सोहँ महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै

निहकलंक हरिशब्द भण्डार

नौवां भाग

http://nehklankharshabad.com/

✪ तत्करा ✪

मिती-सम्मत	नाम	स्थान		पन्ना नं:
२४ मग्घर २०१६ बिक्रमी	ज्ञानी गुरमुख सिंघ दे गृह इक्की इक्की सिख पंगत दा विहार	भलाईपुर	अमृतसर	१
२५ मग्घर २०१६ बिक्रमी	महिंदर सिंघ दे गृह	भलाईपुर	अमृतसर	२४
२५ मग्घर २०१६ बिक्रमी	बलवंत सिंघ दे गृह	जलालबाद	अमृतसर	२४
२६ मग्घर २०१६ बिक्रमी	ऊधम सिंघ दे गृह	जलालबाद	अमृतसर	३१
२६ मग्घर २०१६ बिक्रमी	मास्टर सोहण सिंघ दे गृह	रामपुरा	अमृतसर	३५
२६ मग्घर २०१६ बिक्रमी	हरी सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३७
२७ मग्घर २०१६ बिक्रमी	प्रीतम सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	४६
२७ मग्घर २०१६ बिक्रमी	हरबंस सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	४८
२७ मग्घर २०१६ बिक्रमी	गज्जण सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	४६
२७ मग्घर २०१६ बिक्रमी	तारा सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	५०
२७ मग्घर २०१६ बिक्रमी	साधू सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	५०
२७ मग्घर २०१६ बिक्रमी	पूरन सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	५२
२७ मग्घर २०१६ बिक्रमी	दर्शन सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	५२
२७ मग्घर २०१६ बिक्रमी	महिंदर सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	५४
२७ मग्घर २०१६ बिक्रमी	जिंदर सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	५४
२७ मग्घर २०१६ बिक्रमी	मेघ सिंघ प्रीतम सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	५५
२७ मग्घर २०१६ बिक्रमी	जुगिंदर सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	५५
२७ मग्घर २०१६ बिक्रमी	कुंदन सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	५५
२७ मग्घर २०१६ बिक्रमी	रूड़ सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	५६

1 ०६

२७	मग्घर	२०१६	बिक्रमी	सुखदेव सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	५७
२७	मग्घर	२०१६	बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६१
२७	मग्घर	२०१६	बिक्रमी	गुरमुख सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६२
२७	मग्घर	२०१६	बिक्रमी	भाई नरायण सिँघ दे गृह	कंग	अमृतसर	६३
२८	मग्घर	२०१६	बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	कंग	अमृतसर	७०
२८	मग्घर	२०१६	बिक्रमी	मास्टर कुंदन सिँघ दे गृह	माल चक्क	अमृतसर	७५
२६	मग्घर	२०१६	बिक्रमी	मस्सा सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	८३
३०	मग्घर	२०१६	बिक्रमी	मक्खण सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	६१
०१	पोह	२०१६	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	६६
०२	पोह	२०१६	बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	भूंबली	गुरदासपुर	१०५
०३	पोह	२०१६	बिक्रमी	अजीत सिँघ दे गृह	बटाला	गुरदासपुर	११३
०३	पोह	२०१६	बिक्रमी	चरन सिँघ दे गृह	हेमराजपुर	गुरदासपुर	११६
१३	पोह	२०१६	बिक्रमी	कपतान बंता सिँघ दे गृह	पंज गराईआ	गुरदासपुर	१२४
१३	पोह	२०१६	बिक्रमी	चरन सिँघ दे नवित	पंज गराईआ	गुरदासपुर	१३६
२६	पोह	२०१६	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१३६
०१	फग्गण	२०१६	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१८४
०३	फग्गण	२०१६	बिक्रमी	सरैण सिँघ दे गृह	निधांवाली	फिरोज़पुर	२००
०४	फग्गण	२०१६	बिक्रमी	बूड़ सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	२०६
०५	फग्गण	२०१६	बिक्रमी	सद्दागर सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	२१३
०५	फग्गण	२०१६	बिक्रमी		नाथेवाल	फिरोज़पुर	२१७
०५	फग्गण	२०१६	बिक्रमी	हाकम सिँघ दे गृह	समालसर	फिरोज़पुर	२२०
०५	फग्गण	२०१६	बिक्रमी	नाज़र सिँघ दे गृह	माड़ी	फिरोज़पुर	२२२

2
०९

2
०९

०६ फग्गण २०१६ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह	उसमा	अमृतसर	२४४
०६ फग्गण २०१६ बिक्रमी रतन सिँघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	२४३
०७ फग्गण २०१६ बिक्रमी तारा सिँघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	२५३
०७ फग्गण २०१६ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह	तरनतारन	अमृतसर	२५६
१४ फग्गण २०१६ बिक्रमी दरबार विच	पहाड़गंज	दिल्ली	२५८
१६ फग्गण २०१६ बिक्रमी भगत सिँघ दे गृह	इटारसी	इटारसी	२६५
१७ फग्गण २०१६ बिक्रमी भगत सिँघ दे गृह	इटारसी	इटारसी	२६८
१८ फग्गण २०१६ बिक्रमी जसवंत सिँघ दे गृह	इटारसी	इटारसी	२८०
१८ फग्गण २०१६ बिक्रमी सविंदर सिँघ दे गृह	इटारसी	इटारसी	२८६
१८ फग्गण २०१६ बिक्रमी हरदित सिँघ दे गृह	इटारसी	इटारसी	२८६
२१ फग्गण २०१६ बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे गृह	करोलबाग	दिल्ली	३०३
२२ फग्गण २०१६ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे गृह	नानकपुर	करनाल	३०७
२३ फग्गण २०१६ सरवण सिँघ दे गृह	जगातीआं	करनाल	३१७
२३ फग्गण २०१६ हरबंस सिँघ दे गृह	ठीकरी छंना	करनाल	३२५
०१ चेत २०१७ बिक्रमी दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	३३२
०८ चेत २०१७ बिक्रमी बचन सिँघ दे गृह	काणा कौटा	गुरदासपुर	३७३
०८ चेत २०१७ बिक्रमी धिरता सिँघ दे गृह	काणा कौटा	गुरदासपुर	३७७
०८ चेत २०१७ बिक्रमी मेला सिँघ दे गृह	काणा कौटा	गुरदासपुर	३७८
०८ चेत २०१७ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह	बाब पुर	गुरदासपुर	३८२
०८ चेत २०१७ बिक्रमी दीदार सिँघ दे गृह	बाबू पुर	गुरदासपुर	३८५
०८ चेत २०१७ बिक्रमी संता सिँघ दे गृह	बाबू पुर	गुरदासपुर	३८८
०६ चेत २०१७ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह	बाबू पुर	गुरदासपुर	३६२

3

3

०६	चेत	२०१७	बिक्रमी	हज़ारा	सिँघ	दे	गृह	बाबू पुर	गुरदासपुर	३६७
०६	चेत	२०१७	बिक्रमी	वरखा	सिँघ	दे	गृह	बाबू पुर	गुरदासपुर	३६८
०६	चेत	२०१७	बिक्रमी	प्यारा	सिँघ	दे	गृह	बाबू पुर	गुरदासपुर	३६६
१०	चेत	२०१७	बिक्रमी	बलाका	सिँघ	दे	गृह	बाबू पुर	गुरदासपुर	४०२
१०	चेत	२०१७	बिक्रमी	किशन	सिँघ	दे	गृह	अल्लड़पिंडी	गुरदासपुर	४०६
१०	चेत	२०१७	बिक्रमी	तेजा	सिँघ	दे	गृह	अल्लड़पिंडी	गुरदासपुर	४०६
१०	चेत	२०१७	बिक्रमी	किशन	सिँघ	दे	गृह	अल्लड़पिंडी	गुरदासपुर	४१३
१०	चेत	२०१७	बिक्रमी	दारा	सिँघ	दे	गृह	अल्लड़पिंडी	गुरदासपुर	४२३
११	चेत	२०१७	बिक्रमी	चंनण	सिँघ	दे	गृह	अल्लड़पिंडी	गुरदासपुर	४२३
११	चेत	२०१७	बिक्रमी	बचन	सिँघ	दे	गृह	बाबूपुरा	गुरदासपुर	४२४
११	चेत	२०१७	बिक्रमी	अजीत	सिँघ	दे	गृह	काणा कौटा	गुरदासपुर	४२४
११	चेत	२०१७	बिक्रमी	इन्दर	सिँघ	दे	गृह	आदी	गुरदासपुर	४२५
११	चेत	२०१७	बिक्रमी	बूड़	सिँघ	दे	गृह	वजीरपुर	गुरदासपुर	४२८
११	चेत	२०१७	बिक्रमी	बीबी	बंती	दे	गृह	नौशैहरा	गुरदासपुर	४३४
११	चेत	२०१७	बिक्रमी	चरन	सिँघ	दे	गृह	बल	गुरदासपुर	४३८
१२	चेत	२०१७	बिक्रमी	उजागर	सिँघ	दे	गृह		गुरदासपुर	४४२
१२	चेत	२०१७	बिक्रमी	अतर	सिँघ	दे	गृह	ओगरा	गुरदासपुर	४४५
१४	चेत	२०१७	बिक्रमी	महिंदर	सिँघ	दे	गृह	धीरा	गुरदासपुर	४५२
१४	चेत	२०१७	बिक्रमी					दया	गुरदासपुर	४५६
१४	चेत	२०१७	बिक्रमी	मोहण	सिँघ	दे	गृह	तारा चक्क	गुरदासपुर	४५७
१४	चेत	२०१७	बिक्रमी	बख़शीश	सिँघ	दे	गृह	कादर अबाद	अमृतसर	४५६
१५	चेत	२०१७	बिक्रमी	गिरधारा	सिँघ	दे	गृह	बलोबाल	अमृतसर	४६६

4 ०६

२७ चेत २०१७ बिक्रमी बाबा मोता सिँघ दे गृह कल्सीआं अमृतसर ४७२
२८ चेत २०१७ बिक्रमी बाबा मोता सिँघ दे गृह कल्सीआं अमृतसर ४७६
२८ चेत २०१७ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह गग्गोबूआ अमृतसर ४८२
२८ चेत २०१७ बिक्रमी गुरबख़श सिँघ दे गृह गग्गोबूआ अमृतसर ४८४
०१ विसाख २०१७ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे गृह जेठूवाल अमृतसर ४८५
०२ विसाख २०१७ बिक्रमी लाभ सिँघ दे गृह सैदपुर अमृतसर ५०४
०२ विसाख २०१७ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह बटाला गुररदास पुर ५०६
०३ विसाख २०१७ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह भलाईपुर डोगरां अमृतसर ५१६
२० विसाख २०१७ बिक्रमी महिंदर सिँघ दे गृह नयासाला अमृतसर ५१६
२१ विसाख २०१७ बिक्रमी मिरजा दे मकबरे पर कादीआं अमृतसर ५३०
०१ जेठ २०१७ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल अमृतसर ५३२

5 ०६

०२ जेठ २०१७ बिक्रमी जागीर सिँघ दे गृह सोल्ह गुरदासपुर ५४२
०३ जेठ २०१७ बिक्रमी लैफटीनैंट चेला सिँघ वजारत रोड जम्मू ५५२
०४ जेठ २०१७ बिक्रमी अंगरेज़ सिँघ मंगल सिँघ दे गृह नई बसती जम्मू ५६५
०४ जेठ २०१७ बिक्रमी गूड़ा राम दे गृह शेख़शर जम्मू ५६६
०५ जेठ २०१७ बिक्रमी तेज़ भान दे गृह शेख़शर जम्मू ५७५
०५ जेठ २०१७ बिक्रमी करम चंद दे गृह शेख़शर जम्मू ५८१
०५ जेठ २०१७ बिक्रमी सरदारा सिँघ दे गृह शेख़शर जम्मू ५८३
०५ जेठ २०१७ बिक्रमी मेहर सिँघ दे गृह शेखसर जम्मू ५८४
०५ जेठ २०१७ बिक्रमी तेज भान दे गृह शेख़शर जम्मू ५८७
०६ जेठ २०१७ बिक्रमी राम चंद दे गृह देवा जम्मू ५९७
०६ जेठ २०१७ बिक्रमी नानक चंद प्रेम चन्द भोला राम दे गृह सरदारी जम्मू ६०३

०६	जेठ	२०१७	बिक्रमी	पूरन चंद दे गृह	मलक	जम्मू	६०८
०७	जेठ	२०१७	बिक्रमी	भाग सिँघ दे गृह	मलक	जम्मू	६१६
०७	जेठ	२०१७	बिक्रमी	रसाल सिँघ साहिब सिँघ दे गृह	मनावर	जम्मू	६१७
०७	जेठ	२०१७	बिक्रमी	दौलत सिँघ दे गृह	नवां चक्क	जम्मू	६१८
०७	जेठ	२०१७	बिक्रमी	संत राम दे गृह	बाणीआ	जम्मू	६२०
०७	जेठ	२०१७	बिक्रमी	बेला सिँघ जगत सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	६२१
०७	जेठ	२०१७	बिक्रमी	देवा सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	६२४
०८	जेठ	२०१७	बिक्रमी	इन्दर सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	६३१
०८	जेठ	२०१७	बिक्रमी	वकील चंद दे गृह	धिंगाली	जम्मू	६३२
०८	जेठ	२०१७	बिक्रमी	रोलू दे गृह	बावीआ	जम्मू	६३३
०८	जेठ	२०१७	बिक्रमी	कथा सिँघ जीवण सिँघ दे गृह	मोइला	जम्मू	६३५
०८	जेठ	२०१७	बिक्रमी	लछमण सिँघ दे गृह	धिंगाली	जम्मू	६४१
०६	जेठ	२०१७	बिक्रमी	फरंगी राम दे गृह	तूतां वाला	जम्मू	६४६
०६	जेठ	२०१७	बिक्रमी	ज्ञान चंद दे गृह	तूतां वाला	जम्मू	६५०
०६	जेठ	२०१७	बिक्रमी	ज्ञान चंद दे गृह	खेर वाला	जम्मू	६५०
०६	जेठ	२०१७	बिक्रमी	धरम चंद दे गृह	बाले चक्क	जम्मू	६५८
१०	जेठ	२०१७	बिक्रमी	गुरदित सिँघ दे गृह	छंब	जम्मू	६६७
०६	जेठ	२०१७	बिक्रमी	धूंदा राम दे गृह	छंब	जम्मू	६७३
०६	जेठ	२०१७	बिक्रमी	बीबी राम कौर दे गृह	छंब	जम्मू	६७४
०६	जेठ	२०१७	बिक्रमी	ईशर सिँघ दे गृह	दड़	जम्मू	६५
११	जेठ	२०१७	बिक्रमी	बाजा सिँघ दे गृह	मट्टू	जम्मू	६८१
११	जेठ	२०१७	बिक्रमी	भोला राम दे गृह	जौड़ीआं	जम्मू	६८३

6

6

०६

०६

११ जेठ २०१७ बिक्रमी	प्रकाश चंद दे गृह	जौड़ीआं	जम्मू	६८७
१२ जेठ २०१७ बिक्रमी	सेवा राम दे गृह	कलोए	जम्मू	६९७
१२ जेठ २०१७ बिक्रमी	सरदारा सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	७०२
१३ जेठ २०१७ बिक्रमी	दौलत राम दे गृह	कोटली राईआ	जम्मू	७१८
१३ जेठ २०१७ बिक्रमी	देवी सिँघ आसला दे गृह	मग्घो वाली	जम्मू	७२२
२८ जेठ २०१७ बिक्रमी	शब्द सिँघासण	पहाढ़गंज	दिल्ली	७२६
०१ हाढ़ २०१७ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	७३२
०२ हाढ़ २०१७ बिक्रमी	सरैण सिँघ दे गृह	जंडिआला गरू	अमृतसर	७३८
०३ हाढ़ २०१७ बिक्रमी	सरैण सिँघ दे गृह	जंडिआला गरू	अमृतसर	७४६
०७ हाढ़ २०१७ बिक्रमी	डाकटर पाल सिँघ दे गृह	भलाईपुर डोगरां	अमृतसर	७५४
१७ हाढ़ २०१७ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	७६२
१८ हाढ़ २०१७ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	७८६
२३ हाढ़ २०१७ बिक्रमी	रेछम सिँघ दे गृह	खैहरा	अमृतसर	८०५
२४ हाढ़ २०१७ बिक्रमी	गुरबचन सिघ दे गृह	अैहमदपुरा	कपूरथला	८१७
२४ हाढ़ २०१७ बिक्रमी	जसवंत सिँघ दे गृह	करतारपुर	जलंधर	८२१
२७ हाढ़ २०१७ बिक्रमी	गुरदयाल सिँघ दे गृह	मैहणीआं	अमृतसर	८२६
०१ सावण २०१७ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	८३८
०१ भादरों २०१७ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	८५४
०२ भादरों २०१७ बिक्रमी	नरैण सिँघ दे गृह	नज़ामपुर	अमृतसर	८६६
०३ भादरों २०१७ बिक्रमी	केहर सिँघ दे गृह	रजीवाल	फिरोज़पुर	८७६
०४ भादरों २०१७ बिक्रमी	मल सिँघ दे गृह	रजीवाल	फिरोज़पुर	८८५
०४ भादरों २०१७ बिक्रमी	मुखतयार सिँघ दे गृह	रामूवाला	फिरोज़पुर	८८५

7
०६

०५	भादरों	२०१७	बिक्रमी	बिकर सिँघ	दे	गृह	रामूवाला	फिरोज़पुर	८९३
०५	भादरों	२०१७	बिक्रमी	गुरदयाल सिँघ	दे	गृह	रामूवाला	फिरोज़पुर	९००
०५	भादरों	२०१७	बिक्रमी	उजागर सिँघ	दे	गृह	रामूवाला	फिरोज़पुर	९०७
०६	भादरों	२०१७	बिक्रमी	हरबंस सिँघ	दे	गृह	चूहड़ चक्क	फिरोज़पुर	९१३
०७	भादरों	२०१७	बिक्रमी	बूड़ सिँघ	दे	गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	९३१
०८	भादरों	२०१७	बिक्रमी	इन्दर सिँघ	दे	गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	९३७
०८	भादरों	२०१७	बिक्रमी	गुरदयाल सिँघ	दे	गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	९४२
०९	भादरों	२०१७	बिक्रमी	सौदागर सिँघ	दे	गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	९५०
०९	भादरों	२०१७	बिक्रमी	माहला सिँघ	दे	गृह	समालसर	फिरोज़पुर	९५६
१०	भादरों	२०१७	बिक्रमी	जगीर दास	दे	गृह	खिआड़ी वाला	बठिंडा	९६५
११	भादरों	२०१७	बिक्रमी	मकंद सिँघ	दे	गृह	महराज	बठिंडा	९७८
१२	भादरों	२०१७	बिक्रमी	वधावा सिँघ	दे	गृह	महराज	बठिंडा	९९०
१३	भादरों	२०१७	बिक्रमी	भाग सिँघ	दे	गृह	कबड्डी खाना	महराज	१००१
१३	भादरों	२०१७	बिक्रमी	गुलजार सिँघ	दे	गृह	शाहो के	फिरोज़पुर	१००९
१४	भादरों	२०१७	बिक्रमी	राज सिँघ	दे	गृह	फरीद कोट	फिरोज़पुर	१०१७
१४	भादरों	२०१७	बिक्रमी	करम सिँघ	दे	गृह	पिपली	फिरोज़पुर	१०१९
१५	भादरों	२०१७	बिक्रमी	धरम सिँघ	दे	गृह	पिपली	फिरोज़पुर	१०३१
१६	भादरों	२०१७	बिक्रमी	कृपाल सिँघ	दे	गृह	गोलेवाला	फिरोज़पुर	१०४१
१७	भादरों	२०१७	बिक्रमी	हज़ूरा सिँघ	दे	गृह	गोलेवाला	फिरोज़पुर	१०५०
१७	भादरों	२०१७	बिक्रमी	सूबेदार राम सिँघ	दे	गृह	गवाल टोली	फिरोज़पुर	१०५६
१८	भादरों	२०१७	बिक्रमी	सुलक्खण सिँघ	दे	गृह	मूंगले	फिरोज़पुर	१०६८
१९	भादरों	२०१७	बिक्रमी	करनैल सिँघ	दे	गृह	आलेवाला	फिरोज़पुर	१०७५

8
०९

१६ भादरों २०१७ बिक्रमी अरजन सिँघ दे गृह खलील बसती फिरोजपुर १०७६
२० भादरों २०१७ बिक्रमी — खलील बसती फिरोजपुर १०८२
२० भादरों २०१७ बिक्रमी सुरैण सिँघ दे गृह निधां वाली फिरोजपुर १०८५
२१ भादरों २०१७ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह सद्दा सिँघ वाला फिरोजपुर १०६६
२२ भादरों २०१७ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे गृह सद्दा सिँघ वाला फिरोजपुर ११०२
२२ भादरों २०१७ बिक्रमी सरदारा सिँघ दे गृह मनावा फिरोजपुर ११०३
२३ भादरों २०१७ बिक्रमी करनैल सिँघ दे गृह शाहवाला फिरोज़पुर ११०८
२३ भादरों २०१७ बिक्रमी जरनैल सिँघ दे गृह शाहवाला फिरोज़पुर १११२
२४ भादरों २०१७ बिक्रमी गुरदास सिँघ दे गृह शाहवाला फिरोज़पुर १११६
२४ भादरों २०१७ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह मुंडी जुमाल फिरोज़पुर ११२०
२५ भादरों २०१७ बिक्रमी बगीचा सिँघ दे गृह मुंडी जुमाल फिरोज़पुर ११३०
२५ भादरों २०१७ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह कादर वाला फिरोज़पुर ११३४
२६ भादरों २०१७ बिक्रमी बीबी हरनाम कौर दे गृह तलवंती फिरोज़पुर ११३६
२६ भादरों २०१७ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह उसमा अमृतसर ११४२
०१ अस्सू २०१७ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल अमृतसर ११४६
०१ अस्सू २०१७ बिक्रमी राष्ट्रपती डा० राजिंदर प्रसाद नूं जेठूवाल अमृतसर ११५२
०१ अस्सू २०१७ बिक्रमी श्री हरिमंदर साहिब पंथ खालसा नूं जेठूवाल अमृतसर ११५३
०५ अस्सू २०१७ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह मांगा सराए अमृतसर ११५७
०६ अस्सू २०१७ बिक्रमी — मांगा सराए अमृतसर ११६४
०६ अस्सू २०१७ बिक्रमी बेला सिँघ दे गृह माहल मांगा सराए अमृतसर ११६८
०७ अस्सू २०१७ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह मांगा सराए अमृतसर ११७६
०७ अस्सू २०१७ बिक्रमी सविंदर सिँघ दे गृह भुलर अमृतसर ११७६

9
०६

०८ अस्सू २०१७ बिक्रमी	मंगल सिंघ दे गृह	सारिंगड़ा	अमृतसर	११८८
०९ अस्सू २०१७ बिक्रमी	बूटा सिंघ दे गृह	लेलीआ	अमृतसर	१२००
०९ अस्सू २०१७ बिक्रमी	अजीत सिंघ दे गृह	लोपो के	अमृतसर	१२०४
०९ अस्सू २०१७ बिक्रमी	अवतार सिंघ दे गृह	काउके	अमृतसर	१२०६
१० अस्सू २०१७ बिक्रमी	नरायण सिंघ दे गृह	गुमानपुर	अमृतसर	१२१२
११ अस्सू २०१७ बिक्रमी	सवरन सिंघ दे गृह	गुमानपुर	अमृतसर	१२२२
११ अस्सू २०१७ बिक्रमी	दलीप सिंघ दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	१२२७
१२ अस्सू २०१७ बिक्रमी	बख़शीश सिंघ दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	१२३३
१२ अस्सू २०१७ बिक्रमी	मंगल सिंघ दे गृह	सोहल	अमृतसर	१२३५
१२ अस्सू २०१७ बिक्रमी	सुरजन सिंघ दे गृह	भुचर	अमृतसर	१२४२
१३ अस्सू २०१७ बिक्रमी	मोता सिंघ दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	१२५०
१३ अस्सू २०१७ बिक्रमी	गंडा सिंघ दे गृह	दराजके	अमृतसर	१२५२
१३ अस्सू २०१७ बिक्रमी	लछमण सिंघ दे गृह	भूरे	अमृतसर	१२५७
१४ अस्सू २०१७ बिक्रमी	बली सिंघ दे गृह	कैरों	अमृतसर	१२६७
१४ अस्सू २०१७ बिक्रमी	मक्खण सिंघ दे गृह	जौड़ा	अमृतसर	१२७४
१५ अस्सू २०१७ बिक्रमी	केशो दास दे गृह	जंडो के सिरहाली	अमृतसर	१२८५
१५ अस्सू २०१७ बिक्रमी	संता सिंघ दे गृह	तरनतारन	अमृतसर	१२८९
२२ अस्सू २०१७ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१२९८
०१ कत्तक २०१७ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१३०३
१९ कत्तक २०१७ बिक्रमी	अजीत सिंघ दे गृह	बटाला	गुररदासपुर	१३३२
२० कत्तक २०१७ बिक्रमी	भगवान सिंघ दे गृह	सैदपुर	अमृतसर	१३४२
२० कत्तक २०१७ बिक्रमी	नाज़र सिंघ दे गृह	मलीआं	अमृतसर	१३४६

10
०९

२१	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	मोहण सिँघ दे गृह	सकयांवाली	अमृतसर	१३५३
२२	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	ज्ञान सिँघ दे गृह	भोरछी	अमृतसर	१३६६
२२	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	गुरमुख सिँघ दे गृह	भलाईपुर डोगरा	अमृतसर	१३७३
२३	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	ऊधम सिँघ दे गृह	जलालाबाद	अमृतसर	१३७८
२३	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	सोहण सिँघ दे गृह	रामपुर	अमृतसर	१३८२
२४	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	सुखदेव सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	१३९०
२५	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	हरी सिँघ दे गृह ,,	कल्ला	अमृतसर	१३९७
२५	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	नरायण सिँघ दे गृह	कंग	अमृतसर	१४०१
२६	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	गुरनाम सिँघ दे गृह	कंग	अमृतसर	१४०७
२६	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	कंग	अमृतसर	१४१३
२६	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	कुंदन सिँघ दे गृह	माल चक्क	अमृतसर	१४१५
२६	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	बीबी अजैब कौर दे गृह	बाठ	अमृतसर	१४१६
२६	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	महिंदर सिँघ दे गृह	बान	अमृतसर	१४२२
२६	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	दारा सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	१४२३
२७	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	मक्खण सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	१४२६
२८	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	सरैण सिँघ दे गृह	जंडिआला	अमृतसर	१४३५
२८	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	इन्दर सिँघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	१४४१
२८	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	सरैण सिँघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर	१४४५
२६	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	बीबी बलवंत कौर दे गृह	धारड़	अमृतसर	१४४८
०१	मग्घर	२०१७ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१४५३
०२	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	गुरनाम सिँघ दे गृह	वेरका	अमृतसर	१४६०
०३	कत्तक	२०१७ बिक्रमी	पसौरा सिँघ दे गृह	वेरका	अमृतसर	१४७२

11
०६

१४	कत्तक	२०१७	बिक्रमी	गुरदीप सिँघ दे गृह	हरदो फराला	जलंधर	१४८५
१५	कत्तक	२०१७	बिक्रमी	लाल सिँघ दे गृह	डलेवाल	जलंधर	१४६४
१६	कत्तक	२०१७	बिक्रमी	केसर सिँघ दे गृह	डलेवाल	जलंधर	१५००

12

०६

12

०६

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

❋ २४ मग्घर २०१६ बिक्रमी पिण्ड भलाई पुर जिला अमृतसर ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे घर ❋

❋ इक्की इक्की सिख पंगत संगत दा विहार सतिजुग दी धार ❋

निरँकार निरँकार निरँकार, अलक्ख अगम्म भेव अपारया। सो पुरख निरँजन खेल अपार, आप आपणा आप करा रिहा।
१ हरि पुरख निरँजन निरगुण धार, नर नरायण नाउँ धरा ल्या। आदि निरँजन जोत उज्यार, दीपक साचा इक्क जगा ल्या। १
०६ अबिनाशी करता मीत मुरार, दर घर साचे सोभा पा रिहा। श्री भगवान सांझा यार, सचखण्ड निवास रखा ल्या। पारब्रह्म ०६
प्रभ भेव न्यार, भेव अभेद भेव छुपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहत पुरख अकाल,
दीन दयाल आपणा वेस वटा ल्या। दीन दयाला पुरख अकाला, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर खेल निराला,
आप आपणा ल्ए कराईआ। आपे चले आपणी चाला, चाल निराली इक्क रखाईआ। संग रखाए काल महांकाला, प्रितपाला
वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनुभव प्रकाश कराईआ। आदि पुरख अबिनाशी हरि, हरि
एका रंग समाया। वसणहारा साचे घर, घर घर मन्दिर इक्क उपाया। आपणा अक्खर आपे पढ़, आप आपणा नाअरा आपे
लाया। आपणा घाड़न आपे घड़, रूप अनूप आप वटाया। आपणी चोटी आपे चढ़ चढ़, आप आपणा वेख वखाया। जोती
जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस धर, वेस अवल्ला इक्क इकल्ला एका खेल खिलाया। सो पुरख
निरँजन वसे सच महल्ला, हरि पुरख निरँजण एका घर सुहांयदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी पारब्रह्म अबिनाशी करता
जोती जोत आपे रला, नूरो नूर डगमगांयदा। अगम्म अगम्मड़ा शब्द अनादि हरि ब्रहमादि एकँकार आपे घल्ला, आपे राग
अला्ंयदा। आपे भेव खुला्ए आपे मुख छुपाए कर कर वल छला, अछल छल धारी आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नौ नौ चार लेख लिखांयदा। इक्क नौ नौ चार पार किनारा, हरि पुरख निरँजन आप कराईआ। छत्ती जुग दए हुलारा, देवणहारा बेपरवाहीआ। चौथे जुग वेख अखाड़ा, लोकमात करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी पंचम धाड़ा, नौ खण्ड रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी नाउँ धराईआ। आदि जुगादि हरि निरँकार, निरगुण रूप समाया। जुगा जुंगतर लए अवतार, लोकमात वेख वखाया। शब्द जणाए सच्ची धार, आप आपणा राग अलाया। सन्तां भगतां खोले बन्द किवाड़, अंदर मन्दिर फोल फुलाया। सच वखाए इक्क दुआर, थिर घर वासी वेस वटाया। मेल मिलाए कन्त भतार, साची सेजा आप हंढाया। कलिजुग त्रेता द्वापर खेल न्यार, हरि खालक खलक आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आप लिखाया। आपणा लेखा लिखणहार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। लक्ख चुरासी कर पसार, ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंज तत्त वरताईआ। नौ दुआरे खेल अपार, आपे खेले खेल खिलाईआ। अंदर मन्दिर गुप्त ज़ाहर, घर घर विच आप टिकाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, जोत निरँजन डगमगाईआ। शब्द अनादि सच्ची धुन्कार, अनहद साचा ताल वजाईआ। पंचम मीता मीत मुरार, साची सखीआं मंगल गाईआ। रूप अनूप शाहो भूप सच्ची सरकार, सच सुल्तान आप अख्वाईआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, आप आपणा नाउँ धराईआ। जागरत जोत करे उज्यार, नूरो नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि शब्द ब्रह्ममादि नाम सच शब्द करे कुड़माईआ। सार शब्द हरि बलवान, एका एक उपांयदा। निरगुण खेले खेल महान, खेलणहार दिस ना आंयदा। दाता दानी सर्ब भगवान, भगतन मीता वेस वटांयदा। वेखणहार जगत दुकान, चौदां लोक फोल फुलांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीसा सुरपति इंद आपे पाए आपणी आण, आप आपणा हुक्म जणांयदा। हरि दाता दानी देवे जीआ दान, घर घर हरि रिजक सबांयदा। लक्ख चुरासी पीण खाण, एका रसना मुख सलांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी बणत बणांयदा। सतिजुग साचा सच धर, हरि साचे वेस कराया। त्रेता तेरा मेल दर, दुआरा आप सुहाया। कान्हा खेल कर, सखीआं मंगल एका गाया। कलिजुग गुरू चेले देवे वर, गुर चेला नाउँ धराया। वेले अन्तिम खेल अगम्म अपार, बोध अगाधी भेव अभेदा दए खुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अकल कलधारी हरि निरँकारी, आप आपणी कल वरताया। अकल कल धारा हरि निरँकारा, निरगुण रूप समांयदा। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कारा, अलक्ख निरँजन आप करांयदा। सति सतिवादी दीप उज्यारा, ब्रह्म ब्रह्मादी

आप जगांयदा। साचा नादी नाद धुन्कारा, नाद अनादी आप वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहार पुरख समरथ, हरि साचे वड वड्याईआ। जुग जुग महिमा अकथनी अकथ, वेद कतेब भेव ना राईआ। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, चार कुंट दहि दिशा रिहा भवाईआ। वेखणहारा तीर्थ तट, अठसठ फोल फुलाईआ। वसणहारा घट घट, हरि जू हरि मन्दिर रिहा सुहाईआ। खेले खेल बाजीगर नट, स्वांगी आपणा सांग वरताईआ। भाग लगाए काया मट, पंज तत्त करे वड्याईआ। शब्द अनादी लाए सट्ट, अनहद ताल वजाईआ। आत्म वेखे साची खाट, पलँघ रंगीला सेज विछाईआ। कदे ना आए आण बाट, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। जन भगतां नेड़े रक्खे वाट, हरि सन्तन लए तराईआ। पहलों उतरे आपणे घाट, गुरमुख साचे लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। सतिजुग तेरी धार निरँकार, वार अठारां जोत जगांयदा। हँसा बावन कर प्यार, आप आपणा मेल मिलांयदा। धरनी धरत धवल कर उज्यार, जल बिम्ब वेख वखांयदा। रवि ससि पाए सार, मंडल मंडप डगमगांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड हो उज्यार, गगन पातालां फोल फुलांयदा। लोआं पुरीआं एका धार, एका हुक्म मन्नांयदा। सच तख्त बैठ सच्ची सरकार, सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा। निरगुण दीवा बाती इक्क उज्यार, कमलापाती आप जगांयदा। ना कोई दिवस ना कोई राती, घड़ी पल ना कोई वखांयदा। ना कोई वरन ना कोई गोत ना कोई जाती, ना कोई वण्ड वण्डांयदा। ना कोई पिता ना कोई माती, पूत सपूता ना कोई गोद उठांयदा। भैण भईआ साक सज्जण ना कोई नाती, दूसर कटुम्ब ना कोई बणांयदा। आपे पुच्छे आपणी वाती, दर आपणा भेव आप खुल्हांयदा। जुग जुग महिमा अकथनी काथी, कथनी कथ ना कोए कथांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। हरि साचा भेद खुलावणा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकावणा, छत्ती छत्ती वेस वटाईआ। चार जुग लेखे लावणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग लेखा रहे ना राईआ। विष्नूं वंसी आप उठावणा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। ब्रह्मे दे मति आप समझावणा, चारे वेदां फोल फुलाईआ। शंकर एका रंग रंगावणा, एका सिख्या भिच्छया झोली पाईआ। सुरपति राजा इंद आप बुलावणा, फड़ बाहो लए उठाईआ। करोड़ तेतीसा वक्त चुकावणा, जगत जगदीशा वड वड्याईआ। गण गंधर्ब आपणी सेवा लावणा, वेले अन्त दए समझाईआ। लोकमात फेरा पावणा, निरगुण सरगुण जोत करे रुशनाईआ। रवि ससि मुख शर्मावणा, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। मंडल मंडप ना कोई सुहावना, बंक दुआर वेख वखाईआ। कलिजुग तेरा रंग रंगावणा, रंगणहारा इक्क अख्वाईआ। ईसा मूसा आप उठावणा, काला सूसा तन सुहाईआ।

चार यार संग मुहम्मद नाल रलावणा, एका कलमा दए सखाईआ। नबी रसूलां पीर दस्तगीरां शाह हकीरां फड़ फड़ आप बहावणा, हुक्मी हुक्म विच समाईआ। हक हकीकत वेख वखावणा, लाशरीक इक्क खुदाईआ। इक्क सदा एका नाअरा बेऐब परवरदिगार आपणा आप सुनावणा, एका अल्फ करे पढ़ाईआ। ऐनलहक मुकामे हक आप वखावणा, जल्वा नूर बेपरवाहीआ। मक्का काअबा भेव चुकावणा, दो दो आबा वेस धराईआ। हक जनाबा आपणा नाउँ धरावना, मुख नकाबा आप उठाईआ। सच अहिबाबा रबाब इक्क वजावणा, एकँकारा हरि निरँकारा इक्क सितार हथ्थ उठाईआ। भेख अवल्ला इक्क इकल्ला निरगुण सरगुण आपणा नाउँ धरावना, धरनी धरत दए वड्याईआ। नानक लेखा पूर करावणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सन्त कबीरा नाल रलावणा, सचखण्ड दए वड्याईआ। हरि हरि सन्तां भगतां संग निभावणा, हरि सन्तन लए तराईआ। गीत सुहागी एका गावना, हरि शब्द वड्डी वड्याईआ। गीत सुहागी सच जैकारा इक्क बुलावणा, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। सो पुरख निरँजन इक्क मनावणा, दूसर इष्ट ना कोई जणाईआ। अकाल पुरख हर घट नज़री आवणा, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। सति पुरख निरँजन पकड़े दामना, शब्दी गंढु पुआईआ। दो जहानी बणे जामना, एथे ओथे होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा जाए चुकाया। लेखा हरि हरि आप चुकावणा, विसनूं हरि उठांयदा। सच भण्डारा सच वस्त घर साचे वेख वखावणा, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। देवणहारा किसे दिस ना आवणा, नेत्र लोचन नैण दर्शन कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदि आदि आपणा रंग रंगांयदा। आदि उपाया विष्न धार, विष्नूं रूप वटांयदा। चतुर्भुज खेल अपार, आदि शक्ति जोत जगांयदा। बूंद रक्त ना करी कोई त्यार, मात पित ना कोई बणांयदा। एका एक इक्क इकल्ला खेल अपार, इक्क इकल्ला आप करांयदा। साची सिख्या सिख बेऐब परवरदिगार आप आपणी रचन रचांयदा। आपे होए सच सिक्दार, अमृत ताल आप सुहांयदा। आपे नाभ कँवल कर उज्यार, सरगुण निरगुण वेख वखांयदा। आपे ब्रह्मा कर कर बाहर, पारब्रह्म आपणा अंग कटांयदा। आपे शंकर जणाए धूंआँधार, रूप अनूप आप दरसांयदा। आपे तिन्नां वस्या बाहर, आप आपणे अंग लगांयदा। आपे देवे वस्त सचा धन माल, सच खजाना आप भरांयदा। आपे करे कराए सच प्रितपाल, प्रितपालक नाउँ धरांयदा। आपणी घालन आपे घाल, साची सेवा आप कमांयदा। आपे त्रैगुण माया रचया जाल, रजो तमो सतो वेख वखांयदा। आपे काल आपे महांकाल, दीन दयाल आप अख्वांयदा। आपे काया माटी वसे खाल, आपे सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। आपे लक्ख चुरासी वेखे खेत डाल्, फुल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। आपे घट घट अंदर दीपक बाल, जोत निरँजन आप

टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सच वस्त इक्क वरतांयदा। विशनूं वस्त सच वरताई, हरि साचे दया कमाईआ। देवणहारा रिजक सबाई, दाना बीना वड वड्याईआ। ब्रह्मे ब्रह्म मति इक्क समझाई, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। लक्ख चुरासी तेरी रचन रचाई, तेरा रूप सर्ब लोकाईआ। शंकर करे इक्क पढ़ाई, जो घड़े सो भन्न वखाईआ। पुरख अबिनासी भेव ना राई, तिन्ने बह बह करन सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त झोली पाईआ।

विष्नूं वस्त अनमोल, सतो गुण झोली पांयदा। ब्रह्मा ब्रह्म कंडे एका तोल, राजस राजस संग निभांयदा। शंकर दुआरा
एका खोल्ह, तमो तत्त इक्क समझांयदा। आपे बैठा रहे अडोल, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। दर दरवाजा एका खोल्ह, सच
दुआरे सोभा पांयदा। सबद अगम्मी आपे बोल, धरत माता आप सुणांयदा। लक्ख चुरासी जाणा मौल, आप आपणा रूप
वटांयदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंजां तत्तां बणना खोल, आपणी रचन रचांयदा। अंदर धरना नाभ कौल, उलटा
मूंध रखांयदा। जोती जोत सरुप हरि आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। काया खेल अपार, ब्रह्मा विष्न
५ सिव सेव कमाईआ। घर विच घर कर त्यार, घर बैठा बेपरवाहीआ। आत्म सेजा हो त्यार, सोया बेपरवाहीआ। शब्द ५
०६ धुन सच्ची धुन्कार, आप आपणी आपे गाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठार, सच सरोवर ताल भराईआ। दीपक जोत कर उज्यार, ०६
बैठा मुख छुपाईआ। त्रैगुण माया वस्या बाहर, तत्व तत्त ना कोई रखाईआ। आपे जाणे आपणी कार, करनी करता आप
कमाईआ। आपे सुन्न अगम्मी धूंआँधार, अन्ध अन्धेरा डेरा लाईआ। आपे खोल्हे नौ दुआर, जगत वासना विच भराईआ।
आपे करे पंच प्यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मेल मिलाईआ। आपे आसा तृष्ना दए सहार, आपे जूठ झूठ करे पढ़ाईआ।
आपे पंचम सखीआं मंगलाचार, आपे पंज दस भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा
मन्दिर कर त्यार, अंदर वड़ हरि निरँकार, आप सुहाए बंक दुआर, घर साचा इक्क उपाईआ। साचा मन्दिर काया गढ़,
हरि साचा आप उपांयदा। सेवा लाए ब्रह्मा विष्न शिव फड़, साचा हुक्म सुणांयदा। त्रैगुण माया बद्धी लड़, साची वस्त
झोली पांयदा। पंज तत्त विकारा बणया गढ़, हउमे हंगता विच टिकांयदा। एका तत्त रिहा सड़, हवनी हवन वखांयदा।
जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी जोत धर, सच महल्ले आपे चढ़, उच्च अटले आसण लांयदा। महल्ल अटल उच्च
मनारा, हरि साचा आप सुहांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यारा, आपणी खाणी वण्ड वण्डांयदा। उत्भुज सेत्ज बण वरतारा,

जेरज अंड भेव चुकांयदा। ब्रह्मण्ड देवणहारा सहारा, आप आपणी कल वरतांयदा। परमानंद इक्क दुआरा, निजानंद खोल्ह वखांयदा। भरमां कंध अद्ध विचकारा, आपणा पड़दा पांयदा। खेले खेल पुरख अपारा, आपणी वस्त आप टिकांयदा। मन मति बुध कर त्यारा, निरगुण सरगुण विच धरांयदा। मनूआ मन बण सिक्दारा, साचा हुक्म सुणांयदा। जगत तृष्ना भर भण्डारा, तामस जोत अंस हरि गिरधारा, आपे वेख वखांयदा। मति मतवाली ढह ढह पए चरन दुआरा, फड़ फड़ बाहों आप उठांयदा। तेरा रूप दिस ना आए विच संसारा, गुरमुख विरले आप वखांयदा। चारों कुंट दर दर घर घर लक्ख चुरासी लभ्भदे फिरदे जीव गंवारा, हत्थ किसे ना आंयदा। बुध मतवाली चली चाली, हरि साचा मार्ग पांयदा। तेरा दुआरा ना होए खाली, आपणी धूढ़ तेरे मस्तक टिक्का लांयदा। जन भगतां करनी सच दलाली, हरि वणजारा आप समझांयदा। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, शब्द सरूपी सच मलाह, लोकमात दए सुणा, ब्रह्मा विष्न शिव आप उठा, लख चुरासी डेरा ला, घट घट अंदर जोत जगा, जग आपणी बूझ बुझांयदा। ब्रह्मा तेरी सद वडियाई, हरि साचा आप जणांयदा। विष्नूं तेरी सेव कमाई, हरि साचा लेखे लांयदा। शंकर तेरी अन्त दुहाई, साचा डौरु डंक आप वजांयदा । लक्ख चुरासी वेख वखाई, लेखा रहण ना पांयदा। कलिजुग कूके दए दुहाई, चारों कुंट सर्ब कुरलांयदा। वरनां बरनां पई लड़ाई, साची सरन ना कोई लगांयदा। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैस मिले मेल ना साचे माही, हरिसंगत ना कोई मिलांयदा। निथावयां देवे ना कोई थाँई, फड़ बाहों ना गले कोई लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्नूं सद्दया आपणे घर, ब्रह्मा हथ्थीं ल्या फड़, शंकर आया दुआरे चल्ल, तिन्नां मति रिहा समझाईआ। विष्नूं सुण कर ध्यान, हरि साचा आप समझांयदा। तेरा बख्शे दित्ता पीण खाण, चार जुग जो वरतांयदा। ब्रह्मा उठ नौजवान, प्रभ साचा भेव खुलांयदा। वेखण आया तेरी सन्तान, लख चुरासी डेरा लांयदा। जीव जंत नाता जुड़या पंज शैतान, साचा संग ना कोई रखांयदा। शंकर तेरी त्रिशूल कमान, प्रभ साचा हत्थ उठांयदा। उठ उठ बाल नादान, वेला अन्तिम आंयदा। खेले खेले श्री भगवान, चार जुग भेव कोई ना पांयदा। चौदां लोकां वेख आप दुकान, चौदां तबकां फोल फुलांयदा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी कल वरते आण, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। एका फड़या तीर कमान, साचा खण्डा आप चमकांयदा। सो पुरख निरँजन हरि मेहरबान, हँ ब्रह्म फोल फुलांयदा। नाता तुट्टे पीण खाण, खाणा पीणा आपणे हत्थ रखांयदा। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा भेव खुलांयदा। विष्नूं ब्रह्मा शिव चरन दुआर, दोए जोड़ पए सरनाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धर, तेरी ओट इक्क रघुराया। तेरी इच्छया भिच्छया सर्ब संसार,

हउं सेवक सेवा रहे कमाईआ। तेरी भिच्छया वरते हरि निरँकार, तेरे भाणे सद अख्वाईआ। तूं पति पतिवन्ता हउँ तेरी नार,
चरन धूढ़ मस्तक लाए निउँ निउँ सीस झुकाईआ। बिन हरि तेरे ना दिसे कोई सहार, दूसर दर ना कोई जणाईआ। तूं
दाता घड़न भन्नणहार, समरथ पुरख तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाईआ।
विष्नूं उपज्या आपणी रत, ब्रह्म कँवल फुल महाना। शंकर तेरी जाणे मित गति, गति मित श्री भगवाना। तिन्नां करे एका
मत, शब्द सरूपी बन्न्हे गाना। आदि जुगादी प्रगट होए निहकलंक, नित नवित लोकमात खेल महाना। लक्ख चुरासी वेखे
खेत, हरि वड किरसाना। वढ्डुणहारा अगेत पछेत, आप आपणा बल धराना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत
धर, देवणहारा धुर फ़रमाणा। धुर फ़रमाण हरि सुणाया, ब्रह्मे विष्नूं करे जणाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आया, ना सके
कोई बचाईआ। जूठा झूठा बुरज दए ढाया, थिर कोई रहिण ना पाईआ। निरगुण आपणा वेस धराया, निरगुण नूर जोत
करे रुशनाईआ। चारो कुंट फेरा पाया, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर आप उठाया,
वेले अन्तिम लए अंगड़ाईआ। रवि ससि नस्स नस्स पन्ध मुकाया, बख्शी सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
७ आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, ब्रह्मा विष्न शिव लेखा रिहा समझाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव दोए जोड़ करे निमस्कार, ७
प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट घट वासी सुण पुकार, दर तेरे मंगी मंग एका भिच्छया
०६ मंग मंगाईआ। तेरी खिड़ी सच्ची गुलज़ार, लोकमात बसन्त बहार, लक्ख चुरासी त्रैगुण माटी तत्त टिकाईआ। तूं सच्चा ०६
घुमिआर, हउं कोहलू चक्क गेड़ा आपे मार, तूं पथ्थणहार वारो वार, आपे भाण्डे लए उपाईआ। तेरी वस्त समरथ पुरख
करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव उठ उठ नेत्र
आपे खोल्ह, प्रभू अग्गे देण दुहाईआ। एका वस्त साडे कोल, दूसर नज़र ना कोई आईआ। घट घट अंदर रिहा मौल,
मौला रूप आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दए समझाईआ। ब्रह्मा लेखा
हरि समझाए, शाहो भूप सिक्दारा। तिन्नां फड़ फड़ अग्गे लाए, लोकमात वखाए वारो वारा। सच सुच कोई नज़र ना
आए, कलिजुग कूड़ा दिसे सर्ब पसारा। गुर पीर ना कोई मनाए, सच मन्दिर ना गुरुदुआरा। साचा रंग ना कोई चढ़ाए,
ना कोई दिसे सच ललारा। भगत भगवन्त ना मेल मिलाए, साध सन्त होए अवारा। नारी कन्त ना कोई हंढाए, नार दुहागण
होए विभचारा। चारों कुंट अन्धेरा छाए, ना दिसे रवि ससि सितारा। राम कृष्न ना कोई ध्याए, पाए मेल ना घर निरँकारा।
संग मुहम्मद ना कोई मिलाए, नाता तुटा चार यारा। अल्ला राणी दए दुहाए, उच्ची कूके करे पुकारा। सतिनाम ना कोई

अल्लाए, सति सति ना कोई जैकारा। गुरू की फतेह ना कोई वखाए, सृष्ट सबाई धूंआँधारा। साचा चन्द ना कोई चढ़ाए, गुर गोबिन्द बणया सच लिखारा। साचा लेखा दए जणाए, कलिजुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा। सम्बल नगर डेरा लाए, उच्च महल्ला इक्क इकल्ला सच तख्त बैठ सच्ची सरकारा। साचा अदल कमाए, ब्रह्मा विष्न शिव फड़ खिच बहाए चरन दुआरा। एका हुक्म सुणाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा लहिणा दए मुकाए। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार, प्रभ आपणे संग रखाईआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, नर निरँकार आप कराईआ। निहकलंक लए अवतार, लोकमात करे रुशनाईआ। कलिजुग बेड़ा डुब्बे विच मँझधार, एका धक्का देवे लाईआ। सतिजुग साचा करे त्यार, घर साचे वेख वखाईआ। धरत मात दी सुणे पुकार, नेत्र रो रो रही कुरलाईआ। खुलड़े केस धाहां रही मार, चारों कुंट नैण उठाईआ। सन्त भगत ना मीत मुरार, गुरमुख नजर कोए ना आईआ। संसार सुख पसरया सर्ब संसार, रंग रलीआं रिहा मनाईआ। तीर्थ तट होए ख्वार, धीआं भैणां रहे तकाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआला हाहाकार, सच धर्म ना कोई कुड़माईआ। गुर मन्दिर अंदर जूठ झूठ करन अहार, साचा रसना नाम ना लाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, हरि का भेव कोई ना पाईआ। पंडत पांधे ना करन विचार, जोत लिलाटी ना तिलक लगाईआ। आपे डिगे डूँग्घी गार, शास्त्र सिमरत दए गवाहीआ। मुला शेख़ मुसायक पीर रहे झक्ख मार, साचा सालस कोई नज़र ना आईआ । उम्मती उम्मत रही ललकार, सम्मत सम्मती दए दुहाईआ। ख़ालस ख़ालसा दिसे ना विच संसार, जिस मिल्या गोबिन्द साचा माहीआ। अठ्ठे पहर ना दरस निरँकार, भुल्ली सर्ब लुकाईआ। राम ना मिल्या मीत मुरार, सुरत सवाणी सीता रही कुरलाईआ। राधा कृष्न ना करया सच प्यार, नाम बंसरी ना कोई वजाईआ। उच्ची कूकन करन ज्ञान, हरि का ध्यान ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, ब्रह्मा विष्न शिव तेरी दुकान, प्रगट हो भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाण, जानणहार वड वड्याईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर सलाह, तिन्नां मता पकाया। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, तेरा भेद किसे ना पाया। जुग जुग बणे जगत मलाह, जागरत जोत करे रुशनाया। आपणा नाउँ नरायण धरा, नर निरँकारा आप अखवाया। कागों हँस दए बणा, जिस जन अपणी दया कमाया। तूं दाता हउं डिगे सरना, बख्शणहार बेपरवाहया। असीं बणन आए गवाह, कलिजुग वेला वेख वखाया। अठसठ तीर्थ तेरे पिच्छे पिच्छे फेरा आए पा, तेरी धूढ़ी मस्तक टिक्का लाईआ। त्रैबैणी नैणी वेख्या एका थाँ, जमना सुरस्ती गंगा रही राह तकाया। आप पकड़ी जा जा बांह, आप अपणा खेल खलाया। जगत सिख्या दए सुणा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी

८
०६

जुग तेरा अन्तिम पन्ध मुकाया। इक्की सिक्खी नाल लए रला, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग विछड़े मेल मिलाया। समरथ पुरख सिर रक्खे हथ्थ दे कर ठंडी छाँ, आप आपणे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ रखाया। निहकलंक सूरबीर बलीवान, ब्रह्मा विष्न शिव रहे ध्याईआ। आपे राम कृष्न बण बण आए काहन, आपे ईसा मूसा, सेवा लाईआ। आपे संग मुहम्मद हो प्रधान, अल्ला राणी लए प्रनाईआ। आपे नानक देवे इक्क निशान, दो जहान दए झुलाईआ। एका गोबिन्द बख्शे तीर कमान, खड़ग खण्डा नाउँ धराईआ। आपे देवे साचा दान, दाता दानी वड वड्याईआ। आपे पूत सपूता कर कुरबान, आपणी भेटा आप चढ़ाईआ। आपे देवे दरगाह माण, दर घर साचे वज्जी वधाईआ। आपे लक्ख चुरासी चुकाए कान, आपे उत्पत दए कराईआ। आपे जुग जुग वेखे मार ध्यान, आप आपणी सेव कमाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आया, पुरख अबिनाशी होया निगहबान, नेत्र नैण इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, ब्रह्मा विष्न शिव सद्दे दर दुआर, दर दरवाज़ा आप खुहाईआ। दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा हरि सज्जण आप खुलांयदा। लक्ख चुरासी तेरा रचया काजा, आप अपणा मंगल गांयदा। नाल वजाए अनहद वाजा, धुनी नाद आप वजांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फिरे भाजा, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख उठाए मार वाजां, लक्ख चुरासी विच्चों फोल फुलांयदा। पंज तत्त रखाई नकाबा, आपणा मुख आप छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, ब्रह्मा विष्न शिव तेरी कीमत करता आपे तेरी झोली पांयदा। विष्नूं तेरा मूल चुकावना, लक्ख चुरासी सेव कमाईआ, ब्रह्मे लेखा आपणा पावणा, लिख लिख लेखा दए मुकाईआ। शंकर तेरा पन्ध मुकावना, दूर दुराडे वाट नेड़े आईआ। सुरपति राजा इंद तख्तों लाहवणा, जगत मनवन्तर दए गवाहीआ। करोड़ तेतीसा जन्म दवावणा, लोकमात वड्डी वड्याईआ। नौं खण्ड पृथ्मी वेस वटावना, सत्तां दीपां जोत रुशनाईआ। लक्ख चुरासी तेल चढ़ावना, साची सखीआं मंगल गाईआ। जगत वेला अन्त वखावना, घड़न भन्नणहार बेपरवाहीआ। शाह सुल्तान कोई नज़र ना आवना, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ना किसे अख्वावना, एका ब्रह्म जणाईआ। एका अक्खर सर्ब पढ़ावना, सो पुरख निरँजन सच पढ़ाईआ। सच दुआरा इक्क खुलावना, चार वरनां रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा दए मुकाईआ। तेरा लेखा कलिजुग जाणा मुक्क, वेला अन्तिम आंयदा। लख चुरासी बूटा जाणा सुक्क, हरया अमृत सिंच ना कोई करांयदा। चार कुंटां मनमुख मुख पैणा थुक्क, गुर पीर ना कोए बचांयदा। ठग्ग चोर यार जो बैठे लुक लुक,

फड़ बाहों बाहर कढांयदा। हरि का भाणा ना जाए रुक, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव बैठे झुक, चरन ध्यान रखांयदा। धरत मात सुखणा रही सुख, साचा सगन इक्क मनांयदा। पुरख अबिनाशी कवण वेले मेरी सुफली करे कुक्ख, हरिजन साचे मेरी गोद बहांयदा। मेरी जुगां जुगां दी मेटे तृष्ना भुख, साचे नेत्र दरस वखांयदा। उज्जल होवे मेरा मुख, कलिजुग छाही आप धुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रंग रंगांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर ध्यान, चार कुंट वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट होया हरि भगवान, निहकलंका नाउँ धराया। सम्बल नगरी सच मकान, निरगुण आपणा आसण लाया। सरगुण साढे तिन्न हथ्थ मकान, आप अपणी बणत बणाया। ना कोई बाढी घड़े तरखाण, घड़णहारा आप बण जाया। रक्त बूंद ना कोई पवण मसाण, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। दर सुहञ्जणा हरि भगवान, हरि साचा आप सुहांयदा। आदि निरँजन खेल महान, जोत निरँजन डगमगांयदा। सचखण्ड दुआर इक्क मकान, थिर घर वासी आप सुहांयदा। देवणहारा साचा दान, साची वस्त झोली पांयदा। शब्द अगम्मी सुणाए कान, लिख्त पढ़न विच ना आंयदा। लेखा जाणे दो जहान, लोकमात वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, ब्रह्मे फुलवाड़ी

वेखणहारा सतारा हाढ़ी, आप अपणी रचन रचांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ला फुलवाड़ी, सेवा रहे कमाईआ। अमृत पाणी देण वारो वारी, प्रभात सँधया ना कोई जणाईआ। त्रैगुण माया बणी सच क्यारी, पंज तत्त बूटा देवे लाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यारी, साची पंखड़ीआं महिक महिकाईआ। डूँग्घी कुंदर गुफा खेल न्यारी, भवर भवर गुफा बैठा आसण लाईआ। आपे जाणे खेल न्यारी, खेलणहार दिस ना आईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलकारी, शस्त्रधारी इक्क अख्वाईआ। नाम खण्डा तेज कटारी, ब्रह्मण्डां आप चमकाईआ। आदि जुगादि ना गया हारी, पासा हार ना कोई रखाईआ। वेखणहार सर्ब संसारी, सतिगुर पूरा नाउँ धराईआ। आपे होए जगत जुआरी, ठग्ग चोर यारी आप कराईआ। आपे करनहार ख्वारी, आप अपणा मेल मिलाईआ। आपे चीरे धर धर आरी, दो जहाना वख वख कराईआ। आपे तिन्नां लोकां करे सिक्दारी, त्रिलोकी नंद दए वडियाईआ। आपे सच घर बैठा जोत निरँकारी, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। आपे सच तख्त सुल्तान वड सिक्दारी, शाह भूप आप अख्वाईआ। आपे करे पसर पसारी, मेटणहार आप हो जाईआ। कलिजुग तेरी वेखण आया आप फुलवाड़ी, ब्रह्मा विष्न शिव जो मात लगाईआ । पावे सार मूंड मुडाए वेखणहार मुच्छ दाढ़ी, सीस जगदीश भेव चुकाईआ। जाणे सार बहत्तर नाड़ी, तिन्न सो सठ्ठ हाडी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अचरज

वरते खेल आप रघराईआ। लक्ख चुरासी बूटा कर त्यार, ब्रह्मा विष्न शिव खुशी रहे मनाईआ। त्रैगुण माया बन्नू दस्तार,
पंचम गायण चाँई चाँईआ। कलिजुग मिल्या नाम सिक्दार, साचा हुक्म रिहा सुणाईआ। जूठ झूठ करी खबरदार, एका
खण्डा हथ्थ फड़ाईआ। माया ममता नार मुटयार, जीव जंत लए प्रनाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, बस्त्र गहिणे तन
सजाईआ। आसा तृष्ना कज्जल धार, नेत्र नैण रही मटकाईआ। घर घर फिरे वारो वार, कामनी काम रूप वटाईआ।
शाह सुल्तानां करे ख्वार, साधां सन्तां मति गंवाईआ। धीरज जति सति खिच्चे संसार, ब्रह्म मति ना कोई रखाईआ। रती
रत ना रहे नाड़ नाड़, चारों कुंट पई दुहाईआ। कलिजुग अन्तिम कर विचार, पारब्रह्म दया कमाईआ। गुर गोबिन्द मेला
मीत मुरार, पुरख अकाल वड्याईआ। दीन दयाल हो त्यार, साची धर्मसाल दए सुहाईआ। हरि मन्दिर साचा वेख विचार,
बैठा आसण लाईआ। शब्द डंका अपर अपार, आपणा रिहा वजाईआ। राउ रंकां करे खबरदार, सोया कोई रहिण ना पाईआ।
चारों कुंट खिजा बहार, रुत बसन्त ना कोई वखाईआ। नारी कन्त ना कोई भतार, साची सेज ना कोई हंढाईआ । हरिभगत
ना करे कोई श्रंगार, नाम दोशाला उप्पर पाईआ। सन्त सुहेले ना कोई अधार, गुरु चेले ना वेख वखाईआ। गुरमुख ना
भरे कोई भण्डार, नाम भण्डार ना कोई वरताईआ। सिक्खी सिदक गए हार, सिक्खी सिख्या हथ्थ ना आईआ। लेखा
११ लिख ना सके कोई करतार, खाणी बाणी दए दुहाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी एका धार, चारे खाणी वेख वखाईआ। ११
०६ साचा हाणी हरि नर निरँकार, ना देवे कोई सलाहीआ। अमृत पाणी ठंडा ठार, भर प्याला ना कोई प्याईआ। ब्रह्मा विष्न ०६
शिव तेरी सुण पुकार, हरि साचा लए अंगड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेख गुलज़ार, साचे बूटे वेखण आईआ। मालण बणी
जोत निरँकार, निरगुण खारी हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ।
निरगुण जोत नूर अकालण, एक एका रंग समाईआ। अजूनी रहित दीन दयालण, दीनां बंधप वड वड्याईआ। जुग जुग
सन्त सुहेले लोकमात चले भालण, आप अपणा रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पालण, हरिजन साचे लए तराईआ।
कलिजुग खेल अन्त महानण, महिमा गणत गणी ना जाईआ। धारे भेख बलि बलि बावन, वल छल धारी भेव ना राईआ।
चार वरन ना कोई पछानण, नेत्र नैण ना कोई खुलाईआ। आत्म अन्तर ना दिसे ब्रह्म ज्ञानण, पारब्रह्म ना मेल मिलाईआ।
नज़र ना आए हरि हरि कानूण, मुकंद मनोहर लखमी नरायण, एका नैण ना कोई दसाईआ। सीता राम ना कोई पछानण,
मन रावण दए दुहाईआ। नानक निरगुण ना बणाए कोई ज़ामन, वेले अन्त दए छुडाईआ। गुर गोबिन्द ना फड़ाए कोई
दामन, आपणा पल्लू बैठे छुडाईआ। कलिजुग रैण अन्धेरी शामन, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। उठी सवाणी हरि हरि मालण,

आपणी अंगी तन छुहाईआ। जोत निरँजन कर कर चानन, लोकमात वेखण आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस धराईआ। साची मालण सच दुआर, सच सेवा रही कमाईआ। वरभण्डी आई हो त्यार, जगत डण्डी वेख वखाईआ। वासना गंदी वेखे नर नार, घर घर आपणा फेरा पाईआ। सृष्ट सबाई नेत्र अन्नी होई विभचार, भरमां कंधी ना कोई ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटाईआ। हरि मालण करतार, जग बूटा वेख वखन्नया। फल लग्गा वेख संसार, लोकमात फिरे भन्नया। ब्रह्मा विष्न शिव खिड़ी गुलज़ार, साचा रंग आप रगन्नया। साचे फुल्ल तोड़े तोड़नहार, जिस डाल़ी पत उप्पर हरि जू मन्नया। आप अपणी किरपा धार, आप अपणा बेड़ा बन्न्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण रूप सति सरूप आप करया आपणा कम्मया। साची खारी जोत कुँआरी, निरगुण आपणे हथ्थ उठाईआ। चारे कूंटां फिरे वारो वारी, साचा दर नज़र ना आईआ। आपणे मन्दिर बैठ दुआरी, एका मता रही पकाईआ। गोबिन्द सद्दया घर दरबारी, दर दरवाजा आप खुल्ह़ाईआ। लोकमात तेरी यारी, तेरा संग सगल निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा सगन मनाईआ। गोबिन्द सुत दुलारा, हरि साचा सच समझांयदा। पुरख अकाल तेरा रूप अपारा, तेरा तेरे विच समांयदा। तेरी बसन्त तेरी गुलज़ारा, तेरी बहार वेख वखांयदा। तेरा घर तेरा भण्डारा, तेरा आप वरतांयदा। तेरा शब्द तेरा जैकारा, निरगुण सरगुण आप जणांयदा। तेरा रूप सर्ब संसारा, दूसर रंग ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आप समझांयदा। हरि लेखा आप समझावणा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। बावन अक्खरी भेव खुल्ह़ावना, पैंती अक्खरी जगत लिखाईआ। बावन मीता रूप छुपावना, बावन नाल वज्जी वधाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी रंग रंगावाना, महिबान बीदो आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। सोलां साल साचा सेवक, निरगुण सच्ची सेव कमांयदा। इक्क अकाल देवी देवत, दूजी कुदरत वेख वखांयदा। तीजे नेत्र भेव अभेवक, भेव अभेदा आप खुल्ह़ांयदा। चौथे घर वस्त अमोलक, एका नाम वखांयदा। पंचम वज्जे साची ढोलक, शब्द अगम्मी ताल वजांयदा। छेवे छप्पर ना कोई गोलक, जिस घर आपणा आप टिकांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजन एका एक जाणे आपणी रौणक, आपणा दर वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। अठवे अठ्ठ तत्त कर पसारा, नौवें नौ दर खोज खुजांयदा। दसवें दस घर मेला कन्त भतारा, हरिजन लए प्रनाया। छोटा बाला कर त्यारा, वीह सौ दस बिक्रमी वेख वखाया। इंद

इंदरासन खेल न्यारा, शाह शाबाशन पार कराया। सिँघ मनजीता तेज कटारा, शब्द अतीता हथ्थ उठाया। दस इक्क ग्यारां साची रीता, साचा मन्दिर इक्क सुहाया। खेले खेल जगत जगदीसा, शंकर वेला दए मुकाया। दूआ दस बारां चलाई आपणी रीता, हाढ़ सतारां दए सुहाया। तिन्न दस तेरां साधां सन्ता वेख्या तप्या इक्क अंगीठा, हरि का शब्द नज़र ना आया। दस चार चौदां चौदां लोकां पीसण पीठा, चौदां तबकां फोल फुलाया। दस पंज पंदरां वेखे तीर्थ तट्टां, तीर्थ तट सर सरोवर फोल फुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच फुलवाड़ी आप वखाया। सम्मत सोलां पहली चेत्र, हरि साचे दया कमाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव वेख्या तेरा खेत्र, चारों कुंट फेरा पाईआ। हरि जू खोल्ह्या आपणा नेत्र, आपणा नैण रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच फुलवाड़ी आप महिकाईआ। सच फुलवाड़ी वेखणहारा, एका एक अख्वाया। लख चुरासी विच्चों बीज न्यारा, जन भगतां आप बिजाया। नादी सुत कर त्यारा, शब्दी नाउँ धराया। भगत अंदर भर भण्डारा, आपणा घर बणाया। पारब्रह्म प्रभ वणजारा, साचा वणज रिहा कराया। देवणहारा सच भण्डारा, एका नाम झोली पाया। लेखा जाणे आर पारा, अध विचकार ना कोई रुढ़ाया। निहकलंक लए अवतारा, निरगुण आपणा नाउँ वटाया। सम्बल नगरी धाम न्यारा, गुर गोबिन्द गढ़ वसाया। साचा खण्डा तेज कटारा, हरि जू आप उठाया। जूठे झूठे बूटे वढ्ढी जाए वारो वारा, लोकमात रहिण ना पाया। गुरमुखां करे सद प्यारा, आपणी हथ्थी सेव कमाया। शब्द सरूपी एका वाड़ा, चारों कुंट रिहा कराया। पुरख अबिनाशी साचा लाड़ा, लोकमात वेस वटाया। वीह सौ सोलां बिक्रमी सतारां हाढ़ा, सच अखाड़ा आप लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची मालण बण दलालण, आपणा खारा सीस उठाया। साची खारी चुक्या भार, हरि पुरख वड्डी वड्याईआ। साची नारी हो त्यार, लोकमात वेख वखाया। सतारां हाढ़ी फुल क्यार, सच बगीचा फोल फुलाईआ। गुरमुख विरले दिसे विच संसार, जिस मिली हरि सरनाईआ। घर खुशीआं गाए मंगलाचार, नार मुटयार वज्जी वधाईआ। निरगुण वेस करे अपर अपार, सोलां सिंगार आप कराईआ। सम्मत सोलां हो त्यार, नौं दुआरे करे ख्वार, पंज चोर देवे मार, आशा तृष्ना रहिण ना पाईआ। एका शब्द बोल जैकार, एका अक्खर दए सुणाईआ। एका अल्फ़ मीत मुरार, एका नुकता दए बुझाईआ। एका अक्ख दए उग्घाड़, एका ऐन समझाईआ। एका इष्ट आप करतार, सृष्ट सबाई रचन रचाईआ। एका दृष्ट खोल्ह किवाड़, हरिसंगत दए तराईआ। एका वार दरस दए आप निरँकार, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। साची सेवा करे विच संसार, निरगुण सरगुण रिहा नांउं धराईआ। घनकपुर वासी हो त्यार, शाहो शाबासी वड वड्याईआ। मंडल

१३
०६

रासी पावे सार, अबिनाशी अचुत आप अख्वाईआ। गुरमुखां दुआरे बणी दासी, साची मालन आप हो जाईआ। मनमुख जीव करन हासी, अन्तिम पैणी गल विच फाँसी, गुरमुख उधारे रसन स्वासी, जो जन हरि हरि रहे गाईआ। हथ्थ ना आए पंडत कासी, ग्रन्थी पन्थी देण दुहाईआ। मुल्ला शेख ना मिल्या वास निवासी, निज आत्म ना पन्ध मुकाईआ। नानक गाया अलखना लाखी, आकाश आकाशी वड दाता बेपरवाहीआ। जन भगतां करे पूरी आसी, कलिजुग अन्तिम होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग आपणी धार दए चलाईआ। वीह सौ सोलां बिक्रमी साची धार, हरि साचे आप चलाईआ। पंदरा कत्तक दिवस विचार, साची सिख्या सिख समझाईआ। इक्क ग्यारां कर प्यार, एका घर दए बहाईआ। चार दर खोल्ह किवाड़, नौं सत्त वेख वखाईआ। इक्क इक्क कर प्यार, इक्क इक्क नाल मिलाईआ। छत्ती जुगां पावे सार, आप आपणा रंग रंगाईआ। इक्की हो त्यार, खेले खेल बेपरवाहीआ। डुब्बदे पत्थर आपे तार, आपे होए सहाईआ। ग़रीब निमाणयां लए अधार, नानक रीती इक्क चलाईआ। ग़रीब निमाणा पावे सार, लालो लालन रंग रंगाईआ। शाह सुल्तानां देवे दर दुरकार, राज राजान दिस ना आईआ। वरते वरतावे इक्क भण्डार, सच भण्डारी वड वड्याईआ। निखुट ना जाए विच संसार, आदि जुगादि बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बावन तेरी पूरी आस कराईआ। बल बावन करे पूरी आसा, सतिजुग कलिजुग मूल चुकाया। चार जुग एका इक्क भरवासा, दूसर दर ना कोई जणाया। हरिभगत ना होए निरासा, आस निरास विच टिकाया। पावे सार पृथमी आकासा, गगन मंडल वेख वखाया। आपे जाणे आपणी रासा, आप आपणी रचन रचाया। कलिजुग अन्तिम खेल तमाशा, बाई मग्घर आप कराया। तेई मग्घर दासी दासा, घर साचा वेख वखाया। गुर गुर मेला शाहो सबासा, घर विछड़े दए मिलाया। अमृत पाए काया कासा, नाम बाटा हथ्थ उठाया। देवण आया सच दलासा, भुल्ल रहे ना राया। साचे कंडे हरि जी तोले वट्टा पाया ना तोला मासा, रती मूल ना कोई रखाया। गुरमुखां अंदर करे वासा, कलिजुग जीवां दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा खेल खिलाया। निहकलंक पुरख सुल्ताना, एका एकंकारया। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, नाम खण्डा तेज कटारया। सो पुरख निरँजन हरि मेहरवाना, सो पुरख निरँजन आप अख्वा रिहा। जोत निरँजन दीप महाना, आदि निरँजन आप जगा रिहा। सचखण्ड निवासी श्री भगवाना, सच दुआरे सोभा पा रिहा। थिर घर वासी गुण निधाना, पारब्रह्म आपणा नांउं धरा ल्या। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म करे पछाना, लोकमात वेस वटा ल्या। ब्रह्मा विष्न शिव होए खबरदार, कलिजुग वेला अन्तिम आ गया। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग रीती पतित पुनीती ठांडी सीती आप चला गया। ठांडी सीती गिरवर गिरधार, हरि करता आप चलाईआ। एका नाम शब्द जैकार, एका नाअरा दए सुणाईआ। एका मन्दिर गुरूदुआर, मस्जिद मठ इक्क वखाईआ। एका इष्ट हरि निरँकार, नमो देव इक्क सरनाईआ। वास्तक रूप निरगुण धार, अस्तिक लेखा दए चुकाईआ। सिमरत शास्त्र गए हार, वेद पुराण रहे कुरलाईआ। अञ्जील कुरान हाहाकार, तीस बतीस दए दुहाईआ। खाणी बाणी हरि हरि धार, हरि साचे आप चलाईआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। कलिजुग करे पार किनार, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, एकँकारा हरि निरँकारा, निरगुण आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सतिजुग मार्ग साची धार, हरि साचा आप चलांयदा। सृष्ट सबाई पावे सार, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। गोबिन्द सिक्खी एका धार, तिक्खी धार आप जणांयदा। वालों निक्की अपर अपार, भेव कोई ना पांयदा। मुनी रिखी गए हार, जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा दर आप सुहांयदा। साचा दर सच दरवारा, हरि साचे आप सुहाया। साचा भगत सच वणजारा, हरि साचे नाम कराया। साची वस्त सच भण्डारा, हरि साचे आप भराया। साचा रूप सिरजनहारा, सच सच रिहा वरताया।

१५ १५

साचा रंग चढ़े संसारा, उतर कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर,

०६ ०६

निहकलंक नरायण नर, एका इक्की साची सिक्खी, खंडिउं तिक्खी ते वालों निक्की, नौं खण्ड दए बणाया। नौं खण्ड पृथ्मी साची सिक्खी एका सिख, हरि साचा आप उपजांयदा। सम्मत वीह सौ सोलां बिक्रमी चवी मग्घर लेखा दए लिख, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। निरगुण जोती जामा धारया भेख, आप आपणा वेस वटांयदा। ना कोई मुछ दाड़ी ना दिसे केस, मूंड मुंडाए ना कोई अख्वांयदा। भेव ना पाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, बेअन्त हरि भगवन्त आप अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम हरिसंगत करे इक्क आदेस, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। प्रगट होया माझे देस, सृष्ट सबाई तेरा पड़दा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी पाए मुल्ल, गुरमुख उपजाए साची कुल, आप बणाए साचे फुल्ल, फुल्ल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। साचा फुल्ल गया फुल्ल, लोकमात वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी पावन आया मुल्ल, एका इक्की नाल रलाईआ। सोहँ कंडे तोलया तोल, नानक तेरां धार चलाईआ। गोबिन्द करे पूरा कौल, इक्की कुलां पार कराईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, निर्भय आपणा नाउँ धराईआ। लक्ख चुरासी रही अनभोल, हरिजन साचे लए उठाईआ। निरगुण सेवा करी साल सोल, आप आपणा मुख छुपाईआ। कलिजुग अन्तिम आपणे अंदर आपे रिहा बोल,

उच्ची कूके दए दुहाईआ। चारों कुंट वज्जे ढोल, प्रगट होया बेपरवाहीआ। नौं खण्ड पृथ्मी करे खोल, जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, निहकलंक नाउँ रखाईआ। साचा फल हरि जी तोड़, आपणे हथ्थ रखांयदा। गुरमुखां चरन प्रीती जोड़, साचा मेल मिलांयदा। आप निभाए लग्गी तोड़, अध विच ना कोई तुड़ांयदा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, नीला नीली धारों पार करांयदा। कलिजुग अन्तिम गया बौहड़, ब्राह्मण गौड़ वेख वखांयदा। दो जहानां पन्ध मुकाए लम्मा चौड़, आपणे पग आप मनांयदा। सस्से उप्पर लाया होड़, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। हँ ब्रह्म वेखे मिट्ठा कौड़, कौड़ा रीठा भन्न वखांयदा। गुरसिखां बुझावन आया लग्गी औढ़, एका अमृत मेघ बरसांयदा। जोती जोत सूरप हरि, आप आपणी जोत धर, चौथे घर लाया पौड़, एका डण्डा हथ्थ उठांयदा। एका डण्डा हरि ब्रह्मण्डा, आपणा आप लगाया। कलिजुग अन्तिम वण्डाए वण्डां, सतिजुग साचा राह चलाया। मेट मिटाए भेख पाखण्डा, दूई दवैती रहे ना राया। नाम फड़ाए साचा खण्डा, लोहार तरखान ना दिसे घड़ाया। पंज विकार वढ्ढे गंढ्ढां, अंदरे अंदर आप चलाया। गुरसिख होवे ना कदे रंडा, हरि हरि जू कन्त हंढाया। अन्तिम कलिजुग दिसे कन्ढा, वेला अन्तिम आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा साचा राह वखाया। सतिजुग चाल अवल्लड़ी चले, हरि साचा आप चलांयदा। पंचम गंढ्ढ आपणे पल्ले बन्न्हे, आप आपणे लड़ रखांयदा। ग़रीब निमाणे पार कराए जिउँ दया कमाए जट्ट धन्ने, आप अपणा संग रखांयदा। निरगुण रूप जुगो जुग जन भगतां अगे मन्ने, दूसर अग्गे ना सीस झुकांयदा। किसे ना वसदा मन्दिर महल्ल अटल छप्पर छन्ने, गुरसिखां अंदर डेरा लांयदा। आदि जुगादि जुग जुग बेड़ा आपे बन्न्हे, नाम चप्पू हथ्थ उठांयदा। आपे घड़े आपे भन्ने, समरथ पुरख नाउँ धरांयदा। आपे देवणहारा डन्ने, कलिजुग अन्तिम डंन वखांयदा। आपे सतिजुग साचा चाढ़े चन्ने, गुरमुख साचे लाल आप उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लख चुरासी वेख क्यारी, फुल्ल तोड़े जोत निरँकारी, आपणी हथ्थी सेव कमांयदा। साचा फुल्ल हरि निरँकार, कलिजुग डण्डी नालों तोड़ तुड़ांयदा। साची सोटी कर त्यार, नाम मुखी अग्गे लांयदा। पिच्छे कंडा हँ टिप्पी सार, सति धारा विच रखांयदा। फुल गुंदे वारो वार, आप आपणे नाल बंधांयदा। एका इक्की कर त्यार, साची सिक्खी खेल खिलांयदा। सोलां इच्छया भर भण्डार, इक्की कुलां पार करांयदा। मन मति बुध दए अधार, ब्रह्म मति इक्क वखांयदा। बस्त्र भूशन तन शंगार, सतिगुर पूरा आप करांयदा। अठ सठ तीर्थ फेरा मार, आपणी वस्त आप खिचांयदा। कोई ना किसे बणे सहार, साचा संग ना कोई निभांयदा। इक्की सिखां कर त्यार, सच बरात आप सुहांयदा। लाड़ा सोहे नर निरँकार, कल्गी तोड़ा जोती

जोड़ा शब्दी सीस टिकांयदा । इक्क अगम्मी फड़या घोड़ा, सोलां कलां आसण पांयदा। नौं खण्ड पृथ्मी आपे दौड़ा, चौथा पौड़ा आप उठांयदा। कलिजुग जीव वेखे मिट्ठा कौड़ा, गुण अवगुण वेख वखांयदा। अन्तिम सम्बल नगरी आया दौड़ा, साचा धाम इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्द हार कर त्यार, सेहरा गुंदे आपणी वार, आप आपणी दया कमांयदा। साचे हार कर त्यार, हरि साचा हथ्थ उठांयदा। पंचम मीता मीत मुरार, पंचम मेल मिलांयदा। ठंडा सीता एकँकार, सातक सति सति वरतांयदा। पतित पुनीत पतित पापी जाए तार, पतित पावन नाउँ रखांयदा। रावण गढ़ तोड़ हँकार, कलिजुग लंका आप तुड़ांयदा। गुरमुखां सीता सुरती कर प्यार, आप आपणे दर प्रनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग दा चुक्या भार, कलिजुग अन्तिम दए उतार, वेला वक्त आप सुहांयदा। वेला वक्त सुहञ्जणा, हरि साचे खेल रचाया। जगाई जोत आदि निरँजणा, निरगुण नूर नूर रुशनाया। जन भगतां मिल्या साचा सज्जणा, विछड़ कदे ना जाया। चरन धूढ़ कराए मजना, सर सरोवर इक्क वखाया। वेले अन्तिम पड़दा कज्जणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जो घड़या सो भज्जणा, थिर कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरी साची डोर, पंजां हथ्थ फड़ाया। पंचम जेठ फड़े डोर, सतिजुग तेरी बणत बणांयदा। पहलों पंजे मारे चोर, पंचम शब्द फेर अलांयदा। आपणे चरनी आपे जोड़, आप आपणा मेल मिलांयदा। पंच चढ़ाए साचे घोड़, नाम घोड़ा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा राह वखांयदा। सतिजुग सच्चा सच्चा राह, हरि साचा आप लगाईआ। पंज प्यारे सेवा ला, पंच करे कुड़माईआ। पुरख अबनासी बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। फड़ फड़ बांहों लए चढ़ा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग भुल्ले राहीआ। आपणे कंठ लए लगा, वड दाता बेपरवाहीआ। गुरमुख साजन आप जगा, ज्ञान नेत्र आप खुल्हाईआ। अनहद अवाज आप लगा, एका शब्द सुणाईआ। निहकलंक जामा पा, गुर गोबिन्द दए वड्याईआ। कलिजुग कालख टिक्का देवे लाह, जो चल आए शरनाईआ। साची रंगन दए चढ़ा, रंग चलूल इक्क वखाईआ। निरगुण दीपक जोती आप जगा, अट्ठे पहर रहे रुशनाईआ। साचा अमृत जाम दए प्या, नाम खण्डा विच फिराईआ। साचा मिट्ठा देवे पा, हरिसंगत तेरी ब्रह्म वण्ड वण्डाईआ। शब्द अगम्मी विच समा, सागर रूप आप हो जाईआ। कांया गागर दए टिका, कँवल नाभ आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लावना, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। पंचम पंचम राज पंचम साज पंचम काज आप रचावना, पंचम संग निभाईआ। पंचम साज ग़रीब

निवाज बंक दुआर सुहावना, पंचम पंचम वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, पंच प्यारे देवे वर, निरगुण सरगुण जोत धर, दरस दिखाए अगे खड़, आप आपणा रूप वटाईआ। पंचम प्यारे आए दुआर, हरि साचे सच मिलाया। कर किरपा बख्शे फूलणहार, इक्क इक्क गल विच देवे पाया। दो जहानां पैज रिहा संवार, भुल्ल रहे ना राया। घर वखाए ठांडा दरबार, सचखण्ड दरबारा इक्क उपाया। मेल मिलावा पुरख नार, साचा कन्त आप हो जाया। जुग जुग तन कराए संगार, इच्छया भिच्छया झोली पाया। सति सुच भरे भण्डार, अतोट अतुट आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पंचम मीता इक्क अतीता आप अख्वाया। पंचम वण्ड कर करतार, लोकमात वण्डाईआ। चार यार कर ख्वार, चार दए वड्याईआ। एका घर एका घर बार, एका बंक सुहाईआ। एका देवणहार सच्ची सरकार, साचे तख्त बेपरवाहीआ। इक्क इकल्ला हो उज्यार, जुग जुग लोकमात वेस वटाईआ। सन्त सुहेले फड़ फड़ बांहों जाए तार, मँझधार ना कोई रुढ़ाईआ। अठसठ तीर्थ कर ख्वार, कलिजुग तेरा तेरी झोली पाईआ। चारों कुंट हाहाकार, धीरज धीर ना कोई वखाईआ। दिवस रैण रोवे नारी नार, नर नरायण नज़र ना आईआ। सृष्ट सबाई धूंआँधार, साचा चन्द ना कोई चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

१८ आप आपणी जोत धर, आपणी रचना आप रचाईआ। दिवस बवन्जा तीर्थ तट, हरि साचे खेल खिलाया। गुरसिखां दुरमति १८

०६ मैल कट्ट, आप आपणे रंग रंगाया। साचा अमृत एका झट, सर सरोवर आप भराया। खाली कीते तीर्थ तट, वेला अन्त ०६

दए दुहाया। खेले खेल बाजीगर नट, हरि का भेव किसे ना पाया। उच्चे मन्दिर जाणे ढट्ठ, दर बंक ना कोए सुहाया। प्रभ गेड़न आया उलटी लट्ठ, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाया। वसणहारा घट घट, हरिजन साचे ल्ए तराया। वीह सौ सोलां बिक्रमी हो प्रगट, उच्ची कूके दए दुहाया। हरिसंगत साची कर अकट्ठ, चवी मग्घर दिवस सुहाया। कलिजुग खेड़ा होया भट्ठ, गुर गोबिन्द खेड़ा दए वसाया। अबिनाशी करते करी चट्ठ, रविदास चुमारे तेरा डेरा आण वसाया। गंगा गोदावरी सुरस्ती तेरे चरन दुआरे आई नट्ठ, निउँ निउँ रही सीस झुकाया। तेरी धूढ़ रसना नाल लई चट्ट, लख लख शुकर मनाया। प्रभ पकड़ बहाया नाल ठग्ग, जो कंगन गया छुपाया। नाल रलाया सिँघ जरनैला जट्ट, जो राजा रूप वटाया। फड़ फड़ खेले खेल पुरख समरथ, पूर्ब लहिणा झोली पाया। आपणी वाग फड़ाई सिखां हथ्थ, आपणे खाली हथ्थ रखाया। सृष्ट सबाई मिथ्या मथ, अन्त कोई रहिण ना पाया। हरि की महिमा अकथना अकथ, हरि करता आप समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिसंगत साचा मेल मिलाया। हरिसंगत मेला हरि दुआर,

हरि की पौड़ी आप चढ़ाईआ। हरि मन्दिर मेला हरि निरँकार, अंदरे अंदरे दए कराईआ। गुर चेला होया खबरदार, सज्जण सुहेला वड वड्याईआ। जोत निरँजन चाढ़े तेला विच संसार, साचा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्की सिख सेवा लाए, हरिसंगत लंगर वरते भण्डार, सिँघ गुरमुख तेरा नाम उज्यार, चार जुग दए कराईआ। चार जुग तेरी वडियाई, गुरमुख हरि वड्यांअदा। हरिसंगत करन आई कुड़माई, एका शब्द विचोला विच बणांयदा। रल मिल सखीओ मंगल गाउंणा चाँईं चाँईं, प्रभ वेला वक्त सुहांयदा। आपे बण के आया नैण नाई, आपणा वाड़ा आप मंगांयदा। आपे खारे ल्ए चढ़ाई, आपे वटना तन मलांयदा। आपे सीस सेहरा रिहा बंधाई, जगदीस आपणे हथ्थ उठांयदा। जोत निरँजन साचा कजल नैणां रही पाई, एका हथ्थ त्रसूल उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, रचया काज देस माझ, चार वरन तेरी बणे सांझ, ऊँच नीच ना कोई रखाईआ। चार वरन तेरा सच भण्डार, हरि साचे आप वरताया। पंज प्यारे रहिण तेरे पहरेदार, चारों कुंट आप बहाया। चार सेवक बण वरतार, अंदर वड़ देण वरताया। तिन्न सिख देण चल वारो वार, तिन्न भण्डारा जल भराया। तिन्न दाल उठायण नाल नाल, नाम कड़छा हथ्थ रखाया। तिन्नां फड़ाए हथ्थ रोटी भाजी, जीव उधारे कोटन कोटी, जिस जन आए मुक्ख पाया। धर्म राए ना अन्तिम कट्टे बोटी बोटी, चित्रगुप्त ना लेख वखाया। विच्चों कढ्ढे वासना खोटी, धुरमत मैल दए धवाया। फड़ चढ़ाए साची चोटी, साचा भोजन आप खवाया। गुरसिख ना कोई बन्न्हे तन लंगोटी, जंगल जूह ना कोई उठ धाया। कोई ना चढ़े पर्बत चोटी, जल धार ना कोई वहाया। गुरसिख तेरी आत्म रही ना सोती, सतिगुर पूरा आप उठाया। ना कोई जञ्झू, ना कोई धोती, ना कोई तिलक लिलाट लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, सच भण्डार कर त्यार, वेखे विगसे करे विचार, वेखणहार आप हो आईआ। सच भण्डारा सच दुआर, हरि साचे आप भराया। इक्की सिख सेवादार, साची संगत नांउ धराया। पंगत बणे विच संसार, इक्की इकी जोड़ जुड़ाया। इक्की कुलां दए तार, तारनहार बेप्रवाहया। पिछली लिखी दए निवार, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाया। गुर गोबिन्द मेला विच संसार, सिँघ रूप आप हो आया। गुर चेला सोहे इक्क दरबार, दर दर मन्दिर आप खुलाया। गुर गोबिन्द देवे नाम कटार, साचा खण्डा हथ्थ फड़ाया। गुर गोबिन्द देवे अमृत धार, अमृत आत्म जल प्याया। गुर गोबिन्द वेखे सीस दस्तार, केस सीस चँवर झुलाया। गुर गोबिन्द वेखे जति अपार, सति कच्छ इक्क गुर गोबिन्द हथ्थ कंगन नाम श्रंगार, साची सिख्या सिख समझाया। गुर का शब्द इक्क जैकार, वाहि वाहिगुरू फतेह बुलाया। फतेह डंका सुणे सर्ब संसार, निहकलंका दए वजाया। राउ रंकां लाए पार, जो जन सरनाई

आया। हरिजन जन का लए अधार, जन जननी लेखे लाया। खेले खेल बार अनक निराकार, निरगुण आपणा रंग वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरि आपणा नाउँ धराया। दर हरि हरि दर भगवाना, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। शब्द अगम्मी इक्क बिबाना, पुरख अबिनाशी आप उडाईआ। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्याना, लोकमात फेरा पाईआ। गुरमुख साचा चतर सुजाना, लए उठाईआ। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञाना, एका बूझ बुझाईआ। सो पुरख निरँजन हो प्रधाना, हँ ब्रह्म दए वखाईआ। सोहँ शब्द सच निशाना, सचखण्ड आप सुणाईआ। नानक गाया पद निरबाणा, एका रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजन साचा हरि, हँ मेला सृष्ट सबाईआ। हँ रूप चार खाणी, हरि साचा सच जणांयदा। अबिनाशी करता साचा हाणी, जुग जुग संग रखांयदा। निरगुण दाता देवे पाणी, अमृत जल भरांयदा। आपणी कथा अकथ सुणाए बाणी, आपणा राग अल्लांयदा। आपे होए जाण जाणी, जानणहार आप अख्वांयदा। आपे राजा आपे राणी, शाह सुल्तान आप हो आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकार, आदि जुगादि कर पसार, आपे गुर पीर अवतार, आपे साध सन्त अधार, आपे गुरमुख लावे पार, आप मनमुख दए सँघार, आपणा दर आप खुलांयदा। खेलणहार पुरख अकाला, एका पुरख अख्वाया। कलिजुग अन्तिम खेल निराला, लोकमात आप कराया। आपे काल आप महांकाला, आप आपणा वेस वटाया। आपे बणया भगत दलाला, शब्द शब्दी नाउँ धराया। आपे गुरू गुरू गुर गुर बाला, आपे गोबिन्द दए वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका नूर करे रुशनाया। निहकलंक निरगुण धार, नर हरि आप चलाईआ। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। सोहँ शब्द बोल जैकार, सो पुरख निरँजन करे पढ़ाईआ। दाई दाया बण संसार, सगली सृष्ट वेख वखाईआ। अलक्ख अगम्म भेव न्यार, भेव अभेव आप छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, रविदास चमिआरे वसया घर, गुरमुखां बध्धा एका लड़, साचा पल्लू नाम रसालू, हरि साचे हथ्थ उठाया। घर जम्मया पुत कालू, निरगुण निरगुण बाल समझाया। नानक बणया जगत दयालू, दे मति गया समझाया। कलिजुग अन्तिम तपनी रेत बालू, सांत सांत सतिनाम ना कोई कराया। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण पारब्रह्म अबिनाशी करता, एकँकार आप आपणे आपे भालू, निहकलंक फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता आप अख्वाया। निरगुण दाता देवे दान, जीव जंत अधारया। सच समग्री सच पकवान, सच भण्डार आप वखा ल्या। गुरमुख गुरसिख हरिसंगत, मिल मिल बह बह खाण, हरिसंगत

नाउँ धरा ल्या। रंगत चाड़े इक्क महान, रंग मजीठी इक्क चढ़ा ल्या। तीर निराला मारे बाण, दूई द्वैती पार करा ल्या। साचा बख्शे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटा रिहा। सतिजुग साचे होए प्रधान, साचा धाम आप सुहा ल्या। चवी हथ्थ चढ़े निशान, जिस दुआरे चरन छुहा ल्या। चार वरण मन्नण आण, छत्री ब्राह्मण शूद्र वैश सीस सर्ब झुका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख पाल दीन दयाल, आपणा लाल आप उठा ल्या। गुरमुख नाता तुटा मात पित, जगत कुटम्ब आप छुडाईआ। पुरख अबिनाशी साचा पित, सतिगुर पूरा आप अख्वाईआ। संग निभाए नित नवित, जुग जुग वेस वटाईआ। अठ्ठे पहर वसे चित, चितवत ठगोरी कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सरूपी सुत दुलारा, गुरमुख साजन कर प्यारा, सति सरूपी दए हुलारा, देवे दरस अंदर बाहरा, गुप्त ज़ाहरा आप हो जाईआ। गुप्त ज़ाहरा बण के आया, आपणा नाता दए तुड़ाईआ। त्रैगुण माया सड़ के आया, आपणा लम्बू आपणी हथ्थीं लाईआ। शब्द अगम्मी घोड़े चढ़ के आया, दिस किसे ना आईआ। सच वस्त नाम हथ्थ फड़के आया, हरिसंगत करे पढ़ाईआ। आदि जुगादि ना किसे कोलों डरके आया, निर्भय आपणा नाउँ धराईआ। निहकलंक नाउँ हरि रक्ख, शब्दी डंक वजाया। पारब्रह्म प्रभ हो प्रतक्ख, लोकमात वेस वटाया। साधां सन्तां भाण्डे करे सख, आपणी वस्त आपणे हथ्थ रखाया। गुरसिख ग़रीब निमाणे कक्खों करे लक्ख, लक्ख करोड़ी ना कीमत चुकाया, लख चरासी विच्चों करे वक्ख, सोहँ टिक्का मस्तक लाया। हरिसंगत तेरा निरगुण नानक करे पक्ख, जिस सोहँ रसना गाया। गुर गोबिन्द सोहँ तीर कमान अन्तिम वेले वस्त लई रक्ख, दूजा चिल्ला ना हथ्थ उठाया। सृष्ट सबाई करे भक्ख, आप आपणा बल धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप अपणा डंक वजाया। वज्जे डंक विच ब्रह्मण्ड, हरि साचा आप वजांयदा। कलिजुग जीव भागां मंद, गूढ़ी नींद सवांयदा। मदिरा मास रसना बत्ती दन्द, हरि का नाम सर्ब भुलांयदा। घर घर विच दिसे ना परमानंद, घर मेल ना कोई मिलांयदा। घर घर ना चढ़े निरगुण चन्द, दीपक जोत ना कोई डगमगांयदा। घर घर ना गाए कोई सुहागी छन्द, अनहद राग ना कोई अलांयदा। घर घर ना मुक्कया किसे पन्ध, नौं दुआरे सर्ब भवांयदा। जन भगतां खुशी करे बन्द बंद, आप आपणा दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सच भण्डारा हरि वरतारा, हरिसंगत आप वरतांयदा। हरिसंगत पंगत जाणा बण, एका इक्की मुख रखाईआ। जननी जनया साचा जन, प्रभ लेखे ल्ए लगाईआ। सोहँ सुणया साचे कन्न, दो जहानां वज्जे वधाईआ। झूठा भाण्डा लैणा भन्न, गढ़ हँकार रहिण ना पाईआ। मनूआ मन जाए मन्न, शब्द डोरी तन्द

बंधाईआ। देवणहारा दाणा पाणी अन्न, सच भण्डारा रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग निभाईआ। सगला संग हरि चतर सुजाना, भगतन मेल मिलांयदा। सतिगुर पूरा बणया दाता दाना, बीना आप अख्वांयदा। देवे रिजक पीणा खाणा, विष्नूं वंसी नाउँ उपांयदा। ब्रह्म मति इक्क पछाना, गुरमति नाउँ उपजांयदा। शंकर बन्ने साचा गानां, जो जन हरि हरि दर्शन पांयदा। करोड़ तेतीस सुरपति राजा इंद इक्क गुरसिख तेरे रक्ख चरन ध्याना, तेरा राह तकांयदा। दीपक जोत जगे महाना, आदि जुगादी डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, रविदास चमिआर किरपा देणी कर, चोर ठग्ग आया तेरे दर, पुरख अबिनाशी ल्याया फड़, आप आपणी दया कमाईआ। सन्त ठग्ग कर इक्ट्ठे, साचा मेल मिलांयदा। एका बहाए साचे हट्टे, हरिसंगत हट्ट खुलांयदा। चोर हरि जी चरनी ढट्ठे, पिछली भुल्ल बख्शांयदा। रविदास गंगा तेरे चरन चट्टे, अमृत जल चुआंयदा। कबुध डूंमणी मिटे फट्टे, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। हरि का माल कदी ना कोई लुट्टे, गुरसिख एह समझांयदा। दो जहानां फड़ फड़ जड़्ह पुट्टे, जो गुर का बचन भुलांयदा। गुर गोबिन्द तेरा तीर निराला छुट्टे, अगे हो ना कोई बचांयदा। हरिसंगत तेरा भाग ना कदे निखुटे, वडभागी मेल मिलांयदा। लेखे लाए काया बुते, अबिनाशी अचुते दया कमांयदा। कलिजुग गूढ़ी नींद ना सुत्ते, सतिगुर पूरा आप जगांयदा। सतिजुग फुलवाड़ी लाए बूटे, फुल्लां हार तन पहनांयदा। इक्की एका देवे झूटे, नाम हुलारा इक्क वखांयदा। ठग्ग चोर यार छत्री ब्राह्मण शूद्र वैश आप बणाए एका मुट्ठे, बद्धी गंढु ना कोई खुलांयदा। फड़ के अठाई नर्क कोई ना सुट्टे, जो जन दर्शन दर आए पांयदा। सचखण्ड बह बह मौजां लुट्टे, चार जुग ना कोई जगांयदा। आवण जावण लक्ख चुरासी छुट्टे, मात गर्भ फंद कटांयदा। चवी मग्घर साचा जल ठंडा सीर पीणा एका घुट्टे, सच भण्डारा आप वरतांयदा। कलिजुग जीवां नाता छुट्टे, हरिसंगत मेल मिलांयदा। गुरमुख तेरी बसन्त रुत्ते, बारां मास जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साचा मार्ग आपे लांयदा। साचा मार्ग जाणा लग्ग, हरि साचे आप लगावणा। बीस इकीस बिक्रमी विच जग, जागरत जोत इक्क वखावणा। दाता दानी सूरा सरबग, सति पुरख आप अख्वावणा। सुहाए बंक दुआर छुहाए पग, पतिपरमेश्वर रूप वटावणा। जो जन सरनाई गए लग, भव सागर पार करावणा। हँस बणाए फड़ फड़ कग, सोहँ माणक मोती चोग चुगावणा। पूर्ब जन्म दा लाह देवे दाग, दुरमति मैल आप धुआवणा। अन्ध अन्धेर जलाए चराग, जोती नूर इक्क वखावणा। गुरसिख बणाए पाकी पाक, पतित पुनित आप करावणा। वेले अन्त पति लए रक्ख, प्रगट हो हो दरस दिखावणा। गुरसिख तेरा दुआरा धर्म राए दा जम ना सके झाक, नेत्र नैण

ना किसे उठावना। पुरख अबिनाशी तेरी आपणी हथ्थीं पकड़ी वाग, दूसरे हथ्थ ना किसे फड़ावणा। पूरा करे भविख्त वाक, गुर गोबिन्द जो लिखावणा। मनमुख नकेल पाए नक्क, दर दर घर घर बन्दर आप नचावणा। जन भगतां आपे बणे चाकर चाक, चाकर चाकरी आप करावणा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गंगा तेरा साचा छल्ला हरि फड़ाया हथ्थ उठाया कर कर वल छला, रविदास चमिआरा गवाह इक्क रखावणा। साचा छल्ला साचा कंगण, हरि साचा आप रखांयदा। किसे दर ना जाए मंगण, झोली अगे ना किसे डांहयदा। हरिभगत लगाए आपणे अंगन, आप आपणी गोद सुहांयदा। नाम भिबूती चाड़े रंगन, रंग रंगीला आप रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सच भण्डारा सच वरतारा साची संगत आप वरतांयदा। साची संगत खाणा पीणा, हरि साचे थाल परोसया। लोकमात बख्शे सदा जीणा, पिछला बख्शे कीता रोसया। दो जहाना पाटा तन सीणा, मार मारे ना फड़ बिदोसया। बिन पुरख अकाल दूसर अग्गे ना निउँणा, गुर गोबिन्द लेख लिखासया। सति पुरख निरँजन ठांडा करे सीना, जग तृष्ना प्यास मिटासया। अमृत रंग चढ़ाए भीन्ना, भिन्नड़ी रैण इक्क सुहासया। पार कराए त्रैगुण तीनां, तिन्न गुण करे बन्द खुलासया। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, मेल मिलाए शाहो शाबासया। पीणा जल अमृत धार रज्ज, हरि साचा आप प्यांअदा। नाद अनादी जाए वज्ज, निरगुण तार हिलांयदा। रक्खे लाज जिउँ जल धार गज, कलिजुग तन्दूआ तन्द कटांयदा। हरिसंगत हरि पंगत हरि का रूप बहणा सज, हरि साचा आप सजांयदा। वेले अन्त लौण ना देवे अज्ज पज्ज, लेखा आपणा आप मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, इक्की सिख कर वरतार, सेवा करे विच संसार, हरिजन साचे जाए तार, तारनहारा आप अख्वांयदा। तारनहारा आ गया, हरि गोबिन्द मीत मुरार। निरगुण दीवा इक्क जगा ल्या, लोकमात होया उज्यार। शब्द सुहागी इक्क सुणा ल्या, साचा ढोला एकँकार। आदि जुगादी वेस वटा ल्या, पारब्रह्म रूप करतार। हरिजन साचे मेल मिला ल्या, नाता तोड़ सर्ब संसार। आपणे पौड़े आप चढ़ा ल्या, सेवा करे अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, आप आपणी किरपा धार। हरिसंगत हरि पेखणा, पारब्रह्म करतार। प्रभ कढ्ढे भरम भलेखना, दरस वखाए दर दुआर। लेख चुकाए ब्रह्मा विष्न महेषना, आप आपणी वार। मेल मिलाए दस दस्मेशना, घर साचे कन्त भतार। शाहो भूप नर नरेशना, बेऐब परवरदगार। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिसंगत देवे एका वर, एका वस्त झोली पाईआ।

❋ २५ मग्घर २०१६ बिक्रमी भलाईपुर डोगरां महिंदर सिँघ दे घर ❋

सतिगुर मीता गुरसिख, गुर पूरा वड वड्याईआ। जन्म जन्म लेखा रिहा लिख, कर्म कर्म संग निभाईआ। आपणे नेत्र रिहा पेख, दूसर दिस किसे ना आईआ। आदि जुगादी लिखणहारा लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन लए तराईआ। गुरमुख गुर गुर रतड़ा, हरि हरि नाम अनमोल। घर साचा एका वक्खरा, गुरदर मन्दिर जगत वरोल। आपे जाणे जगत रीठड़ा, अंदर मन्दिर वड़ वड़ बोल। आदि जुगादी ठंडा सीतड़ा, हरि वसे सदा कोल। आपे जाणे आपणी रीतड़ा, जीव जंत रहे अनभोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला साचे दर, दर दुआरा साचा खोल्ह। दर दरवाजा सच दुआर, पूर्ब दिशा वड वड्याईआ। तिन्न सौ सठ्ठ मेल कर प्यार, एका कार कराईआ। पार किनारा बैठ तट, साधक सिद्ध रिहा समझाईआ। एक शब्द रिहा रट, सोहँ सो रसन कुड़माईआ। कलिजुग वेख झूठा घाट, सच किनारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिवस रैण दरस वखाईआ। आत्म अन्तर इक्क प्यार, रसना हरि गुण गांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, दिवस रैण दरस वखांयदा। झूठा वेख लोक पसार, काया मन्दिर साचे अंदर दर साचे सोभा पांयदा। निरगुण मिल्या निरगुण धार, सरगुण संग निभांयदा। कमलापाती मीत मुरार, साची साधना सति सति वखांयदा। मेल मिलावा मोहन माधव माध, रूप अनूप आप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा संग रखांयदा। सगला संग सतिगुर सज्जन, हरिजन आप निभाईआ। सति कराए आपणा मजन, दुरमति मैल धवाईआ। रक्खणहारा जगत लज्जन, लोकलाज दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, आत्म साध सन्त साध साचे साचा संग निभाईआ।

❋ २५ मग्घर २०१६ बिक्रमी जलालाबाद बलवन्त सिँघ दे घर ❋

सतिगुर सच्चा पातशाह, निरगुण रूप हरि निरँकार। जुगा जुगन्तर बण मलाह, लोकमात लए अवतार। एकँकारा आपणा नाउँ धरा, निरगुण खेल करे अपार। सरगुण साचा मेल मिला, जोती नूर करे उज्यार। शब्द अनादी धुन उपजा, राग सुणाए अनहद धार। घर विच घर दए सुहा, घर मन्दिर खेल अपार। कमलापाती वेस वटा, किरपा कर अगम्म अपार। खेल निराली आप करा, खेले खेल विच संसार। ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगा, त्रैगुण माया भर भण्डार। पंज तत्त जोड़ जुड़ा, आप आपणी किरपा कर दए सहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला वसणहारा, सच

महल्ला थिर घर वासी हरि निरँकार। सतिगुर सचा पातशाह, परम पुरख सुल्तान। इक्क जपाए साचा नाँ, प्रगट हो वाली दो जहान। जन भगतां देवे साचा थाँ, निथावयां देवे साचा माण। सन्तन पकड़े हरि हरि बांह, निरगुण सरगुण खेल महान। आत्म अन्तर एका ब्रह्म दए जणा, पारब्रह्म श्री भगवान। एका मन्त्र दए दृढ़ा, आत्मक धुन शब्द सची धुन्कार। बोध अगाधा भेव खुल्ला, देवे दरस दर दरबान। नाम इकल्ला दमां इक्क वखा, उच्च महल्ल करे पछान। थिर घर वासी वेस वटा, सचखण्ड वेखे सच दुकान। सच सिँघासन आसन ला, शाहो भूप वड राज राजान। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, खेले खेल हरि महान। सतिगुर सचा पातशाह, पारब्रह्म बेअन्त। वसणहारा सच ग्रां, अबिनाशी करता आदि अन्त। ना कोई पिता ना कोई माँ, ना कोई बणाए बणत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल श्री भगवन्त। श्री भगवन्त हरि भगवान, परम पुरख अख्वांयदा। सो पुरख निरँजन हरि मेहरवान, हरि पुरख निरँजन दया कमांयदा। आदि निरँजन जोत महान, एकँकारा डगमगांयदा। सच तख्त नौजवान, इक्क इकल्ला आसन लांयदा। सचखण्ड निवासी हो प्रधान, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। धुर फ़रमाना इक्क ज्ञान, शब्द अनादी नाद वजांयदा। प्रगट हो श्री भगवान, आपणा वेस वटांयदा। वेस अवल्ला इक्क इकल्ला, हरि पुरख निरँजन आप करांयदा। वसणहारा उच्च महल्ला, सच दुआरा इक्क सुहांयदा। आपणी शक्ती आपणी जोती आपे रला, आप आपणा मेल मिलांयदा। आपणे दीपक आपे बला, तेल बाती ना कोई रखांयदा। आपणा आसन आपे मल्ला, सच सिँघासन आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जूनी रहित नाउँ धरांयदा। जूनी रहित एकँकार, पुरख अकाल वड्डी वड्याआ। निर्भय रूप अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। ना मरे ना पए जम्म विच संसार, आदि जुगादी रचन रचाईआ। त्रैगुण माया वसया बाहर, पंज तत्त ना कोए वखाईआ। मात पित ना सुत दुलार, भाई भैण ना कोई जणाईआ। घर मन्दिर ना कोए दुआर, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। ना कोई दूसर मीत मुरार, सगला संग ना कोई वखाईआ। ना कोई गुर पीर अवतार, साध सन्त नज़र ना आईआ। रवि ससि ना कोए उज्यार, तारा मंडल ना कोए उपाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए आकार, निउँ निउँ सीस ना कोए झुकाईआ। जल बिम्ब ना कोए धार, धरत धवल ना कोए रखाईआ। जंगल जूह ना कोए पहाड़, डूँग्घी कंदर ना कोए वखाईआ। त्रैगुण माया ना कोए अधार, रजो तमो सतो ना रूप वखाईआ। पंज तत्त ना कोए प्यार, पंचम जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। ना कोई दीसे नौ दुआर, घर विच घर ना कोए बणाईआ। जोत निरँजन ना कोए उज्यार, वण्डन वण्ड ना कोए रखाईआ। ना कोई दीसे ब्रह्म ज्ञान, इष्ट देव ना कोए जणाईआ। ना कोई दीसे होर निशान, ना कोई

रचन रचाईआ। ना कोई गोपी ना कोई काहन, मंडल रास ना कोए रचाईआ। ना कोई सीता ना कोई राम, ना कोई बावन भेख वटाईआ। ना कोई ईसा मूसा करन सलाम, मुहम्मद यार ना संग रखाईआ। नानक गोबिन्द ना कोई वखाण, तत्व तत्त ना रूप वटाईआ। लक्ख चुरासी ना कोए निशान, निष्अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। चार वेद ना कोए ज्ञान, शास्त्र सिमरत ना कोए लिखाईआ। वेद व्यास ना लिखे पुराण, अठारां मेल ना कोए मिलाईआ। गीता करे ना कोए प्रधान, राजन मीत तीस बतीस ना कोए गाईआ। चार खाणी ना मंगे नाम निधान, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड ना वेख वखाईआ। चार बाणी ना कोए माण, परा पसन्ती मद्धम बैखरी कोए ना गाया। सर सरोवर ना कोए अशनान, तीर्थ तट किनारा ना कोए बणाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआला ना कोए मकान, कुला खण्ड ना रचन रचाईआ। मुल्ला सेख मुसायक पीर दस्तगीर साह हकीर बह बह दर दर कोए ना गाण, ना कोई करी पढ़ाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, सच महल्ले कर त्यार, निरगुण दीपक कर उज्यार। शब्द अगम्मी साची धार, घर साचे आप चलाईआ। साचा घर सचखण्ड पुरख अगम्म आप उपाया। आपे वण्डे आपणी वण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाया। आपे चाढ़े आपणा चन्द, रवि ससि सेवा साची लाया। आपे होए सर्ब बख्शंद, दीन दयाला नाउँ धराया। आप उपजाए आपणा छन्द, आपणी धुन आप अलाया। आपे जाणे आपणा परमानंद, निज़ानंद आप वेख वखाया। आपे ढाए भरमां कंध, आपे पड़दा रिहा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा आपणा नाउँ धराया। एकँकारा शहनशाह, शहनशाह सुल्ताना। वसणहारा साचे थाँ, सचखण्ड दुआरा इक्क मकाना। थिर घर बह बह पकड़े बांह, मन्दिर अंदर सच टिकाना। दो जहानां करे सच न्याँ, एका एक श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाया। हरि साचा रचन रचन्दड़ा, इक्क इकल्ला एकँकार। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहंदड़ा, निरगुण नूर कर उज्यार। शब्द अनादी धुन उपजंदड़ा, आप आपणी किरपा धार। साचा सुत आप उठंदड़ा, सार शब्द कर प्यार। धुर फ़रमाना आप सुनंदड़ा, आप होया खबरदार। लोआं पुरीआं रचन रचन्दड़ा, मंडल मंडप लए उसार। रवि ससि आपणी जोत जगंदड़ा, निरगुण मीत मीत मुरार। आपणा रंग आप रगंदड़ा, विष्नूं रूप करे करतार। ब्रह्मा आपणे कोल खलंदड़ा, आपे अंदर आपे बाहर। शंकर धूंआँधार रखंदड़ा, निरगुण खेल अपर अपार। तिन्नां एका रूप वसंदड़ा, हरि साचा सिरजनहार। साची वस्त इक्क वखंदड़ा, आप आपणा खोल्ह दुआर, ब्रह्मा विष्न शिव नेत्र वेख सीस नवंदड़ा, ढह ढह पैण चरन दुआर। प्रभ अबिनाशी आपणा भेव खुलंदड़ा, बख्शे शब्द सची धुन्कार। विष्नूं अगे झोली डहंदड़ा, प्रभ भरे इक्क भण्डार। ब्रह्मा आपणी अक्ख खुलंदड़ा, नेत्र ज्ञान देवे

प्रभ किरपा धार। चारे वेदां वेख वेख वखंदड़ा, उत्पत करे सर्ब संसार। शिव अन्तिम लेख चुकंदड़ा, जो उपजे दए सँघार। तिन्नां विचोला हरि अख्वंदड़ा, वड दाता सिरजनहार। लक्ख चुरासी वेस वटंदड़ा, आप आपणी किरपा धार। अठ्ठां तत्तां मेल मिलंदड़ा, मन मति बुध करे प्यार। जुग जुग आपणा खेल खिलंदड़ा, निरगुण सरगुण लए अवतार। गुर सतिगुर नाउँ धिरंदड़ा, साधां सन्तां हरि हरि हिरदे नाम इक्क आधार। एका अमृत जाम पिलंदड़ा, आत्म अन्तर ठंडी ठार। सर सरोवर इक्क नुहंदड़ा, डुंघी भँवरी कर विचार। कागों हँस बनंदड़ा, सिर रक्ख हथ्थ करतार। एका अनहद ताल वजंदड़ा, पंचम सखीआं मेला मीत मुरार। बन्द कुआड़ी आप खुलंदड़ा, बजर कपाटी देवे पाड़। आत्म सेजा हरि सुहंदड़ा, आपणे रंग रवे निरँकार। सुरत सवाणी वेख वखंदड़ा, गुरमुख साजन कर प्यार। साचे शब्द मेल मिलंदड़ा, नाता तुटे सर्ब संसार। मंगल गाए घर साचा इक्क सुहंदड़ा, गीत सुहागी साची नार। पिर पाया जोबन सच हढंदड़ा, घर मिल्या कन्त भतार। साची सेजा आप सुहंदड़ा, निरगुण निरगुण कर प्यार। आपणे अंक आप लगंदड़ा, अंगीकार आप अख्वंदड़ा, आपणे अंग लाए करतार । दस्म दुआरी मेल मिलंदड़ा, हरिभगतन जाए तार। सच्चे पातसाह आप अख्वंदड़ा, आदि जुगादी इक्क अवतार। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जुगंदड़ा, घलदा रिहा गुर पीर अवतार। आपणा भाणा आप रखंदड़ा, दिस ना आए विच संसार। छत्ती जुग ना वेस वटंदड़ा, वेस अनेका एकँकार। सतिजुग त्रेता द्वापर रेख मिटंदड़ा, कलिजुग अन्तिम खेले खेल अपर अपार। राम कृष्न लहिणा देण चुकंदड़ा, लेखा जाणे ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार। नानक निरगुण खेल खिलंदड़ा, गुर गोबिन्द साची धार। हरि गोबिन्द मेल मिलंदड़ा, सम्बल नगरी धाम न्यार। सच संघासन इक्क वखंदड़ा, हरिभगतां कर प्यार। नेत्र आपणा आप खुलंदड़ा, लोचन करे बन्द संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लोकमात लए अवतार। लोकमात हरि अवतारा, हरी हरि वड्डी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर खेल न्यारा, करता पुरख भेव ना राईआ। आपणा नाम सति भरे भण्डारा, सति सति दए वरताईआ। निर्भय रूप होए विच संसारा, सृष्ट सबाई लए उठाईआ। मूर्त अकाल खेल न्यारा, अकल कल वड्डी वड्याईआ। जूनी रहित वरते वरतावे निरगुण धारा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। सो पुरख निरँजन सिरजनहारा, सिर सिर देवे रिज़क सबाईआ। हरि पुरख निरँजन कर पसारा, घर घर बैठा जोत जगाईआ। आदि निरँजन हो उज्यारा, दिवस रैण डगमगाईआ। श्री भगवान पावे सारा, हरिभगतन वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी मीत मुरारा, सन्त सुहेले लए जगाईआ। पारब्रह्म प्रगट हो विच संसारा, ब्रह्म ब्रह्म लए उठाईआ। एका नाद शब्द धुन्कारा, ब्रह्म ब्रह्माद आप सुणाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, लोआं पुरीआं दए समझाईआ। ब्रह्मा विष्न

२७
०६

शिव दए हुलारा, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इंद आप उठाईआ। गण गंधर्ब किन्नर जच्छप दए दुहाई लक्ख चुरासी पावे सारा, नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां फेरा पाईआ। उच्चे टिले पर्बत वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँग्घी गारा जल थल महीअल रिहा समाईआ। नाथ अनाथां पूजा पाठ अपर अपारा, एका अक्खर दए पढ़ाईआ। निश्अक्खर दिस ना आए विच संसारा, सो पुरख निरँजण आपे गाईआ। हरि पुरख निरँजन बोल जैकारा, आपणे नाम दए वड्याईआ। जन भगतां भरे सच भण्डारा, अतोट अतुट रखाईआ। हरि सन्तन मेला इक्क दुआरा, साचे घर मेल मिलाईआ। गुरमुख देवे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। गुरसिखां तन करे शंगारा, तन बस्त्र भूशन एका नाम वखाईआ। जगत जगदीस खेल अपारा, सच हदीस करे पढ़ाईआ। राग छतीस ना पावे सारा, नारद मुन सुरस्ती रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग करता वड वड्याईआ। जुग करता हरि करनेहारा, सति पुरख निरँजन आप अख्वांयदा। कलिजुग वेखे कूड़ पसारा, चारों कुंट अन्धेरा छांयदा। सृष्ट सबाई होई नार विभचारा, हरि कन्त ना कोए हंढांयदा। ना कोई मन्दिर ना दुआरा, ना कोई साची भिच्छया मंग मंगांयदा। ना कोई शाह ना सिक्दारा, राज राजान ना कोए अख्वांयदा। ना कोई दर ना दरबाना, निउँ निउँ सीस ना कोई झुकांयदा। ना कोई गोपी ना कोई कान्हा, ना कोई बंसरी नाम वजांयदा। ना कोई सीता राम बन्न्हे गाना, सुरती सीता ना कोई प्रनांयदा। ना कोई शब्द ना तराना, अनहद राग ना कोई अल्हांयदा। ना कोई पीणा ना कोई खाणा, आत्म तृष्ना भुक्ख ना कोए मिटांयदा। ना कोई वखाए पद निरबाणा, ब्रह्म पारब्रह्म ना मेल मिलांयदा। पढ़ पढ़ थक्के जीव जहाना, ईश जीव साचा रंग ना कोए रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस धरांयदा। वेस वटाया हरि अवल्ला, हरि पुरख वड वड्याईआ। सचखण्ड निवासी इक्क इकल्ला, कादर करता खेल खिलाईआ। पावे सार राणी अल्ला, बेऐब परवरदिगार नूर अलाहीआ। चौदां लोक पए तरथल्ला, चौंदां तबकां वेख वखाईआ। सच सुनेहड़ा एका घल्ला, लाशरीक सर्ब खुदाईआ। मुकामे हक दर घर साचा एका मल्ला, हक हकीकत करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण धारा हरि निरँकारा, निरवैर वड्डी वड्याईआ। वड वडियाई पुरख सुल्तान, हँ ब्रह्म भेव खुलांयदा। लोकमात हो प्रधान, एका डंका नाम वजांयदा। नाता तोड़े पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मेट मिटांयदा। तीर अणयाला मारे बाण, मुखी तिक्खी आप बणांयदा। धर्म वखाए इक्क निशान, चार वरनां आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा मार्ग एका लांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम पन्ध, हरि साचा आप मुकाईआ। जन भगतां तोड़े चुरासी फंद, राए धर्म ना दए सजाईआ। जिस जन गाया बत्ती दन्द, निज घर साचे मेल मिलाईआ। दिवस रैण परमानंद, अठ्ठे पहर इक्क लिव लाईआ। जोत निरँजन चाड़े चन्द, नूरो नूर करे रुशनाईआ। शब्द सुणाए राग अनहद, तार सितार आप हिलाईआ। जाम प्याए साची मदि, भर प्याला मुख लगाईआ। पार कराए नौं दुआरे हद्द, आपणा किला आप तुड़ाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले चरन दुआरे आपणे सद्द, सतिगरु पूरा आप अख्वाईआ। जगत विकारा देवे कढ्ढ, हउमे हंगता दए मिटाईआ। सति पुरख निरँजन लडाए साचा लड, गुरसिख बाल अंञाणे गोद उठाईआ। आप कराए पार त्रिलोकी हद्द, दरगाह साची मेल मिलाईआ। अद्ध विचकार ना जाए छड्ड, गुर पूरे वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम आपणा नाउँ प्रगटाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल, दया निध अख्वांयदा। गुरमुख वेखे साचे लाल, आप आपणा मेल मिलांयदा। अमृत सुहाए साचा ताल, आत्म अन्तर आप वखांयदा। देवे नाम सचा धन माल, चोर यार ठग्ग लुट्ट कोए ना जांयदा। आपे शाह आपे कंगाल, सच दलाल आप हो आंयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े कलिजुग अन्तिम लए भाल, गुर गोबिन्द वेस वटांयदा। चरन दुआर रखाए काल महांकाल, काल दयाल भेव ना आंयदा। जन भगतां करे सदा प्रितपाल, आप आपणी सेव कमांयदा। लक्ख चुरासी वेखे पत डाहल, फुल्ल फुलवाड़ी फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ वटांयदा। नाउँ वटिंदड़ा गहर गम्भीर, अगम्म अगम्मड़ी कार करांयदा। पंज तत्त ना कोए शरीर, त्रैगुण रचन ना कोए वखांयदा। लक्ख चुरासी ना कोए फड़, मात गर्भ ना कोए टिकांयदा। नेत्र वहाए ना कोए नीर, हँस मुख ना कोए खुलांयदा। मात सच ना कोए सीर, बत्ती धार ना कोए चवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे अंग समांयदा। रंग रतड़ा हरि करतार, एका रंग रंगाईआ। धाम अनडिठड़ा अपर अपार, बैठा आसण लाईआ। कोटन कोटि लभ्भदे फिरदे जंगल जूह विच पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरीआं पाईआ। कोटन कोटि बैठे डूँघी गार, सुन्न समाध लगाईआ। कोटन कोटि उच्ची कूक वाजां मार, हरि सुत्ता बेपरवाह ना लए अंगड़ाईआ। कोटन कोटि हवन धूप करन संसार, जगत समग्री रहे पाईआ। बिन हरिभगत ना जाए कोई दुआर, भगत कबीरा दए गवाहीआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, जगत करता वड वड्याईआ। जिस जन किरपा करे अपर अपार, भोले भाओ मेल मिलाईआ। धन्ना जट्ट रिहा पुकार, मिल्या मेल हरि गोसाईंआ। कलिजुग अन्तिम खेल निरँकार, निरगुण आपणा रिहा खुलाईआ। हरिसंगत धन्ने कर त्यार, मूर्ख मूढ़े चतर सुघड़ बणाईआ। मेल मिलाए दर दुआर, अंदर मन्दिर

डूँग्घी कुंदर खोज खुजाईआ। शब्द डोरी हथ्थ करतार, एका एक आप रखाईआ। लख चरासी विच्चों बन्न् ल्याए चरन दुआर, आउंदा जांदा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। हथ्थ वडियाई निहकलंक, इक्क इकल्ला इक्क एकंकारया। लेखा जाणे राउ रंक, राज राजान विच संसारया। इक्क सुहाए सच बंक, हरिभगतन दर दरबारया। गुरमुख उपजाए जिउँ जन जनक, जन जननी लेखे ला रिहा। प्रगट होया वासी पुरी घनक, घनकपुर वासी खेल खिला रिहा। खेले खेल बार अनक, नित नवित वेस धरा ल्या। गुरमुखां मेटणहारा शंक, लक्ख चुरासी भरम भुलेखा आपे पा रिहा। लहिणा देण चुकाए ब्रह्मे सुत सनक, सनत कुमार सनातन सनंदन मेल मिला रिहा। चार कुंट नौं खण्ड पृथ्मी दहि दिशा वजाए आपणा डंक, साचा नाअरा एका ला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिगुर साचा नाउँ धरा ल्या। सतिगुर सज्जन मीतड़ा, सति पुरख निरँजन एक। जन भगतां रंगे काया चोली चीथड़ा, मन मति बुध करे बबेक। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, आपे जाणे आपणी रीत। आदि जुगादी पतित पुनीतड़ा, सदा सुहेला ठांडा सीत। गुरमुखां देवे नाम इक्क अनडीनड़ा, दिवस रैण वसे चीत। मानस जन्म हरिजन विरले जीतड़ा, मिल्या हरि एका रंग रंगाए हस्त कीट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे हथ्थ ना आए गुरूदुआर मन्दिर मस्जिद विच मसीत। गुरमुख मन्दिर सच दुआर, काया काअबा आप वखाईआ। पुरख अबिनाशी निरगुण धार, बैठा आसन लाईआ। अठ्ठे पहर वाजां रिहा मार, शब्द अनादी धुन सुणाईआ। आपणा नेत्र आप उग्घाड़, हरिजन तेरा राह तकाईआ। आत्म सेजा सुत्ता कर प्यार, आप आपणी सेज सुहाईआ। आसन सोलां कलीआं कर श्रंगार, सोलां इच्छया पूर कराईआ। नेत्र लोचल नैण किसे ना दीसा विच संसार, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। पावे भिच्छया हरि निरँकार, नाम वस्त इक्क रखाईआ। सिख्या सिख सिख उतरे पार, हरिजन हरि हरि मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल कर, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण आपणा नाउँ धराईआ। सरगुण निरगुण हरि निरँकार, रूप अगम्म अपारा। सरगुण निरगुण खेल अपार, आवन जावन पतित पावन खेले खेल विच संसारा।

❊ २६ मघर २०१६ बिक्रमी जलालाबाद ऊधम सिँघ दे घर ❊

सतिगुर पूरा हरि हरि सज्जण, पारब्रह्म गुर अवतारया। गुरमुखां चरन धूढ़ कराए साचा मजन, सर सरोवर इक्क नुहा रिहा। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, भाण्डा भरम भउ आप भन्ना रिहा। अनहद ताल नगारे वज्जण, काया जंदर अंदर बंक सुहा ल्या। नेत्र नैण नाम पाए कज्जल, साचा नैण आप मटका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जन वेख वखा ल्या। हरि हरि सज्जण गुर चरन धूढ़, दुरमति मैल गंवाईआ। चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। वसणहारा नेड़े दूर, साख्यात सच सरूपी दरस वखाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच करे कुड़माईआ। आदि जुगादी हाज़र हज़ूर, हर घट थाँ होए सहाईआ। दाता दानी वड जोद्धा सूर, शाह सुल्तान बेपरवाहीआ। आत्म अन्तर बख्शे एका नूर, जोती जोत डगमगाईआ। आसा मनसा जाए पूर, तृष्ना तृखा दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे ल्ए तराईआ। साचा मजन हरि दुआर, गुर सतिगुर आप करांयदा। गुरमुख साजन लाए पार, साचे बेड़े आप चढ़ांयदा। नाम चप्पू अपर अपार, निरगुण आपणे हथ्थ रखांयदा। सरगुण देवे सच सहार, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। दो जहाना मीत मुरार, आप आपणे अंग लगांयदा। अंगीकार कर करतार, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। साचा संगी विच संसार, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। अमृत आत्म बख्शे ठंडी ठार, निझर धारा मुख चवांयदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन मेला हरि निरँकार, गुर सतिगुर आप मिलाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, घट घट बैठा आसन लाईआ। जुगा जुगन्तर साची कार, जुग करता आप कमाईआ। लेखा जाणे सर्ब संसार, लिखणहार दिस ना आईआ। सन्त सुहेले ल्ए उभार, ब्रह्म मति इक्क समझाईआ। शब्द सुणाए सच धुन्कार, राग अनादी इक्क अल्हाईआ। दीवा बाती कर उज्यार, कमलापाती वेख वखाईआ। बूंद स्वांती ठंडी ठार, कँवल नाभी मुख चुआईआ। इक्क इकांती जोत निरँकार, निज घर बैठा ताड़ी लाईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईआ। हरिजन हरि हरि पेख्या, घर मन्दिर खोल्ह किवाड़। आपे जाणे पूर्ब लेखया, लेखा लिखणहार आप गिरधार। आदि जुगादी कर कर वेसया, करे खेल अगम्म अपार। आपे निरगुण जोत सरगुण जोती करे प्रवेसया, जोत जोती दए अधार। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे घर, घर सच महल्ल मनार। घर महल्ला सच मनारा, हरि साचा आप उपांयदा। काया गढ़ कर त्यार, अंदर वड़ वेख वखांयदा। आपणे पौड़े जाए चढ़, आपणा डण्डा हथ्थ उठांयदा। आपणे दुआरे आपे खड़, आप

आपणा रूप वटांयदा। आपणा अक्खर आपे पढ़, आपणा राग अल्हांयदा। आपणा घाड़न आपे घड़, आपे वेख वखांयदा। आप बन्हाए आपणे लड़, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया अंदर साचे मन्दिर गुरमुख साचे वेख वखांयदा। गुरमुख तेरा सच महल्ला, हरि साचा वेख वखांयदा। आवे जावे इक्क इकल्ला, दूसर संग ना कोई जणाईआ। शब्द अगम्मी फड़ फड़ भल्ला, पंजां चोरां दए डराईआ। वसणहारा नेहचल धाम अटला, आप आपणी दया कमाईआ। सुरती शब्दी आपे रल्ला, सुरत शब्द करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन अंदर बैठा वड़, सच सिँघासन आसन लाईआ। सच सिँघसान काया घर, हरिजन आप सुहांयदा। गुरमुख विरले खोल्हे दर, दर दरवाजा वेख वखांयदा। आपणी करनी आपे कर, आपणी कल वरतांयदा। आप चुकाए आपणा डर, सगला भय जगत मुकांयदा। आप नुहाए साचे सर, हरिजन कागों हँस बणांयदा। आप आपणे ल्ए वर, जुग जुग साचा कन्त अख्वांयदा। नर नरायण किरपा कर, गुरमुख नारी मेल मिलांयदा। वर घर पाया एका हरि, विछड़ कदे ना जांयदा। ना जन्मे ना जाए मर, मात गर्भ ना फेरा पांयदा। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबांयदा। दो दो हथ्थीं सके ना कोई फड़, अंदर बन्द ना कोए करांयदा। आदि जुगादी इकउंकारा हरि निरँकारा आपणा खेल आपे कर, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण रंग रंगांयदा। काया अंदर साचा रंग, सति पुरख निरँजन आप चढ़ांयदा। सतिगुर पूरा गुर सरबंग, आप आपणी कल वरतांयदा। आपणी भिच्छया आपणे कोलों मंग, आपणी झोली आप भरांयदा। आपणा वजा आप मृदंग, गुरमुख सोए मात उठांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघ, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड वेख वखांयदा। आपे पावे सार नौं खण्ड, नौं सत्त आपे वेख वखांयदा। आपे वसणहार विच ब्रह्मण्ड, आपे घट घट डेरा लांयदा। आपे नार दुहागन होए रंड, आपे साचा कन्त हंढांयदा। आपे पंच विकारा करे खण्ड खण्ड, आपे काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना मेल मिलांयदा। आपे नाम खण्डा तेज चण्ड प्रचण्ड, सच कटार आपणा नाउँ धरांयदा। आप आपणी पाए वण्ड, निरगुण सरगुण आपणा राह चलांयदा। आपे तोड़नहारा दूई द्वैती झूठी कंध, हउमे हंगता गढ़ आप तुड़ांयदा। आपे सुणाए सुहागी छन्द, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। आप समाए परमानंद, निज आत्म डेरा लांयदा। आपे करे प्रकाश कोटन कोटि रवि ससि सूरज चन्द, प्रकाश प्रकाश आप समांयदा। आपे गुरसिखां करे खुशी बन्द बन्द, बन्दी तोड़ नाम धरांयदा। आपे रसना जेहवा गाए बत्ती दन्द, घूँगट मुख आप रखांयदा। आपे दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर भेव ना आंयदा। आपे होए सदा बखशिंद, बख्शणहार आपणी बखिशश आप करांयदा।

३२
०६

जोती जोत सूरप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख काया मन्दिर आप सुहांयदा। गुरमुख घर सच टिकाना, घर घर विच आप बणाया। अंदर बैठ श्री भगवाना, साचा तख्त रिहा सुहाया। शाहो भूप वड राज राजाना, एकँकारा आप अख्वाया। आपे जाणे आपणा गाणा, दूसर हथ्थ किसे ना आया। सति सरूपी इक्क बबाना, गुर शब्दी नाउँ धराया। आवे जावे दो जहाना, निरगुण आपणा पन्ध मुकाया। लोकमात वेखे मार ध्याना, हरिजन साचे वेख वखाया। रागी नादी देवे इक्क तराना, आत्म अन्तर आप सुणाया। सच वखाए पद निरबाना, परम पुरख वड वड्याआ। गुरसिखां बन्हे हथ्थीं गाना, एका तन्दन डोर रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराया। काया मन्दिर सच दरवाज़ा, हरि सतिगुर आप खुलाईआ। दरस वखाए ग़रीब निवाजा, घर वजदी रहे वधाईआ। नाल रलाए अनहद वाजा, धुनी धुन विच समाईआ। जुगा जुगन्तर फिरे भाजा, गुरमुख ढूंडे थाउँ थाईंआ। सचखण्ड निवासी दासन दास आप आपणी मारे वाजा, आप आपणी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन उठया नौजवान, गुर सतिगुर आप उठाया। इक्क सुणाया धुर फ़ुरमान, साचा सोहला मंगल गाया। अमृत दित्ता पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख बुझाया। नाम सुणाया साचा कान, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाया। मन्दिर वखाया सच मकान, थिर घर वासी डेरा लाया। धर्म वखाया सच निशान, साचे मन्दिर आप झुलाया। तख्त वखाया श्री भगवान, तख्त निवासी डेरा लाया। देवणहारा धुर फ़रमान, सचखण्ड बैठा सोभा पाया। जुग जुग खेले खेल महान, निरगुण सरगुण वेस वटाया। लोकमात होए प्रधान, आप आपणा नाउँ धराया। आपे सीता आपे राम, आपे कान्हा वेस वटाया। आपे नानक गोबिन्द कर प्रनाम, आप आपणा सीस झुकाया। आपे वसया साचे नगर ग्राम, साचा मन्दिर आप सुहाया। आपे करे प्रकाश कोटन भान, अन्ध अन्धेर आपे डेरा लाया। आपे जन भगतां देवे साचा दान, दाता दानी नाउँ धराया। आपे चरन धूढ़ी बख्शे सचा अशनान, गुरसिख तीर्थ नहावन कोए ना जाया। दर घर साचे देवे माण, माण निमाणयां गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला सहिज सभाया। सहिज सुभा हरि हरि पाया, घर आत्म वज्जी वधाईआ। घर सखीआं मंगल एका गाया, गीत सुहागी इक्क अल्हाईआ। साचा सज्जण वेखण आया, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। दो जहानी लाज रक्खण आया, लाजावन्त बेपरवाहीआ। गुरसिखां पड़दा कज्जण आया, कलिजुग मेटे झूठी शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन खोज खुजाईआ। गुरमुख साजन हरि हरि पाया, आत्म अन्तर पीर। घर मन्दिर साचा बंक सुहाया, चोटी चढ़ अखीर। साची रंगन नाम रंगाया, हउमे हंगता कट्टे ज़ंज़ीर। दूजे दर ना मंगन जाया,

घर बख्शे अमृत ठांडा सीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख देवे साची धीर। गुरमुख धीरज साचा जत, सति सन्तोख आप रखाईआ। आत्म अन्तर एका मत, ब्रह्म मति वड्डी वड्याईआ। हरि शब्द प्रीती साचा तत्त, तत्व तत्त समझाईआ। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत्त, रत्ती रत्त रहिण ना पाईआ। चरन कँवल बंधाए नत, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। वसणहारा घट घट, घर बैठा जोत कर रुशनाईआ। लहिणा देणा चुकाए तीर्थ तट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती गुरसिख तेरे चरनां हेठ वगाईआ। इक्क जणाए पूजा पाठ, सोहँ अक्खर सच पढ़ाईआ। कलिजुग तेरा झूठा घाट, कलिजुग जीवां रिहा रुढ़ाईआ। सतिजुग नेड़े आई वाट, चुक्या पन्ध जांदे राहीआ। गुरसिखां पूरा करे घाट, एका नेत्र दरस वखाईआ। मेल मिलावा आत्म खाट, सच सुहंणनी सेज विछाईआ। निरगुण जोती लाट लाट, अट्ठे पहर करे रुशनाईआ। आप खुल्हाए साचा हाट, चौंदां लोक रहे शर्माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण वेख वखाईआ। गुरमुख सज्जण टोलया, गुर सतिगुर कर विचार। घर अंदर बह बह बोलया, खोल्हया बन्द किवाड़। नाम कंडे साचे तोलया, तोलणहारा आप निरँकार। सच दुआरा एका खोल्हया, चार वरन करे प्यार। गुरसिखां उत्तों आप आपणा आपे घोलया, आप आपा आपे वार। आपे बदल्लया आपणा चोलया, कलिजुग तेरी अन्तिम पावे सार। आदि जुगादि कदे ना डोलया, नाउँ रखाए निहकलंक अवतार। गुरसिखां दुआरे होए आपे गोलया, सेवक सेवा करे अपर अपार। मनमुख नाल कदे ना बोलया, डूँग्घी भँवरी सुत्ता पैर पसार। गुरसिखां संग खेले साची होलया, लाल गुलाला रंग चाढ़े आप करतार। सच मजीठी रंगे चोलया, रंग उतरे ना दूजी वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन लए उभार। गुरमुख साजन जन बलवन्त, बलि बलि बलिहारया। हरि पाया एका साचा कन्त, सोभावन्त होई नारीआ। नाता तुटा जीव जंत, साध सन्त भरे भण्डारया। गुरमुख तेरी महिमा अगणत, वेद कतेब सर्ब पुकारया। तेरी आत्म अन्तर एका मणीआ मंत, शब्द नाद इक्क अल्हा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखा रिहा। हरिजन हरि हरि जाणयां, परम पुरख करतार। सद चले साचे भाणयां, निउँ निउँ जोड़ करे निमस्कार। माण गंवाए राजे राणयां, ग़रीब निमाणयां लाए पार। दरगाह साची देवे माणयां, फड़ फड़ बाहों जाए तार। किसे हथ्थ ना आए सुघड़ स्याणयां, वड विद्वानी रहे विचार। जिस जन होए आप परवानयां, देवे दरस अगम्म अपार। शब्द निशाना मारे कानीआ, मुखी तिक्खी अपर अपार। आपे जाणे आपणी अकथ कहाणीआं, कथनी कथा ना पावे सार। आपे शब्द नाद धुन बाणीआं, आपे गावणहार। आपे वसे पद निरबानीआं, आपे घट घट जोत पसार। आपे दाता दानीआं, आपे दर दर बणे भिखार। आपे गुरसिख

बणाए साची राणीआं, हरि जू आपे होए सिक्दार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेले विच संसार। गुरमुख सज्जण सुहेलया, हरि सतिगुर साचे मीत । एका रंग रंगाए गुरू गुर चेलया, आदि जुगादी ठंडा सीत। आपे वसे रंग नवेलया, आपे करे वसेरा हस्त कीट। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेलया, आप चलाए आपणी रीत। गुरमुखां धर्म राए दी कट्टे जेलया, करे कराए पतित पुनीत। दर घर साचे चाढ़े तेलया, मानस जन्म हरिजन जाए जीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सद बैठा रहे अतीत। त्रैगुण अतीता हरि निरँकार, सारिंग धर आप अख्वाया। परखे नीता सर्ब संसार, सालस सालसी सच कमाया। लख चुरासी वेख विचार, गुरमुख साचे लए जगाया। जम की फाँसी गलों लाहे हार, तन बस्त्र नाम पहनाया। रसन स्वास कर प्यार, आत्म रास दए वखाया। जोत प्रकाश हरि निरँकार, सचखण्ड निवासी फेरा पाया। पृथ्मी आकाश दए अधार, मंडल मंडप आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ऊर्ध कँवल आप बिगसाया। ऊरध कँवल नैण मँधारी, आपणा मूँध मुधाया। अमृत झिरना अपर अपारी, निज आत्म आप झिराया। आपे सीतल सति ठंडी ठारी, अग्नी तत्त आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरि सतिगुर पूरा दीन दयाल, गुर मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। गुरमुख वेखे साचे लाल, फड़ बांहो गले लगांयदा। लक्ख चुरासी तोड़ जंजाल, आवन जावन गेड़ कटांयदा। देवे नाम सच्चा धन माल, सच खजीना इक्क भरांयदा । आपे सुणाए साचा ताल, सच मृदंगा इक्क वजांयदा। सन्त सुहेले जुग जुग भाल, आप आपणा रंग चढ़ांयदा। वस रखाए काल महांकाल, काल महांकाल आप हो जांयदा। जन भगतां बणे लोकमात दलाल, रूप अनूपा वेस वटांयदा। दिवस रैण करे प्रितपाल, सेवक साची सेव कमांयदा। ऊधम सिँघ सिँघ सतिगुर लए भाल, आप आपणे अंग लगांयदा। फल लगाए पत पत डालू, फुल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। काया मन्दिर बणाए सची धर्मसाल, गुरदुआरा इक्क वखांयदा। अंदर बैठा दीन दयाल, नित नवित दया कमांयदा। ना शाह ना कंगाल, मन इच्छया फल खवांयदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग जुग आप आपणा वेस धरांयदा।

❊ २६ मग्घर २०१६ बिक्रमी रामपुर मास्टर सोहण सिँघ दे घर ❊

गुरमुख रत्न अनमोल, हरि गोबिन्द आप उपांयदा। बन्द दुआरा साचा खोलू, घर साचे आप टिकांयदा। शब्द अगम्मी कंडे तोल, कीमत करता आपे पांयदा। लक्ख चुरासी लए वरोल, हरिजन साचा वेख वखांयदा। आपणी धारन आपे बोल,

आपणा वाक सुणांयदा। लेखा जाणे काया चोल, आपणा चोला आप बदलांयदा। आदि जुगादि रहे अडोल, गुरमुख सदा अडोल रखांयदा। सदा अतीता वसे कोल, नित नवित वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा माणक वेख वखांयदा। गुरमुख हीरा साचा लाल, हरि साचे आप उपन्नया। दो जहानी बणे दलाल, सतिगुर पूरा एका मन्नया। देवे नाम सच्चा धन माल, जन जननी एका जणया। आपणी घालण आपे घाल, आपणा बेड़ा आपे बन्नया। बिरहों तीर निराला मारे बाण, काया गढ़ आपे विन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख काया चोली चाड़े रंग भिन्नयां। भिन्नड़ा रंग मिट्ठा रस, हरिजन हरि हरि आप चढ़ांयदा। पुरख अबिनाशी देवणहारा बतीस बतीस, देन्दयां दे तोट ना आंयदा। मेल मिलावा नस्स नस्स, दो जहानां पन्ध मुकांयदा। हिरदे अंदर वस वस, आप आपणा भेव खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि वेख वखांयदा। लाल अनमुल्लड़ा गुरमुख हीरा, गुर सतिगुर हट्ट वकांयदा। पुरख अबिनाशी गहर गम्भीरा, आपणे तक्कड़ आप तुलांयदा। लक्ख चुरासी कीमत रक्खे ना इक्क कसीरा, गुरसिख मुल्ल ना कोई चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग वखांयदा। गुरमुख सज्जन लाए अंग, अंगीकार आप अख्वाईआ। वड दाता सूरा सरबंग, सर्बकल वड वड्याईआ। हरिजन मन्दिर जाए लँघ, निज आत्म खोल्ह खुलाईआ। साची वस्त एका मंग, आपणी भिच्छया वेख वखाईआ। नज़र ना आए जल तरंग, भँवरी भवर भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन साचे घर समाईआ। घर सचा समरथ, हरि हरि आप उपाया। आपणी महिमा जाणे अकथ, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। गुरमुख मार्ग साचा दस्स, आप आपणा मेल मिलाया। त्रैगुण माया ना सके डस्स, पंज विकार ना होए हलकाया। निझर देवे साचा रस, रसक रसक रसक आप चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले साचे घर, घर मन्दिर डेरा लाया। मन्दिर अंदर हरि निरँकारा, निरगुण आपणा रूप रखांयदा। दीवा बाती कर उज्यारा, घट मन्दिर वेख वखांयदा। साचा नाद शब्द धुन्कारा, नाद अनादी आप वजांयदा। सर सरोवर ठंडा ठारा, अमृत जाम प्याला भर प्यांअदा। आपे वसे सभ तों बाहरा, आप आपणा खेल खिलांयदा। मन्दिर अंदर राज दुआरा, राज जोगीशर आपणा आसन लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जन जन हरि जुग जुग जुग जुग जन आपणे लेखे लांयदा।

✻ २६ मग्घर २०१६ बिक्रमी पिण्ड कल्ला हरी सिँघ दे घर ✻

सो पुरख निरँजन हरि भगवन्त, आदि जुगादि समाईआ। हरि पुरख निरँजन साचा कन्त, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। एकँकारा महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। आदि निरँजन धाम सुहंत, निरगुण दीपक बाती जोती डगमगाईआ। श्री भगवान बणाए बणत, बसन बनवारी आप अख्वाईआ। अबिनाशी करता खेल खिलंत, खेलणहारा दिस ना आईआ। पारब्रह्म ना कोई रूप ना कोई रंग, रेख भेख ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा हरि निरँकारा, जूनी रहित नाउँ धराईआ। जूनी रहित पुरख अकाला, अगम्म अगम्मड़ा धाम सहांयदा। आदि जुगादी दीन दयाला, अनुभव प्रकाश समांयदा। आपे चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क रखांयदा। ब्रह्म ब्रह्मादी खेल निराला, पारब्रह्म भेव ना आंयदा। वसणहारा सच सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। निरगुण दीपक साचा बाला, प्रकाश प्रकाश उपांयदा। निरगुण अतीत शाह कंगाला, राज राजाना आप अख्वांयदा। वसणहारा धाम निराला, थिर घर साचे सोभा पांयदा। शब्द अगम्मी इक्क इक्क तराना, धुन अनादी नाद वजांयदा। आप आपणी करे पछाना, आप आपणा भेव खुलांयदा। आपे देवे आपणा दाना, आपणी भिच्छया झोली पांयदा। आपे वस्त रक्खे महाना, पारब्रह्म नाउँ उपजांयदा। आपे वसे सच मकाना, उच्च महल्ल अटल आप सुहांयदा। आपे नारी पुरख चतर सुजाना, कन्त कन्तूहल आप हो जांयदा। आपे सति सन्तोखी बन्ने गाना, घर साचे सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निराकार नाउँ धरांयदा। सो पुरख निरँजन हरि हरि मीत, आदि निरँजन वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजन इक्क अतीता, निर्भय आपणा नाउँ धराईआ। एकँकारा ठंडा सीता, अग्नी तत्त ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस धराईआ। वेस अवल्ला एकँकारा, पुरख अबिनाशी आप करांयदा। श्री भगवान खेल न्यारा, भेव अभेद भेव छुपांयदा। पारब्रह्म प्रभ हो उज्यारा, आप आपणा रूप वटांयदा। आपे पुरख आपे नारा, आपे सेज हंढांयदा। आप उपजाए सुत दुलारा, पूत सपूता नाउँ धरांयदा। आपे देवे धुर फ़रमाणा, शब्द सिँघासन साचे आसण साचा डेरा लांयदा। लोआं पुरीआं महल्ल उसारा, निरगुण पावे आपे सारा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखांयदा। रवि ससि दए सहारा, मंडल मंडप आप सुहांयदा। करनी करता करे करतारा, करनेहार खेल खिलांयदा। जागरत जोत जोत उज्यारा, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। आपणी इच्छया भर भण्डारा, आपणी सिख्या आप समझांयदा। आपणा वरते आप वरतारा, आपणी रचन रचांयदा। आपणा फल लगाए आपणे डाहला, आपे बीज बजांयदा। आप उपजाए साचा लाड़ा, निरगुण आपणा वेस धरांयदा। विष्नूं खेल खेल निराला, निराकार

साकार हो जांयदा। अंदर मन्दिर भरया ताला, सर सरोवर इक्क उपांयदा। अमृत साचा भर प्याला, नाभी कँवली आप टिकांयदा। पारब्रह्म प्रभ दीन दयाला, दयानिध आपणी खेल खिलांयदा। आपे चले आपणी चाला, घर साचे सोभा पांयदा। फुल फुलवाड़ी वेखे लाल गुलाला, आप आपणा फल उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। आपणी कल हरि वरताए, वड वड्डा वड वड्याईआ। नाभी कँवली फुल खिलाए, पत डाली आप महिकाईआ। अमृत सिंच हरा कराए, सुक्क कदे ना जाईआ। आपणी रुत्त आप सुहाए, सच बसन्ती बेपरवाहीआ। अबिनाशी अचुत नाउँ धराए, विनाशी रूप ना कोए जणाईआ। साचे मंडल रासी पाए, घर साचे वज्जे वधाईआ। आपणा अंग आप कटाए, विष्नूं अंस होए सहाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म सरबंस बणाए, एकँकारा वण्ड वण्डाईआ। धूंआँधार रचन रचाए, शंकर मेला सहिज सुभाईआ । भोला नाथ आप उठाए, हथ्थ त्रिसूल फड़ाईआ। एका सिख्या सच समझाए, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मूर्त अकाल वड वड्याईआ। मूर्त अकाल पारब्रह्म, अबिनाशी करता नाउँ धरांयदा। ना मरे ना पए जम्म, जून अजूनी ना कोए वखांयदा। आदि जुगादी जाणे आपणा कम्म, करनी करता नाउँ उपांयदा। हरख सोग ना कोए गम, आलिस निन्दरा विच ना आंयदा। आपणे अंदर आपे गया जम्म, मात पित ना कोए वखांयदा। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, आपे भार उठांयदा। ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा विष्न शिव एका रंग, रंग रंगीला आप हो आंयदा। ब्रह्मा विष्न शिव उपा, हरि साचा हुक्म जणाईआ। एका देवे रिज़क सबा, एका उत्पत वेस वटाईआ। एका अन्तिम लेखा दए मुका, थिर कोए रहिण ना पाईआ। तिन्नां देवे एका नाँ, सो पुरख निरँजन वड वड्याईआ। सिर रक्खे सदा ठंडी छाँ, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अनादी आप अख्वाईआ । आदि पुरख हरि एकँकारा, अकल कला अख्वाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर पसारा, त्रै त्रै वेस वटाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डारा, सांतक राजस तामस झोली पाईआ। लख चुरासी खेल न्यारा, एका ब्रह्म सुणाईआ। वण्डे वण्ड अपर अपारा, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड एका वण्ड वखाईआ। लोआं पुरीआं वेख ब्रह्मण्ड, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंज तत्त देवे वर, आप आपणी किरपा कर, सगला संग रखाईआ। सगला साथ हरि रघुनाथा, एका एक अख्वांयदा। लक्ख चुरासी सुणाए गाथा, अंदर मन्दिर नाद वजांयदा। शब्द अगम्मी पूजा पाठा, एका हुक्म अल्हांयदा। आत्म अंदर सर सरोवर मारे ठाठा, अमृत जल भरांयदा। जोत निरँजन जगे ललाटा, दीपक दीआ इक्क वखांयदा। भाग लगाए काया माटा,

घर घर विच मन्दिर आप सुहांयदा। आत्म सोए साची खाटा, ब्रह्म आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। निरगुण सरगुण वेस अवल्ला, हरि सच्चा आप कराईआ। सचखण्ड निवासी इक्क इकल्ला, घट घट अंदर डेरा लाईआ। वसणहारा जल थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पाईआ। पवण पवनी आपे रला, स्वास स्वास आप चलाईआ। सच सुनेहड़ा आपे घल्ला, शब्दी शब्द करे कुड़माईआ। जोती शब्दी आपे रला, निरगुण दाता वड वड्याईआ। पंच विकारा मारे हल्ला, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त श्री भगवन्त, निरगुण सरगुण वेस धराईआ। निरगुण मीता इक्क अतीता, त्रैगुण भेव ना राया। खेले खेल पतित पुनीता, पतित पापी लए तराया। हरिभगतां बणे साचा मीता, जुग जुग आपणा वेस वटाया। मिट्ठा करे कौड़ा रीठा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। धाम रखाए इक्क अनडीठा, नेत्र नैण इक्क खुलाया। त्रैगुण माया ना तपे अंगीठा, जिस जन हरि हरि दरसन पाया। जुगा जुगन्त ठांडा सीता, सन्त सुहेले लए मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। रंग रंगाए हरि भगवन्त, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। गुरमुख उठाए साचे सन्त, आत्म ब्रह्म करे जणाईआ। तोड़े गढ़ हउमे हंगत, माया ममता मोह चुकाईआ। नाता तोड़े भुक्ख नंगत, सिर सिर देवे रिज़क सबाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, अभुल्ल आप अख्वाईआ। गुरमुख मेला साचे कन्त, हरि कन्त इक्क रघुराईआ। आप वखाए रुत्त बसन्त, पत डाली आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग त्रेता द्वापर पार कर कलिजुग वेखे सर्ब लोकाईआ। कलिजुग अन्तिम हरि हरि सज्जन, एका रंग समाए। जन भगतां कराए साचा चरन धूढ़ मजन, दुरमति मैल गंवाए। निरगुण सरगुण पड़दे कज्जन, ब्रह्म पारब्रह्म वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस धराए। वेसाधारी अलक्ख निरँजन, अगम अगोचर भेव ना राया। जन भगतां नेत्र पाए अंजन, एका नाम हथ्थ उठाया। गढ़ हँकारी भाण्डे, भज्जण, जिस जन आपणी सरन लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ धराया। जुग करता हरि पुरख समरथ, सतिगुर साचा आप अख्वांयदा। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही वेस वटांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर नौ नौ चार महिमा अकथ, सति सति भेव ना आंयदा। आपे करे वक्ख अठ्ठ तत्त, नौ दर लेख ना कोए जणांयदा। आपे पंज तत्त वकारा पाए भट्ठ, निरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। आपे वसे घट घट, घट मन्दिर आप सुहांयदा। खेले खेल बाजीगर नट, सांगी सांग वरतांयदा। जन भगतां तन पहनाए साचा पट, निरगुण नाम दोशाला हथ्थ उठांयदा। चौदां लोक खुलाए एका हट्ट, वणज वणजारा

इक्क करांयदा। सन्तन मेला नट्ठ नट्ठ, जुग जुग साचे वेख वखांयदा। चरन दुआरे कर अकट्ठ, हरि हरि मति इक्क समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन सच्चा एक है, मेला हरि निरँकार। प्रभ करे बुध बिबेक है, निरगुण बाती कर उज्यार। त्रैगुण माया ना लाए सेक है, पंज तत्त ना करे ख्वार। लिखणहारा साचे लेख है, एका दूजा भउ निवार। तीजे नेत्र रिहा पेख है, आप आपणा नैण उग्घाड़। चौथे घर लाए मेख है, चौथे पद सची सरकार। पंचम मेला इक्क अकेला ना मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस है, मूंड मुंडाए ना हरि निरँकार। प्रभ करे बुध बबेक है, छेवें छप्पर छन्न ना कोई ल्ए वेख है, सचखण्ड वसे वसणहार। सति पुरख निरँजन सच आदेस है, सति सतिवादी साची धार। ब्रह्मा विष्न महेष शिव शंकर रिहा वेख है, निउँ निउँ करन निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेले खेल अगम्म अपार। अगम्म अगम्मड़ा खेल निराला, हरि पुरख निरँजन आप करांयदा। हरिभगतन देवे साची माला, निरगुण निरगुण नाम हथ्थ फड़ांयदा। चरन भिखार कराए काल महांकाला, दीन दयाला दया कमांयदा। जन भगतां तोड़े जगत जंजाला, जागरत जोत इक्क वखांयदा। कोटन कोटां विच्चों एक एका भाला, एक एका रंग रंगांयदा। शब्द सरूपी बण दलाला, गुर पीर अवतार आप अख्वांयदा। आपे सभ तों वसे निराला, आपणे हुक्म सर्ब फिरांयदा। कोटन कोटि जुगा जुगन्त लोकमात घालन रहे घाला, प्रभ साची सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रंग सूरा सरबंग रूप अनूप आप रखांयदा। रूप अनूपा सति सरूपा, हरि सच्चा शाह सुल्तानयां। वसणहारा चारे कूटां, दहि दिशा होए प्रधानयां। लोआं पुरीआं खण्डां ब्रह्मण्डां गगन पातालां देवे एका हूटा, नाम हुलारा इक्क वखानयां। आपे ब्रह्मे विष्न शिव करे मूधा ठूठा, आपे साची वस्तू विच टिकानयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल श्री भगवानयां। श्री भगवान साख्यात, निरगुण सरगुण वेस धरांयदा। जन भगतां रक्खे उत्तम जात, वरन गोत ना कोए बणांयदा। सचखण्ड दुआरा वखाए साचा हाट, दूसर दर हरिजन मंगण कदे ना जांयदा। जुगा जुगन्तर पूरा करे घाट, घाटा आपणे हथ्थ वखांयदा। हरिभगत दुआरे रिहा नाठ, नित नवित खेल खिलांयदा। लहिणा देणा चुकाए पूजा पाठ, जिस जन आपणा दरस वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण गुरू सरगुण चेला, गुर चेला मेल मिलाया। निरगुण दाता सज्जण सुहेला, सरगुण साचा वेख वखाया। निरगुण वसे इक्क अकेला, सरगुण कोटी कोटि मेल मिलाया। निरगुण चाड़े साचा तेला, सरगुण साचा सगन मनाया। निरगुण पाए साची वेला, सरगुण झोली अगे डाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण

आपणा नाउँ धराया। निरगुण हरि गोबिन्द, हरि पुरख निरँजन हरि अख्वांयदा। सरगुण मेटे सगली चिन्द, भगतन भगती वेख वखांयदा। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर आप हो जांयदा। हरिभगत बणाए सागर सिन्ध, आपणा जल विच भरांयदा। आप बणाए आपणी बिन्द, नादी सुत नाउँ धरांयदा। धर्म राए ना कढ्ढे जिंद, जिस जन अपणा दरस वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल कर, भगत भगवन्त वेख वखांयदा। भगत भगवन्त आदि अन्त, एका रंग समाया। आपे नारी बणे कन्त, सुरती शब्दी मेल मिलाया। वक्ख करे विच्चों लक्ख चुरासी जीव जंत, आप आपणा हित रखाया। दीना नाथ बणाए साची बणत, दीन अनाथां लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेल कर, खालक खलक वेख वखाया। खालक खलक हरि वेखणहारा, बेऐब परवरदगारा। सालस बण करे प्यारा, ऐनलहक लाए नाअरा। आलस निन्दरा वसया बाहरा, आपे गुप्त आपे ज़ाहरा। पीर दस्तगीर दए सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी धारा। साची धार हरि निरँकार, आपणी आप उपाईआ। सतिजुग साचा कर वरतार, त्रेते राम रूप वटाईआ। द्वापर कृष्ना मीत मुरार, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। कलिजुग कूड़ा धूंआँधार, ईसा मूसा काला सूसा तन छुहाईआ। संग महंमद चार यार, अल्ला राणी वज्जी वधाईआ। नानक निरगुण नाम सितार, सतिनाम हथ्थ उठाईआ। चार वरनां कर प्यार, एका मति गया समझाईआ। एका शब्द गुर अवतार, पंज तत्त ना कोए मनाईआ। जिस घर अंदर जिस तन मन्दिर वसे आप निरँकार, सो मन्दिर सोभा पाईआ। अठ्ठे पहर दीप उज्यार, तेल बाती ना कोए रखाईआ। दिवस रैण सच्ची धुन्कार, अनहद ताल वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द कटार इक्क उपाईआ। शब्द कटार तिक्खी धार, हरि साचा सच उपजांयदा। गोबिन्द सुत कर प्यार, शाह अस्वार हथ्थ फड़ांयदा। आपे रक्खीं तिक्खी धार, दोवें मुख रखांयदा। गुरमुखां करे पार किनार, मनमुखां शौह दरया रुढ़ांयदा। धरनी धरत धवल सुण पुकार, आप आपणी कल वरतांयदा। राज राजानां कर ख्वार, शाह सुल्तानां वेख वखांयदा। नौजवाना हो त्यार, बिरध बाला आप तरांयदा। तीर निराला मारे बाण, अणियाला आप चलांयदा। सतिजुग तेरा सच निशान, साचे हथ्थ उठांयदा। लोआं पुरीआं पाए आण, ब्रह्मा विष्न शिव समझांयदा। साचा बाडी प्रगट होए घर तरखाण, लख चुरासी मोछे आपे पांयदा। कलिजुग उपाए सच मकान, कलिजुग झूठा ढेर आपे ढांयदा। नाम उडाए इक्क बिबान, निरगुण आपणा आप वखांयदा। साची सखीआं मिले साचा काहन, घर साचे मंडल रास रचांयदा। साची सीता मिले एका राम, सीता सुरती आप प्रनांयदा। नानक गोबिन्द कर प्रनाम, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। पुरख अबिनाशी जाणी जाण, जुग जुग

आपणा खेल खिलांयदा। निमाण निमाणयां देवे माण, ताण निताणयां आप हो जांयदा। गऊ ग़रीब कर पछाण, हँकारीआं हँकारी गढ़ तुड़ांयदा। लख चुरासी पुण छाण, गुरमुख विरले मात जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अलक्ख निरँजण इक्क अलक्ख, आपणी अलख जगांयदा। सच अलख बोल जैकारा, हरि शब्दी डंक वजाया। निरगुण सरगुण दए हुलारा, सोया कोई रहिण ना पाया। लख चुरासी तेरा वेख मुनारा, प्रभ साचे डंक वजाया। करे खेल घड़न भन्नणहारा, समरथ पुरख वड वड्याआ। आपणे हथ्थ उठाया साचा आरा, दो जहाना रिहा फिराया। कलिजुग कूड़ा पार किनारा, मूर्ख मूढ़ा रहिण ना पाया। जूठा झूठा ना कोई सहारा, खाली ठूठा सर्ब कराया। विभचार ना कोई नारा, सच शंगारा तन कराया। सृष्ट सबाई बोले इक्क जैकारा, वाह वाह गुरू फतिह गजाया। सति नाम बणे वणजारा, गुर नानक तोला तोला तेरा तेरां तोल तुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, जन भगतां देवे सच सलाह, शब्द सरूपी बण मलाह, एका बेड़े दए चढ़ाया। साचा बेड़ा हरि निरँकार, जुग जुग आप चलांयदा। लोकमात कर त्यार, हरिजन साचे आप वखांयदा। जिस जन देवे नाम भण्डार, भगतन भगती साची लांयदा। लेखा मंगे अपर अपार, चवी हज़ार वेख वखांयदा। साडे तिन्न करोड़ दए अधार, बहत्तर नाड़ी मेल मिलांयदा। तिन्न सौ सठ्ठ हाडी इक्क सितार, तन मन्दिर आप वजांयदा। खेले खेल गुप्त ज़ाहर, ज़ाहरा ज़हूर नाउँ धरांयदा। हरिजन साचे कर प्यार, दर घर साचे मेल मिलांयदा। नाता तोड़े पंचम धाड़, पंचम नाता जोड़ जुड़ांयदा। ख़ड़ग खण्डा तेज कटार, सतिगुर साचा हथ्थ उठांयदा। जेरज अंडा पार किनार, ब्रह्मण्डां चरनां हेठ दबांयदा। पावे वण्डां हरि गिरधार, कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा। भेख पखण्डा करे ख्वार, माया ममता मोह चुकांयदा। निरगुण सरगुण भरे भण्डार, दाता दानी आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा कर पसारा, निरगुण सरगुण मेला विच संसारा, भगत भगवन्त हरि सन्त आदि अन्त जुगा जुगन्त आपणा मेल मिलांयदा। मेलणहारा हरि गोपाल, गुरमुख सज्जण मेल मिलाईआ। आप उपाए आपणे लाल, मानक मोती हीरे रत्न जहावर नाउँ धराईआ। भाग लगाए काया माटी खाल, ब्रह्म ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। बख्शे जोती कोटन भान, रवि ससि मुख शर्माईआ। दर घर साचे देवे माण, अनक सुनहरी गल लगाईआ। सचखण्ड दुआरा धुर मकान, थिर घर वासी आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मेला इक्क घर, घर साचा सोभा पाईआ। घर सुहञ्जणा सच दुआर, हरि साचे आप सुहाया। निरगुण बैठा निराकार, निरवैर आपणा नाउँ रखाया। जूनी रहित खेल अपर अपार, जागरत जोत करे रुशनाया। भगतन मेला विच संसार, आप आपणा दए कराया। कलिजुग तेरा वेख किनार,

कायनात फोल फुलाया। आलम इल्मी गए हार, जगत विद्या भेव ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बाणी धुर दी राणी, हरि साचा शब्द चलाया। हरि इच्छया गुर शब्द सच, गुरमुख सदा सालाहीआ। हरि शब्द गुर अंदर जाए रच, गुरमुख रंग रंगाईआ। हरि शब्द लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रिहा तज, गुर गुरमुख रंग चढ़ाईआ। हरि शब्द बिन सतिगुर पूरे किसे ना अंदर जाए पच, जीव जंत होए हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बैठा बेपरवाहीआ। हरि शब्द सच सुल्तान, गुर गुर नाउँ धरांयदा। हरि देवणहारा साचा दान, गुर गुर झोली पांयदा। हरि करनेहारा सद ध्यान, गुर गुर वेख वखांयदा। हरि आदि जुगादी होए निगहबान, गुर गुर संग निभांयदा। गुर गुर मेला वाली दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा शब्द धुर फ़रमान, गुर गुर आप सुणांयदा। हरि शब्द धुर फ़रमाणा, गुर सतिगुर आप जणाईआ। जन भगतां देवे ब्रह्म ज्ञान, आत्म अन्तर इक्क पढ़ाईआ। सन्तन बख्शे राग तराना, धुनी धुन उपजाईआ। गुरमुखां देवे सच निशाना, घर साचे सोभा पाईआ। गुरमुख मेला विच जहाना, लोकमात करे कुड़माईआ। पुरख अबिनाशी खेल महाना, भेव कोए ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधाना, निहकलंका नाउँ रखाईआ। पंज तत्त ना कोए वखाना, त्रैगुण तत्त ना जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन सज्जण साचे मीत, आप सुणाए सुहागी गीत, गीत गोबिन्द इक्क अल्लाईआ। गीत गोबिन्द सहिज सुख सागर, हरि शब्दी नाउँ धराया। जन भगतां निर्मल कर्म करे उजागर, आप आपणे रंग रंगाया। भाग लगाए काया गागर, काची माटी फोल फुलाया। गुरमुख विरला जगत सोदागर, साचा लाल विहाजन आया। प्रभ आपे बख्शे दे दे आदर, जो जन अग्गे झोली डाहया। करीम करता हरि हरि कादर, राम रहीम नाउँ धराया। जन भगतां देवे साची चादर, गुर तेग बहादर पड़दा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन एका सरन, एका राह वखाया। चार वरन एका रंग, छत्री ब्राह्मण शूद्र वैश आप चढ़ाईआ। चार वरन एका मंग, हरि भिच्छया नाम झोली पाईआ। चार वरन इक्क मृदंग, अनहद शब्द आप वजाईआ। चार वरन एका गंग, काया अंदर आप वहाईआ। चार वरनां इक्क पलँघ, आत्म सेज सुहाईआ। चार वरनां अंदर लँघ, निरगुण आपणा दरस वखाईआ। चार वरन निभाए साचा संग, सांझा यार वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौं खण्ड पृथ्मी एका घर, चार वरन दए वखाईआ। चार वरन इक्क दरवाजा, मन्दिर इक्क वखांयदा। चार वरन ग़रीब निवाज़ा, एका घर प्यार । चार वरन साजन साजा, घर साचे सोभा पांयदा। चार वरन एका राजा, साची

रईयत आप बणांयदा। चार वरन इक्क नवाबा, शाह सुल्तान इक्क वखांयदा। चार वरन इक्क काअबा, चार वरन सजदा इक्क करांयदा। चार वरन एका अमृत कँवल नाभा, आपणी हथ्थी आप भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, बस्त्र कटार एकँकार, आप आपणी किरपा धार, गुरमुख साचे तन पहनांयदा। तन कटारी जोत निरँकारी, हरिजन तन पहनाईआ। तिक्खी धारी हरि श्रंगारी, कन्या कुँवारी नाउँ धराईआ। लक्ख चुरासी वेखे वारो वारी, लोकमात खेल न्यारी, आपणा वर आपे ढूंडन आईआ। उच्चे टिले चढ़ चढ़ वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, डूँग्घी कंदर सुमंद सागर फोल फुलाईआ। आपणी रुत्त सुहाए आपणी वारी, आप आपणा दिवस मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर अवतारा खेल अपारा विच संसारा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा हरि हरि रामा, राम रूप हो आंयदा। कान्हा घनईआ खेल खेले शामा, साची नगरी रास रचांयदा। ईसा मूसा वजाए दमामा, सच नगारा इक्क वखांयदा। नानक निरगुण पूरा करे आपणा कामा, चार वरनां एका मन्त्र नाम पढ़ांयदा। गुर गोबिन्द होया अन्तरजामा, भेव अभेदा आप खुलांयदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक बली बलवाना, तीर निशाना इक्क वखांयदा। शब्द अगम्मी बोल तराना, अक्खर वक्खर आप पढ़ांयदा। सम्बल नगरी सच टिकाना, साचा धाम सुहांयदा। धुरदरगाही साचा राणा, आप आपणा नाउँ धरांयदा। तख्तों लाहे शाह सुल्तानां सीस ताज ना कोए टिकांयदा। बीस इकीसा वरते आपणा भाणा, जगत जगदीसा वेख वखांयदा। छत्र सीस हरि इक्क झुलाणा, नौं खण्ड हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरि भगतन साचे लए वर, आप आपणा खोल्ह दर, दर दरवाजा ग़रीब निवाज़ा, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी, एकँकारा खेल अपारा, निरगुण मेला निरगण धारा, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन मिल्या पारब्रह्म, लोकमात वज्जी वधाईआ। नाता तुट्टा पंज तत्त तन, हरि शब्द होई कुड़माईआ। आपणा बेड़ा गया बन्न्ह, सिर आपणा भार उठाईआ। राह तक्कण सूरज चन्न, जिस मार्ग हरिजन जाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कहिण धन्न धन्न, सच कबीरा गया समझाईआ। पुरख अबिनाशी एका जाए मन्न, हरिभगतां आपणे विच टिकाईआ। जननी जनया साचा जन, जन जनणी लेखे लाईआ। पंज तत्त भाण्डा भन्न, निरगुण जोती जोत मिलाईआ। दिस ना आए नेत्र अन्न, ज्ञान नेत्र आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला आपणे घर, घर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजना, अबिनाशी करता एकँकारा हरि निरँकारा, बैठा आप जगाईआ। साचा दीपक हरि हरि बाल, सुन्न अगम्मी राह तकांयदा। सभ आपणे आप भाल, आपे आपणा मेल

मिलांयदा। नाता तोड़ जगत जंजाल, काल दयाल दया कमांयदा। इक्क वखाए बेहंगम चाल, साचे पौड़े आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, ब्राह्मण गौड़े आपणे पौड़े वेख वखांयदा। आपणा पौड़ा हरि हरि मीत, आप आपे वखाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, जो जन रसना हरि हरि हरि गुण गाईआ। हरी हरि ठंडा सीत, सांतक सति सति वरताईआ। रल मिल सखिओ गाओ गोबिन्द दे गीत, गुर गोबिन्द मुख सलाहीआ। करे कराए पतित पुनीत, पतित पावन आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन साचा वेख्या, गुर सतिगुर दीन दयाल। लोकमात कढ्ढे भरम भुलेखया, आत्म दीपक जोती एका बाल। किसे हथ्थ ना आए मुला शेख्या, पंडत पांधे रहे भाल। जिस मस्तक धुर धुर लेखया, तिस मिल्या लाल गोपाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण सरगुण बणे दलाल। सरगुण विचोला निरगुण रूप, नर नरायण अख्वांयदा। साचा तोला तोलणहारा जूठ झूठ, नाम वट्टा एका पांयदा। फिरे दरोही चारे कूट, महिबान बीदो भेव ना आंयदा। जन भगतां उप्पर जाए तुठ्ठ, अमृत घुट्ट जाम प्यांअदा। आवण जावण लख चुरासी जाए छुट्ट, राए धर्म फंद कटांयदा। हरिभगत रक्खण साची ओट, बिन हरि हरि ना कोई मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपे दाता निरगुण जोत, हरिजन निरगुण जोत आप मिलांयदा। निरगुण जोत जोत अकाल, अकल कला अख्वाईआ। वसणहारा सच्ची धर्मसाल, घर साचे सच सुहाईआ। जन भगतां चले नाल नाल, जुगा जुगन्तर वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरन बहाए एका दर, ऊँच नीच राउ रंक, राज राजान शाह सुल्तान ना कोए अख्वाईआ। राज राजाना इक्क दुआरा, ऊँचां नीचां मेल मिलांयदा। चार वरन वखाए इक्क भण्डारा, अमृत जाम इक्क प्यांअदा। एका इष्ट देव हरि करतारा, शब्द गुर इक्क समझांयदा। एका पुरख एका नारा, नर नरायण नाउँ धरांयदा। हरिजन देवे सति सहारा, साचा मन्त्र इक्क दृढ़ांयदा। महिमा अकथ कथी ना जाए विच संसारा, चार वेद चारे मुख ब्रह्मा कुरलांयदा। वेद पुराणां आई हारा, शास्त्र सिमरत भेव ना पांयदा। गीता ज्ञान दए हलारा, आप आपणा खेल खिलांयदा। अञ्जील कुरान मारन नाअरा, सच महबूब दिस ना आंयदा। नानक निरगुण बोल जैकारा, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। नाम सति बण वरतारा, सृष्ट सबाई आप वरतांयदा। गुर गोबिन्द सिँघ सच सची सरकारा, वाहिगुरू फतिह इक्क गजांयदा। लक्ख चुरासी लेखा लिखे अपर अपारा, वाक भविख्त आप लिखांयदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतारा, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। शब्द खण्डा हथ्थ तेज कटारा, बहत्तर धार पार करांयदा। सम्बल नगरी सच मीनारा, एकउंकारा

आसण लांयदा। पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा, सुत दुलारा हरि शब्दी शब्द उपजांयदा। नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां वेखे इक्क अखाड़ा, एका बंक सुहांयदा। भाग लगाए सतारां हाढ़ा, सतिजुग साचा राह चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां मंगे आपे दर, दर दरवेश नर नरेश फेरी पांयदा।

❋ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी पिण्ड कल्ला प्रीतम सिँघ दे घर ❋

गुर चरन धूढ़ चरनमत, चातृक तृखा बुझाईआ। कंचन काया अमृत देवे सिंच, रस भिन्ना इक्क वखाईआ। ना कोई जाणे वार थित, प्रभ आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। जुग जुग जन भगतां करे साचा हित, सन्त साजन लए तराईआ। दरस वखाए नित नवित, नेत्र नैण आप खुल्हाईआ। दाता दानी साचा पित, पारब्रह्म हरि अख्वाईआ। लेखे लाए बूंद रित, रत्ती रत्त वेख वखाईआ। आपे वसणहारा चित, घर मन्दिर सोभा पाईआ। हरया करे काया खेत, सच फुलवाड़ी आप महिकाईआ। रुत्त बसन्ती महीना चेत, हरिजन साचे आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन एका बूझ बुझाईआ। चरन धूढ़ गुर मिट्ठा रस, गुर गुरमुख झोली पांयदा। हिरदे अंदर आपे वस, आप आपणा रस चखांयदा। साचा मार्ग हरिजन दस्स, साचे पौड़े आप चढ़ांयदा। अगम्मी बोले हस्स हस्स, निरगुण तार सितार आप वजांयदा। बहत्तर नाड़ी तारां कस, नाम गज़ इक्क फरांयदा। तूं ही तू रही दस्स, जिस आपणी बूझ बुझांयदा। मेल मिलावा नस्स नस्स, नर नरायण आप करांयदा। आपणा तीर मारे कस, लोहार तरखान ना कोए घड़ांयदा। त्रैगुण माया ना डस्सनी सके डस्स, जगत वख ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्याला दीन दयाला आत्म मदि एका जाम गुर मन्त्र आप प्यांअदा। चरन धूढ़ साचा रंग, हरिजन साचे आप चढ़ाईआ। पुरख अगम्मा निरगुण घोड़े कस तंग, सरगुण वेखे सहिज सुभाईआ। सो पुरख निरँजन फड़या हथ्थ मृदंग, हँ ब्रह्म रिहा रंगाईआ। हरिजन अंगीकार करे लाए अंग, आपणा अंगन आप सुहाईआ। दूसर दर ना कोई मंगे मंग, सति भण्डारा आप रखाईआ। चरन दरसी कोटन गंग, हरिजन काया आप वहाईआ। आपणे मन्दिर आपे लँघ, आपणी सेजा दए सुहाईआ। हरिजन साजन तेरा रूप पलँघ, पावा चूल ना कोए रखाईआ। उप्पर बैठ सूरा सरबंग, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत जाम इक्क वखाईआ। गुर चरन धूढ़ साची वथ्थ, भगतन झोली पांयदा। पारब्रह्म पुरख समरथ, जुग जुग आपणी वण्ड वण्डांयदा। त्रैगुण माया पावे नथ्थ, सति सन्तोखी डोरी हथ्थ उठांयदा। हरिजन लहिणा देण चुकाए हथ्थो

हत्थ, पिछला मूल ना कोए रखांयदा। जगत विकारा हरि हरि मथ, साचे मार्ग आपे लांयदा। चरन प्रीती साचा हठ, दिवस रैण रखांयदा। दुरमति मैल आपे कट्ट, काया कंचन गढ़ सुहांयदा। घर विच खोल्ह साचा हट्ट, आपणा नाम वकांयदा। आपे लाहा लए खट्ट, आपणी कीमत आपे पांयदा। आपे करे खेड़ा भट्ठ, भट्ठ भठयाला आप तपांयदा। आपे अमृत देवे झट, अग्नी तत्त बुझांयदा। आपे जोती नूर लट लट, लाल गुलाला डगमगांयदा। आपे मारे साची सट्ट, अनहद एका ताल वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंग हरि सज्जण आप रंगांयदा। गुर चरन धूढ़ साची वस्त, अनमोल अनमुल्ल रखाईआ। एका रंग रंगाए कीट हस्त, ऊँच नीच भेव चुकाईआ। गुरमुखां रक्खे सदा मस्त, अलमस्त आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बन्धन दए तुड़ाईआ। गुर चरना धूढ़ी तोड़े बन्धन, बंधी बंध रहिण ना पाईआ। गुरमुख बूटा साचा चन्दन, दर घर साचे आप लगाईआ। वासना भरे परमानंद, निज आत्म आप महिकाईआ। सो पुरख सुणाए सुहागी छन्दन, हँ ब्रह्म वज्जे वधाईआ। त्रै त्रै तोड़े आपे तन्दन, आपे तुट्टी गंढु वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। चरन धूढ़ गुर वस्त अनमोल, चौदां हट्ट ना कोए वकांयदा। जुगा जुगन्तर दर दरवाज़ा आपणा खोल्ह, वणज वणजारा आप करांयदा। निरगुण सरगुण अंदर बह बह आपणा तोले तोल, तोल तराज़ू नाम कंडा इक्क रखांयदा। आपणी धारन आपे लए बोल, बोलणहारा दिस ना आंयदा। आपणी वस्त सदा रक्खे कोल, जिउँ भावे तिउँ वरतांयदा। हरिजन हिरदे अंदर जाए मौल, आप आपणा रूप धरांयदा। अमृत आत्म बख्शे साची पौल, नाम खण्डा विच फरांयदा। देवे वडियाई उप्पर धौल, जिस जन आपणा रस चखांयदा। हरिजन साजन आदि अन्त ना जाए डोल, धीरज धीर इक्क वखांयदा। गोबिन्द सूरा हाज़र हजूरा करनहारा पूरा कौल, पिछली कीती भुल्ल ना जांयदा। आपणा बदल्लया काया चोल, जोती नूर ना कोए बदलांयदा। पुरख अकाल वजाए सच्चा ढोल, बारां रासी कस वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर साचा इक्क उपजांयदा। गुर चरन धूढ़ मेल निरँकार, थिर घर साचे मेल मिलाईआ। फड़ फड़ बांहों जाए तार, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। देवे दरस अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। निरगुण जोती कर उज्यार, नर नरायण रूप वटाईआ। सगला साथी सर्ब संसार, सगला संग निभाईआ। गुरमुखां राखी करे होए पहरेदार, दिवस रैण सेव कमाईआ। अलक्खणा लाखी सच्ची सरकार, अलक्ख निरँजन आपणी अलख आप जगाईआ। मंगणहारा भगत दुआर, एका भिच्छया मंग मंगाईआ । अमृत आत्म ठंडी ठार, काया कासा आप टिकाईआ। चरन धूढ़ बख्शे जिस जन कर प्यार, जन्म जन्म दा मस्तक टिक्का काली छाही देवे लाहीआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ना कोई पुरख ना कोई नार, इक्क अकेला एकँकार, करे खेल अगम्म अपार, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसणहारा सच मकान, रक्खणहारा शब्द बबान, परखणहारा गुरमुख निधान, आप आपणा रूप वटाईआ।

❋ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी पिण्ड कल्ला हरबंस सिँघ दे घर ❋

गुर चरन दुआर ठांडा घर, सांतक सति सति वरताईआ। गुर चरन दुआरा मिले साचा वर, नाम दान झोली पाईआ। गुर चरन दुआरा चुक्के डर, भय भयानक ना कोए वखाईआ। गुर चरन दुआरा हरिजन जाए तर, सतिगुर पूरा आप तराईआ। गुर चरन दुआरा साचा सर, गुरमुख विरला तारीआ लाईआ। गुर चरन दुआरा साचा गढ़, गुरमुख विरले लए चढ़ाईआ। गुर चरन दुआरा एका अक्खर लैणा पढ़, नाता तुट्टे जगत पढ़ाईआ। गुर चरन दुआरा गुर दरसन करना अगे खड़, गुर गोबिन्द मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख सिख मति समझाईआ। गुर चरन दुआरा सचखण्ड, घर साचा आप सुहांयदा। गुर चरन दुआरा उच्च ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म प्रभ आप उपांयदा। गुर चरन दुआरा जन भगतां वण्डी वण्ड, मनमुख हिस्सा ना कोए रखांयदा। गुर चरन दुआर जगत वकारा करे खण्ड खण्ड, नाम खण्डा हथ्थ उठांयदा। गुर चरन दुआरा नाता तोड़े जेरज अंड, चारे खाणी पार करांयदा। गुर चरन दुआरा खुशी करे बन्द बन्द, जगत रोग सोग चिंता दुःख मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण लेखे लांयदा। गुर चरन दुआरा हरि हरि ओट, गुरमुख विरले मात तकाईआ। गुर चरन दुआरा कढ्ढे वासना खोट, माया ममता मोह मिटाईआ। गुर चरन दुआरा तन लगाए साची चोट, नाम नगारा इक्क वजाईआ। गुर चरन दुआरा पार कराए ओत पोत, जो जन रहे सरनाईआ। गुर चरन दुआरा निर्मल जगाए बिमल जोत, दीवा बाती आप टिकाईआ। गुर चरन दुआरा ना कोई वरन ना कोई गोत, एका रंग समाईआ। गुर चरन दुआरा खोले नेत्र सोत, सुरत शब्द मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे चाँईं चाँईंआ। गुर चरन दुआरा चार जुग हरिजन नाता, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ांयदा। जुगा जुगन्तर खेले खेल पुरख बिधाता, वडिया रिखव नाम धरांयदा। मेटणहार अन्धेरी राता, साचा हरिजन चन्द चढ़ांयदा। जन भगतां पुच्छे अन्तिम वाता, आप आपणा रूप वटांयदा। उच्चे मन्दिर बह बह मारे झाता, आपणी ताकी आप खुलांयदा। कलिजुग अन्तिम साचा साकी बणया साका, नाम प्याला इक्क प्यांअदा। जगत जणाई भगत वडियाई भविख्त वाका, अगला

पिछला लेखा लेखे लांयदा। गुर चरन गुरसिख ना होवे कदे जुदाई, जुड़या जोड़ ना कोए तुड़ांयदा। गुरसिख घर वजदी रहे वधाई, सतिगुर पूरा सगन मनांयदा। पारब्रह्म करी कुड़माई, जगत जुदाई आप चुकांयदा। वेखणहारा थाउँ थाईं, दीपां लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां लोआं पुरीआं नौं खण्ड सत्त दीप लक्ख चुरासी अंदर वड़ कोटन विच्चों गुरमुख विरला लए फड़, आप आपणी बूझ बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले गुरू गुर चेले, गुरमुख पड़दा लांहयदा।

✻ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी पिण्ड कल्ला गज्जण सिँघ दे घर ✻

गुर चरन सच ध्यान, आत्म अन्तर इक्क बुझाईआ। गुर चरन सच ज्ञान, हरि मन्त्र नाम पढ़ाईआ। गुर चरन सच मकान, घर साचा इक्क सुहाईआ। गुर चरन सच अशनान, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। गुर चरन इक्क मान, निमाण निमाणया गले लगाईआ। गुर चरन इक्क बबान, गुरमुख साचे लए चढ़ाईआ। गुर चरन पीण खाण, अन्तर आत्म तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। गुर चरन चुकाए जम की कान, लख चुरासी फंद कटाईआ। गुर चरन मेल मिलाए गुण निधान, गुण अवगुण ना वेख वखाईआ। गुर चरन देवे धुर फरमान, आप आपणा शब्द सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर चरन दुआरा एकँकारा, घर मन्दिर इक्क वड्याईआ। गुर चरन दुआरा सोभावन्त, हरि पुरख निरँजन आप सलांहयदा। मेल मिलावा साचे सन्त, गुरमति सुर मेल मिलांयदा। लेखा जाणे जीव जंत, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। एकँकारा आदि अन्त, आप आपणी कल वरतांयदा। जन वडियाई महिमा अगणत, हरिजन भेव कोए ना पांयदा। आप सुणाए सच सुहागी एका छंत, आप आपणा राग अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर चरन ध्यान सच भण्डार, सच शाह आप वरतांयदा। गुर चरन दुआरा डूँग्घा सागर, भेव कोए ना पांयदा। गुर चरन दुआरा लेखा जाणे काया गागर, पंज तत्त वेख वखांयदा। गुर चरन दुआरा नाम उजागर, राम नामा इक्क वखांयदा। गुर चरन दुआरा मिले आदर, हरिजन आपणे गले लगांयदा। गुर चरन दुआरा करीम कादर, करनी करता आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। गुर चरन दुआरा सच महल्ला, सति पुरख निरँजन आप उपाया। भगत वछल बैठा इक्क इकल्ला, अछल अछलधारी खेल खिलाया। निरगुण सरगुण अंदर मन्दिर आपे रला, घट बैठा जोत जगाया। वसया निहचल धाम अटला, अबिनाशी करता दिस ना आया। सच सुनेहड़ा एका घल्ला, गुरमुख साचे लए जगाया। सो पुरख निरँजन बोले हल्ला, हँ ब्रह्म वेख वखाया। गुरसिखां फड़ाए आपणा पल्ला, नाम पल्लू इक्क उठाया। सृष्ट सबाई

भुलाए कर कर वल छला, नेत्र नैणां दिस ना आया। गुरमुखां अमृत देवे ठांडा जला, अमृतधारी आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाया। गुर चरन दुआरा साची रास, गुर पूंजी इक्क वखाईआ। सच वस्त गुर साचे पास, सच खजाने आप टिकाईआ। पहले होवे भगतन दास, दूजे फेर दए वरताईआ। तीजे त्रैगुण माया करे नास, चौथे चौथे पद मिलाईआ। पंचम पंचम कर जोत प्रकाश, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। पावे सार पृथ्मी आकास, जल धरती फोल फुलाईआ। गुरसिखां वसे सदा पास, नेड़ दूर ना कोए वखाईआ। शब्द सरूपी हास बिलास, सति सन्तोखी भोग भोगाईआ। निज आत्म परमात्म कर कर वास, सुख सांतक सति सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर चरन दुआरा नाम भण्डारा हरि वरतारा आप आपे रिहा वरताईआ।

५० ०६ ५० ०६

❊ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी पिण्ड कल्ला तारा सिँघ दे घर ❊

गुर चरन दुआरा साचा मन्दिर, हरि हरि बंक सुहाया। हरि जू बह बह आपणे अंदर, आपणा दीपक आप जगाया। हरि हरि फड़े मन मनूआ बन्दर, नाम नामा बन्धन पाया। हरि जू हरिजन वेखे डूँग्घी कंदर, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। गुर चरन दुआरा सच मलाह, साची नईआ नाम चलाईआ। गुर चरन दुआरा गुर देवे सच सलाह, गुर गुरमुख बूझ बुझाईआ। गुर चरन दुआरा गुरसिख फड़ फड़ पाए राह, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। गुर चरन दुआरा गुर फड़ फड़ हँस बणाए काँ, एका साची नाम चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मन्दिर दए वड्याईआ। हरिजन हरिमन्दिर सोहया बंक, बंक दुआरी वेख वखांयदा। जन लेख चुकाए जिउँ जन जनक, जाणणहार भेव ना आंयदा। लेखा जाणे बार अनक, आप आपणा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम वर, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटांयदा।

❊ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी पिण्ड कल्ला साधू सिँघ दे घर ❊

हरि मन्दिर हरि सुहाया, हरि वसे गहर गम्भीर। हरि मन्दिर हरि जोत जगाया, हरि वेखे चोटी चढ़ अखीर। हरि मन्दिर हरि राग अलाया, हरि अमृत बख्शे ठंडा सीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी काली चिट्टी इक्क लकीर। निरगुण चिटी धार, सरगुण काला रंग रंगाईआ। दोहां विचोला आप निरँकार, तख्त नवासी

बेपरवाहीआ। सचखण्ड निवासी एकँकार, पुरख अबिनाशी भेव ना राईआ। सरगुण जोती कर उज्यार, आप आपणी करे रुशनाईआ। साचा मन्दिर सुहाए बंक दुआर, जिस घर बैठा बेपरवाहीआ। वेद कतेब शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी ज्ञानी ध्यानी ना पावे कोई सार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त रहे सर्ब गाईआ। साध सन्त रहे पुकार, भगत मंगण बण भिखार, गुरमुख ढहि ढहि करन निमस्कार, गुरसिख बाहां रहे हुलार, मनमुख रोवण ज़ारो ज़ार, पारब्रह्म प्रभ खेल अपार, हरिमन्दिर सोहे इक्क दुआर, सच महल्ला इक्क इकल्ला निरगुण दाता पुरख बिधाता आप आपणा रिहा सुहाईआ। हरि मन्दिर सुहाए सोभावन्त, हरि सच्चा सच्ची वड वड्याईआ। सर्ब जीआं दा एका कन्त, लक्ख चुरासी नारी नर नरायण प्रनाईआ। लेखे लाए साचा सन्त, जिस जन आपणे रंग रंगाईआ। रसना जिह्वा मणीआ मंत, अनडिठड़ा शब्द चलाईआ। दो जहान बणाए बणत, लोकमात वेख वखाईआ। पुरख अकाल महिमा अगणत, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मन्दिर खोलू सच दरवाज़ा, खेले खेल ग़रीब नवाजा, जन भगतां मारे शब्द अगम्मी वाजां, नाद अनादी इक्क वजाईआ। नाद अनाद सच्ची धुन्कार, धुन आत्मक आप रखांयदा। सगल सृष्टी सुणनेहार, सुन्न समाध समांयदा। गुरमुख सज्जण लए उभार, अंदर मन्दिर मेल मिलांयदा। घर मेला कन्त भतार, साची सखीआं वेख वखांयदा। दिवस रैण मंगलाचार, ढोला सोहला एका गांयदा। गुरमुख नारी कर श्रंगार, आसन सोलां तन श्रंगार करांयदा। नेत्र नैणा नाम कजला तिक्खी धार, दो धारा मुख भवांयदा। राह तक्के हरि सज्जण मीत मुरार, आप आपणी भुजा उठांयदा। पा गलवकड़ी मिले निरँकार, सुरत सवाणी शब्द हाणी मेल मिलांयदा। अमृत आत्म ठंडा जल पाणी देवे वार, जोत निरँजन सेवा लांयदा। धुर दी बाणी साची राणी भगत पछानी आपे गाए आपणी वार, आपणी धार आप चलांयदा। आपे उत्पत करे सर्ब संसार लख चुरासी आपे पार करांयदा। हरिजन हरिभगत गुरमुख गुरसिख मरे ना जम्मे विच संसार, मरन जीवत जीवत मरन एका रंग वखांयदा। घर मन्दिर वेखे हरी दुआर, हरि साचा आसन लांयदा। कमलापाती सांझा यार, सगला संग निभांयदा। जन भगतां बेड़ा कर जाए पार, शौह दरया ना कोए रुढ़ांयदा। हरिसंगत मेला इक्क निरँकार, नाम भोजन इक्क खवांयदा। साची पंगत सोहे दरबार, काया रंगत इक्क चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन चुकाए जगत डर, निर्भय भय आपणा इक्क वखांयदा।

❋ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी कल्ला पूरन सिँघ दे घर ❋

आत्म सेजा हरि सिँघासण, हरि मन्दिर आप सुहाया। उप्पर बैठ पुरख अबिनाशन, सचखण्ड निवासी आसण लाया। सतिगुर पूरा शाहो शबासन, शब्द सच्चा आपणा नाउँ धराया। गुरमुखां बणाए साची रासन, आप आपणी दया कमाया। घर घर करे पूरी आसन, जो जन रहे ध्यान लगाया। निरगुण बणया सरगुण दासन, रूप अनूप आप वटाया। लेखा जाणे पृथ्मी आकाशन, डुँघे सागर फोल फुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, हरि मन्दिर बैठा आपे वड़, छप्पर छन्न आपे डेरा लाया। छप्पर छन्न सुहञ्जणा, मन्दिर सोभावन्त सुहांयदा। किसे हथ्थ ना आए गोरख मछन्दरा, उच्चे टिल्ले सर्ब कुरलांयदा। जन भगतां होए सदा बख्शंदड़ा, बख्शश आपणे हथ्थ वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि रंग राता उत्तम जाता मेट मिटाए अन्धेरी राता, नाम सुणाए साची गाथा, एका अक्खर पूजा पाठा, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। सोहे बंक वज्जे मृदंग नव नव रंग, नर नरायण आप चढ़ाईआ। कोटन धारा गंग चरन दुआर रहियां मंग, खेले खेल सूरा सरबंग, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जी वधाईआ। पावे रास गोकल नंद, गोबिन्द चढ़या साचा चन्द, सोहिला गाया सुहागी छन्द, गुर मन्त्र अन्तर आत्म ब्रह्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल दीन दयाल दया सागर निर्मल कर्म उजागर, गुरमुखां आप बणाईआ। हरि मन्दिर हरि सुहञ्जणा, चार दिवार ना कोए रखांयदा। सतिगुर पूरा दर्द दुःख भय भंजना, दीनां अनाथां दर्द वण्डांयदा। एथे ओथे सगला साथी दो जहाना होए साचा सज्जणा, सगला संग निभांयदा। महल्ल अटल उच्च मिनार अन्तिम सभ ने तजणा, बिन गुरू चरन दुआर घर साचे सोभा कोई ना पांयदा। जिस जन चरन धूढ़ कराए साचा मजना, सति सरोवर आप नुहांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करते अन्तिम पड़दा कज्जणा, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर हाज़र हजूर, जन्म जन्म दे बख्शणहारा कसूर, नाद तूर अनहद अनाहत आप वजांयदा।

❋ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी दर्शन सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ❋

गृह मन्दिर हरि माणक मोती, हीरे लाल जवाहर जड़त जड़ांयदा। गृह मन्दिर हरि निरगुण जोती, नूर उजाला इक्क वखांयदा। गृह मन्दिर घर एको जोती, सचखण्ड दुआरा इक्क वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग जोबन वेख वखांयदा। गृह मन्दिर घर वसया, नर हरि साचा सुल्तान। गृह मन्दिर फिरे नस्सया, लोआं पुरीआं कर

हैरान। गृह मन्दिर मार्ग दस्सया, आप आपणी दए पछान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी आण। गृह मन्दिर हरि सुहाया, सगल मनोरथ पुन। हरिजन नेत्र दर्शन पाया, लेखा चुक्या गुण अवगुण। पुरख अबिनाश तरस कमाया, जन सज्जण लए चुण। आपणा लेखा आप समझाया, शब्द जणाई साची धुन। निज घर वासी पवण स्वासी वेख वखाया, सर्ब पुकार रिहा सुण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, लख चुरासी छान पुण। लख चुरासी छाछ वरोल, हरिजन मक्खण लए कढ्ढाईआ। गुरमुख तोले साचे तोल, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। मरन जीवन जीवन मरन, एका रंग वखांयदा। घर मन्दिर वेखे हरी दुआर, हरि साचा आसण लांयदा। कमलापाती सांझा यार, सगला संग निभांयदा। जन भगतां बेड़ा कर जाए पार, शौह दरया ना कोई रुढ़ांयदा। हरिसंगत मेला इक्क निरँकार, नाम भोजन इक्क खवांयदा। साची पंगत सोहे दर दरबार, काया रंगत इक्क चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन चुकाए जगत डर, निर्भय भय आपणा इक्क वखांयदा। घर मन्दिर हरि गोपाल, परम पुरख करतारया। हरिजन वेखे साचे लाल, सुत अगम्मी शब्द दुलारया। दो जहाना करे प्रितपाल, करता कारज आप संवारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूरो नूर डगमगा रिहा। हरि मन्दिर हरि सोहया, इक्क इकल्ला एकँकार। आदि जुगादि कदे ना सोया, आलस निन्दरा ना कोई विचार। जन भगतां अंदर भगती बीज आपे बोया, हिरदे नाम दान उरधार। हरि बिन अवर ना जाणे कोया, भेव ना पाए सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। हरि मन्दिर महल्ल अटारीआ, हरि बैठा बेपरवाह। निरगुण नूर करे उज्यारीआ, जोती जोत करे रुशना। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारीआ, सुणे सुणाए बेपरवाह। शाहो भूप सची सिक्दारीआ, निरगुण सरगुण बणे मलाह। जन भगतां देवे नाम खुमारीआ, जुग जुग भेस वटा। नौ दुआरे करे पार किनारीआ, घर दसवे मेला सहिज सुभा। सुरती शब्दी बन्ने साची धारीआ, नाम डोरी गंढु पवा। आत्म सेजा मेल मिलावा कन्त भतारीआ, नार सुहागण खुशी रही मना। पाया पुरख इक्क निरँकारीआ, निरगुण विछड़ कदे ना जा। घर मन्दिर सोहे सच दुआरीआ, हरि मन्दिर वसया एका थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्त करे कराए सच न्याँ। जुगां जुगन्तर जुग जुग खेल, जुग करता आप कराईआ। बुझाए बसन्तर जन भगतां मेल, घर मन्दिर आप कराईआ। जाणे अन्तर हरि सज्जण सहेल, सतिगुर पूरा नाउँ धराईआ। एका मन्त्र अचरज पारब्रह्म प्रभ खेल, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजन पुरख अबिनाशी दाता दानी दर्द भय भंजन हरिभगतन बेड़ा पार कराईआ।

भगतन मेला हरि भगवन्त, घर मन्दिर मेल मिलांयदा। सच दुआरे सोहन साचे सन्त, सति सतिवादी वेख वखांयदा। जागरत जोत बणाए बणत, जगत जुगत आपणे हथ्थ रखांयदा। हरिजन काया चोली चाड़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जांयदा। पारब्रह्म प्रभ महिमा अगणत, वेद कतेब भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार करांयदा। अगम्म अगम्मड़ा खेल अवल्ला, अलख अलखणा आप कराईआ। वसणहारा नेहचल धाम अटला, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकारा वेस वटाईआ। पावे सार जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ प्रभास उच्चे टिले पर्बत फोल फुलाईआ। जन भगतां अंदर आत्म अन्तर जोती शब्दी रला, निरगुण निरगुण विच समाईआ। सच सिँघासन शाहो शाबासन काया मन्दिर आपे मल्ला, आत्म सेजा सेज विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला पारब्रह्म, हरि हरि नाम करे कुड़माईआ।

✻ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी महिंदर सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ✻

गुर चरन तुट्टे हँकार, माण अभिमाण रहिण ना पाईआ। गुर चरन तन श्रंगार, शब्द सार आप कराईआ। गुर चरन भगत अधार, मानस जन्म लेखे लाईआ। गुर चरन रंग करतार, रंग रंगीला मोहण माधव आप चढ़ाईआ। गुर चरन सची सरकार, शाहो भूप एका एक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर चरन खोल्हे हरन फरन, नेत्र लोचण नैण आपणा दरस दिखाईआ। गुरचरन राग नाद संगीत, नाद अनादी आप सुणांयदा। गुर चरन साध सन्त सच प्रीत, साची नीती वेख वखांयदा। गुर चरन मानस मनुख जन्म लए जित, जगत जुगत फंद कटांयदा। गुर चरन निर्मल करे अतीत, निर्धन सरधन एका रंग रंगांयदा। गुर चरन पतित पापी करे पुनीत, पवित पवित आपणा रंग चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख गुरसिख आपणे लेखे लांयदा।

✻ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी जिंदर सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ✻

ताल सुहावा अमृत धार, अमर अमरा पद वखाईआ। कुलवन्ता कुल जाए तार, कल कलेश रहे ना राईआ। महिमा अगणत भेव न्यार, निहकलंका वड वड्याईआ। दुआर बंका वेख किवाड़, माया ममता दए मिटाईआ। हउमे हंगता गढ़ तोड़ हँकार, साची संगता लए मिलाईआ। नाम रंगण चाड़े आप निरँकार, कलीआं चोला दए बदलाईआ। ग़रीब निमाणयां कर प्यार, शाह सुल्तानां ख़ाक रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बिरध रखाईआ।

※२७ मग्घर २०१६ बिक्रमी मेघ सिँघ दे घर (प्रीतम सिँघ दे घर) पिण्ड कल्ला ※

राज जोग सच धार, हरि हरि आप चलाईआ। लोक परलोक खेल अपार, मातलोक वज्जी वधाईआ। सच सलोक सहिज धुन्कार, शब्द अनाद आप अलाईआ। अगाध बोध भेव न्यार, सन्त साध भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जुगीशर आप अख्वाईआ। जोग राज तख्त सुल्तान, हरि साचे तख्त बराजया। सति वखाए इक्क निशान, लोआं पुरीआं फिरे भाजया। ब्रह्मा विष्न शिव वेखे मार ध्यान, पुरख अबिनाशी लोकमात रचया काजया। कलिजुग अन्तिम खेल महान, माझे देस साजन साजया। झूठी मेटे आप दुकान, प्रगट होए ग़रीब निवाजया। चार वरनां देवे ज्ञान, ऊँच नीच रक्खणहारा लाजया। गुरमुख साचे सच पछाण, साचा साची लाए अवाजया। बख्शणहारा बख्शे साचा दान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख चढ़ाए नाम सच्चे जहाजया।

※ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी जगिंदर सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ※

५५ घर सज्जण शौह पाया, शहनशाह मेहरवान। आपणा सालू आप रंगाया, रंगन नाम इक्क महान। दीन दयाल दया कमाया, बाल अञ्याणे बणाए चतर सुजान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवे पीण खाण। देवणहारा हरि दातार, जीव जंत उभारीअन। घर घर मन्दिर खेल निरँकार, निरगुण जोत नूर उजआरिअन। हरिजन साचे लाए पार, मँझधार ना कोई डुबाइअन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाइअन। दर सुहावा सगला संग, निर्धन धरन धरत धवल सुहांयदा। हरिजन मेला आपे कर, वरनी बरनी लेख लिखांयदा। सति सतिवादी देवे वर, चार वरनां भय चुकांयदा। तन माला पाए नाम हरि, मन मनका आप फिरांयदा। जो जन चरन सरन सरनाई गया पड़, पढ़ लेखा मस्तक बन्ने लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप सुहाए आपणा घर, आपे बंक वखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतन भाग आपणी वण्ड वण्डांयदा। ५५

※ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी कुंदन सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ※

हरि सतिगुर सति सतिवादीआ, सति सरूप समाए। खेले खेल आदि जुगादीआ, जुगा जुगन्तर नाउँ धराए। पाए सार ब्रह्म ब्रह्मादीआ, पारब्रह्म हरि भेव ना आए। गुरमुख साजन आपे लाधिया, लक्ख चुरासी फोल वखाए। धुर दीबाण

एका वादीआ, जन भगत दुआरे दर दर फेरा पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले सहिज सुभाए। हरिजन मेलणहार हरि, हरी हरि हरि नाउँ धरांयदा। आप वखाए आपणा दर, घर साचा इक्क सुहांयदा। भिच्छया पाए नाम वर, आत्म झोली आप भरांयदा। दरस दिखाए अगे खड़, रूप अनूप आप वटांयदा। आपे लाए आपणे लड़, अंगीकार आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण सज्जण गुरमुख वेख वखांयदा।

※ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी रूढ़ सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ※

काया कप्पड़ रूप तन श्रंगार, थिर कोई रहिण ना पाईआ। मन मति बुध सुरत ना कोई विचार, सुरती सुरत भवाईआ। ज्ञान ध्यान अशनान ना पावे सार, भेव अभेद भेव छुपाईआ। जोग जप तप हठ सति होए हैरान, तीर्थ तट रहे कुरलाईआ। जीव जंत साध सन्त नट्ठ नट्ठ, आपणा पैंडा रहे मुकाईआ। नीर वरोले अठसठ, नाम मधाणा एका पाईआ। गेड़नहारा उलटी लट्ठ, चारों कुंट रिहा फिराईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, निहकलंका नाउँ धराईआ। इक्क खुलाए साचा हट्ट, चार वरनां वणज कराईआ। नाम वस्त अंदर घत, सोहँ शब्द भण्डार वरताईआ। नपत्तयां रक्खणहारा पति, पतिवन्ता साचा माहीआ। लेखा जाणे आदि अन्त, आदि अन्त इक्क रघुराईआ। जन भगतां मेला साचे कन्त, नाता तुटे जगत जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण लए उठाईआ। त्रैगुण माया जगत पसारा, पंचम बंध बंधानया। जूठ झूठ खेल न्यारा, काम क्रोध लोभ मोह पंज शैतानया। आसा तृष्ना आप श्रंगारा, हउमे हंगता कर प्रधानया। ज्ञान वैराग ना करे विचारा, ध्यानी ध्यान ना कोई लगानया। आर पार ना कोई किनारा, लेखा लेख ना कोई चुकानया। नव सत्त धूंआँधारा, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजानया। पतिपरमेशर खेल न्यारा, ईश जीव भेव चुकानया। जगत जगदीश हो उज्यारा, लाशरीक नाउँ धरानया। पुन्न सवाब ना कोई विचारा, जगत अज़ाब इक्क निशानया। खेले खेल निरगुण धारा, सरगुण साचा माण वखानया। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, सो पुरख निरँजन हँ ब्रह्म करे परवानया। हंगता देवे नाम भण्डारा, घर साचे आप वरतानया। सतिगुर साचा बोल जैकारा, करे खेल श्री भगवानया। निहकलंक नर नरायण अवतारा, गुरमुखां बेड़ा पार कराए वाली दो जहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दरगाह साची सचखण्ड दुआरे देवणहार साचा मानया।

❋ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी सुखदेव सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ❋

अलक्ख अगम्म एक एकँकार, आदि जुगादि वड्डी वडियाईआ। सति पुरख निरँजन खेल अपार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। वसणहारा सचखण्ड निवासी उच्च अटल महल्ल मुनार, थिर घर बैठा आसण लाईआ। इक्क इकल्ला खेल अपार, अकल कल आप वरताईआ। सच तख्त बैठ सच्ची सरकार, सच सुल्तान नाउँ धराईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, धुर फुरमाणा हुक्म जणाईआ। आपणे मन्दिर हो त्यार, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। साची भिख्या पावे पावणहार, आपणी झोली आप भराईआ। श्री भगवान हरि दातार, निरगुण धार निरवैर वड्डी वड्याईआ। मूर्त अकाल साची कार, अजूनी रहित रिहा कराईआ। सो पुरख निरँजन करनेहार, हरि वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार आपणी आप बंधाईआ। निरगुण दाता हरि निरँकार, अकल कला अख्वांयदा। साचे मन्दिर बैठ दुआर, बंक दुआर आप सुहांयदा। आदि निरँजन जोत उज्यार, नूर नुराना डगमगांयदा। सचखण्ड निवासी बेऐब परवरदिगार, पारब्रह्म नाउँ धरांयदा। राज जोग सच्ची सरकार, घर साचे आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला सच महल्ला, हरि साचा आप सुहांयदा। सच महल्ला निरगुण धार, प्रभ अबिनाशी आप उपाईआ। श्री भगवान मीत मुरार, घर बैठा सोभा पाईआ। करे खेल अपर अपार, अपर अपार वड्डी वड्याईआ। आपणा करे आप विहार, आपे सगन मनाईआ। आपे नारी कन्त भतार, आपे सेज हंढाईआ। सुत दलारा कर त्यार, शब्दी नाउँ धराईआ। सेवक लाए साची कार, करनी करता हुक्म सुणाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां महल्ल उसार, गगन पताला वेख वखाईआ। कर प्रकाश रवि ससि सतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आपणा अंग करया अंगीकार, विष्नूं आपणी वण्ड वण्डाईआ। ब्रह्मा कँवला करया बाहर, रूप अनूप आप दरसाईआ। संगत मेला हरि गिरधार, भोले नाथ आप उठाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, एका तत्त समाईआ। पंचम मीता हो त्यार, करे सच कुड़माईआ। एका शब्द नाद धुन्कार, धुन अनादी आप सुणाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी कर त्यार, साचा घाड़न आप घड़ाईआ। समरथ पुरख खेल अपार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आप चलाए आपणा रथ रथवाही हो त्यार, लोकमात धराईआ। धरनी धरत धवल कर अकार, जल बिम्ब आप टिकाईआ। नौं नौं वण्ड अपर अपार, सति सति खोज खुजाईआ। गावत गाए गीत आप निरँकार, निरगुण ढोला आप सुणाईआ। ब्रह्मा वेता कर उज्यार, चार वेद करे पढ़ाईआ। वण्डे वण्ड सिरजनहार, वरभण्डी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाश, लक्ख चुरासी डेरा लांयदा। मन मति बुध

कर प्रकाश, मेल मिलाए अप तेज वाए पृथ्मी अकास, तत्व तत्तां जोड़ जुड़ांयदा। जोत निरँजन कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा रिहा विनास, गगन गगनंतर आप सुहांयदा। पवण चलाए इक्क स्वास, साचे मंडल पावे रास, धुन अनहद ताल वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मेल मिलांयदा। साचा मेला हरि भगवान, निरगुण सरगुण आप मिलाईआ। आत्म ब्रह्म कर ध्यान, आपणी रचन वखाईआ। सुरती सुरत सुरत ज्ञान, सूरबीर जणाईआ। इक्क वखाए सच निशान, घर घर विच आप झुलाईआ। साचे मन्दिर बैठ मकान, दस्म दुआरी खोज खुजाईआ। आत्म सेजा कर प्रधान, बैठा नाउँ धराईआ। आदि जुगादी निगहबान, ना मरे ना जाईआ। जन भगतां करे आप पछान, आपणी बूझ आप बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन साचे तारनहारा, एका एकँकारा आप अख्वांयदा। सन्तन मेला विच संसारा, घर साचे मेल मिलांयदा। भगतन देवे सति भण्डारा, इक्क वरतारा आप अख्वांयदा। आपणा नाम बोल जैकारा, लोकमात आप सुणांयदा। मंगण ना जाए किसे दुआरा, दूसर संग ना कोए वखांयदा। जुगा जुगन्तर साची कारा, सतिगुर पूरा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेस धरांयदा। लोकमात हरि अवतरा, गुरमति सुर नाउँ धराईआ। आपणा खेल आपे करा, करनहार बेपरवाहीआ। आपे पुरख नारी नारा, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग त्रेता द्वापर लेखा आपणा गया समझाईआ। हरि लेखा बलवान, हरि हंगता आप दृढ़ांयदा। हरि सन्तन देवे ब्रह्म ज्ञान, आत्म अन्तर मेल मिलांयदा। गुरमुख बणाए चतर सुजान, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। गुरमुखां देवे इक्क ज्ञान, एका नाम जपांयदा। एका मन्दिर सच मकान, एका इष्ट वखांयदा। दाता दानी श्री भगवान, निरगुण निरगुण रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। जुग जुग खेल खिलंदड़ा, परम पुरख करतार। गुरसिख साचे मेल मिलंदड़ा, देवे दरस अगम्म अपार। नेत्र नैण इक्क खुलंदड़ा, निरगुण नूर जोत उज्यार। घर चौथे मेल मिलंदड़ा, मेला कन्त भतार। पंचम राग इक्क सुनंदड़ा, आपे गाए गावणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग करे कराए आपणी कार। करन करावनहार हरि मेहरवान, परम पुरख अख्वाया। गुर सतिगुर देवे साचा दान, सच भण्डारा आप वरताया। भगतन भगती इक्क ज्ञान, एका राह वखाया। सन्तन अंदर हो प्रधान, आप आपणा पड़दा लाहया। गुरमुख मेला दो जहान, घर घर विच लए मिलाया। गुरमुख साचा चतर सुजान, गुर शब्दी जोड़ जुड़ाया। जुगा जुगन्तर खेल महान, पुरख अबिनाशी खेल खिलाया। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंका नाउँ रखाया। नौं खण्ड पृथ्मी देवे इक्क ज्ञान, चार वरन एका मार्ग लाया। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर खुलाया। पुरख अबिनाशी ठांडा सीता, सति सति वड्डी वड्याईआ। गुर सतिगुर आपणे जेहा कीता, लोकमात वज्जी वधाईआ। भगतन मेला पतित पुनीता, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। सन्तन वखाए साची रीता, आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। गुरमुखां रंग लाए हस्त कीटा, ऊँच नीच ना कोई जणाईआ। गुरमुख वेखे धाम अनडीठा, घर मन्दिर रिहा सुहाईआ। हरिजन नाम निधाना एका पीता, भर प्याला इक्क प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि आपणा वेस धराईआ। सो पुरख निरँजन सिरजनहारा, हरि हरि नाउँ धरांयदा। गुरू गुर गुर लए अवतारा, सतिगुर आपणा वेस वटांयदा। भगतां देवे नाम अधारा, आप आपणा रंग रंगांयदा। सन्तन मेला सच दरबारा, दर दरवाजा आप खुलांयदा। गुरमुख साजन उतरे पारा, हरि साचा पार करांयदा। गुरमुख नेत्र लोचन दरसन पायण घर सोहे बंक दुआरा, घर मन्दिर मेल मिलांयदा। हरिजन वेखे सिरजनहारा, सिर सिर रिज़क सबांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। निरगुण धार पुरख करतार, सरगुण विच टिकाईआ। सरगुण दीपक कर उज्यार, निरगुण करे रुशनाईआ। निरगुण रूप अगम्म अपार, ना मरे ना जाईआ। सरगुण साचा भर भण्डार, साची वस्त इक्क उपजाईआ। लोकमात लए अवतार, आपणा नाउँ वड्याईआ। नाउँ निरँकार बोल जैकार, साचे शब्द करे पढ़ाईआ। तुरीआ नाद इक्क सितार, हरि आपणी आप वजाईआ। आपे अंदर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेल खलाईआ। कलिजुग अन्तिम हरि सुल्ताना, सतिगुर नाउँ धरांयदा। पुरख अबिनाशी वाली दो जहाना, लोकमात फेरा पांयदा। चतुर्भुज खेल महाना, आदि शक्ति रंग रंगांयदा। इष्ट देव नमो गुर आप अखवाना, वास्तक आपणा नाउँ धरांयदा। बोध अगाध खेल महाना, शब्द अनादी नाद सितार वजांयदा। धुन अगम्मी इक्क तराना, आप आपणा आप धरांयदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधाना, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। जन भगतां बन्ने साचा गाना, नाम तन्दन हथ्थ उठांयदा। इक्क वखाए सच मकाना, घर घर विच मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, वर दाता आप हो जांयदा। गुरमुख सज्जण हरि हरि वरया, गुर सतिगुर वड वड्याईआ। हरिजन साचा घाड़न घड़या, समरथ पुरख आप घड़ाईआ। अंदर मन्दिर आपे वड़या, निरगुण बैठा आसण लाईआ। आपणे पौड़े आपे चढ़या, सुखमन बैठी मुख भवाईआ। त्रिकुटी छुट्टी टुट्टा गढ़या, घर साचे वज्जी वधाईआ। मान सरोवर अमृत भरया, कँवला मुख भवाईआ। अनहद शब्द अनादी धुन आप सुणाए आपणे घरया, ताल तलवाड़ा आप वजाईआ। निर्भय

रूप कदे ना डरया, भय भयानक होए सहाईआ। गुरमुख साजण आपे फड़या, सुरत शब्द मिलाईआ। त्रैगुण माया विच ना सड़या, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाईआ। पंज तत्त ना बणाए कोई गड़या, चार दिवार ना कोई रखाईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़या, निअक्खर नाउँ धराईआ। जन भगतां लाए साची जड़या, ना सके कोई अखड़ाईआ। गुरमुख विरले आपे खड़या, जुग जुग आपणा रूप वटाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़या, काया चोला आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग हरिभगत दए वड्याईआ। भगतन मीता हरि गोबिन्द, आप उपाए आपणी बिन्द, इक्क वखाए सेज महाना। दाता दानी गुणी गहिन्द, गुर सतिगुर नाउँ धराना। जुगा जुगन्त सदा बखशिंद, सति पुरख निरँजन वड मेहरबाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले साचे घर, घर साचा इक्क वखाना। घर सचा मेहरबान, हरि साचा आप सुहांयदा। गुरमुख साचे चतर सुजान, फड़ बाहों आप बहांयदा। एका रंग रंगाए श्री भगवान, सारंगधर भगवान बीठलो दिस किसे ना आंयदा। सर्ब जीआं दा जाणी जाण, जागरत जोत इक्क जगांयदा। आदि जुगादी नौजवान, बाल बिरध ना रूप वटांयदा। सचखण्ड वसे श्री भगवान, बैकुण्ठ निवासी आप अख्वांयदा। आपे सीता आपे राम, आपे रावण लंका गढ़ तुड़ांयदा। आपे कान्हा कृष्ना हो प्रधान, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। आपे नानक गोबिन्द खेल जहान, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। आपे चिल्ला तीर कमान, शब्द नशाना आप वखांयदा। आपे जोद्धा सूरबीर बली बलवान, वल छल धारी भेख वटांयदा। आपे बावन होए निगहबान, बल आपणे रंग रंगांयदा। आपे भगती देवे भगतन दान, आपणी इच्छया साची भिच्छया झोली पांयदा। आपे सन्तन कराए सच अशनान, आत्म सर सरोवर आप नुहांयदा। आपे गुरमुखां देवे आपणा माण, दरगाह साची धाम वखांयदा। आपे गुरमुख साचे साचा बख्शे चरन ध्यान, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। एकँकारा खेल महान, नर निरँकारा आप करांयदा। ना कोई रसना जिह्वा दिसे ज़बान, बत्ती दन्द ना कोई वखांयदा। पवण स्वासी ना कोई मसाण, अग्नी हवन ना कोए करांयदा। ना कोई पीण ना कोई खाण, आसा तृष्ना ना कोई जणांयदा। ना कोई मन्दिर मस्जिद गुरदुआर दिसे मकान, चार दीवार ना कोई रखांयदा। छप्पर छन्न ना खेल महान, इट्टां गारां ना कोई लगांयदा। थिर घर बैठ श्री भगवान, सच सिँघासण आसण लांयदा। घर विच घर कर प्रधान, सचखण्ड दुआरा नाउँ धरांयदा। निर्मल दीपक इक्क महान, आदि निरँजन आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता पुरख बिधाता जन भगतां रक्खे उत्तम ज़ाता, वरन गोत ना कोई रखांयदा। गुरमुख तेरा साचा वरन, प्रभ साचा दए वखाईआ। अबिनाशी करता साची सरन, तेरा इष्ट इक्क वखाईआ। करोड़ तेतीसा ब्रह्मा

विष्न तेरा पाणी भरन, पीसण पीस सेव कमाईआ। प्रभ नेत्र देवे हरन फरन, दोए लोचण बन्द कराईआ। तारनहारा तरनी तरन, समरथ आप अख्वाईआ। रवि ससि दिवस रैण डरन भय भै विच रिहा फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार इक्क एकँकार, आदि जुगादी लै अवतार, हरिजन साचे लए उभार, भगत सन्त हरि लाए पार, गुरमुख गुरसिख आप ल्याए चरन दुआर, मनमुखां दए सजाईआ। मनमुख निन्दक दुष्ट दुराचार, हरिजन हरि हरि आप भुलाया। एका विसरया नाम करतार, रसना जेहवा होई हलकाया। मनमति नाल रली कुड़यार, झूठे धन्दे मात लगाया। पंज तत्त विकारा करे प्यार, साचा रंग ना कोई चढ़ाया। नौ दर होए सदा ख्वार, दसवां दर ना कोई खुलाया। आसा तृष्ना रही वंगार, हउमे हंगता जोबन इक्क हंढाया। मिल्या मेल ना मीत मुरार, माया बन्धन ना कोई तुड़ाया। काया बणया गढ़ हँकार, हरि का रूप नज़र ना आया। त्रैगुण माया सड़या होया ख्वार, सांतक सति ना कोई वरताया। मूर्ख मूढ़ नार विभचार, हरि हरि कन्त ना कोई हंढाया। लक्ख चुरासी मारे मार, मारनहारा दिस ना आया। भगत वछल आप गिरधार, गुरमुख साजन लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला एका घर, घर सुहञ्जणा इक्क वखाया। घर सुहञ्जणा पुरख बिधात, एका रंग रंगाईआ। ना कोई दिवस ना कोई रात, सूरज चन्न ना कोई चढ़ाईआ। आदि जुगादी इक्क प्रभात, एका रुत्त वखाईआ। बैठा रहे इक्क इकांत, आप आपणा आसण लाईआ। खेले खेल बहु बिध भांत, वड दाता बेपरवाहीआ। ना कोई पित ना कोई मात, साक सैण ना कोई जणाईआ। आपणी रक्खे उत्तम ज़ात, ज़ात अज़ाती मेट मिटाईआ। शब्द अगम्मी साची गाथ, निरगुण सरगुण आप सुणाईआ। आपे जाणे पूजा पाठ, आपणे नाम करे पढ़ाईआ। जुग जुग पार किनारा वेखे घाट, पत्तन मल्ले सहिज सुभाईआ। कलिजुग अन्तिम कूड़ कुड़यारा मारे ठाठ, चार कुंट लहर लहराईआ। खेले खेल त्रिलोकी नाथ, चौदां लोक वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण वेस कर, हरिजन जनहरि हरि हरि रंग रंगाईआ।

❊ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी दलीप सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला अमृतसर ❊

गुर गुरमुख बख्शे चरन प्यार, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। साचा नाद नाद धुन्कार, अनहद ताल आप वजाईआ। जोत निरँजन दीप उज्यार, दीवा बाती एका एक डगमगाईआ। बूंद स्वांती ठंडी ठार, निझर झिरना कँवल झिराईआ। शब्द अगम्मी साची धार, निज आत्म आप वखाईआ। सुरत सवाणी लए उभार, त्रैगुण माया पड़दा लाहीआ। गुर गुर मीत कर

प्यार, आपणे रंग रंगाईआ। बजर कपाटी तोड़ किवाड़, घर मन्दिर दए वखाईआ। मन्दिर सोहे बंक दुआर, निरगुण दाता आप बणाईआ। साची सेजा खेल अपार, आत्म अन्तर आप वछाईआ। उप्पर बैठ मीत मुरार, गुरमुख साजण राह तकाईआ। गुर शब्द वड बलकार, खिच्ची आए वाहो दाहीआ। दोहां विचोला नर निरँकार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रूप वटाईआ। पाया वर हरि कन्त भतार, गुरमुख घर घर विच खुशी मनाईआ। सोभावन्ती होई नार, कन्त सुहागी इक्क हंढाईआ। विछड़ ना जाए विच संसार, दो जहान सगला संग रखाईआ। आदि जुगादी पुरख अबिनाशी एका गुर अवतार, जुग जुग हरिभगत हरिसन्त हरिजन गुरसिख गुरमुख साजन लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेल कर, खेले खेल बेपरवाहीआ।

६२

०६

❋ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ❋

काल दयाल पुरख करतार, महांकाल रूप वटाईआ। वसणहारा सच सच्ची धर्मसाल, घर सुहञ्जणा इक्क उपाईआ। लेखा जाणे पंज तत्त काया माटी खाल, जीआं जंतां वेख वखाईआ। गुरमुखां करे आप संभाल, मनमुखां दए सजाईआ। कलिजुग साध सन्त होए बेहाल, पिता पूत ना कोई वड्याईआ। आपणी घाल गए घाल, थक्के मांदे रोवण मारन धाईआ। कोई ना मिले सच दलाल, बेड़ा बन्ने देवे लाईआ। फल ना दिसे किसे डाल, फुल फुलवाड़ी ना कोई महिकाईआ। त्रैगुण माया ना तुट्टा जंजाल, तन पिंजर दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। नाम वणज झूठ वणजारा, कलिजुग जीव वरतांयदा। हरि बिन कोई ना देवे सच भण्डारा, साचा रंग ना कोई चढ़ांयदा। जगत तृष्ना गढ़ हँकारा, पंज तत्त विकारा विच वसांयदा। नाम रत्न अमोलक हीरा इक्क प्यारा, गुर सतिगुर आपणे हथ्थ रखांयदा। गुरमुख विरला बणे मात वणजारा, एका वणज इक्क करांयदा। खाए खट्टे विच संसारा, लहिणा देणा मूल मुकांयदा। मन मति माया ममता रही झक्ख मारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुलांयदा। भेख पखण्डी जगत साध, शब्द डोरी तन्द बंधाईआ। आपे बख्शे बख्शणहारा अपराध, पापी पतित लए तराईआ। पिता पूत लेखा जाणे वाद विवाद, पूर्ब लहिणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, अजूनी जून दए कटाईआ। जूनी छुटे नाता तुट्टे, पंज तत्त होए बन्द खुलासीआ। फड़ फड़ कुट्टे मनाए रुट्ठे, लुकया रहिण ना देवे किसे गुट्ठे, वड दाता शाहो शबाशीआ। बन्ने एका मुट्ठे पार किनारे सुट्टे, सुहाए साची रुत्ते, रंग रंगाए पृथ्मी अकासीआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल घनक पुर वासीआ।

✻ २७ मग्घर २०१६ बिक्रमी भाई नरायण सिँघ दे घर पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर ✻

गुरमुख उठे नौजवान, सतिगुर पूरा आप उठांयदा। हथ्थ फड़ाए नाम निशान, दो जहाना आप झुलांयदा। दाता दानी गुणी निधान, साची भिच्छया झोली पांयदा। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे आप जगांयदा। गुरमुख सच्चा सूरबीर, हरि साचा आप उपांयदा। एका देवे साचा तीर, रसना चिल्ला आप चढ़ांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पैडां जाए चीर, सचखण्ड दुआरा इक्क वखांयदा। आपे चोटी चाड़्हे फड़ अखीर, निरगुण आपणी दया कमांयदा। लेखा जाणे शाह हकीर, पीरन पीर भेव ना आंयदा। त्रैगुण माया कट्ट जंजीर, शब्द डोरी नाल बंधांयदा। दूई द्वैती हउमे हंगता कट्ट कट्ट पीड़, अमृत आत्म साचा जाम प्यांअदा। सीस बंधाए साचा चीर, गुर गोबिन्द लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन सोया इक्क उठांयदा। गुरमुख साचा साख्यात, हरि पुरख निरँजन आप बणांयदा। एका बख्शे साची दात, चरन प्रीती सच वखांयदा। एथे उथे पुच्छे वात, लोकमात आप वड्यांअदा। भेव ना पाए कायनात, लक्ख चुरासी मुख भवांयदा। सूरा सरबंग सगला साथ, आपणा आप रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मेला आप मिलांयदा। गुरमुख साचा उठया, हरि सज्जण आप उठाए। पुरख अबिनाशी एका तुठया, फड़ बाहों गले लगाए। अमृत देवे साचा घुट्टया, सर सरोवर इक्क वखाए। हरि का नाता कदे ना तुट्टया, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूत सपूता दए समझाए। नाता तोड़े जगत संसार, सो पुरख निरँजन दया कमांयदा। हरि पुरख निरँजन साची कार, जुग जुग आप करांयदा। एक एकँकारा खेल अपार, निरगुण धारा आप चलांयदा। पुरख अबिनाशी मीत मुरार, घर साचा बंक सुहांयदा। श्री भगवान सांझा यार, सगला संग निभांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, भेव कोए ना पांयदा। वसणहारा सचखण्ड दुआर, दर घर साचे सोभा पांयदा। इक्क इकल्ला निराकार, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। आपणी इच्छया भर भण्डार, थिर घर वासी वेस वटांयदा। आपे पुरख आपे नार, नारी कन्त रूप वटांयदा। सुत अनादी शब्द अधार, शब्दी शब्द उपजांयदा। आपे करे अगम्मी कार, आपणा अंगन आप सुहांयदा। दीपक जोती कर उज्यार, कमलापाती वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, सच दुआरा इक्क सुहांयदा। सच दुआरा हरि सुहञ्जणा, परम पुरख वड्याईआ। जोत जगाए आदि निरँजणा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। सच सिँघासन बह बह सजणा, शाहो भूप नाउँ धराईआ। ना घड़या ना भज्जणा, अबिनाशी पुरख आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताईआ। आपणी कल आपे धार, आपणी दया कमांयदा। निरगुण निरगुण कर प्यार, निरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण कन्त निरगुण नार, निरगुण संग निभांयदा। निरगुण महल्ल निरगुण अटार, निरगुण दीवा बाती आप जगांयदा। निरगुण शाह निरगुण सुल्तान, निरगुण चोबदार अख्वांयदा। निरगुण शब्द अगम्मी धार, निरगुण आपणा आप उपजांयदा। निरगुण करे साची कार, करनी करता नाउँ रखांयदा। आप आपणा कर प्यार, आप आपणी वण्ड वण्डांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रै त्रै खेल खिलांयदा। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंज तत्त मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी तन शंगार, साचा गढ़ सुहांयदा। मन मति बुध दए अधार, अन्तर आत्म बूझ बुझांयदा। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, आपणा रस वखांयदा। घर विच कर खेल अपार, साचा मन्दिर आप उपजांयदा। शब्द नाद सच्ची धुन्कार, अनहद साचा ताल वजांयदा। आपणा रूप कर प्यार, ब्रह्म ब्रह्म नाउँ धरांयदा। पवण स्वासी भर भण्डार, दिवस रैण चलांयदा। शाहो शाबाश खेल न्यार, जोत निरँजन डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, आप आपणा खेल खिलांयदा। निरगुण सरगुण साची धार, लोकमात उपजाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, आप आपणी रचन रचाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, ब्रह्मा विष्न शिव करी कुड़माईआ। साचा मीत मीत मुरार, आप आपणी खेल खिलाईआ। आपे बणे गुर अवतार, हरि सतिगुर नाउँ धराईआ। भगत वछल खेल निरँकार, हरि सन्तन मेल मिलाईआ। सतिजुग साचे पावे सार, बल बावन भेख वटाईआ। त्रेता तेरा करे अधार, रामा रावण दहिसर घाईआ। द्वापर तेरा वेख शंगार, कान्हा बंसरी इक्क वजाईआ। तोड़नहारा गढ़ हँकार, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। कलिजुग तेरा कूड़ पसार, चारों कुंट एका डंक रिहा वजाईआ। तोड़नहारा गढ़ हँकार, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। कलिजुग तेरा कूड़ पसार, चारों कुंट एका डंका रिहा वजाईआ। ईसा मूसा कर प्यार, काला सूसा इक्क वखाईआ। संग मुहम्मद चार यार, चार यारी मता पकाईआ। अल्ला राणी हो त्यार, नेत्र नैण रही मटकाईआ। चारों कुंट करे ख्वार, धीरज धीर ना कोई धराईआ। वरनां बरनां हाहाकार, साची सरन ना कोई सरनाईआ। धरनी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सन्त सज्जण होए ख्वार, घर मिले ना साचा माहीआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपणी कल आप वरताईआ। पंज तत्त कर प्यार, निरगुण जोत करी रुशनाईआ। नानक मेला विच संसार, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। शब्द अगम्मी एक

एकँकार, नाम सति करे पढ़ाईआ। चार वरन सोहण इक्क दुआर, एका सिख्या सिख समझाईआ। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोई विचार, एका रंग रंगाईआ। अंगद करया अंगीकार, आप आपणे अंग समाईआ। अमरदास दास करतार, सेवक सेवा सच कराईआ। राम दास भर भण्डार, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। अर्जन मीता खेल प्यार, बोध अगाध शब्द जणाईआ। साचा गुरू गुर कर त्यार, गुरू ग्रन्थ इक्क समझाईआ। जोती नूर हरि करतार, हरिगोबिन्द दए वड्याईआ। हरिराय मेला विच संसार, हरिकृष्ना वज्जे वधाईआ। तेग बहादर वड बलकार, नाम तेग हथ्थ उठाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे आदर आप आपणा आपे वार, आप आपणा संग निभाईआ। सुत दुलारा पुरख अकाल, एका एक एक उठाईआ। गोबिन्द सूरा साचा लाल, सिँघ रूप आप वटाईआ। नाम खण्डा तेज कटार, तन गात्रे इक्क लटकाईआ। ब्रह्मण्डां मारनहारा मार, लोकमात वेस धराईआ। जेरज अंडां पावे सार, उत्भुज सेत्ज खेल ना राईआ। राज राजानां करे ख्वार, शाह सुल्ताना ख़ाक मिलाईआ। ग़रीब निमाणे लाए पार, आप आपणी गोद उठाईआ। अमृत बख्शे ठंडी ठार, साचा खण्डा विच फिराईआ। पंचम मीता पंच प्यार, पंचम पंच करे कुड़माईआ। देवे वर सच्ची सरकार, गुरमुख साचे आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंगण नाम रंगाईआ। अमृत नाम सति भण्डारा, गुरमति सुर आप वरताया। चार वरनां वखाए इक्क दुआरा, आपे मंगण मंग मंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खिलाया। गुर गोबिन्द सिँघ सूरबीर, शस्त्रधारी वड वड्याईआ। चार वरनां पाई इक्क जंजीर, कट्टी हउमे पीड़, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे शाह फकीर, शब्द निराला फड़या तीर, तिक्खी मुखी हथ्थ उठाईआ। आपे कट्टणहारा भीड़, आपे बन्न्हे साची बीड़, आप आपणा वेस धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे भाणे आप रखाईआ। हरि भाणा बलवान, गुर सतिगुर आप समझांयदा। आपे छड्डे जगत मकान, पुरी अनन्द तजांयदा। आपे वेखे मार ध्यान, गढ़ी चमकौर आप सुहांयदा। आपे सूरा नौजवान, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपे पूत सपूता देवे दान, साची भेटा आप वखांयदा। आपे खेवट खेटा गुण निधान, गुणवन्ता खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सीस जगदीस आप वटांयदा। सीस जगदीस गुर गोबिन्द, एका रंग रंगाया। गुरमुखां मेटे सगली चिन्द, आप आपणा दरस दिखाया। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर भेव ना राया। गुरमुख बणाया आपणी बिन्द, आप आपणे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, । पंचम मेला आप करावना, पंचम वेखे थाउँ थाईंआ। साचा मार्ग साचे लावना, लोकमात करे रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी एका डंक वजावना, वाह वाह गुर वड्डी वड्याईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां

आप उठावना, सोया कोई रहिण ना पाईआ। सीस ताज आपणा फेर आप टिकावना, जो गुरमुख तेरे सीस गया टिकाईआ। साची सिक्खी सेवा लावना, लोकमात रिहा समझाईआ। इक्की सिखां नाल रलावना, चवी मग्घर वज्जी वधाईआ। पहली चेत्र प्रभ आपणे अंग लगावना, वाली हिन्द दए उठाईआ। सिँघ संगत तेरा पिछला लेखा प्रभ साचे आप मुकावना, आपणा मुक्ट आपे लए उठाईआ। अगे मार्ग साचा इक्क वखावना, पिछली मेटे लग्गी छाहीआ। साचा दामन इक्क फड़ावना, पल्लू छुट्ट कदे ना जाईआ। कलिजुग मेटे पापी रावना, गुरमुख तेरे नाम तलवार इक्क चलाईआ। आपे बणे धुरदरगाही साचा ज़ामना, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कीती भुल्ल ना जाईआ। गढ़ी चमकौर दित्ता ताज, हरि साचे सीस टिकाया। कलिजुग अन्तिम खेले खेल देस माझ, पुरख अबिनाशी वेस वटाया। निरगुण सरगुण साजन साज, वेद कतेब भेव ना आया। एकँकारे रचया आपणा काज, आपणा दिवस आप सुहाया। गुरमुखां घर घर दर दर सुत्तया मारे इक्क अवाज, गुरमुख सोए रिहा उठाया। पंचम मुखी बणया ताज, जगत दुःखी लए तजाया। उत्तम करे कुक्खी विच संसार, माता जननी जिस जन साचा जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पिछला दित्ता अग्गे लेवण आया। उठ सिख हरि आप उठाए, दूसर संग ना कोई रखाईआ। गोबिन्द हरि हरि नाउँ धराए, हरि गोबिन्द रूप समाईआ। सिँघ सिँघ हरि फेरा पाए, सिँघ सिँघ वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलाईआ। गुरमुख उठणा कलिजुग जाग, हरि सतिगुर आप जगांयदा। पुरख अबिनाशी हथ्थ पकड़े वाग, चारों कुंट आप फिरांयदा। जन्म जन्म दे धोवे दाग, पिछला कर्म चुकांयदा। जगत तृष्ना बुझे आग, दूई द्वैती फंद कटांयदा। त्रैगुण माया ना डस्से डस्सनी नाग, आसा तृष्ना विच समांयदा। इक्क उपजाए साचा राग, अंदर मन्दिर खोज खुजांयदा। वेखणहारा हरि ब्रह्माद गुरमुख काया गढ़ सुहांयदा। खेले खेल जुगादि आदि, आदि जुगादी नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा संग आप रखांयदा। गुरसिख तेरा सच विहारा, हरि पुरख निरँजन दए कराईआ। गुर गोबिन्द बणाया सच दुलारा, अन्तिम लेखा लेखे लाईआ। कलिजुग ढईआ पार किनारा, साची नईआ हरि चलाईआ। गुरमुखां वखाए इक्क किनारा, मँझधारा ना कोई रुढ़ाईआ। सरसे तेरा कर प्यारा, तेरा तेरे लए उठाईआ। खिच ल्याए चरन दुआरा, जो जन बैठे राह तकाईआ। प्रगट होया शाह अस्वारा, नीला नीली धारों पार कराईआ। सोलां कलीआं तन श्रंगारा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। पारब्रह्म प्रभ गुर करतारा, करनेहारा आप अखवाईआ। खड़ग खण्डा तेज कटारा, तिक्खी देवे धार रखाईआ। कल्गी तोड़ा सीस दस्तारा, जोती जोड़ा मेल

मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, आप आपणे रंग रंगाईआ। गुरमुख
उठे हरिजन मीत, सति पुरख निरँजन आप उठांयदा। पुरख अकाल दीन दयाल इक्क सुणाए सुहागी गीत, निष्अक्खर
वक्खर आप पढ़ांयदा। जुगा जुगन्तर साची रीत, लोकमात आप चलांयदा। करे कराए पतित पुनीत, पतित आप तरांयदा।
गुरमुख मेले ना देहुरा ना मन्दिर मसीत, दर घर साचे दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,
निहकलंक नरायण नर, आपणा नाउँ धरांयदा। निहकलंक आदि निरँजन, अबिनाशी करता वड वड्याईआ। गुरमुखां मिले
साचा सज्जन, गुरमुख साचे लए जगाईआ। चरन धूढ़ कराए एका मजन, बंक दुआरा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप
हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सिँघ सिँघ हरिसंगत संग रखाईआ। सिँघ संगत सिँघ साचा वरया,
सगला संग रखाया। काया रंगत रंग एका चढ़आ, उतर कदे ना जाया। एका अक्खर निरगुण रूप पुरख अकाल गुर गोबिन्द
पढ़या, गुरमुखां रिहा पढ़ाया। तीर कमान सच निशान हथ्थ विच फड़या, नेत्र नैणां दिस ना आया। तोड़नहारा हँकारी
गढ़या, अग्नी हवन कदे ना सड़या, जुग जुग आपणा बल रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख
६७ उठाए साचे घर, देवणहारा साचा वरया। गुरमुख उठ सच दरबार, हरि साचा तख्त सुहांयदा। जगे जोत इक्क निरँकार, ६७
०६ दूसर रूप ना कोई वखांयदा। एका गुर अवतार, एका पूजस पूज पुजांयदा। अठसठ तीर्थ ना कोई विचार, जल धारा ०६
ना कोई नुहांयदा। जंगल जूह ना वखाए कोई पहाड़, डूँघी कंदर ना आसण लांयदा। कर किरपा जाए तार, सतिगुर
पूरा सो अख्वांयदा। पिछला कर्ज़ा दए उतार, अग्गे साचे राह चलांयदा। तेरी रक्ख सीस दस्तार, आपणा वेस वटांयदा।
झूठी छाही करया खबरदार, औदां जांदा दिस ना आंयदा। जांदी वारी कर गया उधार, आपणा लेखा ना किसे समझांयदा।
जो लिख्या सो सरसे दित्ता डार, हथ्थ किसे ना आंयदा। अन्तिम कल प्रगट होवे कल कल्की अवतार, आपणी कला आप
वरतांयदा। वसे एका धाम न्यार, सम्बल नगरी नाउँ धरांयदा। जगमग जोत जगे अपार, हरि मन्दिर डेरा लांयदा। आपे
अंदर आपे बाहर, आपे गुप्त आपे ज़ाहर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सृष्ट सबाई साचा धर्म जाए हार, कुकर्मी कुकर्म
वखांयदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद मट्ठ धीआं भैणां करन वापार, साचा सर ना कोई नुहांयदा । रामदास गुर मारे मार, गुर
अर्जन मुख भवांयदा। नानक निरगुण धक्का देवे मार, आपणे अंग ना कोई लगांयदा। गोबिन्द सूरा खिच कटार, वेले
अन्तिम वेस वटांयदा। सोहँ भथ्था अपर अपार, आपणा चिल्ला तीर कमान आप बणांयदा। सर्बकला समरथ प्रगट होए वाली
दो जहान, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी खेल खिलांयदा। गुरमुख उठ साचे लाल, गुर सतिगुर आप उठाईआ।

साल अठवंजा रिहा कंगाल, प्रभ बख्शे साची शाहीआ। पहलों तोड़ जगत जंजाल, जगत तृष्ना दए मिटाईआ। साचा मार्ग आप वखाल, आपणी उंगली लए लगाईआ। गुर शब्द विचोला बण दलाल, गुर गोबिन्द नाउँ धराईआ। आप आपणे लए भाल, लक्ख चुरासी फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणा डंक रिहा वजाईआ। निहकलंक हरि वज्जया डंक, सृष्ट सबाई आप सुणांयदा। आप उठाए राउ रंक, सच नगारा इक्क वजांयदा। साधां सन्तां जीआं जंतां आत्म अन्तर कढ्ढे शंक, भरम भुलेखा सर्ब गवांयदा। गुरमुख सुहाए तेरा बंक, दर दरवेशा फेरी पांयदा। जोती जामा बार अनक, निरगुण सरगुण नाउँ धरांयदा। गुरसिख पार कराए जिउँ जनक, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा रथ चलांयदा। पहली चेत्र सम्मत सतारां, हरि साचा खेल खिलाईआ। राज जोग बणे सिक्दारा, जोग जुगीशर, भेव ना पाईआ। सीस ताज सोहे दस्तारा, पंचम मुखी मुख सलाहीआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बोल जैकारा, हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई छत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दए जगाईआ। प्रगट होए विच संसारा, आपणा पड़दा दूर कराईआ। गुरमुख साचे दए सहारा, आप आपणा बल वखाईआ। पार वखाए इक्क किनारा, अद्धविचकार ना कोई डुबाईआ। एका इक्की सची सिखी सिरजणहारा, वालों निक्की धारों तिक्खी आप बणाईआ। नौं खण्ड पृथमी आपे पेखी, मेट मिटाए मुल्ला शेखी, मुसायक पीर दस्तगीर कुतब गौंस ना कोई वखाईआ। आपे जाणे लेखा धारी केसी, मूंड मुंडाए वेख वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साचा मेला दस दस्मेशी, कलजुग दहिसर देवे घाईआ। लेखा चुक्के गणपति गणेसी, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोई मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे आप उठाईआ। गुरमुख उठ हरि उठँदड़ा, जोद्धा सूर हरि बलवान। घर साचा इक्क वखँदड़ा, दीपक जोत जगे महान। शब्द राग इक्क सुनँदड़ा, वेद कतेब भेव ना पाण। दरगाह साची धाम वखँदड़ा, धर्म झुलाए सच निशान। हरि निशाना ना कोई मेट मिटँदड़ा, लेखा जाणे ज़िमी अस्मान। गगन पताला खोज खुजँदड़ा, आपे होए निगहबान। ब्रह्मण्डा खण्डां वेस वटँदड़ा, निरगुण रूप श्री भगवान। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहँदड़ा, सचखण्ड वासी राज राजान। साचा अदल आप कमँदड़ा, देवणहारा धुर फुरमाण। शब्द सुनेहड़ा आप घलँदड़ा, सो पुरख निरँजन हो मेहरवान। राम नाम आप अख्वँदड़ा, आपे बणया कृष्न काहन। ईसा मूसा आपे रंग रगँदड़ा, आपे संग मुहम्मद चार यार करे पछाण। आपे नानक निरगुण नाम सति जपँदड़ा, लोकमात हो प्रधान। आपे गुरू ग्रन्थ गुर इक्क अख्वँदड़ा, धुरदरगाही सच निशान। आपे गोबिन्द गुर खण्डा हथ्थ चमकँदड़ा

आपे खिच्चे बाहर म्यान। सिँघ रूप आप वटँदड़ा, जोद्धा सूर बली बलवाना। साचे लेख आप लिखँदड़ा, ना कोई मेटे मेट मिटान। कलिजुग तेरा अन्त भगवन्त वेख वखँदड़ा, निहकलंक गुण निधान। मात पित ना कोई अख्वँदड़ा, जोती नूर श्री भगवान। सम्बल नगरी धाम सुहँदड़ा, साढे तिन्न हथ्थ इक्क मकान। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा आप अख्वँदड़ा, वेद व्यासा करे ध्यान। चारे वेदां पन्ध मुकँदड़ा, पुराण अठारां करे पछान। शास्त्र सिमरत भेव चुकँदड़ा, गीता वेखे गुण निधान। अञ्जील कुरानां पार करँदड़ा, दाता दानी वड्ड मेहरबान। खाणी बाणी मेल मिलँदड़ा, निरगुण सरगुण विच जहान। गुर गोबिन्द साचा घर इक्क सुहँदड़ा, उच्च महल्ला एका एक पछान। पुरख अकाल गले लगँदड़ा, दर घर साचे मेल हरि भगवान। कलिजुग अन्तिम आपणा नाउँ धरँदड़ा, निहकलंक ना सके कोई पछान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल दो जहान। गुरसिख साचे सज्जणा, हरि साचा आप उठाईआ। हरि पड़दा तेरा कज्जणा, तेरी दुरमति मैल धुआईआ। जो घड़या सो भज्जना, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काली मेटे जगत लकीर, बदलणहारा आप तकसीर, तकदीर आपणे हथ्थ रखाईआ। एका नैण नर निरँकार, आपणा आप उपाया। रसना घर घर सारे कहिण, हरि का दरस किसे ना पाया। सन्त साध माया ममता वहिंदे वहण, चप्पू चप्पू नाम ना किसे लगाया। जूठा झूठा तन पाया गहिण, सच शंगार ना कोई कराया। आप चुकाए लहण देण, लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखाया। जन भगतां बणे साक सज्जण सैण, आप आपणा संग निभाया। गुरमुख गुर गुर घर अकठ्ठे बहण, गुर गोबिन्द एह समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए जगाया। गुरसिख गुर गुर रूप, गुर गोबिन्द दए गवाहीआ। गुरसिख मेला सति सरूप, सति सति करे कुड़माईआ। गुरमुख उप्पर जाए तुठ्ठ, गुर दाता बेपरवाहीआ। पूर्ब जन्म जो गए रुठ्ठ, कलिजुग अन्तिम लए मिलाईआ। जिस जन जाम प्याया अमृत घुट, रस आपणा विच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे आप जगाईआ। जगावणहारा आ गया, निहकलंकी जामा धार। गुरमुख साचे एह समझा गया, उठ होणा खबरदार। तेरा तेरा राह तका गया, आप आपणा पन्ध निवार। हरिसंगत कोलों मंगण आया आज्ञा, सम्मत सोलां हुंदा जाए पार। गुरमुख घर घर तेरा जगे चरागया, सृष्ट सबाई अन्ध अँध्यार। अठ्ठे पहर फिरे भागया, गुर गोबिन्द सेवादार। पंचम मीता आप आपे जागया, फेर सिखां दए हुलार। फड़ हँस बणाए कागया, माणक मोती चोग डार। मिल्या मेल धुर संजोगया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। देवे दरस हरि अमोघया, निरगुण रूप सच्ची सरकार। हुण होया हरिसंगत जोगया, दिवस रैण करे प्यार। नौं सौ

चुरानवे चौकड़ी जुग जो हरि हरि भोग भोगया, भस्मड़ होए ना उतरे पार। ना कोई हरख़ ना कोई सोगया, चिंता दुःख ना कोई विचार। हरि का भाणा चौदां लोक ना किसे रोक्या, चौंदां तबकां करे ख्वार। हरि शब्द सच सलोक्या, ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीस सुरपति राजा इंद गावण वारो वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए उठाल। गुरमुख उठया वड बलवाना, निउँ निउँ सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी तेरा खेल महाना, तेरा भेव किसे ना पाया। तेरा मन्दिर सच मकाना हरि भगवाना, हउं याचक मंगण आया। किरपा कर गुण निधाना दे दे दाना, भिछक भिच्छया झोली पाया। एथे उथे तेरा माणा तुटा अभिमाना, सर अमृत दए गवाहया। चरन धूढ़ सचा अशनाना, जोती चमके कोटन भाना, अन्ध अन्धेर दए गंवाया। साचा मेला साचे कान्हा, घर साचे वेख वखाया। तेरा मन्दिर पद निरबाना, बिन तेरे हथ्थ किसे ना आया। निरगुण मेला सच मकाना, सतिगुर नानक राह बणाया। कबीरा करे आप पछाना, आप आपणे अंग लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिखां सुण पुकार, हरि निरँकार जोती जामा भेख भेख वटाया। गुरमुख मंगे मंग, प्रभ अगे झोली डाहीआ। जग तृष्ना मेट भुक्ख नंग, आत्म तृप्त इक्क कराईआ। तेरा रहे सदा संग, विछड़ कदे ना जाईआ। तेरा गुरमुख लड़ फड़ँदड़ा कदे ना करे जंग, तेरे शब्द वड्डी वड्याईआ। तेरा नाम वज्जे मृदंग, त्रैलोक बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां रिहा समझाईआ। गुरमुख सुणना आपणा कन्न ला, हरि साचा सिख समझांयदा। हरि प्रगट होवे बेपरवाह, बेऐब आपणा नाउँ धरांयदा। सृष्ट सबाई आप बणे मलाह, गुरमुखां बेड़ा पार करा, मनमुक्ख अद्धविचकार डुबांयदा। कलिजुग अन्तिम देवण आया सच सलाह, साचे मार्ग आपे पांयदा। पकड़ उठाए आपणी हथ्थीं आपे बांह, कलिजुग दिस किसे ना आंयदा। निथावयां देवण आया सच्चा थाँ, चरन दुआरा इक्क वखांयदा। हरिभगतां बणे पिता माँ, गुरमुख बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। हरिजन सुत्ता कोई रहे ना, सतिगुर पूरा आप जगांयदा। जुग जुग भुल्ले ना पान्धी आपणा राह, आपणे मार्ग आपे आंयदा। सृष्ट सबाई थक्की मांदी दए सवा, माया पड़दा उप्पर पांयदा। सम्मत सतारां पन्थ पन्थी दए जगा, गोबिन्द कवण वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, एका रंगत रंग चलूल, नाम मजीठी भगत ललारी आप रंगांयदा।

७० ०६

✻ २८ मग्घर २०१६ बिक्रमी करतार सिँघ दे घर पिण्ड कंग ✻

आदि पुरख अबिनाश हरि भगवान, इक्क अकाल एकंकारया। सचखण्ड निवासी खेल महान, जोती जोत नूर उज्यारया।

सति सरूपी शब्द निशान, थिर घर साचे आप सुहा रिहा। खेले खेल वाली दो जहान, भेव अभेद भेव छुपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनुभव प्रकाश करा रिहा। अनुभव प्रकाश हरि भगवन्ता, एका दर करांयदा। आपे जाणे आदिन अन्ता, दिस किसे ना आंयदा। चाल निराली जुगा जुगन्ता, जुग करता आप करांयदा। आप बणाए आपणी बणता, आप आपणा रंग रंगांयदा। आपणे दर दरवेश बणे मंगता, आपणी झोली आप भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित नाउँ धरांयदा। अजूनी रहित अकाला, अकल कला अख्वाईआ। पारब्रह्म प्रभ दीन दयाला, दयानिध नाउँ धराईआ। वसणहारा सच सची धर्मसाला, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। आपे शाह आपे कंगाला, राज राजानां आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। निरगुण दाता आदि निरँजन, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आप आपणा बणे सज्जण, दूसर ना संग कोई रखाईआ। आप आपणा करे मजन, सर सरोवर इक्क उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंग रंगाईआ। एका रंग हरि करतारा, दिस किसे ना आंयदा। वसणहार नेहचल धाम उच्च महल्ल मुनारा, आप आपणा घर सुहांयदा। निरगुण दीवा बाती कर उज्यारा, सूरज चन्न ना कोई चढ़ांयदा। सच सिँघसण खेल न्यारा, पुरख अबिनाशी आसण लांयदा। घर मन्दिर सोहे इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा आप सुहांयदा। थिर घर वासी एकँकारा, आप आपणी कल वरतांयदा। आप आपणा कर पसारा, आपे वेख वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ मीत मुरारा, सगला संग आप रखांयदा। निरगुण नूर अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। निर्भय खेल करे करतारा, भउ सीस ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहारा हरि समरथ, पारब्रह्म एकंकारया। आप चलाए आपणा रथ, वड वड्डा वड सिक्दारया। आपणी महिमा जाणे अकथ, लेखा लेख ना कोई जणा रिहा। ना उपजे ना जाए ढट्ठ, जन्म मरन ना कोई वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए सच महल्ला, बैठा रहे इक्क इकल्ला, आप आपणा घर सुहा ल्या। घर सुहञ्जणा पुरख अबिनाशी, थिर घर आप सुहाया। निरगुण नूर जोत प्रकाशी, दीवा बाती ना कोई रखाया। आपणी पूरी करे आसी, आपणी इच्छया भिच्छया झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता नाउँ धराया। निरगुण दाता बेपरवाह, एका रंग समाया। वसणहारा साचे थाँ, सचखण्ड बैठा आसण लाया। करे कराए सच न्याँ, दरगाह साची धाम सुहाया। ना कोई पिता ना कोई माँ, भैण भाई ना कोई रखाया। ना कोई नगर ना ग्रां, जगत खेड़ा ना कोई वसाया। ना कोई पकड़नहारा बांह, ना मार्ग दए वखाया। ना कोई रक्खे ठंडी छाँ, सिर हथ्थ

ना किसे टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ रखाया। आपणा रक्ख नाउँ निरँकार, निरगुण आपणा वेस वटाया। आपे पुरख आपे नार, आप आपणी सेज सुहाया। आपे नारी कन्त भतार, आपे अंगीकार कराया। आपे मंगे मंग दुआर, आपे भिच्छया झोली पाया। आपे करे सच प्यार, सच वस्तू सच उपाया। सुत दुलारा कर उज्यार, हरि शब्दी नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे मंगल गाया। दर घर साचे साचा गीत, पुरख अबिनाशी आपे गाईआ। पारब्रह्म चलाई आपणी रीत, आदि जुगादि वेस वटाईआ। वसणहारा धाम अनडीठ, घर बैठा आसण लाईआ। जुगा जुगन्तर पतित पुनीत, पतित पावण नाउँ धराईआ। सखा सहेला ठंडा सीत, अग्नी तत्त ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा हरि खोल्ह, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। पुरख अगम्मड़ा आप आपणा बोले बोल, शब्दी नाउँ धरांयदा। निरगुण तोले साचा तोल, अलक्ख निरँजन खेल खिलांयदा। एका वस्त रक्खी कोल, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डा खण्डां रचन रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म प्रभ आपणा अंग कटांयदा। आपणा अंग आपे कट्ट, आपणा खेल खिलाईआ। आपणा नूर कर प्रगट, निराकार साकार रूप आप हो जाईआ। विष्नूं लेखे लिखे झट्ट, ब्रह्म दए समझाईआ। ब्रह्मा उपजाए आपणी रत, रक्त बूंद ना कोई वखाईआ। शंकर देवे साची वथ्थ, भोला नाथ अंग लगाईआ। त्रैगुण माया देवे वथ्थ, रजो तमो सतो वेस वटाईआ। पंचम जोड़े साचा तत्त, अप तेज वाए पृथमी आकाश वेख वखाईआ। नाल रलाए बुध मन मत, घर साचा बंक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण नाउँ धराईआ। निरगुण सरगुण नाउँ रक्ख, त्रैगुण वज्जे वधाईआ। पंज तत्त प्यार कर प्रतक्ख, लक्ख चुरासी रचन उपाईआ। आपणी धारा अंदर रक्ख, बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ धराईआ। जुग करता हरि करनेहारा, आपणी कल वरतांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलारा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। शब्द अनाद सची धुन्कार, धुन आत्मक आप उपजांयदा। आत्म ब्रह्म कर पसारा, पारब्रह्म प्रभ वेस वटांयदा। एकँकारा खेल अपारा, ओंकारा कर्म कमांयदा। आपे सभ तों वसया बाहरा, घट घट आपे आसण लांयदा। आपे पावे आपणी सारा, आपणा भेव आप खुलांयदा। आपे देवे नाम हुलारा, घर साचे आप झुलांयदा। आपे आपणा बण लिखारा, चारे मुख सलांहयदा। आपे वण्डण वण्ड वण्डे संसारा, नौ सत्त आपे फेरा पांयदा। आपे वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, समुंद सागर आसण लांयदा। आपे जुग जुग वेखे पार किनारा, सतिजुग साचा राह चलांयदा। निर्भय बोल इक्क जैकारा, एका नाम प्रगटांयदा। द्वापर करया खेल अपारा, मोर मुक्ट सीस

टिकांयदा। कलिजुग रूप अपर अपारा, ईसा मूसा नाल रलांयदा। वेखणहारा संग मुहम्मद चार यारा, घर साचा इक्क सुहांयदा। आदि जुगादी इक्क अवतारा, एका गुर अख्वांयदा। निरगुण सरगुण खेल अपारा, निरँकारा आप करांयदा। पंज तत्त मेला कन्त भतारा, साची नारी नाउँ धरांयदा। नानक नर हरि हो उज्यारा, दीवा बाती डगमगांयदा। सचखण्ड लोकमात इक्क दुआरा, चार वरनां इक्क समझांयदा। नाम सति भर भण्डारा, साची सिख्या सिख समझांयदा। वरनां बरनां वसया बाहरा, नेहकर्मी कर्म कमांयदा। प्रगट हो विच संसारा, साचा मार्ग आपे लांयदा। इक्क शब्द बोल जैकारा, गुरू शब्द इक्क वखांयदा। एका दूजा पार किनारा, तीजा नैण खुलांयदा। चौथे पद पद निरबाना, साचा राणा वेख वखांयदा। पंचम मेला श्री भगवाना, गुरू इष्ट इक्क जणांयदा। गुर अर्जन लेखा लेख महाना, ना कोए मेटे मेट मिटांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी सतिगुर सच्चा इक्क होए प्रधाना, पंज तत्त ना कोई उठांयदा। शब्द गुरू नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटांयदा। मरे ना जम्मे विच जहाना, मढ़ी गोर ना कोई दबांयदा। आदि जुगादि सुणाए सच तराना, हरि का नाम अल्लांयदा। जन भगतां वखाए सच मकाना, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। छे सत्त खेल निवारना, नूरो नूर डगमगांयदा। अठ्ठ नौ भेव चुकावना, दर दसवां इक्क सुहांयदा। जोद्धा सूर बली बलवाना, गुर सतिगुर नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रंग रंगांयदा। कलिजुग तेरा वेस अवल्ला, हरि पुरख निरँजन वेख वखांयदा। सो पुरख निरँजन इक्क इकल्ला, एक एकँकारा नाउँ धरांयदा। सचखण्ड निवासी वसया सच महल्ला, श्री भगवान भेव ना आंयदा। पारब्रह्म प्रभ वसणहारा जला थला, घट घट साची जोत जगांयदा। शब्द सुनेहड़ा जुग जुग घल्ला, गुर पीर साध सन्त आप उपजांयदा। जन भगतां अंदर आसण मल्ला, आत्म सेज सुहांयदा। जोती शब्दी आपे रला, निरगुण सरगुण नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर सतिगुर मात उपजांयदा। सतिगुर पूरा आप निरँकार, गुर गुर शब्द जणाईआ। गुर गुर नाम सच भण्डार, गुरमुखां दए वरताईआ। गुरमुख साजन मीत मुरार, घर साचे मेल मिलाईआ। गुरसिख सुहाए बंक दुआर, दर दुआरा इक्क वखाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, चरन प्रीती इक्क जणाईआ। दरस दिखाए अगम्म अपार, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। शब्द नाद सची धुन्कार, अनहद राग अल्लाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठार, निझर झिरना दए झिराईआ। गुरमुख विरला पीवे पीवणहार, लक्ख चुरासी मरे तिहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि श्री भगवन्त गुरमुख वेखे साचे सन्त, हरिजन लेखा जाणे आदि अन्त, भुल्ल रहे ना राईआ। आदिन अन्ता खेल महाना, गुर सतिगुर वड वड्याईआ। जन भगतां देवे नाम निधाना, निरगुण आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड निवासी

सच निशाना, जुग जुग आपणा आप चढ़ाईआ। लोआं पुरीआं इक्क तराना, एका एक सुणाईआ। अनहद नादी एका गाणा, गुरमुख काया घर वजाईआ। मन्दिर अंदर खेल महाना, सतिगुर बैठा आसण लाईआ। आपणा आप जिन पछाना, हरि मिल्या बेपरवाहीआ। कोटन कोटि प्रकाश करे भाना, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई विद्वाना, ज्ञान ध्यान रहे राह तकाईआ। बिन हरि सन्त ना मिले किसे निशाना, कोटन कोटि भुल्ले जीव पान्धी राहीआ। जिस जन आपणा आप देवे धुर फ़रमाणा, आपणी बूझ आप बुझाईआ। आप वखाए पद निरबाना, त्रैगुण आप वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्त जन भगतां होए सहाईआ। भगत सहेला हरि निरँकार, निर्भय रूप समाया। इक्क इकल्ला हो त्यार, लोकमात वेस वटाया। सज्जण सहेला खबरदार, आलस निन्दरा विच ना आया। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, थित वार ना किसे लिखाया। आपे गुरू गुर चेला, आपे निउँ निउँ सीस झुकाया। आपणा खेल पारब्रह्म प्रभ आपे खेला, वेद कतेब भेव ना राया। कलिजुग अन्तिम गुरमुखां मेल आपे मेला, मिल्या मेल विछड़ ना जाया। राए धर्म दी कट्टे जेला, लख चुरासी फंद कटाया। आपे वसे धाम नवेला, गुरसिख अवल्लड़े धाम वसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द नाद, ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा नाद वजाया। वज्जे नाद हरि सुल्तान, सतिगुर पूरा आप वजांयदा। शब्द अगम्मी इक्क धुनकान, दिस किसे ना आंयदा। किसे ना दिसे विच मकान, छप्पर छन्न ना कोई छुहांयदा। जन भगतां कर किरपा देवे आपणा दान, दाता दानी नाउँ धरांयदा। आत्म उपजाए ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म पारब्रह्म वखांयदा। एका राग सुणाए कान, आप आपणा हुक्म जणांयदा। चरन धूढ़ सच्चा अशनान, दुरमति मैल गंवांयदा। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ मुख शर्मान, जिस दर सतिगुर पूरा चरन टिकांयदा। एथे उथे दो जहान रक्खे माण, मात गर्भ फंद कटांयदा। अमृत आत्म बख्शे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत इक्क जगांयदा। जागरत जोत गुरसिख मन्दिर, काया गढ़ सुहांयदा। हरिजन मेला अंदरे अंदर, जगत नेत्र बन्द वखांयदा। बजर कपाटी तोड़े जंदर, नाम खण्डा इक्क चलांयदा। भाग लगाए अन्धेरी कंदर, जोत निरँजन डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे खोज खुजांयदा। हरिजन साचे जाणया, हरि सतिगुर जानणहार। घर आपणा आप पछाणया, आप आपणी किरपा धार। नाम वखाया वंझ मुहाणया, डूँघा सागर करया पार। मिले मेल श्री भगवानया, निर्मल जोत अगम्म अपार। आवण जावण चुक्के काणया, नाता तुट्टे जगत संसार। किसे हथ्थ ना आए राजे राणया, ग़रीब निमाणे जाए तार। वण्डे वण्ड ना सुघड़ स्याणया, भिखक भिच्छया पाए आप करतार। जोती जोत

७४
०६

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल खेलणहार। खेलणहारा दीन दयाला, दयानिध अखवाया। निरगुण चली अवल्लड़ी चाला, दिस किसे ना आया। चरन भिखारी महांकाला, आप आपणा रंग रंगाया। वेखणहारा जोत ज्वाला, आदि शक्ति पड़दा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ प्रगटाया। नाउँ रक्ख हरि निहकलंक, शब्दी डंक वजांयदा। इक्क सुहाए साचा बंक, सम्बल नगरी नाउँ उपजांयदा। लेखा जाणे राउ रंक, ऊँच नीच भेव मिटांयदा। गुरमुख उधारे जिउँ जनक, घर साचे मेल मिलांयदा। वास निवासी पुरी घनक, घनक पुर वासी खेल खिलांयदा। आवे जावे वार अनक, जन भगतां हित आप वखांयदा। फेरनहारा मन का मनक, मन मनूआ आप भवांयदा। शब्द लगाए साची तनक, नाम डोरी हथ्थ उठांयदा। गुरमुखां मेटे साची शंक, मनमुख माया भरम भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण सच्चा पातशाह, बेपरवाह आप अखवांयदा। बेपरवाह परवरदिगारा, नूरो नूर अलाहीआ। हक हकीकत पावे सारा, लाशरीक इक्क खुदाईआ। मुकामे हक बोल जैकारा, एका नाअरा दए लगाईआ। नूर अलाही मीत मुरारा, शाह सवारा ल्ए मिलाईआ। मुल्ला शेख मुसायक कुतब गौंस ना पावे कोई सारा, पीर दस्तगीर रहे राह तकाईआ। संग मुहम्मद चार यार बैठे अद्धविचकारा, चौदां तबकां कुंडा लाहीआ। अल्ला राणी निउँ निउँ करे निमस्कारा, नेत्र नीर रही वहाईआ। कलिजुग अन्तिम कूड़ पसारा, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। चार वरन ना कोई सहारा, अठारां बरन रहे कुरलाईआ। प्रगट होवे गुर गोबिन्द सिँघ बोल जैकारा, सम्मत सतारां राह तकाईआ। नौं सत्त पाए आपे सारा, नाम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। तोड़नहारा गढ़ हँकारा, किले कोट रिहा ढाईआ। गुरमुखां बणे आप वणजारा, घर घर साचा वणज कराईआ। नाम वखाए सच भण्डारा, अमृत आत्म जाम प्याईआ। एका रंगे रंग करतारा, रंगणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग हरिभगत हरिसन्त हरिजन गुरमुख गुरसिख आपणी गोद उठाईआ।

७५ ०६ ७५ ०६

✻ २८ मग्घर २०१६ बिक्रमी पिण्ड मालचक्क मास्टर कुंदन सिँघ दे घर ज़िला अमृतसर ✻

निरगुण जोत हरि निरँकार, इक्क इकल्ला एकंकारया। सति सरूपी खेल अपार, भेव कोई ना पा रिहा। सचखण्ड वसे सच दुआर, थिर घर साचा आप सुहा रिहा। शाहो भूप सचा सिक्दार, राजन राज आप अखवा रिहा। पारब्रह्म प्रभ रूप अपार, दिस किसे ना आ रिहा। करे करावे आपणी कार, करनी करता नाउँ धरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित आप अखवा रिहा। अजूनी रहित पुरख अकाला, निर्भय आपणा नाउँ रखांयदा। जुगा जुगन्तर

दीन दयाला, साची कार कमांयदा। वसणहार सच सच्ची धर्मसाला, सच घर साचे सोभा पांयदा। दास रखाए काल महांकाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। हरि नाउँ पुरख अबिनाश, ना मरे ना जाईआ। खेले खेल शाहो शाबास, अलक्ख निरँजन वड वड्याईआ। पावे सार पृथ्मी आकाश, गगण पातालां वेख वखाईआ। रवि ससि कर प्रकाश, मंडल मंडप आप सुहाईआ। ब्रह्मा शिव कर दास, सेवक साची सेव लगाईआ। पंज तत्त त्रैगुण माया रक्खे पास, आप आपणी वण्ड वण्डाईआ। निरगुण सरगुण खेल तमाश, लक्ख चुरासी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि करता आप अख्वाईआ। हरि पुरख समरथ, पारब्रह्म अख्वाया। निरगुण सरगुण चलाए रथ, लख चुरासी वेख वखाया। मन मति बुध पाए नथ्थ, आत्म ब्रह्म रंग रंगाया। घर मन्दिर खोल्ह साचा हट्ट, साचा बंक सुहाया। दीपक जोती लट लट, अज्ञान अन्धेर गंवाया। अनहद्द शब्द साची सट्ट, तन नगारे आप लगाया। आप सुहाए साची खाट, आत्म सेजा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल अकल कल धार आपणी रचन रचाया। आपणी रचना आपे रच, आपणी दया कमांयदा। आपे वरते सचो सच्च, साचा मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। आपे पंच विकारा बण बण रिहा नच्च, आपे हरि शब्द धुन उपजांयदा। आप उपजाए काया माटी कच्च, पंज तत्त भाण्डा आपे भन्न वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। निरगुण सरगुण नाउँ रक्ख, लोकमात करे रुशनाईआ। पंज तत्त हो प्रतक्ख, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। शब्द अगम्मी अंदर आप उपाए आपणा पक्ख, किशना सुकला वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी वण्ड वण्डाईआ। सतिजुग वण्ड हरि करतार, आपणी आप वण्डांयदा। बावन खेले खेल अपार, नर नरायण भेव ना आंयदा। त्रेता तेरा नूर उज्यार, आपणा आप उपांयदा। लंका तोड़ गढ़ हँकार, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। द्वापर तेरा खोल्ह किवाड़, गीता ज्ञान इक्क दृढ़ांयदा। भगत भगती कर विचार, साचा मार्ग वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलांयदा। कलिजुग खेल परवरदिगार, आपणा आप खिलाईआ। नूर अलाही एक एकँकार, जल्वा नूर डगमगाईआ। कायनात पावे सार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणी किरपा आपे धार, साची वस्त वण्ड वण्डाईआ। ईसा मूसा कर त्यार, त्रैगुण हदीसा इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका गुर इक्क अवतार, खेले खेल मुहम्मदी यार, कलमा नबी इक्क पढ़ाईआ। कलमा नबी हरि अमाम, एका एक सुणांयदा। आपे जाणे आपणा काम, दूसर संग ना कोई रखांयदा। वसणहारा काया खेड़ा नगर

ग्राम, पंज तत्त डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाअरा बेऐब परवरदिगार, मुकामे हक हो प्रतक्ख, एका एक सुणांयदा। एका नाअरा लाशरीक, आपणा आप सुणाईआ। महिबान बीदो बीखैर या अल्ला तौफीक, अज़मतो कस्मतो अजिबवा अतिलहे आपणे लड़ बंधाईआ। वसणहारा सद नजदीक, दूर नेड़ पन्ध मुकाईआ। बणनहारा सच रफीक, अहिबाब रबाब इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूरी अल्ला नाउँ धराईआ। नूरो नूर हरि उज्यार, भेव कोए ना पांयदा। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, हरि पुरख निरँजन आप करांयदा। आपे निरगुण नूर कर उज्यार, आपे सरगुण सगन मनांयदा। पंज तत्त काया कर प्यार, नानक गढ़ सुहांयदा। अंदर वड़ सच्ची सरकार, साचे तख्त आसण लांयदा। दीवा बाती इक्क उज्यार, अठ्ठे पहर डगमगांयदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, धुन अनादी आप वजांयदा। निरगुण सरगुण इक्क प्यार, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी, घर साचे डेरा लांयदा। नानक पाया हरि पुरख, भतार विछड़ कदे ना जांयदा। एका सोहे बंक दुआर, एका रूप नज़री आंयदा। दोहां विचोला आप सिरजणहार, आपणा खेल आप खिलांयदा। आपे बोल नाम जैकार, सति नाम दृढ़ांयदा। नानक निरगुण सरगुण नानक भरे भण्डार, एका वस्त टिकांयदा। लोकमात दर विचार, चार वरनां आप समझांयदा। ऊँच नीच पार किनार, ज़ात पात ना कोई रखांयदा। जो जन रसना लए उच्चार, जम का फंद कटांयदा। लक्ख चुरासी उतरे पार, साची सिख्या इक्क समझांयदा। उतर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारे कुंटां मार उडार, हिन्दू सिख एका रंग रंगांयदा। मुस्लिम इसाई हो उज्यार, एका कलमा नबी पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत डगमगांयदा। नानक निरगुण धार, लोकमात चलाईआ। अन्तिम खेल विच संसार, अचरज रिहा वखाईआ। आपणा भर भगत भण्डार, अंगद अंगीकार कराईआ। आपे ढह ढह पए दुआर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। बावन अक्खर तन श्रंगार, पैंतीस अक्खर करे पढ़ाईआ। बोध अगाधी शब्द जैकार, निरगुण आपणी बूझ बुझाईआ। गावत गावत गाए आपणी वार, साचा ढोला आपे गाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सार, बिरध अवस्था लए तराईआ। अमरदास प्रभ देवे तार, गुर अंगद अंग लगाईआ। अमृत आत्म बख्शे ठंडी ठार, साचा जल वखाईआ। आपणे रंग रंगे करतार, रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। आपणी किरपा आपे धार, राम दास दए वड्याईआ। छोटे बाले कर प्यार, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। साचा सर कर त्यार, अमृत ताल सुहाईआ। चारो कुंट खोल्ह किवाड़, चार वरनां राह तकाईआ। शब्द अगम्मी सच धुन्कार, अर्जन विच टिकाईआ। गुर अर्जन बणया हरि लिखार, गुरू ग्रन्थ इक्क वड्याईआ। सन्त भगत भगवन्त गुर एका सोहन इक्क दुआर, घर साचे मेल मिलाईआ। सृष्ट सबाई कहे पुकार, एका गुर शब्द वड्याईआ ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा रिहा समझाईआ। गुरू ग्रन्थ लोकमात धर, चार वरनां एह समझांयदा। मेल मिलाए साचे घर, जो जन ध्यान लगांयदा। दो जहानां मिले वर, पुरख अकाल मनांयदा। जो निरगुण सरगुण अक्खर ल्ए पढ़, जगत विद्या माण चुकांयदा । त्रैगुण माया ना जाए सड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आंयदा। सतिगुर पूरे लड़ ल्ए फड़, जगत विछोड़ा पन्ध कटांयदा। छेवां गुर साचे घोड़े चढ़, मीरी पीरी रूप वटांयदा। वक्ख करे सीस धड़, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। सत्तवें जोत आपे धर, हरिराय हरि रूप वटांयदा। अठ्ठवे दर आपे वड़, बाल अवस्था लेखे लांयदा। नौवें तोड़ हँकारी गढ़, गुर तेग बहादर बणया सच सौदागर, साचा वणज इक्क करांयदा। नाता तुटा पंज तत्त काया गागर, घर साचा इक्क सुहांयदा। ग़रीब निमाणयां निर्मल कर्म करे उजागर, आपणी रती रत लेखे लांयदा। दरगाह साची देवे आदर, घर साचा आप सुहांयदा। करे खेल प्रभ करता कादर, आप आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, पुरख अबिनाशी जगत मलाह, साचा मार्ग आप चलांयदा। पुरख अबिनाशी एकँकारा, अकल कला अख्वाईआ। गुर गोबिन्द उपजाया सुत दुलारा, घर साचे जन्म दवाईआ। नाम खण्डा तेज कटारा, साचे तन पहनाईआ। कल्गी तोड़ा सीस दस्तारा, वेखे शहनशाहीआ। नीला घोड़ा कर अस्वारा, लोआं पुरीआं रिहा फिराईआ। घाड़न घड़े अपर अपारा, भेव कोए ना पाईआ। आपणी रक्खी तिक्खी धारा, तिक्खी धार आप चलाईआ। आपे चढ़े उच्च पहाड़ा, हवनी हवन सुहाईआ। आपे मिले मेल हरि निरँकारा, विछड़ कदे ना जाईआ। आपे खोल्ह लोकमात दुआरा, केस गढ़ सुहाईआ। आपे बोले नाम जैकारा, आपणा खण्डा हथ्थ उठाईआ। सतारां सौ छपंजा बिक्रमी सम्मत विचारा, गुर सतिगुर दया कमाईआ। गुरसिख आए कोई दुलारा, प्रभ लेखा दए समझाईआ। दया सिँघ उठया बोल जैकारा, वाह वाह गुरू वड्डी वड्याईआ। चारे आए आपणी वारा, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। गुर सतिगुर करया खेल न्यारा, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे घर, घर साचे वज्जी वधाईआ। पंच प्यारे साची रुत्त, प्रेम रंगन इक्क रंगाईआ। आत्म अन्तर हरि हरि मति, पारब्रह्म हरि समझाईआ। बीज बीजया साचे वत, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। चरन कँवल बंधाया आप आपणा नत, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। लोकमात रखाया धीरज जत, सति सन्तोख इक्क वखाईआ। अमृत साचे बाटे घत, साचा खण्डा विच फिराईआ। पंजे बाणी कर कर पाठ, आपणी दृष्टी विच समाईआ। गुरमुख देवे सिख्या कदे ना विकणा किसे हाट, तेरी कीमत कोए ना पाईआ। तेरा चरन दुआरा तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी मुख शर्माईआ। अमृत आत्म दए झट्ट, सतिगुर पूरा हाजर हजूरा

७६

आप आपणा खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत रस देवे हस्स हस्स, घर साचे सोभा पाईआ। अमृत प्याला दीन दयाला, गुरमुखां आप प्यांअदा। आपे तोड़ जगत जंजाला, आपणे मार्ग लांयदा। साचा दस्से राह सुखाला, गुरमति इक्क समझांयदा। अन्तिम फल लग्गणा डाला, कलिजुग वेला राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। अमृत जाम प्याला पीआ, पुरख अकाल मनाया। आपे ढहि प्या सरना, अगे आपणी झोली डाहया। गुर चेला रूप आप वटा, चेला गुर आप अख्वाया। देवणहारा ठंडी छाँ, घर वेखे सहिज सभाया। पन्थ ख़ालसा ल्या सजा, चार वरनां एका रंग चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। पंज प्यारे तन शंगार, शस्त्र घोड़ा हथ्थ फड़ाईआ। गुजरी चन्द कर प्यार, आपणे रंग रंगाईआ। गुरमुखां खुशी कराए बन्द बन्द, अठ्ठे पहर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भाणा रिहा समझाईआ। हरि भाणा बलवान, गुर गोबिन्द बूझ बुझांयदा। पुरख अकाला धुर फ़रमाण, आपणा आप सुणांयदा। अनन्दपुर छड्डणा पए मकान, सगला संग ना कोई वखांयदा। कलिजुग माया झूठी दिसे रकान, माया ममता मोह मिटांयदा। राज राजान करे बेईमान, शाह सुल्तान ना कोई अख्वांयदा। गुरमुख साचे चतर सुजान, आपणा मेल मिलांयदा। माझे निवासी ना सके पछाण, मुख बेदावा हथ्थ फड़ांयदा। सतिगुर पूरा वड मेहरबान, आपणी कीती भुल्ल ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग रखांयदा। पुरी अनन्द छड्ड दुआरा, रणजीत नगारे चोट लगाईआ। गुर गोबिन्द सूरा शाह अस्वारा, माता गुजरी रिहा समझाईआ। लाल लालां कर प्यारा, एका मार्ग रिहा वखाईआ। चारों कुंट धूंआँधारा, खड़ग खण्डा रिहा चमकाईआ। सिँघ अजीत वेखे वारो वारा, अग्गे पिच्छे फेरा पाईआ। आपे आए चल किनारा, डूँघा सागर तारीआं लाईआ। वाहिगुरू फतिह बोल जैकारा, गुरमुखां रिहा समझाईआ। तिन्न सौ सठ्ठ ग्रन्थ जो रक्खया कर त्यारा, सरसा भेट चढ़ाईआ। बाई करोड़ ना कोई हुदारा, लहिणा लहणे गया चुकाईआ। गुरमुखां देवे इक्क हुलारा, आप आपणी दया कमाईआ। सत्त सौ सिख सरसे अंदर देवे पहरा, शब्द रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द वेखे थांउँ थाँईआ। गुर गोबिन्द सतिगुर गुण निधान, आपणा खेल खिलांयदा। चाली सिँघ नौजवान, अजीत जुझार नाल रलांयदा। फतहि ज़ोरावर विछड़ जाण, माता गुजरी मेल मिलांयदा। रात अन्धेरी पन्ध मकान, गढ़ी चमकौर आप सुहांयदा। आपणी खिच आप कमान, आपणा चिल्ला आप उठांयदा। मेटी जाए बेईमान, शाह अफगाना आप खपांयदा। तिन्न पहर कर जगत घमसान, आपणा वेला आप सुहांयदा। उठो सिँघो देवे धुर फुरमाण, साचा खण्डा आप चमकांयदा। आपे जूझो

विच मैदान, धरत मात वण्ड वण्डांयदा। अजीत सिँघ नौजवान, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। तेरी सिक्खी उत्तों आप आपणा करां कुरबान, तेरा सुत फेर अख्वांयदा। छोटा बाला मार ध्यान, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। वड्डे वीर मिलणा अगों आण, मैं तेरा राह तकांयदा। गुर गोबिन्द खुशी होया सच्चा सुल्तान, साचा हुक्म सुणांयदा। फड़ फड़ मारे बेईमान, मुगलां जड़ उखड़ांयदा। अध विचकार गया होए हैरान, मुख लबां नाल सुकांयदा। मंगया पाणी मुड़के आण, अगे पिता एह समझांयदा। सिँघ जुझार तेरा झुलणा मात निशान, तेरा दादा हथ्थ उठांयदा। सिँघ अजीत आए पाणी प्याण, अमृत कटोरा हथ्थ रखांयदा। खेल करी वाली दो जहान, हरख सोग ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगांयदा। दिवस सबाया खेल तमाशा, गढ़ी चमकौर आप सुहांयदा। रैण अन्धेरी पावे रासा, रवि ससि सतार आप निचांयदा। पंचम मीता दए दिलासा, गुरमुखां एह समझांयदा। गुर सतिगुर सदा वसे पासा, विछड़ कदे ना जांयदा। मेरा सिख ना होए निरासा, आस निरास विच मिलांयदा। वेखण आया जगत तमाशा, पुरख अकाल आप वखांयदा। मेरा लेख ना मिटे रती मासा, आपणी रत साचा तत्त विच रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, गढ़ी चमकौर आप समझांयदा। साची सिख्या कर विचार, गुरमुख मुख सलाहीआ। निउँ निउँ पए चरन दुआर, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तूं दाता सच्ची सरकार, सभ तेरी वड्याईआ। तूं अंदर वसें आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर खेल खिलाईआ। जा जा आपणी वेख सच्ची सरकार, जो बूटे लए लगाईआ। गढ़ी चमकौर बणी बसन्त बहार, फुल डाली रही महिकाईआ। दित्ता वर सची सरकार, सिँघ मनजीत आप समझाईआ। तेरा सीस मेरी दस्तार, साचा ताज वखाईआ। गढ़ी चमकौर होए उज्यार, राज जुगीशर वेख वखाईआ। देवे सनेहड़ा जांदी वार, तेरी कीती भुल्ल ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम कर्ज़ा दए उतार, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। छोटे बाल सुत दुलारे, हरि साचे घर बहांयदा। शाह सुल्तान करे विचारे, साची सिख्या ना कोई समझांयदा। सरहंद गढ़ी रक्खे विच मुनारे, साचे बुरज बन्द करांयदा। नीआं विच आप उसारे, अग्गे हो ना कोई छुडांयदा। उच्ची कूके धाहां मारे, इक्क नलेर मलेर हथ्थ फड़ांयदा। इक्क दूजे नालों लग्गण प्यारे, एका तोल तुलांयदा। छोटा वड्डे रिहा ललकारे, आप आपणा खेल खिलांयदा। मैं जम्मया पिच्छों पहले आई वारे, घर साचा पहलों वेख वखांयदा। दूजा बोले बोल फतिह जैकारे, मैं तेरी सेवा सेव कमांयदा। तूं छोटा बाला भुल्ल ना जाए अञ्याणे, एसे कारन अग्गे लांयदा। प्रभ अबिनाशी वरते आपणे भाणे, गुर गोबिन्द खेल खिलांयदा। माता गुजरी सुणे आपणे काने, जगत जलाद सर्ब समझांयदा।

आपे छुट्टी देह प्राणे, प्राण प्राणी मेल मिलांयदा। गुर गोबिन्द वरते आपणे भाणे, माछूवाड़े डेरा लांयदा। आपे सुत्ता दे बांह सराणे, एका पुरख अकाल ध्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आप समझांयदा। आप आपा उत्तों वार, साचा थान सुहांयदा। गुर गोबिन्द सिँघ बली बलकार, साची सेजा आसण लांयदा। सूलां सथ्थर कर प्यार, एका यार मनांयदा। नाता तुट्टा सर्ब संसार, गुरमुख साचा राह तकांयदा। अमृत घुट्ट पीता ठंडा ठार, आपणी भिच्छया मंग मंगांयदा। दए सनेहड़ा आपणी वार, पवणी पवण समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। गुर गोबिन्द देवे सच संदेश, पुरख अकाल सुणाईआ। सुत दुलारा तेरा रिहा वेख, आपणी सेजा आसण लाईआ। आपणी फुलवाड़ी आपे वेख, तूं माली हउं सेव कमाईआ। पत डाली लाए दाढ़ी केस, सीस जगदीस आप सुहाईआ। एका जोती नानक धार गुर दस दस्मेश, दर बैठा अलक्ख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, माछूवाड़ा धाम न्यारा वेखणहारा हरि करतारा, सचखण्ड बैठा वेख वखाईआ। पुरख अकाल खोल्ह दरवाजा, निरगुण आपणा राह तकांयदा। सच सुल्तान ग़रीब निवाजा, आपणा रूप वटांयदा। माछूवाड़े आया भाजा, गुर गोबिन्द गले लगांयदा। तेरा मेरा एक साजा, तेरा प्यार तेरी सितार गुरमुख साचा इक्क वजांयदा। तेरा सोहे बंक दुआर, नौ खण्ड पृथ्मी आप सुहांयदा। सत्तां दीपां तेरा जैकार, तेरा डंका इक्क वजांयदा। चार सुत जो दिते वार, चौथे जुग वेख वखांयदा। चारे कुंटां दए हुलार, दहि दिशा फेरी पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव तख्तों दए उतार, करोड़ तेतीसा रहिण ना पांयदा। करे खेल आपणी वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला, निरगुण रूपा सति सरूपा पुरख अबिनाशी घट घट वासी एकँकारा, खेल अपारा, गुर गोबिन्द दए सलाहीआ। गोबिन्द सूरा सतिगुर मीत, पुरख अकाल मनांयदा। तेरी चलाई साची रीत, तेरा रूप सर्ब दिखांयदा। सृष्ट सबाई गाए तेरा गीत, पुरख अकाल इक्क मनांयदा। एका हस्त एका कीट, ऊँच नीच एका रंग रंगांयदा। नाम प्याला दए अनडीठा, अमृत जाम साचा हथ्थ रखांयदा। पतित पापी करे पुनीत, जो जन रसना मुख लगांयदा। काया होवे ठंडी सीत, सांतक सति सति धरांयदा। साचा देहुरा मन्दिर मसीत, पुरख अकाल तेरे चरन वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धारा आप बंधांयदा। पुरख अकाल दए सलाह, गुर गोबिन्द ए समझाया। गोबिन्द बणया सच मलाह, तेरा बेड़ा हरि लए तराया। हरिजन साचा पार दए करा, जो रहे ध्यान लगाया। आपे पकड़े आपणी बांह, घर साचे मेल मिलाया। कलिजुग अन्तिम करे सच न्याँ, थान धनंतर इक्क सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुलाया। गुर गोबिन्द बोले

सच जैकार, पुरख अबिनाशी रिहा सुणाईआ । कवण रूप तेरा होए निरँकार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कवण धाम वसे न्यार, कवण बंक सुहाईआ। कवण नगर ग्राम पायण सार, कवण खेड़ा दए वड्याईआ। कवण मात पित करे प्यार, कवण कुक्ख लए लटकाईआ। कवण दिशा हो उज्यार, आप आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। गुर गोबिन्द पुरख अकाल, आपणा भेव खलांयदा। पारब्रह्म प्रभ दीन दयाल, नित नवित वेस वटांयदा। जुगां जुगन्तर अवल्लड़ी चाल, वेद कतेब ना लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी नईआ साचा ढईआ अध विचकार रखांयदा। साची नईआ गुर गोबिन्द, एका ढईआ बणत बणाईआ। गुरमुखां मेटे सगली चिन्द, जो सरसे गया रुढ़ाईआ। गढ़ी चमकौर बणाई आपणी बिन्द, आप आपणी गोद उठाईआ। चारे दुलारे गुणी गहिन्द, चारे कुंट करे रुशनाईआ। आपे तारे भव सागर सिन्ध, एका चप्पू नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दीना नाथ सगला साथ जुग करता आप अख्वाईआ। पुरख अकाल सच सुनौणी, एका शब्द अल्हांयदा। आपणी खेल आप करौणी, आपणा लेखा आप लिखांयदा। निरगुण जोती जोत जगौणी, दीपक बाती इक्क डगमगांयदा। सम्बल नगरी इक्क दसौणी, उच्च महल्ले आसण लांयदा। गुरमुखां पूरी करे भावनी, जो जन ध्यान लगांयदा। मेट मिटाए काम कामनी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आंयदा। रैण ना दिसे अन्धेरी शामनी, सतिगुर साचा चन्द चढ़ांयदा। पंच प्यारे पकड़े दामनी, पंचम पल्ला आप फड़ांयदा। दरगाह साची मिली सच्ची जामनी, शाह शहीदा नाउँ धरांयदा। पन्थ ख़ालसा तेरी पक्की रहे हाढ़ी सावनी, सतिगुर पूरा वेख वखांयदा। जो सतिगुर भुल्ले माया रुल्ले वस होए जगत तृष्ना तामनी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलांयदा। गढ़ी चमकौर ना जाए भुल्ल, हरि वड्डा वड्ड वड्याईआ। गुरसिखां पाए साचा मुल्ल, करता कीमत आप चुकाईआ । सच प्रीती जो जन गए घुल, घोली घोल घोल आप घुमाईआ। आप उठाए लाल अनमुल्ल, माणक मोती रत्न जवाहर साची जड़त जड़ाईआ। भाग लगाए साची कुल, नादी बिन्द आप तराईआ। सच दुआरा जाए खुल्ह, नानक गोबिन्द वेख वखाईआ। गुरमुख सज्जण ना जाए रुल, वेला अन्त दए गवाहीआ। गुरमुख सज्जण साचे फुल्ल, चार वरनां वेख वखाईआ। नाम तराज़ू तोले तोल, तेरां तेरां धार चलाईआ। नौ खण्ड पृथमी सिँघ शेर आप कराए घोल, करन करावनहारा दिस ना आईआ। सचखण्ड निवासी बैठा रहे अडोल, निरगुण आपणा नाउँ धराईआं। शब्द जैकारा आपे बोल, लोकमात करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत दस अवतार, कलिजुग वेखे खेल अपार इक्क इकल्ला नर निरँकार, एकँकारा

आपणा वेस वटाईआ। वेस अवल्ला इक्क अकेला, आदि पुरख करांयदा। आपे वसया सच महल्ला, घर साचे सोभा पांयदा। पावे सार जला थला, गगन पातालां वेख वखांयदा। हरिजन काया मन्दिर अंदर सच सिँघासण आपे मल्ला, आप आपणी बूझ बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जीव जंत आप भुलांयदा।

❊ २६ मग्घर २०१६ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे घर नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ❊

सो पुरख निरँजन अगम्म अथाह, भेव अभेव भेव ना आंयदा। हरि हरि बणे सच मलाह, आप आपणा खेल खिलांयदा। एकँकारा एका नाँ, अकल कलधारी आप उपजांयदा। आदि निरँजन जोत जगा, दीपक साचा आप जगांयदा। श्री भगवान खेल खिला, सचखण्ड साचे सोभा पांयदा। अबिनाशी करता नाउँ धरा, निरगुण एका वेस वटांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्ह, आप आपणी कल वरतांयदा। निरगुण निराकार साकार रूप आप वटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना आप रचांयदा। रचनहारा पुरख सुल्ताना, आपणी खेल खिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधाना, आपणी दया आप कमाईआ। घर मन्दिर सोहे इक्क मकाना, थिर घर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता आप अख्वाईआ। निरगुण दाता बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर समांयदा। करे खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। साचे मन्दिर बैठ दुआर, बंक दुआरा आप सहांयदा। पुरख अबिनाशी खेल न्यार, शाह सुल्तान आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा इक्क महल्ला, आप आपणा आपे मल्ला, सच सिँघासण आसण लांयदा। सच सिँघासण पुरख अकाल, एका एक उपजाईआ। करे खेल दीन दयाल, सो पुरख वड वड्याईआ। हरि पुरख चले अवल्लड़ी चाल, एक एकँकारा दिस ना आईआ। श्री भगवान रक्खणहारा सच सच्चा धन माल, सच खज़ाना आप भराईआ। पुरख अबिनाशी खेल महान, आदि निरँजन वेख वखाईआ। पारब्रह्म कर वेखे मार ध्यान, हरि हरी रूप वटाईआ। हरी रूप दस्स निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे सोभा पाईआ। साचा घर सच हुलारा, सति पुरख निरँजन आप दवांयदा। करे खेल अगम्म अपारा, करनी करता नाउँ धरांयदा। लेखा जाणे नारी नारा, नारी नर वेस वटांयदा। आप उपजाए सुत दुलारा, शब्दी शब्द नाउँ उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस धरांयदा। वेस अवल्ला पुरख अबिनाशा, एका एक कराईआ। आपणी जोत कर प्रकाशा, निरगुण निरगुण करे रुशनाईआ। आपे खेले खेल तमाशा, विष्न ब्रह्मा नाल रलाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म होया दासी दासा, दर घर

साचे वज्जी वधाईआ। शंकर मेला पृथ्मी आकाशा, गगन मंडल आप सुहाईआ। आपे रवि ससि पावे रासा, आप आपणी रचन रचाईआ। आपे त्रैगुण माया दए भरवासा, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। आपे पंज तत्त करे वासा, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। आपे तृष्ना आपे आसा, आपे बुध मति मन विच समाईआ। आपे पवण आप स्वासा, आपे रसना जिह्वा हिलाईआ। आपे बहत्तर नाड़ी कर प्रकाशा, अन्ध अन्धेर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण सरगुण हरि हरि धारा, भेव कोए ना पांयदा। इक्क इकल्ला कर पसारा, लक्ख चुरासी आसण लांयदा। शब्द अनादी धुन जैकारा, आप आपणा आप उपजांयदा। काया मन्दिर वेख मुनारा, सच महल्ला आप सुहांयदा। डूँघी कंदर वेखे गारा, अनुभव प्रकाश करांयदा। जोत निरँजन कर उज्यारा, दीपक साचा इक्क टिकांयदा। डूँघी भँवरी पावे सारा, सुखमन वेख वखांयदा। त्रबैणी करे पार किनारा, त्रैकूटां लेख लिखांयदा। सर सरोवर ठंडी ठारा, घर अमृत जल भरांयदा। अनहद नाद सच्ची धुन्कारा, धुन आत्मक आप अलांयदा। आपे तोड़ गढ़ हँकारा, आपणा मन्दिर आप वखांयदा। बजर कपाटी आर पारा, सच दुआरा सोभा पांयदा। आत्म सेजा मीत मुरारा, आपणा आसण आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर घर विच आप उपांयदा। घर घर विच आप सुहाना, तन मन्दिर वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी डेरा लाया, दिस किसे ना आईआ। ब्रह्म आपणी अंस बणाया, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धारा एका एकँकारा, खेले खेल अगम्म अपारा, घर विच घर कर उज्यारा, दीपक दीप करे रुशनाईआ। हरि दीपक कर उज्यार, घर मन्दिर आप टिकांयदा। निरगुण सरगुण खेल अपार, कमलापाती आप करांयदा। बूंद स्वांती ठंडी ठार, भर प्याला जाम प्यांअदा। उत्तम ज़ाती कर विचार, आप आपणी दया कमांयदा। साची गाथी शब्द धुन्कार, अगाध बोध सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया मन्दिर साचा गढ़, निरगुण अंदर बैठा वड़, सरगुण साचा खेल खिलांयदा। निरगुण अंदर हरि सुल्तान, हरि साचा तख्त सुहाईआ। आदि जुगादी निगहबान, ना मरे ना जाईआ। हरिजन मेले कर ध्यान, हरिभगत दए वड्याईआ। दाता दानी गुण निधान, साची वस्त इक्क उपाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग गुरमुख साजण लए तराईआ। गुरमुख साजण हरि हरि पाउणा, गुर मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर एका रंग रंगाउणा, एका खेल खिलांयदा। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, लोआं पुरीआं सर्ब सुणांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव हरि आप उठाउणा, सोया कोई रहिण ना पांयदा। सुरपति राजा इंद करोड़ तेतीसा नाल रलाउणा, नेत्र नैण खुलांयदा। लख चुरासी पड़दा लाहाउणा, त्रैगुण माया

८४
०६

वेख वखांयदा। पंज तत्त लेखा आप चुकाउणा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव जणांयदा। भेव अभेदा हरि निरँकार, अकल कला अख्वाईआ। भगत वछल मीत मुरार, वड वड्डी वड्याईआ। सन्त सुहेले जावे तार, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। गुरमुख साजण लाए पार, एका चप्पू नाम लगाईआ। गुरमुख बख्शे चरन प्यार, साची सिख्या सिख समझाईआ। दूई द्वैती कर ख्वार, शरअ शरीअत मेट मिटाईआ। एका रंग रंगे करतार, चार वरन करे कुड़माईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे सर्ब संसार, भरमे भुल्ली सर्ब लुकाईआ। हउमे हंगता गढ़ हँकार, चारों कुंट डेरा लाईआ। नाता तुट्टा मीत मुरार, साचा संग ना कोई रखाईआ। दर दर घर घर रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहाईआ। हँस रले कागां डार, हर हरि का नाम भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। जुग जुग खेल हरि भगवन्त, पारब्रह्म करांयदा। लेखा जाणे साध सन्त, गुर पीर अवतार वेख वखांयदा। माण रखाए जीव जंत, जिस जन आपणी दया कमांयदा। आप बणाए साची बणत, बन बनवारी नाउँ धरांयदा। आदि निरँजन महिमा अगणत, वेद कतेब ना कोई जणांयदा। आपणा लेखा आपे जाणे आदि अन्त, अन्त आदि आप हो आंयदा। सृष्ट सबाई साचा कन्त, एकँकारा नाउँ धरांयदा। आपे जाणे आपणी मणया मंत, शब्द अगम्मा आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। खेल खिलंदड़ा हरि निरँकार, एका रंग समाया। चौथे जुग पावे सार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। निहकलंका लए अवतार, साचा डंका नाम वजाया। शाह सुल्तानां करे खबरदार, सोया कोए रहिण ना पाया। नौं खण्ड पृथ्मी देवे इक्क हुलारा, सत्तां दीपां आप जगाया। जोद्धा सूरबीर बली बलकारा, बल आपणा आप वखाया। नाम खण्डा तेज कटारा, तन गात्रे आप लटकाया। लख चुरासी मारी जाए वारों वारा, मारनहारा दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलाया। खेलणहारा पुरख समरथ, शाह सुल्तान वड्डी वड्याईआ। जुग जुग महिमा अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। आप उपाए आपणी साची वथ्थ, हरि मन्त्र नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाईआ। आपणा नाउँ शब्द जैकारा, हरि पुरख निरँजन आप लगांयदा। सो पुरख निरँजन पावे सारा, एकँकारा मेल मिलांयदा। पारब्रह्म प्रभ सांझा यारा, ब्रह्म आपणा नाउँ वटांयदा। लोकमात हो उज्यारा, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। आपे जाणे आपणा आर पार किनारा, ब्रह्मा विष्न शिव गुर पीर अवतार साध सन्त भेव कोई ना पांयदा। नाम खण्डा खड़ग तेज कटारा, ब्रह्मण्डां आप वखांयदा। तेज़ प्रचण्ड तिक्खी धारा, दो जहानां

आप चमकांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर अन्तिम जुग घल्लदा रिहा अवतारा, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणी कल वरतांयदा। निहकलंक कल जामा पा, सो पुरख निरँजन खेल खिलांयदा। कलिजुग कूड़ा दए मिटा, हरि पुरख निरँजन डंक वजांयदा। माया ममता लेखा दए मुका, एकँकारा कल वरतांयदा। गढ़ हँकारी दए तुड़ा, नाम खण्डा हथ्थ चमकांयदा। गुरमुख साचे लए जगा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। स्वच्छ सरूपी दरस दिखा, नेत्र ज्ञान इक्क खुलांयदा। चौथे पद लए मिला, ब्रह्म मति इक्क वखांयदा। पंचम नद लए वजा, साचा राग सुणांयदा। आदि जुगादी नाउँ धरा, धुर धुरदी डेरा लांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा आपे पा, गगन पातालां आप सुहांयदा। रवि ससि जोत रिहा चमका, तारा मंडल लेख लिखांयदा। सचखण्ड निवासी बेपरवाह, घर साचे सोभा पांयदा। कलिजुग अन्तिम बणे मलाह, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। हरिजन वेखे थाउँ थाँ, चार वरन नौं खण्ड सत्त दीप घर घर फोल फुलांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस उडांयदा। निथवयां देवे साचा थाँ, दर घर साचा इक्क वखांयदा। सतिजुग साचा मार्ग ला, आप आपणी बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साचा हरि अख्वांयदा। सतिगुर सच्चा पातशाह, पारब्रह्म करतार। जुग जुग लोकमात चलाए आपणा राह, निरगुण सरगुण लए अवतार। भगतां फड़े हरि हरि बांह, नित नवित खेल अपार। हरि सन्तां रक्खे ठंडी छाँ, समरथ पुरख आप करतार। मनमुखां ना देवे कोई थाँ, देवे दर दुरकार। राए धर्म करे न्याँ, बैठा अद्धविचकार। चित्रगुप्त पकड़े बांह, लेखा लेख दए वखाल। लाड़ी मौत करे न्याँ, सेवा लाए काल महांकाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कलि कल्की अवतार। कलि अवतारा हरि निरँकारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, सरगुण साचा वेख वखाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, साचा नाद वजाईआ। लक्ख चुरासी वेख गुलज़ारा, चारों कुंट फेरा पाईआ। विष्नूं करया खबरदारा, देवणहारा रिजक सबाईआ। ब्रह्मा तेरा जगत अखाड़ा, ब्रह्म पड़दा देवे लाहीआ। विष्नूं तेरा धाम न्यारा, हरि साचा आप सुहाईआ। शंकर मेला अपर अपारा, दे मति रिहा समझाईआ। कलिजुग आई अन्तिम वारा, रैण अन्धेरी छाईआ। सृष्ट सबाई धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोई चढ़ाईआ। सति धर्म ना कोई प्यारा, गुरमति ना कोई रखाईआ। घर घर नार दिसे विभचारा, मनमति करी कुड़माईआ। काया बणया गढ़ हँकारा, निर्भय रूप नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सिख्या रिहा समझाईआ। कलिजुग सिख्या विष्नूं वंसा, आपणी आप जणांयदा। खेले खेल बार सहँसा, सहँसर धारी वेस वटांयदा। आप उपजाए

आपणा बंसा, आपे मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा सुनेहड़ा आप सुणांयदा। ब्रह्मे उठ बाल नादान, हरि साचा आप उठाईआ। अट्ठ नेत्र खोल्ह वेख जहान, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। चारे मुख तेरे कुरलाण, चारे वेद देण दुहाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सुंञ मसाण, धर्म जैकारा ना कोई लाईआ। जूठा झूठा दिसे निशान, शाह सुल्तान रहे झुलाईआ। पंच विकारा बेईमान, नौ दर फिरे हलकाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे मार ध्यान, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। गोबिन्द मीता नौजवान, ना मरे ना जाईआ। साचा चिल्ला तीर कमान, निरगुण आपणा आप उठाईआ। पवण पवणी धुर फ़रमाण, शब्दी शब्द सुणाईआ। तीर निराला इक्को बाण, एकँकार आप चलाईआ। बिन हरिभगत ना सके कोई पछाण, माया भुल्ली सर्ब लुकाईआ। नाता जुड़या पीण खाण, माया ममता रही तरसाईआ। नज़र ना आए शाह सुल्तान, हरि हरि दरस कोई ना पाईआ। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, अञ्जील कुराना रहे गाईआ। शास्त्र सिमरत कर कर ध्यान, लेखा लेख रिहा समझाईआ। खाणी बाणी कर कर ज्ञान, ज्ञान गुरू ना कोई मिलाईआ। मिल्या मेल ना हरि भगवान, साचे पौड़े ना कोई चढ़ाईआ। अन्तिम मिटना जगत निशान, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मे आप रिहा समझाईआ। उठ शंकर बलि बलि धार, हरि साचा मुख सलांहयदा। कलिजुग अन्तिम आई वार, तेरी सेवा साची लांयदा। लख चुरासी कर ख्वार, जो घड़या सो भन्न वखांयदा। राए धर्म कढ्ढे तेरी वगार, तेरे हुक्मे सर्ब फिरांयदा। तेरे सिर हथ्थ रक्खे करतार, समरथ आपणा नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, ब्रह्मा विष्न शिव आप उठांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव हरि जगा, आपणी बूझ बुझांयदा। त्रैगुण माया वण्ड वण्डा, एका रंग समांयदा। पंज तत्त निशाना दए जणा, आप आपणा राह चलांयदा। जो उपजे सो दिसे ना, चारे खाणी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी रचन रचांयदा। विष्नूं दोए जोड़ निमस्कार, चरन दुआर रिहा कराईआ। तूं करता कादर करनेहार, वड दाता बेपरवाहीआ। तूं बख्शणहारा वड भण्डार, हउँ सेवक सेव कमाईआ। तूं करता पुरख हउँ तेरी नार, दर तेरे सोभा पाईआ। नौ नौ चार कर विचार, तेरे अंक समाईआ। छत्ती जुग कर अकार, निराकार वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम ढह प्या तेरे दुआर, बिन तुध दीसे ना होर कोई सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मंगे भिक्ख झोली डाहीआ। विष्नूं रोवे नैण उग्घाड़, दिस किसे ना आंयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, तेरा तेरी सेव कमांयदा। तेरा रंग सर्ब संसार, दूसर कोई दिस ना आंयदा। हस्त कीट तेरा अधार, अनडीठ शब्द चलांयदा। तेरी जोती नूर उज्यार,

८७
०६

नूरो नूर डगमगांयदा। तेरा नाम सच भण्डार, लोकमात वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरे भाणे सद रहांयदा। ब्रह्मा रोवे नेत्र धोवे, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। तेरा भेव ना जाणे कोए, लिख्या लेख ना कोई रखाईआ। सो पुरख तूं दाता एका होए, एक एकँकारा नाउँ धराईआ। लख चुरासी तेरा बीज तेरा बोए, फल फुलवाड़ तेरा महिकाईआ। चार खाणी दए ढोए, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड वेख वखाईआ। घट घट अंदर आत्म सेजा निरगुण बह बह सोए, आप आपणा मुख छुपाईआ। आपणा रस आपणी हथ्थी आपे चोए, स्वास स्वास आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लख चुरासी तेरी फुलवाड़ी, हउँ सेवक सेव रिहा कमाईआ। ब्रह्मा मनवन्तर वेख विचार, चारों कुण्ट नैण उठांयदा। कलिजुग अन्तिम आई वार, नौं नौं चार मुख सलांहयदा। चारे वेद गए हार, हरि का भेव कोई ना पांयदा। कल रोवे विच संसार, वेला वक्त ना कोई छुडांयदा। जोत जगी इक्क निरँकार, निरगुण एका रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुलांयदा। भेव खुलाए पुरख निरँजन, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। शंकर तेरा साचा सज्जण, भोले नाथ दए सलाहीआ। जो घड़े सो अन्तिम भज्जण, तेरी सेवा सच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। भोले नाथ हो त्यार, चरन कँवल मंगे सरनाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, तेरी गतिमित कही ना जाईआ। तूं दाता परवरदगार, नूरो नूर समाईआ। लक्ख चुरासी तेरी धार, तेरी रचना वेख वखाईआ। तेरा बेड़ा विच संसार, लोकमात रिहा चलाईआ। कवण जाणे तेरा पार किनार, आर पार ना कोई वखाईआ। तेरा हुक्म सच्ची सरकार, धुर फुरमाणा दए गवाहीआ। कलिजुग अन्तिम करां सँघार, जो दिसे सो रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर अग्गे सीस निवाईआ। पुरख सुल्तान हो मेहरबान, आपणी दया कमांयदा। शंकर सुण ले ला ला कान, तेरी सेवा सेव कमांयदा। चौदां लोक खाली कर मकान, चौंदां तबक ना कोई रहांयदा। जूठ झूठ ना दिसे निशान, सीस ताज राज राजान ना कोई टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। ब्रह्मे सुण कर विचार, कलिजुग वारी अन्तिम आईआ। तेरा ब्रह्म वेख पसार, पारब्रह्म वेस कराईआ। कलिजुग कूड़ा रिहा ललकार, चार कुंट दहि दिशा फेरी पाईआ। एका रंग ना दिसे हरि निरँकार, एका रूप ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे भाणे आप रहाईआ। विष्नूं तेरा इक्क भण्डारा, लोकमात नज़र ना आंयदा। ना कोई दिसे सच वणजारा, साचा हट्ट ना कोई खलांयदा। करता दिसे ना शाह सिक्दारा, साचा अदल ना कोई कमांयदा। ना कोई दिसे सच भिखारा, एका भिच्छया नाम मंग मंगांयदा। दर दर घर

घर घर घर दर दर होए सर्ब ख्वार, धीरज धीर ना कोई वखांयदा। प्रभ अबिनाशी भेव न्यारा, आप आपणा वेस वटांयदा। लोकमात लै अवतारा, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ांयदा। पंज तत्त करे ख्वारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग आपणा डंक वजांयदा। एका डंक हरि निरँकार, आदि जुगादि वजाया। साचा धर्म धर संसार, आपणा मार्ग आपे लाया। वरनां बरनां वसया बाहर, चार दिवार बन्द ना किसे कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा मेल मिलाया। गुरमुखां दस्से सच प्यार, अन्तर आत्म इक्क लिव लाया। नाम अगम्मी भर भण्डार, सच खज़ीना इक्क जणाया। देवे दरस अगम्म अपार, जगत हरस आप मिटाया। अर्श कुर्श एका कार, निरगुण सरगुण आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शाह सुल्तान मेट मिटाया। कलिजुग जोद्धा हरि बलवान, सूरबीर अख्वाईआ। दाता दानी दो जहान, लोकमात करे रुशनाईआ। जन भगतां होवे निगहबान, गुरमुख साचे लए मिलाईआ। नाम वखाए सच निशान, एका हथ्थ उठाईआ। लोआं पुरीआं पाए आन, आप आपणा हुक्म चलाईआ। सन्तन देवे धुर फुरमान, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। साचा मेला सच मकान, साडे तिन्न हथ्थ दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर अवतारा एकँकारा करे खेल अगम्म अपारा, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। करया खेल पुरख सुल्तान, वीह सद सोलां सम्मत वेख वखांयदा। पंदरां कत्तक सच निशान, नौं खण्ड पृथ्मी आप उठांयदा। ग्यारां दिवस जोत महान, गुरमुख साचे आप जगांयदा। चार दिवस चार जुग, सचखण्ड शिवलोक ब्रह्मलोक देवलोक फेरा पांयदा। नौं दिवस पावे सार, जेरज अंड आप आपणा मुख छुपांयदा। सत्तां दीपां विच ब्रह्मण्ड, सति सति आपणा रंग रंगांयदा। इक्क इक्क इक्क करे खण्ड, बारां इक्क नाल रलांयदा। इक्की मग्घर विच वरभण्ड, आप आपणा लेख लिखांयदा। दोए दिवस सूरा सरबंग, गुर गोबिन्द लेखा आप चुकांयदा। चवी मग्घर सुहागी छन्द, सतिजुग साचा राह वखांयदा। पंज दिवस गुरमुखां अंदर चढ़या साचा चन्द, साचा दीपक आप टिकांयदा। हरिसंगत खुशी कराए बन्द बन्द, हरि का पौड़ा इक्क वखांयदा। दिवस रैण परमानंद, निजानंद आप रहांयदा। दूई द्वैती ढाहे कंध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलांयदा। चाली दिवस पार किनारा, चाली मुक्ते लए तराईआ। आपणा आप आपे वारा, आपणा लेखा दए मुकाईआ। साचा साका चले विच संसारा, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। महां सिँघ नज़र ना आया जीव गंवारा, माझे देस बैठा जोत जगाईआ। खड़ग खण्डा तेज कटारा, सांतक निन्दक दुष्ट रिहा खपाईआ। पंज दिवस करे मेल पंचम प्यारा, पंचम मेला सहिज सुभाईआ।

साचा नाद साची धुन्कारा, घर शब्दी शब्द वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चाली दिवस दिवस रात, इक्क बणाई हरि प्रभात, एका रूप दसाईआ। चाली दिवस चाली युग, छत्ती मूल चकांयदा। कलिजुग औध गई पुग, लेखा लेख ना कोई मिटांयदा। पुरख अबिनाशी बैठा लुक, आप आपणा पड़दा पांयदा। हरिजन साचे आप आपणी गोदी लए चुक्क, नित नवित वेस वटांयदा। मनमुखां मुख पाए थुक्क, निन्दक निन्दया रस जणांयदा। चाली दिन आपे लेखा जाणे गिण गिण, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। चाली दिवस पार किनारा, चार दस करे कुड़माईआ। चौथे पद मेल निरँकारा, घर दसवें वज्जे वधाईआ। गुरमुख विरला पावे सारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा लेखा लेख समझाईआ। पंज दिवस पंचम रात, आठ पहर गुण गाया। हरिजन तेरी उत्तम ज़ात, वरनां बरनां भेव मिटाया। एका मेला हरि सचा पित मात, आप आपणे अंक लगाया। देवणहारा साची दात, साची वस्त झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम लेखा वेख वखाया। सच वस्त अनमोल, गुर सतिगुर हथ्थ रखांयदा। आपणे कंडे आपे तोल, आपणी कीमत आपे पांयदा। लक्ख चुरासी रहे अनभोल, साची अक्ख ना कोई खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक सृष्ट सबाई साची टेक, दाता दानी हरि अख्वांयदा। साची वस्त हरि नाम भण्डारा, लोकमात वरतांयदा। हरिजन देवे इक्क अधारा, एका मार्ग लांयदा। साचा मन्दिर खोल्ह कवाड़ा, साचा राह वखांयदा। लेखा चुक्के पंचम धाड़ा, पंच विकारा नेड़ ना आंयदा। अन्तर आत्म करे सच सिंगारा, बस्त्र भूशन एका नाम वखांयदा। कलिजुग अन्तिम बोल जैकारा, सोहँ साचा नाम दृढ़ांयदा। सतिजुग साचे वरते वरतारा, सृष्ट सबाई एका रंग रंगांयदा। एका इष्ट देव गुर होए निरँकारा, दूसर सीस ना कोई झुकांयदा। एका मन्दिर एका गुरूदुआरा, एका शिवदुआला मट्ठ इक्क वखांयदा। एका भूप इक्क सिक्दारा, तख्त ताज इक्क हंढांयदा। नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां बणे इक्क बणजारा, एका हट्ट रखांयदा। एका शस्त्र इक्क कटारा, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। एका शाह इक्क अस्वारा, एका आसण सोभा पांयदा। एका रूप सर्ब संसारा, निरगुण सरगुण आप वखांयदा। सतिजुग तेरा धर्म दुआरा, हरि करतारा आप खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नेहकर्मी आपणा नाउँ रखांयदा। नेहकर्मी हरि भगवन्त, पारब्रह्म अख्वांयदा। आप बणाए आपणी बणत, दूजा दर ना मंगण जाया। लेखा जाणे साध सन्त, जीव जंत वेख वखाया। गुरमुखां देवे नाम मंत, आप आपणी सेवा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, पंचम पंचम पंचम वेख वखाया।

६१ ०६

✻ ३० मग्घर २०१६ बिक्रमी मक्खण सिँघ दे घर पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✻

एका घर एकँकार, निरगुण आपणा आप वसाया। दूजा मन्दिर खोल्ह किवाड़, सचखण्ड नाउँ रखाया। तीजे जोत कर उज्यार, थिर घर साचे डगमगाया। चौथे शाह भूप सुल्तान, सच सिँघासण आसण लाया। पंचम खेल श्री भगवान, आप आपणी बणत बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आप जणाया। इक्क इकल्ला एकँकारा, दूजा आपणा नाउँ धरांयदा। तीजा नाद सची धुन्कारा, घर चौथे शब्द अल्हांयदा। पंचम रूप अगम्म अपारा, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव जणांयदा। एका एक अकल कलधारा, दूजा मंगल आपे गांयदा। तीजे साजण मीत मुरारा, घर चौथे सगन मनांयदा। पंचम मेला कन्त भतारा, नारी नर नरायण अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत जोत वखांयदा। इक्क इकल्ला निरगुण धार, आपणी आप उपांयदा। दूसर रंग सच्ची सरकार, रूप रेख ना कोई जणांयदा। तीजा सोहे बंक दुआर, घर साचे आसण लांयदा। चौथा उच्ची कूके करे पुकार, आपणा राग आप अल्हांयदा। पंचम सखीआं मीत मुरार, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा बंक सुहांयदा। इक्क इकल्ला पारब्रह्म, ब्रह्म वड्डी वड्याईआ। दूजे दर ना मरे ना पए जम्म, ना कोई तत्त रखाईआ। तीजे घर ना कोई खुशी ना कोई गम, सति सन्तोखी बैठा आसण लाईआ। चौथे हड्ड मास ना नाड़ी चम्म, पवणी दम ना कोई रखाईआ। पंचम आपणा जाणे कम्म, वड दाता शहनशाहीआ। इक्क इकल्ला शहनशाह, हरि हरि आपणा नाउँ धरांयदा। दूजे आपणे बणे आप मलाह, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। तीजे घर सिफ्त सलाह, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। चौथे घर नाउँ निरँकारा आप धरा, आपणा नाउँ वड्यांअदा। पंचम जैकारा दए लगा, थित वार ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे रंग रंगांयदा। इक्क ओंकार एका रंग, आदि जुगादि समांयदा। दूसर कोई ना करे भंग, ना कोई मेट मिटांयदा। तीजे मंगे ना किसे कोलों मंग, आपणी भिच्छया आपणे हथ्थ रखांयदा। चौथे वजाए नाम मृदंग, आपणा ढोला आपे गांयदा । पंचम आपे जाणे आपणा पन्ध, आपणा मार्ग आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे विच टिकांयदा। इक्क इकल्ला पुरख अबिनाश, दूसर संग ना कोई रखाईआ। दूजा खेले खेल सच तमाश, घर साचे रचन रचाईआ। तीजे देवे आपणा आप धरवास, आप आपणा संग रखाईआ। चौथे घर कर प्रकाश, आपणा दीप करे रुशनाईआ। पंचम वसे आस पास, दर सुहञ्जणा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम सोहे इक्क दुआर, दर दुआरा

इक्क वड्याईआ। सो पुरख निरँजन इक्क इकल्ला, एका घर वसाया। हरि पुरख निरँजन दूजा रला, आप आपणा खेल खिलाया। एकँकारा फड़या पल्ला, दर तीजे सोभा पाया। आदि निरँजन निरगुण बाती आपे बला, घर चौथे कर रुशनाया। श्री भगवान वसणहारा नेहचल धाम अटला, सचखण्ड दुआरा सोभा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम वेखे एका घर आप आपणा नाउँ धराया। पंचम मीता पंचम जोग, पंचम राज कमाईआ। पंचम सुणाए सच सलोक, धुर फ़रमाणा इक्क रखाईआ। साचा हुक्म ना सके कोई रोक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला साचे घर, अबिनाशी करता रचन रचाईआ। पंचम जोड़ जोड़ जुड़ाया, आप आपणा खेल खिलांयदा। अबिनाशी करता वेस वटाया, पंचम मुख खुल्हांयदा। पारब्रह्म हरि रूप धर आया, निरगुण आपणी कल वरतांयदा। आपणे दर मता पकाया, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। आपणी इच्छया पूर कराया, साची भिच्छया इक्क वखांयदा। कुदरत दूजी वेखण आया, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव तीजे तिन्नां सेवा लाया, आप आपणा खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी त्रैगुण माया बणत बणाया, चौथे मन्दिर आप सुहांयदा। पंज तत्त जोड़ जुड़ाया, काया माटी सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासन पुरख अबिनाशन, आप आपणा आसण लांयदा। सो पुरख निरँजन सच सिँघासण, हरि नर साचा सोभा पाईआ। हरि पुरख निरँजन दासी दासन, आपणा नाउँ धराईआ। एकँकारा करे खेल आस पासन, सच विचोला रूप वटाईआ। आदि निरँजन हरि हो प्रकाशन, सच मसालची नाउँ धराईआ। श्री भगवान पावे रासन, आपणी रचना आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम वेखे सहिज सुखदाईआ। पंचम मेला पंचम लाया, पंचम वज्जी वधाईआ। पंचम दर घर इक्क सुहाया, घर साचा इक्क वेख वखाईआ। पंचम एका जोग जणाया, पंचम इक्क पढ़ाईआ। पंचम इक्क सलोक सुणाया, पंचम आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा दए समझाईआ। पंचम लेखा एका धार, हरि आपणी बणत बणांयदा। सो पुरख निरँजण कहे पुकार, हरि पुरख निरँजण नाल रलांयदा। एकँकारा कर विचार, आदि निरँजन आप उठांयदा। श्री भगवान हो त्यार, पंचां जोड़ जुड़ांयदा। एका वसे सच दुआर, सच महल्ला आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे डेरा लांयदा। श्री भगवान सच सुल्तान, साची दए सलाहीआ। आदि निरँजण वड्डु मेहरवान, मेहर मेहर विच टिकाईआ। एकँकारा सच निशान, साचा रिहा वखाईआ। हरि पुरख वड बलवान, सूरबीर नाउँ धराईआ। सो पुरख निरँजण एका आण, एका लेख समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे सोभा पाईआ। सो पुरख निरँजण

साचा मीत, हरि पुरख निरँजण दए सलाहीआ। घर साचे दी साची रीत, एकँकारा वेख वखाईआ। आदि निरँजण धाम अनडीठ, नूर करे रुशनाईआ। श्री भगवान पतित पुनीत, आप आपणा नाउँ धराईआ। पंजां गाया एका गीत, सुर ताल इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाईआ। पंचम राग तार सितार, एका एक मुख सलाहया। पंचम लेखा आपणा आपे लिख, आपणा मता पकाया। पंचम बह बह पाए भिख, हरि झोली अग्गे डाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। पंचम मेला साची बणत, साचे घर बणाईआ। आपणी महिमा लेखा अगणत, आपणे विच टिकाईआ। आपे आदि आपे अन्त, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। पंचम खेल पुरख करतारा, हरि आपणा आप करांयदा। पंचम देवे सच सिक्दारा, साचा दर सुहांयदा। पंचम बोल इक्क जैकारा, धुर फ़रमाणा इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राज बणत आप वखांयदा। दर घर साचे साचा राज, हरि साचा आप बणाईआ। पंचम आपणा साजन साज, पंचम करे सलाहीआ। पंचम उठाए एका वाज, एका रूप दरसाईआ। कवण बणे ग़रीब निवाज, जो निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सिर आपणे उप्पर रक्खे ताज, सेवक हो हो सेव कमाईआ। आपणी रक्खे आपे लाज, लाजावन्त नाउँ धराईआ। आपणा रचे अगम्मी काज, आप आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर दिस ना आईआ। पंचम घर मता पकाया। सो पुरख निरँजन हरि पुरख निरँजन एकँकारा, आदि निरँजन श्री भगवान मेल मिलाया। अबिनाशी करता बणे साचा सज्जण, घर साचे सोभा पाया। पारब्रह्म प्रभ रक्खे लज्जण, आप आपणी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक्क वखाया। सच घर साचा आप सुहाए, हरि साचे वड वड्याईआ। साचा ताज इक्क बणाए, आपणा लेखा आप समझाईआ। पंज दस वण्ड वण्डाए, नौ चार वज्जे वधाईआ। त्रै त्रै लेखा आप जणाए, रूप रंग ना कोए वखाईआ। पंचम मुख आप सालाहे, बत्ती दन्द ना कोए खुल्हाईआ। नेत्र नैण ना कोई प्रगटाए, हथ्थ फड़ ना कोए उठाईआ। निरगुण निरगुण सीस टिकाए, निरगुण आपणी गंढु पवाईआ। साचा राज आप कमाए, हरि दाता बेपरवाहीआ। सच तख्त सुल्तान बह बह आपणा जोग वखाए, आप आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाईआ। साचा ताज रक्ख सीस, सो पुरख निरँजन सोभा पांयदा। हरि पुरख निरँजण बण जगदीस, आप आपणा सीस झुकांयदा। एकँकारा छत्र झुलाए सीस, आप आपणी सेव लगांयदा। आदि निरँजन आप आपणा पीसन पीस, आप आपणा बल धरांयदा। श्री

भगवान इक्क हदीस, एका हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ताज इक्क वखांयदा। साचा ताज तख्त सुल्तान, हरि साचा आप सुहाईआ। पहले घर होया मेहरवान, दूजे दर दए वड्याईआ। तीजे घर हो प्रधान, चौथा मेला सहिज सुभाईआ। पंचम वेखे नाम निशान, आप आपणा हथ्थ उठाईआ। आपणी रक्खे आपे आण, आपणे हुक्म आप फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच तख्त बैठ साचा राज कमाईआ। सच तख्त बैठ सिक्दारा, साचा हुक्म सुणांयदा। अबिनाशी करता दर दरबाना, दर दुआरे सोभा पांयदा। आपे बणया साचा राणा, आपणी रयीअत आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरतांयदा। अबिनाशी करता खोल्ह दरवाज़ा, आपणी सेव कमांयदा। खेले खेल ग़रीब निवाज़ा, आपणा हुक्म जणांयदा। पारब्रह्म हरि साजन साजा, साचा रूप वटांयदा। आपे बह बह मारे वाजा, आपे मेल मिलांयदा। आपे रचया आपणा काजा, आपे सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहांयदा। पारब्रह्म रूप करतारा, आपणा आप वटाईआ। आपे मेला कन्त भतारा, आपे सेज हंढाईआ। आपे करे सच प्यारा, आपे गले लगाईआ। आपे बख्शे सुत दुलारा, एका वस्त झोली पाईआ। आप वखाए सच भण्डारा, आप दए वरताईआ। सो पुरख निरँजन खेल अपारा, आप आपणा खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म एह समझाईआ। पारब्रह्म घर दरबार, आए सच दवारया। तख्त बैठ सच्ची सरकार, देवे हरि धुर फ़रमानया। तेरा मेरा इक्क प्यार, तेरा रूप बाल अंजाणया। तेरी वण्ड सर्ब संमति सु तेरी रचना जगत महानया। मेरा ताज तेरी दस्तार, सीस तेरा इक्क सोभानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा धुर फ़रमानया। पारब्रह्म कर निमस्कार, आपणे अग्गे आपे सीस झुकाईआ। आपे दाता शाह सिक्दार, आपे हुक्म सुणाईआ। आपे बणया चोबदार, आपणी सेव कमाईआ। आपे बोल सच जैकार, आपे लए बुलाईआ। आपे वण्डे वण्ड अपर अपार, वण्डणहारा आप हो जाईआ। आपे पारब्रह्म करे प्यार, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर हरि सुहाया, पारब्रह्म दर आया। सो पुरख निरँजन हुक्म सुणाया। तख्त ताज इक्क वखाया। इक्क दरबारा आप उपाया, आप आपणी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव जणाया। पारब्रह्म मंगे मंग, सच दुआरे झोली डाहीआ। आपे दाता बण सरबंग, वड दानी नाउँ धराईआ। आप लगाए आपणे अंग, आप रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म वेख वखाईआ। पारब्रह्म मंगे मंग, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। आपणा घर आपे कारज अनन्द, अनन्द अनन्द

वज्जे वधाईआ। तेरा रूप मेरा बन्द, एका एक होए कुड़माईआ। तेरा नाम मेरा छन्द, मेरा छन्द तेरा नाम घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया झोली पाईआ। सो पुरख निरँजन वड मेहरवाना, आपणी दया कमांयदा। तेरी वण्ड दो जहानां, करनी करता आप करांयदा। ब्रह्म रूप कर प्रधाना, सरगुण संग निभांयदा। तिन्न पंज खेल आप कराना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आप समझांयदा। पारब्रह्म उठ लै अंगड़ाई, आप आपणा खेल खलाया। तेरा हुक्म रिहा बुझाई, तेरा भाणा सीस उठाया। आपणी हथ्थीं लिखदे वड्डे शहनशाही, ना कोई मेटे मेट मिटाया। कोई ना रक्खणी कलम छाही, कागज कोए दिस ना आया। तेरे नाउँ लेखा बेपरवाही, ना कोई मेटे मेट मिटाया। पारब्रह्म घर ब्रह्म जम्मे चाँईं चाँईं, दाई दाया ना कोए लगाया। सदा सद रक्खे ठंडीआं छाईं, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा सीस ताज आपणी हथ्थीं फड़, सिर आपणे उत्तों लाहया। हथ्थ फड़ ताज निरँकार, पारब्रह्म समझांयदा। एका एक कर आकार, एकँकारा नाउँ उपांयदा। ऊड़ा अक्खर खेल अपार, भेव किसे ना आंयदा। ऐड़ा अक्ख इक्क उग्घाड़, आपणा रूप वटांयदा। एका इष्ट हरि करतार, ईड़ी मुख सलांहयदा। सस्सा किला कर त्यार, हरि साचा बणत बणांयदा। चौथा अक्खर चार दीवार, चारों कुंट रखांयदा। आप रखाया अद्ध विचकार, ताज मुखी मुख सलांहयदा। हँ ब्रह्म अंदर वाड़, पारब्रह्म तेरी गोद बहांयदा। सोहँ रूप कर करतार, आपणा लेखा आप लिखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव त्रैगुण माया कर त्यार, लक्ख चुरासी तेरी झोली पांयदा। विष्नूं खेल करे अपार, सिर सिर रिजक सबांयदा। भगवन जोत दए आधार, घट घट दीवा आप जगांयदा। शेर रूप महांबली वरते वरतार, विच संसारा सिँघ आपणा नाउँ उपांयदा। मारनहारा साची मार, दिस किसे ना आंयदा। तेरा तेरे जन लए तार, साचा राज कमांयदा। महां राज करे विच संसार, महाराज आपणा नाउँ धरांयदा। आपणा महल्ला आपे लए उसार, आपे वेख वखांयदा। पारब्रह्म नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रहिणा सेवादार, अगला पन्ध फेर वखांयदा। प्रगट हो आप निरँकार, तेरा लहिणा मूल चुकांयदा। नाउँ रक्ख कल्की अवतार, आपणी कल वरतांयदा। सोहँ शब्द कर प्यार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप अख्वांयदा। सीस रक्ख ताज दस्तार, सचखण्ड दुआरा लोकमात जणांयदा। आपे लेख लिखणहार, लेखा आपणे हथ्थ वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अबिनाशी वेस हरि, पृथ्मी आकासी खेल खिलांयदा।

९५
०९

९६ ०९

✻ १ पोह २०१६ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच दया होई ✻

हरि पुरख निरँजन साजण साज, आपणी खेल रिहा खलाईआ। चारों कुंट निरगुण सरगुण रिहा भाज, दिस किसे ना आईआ। पंज तत्त कराए घर घर नाच, नटूआ नट सर्ब वखाईआ। बिन गुरमुख पल्ले ना दिसे किसे साच, साचा कर्म ना कोए कमाईआ। प्रभ अन्तिम खोलूण आया सभ दे पाज, कलिजुग मुलम्मा दए वखाईआ। सिर रहिण ना देवे किसे दे ताज, मान अभिमान दए गंवाईआ। ना कोई दीसे राजन राज, शाहो भूप ना वड वड्याईआ। बिन हरिभगत ना रक्खे किसे दी लाज, जो आवे दर देवे दुरकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर घर बैठा वेख वखाईआ। आपणी करनी आपे कर, आपणा खेल खिलांयदा। आपणी वरनी आपे वर, आपे वेख वखांयदा। आपणी तरनी आपे तर, तारनहारा नाउँ रखांयदा। गुरमुख विरला सरनी जाए पड़, फड़ बांहों पार करांयदा। दूसर हथ्थ ना कोए सीस धड़, नेत्र नैण ना कोए वखांयदा। तोड़नहारा हँकारी गढ़, आप आपणा वेस वटांयदा। जगत विकारी ल्याए फड़ फड़, फड़नहारा दिस ना आंयदा। उच्च महल्ले आपे चढ़, चार कुंट वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। हरि पुरख निरँजन गहर गम्भीर, भेव कोए ना आंयदा। बिन हरिभगत ना बदले किसे दी तकसीर, तकदीर आपणी तदबीर ना किसे जणांयदा। गुरमुखां कट्टे जगत जंजीर, साची सिख मति इक्क समझांयदा। वड दाता हरि पीरन पीर, शाह सुल्तान नाउँ धरांयदा। माया ममता कट्ट जंजीर, एका पल्लू नाम फड़ांयदा। एका रूप वखाए हस्त कीट, ऊँच नीच एका रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे सोभा पांयदा। किसे हथ्थ ना आए हरि भगवान, लख चुरासी रही कुरलाईआ। भरमे भुले जीव नादान, हरि माया भरम भुलाईआ। जूठा झूठा फड़ निशान, चारों कुंट रहे वखाईआ। करे खेल हरि महान, आप आपणा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका आपणी वण्ड वण्डाईआ। इक्क इकल्ला एका वण्ड, एकँकारा आप वण्डांयदा। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म नाउँ धरांयदा। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी भेख पखण्ड, चारे कुंट डौरू वांहयदा। मनमति नार दुहागण रंड, जीव जंत सर्ब हंढांयदा। हरि हरि मीता इक्क अतीता सुत्ता दे कर कंड, आपणी करवट ना आप बदलांयदा। हरिभगत वखाए एका आपणी वण्ड, कलिजुग अन्तिम आप वण्डांयदा। दूजे तीजे देवे दंड, चौथे पल्ला ना कोए फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। हरि दुआरा एकँकारा, एका वस्त टिकाईआ। गुरमुख मंगे बण भिखारा, साचा

नाम झोली पाईआ। जगत विकारा ना कोए प्यारा, त्रैगुण देवे दर दुरकाईआ। पंचम करे पंच ख्वारा, घर बैठा सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बिन हरिभगत ना कोई मंगे, हरि का दुआर नज़र ना आईआ। गुरमुख विरला काया चोली रंगे, जो आए चल सरनाईआ। माया ममता नेड़ ना लँघे, जिस मिल्या सतिगुर पूरा बेपरवाहीआ। आपे परखे माढ़े चंगे, अभुल गुरू वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। खेलणहारा हरि मेहरवाना, आपणी कल वरतांयदा। जन भगतां देवे धुर फ़रमाना, एका बूझ बुझांयदा। शब्द अगम्मी नाद तराना, धुन आत्मक आप सुणांयदा। शाहो भूप वड राजा राणा, एका हुक्म चलांयदा। लख चुरासी वेखे मार ध्याना, निरगुण आपणा वेस धरांयदा। सरगुण करे सच पछाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। जोत अधारा एकँकारा, अकल कला अख्वाया। वण्डे वण्ड विच संसारा, एका दूजा भउ चुकाया। चार वरनां करे इक्क प्यारा, दूसर धड़ ना कोए बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, आपणी भिच्छया झोली पाया। साची भिच्छया नाम करतार, हरि पुरख निरँजन आप वरतांयदा। बिन हरि कोए ना पावे सार, गुरमुख साचे आप जगांयदा। चरन कँवल कराए इक्क प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। धरनी धरत धवल दए सहार, आकाश प्रकाश दया कमांयदा। निज आत्म निज घर निज रूप कर कर वास, नेत्र नैण इक्क खुलांयदा। प्रभ अबिनाशी राह तक्कण लक्ख आकासा आकास, कोटन कोटि चरनां हेठ दबांयदा। बिन भगत दूसर किसे होए ना वस, हथ्थों हथ्थ ना कोए फड़ांयदा। आपणी चाल निराली आपे दस्स, आपे मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दूसर वण्ड ना कोए रखांयदा। ना कोई वण्ड ना कोई हिस्सा, आदि जुगादि ना हरि वण्डांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं नव खण्ड जोत सरूपी एको दिसा, दूसर नूर ना कोए वखांयदा। एकँकारा निराकारा कर पसारा एका ताज रखाए सीसा, जगत जगदीसा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलांयदा। खेल खलारी हरि भगवन्त, आदि अन्त भेव ना राया। वेस अवल्ला जुगा जुगन्त, जुग करता आप कराया। लेखा जाणे साचे सन्त, सतिगुर आपणा भेव मिटाया। जो जन आए दर साचा मंगत, एका भिच्छया देवे झोली पाया। कर किरपा रलाए साची संगत, कोटन कोटि जन्म राज भोगी भोग लेखा लेख ना किसे मुकाया। हरिजन मेले मेल मिलावा धुर संजोग, घर साचा इक्क सुहाया। पहलां कट्टे हउमे रोग, दूजा मन्त्र नाम दृढ़ाया। तीजा चुक्के हरख सोग, चौथे घर वज्जे वधाया। पंचम देवे दरस अमोघ, स्वच्छ सरूपी रूप वटाया। गुरसिख तेरा राह तक्कण तिन्ने लोक, चौदां हट्ट रहे

मूंह उठाया। जगत वडियाई ना देवे किसे मोख, ना कोई बेड़ा बन्ने लाया। पारब्रह्म अबिनाशी करता बिन सतिगुर पूरे जीवां जंतां धर्म राए भठयाले देवे झोक, ना सके कोई बचाया। बिन गुरमुख सच ना बोले कोई सलोक, शाह सुल्तान होए हलकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाया। जो जन आए चल दुआर, मंगे हरि सची सरनाईआ। दुरमति मैल दए उतार, अमृत साचा जाम प्याईआ। काग रलाए हँसा डार, कागी काग ना विष्टा खाईआ। मानस जन्म दए सुधार, लख चुरासी फंद कटाईआ। झूठा तोड़ गढ़ हँकार, हरिसंगत दए मिलाईआ। जगत ना दिसे कोई उच्च दरबार, जो बेड़ा बन्ने लाईआ। सेवक सेवा करनी चाहे विच संसार, गुर चरन सेव वड्डी वड्याईआ। अन्तिम दर दर मंगदे फिरन भिखार, शाह सुल्तान घर घर फेरा पाईआ। गुरमुख साचे चतर सुजान, दर घर साचे बैठे आसण लाईआ। जिस जन मिल्या हरि भगवान, दूसर राह ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाईआ। बिन हरिभगत ना देवे वर, कोटन कोटि रहे बिल्लाईआ। बिन गुरसिख ना जाए किसे दे दर, दूजा दर ना मंगण जाईआ। बिन हरिभगत ना नहाए किसे सर, सर सरोवर ना कोए जणाईआ। आदि जुगादी इक्क इकल्ला एकँकारा आप ना रक्खे किसे दा डर, सृष्ट सबाई भय वखाईआ। काया माटी पंज तत्त पहले लए घड़, जीव जहाना नाम धराईआ। कलिजुग कलंदर डोरी बैठा फड़, दिवस रैण रिहा खिचाईआ। इक्क दूजे नाल रहे लड़, गुर गोबिन्द मिल्या किसे ना सच्चा माहीआ। आपणे पैरां उत्ते सके कोई ना खड़, धर्म धीर ना कोई वखाईआ। कलिजुग अन्तिम सारे जाणे झड़, प्रभ आपे झाड़ वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल गुरमुख फड़ाया लड़, ना सके कोई छुडाईआ। लोकमात हरि मारन ना देवे किसे तड़, आपणी खेल आप खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए तराईआ। गुरमुख साचे चतर सुजान, हरि साचा सहिज सभाईआ। देवणहारा आत्म ज्ञान, आत्म अन्तर इक्क बुझाईआ। कलिजुग लड़न पंज शैतान, दूर दूराडे बैठे वेखण लड़ाईआ। तेरे हथ्थ फड़ाया सच निशान, प्रभ साचा संग निभाईआ। प्रगट होया वाली दो जहान, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सेवा इक्क समझाईआ। साची सेवा हरि चरन, गुर सतिगुर मेल मिलन्नया। खोल्हणहारा हरन फरन, देवे प्रकाश आत्म अन्न्हया। कलिजुग जीव मरनी मरन, वेले अन्त सभ नूं डन्नया। गुरमुख साचे साची तरनी तरन, लोकमात चढ़े साचा चन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बेड़ा आप बन्न्हया। बेड़ा बन्न्ह हरि करतार, लोकमात रिहा चलाईआ। जोत सरूपी जामा धार, अकल कल आप वरताईआ। कालख टिक्का मस्तक धार, धूढ़ी चरन ना किसे वखाईआ। मानस

मनुख गए हार, माया ममता होए हलकाईआ। सच ना दिसे कोई दरबार, आपणे हिसे वण्ड वण्डाईआ। जिस मिलयां होए नानक गुर गुर अवतार, उच्ची कूक ना दए सुणाईआ। प्रभ फड़ फड़ मारे सभ नूं मार, जो भुल्ले पान्धी राहीआ। सिर बन्नृ जगत दस्तार, गुर गोबिन्द दरस ना पाईआ। ना ओह सिख ना मनुख ना ओह नार, हेजड़ा रूप वटाईआ। कलिजुग अन्तिम बांझ दिसे परिवार, पूत सपूत ना कोई उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग आपणी खेल खिलाईआ। सूरा सिख सो जाणीए, जिस मिल्या गोबिन्द सूर। सूरा सिख पहचानीए, जिस आत्म अंदर हरि का नाम भण्डारा भरपूर। सूरा सिख सो वखानीए, जिस अग्गे सतिगुर पूरा हाजर हजूर। गुरसिख सो चतर सुघड़ सयानीए, जिस जन पैंडां मुक्या नेड़े दूर। तिस गुर गुरसिख का दरस ना पानीए, जिस मिल्या ना हरि गफ़ूर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि बिनंती करे मन्ज़ूर। हरि बिनंती हरिजन पास, हरि हरिजन आप समझाईआ। सतिगुर तेरा दासी दास, पुरख अकाल तेरी सेव कमाईआ। जगत तृष्ना तेरी बुझे प्यास, गुरू दुआर गुरचरन सीस सरनाईआ। जो दीसे सो होए विनाश, थिर कोए रहिण ना पाईआ। महल्ल अटल वसे जंगल जूह हरि प्रभास, जल थल विच रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। गुरसिख संग गुरसिख उधरे, गुरसिख सिख समझांयदा। गुरसिख संग मानस जन्म सुधरे, जन्म मरन फंद कटांयदा। गुरसिख संग गुरसिख कदे ना उजड़े, काया खेड़ा आप वसांयदा। गुरसिख संग गुरसिख वसल करे एका हुजरे, सच महिराब इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग रखांयदा। सगला संगी हरि हरि मीता, पारब्रह्म रूप करतारा। आदि जुगादी इक्क अतीता, निरगुण सरगुण खेल अपारा। जुगा जुगन्तर आप चलाए आपणी रीता, लोकमात लै अवतारा। आपे ठंडा आपे सीता, आपे अग्नी तत्त वरतारा। आपे हस्त आपे कीटा, आपे ऊँच नीच गंवारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वरते आप वरतारा। हरि वरतारा हरि ही जेहा, दूसर रंग ना कोए वखाईआ। गुरमुखां लाए साचा नेंहा, लग्गा नेहों ना तोड़ तुड़ाईआ। अमृत बरसे साचा मेंहा, मेघला बैठा मुख शर्माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल विच संसार, चाल निराली इक्क रखाईआ। चाल निराली जोत अकाली, हरि आपणी खेल खिलांयदा। शब्द अगम्मी सच दलाली, जन भगतां सेव कमांयदा। पुरख अगम्मा आपे फिरे हथ्थां खाली, दो जहानां फेरा पांयदा। लक्ख चुरासी तेरा माली, बूटा बूटा वेख वखांयदा। निरगुण सरगुण बणया पाली, पालणहारा नाउँ धरांयदा। जन भगतां तोड़े जगत जंजाली, जागरत जोत इक्क वखांयदा। वेखणहारा पत्त डाली, फुल फुलवाड़ी फोल फोलांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समांयदा। रंग रंगीला हरि भगवान, पारब्रह्म भेव ना आंयदा। सो पुरख निरँजन सच निशान, घर साचे आप उठांयदा। हरि पुरख निरँजन खेल महान, दर घर साचे सोभा पांयदा। एकँकारा नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटांयदा। आदि निरँजन जोत वखान, नूरो नूर उपांयदा। श्री भगवान सच मकान, सचखण्ड साचे सोभा पांयदा। अबिनाशी करता इक्क ध्यान, दर एका वेख वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, ब्रह्म आपणा रूप वटांयदा। विष्न शिव जगत निशान, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। सति सरूपी धुर फ़रमान, एका शब्द सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लेख उपांयदा। सो पुरख निरँजन साचा लेखा, आपणा आप कराईआ। हरि पुरख निरँजन ना कोई दाढ़ी दिसे केसा, मूंड मुंडाए ना कोए वखाईआ। एकँकारा नर नरेशा, निरगुण आपणा नाउँ उपाईआ। आदि निरँजन जोत प्रवेशा, जोती जोत विच टिकाईआ। श्री भगवान आपणा रूप आपे पेखा, आप आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। पंचम घर मेल मिलाया, घर साचा इक्क सुहांयदा। निरगुण निरगुण विच टिकाया, निरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण निरगुण आसण सेजा लाया, निरगुण निरगुण तख्त सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहांयदा। दर सुहञ्जणा निरगुण धार, निरगुण आपणी आप चलांयदा। सो पुरख निरँजण निरगुण धार, हरि पुरख निरँजण वेख वखांयदा। एकँकारा सुहाए सच दुआर, आदि निरँजन वड वड्यांअदा। श्री भगवान मीत मुरार, सगला संग निभांयदा। सीस ताज इक्क दस्तार, आप आपणी आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मुख आप उपांयदा। पंचम मुख पंचम ताजा, हरि रूप रेख ना कोए जणाईआ। पंचम निरगुण साजण साजा, आप आपणा वेख वखाईआ। पंचम रक्खे आपणी लाजा, घर साचे वड वड्याईआ। पंचम नाउँ रक्ख ग़रीब निवाजा, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण साची कार, करनी करता आप करांयदा। जुगा जुगन्तर लै अवतार, लोकमात वेस वटांयदा। घट मन्दिर जोती कर उज्यार, नूरो नूर डगमगांयदा। सन्त सुहेले कर प्यार, भगत भगती मेल मिलांयदा। गुर चेले वेखे इक्क दुआर, हरि मन्दिर आप सुहांयदा। अंदर मन्दिर डूँग्घी गार, काया कंदर फोल फोलांयदा। तोड़े जंदर गढ़ हँकार, साचा खण्डा नाम उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जुग जुग वेस हरि इकल्ला, एकँकारा आप कराईआ। वसणहारा जलां थलां, जल थल महीअल डेरा लाईआ। लख चुरासी कर पसारा, घट घट अंदर वेख वखाईआ। आदि जुगादी इक्क अवतारा, गुर सतिगुर नाउँ

धराईआ। कलिजुग अन्तिम हो उज्यारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। नाम खण्डा तेज कटारा, शब्दी शब्द चमकाईआ। प्रगट हो विच संसारा, वीह सद सोलां बिक्रमी दए वड्याईआ। उच्ची कूक बोल जैकारा, एका अक्खर दए पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण बण वरतारा, आप आपणी सेव कमाईआ। हँ ब्रह्म भर भण्डारा, अतोट अतुट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा राज जोग आप वखाईआ। राज जोग पुरख समरथ, वेद कतेब भेव ना आंयदा। जुगां जुगन्तर चलाए रथ, रथ रथवाही दिस ना आंयदा। जाणे जणाए महिमा अकथ, कथनी कथ ना कोए सलांहयदा। जन भगतां देवे साची वथ्थ, वस्त अमोलक काया गोलक एका नाम टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा भेव खुलांयदा। आपणा भेव हरि खुलाउणा, सम्मत सम्मती राह तकाईआ। चार कुंट एका डंक वजाउणा, सृष्ट सबाई आप सुणाईआ। साचा दिवस दर घर सुहाउणा, हरिसंगत वेख वखाईआ। पंचम मीता पंचम साल आपणा दीपक देवे बाल, घर घर करे रुशनाईआ। हरिसंगत वखाए सच्ची धर्मसाल, धुर दरवाजा आप खुलाईआ। जुग जुग विछड़े लए भाल, आप आपणा मेल मिलाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, साचा सालस सालसी रिहा कमाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, सो ख़ालसा ख़ालस नाउँ वखाईआ। जिस जन तोड़या ना जगत जंजाल, गुर गोबिन्द ना दए गवाहीआ। झूठी घालना रहे घाल, साचा राज जोग ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खलाईआ। सच ख़ालसा हरि करतार, अन्तिम आपणा लए प्रगटाईआ। चार वरनां विच्चों नितार, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। सति सन्तोखी सति दस्तार, शब्द सरूपी आप बंधाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ अंदर पाए नाम कटार, लोहार तरखान ना कोए घड़ाईआ। अमृत बख्श ठंडी ठार, साचा खण्डा नाम फिराईआ। मिठ्ठा रस देवे डार, गुरसिख गुरसिख गुरसिख तेरा प्यार विच समाईआ। गुरसिख गुरसिख गुरसिख इक्क दूजे नूं मिल मिल गल विच पायण हार, गुरसिख ना करे लड़ाईआ। गुर गोबिन्द सिँघ करे प्यार, जिस अंदर साची वस्त इक्क टिकाईआ। कोटन कोटि राज राजान होए ख्वार, वेले अन्त ना कोए छडाईआ। नाता छड्डुण झूठे यार, बैठण मुख भवाईआ। इक्को मिले हरि निरँकार, दूजी ओट ना कोई रखाईआ। गुरसिख तेरी वोट गुर चरन प्यार, दूजा राह ना कोए तकाईआ। लख चुरासी आहलनिउँ डिग्गे बोट, ना सके कोई उठाईआ। नानक शब्द ना लग्गी तन चोट, गुर अर्जन नज़र ना आईआ। रामदास तेरा सर सरोवर निरगुण जगदी रहे जोत, मनमुख जीवां दिस ना आईआ। वण्ड वण्डाई वरन गोत, पुरख अकाल ना कोए सरनाईआ। बाहरों दिसदे हिलदे होट, अंदर कूड़ी क्रिया बैठे दबाईआ। अन्तिम

१०२

०६

वेखो मरदे केहड़ी मौत, मारनहारा दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख इक्क समझाईआ। गुरसिख लगे ना अग्नी अग्ग, पंज तत्त ना होए हलकाया। जिस मिल्या सूरा सरबग्ग, दूसर साथी कोए नज़र ना आया। नाता तुट्टे झूठे जग, घर साचा एका पाया। चरन परस साचे पग, पारब्रह्म इक्क सरनाया। सतिगुर पूरा कदे ना रक्खे विच अद्ध, बेड़ा बन्ने दए लगाया। सन्त सुहेले आपे सद्द, आपणे बेड़े लए चढ़ाया। नौं खण्ड पृथमी वज्जणा नद, राज राजान शाह सुल्तान राह रहे तकाया। पुरख अबिनाशी बन्द ना होया किसे दी हद्द, आपणा घेरा किसे ना पाया। कलिजुग अन्तिम जूठे झूठे माया लूठे हरि मन्दिर विच्चों देवे कढ्ढ, गुरमुख साचे लए वसाया। पुरख अकाल नानक गोबिन्द नालों होया ना अड्ड, गुर अर्जन कोलों ना मुख भवाया। सम्मत सोलां आपणा मुख विच्चों बाहर कढ्ढे कलिजुग खड्ड, सम्मत सतारां करे रुशनाया। सीस धर साचा ताज, सृष्ट सबाई दए सुणाया। लोकमात आया वड्ड राजन राज, निहकलंकी जामा पाया। किसे दा पूरा होण ना देवे काज, आप आपणा डंक वजाया। हरिसंगत तेरी रक्खे लाज, दिवस रैण सेव कमाया। साची साजण आपे साज, सगला संग आप निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे मन्दिर डेरा लाया। आपणे मन्दिर आपे वड़, हरि बैठा बेपरवाहीआ। निरगुण रूप कोई ना सके फड़, हत्थ किसे ना आईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोई वखाईआ। सम्बल नगरी उप्पर चढ़, हरि मन्दिर आप सुहाईआ। गुरसिख तेरे हिजर फ़राक विछोड़े अंदर गया सड़, तेरा विछोड़ा झल्ल ना सके बेपरवाहीआ। कल्गी तोड़ा सीस धर, धरनी धरत दए वड्याईआ। शब्द अगम्मी घोड़े चढ़, नीली धारों पार वखाईआ। आपे मारे पहला पौड़, चारों कुंट दए हलाईआ। लख चुरासी वेखे परखे फल मिट्ठा कौड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, घर साचा इक्क सुहाईआ। घर सच्चा सुल्तान, साचे तख्त बराजया। घर दाता हरि भगवान, आदि जुगादि ग़रीब निवाज़या। घर सच्चा हरि मेहरवान, आदिन अन्ता रक्खे लाजया। गुरमुख साचे कर पहचान, पुरख अबिनाशी रचया काजया। आपे जोद्धा सूरबीर प्रगट होवे नौजवान, रूप वटाए देस माज्झया। आपे खण्डा खिच तीर कमान, दहि दिशा फिरे भाजया। आप उठाए धर्म निशान, गुप्त गाए अनहद वाजया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका मारे साची वाजया। सच्ची आवाज़ बोल जैकारा, आप आपणा शब्द अलांयदा। गुरमुख साजन सच दुआरा, हरि निरँकारा आप वखांयदा। मिल्या मेल कन्त भतारा, नर नरायण दर सुहांयदा। दूसर कोए ना दिसे सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, देवणहारा जगत वर, दर आए सवाली ना जाण ख़ाली, ख़ाली हत्थ ना कोए वखांयदा। ख़ाली

हथ्थ इक्क निरँकार, सृष्ट सबाई भण्डार भरांयदा। बणया रहे सदा वरतार, जुग जुग सेव कमांयदा। लोकमात लए अवतार, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। जूठा झूठा तोड़ गढ़ हँकार, हउमे हंगता बुरज ढांयदा। सति असति पावे सार, सतिगुर आपणा नाउँ रखांयदा। ब्रह्म मति कर विचार, गुरमति इक्क समझांयदा। पंज तत्त कर ख्वार, साचे वत्त बीज बजांयदा। नाम फुलवाड़ी अपर अपार, घर घर आप सुहांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, जोती जामा भेख वटांयदा। एका शब्द बोल जैकार, गीत सुहागी सोहँ गांयदा। ब्रह्म ब्रह्मादी पावे सार, पारब्रह्म प्रभ वेस वटांयदा। जुगां जुगां दी हरि जी कार, करनी करता कार कमांयदा। सन्त सुहेले जाए तार, त्रैगुण माया अतीत वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा खेल अपारा, निरगुण धारा विच संसारा, आपणी आप बंधांयदा। साची धार पुरख अकाल, लोकमात चलाईआ। एका शब्द इक्क प्यार, इक्क दुआर चार वरन वखाईआ। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्क दूजे नूं ना करन ख्वार, ज़ात अज़ाती मेट मिटाईआ। मुस्लिम सिख हिन्दू ईसाई इक्क दूजे नूं ना देवण दुरकार, दर दरवाज़ा इक्क वखाईआ। सिख नाल सिख लड़े होए गंवार, अमृत रस ना कोए चखाईआ। जगत दुहागण नार विभचार, जो बैठी कन्त भुलाईआ। आत्म सेजा ना सकी शंगार, आपणा घर ना आप सुहाईआ। आपणीआं भुजां ना सकी उभार, चतुर्भुज ना मेल मिलाईआ। दर दर कूके करे पुकार, बिन सतिगुर पूरे कोए ना सुणने पाईआ। एका ओट रक्खो निरँकार, गुर नानक गया समझाईआ। किसे दर ना मंगो बण भिखार, मति सु घर विच घर आपणमति सु खुलाईआ। जिस जन मिले आप निरँकार, सृष्ट सबाई पिच्छे फिरे हलकाईआ । गुरसिख आपणा सिर गुर चरनां उत्तों वार, गुर तेरी लोकमात करे रुशनाईआ। सिखी सिदक सिख कर विचार, साखीआं पढ़ पढ़ ना वक्त गंवाईआ। वालों निक्की धारों तिक्खी रक्खी आप करतार, गुर गोबिन्द एह समझाईआ। जो चढ़े बेड़े सो उतरे पार, समति सु पूरा पार कराईआ। सोहे सीस सच्ची दस्तार, समरथ हथ्थ आप टिकाईआ। उच्ची पदवी देवे आप निरँकार, मानस ज़ात की दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भाणा आप वरताईआ। हरि भाणा बलवान, भेव ना आंयदा। भुल्ले जीव नादान, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। हरि सच्चा वाली दो जहान, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। जुग जुग प्रगट होवे विच जहान, आप आपणा नाउँ रखांयदा। गुरमुख साचे कर परवान, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। बचित्र सिँघ बाल नादान, गुर गोबिन्द दया कमांयदा। मस्त गज होया हैरान, भज्ज भज्ज जान बचांयदा। सतिगुर पूरा देवणहारा सर्ब ज्ञान, किसे दी सिख्या विच ना आंयदा। घट घट वेखे मार ध्यान, कवण सच कवण झूठ कवण जूठ वणज वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमांयदा। दयावान हरि भगवान,

दूसर होर ना कोए वखाईआ। भीखम वखाए दो निशान, हिन्दू मुस्लिम भाई भाईआ। अन्तिम कलिजुग खेल महान, हरि का भेव ना कोए पाईआ। सभ दा मेटन आया निशान, एका इक्क दए वखाईआ। ना कोई हिन्दू ना कोई मुस्लिमान, सिख ईसाई ना कोई जणाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क निगहबान, आदि अन्त अख्वाईआ। देवणहारा पीण खाण, विष्नूं वंस तेरी वड्याईआ। ब्रह्मा अंस वेख निशान, ब्रह्म ब्रह्म करे कुड़माईआ। शंकर बख्शे चरन ध्यान, अन्तिम लेखा लेख समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रूप दरसाईआ। एका रूप हरि दरसावना, सतिजुग साचा राह चलांयदा। चार वरनां इक्क करावना, दीन मज़्हब ना कोए रखांयदा। एका ढोला सभ ने गावना, नाम जैकारा एका लांयदा। पुरख अकाल इक्क मन्नावणा, दूसर इष्ट ना कोए वखांयदा। निरगुण रूप सर्ब ध्यावना, सरगुण पूजा आप मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता मेटणहार अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। सतिजुग साची हरि हरि धार, आपणी आप चलाईआ। कलि कल्की कलि लै अवतार, कालख टिक्का दए मिटाईआ। जूठी झूठी मेट सरकार, वेखणहारा साची शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे रिहा उठाईआ। हरिजन उठाया दया कमाया, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। फड़ फड़ बाहों राहे पाया मोह चुकाया, माया ममता मेट मिटांयदा। साची संगता मेल मिलाया, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाया, एका दूजा भउ गवांयदा। ग़रीब निमाणा भुक्खा नंगता गले लगाया, आप आपणी गोद उठाया, चार वरनां एका रंग रंगांयदा। सगला साबी बण के आया, आपणा ताणा तण के आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर नाउँ रखांयदा। सगला संग सूरा सरबंग, आपणा आप निभांयदा। नाम मृदंग विच ब्रह्मण्ड, दो जहाना आप वजांयदा। मेटणहारा भेख पखण्ड, जूठ झूठ वढ्ढे कंड, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। एका नाम चण्ड प्रचण्ड वण्डी जाए साची वण्ड, गुरमुख मनमुख आप आपणे मार्ग पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, पंचम साल साल बसाला, खेले खेल पुरख अकाला, छब्बी पोह हो दयाला, गुरमुख उठाए साचे लाला, रंग चढ़ाए इक्क गुलाला, उतर कदे ना जांयदा। छब्बी पोह वीह सद सोलां, साचा दिवस सुहावना। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, आपणा पड़दा ओहला आपे लाहवना। आपणा बदले आपे चोला, हाढ़ सतारां लिख्या लेख पूर करावना। नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां लख चुरासी बणे तोला, नाम कंडा हथ्थ उठावना। आपे बणया रिहा भाला भोला, आपे शैतान शैताना रूप वटावना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी, करे खेल हरि नेहकामी, नेहकर्मी नाउँ धरावना। नेहकर्मी हरि भगवन्त, कर्म कांड ना कोए वखांयदा। गुरमुख उधारे साचा सन्त, सतिगुर आपणा नाउँ उपजांयदा। दरगाह साची मेला हरि साचे कन्त, गुरमुख नारी आप हंढांयदा। काया चोली चाड़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जांयदा। आपे आदि आपे अन्त, मध आपणा खेल खिलांयदा। आपणी महिमा जाणे अगणत, कलिजुग अन्त आपणा भेव खुलांयदा। लक्ख चुरासी बणाए बणत, आपे अन्तिम ढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नार आप समझांयदा।

१०५

०६

✻ २ पोह २०१६ बिक्रमी करतार सिंघ दे घर पिण्ड भूम्बली गुरदासपुर ✻

सो पुरख निरँजन सर्ब गुणवन्त, बेऐब परवरदगारया। हरि पुरख निरँजन आदि अन्त, आप आपणी कल वरता रिहा। एकँकारा खेल भगवन्त, निरगुण आपणा रूप वटा रिहा। आदि निरँजन दीपक जोत इक्क जगंत, प्रकाश प्रकाश समा रिहा। श्री भगवान बणाए बणत, आप आपणी दया कमा रिहा। अबिनाशी करता आपे करे आपणी मन्नत, आपणा इष्ट आपे उपा रिहा। पारब्रह्म जुगा जुगन्त, आपणी रीती आप चला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकारा आप आपणा खेल खला रिहा। खेल खलंदड़ा हरि भगवान, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। निरगुण रूप खेल महान, रूप रंग ना कोए वखाईआ। कमलापाती नौजवान, ना मरे ना जाईआ। वसणहारा सच मकान, घर सुहञ्जणा इक्क वखाईआ। ना कोई बणाए लोहार तरखान, बाढी सेव ना कोई कमाईआ। करे खेल हरि गुण निधान, वड दाता बेपरवाहीआ। आप आपणा कर प्रधान, आपे वेख वखाईआ। आपे जाणे आपणा सच निशान, सचखण्ड निवासी आप झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप छुपाईआ। भेव अभेदा हरि निरँकारा, भेव कोई ना पांयदा। सुते प्रकाश कर अकारा, निरगुण धारा निरगुण विच समांयदा। दीपक बाती कर उज्यारा, नूरो नूर डगमगांयदा। आप सुहाए सच दुआरा, सचखण्ड साचा धाम वखांयदा। थिर घर खोल्ह आप किवाड़ा, घर घर विच डेरा लांयदा। पुरख अगम्मी बोल जैकारा, आपणा नाअरा आप सुणांयदा। ना पुरख ना दिसे नारा, सो पुरख निरँजन हरि पुरख निरँजन मेल मिलांयदा। एकँकारा कर पसारा, आदि निरँजन वेख वखांयदा। अबिनाशी करता मीत मुरारा, श्री भगवान संग निभांयदा। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, इक्क इकल्ला वेख वखांयदा। सचखण्ड निवासी निरगुण धारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे सोभा पांयदा। दर घर साचा हरि दुआर, पुरख अबिनाशी आप उपजांयदा। ना कोई दिसे चार दीवार,

छप्पर छन्न ना कोई छुहांयदा। शाहो भूप सच्चा सिक्दार, निराकार आप अख्वांयदा। सच संघासन कर त्यार, पुरख अबिनाशन आसन लांयदा। देवणहारा धुर फ़रमाण, आप आपणा हुक्म चलांयदा। हुक्मी हुक्म करे कार, करनी करता आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जूनी रहित आपणा नाउँ उपजांयदा। जूनी रहित हरि भगवाना, भेव कोए ना पांयदा। पुरख अकाल खेल महाना, दिस किसे ना आंयदा। वसणहारा सच मकाना, सचखण्ड निवासी नाउँ धरांयदा। शाहो भूप हरि वड सुल्ताना, सच सिँघासन सोभा पांयदा। जोद्धा सूर बली बलवाना, बलधारी बल रखांयदा। साचा खण्डा तेज़ कृपाला, नाम नामा हथ्थ उठांयदा। साचा बंक इक्क वखाना, बंक दुआरी आप खुलांयदा। राग अनादी इक्क तराना, धुन अगम्मड़ी आप उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकारा खेल न्यारा, पारब्रह्म ना मरे ना पए जम्म, आपणी खेल आप खलांयदा। सो पुरख निरँजन अगम्म अथाह, भेव कोए ना पांयदा। हरि पुरख निरँजन बेपरवाह, आपणी रचन रचांयदा। एकँकारा वसे एका थाँ, महल्ल अटल अचल्ल इक्क वखांयदा। आदि निरँजन एका दीपक दए जगा, आदि जुगादि ना कोए बुझांयदा। श्री भगवान पिता माँ, मात पित आप हो जांयदा। अबिनाशी करता करे सच न्याँ, साचा सालस वेस वटांयदा। पारब्रह्म प्रभ पकड़े बांह, आपणा पल्लू आप उठांयदा। एका सिख्या दए समझा, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। आपणी वण्डन आप वण्डा, आपणा हिस्सा आपे पांयदा। एका सुत शब्द जणा, जन जननी लेखे लांयदा। दाई दाया ना ल्या बणा, ना कोई गोद वखांयदा। आपणी करनी आप करा, करता पुरख वेख वखांयदा। सुत दुलारा लए प्रगटा, घर साचे सोभा पांयदा। सच सुनेहड़ा दए सुणा, एका रंग रंगांयदा। लोआं पुरीआं रचन रचा, ब्रह्मण्डां खण्डां बंक सुहांयदा। गगन पातालां जोत जगा, रवि ससि लेख लिखांयदा। आपणा अंग आप कटा, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। विष्नूं वंस दए चला, ब्रह्मा कँवल फुल खलांयदा। नाभी रूप आप धरा, अमृत जल सिंच हरा करांयदा। शंकर मेला बेपरवाह, अन्ध अन्धेर उपांयदा। तिन्नां वेखे एका थाँ, एका तत्त वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दीन दयाला हरि गोपाला, आपणी कुल आप उपजांयदा। पारब्रह्म प्रभ खेल अपारा, ब्रह्म आपणी कुल उपजांयदा। विष्न शिव कर पसारा, त्रै त्रै मेल मिलांयदा। निरगुण सरगुण खेल संसारा, साख्यात रूप प्रगटांयदा। त्रैगुण माया भर भण्डारा, दर घर साचे आप वरतांयदा। रजो तमो सतो दए हुलारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त जोड़ जुड़ांयदा। पंज दस कर प्रकाश, दस पंज लेख लिखांयदा। त्रै त्रै कर नवास, तत्त्व तत्त इक्क जणांयदा। अंदर बाहर पावे रास, गुप्त ज़ाहर दिस ना आंयदा। खेले खेल पृथ्मी आकाश, जल बिम्ब रूप वटांयदा। पवन

स्वासी दए स्वास, सास ग्रास लेख लखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अनादी हरि ब्रह्मादी पारब्रह्म आपणा नाउँ रखांयदा। पारब्रह्म सेवादार, साची सेवा आप कराईआ। लक्ख चुरासी कर प्यार, घर घर विच खोज खोजाईआ। अंदर वड़े डूँग्घी गार, आप आपणा राह तकाईआ। जोत निरँजन कर उज्यार, सति सरूपी डगमगाईआ। अमृत आत्म भर भण्डार, ठांडा सीर इक्क रखाईआ। आप आपणा खोल्ह किवाड़, आत्म सेजा रिहा सुहाईआ। निरगुण सरगुण करे प्यार, वड दाता बेपरवाहीआ। मन मति बुध ना पावे सार, अनुभव दृष्टी आपणे हथ्थ रखाईआ। नाता तोड़ गढ़ हँकार, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। लेखा चुकाए काम क्रोध लोभ मोह हँकार, पंचम शब्द करे कुड़माईआ। धुन अनादि सच्ची धुन्कार, अनहद साचा राग सुणाईआ। पंचम सखीआं मीत मुरार, साचा सोहला एका ढोला गाईआ। घर सुहञ्जणा आदि निरँजना एका बैठा एकँकार, दूजा संग ना कोए वखाईआ। ख़ालक खलक कर पसार, ख़लक ख़ालक दए वड्याईआ। बेऐब खुदाई परवरदगार, नूरो नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच महल्ला इक्क इकल्ला आपणा आप वसाईआ। सच महल्ला सचखण्ड, हरि साचा आप उपजांयदा। सच महल्ला विच ब्रह्मण्ड, हरि आपणी रचन रचांयदा। सच महल्ला जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वेख वखांयदा। सच महल्ला इक्क इकल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा आप उपांयदा। सच महल्ला थिर घर, दूसर दर ना कोई वखाईआ। सच महल्ला जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सच महल्ला अंदर वड़, पुरख अबिनाशी डेरा लाईआ। सच महल्ला आपे चढ़, सच सिँघासन आसन सोभा पाईआ। सच महल्ला वेखे खड़, एकँकारा वड वड्याईआ। सच महल्ला इक्क इकल्ला ना कोई सके फड़, हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क सुहाईआ। सच महल्ला अगम्म अथाह, सो पुरख निरँजन आप उपजांयदा। सच महल्ला बेपरवाह, हरि पुरख निरँजन वेख वखांयदा। सच महल्ला इक्क मलाह, एकँकारा आप अख्वांयदा। सच महल्ला साचा थाँ, श्री भगवान आप सुहांयदा। सच महल्ला साचा पकड़े बांह, अबिनाशी करता सेव कमांयदा। सच महल्ला करे सच न्याँ, पारब्रह्म आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क वखांयदा। सच महल्ला सच सिँघासन, हरि साचा आप सुहांयदा। सच महल्ला पुरख अबिनाशन, पारब्रह्म वड वड्यांअदा। सच महल्ला पृथ्मी आकाशन, गगन पाताल ना कोए बणांयदा। सच महल्ला साची रासन, निरगुण दाता आप रचांयदा। सच महल्ला इक्क इकल्ला करे वासन, रूप रंग ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड देवे वर, थिर थिर अंदर वड़, एका आपणी बूझ बुझांयदा। सचखण्ड दुआरा पुरख अकाल, अनडिठ

धाम रखाईआ। थिर घर खेल श्री भगवान, आदि जुगादी रिहा कराईआ। लोकमात खेल महान, लक्ख चुरासी रचन रचाईआ। घर विच घर सच मकान, दर घर साचा आप सुहाईआ। देवणहारा धुर फ़रमाण, अंदर मन्दिर रिहा सुणाईआ। साचा मन्दिर कर परवान, आप आपणा चरन टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया अंदर आपे वड़, आप आपणी खोज खोजाईआ। काया अंदर हरि हरि मन्दिर, हरि साचा आप उपांयदा। त्रै त्रै लाया आपे जंदर, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। वसणहारा डूँघी कंदर, आपणा मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर वेख वखांयदा। हरि मन्दिर हरि सोभावन्त, निरगुण सरगुण विच टिकाया। हरि मन्दिर मेला साचे कन्त, घर साची वज्जे वधाया। हरि मन्दिर फुलवाड़ी फुल खिले बसन्त, साची रुतड़ी आप वखाया। हरि मन्दिर मिले एका नाम मंत, पुरख अकाल इक्क मनाया। हरि मन्दिर बणे साची बणत, जागरत जोत जोत रुशनाया। हरि मन्दिर महिमा गणत अगणत, कोटन कोटि रवि ससि बैठे सीस झुकाया। हरि मन्दिर मेला साचे सन्त, सतिगुर पूरा दए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर घर विच वेख वखाया। हरि मन्दिर काया गढ़, हरि सतिगुर आप सुहांयदा। हरि मन्दिर हरि जी वेखे वड़, आपणा कुंडा आपे लांहयदा। हरि मन्दिर एका अक्खर जाए पढ़, सो पुरख निरँजन आप पढ़ांयदा। हरि मन्दिर अग्नी हवन ना जाए सड़, ख़ाकी ख़ाक ना कोए मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मन्दिर इक्क उपांयदा। हरि मन्दिर सच टिकाणा, घर घर विच आप रखाया। हरि मन्दिर शब्द बबाणा, गुर सतिगुर रिहा उडाया। हरि मन्दिर अमृत आत्म पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख गंवाया। हरि मन्दिर मिले साचा माणा, निमाण निमाणयां गले लगाया। हरि मन्दिर वेखे इक्क निशाना, धर्म निशाना इक्क झुलाया। हरि मन्दिर सुणे एका गाणा, छत्ती राग नैण शर्माया। हरि मन्दिर मिले पद निरबाणा, अमरा पद इक्क उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी काया मन्दिर हरि मन्दिर नाउँ उपजाया। हरि मन्दिर हरि गोपाल, हरि गोबिन्द वड वड्याईआ। हरि मन्दिर दीन दयाल, दयानिध आसण लाईआ। हरि मन्दिर जल्वा नूर नूर जलाल, नूर नूराना डगमगाईआ। हरि मन्दिर ना कोई शाह ना कंगाल, एका रंग सर्ब रंगाईआ। हरि मन्दिर हरि करे सदा प्रितपाल, प्रितपालक वड वड्याईआ। हरि मन्दिर तुट्टे जगत जंजाल, लक्ख चुरासी रहिण ना पाईआ। हरि मन्दिर मिले नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ाना इक्क वखाईआ। हरि मन्दिर हरिजन हरि हरि आपे लए भाल, आप आपणी बूझ बुझाईआ। हरि मन्दिर मिले गुर दलाल, साचा वणज इक्क वखाईआ। हरि मन्दिर वेखे आप गोपाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एकँकारा, निरगुण सरगुण मेला कन्त भतारा, आत्म सेजा इक्क सुहाईआ। हरि

मन्दिर हरि सुहाया, बैठा त्रैगुण अतीत। एका मन्दिर नाम दृढ़ाया, किसे हथ्थ ना आए गुरदुआर मन्दिर मस्जिद मसीत। गुरमुख साचे लए जगाया, वखाए धाम इक्क अनडीठ। फड़ फड़ मार्ग आपे पाया, आप जणाए आपणी रीत। नेत्र नैण इक्क खुल्हाया, अठ्ठे पहर वसे चीत। राग अनादी इक्क अल्हाया, धुन अगम्मी सच संगीत। बजर कपाटी तोड़ तुड़ाया, गढ़ हँकारा भय भीत। आत्म सेजा दए सुहाया, हरिजन करे पतित पुनित। सर सरोवर इक्क नुहाया, एका रंग रंगाए हस्त कीट। निरगुण दीपक इक्क जगाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि हरि मन्दिर आपे पेखे आपे गाए आपणा गीत। हरि मन्दिर हरि साख्यात, जन भगतां बूझ बुझांयदा। आपे बह बह मारे झात, सच झरोका आप खुलांयदा। आपे बन्द किवाड़ी वेखे ताक, आपणा पढ़दा आप रखांयदा। आपे अश्व घोड़े चढ़े राक, शब्द अगम्मी आप दोड़ांयदा। आपे मात पित भाई भैण सज्जण साक, पिता पूत आप अख्वांयदा। आपे चरन धूढ़ी होए ख़ाकी ख़ाक, आपे सीस ताज टिकांयदा। आपे जाणे आपणे भविख्त वाक, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। हरि मन्दिर तेरी साची गाथ, गहर गम्भीर आप सुणांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाया तेरा राथ, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर लेख लिखांयदा। हरि मन्दिर लेखा हरि निरँकार, आप आपणा दए लिखाईआ। आपे गुर आपे अवतार, आपे सतिगुर नाउँ धराईआ।
१०६ आपे राज जोग सिक्दार, आपे घर घर अलक्ख जगाईआ। आपे नाम भगत भण्डार, आपणी वस्त आप रखाईआ। आपे १०६
०६ बोल शब्द जैकार, उच्ची कूक दए सुणाईआ। आपे सन्त सुहेले लए तार, आत्म ब्रह्म इक्क जणाईआ। आपे गुरमुख करे ०६
सच प्यार, धाम अवल्लड़ा इक्क वखाईआ। आपे गुरसिख लए उभार, गुर दीआ जोत जगाईआ। आपे साचे मन्दिर हो उज्यार, गुर मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनुभव प्रकाश आप रखाईआ। अनुभव प्रकाश हरि भगवन्ता, भेव कोए ना पांयदा। खेल खिलाए आदिन अन्ता, नाद अनादी नाद वजांयदा। जोत जगाए जुगा जुगन्ता, लोकमात वेस वटांयदा। लेखा जाणे साधन सन्ता, भगत भगतां मूल चुकांयदा। गुरमुख मेला नारी कन्ता, नर नरायण खेल खिलांयदा। मनमुखां तोड़े गढ़ हँकारी हंगता, माया ममता मोह चुकांयदा। हरि मन्दिर बह बह आपे होए मंगता, आपणी मंग आप मंगांयदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, हरि डूँघा सागर गहर गंभीरया। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, लेखा जाणे ना कोए पीर फ़कीरया। हरि पुरख निरँजण आप उपाए आपणा नाँ, वरनां बरनां तोड़े जंजीरया। एकँकारा पिता माँ, लक्ख चुरासी देवे ठंडा सीरया। आदि निरँजण जोत जगा, जोत निरँजण बख्शे शाह हकीरया। पुरख अबिनाशी वेस वटा, निरगुण

चढ़े चोटी इक्क अखीरया। श्री भगवान आपणा भाग वण्डा, करे खेल गुणी गहीरया। पारब्रह्म ब्रह्म नाउँ धरा, आपे कट्टे आपणी भीड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा बस्त्र चीरया। हरि बस्त्र चीर साचा रंग, लाल गुलालन आप रंगाईआ। कंचन गढ़ सुहाए पलँघ, साचा बंक वखाईआ। सूहा वेस करे अंग, गहर गम्भीर भेव ना राईआ। चिट्टा आसन मंगे मंग, आपणी सेजा आप सुहाईआ। पीली रंगन आपे रंग, पीआ प्रीतम वेख वखाईआ। नीली धारों पार लँघ, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। काली धार लक्ख चुरासी संग, काला भूशन इक्क हंढाईआ। सतिगुर पूरा हरि सरबंग, जुग जुग मातलोक करे रुशनाईआ। नाम वजाए सति मृदंग, सन्त साजन लए उठाईआ। हरिभगत लगाए आपणे अंग, अंगीकार नाउँ रखाईआ। गुरमुखां अंदर आपे लँघ, हरि मन्दिर डेरा लाईआ। गुरमुख आत्म सेजा सच पलँघ, सतिगुर पूरा रिहा सुहाईआ। मानस जन्म ना होए भंग, जिस घर वर हरि पाया सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर वेखे थाउँ थाँईआ। हरि मन्दिर गुरमुख तेरा दर, हरि सतिगुर आप सुहांयदा। चरन कँवल कँवल चरन देवे धर, धरनी धरत धवल वड्यांअदा। सर सरोवर एका भर, अमृत धार वहांयदा। किला तोड़ हँकारी गढ़, एका नाम लड़ फड़ांयदा। पंच विकार ना जाए अड़, माया ममता मोह मिटांयदा। सतिगुर दुआरा उच्च मुनारा

११० ०६

एका हरि मन्दिर बहणा वड़, इट्टां गारा ना कोए लगांयदा। निरगुण दीवा बाती आपे धर, दिवस रैण डगमगांयदा। कमलापाती अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी दरस दखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका एक सच महल्ला इक्क इकल्ला आप वखांयदा। इक्क इकल्ला हरि बनवारा, पारब्रह्म बेअन्त। करे खेल एकँकारा, वल छल धारी जुगा जुगन्त। जन भगतां पावे आपे सारा, मेल मिलावा साची संगत। शब्द अगम्मी इक्क हुलारा, देवणहारा आदिन अन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख काया चोली रंगत। काया रंग चलूल, गुर सतिगुर आप रंगाईआ। दर घर साचे कोई ना लाए मूल, कीमत करता कोए ना पाईआ। जो जन चरन प्रीती रहे घोल, घोली घोल वेख वखाईआ। आत्म अन्तर आपे मौल, आपणी वस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। साचे कंडे देवे तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। नव सत्त रही अनभोल, ब्रह्मा ब्रह्म मति ना कोए जणाईआ। चौदां हट्ट कलिजुग खोल्, आपणा वणज रिहा कराईआ। जूठ झूठ तोले तोल, साची धार ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए फड़, हरि मन्दिर मेल मिलाईआ। हरि अंदर मन्दिर हरि हरि मेला, गुर गुरमुख आप करांयदा। एका घर वसे गुरू गुर चेला, गुर साजण खेल खिलांयदा। सतिगुर गुर गुरू गुरसिख सज्जण

१११
०९

सुहेला, सगला संग निभांयदा। गुरसिख वेखे गुर गुर वेला, वेला वक्त ना किसे जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि साजण वेख वखांयदा। हरि सज्जण हरि पेख्या, पारब्रह्म गुर करतार। जन भगतां लिखणहारा साचा लेखया, पुरख अबिनाशी अगम्म अपार। चारे वेद रहे भुलेखया, हरि का भेव ना पावण सार। ब्रह्मा विष्न शिव करन आदेसया, दोए जोड़ चरन निमस्कार। निरगुण सरगुण लख चुरासी आप प्रवेशया, आत्म ब्रह्म दए आधार। जीव ईश ईश जीव लिखणहारा लेखया, लेखा लिखे आप करतार। सच सुल्ताना हरि मेहरवाना नर नरेश्या, दो जहानी पावे सार। लहिणा देणा जाणे गणपति गणेश्या, आदि शक्ति होए उज्यार। आपे सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग धारे भेसया, बावन रामा कृष्न मुरार। आपे दाता जोद्धा सूरबीर वड मरगेसया, आप आपणा बल रिहा धार। आपे मुल्ला शेख मुसायक पीर दस्तगीर लिखे लेखया, आपे ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार। आपे शाह सुल्तानां राज राजानां करे ख़ाली ख़ीसया, आपे दर दर करे भिखार। आपे ग़रीब निमाणयां ताज धरे साचे सीसया, नव खण्ड दए आधार। पारब्रह्म अबिनाशी करता तेरी कोई ना करे रीसया, आदि जुगादी गुर अवतार। कलिजुग लेखा जाणे बीस इकीसया नानक निरगुण साची कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि मन्दिर सुहाए बंक दुआर। हरि मन्दिर हरि सुहञ्जणा, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। हरिजन मेला साचे सज्जणा, घर बैठा बेपरवाहीआ। नेत्र नैणां नाम पाए कजला, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, अठसठ पन्ध मुकाईआ। अनहद ताल तलवाड़ा काया अंदर वज्जणा, गुर शब्दी दए सुणाईआ। सुरत सवाणी कोल बह बह सजणा, हरि हाणीआ हाणी दए मिलाईआ। पंज तत्त झूठा कच अन्तिम सभ दा भज्जणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। काल नगारा सभ दे सिर ते वज्जणा, काल दयाल आप रघुराईआ। हरिजन चाढ़े सच जहाज़ना, आपणा बेड़ा आप चलाईआ। सो पुरख निरँजन मारे आपणी वाजना, हँ ब्रह्म लए उठाईआ। आपे रचया आपणा काजना, आपणी करनी किरत कमाईआ। लेखा चुक्के राजन राजाना, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। प्रगट होए ग़रीब निवाज़ना, गऊ ग़रीब होए सहाईआ। मनमुखां कढ्ढे पाजना, जो जन बैठे हरि भुलाईआ। चिट्टे अश्व चढ़े ताजना, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पातालां चार कुंट दहि दिशा आपे फेरा पाईआ। गुरसिखां रक्खे लाजना, सिर समरथ हथ्थ रखाईआ। प्रगट होए देस माझना, निहकलंका नाउँ जणाईआ। सम्बल नगरी साजण साजणा, साढे तिन्न हथ्थ वेख वखाईआ। हरि मन्दिर सोहे शाहो शाबासना, पुरख अबिनाशन आसण लाईआ। सीस जगदीश रक्खे ताजना, लोकमात तख्त ताज दए उलटाईआ। लक्ख चुरासी दर दर घर घर भाजना, बिन हरि दिसे ना कोई सहाईआ। वहाए लहर ख़िज़र ख़वाजना,

इंदर मेघला मेघ बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए फड़, हरि मन्दिर वेस वटाईआ। हरि मन्दिर सोहे साचा बंक, हरि सतिगुर आप सुहांयदा। एका रंग वखाए राउ रंक, ऊँच नीच ना कोए जणांयदा। गुरसिख तराय जिउँ जन जनक, जन जननी लेखे लांयदा। शब्द अनाद वजाए डंक चोट नगारे इक्क लगांयदा। प्रगट होए वासी पुरी घनक, अकल कल धारी रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर आपे सोभा पांयदा। हरि मन्दिर हरि सुहाया, घर साचा इक्क वखन्नया। एका मंगल साचा गाया, राग तराना इक्क उपन्नया। एका सज्जण मेल मिलाया, घर चढ़या साचा चन्नया। सतिगुर पूरा वेखण आया, पुरख अबिनाशी आपे मन्नया। घर साचे डेरा लाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, उत्तम जाता इक्क वखन्नया। हरि मन्दिर उत्तम ज़ात, वरन बरन ना कोए रखांयदा। हरि मन्दिर एका अमृत बूंद स्वांत, दूई द्वैत ना कोए जणांयदा। हरि मन्दिर एका दात, हरि आपणा नाउँ वण्ड वण्डांयदा। हरि मन्दिर एका गाथ, चौदां लोक सर्ब सुणांयदा। हरि मन्दिर एका पूजा पाठ, एका इष्ट मनांयदा। हरि मन्दिर एका तीर्थ एका ताट, अठसठ ना कोए जणांयदा। हरि मन्दिर एका घाट, गुरसिख औखी घाटी आप चढ़ांयदा। हरि मन्दिर खेल बाज़ीगर नाट, स्वांगी आपणा सांग रचांयदा। हरि मन्दिर लहिणा देण चुकाए आन बाट, मात गर्भ फंद कटांयदा। हरि मन्दिर हरि नामे करे दात, लख चुरासी पन्ध मुकांयदा। हरि मन्दिर पूरा करे घाट, गुरमुखां झोली आप भरांयदा। हरि मन्दिर वखाए साची खाट, प्रेम पटोला उप्पर पांयदा। हरि मन्दिर अमृत रस लैणा चाट, निझर झिरना आप झिरांयदा। हरि मन्दिर जोत जगे ललाट, डूँग्घी भँवरी कँवरी वेख वखांयदा। हरि मन्दिर राह तक्कण चौदां हाट, चौदां तबकां मुख भवांयदा। हरि मन्दिर आप सुहाए पुरख समराथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन रक्खे दे कर हथ्थ, सगला संग निभांयदा। हरि मन्दिर साचा संग, आदि अन्त विछड़ ना जाईआ। हरि मन्दिर वजाए नाम मृदंग, अनहद साची सेव कमाया। हरि मन्दिर कोटन कोटि वहे धारा गंग, गंग सुरस्ती जमना गोदावरी मुख शर्माईआ। हरि मन्दिर गुरमुख विरला मंगे मंग, लक्ख चुरासी गूढ़ी नींद सवाईआ। हरि मन्दिर हरिजन विरला जाए लँघ, कोटन कोटि साध सन्त जीव जंत भुल्ले फिरदे पान्धी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां कट्टे भुक्ख नंग, आप लगाए आपणे अंग, हरि मन्दिर साचे बैठ पलँघ, नारी रूप चाढ़े रंग, कन्त कन्तूहला सूरा सरबंग, गुरमुख दूजा दर ना मंगण जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, जुगा जुगन्ता साधन सन्ता, काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, लोकमात उतर कदे ना जाईआ ।

३ पोह २०१६ बिक्रमी अजीत सिँघ दे घर बटाला जिला गुरदासपुर

समरथ हथ्थ वडियाई, आदि जुगादि खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजन भेव ना राई, हरि पुरख निरँजन वेख वखांयदा। एकँकारा अगम्म अथाही, बेअन्त बेपरवाह आपणा वेस वटांयदा। पुरख अबिनाशी पकड़े बांह, श्री भगवान संग निभांयदा। पारब्रह्म प्रभ करे सच न्याँ, दर घर साचा आप सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा रचन रचा, सच निवासी आसण लांयदा। थिर घर महल्ला इक्क वसा, आदि निरँजन डगमगांयदा। इक्क इकल्ला सोभा पा, घर सुहञ्जणा आप वखांयदा। हरि मन्दिर हरि जीओ नाउँ धरा, निरगुण आपणा रंग चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि पुरख समरथ आपे जाणे महिमा अकथ, आपणी कथा आप अलांयदा। हरि महिमा अकथ, भेव कोए ना पांयदा। शब्द अगम्मी चलाए रथ, रथ रथवाही सेव कमांयदा। आपणे मन्दिर हो प्रगट, आप आपणी कल वरतांयदा। आपे धुन अनादी मारे सट्ट, वैराग आप हो आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ वड्यांअदा। नाउँ वडियाई हरि निरँकार, आदि जुगादि उपाईआ। करे खेल अपर अपार, आप अपरम्पर भेव ना राईआ। पारब्रह्म प्रभ हो उज्यार, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, लोकमात वेख वखाईआ। आपे देवे जोत अधार, निरगुण सरगुण दीआ आप टिकाईआ। आपे बख्शे सच प्यार, सच दुआरा इक्क वखाईआ। आपे देवे नाम अधार, साची वस्त झोली पाईआ। आपे खोल्ह बन्द कवाड़, आपणा मन्दिर दए वखाईआ। साचे मन्दिर जोत उज्यार, दिवस रैण डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाईआ। हरि मन्दिर घर सुहञ्जणा, हरि साचा आप उपांयदा। सतिगुर पूरा आदि निरँजणा, निरगुण दाता आसण लांयदा। लक्ख चुरासी साचा सज्जणा, दर दर घर घर वेख वखांयदा। ना घड़या ना भज्जणा, घड़न भन्नणहार, आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क वखांयदा। दर घर साचा उच्च मनारा, आदि जुगादी रचन रचाईआ। सरगुण मेला विच संसारा, निरगुण आपणा आप कराईआ। आपे देवे नाद धुन सची धुन्कारा, धुन, आत्मक वड वड्याईआ। घर मन्दिर वेख सच चुबारा, मीत मुरारा आसण लाईआ। डूँघी कंदर पार किनारा, अन्ध अन्धेर ना कोए वखाईआ। कमलापाती हो उज्यारा, नूरो नूर करे रुशनाईआ। रवि ससि ना कोए सतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे मन्दिर बैठा वड़, गुरमुख साचा घर वखाईआ। साचा मन्दिर गुरसिख गढ़, काया बंक आप सुहाईआ। सति सतिवादी अंदर वड़, सार शब्द करे पढ़ाईआ। सुरत सवाणी ल्ए फड़, एका डोरी नाम बंधाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म घाड़न घड़, सुहञ्जणी घड़ी इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आदि जुगादि जुग जुग गुरमुख विरले बूझ बुझाईआ। गुरमुख बूझे हरि दर सूझे, त्रैगुण रंग रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आप खुल्हाए भेव गूझे, सतिगुर पूरा नाउँ धराईआ। आप चुकाए लहिणा देणा, भेव मिटाए एका दूजे तीजे नैण करे रुशनाईआ। चौथे घर चौथे पद पंज तत्त आपे झूझे, रती रत ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साचे मार्ग पाईआ। साचा मार्ग बेपरवाह, जुग जुग आप लगांयदा। आप उपाए आपणा ना, लोकमात आप जपांयदा। सन्त सुहेले पकड़ बांह, आप आपणे गले लगांयदा। मनमुख जीव उडदे काँ, कागी डार रलांयदा। साचे हँसां सर सरोवर दए वखा, मान सरोवर इक्क नुहांयदा। माणक मोती चोग चुगा, सोहँ हँसा जाप जपांयदा। दूई द्वैती रोग कटा, हउमे गढ़ तुड़ांयदा। साचा हरि मन्दिर इक्क वखा, आसा तृष्ना जगत मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। जगत अभ्यास छुट्टा नाता, हरि पुरख निरँजन पाया। सो पुरख निरँजन सुणाए साची गाथा, नेत्र नैण ना बन्द कराया। एकँकारा लहिणा देण चुकाए मस्तक माथा, सिर आपणा हथ्थ रखाया। आदि निरँजन जोती नूर कर प्रकासा, घर घर विच दीपक दए जगाया। अबिनाशी करता खेल तमाशा, आप आपणा वेखण आया। श्री भगवान पाए रासा, मंडल मंडप आप सुहाया। पारब्रह्म आदि जुगादि ना कदे विनासा, ना मरे ना जाया। ब्रह्म ब्रह्म लेखा जाणे पवण स्वासा, लेखा लिखणहारा आप हो आया। खेले खेल पृथ्मी आकासा, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड गगन मंडल चरनां हेठ दबाया। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल कर, मेल मिलावा इक्क वखाया। नाता तोड़ हठ तप, सति जोग इक्क वखाईआ। कोटन कोटि जन्म उतारे पाप, दुरमति मैल दए धवाईआ। आप पछाणे आपणा आप, ब्रह्म पारब्रह्म वखाईआ। मेट मिटाए अन्धेरी रात, साचा एका चन्द चढ़ाईआ। शब्द अगम्मी आपणी गाथ, पुरख समरथ आप सुणाईआ। लहिणा देणा चकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, हरिजन लेखा लेखे पाईआ। इक्क जणाए पूजा पाठ, सोहँ शब्द सच्ची पढ़ाईआ। भट्ठ कराए तीर्थ अठसठ, सच सरोवर हरि चरन इक्क नुहाईआ। लक्ख चुरासी औखा घाट, गुरमुख साचे आप चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर वखाए साचा घर, घर शब्दी शब्द कुड़माईआ। नाता तोड़ जगत अशनान, आत्म अन्तर इक्क नुहांयदा। नाता तोड़ जगत वख्यान, साचा ज्ञान इक्क दृढ़ांयदा। नाता तोड़ जगत ज्ञान, साची सिख्या सिख समझांयदा। नाता तोड़ झूठ दुकान, साचे मार्ग आपे पांयदा। नाता तोड़ पंज शैतान, पंचम शब्द मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मेला साचे घर घर, मन्दिर आप वखांयदा। नाता तोड़ जगत साध, हरिजन हरि हरि रिहा मिलाईआ। नाता

तोड़ जगत नाद, काया नाद इक्क सुणाईआ। नाता तोड़ जगत दाद, नाम दाद झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया मन्दिर मेल हरि, हरि मन्दिर वेख वखाईआ। नाता तोड़ जगत पढ़ाई, आत्म अंदर इक्क लिव लांयदा। नाता तोड़ जगत जुदाई, हरि चरन प्रीती जोड़ जुड़ांयदा। नाता तोड़ जगत कुड़माई, गुर सतिगुर पल्ला नाम फड़ांयदा। नाता तोड़ धी जवाई, सुरत सवाणी शब्द नुहांयदा। नाता तोड़ अठ सठ पाणी, अमृत आत्म धार इक्क प्यांअदा। नाता तोड़ चार खाणी, चौथा पद इक्क सुहांयदा। नाता तोड़ रसना बाणी, अजपा जाप इक्क करांयदा। नाता तोड़ जगत कहाणी, अकथ कहाणी शब्द सुणांयदा। नाता तोड़ माया राणी, पद निरबाणी मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपाकर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। नाता तोड़ जगत प्यार, हरि चरन कँवल समझाईआ। नाता तोड़ पुरख नार, हरि कन्त दए मिलाईआ। नाता तोड़ सगला यार, साचा साथी इक्क वखाईआ। नाता तोड़ माँ पुत भैण भाई हित संसार, नित नवित आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले आपणे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। नाता तोड़ जगत सरूप, निज आत्म सरूप आप दरसाईआ। नाता तोड़ जगत भूप, हरि पुरख मेल मिलाईआ। नाता तोड़ चारे कूट, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण एका रंग रंगाईआ। नाता तोड़ काया सूत, एका तन्दन तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे आप सुहाईआ। नाता तोड़ जगत सुल्तान, हरि साचे मेल मिलांयदा। नाता तोड़ आसा तृष्ना पीण खाण, धीरज धीर सति सन्तोख इक्क ज्ञान समझांयदा। नाता तोड़ जीव जहान, दरगाह साची मेल मिलांयदा। नाता तोड़ चार दीवारी जगत मकान, काया मन्दिर इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर वेखे आपे खड़, आप आपणा बंक वखांयदा। हरि मन्दिर सच दुआरा, हरि साचे आप उपाया। इक्क इकल्ला बैठा एकँकारा, निरगुण रूप डेरा लाया। बोध अगाधी शब्द जैकारा, आप आपणा दए सुणाया। सृष्ट सबाई खेल न्यारा, वेद कुरान भेव ना राया। शास्त्र सिमरत रहे पुकारा, लेखा लेख ना किसे जणाया। आदि जुगादी इक्क अवतारा, जुग जुग आपणा रूप वटाया। चौथे जुग खेल न्यारा, पुरख अगम्मड़ा रिहा कराया। निहकलंकी नूर उज्यारा, नूरो नूर डगमगाया। गुरमुखां देवे चरन सहारा, दूजा दर ना कोए वखाया। दिवस रैण अठे पहर घड़ी पल अमृत बख्शे ठंडी ठारा, निझर झिरना आप झिराया। गुरमुखां खोल्हया बन्द किवाड़ा, आपणा दरस कर कर तरस तारनहार आप वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मार्ग लाया। कोटन कोटि जन्म तप अभ्यास, लेखा लेख ना कोए लगाईआ। कोटन कोटि डूँघी कंदर वड़ वड़ बैठे डूँघे खात, नैण मूंद आसन

लाईआ। कोटन कोटि आप आपणा कर कर घात, बैठे राह तकाईआ। कोटन कोटि उच्चे टिल्ले चढ़ चढ़ पर्बत रहे झाक, औदा जांदा दिस ना आईआ। कोटन कोटि दिवस रैण लग्गे रहे खोल्हण ताक, बन्द किवाड़ी ना कोई खुल्हाईआ। कोटन कोटि बण बण बैठे पाकी पाक, मन दी मैल ना कोए धवाईआ। कोटन कोटि बैठे साकी साक, नाम प्याला जाम ना कोए प्याईआ। कोटन कोटि शाह सवार बैठे मार पलाक, आपणा अश्व रहे दौड़ाईआ। कोटन कोटि मनमुख करन चालाकी चलाक, सच चालाकी ना कोई कमाईआ। कोटन कोटि तन रमाई बैठे ख़ाकी ख़ाक, धूढ़ मस्तक मिली ना साची शाहीआ। कोटी कोटि गुरदर मन्दिर मस्जिद बह बह रगड़दे नाक, बिन सतिगुर पूरे नक्क नकेल किसे ना पाईआ। कोटन कोटि हवन पूजा करदे पाठ, जगत समग्री वण्ड वण्डाईआ। कोटन कोटि नहौदे तीर्थ अठसाठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती फेरा पाईआ। कोटन कोटि साधां सन्तां विके हाट, साची वस्त किसे हथ्थ ना आईआ। कोटन कोटि ला ला गद्दीआं महंत बैठे उप्पर खाट, आत्म खाट ना किसे सुहाईआ। कोटन कोटि अलूणे रस रहे चाट, चात्रिक तृखा ना किसे बुझाईआ। कोटन कोटि रास मंडल रचौण कर कर नटूआ नाट, हरि का नाटक दिस ना आईआ। कोटन कोटि आपणे अंग रहे काट, अंगीकार ना होया साचा माहीआ। कोटन कोटि मुकाई बैठे वाट, जगत ज्ञान रहे दृढ़ाईआ। कोटन कोटि मस्तक तिलक लगायण ललाट, त्रै त्रै रूप वटाईआ। पुरख अबिनाश कलिजुग अन्तिम किसे ना दिसे साथ, घर घर ख़ाली टल्ल रहे खड़काईआ। कोटन कोटि लभ्भदे फिरन त्रलोकी नाथ, नाथ अनाथां ना होए सहाईआ। कोटन कोटि शरअ शरीअत बद्धे हक जनाब, हाज़र हज़ूर हज़रत नूर ना कोए दसाईआ। कोटन कोटि मुख रक्ख नकाब, निउँ निउँ सजदे रहे कराईआ। कोटन कोटि छड्ड छड्ड भज्जे आप, विच थलां आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, बिन आपणी किरपा मेल ना किसे मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दित्ता साचा दान, हरि मन्दिर बैठ काया मकान, राती सुत्तयां दरस दिखाईआ।

❋ ३ पोह २०१६ बिक्रमी चरन सिँघ दे घर हेमराजपुर ज़िला गुरदासपुर ❋

सो पुरख निरँजन हरि सुल्तान, इक्क इकल्ला सोभा पांयदा। हरि पुरख निरँजन वड मेहरवान, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। निहकलंक वड बलवान, बलधारी भेव छुपांयदा। आदि निरँजन खेल महान, जोती नूर डगमगांयदा। श्री भगवान नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटांयदा। अबिनाशी करता वसणहारा सच मकान, सच्चखण्ड डेरा आपे लांयदा। पारब्रह्म

मंगे दान, घर आपणे मंग मंगांयदा। आपे होए निगहबान, आप आपणा कर्म कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी आपणी खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजन वड बलवाना, एका एक अख्वांयदा। हरि पुरख निरँजन सच निशाना, दर घर साचे आप झुलांयदा। एकँकारा पावे सारा दो जहाना, आवण जावण खेल खिलांयदा। आदि निरँजण हो प्रधाना, घर साचे रूप प्रगटांयदा। श्री भगवान सच तराना, आपणा आपे गांयदा। अबिनाशी करता आपे वेखे मार ध्याना, आपणा नैण आप खुल्हांयदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधाना, आपणा हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वासा खेल तमाशा, हरि हरि साचा आप करांयदा। सो पुरख निरँजण सच महल्ला, एका एक वसांयदा। हरि पुरख निरँजण ऊँच अटला, साचे मन्दिर सोभा पांयदा। एकँकारा आपे फड़े आपणा पल्ला, आप आपणा बंध बंधांयदा। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बल्ला, बाती तेल ना कोए टिकांयदा। श्री भगवान वसणहारा जला थला, घट घट आपणा खेल खिलांयदा। अबिनाशी करता सच सिँघासण एका मल्ला, सच दुआरे आसण लांयदा। पारब्रह्म सच संदेस एका घल्ला, शब्द अनादी अनाद वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता बेपरवाह, जुगा जुगन्तर बण मलाह, आप आपणा रूप धरांयदा। सो पुरख निरँजण गहर गम्भीर, भेव कोए ना पांयदा। हरि पुरख निरँजण आपे मारे आपणा तीर, सच निशाना आप रखांयदा। एकँकारा अमृत रक्खे ठांडा सीर, सर सरोवर इक्क वखांयदा। आदि निरँजण आपणा देवे आपे धीर, धीरज धीर आप धरांयदा। श्री भगवान एका रंग समाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए जणांयदा। अबिनाशी करता वसे धाम अनडीठ, दिस किसे ना आंयदा। पारब्रह्म प्रभ आपे जाणे आपणी रीत, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। सो पुरख निरँजण सच सुल्ताना, परम पुरख अख्वांयदा। हरि पुरख देवे दाना, आपणी दया आप कमांयदा। एकँकारा बन्ने गानां, दर घर साचे सगन मनांयदा। आदि निरँजण पाए आना, हुक्मी हुक्म आप अल्हांयदा। श्री भगवान वेस वटाए गोपी कान्हा, नारी कन्त आप हो जांयदा। अबिनाशी करता बणे दर दरबाना, दर दरवेश नर नरेश आपणी अल्फी आप हंढांयदा। पारब्रह्म प्रभ करे आदेस, निउँ निउँ आपणा सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण धार खेल अपार, रूप रंग ना कोए जणांयदा। सो पुरख निरँजण शहनशाह, एका हरि अख्वांयदा। हरि पुरख निरँजण सिफ्त सलाह, सलाही सलाह ना कोई सलांहयदा। एकँकारा बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। आदि निरँजण निथावयां देवे साचा थाँ, दरगाह साची थान इक्क सुहांयदा। श्री भगवान पकड़े बांह, आप आपणे गले लगांयदा। अबिनाशी करता पिता माँ, आप आपणी गोद सुहांयदा। पारब्रह्म आप जपाए आपणा ना, नाम निधाना आप भरांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। सो पुरख निरँजण साचा सज्जण, घर साचे सोभा पांयदा। हरि पुरख निरँजण इक्क वखाए साचा मजन, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का लांयदा। एकँकारा आपे होए पड़दे कज्जण, साचा पर्दा एका पांयदा। आदि निरँजण दर घर, साचे सच नगारे वेखे वज्जण, ताल तलवाड़ा आप वजांयदा। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर सच महल्ला आप सुहांयदा। सच महल्ला सोभावन्त, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। पुरख अबिनाशी महिमा अगणत, वेद कतेब भेव ना आंयदा। आपे नार आपे कन्त, आपे आपणी सेज हंढांयदा। आपे चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जांयदा। आपे आदि आपे अन्त, मध आपणा रूप धरांयदा। आपे साध आपे सन्त, गुर पीर अवतार आप अख्वांयदा। आपे जीव आपे जंत, आपे जागरत जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी खेल तमाशा, पुरख अबिनाशी आप करांयदा। सचखण्ड दुआर हरि निरँकार, एका आप उपांयदा। ना कोई दिसे चार दिवार, ना कोई बणत बणांयदा। दीवा बाती ना कोई उज्यार, ना कोई सेव कमांयदा। शाह सुल्तान ना कोई सिक्दार, जगत भूप ना रूप वटांयदा। खड़ग खण्डा ना तेज कटार, तीर कमान ना कोई उठांयदा। ना कोई मंगे भुक्खा नंगा भिखार, भिखक भिच्छया झोली कोए ना पांयदा। रवि ससि ना कोई सतार, मंडल मंडप ना कोई सुहांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए उज्यार, चारे वेद ना कोए लिखांयदा। खाणी बाणी ना बन्ने धार, जेरज अंडज उत्भुज सेत्ज रचन ना कोई रचांयदा। महल्ल अटल ना कोए मुनार, सरगुण रूप ना कोए प्रगटांयदा। धरत धवल ना करे प्यार, जल बिम्ब ना कोए धरांयदा। सचखण्ड निवासी खेल अपार, पुरख अगम्मड़ा आप करांयदा। अलक्ख अगोचर वसे न्यार, सति पुरख निरँजण आपणा नाउँ धरांयदा। सो पुरख निरँजण मीत मुरार, हरि हरि आपणा मेल मिलांयदा। हरि पुरख निरँजण कर प्यार, आपणे अंग लगांयदा। एकँकारा दए सहारा, सगला संग वखांयदा। आदि निरँजण जोत उज्यार, नूर नुराना रूप धरांयदा। श्री भगवान सांझा यार, वरन गोत ना कोए बणांयदा। अबिनाशी करता वेखे इक्क अखाड़, थिर घर साची रचन रचांयदा। पारब्रह्म धुर दरगाही साचा लाड़, दर घर साचा इक्क अख्वांयदा। शब्द सिँघासण कर त्यार, एका आसण सेज विछांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। सचखण्ड दुआरे वसया, हरि सज्जण शहनशाह। आदि जुगादि फिरे नस्सया, जुग जुग बणे मात मलाह। लक्ख चुरासी काया मन्दिर आपे वसया, आपे बैठा जोत जगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा नाँ। आपणा नाउँ हरि भगवान, दरगाह साची आप उपजाईआ। साचा सुत कर बलवान, शब्दी शब्द शब्द

११६ वड्याईआ। आपे वेखे कंसा काहन, साची सोभा आपे पाईआ। आपे देवे आपणा दान, साची झोली नाम भराईआ। आपे दरगाह कर परवान, लोआं पुरीआं रिहा सुणाईआ। आपे बख्शे साचा माण, लोकमात वड वड्याईआ। आपे लक्ख चुरासी कर प्रधान, घर घर विच आप सुहाईआ। आपे देवे धुर फ़रमान, शब्द अगम्मी तार हिलाईआ। काया मन्दिर सच मकान, त्रैगुण नाता जोड़ जुड़ाईआ। पंचम मेला विच जहान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश करे कुड़माईआ। मन मति बुध कर प्रधान, उप्पर माया पर्दा पाईआ। आसा तृष्ना नार रकान, साचा जोबन रही हंढाईआ। पंच वसाए विच शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाईआ। आपणा करे बन्द मकान, बजर कपाटी कुण्डा लाईआ। किसे हथ्थ ना आए जगत जीव नादान, भरमे भुली सर्ब लोकाईआ। गुरमुख विरला होए चतर सुजान, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्म अन्तर देवे ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। अमृत बख्शे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड खेल खिलाईआ। सचखण्ड खेल खिलंदड़ा, पारब्रह्म निरँकार। जुग जुग आपणा वेस वटंदड़ा, लोकमात लए अवतार। लख चुरासी वेख वेखंदड़ा, घट घट अंदर जोत उज्यार। शब्द अनाद धुन वजंदड़ा, अनहद सुणाए साची धुन्कार। सर सरोवर इक्क सुहंदड़ा, आत्म भरया जल भण्डार। दर दरवाज़ा आप खुलंदड़ा, दूई द्वैती देवे मार। आत्म सेजा सच सुहंदड़ा, हरिजन साचे कर प्यार। सोई सुरती आप उठंदड़ा, एका देवे शब्द हुलार। घर साचे मेल मेलंदड़ा, करे खेल अगम्म अपार। ब्रह्म पारब्रह्म एका रंग रगंदड़ा, नाता तुट्टे सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल विच संसार। वड संसारी हरि भगवन्त, आदि जुगादि समाया। लेखा जाणे साचे सन्त, हरिभगतन मेल मिलाया। गुरमुख मेला नारी कन्त, आत्म सेजा रंग रंगाया। गुरसिख महिमा गणत अगणत, लेखा लिख ना सके कोई राया। करे वख लख चुरासी विच्चों जीव जंत, आप आपणा दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि, सतिगुर एका रूप जणाया। सतिगुर रूप हरि भगवान, शब्दी बणत बणांयदा। गुर गुर वेखे विच जहान, पंज तत्त डेरा लांयदा। साचा नाम कर प्रधान, ब्रह्मण्ड खण्ड आप सुणांयदा। लोआं पुरीआं पाए वण्ड, आप आपणा मुख छुपांयदा। गुरमुखां मिटाए दूई द्वैती कंध, भाण्डा भरम भउ भनांयदा। आप सुणाए आपणा सुहागी छन्द, आपणा भेव आपे आप खुल्हांयदा। लेखा जाणे बत्ती दन्द, रसना जिह्वा आप हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल पुरख बिधाता, जुग जुग मेटे अन्धेरी राता, जन भगतां देवे साची दाता, शब्द पढ़ाई एका गाथा, साचा मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। साचा मन्त्र साचा नाम निधान, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। भगतन ११६

०६ ०६

देवे इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म वखाईआ। सन्तन सुणाए साचे कान, आपणा नाद आप वजाईआ। गुरमुखां करे दर परवान, आप आपणी अंक लगाईआ। गुरसिखां देवे जीआं दान, लख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। जुग जुग शब्द बबाण, हरि साचा सच चढ़ांयदा। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, ब्रह्मा विष्न शिव आपणे भाणे आप रहांयदा। करोड़ तेतीस पाए आण, सुरपति राजा इंद निउँ निउँ सीस झुकांयदा। लोकमात निरगुण सरगुण हो प्रधान, गुर सतिगुर नाउँ धरांयदा। शब्द झुलाए सच निशान, नाम साचा वड वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी खेल खिलांयदा। लोकमात हरि भगवन्त आपणी धार बंधाईआ। जोत जगाए जुग जुगन्त, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। आप उठाए साचे सन्त, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। मेल मिलावा हरि हरि कन्त, घर साचे वज्जे वधाईआ। भरमे भुले जीव जंत, जन जनका ना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाईआ। रंग रतड़ा रंग रंगीला, एका पुरख अख्वांयदा। आदि जुगादि छैल छबीला, सति पुरख निरँजन नाउँ धरांयदा। सो पुरख निरँजण आपे वेखे आपणा सच कबीला, लक्ख चुरासी फोल फोलांयदा। हरि पुरख निरँजण दो जहानां करे आपणा हीला, आप आपणा बिरध धरांयदा। एकँकारा जगत वकीला, हरिजन साचे आप तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर बण मलाह, हरिजन साचे लए जगा, साचे बेड़े आप चढ़ा, दो जहानां पार करांयदा। दो जहानां उतरे पार, गुरसिख वड वड्याईआ। सतिगुर पूरा देवे तार, आदि जुगादि वेस वटाईआ। दो जहाना करे प्यार, निरगुण सरगुण मेल मेलाईआ। दिस ना आए विच संसार, दोए दोए लोचण वेख थक्की सर्ब लुकाईआ। जिस जन खोले बन्द किवाड़, तीजा नैण आप खलाईआ। साचे पौड़े देवे चाढ़, सुखमन टेडी बंक पार कराईआ। मेट मिटाए पंचम धाड़, माया ममता मोह चुकाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, निरगुण जोत डगमगाईआ। अमृत देवे ठंडी ठार, निझर झिरना आप झिराईआ। काग उडाए हँसा डार, माणक मोती चोग चुगाईआ। नादि सुणाए सच्ची धुन्कार, घर मन्दिर शब्द अलाहीआ। आप सुणाए सुणावणहार, दूसर संग ना कोई रखाईआ। अनहद ढोला मृदंग वज्जे अपार, सतिगुर पूरा आप वजाईआ। सुरत सवाणी रहे खबरदार, आलस निन्दरा दए मिटाईआ। हउमे हंगता गढ़ तोड़े हँकार, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। लेखा जाणे अंदर बाहर, गुप्त ज़ाहर भेव ना राईआ। साची सेजा कर प्यार, आपे बैठा आसण लाईआ। हरिजन साचे कर त्यार, आप आपणी भुजां उठाईआ। चतुर्भुज हरि मीत मुरार, आदि शक्ति रूप विस्माद, विस्माद रिहा समाईआ। करे खेल अगम्म अपार, धाम अगम्म इक्क सुहाईआ। हड्ड मास नाड़ी चमड़े वसया

बाहर, तत्व तत्त ना कोई रखाया। खुशी गम ना कोई प्यार, हरख सोग ना कोई जणाईआ। गुरसिखां बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। वरन गोत करे ख्वार, आत्म ब्रह्म इक्क वड्याईआ। हरन फरन नेत्र खोल्ह गुर अवतार, आपणा रूप दरसाईआ। दर घर साचे देवे वाड़, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। वाअ ना लग्गे तत्ती हाढ़, जिस मिल्या हरि हरि सच्चा शहनशाहीआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँग्घी कंदर वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा फिरे पिच्छे अगाड़, जग भगतन सेव कमाईआ। कलिजुग मेटे अन्धेरी रात, रैण अन्धेरी रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया करे छार, खाकी खाक आप उडाईआ। मनमति ना करे शंगार, वेसवा नार ना कोई अख्वाईआ। घर घर अंदर करे प्यार, धरत धवल दए वड्याईआ। करनी करता करे आप निरँकार, दूसर होर ना संग रखाईआ। खेले खेल पुरख करतार, नर नरायण वज्जी वधाईआ। दो जहानां बण सिक्दार, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। सति सरूपी साचा निशाना एका चाढ़, सत्ते दीपां नौ खण्डां ब्रह्मण्डां आप वखाईआ। सीस रक्ख सच दस्तार, तख्त ताज इक्क सुहाईआ। लक्ख चुरासी रच रच काज, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। साचे सन्तां मारे इक्क आवाज़, लिखण पढ़न विच ना आईआ। धुरदरगाही देवे दाज, नाम वस्तू झोली पाईआ। शब्द चढ़ाए सच जहाज, एका चप्पू हथ्थ उठाईआ। जन भगतां साजन आपे साज, आपणे भाण्डे आप घड़ाईआ। जुगा जुगन्तर रक्खे लाज, भुल्ल रहे ना राईआ। हरि का नूर ना झल्ले कोई ताब, गुर पीर अवतार रहे गाईआ। शब्द जणाए बोध अगाध, बोध अगाधी इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाला दीन दयाला, सचखण्ड दुआर वसे सच्ची धर्मसाला, साचे सिँघासण आसण सोभा पाईआ। सोभावन्त सचखण्ड दुआर, साचा आसण लांयदा। निरगुण रूप आप निरँकार, निरवैर आपणा खेल खिलांयदा। अजूनी रहित अन्त ना पारावार, भेव अभेद ना कोई खुलांयदा। जुग जुग आवे जावे आपणी वार, आप आपणी रचन रचांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी पावे सार, कौड़े रीठे भन्न वखांयदा। हरि का भेव अगम्म अपार, वेद कतेब भेव ना पांयदा। कागद कलम लिख लिख गई हार, हरि का हिसाब ना कोई आंयदा। साध सन्त करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणांयदा। गुर सतिगुर कहे अन्त ना पारावार, बेअन्त नाउँ धरांयदा। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, निरगुण आपणा रूप धरांयदा। जोती जामा भेव न्यार, लोआं पुरीआं खेल खिलांयदा। लेखा जाणे रवि ससि सतार, ब्रह्मा विष्न शिव आप उठांयदा। करोड़ तेतीसा दए अधार, सुरपति राजा अक्ख खुल्हांयदा। गण गंधर्ब लेखा जाणे आर पार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोपाला दीन दयाला, जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, आपणी चाल आप रखांयदा। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी

चाल, नर नरायण आप चलांयदा। हरि पुरख निरँजन खेल निराल, अकल कल वरतांयदा। एकँकार बण दलाल, लोकमात वेस वटांयदा। आदि निरँजन जोत जलाल, जल्वा नूर डगमगांयदा। अबिनाशी करता सद प्रितपाल, सूरा सरबंग नाउँ धरांयदा। श्री भगवान वेखणहारा पत डाल, आप आपणा बल धरांयदा। पारब्रह्म त्रैगुण माया पा जंजाल, लक्ख चुरासी बन्धन पांयदा। पारब्रह्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वड्यांअदा। त्रैगुण बद्धा नाता, लक्ख चुरासी आप हंढाईआ। खेले खेल पुरख समराथा, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। जगत अन्धेर अन्धेरी राता, चार कुंट अन्धेरा छाईआ। चारे वरन गायन गाथा, हरि का रूप दिस ना आईआ। लहिणा चुक्के ना मस्तक माथा, पूर्ब लेखा ना कोई रखाईआ। अंदर मन्दिर ना सुणाए कोई पूजा पाठा, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। मानस जन्म पूरा ना करे कोई घाटा, अठ सठ तीर्थ रहे नहाईआ। नज़र ना आए जोत लिलाटा, लाटां वाली रहे ध्याईआ। अमृत प्याए ना साचे बाटा, भर प्याला जाम ना कोई प्याईआ। नेड़ ना दिसे आपणी वाटा, आत्म ब्रह्म ना कोई रुशनाईआ। आपणा पर्दा ना किसे पाटा, घर मन्दिर ना वेख वखाईआ। कलिजुग खेले खेल बाज़ीगर नाटा, आप आपणा सांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए समझाईआ। हरिजन साचा पेख्या, पेखणहार निरँकार। धुरदरगाही लिखे लेखया, लिखणहार आप करतार। किसे हथ्थ ना आए औलीए पीर शेख्या, पीर दस्तगीर होए ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा धारे भेख्या, निरगुण मात लए अवतार। मुछ दाढ़ी ना दिसे केसया, मूंड मुंडाए ना विच संसार। आपे होए नर नरेसया, सचखण्ड निवासी बेऐब परवरदिगार। हरि हरि लेखा जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश्या, आप आपणी बन्ने धार, आप फिरे देस प्रदेसया, लोआं पुरीआं पावे सार। ब्रह्मण्डां खण्डां आप प्रकासया, निरगुण दाता जोत उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा खेल करे अगम्म अपार। अलक्ख अगम्म अगम्मड़ा, हरि साची खेल खिलांयदा। मात पित ना अम्मी अम्मड़ा, सुत गोद ना कोई बहांयदा। पैसा पल्ले ना दमड़ी दमड़ा, साचा हट्ट इक्क खुल्हांयदा। ना खुशी ना गमड़ा, नेत्र नीर ना कोई वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण खेल नर हरि नरायण आपणा नाउँ धरांयदा। खेले खेल नर हरि बनवारी, अकल कल धराईआ। खेले खेल अगम्म अपारी, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां देवे नाम भण्डारी, एका वस्त हथ्थ फड़ाईआ। गुरसिख आत्म रहे ना मात कुँवारी, हरि हरि साचा कन्त प्रनाईआ। इच्छया भिच्छया करे सच श्ंगारी, एका गहिणा शब्द तन पहनाईआ। सचखण्ड निवासी घर वसाए एका बारी, सथ्थर यारड़ा हेठ वछाईआ। कलिजुग

अन्तिम आई वारी, लक्ख चुरासी दए दुहाईआ। अल्ला राणी रोवे ज़ारो ज़ारी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। उत्तर पूर्ब पछम दक्खण रिहा विचारी, सच सिँघासण बैठा बेपरवाहीआ। पंडत पांधे पत्तरी ना किसे विचारी, मन का पत्रा ना कोई उलटाईआ। ग्रन्थी पन्थी पढ़ पढ़ गए हारी, हरि का रूप नज़र ना आईआ। बिन सतिगुर कोई ना चढ़े उच्च अटारी, चढ़ चढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। अठसठ तीर्थ होए ख्वारी, धीआं भैणा रहे तकाईआ। ना कोई पुरष ना कोई नारी, नर नरायण ना घर बहाईआ। जगत जीव होए हँकारी, जगत सेवा रहे कमाईआ। आपणी करे ना कोई कारी, जगत वैद सर्ब अख्वाईआ। बिन गुरमुख लेखे लग्गे ना किसे दी दाढ़ी, सतिगुर चरन ना जो छुहाईआ। काया फसल ना पक्कणा अन्तिम हाढ़ी, कच्चे फल दए तुड़ाईआ। बिन सतिगुर पूरे फिरे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, दरगाह साची ना कोई बहाईआ। लक्ख चुरासी लुट्टे मौत लाड़ी, घर घर आपणा फेरा पाईआ। गुरमुख मिले पाया पारब्रह्म परखोतम बेऐब परवरदगारी, वेले अन्त होए सहाईआ। शाहो भूप हरि सच सिक्दारी, साचे तख्त डेरा लाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतारी, हुक्मी हुक्म सर्ब फिराईआ। कलिजुग अन्तिम खेल निराली, प्रगट होए बेपरवाहीआ। तेज कटार ना कोई उठाली, खड़ग खण्डा ना कोई चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे ल्ए वर, जिस जन बूझ बुझाईआ।
१२३ ०९ गुरमुख चतर सुजान, गुर सतिगुर दया कमांयदा। गुरसिख चतर सुजान, सतिगुर मेल मिलांयदा। गुरसिख चतर सुजान, घर मन्दिर बंक सुहांयदा। गुरसिख चतर सुजान, अंदर मन्दिर जोत जगांयदा। गुरसिख चतर सुजान, शब्द धुन राग अलांयदा। गुरसिख चतर सुजान, साची सखीआं मेल मिलांयदा। गुरसिख चतर सुजान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द विचोला आप बणांयदा। शब्द विचोला लोकमात, जुग जुग हरि हरि आप प्रगटांयदा। बैठा रहे इक्क इकांत, दरगाह साची सोभा पांयदा। उत्तम रक्खे आपणी ज़ात, वरन गोत ना वण्ड वण्डांयदा। जन भगतां देवे साची दात, साची वस्त साचे हट्ट विकांयदा। चौदां लोक वखाए एका खाट, आपणा आसण आपे लांयदा। चौदां तबकां मेटे वाट, दूर दुराडा पन्ध मुकांयदा। जन भगतां पूरा करे घाट, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दाता इष्ट गुरदेव सृष्ट सबाई आप बुझांयदा। एका शब्द गुर सूर, दूसर रूप ना कोई जणाईआ। आदि जुगादी आसा मनसा पूर, ना मरे ना जाईआ। जुगा जुगन्तर हाज़र हज़ूर, हरि सच्चा बेपरवाहीआ। ना नेड़े ना दिसे दूर, निज आत्म डेरा लाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। आदि जुगादि सद भरपूर, अतोल अतुल आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर इक्क वखाईआ। शब्द गुर नौजवान, एका रंग

समाया। आप झुलाए सच निशान, दर घर साचे आप उठाया। आपे लेखा जाणे गोपी काहन, मंडल रास आप रचाया। आपे राम रूप भगवान, ग़रीब निमाणे गले लगाया। आपे लोकमात हो प्रधान, निरगुण नाम सति आप दृढ़ाया। आपे खड्ग खण्डा फड़ कृपान, ब्रह्मण्डां वेख वखाया। आपे चिल्ला तीर कमान, तीर तुफंग आप वखाया। आपे होए हरि मेहरवान, हरिजन साचे लए मिलाया। पतित पापी सर्ब तर जाण, जिस जन आपणी दया कमाया। करे प्रकाश कोटन भान, अन्ध अन्धेर मिटाया। चरन धूढ़ कराए अशनान, दुरमति मैल रहे ना राया। दरगाह साची देवे माण, लख चुरासी फंद कटाया। राए धर्म मुख शर्माण, चित्रगुप्त ना लेख वखाया। जिस जन सतिगुर पूरा मिल्या आण, अन्तिम जोती जोत मेल मिलाया। शब्द वखाए सच बिबान, लोआं पुरीआं वेख वखाया। सच्चखण्ड वखाए इक्क मकान, सचखण्ड निवासी आप सुहाया। विरले सन्त कन्त भगवन्त रंग रलीआं मनाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल विच संसार, जगत सागर वेख वखाया। जगत सागर डूँग्घी गार, हरि सतिगुर वेख वखांयदा। गुरमुख साजण लए उभार, आप आपणी बूझ बुझांयदा। मनमुखां धक्का देवे मार, धरनी हौला भार करांयदा। धर्म राए दर खोल्ह किवाड़, साचा लेखा लेखे हथ्थ रखांयदा।
१२४ ना कोई छुडाए सज्जण मीत मुरार, मात पित भाई भैण ना संग रखांयदा। बिन सतिगुर पूरे कोई ना उतरे पार, वेला अन्त ना कोई वखांयदा। शाह सुल्तान रोवण ज़ारो ज़ार, तख्त ताज सर्ब तजांयदा। हरि सन्त हरिभगत एका शब्द बोल जैकार, वेले अन्तिम खुशी मनांयदा। दर घर आए मीत मुरार, फड़ बाहों गले लगांयदा। गुरसिखां उठाए सिर आपणे भार, सीस जगदीस आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, बीस इकीस शब्द हदीस चार वरन चार कुण्ट नौ खण्ड विच ब्रह्मण्ड सूरा सरबंग आपणा आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे वर, इक्क वखाए साचा घर, काया मन्दिर आपे वड़, आप आपणा मेल मिलांयदा। १२४

०६ ०६

❋ १३ पोह २०१६ बिक्रमी कपतान बंता सिँघ दे घर पिण्ड पंज गराईआं गुरदास पुर ❋

सो पुरख निरँजण हरि सुल्तान, आदि जुगादि समांयदा। हरि पुरख निरँजन वड मेहरबान, रूप अनूप आप धरांयदा। एकँकारा खेल महान, अलक्ख अगोचर खेल खिलांयदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जोत जोत जगांयदा। अबिनाशी करता नौजवान, एका रंग समांयदा। श्री भगवान दाता देवणहारा दान, साची वस्त रखांयदा। पारब्रह्म वेखे सच निशान, दर घर साचे आप हिलांयदा। सचखण्ड दुआरा उच्च मकान, निरगुण आपणा आसण लांयदा। घर विच घर कर परवान, थिर

घर आपणी बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल अपार, सचखण्ड दुआर आप सुहांयदा। सो पुरख निरँजण वड बलवाना, एका एक अख्वांयदा। पुरख निरँजन सच निशाना, दर घर साचे आप झुलांयदा। एकँकारा हो प्रधाना, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। आदि निरँजण नूर महाना, निरगुण आपणा नूर धरांयदा। अबिनाशी करता आपे रक्खे आपणा माणा, आप आपणी दया कमांयदा। श्री भगवान जाणी जाणा, भेद अभेद आप अख्वांयदा। पारब्रह्म खेले खेल दो जहाना, वेस अनेका आप वटांयदा। सचखण्ड दुआरा सच तख्त हरि सुहाना, शाहो भूप आसण लांयदा। निरगुण दाता राज राजाना, आप आपणा हुक्म चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा खेल तमासा, पृथ्मी आकासा पुरख अबिनासा आप करांयदा। सो पुरख निरँजन सच महल्ला, एका एक वसांयदा। सो पुरख निरँजन उच्च अटला, सच सिँघासण आप सुहांयदा। एकँकारा आपणे अंदर आपे रल्ला, दूजा तत्त ना कोए बणांयदा। आदि निरँजण आपणा वेस करे अवल्ला, रूप रंग ना कोई वखांयदा। अबिनाशी करता वसणहारा जलां थलां, जल थल महीअल डेरा लांयदा। श्री भगवान सच सनेहड़ा एका घल्ला, शब्द अनादी नाद वजांयदा। पारब्रह्म फड़ाए पल्ला, एका पल्लू हथ्थ रखांयदा। सचखण्ड दुआरा खेले खेल अछल अछला, वल छल धारी दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण विच समांयदा। सो पुरख निरँजण निरगुण धार, हरि पुरख निरँजण आप उपजाईआ। एकँकारा कर प्यार, आदि निरँजण लए मिलाईआ। अबिनाशी करता मीत मुरार, श्री भगवान वेखणहारा थाउँ थाईंआ। पारब्रह्म आपणे दर आपे करे निमस्कार, आपणा सीस आप झुकाईआ। सचंखड वसे आप निरँकार, दूसर होर ना कोई रखाईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, शाह सुल्तान नाउँ धराईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, हुक्म हुक्म आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाला दीन दयाला खेल निराला आप कराईआ। सो पुरख निरँजण हरि अकाल, वड्डा वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजन दीन दयाल, दयानिध आप अख्वाईआ। एकँकारा आप उपाए काल महांकाल, आप आपणे विच टिकाईआ। आदि निरँजन करे संभाल, जोत निरँजण वेस वटाईआ। अबिनाशी करता एका रक्खे सच्चा धन माल, साचा हट्ट आप खुल्हाईआ। पारब्रह्म करे कराए सदा प्रितपाल, दो जहानां सेव कमाईआ। पारब्रह्म आपे चले अवल्लड़ी चाल, चाल अवल्लड़ी इक्क रखाईआ। सचखण्ड दुआरा सच सच्ची धर्मसाल, सतिगुर बैठा आसण लाईआ। थिर घर वासा हरि भगवाना, आप आपणा मुख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा खेल खिलाईआ। निरगुण खेल अगम्म अपार, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। सचखण्ड निवासी हो त्यार, आप आपणा

बंक सुहांयदा। बंक दुआरा खोल्ह किवाड़, आप आपणी रचन रचांयदा। आपे वेखे सच अखाड़, दर घर साचे सोभा पांयदा। आपे बणे साचा लाड़, कन्त कन्तूहल आप हो जांयदा। आपे बणे आपणी नार, नर नरायण रूप वटांयदा। आपे सेजा रलीआं माणे कन्त भतार, निरगुण निरगुण अंग लगांयदा। आपे अंदर आपे बाहर, आपे आपणा मेल मिलांयदा। आपे करनी करता करे साची कार, करता पुरख नाउँ धरांयदा। आपे उपजाए आपणा सुत दुलार, शब्दी नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची वेख वखांयदा। दरगाह साची साचा संग, सो पुरख निरँजण आप निभांयदा। हरि पुरख निरँजण सूरा सरबंग, आप आपणा खेल खिलांयदा। एकँकारा वजाए मृदंग, आप आपणा नाउँ धरांयदा। आदि निरँजन वसे संग, सगला संग रखांयदा। अबिनाशी करता कसे तंग, साचे अश्व आसण लांयदा। श्री भगवान मंगे मंग, इच्छया भिच्छया वेख वखांयदा। पारब्रह्म साचे मन्दिर आपे लँघ, दर दरवाजा आप खलांयदा। सचखण्ड दुआरा सच पलँघ, निरगुण आपणी सेज सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अजूनी रहित आप अख्वांयदा। अजूनी रहित हरि करतार, दूसर अवर ना कोई जणाईआ। निर्भय खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर वड वड्याईआ। सति पुरख निरँजन बेऐब परवरदिगार, नूरी जल्वा नूर इलाहीआ। साचे मन्दिर सोहे आप सिक्दार, तख्त ताज इक्क हंढाईआ। दो जहानां करे सच्चा राज, दर दरबान ना कोई रखाईआ। आपे रचया आपणा काज, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। आपे शाह आपे नवाब, आपे वेखे आपणा आप बेपरवाहीआ। आपे माई आपे बाप, पूत सपूता आप अख्वाईआ। आपे जाणे आपणा वड प्रताप, लेखा लेखे विच ना आईआ। आपे जाणे आपणा जाप, लिखण पढ़न विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण पुरख अबिनासन सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरे हरि हरि वसया, एका एकँकार। भेव आपणा किसे ना दस्सया, आदि जुगादी बन्न्हे धार। दो जहाना फिरे नस्सया, निरगुण रूप अपर अपार। आपणे मन्दिर बह बह हस्सया, आपणा करे सच प्यार। आपणा दीवा बाती आप करे प्रकासया, जोती जोत कर उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर खेल अपार निरगुण धार। निरगुण धार आदि जुगादि, हरि साचा सच चलांयदा। शब्द वजाए एका नाद, तुरीआ राग आप अल्हांयदा। लेखा जाणे बोध अगाध, भेव अभेदा भेव खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क वसांयदा। दर घर साचा सोभावन्त, हरि साचा सच सुहाया। पुरख अबिनाशी एका कन्त, निरगुण बैठा आसण लाया। आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लिख ना सके कोई राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव प्रकाश आप कराया। अनुभव प्रकाश हरि सूरबीर, एका

एक करांयदा। दाता दानी गुणी गहीर, गहर गम्भीर आप अख्वांयदा। पंज तत्त ना दिसे सरीर, काया गढ़ ना कोई वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर डेरा एका लांयदा। थिर घर अंदर हरि हरि वड़या, दिस किसे ना आया। आपणे पौड़े आपे चढ़आ, आपे वेख वखाया। आदि जुगादि किसे ना फड़या, निरगुण अचरज वेस वटाया। आपणी विद्या आपे पढ़या, ना कोई दूसर सके पढ़ाया। अग्नी हवन कदे ना सड़या, ना मरे ना जाया। आपणा घाड़न आपे घड़या, ना कोई भन्न वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी साची दरगाह, खेले खेल पुरख बिधाता, आपे देवे आपणी दाता, दाता दानी नाउँ धराया। दाता दानी हरि भगवान, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। सति सरूपी सच निशाना, सति पुरख निरँजन आप झुलाईआ। शाहो भूप बणे राज राजाना, साचे तख्त आप सुहाईआ। महिबान बीदो खेल महाना, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। इक्क इकल्ला नौजवाना, साचा तख्त आप सुहाईआ। ना कोई चिल्ला तीर कमाना, शस्त्र बस्त्र ना कोई वखाईआ। ना कोई जोद्धा नाल जवाना, ना कोई दिसे लशकर शाहीआ। ना कोई ज़िमी ना अस्माना, गगन मंडल ना वेख वखाईआ। रवि ससि ना कोए प्रधाना, सूरज चन्न ना कोई चढ़ाईआ। पवण पाणी ना कोई मसाणा, जल धार ना कोई वहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी ना कोए निशाना, सत्त दीप ना वेस वटाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोई ज्ञाना, चारे वेद ना कोई पढ़ाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना कोई बीआबाना, डूँग्घी कंदर ना कोए वखाईआ। रसना जेहवा ना कोई गाणा, बत्ती दन्द ना कोई हिलाईआ। नेत्र नैण ना करे कोई ध्याना, रसन स्वास ना कोई वखाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवाना, सचखण्ड दुआरे बैठा आसण लाईआ। आपणी करनी करे महाना, करनहार इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा घर हरि साचा आप सुहाईआ। सचखण्ड निवासी आदि निरँजन, एका रंग समांयदा। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजन, आपणा नाउँ धरांयदा। आपे जाणे आपणा मजन, सर सरोवर आप इक्क उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संग इक्क वखांयदा। साचा बंक हरि दुआर, हरि साचा आप उपांयदा। कमलापाती मीत मुरार, घर साचे सोभा पांयदा। दीवा बाती ना कोई उज्यार, निरगुण जोती जोत जगांयदा। बूंद स्वांती ठंडी ठार, आपणा ताल भरांयदा। दिवस राती ना कोई विचार, घड़ी पल ना कोई जणांयदा। इक्क अकांती खेल न्यार, हरि साचा आप करांयदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, आपणा नैण आप उठांयदा। अग्नी लग्गे ना वा तत्ती हाढ़, रती रत्त ना कोई रखांयदा। ना कोई नाता जोड़े बहत्तर नाड़, रक्त बूंद ना मेल मिलांयदा। निरगुण उपजाए निरगुण धार, निरगुण निरगुण विच टिकांयदा। निरगुण कन्त निरगुण नार, निरगुण सेज हंढांयदा। निरगुण

शब्द सुत दुलार, आप आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड महल्ला उच्च अटला एका एक वसांयदा। सच महल्ला सच दरगाह, हरि साचा सच सहांयदा। निरगुण दाता बण मलाह, आप आपणा मेल मिलांयदा। जुगा जुगन्तर खेले खेल बेपरवाह, नित नवित कार करांयदा। आपणी रचना आप रचा, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लांयदा। एका वस्त झोली पा, त्रैगुण माया जोड़ जुड़ांयदा। पंचम नाता सहिज सुभा, काया गढ़ सुहांयदा। अंदर मन्दिर डेरा ला, आपणा मुख छुपांयदा। घर विच घर लए रचा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी आप उपांयदा। लक्ख चुरासी भाण्डा घड़, ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगाईआ। निरगुण अंदर आपे वड़, आप आपणा मेल मिलाईआ। आपे पूजा आत्म ब्रह्म, ईश जीव आप अख्वाईआ । आपे आपणी कुक्खों लए जम्म, सुफली कुक्ख आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी एका वर, एका बूझ बुझाईआ। लख चुरासी हरि हरि घड़या, हरि वड्डा वड वड्याईआ। निरगुण अंदर निरगुण वड़या, आप आपणी दया कमाईआ। आपणे अंदर आपे चढ़या, घर घर विच कर रुशनाईआ। आपणा ताला आपे जड़या, बजर कपाटी अग्गे लाईआ। निर्भय हो कदे ना डरया, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे बेपरवाहीआ। बेपरवाह नूर अलाह, एका रंग समांयदा। खेले खेल शहनशाह, थान थंनतर वेख वखांयदा। आदि जुगादि जपाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप रखांयदा। जन भगतां देवे साचा राह, साची सिख्या सिख समझांयदा। आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ा, एका दर वखांयदा। साची भिच्छया झोली पा, नाम भण्डारा आप वरतांयदा। दहि दिशा फेरी पा, गुर सतिगुर रूप प्रगटांयदा। कागों हँस दए बणा, साची चोग इक्क चुगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एकँकार, खेले खेल अगम्म अपार, लक्ख चुरासी डेरा लांयदा। लख चुरासी डेरा लाया, घट घट जोत जगाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खिलाया, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। सरगुण साचा मेल मिलाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। गुरमुख साचे लए उठाया, आप आपणी बूझ बुझाईआ। नौ दुआरे खोज खुजाया, सुखमन टेडी बंक सुहाईआ। त्रिबैणी नैणी पार कराया, आप आपणा रूप दरसाईआ। अमृत सरोवर इक्क नुहाया, साचा ताल आप सुहाईआ। शब्द सरूपी राग सुणाया, अनहद ढोला साचा गाईआ। पंचम बह बह आपे गाया, आपे आपणा नाद वजाईआ। साची सखीआं मेल मिलाया, घर साचे सोभा पाईआ। दूई द्वैती पर्दा लाहया, एका रंग समाईआ। हउमे हंगता गढ़ तुड़ाया, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। एका अक्खर नाम पढ़ाया, जगत विद्या भेव खुल्हाईआ। आत्म सेजा दए सुहाया, स्वच्छ सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। सुरत सवाणी लए बिठाया, शब्द हाणी

मेल मिलाईआ। ठंडा पाणी आप प्याया, त्रैगुण माया साचा साकी अमृत जाम प्याईआ। दीन दयाला दया कमाया, निज आत्म कर रुशनाईआ। जोत निरँजन डगमगाया, दिवस रैण ना कोई रखाईआ। रवि ससि रिहा शर्माया, हरिजन तेरा रूप आप वखाए बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द शब्द शब्द इष्ट गुरदेव आप लगाए, पारब्रह्म अबिनाशी करता ब्रह्म ब्रह्मादी साची सेव आदि जुगादी सेव कमाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आप उपाया, आपणी अंस बणांयदा। आदि जुगादी खेल खिलाया, एका रंग समांयदा। ईश जीव खेल खिलाया, जगदीश वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। खेल अवल्ला पुरख अबिनाशा, आदि जुगादि करांयदा। जुगा जुगन्तर लगा तमाशा, आदि जुगादि वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पावे रासा, मंडल रास आप रचांयदा। जन भगतां करे पूरी आसा, आस निरास सर्ब मिटांयदा। निज घर आत्म कर कर वासा, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। पारब्रह्म प्रभ सर्ब गुणतासा, गुण दाता आप अख्वांयदा। लेखा जाणे पृथ्मी अकासा, गगन गगनंतर फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन साचे आप उठांयदा। भगत वछल हरि गिरधारा, दर दुआर इक्क सुहाया।
१२६ सन्तन करे सच प्यारा, घर साचे मेल मिलाया। गुरमुख कराए वणज वपारा, एका नाम हट्ट विकाया। गुरसिखां देवे चरन १२६
०६ कँवल अधारा, धीरज धीर इक्क धराया। त्रैगुण माया वसया बाहरा, पंज तत्त ना कोए प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि, ०६
आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन साचे लए तराया। हरिभगतन मीता हरि भगवन्त, हरि सज्जण लए उठाईआ। लेखा जाणे साचे सन्त, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। गुरमुख बणाए साची बणत, जुग जुग बेड़ा बन्नॣ वखाईआ। गुरसिख मेला नारी कन्त, घर साची सेज सुहाईआ। काया चोली चाड़्हे रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। तोड़े गढ़् हउमे हंगत, निवण सु अक्खर इक्क समझाईआ। मेल मिलावा साची संगत, गुर शब्द करे कुड़माईआ। जिउँ अंग लगाया नानक अंगद, आप आपणे अंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा लेख करतार, चार वेद भेद ना आंयदा। पुराण अठारां गए हार, वेद व्यासा रसना जिह्वा आप सुणांयदा। शास्त्र सिमरत करे ज्ञान, गीता ज्ञान अठारां अध्याए इक्क जणांयदा। अञ्जीलां कुरानां हाहाकार, कलमा अमाम आपणे हथ्थ रखांयदा। नूर अलाही बेऐब परवरदिगार, मुकामे हक हक वखांयदा। नानक निरगुण बोल जैकार, नाम सति इक्क दृढ़ांयदा। ब्रह्म मति विच संसार, चार वरनां करे प्यार, ऊँच नीचां इक्क प्यार, साची रंगण इक्क रंगांयदा। एका शब्द गुर अवतार, जीव जंत सर्ब समझांयदा। साचे सन्तां करे प्यार, आप आपणी गोद बहांयदा। हँकारीआं तोड़े गढ़् हँकार, नाम खण्डा हथ्थ

उठांयदा। ब्रह्मण्डां मारे आपे मार, साची वण्डा वण्ड वण्डांयदा। भेख पखण्डा दए निवार, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे घर घर, जुग जुग वेस वटांयदा। वेस अवल्लड़ा इक्क इकल्ला, नूरो नूर समाया। खेले खेल घड़ी घड़ी पल पला, आदि जुगादि नाउँ धराया। आप फड़ाए आपणा पल्ला, पंज तत्त चोला आप हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाया। एका धार एका गुर, एका पूज पुजाईआ। एका पुरख एका नार, कन्त कन्तूहल इक्क अख्वाईआ। एका तन इक्क शंगार, बस्त्र भूशन इक्क सुहाईआ। एका पलँघ एका सोवणहार, एका आलस निन्दरा दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे आपणा रूप आप प्रगटाईआ। एका पुरख इक्क सुल्तान, एका बंक सुहांयदा। एका नूर नूर नुरान, आदि शक्ति रूप वटांयदा। एका चतुर्भुज खेले खेल महान, खेलणहारा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, बंक दुआरा इक्क वड्यांअदा। बंक दुआरा सच्चा दर, सो पुरख निरँजन आप सुहाया। हरि पुरख निरँजन किरपा कर, आप आपणा वेख वखाया। एकँकारा अगे खड़, आदि निरँजन लए जगाया। अबिनाशी करता ना कोई सीस ना कोई धड़, श्री भगवान मुछ दाढ़ी केस ना कोई रखाया। पारब्रह्म आपणा अक्खर आपे पढ़, निष्अक्खर आप समाया। साचे पौड़े आपे चढ़, आपणा मन्दिर आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार बंधाया। जुग जुग धार हरि निरँकार, लोकमात आप बंधाईआ। सतिजुग साचे पाए सार, सारंगधर भगवान बीठलो आप अख्वाईआ। त्रेता त्रीया कर विचार, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। लंका तोड़ गढ़ हँकार, दूती दुष्ट आप खपाईआ। द्वापर तेरा कर्म विचार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। प्रगट हो विच संसार, एका बंसरी नाम वजाईआ। बिदर सुदामा जाए तार, लज पति आपणे हथ्थ रखाईआ। रथ रथवाही खेल अपार, आपणा रथ रिहा चलाईआ। कलिजुग वेखे काली धार, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। ईसा मूसा खबरदार, काला सूसा तन छुहाईआ। जगत हदीसा कर उज्यार, एका कलमा आप पढ़ाईआ। कायनात वेख विचार, चार कुण्ट फोल फुलाईआ। चौदां तबकां खोल्ह किवाड़, इक्क दुआरा दए वखाईआ। वेख वखाए संग मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग अन्तिम कूड़ पसारा, हरि साचा वेख वखांयदा। धरती धवल करे पुकारा, जीव जंत सर्ब कुरलांयदा। साध सन्त ना पावे कोई सारा, राज राजान ना कोई दिसांयदा। चार वरन हाहाकारा, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, आपणी रचना आप रचांयदा। नानक निरगुण कर पसारा, सरगुण साची जोत

जगांयदा। एका शब्द बोल जैकारा, मन्त्र नाम इक्क दृढ़ांयदा। आपे खोल्ह सच भण्डारा, ऊँचा नीचां आप वरतांयदा। एका शब्द वणज वपारा, चारों कुंट वणज वखांयदा। वरनां बरनां वसे बाहरा, साची सुरत इक्क टिकांयदा। एका लेखा लिखणहारा, जीव जंत सर्ब समझांयदा। सृष्ट सबाई मीत मुरारा, एका गीत सुहागी गांयदा। सोहँ अक्खर अगम्म अपारा, ब्रह्म पारब्रह्म समांयदा। अंगद अंगीकार कर देवे इक्क हुलारा, अमर अमरापद बहांयदा। रामदास हो उज्यारा, गुर अर्जन आप जगांयदा। अनहद नाद सच्ची धुन्कारा, बोध अगाध भेव खुल्हांयदा। गूरु ग्रन्थ गुर कर त्यारा, लक्ख चुरासी आप समझांयदा। सन्त भगत भगवन्त सोहण इक्क दुआरा, दूजा दर ना कोई वखांयदा। मनमुखां मारे आपणी मारा, नाम खण्डा हथ्थ चमकांयदा। दो जहान करे ख्वारा, राए धर्म हथ्थ फड़ांयदा। चित्रगुप्त पाए सारा, लाड़ी मौत नाल प्रनांयदा। गुरमुखां वखाए सच दुआरा, दरगाह साची साचा धाम सुहांयदा। जिस जन मिल्या हरि हरि मीत मुरारा, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। सो पुरख निरँजन खेले खेल अन्तिम वारा, हरि पुरख निरँजण भेव खुल्हांयदा। एकँकारा कर पसारा, लख चुरासी फोल फोलांयदा। आदि निरँजन दीपक कर उज्यारा, जोत निरँजन डगमगांयदा। श्री भगवान आप वजाए आपणा ताड़ा, शब्द अनादी धुन उप्पर रखांयदा। अबिनाशी करता वेखे सच अखाड़ा, हरिजन काया मन्दिर गोपी काहन आप नचांयदा। पारब्रह्म गुरसिख बणाए साचा लाड़ा, मस्तक टिक्का आप सुहांयदा। आवे जावे वारो वारा, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। एका जोती दस अवतारा, गुर गोबिन्द खेल खिलांयदा। सिँघ रूप कर विच संसारा, साचा खण्डा हथ्थ चमकांयदा। चण्ड प्रचण्ड दए हुलारा, एका चण्डी हथ्थ वखांयदा। शस्त्र बस्त्र तन शंगारा, कल्गी तोड़ा सीस टिकांयदा। साचा घोड़ा शाह अस्वारा, नीला नीली धारों पार करांयदा। अमृत बख्शे ठंडी ठारा, साचा खण्डा नाम विच फिरांयदा। पंचम मीता पंचम प्यारा, पंचम नाता जोड़ जुड़ांयदा। पंचम बोल इक्क जैकारा, वाह वाह गूरु फतिह आप सुणांयदा। वज्जदा रहे सच नगारा, पुरख अकाल आप वजांयदा। एका इष्ट देव गुरू सृष्ट सबाई पावे सारा, एकँकारा दूजा इष्ट ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता हरि करनेहारा आपणा कर्म कमांयदा। करता पुरख हरि करने योग, जुग जुग खेल खिलांयदा। जुगां जुगन्तर करे संजोग, विजोग लहिणा देण आप मुकांयदा। आपणा भोगी भोगे भोग, रस रसीआ रस वखांयदा। लेखा जाणे तिन्नां लोक, चौदां हट्ट वेख वखांयदा। शब्द अगम्मी इक्क सलोक, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव अन्तिम अन्त आपे देवे झोक, थिर कोई रहिण ना पांयदा। हरि का भाणा ना सके कोई रोक, साध सन्त सर्ब समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा पन्ध मुकांयदा। कलिजुग पन्ध मुक्कणा, हरि

साचा आप मुकाईआ। कूड़ अन्धेरा जगत तों मुक्कणा, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। जूठा झूठा बूटा सुक्कणा, पत्त डाली ना कोई महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर आप बुझाए लग्गी बसन्तर, एका अमृत मेघ बरसाईआ। अमृत जाए बरस, हरि सतिगुर आप बरसांयदा। जन भगतां उप्पर करे तरस, काया सिंच हरी करांयदा। जगत तृष्ना मेटे हरस, शब्द शब्दी जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। कलिजुग धोवे काला दाग, सतिगुर साचे हथ्थ वड्याईआ। गुर अर्जन जोती जगे चराग, काया मन्दिर होए रुशनाईआ। त्रैगुण माया लग्गी बुझे आग, सांतक सति सति वरताईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, माणक मोती चोग चुगाईआ। आत्म उपजाए इक्क वैराग, लिव आत्म इक्क अवखाईआ। अनहद सुणाए साचा राग, ताल तलवाड़ा इक्क वजाईआ। सुरत सवाणी जाए जाग, घर साचे आप जगाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादि वजाए नाद, निरगुण ढोला एका गाईआ। लेखा जाणे जुगादि आदि, आदि जुगादि बेपरवाहीआ। मेल मिलाए सन्त साध, भगत भगवन्त वेख वखाईआ। जो जन रसना रहे अराध, देवे दरस थाउँ थाईंआ। मेल मिलावा माधव माध, हरिजन साचे संग निभाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा जाए भाग, लोकमात रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी हथ्थ आपणे पकड़े वाग, गुर पीर अवतार देण गवाहीआ। हरि सरनाई जो जन गया लाग, वेले अन्त होए सहाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग, उज्जल मुख आप कराईआ। चरन धूढ़ कराए मजन माघ, गुरसिख अठसठ तीर्थ नहावन ना जाईआ। सतिगुर सच्चा सज्जण साक, मात पित भैण आप अख्वाईआ। आपे जाणे आपणा भविख्त वाक, दूसर भेव ना कोई रखाईआ। शब्द अगम्मी चढ़े राक, अश्व घोड़ा आप दौड़ाईआ। सच सिँघासण मार पलाक, बैठे दाता शहनशाहीआ। दो जहानां देवे आपणी डाक, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाईआ। खेले खेल अलखना अलाख, लेखा लिख्त विच ना आईआ। अन्तिम बौहड़ देवे भाख्या आपणी भाख, नौं खण्ड पृथ्मी दिस ना आईआ। सन्त सुहेले गुरमुख चेले सज्जण लए राख, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। आपे करे कक्खों लाख, लक्खो कक्ख आप कराईआ। आपे दरस वखाए हो प्रतक्ख, आपे बैठा मुख छुपाईआ। आपे गुरमुख लक्ख चुरासी विच्चों करे वक्ख, आप आपणी वण्ड वण्डाईआ। आपे जाणे आपणा पक्ख, किशना सुखला वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम मार्ग एका दस्स, चार वरन करे पढ़ाईआ। हरिजन मिलाए नस्स नस्स, गूढ़ी नींद ना कोई सुआईआ। हिरदे अंदर वस वस, आप आपणी बूझ बुझाईआ। सोहँ तीर निराला मारे कस, तिक्खी मुखी मुख रखाईआ। पंचम विकारा देवे झस्स, तत्व तत्त रहिण ना पाईआ। माया ममता डसनी डस्स, नाग नागनी रहे कुरलाईआ। भगतां दिसे घट घट, ऊँच नीच ना कोई उपजाईआ। गुरमुखां

अंदर जोत जगाए लट लट, गुर गोबिन्द अंक गया लिखाईआ। दुरमति मैल देवे कट्ट, अमृत साचा जाम प्याईआ। चौदां लोक वखाए हट, आप आपणा वणज कराईआ। गुरमुख विरला लाहा लए खट्ट, भरमे भुल्ली सर्ब लुकाईआ। आदि जुगादि हरि का खेल बाज़ीगर नट, हरि स्वांगी सांग रचाईआ। लेखा जाणे तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती फोल फुलाईआ। वेख वखाए गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। जो उपजाया सो जाए ढट्ठ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल उलटी गेड़नहारा लट्ठ, गेड़ा आपणे आप दवाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां कोई ना पहुंचे नट्ठ नट्ठ, दो जहाना पन्ध ना कोई मुकाईआ। कलिजुग तेरी कूड़ी धार देवे कट्ट, सीस धड़ रहिण ना पाईआ। गुरमुखां आत्म अन्तर अमृत देवे झट्ट, निझर रस इक्क प्याईआ। आप सुहाए साची खाट, सच सिँघासण आसण लाईआ। तन पहनाए शब्द गहिणा साचा पट, कफ्नी कफ्न ना कोई वखाईआ। जो जन रसना जेहवा रहे रट, रत्न अमोलक नाम आपणी जड़त जड़ाईआ। दूई द्वैती पट्टे भट्ठ, तीजा नेत्र इक्क खुलाईआ। चौथे घर देवे अमरापद, आप आपणे रंग रंगाईआ। आपे जाणे पार किनारा हद्द, मँझधार ना कोई रुढ़ाईआ। सन्त सहेले आप आपणे आपे सद्द, आप आपणी करे पढ़ाईआ। मनमुखां उप्पर जूठा झूठा भार देवे लद्द, ना सके कोई पैर उठाईआ। सचखण्ड दवारिउँ देवे कढ्ढ, राए धर्म दए सजाईआ। वेखणहारा लुकया कोई ना देवे छड्ड, ब्रह्मण्ड जंगल जूह पहाड़ फोल फुलाईआ। दुहागण नार मनमुख नक्क देवे वढ्ढ, सीस चोटी ना कोई गुंदाईआ। लेखे लग्गे ना माया काया हड्ड, जिस भुलया बेपरवाहीआ। गुरसिखां लडाए साचा लड्ड, आप आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, आपे मेटे मेटणहारा, जीव जंत भेव ना राईआ। कलिजुग कूड़ पसार, हरि साचे मेट मिटावना। करे खेल एकँकार, इक्क इकल्ला डंक वजावना। लोआं पुरीआं करे खबरदार, ब्रह्मा विष्न शिव आप उठावना। नौं खण्ड पृथ्मी हो त्यार, जोती जामा भेस वटावना। पंज तत्त ना कोई अकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलावणा। जुग जुग खेल खिलंदड़ा, पारब्रह्म बेअंतया। कलिजुग अन्तिम वेख वखंदड़ा, चारो कुण्ट खोज खुजंतया। साचा मन्दिर ना कोई दसंदड़ा, पुरख अबिनाशी माया पाई बेअंतया। गुरमुख विरला एका इश्ट रखंदड़ा, भरमे भुल्ला जीव जंतया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लेखा जाणे साध संतया। साध सन्त हरि बूज्झया, आप आपणी किरपा धार। हरिजन दुआरे जो जन लूज्झया, रसना जेहवा नाम अधार। सच दुआरा एका सूज्झया, नाता तोड़ सर्ब संसार। त्रैगुण माया अग्नी तत्त कदे ना बूज्झया, सीतल शब्द करे हरि करतार। लेखा जाणे एका दूजया, आपे खोल्हे बन्द किवाड़।

१३३ ०६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एकँकार। इक्क इकल्ला हरि अख्वांयदा, वड दाता बेपरवाहीआ। दूजा महल्ला सच वसांयदा, आपणी कुदरत आप रचाईआ। तीजा नैण इक्क खुलांयदा, जन भगतां बूझ बुझाईआ। चौथा पद आप समांयदा, दर घर साचा आसण लाईआ। पंचम मेला मेल मिलांयदा, जगत विछोड़ा दए कटाईआ। छेवे छप्पर छन्न ना कोई सुहांयदा, सचखण्ड बैठा सेज सुहाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण, आपणा रूप धरांयदा, मात पित ना कोई बणाईआ। अठ्ठ तत्तां वेख वखांयदा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध नाल रलाईआ। नौ दुआरे खोज खुजांयदा, जगत वासना फोल फुलाईआ। दस्म दुआरी आपणा घर वसांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। दस्म दुआरा साचा घर, हरि साचा सच वसाईआ। आपे निरगुण अंदर वड़, आपणी करे आप रुशनाईआ। आपे दरस दिखाए आपणा खड़, रूप अनूप आप दरसाईआ। आप फड़ाए आपणा लड़, आपे पल्ले गंढु दवाईआ। आपे शब्द सुणाए निष्अक्खर पढ़, लिखण पढ़न विच ना आईआ। आपे आत्म सेजा सोया हरि चढ़, आपे आपणी करवट लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दरगाह खेल अपार, हरि निरँकार आपे रिहा खलाईआ। खेल अपार हरि निरँकार, घर साचे सच करांयदा। सन्तन करे सच प्यार, आप आपणा मेल मिलांयदा। धुन आत्मक शब्द जैकार, अनादी नाद आप वजांयदा। घर मन्दिर दीप उज्यार, नूर नुराना डगमगांयदा। सर सरोवर इक्क न्यार, अमृत जल भरांयदा। गुरमुख साचे लए नुहाल, कागों हँस बणांयदा। जुगा जुगन्तर चले अवल्लड़ी चाल, भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका डंका शब्द वजांयदा। डंका शब्द अनहद तूरा, सति पुरख निरँजन आप वजांयदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, कूड़ कुड़यार मेट मिटांयदा। जन भगतां आसा तृष्ना करे पूरा, पूरी भिच्छया झोली पांयदा। आदि जुगादी हाज़र हज़ूरा, ज़ाहर ज़हूरा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेल अपारा, पारब्रह्म ब्रह्म पाए सारा, चारों कुंट करे ख्वारा, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। चारों कुण्ट करे ख्वार, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। धरत धवल करे पुकार, सीस भार ना कोई उठाईआ। साध सन्त ना बणे धार, विभचार ना कोई हटाईआ। नार कन्त ना करे प्यार, वेसवा रूप रही हंढाईआ। मात पित ना कोई अधार, पूत सपूत ना गले लगाईआ। माया ममता मारे मार, जूठा झूठा खण्डा हथ्थ चमकाईआ। सतिगुर पूरा पावे सार, नेत्र नैण आपणा आप खुल्हाईआ। शब्द गुर लए अवतार, एका खेल रिहा खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख थाउँ थाईंआ। कलिजुग अन्तिम पेख्या, पारब्रह्म हरि करतार। आपे

वेखे लिख्या लेखया, लेखा लिखणहार आप निरँकार। आपे धारे आपणा भेसया, भेव अभेदा विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी कार। कार करंदड़ा हरि मेहरबाना, दूसर अवर ना कोए जणांयदा। दरगाह साची सच निशान, सत्त रंगा आप चढ़ांयदा। लोकमात हो प्रधान, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। पावे सार दो जहान, गगन पतालां फेरा पांयदा। शब्द अनादी सच तराना, चार वरनां आप सुणांयदा। जन भगतां बन्ने सगनी गाना, साचा तन्द हथ्थ उठांयदा। दरगाह साची देवे माणा, चरन दुआर इक्क वखांयदा। आपे वरते आपणा भाणा, हरि भाणे सद समांयदा। तख्तों लाहे राजा राणा, सीस ताज ना कोई टिकांयदा। लंका तोड़े गढ़ अभिमाना, माया ममता मोह चुकांयदा। शब्द मारे तीर निशाना, लक्ख चुरासी डेरा ढांयदा। ब्रह्मा शिव मंगे दाना, नेत्र रो रो नीर वहांयदा। विष्नूं बैठा बण निमाणा, दर साचे सीस झुकांयदा। शंकर वाशक तशका गलों तजाए एका मंगे चरन ध्याना, हथ्थ त्रशूल ना कोए वखांयदा। राए धर्म हो प्रधाना, अग्गे आपणी झोली डांहयदा। लाड़ी मौत हथ्थ फड़े काना, साचा राह इक्क तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल सूरा सरबंग, नाम वजाए आप मृदंग, मर्द मरदाना आप अख्वांयदा। मर्द मरदाना गज्जया, जोद्धा सूरबीर सुल्तान। रण भूमी कदे ना भज्जया, शब्द उठाए तीर कमान। तख्तों
१३५ लाहे राजन राजया, करे खेल श्री भगवान। लक्ख चुरासी रचया काजया, लहिणा देणा चुकाए जिमी अस्मान। शब्द चढ़ाए १३५
०६ अश्व ताजया, प्रकाश चुकाए रवि ससि सूरज भान। आपे होए ग़रीब निवाजया, गुरमुख साचे ल्ए पछान। लेखा चुकाए ०६
मक्का काअबा हाजी हाजया, सच वखाए इक्क इमान। मेट मिटाए दो दो आब्या, नज़र ना आए पंज शैतान। एका रंग रंगाए शाह नवाब्या, पुरख अबिनाशी नौजवान। कलिजुग अन्तिम फिरे भाजया, चौदां तबकां वेखे दुकान। लहिणा देणा चुकाए कल के आजया, चार यार होए हैरान। दस्तगीर ना मिटे ताजया, शाह हकीर मिटे निशान। शब्द अगम्मी मारे वाजया, दीन अलाही कर परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे बणे सच अमाम। सच अमाम कलमा कायनात, नूर नुराना आप चलांयदा। हक हकीकत वेखे मार झात, लाशरीक खेल खिलांयदा। आपणे रक्खे हथ्थ गुंजात, दूसर कोई ना पार करांयदा। मेटे रैण अन्धेरी रात, कलिजुग कूड़ा कूड़ खपांयदा। चौदां तबकां वेखे इक्क लुगात, आपणा किनारा ना किसे वखांयदा। गगन गगनंतर पड़दा जाए पाट, आमाम अमामा रूप वटांयदा। मैहन्दी रंग ना रंगे ख़ाकी ख़ाक, लाल गुलाल रंग चढ़ांयदा। आपे होए पाकी पाक, आप आपणा नूर धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आप आपणा खेल खिलांयदा।

✳ चन्नण सिँघ दे नवित पिण्ड पंज गराईआं जिला गुरदास पुर ✳

हरि सूरा सरबंग, परम पुरख वड वड्याईआ। ठग्ग ठगोरी रिहा ठग्ग, लख चुरासी वेख वखाईआ। लेखा जाणे हँस कग, काग हँस मेल मिलाईआ। त्रैगुण माया रिहा डंन, जोती लम्बू अग्नी लाईआ। रैण अन्धेरी रही वग, चारों कुण्ट जड़ हिलाईआ। दरस दिखाए आप उप्पर शाह रग, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर जाणे आपणा मग, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। वेख वखाए आपणा पद, घर चौथा सहिज सुभाईआ। नाम वजाए शब्द नद, ब्रह्म ब्रह्मादि दए सुणाईआ। प्रगट होए आदि जुगादि, जुग करता बेपरवाहीआ। लेखा जाणे सन्त साध, गुर पीर अवतार सेवा लाईआ। शब्द जणाए बोध अगाध, ब्रह्मा विष्न शिव भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल हर घट थाँईंआ। सतिगुर चतर सुजाना, मन मति बुध ना कोई जणाईआ। सति सरूपी शब्द ज्ञान, अनुभव प्रकाश वखाईआ। आत्म अन्तर वेखे बख्शे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। राग सुणाए रागी कान, सच सितार आप हिलाईआ। दो जहाना देवणहारा एका दान, इक्क इकल्ला आप अख्वाईआ। निरगुण रूप श्री भगवान, हर घट बैठा आसण लाईआ। सति सन्तोखी वड मेहरबान, हरख सोग ना कोई जणाईआ। कोटन कोटि भुल्ले फिरन विच जहान, सतिगुर पूरा दिस ना आईआ। पर्बत चोटी चढ़ चढ़ करन ध्यान, नेत्र नैण ना कोई दरसाईआ। मन्दिर बह बह करन ज्ञान, रसना जिह्वा रहे हिलाईआ। तीर्थ तट्टां कर अशनान, जीव जंत रहे कुरलाईआ। कोटन कोटि देंदे दान, धनी देवत रहे मनाईआ। कोटन कोटि पूजा पाठ कराण, रवि ससि पूजस सीस झुकाईआ। कोटन कोटि गायन गाण, रसना जिह्वा मुख सलाहीआ। कोटन कोटि वेखण सच निशान, दिस ना आए शहनशाहीआ। आदि जुगादी इक्क भगवान, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। साची सखीआं हरि हरि काहन, साचा मंगल आपे गाईआ। एका दाता कर परवान, आपणी इच्छया आपे वेख वखाईआ। देवणहारा हरि जी माण, अभिमानीआं गढ़ तुड़ाईआ। जिस जन बख्शे चरन ध्यान, चार वरन सरन समझाईआ। साची सरन गुण निधान, जन्म मरन फंद कटाईआ। आवण जावण चुक्के कान, राए धर्म ना दए सजाईआ। दरगाह साची सच मकान, तख्त निवासी आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रंग रतड़ा साचा माहीआ। रंग रतड़ा हरि भगवान, रंग रंगीला इक्क अख्वांयदा। साची सिख्या दो जहान, ब्रह्म विद्या आप पढ़ांयदा। धुर दा लेखा हरि फ़रमाण, शब्द अनादी आप सुणांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर ध्यान, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इंद निउँ निउँ सीस झुकांयदा। गण गंधर्ब सारे गाण, रसना जेहवा ना कोई हिलांयदा। नौ नौ सत्त सत्त वेखे मार ध्यान, लक्ख लक्ख गेड़ा आप दवांयदा। लक्ख लक्ख

कर परवान, चार वरनां नाम करांयदा। नेत्र खोल्ह जगत महान, आपणी कुदरत वेख वखांयदा। साचे तख्त बैठ भगवान, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। हरिजन साचे कर परवान, शब्दी शब्द मेल मिलांयदा। आप कराए आपणी सच पछाण, ओहला पड़दा आप चुकांयदा। कर प्रकाश साचे भान, बिमल रूप आप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। जगत ठगोरी ठग्गया, ठग्गणहार करतार। लक्ख चुरासी विच्चों कोए ना छड्डया, भुल्ल ना जाए विच संसार। हरिजन भगत आप आपणा आपे कढ्ढया, आप आपणी किरपा धार। जगत विकारा विच्चों वढ्ढया, नाम खण्डा फड़ कटार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब जन्मां लए विचार। पूर्ब लेखा वेखणहार, एका एकंकारया। आवे जावे विच संसार, जुग जुग खेल अगम्म अपारया। वरते वरतावे साची कार, करनी करता नाउँ धरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब जन्म जन्म वेख वखा रिहा। जगत ठग्ग ठग्गी ठग्गदा, सज्जण वड दयाल। कलिजुग माया अग्नी मघदा, तृष्ना भुक्ख ना कोए सुकाल। सतिगुर पूरा एका लभ्भणा, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। खेले खेल सूरा सरबग्ग, नानक निरगुण वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१३७ कर, आपणी करनी आप कराईआ। ठग्गी ठग्ग तजांयदा, वेखे नाम आधार। सतिगुर साचा हुक्म सुणांयदा, तेरा लेखा १३७

विच संसार। तेरा अन्तिम पन्ध मुकांयदा, पुरख अबिनाशी पावे सार। आपणी कल आप धरांयदा, रूप अनूप सच्ची सरकार।

०६ जन्म अजून अजूनी आप फिरांयदा, अजूनी रहित खेल अपार। मानस जन्म फेर दुआंयदा, भवजल सागर करे पार। पिछला ०६

लेखा आप मिटांयदा, अग्गे बख्शणहार निरँकार। धर्म राए ना नैण उठांयदा, चित्रगुप्त ना बणे लिखार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे पावणहारा सार। साची सार संभालदा, परम पुरख करतार। गुरमुख साचे पार उतारदा, आप आपणी किरपा धार। कन्ढ्ढा जाणे पार उरारदा, वेखणहार मँझधार। दर घर साचा आप उसारदा, सचखण्ड महल्ला उच्च मुनार। गुरमुख एका आपणे वाड़दा, लख चुरासी करे ख्वार। झूठे सन्तां जड़ उखाड़दा, शब्द डण्डा तेज कटार। राह दिसे ना परवरदगार दा, रसना कूड़ी गढ़ हँकार। धर्म राए अगे डालदा, कुंभी नर्कां देवे वाड़। फड़ बांहों ना कोए निकालदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल सज्जण ठग्ग यार दा। सज्जण सज्जण मनंदड़ा, परम पुरख करतार। जग ठग्गया मुक्कया पन्धड़ा, भवजल उतरया पार। डूँग्घा सागर वहण नैण दा, नैण नैणां दए वखाल। सतिगुर सच्चा पातशाह शाहां सिर शहनशाह, लेखा जाणे शाह कंगाल। दो जहानां बणे इक्क मलाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्तां करे संभाल। साचा सुत उभारदा, हरि सज्जण

मीत मुरार। जूठे झूठे फल उजाड़दा, पत डाली ना दिसे विच संसार। नाम खण्डा हथ्थ उठालदा, दो जहानां मारे मार। तोड़े लंका गढ़ हँकार दा, ग़रीब निमाणे लए उभार। त्रैगुण माया अग्नी साड़दा, आपणी अग्नी आपे बाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे करे कराए सदा प्रितपाल। प्रितपालक प्रितपालया, परम पुरख करतार। जन भगतां होए आप दयालया, देवे दरस अगम्म अपार। चरन भिखार बणाए काल महांकालया, दो जहानां पैज संवार। शब्द वजाए साचा तालया, ना कोई दिसे तार सितार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण लाए पार। हरि सज्जण बेड़ा बन्न्या, परम पुरख करतार। लोकमात चढ़या चन्नया, निरगुण जोत नूर उज्यार। झूठे साधां देवे डन्नया, कलिजुग अन्तिम करे ख्वार। कलिजुग काया माटी भाण्डा घड़या सो भन्नया, थिर रहे ना कोए विच संसार। बैठा वेखे छप्पर छन्नयां, डूँगघी कँवरी लए उठाल। गुरमुख विरला जननी जन जणया, जिस मिल्या आप दीन दयाल। हरि दर हरिजन मन मनूआं एका मन्नया, गुर शब्द सच्चा दलाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे आपणे लाल। गुरसिख लाल अनमुल्लड़ा, कीमत कोए लोक ना पाईआ। मातलोक ना रुलड़ा, चौदां लोक ना हट्ट विकाईआ। आप उपज्या आपणा साचा फुलड़ा, पत डाली आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा घर, घर इक्क समझाईआ। इक्क इक्क करतार, इक्क इक्क आप भवाईआ। लक्ख चुरासी जीव ना करे विचार, बस्त्र गहिणा ना कोई वखाईआ। दोए सहँसर कर पुकार, बाशक तशका रिहा कुरलाईआ। विष्नूं सुत्ता पैर पसार, सांगोपांग सेज बणाईआ। ब्रह्मा चारे मुख रिहा ललकार, उच्ची कूक दए दुहाईआ। चारे वेद रहे पुकार, हरि का भेव कोई ना पाईआ। आदि जुगादि अजूनी रहित खेले खेल विच संसार, निरगुण निरगुण रूप वटाईआ। भगत भगवन्त मेला अगम्म अपार, अगम्मड़ी सेजा आप सुहाईआ। हड्ड मास नाड़ी चमड़े ना पावे कोई सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे नाम दए वड्याईआ। झूठी ठग्गी जगत ठगौर, काम क्रोध लोभ मोह हलकाया। झूठी बस्ती होया बौर, नाम खुमारी ना कोए रखाया। आत्म अन्धेरा होया घोर, गहर गम्भीर दिस ना आया। मानस जन्म ना गया सौर, लख चुरासी फंद ना कोई कटाया। साचे नाम ना रगड़ा लाया पीता दौर, सच प्याला हथ्थ ना किसे फड़ाया। मन मूर्ख चढ़या झूठे घोड़, हरि का शब्द ना कोई रखाया। घर साचे मिले ना एका होड़, निरगुण निरगुण वेख वखाया। हरि हरि ना गाया निरँकारी दोहर, रसना जगत विवाद वधाया। लेखा चुक्के ना तोर मोर, तोर मोर एका रंग रूप रंगाया। पंज तत्त दिसे गागर कोर, साचा अक्खर ना किसे लिखाया। मन का घोड़ा किसे ना होड़ा, दहि दिशा दए दुड़ाया। गुरमुख

विरला सतिगुर पूरे आपणे चरन कँवल संग जोड़ा, चरन चरनोदक मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाया। हरिजन साचे मेलदा, जुगा जुगन्तर साची कार। आपणी खेल आपे खेलदा, मनमुखां मारे मार। लेखा जाणे धर्म राए दी जेल्ह दा, लख चुरासी पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन साचे आप उठाया, कर किरपा दीन दयाल। दर्द दु:ख भय भंजन नाम रखाया, दीना नाथ करे प्रितपाल। सज्जण ठग्ग, शब्द गुर बण दलाल। झूठा काग कग उडाया, वेले अन्त करे संभाल। कलिजुग अग्नी आप बुझाया, दिवस रैण बण रखवाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे उठाए साचे लाल। लाल उठाया हरि हरि मीत, कृपानिध गुण निधान। काया करे ठंडी सीत, पूर्ब लहिणा चुक्के आण। मानस जन्म जाए जीत, पुरख अबिनाशी देवे दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मुग्ध अंञाण।

१३६

❋ २६ पोह २०१६ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच दया होई ❋

०६

हरि पुरख शाह सुल्तान, इक्क इकल्ला भेव ना आंयदा। सो पुरख निरँजन वड मेहरवान, आप आपणी खेल खिलांयदा। एकँकारा खेल महान, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। आदि निरँजन इक्क निशान, नूरो नूर डगमगांयदा। अबिनाशी करता नौजवान, बाल बिरध ना रूप वटांयदा। श्री भगवान इक्क ज्ञान, आपणा आप दृढ़ांयदा। पारब्रह्म प्रभ हो मेहरवान, आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अक्कला खेल अपार, करे कराए करनेहार, रूप रेख ना कोई जणांयदा। रूप रेख ना हरि हरि रंग, दिस किसे ना आंयदा। पुरख अबिनाशी सूरा सरबंग, आप आपणी रचन रचांयदा। आप वजाए आपणा मृदंग, आपणा नाअरा आप अल्हांयदा। आपे रक्खे आपणा संग, सगला संग आप निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला, घर साचा आप सुहांयदा। सच महल्ला हरि निरँकार, आपणा आप उपाईआ। ना कोई बाढी करे त्यार, ना कोई वेख वखाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर वड वड्याईआ। सति पुरख निरँजन साची धार, घर साचे आप चलाईआ। ना कोई दिसे चार दीवार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सचखण्ड निवासी खेल करतार, आपणी करनी आप कमाईआ। आपणा मन्दिर कर कर त्यार, थिर घर बैठा आसण लाईआ। जोत नूर नूर उज्यार, नूर नुराना आप अख्वाईआ। आपणा कर बन्द किवाड़, आपे बंक सुहाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा खेल निराला, खेले खेल पुरख अकाला, दीन दयाला वड वड्याईआ।
साचा मन्दिर कर त्यार, हरि साची रचन रचांयदा। चारों कुण्ट इक्क विहार, एका रूप चढ़ांयदा। एका शाहो भूप बण
सिक्दार, साचा तख्त हंढांयदा। एका हुक्म धुर फ़ुरमान, एका अदल कमांयदा। इक्क झुलाए सच निशान, एका घर वखांयदा।
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अबिनाशा खेल तमाशा, साचे घर एका आपणा आप आपे वेख वखांयदा।
साचा मन्दिर खेल अवल्ला, हरि साचा आप करांयदा। सो पुरख निरँजन इक्क इकल्ला, निरगुण आपणा डेरा लांयदा। हरि
पुरख निरँजण वसाया सच महल्ला, दर घर साचे सोभा पांयदा। एकँकार सच सिँघासण एका मल्ला, दूसर कोए ना संग
वखांयदा। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बला, आप आपणी जोत जगांयदा। पुरख अबिनाशी आपे जाणे आपणा वेला,
वार थित ना कोए वखांयदा। अबिनाशी करता बणे सज्जण सुहेला, साचा संग निभांयदा। पारब्रह्म बणे चेला, हरि गुर
गुर रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहांयदा। दर सुहञ्जणा पुरख अगम्म,
एका एक सुहाईआ। निरगुण नूर आदि जुगादी आपे जाणे आपणा कम्म, करता करनी आप कमाईआ। सति सतिवादी बेड़ा
१४० बन्न, सति पुरख निरँजण आप चलाईआ। आपे घड़े आपे लए भन्न, समरथ पुरख नाउँ धराईआ। आपे जननी जन साचा १४०
जन, हरि शब्द शब्द वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आपणा लेखा आप लिखाईआ।
०६ आपे आदि हरि हरि, आपणी करनी आप करांयदा। आपे वसया आपणे घर घर, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। आपे ०६
पुरख नारी नर, नर नर नरायण वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सच्चा शाह सुल्तान,
खेले खेल श्री भगवान, रूप रंग ना कोई निशान, जोती नूर नूर महान, रूप अनूप आप दरसांयदा। सति पुरख निरंजण
साची धार, हरि साचे आप चलाईआ। अगम्म अगम्मड़ा करे कार, भेव अभेद रखाईआ। अलक्ख अलक्खणा इक्क जैकार,
एका नाअरा लाईआ। सचखण्ड सुहाए बंक दुआर, थिर घर बैठा आसण लाईआ। पारब्रह्म रूप अपार, निरगुण आपणा वेख
वखाईआ। नारी कन्त सच प्यार, कन्त भतार वड्डी वड्याईआ। मेला मेले धुर दरबार, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। सति
सिँघासण कर त्यार, सोभावन्ती नार सुहाईआ। कन्त कन्तूहला करे प्यार, चतुर्भुज वड वड्याईआ। आदि निरँजण जोत
उज्यार, घर बैठा दीप जगाईआ। पुरख अबिनाशी करे विचार, साचा मंगल एका गाईआ। सो पुरख निरँजण हो त्यार,
आपणी आप लए अंगड़ाईआ। हरि पुरख निरँजण ठांडा ठार, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। सति पुरख निरँजण सोभावन्त, हरि सदा सदा सालाहया। अलक्ख

अगोचर एका कन्त, परम पुरख वड्याआ। सचखण्ड बणाई साची बणत, थिर घर साचा दए खुल्हाया। आपे नारी आपे कन्त, अंगीकार आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण मेल मिलाया। निरगुण नारी निरगुण कन्त, निरगुण निरगुण घर वसांयदा। निरगुण रूप पूरन भगवन्त, निरगुण निरगुण जोत जगांयदा। निरगुण दाता आदि अन्त, निरगुण जुग जुग वेस वटांयदा। निरगुण शब्द निरगुण मंत, निरगुण नाम दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा आप सुहांयदा। निरगुण नारी कर श्रंगार, घर साचे सोभा पाईआ। एका नैण कज्जल धार, एका नूर नूर चमकाईआ। एका करे सच प्यार, एका राह तकाईआ। एका रूप पुरख करतार, निरगुण आपणा आप वटाईआ। छैल छबीला नौजवान हो त्यार, घर साचे आए चाँई चाईआ। सति पुरख निरँजण खेल अपार, खेले खेल अगम्म अथाहीआ। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़, आपणा कुंडा आपे लाहीआ। थिर घर साचे पावे सार, घर घर विच वेख वखाईआ। आदि निरँजन निरगुण जोत सुत्ती नार मुटयार, आपणा जोबन रही हंढाईआ। कन्त कन्तूहला एकँकार, आप आपणी खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आप आपणा मेल मिलाईआ। नारी कन्त सच प्यारा, सो पुरख निरँजण मेल मिलाया। हरि पुरख निरँजण पा एका वारा, विछड़ कदे ना जाया एकँकारा सुहाए बंक दुआरा, दूसर दर ना कोए खुलाया। जोत निरँजण कर उज्यारा, एका नूर करे रुशनाया। श्री भगवान कर प्यारा, आप आपणी गोद बहाया। पुरख अबिनाशी मीत मुरारा, साची धारा रिहा चलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारा, दर घर साचे आप कराया। सति पुरख निरँजण एकँकारा, कल आपणी आप वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड वेखे सच दुआर, दर घर साचा इक्क सुहाया। सचखण्ड दुआरा आपे खोल्ह, सो पुरख निरँजन बणत बणाईआ। थिर घर वासी वसया कोल, आप आपणा मेल मिलाईआ। निरगुण नारी करे चोल्ह, निरगुण कन्त हंढाईआ। निरगुण अंदर निरगुण जाए मौल, रक्त बूंद ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। नारी कन्त होया मेला, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। सो पुरख निरँजन जाणे वक्त वेला, थित वार ना कोए रखाईआ। हरि पुरख निरँजण सज्जण सुहेला, घर साचे सोभा पाईआ। एकँकारा चाढ़े तेला, एका सगन मनाईआ। अचरज खेल पुरख अबिनाशी आपणा खेला, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा सच दरवाज़ा, हरि साचे सच उपाया। थिर घर रचया आपणा काजा, आप आपणा मेल मिलाया। करे खेल वड राजन राजा, शाहो भूप नाम धराया। जोती जोत सरूप

१४२ ०६

हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुलाया। सचखण्ड अंदर सच निवास, हरि साचा सच रखांयदा। पुरख अबिनाशी खेल तमाश, रंग रलीआं आप मनांयदा। आपे करे हास बलास, आपणी तृष्ना प्यास आप बुझांयदा। आपणे अंदर कर कर आपणा वास, आपणा बीज आप बजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर थिर घर मन्दिर कर त्यार, घर घर विच आप सुहांयदा। सचखण्ड अंदर थिर घर वासा, हरि साचा सच करांयदा। अंदर वड़ पुरख अबिनाशा, आप आपणा खेल खिलांयदा। ना कोई मंडल ना कोई रासा, रवि ससि ना कोई चमकांयदा। ना कोई पृथ्मी ना आकासा, गगन गगनंतर ना कोए वखांयदा। पंज तत्त त्रैगुण ना कोए वासा, लक्ख चुरासी ना बणत बणांयदा। साध सन्त गुर पीर अवतार ना कोए भरवासा, इष्ट देव ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासी सोभावन्त, खेले खेल नारी कन्त, निरगुण आपणा खेल खिलांयदा। निरगुण नारी नर हरि घर पाया, थिर घर साचे वज्जी वधाईआ। सो पुरख निरँजण उठ उठ वेखण आया, आप आपणा फेरा पाईआ। हरि पुरख निरँजण राह तकाया, सच दुआरा इक्क सुहाईआ। एकँकारा फुल्ल फलवाड़ी रिहा बरसाया, सोभावन्त वज्जे वधाईआ। आदि निरँजण कर रुशनाया, आपणी सेव रिहा कमाईआ। पुरख अबिनाशी मंगल गाया, गुण गहर गम्भीर सुणाईआ। श्री भगवान मुख तों पल्ला लाहया, आपणे नैण आप मटकाईआ। पारब्रह्म घर इक्क सुहाया, घर साचे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आदि आप अख्वाईआ। आदि आदी इक्क इकल्ला, एका घर सुहांयदा। सचखण्ड निवासी सच घर एका मल्ला, थिर घर साचे सोभा पांयदा। नेहचल धाम उच्च अटला, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणी सेज हंढांयदा। घर सेजा कन्त भतार, सचखण्ड हरि सुहांयदा। घर मेला पहली वार, पुरख अबिनाशी आप करांयदा। घर मेला जाणे बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप छुपांयदा। सति पुरख निरँजण थिर घर अंदर वड़, सच महल्ल सुहाईआ। निरगुण निरगुण अंदर खड़, आप आपणा रूप दरसाईआ। सो पुरख निरँजण साचा घाड़न घड़, हरि पुरख निरँजण सेवा लाईआ। एकँकारा लाए जड़, आदि निरँजण दए सलाहीआ। श्री भगवान आपे फड़, अबिनाशी करता बूटा दए लगाईआ। पारब्रह्म प्रभ बन्ने लड़, आपणा पल्लू इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर बैठा खेल खलाईआ। थिर कर खेल हरि करतारा, आपणा आप करांयदा। निरगुण निरगुण कर प्यारा, निरगुण निरगुण विच टिकांयदा। निरगुण जननी जणे सुत दुलारा, निरगुण गोद उठांयदा। निरगुण बख्शे सीर ठंडी ठारा, निरगुण निरगुण

आप प्यांअदा। निरगुण रूप एकँकारा, इकओंकार आपणा आप उपजांयदा। सचखण्ड निवासी कर पसारा, आप आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। पुरख अबिनाशी जम्मया सुत, हरि शब्दी नाउँ उपजाया। खेले खेल अबिनाशी अचुत, आप आपणी कल वरताया। सचखण्ड सुहाई सच्ची रुत्त, थिर घर साचा मंगल गाया। ना कोई काया पंज तत्त दिसे बुत्त, मात पित ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। उपज्या सुत हरि भगवान, हरि साचा खेल खलन्नया। शब्द सरूपी नौजवान, एका रंग वखन्नया। एका वसे सच मकान, थिर घर साचे बह बह मन्नया। इक्क उठाए सच निशान, आपणा बेड़ा आप बन्नया। एका बख्शे आपणा माण, चरन ध्यान इक्क रखन्नया। एका मन्दिर इक्क मकान, इक्क वखाए छप्पर छन्नया। एका पुरख एक सुल्तान, एका रूप श्री भगवन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड अवतारा निरगुण धारा सुत दुलारा इक्क वखन्नया। सुत दुलारा उठया नौजवान, सचखण्ड होए रुशनाईआ। सो पुरख निरँजण देवे इक्क ज्ञान, हरि पुरख निरँजण करे सच पढ़ाईआ। एकँकारा बख्शे माण, एका सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। आदि निरँजण बख्शे जोत महान, जोती नूर कर रुशनाईआ। श्री भगवान देवे दान, आपणी इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। अबिनाशी करता एका राग सुणाए कान, धुनी धुन विच उपजाईआ। पारब्रह्म कर पछान, आप आपणा दए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड अंदर वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, चोटी जड़ ना कोई रखाईआ। सचखण्ड खेल अगम्म, हरि साचे आप कराया। सुत अगम्मी प्या जम्म, हरि शब्दी नाउँ धराया। सति पुरख निरँजण आपे मन्न, आपणी मनसा पूर कराया। आपे देवे साचा माल धन, आपणा नाम ख़ज़ाना इक्क वखाया। आपणा राग सुणाए कन्न, दर घर साचे आपे गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आपणी महिमा आपे दए लिखाया। सचखण्ड निवासी भेव अभेदा, हरि पुरख निरँजण भेव खुलाईआ। सो पुरख निरँजन अछल अछेदा, अछल अछल आप कराईआ। आपे जाणे आपणा लेखा, अलक्खना अलक्ख ना लख्या जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क वड्याईआ। दर घर साचा हरि सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप सुहांयदा। जोत जगाए आदि निरँजना, दीवा बाती ना कोए रखांयदा। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजना, भय भंजन आपणा नाउँ उपजांयदा। आपणे नेत्र आपे पाए अंजना, ज्ञान नेत्र इक्क रखांयदा। आपे दो जहानी साक सैण सज्जणा, आप आपणा मेल मिलांयदा। आपणा मन्दिर आपणा अंदर हरि पुरख निरँजण आपे तजणा, सो पुरख निरँजण वेस वटांयदा। ना घड़या ना भज्जणा, ना कोई

तोड़े तोड़ तुड़ांयदा। आपणे नगारे आपे वज्जणा, आप आपणा ताल सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। सचखण्ड दुआरे लए अंगड़ाई, हरि साचा तख्त सुहांयदा। शाह सुल्तान वड्डी वडियाई, राज राजान वेख वखांयदा। नौजवान ना मरे ना जाई, एका रंग समांयदा। अलक्ख अगोचर भेव ना राई, भेव आपणा आप खुल्हांयदा। साचा सुत इक्क उपजाई, हरि शब्द वड वड्यांअदा। एका वस्त झोली पाई, धुर फ़रमाना हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे भाणे आप रहांयदा। सुत दुलारा दोए जोड़, हरि चरनी सीस निवांयदा। तेरी प्रीती निभे तोड़, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ांयदा। आदि जुगादि तेरी लोड़, तेरा तेरे विच समांयदा। तेरा मिट्ठा फल ना होए कौड़, तेरा रस रस वखांयदा। तेरे दरस रहे औड़, तेरा राह तकांयदा। अन्त आदि जाणा बौहड़, हउँ सेवक सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति आप समझांयदा। शब्द सुत बाल नधान, हरि पुरख निरँजण दए सलाहीआ। तेरा मात पित श्री भगवान, ना मरे ना जाईआ। सचखण्ड नवासी पुरख अबिनाशी इक्क फड़ाए सच निशान, दर घर साचे आप झुलाईआ। तेरी मेरी इक्को आण, तेरा हुक्म मेरी वड्याईआ। मेरो नाम तेरो दान, अतोट अतुट वखाईआ। मेरी दरगाह तेरा माण, थिर घर साचे वज्जे वधाईआ। सचखण्ड निवासी करे परवान, सुत दुलारे दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाईआ। बाल अवस्था शब्द बाल, दर घर साचा वेख वखांयदा। तूं समरथ पुरख करें सदा प्रितपाल, तेरी ओट इक्क तकांयदा। हउँ बालक उपज्या तेरी डाल, फुल फलवाड़ी तूं महिकांयदा। सदा सुहेला वसीं नाल, तेरा संग मोहे भांयदा। तेरा नाम मेरा ताल, ताल तलवाड़ा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त झोली पांयदा। साचे सुत उठ बल धार, सो पुरख निरँजन दए वड्याईआ। तेरा भरे सच भण्डार, तेरा तेरे नाल समाईआ। तेरा रंग रंगे करतार, उतर कदे ना जाईआ। तेरा मृदंग वजाए वजावणहार, सच सितार इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द दए जणाईआ। शब्द निमाणा चरन दुआरा, रो रो नेत्र नीर वहांयदा। सति पुरख निरँजन किरपा धार, तेरा तेरे अग्गे आपणा आप भेट चढ़ांयदा। तूं निरगुण निराकार, सचखण्ड साचे सोभा पांयदा। हउँ वणज करां वपार, दर तेरा मंग मंगांयदा। तूं भगवन्त भर भण्डार, भिखक अग्गे झोली डांहयदा। दूसर होर ना कोई मीत मुरार, ना कोई पल्ला गंढु वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी भिच्छया झोली पांयदा। साची भिच्छया हरि हरि वण्ड, शब्दी शब्द शब्द भराया। मेरा रूप रचन ब्रह्मण्ड, तेरी सेवा सेव लगाया। मेरी धार गगन पाताल नव खण्ड, तेरे डाली पत लगाया। तेरे

सेवादार बणे रवि ससि चन्द, सूरय सूरया मुख सलाहया। तेरा लेखा दूर दुराडा मेरा पन्ध, किसे दिस ना आया। मेरा नाउँ तेरा छन्द, गीत सुहागी इक्क सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या सिख समझाया। साची सिख्या सुण सुत दुलार, हरि साचा आप समझांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड गगन पाताल महल्ल उसार, तेरा तेरी सेवा लांयदा। आकाश प्रकाश दए आधार, रवि ससि मेल मिलांयदा। सूरज चन्न संग सतार, आप आपणी सोभा पांयदा। पवण पवणी भर भण्डार, सच हुलारा इक्क लगांयदा। तेरा रूप अनूप करतार, आपणा आप आप प्रगटांयदा। निरगुण निरगुण कर प्यार, निराकार साकार हो जांयदा। विश्व विश्व कर त्यार, नैण नैणन नैण मटकांयदा। चतुर्भुज खेल अपार, सुते प्रकाश सुत सुत सुत आप अख्वांयदा। करनी करे करनेहार, करता आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। आपे विष्न नाउँ रक्ख, हरि आपणा नाउँ वड्याईआ। आपे निरगुण आपे प्रतक्ख, आप आपणी कल वरताईआ। आपे खेले खेल अलखणा अलक्ख, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। आपे आपणा आप नालों कीता वक्ख, आपे आपणा मेल मिलाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे रिहा चलाईआ। आपे जाणे आपणा पक्ख, किशना सुकला वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जूनी रहित वड वड्याईआ। जूनी रहित पुरख अकाल, एका रंग समाया। सति पुरख निरँजण दीन दयाल, हरि पुरख निरँजण आपणा नाउँ रखाया। सो पुरख निरँजण कर प्रितपाल, एकँकारा वड वड्याआ। आदि निरँजण दीपक बाल, सचखण्ड साचे सोभा पाया। थिर घर वसे सच्ची धर्मसाल, दर दरवाजा आप खुल्हाया। अबिनाशी करता चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क चलाया। श्री भगवान बण दलाल, शब्द विचोला वेख वखाया। पारब्रह्म प्रभ देवणहार सच्चा धन माल, नाम ख़ज़ीना इक्क लुटाया। विष्नूं करे आप प्रितपाल, प्रितपालक हरि सलाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा पड़दा आपे लाहया। आपणा पड़दा आपे चुक्क, हरि साचे रूप दरसाया। सति पुरख निरँजण सचखण्ड दुआरे बैठा लुक, आप आपणा मुख छुपाया। जननी जणे ना कोई कुक्ख, पिता गोद ना कोई बहाया। आदि जुगादि ना होए उलटा रुख, पुरख अबिनाशी वड वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप धराया। आपणा नाउँ विश्व धर, हरि साचा आप रखांयदा। आपणा कर आप आकार, आपे वेख वखांयदा। आपणे अंदर कर प्यार, आप आपणा दर सुहांयदा। आपणा अमृत कर त्यार, आपे वेख वखांयदा। आपे विश्व दए आधार, जल धारा रूप सुहांयदा। आपे कँवली कँवल उज्यार, आपे नाभी फुल खलांयदा। आपे ब्रह्मा ब्रह्म पसार, पारब्रह्म रूप वटांयदा। आपे चार मुख कर उज्यार, चारे दिशा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, शब्द सरूपी बण मलाह, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। आपे ब्रह्मा कर उत्पत, आप आपणी रचन रचाईआ। आपे बणया कमलापति, आप आपणा मेल मिलाईआ। आप उपजाई आपणी रत्त, रती रत्त रत्त वखाईआ। आपणा बीज आपे घत, कँवल फुल आप महिकाईआ। खेले खेल पुरख समरथ, सार शब्द संग मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बीजे आपणे वत, आपे वेख वखाईआ। ब्रह्मा उपज्या ब्रह्म धार, पारब्रह्म उपजाया। शब्द सरूपी शब्द जैकार, हरि साचा सच सुणाया। दर घर साचे देवे इक्क दीदार, दरस दरसी दरस जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे अंग लगाया। ब्रह्मे हरि हरि लाया अंग, अंगीकार आप अख्वांयदा। देवे मति सूरा सरबंग, साची सिख्या इक्क समझांयदा। हरि का शब्द तेरा मृदंग, चार कुण्ट सुणांयदा। निव निव मंगे एका मंग, सीस जगदीस भेट रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। ब्रह्मे उपज्या शब्द ज्ञान, हरि साचे बूझ बुझाईआ। एका राग एक धुनकान, एका नाद वजाईआ। सुन अगम्म ना कोए पहचान, हरि साचा खेल खलाईआ। दाता देवे एका दान, एका भिच्छया झोली पाईआ। एका अंदर वेख मकान, साची वस्त वस्त टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन ध्यान इक्क वखाईआ।

१४६ ०६ ब्रह्मे मिल्या हरि भगवन्त, विश्व वेस वटांयदा। आप बणाए आपणा बंस, आप आपणी अंस सुहांयदा। आपे रूप करे सहँस, आप आपणा भेव छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा सुन्न अगम्मी धुंआँधार, सचखण्ड निवासी आए बाहर, आपणी करे आपे कार, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपणी कार आपे कर, आपणा रंग रंगाया। भोले नाथ देवे वर, शंकर शंकर मेल मिलाया। बाशक तशका सोहे गल्ल, हथ्थ त्रिशूल फड़ाया। आपणा घाड़न आपे घड़, आपणे चक्क आप चढ़ाया। आपणी कीमत करता पाए आपणे घर, आप आपणा मुल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा बन्न्हाए लड़, शंकर मेला सहिज सुभाया। शंकर मेला शब्द डोर, ब्रह्मा विष्न संग रलाईआ। पुरख अबिनाशी करे खेल दूसर अवर ना कोई होर, हरि आपणी रचन रचाईआ। तिन्नां चले ना कोई ज़ोर, हरि आपणा बल धराईआ। तिन्नां चले ना कोई ज़ोर, हरि शब्दी डोर बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव बन्न्ह, हरि साचा हुक्म सुणांयदा। रवि ससि उपजा सूरज चन्न, मंडल मंडप डगमगांयदा। एका शब्द सुणाए कन्न, एका मति रखांयदा। एका देवणहारा दान, एका झोली पांयदा। एका शब्द इक्क निशान, एका हथ्थ झुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तिन्नां एका रंग रंगांयदा। तिन्नां मेला एका घर, हरि

साचे आप मिलाया। तिन्ने मंगण एका वर, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। तिन्नां दिसे एका डर, निर्भय रूप नज़री आया। तिन्नां नुहाए एका सर, चरन चरनोदक इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा आपणा आप रचाया। त्रै त्रै मेला हरि निरँकार, आपणा आप करांयदा। पारब्रह्म कर प्यार, ब्रह्म साचा वेख वखांयदा। साची वस्त एकँकार, आपणे हथ्थ रखांयदा। विष्नूं निउँ निउँ करे निमस्कार, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का लांयदा। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहांयदा। शंकर करे दर पुकार, जटा जूट गल विच पल्ला पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरतांयदा। विष्नूं देवे एका एका वस्त, हरि साचे वड वड्याईआ। सतो गुण साचा तत्त, साची झोली पाईआ। ब्रह्मा उपजाया विष्नूं रत्त, रजो गुण दए सलाहीआ। शंकर धूंआँधार प्रगट, तमो रूप रखाईआ। त्रैगुण मेला घट घट, घर घर विच दए वसाईआ। तिन्नां पहनाए एका पट, शब्द दोशाला इक्क वखाईआ। तिन्नां नगारे लाए सट्ट, आपणा शब्द नाद वजाईआ। तिन्नां अंदर जोत लट लट, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। तिन्ना अंदर अमृत झट्ट, साची धार आप चुआईआ। तिन्ना अंदर विछाई खाट, बैठा आसण लाईआ। तिन्नां बुझाई आपणी वात, आपणा लेखा रिहा समझाईआ। तिन्नां जणाए खेल बाजीगर नाट, स्वांगी सांग रचाईआ। तिन्नां आपणा अंग आपे काट, आपणी वण्ड वण्डाईआ। तिन्नां वखाए एका हाट, वणज वपार इक्क कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द भण्डारा हरि ब्रह्मण्ड, आपणा आप वरताईआ। विष्नूं सुण कर ध्यान, हरि साचे सच समझांयदा। मेरा नाउँ तेरा निशान, लोक परलोक वखांयदा। ब्रह्मे ब्रह्म तेरा ज्ञान, सच ध्यान इक्क करांयदा। शंकर रक्खे एका आण, एका हुक्म सुणांयदा। तिन्नां दर शब्द परवान, शब्दी मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भाणा आप चलांयदा। विष्नूं उठ कर त्यारी, हरि साचा आप जगांयदा। ब्रह्मे तेरी आई वारी, पारब्रह्म आप प्रगटांयदा। शंकर कर उठ सवारी, हरी हरि आप चढ़ांयदा। तिन्नां मेला जोत निरँकारी, निरगुण आपणा वेस वटांयदा। तिन्नां देवे सच भण्डारी, सति भण्डार इक्क वरतांयदा। त्रैगुण माया कर प्यारी, एका झोली पांयदा। आपणे आप तों रक्खी न्यारी, निरगुण आपणा अंग ना अंग मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा सचा वर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। त्रैगुण माया हरि भण्डारा, विष्न ब्रह्मे शिव आप वरताईआ। लक्ख चुरासी कर पसारा, त्रैगुण तेरी रचन रचाईआ। विष्नूं देवे सच भण्डारा, राज़क रिज़क सबाईआ। ब्रह्मा मन्नया इक्क आधारा, आपणा बूटा आपे लाईआ। शंकर लेखा जाणे अन्तिम वारा, आपणा लेखा दए मुकाईआ। सति पुरख निरँजण खेल न्यारा, पुरख करतारा आप कराईआ। देवणहारा सच हुलारा, साचा

झूला रिहा झुलाईआ। एकँकारा निराकारा, इकओंकार रूप वटाईआ। आपे बन्ने आपणी धारा, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हँ हँ हरि कर पसारा, सोहँ रूप आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया एका वर, ब्रह्मा विष्न शिव अग्गे धर, त्रैगुण मेला मेल मिलाईआ। त्रैगुण मेला एका घर, हरि साचा सच समझांयदा। एका रूप एका रुत्त, एका वत बीज बजांयदा। एका खेल पुरख समरथ, सार शब्द वेख वखांयदा। आपणी महिमा जाणे अकथ, विष्न ब्रह्मे आप समझांयदा। आपणा शब्द आपे दस्स, आपणा नाम आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मे अंदर शब्द धर, सच ज्ञान हरि भगवान आपणा आप दृढ़ांयदा। सच ज्ञाना हरि भगवाना, हरि ब्रह्मा ब्रह्म समझाईआ। धुर दरगाही सच निशाना, एकँकारा दए वखाईआ। विष्नूं विष्न कर परवाना, विश्व आपणा रूप दरसाईआ। शंकर मेला विच जहाना, हरि साचा आप कराईआ। सांगोपांग खेल महाना, बाशक तशका आप हंढाईआ। मुख सहँसर एका गाणा, दोए सहँसर जेहवा रिहा हलाईआ। सच तख्त बैठ हरि सुल्ताना, साची सिख्या रिहा समझाईआ। तिन्नां बध्धा एका गानां, एका सगन मनाईआ। धुरदरगाही धुर फ़रमाना, सति पुरख निरँजण आप सुणाईआ। लोकमात लक्ख चुरासी जीव जंत कर प्रधाना, घड़ भाण्डे आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा तत्त आप समझाईआ। आपणा तत्त हरि निरँकार, आपे आप बुझांयदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकास कर त्यार, त्रैगुण मेल मिलांयदा। भाण्डे घड़े घड़नहार घुमिआर, चक्की चक्क आप फिरांयदा। आपे गेड़ा देवे अगम्म अपार, दिस किसे ना आंयदा। आपे अग्नी देवे डार, जोती लम्बू आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा सेव कमांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव वर हरि पा, ढहि ढहि पए सरनाईआ। तेरी सेवा सेवक बण बण रहे कमा, बख्शी सच सरनाईआ। कवण सो वेला कवण वक्त तिन्नां दईं समझा, असीं भुल्ले पान्धी राहीआ। तेरा विछोड़ा रहे ना रा, तेरा दरस नैण बिगसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाईआ। विष्न ब्रह्मे शिव सुण सुण कान, हरि साचा सच सुणांयदा। लक्ख चुरासी जगत मकान, पंज तत्त आप बणांयदा। त्रैगुण माया कर प्रधान, साचा खेल खिलांयदा। नौं दर खोल्ह जगत दुकान, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। मन मति बुध विच निशान, पंज अठ्ठ वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुलांयदा। पंज तत्त काया घर सुहाउणा, बंकी बंक दवारया। घर विच घर आप बनाउणा, उच्च महल्ल अटारया। टेढी बंक राह रखाउणा, उच्चा डण्डा नौ दवारया। तिन्नां मेला एका घर बनाउणा, घर घर विच वेख वखा रिहा। डूँग्घी कँवरी फेरा पाउणा, गहर गवरी जोत जगा रिहा। जोत निरँजण डगमगाउणा, नूरो नूर इक्क वखा

रिहा। सच वस्त हरि झोली पाउणा, दे मति आप समझा रिहा। अनहद शब्द आप वजाउणा, अनहत आपणा रूप वटा रिहा। अमृत सरोवर सच भराउणा, निझर झिरना इक्क वखा ल्या। बजर कपाटी पड़दा पाउणा, कोए ना परे हटा ल्या। अंदर वड़ आसण लाउणा, आत्म सेजा नाउँ उपा ल्या। घर विच साचा घर सुहाउणा, घर मन्दिर इक्क वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव एका दर, त्रैगुण मेला पंज तत्त एका कर, लक्ख चुरासी संग निभा ल्या। ब्रह्मे विष्न शिव हरि समझाए, गुर गुर पुरख वड्डी वड्याईआ। नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी सेवा लाए, लोकमात वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी रचन रचाए, चारे खाणी वण्ड वण्डाईआ। चारे बाणी विच टिकाए, दिस किसे ना आईआ। शब्द हाणी मेल मिलाए, घर वजदी रहे वधाईआ। ब्रह्मा वेता इक्क समझाए, वेद विद्या करे पढ़ाईआ। चारे जुग लेखा दए लिखाए, भुल्ल रहे ना राईआ। सतिजुग साचा संग निभाए, महांसार्थी वड वड्याईआ। वल छल धारी खेल खलाए, बल बावन दए सलाहीआ। त्रेता तेरा तीर चलाए, तत्व तत्त इक्क समझाईआ। गढ़ हँकारी मेट मिटाए, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। द्वापर तेरी धार बंधाए, मुकंद मनोहर लखमी नरायण आपणा वेस वटाईआ। नाम बंसरी इक्क वजाए, साची सखीआं मंगल गाईआ। पंचम लेखा दए चुकाए, पंचम माण वड्याईआ। एका दूजा रहिण ना पाए, तीजे नैण इक्क रघुराईआ। चौथे घर डेरा लाए, चौथें पद मेल मिलाईआ। ब्रह्म नद इक्क वजाए, सुणाए सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता आप अख्वाईआ। जुग करता हरि करने जोग, बेअन्त बेऐब परवरदिगारया। आप आपणा करया भोग, सतिजुग त्रेता द्वापर पार उतारया। कलिजुग होया धुर संजोग, लिख्या लेख आप निरंकारया। जूठ झूठ लग्गा रोग, माया ममता मोह बणया गढ़ हंकारया। फिरे दरोही चौदां लोक, चौदां तबक हाहाकारया। ईसा मूसा सुणाया आपणा सलोक, गाए तराना संग मुहम्मद चार यारया। ऐनलहक हक हकीकत ना सके कोई रोक, लाशरीक खेल अगम्म अपारया। पीर दस्तगीर शाह हकीर मुल्ला शेख कुतब गौंस ना सके कोई रोक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल जोद्धा सूर बली बलकारया। जोद्धा सूर बली बलवान, कायनात वेख वखाईआ। मुकामे हक सच मकान, लाशरीक दए गवाहीआ। महिबान बीदो नौजवान, इसम आज़म इक्क अख्वाईआ। आपे गाए अञ्जील कुरान, तीस बतीस आप सलाहीआ। आपे कलमा नबी बण ईमान, शरअ शरीअत दए वड्याईआ। आपे शाह बण अफ्गान, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। आपे राम रहीम हो रहिमान, रहिमत आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल विच संसार, इज़राईल जबराईल मेकाईल असराफ़ील चारों कुण्ट भवाईआ। चारों कुण्ट चार यारी, चारे दिशा वेख वखांयदा।

शाह सुल्ताना शाह अस्वारी, शहनशाह आपणा नाउँ धरांयदा। ऐली अल्ला नूर इलाही हो उज्यारी, नूर नुरानी जोत जगांयदा। अहिबाब रबाब वजाए सितारी, सच सरंगा हथ्थ उठांयदा। अल्ला राणी रही कुँवारी, साचा खौत ना कोए वखांयदा। लोकमात आबे हयात भरनहारी, पाणी साची सेवा सेव लगांयदा। जोती जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। हरि सतिगुर साची धार, सति पुरख निरँजण आप चलांयदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, लोकमात वेख वखांयदा। भगत भगवन्त मीत मुरार, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। सन्त सुहेला कर प्यार, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। निरगुण बाती कर उज्यार, घर दीपक इक्क जगांयदा। कमलापाती हो त्यार, कँवल नैण नैण मटकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलांयदा। खेलणहार पुरख समरथ, हरि सचा वड वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाया रथ, कलिजुग वेखे बेपरवाहीआ। लख चुरासी पाई नथ्थ, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव महिमा गायण अकथ, चार वेद देण दुहाईआ। निरगुण सरगुण रिहा नट्ठ, दो जहानां फेरा पाईआ। वसणहारा घट घट, हरिजन साचे लए जगाईआ। लेखा जाणे तीर्थ अठसठ, तट किनारा फोल फुलाईआ। गंगा गोदावरी देखे मट्ठ, जमना सुरस्ती चरन टिकाईआ। जोत ज्वाला लट लट, अनुभव प्रकाश वखाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत चोटी चढ़ आपे भन्ने दूई द्वैती वट्ट, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अबिनाशी एकँकारा इकओंकारा निराकारा साकारा निरगुण सरगुण आपणा रूप वटाईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, भेव कोए ना पांयदा। शब्द सरूपी बण मलाह, लोकमात वेख वखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दए सलाह, साचा मता आप पकांयदा। करोड़ तेतीसा नाल रला, सुरपति राजा नाल रलांयदा। गण गंधर्ब लए उठा, किनर जछप आप हलांयदा। लख चुरासी डेरा ला, घट घट वेख वखांयदा। गुरमुख साचे मेल मिला, घर मन्दिर इक्क सुहांयदा। पुरख अबिनाशी जोत जगा, जागरत जोत इक्क जणांयदा। शाह रग उप्पर डेरा ला, अग्नी तत्त बुझांयदा। कागों हँस लए बणा, माणक मोती चोग चुगांयदा। जननी जन लेखे ला, जनक सपुत्री सीता राम प्रनांयदा। साची सखीआं मंगल गा, एका काहन आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता हरि करनेहारा, कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण सरगुण हरि हरि मेला, हरि आपणी खेल खिलांयदा। आपणे घर आपे बणया सज्जण सुहेला, साख्यात रूप वटांयदा। आपणा खेल आपे खेला, अकल कल धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार हरि निरँकार, पंज तत्त कर प्यार, सरगुण मेला विच संसार, नानक नाम वड्यांअदा। नानक मिल्या हरि गोबिन्द, घर साचे वज्जी वधाईआ। त्रैगुण

माया मिटी चिन्द, पंज तत्त होई रुशनाईआ। अमृत धार सागर सिन्ध, दिवस रैण वहाईआ। पुरख अबिनाशी सद बख्शंद,
गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। आप उपजाए आपणी बिन्द, नादी सुत उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
जोत धर, निरगुण दाता निरगुण धार, खेले खेल विच संसार, एका रूप सर्ब दरसाईआ। एका रूप सूरा सरबंग, हरि
सज्जण शहनशाह। जन भगतां काया चोली चाढ़े रंग, वड दाता बेपरवाह। दो जहानां कट्टे भुक्ख नंग, शब्द सरूपी बण
मलाह। अश्व घोड़े कसे तंग, शाह अस्वारा नाउँ धरा। लोआं पुरीआं आपे लँघ, ब्रह्मण्ड खण्ड चरनां हेठ दबा। जोती
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण मेला सरगुण घर, नानक मिल्या सच्चा पातशाह। सतिगुर सच्चा पातशाह,
हरि सज्जण हरि हरि पाया। ना कोई पिता ना कोई माँ, भैण भ्रा ना कोए जणाया। ना कोई जिमीं ना अस्मां, सूरज
चन्न ना कोए चढ़ाया। ना कोई मन्दिर ना मकान, धरनी धरत ना कोए वखाया। ना कोई हँस ना कोई काँ, कागां डार
ना कोए उडाया। ना कोई शब्द ना कोई नाँ, गुर पीर अवतार कोई दिस ना आया। ना कोई थनंतर ना कोई थाँ, ना
कोई डेरा लाया। ना कोई बिरछ ना कोई छाँ, छप्पर छन्न ना कोए छुहाया। ना कोई पकड़नहारा बांह, ना कोई गले
१५१ लगाया। इक्क इकल्ला वेख्या बेपरवाह, नानक मेला सहिज सुभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, १५१
०६ निरगुण अंदर सरगुण वड़, सरगुण आपणा रूप बणाया। सरगुण बणया हरि हरि रूप, हरि साची जोत जगाईआ। शब्द ०६
नगारा चारे कूट, दहि दिशा आप सुणाईआ। अबिनाशी करता गया तुट्ठ, घर साचे वज्जी वधाईआ। आपणा लाहा आपे
रिहा लुट्ट, आपणी झोली आप भराईआ। आपणे अंदरों आपे फुट, आपणा नूर करे रुशनाईआ। आपे ढाए आपणा किला
कोट गढ़, हँकारी रहिण ना पाईआ। आप लगाए आपणी चोट, तन नगारा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेला एका घर, लोकमात करी कुड़माईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर कुड़माई, घर घर बंक
सुहाया। सचखण्ड दुआरे वज्जी वधाई, साचा मंगल इक्क सुणाया। आदि निरँजण वेखे चाँई चाँई, आपणा नैण खुल्हाया।
सो पुरख निरँजण पकड़े बांहीं, हरि पुरख निरँजण गले लगाया। श्री भगवान निथावयां देवे थाँईं, दरगाह साची आप बहाया।
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा विष्न शिव दुआरे रहे खड़, दोए जोड़ पए सरनाया। ब्रह्मा विष्न
शिव बण भिखार, दर घर साचा एका मंगया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, दर दुआरे तेरे आए दूजा दर ना कोई लंघिआ।
कवण वेला पाएं सार, जुग जुग होए भुक्खे नग्गयां। तेरा वण्डदे रहे भण्डार, वड दाते सूर सरबंगया। नानक विचोला
विच संसार, तेरी सेजा सुत्ता सच पलग्गयां। दूसर कोए ना पावे सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

ब्रह्मे विष्न शिव देवे वर, नानक निरगुण लाए अंगया। ब्रह्मा विष्न शिव सुण पुकार, हरि नानक नाम जणाईआ। तिन्नां लेखा लिखे अपार, दे मति आप समझाईआ। त्रैगुण माया करे ख्वार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। पंज तत्त मारे मार, मारनहारा इक्क अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। विश्व रूप वरते विच संसार, ब्रह्मे लहिणा दए मुकाईआ। शंकर तेरा पार किनार, तेरा बेड़ा आप तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बूझ आप बुझाईआ। लेखा लिख्या नानक निरगुण निराकार, चार वरन समझाया। एका जोती दस अवतार, गुर गोबिन्द नाउँ वटाया। शब्द खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकाया। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, जोती जोड़ा शब्द मिलाया। साचा घोड़ा शाह अस्वार, नीला नीली धारों पार कराया। मिट्ठा कौड़ा खेल अपार, लोकमात वेख वखाया। सुत दुलारा हो त्यार, साची सेवा आप कमाया। पुरख अकाल बोल जैकार, पंचम मेला मेल मिलाया। अमृत बख्शे ठंडी ठार, भर प्याला नाम प्याया। केस सीस जगदीस सोहे दस्तार, हथ्थीं कंगन इक्क पहनाया। धीरज जति जगत विहार, सति सन्तोख ज्ञान दृढ़ाया। ब्रह्म मति अपर अपार, गति मित आप वखाया। चार वरनां रंग करतार, रंग मजीठी आप चढ़ाया। आप उतरया पार किनार, गुरमुख साचे पार कराया। अन्तिम बोले शब्द जैकार, वाहिगुरू फ़तह इक्क गजाया। पुरख अकाल सांझा यार, सृष्ट सबाई रिहा समझाया। प्रगट होवे विच संसार, सन्त सहाई आप हो जाया। सम्बल नगरी धाम न्यार, आपणा डेरा लए लगाया। उच्चा कूके करे पुकार, हरि मन्दिर वेख वखाया। आलस निन्दरा ना सोए कदे पैर पसार, त्रैगुण विच कदे ना आया। एका शब्द शब्द जैकार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा नाअरा दए सुणाया। निहकलंका लै अवतार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, हरि सतिगुर पुरख सुल्तान। खेले खेल इक्क अकल्लड़ा, आदि जुगादी नौजवान। सच दुआरा एका मलड़ा, सचखण्ड निवासी हरि मेहरवान। दो जहानां फेरे पलड़ा, जोद्धा सूरबीर बलवान। शब्द सनेहड़ा आपणा घलड़ा, आप आपणी कर पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट होए विच जहान। दो जहानां हरि हरि वाली, वड्डा वड्डी वड वड्याईआ। जुग जुग चले चाल निराली, वेद कतेब भेव ना पाईआ। निरगुण जोत इक्क अकाली, अकल कला आप अख्वाईआ। शब्द सरूपी जगत दलाली, जुग जुग आपणी आप कराईआ। वेखे फल लग्गा डाली, ब्रह्मा विष्न शिव जो बूटे रहे लगाईआ। पुरख अबिनाशी बण के आए पाली, गुरमुख गऊआं आप चराईआ। सतिगुर साचा लोकमात बणे साचा हाली, कलिजुग कूड़े बैल अग्गे रखाईआ। सोहँ तिक्खी रक्खे फाली, मनमुखां जड़ उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप

१५२ ०६

हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा लए प्रगटाईआ। प्रगट होया हरि निरँकार, लोकमात वेस वटाया। साल बवन्जा सोया पैर पसार, गूढ़ी नींद ना कोए उठाया। निरगुण सरगुण खेल संसार, पुरख अबिनाशी आप कराया। भोगया भोग अपर अपार, जगत जुगत विच रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाया। वेस वटाया शाह सुल्तान, ब्रह्मा विष्न शिव भेव ना पांयदा। चार वेद सर्ब कुरलान, चारे जुग जुग सालांहयदा। पुराण अठारां बह बह गान, दिवस रैण सर्ब सलांहयदा। शास्त्र सिमरत करन ज्ञान, गोझ ज्ञान ना कोए खुल्हांयदा। अठारां अध्याए गीता हो प्रधान, भगतन लेखा वेख वखांयदा। राह तक्कण अञ्जील कुरान, ईसा मूसा नैण उठांयदा। चार यार संग मुहम्मद सर्ब पछतान, अल्ला राणी कवण प्रनांयदा। नानक लेखा धुर फ़रमान, शब्द अगम्मी धारा चलांयदा। गोबिन्द चिल्ला तीर कमान, सोहँ भथ्था मुखी आप रखांयदा। कलिजुग प्रगट होवे वाली दो जहान, निहकलंका नाउँ रखांयदा। साल बवन्जा जगत निशान, कलिजुग काया चोला आप हंढांयदा। अन्तिम छड्डया फ़नाह मकान, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। आपणी करनी करता करे भगवान, लेखा लेख ना कोए मिटांयदा। गोबिन्द मिल्या हरि हरि आण, सम्बल नगरी डेरा लांयदा। साढे तिन्न हथ्थ सच निशान, हरि मन्दिर मेल मिलांयदा। छब्बी पोह दिवस महान, वीह सौ बिक्रमी नाल रलांयदा। कोटन कोटि राह तक्कण कृष्ना काहन, कोटन कोटि राम नैण उठांयदा। कोटन कोटि विष्न ला ला बैठे ध्यान, कोटन कोटि ब्रह्मा मुख सलांहयदा। कोटन कोटि शंकर सुणन ला ला कान, दिवस रैण सितार वजांयदा। कोटन कोटि जग मात कर प्रधान, आपणी चलत चलांयदा। कोटन कोटि साध सन्त दए ज्ञान, कोटन कोटि सुरती शब्द मिलांयदा। कोटन कोटि पवण पाणी मसान, कोटन कोटि अग्नी तत्त वखांयदा। कोटन कोटि रागी नादी बह बह गाण, कोटन कोटि सुन्न समाधी डेरा लांयदा। कोटन कोटि जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बैठे बीआबान, कोटन कोटि जल जलधारा सीस रुढ़ांयदा। कोटन कोटि तन लगोटी बन्न्ह निशान, बोटी बोटी कोटन मास तुड़ांयदा। नानक निरगुण चढ़या एका चोटी, दूजा संग कबीर निभांयदा। कलिजुग अन्तिम पुरख अबिनाशी करे खेल जोत इक्क इकलोती, घर घर जोती आप जगांयदा। वीह सौ बिक्रमी आदि शक्ति ना रही सोती, हरि साचा आप उठांयदा। सो पुरख निरँजण हथ्थ विच फड़ी एका सोटी, हँ ब्रह्म आप हलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छब्बी पोह सच दिहाढ़ा, आप मनाए धुरदरगाही साचा लाड़ा, लोकमात वेखण आया सच अखाड़ा, मात आकाश पाताल फेरा पांयदा। वीह सौ बिक्रमी हरि निरँकार, आपणी जोत जगाईआ। सति पुरख निरँजन हो त्यार, अगम्मड़े धाम सोभा पाईआ। अलक्ख अलक्खणा कर विचार, सचखण्ड डेरा लाईआ। सचखण्ड अंदर

खेल अपार, थिर घर सोभा पाईआ। थिर घर खोल्हणहार किवाड़, आपणी किरन बाहर कढ्ढाईआ। एका किरन खेल अपार, हरि करता आप कराईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार, एका हिस्सा झोली पाईआ। इक्क ग्यारां वण्ड अपार, इक्क इक्क एके नाल मिलाईआ। इक्क इक्क हिस्सा गुर पीर अवतार, साधां सन्ता झोली पाईआ। इक्क लक्ख चुरासी कर त्यार, जोत निरँजन घर घर जोत जगाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग खेल अपार, हरि करता आप कराईआ। कलिजुग अन्तिम वेस निरँकार, अकल कल धारी आपणा आप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका छब्बी दए समझाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला अख्वांयदा। दूसर कुदरत कर त्यार, तीजा नैण इक्क दरसांयदा। चौथे पद खेल अपार, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। पंचम शब्द धुन जैकार, अनहद नादी नाद वजांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोए विचार, दर घर साचे आसण लांयदा। सति पुरख निरँजन निराकार, निरगुण आपणा वेस वटांयदा। अठ्ठां तत्तां खेल अपार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, मन मति बुध मेल मिलांयदा। नौं दुआरे खेल संसार, सृष्ट सबाई आप नचांयदा। दस्म दुआरी बैठ निरँकार, घर घर विच सोभा पांयदा। इक्क दस हो त्यार, एका एक अलख जगांयदा। दो दस हो उज्यार, नूरो नूर डगमगांयदा। त्रै दस पार किनार, तेरां तेरां रंग रंगांयदा। चार दस सच्ची सरकार, चौदां लोकां फोल फोलांयदा। पंज दस अंदर बाहर, गुप्त ज़ाहर नाउँ धरांयदा। छे दस कर श्रंगार, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। सत्त दस सच सतार, काया मन्दिर आप वजांयदा। अठ दस अमृत धार, ठंडी ठार आप वहांयदा। नौं दस पार किनार, सुंन्न अगम्म पार लँघांयदा। दस दस खोल्ह किवाड़, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। बीस बीसा हो त्यार, लोकमात जोत जगांयदा। इक्क इकीसा शाह सिक्दार, सच निशाना इक्क लगांयदा। एका इक्की भर भण्डार, आपणी लिखी आप मिटांयदा। इक्की पंज पंज वरतार, पंज दस सोभा पांयदा। किसे हथ्थ ना आए विच संसार, नवखण्ड सर्ब कुरलांयदा। सत्तां दीपां हाहाकार, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। मुस्लिम लभ्भण मुहम्मदी यार, अमाम मैहन्दी दिस ना आंयदा। हिन्दू गौड़ ब्रह्मण रहे पुकार, वेद व्यासा लेख लिखांयदा। सिख उच्ची कूकन करन हाहाकार, गुर गोबिन्द दिस ना आंयदा। एका यसूह रहे लिव तार, बीस बीसा मेल मिलांयदा। प्रगट हो हरि निरँकार, लोकमात खेल खिलांयदा। निरगुण सरगुण एका धार, एका रूप चढ़ांयदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द वाड़, गोबिन्द वेख वखांयदा। गोबिन्द हड्ड मास नाड़ी रत नाड़, गोबिन्द रक्त बूंद मेल मिलांयदा। गोबिन्द पंज तत्त कर प्यार, गोबिन्द पंज ककार वखांयदा। गोबिन्द पंच शब्द भर भण्डार, गोबिन्द पंचम मुख सलांहयदा। गोबिन्द पंचम बणया मीत मुरार, पंचम मेल मिलांयदा। गोबिन्द पंचम सखीआं कन्त भतार, आपणे अंग लगांयदा। गोबिन्द साचा

खण्डा कर त्यार, शब्द डण्डा मुड्ढ लगांयदा। लोहार तरख़ान ना घड़े कोई सुन्यार, लोहा पारस कंचन ना कोए रखांयदा। साची आहरन कर त्यार, गुरमुख तेरी काया अंदर टिकांयदा। उत्ते शब्द हथौड़ा देवे मार, अनहद आपणे भार दबांयदा। तिक्खी रक्खे आपे धार, नाम पाण इक्क चढ़ांयदा। गुरसिख तेरी रसना बणे चिल्ला तीर कमान, गुर गोबिन्द जोद्धा आप खिचांयदा। प्रगट होया वाली दो जहान, निहकलंका नाउँ रखांयदा। छब्बी पोह दिवस महान, हरि गोबिन्द मेल मिलांयदा। पूरन पाया पुरख सुल्तान, पूरी विद्या आप पढ़ांयदा। चौदां विद्या मुख शर्मान, जगत ज्ञान ना कोए दृढ़ांयदा। साचा देवे धुर फ़रमान, हरिसंगत आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा वेस वटांयदा। नर हरि नरायण बन बनवारी, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, निहकलंका नाउँ रखाया। जोद्धा सूर बली बलकारी, शाह सुल्तानां रिहा जणाया। साधां सन्ता दए हुलारी, सोया कोए रहिण ना पाया। हत्थ फड़या खण्डा नाम तेज कटारी, चारों कुंट रिहा चमकाया। कलिजुग जीव ना दिसे कोई हँकारी, मन रावण दए खपाया। सीता सुरती करे नार प्यारी, हरि हरि राम लए प्रनाया। राधा रहे ना जगत कुँवारी, कान्हा कृष्ना अंग लगाया। गुरमुख तेरी आई वारी, कलिजुग अन्तिम दए दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दए समझाया। हरिसंगत उठणा जाग, सतिगुर पूरा आप जगाईआ। दो जहानां लग्गा भाग, लोक परलोक वेख वखाईआ। शाह सुल्तान सीस लथ्थण ताज, सच सिक्दार ना कोए वड्याईआ। जन भगतां संवारन आया काज, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। प्रगट होया देस माझ, निहकलंका नाउँ रखाईआ। हरिसंगत तेरी रक्खे लाज, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी पैणी भाज, ना धीर कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छब्बी पोह सुभागा दिवस, हरिसंगत संग निभाईआ। सम्मत सोलां साची धारा, धरनी धरत धवल सुहांयदा। मातलोक जगत दुआरा, सृष्ट सबाई आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणा भेव आप खुलांयदा। सम्मत सोलां हरि भेव खुलाया, उच्ची कूके दए सुणाईआ। निहकलंक कल जामा पाया, लोकमात होए रुशनाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी दए हलाया, ना सके कोए बचाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव रिहा कुरलाया, खुलड़े केस देण दुहाईआ। अल्ला राणी गल विच पल्ला पाया, मस्तक टिक्का रही लगाईआ। धरत मात झोली रही वछाया, मंगे मंग दए बेपरवाहीआ। राए धर्म उठ उठ धाया, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। चित्रगुप्त लेखा रिहा वखाया, कलिजुग लेखा फोल फोलाईआ। लाड़ी मौत आपणे अंग वटना लाया, साचे खारे चढ़ी आप आपणी लए अंगड़ाईआ। नेत्र कज्जला एका पाया, दो जहान रही मटकाईआ। कलिजुग कूड़ा गहिणा

तन छुहाया, माया ममता बस्त्र भूशन रही हंढाईआ। साचा चूड़ा हथ्थ वखाया, लाल रंगन मैहन्दी रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मंगण आए थाउँ थाईंआ। छब्बी पोह खोल्ह दरवाज़ा, हरि साचा खेल खिलांयदा। विष्नूं चरन दुआरे आया भाजा, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। ब्रह्मा रोवे रक्खो लाजा, वेले अन्त ना कोए छुडांयदा। शंकर पूरा होया काजा, कलिजुग लेख मुकांयदा। तिन्नां मेला करया अंदर दरवाज़ा, आप आपणे कंठ बहांयदा। सचखण्ड निवासी खोल्ह दरवाज़ा, लोकमात राह तकांयदा। हरिसंगत तेरा साजण साजा, हरि साचा मेल मिलांयदा। निरगुण जोत करया वेस देस माझा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। लोकमात हरि आया दौड़, निरगुण नूर नूर नुराना। सचखण्ड निवासी लाया एका पौड़, पावे सार दो जहानां। जन भगतां आपे जाए बौहड़, नाम सुणाए सच तराना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद पंदरां गुरमुखां बद्धा हथ्थीं गाना। गुरमुखां हथ्थीं गानां बन्न्ह, अठसठ मूल चुकाया। सम्मत सोलां चढ़या चन्न, सतिगुर पूरे आप चढ़ाया। जननी जणया एका जन, जन जननी लेखे लाया। सुणया राग साचा कन्न, हरि सोहँ ढोला गाया। भाण्डा भरम भउ दित्ता भन्न, भिन्नड़ी रैण नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण धार विच संसार, गुरमुखां अंदर बन्द कराया। साचा खण्डा जगत कटार, हरि साचा वेख वखाईआ। हरिसंगत करे खबरदार, लोकमात लए उठाईआ। सेवक बणया सेवादार, सतिगुर पूरा सेव कमाईआ। ना पुरख ना दिसे नार, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप समझाईआ। जगत खण्डा आर पार, हरि साचा सीस टिकांयदा। सृष्ट सबाई करे ख्वार, गुरमुख साचे आप तरांयदा। हरिसंगत तेरा चुक्कया भार, सिर आपणे आप उठांयदा। तेरी मरनी मरे आप करतार, गुरमुख साचे पार करांयदा। पहली चेत्र दिवस लए विचार, सीस ताज आप टिकांयदा। शाह सुल्तान राह तक्कण सिरजणहार, ग़रीब निमाणे विचोले विच रखांयदा। फड़ फड़ बाहों करे ख्वार, लग्गी जड़ सर्ब उखड़ांयदा। प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतार, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आपणा नाउँ धरांयदा। गुरसिखां पाया आपणा घेरा, खण्डा हथ्थ चमकाया। हरिसंगत तेरा सतिगुर ढाए भरमां ढेरा, अंदर निर्मल जोत करे रुशनाया। एका रंग वखाए संझ सवेरा, दिवस रैण ना कोए बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा दए मुकाया। हरिसंगत सम्मत सोलां, हरि शब्द करे कुड़माईआ। गुरसिखां चुक्के आपणी हथ्थीं डोला, सच कहार आप बण जाईआ। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इंद ब्रह्मा विष्न शिव राह विच पावण रौला, उच्ची कूकण

देण दुहाईआ। गुरसिखां देवे वडियाई उप्पर धवला, अन्तिम आपणे लेखे लए लगाईआ। छब्बी पोह करन आया उलटा कँवला, अमृत अमृत दए झिराईआ। हिन्दू दरस दिखाए कान्हा कृष्ना साँवल सँवला, राम रामा रूप वटाईआ। मुस्लिम एका नूर हो हो मवला, मौला आप आपणा नूर दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दए वड्याईआ। हरिसंगत चढ़न साचे बेड़े, सो पुरख निरँजण आप चढ़ांयदा। हरि पुरख निरँजण कलिजुग कूड़े मेटे झेड़े, कूड़ी क्रिया ना कोए वखांयदा। एकँकारा वसाए साचे खेड़े, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। आदि निरँजण करे नबेड़े, पूर्ब लेखा वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी देवे गेड़े, चौथा जुग आप भवांयदा। श्री भगवान वसया नेड़े, आपणा पड़दा आप लांयदा। पारब्रह्म हरिसंगत तेरे आया वेहड़े, घर तेरे राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी, हरिजन साचे वेख वखांयदा। सो पुरख निरँजण हरि निरँकार, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, आप आपणा राह तकाईआ। एकँकारा कर आकार, निराकार खेल खलाईआ। जोत निरँजण हो उज्यार, आदि निरँजण साची नगरी आप वसाईआ। पुरख अबिनाशी सांझा यार, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन करे कुड़माईआ। श्री भगवान करे प्यार, घर मेला सहिज सुभाईआ। पारब्रह्म निर्धन सरधन एका धार, आप आपणे लड़ रखाईआ। लोकमात बणाया सचखण्ड दुआर, घर साचा इक्क सुहाईआ। गुरसिखां काया चोली चाड़े रंग अपार, रंगनहारा एका आईआ। ताने मारे सर्ब संसार, ताना तनक ना कोए लगाईआ। गाने बन्नृ बन्नृ हथ्थीं हार गया जगत वणजार, जगत नारी सर्ब प्रनाईआ। बिन सतिगुर पूरे अन्त ना करे कोई प्यार, नाता तुट्टे मात पित भैण भाईआ। हरिसंगत गाओ मंगलाचार, घर पाया सहिज सुभाईआ। होई सुभागी सुलखणी नार, नर हरि साचा कन्त हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कलिजुग कूड़ा दए मिटाईआ। कलिजुग कूड़ा लेख मिटाउणा, हरिसंगत सहिज सुभाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, सति सति सति वरताईआ। कलिजुग लेखा पूर कराउणा, वेला अन्तिम दए दुहाईआ। सतिजुग धरत मात दी गोद बहाउणा, पूत सपूता एका जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरी साची धार, आप लिखाए हरि निरँकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सतिजुग साचा भेव खुलाउणा, बोध अगाध जणाया। सताई पोह लेख लिखाउणा, लेखा लिख्त विच ना आया। राष्ट्रपति आप उठाउणा, आप आपणा हुक्म जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सनेहड़ा दए घलाया। शब्द सनेहड़ा देवे हरि, राष्ट्रपति पति उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ तोड़न आया कलिजुग गढ़, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। एका अक्खर लैणा पढ़, पंडत पांधे नाल मिलाईआ।

पहली चेत्र वेखे खड़, सिर आपणे ताज टिकाईआ। कोई ना सके अंदर वड़, ना बैठे मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा खेल खलाईआ। आदि पुरख खेल अपार, आपणा आप धरांयदा। साचे मन्दिर अंदर हो त्यार, आपणा रूप प्रगटांयदा। आपणी जोत कर उज्यार, नूरो नूर डगमगांयदा। निरगुण निराकार निरँकार, निरवैर रूप समांयदा। निरगुण रूप अगम्म अपार, अलक्ख अलक्खणा आप प्रगटांयदा। जूनी रहित खेल करतार, अनुभव प्रकाश करांयदा। पुरख अकाल दीन दयाल, आप सुहाए सच दुआर, सचखण्ड साचे आसण लांयदा। जूनी रहित अकल कल धार, आप आपणी कल वरतांयदा। आदि जुगादी साची कार, हरि करता आप करांयदा। ब्रह्म ब्रह्मादी खेल अपार, खेलणहारा आप खलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा नाउँ उपजांयदा। निरगुण नाउँ नाउँ निरँकार, हरि साचा सच वड्याईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, आप आपणा वेस धराईआ। सचखण्ड सोहे बंक दुआर, दर दरवाजा वेख वखाईआ। ग़रीब निवाज़ा शाह सिक्दार, शाह सुल्ताना नाउँ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाईआ। वेस अवल्लड़ा पुरख करतारा, हरि सतिगुर आप करांयदा। जुग जुग लोकमात लै अवतार, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, साचा नाअरा आप लगांयदा। लोआं पुरीआं दए सहारा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखांयदा। त्रैगुण माया खेल न्यारा, रूप अनूप आप धरांयदा। राज जोग हरि पावे सारा, जगत जुगत हरि आप बणांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव हरि कर भिखारा, साची भिच्छया झोली नाम पांयदा। करोड़ तत्तीसा दए हुलारा, सुरपति आप उठांयदा। नौ खण्ड पृथमी दए हुलारा, सत्तां दीपां वण्ड वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। रचन रचाए पुरख करतारा, करनी करता आप कमाईआ। जुगा जुगन्तर खेल न्यारा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई बन्ने धारा, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ। घर घर दीपक जोत कर उज्यारा, हरि मन्दिर सोभा पाईआ। आपे वसे धाम न्यारा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता आप अखवाईआ। जुग करता पुरख समरथ, पारब्रह्म अखवाया। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही नाउँ धराया। सृष्ट सबाई पाए नथ्थ, नाम डोरी हथ्थ रखाया। आपणी महिमा जाणे अकथ, कथनी कथ ना सके राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार दए चलाया। साची धार शाह सुल्तान, लोकमात आप चलाईआ। आपे खेले खेल दो जहान, आप आपणी कल वरताईआ। आपे शब्दी शब्द ज्ञान, आपे करे ब्रह्म पढ़ाईआ। आपे बख्शे नाम निधान, निरगुण सरगुण झोली पाईआ। आपे सति सतिवादी नौजवान, ना मरे ना

जाईआ। आपे बल बावन वेखे आन, आप आपणा रूप वटाईआ। आपे सीता राम करे प्रनाम, आपे तीर कमान उठाईआ। आपे गोपी मेला साचे काहन, साची बंसरी आप वजाईआ। आपे ईसा मूसा कर पछान, काला सूसा तन छुहाईआ। आपे संग मुहम्मद देवे दान, चार यारी वेख वखाईआ। आपे नानक कर प्रधान, नाम सति वण्ड वण्डाईआ। आपे गोबिन्द जोद्धा सूरबीर बलवान, साचा खण्डा आप चमकाईआ। आपे वेद शास्त्र पुराण, आपे सिमरत करे पढ़ाईआ। आपे देवे सच ज्ञान, गीता गोबिन्द आप जणाईआ। आपे बाईबल लेखा जाणे अञ्जील कुरान, तीस बतीसा आपे गाईआ। आपे खाणी बाणी धर निशान, साची बाणी वेख वखाईआ। आपे दाता दानी हरि भगवान, देवणहार भेव ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। आपे होए अठसठ नीर, जलधारा आप समाईआ। आपे गंगा गोदावरी देवे चीर, जमना सुरस्ती ल्ए सुहाईआ। आपे शब्द निराला मारे तीर, एका मुखी नाम चढ़ाईआ। आपे शाह आपे हकीर, आपे घर घर अलक्ख जगाईआ। आपे पीर दस्तगीर, शाह शाहाना आप वड्याईआ। आपे त्रैगुण माया आपे जंजीर, पाए बन्धन बंध कटाईआ। आपे हउमे माया रक्खे भीड़, आपे हंगता गढ़ ढाईआ। आपे चोटी चढ़े अखीर, आपे खाकी खाक समाईआ। आपे गुर पीर साध सन्त देवे धीर, धीरज धीर इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी महिमा आपे जणाईआ। आपे राज भूप सुल्तान, आपे तख्त ताज सुहांयदा। आप बणे बंक दरबान, दर दरवेश नाउँ वटांयदा। आपे भगतां करे पछाण, हरिजन आपे मेल मिलांयदा। आपे जोती नूर बख्शे कोटन भान, रवि ससि मुख शरमांयंदा। आपे होए जाणी जाण, हर घट आपे डेरा लांयदा। आपे निरगुण रूप श्री भगवान, सरगुण आपे वेख वखांयदा। आपे गाए अनहद साचा गान, तुरीआ राग आप अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। आपे शहनशाह पातशाह, पति पतिवन्ता आप अख्वाईआ। आपे सतिगुर दाता बण मलाह, लोकमात नाउँ धराया। आपे जुग जुग चलाए आपणा राह, आपणा मार्ग आपे लाईआ। आपे देवणहारा सच सलाह, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। आप उपजाए आपणा नाँ, नर निरँकारा आप सलाहीआ। आपे देवे निथावयां थाँ, थान थनंतर सोभा पाईआ। आपे पिता आपे माँ, बाल अंजाणे गोद उठाईआ। आपे देवणहारा ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे दए सदा वड्याईआ। आपे राज जोग सिक्दार सच्चा भूप, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। आपे वसे चारे कूट, दहि दिशा फेरी पांयदा। आपे ताणा पेटा होए सूत, आपे बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। साचा लेखा हरि निरँकार, आपणे हथ्थ रखाया। लख चुरासी

कर त्यार, घर घर डेरा लाया। सन्त सुहेले कर प्यार, आप आपणी बूझ बुझाया। अमृत आत्म ठंडी ठार, निझर झिरना दए झराया। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, धुन अनादी आप वजाया। आपे खोल्ह बन्द किवाड़, घर साची सेज सुहाया। आत्म सेजा कर प्यार, आप आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन वेख वखाया। सन्तन मेला सच दर, हरि साचा आप करांयदा। धुर दरगाही मिल्या वर, वर घर एका एक समझांयदा। नारी मिल्या साचा नर, नर नरायण नज़री आंयदा। आपणी करनी रिहा कर, करता पुरख नाउँ उपजांयदा। निर्भय रूप ना जाए डर, भय भयानक आप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। रंग रंगीला श्री भगवान, हरि बीठल वड वड्याईआ। जुग जुग वेखे लोकमात मार ध्यान, सचखण्ड निवासी बेपरवाहीआ। भगतां देवे भगती दान, भावनी भगतन पूर कराईआ। दो जहानां रक्खे माण, अभिमानां दए खपाईआ। सच वखाए इक्क निशान, दरगाह साची आप झुलाईआ। पद वखाए इक्क निरबान, परमानंद नंद समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी खेल खलाईआ। जुग जुग खेल करनहार, आपणी किरत कमांयदा। सन्त भगत भगवन्त लाए पार, हरिजन साचे वेख वखांयदा। आदि अन्त आपणी धार, धरनी धरत धवल चलांयदा। जल बिम्ब हरि पाए सार, आकाश प्रकाश फोल फुलांयदा जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ वटांयदा। जुग जुग नाउँ हरि हरि रक्ख, आपणी कल वरतांयदा। निरगुण सरगुण हो प्रतक्ख, हरिजन साचे आप तरांयदा। लख चुरासी विच्चों करे वक्ख, आपणी वण्डण आप वण्डांयदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपणा अक्खर आप पढ़ांयदा। हिरदे अंदर हरि हरि वस, हरि की पौड़ी आप चढ़ांयदा। दो जहानां नस्स नस्स ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। मेटे रैण अन्धेरी मस, अज्ञान अन्धेर ना कोए वखांयदा। शब्द निराला तीर मारे कस, एका मुखी मुख लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ उपजांयदा। नाउँ रक्ख साची धार, सति पुरख निरँजण आप चलाईआ। सतिजुग वेस अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी खेल खलाईआ। त्रेता तेरा रंग सर्ब संसार, दो दो मेला सहिज सुभाईआ। द्वापर तेरा मीत मुरार, इक्क इकल्ला इक्क अख्वाईआ। कलिजुग कूड़ा वेख पसार, आप आपणी कल वरताईआ। वेद पुराण गए हार, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। शास्त्र सिमरत ढह ढह पए दुआर, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। अञ्जील कुराना हाहाकार, दिवस रैण देण दुहाईआ। खाणी बाणी ना करे कोए विचार, नानक गोबिन्द दए गवाहीआ। भरमे भुल्ला सर्ब संसार, भरम गढ़्ह ना कोए तुड़ाईआ। तीर्थ तट्टां आई हार, सगला संग ना कोए निभाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद धूंआँधार, निरगुण जोत ना कोए

रुशनाईआ। पंडत पाधां ना करे विचार, मस्तक झूठा तिलक लगाईआ। मुल्ला शेख मुसायक रोवन ज़ारो ज़ार, नूर इलाही ना मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाईआ। सतिजुग साचा सच पुकार, हरि सन्तन आप सुणांयदा। त्रेता बणे मीत मुरार, त्रैगुण बन्धन पांयदा। द्वापर तेरा ठांडा दरबार, एका घर जणांयदा। कलिजुग खेल सर्ब संसार, पुरख अबिनाशी आप करांयदा। एका गुर इक्क अवतार, एका इष्ट मनांयदा। एका शब्द इक्क जैकार, एका राग सुणांयदा। छत्ती राग करन पुकार, नारद मुन सुरस्ती नाल रलांयदा। सति ना वजाए कोई सितार, नाम सरंगी ना कोई हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग कूड़ कूड़ कूड़यारा, चारों कुंट लए अंगड़ाईआ। हउमे हंगता खण्डा तिक्खी धारा, आपणे हथ्थ उठाईआ। धुर दी लिखी ना कोई मेटे मेटनहारा, ना कोई दिसे होर सहाईआ। चारों कुंट इक्क ललकारा, एका एक दए सुणाईआ। कुँवार कन्या करे श्रंगारा, घर घर कन्त मनाईआ। नारी नर होए विभचारा, नर नरायण दिस ना आईआ। पंज तत्त गढ़ बणया हँकारा, सति सति ना कोए वड्याईआ । काम क्रोध बोल जैकारा, अंदर बैठे देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। कलिजुग जूठ झूठ प्रधान, नव खण्ड वेख वखाईआ। कलिजुग पंज तत्त शैतान, पंचम गए राह भुलाईआ। कलिजुग मदिरा मास पीण खाण, आत्म मध ना कोए सुहाईआ। कलिजुग अठसठ तीर्थ नहावण नहाण, गुर चरन धूढ़ी अशनान ना कोए कराईआ। कलिजुग मन्दिर मस्जिद गुर दर बह बह गाण, सतिगुर पूरा दिस ना आईआ। कलिजुग घर घर बणन गोपी काहन, साची रास ना कोए रचाईआ। घर घर पूजा पाठ करन रामा राम, आत्म राम ना कोए मनाईआ। घर घर रसना गावन सतिनाम, नाम सति ना कोए समाईआ। घर घर तन पहन जगत कृपाल, नाम खण्डा ना हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, चारों कुंट अन्धेरा छाया। ना कोए शाह सुल्तान दिसे सिक्दारा, साचा अदल ना कोए कमाया। ना कोए सज्जण मीत मुरारा, साक सैण ना कोए बणाया। धीआं भैणां करन वणज वणजारा, गुर दर मन्दिर वेसवा घर रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी करनी किरत कमाया। कलिजुग तेरा कूड़ा रंग, हरि पुरख निरँजन वेख वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त माया ममता सेज विछाई इक्क पलँघ, जूठ झूठ लेखा रहे गणाईआ। सच दुआरा ना कोई वेखे लँघ, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गुरमुख विरला मंगे एका मंग, कोटन कोटि जीव रहे बिल्लाईआ। मन मति होई भागामंद, गुर मति ना कोई दिसाईआ। सच ना दिसे चढ़या चन्द, कलिजुग

रैण अन्धेरी छाईआ। किसे हथ्थ ना आया परमानंद, निज आत्म ना वेख वखाईआ। दूई द्वैती हउमे कंध, काया गढ़ टिकाईआ। सतिगुर पूरा सुत्ता दे कर कंड, ना सके कोए जगाईआ। वरन बरन भेख पखण्ड, कलिजुग आपणी वण्ड वण्डाईआ। सृष्ट सबाई नार रंड, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा दए चुकाईआ। कलिजुग लेखा हरि चुकाउणा, हरि पुरख पुरख अवतारया। भरम भुलेखा सर्ब कढाउणा, लख चुरासी पावे सारया। ब्रह्मा विष्न सिव आप उठाउणा, करोड़ तेतीसा दए हुलारया। नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाउणा, सत्तां दीपां जोत जगा रिहा। धरनी धरत धवल हरि आप सुहाउणा, धर धरनी लेखे ला रिहा। उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाउणा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फोल फोला रिहा। समुंद सागर वेख वखाउणा, जल जल जल रूप समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे ला रिहा। सतिजुग साचा मार्ग हरि हरि, हरि सतिगुर आप लगाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़ पढ़, गुरमुखां करे पढ़ाईआ। आपणी अग्नी आपे सड़ सड़, हरिजन तत्त बुझाईआ। आपणी करनी आपे कर कर, गुरमुख साचे लए तराईआ। गुरसिख अंदर आपे वड़ वड़, आपणी बूझ बुझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग फड़ फड़, पूर्ब लहिणा रिहा चुकाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़ खड़, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम सोभा पाईआ। सोभावन्त कन्त भतार, घर साचा आप सुहांयदा। साची सखीआं करे इक्क प्यार, दर साचे मेल मिलांयदा। गीत सुहागी बोल जैकार, आपणी बूझ बुझांयदा। नाम वस्त भर भण्डार, साची झोली आप भरांयदा। निरगुण जोत कर उज्यार, घर घर विच दीप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन साचा मेलया, कर किरपा करतार। हरि मिल्या सज्जण सुहेलया, विछड़या संसार। एका घर सोहे गुरू गुर चेलया, गुर दर मन्दिर खेल अपार। धर्म राए दी कट्टे जेलया, लक्ख चुरासी करे ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक लए अवतार। निहकलंक हरि अवतारा, हरि पुरख निरँजन वड वड्याईआ। सो पुरख निरँजन हो उज्यारा, लोकमात करे रुशनाईआ। एकँकारा अकल कल धारा, आपणी कल वरताईआ। सोहँ शब्द बोल जैकारा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। तीर्थ तट ना कोए किनारा, अठसठ ना कोए वखाईआ। ना कोए मन्दिर मस्जिद दिसे गुरदर दुआरा, गुर चरन इक्क वड्याईआ। ना कोई खड़ग खण्डा चण्ड प्रचण्डा दिसे तेज़ कटारा, नाम खण्डा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए उठाईआ। गुरसिख आप उठावन आया, पोह छब्बी रुत्त सुहांयदा। वीह सौ सोलां बिक्रमी

१६२
०६

नाल रलाया, गुर गोबिन्द मेल मिलांयदा। नानक नाम इक्क वखाया, एका शब्द बंधांयदा। सीता राम लए प्रनाया, आप आपणे लड़ लगांयदा। राधा कृष्ना रंग रंगाया, रंग चलूला इक्क चढ़ांयदा। साचे मन्दिर डेरा लाया, वेद व्यासा वेख वखांयदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा हरि जू हरि हरि बण के आया, हरि साचा रंग वटांयदा। तख्त नवासी शाहो शाबासी पुरख अबिनाशी आपणे अश्व चढ़ के आया, सोलां कलीआं आसण पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव राह विच्चों फड़ के आया, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचे वेखणहारा, आदि जुगादी इक्क अवतारया। लोकमात खेल न्यारा, करता पुरख आप करा रिहा। जूनी रहित भेव न्यारा, निरगुण साची धार बंधा रिहा। घर घर दीपक कर उज्यारा, जोत निरँजण डगमगा रिहा। साचा साकी कर प्यारा, भर प्याला जाम प्या रिहा। खोल्ह ताकी बन्द किवाड़ा, पंचम धाड़ा परे हटा रिहा। कंचन गढ़ सुहाए इक्क दुआरा, किला कोट इक्क वखा रिहा। अंदर वड़ एकँकारा, आप आपणा मेल मिला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा दिवस आप सुहा ल्या। साचा दिवस सोहे प्रभात, हरि रुतड़ी रुत सुहाईआ। ना कोई दिवस ना कोई रात, गुरसिख आपणे रंग रंगाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत ना कोई ज़ात ना कोई पात, कमलापात इक्क अख्वाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, ना कोई तीर्थ ना कोई सरोवर मारे ठाठ, चरन धूढ़ मस्तक टिक्का एका लाईआ। ना कोई अग्नी जले काठ, ना कोई गुरमुख विके हाटो हाट, ख़ाकी ख़ाक ना कोई दबाईआ। ना कोई देवी पूजा जोत ललाट, अष्टभुज ना रक्खे साथ। ना कोई मेला त्रिलोकी नाथ, इक्क इकल्ला खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उठाईआ। उठ जाग गुरमुख सुत्तया, हरि सतिगुर आप जगांयदा। प्रगट होया पारब्रह्म अबिनाशी अचुतया, आप आपणा नाउँ धरांयदा। कलिजुग अन्तिम आई रुत्तया, साचा फुल ना कोए महिकांयदा। पंज तत्त ख़ाली दिसे बुतया, हरि का नाम ना कोए धरांयदा। पंजां चोरां धन माल तेरा लुट्टया, अग्गे हो ना कोए छुडांयदा। लक्ख चुरासी बूटा जाणा पुट्टया, फिर कोए ना मात लगांयदा। सतिजुग साचा चन्द एका फुट्टया, सतिगुर साची जोत जगांयदा। गुरमुखां देवे एका अमृत आत्म नाम साचा घुट्टया, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख साचे वेख वखांयदा। सतिजुग विछोड़ा देवे कट्ट, जो हरि हरि गए ध्याईआ। त्रेता पहनाए एका पट, साचा बस्त्र हथ्थ उठाईआ। द्वापर वेखे नेड़े वाट, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। कलिजुग पूरा करे घाट, गुरमुख साचे आप उठाईआ। निरगुण जोत जगाए ललाट, मस्तक रेखा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छब्बी पोह हरिसंगत

१६४ ०६

करे जगत निर्मोह, निरगुण आपणा मेल मिलाईआ। जगत नाता देवे तोड़, हरिसंगत हरि समझांयदा। चरन प्रीती लवे जोड़, आप आपणे चरन लगांयदा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, साचा घोड़ा इक्क वखांयदा। जुगां जुगां दी प्यास बुझाए लग्गी औढ़, अमृत मेघ आप बरसांयदा। मनमुख दर तों देवे होढ़, सस्से उप्पर होड़ा इक्क वखांयदा। लक्ख चुरासी वेखे फल मिट्ठा कौड़, कौड़ा रीठा आप भनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत सदा सुहांयदा। हरिसंगत उपाया साचा फुल्ल, फुल फुलवाड़ी मात लगाईआ। विष्न वंसी बणाई आपणी कुल, आपणे बंस दए वडियाईआ। श्री भगवान पावे मुल्ल, कली कली वेख वखाईआ। कलिजुग बूटा रिहा फुल, आप आपणी सेव कमाईआ। अन्तिम तोले साचे तोल, नाम तराजू हथ्थ उठाईआ। सचखण्ड निवासी बैठ अडोल, गुरमुख अडुल रखाईआ। सदा सुहेला वसे कोल, आप आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत सति समझाईआ। हरिसंगत दिवस सुहावना, पारब्रह्म सरनाया। सोहँ शब्द एका गावना, जन्म मरन रहे ना राया। पुरख अबिनाशी पकड़े दामना, दो जहान होए सहाया। जगत अन्धेरी मेटे शामना, साचा चन्द इक्क चढ़ाया। नगर खेड़ा वेखे ग्रामना, काया बंक सुहाया। बल धारे जिउँ बल बावना, वल छल आपणा वेस वटाया। गढ़ लंका तोड़े जिउँ रामा रावना, कलिजुग गढ़ रहिण ना पाया। कान्हा कंसा आपे घावना, आप आपणा बल वखाया। नानक गोबिन्द मेल मिलावना, काया चोली रंग चढ़ाया। धुरदरगाही साचा जामना, एकँकारा इक्क अख्वाया। आपे होए पतित पावना, पतित पापी लए तराया। शब्द निराला मारे बानना, बिरहो रोग दए गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ रखाया। निहकलंक जामा पा, हरि साची जोत जगाईआ। सृष्ट सबाई रिहा समझा, कलिजुग पड़दा आपे लाहीआ। सम्मत सतारा वेखे राह, चारों कुंट नैण उठाईआ। शाह सुल्तानां मिले ना कोई थाँ, महल्ल अटल ना कोए सुहाईआ। करे प्यार ना पुतर माँ, धीआं भैणां सर्ब तजाईआ। दहि दिशा उडणे झूठे काँ, हँस डार ना कोए वखाईआ। हिन्द मुस्लिम सिख ईसाई चार वरन छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रिहा समझा, निहकलंका इक्क अख्वाईआ। पुरख अकाल दया कमा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। ब्रह्मे लेखा दए मुका, वेला अन्तिम आईआ। शंकर तख्तों देवे लाह, आप आपणे विच टिकाईआ। सुरपति राजा इंद दए उठा, करोड़ तेतीस ना कोए सहाईआ। लोकमात फेरा पा, नौ खण्ड करे रुशनाईआ। राजा राणा दए हल्ला, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द नगारा इक्क वजा, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, हरि राणा आप सुणांयदा। कलिजुग अन्तिम मन्नणा पए भाणा, गुर गोबिन्द लेख लिखांयदा। चार

१६५

०६

कुण्ट ना दिसणा कोई निशाना, सच निशाना ना कोए झुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्द खण्डा विच ब्रह्मण्डां वरभण्डा इक्क चमकांयदा। शब्द खण्डा तिक्खी धार, गुरमुखां हथ्थ फड़ाया। पाए वण्ड सर्ब संसार, नव नव वेख वखाया। आपणे रंग रवे करतार, रंग रंगीला दिस ना आया। छैल छबीला बण सिक्दार, सच कबीला गुरसिख लए बणाया। रंग चढ़ाए आपणा पीला, परा पसन्ती वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे दया कमाया। दया निध गहर गुण सागर, हरि सतिगुर हरि अख्खांयदा। गुरमुखां निर्मल कर्म करे उजागर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। साचे नाम करे सौदागर, वणज वणजारा इक्क करांयदा। भाग लगाए काया गागर, पंज तत्त माटी जोत जगांयदा। एका नाम रती रत्नागर, घर साचे हट्ट विकांयदा। एथे ओथे देवे आदर, जिस जन आपणे चरन लगांयदा। आपे होए करीम कादर, करनी करता आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा दिवस आप सुहांयदा। साचा दिवस हरि सुहञ्जणा, घर साचे वज्जी वधाईआ। पाया पुरख इक्क निरँजणा, घर मिल्या साचा माहीआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। नेत्र पाए नाम अंजना, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। धुरदरगाही साचा सज्जणा, एकँकारा इक्क अख्वाईआ। वेले अन्तिम रक्खे लज्जना, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। तख्त ताज शाह सुल्तान तजणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जो घड़या सो भज्जणा, भन्नणहार हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख आपणे लड़ बंधाईआ। गुरमुख तेरा पूर्ब जन्म, हरि सतिगुर वेख वखांयदा। गुरमुख तेरा साचा कर्म, निहकर्मी कर्म जणांयदा। गुरसिख तेरा साचा धर्म, वरन गोत ना कोए उपजांयदा। गुरसिख तेरा हरन फरन, नेत्र नैण आप खुलांयदा। गुरसिख नाता तोड़े मरन डरन, निर्भय आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, प्रगट हो नर अवतार, निहकलंक आपणा डंक वजांयदा। वज्जया डंक लोकमात, सम्मत सोलां वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव रहे झाक, दर आए सीस झुकाईआ। धन्न वडियाई हरि हरिसंगत जिस जन जुड़या चरन नात, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। पुरख अगम्मड़ा मिल्या इक्क बिधात, बिधना नैण ना सके उठाईआ। लक्ख चुरासी चुक्की वाट, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। गुरसिख ना विके किसे हाट, जो जन दर दुआरे दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छब्बी पोह दिवस सुभागा गुरमुखां अंदर रखाए आपणा वाजा, अनहद आपणी सितार हलाईआ। गुरमुख तेरी सच सितार, हरि काया घर टिकांयदा। किल्ली मरोड़े आप निरँकार, दिस किसे ना आंयदा। साची सुर वजाए ताल, ताल तलवाड़ा आप

रखांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों भाल, आप आपणा मेल मिलांयदा। एका रंग रंगाए शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए वखांयदा। दिवस रैण करे प्रितपाल, आप आपणी सेव कमांयदा। लेखा जाणे सरसे घाली घाल, गढ़ी चमकौर आप सुहांयदा। अन्तिम फल लग्गा डाल, पत डाली आप महिकांयदा। गोबिन्द चली अवल्लड़ी चाल, सम्बल नगरी डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेख वखांयदा। हरिसंगत तेरा साचा मीत, एका एक अख्वाया। सोहँ गाउणा सुहागी गीत, घर साचे मेल मिलाया। आदि जुगादी वसे चीत, चित वित ठगौरी कोए ना पाया। सतिजुग चलाए साची रीत, साचा मार्ग एका लाया। एका रंग रंगाए हस्त कीट, कीटां कीट आप अख्वाया। धाम वखाए इक्क अनडीठ, वेद पुराण रहे जस गाया। सिर सुहाए पीतम्बर पीत, नाम मुक्ट इक्क बन्हाया। लख चुरासी परखे नीत, नित नवित वेस वटाया। हरिसंगत करे ठंडी सीत, आपणा अमृत मेघ बरसाया। चरन प्रीती साची रीत, सतिगुर पूरा सच समझाया। सतिजुग साचे कोई ना वसणा देहुरा मसीत, शिवदुआला मढ्ढ ना कोए बणाया। सतिजुग सोहया धुर दरगाह, हरि साचा चरन बहाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंका फेरा पा, कलिजुग क्रिया वेख वखाईआ। दो जहानां सच सुनेहड़ा रिहा सुणा, शब्दी शब्द शब्द चलाईआ। सतिजुग साचे लए उठा, आप आपणी दया कमाईआ। कलिजुग कूड़े रिहा समझा, तेरा अन्तिम वेला आईआ। दोहां विचोला बेपरवाह, आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी अलक्ख जगाईआ। सतिजुग उठाए निक्का बाला, सो पुरख निरँजण दया कमांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखे मुख काला, जूठा झूठा टिक्का इक्क वखांयदा। सतिजुग वसे सच धर्म साला, वर घर साचा इक्क सुहांयदा। कलिजुग कूड़ा होया बेहाला, लोकमात कुरलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दोहां विचोला खेल खिलांयदा। सतिजुग साचे लै अंगड़ाई, हरि साचा सच समझाईआ। कलिजुग उठ होए जुदाई, तेरा अन्तिम अन्त वखाईआ। सगला संग ना कोए निभाई, चार यारी मुख भवाईआ। सम्मत सोलां रुत्त सुहाई, छब्बी पोह दए वड्याईआ। सतिजुग तेरी कर कुड़माई, धरत मात दी गोद बहाईआ। आपे धी आप जवाई, सौहरे पेईआ आप बण जाईआ। आपे नार भतार रिहा हंढाई, पूत सपूता आपे जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे वर, सम्मत सोलां एका एक रुत्त सुहाईआ। सतिजुग साचा मात धर, गुरमुखां जोड़ जुड़ांयदा। कलिजुग कूड़े चुक्के डर, भय भयानक ना कोए जणांयदा। एका रूप नज़री आए हरी हरि, हरि हरि आपणा मेल मिलांयदा। एका चरन धूढ़ नहाए साचे सर, दुरमति मैल धवांयदा। एका वरनी रिहा वर, आप आपणा बन्धन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचे वेखण आया,

अकल कल वरताईआ। निरगुण सरगुण बण के आया, सरगुण निरगुण विच समाईआ। आपणा ताणा तण के आया, त्रैगुण माया पाई फाहीआ। साचा राणा बण के आया, कलिजुग मेटे झूठी शाहीआ। सुत दुलारा जण के आया, आपे पिता आपे माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्द दए वड्याईआ। मात पित हरि सुत दुलारा, शब्दी शब्द उपजाया। महल्ल अटल उच्च मुनारा, थिर घर साचा इक्क वसाया। सचखण्ड निवासी सच सिक्दारा, घर साचे सोभा पाया। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, निरगुण आपणा वेस वटाया। लोकमात लै अवतारा, निहकलंका नाउँ धराया। खड़ग खण्डा तेज कटारा, दोवें आपणे हथ्थ उठाया। गुरमुखां करे पार किनारा, अद्धविचकार ना कोए डुबाया। मनमुखां मारे आपणी हथ्थीं मारा, ना सके कोई बचाया। दोवें रक्खीआं तिक्खीआं धारा, इक्क इक्क नाल दए टकराया। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, भेव किसे ना पाया। गुर गोबिन्द बणया मात लिखारा, लिख्या लेख ना कोए मिटाया। मीरी पीर शाहसवारा, शहनशाह आपणा नाउँ धराया। निहकलंक लै अवतारा, राज राजानां दए हलाया। आपणा खेल कर न्यारा, आपणी कल आप धराया। आपणी बणे आपे धारा, साची बणत बणाया। हरिसंगत विच सोहे साचा लाड़ा, साचे जांञी नाल रखाया। अल्ला राणी लुट्टे दिन दिहाढ़ा, सूरज चन्न ना कोए चढ़ाया। गुरसिखां चार चुफेरे करे आपणी वाड़ा, पहरेदार आप अख्वाया। कोई नेड़ ना आवे ठग्ग चोर यारा, कलिजुग धाड़ा दए खपाया। हरिसंगत बोले एको नाअरा, सोहँ महाराज शेर सिँघ प्रगट हो हो आया। प्रगट होया हरि गोबिन्द, लोकमात वज्जी वधाईआ। हरिसंगत तेरी मेटे चिन्द, घर घर दरस दिखाईआ। पंच प्यारे बणाए आपणी बिन्द, आप आपणी रुत्त सुहाईआ। सतिगुर पूरा गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर वड वड्याईआ। कलिजुग जीव लगाए आपणी निन्द, गुरमुख आपणे गले लगाईआ। छब्बी पोह सम्मत सोलां जन्म जन्म दी मेटन आया चिन्द, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खण्डे उप्पर खण्डा धार, नौ खण्ड पृथ्मी मारे मार, शाह सुल्तान होए ख्वार, बचया कोई रहिण ना पाईआ। राज राजाना दए हुलारा, दोवें धारा मुख फराईआ। आपे अंदर आपे बाहरा, गुप्त ज़ाहरा दिस ना आईआ। आपे ऐनलहक लाए नाअरा, हक हकीकत वेख वखाईआ। आपे प्रगट होए बेऐब परवरदिगारा, नूरो नूर जल्वा नूर इलाहीआ। आपे बोले फ़तेह जैकारा, एका डंका नाम वजाईआ। चार वरन चार कुण्ट चार मुख चार वेद ब्रह्मा करे ख्वारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। हरिसंगत तेरा सच प्यारा, लोकमात दए वखाईआ। तेरा मन्दिर बणाया इक्क मुनारा, नौ दर खोल्ह खुलाईआ। साची कुल्ली सिरजणहारा, साचा रंग चढ़ाईआ। साढे तिन्न हथ्थ तेरा पार किनारा, सिँघ मनजीता दए कराईआ। सिँघ जगदीसा बोल जैकारा, हरिसंगत

१६७ ०६

रिहा समझाईआ। मगरे आउणा वारो वारा, राह विच ना कोए अटकाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव निउँ निउँ करन निमस्कारा, गुरसिख तेरा राह तकाईआ। सचखण्ड नवासी अगे खड़ा जोद्धा सूरबीर बली बलकारा, चतुर्भुज आपणीआं भुजां रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिसंगत लाई फुल फलवाड़ी वेखे थाउँ थाँईआ। करे खेल हरि समरथ, आपणी खेल आप खलांयदा। खण्डे उप्पर खण्डा रक्ख, चण्ड प्रचण्ड चमकांयदा। गुरमुख गुरसिख लख चुरासी विच्चों करे वक्ख, आपणी वण्ड हरि आप वण्डांयदा। सोहँ शब्द एका दस्स, हँ ब्रह्म मेल मिलांयदा। साधां सन्तां भाण्डे कीते सख, हरि का रूप दिस किसे ना आंयदा। अज्ज कक्खों होए लक्ख, शाह करोड़ी ख़ाक रलांयदा। गुरसिखां दरस दिखाए हो प्रतक्ख, आप आपणा रूप वटांयदा। चारों कुण्ट कलिजुग तप्या मठ्ठ, त्रैगुण माया लम्बू लांयदा। उतर पूर्ब पच्छिम दक्खण आपे करे इक्ट्ठ, आपणी वण्ड वण्डांयदा। झूठा बुरज रिहा ढठ्ठ, साचा भार ना कोए वण्डांयदा। पहली चेत्र सीस उप्पर ताज रक्ख, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। हरिसंगत तेरा करे पक्ख, दूसर हथ्थ किसे ना आंयदा। गुरसिख तेरा खण्डा आपणे सीस रक्ख, जगदीस आपणी भेटा तेरे अग्गे चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह वखांयदा। एका खण्डा सिर जगदीस, हरि आपणे आप टिकाईआ। दूजी सृष्टी जाए पीस, कलिजुग चक्की आप चलाईआ। किसे दे छत्र झुल्ले ना सीस, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। ना कोई पड़े जगत हदीस, नाअरा नाम ना कोए लगाईआ। शाह सुल्तानां ख़ाली खीस, घर घर मंगण भिच्छया कोए ना पाईआ। प्रगट होया बीस इकीस, बीस बीसा वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड पृथमी देवे आप सजाईआ। चण्ड प्रचण्ड रक्ख हथ्थ करतार, करनी करता किरत कमांयदा। सृष्ट सबाई आर पार, सीस धड़ आप कटांयदा। नारी नर होए ख्वार, गुर पीर अवतार ना कोए बचांयदा। चारों कुण्ट धुआंधार, सूरज चन्न मुख शर्मांयदा। अल्ला राणी करे पुकार, सिर हथ्थ ना कोए टिकांयदा। नाता तुट्टा इक्क परवरदिगार, सांझा यार दिस ना आंयदा। हरिसंगत तेरा बण सेवादार, साची सेवा आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी कल वरतांयदा। वरते कलिजुग कल, हरि साचा आप वरताईआ। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छल, हरिजन साचे लए उठाईआ। वसणहारा नेहचल धाम अटल, लोकमात जोत करे रुशनाईआ। साचा दीपक गया बल, सम्बल नगरी रुत्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन साचा पेख्या, परम पुरख करतार। लेखा चुकाए धारी केसया,

मुंड मुंडाए ल्ए उभार। रूप वटाए दस दस्मेशया, निरगुण जोत कर उज्यार। सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेश्या, त्रैगुण माया कर ख्वार। आपे करे अवल्लड़ा वेसया, निहकलंका लै अवतार। आपे सुत्ता बाशक शेश्या, आप आपणी सेज संवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरा करजा दए उतार। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी वेला अन्तिम आया, हरि साचा वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई आप उपजाए आपे दाई आपे दाया, आप आपणी बणत बणांयदा। पंज तत्त मुनारा आप रखाया, आपे सेव कमांयदा। विष्नूं देवे रिजक सबाया, सुरपति साची सार दर घर साचे आपे पांयदा। चौथे जुग खेल खला, चौथी कूट वेख वखांयदा। चौथा पौड़ा आप रखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। दर घर साचा हरि सुहावना, हरि साचे वड वड्याईआ। कलिजुग वेला अन्त करावना, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लावणा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी शहनशाह इक्क अख्वावणा, दूसर होर ना बणत बणाईआ। लक्ख चुरासी एका शब्द पढ़ावना, सतिजुग साचा सच समझाईआ। राम कृष्न नानक गोबिन्द ईसा मूसा संग मुहम्मद एका रंग रंगावना, आप आपणे विच टिकाईआ। दहि दिशा एका रूप नज़री आवणा, नूरो नूर सवाईआ। सोहँ गीत सुहागी सृष्ट सबाई गावणा, लोकमात वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल इक्क मनावणा, पुरीआं लोआं मात समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर अवतारी खेल अपारी, वड संसारी आप कराईआ। वड संसारा हरि सिक्दारा, साचा शाह सुल्तानया। खेले खेल अगम्म अपारा, निरगुण धारा दो जहानया। गुरमुखां देवे इक्क अधारा, नाम साचा तन तरानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, छब्बी पोह वसे घर घर, मन्दिर कर परवानया। गुरसिख तेरा काया मन्दिर, हरि सतिगुर दए सुहाईआ। आपे वेखे तेरा अंदर, तेरा तेरे विच समाईआ। आपे तोड़े लग्गा जंदर, बजर कपाटी रहिण ना पाईआ। आपे करे प्रकाश डूँग्घी कंदर, जोती नूर नूर रुशनाईआ। किसे हथ्थ ना आया गोरख मछन्दर, उच्चे टिल्ले बैठे धूंणीआँ ताईआ। चारों कुण्ट भौदे बन्दर, मन मति होई हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लेख लिखाईआ। गुरमुख साजण साचा लेखा, हरि साचा आप लखांयदा। कलिजुग अन्तिम धरया वेसा, वेस अवल्लड़ा आप करांयदा। मेल मिलावा दस दस्मेशा, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। कलिजुग अन्तिम चले किसे दी कोई ना पेशा, हरि भाणे आप समांयदा। शाहो भूप वड नर नरेशा, नर नरायण आपणा नाउँ उपजांयदा। आपे होए रिखी केसा, गोवर्धन आपणे हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। निरगुण भेव जाणा खुल्ह,

१६९
०६

हरि साचा आप खुलाईआ। हरिसंगत उपजाई साची कुल, कलवन्ता वड वड्याईआ। करता कीमत पाए मुल्ल, लक्ख करोड़ी ना कोए चुकाईआ। दर घर साचे उपज्या साचा फुल्ल, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। आदि जुगादि सदा अभुल्ल, भरम भुलेखे विच ना आईआ। हरिसंगत सोहँ शब्द रसना गौदें सोहँदे बुल्ल, पवन स्वास नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारों कुण्ट खिच लकार, गुरमुख आपणे अंदर लेवे वाड़, कदम बाहर ना कोए टिकाईआ। शब्द सरूपी खिच लकीर, हरि सच निशान लगांयदा। किसे हथ्थ ना आए पीर फ़कीर, ज्ञानी ध्यानी ना वेख वखांयदा। पंडत पांधे जगत रहे घत वहीर, कलिजुग पन्ध ना कोए मुकांयदा। प्रगट होया गुणी गहीर, गहर गम्भीर सागर आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द सरूपी सच बबाणा गुरमुखां वखाए इक्क टिकाणा, दरगाह साची धाम सुहांयदा। दरगाह साची धाम अवल्ला, हरि सतिगुर आप सुहाया। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, बैठा आसण लाया। वसणहारा जलां थलां, जल थल महीअल फेरा पाया। शब्दी जोती आपे रला, पवन पवनी डेरा लाया। सच सनेहड़ा एका घल्ला, धुर फ़रमान ना किसे जणाया। जन भगतां फड़ाए जुग जुग आपणा पल्ला, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। चारों कुण्ट बोलणहारा हल्ला, आपणे हथ्थ खण्डा चमकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पुरख अबिनाशी आप अख्वाया। पुरख अबिनाशी हरि बेअन्त, भेव कोए ना पांयदा। गा गा थक्के साध सन्त, गुर पीर अवतार राह तकांयदा। लक्ख चुरासी माया पाए बेअन्त, जुग जुग आपणा पर्दा आप रखांयदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, अलख निरँजण कोए ना गांयदा। आप बणाई आपणी बणत, आपे घड़े आपे भन्न वखांयदा। लक्ख चुरासी जीव जंत, नौ खण्ड पृथ्मी फोल फुलांयदा। गुरमुख नारी मिल्या हरि हरि साचा कन्त, जगत दुहागण नार सर्ब कुरलांयदा। रसना जेहवा मणीआ मंत, सोहँ शब्द इक्क पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अगम्मा ना मरे ना कदे जम्मा, मात गोद ना कोए सुहांयदा। ना कोई मात पित करे प्यार, भैण भाई ना कोए अख्वाईआ। धीआं पुत्तर ना सुत दुलार, जगत कन्त ना कोए वखाईआ। काम क्रोध लोभ मोह ना कोई हँकार, माया ममता ना अंग लगाईआ। जूठ झूठ ना कोए वणजार, आसा तृष्ना ना संग रखाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, जुग जुग आपणी करनी आप कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर लै अवतार, आप आपणा वेस वटाईआ। कलिजुग कूड़े करे ख्वार, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। गुरमुख साचे लए उभार, अंदर वड़ वड़ दे मति आप समझाईआ। इक्क वखाए पार किनार, साचे बेड़े आप चढ़ाईआ। चप्पू लाए सेवादार, आप आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निरगुण जोती जोत

उजाला, दीना बंधप गुर गोपाला, गुरमुखां करे सदा प्रितपाला, प्रितपालक वड वड्याईआ। प्रितपाले हरि मेहरवान, जुग जुग दया कमांयदा। जन भगतां देवे भगती दान, साची भिच्छया झोली पांयदा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, ब्रह्म ज्ञान आप समझांयदा। एका रसना पीण खाण, एका तृप्त वखांयदा। एका नाद धुन धुनकान, एका मंगल आप सुणांयदा। एका घर सचा मकान, सचखण्ड दुआरा आप उपांयदा। एका धर्म सच्चा निशान, दर घर साचे आप झुलांयदा। लाल रंग ना सके कोई पछाण, लालन आपणा रंग रंगांयदा। सो पुरख निरँजण हो प्रधान, कंचन रूप वटांयदा। हरि पुरख निरँजण आपणी आण, आपणी आण आप वखांयदा। सूही धार एकँकार, निरगुण आपणी आप चलाईआ। चिट्टा रंग सूरा सरबंग, घर साचे वेख वखाईआ। पीला वेस दर दरवेस, गुर गोबिन्द दए गवाहीआ। नीली धार करे आदेस, रवि ससि सूरज चन्न मंडल मंडप सतार निउँ निउँ सीस झुकाईआ। काला सूसा ईसा मूसा, हरि साचा तन पहनाईआ। कलिजुग वेखे जगत हदीसा, कूड़ी क्रिया कूड़ पढ़ाईआ। लेखा जाणे चीना रूसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी जाणे आपे वथ्थ, ना हथ्थ किसे फड़ांयदा। हरिसंगत साचा कर अकट्ठ, गुरमति इक्क रखांयदा। चार वरन ना कोई वट्ट, दूई द्वैती पड़दा लांयदा। गुरचरन दुआरा साचा हट्ट, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका धाम बहांयदा। अमृत आत्म लैणा चट्ट, निझर झिरना आप झिरांयदा। जोत जगाए लट लट, दीपक दीपक संग रलांयदा। भाग लगाए काया मट्ट, हरि जू हरि मन्दिर वेख वखांयदा। सेवा करे नट्ठ नट्ठ, गुरमुख सोए आप उठांयदा। वसणहारा घट घट, आप आपणा मुख छुपांयदा। इक्क जणाए पूजा पाठ, गुर मन्त्र इक्क सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग तेरी साची धार, प्रगट करे विच संसार, साचा मार्ग आपे लांयदा। साचा मार्ग हरि हरि लाउणा, कलिजुग क्रिया दए मिटाईआ। राज राजाना शाह सुल्तानां राउ रंकां एका धाम बहाउणा, ऊँच नीच ना कोई वखाईआ। सृष्ट सबाई सोहँ अक्खर जाप जपाउणा, बीस बीसा राह तकाईआ। सीस ताज जगदीस टिकाउणा, पंचम मुख मुख रखाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान उप्पर लेख लिखाउणा, आप आपणी दया कमाईआ। सत्त रंग निशाना आप चढ़ाउणा, दिल्ली दुआरे फेरा पाईआ। पंदरां कत्तक दिवस सुहाउणा, बीस इकीसा खेल खलाईआ। लिख्या लेख ना किसे मिटाउणा, मेटणहार ना कोए अख्वाईआ। चिट्टे उप्पर काली धार रखाउणा, नुकता ऐन ना कोई जणाईआ। अल्फ़ अल्फ़ी एका पाउणा, एका एक मुख सलाहीआ। ऊड़ा इकओंकार नाउँ धराउणा, त्रै लोक आपणे विच बन्द कराईआ। ऐड़ा अक्ख इक्क खुलाउणा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। ईड़ी इष्ट सर्ब बनाउणा,

ईस जीव वड वड्याईआ। सस्सा किला आप सुहाउणा, चारे कुण्ट बन्द कराईआ। उप्पर होड़ा इक्क टिकाउणा, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। हाहा हरि का रूप वटाउणा, उप्पर टिप्पी दए सुहाईआ। ब्रह्म ब्रह्म प्रभ वेख वखाउणा, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। करे कराए जो हरि भाउणा, हरि भाणा वड वड्याईआ। हरिसंगत दे बांह सरहाणे सौणा, वेले अन्त सतिगुर पूरा घर घर दए उठाईआ। उठदयां जागदयां चरन ध्यान रखाउणा, चरन कँवल हिरदे विच टिकाईआ। सतिगुर पूरा नज़री आउणा, स्वच्छ सरूप रूप वटाईआ। बाल अञ्याणे फड़ फड़ गले लगाउणा, जिउँ मावां पुत्तरां लाड लडाईआ। कागों हँस बनाउणा, सोहँ हँसा चोग चुगाईआ। जन्म जन्म दा रोग मिटाउणा, लक्ख चुरासी कट्टे फाहीआ। गुरसिख हरख सोग विच कदे ना आउणा, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। दर घर साचे हरि साचा एका पाउणा, दूजा राह ना कोए तकाईआ। कलिजुग अन्तिम दिसे डराउणा, शाह सुल्तान रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा हरि हरि धर, अलख निरँजण अलक्ख जगाईआ। गोबिन्द काया अंदर वड़, महल्ल अटल सुहाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त नज़र ना आईआ। कोई ना सके हत्थीं फड़, लभ्भ लभ्भ थक्की सर्ब लोकाईआ। हरिसंगत उप्पर किरपा कर, हरि आपणा मेल मिलाईआ। शेर सिँघ कलिजुग अग्नी गया सड़, गुरमुखां अग्नी रिहा बुझाईआ। जगत विद्या ना गया पढ़, पंडत पांधे ना करी पढ़ाईआ। आपणा निष्अक्खर वक्खर आप बंधाया आपणे लड़, लोकमात आया चाँईं चाँईंआ। गुरसिखां लगाई डूँग्घी जड़, ना सके कोई उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्द खण्डा तेज कटार, गुरसिख तेरा सच प्यार, आपणे उत्तों देवे वार, साची सिख्या सिख समझाईआ। सतिजुग तेरी साची सिक्खी, चार वरन समझांयदा। आपे रक्खे धारों तिक्खी, वरन गोत मेट मिटांयदा। आपे वेखे वालों निक्की, दिस किसे ना आंयदा। गोबिन्द तेरी रेख लिखी, ना कोई मेट मिटांयदा। कलिजुग अन्तिम भुगते आपणी पेशी, दर दुआरे हरि बुलांयदा। नाल रलाया दस दस्मेशी, दर दरवेश वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। कलिजुग आया चल दुआर, नेत्र नैण रिहा वहाईआ। छब्बी पोह धाहां रिहा मार, प्रभ साचा दर दुरकाईआ। नौ दुआरे करन ना दए पार, गुरसिखां हत्थ खण्डा चमकाईआ। आपे उठ के गया बाहर, कलिजुग कूड़ा वेख वखाईआ। हरिसंगत तेरा करन ना दित्ता दीदार, तेरे दरस कोटन कोटि पापी लए तराईआ। आपे होया ख़बरदार, गुरमुख साचे लए जगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग कूड़े रिहा समझाईआ। कलिजुग सुण कर ध्यान, हरि साचा आप समझांयदा। गुरमुख साचे वेख पछाण, प्रभ

साचा मस्तक टिक्का लांयदा। एका बख्शे चरन ध्यान, दूजा दर ना कोए वखांयदा। तेरी मन्ने ना कोई आण, सतिगुर पूरा सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी तेरी दुकान, गुरसिख वणज ना कोए करांयदा। छब्बी पोह हरिसंगत चरन धूढ़ कराया अशनान, जन्म जन्म दी मैल गंवांयदा। गुरसिखां हथ्थ फड़ा तेज कृपाल, कलिजुग कूड़ा बाहर कढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां अंदर बैठा वड़, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग कूड़ा नैण उग्घाड़, आपणा राह तकांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, साचा दर ना कोए दसांयदा। अन्तिम नाता तुट्टणा सर्ब संसार, सगला संग ना कोए वखांयदा। कुँवारी कन्या लाड़ी मौत होई मुट्टयार, घर घर आपणा आप वखांयदा। वर मंगे कन्त भतार, साचा हाणी ना कोए दसांयदा। लक्ख चुरासी करे विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग साचे एह समझांयदा। कलिजुग उठ उठ घर जा, हरि साचा सच समझाईआ। तेरी पुत्तरी दए विआह, कुँवारी कन्या रहिण ना पाईआ। पहली चेत्र दिवस सुहा, सिर आपणे मुक्ट रखाईआ। तेरी मैहन्दी तेरे रंगण तेरे हथ्थीं दए चढ़ा, तेरा सगन मनाईआ। तेरी कन्या तेरी डोली पा, तेरे कंध चुकाईआ। करे खेल बेपरवाह, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। लोकमात विच दए टिका, मुख घूँगट दए उठाईआ। जोधे सूरबीर बलवान नाल रला, नौं खण्ड पृथ्मी इक्ट्ठ कराईआ। कलिजुग सवंम्बर दए रचा, साचे लाड़े आप बहाईआ। तेरी सपुत्री आपणी आसा सच हार हथ्थ उठा, लख चुरासी देवे गल पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, छब्बी पोह दित्ता वर, कलिजुग मंगण आया घर, संगत अंदर ना सकया वड़, सतिगुर पूरा आप दुरकाईआ। सतिगुर पूरे तिक्खा खण्डा, गुरमुखां हथ्थ फड़ाया। कलिजुग तेरीआं वढ्ढे गंढां, आपणी हथ्थीं वण्ड वण्डाया। मेटन आया भेख पखण्डा, जूठ झूठ रहे ना राया। गुरमुखां तोड़न आया वज्जा जंदर, आपणी कुंजी नाम लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द इक्क कटार, एका रूप आप निरँकार, दूजी कुदरत करे प्यार, गुरमुख साचे लए उभार, छब्बी पोह दिवस विचार, पार कराए नर नार, बिरध बाल जो जन सरनाई आया। हरि चरन सची सरनाई, हरि हरिजन मेल मिलांयदा। हरि चरन मिले वडियाई, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। हरि चरन सच कुड़माई, हरि साचा सगन मनांयदा। हरि चरन मिटे पीड़ पराई, हरि आपणी दया कमांयदा। हरि चरन मिटे झूठी छाही, साचा तिलक ललाट लगांयदा। हरि चरन मिले ठंडी छाँईं, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा वेला वक्त सुहांयदा। हरि चरन हरि दुआरा, हरि पुरख निरँजण आप सुहांयदा। हरि चरन बख्शे सच प्यारा, साची धारा आप बंधांयदा।

१७४

०६

हरि चरन मिले मीत मुरारा, निरगुण आपणा मेल मिलांयदा। हरि चरन खेले खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ा वेस वटांयदा। हरि चरन बोल इक्क जैकारा, एका अक्खर नाम सलांयदा। हरि चरन मिले सच भण्डारा, हरि साचा आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क वखांयदा। हरि चरन दुआरा साचा राज, धुरदरगाही आप वखाईआ। हरि चरन दुआरा पूरन काज, गुर सतिगुर पूर कराईआ। हरि चरन दुआरा देस माझ, गुरसिख साचे लए मिलाईआ। हरि चरन दुआरा सच जहाज, हरिसंगत बेड़े आप चढ़ाईआ। हरि चरन दुआरा पूरन होए काज, हरि करता आप कराईआ। हरि चरन दुआरा रक्खे लाज, वेले अन्त वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरि चरन दुआरा सच महल्ला, हरि पुरख निरँजण आप वसांयदा। हरि चरन दुआरा पार वखाए जलां थलां, डूँग्घी धार ना कोए वहांयदा। हरि चरन दुआरा सच सनेहड़ा एका घल्ला, नाम निधाना आप सुणांयदा। हरि चरन दुआरा जोत जगाए घड़ी घड़ी पल पला, आपणी पलक आप खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा आप उपजांयदा। हरि चरन दुआरा सच दरवाजा, सो पुरख निरँजण आप खुल्हाईआ। हरि चरन दुआरा ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे लए तराईआ। हरि चरन दुआरा इक्क वजाए अनहद वाजा, धुन आपणे हथ्थ रखाईआ। हरि चरन दुआरा गुरमुखां देवे अश्व ताजा, निरगुण सरगुण शब्द चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क बुझाईआ। चरन दुआरा सचखण्ड, हरि साचा सच समझांयदा। गुरमुख मंगे साची मंग, प्रभ पूरी आस करांयदा। लोआं पुरीआं आया लँघ, लोकमात जोत जगांयदा। सदा सुहेला वसे संग, दर घर साचा आप सुहांयदा। करे कराए अगम्मी कार, आपणे लाए अंग, आपणा अंगन आप सुहांयदा। माणस जन्म ना होए भंग, गुरमुख साचे आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरा एकँकारा एका घर वखांयदा। चरन दुआर साची रास, हरि साचा सच जणाईआ। सच वस्त हरि साचे पास, हरि सज्जण आप वरताईआ। चरन दुआरा राह तक्के पृथ्मी आकाश, नेत्र नैण नैण उठाईआ। चरन दुआरा गुरमुख हिरदे वास, घर विच घर वज्जे वधाईआ। चरन दुआरा रसन स्वास, पवणी पवण समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरा इक्क वखाईआ। चरन दुआरा जिस जन पेख्या, मिटया जगत संताप। सतिगुर पूरा लिखे लेखया, आप बुझाए आपणा आप। दरस दिखाए नर नरेसया, अक्खर पढ़ाए एका जाप। जोती जामा धरया भेख्या, ना कोई माई ना कोई बाप। मुछ दाढ़ी ना दिसे केसया, जोती नूर वड प्रताप। शब्द अगम्मी दस दस्मेशया, आपे उतरया आपणे घाट। नर नरायण वड नरेसया, आपे सोया सम्बल नगरी साची खाट।

१७४

०६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरा वखाए साचा हाट। चरन दुआरा साचा हट्ट, चौदां लोक मुख शर्माईआ। चरन दुआरा एका दात, निरगुण सरगुण झोली पाईआ। चरन दुआरा वड करामात, नेहकर्मी कर्म कटाईआ। चरन दुआरा लेखा चुक्के आन बाट, गर्भ वास ना फंद रखाईआ। चरन दुआरा बस्त्र तन पहनाए पाट, काया चोली रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआर दए वड्याईआ। चरन दुआरा हरि हरि खोल्, लोकमात वेस वटांयदा। सच वस्त हरि रक्खे कोल, जन भगतां आप वरतांयदा। नाद अनादी आपे बोल, एकँकारा नाअरा लांयदा। साचे कंडे साचा तोल, आपणी धारन आप चलांयदा। गुरमुखां अंदर आपे मौल, आपणा रूप दरसांयदा। उलटा करे नाभ कँवल, अमृत आत्म आप भरांयदा। देवे वडियाई उप्पर धवल, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। रिखी केस साँवल सँवल, मुकंद मनोहर लखमी नरायण आप आपणा नाउँ वटांयदा। ना कोई जाणे पंडत पांधा रौल, हिसाब किताब ना कोए वखांयदा। नूर इलाही एका अल्ला अव्वल, औलीआ पीर ना कोए गणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरा इक्क उपजांयदा। चरन दुआरा साचा सर, गुरमुखां आप नुहाईआ। निर्भय चुकाए झूठा डर, मूर्त अकाल दरस दिखाईआ। जूनी रहित लए वर, अजून अजूनी फंद कटाईआ। नाम सति भण्डारा भर, घर साचा इक्क सुहाईआ। करता पुरख करनी कर, आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि चरन दुआरा साचा खोल्, शब्द अगम्म वजाए ढोल, दिस किसे ना आईआ। चरन दुआरा साख्यात, लोकमात दसांयदा। गुरसिख बणाए पारजात, जो जन सरनाई आंयदा। एका देवे साची दात, सोहँ साची झोली पांयदा। चरन कँवल बंधाए आपणा नात, आप आपणे अंग लगांयदा। दुरमति मैल देवे काट, काया कंचन गढ़ सुहांयदा। गुरसिखां पूरा करन आया घाट, साचा तोला वेस वटांयदा। आप सुत्ता ना किसे खाट, आलस निन्दरा ना कोए रखांयदा। भाग लगाए गुरमुख तेरी काया माट, आत्म सेजा सोभा पांयदा। रसना रस निझर झिरना लैणा चाट, रिसक रिसक आप वहांयदा। लहिणा देणा चुक्के तत्त आठ, नौ दर साचा पन्ध मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरा इक्क वड्यांअदा। चरन दुआरा वड वडियाई, हरि वड्डा सिफ्त सलाहीआ। गुरमुख वेखे थाउँ थाईं, थान थनंतर गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। पकड़नहारा निरगुण बाहीं, सोहँ मन्त्र इक्क पढ़ाईआ। त्रैगुण बुझाए लग्गी बसन्तर, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। आपे बिध जाणे अन्तर, गति मित आपणी आप बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरा इक्क सुहाईआ। चरन दुआरा सच सुल्तान, साचा तख्त सुहांयदा। पुरख अबिनाशी वड मेहरवान, लोकमात वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंका नाउँ रखांयदा।

सति सतिवादी इक्क निशान, ब्रह्म ब्रह्मादी आप झुलांयदा। आदि जुगादी आपणी काण, दो जहानां आप रखांयदा। सन्त सुहेले कर पछाण, गुर चेले मेल मिलांयदा। शब्द सरूपी इक्क बबाण, सतिगुर पूरा आप रखांयदा। जन भगतां देवे साचा माण, आप आपणे गले लगांयदा। आवण जावण चुक्के काण, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। पतित पावन श्री भगवान, आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरा एका घाट, लेखा चुक्के तीर्थ ताट, अठसठ नहावन कोए ना जांयदा। चरन दुआरा सच सरोवर, हरि साचा सीर भराईआ। लेखा जाणे गिरधर गिरवर, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। आपे होए वड वडा ज़ोरावर, आप आपणा बल धराईआ। आपणा घोड़ा पुरख अबिनाशी आपे लए फड़, आप आपणी वाग उठाईआ। अगम्म अगम्मा उप्पर चढ़, निरगुण निरगुण लए दौड़ाईआ। राह विच ना जाए अड़, ब्रह्मा विष्न शिव बैठे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे साची धार, आप चलाए एकँकार इक्क इकल्ला खेल खलाईआ। चरन दुआरा साचा आसन, हरि सतिगुर पुरख लगांयदा। खेले खेल पृथ्मी आकासन, मंडल मंडप वेख वखांयदा। एथे ओथे पावे रासन, गोपी काहन आप नचांयदा। आपे खेले खेल तमासन, नटूआ नट आप अख्वांयदा। जन भगतां होए दासी दासन, जुग जुग सेव कमांयदा। कलिजुग अन्तिम घनक पुर करया वासन, पुरी घनक आप सुहांयदा। सतिगुर पूरा शाहो शाबासन, शाह सुल्तान वेस वटांयदा। गुरसिखां पूरी करन आया आसन, जो सरसे भेट चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर आप वड्यांअदा। चरन दुआरा मस्तक धूढ़, जिस जन आप लगांयदा। चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, माया ममता मोह चुकांयदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच मेल मिलांयदा। घर विच बख्शे साचा नूर, जोती नूर डगमगांयदा। गुरसिखां अग्गे हाज़र हज़ूर, ज़ाहरा जहूर जोत जगांयदा। आसा मनसा करे पूर, गुरसिख निरासा ना कोए वखांयदा। दो जहानां पैंडा जाणे नेड़ा दूर, हरि आपणा पन्ध मुकांयदा। सर्बकल हरि भरपूर, गुरमुखां भण्डारे आप भरांयदा। पंच विकारा करे चूर, नाम खण्डा हथ्थ उठांयदा। दाता दानी जोद्धा सूर, सूरबीर वेस वटांयदा। शब्द निराला मारे तीर, सोहँ मुखी अग्गे लांयदा। अठसठ वरोले आपे नीर, नाम मधाणा एका पांयदा। तन वरोले पीर फकीर, दस्तगीर खोज खोजांयदा। शाह सुल्तानां लाहे चीर, ख़ाकी ख़ाक रलांयदा। गुरसिख चोटी चाढ़े अख़ीर, उच्ची कूक कबीर सुणांयदा। हरि मिल्या शाह वड पीरन पीर, ग़रीब निमाणे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लग्गी प्रीती तोड़ निभांयदा। लग्गी प्रीती निभे तोड़, गुर चरन आप लगाईआ। गुरमुखां आपे गया बौहड़, कलिजुग सोए लए जगाईआ। जुगां जुगां दी लग्गी औड़,

दे दरस आप बुझाईआ। काया मन्दिर अंदर लाया पौड़, सोहँ डण्डा विच लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरा इक्क समझाईआ। चरन दुआरा जिस जन जाणया, हरि मेला शाहो शाबास। घर साचे सच रंग माणया, पूरन होई आस। दर होया माण निमाणया, लेखे लग्गा स्वास स्वास। प्रभ मिल्या वड जरवाणया, जर जोबन होए नास। गुर सतिगुर गुरसिख आप पछाणया, आप आपणी वेखी रास। मिल्या मेल साचे हाणीआ, वज्जी वधाई पृथ्मी अकास। अमृत देवे ठंडा पाणीआ, गुरसिख बूटा ना जाए विनास। फुल फुलवाड़ी आप महिकाणीआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल सर्ब गुणतास। चरन दुआरा हरि भगवन्त, एका एक रखांयदा। गुरमुख साचे होए सन्त, जिस जन मेल मिलांयदा। धन्न सुभागण सोभावन्त, जिस मिल्या हरि हरि कन्त, घर साची सेज सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरा हरि निरँकार, आपणा घर वखांयदा। चरन दुआरा एकँकार, एका रंग समाया। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, लोकमात वेस वटाया। छब्बी पोह दिवस विचार, निरगुण जोत करे रुशनाया। गोबिन्द तेरा कर्ज़ा दए उतार, तेरा लहिणा रहे ना राया। तेरी सिक्खी कर त्यार, साची सिख्या दए समझाया। एका इक्की मेल संसार, भव सागर दए तराया। आपणे नेत्र पेखी आप करतार, करता कुदरत वेख वखाया। आपे घड़न भन्नणहार, आपे भाण्डे लए उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरा इक्क रखाया। चरन दुआरा एका रक्ख, एका अक्ख खुलांयदा। सतिगुर पूरा हो प्रतक्ख, गुरमुख साचे आप तरांयदा। आपे करे कक्खो लक्ख, लक्खो कक्ख आप बणांयदा। सन्त सहेले गुरू गुर चेले आप आपणे लए रक्ख, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, आप आपणा डंक वजांयदा। हरिसंगत वखाए साचा तीर्थ तट, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। तन पहनाए सोहँ पट, ताणा पेटा आप मिलांयदा। थिर घर वेचे साचे हट्ट, चरन प्रीती कीमत पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत संग समांयदा। हरिसंगत सतिजुग साची धार, सतिगुर आप समझाईआ। चार वरन करना इक्क प्यार, दूई द्वैती ना कोई रखाईआ। नारी रलीआं माणे नाल भतार, दूसर सेज ना कोई हंढाईआ। कुँवारी कन्या ना करे श्रंगार, नेत्र नैण नैण शर्माईआ। मावां पुतरां धर्म प्यार, धीरज जति इक्क वखाईआ। भैण भ्रावां इक्क अधार, एका रत्त उपजाईआ। एका शब्द इक्क जैकार, एका राग सुणाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआर, एका इष्ट देव हरि अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। सतिजुग मार्ग साचा रस, हरिसंगत विच भरांयदा। इक्क दूजे नूं मिल्या हस्स हस्स, प्रेम गलवकड़ी इक्क पवांयदा। निराला तीर मारे कस, नैण नैणां विच टिकांयदा।

जगत विकारा हरिसंगत तेरे चरना हेठ देवे झस्स, बेमुखां सिर ख़ाक उडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा राह इक्क वखांयदा। सतिजुग तेरा सच प्यार, हरिसंगत विच रखांयदा। ना कोई तक्के धी भैण मुट्टयार, भैण भाई सर्ब बणांयदा। हरिसंगत विच ना करे कोई श्रंगार, नेत्र नैण सर्ब शर्मायदा। चरन बख्शे इक्क अधार, दूसर पल्लू ना कोई बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सिख्या सिख वखांयदा। साची सिख्या हरि दरबार, हरिसंगत सहिज सभाईआ। दोए जोड़ कर निमस्कार, गुर सतिगुर सीस झुकाईआ। बिन हरि चरन ना तक्के कोई मुख विच दरबार, स्त्री पुरष एका रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रीती आप बंधाईआ। सतिजुग एका गया जाग, हरि साचे आप जगाया। छब्बी पोह हरिसंगत धोवे तेरा पिछला दाग, अग्गे मार्ग इक्क वखाया। आए दुआर बणाए हँस काग, मान सरोवर इक्क नुहाया। बुझिआ दीप जगाए चराग, तेल बाती ना कोए पाया। जगत नाता तोड़े साक, कूड़ कुटम्ब वखाया। सतिजुग पूरा पाकी पाक, हरिजन साचे लए बणाया। अंदर बैठा रिहा झाक, दोए लोचन नैणां दिस ना आया। जिस जन पुच्छे आपे वात, आप आपणा पर्दा लाहया। चरन दुआर वखाए साचा हाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा दए चुकाया। कलिजुग लहिणा जाणा
१७८ मुक्क, हरि हरि आप मुकाईआ। जूठा झूठा बूटा जाणा सुक्क, हरया सिंच ना कोई कराईआ। मनमुखां मुख पैणा थुक्क, १७८
०९ सम्मत सम्मती वेख वखाईआ। सोलां साल लँघाए लुक लुक, अन्तिम पर्दा देवे लाहीआ। हरिसंगत तेरा भार आपणे कंधे ०९
चुक्क, दो जहानां आवे जावे वाहो दाहीआ। गुरसिखां रक्खया आपणी कुक्ख, हरि सच जणेंदी माईआ। करन आया उज्जल मुख, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। जगत विछोड़ा मिटे दुक्ख, दुःख सुख विच समाईआ। जन्म जन्म दी लग्गी भुक्ख, कलिजुग अन्तिम तृप्त कराईआ। सिँघ शेर बघेला रिहा बुक्क, कोई अग्गे ठहर ना पाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी लए लुट्ट, ठग्ग चोर यार रूप वटाईआ। शाह सुल्तानां कढ्ढे कुट्ट, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरा इक्क सुहाईआ। चरन दुआरा साचा गढ़, हरिसंगत आप समझांयदा। गुरमुख अंदर गया वड़, मनमुख राह ना कोए तकांयदा। हरिजन पौड़े गया चढ़, सतिगुर पूरा आप चढ़ांयदा। भगतन फड़या साचा लड़, भगत भगती वेख वखांयदा। सन्त सुहेला एका अक्खर पढ़, सोहँ ढोला साचा गांयदा। सतिजुग साची लाई जड़, लोकमात धरांयदा। खेले खेल नारी नर, नर नरायण वेस वटांयदा। वज्जे वधाई घर घर, गुरमुख साचे आप जगांयदा। साचा अमृत प्याला आपे भर, साचा साकी आप प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरा सच प्यारा, वरते

वरतावे विच संसारा, लोकमात आप वरतांयदा। सतिजुग वरते साचा सति, सति वज्जे वधाईआ। चार वरनां हरि हरि मत, पारब्रह्म आप समझाईआ। हरिसंगत साची कर उत्पत, ब्रह्मे उत्पत दए मिटाईआ। प्रभ कोए ना जाणे तेरी गति, तेरी कीमत कोए ना पाईआ। ना कोई जाणे वार थित, दिवस रैण ना कोए वखाईआ। धन्न सो वेला जन भगतां करे साचा हित, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। खेले खेल नित नवित, आप आपणी रुत्त सुहाईआ। राह तक्के महीना चेत, सम्मत सतारां वेख वखाईआ। आपे उठ उठ आए आपणे खेत, आपे रण झूझे आपे करे लड़ाईआ। आपे होए नेतन नेत, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। आपे लेखा जाणे पंचम जेठ, हरिजन साचे लए तराईआ। पकड़ पछाड़े वड वड सेठ, जगत धनाड ना कोई रखाईआ। हरिसंगत रक्खे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। कलिजुग हाढ़ी वड्ढे अगेत पछेत, वड किरसाना हरि रघुराईआ। चारों कुंट बालू रेत, त्रैगुण अग्नी तत्त तपाईआ। दहि दिशा फिरन जिन्न प्रेत, जगत जीत करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत सिख समझाईआ। हरिसंगत सिख्या लैणी सिख, हरि साचा आप समझांयदा। अगला लेखा आपणी हथ्थी लिख, पिछला कीता आप मुकांयदा। छब्बी पोह जो जन मंगे नाम भिख, सच भण्डारा आप वरतांयदा। राती सुत्तयां जा जा करे हित, फड़ बाहों गले लगांयदा। दरस दिखाए नित नवित, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। अगला धाम दस्से अनडिठ, साचा नैण इक्क खुलांयदा। सम्मत सोलां सोलां साल सुत्ता रिहा दे कर पीठ, आपणी करवट आप बदलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा राह वखांयदा। सतिजुग साचा चढ़या चन्द, हरि सतिगुर आप चढ़ाईआ। हरिसंगत तेरा खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दी छोड़ वड्डी वड्याईआ। अठ्ठे पहर परमानंद, परम पुरख आप वखाईआ। जो जन तजाए मदिरा मास गंद, राए धर्म ना दए सजाईआ। सोहँ शब्द सुणाए सुहागी छन्द, थिर घर साचे वज्जे वधाईआ। दूई द्वैती ढाए कंध, भरम गढ़ रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच समग्री जोत इक्ग्री आपणे हथ्थ रखाईआ। साची वस्त हरि अनमोल, सतिगुर पूरा आपणे हथ्थ रखांयदा। हरिसंगत साची आपणे कंडे लवे तोल, नाम खण्डा हथ्थ उठांयदा। छब्बी पोह ऊँची कूक आपे बोल, सम्मत सोलां लेख लिखांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां कढ्ढुण आया पूर्ब पोल, साधां सन्तां आप हलांयदा। शब्द नगारा वज्जे ढोल, हरि निरँकार आप वजांयदा। साची वस्त रहिण ना देवे किसे कोल, आपणी वस्त आपणे विच टिकांयदा। गुरमुखां अंदर जाए मौल, निरगुण आपणा रूप वटांयदा। दिवस रैण कम्बे धरत धवल धौल, ज़िमी अस्मान आप हलांयदा। गुर संगत मुख लगाए साची पौहल, रसना सोहँ रस चटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरा

१८० ०६

सच भण्डारा, सतिगुर साचा आप भरांयदा। भरे भण्डारा नाम रंग, हरि सज्जण शहनशाहीआ। हरिसंगत चाढ़े उच्च अटल महल्ल पलँघ, दर घर साचे आप सुहाईआ। दूसर दर ना लए मंग, दूजे दर ना अलक्ख जगाईआ। जन भगतां रक्खे सदा संग, भगत वछल आप अख्वाईआ। कलिजुग जीव भागां मंद, बैठे मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत संग रखाईआ। हरिसंगत सगला साथ, हरि पुरख निरँजण आप रखांयदा। लहिणा देणा चुक्कया पूजा पाठ, जोग अभ्यास ना कोए वखांयदा। साचा तीर्थ एका ताट, एका घर वखांयदा। इक्क प्रीती एका नात, एका दाता जोड़ जुड़ांयदा। छब्बी पोह लेखा जाणे दिवस रात, भिन्नड़ी रैण नाल रलांयदा। हरिसंगत तेरी पुच्छण आया वात, तेरे दुःखड़े मुख रखांयदा। उत्तम करी तेरी ज़ात, वरन गोत ना कोए बणांयदा। साचा मेला कमलापात, कँवल कँवला वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत माण दवांयदा। हरिसंगत तेरी साची रुत्त, हरि सतिगुर आप सुहाईआ। खेले खेल अबिनाशी अचुत, आप आपणी दया कमाईआ। गुरमुख दुलारे साचे सुत, शब्दी जन्म दवाईआ। जगत दवारिउँ बूटे लए पुट्ट, घर आपणे आप लगाईआ। लक्ख चुरासी गई छुट्ट, जो आए चल सरनाईआ। नाम प्याए साचा घुट्ट, अट्ठे पहर खुमार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे माण वड्याईआ। माण वडियाई साचा हरि, हरिसंगत आप दवांयदा। लाड़ी मौत चुकया डर, वेले अन्त दरस दिखांयदा। आपणी किरपा आपे कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। सफल कुक्ख दए कर, जिस जन आपणा दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगांयदा। रंग रंगीला हरि चलूल, हरिसंगत आप चढ़ाईआ। गोबिन्द तेरा लेखा गया ना भूल्ल, अन्तिम लहिणा रिहा मुकाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव हरिसंगत तेरे उत्ते बरसन आए फूल, प्रभ साचे सेव लगाईआ। सति सरूपी शाहो भूपी, साचे तख्त बराजे ना कोई पावा ना कोई चूल, ना कोई बाढी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे थल अस्गाह, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। निरगुण जोती नूर उजाला, हरि साचा दीप जगांयदा। खेले खेल गुर गोपाला, गोबिन्द आपणा वेस वटांयदा। जन भगतां तोड़न आया जगत जंजाला, जागरत जोत इक्क जगांयदा। चरन रखाए काल महांकाला, काल दयाल रूप वटांयदा। सम्बल नगरी साची धर्म धर्म धर्मसाला, हरि साचा आसण लांयदा। हरिसंगत तेरा बण रखवाला, साची सेवक सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, छब्बी पोह दिवस सुहांयदा। छब्बी पोह भिन्नड़ी रैण, गुरमुखां राह तकाईआ। आपे खोल्हे आपणा नैण, आपे वेख वखाईआ। हरिसंगत हरि जी साचा साक सैण,

साचा नाता इक्क बंधाईआ। आपे नुकता जाणे ऐन ग़ैन, आपे अल्फ़ नाउँ वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खलाईआ। खेलणहारा पुरख अकाला, कलिजुग काली धार वेख वखांयदा। नौं खण्ड पृथ्मी मारे इक्क उछाला, सत्त सागर आपे फोल फोलांयदा। गुरमुख साचे लभ्भे लाला, लाल लालन रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लेखे लांयदा। साचा लेखा चरन दुआरे, हरि सतिगुर आप चुकाईआ। हरिसंगत तेरे सोहन बंक दुआरे, काया मन्दिर होए रुशनाईआ। घर घर दीपक कर उज्यारे, जोत निरँजण वेख वखाईआ। गुरमुख साचे कर प्यारे, मुख आपणे आप सलाहीआ। साचा भरे सच भण्डारे, अतोट अतुट नाम वरताईआ। जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लाए पंच जैकारे, कोटन कोटि जन्म दे जोग अभ्यास पासकू तोल ना तोल तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खण्डा हथ्थ उठाईआ। साचा खण्डा हरि जी फड़या, सोहँ डण्डा नाल लगांयदा। तिन्नां लोकां एका पासे धरया, लक्ख चुरासी नाल रलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव फड़ उप्पर करया, साचा मेल मिलांयदा। दूजे पासे खेल अपरया, हरि साची खेल खिलांयदा। गुरसिख तेरी चरन धूढ़ी आपणी हथ्थीं फड़ फड़ अंदर वड़या, साचा छाबा आप भरांयदा। चार जुग रिहा डरया, साचा तोल ना कोए तुलांयदा। कलिजुग अन्तिम निहकलंक हरि लए अवतरया, आपणी करनी आप कमांयदा। लक्ख चुरासी भाण्डा आपे घड़या, अन्तिम आपे भन्न वखांयदा। गुरसिख मौत कोलों कदे ना डरया, सतिगुर पूरा आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा राह तकांयदा। हरख सोग ना कोई दुक्ख, चिंता चित ना कोए जणाईआ। सतिजुग खाली रहे ना कोई कुक्ख, बिन पुत्तर माँ ना देवे कोए दुहाईआ। छोटा बूटा जाए ना सुक्क, पिता पुत ना होए जुदाईआ। पहलों वड्डुयां लए चुक्क, पिच्छो वारी निकिआं आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची धार बंधाईआ। सतिजुग साचा कर उज्यार, हरि लोकमात वड्यांअदा। नेत्र कोई ना रोवे ज़ारो ज़ार, नैण नीर ना कोए वहांयदा। बत्ती दन्द ना हाहाकार, रसना जेहवा ना कोए हलांयदा। एका रूप नज़र आए करतार, निरगुण आपणी जोत जगांयदा। सति सन्तोखी लाए सच दरबार, सच सिँघासण आसण सोभा पांयदा। अबिनाशी करता बण सिक्दार, आप आपणा राज कमांयदा। पृथ्मी आकासन एका धार, ब्रह्मा विष्न शिव समझांयदा। सोहँ शब्द चौदां लोक करन जै जैकार, ब्रह्म पारब्रह्म अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक आपणी कल वरतांयदा। निहकलंक अकल कल धार, सतिजुग रूप वटाया। हरिसंगत सुहाए इक्क दुआर, दर दरवाजा इक्क खुल्हाया। ग़रीब निमाणयां करे प्यार, आप आपणी गोद बहाया। छोटे

बाले कर त्यार, हरिसंगत एह समझाया। सिँघ मनजीत हो त्यार, सति रंग रंगन रंगाया। पुरी इंदर करे ख्वार, सुरपति राजा इंद रहिण ना पाया। जगत जगदीशा हो त्यार, राह साचा वेख वखाया। शंकर गल विच्चों लाहे हार, हथ्थ त्रसूल सुटाया। साची पुरी विच्चों आए बाहर, पूर्ब लहिणा झोली पाया। सच घर सच सिक्दार, हरि साचे आप बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा वेख वखाया। ब्रह्मे तेरी अन्तिम वार, ब्रह्मे दए समझाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, हरि साचा आप कराईआ। साचा सिख कर त्यार, साचे पौड़े आप चढ़ाईआ। सिँघ पाल सच्ची सिक्दार, एका हथ्थ फड़ाईआ। ब्रह्मे तेरी उत्पत दए सँघार, सतिजुग आपणे बूटे देवे लाईआ। सचखण्ड निवासी खेल अपार, वेद पुराण शास्त्र सिमरत खाणी बाणी भेव ना राईआ। गा गा थक्के साध सन्त गुर पीर अवतार, बेअन्त बेअन्त कह कह गए विच लोकाईआ। एकँकार आपे जाणे आपणा पसर पसार, आदि अन्त मध आपे डेरा लाईआ। निहकलंका लए अवतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। भिन्नी रैनड़ीए उठ नेत्र खोल्ह, हरि सतिगुर आप खुलांयदा। भिन्नी रैनड़ीए उठ शब्दी एका बोल, हरि सतिगुर आप सुणांयदा। भिन्नी रैनड़ीए उठ वजा सच्चा ढोल, हरि मृदंगा हथ्थ फड़ांयदा। भिन्नी रैनड़ीए उठ तोल, साचा तोल हरि साचा खण्डा हथ्थ वखांयदा। भिन्नी रैनड़ीए उठ गुरसिख अंदर जाईं मौल, तेरा तेरे विच रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रैण भिन्नड़ी वेख वखांयदा। भिन्नड़ी रैण चढ़या चा, हरिसंगत दर्शन पाईआ। पुरख अबिनाशी बणया मलाह, खेवट खेटा बेपरवाहीआ। देवणहारा सच सलाह, सिफ्त सलाह ना कोई सलाहीआ। हरिसंगत फड़ाई आपे बांह, सच न्याँ आप कराईआ। निथांविआं देवण आया थाँ, निमाणयां माण धराईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, लेखा लिखे कागद कलम ना कोई छाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अठारां भार बनासत गुरसिख तेरे चरना हेठ दबाईआ। हरि चरन सच्ची प्रभात, अमृत वेला आप वखांयदा। सतिगुर पूरा इक्क इकांत, आदि जुगादि समांयदा। गुरमुखां लेखा जाणे खात, वही खाता ना कोई बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। चार कुण्ट सतिगुर साचा उठ उठ वेखे, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। नाल रलाया दस दस्मेशे, दहि दिशा फेरी पाईआ। आप आपणे आपे पेखे, आप आपणे लए जगाईआ। छब्बी पोह हरिसंगत बह बह लिखे लेखे, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। पार उतारे धारी केसे, मूंड मुंडाए नाल रलाईआ। बिन सतिगुर पूरे लख चुरासी जन्म किसे ना लेखे, लेखा कोए ना सके मुकाईआ। राह तक्कण अद्ध विचकार बैठे, ब्रह्मा विष्न महेष गणेशे नेत्र नैण रहे उठाईआ। जीव जंत साध सन्त कलिजुग

पए भरम भुलेखे, माया पर्दा एका पाईआ। हरिसंगत तेरा रूप बण बण आपे वेखे, आप आपणा नैण खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दित्ता साचा वर, आप लगाया आपणे लड़, वेले अन्त होए सहाईआ। अन्त सहाई आप प्रभ, हरिजन साचे सच तरांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों लभ्भ, आपणे लाल आपणे गल लटकांयदा। हरिसंगत हरि दुआरे रही फब, साची अमृत छहबर लांयदा। कलिजुग वा तत्ती रही वग, चारों कुण्ट अग्नी तत्त जलांयदा। गुरसिख तेरा वास कराए उप्पर शाह रग, सुरती शब्दी डोर बंधांयदा। हरि मन्दिर टिकाया सज्जा पग, कलिजुग जीवां दिस ना आंयदा। घर घर लग्गी वेखो अग्ग, तत्व तत्त ना कोए बुझांयदा। सिँघ संगत तेरी रक्खी पग, आपणा ताज तेरे सीस टिकांयदा। लहिणा देण चुकाए कल कि अज्ज, सम्मत सतारां राह तकांयदा। दिवस रैण रिहा भज्ज, वाह वा गुरू आपणा खेल खिलांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आया तज, लोकमात आसण लांयदा। हरिसंगत तेरा पर्दा लए कज, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। कलिजुग काल नगारा जाणा वज्ज, हरि साचा आप वजांयदा। जो घड़या सो जाए भज्ज, भन्नणहार दिस ना आंयदा। पहली चेत आपणे सीस रखाए ताज, तख्त ताज सर्ब मिटांयदा। गुरसिखां मारे सुत्तयां वाज, सोहँ शब्द साची सेवा लांयदा। छब्बी पोह रचया काज, साची नारी कन्त प्रनांयदा। आपणी हथ्थीं देवण आया दाज, पल्ले नाम गंढु

१८३ बंधांयदा। सौहरे पेईए रक्खे लाज, दरगाह साची आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग १८३

०६ तेरी अन्तिम वर, हरिसंगत अग्गे आपणा आप धर, धरन धरनी विच टिकांयदा। हरिसंगत तेरा साचा घर, सतिगुर साचा ०६

आप सुहाईआ। हरिसंगत तेरे अंदर वड़, तेरे बंक दए वड्याईआ। हरिसंगत तेरी अग्नी पहलों गया सड़, शेर सिँघ शेर नज़र ना आईआ। सचखण्ड निवासी बैठा मार दड़, सोलां साल आपणा मुख बैठा छुपाईआ। साचे दिवस छब्बी पोह हरि मन्दिर बैठा आपे चढ़, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शाह सुल्ताना ल्याए फड़, चरन दुआरा इक्क वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी टुटे गढ़, हरि शब्दी धक्का एका लाईआ। सन्त सहेले गुरू गुर चेले कर कर मेले आप लगाए आपणे लड़, आपणा पल्ला आप फड़ाईआ। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत देवे साचा दान, सच सुच काया कच आप टकाईआ। काया कच माटी गगरीआ, हरि साचा आप उपजांयदा। त्रैगुण रूप साची नगरीआ, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। नाम वस्त सच समग्रीआ, घर साचे आप टकांयदा। जगे जोत इक्क :इक्ग्रीआ, इक्क इकल्ला वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत चाढ़े नाम रंगत, जिउँ नानक अंग लगाया अंगद, अंगीकार आप अख्वांयदा।

❋ १ फग्गण २०१६ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ❋

सो पुरख निरँजण निरगुण धार, आदि अन्त ना कोए जणाईआ। हरि पुरख निरँजण अगम्म अपार, अगम्म अगमड़ा भेव ना राईआ। एकँकारा निरँकार, रूप रेख ना कोए जणाईआ। आदि निरँजण जोत उज्यार, नूरो नूर डगमगाईआ। श्री भगवान खेल अपार, लेखा लेख ना कोए लखाईआ। अबिनाशी करता सति करतार, सति सतिवादी सति समाईआ। पारब्रह्म एका धार, आपणी आप चलाईआ। वसणहारा सचखण्ड दुआर, घर साचे सोभा पाईआ। महल्ल अटल उच्च मनार, थिर घर आपणा आप उपाईआ। दीपक बाती कर उज्यार, नूरो नूर आप धराईआ। शाहो भूप सच्ची सरकार, घर साचे सोभा पाईआ। तख्त ताज इक्क सिक्दार, राउ रंक वड वड्याईआ। हुक्मी हुक्म करे अपार, आप आपणा हुक्म जणाईआ। सुणे सुणावे सुणनेहार, दूसर कोए दिस ना आईआ। आपणे रंग रवे करतार, करनी करता किरत कमाईआ। आप सुहाए बंक दुआर, घर बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एक एकँकार आपणा नाउँ रखाईआ। सो पुरख निरँजण सर्ब गुणवन्त, भेव कोए ना पांयदा। हरि पुरख निरँजण आदि अन्त, आप आपणी खेल खिलांयदा। एकँकारा महिमा अगणत, लेखा लेख ना किसे जणांयदा। आदि निरँजण बणाए बणत, जोती जोत नूर उपजांयदा। श्री भगवान साचा कन्त, एका पुरख अख्वांयदा। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणी अंस, आप आपणा दर सुहांयदा। पारब्रह्म बणे मंगत, दर आपणा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगांयदा। सो पुरख निरँजण हरि रंग राता, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण आपे जाणे आपणा नाता, आप आपणा मेल मिलाईआ। एकँकारा आप निभाए आपणा साथा, आप आपणा संग रखाईआ। आदि निरँजण दीपक जोत प्रकाशा, प्रकाश प्रकाश आप टिकाईआ। श्री भगवान चलाए राथा, रथ रथवाही दिस ना आईआ। अबिनाशी करता गाए आपणी गाथा, गावणहार गीत अल्हाईआ। पारब्रह्म निउँ निउँ निमस्कार टेके माथा, आपणी पए ढह सरनाईआ। सचखण्ड निवासी घर सच निवासा, थिर घर साचे सोभा पाईआ। सच सुल्तान शाहो शाबाशा, ना मरे ना जाईआ। आपे दास आपे दासा, दासी दास सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। सो पुरख निरँजण हरि मेहरवाना, भेव कोए ना पांयदा। हरि पुरख निरँजण श्री भगवाना, दिस किसे ना आंयदा। आदि निरँजण जोती नूर नुराना, नूरो नूर डगमगांयदा। अबिनाशी करता सच तराना, आपणा आपे गांयदा। श्री भगवान मर्द मरदाना, आपणा नाउँ रखांयदा। पारब्रह्म करे ध्याना, सच ध्यान इक्क जणांयदा। सचखण्ड निवासी नौजवाना, रूप अनूप आप दरसांयदा। आपे होए जाणी जाणा, जानणहार

खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, आप आपणा बणे मलाह, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। निरगुण बेड़ा कर त्यार, सो पुरख निरँजण सेव लगाईआ। हरि पुरख निरँजण सेवादार, आदि निरँजण नाल रलाईआ। एकँकारा कर प्यार, श्री भगवान वेख वखाईआ। अबिनाशी करता करे ध्यान, पारब्रह्म सच सलाहीआ। सचखण्ड दुआरे वसे इक्क मकान, दूसर दर ना कोए खुल्हाईआ। थिर घर वेखे इक्क निशान, सच दुआरे आप झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित वड वड्याईआ। अजूनी रहित पुरख आकाला, एका रंग समांयदा। वसणहारा सच सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। दीना बंधप दीन दयाला, घर आपणे दया कमांयदा। आपे चले आपणी चाला, थिर घर बैठा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनुभव प्रकाश आप करांयदा। अनुभव प्रकाश हरि निरँकार, आपणा आप कराईआ। सचखण्ड सुहाए बंक दुआर, सोभावन्त वड्डी वड्याईआ। निरगुण बाती कर त्यार, कमलापाती आप जगाईआ। आदि जुगादि साची कार, करता पुरख आप कराईआ। सो पुरख निरँजण साची धार, घर साचे वेख वखाईआ। हरि पुरख निरँजण कर पसार, आप आपणा घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड बैठा बेपरवाहीआ। सचखण्ड निवासा पुरख अबिनासा, एका रंग समाया। जोती नूर खेल तमासा, जागरत जोत करे रुशनाया। आपे पावे साची रासा, आप आपणा मंगल गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क सुहाया। दर घर सुहञ्जणा हरि सुहाए, सोभावन्त वड्डी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण दया कमाए, घर साचे वज्जी वधाईआ। हरि पुरख निरँजण वेखण आए, आप आपणा वेस धराईआ। आदि निरँजण कर रुशनाए, आपणा नूर रिहा वखाईआ। एकँकारा मंगल गाए, आप आपणा राग अल्हाईआ। श्री भगवान सगन मनाए, घर साचे सोभा पाईआ। अबिनाशी करता राह तकाए, आपणा मार्ग वेख वखाईआ। पारब्रह्म घर साचे आए, घर साचा इक्क वखाईआ। सचखण्ड दुआरा रंग रंगाए, रंग रंतड़ा हरि हरि माहीआ। सच सिँघासण इक्क विछाए, पावा चूल ना कोए बणाईआ। आपणी सेजा आप सुहाए, निरगुण बैठा आसण लाईआ। निरगुण नारी निरगुण कन्त निरगुण निरगुण लए प्रनाए, घर साचे मेल मिलाईआ। निरगुण मेला सहिज सुभाए, निरगुण साचा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा वेख वखाईआ। घर साचा सचखण्ड दुआरा, हरि साचा आप सुहांयदा। निरगुण निरगुण कर पसारा, निरगुण धारा विच रखांयदा। निरगुण नारी कन्त प्यारा, निरगुण साची सेज हंढांयदा। निरगुण अंदर निरगुण बाहरा, निरगुण गुप्त ज़ाहरा रूप वटांयदा। निरगुण जोत नूर उज्यारा, निरगुण रक्त बूंद अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा आप

१८६
०६

वसांयदा । सचखण्ड दुआरा हरि वसंदड़ा, पारब्रह्म बेअन्त। आदि जुगादि भेव ना कोए खुलंदड़ा, महिमा गणत अगणत। घर साचे आप सुहंदड़ा, आपे होए सोभावन्त। आप आपणा मेल मलंदड़ा, आपे नारी आपे कन्त। आप आपणा सुत उपजंदड़ा, आपे गाए सुहागी छंत, आप आपणा नाउँ रखंदड़ा, पारब्रह्म श्री भगवन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी बणत। निरगुण नारी कन्त प्यारी, हरि पुरख निरँजण आप प्रनाईआ। निरगुण सेजा रिहा विचारी, निरगुण बैठा आसण लाईआ। निरगुण अंगीकार करे आपणे अंग लगाए सच सिक्दारी, सर्ब सूख आप अख्वाईआ। निरगुण दाता बण भण्डारी, आपणा भण्डारा आप वरताईआ। निरगुण करे निरगुण शंगारी, सति शंगार आप वखाईआ। साचा रंग अपर अपारी, पुरख निरँजण आप रंगाईआ। आपणी जोत कर कुँआरी, आपे आपणे नाल हंढाईआ। रंग रलीआं माणे बेऐब परवरदिगारी, नूरो नूर नूर अख्वाईआ। मुकामे हक सच्ची यारी, हक हकीकत आपणे विच रखाईआ। सचखण्ड दुआरे पैज सँवारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। सति पुरख निरँजण भेव खुल्हाउँणा, आप आपणी कल वरतांयदा। सो पुरख निरँजण मेल मिलाउणा, हरि पुरख निरँजण अंग लगांयदा। आदि निरँजण वेख वखाउँणा, एकँकारा दर सुहांयदा। श्री भगवान मंगल गाउँणा, अबिनाशी करता राग अल्हांयदा। पारब्रह्म प्रभ इक्क वखाउँणा, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। एका नारी एका कन्त मनाउँणा, दूजी सेज ना कोई हंढांयदा। सुत दुलारा इक्क उपजाउँणा, हरि शब्दी नाउँ धरांयदा। साचा बस्त्र इक्क रंगाउँणा, आप आपणा रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची वण्डण आप वण्डांयदा। सो पुरख निरँजण लाल रंग, सुते प्रकाश आप रंगाईआ। हरि पुरख निरँजण सच पलँघ, कंचन रूप वटाईआ। आदि निरँजण मंगे मंग, सूहा वेस बेपरवाहीआ। एकँकारा सच दुआरा लँघ, चिट्टा रंग रंग अलाहीआ। श्री भगवान सूरा सरबंग, पीली धार धार सलाहीआ । अबिनाशी करता फड़ मृदंग, आप आपणा हुक्म चलाईआ। नीली धार एका रंग, आपणी इच्छया आप वहाईआ। पारब्रह्म आपणा ढके आपे नंग, काला रंगण रंग छुहाईआ। सचखण्ड दुआरे बणया संग, घर साचे वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एक एका खेल खिलाईआ। सत्त रंग निशाना सचखण्ड, हरि साचे सच झुलाया। सो पुरख निरँजण वण्डी वण्ड, हरि पुरख निरँजण वेख वखाया। आदि निरँजण निभाए संग, एकँकारा मेल मिलाया। श्री भगवान वेखे लँघ, अबिनाशी करता खुशी मनाया। पारब्रह्म प्रभ लाया अंग, आप आपणे अंग छहाया। सच वछाई सेज पलँघ, सच तख्त सुल्तान आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अगम्म अगम्मड़ी धार रखाया। अगम्मड़ी धार बेपरवाह, सचखण्ड दुआर चलाईआ। सत्त रंगण

रंग रंगा, निरगुण जोत नूर इलाहीआ। आपणा रूप आप वटा, आपे वेख वखाईआ। आपणी रचना आप रचा, आप आपणे
विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरे साचा भूशन आपणा आप बणाईआ। साचा
भूशन सत्त रंग धार, हरि साचा सच समांयदा। सच सिँघासण कर त्यार, उप्पर आसण लांयदा। आपे बणे हरि सिक्दार,
आप आपणा हुक्म चलांयदा। आपे बणे दर चोबदार, आप आपणा सीस झुकांयदा। आपे मंगे दर बण भिखार, आपे आपणी
झोली डांहयदा। आपे देवे सच भण्डार, साची वस्तू आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
आप आपणा हुक्म सुणांयदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, हरि पुरख निरँजण आप सुणांयदा। सत्त रंग निशाना इक्क झुलाणा,
एका मेल मिलांयदा। एका मन्दिर इक्क मकाना, घर एका सोभा पांयदा। एका राज इक्क राजाना, शाहो भूप इक्क अख्वांयदा।
एका दर इक्क दरबाना, एका तख्त ताज सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म
जणांयदा। हुक्मी हुक्म कर त्यार, निरगुण निरगुण दए जणाईआ। निरगुण होए सच्चा सिक्दार, निरगुण बैठा आसण लाईआ।
निरगुण वस सच दरबार, दर दरबारा आप सुहाईआ। निरगुण खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। जोती
१८७ जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी भिच्छया आप वरताईआ। आपणी भिच्छया देवे पा, निरगुण निरगुण सेव १८७
०६ कमाया। सच सुनेहड़ा दए सुणा, धुर फरमाना आप जणाया। आपणी बणत आप बणा, आपे रिहा समझाया। आपणी महिमा ०६
आप गणा, आपे वेख वखाया। आपणी जननी आप जणा, जन जननी आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप
आपणी जोत धर, थिर घर साचा इक्क वसाया। थिर घर वसया हरि निरँकार, सचखण्ड दुआर सोभा पाईआ। पारब्रह्म
प्रभ भेव न्यार, आप आपणा भेव खुलाईआ। आपणी सेवा करे बण सेवादार, सेवक साची सेवा कमाईआ। जोती जोत सरूप
हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाईआ। रंगया रंग रंग अनमोल, रूप रंग ना कोए वखांयदा। सति
पुरख निरँजण आपणे कंडे तोलया तोल, दूसर तोल ना कोए तुलांयदा। आपणा अक्खर आपे बोल, आपणा आप सुणांयदा।
आपणी वस्त रक्खे कोल, आपणे हट्ट वकांयदा। आपणा दुआरा आपे खोल्ह, आपे वणज करांयदा। जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वण्डांयदा। साची वस्त हरि कर त्यार, सो पुरख निरँजण दए समझाईआ। हरि
पुरख निरँजण इक्क प्यार, एका रंग रंगाईआ। आदि निरँजण दर दरबार, दर दर अलक्ख जगाईआ। एकँकारा एकँकार,
इक्क इकल्ला आप कराईआ। श्री भगवान कर प्यार, पंचम मेल मिलाईआ। अबिनाशी करता बणे सच्चा सुन्यार, साचे
कंडे तोल तुलाईआ। पारब्रह्म कुठाली देवे डार, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, पंचम पंचम वेख वखाईआ। पंचम मेला सच दुआरे, हरि साचा आप करांयदा। पंचम खेल अगम्म अपारे, पंचम वेख वखांयदा। पंचम तख्त पंचम सिक्दारे, पंचम संग रलांयदा। पंचम बह बह वाजां मारे, आप आपणा हुक्म अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला एका घर, आपे देवे आपणा वर, आपे घाड़न लए घड़, आपे कंडे तोल तुलांयदा। आपे तोला तोलणहारा, निरगुण तोलणहार अख्वाया। आपे बोला बोलणहारा, आपणा बोल दए जणाया। आपे पड़दा खोलणहारा, आपणा पर्दा दए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घर साचा इक्क सुहाया। सचखण्ड पंचम मुख, पंचम वेख वखन्नया। पंचम रक्खया किसे ना कुक्ख, जनणी जन ना किसे जणया। पंचम सोग ना पंचम दुःख, पंचम भोग ना कोए भुगन्नया। पंचम होए ना उलटा रुख, पंचम तत्त ना कोए बणन्नया। पंचम बैठा अंदर लुक, घर साचा आप सुहन्नया। पंचम गोदी आपे चुक्क, पंचम पाए साचे मम्मयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे गुण अवगुणयां। पंचम मेला पंचम दुआर, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। सति पुरख निरँजण खेल अपार, अगम्म अगमड़ा खेल खिलाईआ। अलक्ख निरँजण बोल जैकार, एका एक सुणाईआ। सत्त रंग निशाना, रूप अपार, घर साचे रिहा सुहाईआ। इक्क इकल्ला हरि सिक्दार, दर घर साचे सोभा पाईआ। तख्त शाह होया त्यार, भूप आसण इक्क विछाईआ। थिर घर होए मंगलाचार, थिर घर वासी आप कराईआ। जोत प्रकाश होई उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता बण सुन्यार, पंचम मुख रिहा सुहाईआ। पारब्रह्म बण सेवादार, साचा ताज हथ्थ उठाईआ। आपणी रुतड़ी आपणा दरस निरगुण निरगुण लए विचार, थित वार ना कोए जणाईआ। आपणे सीस रक्खे सच्ची सरकार, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा तख्त वड्याईआ। पंचम मुखी साचा ताज, हरि साचा सीस झुकांयदा। धुरदरगाही साचा राज, आपणे चरना हेठ दबांयदा। शब्द अगम्मी इक्क आवाज़, पुरख आकाल आप लगांयदा। आपणा रचया आपे काज, आपे वेख वखांयदा। सत्त रंग निशाना दित्ता दाज, घर साचे आप उडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आप अख्वांयदा। आदि पुरख हरि हरि एक, दूसर अवर ना कोए। सो पुरख निरँजण रक्खे टेक, हरि पुरख निरँजण देवे ढोए। आदि निरँजण आपे पेख, एकँकारा कदे ना सोए। श्री भगवान लिखे लेख, अबिनाशी करता करे सोई होए। पारब्रह्म बणया दर दरवेश, आपे सिक्दार दर दरबान आप खलोए। दर दरबान बणया राजा, तख्त ताज सुहाईआ। पुरख अबिनाशी ग़रीब निवाजा, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। आपे रक्खे आपणी लाजा, आप आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

आपणी भिच्छया आपणी इच्छया आपे झोली पाईआ। आपणी भिच्छया भर भण्डार, आपे वेख वखांयदा। आपे ताज रक्ख सिक्दार, आपे हुक्म सुणांयदा। आपे निरगुण रूप निराकार, रेख रंग ना कोए वखांयदा। आपे अबिनाशी करता हो त्यार, आप आपणी खेल खिलांयदा। आपे पारब्रह्म मीत मुरार, आप आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलांयदा। सत्त रंग निशाना पंचम ताज, सचखण्ड दुआरे आप बणाया। पुरख अबिनाशी आपणा साजन साज, आपणी घाड़त घड़न घड़ाया। आपणी अहिरन कर त्यार, आपणा हथौड़ा आप उठाया। आपणी कुठाली आपे गाल, आपणे सांचे आपे पाया। आपणा रंग चाढ़े अपार, उतर कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे आप टिकाया। साची वस्त कर त्यार, घर साचे आप टिकाईआ। आपणी हत्थीं रक्ख निरँकार, आपे बन्द कराईआ। आपे वेखे करे विचार, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दए गवाहीआ। साची वस्त सच दरगाह, हरि साचा आप टिकांयदा। निरगुण निरगुण करे सलाह, आपणा मता आप पकांयदा। निरगुण निरगुण बणे मलाह, निरगुण बेड़ा आप तरांयदा। आपणी रचना आप रचा, आपे खेल खिलांयदा। आपणा रूप आप वटा, निराकार साकार आप अख्वांयदा। आपे विष्नूं नाम धरा, आपे अमृत जल भरांयदा। आपे नाभी फुल्ल लए खिला, कँवल कँवला आप उपजांयदा। आपे ब्रह्मा वेता नाउँ धरा, आप आपणा रूप वटांयदा। आपे सुन्न अगम्म डेरा ला, धूंआँधार आप रहांयदा। आपे शंकर लए बणा, आप आपणा वेस करांयदा। आपे मेला दए मिला, आप आपणी बूझ बुझांयदा। आपे इष्ट दए वखा, गुरदेव आप मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप वरतांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार, हरि साचा खेल खिलांयदा। निरगुण निरगुण बण भिखार, निरगुण निरगुण मंग मंगांयदा। निरगुण राज जोग सिक्दार, निरगुण साचा तख्त सुहांयदा। निरगुण जाणे आपणी कार, करता पुरख वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी महिमा आप सुणांयदा। निरगुण महिमा आदि अन्त, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। निरगुण जाणे आपणा मंत, दूसर करे ना कोए पढ़ाईआ। निरगुण उपजाए जीव जंत, लक्ख चुरासी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण आपणे रंग रंगाईआ। त्रैगुण रंग हरि भगवान, आपणा आप समझाईआ। राजस तामस सातक कर परवान, आप आपणी दए सलाहीआ। विष्नूं विश्व इक्क ज्ञान, एका इक्क समझाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म कर प्रधान, पारब्रह्म रूप दरसाईआ। शंकर शंकर इक्क कल्याण, हरि साचा वेख वखाईआ। तिन्नां विचोला हरि मेहरवान, त्रैगुण साचा संग रलाईआ। आपे रक्खे आपणी आण, आपणे भाणे सद रहाईआ। निरगुण रूप ना सके कोई पछाण, खेले

खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी भिच्छया आपे रिहा पाईआ। साची भिच्छया भर भण्डारा, हरि करता खेल खिलांयदा। ब्रह्मा वेता कर प्यारा, लख चुरासी मेल मिलांयदा। पंज तत्त दए आधारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वेख वखांयदा। विष्नूं बणे सच वरतारा, राजक रिजक आप हो जांयदा। शंकर करे सच सँघारा, थिर कोए रहिण ना पांयदा। आपे ज़िमी अस्माना बन्ने धारा, लोआं पुरीआं रचन रचांयदा। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड दए सहारा, गगन गगनंतर वेस वटांयदा। आपे रवि ससि बणे सतारा, मंडल मंडप आप सुहांयदा। आपे लख चुरासी घट घट अंदर कर पसारा, आप आपणा आसण लांयदा। आपे जगत पित बण वणजारा, साचा वणज आप करांयदा। आपे चौदां लोक खोल्ह दुआरा, चौदां हट्ट वेख वखांयदा। आपे तिन्नां लोकां रक्खे पार किनारा, त्रिलोकी चरनां हेठ दबांयदा। आपे बाशक सेजा कर शंगारा, सांगोपांग हंढांयदा। आपे जल बिम्ब दए सहारा, धरत धवल आप सुहांयदा। आपे पवन स्वासी दए हुलारा, रसना जिह्वा आप चलांयदा। आपे शब्द अगम्मी बोल जैकारा, राग अनादी आप सुणांयदा। आपे खोल्हे बन्द कवाड़ा, ताल तलवाड़ा आप वजांयदा। आपे लाए साचा खाड़ा, आपे गोपी काहन नचांयदा। आपे बणे धुरदरगाही साचा लाड़ा, सिर आपणे ताज टिकांयदा। आपे लक्ख चुरासी मंगण आए दौड़ा, आपे घर घर अलख जगांयदा। आपे करे प्रकाश बहत्तर

१६० नाड़ा, आपे अन्ध अन्धेर समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटांयदा। आपे रूप १६०

०६ अगम्म पुरख करतार, कादर करता वड वड्याईआ। आपे ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाए सेवादार, साची सेवक सेव कमाईआ। ०६

आपे त्रैगुण माया बण वरतार, आपे पंचम मेला सहिज सभाईआ। आपे मन मति बुध कर त्यार, घर साचे आप टिकाईआ। आपे नौं दुआरे खोल्ह कुआड़, जगत वासना विच भराईआ। आपे पंचम रक्खे धाड़, आपे पंचम सखीआं बह बह मंगल गाईआ। आपे दर घर साचे देवे वाड़, आपे बैठा मुख भुआईआ। आपे राए धर्म करे प्यार, आपे चित्रगुप्त रिहा समझाईआ। आपे लाड़ी मौत कर शंगार, लक्ख चुरासी दए प्रनाईआ। आपे वसया सभ तों बाहर, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। एकँकारा खेल अपार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। आपणी किरपा आपे धार, आपणी करनी किरत कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी वस्त सच्चा शाह, आपणे हथ्थ रखांयदा। दूसर हथ्थ ना दए फड़ा, नेड़ कोए ना जांयदा। ना कोई मंगे किसे कोलों सलाह, सिफ्त सलाह विच ना आंयदा। ना फड़ाए किसे नूं आपणी बांह, हथ्थो हथ्थ ना कोए धरांयदा। दो जहानां करनहारा सच न्याँ, पुरख अबिनाशी आप अख्वांयदा। ना कोई पिता ते ना कोई माँ, बालक गोद ना कोए उठांयदा। आपणे सिर रक्खे आपणी छाँ, सिर आपणा ताज सुहांयदा।

सीस जगदीस इक्क बणा, निरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा
वेस धरांयदा। वेस अवल्ला इक्क इकल्ला, हरि पुरख निरँजण आप करांयदा। वसणहारा जलां थलां, जंगल जूह उजाड़
पहाड़ वेख वखांयदा। शब्दी जोती आपे रल्ला, रूप रंग ना कोए वखांयदा। लक्ख चुरासी आसण मल्ला, घर घर डेरा
लांयदा। सच सनेहड़ा एका घल्ला, जुग जुग शब्द सुणांयदा। दीपक जोती एका बल्ला, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। आपे
फुलया आपे फला, फुल फलवाड़ी आप महिकांयदा। आदि जुगादि कदे ना हुल्ला, रुत बसन्त इक्क सुहांयदा। जोती जोत
सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। त्रै त्रै मेला हरि करतार, हरि साचे आप कराया। एका
नाम सच भण्डार, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेल मिलाया। शब्दी नाद धुन जैकार, चारे वेदां लए सुणाया। चारे जुग खेल अपार,
सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वण्ड वण्डाया। गुर पीर बण अवतार, साध सन्त रूप वटाया। भगत भगवन्त साचा यार,
यार यारी रिहा निभाया। राम राम रूप अपार, राम रामा विच समाया। सीता सुरती कर प्यार, सच सवाणी लए प्रनाया।
कान्हा गोपी मीत मुरार, नाम बंसरी इक्क वजाया। रथ रथवाही खेल अपार, लख चुरासी रथ चलाया। गीता ज्ञान इक्क
आधार, दस अठ्ठ मेल मिलाया। वेद व्यासा करया पार, पुराण अठारां लए पढ़ाया। एका चोला कर त्यार, साचा रंग आप
१६१ रंगाया। कलिजुग सूसा इक्क श्रंगार, तन बस्त्र आप पहनाया। ईसा मूसा हो त्यार, संग मुहम्मद चार यार डौरु वाया। १६१
०६ अञ्जील कुरानां कर उज्यार, तीस बतीसा सोहला गाया। अल्ला राणी कन्त भतार, सच महबूब इक्क प्रनाया। हक जनाब ०६
ख़बरदार, सच रबाब इक्क हलाया। आब हयात कर त्यार, सच महिराबे आप टिकाया। दो दो आब बन्ने धार, त्रै त्रै
मूल चुकाया। चौथे जुग खेल अपार, ऐनलहक नाअरा लाया। लाशरीक सांझा यार, नूरो नूर जल्वा जलाल इक्क उपजाया।
शरअ शरीअत कर त्यार, साचा कलमा इक्क पढ़ाया। साचा सजदा विच संसार, दर घर साचे आप कराया। पंजे मुख
वेखे वारों वार, पंचम सीस ताज मुहम्मद दिस ना आया। उम्मत उम्मती कह गया ललकार, निउँ निउँ ख़ाकी ख़ाक रमाया।
सदी चौंधवीं पावे सार, नूर इलाही नूर आप खुदाया। चौदां तबकां खोल्हे बन्द किवाड़, अगला हट्ट दए वखाया। प्रगट
होए विच संसार, सच अमाम नाउँ धराया। मुख नकाब दए उतार, पर्दा कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। वेस अवल्ला इक्क इकल्ला, आदि जुगादी रूप वटांयदा। वसणहारा
सच महल्ला, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। निरगुण दीवा निरगुण बाती निरगुण जोत आपे बला, निरगुण प्रकाश प्रकाश
वखांयदा। निरगुण मेटणहारा सल्ला, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। निरगुण फड़ाए सरगुण पल्ला, सरगुण निरगुण मेल मिलांयदा।

लेखा जाणे राणी अल्ला, इलाही नूर आप अख्वांयदा। आपे करे वल छला, अछल अछल भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा वेस वटांयदा। निरगुण वेस वटाया, रक्खया नाउँ विच संसार। नानक एका तत्त बुझाया, एका रूप अनूप सच्ची सरकार। एका मन्दिर सोभा पाया, एका घर होया जैकार। एका सखीआं मंगल गाया, एका फूलन बरखे अपर अपार। एका नेत्र दरसन पाया, सति पुरख निरँजण सच्ची सरकार। लोकमात वेखण आया, मात पित कर प्यार। पंज तत्त चोला आप हंढाया, अंदर वड़या सिरजणहार। औंदा जांदा दिस ना आया, पंडत पांधे थक्के हार। मुल्ला शेख मुसायक पीर दस्तगीर, भेव किसे ना राया। गल तसबी माला पाए हार, बिन सतिगुर नानक एक एक नज़र किसे ना आया। चारे जुग गए हार, सति पुरख निरँजण घर साचे मेल मिलाया। सचखण्ड सोहे बंक दुआर, सरगुण निरगुण घर सदाया। जोती शब्दी कर प्यार, सरगुण निरगुण सीस झुकाया। निरगुण निरगुण दए आधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक जोत इक्क रुशनाया। नानक निरगुण जोत, पुरख अकाल आप जगाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, चार वरनां करे पढ़ाईआ। मूर्ख मुग्ध पतित पापी उधारे कोटी कोटि, कोटी कोटि गया तराईआ। तन नगारे लाई चोट, सतिनाम डंका इक्क वजाईआ। हँकारीआं कढुया काया खोट, आत्म अन्तर ब्रह्म जणाईआ। चार वरन वखाई एका ओट, पुरख अकाल इक्क वड्याईआ। दर मंगदे ब्रह्मा विष्न शिव ओत पोत, जुगा जुगन्तर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा घर सुहाईआ। नानक निरगुण हरि हरि पाया, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी रूप वटाया, आप आपणी दया कमाईआ। सत्त रंग निशान चढ़ाया, सचखण्ड रिहा सुहाईआ। पंचम मुख ताज सीस टिकाया, नानक निरगुण पेख रिहा बिगसाईआ। निउँ निउँ आपणा सीस झुकाया, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। हउँ सेवक तूं दाता रघुराया, सो पुरख निरँजण तेरी महिमा कहिण ना जाया। हँ ब्रह्म वेख वखाया, सोइम रूप सोहँ तेरी शरनाया। कागद कलम लिखे ना राया, चार वेद रहे कुरलाईआ। पुराण अठारां बह बह गाया, शास्त्र सिमरत देण गवाहीआ। अञ्जील कुरानां राह तकाया, संग मुहम्मद चढ़ चढ़ थक्के राहीआ। नानक निरगुण दुआरे तेरे आया, मिल्या मेल चाँईं चाँईआ। तेरा दरसन हरि जू तेरे हरि मन्दिर पाया, दूसर दर दिसे नाहींआ। तेरा सीस ताज मोहे साचे भाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खलाईआ। सति पुरख निरँजण तेरा ताज, घर साचे सोभा पांयदा। सति सवाणी तेरा राज, तेरे घर सुहांयदा। सति सतिवादी तेरी वाज, तेरा शब्द सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा दुआर हरि निरँकार, लोकमात मोहे भांयदा। सचखण्ड दुआरा लोकमात, सतिगुर नानक मंग मंगाईआ।

पुरख अबिनाशी देवे दात, दे मति इक्क समझाईआ। तेरा चले जगत राथ, चार वरनां लए चढ़ाईआ। तेरी पूजा तेरा नाम पाठ, तेरी इच्छया जगत पढ़ाईआ। तेरा रक्खे तेरा साथ, तेरा तेरे विच समाईआ। तेरा होए अनाथां नाथ, नाथ अनाथां लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दए आप गवाहीआ। आपे बणया सच गवाह, आपे हुक्म सुणांयदा। आपे सतिगुर नानक ल्या मना, आपे राग अलांयदा। आपे ढोला ल्या गा, लोकमात आप सुणांयदा। आपे सतिनाम ल्या दृढ़ा, घर साचा वेख वखांयदा। आपे आपणा भेव दए खुला, भेव अभेदा आप हो जांयदा। सोहँ अक्खर इक्क पढ़ा, रूप अनूप आप मिलांयदा। साचा ताज दए वखा, लोकमात वेस वटांयदा। सत्त रंग निशाना दए चढ़ा, सतिनाम आप वड्यांअदा। उप्पर साचा लेख लिखा, आदि अन्त मेल मिलांयदा। पंचम मुख ताज लए उपा, निरगुण सेव ना कोए लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप लिखांयदा। पंचम ताज हरि प्रगटाउणा, नानक सतिगुर हरि सलाहीआ। निरगुण रूप रूप वटाउणा, रूप रंग ना कोए वखाईआ। निरगुण उपजाया निरगुण घड़ाया, निरगुण लोकमात उठ लै धाईआ। निरगुण हुक्म चलाया निरगुण शब्द जणाया, निरगुण शब्द दए वड्याईआ। आपणा नाउँ लए प्रगटाया, निहकलंक नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दो जहानां आपणा छत्र झुलाईआ।
नानक सुणया धुर फ़रमाना, रसना हरि गुण गाया। कलिजुग अन्तिम आउणा साचा राणा, निहकलंक नाउँ धराया। जोत सरूपी पहरे बाणा, चार वरनां दिस ना आया। आपे वरते आपणा भाणा, भाणे विच ना किसे रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई एह समझाया। निहकलंक उतरे, आवे विच संसार। ताणा पेटा ना कोई सूत्रे, ना कोई बणत बणाए जीव गंवार। मात पित भैण भाई साक सज्जण सैण पुत ना पोतरे, ना कोई नारी करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल आप निरँकार। निरगुण नानक मेल मिलन्नया, पाया परम पुरख करतार। घर साचा इक्क सुहन्नया, विछड़या संसार। साचा मीत किसे ना जम्मया, आवे जावे वारो वार। ना घड़या ना भन्नया, सृष्ट सबाई घड़न भन्नणहार। तीन लोक किसे ना डन्नया, चौदां हट्ट ना पायण सार। जुग जुग दिसे ना आत्म अन्नया, हरि सन्तन करे प्यार। जन भगतां पिच्छे फिरे भन्नया, लोकमात लै अवतार। जननी जन ना किसे जनया, जट धन्ना लाए पार। गुरमुख विरले सतिगुर पूरा मन्नया, नानक रसना कहे पुकार। लक्ख चुरासी देवणहारा डन्नया, अन्तिम कलिजुग प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार। कदे वसे ना छप्पर छन्नया, मन्दिर माढ़ी ना करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल अगम्म अपार। खेल अपारा हरि निरँकारा, विच संसारा आप कराईआ। एकँकारा

कर पसारा, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा आपे बोले आपणी वारा, जुग जुग दाता बेपरवाहीआ। कलिजुग तेरा रूप न्यारा चारों कुण्ट धूआँधारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। नानक बोले सति जैकारा, वरनां बरनां करे प्यारा, साची सरना इक्क रखाईआ। एका अंगद अंगीकारा, अमरदास अमृत धारा, राम दास मिलाईआ। अर्जन बोल सच जैकारा, बोध अगाध शब्द जणाईआ। एका गुर इक्क अवतारा, एका एक एक अख्वाईआ। गुरू ग्रन्थ खेल अपारा, साध सन्त लए मिलाईआ। भगतन देवे सच आधारा, घर साचे वेख वखाईआ। हरि गोबिन्द पावे सारा, सारंगधर वड वड्याईआ। हरिराय हरि का दुआरा, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। हरिकृष्न उतारे पारा, बाल अवस्था वड वड्याईआ। तेग बहादर तिक्खी धारा, दो धारा धार चलाईआ। गोबिन्द सूरा सुत दुलारा, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। साचा शब्द बोल जैकारा, वाहिगुरू फ़तेह इक्क गजाईआ। एका इष्ट देव एका मीत मुरारा, घर साचे इक्क सुहाईआ। एका खड़ग खण्डा कटारा, हथ्थ भगौती इक्क उठाईआ। एका अमृत सच भण्डारा, साचा जाम आप प्याईआ। साचा साकी बण वरतारा, साची भिच्छया झोली पाईआ। साचे मन्दिर खोलृ किवाड़ा, सचखण्ड दुआरा बूहा लाहीआ। सचखण्ड दुआरा बैठा हरि निरँकारा, निरगुण नूर नूर रिहा चमकाईआ। पाया दरस अगम्म अपारा, नेत्र नैण खुशी मनाईआ। लोचन खोलृे इक्क दुआरा, दो जहानां वेख वखाईआ। पंचम ताज सीस दस्तारा, पंचम मुख रिहा सलाहीआ। एका बोले सच जैकारा, दोए दोए मेल मिलाईआ। वाह वा गुर गुर कहे पुकारा, वाहिगुरू फ़तह गजाईआ। सचखण्ड चों आया बाहरा, पुरख अकाल मनाईआ। केस गढ़ सोहे दरबारा, घर साचे सोभा पाईआ। पंचम करे पंच प्यारा, पंचम ताज अग्गे टिकाईआ। पंचम राज जोग सिक्दारा, पंचम सची शहनशाहीआ। पंचम मीता पंचम अतीता पंचम ठांडा पंचम सीता, पंचम रीता इक्क वखाईआ। पंचम मन्दिर पंचम मसीता, पंचम मठ शिवदुआला पंचम गुरूदुआरा दए समझाईआ। पंचम तपे ना तत्त अंगीठा, पंचम रती रत रहे ना राईआ। पंचम नाम निधाना पीता, गुर अर्जन तेरी खोपरी साचा बाटा आप बणाईआ। पंचम बाणी पाठ बह बह आपे कीता, शब्द शब्दी विच समाईआ। पतित पापी करे पुनीता, पतित पावन आप अख्वाईआ। पंचम मारे पंचम जीता, पंचम नाद धुन सुणाईआ। पंचम हस्त पंचम कीटा, पंचम देवे वड वड्याईआ। पंचम वखाए धाम अनडीठा, सुरती शब्द मेल मिलाईआ। नानक गोबिन्द एका कीता, पुरख अकाल सच्ची सरनाईआ। एका शब्द इक्क हदीसा, एका करे पढ़ाईआ। एका जगत इक्क जगदीसा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। गुर गोबिन्द सिँघ सिँघ बलकारा, हरि हरि पुरख मनाया। पंच प्यारे दए आधारा, एका मति समझाया। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए

१६४
०६

विचारा, आप आपणे रंग रंगाया। आपे अंदर आपे बाहरा, आपे गुप्त आपे ज़ाहरा, आप आपणा वेख वखाया। आपे खड़ग खण्डा तेज कटारा, सीस भेट आप चढ़ाया। आपे करे तन शंगारा, बस्त्र भूशन आप सजाया। आपे तिलक ललाट लगाए लगावणहारा, सवा रती केसर नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग निभाया। पंच प्यारे कर परवान पंचम दए वड्याईआ। पंचम देवे धुर फ़रमान, साचा हुक्म सुणाईआ। पंचम राज पंचम राजान, शाह सुल्तान पंच बणाईआ। पंचम रक्खे साची आण, सृष्ट सबाई इक्क वखाईआ। पंचम हथ फड़ाए निशान, लोकमात दए झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खिलाईआ। पंच प्यारे हरि हरि साज, गुर सज्जण मीत अख्वाया। आपणे सिर तों लाह के ताज, गुरसिखां चरनां सीस झुकाया। तुहाढ्ढी सिक्खी मेरी लाज, लज पति तुहाढ्ढी झोली पाया। मेरी सेवा तुहाढ्ढा काज, मैं सेवक सेवा करने आया। तुहाढ्ढी वस्त साचा राज, लोकमात वखावण आया। चार वरन चलाउणा इक्क जहाज, ऊँच नीच ना कोए बणाया। करता रक्खे सिर तेरे ताज, आप आपणी दया कमाया। गुर गोबिन्द सिँघ उठाई इक्क आवाज़, वाह वा गुर फतिह गजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग रखाया। पंचम प्यारे पंचम रंग, पंचम वेख वखांयदा। दाता दानी सूरा सरबंग, सूरबीर भेव ना आंयदा। आप होए शाह मलंग, आपे तख्त ताज हंढांयदा। आपे अश्व घोड़े कसे तंग, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप दौड़ांयदा। आपे खड़ग खण्डा करे जंग, चण्ड प्रचण्ड आप चमकांयदा। आपे सरसा रिहा लँघ, गढ़ी चमकौर आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव रखांयदा। गढ़ी चमकौर हरि का धाम, सतिजुग साचे आप सुहाया। त्रेता आया चल के राम, वशिष्ट गुर इक्क मनाया। द्वापर बंसरी वज्जी काहन, सुरती गोपी नाच नचाया। नानक वसाया नगर ग्राम, अन्त कन्त भगवन्त मिलाया। हरि गोबिन्द प्याया साचा जाम, छेवां घर फोल फुलाया। गुर गोबिन्द करया पूरा काम, कलिजुग लहिणा रहे ना राया। नीले घोड़े दित्ती लगाम, सोलां कलीआं आसण पाया। चार जुग दा सुहाया धाम, धर्मी धर्मी धर्म कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गढ़ी चमकौर दए समझाया। सतिजुग बावन बलि बलि धार, बल राजा एह समझाईआ। बलख बुखारिउं आया कर विचार, डेरा डेरे लए लगाईआ। पूजा पाठ करया सँधया विचार, एका इष्ट इष्ट मनाईआ। दरस दिखाया हरि करतार, चिट्टे अश्व फेरा पाईआ। रूप अगम्म वेख निरँकार, बल बावन ढह ढह पए सरनाईआ। मंगे मंग बण भिखार, आपणी झोली अगे डाहीआ। तूं दाता दातार सद सुणनेहार, हउं रसना जेहवा गाईआ। धरनी धरत धवल रही पुकार, तेरा राह तकाईआ। तेरा चरन छोहे विच संसार,

ग़रीब निमाणे लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। गोबिन्द फेरा साचा पाउणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। ग़रीब निमाणयां गले लगाउणा, चार वरनां लए उठाईआ। साची धरनी आप सुहाउणा, चल के आए साचा माहीआ। आप आपणा भेट चढ़ाउणा, बंस सरबंस लेखे लाईआ। सिर ताज इक्क वखाउणा, गुरमुख आप उपजाईआ। चार जुग दा लेखा मूल चुकाउणा, पूर्ब लहिणा रहे ना राईआ। आपणी दस्तार कर प्यार गुरमुख साचे सीस टिकाउणा, सिँघ संगत हरिसंगत रूप समाईआ। कल्गी तोड़ा दूसर किसे ना हथ्थ फड़ौना, ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीसा बैठे राह तकाईआ। सूलां सेज फेर हंढाउणा, साचा सत्थर आप वछाईआ। साचा यार इक्क मनाउणा, एका वज्जे वधाईआ। बल तेरा उल्ामा, लोकमात चौथे जुग लौहणा, सतिजुग त्रेता द्वापर देण नाल गवाहीआ। साचा सालस बणके आउणा, साख्यात रूप वटाईआ। फड़ फड़ कागों हँस बणाउणा, काग हँसा डार रलाईआ। तख्त ताज आप तजाउणा, गुरमुखां बख्शे साची शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाईआ। सूलां सथ्थर हेठ विछाया, एका यार ध्यांअदा। पवण पवणी सेवा लाया, पवण पवणां विच टिकांयदा। अवण गवण पार कराया, त्रैभवन पन्ध मुकांयदा। बावन बवन लेख मुकाया, बलि बलि वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगांयदा। शब्द सुनेहड़ा साचे यार, गुर गोबिन्द आप घलाया। पुरख अबिनाशी कर प्यार, आप आपणी झोली पाया। आपे पढ़े आपणी वार, आपणा बंध आप खुल्ाया। एका ऊड़ा कर त्यार, त्रैगुण मेला मेल मिलाया। तिन्न लोक त्रैगुण ब्रह्मा विष्न शिव बन्द करे अध विचकार, चौदां लोक चार कुण्ट बिठाया। निरगुण रूप निराकार गुर गोबिन्द मेला विच संसार, शब्द शब्दी डंक वजाया। तेरा सोहे बंक दुआर, दर दरवाजा इक्क खुल्ाया। जनक उल्ामा दए उतार, हरिजन साचे गले लगाया। बिदर सुदामा करे प्यार, कान्हा कृष्ना वेख वखाया। भीलनी बणे दर भिखार, मुख आपणे भोग लगाया। साचा वरते अमृत विच संसार, पुरख अबिनाशी दए वरताया। चार वरनां दए अधार, मन मनूआ आप बंधाया। मति मतवाली ना होए ख्वार, बुध बिबेक जणाया। नाम खण्डा तेज कटार, तन गात्रे दए लटकाया। पंजा दुष्टां करे सँघार, पंचम पंचम दए खपाया। अन्तिम कलिजुग प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, निरगुण आपणा नाउँ धराया। सम्बल नगरी धाम न्यार, साढे तिन्न हथ्थ बणत आप बणाया। जुग जुग जोत जगे अपार, तेल बाती ना कोई रखाया। घर विच घर कर त्यार, घर घर विच मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका

डंक दए वजाया। कलिजुग अन्तिम खेल करावाणा, हरि हरि आप जणाईआ। सो पुरख निरँजण वेस वटावणा, एकँकारा नाउँ धराईआ। आदि निरँजण जोत जगावणा, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी वेस वटावणा, दिस किसे ना आईआ। श्री भगवान आपणा भेव खुल्हावणा, आप आपणा ढोला गाईआ। पारब्रह्म इक्क समझावणा, एका इष्ट देव वखाईआ। विष्नूं विश्व नाल रलावणा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फेरा पाईआ। ब्रह्मा वेद चार पढ़ावणा, आपणी विद्या आप सिखाईआ। शंकर बासक तशक गल सुहावणा, हथ्थ त्रिशूल उठाईआ। करोड़ तेतीसा दर बहावणा, सुरपति राजा इंद मंगे सरनाईआ। गण गंधर्ब गीत एका गावणा, किन्नर यच्छप नाच नचाईआ। धर्म राए सीस झुकावणा, चित्रगुप्त नैण शर्माईआ। लाड़ी मौत सीस गुंदावणा, लाल मैहन्दी हथ्थ रंगाईआ। कूड़ कुड़यारा कज्जल पावणा, जूठ झूठ नैण मटकाईआ। आसा तृष्ना प्यार वधावाणा, हउमे हंगता बस्त्र भूशन इक्क हंढाईआ। पंच विकारा बह बह गावणा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होए हलकाईआ। चार कुण्ट जगत नगारा इक्क वजावणा, दहि दिशा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। कलिजुग अन्तिम होए अन्धेरा, साचा चन्द ना कोई वखाईआ। साधां

सन्तां ढए डेरा, घर विच घर ना कोई वखाईआ। काया उजड़ उजड़ वसे खेड़ा, रुत बसन्त ना कोई महिकाईआ। पंचम ना लाए कोई उखेड़ा, पंचम शब्द ना कोई सुणाईआ। वेले अन्त ना बन्न्हे कोई बेड़ा, घर घर बैठे बह बह राम अख्वाईआ। पुरख अबिनाशी पाए घेरा, निरगुण लए मात अंगड़ाईआ। चौथे जुग करे हक निबेड़ा, गुरमुख मनमुख वेखे थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक आपणा नाउँ रखाईआ। निहकलंक हरि भगवाना, एका एक एकंकारया। जोत सरूपी नूर महाना, नूरो नूर उज्यारआ। शब्द सरूपी सति तराना, गुर शब्दी नाउँ धरा ल्या। कलिजुग अन्तिम पहरया बाना, आप आपणा रूप वटा ल्या। सोहँ शब्द तीर कमाना, साचा चिल्ला हथ्थ उठा ल्या। निरगुण सरगुण वेखे दो जहाना, पृथमी आकाश फेरा पा ल्या। एका राग इक्क तराना, एका सोहला गा ल्या। एका मर्द इक्क मरदाना, गुर चेला इक्क बणा ल्या। एका पीणा एका खाणा, एका रसना रस वखा ल्या। दन्द बतीसा एका गाना, एका गोबिन्द सगन मना ल्या। एका तीर एका खण्डा एका तेज कृपाना, आपणी किरपा धार वखा ल्या। एका मन्दिर इक्क मकाना, सम्बल नगरी डेरा ला ल्या। हरि जू हरि मन्दिर उडाए सच बिबाना, शब्द शब्दी सेव कमा ल्या। आपे बणे साचा राणा, सीस आपणा ताज सुहा ल्या। आप चढ़ाए सति निशाना, सत्त रंगा आप रंगा ल्या। कलिजुग अन्तिम हो प्रधाना, आपणा डंक वजा ल्या। सम्मत सोलां लेख लिखाना, शाह सुल्ताना मेट मिटा ल्या। गुरमुख साचे नौजवाना, गुर गोबिन्द गोद

सुहा ल्या। पहली चेत्र पहनाए साचा बाणा, काया चोली रंग रंगा ल्या। एका इक्की इक्क वखाना, साची सिक्खी सिख समझा ल्या। पंचम मेला दो जहाना, जोत लिलाटी तिलक वखा ल्या। लक्ख चुरासी सहिणा भाणा, हरि हरि हुक्मी हुक्म फिरा ल्या। आप चुकाए अन्न दाना, पीणा खाणा आपणे हथ्थ रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा ताज धुरदरगाही, एका एक वखा ल्या। पंचम मुख साचा ताज, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, दिस किसे ना आया। कलिजुग अन्तिम निरगुण रचया आपणा काज, निरगुण वेखण आया। प्रगट होया देस माझ, भुल्ल रहे ना राया। सृष्ट सबाई राजन राज, शाहो भूप आप अख्वाया। वीह सौ वीह बिक्रमी पूरा करना आपणा काज, साचे तख्त आप सुहाया। नौं खण्ड पृथ्मी सुणाए इक्क आवाज़, सत्तां दीपां आप हलाया। गुर संगत चढ़ी सच जहाज़, सतिगुर पूरा आप चढ़ाया। लख चुरासी भाण्डा भज्जणा कल कि आज, कल कूके दए दुहाया। लाड़ी मौत नचाए नाच, मुख घुँगट रही उठाया। काया वेखे सुराही काच, जगत प्याला मध दए प्याया। सतिगुर पूरा गुरमुखां हिरदे अंदर जाए राच, साढे तिन्न करोड़ आपणा अंग बणाया। नेड़ ना आए कलिजुग आंच, तत्ती वा ना लगे राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा दिवस दए सुहाया। साचा दिवस हरि सुहावना, पहली चेत्र वेख वखांयदा। वीह सौ तेरां बिक्रमी दिन याद करावना, राज राजानां लेख लिखांयदा। साची दस्तार हथ्थ फड़ावना, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौथे साल चौथे युग, चार कुंट वेख वखांयदा। सम्मत वीह सद तेरां पहली चेत, राज राजान साध सन्त आप उठाईआ। सुंजां होणा काया खेत, साची रुत ना कोए वखाईआ। कलिजुग हाढ़ी वढ्ढे अगेत पछेत, तिन्न दिन आपणे लेखे लाईआ। चौथे दिवस साध सन्त कोई ना दिसे नेतन नेत, चौथा चेत दए गवाहीआ। कलिजुग सन्त होए प्रेत, चार कुंट विष्टा मुख मुख पाईआ। पुरख अबिनाशी तेरा किसे ना पाया भेत, बैठे आपणे आसण लाईआ। अन्तिम सिर विच पैणी बालू रेत, कलिजुग कड़छा हथ्थ उठाईआ। गुर अर्जन करन आया हेत, सड़दे हिरदे सांत सति कराईआ। घर तरखाणां प्या जम्म आपे लाए वेंत, सिध्धा चीर आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, राज राजानां शाह सुल्तानां, चार वरनां उच्ची कूक रिहा सुणाईआ। चार वरन जाणा जाग, हरि साचा जोत जगांयदा। माझे देस लग्गा भाग, चारों कुण्ट हलांयदा। मनमुखां सिर पाए ख़ाक, संग मुहम्मद चार यार कलिजुग नाल उडांयदा। आपे चढ़या एका राक, शब्द घोड़ा हरि दौड़ांयदा। शाह सुल्तानां नकेल पाए नाक, तख्त ताज सर्ब मिटांयदा। गुरमुखां बणे सज्जण साक, सतिजुग नाता जोड़ जुड़ांयदा। जन्म जन्म दा पूरा करे घाट, साचा तोला

आपणा तोल तुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंच प्यारे एह समझांयदा। पंच प्यारे नेत्र खोल्ह, हरि सतिगुर आप खुल्हाईआ। पंजां अंदर जाए बोल, आपणा मुख । पंजां अंदर तोले तोल, आपणा कंडा हथ्थ उठाईआ। पंजां करे सदा अडोल, ना कोई डोले डोल डुलाईआ। पंजां उत्तों आप आपणा घोली घोल, घोली घोल सेव कमाईआ। अमृत आत्म बख्शे साची पौहल, मिठ्ठा रस विच भराईआ। देवे वडियाई उप्पर धवल, धरनी निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अमृतसर वखाए अमृत कँवल, मुख नाभी नाभ भवाईआ। जोती जोत सरप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सगन आप जणाईआ। पंच प्यारे इक्की सिख, एका बन्धन पांयदा। हरिसंगत तेरा लेखा लिख, चार वरन समझांयदा। दीन मज़्हब दर मेटे भेख, बीस बीसा राह तकांयदा। सृष्ट सबाई आपे वेख, आपणा मार्ग आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सवा रती साचा केसर सिँघ प्रगट सेवा लांयदा। प्रगट सिँघ केसर सवा रती, पहली चेत्र भेट चढ़ाईआ। हरिसंगत वा ना लग्गे तत्ती, आपणी हथ्थीं लेखा दए लिखाईआ। हरि का भेव ना पायण जुग छत्ती, राग छत्ती रहे सलाहीआ। साध सन्त जीव जंत गा गा थक्के दन्द बत्ती, कमलापती भेव ना राईआ। कलिजुग अन्तिम मिल्या सच्चा साथी, जगत विछोड़ा फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्की सिखां एका रंग चढ़ाईआ। ढाई गज़ चिट्टा बस्त्र, केसर रंग रंगावना। इक्की सिखां नाम पहनाए तन साचा शस्त्र, लोकमात किसे गलों ना लाहवणा। तन पहनाए आपणा नाम ज़र बकतर, तीर तलवार ना खण्डा किसे घावणा। आत्म बीज बीजे आपणे वत्तर, फुल फुलवाड़ी आप महिकावणा। लेखा जाणे अफ़ग़ान लक्ख सत्तर, भगत बहत्तर मेल मिलावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण खेल खलावना। पहली चेत्र साढे दस, थित वार हरि समझाईआ। हरिसंगत आउणा नस्स नस्स, सतिगुर मिले बेपरवाहीआ। साचा मार्ग देवे दस्स, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। शब्द तीर निराला देवे मार कस, बिरहो रोग मिटाईआ। हिरदे अंदर जाए वस, हरि हरि का रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ताज़ ग़रीब निवाज़, गुरमुख साचे हथ्थ फड़ाईआ। हथ्थ ताज हरि फड़ाउणा, सतिगुर पूरा आप समझांयदा। पंजां सिखां अग्गे लाउणा, नंगी दो कटार चमकांयदा। छेवें घर पन्ध मुकाउणा, छे दर फोल फोलांयदा। सिँघ नरायण सेव कमाउणा, साची सेवा आप करांयदा। सज्जा हथ्थ अग्गे वधाउणा, खब्बा हेठां मूंह धरांयदा। उप्पर ताज आप टिकाउणा, आप आपणे रंग रंगांयदा। पिछला लहिणा करज़ मुकाउणा, आपणी वस्त दस्त बदस्त, शाह हस्त कीट वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा वेख वखांयदा। इक्की सिख पहरेदार,

केसर रंग रंगाईआ। संगत गाए मंगला चार, धुन वजदी रहे वधाईआ। पुरख अबिनाशी करे प्यार, निउँ निउँ आपणा सीस जगदीस झुकाईआ। फुल फुलवाड़ी खिड़े गुलज़ार, लोकमात आप महिकाईआ। कलिजुग तेरी अन्त बहार, सतिजुग बसन्त आपणे हथ्थ रखाईआ। होए मिलावा नारी कन्त, आत्म सेज सुहावी सुरत शब्द करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरी हरि हरि हरि का रूप दरसाईआ। हरि का रूप अगम्म अथाह, वेद कतेब भेव ना राया। चार जुग चार वरन अठारां बरन साध सन्त जीव जंत रहे गा, आदि अन्त ना किसे जणाया। जुगा जुगन्तर जन भगतां पकड़े आप बांह, आप आपणा भेख वटाया। गुरसिख उठाए जिउँ बालक माँ, आप आपणी गोद सुहाया। कागो हँस दए बणा, माणक मोती सोहँ हँसा चोग चुगाया। निरगुण जोती दए जगा, काया मन्दिर डगमगाया। अनहद ताल नगारे चोट दए लगा, ताल तलवाड़ा इक्क वजाया। आत्म सेजा दए सुहा, बन्द कवाड़ी आप खुल्हाया। आलस निन्दरा दए मुका, आस निरासा पूर कराया। चरन भरवासा इक्क वखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत देवे साचा दान, आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, नाम सति होए प्रधान, जगत प्रधानगी आप कमाया।

२०० २००

०६ ०६

❋ ३ फगण २०१६ बिक्रमी पिण्ड निधांवाली सरैण सिँघ दे घर ज़िला फिरोज़पुर ❋

सो पुरख निरँजण अगम्म अथाह, आदि जुगादी हरि अख्वांयदा। हरि पुरख निरँजण बेपरवाह, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। एकँकारा सिफ्त सालाह, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। आदि निरँजण जोत जगा, नूरो नूर डगमगांयदा। श्री भगवान एका नाँ, आपणा आप उपजांयदा। अबिनाशी करता वसे साचे थाँ, सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा। पारब्रह्म करे इक्क न्याँ, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहांयदा। दर सुहञ्जणा हरि निरँकार, एका एक उपांयदा। सचखण्ड महल्ला निरगुण धार, थिर घर वासी डगमगांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह भेव ना आंयदा। ना पिता ना कोए माँ, साची गोद ना कोए सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। आपणी रचना आप रचाए, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। एकँकारा नाउँ धराए, ना मरे ना जाईआ। सचखण्ड निवासी डेरा लाए, महल्ल अटल इक्क उपाईआ। तख्त ताज इक्क वखाए, शाह सुल्तान वड भूप एका रूप उपजाईआ। वसणहारा चारे कूंट, दहि दिशा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला सच महल्ला, निरगुण धारा एकँकारा, अकल कल धारी आप वसाईआ। अकल कल धार हरि भगवन्त, आदि जुगादि समांयदा। आप बणाए आपणी बणत, दूसर कोए ना संग रलांयदा। आपे नारी आपे कन्त, आपे निरगुण निरगुण सेज हंढांयदा। आपे वेखे रुत्त बसन्त, फुल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। आपे मणीआ आपे मंत, आप आपणा जाप दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित नाउँ धरांयदा। अजूनी रहित पुरख अकाल, एका रंग समाईआ। आदि जुगादी दीन दयाल, घर साचे सोभा पाईआ। आपे चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली आप उपाईआ। वसणहारा सच सच्ची धर्मसाल, थिर घर बैठा आसण लाईआ। सति सरूपी शाह कंगाल, निर्भय आपणा नाउँ धराईआ। आपे धन आपे माल, सच समग्री आपणी आप उपाईआ। आपे करे कराए सदा प्रितपाल, प्रितपालक हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख निरँजण आपणा नाउँ धराईआ। सति पुरख निरँजण नाउँ रक्ख, अगम्म अगम्मड़ी कार करांयदा। सचखण्ड दुआरे हो प्रतक्ख, निरगुण दीवा बाती जोत जगांयदा। आपे बणे कमलापत, मीत मुरारा आप अख्वांयदा। आपे जाणे मित गति, गति मित दाता भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला दीन दयाला खेल खिलांयदा। खेल खलाए पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार करांयदा। हड्ड मास नाड़ी ना दिसे चम्म, पंज तत्त ना कोए रखांयदा। ना कोई पवण स्वासी दम, रसना जेहवा ना कोए गांयदा। आपणा बेड़ा आपे बन्, निरगुण निरगुण आप चलांयदा। आपे जननी आपे जन, आप आपणी गोद सुहांयदा। आपे वसे साची छप्परी छन्न, चार दीवार ना कोए उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एकँकारा, खेले खेल अपर अपारा, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। एकँकारा हरि निरँकारा, भेव कोए ना पांयदा। आदि जुगादी खेल अपारा, जुग जुग वेस वटांयदा। लोआं पुरीआं बन्ने धारा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखांयदा। आपे रवि ससि बण सतारा, मंडल मंडप आप सुहांयदा। आपे ज़िमी अस्मानां दए हुलारा, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपे पृथ्मी आकाश करे प्यारा, गगन गगनंतर सोभा पांयदा। आपे त्रैगुण माया खोलू किवाड़ा, आप आपणे रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समांयदा। रंग समाए हरि रंग राता, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। अबिनाशी करता पुरख बिधाता, पारब्रह्म परम पुरख अख्वाईआ। आपणी रक्खे उत्तम ज़ाता, वरन गोत ना कोए बणाईआ। बैठा रहे इक्क एकांता, दर घर साचे सोभा पाईआ। आपे पुच्छे आपणी वाता, आप आपणा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप वटाईआ। रूप वटंदड़ा हरि भगवान, भेव कोए ना पांयदा। सचखण्ड दुआरे

२०१ ०६

सच निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलांयदा। सति सतिवादी हो मेहरवान, आप आपणी दया कमांयदा। साचा सुत सुत बलवान, शब्दी शब्द उपजांयदा। एका गीत एका राग एका धुनकान, राग अनादी आप सुणांयदा। एका मन्दिर इक्क मकान, थिर घर साचा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा दान, दाता दानी एका वस्त हथ्थ फड़ांयदा। साची दात धुर दरबार, हरि साचे हथ्थ रखाईआ। आपणी किरपा आपे धार, आपणी झोली आप भराईआ। आपे विष्नूं कर त्यार, देवे रिज़क सबाईआ। आपे कँवला कँवली हो उज्यार, नाभी नाभी अमृत मुख चुआईआ। आपे ब्रह्म कर प्यार, पारब्रह्म दए वड्याईआ। आपे वसे धूंआँधार, सुन्न अगम्म आप समाईआ। आपे शंकर दए आधार, सांगो पांग सेज सुहाईआ। आपे त्रैगुण खेल करे निरँकार, आप आपणा बन्धन पाईआ। आपे पंज तत्त मेला विच संसार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आप आपणा रूप दरसाईआ। आपे वसे जल बिम्ब जल जल धार, धरत धवल आप वड्याईआ। आपे मन मति बुध कर जोत उज्यार, दीवा बाती निरगुण आपणा आप टिकाईआ। आपे चौदां लोक खोल्ह ताक, साची हाटी आप सुहाईआ। आपे शब्द अगम्मी बोल वाक, आपणा नाउँ लए प्रगटाईआ। आपे सति सरूपी चढ़े राक, अश्व आपणा आप दौड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, वसणहारा सचखण्ड दुआरा, त्रैगुण मीता हरि अतीता, त्रै त्रै वस्त आपणी वण्ड वण्डाईआ। त्रैगुण भण्डारा हरि निरँकारा, ब्रह्मा विष्न शिव आप वरताईआ। आपणा देवे नाम सहारा, निरगुण निरगुण रूप दरसाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, अगाध बोध शब्द करे कुड़माईआ। आपे शब्दी शब्द बण लिखारा, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। आपे वणज आप वणजारा, आपणी वस्त आपे विच टिकाईआ। जोती जोत सरप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, लक्ख चुरासी घाड़न घड़, आत्म ब्रह्म करे कुड़माईआ। आत्म ब्रह्म हरि हरि नाता, हरि सतिगुर आप बणाया। आपे दिवस आपे राता, आप आपणी खेल खलाया। आपे खेले खेल बौह बौह भांता, वेद कतेब लेखा लख ना सके राया। आपे देवे आपणी दाता, ब्रह्मा रो रो नेत्र नैण नीर वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाया। खेल खलंदड़ा सति सरूप, महिमा कथ कथी ना जाईआ। शाह सुल्ताना वड्डा भूप, सच सिक्दार इक्क अख्वाईआ। एका ताणा एका सूत, एका पेटा रिहा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी अंदर वड़, बन्द किवाड़ा आप कराईआ। लक्ख चुरासी घाड़न घड़या, भेव कोए ना पांयदा। सरगुण अंदर निरगुण वड़या, दिस किसे ना आंयदा। आपणे पौड़े आपे चढ़या, शब्द डण्डा हथ्थ रखांयदा। नौं दुआर किते ना अड़या, डूँघी भँवर ना कोए फिरांयदा। सुखमन नाड़ी पार

करया, त्रिबैणी नैण मटकांयदा। सर सरोवर आत्म भरया, जल धारा इक्क सुहांयदा। अनहद ताल अनादी एका जड़या, साचा डंका आप वजांयदा। दस्म दुआरी आपे खड़्या, साची सेजा आप सुहांयदा। पंच विकारा आपे लड़या, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आपे वेख वखांयदा। हउमे हंगता आपे गड़या, गढ़ हँकारी आप सुहांयदा। आसा तृष्ना कदे ना सड़या, घट साचे सोभा पांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़या, ब्रह्मा वेता आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत इक्क वखांयदा। जागरत जोत पुरख अबिनाशा, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। लक्ख चुरासी खेल तमाशा, घर घर विच आसण लाईआ। जोत निरँजण कर प्रकाशा, दिवस रैण डगमगाईआ। अनहद शब्द सर्ब गुण तासा, नाद अनादी नाद वजाईआ। सति सतिवादी शाहो शाबाशा, दर घर साचे सोभा पाईआ। जन भगतां देवे नाम दिलासा, एका आपणा नाउँ सुणाईआ। भाग लगाए काया कासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग दाता बेपरवाहीआ। जुग जुग दाता हरि निरँकार, आपणा खेल खिलांयदा। सतिजुग वेस अपर अपार, वेस अनेका रूप वटांयदा। सन्त भगत लए उधार, आत्म ब्रह्म मेल मिलांयदा। जगत जुगत अपर अपार, हरिजन साचे आप जणांयदा। साची शक्ति दए आधार, बूंद रक्त वेख वखांयदा। कागद कलम लिख लिख गए हार, हरि का भेव कोए ना पांयदा। जिस जन किरपा करे अपार, कर किरपा मेल मिलांयदा। आपे घड़े भन्ने भन्नणहार, समरथ पुरख आप अख्वांयदा। चलाए रथ विच संसार, रथ रथवाही दिस ना आंयदा। सतिजुग साचे दए हुलार, नाम हुलारा इक्क वखांयदा। सो पुरख निरँजण मीत मुरार, हरि पुरख निरँजण मेल मिलांयदा। एकँकारा दए आधार, आदि निरँजण वेख वखांयदा। श्री भगवान सच दुआर, अबिनाशी करता सोभा पांयदा। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, आप आपणा रूप वटांयदा। ब्रह्म ब्रह्म खेल न्यार, हँ हँ आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरा साचा घर, हरि साचा आप सुहांयदा। साचा घर सुहञ्जणा, हरि साचा आप सुहांयदा। जोत जगाए आदि निरँजणा, आदि जुगादी डगमगांयदा। जन भगतां चरन धूढ़ कराए साचा मजना, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। सतिगुर पूरा साख्यात, मिले साचा सज्जणा, सगला संग निभांयदा। नेत्र नैण पाए नाम कजला, लोचन इक्क खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा वेस वटांयदा। त्रेता खेल अपार, हरि पुरख निरँजण आप कराईआ। द्वापर जोत अगम्म अपार, निरगुण दीवा बाती एका डगमगाईआ। कलिजुग खेल विच संसार, करनी करता आप कराईआ। ईसा मूसा मीत मुरार, संग मुहम्मद चार यार करे कुड़माईआ। अञ्जील कुराना बोल जैकार, एका नाअरा दए सुणाईआ। हक हकीकत वेख विचार, लाशरीक इक्क खुदाईआ। महिबान बीदो हो त्यार, आपणी

अज़मत आप वखाईआ। चौदां तबकां खोल्ह कवाड़, एका जल्वा नूर इलाहीआ। एका नबी दए विचार, उम्मत उम्मती आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस हरि भगवाना, आपणा आप वटांयदा। निरगुण सरगुण हो प्रधाना, नानक नाउँ धरांयदा। सति सरूपी सति तराना, शब्दी शब्द उपजांयदा। एका गोपी एका कान्हा, एका घर सुहांयदा। एका मन्दिर एक मकाना, सच सिँघासण इक्क वछांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी वेस वटांयदा। आदि जुगादी हरि भगवन्त, परम पुरख अख्वाया। हरिजन तारे साचे सन्त, सतिगुर साचा नाउँ धराया। लेखा जाणे जीव जंत, हस्त कीट वेख वखाया। अबिनाशी करता महिमा अगणत, शास्त्र सिमरत कथ ना सके राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, नानक बणया सतिगुर मलाह, चार वरनां लए तराया। चार वरनां सच दरबार, सतिगुर पूरा इक्क जणाईआ। ऊँचां नीचां करे प्यार, राउ रंक ना कोए वखाईआ। साचा डंका विच संसार, नाम सति रिहा वजाईआ। गुरमुख जनका लए उभार, जन जननी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमाईआ। नानक निरगुण निरगुण दाता, निरवैर रूप समाया। आत्म अन्तर इक्क ज्ञाता, एका ब्रह्म वखाया। एका पिता एका माता, पुरख अकाल इक्क जणाया। एका बन्न्हे साचा नाता, ना मरे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती दस अवतार, गुर गोबिन्द बोले सच जैकार, सिँघ आपणा रूप वटाया। साचा नाम बोल जैकारा, गुर गुर इक्क समझाईआ। एका गुर इक्क अवतारा, इष्ट देव इक्क वखाईआ। एका भगत भगवन्त करे प्यारा, एका मीत सहिज सुखदाईआ। एका लक्ख चुरासी दए हुलारा, एका साध सन्त करे कुड़माईआ। एका नाम बणे सच वरतारा, एका भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द दए वड्याईआ। गुर शब्द साचा सज्जण, लोकमात हरि वड्यांअदा। गुर शब्द साचा मजन, गुरमुखां आप करांयदा। गुर शब्द साचा कज्जल, नाम नेत्र धार बंधांयदा। गुर शब्द सच जहाज़न, हरिजन साचे पार लँघांयदा। गुर शब्द साचा ताजन, सतिगुर पूरा आप चढ़ांयदा। गुर शब्द अगम्मी मारे वाजण, धुन आत्मक आप सुणांयदा। गुर शब्द साचा राजन, शाहो भूप नाम धरांयदा। गुर शब्द ग़रीब निवाज़न, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्त्र गुर गुर नाम दृढ़ांयदा। गुर गुर मन्त्र नाम हरि सच्च, सति पुरख निरँजण आप दृढ़ाया। वेखणहारा काया माटी भाण्डा कच्च, पंज तत्त फोल फोलाया। मन मनूआ तन रिहा नच्च, बिन सतिगुर बन्धन कोए ना पाया। त्रैगुण अग्नी रिहा मच्च, अमृत जल ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। कलिजुग अन्तिम वेस, हरि आपणा आप वटाईआ। भेव ना जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, करोड़ तेतीसा रिहा कुरलाईआ। सति सतिवादी दर दरवेश, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। दाता दानी दस दस्मेश, कलिजुग दहि सिर देवे घाईआ। वेखणहारा मूंड मुंडाए धारी केस, दर दरवेशां फेरी पाईआ। आदि निरँजन नर नरेश, साचे तख्त सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त कन्त भगवन्त, एका सेज सुहाईआ। साची सेज हरि सुहाए, हरिजन साचे मेल मिलन्नया। आपणी दृष्टी आप खुल्हाए, जोती नूर श्री भगवन्नया। एका इष्ट आप जणाए, पुरख अकाल वड गुण गुणया। सृष्ट सबाई पर्दा लाहे, हरि वाली दो जहन्नया। कलिजुग रैण अन्धेरी छाए, साचा दिसे ना कोई चन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खलन्नया। कलिजुग खेल खलंदड़ा, हरि सतिगुर शाह सुल्तान। जोती जामा भेख वटंदड़ा, निरगुण रूप श्री भगवान। ब्रह्म पारब्रह्म मिलंदड़ा, देवणहारा दानी दान। साढे तिन्न हथ्थ बंक सुहंदड़ा, आदि जुगादी नौजवान। सम्बल नगरी वेख वखंदड़ा, सचखण्ड निवासी सच मकान। शब्द अनादी ताल वजंदड़ा, लोआं पुरीआं होण हैरान। करोड़ तेतीसा सीस झुकंदड़ा, शिव शंकर वेखे चरन ला ध्यान। ब्रह्मा नेत्र नीर वहंदड़ा, विष्नूं ढह ढह मंगे दान। पुरख अबिनाशी खेल खलंदड़ा, लेखा लिखे ना कोए जहान। गोबिन्द साचा तीर उठंदड़ा, रसना चिल्ला तीर कमान। नौं खण्ड वेख वखंदड़ा, सत्तां दीपां निगहबान। रवि ससि मुख लुकंदड़ा, नेत्र नैण सर्ब शर्मान। राए धर्म सीस झुकंदड़ा, चित्रगुप्त करे ब्यान, हरि का भेव कोए ना पंदड़ा, चारे वेद सर्ब कुरलान। शास्त्र सिमरत गीत सुनंदड़ा, पुराण अठारां नाल मिल जाण। गीता ज्ञान इक्क वखंदड़ा, सीता राम करे ध्यान। कान्हा कृष्ना ओट रखंदड़ा, कँवल नैण खेल महान। ईसा मूसा राह तकंदड़ा, लेखा चुक्के पंज शैतान। संग मुहम्मद सेव कमंदड़ा, चार यारी वसे एका घर मकान। मक्का काअबा आप खुलंदड़ा, चौदां तबकां इक्क ईमान। नानक निरगुण सरगुण आप अख्वंदड़ा, सतिगुर पूरा वड मेहरवान। गोबिन्द खण्डा इक्क चमकंदड़ा, पंचम मीता विच जहान। अन्तिम लेखा सच लखंदड़ा, कलिजुग मेटे झूठी काण। निहकलंका भेव खुलंदड़ा, हरि मूर्त श्री भगवान। सच धाम आप सुहंदड़ा, सचखण्ड करे परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल वड मेहरवान। मेहरवान हरि गोबिन्द, हरि पुरख निरँजण आप अख्वांयदा। जन भगतां मेटे सगली चिन्द, जुग जुग वेस वटांयदा। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर समांयदा। अमृत आत्म देवे सागर सिन्ध, भर प्याला जाम प्यांअदा। गुरमुख उपजाए आपणी बिन्द, नादी सुत नाउँ धरांयदा। मनमुख लगाए आपणी निन्द, जूठा झूठा

संग वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर गहर गम्भीर, हरिजन करे सांत सरीर, दु:ख दर्द सर्ब मिटांयदा। दु:ख दर्द ढाहे डेरा, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। आपे तारे कर कर मेहरा, मेहरवान भेव ना आईआ। एका रंग रंगाए संझ सवेरा, दिवस रैण ना कोए वखाईआ। चारों कुंट चुक्के घेरा, दूती दुष्ट रहिण ना पाईआ। वसदा रहे काया खेड़ा, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। डुब्बदा तारनहारा बेड़ा, बण मलाह बन्ने लाईआ। देवणहारा उलटा गेड़ा, आपणी लट्ठ आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द दए मिलाईआ। गुर शब्दी हरि हरि साचा मेला, हरिजन साचे आप करांयदा। आपे गुरू गुरु गुर चेला, गुर गोबिन्द वेख वखांयदा। दो जहानी सज्जण सुहेला, कलिजुग साचा संग निभांयदा। दरगाह साची चाढ़े साचा तेला, घर साचे सगन मनांयदा। पंचम सखीआं बह बह पायण वेला, गीत अनादी राग सुणांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता आपणा खेल आपे खेला, खेलणहारा दिस ना आंयदा। कट्टणहारा राए धर्म दी झूठी जेल्हा, लख चुरासी फंद कटांयदा। गुरमुख तेरा आपे जाणे वक्त वेला, थित वार ना कोए लिखांयदा। आपे वसे सद नवेला, निज घर आपे डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सरूपी एका धार, शब्द अगम्मी बोल जैकार, काया मन्दिर खोल्ह किवाड़, दरस दिखाए अपर अपार, दर घर साचा आप सुहांयदा। दर घर साचा सोभावन्त, गुरसिख सज्जण वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी पाया सच्चा कन्त, सच सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। लेखा चुक्के आदि अन्त, मध भेव रहे ना राईआ। माणस देही बणे बणत, मानुक्ख लेखा दए चुकाईआ। वेखणहारा लक्ख चुरासी जीव जंत, हरि सन्त लए उठाईआ। गुरसिखां काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। तोड़े गढ़ हउमे हंगत, चरन प्रीती इक्क वखाईआ। हरिजन दूजे घर ना होए मंगत, जिस मिल्या सतिगुर पूरा बेपरवाहीआ। आप मिलाए साची संगत, पूर्ब लहिणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन साचा पेख्या, कर किरपा करतार। गुर सतिगुर लिखे लेखया, घर मन्दिर बह घर बार। आप चुकाए भरम भुलेखया, दूई द्वैती पर्दा दए उतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नैण एका सैण, एका करे सच प्यार। सच प्यारा हरि निरँकारा, हरिभगतन आप करांयदा। गुरमुख सोहे सच दुआरा, दर घर साचा आप सुहांयदा। हरिभगती भरे भगत भण्डारा, अतोट अतुट वखांयदा। आपे वणज आप वणजारा, आप आपणी वस्त विकांयदा। आपे ख़ालक ख़लक दए सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल कर, सरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण मेला गुरसिख रंग, पारब्रह्म सरनाया। सरगुण चेला सच पलँघ, थिर घर आसण लाया। सूरा सरबंग लाए अंग,

सतिगुर पूरा वड वड्याआ। कट्टे भुक्ख नंग, सर सरोवर आत्म नुहाए साची गंग, दुरमति मैल धवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग कूड़ा मेटे दुक्ख, आत्म अन्तर एका सुख, सफल कराए मात कुक्ख, जन जननी हरिजन साचा जाया। दुःख दलिद्र जगत विनास, तत्व तत्त रहिण ना पाईआ। घर विच घर दीप प्रकाश, घर नूर करे रुशनाईआ। घर मेटे लग्गी जगत प्यास, तृष्ना तृप्त कराईआ। घर मेल मिलाए शाहो शाबास, मेल मिलावा साचे माहीआ। घर पूर कराए आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। घर लेखा लाए स्वास स्वास, जो जन हरि हरि रसना गाईआ। घर लहिणा चुकाए दस दस मास, मात गर्भ फंद कटाईआ। घर मन्दिर हरि कर निवास, निज घर बैठा ताड़ी लाईआ। घर गोपी काहन पाए रास, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। घर भोग घर रास बलास, घर हस मुख सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख सज्जण लए तराईआ। तारनहारा पुरख अकाल, अवर ना दिसे कोए। आदि जुगादि दीन दयाल, जन भगतां देवे नाम साचे ढोए। तोड़नहारा जगत जंजाल, आलस निन्दरा विच कदे ना सोए। शब्द वजाए साचा ताल, सोइम रूप आप हो जाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे आपणे घर, घर साचा आपे सोहे। सोहे घर दर दरवाज़ा, पुरख अकाल आप सुहांयदा। अबिनाशी करता ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। मनमुखां खोलू़णहारा पाजा, कूड़ी क्रिया वेख वखांयदा। हरिभगत दुआरे फिरे भाजा, जुग जुग वेस वटांयदा। हरि जू हरिजन हरि मन्दिर आपे साजण साजा, काया बंक सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे रक्खणहारा लाजा, आप आपणा संग निभांयदा। संग निभाए पुरख समरथ, जिस जन दया कमाईआ। लहिणा देण चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, धरनी धरत धवल वण्ड वण्डाईआ। नाम चढ़ाए साचे रथ, दो जहानां आप चलाईआ। पुरख निरँजन महिमा अकथ, कागद कलम ना लिखे छाहीआ। सगल विसूरे जायण लथ्थ, जो जन नेत्र लोचण नैण दरसन पाईआ। जगत विकारा देवे मथ, एका करे नाम पढ़ाईआ। जूठा झूठा बुरज जाए ढट्ठ, सच सुच दए वड्याईआ। पंच विकारा जाए नट्ठ, सतिगुर खण्डा हथ्थ चमकाईआ। जगत तृष्ना होवे भट्ठ, सांतक सति सति वरताईआ। गुर चरन दुआर वखाए एका हट्ट, चौदां लोक रहे शर्माईआ। सर सरोवर एका तट, अठसठ लेखा रिहा मुकाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती राह तक्कण नट्ठ नट्ठ, हरि दरस नैण बिगसाईआ। जन भगतां अमृत आत्म देवे झट्ट, आप आपणी सेव कमाईआ। दूई द्वैती मेटे फट, एका रंग रंगाईआ। जोत जगाए लट लट, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। तन पहनाए साचा पट, शब्द दोशाला हथ्थ उठाईआ। झूठी मैल देवे कट्ट, त्रैगुण माया अग्नी लम्बू लाईआ। हरि का नाम बीजे साचे

वत, गुरसिख फुल फलवाड़ी आप महिकाईआ। लेखा जाणे अठ्ठ तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध नौं दर खोजे सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे दर, दर दरबारा इक्क सुहाईआ। दर दरबार सुहञ्जणा, सोभावन्त सहिज गुणमीत। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजना, सति सुणाए साचा गीत। जो घड़या सो भज्जणा, आदि जुगादी साची रीत। बिन सतिगुर पूरे पर्दा किसे ना कज्जणा, किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीत। शब्द सरूपी हरि हरि गज्जणा, लक्ख चुरासी परखे नीत। काल नगारा चारों कुण्ट नौ खण्ड सत्त दीप लक्ख चुरासी सिर ते वज्जणा, लेखा चुक्के हस्त कीट। राज राजान शाह सुल्तान महल्ल अटल तख्त ताज सभ ने तजणा, झूठी रहे ना जगत प्रीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, घर सच्चा इक्क अनडीठ। अनडिठ धाम हरि सुहंदड़ा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सूरज चन्द ना कोए चढ़ँदड़ा, मंडल मंडप ना कोए वखाईआ। ज़िमी अस्मान ना कोए सुहंदड़ा, गगन मंडल ना वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना खेल करंदड़ा, त्रैगुण ना करे कुड़माईआ। समुंद सागर ना डूँग्घी धार ना कोए वहंदड़ा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना डेरा कोए वखाईआ। लक्ख चुरासी ना मेल मिलंदड़ा, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड ना वण्ड वण्डाईआ। साध सन्त ना कोई रसना जेहवा जाप करंदड़ा, भगत भगवन्त बत्ती दन्द ना कोए गाईआ। मुल्ला शेख मुसायक पीर दस्तगीर कोए ना नाउँ रखंदड़ा, कलमा नबी ना कोए पढ़ाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार सचखण्ड निवासी साचा धाम सुहंदड़ा, जगे जोत अगम्म अपार। साचा डंक शब्द वजंदड़ा, आपणा खेल करे करतार। जुग जुग हरिभगतां मेल मिलंदड़ा, निरगुण सरगुण लै अवतार। कलिजुग अन्तिम खेल खलंदड़ा, बेड़ा डोबे विच मंजधार। सतिजुग साचा राह चलंदड़ा, चार वरनां इक्क प्यार। ऊँच नीच ना कोए रखंदड़ा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रूप सच्ची सरकार। ग़रीब निमाणे आप उठंदड़ा, शाह सुल्तानां तोड़ हँकार। सच निशाना आप झुलंदड़ा, दो जहानां एका धार। नौं खण्ड पृथ्मी वेख वखंदड़ा, नौ नौ लेखा गिणे जुग चार। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग मुख छुपंदड़ा, अन्त भगवन्त प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर बली अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी वसे एका घर, दर घर हरि नर, आपणा आप सुहांयदा। गुरमुखां चुक्के जगत डर, भय भयानक ना कोए वखांयदा। करनी करता किरपा कर, क्रिया कर्म मेट मिटांयदा। सच भण्डारा नाम भर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रोग सोग चिंता दुःख जाए हर, हरि की पौड़ी आप चढ़ांयदा।

✳ ४ फग्गण २०१६ बिक्रमी नाथेवाल बूड़ सिंघ दे घर ज़िला फिरोज़ पुर ✳

सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। हरिजन वेखे मार ध्यान, जुग करता वेस वटाईआ। मेल मिलावा दो जहान, लोकमात करे कुड़माईआ। शब्द सरूपी सति ज्ञान, आत्म अन्तर ब्रह्म जणाईआ। रसना जेहवा पीण खाण, हरि शब्दी तृप्त कराईआ। दर घर साचा कर परवान, घर मन्दिर सोभा पाईआ। सति सतिवादी इक्क निशान, निरगुण सरगुण दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। सतिगुर पूरा सर्ब गुणवन्त, हरि पुरख निरँजण भेव ना राईआ। महिमा जाणे आदि अन्त, जुगा जुगन्तर खेल खलाईआ। लेखा जाणे साध सन्त, लक्ख चुरासी रूप समाईआ। नगर खेड़ा धाम सुहाए इक्क भगवन्त, महल्ल अटल मुनारा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाईआ। सतिगुर पूरा हरि निरँकार, सगला संग रखांयदा। भगतन मीता हो उज्यार, लोकमात वेस वटांयदा। घट घट अंदर पावे सार, साकत निन्दक दुष्ट वेख वखांयदा। भगती दाता नाम भण्डार, भगवन भगतन झोली पांयदा। चरन चरनामत ठंडी ठार, भर प्याला जाम प्यांअदा। आत्म ताकी खोल्ह किवाड़, साची झाकी आप वखांयदा। साचा साकी परवरदिगार, निझर नामा मुख सलांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी साचा घर, हरि साचा आप सुहांयदा। सचखण्ड निवासी सिफ्त सलाह, सतिगुर साचा खेल खिलांयदा। निरगुण अंदर निरगुण बण मलाह, आपणी वस्त वण्ड वण्डांयदा। आत्म ब्रह्म रूप वटा, पारब्रह्म खेल खिलांयदा। पंज तत्त काया दए टिका, दीपक जोती आप जगांयदा। आपणी धारा आप समा, आपे वेख वखांयदा। राग अनादी आपे गा, गीत गोबिन्द आप अल्हांयदा। पवण स्वासी आप चला, पवण पवणी नाम रखांयदा। त्रैगुण मेला सहिज सुभा, त्रै त्रै लेख लिखांयदा। विष्न सेवा रिहा कमा, ब्रह्मा आपणा रंग रंगांयदा। शंकर अन्तिम लावे ढाह, खेड़ा कोए रहिण ना पांयदा। जो उपजे सो लए समा, आप आपणे दर वसांयदा। आपे बाहर लए कढा, आप आपणा वेस वटांयदा। रक्त बूंद वेख वखा, पंज तत्त नाता जोड़ जुड़ांयदा। हड्ड मास नाड़ी रत मेल मिलावा सहिज सुभा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड वेखे साचा घर, घर साचा सच सलांहयदा। घर साचा हरि उपजाया, निरगुण रूप अपार। नेहकर्मी कर्म कमाया, कागद कलम ना पावे सार। ब्रह्मा विष्न शिव रहे कुरलाया, कवण रूप खेल करे करतार। लक्ख चुरासी अंग समाया, अंदर वड़या डूँग्घी गार। रूप रेख ना कोए वखाया, नज़र आए ना विच संसार। आपणा भेव आप खुल्हाया, जिस जन बख्शे चरन प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे लिखणहार। लेखा

लिखणहार गोपाला, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। भगतन दस्से राह सुखाला, हरि पुरख निरँजण सहिज सुभाईआ। आपे चले अवल्लड़ी चाला, एकँकारा भेव ना राईआ। मेल मिलावा पंज तत्त माटी काया खाला, आदि निरँजण जोत रुशनाईआ। दीपक जोती आपे बाला, जोत निरँजण डगमगाईआ। श्री भगवान वसे धर्म सच्ची धर्मसाला, आप आपणा बंक खुलाईआ। अबिनाशी करता गल पाए माला, आप आपणा शब्द अलाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल निराला, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेख वखाईआ। लोकमात हरि वसंदड़ा, परम पुरख करतार। काया माटी वेख वखंदड़ा, पंज तत्त रूप आकार। आपणा मन्दिर आप सुहंदड़ा, आपे होए घड़न भन्नणहार। आप आपणी जोत जगंदड़ा, मेट मिटाए अन्ध अँध्यार। आप आपणा गीत सुनंदड़ा, गावणहारा गाए आपणी वार। दर घर साचा इक्क वखंदड़ा, महल्ल अटल उच्च मुनार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप उपाए आपणी धार। साची धार हरि भगवान, आपणी आप उपजाईआ। हरिभगतन वेखे मार ध्यान, जुग करता वड वड्याईआ। सति सतिवादी निगहबान, सति पुरख निरँजण आप अख्वाईआ। गुरमुखां देवे साचा दान, साची वस्त नाम झोली पाईआ। पूरन करनहारा काम, इच्छया भिच्छया विच टिकाईआ। एथे ओथे रक्खे माण, शाह सुल्ताना वड वड्याईआ। एका बख्शे चरन ध्यान, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। जूठ झूठ मिटे निशान, सच सुच करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा काया सच मकान। काया मन्दिर सच मकान, हरि हरि आपणा बंक सुहांयदा। आदि जुगादी धुर फ़रमान, धुन आत्मक आप अलांयदा। सचखण्ड निवासी सच ज्ञान, बोध अगाध आप जणांयदा। अमृत आत्म पीण खाण, जगत तृष्ना भुख मिटांयदा। शब्द अनादी एका गान, राग रागां आप अलांयदा। कोटन कोटि प्रकाश कर कर भान, भावी चरनां हेठ दबांयदा। भगवन रूप दो जहान, भगवत आपणा खेल खलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लेख लिखांयदा। हरिजन लेखा धुर दरबार, घर मन्दिर बैठ लिखाईआ। आपे लेखा लए विचार, आप आपणा भेव खुलाईआ। लोकमाती लै अवतार, साचा साकी वेख वखाईआ। लहिणा देण चुकाए बाकी आप निरँकार, आप आपणी वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गृह मन्दिर फेरा पाईआ। गृह मन्दिर हरि सुहाया, पंज तत्त काया महल्ल मुनार। पुरख अबिनाशी डेरा लाया, दिस ना आए विच संसार। साची सेजा आप सुहाया, आपे करया बन्द किवाड़। आप आपणा मेल मिलाया, आपे सुत्ता पैर पसार। आपे आलस निन्दरा दए गंवाया, आपे नैण मुँधारी करे खेल बेऐब परवरदिगार। आपे हरिजन लए उठाया, देवे दरस अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख वखाया।

गुरमुख सज्जण तेरी वण्ड, सो पुरख निरँजण आप वण्डाईआ। हरि पुरख निरँजण पल्ले बन्ने एका गंढु, साची वस्त झोली पाईआ। एकँकारा वेख ब्रह्मण्ड, आप आपणा नैण उठाईआ। आदि निरँजण वेखे चन्द, रवि ससि मुख शर्माईआ। श्री भगवान साचा छन्द, आपणा आप अलाईआ। अबिनाशी करता परमानंद, बैठा आसण लाईआ। पारब्रह्म हो बख्शंद, ब्रह्म मेले सहिज सुभाईआ। गुरमुखां मिटाए दूई द्वैती कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। मेट मिटाए अन्धेरा अन्ध, अज्ञान रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। लेखा जाणे बेपरवाह, निरगुण रूप अख्वाया। सरगुण बण विच मलाह, सतिगुर आपणा नाउँ धराया। जन भगतां देवे सच सलाह, सन्त सुहेला भेव ना राया। गुरमुख अंग लए लगा, गुरसिख आपणी गोद बिठाया। साची वस्त झोली देवे पा, ब्रह्मा विष्न शिव नाल रलाया। करोड़ तेतीस फूलन बरखा रहे ला, घर साचा आप वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाया। मेल मिलावा सच दर, हरि सतिगुर आप करांयदा। गुरमुखां अंदर आप वड़, आप आपणा पर्दा लांहयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, हरिजन साचे मात पढ़ांयदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे खड़्, लोकमात गुरमुखां राह तकांयदा। लक्ख चुरासी भाण्डा घड़, घट आपणी वस्त टिकांयदा। गुरसिख फड़ाए आपणा लड़, दूसर हथ्थ किसे ना आंयदा। सच सिँघासण उप्पर चढ़, शाहो भूप सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वस्त रखांयदा। वस्त अमोलक काया गोलक, हरि साचे सच टिकाईआ। गीत गाए सहिज धुन राए शब्द वजाए साची ढोलक, ताल तलवाड़ा नाल रखाईआ। आपणा राग आपे बोलत, रसना जेहवा ना कोए हलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा वड वड्याईआ। वड वडियाई वड दाता मीत, गुरमुखां आप वड्यांअदा। सति पुरख निरँजण सदा अतीत, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। आपे वसणहारा चीत, चात्रिक तृखा आप बुझांयदा। आप चलाए आपणी रीत, आपणा मार्ग आप वखांयदा। आपे करे पतित पुनीत, पतित पावन आपणा नाउँ रखांयदा। हरिजन काया करे ठांडी सीत, सांतक सति सति वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर लेख लिखांयदा। गृह मन्दिर लेखा साचे घर, हरि सतिगुर आप कराईआ। आपे देवणहारा वर, आपे पूर कराईआ। आप चुकाए आपणा डर, आपे लेखा दए समझाईआ। आपे किरपा देवे कर, मेहरवान बेपरवाहीआ। आपे खाली भण्डारे देवे भर, देंदयां तोट ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी करपा कर, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी आपे वाली, सो पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा। दो जहाना आपे पाली, प्रितपालक सेव कमांयदा। आपे करे सच दलाली, वणज वणजारा दिस ना आंयदा।

आपे लक्ख चुरासी वेखे पत डाली, फल फुल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। आपे बाल बिरध आपे नौजवानी, आपे आदि अन्त मुख छुपांयदा। आपे बख्शे पद निरबाणी, परम पुरख मेल मिलांयदा। आपे होए जीव नादानी, जीवण जुगत मुक्त ना कोए करांयदा। आपे वस आलमे जावदानी, ख़लक ख़ालक रूप वटांयदा। आपे होए लासानी, लाशरीक नाउँ धरांयदा। आपे देवे जन भगतां नाम निशानी, लोकमात सोभा पांयदा। आपे बख्शे अमृत आत्म, ठंडा पाणी भर प्याला जाम प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा बूटा आप लगांयदा। साचा बूटा आत्म जड़, परम पुरख आप लगांयदा। सति पुरख निरँजण आपणी हथ्थी फड़, काया मन्दिर आप टिकांयदा। प्रितपाल करे सीस धड़, तत्व तत्त संग निभांयदा। जोत सरूपी अंदर वड़, आप आपणा बिरद रखांयदा। पवण स्वासी अंदर कर, आपे रस चखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। अमृत रस निझर धार, निज घर साचा आप वहाईआ। उलटा रुख कर त्यार, आपणा बूटा आपे लाईआ। आपे पाणी देवे सिंच क्यार, आपे सेव कमाईआ। आपे राजक रहीम करे प्यार, आपणी रोजी दए पुचाईआ। आपे करे कराए सदा प्रितपाल, मात पित भेव ना राईआ। आपे वेखे आपणा लाल, लाल गुलाला गोद सुहाईआ। आपे दीपक देवे बाल, जोती नूर कर रुशनाईआ। आपे सांचे देवे ढाल, आप आपणी किरत कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे लेखा दए बुझाईआ। आपे लेखा लिखणहार, एका एकँकार अख्वाया। आपे कुदरत कर प्यार, रक्त बूंद मेल मिलाया। आपे तीजा खोल्ह किवाड़, पंज तत्त वेखे सहिज सुभाया। आपे चौथे अग्नी देवे डार, साची भठ्ठी आप बणाया। आपे पंचम सहिज सुख धार, अमृत आपणा दए छिड़काया। आपे छेवें खबरदार, अंगी अंग लए लटकाया। आपे सत्तवें सति पुरख निरँजण करे प्यार, आपणी रास विच रखाया। आपे अठ्ठां तत्तां बन्न्हे धार, मन मति बुध दए सलाहया। आपे नावें होए खबरदार, आपणी बूझ दए बुझाया। आपे दसवें फल लाए करतार, आपणा मेवा वेख वखाया। आपे दिवस रैण करे गुफ्तार, आप आपणी बूझ बुझाया। आपे बणया रहे शीर ख़ार, आप आपणा रस चवाया। आपे दोए जोड़ करे निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाया। आपे मंगे दर कर प्यार, नेत्र लोचन दरसन इक्क रघराया। आपे किरपा करे अपार, हुक्मी हुक्म आप सुणाया। आपे अंदर आपे बाहर, आपे देवे गोद सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। रंग रंतड़ा हरि भगवन्त, दस दस वज्जे वधाईआ। गृह मन्दिर नाता साचे कन्त, बाहर वेखे जगत लुकाईआ। घर मेला रसना जेहवा मणीआ मंत, दर वासना वासना विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाईआ। उपजे सुत सुत दुलारा, लक्ख चुरासी आप उपजांयदा।

भगतन खेल करे करतारा, आप आपणा भेव खुलांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म दए सहारा, ब्रह्म विद्या ब्रह्म पढ़ांयदा। आसा तृष्ना जगत दुआरा, निमस्कारा सीस करांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार कर ख्वारा, दर दर धक्का लांयदा। आत्म दरसी दरस अपारा, दासन दासी आप वखांयदा। निझर मेघ अमृत धारा, अमृत झिरना आप झिरांयदा। साचा शब्द सच जैकारा, सो पुरख निरँजण आप सुणांयदा। हँ ब्रह्म दए आधारा, सोहँ रूप आप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन लेखा बह समझांयदा। बह लेखा हरि समझावना, सतिगुर पूरा वड मेहरवान। लोकमात निशान झुलावना, दर घर साचे देवे दान। पूर्ब लहिणा झोली पावणा, इक्की जन्म होए प्रधान। मात गर्भ फेर ला आवना, पिता पूत ना कोए पछाण। काया बंक ना वेख वखावना, पंज तत्त ना कोए मकान। एका गोबिन्द गीत गावना, रसना गाए श्री भगवान। लिख्या लेख ना किसे मिटावना, दो जहान होए हैरान। निहकलंक नरायण नर हरि इक्क अख्वावना, जोत सरूपी जोत महान। गुरसिख आपणे घर बहावना, सचखण्ड दुआर कर प्रधान। लोकमात आप वडियावना, एका बख्शे सच ज्ञान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन बणाए चतुर सुजान। चतुर सुजान गुरमुख सज्जण, बिरध बाल ना कोए जणाईआ। सतिगुर पूरा पर्दे कज्जण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। नाम निधाना नेत्र पाए अञ्जण, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। धूढ़ी मस्तक टिक्का लाए चन्दन, चरन सरोवर आप नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूत सपूता पित मात देवणहार सच वड्याईआ। देवणहार गहर गुण सागर, सर्ब सुखां सुख दाता। निर्मल कर्म करे उजागर, मेटे रैण अन्धेरी राता। साचा वणज कराए सच सौदागर, हरिजन मेटे अन्धेरी राता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे साचा वर, आपे जोत जोत में जाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हो मेहरवान, चरन कँवल कँवल चरन बंधाए सच्चा नाता।

❋ ५ फग्गण २०१६ बिक्रमी सदागर सिँघ दे घर नाथेवाल ज़िला फीरोज़पुर ❋

सतिगुर पूरा हरि सुल्तान, नर हरि नरायण आप अख्वांयदा। सचखण्ड निवासी खेल महान, सति पुरख निरँजण आप खिलांयदा। अलक्ख अगोचर श्री भगवान, अगम्म अथाह बेपरवाह, भेव कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकार, आदि जुगादी कर पसार, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवन्त, जूनी रहित वड्डी वड्याईआ। हरिजन तारे साचे सन्त, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। वेखणहारा जीव जंत, चारे

खाणी फोल फुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ महिमा अगणत, वेद कतेब भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल खेल खिलाईआ। पुरख अकाल हरि समरथ, एका एक एक अख्वांयदा। आप चलाए आपणा रथ, जुग जुग वेस वटांयदा। पुरख अबिनाशी महिमा अकथ, कथनी कथ ना कोए सुणांयदा। जन भगतां देवे साची वथ, साची वस्त झोली पांयदा। जगत विकारा देवे मथ, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, एका घर सुहांयदा। थिर घर वसे सच मकान, महल्ल अटल आप उपांयदा। सति सरूपी इक्क ज्ञान, आपणा नाम जणांयदा। आत्म अन्तर वेखे मार ध्यान, दिस किसे ना आंयदा। लक्ख चुरासी साचा काहन, घर मंडल रास रचांयदा। करे प्रकाश कोटन भान, रवि ससि मुख शर्मांयदा। धुन अनादि सच्ची धुनकान, अनहद सेवा सेव कमांयदा। गुरमुख विरला चतुर सुजान, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। एका बख्शे चरन ध्यान, चातृक तृखा बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा वेख वखांयदा। सतिगुर साचा नर हरि नरायण, दूसर अवर ना कोए। गुरमुख वेखे आपणे नैण, आप आपणे जेहा होए। लक्ख चुरासी जीव जंत रसना सारे कहिण, घर मिले ना किसे ढोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर खेले खेल त्रै त्रै लोए। त्रै त्रलोक पुरख अकाला, आपणी कल वरतांयदा। दीना बंधप दीन दयाला, आप आपणा वेस वटांयदा। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, थिर घर आपणा आसण लांयदा। आपे शाह आपे कंगाला, सच ख़ज़ाना आप वरतांयदा। आपे तोड़नहारा जगत जंजाला, जागरत जोत आप जगांयदा। आपे करे कराए सदा प्रितपाला, जुग जुग आपणी सेव कमांयदा। आपे फल लगाए डाला, पत डाली वेख वखांयदा। आपे शब्द सरूपी बण दलाला, लोकमात वेस वटांयदा। जन भगतां दस्से राह सुखाला, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा इक्क अख्वांयदा। सतिगुर पूरा हरि गोबिन्द, एका रंग समाया। जन भगतां मेटे सगली चिन्द, चिंता सोग रहे ना राया। सतिगुर पूरा गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर आप अख्वाया। गुरसिख उपजाए आपणी बिन्द, आप आपणी गोद उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग एका वेस, दर दरवेश अलक्ख निरँजण आप कराया। अलक्ख निरँजण अगम्म अथाह, बेअन्त भेव ना आंयदा। जुग जुग बणे मात मलाह, हरि सन्तन राह वखांयदा। सति सरूपी एका नाँ, गुर शब्दी नाउँ दृढ़ांयदा। निथाव्यां देवे साचा थाँ, ग़रीब निमाणीआ गले लगांयदा। आपे पिता आपे माँ, सुत दुलारा वेख वखांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, माणक मोती एका नाम चोग चुगांयदा। भव सागर पार कराए फड़ फड़

बांह, सतिगुर पूरा सेव कमांयदा। दो जहानी करे सच न्याँ, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। सतिगुर पूरा साख्यात, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। जन भगतां देवे साची दात, नाम वस्त झोली पांयदा। निज नेत्र दरस वड करामात, आप आपणा नैण खुलांयदा। मेटे रैण अन्धेरी रात, घर घर विच दीपक आप जगांयदा। बन्द किवाड़ खोल्ह ताक, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। पंच विकारा करे ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक मिलांयदा। शब्द घोड़ा साचा राक, गुरमुख साचे आप वखांयदा। हरिजन चढ़े मार पलाक, लोआं पुरीआं पार करांयदा। सचखण्ड दुआर वखाए खोल्हे ताक, महल्ल अटल आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा हरि भगवन्त, हरिजन मेला नारी कन्त, आत्म साची सेज सुहांयदा। आत्म सेज सुहञ्जणा, हरि सतिगुर वड मेहरवान। जन भगतां चरन धूढ़ कराए साचा मजना, आत्म अन्तर देवे ब्रह्म ज्ञान। नेत्र नैण पाए एका कज्जला, जगत लोचण नैण शर्मान। मेल मिलाए साचे सज्जणा, घर मन्दिर श्री भगवान। जो घड़या सो भज्जणा, थिर दिसे ना कोए निशान। काल नगारा सिर ते वज्जणा, चारों कुंट होए हैरान। पंज तत्त मकान सभ ने तजणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन साचे लए पछाण। हरिजन सच्चा पेख्या, पेखणहार करतार। आपे लिख्या लेखया, लेखा जाणे ना वेद चार। नर हरि नरायण धारे भेख्या, लोकमात लै अवतार। आपे मुछ दाढ़ी रखाए केसया, मूंड मूंडाए सिरजणहार। आपे होए दस दस्मेशया, आपे नानक निरगुण धार। आपे गुरू ग्रन्थ उपदेसया, गुर मन्त्र शब्द जैकार। आपे खेले खेल नर नरेसया, आपे राम कृष्न अवतार। आपे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश्या, आपे त्रैगुण माया भरे भण्डार। आपे सचखण्ड दुआर करे प्रवेशया, निरगुण नूर अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल विच संसार। वड संसारी हरि निरँकार, धरत धवल वेख वखाईआ। चौदां लोकां खोल्ह किवाड़, हाटी हट करे रुशनाईआ। पुरख अगम्मा भर भण्डार, त्रै भवण आप विकाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां दए आधार, लोआं पुरीआं खेल खलाईआ। ज़िमी अस्मानां एका धार, शाह सुल्तानां आप बंधाईआ। रवि ससि मेल सतार, मंडल मंडप आप वड्याईआ। पवणी पवण दए हुलार, रूप अनूप बेपरवाहीआ। आपे वसे धाम न्यार, नेहचल बैठा डेरा लाईआ। घर विच घर कर त्यार, घर बैठा जोत जगाईआ। घर मन्दिर सोहे बंक दुआर, घर आपणा ताल सुणाईआ। घर अनहद धुन सच्ची धुन्कार, आप आपणा नाद वजाईआ। घर सखीआ मंगलाचार, गीत गोबिन्द सालाहीआ। घर अमृत ठंडी ठार, हरि मन्दिर आप भराईआ। घर मेला कन्त भतार, घर बैठा सहिज सुखदाईआ। घर करे सच प्यार, हरि सतिगुर नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

हरिजन मेले थाउँ थाँईआ। हरिजन हरि हरि मेलया, कर किरपा करतार। घर साचे सोहे गुरू गुर चेलया, गुर गोबिन्द मीत मुरार। घर वसे धाम नवेलया, छप्पर छन्न ना कोए पसार। घर पाया सज्जण सुहेलया, विछड़या संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन हरि हरि जाणया, एका रंग करतारा। दर घर साचे एका माणया, मिल्या मेल मीत मुरारा। चले चलाए साचे भाणया, हरि भाणा कर प्यारा। रसना गावे साचा गाणया, हरि हरि साचा नाउँ उच्चारा। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञानया, सतिगुर पूरा भरे भण्डारा। दरगाह साची देवे माणया, आप वखाए इक्क दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात मार झात, हरिजन मेल मिलाए कमलापात, पति पतिवन्ता खेल न्यारा। पति पतिवन्ता हरि मीतड़ा, परम पुरख करतार। गुरसिख काया चोली रंगे, चीथड़ा चाढ़े रंग अपर अपार। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, काया मन्दिर सच दुआर। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, मेट मिटाए काम क्रोध लोभ मोह हँकार। अमृत बख्शे ठांडा सीतड़ा, सति सति वरते वरतार। करे कराए पतित पुनीतड़ा, पतित पापी जावे तार। जुग जुग चले चलाए आपणी रीतड़ा, लक्ख चुरासी ना पाए सार। साचा मन्दिर देहुरा गुरूदुआर मसीतड़ा, जिस मिल्या हरि निरँकार। गुरसिख गाए सुहागी गीतड़ा, अजपा जाप अपर अपार। हरि भाणा लग्गे मीठड़ा, निउँ निउँ ढह ढह करे सरन निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगतां करे उधार। भगतन हरि रंग रच्छया, राम रंग चलूल। आपे दे समझावे मतया, पुरख अबिनाशी कंत कन्तूल। बीज बीजे साचे वतया, आत्म अन्तर उपजाए साचा फूल। आपे बख्शे साची सतया, चरन कँवला बख्शे धूल। हरिजन जाणे मित गतया, गति मित ना जाए भूल। गुरमुख विरले लाहा खट्टया, गुर शब्द पंघूड़ा ल्या झूल। कलिजुग खेल बाज़ीगर नटया, सृष्ट सबाई रही भूल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां करनहारा सूलीउँ सूल। गुरसिख तेरा बन्धन कट्ट, गुर सतिगुर दया कमांयदा। दूई द्वैती मेटे फट, नाम पटी इक्क बंधांयदा। अमृत आत्म साचा झट, जगत तृष्ना भुक्ख बुझांयदा। दुरमति मैल देवे कट्ट, निर्मल निर्मल आप समांयदा। वसणहारा घट घट, हर घट आपे सोभा पांयदा। निरगुण सरगुण हो प्रगट, परम पुरख वेस वटांयदा। जोत उजाला लट लट, नूर नूराना डगमगांयदा। शब्द अगम्मी मारे सट, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, घर साचे मेल मिलांयदा। वर घर हरि नर साचा पाउणा, गुर सतिगुर मेल मिलन्नया। दु:ख दलिद्र डेरा ढाउणा, पवण पवणी देवे डन्नया। एका मार्ग साचे लाउणा, पुरख अकाल श्री भगवन्नया। पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाउणा, रूप अनूप इक्क वखन्नया। निरगुण साचा चन्न चढ़ाउणा, सरगुण

कहे धन्न धन्न धन्न धन्नया। चात्रिक तृखा आप बुझाउणा, आत्म जाम प्याए अमृत हरि हरि भिन्नया। कागो हँस आप बनाउणा, साची चोग मुख वखन्नया। जम का जेड़ा आप कटाउणा, राए धर्म ना देवे डन्नया। चित्रगुप्त दा लेख चुकाउणा, लाड़ी मौत मुख शर्मनया। गुरमुख आपणी गोद बहाउणा, सिर आपणा हथ्थ धरन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे आपणा वर, आपे लाए बेड़ा बन्नया। बेड़ा बन्ने देवे ला, हरि शब्द वड्डी वडियाईआ। सतिगुर शब्द जगत मलाह, गुरमुख सज्जण ल्ए तराईआ। निरगुण जपाए आपणा नाँ, सरगुण निरगुण विच समाईआ। होए सहाई सभना थाँ, थान थनंतर वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ पकड़े बांह, जो जन मंगे सच सरनाईआ। नानक गोबिन्द मेला एका थाँ, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकास वेख वखा, सति नाम नाम निरबाण एका बाण लगाईआ। भूत प्रेत पसू चक्र ना रहे किसे थाँ, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। हाकनी डाकनी सीस दए मुंडा, बीर अठारां रहे कुरलाईआ। चण्ड प्रचण्डका इक्क चमका, आप आपणी वण्ड वण्डाईआ। गुरसिख गुरमुख दर घर साचे दए बहा, घर मन्दिर आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत चुकाए झूठा डर, नाम नामा होए सहाईआ।

❊ ५ फग्गण २०१६ बिक्रमी नाथेवाल ❊

घर ठाकर अबिनाश्या, घर सगल मनोरथ पुन्न। घर मंडल पावे रासया, घर उपजे शब्दी धुन। घर खेल पृथ्मी आकाशया, घर गगन मंडल मंडप सुन्न। घर मेला पवण स्वास्या, घर लेखा गुण अवगुण। घर भोग रस बलास्या, घर पुकार रिहा सुण। घर रक्खे हरि जू वास्या, गुरमुख सज्जण चुण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी छाण पुण। घर सुल्तान सुहञ्जणा, शाहो भूप सिक्दार। घर मेहरवान निरँजणा, जोत नूर उज्यार। घर सतिगुर साचा सज्जणा, करे खेल अपार। घर ताल तलवाड़ा वज्जणा, घर शब्द नाद धुन्कार। घर सतिगुर चरन दुआरे बह बह सजणा, घर अमृत भरे भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे एका वार। घर धरनी धरत दुआरका, घर धौल धर्म दया का पूत। घर करे कराए आरती आरता, घर मेला कन्त कन्तूहल। घर वेस पुरख नार दा, नर नरायण चुकाए मूल। घर खेल बेऐब परवरदिगार दा, घर बरखणहारा फूल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा मूल। घर मेला कन्त सुहागया, घर सोभावन्ती नार। घर कन्त भतारा जागया, घर सोहे बंक दुआर। घर वज्जे अनहद वाजया, घर सुणे सुणाए सुनणेहार। घर आवे जावे फिरे भागया, अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर। घर हँस बणाए कागया, आप उडाए आपणी डार। घर बह बह मारे वाजया, आलस निन्दरा पार किनार। घर चढ़े साचे

२१७
०६

ताजया, अश्व घोड़ा शब्द श्रंगार। घर खेल ग़रीब निवाजया, गुरमुख सज्जण लए उभार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पावणहारा साची सार। घर वणज सच वणजारड़ा, घर परखणहारा लाल। घर बैठ मीत मुरारड़ा, आप आपणे रिहा भाल। घर करे पार किनारड़ा, घर माणक मोती दए उछाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप वजाए आपणा ताल। घर वणजारा सच सौदागर, घर साचा दर खुलांयदा। घर वेखणहारा काया गागर, महल्ल मुनारा आप उपांयदा। घर नेहकर्मी करे कर्म उजागर, आप आपणी दया कमांयदा। घर करे कराए साचा आदर, आदि जुगादी वेस वटांयदा। घर मेला करता कादर, रहीम रहिमान रहिमत आपणे हथ्थ वखांयदा। घर करे खेल पिदर मादर, मोहन माधव रूप वटांयदा। घर राग सुणाए आपणा दादर, दरोही खुदाए इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच ताड़ी लांयदा। घर ताड़ी हरि भगवन्त, घर नदरी नदर निहालया। घर वाड़ी मंगे सन्त, दर आए बण सवालीआ। दर ख़ारी चुक्के कन्त, फुल्ल फूलण आप उठा ल्या। घर वेखे रुत बसन्त, पत डाल्ही आप महिका ल्या। घर लेखा जीव जंत, श्री भगवन्त आप बुझालया। घर जाणे महिमा अगणत, आप आपणा मुख छुपा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर दीवा बाती इक्क जगा ल्या। घर दीवा बाती कर प्रकाश, घर अन्ध अन्धेर वखांयदा। घर खेल करे सर्ब गुणतास, घर मुखड़ा मुख छुपांयदा। घर आपणा कर कर वास, घर नज़र किसे ना आंयदा। घर वसे आस पास, घर दूर दुराडा पन्ध जणांयदा। घर पूरी करे आस, निरासा निरास सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर एका रंग रंगांयदा। घर रंगे एका रंग, रंगण रंग ना कोए जणाईआ। घर बैठ सूरा सरबंग, सारंगधर आप अख्वाईआ। घर वेख सच पलँघ, सच सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। घर आप लगाए आपणे अंग, अंगीकार बेपरवाहीआ। घर मंगे बण मलंग, रूप अनूप आप वटाईआ। घर सदा रक्खे संग, सगल मनोरथ पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा आप सुहाईआ। घर साचा आप उपाया, निरगुण सरगुण साची धार। घर छप्पर छन्न छुहाया, घर बाडी बण करतार। घर दीपक जोत जगाया, दिवस रैण रहे उज्यार। घर माटी भाण्डा पोच पोचाया, घर बणया हरि घुमिआर। घर चक्की चक्क भवाया, आपे वेखे आपणी वार। घर भाण्डे आप तपाया, त्रैगुण अग्नी देवे डार। घर आपणा मुख खुल्हाया, आपे वेखे चार दीवार। घर आपणी वस्त टिकाया , हरि अमृत भर भण्डार। हरि हरि हरि वेखण आया, घर वेखे सच दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे अगम्म अपार। घर भाण्डा बह साचा घड़, कंचन गढ़ सुहाईआ। सति सरूपी अंदर वड़, आपणी वस्त विच

टिकाईआ। आपे मुख बन्द कर, आपे दए खुल्हाईआ। आपे पवण स्वास धर, आपे शब्द जणाईआ। आपे अमृत देवे सर, आपे मुख रस रसाईआ। आपे नारी आपे नर, आप आपणा रूप वटाईआ। आपे आपणी किरपा कर, गुरमुखां एह बुझाईआ। सन्त साजण लाए लड़, घर साचे वज्जे वधाईआ। देवे दरस अग्गे खड़, जगत हरस रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट भाण्डा वेख वखाईआ। घट भाण्डा हरि पेख्या, नेत्र नैण उग्घाड़। आपणे लोचन आपे वेख्या, आपणे हथ्थ लाए टनकार। आपे कीमत पाए नर नरेश्या, आपे वणज करे वपार। आपे सच सौदागर फिरे देस प्रदेसया, गुरमुख सज्जण ल्ए भाल। बाल जवानी बिरध ना कोए वरेसया, एका रंग रवे करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे करे प्यार। हरिजन भाण्डा नाम अनमुल्ल, लक्ख चुरासी कीमत कोए ना पाईआ। त्रैगुण माया कंडे ना सके तुल, चौदां लोक ना कोए तुलाईआ। ख़रीद ना सके कोई मुल्ल, बिन सतिगुर पूरे हथ्थ कोए ना पाईआ। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणा मुल्ल, आपे लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरसिख काया काया मट, करता कीमत आपे पांयदा। चरन दुआरा साचा हट्ट, लोकमात आप खुलांयदा। आपे वेखे नट्ठ नट्ठ, दिवस रैण पन्ध मुकांयदा। आप तपाया आपणे भट्ठ, भट्ठ भठयाला ना कोए रखांयदा। आपणी खोल्ह्रे बद्धी गट्ठ, आपणा पल्लू अग्गे डांहयदा। वसणहारा घट घट, हरिजन साचे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहिणा आप चुकांयदा। गुरमुख काया कीमत हरि हरि पा, आपणा लेखा दए चुकाईआ। आप आपणा गुरसिखां उत्तों घोल घुमा, घोली घोल सेव कमाईआ। चार जुग दी बोली दए विआह, पूर्ब लहिणा दए मुकाईआ। काया चोली दए रंगा, सच चोलड़ा वेख वखाईआ। नाम मौली तन्द बंधा, साची मैहन्दी रंग रंगाईआ। एका वटणा दए लगा, आपणी हथ्थीं तन छुहाईआ। साचे खारे दए चढ़ा, आप आपणा मंगल गाईआ। सीस सेहरा दए सजा, सोलां कलीआं आप लटकाईआ। शब्द घोड़ी आप बहा, जोत निरँजण वाग रहे गुंदाईआ। साचा नेत्र कजला पा, साचा सगन वखाईआ। गुरसिख जांञी नाल रला, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। दरगाह साची ढुके जा, नाम मृदंग सच सारंग एका राग अल्हाईआ। सचखण्ड दुआरे डेरा ला, आप आपणा थान सुहाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, अग्गों आवे चाँईं चाँईंआ। आपणा मेला ल्ए मिला, घर साचे वज्जे वधाईआ। धी जवाई नां रखा, एका सेज सुहाईआ। गुरसिख गुरमुख मेल मिलावा करे साचे थाँ, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सगला संग सदा सद रखाईआ।

✻ ५ फग्गण सम्मत २०१६ बिक्रमी पिण्ड समालसर हाकम सिँघ दे घर जिला फीरोजपुर ✻

गुरमुख गुर सज्जण पाया, हरि मिली सच सरनाईआ। सगल मनोरथ इछ पुन सहिज सुखदाया, दर घर साचे मेल मिलाईआ। रत्न अमोलक हीरा नाम वड्याआ, लोकमात वज्जे वधाईआ। सच सलोक मन्त्र नाम दृढ़ाया, दिब दृष्ट आप खुलाईआ। चिंता हरख सोग मिटाया, सांतक सति सति वखाईआ। जगत विकारा नेड़ ना आया, निरगुण सरगुण बूझ बुझाईआ। पंज तत्त काया खेल खिलाया, त्रैगुण मेला बन्धन पाईआ। आपणा दीपक आप जगाया, घर साचे आप टिकाईआ। आपे अन्तिम लए बुझाया, आप आपणे विच समाईआ। जगत नेत्र दिस ना आया, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी हरिजन हिस्सा आप वण्डाया, हरि मन्दिर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म पारब्रह्म सरनाईआ। सच सरनाई सतिगुर मीत, सगला रोग विनासया। एकँकारा वसया चीत, घर मेला शाहो शाबासया। काया मन्दिर ठंडा सीत, निरगुण नूर दीप प्रकासया। रसना गाए सुहागी गीत, गोपी काहन पावे रासया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे खेले खेल तमाश्या। सच सरनाई हरि निरँकार, सगला सुख उपजाईआ। नाता तोड़ जगत संसार, घर साचे मेल मिलाईआ। मेल मिलावा मीत मुरार, घर मिल्या सज्जण बेपरवाहीआ। आत्म अन्तर इक्क दीदार, आप आपणी दींद दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लेखा लेख लिखाईआ। हरि सरनाई सरनगत, हरि सतिगुर वेख वखांयदा। नाम बीजे साचे वत, काया खेत वेख वखांयदा। आप लगाए डाली पत, फुल फलवाड़ी आप महिकांयदा। आपे रक्खे दे कर हथ्थ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। सति सरूपी साची वथ, एका ब्रह्म ज्ञान दृढ़ांयदा। गुरमुख सगल विसूरे गए लथ्थ, दर घर साचे दरसन पांयदा। झूठा बुरज गया ढट्ठ, थिर कोए रहिण ना पांयदा। पुरख अबिनाशी मेला नट्ठ नट्ठ, दरगह साची धाम सुहांयदा। लेखा जाणे जिउँ भगत घर दसरथ, राम रामा वेख वखांयदा। हरि हरि महिमा अकथना अकथ, वेद कतेब कोए ना गांयदा। जुग जुग गेड़े आपणी लट्ठ, चारों कुंट फरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शस्त्र धारी वेस वटांयदा। जिउँ रामा मीत भरत भ्राता, हरि सतिगुर वेख वखाईआ। तिउँ सिँघ रूप होए इक्क इकांता, देवे दरस अगम्म अथाहीआ। जन उत्तम रक्खी हरि हरि जाता, जोत जात जगत आप जगाईआ। आप सुणाई आपणी गाथा, हरि मन्दिर अंदर कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाईआ। एका मीत साचा सईया, भईया आपणा नाउँ रखांयदा। इक्क नरायण एका नईया, एका निरगुण रूप चढ़ांयदा। एका गेड़नहारा पहीआ, पीआ प्रीतम वेस धरांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपे खेले खेल खलारी, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। आपे भगतन मेला वड संसारी, लोकमात मेल मिलाईआ। आपे शब्द अनाद बोल जैकारी, साचा राग नाद सुणाईआ। आपे महल्ल अटल ल्ए उसारी, घड़न भन्नणहार आप अख्वाईआ। आपे पंज तत्त मेला त्रैगुण सिक्दारी, आत्म ब्रह्म करे शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, घर साचा इक्क वखाईआ। काया मन्दिर जगत मुनारा, त्रैगुण मेल मिलाया। पंचम मीता खेल न्यारा, इक्क अतीता रिहा कराया। ठांडा सीता एकँकारा निराधारा, निरगुण आपणा नाउँ धराया। हरिजन बख्शे चरन प्यारा, चातृक तृखा दए बुझाया। इक्क वखाए सच दुआरा, सचखण्ड साचा आप सुहाया। जुग जुग जन भगतां करे मात प्यारा, आप आपणी गोद उठाया। देवे दान श्री भगवान, एका रंग रंगे करतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर होए उज्यारा। जोत उजाला हरि गोपाला, गोबिन्द गहर गम्भीरा। गुरमुख वेखे साचा लाला, आपणी चोटी चढ़ अखीरा। दिवस रैण करे प्रितपाला, अमृत बख्शे ठांडा सीरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे सांतक साची धीरा। धीरज धीर सति सन्तोख, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। गुरमुख तेरे कदम चुम्में मुक्ती मोख, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ना कोई हरख ना कोई सोग, चिंता दुःख ना कोए वखाईआ। भरमे भुल्ले भरमी लोक, लोक अग्नी अग्ग लगाईआ। हरिजन गाए सुहागी सलोक, दर घर साचे मेल मिलाईआ। हरि का भाणा ना सके कोई रोक, साध सन्त गुर पीर अवतार बैठे सीस झुकाईआ। प्रभ दरसन को लोचन कोटन कोट, कोटन कोटि राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख साचे ल्ए मिलाईआ। गुरमुख सज्जण मेलया, घर साचे सतिगुर सुजान। आपे होए गुरू गुर चेलया, देवणहारा साचा दान। दो जहानी सज्जण सुहेलया, राम रूप श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे ल्ए पछाण। आपणे आप पछानण आया, धुर दरगाही हरि निरँकारा। जुग जुग विछड़े मेल मिलावन आया, निरगुण रूप विच संसारा। शब्द डोरी बंध बंधावन आया, खेले खेल अगम्म अपारा। जगत नाता तोड़ तुड़ावन आया, जूठा झूठा पार किनारा। साचा मार्ग इक्क सिखावन आया, गुरमुखां करे सच प्यारा। दे मति आप समझावन आया, नेत्र रोवे ना कोए ज़ारो ज़ारा। घर साचे सगन मनावन आया, खिली रहे बसन्त बहारा। गुर शब्दी लड़ फड़ावन आया, आप कराए पार किनारा। चिंता सोग सर्ब मिटावन आया, नाम वजाए सच सितारा। कागों हँस उडावन आया, आप रलाए आपणी डारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे इक्क सहारा। सच सहारा नाम वथ, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। हरि सन्त चढ़ाए आपणे रथ, बेपरवाह

आप चलाईआ। लोआं पुरीआं आपे मथ, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। गुरसिख तेरा कदे ना विछाए सथ्थर सथ्थ, सगले साथी सति समझाईआ। लहिणा देणा चुक्या सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, मात गर्भ फेर ना आईआ। पाया पुरख इक्क अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। अन्तिम मेला जिउँ रामा दसरथ, भरत भावनी विच टिकाईआ। माणस जन्म लाहा खट्ट, आत्म साची खाट हंढाईआ। तन पहनाया शब्द पट, नाम रसालू इक्क रंगाईआ। अन्तिम विक्या साचे हट्ट, करते कीमत साची पाईआ। तन ख़ाक ना रुलया तीर्थ किसे तट, गंगा गोदावरी बैठी मूंह छुपाईआ। जोत ज्वाला लट लट, तेरा राह तकाईआ। अन्तिम उतरया साचे घाट, खेवट खेटा पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा एकँकारा गुरमुख मेला कन्त भतारा, सिँघ हाकम आत्म परमात्म विच समाईआ।

❋ ५ फग्गण २०१६ बिक्रमी पिण्ड माढ़ी नाज़र सिँघ दे घर दया होई जिला फीरोजपुर ❋

सो पुरख निरँजण अगम्म अथाह, आदि अन्त भेव ना राया। हरि पुरख निरँजण बेपरवाह, भेव अभेदा भेव छुपाया। एकँकारा इक्क इकल्ला आपणा नाउँ उपा, आप आपणी रचन रचाया। आदि निरँजन जोत जगा, जोती नूर नूर रुशनाया। अबिनाशी करता वेस वटा, आप आपणा बंक सुहाया। श्री भगवान खेल खिला, खेलणहारा दिस ना आया। पारब्रह्म प्रभ धाम सुहा, आप आपणी अलक्ख जगाया। सचखण्ड दुआरा रचन रचा, थिर घर आपणा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल दिस ना आया। पुरख अकाला हरि बेअन्त, भेव कोए ना पांयदा। खेले खेल आदि अन्त, जुग जुग आपणी धार बंधांयदा। आप बणाए आपणी बणत, महिमा गणत ना कोए गणांयदा। आपे नारी आपे कन्त, हरि साची सेज हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जूनी रहित वेस वटांयदा। जूनी रहित पुरख अगम्म, भेव कोए ना पाईआ। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण खेल खिलाईआ। पवण स्वासी ना कोई दम, तत्व तत्त ना कोए उपाईआ। हड्ड मास नाड़ी ना दीसे चम्म, जननी जन ना कोए कराईआ। ना कोई तृष्ना ना कोई तम, आलस निन्दरा ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा, आप आपणा धाम सुहाईआ। धाम अवल्ला एकँकारा, हरि साचा आप उपांयदा। थिर घर वसे इक्क दुआरा, दर साचे सोभा पांयदा। निर्मल दीप कर उज्यारा, कमलापाती वेख वखांयदा। सच सिँघासण खेल न्यारा, शाहो शाबासन आसण लांयदा। सच सुल्ताना हरि वड सिक्दारा, तख्त ताज इक्क उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर साचा

आप वखांयदा। दर घर साचा हरि सुहञ्जणा, प्रभ आपणा रूप वटाईआ। पारब्रह्म दर्द दुःख भय भञ्जणा, घर साचे सोभा पाईआ। आपे बणया आपणा सज्जणा, सगला संग आप रखाईआ। ना घड़या ना भज्जणा, घड़न भन्नणहार वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। अलक्ख अगोचर दीन दयाला, दया निध नाउँ धरांयदा। वसणहारा सच सची धर्मसाला, सचखण्ड साचे डेरा लांयदा। आपे काल आपे महांकाला, आप आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, आपणी रचना आप रचांयदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। हरि पुरख निरँजण साचा कन्त, घर साचा वेख वखाईआ। एकँकारा महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत इक्क रुशनाईआ। जागरत जोत हरि मेहरवान, आपणी आप जगाईआ। सति सरूपी सति निशान, घर साचे आप वखाईआ। आपे होए निगहबान, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। रचन रचावनहार निरँकारा, आदि जुगादि समाया। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कारा, पुरख निरँजण आप कराया। अलक्ख अगोचर भेव न्यारा, निरगुण आपणे हथ्थ रखाया। आप सुहाए सचखण्ड दुआरा, थिर घर बैठा सेज हंढाया। आपे पुरख आपे नारा, नर नरायण नाउँ उपजाया। आपे पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, आप आपणा रूप वटाया। आपे विष्न आपे ब्रह्म आपे शिव दए हुलारा, आप आपणा रंग रंगाया। आपे त्रैगुण माया भर भण्डारा, आप आपणी रिहा वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बंक सुहाया। आपे बंक दुआरा खोल्ह, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। आपे शब्द अगम्मी बोल, नाद अनादी नाद वजाईआ। आपे आपणे जाए मौल, आप आपणे विच समाईआ। आपे आदि जुगादी रहे अडोल, जुगा जुगन्तर खेल खलाईआ। आपे नाभी कँवली रिहा मवल, आपे अमृत जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरताईआ। कल वरतंता हरि भगवाना, भेव अभेद खुलांयदा। जुगां जुगन्तर खेल महाना, आपणा वेस वटांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव बख्शे इक्क ध्याना, एका रूप दरसांयदा। लोआं पुरीआं खेल महाना, ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पांयदा। लेखा जाणे रवि ससि सूरज चन्न भाना, मंडल मंडप मेल मिलांयदा। निरगुण सरगुण हो प्रधाना, आप आपणा नाउँ उपजांयदा। पंज तत्त मेल विच जहाना, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल खिलांयदा। मन मति बुध बन्न्हे गाना, निरगुण आपणा सगन मनांयदा। आत्म ब्रह्म कर प्रधाना, काया बंक सुहांयदा। खेले खेल मर्द मरदाना, आपणा मार्ग आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लेख लिखांयदा। लेखा लिखणहारा

हरि हरि, हरि वड्डा वड वडिाईआ। लक्ख चुरासी जोत धर धर, धर धरनी रिहा सुहाईआ। आपणी करनी आपे कर कर, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोत नूर रुशनाईआ। जोती नूर नूर उजाला, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण दीन दयाला, आप आपणा अंग कटांयदा , एकँकारा सद प्रितपाला, लक्ख चुरासी सेव कमांयदा। आदि निरँजण दीपक जोती बाला, जोत निरँजण वण्ड वण्डांयदा। पुरख अबिनाशी वसे सच सच्ची धर्मसाला, दर घर साचे सोभा पांयदा। अबिनाशी करता एका पाए सच्ची गल माला, आप आपणा नाउँ उपजांयदा। पारब्रह्म खेले खेल निराला, ब्रह्म आपणा रूप वटांयदा। निरगुण सरगुण वजाए ताला, अनहद साची सेव कमांयदा। त्रैगुण माया पा जंजाला, आपणा बन्धन आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एकँकारा, खेले खेल विच संसारा, धरत धवल हो उज्यारा, गगन मंडल दए हुलारा, ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगांयदा। त्रैगुण मीता इक्क अतीता, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी ठंडा सीता, थिर घर बैठा आसण लाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म साचा मीता, पतित पुनीता हरि रघुराईआ। लेखा जाणे हस्त कीटा, राउ रंकां वेख वखाईआ। नाम जणाए इक्क अनडीठा, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। त्रैगुण माया वेख अंगीठा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। नाम निधाना एका पीता, घर साचे जाम वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि निरँजण वड वड्याईआ। आदि निरँजण शाह सुल्ताना, एका रंग समांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर प्रधाना, हुक्मी हुक्म अलांयदा। त्रैगुण मेला विच जहाना, साचा संग वखांयदा। एका शब्द इक्क तराना, एका राग अलांयदा। एका अमृत पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख गवांयदा। इक्क वखाए पद निरबाणा, घर साचे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला सच महल्ला उच्च अटला आप सुहांयदा। सच महल्ला सच दुआरा, हरि साचा आप सुहाईआ। साचा भूप शाह सिक्दारा, सच सुल्तान आप अख्वाईआ। साचा नाम सच जैकारा, घर साचे आप अलाईआ। साची वस्त सच भण्डारा, हरि साचा सच भराईआ। साचा शब्द सच वरतारा, साची सेव कमाईआ। साचा वणज सच वणजारा, साची झोली आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी वण्ड वण्डाईआ। निरगुण वण्डे आपणी वण्ड, भेव कोए ना आंयदा। आप उपजाए खण्ड ब्रह्मण्ड, गगन पातालां डेरा लांयदा। आपे लेखा जाणे सूरा सरबंग, दूसर भेव कोए ना पांयदा। आपे लक्ख चुरासी काया चोली रंग, आप आपणा रंग रंगांयदा। आपे घर घर अंदर बैठा भिच्छया रिहा मंग, आपणी झोली अग्गे डांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी विच समांयदा। लक्ख चुरासी हरि समाया, दिस किसे ना

आंयदा। घर विच घर इक्क उपाया, आप आपणा बंक खुलांयदा। सच सिँघासण इक्क विछाया, पुरख अबिनाशन डेरा लांयदा। दीपक जोती डगमगाया, नूरो नूर उपजांयदा। अनहद साचा राग सुणाया, पंचम पंच सलांहयदा। अमृत ठंडी धार वहाया, निझर झिरना आप झिरांयदा। कँवल कँवला आप खिलाया, कमलापाती भेव ना आंयदा। डूँघी भँवरी पार कराया, काया कँवरी वेख वखांयदा। त्रै त्रै मेला सहिज सुभाया, आपणा लेखा आप जणांयदा। नौं दर खोजे खोज खोजाया, आपणा मार्ग आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त नाम अनमोल, आप आपणी दए वरताईआ। नाम वस्त इक्क अनमोल, प्रभ साचे हथ्थ रखाईआ। धुरदरगाही एका कंडे देवे तोल, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। आपे जाणे आपणा बोल, आपणी धारा आप सुणाईआ। जन भगतां पड़दा आपे खोल्ह, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल सहिज सुखदाईआ। भगतां देवे नाम अपारा, सो पुरख निरँजण वड वड्याआ। काया मन्दिर भर भण्डारा, आपे वेखे वेखणहारा। एका नाद शब्द धुन्कारा, धुन अनादी आप वजाया। आपे सुणे सुणाए सुणनेहारा, घर साची सेव कमाया। दरस दिखाए अगम्म अपारा, स्वच्छ सरूपी रूप वटाया। निरगुण सरगुण मेला कन्त भतारा, सन्त सुहेले लए जगाया। जागरत जोत दीपक कर उज्यारा, घर घर विच आप टिकाया। आपे अंदर आपे बाहरा, गुप्त ज़ाहरा भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलाया। जुग जुग खेल खिलंदड़ा, पारब्रह्म पुरख अबिनाश्या। निरगुण सरगुण वेस वटंदड़ा, लेखा जाणे पृथ्मी आकासया। सन्त साजण मेल मिलंदड़ा, काया मंडल पाए रासया। शब्द ज्ञान इक्क दिरंदड़ा, निज आत्म करे वासया। बन्द किवाड़ा आप खुलंदड़ा, हरि सतिगुर शाहो शाबासया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करे पूरी आसया। पूरी आसा साजण सन्त, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। रसना जेहवा मणीआ मंत, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। मेल मिलावा साचे कन्त, घर साची सेज सुहांयदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मधि आपणा भेव खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। साचा लेखा धुर करतार, आपणे हथ्थ रखाईआ। वण्डे वण्ड विच संसार, जुग करता बेपरवाहीआ। चारे जुग कर त्यार, चारे खाणी विच समाईआ। एका अक्खर दए अधार, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हँ ब्रह्म कर त्यार, आप आपणे रंग रंगाईआ। तीजा नेत्र खोल्ह किवाड़, स्वच्छ सरूपी रूप दरसाईआ। चौथा पद इक्क दुआर, आप आपणा चरन वखाईआ। पंचम मेला पुरख भतार, घर साचे सोभा पाईआ। छेवां छप्पर छन्न ना कोए मुनार, निरगुण बैठा आसण लाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण साची कार, अगम्म अगम्मड़ा

रिहा कराईआ। अठ्वें अठ्ठां तत्तां वसया बाहर, अप तेज वाए पृथ्मी अकास मन मति बुध ना संग रलाईआ। नौ दर ना दिसे किवाड़, पंज तत्त ना कोए हंढाईआ। जन भगतां करे सच प्यार, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। दस्म दुआरा इक्क घर बार, घर मेला सहिज सुखदाईआ। कागद कलम ना पावे सार, लेखा लिख लिख थक्के छाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस धराईआ। सतिजुग वेस सति सतिकार, सति सतिवादी आप करांयदा। निरगुण सरगुण हो उज्यार, वार अठारां धार बंधाईआ। चारे वेदां इक्क जैकार, आप आपणी गणत गणांयदा। आपे वसया सभ तों बाहर, घट घट आपणा आसण लांयदा। आपे भगती भरे भण्डारा, भगतन साचा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। सतिगुर साचा पार उतारा, भेव कोए ना आंयदा। त्रेता वेखे विच संसारा, साची कल वरतांयदा। पुरख अगम्मा खेल न्यारा, रूप अनूप वटांयदा। आपे जाणे आपणी कारा, करनी करता करनी आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राम नाम आप प्रगटांयदा। आपे राम रूप अवतारा, आपे रावण बंक सुहाईआ। आपे देवणहार सच भण्डारा, आदि जुगादी आप वरताईआ। आपे मंगे बण भिखारा, घर साचे आपणी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे चिल्ला तीर कमाना, आपे हथ्थ उठांयदा। आपे जोद्धा सूरबीर बलवाना, आप आपणा बल धरांयदा। आपे मारे सच निशाना, पार किनारा आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे तोड़ हँकारी गढ़ किला कोट आप मिटांयदा। आपे राम रम कर प्यार, आप आपणा रूप वटाईआ। आपे होए नैण मुँधार, कँवल नैण भेव ना राईआ। आपे रथ रथवाही बण संसार, आपणी सेवा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग वेस अनेक वटाईआ। वेस अनेका हरि हरि, आपणा आप वटांयदा। सन्त सुहेले साचे फड़ फड़, आप आपणे संग मिलांयदा। लेखा जाणे सीस धड़ धड़, घर घर फोल फुलांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़ पढ़, साचा मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। गीता ज्ञान आपे कर कर, आप आपणा राग सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेद व्यासा आपे वर, पुराण अठारां मुख सलांहयदा। पुराण अठारां आपे गा, आपे वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर फेरा पा, आप आपणा रूप वटाईआ। कलिजुग खेल बेपरवाह, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। चौथा जुग लए उठा, घर चौथे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति रिहा समझाईआ। कलिजुग उठया नौजवान, हरि सतिगुर आप उठाया। एका बख्शे चरन ध्यान, दे मति रिहा समझाया। तेरा राग सृष्ट सबाई सुणे कान, जूठ झूठ तेरी झोली पाया। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बल धराया। कलिजुग उठया बाल नादाना, नेत्र रो रो नीर वहांयदा। पुरख अबिनाशी तेरा चरन ध्याना, दूसर ओट ना कोए तकांयदा। तेरा राग मेरा गाना, गीत इक्क अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वर साचा झोली पांयदा। साचा वर भर भण्डारा, हरि साचा हुक्म सुणांयदा। तेरी कल वरते विच संसारा, कल कलंदर आप नचांयदा। तेरा गढ़ होए हँकारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मेल मिलांयदा। आसा तृष्ना करे प्यारा, तेरा दर सुहांयदा। जूठ झूठ बणे वणजारा, चारों कुंट वणज करांयदा। उच्ची कूके लाए नाअरा, आपणा बोल सुणांयदा। ना कोई दीसे सज्जण यारा, मीत मुरारा ना कोई वखांयदा। चारों कुण्ट धूआँधारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ांयदा। करे खेल अगम्म अपारा, तेरा सगला संग वखांयदा। ईसा मूसा कर तिआरा, तेरे रंग रंगांयदा। एका कलमा बोल नाअरा, कायनात आप सुणांयदा। संग मुहम्मद चार यारा, एका रूप वटांयदा। हक हकीकत खोल्ह किवाड़ा, लाशरीक वेख वखांयदा। लाशरीक बेऐब परवरदिगारा, नूरो नूर डगमगांयदा। बेऐब खुदाई परवरदिगारा, मुकामे हक इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। नूर इलाही बेपरवाह, नूरो नूर नूर नूराना डगमगांयदा। सति सरूपी बणे हरि मलाह, तामस तृष्ना विच समांयदा। त्रिलोकी नंदन नाम धरा, तिन्नां लोकां खोज खुजांयदा। शिव ब्रह्मा विष्न सेवा ला, आदि जुगादी सगला संग निभांयदा। तेरा संग बणे प्रभ बेपरवाह, तेरा मार्ग एका लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। कलिजुग तेरा रंग चलूल, हरि साचा आप चढ़ाईआ। सच सिँघासण हरि जी बैठा ना कोई पावा ना कोई चूल, दिस किसे ना आईआ। जोती जामा भेख वटा, लोकमात वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग देवे साचा वर, घर साचे इक्क समझाईआ। चारों कुण्ट आप उठाउणा, एका डंका नाम वजाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां आप जगाउणा, सोया कोई रहिण ना पाईआ। दर मंगण भिख्या किसे ना पाउणा, दर दर आप फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग साचा वेख वखाईआ। कलिजुग वर घर साचा पाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी अग्गे सीस झुकाया, तूं दाता बेपरवाहीआ। तेरा लेखा लेख ना किसे मिटाया, लेखा लेखे विच ना आईआ। ब्रह्मा विष्न शिव तेरी सेव कमाया, करोड़ तेतीसा रहे ध्याईआ। राम कृष्न तेरा जस गाया, एका नाम वड्डी वड्याईआ। अञ्जील कुरानां आपे गाया, तीस बतीसा दए वड्याईआ। नूर इलाही डगमगाया, जल्वा नूर बेपरवाहीआ। महिबान बीदो आप अख्वाया, बी खैर या अला दिस ना आईआ। चौदां तबकां एका रंग हरि साचा आप चढ़ांयदा। जन भगतां दरस दिखाए काया मन्दिर

अंदर लँघ, आपणी दया कमांयदा। खेवट खेटा बण वणजारा, कलिजुग वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, नेत्र नैणा दरस कोए ना पांयदा। आपे जाणे आपणी धारा, आपणा लेखा आप सुणांयदा। आवे जावे वारो वारा, जुग जुग वेस वटांयदा। बेऐब खुदाई परवरदिगारा, आपणा नाउँ रखांयदा। लाशरीक बोल एका नाअरा, आपणा कलमा आप अल्ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल करांयदा। चार कुण्ट करे पुकार, मुहम्मद साची सेव कमाईआ। चार यारी करे ख्वार, आपणा पल्लू रही फराईआ। चार वरन रोवन ज़ारो ज़ार, खत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रहे कुरलाईआ। चारे वेद हाहाकार, आप आपणी रहे सुणाईआ। गीता ज्ञान गया हार, अठारां अध्याए ना कोए अल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग देवे साचा वर, घर सुहञ्जणा इक्क सुहाईआ। पुरख अबिनाशी खेल कर, आप आपणे रंग रंगांयदा। दोहां देवे एका वर, एका घर बहांयदा। नाता जुड़या इक्क घर, दोवें मेल मिलांयदा। इक्क दूजे नूं वेखण खड़, नेत्र नैणां नाल मिलांयदा। आपणी चोटी आपे चढ़, वासना खोटी आप करांयदा। आपे कोटन कोटि लए फड़, आप आपणे भरम भुलांयदा। आपे बोटी बोटी दए कर, आपे साचा सन्त सलांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। कलिजुग खेल राणी अल्ला, इलाही नूर समांयदा। जगत दुआरा एका मल्ला, घर साचा इक्क वखांयदा। फिरे दरोही जलां थलां, पीर दस्तगीर सर्ब कुरलांयदा। ना कोई फड़ाए किसे पल्ला, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो दो आब आपणी वण्ड वण्डांयदा। वण्डे वण्ड देवे दात, एका वण्ड वण्डाईआ। निरगुण आपे होए संझ सवेरा संझ प्रभात, दिवस रैण आप अख्वाईआ। आप बैठा रहे इक्क इकांत, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग खेल सहिज सुभाईआ। कलिजुग कूड़ा होया ढोर, पंज तत्त शोर मचाया। चारों कुंट ठग्ग चोर, बैठे डेरा लाया। घर घर दिसण हरामख़ोर, हरि का नाम ना कोए ध्याया। कूड़ी क्रिया बंधी डोर, साचा तन्द ना कोए बंधाया। माया ममता नाता जोड़, जीवां जंतां रहे सताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी लए अंगड़ाया। लए अंगड़ाई हरि भगवान, आपणी करवट आप बदलाईआ। लोकमात वेखे मार ध्यान, धरनी धरत धवल लक्ख चुरासी रही कुरलाईआ। सच ना दिसे कोए ज्ञान, चार वरन ना मेल मिलाईआ। चारों कुंट होया हैरान, धीरज धीर ना कोए वखाईआ। ना कोई मज़्ब ना ईमान, दीन इस्लाम ना कोए पढ़ाईआ। ना कोए कलमा ना कोए कलाम, ना कोई साचा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमाईआ। निरगुण हरि हरि कृपानिध, आपणी दया कमांयदा। आप बणाए

२२६ ०६

आपणी बिध, आपणा रूप वटांयदा। करे कराए कारज सिद्ध, सतिगुर साचा नाउँ उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। निरगुण सरगुण वेस वटाया, गुर नानक नाउँ धराईआ। आप आपणा विच रखाया, घर साचे होई रुशनाईआ। एका बंक दए सुहाया, घर सुहञ्जणा सोभा पाईआ। एका मन्त्र दए दृढ़ाया, नाम सति वज्जी वधाईआ। चार वरनां दए जपाया, ऊँच नीच ना वेख वखाईआ। राउ रंकां गले लगाया, हँकारीआं गढ़ तुड़ाईआ। मन का मणका आप फिराया, मति मतवाली दए सलाहीआ। बुध बबेकी रूप वटाया, अमृत जाम इक्क प्याईआ। सच सुनेहड़ा हरि सुणाया, हरि शब्द वज्जी वधाईआ। चारों कुंट फेरा पाया, जीव जंत सर्ब उठाईआ। एका पुरख अकाल मनाया, दूजा इष्ट ना कोए वखाईआ। नमो देव इक्क रघुराया, वास्तक रूप आप समाईआ। ख़ालक ख़लक विच दए वखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। नानक निरगुण नाउँ रक्ख, लोकमात वेख वखांयदा। सतिगुर पूरा हो प्रतक्ख, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। आपे करे कक्खों लक्ख, लक्खों कक्ख बणांयदा। घर घर देवे साची वथ्थ, साचा नाम झोली पांयदा। पुरख अबिनाशी इक्क समरथ, जीआं जंतां आप समझांयदा। जुग जुग चलाए मात रथ, आप आपणा वेस वटांयदा। सच दुआरा खोल्हे हट्ट, चरन दुआरा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोती दस अवतार, गुर गोबिन्द उपजे सुत दुलार, सूरबीर आप उपजांयदा। सूरबीर सुल्तान, गुर सतिगुर वड वड्याईआ। एका खण्डा तीर कमान, आपणा आप चमकाईआ। गुरमुख साचे कर पछाण, अमृत जाम प्याईआ। पंचम मीता हो प्रधान, पंचम मेले सहिज सुखदाईआ। पंचम देवे इक्क ज्ञान, एका शब्द पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक गोबिन्द एका घर साचा दए वसाईआ। नानक गोथिंद सचखण्ड, घर साचा आप सुहांयदा। कलिजुग अन्तिम वण्डे वण्ड, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। सृष्ट सबाई होई रंड, साचा कन्त ना कोए हंढांयदा। चारों कुण्ट भेख पखण्ड, चार वरन सर्ब कुरलांयदा। पंडत पांधे होवण आत्म अन्ध, साचा ज्ञान ना कोए समझांयदा। मुल्ला शेख़ ना मुकाए कोई पन्ध, साचा सजदा ना कोए करांयदा। साध सन्त रसना लावण मदिरा मास गंद, आत्म जाम ना कोए वखांयदा। जूठ झूठ रक्खण अनन्द, परमानंद ना कोए समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप समझांयदा। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, नानक निरगुण दए समझाईआ। गोबिन्द लेखा लेख लिखाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। पुरख अबिनाशी फेरा पाउणा, जूनी रहित वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ दए समझाईआ। हरि का नाउँ हरि निरँकार, हरि साचा सच उपजांयदा। जुगा जुगन्तर खेल

अपार, जुग करता आप करांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यार, निरगुण आपणा खेल खिलांयदा। प्रगट होवे विच संसार, निहकलंका नाउँ उपजांयदा। शब्द डंका जगत नगार, आप आपणा ताल सुणांयदा। लोआं पुरीआं पावे सार, ब्रह्मा विष्न शिव वेख वखांयदा। करोड़ तेतीसा पार किनार, सुरपति राजा इंद नाल रलांयदा। गण गंधर्ब ना करे कोए शंगार, बस्त्र भूशन ना कोए हंढांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी हो त्यार, आप आपणी जोत जगांयदा। सत्तां दीपां खोल्ह किवाड़, आप आपणा भरम मिटांयदा। वीह सौ बिक्रमी एका कार, आपणी कल वरतांयदा। इक्क इकल्ला रूप अपार, जोती नूर डगमगांयदा। दूजी कुदरत पावे सार, तीजा लेखा लेख मुकांयदा। चौथे घर प्रभ हो त्यार, पंचम अतीता रूप धरांयदा। छेवें छप्पर छन्न वसया बाहर, घर साचे जोत जगांयदा। सत्तवें सतिवाद हरि करतार, सति पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा। अठ्ठवें खेल करे निरँकार, आपणा लेखा आप जणांयदा। नौवें तोड़े गढ़ हँकार, नौ दर भाण्डा भरम भनांयदा। दसवें जोती कर उज्यार, दस्म दुआरा पन्ध मुकांयदा। इक्क ग्यारां मीत मुरार, साढे तिन्न हथ्थ रचन रचांयदा। दस दो बारां आपणे रंग रहवे निरँकार, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। दस तिन्न तेरां साधां सन्तां दए हुलार, शाह सुल्तानां आप उठांयदा। चौदां चौदां तबकां करे ख्वार, चौदां विद्या ना कोए पढ़ांयदा। पंदरां अठसठ तीर्थ मारे मार, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती फोल फुलांयदा। सोलां खेल अपर अपार, वीह सद बिक्रमी मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। निरगुण नाउँ हरि भगवान, आपणा आप उपजाईआ। निहकलंक बली बलवान, जोती नूर नूर रुशनाईआ। शब्द सरूपी सच निशान, सत्तां दीपां आप झुलाईआ। मेट मिटाए राज राजान, शाह सुल्तान दिस ना आईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। चार वरनां इक्क मकान, एका शब्द दए वखाईआ। चार वरनां इक्क बबाण, एका नाम चढ़ाईआ। चार वरनां एका पीण खाण, एका अमृत जाम प्याईआ। चार वरनां एका देवे दान, दाता दानी आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम लेखा दए मुकाईआ। कलिजुग लेखा जाणा मुक्क, हरि सतिगुर आप मुकांयदा। हरि का भाणां ना जाए रुक, ना कोई मेट मिटांयदा। लक्ख चुरासी बूटा जाणा सुक्क, हरया सिंच ना कोए करांयदा। मात गर्भ वेखे उलटा रुख, घर घर विच फोल फुलांयदा। गुरमुख विरले उज्जल मुख, जो रसना हरि हरि गांयदा। आत्म अन्तर साचा सुख, आत्म ब्रह्म वखांयदा। सफल कराए मात कुक्ख, जन जननी लेखे लांयदा। दो जहानां वेखे झुक, सच सिंघासण सोभा पांयदा। जन भगतां मेटे चिंता दुक्ख, हरख सोग ना कोए वखांयदा। लक्ख चुरासी अंदर बैठा लुक, गुरमुख विरला दरसन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण

२३० ०६

नर, आपणा नाउँ उपजांयदा। निहकलंक सतिगुर मीत, सो पुरख निरँजण आप अख्वांयदा। इक्क सुणाए सुहागी गीत, आप आपणा नाम दृढ़ांयदा। सदा सुहेला वसे चीत, आत्म सेजा आप सुहांयदा। करे कराए पतित पुनीत, पतित पापी मात तरांयदा। लक्ख चुरासी परखे नीत, लेखा आपणा आप करांयदा। गुरमुखां काया करे ठंडी सीत, सच प्याला नाम प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगांयदा। गुरमुख रंग अपार, हरि सतिगुर आप रंगाईआ। माणस जन्म दए संवार, लख चुरासी फंद कटाईआ। दरगाह साची धाम न्यार, सति सुहञ्जणा धाम वखाईआ। एथे ओथे दए सहार, दो जहानां वेख वखाईआ। मरे ना जम्मे विच संसार, आवे जावे बेपरवाहीआ। शब्द गुर बण वणजार, दर घर साचे वणज कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। जुग विछड़े हरि मेलया, कर किरपा गुर करतार। आपणा खेल आपे हरि खेलया, कलिजुग अन्तिम लै अवतार। आपे गुरू गुरु गुर चेलया, हरि साजण मीत मुरार। आपे वसे धाम नवेलया, आप सुहाए बंक दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख सज्जण लाए पार। गुरसिख उतरे पार घाट, पार किनारा इक्क वखाईआ। दूसर विके ना किसे हाट, करता कीमत आपे पाईआ। दुरमति मैल देवे काट, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। अमृत रस लैणा चाट, निझर झिरना रिहा झिराईआ। कलिजुग अन्तिम मुक्की वाट, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। लक्ख चुरासी पैणा खात, धर्म राए खाता रिहा खुल्हाईआ। हरिजन विरले मेला पुरख समराथ, जिस हरि हरि ओट रखाईआ। चारों कुण्ट अग्नी काठ, त्रैगुण तत्त वखाईआ। नगर खेड़ा होए भट्ठ, जगत भठयाला इक्क तपाईआ। लहिणा देणे चुकाए अठसठ, तीर्थ तट ना कोए वखाईआ। खेले खेल बाजीगर नट, हरि नटूआ सांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम जोत करे रुशनाईआ। कलिजुग जोत नूर नुरानी, निरगुण आपणी आप जगांयदा। पारब्रह्म प्रभ देवे सच निशानी, जन भगतां बूझ बुझांयदा। गुरमुखां मारे तीर कानी, अणयाला तीर आप चलांयदा। काया अंदर अनहद बाणी, आपणा राग सुणांयदा। आत्म अन्तर ठंडा जल पाणी, अमृत प्याला मुख प्यांअदा। घर वखाए इक्क पद निरबाणी, दर घर साचा आप सुहांयदा। आपे होया जाण जाणी, जानणहार रूप वटांयदा। आपे होए ब्रह्म ज्ञानी, ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण आप उठांयदा। गुरमुख सोया उठया जाग, हरि सतिगुर आप जगाया। कलिजुग काया लग्गा भाग, घर मन्दिर होए रुशनाया। दीपक जोती जगे चिराग, अन्ध अन्धेर मिटाया। दुरमति मैल धोवे दाग, जन्म जन्म दा लेखा दए चुकाया। हँस बणाए फड़ फड़ काग, सोहँ हँसा चोग चुगाया। जगत तृष्ना बुझाए लग्गी आग,

अमृत मेघ इक्क बरसाया। माया डस्से ना डस्सणी नाग, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण लए तराया। गुरसिख सज्जण तारया, कर किरपा हरि गोबिन्द। जग दु:खड़ा रोग निवारया, अमृत प्याया सागर सिन्ध। घर मेला कन्त भतारया, आप उपजाई आपणी बिन्द। कलिजुग अन्तिम वेख वखा ल्या, हरि सतिगुर हो बख़्शंद। डुब्बदा पत्थर आप तरा ल्या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेटणहारा सगली चिन्द। गुरसिख सज्जण जागया, जागरत जोत जगाए। घर साचे लग्गा भागया, प्रभ मिल्या हरि हरि राए। सरन सरनाई साची लागया, जम डण्ड नेड़ ना आए। लख चुरासी कट्टी फाँसीआ, राए धर्म ना दए सजाए। करे कराए बन्द खुलासीआ, दरगाह साची मेल मिलाए। सतिगुर पूरा शाहो शाबासीआ, विछड़ कदे ना जाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे सहिज सुभाए। गुरमुख सज्जण रतड़ा, सतिगुर रंग अपार। ना ठंडा ना तत्तड़ा, एका रूप सच्ची सरकार। सगल विसूरा जगत जहान लथ्थड़ा, घर पाया दरस मुरार। लेखा चुक्के साढे तिन्न तिन्न हथ्थड़ा, लेखा लिख्या रविदास चुमार। कबीरा निउँ निउँ चरनी ढठ्ठड़ा, सचखण्ड मेला कन्त भतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी धार। निरगुण धार हरि अवल्ली, आपणी आप उपाईआ। गुरमुख वेखे साची कली, लोकमात आप महिकाईआ। गुर गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा होका देवे गलीओ गली, गुरसिख सज्जण लए उठाईआ। आपणा सीस रक्खणा तली, लोकलाज जगत गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। गुरमुख सज्जण सच दरवाजा, हरि साचा सच खुल्हांयदा। अंदर वड़ ग़रीब निवाजा, आप आपणे रंग रंगांयदा। शब्द वजाए अनहद वाजा, आप आपणा राग सुणांयदा। सच संघासण साचा राजा, शाह सुल्तान आसण लांयदा। जुगा जुगन्तर रचया काजा, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे देस माझा, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे संग रलांयदा। सगला साथी हरि रघुनाथ, अवर ना कोए जणाईआ। गुरसिखां लहण देण चुकाए मस्तक माथ, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। इक्क जपाए साचा पाठ, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। इक्क उतारे आपणे घाट, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए तराईआ। तारनहार हरि गुरदेव, गुरमुख साचे आप तरांयदा। आप लगाए साची सेव, साची सिख्या सिख रखांयदा। फल खवाए आत्म मेव, रीठा कौड़ा आप भनांयदा। रसना गुण हरि हरि जिह्व, गीत गोबिन्द इक्क अल्हांयदा। अलख निरँजण अलख अभेव, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे एका राह, चार वरन बणाए भैण भ्रा,

ऊँच नीच ना कोए जणांयदा। चार वरन इक्क दुआर, सतिगुर नानक नाम बुझाईआ। गुर गोबिन्द सिँघ सिँघ करे प्यार, चार वरनां एका अमृत जाम प्याईआ। चार वरनां इक्क सिक्दार, साहिब सुल्तान इक्क अख्वाईआ। चार वरनां इक्क भण्डार, इक्क दाता रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग मेटे कूड़ पसारा, झूठा लंका गढ़ तोड़े हँकारा, शाह सुल्तान रहिण ना पाईआ। कलिजुग कूड़ा पार किनार, पुरख अकाल आप कराईआ। सतिजुग साचा कर उज्यार, लोकमात करे रुशनाईआ। कलिजुग करे हाहाकार, वेला अन्तिम आईआ। सतिजुग होया ख़बरदार, वीह सौ सोलां बिक्रमी दए सलाहीआ। दोहां विचोला आप निरँकार, लोकमात खेल खिलाईआ। सम्मत सतारां धक्का देवे मार, आपणा बल आप वखाईआ। सतिजुग साचे कर प्यार, आप आपणी गोद सुहाईआ। सम्मत अठारां हाहाकार, चारों कुण्ट सृष्ट कुरलाईआ। सतिजुग उठे मीत मुरार, हरिजन वेखे वेख वखाईआ। वीह सद उन्नी अल्ला राणी चोटी जाए मुन्नी ना कोई दीसे संग मुहम्मद चार यार, ऐनलहक नाअरा कोए ना लाईआ। सतिजुग साचा होए ख़बरदार, आप आपणा रूप वटाईआ। बीस बीसा पुरख करतार, खड़ग खण्डा इक्क चमकाईआ। शाह सुल्तान कर ख्वार, तख्त ताज दए मिटाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी एका धार, सत्तां दीपां आप बंधाईआ। लेखा जाणे जमन किनार, गुर तेग बहादर तेरा सीस जगदीस वेख वखाईआ। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, जोती जोड़ा शब्द कुड़माईआ। अश्व घोड़ा कर त्यार, नीला नीली धारों पार कराईआ। सोहे तख्त आप सच्ची सरकार, दिल्ली दुआरे फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग सतिजुग लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग साचा मार्ग ला, सति सति वरतावणा। चार वरनां एका ब्रह्म जणा, एका रूप सर्ब दरसावणा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका रंग रंगा, एका मन्त्र नाम दृढ़ावणा। पुरख अकाल इक्क मना, सीस जगदीस इक्क झुकावणा। एका बरन दए वखा, चार वरन अठारां बरन पन्ध मुकावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा मात धरावना। सतिजुग साचा सति सति दुआर, हरि लोकमात उपजाईआ। शब्द जणाई बोध अगाध, सति अक्खर करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे सन्त साध, भगत भगवन्त वेख वखाईआ। गुरसिख साचे सज्जण लाध, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लिखे थांउँ थाईंआ। लेखा लिख्या सिख दुलार, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। आपणे सुत किया प्यार, अबिनाशी अचुत दया कमांयदा। काया बुत दए आधार, रुत्त बसन्त आप वखांयदा। लोकमात खिड़ी गुलज़ार, पत डाली आप महिकांयदा। लेखा जाणे सर्ब परवार, बिरध बाल जवान आप तरांयदा। घर वेखे सुभागण नार, नारी कन्त कन्त वड्यांअदा। घर भरे सच भण्डार, अतोट अतुट

आप वरतांयदा। चोग निखुट ना जाए विच संसार, साचा साकी जाम प्यांअदा। ना कोई लुट्टे चोर यार, ठग्ग ठगोरी कोए ना पांयदा। गुरसिखां नाल ना करे कोई उधार, आपणा पिछला करज़ मुकांयदा। आपणा आप उत्तों वार, आप आपणी सेव कमांयदा। आपणी रत उत्तम धार, ब्रह्म मति विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख सज्जण मुख सलांहयदा। गुरसिख सालाह सलाहवण जोग, हरिभगत वड्डी वड्याईआ। गुरमुख दरसन पाए इक्क अमोघ, लोकमात ना कोए चतुराईआ। घर मन्दिर सुणे सच सलोक, सोहँ शब्द इक्क पढ़ाईआ। चौदां लोक ना सकण रोक, गुरमुख सुरती शब्द मिलाईआ। चरन कँवल रखाए साची ओट, आप आपणी दया कमाईआ। जगत वासना कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। तन लगाए साची चोट, सच नगारा नाम वजाईआ। आत्म भरे अमृत पोट, तृष्ना तृखा दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वज्जे वधाईआ। गुरमुख सज्जण घर वधाई, हरि साचे मंगल गाया। सुरत शब्द होई कुड़माई, आप आपणा मेल मिलाया। पीआ प्रीतम मिल्या चाँई चाँई, आप आपणा रूप दरसाया। पकड़ उठाए फड़ फड़ बांहीं, सेवक साची सेव कमाया। सदा सुहेला इक्क अकेला जुग जुग रक्खे सिर ठंडीआं छाँईं, आप आपणा रूप वटाया। आपे पिता आपे माई, मात पित भेव ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख सूरा आप तराया। गुरसिख सूरा तारया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। देवे दरस हरि निरंकारया, निरगुण सरगुण रूप करतार। घर भरे सच भण्डारया, एका वणज करे वपार। घर जोत नूर उज्यारया, नूर नूराना कर पसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर खोल्ह बन्द किवाड़। बन्द किवाड़ा खोल्हया, प्रभ आपणी किरपा धार। गुर शब्दी अंदर वड़ वड़ बोलया, दिस ना आए विच संसार। गुरसिख आपणे कंडे तोलया, तोलणहारा इक्क निरँकार। नानक तेरां धार बोलया, तेरा अन्त ना पारावार। जिस जन वसे काया चोलया, चाढ्ह रंग अपर अपार। गुरसिख पावे आपणे डोलया, सतिगुर पूरा बणे कुहार। चुक्की जाए भार हौलया, आप आपणे सिर निरँकार। करे हौला भार धौलया, धरन धरती पैज संवार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख उपज्या फुल्ल कवलया, घर साचे खिड़ी गुलज़ार। कँवल नाभी साचा फुल, गुर गुरमुख आप उपजांयदा। भाग लगाए साची कुल, कुल कुलवन्ता वेख वखांयदा। नाम अमोलक वस्त अनमुल्ल, हरि जू हरि मन्दिर आप टिकांयदा। आदि जुगादि सदा अभुल, लक्ख चुरासी आप भुलांयदा। त्रैगुण माया ना जाए रुल, आपणी कीमत आपे पांयदा। जन भगतां करे सदा चोल्ह, निज आत्म डेरा लांयदा। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत पांधा रौल, लेखा लेख ना कोए गणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे थान सुहांयदा।

गुरसिख थान सुहंदड़ा, हरि वेखे सहिज सुभाए। सचखण्ड नवासी वेख वखंदड़ा, आप आपणा रूप वटाए। कर किरपा मेल मलंदड़ा, आत्म अन्तर इक्क लिव लाए। जागरत जोत जगत जगंदड़ा, जोती नूर नूर रुशनाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाए। हरिजन सच्चा उठया, लोकमात होया प्रधान। पुरख अबिनाशी साचा तुठया, देवणहारा जीआ दान। अमृत प्याए आत्म घुट्टया, शब्द जणाई धुर फुरमान। लुकया रहिण ना देवे किसे गुठ्ठया, चार कुण्ट करे पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बख़्शे चरन ध्यान। चरन कँवल जन साचा नाता, एका एक एक समझाईआ। गुरसिख तेरी उत्तम ज़ाता, वरन गोत ना कोए बणाईआ। हरिजन तेरा पिता माता, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। हरिजन तेरी साची गाथा, सोहँ शब्द सच पढ़ाईआ। हरिजन तेरी मस्तक माथा, जोत ललाटी वेख वखाईआ। हरिजन तेरा पूजा पाठा, गुर चरन ध्यान लगाईआ। हरिजन तेरा तीर्थ ताटा, मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। लेखा चुक्के आन बाटा, आवण जावण फंद कटाईआ। गुरसिख तेरा करे पूरा घाटा, साचा तोला बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन जन हरि गुरमुख गुरसिख सन्त भगत भगवन्त मेल मिलावा एका थाँईंआ। कोटन कोटि पाप उतारया, जो जन आए सरनाईआ। एका बख़्शे नाम आधारया, कर किरपा आप गोसाईआ। गुरमुख सज्जण दए सहारया, निमाणयां गले लगाईआ। इक्क वखाए सच दवारया, ऊँच नीच इक्क वड्याईआ। एका अमृत जाम प्या रिहा, नाम कटोरा हथ्थ उठाईआ। आप सुहाए बंक दवारया, सतिगुर वेखे थाउँ थाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ नाज़र पकड़े बाहींआ। नन्ना निरगुण धार, नानक नाम चलाईआ। जज्जा ज़ाहर हो विच संसार, ज़ाहर ज़हूर वड्डी वड्याईआ। रारा राम करे प्यार, एका नाम वज्जी वधाईआ। सस्सा किला कर त्यार, साचा घर इक्क बणाईआ। ऊड़ा अक्खर एकँकार, इकओंकारा रूप समाईआ। ऐड़ा अक्ख दए उग्घाड़, निज नेत्र नैण खुलाईआ। ईड़ी इष्ट सच्ची सरकार, सतिगुर पूरा आप हो जाईआ। साचा मन्दिर इक्क न्यार, सो पुरख निरँजण आप उपाईआ। हँ रूप सर्ब संसार, जीव आत्म नाउँ धराईआ। परमआत्म करे सच प्यार, आप आपणा खेल खिलाईआ। दीनां नाथां दए सहार, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पतित पापी लए तराईआ। पतित पापी करे पुनीत, जो जन आए चल दुआर। गुरमुख काया ठंडी सीत, अग्नी तपे ना तत्ती हाढ़। साचा मन्दिर गुरूदुआर मन्दिर मसीत, करे प्रकाश बहत्तर नाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेटे पंचम धाड़। पंचम नाता देवे तोड़, सतिगुर पूरा हरि अख्वांयदा। चरन प्रीती चरन कँवल जोड़, धरत धवल माण रखांयदा।

आत्म अन्तर आपे बौहड़, आप आपणा मेल मिलांयदा। शब्द अगम्मी चढ़आ घोड़, निरगुण आपणा घोड़ा आप दौड़ांयदा। दो जहाना लाया एका पौड़, सरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी वेखे फल मिट्ठा कौड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे सुख उपजांयदा। आत्म सुख सर्ब गुणवन्त, परम पुरख अबिनासया। लेखा जाणे जीव जंत, खेले खेल पृथ्मी आकासया। एकँकार सर्ब गुणवन्त, श्री भगवान दासन दासया। पुरख अबिनाशी महिमा अगणत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे कंचन पासया। काया कंचन रूप अपारा, गुरमुख आप उपाईआ। आपे वेखे सिरजणहारा, आपणा नैण खुल्ाईआ। आपे बख्शे चरन सहारा, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पतित पावन आप अख्वाईआ। पतित पावन हरि भगवानन, भगतन लेख जणांयदा। शब्द सरूपी इक्क ज्ञानन, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। करे प्रकाश कोटन भानन, जल्वा नूर नूर चमकांयदा। मारे शब्द तीर निशानन, मन हँकारी गढ़ तुड़ांयदा। सुरत सवाणी करे पछानन, साचे हाणी मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत पाप रोग संताप गुरसिख सज्जण आप चुकांयदा। जगत संताप चुक्के रोग, चिंता सोग रहिण ना पाईआ। सतिगुर पूरा देवे एका जोग, तन भबूती नाम लगाईआ। सो पुरख निरँजण गाउणा सच सलोक, हँ ब्रह्म वज्जे वधाईआ। लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर उच्चे पर्बत समुंद सागर फेरीआं पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन डिगे आल्णिउं बोट, आपणी हथ्थीं आप उठाईआ। गुरसिख साचा आप उठाया, हरि सेवक सेव कमांयदा। सच सिँघासण आप सुहाया आपणा मन्दिर आप वखांयदा। एका मणका मन फिराया, जन जनका लेखे लांयदा। वासी पुरी घनका वेखण आया, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां करे सच दलाली, शब्द सरूपी बण सवाली, निरगुण जोत जगी अकाली, मूर्त अकाल नाउँ धरांयदा। मूर्त अकाल करता पुरख, अनुभव प्रकाश प्रकासया। ना कोई सोग ना कोई हरख, गुरसिखां अंदर करे निवासया। नाम कसवटी लक्ख चुरासी लए परख, आपे जाणे खेल तमासया। गुरमुख विरले देवे आपणा दरस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलाए शाहो शाबासया। पतित पापी उतरन पार, नेत्र लोचण नैण हरि हरि दरसन पाया। हउमे हंगता तुटे गढ़ हँकार, निवण सो अक्खर आप समझाया। जूठ झूठ करे ख्वार, सच सुच भण्डार भराया। नेड़ ना आए पंच विकार, आसा तृष्णा दए दुरकाया। एका अक्खर बोल जैकार, सो रूप आप दरसाया। हँ ब्रह्म मेला कन्त भतार, आत्म सेज सुहञ्जणी डेरा लाया। रंग रलीआं माणे अपर अपार, रंग रंगीला मोहण माधव साँवल सुंदर घर घर पाया। छैल छबीला

सांझा यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन सरधन वेख वखाया। निर्धन सरधन एका दाता, आदि जुगादि अख्वांयदा। गुरमुखां रक्खे सगला साथा, साचा संग ना कोए तुड़ांयदा। चुक्के लहिणा मस्तक माथा, अंक बंक वेख वखांयदा। सर्बकल पुरख समराथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीवण जुगत जगत आपणी आप समझांयदा। जीवण जुगत जगत गुर चरन सरन, जन्म मरन दए चुकाईआ। नेत्र खोले हरन फरन, दूई द्वैती पड़दा लाहीआ। आवण जावण चुक्के मरन डरन, दरगाह साची धाम सुहाईआ। लेखा मुक्के वरन बरन, ज़ात पात ना कोए वखाईआ। एका रूप सति सरूप पारब्रह्म उपाए आपणा ब्रह्म, ब्रह्म ब्रह्म वज्जी वधाईआ। नेहकर्मी करे आपणा कर्म, कर्म कांड ना कोए वखाईआ। जो जन हरि लागा साची सरन, आसा मनसा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए तरनी तरन, तारनहार वड वड्याईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत देवे दरस बेपरवाहीआ।

मनमति जीव त्याग, गुरमति इक्क प्रनाईआ। आत्म अन्तर इक्क वैराग, हरि चरन कँवल लिव लाईआ। सुरती सोई जाए जाग, आलस निन्दरा पड़दा लाहीआ। चरन धूढ़ी मजन माघ, गुर चरन दुआर नुहाईआ। झूठा नाता वेख सज्जण साक, बिन हरि अवर ना संग निभाईआ। शब्द घोड़े चढ़ना साचे राक, नौं दुआरे पार कराईआ। जगत वसूरे जायण लाथ, गुर पूरे दरसन पाईआ। जोत लिलाटी एका टिक्का लाए मस्तक माथ, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। अनहद शब्द सुणाए साची गाथ, घर मन्दिर ताल वजाईआ। एका मन्त्र सतिगुर नाउँ पूजा पाठ, रसना जिह्वा हरि गुण गाईआ। घर विच वखाए तीर्थ अठ साठ, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग जुग गुरमुखां देवे सच सलाहीआ। एका जपणा हरि हरि नाउँ, काया रंगण रंग चढ़ांयदा। मेल मिलावा अगम्म अथाहो, बेपरवाहो वेख वखांयदा। वसणहारा काया नगर गराउं, साचा खेड़ा आप वसांयदा। गुरसिख उठाए फड़ फड़ बांहों, सोया लोकमात कोए रहिण ना पांयदा। करे कराए सच न्याउँ, सचखण्ड वासी फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आप समझांयदा। मनमति झूठा नाता, कलिजुग कूड़ रिहा कुरलाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। एका गुर मन्त्र नाम सच्ची दाता, सतिगुर नानक गया समझाईआ। गुर गोबिन्द चढ़ाए साचे राथा, वाहिगुरू अक्खर इक्क पढ़ाईआ। लहिणा देणा चुक्के तत्त आठा, तत्व तत्त ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा मार्ग आपे लाईआ। साची करनी कार, साची किरत जणांयदा। चार वरनां इक्क प्यार, दूई

द्वैती मेट मिटांयदा। तीजे नेत्र इक्क दीदार, आत्म दरसी दरस दिखांयदा। चौथे पद सच्ची सरकार, घर साचे मेल मिलांयदा। पंचम सोहे बंक दुआर, पंचम आपणा खेल खिलांयदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, एकँकारा आप अख्वांयदा। वरते वरतावे विच संसार, आदि अनादी वेस वटांयदा। सति सतिवादी आपणी धार, ब्रह्म ब्रह्मादी आप जणांयदा। धुन अनादि सची धुन्कार, आत्म अंदर आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमति इक्क रखांयदा। मनमति नाता देणा तोड़, गुरमुख सिख समझाईआ। हरि चरन प्रीती लैणी जोड़, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। जगत विकारा देणा होड़, दर बंक रहिण ना पाईआ। सतिगुर पूरा आपे जाए बौहड़, जिस जन तेरी बणत बणाईआ। वेखे फल मिठ्ठा कौड़, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। धुरदरगाही रिहा दौड़, शब्द सरूपी वेस वटाईआ। घर विच घर लगाया पौड़, महल्ल अटल आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या विच संसार, देवणहार आप निरँकार, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। निरगुण सरगुण सिफ्त सालाह, आपणा शब्द जणांयदा। सतिगुर पूरा बण मलाह, जुग जुग वेस धरांयदा। गुरसिख सज्जण लए जगा, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। जोत निरँजण दीप जगा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। अमृत आत्म जाम प्या, जगत तृष्ना भुक्ख गवांयदा। साचा मार्ग इक्क वखा, एका पन्ध चलांयदा। राग अनादी इक्क सुणा, अक्खर वक्खर आप पढ़ांयदा। बोध अगाधी भेव खुला, गुर अरजण मेल मिलांयदा। जगत पान्धी देवे पन्ध मुका, आप आपणे दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती सच विहारा, आप कराए विच संसारा, हरिजन साचे आप उठांयदा। साची किरत कमाई, हरिजन साचे आप दृढ़ांयदा। सृष्ट सबाई नैण वेखे भैणा भाई, नेत्र अक्ख ना कोए उठांयदा। बिन हरि अवर ना दिसे कोए साईं, समरथ पुरख ना कोए अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क रखांयदा। साची सिख्या विच संसार, हरि सतिगुर आप चलाईआ। आपे राम रूप अवतार, राम रामा वज्जी वधाईआ। आपे कान्हा कृष्ना खेल निरँकार, जगत बंसरी नाम वजाईआ। आपे सखीआं करे मंगलाचार, मंडल रास आप रचाईआ। आपे दूती दुष्ट दए सँघार, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। आपे जाणे आर पार किनार, मँझधार आप समाईआ। आपे ईसा मूसा हो उज्यार, जल्वा नूर करे रुशनाईआ। एका अल्फ़ी कर त्यार, तन श्रंगार इक्क वखाईआ। आपे ऐनलहक बोल जैकार, कलमा नबी आप पढ़ाईआ। आपे वेख मुहम्मद यार, चार यारी दए सलाहीआ। आपे मक्का काअबा खोल्ह किवाड़, दो दो आबा दए मिलाईआ। आपे खेले खेल बेऐब परवरदिगार, मुकामे हक वज्जे वधाईआ। आपे अल्ला हू हू लाए नाअर, आपे बिस्मिल रूप समाईआ। आपे निरगुण सरगुण भर भण्डार, नानक

जोत करे रुशनाईआ। आपे सतिनाम बोल जैकार, चार वरन करे कुड़माईआ। आपे देवणहारा जगत आधार, आप आपणी दया कमाईआ। आपे एका जोती दस अवतार, आपे वाहिगुरू फतिह गजाईआ। आपे अमृत भरे सच भण्डार, भर प्याला जाम प्याईआ। आपे बन्ने सीस दस्तार, आपे बैठा मूंड मुंडाईआ। आपे खड़ग खण्डा कटार, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाईआ। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड बन्ने धार, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। आपे गगन गगनंतर दए हुलार, आप आपणा खेल रचाईआ। आपे ब्रह्मा विष्न शिव करे प्यार, आपणी सिख्या आप समझाईआ। आपे करोड़ तेतीसा दए सुधार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। आपे खाणी बाणी खेल न्यार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे रिहा गाईआ। आपे वेदां दए उच्चार, पुराण अठारां करे पढ़ाईआ। आपे बणया सांझा यार, सिदक सबूरी आप निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात जीव जंत आप समझाईआ। कलिजुग जीव उठणा जाग, हरि साचा आप जगांयदा। माणस देही होई काग, हँस रूप ना कोए वटांयदा। घर घर विच ना जगे कोए चिराग, दीपक जोत ना कोए जगांयदा। त्रैगुण माया लग्गी आग, पंज तत्त ना कोए बुझांयदा। अन्तिम होणा खाकी ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक सर्ब समांयदा। गुर का शब्द तन बन्नणा ताग, सतिगुर पूरा सगन मनांयदा। एथे ओथे पकड़े वाग, दो जहाना संग रखांयदा। मनमति जग देणी तयाग, गुरमति रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। मनमति नाता जाए छुट्ट, गरुमुख साची बूझ बुझाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच्चों कढ्ढे कुट, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। आसा तृष्ना जड़ देवे पुट्ट, माया ममता दए तजाईआ। अमृत पीवे साचा घुट्ट, गुर गोबिन्द दए पिलाईआ। आवण जावण जाए छुट्ट, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। तन नगारे लग्गे चोट, अनहद ताल तलवाड़ा आप वजाईआ। कलिजुग जीव आहलणिउँ डिग्गे बोट, सच महल्ल ना कोए टिकाईआ। जगत वासना भरी खोट, दिवस रैण होई हलकाईआ। बिन हरि नाम भरे ना किसे दी पोट, सांतक सति ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप समझाईआ। साची करनी चरन गुर सेव, गुर गुर गुर वेख वखांयदा। अमृत आत्म साचा मेव, फल साचा आप लगांयदा। पुरख निरँजण अलक्ख अभेव, आदि जुगादी खेल खिलांयदा। दाता दानी देवी देव, सूरबीर वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मनमति दर दुरकांयदा। मनमति दूर किनारा, गुरसिख तेरी वड वड्याईआ। तेरे घर वसे निरँकारा, बिन गुर वेख कोए ना पाईआ। मन पंखी उडे दहि दिश धारा, शब्द डोर ना कोए बंधाईआ। सुरत सवाणी नार कुँवारा, साचा कन्त ना वेख वखाईआ। हरि जू मिले ना हरि मीत मुरारा, मर मर जम्मे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, गुर मति इक्क समझाईआ। गुरमति ब्रह्म तत्त, पारब्रह्म सरनाईआ। बहत्तर नाड़ ना उब्बले रत, रती रत ना दए सुकाया। सति सन्तोखी धीरज जति, शब्द ज्ञान दृढ़ाया। दूई द्वैती मेटणा फट, एका रंगण रंग रंगाया। हरि वसणहारा घट घट, घर घर विच बैठा आसण लाया। जिस जन दुरमति मैल देवे कट्ट, आप आपणा रूप वखाया। भाग लगाए काया मट, जोती नूर डगमगाया। कलिजुग अन्तिम लाहा लैणा खट्ट, गुर चरन दुआर ध्यान धराया। साढे तिन्न हथ्थ मुनारा जाणा ढट्ठ, थिर कोए रहिण ना पाया। माणस जन्म ना होए भट्ठ, सतिगुर पूरा ल्ए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क उपजाया। साची करनी कार मेल हरिसंगत, रसना जिह्वा हरि गुण गाईआ। काया चोली चढ़े रंगत, रंग चलूला आप चढ़ाईआ। गुरसिख दूजे दर ना जाणा मंगत, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। प्रभ कट्टणहारा भुक्ख नंगत, नाम दोशाला उप्पर पाईआ। हरिजन अंग लगाए जिउँ नानक अंगद, अंगीकार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा जाप जपाईआ। एका जाप मन्त्र सतिनाम, गुर गुर नाम दृढ़ाया। आप प्याए अमिउं रस जाम, दिवस रैण खुमार कराया। नाता तुटे माटी चाम, कोटन भान होए रुशनाया। तीर निराला मारे बाण, अणयाला आप चलाया। नाम फड़ाए तेज किरपाण, लोहार तरखाण ना कोए घड़ाया। पंजां लाहे आपे घाण, आप आपणा वार वखाया। काया खेड़ा सच मकान, गुरूदुआर गुर आप सुहाया। टेढी बंक पार निशान, सुखमन आपे पन्ध मुकाया। त्रबैणी नैणी इक्क ज्ञान, ईड़ा पिंगल मुख सलाहया। सर सरोवर विच महान, अमृत आत्म ताल भराया। बन्द किवाड़ी खोल्ह दुकान, दस्म दुआरी दए वखाया। अनहद नाद सच्ची धुनकान, शब्द अगम्मी आप अल्हाया। पंचम बह बह आपे गाण, आप आपणा नाम सलाहया। आत्म सेजा हो प्रधान, सच सिँघासण इक्क वछाया। जोत जगे श्री भगवान, ब्रह्म आपणा नाउँ धराया। आपे पाए आपणी आण, आपणा भाणा आप वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच मेल मिलाया। गुरसिख गाउणा हरि गोबिन्द, दिवस रैण वड्याईआ। कलिजुग मिटे सगली चिन्द, चिंता सोग ना कोए रखाईआ। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर इक्क अख्वाईआ। गुरमुख उपजाए आपणी बिन्द, जो जन बैठे सीस झुकाईआ। मनमुख लगाए जगत निन्द, निन्दक निन्दया मुख सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमति इक्क वखाईआ। गुरमति कूके कूक पुकारे, चार वरन जणाईआ। पुरख अबिनाशी कन्त भतारे, सचखण्ड बैठा सोभा पाईआ। थिर घर वसे उच्च मनारे, अस्थिल आपणा धाम बणाईआ। कागज कलम लिख लिख हारे, ब्रह्मा विष्न शिव भेव ना राईआ। नानक सतिगुर चढ़या इक्क चुबारे, दूसर हथ्थ किसे ना आईआ। कबीर जोलाहा रिहा पुकारे, निज

नेत्र दर्शन पाईआ। पारब्रह्म प्रभ मीत मुरारे, जुग जुग जन भगतां राह तकाईआ। जो जन गुर का नाम शब्द उच्चारे, अन्तिम मेला सहिज सुभाईआ। धर्म राए ना आए दुआरे, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। लाड़ी मौत ना करे शंगारे, वेले अन्त ना कोए प्रनाईआ। गुर शब्द बिठाए सच बिबाणे, धरू प्रहलाद जिउँ मात तराईआ। हरिजन होवण सुघड़ स्याणे, मनमति ना संग रखाईआ। गुरमति चलाए गुर के भाणे, हरि भाणा वड वड्याईआ। तख्तों लाहे राजे राणे, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। काल महाकाल खेल भगवाने, दीन दयाल भेव ना राईआ। कलिजुग जीव बाल अंञाणे, एका भुलया साचा माहीआ। बिन हरि सतिगुर पूरे ना कोए पछाणे, शास्त्र सिमरत वेद पुराण, खाणी बाणी दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए साचा घर, करनी किरत लैणी कर, हरि का नाम एका इक्क सची पढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ।

अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, पंज तत्त हरि हरि बणत बणांयदा। मनमति बुध कर प्रकाश, निरगुण आपणा अंग कटांयदा। पवण स्वास दए धरवास, रसन स्वास चलांयदा। निज घर आत्म रक्खे वास, ब्रह्म आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप

२४१ हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी बणत बणांयदा। नौ दस ग्यारां बीस तीस चार, लक्ख चुरासी जून उपाईआ। २४१

०६ इक्क लक्ख अस्सी हजार, भूत प्रेत वण्ड वण्डाईआ। नानक बणया मात लिखार, आपणा लेखा गया समझाईआ। सुरती ०६

सुरत दए आधार, सुरती सुरत संग समाईआ। आकाल मूर्त खेल न्यार, जूनी रहित भेव ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराईआ। आपणा बल आपे धर, आपे खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी भाण्डे घड़, आपे वेख वखांयदा। आपे काया मन्दिर वड़, आपणा आसण लांयदा। आपे चोटी बैठा चढ़, दिस किसे ना आंयदा। आपे बीर बेताले लाए लड़, आपणा हुक्म सुणांयदा। आपे हाकण डाकण लए फड़, आपे सिर मुंडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलांयदा। आपे बणे मूंगली सार, नानक हथ्थ फड़ाईआ। आपे मारनहारा मार, पसू प्रेत जिन्न ख़बीस नेड़ ना आईआ। आपे करनेहार ख्वार, आपे जूनी जून भवाईआ। आपे करे भगतां हेत, आप आपणा नाम जणाईआ। आपे वसे काया खेत, आप आपणी कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द बबाण इक्क वखाईआ। शब्द बबाणा हरि निरँकारा, आपणा आप सुहांयदा। आपे जाणे आपणी कारा, आपे खेल खिलांयदा। आपे पवण होए अस्वारा, पवण पवणी आप दौड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आप आपणी रचन रचांयदा। आपणी रचन आप रचा, आपे खेल खलाईआ। सतिनाम मन्त्र दृढ़ा, जगत प्रधान आप बणाईआ। मसाण पवण का रूप दए हटा, पवण पवणी डेरा ढाहीआ। जम का बेटा दए खपा, काली कालका सिर लगाईआ। अवणी माता मेट मिटा, गौरजां डंक ना कोए वजाईआ। जगत किंगरा देवे ढा, आप आपणा मृदंग वखाईआ। हँसा बटका बिनोदीआ बीर दए सवा, गूढ़ी नींद आप वखाईआ। कालीआ दुनिया ना फेरा सके पा, शब्द खण्डा इक्क चमकाईआ। अहिमद मुहम्मद देवे दर दुरका, भौर पाताल ना नेड़े आईआ। भैरों मुख जाए भवा, भावनी भाव ना कोए रखाईआ। हनवन्त निउँ निउँ बैठा रिहा सीस झुका, प्रभ साचा शब्द जणाईआ। खलंता सलसला रहे राह तका, आप आपणा नैण उठाईआ। अंचनी कंचनी निरंचनी कला सोदरी संग रला, भैण भ्रा, शक्ती भगती नाल रलाईआ। नानक सतिगुर बणे मलाह, डुब्बदा बेड़ा दए तराईआ। गल विच फाँसी दए लटका, भूत प्रेत वेख वखाईआ। सन्त साजण हो सहा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। अंचनी कंचनी निरंचनी कला सोदरी लेखा दए मुका, लेखा लिख्या रहिण ना पाईआ। गुर का शब्द इक्क सुणा, एका करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ शब्द साचा अक्खर बज़र कपाटी तोड़े पत्थर, तीर निराला इक्क लगाईआ। सोहँ अक्खर हरि हरि गाउणा, पंज तत्त करे श्रंगारया। देवी देव ना कोए मनाउणा, मिले इक्क कन्त भतारया। सुत दुलारा सुत बणाउणा, अबिनाशी अचुत एह समझा रिहा। काया बुत सफल कराउणा, रसना ढोला इक्क सुणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीब निमाणे आप उठा ल्या। गुरमुख मेला नारी कन्त, हरिजन साचे साचा संग निभाईआ। गुरसिख रुतड़ी बसन्त, हरि बसन्त बहार वखाईआ। गुरसिख मेला श्री भगवन्त, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। गुरमुख मिले नाम सुगंत, आप आपणा विच टिकाईआ। गुरमुख वडियाई विच जीव जंत, सतिगुर पूरा आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पत डाहली वेख वखाईआ। गुरसिख सोभावन्त, घर सज्जण सतिगुर पाया। गुरसिख वड गुणवन्त, गुर गोबिन्द मेल मिलाया। गुरसिख महिमा अगणत, गुर मन्त्र इक्क दृढ़ाया। गुरसिख बणाए बणत, गुर सज्जण सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे दर बहाया। गुरसिख राजन भूप, घर मेला सहिज सुभाईआ। गुरसिख प्रगटे चारे कूट, चौथे जुग वज्जे वधाईआ। गुरसिख नाता तोड़े जूठ झूठ, कूड़ कूड़यारा रहिण ना पाईआ। गुरसिखां उप्पर आपे तुट्ठ, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, घर झिरना आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। गुरसिख सच्चा संग, हरि सतिगुर आप रखांयदा। गुरसिख मंगे मंग, गुर शब्दी नाम वण्डांयदा।

२४३

०६

गुरसिख लग्गे अंग, हरि अंगी अंग वखांयदा। गुरसिख डोरी नाम पतंग, आकाश प्रकाशां आप फिरांयदा। गुरसिख जगत दुआरा वेखे लँघ, घर साचे मेल मिलांयदा। गुरसिख मेला आत्म पलँघ, सच सिँघासण आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुर गुर रूप वटांयदा। गुर गुर रूप गुरमुख धार, गुरू गुर गुर दे बुझाईआ। सतिगुर पूरा हरि निरँकार, सारंगधर भेव ना राईआ। काया तत्त करे प्यार, ब्रह्म मति इक्क दरसाईआ। बीजे बीज सच क्यार, आप आपणी सेव कमाईआ। बूटा लाए विच संसार, फल फुल आप महिकाईआ। आपे पंखड़ी खोल होए गुलज़ार, सच सुगंधी आप महिकाईआ। आपे मालण बणे जोत अकाल, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। आपे लक्ख चुरासी विच्चों लए भाल, आप आपणी खोज खोजाईआ। आपे सति सरूपी बण दलाल, लोकमात वेख वखाईआ। आपे नाल रलाए काल महाकाल, दो जहानां फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचा मात उपजाईआ। गुरसिख साजण साचा बूटा, हरि जुग जुग आप लगांयदा। आपे देवे पवणी हूटा, हरि की पौड़ी आप चढ़ांयदा। आप दरसाए आपणा रूपा, अनुभव प्रकाश आप जणांयदा। आपे पावे सार चारे कूंटां, दहि दिशा वेख वखांयदा। आपे ताणा पेटा होए सूता, जगत सूतक ना कोए लगांयदा। आपे खेवट बण बण खेटा, साचा बेड़ा आप चलांयदा। आपे मात पित होए बेटी बेटा, रूप अनूप आप वटांयदा। आपे होए नेतन नेता, निज घर आपणा वास धरांयदा। आपे वेखणहारा साचा खेता, सच किरसाण भेव ना आंयदा। आपे फिरे बालू रेता, आपे जंगल जूह उजाड़ डेरा लांयदा। आपे लोकमात जुग जुग जन भगतां देवे नेता, शब्द सरूपी हुक्म सुणांयदा। आपे सेवा लाए ब्रह्मा वेता, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ांयदा। आपे विष्नूं जाणे लेखा, लिख्या लेख ना कोए मिटांयदा। आपे शंकर रक्खे चरनां हेठा, काल महांकाल नेड़ ना आंयदा। आपे जाणे आपणा वेसा, दर दरवेसा फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तरांयदा। सज्जण सचा मीत एकँकार, एका रंग समांयदा। सति सवरनी साची धार, वरनी बरनी पार वखांयदा। तारन तरनी आप करतार, करता पुरख खेल खिलांयदा। हरनी फरनी खोल्ह किवाड़, आत्म दरसी दरस दिखांयदा। मरनी मरे ना विच संसार, जो जन सच सरनाई आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार करांयदा। गुरसिख दुलारा साचा सुत, सति पुरख निरँजण आप उपजांयदा। आप वखाए बसन्ती रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप सुहांयदा। लेखा जाणे अबिनाशी अचुत्त, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। गुरसिख तेरा रूप अपार, हरि साचा सच समझांयदा। गुरसिख तेरा काया पंज तत्त मुनार, लोकमात आप सुहांयदा। गुरसिख

तेरा शब्द विचार, गुर मन्त्र आप जणांयदा। गुरसिख तेरा अमृत भण्डार, सच प्याला जाम प्यांअदा। गुरसिख तेरा सच दुआर, सचखण्ड साची वण्ड वण्डांयदा। गुरसिख तेरा सच सिक्दार, हरि हुक्मी हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लगाए आपणे लड़, आपणा बन्धन आपे पांयदा। आपणा बन्धन हरि हरि पा, हरि सज्जण लए तराईआ। लक्ख चुरासी कट्टे फाह, जम का दूत नेड़ ना आईआ। दरगाह साची दए सुहा, बैकुंठ निवासी बेपरवाहीआ। काल फास दा फंद कटा, वेले अन्त ना पाए फाहीआ। सच धरवासा इक्क वखा, चरन कँवल सची सरनाईआ। दर घर साचे फेरी पा, दर्द दु:ख दए मिटाईआ। हरिसंगत मेला सहिज सुभा, गुरमुख साचे आप कराईआ। गुर चेला एका रंग रंगा, नव जोबन आप हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रुतड़ी सोभा पाईआ। साची रुतड़ी जगत गुलज़ार, गुरसिख रूप आप महिकाया। सच वासना भर भण्डार, नाम सोगंधी इक्क रखाया। अमृत झिरना झिरे अपार, निझर धारा दए वहाया। साचे मन्दिर कर उज्यार, दीपक दीआ इक्क वखाया। निर्मल जीआ कर संसार, हरिजन साचे वेख वखाया। साढे तिन्न हथ्थ सीआं उतरे पार, आप आपणी वण्ड वण्डाया। बीजया बीआ अगम्म अपार, आप आपे वेख वखाया। एका दूजा तीआ खेल न्यार, घर चौथे आप समाया। पंचम जाणे जानणहार, पंचम सखीआं बह बह मंगल गाया। छन्द सुहागी एकँकार, साचा सोहला आप उपजाया। सुणे वैरागी सुणनेहार, जगत ज्ञानी भेव ना राया। गुरसिख विरले सुरती सोई जागी, जिस जन हरि हरि आप जगाया। कलिजुग पापां धोवे दागी, दुरमति मैल रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण वेख वखाया। गुरसिख मनूआ जगत ठगौर, चारों कुण्ट ठग्ग वखाईआ। शाह सुल्ताना उठया कौर, कवर आप आपणा हुक्म सुणाईआ। गुरसिख गुरमुख चुकाए मोर तोर, तोरा मोरा रहे ना राईआ। सो पुरख निरँजण फड़ी एका डोर, हँ ब्रह्म लए बंधाईआ। सोहँ अक्खर जुड़या जोड़, आदि जुगादी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मेला सहिज सुखदाईआ।

२४४

०६

❊ ६ फग्गण २०१६ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे घर पिण्ड उस्मा जिला अमृतसर ❊

सो पुरख निरँजण गहर गम्भीरा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण मारे एका तीरा, पुरख अबिनाशी रूप वटाईआ। एकँकारा चोटी चढ़े अखीरा, श्री भगवान वेख वखाईआ। आदि निरँजण खेले खेल वड पीरन पीरा, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल नाउँ उपाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला,

आदि जुगादि आप अख्वांयदा। वसणहारा सचखण्ड साची धर्मसाला, दर घर साचा आप सुहांयदा। थिर घर सोहे शाह कंगाला, आप आपणा बंक वखांयदा। दीपक जोत एका बाला, नूर नुराना डगमगांयदा। शब्द अनादि सची धुनकाना, राग अनादी आप अलूांयदा। जूनी रहित खेल महाना, अनुभव प्रकाश समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी मूर्त आपे वेख वखांयदा। आपणी मूर्त हरि हरि रंग, सो पुरख निरँजण वेख वखाईआ। हरि पुरख निरँजण वसे संग, दूसर रूप ना कोए जणाईआ। एकँकारा सच सिँघासण सोहे पलँघ, पावा चूल ना कोए बणाईआ। आदि निरँजण चाढ़े चन्द, जोती नूर करे रुशनाईआ। श्री भगवान वजाए मृदंग, आप आपणा ढोला गाईआ। अबिनाशी करता सचखण्ड दुआरा आपे लँघ, आप आपणा आसण लाईआ। पारब्रह्म निउँ निउँ मंगे मंग, घर साचे सीस झुकाईआ। पुरख अकाल सूरा सरबंग, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा सच महल्ला उच्च अटला एकँकारा आप सुहाईआ। सच महल्ला सच सिँघासण, हरि साचा आप लगांयदा। खेले खेल पृथ्मी आकाशन, आदि जुगादी दिस ना आंयदा। शाहो भूप हरि शाहो शाबाशन, तख्त ताज आप सुहांयदा। आपणे मंडल पावे रासन, गोपी कान्हा आप नचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, पुरख अबिनाशी एका कन्त, नर नरायण नाउँ धरांयदा। सचखण्ड दुआर सुहञ्जणा, हरि साचा आप सुहांयदा। जोत जगाए आदि निरँजणा, आदि जुगादी नाउँ धरांयदा। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जणा, भय होर ना कोए जणांयदा। थिर घर वासी साचा सज्जणा, सगला संग निभांयदा। ना घड़या ना भज्जणा, रूप अनूप ना कोए जणांयदा। ताल नगारे आपे वज्जणा, आप आपणी चोट वखांयदा। आपे सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी बह बह सजणा, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला, दीन दयाला आप अख्वांयदा। रंग रंगीला हरि करतारा, दूसर होर ना कोए जणांयदा। जुगा जुगन्तर खेल अपारा, करनी करता आप कमांयदा। लक्ख चुरासी बन्ने धारा, ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगांयदा। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहरा, लक्ख चुरासी पावे सारा, नौ दर खोज खुजांयदा। लक्ख चुरासी हो उज्यारा, घर घर विच दीप टिकांयदा। डूँघी कंदर पावे सारा, अन्ध अँध्यारा, ईड़ा पिंगल सुखमन मार्ग पांयदा। त्रैलोकी खेल खेल न्यारा, आप आपणा भेव खुलूांयदा। आत्म अन्तर सची धारा, निझर झिरना आप झिरांयदा। कँवल कँवला कर त्यारा, एका मुख भवांयदा। आपे करे बन्द किवाड़ा, आपे कुंडा लांहयदा। आत्म सेजा खेल न्यारा, करनी करता आप कमांयदा। अनहद राग सच्ची धुन्कारा, धुन आत्मक आप सुणांयदा। साची सखीआं मंगलचारा, बह बह गीत अलूांयदा।

कन्त कन्तूल मीत मुरारा, आप आपणा रूप वटांयदा। ब्रह्म ब्रह्म प्रभ खेल न्यारा, आप आपणा घर सुहांयदा। दस्म दुआरी जोत उज्यारा, निरगुण धारा आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लख चुरासी वेखे घर, घट घट आपणा आसण लांयदा। घट घट वसया पुरख अगम्म, दिस किसे ना आंयदा। ना मरे ना पए जम्म, मात पित ना कोई रखांयदा। हड्ड मास नाड़ी ना दिसे चम्म, रक्त बूंद ना मेल मिलांयदा। जुगा जुगन्तर जाणे आपणा कम्म, गुर पीर अवतार साध सन्त आप हो जांयदा। गगन पातालां देवे थम्म, बिन थम्मां आप रहांयदा। त्रैगुण माया बेड़ा देवे बन्नृ, लोकमात आप चलांयदा। आकाश प्रकाश सूरज चन्न, मंडल मंडप आप सुहांयदा। ना कोई जननी जणे जन, पिता पूत ना कोए अख्वांयदा। ना कोई राग सुणाए कन्न, ना कोई विद्या होर पढ़ांयदा। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, सच सिंघासण आसण लांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता आपणा बेड़ा आपे बन्नृ, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज वेख वखांयदा। एका वस्त नाम धन, सच वस्त झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे आप जगांयदा। पुरख अबिनाशी रूप वटाया, आप आपणी दया कमांयदा। लक्ख चुरासी वेख वखाया, आप आपणा संग निभांयदा। हरिजन साचा आप उठाया, इष्ट दृष्ट आप खुलाईआ। रूप अनूपा दरस दिखाया, आत्म हिरस सर्ब मिटाईआ। चिंता सोग हरख गंवाया, आप आपणा रंग रंगाईआ। नाम कसवट्टी परख वखाया, कंचन सोना रूप वटाईआ। निरगुण सरगुण तरस कमाया, त्रैगुण मेटे लग्गी शाहीआ। पूर्ब लहिणा कर्ज़ा लाहया, जन्म जन्म दा लेखा रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा लेखे लाईआ। हरिजन लेखा आप लिख, जुग जुग वेस वटांयदा। होर किसे ना रिहा दिस, कोटन कोटि राह तकांयदा। जगत विकारा चढ़ी विस, बिन हरिनाम ना कोए लांहयदा। माया ममता रहे पिस, कलिजुग चक्की आप चलांयदा। खाली दिसण सभ दे खिस, नाम धन्न ना कोए वखांयदा। माया डसनी रही डस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप तरांयदा। गुरसिख सज्जण तारनहारा, एकँकारा इक्क अख्वाईआ। सतिगुर रूप विच संसारा, शब्द शब्दी रूप वटाईआ। आदि जुगादि करे प्यारा, दिवस रैण मेल मिलाईआ। सारंगधर खेल न्यारा, आप आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। कागज़ कलम ना लिखणहारा, लिख लिख थक्की सति सरोवर छाहीआ। गुरसिख तेरा पार किनारा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव तक्कण तेरा दुआरा, निउँ निउँ बैठे सीस झुकाईआ। जिस जन मिल्या हरि निरँकारा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां इक्क इक्क समझाईआ। गुरमुख आत्म नेत्र खोलृ, सतिगुर पूरा दरस दिखांयदा। नाद अनादी वजाए ढोल, अनहद साची सेव

कमांयदा। शब्द अगम्मी आपे बोल, धुर फ़रमाना आप जणांयदा। नित नवित वसे कोल, वार थित ना कोए वखांयदा। काया पंज तत्त करे चोल़, आपणा चोला आप बदलांयदा। सुरती शब्दी रिहा मौल, सच फ़लवाड़ी आप महिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। गुरसिख हरि हरि वेख्या, कर किरपा करतार। आपे कढ्ढे भरम भुलेखया, हउमे हंगता गढ़ निवार। आपे दरस दिखाए गुर गुर दस दस्मेश्या, नानक गोबिन्द साची धार। आपे लेखा जाणे धारी केसिआं, मूंड मुडाए ल्ए उभार। आपे फिरे देस प्रदेसया, दो जहाना एका धार। आपे शाहो भूप नर नरेश्या, हरि सचा सच्ची सरकार। जुग जुग धारे आपणा वेसया, शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना पायण सार। गुरमुख विरले नेत्र वेख्या, जिस जन किरपा करे आप निरँकार। सृष्ट सबाई भरम भुलेखया, काया गढ़ होया हँकार। जोत अव्वला धारे भेख्या, अछल अछल रूप अपार। बल बावन देवे सिख्या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एकँकार। एकँकारा पुरख अबिनाशा, एका रंग समाया। जुगा जुगन्तर खेल तमाशा, लोकमात वेखण आया। जन भगतां देवे नाम दिलासा, भगत भगवन्त मेल मिलाया। लेखा जाणे रसन स्वासा, जो जन रसना रहे गाया। हरिभगत हरिजन गुरमुख गुरसिख कोए ना रहे निरासा, नौ खण्ड पृथ्मी मेल मिलाया। हरिभगत कदे ना आवे हार पासा, आपणे वट्टे नाम तुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मूर्त अकाल दीन दयाल, जूनी रहित सर्ब प्रितपाल, चरन रखाए काल महांकाल, गुरमुखां वखाए सच सच्ची धर्मसाल, थिर घर साचा इक्क वसाया।

२४७ ०६ २४७ ०६

❋ ६ फग्गण २०१६ बिक्रमी रत्न सिँघ दे घर पिण्ड चम्बल जिला अमृतसर ❋

सो पुरख निरँजण लाल गुलाला, सुते प्रकाश रूप वटाईआ। हरि पुरख निरँजण कंचन ढाला, महिमा अनूप बेपरवाहीआ। एकँकारा सूहा वेस दर दरवेश खेल निराला, आपणी धार बंधाईआ। आदि निरँजण जोत उजाला, सति सफ़ैदी रूप समाईआ। श्री भगवान हो दलाला, पीला रंग आप उपजाईआ। अबिनाशी करता अवल्लड़ी चाला, नीला तन्दन पाईआ। पारब्रह्म प्रभ हरि गोपाला, काली कफ्नी इक्क हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप वटाईआ। आपणा रूप साचे घर, एका एक वटांयदा। दूजे मन्दिर आपे वड़, तीजा बंक सुहांयदा। चौथा देवे खोल्ह किवाड़, पंचम सोभा पांयदा। छेवें दिसे ना कोई नारी ना कोई नर, निरगुण आपणा खेल खिलांयदा। सत्तवें मन्दिर बैठा चढ़, सच सिँघासण आसण लांयदा। पहला घर अगम्म अथाह, हरि साचा आप सुहांयदा। दूजे दर बण मलाह, आपणा राह चलांयदा।

तीजा देवे सच सलाह, सिफ्ती सिफ्त आप वड्यांअदा। चौथे ढोला एका गा, आपणा नाउँ धरांयदा। पंचम बोला आप अल्ला, आपणा राग सुणांयदा। छेवें पड़दा दए हटा, आप आपणा वेख वखांयदा। सत्तवें मेला लए मिला, घर साचे सोभा पांयदा। पहले घर अगम्म अपार, आपणी अलक्ख जगाईआ। दूजे दर हो त्यार, आपणी करवट लए बदलाईआ। तीजे दर खेल अपार, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। चौथे घर मीत मुरार, आप आपणा सगन मनाईआ। पंचम बणे सच भतार, आप आपणा रूप सुहाईआ। छेवें नारी जोत उज्यार, नूरो नूर डगमगाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण करे प्यार, आप आपणा अंग लगाईआ। सत्तवें घर अंग लगा, छेवें मेल मिलांयदा। पंचम बीज दए बिजा, चौथे घर उपजांयदा। तीजे दर फुल्ल फलवाड़ी दए लगा, दूजे घर आप महिकांयदा। पहले घर वेख वखा, आप आपणे रूप समांयदा। पहला घर हरि निरँकार, आपणा आप वखांयदा। दूजे बन्ने आपणी धार, आपणा रूप प्रगटांयदा। तीजे पावणहारा सार, आपणी इच्छया पूर करांयदा। चौथे घर हो उज्यार, दीपक जोत आप जगांयदा। पंचम बैठ सची सरकार, सच सिँघासण इक्क सुहांयदा। छेवें घर खेल अपार, आप आपणा मता पकांयदा। सत्तवें देवणहार अधार, निरगुण निरगुण रंग रंगांयदा। निरगुण रंग अपर अपारा, हरि साचा आप रंगाईआ। आपे खोल्ले सच दुआरा, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। आपे थिर घर पावे सारा, घर घर विच रिहा सुहाईआ। आपे बण चोबदार देवे पहरा, आप आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। पहले घर नर नरेश, आपणा तख्त सुहांयदा। आपणी जोत आप प्रवेश, आपे वेस वटांयदा। आपणा लिखे आपे लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। आपणा नेत्र आपे लए पेख, आप आपणा रूप सलांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटांयदा। पहले घर रूप वटाया, भेव कोए ना पांयदा। दूजी धार दए चलाया, तीजे आपणा खेल खिलांयदा। चौथे मुख आप खुलाया, आप आपणा बोल जणांयदा। पंचम नाअरा एका लाया, छेवें ताल वजांयदा। सत्तवें सति सतिवादी सुणने आया, घर घर बह बह आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ला इक्क वसांयदा। सच महल्ला एकँकार, आपणा आप वसाईआ। दूजी बन्ने साची धार, सच रूप वटाईआ। तीजा सुहाए तख्त ताज सच्ची सरकार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। चौथे बैठ पुरख करतार, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। पंचम होवे फ़रमाबरदार, आपे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। छेवें दर अंदर बाहर, गुप्त ज़ाहर भेव ना राईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण आपणी कार, हरि साचा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त रंग साची धार, आप उपजाए एकँकार, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग ना पाए कोई सार, लेखा

लेख ना कोए जणाईआ। सत्त रंग जोत जगा, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। सत्त रंग निशाना आप चढ़ा, आपे वेख वखांयदा। आपणा हुक्म आप सुणा, आपे सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहांयदा। दर सुहञ्जणा पुरख अकाल, घर साचे वज्जी वधाईआ। सत्त रंग निशाना दीन दयाल, घर साचे आप चढ़ाईआ। आपे जल्वा नूर नुरानी जलाल, नूरो नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। सत्त रंग निशाना हरि भगवाना, आपणी धार आप रंगांयदा। सति पुरख निरँजण नौजवाना, आप आपणा हुक्म चलांयदा। आपे दर दरवेश बणे दरबाना, आप आपणी कार कमांयदा। आपे देवे धुर फ़रमाना, आपे हुक्म सुणांयदा। आपे जाणे आपणा भाणा, आपणे भाणे आप रहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क उपजांयदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, निरगुण आपणा आप उपाया। आपे बैठ श्री भगवन्त, घर साचा आप सुहाया। आपे महिमा जाणे अगणत, आप आपणा भेव रखाया। आप बणाए आपणी बणत, आप आपणा रूप धराया। आपे आदि आपे अन्त, मध आपणा डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा छत्र इक्क झुलाया। साचा छत्र हरि भगवान, सचखण्ड दुआरे आप झुलाईआ। ना कोई ज़िमीं ना कोई अस्मान, गगन मंडल ना कोए अख्वाईआ। ना कोई पवण पाणी देवे दान, जल बिम्ब ना कोए तराईआ। त्रैगुण माया ना कोए प्रधान, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए वड्याईआ। पंज तत्त ना कोए मकान, ब्रह्म रूप ना कोए वटाईआ। राग नाद ना कोए गान, सुर ताल ना कोए वखाईआ। रवि ससि ना कोए भान, सूरज चन्न ना कोए चढ़ाईआ। खण्डा खड़ग ना कोए कृपाल, तीर कमान ना कोए उठाईआ। राम कृष्न ना कोए बलवान, रथ रथवाही ना कोए चलाईआ। सिमरत शास्त्र ना कोई वेद पुराण, चारे मुख ना कोए गाईआ। भगत भगवन्त ना कोए निशान, आत्म ब्रह्म ना कोए वखाईआ। गोपी दिसे ना कोई काहन, मंडल रास ना कोए रचाईआ। बिरध बाल ना कोए जवान, जगत वरेस ना कोए वड्याईआ। ना कोई पीण ना कोई खाण, आलस निन्दरा ना कोए उपजाईआ। नार कन्त ना करे पछाण, सुहञ्जणी सेज ना कोए हंढाईआ। ना कोई दाता ना कोई देवे दान, अग्गे झोली कोई ना डाहीआ। ना कोई तीर्थ करे अशनान, सर सरोवर ना कोए वखाईआ। ना कोई शब्द ना कोई ज्ञान, ना कोई करे पढ़ाईआ। ना कोई दीन मज़ब दिसे ईमान, वरन बरन ना कोए बणाईआ। ना कोए शरीअत अञ्जील कुरान, तीस बतीसा ना कोए गाईआ। ईसा मूसा ना कोए प्रधान, जगत हदीसा ना कोए वखाईआ। संग मुहम्मद ना करे कोई परवान, चार यार ना कोए मनाईआ। नानक गोबिन्द ना करे कोई ध्यान, खाणी बाणी ना कोए सुणाईआ। इक्क इकल्ला हरि भगवान, सचखण्ड बैठा आसण

लाईआ। सीस छत्र झुलाए सत्त रंग निशान, दूसर हथ्थ ना कोए वड्याईआ। आदि जुगादी मेहरवान, ना मरे ना जाईआ। आपे जाणे आपणी आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। चौथा घर सच दरवाजा, सो पुरख निरँजण आप खुल्हांयदा। आपे बह बह मारे वाजा, आपणा नाउँ आप अल्हांयदा। आपे रचया आपणा काजा, आप आपणा मंगल गांयदा। आप आपणा साजण साजा, आप आपणी रचन रचांयदा। आप चलाए आपणा जहाजा, आपणा बेड़ा आप तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, सत्त रंग निशाना कर त्यार, पुरख अबिनाशी इच्छया धार, आपणी भिच्छया झोली पांयदा। आपणी इच्छया पुरख अकाल, आपे आप प्रगटाईआ। आपे होया दीन दयाल, आपणी दया आप कमाईआ। आपे वसया आपणी सच सची धर्मसाल, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। आपे करे आपणी प्रितपाल, प्रितपालक बेपरवाहीआ। आप आपणा बणे दलाल, आप आपणी बूझ बुझाईआ। सिर छत्र सोहे सत्त रंग निशान, दूजी वस्त इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी गणत गणाईआ। सचखण्ड दुआरा एकँकारा, निरगुण निरगुण आप समांयदा। इक्क इकल्ला खेल न्यारा, दूजा कोए ना जाणे पारावारा, तीजे भेव ना कोए खुलांयदा। चौथे रूप अगम्म अपारा, पंचम लाए सच अखाड़ा, आपणी धारा आप बंधांयदा। पहली धार सो पुरख निरँजण, आपणी वण्ड वण्डाईआ। दूजी खेल करे करतार, दो दो मेला सहिज सुभाईआ। एकँकारा हो त्यार, आपणा रूप आप प्रगटाईआ। आदि निरँजण जोत उज्यार, अंदर वड़ करे रुशनाईआ। श्री भगवान पावे सार, कमलापाती खेल खलाईआ। पंचम सोहण इक्क दुआर, पंचम रूप वटाईआ। अद्धविचकारे चढ़ निरँकार, आपणा आसण लाईआ। उच्ची कूक करे पुकार, सो आपणा नाउँ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम वेखे एका थाईंआ। पंचम रूप अपार, सो पुरख निरँजण आप वटाया। हरि पुरख निरँजण खेल अपार, आप आपणा खेल खलाया। एकँकारा हो त्यार, आपणी घाड़न रिहा घड़ाईआ। आदि निरँजण करे सच प्यार, आप आपणा संग निभाईआ। श्री भगवान एका धार, एका पांजा मेल मिलाया। दोहां विचोला आप करतार, आपे आवे जावे फेरा पाया। पंचम मेला सचखण्ड, हरि साचा आप करांयदा। आपे करे आपणी वण्ड, आपे हुक्म सुणांयदा। आपे देवणहारा गंढ, आपे आपणी आप खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमांयदा। पंचम घर पंचम मेला पंच प्रधान, पंचां वेख वखांयदा। पंचम देवे आपणा दान, पंचम आपे मंग मंगांयदा। पंचम बणे आपे काहन, आप आपणी खेल खिलांयदा। पंचम बख्शे इक्क ध्यान, एका रूप दरसांयदा। पंचम करे इक्क पहचान, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा जोड़ जुड़ांयदा। सो पुरख

निरँजण हरि पुरख निरँजण जुड़या जोड़, कर किरपा आप जुड़ांयदा। एकँकारा चढ़या घोड़, आपे वेख वखांयदा। आदि निरँजण श्री भगवान जाए बौहड़, सगला संग आप निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम एका डोर बंधांयदा। पंचम रंग अपार, पंचम जोड़ जुड़ाईआ। पंचम रूप आप निरँकार, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। पंचम शाह भूप सिक्दार, पंचम आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बख्शे सच सची शहनशाहीआ। पंचम शाह सुल्तान, सचखण्ड साचे सोभा पांयदा। पंचम होया आप मेहरवान, आप आपणी दया कमांयदा। पंचम वेखे सति निशान, सति सतिवादी आप झुलांयदा। पंचम वेखे मार ध्यान, सीस जगदीस नज़री आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप प्रगटांयदा। आपणी इच्छया आपे कर, आपे खेल खलाईआ। आपणी भिच्छया आपे भर, आपणी वण्ड वण्डाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़, आप आपणी रचन रचाईआ। आपणा सीस आपणे अग्गे धर, आपे वेख वखाईआ। आपे तख्त निवासी जाए बण, शाहो शाबासी बेपरवाहीआ। आपे पंचम मुख ताज फड़, निरगुण आपणे सीस टिकाईआ। अबिनाशी करता सचखण्ड दुआरे बैठा चढ़, आप आपणा हुक्म चलाईआ। पारब्रह्म हरि ल्या फड़, दे मति रिहा समझाईआ। पंचम ताज सीस टिकाया, हरि जगदीस वड्डी वड्याईआ। अबिनाशी करता दर दरबान बहाया, देवे हुक्म सिफ्त सलाहीआ। पारब्रह्म दर सद बहाया, धुर फ़रमाणा इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पंचम मुख भेव खुलाईआ। पंचम मुख भेव खुलाउणा, हरि ताज वड्डी वड्याईआ। चार मुख चार जुग चार वेद पाठ पढ़ाउणा, चार वरन करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मुख आप वड्याईआ। पंचम मुख एकँकार, आपणा घर वखांयदा। सो पुरख निरँजण भर भण्डार, हँ ब्रह्म विच समांयदा। हँ रूप कर साकार, विष्नूं आपणा खेल खिलांयदा। आपे भरे सति भण्डार, आपणा कँवल रूप वटांयदा। आपे पंखड़ी बण खिले गुलज़ार, सच बहार आप जणांयदा। आपे ब्रह्म होए बाहर, हँ आपणा नाउँ रखांयदा। आपे वसया धूंआँधार, सुन्न अगम्मी डेरा लांयदा। आपे शंकर कर त्यार, साख्यात रूप दरसांयदा। आपे वसे सभ तों बाहर, सो पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ आपणा रूप वटांयदा। सो पुरख अकाल, हरि वड्डा वड वड्याईआ। हँ उपाए आपणे लाल, ब्रह्मा विष्न शिव वज्जी वधाईआ। आपे चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। त्रैगुण माया आप दलाल, आपणा वणज आप वखाईआ। सांतक विष्नूं करे प्रितपाल, सति सति सति बुझाईआ। राजस ब्रह्मे झोली देवे डाल, दे मति इक्क समझाईआ। तामस शंकर बद्धा काल, साचा सगन मनाईआ।

तिन्ना विचोला खेल कृपाल, करनी करता किरत कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मुख साचा ताज, धुरदरगाही एका राज, आदि जुगादी करे काज, भेव कोए ना पाईआ। चारे मुख हरि भगवान, आपणी खेल खलाईआ। ब्रह्मे देवे एका दान, एका बूझ बुझाईआ। चारों कुण्ट जगत ज्ञान, करे सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वण्ड वण्डाईआ। चारे युग वण्डी वण्ड, चारे मुख सलांहयदा। लेखा जाणे उत्भुज सेत्ज जेरज अंड, आप आपणा लेख लिखांयदा। आपे सुत्ता रहे दे कर कंड, आप आपणा मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। निरगुण हरि हरि खेल खलाया, सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। पंचम मुख ताज उपाया, पुरख अबिनाशी भेव ना आंयदा। चार मुख जगत जगाया, चार खाणी लेख लिखांयदा। पंचम बह बह आपणा आसण लाया, आप आपणी कल वरतांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमाया, धुर फुरमाना आप जणांयदा। साचा राणा आप हो जाया, लख चुरासी रइयत इक्क वखांयदा। धुर दा गाणा आप सुणाया, आप आपणा नाउँ उपजांयदा। आपणा बाणा आप उठाया, दिस किसे ना आंयदा। आपणी कुक्खों आपणा आप आपे जाया, मात पित ना कोए बणांयदा। लक्ख चुरासी तेरा दाई दया, पुरख अकाल इक्क अख्वांयदा। त्रैगुण माया रक्खी छाया, लक्ख चुरासी पड़दा पांयदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग जुग आपणा भेव खुलाया, गुर पीर अवतार साध सन्त मात घलांयदा। आपणे भाणे सर्ब रखाया, हुक्मी हुक्म आप चलांयदा। निउँ निउँ सीस रहे झुकाया, पंज तत्त चोला जो हंढांयदा। शब्द अनादी विच टिकाया, गुर गुर दे बुझांयदा। आपणा आप हरि आपणे धाम वसाया, लेखा लेख ना कोए वखांयदा। नौ सत्त ना कल कोए वण्ड वण्डाया, अकल कल धारी आप हो जांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखाया, कलिजुग अन्तिम भेव चुकांयदा। निरगुण रूप निहकलंक जामा पाया, जागरत जोत इक्क जगांयदा। तुरीआ राग इक्क सुणाया, सुपन सखोपत जागृत ना कोए मनांयदा। आपणा भेव आप खुलाया, गुर पीर अवतार बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह सीस सर्ब नवांयदा। सचखण्ड दुआरा लोकमात वखाया, सोलां कला पन्ध मुकांयदा। सम्मत सोलां चढ़ के आया, गढ़ हँकारी आप तुड़ांयदा। धुर दरबाना सत्त रंग निशाना फड़ के आया, लोकमात आप चढ़ांयदा। सोहँ अक्खर एका पढ़ के आया, लक्ख चुरासी आप पढ़ांयदा। आपणी जोती आपे सड़ के आया, त्रैगुण माया ना अग्न लगांयदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे वड़ के आया, आप आपणा बंक खुलांयदा। आपणा भाणा आपणे हथ्थ ते धर के आया, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। आपणा खण्डा आपे फड़ के आया, तिक्खी धार ना कोए वखांयदा। पंचम मुख ताज सीस आपणे धर के आया, लोकमात आप

उपजांयदा। साढे तिन्न हथ्थ सिँघासण उप्पर चढ़ के आया, पुरख अकाल वेस वटांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इंद राह विच आपे फड़ के आया, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटांयदा। निरगुण घड़या पंचम मुख ताज, आदि आदि हरि वड्याईआ। धुर दरगाही सच्चा राज, हरि करे सच शहनशाहीआ। कलिजुग अन्तिम रचया काज, नौ नौ चार दए गवाहीआ। आपणी शब्द अगम्मी मार वाज, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वक्त सुहाईआ। वक्त सुहावणा पुरख अकाल, लोकमात वज्जी वधाईआ। हरिजन साचे वेखे लाल, दीन दयाल दया कमाईआ। चरन चुम्मे काल महांकाल, दर बैठन सीस नवाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव होयण बेहाल, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। करोड़ तेतीस ना मिले कोई दलाल, बेड़ा पार ना कोए कराईआ। पुरख अबिनाशी चली अवल्लड़ी चाल, वेद कतेब भेव ना राईआ। कोटन कोटि साध सन्त घालणा गए घाल, लेखा लिख ना सके राईआ। नानक कबीरे ल्या भाल, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल निराल, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। पहलों फड़या सिँघ पाल, आप आपणे अंग लगाईआ। दूजे वजाया साचा ताल, पूत सपूता वेख वखाईआ। पुत पोतरे देवे सच्चा धन माल, नाम खजाना इक्क वखाईआ। लगे फल सचे डाल, लोकमात आप महिकाईआ। गोबिन्द तेरी काया माटी खाल, काया उडदी दिसे शाहीआ। तेरा होया ना विंगा वाल, घोड़े चढ़या साचा माहीआ। पुरख अबिनाशी लए भाल, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। दुष्ट दमन घाली घाल, सप्त सरिंग हेम कुण्ट फोल फुलाईआ। सत्त रंग निशाना तेरे हथ्थ फड़ाए दीन दयाल, लोकमात दए चढ़ाईआ। एका रंग रंगाए शाह कंगाल, राज जोग इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, अगला लेखा आपणा बन्द रखाईआ।

✻ ७ फग्गण २०१६ बिक्रमी तारा सिँघ दे घर पिण्ड चम्बल जिला अमृतसर ✻

हरि सतिगुर सच्चा पातशाह, रूप रंग ना कोए जणाईआ। पुरख अबिनाशी दाता बेपरवाह, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी इक्क मलाह, आपणा वेस वटाईआ। एकँकारा सिफ्त सलाह, महिमा गणत गणी ना जाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, हरि पुरख निरँजण सहिज सुखदाईआ। वसणहारा साचे थाँ, सचखण्ड बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सचा इक्क अख्वाईआ। सतिगुर सचा एकँकार, इक्क इकल्ला हरि अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर खेल अपार, जुग करता आप करांयदा। निरगुण सरगुण साची धार, सति पुरख निरँजण आप चलांयदा।

दो जहानां इक्क आधार, एका बन्धन पांयदा। लोकमात लै अवतार, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। भगतन करे इक्क प्यार, आप आपणी बूझ बुझांयदा। सन्तन मेला धुर दरबार, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। गुरमुख सज्जण लए उभार, आप आपणा मेल मिलांयदा। गुरसिख नईया जाए तार, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। खेले खेल विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा भेव ना आंयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवन्त, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। हरिजन मेले साचे सन्त, आप आपणे रंग रंगाईआ। गुरमुख बणाए आपणी बणत, आप आपणा भेव खुलाईआ। गुरसिख रलाए साची संगत, सगला संग आप निभाईआ। दूसर दर ना जाए मंगत, गुर पूरे इक्क वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड वडा शहनशाहीआ। शहनशाह हरि वड सुल्तान, महिमा अपर अपारया। वसणहारा सच मकान, थिर घर वासी कर पसारया। देवणहारा एका दान, एकँकारा आप अख्वा रिहा। साचा खेल श्री भगवान, भगतन आपणा वेस वटा ल्या। शब्द अनादी इक्क ज्ञान, वड धनाडी आप धरा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खला ल्या। सतिगुर पूरा हरि भगवाना, अवर ना कोए दसांयदा। गुर गुर रूप विच जहाना, आपणा मेल मिलांयदा। गुरमुख करे जगत प्रधाना, शब्द शब्दी नाद वजांयदा। गुरसिखां बख्शे चरन ध्याना, चातिक तृखा आप बुझांयदा। जुगा जुगन्तर देवे धुर फ़रमाना, शब्द अगम्मी बोल सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगांयदा। सतिगुर पूरा शब्द भण्डार, गुर गुर झोली आप भराईआ। गुर गुर पूरा बण वरतार, गुरमुखां देवे थाउँ थाईंआ। गुरमुख साचा बोल जैकार, गुरसिख सज्जण लए उठाईआ। गुरसिख निउँ निउँ करे सदा निमस्कार, दर साचे सीस झुकाईआ। लोकमाती खेल न्यार, निरगुण सरगुण आप कराईआ। कमलापाती मीत मुरार, पीत पीतम्बर आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तख्त ताज इक्क सुहाईआ। तख्त ताज हरि नरायण, निरगुण आपणा आप सुहांयदा। गुर गुर बख्शे एका नैण, आप आपणी अक्ख वखांयदा। गुरमुखां चुकाए लहिणा देण, जुग जुग मार्ग आपे लांयदा। गुरसिख बणाए साक सज्जण सैण, बंस सरबंस वेख वखांयदा। धाम इक्ट्ठे एका बहण, दर घर साचा इक्क वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटांयदा। सतिगुर सच्चा हरि निरँकार, घर साचे सोभा पांयदा। सतिगुर पूरा बण संसार, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। गुरमुखां देवे शब्द आधार, निरगुण बाती जोत जगांयदा। गुरसिखां दर बणे भिखार, एका अल्फ़ी गल हंढांयदा। आवे जावे वारो वार, जुग जुग आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाहो भूप आप अख्वांयदा। शाहो भूप हरि सिक्दार, दरगाह

साची आप सुहाईआ। सतिगुर पूरा बण चोबदार, लोकमात सेव कमाईआ। गुरमुखां वाजा रिहा मार, सोए लोकमात उठाईआ। गुरमुखां फड़ फड़ बाहों दए उठाल, आलस निन्दरा दए मिटाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों भाल, जम की फाँसी फंद कटाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, जगत विचोला बेपरवाहीआ। एका दस्से राह सुखाल, मार्ग पन्थ आप वखाईआ। आपणी घालन आपे घाल, गुरसिखां पूरन घाल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। सतिगुर पूरा हरि बलवान, बलधारी आप अख्वांयदा। सचखण्ड वसे सच मकान, थिर घर आपणा आसण लांयदा। सति वखाए इक्क निशान, सच निशाना आप झुलांयदा। तख्त ताज श्री भगवान, आप आपणा वेख वखांयदा। आपे बैठा साचा काहन, आप आपणा दर सुहांयदा। आपे देवे धुर फ़रमान, आप आपणा हुक्म अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भूषन आप सुहांयदा। आपणा भूषन हरि निरँकार, आपे आप बणाईआ। आपणे घर कर त्यार, आपे वेख वखाईआ। आपे तागा सूत्र वट चाढ़े गिरवर गिरधार, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। आपे ताणा तणे अपर अपार, आपे पेटा देवे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बस्त्र आप उपाईआ। आपणा बस्त्र कर त्यार, हरि हरि वेख वखांयदा। आपे सीवे सीवणहार, साची सूई आप चलांयदा। लेखा जाणे एकँकार, दूसर दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप चलांयदा। सत्त रंग सति करतार, सति सतिवाद बणाईआ। आपणी वण्ड वण्डे बेऐब परवरदिगार, बारां बारां मूल चुकाईआ। एका दूजा कर प्यार, अठ्ठ चार वेख वखाईआ। चार मुख खोल्ह किवाड़, अठ्ठ तत्त दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची अल्फ़ी आप बणाईआ। साची अल्फ़ी हरि मेहरवान, आपणी आप बणांयदा। सत्त रंग वखाए इक्क निशान, बारां बारां जोड़ जुड़ांयदा। सचखण्ड दुआर कर परवान, आपणा हुक्म आप जणांयदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी सुत्ता रिहा बण अञ्याण, लोकमात ना फेरा पांयदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, निरगुण आपणा रूप वटांयदा। खेले खेल दो जहान, खेलणहारा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, आपणी अल्फ़ी आप उपांयदा। एका अल्फ़ी हरि हरि उलफ़त, महिमा गणत गणी ना जाईआ। लेखा जाणे ना कोई नबी रसूल उम्मत, अमाम अमामा वड वड्याईआ। आपे वदी सुदी जाणे आपणा सम्मत, गहर गम्भीर भेव ना राईआ। आपे आदि आपे अन्त, हरि भगवन्त खेल खलाईआ। आप उठाए साचे सन्त, साची सिख्या इक्क सिखाईआ। आपे गुरमुख मणीआ बणे मंत, नाम नामा आप दृढ़ाईआ। आपे गुरसिख उपजाए विच्चों जंत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन श्रंगार इक्क वखाईआ।

निरगुण आपणा वेस वटाउणा, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। सत्त रंग निशाना इक्क चढ़ाउणा, लोकमात फेरा पांयदा। सीस ताज इक्क रखाउणा, दर घर साचा इक्क वड्यांअदा। बस्त्र तन इक्क छुहाउणा, चुरासी कलीआं वेख वखांयदा। सत्त बारां जोड़ जुड़ाउणा, रंग रंगीला रंग रंगांयदा। साढे तिन्न हथ्थ लम्बा मिण कराउणा, वध घट ना कोए बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलांयदा। साढे तिन्न हथ्थ अल्फ़ी गल हरि पा, लोकमात वेख वखाईआ। एका अल्फ़ दए पढ़ा, निरगुण सरगुण बेपरवाहीआ। ऐन अक्ख दए खुला, गैन ग़फलत ना कोए रखाईआ। नुक्ता नून दए मिटा, सीस मुख आप उठाईआ। आपणी तरमीम आपे दए करा, आपणा लेखा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अल्फ़ी तन श्रंगार, खेले खेल पुरख करतार, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी साची डोर, हरि शब्दी शब्द बंधांयदा। वसणहारा अन्ध घोर, जोत उजाला रूप वटांयदा। सति सतिवादी चढ़या घोड़, शाह सवार नाउँ धरांयदा। लोआं पुरीआं रिहा दौड़, ब्रह्मण्डां खण्डां फेरा पांयदा। गुरमुखां बुझाए लग्गी औड़, अमृत मेघ इक्क बरसांयदा। वेखणहारा मिट्ठा कौड़, कौड़ा रीठा आप भनांयदा। कलिजुग अन्तिम गया बौहड़, गुर गोबिन्द मेला आप मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अल्फ़ी हरि करतार, आपणी आप बणांयदा। अल्फ़ी तन श्रंगार, त्रैगुण तत्त मिटाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, ब्रह्म मति करे कुड़माईआ। चार वरनां इक्क अधार, पुरख अकाल आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहली चेत्र कलिजुग खेत्र आपणे नेत्र वेख वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा नाउँ धराईआ।

* ७ फग्गण २०१६ बिक्रमी सोहण सिँघ दे घर तरन तारन *

हरि बाढी छन्न छुहंदड़ा, चार दीवार ना कोए रखाईआ। आपणी सेवा आप कमंदड़ा, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। साचा रंग इक्क रगंदड़ा, रंग रंगीला मोहण माधव साचा माहीआ। सति दरवाजा इक्क खुलंदड़ा, आप आपणा दर समझाईआ। दीपक जोत इक्क जगंदड़ा, जोती नूर नूर रुशनाईआ। साचा धाम आप सुहंदड़ा, सोभावन्त बेपरवाहीआ। साचा खेल आप खलंदड़ा, एकँकारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर एका एक बुझाईआ। साचा बाढी हरि पुरख सुल्तान, आपणी बणत बणांयदा। सचखण्ड बणाए सच मकान, सच सिँघासण आप वछांयदा। साची सेजा कर परवान, दर घर साचे आप सुहांयदा। उप्पर बैठ नौजवान, निरगुण आपणा धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वास धरांयदा। साचा बाढी सच्चा शाह, घर साचे सच सुहांयदा। तख्त ताज इक्क बणा, आप आपणे मन्दिर डांहयदा। चारे कूटां वेख वखा, दहि दिशा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी सेव कमांयदा। साचा बाढी सच सिँघासण, हरि साचा सच उपजाईआ। आप बणाए पुरख अबिनाशन, परम पुरख बेपरवाहीआ। सच दुआरे आप टिकाए ना कोई पृथ्मी ना आकासण, पावा चूल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा सूत्र आपे लाईआ। आपणा सूत्र आपे ला, हरि आपे वेख वखांयदा। आपे बणया बेपरवाह, आपे चीर चरांयदा। आपे वण्डी देवे पा, आपणा हिस्सा आप वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तख्त आप सुहांयदा। आपे रक्ख तिक्खा आरा, आपणी धार चलांयदा। आपे चीरे चीरनहारा, सिध्धा चीर इक्क वखांयदा। आपे फड़ सच कुहाढ़ा, आपणी हथ्थीं आप लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बाढी दिस ना आंयदा। साचा बाढी उठ बलवान, आपणा भार उठांयदा। सच लगाए इक्क निशान, सच निशाना इक्क वखांयदा। आर पार करे ध्यान, अद्धविचकार ना मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलांयदा। सच सिँघासण आपे ठोक, हरि साचा सोभा पांयदा। आप रखाए उप्पर चौदां लोक, लोआं

पुरीआं चरनां हेठ दबांयदा। उप्पर बैठ पढ़े सलोक, सो पुरख निरँजण आपे गांयदा। हँ ब्रह्म ना सके कोए रोक, रोकणहारा

दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक्क सुहांयदा। सच सिँघासण साचे मन्दिर, हरि साचा सच सुहांयदा। साढे तिन्न तिन्न रक्खे अंदरे अंदर, त्रैलोक भेव ना आंयदा। ताणा पेटा डूँग्घी कंदर, गहर गम्भीर आप उँणांयदा। बन्द किवाड़े मार जंदर, दर घर साचे आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बाढी खेल खिलांयदा। साचा बाढी परवरदिगार, तख्त ताज सुहांयदा। नूर नुराना हो उज्यार, शाह सुल्ताना आसण लांयदा। आपणा लेखा आप विचार, लेखा लेखे विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अथाह बेपरवाह सिफ्त सलाह आप जणांयदा। सच सिँघासण सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहांयदा। हरि पुरख निरँजण एका कन्त, घर साचे मंगल गांयदा। एकँकारा होए मंगत, आदि निरँजण संग रखांयदा। श्री भगवान चाढ़े रंगत, पुरख अबिनाशी आप उठांयदा। पारब्रह्म आदि जुगादि ना होए भंगत, जुगा जुगन्तर खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बाढी पुरख करतार, ब्रह्मा विष्न शिव लक्ख चुरासी घड़नेहार, घड़ भन्ने बेपरवाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी खेल न्यारा, जुगा जुगन्तर मात अवतारा, भगतन करे सच प्यारा, दूत दुष्ट दर दुरकाईआ।

✻ १४ फग्गण २०१६ बिक्रमी दिल्ली दरबार विच लिख्त होई पहाड़ गंज गली नं ७ मुलतानी ढांडा मकान नं ६७८६ ✻

पीत पीतम्बर सोहे सीस, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण हरि जगदीस, एकँकारा भेव ना राईआ। आदि निरँजण बीस इकीसा, राग छतीस भेव ना राईआ। श्री भगवान तीस बतीस, रसना जेहवा ना सके गाईआ। अबिनाशी करता इक्क हदीस, आदि जुगादी आप चलाईआ। पारब्रह्म निरगुण आपणा पीसण पीस, सेवक साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल खिलाईआ। पीत पितम्बर हरि भगवान, सो पुरख निरँजण आप सुहांयदा। सच सुअम्बर दो जहान, हरि पुरख निरँजण आप करांयदा। एकँकारा नौजवान, आप आपणा सगन मनांयदा। आदि निरँजण जोत महान, नूर नुराना डगमगांयदा। अबिनाशी करता कर ध्यान, आप आपणा बल धरांयदा। श्री भगवान खेल महान, खेल आपणा आप खिलांयदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, सचखण्ड साचे सोभा पांयदा। सति सतिवादी सति विधान, सति सरूपी आप बणांयदा। आपे सखी आपे काहन, आप आपणा मंगल गांयदा। आपे शाह भूप राज राजान, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। आपे तख्त ताज वेखे मार ध्यान, थिर घर वासी वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। पीत पीतम्बर हरि भगवन्त, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण साचा कन्त, हरि पुरख निरँजण लए प्रनाईआ। एकँकारा एका चाढ़े रंग बसन्त, अजूनी रहित आप रंगाईआ। आदि निरँजण आदि अन्त, आप आपणा दीप जगाईआ। अबिनाशी करता खेल बेअन्त, अगम्म अगम्मड़ा कार कमाईआ। श्री भगवान सोभावन्त, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा वेस धराईआ। पीत पीतम्बर निरगुण धार, पुरख अकाल वेख वखांयदा। सो पुरख निरँजण हो त्यार, हरि पुरख निरँजण मेल मिलांयदा। एकँकारा कर प्यार, आप आपणा संग रखांयदा। आदि निरँजण हो उज्यार, सति सरूपी डगमगांयदा। पुरख अबिनशी बण भिखार, दर आपणे मंग मंगांयदा। श्री भगवान हो त्यार, साची भिच्छया झोली पांयदा। पारब्रह्म प्रभ बण वरतार, आपणी झोली आप भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा वेख वखांयदा। पीत पीतम्बर हरि भगवान, हरि जू हर घट आप सुहांयदा। सो पुरख निरँजण वड मेहरबान, हरि पुरख निरँजण वेख वखांयदा। एकँकारा खेल महान, आदि निरँजण आप खिलांयदा। श्री भगवान बन्ने गान, पुरख अबिनाशी वेख वखांयदा। पाहब्रह्म प्रभ चतर सुघड़ सयान, आपणा लेखा आप चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर सुहञ्जणा इक्क सुहांयदा। पीत पीतम्बर

हरि नरायण, निरगुण आपणा आप उपजाईआ। सो पुरख निरँजण बणे साक सज्जण सैण, हरि पुरख निरँजण सज्जण मेल मिलाईआ। एकँकारा वेखे आपणा नैण, आदि निरँजण संग रखाईआ। अबिनाशी करता चुकाए लहण देण, श्री भगवान आपणी वस्त आप उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ एका धाम अकट्ठे बहण, निरगुण निरगुण विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचे वड वड्याईआ। थिर घर साचा हरि सुहावणा, सो पुरख निरँजण आप सुहांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल खिलावणा, एकँकारा रंग रंगांयदा। आदि निरँजण डगमगावणा, अबिनाशी करता रूप वटांयदा। श्री भगवान संग रखावणा, पारब्रह्म नाउँ धरांयदा। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहावणा, छप्पर छन्न ना कोई वखांयदा। साचा तख्त इक्क विछावना, आसण सेज ना कोई हंढांयदा। साचा काहन इक्क अख्वावना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला, घर साचा आप सुहांयदा। थिर घर साचा उच्च महल्ला, सो पुरख निरँजणा आप सुहाईआ। हरि पुरख निरँजण बैठ इक्क इकल्ला, एकँकारा सोभा पाईआ। आदि निरँजण दीपक बला, अबिनाशी करता कर रुशनाईआ। श्री भगवान आपणा आसण आपे मल्ला, पारब्रह्म दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच समग्री साची रास, घर मन्दिर आप टिकाईआ। साची रास पुरख करतार, करनी करता आप उपजांयदा। साचे मन्दिर बैठ निरँकार, सचखण्ड साचा आप सुहांयदा। थिर घर दीपक कर उज्यार, रूप अनूप डगमगांयदा। सच सिँघासण बैठ सच्ची सरकार, हुक्मी हुक्म आप चलांयदा। निरगुण निरगुण कर प्यार, नारी कन्त रूप वटांयदा। बण विचोला सिरजणहार, घर घर विच फेरे पांयदा। मेल मिलावा कन्त भतार, नर नरायण रंग रंगांयदा। साची सखीआं मंगलचार, अजूनी रहित आप करांयदा। आपे गाए गावणहार, दूसर कोए ना संग वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकारा खेल अपारा, निरगुण धारा आप चलांयदा। निरगुण धार सति सरूप, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। हरि पुरख निरँजण चारे कूट, एकँकारा दहि दिशा वेख वखाईआ। आदि निरँजण आपणे नूर आपे फुट, नूरो नूर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता उच्च महल्ल अटल मुनार चढ़े चोट, सच सिँघासण आसण लाईआ। श्री भगवान वेस वटाए कोटन कोट, कोटन कोटि भेव ना राईआ। पारब्रह्म सच लगाए आपणी चोट, सति नगारा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अगम्मा ना मरा ना कदे जम्मा, आवण जावण खेल खलाईआ। आवण जावण हरि करतार, आपणा खेल खिलांयदा। सचखण्ड निवासी एकँकार, अकल कल आप वरतांयदा। थिर घर बैठ सचे दरबार, सच सुल्ताना नाउँ धरांयदा। सच तराना गाए आपणी वार, नाद अनादी गीत अल्हांयदा। सुत

दुलारा कर त्यार, पूत सपूता नाउँ वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगांयदा। रंग रंगीला हरि हरि मीत, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण सति अतीत, घर साचे सोभा पाईआ। एकँकारा वसे धाम अनडीठ, दिस किसे ना आईआ। आदि निरँजण आप आपणा आपे जीत, घर आपणे सोभा पाईआ। पुरख अबिनाशी हस्त कीट, आप आपणा रूप वटाईआ। श्री भगवान साची रीत, सचखण्ड साचे आप चलाईआ। पारब्रह्म वसणहारा सच मसीत, थिर घर साचा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत करे रुशनाईआ। पीत पीतम्बर निरगुण ताज, पुरख निरँजण आप बणांयदा। आदिन आदि रचया काज, अन्त मध ना कोए वखांयदा। आपणा साजण आपे साज, सच सिँघासण आप विछांयदा। आपे बणया राजन राज, आप आपणा आसण लांयदा। आप आपणी मार आवाज, दर दरबान आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखांयदा। वेखणहारा पुरख समरथ, दूसर अवर ना कोई जणांयदा। आपणी महिमा जाणे अकथ, कथनी कथ ना कोए सुणांयदा। खेले खेल आपणे घाट, सच दुआरा वेख वखांयदा। आपे अंदर वड़या आन बाट, आप आपणा रूप प्रगटांयदा। आपे सोया आपणी खाट, आप आपणा बिरध धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुलांयदा। भेव अवल्ला हरि भगवान, आपणा आप खुल्हाईआ। निरगुण जोत नूर महान, आदि जुगादि डगमगाईआ। आपे जाणे आपणा सच निशान, आप आपणे रंग रंगाईआ। वसणहारा सचखण्ड मकान, चार दीवार ना कोए बणाईआ। ना कोई रवि ससि दिसे सूरज चन्न भान, मंडल मंडप ना कोए वखाईआ। पृथ्मी आकाश गगन मंडल ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए निशान, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड ना कोए वड्याईआ। शब्द धुन ना कोए ज्ञान, नाम नामा ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बंक वखाईआ। बंक दुआरा हरि सुहञ्जणा, एका एक उपाया। सो पुरख निरँजण आदि निरँजणा, हरि हरि बैठा आसण लाया। एकँकारा घर साचे बह बह सजणा, साचा तख्त आप वड्याईआ। आप कराए आपणा मजणा, अबिनाशी करता नाउँ धराया। श्री भगवान ना घड़या ना भज्जणा, ना मरे ना जाया। पारब्रह्म आपणे मन्दिर आपे बह बह सजणा, थिर घर साचा इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच पीतम्बर आप उपाया। सच पीतम्बर साची धार, परम पुरख आप उपजाईआ। सच प्रीतम कर प्यार, परम पुरख वेख वखाईआ। सच सच घर सच श्रंगार, सच साचा आप कराईआ। सच पुरख हरि साची नार, सच सच करे कुड़माईआ। सच मन्दिर सच घर बार, सच अंदर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क वसाईआ। घर

वसाए हरि पुरख अगम्मड़ा, एका वेस वटांयदा। कीमत कोए ना पाए दमड़ी दमड़ा, हट्टो हट्ट ना कोए विकांयदा। वसणहारा बिन नाड़ी चमड़ा, तत्व तत्त ना कोए जणांयदा। मात पित ना अम्मी अम्मड़ा, बाल गोद ना कोए उठांयदा। करे खेल अगम्म अगम्मड़ा, आप आपणी खेल खिलांयदा। साचा थान इक्क सुहंदड़ा, सचखण्ड साचे आसण लांयदा। सच सिँघासण जोत जगंदड़ा, नूरो नूर नूर रुशनांयदा। शाहो भूप रूप वटंदड़ा, महिमा रूप ना कोए गणांयदा। हुक्मी हुक्म आप सुणंदड़ा, धुर फ़रमाना आप अलांयदा। चारों कुण्ट वेख वखंदड़ा, दहि दिशा फेरी पांयदा। शब्द सुत इक्क उठंदड़ा, आप आपणे मार्ग लांयदा। तख्त ताज इक्क वखंदड़ा, दो जहानां खेल खिलांयदा। सत्त रंग साची धार वहंदड़ा, सति सतिवादी आप रंगांयदा। पंचम मुख खोल खुलंदड़ा, आप आपणा ढोला गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण मेला बेपरवाह, हरि साचा आप कराईआ। सो पुरख निरँजण बण मलाह, हरि पुरख निरँजण सेव कमाईआ। एकँकारा दए सलाह, आदि निरँजण भैणा भाईआ। अबिनाशी करता फड़ाए बांह, श्री भगवान आप उठाईआ। पारब्रह्म वेखे साचा थाँ, थिर घर साचा इक्क वखाईआ। सचखण्ड निवासी करे सच न्याँ, निरगुण मीता हुक्म सुणाईआ। पीत पीष्तम्बर आप बणा, आप आपणे हथ्थ उठाईआ। सच सुअम्बर वेख वखा, आप आपणा नैण लगाईआ। कागद कलम ना लिखे शाह, लिखणहारा कोए दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप उपाईआ। साची वस्त सच अनमोल, हरि साचा आप उपांयदा। कोए ना सके कंडे तोल, कीमत करता ना कोए वखांयदा। आपणा अक्खर आपे बोल, शब्द शब्दी आप उपांयदा। आपणी जोती आपे मौल, आप आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेल खिलंदड़ा हरि सुल्तान, तख्त ताज वड्याईआ। आदि जुगादी नौजवान, ना मरे ना जाईआ। सति सतिवादी सति निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाईआ। दो जहानां निगहबान, दूई द्वैती ना कोए रखाईआ। आपे जाणे आपणा धुर फ़रमान, आपणे भाणे आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त आप उठाईआ। आपणी वस्त साची रास, सो पुरख निरँजण आप उठांयदा। हरि पुरख निरँजण वसे पास, एकँकारा संग निभांयदा। आदि निरँजण कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर गवांयदा। श्री भगवान सर्ब गुणतास, अबिनाशी करता आस पुजांयदा। पारब्रह्म पावे रास, आपणा मंडल आप सुहांयदा। निरगुण रूप शाहो शाबास, साची रचना वेख वखांयदा। ना कोई पृथ्मी ना आकास, मंडल मंडप ना कोए जणांयदा। आदि जुगादि ना कोए विनास, अबिनाशी करता आप अख्वांयदा। आपणे मन्दिर कर कर वास, थिर घर साचा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। हुक्मी हुक्म सच दरबार, हरि साचा सच सुणाईआ। आपे बण बण चोबदार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। आपे होए ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोए रखाईआ। आपे अंदर फिरे बाहर, गुप्त ज़ाहर वड वड्याईआ। आपे पुरख आपे नार, कन्त कन्तूल आप हो जाईआ। आपे पूत सपूता बण सुत दुलार, आप आपणी कुक्ख सुहाईआ। आपे बह बह करे प्यार, आप आपणा मेल मिलाईआ। आपे वणज वणजारा करे वपार, आप आपणा हट्ट खुलाईआ। आपे वस्त रक्खे हरि अपर अपार, रूप रंग ना कोए जणाईआ। आपे घाड़न घड़े सच्चा सुन्यार, आपणी कुठाली आपे ताईआ। आपे सुहागा देवे डार, आपे सोना कंचन रूप वटाईआ। आपे जड़ती जड़े करतार, निरगुण निरगुण विच टिकाईआ। आपे बण सच सिक्दार, शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अलक्ख अलक्खना अलक्ख जगाईआ। अलक्ख निरँजण बोल अलक्ख, दर घर साचा मंग मंगांयदा। सचखण्ड निवासी हो प्रतक्ख, आप आपणा रूप वटांयदा। आपणी कीमत आपे पाए करोड़ लक्ख, लिख्या लेख ना कोई जणांयदा। आप आपणे नालों कर कर वक्ख, आप आपणी सेव कमांयदा। आपणे चरना उप्पर जाए ढट्ठ, आपे फड़ फड़ गले लगांयदा। आपे खेल पुरख समरथ, आप आपणा हथ्थ रखांयदा। आपे महिमा अकथना अकथ, अकथ कहाणी आप जणांयदा। आपे आपणा चलाए आप रथ, रथ रथवाही नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगांयदा। आपे रईयत आपे राजा, शाहो भूप आप अख्वाईआ। आपे सीस पहने ताजा, आपे कफ्नी आपणी आप हंढाईआ। आपणे गल पाए अल्फी मारे वाजा, आपे बणया वड्डा शहनशाहीआ। आपे चारों कुण्ट फिरे भाजा, आदि जुगादि वेख वखाईआ। आपे अश्व चढ़े साचे ताजा, आप आपणा आप दृढ़ाईआ। आपे हो ग़रीब निवाजा, आपणी आसा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीत पीतम्बर इक्क वखाईआ। पीत पीतम्बर सीस रक्ख, रक्खणहारा आप अख्वांयदा। आपणा लेखा आपे लिख, आपणी गिणती आप गिणांयदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आप आपणा भेव खुलांयदा। आपणे अंदर आपे वस, आप आपणी बूझ बुझांयदा। आपणे हुक्मे आपे नस्स, हुक्मी हुक्म आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह सुल्तान नाउँ धरांयदा। शाह सुल्तान वड राजन राजा, तख़्त ताज बराजया। सीस सुहाए साचा ताजा, लेखा जाणे वड वड महाराजया। आपणे आसण बह बह आपणा रचया आपे काजा, आपे रक्खणहारा लाजया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म देवे एका दाजया। पारब्रह्म उठ जाग, सो पुरख निरँजण आप जगाईआ। मेरा नाउँ तेरा राग, तेरा राग मेरी शनवाईआ। मेरी धुन तेरा साज, मेरी अलक्ख जगाईआ। जोती जोत सरूप

२६३ ०६

हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी तार हिलाईआ। सो पुरख निरँजण सच सितार, आपणी वेख वखांयदा। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, आपणा पड़दा आपे लांहयदा। एकँकारा नैण उग्घाड़, प्रतक्ख रूप वटांयदा। आदि निरँजण सच अखाड़, घर साचे आप वखांयदा। अबिनाशी करता सांझा यार, मीत मुरारा मेल मिलांयदा। श्री भगवान खेल अपार, स्वांगी आपणा सांग रचांयदा। अबिनाशी करता हो त्यार, सच मृदंग हथ्थ उठांयदा। पारब्रह्म दए अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा आप सुहांयदा। पारब्रह्म प्रभ सच मृदंग, आपणे हथ्थ उठाईआ। श्री भगवान इक्क सारंग, सारंग सारंगा इक्क वजाईआ। अबिनाशी करता सच तरंग, तुरीआ धार उडाईआ। आदि निरँजण सूरा सरबंग, सूरबीर वेख वखाईआ। एकँकार कस तंग, आसण सिँघासण इक्क विछाईआ। हरि पुरख निरँजण बैठ पलँघ, आप आपणा नैण उठाईआ। सो पुरख निरँजण उच्च महल्ले आपे लँघ, आप आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। सो पुरख निरँजण धुर फुरमाणा, हरि पुरख निरँजण आप जणांयदा। एकँकारा कर ध्याना, अंदर बाहर वेख वखांयदा। आदि निरँजण सत सहाणा, चतर सुघड़ वड वड्यांअदा। श्री भगवान इक्क निशाना, एका नाउँ वखांयदा। अबिनाशी करता गाए गाणा, शब्द अनादी नाद वजांयदा। पारब्रह्म सच मन्ने भाणा, आपणे भाणे आप समांयदा। पारब्रह्म मन्नया साचा भाणा, हरि साचा आप सुणांयदा। पुरख अबिनाशी साचा राणा, घर साचे अदल कमांयदा। आपणा वेस आप वटाना, वेस अनेका आप करांयदा। आपणी जोत आपे डगमगाना, जोती नूरो नूर आप अख्वांयदा। आपे रवि ससि कर प्रधाना, आप आपणा चरन छुहांयदा। चरन कँवल वखाए इक्क ज्ञाना, साचे नेत्र मेल मिलांयदा। आप रखाए पन्ध जिमी अस्माना, आपणी इच्छया आप टिकांयदा। हरि का भेव दिसे ना पाणा, भेव अभेद भेव खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। रवि ससि कर त्यार, पारब्रह्म आप उपजाईआ। आदि निरँजण जोत कर उज्यार, नूर नुराना, विच टिकाईआ। एकँकारा बण सिक्दार, साचा हुक्म सुणाईआ। आदि जुगादी एका धार, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। तीजा लोचण इक्क उग्घाड़, चरन कँवल दरसाईआ। दोए लोचन अपर अपार, नैण मूंद आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। रवि ससि कर प्रकाश, जोती जोत टिकाया। दोहां विचोला पुरख अबिनाश, दूसर संग ना कोई रखाया। साचे मंडल साची रास, मंडल मंडप नाल रलाया। कोटन कोटि कर कर वास, तार सितार आप हिलाया। गृह गृह मेला विच आकाश, त्रै त्रै दिस ना आया। आपणा कर कर आपे वास, आपणे भाणे आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म प्रभ साची

सेव कमाया। पारब्रह्म प्रभ अंदर वड़, रवि ससि करे रुशनाईआ। आपे अगे रिहा खड़, आपे मुख भवाईआ। आपे उप्पर बैठा चढ़, चरना हेठ दबाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, पुरख अबिनाशी भेव ना राईआ। ना कोई चोटी ना कोई जड़, साचा बीज ना कोई वखाईआ। दो दो हथ्थीं ना सके कोई फड़, नेत्र नैण ना रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रवि ससि बूझ बुझाईआ। रवि ससि कर पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाया। पारब्रह्म तेरी साची धार, जोती नूर नूर रुशनाया। एका किरन इक्क वपार, इक्क इक्क इक्क नाल दए मिलाया। तेरा चरन सच प्यार, सचखण्ड साचे वेख वखाईआ। तेरा मुख सची सरकार, पंचम बह बह नाल सुहाया। अद्धविचकारे खेल अपार, निरगुण आपणा नाउँ उपजाया। आपणा कर बन्द किवाड़, आपणी वस्त विच टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तख्त निवासी पुरख अबिनाशी शाहो शाबासी भेव छुपाया। शाहो शाबासी भेव निराला, सो पुरख निरँजण भेव छुपांयदा। हरि पुरख निरँजण जोत अकाला, अकल कलधारी दिस ना आंयदा। एकँकारा अवल्लड़ी चाला, आदिन अन्ता आप चलांयदा। आदि निरँजण जोत उजाला, हरि गोपाला दिस ना आंयदा। अबिनाशी करता राह सुखाला, निरगुण आपणा रूप वखांयदा। श्री भगवान बण दलाला, थिर घर साचा वेख वखांयदा। पारब्रह्म बण रखवाला, साची सेव कमांयदा। रवि ससि दोवें लाला, लालन लाल आप उपजांयदा। आप उपजाए दया कमाए, नूरी किरन किरन समाईआ। करनी करता किरत कमाए, करनहारा दिस ना आईआ। आपणा नूर नूर रुशनाए, नूरो नूर डगमगाईआ। तख्त ताज हरि इक्क सुहाए, शाह सुल्तान दए वड्याईआ। साचा राज आप कमाए, धुरदरगाही इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच पीतम्बर दए वड्याईआ। सच पीतम्बर पंचम मुख, हरि मुखड़ा मुख सलाहीआ। ना कोई चिंता ना कोई दुक्ख, हरख सोग ना कोए जणाईआ। ना कोई जननी रक्खे कुक्ख, पिता मात ना कोए वड्याईआ। ना कोई तृष्ना ना कोई भुक्ख, त्रैगुण बंध ना कोए बंधाईआ। ना कोई काया ना कोई मुख, रसना जेहवा ना कोए वखाईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे बैठा लुक, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा लेख वखाईआ। आपणा लेखा लिखणहारा, भेव अभेद रखांयदा। सचखण्ड निवासी हरि निरँकार, थिर घर साचे सोभा पांयदा। सति सरूपी बण सिक्दार, अदल अदालत इक्क वखांयदा। पीत पीतम्बर सोहे दस्तार, दस्तगीर रूप वटांयदा। आपणी इच्छया साचा हार, तन साचे आप लटकांयदा। आपणी भिच्छया भर भण्डार, घर आपणे आप वरतांयदा। आपणी भिच्छया मंगे बण भिखार, आप आपणा फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड सच दरवाजा, आपे खोल्हे ग़रीब

निवाजा, बह बह आपणा काज रचांयदा। काज रचदंड़ा पुरख सुल्तान, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। आदि पुरख खेल महान, अन्त आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी उपज आप सुल्तान, आप आपणा नाउँ धराईआ। पंचम मुख इक्क ज्ञान, एका पड़दा लाहीआ। एका वेख सच निशान, एका ल्ए उठाईआ। निराकार पाए आन, साकार रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे सीस रखाईआ।

❋ १६ फग्गण २०१६ बिक्रमी भगत सिँघ दे घर अटारसी ❋

अजूनी रहित निरगुण धार, पुरख अकाल वड वड्याईआ। आदि जुगादी एकँकार, इक्क इकल्ला खेल खिलाईआ। निरगुण सरगुण रूप करतार, अनुभव प्रकाश भेव ना राईआ। शाहो भूप वड सिक्दार, तख्त ताज आप सुहाईआ। सुणे सुणाए सुणनेहार, हुक्मी हुक्म आप चलाईआ। सचखण्ड सुहाए सच दुआर, थिर घर आपणा आसण लाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, गुर पीर अवतार देण गवाहीआ। जागरत जोत अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर बेपरवाहीआ। नूर नुराना बेऐब परवरदिगार, बेपरवाह आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाईआ। अजूनी रहित सति सरूप, सति पुरख निरँजण वड वड्याईआ। आदि जुगादी शाहो भूप, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। ना कोई रंग ना कोई रूप, घट घट बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाईआ। अजूनी रहित पुरख अकाला, एका रंग समाया। आदि जुगादी दीन दयाला, जुग जुग वेस वटाया। जुगा जुगन्तर खेल निराला, करनी करता आप कराया। सेवा लाए काल महांकाला, अवल्लड़ी चाला आप चलाया। लेखा जाणे आदि शक्ति जोत ज्वाला, हवन हवनी रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता आप अख्वाईआ। आदन अन्ता हरि भगवाना, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। खेले खेल दो जहानां, त्रै त्रै लेखा आप चुकाईआ। चौदां चौदां हो प्रधाना, आप आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाईआ। रंग अवल्ला इक्क इकल्ला, एका इक्क अख्वांयदा। वसणहारा जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर फेरा पांयदा। आदि निरँजण आपणा दीपक आपे बल्ला, तेल बाती ना कोए रखांयदा। सच सिँघासण एका मल्ला, सचखण्ड निवासी सोभा पांयदा। आपे वसे नेहचल धाम अटला, उच्च महल्ल अटल मुनार वखांयदा। करे खेल वल छला, वल छलधारी भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। रचन रचावणहार

करतार, एका खेल खिलांयदा। आदि जुगादी लै अवतार, जुग जुग वेस वटांयदा। निरगुण सरगुण खेल अपार, खेलणहार आप खलांयदा। बरनां वरनां वसे बाहर, पंज तत्त ना कोए हंढांयदा। घट घट अंदर खेल अपार, कमलापाती आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जोत जगांयदा। जागरत जोत हरि जगा, आपणा वेस वटांयदा। निरगुण सरगुण नाउँ रखा, लोकमात वेख वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्हा, ब्रह्म ब्रह्म आप बुझांयदा। विष्नूं मेला सहिज सुभा, शंकर संग रखांयदा। आप आपणा मुख छुपा, आपणी कार आप करांयदा। पड़दा ओहला जगत वखा, जगत विचोला नाउँ धरांयदा। आपणा ढोला आपे गा, साचा बोला आप अल्हांयदा। लक्ख चुरासी तोला एका तोल लए तुला, दूसर कंडा ना कोए उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा रूप धरांयदा। आपणा रूप आपे रक्ख, आप आपणे विच टिकाईआ। आपे भाण्डे करे सख, आपे सखणे लए भराईआ। आप आपणे आपे परख, हरिजन साचे मात तराईआ। सति सरूपी मार्ग दस्स, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाईआ। करे कराए कक्खों लक्ख, लक्खों कक्ख आप वखाईआ। सर्बकल आप समरथ, पुरख अकाल वड वड्याईआ। सृष्ट सबाई पाए नथ्थ, लोआं पुरीआं आप उपाईआ। जुगा जुगन्तर रिहा नट्ठ, आप आपणा रथ चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धाम अवल्ला इक्क उपाईआ। धाम अवल्लड़ा हरि निरँकार, आदि जुगादि उपांयदा। खेल करंदड़ा सिरजणहार, साकत निन्दक वेख वखांयदा। भगत वछल हरि मीत मुरार, भगत भगती इक्क वखांयदा। आप आपणी प्रभ किरपा धार, आप आपणा नाउँ धरांयदा। आप आपणे रंग रवे करतार, करनी करता खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। दर सुहाया सर्ब सुख, हरि सतिगुर आप करांयदा। मेटणहारा तृष्ना भुक्ख, हरिजन साचा आप जगांयदा। उज्जल करे मात मुख, दुरमति मैल धवांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों पुट्ट, आपणा बूटा साचा माली आप लगांयदा। अमृत जाम प्याए साचा घुट्ट, दो जहानी हथ्थ किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार बंधांयदा। हरिजन साचा हरि रंग राता, सो पुरख निरँजण आप रंगाईआ। हरि पुरख निरँजण पिता माता, एकँकार गुर सहाईआ। आदि निरँजण देवे दाता, श्री भगवान सहिज सुखदाईआ। पुरख अबिनाशी बन्न्हे नाता, चरन प्रीती इक्क सिखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रखाए उत्तम ज़ाता, ना मरे ना जाईआ। निरगुण बैठा इक्क इकांता, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। ना कोई दिवस ना कोई राता, सूरज चन्न ना कोए चढ़ाईआ। शब्द अगम्मी एका गाथा, जुगा जुगन्तर आप चलाईआ। आपे हो त्रैलोकी नाथा, त्रै त्रै आपणा बन्धन पाईआ। आपे पूजा आपे पाठा, निहअक्खर आपे

२६६
०६

करे पढ़ाईआ। आपे तीर्थ आपे ताटा, अठसठ आपणा रूप धराईआ। आपे वसे आन बाटा, आप आपणा वेस वटाईआ। आपे करे पूरा घाटा, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। आपे रक्खे नेड़े वाटा, पिछला पन्ध मुकाईआ। आपे अंगी अंग मिलाता, आदि शक्ति नाउँ धराईआ। आपे बाशक सेजा सुत्ता खाटा, सांगो पांग आप हंढाईआ। आपे वसे काया माटा, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। आपे भरया अमृत बाटा, सति प्याला हथ्थ उठाईआ। आपे खेले खेल बाज़ीगर नाटा, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। आपे सम्मण मूसण बण बण चुक्क ल्याए आटा, आपणी कल आप चलाईआ। वणज वणजारा दर दरबारा आपे बैठा हाटा, आपणा कंडा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगाईआ। रंग रतड़ा पुरख अकाल, सो पुरख निरँजण इक्क अख्वांयदा। हरि पुरख निरँजण बण दलाल, एकँकारा मेल मिलांयदा। आदि निरँजण सचखण्ड बैठ सच्ची धर्मसाल, अबिनाशी करता वेख वखांयदा। श्री भगवान वजाए ताल, शब्द अनादी नाद सुणांयदा। पारब्रह्म प्रभ शाह कंगाल, शहनशाह आप अख्वांयदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्त सन्त सुहेले गुरू गुर चेले आपे भाल, आप आपणे मेल मिलांयदा। गुरमुख उठाए साचे लाल, पूत सपूता रंग रंगांयदा। दिवस रैण वसे नाल, विछड़ कदे ना जांयदा। भाग लगाए काया माटी खाल, पंज तत्त चोला आप हंढांयदा। फल लगाए साचे डाल, पत डाली आप महिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। लेखा लिखणहार गोबिन्द, दूसर अवर ना कोए वखांयदा। आदि जुगादी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर नाउँ धरांयदा। अबिनाशी करता सागर सिन्ध, साचा अमृत ताल भरांयदा। हरिजन उपजाए आपणी बिन्द, सुत अनादी नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन लेखा आपे लिख, दूसर हट्ट ना किसे विकांयदा। ना कोई हट्ट ना हटवाणा, शिव गद्दी ना कोए हंढाईआ। ना कोई राजान ना कोई राणा, हुक्मी हुक्म ना कोए सुणाईआ। ना कोई बिरध ना बाल दिसे नौजवाना, बलधारी ना कोए वड्याईआ। ना कोई शस्त्र बस्त्र दिसे तीर कमाना, खड़ग खण्डा ना हथ्थ उठाईआ। ना कोई गोपी ना कोई कान्हा, मंडल रास ना कोए वखाईआ। ना कोई सीता ना कोई रामा, जनक सपुत्री ना कोए प्रनाईआ। ना कोई रावण मारे बाणा, तीर कमान ना हथ्थ उठाईआ। ना कोई भेख धरे बल बावण विच जहाना, चार वेद ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई शास्त्र सिमरत दए ज्ञाना, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सलाहीआ। ना कोई सति सन्तोखी बन्ने गाना, धीरज जत ना कोए जणाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवाना, निरगुण आपणा खेल खलाईआ। हरिजन वेखे चतर सुजाना, लख चुरासी फोल फुलाईआ। एका देवे नाम निधाना, धुरदरगाही सच पढ़ाईआ। आत्म अन्तर पद निरबाणा, निर्भय आपणा रूप वखाईआ। दो जहानी साचा

माणा, माण अभिमाना दए गंवाईआ। आप रखाए आपणे भाणा, हरि भाणा वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पूर्ब लेखा वेख वखाईआ। पूर्ब लेखा हरि चुकावणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। चौथे जुग भार लाहवणा, त्रैगुण सुत्ता कर पसार। त्रै त्रै लेखा मूल मुकावणा, ब्रह्मा विष्न शिव रहे पुकार। हरिजन तेरा संग निभावणा, तेरी बन्नृ सीस दस्तार। दो जहाना एका रंग रंगावणा, रंग बसन्ती खिड़ी गुलज़ार। तेरा पीसण पीसा लेखे लावणा, सीस जगदीस कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा आपणा वर, वर दाता आप निरँकार।

२६८

०६

❋ १७ फग्गण २०१६ बिक्रमी भगत सिँघ दे गृह अटारसी ❋

सो पुरख निरँजण निराकार, निरवैर नाउँ धराईआ। हरि पुरख निरँजण अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव ना राईआ। एकँकारा खेल न्यार, रूप रेख ना कोए वखाईआ। आदि निरँजण जोत उज्यार, दीपक दीपक करे रुशनाईआ। श्री भगवान सिरजणहार, आप आपणा मेल मिलाईआ। अबिनाशी करता मीत मुरार, सगला संग आप रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर पसार, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआरा सच उसार, घर साचे सोभा पाईआ। घर विच घर कर त्यार, थिर घर आपणा बंक वखाईआ। सच सिँघासण शाह सिक्दार, नर नरायण आसण लाईआ। निर्मल जूनी रहित उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। बेऐब खुदाई परवरदिगार, परम पुरख आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सो पुरख निरँजण सच महल्ला, हरि सच्चा आप वसांयदा। हरि पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, एकँकारा डेरा लांयदा। आदि निरँजण दीपक बला, अज्ञान अन्धेर ना कोए वखांयदा। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणा वल छल्ला, अछल अछल खेल खिलांयदा। श्री भगवान सच सिँघासण आसण मल्ला, तख्त निवासी डेरा लांयदा। पारब्रह्म आपणी शक्ती आपे रला, अजूनी रहित दिस ना आंयदा। सचखण्ड दुआरा नेहचल धाम अटला, चार दीवार छप्पर छन्न ना कोए बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रूप अनूप सति सरूप, सति सुल्ताना आप अख्वांयदा। सो पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, दूसर संग ना कोए रखाईआ। हरि पुरख निरँजणा नौजवाना, ना मरे ना जाईआ। एकँकारा वड बलवाना, बलधारी भेव ना राईआ। आदि निरँजण जोत महाना, आदि जुगादि करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता निगाहबाना, लोचण नैण ना कोए वखाईआ। श्री भगवान सच तराना, राग अनादी आपे गाईआ। पुरख अबिनाशी वाली दो जहाना,

रंग रंगीला मोहण माधव साचा माहीआ। पारब्रह्म धुर फ़ुरमाना, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। सचखण्ड दुआरा वसे सच मकाना, थिर घर बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनुभव प्रकाश आप कराईआ। सो पुरख निरँजण सुते प्रकाश, हरि पुरख निरँजण आप करांयदा। एकँकारा पाए रास, आदि निरँजण वेख वखांयदा। श्री भगवान सर्ब गुणतास, पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा। पारब्रह्म सद वसे पास, वास निवासा आप हो जांयदा। सचखण्ड दुआर साची रास, मंडल मंडप आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वखांयदा। सो पुरख निरँजण हरि भगवन्त, आदि जुगादि भेव ना आंयदा। हरि पुरख निरँजण साचा कन्त, एकँकारा वेस वटांयदा। आदि निरँजण महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए रखांयदा। अबिनाशी करता जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। श्री भगवान लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणा रूप वटांयदा। पारब्रह्म प्रभ नारी कन्त, दर घर साचा आप सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सच सुहञ्जणी सेज सुहांयदा। थिर घर वासी नारी कन्त, कन्त कन्तूहला मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। सो पुरख निरँजण निरगुण धार, हरि पुरख निरँजण आप चलाईआ। एकँकारा खेल अपार, अकल कल धारी दिस ना आईआ। आदि निरँजण सच सिक्दार, श्री भगवान सेव कमाईआ। अबिनाशी करता चोबदार, दिवस रैण सेव कमाईआ। पारब्रह्म दए हुलार, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़, थिर घर साचा वेख वखाईआ। साचे मन्दिर सच अखाड़, अबिनाशी करता आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण दए वड्याईआ। सो पुरख निरँजण हरि वडियाई, हरि साचा आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण बेपरवाही, बेपरवाह नाउँ रखांयदा। एकँकारा थाउँ थाँई, थान थनंतर आप सुहांयदा। आदि निरँजण आप आपणी पकड़े बांहीं, आप आपणा बल वखांयदा। श्री भगवान चाँईं चाँईं, अबिनाशी करता अंग लगांयदा। पारब्रह्म वसे एका थाँईं, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सुहञ्जणा एकँकार, आदि निरँजण खेल न्यार, निरगुण आपणा वेस धरांयदा। सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा, भेव कोए ना पांयदा। निरगुण जाणे निरगुण रासा, निरगुण वेख वखांयदा। निरगुण पूरी करे आसा, निरगुण भिच्छया झोली पांयदा। निरगुण अंदर निरगुण वासा, निरगुण निरगुण विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित भेव ना आंयदा। अजूनी रहित पुरख अकाला, एका रंग समाया। सो पुरख निरँजण दीन दयाला, हरि पुरख निरँजण वड वड्याआ। एकँकारा बण दलाला, घर साचे वेस वटाया। आदि निरँजण जोत जलाला, जल्वा नूर आप वखाया। श्री भगवान वसे

२७०

०६

सच सची धर्मसाला, सच सिँघासण सोभा पाया। अबिनाशी करता आप बणाए काल महांकाला, आप आपणा हुक्म चलाया। पारब्रह्म प्रभ बण रखवाला, आदि जुगादी वेख वखाया। आपे चले अवल्लड़ी चाला, निरगुण निरगुण दए सलाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क वखाया। घर साचा सचखण्ड दुआर, सो पुरख निरँजण आप उपाईआ। हरि पुरख निरँजण कर त्यार, एकँकारा दए वखाईआ। आदि निरँजण दीपक दीआ कर उज्यार, एका एक डगमगाईआ। अबिनाशी करता खेल अपार, दिवस रैण वेख वखाईआ। श्री भगवान सांझा यार, घर साचे सोभा पाईआ। पारब्रह्म करे निमस्कार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच तख्त सच सुल्तान, आपे बैठ श्री भगवान, आपणा हुक्म आप सुणाईआ। सच तख्त सचखण्ड निवासा, हरि साचा आप करांयदा। आपणे चरन रक्ख भरवासा, आपणी ओट आप तकांयदा। आपणी पूरी करे आसा, आपणी भिच्छया आपे पांयदा। आपणा कारज आपे करे रासा, आप आपणी सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए राज राजान, आपे बणे दर दरबान, आपणा खेल आप खलांयदा। सचखण्ड दुआरे साचे तख्त हरि साचा चढ़, सच सिँघासण सोभा पांयदा। आपणा अक्खर आपे पढ़, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। आपणे अग्गे आपे खड़, आपे निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आपणा घाड़न आपे घड़, आपे वेख वखांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, तत्व तत्त ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क वड्यांअदा। सचखण्ड दुआरे साचा भूप, हरि सज्जण शाह अख्वांयदा। ना कोई रंग ना कोई रूप, लेखा लेख ना कोए वखांयदा। ना कोई ताणा पेटा दिसे सूत, रंगण रंग ना कोए चढ़ांयदा। ना कोई मात पित दिसे पूत, गोदी गोद ना कोए सुहांयदा। ना कोई साल बरख महीना दिसे रुत्त, बसन्त बहार ना कोए जणांयदा। त्रैगुण माया पंज तत्त ना दिसे बुत्त, पवण स्वास ना कोए चलांयदा। एकँकारा अबिनाशी अचुत्त, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। आप उपजाए आपणा सुत, हरि शब्दी नाउँ उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुत दुलारा कर त्यार, हुक्म सुणाए हरि निरँकार, हुक्मी हुक्म आप चलांयदा। साचा हुक्म धुर फ़ुरमाना, हरि सच्चा आप जणाईआ। तख्त निवासी एका राणा, एकँकारा दए सलाहीआ। आदि जुगादी एका भाणा, हरि भाणा वड वड्याईआ। एका पेटा एका ताणा, आप आपणा मेल मिलाईआ। एका राग एका गाना, एका नाद वजाईआ। एका पीणा एका खाणा, एका बूझ बुझाईआ। एका घर इक्क मकाना, एका मेला बेपरवाहीआ। एका माण इक्क अभिमाना, एका एक रूप दरसाईआ। एका पुरख इक्क सुल्ताना, एका जोग जुगत जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा

वर, आप आपणा भेव खुलाईआ। शब्द सुत उठ बलधार, सो पुरख निरँजण आप जगांयदा। हरि पुरख निरँजण कर प्यार, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। एकँकारा दए आधार, आप आपणा मेल मिलांयदा। आदि निरँजण खबरदार, जोत निरँजण झोली पांयदा। श्री भगवान एका धार, घर घर विच मेल मिलांयदा। अबिनाशी करता अमृत ठार, बूंद स्वांती आप प्यांअदा। पारब्रह्म बण सिक्दार, साचा हुक्म सुणांयदा। तेरा रूप अगम्म अपार, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन इक्क इकल्ला डेरा लांयदा। इक्क इकल्ला बेपरवाह, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सलाह, घर साचे मता पकाईआ। निरगुण निरगुण दस्से राह, निरगुण साचा वेख वखाईआ। शब्द दुलारा लए उठा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आपणी वस्त झोली पा, सच भण्डार इक्क जणाईआ। तेरा हुक्म वरते सभनी थाँ, देवणहार आप अख्वाईआ। निरगुण पिता निरगुण माँ, सो पुरख निरँजण आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा इक्क वखाईआ। थिर घर साचे हरि मेहरबान, आपणा बंक सुहाया। उप्पर बैठ श्री भगवान, सच सिँघासण लाया। सति सतिवादी इक्क निशान, निरगुण आपणा आप झुलाया। शाहो भूप बण वड राजान, आप आपणा हुक्म चलाया। आपे देवे धुर फुरमाण, धुरदरगाही वेख वखाया। आपे वसे सच मकान, सच महल्ला आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाया। सत्त रंग निशाना निरगुण जोत, सचखण्ड दुआरे आप झुलाईआ। लेखा जाणया जुग जुग कोटी कोटिन कोट, दूसर घर ना दए वड्याईआ। शब्द नगारे लाए चोट, साचा धौसां नाम वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ लए अंगड़ाई, आपणी करवट आप बदलांयदा। अबिनाशी करता दए सलाही, साची सेवा सेव कमांयदा। आपणा घाड़न घड़े बेपरवाही, आपणा नेत्र आप खुल्हांयदा। आपणी वस्त आपे पकड़े चाँईं चाँईं, समरथ आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे भुजां रिहा उठाई, चतुर्भुज नाउँ धरांयदा। आपे सीस छत्र रिहा झुलाई, साचा छत्र हथ्थ वखांयदा। आपे पंचम देवे पंच वडियाई, पंचम पंचम वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा तख्त सुहांयदा। तख्त निवासी ग़रीब निवाजा, एका रंग समाया। शब्द अगम्मी वज्जे वाजा, आप आपणी धुन उपजाया। सति सरूपी साचा ताजा, निरगुण आपणा आप उपाया। पंचम मुखी एका ताजा, निरगुण निरगुण सीस टिकाया। घर घर विच बैठा साचा राजा, राजक रिजक रहीम अख्वाया। निरगुण निरगुण रच रच काजा, घर निरगुण मंगल गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीस जगदीस एका मुक्ट सुहाया। एका मुक्ट पंच मुख, निरगुण निरगुण सीस

टिकांयदा। सो पुरख निरँजण वेखे मुख, हरि पुरख निरँजण पड़दा लांहयदा। एकँकारा अगे झुक, आदि निरँजण आप उठांयदा। श्री भगवान लेखा जाणे लुक लुक, अबिनाशी करता मुख छुपांयदा। पारब्रह्म वेखणहारा तृष्ना भुक्ख, आलस निन्दरा ना कोई जणांयदा। शब्द अनादी गोदी चुक्क, आप आपणी गोद सुहांयदा। ना मानस ना कोई मनुख, रूप अनूप आप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दरस दिखांयदा। शब्द दुलारा दर्शन पा, एका एक वखाईआ। दोए दोए जोड़ सीस झुका, चरन कँवल ध्यान टिकाईआ। मंगे मंग बेपरवाह, तूं दाता बेपरवाहीआ। खाली झोली रिहा वखा, चारे कन्नीआं आप उठाईआ। साची वस्त झोली पा, अतुट भण्डार वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच वड्याईआ। सच वडियाई हरि निरँकार, आपणे हथ्थ रखांयदा। शब्द शब्दी कर प्यार, साचा हुक्म सुणांयदा। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी सेव कमांयदा। एका किरन कर उज्यार, तेरे रंग रंगांयदा। सूरज चन्न मेल सतार, साचे मंडल आप लटकांयदा। पृथ्मी आकाश दए उसार, जल बिम्ब रूप वटांयदा। त्रैगुण माया अंगीकार, रजो तमो सतो वेख वखांयदा। आपणा रूप कर अकार, निराकार साकार अख्वांयदा। विष्नूं वंसी खेल अपार, कँवल नैण नैण मटकांयदा। सांगोपांग कर त्यार, साची सेज विछांयदा। अमृत आत्म भर भण्डार, कँवल कँवला फुल्ल खिलांयदा। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, ब्रह्म आपणा रूप वटांयदा। शंकर मेला धूंआँधार, सच समग्री संग रखांयदा। एका जोती एका धार, एका रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा साचा धाम, खेले खेल हरि हरि राम, राम राम भेव ना आंयदा। शब्द दुलारा सेव कमा, चौदां लोक हट्ट खुल्हाईआ। जिमी अस्मानां बणत बणा, गगन मंडल वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचा, आपणा बन्धन आपे पाईआ। रवि ससि लए लटका, एका डोरी नाम वखाईआ। आकाश प्रकाश रिहा जगा, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव हुक्म सुणा, हुक्मी हुक्म दए वड्याईआ। एका वस्त झोली पा, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। आपणे दुआरे आपे आ, घर साचा आप सुहाईआ। आपे बणया शहनशाह, पातशाह आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाईआ। सुत दुलारा दर घर आया, सचखण्ड दुआरे डेरा लांयदा। पुरख अबिनाशी तेरा दरस दरस मोहे मोह भाया, दूसर कोए दिस ना आंयदा। तेरा नूर जल्वा जल्वा अलाही इक्क रघुराया, आदि जुगादी डगमगांयदा। तेरा ताज तेरा राज तेरा काज सहिज सुखदाया, सगल समग्री वस्त वखांयदा। तूं मात पित पिता माया, दाई दाया तूहीं गोद उठांयदा। हउं भिखारी हरि निरँकारी दर तेरे ते आया, तुध बिन दर ना अवर सिखांयदा। एका अक्खर तेरा तेरे दर पढ़न आया, साची विद्या

ना कोई जणांयदा। सो पुरख निरँजण तेरा लड़ फड़ के आया, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे साचा वर, दूजा दर ना कोई सिखांयदा। सुत दुलारा मंगे वर, प्रभ अगे सीस झुकाईआ। आदि जुगादि चुक्के डर, निर्भय तेरा नाउँ इक्क जणाईआ। ना जन्मा ना जाए मर, आवण जावण खेल खलाईआ। इक्क नुहाउणा साचे सर, सर सरोवर इक्क वड्याईआ। एका तरनी जाणा तर, तारनहार आप अख्वाईआ। आपणी करनी करता पुरख देणी कर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीस जगदीस इक्क वखाईआ। हरि भगवान वड मेहरवान, शब्दी शब्द करे जणाईआ। मेरा नाम तेरा निशान, आदि जुगादि वज्जे वधाईआ। तूं गोपी हउं साचा काहन, ब्रह्मण्ड खण्ड रास रचाईआ। देवणहारा साचा दान, सच भण्डार इक्क वरताईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार, साची भिच्छया झोली पाईआ। आपणा खेल करे करतार, करनहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेव अभेदा भेव खुलाईआ। सुत दुलारा वड बलकारा, एका मंग मंगांयदा। पुरख अबिनाशी शाहो शाबाशी निरगुण धारा, तेरा रूप अनूप जणांयदा। तेरा तख्त तेरा ताज तूही सिक्दारा, तेरा हुक्मी हुक्म अलांयदा। कवण रूप वरते विच संसारा, लोकमात वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देणा दस्स, शब्द सरूपी शब्द वस, लेखा लेख ना कोए लिखांयदा। हरी भगवन्त सहिज सिक्दार, शब्दी शब्द करे जणाईआ। मेरा रूप अपर अपार, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। एका वसां सचखण्ड दुआर, अगम्म अगम्मड़ा थान वखाईआ। निरगुण जोत कर उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। ना कोई चन्न सूरज ना मंडल सतार, धरत धवल ना कोए वखाईआ। ना कोई पसर ना कोई पसार, ना कोई त्रैगुण मेल मिलाईआ। पंज तत्त ना कोए आकार, निरगुण रूप ना कोए दरसाईआ। एका नाम सचा जैकार, घर साचे आप सुणाईआ। सो पुरख निरँजण बणे भतार, आपणी नार आप प्रनाईआ। आपे सेजा सोए पैर पसार, आपे आपणा अंग लगाईआ। आपे अंदर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आप हो जाईआ। आपे सज्जण मीत मुरार, सगला संग आप निभाईआ। आपे सुत दुलारा कर त्यार, तेरा जन्म दवाईआ। लख चुरासी कर त्यार, त्रैगुण साची वण्ड वण्डाईआ। ब्रह्मा वेता इक्क भण्डार, भुल्ल रहे ना राईआ। मेरी इच्छया तेरी धार, निरगुण निरगुण करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत आप समझाईआ। शब्द सुत नैण उठा, नेत्र दरसन पांयदा। पारब्रह्म तेरा सच्चा थाँ, थान थनंतर इक्क सुहांयदा। सो पुरख निरँजण तेरा नाँ, मेरा नाम माण धरांयदा। कवण वस्त ब्रह्मे झोली देवां पा, कवण वण्ड वण्डांयदा। सो पुरख निरँजण दए सुणा, एका हुक्म आप चलांयदा। मेरी इच्छया ब्रह्मे झोली देणी पा, हँ साचा नाउँ धरांयदा। सोहँ रूप आप

बेपरवाह, पंचम मुख मुख सलांहयदा। चारे मुख दए लगा, साचा मोर मुक्ट लोकमात धरांयदा। आपणी विद्या विच टिका, आपणा अक्खर आप पढ़ांयदा। चारे वेदां लेखा दए लिखा, चारे जुग वण्ड वण्डांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर रचन रचा, कलिजुग आपणा खेल खिलांयदा। नव नव चार लेखे ला, अलक्ख अलक्ख अलक्ख आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला दीन दयाला एकँकारा खेल न्यारा, अबिनाशी करता भेव कोए ना पांयदा। शब्द सुत सच हुलारा, ब्रह्मा विष्न शिव आप लगाईआ। आपे भर सच भण्डारा, आपे दए वरताईआ। आपे लक्ख चुरासी दीपक कर उज्यारा, नव दस ग्यारा बीस तीस चार करे कुड़माईआ। आपे अंडज जेरज महल्ल उसार, उत्भुज सेत्ज आपणी वण्ड वण्डाईआ। आपे अप तेज वाए पृथ्मी आकास वेख मुनार, आपणा घाड़न आप घड़ाईआ। आपे मन मति बुध कर उज्यार, निरगुण निरगुण विच समाईआ। आपे नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, जगत वासना विच रखाईआ। आपे डूँग्घी कंदर करे खेल न्यार, टेढी बंक फेरा पाईआ। आपे त्रैबैणी नैणी सरोवर धारा, आत्म अमृत जल वखाईआ। आपे करे बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी कुंडा लाईआ। आपे घर विच घर खेल न्यारा, आत्म सेजा आप सुहाईआ। आपे शब्द नाद सची धुन्कारा, नाद अनादी राग अल्हाईआ। आपे पंचम बह बह गाए गावणहारा, आप आपणा राग सुणाईआ। आपे कन्त बणे भतारा, आपे नारी नर नरायण प्रनाईआ। आपे सुरती सुरत होए अस्वार, शब्दी शब्द घोड़ चढ़ाईआ। आपे खड़ग खण्डा बण तेज कटारा, शस्त्र बस्त्र तन सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त मेला साचे घर, हरि मन्दिर आपे बैठा वड़, दस्म दुआरी चोटी चढ़, दिस किसे ना आईआ। शब्द सुत साचा मीता, घर सज्जण वेख वखांयदा। पारब्रह्म तेरा धाम अनडीठा, दिस किसे ना आंयदा। आदि जुगादी अवल्लड़ी रीता, भेव कोए ना पांयदा। एकँकारा ठांडा सीता, तत्व तत्त ना कोए रखांयदा। सो पुरख निरँजण पतित पुनीता, पतित पावण नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत इक्क वखांयदा। जागरत जोत जोत उज्यार, निरगुण आपणी आप कराईआ। सचखण्ड निवासी खेल अपार, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड दए आधार, लक्ख चुरासी मेल मिलाईआ। घर विच घर कर त्यार, घर बैठा मुख छुपाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, बोध अगाध भेव ना राईआ। चले चलाए अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। निरगुण सरगुण वजाए ताल, शब्द शब्दी चोट लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे घर, दर घर साचा धुरदरगाहीआ। धुरदरगाही सच महल्ला, हरि साचा सच वसांयदा। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, आप आपणा आसण लांयदा। लेखा जाणे जलां थलां, जल थल

महीअल आप समांयदा। आपणी जोत आपे बला, तेल बाती ना कोए पांयदा। सच सुनेहड़ा आपे घल्ला, धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। जुगा जुगन्तर आप फड़ाए आपणा पल्ला, निरगुण सरगुण राह वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण खेल तमाशा, करे कराए पुरख अबिनाशा, वेख वखाए पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर फोल फुलांयदा। गगन मंडल साची रास, हरि साचा सच वरताईआ। आपणे मन्दिर कर कर वास, आपे वेख वखाईआ। लोकमात जन भगतां पूरी करे आस, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। सन्त सुहेला दासी दास, गुरमुख सज्जण ल्ए उठाईआ। गुरसिख मेला सर्ब गुणतास, सतिगुर पूरा मेल मिलाईआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ विच प्रभास, समुंद सागर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। हरि हरि साचा भेव खुल्हाया, हरि शब्दी शब्द जणांयदा। साचा मार्ग लोकमात चलाया, लक्ख चुरासी जून धरांयदा। आत्म ब्रह्म इक्क वखाया, पारब्रह्म वण्ड वण्डांयदा। विष्नूं रिज़क दए सबाया, ब्रह्मा उत्पत वेख वखांयदा। शंकर लेखा दए मुकाया, थिर कोए रहिण ना पांयदा। सन्त भगत भगवन्त हरि साचा मेल मिलाया, शब्द सुनेहड़ा इक्क सुणांयदा। आपणा ढोला आपे गाया, जुग जुग बोला आप अल्हांयदा। साचा तोला आप अख्वाया, नाम कंडा हथ्थ उठांयदा। गुर पीर अवतार लोकमात सेवा आपे लाया, हुक्मी हुक्म आप फिरांयदा।
पंज तत्त चोला आप हंढाया, निरगुण निरगुण मुख छुपांयदा। आपणी कल आप वरताया, अकल कल धारी भेव कोए ना पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव सीस रहे झुकाया, करोड़ तेतीसा एका राह रहे तकाया, सुरपति राजा इंद रिहा कुरलाया, दिवस रैण नेत्र नैणां नीर वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वण्ड वण्डांयदा। आपणी वण्ड हरि करतार, आपे खेल खिलांयदा। शब्द सुत दए सहार, आप आपणी बूझ बुझांयदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रहिणा ख़बरदार, तेरी साची सेव कमांयदा। ब्रह्मे मनवन्तर जाए हार, सति इक्क ना मेल मिलांयदा। शंकर लाहे बाशक तशका हार, हथ्थ त्रिशूल सुटांयदा। जटा जूट ना कोए प्यार, धूंआँधार ना कोए वखांयदा। ब्रह्मा वेता रोवे ज़ारो ज़ार, चारे वेद ना पाठ सुणांयदा। चारे खाणी होए ख्वार, चारे बाणी लेख लिखांयदा। परा पसन्ती एका धार, मद्धम बैखरी आप जणांयदा। सारंग सरंगा ना कोए संसार, साचा राज ना कोए फिरांयदा। मीन तरंग दए मेल करा, सूरा सरबंग इक्क अख्वांयदा। मंगे मंग ना बण भिखार, दाता दानी वेस वटांयदा। करे जंग ना फड़े कटार, तीर तुफंग ना कोए उठांयदा। खड़ग खण्डा ना दिसे धार, शस्त्र बस्त्र ना कोए सजांयदा। आपणे रंग रवे करतार, रंग रंगीला खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी भाण्डा कर त्यार, साचा घाड़न आप घड़ांयदा। आपे भन्ने आपणी वार, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ांयदा। जुगा जुगन्तर

खेल अपार, जुग चौकड़ी वेख वखांयदा। सतिजुग साचा कर त्यार, वार अठारां वेस वटांयदा। बल बावन मेला अपर अपार, दुष्ट हँकारी रावण मेट मिटांयदा। रामा रूप अगम्म अपार, कान्हा बंसरी नाम वजांयदा। पंचम मीता मीत मुरार, साची गीता नाम दृढ़ांयदा। वेद व्यासा कर श्रंगार, काया चोली रंग रंगांयदा। पुराण अठारां इक्क विचार, बारां अक्खर आप पढ़ांयदा। ब्रह्मा नारद मेल अपर अपार, मेल मिलावा आप वखांयदा। आपे जाणे आर पार किनार, आपणी कल आप धरांयदा। आपे देवे बोध अगाध ज्ञान, सच ध्यान आप जणांयदा। आपे ईसा मूसा कर प्रधान, आपणी विद्या आप सुणांयदा। आपे हुक्मी नबी अमाम, रहीम रहिमान राज़क रिज़क रहीम आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी वेस वटांयदा। आपे बेऐब परवरदिगारा, नूरो नूर अलाहीआ। आपे संग मुहम्मद वसे चार यारा, नबी रसूल आप अख्वाईआ। आपे ऐनलहक बोल नाअरा, हक हक हकीकत दए वड्याईआ। आपे लाशरीक वरते विच संसार, खुदी खुदाई मूल ना भाईआ। आपे अहिबाब रबाब वजाए सितारा, सच सितार आप हिलाईआ। आपे आबे हयात कर प्यारा, एका साकी जाम प्याईआ। आपे ख़ाकी ख़ाक दए सहारा, आपे कफ्नी गल हंढाईआ। आपे एका अल्फ़ी अल्फ़ श्रंगारा, एका नुकता दए बुझाईआ। आपे एका अक्ख नैण उग्घाड़ा, आप आपणा रूप दरसाईआ। आपे मुल्ला शेख मुसायक पीर दस्तगीर गुप्त ज़ाहरा, जल्वा नूरो नूर अलाहीआ। आपे अञ्जील कुरानां दए सहारा, तीस बतीस आप पढ़ाईआ। आपे निरगुण नूर कर उज्यारा, नानक पंज तत्त करे कुड़माईआ। आपे बोल शब्द जैकारा, पंज पंज दए वड्याईआ। आपे सति नाम सति वरतारा, चार वरनां भिच्छया झोली पाईआ। आपे सत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगे संसारा, आपे आपणी वण्ड वण्डाईआ। आपे एका जोती दस अवतारा, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। आपे अमृत ठांडा ठारा, भर प्याला जाम वखाईआ। आपे लेखा लिखे बण लिखारा, अगाध बोध आप जणाईआ। आपे गुरू ग्रन्थ गुर अवतारा, गुर गोबिन्द दए वड्याईआ। आपे भगतां बणे सहारा, जुग जुग पैज रखाईआ। आपे सन्तां करे पार किनारा, जगत मलाह बेपरवाहीआ। आपे गुरमुखां देवे नाम खुमारा, आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। आपे गुरमुखां बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। कलिजुग अन्तिम लए अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। ऊँचां नीचां करे पार किनारा, राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका धाम बहाईआ। गुरमुखां बन्ने साचा गाना, निरगुण साचा सगन मनाईआ। सो पुरख निरँजण इक्क सुणाए सच तराना, हँ ब्रह्म करे कुड़माईआ। निमाणयां देवे साचा माणा, आप आपणी गोद उठाईआ। लक्ख चुरासी सिर ते वरते भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। ना कोई रहसी राजा राणा, तख्त ताज ना कोई हंढाईआ। ना कोई राग ना गाणा, सच सितार ना

कोई वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सुत शब्द कर प्यार, तेरा करे सच विहार, लोकमात लए अवतार, आप आपणा रूप वटाईआ। हरि हरि आपणा रूप वटावणा, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। निहकलंकी जामा पावना, वेद व्यास लिख्या लेख पूर करांयदा। शब्द डंका इक्क वजावणा, नानक तोला तेरां तेरां धार चलांयदा। राउ रंकां एका रंग रंगावना, गोबिन्द चोला आप रंगांयदा। राम राजा आप अख्वावना, सीता सुरती आप प्रनांयदा। साची बंसरी नाम वजावणा, जगत गवाला फेरा पांयदा। कलमां अमाम इक्क पढ़ावना, एका अक्खर वक्खर आप सुणांयदा। सच ईमान इक्क धरावना, आपणी रहिमत विच रखांयदा। धुर फुरमाणा इक्क जणावना, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। नानक गोबिन्द मेल मिलावना, दूई द्वैती कट्ट वखांयदा। निहकलंक कल खेल खिलावना, खालक खलक वेख वखांयदा। गुरसिख लक्ख चुरासी विच्चों पकड़ उठावना, आप आपणी दया कमांयदा। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान दृढ़ावना, सच ध्यान इक्क जणांयदा। ग़रीब निमाणे गले लगावना, काया गढ़ हँकार मिटांयदा। स्वच्छ सरूपी दरस दिखावना, लोचण नैण इक्क खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचा वेखणहारा, आदि जुगादि समांयदा। जुगा जुगन्तर लए अवतारा, आप आपणा रूप वटांयदा। सन्तन पावे सति सति सारा, सारंगधर भगवान बीठलो आप आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पूर्ब लहिणा लेखे लांयदा। नामे तेरी वड वडियाई, हरि छप्पर छन्न छुहाईआ। मोई गऊ जगत जवाई, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। भर प्याला पीए चाँईं चाँईं, कपला गऊ दोह आप लै आईआ। देहुरा फेर दए वडियाई, पंडत पांधे मुख शर्माईआ। पारब्रह्म दरस दिखाई, बहत्तर नाड़ करे रुशनाईआ। निरगुण घर आया चाँईं चाँईं, दिवस रैण सेव कमाईआ। भिच्छया मंगे खावे आपे आपे आपणी रज़ाई, दूसर भेव कोई ना पाईआ। आपणी सिख्या आप समझाई, दे मति करे पढ़ाईआ। नामे मेला हरि रघुराई, रघुपत मेला सहिज सभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। नामे मेला हरि भगवन्त, छप्पर छन्न छुहांयदा। बाढी बणया हरि साचा कन्त, चार दुआरे इक्क वखाईआ। आपे रंग वेखे बसन्त, सच गुलज़ार आप खिलाईआ। आपे बणया रसना जेहवा मणीआ मंत, गीत गोबिन्द आपे हरि हरि गाईआ। लेखा कोए ना जाणे आदि अन्त, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। नामे मेला हरि गोबिन्द, चिंता चिखा रहिण ना पाईआ। अमृत मिल्या सागर सिन्ध, गहर गम्भीर मेल मिलाईआ।

जीव जंत करन निन्द, निन्दक निन्दया मुख भराईआ। हरिजन साचा साची बिन्द, पुरख अबिनाशी आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाईआ। नामे मेला हरि गोपाल, दिवस रैण ध्यांअदा। तेरा रूप जल्वा जलाल, जल थल महीअल शब्द समांयदा। मेरी काया माटी दिसे खाल, पंज तत्त काया चोला हंढांयदा। तेरा नाम अनमुल्लड़ा लाल, नामा कवण हट्ट रखांयदा। सच कुठाली देणा गाल, कंचन सोयना रूप वटांयदा। तेरा गगन तेरा दीपक तेरा थाल, तेरा माणक मोती तेरा रवि ससि तेरा मंडल तेरा मुख सुहांयदा। कवण नूर हरि तेरी जोती, हरि ज़ाहर ज़हूर बिन वरन गोती, लभ्भदे फिरदे कोटन कोटि, हत्थ किसे ना आंयदा। नामे तेड़ इक्क लंगोटी, तेरा भोजन मेरी बोटी, तेरा शब्द मेरी वासना खोटी, पतित पुनीत आप करांयदा। तूं ठाकर चाढ़े चोटी, हउँ सेवक दर आण खलोती, दोए नैण नेत्र रोती, जुग जुग सवाणी रही सोती, बिन हरि कन्त ना कोई उठांयदा। हमारी दिसे पाटी धोती, सिर दे उत्ते रक्खी चोटी, मस्तक तिलक तेरी जोती, तेरा रूप महिमा अनूप सति सरूप सर्ब समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दरस दिखांयदा। दरस दिखंदड़ा हरि भगवन्त, नामे मन मन भाणया। चोली रगंदड़ा साचा कन्त, सालू रंगन लाल रंगानया। नारी नर नरायण वखंदड़ा, नेत्र इक्क खुलंदड़ा, पाया दरस श्री भगवानया। आत्म सेज विछंदड़ा, फूलन बरखा लगंदड़ा, घर घर आया कन्त वड्ड प्रधानया। गल गलवकड़ी पौदा रस भोग बिलास वखंदड़ा, छुट्टा नाता सर्ब जहानया। पीआ प्रीतम इक्क मलंदड़ा, एका रूप प्रभ सति सरूप आप वखंदड़ा, लेखा जाणे दो जहानया। नामा ढह ढह चरन धूढ़ मस्तक लगंदड़ा, दुरमति मैल गंवानया। पारब्रह्म सद बख्शंदड़ा, जो जन रक्खे इक्क ध्यानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आप आपणी बूझ बुझानया। बूझ बुझाए हरि बनवारी, नामे नाम जणाईआ। पुरख अबिनाशी कन्त भतारी, जुग जुग गुरमुख नारी नार प्रनाईआ। साचा सीस ताज सच शिकदारी, शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नामे वखाए एका घर, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। नामे दर वेख्या, अन्तर इक्क ध्यान। आपे बख्शे आपणा लेखया, दस्सणहार श्री भगवान। रूप रंग ना कोई रेख्या, बिरध बाल ना कोई जवान। कवण रूप धरे लोकमात भेसया , निरगुण सूरबीर बलवान। सरगुण तेरी करे प्रीख्या, ना दिसे तेरा निशान। नामा मंगे दर दर भीख्या, प्रगट वाली दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे आपणा दान। नामे रक्खणा याद, हरि भगवान भगत जणाईआ। निरगुण रूप श्री भगवान, निरगुण भगत दए जणाईआ । निरगुण खेल दो जहान, जिमी अस्मान वेख वखाईआ। त्रैगुण वेखे मार ध्यान, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ। निरगुण देवे

धुर फुरमाण, गुर पीर अवतार साध सन्त हुक्मी हुक्म जणाईआ। निरगुण बणे साचा काहन, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। निरगुण होए लोकमात प्रधान, कलिजुग अन्तिम कूके दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। नामे हरि मन्नया कहिणा, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। निरगुण तेरा दरसन नैणा, कवण दुआरे नामा पांयदा। पंज तत्त रक्खणा बस्त्र गहिणा, काया गढ़ सुहांयदा। अंदर वड़के आपे बहणा, तेरी सेज इक्क विछांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द समांयदा। नामे अन्तिम हरि हरि आवणा, निहकलंक करे रुशनाईआ। सो पुरख निरँजण डंक वजावणा, पारब्रह्म मेल मिलाईआ। निरगुण रूप लोकमात प्रगटावना, दिस किसे ना आईआ। गुरमुख साचे आप जगावना, जुग जुग विछड़े मेल मिलाईआ। तेरा दुआरा फेर सुहावना, तेरी छप्पर दए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप जणाईआ। नामे वर घर हरि हरि पाया, घर साचे वज्जे वधाया। दोए जोड़ सीस झुकाया, नेत्र नैण दिस ना पाया। कलिजुग अन्तिम राह तकाया, निरगुण निरगुण डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम नामा झोली पाया। नाम नामा नाम धरा, पंज तत्त चोली तन रंगाईआ। लोकमाती जन्म दवा, मात गर्भ बाहर मेल मिलाईआ। अंदर वड़ ना गया समा, दस मास ना अग्न तपाईआ। रक्त बूंद ना कोई रखा, मात पित ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी सुत भगत वड्याईआ। सुत दुलारा सच सपूता, हरि हरि आप उपांयदा। लेखा जाणे चारे कूटा, दहि दिशा वेख वखांयदा। पंज तत्त काया चोला दिसे झूठा, घर साची वस्त टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बोल आपणा तोल, आपणे कंडे तुलांयदा। तोलणहारा हरि भगवन्त, एका कंडा हथ्थ उठांयदा। लेखा जाणे साचे सन्त, सतिगुर आपणा नाउँ धरांयदा। भेव खुल्हाए जीव जंत, जन जननी लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रूप दरसांयदा। छे घर छे उपदेस, नामे रसना हरि हरि गाया। एका रूप हो प्रवेश, छे दर दए खलाया। छे शास्त्र सीस झुकाइन, बाशक तशका निउँ निउँ चरन ध्यान लगाया। आपे वेखे रिखी केस, गवर्धन धारी बेप्रवाहया। लेखा जाणे दस दस्मेश, आप आपणा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नामा ठाकर रहे हमेश, ना मरे ना जाया। नामे तेरी रोटी दाल, प्रभ साचे लेखे लाईआ। घर आए चारे तेरा माल, सति सवाणी भेव ना राईआ। आदि जुगादि करे प्रितपाल, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, हरिजन साचे आपणे विच टिकाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, लोकमात ल्ए मिलाईआ। तेरी घालन आपे घाल, गुरमुखां सेव कमाईआ। सिँघ भगत भगवन

आपे भाल, नाम नामा साचे रंग रंगाईआ। आपणे सरोवर मार उछाल, आपणा मोती आपे बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दरस आपणा आप वखाईआ। निरगुण दरस अगम्म अपार, हरि हरि आप वखांयदा। कागद कलम ना लिखणहार, सति सरोवर अठारां भार बनासत मुख शर्मायदा। गुरसिख तेरा पार किनार, आर पार ना कोई जणांयदा। लेखा जाणे हरि निरँकार, जुग आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम ल्ए अवतार, निहकलंका नाउँ धरांयदा। साची भूमका सुहाए बंक दुआर, जिस दर साचा चरन टिकांयदा। नामा आया त्रै त्रै वारा, त्रै त्रै दिन आपणी अल्फ़ी हेठ विछांयदा। मंगे मंग बण भिखारा, कवण रूप निरगुण लोकमात वटांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, साची भूमका दए सहारा, सच सिँघासण उप्पर डांहयदा। पिछला लहिणा करज उतारा, भगतन भगवन करे प्यारा, शब्द विचोला अगम्म अपारा, ब्रह्मा वेद भेव ना पांयदा। पुराण अठांरां रहे पुकारा, गीता ज्ञान करे सहारा, अञ्जील कुराना एका नाअरा, खाणी बाणी बन्ने धारा, बिन हरि साचे घर ना कोई पांयदा। गुरमुख मेला हरि सज्जण मीत मुरारा, मीत मुरारी फेरा पांयदा। झूठा जूठा तज सर्ब संसारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार त्रै अग्नी आपे लांयदा। विभचार कराए नारी नारा, दुष्ट दुराचारा वेख वखांयदा। बिन गुरसिख आत्म होए ना ठंडी ठारा, जीव जंत सर्ब कुरलांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता, दर दरवेश नर नरेश नामे घर सिँघ भगत वर मंगण आया चलके वाड़ा, निरगुण आपणी झोली अग्गे डांहयदा। सतिजुग बणे इक्क दुआरा, शाह पातशाह निउँ निउँ सीस झुकांयदा। तख्त निवासा पुरख अबिनाशा, बेपरवाह बणे मलाह, कलिजुग बेड़ा आप तरांयदा। मूर्ख मुग्ध अञ्याण करन हासा, कलिजुग अंदर बह बह दए दिलासा, राए धर्म वेख वखांयदा। हरिभगतां बख्शे चरन भरवासा, लेखा जाणे रसन स्वासा, पवण स्वासी आप समांयदा। पार कराए गगन गगनंतर पृथ्मी आकासा, सचखण्ड दुआरा एकँकारा, निरगुण धार पुरख अगम्मड़ा, हड्ड मास नाड़ी ना चमड़ा, हरिजन साचे जीओं पिण्ड तन काचे साची वस्त आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फल फलवाड़ी आपे वेख वखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगला जन्म धुर दा कर्म, लेखा लिख्या धुर आप प्रगटांयदा।

❈ १८ फगण २०१६ बिक्रमी जसवन्त सिँघ दे घर इटारसी शहर मधप्रदेस ❈

पुरख अबिनाशी एका कंडा, निरगुण आपणे हथ्थ रखांयदा। दो जहानां पावे साची वण्डा, आपणा हिस्सा आप करांयदा। तोल तुलाए खण्ड ब्रह्मण्डा, वरभण्डी वेख वखांयदा। लेखा जाणे जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज आप उठांयदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी सेव कमांयदा। साचा कंडा हरि करतार, सो पुरख निरँजण हथ्थ उठाईआ। हरि पुरख निरँजण दए हुलार, दोवें पासे वेख वखाईआ। एकँकारा बण सुन्यार, साचे वट्टे हथ्थ उठाईआ। आदि निरँजण पावे भार, नाम नामा विच टिकाईआ। अबिनाशी करता अद्धविचकार, आपणा हथ्थ वखाईआ। श्री भगवान वस्त निराधार, अमोल अमोलक विच टिकाईआ। पारब्रह्म आपणी धारन गाए आपणी वार, आपणा वाक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे कंडे तोल तराज़ू, तोलणहारा खेल खिलाईआ। साचा कंडा पुरख अथाह, आपणे घर रखांयदा। सचखण्ड निवासी कर सलाह, आपणा मता पकांयदा। लोआं पुरीआं रचन रचा, आपणा भार वण्डांयदा। लक्ख चुरासी खेल खिला, घट घट वेस विटांयदा। आत्म ब्रह्म सर्ब जणा, जागरत जोत दीप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल अपार, इक्क नाल इक्क करे प्यार, इक्क एका वेख वखांयदा। एका इक्क अकल्ल कल धार, एका रंग समांयदा। एका ब्रह्मा विष्न शिव कर प्यार, एका लक्ख चुरासी बन्धन पांयदा। एका वस्त रक्खे अपर अपार, आप आपणी वण्ड वण्डांयदा। लोकमात खेल न्यार, निरगुण सरगुण आप खिलांयदा। साचे कंडे वेखे भार, नेत्र नैण आप खुलांयदा। तोला माशा रत्ती कर कर बाहर, सति सतिवादी भेव खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वण्ड रखांयदा। इक्क इक्क खेल अपारा, लक्ख चुरासी वेस वटांयदा। एका एक कर न्यारा, थिर घर साचे आप सुहांयदा। जुगा जुगन्तर खेल न्यारा, पुरख अबिनाशी आप करांयदा। पंज तत्त वेख मुनारा, जीव ब्रह्म उठांयदा। एका देवे सति भण्डारा, सच वणजारा वणज करांयदा। घाड़न घड़े बण बण ठठयारा, नाम सुन्यारा रूप वटांयदा। कंडा रक्ख निरगुण धारा, दो जहानां रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त वस्त अनमोल आपणे हथ्थ रखांयदा। इक्क इक्क हरि वसे बाहर, गुप्त ज़ाहर भेव ना राईआ। लख चुरासी कर कर खबरदार, चार खाणी दए वड्याईआ। आप आपणी किरपा धार, आप आपणा लए प्रगटाईआ। भगत भगवान वेख विचार, एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग जुग आपणा हिस्सा आप रखाईआ। इक्क इक्क पार किनारा, इक्क एका वेख वखांयदा। इक्क सौ ग्यारा खेल अपारा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म चलांयदा। एका एक ब्रह्म विष्न शिव उज्यारा, इक्क एका लक्ख चुरासी रचन रचांयदा। एका एक भरे भगत भण्डारा, लख चुरासी पूरा तोल ना कोई करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत भगवन्त आप प्रगटांयदा। भगत उपाए हरी हरि घाट, हरिजन वेख वखानया। हरिजन उपाए तीर्थ ताट, हरि हरि चरन छुहानया। हरिजन हरि हरि मेल मिलाए

२८१
०६

काया माट, दीपक जोती जोत जगानया। हरिजन हरि हरि सोए आत्म खाट, साची सेज आप सुहानया। हरिजन हरि बस्त्र पहनाए तन साचा पाट, साची अल्फ़ी गल वखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगतां एका रंग रंगानया। भगतन वण्ड पुरख सुल्तान, एका इक्क कराईआ। आप झुलाए आपणा सच निशान, जन भगतां हथ्थ फड़ाईआ। नाथ अनाथां होए मेहरबान, दीनन दीन दए वड्याईआ। नाद अनादी वजाए नाद, नाद नादां विच टिकाईआ। शब्द जणाई बोध अगाध, अगाध बोध भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन हथ्थ भगवन डोर, तार सितार आप हिलाईआ। भगतन मेला भगती घर, भगवन्त खेल खिलांयदा। लोकमात माणस जन्म कर, जन्म जन्मां वेख वखांयदा। पंज तत्त काया चोला अंदर वड़, काया गढ़ फोल फुलांयदा। सति सरूपी शब्द शब्दी लए फड़, नाम नामा बन्धन पांयदा। गृह मन्दिर आपणा घाड़न घड़, घर घर विच आसण लांयदा। सच महल्ल उच्च अटार आपे चढ़, आप आपणा मुख खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका भगत लक्ख चुरासी पार शक्ति धारन धार इक्क वखांयदा। लक्ख चुरासी एका तोल, जूनी जून आप टिकाईआ। पुरख अबिनाशी आपणी रसना आपे बोल, हरिभगतन देवे वड वड्याईआ। सचखण्ड निवासी सच दुआरा खोल्ह, साची वस्त वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन हरि रंग रतड़ा, रंग रंगीला इक्क अख्वाईआ। भगतन अंदर हरि भण्डारा, हरि शब्दी शब्द भरांयदा। सच तराज़ू सिरजनहारा, ख़ालस आपणे हथ्थ उठांयदा। आपे जाणे आर पार किनारा, मँझधार वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला एके दर, एका अक्खर आप पढ़ांयदा। एका अक्खर हरिजन पढ़, पढ़ पढ़ आपणा रूप वटाईआ। एका पौड़े हरिजन चढ़, चढ़ चढ़ आपणा घर सुहाईआ। एका पल्लू हरिजन फड़, फड़ फड़ मिले बेपरवाहीआ। एका अग्नी हरिजन सड़, सड़ सड़ आपणी जोत करे रुशनाईआ। एका घाड़न हरिजन घड़, घड़ घड़ भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निष्अक्खर रूप समाईआ। एका रंग हरि हरि कर, रंग रत्तड़ा इक्क रंगांयदा। एका मेला हरि हरि दर, दर दरवाजा आप खुलांयदा। एका नहावण हरि हरि सर, सर सरोवर इक्क सुहांयदा। एका घर हरि हरि वड़, हरिजन साचे आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन रूप आप दरसांयदा। भगतन रूप अगम्म अपार, हरि बिन अवर ना कोए जणाईआ। भगतन रूप अपर पार, हरि बिन अवर ना कोए मनाईआ। वेद कतेब ना पावण सार, गा गा थक्की सर्ब लोकाईआ। शास्त्र सिमरत ना करे विचार, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। सन्त कन्त रहे पुकार, अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। गुर पीर एका

धार, हरि हरि सची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवे वड वड्याईआ। भगत वडियाई हथ्थ निरँकार, आपणा भेव खुलांयदा। इक्की जन्म माणस माणस कर उज्यार, मानुख मानुख आप समझांयदा। एका बख्श चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख लगांयदा। अठ्ठे पहर सच गुफ़तार, नाम सितार आप वजांयदा। सति सरूपी शब्दी हार, तन श्रंगार आपणा आप वखांयदा। पंज तत्त कर ख्वार, ब्रह्म मति भर भण्डार, धीरज जत इक्क धरांयदा। रुत्ती रुत्त पैज संवार, निरगुण जोत नूर उज्यार, पुरख अकाल एका रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत तेरा रूप आप वटांयदा। इक्की जामे माणस रक्ख, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। प्रहलाद प्रभ कर प्रतक्ख, रूप अनूप आप दरसाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कीता वख, राम नाम इक्क पढ़ाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे लए चलाईआ। गढ़ हँकारी जाए ढठ्ठ, ढावणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां पैज तराईआ। इक्की जन्म सच सिक्दार, माणस माणस रूप वटांयदा। इक्की बरस एका धार, एका शब्द एका अक्खर आप पढ़ांयदा। इक्की बरस जत सति धार, नेत्र नैण मूंद लिव तार गुफ़तार आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। इक्की जन्म जगत दवा, साचा संग निभाईआ। इक्क इक्क अक्खर दए पढ़ा, एका एके नाल मिलाईआ। रिखी मुनी आप समझा, सच मति इक्क दरसाईआ। तिक्खी धार आप चला, एकँकार आपे वेख वखाईआ। वण्डे वण्ड बेपरवाह, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खोजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे थांउँ थाईंआ। प्रहलाद पुकारया दर नमसकारया, हरि विचारया नर नरायण वेख वखांयदा। तेज कटारया पर्बत हलारया अग्नी साड़या, तत्व तत्त ना कोए जलांयदा। हरि चरन प्यारया एका धारया निउँ निउँ निमस्कारया, दूजा संग ना कोए रखांयदा। सिरजणहारया पावे सारया, रूप धारया, कीटां विच कीट आप अख्वांयदा। थम्म ठारया चढ़ सिखर मनारया, भगत वणजारया साचा वणज इक्क करांयदा। दुष्ट बिदारया गोद उठारया, पार करा ल्या, नर सिँघ रूप वटांयदा। प्रहलाद करे गिरया जारया, तूं बेपरवाह तेरा अन्त ना पारावारया, कवण रूप वेस करे विच संसारया, जन भगतां लाज रखांयदा। पुरख अबिनाशी बोल जैकारया, शब्द सुनेहड़ा इक्क सुणा रिहा, कलिजुग अन्तिम आवे वारया, निहकलंक लए अवतारया, हरिजन भगत प्रहलाद आपणे आप आप प्रनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन मेला मेल मिला ल्या। सतिजुग भगत हरि भगवान, इक्क प्रहलाद तराईआ। जोती जामा श्री भगवान, माणस मनुख ना कोए दरसाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल महान, निरगुण नूर करे रुशनाईआ।

२८३ ०६

गुरमुख वेखे बाल अंञाण, जगत काण ना कोए जणाईआ। एका देवे धुर फ़रमान, सो अक्खर करे पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म प्रभ आपणी अणस पछाण, आप आपणी गोद बहाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों आप पछाण, हरिजन साचे लए उठाईआ। निमाणया देवे साचा माण, चरन कँवल इक्क वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग वेखे खेल अगम्म अथाहीआ। प्रहलाद रसना गाया राम, अन्तर हरि लिव लांयदा। कलिजुग अन्तिम गुरसिखां सोहँ पीता साचा जाम, हरि साचा आप प्यांअदा। अन्तिम पूरा कर काम, करनी करता आप करांयदा। हरिजन तेरा खेड़ा नगर ग्राम, सदा सुहेला आप वसांयदा। तेरी माटी काया चाम, हरि साचा आप हंढांयदा। तेरी जोती कोटन भान, रवि ससि मुख शर्मांयदा। तेरा नाउँ करोड़ तेतीस ब्रह्मा विष्न शिव आदि जुगादी गाण, गावत गावत आप सुणांयदा। पुरख अबिनाशी हो प्रधान, लोकमात वेस वटांयदा। देवणहारा धुर फ़रमान, सच संदेसा इक्क सुणांयदा। कलिजुग अग्नी तप्त महान, जगत विकारा हरनाक्ष अग्न लगांयदा। पुरख अबिनाशी जाणी जाण, हरिजन साचे आप बचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा निध गहर गम्भीर डूँघा सागर, काया गागर जल धारा वेख वखांयदा। जल धारा अमृत रस, निझर झिरना आप झिराईआ। पुरख अबिनाशी नस्स नस्स, कलिजुग काया थम्म वेख वखाईआ। हरिजन चढ़ाए हस्स हस्स, चरनां हेठ दए दबाईआ। दूसर किसे ना होवे वस, जीव जंत रहे कुरलाईआ। हरिभगतन साचा मार्ग दस्स, सच सनेहड़ा इक्क सुणाईआ। तीर निराला मारे कस, अणियाली मुखी आप वखाईआ। जोत सरूपी हो प्रतक्ख, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप समझाईआ। इक्की जन्म जुग जुग धार, माणस माणस आप उपजांयदा। इक्की बरख ना कोई सोग ना कोई हरख, एका एका राह वखांयदा। एका इक्की आपे परख, आपणी सोटी हथ्थ उठांयदा। अन्तिम अन्त अन्त इक्की जन्म दे दे दरस, काया चोला आप छुडांयदा। ब्रह्म ब्रह्म प्रभ कर कर तरस, आप आपणा संग रखांयदा। वेखणहारा जगत हरस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलांयदा। हरिजन आत्म आपणे अंदर रक्ख, घर साचे आप सुहांयदा। पहलां प्रगट होए आप प्रतक्ख, हरिजन साचे फेर जगांयदा। हिरदे अंदर आपे वस, शब्द शब्दी मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगतन एका रंग रंगांयदा। भगतन रंग चलूल, सच मजीठी आप रंगांयदा। भगतन मेला कन्त कतूंहल, घर मन्दिर आप सुहांयदा। भगत सिँघासण सच पघूंड़ा रिहा झूल, सचखण्ड निवासी आप झुलांयदा। त्रैगुण दासी बरखे फूल, फूलन बरखा आप लगांयदा। आपे जाणे आपणा मूल, लेखा आपणे हथ्थ वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन लेखा विच संसार,

आपे जाणे आप निरँकार, जुग जुग करे खेल अपार, खेलणहारा खेल खिलांयदा। खेलणहारा पुरख समरथ, घर साचे सोभा पांयदा। आपणी महिमा जाणे अकथ, कथनी कथ ना कोई सुणांयदा। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही सेव कमांयदा। जन भगतां देवे साची वथ, वस्त अमोलक हथ फड़ांयदा। काया मन्दिर खोलू हट्ट, वणज वणजारा वेख वखांयदा। आपे खेले खेल बाजीगर नट, नटूआ सांग वरतांयदा। आपणा दीपक आपणे घर आपे रक्ख, जोती जोत जोत आप जगांयदा। आपे अनहद मारे सट्ट, ताल तलवाड़ा आप वजांयदा। आपे रूप अनूप कर प्रगट, घर घर विच दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मेला धुरदरगाह, लोकमाती दए सलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। साचा बेड़ा बन्नू करतार, एका चप्पू नाम लगाईआ। साची नईआ आर पार, साचा सईआ पार कराईआ। भैणा भईआ दए अधार, पिता पूत मात वड्याईआ। जिस जन मेला हरि निरँकार, मेल मिलावा एका थाईंआ। अन्तिम अन्त उतरे पार, मँझधार ना कोई रुढ़ाईआ। भगत भगवन्त इक्क प्यार, कबीर जलाहा दए गवाहीआ। कलिजुग अन्तिम खेल न्यार, पुरख अबिनाशी आप खिलाईआ। निरगुण रूप विच संसार, घर भगतन फेरा पाईआ। जिउँ सुत कमाला दए अधार, तिउँ अक्खर इक्क पढ़ाईआ। पत डाल वेख गुलजार, गुंचा पंखड़ीआ आप खिलाईआ। हरिभगत तेरी बसन्त बहार, आदि जुगादि महिक महिकाईआ। पुरख अबिनाशी सेवादार, सिंच अमृत बूटे हरे कराईआ। आपे बणे मालन गिरवर गिरधार, नाम खारी हथ्थ उठाईआ। फल तोड़े आपणी वार, सच सुगंधी आपणी विच भराईआ। भवरा गूंजे सच गूंजार, तूही तूही राग अलाहीआ। जोत अकालण नार मुटयार, आपणी खारी सीस उठाईआ। आपे आए चल सचे दरबार, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। हार गुंदे आपणी वार, साची सूई नाम उठाईआ। प्रेम धागा अंदर डार, इक्क नाल इक्क लए बंधाईआ। इक्क इक्क इक्क नाल कर त्यार, त्रैलोक मुख भवाईआ। सगन मनाए आप निरँकार, लाल भोशन गल पहनाईआ। सीस गुंदे सिरजणहार, मेंहडी तिन्न तिन्न वट चढ़ाईआ। आपणे अंदरों आए बाहर, थिर घर वासी सच दुआरा आप खुलाईआ। रवि ससि करन निमस्कार, ब्रह्मा विष्न शिव बैठे सीस झुकाईआ। चरन भिख्या मंगण वारो वार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह आपे जाणे आपणी धार, बन्धन बंध ना कोई बंधाईआ। चौदां लोक चरन हेठ लताड़, आवे जावे वाहो दाहीआ। लोकमात लए अवतार, हरिजन वेखे थाउँ थाँईआ। जिउँ प्रहलाद गल लगाया आप करतार, फड़ फड़ आप जगत बाहींआ। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, पंज तत्त रूप ना कोई दसाईआ। घर घर दर दर फिरे वारो वार, दिवस रैण ना कोई जणाईआ। इक्क सौ ग्यारवें सिख तारे एका वार, इक्क इक्क इक्क नाल बंधाईआ। राती सुत्तयां देवे पैज संवार, जोग अभ्यास ना

कोई कराईआ। एका नाम सच श्रंगार, गुरसिखां तन कराईआ। मालण आई धुर दरबार, जोत अकाल सेव कमाईआ। सोहँ हार कर त्यार, लोकमात फिरे चाँईं चाँईंआ। बिरध बाल नौजवान, गुरसिख वेखे इक्क ध्यान, दूजी अक्ख ना कोई वखाईआ। चरन कँवल सच ध्यान, एका मन्त्र ब्रह्म ज्ञान, आत्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। चौदां विद्या होण हैरान, लेखा चुक्के जिमी अस्मान, पवण पाणी होए अंजाण, हरि का भेव कोई ना पाईआ। गुरमुख साचे चतर सुघड़ सयान, पुरख अबिनाशी घट घट वासी, कलिजुग अन्तिम मिल्या आण, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँग्घी कंदर समुंद सागर फोलण कोई ना जाईआ। घर घर बैठिआं करे अन्त कल्याण, इक्क वखाए सचखण्ड निवासी सच निशान, शाह सुल्ताना हो मेहरवान, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहाना बण बण माली, जन भगतां करे सच दलाली, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल खलाईआ। सत्त रंग निशाना सतिगुर चाढ़, सति पुरख निरँजण खेल खिलांयदा। हरिजन वेखे साचे लाल, दरगाह साची आप सुहांयदा। लोकमात जगत अखाड़, जोगी जती सर्ब कुरलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण वसे सच मकान, हरिजन साचे वेख वखांयदा।

✻ १६ फग्गण २०१६ बिक्रमी भगत सिँघ दे सपूत सविंदर सिँघ दे घर लिख्त होई अटारसी ✻

भगतन हरि भण्डार, नाम वरताया। सन्तन संग अपार, आदि जुगादि रखाया। गुरमुख मीत मुरार, गुर बन्धन एका पाया। गुरसिख सज्जण लए उभार, घर साचा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रंग रंगीला इक्क अख्वाया। भगतन नाम अनमोल, झोली पांयदा। सन्तन वसे कोल, विछड़ कदे ना जांयदा। गुरमुख सदा अडोल, आप करांयदा। गुरसिख पड़दा खोल्ह, शब्द जणांयदा। तोलणहारा साचा तोल, कंडा नाम वखांयदा। लक्ख चुरासी लए वरोल, नाम हुलारा इक्क लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। हरिभगतन हरि मलाह, आप अख्वाया। सन्तन सच सलाह, नाम जपाया। गुरसिख फड़ फड़ बांह, पार कराया। गुरसिख देवे साचा थाँ, चरन छुहाया। करे कराए सच न्याँ, जुग जुग वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाया। भगतन हरि दुआर, हरि हरि समांयदा। सन्तन खोल्ह किवाड़, भेव जणांयदा। गुरमुख अंदर वाड़, रंग रंगांयदा। गुरसिख जाए तार, तरनी तरन दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी

कार कमांयदा। भगत वडियाई आपणे हथ्थ, घर साचे सोभा पाईआ। सन्त चलाए एका रथ, रथ रथवाही बेपरवाहीआ। गुरमुख मेला हरि समरथ, घर साचे वज्जे वधाईआ। गुरसिख सगल विसूरे जायण लथ, नेत्र नैणा दरसन पाईआ। हरि हरि महिमा अकथना अकथ, कोई कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अचरज आपणी रीत चलाईआ। भगतन अंदर वसया, एका एकँकार। सन्तन मार्ग दस्सया, कर किरपा अपर अपार। गुरमुख दुआरे फिरे नस्सया, आदि जुगादी एका कार। गुरसिख घर घर बह बह वसया, आप आपणा खोल्ह किवाड़। लेखा चुक्के रैण अन्धेरी रुस्सया, सूरज चन्न कराए सेवादार। तीर निराला एका कसया, मारनहारा मारे मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन करे सच श्रंगार। भगतन तन श्रंगार, सच समाईआ। सन्तन अमृत धार, मेघ बरसाईआ। गुरमुख मेला अगम्म अपार, घर मेले सहिज सुभाईआ। गुरसिख मंगे इक्क दुआर, दूजा दर ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लिखे लेख आपणे हथ्थ रखाईआ। भगतन लेख अपार, हरि जणांयदा। सन्तन साची कार, सेव कमांयदा। गुरमुख जोत उज्यार डगमगांयदा। गुरसिख उधरे पार, दरस करांयदा। दिस ना आए विच संसार, नज़र छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे कागद आपे छाही, आपे कलम चलांयदा। भगत लेखा कागद कलम, लेख लिख ना कोई जणाईआ। सन्तन जाणे आपे जन्म, आपणा रूप दरसाईआ। गुरसिखां लेखे लाए कर्म, नेहकर्मी वड वड्याईआ। गुरसिख वखाए एका धर्म, वरन जोत इक्क जणाईआ। पुरख अबिनाशी साची सरन, सरनगत बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वेख वखाईआ। भगतन मेला इक्क इकल्ला, हरि साचे घर करांयदा। सन्तन वसाए सच महल्ला, दर घर साचा आप सुहांयदा। गुरमुख फड़ाए एका पल्ला, आप आपणे रंग रंगांयदा। गुरसिख दस्से राह सुखाला, औझड़ मार्ग ना कोई जणांयदा। सति संदेश आपे घल्ला, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। आपे करे वल छला, अछल छलधारी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा जोत धर, आप आपणा बीज बिजांयदा। भगतन बीज अपार, हरि उपाया। सन्तन सिंच क्यार, हरा कराया। गुरमुख फुल फुलवाड़, मात लगाया। गुरसिख तोड़ हार, गल पहनाया। पुरख अबिनाशी खेल अपार, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा राग सुणाया। भगतन राग अनादि, नादी नाद सुणांयदा। सन्तन खेल ब्रह्मादि, ब्रह्मंड खण्ड वेख वखांयदा। गुरमुख आदि जुगादि, जुग जुग मात प्रगटांयदा। गुरसिखां देवे साची दाद, एका वस्त झोली पांयदा। लख चुरासी विच्चो लाध, लालन लाल आप उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, हरिजन साचे सच वड्यांअदा। भगत वडियाई हरि भगवन्त, जुग जुग आप कराईआ। लेखा जाणे साचे सन्त, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। गुरमुख महिमा अगणत, वेद कतेब रहे जस गाईआ। गुरसिख वडियाई जीव जंत, लाल अनमुल्ला इक्क वखाईआ। मीत सखाई साचा कन्त, पीत पीतम्बर सीस छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घट आपणी सेज सुहाईआ। भगतन अंदर सेज सुहञ्जणी, हरि साचा आप वछांयदा। सन्तन मेला जोत निरँजणी, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। गुरमुख पाया दर्द दुःख भय भंजनी, भय भयानक दए मिटाया। गुरसिख तीर मारे नाम अञ्जणी, अज्ञान अन्धेर मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग आपणा वेस वटाया। भगतन वेस वटंदड़ा, परम पुरख करतार। सन्त साजन वेख वखंदड़ा, आप आपणी किरपा धार। गुरमुख साचा थान सुहंदड़ा, थान थनंतर अपर अपार। गुरसिख एका रंग रंगदड़ा, रंग रंगीला हरि करतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे सर्ब संसारा, लेखा लिखणहारा गोपाला, दीन दयाला एका एक वड्याईआ। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाला, खेल निराला पुरख अबिनाशी आप कराईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, जोत अकाला नूरो नूर नूर रुशनाईआ। भगतन पाए फूलन माला, लोकमात बण दलाला, सेवक सेवा सच कमाईआ। शब्द अनादि वजाए ताला, फल लगाए साचे डाला, पत डाली आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगतन लेखा सहिज सभाईआ। भगतन पाया भेव गोबिन्द, भावी भगतन विच समाईआ। सन्तन मेटे सगली चिन्द, चिंता चिखा आप जलाईआ। गुरमुख विरला गुणी गहिन्द, घर वेखे बेपरवाहीआ। गुरसिख धार सागर सिन्ध, अमृत आत्म मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल वखाईआ। भगतन खेल अपार, हरि वखांयदा। सन्तन दर भिखार, मंगण आंयदा। गुरमुखां बण वणजार, वणज करांयदा। गुरमुखां वस्त अपार, झोली पांयदा। आपे वसे सभ तों बाहर, दिस ना आंयदा। जुग जुग खेल अपार, निरगुण सरगुण जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेल अपारा हरि निरँकारा, भेव अभेदा भेव रखाईआ। आदि जुगादी लै अवतारा विच संसारा, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। भगतन भर भण्डारा, नाम अधारा, इक्क इकल्ला आप वरताईआ। सन्तन मीता सुत दुलारा सच सहारा, शब्दी शब्द शब्द कुड़माईआ। गुरमुख बोल इक्क जैकारा लाए नाअरा, सो पुरख निरँजण सच पढ़ाईआ। गुरसिख ढह ढह पए दुआरा करे नमसकारा, मस्तक टिक्का धूढ़ी चरन छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक्क अख्वाईआ। देवण को गुर एका दीना, अवर ना कोए वखांयदा। जन भगतां करे ठांडा सीना, सांतक

सति सति वरतांयदा। सन्तन मेला जिउँ जल मीना, आप आपणा मेल मिलांयदा। गुरमुख पार किनारा लोकां तीना, त्रैगुण विच फेर ना आंयदा। गुरसिख रंग चाढ़े भीना, उतर कदे ना जांयदा। अबिनाशी करता दाना बीना, बीना दाना आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत इक्क जगांयदा। जागरत जोत पुरख करतार, एकँकारा आपणी आप जगाईआ। दीपक बाती कर उज्यार खेल अपार बाती तेल ना कोए रखाईआ। लेखा लिखे लिखणहार अगम्म अपार, अलख अगोचर वड वड्याईआ। भगतन देवे इक्क आधार विच संसार, पुरख अकाल ओट तकाईआ। सन्तन मेला कन्त भतार, नर नरायण करे प्यार, नारी रूप सर्ब दरसाईआ। गुरमुख जीते आप आपणा आपणी वार, पंज तत्त करे ख्वार, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। गुरसिख उतरे पार किनार, मिले मेल धुर दरबार, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वार बण बण ढाडी आपे गाईआ। गावणहारा गाविओ, गहर गम्भीर सुन्न। भगतन मेल अगम्म अपारयो, आपे जाणे गुण अवगुण। सन्तन उपजिओ सुत दुलारयो, लख चुरासी विच्चों लए चुण। गुरमुख भरे इक्क भंडारयो, शब्द अनादि नादी धुन। गुरसिख एका रूप दिखारयो, किसे हथ्थ ना आवे रिख मुन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी पुकार आपे रिहा सुण। सुणे पुकार हरि निरँकार, आदि जुगादी खेल अपारया। भगत भगती कूकां रहे मार, उच्च महल्ल अटार एका राग अला ल्या। सन्तन दिसे ठंडा दरबार, नेत्र निउँ निउँ करन निमस्कार बेऐब परवरदिगारया। गुरमुख पायण वर एका वार, लड़ छुटे सर्ब संसारया। गुरसिख तृखा दए नवार, नेत्र नैण इक्क उग्घाड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे मन्दिर आपे वाड़या। मन्दिर उच्च महल्ल, भगत सुहांयदा। सन्तन नेहचल धाम अटल, इक्क वखांयदा। गुरमुख रविआ जल थल, रूप दरसांयदा। गुरसिख दूई द्वैती मेटे सल, एका रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा बह समझांयदा। लेखा हरि सुल्तान, एका एक एक रखाया। त्रै त्रै मंगण साचा दान, हरि हरि झोली आप भराया। भगतन बख्शे साचा माण, जुग जुग सिर आपणा हथ्थ रखाया। सन्तन देवे इक्क ज्ञान, दूई द्वैती पड़दा लाहया। गुरमुख बणाए चतर सुघड़ स्याण, बुध बबेकी आप कराया। गुरसिख साजण करे पछाण, रूप अनूप आप दरसाया। अमृत बख्शे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाया। चरन कँवल रखाए एका आण, हुक्मी हुक्म आप चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला एका घर, दर दरवाजा इक्क खुल्हाया। दर दरवाजा सचखण्ड, हरि सतिगुर आप खुलांयदा। गुर गुर मात वण्डाए वण्ड, हरि सन्तन वेख वखांयदा। सन्त सुहेले मंगां रहे मंग, आपणी रीती आप चलांयदा। गुरमुख सेजा

सच पलँघ, मंडल मंडप आप सुहांयदा। गुरसिख कट्टणहारा भुक्ख नंग, सच ख़ज़ीना इक्क वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया दृष्टी देवे दान, इष्ट सृष्ट इक्क जणांयदा।

❋ १८ फगण २०१६ बिक्रमी हरदित सिँघ दे घर अटारसी ❋

हरी हरि रूप निराकार, निरगुण आपणा नाउँ रखाईआ। सतिगुर खेल पुरख करतार, सचखण्ड दुआरे आप खलाईआ। लोकमात लै अवतार, गुर गुर वेख वखाईआ। जन भगतां देवे इक्क आधार, आसा मनसा तृप्त कराईआ। सन्त सुहेले खोल्ह किवाड़, घर घर विच मेल मिलाईआ। गुरमुख साचे पौड़े चाढ़, शब्द डोरी हथ्थ फड़ाईआ। गुरसिख उजाला नाड़ नाड़, दीन दयाला आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी खेल खलाईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, आदि जुगादि समाया। सतिगुर पूरा बण मलाह, लोकमात वेस वटाया। गुर गुर शब्द दए जणा, इष्ट देव इक्क अख्वाया। भगत भगवन्त मेल मिला, आप आपणा रंग रंगाया। सन्त सुहेले लए जगा, आलस निन्दरा दए मिटाया। गुरमुख अंगी अंग करा, आप आपणी गोद सुहाया। गुरसिख सिख्या सिख पढ़ा, सिख मति इक्क दृढ़ाया। धुर दा लिख्या झोली पा, जगत मिथ्या दए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए बेपरवाहया। निरगुण दाता धुर दरबार, घर साचा इक्क सुहाईआ। सतिगुर रूप अगम्म अपार, आपणा आप आप प्रगटाईआ। गुर गुर वेखे एका धार, एका एक सच जणाईआ। भगत भगवन्त खेल संसार, आदि जुगादि वेख वखाईआ। सन्त कन्त बण भतार, नार प्यार सेज हंढाईआ। गुरमुख नाद शब्द धुन्कार, धुन आत्मक अन्तर आप वजाईआ। गुरसिख दरस दरस अपार, घर घर विच आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीवा बाती इक्क टिकाईआ। निरगुण दीआ बाती कमलापाती, हरि मन्दिर आप सुहांयदा। बंक किवाड़ा खोल्हे ताकी मारे झाकी, आप आपणा पड़दा लांहयदा। अमृत बाटी साचा साकी, भर प्याला जाम प्यांअदा। अश्व घोड़ा साचा राकी, मार पलाकी सच सिँघासण आसण लांयदा। पुरख अबिनाशी पाकन पाकी, लेखा जाणे ख़ाकन ख़ाकी, ख़ालक ख़लक रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आपणा आप सुहांयदा। निरगुण निरगुण निरगुण रंग, हरि आप आपणा वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा इक्क सरबंग, सूरबीर वड्डी वड्याईआ। गुर गुर वजाए सच मृदंग, सति दमामा हथ्थ उठाईआ। भगतां अंदर आपे लँघ, आप आपणा दर खुल्हाईआ। सन्तन माणे सेज पलँघ, आपे सुत्ता बेपरवाहीआ। गुरमुख लगाए आपणे अंग, आपणा अंगन आप

सुहाईआ। गुरसिख सच दुआरे जाए लँघ, अद्धविचकार ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हथ्थ वडियाई रक्ख करतार, सिरजणहार सगला खेल खिलांयदा। जोत उजाला हो उज्यार, विच संसार नूर नुराना डगमगांयदा। दीन दयाला सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, वसणहार लोकमाती वेस वटांयदा। काल महांकाला कर भिखार, साचे तख्त सची सरकार, हुक्मी हुक्म आप चलांयदा। सतिगुर रूप एकँकार, आदि जुगादी नाउँ रखांयदा। गुर गुर जाणे साची कार, लोकमात राह वखांयदा। भगतन भगती भर भण्डार, सति भण्डारा आप वरतांयदा। सन्त सुहेले वेखे डूँघी गार, काया कँवरी फोल फुलांयदा। गुरमुख सज्जण साचे ताड़, त्रै त्रै लोकां पार करांयदा। गुरसिख मेला मीत मुरार, प्रीतम प्यारा आप मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत विच समांयदा। जोत समाए हरि रघुराय, भेव कोए ना पांयदा। खेल खिलाए बेपरवाहे, दिस किसे ना आंयदा। बणत बणाए रचन रचाए, लक्ख चुरासी रंग रंगांयदा। घट घट अंदर जोत जगाए डगमगाए, अन्ध अन्धेर गवांयदा। अनहद नाद वजाए धुन सुणाए, साचा मंगल आपे गांयदा। अमृत जाम प्याए, सर्ब सरोवर इक्क नुहाए, दुरमति मैल धवांयदा। कागों हँस बणाए, सोहँ हँसा चोग चुगाए, माणक मोती आप उपांयदा। जूठा झूठा दाग मिटाए, आत्म जोती चिराग जलाए, घर मन्दिर इक्क सुहांयदा। साकी बण बण जाम प्याए, तृष्ना भुक्ख आप मिटाए, सांतक सति आप करांयदा। पूर्ब लेखा वेख वखाए, अग्गे लहिणा झोली पाए, लिख्या लेख ना कोए मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे लेखा लिखणहारा, आपे करे वणज वणजारा, आपे हट्टो हट्ट विकांयदा। साचा हट्ट निरगुण नरायण, एका एक खुलाईआ। औखा घाट कोई ना वेखे नैण, कोटन कोटि राह तकाईआ। सतिगुर पूरा साक सैण, एका मार्ग दए वखाईआ। गुर गुर मूर्त एका धाम इक्ट्ठे बहण, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। भगतन चुकाए लहिणा देण, लेखा लेखे लए लगाईआ। सन्तन बणे साक सैण, सज्जण मीत बेपरवाहीआ। गुरमुख धन्न धन्न सद रसना कहिण, जिह्वा गुण वड वड्याईआ। गुरसिख पेखे दरस निज नेत्र नैण, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दासन दासा शाहो शाबासा, पुरख अबिनाशा खेल तमाशा, जुग जुग वेख वखाईआ। खेल अपारा हरि निरँकारा, जुग जुग वेख वखांयदा। लए अवतारा विच संसारा, गुर गुर नाउँ उपांयदा। भगत भण्डारा बण वरतारा, साची भिच्छया इक्क वखांयदा। सन्त हुलारा शब्द जैकारा, एका राग अल्हांयदा। गुरसिख उज्यारा पाया पुरख अपारा, अगम्म अगम्मड़ी खेल खिलांयदा। गुरसिख उतारा पार किनारा, भव सागर ना कोए रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपे वेख वखांयदा। लेखा

२६१
०६

२६२
०६

लिखे निरगुण दाता, दूसर अवर ना कोए जणांयदा। सतिगुर पूरा पुरख बिधाता, पुरख पुरखोतम नाउँ धरांयदा। गुर गुर विच संसारा वरना वरन गोत ना कोए जणांयदा। भगतन बणे पिता माता, बाल बाला गोद उठांयदा। सन्तन मेट अन्धेरी राता, निरगुण साचा चन्द चढ़ांयदा। गुरमुख मेल इक्क इकांता, इक्क इकल्ला फेरी पांयदा। गुरसिख जणाए साची गाथा, गीत गोबिन्द आप अलांयदा। आप निभाए सगला साथा, दर घर साचे संग वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। मेल मिलाए साचा मीता, इक्क अतीता एका रंग समाईआ। जुग जुग जाणे आपणी रीता, पतित पुनीता पतित पापी लए तराईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, धाम वखाए इक्क अनडीठा, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी मति आपणे हथ्थ रखाईआ। साची मति सतिगुर हथ्थ, सति सति सति वरतांयदा। गुर गुर चलाए जगत रथ, रथ रथवाही फेरा पांयदा। भगतन देवे एका वथ, साची वस्तू वण्ड वण्डांयदा। सन्तन करे इक्क अकथ, एका अक्खर नाम पढ़ांयदा। गुरमुखां गेड़े उलटी लठ्ठ, मन मनूआ आप फिरांयदा। गुरसिखां अमृत देवे झट्ट, निझर झिरना आप झिरांयदा। आपे सोए साची खाट, साची सेजा आप हंढांयदा। आपे जाणे नेड़े वाट, दूर दुराडा पन्ध मुकांयदा। आपे चढ़े औखे घाट, पार किनारे डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मंगल आपे गांयदा। मंगल गाए गीत सुहागी हरि हरि रागी, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। आदि जुगादी बण बैरागी होए तयागी, त्रैगुण मेल अनूप मिलाईआ। आपणा वरते स्वांग स्वांगी, ना कोई जाणे रागी नादी, राग रागां भेव ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दरवेशा इक्क अख्वाईआ। दर दरवेश शाह नरेश, एका एक अख्वांयदा। लेखा जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणपति गणेश, गिण गिण लेखा आप चुकांयदा। आपे सोया बाशक शेश, आदि जुगादी रहे हमेश, जीवन मरन ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा शब्द दमामा, निरगुण आपणा आप वजांयदा। करे खेल श्री भगवाना, दो जहाना लोकमात वेख वखांयदा। साची सखीआं गोपी कान्हा, गुण निधाना एका बंसरी नाम सुणांयदा। साची सुरती सीता रामा, बख्शे चरन ध्याना, सति सन्तोख इक्क दृढ़ांयदा। साचा मन्त्र सच ज्ञाना, देवणहार पुरख सुल्ताना, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ांयदा। भगतन बन्ने साचा गाना, विच जहाना साचा सगन मनांयदा। सन्तन आत्म देवे पीणा खाणा, आपे रक्खे आपणे भाणा, हरि भाणे आप समांयदा। गुरमुख सुणाए एका गाणा धुर फ़रमाणा, अनादि अनादी राग अलांयदा। गुरसिख बणाए चतर सुघड़ स्याणा, बाल अंजाणा बाली बुध वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन सरधन

सरधन निर्धन एका घर बहांयदा। निर्धन सरधन निरगुण रूप, हरी हरि हरि आप बणाईआ। सतिगुर पूरा सति सरूप, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। भगतन मेटे अन्ध कूप, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। सन्त उपजाए साचे पूत, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। गुरमुख पंघूड़ा लैणा झूट, दरगाह साची आप झुलाईआ। गुरसिख नाता तोड़े जूठ झूठ, सच सुच मेल मिलाईआ। पुरख अबिनाशी आपे तुट्ठ, जुग जुग विछड़े मेल मिलाईआ। जाम पिलाए अमृत घुट, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी जाए छुट्ट, राए धर्म ना दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन मिलाए आपणे घर, सो जन विछड़ कदे ना जाईआ। सो पुरख निरँजण हरि समरथ, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। हरि पुरख निरँजण चलाए आपणा रथ, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। एक एकँकारा निराकारा सचखण्ड दुआरे आपे वस, थिर घर आपणा आप सुहाईआ। आदि निरँजण खेल तमाश, पुरख अबिनाश आपणा आप वखाईआ। श्री भगवान सर्ब गुणतास, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। अबिनाशी करता पावे रास, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म एका मन्दिर हो प्रकाश, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाला दीन दयाला, अजूनी रहित अनुभव प्रकाश वखाईआ। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, भेव कोए ना पांयदा। आदि निरँजण खेल खिला, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। एका एकँकारा रंग रंगा, रंग मजीठी इक्क चढ़ांयदा। आदि निरँजण जोत जगा, थिर घर साचा आप सुहांयदा। अबिनाशी करता वसे एका थाँ, महल्ल अटल उच्च मुनार आप उपांयदा। श्री भगवान करे कराए सच न्याँ, सच तख्त सुल्तान सुहांयदा। पारब्रह्म वेखणहारा थाउँ थाँ, थान थनंतर आप वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप निराकार, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव कोए ना आंयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, एका एक एकंकारया। जुग जुग बणे आप मलाह, आपणा बेड़ा आप चला रिहा। आपणी देवे आप सलाह, आप आपणा संग निभा रिहा। आपे वसे साचे थाँ, सचखण्ड निवासी डेरा आपणा ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा रूप वटा ल्या। निरगुण रूप इक्क इकल्ला, हरि सच्चा सच वड्याईआ। वसे नेहचल धाम अटला, दिस किसे ना आईआ। जल थल महीअल आपे रला, आप आपणे विच समाईआ। सच सिँघासण एका मल्ला, सोभावन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता इक्क अख्वाईआ। इक्क इकल्ला कर पसारा, एका एक वेख वखांयदा। सचखण्ड वसाए इक्क दुआरा, दर साचा आप उपांयदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, शहनशाह नाउँ धरांयदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, हुक्मी हुक्म हुक्म आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर,आपणा खेल आप खिलांयदा। खेलणहार हरि भगवन्त, भेव कोए ना पांयदा। सचखण्ड निवासी सोभावन्त, रूप रेख ना कोई जणांयदा। आपे नारी आपे कन्त, आपे साची सेज हंढांयदा। आपे आदि आपे अन्त, मध आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नाउँ प्रगटांयदा। निरगुण नाउँ हरि गोपाल, परम पुरख आप धराईआ। आपे वसे सच सच्ची धर्मशाल, कर साचा इक्क उपजाईआ। दीपक जोती आपे बाल, नूर नुराना डगमगाईआ। आपे चले आपणी चाल, चाल निराली बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन, आप आपणा आसण लाईआ। साचा आसण हरि हरि ला, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। साचा ताज सीस टिका, तख्त ताज वेख वखांयदा। दर दरबान बण बेपरवाह, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भाणा साचा राणा, आपणे हथ्थ रखांयदा। हरि भाणा बलवान, भेव कोई ना पांयदा। हरि वसे सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए रखांयदा। हरि दाता दानी दो जहान, आप आपणा खेल खिलांयदा। आदि जुगादी वड मेहरबान, भगवान आपणा रूप वटांयदा। सति सरूपी नौजवान, बिरध बाल ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा एकँकारा, निरगुण धारा खेल अपारा, अलक्ख अलक्खणा आप लिखांयदा। निरगुण रूप पुरख अगम्म, आदि जुगादि समांयदा। ना मरे ना पए जम्म, जुग जुग आपणी खेल खिलांयदा। करनी करता करे कम्म, करता पुरख नाउँ धरांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव आप आपणे लए जम्म, आपणी गोदी आप सुहांयदा। आपे पवण स्वासी देवे दम, आप आपणे रंग रंगांयदा। आपे त्रै त्रै बेड़ा बन्न्ह, भार आपणे कंध उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। निरगुण सरगुण साची धार, हरि साचा सच वरताईआ। आपणा रूप अगम्म अपार, हरि आपे वेख वखाईआ। आपे भरे सद भण्डार, वड भण्डारी बेपरवाहीआ। आपे वरते हरि वरतार, हरी हरि आप अख्वाईआ। त्रैगुण माया कर त्यार, त्रै त्रै मेल मिलाईआ। आपे वण्ड वण्डे अपर अपार, सो पुरख निरँजण खेल खलाईआ। हँ ब्रह्म कर त्यार, सोइम रूप आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण घाड़न घड़, आपणी रचन रचांयदा। त्रैगुण माया बन्न्हे लड़, पंचम तत्त वेख वखांयदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश लाए जड़, आपे अन्त उखड़ांयदा। निरगुण रूप अंदर वड़, घट घट आपणा आसण लांयदा। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोए दबांयदा। हथ्थो हथ्थ ना सके कोई फड़, दिस किसे ना आंयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, लोकमात आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यार,

ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। नौं दुआरे खोल्ह किवाड़, पंज तत्त मेल मिलाईआ। मन मति बुध भर भण्डार, निरगुण आपणी वस्त टिकाईआ। काया कँवरी कर त्यार, सुखमन बैठा मुख छुपाईआ। त्रै त्रै मेला अद्धविचकार, बज़र कपाटी कुंडा लाहीआ। शब्द अनादि सची धुन्कार, घर मन्दिर बन्द वखाईआ। आपे करे मंगलाचार, पंचम बह बह राग अलाईआ। आपे सेजा सुत्ता पैर पसार, आत्म ब्रह्म वेख वखाईआ। जीव आत्म निराकार, परम आत्म वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी एकँकार, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। सो पुरख निरँजण हो त्यार, हँ ब्रह्म करे कुड़माईआ। घट घट अंदर जोत उज्यार, आदि निरँजण डगमगाईआ। बिन हरिभगत ना पावे कोई सार, दिस किसे ना आईआ। हरि सन्तन खोल्हे आप किवाड़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरमुखां मेटे पंचम धाड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। गुरसिख साचे मन्दिर देवे वाड़, दर दरवाजा इक्क खुल्हाईआ। जोत जगाए बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। काया मन्दिर वखाए सच अखाड़, गोपी काहन आप नचाईआ। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, समुंद सागर फोल फुलाईआ। हरिजन घोड़ी देवे चाड़, शब्द डोरी हथ्थ फड़ाईआ। मनमुख सुते पैर पसार, लोकमात ना कोए उठाईआ। काग रले कागी डार, हँस माणक मोती चोग ना कोए चुगाईआ। जून अजूनी होए ख्वार, अजूनी रहित दए सज़ाईआ। धर्म राए दर मारे मार, ना दिसे कोए सहाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना उतरे पार, ना देवे सच गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अनादा शब्द ब्रह्मादा, आपणा खेल आप खलाईआ। आपणा खेल खलंदड़ा हरि भगवान, आदि जुगादी वेस वटांयदा। लोकमाती धुर फ़रमान, जुग जुग आपणा आप सुणांयदा। आपे पंज तत्त काया चोला हो प्रधान, सरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। आपे देवे आपणा दान, आपणी भिच्छया झोली पांयदा। आपे आत्म अन्तर हो हो ब्रह्म ज्ञान, आपणा अक्खर वक्खर पढ़ांयदा। आपे राग रागी गाए गाण, धुन अनादी नाद वजांयदा। आपे लेखा जाणे वेद पुराण, शास्त्र सिमरत आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। भेव अभेदा हरि हरि खोल्ह, हरिभगतन सच दृढ़ाईआ। शब्द अगम्मी एका बोल, दूई द्वैती पड़दा लाहीआ। नाम मृदंगा वज्जे ढोल, सन्त सुहेले लए जगाईआ। गुरमुखां सद वसे कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरसिख तोले साचे तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। जगत सृष्ट सबाई रहे अनभोल, सोए मात ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। शब्द सरूपी बण मलाह, लोकमात फेरा पाईआ। शब्द गुरदेव साख्यात, आदि जुगादि समाईआ। हरिजन बणाए पारजात, परम पुरख मेल मिलाया। वेखणहारा कायनात, परवरदिगार बेऐब खुदाया। घट घट अंदर मारे झात, निगाहबान

रूप वटाया। हरि सन्तन खोले आपणा ताक, आपणी दृष्टी आपे पाया। आपे होए पाकी पाक, पतित पापी लए तराया। शब्द घोड़े चाढ़े राक, लोआं पुरीआं वेख वखाया। ब्रह्मा विष्न शिव रक्खे आस, नेत्र नैण रहे उठाया। करोड़ तेतीसा लग्गी प्यास, सुरपति राजा इंद रिहा कुरलाया। जन भगतां पूरी करे आस, लोकमात फेरा पाया। हरि सन्तन होए दासी दास, जुगा जुगन्तर सेव कमाया। गुरमुखां वेखे पृथ्मी आकास, त्रैगुण माया फंद कटाया। गुरसिख अंदर कर कर वास, आपणा मन्त्र आप दृढ़ाया। लेखा जाणे स्वास स्वास, रसना जेहवा आप चलाया। आदि जुगादि ना होए विनास, सतिगुर पूरा सो अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाया। सतिगुर पूरा हरि भगवान, दूसर अवर ना कोए वखाईआ। खेले खेल दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। आदि जुगादी नौजवान, ना मरे ना जाईआ। हथ्थ उठाए सति निशान, सचखण्ड दुआरा आप खुलाईआ। तख्त बैठ साचा काहन, आप आपणा वेख वखाईआ। लोकमात हो प्रधान, सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल महान, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस धराईआ। वेस अवल्ला इक्क इकल्ला, हरि साचा सच करांयदा। सम्बल नगरी सच महल्ला, निरगुण आपणा आसण लांयदा। लक्ख चुरासी आप भुलाए कर कर वल छला, अछल छल धारी खेल खिलांयदा। जोती शब्दी आपे रला, दिस किसे ना आंयदा। एका फड़या तिक्खा भल्ला, लोआं पुरीआं खण्डां ब्रह्मण्डां जेरज अंडां पार वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखणहार आप निरँकार, पंज तत्त ना कोए रखांयदा। पंज तत्त ना कोए चोला, गुर पीर ना कोए अख्वाईआ। पुरख अबिनाशी बणया तोला, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। ना कोई जाणे कलां सोलां, अकल कल आप अख्वाईआ। एका गाए साचा ढोला, ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीसा, लक्ख चुरासी आप सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम खेले होला, नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां आपे वेख वखाईआ। आपे रूप अनूप होए मौला, नूर नुराना डगमगाईआ। आपे वसे उप्पर धवला, आपे सांगोपांग सेज हंढाईआ। आपे रूप वटाए साँवल सँवला, मुकंद मनोहर लखमी नरायण आप आपणी खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम आया, हरि साचा खेल खिलांयदा। वेद व्यासा गया लिखाया, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिले पर्बत आसण लांयदा। नानक निरगुण एका गाया, पुरख अकाल मनांयदा। गोबिन्द साचा राह चलाया, साचा धाम इक्क वखांयदा। हरि मन्दिर हरि जू इक्क सुहाया, दूजा दर ना कोए खुल्हांयदा। औदा जांदा दिस ना आया, त्रैगुण कोए ना मेल मिलांयदा। गुरमुख विरले लए जगाया, जिस जन आपणा दरस दिखांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द अगम्मी साची धार, प्रगट करे आप निरँकार, निरगुण एका नाउँ रखांयदा। निरगुण नाउँ हरि करतारा, सरगुण साचा मेल मिलांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर लए अवतारा, एका गुर अख्वांयदा। पीर दस्तगीर शाह हकीर पावे सारा, बेनज़ीर रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक एका डंक वजांयदा। निहकलंक पुरख सुल्ताना, माणस मानुख ना कोए जणाईआ। शब्द सरूपी सच तराना, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। तख्तों लाहे राजा राणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। लक्ख चुरासी वरते भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा हुक्म चलाईआ। कलिजुग अन्तिम साची धार, हरि साचे सच चलाईआ। चार वरनां इक्क प्यार, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाईआ। ऊँच नीच पार किनार, राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान इक्क वड्याईआ। एका अक्खर कर प्रधान, सृष्ट सबाई दए जणाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क भगवान, दूई द्वैत ना कोए वखाईआ। घर घर बैठा साचा काहन, घर घर विच रास रचाईआ। घर घर मेला सीता राम, सुरती सीता राम प्रनाईआ। घर घर नानक देवे धुर फ़रमाण, जो जन रसना जेहवा गाईआ। घर घर गोबिन्द मिले आण, जो जन चरन ध्यान रखाईआ। लक्ख चुरासी करे पछाण, घड़न भन्नणहार इक्क अख्वाईआ। राणा राजा दो जहान, हरिजन साचे लए जगाईआ। अमृत आत्म पीणा खाणा देवे विच जहान, अग्गनी तत्त बुझाईआ। बिरहों तीर निराला मारे बाण, आर पार आप कराईआ। दरगह साची सचखण्ड निवासी देवे माण, अभिमान रहिण ना पाईआ। कलिजुग भुल्ले जीव नादान, हरि का रूप दिस ना आईआ। मदिरा मास पीण खाण, माया ममता मोह हलकाईआ। जिस जन सतिगुर पूरा मिल्या आण, शब्दी शब्द लए मिलाईआ। नाता तुट्टे जगत जहान, मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण ना कोए वखाईआ। एका मन्त्र हरि हरि नामा गाण, दूसर दिसे ना कोए पढ़ाईआ। चरन धूढ़ सचा असनान, अठसठ तीर्थ रहे शर्माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। वेस वटाए पुरख अकाला, गुर गुर ना कोए अख्वांयदा। सर्ब जीआं करे प्रितपाला, प्रितपालक नाउँ रखांयदा। चरन रखाए काल महांकाला, सेवक साची सेव लगांयदा। शब्द अनाद वजाए ताला, ताल तलवाड़ा आप उठांयदा। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाला, लोकमात आप चलांयदा। जन भगतां दस्से राह सुखाला, आपणा अक्खर आप पढ़ांयदा। हँ ब्रह्म गल पाए माला, हड्ड मास नाड़ी चम्म लेखे लांयदा। अन्तिम तोड़े जगत जंजाला, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण साची धार प्रगट करे आप निरँकार, वरते वरतावे विच संसार, वरन बरन ना कोई रखांयदा।

वरन बरन ना कोई वण्ड, घट घट अंदर हरि पसारया। लेखा जाणे कोट ब्रह्मण्ड, हरिजन साचे लए उभारया। मेट मिटाए भेख पखण्ड, जुग जुग लए मात अवतारया। मनमुखां सुत्ता दे कर कंड, दिस ना आए विच संसारया। नार दुहागण होई रंड, हरि कन्त ना कोई हंढा रिहा। गुरमुखां साची वस्त एका नाम देवे वण्ड, नाम सति झोली आप भरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा नाउँ धरा ल्या। सतिगुर पूरा हरि मेहरबान, घर साचे आप सुहांयदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंका नाउँ धरांयदा। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका शब्द जणांयदा। चार वरनां इक्क मकान, सचखण्ड दुआरा इक्क वखांयदा। चार वरनां इक्क ध्यान, पुरख अकाल इक्क जणांयदा। चार वरनां एका माण, ऊँच नीच ना कोई वड्यांअदा। चार वरनां एका पीण खाण, दूई द्वैती ना कोई रखांयदा। चार वरनां एका मेला श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा आप हो जांयदा। सतिगुर पूरा इक्क एकँकारा, अकल कल अख्वाईआ। कल कल्की लए अवतारा, डंका शब्द वजाईआ। राउ रंकां करे ख्वारा, बंक दुआर ना कोई सहाईआ। चारों कुंटां धूंआँधारा, अन्ध अन्धेर वखाईआ। जीव जंत हाहाकारा, मनमति करे लड़ाईआ। गुरमति होया पार किनारा, साची सिख्या सिख भुलाईआ। कलिजुग वहण डूँघी गारा, भरमे भुल्ले जीव भरम गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। माया ममता लग्गा अखाड़ा, आसा तृष्ना विच नचाईआ। लग्गी अग्ग अग्नी हाढ़ा, अमृत सिंच हरा ना कोई कराईआ। गुर का शब्द ना करे प्यारा, हरि का रूप ना रिदे वसाईआ। ना कोई पुरख ना कोई नारा, नर नरायण ना वेख वखाईआ। साचा घर ना दिसे कोई मुनारा, घर घर विच ना कोई रुशनाईआ। अगम्मी शब्द ना सुणे कोई धुन्कारा, अनहद ताल ना कोई वजाईआ। आत्म सेज ना करे प्यारा, कन्त कन्तूहल ना वेख वखाईआ। रसना करे जगत विकारा, वाहि वाहि गुरू ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम धार, आप चलाई विच संसार, आपे अन्तिम करे पार, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। मनमति जगत कुरलाए, चारों कुंट हाहाकारया। सतिगुर पूरा नज़र ना आए, निरगुण नूर नूर उज्यारया। गुर का शब्द आप भुलाए, रसना जिह्वा ना किसे उच्चारया। मन का मणका ना कोई भवाए, मन मनूआ होए हलकाया। मति मतवाली ना बन्धन पाए, माया ममता ना मोह चुका रिहा। बुध बबेक ना कोई रखाए, एका एक ना टेक धरा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जीव जंत आप भुला ल्या। कलिजुग जीव गया भुल्ल, हरि नाम ना कोए वड्याईआ। झूठे कंडे गया तुल, साची वस्त नज़र ना आईआ। आपणी कीमत ना जाणे मुल्ल, कौडी कौडी हट्ट विकाईआ। अमोलक हीरा गया रुल, ख़ाकी ख़ाक समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

कलिजुग तेरी अन्तिम वर, बेमुखां सिर पाए छाहीआ। बेमुख तेरा कूड़ा नाता, लोकमात जुड़ाया। दिवस रैण अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोई चढ़ाया। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, गायत्री मन्त्र ना कोई पढ़ाया। ना अमृत पीआ साचे बाटा, गुर गोबिन्द दिस ना आया। नानक ना सोया आत्म सेजा साची खाटा, अंगी अंग ना कोई कराया। गुरू ग्रन्थ गुर इष्ट देव ना किसे वाचा, जगत वाष्ना विच रखाया। पंज तत्त दिसे भाण्डा काचा, थिर कोए रहिण ना पाया। मनूआ दहि दिस उठ उठ नाचा, नौ दुआरे खोज खुजाया। हरि का शब्द जाणे हासा, हरि का भेव कोई ना पाया। अबिनाशी करता जुग जुग खेले खेल तमाशा, निरगुण सरगुण रूप वटाया। जन भगतां करे पूरी आसा, घर घर आपणा दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण एका कर, घर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजणा, दीवा बाती ना कोई टिकाया। आदि निरँजण सुते प्रकाश, अनुभव रूप समांयदा। आदि जुगादि ना जाए विनास, अबिनाशी करता नाउँ धरांयदा। मंडल आपणे पाए रास, रवि ससि सूरज चन्न आप नचांयदा। लक्ख चुरासी कर कर वास, पृथ्मी आकाश जल बिम्ब रूप समांयदा। दीनां बंधप दीनां नाथ सर्ब गुणतास, लिख्या लेख ना कोई मिटांयदा। पूरन जोत श्री भगवन्त एका जाणे साचा सन्त, सन्त सुहेला आप अख्वांयदा। गुरमुख उधारे लक्ख चुरासी विच्चों जीव जंत, जागरत जोत इक्क जगांयदा। गुरसिख बणाए तेरी बणत, आप आपणा रंग रंगांयदा। आपे नारी आपे कन्ता, गुरमुख काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जांयदा। तोड़े गढ़ हउँमे हंगता, आप रलाए साची संगता, बण बण मंगता एका अलख जगांयदा। आदि जुगादी भुक्खा नंगता, हरिभगत भण्डार आप भरांयदा। हरिजन उधारे जिउँ नानक अंगदा, अंगीकार अंग समांयदा। चार जुग औंदा जांदा मूल ना संगदा, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। उच्च महल्ल अटल अटले आपे चढ़दा, सचखण्ड दुआरे आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी काली धार आपे वेखे विच संसार, चारों कुंट नार विभचार, जीव जंत होए ख्वार, घर घर मंगल कोए ना गांयदा। घर मंगल ना कोई धुन्कारा, घर शब्द ना कोई जणाईआ। घर सज्जण ना मीत मुरारा, घर मिले ना साचा माहीआ। घर दीप ना कोई उज्यारा, घर अन्धेर ना कोई मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेखे थाउँ थाँईआ। घर मन्दिर सच मकाना, सच वस्त ना कोई वखांयदा। घर मन्दिर मिले मेल ना श्री भगवाना, घर इष्ट ना कोए जणांयदा। घर मन्दिर ना कोई बिबाना, साचे शब्द ना कोई चढ़ांयदा। घर मिले ना साचा राणा, तख्त ताज ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल अपारा, वरते वरतावे हरि निरँकारा, निरगुण सरगुण मेला विच संसारा, गुर पीर बण अवतारा,

आपणा हुक्म चलांयदा। हुक्म निराला जोत अकाला, जुग जुग आप सुणांयदा। जन भगतां दस्से राह सुखाला, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। आपे अग्न शक्ती जोत ज्वाला, नूरो नूर डगमगांयदा। आपे सेवा लाए काल महांकाला, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपे शब्द सरूपी बण दलाला, गुर शब्दी नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रंग रंगांयदा। काया चोली रंगे साचे सन्त, रंग मजीठी इक्क चढ़ांयदा। आप बणाए साची बणत, सेवक साची सेव कमांयदा। सर्ब जीआं दा साचा कन्त, घर साचे आप बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा अन्त वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम वेख वखावणा, भुल्ल रहे ना राईआ। संग मुहम्मद चार यार लेखा आप मुकावणा, अञ्जील कुरान फोल फुलाईआ। एका कलमा आप पढ़ावणा, नबी रसूल आप पढ़ाईआ। बण बण साकी जाम प्यावणा, आबेहयात हथ्थ उठाईआ। दो दो आबा मेल मिलावणा, शाह नवाब बेपरवाहीआ। मक्का काअबा फेरा पावणा, आप आपणा चरन छुहाईआ। मुख नकाब पर्दा लाहवणा, नूरी जल्वा नूर इलाहीआ। पीर दस्तगीर शाह हकीर आप अख्वावणा, लेखा लिखे ना कागज कलम छाहीआ। पंडत पांधा आप उठावणा, मस्तक टिक्का जोत ललाट वेख वखाईआ। अठसठ तीर्थ फेरा पावना, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आपणे मेल मिलाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद मट्ठ हरि साचे वेख वखावणा, वेखणहारा दिस ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी शब्द हुलारा इक्क लगावणा, सत्तां दीपां दए हिलाईआ। लक्ख चुरासी तेरा पर्दा लाहवणा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। गुरसिख साचे आप उठावणा, आप आपणे गल लगाईआ। सोहँ अक्खर इक्क पढ़ावणा, आदि जुगादी रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सतिजुग बन्न्हे साची धार, सति सतिवादी नाउँ रखाईआ। कलिजुग अन्तिम पार किनारा, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। सतिजुग साचे दए सहारा, सोया पूत आप उठांयदा। दोहां विचोला सिरजणहारा, दिस किसे ना आंयदा। वणज कराए हरि वणजारा, साचा हट्ट आप खुल्हांयदा। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ारा, दिवस रैण कुरलांयदा। सतिजुग साचे नैण उग्घाड़ा, एका राह तकांयदा। धरत मात करे हाहाकारा, हौला भार ना कोई करांयदा। मनमति लगा जगत अखाड़ा, साचा ताल ना कोई वजांयदा। चार वरनां झूठी धाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हलकांयदा। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़ा, त्रैगुण तत्त आप जलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा आप उठांयदा। सतिजुग साचे जाणा उठ, हरि पुरख निरँजण आप जगाईआ। एकँकारा गया तुट्ठ, दे मति रिहा समझाईआ। गुरमुख करे एका मुट्ठ, एका गंढु बंधाईआ। मनमुख कढ्ढे विच्चों कुट्ट, राए धर्म दर बहाईआ। तीर निराला जाए छुट्ट, पुरख

अकाला आप चलाईआ। कलिजुग जड़ देवे पुट्ट, लोकमात रहिण ना पाईआ। मनमुख जीवां भाग गए निखुट, मिल्या मेल ना हरि रघुराईआ। नाता जुड़या ओत पोत, नार कन्त खुशी मनाईआ। दस्म दुआरी ना खुल्या सुरोत, आत्म ताकी ना किसे खुल्हाईआ। भरमी भरम भुलाया वरन गोत, निरगुण जाता ना साचा माहीआ। लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि, जंगल जूह उजाड़ फेरीआं पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा खेल आप खलाईआ। खोल्णहार दीनां बन्धन, दीनां नाथा बन्द कटांयदा। गुरमुखां वखाए परमानंदन, निजा नंद आप समांयदा। तिलक लिलाट लगाए साचे चन्दन, चन्दन नाम आप उपजांयदा। आपे देवे सच सुगंधन, निर्मल वाष्ना विच महिकांयदा। दूई द्वैती ढाहवे कंधन, भाण्डा भरम भउ भनांयदा। सर्ब जीआं आपे बख्शंदन, पारब्रह्म इक्क अख्वांयदा। कलिजुग जीव भागां मंदन, वडभागी हरि साचा आपणे भाणे ना कोई रखांयदा। रसना गाया ना बत्ती दन्दन, साचा छन्द ना कोई अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे सच वखांयदा। सतिजुग उठ उठ बलधार, हरि साचे सच जणाईआ। धरत मात दी पैज संवार, तेरे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। लोकमात वेख विचार, चारों कुंट नैण उठाईआ। जीव जंत होए ख्वार, धीआं भैणां रहे तकाईआ। माता पुत्तर ना करे सच प्यार, नारी कन्त ना कोई हंढाईआ। घर घर दिसे भृष्टाचार, एका इष्ट गए भुलाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक पीर करन पुकार, एका जल्वा नूर इलाहीआ। बेऐब खुदा परवरदिगार, हक हकीकत वेख वखाईआ। लाशरीक हो त्यार, चौदां तबकां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे आप जगाईआ। सतिजुग साचे जाणा जाग, हरि साचा आप जगांयदा। कलिजुग अन्तिम लग्गी आग, लोकमात ना कोए बुझांयदा। माणस जीव बुध होई काग, दिवस रैण रैण कुरलांयदा। मिले मजन धूढ़ी ना साचा माघ, गुर चरन इशनान ना कोए करांयदा। हउमे हंगता लग्गा दाग़, दुरमति मैल ना कोए धवांयदा। घर घर जोती बुझी चिराग, दीप प्रकाश ना कोए करांयदा। माया डस्से डसणी नाग, गुर दर मन्दिर वेख वखांयदा। गुरमुख विरले वड वडभाग, जो जन हरि हरि दर्शन पांयदा। नाता तुट्टे कलिजुग साक, सज्जण सैण मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द खण्डा इक्क चमकांयदा। शब्द खण्डा सूरा बलवान, हरि आपणे हथ्थ उठांयदा। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, विष्न ब्रह्मा शिव आप उठांयदा। करोड़ तत्तीसा एका आण, एका हुक्म सुणांयदा। लक्ख चुरासी कर ध्यान, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। एका राग सुणाए कान, रसना जिह्वा ना कोए हिलांयदा। आप वखाए पद निरबाण, चौथा पद आप वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा राह चलांयदा। सतिजुग

साचा मार्ग लावणा, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। एका अक्खर सृष्ट सबाई आप सुणावणा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करे पढ़ाईआ। एका इष्ट पुरख अकाल जणावणा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। एका राज राजान शाह सुल्तान हरि अख्वावणा, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। एका दर दरबान सच मकान हरि आप बहावणा, हरिभगत दए वड्याईआ। एका तीर इक्क कमान एका चिल्ला आप चढ़ावणा, इक्क निशाना आप लगाईआ। एका खण्डा खड़ग कटार आप चमकावणा, चण्ड प्रचण्ड आप वखाईआ। एका ब्रह्मण्ड खण्ड हरि आसण लावणा, सच सिँघासण सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द अगम्मी मारे मार, निरगुण खेल करे करतार, सरगुण रूप ना कोए वटाईआ। सरगुण अंदर निरगुण वड़या, दिस किसे ना आंयदा। सम्बल नगरी आपे चढ़या, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणांयदा। आपणा अक्खर आपे पढ़या, निष्अक्खर नाउँ धरांयदा। आपणा खण्डा एका फड़या, तिक्खी दोवें धार बणांयदा। दो जहानां शाह सुल्तानां अग्गे दिसे ना कोए अड़या, तख्त ताज सर्ब उलटांयदा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़या, वेले अन्तिम आपे भन्न वखांयदा। गुरमुख विरला पारब्रह्म अबिनाशी करते कलिजुग अन्तिम आपे फड़या, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे मन्दिर डेरा लांयदा। साचा मन्दिर कर त्यार, हरि मन्दिर आप सुहाईआ। ना कोई दिसे चार दीवार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। रवि ससि ना कोए उज्यार, तारा मंडल ना कोए रुशनाईआ। गुर पीर ना कोए अवतार, साध सन्त ना कोए जणाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, घर साचे बैठा आसण लाईआ। हुक्मे वरते सर्ब वरतार, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। आपे कलिजुग लोकमात दए सहार, माण ताण आप रखाईआ। आपे मेल मिलावा ईसा मूसा संग मुहम्मदी यार, चार यारी वेख वखाईआ। आपे अन्तिम बेड़ा कर दए पार, थिर कोए दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे भाणे आप समाईआ। हरि भाणा बलवान, भेव कोए ना पांयदा। आपे खेले विच जहान, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग तेरी झूठ दुकान, वेले अन्त लुटांयदा। आप सुणाए तेरे कान, नेत्र नैण आप खुल्हांयदा। लक्ख चुरासी पुण छाण, हरिजन साचे लाल आपणे आप उठांयदा। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, भरम भुलेखा कोए ना पांयदा। अबिनाशी करता जीव ना सके कोई पछाण, मन मति बुध चतुराई ना कोए जणांयदा। जिस जन किरपा करे आप मेहरबान, तिस जन साची सोझी पांयदा। पहलां बख्शे चरन ध्यान, दूजा शब्दी शब्द मिलांयदा। तीजे नेत्र इक्क ज्ञान, चौथे पद मिलांयदा। पंचम राखे इक्क ध्यान, एका वेस वटांयदा। छेवें छप्पर छन्न मकान, हरि साचा आप सुहांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण खेल महान, अगम्म अगम्मड़ी खेल खिलांयदा। अठवें अठ्ठां तत्तां हो प्रधान, नौ दुआरे खोज खुजांयदा। दस्म

दुआरी हरि भगवान, दीपक जोती नूर जगांयदा। राग शब्द सच्ची धुनकान, धुनी नाद आप वजांयदा। सुरत सवाणी कर परवान, आप आपणे अंग लगांयदा। घर विच घर सच मकान, घर साचा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। वेखणहारा हरि भगवन्ता, हरिजन साचे मेल मिलन्नया। लेखा जाणे साचे सन्तां, भेव चुकाए आत्म अन्नयां। गुरमुख रंग रंगता, रंग रंगीला मोहण माधव श्री भगवन्नयां। सृष्ट सबाई रक्खी चिंता, धीरज धीर ना कोए धरन्नयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे एका वर, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म, साची जननी जन जणयां।

✻ २१ फग्गण २०१६ बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे घर करोलबाग़ दिल्ली ✻

सो पुरख निरँजण सुते प्रकाशा, एका एक भेव ना राया। हरि पुरख निरँजण पुरख अबिनाशा, आदि जुगादी इक्क समाया। एकँकारा खेल तमाशा, निरगुण नूर नूर रुशनाया। आदि निरँजण पावे रासा, मंडल रास आप रचाया। अबिनाशी करता सचखण्ड निवासा, थिर घर साचे डेरा लाया। श्री भगवान आपणे मन्दिर करे वासा, दूसर धाम ना कोए बणाया। पारब्रह्म खेले खेल पृथ्मी आकाशा, गगन मंडल मंडप वेख वखाया। रवि ससि दए भरवासा, जोती जोत जोत सवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल अगम्म अपार, अगम्म अथाह भेव ना राया। अगम्म अथाह हरि बेअन्त, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग करता नाउँ धराईआ। हरि हरि महिमा गणत अगणत, कथनी कथ ना सके राईआ। लेखा जाणे गुरमुख विरला सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। एका शब्द रसना जिह्वा मणीआ मंत, राम नाम नाम वड्याईआ। नर नरायण नारी कन्त, सति पुरख निरँजण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सतिवादी साची धार ब्रह्मण्ड खण्ड पाए सार, आपणी वण्ड आप वण्डाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड शब्द हुलारा, एकँकारा आप लगांयदा। आदि जुगादी एकँकारा, एका घर सुहांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर खेल अपारा, कलिजुग आपणा वेस वटांयदा। निरगुण दीवा बाती कर उज्यारा, घर साचे आप सुहांयदा। सचखण्ड खोल्ह किवाड़ा, लोकमाती राह तकांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क अखाड़ा, सत्तां दीपां वेख वखांयदा। चौदां तबकां मारे मारा, मारनहारा दिस ना आंयदा। ब्रह्मा विष्न शिव पावे सारा, करोड़ तेतीसा आप उठांयदा। लक्ख चुरासी जीव गंवारा, मनमति सर्ब कुरलांयदा। गुरमुख विरला चतुर सुघड़ स्याणा, जिस जन हरि हरि आपणी बूझ बुझांयदा। ना कोई दिसे राजा राणा, शाह सुल्तान

ना कोए अख्वांयदा। चार वरनां मन्नणा भाणा, वरन बरन मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा, शाहो भूप सुल्तान दो जहान वेख वखांयदा। दो जहानां हरि हरि वाली, दूसर होर ना कोए जणांयदा। निरगुण जोत जोत अकाली, आदि शक्ति रूप वटांयदा। शब्दी शब्द करे दलाली, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई बणया पाली, दिवस रैण सेव कमांयदा। फल लग्गा वेखे डाली, कलिजुग अन्तिम फेरा पांयदा। चले चलाए अवल्लड़ी चाली, वेद कतेब भेव ना आंयदा। आपणे हथ्थां रक्खे खाली, जन भगत भगती भण्डार झोली भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचा सज्जण मीत, हरि सतिगुर पुरख आप बणांयदा। एका देवे नाम अतीत, त्रैगुण माया नेड़ ना आंयदा। काया करे ठंडी सीत, पतित पावण आप करांयदा। इक्क सुणाए सुहागी गीत, सो पुरख निरँजण ढोला आप अलांयदा। दिवस रैण वसे चीत, घर साचे सोभा पांयदा। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच वेख वखांयदा। वसणहारा धाम अनडीठ, निज घर आत्म डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे घर, घर साचा आप वड्यांअदा। हरिजन साचा एका रंग, हरि सन्तन आप तराईआ। आपे भगत दुआरा रिहा मंग, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। दाता दानी सूरा सरबंग, सो पुरख इक्क अख्वाईआ। जगत दुआरे आपे लँघ, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। आत्म सेजा वेख पलँघ, सच सुहञ्जणी सेज हंढाईआ। दूई द्वैती ढाए कंध, हउमे हंगता माया ममता गढ़ रहिण ना पाईआ। आप मुकाए अगला पिछला पन्ध, साचे मार्ग आप चढ़ाईआ। लेखा जाणे रसना जिह्वा बत्ती दन्द, पवण स्वासी वेख वखाईआ। आत्म अन्तर निजानंद, निज आत्म दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले काया घर, घर घर विच आप वखाईआ। काया मन्दिर साचा घर, हरि पुरख निरँजण आसण लांयदा। निरगुण अंदर बैठा वड़, जोत सरूपी दिस ना आंयदा। गुरमुख विरले लए फड़, जिस जन आपणी दया कमांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोए रखांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, जन भगतां आप पढ़ांयदा। आप फड़ाए आपणा लड़, अद्ध विचकार ना कोए तुड़ांयदा। साचे पौड़े जाए चढ़, उच्च महल्ल अटारी आप सुहांयदा। दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत निराकार, सति सरूपी खेल अपार, बेऐब परवरदिगार आप अख्वांयदा। बेऐब परवरदिगार हरि हरि रामा, एका एकंकारया। शब्द नादि अनादी वजाए दमामा, लोआं पुरीआं आप सुणा रिहा। जुगा जुगन्तर करे कराए आपणा कामा, करनी करता कर्म कमा रिहा। निरगुण सरगुण पहरया जामा, रूप अनूप आप वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, हरिजन वेखे एका दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हा रिहा। दर दरवाज़ा साचा बंक, हरि सतिगुर आप खुल्हाईआ। लेखा जाणे राउ रंक, घट घट खेल बेपरवाहीआ। हरिजन लाए एका तनक, शब्द शब्दी बन्धन पाईआ। लेखा जाणे जिउँ जन जनक, जन जननी वेख वखाईआ। शाहो शाबाशी वासी पुरी घनक, वार अनक खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम धार, वेखणहारा आप निरँकार, हरिभगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन मेला धुर दरगाह, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। सतिगुर पूरा बण मलाह, लोकमात फेरा पांयदा। आपणा लेखा आपे दए जणा, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। ब्रह्मा चारे वेद रिहा सुणा, चारे मुख सलांहयदा। वेद व्यासा पुराण अठारां गया गा, लक्ख चार हज़ार सतारां सलोक आप गणांयदा। गीता ज्ञान अर्जन दृढ़ा, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण नाम बंसरी इक्क वजांयदा। ईसा मूसा सिफ्त सालाह, संग मुहम्मद चार यार मेल मिलांयदा। अञ्जील कुरानां पकड़े बांह, कलमा नबी आप सुणांयदा। कायनात फेरा पा, आप आपणा खेल खिलांयदा। निरगुण निरगुण जोत जगा, नर नरायण रूप वटांयदा। नाम सति मन्त्र दृढ़ा, चार वरन आप समझांयदा। दहि दिशा फेरा पा, चार कुंट वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एकँकार खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर दिस ना आंयदा। अलक्ख अगोचर पुरख अगम्म, नेत्र नैण दिस ना आंयदा। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण खेल खिलांयदा। जुग जुग लक्ख चुरासी देवणहारा डंन, आपे घड़े आपे भन्न वखांयदा। गुरमुख विरले शब्द डोरी लए बन्न्ह, आप आपणे अंग लगांयदा। एका राग सुणाए कन्न, धुन आत्मक आप वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम धार, वरते वरतावे विच संसार, लेखा लेख ना कोए मिटांयदा। लेखा लिखणहार गोपाल, शाह सुल्तान वड वड्याईआ। खेले खेल दीन दयाल, दीनां नाथ बेपरवाहीआ। वेख वखाए काल महांकाल, दो जहान वेस वटाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड अवल्लड़ी चाल, गगन मंडल फेरा पाईआ। रवि ससि वजाए ताल, आप आपणा खेल खलाईआ। लक्ख चुरासी वेखे शाह कंगाल, राउ रंक फोल फुलाईआ। हरि सन्त हरिभगत हरि हरि आपे लए भाल, आप आपणी बूझ बुझाईआ। देवे नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ाना ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ। शब्द कुठाली साची गाल, सोइना कंचन रूप वटाईआ। आप बणाए साचे लाल, लाल अनमुल्लड़ा करता कीमत आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, खेले खेल विच संसार, खेलणहारा दिस ना आईआ। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। निरगुण जोत नूर उज्यारा, हरि पुरख निरँजण डगमगांयदा। एकँकारा बोल जैकारा, नाम नामा इक्क सुणांयदा।

आदि निरँजण पावे सारा, घर घर दीपक आप वखांयदा। श्री भगवान बोल जैकारा, साचा नाअरा एका लांयदा। अबिनाशी करता वेखे जगत अखाड़ा, नौ खण्ड पृथ्मी आप लगांयदा। पारब्रह्म बणे साचा लाड़ा, ब्रह्म साची सवाणी आप प्रनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा अन्तिम रूप, चारों कुंट जूठ झूठ, सच सुच्च ना कोए वखांयदा। कलिजुग तेरा झूठा नाता, जीव जंत बन्धन पाया। मिले मेल ना पुरख बिधाता, हरि हरि रसना ना कोए गाया। दिवस रैण अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए चढ़ाया। जोत ना जगे मस्तक ललाटा, जगत घाटा ना कोए पूर कराया। नाता ना छुट्टे आण बाटा, आवण जावण ना पन्ध मुकाया। आत्म मिले ना साची खाटा, घर साचे ना कोए वड्याआ। अमृत मिले ना सर सरोवर साचे बाटा, भर प्याला साचा साकी जाम ना कोए प्याया। मनमुख विक्या हाटो हाटा, अन्त कौडी कौडी आप विकाया। गुरमुख विरले सगल वसूरा लाथा, जिस सतिगुर पूरे दर्शन पाया। मेल मिलावा तरलोकी नाथा, त्रै त्रै लेखा आप चुकाया। सतिजुग सुणाए साची गाथा, कलिजुग अन्तिम फेरा पाया। एका पूजा एका पाठा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। एका सर सरोवर तीर्थ अठसठ मारे ठाठा, गंगा गोदावरी सुरस्ती चरना हेठ दबाया। एका आदि शक्ति जोत ललाटा, सिँघ रूप शेर वटाया। एका खेले खेल बाज़ीगर नाटा, हरि स्वांगी स्वांग वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, चारों कुंट अन्ध अँध्यारा, साचा राह ना कोए चलाया। साचा राह भुला पन्ध, जगत पान्धी रहे कुरलाईआ। मदिरा मास रसना गंद, बत्ती दन्द देण दुहाईआ। घर मन्दिर ना चढ़या साचा चन्द, काया गढ़ ना कोए सुहाईआ। निज घर ना मिल्या निज़ा नंद, परमानंद ना कोई वखाईआ। चौथे पद ना सुणया सुहागी छन्द, तीजा नैण ना कोई खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरी झोली पाईआ। कलिजुग तेरा लहिणा आप चुकावणा, पुरख अबिनाशी आप चुकाईआ। जूठा झूठा बस्त्र गहिणा तेरे तन पहनावणा, तेरा शृंगार वेख वखांयदा। माया ममता लाए अंग नेत्र नैणां कज्जल पावणा, रूप अनूप तेरा मटकांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार भैणा भईआ तेरा साक सैण बणावना, तेरे संग रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा अन्तिम वेस, वेखणहारा वारो वार दर दरवेश फेरा पांयदा। कलिजुग कूड़ा कर शृंगार, हरि साची घोड़ी दए चढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया नाल प्यार, जूठ झूठ करी कुड़माईआ। चारे कुंट कर ख्वार, संग मुहम्मद चार यार अल्ला राणी नाल प्रनाईआ। धुरदरगाही धक्का देवे मार, आपे सुट्टे मूंह दे भार, मँझधार आप रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेस अवल्ला इक्क रखाया। पारब्रह्म खेल न्यार, करता पुरख आप कराईआ। श्री भगवान

भगतन संग, हरि भगवन रूप वटाईआ। भगत भगती चाढ़े रंग, साची रंगन नाम रंगाईआ। एका नाम वजाए मृदंग, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान कसे तंग, सोलां कलीआं आसण लाईआ। पावे सार कोट ब्रह्मण्ड, जेरज अंड उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। आपे करे खण्ड खण्ड, साचा खण्डा हथ्थ चमकाईआ। जीव जंत नार दुहागण रंड, कूड़ कुड़यारा वेस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग मन्दिर देवे ढाह, चार दिवार ना कोई बणाईआ। कलिजुग मन्दिर जावे ढट्ठ, चार दीवार रहिण ना पांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी गेड़े उलटी लट्ठ, आपणा गेड़ा आप दवांयदा। माया ममता होई भट्ठ, आसा तृष्ना नाल रलांयदा। लेखा चुक्के अठसठ, अठ्ठ अठोतरी माला वेख वखांयदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर वेखे नट्ठ नट्ठ, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलांयदा। हरिजन कराए एका धाम इक्ट्ठ, चरन दुआरा इक्क वखांयदा। एका देवे ब्रह्म मत, पारब्रह्म आप समझांयदा। सति सन्तोख धीरज जत, मनमति ना कोई कुरलांयदा। आपे जाणे मित गत, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। पुरख अबिनाशी कमलापति, पीत पितम्बर सीस सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। पीत पितम्बर सोहे सीस, श्री भगवान वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे शाह जगदीश, शाह सुल्ताना बेपरवाहीआ। नूरो नूर नूर बीस इकीस, इक्क इकल्ला खेल खलाईआ। लेखा जाणे राग छतीस, तीस बतीस भेव खुल्हाईआ। आप जणाए इक्क हदीस, चार वरनां सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी ख़ाक तेरे सीस पांयदा।

❊ २२ फग्गण २०१६ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे घर पिण्ड नानकसर ज़िला करनाल ❊

गृह मन्दिर हरि सुहाया, पारब्रह्म पुरख करतार। अबिनाशी करते खेल रचाया, आदि जुगादी एकँकार। जोत सरूपी वेस वटाया, निरगुण जोत नूर उज्यार। घट घट दीपक आप जगाया, पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार। सो पुरख निरँजण वेस वटाया, हरि पुरख निरँजण मीत मुरार। एकँकारा रंग रंगाया, आदि निरँजण दए सहार। अबिनाशी करता वेख वखाया, श्री भगवान रूप अपार। पारब्रह्म प्रभ भेव ना राया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर इक्क सुहाया। गृह मन्दिर हरि सज्जणा, थिर घर साचे वड वड्याईआ। पुरख अबिनाशी आदि निरँजणा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। इक्क इकेला दर्द दुःख भय भञ्जणा, दो जहानां खेल खलाईआ। भगतन बणया साचा सज्जणा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। नेत्र नाम पाए एका अंजना, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। लक्ख

चुरासी भाण्डा भज्जणा, जो घड़या सो भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला, दीन दयाला वड वड्याईआ। गृह मन्दिर खेल खलंदड़ा, एका एक एकँकार। पुरख अबिनाशी जोत जुगंदड़ा, दीवा बाती कर उज्यार। शब्द अनादी ताल वजंदड़ा, अनहद धुन सच्ची धुन्कार। सचखण्ड दुआरा वेख वखंदड़ा, आप आपणी किरपा धार। सच सिँघासण सेज वछंदड़ा, शाहो भूप सच्ची सरकार। तख्त ताज इक्क रचन्दड़ा, रूप रंग ना कोई विचार। आसण सिँघासण आप रखंदड़ा, छप्पर छन्न ना कोई विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर वेखे सिरजणहार। घर मन्दिर सच महल्ला, हरि सतिगुर आप सुहांयदा। वसणहारा इक्क इकल्ला, दर घर साचे सोभा पांयदा। लेखा जाणे जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँग्घी कंदर वेस वटांयदा। जोती शब्दी आपे रला, लक्ख चुरासी डेरा लांयदा। शब्दी शब्द सुनेहड़ा घल्ला, धुर फ़रमाणा आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गृह मन्दिर करे पवित, खेले खेल नित नवित, आप आपणी खेल खिलांयदा। खेल खलंदड़ा पुरख सुल्तान, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। जगे जोत श्री भगवान, बिस्मिल रूप आप वटाईआ। वेख वखाए दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फेरा पाईआ। शब्द सरूपी सति ज्ञान, सति सतिवादी करे पढ़ाईआ। एका राग इक्क धुनकान, धुन आत्मक आप जणाईआ। ब्रह्मे देवे धुर फ़रमाण, चारे वेदां करे पढ़ाईआ। विष्नूं बख्शे चरन ध्यान, सच सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। सतिगुर पाए आपणी आण, नाथ अनाथां वड वड्याईआ। लेखा जाणे ज़िमीं अस्मान, मंडल मंडप फोल फुलाईआ। रवि ससि देवे दान, प्रकाश प्रकाश विच टिकाईआ। आपे होए जाणी जाण, जानणहार इक्क अख्वाईआ। वसणहारा सच मकान, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत निराकार, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, अगाध बोध भेव ना राईआ। सचखण्ड वसे सच मकाना, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। खेले खेल दो जहानां, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सति सरूपी शब्द तराना, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। निरगुण सरगुण पहरे बाणा, बावण आपणा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गृह मन्दिर वेखे एका दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। सचखण्ड दुआरा आपे खोल्ह, निरगुण आपणा आसण लांयदा। शब्द अगम्मी वज्जे ढोल, ताल तलवाड़ा आप रखांयदा। आपणी वस्त आपणे रक्खे कोल, आदि जुगादि जुग जुग आप वरतांयदा। साचे कंडे तोले तोल, नाम तराजू हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गृह मन्दिर बैठा आपे वड़, आप आपणा दर सुहांयदा। गृह मन्दिर हरि जू वड़या, दिस किसे ना आंयदा। पुरख अबिनाशी घाड़न घड़या, पंज तत्त ना कोए जणांयदा। त्रैगुण माया ना बन्न्हे लड़या, आप आपणा

खेल खिलांयदा। आदि जुगादि कदे ना मरया, मात गर्भ ना फेरा पांयदा। पुरख अबिनाशी खेल करया, नर नरायण वेस वटांयदा। आपणी चोटी आपे चढ़या, उच्च महल्ल अटल सच सिंघासण सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे सच वड्यांअदा। घर सच्चा हरि मेहरवान, एका एक उपाईआ। सति सरूपी सच निशान, सचखण्ड दुआरे आप झुलाईआ। सच तख्त बैठ श्री भगवान, हुक्मी हुक्म आप फिराईआ। आपे बणे दर दरबान, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। आपे होए राज राजान, शाह सुल्तान सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क वखाईआ। दर घर साचा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप उपांयदा। एकँकारा श्री भगवन्त, हरि पुरख निरँजण खेल खिलांयदा। लेखा जाणे आदि अन्त, अलक्ख अलक्खणा वेख वखांयदा। आपे नारी आपे कन्त, कन्त कन्तूहल रूप वटांयदा। आपे रुतड़ी सुहाए बसन्त, फल फुल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। आप उपाए जीव जंत, लक्ख चुरासी ब्रह्मा विष्न शिव सेव करांयदा। आपे लेखा जाणे साचे सन्त, आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान दृढ़ांयदा। तोड़े गढ़ हउमे हंगत, माया ममता मोह चुकांयदा। दर भिखारी होए मंगत, दर दरवेशा फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर रंग रंगांयदा। गृह मन्दिर रंग मजीठ, सतिगुर पूरा आप रंगाईआ। पुरख अकाल वसे धाम अनडीठ, दिस किसे ना आईआ। आपे सुत्ता दे कर पीठ, आप आपणा मुख छुपाईआ। गुरमुख विरले जणाए भाणा मीठ, निष्अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। काया करे ठंडी सीत, सांतक सति सति वरताईआ। सो पुरख निरँजण सुणाए सुहागी गीत, हँ ब्रह्म करे कुड़माईआ। बैठा रहे इक्क अतीत, ना मरे ना जाईआ। जुग जुग चलाए आपणी रीत, सतिजुग त्रेता द्वापर वेस वटाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। करे कराए पतित पुनीत, पतित पावण आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर हरि सुहञ्जणा, जगे जोत आदि निरँजणा, तेल बाती ना कोए रखाईआ। आदि निरँजण कर प्रकाश, कलिजुग दुआरा आप सुहांयदा। साचे मंडल पावे रास, नूर नुराना डगमगांयदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, धरत धवल वेख वखांयदा। जन भगतां पूरी करे आस, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। आपे होए दासी दास, सेवक साची सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर इक्क सुहांयदा। घर मन्दिर हरि सुहाया, एका रंग रंगाईआ। साची सखीआं मंगल गाया, सुणे सुणाए बेपरवाहीआ। पंचम नाद शब्द धुन वजाया, अनहद आपणा ताल अलाईआ। बेऐब परवरदिगार वेख वखाया, राम रहीम वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा लोकमात वेखे जगत तमाशा, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। जुग जुग खेले

खेल खेलणहार, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। लोकमाती लै अवतार, पंज तत्त चोला आप हंढांयदा। सरगुण साचे करे प्यार, घर घर विच वेख वखांयदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, पंचम धाड़ मेट मिटांयदा। निज आत्म वखाए सच अखाड़, गोपी काहन आप नचांयदा। धुरदरगाही साचा लाड़, गुर शब्दी नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुरदेव आत्म इष्ट सृष्ट सबाई मेल मिलांयदा। सृष्ट सबाई साचा नाता, हरि शब्दी जोड़ जुड़ांयदा। करे खेल पुरख बिधाता, वेद कतेब भेव ना पांयदा। जन भगतां देवे साची दाता, साची भिच्छया इक्क वखांयदा। मेटे रैण अन्धेरी राता, सतिगुर साचा चन्द चढ़ांयदा। शब्दी देवे एका गाथा, साची सिख्या सिख समझांयदा। जुग जुग पूरा करे घाटा, पूर्ब लहिणा वेख वखांयदा। अमृत प्याए साचे बाटा, नाम प्याला हथ्थ उठांयदा। आत्म वेखे साची खाटा, नाम रंगीला एका पलँघ विछांयदा। चौदां लोक खुल्हाए एका हाटा, चौदां तबकां मूल चुकांयदा। पुरख अबिनाशी खेल बाज़ीगर नाटा, स्वांगी आपणा स्वांग रचांयदा। वेख वखाए तीर्थ ताटा, अठसठ फेरा आपे पांयदा। लक्ख चुरासी वेखे काया माटा, जोत निरँजण डगमगांयदा। गुरमुख चलाए साथ राथा, रथ रथवाही सेव कमांयदा। लेखा जाणे त्रिलोकी नाथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गृह मन्दिर डूँघी कंदर, हरि हरि वेख वखांयदा। डूँघी कंदर काया गागर, भेव किसे ना पाया। हरिजन विरले कर्म उजागर, जिस जन सतिगुर पूरा दया कमाया। देवे नाम रती रत्नागर, रत्ती रत्त रहे ना राया। निर्मल कर्म करे उजागर, सिर समरथ हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जुग जुग वेस पुरख करतार, लोकमाती खेल करांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पावे सार, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। नानक निरगुण जोत नूर उज्यार, गुर गोबिन्द मेल मिलांयदा। एका घर सोहे बंक दुआर, चेला गुर एका रंग रंगांयदा। एका फ़तह बोल जैकार, वाह वा गुरू इक्क वखांयदा। शब्द गुर कर त्यार, सृष्ट सबाई मूल वखांयदा। पुरख अकाल सिरजणहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर एक वड्यांअदा। घर मन्दिर पुरख अकाल, थिर घर साचा आप वसाया। सेवा लाए काल महांकाल, दीन दयाल दया कमाया। आपणा दीपक आपे बाल, आपे वेख वखाया। आपे बैठ तख्त सुल्तान, सीस ताज आप टिकाया। आप झुलाए सच निशान, धुर दरगाह वेस वटाया। आपे होए वड बलवान, बलधारी बल धराया। आपे वसे सुंञ मसाण, रूप अनूप आप दरसाया। आपे ब्रह्मा विष्न शिव कर प्रधान, त्रै त्रै मेला मेल मिलाया। आपे पंज तत्त देवे दान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल खलाया। आपे मन मति बुध करे ज्ञान, अन्तर मन्त्र आप समझाया। आपे होया बेपछाण, दिस किसे ना आईआ। सर्ब जीआं दा

३१० ०६

जाणी जाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेल खलाया। कलिजुग अन्तिम खेल गोबिन्द, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर भेव ना आंयदा। जन भगतां मेटे सगली चिन्द, जोत सरूपी दरस वखांयदा। अमृत सर सरोवर वखाए सागर सिन्ध, निझर झिरना आप झिरांयदा। लेखा चुकाए करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इंद, शिव शंकर मूल मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा खेल अपारा, वेखणहार हरि निरँकारा, जुग जुग लै मात अवतारा, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस अवल्ला, पुरख अकाल आप वटाईआ। पावे सार राणी अल्ला, संग मुहम्मद चार यार वेख वखाईआ। ईसा मूसा छुट्टे पल्ला, सगला संग ना कोए निभाईआ। कलमा अमाम कायनात एका घल्ला, अज़मतो करमतो दए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा सच घर, गृह मन्दिर इक्क रखाईआ। गृह मन्दिर हरि सुहावणा, निरगुण सरगुण साची धार। लोकमात नाउँ उपजावणा, सम्बल नगरी कर त्यार,। गोबिन्द साचा आसण लावणा, पूत सपूता इक्क प्यार। पुरख अकाल इक्क मनावणा, दूजा इष्ट ना कोए विचार। तीजा नैण इक्क खुल्लावणा, चौथे पद सच्ची सरकार। पंचम बह बह राग गावणा, राग अनादी एका धार। छेवें छप्पर छन्न ना कोए वखावणा, सचखण्ड निवासी वसे सचखण्ड दुआर। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण एका रूप वटावणा, अछल छल करे करतार। अठ्ठां तत्तां मूल चुकावणा, त्रैगुण माया देवे साड़। नौ दुआर लक्ख चुरासी खोज खुजावणा, जगत वासना वेख विकार। दस्म दुआरी कुण्डा लाहवणा, गुरमुख साजण लए उभार। आत्म सेजा इक्क सुहावणा, घर मेला कन्त भतार। अमृत साचा जाम प्यावणा, रस रसीआ ठंडा ठार। गीत अनादी एका गावणा, अनहद शब्द सच्ची धुन्कार। स्वच्छ सरूपी रूप दरसावणा, बज़र कपाटी पर्दा पाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर पावे सार। गृह मन्दिर हरि वसया, सतिगुर दीन दयाल। गुरमुख विरले मार्ग दस्सया, होए आप हरि कृपाल। करे प्रकाश कोटन रव सस्या, तोड़णहारा जगत जंजाल। जुगा जुगन्तर फिरे नस्सया, गुरमुख वेखे साचे लाल। घर मन्दिर बह बह हस्सया, नेड़ ना आए काल महांकाल। शब्द निराला तीर कसया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर मारे इक्क उछाल। गृह मन्दिर सच उछाल, सतिगुर पूरा आप लगांयदा। हरिजन उपजाए साचा लाल, लाल अनमुल्लड़ा वेख वखांयदा। लोकमात बणे दलाल, आप आपणी सेव कमांयदा। लेखा जाणे काया माटी खाल, मन्दिर अंदर सोभा पांयदा। देवणहारा नाम सच्चा धन माल, सच खज़ीना इक्क लुटांयदा। दो जहानी शाह कंगाल, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचा घर, घर विच आप

३११ ०६

बहांयदा। घर विच घर कर त्यार, काया गढ़ सुहाईआ। अंदर वड़ पुरख करतार, बैठा आसण लाईआ। जगमग जोत जगे अपार, दिवस रैण रुशनाईआ। रवि ससि होए शर्मशार, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। एका नाद सच्ची धुन्कार, नाद अनादी नाद वजाईआ। अमृत देवे ठंडी ठार, सर सरोवर इक्क भराईआ। त्रबैणी नैणी इक्क प्यार, सुखमन टेढी बंक भुआईआ। कागद कलम ना लिखणहार, चारे वेद देण गवाहीआ। पुराण अठारां करन पुकार, हरि का भेव कोए ना पाईआ। हरिजन विरला पावे सार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। घर मन्दिर खोल्ह दरवाज़ा, हरि साचा वेख वखांयदा। वेखणहार ग़रीब निवाज़ा, जीवां जंतां दिस ना आंयदा। शब्द वजाए अनहद वाजा, छत्ती राग ना कोए अल्हांयदा। आपणा मन्दिर आपे साजा, आपे वेख वखांयदा। अश्व घोड़े चढ़या ताजा, लोआं पुरीआं आप दौड़ांयदा। शाह सुल्तान राजन राजा, सीस ताज आप टिकांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम काजा, हरि साचा आप करांयदा। कोए ना रक्खे तेरी लाजा, सगला संग ना कोए निभांयदा। लेखा चुक्के कल कि आजा, कलि कल्की अवतार हरि अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गृह मन्दिर वेखे साचा घर, नव खण्ड फेरा आपे पांयदा। सत्त दीप नव खण्ड, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फोल फुलांयदा। पारब्रह्म प्रभ पाए वण्ड, वण्डणहारा दिस ना आंयदा। लेखा जाणे कोट ब्रह्मण्ड, आप आपणी अक्ख खुल्हांयदा। जुगा जुगन्तर देवे दंड, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। नाम निधाना चण्ड प्रचण्ड, दो जहानां आप चमकांयदा। मेटणहारा भेख पखण्ड, जूठ झूठ आप मिटांयदा। साचा नाम एका वण्ड, चार वरनां मेल मिलांयदा। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका पल्ले बन्न्हे गंढु, आप आपणे रंग रंगांयदा। दूई द्वैती ढावे कंध, हउमे हंगता गढ़ तुड़ांयदा। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, पुरख अकाल आप अल्हांयदा। आप जणाए आपणा परमानंद, निज़ानंद आप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। वेखणहार पुरख समरथ, घट अंदर जोत जगाईआ। जुग जुग चलाए आपणा रथ, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जन भगतां देवे साची वथ, नाम अमोलक झोली पाईआ। सगल वसूरे जायण लथ, जिस जन नेत्र लोचण नैण दरस दखाईआ। पंच विकारा होए सथ्थ, कलिजुग सथ्थर हेठ विछाईआ। त्रैगुण माया करे भट्ठ, एका अग्नी तत्त जलाईआ। साचा मार्ग सतिगुर दस्स, मनमति दए गंवाईआ। गुरमति साची हिरदे रक्ख, हरि हरि सिउँ लए मिलाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों करे वक्ख, जिस जन आपणा रंग रंगाईआ। कक्खों करनहारा लक्ख, लक्खों कक्ख आप कराईआ। हरिजन मेला नट्ठ नट्ठ, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ।

मनमुख खेड़ा दिसे भट्ठ, भट्ठ भठयाला अग्न तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम खेल निराला, चले चलाए अवल्लड़ी चाला, चार वरनां इक्क पढ़ाईआ। चार वरन इक्क ज्ञान, हरि साचा सच जणांयदा। चार वरन इक्क ध्यान, पुरख अकाल इक्क मनांयदा। चार वरन इक्क दान, एका नाम झोली पांयदा। चार वरनां एका माण, चरन कँवल इक्क वखांयदा। चार वरन एका पीण खाण, आत्म अन्तर अमृत आप प्यांअदा। चार वरन इक्क पछाण, नेत्र नैण इक्क खुल्हांयदा। चार वरन एका शब्द गाण, साचा ढोला इक्क सुणांयदा। चार वरन इक्क मकान, सचखण्ड दुआरा इक्क वखांयदा। चार वरन इक्क भगवान, भगत भगती रंग रंगांयदा। चार वरन एका काहन, एका मंडल रास रचांयदा। चार वरन एका राम, राम रूप आप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जामा श्री भगवाना, दो जहानां खेल खिलांयदा। दो जहानां खेले खेल, निरगुण नूर रूप बेपरवाहीआ। गुरमुखां करे साचा मेल, जुग जुग विछड़े लए मिलाईआ। ठाकर अबिनाशी चाढ़े तेल, घर साचा सगन मनाईआ। धर्म राए दी कट्टी जेल, वेले अन्त ना दए सज़ाईआ। लेखा जाणे गुरू गुर चेल, गुर गुबिन्द शब्द मिलाईआ। समरथ पुरख सज्जण सुहेल, सगला संग आप निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर विच दए वड्याईआ। घर घर विच हरि उपाया, चार दीवार ना कोए बणाईआ। इट्ट गारा ना कोए लाया, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जगत नेत्र दिस ना आया, लभ्भ लभ्भ थक्की सर्ब लोकाईआ। जीव जंत होए हलकाया, हरि का रूप नज़र ना आईआ। साध सन्त दए दुहाया, देहुरा मन्दिर मसीत मिले ना सच्चा साचा माहीआ। जिस जन आपणी दया कमाया, घर घर विच दए वखाईआ। सतिगुर पूरा सच सिँघासण बैठा आसण लाया, निज घर आपणी ताड़ी लाईआ। गुरसिख मेला गुर गोबिन्द सहिज सुभाया, गुर नानक फड़ फड़ तारे बाहींआ। जिस जन पुरख अकाल इक्क मनाया, दूजे दर ना मंगण जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कल कलवन्ता आप वरताईआ। कल कलवन्ता अकल कल धार, कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा। शब्द डंका विच संसार, राउ रंकां आप सुणांयदा। वासी पुरी घनका हो त्यार, सम्बल नगरी आप सुहांयदा। वेद व्यासा करे पुकार, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा राह तकांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, उच्चे टिल्ले साचे पर्बत आपणा आसण आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर आप जणांयदा। उच्चा टिल्ला पर्बत चोटी, काया मन्दिर आप सुहाईआ। आप जगाए निर्मल जोती, निरवैर रूप समाईआ। गुरमुख उधारे विच्चों कोटन कोटि, दे मति आप समझाईआ। आपे कढ्ढे वासना

खोटी, सच सुगंधी नाम भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाईआ। रंग समाया हरि रघुराया, भेव कोए ना पांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, निरगुण आपणा नाउँ रखांयदा। शब्द शब्दी शब्द अलाया, शब्द शब्दी मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख लेखा देवे कर, पूर्ब लहिणा झोली पाया। गुरमुख लेखा आदि जुगादि, हरि सतिगुर वेख वखांयदा। पावे सार ब्रह्म ब्रह्माद, भेव अभेदा भेव खुल्हांयदा। देवणहारा बोध अगाध, शब्द शब्दी शब्द सुणांयदा। सन्त सुहेले साचे लाध, दर घर साचे मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों काढ, आप आपणे घर बहांयदा। लेखा जाणे अन्धेरी खाड, डूँग्घी कंदर फोल फुलांयदा। नाता तोड़े हड्ड मास, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा। सतिगुर पूरा ना होए विनास, अबिनाशी आपणा नाउँ धरांयदा। लेखा जाणे स्वास स्वास, जो जन रसना जिह्वा गांयदा। जुग जुग पूरी करनहारा आस, हरिजन साचे पार करांयदा। बणया रहे दासी दास, सेवक सेवा आप कमांयदा। लेखा लिखाए दस दस मास, दर्द दु:ख आप वण्डांयदा। पार कराए पृथ्मी आकाश, सचखण्ड दुआरे आप बहांयदा। जोती जोत कर प्रकाश, अवण गवण पन्ध मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे आप उठांयदा। हरिजन आप उठावण आया, निरगुण रूप अगम्म अपार। आप आपणा रूप दरसावण आया, पुरख अबिनाशी खेल न्यार। भाण्डा भरम भउ भन्नावण आया, गुर मन्त्र कर उज्यार। जूठा झूठा नाता तुड़ावण आया, बख्शणहार चरन प्यार। माया ममता मोह चुकावण आया, देवे नाम शब्द भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे इक्क इकल्ला, वसणहारा सच महल्ला, घर साचा बंक दुआर। बंक दुआरी आप प्रभ, घट घट बैठा आसण लाईआ। गुरसिख साचे ल्ए लभ्भ, जुग जुग आपणा खेल खलाईआ। अमृत चोए कँवल नभ, कँवल कँवला आप खुल्हाईआ। जगत विकारा देवे दब्ब, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले साचे घर, दर घर साचा इक्क वखाईआ। दर घर साचा हरि भगवान, एका एक वखांयदा। लोकमात ना कोई निशान, जीव जंत ना कोई बणांयदा। नज़र ना आए साचा काहन, साचा मन्दिर ना कोई सुहांयदा। जूठा झूठा पीण खाण, काम क्रोध सर्ब कुरलांयदा। हरि का रूप ना सके कोई पछाण, आत्म परमात्म ना कोई मिलांयदा। ईश जीव ना कोई ध्यान, जगत जगदीश ना कोई सालांहयदा। साचा छत्र ना सीस कोई झुलाण, राज राजान ना बंक सुहांयदा। नाम ना देवे कोई दान, जीआं भिच्छया ना झोली पांयदा। चरन धूढ़ ना कोए अशनान, दुरमति मैल ना कोई धवांयदा। हरि मन्दिर ना दिसे कोई मकान, साचा गीत ना कोई सुणांयदा। कलिजुग झूठी खोल्ह दुकान, झूठा वणज करांयदा। अठसठ तीर्थ सर्ब कुरलाण, लजपत ना

३१५

०६

कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख विरले आप उठांयदा। हरिभगत उठ जाग, हरि साचा नेत्र खुल्हांयदा। हरि सन्त प्यारे सुण सुण राग, पुरख अबिनाशी एका गांयदा। गुरमुख साचे सच वैराग, बिरहों तीर निराला एका लांयदा। गुरसिख बुझाए लग्गी आग, अमृत मेघ इक्क वरसांयदा। आप बणाए हँस काग, सोहँ हँसा मोती चोग चुगांयदा। दीपक जोत जगे चिराग, दिवस रैण डगमगांयदा। जन्म जन्म दर धोवे दाग़, तन बस्त्र इक्क पहनांयदा। जो जन सरनाई गया लाग, लक्ख चुरासी पार करांयदा। मेल मिलावा मोहण माधव माध, घर साचा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर कीमति सुर करता गुर साचे हट्ट विकांयदा। गुर हट्ट वणज वणजारा, गुरसिख वेखण आईआ। हरिभगती भगत भण्डारा, प्रभ साचा आप वरताईआ। गुर गुरमुख कर उज्यारा, गोर मढ़ी पन्ध चुकाईआ। गुरसिख दए सच आधारा, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। लेखा जाणे आर पार किनारा, मँझधार ना कोई रुढ़ाईआ। भव सागर वेखे डूँग्घी गारा, जल थल महीअल फेरा पाईआ। गुरसिख सुहाए इक्क दुआरा, महिबान बीदो वड वड्याईआ। अलक्ख निरँजण बोल जैकारा, अलक्ख अलक्खणा अलक्ख सुणाईआ। जुग जुग लए मात अवतारा, हरिजन साचे आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगवन बीठलो भेव ना राईआ। भगतन मीता हरि भगवन्त, परम पुरख आप अख्वांयदा। लेखा जाणे जीव जंत, जन जननी वेख वखांयदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, रसना जिह्वा ना कोई गणांयदा। सर्ब जीआं दा साचा कन्त, पुरख अकाल इक्क अख्वांयदा। लक्ख चुरासी मणीआ मंत, धुर फ़रमाणा आप जणांयदा। आप बणाए आपणी बणत, आपे अन्तिम ढांहयदा। दूजे दर ना जाए मंगत, आप आपणा घर सुहांयदा। देवे वडियाई साची संगत, जिउँ नानक अंगद अंग लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी काली धार, नौ खण्ड पृथ्मी विच संसार, सति सतिवाद ना कोई वखांयदा। सति सतिवाद ना कोए रंग, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। कंचन रंग ना सेज पलँघ, सूहा वेस ना कोई वटाईआ। चिटी धार ना वेखे लँघ, पीला बस्त्र तन छुहाईआ। नीली धारों गया लँघ, सग़ली चिंत ना कोई मिटाईआ। कलिजुग काला वजाए मृदंग, काल कूके दए दुहाईआ। लाड़ी मौत मंगे मंग, राए धर्म नाल रलाईआ। पुरख अबिनाशी सूरा सरबंग, सूरबीर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग कूके कूक पुकारे चारों कुंट हाहा नाअरे, हरि का नाम ना कोई ध्याईआ। कलिजुग कूके कूड़ कड़यारा, चार कुंट लए अंगड़ाईआ। दिवस रैण अन्ध अँध्यारा, साचा चन्न ना कोई चढ़ाईआ। जीवां जंतां माण मोह हँकारा, एका संग निभाईआ। साध सन्त करन विभचारा, नारी कन्त भतार ना कोई हंढाईआ। भैणां भईआ ना कोए प्यारा, पिता पूत ना

कोए वड्याईआ। मात पित ना दए सहारा, ना कोई दीसे धी जवाईआ। साक सैण ना मीत मरारा, कूड़ी क्रिया वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सारा, धरत धवल रही कुरलाईआ। कलिजुग आई अन्तिम वारा, ना दीसे कोए सहाईआ। ऐनलहक ना बोले कोई नाअरा, हक हकीकत मुख शर्माईआ। लाशरीक करे खेल न्यारा, बेऐब परवरदिगारा आप खुदाईआ। मुकामे हक पावे सारा, शरअ शरीअत वेख वखाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक पीर रोवन ज़ारो ज़ारा, दस्तगीर ना कोए सहाईआ। चौदां तबकां इक्क हुलारा, नबी रसूलां दए जगाईआ। पंडत पांधे मारे मारा, तिलक ललाटी वेख वखाईआ। शत्री ब्रह्मण कर ख्वारा, शूद्र वैश फोल फुलाईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। निहकलंक लए अवतारा, निरगुण आपणा नाउँ रखाईआ। लक्ख चुरासी वणज वपारा, एका हट्ट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा साचा मेला, मेल मिलाए गुरू गुर चेला, चेला गुर आप अख्वाईआ। चेला गुर दीन के नाथ, नाथ अनाथां होए सहाईआ। सतिगुर पूरा सगला साथ, आदि जुगादि निभाईआ। आप चुकाए पूजा पाठ, साचा मन्त्र इक्क पढ़ाईआ। आप उतारे आपणे घाट, पार किनारा इक्क वखाईआ। आप सुआए आपणी खाट, आत्म सेजा इक्क वछाईआ। आप विकाए आपणे हाट, गुरसिख तेरी कीमत करता आपे पाईआ। किसे हथ्थ ना आया नौ नौ नाथ, सिद्ध चुरासी रहे गाईआ। गुरसिखां नेड़े रक्खे वाट, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जन्म जन्म दा पूरा करे घाट, जिस जन आपणी गोद बिठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। थान थनंतर फोलया, पारब्रह्म गुर करतार। गुरसिख साचे कंडे तोलया, तोलणहार आप निरँकार। सच दुआरा एका खोल्हया, एका वणज इक्क विहार। लक्ख चुरासी पावे रौलया, दिस ना आए सिरजणहार। वसणहारा काया मन्दिर आपणे पर्दे ओहलया, आप आपणा पर्दा डार। गुरमुखां वसे सदा कोलया, कँवल नैण मीत मुरार। हौली हौली आपे बोलया, शब्द अनहद वजाए सच्ची धुन्कार। सतिगुर पूरा कदे ना डोलया, अडोल अडुल विच संसार। हरिजन काया अंदर मौलया, फुल्ल फलवाड़ी खिड़े गुलज़ार। दो जहानां करे भार हौलया, कोटन कोटि पाप दए उतार। जिस जन एका अक्खर हरि हरि बोलया, भव सागर उतरे पार। देवणहार शब्द झकोलया, उँणंजा पवण करे ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचा जाए तार। तारनहार दीन दयाल, हरिजन साचे आप तरांयदा। गुरसिख वेखे साचा लाल, लाल अनमुल्लड़ा आप उठांयदा। आप आपणे आपे भाल, आप आपणा मेल मिलांयदा। शब्द सरूपी बण दलाल, घर घर विच फोल फुलांयदा। कलिजुग चली अवल्लड़ी चाल, भेव कोए ना पांयदा। पंज तत्त ना दीसे माटी खाल, त्रैगुण ना जोड़ जुड़ांयदा। अगम्म अगम्मड़ा वजे ताल, अगम्मी सुर

आप रखांयदा। सचखण्ड दुआर बैठ सच्ची धर्मसाल, धुरदरगाही वेख वखांयदा। जन भगतां करे सदा प्रितपाल, प्रितपालक आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे वर, मेल मिलावा साचे घर, गृह मन्दिर आप सुहांयदा। गृह मन्दिर वसे हरि हरि राजा, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण ग़रीब निवाज़ा, आसण सिँघासण आप सुहाईआ। गुरसिख उठाए दया कमाए आप जगाए मारे वाजां, आलस निन्दरा विच ना आईआ। सति पुरख निरँजण चलाए सच जहाज़ा, सच साचे लए चढ़ाईआ। वेले अन्तिम रक्खे लाजा, जगत जगदीश इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां लेखा लिखणहार वरते वरतावे विच संसार, पुरख पुरखोतम खेल अपार, कागद कलम ना लिखणहार, कर्म धर्म जरम वरन बरन साची सरन इक्क रखाईआ। अन रूप सरीर को जाण, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। तन सरीर श्री भगवान, निज बैठा आसण लाईआ। ना कोई पीण ना कोई खाण, रसन ज्ञान ना कोए अलाईआ। ना कोई रूप ना निशान, नेत्र नैण ना कोए दसाईआ। ना कोई बिरध ना जवान, बाल अवस्था ना कोए दसाईआ। ना कोई हथ्थ पैर दिसे कान, मुख नाक ना कोए लगाईआ। नौ दर ना कोए निशान, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रूप अनूप दरसाईआ। निरगुण रूप निरगुण धार, निरगुण निरगुण विच उपाईआ। निरगुण मन्दिर कर त्यार, निरगुण बैठा आसण लाईआ। निरगुण कन्त निरगुण भतार, ...

३१७ ०६

✻ २३ फग्गण २०१६ बिक्रमी सरवण सिँघ दे घर पिण्ड जगातीआं ज़िला करनाल ✻

सो पुरख निरँजण एका दाता, आदि जुगादि समांयदा। हरि पुरख निरँजण सच्चा नाता, जुगा जुग आप बंधांयदा। एकँकारा पुरख बिधाता, एका रंग रंगांयदा। आदि निरँजण उत्तम ज़ाता, वरन गोत ना कोए वखांयदा। श्री भगवान मेटे अन्धेरी राता, साचा चन्द इक्क चढ़ांयदा। अबिनाशी करता इक्क इकांता, सच सिँघासण आसण लांयदा। पारब्रह्म पिता माता, आप आपणा वेस धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल अकल कल धार, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, भेव अभेदा आप खुल्हांयदा। सो पुरख निरँजण सोभावन्त, एका रंग समाया। हरि पुरख निरँजण आदि अन्त, रूप अनूप आप दरसाया। एकँकारा महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए जणाया। आदि निरँजण जुगा जुगन्त, जोत निरँजण दए रुशनाया। अबिनाशी करता साचा कन्त, कन्त कन्तूहल वड वड्याआ। श्री भगवान बणाए बणत, ना कोई दूसर संग रखाया। पारब्रह्म आपे जाणे आपणा अन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा

खेल खलाया। निरगुण दाता बेपरवाह, अजूनी रहित भेव ना राईआ। करता पुरख इक्क मलाह, एका बेड़ा सच चलाईआ। धुरदरगाही वसे साचे थाँ, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एका आसण डेरा लाईआ। दो जहानां करे सच न्याँ, हुक्मी हुक्म आप चलाईआ। खेले खेल अगम्म अथाह, अलक्ख अलक्खणा वड वड्याईआ। थिर घर बंक रिहा सुहा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। आपे होए शाह पातशाह, शहनशाह सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला, दीन दयाल इक्क अख्वाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला अख्वांयदा। वसणहारा सच दुआर, सचखण्ड साचे सोभा पांयदा। थिर घर खोल्हे आप किवाड़, ठांडा दरबार आप उपजांयदा। तख्त बैठ सच्ची सरकार, आप आपणा आसण लांयदा। दर दरवेश होए चोबदार, सीस जगदीश आपणा आप झुकांयदा। वरते वरतावे हरि वरतार, आप आपणा हुक्म जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा खेले खेल पृथ्मी आकाशा, गगन मंडल पावे रासा, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। वसणहारा नेहचल धाम अटला, सच महल्ला आप सुहांयदा। जलां थलां आपे रला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ आपे डेरा लांयदा। शब्द अनादी सच संदेश निरगुण धारा एका घल्ला, ब्रह्मा विष्न शिव आप समझांयदा। जोती जोत आपे रला, नूरो नूर डगमगांयदा। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, आत्म परमात्म रंग रंगांयदा। आपे करे खेल वल छला, अछल छल धारी भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। वेस वटंदड़ा पुरख सुल्तान, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। लोकमात होए प्रधान, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। धुरदरगाही इक्क फ़रमाण, सच साचा सच जणाईआ। शब्द अनादी सच धुंनकान, धुन अनादी आप अल्हाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे मार ध्यान, जेरज अंड उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी जगत निशान, चारों कुंट आप झुलाईआ। दहि दिशा हो प्रधान, खेले खेल बेपरवाहीआ। दाता दानी गुण निधान, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। भगतां देवे भगती दान, भगवन आपणा मेल मिलाईआ। सति वखाए सच दुकान, चौदां लोक मुख भवाईआ। गुरमुख बख्शे इक्क ध्यान, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। गुरसिखां देवे साचा दान, साची भिच्छया झोली पाईआ। एका शब्द रसना गान, अक्खर वक्खर आप पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणे नाम रक्खे वड्याईआ। हरि हरि नाउँ अपार, वेद कतेब भेव ना पांयदा। ब्रह्मा लिख लिख गया हार, चारे वेदां मुख सालांहयदा। सिफ्ती सिफ्त करे विचार, नेत्र नैण ना कोए दरसांयदा। देवणहार इक्क निराकार, सरगुण साचा मेल मिलांयदा। सचखण्ड निवासी खेल अपार, शाहो शाबाशी आप खुल्हांयदा।

त्रैगुण माया वसे बाहर, पंच तत्त ना मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचांयदा। जुग जुग खेल पुरख अकाल, आपणा आप करांयदा। गुरमुख वेखे साचे लाल, लक्ख चुरासी विच्चों आप उठांयदा। शब्द सरूपी बण दलाल, सच वणजारा वणज करांयदा। एका देवे नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ीना हथ्थ फड़ांयदा। लेखा जाणे काल महांकाल, जगत जंजाल तोड़ तुड़ांयदा। फल लगाए काया डाल, फुल्ल फलवाड़ी आप महिकांयदा। अमृत सरोवर बख्शे ताल, काया मन्दिर आप भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहार पुरख समराथ, एका रंग समांयदा। जुग जुग महिमा कथना अकाथ, कथनी कथ ना कोए सुणांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाए राथ, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। लक्ख चुरासी बैठी घाट, साचा बेड़ा ना कोए रखांयदा। लहिणा देणा चुक्या अठसाठ, तीर्थ ताट ना कोए नुहांयदा। घर घर जोत ना दिसे कोए ललाट, अज्ञान अन्धेर ना कोए गवांयदा। अनहद शब्द ना वज्जे सट्ट, तन नगारा ना कोए वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचा जुग जुग धार, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। भगतन मीता एकँकार, रूप अनूप आप वटाईआ। भगत वछल विच संसार, आप आपणा खेल खलाईआ। डुब्बदे पाथर देवे तार, जिस जन आपणी दया कमाईआ। हरिजन बख्शे सच प्यार, सच दुआरा इक्क वखाईआ। मेट मिटाए अन्ध अँध्यार, कूड़ कुड़यार दिस ना आईआ। जोत निरँजण कर उज्यार, घर घर विच दए वखाईआ। शब्द अनादि सच्ची धुन्कार, अनहद ताल आप वजाईआ। अमृत देवे ठंडी ठार, भर प्याला जाम प्याईआ। खोल्ह वखाए बन्द किवाड़, बज़र कपाटी पर्दा लाहीआ। घर साचे सच देवे वाड़, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। नारी कन्त सच प्यार, आत्म सेजा आप वखाईआ। मेल मिलावा जोत निरँकार, निरगुण निरगुण विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग आपणी वण्ड वण्डाईआ। साची वस्त हथ्थ करतार, गुर सतिगुर आप वरतांयदा। गुर गुर पावणहारा सार, लोकमात वेस वटांयदा। गुरमुख साजण जाए तार, दे मति तत्त समझांयदा। गुरसिख लेखा आर पार, मँझधार ना कोए रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। तारनहार एको दीना, दीना नाथ होए सहाईआ। जन भगतां करे ठांडा सीना, आप आपणी बूझ बुझाईआ। गुरसिख सहारा जिउँ जल मीना, चार्तक तृखा आप बुझाईआ। काया चोली चाढ़े रंग भीन्ना, उतर कदे ना जाईआ। पार कराए लोकां तीनां, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन साचे मेल मिलाईआ। मेल मिलावा हरि भगवान, हरि साचा आप करांयदा। आत्म अन्तर

इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म वखांयदा। घर विच घर सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहांयदा। दीवा बाती जोत महान, कमलापाती आप टिकांयदा। सुणावे गाथी धुर फ़रमाण, बोध अगाधी भेव खुल्हांयदा। एका नाद वजाए सच्ची धुनकान, आत्म अन्तर बूझ बुझांयदा। करे प्रकाश कोटन भान, रवि ससि मुख शर्मांयदा। गुरमुख गुरसिख काग हँस बण जाण, माण सरोवर जो जन नुहांयदा। सतिगुर पूरा देवे दान, दया दृष्टी आप कमांयदा। सर्ब जीआं दा साचा काहन, लक्ख चुरासी गोपी आप नचांयदा। एथे ओथे एका राम, दूसर रूप ना कोई वटांयदा। गुरमुखां देवे साचा माण, दरगाह साची आप सुहांयदा। इक्क वखाए पद निरबाण, निर्भय आपणा नाउँ धरांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इंद बह बह गाण, कोटी कोटि ध्यान लगांयदा। किसे हथ्थ ना आए श्री भगवान, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। जुग जुग लोकमात हो प्रधान, आप आपणा रूप वटांयदा। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले लए पछाण, पूर्ब लहिणा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम फेरा पांयदा। कलिजुग अन्तिम हरि हरि धार, निरगुण निराकार चलाईआ। जोती जामा खेल अपार, जोती जोत रुशनाईआ। शब्दी शब्द शब्द जैकार, साचा नाअरा एका लाईआ। वसणहारा धाम न्यार, सम्बल बैठा रुत्त सुहाईआ। उच्चा टिल्ला पर्बत आपे पाड़, आप आपणा पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम वेस, निरगुण रूप नर नरेश खेले खेल दर दरवेश, अलक्ख अलक्खणा आपणी अलक्ख जगाईआ। अलक्ख अलक्खणा हरि भगवान, भेव कोए ना पांयदा। दिस ना आए ज़िमी अस्मान, धरत धवल ना कोई रखांयदा। वेद पुराण शास्त्र सिमरत सारे गाण, हरि हरि आपणा खेल खिलांयदा। गुर पीर साध सन्त अवतार आदि जुगादी सच निशान, लोकमात आप उपजांयदा। इक्क इकल्ला देवणहारा धुर फ़रमाण, जुग जुग आपणा हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन रंग रंगांयदा। चार वरन रंग अनमोल, हरि साचा आप चढ़ाईआ। लक्ख चुरासी एका कंडे देवे तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे ढोल, ब्रह्मण्ड खण्ड आप सुणाईआ। आपणी धारन आपे बोल, त्रै त्रै लेखा दए मुकाईआ। सचखण्ड निवासी सच दुआरा एका खोल्ह, एका वणज कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखणहारा, एका एक एकंकारया। खेले खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना आ रिहा। सति सतिवादी साची धारा, सति सति आप चला रिहा। पावे सारा पुरख नारा, नाउँ नरायण आप धरा ल्या। जन भगतां देवे नाम आधारा, आप आपणा भेव खुल्हा ल्या। सन्तन मेला मीत मुरारा, घर सज्जण वेख वखा ल्या। गुरमुखां वखाए पार किनारा, साचा बेड़ा आप चला रिहा। गुरसिख सुहाए बंक

दुआरा, बंक दुआरी वेस वटा ल्या। वेस वटंदड़ा हरि हरि मीत, लोकमात वेख वखाईआ। करे कराए पतित पुनीत, पतित पावन बेपरवाहीआ। गुरमुख काया ठंडी सीत, अग्नी तत्त ना कोई जलाईआ। धाम वखाए इक्क अनडीठ, लिखण पढ़न विच ना आईआ। मानस जन्म जाणा जीत, जगत ठगौरी कोए ना पाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, राउ रंक ना कोई वखाईआ। सतिजुग तेरी साची रीत, हरि साचा सच चलाईआ। ना कोई मन्दिर नां मसीत, शिवदुआला मट्ठ ना कोई वखाईआ। काया मन्दिर एका गीत, हरि मन्दिर आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खलाईआ। जुग जुग खेल पुरख सुल्तान, सति सतिवादी आप करांयदा। कलिजुग मेटे कूड़ निशान, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका हरि हरि नाम दृढ़ांयदा। नाता तोड़े पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आंयदा। आशा तृष्ना सर्ब मिट जाण, जो जन सतिगुर पूरे दर्शन पांयदा। तोड़णहारा माण अभिमाण, निवण सु अक्खर आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लेखे लांयदा। हरिजन लेखा लिखणहार, एका एक एक अख्वाया। पूर्ब लहिणा कर्म विचार, नेत्र नैणां दरस दखाया। भव सागर जन जाए तार, जन जननी वेख वखाया। मेल मिलावा धुर दरबार, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए फड़, शब्द डोरी हथ्थ उठाया। शब्द डोर हथ्थ करतार, जुग जुग आपणी सेव कमांयदा। हरिजन मेले विच संसार, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। एका बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। काया गढ़ तोड़ हँकार, माया ममता मोह मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम रास, आपे पाए पृथ्मी आकाश, नव सत्त खेल खिलांयदा। नव सत्त हरि हरि डेरा, दिस किसे ना आंयदा। लक्ख चुरासी हेरा फेरा, कर कर मात भुलांयदा। देवणहारा उलटा गेड़ा, आपणी लट्ठ आप गढ़ांयदा। शाह सुल्तानां मुक्के झेड़ा, सीस ताज ना कोए वखांयदा। ना कोई वसे नगर खेड़ा, सच ग्राँ ना कोए सुहांयदा। धरत मात दा खुल्हा वेहड़ा, जुग जुग आप करांयदा। जन भगतां बन्न्हणहारा बेड़ा, खेवट खेटा रूप वटांयदा। कलिजुग अन्तिम लाए उखेड़ा, चारों कुंट हलांयदा। करे कराए हक नबेड़ा, गुर सतिगुर वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगांयदा। जागणहार एक गुरदेव, दूसर अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। पारब्रह्म अलक्ख अभेव, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। हरिजन लगाए साची सेव, आप आपणा नाम समझाईआ। जो जन गाए रसना जेहव, जागरत जोत करे रुशनाईआ। कौस्तक मणीआ लाए थेव, तिलक ललाटी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन

मेला हरि गोबिन्द, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। मेटणहारा सगली चिन्द, चिंता चिखा दए गंवाईआ। अबिनाशी करता गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर आप अख्वाईआ। अमृत भरया सागर सिन्ध, भर प्याला जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाला वड वड्याईआ। दीन दयाल दर्द दु:ख भय भञ्जणा, एका रंग समाया। जन भगतां नेत्र पाए नाम अञ्जणा, अज्ञान अन्धेर मिटाया। दो जहानी साचा सज्जणा, लोकमात वेखण आया। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, दुरमति मैल गंवाया। गढ़ हँकारी भाण्डा भज्जणा, भाण्डा भरम भउ आप भन्नाया। शब्द नगारे साचे वज्जणा, तन मन्दिर खेल कराया। अमृत आत्म पी पी रज्जणा, हँस काग आप बणाया। जगत वसूरे सगले लथ्थणा, रोग सोग दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साची सेवा लाया। हरिजन साची सेवा लग्ग, हरि हरि रसना नाउँ ध्यांअदा। मेल मिलावा सूरे सरबग, घर साचा वेख वखांयदा। जगत बुझाए लग्गी अग्ग, अमृत आत्म मेघ बरसांयदा। दरस दखाए उप्पर शाह रग, नौ दुआरे पन्ध चुकांयदा। हँस बणाए बगला कग, सोहँ हँसा मोती चोग चुगांयदा। नाम प्याला प्याए साची मदि, दिवस रैण खुमार जणांयदा। धुन वजाए अनहद नद, रागी राग आप अलांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों कढु, आप आपणा मेल मिलांयदा। पंज विकारा देवे वढु, नाम खण्डा हथ्थ उठांयदा। करे प्रकाश अन्धेरी खड्ड, नूर नुराना दीप जगांयदा। दिवस रैण लडाए लड्ड, दस्म दुआरी वेख वखांयदा। इक्क जणाए निरबाण पद, परमानंद आप जणांयदा। सच दुआरे आप सद्द, हरिजन साचे वेख वखांयदा। कलिजुग जूठा झूठा भार रिहा लद, वेले अन्त ना कोए उठांयदा। संगी साथी जाण छड्ड, साचा पल्लू ना कोए फड़ांयदा। अन्तिम वेला अन्तिम आई हद्द, ब्रह्मा विष्न शिव सर्ब कुरलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप उठांयदा। हरिजन साचा जागया, जगावणहार आप करतार। मन उपजे इक्क बैरागया, एका शब्द सच्ची लिव तार। मेल मिलावा मोहण माध्या, घर मेला मीत मुरार। लेखा जाणे आदि जुगादया, जुगा जुगन्तर पावे सार। हरिजन फड़ फड़ बाहों आपे काढया, अग्नी अग्ग ल्ए उभार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहार आप निरँकार। वेखणहार पुरख अकाला, दूसर संग ना कोए जणांयदा। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाला, लोकमात वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल निराला, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। शब्द बणाए इक्क दलाला, पंज तत्त ना गुर वखांयदा। काया वसे सच सच्ची धर्मसाला, सच सिँघासण सोभा पांयदा। दीपक जोती एका बाला, प्रकाश प्रकाश आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन नेत्र पेख्या, परम

पुरख करतार। पिछली मिटे लिखी रेख्या, अग्गे लिखणहार निरँकार। लेखा जाणे दर दरवेश्या, दर दर बणे आप भिखार। आपे सुत्ता बाशक सेजया, सांगोपांग लए हुलार। आपे ब्रह्मा लिखे वेदया, गुण दाता वड भण्डार। आपे शंकर वेखे खुल्ले केसया, जटा जूट अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल विच संसार। हरिसंगत वडियाई धन्न, हरि साचे मात बणाईआ। हरिसंगत वडियाई धन्न, लोकमात मात रुशनाईआ। हरिसंगत वडियाई धन्न, हरि साचे सच मन भाईआ। हरिसंगत वडियाई धन्न, हरि रागी राग सुणाईआ। हरिसंगत वडियाई धन्न, गुरसिख तेरी छप्परी छन्न छुहाईआ। हरिसंगत वडियाई धन्न, हरि नाम करी कुड़माईआ। हरिसंगत वडियाई धन्न, हरि हिरदे रहे वसाईआ। हरिसंगत वडियाई धन्न, घर साचे चढ़े चन्न, सुक्के रुक्खड़े हरे कराईआ। एका बेड़ा देवे बन्न, नाम चप्पू इक्क लगाईआ। हरिसंगत तेरा कहिणा मन्न, अग्गे अग्गा दए वधाईआ। अन्धेर घोर विकारे देवे डंन, किशना शुक्ला बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संगत कोलों मंग वर, गुरसिख तेरी झोली पाईआ। हरिसंगत तेरी उत्तम ज़ात, हरि सतिगुर आप बणांयदा। हरिसंगत तेरे हथ्थ सच्ची दात, गुर सतिगुर मंग मंगांयदा। हरिसंगत तेरी इक्क प्रभात, दिवस रैण ना कोए वखांयदा। हरिसंगत तेरा साचा नात, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ांयदा। हरिसंगत तेरी आत्म खाट, हरि साचा आसण लांयदा। हरिसंगत चढ़ाए औखे घाट, गुरसिख साचे पार करांयदा। अग्गे रक्खे नेड़े वाट, दु:ख सुख विच रूप वटांयदा। पूरा करे पिछला घाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची भिच्छया झोली पांयदा। वेखणहार हरि ब्रह्मण्ड, घट घट अंदर फोल फुलांयदा। त्रैगुण माया वण्डी वण्ड, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त नाता जोड़ जुड़ांयदा। लेखा जाणे जेरज अंड, आप आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म कर्म आपणे हथ्थ रखांयदा। पंज तत्त नाता काया मन्दिर, मन मति बुध विच टिकाईआ। जोत जगाए अंदरे अंदर, दिस किसे ना आईआ। बैठा रहे अन्धेरी कंदर, आप आपणा मुख छुपाईआ। आपे कुक्खी लाया जंदर, आपे दए खुल्हाईआ। सर्ब जीआं हरि साचा बख्शंदड़, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। जीव जंत जग भागां मंदड़, भावी भाग विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पूत सपूता झोली पाईआ। पूत सपूता सुत दुलारा, घर साचे सच सुहाया। दस दस मास दए आधारा, आप आपणी दया कमाया। पवण स्वासी इक्क सहारा, रसना जिह्वा आप चलाया। सो पुरख निरँजण खेल न्यारा, हँ ब्रह्म झोली आप भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जगत सन्तान हरि भगवान, आपणा लेखा दए लिखाया।

दोए हथ्थ चरन गुर सेव, दुःख रोग रहिण ना पाईआ। नेत्र दरस अलक्ख अभेव, चिंता सोग मिटाईआ। रसना गाउणा साची जिह्व, सोहँ शब्द सहिज सुखदाईआ। काया लग्गे साचा मेव, पत डाली वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हथ्थो हथ्थ साची वस्त फड़ाईआ। एका हथ्थ हरिसंगत रंग, दूजे भिच्छया झोली पांयदा। दोए जोड़ मंगे मंग, अंग संग आप अख्वांयदा। लेखा जाणे काची वंग, रत्न अमोलक हीरा आप बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे साचा वर, जगत रोग आप गवांयदा। हरिसंगत सच दुआर, आत्म अन्तर रही ध्याईआ। रोग सोग चिंत निवार दुःख दलिद्र दए गंवाईआ। मात पुत्त भरे भण्डार, कुक्खी कुक्ख सुहाईआ। जो जन मंगे शब्द आधार, शब्द अनादि धुंन सुणाईआ। जो जन मंगे दरस अपार, रातीं सुत्तयां दरस दिखाईआ। जो जन मांगे चरन प्यार, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का लाईआ। जो जन मांगे सचखण्ड दुआर, सचखण्ड निवासी दए वखाईआ। जो जन मांगे लक्ख चुरासी पार किनार, आवण जावण फंद कटाईआ। जो जन मांगे निर्मल जोत उज्यार, घर घर विच दीप जगाईआ। जो जन मांगे अमृत ठांडी ठार, भर प्याला जाम प्याईआ। जो जन मांगे नानक गुर ठांडा दरबार, नानक दर्शन दए कराईआ। जो जन मांगे गोबिन्द घोड़ अस्वार, नीले वाला नीली धारों पार वखाईआ। जो जन मांगे हरिसंगत प्यार, गुरसिख नाता जोड़ जुड़ाईआ। जो जन मांगे तन हँकार, मन का मणका दए भवाईआ। जो जन मांगे जूठ झूठ श्रंगार, कूड़ कुड़यारा वेस वखाईआ। जो जन मंगे हरि साचा कन्त भतार, आत्म सेजा दए मिलाईआ। हरिसंगत तेरा दुःख दर्द दए निवार, जो जन आए चल सरनाईआ। गुरसिख वसदा रहे सदा दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। लेखे लग्गा पुरख नार, बिरध बाल जवान माता कुक्ख एका रंग रंगाईआ। आपे उदर पावे सार, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। वडभागी हरि पाया दुआर, सतिगुर पूरा विछड़ कदे ना जाईआ। अन्तिम वेले होए सहार, आप आपणी गोद उठाईआ। सचखण्ड दुआरे देवे वाड़, जोती जोत आप मिलाईआ। घड़ी सुहञ्जणी सच दिहाढ़, घर पाया बेपरवाहीआ। खुशी कराए बहत्तर नाड़, बन्दी बन्द आप कटाईआ। ग़रीब निमाणे जाए तार, आप आपणे गले लगाईआ। गुरमुख तेरा सच प्यार, लक्ख करोड़ी कीमत कोए ना पाईआ। हरिसंगत तेरा सच भण्डार, लोकमात वरते वरतावे पुरख अबिनाशी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीआं जंतां दुःखड़े हर, घर घर विच सुख उपजाईआ।

३२४ ०६

* २३ फग्गण २०१६ बिक्रमी हरबंस सिंघ दे घर पिण्ड ठीकरी छन्ना ज़िला करनाल *

निरगुण रूप एकँकार, अकल कला वड वड्याईआ। निरगुण जोत नूर उज्यार, पुरख अबिनाशी भेव ना राईआ। पुरख अकाला खेल अपार, खेलणहारा बेपरवाहीआ। वसणहारा सच दुआर, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। एका राग सच्ची धुन्कार, शब्द अनादी नाद अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा नाउँ रखाईआ। निरगुण दाता हरि मेहरवान, आदि जुगादि समांयदा। इक्क इकल्ला खेल महान, खेलणहारा दिस ना आंयदा। तख्त निवासी श्री भगवान, सच सिँघासण आसण लांयदा। सचखण्ड दुआरा इक्क मकान, थिर घर आपे वेख वखांयदा। आदि निरँजण जोत महान, सो पुरख निरँजण आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा वेख वखांयदा। एकँकारा खेल अपारा, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। शाहो भूप वड सिक्दारा, तख्त ताज आप हंढाईआ। हुक्मी हुक्म कर पसारा, हुक्म हुक्मी आप चलाईआ। अलक्ख अगोचर खेल न्यारा, बोध अगाध वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर निवासा पुरख अबिनाशा मंडल रास आप रचाईआ। मंडल रास पुरख सुल्तान, हरि साचा सच रचांयदा। आपे देवे धुर फ़रमाण, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला दीन दयाला, आप आपणे रंग समांयदा। रंग रंगीला हरि करतार, घर साचे सोभा पाईआ। रूप रंग ना कोए सके विचार, दिस किसे ना आईआ। सति सरूपी साची धार, सति सतिवादी आप चलाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी कार कराईआ। नाद तूरत इक्क धुन्कार, हरि शब्दी शब्द सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसाए सच महल्ला बैठा रहे इक्क इकल्ला, दूसर कोए ना संग रखाईआ। इक्क इकल्ला खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण मीत मुरारा, सगला संग रखांयदा। एकँकारा करे प्यारा, आप आपणा मेल मिलांयदा। आदि निरँजण हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगांयदा। श्री भगवान बन्ने धारा, आप आपणी बणत बणांयदा। अबिनाशी करता अंदर बाहरा, गुप्त ज़ाहरा खेल खिलांयदा। पारब्रह्म प्रभ बण सिक्दारा, साचा दर आप सुहांयदा। सचखण्ड थिर घर ठांडा दरबारा, आप आपणा आसण लांयदा। दर दरवेश बणे चोबदारा, घर साचे साची सेव कमांयदा। खड़ग खण्डा ना कोई कटारा, शस्त्र बस्त्र ना कोए वखांयदा। पंज तत्त ना कोए आकारा, त्रैगुण मेल ना कोए मिलांयदा। रवि ससि ना कोए सतारा, ज़िमीं अस्मान ना बणत बणांयदा। मंडल

मंडप ना कोए अखाड़ा, गोपी काहन ना कोए नचांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए उज्यारा, चारे मुख ना कोए सालांयदा। करोड़ तेतीस ना कोए सहारा, सुरपति राजा इंद ना रूप वटांयदा। गुर पीर ना कोए अवतारा, साध सन्त ना कोए वखांयदा। मात पित ना कोए संसारा, भैण भइया ना वेख वखांयदा। महल्ल अटल ना कोए मुनारा, मन्दिर गुरूदुआर ना कोए उपांयदा। सत्त सरोवर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत ना वेख वखांयदा। ना कोई पुरख ना कोई नारा, नारी कन्त ना कोए हंढांयदा। सचखण्ड निवासी एकँकारा, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित भेव ना आंयदा। अजूनी रहित पुरख अकाल, एका रंग समाया। आपे चले अवल्लड़ी चाल, वेद कतेब भेव ना राया। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, दर दरवाज़ा आप खुल्ह्याया। चरन भिखार बणाए काल महांकाला, दीन दयाल नाउँ धराया। आपणा दीपक आपे बाल, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा, आप आपणा खेल खलाया। सचखण्ड दुआरे साची धार, सो पुरख निरँजण आप चलांयदा। हरि पुरख निरँजण पावे सार, आप आपणी गणत गणांयदा। एकँकारा दए आधार, इच्छया भिच्छया आप वखांयदा। आदि निरँजण सांझा यार, दीपक दीप आप जगांयदा। पुरख अबिनाशी हो त्यार, आप आपणा वेस वटांयदा। श्री भगवान बोल जैकार, आप आपणा नाअरा लांयदा। पारब्रह्म खोल्ह किवाड़, रूप अनूप आप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप वड्यांअदा। दर घर साचा हरि सुहञ्जणा, एका रंग समाया। पुरख अकाला आपे बणया आपणा सज्जणा, आप आपणा संग रखाया। ना घड़या ना भज्जणा, मूर्त अकाल वेस वटाया। आदि जुगादी आपणी आपे रक्खे लज्जणा, आप आपणा रूप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे आपणा वर, आपणी झोली आप भराया। आपे बणे दर भिखारी, शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। आपे करे सच सिक्दारी, आपे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आपे निरगुण जोत कर उज्यारी, आपे नूर नूर विच टिकाईआ। आपे बणे वड भण्डारी, आपणी दात आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मेल मिलाईआ। आपे मेल मिलंदड़ा, नारी कन्त भतार। आपे हरि हरि सेज सुहंदड़ा, थिर घर बैठ सच्चे दरबार। आपे आपणा रस भोग बलास करंदड़ा, निरगुण निरगुण कर प्यार। आपे सुत दुलारा उपजंदड़ा, आप आपणी किरपा धार। आपे धुर फ़रमाणा हुक्म सुनंदड़ा, पूत सपूता कर कर ख़बरदार। लोआं पुरीआं रचन रचन्दड़ा, ब्रह्मण्ड खण्ड महल्ल उसार। त्रैगुण माया हथ्थ वखंदड़ा, घाड़न घड़े अपर अपार। निराकार साकार रूप आप वटंदड़ा, विष्न रूप अपर अपार। अमृत नाभी आप सुहंदड़ा, आपे खिड़े सच्ची

गुलज़ार। आपे पंखड़ी मुख वखंदड़ा, आपे अंदरों आए बाहर। आपे ब्रह्मा नाउँ रखंदड़ा, पारब्रह्म खेल अपार। आपे सुन अगम्म रहंदड़ा, आपे वसे धूंआँधार। आपे शंकर जोत जगंदड़ा, आपणे रंग रवे करतार। शब्द दाता इक्क वखंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी धार। शब्द दाता बेपरवाह, निरगुण आपणा सुत उपजांयदा। सचखण्ड दुआरे देवे सच सलाह, साचा हुक्मी हुक्म सुणांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव सेवा दए लगा, सेवक सेवा सच करांयदा। एका अक्खर दए पढ़ा, सो पुरख निरँजण नज़री आंयदा। तख्त ताज इक्क वखा, धुर दरबारा आप सुहांयदा। राजन राज बेपरवाह, पारब्रह्म आपणा रूप वटांयदा। तिन्नां मेला सहिज सुभा, त्रैगुण साचा रंग रंगांयदा। लक्ख चुरासी रचन रचा, एका मति तत्त वखांयदा। पंज तत्त मेल मिला, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश झोली पांयदा। मन मति बुध विच टिका, निरगुण आपणा रूप छुपांयदा। घर विच घर दए सुहा, घर आपणा बंक बणांयदा। निरगुण दीपक इक्क टिका, जोत निरँजण डगमगांयदा। शब्द अनादी धुन उपजा, अनहद ताल वजांयदा। सर सरोवर इक्क वखा, अमृत झिरना आप झिरांयदा। आत्म सेजा डेरा ला, ब्रह्म पारब्रह्म अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी रचना रच, आपे अंदर वड़या सच्च, काया माटी भाण्डा कच्च आप वखांयदा। काया माटी कर त्यार, नौ दर खोल्ह खुल्हाईआ। पंचम पंच कर प्यार, पंचम नाद धुन सुणाईआ। पंचम मेला विच संसार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार अंग लगाईआ। पंचम राज जोग सिक्दार, पंचम लेखा बेपरवाहीआ। पंचम वेखे बंक दुआर, डूँग्घी भँवरी फोल फुलाईआ। पंचम तोड़े गढ़् हँकार, पंचम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। बणे विचोला आप निरँकार, शब्द शब्दी रूप वटाईआ। आसा तृष्ना करे प्यार, हउमे हंगता रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी अंदर वड़, निरगुण बैठा मुख छुपाईआ। लक्ख चुरासी अंदर वड़या, हरि साचा दिस ना आंयदा। आपणे पौड़े आपे चढ़या, महल्ल अटल आप सुहांयदा। आपणा घाड़न आपे घड़या, आपे भन्न वखांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़या, अक्खर वक्खर आप जणांयदा। अग्नी हवन कदे ना सड़या, तत्व तत्त ना कोए रखांयदा। ना जन्मे ना कदे मरया, आवण जावण खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म आपणा रूप दरसांयदा। ब्रह्म ब्रह्म हरि खेल न्यारा, दीपक दीआ आप जगाईआ। अंदर वड़ पुरख करतारा, घट बैठा आसण लाईआ। लक्ख चुरासी पावे सारा, भुल्ल रहे ना राईआ। लोकमात खेल अपारा, शब्द अनादी नाद वजाईआ। भगतन देवे इक्क आधारा, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। दरस दखाए अगम्म अपारा, नेत्र लोचण नैण इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ उपजाईआ। जुग

जुग नाउँ हरि निरँकार, जन भगतां आप सुणांयदा। सन्तन मीता विच संसार, सच समग्री झोली पांयदा। गुरमुख अतीता ठांडे दरबार, घर साचे आप वड्यांअदा। गुरसिख पतित पुनीता करे करनेहार, पतित पापी आप तरांयदा। देवे नाम अनडीठा अगम्म अपार, अक्खर वक्खर आप पढ़ांयदा। मिट्ठा करे कौड़ा रीठा आप निरँकार, जिस जन आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। भगतन अंदर वसया, परम पुरख करतार। सन्तन मेटे अन्धेरी मस्सया, निरगुण जोत कर उज्यार। गुरमुखां दुआरे फिरे नस्सया, जुगा जुगन्तर साची कार। गुरसिख मार्ग एका दस्सया, मेल मिलाए कन्त भतार। तीर निराला एका कसया, बज़र कपाटी देवे पाड़। त्रैगुण माया मूल ना डस्सया, जिस जन मिल्या मीत मुरार। जगत विकारा चरनां हेठां झस्सया, नेड़ ना आए लोभ मोह हँकार। करे प्रकाश कोटन रव सस्या, दीपक दीआ कर उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लए मात अवतार। हरि अवतारा खेल अपारा, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। नित नवित खेल न्यारा विच संसारा, हरि साचा आप करांयदा। भगत उधारा दुष्ट सँघारा, साख्यात रूप वटांयदा। नाम आधारा बोल जैकारा, हरिजन साचे आप उठांयदा। तेज़ कटारा मारे धारा, अगम्म अपारा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। वेस अवल्ला इक्क इकल्ला, हरि हरि आप करांयदा। आदि जुगादी अछल अछला, दिस किसे ना आंयदा। हरिभगतन जोती शब्दी रला, जोती जोत जोत जगांयदा। सच सिँघासण आत्म मल्ला, एका सेजा आप वछांयदा। वसणहारा जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फोल फुलांयदा। गुरमुख फड़ाए आपणा पल्ला, दो जहान ना कोए छुडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस अपारा हरि सुल्तान, जुग जुग आप करांयदा। भगतन देवे ब्रह्म ज्ञान, आत्म अन्तर बूझ बुझांयदा। सन्तन देवे सच निशान, सच निशाना इक्क झुलांयदा। गुरमुख बणाए चतुर सुघड़ स्याण, चातरक तृखा आप बुझांयदा। गुरसिखां देवे इक्क ज्ञान, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। सतिजुग साचे हो प्रधान, रूप अनूप आप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। एका गुर एका वेस, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। एका दर इक्क दरवेश, एका आपणी अलक्ख जगाईआ। एका नर इक्क नरेश, नर नरायण वड वड्याईआ। एका आदि जुगादी रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। एका लिखणहार लेख, एका एका एक वड्याईआ। एका हुक्म जणाई ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, हुक्मी हुक्म सर्ब फिराईआ। एका एक रिहा वेख, लक्ख चुरासी आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रंग रंगाईआ। सतिजुग रंग सति सतिवाद,

३२८ ०६

सो पुरख निरँजण आप रंगाया। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपे अन्त आपे आदि, मध आपणा खेल खलाया। आपे शब्द अनादी बोध अगाध, ब्रह्मा वेद ना कोए अलाया। आपे देवणहारा साची दाद, गुर अवतार रूप वटाया। आपे लोआं पुरीआं वजाए नाद, शब्द जैकारा आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप दरसाया। जुग जुग रूप अपार, निरगुण सरगुण आप वखांयदा। लोकमात लै अवतार, आप आपणा नाउँ धरांयदा। सतिजुग साचे साची कार, करनी करता आप करांयदा। भगतां देवे भगती आधार, भगत भगवन मेल मिलांयदा। रंग अनमुल्ला एका चाढ़, काया चोली आप रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। रचन रचावणहार गोपाल, दूसर अवर ना कोए वखाईआ। आपे जाणे आपणी चाल, सतिजुग त्रेता वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, राम रूप आप वटाईआ। आपे रूप होए काल, काल रूप आप रखाईआ। आपे रावण देवे घाल, तीर कमान आप चलाईआ। हरिजन साचे लए पछाण, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। सर सरोवर तोड़े माण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाईआ। सतिजुग त्रेता पार किनारा, हरि द्वापर वेख वखांयदा। कान्हा कृष्ना मीत मुरारा, कँवल नैण नैण मटकांयदा। पंचम मीता सच आधार, पंचम वेख वखांयदा। द्रोपद सुत पाए सारा, दर्योध्न मेट मिटांयदा। रथ रथवाही शाह सवारा, ख़ाली हथ्थ सृष्ट सबाई वखांयदा। अठारां अध्याए बोल जैकारा, गीता ज्ञान इक्क दृढ़ांयदा। आपे जाणे आर पार किनारा, आपे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी कार करांयदा। द्वापर उतरया आपणे घाट, हरि साचे पार उतारया। कलिजुग विछाई आपणी खाट, लोकमात आसण ला ल्या। कूड़ कुड़यारा खोल्ह हाट, जूठी झूठी वस्त विच टिका ल्या। खेले खेल बाज़ीगर नाट, घर घर आपणा स्वांग वरता ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा हुक्म जणा ल्या। धुर फ़रमाणा हरि भगवान, जुग जुग आप सुणांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कर प्रधान, अन्तिम मेल मिलांयदा। कलिजुग वेखे जगत निशान, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पांयदा। सत्तां दीपां इक्क ज्ञान, एका हुक्म सुणांयदा। माया ममता मदि पीण खाण, काया चोली रंग रंगांयदा। हरि का नाम ना सके कोई पछाण, अन्ध अन्धेर एका छांयदा। रवि ससि ना चढ़े कोई बिबाण, जोत निरँजण ना कोई जगांयदा। साची सक्खी ना मेला होए काहन, नाम बंसरी ना कोई वजांयदा। सीता सुरती ना मिले राम, शब्द हाणी ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस धरांयदा। वेस अवल्ला राणी अल्ला, हरि साचे आप वटाया। बिस्मिल रूप इक्क इकल्ला, निरगुण बैठा खेल खलाया। कलमा अमाम एका घल्ला,

सच हदीस इक्क सुणाया। मूसा ईसा फड़ाया पल्ला, आप आपणे लड़ बंधाया। फर्श ख़ाकी इक्क मसला, लोकमात हेठ विछाया। अर्श कुर्श डेरा मला, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कायनात वेख वखाया। कायनात मार झाकी, परवरदिगार वेख वखांयदा। बेऐब बणया आप साकी, भर प्याला जाम प्यांअदा। आपे चढ़या आपणे राकी, साचा अश्व आप दौड़ांयदा। लेखा कोई ना जाणे बन्दा ख़ाकी, ख़ाकी ख़ाक सर्ब वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। हुक्मे अंदर हरि वरतारा, हरि वड्डा वड्याईआ। शब्द सरूपी खेल अपारा, कलमा नबी आप जणाईआ। लेखा जाणे मुहम्मदी यारा, दर घर साचा फोल फुलाईआ। हक हकीकत खेल अपारा, लाशरीक वेख वखाईआ। मुकामे हक एका नाअरा, ऐनलहक आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा कलमा आप पढ़ाईआ। आपणा कलमा जगत हदीश, नूर इलाही आप अलांयदा। आपे गाए बतीस तीस, तीस बतीस आप सुणांयदा। आपणा पीसण आपे पीस, आप आपणी सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप अपणा भेव खुलांयदा। आपणा भेव आपे खोल, हरि साचा सच जणांयदा। एका कलमा आपणा बोल, चौदां लोक आप जणांयदा। अर्श फर्श कुर्श वज्जे ढोल, हरि मृदंगा हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधांयदा। अञ्जील कुराना बन्नी धार, लोकमात कुड़माईआ। शरअ शरीअत कर विचार, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। राजा रईयत करे ख्वार, धीरज धीर ना कोई धराईआ। जगत हकीकत जाए हार, शाह हकीर रो रो नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। वेस वटाए हरि निरँकारा, निरगुण निरगुण नाउँ उपजांयदा। नानक मेला विच संसारा, पंज तत्त चोला आप हंढांयदा। नाम सत बोल जैकारा, चार वरनां आप समझांयदा। ऊँचां नीचां पार किनारा, राउ रंकां एका रंग रंगांयदा। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, आप आपणे गले लगांयदा। हँकारीआं तोड़े गढ़ हँकारा, उच्चे टिल्ले फोल फुलांयदा। साचा वणज कराए इक्क वणजारा, चौदां हट्टां माण गवांयदा। चौदां तबकां करे किनारा, कोट कोटन विच समांयदा। मेल मिलावा इक्क इकँकारा, पुरख अकाल इक्क वखांयदा। वरनां बरनां वसे बाहरा, ज़ात पात ना कोई जणांयदा। हरि का शब्द इक्क निराकारा, साचा गुर इक्क अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द शब्दी मेल मिलांयदा। शब्द गुर सच्चा सूरबीर, नानक पंज तत्त सालाहीआ। जन भगतां कढ्ढे हउमे पीड़, आप आपणी दया कमाईआ। सन्तन मारे साचा तीर, तीर निराला इक्क चलाईआ। गुरमुख चोटी चाढ़े अखीर, अद्धविचकार ना कोई वड्याईआ। गुरसिखां कट्टे

३३१

०६

जगत जंजीर, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। वड दाता हरि पीरन पीर, गुर गुर एका रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द दए वड्याईआ। शब्द गुर वड बलवाना, आदि जुगादि समाया। खेले खेल दो जहाना, लोकमात वेस वटाया। नानक गाए नाम तराना, तार सितार निरँकार वजाया। लक्ख चुरासी बन्ने गाना, घर घर सगन मनाया। साची सखी मिले कान्हा, मंडल रास आप रखाया। दरगाह साची देवे माणा, जिस जन निउँ निउँ सीस झुकाया। एका राग सुणाए गाना, अनहद साची सेवा लाया। देवणहारा धुर फ़रमाणा, शब्द शब्दी दए जणाया। कलिजुग अन्तिम होए वैराना, थिर कोए रहिण ना पाया। जीव जंत नाता जुड़े पंज शैताना, काम क्रोध होए हलकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। निरगुण नानक बोल जैकारा, लक्ख चुरासी गया सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम होए धूंआँधारा, झूठी रैण अन्धेरी छाईआ। मात पुत करे प्यारा, भैण भईआ सेज हंढाईआ। ना कोई दिसे मीत मुरारा, साक सैण ना कोई अख्वाईआ। सृष्ट सबाई होए विभचारा, हरि हरि कन्त ना कोई हंढाईआ। साध सन्त हरि भगवन्त ना करे कोई प्यारा, तन वेसवा श्रंगार कराईआ। गुर दर मन्दिर होए ख्वारा, धीआं भैणां राह तकाईआ। पुरख अबिनाशी पावे सारा, निरगुण वेखे थाउँ थाँईंआ। ब्रह्मण्ड खण्ड दए हुलारा, लोआं पुरीआं आप मिलाईआ। लोकमात लए अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। शब्द डंका हरि अपारा, शाह सुल्तानां दए जगाईआ। जन भगतां करे इक्क प्यारा, आप आपणा मेल मिलाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लेखा चुक्के समुंद सागर जगत छाहीआ। करे खेल अगम्म अपारा, एकँकार भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखणहारा, एका एक अख्वांयदा। खेले खेल विच संसारा, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। एका जोती दस अवतारा, गुर गोबिन्द मुख सालांहयदा। पूत सपूता बण दुलारा, घर साचे सोभा पांयदा। पुरख अकाल इक्क जैकारा, रसना जिह्वा एका गांयदा। आपे जाणे आर पार किनारा, आप आपणा भेव खुल्लांयदा। लेखा लिख धुर संसारा, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। कलिजुग अन्तिम आए वारा, धूंआँधार सर्ब वखांयदा। प्रगट होए हरि निरँकारा, निहकलंका नाउँ धरांयदा। सम्बल नगरी धाम न्यारा, पुरख अबिनाशी आसण लांयदा। एका शब्द बोल जैकारा, हँ ब्रह्म मेल मिलांयदा। नाम खण्डा तेज कटारा, दो जहानां आप चमकांयदा। राज राजाना करे ख्वारा, सीस ताज ना कोई हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखणहार सूरा सरबंग, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, एकँकारा वड वड्याईआ। प्रगट होए विच जहान, दो जहाना वेख वखाईआ। देवणहारा धुर फ़रमाण, शब्दी ढोला एका गाईआ।

लक्ख चुरासी तोड़े माण, जगत अभिमाण रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ।

❋ पहली चेत २०१७ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ❋

सो पुरख निरँजण वड मेहरबान, आदि जुगादि समांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल महान, निरगुण आपणा आप करांयदा। एकँकारा वड बलवान, भेव कोए ना पांयदा। आदि निरँजण जोत महान, नूर नुराना डगमगांयदा। अबिनाशी करता नौजवान, बिरध बाल ना कोई वखांयदा। श्री भगवान सच निशान, सति सतिवादी आप झुलांयदा। पारब्रह्म वसे सच मकान, सच सिँघासण आसण लांयदा। सचखण्ड दुआरा इक्क मकान, छप्पर छन्न ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकार, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर दिस किसे ना आंयदा। सो पुरख निरँजण खेल महाना, हरि पुरख निरँजण आप करांयदा। एकँकारा गुण निधाना, जोत निरँजण डगमगांयदा। पुरख अबिनाशी इक्क तराना, श्री भगवान आपे गांयदा। पारब्रह्म खेले खेल महाना, आप आपणी रचन रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल अपार, करे कराए हरि निरँकार, दिस किसे ना आंयदा। खेल अपारा हरि निरँकारा, आपणा आप करांयदा। वसणहारा धाम न्यारा, निरगुण आपणा घर वखांयदा। सचखण्ड वसाए बंक दुआरा, बंक दुआरी नाउँ धरांयदा। रवि ससि ना कोए सतारा, सूरज चन्न ना कोए चढ़ांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए सहारा, जेरज अंड उत्भुज सेत्ज ना रचन रचांयदा। जंगल जूह ना कोए उजाड़ पहाड़ा, डूँग्घी कंदर ना फेरी पांयदा। वसणहारा धाम न्यारा, निरगुण दीवा बाती कमलापाती आपणा आप जगांयदा। साचे मन्दिर खोल्ह ताकी, आप आपणा मुख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल खिलांयदा। आदि जुगादी खेल अवल्ला, हरि साचा आप करांयदा। बैठा रहे इक्क इकल्ला, अकल कल नाउँ धरांयदा। वसणहारा जल थला, घट घट आपणा रूप वटांयदा। आपणे दीपक आपे बला, अज्ञान अन्धेर ना कोए वखांयदा। शब्द जोती आपे रला, सच संदेश सच तराना आपणा आप सुणांयदा। आदि जुगादी रहे हमेश, दूसर रंग ना कोए वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा खेल तमाशा शाहो शाबाशा, आपणा आप करांयदा। सचखण्ड निवासी हरि भगवान, आपणी खेल खलाईआ। सो पुरख निरँजण मार ध्यान, हरि पुरख निरँजण दए समझाईआ। एकँकारा कर पछाण, आदि

निरँजण लए उठाईआ। श्री भगवान देवे दान, अबिनाशी करता झोली पाईआ। पारब्रह्म मंगे एका दान, दर दरवेश आपणी अलक्ख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाईआ। रंग रंगीला हरि करतार, साचा रंग रंगांयदा। लालण लाल अगम्म अपार, कंचन रूप आप वटांयदा। सूहा वेस दर दरवेश अलक्ख अलक्खणा बोल जैकार, आप आपणी अलक्ख जगांयदा। चिट्टी धार खेल अपार, रूप अनूप आप दरसांयदा। पीला बस्त्र कर श्रंगार, सच सिँघासण आसण सोभा पांयदा। नीली धार खेल अपार, ख़ालक ख़लक रूप वटांयदा। काला रंग सूरा सरबंग, आदि जुगादि जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। आपणे मन्दिर आपे लँघ, आप आपणा वेख वखांयदा। निशान चाढ़े सत्त रंग, सति सतिवादी आप झुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त रंग निशाना कर त्यार, सचखण्ड दुआरे देवे चाढ़, दूसर दर ना कोए वखांयदा। सत्त रंग निशाना कर त्यार, सचखण्ड निवासी खुशी मनाईआ। आपे वेखे वेखणहार, दूसर दिस किसे ना आईआ। निरगुण दाता निरगुण भिखारी निरगुण आपणी हथ्थीं देवे चाढ़, निरगुण आपे वेख वखाईआ। निरगुण शाह निरगुण घोड़ अस्वार, निरगुण आपणा आप दुड़ाईआ। निरगुण खण्डा तेज कटार तीर कमान निरगुण आपणा नाउँ धराईआ। निरगुण शाह निरगुण सुल्तान, निरगुण राज निरगुण राजान, शाहो भूप वड वड्याईआ। देवे हुक्म धुर फ़रमाण, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे वेख वखाईआ। घर साचा हरि सुहञ्जणा, पुरख अबिनाशी आप सुहांयदा। जगे जोत आदि निरँजणा, दीवा बाती ना कोई टिकांयदा। आपणा बणया आपे सज्जणा, साक सैण नाउँ धरांयदा। आपणा पर्दा आपे कज्जना, आपणा पर्दा हथ्थ उठांयदा। ना घड़या ना भज्जणा, आदि जुगादी नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड सच महल्ला आप वसाए इक्क इकल्ला, सच सिँघासण आसण लांयदा। सच सिँघासण पुरख करतारा, आपणा आसण लाईआ। देवे धुर फ़रमाणा अगम्म अपारा, आप आपणा हुक्म जणाईआ। ना कोई दिसे चोबदारा, दुआरपाल ना कोई टिकाईआ। ना कोई निउँ निउँ करे निमस्कारा, चरन सीस ना कोए रखाईआ। ना कोई बोले कूके नाअरा, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। इक्क इकल्ला परवरदिगारा, बेऐब खुदाई बैठा जल्वा नूर इलाहीआ। राम रूप निराकारा, निरगुण आपणा खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा तख्त आपे रिहा सुहाईआ। तख्त सुहावा हरि सुल्तान, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। सत्त रंग झुलाए इक्क निशान, सचखण्ड दुआरे आप वखांयदा। दूजा देवे धुर फ़रमाण, सो पुरख निरँजण हुक्म जणांयदा। हरि पुरख निरँजण कर ध्यान, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। एकँकारा सुणे ला ला कान, आप आपणा राह तकांयदा। आदि निरँजण वड बलवान,

सेवक सेवा मुख करांयदा। अबिनाशी करता बण राजान, आप आपणे सीस टिकांयदा। श्री भगवान खेल दरबान, दर दरवेस अलक्ख जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मुख पंचम ताज धुरदरगाही साचा राज, सचखण्ड दुआरे आप बणांयदा। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा, तख्त ताज इक्क सुहाईआ। पंचम मुख पंच उज्यारा, पंचम वेखे बेपरवाहीआ। दिस ना आए विच संसारा, नेत्र नैण दरस कोए ना पाईआ। आदि जुगादी खेल न्यारा, आप आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे तख्त सोभावन्त खेले खेल श्री भगवन्त, आप आपणा हुक्म चलाईआ। आपणी इच्छया धुर फ़रमाणा, साचा हुक्म जणांयदा। सचखण्ड निवासी हरि हरि राणा, आप आपणा तख्त सुहांयदा। आपे जाणे आपणा भाणा, भेव कोई ना पांयदा। आपे पहरे आपणा बाणा, रूप अनूप आप वटांयदा। आपे शाह आपे सुल्ताना, शहनशाह आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म चलांयदा। आपणा हुक्म सच दरबार, हरि साचा सच जणाईआ। सो पुरख निरँजण करया ख़बरदार, हरि पुरख निरँजण लए उठाईआ। एकँकारा कर ध्यान, आदि निरँजण मेल मिलाईआ। श्री भगवान वेखे इक्क निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। पुरख अबिनाशी पंचम मुख ताज सुहान, तख्त ताज दए वड्याईआ। ना कोई दीसे दर दरबान, आपणी इच्छया आपे लए प्रगटाईआ। सुत दुलारा नौजवान, हरि शब्दी शब्द उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक्क समझाईआ। सुत दुलार कर त्यार, सचखण्ड दुआरे आप बहाया। निरगुण करे सच प्यार, सच साचा मेल मिलाया। तेरा रूप अपर अपार, मेरा बंस नाउँ उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी धार तेरा तेरे विच रखाया। शब्द दुलारे हो त्यार, हरि साचा सच जणांयदा। लोआं पुरीआं कर त्यार, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचांयदा। विष्न देणा इक्क अधार, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। कँवली कँवला कर उज्यार, ब्रह्मा सुत सुत अख्वांयदा। अबिनाशी अचुत्त खेल अपार, आपणी रुत्त आप सुहांयदा। आपे अंदर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आप अख्वांयदा। आपे ब्रह्मा कर पसार, चारे मुख मुख सालांहयदा। आपे देवे शंकर धार, आप आपणा रंग रंगांयदा। आपे तिन्नां वसया बाहर, भेव कोए ना पांयदा। त्रैगुण माया भर भण्डार, साची वस्त नाल रलांयदा। पंज तत्त करे उज्यार, पंज पंचीस वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी इक्क आधार, घड़ भाण्डे आप रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी घाड़ण घड़या, ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगाईआ। पुरख अबिनाशी अंदर वड़या, दिस किसे ना आईआ। मन मति दुआर किसे ना फड़या, बुध मतवाली रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजून रहित

पुरख अकाल, खेले खेल दीन दयाल, आप आपणी दया कमाईआ। दीन दयाला हरि गोपाला, अकल कला वरतांयदा। लक्ख चुरासी खेल निराला, आप आपणी रचन रचांयदा। त्रैगुण माया पा जंजाला, शब्द डोरी नाल बंधांयदा। खेले खेल हरि निराला, ख़ालक ख़लक विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वण्ड वण्डांयदा। आपणी वण्ड हरि हरि वण्डे, भेव कोई ना पांयदा। लोआं पुरीआं खेले खेल ब्रह्मण्ड खण्ड खण्डे, खण्ड खण्ड आपणा आप करांयदा। आपे जाणे जेरज अंडे, उत्भुज सेत्ज मेल मिलांयदा। आपे जाणे आर पार कन्ढे, अद्धविचकारे डेरा लांयदा। आपे चढ़े साचे डण्डे, आपणा डण्डा आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वण्ड करे करतार, सतिजुग त्रेता द्वापर विच संसार, आपणा मार्ग आपे लांयदा। वण्डे वण्ड पुरख अकाला, भेव कोई ना पांयदा। ब्रह्मे दस्से राह सुखाला, चारे वेदां मुख सुणांयदा। सेवा लाए काल महांकाला, धर्म राए रंग रंगांयदा। चित्रगुप्त फल वेखे लग्गा डाल़ा, लाड़ी मौत तोड़ तुड़ांयदा। लेखा जाणे शाह कंगाला, ना भेव कोई छुपांयदा। जन भगतां पाए शब्द सरूपी तन साची माला, अजपा जाप आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस अवल्ला पुरख अकाल, आपणा आप कराईआ। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। शब्द वजाए ताल, लोआं पुरीआं आप सुणाईआ। भगतन देवे साची घाल, नाम भगती झोली पाईआ। लोकमात आए बण बण दलाल, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। पंज तत्त माटी भाग लगाए काया खाल, आप आपणा मुख छुपाईआ। वसणहारा सच सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड दुआरा दर दरवाज़ा इक्क खुल़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। सतिजुग नाउँ रक्ख करतार, लोकमात वेस वटांयदा। हरिजन साचे जाए तार, आप आपणा मेल मिलांयदा। भगतन देवे नाम आधार, एका वस्त झोली पांयदा। लेखा जाणे वार अठार, अठ्ठ दस फोल फुलांयदा। सतिजुग तेरा पार किनार, त्रेता आपणे रंग रंगांयदा। लंका तोड़ गढ़ हँकार, राम रामा वेख वखांयदा। सति सवाणी कर प्यार, सीता सुरती इक्क प्रनांयदा। ग़रीब निमाणे जाए तार, आप आपणे गले लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेल खलंदड़ा हरि भगवन्त, भेव कोए ना पांयदा। लेखा जाणे साचे सन्त, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। गुरमुख मिलावा नारी कन्त, आप आपणे अंग लगांयदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जांयदा। जुग जुग महिमा गणत अगणत, वेद कतेब भेव कोए ना पांयदा। आपे आदि आपे अन्त, मध आपणा डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल विच संसार, जोती नूर नूर उज्यार, नूरो नूर

३३६ ०६

डगमगांयदा। त्रेता त्रिया पार किनारा, त्रैगुण भेव भिन्न ना राईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, आप आपणा रूप वटाईआ। आपे बणे जगत लिखारा, पुराण अठारां आपे गाईआ। आपे कान्हा कृष्ना मीत मुरारा, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण रूप अनूप आप वटाईआ। आपे गीता ज्ञान दए सहारा, अठारां अध्याए रसना गाईआ। आपे पंचम करे प्यारा, भगत भगवन्त वेख वखाईआ। आपे रथ रथवाही खेले खेल अपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, द्वापर तेरा अंक अंक समाईआ। द्वापर अंक अंक हरि लेखा, दिस किसे ना आंयदा। वेद व्यासे नेत्र पेखा, रसना जिह्वा गांयदा। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केसा, सो पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा। जन भगत दुआरे बणे दर दरवेशा, जुग जुग आपणी अलख जगांयदा। भेव ना पाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा, करोड़ तेतीसा राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला, दीन दयाला आपणा नाउँ धरांयदा। दीन दयाला खेल अपार, आपणा आप कराईआ। कलिजुग रूप अपर अपार, नौ खण्ड पृथ्मी दहि दिशा चारे कूट आप चढ़ाईआ। पंचम पंच पंच प्यार, पंचम वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा खेल अपार, हरि साचा आप खिलाईआ। कलिजुग खेल सच महल्ला, हरि साचा सच करांयदा। चौदां तबकां एका नर वखाए राणी अल्ला, आप आपणा नाउँ जणांयदा। कलमा अमाम फड़ाया पल्ला, नबी रसूलां आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार बंधांयदा। कलमा अमाम नूर इलाही, जल्वा जल्वा हरि भगवानयां। खेले खेल बेपरवाही, दो जहानां इक्क निशानयां। जूठी झूठी करे शाही, शाह सुल्तान वड बलवानयां। नाता तोड़े भैणां भाई, सज्जण मीत ना कोए अख्वानयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगानयां। ईसा मूसा पार किनार, संग मुहम्मद करे कुड़माईआ। वेखणहारा चार यारा, चौदां तबक दए हलाईआ। हक हकीकत खोल्ह किवाड़ा, बंक दुआरा इक्क जणाईआ। धुर दरगाही साचा लाड़ा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। पावे सार ज़िमीं अस्मान नौ खण्ड पृथ्मी वेखे इक्क अखाड़ा, लोआं पुरीआं फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगाईआ। रंग अमोला हरि निरँकार, आपणा आप रंगांयदा। पंज तत्त चोला कर त्यार, निरगुण निरगुण विच मिलांयदा। सरगुण बोला बोल जैकार, नानक नाम धरांयदा। नाम सति वणज वपार, चार वरन आप करांयदा। एका नाम नाम करतार, करनी करता आप दृढ़ांयदा। धरनी धरत धवल दए सहार, साचा बेड़ा आप चलांयदा। रसना गाए सोहँ धार, सो पुरख निरँजण इक्क मनांयदा। हँ ब्रह्म करे प्यार, दूई द्वैत ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। नानक मेला पुरख अकाल, घर साचे सच

मिलांयदा। वेखणहारा दीपक मस्तक साचा थाल, गगन गगनंतर आप सुहांयदा। सर सरोवर आत्म अन्तर भरया ताल, सच भण्डारा आप वरतांयदा। एका वस्त नाम धन सच्चा धन माल, सच ख़ज़ीना हथ्थ फड़ांयदा। चरन भिखार कराए काल महांकाल, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। दिवस रैण करे प्रितपाल, प्रितपालक भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका हुक्म सुणांयदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, हरि साचा सच जणांयदा। नानक सतिगुर सुणे सच ध्याना, आप आपणा वेख वखांयदा। मातलोक कूड़ो कूड़ होए प्रधाना, सच सुच ना कोए जणांयदा। ना कोई दिसे शाह सुल्ताना, तख्त ताज ना कोए सुहांयदा। मिले ना मेल श्री भगवाना, चार वरन सर्ब कुरलांयदा। नाम ना देवे कोई दाना, भिखक भिच्छया झोली कोए ना पांयदा। कवण रूप खेले खेल गुण निधाना, नानक निरगुण आप जणांयदा। निहकलंकी पहरे बाणा, लिख्या लेख ना कोए मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोती शब्द संदेश, लेखा जाणे दस दस्मेश, दर दरवेश वेस वटांयदा। दस दस्मेश दर दरबारा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। पुरख अकाल बणाया सुत दुलारा, आप आपणा नाउँ वटाईआ। पंचम मीता पंच प्यारा, पंचम पंच करे जणाईआ। पंचम नाद धुन जैकारा, पंचम शब्द शब्द सुणाईआ। पंचम खड़ग खण्डा कटारा, पंचम चण्ड प्रचण्ड चमकाईआ। पंचम अमृत देवे ठंडी ठारा, सांतक सति सति वरताईआ। पंचम सीस बन्न्हे दस्तारा, मुख आपणे मुख सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। साचा लेखा हरि भगवान, आपणा आप चलांयदा। गुर गोबिन्द सिँघ नौजवान, सूरबीर आप उठांयदा। साचा खण्डा सच कृपाल, सच भगौती श्री हथ्थ फड़ांयदा। सच वखाए इक्क निशान, सचखण्ड दुआरा आप जणांयदा। शाह सुल्तान राज राजान, सर्ब सीस झुकान, सीस ताज ना कोए टिकांयदा। पुरख अकाल एका गान, दूजा नाम ना कोए वड्यांअदा। एका चमके साचा भान, कोटन कोटि शमां आप जलांयदा। एका राग वजाए तान, दूजा ताल ना कोए अल्हांयदा। एका देवे धुर फ़रमाण, साचा हुक्मी हुक्म सुणांयदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान, पुरख अबिनाशी आपणा रूप वटांयदा। लेखा जाणे सीता राम, गणपति गणेश ब्रह्मा विष्न महेष, आपणी झोली पांयदा। रूप वटाए कृष्ना काहन, वेद व्यासा ध्यान लगांयदा। ईसा मूसा कर परवान, संग मुहम्मद देवे इक्क ईमान, शरअ शरीअत इक्क जणांयदा। नानक गोबिन्द सच निशान, आप झुलाए दो जहान, वाली दो जहानां वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड मृगेश आपणा वेस वटांयदा। वड मृगेश नर नरेश, दस दस्मेश आप उठाईआ। लेखा जाणे रिखी केश, केशव आपणा रूप वटाईआ। आदि जुगादी रिहा वेख, मुख

मुखड़ा आप छुपाईआ। आपे लिखणहारा लेख, लिख्या लेख दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाईआ। गुरू गोबिन्द सिँघ गोबिन्द सूरा, हरि गोबिन्द रंग रंगाया। शब्द नाद अनादी तूरा, तुरीआ राग आप सुणाया। आसा मनसा करे पूरा, पतिपरमेश्वर नाउँ धराया। आदि जुगादी हाज़र हज़ूरा, ना मरे ना जाया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, सच सुच्च नाता आप बंधाया। बख्शणहारा साची धूढ़ा, मस्तक टिक्का आप लगाया। काया चोली रंगण रंग चढ़ाए गूढ़ा, उतर कदे ना जाया। मूर्ख मूढ़ बणाए चतुर सुघड़ , आप आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप जणाया। गोबिन्द सुण हरि फ़रमाणा, हरि हरि विच आप मिलांयदा। तेरा रूप श्री भगवाना, मैं मेरी मेट मिटांयदा। तेरा नाद तेरा तराना, सुर ताल इक्क वजांयदा। तेरा तेरी हथ्थीं बध्धा गानां, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। तेरा उठाए सच निशानां, दो जहानां आप झुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपे आप मुकांयदा। लेखा हरि मुकावणा, भेव किसे ना राया। चारे वेदां मुख शर्मावणा, ब्रह्मा गा गा थक्का रसना जिह्वा हो हलकाया। शास्त्र सिमरत लेखा लेख ना किसे जणावणा, लेखा लिख ना सके कोई राया। अठारां अध्याए गीता एका रूप दरसावणा, पुरख अकाल वड वड्याआ। अञ्जील कुरानां ढोला गावना, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहया। खाणी बाणी इक्क समझावणा, प्रभ साचे पद तराया। हरि का भेव किसे ना पावणा, गुर गोबिन्द आप समझाया। तेरा साचा डंक वजावणा, शब्दी तेरा नाउँ रखाया। तेरा नगर खेड़ा फेर वसावणा, सम्बल नाउँ रखाया। अन्त विछोड़ा आप करावणा, पंज तत्त नाता तोड़ तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुल्हाया। भेव खुलंदड़ा हरि भगवान, एका एकंकारया। खेले खेल दो जहान, लोकमात लए अवतारया। देवणहारा साचा दान, साची वस्त इक्क वखा रिहा। हरिजन मेला गोपी काहन, घर बंसरी नाम वजा रिहा। सीता सुरती मेला राम, जगत बनवास आप कटा रिहा। नानक नाम देवे सतिनाम, नाम सति इक्क समझा रिहा। गुर गोबिन्द तेरा नगर ग्राम, साढे तिन्न हथ्थ वेख वखा रिहा। तेरी माटी काया चाम, हड्ड मास नाड़ी रत्त, गुरमुखां रंग रंगा रिहा। तेरा चार वरन पकड़े दाम, दामनगीर आप बणा रिहा। कलिजुग मिटे अन्धेरी शाम, तेरा नूर चन्द चढ़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझा रिहा। गुर गोबिन्द सिँघ सिँघ कर परवाना, पारब्रह्म मेल मिलाया। तूं दाता हउँ बीना दाना, सेवक सेवा सच कमाया। आदि जुगादी तेरा निशाना, गुर पीर रहे झुलाया। बिन तेरे दिसे ना कोए टिकाणा, पुरख अकाल इक्क वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा

३३८ ०६

लेखा गया समझाया। साचा लेखा गढ़ी चमकौर, हरि पुरख निरँजण आप जणांयदा। सो पुरख निरँजण वेखे अन्ध घोर, चारों कुंट अन्धेरा छांयदा। एकँकारा पकड़णहारा ठग्ग चोर, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। आदि निरँजण जोती नूर देवे जोड़, नूरो नूर डगमगांयदा। श्री भगवान चढ़े घोड़, नीला नीली धार वेख वखांयदा। अबिनाशी करता आपे दौड़, आप आपणा सीस टिकांयदा। पारब्रह्म प्रभ लाया पौड़, लोकमात वेख वखांयदा। गुरमुखां बुझाए लग्गी औड़, अमृत मेघ आप बरसांयदा। लक्ख चुरासी रीठा वेखे मिट्ठा कौड़, जो घड़या भन्न वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला एका रंग रंगाए गुरू गुर चेला, सीस ताज आपणी हथ्थीं आप पहनांयदा। चेला गुर एका धार, एका रंग रंगाया। आपणे सीस रक्ख दस्तार, गुरमुख साचे सच वड्याआ। अन्तिम कलिजुग पावे सार, लहिणा लहिणा दए चुकाया। लेखा करे सच दरबार, पुरख अकाल विच रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रूप वटाया। रूप वटंदड़ा हरि भगवाना, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। खेले खेल नौजवाना, ना मरे ना जाईआ। शब्द अनादी धुर फ़रमाणा, आदि जुगादि सुणाईआ। शाहो भूप वड राज राजाना, शहनशाह आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ रखाईआ। निहकलंक नाउँ रक्ख, हरि आपणा आप प्रगटाया। वीह सौ बिक्रमी हो प्रतक्ख, जोती जामा वेस वटाया। वीह सौ इक्क लेखा लिख, दूई द्वैती मेट मिटाया। तीजे नेत्र आपे पेख, हरिजन साचे लए जगाया। चौथे पद लाए मेख, पंचम मेला सहिज सुभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाया। वीह सौ बिक्रमी हो त्यार, लोकमात करी रुशनाईआ। सोलां बरस छुप्या रिहा विच संसार, आप आपणा पर्दा आपे पाईआ। तीर्थ तट्टां आप विचार, गुरदर मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले वेख वखाईआ। साधां सन्तां जाणे सार, अंदर मन्दिर खोज खुजाईआ। डूँघी भँवरी वेखे अन्ध अँध्यार, सुखमन नाड़ी आपणे हथ्थ रखाईआ। कोए ना करे कलिजुग पार, सर सरोवर कोए ना नहावण जाईआ। काग रले कागां डार, हँस हँसमुक्ख चोग ना कोए चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा पर्दा दए उठाईआ। सम्मत सतारां पहली चेत्र, हरि साचे सच जणाईआ। पुरख अबिनाशी लोकमात आया साचे खेत्र, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाईआ। राष्ट्रपती खोल्हणा नेत्र, हरि साचा रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीस ताज इक्क टिकाईआ। राष्ट्रपती उठ नादान, राज इंदर प्रशादि हरि साचा आप सुणांयदा। प्रगट होया वाली दो जहान, भरम भुलेखा सर्ब मिटांयदा।

राज ताज तख्त सर्ब मिट जाण, शाह सुल्तान ना कोए अख्वांयदा। लोकमात ना रहिणा किसे दा माण, माण अभिमानी आप मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा शब्द संदेशा आप सुणांयदा। राष्ट्रपती उठ उठ जाग, पंडत नहर नाल रलावणा। माझे देस लग्गा भाग, प्रभ साचे सच लिखावणा। नौ खण्ड पृथ्मी लग्गणी आग, अग्गे हो ना किसे बचावणा। शाह सुल्ताना उडदे दिसदे काग, साची चोग ना किसे चुगावणा। बिन हरि पकड़े ना कोए वाग, देस प्रदेसां आप सुणावणा। जो जन सरनाई जाए लाग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा देवे वर, सोया लोकमात उठावणा। नेत्र नैण लैणा खोल्ह, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी रिहा बोल, शब्द अगम्मी आप सुणाईआ। सत्तां दीपां वज्जे ढोल, सत्त रंग निशाना दए गवाहीआ। तोलण आया पूरे तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। जीआं जंतां खेले होली होल, धरनी हौला पार कराईआ। पूरा करन आया कौल, गोबिन्द कीता भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह सुल्तानां रिहा जगाईआ। राष्ट्रपति मार ध्यान, पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा। सत्त रंग चढ़ाया इक्क निशान, शब्द खण्डा हथ्थ चमकांयदा। आपे बणे शाह सुल्तान, राज राजान हरि अख्वांयदा। सचखण्ड दुआरा इक्क मकान, पारब्रह्म आप सुहांयदा। देवणहारा धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी बाण लगांयदा। कलिजुग अन्तिम चुकणी काण, थिर कोए रहिण ना पांयदा। शाह सुल्तान होण हैरान, बीआबान राह वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नौ खण्ड पृथ्मी आप उठांयदा। राष्ट्रपति हरि साचा पकड़ उठांयदा। कलिजुग वेला अन्तिम आया, माझे देस जोत जगांयदा। सम्बल नगरी धाम सुहाया, गुर गोबिद शब्द चलांयदा। एका डंका नाम वजाया, पुरख अकाल खेल खिलांयदा। दिस किसे ना आया, सालस आपणा रूप वटांयदा। निरगुण सरगुण बण के धाया, काल महांकाल चरनां हेठ दबांयदा। आप आपणा भार वखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, साचा लेखा लेख लखांयदा। लेखा लिखणहार गोपाल, भुल्ल रहे ना राईआ। फल ना दिसे किसे डाल, पत झड़ कलिजुग आप कराईआ। सिर ते कूके सभ दे काल, ना सके कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सृष्ट सबाई दए समझाईआ। साचा लेखा धुर फ़रमाणा, दर दुआरे आंयदा। सम्मत सतारां अस्सू तिन्न दिवस होए सुहाणा, हरि मेला मेल मिलांयदा। कलिजुग हथ्थीं बन्न्हे गाना, घर घर सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका लेखा दस्से हरि, दिवस दिहाढ़ा आप जणांयदा। अस्सू तिन्न मिलणा मेल, राष्ट्रपति दए जणाईआ। खेले खेल गुरू गुर चेल, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। कट्टणहारा धर्म

राए दी जेल, आवण जावण फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अस्सू तिन्न आउणा दुआर, हरि मेला मेल मिलन्नयां। आपणे नेत्र वेख लैणा संसार, कवण दुआर चढ़े सच चन्नयां। तोड़णहारा गढ़ हँकार, आदि जुगादी फिरे भन्नया। शब्द सरूपी मारे मार, जो अड़या सो अग्गे डन्नयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उच्ची कूके करे पुकार, जो घड़या सो भन्नयां। हरिजन आउँणा दर दरवाज़ा, हरि साचा सच समझांयदा। पुरख अबिनाशी ग़रीब निवाज़ा ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। कलिजुग अन्तिम रचया काजा, साचा खण्डा इक्क चमकांयदा। ना कोई दिसे राजन राजा, तख्त ताज सर्ब मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा देवे भेज, जोती नूर वखाए तेज, लेखा जाणे जिउँ शमस तबरेज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम धार, आपणे हथ्थ रक्खी करतार, दूसर हथ्थ ना किसे रखांयदा। पन्थ ख़ालसा गुर गुर धार, हरि सतिगुर शब्द जणाईआ। नानक निरगुण कर प्यार, चार वरन करे कुड़माईआ। गोबिन्द मीता मीत मुरार, सिँघ सिँघ रूप वटाईआ। सच वखाए इक्क दुआर, ऊँच नीच भेव ना राईआ। सर अमृत अमृत सति भण्डार, सर सरोवर इक्क वखाईआ। नहा नहा थक्के जीव गंवार, काग हँस ना रूप वटाईआ। जो जन सतिगुर पूरे करे प्यार, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। काया तोड़े गढ़ हँकार, गुरू ग्रन्थ दए गवाहीआ। गुर अर्जन बणया मीत मुरार, घर साचे वेख वखाईआ। गोबिन्द लेखा अपर अपार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलिजुग अन्तिम आई वार, प्रभ साचा खेल खलाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यार, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। अंदर वड़या गुर करतार, गुर शब्दी नाउँ धराईआ। पुरख अकाल मीत मुरार, साचा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, एका आपणा रूप दरसाईआ। गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा, अनुभव प्रकाश समाया। शब्दी देवे नादी तूरा, नाद अनादी राग सुणाया। आसा मनसा करनहारा पूरा, पूर्ब लहिणा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ रखाया। निहकलंक सतिगुर हरि हरि, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। सच प्याला नाम देवे भर भर, आपणी हथ्थीं जाम उठाईआ। दरस दिखाए अंदर वड़ वड़, कल्गी तोड़ा सीस टिकाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डे घड़ घड़, घड़न भन्नणहार आप हो जाईआ। उच्चे पौड़े आपे चढ़ चढ़, आपणा मन्दिर आप सुहाईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़ पढ़, वाह वा गुरू फ़तह गजाईआ। आपणी अग्नी आपे सड़ सड़, आपणा हवन आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भरम भुलेखा दए कढ्ढाईआ। प्रगट होया हरि मेहरबाना, गुरमुखां आप जणांयदा। शब्द

वखाए तीर निशाना, तीर तीरां आप चलांयदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, पारब्रह्म नाउँ धरांयदा। हरिजन मेला दो जहानां, गुरसिख सिँघ आप समांयदा। आवण जावण चुक्के काणा, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। उठणा जाग हरि हरि आया, हरि सच्चा सच वड्याईआ। वरन बरन हरि मेट मिटाया, चार वरन इक्क सरनाईआ। चौथा जुग दए गवाहया, कलिजुग अन्त रहिण ना पाईआ। साची सिख्या सिख दए समझाया, बिन हरि ना अवर सरनाईआ। कागद कलम ना लिखे राया, लेख अलेखा बेपरवाहीआ। पंडत पांधे भेव ना आया, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा मुक्ट साचा ताज, सिर रक्खे आप ग़रीब निवाज़, दूसर सीस ना किसे टिकाईआ। सोहे सीस ताज जगदीश, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। लेखा चुक्कणा बीस इकीस, हरि साचा आप चुकाईआ। लहिणा जाणे राग छतीस, रसना जिह्वा रही गाईआ। अञ्जील कुराना वेखे हदीस, कलमा नबी कवण पढ़ाईआ। वेद पुराण पीसण रहे पीस, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वण्ड वण्डाईआ। शाह सुल्तानां ख़ाली ख़ीस, त्रैगुण बैठे मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सतिजुग साची धार आप बंधाईआ। सतिजुग साची धार चलावणी, पारब्रह्म गुर करतार। कलिजुग तेरी रीत मिटावणी, नाता तोड़ सर्ब संसार। जन भगतां पूरन करे भावणी, देवे दरस अगम्म अपार। नेड़ ना आए कामन कामनी, मारे तत्त पंच हँकार। दरगाह साची देवे ज़ामनी, इक्क इकल्ला एकँकार। मिटे रैण अन्धेरी शामनी, साचा चन्द करे उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग लावे आप निरँकार। सतिजुग साचा हरि लगावणा, निरगुण जोती जामा धार। कलिजुग कूड़ा पन्ध मुकावणा, चौथे जुग आई हार। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावणा, राउ रंकां कर ख्वार। गुरमुख साचे आप जगावणा, आप आपणी किरपा धार। एका सोहँ अक्खर पढ़ावणा, चार वरनां कर प्यार। दूई द्वैती पन्ध मुकावणा, आसा तृष्ना देवे मार। काया चोली रंग रंगावणा, रंगणहार आप करतार। भैणां भाई ऊँच नीच आप बणावणा, नाता जोड़ विच संसार। शब्द खण्डा हत्थ उठावणा, तिक्खी रक्खे दोवें धार। हरि का हुक्म ना किसे मिटावणा, ना कोई मेटे मेटणहार। जो घड़या सो भन्न वखावणा, कल कल्की लए अवतार। अमाम मैहन्दी नाम धरावणा, मुस्लिम नूर इलाही लए उभार। कलमा आपणा आप पढ़ावणा, हक हकीकत वेख वचार। लाशरीक आप अख्वावणा, खुदी खुदाई देवे मार। अज़मत आपणे हत्थ रखावणा, गफ्लत करे ना परवरदिगार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बेड़ा करे त्यार। कलिजुग अन्तिम मुक्कणा, हरि साचा आप मुकाईआ। हरि का भाणा कदे

ना रुकणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। हरया बूटा सारा सुक्कणा, बिन सतिगुर पूरे अमृत जाम ना कोई प्याईआ। सिँघ शेर लोकमात नहीं लुकणा, प्रगट होया बेपरवाहीआ। पातशाहां दे घर जा जा बुक्कणा, सम्मत सत्तरां दए गवाहीआ। सिर ताज रक्ख दो जहानां आदि शक्ति तेरे दुआरे झुकणा, जोत निरँजण ल्ए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम दए खपाईआ। कलिजुग अन्तिम आप खपाउणा, हरि साचा खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी मेट मिटाउणा, बचया कोए रहिण ना पांयदा। जल थल महीअल फेरा पाउणा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वेख वखांयदा। शाह सुल्तानां साची सेज किसे ना मिले सौणा, तख्त ताज ना कोए हंढांयदा। घर घर गुर दर मन्दिर मस्जिद किसे ना मिले गाउणा, राग ताल ना कोए वजांयदा। छत्र झुलाए ना कोए पाउणा, उँणंजा पवण आपणे चरनां हेठ दबांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा पन्ध मुकांयदा। कलिजुग तेरा पन्ध मुकाउणा, हरि साचे साची जोत जगाईआ। लोआं पुरीआं आप उठाउणा, सत्तां दीपां दए उठाईआ। लोआं पुरीआं फेरा पाउणा, करोड़ तेतीसा दए जगाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव फड़ हलाउणा, शब्द हुलारा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा जुग जुग खेले खेल तमाशा, पृथ्मी आकाशा रूप वटाईआ। रूप वटाया हरि निरँकार, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग कूड़ा करे पार, झूठी धार आप वहांयदा। नाल रलाए मुहम्मदी यार, चार यारी वेख वखांयदा। अल्ला राणी नेत्र रो रो करे पुकार, पीर दस्तगीर धीर ना कोए धरांयदा। शरअ शरीअत आई आई हार, चौदां तबकां हरि साचा वेख वखांयदा। चौधवीं सदी करे ख्वार, ख़ालक ख़लक रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। पंडत पांधे रोवण मार धा, अठसठ तीर्थ रहे कुरलाईआ। बिन हरि साचे दिसे ना कोई मलाह, साध सन्त जूठे झूठे बैठे धूंणीआँ ताईआ। सिर सिर बैठे पा पा सुआह, तन सुआह ना कोई कराईआ। रसना जिह्वा रहे गा, गावणहारा दिस ना आईआ। एका राम ना मिल्या किसे थाँ, राम बैठा मुख छुपाईआ। हथ्थीं पुन्न करौंदे गां, जीव आत्मा पुन्न ना किसे कराईआ। घर घर पूजदे पितर माँ, आपणा पित्तर ना कोई मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा घर घर, पंडत पांधे फोल फुलाईआ। पंडत पांधे तिलक लिलाट लगाया, औखी घाट आप चढ़ाईआ। तीर्थ ताट जगत नुहाया, आपणा नावण ना कोई वखाईआ। घर घर मेघ सावण बरसाया, अमृत झिरना ना कोई झिराईआ। मन हँकारी रावण किसे ना ढाया, चार कुंट पई लड़ाईआ। सीता सुरती राम दामन ना किसे फड़ाया, बनबास रही कुरलाईआ। कलिजुग निहकलंक प्रभ एको आया, दूसर कोए रहिण ना पाईआ।

कलिजुग तेरा वेस मुकावणा, ना दिसे अन्धेरी रात। सतिजुग साचा चन्न चढ़ावणा, पुरख अबिनाशी वेखे मार झात। साचा तख्त इक्क सुहावणा, बैठा इक्क इकांत। एका राग नौ खण्ड सत्तां दीपां लोआं पुरीआं गावणा, सोहँ शब्द आए आवाज़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखण आया तेरा समाज। कलिजुग तेरा समाज वेखणा, चार कुंट नैण उग्घाड़। पुरख अबिनाशी लिखणा लेखणा, ब्रह्मा शिव विष्न नाल ल्याया कर त्यार। अन्तिम किसे ना नेत्र पेखणा, चारों कुंट होया अँध्यार। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केसना, सर्ब जीआं दा सांझा यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, कल खेल अगम्म अपार। कलिजुग नाता तुटणा, तोड़े पुरख अगम्म। तीर निराला शब्द छुट्टणा, लक्ख चुरासी लाहे चम्म। सिँघ शेर कलिजुग झल्ल विच बुक्कणा, आपे मारे आपणी मार। नौ खण्ड पृथमी अंदर वड़ किसे ना लुकणा, करे खेल अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरे सीस पाए तेरी छार। कलिजुग छार मनमुख छाही, मस्तक टिक्का आप लगांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार दए गवाही, साचा संग निभांयदा। आसा तृष्ना फड़ फड़ बाहीं, लड़ नाल लड़ बंधांयदा। गोबिन्द बूटा एका पुट्टया काही, कलिजुग तेरी जड़ उखड़ांयदा। मेल मिलाया छींबे नाई, झीवर जट्ट अंग लगांयदा। कलिजुग अन्तिम फड़ फड़ तारे बाहीं, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा बूटा देवे पुट्ट, शौह दरयाए देवे सुट्ट, आर पार ना कोए वखांयदा। कलिजुग अन्तिम उतरना पार, चौथा जुग लए अंगड़ाईआ। सतिजुग साची बन्ने धार, सतिगुर दाता बेपरवाहीआ। सो पुरख निरँजण हो त्यार, हरि पुरख निरँजण मेल मिलाईआ। एकँकारा कर प्यार, आदि निरँजण लए उठाईआ। अबिनाशी करता साचा यार, श्री भगवान रंग रंगाईआ। पारब्रह्म रूप अपार, हँ ब्रह्म करे कुड़माईआ। जोत सरूपी जामा धार, शब्द शब्दी डंक वजाईआ। लुकया रिहा विच संसार, अठसठ साल ना मुख वखाईआ। बावन अक्खरी कर त्यार, आप आपणे विच टिकाईआ। पैंतीस अक्खरी जीवां जंतां दए अधार, सतारां अक्खर निरगुण आपणे विच समाया। सतारवां अक्खर उग्घड़या अपर अपार, सम्मत सतारां वेख वखाईआ। प्रगट होया हरि निरँकार, बवन्जा बावन आपणा रूप वटाईआ। बावन बावन दए आधार, हरि गोबिन्द तेरी वड्याईआ। मंगी मंग ढह ढह दुआर, लक्ख चुरासी कवण पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बारां साल खेल तमाश, सति सतिवादी आपणी वण्ड वण्डाईआ। सतिजुग साचा हरि हरि लाउणा, आप आपणा खेल खिलांयदा। कलिजुग अन्तिम मेट मिटाउणा, चारों कुंट आप मिटांयदा। गुरमुख साचे आप उठाउँणा, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। लक्ख चुरासी

फंद कटाउँणा, लक्ख चुरासी आपणी झोली पांयदा। परमानंद इक्क वखाउणा, निजानंद आप दिसांयदा। अमृत जाम जाम प्याउणा, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। शब्द अनाद नाद वजाउणा, अनहद आपणा राग सुणांयदा। आत्म सेज सेज सुहाउणा, सच दुआर आप वड्यांअदा। सुरती शब्दी मेल मिलाउणा, मेल मिलावा आप करांयदा। सचखण्ड दुआरे साचा तख्त आप सुहाउणा, सच सिँघासण आसण लांयदा। सीस ताज जगदीश टिकाउणा, पंचम पंचम राज कमांयदा। लोकमात फेरा पाउणा, निहकलंका नाउँ उपांयदा। शब्द राजा इक्क जगाउँणा, दिवस रैण हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पंचम पंचम मेल मिलांयदा। साचे तख्त सच्चा पातशाह, सोहे हरि निरँकार। जुग जुग बणे जगत मलाह, गुर सतिगुर लए अवतार। लक्ख चुरासी दस्से राह, हरि मन्त्र नाम प्यार। गुरमुख साचे लए उभार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची बन्ने धार। सतिजुग साचा लावणा, परम पुरख आप करतार। बीस इकीसा नाम धरावणा, निरगुण नूर जोत उज्यार। दिल्ली दुआरे फेरा पावणा, नव खण्ड हो उज्यार। सृष्ट सबाई सीस झुकावणा, शाह सुल्तान दर दरबार। धुरदरगाही हुक्म चलावणा, लेखा जाणे ना कोई संसार। चार वरनां इक्क बणावणा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोई विचार। राउ रंक इक्क करवाणा, एका रंग रंगे करतार। तख्त ताज इक्क सुहावणा, एका दर सच्चा दरबार। स्यासत वरासत मेट मिटावणा, कलिजुग अन्तिम जाए हार। शास्त्र सिमरत पन्ध मुकावणा, वेद पुराण करन पुकार। गीता ज्ञान विच समावणा, एका अक्खर एकँकार। अञ्जील कुराना गोद बहावणा, आप आपणी गोद उठाल। खाणी बाणी रंग रंगावणा, पुरख अकाल इक्क जैकार। सोहँ शब्द इक्क सुणावणा, सो पुरख निरँजण मीत मुरार। हँ ब्रह्म नज़री आवणा, ब्रह्म रूप सर्ब संसार। तृष्ना तमा सर्ब मिटावणा, आसा आसा भरे भण्डार। खुशी ग़म ना कोई जणावणा, नेत्र रोवे ना कोई ज़ारो ज़ार। एका बस्त्र तन पहनावणा, एका करे सच शंगार। एका कज्जल नैण पवावणा, हरि हरि नाम अपर अपार। एका भोष्ण भूष्ण आप सुहावणा, रंग मजीठी चाढ़े आप निरँकार। पीआ प्रीतम इक्क प्रनावणा, एका कन्त एका नार। नेत्र नैण ना किसे उठावणा, ना दिसे कोई विभचार। घर घर मन्दिर काया गढ़ सुहावणा, निरगुण दीपक जोत कर उज्यार। अनहद ताल इक्क वजावणा, आपे गूंजे गूंजणहार। सर सरोवर इक्क नुहावणा, अमृत आत्म ठंडी ठार। दीपक दीप इक्क जगावणा, निरगुण बाती कमलापाती कर उज्यार। राष्ट्रपती ना किसे अख्वावणा, ना कोई दिसे चोबदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सत्त रंग निशाना देवे चाढ़। सतिजुग सति निशाना चाढ़णा, हरि सच सच समझाईआ। पंचम ताज सीस रखावणा, पंच प्यारे दए वड्याईआ। पंचम राज जोग कमावणा, जगत

जुगत इक्क वखाईआ। पंचम हरख सोग मिटावणा, माया ममता मोह मिटाईआ। पंचम तिन्नां लोकां पार करावणा, चौथे पौड़े आप चढ़ाईआ। पंचम जगत विजोग मिटावणा, सच संजोग बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम देवे साचा राज, नौ खण्ड पृथ्मी करे काज, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। पंचम राज जोग सुल्ताना, पंचम सच शहनशाहीआ। पंचम देवे शब्द बिबाना, पंचम चारों कुंट भवाईआ। पंचम देवे राग तराना, पंचम अनहद शब्द सुणाईआ। पंचम देवे प्रकाश कोटन भाना, रवि ससि मुख शर्माईआ। पंचम मेले साचा कान्हा, रूप अनूप आप दरसाईआ। पंचम देवे इक्क निशाना, शब्द निशाना तीर चलाईआ। पंचम बन्ने एका गानां, पुरख अबिनाशी सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग सच्चा साचा संग वखाईआ। सतिजुग साचा लावणा, लावणहार बेपरवाह। एका तागा सूत आप बणावणा, एका उनणेहार जुलाह। एका बस्त्र तन छुहावणा, एका ओढे थाउँ थाँ। एका पर्दा हरि हरि पावणा, एका पकड़णहारा बांह। एका साचा धाम सुहावणा, एका करे सच न्याँ। एका शाह सुल्तान अख्वावणा, एका निथावयां देवे थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहारा ठंडी छाँ। बख्शणहारा आप प्रभ, जुग जुग दया कमांयदा। सतिजुग साचे देवे वर, पंचम मुख सालांहयदा। एका इक्की घाड़ण घड़, सतिजुग साची सिक्खी नाउँ धरांयदा। वालों निक्की आपे कर, धारों तिक्खी आप बणांयदा। मुनी रिखी रहे डर, सन्त साध सर्ब कुरलांयदा। जीव जंत माया ममता रहे हर, हरि का नाम ना कोई ध्यांअदा। ना कोई दिसे नारी नर, नारी नर ना अंग लगांयदा। आपणी आपणी विद्या रहे पढ़, हरि का शब्द ना कोई सुणांयदा। आपणे आपणे अंदर रहे वड़, हरि मन्दिर कोए ना डेरा लांयदा। आपणी अग्नी रहे सड़, कलिजुग अग्नी ना कोए बुझांयदा। आपणी लड़ाई रहे लड़, पंज चोर ना कोए मार मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा देवे वर, साची रीती इक्क चलांयदा। सतिजुग तेरा साचा रूप, हरि साचे मात लगावणा । प्रगट होए शाहो भूप, सच सुल्तान नाम धरावणा। इक्क जैकारा चारे कूट, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ावणा। नाता तोड़े जूठ झूठ, कंचन काया गढ़ सुहावणा। हरिसंगत उप्पर आपे तुट्ठ, आप आपणे मार्ग लावणा। आप बंधाए आपणी मुट्ठ, एका तन्द नाम रखावणा, लुकया रहिण ना देवे किसे गुठ, जिस हरि हरि नाम ध्यावणा। मनमुखां हथ्थ फड़े ख़ाली ठूठ, चार कुंट दहि दिशा आप भवावणा। दर दुआरयों कढ्ढे कुट, शब्द खण्डा हथ्थ चमकावणा। सृष्ट सबाई पैणी लुट्ट, धन माल ना किसे बचावणा। कोई ना चढ़े पहाड़ी चोट, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलावणा। समेरू नेत्र रोवे हाढ़े कढ्ढे कोटन कोट, धीरज धीर ना कोए धरावणा। आदि जुगादी पारब्रह्म करता एक निर्मल जोत, जुग जुग आपणा वेस वटावणा। आपे

जाणे आपणा ओत पोत, बंस बंसा आप सुहावणा। जन भगतां खोलणहारा सोत, निज नेत्र आप खुलावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा रंग रंगावणा। सतिजुग साचा रंग, रंग रंग रंग विच समांयदा। पुरख अबिनाशी सूरा सरबंग, निरगुण सरगुण वखांयदा। गुर गोबिन्द सिँघ सूरबीर नीले घोड़े कसया तंग, नीला नीली धारों पार करांयदा। कलिजुग तेरा वेखण आवे जंग, आपणे शस्त्र आपणे चरनां हेठ दबांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी धर्म राए दे दुआरे देवे टंग, जो जन हरि हरि तों मुख भवांयदा। सिँघ संगत उपजाया विच कंग, आपणा मुक्ट आपणे सिर रखांयदा। किसे कोलों कुछ ना रिहा मंग, सर्ब जीआं दा दाता आप अख्वांयदा। आपणा मन्दिर सचखण्ड दुआरा आपे आया लँघ, लोकमात आसण लांयदा। कलिजुग जीव वेखे काची वंग, आपणे वेले आपे भन्न वखांयदा। गुरसिखां कट्टे भुक्ख नंग, लक्ख चुरासी अल्फ़ी आपणे गल हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंका जामा पांयदा।

सत्त रंग चाढ़ निशान, सृष्ट सबाई दए सुणाईआ। सिर रक्ख ताज महान, ब्रह्मे चारे मुख दए मिटाईआ। शंकर होया अन्त हैरान, बाशक तशका गलों लाहीआ। विष्नूं अग्गे आया करन ब्यान, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। करोड़ तेतीसा सर्ब कुरलाण, सुरपति राजा इंद दए दुहाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त अन्त पछताण, वेला गया हथ्थ ना आईआ। गुरसिख साचे सोहँ गान, सो मिल्या बेपरवाहीआ। हँ ब्रह्म करी पछाण, आप आपणे लए मिलाईआ। हरि भुल्ल ना जाए बण अंञाण, जुग जुग आवें वाहो दाहीआ। सेवा लाए सूरज रवि ससि भान, हुक्मी हुक्म रिहा फिराईआ। लेखा जाणे ज़िमीं अस्मान, ब्रह्मण्ड खण्ड चरना हेठ रखाईआ। जेरज अंड ना कोई निशान, उत्भुज सेत्ज दिस ना आईआ। आपे देवणहारा ब्रह्मे विष्न शिव त्रैगुण माया दान, अन्त आपणी झोली आपे लए पाईआ। ना कोई मन्दिर ना मकान, मस्जिद गुरूदुआर ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा लोकमात धर, आपणी रीती आप वखाईआ। सतिजुग साचा उठया आया चरन दुआर, अबिनाशी करता पारब्रह्म निरगुण रूप एका तुठया, भरे नाम नाम भण्डार। लोकमात ना जाए लुट्टया, नेड़ आए ना ठग्ग चोर यार। बूटा लग्गा ना जावे पुट्टया, लगावणहार आप करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपे करे आपणी कार। कार करावण आया हरि करतार, करता कीमत कोए ना पाईआ। आपणी पैज आपे रिहा संवार, जुग जुग भगतां पैज रखाईआ। चण्डी हो के चमके विच संसार, जोती जोत सेव लगाईआ। दामनी दमके

आप निरँकार, चारे कुंट करे रुशनाईआ। खड़ग खण्डा बण कटार, खण्ड ब्रह्मण्ड वेख वखाईआ। जेरज अंड दए हुलार, भेख पखण्ड दए मिटाईआ। गुरसिख करे ठंडा ठार, सीतल सीतल धार वहाईआ। एका इक्की सिक्खी कर त्यार, तेग बहादर तेरी चादर, सृष्ट सबाई उप्पर आप टिकाईआ। तेग बहादर तेरी रत्त, रत्ती रत्त रंगांयदा। तेरा रूप ब्रह्म मत, गुरसिखां विच टिकांयदा। तेरा चरन तीर्थ अठसठ, सर सरोवर इक्क नुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा लोकमात धर, साचा मार्ग एका लांयदा। चार वरन तुटणा नाता, हिन्दू मुस्लिम सिख ना कोई अख्वाईआ। पारब्रह्म करे प्रभ उत्तम जाता, ज़ात अज़ाती मेट मिटाईआ। मेटणहारा अन्धेरी राता, काली रैण रहिण ना पाईआ। एका गाए साची गाथा, गहर गम्भीर वड वड्याईआ। खेले खेल त्रिलोकी नाथा, त्रै त्रै आपणी गोद बहाईआ। सर्ब जीआं दा सगला साथा, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। सगल विसूरा हरिजन लाथा, जो जन हरि हरि दर्शन पाईआ। कोटन कोटि मस्तक तिलक लगायण लिलाटा, जोत ललाट ना कोए जगाईआ। कलिजुग अन्तिम पूरा करन आया घाटा, साचे कंडे तोल तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। वड वडियाई पुरख अकाल, दूसर ओट ना कोई जणांयदा। इक्की सिख बणाए साचे लाल, लालण लालणा रंग चढ़ांयदा। जोत अकालण सेवादार, साची सेव कमांयदा। बणी मालण धुर दरबार, फूलण हार इक्क गुंदांयदा। ख़ारी चुक्क सच्ची सरकार, लोकमात वेस वटांयदा। लेखा जाणे पुरख नार, नारी पुरख वेख वखांयदा। फड़ फड़ पाए गल विच हार, कली कली नाल गुंदांयदा। अंदर धागा देवे डार, आप आपणा नाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्की सिख बणण दरबारी, सतिजुग साची चले विहारी, करता करनी कारी आप करांयदा। इक्की सिख बणन दरबारी, हरि साचा वण्ड वण्डांयदा। साचे तख्त सोहे जोत निरँकारी, निरगुण आपणा रूप डगमगांयदा। चार चारों कुंट सेवादारी, पंज प्यारे पंचम चरन ध्यान वखांयदा। चार दोवें जोड़ करन निमस्कारी, अन्तर मन्त्र बूझ बुझांयदा। पंज त्रै मंगण बण भिखारी, अठ्ठ तत्त मेट मिटांयदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश करे ख्वारी, मन मति मूल चुकांयदा। लेखा जाणे भगत लिखारी, शब्दी धार धार विच टिकांयदा। हुक्मी हुक्म हुक्म सरकारी, शाह सुल्तानां आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका लांयदा। साचा मार्ग विच संसार, सति पुरख निरँजण आप लगाईआ। ना कोई दिसे जीव गंवार, मूर्ख मूढ़ दिस ना आईआ। ना कोई करे हाहाकार, मन मति ना कोई कुरलाईआ। ना कोई रोवे ज़ारो ज़ार, उच्ची कूके दए दुहाईआ। घर घर होवे जै जैकार, रसना जिह्वा हरि गुण गाईआ। बत्ती दन्द

३४६

०६

करन प्यार, आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। छत्ती राग करन निमस्कार, हरिजन तेरी वड वड्याईआ। ब्रह्मा विष्न शिव बणन भिखार, गुर सिख साचे तेरी सेव रहे कमाईआ। पुरख अबिनाशी देवणहार, दूजे दर ना मंगण जाईआ। जुगा जुगन्तर गुर पीर लए अवतार, आपणी सिख्या दए समझाईआ। सन्तां भरे सति भण्डार, साची वस्त एका हट्ट विकाईआ। चौदां लोकां पावणहारा सार, चौदां तबकां फोल फुलाईआ। तिन्नां लोकां वसया बाहर, सचखण्ड निवासी आप अख्वाईआ। छप्पर छन्न ना कोई सहार, महल्ल अटल आप बणाईआ। आपे होया सेवादार, जुग जुग साची सेव कमाईआ। हरिसंगत तेरा सच प्यार, सतिगुर साचा आप कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े यार, कलिजुग अन्तिम लए मिलाईआ। साचा बेड़ा कर त्यार, आपणे बेड़े लए चढ़ाईआ। आपणे सिर ते चुक्के भार, गुरमुख हौले भार रखाईआ। सिँघ मनजीता आपे आपे वार, जगदीशा राह चलाईआ। ब्रह्मा वेखे नैण उग्घाड़, सिँघ पाला आवे वाहो दाहीआ। शंकर ढह ढह करे निमस्कार, छोटे बाले वड वड्याईआ। करोड़ तेतीसा करे पुकार, सुरपति राजा इंद रहिण ना पाईआ। मन मनजीता हो उज्यार, घर साचे इक्क जैकार सुणाईआ। प्रगट होया करतार, ब्रह्मे मनवन्तर मूल चुकाईआ। साचा मन्त्र कर उज्यार, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। निहकलंक उतरया निरँकार, मात गर्भ ना वास रखाईआ। दस मास ना करया कोई प्यार, रक्त बूंद ना जोड़ जुड़ाईआ। गोद चुक्क ना दए कोई हुलार, जगत लोरी ना कोई रखाईआ। हड्ड मास नाड़ी ना कोई उधार, रत्ती रत्त ना कोई बणाईआ। निरगुण जोत कर उज्यार, आप आपणा वेस वटाईआ। शब्द गुर लै अवतार, लोकमात आया फेरा पाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यार, साढे तिन्न हथ्थ आप रचाईआ। गोबिन्दा सूरा वड बलकार, जोद्धा आपणा नाउँ धराईआ। चुरासी कलीआं तन श्रंगार, चुरासी अल्फ़ी आप हंढाईआ। आपणा हल्फ़ीआ दए ब्यान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुरमुखां लेखा जाणे धुर दरगाह श्री भगवान, आपणा लेखा आपे दए लिखाईआ। साध सन्त होए हैरान, हरि का भेव कोई ना पाईआ। अंदर वड़ वड़ सारे गाण, दिस किसे ना आईआ। जिस जन उप्पर होए आप मेहरवान, चरन दुआरे खिच लिआईआ। सचखण्ड तों आया आप भगवान, गुण निधान लोकमात वेख वखाईआ। उतर पूर्ब पच्छिम दक्खण वेखे मार ध्यान, भुल्ल रहे ना राईआ। हरिसिख गुरसिख गुरमुख हरिभगत एका पाए आपणी आण, आपणा दरस कर कर तरस, घर घर विच आप दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पहली चेत्र दए वड्याईआ। पहली चेत्र लोकमात चढ़या, सम्मत सतरां लेख लखांयदा। पुरख अबिनाशी आपणे घोड़े आपे चढ़या, आपणा आसण हेठ विछांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी एका खण्डा हथ्थ विच फड़या, ब्रह्मण्डां चरना हेठ दबांयदा। गुरसिखां लड़ आपे फड़या, इक्क दूजे नाल बहांयदा। जीव

जंत साध सन्त त्रलोक पारब्रह्म आपणा घाड़ण घड़या, ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमांयदा। चौथे घर आपे वड़या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सति पुरख निरँजण आप अख्वांयदा। सति पुरख निरँजण आया, लोकमात वज्जी वधाईआ। अलक्ख अलक्खणा अलक्ख अख्वाया, अलक्ख अगोचर वड वड्याईआ। सुंन अगम्मी पैरां हेठ छड़के आया, आप आपणा रूप वटाईआ। दस्म दुआरी गुरमुखां अंदर वड़ के आया, आप आपणा कुण्डा लाहीआ। सुखमन नाड़ी टेढी बंक आपणी हथ्थीं सिध्धी कर के आया, त्रबैणी नैणी पन्ध मुकाईआ। नौ दुआरे तज के आया, झूठा भाण्डा भउ भन्नाईआ। गुरमुख साचे काया पिण्ड आपे वाचे भाण्डे काचे आपणे दर फड़ के आया, शब्द डोरी इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका जोत करी रुशनाईआ। जोत उजाला हरि गोबिन्द, भुल्ल रहे ना राईआ। जन भगतां मेटे सगली चिन्द, घर घर दरस दिखाईआ। हरिजन बणाए आपणी बिन्द, नादी सुत उपजाईआ। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर आप अख्वाईआ। अमृत बख्शे सागर सिन्ध, भर प्याले रातीं सुत्तयां जाम प्याईआ। धर्म राए ना कढ्ढे जिंद, जो चल आए शरनाईआ। लक्ख चुरासी करे निन्द, वेले अन्त दए सज़ाईआ। हरिसंगत तेरा होए बख्शिंद, आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एकँकारा इक्क अख्वाईआ। एकँकार हरि निरँकार, एका रंग समाया। प्रगट होया विच संसार, निहकलंकी जामा पाया। शब्द गुर कर त्यार, गुर गोबिन्द नाउँ धराया। सम्बल नगरी धाम न्यार, साढे तिन्न हथ्थ आसण लाया। एका खण्डा हथ्थ फड़ सिरजणहार, नौ खण्ड पृथ्मी रिहा हिलाईआ। रवि ससि करन निमस्कार, निउँ निउँ बैठे सीस झुकाया। ब्रह्मा मंगे बण भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहया। विष्नूं रोवे ज़ारो ज़ार, वेला अन्तिम आया। रिज़क ना देवे कोई संसार, तेरा भण्डारा तेरे अग्गे सुटाया। बाशक तशका गलों लाहे शंकर हार, हथ्थ त्रसूल दिस ना आया। करोड़ तेतीसा तन ना कोई श्ंगार, अपच्छरां नाच ना कोई नचाया। गण गधंरथ कोई ना ऊँची कूके करे प्यार, साचा ताल ना कोई वजाया। साध सन्त कोई ना चढ़े उच्च मिनार, प्रभ अबिनाशी उत्तों फड़ के थल्ले लाहया। बिन गुरसिख कोए ना उतरे पार, पारब्रह्म पार करावण आप आया। हरिसंगत तेरा प्यार, दो जहानां भुल्ल ना जाया। कलिजुग अन्तिम वेख आप निरँकार, जोती जामा भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई आपणा घाड़ण आपे घड़, आपे भन्न वखाईआ। भन्नणहार पुरख समरथ, दूसर अवर ना कोए जणांयदा। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही नाउँ धरांयदा। लक्ख चुरासी देवे मथ, आपणे भाण्डे भन्न वखांयदा। आपे जाणे महिमा अकथ, कथनी कथ

ना कोए सुणांयदा। गुरमुखां अंदरे अंदर पाए नथ्थ, मन पंछी बन्नृ वखांयदा। लेखा जाणे रामा दसरथ, राम रूप आप हो आंयदा। कान्हा कृष्ना वेखे सथ, सखीआं मंगल नाच नचांयदा। उलटी गेड़णहारा लट्ठ, कलिजुग गेड़ा आप चलांयदा। पावे सार अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती फोल फुलांयदा। लोआं पुरीआं नट्ठ नट्ठ, आपणा पन्ध मुकांयदा। वसणहारा घट घट, घट घट अंदर आपणी जोत जगांयदा। दीप निराला लट लट, नूर नुराना डगमगांयदा। अनहद शब्द मारे सट्ट, ताल तलवाड़ा आप वजांयदा। भाग लगाए काया मट, जिस जन आपणी दया कमांयदा। चौदां लोक वखाए एका हट्ट, आप आपणा दर खुल्हांयदा। दूई द्वैती मेटे फट, एका रंग रंगांयदा। तन लपेटे साचा पट्ट, शब्द पल्ला हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, पुरख अकाला दीन दयाला, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहारा एकँकार, आदि जुगादि समाया। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, निहकलंकी जामा पाया। लक्ख चुरासी पावे सार, भुल्ल रहे ना राया। नौ दस ग्यारां बीस तीस खेल अपार, चार चार रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेलणहारा खेल अपार, आप आपणा भेव खुल्हाया। भेव खुल्हाए हरि भगवन्त, भुल्ल रहे ना राईआ। गुरमुख उठाए साचे सन्त, आप आपणी बूझ बुझाईआ। एका मेल मिलाए नारी कन्त, कन्त कन्तूहल आप अख्वाईआ। सेजा सुहाए फूलण रुत्त वखाए इक्क बसन्त, फुल्ल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। भरमे भुल्ला जीव जंत, हरि का रूप दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका एक सृष्ट सबाई बख्शे टेक, जन भगतां करे बुध बिबेक, पिछली रेखा दए मिटाईआ। पिछला लेख मिटावण आया, हरि सच्चा बेपरवाह। सच मार्ग एका लावण आया सतिजुग देवे सच सलाह। गुरमुख साचे आप जगावण आया, दीवा घर घर दए टिका। आपणा शब्द आप पढ़ावण आया, अनहद राग दए सुणा। आपणा अमृत आप प्यावण आया, गुर गोबिन्द बण मलाह। साचे बेड़े आप चढ़ावण आया, सखी सरवर बेपरवाह। तख्तों ताजों आप लाहवण आया, ख़ाकी ख़ाक दए मिला, शाह सुल्ताना आप जगावण आया, एका ढोला रिहा गा। हरिसंगत मेल मिलावण आया, मेल मिलाए भैण भ्रा। मावां पुत्तरां रंग रंगावण आया, आपणी गोदी लए उठा। जुग जुग विछड़े एका घर बहावण आया, सचखण्ड दुआरा एका दए वखा। धुरदरगाही सच मलाही बण के आया, खेवट खेटा आपणा बेड़ा रिहा चला। गोबिन्द बेटा पुरख अकाल एका एक रल के आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आप अख्वाया। नर हरि निरवैर, एका एक अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम वरते कहर, ना कोई मेट मिटांयदा। वेखणहारा सवा पहर, सवा सेर अन्न आपणे सिर उठांयदा। एका

वक्त ना कोई लाए देर, दूर दुराडा पन्ध मुकांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी रिहा घेर, ब्रह्मा विष्न शिव सर्ब कुरलांयदा। लेखा जाणे अंडज ज़ेर, उत्भुज सेत्ज फोल फुलांयदा। जिस जन तारे प्रभ साचा कर कर मेहर, अग्नी तत्त आप बुझांयदा। प्रगट होया सिँघ शेर, शेर दलेर कोए ना रोक रुकांयदा। कलिजुग तेरा उलटा गेड़ रिहा गेड़, लट्ठ आपणे हथ्थ रखांयदा। जीव जंत इक्क दूजे नाल देवे भेड़, पिच्छे मुख ना कोई भुआंयदा। लग्गी जड़ सभ दी दए उखेड़, लोकमात ना कोई लगांयदा। धरत मात तेरा खुल्ला करे वेहड़, हौला भार आप वखांयदा। सम्मत सतारां छेड़ां देवे छेड़, उतर पूर्ब पच्छिम दक्खण फेरा पांयदा। वीह सौ बिक्रमी दए निबेड़ा निबेड़, आप आपणा रंग वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काल रूप आप हो जांयदा। आपे काल आपे दयाल, निरगुण सरगुण रूप वखाईआ। चले चलावे अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क वखाईआ। त्रैगुण माया हथ्थ जंजाल, लक्ख चुरासी लए फसाईआ। फल ना दिसे किसे डाल्, चारों कुंट वेख वखाईआ। लेखा जाणे हक हलाल, हक हकीकत बेपरवाहीआ। लाशरीक जल्वा नूरी जल्वा जलाल, बेऐब नाउँ खुदाईआ। प्रगट होया बण दलाल, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाही अलाही नूर, ऐनलहक इक्क अवाज लगांयदा। सर्बकला आपे भरपूर, सृष्ट सबाई रिहा तक्क दिस किसे ना आंयदा। तोड़णहारा शाह फ़कीरां हकीरां गरूर, बेनज़ीर नाउँ धरांयदा। आपे चोटी चढ़े अखीर, आपे ख़ाकी ख़ाक रमांयदा। आपे अमृत होवे ठांडा सीर, आपे आबहयात प्यांअदा। आपे मेटणहारा तकदीर, तकसीर तदबीर आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे मारनहारा जंजीर, ना कोई मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल विच संसार, खेलणहारा आप हो आंयदा। खेलणहारा आया खेल खिलारी, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश भेव ना राईआ। जगी जोत इक्क निरँकारी, दर दरवेश नर नरेश ब्रह्मा विष्न शिव भेव खुल्लाईआ। लेखा जाणे गणपति गणेश, भुल्ल रहे ना राईआ। हरिसंगत दुआरे दर दरवेश, गल कफ़नी एका पाईआ। जिउँ नानक निरगुण मोढे धरया खेस, हथ्थ खूंडी सृष्ट सबाई रिहा भुलाईआ। गुर गोबिन्द सूरा दस दस्मेश, चारे चारे गया घुमाईआ। मात पिता आपणी अक्खीं लए वेख, हरिसंगत तेरी सेवा लाईआ। हरि का कोई ना जाणे भेव, भेख कवण रूप वरते विच संसार बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम लिख्या लेख, आपे दए मिटाईआ। भाग लगाए माझे देस, हरि मन्दिर तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा एका रंग रंगाईआ। रूप रंग रेख भेख सतिगुर साचा आपे वेख वखांयदा। आपे नौ नौ दुआरे नाचा, नौ नौ आपे मुख छुपांयदा। आपे हरि हरि हरि हिरदे

वाचा, हरि हरि आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल अगम्म अपार, प्रगट हो विच संसार, सागर सिन्ध फोल फुलांयदा। सागर सिन्ध डूँग्घी गागर, काया मट आप वखाईआ। जन भगतां निर्मल कर्म करे उजागर, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। देवे नाम रती रत्नागर, रत्ती रत्त रहिण ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम बणया हरि सौदागर, गुर शब्दी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत संग निभाईआ। हरिसंगत तेरा साचा संग, हरि पुरख निरँजण आप निभांयदा। काया चोली चाढ़े रंग, रंग मजीठी इक्क वखांयदा। आत्म अन्तर परमानंद, परम पुरख आप करांयदा। मदिरा मास तजाउणा गंद, रसना जिह्वा ना कोई लगांयदा। हरि का नाउँ गाउणा बत्ती दन्द, अक्खर वक्खर इक्क पढ़ांयदा। सो पुरख निरँजण सुणाए सुहागी छन्द, हँ ब्रह्म आप अलांयदा। दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भनांयदा। सतिजुग साचा चढ़े चन्द, सतिगुर आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस इकीसा हरि जगदीशा, आप आपणा मेल मिलांयदा। मेल मिलाए हरि बनवारी, भुल्ल रहे ना राईआ। गुरसिख सुरती रहे ना कुँआरी, गुर शब्दी रंग रंगाईआ। दिवस रैण करे श्रंगारी, सोलां कलीआं सति श्रंगार वखाईआ। देवे नाम शब्द भण्डारी, वड दाता बेपरवाहीआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, डूँग्घी कंदर वेख वखाईआ। नौ दुआर पार कनारी, जगत तृष्ना मेट मिटाईआ। एका एक वखाए महल्ल अटारी, ऊँचा मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, दर घर साचे मेल मिलाईआ। सचखण्ड दुआर उच्च महल्ला, हरि साचा आप सुहांयदा। पुरख अबिनाशी बैठा इक्क इकल्ला, नानक कबीरा दर्शन पांयदा। आपणा फड़ाया आप पल्ला, आप आपणा संग रखांयदा। शब्द स्नेहड़ा एका घल्ला, एका बूझ बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखण आया, कूड़ी क्रिया धार। भेख पखण्डा मेटण आया, लेखा जाणे तत्त विकार। हउमे हंगता गढ़ तुड़ावण आया, फड़ खण्डा नाम कटार। एका दूजा पन्ध मुकावण आया, तीजा नैण खोल्ह किवाड़। चौथे पद आप बहावण आया, माया ममता तोड़ जंजाल। पंचम शब्द आप सुणावण आया, सत्तवें सति पुरख निरँजण दीन दयाल। अठ्ठां तत्तां रंग रंगावण आया, नौ दुआरे घाले घाल। दसवें दस्म दुआरी जोत जगावण आया, निरगुण दीपक जोत अकाल। गुर शब्द इक्क बणाया, लोकमात बण दलाल। पंज तत्त ना गुर कोए बणाया, आदि जुगादी हरि हरि चाल। जिस जन अंदर आपणा आप दए टिकाया, साचा दीपक देवे बाल। साध सन्त गुर पीर अवतार सो अख्वाया, जिस लग्गी निभे नाल। जिस आपणा भेव हरि आप खुल्हाया, जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आपे देवे साचा सच सच्चा धन माल। धन माल ख़ज़ाना हरि निरँकार, जुग जुग आप वरतांयदा। कलिजुग अन्तिम बण दलाल, हरि शब्दी नाउँ धरांयदा। गुरमुख साचे रिहा भाल, प्रितपालक सेव कमांयदा। जो जन घालण रहे घाल, लेखा लेखे आपे लांयदा। वेले अन्त ना खाए काल, जम का दूत ना मुख वखांयदा। सचखण्ड बणाए सच्ची धर्मसाल, दरगाह साची आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिसंगत तेरे अग्गे आप आपणा सीस धर, आपणी भेटा आप चढ़ांयदा। हरिसंगत तेरा उच्च दुआरा, सो पुरख निरँजण आप बणाया। गुर पीर अवतार आए तेरे सेवादारा, तेरी सेवा सेव कमाया। दरस दिखाए अग्गे हो ज़ाहरा, नूरो नूर करे रुशनाईआ। कलिजुग अन्तिम वरते कहरा, अग्नी अग्न जलाया। काल ना छड्डे किसे दा खहड़ा, सिर सिर आपणा डंक वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा आप दए समझाया। दयाल रूप हरि बण के आया, गुरसिख लए तराईआ। काल रूप हरि बण के आया, मनमुखां दए खपाईआ। दयाल रूप हरि बण के आया, भगतन दए वड्याईआ। काल रूप हरि बण के आया, माया ममता दए जलाईआ। दयाल रूप हरि बण के आया, हरि सन्तां लए उठाईआ। काल रूप हरि बण के आया, गुरमुख आपणे अंग लगाईआ। काल रूप हरि बण के आया, मूर्ख मूढ़े मेट मिटाईआ। दयाल रूप हरि बण के आया, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। दोहां विचोला निरगुण आपणा रूप धर के आया, शब्दी शब्द करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बणया बेपरवाहीआ। दयाल रूप हरि बण के आया, हरिभगतां मेल मिलांयदा। काल रूप हरि बण के आया, काल नगारा इक्क वजांयदा। दयाल रूप हरि बण के आया, हरि सन्तां नैण खुल्लांयदा। काल रूप हरि बण के आया, धर्म राए आप जगांयदा। दयाल रूप हरि बण के आया, गुरमुखां शब्द धुन उपजांयदा। काल रूप हरि बण के आया, चित्रगुप्त हिसाब लिखांयदा। दयाल रूप हरि बण के आया, गुरसिख आपणे रंग रंगांयदा। काल रूप हरि बण के आया, लाड़ी मौत सीस गुंदांयदा। दोहां विचोला निरगुण रूप पुरख अगम्मड़ा धर के आया, धुर धुरदी जोत जगांयदा। दयाल रूप हरि बण के आया, हरिसंगत दए वड्याईआ। काल रूप हरि बण के आया, काल कलंदर रिहा नचाईआ। दयाल रूप हरि बण के आया, हरि सन्तन अमृत आत्म जाम प्याईआ। काल रूप हरि बण के आया, कागद कलम नाले लेखा जाणे छाहीआ। दयाल रूप हरि बण के आया, गुरसिखां आपणी गोद बहाईआ। काल रूप हरि बण के आया, त्रैभवन अवन गवन फेरा पाईआ। दयाल रूप हरि बण के आया, गुरसिख गुर की बाणी आप सुणाईआ। काल रूप हरि बण के आया, कलिजुग जीवां काल हाणी दए मिलाईआ। काल दयाल आप प्रभ बण के आया, आदि जुगादि

समाया। जुग जुग खेल करे अगाध बोध, बोध अगाध भेव ना राया। हरिजन हिरदा आपे सोध, हरि का रूप दए दरसाया। मनमुखां करे ममता जोध, जोद्धा काम नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सतारां रिहा वर, वाहवा सतिगुर नाम वड्याआ। वाहवा गुरू सतिगुर, सति सति सति वड्डी वड्याईआ। वाहवा गुरू गुर मत, गुर गोबिन्द गया समझाईआ। वाहवा गुरू गुरमति, वड मन्त्र ज्ञान पढ़ाईआ। वाहवा गुरू गुर मत, एका तत्त तत्त समझाईआ। वाहवा गुरू गुरमति, कमलापत आपणा कौल निभाईआ। वाहवा गुरू गुरमति समरथ, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। वाहवा गुरू गुर चलाए रथ, जगत जगदीशा आपणा भेस वटाईआ। वाहवा गुरू गुर खेड़ा करे भट्ठ, जो जन बैठे मुख छुपाईआ। वाहवा गुरू गुरमति, हरिसंगत करे एका धाम अकट्ठ, चार वरनां नाता जोड़े भैणां भाईआ। गुरसिख सगल विसूरे जायण लथ्थ, सतिगुर पूरे दर्शन पाईआ। मनमुक्ख दर तों जायण नट्ठ, जन्म कर्म टिकण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कर्म कर्म लेखा दए जणाईआ। जन्म कर्म हथ्थ करतार, लेखा लिखणहार दीन दयालया। घट घट भाण्डे लए उसार, जोती देवे नूर उजालया। मन मति बुध देवे डार, अग्नी तत्त तत्त वखा ल्या। नाल रलाए पंज विकार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार वजाए तालया। खेले खेल अगम्म अपार, घर घर विच आप सुहा ल्या। अंदर मन्दिर नाद धुन्कार, शब्दी डंक आप वजा ल्या। सुणे सुणाए सुणनेहार, दूसर हथ्थ किसे ना आ ल्या। गुरमुख साचे लए उभार, आप आपणा भेव खुल्ह ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिसंगत करे प्रितपालया। प्रितपालणहारा एक है, इक्क इकल्ला एकँकार। आदि जुगादी साची टेक है, प्रभ साचा सिरजणहार। जुगा जुगन्तर रिहा वेख है, जम्मे मरे ना विच संसार। आपे जाणे आपणा भेख है, दूजा लिखे ना कोई लिखार। हरिभगतां मेला रहे हमेश है, मेल मिलाए आप करतार। आत्म जोती कर प्रवेश है, परम पुरख करे उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लोकमात लए अवतार। लोकमात अवतारा हरि निरँकारा, आपणा भेख वटांयदा। निरगुण सरगण रक्खे धारा, दोवें रूप जणांयदा। तीजा शब्द अगम्म अपारा, आपणा नाद वजांयदा। चौथा पद उच्च मुनारा, जगत नेत्र दिस ना आंयदा। पंचम शब्द सच्ची धुन्कारा, धुन आत्मक आप सुणांयदा। जन भगतां कट्टे लक्ख चुरासी आवण जावण गेड़ा दुःख जगत निवारा, हरि हरि साचा दया कमांयदा। पारस परस कंचन लोहा सोना उतरया पारा, सच घसवटी एका लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, इक्क वखाए पद निरबाण, शब्द उडाए सच बिबान, लेखा जाणे दो जहान, आपणा पन्ध आप मुकांयदा। हरि साचे पन्ध मुकावना, जो

जन आए सरनाईआ। सचखण्ड दुआरा इक्क वखावणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। आप आपणा मेल मिलावणा, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। जोती जोत जोत रलावणा, जोती जोत जोत समाईआ। पंच तत्त ना कोई वखावणा, रूप रंग नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सर्ब जीआं दा एका दाता, पारब्रह्म प्रभ पुरख बिधाता, दूसर दर ना कोई जणाईआ। सर्ब जीआं प्रभ देवे दान, साची वस्त इक्क वरतांयदा। सर्ब जीआं इक्क भगवान, एका राम वखांयदा। सर्ब जीआं एका काहन, एका बंसरी नाम वजांयदा। सर्ब जीआं इक्क निशान, एका घर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजांयदा। ब्रह्म ब्रह्मादि हरि वेख वखाया, भेव अभेदा भेव अपारया। शब्द अनादी नाद वजाया, नाम तराना इक्क अपारया। बोध अगाधी राग सुणाया, साचा सोहला आपे गा ल्या। हँस कागी डार रलाया, काग हँसा रूप वटा ल्या। सारिंग धर आप अख्वाया, सहिज धुन धुन समा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तख्त ताज वेख वखा ल्या। लेखा लिखणहार इक्क, एका एक एकंकारया। त्रै त्रैगुण मंगणहार भिख, कोटन कोटि खड़े दवारया। शब्दी सिख्या लैण सिख, आप सुणाए सुणावण हारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच भण्डारा आप वरता रिहा। लेखा लिखणहार लेख, एका एक रंग समाया। आदि जुगादी साची रीत एक, हरि सतिगुर आप चलाया। आपे सभ नूं रिहा वेख, वेखणहारा दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इक्क इक्क वड्याआ। एका घर इक्क मकाना, एका सोभा पांयदा। एका शब्द इक्क बिबाना, एका सतिगुर आप उडांयदा। एका पुरख इक्क सुल्ताना, एका राज कमांयदा। एका मेहरबान मेहरबाना, मेहर मेहर विच रखांयदा। एका शब्द राग तराना, गीत अनादी एका गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरी वण्ड वण्डांयदा। एका वण्ड पंज तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश करी कुड़माईआ। एका वण्ड बूंद रक्त, हड्ड मास नाड़ी जोड़ जुड़ाईआ। एका वण्ड मन मति बुध, एका एक संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा लेखे विच टिकाईआ। एका वण्ड शब्द धुन्कार, पंचम धाम सुहानया। एका रूप हरी हरि हरि राम, राम रूप श्री भगवानयां। एका अमृत जाम, साचा प्यावणहार, इक्क अख्वानया। एका धारे रूप बावना बाण, बलि बलि आपणा बल जणानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा राह वखानया। एका मार्ग साचा दस्स, पंचम मेल मिलाया। सतिगुर साचा हिरदे अंदर वस, आप आपणा लेखा दए जणाईआ। तीर निराला मारे कस, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाया। त्रैगुण माया ना सके

डस्स, मोह माया नेड़ ना आया। आत्म देवे साचा रस, रस रसीआ मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम एका जोत करे रुशनाया। पंचम जोत जाए जग, सतिगुर पूरा आप जगांयदा। हँस बणाए फड़ फड़ कग्ग, सोहँ मोती चोग चुगांयदा। दरस दखाए उप्पर शाह रग, घर घर विच मेल मिलांयदा। कलिजुग बुझाए लग्गी अग्ग, आप आपणी दया कमांयदा। पंचम मुखी ताज गुरसिख हीरे जड़े विच नग, चमक चमक विच टिकांयदा। लोकमात दीपक जाए जग, सतिगुर साचा आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार रखांयदा। हीरे माणक माणक मोती, गुरसिख वड वड्याईआ। लोकमात जगदी रहे जोती, जागरत जोत आप जगाईआ। पहली चेत्र नाता तुट्टया वरन गोती, वरन गोत ना कोई रखाईआ। हरिसंगत आत्म उठाई सोती, गूढ़ी नींद ना कोई सुआईआ। विच्चों वासना कढ्ढे खोटी, कोटन कोटि पाप मुकाईआ। आपे अंदर वड़ के वेखे चोटी, औंदा जांदा दिस ना आईआ। रसना खाए ना कोई मास बोटी, बोटी बोटी ना कोई कटाईआ। सिँघ कर्म दरस दरस मंगदा गया मरदान होती, प्रभ अन्तिम मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा ताज आपणा नग आप बणाईआ। सन्त पुकारन आदि जुगादि, हरि अन्तर इक्क लिव लाईआ। पुरख अबिनाशी देवणहारा वर, एका वस्त दस्त फड़ाईआ। जगत वजाए आपणा नाद, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। हरिभगतां सुणे सद फरयाद, जो रहे जगत बिल्लाईआ। पुरख अबिनाशी मोहण माधव माध, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण नैणण नैण नैण वखाईआ। एका जाणे बोध अगाध, अगम्म अगम्मड़ी करे पढ़ाईआ। हरिजन साचे लक्ख चुरासी विच्चों काढ, आप आपणी गोद बहाईआ। सचखण्ड करे लाड, ब्रह्म प्याला जाम प्याईआ। तिन्नां लोकां पार कराए पन्ध मुकाए पिछली हाद, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, माणक मोती आप चमकाईआ। गुरसिख चमक्या विच संसारा, हरि सतिगुर आप चमकाया। जिउँ नानक अंगद करया प्यारा, आप आपणे अंग लगाया। जिउँ अंगद अमरदास दए सहारा, दर आपणा इक्क बुझाया। जिउँ अमरदास रामदास करे उज्यारा, घर मन्दिर जोत जगाया। जिउँ रामदास गुर भरे भण्डारा, गुर अर्जन शब्द सुणाया। गुर अर्जन सतिगुर बण लिखारा, गुरू ग्रन्थ गया लिखाया। गुरू ग्रन्थ सोहे सच दुआरा, हरि मन्दिर हरि जू हरि हरि डेरा लाया। कूड़ कुड़यारा ना वड़े अंदर, जिस जन सतिगुर दर्शन पाया। कलिजुग जीव होए बन्दर, गुर का शब्द भुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी इक्क वड्याईआ। सतिगुर पूरा एक है, गुरमुखां आप लए मिलाए। सतिगुर पूरा एक है, गुरसिख लए मिलाए। हरि गोबिन्द रक्खी टेक है, हरि राए लए तराय। हरि हरि राए हरि हरि लए वेख है, हरि

कृष्ना लए जगाए। हरि कृष्ना करया भेख है, बाबा लेखा दए छुपाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा दए वडियाए। सतिगुर पूरा इक्क रघुनाथ, हरि सतिगुर दए वड्याईआ। अबिनाशी करता रहे साथ, आप आपणा साथ निभाईआ। खेले खेल पुरख पुरखोतम पुरख समरथ, हथ्थ समरथ वड्याईआ। एका जोत गोबिन्द अंदर रक्ख, गोबिन्द गोबिन्द गढ़ सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इक्की मंग मंगाईआ। एका इक्की साची सिख्या सतिगुर भाईआ। पुरख अबिनाशी लेखा लिख्या, कलिजुग अन्तिम दए वड्याईआ। सृष्ट सबाई दिसे मिथ्या, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग माया पीसण पीसा, त्रैगुण माया चक्की आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। साची इक्की एकँकार, इक्क इकल्ला आप उपांयदा। सत्त रंग निशाना अपर अपार, तिन्नां लोकां आप वखांयदा। सति सतिवादी साची धार, निरगुण निरगुण रूप वटांयदा। सति सतिवादी बोल जैकार, सच ढोले शब्द सुणांयदा। चौदां लोक इक्क अखाड़, चौदां चौदां हुक्म सुणांयदा। चौदां सिखां चौदां लोकां चौदां तबकां अंदर देवे वाड़, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। पंच प्यारे कर प्यार, इक्क सुहाए बंक दुआर, साचा धाम आप सुहांयदा। इक्की सिख एका रूप वखाए एका सुत बणाए एका लाल, आपणा नाम जपांयदा। एका घालण गए घाल, घाली घाल लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे माणक मणीआं आप बणांयदा। माणक मणीआ पाए मुल, करता कीमत आप चुकाईआ। वीह सौ सोलां बिक्रमी साचे कंडे गए तुल, सतिगुर पूरा आप तुलाईआ। भाग लगाए आपणी कुल, इक्की कुलां मात तराईआ। जिस जन रसना गाया सोहँ भुल्ल, भुल्लयां रुलयां लेखे लए लगाईआ। करोड़ तेतीसा बरखे फुल्ल, सुरपति राजा इंद सेव कमाईआ। जिस जन एका अक्खर एका वार गाया बुल्ल्, एका एक दए मिलाईआ। अमृत आत्म ना गया डुल्ल, जो हरि हिरदे विच वसाईआ। मानस जन्म ना गया रुल, हीरा साचे हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिख आपणा सीस ताज बणाईआ। गुरसिख बणया सीस ताज, हरिसंगत जड़त जड़ाया। पुरख अबिनाशी साजण साज, लोकमात मेल मिलाया। बण के आया ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे लए उठाया। सति चलाए सच जहाज़, सतिजुग साचा राह वखाया। कलिजुग कूड़ कुड़यारा रिहा नाच, नटूआ नट्ट स्वांगी स्वांग वखाया। चारों कुंट लग्गी आंच, अग्गनी अग्ग रही जलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संगत देवे साचा वर, घर घर देवे दरस दिखाया। घर घर दर्शन दिखावणा, हरिसंगत हरि हरि याद। रातीं सुत्तयां आप उठावणा, फड़ बाहों सुणे फरयाद। रोग सोग सर्ब मिटावणा, देवे नाम साची दाद। एका मन्दिर आप

सुहावणा, शब्द जणाई बोध अगाध। साची सखीआं मंगल गावणा, मेल मिलावा मोहण माधव माध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए लाध। हरिजन साचा लाध्या, कर किरपा आप करतार। गुरसिख आत्म मद्व सदा मद्वया, दिवस रैण रहे खुमार। वज्जे नादी नाद नदया, दिवस रैण धुन्कार। सच दुआरे सतिगुर सद्दया, आप आपणा कर प्यार। सृष्ट सबाई नाता छड्डया, जिस मिल्या गुर करतार। पंच विकारा विच्चों कढ्ढया, दूई द्वैती देवे मार। करे प्रकाश अन्धेरी खड्डया, निर्मल जोत होए उज्यार। घर साचे लडाए लडया, मात पित जिउँ करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत बख्शे अमृत धार। अमृत धार अनूठा रस, हरिसंगत जाम प्याईआ। सतिगुर पूरा देवे हस्स हस्स, लोकमात वेस वटाईआ। हिरदे अंदर वस वस, मनमति दए गंवाईआ। शब्दी मारे तीर कस, अनयाला तीर आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा जस हरिसंगत रिहा गाईआ। हरिसंगत तेरा जस हरि हरि गावणा, ब्रह्म मति इक्क विचार। गुर का शब्द ना किसे भुलावणा, सतिजुग सुण शब्द जैकार। घर मन्दिर बह बह गावणा, मिले मेल पुरख करतार। मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआला एका रंग रंगावणा, एका रंग रंगे करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत साची जाए तार। तारनहारा दीन के नाथ, दीनां नाथ दया कमांयदा। लहिणा चुकाए मस्तक माथ, पूर्ब लेखा झोली पांयदा। नाता तुट्टे सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चुमारा लेख लखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द भगौती इक्क चमकांयदा। शब्द भगौती भगवन धार, आदि शक्ति रही शर्माईआ। जोत ज्वाला पाणी भरनहार, पवणी सेव कमाईआ। पुरख अकाला होए सहार, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा नाम सुणाईआ। नर हरि नरायण हरि बनवारी, निरगुण आपणा खेल खिलांयदा। पारब्रह्म प्रभ निरगुण जोत कर उज्यारी, नूरो नूर डगमगांयदा। शब्द नाद ब्रह्मादि सुणाए वड संसारी, सच साचा हुक्म अल़ांयदा। हरिसंगत हरि हरि कर प्यारी, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सीस रक्खया हरिसंगत ताज, वेले अन्तिम रक्खे लाज, लाजावन्त आप हो जांयदा।

सो पुरख निरँजण आदि अन्त, आपणी रचना आप रचांयदा। हरि पुरख निरँजण बणाए बणत, दूसर संग ना कोई रखांयदा। एकँकारा महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोई वखांयदा। आदि निरँजण सोभावन्त, जोत उजाला डगमगांयदा।

३५६
०६

अबिनाशी करता नारी कन्त, साचा मेल आपणा आप मिलांयदा। श्री भगवान धाम सुहंत, सचखण्ड दुआरा आप वड्यांअदा। पारब्रह्म प्रभ आपे होए मंगत, आपणी भिच्छया आप मंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा आप सुहांयदा। थिर घर साचा सच दरबारा, सो पुरख निरँजण आप सुहांयदा। हरि पुरख निरँजण शाह सिक्दारा, वड सुल्तान नाउँ धरांयदा। एकँकारा खेल अपारा, निरगुण धारा रूप धरांयदा। आदि निरँजण जोत उज्यारा, सति पसारा आप करांयदा। पुरख अबिनाशी मीत मुरारा अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर खेल खिलांयदा। श्री भगवान कन्त भतारा नारी नारा, नर नरायण वेख वखांयदा। पारब्रह्म दर दरबारा, आपणा आप सुहांयदा। एका इक्क वसणहारा सच मनारा, महल्ल अटल आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित नाम धरांयदा। अजूनी रहित पुरख अकाल, अकल कल वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा आप सुहाए सच सच्ची धर्मसाल, हरि हरि बैठा आसण लाईआ। एका वस्त रक्खे सच सच्चा धन माल, नित नवित आप वरताईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, शहनशाह बेपरवाहीआ। रूप बणाए काल महांकाल, प्रितपाल आप कराईआ। आपणा दीपक आपे बाल, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा, आपणा आप कराईआ। सचखण्ड सच मुनार, हरि साचा सोभा पांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, इक्क इकल्ला वेख वखांयदा। शाहो भूप सच्ची सरकार, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। एका करे बन्द किवाड़, चार दिवार ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण आपणा आसण लांयदा। निरगुण आसण शाहो शाबाश, हरि हरि साचा आप लगाईआ। आपणे मन्दिर पावे रास, नूरो नूर डगमगाईआ। आपे होए आपणा दासी दास, सेवक साची सेव कमाईआ। आपे वसे आपणे पास, आप आपणे अंग लगाईआ। आपणी जोत आपे कर प्रकाश, सो पुरख निरँजण वेख वखाईआ। आदि जुगादि ना जाए विनास, जुग करता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड मुनार वसणहार एकँकारा, एका रंग रंगाईआ। रंग अवल्लड़ा इक्क इकल्लड़ा, आदि पुरख निरँजण आप रंगांयदा। साचा धाम इक्क सुहंदड़ा, सोभावन्त आसण लांयदा। आपणा मेल आप मिलंदड़ा, नारी कन्त रूप वटांयदा। सति दुआरा इक्क वखंदड़ा, शब्दी शब्द आप उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेल खिलावणहार समरथ, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। आदि निरँजण देवे साची वथ, पुरख अबिनाशी घट घट वासी एका वस्त झोली पाईआ। श्री भगवान शाहो शाबाश, आपणी करे पूर आस, पारब्रह्म मेल मिलाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल खेल अपार, थिर घर वासी थिर दरबारा इक्क सुहाईआ। थिर दरबारा ठांडा घर, हरि साचा आप सुहांयदा। आपे अंदर बैठा वड़, दिस किसे ना आंयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, तत्व तत्त ना कोई रखांयदा। ना कोई विद्या गया पढ़, रसना जिह्वा ना कोई गांयदा। किला कोट ना घाड़ण घड़, छप्पर छन्न ना कोई छुहांयदा। निर्भय रक्खे ना किसे कोई डर, आप आपणा हुक्म चलांयदा। ना जन्मे ना जाए मर, अजूनी रहित रूप वटांयदा। धरत आकाश आप आपणा आपे धर, आप आपे वेख वखांयदा। नाम सति भण्डारा भर, सचखण्ड दुआरा आप वरतांयदा। करता पुरख खेल कर, करनी करता आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुरदरगाही साचा लाड़, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहार एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। सचखण्ड दुआरे कर पसार, निरगुण नूर डगमगाईआ। शब्द सिँघासण कर त्यार, पुरख अबिनाशण आसण लाईआ। शाहो भूप एका एक इक्क सिक्दार, हुक्मी हुक्म हुक्म भवाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सच जणाईआ। सचखण्ड दुआरा एका घड़, घाड़ण घड़या ना कोई भनांयदा। सचखण्ड दुआरा निर्भय रूप आपणा धर, भय भयानक सर्ब जणांयदा। सचखण्ड दुआरा एकँकारा आपे खड़ आप आपणा हुक्म सुणांयदा। सचखण्ड दुआरा हरि सज्जण मीत मुरारा आप फड़ाए आपणा लड़, दूसर संग ना कोई रखांयदा। सचखण्ड दुआर उच्च मिनार, अटल महल्ल आप सुहांयदा। सचखण्ड दुआर शब्दी धार, सुत दुलारा आप वहांयदा। सचखण्ड दुआर अमृत ठंडी ठार, सर सरोवर आप वखांयदा। सचखण्ड दुआर निर्मल दीआ जोती कर उज्यार, नूरो नूर डगमगांयदा। सचखण्ड दुआर नूर खुदाई बेऐब परवरदिगार, जल्वा नूर आप वखांयदा। सचखण्ड दुआर राम रूप सच्ची सरकार, घर साचा सोभा पांयदा। सचखण्ड दुआर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस धरांयदा। सचखण्ड निवासा, हरि साचे सच वड्याईआ। सचखण्ड प्रकाशा हरि साचा आप कराईआ। सचखण्ड भरवासा, हरि आपणा आप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड साची बूझ बुझाईआ। सचखण्ड अंदर हरि हरि वड़या, दिस किसे ना आंयदा। पुरख अबिनाशी आपणे पौड़े आपे चढ़या, आपणे मार्ग आपे लांयदा। ना किसे बाढी घाड़त घड़या, ना कोई बणत बणांयदा। आपणी जड़्हत आपे जड़या, आप आपणे रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा आप वड्यांअदा। सचखण्ड दुआरा सच मुनारा, हरि साचे सच उपाया। अंदर वड़े एकँकारा, घर साचा आप सुहाया। निर्मल नूर कर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाया। सति सरूपी सति हुलारा, सति सतिवादी आप हिलाया।

सति पुरख निरँजण खेल अपारा, खेलणहारा दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, आपणा घाड़ण आप घड़ाया। सचखण्ड दुआरे घाड़ण घड़, घर घर विच आप बणाईआ। थिर घर अंदर देवे धर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। थिर घर साचा कर त्यार, निरवैर नाउँ धरांयदा। आपे जाणे आर पार किनार, मँझधार भेव कोए ना पांयदा। आपे वसे अंदर बाहर, गुप्त ज़ाहर खेल खिलांयदा। आपे पुरख आपे नार, आपे साची सेज हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा खोल्ह किवाड़ा, अंदर वड़े आप निरँकारा, सच सिँघासण सोभा पांयदा। सच सिँघासण सोभावन्त, थिर घर साचा आप सुहाईआ। पुरख अबिनाशी बैठ इकन्त, कन्त कन्तूहला सेज हंढाईआ। आपे जाणे आपणा रंग बसन्त, सच सुहञ्जणी सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर दरबारा खेल अपारा, घर घर विच आप कराईआ। घर विच घर कर त्यार, हरि साचा तख्त सुहांयदा। उप्पर बैठ सच्ची सरकार, शाह सुल्ताना शाहो भूप रूप वटांयदा। आपणी हथ्थीं बन्न्हे गानां, आप आपणा गुण जणांयदा। रसना राग गाए तराना, शब्दी शब्द अल्हांयदा। पारब्रह्म प्रभ पुरख श्री भगवाना, आप आपणी रचन रचांयदा। आपे देवे धुर फ़रमाणा, हुक्मी हुक्म आप सुणांयदा। आपे जाणे आपणा पद निरबाणा, आप आपणा घर सुहांयदा। आपे पहरे आपणा बाणा, रूप अनूप आप वटांयदा। आपे राजा आपे राणा, आपे रईयत नाउँ धरांयदा। आपे बणे दर दरबाना, दर दरवेश आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द संदेश नर नरेश, निरगुण आपणा आप सुणांयदा। शब्द संदेशा हरि निरँकार, थिर घर साचे आप उपाईआ। सचखण्ड दुआरे हो त्यार, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, आपणा कुण्डा आपे लाहीआ। आपे सुन्न अगम्मी वेखे धाड़, रूप अनूप आप वटाईआ। आपणा वेखे सच अखाड़, मंडल रास रचाईआ। रवि ससि सूरज चन्न ना दिसे कोई सतार, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। गगन पताल ना कोई आधार, धरत धवल ना कोई वड्याईआ। आकाश प्रकाश ना होए उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर आपे खोल्ह, निष्अक्खर वक्खर रिहा बोल, वजाए नाम मृदंगा साचा ढोल, धुन नाद आप सुणाईआ। तुरीआ नाद सच तराना, हरि साचा आपे गांयदा। सचखण्ड निवासी हरि भगवाना, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। अबिनाशी करता नौजवाना, निउँ निउँ आपणा सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। दर घर साचा तुरीआ राग, हरि हरि नाद हरि साचा आप सुणाईआ। सति दुआरे सुणे फरयाद, प्रभ साचा शब्द जणाईआ। लेखा लिख ना सके कोए

दानी देवणाहारा साची दाद, साच वस्त इक्क रखाईआ। तेरा रूप वेखे ब्रह्म ब्रह्माद, लोआं पुरीआं तेरा रंग रंगाईआ। ना कोई सन्त ना कोई साध, गुर पीर अवतार ना कोई दिसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआर हो उज्यार, खेले खेल अगम्म अपार, जोती नूर हो उज्यार, थिर घर साचे सोभा पाईआ। आपे जाणे अवल्लड़ी चाल, चाल अवल्लड़ी इक्क रखांयदा। सचखण्ड दुआरे घालण घाल, साची सेवा आप कमांयदा। सुत दुलारा बणया लाल, आपणी गोदी आप बहांयदा। पुरख अबिनाशी दीन दयाल, बण दलाल आप आपणा खेल खिलांयदा। चरनां हेठ रखाए काल महांकाल, आपणा बल आप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, आपणा आसण लांयदा। थिर घर साचा सच मुनारा, हरि साचा सच सुहाईआ। खेले खेल पुरख करतारा, कादर करता वड वड्याईआ। आसण सिँघासण अपर अपारा, शाहो शबाशण आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच महल्ला आप सुहाईआ। सच महल्ला वसया, वसावणहार करतार। आपणा भेव किसे ना दस्सया, ना कोई पावे सार। ब्रह्म ब्रह्माद फिरे नस्सया, शब्द सुणाए साची धार। घट घट अंदर आपे वसया, निरगुण रूप अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बणे सच्चा सिक्दार। सच सिक्दार हरि भगवाना, घर साचे आप अख्वांयदा। आपे जाणे आपणा सत्त रंग निशाना, सचखण्ड दुआरे आप चढ़ांयदा। पंचम मुख ताज महाना, एकँकारा आप उपांयदा। देवणहारा साचा दाना, दरगाह साची आप वरतांयदा। जोत सरूपी जोती बाणा, आपणा आप हंढांयदा। एका शब्द धुर फ़रमाणा, श्री भगवाना आप सुणांयदा। जुगा जुगन्तर खेल महाना, जुग जुग वेस वटांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे जगत मकाना, त्रैगुण मेला मेल मिलांयदा। पंज तत्त काया खेल महाना, लक्ख चुरासी जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा तत्त आप रखांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमाईआ। मन मति बुध कर त्यार, निरगुण आपणी वस्त टिकाईआ। काया मन्दिर पावे सार, डूँग्घी कंदर फोल फुलाईआ। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, जगष्त वासना विच भराईआ। पंचम पंच दए अधार, पंचम पंचम विच टिकाईआ। पंचम नाद धुन जैकार, पंचम मंगल इक्क सुणाईआ। पंचम ढह ढह पए दुआर, पंचम पंचम निउँ सीस झुकाईआ। पंचम काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आप आपणा बल धराईआ। खेले खेल पुरख करतार, घर घर विच आप सुहाईआ। लेखा जाणे टेढी धार, डूँग्घी कँवरी भँवरी आप सुहाईआ। अंदर करया बन्द किवाड़, बज़र कपाटी सिला लगाईआ। सर सरोवर भर भण्डार, बैठा मुख छुपाईआ। आत्म सेजा कर त्यार, सच सुहावणी सेज वछाईआ। अंदर वड़ हरि निरँकार, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। दिस ना

आए विच संसार, दोए दोए लोचण रिहा चमकाईआ। जिस जन किरपा देवे कर हरि करतार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर देवे वर, गुरमुख साचे लए उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर हरि हरिभगत, हरि जी बूझ बुझांयदा। लेखा जाणे आदि शक्त, जोती नूर डगमगांयदा। आपे जाणे बूंद रक्त, रत्ती रत्त वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन वेस वटांयदा। सन्तन हरि रंग रतड़ा, पारब्रह्म गुर करतार। काया चोली रंगे चीथड़ा, चाढ़े रंग अपर अपार। वखाए धाम इक्क अनडीठड़ा, सचखण्ड निवासी सच दुआरा नाम निधाना जिस जन पीतड़ा, नाता छुट्टे सर्ब संसार। इक्क सुणाए सुहागी गीतड़ा, सो निरँजण पुरख निरँकार। हँ ब्रह्म प्रभ साचे जीतड़ा, आदि जुगादी इक्क अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल विच संसार। वड संसारी हरि करतार, जुग जुग वेस वटांयदा। लोकमात लए अवतार, आप आपणा नाउँ धरांयदा। लक्ख चुरासी पावे सार, नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां फोल फुलांयदा। एका बोल सच जैकार, हरि हरि साचा नाम दृढ़ांयदा। जीवां जंतां दए आधार, साधां सन्तां मेल मिलांयदा। भगतां देवे भगवन भगती भण्डार, साची वस्त इक्क वखांयदा। काया करे ठंडी ठार, भर प्याला आप प्यांअदा। साचा साकी बणे बेऐब परवरदिगार, हकीकी जाम हथ्थ उठांयदा। सच सुराही सुखमन नाड़ी देवे एका धार, अमृत झिरना निझर आप झिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका भरे सच प्याला, आपे होए दीन दयाला, गुरमुख वेखे साचे लाला, जगत तृष्ना हरस मिटांयदा। जगत तृष्ना बुझे प्यास, जिस जन सतिगुर पूरा दया कमाईआ। लोकमात मार झात पूरी करे आस, हरिजन निरास ना कोई वखाईआ। आदि जुगादी एकँकार ब्रह्मण्ड होए दासी दास, सेवक सच्ची सेव कमाईआ। घर विच घर करे प्रकाश, आप आपणी कर रुशनाईआ। मेल मिलाए शाहो शाबाश, सति सरूपी नज़री आईआ। गगन मंडल वखाए पृथ्मी आकाश, निज आत्म निज घर परम आत्म वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत करता वड वड्याईआ। जगत करता जाणया, एका रंग अपार। दरगाह साची आपणा रंग आपे माणया, सचखण्ड बैठ सच्ची सरकार। आपे वरते आपणे भाणयां, ना कोई मेटे मेटणहार। आपे गाए आपणे गाणयां, बोले नाद शब्द धुन्कार। तुरीआ राग इक्क वखाणयां, दर घर साचे आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर साचा आप सोहाणयां। आपणी इच्छया हरि निरँकार, तुरीआ राग समझांयदा। पाए भिच्छया सर्ब संसार, घर घर वण्ड वण्डांयदा। बिन सन्त सतिगुर कोए ना पाए सार, कोटन कोटि जीव भवांयदा। ब्रह्मा चारे मुख चारे वेद गा गा गया हार, आदि अन्त ना कोए वखांयदा। बेअन्त

३६५ ०६

बेअन्त बेऐब परवरदिगार, हरि भगवन्त आपणा भेव आप छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रूप ना कोई वखांयदा। त्रै जुग पार किनारा, त्रैगुण माया वेख वखाईआ। चौथे जुग होए उज्यारा, हरि साचे वड वड्याईआ। एका कलमा कर त्यारा, कायनात अमाम बणाईआ। एका शब्द सच भण्डारा, नाम सति वरताईआ। एका गुर शब्द अवतारा, नानक गोबिन्द इक्क समझाईआ। एका मंगे सचखण्ड दुआरा, दूजे दर ना मंगण जाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग हरि का भेव ना पावे कोई संसारा, वेद कतेब ना कोई वखाईआ। खाणी बाणी करे पुकारा, रसना जिह्वा होई हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा भेख आप कराईआ। कलिजुग अन्तिम भेख अवल्ला, हरि पुरख निरँजण आप करांयदा। लेखा जाणे राणी अल्ला, बिस्मिल आपणा रूप वटांयदा। सचखण्ड निवासी इक्क इकल्ला, आप आपणी कल वरतांयदा। पावे सार जला थला, जल थल महीअल फोल फुलांयदा। शब्द सरूपी फड़या पल्ला, चारों कुंट उठांयदा। सच सुनेहड़ा हरि साचे घल्ला, हरिजन साचे आप जगांयदा। सो पुरख निरँजण फड़े पल्ला, हँ ब्रह्म मेल मिलांयदा। जीव जंत भुलाए कर कर वल छला, अछल छल धारी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक आपणा नाउँ धरांयदा। निहकलंक हरि सूरबीर, पंज तत्त ना कोई रखाईआ। ना कोई शस्त्र ना कोई तीर, जगत कमान ना कोई उठाईआ। ना कोई तौक ना जंज़ीर, खड़ग खण्डा ना कोई चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा बल आप धराईआ। निरगुण सूरबीर सुल्ताना, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। निरगुण सूरबीर नौजवाना, एका रूप वखांयदा। निरगुण खण्डा तीर कमाना, साचा शब्द चलांयदा। निरगुण वेखे जगत मैदाना, नौ नौ फेरा पांयदा। निरगुण लक्ख चुरासी बन्ने गाना, घर घर सगन मनांयदा। निरगुण राग सुणाए गाना, अनहद साचा ताल वजांयदा। निरगुण जोत जगाए महाना, कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा। निरगुण मेट मिटाए राज राजाना, शाह सुल्ताना ना कोई वखांयदा। निरगुण वरते आपणे भाणा, गुर गोबिन्द लेख लिखांयदा। निरगुण आपणा जाणे सच टिकाणा, दर घर साचा आप सुहांयदा। निरगुण चढ़या सच बिबाना, नाम बिबाना इक्क उडांयदा। निरगुण रूप पवण मसाणा, बल अग्नी बल धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल वरतांयदा। निरगुण दाता बेपरवाह, आदि जुगादि समाया। निरगुण दाता सिफ्त सलाह, सिफ्त सलाही किसे ना गाया। निरगुण दाता इक्क मलाह, चौदां तबकां बेड़ा रिहा चलाया। निरगुण दाता वसे एका थाँ, मुकामे हक डेरा लाया। निरगुण दाता करे सच न्याँ, जुग जुग आपणा अदल कमाया। निरगुण दाता

जन भगतां पकड़े आपे बांह, आप आपणा मेल मिलाया। निरगुण दाता ग़रीब निवाजा बणे पिता माँ, आप आपणी गोद उठाया। निरगुण दाता सन्तन देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। निरगुण दाता फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सोहँ शब्द साची चोग चुगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण आपणा वेस वटाया। निरगुण दाता पुरख निरँजण, हरि साचा वड वड्याईआ। निरगुण नेत्र नाम पाए अंजन, अज्ञान अन्धेरे मिटाईआ। निरगुण सखा सखाई दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर आप तराईआ। निरगुण चरन धूढ़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल गंवाईआ। निरगुण आदि जुगादी साचा सज्जण, सचखण्ड दुआरे बैठा आसण लाईआ। निरगुण कलिजुग अन्तिम गुरसिखां आया पर्दे कज्जण, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धारा अपर अपारा, हरि निरँकार आप चलाईआ। निरगुण दाता हरि समरथ, सर्बकल आप अख्वांयदा। निरगुण चलाए आपणा रथ, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। निरगुण महिमा अकथना अकथ, वेद कतेब कोई ना गांयदा। निरगुण सुणाए आपणी गाथ, लोकमात मार्ग लांयदा। निरगुण पूजा निरगुण पाठ, निरगुण इष्ट देव बण जांयदा। निरगुण तीर्थ निरगुण ताट, निरगुण चौदां हट्ट समांयदा। निरगुण किनारा निरगुण घाट, निरगुण जल जल धार बंधांयदा। निरगुण बस्त्र निरगुण पाट, निरगुण नाम ध्यान आपे लांयदा। निरगुण सेजा निरगुण खाट, निरगुण आसण हरि सिँघासण आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। निरगुण गोपी निरगुण काहन, निरगुण बंसरी नाम वजाईआ। निरगुण सीता निरगुण राम, निरगुण बण बण खोज खुजाईआ। निरगुण नाम निरगुण निधान, निरगुण निरगुण झोली पाईआ। निरगुण साकी निरगुण जाम, निरगुण भर प्याला जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण एका एक इक्क अख्वाईआ। निरगुण शब्द निरगुण बाणी, निरगुण हुक्मी हुक्म सुणांयदा। निरगुण चारे वसे खाणी, चारे जुग वेख वखांयदा। निरगुण चारे वेद जणाए हाणी, निरगुण आपणा मेल मिलांयदा। निरगुण दाता जीअ प्राणी, कुरान कुराना विच समांयदा। निरगुण राजा निरगुण राणी, निरगुण अकथ कहाणी आप अलांयदा। निरगुण अमृत देवे ठंडा पाणी, निरगुण अग्नी तत्त जलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक आपणा नाउँ रखांयदा। निहकलंक हरि भगवाना, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। कलिजुग अन्तिम होए प्रधाना, शब्द डंका इक्क वजाईआ। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्याना, ब्रह्मा विष्न शिव आप उठाईआ। जन भगतां हथ्थीं बन्ने गाना, लोकमात इक्क रुशनाईआ। सोहँ शब्द सुणाए सच तराना, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। दो अक्खर गाए एका गाणा, चौथा जुग मेट मिटाईआ। मुख शर्माए रवि ससि

भाना, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खड़ग खण्डा इक्क चमकाईआ। खड़ग खण्डा हरि जगदीश, शब्दी शब्द उठांयदा। लक्ख चुरासी पीसण जाए पीस, कलिजुग चक्की जूठी झूठी आप चलांयदा। लेखा जाणे जगत हदीस, अञ्जील कुराना फोल फुलांयदा। राज राजाना वेखे सीस, सीस ताज ना कोई टिकांयदा। लेखा जाणे बीस इकीस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची धारा आप चलांयदा। बीस इकीसा हरि जगदीसा, शाहो शबीसा आप अख्वाईआ। साचा ताज रखाए सीसा, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क हदीसा, चार वरनां करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे मूसा ईसा, संग मुहम्मद चार यार एका धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर निरँकारा आपणा खेल आप खलाईआ। नर नरायण हरि निरँकार, निरगुण आपणा नाउँ धराया। प्रगट होया विच संसार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। लोआं पुरीआं खेल अपार, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज भेव ना राया। वण्डणहारा आपे वण्ड, आपणा हिस्सा आप वण्डाया। कलिजुग जीव सुत्ते दे कर कंड, पुरख अबिनाशी फेरा पाया। सृष्ट होई रंड, साचा कन्त ना कोई हंढाया। तीर्थ तट्टां भेख पखण्ड, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती साचा कन्त ना कोई मिलाया। गुर दर मन्दिर मस्जिद पायण डण्ड, हरि का रूप दिस ना आया। भरमां ढाई ना किसे कंध, हउमे कंध ना कोई तुड़ाया। घर घर चढ़या ना साचा चन्द, गुर का शब्द ना किसे अल़ाया। खुशी होया ना बन्द बन्द, निरगुण रूप नज़र ना आया। रसना लाया मदिरा मास गंद, परमानंद सर्ब तजाया। जो जन एका अक्खर गाए सुहागी छन्द, लक्ख चुरासी दए कटाया। कलिजुग अन्तिम सोहँ शब्द जो गाए बत्ती दन्द, बीस बीसा एका धार बंधाया। सतिगुर पूरा हरि बख्शिंद, कोटन कोटि पापी लए तराया। मनमुख जीव भागां मंद, अन्तिम बैठे मुख भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे लए जगाया। गुरमुख साचे जगावण आया, निरगुण जोती जामा धार। जग विछड़े मेल मिलावण आया, निहकलंक नरायण नर अवतार। शब्द गुर इक्क समझावण आया, आदि जुगादी मीत मुरार। घर मन्दिर दीप जगावण आया, घोर अन्धेरे होए उज्यार। बूंद स्वांती आप प्यावण आया, भर प्याला ठंडी ठार। इक्क इकांती दरस दिखावण आया, स्वच्छ सरूपी हरि निरँकार। साचे मार्ग आपे लावण आया, हरि बूटा जगत अपार। पंच विकारा गढ़ तुड़ावण आया, नाम खण्डा मारे मार। जूठा झूठा लड़ छुड़ावण आया, सच सुच्च करे प्यार। आसा तृष्ना जगत मिटावण आया, गुर चरन कराए इक्क प्यार। उजड़या घर फेर वसावण आया, काया मन्दिर खोल्ह किवाड़।

पंच प्यारे नाल रलावण आया, सिर बन्नी सच्ची दस्तार। तख्त ताज राज जोग साची वस्त झोली पावण आया, लोकमात बण सिक्दार। कागों हँस बणावण आया, गुरसिख रले ना कागी डार। अन्तिम आपणी गोद सुहावण आया, गुरमुख साचे लाल लए उभार। जोती जोत जगावण आया, घर घर दीपक होए उज्यार। जगत अभ्यास पन्ध मुकावण आया, सिर हथ्थ रक्ख करतार। चार जुग दी लग्गी प्यास बुझावण आया, हथ्थ फड़ सुराही मीत मुरार। ब्रह्मा विष्न शिव गुरसिख तेरी सेव लगावण आया, करोड़ तेतीसा निउँ निउँ करे निमस्कार। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा दासी दास बनावण आया, तेरा मन्दिर वखाए उच्च दरबार। सचखण्ड दुआरा आप सुहावण आया, निरगुण जोती जामा धार। गुरमुख एका रंग रंगावण आया, जोद्धा सूरबीर गुर करतार। नाम खण्डा इक्क चमकावण आया, चण्डी चमके वारो वार। वर भंडी मेट मिटावण अया, भेख पखण्डी ना दिसे विच संसार। साची डण्डी राह चलावण आया, चार वरनां करे प्यार। वासना गंदी सर्ब कढावण आया, शब्द सुगंधी भरे भण्डार। चन्द नौचन्दी आप चढ़ावण आया, आपे वेखे सीतला धार। भागां मंदी धरत मात फेर उठावण आया, कलिजुग अन्तिम हौला करे भार। हरिसंगत तेरे उत्तों फुल्ल बरसावण आया, आपणी सेवा करे सेवादार। राए धर्म तेरे दर तों आप दुरकावण आया, चित्रगुप्त लेखा दए ना कोई वखाल। लाड़ी मौत मुख शर्मावण आया, नेत्र नैणां लए उग्घाड़। गुरसिख तेरी सेज सुहावण आया, अंदर वड़ आप निरँकार। बज़र कपाटी तोड़ तुड़ावण आया, शब्द हथौड़ा देवे मार। सर सरोवर आप नुहावण आया, दुरमति मैल दए उतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दरस दिखाए आप करतार। हरि दर्शन चुक्के जग लेखा, जोग अभ्यास ना कोए जणाईआ। जिस जन आए नेत्र पेखा, अजप्पा जाप रूप वटाईआ। सतिगुर पूरा दस दस्मेशा, रामा कृष्ना रंग रंगाईआ। ईसा मूसा जाणे लेखा, चार यार संग मुहम्मद करे कुड़माईआ। कलिजुग अन्तिम कढ्ढे भरम भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। मेल मिलंदड़ा हरि भगवाना, शाहो भूप अख्वाया। शब्द सुणंदड़ा धुर तराना, रागी राग अलाया। जोत जगंदड़ा दो जहाना, जागरत जोत करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम फेरा पाया। फेरा पाए हरि रघुराय, रघपत वड्डी वड्याईआ। डुब्बदे पाथर लए तराय, जो जन आए सरनाईआ। त्रैगुण माया ना सथ्थर कोई विछाए, पंज तत्त ना सेज सुहाईआ। नेत्र नैण अथ्थर ना कोई वहाए, जिस हरि मिल्या बेपरवाहीआ। कलिजुग झक्खड़ रिहा झुलाए, जीव जंत जड़ उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। कलिजुग अन्धेर झुलया, चार कुंट नौ खण्ड। कलिजुग बूटा अन्तिम फुलया,

प्रभ वेखणहार ब्रह्मण्ड। सम्मत सतारां अठारां जाए हुलया, दीसे दुहागण रंड। साचे तोल ना किसे तुल्या, प्रभ पाई ना कोई वण्ड। लोकमात ना पए मुलया, नाता जुड़या भेख पखण्ड। सच दुआरा एका खुल्हिआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप आपणे लए मंग। हरिजन साचे मंगण आया, दीना नाथ के नाथ। आपणे अंगण आप उठावण आया, आप रखाए सगला साथ। आपणा कंगण नाम पहनावण आया, आप जणाए पूजा पाठ। आपणा मृदंगन आप वजावण आया, सोहँ शब्द उतारे एका घाट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख विकाए ना किसे हाट। गुरसिख हट्ट किसे ना विकना, करता कीमत आपे पाईआ। लक्ख चुरासी तेरा राह तक्कणा, साचा मार्ग पन्थ इक्क वखाईआ। नाम दो जहानी रक्खणा, जीव जंत रसना गाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों विरोले मक्खणा, सृष्ट सबाई छाछ बणाईआ। अन्तिम कलिजुग करे भक्खणा, तेरा तेरा होए सहाईआ। बण भिखारी मंगे दच्छणा, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। जूठ झूठ काया विच ना रक्खणा, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। बिन हरि नामे भाण्डा सखणा, वेले अन्त कम्म ना आईआ। साचा मार्ग बिन सतिगुर पूरे किसे ना दस्सणा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। वेद कतेब हरि का नाम गायण जसना, हरि का नाम हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप मिलाईआ। हरिजन साचा मेलणा, कर किरपा आप निरँकार। कलिजुग अन्तिम खेल खेलणा, प्रगट हो विच संसार। जोत निरँजण चाढ़े तेलणा, आदि निरँजण कर प्यार। सतिगुर पूरा सज्जण सुहेलणा, लोकमात करे विचार। आपे जाणे वक्त वेलणा, वार थित पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख रखाए साचे लाड़। गुरमुख साचा लाड़ा, हरि साचा आप उठांयदा। शब्द घोड़े आपे चाढ़ा, वाग आपणे हथ्थ रखांयदा। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, मोह विकारा मेट मिटांयदा। जोत जगाए बहत्तर नाड़ा, घर घर विच वेख वखांयदा। अंदर मन्दिर वखाए इक्क अखाड़ा, गोपी काहन आप नचांयदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँग्घी कंदर वेख वखांयदा। शब्द उठाए तेज कटारा, चण्ड प्रचण्ड आप चमकांयदा। तिक्खीआं रक्खे दोवें धारा, गुरमुख मनमुख वेख वखांयदा। गुरमुखां बख्शे चरन प्यारा, मनमुख दर दुआर आप फिरांयदा। दोहां विचोला सिरजणहारा, भेव कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा हरि भगवाना, भगवन रूप वटांयदा। भगवान रूप शाहो भूप, निरगुण नरायण वटाईआ। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरी पाईआ। जगत नाता तोड़े जूठ झूठ, सतिजुग सच सुच्च वरताईआ। जन भगतां उप्पर जाए तुट्ठ, गुरमति इक्क समझाईआ। मनमति सतिगुर दवारिउँ

जाए रुठ, दर घर साचे रहिण ना पाईआ। हरिजन हरि जगत विकारा कढ्ढे कुट्ट, काया कंदर फोल फुलाईआ। दूई द्वैती वेखे फुट्ट, भरमी भरम भुलाईआ। हरिसंगत बन्हाए एका मुट्ठ, चार वरन भैणा भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हथ्थ वडियाई पारब्रह्म, जुग जुग खेल खलाया। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरा पाया। पवण स्वासी ना लए दम, रसना जिह्वा ना कोई हिलाया। नेत्र नैण ना रोवे छम्म छम्म, आलस निन्दरा विच ना आया। हरख़ सोग ना खुशी गम, चिंता चिखा ना कोए जलाया। ना घड़े ना कोई जाए भन्न, घड़ण भन्नणहार आप अख्वाया। जन भगतां बेड़ा देवे बन्न्ह, जुग जुग आपणा रूप वटाया। धरू प्रहलाद चढ़ाया चन्न, निरगुण साचा खेल खिलाया। हरिजन आत्म जाए मन, मन मणका आप फिराया। जोत जगाए काया तन, तत्ती वा रहे ना राया। गुरसिख मति कहे धन्न धन्न, सतिगुर पूरा साचा पाया। सुणया राग एका कन्न, छत्ती राग रहे शर्माया। धन्न जणेंदी माई जिस जणया जन, सतिगुर पूरे मेल मिलाया। भाण्डा भरम देवे भन्न, लंका गढ़ हँकार तुड़ाया। लेखा लग्गा खादा पीता पाणी अन्न, जिस जन नेत्र हरि हरि दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए तराया। कलिजुग तत्ती अग्नी अग्ग, सृष्ट सबाई रही जलाईआ। सतिगुर पूरा इक्क सरबग्ग, सूरबीर आप अख्वाईआ। गुरमुखां बन्न्हे साचा तग, नाम तन्दन तन्द बंधाईआ। दरस दिखाए उप्पर शाह रग, शाह सुल्ताना वड्डी वड्याईआ। दीपक जोती गया जग, जुग करता आप जगाईआ। शब्द नगारा रिहा वज, सतिगुर पूरा आप वजाईआ। हरिसंगत तेरी रक्खे लज, शब्द दोशाला उप्पर पाईआ। जो घड़या सो जाए भज्ज, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग लौण ना देवे किसे अज पज, काया कफ़नी फोल फुलाईआ। हरिजन तेरा मक्का काअबा काया मन्दिर करना साचे हाजी हज्ज, उच्च महिराब हरि नवाब साचे हुजरे बैठा आसण लाईआ। चरन घोड़े दए रकाब, दूई द्वैती मुख पर्दा लाहे नकाब, आपणे हथ्थ रक्खे सुराही आब हयात, भर प्याला आप प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बेड़े देवे चाढ़, साचा बेड़ा इक्क वखाईआ। साचा बेड़ा कर त्यार, हरि सतिगुर सेव कमांयदा। गुरमुखां चुक्के आपे भार, आपणे कंध उठांयदा। चप्पू लाए नाम अपार, मँझधार आप तरांयदा। डूँघा सागर करे पार, कलिजुग वेख वखांयदा। आपे जाणे आर पार, सच किनारा आप सुहांयदा। सति सतिवादी दए सहार, सति सागर फोल फुलांयदा। काया गागर खेल अपार, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। भगत सौदागर वणज वापार, नामा हट्ट खुल्हांयदा। शब्द अनमोला भर भण्डार, काया चोला रंग रंगांयदा। तोला बणया हरि निरँकार, साचा कंडा हथ्थ उठांयदा।

सोलां कलां ना कोई अवतार, अकल कल धारी रूप वटांयदा। भोला भाला बण विच संसार, सृष्ट सबाई आप भुलांयदा। गुरसिख दुआरे गोला होए आप निरँकार, निरगुण सरगुण सेव कमांयदा। सरगुण मेला विच संसार, निरगुण भुल्ल कदे ना जांयदा। निरगुण साचा मीत मुरार, सरगुण विछड़ कदे ना जांयदा। सरगुण ढह ढह पए दुआर, निरगुण फड़ फड़ गले लगांयदा। निरगुण देवे सच प्यार, सरगुण लक्ख लक्ख शुकर मनांयदा। सरगुण फड़ फड़ पौड़े देवे चाढ़, निरगुण आपणे आपणे घर बहांयदा। गुरसिख गुर सतिगुर सोहे इक्क दुआर, गुर चेला नाउँ वटांयदा। जागरत जोत जगाए अगम्म अपार, दीवा बाती इक्क वखांयदा। कमलापाती मीत मुरार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला एका घर, घर घर विच मेल मिलांयदा। घर मेला कमलापातया, घर नैनण नैण धार। घर एका रंग वेखे प्रभातया, दिवस रैण ना कोई विचार। घर गाए साची गाथिआ, अक्खर वक्खर अपर अपार। घर मन्दिर पूजा पाठया, घर पवण दीप हुलार। घर मेला सगला साथया, मेल मिलावा साचे यार। घर होए साची आरतीआ, धूप दीप खेल अपार। घर मंडल रास मंडप आप सुहासया, घर चन्द सूरज अवतार। घर उत्तम होए ज़ातया, घर ब्रह्म करे विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लाए पार। घर मन्दिर हरि सुहञ्जणा, घर सोहे हरि भगवान। घर दीपक जगे निरँजणा, घर झूले सच निशान। घर मेला साचे सज्जणा, घर दरस श्री भगवान। घर करना सच्चा मजना, घर धूढ़ चरन अशनान। घर करना साचा हजना, घर मिले इक्क अमाम। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए पछाण। हरिजन साचा आप पछानया, कर किरपा गुर करतार। देवे नाम गुण निधानयां, नाता तोड़ सर्ब संसार। लक्ख चुरासी पुण पुण छाणया, गुरमुख लाल लए निकाल। किसे हथ्थ ना आए राजे राणया, शाह सुल्तान रहे भाल। किसे दिसे ना मन्दिर गाणया, गुर दर मन्दिर मस्जिद बैठे ला ला ध्यान। गुरसिख तेरा हट्ट मकानया, अंदर वड़या दीन दयाल। देवणहारा धुर फ़रमाणया, शब्द जणाई वड मेहरबान। जो जन चले सतिगुर भाणया, घर घर दरस दिखाए आण। लभ्भण जाए ना कोई विच बीआबानयां, लक्ख चुरासी ख़ाक रही छाण। गुरसिख गुरू गुर सतिगुर आप पछानया, आपणी करे जाण पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए गुण निधानया। गुण निधाना हथ्थ ना आंवदा, सृष्ट सबाई रही कुरलाईआ। कोटन कोटि जीव कुरलांवदा, नेत्र नीर रहे वहाईआ। अठसठ तीर्थ मनमुख ख़ाक छाणदा, काया मन्दिर ना फोल फुलाईआ। ज्ञान ध्यान जगत वासना फिरे वाचदा, मन वासना ना कोए गंवाईआ। चारों कुंट फिरे नाचदा, निज आत्म ना कोई रसाईआ। भाण्डा वेख माटी काच दा, पोचे पोच चमकाईआ। आपणी वस्त ना आपे जाचदा, साचा कंडा

३७१
०६

हथ्थ उठाईआ। आपणा घर ना किसे भासदा, घर भुल्ली सर्ब लोकाईआ। कलिजुग वेला जंगल जूह उजाड़ प्रभास दा, सुंञी रैण अन्धेरी छाईआ। गुरमुख विरला दरसी दरस प्यास दा, दर हरि दर्शन आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग भगतन होए सहाईआ। भगतन होए सहायक, हरि साचा सच भगवानया। जिस जाता हरि हरि नायक, हरि देवे धुर माणया। आदि जुगादी सदा सहायक, समरथ पुरख इक्क अख्वानया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, किसे हथ्थ ना आए वड वड दानया। ज्ञानी ध्यानी वड विद्‌वानी, चारों कुंट खोज खुजाईआ। किसे हथ्थ ना आए सच निशानी, पढ़ पढ़ रसना जिह्वा वाद विवाद वधाईआ। अन्तर मन्त्र पढ़या अक्खर ना एका बाणी, जो बाण निराला दए लगाईआ। रसना जिह्वा रिड़क्या पाणी, साचा मक्खण हथ्थ ना आईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना मारे तीर निशानी, सच निशाना ना कोए लगाईआ। बिन हरि शब्द लेखे लग्गे ना किसे बिरध बाल जवानी, मानस बैठे जन्म गंवाईआ। किसे हथ्थ ना आए ठंडा पाणी, अठसठ तीर्थ फेरीआं रहे पाईआ। नज़र ना आए पद निरबाणी, दोए दोए लोचण जगत वेख वखाईआ। रंग माणयां चारे खाणी, भोग बिलास वड वड्याईआ। हरि का शब्द ना मिल्या साचा हाणी, साची सेज ना किसे सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेखे थाउँ थाँईंआ। थान थनंतर सोभावन्त, हरि सतिगुर आप सुहांयदा। हरिसंगत बुझाए तेरी बसन्तर, अमृत मेघ इक्क बरसांयदा। सोहँ शब्द गाउणा साचा मन्त्र, जम का दूत नेड़ ना आंयदा। गुर का चरन ध्यान साचा मन्त्र, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। आपे बिध जाणे अन्तर, जो जन नेत्र दर्शन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाम आप रखांयदा। सोहँ शब्द ब्रह्म पारब्रह्म, हरि हरि नाउँ धराया। हरिसंगत लेखा चुक्या जगत ग़म, चिंता चिख़ा दए मिटाईआ। रसना गाउणा दमा दम, जिह्वा साची सेव कमाया। मन की वासना रक्खे मन, मन पंखी बंध बंधाया। मति मतवाली रक्खे तन, त्तत्व तत्त ना कोए जलाया। बुध बिबेकी कहे धन्न धन्न धन्न, सतिगुर सच्चा पाया। अग्गे देवे ना कोई डंन, राए धर्म ना सीस उठाया। जिस जन बेड़ा देवे बन्न्, मँझधार ना कोई डुबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरा बण मलाह, खेवट खेटा रूप वटाया। खेवट खेटा सतिगुर पूरा, जगत मलाह अख्वाया। गुरमुखां अग्गे हाज़र हज़ूरा, आदि जुगादी वेस वटाया। कलिजुग जूठा झूठा हूंझे कूड़ा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाया। हरिसंगत तेरे मस्तक लाए चरन धूढ़ा, जोत लिलाटी आप जगाया। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, जो जन सरनाई आया। सोहँ रंग रंगाए गूढ़ा, उतर कदे ना जाया। नाम कंगन पहनाए चूड़ा, आप आपणा सगन मनाया, कलिजुग अन्तिम आपणा कौल करे पूरा, कीता कौल

भुल्ल ना जाया। सतिगुर पूरा दाता सूरा, सरबंग आप अख्वाया। वसणहारा नेड़ दूरा, दूर नेड़े पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेले आपणे दर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा, आपणा आप खुल्हाया। दर दरवाज़ा खुल्हिआ, खोल्हणहार करतार। सतिगुर पूरा कदे ना लाए मुल्लया, देवे दरस अगम्म अपार। आपे फलया आपे फुलया, हरिसंगत वखाए सच्ची गुलज़ार। हरिजन लोकमात कदे ना रुलया, करे कराए सच वणज वपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरे अग्गे खड़, लेखा जाणे लिखणहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा सांझा यार।

✻ ८ चेत २०१७ बिक्रमी बचन सिँघ दे घर पिण्ड काणा कौंटा ज़िला गुरदास पुर ✻

हरि साचे सच घाड़ण घड़या, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सो पुरख निरँजण अंदर वड़या, निरगुण आपणा खेल खलाईआ। हरि पुरख निरँजण फड़या लड़या, अंगीकार आप अख्वाईआ। एकँकारा अक्खर पढ़या, निअक्खर आप पढ़ाईआ। आदि निरँजण कदे ना सड़या, ना मरे ना जाईआ। श्री भगवान आपणे अग्गे आपे अड़या, आप आपणा बल धराईआ। अबिनाशी करता निर्भय भय आपे करया, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। पारब्रह्म प्रभ बैठा दड़या, दर दुआर सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा सचखण्ड निवासी बणाए एका सरया, सर सरोवर इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग वटाया। रंग वटाया पुरख अकाल, सुते प्रकाश अख्वांयदा। लालण लाल जल्वा नूरी जलाल, बेमिसाल आप अख्वांयदा। वसणहारा सचखण्ड सची धर्मसाल, सच मुकाम इक्क वड्यांअदा। सति सरूपी बण दलाल, थिर घर साचे मेल मिलांयदा। खेले खेल दीन दयाल, गोबिन्द गोपाल नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, निरगुण धारा आप चलांयदा। निरगुण धार खेल अपार, हरि साचा सच वरताईआ। सो पुरख निरँजण हो त्यार, आप आपणा बल धराईआ। आपणी इच्छया भर भण्डार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणा सुहाए बंक दुआर, एका बंक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण लेखा सहिज सुभाईआ। निरगुण लेखा कंचन रंग, हरि साचे मन्दिर सोभा पांयदा। पारब्रह्म सूरा सरबंग, दिस किसे ना आंयदा। आदि जुगादी आप आपणे लगाए अंग, आपणी सेज आप हंढांयदा। सचखण्ड दुआर मंगे एका मंग, भिच्छया इच्छया वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप वड्यांअदा। दर घर साचे हरि हरि वेस, सूही धार चलाईआ। परम पुरख प्रभ हो प्रवेश, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। आदि जुगादी इक्क आदेश, एका एक सीस झुकाईआ। इक्क

इकल्ला रिहा वेख, घर साचे कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। बेपरवाह साची धार, सति सफैदी आप वहांयदा। दर घर साचे कर प्यार, हरि हरि साचा सगन मनांयदा। आपणे रंग रवे करतार, आपणी नदरी नदर सुहांयदा। जानणहारा खेल अपार, सचखण्ड निवासी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बन्धन पांयदा। बन्धन पाए हरि हरि रूप, पीला रंग वटाईआ। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरा पाईआ। आदि जुगादी सति सरूप, दर घर साचे रिहा सुहाईआ। एका ताणा एका सूत, ताणा पेटा इक्क वखाईआ। आपे जाणे आपणी रुत्त, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। आपे होए अबिनाशी अचुत्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाईआ। वेखणहारा बेपरवाह, हरि सज्जण शाह सुल्तानया। नीला रंग लए रंगा, आपणी चोली आप वखानया। आपणे अंग लए लगा, अंगीकार श्री भगवानया। साचा संग लए निभा, दरगाह साची हो परवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वरते आपणे भाणया। आपणा भाणा जाणे साहिब सुल्तान, सति पुरख निरँजण आप जणांयदा। आपे जाणे आपणी आण, आपे हुक्मी हुक्म सुणांयदा। आपे पाए पद निरबाण, निगहबान आप हो आंयदा। आपे करे सच पछाण, आपणी कीमत आपे पांयदा। आप सुहाए सच अस्थान, सच सिँघासण आसण लांयदा। आपणा रंग इक्क पछाण, कालख टिक्का मस्तक लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति रंग कर त्यार, सचखण्ड जोती धार, सच सिँघासण हरि निरँकार, आपे बैठे सिरजणहार, आप आपणी जोत जगांयदा। सत्त रंग हरि हरि धारा, सो पुरख निरँजण आप चलांयदा। हरि पुरख निरँजण वेखणहारा, नेत्र नैण इक्क उठांयदा। एकँकारा कर पसारा, घर साचे ख़ुशी मनांयदा। आदि निरँजण पावे सारा, गुप्त ज़ाहर रूप अनूप आप दरसांयदा। अबिनाशी करता कर प्यारा, आप आपणा संग निभांयदा। श्री भगवान सच्ची सरकारा, साचा बस्त्र इक्क वखांयदा। पारब्रह्म कर श्रंगार खोल्हे बन्द थिर घर किवाड़ा, निज डेरा आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति निशाना हरि भगवाना, घर साचे आप झुलांयदा। सत्त रंग निशाना कर त्यार, सचखण्ड आप झुलाईआ। पंचम मुख सीस दस्तार, हरि साचा आप रखाईआ। सच सिँघासण बैठ निरँकार, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। शब्द अगम्मी लए उभार, सुत दुलारा आप उठाईआ। आपणी शक्ती भर भण्डार, सच व्यक्ती इक्क बणाईआ। बूंद रक्ती ना कोए पसार, मात गर्भ ना कोई रखाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, लेखा लिखे ना कोई शाहीआ। सचखण्ड वसे आप निरँकार, सच दुआरा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। साचा तख्त सच सुल्ताना,

३७४ ०६

हरि साचा कर्म कमांयदा। शब्द नाउँ धर श्री भगवाना, नर हरि नरायण आप अख्वांयदा। धरया वेस साचे कान्हा, साचा मुक्ट सीस टिकांयदा। शब्द अगम्मी पहरे बाणा, दिस किसे ना आंयदा। गाए राग धुन तराना, ताल तलवाड़ा ना कोए वजांयदा। आपे होया जाणी जाणा, आपणी बूझ आप बुझांयदा। आपे देवणहारा माणा, आप आपणा माण रखांयदा। आपे वरते आपणा भाणा, हरि भाणा वड वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे बैठा वड़, सच सिँघासण आसण लांयदा। सचखण्ड दुआरे हरि हरि बराजे, साचे तख्त सुहाया। पुरख अबिनाशी आपणा रचया आपे काजे, आपे वेख वखाया। आप सुहाए सीस ताजे, आपे रंग रंगाया। आपे मारनहारा वाजे, आप आपणा हुक्म सुणाया। आपे रक्खणहारा लाजे, आपणी लज्जया आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच तख्त बैठ सुल्ताना, आपणा करे आप ध्याना, आप आपणा भेव खुल्हाया। सत्त रंग निशाना हरि हरि चाढ़, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। धुरदरगाही बण बण लाड़, तख्त ताज दए वड्याईआ। आपणी इच्छया आपणे विच्चों काड, आपणी झोली आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खलाईआ। पंचम ताज रक्ख सीस हरि, साचा खेल खिलांयदा। शब्द अनादी सुत अग्गे धर, आप आपणा हुक्म चलांयदा। सुत दुलारा चरनी गया पड़, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। एका अक्खर जावां पढ़, दूजा लेख ना कोई वखांयदा। आदि जुगादी तेरा दर, दर साचा इक्क सुहांयदा। सो पुरख निरँजण दित्ता वर, बालक भिच्छया मंग मंगांयदा। हरि पुरख निरँजण किरपा देवे कर, दे मति आप समझांयदा। दो जहान चुकाए तेरा डर, भय आपणा आप वखांयदा। तेरी धार तेरा प्यार तेरे नाल जाए रल, हरि साचा आप रलांयदा। करे त्यार महांकाल, शब्द शब्दी संग रखांयदा। पंचम मुख सुहाए एका वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहांयदा। शब्द मंगी मंग हरि दुआर, हरि साचा झोली पांयदा। आपणी इच्छया कर त्यार, महांकाल नाल रलांयदा। पंचम मुख सुहाए एका वार, छेवां दर खुल्हांयदा। सत्तवें वज्जे साचा ताल, सति सतिवादी आप वजांयदा। महांकाल बण भिखार, पारब्रह्म अग्गे झोली डांहयदा। कवण रूप होए तेरा निरँकार, वेस अनेका भेव कोए ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति आप समझांयदा। महांकाल कर ध्यान, हरि साचा सच जणाईआ। खेले खेल श्री भगवान, भेव अभेद भेव छुपाईआ। सचखण्ड दुआर सच मकान, आदि जुगादी आसण लाईआ। झुलदा रहे शब्द निशान, हरि साचा आप झुलाईआ। बैठा रहे राज राजान, सीस आपणा मुक्ट टिकाईआ। देंदा रहे दानी दान, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। महांकाल सुण हरिजन मीत,

३७५ ०६

सचखण्ड दुआरे आप सुणाईआ। पारब्रह्म चलाए आपणी रीत, सो पुरख निरँजण हुक्म सुणाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर पतित पुनीत, पतित पावण आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेख वखाईआ। हरि लेखा लेख अपार, भेव कोए ना पांयदा। सुत दुलारा तेरा यार, तेरा संग रखांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं महल्ल लए उसार, रवि ससि तेरी अंस बणांयदा। मंडल मंडप कर पसार, कोटन कोटि सतार चमकांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दए अधार, आपणी भिच्छया इक्क वखांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, साचे भाण्डे आप घड़ांयदा। साचा बणे हरि ठठयार, रूप अनूप आप वटांयदा। खेले खेल अगम्म अपार, वेद कतेब ना कोई जणांयदा। गुर पीर ना पावे सार, साध सन्त ना कोए लिखांयदा। मंगण मंग बण भिखार, साचा दर इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटांयदा। लक्ख चुरासी कर पसार, जुग जुग आपणी खेल खलाईआ। सुत दुलारे करे प्यार, शब्द शब्दी विच समाईआ। आपे करे बन्द किवाड़, अंदर बैठा मुख छुपाईआ। आपे करे सच जैकार, आपणा नाअरा आपे लाईआ। आपे पावणहारा सार, हरिजन साचे लए उठाईआ। आपे करनहार ख्वार, घट घट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महांकाल इक्क समझाईआ। महांकाल हरि समझाया, भुल्ल रहे ना राईआ। पुरख अबिनाशी आप उपजाया, तेरी बिन्द आप धराईआ। मात पित ना कोई बणाया, शब्द दुलारा बणया भाईआ। तेरी सेवा सच वखाया, हरि साचा आप कराईआ। दूसर कोई वेख ना पाया, नेत्र नैण नज़र ना आईआ। चरन दुआर इक्क समझाया, दर घर साचा आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खलाईआ। चरन दुआर साचा घर, महांकाल समझांयदा। ना पुरख ना नारी नर, नर नरायण रूप वटांयदा। आपणी करनी आपे कर, करता करनी खेल खिलांयदा। पावे सार धरनी धर, धरत धवल आप वड्यांअदा। गगन पातालां आपे खड़, आपणे नेत्र वेख वखांयदा। सचखण्ड दुआर सुहाए गढ़, थिर घर साचे आसण लांयदा। आप फड़े आपणा लड़, आपणा पल्लू शब्द रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी सेवा सेव समझांयदा। महांकाल तेरी साची धार, हरि साचे सच चलाईआ। जुग जुग ना होणा ख़बरदार, लोकमात ना लए अंगड़ाईआ। तेरा शाहो भूप हरि सिक्दार, दूसर हुक्म ना कोए सुणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग सुत्ता रहिणा पैर पसार, ना सके कोई उठाईआ। अन्तिम कलिजुग आए तेरी वार, प्रभ साचा लए जगाईआ। लोकमात लए अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सत्त रंग निशाना कर त्यार, नौ खण्ड पृथ्मी दए वखाईआ। पंचम मुख सीस दस्तार, शाह सुल्ताना आप टिकाईआ। राज राजानां करे ख्वार, तख्त

ताज ना कोई हंढाईआ। अन्तिम आए तेरी वार, तेरा रूप सर्ब दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महांकाल दए दुहाईआ। महांकाल दर दुआरा, हरि साचा आप खुल्हांयदा। इक्क वखाए पंचम ताजा, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। सत्त रंग निशाना मारे वाजां, सत्तां दीपां आप उठांयदा। निरगुण सरगुण रचया काजा, दिस किसे ना आंयदा। दिवस रैण वज्जे अनहद वाजा, तेरा घर वखांयदा। दो जहानां फिरे भाजा, लोआं पुरीआं चरनां हेठ रखांयदा। सच चलाए नाम जहाज़ा, आपणा आप बणांयदा। जन भगतां रक्खे अन्तिम लाजा, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। भाग लगाए देस माझा, सम्बल वड वड्यांअदा। ना कोई शाह ना नवाबा, नूरो नूर डगमगांयदा। ना कोई पाप पुन्न सवाबा, जगत अज़ाबा ना कोई रखांयदा। ना कोई मक्का ना कोई काअबा, जगत महिराब हुजरे डेरा लांयदा। ना कोई तीर्थ अठसठ दिसे आबा, सर सरोवर ना कोई नुहांयदा। ना कोई गुर पीर अवतार सन्त साध दिसे बाबा, बिरध बाल ना कोई जणांयदा। ना कोई घोड़ा ना चरन रकाबा, आसण सिँघासण ना कोई वखांयदा। ना कोई तीर तलवार खण्डा खड़ग ना साजण साजा, शस्त्र बस्त्र ना कोई चमकांयदा। शब्द सरूपी फिरे भाजा, महांकाल नाम धरांयदा। पारब्रह्म प्रभ तेरी कोई ना झल्ले ताबा, नेत्र नैण ना कोई उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचा आप सुहांयदा। महांकाल लए अंगड़ाई, चरन कँवल करे निमस्कारया, पारब्रह्म तेमति सुदी रहे वधाई, तेरा खेल अपर अपारया। सार शब्द तेरी सार ना पाई, सृष्ट सबाई वेख विचारया। लक्ख चुरासी होई हलकाई, लक्ख लक्ख गेड़ ना किसे निवारया। पुरख अबिनाशी बेपरवाही, कलिजुग करे खेल आप निरंकारया। निरगुण जोत जोत उज्यार होए रुशनाई, शब्दी जामा गुर गुर धारया। हरिजन पकड़े फड़ फड़ बाहीं, मनमुख जीव आप सँघारया। महांकाल अन्तिम फिरे चाँईं चाँईं, चार कुंट विच संसारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल पुरख करतारया। पुरख करतार खेल खलावणा, शब्द दुलारा आप उठाया। महांकाल हरि संग रलावणा, हरि घर साचे मेल मिलाया। दोहां विचोला आप अख्वावणा, दो दो धार आप बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हुक्मी हुक्म आप सुणाया।

३७७ ०६

✻ ८ चेत २०१७ बिक्रमी धिरता सिँघ दे घर पिण्ड काणा कौंटा ज़िला गुरदास पुर ✻

हरिजन हरि हरि मेलया, कर किरपा सतिगुर दीन। मेल मिलावा गुरू गुर चेलया, घर साचे जिउँ जल मीन। हरि मिल्या सज्जण सुहेलया, दर ठांडा करे सीन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पार कराए लोकां तीन।

तिन्नां लोकां पार किनारा, त्रैगण वेख वखाईआ। चौथे घर मीत मुरारा, हरिजन वेख वखाईआ। पंचम देवे नाम सहारा, पंचम मोह तुड़ाईआ। आदि जुगादी एकँकारा, गुरमुख लए उठाईआ। दो जहाना पार किनारा, जगत सागर वेख वखाईआ। तेरे कोल इक्क प्यारा, देवे देवणहार सहिज सुखदाईआ। गुरसिख मेला विच संसारा, गुर सतिगुर दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पकड़ बाहों दए तराईआ। तारनहारा सतिगुर पूरा, सर्बकला समरथ। दरस दिखाए हाज़र हज़ूरा, सगल वसूरे देवे मथ्थ। आसा मनसा करे पूरा, सद रक्खे दे कर हथ्थ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां बख्शे एका नाम निधान। साची वस्त नाम निधान, सोहँ दात झोली पाईआ। हरिजन बुज्झे आपणा आप, हउमे रंग गंवाईआ। मेट मिटाए तीनो ताप, तृष्ना अग्न बुझाईआ। जगत विकार मेटे संताप, सति सन्तोख वरताईआ। आपे होए माई बाप, गुरसिख बाल अंञाणे गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेट मिटाए अन्धेरी रात, घर साचा चन्द वखाईआ। चन्द चन्द्रमा सीतल धार, सतिगुर चरन दुआर। पुरख अबिनाशी पावे सार, गुरमुख साचे लए उभार। सतिगुर पूरा बख्शे चरन प्यार, जो जन मंगे मंग भिखार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख सज्जण उतारे पार किनार।

❋ ८ चेत २०१७ बिक्रमी मेला सिँघ दे घर पिण्ड बाबू पुरा ज़िला गुरदास पुर ❋

सतिगुर पूरा हरि भगवन्त, हरी हरि आदि जुगादि समाया। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणा वेस वटाया। आप बणाए आपणी बणत, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाया। शब्द जणाई महिमा अगणत, नाद अनादी नाद वजाया। सचखण्ड निवासी साचा कन्त, हरि सज्जण नाउँ धराया। साचा चाढ़े रंग बसन्त, नाम निधाना उतर ना जाया। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणा वेस धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अकल कलधारी खेल खलाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, एका रंग समांयदा। सतिगुर पूरा वाली दो जहान, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। सतिगुर पूरा गुण निधान, निरगुण आपणा नाउँ रखांयदा। सतिगुर पूरा साचा काहन, समरथ पुरख आप आपणा नाउँ धरांयदा। सतिगुर पूरा वड मेहरवान, दीन दयाल दया कमांयदा। सतिगुर पूरा सच निशान, नाम निशाना आप झुलांयदा। सतिगुर पूरा धुर फ़रमाण, आदि जुगादी आप सुणांयदा। सतिगुर पूरा देवे माण, माण निमाणयां आप हो आंयदा। सतिगुर पूरा पाए आण, हुक्म हुक्म आप सुणांयदा। सतिगुर पूरा जाणी जाण, हर घट अंदर वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, हरि शब्द शब्द वड्यांअदा। सतिगुर साचा सूर, सूरबीर आप अख्वांयदा। सतिगुर पूरा एका नूर, नूर नुराना डगमगांयदा। सतिगुर पूरा एका तूर, नाद अनादी आप वजांयदा। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूर, जुग जुग आपणी जोत जगांयदा। सतिगुर पूरा सर्बकला भरपूर, समरथ पुरख आप अख्वांयदा। सतिगुर पूरा आपे नेड़े आपे दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकांयदा। सतिगुर पूरा नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साचा जोड़ा जोड़ जुड़ांयदा। सतिगुर पूरा मस्तक लाए साची धूढ़, दुरमति मैल आप गवांयदा। सतिगुर पूरा चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। सतिगुर पूरा एका बख्शे जोती नूर, जोत निरँजण डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। सतिगुर पूरा साहिब सुल्तान, एका एकंकारया। सतिगुर पूरा नौजवान, बाल बिरध ना रूप वटा रिहा। सतिगुर पूरा श्री भगवान, शब्द भगौती हथ्थ उठा रिहा। सतिगुर पूरा सति नाम, निशाना एका एक झुला रिहा। सतिगुर पूरा सच ज्ञान, आत्म अन्तर इक्क ध्या रिहा। सतिगुर पूरा सति बिबान, सति सतिवादी आप वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, आदि जुगादी बण मलाह, साचा बेड़ा आप चला रिहा। सतिगुर पूरा बेड़ा बन्न्ह, आपणे कंध उठांयदा। सतिगुर पूरा आदि जुगादी कहे धन्न धन्न धन्न, नामा हट्ट विकांयदा। सतिगुर पूरा एका राग सुणाए कन्न, छत्ती राग दिस ना आंयदा। सतिगुर पूरा भाग लगाए काया तन, जोती जोत डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। सतिगुर पूरा दीन दयाल, दयानिध अख्वांयदा। करे कराए सदा प्रितपाल, आप आपणे रंग रंगांयदा। सतिगुर पूरा देवणहार सच्चा धन माल, नाम ख़ज़ाना हट्ट विकांयदा। सतिगुर पूरा तोड़णहार जंजाल, जागरत जोत इक्क जगांयदा। सतिगुर पूरा सति सरूपी बण दलाल, साचा मेला मेल मिलांयदा। सतिगुर पूरा आप वजाए आपणा ताल, तार सितार आप हिलांयदा। सतिगुर पूरा फल लगाए काया डाल्ह, फुल्ल फुलवाड़ी वेख वखांयदा। सतिगुर पूरा आपे चले अवल्लड़ी चाल, वेद कतेब भेव ना पांयदा। आप आपणी घाले घाल, घोली घोल आप घुमांयदा। सतिगुर पूरा चले नाल नाल, हरिजन साचे आप चलांयदा। सतिगुर पूरा दीपक जोती देवे बाल, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। सतिगुर पूरा अनहद वजाए साचा ताल, अनहद अनाहत राग अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सतिगुर पूरा आप अख्वांयदा। सतिगुर पूरा गहर गम्भीर, भेव किसे ना पाया। सतिगुर पूरा अमृत बख्शे ठांडा सीर, हरिजन साचे मुख चुआया। सतिगुर पूरा शब्द निराला मारे तीर, आर पार आप कराया। सतिगुर पूरा हउमे हंगता दूई द्वैती कढ्ढे पीड़, माया ममता मोह चुकाया। सतिगुर पूरा चोटी चाढ़े इक्क अखीर, दर मन्दिर

आप खुल्हाया। सतिगुर पूरा वड पीरन पीर, गुर पीर अवतार आपणी सेवा लाया। सतिगुर पूरा आदि जुगादी लक्ख चुरासी कट्टणहारा पीड़, थिर कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा बंक सुहाया। सतिगुर पूरा सर्ब गुण सागर, हरि सतिगुर नाउँ धरांयदा। जुग जुग जन भगतां करे कर्म उजागर, दुरमति मैल धुआंयदा। आपे बणे सच सौदागर, हरिजन साचे आपणा वणज वखांयदा। एका नाम रत्ती रत्नागर, चौदां लोकां एका हट्ट वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा खेल खिलांयदा। सतिगुर पूरा एकँकार, अकल कल वरताईआ। सतिगुर पूरा कर पसार, आदि जुगादि वेख वखाईआ। देवे जोत रवि ससि सूरज चन्न सतार, नूर नूर विच रखाईआ। सतिगुर पूरा पावे सार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँघे सागर हउँ तराईआ। सतिगुर पूरा मच्छ कच्छ देवे तार, लक्ख लक्ख आपणा गेड़ भवाईआ। सतिगुर पूरा साचा मार्ग देवे दस्स, जुग दाता बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा दो जहाना पन्ध मुकाए नस्स, आपणा डेरा सूरा सरबंग आप उठाईआ। सतिगुर पूरा हिरदे अंदर जाए वस, हरिजन साचे आप जगाईआ। सतिगुर पूरा रैण अन्धेरी मेटे मस, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। सतिगुर पूरा जगत विकारा देवे झस्स, गुरसिख तेरे चरन हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। सतिगुर साजण मीत, एका रूप दरसाया। इक्क सुणाए सुहागी गीत, लिखण पढ़ण विच ना आया। ब्रह्मे चारे वेद एका अक्खर ल्या जीत, हरि का रूप हरि हरि ही विच टिकाया। बिन हरिभगत कोए ना करे काया ठंडी सीत, सतिगुर पूरा अमृत मेघ आपणा आप बरसाया। आदि जुगादी पतित पुनीत, पतित पापी लए तराया। मेट मिटाए तेरी रीत, सतिजुग साचा मार्ग लाया। ना कोई देहुरा ना मन्दिर मसीत, शिवदुआला मट्ठ ना कोई सुहाया। ना कोई हस्त ना कोई कीट, ना कोई राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान ना कोई अख्वाया। अबिनाशी करता करे खेल इक्क अनडीठ, खाणी बाणी रही कुरलाया। सिर ते सोहे पंचम पीत, सति पुरख निरँजण आपणी छहबर आपे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा सर्ब सुखदाया। सतिगुर नाउँ, गुर गुर पूरा वड्डी वड्याईआ। निथावयां देवे साचा थाउँ, साची सरन सरन इक्क सरनाईआ। हरिजन उठाए फड़ फड़ बाहों, आप आपणी सेव कमाईआ। वसणहारा काया नगर गराउँ, साचा खेड़ा आप वसाईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला रक्खे ठंडी छाउँ, समरथ आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपे पिता आपे माउँ, बाल अञ्याणे साचा सीर बत्ती धार मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा वड बलवान, खेले खेल दो जहान, लेखा जाणे ज़िमी अस्मान, रवि ससि होए हैरान, भेव कोए ना पाईआ। सतिगुर पूरा धुर फ़रमाणा, ब्रह्मे विष्न आप जणांयदा। सतिगुर

पूरा इक्क तराना, करोड़ तेतीसा झोली पांयदा। सतिगुर पूरा इक्क ज्ञाना, सुरपति राजा इंद आप सुणांयदा। सतिगुर पूरा इक्क बिबाना, गण गंधर्ब आप उडांयदा। सतिगुर पूरा खेल महाना, कागद कलम ना कोई लिखांयदा। सतिगुर पूरा नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाया हरि निरँकार, एका रंग समाया। मरे ना जम्मे विच संसार, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा आपणा खेल खिलाया। आवे जावे वारो वार, लोकमात लए अवतार, धर धरनी वेख वखाया। रवि ससि करन पुकार, नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोई धराया। ब्रह्मा वेता गया हार, लेखा लिख्या जुग यार, जुग करता भेव ना राया। शंकर करे गिरआज़ार, बाशक तशका लए उभार, सहँसर मुख साची सेजा विष्नूं आसण लाया। एकँकारा खेल अपारा निराकार, बन्ने धार विच संसार, निहकलंका जामा पाया। शब्द डंका राउ रंका वासी पुरी घनका, आपणा आप सुणाया। हरिजन उठाए जिउँ जन जनका, आप फराय मन का मणका, पूजा पाठ ना कोई कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा वसया साचे घर, काया मन्दिर बंक सुहाया। काया मन्दिर गुरूदुआर, हरि सतिगुर आप सुहांयदा। जन भगतां करे सच प्यार, घर साचे मेल मिलांयदा। सन्तन देवे अमृत धार, निज रस मुख चुआंयदा। गुरमुख साचे लए उभार, काया कँवरी फोल फुलांयदा। गुरसिख साजण जाए तार, त्रैगुण माया फंद कटांयदा। दरस दखाए अगम्म अपार, पूर्ब लहिणा मूल चुकांयदा। लक्ख चुरासी कर ख्वार, बन्द ख़लासी आप करांयदा। रसन स्वासी पावे सार, मदिरा मासी दर दुरकांयदा। पंडत कांशी गए हार, हरि का रूप दिस ना आंयदा। जोत प्रकाश इक्क निरँकार, गुरमुख साचे जोत जगांयदा। घनकपुर वासी हो त्यार, घर चौथे दर खुल्लांयदा। शाहो शाबाशी मीत मुरार, पंचम मेला जोड़ जुड़ांयदा। पूरी करे कराए आस, जगत निरास ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया मन्दिर अंदर वड़, हरिजन साचे आप उठांयदा। काया मन्दिर सतिगुर वड़या, दिस किसे ना आया। आपणे पौड़े आपे चढ़या, साचा डण्डा हथ्थ रखाया। पहलों तोड़े हँकारी गढ़या, दूजा तोड़ तुड़ाईआ। सुखमन नाड़ी आपे खड़या, टेढी बंक पार कराया। समुंद सागर आपणा ताल आपे वड़या, शब्द ढोला आपे गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा वसे एका घर, घर मन्दिर आप वड्याआ। घर मन्दिर हरि सुहाया, पंज तत्त आकार। सतिगुर पूरे डेरा लाया, निरगुण जोत कर उज्यार। आपणा ढोला आपे गाया, अनहद वजाए तार सितार। हँ सोया आप उठाया, ब्रह्म करया घर उज्यार। बारां ससि रहे शर्माया, अभ्यास गए हार। हरि की किरन भेव ना राया, गुरमुख अंदर करे उज्यार। कोटन कोटि रवि ससि करन

३८२
०६

निमस्कार, जिस घर अंदर सतिगुर पूरे चरन टिकाया। बज़र कपाटी लाए पाड़, बन्द किवाड़ा आप खुल्हाया। सर सरोवर चरन दुआरे गुरसिख आए ठंडा ठार, चरन चरनोदक मुख लगाया। आत्म सेजा आप सुहाए मीत मुरार, सतिगुर पूरा सेव कमाया। गुरसिख सवाली कर शंगार, सोलां इच्छया भिच्छया झोली पाया। तन बस्त्र पहनाए इक्क निरँकार, नाम गीता इक्क वखाया। साचा कंगन कर प्यार, कन्त कन्तूहल हथ्थ उठाया। नाम रंगण मैहन्दी विच संसार, हरिजन साचे हथ्थ रंगाया। मौली तन्दन गिरवर गिरधार, दो जहानां बन्धन पाया। त्रैगुण माया भरन भण्डार, गुरमुख साची घोड़ी आप चढ़ाया। जोत निरँजण गुंदे वाग आपणी वार, आप आपणा वट्ट चढ़ाया। साची सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द इक्क अल्हाया। घर वर पाया पुरख करतार, ना मरे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिगुर पूरा इक्क अख्वाया। सतिगुर पूरा हरि हरि आया, दूसर अवर ना कोए जणांयदा। सभ दा पर्दा देवे लाहया, माया पर्दा ना कोए रखांयदा। चौथा बुरज देवे ढाया, गढ़ हँकार ना कोई बणांयदा। माया ममता करी सफाया, सिफ्त सालाही आप हो जांयदा। सृष्ट सबाई दाई दाया, हरि साचा रूप वटांयदा। साधां सन्तां वेखे पंज तत्त काया, कागी काग आप उडांयदा। गुरमुख विरले हरि हरि पाया, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। घर घर मन्दिर जगत बणाया, हरि का मन्दिर ना कोई वखांयदा। विद्या पढ़ पढ़ जगत सुणाया। आत्म विद्या ना कोई अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे देवे वर, सतिगुर पूरा दया कमांयदा। सतिगुर पूरा पारब्रह्म, परम पुरख अख्वाया। हरिजन तेरा जाणे आपे कम्म, तेरी करनी किरत कमाया। जुग जुग बेड़ा रिहा बन्न्ह, बन्न्हणहार बेपरवाहया। किसे ना वसया छप्पर छन्न, चार दिवार बन्द ना किसे कराया। जगत राग ना सुणे आपणे कन्न, नाद अनादी अनाद वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एकँकारा खेल अपारा, निरगुण धार आप चलाया। निरगुण धार सूरा सरबंग, पुरख निरँजण आप चलाईआ। सचखण्ड दुआर सच पलँघ, दूसर गुरमुख सेज सुहाईआ। त्रै काल दरसी आपे रंग, त्रै त्रै नाता तोड़ तुड़ाईआ। किसे दरों ना मंगे मंग, देवणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वड दाता सूरा सरबंग, हरिजन लगाए आपणे अंग, अंगीकार आप अख्वाईआ।

❋ ८ चेत २०१७ बिक्रमी दलीप सिँघ दे घर बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर ❋

मन मति जीव तयाग, दर घर साचा इक्क बुझाईआ। गुर शब्द नाम वैराग, बिरहों तीर निराला लाईआ। हँस बणया

कलिजुग काग, रसना जिह्वा विष्टा मुख तजाईआ। त्रैगुण माया बुझे आग, तत्व तत्त इक्क वखाईआ। माया डस्से ना डसनी नाग, रोग सोग ना कोई वखाईआ। सच सरनाई एका लाग, बिन सतिगुर ना कोई सहाईआ। हरि हरि मेला कन्त सुहाग, सोभावन्त नार वड्याईआ। सुरत सवाणी जाए जाग, गुर शब्दी शब्द जगाईआ। घर मन्दिर लग्गे साचा भाग, मेल मिलावा साचे माहीआ। जोती जगे इक्क चिराग, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। अनहद सुणाए आपणा राग, लिव अन्तर आप बुझाईआ। चरन धूढ़ी मजन माघ, दुरमति मैल गंवाईआ। शब्द सरूपी बन्ने ताग, धीरज जत सन्तोख इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। मन मति तुटे नात, गुर सतिगुर आप समझाईआ। मिटे रैण अन्धेरी रात, अज्ञान अन्धेर गंवाईआ। उत्तम करे हरिजन ज़ात, दीन मज़्ब ना कोई वखाईआ। दरस दखाए इक्क इकांत, नूरी जल्वा नूर इलाहीआ। अमृत देवे बूंद स्वांत, निझर झिरना आप झिराईआ। दरस दखाए इक्क इकांत, इक्क इकल्ला रूप वटाईआ। नाम वखाए साची दाता, सच वस्त आपणी झोली आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन मूर्ख मूढ़ आप समझाईआ। मन मूर्ख मुग्ध अञ्याण, सतिगुर पूरा आप समझांयदा। एका देवे नाम निधान, सच निशाना हथ्थ फड़ांयदा। शब्द जणाए धुर फ़रमाण, हुक्मी हुक्म आप अल्लांयदा। एका राग सुणाए कान, रागी राग सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मन ममता मोह चुकांयदा। मन ममता मोह चुकावणा, हरिजन साचे कर प्यार। दर दुआरे दरस दखावणा, दर दरवेशा बण भिखार। घर घर साचा दीप जगावणा, जोती नूर कर उज्यार। अमृत साचा जाम प्यावणा, भर प्याला ठंडा ठार। फड़ आपणे मार्ग लावणा, औझड़ मार्ग वेख संसार। हरिसंगत साचा मेल मिलावणा, हरिजन साचे लए उभार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन मति करे ख्वार। मन मति होए ख्वार, हरि करांयदा। हरिजन करे प्यार, दया कमांयदा। देवे दरस अपार, रूप वटांयदा। घर मन्दिर सोहे दुआर, चरन छुहांयदा। रंग चाढ़े हरि अपार, उतर ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमति इक्क वखांयदा। गुरमति सुर का रूप, सतिगुर शब्द जणाया। लेखा जाणे जूठ झूठ, माया ममता मोह मिटाया। जित दुआरे जाए तुट्ठ, दर दरका वेख वखाया। प्याए प्याला जाम घुट्ट, घर अमृत आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन मति तयागे शब्द बैरागे, सन्त सुहागे मेल मिलाया। सन्त सुहागा सोभावन्त, हरि सज्जण मीत मुरारड़ा। घर नरायण हरि हरि कन्त, दिवस रैण करे प्यारड़ा। वड वडियाई हरि रघुराई काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, रंग रंगे अपर अपारड़ा। आदि जुगादि लेखा जाणे जीव जंत, जन भगतां मीत मुरारड़ा। जुगा जुगन्तर

महिमा अगणत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आर पार किनारड़ा। आर पार हरि हरि डेरा, दिस किसे ना आया। आपे चार कुंट रक्खणहारा फेरा, दहि दिशा वेख वखाया। आपे वसे नेरन नेरा, दूर दुराडा आप हो जाया। आपे तारे कर कर आपणी मेहरा, मेहरबान नाउँ धराया। आपे भरम भुलाए कर कर हेरा फेरा, वल छल धारी खेल खलाया। आपे देवे उलटा गेड़ा, मन मनूआ आप गिड़ाया। आप वसाया काया खेड़ा, हरि मन्दिर हरि जू डेरा लाया। आपे बन्नृणहारा बेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका चप्पू नाम लगाया। हरिजन बेड़ा देवे तोर, हरि साचा सेव कमाईआ। होए सहाई अन्ध घोर, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। आपणे हथ्थ रक्खे डोर, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। गुरमुख गुरसिख पाया वर जेहा लोड़, घर मिल्या साचा माहीआ। जुगां जुगां दी लग्गी औड़, सतिगुर पूरा दए बुझाईआ। ग़रीब निमाणयां आपे जाए बौहड़, आपणा लेखा आप वखाईआ। लक्ख चुरासी वेखे रस मिठ्ठा कौड़, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। एथे ओथे दो जहानां श्री भगवाना एका लाए नाम पौड़, उच्चे डण्डे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, घर मेला मेल मिलाईआ। गुरमति सुर गुर रंग, सतिगुर साचा आप चढ़ाईआ। गुर गुर सूरा सरबंग, हरिजन साचे वेख वखाईआ। गुर गुर वजाए नाम मृदंग, तार सितार ना कोई हलाईआ। गुर गुर बैठ वेखे आप पलँघ, आत्म सेजा इक्क सुहाईआ। घर घर सदा सुहेला वसे संग, विछड़ कदे ना जाईआ। गुर गुर कट्टणहार भुक्ख नंग, सतिगुर पूरा आपणा नाउँ धराईआ। गुर गुर चढ़ाए साचा चन्द, चन्द चकोर इक्क लिव लाईआ। गुर गुर खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दी तोड़ वड वड्याईआ। गुर गुर वखाए परमानंद, निज आत्म कर रुशनाईआ। गुर गुर मिटाए जगत विकारा गंद, बत्ती दन्द ना मुख छुपाईआ। गुर गुर सुणाए सुहागी छन्द, वाह वाह गीत गोबिन्द अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। गुरमुख सज्जण साक, हरि नाता जोड़ जोड़ाया। पुरख अबिनाशी पाकी पाक, पतित पापी लए तराया। सतिगुर पूरा आपे जाणे आपणा वाक, भविक्ख भविक्खी लए सुणाया। हरि हरि चढ़े आपे आपणे राक, साचा घोड़ा नाम दौड़ाया। पारब्रह्म प्रभ अलक्खणा अलाख, लेखा लिख ना सके राया। करनहारा कक्खों लाख, लक्खों कक्ख आप बणाया। आपे दरस दिखाए हो प्रतक्ख, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। लेखा जाणे किशना सुखला पक्ख, वदी सुदी मुख भवाया। आप आपणे आपे लए रक्ख, जुग जुग सिर आपणा हथ्थ रखाया। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, लोआं पुरीआं आप फिराया। वसणहारा घट घट, हरि जू हरि मन्दिर हरि हरि डेरा लाया। गुरमुख काया दुरमति मैल देवे कट्ट, भर प्याला अमृत जाम प्याया। शब्द अनादी धुन

धुन मारे एका सट्ट, राग रागनी आप हिलाया। प्रगट होवे आपे झट पट, निरगुण सरगुण रूप वटाया। आप खुल्हाए आपणा हट्ट, एका वस्तू नाम विकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मनमति नाता देवे तोड़, गुरमति सुर चरन प्रीती देवे जोड़, जोड़णहार दिस ना आया।

✻ ८ चेत २०१७ बिक्रमी दीदार सिँघ दे घर पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर ✻

नेत्र लोचण नैण दरस दिदार, हरिजन रोग सोग मिटांयदा। गुर चरन कँवल धवल सच प्यार, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। धरनी धरत धवल कर उज्यार, दर घर साचे खेल खिलांयदा। अवरनी वरन गिरवर गिरधार, परम पुरख भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप धरांयदा। दरस दीदार सतिगुर मीत, नेत्र नैण उग्घाड़या। सतिगुर पूरा हरिजन वसे चीत, घर मन्दिर हरि उज्यारया। मेल मिलाए नाम अनडीठ, उच्च महल्ल अटल मुनारया। काया करे ठंडी सीत, सीतल धार आप चवा रिहा। एका रंग रंगाए हस्त कीट, कीट कीटा आप उपा रिहा। अमृत जाम प्याए एका मीठ, रस साचा आप भरा रिहा। हरिजन माणस देही जाए जीत, मानस जन्म लेखे ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे दरस वखा रिहा। दरस नेत्र हरि गुर सज्जण, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। मेल मिलावा दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागर पार कराईआ। नेत्र नाम निधाना देवे अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चरन धूढ़ बख्शे सच्चा मजन, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दरश दरस आप कराईआ। साचा दरस दर दरबार, हरि साचा सच करांयदा। साचा रूप पुरख करतार, निरगुण सरगुण आप वटांयदा। साचा रंग रंगे संसार, रंग रंगीला इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दरस आपणा भेव अलख निरँजण गुरू गुरदेव, आपे आप खलांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, हरी हरि खेल खलाईआ। मानस मानुख हो उज्यार, जोती नूर करे रुशनाईआ। शब्दी शब्द शब्द धुन्कार, घर मन्दिर आप सुणाईआ। अंदर वड़ हरि निरँकार, आपणा बैठा मुख छुपाईआ। आदि जुगादी साची धार, सच साचे आप उपाईआ। भगतन करे मात प्यार, जुग जुग आपणा खेल खलाईआ। आपे बख्शे बख्शणहार, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। सहँसर मुख ना सके विचार, रसना जिह्वा गुण गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, ब्रह्म ब्रह्म समझांयदा। ब्रह्म ब्रह्म बणे भिखार, पारब्रह्म सिँघासण आसण सोभा पांयदा। दोए जोड़ करे निमस्कार, रूप रंग ना कोए वखांयदा। ढह

ढह मंगे मंग दुआर, दर दरवाजा इक्क सुहांयदा। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, नैणी नैण ना कोई मटकांयदा। शब्दी शब्द करे पुकार, रसना जिह्वा ना कोई हिलांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, दे मति आप समझांयदा। तेरा रूप आप निरँकार, तेरा मेरा संग वखांयदा। मेरा संग सर्ब संसार, तेरा तेरे रंग रंगांयदा। तेरी मंग भरे भण्डार, आप आपणी वण्ड वण्डांयदा। ब्रह्म वस्त पावे पावणहार, साची वस्त हथ्थ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति आप समझांयदा। देवे मति पारब्रह्म ब्रह्म, हरि साचा सच सुणांयदा। मेरा तेरा एका धर्म, दूसर बरन ना कोए वखांयदा। मेरा हुक्म तेरा कर्म, करनी किरत वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क रखांयदा। साची सिख्या सुण उठ कर ध्यान, हरि साचा सच जणाईआ। ब्रह्म ब्रह्म तेरा रूप महान, पारब्रह्म रूप जणाईआ। लक्ख चुरासी देवे माण, आपणी अंस आप उपजाईआ। आपणे हथ्थ रक्खे निशान, तेरा निशाना आप झुलाईआ। आपे देवे जीआं दान, जी दाता बेपरवाहीआ। तेरा बणाए इक्क मकान, पंचम मेला मेल मिलाईआ। सुणाउँदा रहे धुर फ़रमाण, सच सितार इक्क हिलाईआ। भुल्ल ना जाए बण अञ्याण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। ब्रह्म वेख नेत्र खोल्ह, हरि साचा सच सुणांयदा। मेरा रूप तूही तूही रिहा बोल, तेरा मेरा रंग वखांयदा। हउँ वसणहारा सदा कोल, विछड़ कदे ना जांयदा। आदि जुगादी वजावणहार ढोल, आपणा मृदंग हथ्थ उठांयदा। तेरा मन्दिर आपे फोल, तेरी वस्त तेरे हथ्थ फड़ांयदा। तेरा भण्डारा भरे अमृत कँवल, ठांडा सीता इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा हुक्म आप सुणांयदा। साचा हुक्म ब्रह्म पछाण, पारब्रह्म जणाया। देवणहारा धुर फ़रमाण, साचे तख्त रिहा सुहाया। निरगुण रूप श्री भगवान, गोपी काहन ना कोए नचाया। लेखा जाणे ना सीता राम, राम सीता आपे गाया। इक्क इकल्ला नौजवान, ना मरे ना जाया। आदि जुगादी पावे आण, आपणे भाणे सद रहाया। देवणहारा देवे दान, दाता दानी इक्क अखवाया। जुग जुग तेरी करे पछाण, आप आपणा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा तेरा लेख लिखाया। सुण फ़रमाणा हरि भगवान, ब्रह्म नेत्र नैण उग्घाड़या। अबिनाशी करता तूही जाण, हउँ सेवक चरन बलिहारया। तेरा शब्द निराला बाण, आदि जुगादी एका मारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस धरा ल्या। सुण ब्रह्म उठ उठ जाग, हरि साचे सच जगांयदा। पारब्रह्म प्रभ लाए भाग, आपणी अंस वेख वखांयदा। आपणे हथ्थ रक्खे तेरी वाग, चार जुग आप भवांयदा। चार कुंट माया ममता लाया दाग, उप्पर पर्दा एका पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा।

ब्रह्म पुकारे सुण पुकार, हरि साचे सच रघुराया। हउँ सेवक तेरा सेवादार, लोकमात सेव कमाया। लक्ख चुरासी अंदर रिहा तूं वाड़, आपणा मुख बन्द कराया। पहरेदार कराई पंचम धाड़, दिवस रैण रही कुरलाया। त्रैगुण अग्नी लाया इक्क अखाड़, नटूआ नट स्वांग वरताया। तेरा मेरा इक्क प्यार, भुल्ल कदे ना जाया। ब्रह्म ठांडा दरबार, थिर घर तेरा इक्क सुहाया। सचखण्ड दुआरे सुण पुकार, मंगणहार सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाया। सुणे पुकार हरि निरँकार, ब्रह्म पारब्रह्म समझांयदा। भगतन अंदर आपणी धार, साचा शब्द टिकांयदा। तेरा मेल करे संसार, दर घर साचा वेख वखांयदा। आपणी हथ्थीं खोल्ह किवाड़, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा। करे कराए सच प्यार, साचा मेला मेल मिलांयदा। नाम कराए इक्क शंगार, साचा बस्त्र तन सजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। ब्रह्म तेरी पावे सार, निरगुण आपणा वेस वटाया। सच दुआरे हो उज्यार, घर दीपक जोत जगाया। भर प्याला अमृत धार, ठांडा जल वखाया। बन्द कवाड़ी खोल्ह किवाड़, आप आपणा चरन टिकाया। साची सेजा मेल भतार, हरि कन्तन कन्त वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा बन्धन पाया। जुग जुग बन्धन हरि भगवन्त, ब्रह्म ब्रह्म बंधाया। आप उपजाए आपणे सन्त, आपणा लेखा आप गणाया। महिमा जाणे गणत अगणत, लिख सके ना कोई राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा ओहला आप चुकाया। पर्दा ओहला चुक्कणा, हरि साचा आप चुकांयदा। ब्रह्म तेरा पैंडा मुक्कणा, पारब्रह्म दरस दखांयदा। काया मन्दिर फेर ना तक्कणा, आप आपणे विच ना टिकांयदा। दूसर दुआर कदे ना झुकणा, हरि साचा रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। ब्रह्म तेरा खेल अपार, प्रभ साचा मात कराईआ। प्रगट हो विच संसार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आपे बण गुर दातार, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। आपे भगतां ल्ए उभार, आप आपणा रंग चढ़ाईआ। आपे सन्तन भरे भण्डार, साची भिच्छया झोली पाईआ। आप गुरसिख बणाए यार, आप आपणे अंग लगाईआ। आपे गुरसिख जाए तार, तारनहारा हरि रघराईआ। आपे अंदर वड़ मेट मिटाए पंचम धाड़, नौ दुआरे खोज खुजाईआ। आपे कँवरी भँवरी करे उज्यार, जोत निरँजण आप जगाईआ। आपे अमृत बख्शे ठंडी धार, अंमिउँ रस आप वखाईआ। आपे मन्दिर हो उज्यार, साचा तख्त आप सुहाईआ। आपे शब्द सुणाए धुन सच्ची धुन्कार, आपणा गीत आपे गाईआ। आपे मुख घूँगट दए उतार, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। आपे सम्पट दए निरँकार, निरगुण जोत अग्नी तत्त जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा मेरा मेला मेल मिलाईआ। मेल मिलावा हरि करतार, आत्म ब्रह्म मिलांयदा। पुरख

अबिनाशी मीत मुरार, सगला संग निभांयदा। घर मन्दिर साचे कर प्यार, आपणी गोद बहांयदा। रंग रलीआं माणे आप भतार, साची सेज सुहांयदा। सोहे मुखड़ा निरगुण धार, नेत्र नैण ना कोई मटकांयदा। बत्ती दन्द ना कोई जैकार, रसना जिह्वा ना कोई हिलांयदा। सीस ना करे कोई शंगार, शब्द गहिणा ना कोए हंढांयदा। ना कोई घोड़ा शाह अस्वार, आसण सिँघासण ना कोई विछांयदा। ना कोई सज्जण मीत मुरार, दर दरबान ना कोई वखांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, एका आपणा रूप वटांयदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कर प्यार, घर साचे दरस दिखांयदा। नेत्र लोचण नैण दरस दिदार, निरगुण निरगुण आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग जुग ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा।

❋ ८ चेत २०१७ बिक्रमी सन्ता सिँघ दे घर पिण्ड बाबू पुर ❋

हरि शब्द सन्त हरि शब्द गुर, हरि हरि नामा वड वड्याईआ। हरि शब्द कन्त हरि शब्द मेला धुर, हरि साचा आप मिलाईआ। हरि शब्द आदि, हरि शब्द अन्त, हरि शब्द चाढ़े रंग बसन्त, रंग रंगीला इक्क अख्वाईआ। हरि शब्द जीव हरि शब्द जंत, हरि शब्दी शब्द जणाईआ। हरि शब्द मणीआ हरि शब्द मंत, हरि रसना जिह्वा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम दए वड्याईआ। हरि शब्द बिबाण हरि साचा राणा, तख्त ताज सुहांयदा। हरि शब्द राग धुन तराना, हरि शब्द होए पवण मसाणा, दो जहानां फेरा पांयदा। हरि शब्द गोपी हरि शब्द कान्हा, हरि शब्द सीता हरि शब्द रामा, रूप अनूप आप वटांयदा। हरि शब्द भूमका हरि शब्द अस्थाना, हरि शब्द आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखांयदा। हरि शब्द हरि ताल, हरि शब्द मृदंग हरि साचा सच वजांयदा। हरि शब्द घालण रिहा घाल, आपे मन्दिर आपे लँघ, आपे वेख वखांयदा। हरि शब्द सरोवर इक्क उछाल, हरि शब्द साचा सच पलँघ, हरि साचा आसण लांयदा। हरि शब्द वसे सदा नाल, हरि शब्द धार गंग, हरि साचा आप वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अनादी आप अख्वांयदा। हरि शब्द दीवार हरि शब्द धार हरि सच पसार, हरि शब्दी दए भेव खुल्हाईआ। हरि शब्द पुरख हरि शब्द नार, हरि शब्द पैज रिहा संवार, हरि शब्द वड वड्याईआ। हरि शब्द राज जोग सिक्दार, हरि शब्द भोगे भोग विच संसार, भस्मड़ आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वरताईआ। हरि शब्द संजोग हरि शब्द विजोग, हरि

शब्द मेल मिलाईआ। हरि शब्द वसे तिन्नां लोक, हरि शब्द सुणाए इक्क सलोक, आपणा ढोला आपे गाईआ। हरि शब्द मुक्त हरि शब्द मोख, हरि शब्दी शब्द भवाईआ। हरि शब्द हरख़ हरि शब्द सोग, हरि शब्द हंगता दु:ख गंवाईआ। हरि शब्द लक्ख चुरासी देवे झोक, आदि जुगादि ना सके कोई रोक, जूनी जून आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। हरि शब्द पूजा हरि शब्द पाठ, हरि शब्द सरोवर हरि शब्द ठाठ, हरि शब्द अग्नी हरि शब्द काठ, हरि शब्द जोती लाट लिलाट हरि शब्दी डगमगाईआ। हरि शब्द वणजारा हरि शब्द हाट, हरि शब्द चौदां लोकां एका रंग वखाईआ। हरि शब्द होए त्रिलोकी नाथ, हरि शब्द निभाए सगला साथ, दो जहानां फेरा पाईआ। हरि शब्द चलाए जुग जुग राथ, हरि शब्द महिमा अकथना अकथ, चारे वेद ना सके गाईआ। हरि शब्द लहिणा देण चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, हरि शब्द वेख वखाए मस्तक माथ, अंदर मन्दिर खोज खुजाईआ। हरि शब्द मिलावा कमलापात, मेट मिटाए अन्धेरी रात, एका साचा चन्द चढ़ाईआ। हरि शब्द ना रखाए कोई ज़ात पात, देवणहारा साची दात, एका वस्त हथ्थ रखाईआ। हरि शब्द वड करामात, लेखा जाणे दो जहाना खात, लिखणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी शब्द वड वड्याईआ। शब्द गुर शब्द गुरदेव, शब्द कराए साची सेव, शब्द महिमा आप जणांयदा। शब्द दाता अलख अभेव, शब्द निरँजण सदा अभेव, निर्मल आपणा थाउँ सुहांयदा। शब्द मात शब्द पित, शब्द करे साचा हित्त, आदि जुगादि जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। शब्द वार शब्द थित, शब्द प्रगटे नित नवित, बरस मास ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द आप अख्वांयदा। शब्द तीर शब्द तरंग, शब्द गुर सूरा सरबंग, शब्द लाए आपणे अंग, शब्द वजाए नाम मृदंग, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। शब्द सेजा शब्द पलँघ, शब्द रूप दिसे अनरंग, शब्द शब्दी मंगे मंग, हरि शब्दी वण्ड वण्डांयदा। शब्द लोआं पुरीआं रिहा लँघ, शब्द शब्दी कसया तंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा शब्द चलांयदा। शब्द निराली धार, हरि चलाईआ। सतिजुग साचे कर त्यार, सो पुरख सिफ्त सालाहीआ। हरि पुरख निरँजण मीत मुरार, आप आपणा गीत सुणाईआ। एकँकारा होया ख़बरदार, मुख नकाब पर्दा लाहीआ। आदि निरँजण कर उज्यार, दीपक जोत करे रुशनाईआ। श्री भगवान सांझा यार, सगला संग आप रखाईआ। अबिनाशी करता बण सिक्दार, लोकमात फेरा पाईआ। पारब्रह्म प्रभ दर दरबान, दर दरवेश अलक्ख जगाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म करे पछाण, हरि साचा वड वड्याईआ। सच दुआरे धर्म निशान, सच दुआरे आप झुलाईआ। एका देवे ब्रह्म ज्ञान, हँ ब्रह्म मेट मिटाईआ। लेखा जाणे कोटन भान, रवि ससि रिहा चमकाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द करे पढ़ाईआ। एका शब्द एका जाप, एका अक्खर पढ़ांयदा। एका बूझे आपणा आप, आप आपा विच प्रगटांयदा। एका माई एका बाप, एका पुत्त हित्त करांयदा। एका सति इक्क संताप, एका सगला संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा शब्द उपजांयदा। आपे शब्द राग तराना, हरि साचा सच उपजांयदा। आपे दाता गुण निधाना, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। आपे विश्व रूप हो प्रधाना, घर घर रिज़क पुचांयदा। आपे ब्रह्मा ब्रह्म पछाणा, अंस बंस रंग रंगांयदा। आपे शंकर हो निमाणा, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आपे त्रैगुण माया बद्धा गाना, आपणा सगन मनांयदा। आपे पंज तत्त कर निशाना, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मेल मिलांयदा। आपे मन मति बुध देवे दाना, घर घर विच आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द शब्दी मुख सालांहयदा। हरि शब्द अपार एकँकार, निरगुण निरगुण आप उपाया। सचखण्ड वजाए सच सितार, सच सारंग नाउँ धराया। एका रंग रवे करतार, राग रागनी ना कोए वखाया। लोकमात खेल अपार, जोती नूर डगमगाया। सतिजुग साचे साची धार, सो पुरख निरँजण आप चलाया। हँ ब्रह्म प्रभ कर प्यार, आप आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्दी वण्ड वण्डाया। सो पुरख निरँजण वण्डे वण्ड, दिस किसे ना आंयदा। चारों कुंट शब्द सरूपी चार दुआरी रक्खे कंध, आप आपणा पर्दा पांयदा। नौ दुआरे कर कर बन्द, दर दरवाज़ा ना कोई खुल्हांयदा। आपे जाणे आपणा दूर दुराडा पन्ध, नेड़ दूर ना कोई वखांयदा। आपे गाए शब्द सुहागी हरि छन्द, गीत गोबिन्द आप अल्हांयदा। आपे जाणे परमानंद, निज घर आपणा रस आपणे विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी शब्द सालांहयदा। शब्द सलाहया हरि भगवान, गुर सतिगुर नाउँ धराईआ। लोकमात कर प्रधान, गुर गुर बूझ बुझाईआ। गुर गुर देवे एका दान, जीआं दाता वड वड्याईआ। आप आपणी करे पछाण, हरिभगतन मेल मिलाईआ। भगतन पाए साची आन, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सन्तां देवे सति सति दान, सति सतिवादी झोली पाईआ। तीर निराला मारे बाण, शब्दी चिल्ला आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाईआ। शब्द चिल्ला शब्द तीर, शब्द निशाना हरि लगांयदा। शब्द अमृत शब्द सीर, भर प्याला जाम प्यांअदा। शब्द चोटी चाढ़े इक्क अखीर, सच महल्ले आप बहांयदा। शब्द कढ्ढे हउमे पीड़, रोगी रोग मिटांयदा। शब्द कट्टे जगत जंज़ीर, लक्ख चुरासी फंद मुकांयदा। शब्द देवणहारा धीर, धीरज धीर इक्क धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द नाम वड्यांअदा। शब्द गुर गहर गम्भीर, हरि साचे सच उपजाया। शब्द ठांडा सतिगुर सीर, भर प्याला जाम

प्याईआ। शब्द दाता जोद्धा सूरबीर, वड बलवान इक्क अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा शब्द हुक्मी हुक्म आप चलाया। हुक्मी हुक्म हरि फ़रमाण, शब्दी शब्द सुणांयदा। जुग जुग खेले खेल महान, लोकमात वेस वटांयदा। सन्त साजण कर पछाण, आप आपणा मेल मिलांयदा। जूठ झूठ मेट निशान, सच सुच्च मार्ग इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सतिजुग खेल खलावणहारा, हरी ओम एकँकार। एका शब्द नाम चलावणहारा, दो जहान पावे सार। एका भगती भगत वडियावणहारा, ऊँची कूके बोले नाम जैकार। एका मार्ग हरि हरि लावणहारा, चारों कुंट होए उज्यार। एका सिख्या सच समझावणहारा, चार वरना करे प्यार। जगत मिथ्या आप वखावणहारा, मेट मिटाए जीव गंवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका फड़ शब्द कटार। शब्द कटार दो धार खण्डा, हरि साचा हथ्थ उठांयदा। पावणहारा जुग जुग वण्डा, कलिजुग अन्तिम वण्ड वण्डांयदा। लक्ख चुरासी जीव जंत रंडा, साध सन्त कन्त ना कोई हंढांयदा। माया ममता मोह भागां मंदा, भाण्डा भरम ना कोए भनांयदा। मदिरा मास मुख अहार रखाए गंदा, अमृत रस ना कोए चखांयदा। जोत निरँजण नूर नुराना चढ़या चन्दा, चन्द चकोर ना मेल मिलांयदा। सन्त सतिगुर वेखणहारा आप आपणा बन्दा, बन्दीख़ाना फोल फुलांयदा। सुणावणहारा साचा छन्दा, सोहँ एका गांयदा। हरिजन तोड़या आपे जंदा, नाम हुलारा इक्क वखांयदा। दूई द्वैती ढाई कंधा, दर घर साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द मुख रखांयदा। शब्द गुर सर्ब गुणवन्त, आदि जुगादि रखाया। हरि शब्द लेखा जाणे जीव जंत, भुल्ल रहे ना राया। भगतन महिमा गाए अगणत, जगत लेखा लेख समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खाणी बाणी रचन रचाया। हरि महिमा जगत बाणीआं, चार वेद करन पुकार। पुराण अठारां अकथ भयानक, एका गायण हरि निरँकार। शास्त्र सिमरत बण बण राणीआं, मंगण मंग बण भिखार। गीता ज्ञान इक्क वखाणीआं, रसना बोल कृष्न मुरार। अञ्जील कुरानां मेल मिलावा साचे हाणीआं, कलमा रसूल धुर फ़रमाण। नानक गाया पद निरबाणीआं, मेल मिलावा कन्त कन्तूहल। अर्जन अक्खर इक्क पछानयां, त्रै लोक बरसणहारा फूल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द वखाए इक्क अनभुल्ल। हरि शब्द कदे ना भुलया, जुग जुग खेल खेल अपार। हरि शब्द कदे ना रुलया, रुलणहार सर्ब संसार। हरि शब्द कदे ना तुल्या, ना कोई तोले अगम्म अपार। हरि शब्द भण्डारा जुग जुग एका खुल्ह्आि, वरतावणहार आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल विच संसार। शब्द भण्डारा खोल्ह्या, हरि साजण सतिगुर मीत। सोहँ अक्खर एका बोलया, सतिजुग तेरी साची रीत।

जिस जन गाया साचा ढोलया, लेखा चुकया मन्दिर मसीत। सतिगुर वसया सदा कोलया, अठ्ठे पहर परखे नीत। हौली हौली अंदर मन्दिर बह बह बोलया, काया करे ठंडी सीत। भाग लगाए साचे चोलया, मानस जन्म हरिजन साचा जाए जीत। हरि हिरदे अंदर मौलया, एका रंग रंगाए हस्त कीट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मनमुखां सुत्ता दे कर पीठ। मनमुख जीव अञ्याणयां, नेत्र नैण उग्घाड़। खेले खेल श्री भगवानयां, शब्द सरूपी साची धार। जन भगतां करे मात पछाणयां, इक्क आपणा दरस वखाल। देवणहारा धुर फ़रमाणयां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दस्से राह सुखाल। साचा मार्ग हरि हरि दस्सणा, हरि हिरदे अंदर वस। हरिजन मेटे रैण अन्धेरी मसना, तीर निराला मारे कस। मनमुख दर तों उठ उठ नस्सना, किसे ना चले कोई वस। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा रस।

❋ ६ चेत २०१७ बिक्रमी दलीप सिँघ दे घर पिण्ड बाबू पुरा ❋

निरगुण शहनशाह पातशाहां शाह, हरि सतिगुर पुरख अख्वांयदा। निरगुण दाता बेपरवाह, बेअन्त नाम धरांयदा। निरगुण नूर इलाही इक्क खुदा, जल्वा नूर डगमगांयदा। निरगुण राम राजा नाउँ धरा, दर घर साचा आप सुहांयदा। निरगुण राज राजाना करे सच न्याँ, सच सिँघासण सोभा पांयदा। निरगुण धुर फ़रमाणा दए जणा, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। निरगुण सचखण्ड दुआर दए वसा, सचखण्ड वासी खेल खिलांयदा। निरगुण थिर घर आपणी रचन लए रचा, चार दिवार ना कोई वखांयदा। निरगुण दीपक जोत लए जगा, आदि निरँजण सेवा लांयदा। निरगुण साचा सच निशाना दए चढ़ा, आप आपणे रंग रंगांयदा। निरगुण सीस ताज लए टिका, राज जोग इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क वड्यांअदा। निरगुण शाह निरगुण सुल्तान, निरगुण राउ रंक अख्वाईआ। निरगुण भगत निरगुण भगवान, निरगुण सतिगुर वेस वटाईआ। निरगुण जीव जंत जहान, निरगुण शब्द गुण वडियाईआ। निरगुण देवे धुर फ़रमाण, निरगुण राग नाद सुणाईआ। निरगुण पंज तत्त करे ध्यान, निरगुण त्रै त्रै मेल मिलाईआ। निरगुण वेखे मात दुकान, निरगुण हट्टो हट्ट विकाईआ। निरगुण ज़िमी निरगुण अस्मान, निरगुण रवि ससि आप चमकाईआ। निरगुण गण गंधर्ब करे आप पछाण, निरगुण करोड़ तेतीसा रूप वटाईआ। निरगुण ब्रह्मा विष्न करे प्रधान, निरगुण शब्द खेल खिलाईआ। निरगुण मन मति बुध करे सन्तान, आप आपणी अंस उपजाईआ। निरगुण काम क्रोध लोभ मोह अभिमान, आसा तृष्ना रूप जणाईआ। निरगुण

जूठ झूठ देवे दान, सच सच करे वड्याईआ। निरगुण मन्दिर मस्जिद खेले खेल जगत मकान, निरगुण आसण सच सिँघासण इक्क विछाईआ। निरगुण राए धर्म फड़ाए बान, आदि जुगादि तीर चलाईआ। निरगुण चित्तर गुप्त बैठा लेखा लिखे जहान, लेखा जाणे पंचम छाहीआ। निरगुण वसणहारा उच्च अटल मकान, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। निरगुण सो पुरख निरँजण देवणहारा जीअ दान, हरि पुरख निरँजण संग रलाईआ। निरगुण एकँकारा करे कल्याण, कलकाती नेड़ ना आईआ। निरगुण आदि निरँजण महिमा महान, लेखा गणत ना कोई गणाईआ। अबिनाशी करता नौजवान, थिर घर बैठा जोत जगाईआ। श्री भगवान बण बण काहन, साचे मंडल रास रचाईआ। पारब्रह्म करे इक्क ध्यान, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। सच तख्त सच सुल्तान, हरि साचा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण एका इक्क इक्क इक्क वरताईआ। एका एक हरि निरँकारा, निरगुण खेल खिलांयदा। आदि जुगादी कर पसारा, जुग जुग वेख वखांयदा। सचखण्ड निवासी खोल्ह दुआरा, आप आपणा बंक सुहांयदा। आपे अंदर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आपे रूप वटांयदा। सच तख्त सच सिक्दार, साचा हुक्म चलांयदा। राग नाद धुन सितार, ताल तलवाड़ा इक्क वजांयदा। बोध अगाध शब्द जैकार, पुरख अबिनाशी आप सुणांयदा। सच दवारिउँ आए बाहर, आप आपणा पग टिकांयदा। सुन्न अगम्म धूंआँधार, सूरज चन्न ना कोई चढ़ांयदा। ना कोई दिसे मंडल मंडप सितार, गगन गगनंतर ना कोई वखांयदा। आपणे रंग रवे करतार, नूरो नूर समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता हरि निरँकार, खेले खेल अगम्म अपार, आदि जुगादी साची कार, सच साची खेल खिलांयदा। हरि साचा खेल खिलंदड़ा, निरगुण रूप अनूप। घर साचे दीप जगंदड़ा, करे प्रकाश चारे कूट। साचे तख्त आप सुहंदड़ा, पुरख अबिनाशी एका भूप। धुर फ़रमाणा इक्क सुनंदड़ा, शब्द उठाए साचा दूत। सुन्न अगम्मी वेख वखंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा पूत। पूत सपूता हरि बलवान, शब्दी शब्द वड्यांअदा। महांकाल मेल महान, घर साचे मेल मिलांयदा। चरन कँवल इक्क ध्यान, एका अक्खर वक्खर आप पढ़ांयदा। एका वरन देवे दान, दूसर होर ना कोई दिसांयदा। एका तख्त इक्क सुल्तान, एका हुक्म चलांयदा। एका होए निगहबान, आदि जुगादी वेख वखांयदा। इक्क झुलाए सच निशान, रंग रंगीला आप रंगांयदा। एका मुख सहिज सुख सुभान, नूर इलाही आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर सरबंग, आप आपणा रंग वखांयदा। अनरंग दाता पुरख बिधाता, भेद अभेव ना कोई जणाईआ। बैठा रहे इक्क इकांता, अकल कल वड वड्याईआ। सचखण्ड निवासी मारे झाता, अंदर मन्दिर खोज खुजाईआ। सुन्न अगम्मी अन्धेरी राता, प्रकाश ना

कोई वखाईआ। शब्द शब्दी देवे साथा, साचा संग रखाईआ। महांकाल निउँ निउँ टेके माथा, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरताईआ। सुन्न अगम्मी धूंआँधारा, धरत धवल ना कोई वड्याआ। गगन मंडल ना कोई पसारा, साकार रूप ना कोए वटाया। शब्दी खेल हरि निरँकारा, आपे वेख वखाया। महांकाल दर बणे भिखारा, नेत्र रो रो नीर वहाया। मंगे मंग एका वारा, आपणी झोली अग्गे डाहया। पूत सपूत सुत दुलारा, हरि साचा दए उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेव अभेदा भेव खुल्हाया। महांकाल सीस झुका, प्रभ अग्गे नेत्र नीर वहांयदा। एका वस्त झोली पा, दूसर मंग ना कोई मंगांयदा। सगला संग दए वखा, हुक्मी हुक्म अल्हांयदा। मेरा अंग दए कटा, अंगीकार वड वड्यांअदा। इक्क मृदंग दए वजा, चारों कुंट सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे आप सुणांयदा। महांकाल सुण कर ध्यान, हरि साचा देवे वड वड्याईआ। पूत सपूता देवे दान, थिर घर साचे रहिण ना पाईआ। सचखण्ड दुआर ना सके आ, नेत्र नैण ना दर्शन पाईआ। तेरा बूटा दए लगा, जड़ आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची भिच्छया झोली पाईआ। महांकाल तेरा साचा पूत, हरि साचा सच उपजांयदा। तष्रो पेटा तेरा सूत, तेरा ताणा विच टिकांयदा। तेरा लेखा तेरी कूट, तेरी दिशा फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एक आपणा हुक्म सुणांयदा। महांकाल उपजे पूत सुत दुलार, हरि साचे शब्द जणाया। धूंआँधार कर पसार, सुन्न अगम्म टिकाया। सुन्न अगम्मों कढे बाहर, मात पित ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची भिच्छया झोली पाया। इच्छया भिच्छया उपज्या बाल, तत्व तत्त ना कोई रखाया। महांकाल करे प्रितपाल, काल आपणे रंग रंगाया। सतिगुर दाता दीन दयाल, एकँकारा आप अख्वाया। आपे चले आपणी चाल, चाल निराली इक्क जणाया। किसे ना वसे विच मकान, बंक दुआर ना कोई सुहाया। नेत्र दिसे ना कोई निशान, रूप सरूप ना कोए वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी सेवा लाया। काल उपज्या काली धार, हरि हरि रंग समाया। महांकाल दर बण भिखार, एका मंग मंगाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, घर घर विच दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क सिखाया। साची सिख्या हरि समझाए, वड्डा वड वड्याईआ। तेरी सेवा आप लगाए, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। मातलोक हरि रचन रचाए, धरत धवल उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी भाण्डे घड़ वखाए, ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डा घड़ना, पंज तत्त

बणत बणाईआ। सरगुण निरगुण अंदर वड़ना, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। शब्द सरूपी किसे ना फड़ना, हथ्थ किसे ना आईआ। जुगा जुगन्तर लोकमात लड़ना, पंचम करे लड़ाईआ। गुरमुख विरले साचे पौड़े चढ़णा, जिस सतिगुर आप चढ़ाईआ। काल दुआरे अद्ध विच अड़ना, ना कोई सके पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। उपज्या काल होए बलवान, हरि साचे सच उपजाया। लक्ख चुरासी मेट निशान, तेरा तेरी झोली पाया। हरिजन साचे कर पछाण, साची सिख्या इक्क समझाया। हँ ब्रह्म प्रभ देवे दान, सो पुरख निरँजण मेल मिलाया। हरि सन्त बणे साचा काहन, पुरख अबिनाशी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना इक्क वखाया। गुरसिख तेरा सच निशानड़ा, हरि सतिगुर सच समझाए। दरगाह वज्जे इक्क तरानड़ा, नादी धुन उपजाए। राह दस्से इक्क सुखालड़ा, घर घर विच मेल मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी विद्या आप जणाए। आपणी विद्या हरि भगवान, एका एक जणाईआ। आदि जुगादि जुग जुग जो जन सोहँ गाण, काल महाकाल नेड़ ना आईआ। अग्गे अग्गे चले भगवान, पिच्छे पिच्छे आप चलाईआ। दो जहानां देवे माण, पुरख अबिनाशी खेल खलाईआ। महांकाल करे चरन ध्यान, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ताज तख्त सोहे इक्क निगहबान, दिवस रैण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क सिखाईआ। काल ढह प्या दुआर, महांकाल संग रलाया। कवण रूप होए विच संसार, तेरा तेरा नाउँ उपजाया। कवण शब्द लाए जैकार, जै जै पुरीआं लोआं आप कराया। कवण शस्त्र होए ढाल, तेज़ कटार ना कोई घाया। कवण हरिजन घालण जाए घाल, भगत भगती वेख वखाया। कवण शब्द वज्जे ताल, नाद अनादी नाद सुणाया। कवण वस्त सच्चा धन माल, झोली कवण भराया। कवण फल वेखे डालू, फुल्ल फुलवाड़ी आप महिकाया। कवण रूप करे प्रितपाल, तेरा भेव किसे ना आया। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाया। पुरख अबिनाशी करे प्रितपाल, हरिजन साचे आप उठाया। काया मन्दिर वेख धर्मसाल, घर साचे डेरा लाया। गुरमुख उठाए आपणे लाल, अनमुल्लड़े कीमत कोए ना मात चुकाया। एका दीपक देवे बाल, अन्ध अन्धेर रहे ना राया। लक्ख चुरासी विच्चों भाल, आप आपणे लए उठाया। नाम पाए साची गल माल, मन का मणका लए फिराया। नेड़ ना आए काल महांकाल, दीन दयाल सिर हथ्थ रखाया। तोड़णहारा जगत जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मार्ग आप वखाया। हरि मार्ग साचा पन्थ, भेव कोए ना पाया। हरि महिमा शब्द शास्त्र वेद पुराण ग्रन्थ, अञ्जील कुरान सर्ब गाया। हरि का रूप आदि अन्त, ना कोई मेटे मेट मिटाया। जुग जुग

राह तक्कण साध सन्त, गुर पीर अवतार रहे सालाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे दर बैठा आसण लाया। निरगुण दर सुहञ्जणा, उच्च अगम्म अथाह। हरि बैठा इक्क निरँजणा, शहनशाह सिर शहनशाह। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजना, दो जहानी बणे मलाह। जन भगतां नेत्र पाए नाम अंजना, अन्ध अन्धेरा दए गंवा। चरन धूढ़ कराए मजणा, अठसठ देवे ना कोई थाँ, जुग जुग जन भगतां पर्दा कज्जणा, शब्द सरूपी दोशाला हथ्थ उठा। हरि शब्द ना घड़या ना भज्जणा, पंज तत्त चोला रिहा हंढा। ताल नगारा एका वज्जणा, गुर पूरा दए वजा। काल दुआरा छड्ड छड्ड नट्ठणा, मुड़ तक्के ना गुरसिख तेरा राह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बणे मात मलाह। मात मलाह खेवट खेटा, हरि सतिगुर पुरख अख्वांयदा। गुरमुख उपजाए आपणा बेटा, आप आपणी गोद सुहांयदा। शब्द सरूपी साचे शब्द आप लपेटा, तत्ती वा ना कोई लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तरांयदा। तारनहारा सति पुरख, दूसर अवर ना कोई जणांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले लए परख, नाम घसवट्टी हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा खेल खिलांयदा। निरगुण दाता दयावान, आदि जुगादि समाया। निरगुण दाता हरि भगवान, हरिजन साचे लए जगाया। निरगुण दाता वड मेहरबान, ग़रीब निमाणे गले लगाया। निरगुण दाता सच निशान, लोकमात आप झुलाया। निरगुण दाता रम्मईआ राम, रावण गढ़ हँकार तुड़ाया। निरगुण रूप कृष्ना काहन, नाम बंसरी इक्क वजाया। निरगुण नानक कर प्रनाम, नाम सति मन्त्र दृढ़ाया। निरगुण वसे काया नगर ग्राम, फतिह डंका इक्क वजाईआ। निरगुण मेटे अन्धेरी शाम, जुग जुग साचा चन्द चढ़ाया। निरगुण चिल्ला तीर कमान, निरगुण साचा बाण वखाया। निरगुण खेले खेल दो जहान, लोआं पुरीआं फेरा पाया। निरगुण कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, आप आपणा रूप वटाया। शब्द डंका वज्जे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड आप सुणाया। राउ रंक उठाए राज राजान, सोया कोई रहिण ना पाया। गुरमुखां देवे साचा दान, दाता दानी बण के आया। लक्ख चुरासी फंद कटान, राए धर्म ना दए सजाया। जो जन चरनी डिग्गे आण, वेले अन्त होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा वेस वटाया। वेस अवल्लड़ा हरि हरि करतार, आपणा आप करांयदा। करे कराए वरते वरताए विच संसार, सारिंग धर भगवान आपणा खेल खिलांयदा। पावे सार पुरख नर नार, नर हरि हरी हरि नरायण आपणा रूप वटांयदा। खड़ग खण्डा तेज कटार, ब्रह्मण्ड नाम चमकांयदा। सीस ताज इक्क दस्तार, तख्त ताज आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण एका खेले खेल सूरा सरबंग, घर साचे सोभा पांयदा। घर साचा हरि भाया,

वड दाता गहर गम्भीर। जग तृष्ना रंग मिटाया, मन सांतक सति सरीर। कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाया, माया ममता कट्ट ज़ंजीर। हरि दर्शन नेत्र पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन प्याए अमृत साचा सीर।

❊ ६ चेत २०१७ बिक्रमी हज़ारा सिँघ दे गृह बाबू पुर ❊

हस्त कीट वसया, गुर सागर गहर गम्भीर। हरिजन विरले मार्ग दस्सया, कर किरपा शाह हकीर। हरिजन हिरदे अंदर वसया, वड दाता पीरन पीर। बाण निराला एका कसया, शब्दी शब्द चलाए तीर। घर मन्दिर फिरे नस्सया, दो जहानां पैंडा चीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बन्न्हणहारा बीड़। बन्न्हे बीड़ गुर करतार, कृपानिध वड वड्याईआ। भव जल सागर करे पार, भय भयानक होए सहाईआ। जल थल महीअल पाए सार, डूँग्घा सागर वेख वखाईआ। एका नईआ कर त्यार, हरिजन साचे ल्ए चढ़ाईआ। पार कराए पार किनार, मँझधार ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन हरि हरि जन जग जीवण मुक्त कराईआ।

३६७ ०६ काल फांस कट्टे जम कंकर, दूती दुष्ट नेड़ ना आईआ। होए सहाई विच भयँकर, भय भयानक रूप वटाईआ। लेखा जाणे एका अंकर, एका गुर दए समझाईआ। पूजा चुक्की गनेश शंकर, शिवदुआला मट्ठ इक्क वखाईआ। अग्न बुझाए लग्गी बसन्तर, सीतल धार वहाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, भुल्ल रहे ना राईआ। हरिजन गाए सोहँ मन्त्र, मन मति बुध लेखे लाईआ। अन्त काल बणाए बणतर, जम तरास ना कोई वखाईआ। लेखा जाणे जुगा जुगन्तर, जुग करता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म पारब्रह्म करे सवतंतर, सुरत शब्द इक्क लिव लाईआ। ३६७ ०६

अन्ध अँध्यार हरि काढया, कर किरपा हरि राए। दु:ख दलिद्र वाढया, नाम खण्डा इक्क चमकाए। चरन दुआरे लडाए लाडया, जिउँ बालक पिता मांए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाए। हथ्थ रक्ख समरथ करतार, बाल अञ्याणे आप उठाईआ। देवे वथ्थ अपर अपार, नाम शब्द वणज कराईआ। मिले वडियाई विच संसार, लजपत आपणे हथ्थ रखाईआ। घर मन्दिर होए उज्यार, बन्द दरवाजा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीब निवाज़ा ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। निमाणयां माण हरि निरँकार, जुग जुग खेल खिलांयदा। फड़

फड़ बाहों जाए तार, जगत मलाह आप हो आंयदा। एथे ओथे करे प्यार, सगला संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नार कन्त रंग बसन्त काया चोली एका रूप वखांयदा।

दीनां नाथ दीन हरि ठाकर, दीन दयाल अख्वाया। निर्मल कर्म करे उजागर, जो जन सरनाई आया। साचा नाम रत्न रत्नागर, रत्ती रत्त विच टिकाया। वणज कराए इक्क सौदागर, नाम वस्त झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लाल अनमुल्लड़ा एका हट्ट विकाया। लाल अनमुल्लड़ा गुरमुख सिख, सिखी सिख्या सिख वीचारया। साचा लेखा आपे देवे लिख, पिछला लेखा हथ्थीं पाड़या। नेत्र नैण आए दिस, साचा लोचण इक्क उग्घाड़या। जगत मेटे लग्गी तृख, आत्म भरे सच भण्डारया। जो जन मंगे एका भिक्ख, देवणहार आप वरता रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनां नाथ दीन हरि, दानन दाता दानी दया कमा रिहा।

✻ ६ चेत २०१७ बिक्रमी वरखा सिँघ पिण्ड बाबू पुर ✻

३६८ ०६

जीव जंत हरि तारया, जुग जुग खेल अपार। हरि हरिजन करे प्यारया, आप आपणी किरपा धार। सहिंसा रोग सर्ब निवारया, रोग संताप उतरे पार। घर मन्दिर होए उज्यारया, जोत जगाए अगम्म अपार। हस्त कीट पैज संवारया, ऊँच नीच ना कोए विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बख्शे एका धार। शब्द गुरदेव, सहिंसा रोग जलाईआ। गुरसिख लगाए साची सेव, सेवक सेवा आप कराईआ। अबिनाशी करता अलक्ख अभेव, अलक्ख अगोचर बेपरवाहीआ। जो जन गाए रसना जेहव, जीव जगत जुगत इक्क समझाईआ। करे खेल हरि नेहकेव, नेहचल धाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दर बहाईआ। दर दरवाज़ा सच दरगाह, दर दुआर वखांयदा। नदरी नदर बण मलाह, कर्मी कर्म बन्द कटांयदा। वरनी बरनी पार करा, साची सरना इक्क वखांयदा। तारन तरनी आप अख्वा, हरिजन साचे आप तरांयदा। हरनी फरनी दरस दिखा, नेत्र नैण आप तृप्तांयदा। अमृत मेघ मेघ बरसा, करोड़ छिआनवें मुख शरमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप बुझाए लग्गी अग्ग, देवे दरस सूरा सरबग्ग, फड़ फड़ हँस बणाए कग्ग, साची चोग एका नाम चुगांयदा।

❋ ६ चेत २०१७ बिक्रमी प्यारा सिँघ दे घर पिण्ड बाबू पुर ❋

सत्तवें घर सति सतिवादि, सति पुरख निरँजण आसण लाया। सो पुरख निरँजण आदिन आदि, सच सिँघासण इक्क सुहाया। हरि पुरख निरँजण सगला साथ, दर घर साचे आप निभाया। एकँकारा चलाए आपणा राथ, रथ रथवाही इक्क अख्वाया। आदि निरँजण जोत प्रकाश, निरगुण नूर डगमगाया। श्री भगवान महिमा अकथना अकथ, कथ सके ना कोई राया। अबिनाशी करता देवे दात, साची वस्त इक्क वखाया। पारब्रह्म लहिणा चुकाए आपणा आप, आप आपणा खेल खलाया। सचखण्ड दुआरा साचा खात, हरि साचे सच सुहाया। उप्पर बैठ पुरख अबिनाश, तख्त निवासी आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तवां घर इक्क समझाया। सत्तवां घर हरि सुल्तान, निरगुण साचा सच सुहांयदा। उप्पर बैठ श्री भगवान, निरगुण जोती जोत जगांयदा। ना कोई दूसर होर निशान, सगला संग ना कोई रखांयदा। ना कोई गोपी ना कोई काहन, ना कोई मंडल रास रचांयदा। ना कोई सीता ना कोई राम, धनुष बाण ना कोई उठांयदा। ना कोई सन्त भगत करे प्रनाम, निउँ निउँ ना कोए सीस झुकांयदा। ना कोई रवि ससि सूरज चन्न दिसे भान, मंडल मंडप ना कोए रखांयदा। ना कोई उत्पत मात पित सन्तान, पूत सपूता ना गोद सुहांयदा। ना कोई ज़िमी ना अस्मान, धरत धवल ना कोई वड्यांअदा। ना कोई पाणी पवण मसाण, गण गंधर्ब ना कोई नचांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ना करे कोई कल्याण, चारे वेद ना कोई लिखांयदा। ना कोई करे पूजा पाठ, वेद व्यास ना रूप वटांयदा। मच्छ कच्छ ना होए प्रधान, तीस बतीसा ना कोई सालांहयदा। ना कोई दिसे दर दरबान, दुआरपाल ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी एका घर वखांयदा। सत्तवां घर आदि निरँजण, निरगुण खेल खिलांयदा। ना कोई दिसे दूसर सज्जण, ना कोई संग रलांयदा। आपे बैठा आपणा करे मजन, आप आपणा मेल मिलांयदा। दाता दानी दर्द दु:ख भय भंजन, दु:ख रोग ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति घर वसया आप, आप आपणा दर सुहांयदा। सत्तवां घर साची धार, हरि साचे सच चलाईआ। सो पुरख निरँजण खेल अपार, हरि पुरख निरँजण आप वखाईआ। एकँकारा कर प्यार, आदि निरँजण दए वड्याईआ। अबिनाशी करता दए हुलार, श्री भगवान आप उठाईआ। पारब्रह्म एका एक करे ध्यान, घर एका वेख वखाईआ। सचखण्ड निवासी वसे सच मकान, उच्च महल्ल अटल एका एक सुहाईआ। साचा धाम हरि हरि जू मल्ला, आपे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तवां घर सति सन्तोख ना कोई हरख ना कोई सोग, चिंता रोग ना कोई वखाईआ। सत्तवें घर घाड़ण घड़या, आपणी

बणत बणाईआ। निरगुण रूप आपणे पौड़े आपे चढ़या, उच्चा डण्डा ना कोई रखाईआ। आपे वड़या आपणे सरया, सर सरोवर इक्क वड्याईआ। आप आपणे जेहा करया, आप आपणा मुख वखाईआ। आपे सुक्का आपे हरया, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति दरवाज़ा आपे खोल्ह, अबिनाशी करता आपे बोल, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। सत्तवां घर सति पुरख साख्यात, नर नरायण आप सुहांयदा। आपे जाणे आपणी ज़ात, वरन बरन ना कोए बणांयदा। ना कोई दिवस ना कोई रात, घड़ी पल्ल ना कोए वखांयदा। बैठा रहे इक्क इकांत, इक्क इकल्ला सोभा पांयदा। आपे जाणे आपणी वात, आपणी सेव कमांयदा। आपे देवे आपणी दात, आपणी भिच्छया आप भरांयदा। खेले खेल बहु बिध भात, रूप अनूप रंग वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति सत्तवां घर एका बैठा अंदर वड़, आप आपणा मुख सालांहयदा। मुख सलाह हरि बलवान, एका रंग समाया। सत्तवें घर सच निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाया। आपे वेखे मार ध्यान, वेखणहार आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाया। रंग रंगीला हरि भगवन्त, आपणा खेल खिलांयदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, वेद कतेब ना कोई लिखांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटांयदा। आपे आदि आपे अन्त, आप आपणी कल वरतांयदा। आपे नार आपे कन्त, आपे सेज हंढांयदा। आपे चाढ़े रंग बसन्त, रंग मजीठ इक्क चढ़ांयदा। आप बणाए आपणी बणत, साचा घाड़न आप घड़ांयदा। आपे जीव आपे जंत, आपे जागरत जोत जगांयदा। आपे साध आपे सन्त, आपे सतिगुर नाउँ धरांयदा। आपे रसना जिह्वा मणीआ मंत, आप आपणा मात प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सतिवादी हरि ब्रह्मादी ब्रह्म आपे फोल फुलांयदा। आपे ब्रह्मा आपे ब्रह्म, हरि सच्चा वड वड्याईआ। आपे मरे आपे पए जम्म, उत्पत आप अख्वाईआ। आपे पवण स्वासी ल्ए दम, आपे सुत्ता सेज विछाईआ। आपे खुशी आपे ग़म, आपे सति सन्तोख दए वड्याईआ। आपे तृष्ना आपे तम, आपे सांतक सति कराईआ। आपे जननी आपे जन, आपे गोद सहाईआ। आपे काया पंज तत्त तन, आपे बैठा अंदर आसण लाईआ। आपे मन मति बुध बेड़ा रिहा बन्न्ह, आपे चारे कुंटां रिहा भवाईआ। आपे वसे छप्पर छन्न, हरि मन्दिर आपे सोभा पाईआ। आपे राग सुणाए कन्न, शब्द डंका इक्क वजाईआ। आपे देवणहारा डन्न, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। आपे घड़े आपे ल्ए भन्न, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे सूरज आपे चन्न, आपे निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आपे गण गंधर्ब वेखे गन, किन्नर यच्छप आपे नाच कराईआ। आपे करोड़ तेतीसा देवे धन, साची वस्त झोली पाईआ। आपे शंकर बेड़ा देवे बन्न्ह, बाशक तशका गल

४०० ०६

लगाईआ। आपे ब्रह्मा वेता जाए मन्न, लक्ख चुरासी आप उपाईआ। आपे विष्नूं बाशक सेज सांगोपांग सोया दे कर कंड, आपे देवे रिज़क सबाईआ। आपे त्रैगुण माया करे खंन खंन, आपे पंज तत्त जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, श्री भगवान वड मेहरबान, निरगुण दाता पुरख बिधाता बेपरवाह आप अख्वाईआ। सति पुरख निरँजण बेपरवाह, आदि जुगादि समाया। सो पुरख निरँजण बण मलाह, आप आपणा वेस वटाया। हरि पुरख निरँजण बेड़ा रिहा चला, दो जहानी सेव कमाया। एकँकारा एका गीत रिहा गा, हरि हरि नाम आप सालाहया। आदि निरँजण जोत जगा, नूर नुराना डगमगाया। श्री भगवाना पैज रिहा रखा, जुग जुग रक्खदा आया। अबिनाशी करता देवे सच सलाह, साचे सन्तां दए उठाया। पारब्रह्म प्रभ पकड़े बांह, जो जन रसना जिह्वा रहे गाया। वेस अवेसा आप वटा, आप आपणा रूप धराया। गुर पीर अवतार आप अख्वा, पंज तत्त चोला आप हंढाया। शब्द अनादी ढोला आपे गा, ब्रह्म ब्रह्मादी आप सुणाया। हरिजन साचे लए जगा, जागरत जोत कर रुशनाया। विस्मादी विस्माद गया समा, विश्व रूप आप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आप आपणा खेल खलाया। आपे लिखणहारा लेख, एका एक एकंकारया। जुगा जुगन्तर साची टेक, लोकमात लए अवतारया। जन भगतां करे बुध बिबेक, एका मन्त्र नाम दृढ़ा रिहा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अमृत जाम इक्क प्या रिहा। आपे वेख, लोचण तीजा आप खुल्हा रिहा। आपे लिखणहारा लेख, पूर्ब लेखा लेख मिटा रिहा। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, निरगुण आपणा वेस धरा ल्या। आपे लेखे जाणे ब्रह्मादि ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, दर घर साचे आप समझा ल्या। आपे होए रिखी केस, गवर्धन आपणे हथ्थ उठा ल्या। आपे दाता नर नरेश, हुक्मी हुक्म आप चला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए दर दरवेश, एका अल्फ़ी गल हंढा रिहा। एका अल्फ़ी इलाही नूर, आप आपणे तन रखांयदा। सर्बकला आपे भरपूर, हाज़र हज़ूर वेस वटांयदा। नाद तराना वजाए तूर, हक बहक नाअरा एका लांयदा। दाता दानी वड जोद्धा सूर, ख़ालक ख़लक वेख वखांयदा। मेहबान बीदो बख्शणहारा एका नूर, नूर इलाही डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा सच सालांहयदा। साचा घर खुदाई ज़ात, ज़ेर ज़बर ना कोई वखाईआ। एका जाणे कायनात, चौदां तबक फोल फुलाईआ। मुकामे हक मारे एका झात, आपणा पर्दा आपे लाहीआ। देवणहारा सर्ब निज़ात, घर बैठा मुख छुपाईआ। आदि जुगादी पुच्छे वात, आपणा कलमा आप पढ़ाईआ। दीन ईमान रक्खे आपणे साथ, रमज़ रहिमान इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सत्तवां सति समझाईआ। सत्तवें घर जल्वा नूर, नूर

नुराना आप वखाया। चौदां तबकां सुणाए एका तूर, अद्धविचकारे नाद वजाया। मुहम्मद राह तक्के दूर, चार यारी संग रखाया। मंगे मंग आसा हूर, तृष्ना अग्गे नाच नचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेपरवाह मौला आप अख्वाया। बेपरवाह मौला अलाह, भेव कोए ना पांयदा। सच हदीस कलमा अमाम पढ़ा, लोकमात वेख वखांयदा। हकीकी जाम दए प्या, लाशरीकी खेल खिलांयदा। जगत तरीकी दए मिटा, साचा चन्द इक्क चढ़ांयदा। इशक हकीकी दए करा, तालब तल्ब इक्क वखांयदा। अहिबाब रबाब दए वजा, तार सितार आप हिलांयदा। मक्का काअबा फेरा पा, शाह नवाबा रूप वटांयदा। पुन्न सवाबा लहिणा देणा दए चुका, आबेहयाता घुट्ट प्यांअदा। मुख नकाबा दए उठा, आप अपणा पर्दा लहिन्दा। साचा चरन रकाबा दए टिका, आपणा अश्व आप दृढ़ांयदा। चार कुंट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी जीव उपा, सत्तां दीपां आप जगांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दए मिला, हुक्मी हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि पारब्रह्म आप खलांयदा। खेल खलंदड़ा हरि भगवान, जुग जुग खेल खलाया। सति पुरख निरँजण नौजवान, ना मरे ना जाया। सचखण्ड दुआरे झुलाए सच निशान, सति सतिवादी वेख वखाया। लोकमात बण बण आए साचा काहन, जुग जुग आपणा वेस वटाया। त्रिलोकी नंदन राज राजान, शाहो भूप बेपरवाहया। चौथा घर वसाए इक्क मकान, चौथे दर लए उपजाया। पंचम ढोला सारे गान, वाह वाह सतिगुर सच्चा पाया। जन भगतां मेला विच जहान, सन्तन लेखा आप मुकाया। गुरमुख उठाए चतुर सुजान, तृष्ना तृखा दए बुझाया। गुरसिखां देवे जीआं दान, जीवण जुगत इक्क जणाया। लक्ख चुरासी फंद कटाण, बन्दी छोड़ नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तवें घर देवे वासा, जिस जन रक्खया चरन भरवासा, पूरी आसा दए कराया। गुरसिख पूरन आस कर, घर साचे आप बहांयदा। हरिजन सच धरवास धर, धीरज धीर इक्क वखांयदा। सन्तन जोत प्रकाश कर, आपणा मेल मिलांयदा। सर्ब जीआं दा दास हरि, जुग जुग सेव कमांयदा। पृथ्मी आकाश चुक्के डर, जो जन सरनाई आंयदा। कलिजुग अन्तिम साची तरनी जाए तर, भव सागर ना कोई रुढ़ांयदा। सतिगुर पूरा गुरमुखां अग्गे आए खड़, धरनी धवल मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे घर सच सिँघासण एका सोहे पुरख अबिनाशण, जन भगतां पूरी करे आसन, जगत निरास ना कोई करांयदा।

✻ १० चेत २०१७ बिक्रमी बलाका सिँघ आसा सिँघ प्यारा सिँघ हज़ारा सिँघ दे घर पिण्ड बाबू पुर ✻

हरि भाणा बलवान, हरि आपणे हथ्थ रखाया। आदि जुगादी खेल महान, पुरख अबिनाशी आप कराया। वेस अनेका दो जहान, नित नवित आप वटाया। सच निशाना श्री भगवान, सचखण्ड दुआरे आप झुलाया। देवणहारा धुर फ़रमाण, सच संदेशा शब्द सुणाया। पुरीआं लोआं पाए आण, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा मंडल आप सुहाया। रवि ससि कर प्रधान, सेवक सेवा सर्ब लगाया। ब्रह्मा विष्न शिव इक्क निशान, निरगुण आपणा नाउँ धराया। त्रैगुण माया कर प्रधान, सगला संग निभाया। तत्व तत्त तत्त मेहरवान, करनी किरत आप वखाया। आत्म ब्रह्म एका दान, दाता दानी आप वरताया। घर मन्दिर वेख सच मकान, लक्ख चुरासी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाया। वड भाणा हरि भगवन्त, आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे आदि आपे अन्त, आपणी खेल खिलांयदा। आपे साध आपे सन्त, गुर पीर आप अख्वांयदा। आपे मणीआ आपे मंत, आपे मन मति बुध धरांयदा। आपे नारी आपे कन्त, आपे साची सेज हंढांयदा। आपे चाढ़े रंग बसन्त, नाम ललारी आप रंगांयदा। आपे तोड़े गढ़ हउमे हंगत, माया ममता मोह चुकांयदा। आपे लेखा जाणे भुक्खा नंगत, सीस ताज आप टिकांयदा। आपे हरि हरि बणाए साची संगत, सगला संग आप वखांयदा। आपे पांधा आपे पंडत, ज्ञान गोष्ट आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड करे खण्डत, आपे रचना सच रचांयदा। आपे जेरज आपे अंडज, उत्भुज सेत्ज आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भाणे सद रहांयदा। हरि भाणा अथाह, भेव कोए ना पांयदा। हरि शब्दी शब्द सलाह, आपणा हुक्म सुणांयदा। हरि सतिगुर बण मलाह, जुग जुग वेस वटांयदा। हरि वसे साचे थाँ, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। हरि पकड़णहारा बांह, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। हरि हँस बणाए काँ, एका माणक मोती चोग चुगांयदा। हरि निथावयां देवे थाँ, दरगाह साची धाम वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भाणे सद समांयदा। हरि भाणा धुर दरगाह, साचा सच समांयदा। हरि भाणा गुर पीर अवतार रहे मना, जुग जुग आपणा हुक्म चलांयदा। हरि भाणे किसे हथ्थ ना सके आ, खोजत खोज ना कोई खुजांयदा। हरि भाणे करे सच न्याँ, साचे तख्त सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड भाणा आप करांयदा। वड भाणा हरि बलवान, एका एक रखाया। आदि जुगादी श्री भगवान, साचा तख्त सुहाया। गुरूआं पीरां देवे दान, साधां सन्तां हुक्म जणाया। आपे बख्शे चरन ध्यान, मातलोक विच आया। पंज तत्त जगत निशान, आपणा

४०३ ०६

बन्धन एका पाया। अंदर मन्दिर सच फ़रमाण, हरि साचे आप सुणाया। एका रक्खे शब्दी आण, दूसर डंक ना कोई वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भाणे रचन रचाया। आपणे भाणे रचना रच, हरि साचे सच वखाया। आपणा हुक्म करे सच्च, सच्चो सच वरताया। लक्ख चुरसी भाण्डा कच्च, आपे घड़े भन्न वखाया। आपे घट घट अंदर रिहा नच्च, स्वांगी आपणा स्वांग वरताया। आपे त्रैगुण अग्नी रिहा मच्च, जोती लम्बू एका लाया। आपे मार्ग साच दस्स, दहि दिशा फेरी पाया। आपे लेखा जाणा हस्स हस्स, गुर पीर अवतार साध सन्त आपणा हुक्म सुणाया। आपे मेल मिलाए नस्स नस्स, निरगुण सरगुण सेव कमाया। आपे शब्द निराला मारे तीर कस, तिक्खी धार आप वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भाणा सद सालाहया। भाणे अंदर रवि ससि, सूरज चन्न आप भुआईआ। भाणे अंदर अन्धेर मस, प्रकाश प्रकाश दए वड्याईआ। भाणे अंदर उपजे जाए ढठ्ठ, हरि भाणे मरे जम्मे जाईआ। हरि भाणे गेड़े आपणी लठ्ठ, जुग जुग गेड़ा आप भुआईआ। हरि भाणे करे गुरमुख इक्क इक्ट्ठ, हरिसंगत मेल मिलाईआ। हरि भाणे लोआं पूरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पाए नथ्थ, लक्ख चुरासी आप भवाईआ। हरि भाणे जीव जंत सथ्थर देवे घत्त, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक मिलाईआ। हरि भाणे करे खेल पुरख समरथ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि हरि हरि भाणा नौजवाना ना मरे ना जाईआ। हरि भाणा नौजवान, आदि जुगादि समाया। सूरबीर फड़ निशान, चार जुग उठ उठ धाया। देवणहारा धुर फ़रमाण, साचे तख्त सुहाया। तख्त ताज इक्क भगवान, श्री भगवान आप सुहाया। श्री असकेत गुण निधान, सृष्ट भगत वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाया। वड भाणा श्री असकेत जगत के ईस, जागरत जोत करी रुशनाईआ। नानक गोबिन्द इक्क हदीस, पुरख अबिनाशी आप पढ़ाईआ। अबिनाशी करता एका छत्र झुलाए सीस, दूसर कोई रहिण ना पाईआ। जुगा जुगन्तर हरि हरि आपणा पीसन पीस, लोकमात चक्की इक्क चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भाणा हुक्म जणाईआ। हरि भाणा हरि हरि मन्नया, चार कुंट जैकार। जो आया सो डन्नया, लेखा रहे ना विच संसार। जो घड़या सो भन्नया, घड़ण भन्नणहार आप निरँकार। हरिजन बेड़ा विरले बन्न्या, कर किरपा आप करतार। जिस भाणा सतिगुर मन्नया, कलिजुग अन्तिम करे विचार। दरगाह साची चढ़े चन्नयां, चन्न सूरज मुख शर्मसार। सतिगुर पूरा बन्न्हे तंदया, सगन मनाए अगम्म अपार। इक्क उपजाए परमानंदिआ, निज आत्म अमृत ठंडी ठार। सोहँ गाए सुहागी छंदिआ, सचखण्ड निवासी मिले कन्त भतार। लक्ख चुरासी तुट्टे फंदिआ, राए धर्म ना करे ख्वार। गुरसिख दूसर दर ना करे बन्दना, जिस मिल्या आप निरँकार।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भाणे वरते सर्ब संसार। हरि भाणा वरतावणा, साध सन्त ध्यान लगाईआ। हरि भाणा वरतावणा, ब्रह्मा विष्न शिव नैण उठाईआ। हरि भाणा वरतावणा, करोड़ तेतीसा निउँ निउँ सीस झुकाईआ। हरि भाणा वरतावणा, वेद पुराण देण गवाहीआ। हरि भाणा वरतावणा, राम रामा गया समझाईआ। हरि भाणा बलवान, अर्जन कृष्ना गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। हरि भाणा वरतावणा, ईसा मूसा रहे कुरलाईआ। हरि भाणा बलवान, अञ्जील कुराना संग रलाई कागद छाहीआ। हरि भाणा बलवान, नानक निउँ निउँ सीस झुकाईआ। हरि भाणा बलवान, गुर अर्जन भेद अभेद आप खुल्हाईआ। हरि भाणा बलवान, गुर गोबिन्द आपणी रत्त, पुरख अकाल तेरे लेखे लाईआ। हरि भाणा बलवान, सतिगुर पूरा इक्क सहाईआ। हरि भाणा वरतावणा, कलिजुग अन्तिम कूके दए दुहाईआ। हरि भाणा वरतावणा, हरि आपणी इच्छया आपे पूर कराईआ। हरि भाणा वरतावणा, गुर गुर भिच्छया झोली पाईआ। हरि भाणा वरतावणा, पिछला लिख्या लेखा दए मिटाईआ। हरि भाणा वरतावणा, अगला मार्ग आपे लाईआ। हरि भाणा वरतावणा, ऊँचां नीचां मेट मिटाईआ। हरि भाणा वरतावणा, राउ रंकां एका रंग रंगाईआ। हरि भाणा वरतावणा, चार वरनां एका धाम बहाईआ। हरि भाणा वरतावणा, लक्ख चुरासी जीव जंत सोहँ ढोला एका गाईआ। हरि भाणा वरतावणा, गुर दर मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले सतिगुर पूरा एका नज़री आईआ। हरि भाणा वरतावणा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। हरि भाणा वरतावणा, घट घट अंदर दीपक जोत इक्क जगाईआ। हरि भाणा समझावणा, जन भगतां दर घर साचे बख्शे सच्ची शहनशाहीआ। हरि भाणा वरतावणा, तख्त ताज कोए रहिण ना पाईआ। हरि भाणा वरतावणा, निउँ निउँ पढ़े ना कोई निमाज़, पंचम वक्त सीस ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा सच समाज इक्क रखाईआ। हरि भाणा वरतंत, आदि जुगादि समाया। जुग जुग बणाए आपणी बणत, दूसर संग ना कोए रखाया। पुरख अबिनाशी महिमा अगणत, लिख्या लेख ना कोए जणाया। कलिजुग उपजाए साचे सन्त, जिस जन आपणा दरस दिखाया। अठसठ तीर्थ माया पाए बेअन्त, हरि का भेव कोई ना पाया। घर घर बैठे जगत महंत, वेले अन्तिम दए सजाया। किसे ना मिल्या हरि हरि कन्त, ऊँची कूकण रो रो रहे सुणाया। मन मानया माया ममत, तन भेख पखण्ड बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आपणे अग्गे धर, पिच्छे आपणा हुक्म सुणाया। आपणा भाणा अग्गे रक्ख, हरि हरि वड वड्याईआ। गुरमुख साजण लए रक्ख, कलिजुग तत्ती वा ना लग्गे राया। नौ नौ सत्त सत्त देवे मथ, ना सके कोई बचाया। धरत मात सथ्थर बैठी घत्त, गल पल्लू एका पाईआ। नेत्र नीर विरोले सुट्टे अथ्थ, खुल्हड़ा केस रही वखाया। अन्तिम कीमत

पए ना करोड़ी लक्ख, कक्खों लक्ख आप विकाया। चारों कुंट खेल बाज़ीगर नट, कलिजुग आपणा वेस वटाया। साधां सन्तां जड़ां रिहा पट्ट, आपणी हथ्थीं रिहा उखड़ाया। किसे ना लेखे लग्गा काया खाधा अन्न मट्ट, साची किरत ना कोई कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भाणा हुक्म सुणाया। भाणा रूप अनडिठ, दिस किसे ना आया। जन भगतां करे सदा हित्त, जुग जुग आपणा मेल मिलाया। जूठा झूठा उजाड़े खेत, कलिजुग अन्तिम बीज बिजाया। साध सन्त होए जिन्न प्रेत, जिन्ह हरि हरि दरस ना नेत्र पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिसंगत देवे एका वर, भाणा हरिसंगत नेड़ ना आया।

❋ १० चेत २०१७ बिक्रमी किशन सिंघ दे घर पिण्ड
अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ❋

४०६ गुरसिख सच्चा आखीए, जिस मिल्या हरि निरँकार। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस मिल्या नाम आधार। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस मिल्या हरि कन्त भतार। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस हरि मन्दिर पाया दरस अपार। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस सतिगुर सुरती करे प्यार। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस बज़र कपाटी जाए पाड़। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस अमृत आत्म मिले ठंडी ठार। गुरसिख सच्चा आखीए, जो उडे हँसां डार। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस दुरमति मैल दए उतार। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस नाता तोड़े पंच विकार। गुरसिख सच्चा आखीए, गढ़ तोड़े माया ममता हउमे हंगता काम क्रोध लोभ मोह हँकार। गुरसिख सच्चा आखीए, आसा तृष्णा देवे मार। गुरसिख सच्चा आखीए, घर मंगे मंग भिखार। गुरसिख सच्चा आखीए, नाता तोड़े नौ दुआर। गुरसिख सच्चा आखीए, नेत्र लोचण राह तक्के मीत मुरार। गुरसिख सच्चा आखीए, चरन कँवल मंगे एका निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपार। सतिगुर सच्चा आखीए, एका एकँकार। सतिगुर सच्चा आखीए, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार। सतिगुर सच्चा आखीए, वसणहारा सचखण्ड सच्चे दुआर। सतिगुर सच्चा आखीए, अलक्ख निरँजण जोत उज्यार। सतिगुर सच्चा आखीए, सुन्न अगम्मी पावे सार। सतिगुर सच्चा आखीए, निर्मल दीआ बाती कमलापाती घर मन्दिर करे पसार। सतिगुर सच्चा आखीए, आपे वेखे मार झाकी, दिस ना आए विच संसार। सतिगुर सच्चा आखीए, खोल्हे किवाड़ बन्द ताकी, आप आपणी किरपा धार। सतिगुर सच्चा आखीए, साचा जाम प्याए बण बण साकी, भर प्याला एका वार। सतिगुर ४०६
०६ ०६

सच्चा आखीए, शब्द घोड़ चढ़ाए एका मार पलाकी, दो जहानां करे पार। सतिगुर सच्चा आखीए, लेखा जाणे ना जीव ख़ाकी, कंचन महल्ल दए उसार। सतिगुर सच्चा आखीए, आपणा जाणे भविख्त वाकी, एका शब्द करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए वणज वापार। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस मिल्या बेपरवाह। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस पाया पुरख अथाह। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस मिले शब्द सलाह। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस सतिगुर पूरा पकड़े बांह। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस दरगाह मिले थाँ। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस मिल्या एका पिता माँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए सच न्याँ। सतिगुर पूरा आखीए, गुण दाता गहर गम्भीर। सतिगुर पूरा आखीए, वड दाता पीरन पीर। सतिगुर पूरा आखीए, जन भगत अमृत आत्म देवे ठांडा सीर। सतिगुर पूरा आखीए, दूई द्वैती कढ्ढे पीड़। सतिगुर पूरा आखीऐ, एका रंग रंगाए हस्त कीड़। सतिगुर पूरा आखीए पतित पापियां मुग्ध अञ्याणयां आपे बन्ने बीड़। सतिगुर पूरा आखीए, शब्द निराला मारे तीर। सतिगुर पूरा आखीए, लक्ख चुरासी कट्टे ज़ंजीर। सतिगुर पूरा आखीए, चोटी चढ़ाए फड़ अख़ीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जाणे हरिजन साचा, एका घर बहाए अमृत बख्शे साचा सीर। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस मिल्या सच्चा शाह। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस नाता तुटा भैण भ्रा। गुरसिख सच्चा आखीए, हरि हिरदे ल्ए वसा। गुरसिख साचा आखीए, जो दरगाह साची साचे घर तारीआं रिहा ला। गुरसिख सच्चा आखीए, जो उच्ची कूक दए सुणा। गुरसिख सच्चा आखीए, लोक लज्जया दए तजा। गुरसिख सच्चा आखीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका फड़ाए आपणी बांह। सतिगुर सच्चा आखीए, जोती जोत श्री भगवान। सतिगुर पूरा आखीए, देवणहारा जीअ दान। सतिगुर पूरा आखीए, सर्ब जीआं दा साचा काहन। सतिगुर पूरा आखीए, देवणहारा माण सीता राम। सतिगुर पूरा आखीए, वसणहारा सचखण्ड साचे ग्राम। सतिगुर पूरा आखीए, आदि जुगादि जुग जुग आपणी भगती मंगे ना कोए दाम। सतिगुर पूरा आखीए, नेहचल धाम वसे करे बिसराम। सतिगुर पूरा आखीए, लेखा जाणे हड्ड मास नाड़ी चाम। सतिगुर पूरा आखीए, बिरहों मारे तीर निराला बाण। सतिगुर पूरा आखीए, अमृत बख्शे पीण खाण। सतिगुर पूरा आखीए, होए सहाई सुञ्झ मसाण। सतिगुर पूरा आखीए, हरिजन पति रक्खे आण। सतिगुर पूरा आखीए, शब्द बैठाए इक्क बबाण। सतिगुर पूरा आखीए, गुर पीर अवतार साध सन्त एका रंग वखाए महान। सतिगुर पूरा आखीए, उप्पर तख्त बैठे आप निगहबान। सतिगुर पूरा आखीए, आदि जुगादि देवणहारा जो धुर फ़रमाण। सतिगुर पूरा आखीए, हरि सन्तन रक्खे माण। सतिगुर पूरा आखीए, लक्ख

४०७ ०६

चुरासी विच्चों आप आपणे ल्ए पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी काण। गुरसिख सच्चा आखीए, हरि सिफ्ती सिफ्त सलाहया। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस सतिगुर सच्चा होए सहाया। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस जगत नाता तोड़ तुड़ाया। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस काया मन्दिर घर सुहाया। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस आपणा राग आप अल्हाया। गुरसिख सच्चा आखीए, सर सरोवर जिस भराया। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस सतिगुर आपणे दर बहाया। गुरसिख सच्चा आखीए, एका पूजा एका पाठ लिव अन्तर इक्क रखाया। सतिगुर पूरा आखीए, गुरसिख सोई आत्म आप उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खलाया। सतिगुर पूरा आखीए, हरि सच्चा भगवन्त। सतिगुर पूरा आखीए, सर्ब जीआं दा एका कन्त। सतिगुर पूरा आखीए, जोत जगाए जुगा जुगन्त। सतिगुर पूरा आखीए, आदि जुगादी महिमा अगणत। सतिगुर पूरा आखीए, सेवा लाए साध सन्त। सतिगुर पूरा आखीए, आप बणाए साची बणत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे जीव जंत। गुरसिख सच्चा आखीए, गुर चरन कँवल ध्यान। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस मिल्या हरि मेहरबान। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस पाया पद निरबाण। गुरसिख सच्चा आखीए, घर शब्द धुन होए निशान। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस कोटन कोटि देवत सुर निउँ निउँ सीस झुकाण। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस ब्रह्मा विष्न शिव राह तकाण। गुरसिख सच्चा आखीए, सुन्न अगम्म कोटन कोटि रवि ससि प्रकाश करे रवि ससि भान। गुरसिख सच्चा आखीए सचखण्ड दुआर होए परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा धुर फ़रमाण। सतिगुर पूरा आखीए, आदि जुगादि समाए। सतिगुर पूरा आखीए, ब्रह्म ब्रह्माद आपणी खेल खिलाए। सतिगुर पूरा आखीए, शब्द अनादी नाद वजाए। सतिगुर पूरा आखीए, गुरूआं पीरां साधां सन्तां आपणा बोध अगाध शब्द सुणाए। सतिगुर पूरा आखीए, जुगा जुगन्त गुरमुख गुरसिख आपणे लाध आप आपणा मेल मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाए। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस मिल्या पारब्रह्म। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस सतिगुर पूरा लाए कम्म। गुरसिख सच्चा आखीए, ना ख़ुशी ना कोई ग़म। गुरसिख सच्चा आखीए, रसना जिह्वा गाए दमा दम। गुरसिख सच्चा आखीए, बिरहों नीर वहाए छमां छम्म। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस हरि शब्द तृष्ना तम। गुरसिख सच्चा आखीए, विरला जननी जणया जन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बेड़ा देवे बन्न्ह। गुरसिख सच्चा आखीए, जिस पाया हरि गोबिन्द। सतिगुर पूरा आखीए, जो मेटे सगली चिन्द। गुरसिख सच्चा आखीए, आप उपजाए आपणी बिन्द। सतिगुर पूरा आखीए, वड दाता गुणी गहिन्द।

गुरसिख सच्चा आखीए, अमृत भरया सागर सिन्ध। सतिगुर पूरा सच्चा आखीए, सर्ब जीआं आप बख्शिंद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी बिन्द।

✻ १० चेत २०१७ बिक्रमी तेजा सिँघ दे घर पिण्ड अलड़ पिंडी ज़िला गुरदास पुर ✻

सर्ब व्यापी सर्ब सुख, देवणहार दातार। सर्ब व्यापी मेटे दुःख, कर किरपा अपर अपार। सर्ब व्यापी उज्जल करे मुख, एका बख्शे नाम आधार। सर्ब व्यापी सुफल करे कुक्ख, मानस जन्म पैज संवार। सर्ब व्यापी गेड़ा मिटाए उलटा रुख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग रंगे करतार। सर्ब व्यापी सहिज सुख दाता, सतिगुर पुरख अख्वाया। सर्ब व्यापी पिता माता, आदि जुगादि समाया। सर्ब व्यापी मेटे अन्धेरी राता, ज्ञान भान प्रकाश कराया। सर्ब व्यापी रक्खे उत्तम जाता, जोत जगत इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे अंग लगाया। सर्ब व्यापी हरि हरि मीता, हरि जी वेख वखाईआ। सर्ब व्यापी पतित पुनीता, पतित पापी लए तराईआ। सर्ब व्यापी शब्द जणाई जणाए धाम अनडीठा, रसना जिह्वा हरि गुण गाईआ। सर्ब व्यापी काया मन्दिर करे ठंडा सीता, अमृत बरखा इक्क बरखाईआ। सर्ब व्यापी मेल मिलाए जिउँ बण विछोड़ा राम सीता, अन्तिम पन्ध मुकाईआ। सर्ब व्यापी एका राग सुणाए जिउँ अर्जन अठारां अध्याए गीता, कृष्न घनईआ दूजी विद्या ना कोई पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप बंधाए आपणे लड़, भोले भाओ सहिज सुभाईआ। सर्ब व्यापी एका हरि, हरी हरिजन आप तराईआ। सर्ब व्यापी एका घर, घर साचा सच बुझाईआ। सर्ब व्यापी एका दर, ग़रीब निवाज़ा आप खुल्हाईआ। सर्ब व्यापी एका नर, नर नरायण नाउँ धराईआ। सर्ब व्यापी एका सर, सर सरोवर सहिब सुबाईआ। सर्ब व्यापी एका अक्खर पढ़, सृष्ट सबाई रिहा पढ़ाईआ। सर्ब व्यापी तोड़ गढ़, हँकार विकार दए मिटाईआ। सर्ब व्यापी लाए जड़, आपणी हथ्थीं बूटा आपे लाईआ। सर्ब व्यापी दरस दिखाए अग्गे खड़, जिस जन आपणी दया कमाईआ। सर्ब व्यापी हरिजन बंधाए आपणे लड़, शब्द पल्लू गंढु बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साचा रंग चढ़ाईआ। सर्ब व्यापी हरि दातार, आदि जुगादि समाया। सर्ब व्यापी लक्ख चुरासी करे प्यार, आप आपणी दया कमाया। सर्ब व्यापी वरन बरन वसे बाहर, ज़ात पात ना कोई जणाया। सर्ब व्यापी खेले खेल गुप्त ज़ाहर, अंदर बाहर वेस वटाया। सर्ब व्यापी हरिजन साचे लए उभार, जुग जुग आपणा रूप वटाया। सर्ब व्यापी गुरमुख सज्जण लाए पार, साचे बेड़े नाम चढ़ाया। सर्ब व्यापी,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाया। सर्ब व्यापी सर्ब गुणवन्त, हरि सतिगुर पुरख अख्वाया। सर्ब व्यापी लेखा जाणे जीव जंत, घट घट आपणा आसण लाया। सर्ब व्यापी हरिजन उठाए साचे सन्त, आप आपणा मेल मिलाया। सर्ब व्यापी जिस जन लोकमात बणाए बणत, लक्ख चुरासी विच्चों बाहर कढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जम की फाँसी फंद कटाया। सर्ब व्यापी गोबिन्द रूप, सतिगुर पुरख अख्वांयदा। सतिगुर पुरख शाहो भूप, साचा हुक्म जणांयदा। सर्ब व्यापी वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा फोल फुलांयदा। सर्ब व्यापी नाता तोड़े जूठ झूठ, साचा मन्त्र नाम आप दृढ़ांयदा। सर्ब व्यापी जिस जन हरि जाए तुठ्ठ, आप आपणा मेल मिलांयदा। सर्ब व्यापी एका अमृत आत्म देवे घुट्ट, अग्नी तत्त बुझांयदा। सर्ब व्यापी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सर्ब व्यापी सतिगुर दाता, साची खेल खलाया। सर्ब व्यापी पुरख बिधाता, एका एक संग समाया। सर्ब व्यापी आप रखाए सगला साथा, विछड़ कदे ना जाया। सर्ब व्यापी एका शब्द जणाए पूजा पाठा, सोहँ मन्त्र नाम दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, जगत बसन्तर तत्त गंवाया। सर्ब व्यापी गुण निधान, अवगुण ना कोए जणाईआ। सर्ब व्यापी हरि भगवान, हरिभगतन वेख वखाईआ। सर्ब व्यापी सच निशान, गुरमुख मात झुलाईआ। सर्ब व्यापी जाणी जाण, घट घट मन्दिर खोज खुजाईआ। सर्ब व्यापी शब्द फ़रमाण, आपणा राग आप सुणाईआ। सर्ब व्यापी चुकाए आवण जाण, हरिजन साचे लए तराईआ। सर्ब व्यापी दो जहानी बख्शे माण, जो जन आए सरनाईआ। सर्ब व्यापी एका अक्खर देवे दान, नाम वक्खर शब्द पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाथ अनाथां होए सहाईआ। सर्ब व्यापी अलक्खणा अलक्ख, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। सर्ब व्यापी हो प्रतक्ख, लोकमात जोत करे रुशनाईआ। सर्ब व्यापी हरिजन साचे लए रक्ख, एका मन्त्र नाम पढ़ाईआ। सर्ब व्यापी करणहारा लक्खों कक्ख, करता कीमत दए चुकाईआ। सर्ब व्यापी मार्ग एका दस्स, मानस जन्म दए वड्याईआ। सर्ब व्यापी हिरदे अंदर वस, हरि की पौड़ी दए चढ़ाईआ। सर्ब व्यापी एका देवे आत्म रस, रसना जिह्वा भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। सर्ब व्यापी एका राम, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। सर्ब व्यापी देवे नाम, नाम नामा झोली पांयदा। सर्ब व्यापी प्याए जाम, सच प्याला हथ्थ उठांयदा। सर्ब व्यापी पूरन करे काम, काया कपट फोल फुलांयदा। सर्ब व्यापी लेखा जाणे माटी चाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे आपणा वर, दर घर साचे आप बहांयदा। सर्ब व्यापी हरि करतार, करनी करता आप अख्वांयदा। सर्ब

व्यापी करे सर्ब प्यार, कीट कीटां रूप समांयदा। सर्ब व्यापी देवे सर्ब धार, शब्द शब्दी मेल मिलांयदा। सर्ब व्यापी एका एक बख्शे चरन प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। सर्ब व्यापी बूज्झया, हरि सतिगुर दीन दयाल। सर्ब व्यापी एका सुझया, गुरमुख विरले साचे लाल। सर्ब व्यापी एका भउ चुकाए एका दूजया, साचा दस्से राह सुखाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे पत डालृ। सर्ब व्यापी सच फुलवाड़ी, हरिजन वेख वखाईआ। सर्ब व्यापी आपे खेत आपे वाड़ी, सर्ब रख्या आप कराईआ। सर्ब व्यापी आपे वेखे आपणी फसल हाढ़ी, आपणी झोली आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत चुकाए झूठा डर, हरिजन साचे आपणे भय रखाईआ। सर्ब व्यापी साख्यात, आपणा दरस दखाईआ। सर्ब व्यापी ग़रीब निवाज़ पारज़ात, फुल्ल फल आप महिकाईआ। सर्ब व्यापी धुरदरगाही दात, साची वस्त झोली पाईआ। सर्ब व्यापी उत्तम कराए ज़ात, चार वरनां मुख शर्माईआ। सर्ब व्यापी पिछला पूरा करे घाट, अगला लेखा आपणे हत्थ रखाईआ। सर्ब व्यापी इक्क वखाए तीर्थ ताट, सर सरोवर चरन नुहाईआ। सर्ब व्यापी अग्गे रक्खे नेड़े वाट, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सर्ब व्यापी रोग सोग चिंता दुःख देवे काट, आत्म सुख सहिज सुखदाईआ। सर्ब व्यापी इक्क वखाए सच्चा हाट, हरिजन साचे बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीब निमाणयां अंदर वड़, आपणी सेजा आपे रिहा सुहाईआ। सर्ब व्यापी निरगुण जोत, आदि जुगादि समाया। सर्ब व्यापी तारे कोटी कोटि, कोटन कोटि लेखे लाया। सर्ब व्यापी कढ्ढे वासना खोट, अमृत आत्म रस भराया। सर्ब व्यापी देवे इक्क भण्डारा अतोट, आदि जुगादि निखुट ना जाया। सर्ब व्यापी तृष्ना तृखा भरे पोट, आसा मनसा पूर कराया। सर्ब व्यापी आप बठाए आलृणिउँ डिग्गे बोट, कलिजुग अन्तिम होए सहाया। सर्ब व्यापी शब्द नगारे लाए चोट, आप आपणा ताल वजाया। सर्ब व्यापी एका इक्क वखाए चरन ओट, दूसर दर ना कोए फिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, क्रिया कर्म वेख वखाया। सर्ब व्यापी खेल ब्रह्मण्ड, हरि हरि आप करांयदा। सर्ब व्यापी जेरज अंड, जुग जुग वेख वखांयदा। सर्ब व्यापी आपे जाणे आपणा पन्ध, दो जहानां फेरी पांयदा। सर्ब व्यापी वेखणहारा नौ खण्ड, लोकमात वेस वटांयदा। सर्ब व्यापी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप धरांयदा। सर्ब व्यापी डूँग्घा सागर, हरि हरि रूप समाया। सर्ब व्यापी आपे वसे काया गागर, गहर गम्भीर दिस ना आया। सर्ब व्यापी ग़रीब निमाणयां करे कर्म उजागर, आपणी हत्थीं लेख लिखाया। सर्ब व्यापी आदि जुगादी इक्क सौदागर, साचा वणजी वणज कराया। सर्ब व्यापी जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुहाए थान सगला साथ, एका

४११ ०६

टेक बख्शे रघुनाथ, रघपत आपणा संग रखाया। चार वरनां सच प्रीत, सच सच्चा इक्क रखाईआ। चार वरनां इक्क रीत, साची रीत चलाईआ। चार वरनां एका मन्दिर मसीत, गुरूदुआर इक्क वखाईआ। चार वरनां परखे नीत, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश भुल्ल ना राईआ। चार वरनां काया करे ठंडी सीत, जो जन रसना सोहँ गाईआ। चार वरन कराए पतित पुनीत, दुरमति पापां मैल धुआईआ। चार वरन मानस जन्म जायण जीत, चरन कँवल कँवल चरन उप्पर धवल जो जन सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हस्त कीट कीट हस्त साचा मीत इक्क अख्वाईआ। जग जीवण दाता भेटया, जल थल महीअल पूर। सतिगुर पाया खेवट खेटया, लेखा जाणे नेड़े दूर। नाता बिधाता पिता पूत बेटया, आदि जुगादी हाज़र हज़ूर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहारा चरन धूढ़। सतिगुर पूरा पाया, गुणवन्ता गुण निधान। मन संसा रोग चुकाया, आत्म देवे इक्क ज्ञान। दूई द्वैती पर्दा लाहया, दरस दखाए सच मकान। हउमे हंगता गढ़ तुड़ाया, शब्द वखाया सच निशान। तन सड़दा आप बचाया, कर किरपा मेहरबान। उप्पर पर्दा एका पाया, वेले अन्त होए निगहबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द नाम नामा देवे साचा दान। निर्धन सरधन एका रंग, हरि सतिगुर आप रखाया। निर्धन सरधन वसे संग, आपणी सेव कमाया। निर्धन सरधन एका धार वहाए गंग, अमृत मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निवण सु अक्खर इक्क पढ़ाया। एका अक्खर एका अक्ख एका नैण, एका मुख सालाहीआ। एका पति लए रक्ख एका नर नरायण, एका इक्क होए सहाईआ। एका भरे एका भाण्डे करे सक्ख एक चुकाए लैण देण, एका एक वड वड्याईआ। एका महिमा अकथना अकथ एका नाता जोड़े भाई भैण, साक सैण इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप चलाए काया रथ, रथ रथवाही इक्क अख्वाईआ। एका गुर एका धार, एका शब्द जणाईआ। एका सिख इक्क प्यार, एका लिख लिख झोली पाईआ। एका रूप हरि हरि रिहा वस, घट घट अंदर जोत जगाईआ। एका मिटाए दूई द्वैती विस, मिट्ठा रस इक्क खुआईआ। एका वण्डे आपणा हिस्स, साची वण्डण एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निमाणयां देवे आपणा माण, एथे ओथे सगल जहान, आत्म दरस देवे घर आण, हरि घर घर घर विच होए सहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निर्धन आपणी झोली पाईआ।

❊ १० चेत २०१७ बिक्रमी किशन सिँघ दे घर दया होई अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदासपुर ❊

सो पुरख निरँजण सच सिक्दार, हरि साचा हुक्म सुणांयदा। हरि पुरख निरँजण बण सुन्यार, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। एकँकारा कुठाली कर त्यार, आपणी वस्त आप वखांयदा। आदि निरँजण दीपक देवे बाल, लाल लिलाटी डगमगांयदा। अबिनाशी करता आप आपणा विच देवे घाल, कंचन रूप वटांयदा। श्री भगवान आपणी वस्त लए संभाल, आप आपणे हथ्थ रखांयदा। पारब्रह्म प्रभ बण दलाल, साचा वणज करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजण सति फ़रमाण, आपणा आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण कर परवान, सेवा सेव कमाईआ। एकँकारा कर ध्यान, आपे निउँ निउँ वेख वखाईआ। आदि निरँजण दीप महान, घर साचे करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता आपणा लेख लिखे महान, एका अक्खर आपे पाईआ। श्री भगवान बण दरबान, साची वस्त टिकाईआ। पारब्रह्म वेख निशान, बैठा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घाड़ण आप घड़ाईआ। सो पुरख निरँजण खेल करया, भेव कोए ना पांयदा। हरि पुरख निरँजण घाड़ण घड़या, घड़णहारा आप अख्वांयदा। एकँकारा अंदर वड़या, आप आपणा विच टिकांयदा। आदि निरँजण जोती नूर जड़या, रंग रंगीला डगमगांयदा। श्री भगवान हथ्थ विच फड़या, घर साचे वेख वखांयदा। अबिनाशी करता वेखे दरया, दर दरवाज़े सोभा पांयदा। पारब्रह्म नरायण नर हरया, ब्रह्म आपणा वेस धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणा आप सुहांयदा। सो पुरख निरँजण हरि भगवान, आपणा आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण कर परवान, सगला संग वखाईआ। एकँकारा कर पछाण, आपणे हथ्थ उठाईआ। आदि निरँजण देवे माण, आप आपणा मेल मिलाईआ। अबिनाशी करता नौजवान, आपणी लए आप अंगड़ाईआ। श्री भगवान देवे दान, एका वस्त हथ्थ उठाईआ। पारब्रह्म वेखणहारा साचा काहन, नेत्र नैण इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। सो पुरख निरँजण साचा काहन, घर साचे आप सुहांयदा। हरि पुरख निरँजण सच निशान, साचे हथ्थ रखांयदा। एकँकारा हो प्रधान, चारों कुंट आप हिलांयदा। आदि निरँजण होया जाणी जाण, आपणा भेव आप खुल्हांयदा। अबिनाशी करता करे परवान, पंचम साचा संग रखांयदा। पंचम मेला धुर दी बाण, पुरख अबिनाशी आप करांयदा। साचे तख्त राज राजान, सचखण्ड निवासी आप सुहांयदा। शाहो भूप बण सुल्तान, तख्त निवासी हुक्म चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा सगन आप मनांयदा। सो पुरख निरँजण हरि बेअन्ता, भेव कोए ना पांयदा। हरि पुरख निरँजण बणे मंगता, आपणी झोली अग्गे डांहयदा। एकँकारा आपे होए भुक्खा

नंगता, धन माल ख़ज़ीना आप भरांयदा। आदि निरँजण सच दुआरा आपे लँघणा, अंदर बाहर ना कोए वखांयदा। अबिनाशी करता दर दरवेश कदे ना संगदा, अलक्ख अलक्खणा आपणी अलक्ख जगांयदा। पंचम मुख एका भिक्ख मंगदा, एका वस्त हथ्थ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आप सुहांयदा। सच सिँघासण हरि भगवाना, एका आप सुहाया। सति सरूपी सति निशाना, सति पुरख निरँजण आप चढ़ाया। आदि निरँजण वड मेहरवाना, आदिन अन्ता आप अख्वाया। आपणा बन्ने आपे गाना, साचा सगन मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, पुरख अबिनाशा वेख वखाया। सो पुरख निरँजण वेखणहारा, आपणी खेल आप खिलाईआ। साचा तख्त कर त्यारा, सच सिँघासण इक्क विछाईआ। साचा दीपक कर उज्यारा, नूर नुराना आप टिकाईआ। साचा चँवर दए हुलारा, पुरख अबिनाशी आप झुलाईआ। साचा भूप बण सिक्दारा, आप आपणा चरन टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड बैठा साचा माहीआ। सचखण्ड सच सिँघासण हरि निरँकार, एका आप विछाया। जगमग जोत जगे अपार, आदि जुगादी आप जगाया। कमलापाती हो त्यार, सच सुहञ्जणी सेज सुहाया। इक्क इकांती बैठ करतार, आपणी करनी रिहा कमाया। आपे बणया चोबदार, आप आपणा हुक्म सुणाया। जोती जोत सरूप हरि,
४१४ आप आपणी किरपा कर, चतुर्भुज आप अख्वाया। चतुर्भुज हरि सुल्ताना, दिस किसे ना आया। आपे मर्द मर्द मरदाना, ४१४
०६ आप आपणा नाउँ उपाया। आपे गोपी आपे कान्हा, आपे आपणे घर घर रास रचाया। आपे खेले खेल भगवान रूप श्री ०६
भगवाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मन्दिर इक्क सुहाया। साचा मन्दिर हरि सुहावणा, हरि साची किरपा धार। साचा भूप इक्क बणावणा, आप आपणा कर प्यार। साचा रूप इक्क वटावणा, दिस ना आए विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए साचा सिक्दार। सच सिक्दार इक्क अख्वावणा, शाहो भूप राज राजान। साचा हुक्म इक्क चलावणा, पुरख अबिनाशी कर ध्यान। सच निशाना इक्क चढ़ावणा, उच्च महल्ले हरि भगवान। एका ताज सीस टिकावणा, पंचम मुख मुख निशान। सो पुरख निरँजण आपणा खेल आप खिलावणा, खेलणहार गुण निधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा राग अलावणा। पंचम मुख पंचम ताजा, हरि साचे सच उपजाया। उप्पर लाया नाम सुहागा, सच कुठाली एका ताया। आपे सोया आपे जागा, नित नवित आपे वेख वखाया। आपे पाया प्रेम प्यारा धागा, त्रैगुण हथ्थ ना किसे वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर इक्क सुहाया। पंचम ताज सीस रक्ख, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। निरगुण अग्गे निरगुण रूप हो प्रतक्ख, निरगुण

निरगुण वेख वखाईआ। निरगुण अंदर बाहर निरगुण वक्ख, निरगुण निरगुण विच समाईआ। निरगुण अलक्खणा अलक्ख, अगम्म अगोचर निरगुण आप अख्वाईआ। निरगुण सो पुरख निरँजण होए प्रतक्ख, रूप अनूप आप दरसाईआ। आपणा मार्ग सचखण्ड दुआरे आपे दस्स, आपणी बूझ आप बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाईआ। सो पुरख निरँजण साची धार, घर साचे आप चलांयदा। जुगा जुगन्तर आदि जुगादी कोए ना पावे सार, लेखा लेख ना कोए लखांयदा। कोटन कोटि जो जन दए हुलार, एका हुलारा आप हिलांयदा। ख़ालक खलक बेऐब परवरदिगार, सालस कोए ना विच रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क वड्यांअदा। तख्त ताज सुहावणा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। राज राजान इक्क अख्वावणा, प्रभ साचा शहनशाहीआ। दो जहान जोग कमावणा, हुक्मी हुक्म आप चलाईआ। धुर फ़रमाणा इक्क सुनावणा, ना कोई लिखे कलम शाहीआ। साचा तख्त इक्क वडियावणा, पावा चूल ना कोए बणाईआ। ज़िमी अस्मान किसे ना डाहवणा, धरत धवल ना कोई भार उठाईआ। साध सन्त गुर पीर अवतार हरि सिँघासण महिमा किसे ना गावणा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह गए विच लोकाईआ। आपणा भेव हरि आप खुल्ह्रावणा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणा राग आप अल्ह्रावणा, आपे बैठा रिहा सुणाईआ। सचखण्ड निवासी ताल इक्क वजावणा, ताल तलवाड़ा ना कोए सुणाईआ। दर दरवाजा इक्क खुल्ह्रावणा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। ग़रीब निवाज़ा नाम धरावणा, दो जहानां करे सच्ची पातशाहीआ। जुग जुग आपणा काज रचावणा, डोर आपणे हथ्थ रखाईआ। शाह सुल्ताना मेट मिटावणा, ख़ाकी ख़ाक दए मिलाईआ। साचा खण्डा इक्क चमकावणा, थिर घर बैठा आप घड़ाईआ। जोद्धा सूरबीर आप अख्वावणा, आप आपणा बल धराईआ। रवि ससि ब्रह्मण्ड खण्ड चरना हेठ दबावणा, कोई सके ना भार उठाईआ। जो घड़या सो भन्न वखावणा, हुक्मी हुक्म हुक्म चलाईआ। धुरदरगाही एका नाद वजावणा, तुरीआ राग आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीस आपणा ताज टिकाईआ। साचा ताज सीस सुल्तान, हरि साचे सच टिकाया। पुरख अबिनाशी वड मेहरवान, सचखण्ड बैठा आसण लाया। दो जहानां वेखे मार ध्यान, आप आपणा नैण खुल्ह्राया। शब्द अगम्मी पावे आण, सच फ़रमाणा आप जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाया। सचखण्ड वासी रचन रचाए, वड दाता बेपरवाहीआ। लोआं पुरीआं बणत बणाए, ब्रह्मण्ड खण्ड मेल मिलाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव आपणी बिन्द उपजाए, आप आपणी दया कमाईआ। त्रैगुण माया वस्त टिकाए, घट घट झोली आप भराईआ। लक्ख चुरासी जोड़ जुड़ाए, पंज तत्त घाड़ण आप घड़ाईआ। शब्द अनादी विच टिकाए, दिस

किसे ना आईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी खेल खलाए, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राज जोग जगत वखाईआ। राज जोग जगत जगदीशर, लोकमात आप चलांयदा। सर्ब जीआं दा एका ईश्र, एका रूप दरसांयदा। आप उपजाए तपी तपीशर, मुनी मुनीशर सेव लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचांयदा। राज जोग जगत सुल्ताना, लोकमात खेल खिलांयदा। मानस मानुख कर प्रधाना, लक्ख चुरासी वड सिक्दार आप बणांयदा। लेखा जाणे तत्त मकाना, हट्टो हट्ट फोल फुलांयदा। धुरदरगाही नाम तराना, शादीआना सच वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म अलांयदा। राज जोग जुग जुग चानण, हरि साचा आप करांयदा। भगतां देवे भगती दानण, आत्म ब्रह्म ज्ञान धरांयदा। सन्तन मेला साचे राम रामन, राम रामा आप अख्वांयदा। गुरमुखां पकड़े आपे दामन, दामनगीर आप अख्वांयदा। गुरसिखां होए सच्चा ज़ामन, आदि अन्त दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल करांयदा। जुग जुग खेल पुरख करतार, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण कर पसार, एकँकारा सेवा लाईआ। आदि निरँजण बण पनिहार, घर घर फेरा पाईआ। अबिनाशी करता दए आधार, श्री भगवान आपणा रंग रंगाईआ। पारब्रह्म हो त्यार, आपणी वण्डण वण्ड वण्डाईआ। ब्रह्म रूप सर्ब संसार, लक्ख चुरासी विच टिकाईआ। जीव आत्म कर त्यार, निरगुण बैठा मुख छुपाईआ। वसणहारा धरत मुनार, साचा गढ़ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क समझाईआ। दर घर साचा काया मन्दिर, हरि साचा सच समझांयदा। निरगुण सरगुण वड़या अंदर, आपणा मुख छुपांयदा। आपे लाया आपणा जंदर, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। लेखा जाणे अन्धेरी कंधर, डूँघी भवर मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी रास रचांयदा। जगत रास रचाए लीला, लालण लाल रंग हो उज्यारया। आपे जाणे आपणा वेस कंचन सूहा चिट्टा पीला, नीला काला वेखे धारया। आपे करे आपणा हीला, दो जहानां पावे सारया। आपे होए छैल छबीला, निरगुण दाता बेऐब परवरदिगारया। आपे जाणे आपणा सच कबीला, हरि सन्तन करे प्यारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेले खेल अगम्म अपारया। अगम्म अपार हरि निरँकार, आपणा खेल खिलांयदा। आदि जुगादी इक्क अवतार, गुर गुर नाउँ धरांयदा। गुर गुर रूप विच संसार, सतिगुर हुक्म सुणांयदा। सन्तां देवे नाम आधार, एका वस्त हथ्थ फड़ांयदा। भगतन अंदर भर भण्डार, साची दात आप वरतांयदा। गुरमुखां बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। गुरसिखां करे पार किनार, अद्ध विचकार ना कोए डुबांयदा। सच तख्त सच

सिक्दार, साचा अदल कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्ला, हरि साचा सच करांयदा। लेखा जाणे राणी अल्ला, नूर इलाही आप अल्लांयदा। आप फड़े चार यारी संग मुहम्मद पल्ला, आपणा पल्लू आप फड़ांयदा। आपे वसे निहचल धाम अटला, आपे लोकमात खेल खिलांयदा। आपे लक्ख चुरासी भुलाए कर कर वल छल्ला, वल छल धारी नाउँ धरांयदा। जोती शब्दी आपे रला, आप आपणा रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म रंग रंगांयदा। रंग रंगीला हरि करतार, करता कुदरत विच समाईआ। राम रूप पसर पसार, रव रिहा सर्ब थाँईंआ। करे खेल अगम्म अपार, आप आपणी कल वरताईआ। अकल कला कल आपे धार, चारों कुंट वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी पावे सार, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। ब्रह्मण्डां वेखे हो त्यार, जेरज अंडां फोल फुलाईआ। भेख पखण्डा करे ख्वार, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा लिखणहार शाह, वड्डा दाता आप अख्वाया। आपे बणे जगत मलाह, जुग जुग बेड़ा आप चलाया। आपे पावे आपणे राह, मार्ग पन्थ आप दसाया। आपे होए सिफ्त सालाह, रसना सके ना कोए सालाहया। आपे वसे जल थल अस्गाह, महीअल आपणा रूप वटाया। आपे जाणे आपणा नाँ, कोटन कोटि नाम उपाया। आपे वसे आपणे ग्रां, सच महल्ला आप वसाया। आपे भगतन पकड़े बांह, लोकमात फेरा पाया। आप निथावयां देवे थाँ, थान थनंतर इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा खेल आप खलाईआ। खेलणहार पुरख समरथ, एका एकंकारया। आदि जुगादि महिमा अकथ, वेद कतेब भेद ना पा रिहा। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही दिस ना आ रिहा,। जन भगतां देवे साची वथ्थ, साची वस्त नाम वखा रिहा। नौ खण्ड पृथ्मी पाए नथ्थ, जीव जंत साध सन्त चारों कुंट भुआ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप उठा रिहा। हरिजन साचे उठावणहार, एका आप अख्वाया। जुग जुग लए मात अवतार, गुर पीर ना दए कोई सलाहया। कलिजुग अन्तिम पावे सार, निरगुण नूर कर रुशनाया। शब्द डंक वजाए अपर अपार, लोआं पुरीआं दए हलाया। एका बोल सच जैकार, हँ ब्रह्म लए मिलाईआ। हँ ब्रह्म होए उज्यार, सो पुरख निरँजण खेल खलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लेखा वेख वखाया। पूर्ब लेखा वेखणहार गुपाला, आपणा भेव आप रखांयदा। हरिजन वेखे साचे लाला, जुग विछड़े मेल मिलांयदा। निरगुण सरगुण बण दलाला, घर साचे सेव कमांयदा। आपे चली अवल्लड़ी चाला, जोती जामा भेख वटांयदा। आप उठाए निक्का बाला, गुरमुख सोया आप जगांयदा।

आपे करे कराए सर्ब प्रितपाला, प्रितपालक आपणा नाउँ रखांयदा। आपे घाले आपणी घाला, घोली घोल आप घुमांयदा। आपे संग रखाए काल महांकाला, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। आप फल लगाए डाला, पत टाहणी वेख वखांयदा। आपे तोड़े जगत जंजाला, जागरत जोत इक्क जगांयदा। आप सुहाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, घर साचा आप सुहांयदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लहिणा वेख वखांयदा। पूर्ब लहिणा वेखण आया, आप आपणी किरपा धार। गुरमुख साचे परखण आया, नाम घसवट्टी रक्खी नाल। लक्ख चुरासी विच्चों रक्खण आया, ग़रीब निमाणा लालो लाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सरूपी बण दलाल। शब्द सरूपी बण दलाल, हरि साची सेव कमांयदा। गुरसिख घाली साची घाल, सतिगुर साचे लेखे लांयदा। जन्म जन्म करे प्रितपाल, मरन मरन दा पल्ला छुडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलांयदा। मेल मिलावा हरि निरँकार, गुरमुख सज्जण आप कराईआ। सेवक सेवा करी कर प्यार, सतिगुर साचे लेखे लाईआ। मिट्ठा रस ना दिसे कोई विच संसार, रस कोदरा इक्क भराईआ। नानक करया इक्क प्यार, ग़रीब निमाणा गले लगाईआ। सिर तेरा चुक्कया आपणे भार, अन्तिम वेले दए मुकाईआ। लैणा जन्म विच संसार, मानस रूप फेर वटाईआ। निहकलंक आए फेर आपणी वार, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। सिर रक्ख सीस ताज दस्तार, दो जहानां चरनां हेठ रक्खे शहनशाहीआ। तेरा करजा दए उतार, सिर हौला भार रखाईआ। सूरबीर बली हरि निरँकार, इक्की सिखां नाल रलाईआ। आपणा करज़ ना रक्खया कोई उधार, हरिसंगत दए वखाईआ। फिर बैठा तख्त सच्चे दरबार, आपणा मुख सिखां वखाईआ। सिर रक्ख सच्चा ताज आप निरँकार, गुरसिखां देवे दरस बेपरवाहीआ। नौ खण्ड पृथमी ब्रह्मण्ड खण्ड करोड़ तेतीस ब्रह्मा विष्न शिव साध सन्त गुर पीर अवतार बणन पनिहार, प्रभ साचा हुक्मी रिहा फिराईआ। प्रभ गुरसिखां उत्तों देवे वार, साचा ताज तेरे चरनां हेठ टिकाईआ। तेरा दुआरा सचखण्ड, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। उच्ची कूको करो पुकार, प्रभ पाया सच साचा माहीआ। आवण जावण छुट्टया विच संसार, लक्ख चुरासी रहिण ना पाईआ। ब्रह्मा बणे दर भिखार, लालो तेरी वड वड्याईआ। विष्नूं रूप करया करतार, तेरे दर भिच्छया मंगण आईआ। शंकर नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, हथ्थ त्रसूल ना कोई वखाईआ। छोटे बाले धक्का दित्ता मार, ना सके कोए उठाईआ। सिँघ पाला बैठा कर श्रंगार, चारों कुंट राह तकाईआ। करोड़ तेतीसा गया हार, सुरपति राजा इंद रिहा कुरलाईआ। सिँघ मनजीता अतीता बहे चरन दुआर, प्रभ साचे तख्त बहाईआ। तप्या अंगीठा सर्ब संसार, हरि साचा रिहा तपाईआ। नाम निधान गुरमुख पीता चरन दुआर, अठ्ठे पहर खुमार रखाईआ। हस्त कीटा रंगया रंग करतार, ऊँच

नीच ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सचखण्ड दुआर सोहे निरँकार, हरिसंगत बणाए आपणा परिवार, अन्तिम वार आपणे चरन बहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची सच सच्चा करे शहनशाहीआ।

हरि शब्द वड्डी वड्याईआ, सतिगुर साचा नाउँ धरांयदा। सतिगुर साचे वड वड्याईआ, गुर गुर आपणा रूप वटांयदा। गुर साचे वड वड्याईआ, हरिभगतन रंग रंगांयदा। हरिभगतन वड वड्याईआ, सन्तन संग निभांयदा। हरि सन्तन वड वड्याईआ, गुरमुखां खेल खिलांयदा। हरि गुरमुख वड वड्याईआ, गुरसिख साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द शब्दी वेस वटांयदा। हरि शब्द मेहरवान, सतिगुर घर वसाया। सतिगुर देवे साचा दान, गुर गुर झोली पाया। गुर गुर बख्शे इक्क ज्ञान, हरिभगतन वेख वखाया। हरि सन्तन मेला साचे काहन, घर साचे रास वखाया। हरि सन्तन देवे ऐका माण, गुरमुख साचे वेस वटाया। गुरमुख बख्शे इक्क ध्यान, गुरसिख साचे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी शब्द सालाहया। हरि शब्द सूरबीर, सतिगुर हथ्थ रखाया। सतिगुर मारे साचा तीर, गुर गुर निशाना इक्क कराया। गुर गुर कढ्ढे हउमे पीड़, भगतन लेखा आप समझाया। भगतन बन्नृणा हरि हरि बीड़, सन्तन आदि अन्त होए सहाया। चोटी चाढ़े इक्क अखीर, आपणी दया कमाया। गुरमुखां आत्म देवे ठंडा सीर, गुरसिख साचे एका जाम प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा शब्द वड्याआ। शब्द वडियाई सतिगुर देव, हरि साचा सच रखांयदा। आदि जुगादी अलक्ख अभेव, गुर गुर नाउँ धरांयदा। भगतन देवे इक्क मेव, अमृत फल इक्क खुआंयदा। सन्तन जाणे रसना जिह्व, गुण अवगुण ना कोए वखांयदा। गुरमुख मस्तक लावे साचा थेव, कौस्तक मणीआ आप चमकांयदा। गुरसिख मेल मिलावा सदा निहकेव, निहचल एका धाम वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द बबाणा साचा राणा, एका एक उडांयदा। सतिगुर शब्द बबाण, हरि साचा आप उडाईआ। गुर गुर मेला विच जहान, दो जहानां वेख वखाईआ। भगतन भगती कर परवान, भगवान आपणा रूप दरसाईआ। साचे सन्तां कर परवान, घर साचे मेल मिलाईआ। गुरमुख बणाए चतुर सुघड़ सुजान, ब्रह्म मति इक्क समझाईआ। गुरमुख बाल अञ्याण पछाण, आप आपणे अंग लगाईआ। आदि जुगादी जाणी जाण, भुल्लणहार अभुल्ल आप अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द बणे रथवाहीआ। शब्द चलाए साचा रथ, सतिगुर

साची सेव कमांयदा। गुर गुर महिमा अकथना अकथ, आपणा लेखा आप जणांयदा। भगतन रक्खे दे कर हथ्थ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। सन्तन देवे साची वथ्थ, एका वस्त झोली पांयदा। गुरमुखां सगल विसूरे जायण लथ्थ, नेत्र लोचण नैण इक्क खुल्हांयदा। गुरसिखां मार्ग एका दस्स, साचे मार्ग आपे पांयदा। हिरदे अंदर हरि जू वस, हरि मन्दिर मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। शब्द गुर सच मलाह, सतिगुर आप उपाया। गुर गुर देवे इक्क सलाह, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सलाहया। भगतन जपाए एका नाँ, नाम निधान इक्क वखाया। सन्तन पकड़े आपे बांह, आप आपणी दया कमाईआ। गुरमुखां देवे साचा थाँ, चरन दुआर इक्क वखाया। गुरसिखां बणे पिता माँ, पुरख अबिनाशी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द राणा साचे तख्त आप बहाया। शब्द तख्त ताज सुल्तान, हरि सतिगुर आप सुहाया। गुर गुर पूरा नौजवान, आदि जुगादी खेल खलाया। भगतन मेला दो जहान, एकँकारा आप कराया। सन्तन वेखे मार ध्यान, नौ खण्ड पृथ्मी फोल फुलाया। गुरमुखां पाए एका आण, एका हुक्मी हुक्म सुणाया। गुरसिखां देवे धुर फ़रमाण, शब्द अनादी धुन जणाया। अमृत आत्म पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाया। एका राग सुणाए कान, धुन आत्मक आप अल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह अस्वार आप अख्वाया। शाह अस्वार हरि निरँकार, शब्द अश्व आप दौड़ाईआ। सतिगुर पूरा हो त्यार, सचखण्ड दुआरा वेख वखाईआ। आपणे अंदरों आपे आए बाहर, आप आपणा चरन उठाईआ। चारों कुंट पावे सार, दहि दिशा वेख वखाईआ। महल्ल अटल उच्च मिनार, आप आपणा दए तजाईआ। आवे जावे वारो वार, जुग जुग जगत वेस वटाईआ। लोकमात लए अवतार, एका शब्द करे पढ़ाईआ। जोती जल्वा अगम्म अपार, जोती जोत जोत जगाईआ। वरन गोती वसया बाहर, ज़ात पात ना कोई रखाईआ। आपे गुप्त आपे ज़ाहर, अंदर मन्दिर बैठा आसण लाईआ। आपे पुरख आपे नार, नर नरेशा वड वड्याईआ। आपे करे आपणी कार, दिवस रैण सेव कमाईआ। आप उठाए आपणा भार, सीस जगदीश आप उठाईआ। आपे वेखे सच अखाड़, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द वज्जे वधाईआ। शब्द तराना हरि भगवाना, दो जहानां आप वजांयदा। गुरमुखां देवे इक्क बिबाना सच निशाना, बीना दाना दया कमांयदा। हथ्थीं बन्न्हे एका गाना, अमृत बख्शे पीणा खाणा, आप चलाए आपणा भाणा, सद भाणे आप समांयदा। तीर निराला मारे बाणा, तख्तों लाहे राजा राणा, भेव ना पाए चतुर सुघड़ स्याणा, माया भरम सर्ब भुलांयदा। हरिजन देवे साचा माणा, आत्म तोड़े जगत अभिमाना, चरन धूढ़ कराए अशनाना, दुरमति मैल आप धुआंयदा। लेखा जाणे गोपी कान्हा,

४२१ ०६

आपे होए नैण मधाना, निरगुण सरगुण पहरे बाणा, रूप अनूपा आप वटांयदा। एका खण्डा तीर कमाना, आपे जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, आपे होए नौजवाना, जगत वासी ना कोई बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी नाउँ धरांयदा। आपे भूप चारे कूट, दहि दिशा फेरी पाईआ। आपे निरगुण सति सरूप, नर हरि नाउँ धराईआ। आपे तागा आपे सूत, ताणा पेटा आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द डोरी माया तन्द आपे बन्ने आपणे बन्द, बन्दी छोड़ आप अख्वाईआ। आपे रचया आपणा काजा, आपे रक्खे आपणी लाजा, आप आपणा वेस धरांयदा। आपे अश्व आपे ताजा, आपे होए शाह नवाबा, आपे आपणा आसण लांयदा। आपे जाणे दो दो आबा, आपे तन वजाए इक्क रबाबा, मक्का काअबा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द निशाना हरि भगवाना, एका एक रखांयदा। शब्द गुर हरि भगवान, एका एक उपाया। जुग जुग खेले खेल महान, लोकमात वेस वटाया। एका राग सच्ची धुनकान, नाद ब्रह्माद दए सुणाया। जीव जंत ना सके कोई पछाण, नेत्र नैण दिस ना आया। जिस जन बख्शे आपणा माण, सो जन साची बूझ बुझाया। काया मन्दिर सुणाए धुर फ़रमाण, लेखा लेख ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्दी शब्द उपजाया। शब्द उपजाए साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जुगा जुगन्तर मात धर, लक्ख चुरासी दए समझाईआ। सतिगुर गुर आपे वर, पंज तत्त करे कुड़माईआ। भगतन चुकाए लक्ख चुरासी डर, दर एका एक वखाईआ। सन्तन मेला हरी हरि, हरि मन्दिर दए कराईआ। गुरमुखां फड़ाए आपणा लड़, एका पल्लू हत्थ उठाईआ। गुरसिख पौड़े जाए चढ़, जिस जन आप चढ़ाईआ। काया मन्दिर आपे वड़, सुरत सवाणी ल्ए जगाईआ। जगत विकारा जाए झड़, पंज तत्त रहे शर्माईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, निज घर बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी आपणा नाउँ उपजाईआ। शब्द गुरू गुर अंदर वड़या, काया मन्दिर आप सुहाया। साचे पौड़े आपे चढ़या, आपणा डण्डा आप लगाया। आपणे दुआरे आपे खड़या, आप आपणा मुख वखाया। आपणा घाड़न आपे घड़या, भन्नणहार ना कोई भन्न वखाया। आपणी जड़ती आपे जड़या, रक्त बूंद ना कोए वखाया। अग्नी हवन कदे ना सड़या, ना मरे ना जाया। आपणी विद्या आपे पढ़या, ब्रह्मा वेता आप पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्दी रूप वटाया। शब्द रूप हरि अन रंग, दिस किसे ना आंयदा। नाम वजाए इक्क मृदंग, आपणी सेवा आप कमांयदा। सचखण्ड दुआरा आपे लँघ, लोआं पुरीआं डेरा ढांहयदा। नौ खण्ड पृथ्मी करे नंग, सत्तां दीपां डेरा ढांहयदा। लेखा जाणे सर्ब वरभण्ड, इष्ट रूप ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द नगारा एकँकारा, धूंआँधार आप वजांयदा। शब्द नगारा वज्जया, वजावणहार निरँकार। नौ खण्ड पृथ्मी फिरे भज्जया, एथे ओथे पावे सार। त्रैगुण माया पर्दा किसे ना कज्जया, पंज तत्त ना कोई अकार। जन भगतां रक्खे लज्जया, गुर पीर बण अवतार। कलिजुग अन्तिम आपणे मन्दिर आपणे सिँघासण आपे सजया, निरगुण रूप जोत निराकार। एका नाम चलाए सच जहाजया, कलिजुग बेड़ा देवे तार। लेखा चुक्के कल के आजया, लक्ख चुरासी ना होए ख्वार। मेट मिटाए राजन राजया, शाह सुल्तानां मारे मार। सीस रक्खे ना कोई ताजया, करे ना कोई शंगार। घर मन्दिर ना दिसे नाचया, वेसवा रूप करे ना कोई विचार। प्रगट होया देस माज्झया, कल्गी तोड़ा सीस दस्तार। ना कोई वेखे हाजी हाजया, उच्ची कूक ना करे पुकार। अठसठ तीर्थ कोई ना फिरे भाजया, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती गई हार। एका शब्द सो पुरख निरँजण मारे वाजया, जगत ब्रह्म करे ख़बरदार। प्रगट होए ग़रीब निवाजया, ग़रीब निमाणे जाए तार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बोले शब्द जैकार। शब्द जैकारा सोहँ सो, हरि सच सच जणाया। गुरमुखां दुरमति मैल धो, आप आपणा मेल मिलाया। निज आत्म रस एका चो, बज़र कपाटी खोल्ह खुल्हाया। शब्द अनादी देवे ढोआ ढो, अनहद रिहा सीस झुकाया। आपणी हत्थीं बीज दित्ता बोअ, ना सके कोई जड़ उखड़ाया। प्रभ पार कराए तिन्नां लोअ, चौदां लोकां पन्ध मुकाया। गुरमुख सज्जण धर्म राए कोलों आपणी हत्थीं लए खोह, लेखा आपणे हत्थ रखाया। वेले अन्त दूसर नेड़ ना आवे को, लाड़ी मौत ना मुख वखाया। चारों कुंट शब्द सुहागा रिहा जोअ, साचा हाली हरि बण बण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द डोरी इक्क रखाया। शब्द डोर हत्थ करतार, कलिजुग अन्तिम आप उठाईआ। लक्ख चुरासी करे ख्वार, दहि दिशा एका नर्क फिराईआ। गुरमुखां करे सच प्यार, कुंभी नर्क कोई ना जाईआ। निधड़क होए करे पुकार, घर मिल्या शहनशाहीआ। हत्थ खड़ग फड़ आया तेज कटार, अठ्ठे पहर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द रूप वटाईआ। शब्द कटारा हरि जू फड़या, गुरमुखां लाज रखांयदा। निरगुण रूप हो लोकमात चढ़या, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख विरला आप आपणा आपे फड़या, लक्ख चुरासी विरोल वखांयदा। एका अक्खर गुरमुख विरला पढ़या, सोहँ आपणा नाउँ पढ़ांयदा। हीरा माणक मोती आपणे सीस ताज गुरमुख जड़्या, सिर आपणे आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सूरा हरि निरँकारा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाया पुरख सुल्तान, निरगुण वड्डा वड वड्याईआ। गुरमुखां देवण आया दान, एका वस्त हत्थ रखाईआ। शब्द वखाए सच निशान, सतिगुर पूरा आप

झुलाईआ। जगत चुकाए झूठी काण, काया आपणे लेखे लाईआ। जो जन हरि हरि रसना गाण, गावणहारा आप होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रक्खणहारा आपणे घर, घर महल्ला उच्च अटला निहचल असथिल थिर ठांडा आप वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना पुरख ना दिसे नार, एका रूप आप निरँकार, गुरमुखां करे शब्द प्यार, दूजा रंग ना कोए जणाईआ।

४२३

०६

❋ ११ चेत २०१७ बिक्रमी दारा सिँघ दे घर अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ❋

सर्ब जीआं करे प्रितपाल, प्रितपालक हरि रघराया। हरिजन विंगा होए ना वाल, जिस आपणी बूझ बुझाया। साचे ढांचे देवे ढाल, नाम कुठाली एका पाया। लेखा जाणे शाह कंगाल, माया ममता वेख वखाया। फल लगाए साचे डाल, अमृत मेवा फल खुआया। सदा सुहेला वसे नाल, दिवस रैण संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा एका थान वड्याआ। थान थनंतर चरन गुरदुआर, गुर गुर मन्दिर इक्क सुहाया। बुझे बसन्तर विच संसार, गुर गुर अमृत मेघ बरसाया। जाणे बिध अन्तर हरि निरँकार, जीव आत्मा वेख वखाया। किरपा करे किरपन हरि गिरधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माण ताण विच जहान, जन जन का आप रखाया ।

❋ ११ चेत २०१७ बिक्रमी चन्नण सिँघ दे घर बाबू पुरा ज़िला गुरदास पुर ❋

काल फास जम कट्ट, हरि बख्शे चरन दवारया। घर मन्दिर वखाए साचा हट्ट, चौदां लोक कर उज्यारया। अमृत नुहाए तीर्थ तट्ट, सर सरोवर इक्क वखा रिहा। दुरमति मैल देवे कट्ट, कर किरपा पार उतारया। गुरमुख विरले लाहा रहे खट्ट, हरि पुरख निरंकारया। रसना रस रिहा चट्ट, सोहँ अक्खर जाप अपारया। दूई द्वैती मिटे फट्ट, सतिगुर पूरा आप मिटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगा रिहा। रंग रंगीला हरि करतार, रंग मजीठी इक्क चढ़ांयदा। खेले खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी कार करांयदा। अलक्ख अगोचर भेव न्यार, जुग जुग आपणा भेव छुपांयदा। सन्त सुहेले मीत मुरार, गुर गुर चेले वेख वखांयदा। इक्क अकेले दए आधार, बंस सरबंसा नाल रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा फल अमृत मेवा, हरिजन साचे आप खवांयदा। अमृत रस साचा दुध्ध, रसना जिह्वा आप खवाईआ। आपे करे बिबेक बुध, मन मति दूर कराईआ। करता करे कारज

सिद्ध, सगला भेव चुकाईआ। घर सुहाए नौ निध, अठ्ठ अठारां इक्क सरनाईआ। प्रभ मिलण दी साची बिध, सतिगुर आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयालण हरि गोपालण, लाल लालण वेख वखाईआ। दीन दयाल सर्ब जग मीता, परम पुरख अख्वाया। हरिजन परखणहारा नीता, मन मनूआ दए भवाया। चरन कँवल बंधाए प्रीता, जगत प्रीती मोह चुकाया। नाम निधान देवे अनडीठा, भर प्याला जाम प्याया। सदा सुहेला रक्खे सदा ठंडा सीता, अग्न तत्त ना कोए रखाया। पिता पूत एका रंग हरि साचे कीता, दूजा रंग ना कोए चढ़ाया। लेखा जाणे पिछला बीता, अगला लहिणा लहणे झोली पाया। सतिगुर पूरा ना मरया ना कदे जीता, जम्मण मरन विच ना आया। कोटन कोटि उधारे पतित पापी कर पुनीता, जन्म जन्म विछड़े मेल मिलाया। आप चलाई आपणी रीता, वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी भेव ना राया। ना कोई मन्दिर ना मसीता, हरिजन काया मन्दिर आपणा आसण आप सुहाया। काया आसण सोभावन्त, सहिज सहिज समाईआ। घर मिलावा हरि हरि कन्त, निज आत्म वज्जे वधाईआ। पाया प्रीतम इक्क भगवन्त, भगतन भगती कर कुड़माईआ। सोहँ गाया सुहागी छंत, घर चौथा इक्क वखाईआ। आदि जुगादी महिमा अनन्त, अगणत गिणी ना जाईआ। तन काया चोली रंग बसन्त, चेत्र चेतन्न रुत सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बणाए साची बणत, कर्म जरम धर्म आपणे हथ्थ रखाईआ।

४२४ ०६

❊ ११ चेत २०१७ बिक्रमी बचन सिँघ दे घर बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर ❊

पंचम कढ्ढे काया चोर, हरामख़ोर रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे अन्ध घोर, घोर अन्धेरा वेख वखाईआ। शब्द वखाए साचा जोर, ज़ोरु ज़र ना कोए वड्याईआ। जगत विकारा देवे होड़, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। चरन प्रीती देवे जोड़, कर किरपा बेपरवाहीआ। नाम चढ़ाए साचे घोड़, काया मन्दिर अंदर आप दौड़ाईआ। वर पाया जिहा लोड़, कन्त सुहागी इक्क हंढाईआ। पूरी कर जगत थोड़, अतोट अतुट वखाईआ। सतिगुर पूरा साजण जाए बौहड़, जमदूत नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारे कूट होए सहाईआ।

❊ ११ चेत २०१७ बिक्रमी अजीत सिँघ दे घर काणा कौंटा ज़िला गुरदास पुर ❊

हरि हरि नाम साचा सुख, जगत तृष्ना रोग मिटाईआ। हरि हरि नाम उज्जल मुख, लोकमात दए वड्याईआ। हरि

हरि नाम सफल कराए कुक्ख, जन जननी लेखे लाईआ। हरि हरि नाम गर्भ वास कट्टे उलटा रुख, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। हरि हरि नाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख विरले झोली पाईआ। हरि हरि नाम सहिज सुख दाता, गुर सतिगुर हट्ट विकांयदा। हरि हरि नाम उत्तम कराए ज़ाता, ज़ात पात ना कोए रखांयदा। हरि हरि नाम मेटे अन्धेरी राता, घर घर साचा चन्द चढ़ांयदा। हरि हरि नाम अन्तिम पुच्छे वाता, भइया बेबा संग ना कोए रखांयदा। हरि हरि नाम हरि दरस दिखाए इक्क इकांता, जो जन रसना जिह्वा गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख विरले एका नाम झोली पांयदा। नाम पदार्थ साची वथ्थ, सतिगुर आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुखां देवे पुरख समरथ, जुग जुग लोकमात वरताईआ। लक्ख चुरासी विच्चों लए रक्ख, तत्ती वा ना लग्गे राईआ। लेखा जाणे सीआं साढे तिन्न हथ्थ, धरत मात ना गोद सुहाईआ। एका मन्त्र जपाए पूजा पाठ, हँ ब्रह्म मेल मिलाईआ। पूर्ब पिछला पूरा करे घाट, साचे कंडे नाम तुलाईआ। गुरसिख विके ना किसे हाट, वेद शास्त्र पुराण ग्रन्थ कीमत कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन उधारे विच्चों संख, असंख संख असंखां फोल फुलाईआ।

✲ ११ चेत २०१७ बिक्रमी इंदर सिँघ दर्शन सिँघ कर्म सिँघ दे घर पिण्ड आदी ज़िला गुरदास पुर ✲

सो पुरख निरँजण सर्ब गुणवन्त, आदि जुगादि समाया। हरि पुरख निरँजण महिमा अगणत, भेव किसे ना पाया। एकँकारा बणाए बणत, आपणी रचना आप रचाया। आदि निरँजण साचा धाम सोहँत, सचखण्ड दुआरा आसण लाया। अबिनाशी करता साचा कन्त, निरगुण निरगुण लए प्रनाया। पारब्रह्म आदि अन्त, आप आपणा खेल खलाया। पारब्रह्म लेखा जाणे साचे सन्त, शब्द अनादी धार चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, आपणा आप कराया। सचखण्ड सच महल्ला, हरि साचा सच वसांयदा। सो पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, हरि पुरख निरँजण आसण लांयदा। एकँकारा वसणहारा जला थला, आदि निरँजण जोत निरँजण जगांयदा। श्री भगवान शब्द सुनेहड़ा एका घल्ला, अबिनाशी करता लक्ख चुरासी आप सुणांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म पाए हल्ला, हँ ब्रह्म वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपर, अलक्ख अलक्खणा भेव ना कोई जणांयदा। सो पुरख निरँजण ठांडा सीता, आदि जुगादि समाया। आप चलाए आपणी रीता, आप आपणा वेस वटाया। खेले खेल हस्त कीटा, जून अजूनी आप फिराया। आपणा रस जाणे मीठा, अनरस आपणा आप वखाया। एका धाम अवल्लड़े बैठा, सच सिँघासण सोभा पाया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण जोत पुरख बिधाता, उत्तम ज़ाता इक्क कराया। निरगुण दाता बेपरवाह, एका रंग समांयदा। जुगा जुगन्तर बण मलाह, लोकमात वेस वटांयदा। शब्द सरूपी शब्द सलाह, आप आपणी बूझ बुझांयदा। साचे सन्तां दया कमा, आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान दृढ़ांयदा। गुरमुख साचे मेल मिला, एका दूजा भउ चुकांयदा। गुरमुख साचे संग रला, आप आपणा दरस वखांयदा। सूरा सरबंग आप अख्वा, नाम मृदंग इक्क वजांयदा। काया मन्दिर डेरा ला, अनहद ताल इक्क वजांयदा। सर सरोवर इक्क वखा, अमृत आत्म आप भरांयदा। बज़र कपाटी तोड़ तुड़ा, साची सेजा आप सुहांयदा। पारब्रह्म प्रभ वेस वटा, घर घर विच आप टिकांयदा। दीवा बाती इक्क जगा, जोत निरँजण इक्क वखांयदा। बूंद स्वांती दए प्या, सीतल धार इक्क वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल खिलांयदा। अकल कला कल धार, खेल खिलांयदा। लोकमाती लए अवतार, जुग जुग वेस वटांयदा। आप लगाए साची कार, हरिजन साची कारे लांयदा। अंदर मन्दिर गुप्त ज़ाहर, आप आपणे रंग रंगांयदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, आपे अन्तर शब्द वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता नाउँ धराईआ। जुग करता हरि करनेहार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। खेले खेल अगम्म अपार, लोकमात वेस वटाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, निरगुण ढोला एका गाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, ब्रह्मा विष्न शिव लए उठाईआ। सुरपति दए इक्क अधार, भुल्ल रहे ना राईआ। साचे सन्तां कर प्यार, आप आपणा मेल मिलाईआ। लेखा जाणे रवि ससि सूरज चन्न सतार, मंडल मंडप खोज खुजाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड दए आधार, नौ खण्ड सत्तां दीपां रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। जुग जुग धार हरि करतार, लोकमात चलांयदा। हरिजन साचे लाए पार, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। नाता तोड़े काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना मेट मिटांयदा। साची वस्त रक्खे घर थार, थिर घर वासी दया कमांयदा। कागद कलम ना लिखणहार, वेद कतेब ना कोई सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठांयदा। हरिजन साचे वेखणहारा, एका रंग समाया। एका बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मुख चुआया। आपे खोले बन्द किवाड़ा, डूँग्घी कंदर फेरा पाया। इक्क कराए सच जैकारा, वाह वाह गुरू रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द इक्क जणाया। शब्द गुर सतिगुर पूरा, दूसर अवर ना कोई जणांयदा। जुगा जुगन्तर हाज़र हज़ूरा, रूप रंग ना कोई वखांयदा। अजूनी रहित नूरो नूरा, पुरख अकाल आप अख्वांयदा। आप वजाए अनादी तूरा, तार सितार आप हिलांयदा। सन्तां भगतां आसा मनसा

करे पूरा, सर्बकल आप अख्वांयदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, साचा मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। गुरमुख विरला बख्शे चरन धूढ़ा, चरन धूढ़ा आप सुहांयदा। काया चोली रंग चाढ़े गूढ़ा, उतर कदे ना जांयदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, जिस जन आपणा संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर सच निशान वेखणहारा दो जहान, लोआं पुरीआं फेरा पांयदा। शब्द गुर वड बलवाना, हरि साचा सच धरांयदा। सचखण्ड निवासी झुलाए सच निशाना, दरगाह साची आप चढ़ांयदा। लोआं पुरीआं पाए आणा, हुक्मी हुक्म आप सुणांयदा। लक्ख चुरासी कर प्रधाना, आत्म ब्रह्म विच टिकांयदा। शब्द सुणाए इक्क तराना, राग रागनी मुख शर्मांयदा। गुरमुख विरले बन्ने गाना, सतिगुर पूरा सगन मनांयदा। आपे होए बीना दाना, दाता दानी नाउँ धरांयदा। सर्ब जीआं हरि जाणी जाणा, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा आप अख्वांयदा। सतिगुर पूरा हरि करतार, अचरज खेल खलाईआ। वरते वरतावे विच संसार, जुग जुग आपणा रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, कलिजुग खेले खेल बेपरवाहीआ। सचखण्ड निवासी हो त्यार, पुरख अबिनाशी सेव कमाईआ। ब्रह्मा वेद ना पाए सार, चारे मुख रिहा सालाहीआ। पुराण अठारां गए हार, वेद व्यासा गया गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द मलाह जुग जुग आपणा वेस धराईआ। शब्द गुर सूरा सरबंग, एका एक अख्वाया। जुग जुग वजाए आपणा मृदंग, नाम सितार हथ्थ उठाया। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं आपे लँघ, गगन पतालां फेरा पाया। लोकमात जन भगतां निभाए सदा संग, विछड़ कदे ना जाया। नाता तोड़े भुक्ख नंग, साची वस्त एका झोली पाया। कलिजुग कूड़ी चढ़ी कंग, चारों कुंट लहर लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा देवे एका वर, लक्ख चुरासी झोली पाया। सतिगुर सच्ची सरकार, हरि साचा सच उपजांयदा। सचखण्ड निवासी खेल अपार, ब्रह्मण्ड वेख वखांयदा। जेरज अंड पावे सार, उत्भुज सेत्ज फोल फुलांयदा। भेख पखण्डा विच संसार, चारों कुंट अन्धेरा छांयदा। आत्म रंडा जीव गंवार, साचा कन्त ना कोई हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुरू गुर पूरा, एका आप अख्वांयदा। एका शब्द सतिगुर देव, हरि साचा सच उपजांयदा। अबिनाशी अलक्ख अभेव, भेव अभेद खुल्हांयदा। हरिजन लाए साची सेव, सेवक सेवा सच करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर वड बलवान, दो जहानां फेरा पांयदा। हरि शब्द गुर नौजवाना, ना मरे ना जाईआ। खेले खेल श्री भगवाना, आपणी इच्छया रूप वटाईआ। लक्ख चुरासी हो प्रधाना, लुक लुक बैठा आसण लाईआ। आपे चिल्ला तीर निशाना, शस्त्र बस्त्र आप सुहाईआ। आपे मर्द मर्द मरदाना, पारब्रह्म इक्क अख्वाईआ।

आपे बन्नणहारा घर घर गानां, आप आपणा सगन मनाईआ। आपे देवे प्रकाश रवि ससि सूरज भाना, आपणा तेज आप चमकाईआ। आपे वरते आपणा भाणा, हरि भाणे सद समाईआ। गुरमुख़ विरले हरि का शब्द मात पछाणा, नेत्र नैण दिस ना आईआ। हरिजन होया चतुर सुघड़ स्याणा, जिस सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। आवण जावण चुक्के काना, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। शब्द सरूपी मिले इक्क बिबाना, सतिगुर दए चढ़ाईआ। सचखण्ड साचा धाम सुहाना, थिर घर साचे वज्जे वधाईआ। नाता तुट्टा आवण जाणा, विच जोती जोत समाईआ। गुरमुख विरला पाए पद निरबाणा, परम पुरख आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीव जंत साध सन्त आदि अन्त हरि भगवन्त साचा कन्त साची आत्म सेज सोभा पाईआ।

४२८

०६

❊ ११ चेत २०१७ बिक्रमी बूड़ सिँघ दे घर पिण्ड वज़ीर पुर ज़िला गुरदास पुर ❊

सो पुरख निरँजण पातशाह, निरगुण एका एक अख्वांयदा। हरि पुरख निरँजण बेपरवाह, आप आपणी कल धरांयदा। एकँकारा सच मलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। आदि निरँजण नूर नुराना डगमगा, नूर इलाही नाउँ धरांयदा। अबिनाशी करता वसे आपणे थाँ, भूमिका आप सुहांयदा। श्री भगवान करे सच न्याँ, आदि जुगादी हुक्म चलांयदा। पारब्रह्म आप आपणा रूप लए वटा, आप आपणा वेस धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा सच सुहांयदा। घर साचा हरि सुहावणा, एकँकारा एका एक। पुरख अबिनाशी डेरा लावणा, दूसर रक्खे ना कोई टेक। सच सिँघासण इक्क विछावणा, हरि बह बह लिखे लेख। तख्त ताज इक्क सुहावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा भेख। साचा भेख हरि निरँकार, सचखण्ड दुआरे आप वटाईआ। निरगुण रूप अगम्म अपार, सति पुरख निरँजण आप दसाईआ। अलक्ख अलक्खणा खेल अपार, अगम्म अगोचर भेव ना राईआ। निरगुण बाती कर त्यार, कमलापाती जोत जगाईआ। साची खाटी खेल अपार, हरि करतार आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर शाहां इक्क अख्वाईआ। सतिगुर सच्चा शहनशाह, एका रंग समाया। सचखण्ड बैठा आसण ला, रूप रंग ना कोई वखाया। आपणा तख्त रिहा सुहा, तख्त निवासी दिस ना आया। आपणा हुक्म रिहा चला, आपणे भाणे सद समाया। दर दरबाना अलक्ख जगा, दरगाह साची निउँ निउँ सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आपे खोल्ह, आप आपणा आसण लाया। सचखण्ड दुआरा सच दरवाज़ा, पुरख अबिनाशा आप खुल्हांयदा। खेले

खेल ग़रीब निवाज़ा, निरगुण आपणी धार चाल चलांयदा। आपे रंक आपे राजा, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। आपे मारे आपणी वाजा, शब्द अगम्मी आप प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगांयदा। साचा रंग शब्द रंगणहार, हरि साचा आप उपजाईआ। वेख वखाए हरि ब्रह्माद, आदि जुगादि खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वड्याईआ। हरि शब्द वड बलवान, हरि साचे घर उपजाया। हथ्थ रक्ख श्री भगवान, प्रतक्ख रूप वटाया। पावे सार दो जहान, निरगुण नूरो नूर डगमगाया। आदि जुगादी एका आण, हुक्मी हुक्म आप सुणाया। लेखा जाणे धुर फ़रमाण, सच संदेशा आप अल्लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, एकँकारा आप कराया। एकँकार पुरख अगम्म, भेव कोए ना पांयदा। ना मरे ना पए जम्म, पंज तत्त ना कोई रखांयदा। जुगा जुगन्तर जाणे आपणा कम्म, करनी करता किरत कमांयदा। ना कोई घड़े ना सके भन्न, घड़ण भन्नणहार आप अख्वांयदा। आपणा बेड़ा आपे बन्न्, पारब्रह्म आप चलांयदा। रसना जिह्वा ना कहे कोई धन्न धन्न, बत्ती दन्द ना कोई हिलांयदा। ना कोई सुणे सुणाए नाद कन्न, रागी राग ना कोई अल्लांयदा। ना कोई जननी जणे जन, पूत सपूता ना कोई रखांयदा। सच्चखण्ड दुआरा ना कोई सूरज ना कोई चन्न, मंडल मंडप ना कोई सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द उजाला दीन दयाला आपणा आप प्रगटांयदा। शब्द उपजाया हरि भगवान, थिर घर साचे वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे मार ध्यान, जुग जुग आपणी पैज धराईआ। देवणहारा साचा माण, दरगाह साची साचा थान सुहाईआ। एका राग सुणाए कान, धुन आपणी आप उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाईआ। शब्द सुत सूरा बलवान, हरि पुरख निरँजण आप उपाया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप उठाए सच निशान, साचा बेड़ा आप बंधाया। ब्रह्मा विष्न शिव कर प्रधान, आप आपणे अंग लगाया। आपे त्रैगुण माया देवे दान, दाता दानी दिस ना आया। आपे पंज तत्त नाता जोड़े दो जहान, लक्ख चुरासी मेल मिलाया। आपे निरगुण सरगुण हो प्रधान, दीवा बाती इक्क जगाया। आपे शब्द सुणाए सच्ची धुन कान, अनहद राग इक्क अल्लाया। आपे वसे काया मन्दिर सच मकान, आप आपणा रूप छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर सेव कमाया। हरि शब्द पैज संवारया, सतिगुर साजण मीत मुरार। गुर किरपा विच संसारया, लोकमात लए अवतार। सन्त कन्त करे प्यारया, अन्तर आत्म दए आधार। पंज तत्त करे ख्वारया, मेट मिटाए काम क्रोध लोभ मोह हँकार। अमृत बख्शे ठंडा ठारया, आसा तृष्ना देवे मार। एका बोल सच जैकारया, काया मन्दिर हरि मन्दिर गुरदुआर।

आत्म सेजा धाम सुहा रिहा, आप आपणी किरपा धार। निरगुण सरगुण मेल मिला रिहा, शब्द विचोला बण करतार। साचा चोला आप बदला ल्या, जुगा जुगन्तर साची कार। एका ढोला आपणा गा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द भरे भण्डार। हरि शब्द भण्डारा शब्द भरपूर, सो पुरख निरँजण आप भरांयदा। हरि पुरख निरँजण आसा मनसा पूर, जुग जुग आपणा मेल मिलांयदा। एकँकारा वसणहारा नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकांयदा। आदि निरँजण ज़ाहरा ज़हूर, जोत निरँजण डगमगांयदा। अबिनाशी करता एका तूर, नाद अनाद वजांयदा। श्री भगवान नाता तोड़े कूड़ो कूड़, दर घर साचे मेल मलांयदा। पारब्रह्म लेखा जाणे मूर्ख मुग्ध मूढ़, जिस जन सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सरूपी रूप वटांयदा। शब्द सरूपी रूप अनूठा, दिस किसे ना आया। वसणहारा चारे कूटां, दहि दिशा फेरी पाया। जुग जुग लक्ख चुरासी करे खाली ठूठा, जो घड़या भन्न वखाया। गुरमुख विरले उप्पर तुट्ठा, एका अमृत जाम नाम प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरदेव शब्द अख्वाया। गुरदेव शब्द इष्ट करतार, एका जगत कराईआ। वास्तक रूप सर्ब सृष्ट, विश्व आपणा नाउँ धराईआ। आस्तिक जीव होए हँकार, नास्तिक रूप आप समाईआ। प्रकाश जोत सर्ब निराकार, निरगुण वेखे थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खलाईआ। जुग जुग खेल खलंदड़ा, पारब्रह्म गुर करतार। सतिजुग साचा लेख लखंदड़ा, आप आपणी कर विचार। त्रेता तेरा पन्ध मुकंदड़ा, रूप दिसे ना विच संसार। द्वापर अन्तिम लेख लखंदड़ा, चारों कुंट पावे सार। कलिजुग अन्तिम जोत जगंदड़ा, रैण अन्धेरी वेखे धूंआँधार। चार वरन सर्ब करंदड़ा, धीरज धरे ना कोए करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार। कलिजुग अन्धेरी रैण, चारों कुंट अन्धेरा छाया। ना कोई साक सज्जण दिसे सैण, सगला संग ना कोए निभाया। माया राणी खाए डैण, जत सति धीरज दए गुआया। हरि का दरस ना वेखे कोई नैण, सन्त साध रहे कुरलाया। जूठा झूठा बस्त्र पाया गहिण, हरि का शब्द ना कोए बंधाया। दूई द्वैती डुब्बे वहण, सच्चे बेड़े ना कोए चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपे लए जगाया। गुरमुख विरला जागया, जिस किरपा करे आप निरँकार। सच सरनाई सतिगुर लागया, हरि शब्द करे प्यार। त्रैगुण लग्गी बुझी आग्ग़ा, पंज तत्त होए ख्वार। माया डस्से ना डस्सणी नागया, नेड़ ना आए काम क्रोध लोभ मोह हँकार। सतिगुर पूरा आपणी हथ्थीं पकड़े वागया, दो जहाना पाए सार। निरगुण सरगुण अंदर फिरे भागया, रूप अनूप सच्ची सरकार। फड़ हँस बणाए कागया, अमृत आत्म एका डार। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन साचा उठया, पाया पुरख अपार। हरि शब्दी गुर गुर तुट्ठया, देवे दरस आप निराकार। लोकमात ना जाए लुट्टया, लुट्ट ना सके ठग्ग चोर यार। मानस जन्म भाग ना निखुट्टया, मिल्या मेल मीत मुरार। अन्तिम चढ़े साची चोटीआं, राए धर्म ना करे ख्वार। कढ्ढणहारा वाश्ना खोटीआं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप सुहाए बंक दुआर। बंक दुआर सुहञ्जणा, हरि साचा वेख वखांयदा। जोत जगाए आदि निरँजणा, नूर नुराना डगमगांयदा। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार करांयदा। जन भगतां नेत्र पाए नाम अञ्जणा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजणा, अठसठ पन्ध मुकांयदा। जो घड़या सो भज्जणा, थिर कोए रहिण ना पांयदा। जन भगतां पर्दा आपे कज्जणा, शब्द दुशाला हथ्थ उठांयदा। काल नगारा नौ खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी सीस वज्जणा, शाह सुल्तान ना कोए बचांयदा। राज राजानां तख्त ताज जग तजणा, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। गुरमुख विरले अमृत आत्म पी पी रज्जणा, जिस हरि हरि आप प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे मेल मिलांयदा। गुरसिख साचा मेलया, कर किरपा आप करतार। एका रंग रंगे गुर चेलया, रंग रंगीला अपर अपार। घर पाया सज्जण सुहेलया, विछड़या संसार। कट्टे धर्म राए दी जेलया, लक्ख चुरासी करे पार। हरि जू खेल आपणा आपे खेलया, निरगुण रूप लए अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लाए पार। हरिजन साचा बेड़ा बन्न्, गुर सतिगुर आप चलांयदा। गुरमुख चढ़या साचा चन्न, लोकमात वेख वखांयदा। सतिगुर कहे धन्न धन्न, रसना जिह्वा ना कोए हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर एकँकार लोकमात खेल अपार, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। निरगुण सरगुण पेख्या, जोती जोत नूर उज्यार। निरगुण सरगुण लिखे लेखया, लेखा जाणे धर्म दुआर। निरगुण सरगुण वेखे रेख्या, कर्म धर्म करे विचार। निरगुण सरगुण धारे भेख्या, निहकलंका लए अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द करे वपार। हरि शब्द वणजार सति, सति पुरख निरँजण आप करांयदा। हरि शब्द वणजार सति, सतिगुर पूरा साचे हट्ट विकांयदा। हरि शब्द वणजार सति, गुर गुर एका रंग वखांयदा। हरि शब्द वणजार सति, भगतन झोली आप भरांयदा। हरि शब्द वणजार सति, सन्त साजण वेख वखांयदा। हरि शब्द वणजार सति, गुरमुख एका बूझ बुझांयदा। हरि शब्द वणजार सति, गुरसिख सज्जण संग निभांयदा। पुरख अबिनाशी देवणहारा ब्रह्म मत, मन मति ना कोए वखांयदा। आदि जुगादी जाणे मित गति, जुग जुग आपणी रचन रचांयदा। आवे जावे नित नवित, भगतन मीत खेल खिलांयदा। ना कोई वार ना कोई थित, मास

बरख ना वण्ड वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप धरांयदा। शब्द जणाई धुर फ़रमाण, सति पुरख निरँजण आप जणांयदा। सतिगुर देवे धुर फ़रमाण, गुर गुर बूझ बुझांयदा। गुर गुर देवे एका माण, भगतन संग तरांयदा। भगतन देवे इक्क ध्यान, एका इष्ट वखांयदा। एका इष्ट श्री भगवान, सन्तन मेल मिलांयदा। सन्तन खोल्हे इक्क दुकान, चौदां लोक मुख शरमांयदा। एका देवे साचा दान, दाता दानी साची भिच्छया झोली पांयदा। गुरमुख साचे चतुर सुजान, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। अंदर मन्दिर इक्क निशान, सति सतिवादी आप झुलांयदा। गुरसिख उठाए बाल अंञाण, आप आपणी गोद बहांयदा। जगत चुकाए झूठी काण, दे मति आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठांयदा। हरि शब्द साजण मीत, सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। गुर गुर बैठा इक्क अतीत, निरगुण सरगुण बेपरवाहीआ। भगतन काया करे ठंडी सीत, सन्तन सति सति वरताईआ। गुरमुख चलाए आपणी रीत, वेद कतेब भेव ना राईआ। गुरसिख मिले हरि साचा मीत, विछड़ कदे ना जाईआ। मानस जन्म जाए जीत, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। अमृत रस देवे साचा मीठ, निझर झिरना आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे देवे वर, काया मन्दिर वेख वखाईआ।
४३२ काया मन्दिर सच महल्ला, हरि साचे सच वसाया। निरगुण बैठा इक्क इकल्ला, निज आत्म डेरा लाया। आत्म सेजा सच ४३२
०६ सिँघासण मल्ला, आप आपणी सोभा पाया। शब्द सुनेहड़ा एका घल्ला, नाद अनादी धुन वजाया। जोती जोत सरूप हरि, ०६
आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन काया मन्दिर डूँघा सागर, सर सरोवर आप सुहाईआ। भाग लग्गा पंज तत्त गागर, सतिगुर पूरा आप लगाईआ। निर्मल जोत करे उजागर, दिवस रैण डगमगाईआ। एका नाम कराए वणज सौदागर, साची वस्त साचे हट्ट वकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरा काया मन्दिर फोल फुलाईआ। काया मन्दिर डूँघी भँवरी, सुखमन नाड़ी फोल फुलांयदा। अन्ध अन्धेरी वेखे कँवरी, दीपक आपणा आप लटकांयदा। सुरत सुआणी अवरी गवरी, शब्द हाणी आप मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तेरा काया मन्दिर आप सुहांयदा। काया मन्दिर सच दुआरा, गुरमुख आप जणांयदा। सुरती शब्दी करे प्यारा, घर साचे मेल मिलांयदा। अगम्म अगम्मड़ा दए हुलारा, अगम्मी धार आप वहांयदा। अनहद धुन सुणाए आप धुन्कारा, पंचम सखीआं मंगल गांयदा। आपे वेखे वेखणहारा, रूप अनूप आप प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख काया अंदर वड़, आप आपणा तख्त सुहांयदा। गुरसिख काया अंदर वड़या, गुर सतिगुर आप करतार।

साचे पौड़े आपे चढ़या, नाता तोड़ नौ दुआर। टेढी बंक घाड़ण घड़या, आपे होए आर पार। आपणा अक्खर आपे पढ़या, आपे बोले सच जैकार। आपणा पल्ला आपे फड़या, आपे बणया मीत मुरार। आपणा गढ़ आपे तोड़े, अग्गे कोए ना अड़या, बज़र कपाटी देवे पाड़। सर सरोवर साचा अमृत आपे भरया, पुरख अबिनाशी ठंडा ठार। सुक्का बूटा हरया करया, हँस उडाए कागों डार। साची सेजा चरन धरया, आत्म सेजा कर प्यार। गुरमुख साचा आपे वरया, पुरख अबिनाशी मीत मुरार। एका सेजा पैर पसरया, नारी मेला कन्त भतार। घर विच घर घर उजरया, अन्ध अन्धेरा दए निवार। आदि जुगादि कदे ना मरया, सतिगुर पूरा गुर अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लाए पार। आत्म सेजा सच पलँघ, सतिगुर पूरा आप सुहांयदा। सुरत सुआणी मंगे मंग, शब्द हाणी मेल मिलांयदा। अमृत धार वहाए गंग, साची धार आप चलांयदा। शब्दी शब्द सूरा सरबंग, गुर गुर एका रूप वटांयदा। कट्टणहारा भुक्ख नंग, तृष्ना रोग मेट मिटांयदा। पंच विकार ना करे जंग, साचा खण्डा इक्क चमकांयदा। सच दुआरे आपे लँघ, आप आपणा राह चलांयदा। साचे अश्व कस तंग, साची घोड़ी गुरमुख आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वसे साचे घर, घर मन्दिर आप सालांहयदा। घर मन्दिर सोभावन्त, गुर सतिगुर आप सुहाईआ। गुरमुख मेला नारी कन्त, हरि कन्त कन्तूहल इक्क हंढाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। तोड़े गढ़ हउमे हंगत, हँकार विकार दए मिटाईआ। नाता जोड़े साची संगत, सगला संग वखाईआ। हरिजन मेला जिउँ नानक अंगद, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। सतिगुर पूरा किसे दर ना जाए मंगत, देवणहार सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वसे साचे घर, काया खेड़ा आप वसाईआ। काया खेड़ा सच ग्राँ, हरि साचा सच सुहांयदा। आपे वेखे आपणा थाँ, आपणी वण्ड आप वण्डांयदा। आपे पकड़णहारा बांह, आप आपणी गोद सुहांयदा। आपे हँस बणाए फड़ फड़ काँ, कागों हँस आप उडांयदा। आपे पिता आपे माँ, पूत सपूता आप अख्वांयदा। आपे करे सच न्याँ, घर घर विच आसण लांयदा। आप जणाए आपणा नाँ, हँ ब्रह्म आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया खेड़ा आप वसांयदा। आप वसाए काया खेड़ा, हरि हरि जोत जगाईआ। आपे देवे एका गेड़ा, मन हँकार दए भवाईआ। आपे करे हक निबेड़ा, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। आपे करे खुल्हा वेहड़ा, पंज दूत दए मिटाईआ। आपे बन्न्हे साचा बेड़ा, एका चप्पू नाम लगाईआ। आपे ढाए भरमां डेरा, नाम ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। आपे जाणे सञ्झ सवेरा, अन्धेरी रैण रहिण ना पाईआ। आप मिटाए हेरा फेरा, एका फेरा हरि दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख

तेरा काया मन्दिर आत्म सेजा आप सहाईआ। गुरसिख काया सच सिंघासण, हरि साचा सेज सुहांयदा। आदि जुगादी दासी दासण, जुग जुग सेव कमांयदा। निज घर आत्म करे निवासण, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। पूरी करे साची आसण, आसा तृष्ना मेट मिटांयदा। घर मन्दिर बह बह पाए रासन, गोपी काहन आप नचांयदा। लहण देण चुकाए दस दस मासन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा।

✻ १२ चेत २०१७ बिक्रमी बीबी बंती पिण्ड नौशैहिरा ज़िला गुरदास पुर ✻

ईश जीव उपाया, खेल अगम्म अपार। जगदीश खेल रचाया, जुग जुग वेखणहार। ब्रह्म आपणा रंग रंगाया, पारब्रह्म गुर करतार। जन्म मरन खेल खलाया, लक्ख चुरासी कर पसार। आप आपणा बिरध धराया, जीव पावे ना कोई सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी धार। आत्म ब्रह्म उपांयदा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। लक्ख चुरासी विच टिकांयदा, पंज तत्त कर कुड़माईआ। हुक्मी हुक्म आप फिरांयदा, अजूनी जून आप फिराईआ। कर्म धर्म आप जणांयदा, वरन बरन वेख वखाईआ। साचे मार्ग आपे जाणदा, दे मति रिहा समझाईआ। कूड़ी क्रिया जगत
४३४ पछाड़दा, कूड़ा धन्दा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लेख लिखाईआ। ४३४
०६ आत्म ब्रह्म हरि करतार, ईश जीव उपाया। वरते वरतावे विच संसार, जीव जंत वेख वखाया। घट घट अंदर हो उज्यार, ०६
दीवा बाती आप जगाया। साचा साकी हरि निरँकार, अमृत जाम आप प्याया। आपे सुत्ता पैर पसार, ख़ाकी ख़ाक दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप अपणा रंग रंगाया। जीव ईश आत्म धार, हरि हरि आप उपजाईआ। सति सतिवादी साची कार, जुग जुग आप कराईआ। लक्ख चुरासी वसणहार, सेवक सेवा सच कमाईआ। ब्रह्म आत्म एका धार, अस्थान भूमिका सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे थाउँ थाँईंआ। पारब्रह्म ब्रह्म पाया, घर मन्दिर बंक दुआर। पारब्रह्म प्रभ मुख भवाया, दिस ना आए अन्ध अँध्यार। पारब्रह्म ब्रह्म समझाया, एका शब्दी शब्द धुन्कार। पारब्रह्म ब्रह्म सुहाया, आप आपणा पर्दा डार। पुरख अबिनाशी भेव ना आया, खेले खेल अगम्म अपार। लक्ख चुरासी वेख वखाया, कीट कीटां कर पसार। शाह सुल्ताना रूप वटाया, सतिगुर नाम बण सिक्दार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आप करतार। लेखा हरि करतार, ब्रह्म पारब्रह्म अख्वांयदा। लक्ख चुरासी कर उज्यार, घर घर दीप आप टिकांयदा। कमलापाती खेल अपार, धुर दी राणी आप करांयदा। डूँघी कंदर बह

बह मारे झाकी, निरँकारा आपणी ताकी आप खुल्हांयदा। लहिणा देणा जाणे बाकी, वाह वाह जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। साचा साकी मीत मुरार, अमृत प्याला हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दर आप सुहांयदा। आत्म ब्रह्म ब्रह्म विछोड़या, पारब्रह्म बेअन्त। आपणा जोड़ा आपे जोड़या, गुरमुख विरले साजण सन्त। आपे बख्शे साचा घोड़या, नाम सुणाए सुहागी छंत। आपे दर दुआरे देवे होड़या, माया पाए बेअन्त। आपे चढ़ाए साचे पौड़या, लेखा जाणे आदि अन्त। आपे वेखे रस मिट्ठा कौड़या, हरि हरि महिमा गणत अगणत। आपे फिरे दो जहानां दौड़या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे हरि भगवन्त। भगवन हरि भगवान, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। ब्रह्म वेख मात निशान, जीव ईश रूप वटाईआ। अन्तर आत्म इक्क ज्ञान, आत्म ब्रह्म इक्क समझाईआ। आपे देवणहार दान, घर साची वस्त रखाईआ। आपे सखीआं मिल मिल मंगल गाए काहन, आपे बैठा मुख छुपाईआ। आपे बिरध बाल नौजवान, आपे रूप रंग ना कोई सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी आपणी वण्ड वण्डाईआ। लक्ख चुरासी वण्डी वण्ड, हरि साचे कर्म कमाया। खेले खेल विच वरभण्ड, नौ दस ग्यारां बीस तीस चार सगला संग रखाया। आपे जेरज आपे अंड, उत्भुज सेत्ज रूप वटाया। आपे सुत्ता दे कर कंड, आपे साची सेज हंढाया। आपे नार दुहागण होए रंड, कन्त कन्तूहल आप सुहाया। आपे पल्ले बन्ने आपणी गंढ, आपे खाली हथ्थ फिराया। आपे करे खण्ड खण्ड, आपे एका बन्धन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। लक्ख चुरासी खेल न्यार, ब्रह्म पारब्रह्म कराईआ। जीव ईश कर त्यार, सच हदीस इक्क पढ़ाईआ। कर्म नेहकर्मी करे विचार, जन्म जन्म वेख वखाईआ। धर्मी धर्म करे पुकार, साचा धाम इक्क वखाईआ। एका मीत हरि करतार, कादर करता कुदरत विच समाईआ। एका नाम एका नाअर, एका नूर डगमगाईआ। एका गुप्त एका ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर इक्क वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ करे प्यार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। एका नाम दए आधार, दूसर ओट ना कोई तकाईआ। एका कंडा तोलणहार, सच तराज़ू हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मति आप समझाया। लेखा जाणे पारब्रह्म, पारब्रह्म आप समझांयदा। पंज तत्त काया तन, घर साचा आप वसांयदा। अंदरे अंदर बेड़ा बन्न्, साचे मन्दिर आप टिकांयदा। दिवस रैण राग सुणाए कन्न, साचा हुक्म अल्हांयदा। करे प्रकाश साचे चन्न, जोत निरँजण सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म आत्म घर सुहांयदा। ब्रह्म दुआरा सच घर, सच सच टिकाईआ। ब्रह्म वेखे चार दुआर, आत्म बंक सुहाईआ । आत्म लोअ कर उज्यार, ब्रह्म अंदर बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, काया मन्दिर आपे वड़, आपे वेखे बेपरवाहीआ। ब्रह्म अस्थान आत्म प्रकाश, ईश जीव करांयदा। आदि जुगादि ना होए विनाश, अबिनाशी करता खेल खिलांयदा। आपणी इच्छया बख्शे स्वास, साची धार इक्क विहांयदा। काया गढ़ पृथ्मी आकाश, गगन मंडल रूप वटांयदा। आपे वसे आस पास, सगला संग आप निभांयदा। दाता दानी सर्ब गुणतास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया मन्दिर साचा गढ़, एका बंक सुहांयदा। ब्रह्म निवासा आत्म प्रकाशा, ब्रह्म आत्म वड वड्याईआ। पुरख अबिनाशी वेखे खेल तमाशा, घर घर विच जोत जगाईआ। एका देवे नाम भरवासा, निज मन्दिर आप उपजाईआ। एका गुण चलाए स्वास स्वासा, एका राग सुणाईआ। एका पूरी करे आसा, आसा आसा विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म लेखा लेखे पाईआ। ब्रह्म लेखा हरि भगवान, आदि जुगादि जणांयदा। लक्ख चुरासी कर प्रधान, जून अजूनी आप फिरांयदा। मानस मानुख देवे इक्क ज्ञान, आप आपणी बूझ बुझांयदा। शब्द सरूपी साचा दान, नर हरि साची झोली पांयदा। अमृत बख्शे आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख ना कोए वखांयदा। घर विच घर प्रकाश करे महान, नूर नुराना डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा विछोड़ा आप कटांयदा। ब्रह्म विछोड़ा हरि हरि पा, लक्ख चुरासी रिहा भवाईआ। आदि जुगादि ना सके कोई

४३६ छुडा, फंदन फंद ना कोई कटाईआ। पंज तत्त चोली तन दए पहना, पशू पंखी एका रंग रंगाईआ। कूकर शूकर जोड़ ४३६

०६ जुड़ा, तरवर सरवर आप भवाईआ। मच्छ कच्छ डेरा ला, गज़ आपणा रूप वटाईआ। हँसा बंसा चोग चुगा, सहिंसा आपणा ०६

रूप वखाईआ। आपणी अंसा वेखे थाउँ थाँ, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा विछोड़ा आप कटाईआ। आत्म विछोड़ा देवे कट्ट, परम आत्म वड्डी वड्याईआ। आप वखाए आपणा हट्ट, काया मन्दिर खोल्ह खुल्हाईआ। दरस दखाए हो प्रगट, नूर नुराना बेपरवाहीआ। साचा अमृत निझर देवे झट्ट, आप आपणी सेव कमाईआ। आत्म सुहाए साची खाट, ब्रह्म थान इक्क वड्याईआ। पूर कराए आपे घाट, ईश जीव झोली पाईआ। आत्म रस लए चाट, पुरख अबिनाशी आप चटाईआ। आपे वेखे नेड़े वाट, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा फंद आप कटाईआ। पारब्रह्म फंद कट्टणहारा, लक्ख चुरासी रहिण ना पाईआ। जुगा जुगन्तर खेल अपारा, जुग करता आप कराईआ। निरगुण सरगुण लए अवतारा, लोकमात करे रुशनाईआ। धुरदरगाही सच्ची धुन्कारा, शब्द अनादी नाद वजाईआ। आपे गाए सुणाए सुणनेहारा, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग विछड़े मेला मेल मिलाईआ। मेल मिलावा हरि गोबिन्द, ब्रह्म पारब्रह्म करांयदा। आपे मेटे

आपणी चिन्द, आपणा लेखा आप चलांयदा। आपे सागर आप सिन्ध, आप नीर वरोले अमृत मेघ आप बरसांयदा। आपे साहिब गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, आप आपणी रचन रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। लक्ख चुरासी लक्ख लक्ख वार, लक्ख लक्ख गेड़ा आप दवांयदा। सद बीस ना करे कोई विचार, बीस बीसा आप फिरांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, भेद अभेदा ना कोई खुल्हांयदा। एका नाम जगदीश निरँकार, रसना कदे ना कोई सुणांयदा। राग छतीस गए हार, हरि का रूप ना कोई सलांहयदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराणां वसया बाहर, गीता ज्ञान सर्ब कुरलांयदा। खेले खेल आप आपणी वार, जुग जुग आपणा वेस धरांयदा। शब्द ब्रह्माद ब्रह्म पावे सार, लक्ख चुरासी काया चोला फोल फुलांयदा। ईश जीव दए आधार, साचा छत्र सीस झुलांयदा। हँस बंस दए विचार, रसना जिह्वा सर्ब हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा आप कटांयदा। जगत विछोड़ा कट्टणहारा, सो पुरख निरँजण आप अख्वाया। हरि पुरख निरँजण खेल अपारा, एकँकारा सेवा रिहा कमाया। आदि निरँजण कर उज्यारा, घर घर अन्धेरा दए मिटाया। अबिनाशी करता होए ख़बरदारा, आलस निन्दरा दए गंवाया। श्री भगवान करे सच प्यारा, आप आपणा शब्द सुणाया। पारब्रह्म प्रभ पावे सारा, ब्रह्म आपणी गोद बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप लिखाया। लक्ख चुरासी घर घर , ब्रह्म पारब्रह्म दिस ना आईआ। तीर्थ तट्टां फिर फिर अक्का, फड़ पार ना कोए कराईआ। सजदा करया मदीना मक्का, साचा सीस लेखे कोए ना लाईआ। साध सन्त ना दिसे साक सज्जण सैण सका, जो साचे बेड़े दए चढ़ाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत देवण धक्का, साची नईआ ना कोई वखाईआ। जगत नेत्र ना दिसे हरि अलक्खणा अलक्खा, लिख लिख जिह्वा रही गाईआ। चारों कुंट नौ खण्ड पृथ्मी जगत मन्दिर दिसे ढट्ठा, साची जोत ना कोई टिकाईआ। शाह सुल्तानां विछाया सथ्थर सथ्था, साची सेज ना कोई हंढाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद जीव जंत हारे टेक टेक मथ्था, मस्तक रेख ना कोई मिटाईआ। लक्ख चुरासी फिर फिर ब्रह्म आत्म जीव थक्का, सच सिँघासण ना कोई सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा भेव खुल्हाईआ। जीव उपाया छोटा बाला, ब्रह्म चार जुग भवांयदा। पुरख अबिनाशी खेल निराला, भेव कोए ना पांयदा। आदि जुगादी अवल्लड़ी चाला, जुग जुग आप चलांयदा। संग रखाए काल महांकाला, साची सेव आप कमांयदा। आपे होए दीन दयाला, दीना बंधप आपणा नाउँ धरांयदा। फल लगाए साचे डाला, पतझड़ आप करांयदा। आपे तोड़े जगत जंजाला, जगत जंजाला आपे पांयदा। आपे शाह आपे कंगाला, आपे घर घर अलक्ख जगांयदा। आपे बणे सच

दलाला, एका वणज नाम करांयदा। आपे करे कराए सदा प्रितपाला, नित नवित वेस वटांयदा। आपे वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, आपे लुक लुक मुख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म पारब्रह्म आप दरसांयदा। ब्रह्म मेला गुर चेला, हरि घर साचे वज्जे वधाईआ। सतिगुर मेला सज्जण सुहेला, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। आवण जावण धर्म राए दी कट्टे जेला, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। आपणी हथ्थीं सगन मनाया गुरमुख सज्जण चाढ़े तेला, साचा वटना तन वखाईआ। धाम अवल्लड़े आप बहाया आपणे रंग रंगाए नवेला, इक्क इकल्ला फेरी पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाया। बिन हरि शब्द ना जाणया, पारब्रह्म गुर करतार। बिन हरि शब्द ना मानया, घर साचा कन्त भतार। बिन हरि शब्द ना जाणया, हरि सन्तन मीत मुरार। बिन हरि शब्द ना जाणया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी धार। बिन हरि शब्द ना बुज्झया, ब्रह्म पारब्रह्म अभेद। बिन हरि शब्द ना सुज्झया, पढ़ पढ़ थक्के चारे वेद। बिन हरि शब्द भेव ना खुल्ले गुज्झया, करे खेल अछल अछेद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे खेले आपणी खेल। आत्म मिलाया जन्म मिटाया, लक्ख लक्ख गेड़ा कट्ट वखांयदा। कर्म कमाया धर्म धराया, वरन गोत ना कोई बणांयदा। चरन टिकाया डुब्बदे लए तराया, पाथर पाहिन आपणे गल लटकांयदा। मरन कटाया सीस हथ्थ धराया, दो जहानां मेल मिलांयदा। जुग जुग विछड़ी आत्मा परमात्मा विच टिकाया, सगला संग निभांयदा। मानस जन्म लेखे लाया, लिख्या लेख ना किसे मिटाया, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। रसना जिह्वा एका अक्खर गुरसिख गुरमुख सोहँ गाया, हँ ब्रह्म पारब्रह्म एका धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म ईश जीव जगदीश सीस ताज इक्क सुहांयदा।

✻ १२ चेत २०१७ बिक्रमी चरन सिँघ दे घर पिण्ड धूल ज़िला गुरदास पुर ✻

गुरमुख उज्जल मुखड़ा, हरि सतिगुर आप कराए। हउमे मेटे दूई द्वैती दुःखड़ा, काया रंगण नाम चढ़ाए। सुफल कराए मात कुखड़ा, लक्ख चुरासी फंद कटाए। मात गर्भ ना होए उलटा रुखड़ा, दस दस मास ना अग्न जलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाए। गुरसिख साचा बेड़ा, गुर सतिगुर आप चलांयदा। काया चोली रंगे चीथड़ा, रंग मजीठी इक्क चढ़ांयदा। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, वेद कतेब भेव ना पांयदा। अमृत बख्शे ठंडा सीतड़ा, निझर झिरना आप झिरांयदा। करे कराए पतित पुनीतड़ा, दुरमति पापां मैल धवांयदा। इक्क सुणाए सुहागी

गीतड़ा, शब्द अनादी धुन उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचा भालया, हरि सतिगुर दीन दयाल। जुग जुग करे सदा प्रितपालया, दिवस रैण रहे रखवाल। देवे नाम सच्चा धन मालया, फल लगाए काया डाल्ह। आत्म अन्तर काया मन्दिर दीपक जोती एका बालया, अन्ध अन्धेरा दए निवार। अनहद राग घट घट आप सुणा ल्या, शब्द वजाए साचा ताल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे ल्ए संभाल। हरिजन साचा सोभावन्त, हरिभगतन वड वड्याईआ। पुरख अबिनाशी मेला एका कन्त, दरगाह साची दए मिलाईआ। एका शब्द एका नाम एका रसना जिह्वा मणीआ मंत, माया ममता हउमे हंगता रोग गंवाईआ। रोग सोग मिटाए भुक्ख नंगत, चिंता दुःख रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे साचे थाँईंआ। साचा थान आप सुहावणा, एका एकँकार। हरिजन सोया मात जगावणा, जगत खेल अगम्म अपार। नेत्र लोचण नैणां दरस इक्क दिखावणा, आत्म ताकी खोल्ह किवाड़। भर प्याला अमृत जाम इक्क प्यावणा, पंच विकारा मेटे धाड़। सच दुआर इक्क वखावणा, सचखण्ड निवासी खेल अपार। ब्रह्म पारब्रह्म समावणा, निरगुण सरगुण दए आधार। एका जोग सच वखावणा, साचे तख्त आप निरँकार। शब्द शब्दी हुक्म जणावणा, आप सुणाए गुप्त ज़ाहर। भेव अभेद भेव खुल्हावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लाए पार। हरिजन साचे पार किनार, सतिगुर पूरा आप करांयदा। कोए ना आए विच मँझधार, संसार सागर ना कोई रुढ़ांयदा। नाम देवे बेड़े चाढ़, एका चप्पू आप लगांयदा। आपे वसे अद्धविचकार, दूर दुराडा पन्ध मुकांयदा। आदि जुगादी खेल अपर अपार, बोध अगाध खेल खिलांयदा। साधां सन्तां पाए सार, हरि शब्द ब्रह्मादि खोज खुजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। हरिजन लेखा हरि करतार, आपणे हथ्थ रखाईआ। राए धर्म ना करे ख्वार, वेले अन्त ना दए सजाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, हरिजन साचे ल्ए मिलाईआ। एका बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। काग रलाए हँसां डार, सोहँ हँसा चोग चुगाईआ। बंस सरबंसा जाए तार, जिस दर आपणा चरन छुहाईआ। सतिगुर पूरा मीत मुरार, निरगुण दाता इक्क अख्वाईआ। वरनां बरनां वसे बाहर, ज़ात पात ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। सहिज सुभा गुर सज्जण पाया, गुर सतिगुर गहर गम्भीर। आवण जावण पन्ध मुकाया, चोटी चढ़े इक्क अखीर। नौ दरवाज़े जगत तजाया, जगत तृष्ना कट्टी पीड़। साचा मन्दिर इक्क सुहाया, अमृत बख्शे ठांडा सीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल गुणी गहीर। बेपरवाह

हरि पुरख निरँजण, आदि जुगादि भेव ना आंयदा। सिफ्त सलाह साचा सज्जण, रूप अनूप रूप वटांयदा। जगत मलाह कराए मजन, साचा बेड़ा आप चलांयदा। दो जहानी पर्दे कज्जण, नाम दोशाला दीन दयाला गुर गोपाला, साचा हथ्थ उठांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, हरि का भेव ना कोई पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सरूपी बण दलाल, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन हरि हरि मेलया, ब्रह्म पारब्रह्म समाए। एका घर वसाए गुरू गुर चेलया, गोबिन्द लेखा लेख चुकाए। आपे वसे धाम नवेलया, सच महल्ला आप उपाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाए। हरिजन साचे उठ उठ जाग, सतिगुर पुरख आप जगांयदा। आत्म जोती जगे चिराग, अज्ञान अन्धेर गवांयदा। दुरमति मैल धोवे दाग, पूर्ब कर्मा वेख वखांयदा। हरिजन उपजाए इक्क वैराग, जन वैरागी इक्क करांयदा। जगत वखाए झूठा त्याग, सगला संग आप निभांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काग, सिर सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। सरन सरनाई जो जन गया लाग, ब्रह्म ब्रह्म आप वड्यांअदा। चरन धूढ़ कराए मजन माघ, सर सरोवर इक्क सुहांयदा। दो जहानां सज्जण साक, सगला संग रखांयदा। पुरख अबिनाशी पाकी पाक, घट घट वासी वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी चढ़या राक, आपणा अश्व आप दुड़ांयदा। बजर कपाटी तोड़े ताक, अनहद ताल तलवाड़ा आप वजांयदा। डूँग्घी कंदर बैठा रिहा झाक, साची सोभा पांयदा। आपे जाणे आपणा भविख्त वाक, जुग जुग आपे पूर करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण मेल मिलांयदा। हरि सज्जण हरि रंग माणयां, हरि पाया बेअन्त। घर मन्दिर इक्क पछाणयां, पुरख अबिनाशी साचा कन्त। निरगुण रूप श्री भगवानयां, दिस ना आए जीव जंत। भरमे भुल्ले सुघड़ स्याणयां, कलिजुग माया पाई बेअन्त। त्रैगुण वज्जा इक्क निशानयां, पंज तत्त गढ़ बणया हउमे हंगत। घर मिल्या ना हरि भगवानयां, मिल्या मेल ना साचे सन्त। चौथा पद ना किसे पछाणया, नार सुहागण हंढाए ना कन्त। रसना गा गा थक्की गानया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल जुगा जुगन्त। जगत खेल अवल्लड़ा, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण इक्क अवल्लड़ा, जोती जामा वेस वटांयदा। एकँकारा एका मार्ग दस्से सुखलड़ा, साचा मन्दिर इक्क जणांयदा। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बलड़ा, नूरो नूर डगमगांयदा। श्री भगवान फड़ाए पलड़ा, शब्द पल्लू इक्क वखांयदा। अबिनाशी करता आपणी जोती आपे रलड़ा, दूसर संग ना कोई रखांयदा। पारब्रह्म सच संदेश एका घलड़ा, जीव आत्म ब्रह्म आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेशा नर नरेशा हरिजन साचे आप सुणांयदा। शब्द संदेशा हरि भगवन्त, जुग जुग आप सुणांयदा। लेखा

जाणे साचे सन्त, सन्त सतिगुर मेल मिलांयदा। गुरमुख मिलाए आपे कन्त, हरि साचा विछड़ ना जांयदा। गुरसिख बणाए साची बणत, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर दीवा बाती कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर दए विनास, मेल मिलाए शाहो शाबाश, घर साचा आप सुहांयदा। घर साचा ठांडा दरबार, हरि साचा आप उपांयदा। जिस जन मिल्या गुर करतार, मानस मानुक्ख लेखे लांयदा। धरत धवल पैज दए संवार, आकाश प्रकाश आप सुहांयदा। अकाल मूर्त निराकार, अजूनी रहित एका वेस वटांयदा। सन्तन करे सच प्यार, सांतक सति सति आप वरतांयदा। गुरमुख साचे लए उभार, ज्ञान गुर इक्क वखांयदा। गुरसिख साचे बख्शे चरन प्यार, जगत नाता तोड़ तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे सच समझांयदा। हरिजन साचे साची धार, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण कर प्यार, करनी किरत आपणी रिहा कमाईआ। निरगुण एकँकारा हो त्यार, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। आदि निरँजण धुर दरबार, आपणा नूर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता सांझा यार, वरन गोत ना कोई बणाईआ। श्री भगवान बण सिक्दार, दो जहानां राज कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ सेवादार, लोकमात वेस वटाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर प्यार, त्रैगुण माया साचा रंग रंगाईआ। पंचम काया चोला कर त्यार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणा संग वखाईआ। अंदर वड़ निराकार, निज आत्म सेज सुहाईआ। शब्दी शब्द शब्द जैकार, दिवस रैण आप सुणाईआ। गुरमुख विरला सुणे सुणनेहार, लक्ख चुरासी गूढ़ी नींद सवाईआ। जुगा जुगन्तर लए अवतार, जोग जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। सन्तन भरे सच भण्डार, साची वस्त इक्क वरताईआ। भगतन मेला धुर दरबार, सचखण्ड दुआरे आप कराईआ। निरगुण रूप निराकार, निरवैर आपणा नाउँ उपजाईआ। साचा नाम बोल जैकार, एका ढोला रिहा सुणाईआ। ऊँचां नीचां करे प्यार, राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए उठाईआ। गुरमुख विरला उठया, जिस सतिगुर आप उठाए। सतिगुर पूरा एका तुठया, पारब्रह्म वड वडियाए। अमृत देवे साचा घुट्टया, नेत्र लोचण आप खुल्हाए। नाता तोड़े जूठया झूठया, सच सुच्च ज्ञान इक्क दृढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाए। हरिजन साचा जागया, जगावणहार करतार। गुर सतिगुर सरनाई लागया, नाता तोड़ सर्ब संसार। सतिगुर पूरा पकड़े आपणी हथ्थीं वागया, लोआं पुरीआं करे पार। दो जहानां फिरे भागया, इक्क इकल्ला एकँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख निमाणे बाल अञ्याणे आदि जुगादी जाए तार। गुरसिख बाल बाली बुध, गुर सतिगुर वेख वखांयदा। बिरध बाल जवाना पाए सुध, आप आपणा भेव

खुल्लांयदा। भेव खुल्लाए आपणा गुझ, शब्द शब्दी नाद वजांयदा। गुरसिख गुरमुख आपणा घर जाए सुझ, घर घर विच मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तरांयदा। तारनहारा एका गुर, दूसर दर ना कोई जणांयदा। मेला मिलाए लेखा धुर, धुर संजोगी वेख वखांयदा। लहण देण चुकाए तोर मोर, अन्ध घोर फोल फुलांयदा। शब्दी सुरती बन्न्हे डोर, मन मनूआ दहि दिशा पंछी उड उड ना फेरी पांयदा। मारनहारा पंजे चोर, नाम खण्डा हथ्थ चमकांयदा। आपे चाढ़े साचे घोड़, शब्द घोड़ा इक्क वखांयदा। धुरदरगाही आए दौड़, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे लाए पौड़, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज आपणे चरना हेठ दबांयदा। लक्ख चुरासी वेखे फल मिट्ठा कौड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे देवे वर, गुरमुख साजण आप तरांयदा।

❋ १२ चेत २०१७ बिक्रमी उजागर सिँघ दे घर ❋

जुग जुग खेल अपार, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण लए अवतार, रूप अनूपा आप वटांयदा। एकँकारा करे कार, आप आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचन रचांयदा। जुग जुग खेल पुरख सुल्ताना, पारब्रह्म आप कराईआ। लोकमात हो प्रधाना, गुर सतिगुर नाउँ धराईआ। हरि जी वेखे जगत तमाशा, निमाण निमाणयां होए सहाईआ। एका बख्शे चरन ध्याना, चरन कँवल वड वड्याईआ। सति सतिवादी बन्न्हे गाना, साची डोरी बन्धन पाईआ। लेखा जाणे सीता रामा, राम रामा रूप वटाईआ। सर सरोवर माण गंवाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका भगतन गले लगाईआ। एका एक सर्ब गुण दाता, आदि जुगादि समाया। मेटे रैण अन्धेरी राता, जुग जुग आपणा चन्द चढ़ाया। शब्द चलाए साची गाथा, मन्त्र नाम इक्क दृढ़ाया। एका जाणे पूजा पाठा, आपणी विद्या आप पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन आपणा रूप वटाया। निर्धन हरि भगवान, आदि जुगादि समांयदा। सतिगुर पूरा बण मेहरबान, लोकमात वेस वटांयदा। हरिजन वेखे मार ध्यान, चारे कन्नीआं दहि दिशा फोल फुलांयदा। लेखा जाणे कृष्ना काहन, नाम मन्त्र इक्क जणांयदा। बिपर सुदामा देवे माण, जगत दलिद्री गले लगांयदा। साचा बख्शे पीण खाण, नाम खण्डा इक्क फड़ांयदा। आप वखाए उच्च अटल मकान, असथिल आपणा रूप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लेख लिखांयदा। लेखा लिखणहार

दातार, हरि वड्डा वड वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सार, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। एका भगत कर प्यार, घर बिदर चरन टिकाईआ। रसना रस लए अपार, छत्ती भोजन मुख शर्माईआ। अठारां अध्याए गीता ना करे पुकार, हरिभगत भेव कोई ना पाईआ। जिस जन मिल्या हरि निरँकार, जगत तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। घर मन्दिर सोहे इक्क दुआर, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निथावयां देवे साचा थाँ, दरगाह साची धाम सुहाईआ। दरगाह साची धाम सुहञ्जणा, हरिजन साचे आप वखांयदा। नेत्र पाए नाम अञ्जणा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। धुरदरगाही सच्चा सज्जणा, सगला संग निभांयदा। जो घड़या सो भज्जणा, घड़ण भन्नणहार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रूप वटांयदा। रूप अवल्ला इक्क इकल्ला, हरि हरि नाम वटांयदा। वसणहारा जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर फेरा पांयदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण एका मल्ला, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। जोती शब्दी आपे रला, पवणी पवण समांयदा। दीपक प्रकाश आपणे आप बला, सूरज चन्न ना कोई चढ़ांयदा। सच संदेश नर नरेश एका घल्ला, शब्द अनादी नाद वजांयदा। आपे लक्ख चुरासी भुलाए कर कर वल छला, अछल छल धारी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन हरिभगत ना फड़ाए आपणा पल्ला, जीव जंत सर्ब कुरलांयदा। जीव जंत रिहा कुरलाए, चारों कुंट अन्धेरा छाया। कलिजुग कूके दए दुहाए, हरि का रूप दिस ना आया। पुरख अबिनाशी नज़र ना आए, निरगुण आपणा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाया। खेलणहारा दीन दयाला, आदि निरँजण वड वड्याईआ। अलक्ख अगोचर पुरख अकाला, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कराईआ। गुरमुख वेखे साचे लाला, लाल अनमुल्लड़े आपणे हथ्थ रखाईआ। शब्द सरूपी बण दलाला, लोकमात मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन सरधन एका जोत करे रुशनाईआ। निर्धन अंदर वसया, पारब्रह्म गुर करतार। एका मार्ग आपणा दस्सया, निरगुण रूप विच संसार। साचे मन्दिर बह बह हस्सया, शब्द दाता बेऐब परवरदिगार। हरि जी तीर निराला एका कसया, हरि हरी मारे आपणी मार। दो जहानां फिरे नस्सया, कलिजुग अन्तिम लए अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण साचे लए उभार। गुरमुख सज्जण मिलाया, कर किरपा हरि भगवन्त। सिर आपणा हथ्थ रखाया, आप बणाया साचा सन्त। भोला भाउ इक्क रखाया, लेखा जाणे जुगा जुगन्त। कर्म कांड ना कोए दसाया, माया ममता कर भस्मंत। नूर नुरानी दरस दिखाया, भेव चुकाया आदि अन्त। मानस जन्म लेखे लाया, आप बणाई साची बणत। काग हँसां डार मिलाया, मिल्या

मेल साची संगत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे लाए आपणे अंगत। अंगीकार कर करतार, आपणी गोद बहांयदा। रोग सोग चिंता दए निवार, सगला सुख जणांयदा। उज्जल मुख कर प्यार, शब्द धारा इक्क जणांयदा। शब्द विकारा कढ्ढे कुट्ट, साचा शब्द सिफ्त सालांहयदा। सतिगुर पूरा आपे जाए तुट्ठ, आपणी दात साची वस्त झोली पांयदा। कलिजुग सके ना कोई लुट्ट, चोर यार नेड़ ना आंयदा। मानस जन्म भाग ना जाए निखुट, राए धर्म ना डंन लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग फुलवाड़ी देवे पुट्ट, बूटा आपणे घर लगांयदा। साचा फल सच फुलवाड़ी, हरि साचा सच लगाईआ। आपे करे साची दारी, सेवक सेवा आप कमाईआ। आपे पैज रिहा संवारी, मूर्ख मूढ़ गले लगाईआ। आपे देवे शब्द अधारी, निज आत्म धीर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, डुब्बदे पत्थर आप तराईआ। कलिजुग पत्थर मुग्ध मन पाहिन, माया भरम भुलाया। साचा वखाए एका दीन, इष्ट देव गुर नज़री आया। रसना जिह्वा गुरसिख रिहा चीन, चितवत ठगोरी कोए ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन आपणे रंग रंगाया। निर्धन रंग अपार, गुर सतिगुर आप चढ़ांयदा। फड़ फड़ बाहों जाए तार, तारनहारा दिस ना आंयदा। दिवस रैण करे प्यार, अन्ध अन्धेर वेख वखांयदा। कूड़ी क्रिया दए निवार, साचे मार्ग आपे पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर देवे धर, दर घर एका एक सालांहयदा। सच दुआरा धुर धाम, सचखण्ड निवासी आप मिलाईआ। लेखा जाणे नगर ग्राम, गुरसिख काया कप्पड़ आप वसाईआ। लेखा जाणे हड्ड मास नाड़ी चाम, अग्नी तत्त आप बुझाईआ। मेल मिलावा एका राम, राम रामा मेल मिलाईआ। पूरन करे सतिगुर काम, काम कामनी नेड़ ना आईआ। पल्ले बन्ने साचा दाम, एका शब्दी गंढु पवाईआ। अमृत प्याए एका जाम, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। करे प्रकाश कोटन भान, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। आपे देवे जीआ दान, जीआं दाता बेपरवाहीआ। एथे ओथे बख्शे माण, पत डाली आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, आप आपणे लड़ बंधाईआ। आप फड़ाया आपणा लड़, गुरसिख बाल अञ्याणयां। आपे घाड़ण ल्या घड़, दिस ना आए सुघड़ स्याणयां। आपे लाए चोटी जड़, खेले खेल दो जहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा माण निमाणया। माण निमाणया देवे माण, दरगाह साची सच वड्याईआ। एका अक्खर हरि हरि गाण, सो पुरख निरँजण मेल मिलाईआ। हँ ब्रह्म चुक्के काण, चाकर चाकरी इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत वसाए एका घर, घर सच्चा सहिज सुखदाईआ ।

✱ १२ चेत २०१७ बिक्रमी अतर सिँघ दे घर पिण्ड ओगरा ✱

सति पुरख निरँजण हरि मेहरबान, निरगुण रूप वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे वसे सच मकान, जोती नूर नूर रुशनाईआ। थिर घर साचा कर परवान, सच सिँघासण आप सुहाईआ। तख्त बैठ श्री भगवान, शाह भूप इक्क अख्वाईआ। सति सतिवादी धुर फ़रमाण, शब्द अनादी आप अलाईआ। खेले खेल दो जहान, आप आपणा रूप वटाईआ। चतुर्भुज आपे होए जाणी जाण, आप आपणा भेव खुलाईआ। आदि शक्ति जोत महान, आप आपणा रूप वखाईआ। चतुर्भुज आपे होए जाणी जाण, आप आपणा भेव खुलाईआ। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी रचन रचाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवे दान, एका वस्त हथ्थ फड़ाईआ। त्रैगुण माया कर प्रधान, त्रै त्रै वेस वटाईआ। अन्तिम मेला विच जहान, लोकमात करे कुड़माईआ। मन मति बुध कर निशान, निरगुण आपणा अंग कटाईआ। लक्ख चुरासी खेल महान, घट घट आपणी जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता इक्क अख्वाईआ। सति पुरख निरँजण वड मेहरबाना, आदि जुगादि समाया। खेले खेल गुण निधाना, गुणवन्ता भेव ना राया। शब्द अनादी धुन तराना, अगम्म अगम्मड़ा आप सुणाया। लक्ख चुरासी वेखे मार ध्याना, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। भगतन देवे धुर फ़रमाणा, शब्द अनहद राग सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख निरँजण खेल खिलाया। सति पुरख निरँजण सूरबीर, वड दाता हरि भगवानया। आदि जुगादि चलाए एका तीर, साचा शब्द मारे बाणया। लोआं पुरीआं पैंडा आपे चीर, आपे जाणे आपणी आनया। भगतन बख्शे अमृत आत्म ठांडा सीर, शब्द चढ़ाए सच बिबाणया। दो जहाना बन्ने धीर, रथ रथवाही खेल महानया। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोई जाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार चलाणया। सति पुरख निरँजण सच महल्ला, एका एक वसांयदा। सो पुरख निरँजण बैठा इक्क इकल्ला, सच दुआर सुहांयदा। हरि पुरख निरँजण वसणहारा जलां थलां, निहचल धाम आप सुहांयदा। एकँकारा सति सरूपी अन रंग अल्ला, आपे फड़े आपणा भल्ला, आप आपणा संग निभांयदा। आदि निरँजण दर्द दु:ख भय भञ्जण आपणे दीपक आपे बला, दीवा बाती ना कोई रखांयदा। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणा वल छला, अछल छल धारी दिस ना आंयदा। श्री भगवान सच सुनेहड़ा शब्दी शब्द आपे घल्ला, नाद तराना धुन उपजांयदा। पारब्रह्म प्रभ आपे रला, आपणी अंस आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण साचा धाम आप वड्यांअदा। सति पुरख निरँजण सोभावन्त, हरि महिमा कहिण ना जाईआ। आदि जुगादी एका कन्त, लक्ख चुरासी लए प्रनाईआ। लेखा

जाणे साचे सन्त, हरिभगतन माण रखाईआ। गुरमुख बणाए आपणे सुत, घर मेला बेपरवाहीआ। गुरसिख उपजाए विच्चों जीव जंत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जुगा जुगन्तर साचा कन्त, वेद कतेब रहे जस गाईआ। मनमुक्खां माया पाए बेअन्त, आपणा पड़दा आप रखाईआ। काया गढ़ बणाए हउमे हंगत, जूठ झूठ करे कुड़माईआ। आसा तृष्ना होई नंगत, हउमे रोग विच टिकाईआ। जिस जन मेले साची संगत, काया चोली रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख निरँजण आप अख्वाईआ। सति पुरख निरँजण पुरख अकाला, एका रंग समाया। दीनां बंधप दीन दयाला, जुग जुग आपणा वेस वटाया। चले चलाए अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क रखाया। चरन दुआर रखाए काल महांकाला, हुक्मी हुक्म आप सुणाया। शब्द वजाए साचा ताला, लोआं पुरीआं आप अलाया। लक्ख चुरासी फल लगाए डाला, आपणा मेवा वेख वखाया। जन भगतां दस्से राह सुखाला, आत्म अन्तर एका ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख निरँजण सति सतिवाद, लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, आदि जुगादि आपणा लेख आप मुकाया। सति पुरख निरँजण हरि समरथ, दूसर अवर ना कोई जणाईआ। आप चलाए आपणा रथ, वड रथवाही बेपरवाहीआ। शब्द जणाए महिमा अकथ, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, शब्दी डोरी हथ्थ रखाईआ। जन भगतां देवे एका वथ्थ, नाम सति झोली पाईआ। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जो जन हरि हरि दर्शन पाईआ। वसणहारा सदा जगत, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। लेखा जाणे तीर्थ अठसठ, सर सरोवर फोल वखाईआ। चौदां लोक वखाए एका हट्ट, वड दाता बेपरवाहीआ। हरिजन भाग लगाए काया मट्ट, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। दुरमति मैल देवे कट्ट, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। मन मनूआ खेले खेल बाजीगर नट, मति मतवाली रही कुरलाईआ। बुध बिबेक करे झट्ट, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दूई द्वैती मेटे फट, तीर निराला एका लाईआ। हँकारी बुरज जाए ढट्ठ, पुरख अबिनाशी आपे ढाईआ। काया गेड़े उलटी लट्ठ, आपणा गेड़ा आप दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट घट अंदर आपे वड़, घर घर विच आसण लाईआ। घर विच घर हरि जी वड़या, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख दुआरे आपे चढ़या, आपणी बूझ आप बुझांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़या, हरिजन साचे आप पढ़ांयदा। आपे तोड़े हँकारी गढ़या, पंच विकारा मेट मिटांयदा। अग्नी हवन कदे ना सड़या, मढ़ी गोर ना कोए दबांयदा। अद्वविचकार कदे ना अड़या, पार किनारा इक्क वखांयदा। गुरमुख बंधाए आपणे लड़या, एका पल्लू हथ्थ उठांयदा। माणक मोती गुरमुख दर घर साचे आपे जड़या, आप आपणी सेव कमांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़या, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। दर दुआरे अग्गे

खड़या, हरिजन आत्म ब्रह्म वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख निरँजण इक्क अतीता, आपे जाणे आपणी रीता, जुग जुग आपणी कार करांयदा। सति पुरख निरँजण बेपरवाह, एका रंग समाया। जुग जुग बणे मात मलाह, लोकमाती वेस वटाया। जन भगतां देवे नाम सलाह, एका मार्ग दए वखाया। पार उतारे फड़ फड़ बांह, सेवक साची सेव कमाया। निथावयां देवे साचा थाँ, दरगाह साची धाम सुहाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सोहँ माणक मोती चोग चुगाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्त करे सच न्याँ, लेखा आपणे हथ्थ वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख निरँजण एको दाता, आपे होए ब्रह्म ज्ञाता, पारब्रह्म वेस धराया। ब्रह्म ज्ञाना ब्रह्म ज्ञान, आप आपणा शब्द जणाईआ। आत्म अन्तर इक्क ध्यान, लिव आत्म इक्क वखाईआ। सर सरोवर पीण खाण, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। दाता दानी गुण निधान, इच्छया भिच्छया झोली पाईआ । हथ्थ फड़ाए शब्द कमान, रसना जिह्वा तीर चलाईआ। खाणी बाणी होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। गुरमुख विरला चतुर सुजाण, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। काया मन्दिर सच मकान, हरि मन्दिर आप सुहाईआ। आत्म सेजा कर परवान, सतिगुर पूरा वेख वखाईआ। उप्पर बैठ श्री भगवान, तख्त ताज इक्क सुहाईआ। एका राग सुणाए कान, अनहद साची सेवा लाईआ। करे प्रकाश कोटन भान, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। शब्दी देवे सुरती दान, सुरत सवाणी मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख निरँजण एकँकार, आदि जुगादी साची कर, जुग करता आप कराईआ। सति पुरख निरँजण गुण निधाना, गुण अवगुण ना कोई जणांयदा। परम पुरख श्री भगवाना, पारब्रह्म वेस वटांयदा। जुग जुग खेले खेल महाना, वेद पुराण ना कोई लिखांयदा। ब्रह्मा वेखे नेत्र करे ध्याना, निउँ निउँ चरन सीस झुकांयदा। विष्नूं मंगे एका दाना, साची वस्त झोली पांयदा। शंकर मन्ने सति सति भाना, बाशक तशक गलों सुटांयदा। सुरपति राजा इंद होए हैराना, हरि का भेव कोई ना पांयदा। करोड़ तेतीसा मंगे इक्क निशाना, इष्ट देव हरि मनांयदा। लक्ख चुरासी जीव नादाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख निरँजण साची कार, सति पुरख आप करांयदा। सति पुरख निरँजण योग, एका एक अख्वाया। जन भगतां मेला धुर संजोग, जुग जुग मेल मिलाया। आपे कट्टे हउमे रोग, माया ममता मोह चुकाया। एका शब्द वखाए साचा जोग, बन खण्ड ना फेरा पाया । रसना चुगे साची चोग, अमृत मेवा फल खवाया। जगत नाता तुट्टे विजोग, गुर शब्दी मेल मिलाया। आत्म सेजा भोगे भोग, दूजी सेज ना कोई हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख निरँजण साचा मीता, इक्क अतीता नाउँ धरांयदा। सति पुरख निरँजण मीत

४४८
०६

मुरार, एका धाम सुहांयदा। आपे वसे सचखण्ड दुआर, चार दुआर ना कोई बणांयदा। छप्पर छन्न ना कोई सहार, आप आपणी रचन रचांयदा। रवि ससि ना कोई सितार, मंडल मंडप ना कोई वखांयदा। ज़िमीं अस्मान ना कोई धार, रचन रचांयदा। त्रैगुण माया ना कोई पसार, पंज तत्त ना कोई बंधांयदा। गुर पीर ना कोई अवतार, साध सन्त ना कोई अख्वांयदा। जल बिम्ब ना कोई धार, छहबर धार ना कोई वहांयदा। तीर्थ तट ना कोई किनार, अठसठ ना भेख वटांयदा। शब्द धुन ना कोई जैकार, राग नाद ना कोए सुणांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए उज्यार, निरगुण सरगुण भेख ना कोए वटांयदा। कागद कलम ना लिखणहार, मस सयाही सत्त समुंदर ना कोए बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख निरँजण एका दाता, आपणी वस्त आप उपांयदा। आपे निरगुण हरि गोबिन्द, दर घर साचे सोभा पांयदा। आपे मेटे सगली चिन्द, सांतक सति सति वरतांयदा। दाता दानी गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, सतिगुर आपणा नाउँ रखांयदा। पारब्रह्म प्रभ उपजाए आपणी बिन्द, आप आपणा अंग कटांयदा। आपे धार वहाए अमृत सागर सिन्ध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहांयदा। सति पुरख निरँजण सच दुआरा, थिर घर साचा आप सुहाईआ। अलक्ख निरँजण बोल जैकारा, आपणी अलक्ख आप जगाईआ। आपे मंगे बण भिखारा, आपणी अल्फ़ी गल हंढाईआ। आपे बणे सच सिक्दारा, साचा तख्त सुहाईआ। आपे होए चोबदारा, निउँ निउँ आपणा सीस आप झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख निरँजण आपणी खेल आप खिलाईआ। सति पुरख निरँजण सच दरवाजा, सचखण्ड दुआरे आप खुल्हांयदा। अलक्ख अगोचर ग़रीब निवाज़ा, आप आपणी कल वरतांयदा। हरि मन्दिर बह बह मारे वाजा, आपणा मन्दिर आप सुहांयदा। आपे रच्चे आपणा काजा, निरगुण निरगुण खेल खिलांयदा। शब्द सुणाए अनहद वाजा, आप आपणा राग सुणांयदा। आप चलाए सच जहाजा, आपणी सेवा आप कमांयदा। आपे अश्व रक्खे ताजा, आसण सिँघासण आप सुहांयदा। आपे लोआं पुरीआं फिरे भाजा, मंडल मंडप आपे रास रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। सचखण्ड दुआर हरि निरँकार, आपणा आप सुहाईआ। शाहो भूप वड सिक्दार, शाह सुल्ताना नाउँ धराईआ। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, हरि जगदीश आप टिकाईआ। जोती शब्दी जोत कर त्यार, लोकमात वेख वखाईआ। सस्से उप्पर होड़ा निरगुण सरगुण बणे धार, हँ ब्रह्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाँईं, एका तत्तव रंग रंगाईआ। तत्व तत्त रंग रंगाया, कंचन गढ़ सुहांयदा। पुरख अबिनाशी खेल खलाया, हरिजन साचे आप उपजांयदा। त्रैगुण बन्धन फंद कटाया, साची सिख्या सिख समझांयदा। सति सरूपी

चन्द चढ़ाया, दीपक भान इक्क प्रकाश करांयदा। परमानंद आप रखाया, निज आत्म रस चुआंयदा। दूई द्वैती पर्दा लाहया, मन बन्दर बन्नृ वखांयदा। शब्द कलंदर डोरी हथ्थ रखाया, घर आपणे नाच करांयदा। सुहागी छन्दन एका गाया, गीत गोबिन्द अलृांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा आप वड्यांअदा। घर सच्चा हरि वडियाई, पारब्रह्म ब्रह्म बेअंतया। घर वड्डा करे सति कुड़माई, लेखा जाणे साचे संतया। हरिजन वज्जे सच वधाई, पाया पुरख इक्क भगवंतया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आदि अंतया। आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, एका रंग समाया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग आपणा वेस वटाया। आपे भुक्खा आपे नंगता, शाहो भूप आपणा नाउँ धराया। आपे दर दर फिरे मंगता, घर घर आपणा नाम आपणे हट्ट विकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी चाल चलाया। चाल अवल्ली जोत अकाली, आपणी आप चलांयदा। दो जहानां साचा वाली, लक्ख चुरासी बूटा वेख वखांयदा। दिवस रैण बणया रहे पाली, हरिजन साची सेव कमांयदा। मेटे रैण अन्धेरी काली, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। तोड़णहारा माया ममता जगत जंजाली, जागरत जोत इक्क जगांयदा। आपणे हथ्थ रक्खे खाली, गुरमुख सच भण्डारा नाम भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणे वेस वटांयदा। जुग जुग खेल अवल्लड़ा, सति पुरख निरँजण आप करांयदा। दो जहानां इक्क इकल्लड़ा, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। जन भगतां दर दुआरे अग्गे खलड़ा, स्वच्छ सरूपी दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची बन्नृे धार, इक्क इकल्ला एकँकार, लक्ख चुरासी दए आधार, एका अक्खर शब्द पढ़ांयदा। एका अक्खर जगत वक्खर, हरि पुरख निरँजण आप पढ़ांयदा। जन भगतां बज़र कपाटी तोड़े जंदर, दूजी सिला आप उठांयदा। पंज विकारा करे सथ्थर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त हथ्थ रखांयदा। साची वस्त हथ्थ करतार, आदि जुगादि रखाया। जन भगतां देवे कर प्यार, दूसर हट्ट ना किसे विकाया। सन्तन भरे नाम भण्डार, अतोट अतुट रखाईआ। गुरसिख सज्जण जाए तार, कर किरपा बेपरवाहीआ। गुरसिखां बख्शे चरन प्यार, साचा नाता जोड़ जुड़ाईआ। दरगाह साची पावे सार, आप आपणा दरस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लेखा लेख जणाईआ। सतिजुग लेखा लिख्या, त्रेता बणे धार। द्वापर पैंडा मुक्कया, कलिजुग आई हार। अठसठ तीर्थ सुक्कया, अमृत मिले ना जल, साचे घर ना कोई विचार। साध सन्त दर दर फिरे लुकया, ऊँची कूक ना करे पुकार। अमृत सोमा कदे ना फुट्टया, नाम पए ना सच फुहार। तीर निराला कदे ना छुट्टया,

मिले मेल ना गोबिन्द यार। अमृत पीता किसे ना घुट्टया, खुल्ले बन्द ना कोई किवाड़। हरि का नाम किसे ना लाहा लुट्टया, लक्ख चुरासी झक्ख रही मार। गुरमुख विरले उप्पर पारब्रह्म अबिनाशी आपे तुट्ठया, आपे देवे नाम अधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार। अगम्म अपारा हरि निरँकारा, निरगुण रूप समाया। आदि जुगादी इक्क अवतारा, इक्क गुर अख्वाया। शब्द सरूपी सच भण्डारा, हरि साचा सच वरताया। सो पुरख निरँजण बोल जैकारा, हँ ब्रह्म लए जगाया। दोहां विचोला बण संसारा, एका रंग रंगाया। एका ढोला गाए आपणी वारा, आप आपणा राग जणाया। साचा तोला बेऐब परवरदिगारा, चौदां लोकां लए तुलाया। चौदां तबकां दए हुलारा, संग मुहम्मद वेख वखाया। चार यारी करे पुकारा, अल्ला हू हू नाअरा लाया। ऐनलहक कढ्ढे हाढ़ा, मुकामे हक राह तकाया। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, नूर इलाही आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा लेखा आप समझाया। साचा लेखा नूर नुराना, हरि साचा सच समझांयदा। बेऐब नुरानी खेल महाना, ख़ालक ख़लक वेख वखांयदा। उम्मत उम्मती बन्ने गाना, साचा सगन मनांयदा। कलमा अमाम इक्क वखाना, कायनात आप जणांयदा। पीर दस्तगीर पीर करे परवाना, मुल्ला शेख़ मुसायक वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग आपणी धार चलांयदा। मुला शेख़ मुसायक पीर, उच्ची कूकण देण दुहाईआ। हथ्थ ना आए दस्तगीर, बेनज़ीर रूप वटाईआ। ना कोई मेटे तकदीर, तकसीर तदबीर ना कोई वखाईआ। चारों कुंट वज्जा ज़ंजीर, अला राणी रही कुरलाईआ। पुरख अबिनाशी वड पीरन पीर, आपणी खेल रिहा खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह अल्ला अलाह, एका हुकम सुणांयदा। नूरो नूर बण मलाह, नूर नुराना डगमगांयदा। एका कलमा सिफ्त सलाह, सच सलाही आप सलांहयदा। आपे वेखे आपणा थाँ, ज़िमी अस्मानां फोल फुलांयदा। मक्का काअबा फेरा पा, दो दो आबा हज्ज वखांयदा। हक जनाबा आप अख्वा, सच नवाबा रूप वटांयदा। बेआबा वेखे थाउँ थाँ, नूरी ताब ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वजाए सच रबाबा, अहिबाब सितार आप वखांयदा। सच सितार शब्द धुन्कार, हरि साचा आप सुणाईआ। दो जहाना नौजवाना श्री भगवान पाए सार, सच निशाना इक्क वखाईआ। गोपी कान्हा मीत मुरार, मंडल रास इक्क वखाईआ। सीता राम कर प्रनाम, आपणा काम आप कराईआ। जन भगतन देवे अमृत जाम, आबेहयात आप प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे मेटे कूड़ पसार, तोड़णहारा गढ़ हँकार, झूठा गढ़ रहिण ना पाईआ। झूठा गढ़ जाणा तुट्ट, हरि साचा आप तुड़ांयदा। लक्ख चुरासी

४५०
०६

नाता जाए छुट्ट, सगला संग ना कोए निभांयदा। कलिजुग लोकमात विच्चों कढ्ढे कुट्ट, थिर कोए रहिण ना पांयदा। गुर तीर निराला रिहा छुट्ट, साचा चिल्ला हथ्थ उठांयदा। झूठी शाही जड़ देवे पुट्ट, आपणी सेवा आप कमांयदा। घर घर अंदर दिसे फुट्ट, भैण भाई ना मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी काली धार, चारों कुंट करे ख्वार, साचा प्यार ना कोई करांयदा। साचा प्यार ना सज्जण मीत, मात पित भैण भाई ना कोई सखाईआ। कलिजुग चलाई आपणी रीत, मन्दिर मसीत देण गवाहीआ। साधां सन्तां काया होए ना ठांडी सीत, अग्नी अग्ग ना कोई बुझाईआ। तीर्थ तट्टां परखे नीत, गंगा गोदावरी सुरस्ती जमना नैण शर्माईआ। हरि जू हरि घट हरि मन्दिर वसया दिसे ना विच कलबूत, ठगौरी रिहा पाईआ। ना गाए गोबिन्द गीत, रसना जिह्वा होई हलकाईआ। सतिगुर पूरा काया अंदर सुत्ता दे कर पीठ, आपणी करवट लए बदलाईआ। हरिजन विरला मानस जन्म रिहा जीत, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। मिल्या नाम धाम अनडीठ, दिस किसे ना आईआ। एका रंग वखाए हस्त कीट, ऊँच नीच भेव चुकाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, संग मुहम्मद रिहा कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए उठाईआ। गुरमुख आप उठावणा, कर किरपा अपर अपार। घर दीपक इक्क जगावणा, निरगुण जोत कर उज्यार। अमृत साचा जाम प्यावणा, दिवस रैण रक्खे ठंडा ठार। गीत सुहागी इक्क सुणावणा, अनहद शब्द बोल जैकार। आत्म सेजा सच सुहावणा, आप आपणा कर प्यार। सुरत सवाणी मेल मिलावणा, शब्द हाणी ख़बरदार। सच सवाणी संग निभावणा, कन्त कन्तूहल करे प्यार। अमृत सीर मिट्ठा इक्क बरसावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बख्शे निझर धार। निझर धार अमृत रस, गुरमुखां आप प्याईआ। हिरदे अंदर वस वस, हरि आपणा रूप दरसाईआ। एका मार्ग दस्स दस्स, झूठा नाता तोड़ तुड़ाईआ। तीर निराला मारे कस, तिक्खी मुखी आप भवाईआ। जगत विकारा देवे झस्स, शब्दी शब्द दबाईआ। त्रैगुण माया ना डस्से डस, नाग नागनी मुख भवाईआ। हरिजन मेले हस्स हस्स, घर साचे कर कुड़माईआ। मनमुख दर तों जायण नस्स, हरि का शब्द ना रसना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्त साजण वेख वखाईआ। सन्त साजण मीतड़ा, गुर सतिगुर वेख वखांयदा। काया चोली रंगे चीथड़ा, लाल गुलाला रंग वखांयदा। गुरमुख मनमुख वेखे कौड़ा रीठड़ा, घट घट आपणा आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लेख वखांयदा। हरिजन लेखा चुक्या, सतिगुर पूरा आप चुकांयदा। चारों कुंट रहिण ना देवे किते लुकया, पूर्ब लहिणा वेख वखांयदा। सन्त सतिगुर बूटा कदे ना सुक्कया, अमृत सिंच हरा करांयदा।

कलिजुग वेला अन्तिम ढुक्कया, लक्ख चुरासी रो रो सर्ब कुरलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणी गोदी चुक्कया, दरगाह साची धाम बहांयदा।

✻ १४ चेत २०१७ बिक्रमी महिंदर सिँघ दे घर पिण्ड धीरा ज़िला गुरदास पुर ✻

सो पुरख निरँजण एका गावणा, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। हरि पुरख इक्क ध्यावणा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। एकँकारा वेख वखावणा, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। आदि निरँजण इक्क जगावणा, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। श्री भगवान दर्शन एका पावणा, दूसर राह ना कोए तकाईआ। अबिनाशी करता घर बहावणा, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ मेल मिलावणा, विछड़ कदे ना जाईआ। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहावणा, उच्च महल्ल अटल मुनार सोभा पाईआ। थिर घर वासी रंग रंगावणा, रंग रंगीला बेपरवाहीआ। शब्द अनादी ढोला एका गावणा, नाद धुन आप सुणाईआ। ब्रह्मा वेद हरि खोज खुजावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। पुरख अकाल बेपरवाह, आदि जुगादि समाया। वसणहारा निहचल धाम अथाह, आप आपणा रूप उपाया। शाहो भूप आप अख्वा, तख्त निवासी खेल खलाया। शब्दी शब्द हुक्म दए जणा, धुर फ़रमाणा आप सुणाया। साचा राणा डेरा ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क वड्याआ। दर घर साचा सोभावन्त, सचखण्ड दुआर वड्डी वड्याईआ। हरि हरि बैठा एका कन्त, नर नरायण आप अख्वाईआ। हरि पुरख निरँजण मेल मिलावा साचे कन्त, दरगाह साची सोभा पाईआ। एकँकारा महिमा अगणत, भेव अभेद छुपाईआ। अबिनाशी करता जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणी कार कराईआ। श्री भगवान मेल मिलाए साचे सन्त, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। पारब्रह्म आप जणाए आपणी बणत, अक्खर वक्खर नाम पढ़ाईआ। लेखा जाणे जीव जंत, लक्ख चुरासी आप सुहाईआ। त्रैगुण माया पाए बेअन्त, नेत्र नैण दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा एकँकारा उच्च महल्ल अटल मुनारा आप सुहाईआ। सच मुनारा वसया, बैठा हरि हरि एकँकार। एकँकारा बिन हरिभगतां किसे ना दिसया, लक्ख चुरासी करे वीचार। जुगा जुगन्तर फिरे नस्सया, निरगुण सरगुण ल्ए अवतार। जन हरि हरिजन हर हिरदे अंदर आपे वसया, अमृत आत्म बख्शे ठंडी ठार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे सच दरबार। सच दरबार सुहञ्जणा, सतिगुर साचा आप सुहाए। दीपक दीप जगाए आदि निरँजणा, नूर नुराना डगमगाए। घर मेला साचे सज्जणा, पुरख अबिनाशी संग निभाए। नाद

अनादी एका वज्जणा, अनहद साची सेव कमाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर बंक वेख वखाए। बंक दुआरा हरि सुहांयदा, रूप अनूप आप करतार। साचे मन्दिर सोभा पांयदा, सच तख्त बैठे सच्ची सरकार। पुरख अकाल नाउँ धरांयदा, जोती जोत बेऐब परवरदिगार। गगन मंडल रचन रचांयदा, पुरीआं लोआं बन्ने धार। ब्रह्मा विष्न शिव सेव करांयदा, त्रैगुण माया दए भण्डार। अंदर बाहर आप अख्वांयदा, सरगुण निरगुण बन्ने धार। पंज तत्त काया गढ़ बणांयदा, घाड़ण घड़े अपर अपार। अंदर वड़ वड़ आसण लांयदा, घर विच घर कर त्यार। आपणी हथ्थीं जिंदा लांयदा, ना कोई तोड़े विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा आप उपजांयदा। घर उपजाया पारब्रह्म, थिर घर वासी दया कमाईआ। आपे अंदर रख्या ब्रह्म, निरगुण रूप ना कोए वखाईआ। आपणे अन्तर आपे पए जम्म, मात पित ना कोए बणाईआ। आप उपजाए आपणा नाम, ना कोई दूसर करे पढ़ाईआ। ना कोई तृष्ना ना कोई ताम, खुशी ग़म ना कोई रखाईआ। ना कोई नगर ना ग्राम, जगत खेड़ा ना वेख वखाईआ। ना कोई रवि ससि तेज देवे भान, मंडल मंडप ना कोई वखाईआ। ना कोई चिल्ला तीर कमान, खड़ग खण्डा कटार ना हथ्थ उठाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, एकँकारा आप अख्वाईआ। सचखण्ड सच तख्त बैठ सुल्तान, दो जहाना हुक्म चलाईआ। शब्द अनादी धुर फ़रमाण, लोकमात आप जणाईआ। जन भगतां देवे साचा दान, आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाईआ। आप आपणी करे कराए सच पछाण, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। दर दुआरे देवे माण, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। एका तूर सुणाए साचे कान, राग रागणी भेव ना पाईआ। जुगा जुगन्तर तोड़े माण अभिमाण, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। सच धर्म झुलाए इक्क निशान, चारों कुंट वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां पाए एका आण, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। दो जहानां हो प्रधान, हरि भगवान आपणा आसण आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच महल्ला एकँकार, निरगुण दीपक कर उज्यार, कमलापाती बैठा मीत मुरार, सच सिँघासण आप सुहाईआ। सच सिँघासण हरि भगवान, आपणा आप सुहांयदा। ना कोई दूसर होर निशान, सगला संग ना कोए रखांयदा। ना कोई गोपी ना कोई काहन, मंडल रास ना कोए रचांयदा। ना कोई सीता ना कोई राम, बनवास फेरा ना कोई पांयदा। ना कोई शब्द धुन ना कोई करे प्रनाम, निउँ निउँ सीस ना कोई झुकांयदा। ना कोई पीण ना कोई खाण, तन बस्त्र ना कोई हंढांयदा। ना कोई जगत अक्खर सुणाए कान, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोई हिलांयदा। ना कोई दाता दानी देवे दान, अग्गे झोली ना कोए रखांयदा। सचखण्ड दुआरे इक्क मेहरवान, आपणी भिच्छया आपे पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, आपे वसे

सच महल्ला, दर घर साचा आप सुहांयदा। दर घर साचा थिर दुआर, दर दरवाज़ा आप खुलाईआ। ग़रीब निवाज़ा वेखणहार, आपणी दिशा आपे वेख वखाईआ। उतर पूर्ब पच्छिम दक्खण ना सके विचार, दहि दिशा ना रूप वटाईआ। जेरज अंडज उत्भुज सेत्ज ना कोए पसार, खाणी बाणी ना कोए वखाईआ। अकथ कथणी गाए आप निरँकार, वेद कतेब भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, एका बैठा हरि नर श्री भगवन्त, नर हरि नरायण आप अख्वाईआ। घर सुहाया पुरख अगम्म, घर साचे वज्जी वधाईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। आदि जुगादि पवण स्वास ना लए दम, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह वड वड्याईआ। ना कोई पिता ना कोई माँ, बालक गोद ना कोए उठाईआ। रसना जिह्वा ना जपे कोई नाँ, आप आपणे विच रिहा समाईआ। आपे वसे साचे थाँ, थान थनंतर आप उपाईआ। जुगा जुगन्तर करे सच न्याँ, कागद कलम ना लिखे किसे शाहीआ। जन भगतां जपाए एका नाँ, घर मन्दिर अंदर आपणा राग आप सुणाईआ। आप उठाए फड़ फड़ बांह, आलस निन्दरा दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क वड्याईआ। दर घर साचा पाया, कर किरपा आप निरँकार। सो पुरख निरँजण आसण लाया, हरि पुरख निरँजण सेवादार। इक्क ओंकारा हुक्म चलाया, आदि निरँजण निरगुण जोत करे उज्यार। श्री भगवान रिहा सुणाया, अबिनाशी करता पावे सार। पारब्रह्म आपणा निउँ निउँ सीस झुकाया, हरि हरि करे ख़बरदार। सन्त साजण वेख वखाया, जुगा जुगन्तर लए अवतार। जगत सागर फोल फुलाया, काया गागर हो उज्यार। साचा वणज सौदागर इक्क कराया, नाम विकाए एका हट्ट बाज़ार। चौदां लोकां मुख भुआया, चौदां तबकां करे ख्वार। लोआं पुरीआं बेड़ा आप चलाया, ब्रह्मण्ड खण्ड उठाए भार। त्रिलोकी नंदन त्रै त्रै वेख वखाया, आपे जाणे आपणी सार। जुग जुग लहिणा आप चुकाया, सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, निरगुण जोत करे उज्यार। लक्ख चुरासी घट घट मन्दिर खोज खुजाया, तख्त निवासी सच्ची सरकार। कर्म कुकर्मा वेख वखाया, मन मति बुध ना पावे सार। गुरमुख साचे धन्दे लाया, एका बख्शे नाम प्यार। मनमुख अन्धे गूढ़ी नींद सुआया, नाल रलाया काम क्रोध लोभ मोह हँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे सच दुआर। सच दुआरा हरि पुरख रिहा खोल्हया, आदि अन्त समाए। सो पुरख आपे बोलया, शब्द अनादी डंक वजाए। हरि पुरख वसे कोलया, एका दूजा भेव चुकाए। एकँकारा आपे मौलया, फुल्ल फुलवाड़ी आप महिकाए। आदि निरँजण कदे ना डोलया, अडुल अडोल आप हो जाए। श्री भगवान तोले साचा तोलया, नाम कंडा हथ्थ उठाए। पुरख अबिनाशी बणया गोलया, साची साचा सेव कमाए।

पारब्रह्म विच विचोलया, शब्दी विचोला नाउँ उपजाए। ब्रह्म पर्दा आपे फोलया, काया मन्दिर वेख वखाए। लेखा जाणे कला सोलया, अकल कल आप रघुराय। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे अमृत नाभी कवलया, निझर झिरना आप झराय। निझर झिरना आप झिरांयदा, हरि सतिगुर सज्जण मीत। अमृत मेघ आप वरसांयदा, काया करे ठंडी सीत। सच प्याला जाम प्यांअदा, करे कराए पतित पुनीत। दीन दयाला दया कमांयदा, आप सुणाए आपणा गीत। पुरख अकाला मेल मिलांयदा, मानस जन्म हरिजन जाए जीत। साची चाला आप चलांयदा, बैठा रहे इक्क अतीत। काल महांकाल चरनां हेठ दबांयदा, एका रंग रंगाए हस्त कीट। सच महल्ला आप वसांयदा, सचखण्ड दुआरा इक्क अनडीठ। गुरमुख साचे आप जगांयदा, आदि जुगादी जुग जुग रीत। काया मन्दिर मस्जिद काअबा आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी परखे नीत। लक्ख चुरासी परखणहारा, एका एक ओअँकारया। जुगा जुगन्तर लए अवतारा, गुर शब्दी नाउँ धरा रिहा। एका घर वसे दोए दोए धारा, धर धरनी सोभा पा रिहा। रवि ससि सूरज चन्न सितारा, मंडल मंडप सर्ब कुरला रिहा। शंकर रोवे ज़ारो ज़ारा, बाशक तशका गलों सुटा रिहा। ब्रह्मा मंगे वारो वारा, चारे मुख इक्क सालाह रिहा। विष्नूं सांगोपांग तजे सेज दोए जोड़ करे निमस्कारा, चरन कँवल ध्यान लगा रिहा। बाशक सहँसर मुख गाए आपणी वारा, दोए सहँसर जिह्वा आप हिला ल्या। हरि का भेव अगम्म अपारा, अलक्ख निरँजण लेख ना किसे लिखा ल्या। सति पुरख निरँजण हो उज्यारा, घर साचे आप सुहा रिहा। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, जोती जामा भेख वटा रिहा। वरन गोती वसे बाहरा, ज़ात पात ना कोए रखा ल्या। पंज तत्त ना करे प्यारा, मन मति बुध ना मेल मिला ल्या। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, पुरख अगम्मड़ा आप सुणा रिहा। नौ खण्ड पृथ्मी पावणहारा सारा, सारंगधर नाउँ धरा रिहा। गुरमुख सज्जण लाए पारा, शब्द धार ना कोई रुढ़ा ल्या। जोती जोत नूर उज्यारा, निहकलंका नाउँ रखा ल्या। सम्बल नगरी धाम न्यारा, एकँकारा आसण ला रिहा। वेद व्यासा बण लिखारा, उच्चा टिल्ला पर्बत इक्क सुहा रिहा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, आपे वसे धाम न्यारा, उच्चा पौड़ा आप लगा रिहा। अन्तिम वेखे जगत अखाड़ा, लक्ख चुरासी भेड़ भिड़ा रिहा। शब्द अगम्मी रक्खे धाड़ा, शाह सुल्तानां मेट मिटा रिहा। गुरसिख बणाए साचा लाड़ा, सिर आपणा हथ्थ टिका रिहा। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, पंचम पंचम देवे शब्द धुन्कारा, धुन आत्मक आप सुणा रिहा। अंदरे अंदर दरस गुर मीत मुरारा, जगत नेत्र बन्द करा रिहा। तीजा नैण खोल्ह किवाड़ा, हरिजन साचे सच समझा ल्या। चौथे पद मीत मुरारा, आप आपणा संग वखा रिहा। पंचम बोल इक्क जैकारा, ब्रह्म पारब्रह्म समा रिहा। आत्म सेजा कर प्यारा, शब्दी सुरती

रंग लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरसिख देवे साचा वर, नाम निधाना हरि भगवाना एका वस्त काया मन्दिर अंदर डूँघी कंदर सच साची झोली आप भरा रिहा।

✻ १४ चेत २०१७ बिक्रमी महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड दईआ ज़िला गुरदास पुर ✻

दीनां नाथ दर्द दुःख भञ्जण, दीन दयाल आप अख्वांयदा। ग़रीब निमाणयां साचा सज्जण, सतिगुर साचा सेव कमांयदा। कलिजुग अन्त कराए एका मजन, दूजा ताल ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। दीना नाथ अनाथां नाथ, सगला संग रखाईआ। सर्ब वस्त प्रभ रक्खे साथ, जुग जुग आप वरताईआ। लहिणा देण चुकाए मस्तक माथ, पूर्ब जन्मां वेख वखाईआ। धर्म राए ना फोले खात, खाता वही ना कोए वखाईआ। जिस जन सुणाए आपणी गाथ, सोहँ ढोला एका गाईआ। लेख चुकाए मस्तक माथ, बिधना लेखा दए मिटाईआ। करे कराए पूरा घाट, नाम भण्डारा इक्क वरताईआ। हरि मन्दिर वखाए साच हाट, चरन दुआरा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन दीन दयाल दया कमाईआ। दीना नाथ दयाल गुर सतिगुर, हरि पुरख निरँजण दया कमांयदा। मेल मिलाए लिख्या धुर, धुर मस्तक वेख वखांयदा। जगत जुगत घर जाए बौहड़, आप आपणा भेव खुलांयदा। दरदीआं दर्द वण्डाए दौड़, दुःख दलिद्र मेट मिटांयदा। मिठ्ठा रस करे रीठा कौड़, अमृत फल आप पकांयदा। चरन प्रीती साची जोड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीना बंधप नाम धरांयदा। दीना बंधप दयानिध सागर, गहर गम्भीर समाया। आदि जुगादी आपे जाणे आपणी बिध, पुरख बिधाता भेव ना राया। नाथ अनाथां करे कारज सिद्ध, साची आस झोली पाया। आत्म अन्तर देवे विध, तीर निराला बाण चलाया। दर भिखार कराए नव निध, निउँ निउँ बैठी सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सगला संग आप निभाया। सगला संग सर्ब गुर दीना, गुरमुख आप रखांयदा। काया चोली चाढ़े रंग भीन्ना, तन मन हरया आप करांयदा। लेखा चुकाए त्रैगुण तीनां, लोक परलोक आप सुहांयदा। तृखा मिटाए जिउँ जल मीना, अमृत मेघ इक्क बरसांयदा। दिवस रैण ठांडा सीना, हरि शब्दी शब्द वखांयदा। धुनी वज्जे अगम्मी बीना, बिनै बेनन्ती लेखे लांयदा। आपणे हथ्थ रखाए मरना जीणा, जीवण मुक्त आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल आप अख्वांयदा। दीन दयाल सर्ब सुख दाता, हरिजन साचे लए तराईआ। नाम चढ़ाए साचे राथा, रथ्थ रथवाही सेव कमाईआ। एका अक्खर कराए पूजा पाठा, सोहँ शब्द वड वड्याईआ।

करे कराए पूरा घाटा, पिछला लेखा रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ धराईआ। सिर रक्खे हथ्थ करतार, दीन दुनी वेख वखांयदा। समरथ पुरख खेल अपार, गुण अवगुणी भेव ना आंयदा। वरते वरतावे विच संसार, लक्ख चुरासी छाणी पुणी, गुरमुख साचे बाहर कढांयदा। इक्क पुकार हरि निरँकार सुणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे रंग रंगांयदा। रंग रंगाए हरि मजीठ, काया चोली अपर अपारया। रसना जिह्वा नाम जपाए एका मीठ, गुणवन्ता वड भण्डारया। काया करे ठंडी सीत, सीतल धारा मुख चुआ रिहा। माणस जन्म जन जाए जीत, जो जन सतिगुर पूरे नेत्र दर्शन पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए पतित पुनीत, पतित पुनीत पतित पावण आपणा बिरद आप रखा रिहा।

❊ १४ चेत्र २०१७ बिक्रमी मोहण सिंघ दे घर पिण्ड तारा चक्क ज़िला गुरदास पुर ❊

हरि शब्द विचोला लोकमात, जुग जुग विछड़े मेल मिलाईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, सतिगुर साचा चन्द चढ़ाईआ। चरन प्रीती बख्शे एका दात, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। दरस दिखाए इक्क इकांत, नूर नुराना बेपरवाहीआ। उत्तम रक्खे गुरसिख ज़ात, ब्रह्म पारब्रह्म वखाईआ। नाम जणाए आपणी गाथ, साची सिख्या सिख समझाईआ। आदि जुगादि रक्खे साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। लहिणा देण चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, कलिजुग वेखे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा आप गणाईआ। लेखा लिखणहार गोपाला, पुरख अबिनाशी आप रखांयदा। काया मन्दिर वेखे सच सच्ची धर्मसाला, घर मन्दिर सोभा पांयदा। शब्द वजाए साचा ताला, ताल तलवाड़ा ना कोए वखांयदा। तोड़णहारा जगत जंजाला, जागरत जोत इक्क जगांयदा। शब्द सरूपी बण दलाला, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। फल लगाए साचे डाला, अमृत मेवा आप खुआंयदा। लक्ख चुरासी तोड़ जंजाला, जन्म मरन फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग समांयदा। साचा रंग समाया हरिजन पूत, सतिगुर साचा मेल मिलांयदा। पुरख अबिनाशी पावे सार चारे कूट, दहि दिशा फोल फुलांयदा। नाता तोड़े जूठ झूठ, सच सुच्च इक्क वखांयदा। आप सुहाए आपणी रुत्त, फुल्ल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचा पेख्या, पेखणहार करतार। त्रैगुण माया वेखे भेख्या, पंज तत्त पावे सार। लक्ख चुरासी लिखे लेखया, लेख लिखावणहार आप करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन

साचे लए उभार। हरिजन साचा सच घर, हरि साचा सच बहांयदा। सतिगुर पूरा एका वर, गुर झोली नाम भरांयदा। आवण जावण चुक्के डर, जम का दंड ना कोए वखांयदा। आपणे मन्दिर आपे चढ़, गुरसिख साचे आप जगांयदा। शब्द फड़ाए साचा लड़, एका पल्लू गंढु दुआंयदा। काया मन्दिर बैठा वड़, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख विरला लए फड़, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। किला कोट हँकारी गढ़, हउमे बुरज आपे ढांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साच सालांहयदा। हरिजन सच सालाहया, हरि सतिगुर पुरख सुजाण। कर किरपा दरस दिखाया, वड दाता वड मेहरवान। घर मन्दिर वेख वखाया, लेखा चुक्के सुंञ मसाण। हरि मन्दिर जोत जगाया, जोती नूरो नूर नुरान। अमृत धारा इक्क वहाया, जल भर श्री भगवान। साचा शब्दी नाद वजाया, अनहद वजाए सच्ची धुनकान। दर घर साचे बह बह मंगल गाया, राग नाद होए हैरान। आत्म सेजा तख्त सुहाया, तख्त निवासी साचा काहन। सुरत सुआणी मेल मिलाया, शब्द मिलावा हाणी हाण। एका धाम दए वसाया, घर मन्दिर सच मकान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साची नारी कर परवान। गुरमुख नारी नर नरायण हरि पाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। कन्त कन्तूहला वेखण आया, निरगुण रूप बेपरवाहीआ। नाम रसालू रंग रंगाया, वेस अवल्लड़ा आप कराईआ। दीन दयालू भेव खुल्हाया, आपणा पर्दा दए चुकाईआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए प्रनाईआ। हरिजन साचा नार सुहागण, घर कन्त सुहागी पाया। जन्म जन्म दा धोया दागण, दुरमति मैल गुआया। हँस बणया घर साचे कागण, सर सरोवर एका नुहाया। दीपक जोत जगे चरागण, अन्ध अन्धेर मिटाया। उपजे शब्द मन बैरागण, मन मनसा दए मिटाया। सतिगुर पूरे जो जन सरनाई लागण, संसा रोग दए मिटाया। जगत तृष्ना बुझाए आगण, तत्व तत्त ना कोए सताया। माया डस्से ना डस्सणी नागण, विकार हँकारा नेड़ ना आया। गुरमुख विरले सोए जागण, जिस जन हरि हरि आप जगाया। चरन धूढ़ कराए सच्चा माघण, अमृत जल आप भराया। गुर की महिमा गाए रागणी रागण, वेद पुराण रहे जस गाया। जिस जन हरि हरि कन्त पाया सो सुभागण, घर मन्दिर दए सुहाया। सच स्वामी शब्द अगम्मी मारे वाजण, आप आपणा हुक्म अल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले सहिज सुभाया। सहिज सुभाउ मेल हरि, ग़रीब निमाणे लए तराईआ। इक्क वखाए साचा दर, दरबार साचे सोभा पाईआ। ना पुरख ना दिसे नार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। आपणी करनी रिहा कर, आदि जुगादि वेस वटाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, जुग जुग आपणा खेल खलाईआ। निर्भय रूप ना जाए डर, भय भयानक ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल आपणी करनी करता कर, दूसर लए ना कोए

सलाहीआ। जो जन सरनाई जाए पड़, सरनगत इक्क वखाईआ। आपणी किरपा आपे कर, कर्म कुकर्मा लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माया बन्धन देवे तोड़, सुरती शब्दी देवे जोड़, नाम चढ़ाए साचे घोड़, बांकी चाल इक्क रखाईआ। शब्द घोड़ शाह सवारा, हरि सति पुरख निरँजण आसण लांयदा। गुरमुख मिलाए अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। खिच्ची आए वारो वारा, दिवस रैण सेव कमांयदा। लक्ख चुरासी पावे सारा, घर घर मन्दिर खोज खुजांयदा। हरिजन आपणी हथ्थीं कढ्ढे आपे बाहरा, साचा नाअरा इक्क सुणांयदा। साचा वणज कराए नाम वणजारा, कलिजुग एका हट्ट खुलांयदा। चार वरनां सच प्यारा, ऊँचां नीचां मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां देवे इक्क दुआरा, चरन सरन सरन चरन साचा धाम वखांयदा।

❋ १४ चेत २०१७ बिक्रमी बख्शीश सिँघ दे घर दया होई कादर अबाद ज़िला अमृतसर ❋

४५६
०६

साहिब सच्चा सो आखीए, आदि जुगादि समाए। साहिब सच्चा सो भाखीए, निरगुण सरगुण रूप वटाए। साहिब सच्चा अलक्खणा अलाखीए, लेखा लिख ना सके कोई राए। साहिब सच्चा सगला साथीए, जुगा जुगन्तर वेख वखाए। साहिब सच्चा पुरख समराथीए, एकँकार नाउँ धराए। साहिब सच्चा सुणाए सच्ची गाथीए, सो पुरख निरँजण नाउँ उपजाए। साहिब सच्चा इक्क जणाए पूजा पाठीए, हँ ब्रह्म मेल मिलाए। साहिब सच्चा चलाए सच्चा राथीए, हरिजन साचे लए चढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता इक्क अख्वाए। साहिब सच्चा पाईए, हरि सतिगुर गहर गम्भीर। साहिब सच्चा वेख वखाईए, सांतक करे सति सरीर। साहिब सच्चा घर साचे आप बहाईए, बिरहों विछोड़ा कट्टे पीड़। साहिब सच्चा दरगाह सच्ची दर्शन पाईए, लक्ख चुरासी कट्टे ज़ंजीर। साहिब सच्चा सचखण्ड निवासी इक्क ध्याईए, अमृत बख्शे ठांडा सीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वड दाता दानी गुणी गहीर। साहिब सच्चा सुल्तान, पारब्रह्म अख्वांयदा। साहिब सच्चा मेहरवान, सतिगुर नाउँ धरांयदा। साहिब सच्चा मेहरवान, साचे तख्त आसण लांयदा। साहिब सच्चा मेहरवान, राज जोग आप कमांयदा। साहिब सच्चा मेहरवान, साचा हुक्म आप सुणांयदा। साहिब सच्चा मेहरवान, तख्त निवासी वेस वटांयदा। साहिब सच्चा मेहरवान, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। साहिब सच्चा हरि एका काहन, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। साहिब सच्चा हरि एका राम, सीता सुरती सर्ब प्रणांयदा। साहिब सच्चा हरि एका जाण, हरिजन साचे मात तरांयदा। साहिब सच्चा इक्क पछाण, माण निमाणयां आप अख्वांयदा। साहिब सच्चा एका देवे दानी दान, साची

वस्त झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वड दाता आप अख्वांयदा। साहिब सच्चा सूरबीर, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। साहिब सच्चा वड पीरन पीर, शहनशाह आप अख्वाईआ। साहिब सच्चा दो जहाना घत्ते वहीर, लोआं पुरीआं दए हिलाईआ। साहिब सच्चा लेखा जाणे पीर फकीर, दस्तगीर वेख वखाईआ। साहिब सच्चा आपणे रंग रंगाए शाह हकीर, हक हकीकत दए सालाहीआ। साहिब सच्चा बेनज़ीर, लिख सके ना कोई छाईआ। साहिब सच्चा मेटे तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। साहिब सच्चा आपे जाणे आपणी तकसीर, तसवीर किसे ना हथ्थ फड़ाईआ। साहिब सच्चा कट्टणहार ज़ंजीर, ज़ोरू ज़र रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सुल्तान आप अख्वाईआ। साहिब सच्चा मेहरवान, हरि पुरख निरँजण आप अख्वांयदा। साहिब सच्चा झुलाए सच निशान, दरगाह साची आप चढ़ांयदा। साहिब सच्चा एका देवे धुर फ़रमाण, ब्रह्मा विष्न शिव आप समझांयदा। साहिब सच्चा जन भगतां रक्खे साचा माण, लोकमात वेख वखांयदा। साहिब सच्चा जाणी जाण, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दरगाह साची सोभा पांयदा। साहिब सच्चा गुणी गहीर, पातशाह सिर शाह अख्वाईआ। सतिगुर सच्चा हरिजन साचे करे सांत सरीर, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। साहिब सच्चा अमृत जाम प्याए साचा नीर, निर्मल आपणा रूप दरसाईआ। साहिब सच्चा साचा शब्द तन पहनाए बस्त्र चीर, सच कटार हथ्थ फड़ाईआ। साहिब सच्चा कट्टणहारा भीड़, आदि अन्त होए सहाईआ। साहिब सच्चा बन्नृणहारा बीड़, गुण अवगुण ना कोए जणाईआ। साहिब सच्चा एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना वेख वखाईआ। साहिब सच्चा वसे धाम अनडीठ, थिर घर वासी बैठा आसण लाईआ। साहिब सच्चा गुरमुख मिलाए साचा मीत, घर साचे वज्जे वधाईआ। साहिब सच्चा इक्क सुणाए सुहागी गीत, सोहँ अक्खर वक्खर जगत पढ़ाईआ। साहिब सच्चा करे कराए पतित पुनीत, कोटन कोटि लए तराईआ। साहिब सच्चा हरि सन्तन वसे आपे चीत, चेतन्न रूप आप कराईआ। साहिब सच्चा आदि जुगादि ठंडा सीत, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। साहिब सच्चा हरि भगवन्त, भगवन खेल खिलांयदा। साहिब सच्चा हरि साचा कन्त, गुरमुख नारी आप प्रनांयदा। साहिब सच्चा काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, नाम मजीठी रंग रंगांयदा। साहिब सच्चा हरि बेअन्त, भेव कोए ना पांयदा। साहिब सच्चा महिमा अगणत, अलक्ख निरँजण अलक्ख अलक्खणा आप अख्वांयदा। सच्चा साहिब आदि अन्त, जुग जुग आपणा वेस धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी रचन रचांयदा। आदि जुगादी वसया, हरि साचा सच समाए। जुगा जुगन्तर वेखे खेल तमासया, दो जहानां

फेरी पाए। निरगुण जोत कर प्रकाश्या, अज्ञान अन्धेरा आप मिटाए। हरिजन भगतां होए दासी दासया, सन्त साजण मेल मिलाए। लेखा जाणे पृथ्मी अकाश्या, गगन गगनंतर फोल फुलाए। गुरमुख हिरदे अंदर रक्खे वासया, घर मन्दिर डेरा लाए। सतिगुर पूरा शाहो शाबासया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता आप अख्वाए। जुग करता खेल खिलांयदा, जुगा जुगन्तर बन्ने धार। रूप अनूपा आप वटांयदा, पुरख अबिनाशी अगम्म अपार। निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा, एका रूप गुर अवतार। साचा डंका शब्द वजांयदा, लोआं पुरीआं करे ख़बरदार। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा, कलिजुग अन्तिम आई हार। चारों कुंट अन्धेरा छांयदा, रवि ससि होए शर्मसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वरते आपणा वरतार। सच वरतार वरतावण आया, निहकलंक बली बलवाना। कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकावण आया, मारे शब्दी तीर निशाना। सतिजुग साचा चन्द चढ़ावण आया, सति सरूपी बन्ने गानां। चार वरनां एका घर बहावण आया, देवे नाम गुण निधाना। ऊँचां नीचां मेल मिलावण आया, इक्क वखाए पद निरबाना। सोहँ अक्खर आप पढ़ावण आया, सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाणा। रोड़ी सक्खर वेख वखावण आया, कृपानिध श्री भगवाना। कलिजुग पत्थर भन्न वखावण आया, जूठा झूठा मिटे निशाना। लक्ख चुरासी सथ्थर आप विछावण आया, चारों कुंट सुंञ मसाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल दो जहाना। दो जहाना खेल अगम्मड़ा, हरि साचा सच करांयदा। हरिजन फड़ाए आपणा पल्लड़ा, लोकमात वेख वखांयदा। शब्द सुनेहड़ा एका घल्लड़ा, आप आपणा हुक्म अल्लांयदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण आत्म सेजा एका मलड़ा, जगत नेत्र दिस ना आंयदा। बैठा रहे इक्क इकल्लड़ा, इक्क ओंकारा नाउँ धरांयदा। सतिजुग मार्ग दस्से इक्क सुखलड़ा, एका वस्त नाम अमोलक झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। सतिजुग नाम साचा हरि, हरि एका अक्खर आप पढ़ाईआ। लोकमात आपे धर, धर धरती धवल दए सुहाईआ। आपणी करनी करता आपे कर कर, आपणी कीमत आपे पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क वखाए साचा सर, सर चरन दुआरा वड वड्याईआ। गुरमुख सुहेले आपणी हथ्थीं फड़ फड़, दर घर साचे मेल मिलाईआ। निज आत्म पौड़े आपे चढ़ चढ़, सोए सन्त लए उठाईआ। आपे तोड़ हँकारी गढ़ गढ़, किला कोट ना कोए वखाईआ। आपणी अग्न आपे सड़ सड़, गुरमुखां अग्ग रिहा बुझाईआ। आपणा नाता तोड़ सीस धड़ धड़, गुरमुख सीस धड़ होए सहाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़ खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़ पढ़, हरिसंगत साची करे इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मात लए तराईआ। हरि पढ़ाए सच सलोक, महिमा अगणत गिणी

ना जाईआ। गुरसिख तेरे चरन चुम्मे मुक्त मोख, प्रभ साचा देवे दर दुरकाईआ। तेरा राह तक्कण तिन्ने लोक, चौदां हट्ट नैण उठाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव गायण इक्क सलोक, करोड़ तेतीसा करे पढ़ाईआ। राए धर्म ना सके कदे रोक, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा मार्ग इक्क वखाईआ। सतिजुग मार्ग लावणा, हरि साचा बेपरवाह। एका शब्द जहाज़ चलावणा, पुरख अबिनाशी बण मलाह, एका चप्पू हथ्थ उठावणा, नाम नामा लए वखा। चारे कुंट आप फिरावणा, दहि दिशा फेरी पा। गुरमुख साचा आप जगावणा, शब्द हलूणा देवे ला। अमृत जाम इक्क प्यावणा, भर प्याला मुख दए छका, गीत सुहागी इक्क सुणावणा, सोहँ ढोला आपे गा। कागों हँस आप बणावणा, सर सरोवर सच नुहा। जन्म जन्म दा दाग़ मिटावणा, दुरमति मैल दए गंवा। नाम वैराग इक्क लगावणा, बिरहों तीर निराला दए चला। साक सैण आप अख्वावणा, आपे बणे पिता माँ। बाल अंञाणे गोद उठावणा, सिर रक्खे ठंडी छाँ। साचे तख्त आप बहावणा, करे कराए सच न्याँ। दरगाह साची माण दवावणा, निथावयां देवे आपणा थाँ। सतिजुग साचा संग निभावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाह। सतिजुग साचा चन्द चढ़ाउँणा, सीतल सति करे रुशनाईआ। गुरमुख नूर नुराना आप चमकाउँणा, जोती नूर नूर सवाईआ। नेत्र नैण आप मटकाउँणा, नैण मुँधार वेख वखाईआ। छैल छबीला आप उपजावणा, साचा जोबन इक्क वखाईआ। चार वरन कबीला इक्क बनाउँणा, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। पीला दस्तार सीस आप बंधाउँणा, लक्ख चुरासी सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे करे कुड़माईआ। सतिजुग साचा सोहणा, सुहाए बंक दुआर। पुरख अबिनाशी हर घट मन मनूआ आपे मोहणा, आप आपणी किरपा धार। साचा ढोला एका गाउँणा, निरगुण बोल शब्द जैकार। मनमुख किसे ना मिले सेजे सौणा, शब्द अगम्मी मारे मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग खोल्हे सच किवाड़। सच किवाड़ा खोल्हणा, प्रभ आपणी किरपा धार। लक्ख चुरासी जग विरोलणा, गुरमुख साचे लए उभार। एका कंडे नाम तोलणा, दूसर वट्टा ना रक्खे विच संसार। लक्ख चुरासी पर्दा फोलणा, साधां सन्तां पावे सार। गुरमुख विरला लाल अमोलणा, कीमत करता पाए आपणी वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच जैकारा एका बोलणा, सो पुरख निरँजण हरि निरँकार। हरि निरँकारा सतिजुग धारा, आपणी आप चलाईआ। आपे वरते आपणी कारा, वड दाता बेपरवाहीआ। जीवां जंतां करे सच प्यारा, घर साचे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह वखाईआ। सतिजुग मार्ग साचा पन्थ, सति पुरख निरँजण आप चलाईआ। आपे पूजा पाठ होए वेद शास्त्र सिमरत

ग्रन्थ, आपणे नाम करे पढ़ाईआ। आपे आपणा नाद वजाए साचा संख, आपणी बांग अज़ान आप अल्लाईआ। आपे हँस होए उडे पंख, मच्छ कच्छ जल धारा आप सुहाईआ। आपे गाए मुख सहँस, आपणी जिह्वा आप हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे सोभा पाईआ। सतिजुग साचे साचा गुण, हरि साचा विच टिकांयदा। सर्ब व्यापी सर्ब पुकार ल्ए सुण, दिवस रैण राह तकांयदा। सन्त साजण आपे चुण, आप आपणे रंग रंगांयदा। करे कराए छाण पुण, जगत छाछ वरोल वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा साचा राह, पुरख अबिनाशी बण मलाह, लोकमात आप चलांयदा। लोकमात साची धार, हरि साचा आप चलाईआ। एका डंका वज्जे विच संसार, एका छत्र सीस झुलाईआ। एका राज राजान होए सिक्दार, शाह सुल्तान इक्क अख्वाईआ। एका देवे धुर फ़रमाण, एका शब्द नाम पढ़ाईआ। एका हुक्मी हुक्म वरते वरतार, दूसर होर ना कोए सालाहीआ। एका मन्दिर मस्जिद गुरूदुआर, शिवदुआला मठ्ठ मसीत इक्क वखाईआ। एका राग नाद वजाए सितार, सारंग सारंगा आप हिलाईआ। एका गावत गाए आपणी वार, पउड़ी गउड़ी आप अल्लाईआ। एका वसे सच मुनार, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा वेख वखाईआ। सतिजुग साचा जाए लग्ग, हरि साचे साच लगावणा। जन भगतां दरस दिखाए उप्पर शाह रग, दिवस रैण एका रंग रंगावणा। इक्क वखाए चौथा पद, परम पुरख मेल मिलावणा। पंचम शब्द वजाए नद, नाना रूप आप वटावणा। आपे जाणे पार किनारा आपणी हद्द, ब्रह्मादि खोज खुजावणा। आपे गाए शब्द बोध अगाध, खाणी बाणी भेव ना पावणा। आपे रंग रंगाए सन्त साध, भगत भगवन्त आप अख्वावणा। आपे रूप वटाए मोहन माधव माध, मुकंद मनोहर लक्ख़मी नरायण खेल खिलावणा। आप सुणे सर्ब फरयाद, साचे तख्त आप सोहावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा रंग रंगावणा। सतिजुग साचा रंग अपार, चार वरनां आप चढ़ाईआ। नाता तुटे काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। हउमे हंगता देवे मार, जगत तृष्ना भुक्ख गुआईआ। साचे शब्द करे प्यार, हँ ब्रह्म वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे वर, राउ रंक ना कोए वखाईआ। राउ रंक एका रंग, हरि साचा आप रंगांयदा। पुरख अबिनाशी सूरा सरबंग, सगला संग निभांयदा। नाम वजाए इक्क मृदंग, ब्रह्मण्ड खण्ड आप सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा आपे लँघ, साचे तख्त चरन टिकांयदा। दूई द्वैती ढाए कंध, भाण्डा भरम भउ भनांयदा। इक्क उपजाए परमानंद, निज आत्म रस चुआंयदा। जीव जंत रसना कोए ना लाए मदिरा मास गंद, सोहँ सो साचा जाप जपांयदा। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दी तोड़ दया कमांयदा। हरिजन

चढ़ाए साचे चन्द, लोकमात आप रुशनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा सच समांयदा। सतिजुग अंदर सच धर, सच साचा वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी देवे वर, घर साचे वस्त टिकाईआ। जगत जहान चुक्के डर, जीव जीव ना कोए तरसाईआ। सो पुरख निरँजण किरपा कर, मनमति दए गुआईआ। गुरमति साची अग्गे धर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरनां दए समझाईआ। चार वरन अठारां बरन आप समझाउँणा, साची सिख्या सिख समझांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ना किसे अख्वाउँणा, आत्म ब्रह्म सर्ब वखांयदा। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पन्ध मुकाउँणा, ज़ात पात मेट मिटांयदा। अक्खर वक्खर एका जाप जपाउँणा, दोए दोए रूप वटांयदा। निरगुण सरगुण मेल मिलाउणा, मेल मिलावा आपणे हत्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा खेल खिलांयदा। सतिजुग साचा वरते वरतंत, सो पुरख निरँजण आप वरताईआ। एका नाता जीव जंत, सगल सृष्टी भैण भाईआ। नारी मेला साचे कन्त, दूसर नैण ना कोए उठाईआ। हरि का नाम ना मंगण जाए कोई बण बण मंगत, हट्टो हट्ट ना कोए वखाईआ। साची बणाए हरि हरिसंगत, हरि की पौड़ी आप चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा वेख वखाईआ। सतिजुग साची एका गोत, पुरख अबिनाशी आप उपांयदा। निरगुण मेला साची जोत, जोती जोत खेल खिलांयदा। तन नगारे शब्दी चोट, अगम्म अगम्मड़ा आप लगांयदा। कोए ना रक्खे वासना खोट, माया ममता ना कोए प्रनांयदा। कोए ना पीवे पोस्त घोट, मदि प्याला ना हत्थ उठांयदा। कोए ना दर दर मंगे रोट, दर दरवेश ना कोए अख्वांयदा। ना कोई भुन्ने कबाब बोटी बोट, रसना जिह्वा ना कोए हलकांयदा। कोई ना सोए कर कर बन्द सोत, पुरख अबिनाशी घर घर दरस दखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका लांयदा। ना कोई हवन ना कोई धूप, दीवा बत्ती ना कोए जलाईआ। ना कोई सिल पाथर पाहन लए पूज, ब्रह्मा विष्न शिव गणेश ना कोए मनाईआ। ना कोई शस्त्र खण्डे जाए झूझ, तीर कमान ना कोए चलाईआ। पुरख निरँजण एकँकारा लक्ख चुरासी आपे लए बूझ, साची सूझ आपणे हत्थ रखाईआ। नेत्र नैण उठा ना कोई वेखे चन्द दूज तीज, घर घर चन्द्रमा प्रकाश कराईआ। गुरमुख सज्जण जाए पतीज, पीआ प्रीतम घर विच पाईआ। आपे करे साची रीझ, गुरमुख सच श्रंगार इक्क वखाईआ। दिवस रैण बैठा रहे अग्गे दर दहिलीज, आप आपणी सेव कमाईआ। हरिजन चरन कँवल जन जाए भीज, अमृत मेघ आप बरसाईआ। साची रुत्तड़ी एका बीज देवे बीज, काया धरती हल्ल चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग सच फुलवाड़ी आप महिकाईआ। सतिजुग बूटा लाए फुल्ल, गुरमुख

साचा बीज बजांयदा। पुरख अबिनशी कदे ना जाए भुल्ल, जुग जुग आपणी रचन रचांयदा। करे खेल अमोल अमुल, अमोलक आपणी वस्त टिकांयदा। आदि अन्त पावणहारा साचा मुल्ल, लक्ख करोड़ी ना कोए चुकांयदा। निरगुण कंडे तोले तोल, सरगुण हथ्थ ना कोए वखांयदा। सतिजुग उपजाए आपणी कुल, विश्व आपणी धार चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सगला संग आप रखांयदा। सगला संग पुरख बिधाता, सतिजुग साचे आप निभाईआ। आपे देवे आपणी दाता, दाता दानी सेव कमाईआ। आप सुणाए आपणी गाथा, वाह वा गुरू वड वड्याईआ। आपे जाणे पूजा पाठा, नाम सति सति पढ़ाईआ। आपे पूरा करे घाटा, साचा तोला बेपरवाहीआ। ना कोई दिसे तीर्थ ताटा, अठसठ रहिण ना पाईआ। भाग लगाए काया माटा, सर सरोवर इक्क वखाईआ। दरस दिखाए साची खाटा, मन्दिर गुरदुआरा ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे साची बणत बणाईआ। सतिजुग साचे साचा गुरूदुआर, हरिजन काया बंक सुहांयदा। अंदर वड़ गुर करतार, आपणा आसण आप वछांयदा। आपे बोले आपणी धार, आपणा वाक आप अलांयदा। आपे पर्दा देवे डार, आपे मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर आप सुहांयदा। घर मन्दिर हरि सुहावणा, पंज तत्त काया कर प्यार। हरि मन्दिर आप बणावणा, इट्टां गारा ना लाए निरँकार। छप्पर छन्न ना कोए रखावणा, ना कोई घाड़ण घड़े जगत सुन्यार। साचा सवरन इक्क चमकावणा, कंचन निउँ निउँ करे निमस्कार। शब्द गुर विच वसावणा, जन्मे मरे ना विच संसार। ग्रन्थी कोई पढ़ण ना लावणा, आपे सुणाए हरि निरँकार। सारंग ढड्ड ना कोए वजावणा, अनहद रक्खे सच्ची धुन्कार। जगत स्टेज ना कोए रखावणा, उत्ते चढ़े ना कोई गंवार। पुरख अबिनाशी आपणा वाक अलावणा, आप आपणी किरपा धार। गुरू ग्रन्थ इक्क वखावणा, जल डोबे ना अग्नी देवे साड़। किसे कागद कलम छाही ना माण दवावणा, निष्अक्खर रूप आप निरँकार। सतिजुग साचे साचा अक्खर इक्क पढ़ावणा, अठ्ठे पहर रक्खे धुन्कार। मन पंखी आपणी डोर आप बंधावणा, दहि दिशा ना करे विचार। मति मतवाली दूजा राह ना कोए तकावणा, चार कुंट ना होए ख्वार। बुध बबेकी आप करावणा, त्रैगुण माया ना देवे साड़। मुल्ला शेख़ मुसायक ना कोए अख्वावणा, पीर दस्तगीर ना दए आधार। पंडत पांधे तिलक ना किसे लगावणा, गल जंजू ना करे शंगार। जगत सुंनत ना किसे करावणा, कट्टे अंग ना होए ख्वार। सूरा सरबंग सतिगुर पूरा इक्क अख्वावणा, करे खेल विच संसार। राजा राणा मेट मिटावणा, ना कोई होवे छत्रधार। दर दरबान ना किसे बहावणा, ना कोई वण्डे वण्ड विच संसार। धुरदरगाही एका हुक्म चलावणा, ना कोई रक्खे डाक तार। चिट्ठी रसायण कागद किसे ना हथ्थ फड़ावणा, ना कोई घर घर फेरे देवे

मार। रातीं सुत्तयां आपणा हुक्म सुनावणा, शब्द अगम्मी हिला सितार। सचखण्ड बैठे लोआं पुरीआं बन्धन पावणा, एका डोर अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे साचा करे विहार। सतिजुग चुक्के पूजा पाठ, पुरख अबिनाशी आप चुकाईआ। सतिजुग कोए सरोवर ना मारे ठाठ, जलधार ना कोए वड्याईआ। सतिजुग साध सन्त ना खोल्हे कोई हाट, हरि का नाम ना कोई वकाईआ। सतिजुग सतिगुर पूरा दीपक जोत जगाए ललाट, दूसर दर मंगण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिवस रैण करे पढ़ाईआ। दिवस रैण शब्द चलावणा, आलस निन्दरा ना कोई रखाए। गुरमुख साचे मेल मिलावणा, काया जिंदरा तोड़ तुड़ाए। मदि प्याला नाम प्यावणा, सच खुमार इक्क वखाए। नेत्र नैण इक्क खुल्हावणा, अठ्ठ पहर रुशनाए। सोहँ साचा जाप जपावणा, सो पुरख निरँजण घर घर फेरा पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा तख्त सुहाए। सतिजुग साचा तख्त सुल्तान, दो जहानां आप सालाहीआ। पुरख अबिनाशी वड मेहरबान, जीवां जंतां दए वड्याईआ। एका अक्खर कर प्रधान, पारब्रह्म ब्रह्म करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपणा इष्ट वेख वखाईआ।

०६ ०६

✻ १५ चेत २०१७ बिक्रमी गिरधारा सिँघ दे घर बल्लोवाल ज़िला अमृतसर ✻

सो पुरख निरँजण एका पावणा, आदि जुगादि समाए। हरि पुरख निरँजण एका गावणा, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कराए। एकओकंकारा एक ध्यावणा, ना मरे ना जाए। आदि निरँजण वेख वखावणा, जोत सरूपी डगमगाए। श्री भगवान तख्त बहावणा, सचखण्ड वासी बेपरवाहे। अबिनाशी करता सीस झुकावणा, दूसर इष्ट ना कोई मनाए। पारब्रह्म ब्रह्म समावणा, एका दूजा भउ चुकाए। थिर घर साचे फेरा लावणा, महल्ल अटल इक्क वखाए। ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगावणा, हुक्मी हुक्म आप सुणाए। लक्ख चुरासी रंग रंगावणा, आपणे भाण्डे आप घड़ाए। पंज तत्त साचा मेल मिलावणा, त्रैगुण एका बन्धन पाए। नौ दुआरे खोज खुजावणा, बंक दुआरी वेख वखाए। घर घर विच आप सुहावणा, हरि साची रचन रचाए। धुन नादी नाद वजावणा, ब्रह्म ब्रह्मादी आप अल्हाए। सर सरोवर इक्क सुहावणा, अमृत आत्म जल भराय। आत्म सेजा रंग रंगावणा, आप आपणा वेस धराए। साचा महल्ल अटल इक्क उपावणा, दस्म दुआरी सोभा पाए। बज़र कपाटी कुण्डा लाहवणा, दूई द्वैती मेट मिटाए। नारी कन्त मेल मिलावणा, साची सेजा सोभा पाए। रस रसना इक्क खवावणा,

रस रसीआ आप चखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाए। सो पुरख निरँजण पेखणा, एक नैण खुल्हाए। हरि पुरख निरँजण धारे भेखणा, रूप अनूप आप वटाए। एकँकारा लिखे लेखणा, जुगा जुगन्तर खेल खलाए। आदि निरँजण आपे जाणे आपणी रेखणा, रूप रंग ना कोई वखाए। अबिनाशी करता मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केसना, सीस जगदीश ना मूंड मुंडाए। श्री भगवान लेखा जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गनेशणा, हुक्मी हुक्म आप फराय। पारब्रह्म धारे आपणा भेखणा, ब्रह्म लेखा बह समझाए। आपे नर नरायण साच नरेशणा, साचे आसण सोभा पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा नाम धराए। सो पुरख निरँजण ध्यावणा, दो जहानां वाली। हरि पुरख निरँजण साचे मन्दिर आप बहावणा, आदि जुगादि करे प्रितपाली। एकँकारा सतिगुर पूरा इक्क वखावणा, दूसर करे ना कोए दलाली। आदि निरँजण डगमगावणा, मेटे रैण अन्धेरी काली। श्री भगवान संग रखावणा, धुर दरगाही बणे साचा माली। अबिनाशी करता कन्त हंढावणा, लेखा जाणे शाह कंगाली। पारब्रह्म आपणा रंग रंगावणा, शब्द वजाए साची ताली। सचखण्ड दुआरे सोभा पावणा, वेखे महल्ल अटल उच्च मुनारी। त्रैगुण माया फंद कटावणा, पंचम पंच ना करे ख्वारी। घर सतिगुर एका पावणा, हरि शब्द सच्चा सिक्दारी। अनहद आपणा राग अल्हावणा, धुनी आत्मक वज्जे सच्ची धुन्कारी। निझर झिरना आप झिरावणा, अमृत सोहे बंक दुआरी। पीआ प्रीतम घर घर पावणा, लेखा चुक्के दस्म दुआरी। सति सतिवादी एका नज़री आवणा आदि जुगादी एकँकारी। सुरती शब्दी एका रंग रंगावणा, रंगणहारा हरि ललारी। धाम अवल्लड़े आप बहावणा, ना कोई दीसे चार दीवारी। साचा दीपक इक्क जगावणा, दिवस रैण करे उज्यारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपारी। सो पुरख निरँजण साचा गाईए, हरि दाता गहर गम्भीर। हरि पुरख निरँजण संग समाईए, अमृत बख्शे साचा सीर। एकँकारा अंग लगाईए, दूई द्वैती कट्टे पीड़। आदि निरँजण जोत जगाईए, चोटी चाढ़े इक्क अखीर। अबिनाशी करता वेख वखाईए, दरस दिखाए बेनज़ीर। श्री भगवान दर्शन पाईए, वड दाता पीरन पीर। पारब्रह्म गले लगाईए, लक्ख चुरासी कट्टे ज़ंजीर। आवण जावण सुफल कराईए, लेखा चुक्के हस्त कीट। एका मन्दिर सोभा पाईए, सचखण्ड दुआरा धाम अनडीठ। रस रसना हरि शब्द एका लाईए, आप खवाए सतिगुर मीठ। भरमा कंध एका ढाईए, गाईए शब्द सुहागी गीत। घर पंचम नाद वजाईए, काया होए पतित पुनीत। अमृत मेघ इक्क बरसाईए, करे कराए सांतक सीत। दर्द दुःख भय भञ्जण नर नरायण एका इष्ट मनाईए, आदि जुगादि चलाए आपणी रीत। कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाईए, गोबिन्द गाईए साचे गीत। कलिजुग सूसा तन तजाईए, अन्तिम सदी रही बीत। एका ढोला आख सुणाईए, सोहँ वसे साचे चीत।

पर्दा ओहला मात उठाईए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे हार जीत। सो पुरख निरँजण ध्यावणा, थिर दरबारे बैठा हरि राए। सतिगुर सच्चा एका पावणा, गुर शब्दी मेल मिलाए। भगतन रूप मात वटावणा, एका भगती नाम दृढ़ाए। सन्त साचा आप अख्वावणा, हरि चरन कँवल चित लाए। गुरमुख आपणा नाउँ धरावणा, माया ममता मोह तजाए। गुरसिख आपणा लेख लखावणा, लिखणहारा बेपरवाहे। पिछला कीता पन्ध मुकावणा, पूर्ब जन्मां वेख वखाए। एका छन्द सुहागी गावणा, सति पुरख निरँजण आप पढ़ाए। निज आत्म रस एका पावणा, अमृत आत्म दए प्याए। कोट जन्म दा पाप गंवावणा, सतिगुर साचे दर्शन पाए। आपणी कीती भुल्ल बख्शावणा, अग्गे मार्ग दए वखाए। काग आपणा हँस रूप वटावणा, सोहँ साची चोग रसना लाए। काला दाग़ जगत धुआवणा, आया चल सच्ची सरनाए। मन वैराग इक्क उपजावणा, बिन हरि नज़र कोए ना आए। कलिजुग कूड़ा पन्ध मुकावणा, झूठा नाता तोड़ तुड़ाए। सतिजुग साचा संग निभावणा, वर घर पाया हरि हरि राए। मिल सखीआं बह बह मंगल गावणा, गीत गोबिन्द इक्क अल्लाए। सो पुरख निरँजण काज रचावणा, करनी करता खेल खलाए। हरि पुरख निरँजण सच सुहाग गावणा, शब्द शब्दी नाद सुणाए। एकँकारा आपणा सगन मनावणा, मस्तक तिलक ललाट वखाए। अबिनाशी करते घर वसावणा, आदि निरँजण लए उठाए। श्री भगवान साचे घोड़े आप चढ़ावणा, पारब्रह्म प्रभ आपणी हथ्थीं वाग गुंदाए। जोत निरँजण कजला पावणा, नाम सलाई हथ्थ उठाए। सौहरा पेईआ एका घर वखावणा, हरि हरि नार कन्त मिलाए। साची डोली आप बहावणा, जगत कहार ना कोए रखाए। साचे कंधे आप उठावणा, ख़ाकी बन्दे ना कोई लगाए। माया अन्धे भरम भुलावणा, गुरमुख साचे लए जगाए। झूठे धन्दे पन्ध मुकावणा, सच सच मार्ग एका लाए। नार दुहागण ना कोए प्रनावणा, विभचार नेड़ रहिण ना पाए। लोक लाज सर्ब तजावणा, गुरसिख सिख मति इक्क समझाए। सतिगुर पूरे साचे नाम जहाज़ चढ़ावणा, साचा बेड़ा लए तराय। साचा दाज हरि का नाउँ गंढु बंधावणा, दरगाह साची लै के जाए। सचखण्ड उच्च महल्ले आप बहावणा, शब्द रंगीला पीड़ा हेठ रखाए। सच सालू आप रंगावणा, सीस जगदीश आ टिकाए। मुख घूँगट आप उठावणा, दो जहाना पर्दा दए चुकाए। पीआ प्रीतम नज़री आवणा, निरगुण दाता बेपरवाहे। गुरसिख सखी अंक समावणा, अंगीकार आप कराए। दूसर दिस किसे ना आवणा, लक्ख चुरासी वेखे नैण उठाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सतिवादी साची धार बंधाए। सो पुरख निरँजण सदा सेवीए, इक्क इकल्ला खेल अपार। हरि पुरख निरँजण वडा वड वड देवीए, देवत सुर करन निमस्कार। एकँकारा अलक्ख अभेवीए, ब्रह्मा विष्न शिव होए पनिहार। आदि निरँजण कथनी कथ ना सके रसना जेहवीए, लेखा लिखे

ना कोई लिखार। अबिनाशी करता देवे साचा मेवीए, अमृत फल कर त्यार। श्री भगवान साचा मीत घर घर सेवीए, घर मन्दिर खेल अपार। पारब्रह्म ना मरे ना पए जम्म जुगा जुगन्तर एका सेवीए, निरगुण सरगुण बन्ने धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। अगम्म अगोचर बुज्झया, जिस आपणी दया कमाए। सतिगुर पूरा भेव खुल्हाए गुज्झया, अन्तर आत्म आप सुणाए। लेखा चुक्के एका दूजया, नैणी नैण होए रुशनाए। चौथे पद पैंडा मुक्कया, अमरापद आप वखाए। पंचम बह बह नेड़े ढुक्कया, निरगुण मेला सहिज सुभाए। छेवें उज्जल करे मुख्या, सिर आपणा हथ्थ धराए। सत्तवें सति पुरख निरँजण लक्ख चुरासी कोलों लुकया, गुरमुख विरले दरस दखाए। हरिजन बूटा कदे ना सुक्कया, पत डाल्ही आप महिकाए। जो जन सरनाई झुकया, फड़ फरशो अर्श बहाए। कलिजुग वेला अन्तिम ढुक्कया, अर्श फर्श रिहा कुरलाए। लेखा जाणे मानस मनुख्या, देवत सुर भेव ना राए। हरिजन उज्जल करे मुख्या, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाए। गुरमुख विरला आपणी गोदी हरि हरि चुक्कया, गुर गुर साची सेव कमाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर आपणा खेल खलाए। सो पुरख निरँजण जाए बौहड़, हरि पुरख निरँजण वड वड्याईआ। एकँकारा चढ़े साचे घोड़, आदि निरँजण वाग उठाईआ। अबिनाशी करता दो जहानां लाए एका पौड़, श्री भगवाना सेव कमाईआ। पारब्रह्म आदि जुगादी रिहा दौड़, निरगुण आपणा खेल खलाईआ। हरि हरि बुझाए लग्गी औढ़, साचा मेघ इक्क बरसाईआ। लक्ख चुरासी वेखे फल मिट्ठा कौड़, कौड़ा रीठा भन्न वखाईआ। हरि सन्त भगत चरन प्रीती देवे जोड़, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मन मतवाला देवे होड़, एका खण्डा शब्द उठाईआ। सुरती बन्ने आपणी डोर, नाम नामा बन्धन पाईआ। लेखा जाणे अन्ध घोर, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। पकड़ बिदारे पंचम चोर, चोर यार ठग्ग आप मिटाईआ। पंचम मिटाए मोर तोर, हउमे हंगता रहिण ना पाईआ। पंचम वखाए आपणा ज़ोर, वड ज़ाबर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर खेल खलाईआ। सो पुरख निरँजण तुठया, हरि सच्चा बेपरवाह। एकँकारा आपणे बल आपे उठया, हरि पुरख निरँजण दए सलाह। अबिनाशी करता आप वेखे आपणी गुठया, आदि निरँजण कर रुशना। पारब्रह्म कदे ना लुट्टया, श्री भगवान बणे गुआह। हरि शब्द चढ़े आपे साची चोटीआ, सच महल्ले डेरा ला। लक्ख चुरासी वेखे वासना खोटीआ, घट घट अंदर फेरा पा। गुरसिख लभ्भे विच्चों कोटन कोटीआ, आप आपणे ल्ए जगा। देवे नाम इक्क अतोटीआ, सच भण्डारा हरि वरता। अन्तिम धर्म राए ना तोड़े बोटीआ, चित्रगुप्त ना दए सज़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाह। सो पुरख निरँजण दाता सूरबीर, बलवान आप अख्वांयदा।

हरि पुरख निरँजण आसा पूर, साचा अमृत सीर जाम प्यांअदा। एकँकारा मारे तीर, तीर निराला इक्क चलांयदा। आदि निरँजण गहर गम्भीर, भेव अभेदा भेव खुल्हांयदा। अबिनाशी करता वड पीरन पीर, दस्तगीर नाउँ धरांयदा। श्री भगवान शाह हकीर, हक हकीकत फोल फुलांयदा, पारब्रह्म प्रभ बन्न्हे बीड़, जुग जुग बेड़ा आप चलांयदा। जन भगतां कट्टे साची भीड़, लोकमात रूप वटांयदा। एका बख्शे साचा सीर, नीर प्याला जाम प्यांअदा। चिट्टे उप्पर खिच लकीर, कागद शाही मेल मिलांयदा। चार जुग चार वरन चार खाणी चार बाणी लिख्या लिख्त करे तकदीर, तकबीर तदबीर आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा बन्धन पांयदा। सो पुरख निरँजण बन्धन पा, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। हरि पुरख निरँजण रवि ससि सूरज चन्दन दए चढ़ा, एकँकार हुक्म सुणांयदा। आदि निरँजण जोती विच दए टिका, जुगा जुगन्तर डगमगांयदा। अबिनाशी करता रिहा भुआ, दिवस रैण बणांयदा। श्री भगवान वेखे ज़िमी अस्माँ, गगन गगनंतर फोल फुलांयदा। पारब्रह्म आपे खड़ा आपणे थाँ, सच्चखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। जुग जुग करे सच न्याँ, आपणा गेड़ा आप चलांयदा। जन भगतां फड़े लोकमात बांह, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। एका अक्खर नाम दए जपा, साचा ढोला आपे गांयदा। साचा मार्ग दए वखा, आपणा पन्थ चलांयदा। राग अनादी दए सुणा, एका राग अल्हांयदा। वाद विवाद दए मिटा, आदि जुगादि खेल खिलांयदा। साध सन्त लए मिला, आप आपणा दरस दिखांयदा। बोध अगाध शब्द जणा, आप आपणे रंग रंगांयदा। धुर दी दाद झोली पा, साचा हट्ट इक्क खुल्हांयदा। चारे वेदां दए लिखा, आपणी वण्डण आप वण्डांयदा। ब्रह्मा वेता मंगे ढह ढह सरना, चरन धूढ़ी मस्तक इक्क छुहांयदा। विष्नूं कूके उच्ची कर कर बांह, भगवन साचा राह तकांयदा। शंकर मंगे चरन दुआरे थाँ, तन भबूती इक्क रमांयदा। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, आप आपणा खेल खिलांयदा। साचे सन्ता दर्शन देवे आ, नित नवित जोत जगांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों लए उठा, नौ खण्ड पृथमी फोल फुलांयदा। वरन गोत ना दए कोई बणा, ज़ात पात ना कोई मनांयदा। एका ब्रह्म दए वखा, सुरत शब्दी मेल मिलांयदा। निहकर्मी आपणा कर्म लए कमा, हरिजन साचे माण दवांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जगत विष्टा ना कोए फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधांयदा। सो पुरख निरँजण जपणा जाप, दूजे अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। हरि पुरख निरँजण वड प्रताप, परम पुरख वड वड्याईआ। एकँकारा मारे तीनों ताप, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाईआ। आदि निरँजण मेल मिलावा कमलापात, कँवल नैण नैण दरसाईआ। अबिनाशी करता खोल्हे ताक, बन्द किवाड़ी आप खुल्हाईआ। श्री भगवान वेखे मार झाक, आत्म सेजा सेज सुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ

४७० ०६

बणे साचा सज्जण सैण साक, सगला संग निभाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म वखाए पाकी पाक, पतित पुनीत वड वड्याईआ। जन भगतां पर्दा ल्ए ढाक, ढाकण को पति आप अख्वाईआ। लेखा जाणे ख़ाकी ख़ाक, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। जीव जंत एका पाए नकेल नाक, माया ममता डोरी इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रास रचाईआ। सो पुरख निरँजण साचा सज्जणा, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। हरि पुरख निरँजण ना घड़या ना भज्जणा, तत्व तत्त ना कोए रखांयदा। एकँकारा निरगुण रूप किसे ना लभ्भणा, जगत नेत्र दर्शन कोए ना पांयदा। आदि निरँजण किसे फंदी विच ना बज्झणा, आदि जुगादी खेल खिलांयदा। अबिनाशी करता आपणे मन्दिर बह बह आपे सजणा, थिर घर साचा आप सुहांयदा। श्री भगवान शब्द नगारा, बण बण आपे वज्जणा, आपणा ताल आप सुणांयदा। पारब्रह्म प्रभ पर्दा आपे कज्जणा, आपणा मुख आप छुपांयदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कराए साचा मजना, सर सरोवर इक्क नुहांयदा। गुरमुख विरले अमृत दर घर साचे पी पी रज्जणा, कँवल नाभ आप खुल्हांयदा। हरि शब्द चढ़ना साचे ज़हाजना, पार किनारा आप वखांयदा। सति सरूपी मारे इक्क आवाज़ना, शब्दी शब्द जैकारा लांयदा। खेले खेल ग़रीब निवाज़णा, ग़रीब निमाणे मेल मिलांयदा। हँकारीआं तोड़े गढ़ खोल्हे पाजना, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। शाहो भूप वड राजन राजना, सच सुल्ताना वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्ला देस माझना, साची नगरी फेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण सति सतिवाद लेखा जाणे आदि जुगादि, जुग जुग आपणा राह चलांयदा। राह चलंदड़ा पुरख अकाल, दीना बंधप वड वड्याईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, मंडप माढ़ी ना कोए समाईआ। साचा दीपक बैठा बाल, दीवा बत्ती ना कोए रखाईआ। साचे तख्त बैठा नूरी जल्वा जलाल, शाह कंगाल ना वड वड्याईआ। आपे बणे सच दलाल, साचा वणज आप कराईआ। आपे सेवादार उठाए काल महांकाल, दीन दयाल बेपरवाहीआ। आपे सच दुआरयों मारे आपणी छाल, किला कोट पार कराईआ। आपे आपणी घाल जुग जुग ल्ए घाल, हरि दाता इक्क अख्वाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चली जगत चाल, कलिजुग अवल्लड़ी चाल आपणे हथ्थ रखाईआ। करया खेल बेमिसाल, वेद शास्त्र सिमरत पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी गुर पीर अवतार साध सन्त भेव कोए ना पाईआ। दो जहाना एका चाल, चौदां तबकां एका राह वखाईआ। गुरमुखां चले नाल नाल, बेऐब परवरदिगार नाउँ अक्खर इक्क ख़ुदाईआ। कलिजुग अन्तिम करे काल, काल नगारा इक्क वजाईआ। गुरमुख सज्जण ल्ए भाल, भगवन आपणी भगती आप कमाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, बन्धन बन्द दए कटाईआ। आपे वेखे आपणे लाल, लाल अमोलक मोती हीरे माणक जवाहर आप उठाईआ।

अन्त कन्त भगवन्त करे सन्त प्रितपाल, जुगा जुगन्तर सेव कमाईआ। बणाए बणत हरि दीन दयाल, दर्द दु:ख भय भञ्जण दीनां अनाथां दर्द वण्डाईआ। लक्ख चुरासी हाल बेहाल सुरत संभाल, कोई पान्धी राह ना चले राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए फड़, आपणा बन्धन आपे पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रक्खणहार बख्शे सच सच्ची सरनाईआ।

✻ २७ चेत २०१७ बिक्रमी बाबे मोता सिँघ दे घर दया होई कल्सीआं ज़िला अमृतसर ✻

सो पुरख निरँजण गुण निधान, हरि वड्डा वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण मेहरवान, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। एकँकारा नौजवान, ना मरे ना जाईआ। आदि निरँजण खेल महान, इक्क इकल्ला खेल खलाईआ। श्री भगवान दाता दानी देवे दान, आदि जुगादी वड वड्याईआ। अबिनाशी करता पाए एका आण, आप आपणा हुक्म चलाईआ। पारब्रह्म वेखे मार ध्यान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां एका नैण उठाईआ। एका मन्त्र इक्क ज्ञान, सचखण्ड दुआरे आप जणाईआ। सति पुरख निरँजण धुर दीबाण, बेअन्त बेपरवाह आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कराईआ। अगम्म अगम्मड़ा खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, एकँकारा संग रलांयदा। आदि निरँजण वसणहारा जलां थलां, अबिनाशी करता घट घट डेरा लांयदा। श्री भगवान जोती शब्दी आपे रला, निरगुण निरगुण रंग रंगांयदा। पारब्रह्म सच सिँघासण एका मल्ला, थिर घर साचे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, सो पुरख निरँजण आप खिलाईआ। हरि पुरख निरँजण पृथ्मी आकाशा, गगन मंडल मंडप वेख वखाईआ। इक्क इकल्ला पावे रासा, रवि ससि सूरज चन्न हुक्मी हुक्म फिराईआ। आदि निरँजण हो प्रकाशा, जोती नूर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता दासी दासा, सेवक साची सेव कमाईआ। पुरख अबिनाशी पूरी करनहारा आसा, इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। पारब्रह्म घट घट अंदर करे वासा, निज आपणी जोत जगाईआ। सचखण्ड निवासी शाहो शाबाशा, साचे तख्त आप सुहाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव बख्शे चरन भरवासा, कँवल कँवला नैण खुल्हाईआ। अमृत आत्म दे बुझाए प्यासा, सांतक सति सति वरताईआ। आदि जुगादि ना कदे विनासा, जुगा जुगन्तर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। बेपरवाह इक्क इकल्ला सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। वसणहारा सच महल्ला, बंक

दुआरा आप सुहांयदा। बैठा रहे निहचल धाम अटला, उच्च महल्ल अटल आप उपांयदा। आपणे दीपक आपे बला, सति प्रकाश आप करांयदा। सच सुनेहड़ा शब्द अगम्मी आपे घल्ला, जुग जुग आपणा हुक्म चलांयदा। त्रै त्रै फड़ाए आपे पल्ला, आप आपणे अंग लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा बन्धन आपे पांयदा। जुग जुग बन्धन हरि करतार, लोआं पुरीआं आपे पाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर ख़बरदार, धुर फ़रमाणा दए जणाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, एका बंक सुहाईआ। पंज तत्त कर अकार, निराकार विच समाईआ। हड्ड मास नाड़ी कर श्रंगार, तन बस्त्र इक्क सुहाईआ। अंदर मन्दिर खोल्ह किवाड़, साची हाटी वेख वखाईआ। चौदां लोकां बन्न्हे धार, चौदां तबकां वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड अंदर देवे वाड़, सति सरूपी दया कमाईआ। आपे होए पहरेदार, दिवस रैण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता इक्क अख्वाईआ। जुग करता पुरख समरथ, हरि साचा हरि अख्वांयदा। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही ना कोए वखांयदा। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, चार कुंट दहि दिशा जून अजून आप फरांयदा। आप जणाए पूजा पाठ, अबिनाशी करता नाम दृढ़ांयदा। चारे वेदां खोल्ह हाट, शब्द अनादी नाद वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करनी करता किरत कमांयदा। जुग करता हरि भगवान, वड दाता बेपरवाहीआ। सति सरूप सति निशान, सच दुआरे आप झुलाईआ। नौ खण्ड वेखे मार ध्यान, सत्तां दीपां फोल फुलाईआ। लक्ख चुरासी हो प्रधान, घर घर बैठा अलक्ख जगाईआ। आपे गाए नाद धुनकान, धुन आत्मक शब्द सुणाईआ। आपे लेखा जाणे पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होए हलकाईआ। आसा तृष्ना पीण खाण, माया ममता आपणे रंग रंगाईआ। आपे बिरहों तीर निराला मारे बाण, निमख निमख आप कटाईआ। आप जोत सति जगाए महान, अन्ध अन्धेर दए गुआईआ। आप सुणाए धुर फ़रमाण, घर साचे वज्जे वधाईआ। आपे सन्त उठाए देवे माण, भगत भगवन्त इक्क वड्याईआ। आपे जोद्धा सूरबीर बलवान, तीर कमान आप उठाईआ। आप खड़ग खण्डा तेज़ कृपान, संख चक्र गदा आप भुआईआ। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड हो प्रधान, आप आपणा वेस धराईआ। आपे लेखा जाणे गोपी काहन, आपे सईआं मंडल रास रचाईआ। आपे मेल मिलाए सीता राम, सीता सुरती राम शब्द प्रनाईआ। आपे अमृत प्याए साचा जाम, नाम प्याला हथ्थ उठाईआ। आपे साचा सयदा कर प्रनाम, आपे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आपे कलमी कलमा पढ़े अमाम, कायनात आप पढ़ाईआ। आपे इस्म आज़म होए इस्लाम, नबी रसूल आप अख्वाईआ। आपे आप हयात प्याए जाम, मलकुलमौत आपणा रूप वटाईआ। आपे प्रगट कराए सतिनाम, नाम नामे वड वड्याईआ। आपे वसे काया खेड़ा साचे नगर ग्राम, घर

मन्दिर सोभा पाईआ। आपे भाग लगाए माटी चाम, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश, मन मति बुध आपणे विच टिकाईआ। आपे मेटे रैण अन्धेरी शाम, साची सच करे रुशनाईआ। आपे लेखा जाणे कोटन कोटि भान, कोट कोटी इक्का किरन दए वड्याईआ। आपे आदि जुगादी जाणी जाण, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। आपे सतिजुग साचे करे प्रधान, आपे त्रेता तीर चलाईआ। आपे द्वापर होया नौजवान, मुकंद मनोहर लखमी नरायण वड वड्याईआ। आपे कलिजुग खेले खेल दो जहान, लोकमात फेरा पाईआ। आपे ईसा मूसा जगत निशान, काला सूसा तन पहनाईआ। आपे मज़्ब दीन इस्लाम, अञ्जील कुराना आपे गाईआ। आपे वेद शास्त्र सिमरत होए पुराण, गाइत्री मन्त्र आप पढ़ाईआ। आपे ओअँ रूप आप भगवान, सोइम रूप सर्ब दरसाईआ। आपे भगवत भगौती खिच्चे म्यान, सिंघ अस्वार आप हो जाईआ। आपे होए बाल नादान, रूप अनूप आप वटाईआ। आपे नानक निरगुण देवे दान, साची वस्त झोली पाईआ। आपे गोबिन्द जोद्धा बणे बलवान, एका खण्डा हथ्थ चमकाईआ। आपे अमृत आत्म करे पान, पतित पुनीत आप कराईआ। आपे बख्शे सच्चा पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख गुआईआ। आपे जुगा जुगन्तर हो प्रधान, लोकमात निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आपे सरगुण शब्द सुणाए कान, निरगुण आपणा निश्अक्खर करे पढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम लए पछाण, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। रवि ससि मुख शर्माण, सीतल धार ना कोए वहाईआ। कागद कलम होए हैरान, लिख लिख थक्की सत्त सरोवर तेरी सयाहीआ। बसुधा गुण ना जाणे गुण निधान, उच्ची कूके दए दुहाईआ। करोड़ तेतीसा चरन दुआरे मंगण आण, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। ब्रह्मा नेत्र अठ्ठे रोवे नीर विरोले आपणा आप ना रिहा पछाण, धीरज धीर ना कोए धराईआ। शंकर बैठा सुञ मसाण, सृष्ट सबाई रिहा जणाईआ। विष्नूं सुणे हरि का शब्द ला ला कान, बाशक सांगोपांग, सेज बैठा आसण लाईआ। एकँकारा श्री भगवान, निरगुण दाता आपणी खेल रिहा खलाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी प्रगट होए वाली दो जहान। घनक पुर वासी आपणा नाउँ धराईआ। शब्द उठाए सच निशान, दरगाह साची आप झुलाईआ। लोकमात वेखे मार ध्यान, हरिजन साचे लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा खेल अपारा जुग जुग पसारा, आप आपणा वेख वखाईआ। हरि पसारा पेख्या, निरगुण रूप अपार। ब्रह्मा विष्न शिव ना जाणे लेखया, चारे वेद रहे पुकार। हरि का रूप मुछ दाढ़ी ना दिसे केसया, मूंड मुंडाए ना विच संसार। भाणा जाणे गुरू दस दस्मेश्या, कलिजुग अन्तिम वरते वरतावे जो करतार। तख्त ताज ना दिसे नर नरेसया, नर नरायण करे ख्वार। जोती जामा धारे भेख्या, निहकलंक लए अवतार। शब्दी विचोला देस प्रदेसया, ढोला गाए आप आपणी वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल

अगम्म अपार। अगम्म अपार हरि हरि खेल, भेव कोए ना पांयदा। जुग जुग हरिजन हरिभगत साचे सन्त लए मेल, आप आपणा मेल मिलांयदा। आदि निरँजण चाढ़े तेल, जोत निरँजण सगन मनांयदा। अचरज पारब्रह्म प्रभ खेले खेल, गुरमुख विरले बूझ बुझांयदा। सखा सखाई सज्जण सुहेल, निरगुण सरगुण रंग रंगांयदा। वसणहारा धाम नवेल, धरती धवल आप सुहांयदा। लेखा जाणे गुरू गुर चेल, गुर सतिगुर संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा हरि गोपाल, निहकलंक नाउँ रखाईआ। पुरख अबिनाशी दीन दयाल, दर घर साचे बैठा सोभा पाईआ। गुरमुख वेखे साचे लाल, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। नाता तोड़े काल महांकाल, आप अपणी गोद बहाईआ। कलिजुग अन्तिम चली अवल्लड़ी चाल, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, गुर गोबिन्द दए गवाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी तेरा सुहाए साचा ताल, अठसठ लेखा दए मुकाईआ। सतिजुग साची वस्त देवे सच्चा धन माल, नाम खज़ाना इक्क वखाईआ। एका रंग रंगाए शाह कंगाल, ऊँच नीच रहिण ना पाईआ। लक्ख चुरासी फल लगाए एका डाल्ह, फुल्ल फुलवाड़ी मात महिकाईआ। गुरसिख सज्जण साचे भाल, भवजल अन्तिम पार कराईआ। दिवस रैण वसे नाल, रवि ससि रहे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा भेख वटाया, हरि वड्डा वड वड्याईआ। घनक पुर वासी फेरा पाया, सम्बल बैठा जोत जगाईआ। निरगुण सरगुण बण के आया, सरगुण निरगुण विच समाईआ। निरगुण निरगुण घोड़े चढ़ के आया, लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबाईआ। शब्द अगम्मी खण्डा फड़ के आया, बहत्तर नाड़ रही कुरलाईआ। कलिजुग अग्नी आपे सड़ के आया, गुरसिखां अग्नी दए बुझाईआ। धुरदरगाही धुर दा शब्द एका पढ़ के आया, सो पुरख निरँजण करे सच पढ़ाईआ। चार वरनां लड़ फड़ के आया, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा पुरख अकाला, आपे चले अवल्लड़ी चाला, जगत अवल्लड़ी चाल चलाईआ। चाल अवल्लड़ी हरि नरायण, निरगुण आपणी आप चलांयदा। सरगुण कोए ना सके कहिण, लेखा दूसर हथ्थ ना किसे फड़ांयदा। दिस ना आए दोए नैण, जगत नेत्र सर्ब तरसांयदा। जिस जन सतिगुर पूरा मिल्या साक सज्जण सैण, निज नेत्र इक खुल्हांयदा। नाता तुटे मात पित भाई भैण, गुर शब्दी जोड़ जुड़ांयदा। नेड़ ना आए लाड़ी मौत डायण, धर्म राए ना बन्धन पांयदा। जो जन सोहँ शब्द रसना कहिण, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। कलिजुग अन्त चुकाए लहण देण, देवणहार आप अख्वांयदा। गुरू गुर गुरसिख धाम इक्ट्ठे साचे बहण, सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग

तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण आपणा भेव खुल्हांयदा। निरगुण भेव अवल्लड़ा, वेद कतेब कहिण ना जाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्लड़ा, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। सचखण्ड दुआरा एकँकारा थिर दरबारा आपे खुल्हड़ा, सिँघासण आसण कर रुशनाईआ। गुर पीर अवतार फड़ाए पल्लड़ा, लोकमात शब्द कुड़माईआ। सच संदेश हरि नरेश जुगा जुगन्तर आप आपणा घलड़ा, हुक्मी हुक्म सर्ब चलाईआ। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्लड़ा, निरगुण आपणा रंग वटाईआ। हड्ड मास नाड़ी ना दीसे चमड़ा, जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण खेल करे हरि, हरी हरि आप अख्वाईआ। हरी हरि खेल अपारा, हरि साचा वेस वटांयदा। निरगुण सरगुण दोवें धारा, लोकमात चलांयदा। गुर सतिगुर साचा लए अवतारा, आपणा खेल खिलांयदा। शब्द अनादी इक्क जैकारा, सृष्ट सबाई आप सुणांयदा। वरनां बरनां वसे बाहरा, ज़ात पात ना कोए बणांयदा। पैंतीस अक्खर ना पावे सारा, बावन अक्खर ना कोए पढ़ांयदा। चार वेद ना बणे लिखारा, ब्रह्मा मुख ना चार सालांहयदा। विष्नूं निउँ निउँ ना करे निमस्कारा, नेत्र ध्यान ना कोए लगांयदा। सचखण्ड वसे आप निरँकारा, सच सिँघासण आसण लांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, ख़ालक ख़लक वेख वखांयदा। बेऐब खुदाई परवरदिगारा, नूरो नूर डगमगांयदा। मन मति पावे सारा, लाशरीक वेख वखांयदा। अज़मतो कस्मतो रंग रंगे रंगणहारा, रंग रंगीला आप रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चौदां तबकां इक्क हुलारा, पीर दस्तगीर लेखा जाणे गुप्त ज़ाहरा, जगत नेत्र वेख वखांयदा। पीर दस्तगीर शाह हकीर, हरि साचा सच उपजाईआ। खुदी खुदाई मारे तीर, बेनज़ीर बेपरवाहीआ। लेखा चुक्के बवन्जा बीर, बेताल दए दुहाईआ। शरअ शरीअत तोड़ ज़ंजीर, इक्का कलमा दए पढ़ाईआ। मुकामे हक चोटी चाढ़े इक्क अखीर, ऐनलहक बहक दए वखाईआ। कलिजुग तेरी मेट तकदीर वेखे तकसीर, आपणी तदबीर आप बणाईआ। राह तक्कदे नेत्र पीर फ़कीर, अमाम अमामा नूर इलाहीआ। पुरख अबिनाशी शब्द अगम्मी घत वहीर, चारे कूटां पन्ध मुकाईआ। चार यारी मंगे सीर, आब बेआब वेख वखाईआ। शाह नवाब ना कट्टे कोई भीड़, देवणहार अज़ाब सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग खेले खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह मौला अलाह, नूरो नूर समाया। चौदां तबकां बण मलाह, सदी चौधवीं चप्पू दए लगाया। अन्तिम भुल्ले एका राह, नूह हथ्थ किसे ना आया। सखी सरवर ना पकड़े कोई बांह, सखावत सके ना कोई तराया। पंखी पंछी तरवर सरवर कूकण कुरलाण काँ, काग हँस ना रूप वटाया। सीस ना रक्खे कोई ठंडी छाँ, कलिजुग अग्नी तत्त तपाया। ना कोई सहारा पिता माँ, पिता पूत ना मेल मिलाया। लेखा चुकाए सूर गाँ, जगत

कसाई छुरी हथ्थ ना कोए रखाया। सृष्ट सबाई लेखा दए चुका, कलिजुग वेला अन्तिम आया। एका नाम डंका दए वजा, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाया। सिँघ शेर हरि नाउँ धरा, सिँघ रूप लए वटाया। आदि शक्ति जगत भुआनी सेवा ला, भगत भगती लए तराया। जुग जुग दा बानी आप अख्वा, सतिजुग मार्ग दए वखाया। कलिजुग झूठा मन्दिर देवे ढाह, काम क्रोध लोभ मोह हँकार गढ़ कोए दिस ना आया। पुरख अकाल एका नाम दए जपा, लक्ख चुरासी जिह्वा हरि गुण गाया। भर प्याला अमृत जाम दए प्या, जागरत जोत करे रुशनाया। कागों हँस दए बणा, माणक मोती चोग चुगाया। शाह रग उप्पर दरस दिखा, जगत तृष्ना अग्ग दए बुझाया। अमृत मेघ इक्क बरसा, निझर झिरना दए झिराया। राज राजाना शाह सुल्तानां देवे ख़ाक मिला, ग़रीब निमाणे गले लगाया। सत्त रंग निशाना दए झुला, सत्तां दीपां हुक्म सुणाया। पुरख अबिनाशी खेले खेल थाउँ थाँ, थान थनंतर वेख वखाया। किसे ना वसे नगर ग्रां, गुरसिख तेरी काया मन्दिर अंदर डेरा लाया। आदि अन्त पकड़े बांह, जिउँ माता पूत गोद उठाया। इक्क जपाए आपणा नाँ, दूजा इष्ट ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका आप वजाया। एका डंका शब्द निरँकार, हरि आपणा आप वजाईआ। कलिजुग कूड़ा मेट पसार, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। चार वरन सोहण इक्क दुआर, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, नाता बणाए भैणां भाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ एका बोले नाम जैकार, गुर दर मन्दिर एका कूक सुणाईआ। एका डंका वज्जे विच संसार, फतिह वाहिगुरू आप आपणी आपणे हथ्थ रखाईआ। महाराज शेर सिँघ हो त्यार, विष्नूं खेल करे बेपरवाहीआ। भगवन जोती जोत कर उज्यार, हँ ब्रह्म करे कुड़माईआ। सो पुरख निरँजण मीत मुरार, सगला संग निभाईआ। राज जोग सच्चा सिक्दार, साची रईयत दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर वड वड्याईआ। अलक्ख अगोचर घनक पुर वास, पुरी घनक आप तजाईआ। सचखण्ड दुआरे कर प्रकाश, लोकमात वेख वखाईआ। गोबिन्द रक्खी एका आस, पुरख अकाल राह तकाईआ। साहिब सतिगुर दासी दास, सेवक याचक चाकर सेव कमाईआ। जन भगतां पूरी करे आस, जुगा जुगन्तर हरि सन्त लए तराईआ। पार किनारा जाए पृथ्मी आकाश, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। धरती तेरा वेखे खेल तमाश, जल धारा आप समाईआ। समुंद सागर ना होए निरास, उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वेख वखाईआ। मान सरोवर रक्खे आस, कवण प्यास दए बुझाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण रूप सति सरूप पूरी करनहारा आस, पूर्ब पूर्ब वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण

नर, निरगुण दाता इक्क अख्वाईआ। निरगुण दाता हरि बेअन्त, परम पुरख अख्वांयदा। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। हरिजन मेला नारी कन्त, नर नरायण आप प्रनांयदा। भगतन महिमा गणत अगणत, लेखा लेख ना कोए लिखांयदा। भरमे भुल्ला जीव जंत, जागरत जोत ना कोए जगांयदा। गुरसिख काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, नाम मजीठी रंग रंगांयदा। धन्न सुहाग होए धन्न धन्नवन्त, प्रिया प्रीतम मेल मिलांयदा। मनमुख माया पाए बेअन्त, काया कप्पड़ गूढ़ी नींद सुआंयदा। आपे जाणे जणाए आपणा मंत, अक्खर वक्खर शब्द पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोड़ा शब्दी घोड़ा चारों कुंट दौड़ांयदा। चारों कुंट रिहा दौड़, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। निरगुण लाया एका पौड़, दो जहानां वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी वेखे फल मिट्ठा कौड़, घट घट बैठा डेरा लाईआ। गुरसिख विरले जाए बौहड़, बाहों पकड़ गले लगाईआ। जुग जुग दी लग्गी बुझाए औड़, दे दरस तृप्त कराईआ। किसे हथ्थ ना आए पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, उच्चे टिल्ले पर्बत बैठे राह तकाईआ। सम्बल नगर कोए ना जाणे लम्मां चौड़, गुर गोबिन्द गया लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द तराना हरि भगवाना दो जहानां आप सुणाईआ। शब्द तराना साचा राग, हरि साचा सच अलांयदा। गुरमुख विरले वड वड भाग, जिस जन आत्म अन्तर खोज खुजांयदा। दुरमति मैल धोवे दाग़, साची रंगण नाम रंगांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काग, जिस जन आपणे चरन लगांयदा। दीपक जोत जगे चिराग, ज्ञान भान प्रकाश आप वखांयदा। घर मेला नारी कन्त सुहाग, सुरती शब्दी मेल मिलांयदा। चरन धूढ़ कराए मजन माघ, अठसठ पैंडा आप मुकांयदा। एथे ओथे दो जहानी पकड़े वाग, अद्धविचकार ना कोए अटकांयदा। जिस जगाए सो जन जाए जाग, दूसर अक्ख ना कोए खुलांयदा। त्रैगुण माया लग्गी आग, पंज तत्त बसन्तर ना कोए बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नाम अक्खर इक्क वड्यांअदा। एका अक्खर हरि का नाउँ, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। एका अक्खर वसे हर घट थाउँ, दिस किसे ना पाईआ। एका अक्खर करे सच न्याउँ, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। एका अक्खर पिता माउँ, एका अक्खर बाल सखाईआ। एका अक्खर देवे सदा ठंडी छाउँ, चारे वेद देण गवाहीआ। एका अक्खर सतिगुर पूरा आपे जाणे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नाम करे पढ़ाईआ। एका अक्खर शब्द बबाणा, गुर सतिगुर हथ्थ रखाया। एका अक्खर पन्ध मुकाए आवण जाणा, लक्ख चुरासी गेड़ चुकाया। एका अक्खर गुरूआं पीरां रक्खे आपणे भाणा, हरि भाणा वड वड्याआ। एका अक्खर लहिणा देणा चुकाए राजा राणा, राज राजानां

दए सज़ाईआ। एका अक्खर भिच्छया मंगे दर दरबाणा, दर दर फेरी अलक्ख जगाया। एका अक्खर होए परवाना, परम पुरख मेल मिलाया। एका अक्खर रूप श्री भगवाना, ना मरे ना जाया। सो अक्खर सतिजुग साचे चढ़े निशाना, पुरख अबिनाशी आप चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत हरि हरि हरि गाए गाणा, पारब्रह्म दए सालाहया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना, निरगुण निरगुण निरगुण निरगुण खेल खलाया।

* २८ चेत २०१७ बिक्रमी मोता सिँघ दे घर पिण्ड कल्सीआं *

सचखण्ड दुआर सुहंदड़ा, पुरख अबिनाशी वड मेहरबान। थिर घर वासी जोत जुगंदड़ा, आदि जुगादी नौजवान। शब्द अनादी राग अलंदड़ा, गावणहारा गाए गान। सुन्न अगम्मी वेख वखंदड़ा, वड दाता दानी दान। लोआं पुरीआं लेख लखंदड़ा, लेखा जाणे ज़िमी अस्मान। रवि ससि नूर चमकंदड़ा, मंडल मंडप हो प्रधान। आप आपणी रास रचन्दड़ा, जुगा जुगन्तर खेल महान। धरत धवल वेख वखंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी आण। धरत धवल धवल वड्याई, हरि पुरख निरँजण आप वड्यांअदा। निरगुण सरगुण कर कुड़माई, जगत विचोला खेल खिलांयदा। भगतन भगती भिच्छया झोली पाई, नाम भण्डारी आप अख्वांयदा। साचे सन्तां लए जगाई, जागरत जोत इक्क वखांयदा। जुग जुग आपणा मेल मिलाई, लोकमात दया कमांयदा। कलिजुग अन्तिम करे सच न्याईं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। सच न्याउँ हथ्थ करतार, आदि जुगादि रखाया। जुगा जुगन्तर लै अवतार, लोकमात करे रुशनाया। कलिजुग खेल अगम्म अपार, वेद अथर्बण दए दुहाया। वेद व्यासा कर पुकार, रसना जिह्वा गया गाया। नानक गोबिन्द बोल जैकार, एका अक्खर गया पढ़ाया। पुरख अकाल मीत मुरार, जूनी रहित इक्क अख्वाया। दुःख दर्द भय भञ्जण हरि सर्ब संसार, सगला संग आप तराया। शाह सुल्तान भूप इक्क सिक्दार, दो जहानां राज जोग इक्क वखाया। हुक्मी हुक्म करे वरतार, वड भाणे भाणां विच टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर वेस वटाया। जुग जुग खेल खलंदड़ा, पारब्रह्म प्रभ बेअन्त। निरगुण आपणा वेस वटंदड़ा, लेखा जाणे जीव जंत। पंज तत्त काया चोला आप हढंदड़ा, लेखा जाणे आदि अन्त। गुरमुख विरले आप जगंदड़ा, शब्द जणाई मणीआ मंत। साचा कन्त सुहाग हढंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई साचा कन्त। कन्त कन्तूहला हरि भगवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। जुगा जुगन्तर खेल महान, पुरख समरथ आप कराईआ। कलिजुग अन्तिम

हो प्रधान, पुरी घनक करे रुशनाईआ। साचे सन्तन आत्म ज्ञान, ब्रह्म ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। बख्शिश बख्शे चरन ध्यान, लिव अन्तर आप लगाईआ। मन मानया मिल्या जीआ दान, जीवण जुगत इक्क सिखाईआ। घर सखी मिल्या साचा काहन, साचे मन्दिर बंसरी नाम वजाईआ। लेखा चुक्का सीआ राम, सीतल धार सहिज सुखदाईआ। एका निरगुण कर प्रनाम, जगत जगदीश सीस झुकाईआ। खेड़ा वेख्या सच ग्राम, जगत झेड़ा दए कटाईआ। कोटन कोटि शर्मायण रवि ससि सूरज भान, एका किरन हरि रुशनाईआ। सन्त मनी सिँघ चरन दुआरे डिग्गा आण, हरि मिल्या फड़ फड़ बाहींआ। अर्जन गीता दित्ता इक्क ज्ञान, दूसर पुस्तक ना हथ्थ फड़ाईआ। कलिजुग अन्तिम सच निशान, आपणा अक्खर देवे विच टिकाईआ। बज़र कपाटी पत्थर तोड़ सच मकान, साची सिख्या इक्क समझाईआ। कलिजुग भुल्ला जीव नादान, माया पर्दा एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेल पसारा हरि निरँकारा निराकारा निरगुण धारा आप चलाईआ। सन्त मनी सिँघ जै जै वन्त, जैतसरी एका राग समाया। पारब्रह्म प्रभ पाया साचा कन्त, श्री राग घर मन्दिर आप अल्लाया। काया चोली चढ़या रंग बसन्त, बसन्त मंगलाचार रिहा वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर घर साचा इक्क दरसाया। दर घर साचा हरि भगवन्त, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे साजण सन्त, सतिगुर दाता बेपरवाहीआ। सखी मेला साचे कन्त, गिरवर गिरधर गृह मन्दिर फेरा पाईआ। सखा सुहेला आदि अन्त, जुगा जुगन्त सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज आपणी रचन रचाईआ। अचरज रचना हरि हरि रच, आदि जुगादि समाया। घट घट अंदर रविआ सच्च, सच मन्दिर आप उपाया। पंज तत्त काया दीसे कच्च, थिर कोए रहिण ना पाया। जुगा जुगन्तर रिहा नच्च, स्वांगी आपणा स्वांग वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ नौ चार आपणा बन्धन आप रखाया। नौ नौ चार बन्धन पा, जुग चौकड़ी आप चलाईआ। ब्रह्मा मनवन्तर लेखा दए लिखा, सत्त इक्क करे कुड़माईआ। अठ्ठ तत्त रंग रंगा, नौ नौ खोज खुजाईआ। पंज पंज लेखा दए मुका, दस दस वेख वखाईआ। लक्ख लक्ख गेड़ा दए दुआ, लक्ख बीस जगदीश बेपरवाहीआ। कलिजुग झेड़ा दए मुका, पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कमाईआ। सति सरूपी जामा पा, तत्व तत्त इक्क रखाईआ। नेहकर्मी नेहकर्मी हरि आप अख्वा, कर्म कुकर्मी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची धरनी आप सुहाईआ। नौ नौ चार करे पुकार, ब्रह्मा वेता संग रलाईआ। विष्नूं नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, कँवल नैण ना कोए मटकाईआ। शंकर ढह ढह करे निमस्कार, धूढ़ी मस्तक टिक्का लाईआ। धरती

मंगे साची छार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। करोड़ तेतीसा बण भिखार, एका अलख रहे जगाईआ। लक्ख चुरासी करे विचार, कवण लेखा दए मुकाईआ। धर्म राए तक्के दुआर, अद्धविचकार ताड़ी लाईआ। जुग चौकड़ी दरस मंगे करतार, हौला भार ना कोए कराईआ। गुर पीर अवतार उच्ची कूक करन पुकार, बिन हरि ना कोए सहाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना पायण सार, अञ्जील कुरान खाणी बाणी रही गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, धाम अवल्लड़ा इक्क सहाईआ। धाम अवल्लड़ा सचखण्ड निवास, थिर घर आप वड्याआ। पुरख अबिनाश शाहो शाबाश, साचे तख्त डेरा लाया। निरगुण जोत जोत प्रकाश, दीवा बाती ना कोए जगाया। ना कोई पवण ना स्वास, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। ना कोई पृथ्मी ना आकाश, गगन मंडल ना कोए वखाया। आपे रचे आपणी रास, आप आपणी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा गेड़ा दए चुकाया। कलिजुग गेड़ा चुक्कणा, धरत धवल करे पुकार। सिँघ शेर दलेर एका बुक्कणा, शाह सुल्तानां करे ख्वार। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, वरते वरतावे विच संसार। अंदर वड़ किसे ना लुकणा, शब्द अगम्मी मारे मार। कलिजुग बूटा झूठा सुक्कणा, फल दिसे ना किसे डार। गुरमुख विरला गोदी चुक्कणा, दरगाह साची करे प्यार। हरि का रूप ना मानस ना दिसे मनुखना, निरगुण जोत नूर उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धरनी सुणे पुकार। धरनी सुण पुकार, जगदीश जगत वड्याईआ। पुरी घनक घनक विचार, भव सागर वेख वखाईआ। जिउँ जनक सपुत्री जाए तार, धनक धनुष आपणे हथ्थ उठाईआ। जिउँ तोड़णहारा गढ़ हँकार, लंका रावण रहिण ना पाईआ। जिउँ कंस दुहसासण मारे मार, दर्योधन मेट मिटाईआ। जिउँ खण्डा खड़ग खिच कटार, चिल्ले तीर कमान चढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल बेऐब परवरदिगार, नूरी इसम जिस्म आप अख्वाईआ। बिस्मिल करे सर्ब संसार, एका धार धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल आप खुदाईआ। ख़ालक ख़लक बेनज़ीर, नूर नुराना आफताब महिताब्या। चौदां चौदां पाए जंज़ीर, लेखा चुक्के शाह नवाब्या। सच्चे सूफी चुकाए अन्तिम भीड़, जिस पाया मक्का काया काब्या। दरस दखाए पीरन पीर, अश्व घोड़े साचे चरन दे रकाब्या। चोटी चढ़या इक्क अखीर, लेखा जाणे गैब अगैब्या। मुख नकाब बस्त्र चीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मेल मिलाए दो दो आब्या। दो दो आब हरि हरि मेला, दो जहानां वेख वखाईआ। लेखा जाणे गुर गुर चेला, गुर गुर एका रूप समाईआ। सन्त मिलाए सज्जण सुहेला, घर साचे वज्जे वधाईआ। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, पंडत पांधा थक्का मांदा ना सके कोए बताईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक एका एक अख्वाईआ। निहकलंक हरि भगवान, दूसर अवर ना कोए जणांयदा। सति सरूपी सच निशान, सचखण्ड दुआरे आप झुलांयदा। चौदां लोकां पाए आण, लक्ख चुरासी हुक्म सुणांयदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, रूप रेख आप वखांयदा। गुरमुख साचे चतुर सुजान, जिस जन साची बूझ बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काला सूसा वेख वखांयदा। काला सूसा काली धार, कुल कुलवन्ता वेख वखाईआ। सति सफ़ैदी कर प्यार, सति सतिवादी लए मिलाईआ। बोध अगाधी शब्द जैकार, एका ढोला साचा गाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए विच संसार, पर्दा ओहला रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण अंदर निरगुण वड़, सरगुण डंका रिहा सुणाईआ।

४८२ ०६

✻ २८ चेत २०१७ बिक्रमी दलीप सिँघ दे घर पिण्ड गग्गोबूआ ज़िला अमृतसर ✻

निरगुण हरि हरि राम, हरी हरि हरि खेल खिलांयदा। निरगुण हरि हरि शाम, घनईआ नईआ मात चलांयदा। निरगुण हरि हरि वड अमाम, कायनात कलाम आप पढ़ांयदा। निरगुण हरि हरि सतिनाम, सति मन्त्र इक्क दृढ़ांयदा। निरगुण हरि हरि गोबिन्द जाम, भर प्याला आप प्यांअदा। निरगुण हरि हरि वसणहार सच ग्राम, नगर खेड़ा आप सुहांयदा। निरगुण हरि हरि पूरन करे काम, कादर करता आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द निशान इक्क झुलांयदा। निरगुण हरि हरि बेपरवाह, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। निरगुण हरि हरिभगत मलाह, जुग जुग बेड़ा रिहा चलाईआ। निरगुण हरि हरि पावे साचे राह, मार्ग पन्थ इक्क दसाईआ। निरगुण दिखावे निथावयां साचा थाँ, थान थनंतर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। निरगुण हरि हरि साचा मीत, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। निरगुण हरि हरि इक्क अतीत, घर मन्दिर जोत जगांयदा। निरगुण हरि हरि आपे जाणे आपणी रीत, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। निरगुण हरि हरि पतित पापी करे पुनीत, पतित पावण नाउँ धरांयदा। निरगुण हरि हरि वसे चीत, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। निरगुण हरि हरि एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच वरन बरन ना कोए धरांयदा। निरगुण हरि हरि शब्द जणाए इक्क अणडीठ, आपणी महिमा आप गणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगांयदा। निरगुण रंग हरि हरि चलूल, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। निरगुण हरि हरि ना जाए भुल्ल, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। निरगुण हरि हरि कन्त कन्तूहल, हरिजन सखी वेख वखाईआ।

निरगुण हरि हरि सच पंघूड़ा रिहा झूल, हरिजन साचे आप झुलाईआ। निरगुण हरि हरि आप चुकाए पिछला मूल, अग्गे लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अथाहीआ। निरगुण हरि हरि सगला संग, परम पुरख पतिपरमेश्वर आप निभांयदा। निरगुण हरि हरि सूरा सरबंग, चार कुंट नाम मृदंग आप वजांयदा। निरगुण हरि हरि लोआं पुरीआं आपे लँघ, लोकमात गुरमुख साचे आप जगांयदा। निरगुण हरि हरि साची सेजा सुत्ता इक्क पलँघ, आत्म अन्तर आसण लांयदा। निरगुण हरि हरि वहाए सर सरोवर साची गंग, अमृत तालाब आप भरांयदा। निरगुण हरि हरि आपे लाए आपणे अंग, अंगीकार दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले वेख वखांयदा। निरगुण हरि हरि साचा सतिगुर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। निरगुण हरि हरि लेखा जाणे दरगाह धुर, धुरदरगाह वेख वखाईआ। निरगुण हरि हरि शब्द जणाए एका सुर, सुर ताल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण हरि हरि वड बलवाना, गहर गम्भीर आप अख्वांयदा। निरगुण हरि हरि शाह सुल्ताना, रूप अनूप आप धरांयदा। निरगुण हरि हरि एका देवे पद निरबाणा, निरवैर आपणा खेल खिलांयदा। निरगुण हरि हरि एका देवे ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा। निरगुण हरि हरि एका देवे दाना, साची वस्त झोली पांयदा। निरगुण हरि हरि, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलांयदा। निरगुण हरि हरि वड मेहरवान, महिमा कथन कथी ना जाईआ। निरगुण हरि हरि बेपहिचाण, रूप रंग ना कोए वखाईआ। निरगुण हरि हरि एका वसे सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। निरगुण हरि हरि, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूर नुराना डगमगाईआ। निरगुण हरि हरि नूर नुराना, जल्वा जलाल आप दरसांयदा। निरगुण हरि हरि खेल महाना, लक्ख चुरासी खेल खिलांयदा। निरगुण हरि हरि राग तराना, नादी शब्द वजांयदा। निरगुण हरि हरि आपे पाए आपणी आणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा हुक्म चलांयदा। निरगुण हरि हरि सच फ़रमाण, दो जहानां आप सुणाईआ। निरगुण हरि हरि धुर दीबाण, धुर लेखा दए मुकाईआ। निरगुण हरि हरि शब्द निराला मारे बाण, तीर अणयाला आप चलाईआ। निरगुण हरि हरि आपे होए जाणी जाण, घर घर विच खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता हरि बेअन्त, हरि हरि मेला साचे सन्त, घर साचे वज्जे वधाईआ। निरगुण हरि हरि सन्त प्यारड़ा, सरगुण मेला सहिज सुभाए। पंचम मिलावा मीत मुरारड़ा, त्रैगुण वण्डण वण्ड वण्डाए। लेखा जाण आर पार किनारड़ा, मँझधार आपणा चप्पू रिहा लगाए। आपे सुत्ता सथ्थर यारड़ा, सच सिंघासण पुरख अबिनाशण साची सेज आप

सुहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण हरि हरि अचरज खेल आप खिलाए। निरगुण हरि सर्ब गुणवन्ता, परम पुरख अख्खांयदा। पारब्रह्म बेअन्त बेअन्ता, जीव जंत साध सन्त रसना सर्ब गांयदा। आपे जाणे आपणा लेखा आदि अन्ता, जुग जुग आपणा वेस धरांयदा। आपे शब्द राग नाद गाए आपे पोथी देवे संथा, मन्त्र नाम आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा रंग रंगांयदा। निरगुण रंग अगम्म अपारा, वेद कतेब कहिण ना पाईआ। हरि हरि वसे धाम न्यारा, थिर घर आपणी सेज हंढाईआ। थिर घर सोहे बंक दुआरा, दर दरवाज़ा ना कोए लगाईआ। महल्ल अटल उच्च मुनारा, लेखा लिखे ना कागद कलम शाहीआ। सन्त सतिगुर पावे सारा, जिस आपणा मेल मिलाईआ। साचा शब्द सच धुन्कारा, धुन धुन विच उपजाईआ। सुणे सुणावे सुनणेहारा, सुन्न समाध बोध अगाध लिव लिव विच टिकाईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, आदि जुगादी सच जैकारा, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। कलिजुग अन्तिम गुप्त ज़ाहरा, खेले खेल हरि करतारा, एका अक्खर कर त्यारा, हँ ब्रह्म करे न्यारा, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूर नूर नूर डगमगाईआ। नूर उजाला हरि गोपाला, दीना नाथां दया कमांयदा। सति पुरख निरँजण खेल निराला जोत अकाला, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। भेव चुकाए काल महांकाला अवल्लड़ी चाला, जगत जंजाल तोड़ तुड़ांयदा। एका मन्दिर सुहाए सच्ची धर्मसाला, लेखा जाणे जोत जुआला, दीपक दीआ इक्क टिकांयदा। जन भगतां आत्म पाए साची माला, शब्द सरूपी बण दलाला, मन का मणका आप फिरांयदा। लेखा जाणे शाह कंगाला, फल वेखे लक्ख चुरासी डाला, पाती पाती कमलापाती दिवस राती वेख वखांयदा। गुरसिखां दस्से राह सुखाला, चरन प्रीती घालण घाला, राए धर्म नेड़ ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल साचा हरि, हरी हरि हरिजन साचे लए वर, दर आपणा मेल मिलांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कागद कलम वेद कतेब शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान, गुर पीर अवतार साध सन्त ब्रह्मा विष्न महेष गणपति दर दरवेश आपणी लाए आपे सेव, आपणा लेखा ना किसे जणांयदा।

⁕ २८ चेत २०१७ बिक्रमी गुरबख्श सिँघ दे घर गग्गोबूआ ज़िला अमृतसर ⁕

सुख दुःख एका धार, चिंता सोग ना कोए जणाईआ। मानस मानुख करे प्यार, मन ममता दए तजाईआ। साचा शब्द जगत अधार, गुरसिख रसना जिह्वा गाईआ। सगला भउ दए निवार, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। अन्तिम बख्शे

बख्शणहार, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति गुरमति इक्क पढ़ाईआ। दु:ख सुख हरि का रूप, हरी हरि हरि खेल खिलांयदा। कर पसार चारे कूट, दहि दिशा वेख वखांयदा। पंज तत्त अकार नाता झूठ, सगला संग ना कोए रखांयदा। गुरमुख विरला उपजे साचा पूत, जिस जन साचे सूत नाम बन्धन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दु:ख सुख विच वखांयदा। दु:ख दयाल सहिज सुख सागर, गुरमुख विरले वण्ड वण्डाईआ। काया चोली चढ़े रंग गुलाल, जो जन दु:ख विच हरि हरि रिहा ध्याईआ। हरिजन बणे साचे लाल, त्रैगुण माया गोदड़ी ना कोए हंढाईआ। पुरख पुरखोतम करे प्रितपाल, रैण नैण दिवस सेव कमाईआ। अन्तिम पोह ना सके काल, जगत जंजाल ना दिसे फाहीआ। जिस जन देवे नाम सच्चा धन माल, दो जहानां दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा चुकाए शाह कंगाल, गुरसिख भाणे विच समाईआ। सुख दु:ख जगत जग प्रताप, पूरन परमेश्वर आप रखांयदा। दु:ख विच बुज्झे आपणा आप, सुख साचा नज़री आंयदा। जिस जन सतिगुर पूरा मिल्या माई बाप, चिंता सोग ना कोए जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां देवे एका वर, चिक्खा चिंता हड्डीआं बालण ना कोए तपांयदा।

❊ १ विसाख २०१७ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे घर जेठूवाल दया होई ज़िला अमृतसर ❊

सो पुरख निरँजण साहिब सुल्तान, आदि जुगादि समांयदा। हरि पुरख निरँजण वड बलवान, अगम्म अगम्मड़ा खेल खिलांयदा। एकंकारा वड मेहरवान, अलक्ख अलक्खणा नाउँ धरांयदा। आदि निरँजण जोत महान, निरगुण नूरो नूर डगमगांयदा। अबिनाशी करता वाली दो जहान, इक्क इकल्ला सोभा पांयदा। श्री भगवान नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटांयदा। पारब्रह्म सति फ़रमाण, सति पुरख निरँजण आप अल्लांयदा। साचे तख्त हो प्रधान, सचखण्ड साचे डेरा लांयदा। ना कोई मन्दिर ना मकान, छप्पर छन्न ना कोए वखांयदा। ना कोई ज़िमी ना अस्मान, गगन मंडल ना कोए उपांयदा। रवि ससि ना कोए निशान, लोआं पुरीआं ना रचन रचांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए ज्ञान, चरन ध्यान ना कोए लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल आपणी खेल आप खलांयदा। सो पुरख निरँजण सर्ब गुणवन्त, हरि पुरख निरँजण वड वड्याईआ। एकँकारा महिमा अगणत, आदि निरँजण लखा ना जाईआ। श्री भगवान साचा कन्त, अबिनाशी

करता आप हंढाईआ। पारब्रह्म आदि अन्त, मध आपणी खेल रचाईआ। सचखण्ड निवासी लेखा जाणे जीव जंत, जुगा जुगन्तर वेस धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अकल कल आप अख्वाईआ। सो पुरख निरँजण साची धार, दर घर साचे आप वहांयदा। हरि पुरख निरँजण कर प्यार, एका अंक लगांयदा। एकँकारा खेल अपार, नर हरि आपणी आप करांयदा। आदि निरँजण ठांडा ठार, सांतक सति सति वरतांयदा। श्री भगवान हो त्यार, निरगुण आपणा रूप वटांयदा। अबिनाशी करता साचा भर भण्डार, साची वस्त आप उपांयदा। पारब्रह्म प्रभ बण भिखार, आपणी झोली अग्गे डांहयदा। सचखण्ड निवासा खेल करे करतार, करनी करता आप करांयदा। राज जोग करे सिक्दार, साचे तख्त सोभा पांयदा। हुक्मी हुक्म करे विचार, धुर फ़रमाणा आप अल़ांयदा। ना कोई दीसे चोबदार, दुआरपाल ना कोए रखांयदा। इक्क इकल्ला निराकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहांयदा। सो पुरख निरँजण साचा घर, हरि सचा सच सुहाईआ। हरि पुरख निरँजण अंदर वड़, बैठा आसण लाईआ। एकँकारा फड़ लड़, आपणा पल्लू नाल बंधाईआ। आदि निरँजण साचे पौड़े आपे चढ़, उच्च महल्ले डगमगाईआ। श्री भगवान अग्गे खड़्ह, रूप अनूप आप दरसाईआ। अबिनाशी करता आपणा अक्खर आपे पढ़, निष्अक्खर आपे करे पढ़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ घाड़ण घड़, आपणी रचना आप रचाईआ। सचखण्ड दुआर ना कोई चोटी ना कोई जड़्ह, आदि अन्त ना कोए वखाईआ। ना कोई किला कोट दिसे गढ़, चार दीवार ना कोए वखाईआ। शाह सुल्तान ना सके कोए फड़, राज राजान नज़र ना आईआ। जल धार ना दिसे हढ़, धरत धवल ना कोए वड्याईआ। पंज तत्त ना दिसे नाड़ी नड़, त्रैगुण ना बन्धन पाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, लक्ख चुरासी ना कोए भुआईआ। ना कोई तीर्थ तट दिसे सर, सर सरोवर ना कोए वखाईआ। आपणी करनी रिहा कर, आदि जुगादी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म अगम्मड़ी खेल खलाईआ। सो पुरख निरँजण हरि सुल्ताना, दरगाह साची सोभा पांयदा। हरि पुरख निरँजण सच निशाना, सति सतिवादी आप झुलांयदा। एकँकारा पद निरबाना, आपणा आप जणांयदा। आदि निरँजण विच समाणा, नूरो नूर धरांयदा। श्री भगवान ना किसे पछाणा, रूप रेख ना कोए वखांयदा। पारब्रह्म वेस महाना, इक्क इकल्ला आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे वड़, घर घर विच आप बणांयदा। सचखण्ड दुआरा हरि उपा, आपणी दया कमांयदा। सच सिँघासण आसण ला, तख्त ताज सुहांयदा। धुर फ़रमाणा आप जणा, हुक्मी हुक्म फ़रांयदा। राजा राणा आप अख्वा, आपणा सीस झुकांयदा। नाद तराना आप वजा, तार सितार हिलांयदा। पारब्रह्म प्रभ नाउँ धरा, जोती जोत सरूप हरि,

४८६ ०६

४८७ ०६

आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे अंदर वड़, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। सचखण्ड दुआरा हरि सुहञ्जणा, महिमा अकथन कथी ना जाईआ। सो पुरख निरँजण दर्द दुःख भय भञ्जणा, हरि दाता बेपरवाहीआ। एकँकारा सच दुआर कराए मजना, सर सरोवर इक्क वखाईआ। आदि निरँजण रक्खे लजणा, अन्ध अन्धेर ना कोए वखाईआ। श्री भगवाना ना घड़या ना भज्जणा, भन्नणहार हथ्थ वड्याईआ। अबिनाशी करता आदि जुगादी एका गज्जणा, शब्द अनादी नाद वजाईआ। पारब्रह्म सचखण्ड अंदर थिर घर बह बह सजणा, घर घर विच आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल खलाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, भेव कोए ना पांयदा। आदि अन्त इक्क अवतारा, एका वेस वटांयदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। खेले खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। ना कोई पुरख ना कोई नारा, नर नरायण नाउँ धरांयदा। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, पुत्तर धीआं ना बणत बणांयदा। ना कोई नारी कन्त भतारा, सेज सुहञ्जणी ना कोए हंढांयदा। ना कोई सखीआं मंगल गाए आपणी वारा, रचना रास ना कोए रचांयदा। ना कोई ताल ना तलवाड़ा, रागनी राग ना कोए सुणांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, दर घर साचे आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत डगमगांयदा। जोत उजाला हरि गोपाला, थिर घर साचे सोभा पाईआ। आपणी करे आप प्रितपाला, आदि जुगादि सेव कमाईआ। आपे खेले खेल निराला, वेद कतेब ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई गल्ल विच पाए माला, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरे आप बिराजे, साचे सीस सोहे ताजे, पंचम मुख आप सुहाईआ। पंचम मुख ताज सुहावणा, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। सो पुरख निरँजण एका नज़री आवणा, दूसर होर ना कोए वखाईआ। हरि पुरख निरँजण एका गावणा, वाहवा वजदी रहे वधाईआ। एकँकारा रंग रंगावणा, रंग चलूल इक्क चढ़ाईआ। आदि निरँजण जोत जगावणा, जोत निरँजण डगमगाईआ। श्री भगवान खेल खलावणा, आपणी महिमा आप वखाईआ। अबिनाशी करता नाउँ धरावणा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। पारब्रह्म थिर घर साचे डेरा लावणा, आपणा तख्त ताज सुहाईआ। साची वण्ड आप वण्डावणा, आपणी भिच्छया इच्छया मंग मंगाईआ। आपे झोली अग्गे डाहवणा, शाह हकीर आप अख्वाईआ। बेनज़ीर आप अख्वावणा, तबदीर तकसीर आप बणाईआ। लाशरीक नाम धरावणा, नूरो नूर जल्वा इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाईआ। सो पुरख निरँजण हरि रंग राता, रंग रतड़ा साचा माहीआ। हरि पुरख निरँजण उत्तम ज़ाता, वरन गोत ना कोए बणाईआ। एकँकारा सोहे आपणी खाटा, पावा चूल ना कोए बणाईआ। आदि निरँजण

करे प्रकाश चौदां हाटा, चौदां लोक इक्क रुशनाईआ। श्री भगवान देवे दाता, वड दाता इक्क अख्वाईआ। अबिनाशी करता आपे गाए आपणी गाथा, निरगुण निरगुण करे पढ़ाईआ। पारब्रह्म सर्बकला समराथा, समरथ पुरख आप अख्वाईआ। आपे चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही इक्क अख्वाईआ। आप निभाए सगला साथा, सगला संग आप हो जाईआ। आपे पिता आपे माता, आपे जन जननी नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप लिखाईआ। सो पुरख निरँजण निराकार, एका रंग समाया। हरि पुरख निरँजण मीत मुरार, घर सज्जण सच्चा पाया। एकँकारा कर प्यार, सेज सुहावी दए सुहाया। आदि निरँजण दीपक बाती बाल, प्रकाश प्रकाश दए कराया। श्री भगवान चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाया। अबिनाशी करता आपणा रूप वटाए काल महांकाल, दीन दयाल आपणा नाउँ धराया। पारब्रह्म आपणा आपे पाए जंजाल, आप आपणा खेल खलाया। आपे शब्द अगम्मी बण दलाल, पूत सपूता आपे जाया। आपे वेखे साचा लाल, साची गोदी आप बहाया। आपे आपणा फल लगाए आपणी डाल्ह, पत डाल्ही आप महिकाया। आपे आपणी घालण रिहा घाल, सेवक साची सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण अंदर निरगुण वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, नारी कन्त सेजे चढ़, शब्द दुलारा सुत उपजाया। शब्द सुत सच बलवाना, सचखण्ड दुआरे आप उपांयदा। थिर घर वासी देवे धुर फ़रमाणा, दरगाह साची आप सुणांयदा। लोआं पुरीआं पावे तेरी आणा, तेरा बंक वसांयदा। मेरा राग तेरा गाणा, तेरी धार चलांयदा। तेरा रूप श्री भगवाना, विछड़ कदे ना जांयदा। सति सरूप बद्धा गाना, सति पुरख निरँजण सदा मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल सति सतिवाद लेखा जाणे आदि जुगादि, ब्रह्म ब्रह्माद आपणी रचन रचांयदा। आपणी रचना हरि रचाए, वड दाता बेपरवाहीआ। शब्द दुलारा सेव कमाए, अगम्म अगम्मड़ी खेल खलाईआ। सचखण्ड दुआरा तज थिर घर वासी बाहर आए भज्ज, आपे रक्खे आपणी लज्ज, लाजावन्त आप अख्वाईआ। शब्द शब्दी पर्दा रिहा कज्ज, आप आपणा पर्दा पाईआ। आपणे नगारे आपे रिहा वज्ज, तार सितार ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एकँकार करे खेल अपर अपार, सुत दुलारा कर त्यार, आपणे अंदर लेवे वाड़, आपे बाहर कढ्ढाईआ। आपे पूत सपूता मात पित, जन जननी आप अख्वांयदा। आपे आदि जुगादि जुगा जुगन्त खेले खेल नित नवित, वेस अवेसा वेस वटांयदा। आपे जोती नारी करे हित्त, आपे कन्त रूप समांयदा। आपे वसे साचे खेत, फुल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। आपे रक्खे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। आपे होए नेतन नेत, नित नित आपणी रचन रचांयदा। आपे हारे आपे लए जित्त, आपे आपणी

चाल चलांयदा। आपे वसे धाम अणडिठ, नेत्र नैण ना किसे वखांयदा। आपे साची सेजा रिहा लेट, साची खाट हेठ विछांयदा। आपे सूत ताणा पेट, आपे साची बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण अंदर निरगुण धार, निरगुण आपणा रूप वटांयदा। निरगुण अंदर निरगुण बाहर, निरगुण गुप्त निरगुण ज़ाहर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण सज्जण निरगुण मीत मुरार, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण ठांडा दर दरबार, निरगुण बैठा आसण लाईआ। निरगुण वरते सच वरतार, निरगुण सतिवाद अख्वाईआ। निरगुण शब्द बोल जैकार, आप अपणा नाउँ उपजाईआ। निरगुण नाउँ रक्ख निरँकार, निराकार खेल खलाईआ। निरगुण आपणा आप लए पाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर बैठा अलक्ख जगाईआ। निरगुण आया निरगुण दुआर, निरगुण वेख वखाईआ। निरगुण पुरख अगम्मड़ा एकँकार, ना मरे ना जाईआ। निरगुण पुरख अकाल बोल जैकार, आपणा नाउँ आपे उपजाईआ। निरगुण विश्व कर पसार, विष्नूं आपणी कल वरताईआ। निर्मल अमृत भरया ठंडी ठार, सति सरोवर आप टिकाईआ। निरगुण कँवल होया उज्यार, नाभी कँवल आप भुआईआ। निरगुण खिड़ी सच्ची गुलज़ार, पत पत आप महिकाईआ। निरगुण साची सच बहार, पारब्रह्म वेखे चाँईं चाँईंआ। ब्रह्म अंदरों आया बाहर, प्रभ साचे हथ्थ वड्याईआ। देवे दरस अगम्म अपार, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। एका अक्खर निष्अक्खर आप विचार, कोई दूसर दिस ना पाईआ। ब्रह्मे अंदर कर पसार, ब्रह्म विद्या इक्क समझाईआ। ब्रह्मा निउँ निउँ करे चरन निमस्कार, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। तूं ठाकर हउँ सेवक तुहार, आदि जुगादि सेव कमाईआ। तूं दाता वड सिरजणहार, सिर सिर देणा रिज़क सबाईआ। तेरे दर बणे भिखार, एका भिच्छया मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, देवणहार बेपरवाहीआ। एका वस्त भरे भण्डार, नाम वस्त अमोलक झोली पाईआ। निखुट ना जाए विच संसार, एका एक दए समझाईआ। तेरी कराए धुँदूकार, सुन अगम्म वड्डी वड्याईआ। आपे शंकर करे प्यार, एका तख्त वखाईआ। एका तन पहनाए हार, बाशक तशका गल लटकाईआ। एका त्रसूल कर त्यार, जोती नूर करे रुशनाईआ। विष्नूं सुत्ता पैर पसार, सागों पांग इक्क हंढाईआ। सचखण्ड निवासी खेल करे अपार, आप आपणा नैण खुल्हाईआ। देवे हुक्म सच्ची सरकार, सेवक सेवा सच लगाईआ। लक्ख चुरासी कर प्यार, ब्रह्मे ब्रह्म मति समझाईआ। विष्नूं घर घर भर भण्डार, तेरे हथ्थ हथ्थ वड्याईआ। शंकर अन्तिम दए सँघार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। तिन्नां विचोला आप निरँकार, दिस किसे ना आईआ। शब्द अगम्मी वाजां मार, थिर घर बैठा सेज सुहाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, लेखा लिखे ना कोए शाहीआ। ब्रह्मा निउँ निउँ करे निमस्कार, अठ्ठे नेत्र रहे शर्माईआ। विष्नूं गल पल्ला पा पा रिहा पुकार, तेरा विछोड़ा

झल्लया ना जाईआ। शंकर गलों लाहे आपणे हार, बिन तेरे कुझ ना भाईआ। तेरा हुक्म सच्ची सरकार, शहनशाह मेटया ना जाईआ। तूं दिसें वड ठठयार, हउँ घुमिआर घुमिआर अख्वाईआ। लक्ख चुरासी करनी कार, कादर तेरी कुदरत इक्क जणाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव की करन विचार, तेरी चरन ओट तकाईआ। इक्क वस्त देवीं थार, थिर घर वसया इक्क मलाहीआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपणी दृष्टी आपे पाईआ। त्रैगुण माया कुआड़, रजो तमो सतो आपणे रंग रंगाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवे कर प्यार, इक्क इक्क झोली पाईआ। विष्नूं सतो करया गल दा हार, रजो ब्रह्मा रंग रंगाईआ। तमो शंकर वेखे आपणे अखाड़, घर साचे नाच नचाईआ। पुरख अबिनाशी सच दुलार, तिन्ने लए उपजाईआ। त्रैगुण माया बणाई जगत नार, घर साचे करे कुड़माईआ। साचा मंगल आप उच्चार, सो पुरख निरँजण ढोला गाईआ। हँ ब्रह्म करे पसार, आपणी वण्ड आप वण्डाईआ। हरि का भेव ना कोए विचार, लेखा लेख ना लिख्या जाईआ। अलक्ख निरँजण बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर जल्वा इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण माया पाई वण्ड, खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, रचना रची विच वरभण्ड, लक्ख चुरासी दित्ती गंढ, साची वस्त झोली पाईआ। साची वस्त वस्त अणमोल, विष्न ब्रह्मा शिव झोली पांयदा। पारब्रह्म आपणे कंडे आपे तोल, नाम तराजू हथ्थ उठांयदा। लोआं पुरीआं कुण्डा खोल्ह, ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखांयदा। गगन मंडल वजाए ढोल, रवि ससि अपणी जोत चमकांयदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त आपे करे चोल्ह, त्रैगुण माया जगत जुड़ांयदा। आपे अंदर रक्खया खोल्ह, आकाश प्रकाश आप करांयदा। आपे रक्खया पर्दा ओहल, आपणा मुख आप छुपांयदा। आपे हौली हौली रिहा बोल, आपणा राग आप अल्हांयदा। आपणे अंदर गया मौल, मौला रूप आप अख्वांयदा। आपे बणया आपणा कौल, कँवल कँवला नाम धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया भर भण्डारा, ब्रह्मा विष्न शिव लाए सेवादारा, लक्ख चुरासी आप उपांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव त्रैगुण वस्त झोली पा, दोए जोड़ करन निमस्काररया। तूं पातशाह सच्चा शहनशाह, तेरा रूप ना किसे विचारया। तूं मार्ग सच्चा देणा ला देवें सच सलाह, तेरा अन्त ना पारावारया। तूं आपणा नाम आपे दए सुणा, हउँ मूर्ख मुग्ध गंवारया। तूं आपणा इष्ट आपे दए तरा, सारी सृष्ट तेरा रंग रंगारया। तूं साडी दृष्ट दए खुल्हा, देव देवा नमो देव इष्ट गुर वास्तक रूप तेरा नज़री आ रिहा। तूं दाता अलक्ख अभेव तेरी बिरथा ना जाए सेव, तूं समरथ पुरख नाउँ धरा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव जणा ल्या। भेव जणाए हरि भगवान, ब्रह्मे विष्न शिव करे जणाईआ। लक्ख चुरासी मात निशान, लोकमात वड वड्याईआ। पंज तत्त तत्त प्रधान, त्रै त्रै तत्त आप रखाईआ। पंचम शब्द पंच

ज्ञान, पंज दस्स वज्जे वधाईआ। पंज नाल रलाए शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाईआ। पंचम देवे लोकमात दान, आसा तृष्ना हउमे हंगता मेल मिलाईआ। पंचम बणाए सच्चा काहन, मन मनूआ वड वड्याईआ। पंचम मति करे प्रधान, एका हुक्म सुणाईआ। पंचम बुध बबेकी लए पछाण, घर साचे वेख वखाईआ। नौ दर खोल्हे जगत दुकान, जगत वाष्ना विच रखाईआ। घर विच घर धरे महान, निरगुण आपणी वण्ड वण्डाईआ। सुखमन नाड़ी टेड निधान, अन्ध घोर घोर समाईआ। ईड़ा पिंगल ना सके कोए वखाण, मारू दंड करे जुदाईआ। पंच विकारा मारे बाण, मन मनूआ करे शहनशाहीआ। मन मति बुध होए निधान, साचा बल ना कोए रखाईआ। पुरख अबिनाशी वड मेहरवान, आपणी दया आप कमाईआ। अंदर रक्खे सच निशान, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। साची धुन सुणाए साचे कान, धुन आत्मक आप अलाईआ। अनहद गाए आपणा गाण, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। अमृत आत्म रक्खे पीण खाण, कँवल कँवला आप भराईआ। शब्द निराला मारे बाण, तिक्खी मुखी तीर चलाईआ। बज़र कपाटी वेख चटान, ना कोई भन्ने भन्न हटाईआ। हरि का शब्द सतिगुर पूरा होए आप मेहरवान, आपणा पर्दा देवे लाहीआ। घर विच घर जोत जगाए महान, दस्म दुआरी खेल खलाईआ। साची सेजा सुत्ता नौजवान, कन्त कन्तूहला इक्क अख्वाईआ। सुरत सुआणी साची सखी मिले सच्चा काहन, घर साचे रास रचाईआ। साची सेजा हो परवान, पारब्रह्म मेल मिलाईआ। घर विच घर खेल महान, घर घर विच रिहा कराईआ। लक्ख चुरासी देवे दान, जीआं दाता जीअ दान झोली पाईआ। विष्नूं ब्रह्मा शिव होए हैरान, ब्रह्म कवण रूप अख्वाईआ। पारब्रह्म कवण दुआरे देवे माण, कवण घर वज्जे वधाईआ। कवण पुरख होए सुजान, जिस मिले सच्चा माहीआ। कर्म धर्म जरम विच जहान, तिन्नां लेखा एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे एका वर, विष्नूं भण्डारा साचा भर, शंकर अन्तिम देणा हर, थिर कोए रहिण ना पाईआ। त्रै भिखारी दर दरवाज़े, निउँ निउँ सीस झुकाया। शब्द अगम्मी वज्जण वाजे, पुरख अकाल रिहा सुणाया। साचे तख्त बैठा वड राजन राजे, थिर घर महल्ला उच्च अटला साचे सच सुहाया। करे खेल ग़रीब निवाज़े अश्व घोड़े चढ़े ताजे, लोआं पुरीआं आप दौड़ाया। ब्रह्मे विष्न शिव तेरी रक्खे लाजे, जिस तेरी बणत बणाया। आपे रचया आपणा काजे, प्रभ आपे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर आप बुझाया। एका अक्खर पुरख अकाल, सो आपणा नाम दृढ़ाईआ। ब्रह्मे उप्पर हो दयाल, दीन दयाल दया कमाईआ। तन पहनाया साचा लाल, लाल गुलाला आप अख्वाईआ। फल लगाए आपणे डाल्ह, आप आपणी रुत्त सुहाईआ। आप बणाई धर्म सच्ची धर्मसाल, ब्रह्मे अंदर डेरा लाईआ। शब्द वजाया साचा ताल, निरगुण करे सच पढ़ाईआ।

आपणा मार्ग दस्स सुखाल, चारे वेद करे जणाईआ। चारे जुग करे बहाल, आपणा बन्धन तोड़ तुड़ाईआ। आपणी चौकड़ी घालण घाल, आप आपणी सेव कमाईआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या हरि समझाए, ब्रह्मे भुल्ल रहे ना राईआ। तेरा वेला अन्तिम आए, थिर कोए रहिण ना पाईआ। तेरा काल दए बताए, महांकाल वड वड्याईआ। तेरा जंजाल दए तुड़ाए, त्रैगुण मेटे तेरी शाहीआ। तेरी घाल लेखे लाए, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग अन्तिम पन्ध मुकाईआ। तेरा थाल मस्तक वेख वखाए, गगन गगनंतर फोल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरा लहिणा दए चुकाईआ। ब्रह्मे नेत्र नीर वहाया, प्रभ तेरा भाणा सिर सिर मन्नया। हउँ चाकर तेरी सेव कमाया, वेले अन्त ना जावां डन्नया। घड़ घड़ भाण्डे इट्टां लावां, मैं जो घड़या सो तूं ही भन्नया। त्रैगुण माया तेरा तपदा रहे आवा, तेरा हुक्म सूरज चन्न मन्नया। कवण वेला मैं तेरा दर्शन पावां, तूं मेरे दुआरे आवें भन्नया। प्रभ तेरी सरनगत तेरी सरनाई बलि बलि जावां, मैनूं तेरी छाया मैं वसां तेरी छप्पर छन्नयां। तूं मेरा पिता तूं मेरा माया, तूं मेरा दाई दाया, तेरी सरन तेरी सरनाई घोली घोल घुमावां, तेरे हुक्मे अंदर आया, लक्ख चुरासी सेव कमाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे आपणा वर, तेरा भाणा सिर सिर मन्नया। पुरख अबिनाशी शब्द जणाया, ब्रह्मे बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी तेरा खेल रचाया, वेखणहारा बेपरवाहीआ। त्रैगुण माया रंग रंगाया, पंचम मुक्ट मुक्ट जुड़ाईआ। ब्रह्म ब्रह्म विच ब्रह्म टिकाया, पारब्रह्म भेव ना राईआ। धरत धवल दए सुहाया, धरनी धरन वेख वखाईआ। साध संगत तेरा संग निभाया, भगत भगवन्त दए वड्याईआ। आपणा नाउँ लए उपजाया, आपणे सेवक आप सुणाईआ। गुर पीर रूप लए वटाया, अवतार आपणा खेल खलाईआ। सहँसर मुख बाशक सेवा लाया, दो सहँसर जिह्वा रिहा हिलाईआ। विष्नूं सांगोपांग डेरा लाया, सागों पांग रिहा खिलाईआ। अन्तिम वेला कोई भेव ना पाया, तेरे वेद देण गुआहीआ। पुरख अबिनाशी निरगुण रूप सति सरूप लए वटाया, लोकमात करे रुशनाईआ। कोटन कोटि जीव जंत भरम भरम किसे हथ्थ ना आया, जुग चौकड़ीआं जाण बिताईआ। अठासी अठासी हज़ार बरस जिस तप कमाया, निरगुण घर मिले ना सच्चा माहीआ। खण्ड खण्ड जिस तन कराया, अग्नी अग्नी भेट चढ़ाईआ। रत्ती रत्त जो रहे सुकाया, रत्ती नाम ना हट्ट विकाया। तीर्थ तट जो रहे नुहाया, जटा जूट धार गंगा आपणी धार वहाईआ। सुरस्ती जमना ना पार कराया, गोदावरी दए दुहाईआ। अठसठ नीर रहे कुरलाया, काया कुरा साफ ना कोए कराईआ। रवि ससि रहे शर्माया, जोत प्रकाश ना कोए कराया। गण गंधर्ब देण दुहाया, घर मन्दिर राग ना कोए सुणाईआ। चारे वेद होए हलकाया, हरि का रूप ना कोए वखाईआ। ब्रह्मा

आपणा वेला वक्त ना किसे जणाया, आपणे भाणे आप समाईआ। तेरी अन्तिम आपणे लेखे लए लगाया, तेरी बदली करे शाहीआ। साचे सिखां माण दए दुआया, ब्रह्म पुरी आप बहाईआ। मस्तक चरन आप छुहाया। अगम्म अगम्म बूझ आप बुझाईआ। साची सरन इक्क तकाया, संसा रोग रहे ना राईआ। साचा छत्र सीस झुलाया, जगदीश हथ्थ वड्याईआ। अमृत झिरना दए झिराया, अंमिउँ रस आप भराईआ। अठ्ठे पहर दरस दखाया, सिँघ पाल रूप वटाईआ। आपे पिता आपे माया, आप आपणी गोद सुहाईआ। तेरा लेखा दए चुकाया, पूर्ब लहिणा वेख वखाईआ। आपणा रूप लए वटाया, निहकलंका नाउँ धराईआ। पंज तत्त ना कोए वखाया, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। शब्द अगम्मी एका गाया, चारे वेद लिखण ना पाईआ। ब्रह्मे लक्ख लक्ख शुकर मनाया, सजदा करे बेपरवाहीआ। तेरा तेरी गोद सुहाया, तेरा सोहँ मुम्मा रसना सीर एका प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खलाईआ। विष्नूं बख्शे विश्व धार, सति सतिवादी खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी तेरा अहार, लेज फेज आप बणांयदा। भक्ख भोज कर त्यार, रोज़ी रिज़क राज़क नाम धरांयदा। चोजी चोज करे निरँकार, चाल अवल्लड़ी इक्क वखांयदा। बोध अगाधी खेल न्यार, शब्द अनादी नाद वजांयदा। अतोट अतुट भर भण्डार, आदि जुगादि वरतांयदा। आपे अन्तिम पावे सार, आप आपणी कल वरतांयदा। भगत भगवन्त करे प्यार, जागरत जोत इक्क जगांयदा। अंदर मन्दिर खोल्ह किवाड़, कंचन गढ़ सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न आपणी अंस उपजांयदा। अंसा बंसा हरि करतार, सहँसर सहँसा नाउँ रखाईआ। आपणा बेड़ा विच संसार, साचे सागर आप तराया। आपे जाणे आर पार, मँझधार आप डुबाईआ। आपे वणज करे वापार, आपे हट्टो हट्ट विकाईआ। आपे खेवट खेटा सांझा यार, पुरख अकाल आप अख्वाईआ। आपे बेटी बेटा लए उभार, आप आपणी गोद सुहाईआ। आपे नेतन नेता मीत मुरार, नित नवित वेख वखाईआ। आपे ठांडा सीता सच दरबार, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। आपे पतित पुनीत निरगुण निराकार, पतित पापी लए तराईआ। आपे हस्त कीटा पसर पसार, ऊँच नीच आपणी जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं सेवा इक्क समझाईआ। विष्नूं सेवा साची कर, हरि साचा सच समझांयदा। घट घट अंदर वसया हरि, बिन हरि नज़र कोए ना आंयदा। खुल्ह रक्खे सदा दर, ना बन्द कोए करांयदा। आपणी करनी आपे कर, कादर कुदरत वेख वखांयदा। आपणा भाणा आपे जर, आप आपणे सीस टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्नूं चाढ़े एका रंग, पारब्रह्म सूरा सरबंग नाम वजाए सच मृदंग, साचा धौंसा आप वजांयदा। विष्नूं सुण कर ध्यान, हरि साचे सच जणाईआ। तेरा मिटे अन्त निशान, मेटणहार

आप अख्वाईआ। कोटन कोटि बैठे दर दरबान, विष्न ब्रह्मे अलक्ख जगाईआ। रसना जिह्वा बह बह गाण, बत्ती दन्द रहे हिलाईआ। जिस जन किरपा करे आप भगवान, साची सेवा दए लगाईआ। लोकमात करनी सच पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका हुक्म धुर फ़रमाणा, देवणहारा साचा राणा, वड सच्चा शहनशाहीआ। शाह सुल्ताना, हरि मेहरवाना एका एकंकारया। विष्नूं राग सुणाए तराना, नादी नाद वजा रिहा। सति सरूपी बन्ने गाना, साचा सगण मना रिहा। अन्तिम वेखे मार ध्याना, आप आपणी दया कमा रिहा। मेले मेल दो जहानां, त्रैभवण मेट मिटा रिहा। अवण गवण इक्क तराना, एका राग सुणा रिहा। लक्ख चुरासी जाणी जाणा, घट घट अंदर वेख वखा रिहा। आपे होए मात प्रधाना, निरगुण आपणा नाउँ धरा रिहा। सच झुलाए इक्क निशाना, साचा मार्ग इक्क वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझा रिहा। विष्न ब्रह्मा शिव जणाया, हरि आपणा भेव खुल्हांयदा। निरगुण सरगुण खेल खलाया, सरगुण निरगुण रूप वटांयदा। निरगुण अंदर जोत जगाया, सरगुण डगमगांयदा। सरगुण ताक आप खुल्हाया, बन्द किवाड़ी आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाए हरि भगवाना, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। सतिजुग साचे हो प्रधाना, साचा तख्त इक्क सुहाईआ। सृष्ट सबाई साचा राणा, राउ रंक वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड सुणाए सच्चा गाणा, लोआं पुरीआं आपे गाईआ। लोकमात इक्क तराना, तुरीआ नाद इक्क वजाईआ। सुपन सखोपत जागरत होए हैराना, जग जीवण दाता भेव ना राईआ। आपे गाए खाणी बाणी इक्क तराना, शास्त्र सिमरत आप अल्हाईआ। आपे राम रूप हो प्रधाना, सीता सुरती लए प्रनाईआ। आपे त्रेता त्रीया वेस करे बहाना, तीर कमान आप उठाईआ। आपे फिरे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बीआबाना, आपे ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। आपे भीलणी देवे दाना, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। आपे लंका गढ़ तोड़े मारे रावण वड बलवाना, आपे मेटे झूठी शाहीआ। आपे एका नाम होए प्रधाना, दोए दोए अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करनी करता खेल खलाईआ। करनी करता साचा काहन, भेव कोए ना पांयदा। मुकंद मनोहर लख़मी नरायण आपे देवे सच्चा दान, मोर मुक्ट सीस ताज आप टिकांयदा। आपे सखीआं मंगल गाए गाण, साची रास आप रचांयदा। आपे बण ग्वाला देवे दान, आपे बंसरी नाम वजांयदा। आपे अर्जन बख्शे गीता ज्ञान, अठारां अध्याए आप दृढ़ांयदा। आपे पंचम करे दर परवान, द्रोपत लज्जया आप रखांयदा। आपे बिदर सुदामा देवे माण, हँकारीआं हँकार मेट मिटांयदा। आपे मेटे झूठ निशान, साचा साची सिख्या इक्क समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शास्त्र सिमरत

वेद कतेब आपे गाए आपणी जिह्व, वेद कतेब हरि का रूप ना कोए बणांयदा। आपे खेल खेले भगवाना, भेव कोए ना पांयदा। आपे कलिजुग हो प्रधाना, प्रिआ प्रीतम वेख वखांयदा। आपे जाणे आवण जाणा, लक्ख चुरासी आप भुआंयदा। आपे पहरे आपणा बाणा, वेस अनेका रूप धरांयदा। आपे देवे धुर फ़रमाणा, बुध बबेकी आप करांयदा। आपे ईसा मूसा बद्धा गानां, काला सूसा तन वखांयदा। आपे सुणाए इक्क तराना, सच हदीसा आप पढ़ांयदा। आपे दरगाह करे परवाना, नूर नूर विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। आपे नूर इलाही जल्वा नूर, नूर नूर नूर सच ज़हूर होए महानया। आपे राह तक्के उप्पर कोहतूर, आपे मूसा भेख वटानया। आपे मंग मंगे बहश्ती हूर, आपे खेले खेल श्री भगवानया। आपे बणे शाह ग़फ़ूर, आपे पाए फ़तूर पंज शैतानया। आपे तोड़णहार ग़रूर, आपे हज़ूर होए प्रधानया। आपे देवे आब हयात सरूर, आपे भर प्याए इक्क पैमानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल दो जहानया। दो जहाना ख़ालक ख़लक, बेऐब नाउँ धरांयदा। आपे वसे आपणे फ़लक, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। आपे नूरी इसम रक्खे आपणा तुअल्लक, तालब तल्ब आपणी पूरी आप करांयदा। आपे महबूब आशक इशक, अहिबाब रबाब आप वजांयदा। आपे सादक आपे भिक्खक, सबर सबूरी आप हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जल्वा नूर अलाह, आपे बणे सच मलाह, चौदां तबकां वेख वखांयदा। चौदां तबकां आपे अमाम, कायनात वेख वखाईआ। आपे चार यारी बणे गुलाम, ज़बराईल मेकाईल असराफील अजराईल आप अख्वाईआ। आपे देवणहारा सच पैग़ाम, आपे कासद रिहा उडाईआ। आपे घोड़े देवे इक्क लगाम, चरन रकाब इक्क रखाईआ। आपे जाणे हकीकी कलाम, लाशरीकी हथ्थ वड्याईआ। तहिकीकी तहिरीकी मेटे दो जहान, नूरी नूर करे रुशनाईआ। सच तौफ़ीकी करे काम, तौफ़ीक इक्क खुदाईआ। नाम हकीकी देवे जाम, अन्धेरी शाम गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका कलमा दए पढ़ाईआ। एका कलमा हरि हदीस, उम्मती उम्मत आप सिखांयदा। एका पीसण रिहा पीस, चारों कुंट गेड़ा आप लगांयदा। एका छत्र एका सीस, एका अमाम नाउँ धरांयदा। चौदां चौदां वेखे तीस बतीस, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगांयदा। संग मुहम्मदी चार यार, राणी अल्ला नाल रलाईआ। महिबान बीदो खेल अपार, ऐनलहक करे कुड़माईआ। सच महिराबे करे पुकार, मक्का काअबा दए दुहाईआ। शाह नवाबा परवरदिगार, ख़ाकी तन ना कोए रखाईआ। अमाम अमामा सिर होए सिक्दार, रईयत वेखे खलक खुदाईआ। धुर फ़रमाणा मारे मार, तीर कमान ना हथ्थ उठाईआ। एका कलमा करे प्यार, कुरान कुरान अञ्जील

अञ्जील भेव ना राईआ। साचा बालम होए आप त्यार, सनम आपणा नाम रखाईआ। सिला पत्थर देवे तार, उच्चे पर्बत चरन छुहाईआ। मुहम्मद चरन दुआरे मंगे मंग भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। सदी चौधवीं जाए हार, चौदां लोक ना कोए सहाईआ। चौदां तबकां मारे मार, मारणहारा दिस ना आईआ। दुलदुल ऐली शाह सवार, नीले बस्त्र तन रखाईआ। काली कफ्नी देवे पाड़, एका अल्फ़ी आप हंडाईआ। एका अल्फ़ करे दरकार, निझर धारा आप चुआईआ। अल्फ़ रूप आप करतार, निरगुण आपणी वण्ड वण्डाईआ। भेव ना पाए कोई जीव गुआर, जगत विद्या मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एकओंकारा वसे आपणे घर, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। सचखण्ड दुआरे वसया, पारब्रह्म प्रभ बेअन्त। गुरमुख विरले मार्ग दस्सया, मेल मिलाए साचे सन्त। जुग जुग जन भगतां फिरे पिच्छे नस्सया, धुरदरगाही साचा कन्त। तीर निराला एका कसया, आप मारे महिमा गणत अगणत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आदि अन्त। आदि अन्त हरि हरि खेल, भेव कोए ना पांयदा। गुरमुख सज्जण लए मेल, आप आपणी बूझ बुझांयदा। काया चोली चाढ़े तेल, घर साचे सगन मनांयदा। मेल मिलाए सज्जण सुहेल, सतिगुर पूरा संग निभांयदा। धाम बहाए इक्क नवेल, सचखण्ड दुआरा आप बणांयदा। लेखा जाणे गुरू गुर चेल, गुर चेला आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। वेस अवल्लड़ा पुरख अगम्म, निरगुण आप धरांयदा। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरा पांयदा। पवण स्वास ना लए दम, रसना जिह्वा ना कोए हिलांयदा। हड्ड मास नाड़ी ना दिसे चम्म, पंज तत्त ना कोए रखांयदा। आपे जाणे आपणा कम्म, जुग जुग आप तरांयदा। ना कोई तृष्ना ना कोई तम, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। ना कोई खुशी ना कोई ग़म, ममता मोह ना कोए वधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव छुपांयदा। आपणा भेव आपे रक्ख, जुग जुग करे वड्याईआ। आपे निरगुण सरगुण कर प्रतक्ख, भगत भगती वेख वखाईआ। आपे लेखा जाणे मस्तक मथ, गगन मंडल कर रुशनाईआ। आपे पाए नाम सरूपी साची नथ्थ, हरिजन साचे आप उठाईआ। आपे देवे साची वथ्थ, शब्द अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। आपे दरस दिखाए हो प्रगट, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। आपे अमृत आत्म देवे झट्ट, निझर झिरना आप झिराईआ। आपे जोत जगाए लट लट, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाईआ। आपे वसे घट घट, हस्त कीट एका रंग समाईआ। आपे दूई द्वैती मेटे फट्ट, बिरहों रोग रहिण ना पाईआ। आपे नाता तोड़े आण बाट, मात गर्भ दस दस मास ना कोए तपाईआ। आपे दुरमति मैल देवे कट्ट, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता सर्बकला समरथ, समरथ पुरख आप अख्वाईआ।

समरथ पुरख इक्क इकल्ला, घर साचे सोभा पांयदा। लोकमात वसाए सच महल्ला, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। वसणहारा जलां थलां, समुंद सागर डेरा लांयदा। करे खेल वल छला, अछल अछला नाउँ उपजांयदा। लेखा जाणे राणी अल्ला, आप आपणा पन्ध मुकांयदा। आपणा नूर आपे घल्ला, सति सरूप आप वटांयदा। पंज तत्त काया जोती रला, शब्दी डंक वजांयदा। नानक फड़ाया साचा भल्ला, नाम सति मन्त्र इक्क दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, पुरख अबिनाशा आपणा आप करांयदा। नानक निरगुण सरगुण धार, लोकमात चलाईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यार, आप आपणा मेल मिलाईआ। दोहां विचोला सिरजणहार, सति पुरख निरँजण नाउँ धराईआ। सचखण्ड दुआरा सुहाए बंक दुआर, अलक्ख अलक्खणा बेपरवाहीआ। तख्त बैठ सच्ची सरकार, सीस जगदीश सोभा पाईआ। पंचम मुख ताज हरि निरँकार, आप आपणा दए प्रगटाईआ। सो पुरख निरँजण खेल अपार, हँ ब्रह्म गया कराईआ। शहनशाह सच्चा सिक्दार, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। नानक दर्शन पाया हरि करतार, दरगह वज्जी सच वधाईआ। सो पुरख निरँजण कर प्यार, आप आपणे अंग लगाईआ। हरि पुरख निरँजण बोल जैकार, नाम सति करे पढ़ाईआ। एकँकारा बन्ने धार, धार धार विच टिकाईआ। आदि निरँजण हो त्यार, जोती जोत जोत मिलाईआ। श्री भगवान ख़बरदार, लोकमात संग निभाईआ। अबिनाशी करता इक्क जैकार, चारे वरनां दए सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ मीत मुरार, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाईआ। अठारां बरनां कर ख्वार, पुरख अकाल इक्क जणाईआ। चारों कुंट दए हुलार, दहि दिशा करे रुशनाईआ। हँकारीआं तोड़े गढ़ हँकार, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सार, सतिनाम करे पढ़ाईआ। जगत विकारां कर ख्वार, मन मति दए तजाईआ। गुरमति साची कर अकार, साकार दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द गुर अख्वाईआ। शब्द गुर दाता सूरा, नानक गुर दए गवाहीआ। आदि जुगादी हाज़र हज़ूरा, ना मरे ना जाईआ। नूर इलाही जल्वा नूर, नूरो नूर डगमगाईआ। शब्द वजाए नादी तूर, तार सितार ना कोए हिलाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच्च करे कुड़माईआ। जिस जन मस्तक लाए धूढ़, मूर्ख मुग्ध चतुर सुघड़ बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। नानक खोल्हया भेव हरि निरँकार, एका अक्खर नाम जणांयदा। बहत्तर नाड़ वज्जे सितार, सारंग साची सेव कमांयदा। छत्ती राग रहे पुकार, राग रागनी हुक्म सुणांयदा। अनहद देवे साची धुन्कार, ताल तलवाड़ा आप सुणांयदा। पुरख अगम्म अगम्मड़ी गुफ्तार, गुफ्तम आपणी आप जणांयदा। पेशतो पेश सुणे सुणनेहार, पेशानी आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बोध अगाध आप

अल्लांयदा। बोध अगाध भेव अभेदा, नानक हरि जणाया। लेखा जाणे ना चारे वेदा, साध सन्त रहे ध्याया। लेखा लिखे ना कोए कतेबा, गुर पीर रहे सालाहया। रसना गाए ना कोई जिह्वा, जीव जंत रहे कुरलाया। पुरख अबिनाशी अलक्ख अभेवा, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द अगम्मा सच जैकार, आप सुणाए सुणावणहार, एका नानक झोली पाया। नानक सुण शब्द जैकार, उच्ची कूके दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क निरँकार, दूसर इष्ट ना कोए जणाईआ। जुगा जुगन्तर गुर पीर अवतार साध सन्त पनिहार, मुल्ला शेख़ मूसा इक्क पीर दस्तगीर सेव कमाईआ। आपे करता जाणे आपणी कार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई अन्ध अँध्यार, सच चन्द्रमा ना कोए चढ़ाईआ। वरन बरन हाहाकार, साची सरन ना कोए तकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर होया पार, कलिजुग अन्तिम रहिण ना पाईआ। ऐड़ा अथरबण करे विचार, अल्ला राणी नाल सलाहीआ। सदी चौधवीं आए हार, चौदां तबकां वेख वखाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, पुरान अठारां गया जणाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत आपणा डेरा लाईआ। नानक गाया एका वार, एका मति रिहा समझाईआ। किसे कुखों ना जम्मे लए अवतार, मात पित ना कोए बणाईआ। महांबली उतरे विच संसार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शब्द सरूपी तेज कटार, खड़ग खण्डा आपणा लए चमकाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पावणहारा सार, ब्रह्मे वेला दए मुकाईआ। शंकर करे पार किनार, शिव पुरी वेख वखाईआ। इंद इंद्रासण तज बणे भिखार, भोगी भोग ना कोए कराईआ। करोड़ तेतीसा रोवे ज़ारो ज़ार, उच्ची कूके दए दुहाईआ। गण गंधर्ब ना गाए कोई आपणी वार, किन्नर जच्छप ना नाच नचाईआ। प्रगट होवे हरि कल्की अवतार, निरगुण आपणा नाउँ धराईआ। लक्ख चुरासी जाए हार, बेड़ा पार ना कोए कराईआ। कलिजुग डुब्बे विच मँझधार, सीस भार ना सके उठाईआ। लेखा लिखे आप निरँकार, हुक्मी हुक्म करे जणाईआ। एका जोती दस अवतार, गोबिन्द सिँघ सिँघ अख्वाईआ। सिँघ सिँघ बोल जैकार, एका फ़तह डंक वजाईआ। पंचम पंचम दए आधार, पंचम करे सच कुड़माईआ। पंचम बणाया सच्चा सिक्दार, पंचम बख्शे शहनशाहीआ। पंचम मार तेज़ कटार, नाम धार आप चलाईआ। पंचम कर निमस्कार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। पंचम अमृत भर भण्डार, काया बाटे आप प्याईआ। मिट्ठा रस हरि निरँकार, गुरबाणी विच टिकाईआ। गुरू अर्जन बणया मीत मुरार, गुर शब्द दए गवाहीआ। गुरू ग्रन्थ गुर मीत मुरार, चार वरनां इक्क समझाईआ। जगत सुत ना करे प्यार, अबिनाशी अचुत्त इक्क मनाईआ। सुहाई रुत्त सांझे यार, बसन्त रुत्तड़ी वेख वखाईआ। आपे सथ्थर सुत्ता पैर पसार, मंगे दरस साचे माहीआ। पुरख अबिनाशी

मिल्या एकँकार, जंगल जूह मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। नानक गोबिन्द हरि हरि मेला, एका जोती जोत रुशनाईआ। आपे गुरू गुरू गुर चेला, गुर चेला आप अख्वाईआ। आपे बणया सज्जण सुहेला, पुरख अकाल आप मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बन्धन पाईआ। गुर गोबिन्द सिँघ बलकार, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, तीर तरकश आप उठांयदा। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, पंचम प्यारा आप अख्वांयदा। वाहिगुरू फ़तह बोल जैकार, चार वरनां डंका इक्क सुणांयदा। ऊँचां नीचां एका धार, अमृत साचा जाम प्यांअदा। नीले घोड़े हो अस्वार, शाह अस्वार खेल खिलांयदा। अन्तिम वार गया पुकार, सृष्ट सबाई एह समझांयदा। निहकलंक लए अवतार, पुरख अकाल इष्ट वखांयदा। दूजे दर ना बणे कोई भिखार, पंज तत्त गुरू ना कोए अख्वांयदा। शब्द गुरू सर्ब संसार, जुग जुग सगला संग निभांयदा। काया देस लए अवतार, दर दरवेश खेल खिलांयदा। पुरख अगम्म अगम्मड़ी धार, लोकमात आप चलांयदा। सम्बल नगरी धाम न्यार, साची सिख्या सिख समझांयदा। इक्क इकल्ला वसे एकँकार, दूजा कोए रहिण ना पांयदा। हरि मन्दिर वेखे सच दुआर, उतर पूर्ब पच्छिम दक्खण दिशा फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी कल वरतांयदा। कलिजुग वेला अन्तिम आया, एका ढईआ दए गवाहीआ। पुरख अबिनाशी जामा पाया, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। साचा डंका शब्द वजाया, ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीसा लए उठाईआ। लोकमात नाउँ धराया, आप आपणी कर पढ़ाईआ। सम्बल नगरी डेरा लाया, साढे तिन्न हथ्थ वेख वखाईआ। गोबिन्द मेला सच मिलाया, प्रभ मिल्या विछड़ ना जाईआ। गुर चेला एका रंग रंगाया, सीस आपणा ताज टिकाईआ। सोहँ अक्खर आप लिखाया, नानक रसना गया गाईआ। कबीर जुलाहया दए दुहाया, दर्शन पाया साचे माहीआ। पुरख अबिनाशी दया कमाया, कलिजुग खेल करे बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण आपे बण बण आया, सरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। सतिगुर साचा घाड़ण घड़ के आया, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। शाह सवार हरि निरँकार शब्द अगम्मी घोड़े चढ़ के आया, नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां रिहा दौड़ाईआ। एका नाम खण्डा हथ्थ फड़ के आया, लम्मा चौड़ा ना कोए जणाईआ। सीस धड़ अड्ड आपणा कर के आया, लक्ख चुरासी दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एकँकार आप अख्वाईआ। निहकलंक हरि निरँकार, दूसर अवर ना कोए अख्वाया। प्रगट कल कल्की अवतार, कल कलेश दए मिटाया। दस दस्मेश करे प्यार, दहि दिशा वेख वखाया। नर नरेश हो त्यार, सच सिँघासण सोभा पाया। दर दरवेश

बणे भिखार, गुरसिख दुआरा मंगण आया। मुच्छ दाढ़ी केस ना दिसे विच संसार, ना कोई मूंड मुंडाया। गणपति गणेश ना करे प्यार, इष्ट देव ना कोए रखाया। सृष्ट सबाई सांझा यार, हरि आपणा नाउँ धराया। गुरमुख साचे लए उभार, हरिजन साचे वेख वखाया। हरि सन्तन करे प्यार, पारब्रह्म वड्डी वड्याआ। भगत भगवन्त मीत मुरार, पीत पीतम्बर रिहा सुहाया। अमृत बख्शे ठंडी ठार, आपणी छहबर आपे लाया। करोड़ छिआनवें गया हार, सीतल धार ना कोए वहाया। बिन सतिगुर पूरे कोए ना करे पार, सतिगुर पूरा पुरख अकाल इक्क बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा तख्त ताज सुहाया। तख्त ताज हरि गोबिन्द, एका एक सुहांयदा। जन भगतां मेटे सगली चिन्द, जिस जन आपणा दरस दिखांयदा। हरि सन्त बणाए आपणी बिन्द, सुत अनादी नाउँ धरांयदा। गुरमुख अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, कँवल कँवला आप भरांयदा। गुरसिखां होए सदा बख्शिंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखांयदा। मनमुख लगाए आपणी निन्द, मुख थुक्कां आप भरांयदा। वड दाता गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर भेव ना आंयदा। लेखा जाणे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेले खेल पुरख करतार, हरिभगतां दए वड्याईआ। जिस जन खोल्हे बन्द किवाड़, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। अमृत्र बख्शे ठंडी ठार, बूंद सुआंती आप पिलाईआ। काया मन्दिर अंदर वखाए सच्चा गुरूदुआर, सतिगुर बैठा राह तकाईआ। नेत्र नैण करे उज्यार, तीजा लोचण आप खुल्हाईआ। अनहद शब्द सुणे धुन्कार, साचा राग आपे गाईआ। जो जन आए चल दुआरा, प्रभ लेखा दए मुकाईआ। लक्ख चुरासी पार किनारा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। लाड़ी मौत ना करे शंगारा, वेले अन्त ना लए प्रनाईआ। सतिगुर पूरा करे प्यारा, गुरमुख आपणी गोद बहाईआ। कलिजुग अन्तिम लए अवतारा, चार जुग विछड़े मेल मिलाईआ। जो सरसे डुब्बे डूँग्घी धारा, आप आपणे गले लगाईआ। सीस जगदीश उत्तों जिस वारा, गढ़ी चमकौर होए सहाईआ। चाली चाली पार किनारा, छत्ती जुग सेव कमाईआ। गुर गोबिन्द मीत मुरारा, घर मेला सहिज सुभाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणा अञ्जील कुराना वसे बाहरा, खाणी बाणी रही गुण गाईआ। करे खेल गुप्त ज़ाहरा, अंदर बाहरा आप अख्वाईआ। चार वरन सुणाए एका नाअरा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान करे पढ़ाईआ। शाह सुल्ताना राज राजाना आउँणा चल दुआरा, वीह सौ बीस बिक्रमी राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी माया आपे छाईआ। आपे माया आपे छाया, आपे पर्दा पांयदा। आपे गुर आप अवतार पीरन पीरा आप अख्वाया, आपे भेव रखांयदा। आपे मन्त्र आपे नाम आपे शब्दी शब्द दृढ़ाया, आपे ज्ञान गोझ वखांयदा। आपे रसना आपे जिह्वा आपे बत्ती

दन्द हिलाया, सुन्न समाध आप करांयदा। आपे नेत्र लोचण नैण बन्द वखाया, आपे नैण नैण दरसांयदा। आपे दीपक जोत दीआ आप जगाया, अज्ञान अन्धेर आप मिटांयदा। आपे कलिजुग अन्तिम निहकलंका बण के आया, हरिजन साचे आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिक्खी सिख समझांयदा। साची सिक्खी सिख विचार, सिख्या सिख विच ना आईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपणी दृष्टी दए टिकाईआ। चरन दुआर साची भगती विच संसार इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोग अभ्यास ना कोए कराईआ। जोग अभ्यास तुट्टा नाता, सतिगुर पूरे दर्शन पाया। रसना जिह्वा छुट्टी गाथा, हरि हरि एका रसना गाया। लहिणा देणा चुक्या पूजा पाठा, पतिपरमेश्वर नज़री आया। सर सरोवर मुक्कया घाटा, चरन धूढ़ एका नुहाया। अमृत पीता काया बाटा, पुरख अबिनाशी आप प्याया। अग्गे आई नेड़े वाटा, पिछला चुरासी पन्ध मुकाया। गुरसिख कदे ना खाए घाटा, सतिगुर साचे कंडे तोल तुलाया। सेवा करे आदि शक्ति जोत लिलाटा, हवनी हवन गुरसिख तेरा प्रेम अहूती विच पुआया। उत्तम होई जगत ज़ाता, जोती जाता एका पाया। लेखा चुक्या मस्तक माथा, जिस जन चरनी मस्तक लाया। पारब्रह्म प्रभ सगला साथा, पुरख अकाल संग निभाया। गुरसिख विके ना किसे हाटा, बिन सतिगुर पूरे कीमत ना सके कोई चुकाया। कलिजुग खेल बाज़ीगर नाटा, स्वांगी आपणा स्वांग रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिक्खी सिख अख्वाया। साची सिक्खी गोबिन्द गोपाल, हरि साचा मेल मिलांयदा। गुरमुख वेखे साचे लाल, लाल गुलाला रंग चढ़ांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों भाल, आप आपणे अंग लगांयदा। आप वजाए साचा ताल, तन नगारे चोट लगांयदा। लक्ख चुरासी तोड़ ज़ंजाल, जागरत जोत इक्क जगांयदा। सम्मत सत्तरां बण दलाल, कलिजुग बेड़ा पार करांयदा। पहली विसाख होए खुशहाल, जो जन नेत्र दर्शन पांयदा। वेले अन्त ना खाए काल, जम का दूत नेड़ ना आंयदा। सचखण्ड बहाए सच्ची धर्मसाल, सतिगुर पूरा आपणी हथ्थीं आप उठांयदा। एथे ओथे दो जहानी चले नाल नाल, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। गुरसिख मन तन रतड़ा, हरि नामा रंग अमोल। हरिजन ना ठांडा ना तत्तड़ा, एका तक्कड़ तुले तोल। गुरमति वेखे साची मतड़ा, मन मति ना बोले बोल। लेखा मिले हथ्थो हथ्थड़ा, शब्द नगारा वज्जे ढोल। कलिजुग अन्तिम राहों घुथड़ा, सच वस्त ना किसे कोल। बसन्त सोहे ना कोए रुत्तड़ा, पत डाल्ही ना रही मौल। लक्ख चुरासी जीव सिम्बल रुक्ख ना फल ना फुलड़ा, अमृत आत्म छकी ना साची पहुल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां पर्दे देवे खोल्ह। गुरसिख तेरा पर्दा खोल्हणा, कर किरपा सिरजणहार।

५०२

०६

तेरी काया मन्दिर बोलणा, हौली हौली करे गुफ़तार। तेरी सुरती सुरती मौलणा, शब्द शब्दी खेल न्यार। तेरा करे भार हौलणा, सिर आपणे चुक्के भार। कलिजुग अन्त कदे ना डोलणा, चारों कुंट होए हाहाकार। पुरख अबिनाशी सच दुआरा एका खोलणा, चार वरन बणे भिखार। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां एका कंडे तोलणा, तोलणहारा आप निरँकार। जो जन चरन प्रीती घोली घोल घोलणा, भव सागर उतरे पार। सोहँ शब्द एका बोलणा, सतिजुग साची सच जैकार। नौ खण्ड वज्जे ढोलणा, मृदंगा गूंजे नाम गुंजार। हरिजन तेरा डूँग्घी भँवरी काया कँवरी पर्दा आपे खोलणा, लेखा जाणे अन्ध अँध्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सिर रक्ख ताज दस्तार। गुरसिख सोया जागया, कलिजुग अन्तिम चुकया मूल। पुरख अबिनाशी लोकमात आया भागया, जिउँ धरू प्रहलाद मिल्या कन्त कन्तूहल। जो जन रहे विच आज्ञा, शब्द पंघूड़ा लए झूल। हरि मिल्या कन्त सुहागया, दो जहानी बरखे फूल। सतिगुर पूरा पाया वड वड भागया, साचा दाता दूहलो दूहल। मन उपजाए इक्क वैरागया, गुरसिख ना जाए भूल। जो जन सरनाई लागया, सरनगत कमलापत एका कन्त हरि भगवन्त कन्त कन्तूहल। गुरसिख सोया उठया, कलिजुग अन्तिम लए अंगड़ाई। सतिगुर पूरा आपे तुठया, लोकमात देवण आया नाम वधाई। चार कुंट रहिण ना देवे लुकया किसे गुट्ठया, हरि शब्द करे कुड़माई। मनमुख जीव ना दिसे जूठा झूठया, वेले अन्त राए धर्म दए सज़ाई। कुंभी नर्क टंगे पुठया, अग्नी तत्त बालू पाए सिर शाही। गुरसिख पूर्ब जन्म जो रुसया, कलिजुग अन्तिम लए मिलाई। आप अंदर वड़ बुझाए गुरसिख तेरा गुसया, तेरा पीसण पीस सेव कमाई। तेरा तन बणाए आपणा सूसया, आपणी चोली दए तजाई। लेखा चुकाए ईसा मूसया, गुरमुखां बख्शे साची शाही। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अजूनी रहित पुरख अकाला प्रगट होए दीन दयाला, चरन दुआर रखाए काल महांकाला, दर आए तराय कोटन कोटि जन्म दे वड गुनाही। गुरसिख सोया साची नींद, सतिगुर पूरा आप सुआंयदा। सगली मेटे दो जहानां चिन्द, चिंता चिखा ना कोए वखांयदा। दाता दानी वड मेहरवानी गुणी गहिन्द, वड मेहरवान सागर सिन्ध आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, वर घर साचा एका एक समझांयदा। वर घर एका पावणा, हरि सच्चा एकँकार। एका कन्त हंढावणा, पुरख अबिनाशी कर प्यार। एका सेज सुहावणा, हरि सज्जण मीत मुरार। एका अंग लगावणा, विछड़ ना जाए विच संसार। एका बंक सुहावणा, आत्म सेजा कर त्यार। एका रंग चढ़ावणा, रत्ती रत्त ब्रह्म मति आत्म तत्त उत्तों वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे जाए तार। गुरमुख साचा तारया, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। सतिजुग

साचे खेल अपारया, दस अठ्ठ करे रुशनाईआ। दोए दोए रूप आप निरंकारया, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। पंज तत्त जोत उज्यारया, शब्द शब्दी डंक वजाईआ। हरिभगत कराए वणज सच वणजारया, एका भिच्छया झोली पाईआ। कलिजुग आई अन्तिम वारया, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। वरनां बरनां फड़ फड़ारिहा, शाह सुल्तान करन लड़ाईआ। नारी कन्त ना कोए प्यारया, विभचार रही कमाईआ। पिता पूत ना सुत दुलारया, भाई भैण ना पति रखाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरारया, सृष्ट सबाई होई गुनाहीआ। साध सन्त मन हंकारया, जगत विद्या वाद वधाईआ। पुरख अबिनाशी ना कोए मना रिहा, आपणे गीत रहे गाईआ। घर मन्दिर ना जोत कोई जगा रिहा, गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ करन रुशनाईआ। आपणा शब्द ना किसे अल्ा ल्या, रसना पढ़ पढ़ जगत सुणाईआ। आपणा लेखा ना किसे पढ़ा ल्या, जीवां जंतां लेखा रहे जणाईआ। आपणा कन्त ना किसे मना ल्या, घर घर शादीआं रहे रचाईआ। चौथे पद प्रभ अबिनाशी किसे ना पा ल्या, चौथी लांव पूरी होई ना विच संसार, दुहागण नार सर्ब अख्वा रिहा। जिस जन सतिगुर पूरे चरन प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, आप आपणे घर बहा ल्या। घर सुहावा थिर दरबारा, महिमा गणत गणी ना जाईआ। एका वसे एकँकारा, अकल कला अख्वाईआ। सचखण्ड निवासी साची धारा, दरगाह साची आप चलाईआ। साचा तख्त सच्ची सरकारा, सच सिँघासण आसण लाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, सीस ताज आप टिकाईआ। पंचम मुख मुख उज्यारा, सप्तम आपणा रंग रंगाईआ। सति पुरख निरँजण खेल न्यारा, सति सतिवादी आप कराईआ। कलिजुग अन्तिम लए अवतारा, निहकलंक नाउँ धराईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत हरि सन्त वसण इक्क दुआरा, एका मंगल गाईआ। गुरसिखां छुट्टा जगत संसारा, नाता जुड़या बेपरवाहीआ। कलिजुग माया कुत्ता खाए सर्ब संसारा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जिस जन मिल्या सच्चा हरि दुआरा, हरिजन हरि का रूप समाईआ। गुरमुख उतरे पार किनारा, मनमुख वहिंदी धार वहाईआ। जुगा जुगन्तर साची कारा, सति पुरख निरँजण आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरसिख फड़ाए आपणा लड़, ठाकर अबिनाशी किरपा कर, ठाकुर ठाकर लए तराईआ। ठाकुर तराया धन्ना जट्ट, ठाकुर ठाकर रूप वटांयदा। ठाकुर लाहा लए खट्ट, ठाकुर ठाकर मुख वखांयदा। ठाकुर वसे घट घट, घट ठाकुर आसण लांयदा। ठाकुर खोल्हे साचा हट्ट, ठाकुर वणज वपार इक्क करांयदा। ठाकुर पहनाए तन पट्ट, ठाकुर छप्पर छन्न छुहांयदा। ठाकुर गाए मोई ज्विाले झट्ट, ठाकुर कपला दोह लै आंयदा। ठाकुर खेले खेल बाज़ीगर नट, पंडत पांधा भेव ना पांयदा। ठाकुर गुरसिखां पहलों भरे काया मट्ट, आपणी तृष्ना फेर बुझांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे ठाकर आपे ठाकुर, आपणी ठोकर आपे लांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी खेल महान, जुग जुग आपणी खेल खिलांयदा।

✻ २ विसाख २०१७ बिक्रमी लाभ सिँघ दे दरवाज़े अग्गे पिण्ड सैद पुर ज़िला अमृतसर ✻

सो पुरख निरँजण अगम्म अपार, आदि जुगादी खेल अपारया। हरि पुरख निरँजण भेव न्यार, रूप रेख ना कोए जणा रिहा। एकँकारा साची धार, सति सतिवादी आप वहा रिहा। आदि निरँजण जोत उज्यार, नूर नुराना डगमगा रिहा। श्री भगवान मीत मुरार, साचा संग रखा रिहा। अबिनाशी करता दो जहाना पावे सार, निरगुण आपणा खेल खला रिहा। पारब्रह्म प्रभ आपे जाणे आपणी कार, करनी करता नाउँ धरा रिहा। वसणहारा सचखण्ड दुआर, सच सिँघासण आसण ला रिहा। शाहो भूप सच्ची सरकार, वड सुल्तान भेव अपारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला निराकार दिस ना आ रिहा। सो पुरख निरँजण गहर गम्भीर, वड दाता बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरँजण चोटी चढ़े इक्क अखीर, महल्ल अटल आप सुहाईआ। एकँकारा शाह हकीर, एका रंग समाईआ। आदि निरँजण आप आपणी बन्न्हे बीड़, जोती जाता आप अख्वाईआ। श्री भगवान वड पीरन पीर, पीत पीतम्बर सीस छुहाईआ। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणा अमृत सीर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। पारब्रह्म जोद्धा सूर वड दाता बीरन बीर, बली बलवान आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड बैठा सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरा सच महल्ला, हरि साचा सच सुहांयदा। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, थिर घर वासी आसण लांयदा। आपणी जोती दीपक आपे बला, दीवा बाती ना कोए टिकांयदा। कमलापाती वसे नेहचल धाम अटला, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा नाउँ धरांयदा। सच संदेश हरि नरेश शब्द अगम्मी एका घल्ला, धुर फ़रमाणा आप जणांयदा। सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्मादि आप फड़ाए आपणा पल्ला, आपणी रचना आप रचांयदा। आपे होए अछल अछला, वल छल धारी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, जुग जुग आपणी वण्ड वण्डांयदा। सो पुरख निरँजण वड मेहरवान, हरि पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। एकँकारा नौंजवान, आदि निरँजण ना मरे ना जाईआ। श्री भगवान देवे दान, अबिनाशी करता अतोट, अतुट्ट आप वरताईआ। पारब्रह्म खेले खेल महान, आपणी इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। सचखण्ड दुआर हरि निरँकार खेल अपार, निरगुण निरगुण देवे माण, निरगुण आपणी वण्ड वण्डाईआ। निरगुण शाह निरगुण सुल्तान, राज

राजान आप अख्वाईआ। निरगुण गोपी निरगुण काहन, निरगुण साचा संग निभाईआ। निरगुण मेला दो जहान, निरगुण वेखे ताड़ी लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला, आदिन अन्ता इक्क अख्वाईआ। आदिन अन्त श्री भगवन्त, दूसर अवर ना कोए जणांयदा। आपे नारी आपे कन्त, आपे साची सेज हंढांयदा। आपे आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लेख ना कोए वखांयदा। आपे आपणा रंग रंगे इक्क बसन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा पुरख अबिनाशा आपणा आप करांयदा। सचखण्ड अटारी जोत निरँकारी, निरगुण आपणी आप जगाईआ। जुगा जुगन्तर हो उज्यारी, थिर घर साचे सोभा पाईआ। वज्जे शब्द नाद धुन सच्ची धुन्कारी, धुनी धुन नाद उपजाईआ। आपे सुणे सुणाए सुणनेहारी, आपणा ढोला आपे गाईआ। आपे वणज आप वपारी, आपे साचा हट्ट खुल्हाईआ। आपे भिक्खक मंगे बण भिखारी, आपे दाता दानी नाउँ धराईआ। आपे पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण खेले खेल अगम्म अपारी, अलक्ख अगोचर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर सोहे सोभावन्त, खेले खेल श्री भगवन्त, हरि हरि आपणा खेल खलाईआ। हरि खेल अवल्लड़ा, इक्क इकल्लड़ा, साचे धाम खलांयदा। सचखण्ड निवासी सच तख्त सुल्तान आपे मलड़ा, मेहरवान आप आसण लांयदा। सच संदेश नर नरेश एकँकारा ओंकारा आपे घलड़ा, निराकार हुक्म सुणांयदा। आपणे दर दुआर आपे खलड़ा, दर दरवेश आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा एकँकारा आपणा आप सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा थिर घर वास, पुरख अबिनाशी सोभा पाईआ। नर नरायण खेल तमाश, आप आपणा वेख वखाईआ। आपणे मन्दिर पावे रास, आपणा मंडल आप सुहाईआ। आपणे अग्गे आपे होए दास, आपे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आदि अन्त ना जाए विनास, थिर घर वासी बेपरवाहीआ। ना कोई पृथ्मी ना आकाश, धरत धवल ना कोए वड्याईआ। रवि ससि ना कोए प्रकाश, त्रैगुण माया ना तत्त वखाईआ। पंचम पंच ना कोए धरवास, रक्त बूंद ना कोई वखाईआ। ना कोई पवण ना कोई स्वास, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। निरगुण नूर नूर प्रकाश, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। मात गर्भ ना वसे दस दस मास, पिता पूत ना नाउँ धराईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना दिसे कोई प्रभास, समुंद सागर ना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। दर घर साचा हरि सुहञ्जणा, निरगुण जोत दीप प्रकाश्या। पुरख अबिनाशी दर्द दुःख भय भंजना, आदि जुगादि ना कदे विनासया। सखा सुहेला साचा सज्जणा, आप आपणी पूरी करे आसया। आपे जाणे आपणा मजणा, अमृत धारा आप चलासया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

सचखण्ड दुआरा हरि जी वसे एकँकारा एका रंग समांयदा। एका रंग रंग अपार, रंग रत्तड़ा आप अख्वाईआ। सो पुरख निरँजण हो उज्यार, हरि पुरख निरँजण वेस वटाईआ। एकँकारा दए हुलार, आदि निरँजण आप जगाईआ। श्री भगवान साची कार, अबिनाशी करता करे किरत कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, जन जनणी आप अख्वाईआ। सुत दुलारा कर त्यार, हरि शब्दी नाउँ धराईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां महल्ल उसार, चौदां लोकां वण्ड वण्डाईआ। आपणी इच्छया आपे धार, विश्व आपणा रूप वटाईआ। आपे कँवल कँवला खिड़े गुलज़ार, आपे नाभी अमृत सच भराईआ। आपे अंदर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आप अख्वाईआ। आपे ब्रह्म कर पसार, पारब्रह्म आपणी वण्ड वण्डाईआ। आपे शंकर बणया मीत मुरार, हथ्थ त्रसूल उठाईआ। आपे त्रैगुण माया भर भण्डार, सतो रजो तमो आपणे रंग रंगाईआ। आपे पंज तत्त खेले खेल संसार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बणत बणाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, मानस मानुख दए वड्याईआ। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, जगत वासना विच टिकाईआ। घर विच घर कर त्यार, घर बैठा आसण लाईआ। घर मन्दिर दिसे धूंआँधार, घर साचा चन्द चढ़ाईआ। घर पंज शब्द सच्ची धुन्कार, घर सुन्न समाध वखाईआ। घर बह बह मारे मार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होए हलकाईआ। घर नाम वजाए सच सितार, तार सितार ना कोए हिलाईआ। घर अमृत भरया ठंडा ठार, नाभी कँवली मुख भुआईआ। घर अनहद शब्द वजाए सच्ची सरकार, ताल तलवाड़ा ना कोए वखाईआ। घर मान सरोवर लए उछाल, साची वस्तू आप रखाईआ। घर बज़र कपाटी लाए पाड़, दूई द्वैती पर्दा दए मिटाईआ। घर आत्म सेजा कर त्यार, निज बैठा डेरा लाईआ। घर सखीआं मंगलाचार, घर गीत गोबिन्द अल्हाईआ। घर वेस करे कुड़यार, मन मति खेल खलाईआ। घर बुध बबेकी करे प्यार, घर सगला संग रखाईआ। घर सतिगुर बैठा मीत मुरार, डूँघी कंदर मुख छुपाईआ। घर सोहे बंक दुआर, घर वजदी रहे वधाईआ। घर मेला कन्त भतार, नारी सुरती लए प्रनाईआ। घर एका सेजा सुत्ते पैर पसार, ना करवट लए बदलाईआ। घर पाया मीत मुरार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी आत्म ज़ात, हरि साचे सच उपाईआ। निरगुण बख्शे आपणी दात, जीव आत्म परम आत्म मेल मिलाईआ। ईश जीव वेखे मार झात, बन्द ताक आप खुल्हाईआ। आपे होए पतित पाक, पवित आपणा नाउँ धराईआ। आपे साक सैण सज्जण साक, मात पित भाई भैण आप हो जाईआ। आपे अन्तिम पत लए राख, वेले अन्त होए सहाईआ। आपे पुछणहारा वात, कमलापत आप अख्वाईआ। आपे लहिणा देण चुकाए बाक, राए धर्म वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डा घढ़या, ब्रह्मा

विष्न शिव सेव कमाईआ। निरगुण सरगुण अंदर वड़या, दिस किसे ना आईआ। आपणे मन्दिर आपे चढ़या, हरि बैठा डेरा लाईआ। आउँदा जांदा किसे ना फड़या, नेत्र लोचण नैण ना कोए वखाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़या, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। अग्नी हवन कदे ना सड़या, मढ़ी गौर ना कोए दबाईआ। फड़ कटार कदे ना लड़या, हुक्मी हुक्म रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआर खेल अपार, हरि गिरधार आप कराईआ। हरि गिरधार सच निशानी, थिर घर साचे आप वखांयदा। आदि शक्ति जोत भवानी, जागरत जोत इक्क जगांयदा। चतुर्भुज खेल महानी, मूर्त अकाल रूप वटांयदा। जूनी रहित वड्डा दानी, निर्भय आपणा भउ जणांयदा। शब्द अगम्मी गाए तरानी, आपणा सोहला आप अल्ांयदा। आपे जाणे आपणी बाणी, ब्रह्मे भिच्छया एका झोली पांयदा। चार वेद लोकमात निशानी, लक्ख चुरासी जीव जंत आप समझांयदा। आपे वेखे चारे खाणी, अंडज जेरज सेत्ज उत्भुज घट घट फोल फुलांयदा। आपे राजा आपे राणी, तख्त ताज आप सुहांयदा। आपे होया जाण जाणी, आप आपणा वेस धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड प्रकाश पुरख अबिनाश, इक्क इकल्ला आप करांयदा। इक्क इकल्ला अगम्म अथाह, अकल कला अख्वाईआ। लक्ख चुरासी बण मलाह, लोकमात वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण नाउँ धरा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। शब्द अगम्मी विच टिका, राग नाद आप अल्ाईआ। दीपक जोती इक्क जगा, घर घर विच करे रुशनाईआ। आपणा आप दए जणा, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म दए वखाईआ। रवि ससि रहे शर्मा, जिस जन मिल्या सच्चा माहीआ। लोकमात फेरी पा, हरिभगत लए उठाईआ। हरि सन्तां देवे सिफ्त सालाह, नाम निधाना झोली पाईआ। दो जहानां बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलाईआ। खेवट खेटा नाम धरा, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पा, सत्तां दीपां लए अंगड़ाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखा, ब्रह्मा विष्न शिव लए समझाईआ। जुग जुग लेखा दए मुका, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सो पुरख निरँजण खेल खला, हँ ब्रह्म विच समाईआ। सोइम रूप आपणा आप करा, ओअँग आपणा नाउँ उपजाईआ। देवी देवा भेव ना पाए कोई रा, अलक्ख अभेव वड्डी वड्याईआ। वास्तक रूप विश्व आपणा नाम धरा, नमो देव इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे निराकार तख्त निवासी बेऐब परवरदिगार, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। बेऐब परवरदिगार हरि निरँकार, जुग जुग आपणी खेल खिलांयदा। भगतां देवे भगती धार, आत्म शक्ती इक्क धरांयदा। बूंद रक्ती कर प्यार, जगत व्यक्ती आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल विच संसार, सालस आपणा नाउँ धरांयदा। सच्चा सालस हरि भगवन्त, लोकमात वेस वटांयदा। आप उठाए साचे

सन्त, सति धर्म इक्क दृढ़ांयदा। आप जणाए ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ांयदा। आप रखाए निरगुण तत्त, तत्व तत्त
ना कोए जणांयदा। आपे जाणे मित गति, गति मित आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे बीज बीजे साचे वत, फल फुलवाड़ी
आप महिकांयदा। आपे सन्तन जोड़े चरन कँवल नत्त, जगत नाता तोड़ तुड़ांयदा। चार वरन वखाए एका ज़ात पात, शत्री
ब्रह्मण शूद्र वैश ना वण्ड वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर लोकमात बुझाए लग्गी
बसन्तर, सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, साचे सन्तन मेल मिलांयदा। सन्तन मेला हरि भगवान, गुरमुख वड्डा वड वड्याईआ।
शब्द जणाई धुर फ़रमाण, कागद कलम ना लिखे छाहीआ। हरिजन पाए पद निरबान, परम पुरख मेल मिलाईआ। जो
जन रसना जिह्वा हरि हरि गाण, घर साचे वज्जे वधाईआ। अमृत आत्म बख्शे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख दए मिटाईआ ।
एका राग सुणाए कान, अनुभव प्रकाश कराईआ। एका देवे ब्रह्म ज्ञान, जगत ज्ञान ना कोए वखाईआ। सच वखाए सत्त
निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाईआ। जन भगतां उप्पर होए आप मेहरवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आप
कराए आपणी पछाण, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लेखा
५०८ वेख वखाईआ। जुग जुग लेखा हथ्थ करतार, चार जुग चौकड़ी आप भुआंयदा। आपे ब्रह्मा मनवन्तर पाए सार, जुगा ५०८
जुगन्तर खेल खिलांयदा। आपे शास्त्र सिमरत वेद रिहा विचार, खाणी बाणी फोल फुलांयदा। आपे अञ्जील कुराना पावे
०६ सार, शाह सुल्ताना नाउँ धरांयदा। शब्द तराना अपर अपार, गुरमुख विरले आप सुणांयदा। काया मन्दिर अंदर खेल अपार, ०६
डूँग्घी कंदर आपे गांयदा। बज़र कपाटी तोड़े जंदर, आपणा मुख आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
किरपा कर, सच भगौती भगवत धार, आपणी आप वखांयदा। साची धार धुरदरगाह, हरि साचा सच जणांयदा। रथ
रथवाही इक्क मलाह, लक्ख चुरासी बेड़ा आप चलांयदा। जन भगतां देवे सच सलाह, एका नाम जपांयदा। राम रामा
दए मिला, राम रूप आप अख्वांयदा। पूरन काम दए करा, निहकर्मी कर्म कमांयदा। काया नगर खेड़ा दए वसा, जिस
जन आपणी बूझ बुझांयदा। झूठा झेड़ा दए मुका, भाण्डा भरम भउ भनांयदा। पंज तत्त सथ्थर दए विछा, आसा तृष्ना
मेट मिटांयदा। एका अक्खर दए पढ़ा, लिखण पढ़ण विच ना आंयदा। गुर पीर अवतार साध सन्त रहे गा, तुरीआ नाद
इक्क वजांयदा। गुरमुखां जाग दए खुल्हा, तीजा नेत्र आप खुल्हांयदा। चौथे पद दए मिला, घर साचे सोभा पांयदा। पंचम
मेला सहिज सुभा, पुरख अबिनाशी आप करांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना रक्खे कोई छाँ, सिर आपणा हथ्थ धरांयदा। सत्तवें
सति पुरख निरँजण जोती जोत ल्ए मिला, जोती जोत विच टिकांयदा। अठ्ठवें अठ्ठां तत्तां दए खपा, अप तेज वाए पृथ्मी

आकाश मन मति बुध नज़र ना आंयदा। नावें नौ दुआरे खोज खुजा, काया गढ़ फोल फुलांयदा। दस्म दुआरी जोत जगा, गुरमुख साचे राह वखांयदा। सुखमन नाड़ी पार करा, टेढी बंक पन्ध मुकांयदा। ईड़ा पिंगल लेखा दए जणा, लेखा लेख ना कोए वखांयदा। सतिगुर पूरा नाउँ धरा, आप आपणा रूप वटांयदा। कागों हँस दए बणा, सोहँ माणक मोती चोग चुगांयदा। घर घर जोती दए जगा, नाम बत्ती एका लांयदा। कोटन कोटि रहे ध्या, दिस किसे ना आंयदा। राम नाम घर घर बैठे रहे गा, राम रंग ना कोए रंगांयदा। कान्हा कृष्ना नेत्र नैण रहे तका, मुकंद मनोहर लक्ख़मी नरायण नैण दरस कोए ना पांयदा। जिस जन बणे सज्जण सैण, घर साचे मेल मिलांयदा। नाता तोड़े भाई भैण, भईआ बेबा आप अख्वांयदा। आप चुकाए लहण देण, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। हरिभगत लाड़ी मौत ना खमति सुण, चित्रगुप्त ना हिसाब खुलांयदा। राए धर्म निउँ निउँ चरनी पैण, जिस दुआरे गुरमुख जांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव अग्गे हो हो बहण, दर दर साचा दरस करांयदा। हरि सन्तन महिमा कोए ना सके कहिण, सन्त सुहेला इक्क इकल्ला एका रंग रंगांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म एका धाम इक्ट्ठे बहण, सोहँ रूप आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, दरस दिखाए आत्म घर, निज आत्म मेल मिलांयदा। निज आत्म निझर रस, निजधारा आप चलाईआ। निज मन्दिर मेला हस्स हस्स, निज घर वजे सच वधाईआ। निज दर मार्ग देवे दस्स, साचा पन्थ इक्क वखाईआ। निज तीर निराला मारे कस, तिक्खी मुखी नाम चढ़ाईआ। निज हिरदे अंदर जाए वस, निरगुण आपणी दया कमाईआ। जुगा जुगन्तर जन भगतां होया रिहा वस, नित नवित आपणा वेस वटाईआ। जगत विकार हँकार चरना हेठ देवे झस्स, त्रिलोकी नाथ आपणा भार उप्पर पाईआ। लेखा जाणे सर सरोवर तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती वेख वखाईआ। आपे जाणे किनार तट्ट, आप आपणा फेरा पाईआ। जन भगतां दूई द्वैती मेटे फट, एका पट्टी नाम बंधाईआ। आत्म अमृत सर सरोवर देवे झट्ट, भर प्याला जाम प्याईआ। आत्म सेज सुआए खाट, पलँघ रंगीला आप विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले आपणे घर, घर साचा हरि साचा दर साचा वर साचा मिले मेल सहिज सुखदाईआ।

५०६
०६

❊ २ विसाख २०१७ बिक्रमी अजीत सिँघ दे घर बटाला ज़िला गुरदास पुर ❊

सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। हरि पुरख निरँजण सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। एकँकारा वड मेहरवान, आपणी रचना आप रचाईआ। आदि निरँजण खेल महान, घर साचे करे रुशनाईआ।

अबिनाशी करता नौजवान, नर नरायण नाउँ धराईआ। श्री भगवान आपे होया जाणी जाण, आपणा लेखा आप गणाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। सचखण्ड दुआरे निगहबान, नर हरि आपणा नैण खुल्हाईआ। दहि दिशा वेखे मार ध्यान, चारे कूटां फोल फुलाईआ। तख्त निवासी राज राजान, शाहो भूप बेपरवाहीआ। अगम्म अगम्मड़ा धुर फ़रमाण, अलक्ख अलक्खणा आप सुणाईआ। दो जहानां एका आण, हुक्मी हुक्म फिराईआ। एका शब्द एका गाण, नाम तराना एका लाईआ। एका जोती हरि भगवान, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, थिर घर वासी आप करांयदा। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, अकल कल वरतांयदा। वसणहारा जलां थलां, जल थल महीअल डेरा लांयदा। सच सिँघासण एका मल्ला, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला जूनी रहित दिस ना आंयदा। जूनी रहित पुरख अकाल, रूप रंग ना कोए जणाईआ। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाल, चाल निराली आप रखाईआ। आपणी वस्त आपणे हथ्थ रक्खे भगवान, अछल अछल वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस पुरख सुल्तान, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा खेल खिलांयदा। लोकमात हो प्रधान, धरत धवल आप सुहांयदा। लेखा जाणे ज़िमी अस्मान, चौदां लोकां फोल फुलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवे दान, साची भिच्छया झोली पांयदा। चरन दुआरा बख्शे माण, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हांयदा। सति सरूपी पाए आण, आपणा भाणा आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। भेव अवल्ला हरि भगवन्त, आपणा आप खुल्हाईआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग करता बेपरवाहीआ। लेखा जाणे आदि अन्त, अन्त आदि वड्डी वड्याईआ। आप उठाए साचे सन्त, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। मेल मिलाए साचे कन्त, हरि दूल्हा आप अख्वाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। महिमा जाणे गणत, अगणत लेखा लेख ना कोए राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग खेल हरि निरँकारा, लोकमात आप वरतांयदा। आपे वसे सचखण्ड दुआरा, थिर घर साचे सोभा पांयदा। आपे गगन मंडल हो उज्यारा, रवि ससि आप चमकांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न शिव दए आधारा, आप आपणी जोत टिकांयदा। आपे शब्द अगम्मी बोल जैकारा, अलक्ख निरँजण आपणी अलख जगांयदा। आपे वरते वरतावे हरि वरतारा, आप आपणी धार बंधांयदा। आपे पंज तत्त करे प्यारा, त्रैगुण आपे मेल मिलांयदा। आपे ब्रह्म कर पसारा, पारब्रह्म खेल खिलांयदा। आपे

गुर पीर अवतारा, भगत भगवन्त आपणा नाउँ धरांयदा। आपे अनहद शब्द सच्ची धुन्कारा, धुन अनादी नाद वजांयदा। आपे अमृत सरोवर ठंडी ठारा, कँवल कँवला आप धरांयदा। आपे जोत निरँजण हो उज्यारा, घर घर दीआ आप टिकांयदा। आपे आत्म सेजा कर प्यारा, साची सखीआं मेल मिलांयदा। आपे गाए गावणहारा, गावत गावत आपणा राग अलांयदा। आपे भरे सच भण्डारा, नाम वणजारा आप अख्वांयदा। आपे सन्तन खोले बन्द किवाड़ा, बज़र कपाटी पर्दा लांहयदा। आप वखाए सच अखाड़ा, गोपी काहन आप नचांयदा। आपे मेटे पंचम धाड़ा, माया ममता मोह चुकांयदा। आपे जोत जगाए बहत्तर नाड़ा, अज्ञान अन्धेर गवांयदा। आपे वेख वखाए धुरदरगाही साचा लाड़ा, साचे घोड़े आप चढ़ांयदा। आपे खेले खेल जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँघी कंदर फोल फुलांयदा। आपे अग्नी तत्त बुझाए तत्ती हाढ़ा, सांतक सति सति आप वरतांयदा। आपे लेखा लिखणहारा, चारे वेदां भेव खुलांयदा। आपे ब्रह्मा करे प्यारा, चारे मुख मुख सालांहयदा। आपे विष्नूं बख्शे चरन सहारा, विश्व आपणा रूप सुहांयदा। आपे बाशक सेजा सुत्ता पैर पसारा, सांगोपांग आप हंढांयदा। आपे शंकर हो उज्यारा, हथ्थ त्रिसूल उठांयदा। आपे करोड़ तत्तीसा बन्ने धारा, अमृत साचा जाम प्यांअदा। आपे लक्ख चुरासी कर पसारा, घट घट आपणा आसण लांयदा। आपे निरगुण सरगुण खेल करे संसारा, सारंगधर भगवान बीठलो, दिस किसे ना आंयदा। आपे जागरत जोत करे उज्यारा, आप आपणा डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादा हरि ब्रह्मादा, शब्द चलाए नाद अनादा, राग रागनी आप अलांयदा। शब्द अनादा हरि भगवन्त, पारब्रह्म आप उपजाईआ। आप सुणाए साचे सन्त, सति सतिवादी दया कमाईआ। आपे तोड़े गढ़ हउमे हंगत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हलकाईआ। आपे लेखा जाणे जीव जंत, ईश जीव वड्डी वड्याईआ। आपे शब्द गाए मणीआ मंत, मन मनूआ आप बंधाईआ। आपे मेट मिटाए सगली चिंत, चिंता चिखा ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर आपणा खेल खलाईआ। जुगा जुगन्तर खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण लै अवतारा, लोकमात वेख वखांयदा। एकँकारा कर पसारा, आप आपणा रंग रंगांयदा। आदि निरँजण मीत मुरारा, जोत निरँजण डगमगांयदा। श्री भगवान बोल जैकारा, शब्द अगम्मी आप सुणांयदा। अबिनाशी करता कर प्यारा, हरिजन साचे वेख वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ भर भण्डारा, अतोट अतुट आप वरतांयदा। नाम वणज कराए सच्चा सिक्दारा, राउ रंक राज राजान एका रंग रंगांयदा। एका वस्त रक्खे हरि थारा, थिर घर साचे आप टिकांयदा। उच्च महल्ल अटल मुनारा, सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा। अठ्ठे पहर रहे उज्यारा, सञ्झ सवेर ना कोए रखांयदा। ना कोई सूरज चन्द दिसे सितारा,

मंडल मंडप ना कोए रुशनांयदा। तख्त बैठ सच्ची सरकारा, सीस साचा ताज टिकांयदा। पंचम मुख हो उज्यारा, दरगह साची खेल खिलांयदा। चार जुग कर पसारा, एका चौकड़ी बन्धन पांयदा। ब्रह्मा वेता मंगे बण भिखारा, अग्गे आपणी झोली डांहयदा। पारब्रह्म प्रभ देवणहारा, साची भिच्छया इक्क वखांयदा। विष्नूं दोए जोड़ कर निमस्कारा, मस्तक टिक्का चरन धूढ़ी आप लगांयदा। पारब्रह्म तेरा सच प्यारा, लोकमात भुल्ल ना जांयदा। शंकर रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहांयदा। भोला नाथ मंगे इक्क सहारा, एका नाता जोड़ जुड़ांयदा। पुरख निरँजण एकँकारा, आपे जाणे आपणी कारा, साचा राणा धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। लोकमात लए अवतारा, त्रैगुण वेखे जगत पसारा, पंज तत्त करे प्यारा, आप आपणी जोत जगांयदा। भगतन देवे नाम अधारा, सन्तन बख्शे चरन दुआरा, गुरमुखां करे दीप उज्यारा, गुरसिखां बख्शे अमृत ठंडी ठारा, हरिजन साचे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सर्बकल आपे समरथ, जुगा जुगन्तर चलाए रथ, रथ रथवाही आपणा नाउँ धरांयदा। रथ रथवाही हरि निरँकार, जुग जुग गेड़ा आप दुआईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। चारे कुंटां दए हुलार, आप आपणा धक्का लाईआ। लक्ख चुरासी होए ख्वार, जो घड़या सो भन्न वखाईआ। रवि ससि ना रहे उज्यार, प्रकाश प्रकाश ना कोए जणाईआ। धरनी रोवे धाहां मार, धवला भार ना कोए उठाईआ। सांवल सँवला मीत मुरार, कान्हा कृष्ना रूप वटाईआ। राम रामा हो उज्यार, कलिजुग लंका रावण गढ़ दए तुड़ाईआ। सशत्र बस्त्र तेज कटार, गोबिन्द चीरा सीस गुंदाईआ। निरगुण निरवैर करे खेल न्यार, नानक चार वरना करे पढ़ाईआ। नाम सति बोल जैकार, कलिजुग रैण अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। तीर्थ तट चौदां हट्ट अठसठ रोवण ज़ारो ज़ार, सीस जगदीश हथ्थ ना कोए टिकाईआ। साधां सन्तां खाली मट, काया गढ़ ना कोए वड्याईआ। जोत ना जगे लट लट, जोत ज्वाला रहे जगाईआ। दुरमति मैल ना देवे कट्ट, सर सरोवर ताल तारीआं रहे लाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले बैठे मट्ठ, माया ममता मोह ना कोए चुकाईआ। खेले खेल बाज़ीगर नट, कलिजुग सुआंगी आपणा सुआंग रचाईआ। दिवस रैण मारे सट्ट, जूठ झूठ टकसाल हथ्थ उठाईआ। घर घर उलटी गेड़ी जाए लट्ठ, मन मनूआ नाल रलाईआ। नौ खण्ड पृथमी राज राजान कोई ना रक्खे किसे दी पति, पतिपरमेश्वर गए भुलाईआ। घट घट अंदर उब्बले रत्त, रत्ती रत्त नाम दिस ना आईआ। ना कोई धीरज सन्तोख दिसे जति, काम कामनी होई हलकाईआ। किसे दर ना उपजे ब्रह्म मत, मन मति जगत प्रनाईआ। साचा बीज ना बीजया आत्म वत्त, सच क्यारी ना कोए महिकाईआ। आसा तृष्ना अंदर लई घत्त, दिवस रैण रही सताईआ। कूड़ कुटम्ब बध्धा नात, पुरख बिधाता दिस ना आईआ। झगड़ा

पाया ज़ात पात, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। डूंघी कंदर अन्धेरी रात, जोत निरँजण ना करे रुशनाईआ। अन्तिम पूरा करे ना कोए घाट, साचे कंडे ना कोए तुलाईआ। कलिजुग नेड़े आई वाट, ऊँची कूके दए दुहाईआ। काया बस्त्र सभ दा जाणा पाट, थिर कोए रहिण ना पाईआ। धर्म राए दे विकणा हाट, गुर पीर ना देवे कोई गवाहीआ। रंग कसुम्बड़ा जाए पाट, लाल गुलाला ना कोए रंगाईआ। आत्म सेजा सुत्ता ना साची खाट, घर मिल्या ना साचा माहीआ। लेखा चुक्के ना आण बाण, मात गर्भ ना फंद कटाईआ। जिस जन सतिगुर पूरा देवे आपणा साथ, दो जहानां होए सहाईआ। लहिणा देणा चुकाए हथ्थों हाथ, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। खेले खेल त्रिलोकी नाथ, तिन्नां लोकां वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम आप जणाए साची गाथ, सतिजुग साचा राह वखाईआ। गुरसिखां लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चुमारा नाल रलाईआ। लेखा चुक्के पूजा पाठ, जो जन सतिगुर पूरे दर्शन पाईआ। आपे पिता आपे मात, हरिजन बाल अंञाणे गोद उठाईआ। चार वरन बणाए भैण भ्रात, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बरन अठारां एका रंग रंगाईआ। आदि जुगादी बैठा रहे इक्क इकांत, इक्क इकल्ला खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। जुगा जुगन्तर भेख भगवन्त, भगवन आपणी खेल खिलांयदा। लेखा जाणे नारी कन्त, नर नरायण वेख वखांयदा। आपे माया पाए बेअन्त, दूई द्वैती पर्दा आपे लांहयदा। आपे सार समाले जीव जंत, जम की फाँसी आप कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा रंग रंगांयदा। रंग रतड़ा हरि करतार, महिमा अकथ कथन ना जाईआ। ब्रह्मा चारे वेद लिख लिख गया हार, हरि का भेव कोए ना पाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, पुराण अठारां करे पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत कर विचार, छे छे देवण नाल गवाहीआ। गीता ज्ञान कर उज्यार, दस अठ्ठ मेल मिलाईआ। अञ्जील कुरान खोल्ह किवाड़, जगत हदीस करे पढ़ाईआ। खाणी बाणी साची धार, धुरदरगाही आप अल्हाईआ। साध सन्त करन पुकार, प्रभ दाता बेपरवाहीआ। भगत भगवन्त सांझा यार, मीत मुरारा इक्क अख्वाईआ। गुरमुख लेखा जाणे धुर दरबार, धुर मस्तक लेख चुकाईआ। गुरसिख सज्जण लए उभार, लक्ख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। डुब्बदे पाहन पाथर लए तार, साची सिला सतो चरन छुहाईआ। ग़रीब निमाणे लाए पार, जो अन्तर आत्म रहे ध्याईआ। जुगा जुगन्तर खेल अपार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। शब्द डंका अपर अपार, वासी पुरी घनका आप वजाईआ। मेटे शंका सर्ब संसार, संसा रोग दए गुआईआ। जिउँ कान्हा कंसा करे ख्वार, रावण रामा दए मिटाईआ। कलिजुग अन्तिम मारे मार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। साचा खण्डा तेज कटार, नाम निधाना हथ्थ उठाईआ। लोआं पुरीआं पावे सार, करोड़ तेतीसा सुरपति

राजा इंद ब्रह्मा विष्न शिव लए जगाईआ। गण गंधर्ब दए हुलार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। पशू प्रेतां करे ख्वार, माणस मानुख आप उठाईआ। गुरसिख साचे लाए पार, साचे बेड़े नाम चढ़ाईआ। कलिजुग डुब्बे विच मंजधार, वहिंदी धार आप वहाईआ। नाल रलाए मुहम्मदी यार, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। अल्ला राणी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर रही वहाईआ। आबेहयात ठंडा पाणी ना मिले विच संसार, नाता तुट्टा सच खुदाईआ। ख़ालक ख़लक पावे सार, मख़लूक वेखे सर्ब लोकाईआ। कायनात आर पार, चौदां तबक रहे शर्माईआ। साचा साथ ना कोए करे अन्त प्यार, साचा राह ना कोए वखाईआ। कलमी कलमा रहे विचार, अमाम अमामा आप अख्वाईआ। जगत दमामा वज्जे इक्क निरँकार, हरि हरि साचा आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लेखा लेखे लए लगाईआ। लेखा लेखे लावणा, कलिजुग तेरा अन्तिम वार। जो घढ़या सो भन्न वखावणा, पुरख अबिनाशी खेल अपार। शंकर साची सेवा लावणा, लक्ख चुरासी दए सँघार। ब्रह्मे भाण्डा आप घढ़ावणा, विच वस्त रक्खे हरि थार। विष्नूं रोज़ी राज़क आप पुचावणा, देवे रिज़क सर्ब संसार। प्रभ सभ दा मूल चुकावणा, आपणा वरते सच वरतार। खाणा पीणा पहनणा बन्द करावणा, तन करे ना कोए

५१४ शंगार। सोलां इच्छया वेख वखावणा, सोलां कलीआं ना पावे कोई हार। साचा सीस ना किसे गुंदावणा, नेत्र नैण ना ५१४

०६ कजल धार। बत्ती दन्द ना मुख हसावणा, नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार। गीत सुहाग किसे ना गावणा, घर घर होए ख्वार। ०६

साचा कन्त ना किसे हंढावणा, नारी नर ना कोए प्यार। जगत विभचार इक्क वखावणा, सृष्ट सबाई धूंआँधार। जोती लम्बू एका लावणा, अग्नी तत्त देवे साड़। गुरमुख विरला आप बचावणा, कर किरपा हरि निरँकार। सिर आपणा हत्थ टिकावणा, निरगुण सरगुण कर प्यार। सोहँ साचा जाप जपावणा, सतिजुग साची बन्ने धार। त्रैगुण माया तेरा ताप मिटावणा, तीनो ताप देवे मार। अमृत मेघ इक्क बरसावणा, काया करे ठंडी ठार। कँवल कँवला झिरना आप झिरावणा, निझर रस अपर अपार। गुरसिख कागों हँस बणावणा, मानस जन्म पैज संवार। जन्म जन्म दा पिछला दाग धुआवणा, कर किरपा आप करतार। अगला लेखा आप लिखावणा, ब्रह्मे वेद ना पायण सार। गुरसिख साचे तख्त बहावणा, दरगाह साची सच सच्ची धर्मसाल। अन्तिम जोती जोत मेल मिलावणा, फल लाए साचे डाल। आवण जावण पन्ध मुकावणा, जो जन घालण रहे घाल। साचे मन्दिर आप सुहावणा, करे कराए सदा प्रितपाल। गुरमुख दूसर हत्थ ना किसे फड़ावणा, वेले अन्त ना खाए जम काल। काल महांकाल आपणे चरनां हेठ दबावणा, लक्ख चुरासी तोड़ जंजाल। करे कराए जो हरि भावणा, जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अगम्मा अगम्मड़ी कार, करे कराए विच

संसार, निरगुण जोती जामा लै अवतार, शब्द डंका इक्क वजावणा। शब्द डंका वज्जया, चार कुंट जैकार। ब्रह्मा विष्न शिव फिरे भज्जया, करोड़ तेतीसा करे पुकार। लक्ख चुरासी कोए ना रक्खे लज्जया, मानस जन्म गए हार। काल नगारा सिर ते वज्जया, ऊँची कूके करे पुकार। गुरसिख विरला सतिगुर दुआरे बह बह सजया, हरिसंगत करे प्यार। चरन धूढ़ करे साचा मजन मजया, दुरमति मैल लए उतार। वेले अन्तिम पर्दा कज्जया, कर किरपा आप निरँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम रंग, आपे वेखे सूरा सरबंग, सच मृदंग एका वज्जया। नाम मृदंगा ढोल नगारा, त्रैगुण माया रिहा जगाईआ। आप वजाए हरि निरँकारा, पंज तत्त दए उठाईआ। मति बुध दए हुलारा, मनूआ सोया रहिण ना पाईआ। गुरमुख विरला पावे सारा, जिस जन आत्म बूझ बुझाईआ। मनमुख जीव होए गंवारा, गुर का शब्द ना कोए गाईआ। अंदर मन्दिर वसे ना हरि निरँकारा, घर बंक ना कोए सुहाईआ। जनक सपुत्री ना करे कोए प्यारा, सीता सुरती ना कोए प्रनाईआ। बिन हरि नामे उतरे ना कोए पारा, कबीर जुलाहा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, लेखा जाणे चवीआं अवतारा, चौथा जुग वेख वखाईआ। चौथे जुग साची धार, चार वेदां फोल फुलांयदा। चारे खाणी पावे सार, चारे बाणी भेव जणांयदा। चार वरन रहे पुकार, चारे दिशा नैण उठांयदा। चारे घर राह तक्कण मीत मुरार, कवण दुआरे हरि हरि फेरा पांयदा। उतर पूर्ब पच्छिम दक्खण दिस ना आए विच संसार, जीव जंत राह तकांयदा। जिस जन बख्शे चरन प्यार, घर मन्दिर वेख वखांयदा। तन माटी हाटी खोल्ह किवाड़, औखी घाटी आप चढ़ांयदा। तीर्थ ताटी सर सरोवर आर पार, जोत ललाटी डगमगांयदा। इक्क इकांती खेल अपार, बूंद स्वांती देवे ठंडी ठार, गुरसिख चातृक तृखा बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठ्ठे पहर रक्खे प्रभाती, सवेर सञ्झ ना कोए बणांयदा। गुरमुख तेरी सच प्रभाती, अठ्ठे पहर रंग रंगाया। रातीं सुत्तयां पुच्छे वाती, सुपन सखोपत जागरत तुरीआ आपणा खेल खलाया। उत्तम रक्खी तेरी ज़ाती, ज़ात पात ना वण्ड वण्डाया। कलिजुग मिटी अन्धेरी राती, सतिगुर साचा चन्द चढ़ाया। कलिजुग मारे ना आपणी काती, तिक्खा तीर ना कोए वखाया। गुरसिख होवे ना कोए घाती, गुर चरन ध्यान इक्क धराया। प्रभ देवणहारा साची दाती, वस्त अमोलक झोली पाया। सतिजुग तेरी बूंद स्वांती, अमृत मेघ इक्क बरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला, दीन दयाला आपणा नाउँ धराया। दीन दयाला गहर गुण सागर, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। गुरमुखां निर्मल कर्म करे उजागर, माया ममता मोह चुकाईआ। एका वणज कराए सच सौदागर, साची वस्त एका हट्ट वखाईआ।

५१५
०६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता बेपरवाहीआ। जुग करता बेपरवाह, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। शब्द सरूपी बण मलाह, गुर सतिगुर नाउँ धरांयदा। नाम सति देवे सच सलाह, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। कलिजुग कूड़ा पन्ध दए मुका, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। सतिजुग साचा देवे ला, धरत मात दी गोद बहांयदा। वरन बरन ना कोए वण्ड वण्डा, इष्ट देव इक्क रखांयदा। ना कोई खाए सूर गां, इक्क हदीस सर्ब पढ़ांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका रंग दए रंगा, आप आपणी खेल खिलांयदा। राज जोग साचा दए सिखा, साची रइयत मेल मिलांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी एका हुक्म सुणा, सत्तां दीपां सच निशान झुलांयदा। जगत जगदीश प्रभ खेल खला, आप आपणा कर्म कमांयदा। सीस ताज इक्क टिका, राज राजानां आप समझांयदा। शब्द अश्व रिहा दौड़ा, चारे वागां हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग करे पार किनारा, सतिजुग साची बन्न्हे धारा, दोहां विचोला हरि निरँकारा, गुरसिखां करे सच प्यारा, हरिजन साचे पार करांयदा। हरिजन बेड़ा बन्न्हणा, आपणी गंढु संभाल। हरि हरि भाणा सिर ते मन्नणा, पुरख अबिनाशी अवल्लड़ी चाल। जो घढ़या सो भन्नणा, वेखणहारा गगन मंडल साचा थाल। जीव हँकारी सर्ब डन्नणा, जगत वजाए झूठा ताल। गुरमुख विरला जननी जणणा, जिस होए आप कृपाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिखां करे आप संभाल। गुरसिखां सदा संभालदा, सतिगुर सूरा वड मेहरवान। लेखा जाणे दो जहान दा, आप झुलाए सच निशान। लेखा चुकाए धर्म राए दी काण दा, लाड़ी मौत ना करे परवान। दरगाह साची इक्क वखाण दा, मेल मिलाए श्री भगवान। नाता तुटे आवण जाण दा, लक्ख चुरासी पन्ध मुकाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्बल नगरी बैठा वड़, साढे तिन्न हथ्थ वेख मकान, खेले खेल खेल महान।

❊ ३ विसाख २०१७ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे घर भलाई पुर डोगरां ❊

हरि मूर्त अकाल, काल रहित अख्वाईआ। हरि मूर्त दयाल, दीन दयाल वड्डी वड्याईआ। हरि मूर्त अकाल, अकल कल बेपरवाहीआ। हरि मूर्त दयाल, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। हरि मूर्त अकाल, एका आपणा नाउँ उपजाईआ। हरि मूर्त दयाल, साचा डंका शब्द वजाईआ। हरि मूर्त अकाल, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। हरि मूर्त दयाल, थिर घर साचे आसण लाईआ। हरि मूर्त अकाल, ब्रह्मण्ड खण्ड करे रुशनाईआ। हरि मूर्त दयाल, लोआं पुरीआं वण्ड वण्डाईआ।

५१७ ०६ ५१७ ०६

हरि मूर्त अकाल, लोकमात वेस वटाईआ। हरि मूर्त अकाल, ब्रह्मा विष्न महेष सेवा लाईआ। हरि मूर्त अकाल, नर नरेश नर नरायण अख्वाईआ। हरि मूर्त दयाल, मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, सीस जगदीश ना मूंड मुंडाईआ। हरि मूर्त अकाल दो जहानां दर दरवेश, घर घर आपणी अलक्ख जगाईआ। हरि मूर्त दयाल निरगुण सरगुण अवल्लड़ा वेस, पारब्रह्म प्रभ रूप वटाईआ। हरि मूर्त अकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दाता आप अख्वाईआ। हरि मूर्त अकाल, लोकमात पसारया। हरि मूर्त दयाल, त्रैगुण माया तत्त प्यारया। हरि मूर्त अकाल, पंचम नाता जोड़ जुड़ा रिहा। हरि मूर्त दयाल, मन मति बुध नाता चरन बंधा रिहा। हरि मूर्त अकाल, घर विच घर बंक सुहा ल्या। हरि मूर्त दयाल, अनहद वाजा शब्द वजा ल्या। हरि मूर्त अकाल, साचे तख्त राजन राजा आप अख्वा रिहा। हरि मूर्त दयाल, लक्ख चुरासी संवारे काजा, घड़ भाण्डे वेख वखा रिहा। हरि मूर्त अकाल आपे होए ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे गले लगा रिहा। हरि मूर्त अकाल, शब्द अगम्मी मारे वाजा, तार सितार आप हिला रिहा। हरि मूर्त अकाल जुगा जुगन्तर रचया काजा, त्रै भवन वेख वखा रिहा। हरि मूर्त दयाल अश्व रक्खे एका ताजा, दहि दिशा आप दौड़ा रिहा। हरि मूर्त अकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बिरध रखा ल्या। हरि मूर्त अकाल, गहर गम्भीर समाया। हरि मूर्त दयाल, आदि अन्त भेव ना राया। हरि मूर्त अकाल अमृत बख्शे साचा सीर, दर घर साचे जाम प्याया। हरि मूर्त दयाल लेखा जाणे शाह फ़कीर, गुर पीर अवतार सेवा लाया। हरि मूर्त अकाल लक्ख चुरासी मारे ज़ंजीर, निरगुण सरगुण बन्धन पाया। हरि मूर्त दयाल शब्द चलाए एका तीर, तिक्खी मुखी धार बंधाया। हरि मूर्त दयाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर गुरमुखां वेखे आत्म भुक्खी, दे दरस तरस कमाया। हरि मूर्त अकाल, रोग सोग विच ना आईआ। हरि मूर्त दयाल, धुर दा जोग इक्क वखाईआ। हरि मूर्त अकाल, चौदां लोक भेव खुल्हाईआ। हरि मूर्त दयाल, नाम निधाना सच सलोक इक्क सुणाईआ। हरि मूर्त अकाल बख्शणहारी साची मोख, मुक्ती दर दर सेवा लाईआ। हरि मूर्त दयाल, हरिजन भोगे साचा भोग, रस रसीआ रस वखाईआ। हरि मूर्त अकाल लेखा जाणे धुर संजोग, धुर दी रेख ना कोए मिटाईआ। हरि मूर्त दयाल झूठा मेटे जगत विजोग, बिरहों अग्ग ना कोए लगाईआ। हरि मूर्त अकाल, दरस दखाए आप अमोघ, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। हरि मूर्त दयाल नाम चुगाऐ साची चोग, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। हरि मूर्त अकाल हरिजन उधारे विच्चों कोटन कोटि कोट, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। हरि मूर्त दयाल सच नगारे लाए चोट, एका डंका आप वजाईआ। हरि मूर्त अकाल हरिजन कढ्ढे ममता खोट, सति सन्तोख ज्ञान दृढ़ाईआ। हरि मूर्त दयाल निरगुण बिमल जगाए जोत, धूंआँधार

ना कोए वखाईआ। हरि मूर्त अकाल ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोए वड्याईआ। हरि मूर्त दयाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे रुशनाईआ। हरि मूर्त अकाल, जुगा जुगन्तर खेल खिलांयदा। हरि मूर्त दयाल, लग्गी बसन्तर आप बुझांयदा। हरि मूर्त अकाल, नाम मन्त्र इक्क दृढ़ांयदा। हरि मूर्त दयाल, साची बणतर आप बणांयदा। हरि मूर्त अकाल, सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, आपणा भेव आप छुपांयदा। हरि मूर्त दयाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरि मूर्त अकाल, भगतन देवे वड वड्याईआ। हरि मूर्त दयाल, सन्त साजण लए जगाईआ। हरि मूर्त अकाल, गुरमुख मेले सहिज सुभाईआ। हरि मूर्त दयाल, गुरमुख आपणे गले लगाईआ। हरि मूर्त अकाल, साची भिच्छया भिक्ख झोली पाईआ। हरि मूर्त दयाल, अगला लेखा देवे लिख, पिछला आप मिटाईआ। हरि मूर्त अकाल, साची मस्तक लाए मेख, बिधना बिध ना कोए वड्याईआ। हरि मूर्त दयाल, हरि सज्जण आपे वेख, चरन कँवल प्रीत बंधाईआ। हरि मूर्त अकाल, करे कराए अवल्लड़ा वेस, इक्क इकल्लड़ा भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। हरि मूर्त अकाल, भेव अभेव छुपांयदा। हरि मूर्त दयाल, चारे वेद ब्रह्मा रसना हरि जस गांयदा। हरि मूर्त अकाल, लेखा लिखे ना कोए कतेब, आदि अन्त ना कोए वखांयदा।
५१८ हरि मूर्त दयाल गा ना सके कोई जिह्व, जिह्वा गुण ना कोए वड्यांअदा। हरि मूर्त अकाल गुरमुख विरले लाए सेव, जिस ५१८
०६ जन आपणी बूझ बुझांयदा। हरि मूर्त अकाल निरगुण दाता अलक्ख अभेव, अलक्ख अगोचर नाम धरांयदा। हरि मूर्त दयाल, ०६
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा लेखा आप लखांयदा। हरि मूर्त अकाल, साचा लेखा लेख लिखांयदा। हरि मूर्त दयाल, हरिजन भरम भुलेखा दूर करांयदा। हरि मूर्त अकाल, पवण पवणा साचा चँवर सीस झुलांयदा। हरि मूर्त दयाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा संग निभांयदा। हरि मूर्त अकाल, आदि जुगादी सदा सुहेलया। हरि मूर्त दयाल, जुगा जुगन्तर गुरमुख मेलया। हरि मूर्त अकाल, एका रंग रंगाए गुरू गुर चेलया। हरि मूर्त दयाल, सगला संग निभाए सज्जण सुहेलया। हरि मूर्त दयाल, लक्ख चुरासी कट्टे धर्म राए दी जेलया। हरि मूर्त अकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आपे खेलया। हरि मूर्त अकाल, घट घट अंदर आप समाईआ। हरि मूर्त दयाल, मन्दिर अंदर सोभा पाईआ। हरि मूर्त अकाल, निरगुण दीवा बाती इक्क जगाईआ। हरि मूर्त दयाल, कमलापाती साची सेज सुहाया। हरि मूर्त अकाल, बन्द किवाड़ा खोल्हे ताकी, साचा साकी जाम प्याईआ। हरि मूर्त दयाल, लेखा जाणे भविक्खत वाकी, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। हरि मूर्त अकाल साचे अश्व चढ़े राकी, चारों कुंट

आप फिराईआ। हरि मूर्त दयाल, दो जहान ना दिसे कोई आकी, अग्गे सीस ना कोए उठाईआ । हरि मूर्त अकाल, गुरसिखां लहिणा देवे बाकी, पूर्ब मूल चुकाईआ। हरि मूर्त दयाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरि मूर्त अकाल, माया ममता मोह तजांयदा। हरि मूर्त दयाल, हउमे हंगता गढ़ तुड़ांयदा। हरि मूर्त अकाल, भुक्खा नंगता गले लगांयदा। हरि मूर्त दयाल, नानक अंगदा अंग समांयदा। हरि मूर्त अकाल, साची संगत वेख वखांयदा। हरि मूर्त दयाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दया कमांयदा। हरि मूर्त अकाल, हरिजन साचा आप उठाईआ। हरि मूर्त दयाल, दर घर मेला साचा मेल मिलाईआ। हरि मूर्त अकाल, जुगा जुगन्तर आपे जाणे आपणा वेला, वार थित ना कोए रखाईआ। हरि मूर्त दयाल, अचरज खेल आपे खेला, नित नवित वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे दए वड्याईआ। हरि मूर्त अकाल, हरी हरि हरि नाउँ धरांयदा। हरि मूर्त दयाल, करनी करता कर कर वेख वखांयदा। हरि मूर्त अकाल, धरनी धरत धवल जल आपे धरता, जल बिम्ब आपणा रूप वटांयदा। कँवल फुल्ल कँवल नाभी अमृत जल आपे भरदा, साचा झिरना आप झिरांयदा। गुरसिख काया अंदर आपे वड़दा, सुरती शब्दी मेल मिलांयदा। तख्त निवासी साचे पौड़े आपे चढ़दा, सच सिँघासण सोभा पांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों हरिजन साचे आपे फड़दा, नाम डोरी हथ्थ उठांयदा। आपणा अक्खर आपणे मन्दिर बह बह आपे पढ़दा, हँ ब्रह्म सो रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे घर, आप आपणा बिरध रखांयदा।

५१६
०६

✲ २० विसाख २०१७ बिक्रमी महिंदर सिँघ दे घर पिण्ड नया शाला ज़िला गुरदास पुर ✲

सो पुरख निरँजण पाया, इक्क इकल्ला खेल अपार। हरि पुरख निरँजण गाया, निरगुण जोत नूर उज्यार। एकँकारा वेख वखाया, घर मन्दिर सोहे बंक दुआर। आदि निरँजण दीप जगाया, मेट मिटाए अन्ध अँध्यार। श्री भगवान संग निभाया, मेल मिलावा कन्त भतार। अबिनाशी करता गोद उठाया, जुगा जुगन्तर साची कार। पारब्रह्म वेस वटाया, रूप अनूप सच्ची सरकार। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया, सचखण्ड निवासी सिरजणहार। सच सिँघासण आसण लाया, पुरख अबिनाशी हो उज्यार। शाहो शाबाशण हुक्म चलाया, शब्द अगम्मी इक्क जैकार। एका आपणी बणत बणाया, निरगुण निरगुण कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। अगम्म अपारा खेल न्यारा, महिमा गणत

गणी ना जाईआ। सो पुरख निरँजण इक्क वणजारा, एका वस्त वेख वखाईआ। हरि पुरख निरँजण साची वस्त रक्खे थारा, थिर घर साचे आप टिकाईआ। एकँकारा कर पसारा, आदि जुगादि वेख वखाईआ। आदि निरँजण भेव न्यारा, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। श्री भगवान सच्चा सिक्दारा, साचे तख्त सच सुल्तान सोभा पाईआ। अबिनाशी करता बण दरबारा, आप आपणा सीस झुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ मंगे दाना, निरगुण आप आपणी इच्छया भिच्छया वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआरा सच मकाना, उच्च महल्ल अटल आप सुहाईआ। आपे पहरया आपणा बाणा, मात पित ना कोए बणाईआ। आपे गाए आपणा गाणा, नाद तरान आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। दर घर साचा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहांयदा। हरि पुरख निरँजण बेअन्त बेअन्त बेअन्त, भेव कोए ना पांयदा। एकँकारा एका कन्त, एका सेज हंढांयदा। आदि निरँजण लेखा जाणे जीव जंत, जागरत जोत इक्क जगांयदा। श्री भगवान मेल मिलावे साचे कन्त, कन्त कन्तूहल खेल खिलांयदा। अबिनाशी करता बणाए बणत, आप आपणी रचन रचांयदा। पारब्रह्म लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी धार चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा खेल अबिनाशा, अबिनाशी करता आप करांयदा। अबिनाशी करता पुरख अकाल, रूप रेख ना कोए जणाईआ। सचखण्ड दुआर वसे सच्ची धर्मसाल, थिर घर बैठा आसण लाईआ। आपणी आप करे प्रितपाल, प्रितपालक बेपरवाहीआ। आप वजाए आपणा ताल, शब्द शब्दी धुन रखाईआ। आपे लेखा जाणे काल महांकाल, दीन दयाल वड वड्याईआ। आपे आपणी घालण लए घाल, आदि जुगादि वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा एकँकारा, निरगुण बैठा जोत जगाईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, सो पुरख निरँजण खेल खिलांयदा। हरि पुरख निरँजण सच सलाह, सिफ्ती सिफ्त आप सालांहयदा। एकँकारा बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। आदि निरँजण जपाए एका नाँ, निष्अक्खर वक्खर आप पढ़ांयदा। श्री भगवान वसे साचे थाँ, थान थनंतर सोभा पांयदा। अबिनाशी करता आपे कर सच न्याँ, शाहो भूप आप अख्वांयदा। पारब्रह्म मेल मिलावा एका नाँ, नाम निधाना झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, दिस किसे ना आंयदा। जुगा जुगन्तर खेल अपार, आप आपणा रूप वटांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर प्यार, शब्द शब्दी नाद वजांयदा। त्रैगुण माया भर भण्डार, एका तत्त वखांयदा। ब्रह्म मति कर उज्यार, आप आपणी रत्त तरांयदा। सर्बकल समरथ पुरख निरँकार, जूनी रहित खेल खिलांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां महल्ल अटल लए उसार, आप आपणी बणत बणांयदा। दीवा बाती

कर उज्यार, निरगुण एका जोत डगमगांयदा। कमलापाती मीत मुरार, दर घर साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगांयदा। रंग रंगीला हरि करतारा, ब्रह्मा विष्न शिव दए जणाईआ। आपे बन्ने आपणी धारा, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। आपे देवे सति भण्डारा, सति सतिवादी आप वरताईआ। आपे देवे शब्द हुलारा, आपणी बूझ आप बुझाईआ। आपे वसे धूंआँधारा, सुन्न अगम्म आप समाईआ। आपे करे पार किनारा, अद्धविचकार आपणा डेरा लाईआ। आपे त्रैगुण माया पाए सारा, रजो तमो सतो रहिण ना पाईआ। पंज तत्त कर प्यारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आप आपणी खेल खलाईआ। आपे जीव जंत बण वरतारा, लख चुरासी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला आदि निरँजण दर्द दु:ख भय भञ्जण, दीनां नाथ दया कमाईआ। साची वस्त नाम अमोलक, सो पुरख निरँजण हथ्थ रखांयदा। हरि पुरख निरँजण तोले एका तोल, साचा कंडा आप उठांयदा। एकँकारा बोले बोल, आपणी धारन आप चलांयदा। आदि निरँजण सदा अडोल, जुगा जुगन्तर ना कोए डुलांयदा। श्री भगवान वसे कोल, विछड़ कदे ना जांयदा। अबिनाशी करता रिहा मौल, रूप रंग ना कोए वखांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म उलटा करे कौल, अमृत आपणा जाम भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता निराकार, करे खेल अपर अपार, आप आपणी रेख उपजांयदा। आपे कँवल आपे अमृत रस, आप आपणा विच टिकाईआ। आपे त्रैगुण मेला करे हस्स हस्स, आप आपणा बन्धन पाईआ। आपे पंज तत्त प्यार करे नस्स नस्स, दर घर साचे जोड़ जुड़ाईआ। आपे ब्रह्मा मार्ग रिहा दस्स, चारे वेद करे पढ़ाईआ। आपे शब्द तीर निराला मारे कस, चारे मुख मुख भुआईआ। आपे हिरदे हरि हरि जाए वस, हरि जू हरि मन्दिर डेरा लाईआ। आपे करे प्रकाश कोटन रवि ससि, जोती नूर नूर विच टिकाईआ। आपे बाशक तशका मारे डस्स, विष आत्म आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी धार, आदि जुगादी खेल अपार, इक्क इकल्ला आप कराईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवान, दूसर संग ना कोए रखांयदा। सचखण्ड दुआरे वसणहारा सच मकान, चार दीवार ना कोए बणांयदा। ना कोई चिल्ला तीर कमान, शस्त्र बस्त्र ना कोए सजांयदा। ना कोए जोद्धा सूरबीर बलवान, दूसर रंग ना कोए रंगांयदा। इक्क इकल्ला वाली दो जहान, आप आपणा बल धरांयदा। पवण पाणी सर्ब शर्माण, लक्ख चुरासी जीव जंत निरगुण जोती आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर साचे सोभा पांयदा। दर घर साचा हरि भगवन्त, एका एक सुहांयदा। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। लेखा जाणे साध सन्त, सतिगुर आपणी खेल खिलांयदा। आपे

५२१ ०६

गढ़ हउमे हंगत, पंज विकारा आपणा तत्त उपांयदा। आपे काया चोली रंगे रंगत, रंग मजीठी इक्क रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, करता पुरख नाउँ धरांयदा। करता पुरख करने जोग, आपणी करनी आप करांयदा। दो जहानां आपे रसीआ भोगे भोग, आपणी रचना आप रचांयदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपे जाणे धुर संजोग, संजोग विजोग आपणा आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे लेखा जाणे चौदां लोक, लोक परलोक आपणी खेल खिलांयदा। आपे गाए शब्द सलोक, ब्रह्मा वेता आप समझांयदा। आपे जाणे मुक्त मोख, जून अजूनी आप फरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगांयदा। जोती नूर नूर उजाला, एक एका रंग रंगाईआ। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाला, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। आपे जाणे आपणी माला, आप आपणा नाउँ धराईआ। आपे वेखे सच सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। आपे लक्ख चुरासी फल लगाए काया डाल़ा, फुल्ल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। आपे अनहद नाद वजाए ताला, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे आत्म अमृत भरया ताला, सर सरोवर साचा ऩावण आप नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, घर साचा इक्क वड्याईआ। घर वड्डा हरि वड्याआ, पारब्रह्म बेअन्त। दरगाह साची जोत जगाया, पुरख अबिनाशी एका कन्त। सच सिँघासण आसण लाया, महिमा गणत अगणत। शाहो भूप इक्क अख्वाया, आप बणाए साची बणत। शब्दी सुत इक्क उपजाया, आप जणाए आपणी बणत। ब्रह्मा विष्न शिव जोत जगाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे आदि अन्त। आदि अन्त हरि वसया, पारब्रह्म करतार। आपणा भेव किसे ना दस्सया, लेखा लिखे ना वेद चार। दो जहानां फिरे नस्सया, निरगुण जोत कर उज्यार। आप उपाए रव सस्या, मंडल मंडप दए सहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाउँ धरे निरँकार। निरँकार हरि नाउँ रक्ख, निरगुण आपणी जोत जगाईआ। विष्नूं रूप हो प्रतक्ख, सागों पांग सेज हंढाईआ। ब्रह्मा वेता लए रक्ख, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। शंकर देवे एका तत्त, बाशक तशका गल लटकाईआ। त्रैगुण माया रक्खे हथ्थ, आप आपणी लए उपजाईआ। पंज तत्त वखाए एका हट्ट, सच भण्डारा आप वरताईआ। एका वस्त अंदर घत, निरगुण जोत दए जगाईआ। संग रखाए मन बुध मत, निरगुण आपणी वण्ड वण्डाईआ। लेखा जाणे काया पंज तत्त मट, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। खोल्ह़े किवाड़ काया घट, घर घर विच रूप प्रगटाईआ। लक्ख चुरासी लाए फट्ट, आप आपणा तीर चलाईआ। निरगुण सरगुण अंदर हो प्रगट, धरत धवल करे रुशनाईआ। आपणी मैल आपे कट्ट, उज्जल मुख आप धराईआ। आपणी करवट आपे वट्ट, आप आपणा नूर करे रुशनाईआ।

आपे सोए साची खाट, घर घर आत्म सेज आप हंढाईआ। आपे मस्तक जोत धरे लिलाट, जोत निरँजण आप जगाईआ। आपे जुग जुग जाणे आपणी वाट, आपणा पन्ध आप मुकाईआ। ब्रह्मा दोवें जोड़ चरन दुआर मस्तक टेके माथ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी आपणी दस्से आपे गाथ, अन्तर आत्म करे पढ़ाईआ। सगल विसूरे जायण लाथ, नेत्र नैण दर्शन पाईआ। सर्बकल हरि समरथ, आपणा गेड़ा रिहा चलाईआ। आप उपजाए आपे देवे मथ, ब्रह्मा विष्न शिव तेरी पेश कोए ना जाईआ। खेले खेल स्वांगी बाज़ीगर नट्ट, आप आपणी रचन रचाईआ। सचखण्ड दुआरे साचे तख्त बैठ हो प्रगट, परम पुरख आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे एका मत, मति तत्त विच रखाईआ। मति तत्त हरि साची धार, पारब्रह्म ब्रह्म समझांयदा। ब्रह्मा तेरा लेखा वेद चार, तेरी बणत बणांयदा। शब्द अनादी इक्क जैकार, सत्त इक्क नाल मिलांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, पंज तत्त ना कोए रखांयदा। जुग जुग ना मरे विच संसार, लाड़ी मौत ना कोए प्रनांयदा। करे खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी चाल चलांयदा। हड्ड मास नाड़ी चमड़े वसया बाहर, रक्त बूंद ना कोए उपांयदा। तेरे अंदर कर प्यार, आप आपणी तार वजांयदा। चारे वेद कर त्यार, चारे जुग नाल रलांयदा। चारे खाणी पावे सार, चारे बाणी मेल मिलांयदा। गुर पीर अवतार आवण वारो वार, जगत चौकड़ी आप फरांयदा। रवि ससि सूरज चन्न करन पुकार, दिवस रैण सेव कमांयदा। करोड़ तेतीसा मंगे बण भिखार, सुरपति राजा राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि खेल ब्रह्मादि, आप आपणी रचन रचांयदा। ब्रह्मे सुण कर ध्यान, हरि साचे सच जणाईआ। तेरा रूप सच जहान, तेरा अंग अंग कटाईआ। प्रगट होवे विच जहान, निरभउ आपणा नाउँ रखाईआ। मेरा शब्द तेरा फ़रमाण, सृष्ट सबाई दए सुणाईआ। मेरा अमृत पीण खाण, निझर झिरना इक्क वखाईआ। मेरा नाउँ तेरा शब्द वखाण, रसना जिह्वा एका गाईआ। मेरी दरगाह तेरा माण, मेरी सरन तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वर देवे साचे घर, साचे तख्त सच सुल्तान हो मेहरवान, ब्रह्मे भिच्छया झोली पाईआ। ब्रह्मे भिच्छया साची पा निरगुण निराकार, आपणी वण्ड वण्डांयदा। प्रभ अबिनाशी तेरा चरन दुआर, जुग जुग ना कोए छुडांयदा। तेरी सेवा करां अपार, सेवक झोली आप भरांयदा। तेरा वणज मेरा वापार, तेरा हट्ट मैं चलांयदा। तेरा घर बंक दुआर, जुग जुग वेख वखांयदा। विछड़ ना जाईं विच संसार, माया भरम ना मोहे भुलांयदा। लक्ख चुरासी तेरी धार, लोकमात तेरा रूप प्रगटांयदा। ब्रह्म अंस कर त्यार, घट घट अंदर जोत जगांयदा। सहँसर सहँस पावे सार, आप आपणा विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा

वर, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। ब्रह्मे तेरा हरि हरि मीता, सति पुरख निरँजण आप अख्वाईआ। मेरा दर ठांडा सीता, जुगा जुगन्तर इक्क रखाईआ। जुगा जुगन्तर चलाए रीता, लोकमात करे रुशनाईआ। मेरी धार पतित पुनीता, पतित पापी लए तराईआ। मेरा रंग हस्त कीटा, ऊँचां नीचां आप रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बूझ आपे रिहा बुझाईआ। आपणा रंग आप चढ़ाया, ब्रह्मे लेखा इक्क समझाए। नेत्र नैण इक्क खुल्हाया, कँवल नैण बेपरवाहे। जोती जोत डगमगाया, एका नूर करे रुशनाए। आपणा भेव आप खुल्हाया, कागद कलम कोई लिख ना सके राए। लेखा हथ्थ ना किसे फड़ाया, तख्त निवासी सचखण्ड दुआरे डेरा लाए। लक्ख चुरासी जीव उपाया, हँ ब्रह्म अंदर बन्द कराए। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाया, निरगुण सरगुण वेख वखाए। सुहागी छन्द एका गाया, आप आपणा लए उपजाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि जू बैठा साचा कन्त, घर साचे डेरा लाए। दरगाह साची हरि प्रधाना, दूसर होर ना कोए वखांयदा। सति पुरख निरँजण नौजवाना, एका रंग रंगांयदा। एका वसे सच मकाना, थिर घर साचे सोभा पांयदा। आपे गोपी आपे कान्हा, आपे आपणा संग निभांयदा। आपे मन्ने आपणा भाणा, हरि भाणे सद समांयदा। आपे गाए आपणा गाणा, राग अनादी आप सुणांयदा। आपे पहने जोती जामा, निरगुण आपणा रूप प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे ब्रह्मे देवे माणा, विष्न शिव आप आपणे रंग रंगांयदा। एकँकारा खेल अवल्ला, हरि साचा सच कराईआ। आपे वसया सच महल्ला, थिर घर बैठा जोत जगाईआ। आपे जोती शब्दी रला, निरगुण आपणी धार बंधाईआ। आपे सच सुनेहड़ा एका घल्ला, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। आपे ब्रह्मे फड़ाया आपणा पल्ला, आप आपणे लड़ बंधाईआ। आपे वसया जलां थलां, जल थल महीअल डेरा लाईआ। आपे लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँग्घी डल्ला, धरनी धरत धवल आप वड्याईआ। आपे बैठा रहे इक्क इकल्ला, निरगुण आपणी जोत कर रुशनाईआ। आपे वसे निहचल धाम अटला, महल्ल अटल सोभा पाईआ। आपे करे कराए आपणा वल छला, अछल छलधारी वड सिक्दारी भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा लेखा जाणे चारे वेद, साची किरपा आप कराईआ। चारे वेद साची सिख्या, प्रभ अबिनाशी करता आप जणाईआ। चार जुग मंगण भिख्या, अग्गे बैठे झोली डाहीआ। सृष्ट सबाई दीसे मिथ्या, थिर कोए रहिण ना पाईआ। एकँकारा एका एक जिस जन पेख्या, काल महांकाल नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, वर दाता आप अख्वांयदा। वर दाता शब्द भण्डारी, एका एकंकारया। निरगुण जोत नूर उज्यारी, नूरो नूर उपजा रिहा। आदि जुगादी खेल न्यारी, ख़ालक ख़लक विच खिला

रिहा। जुगा जुगन्तर सांझा यारी, आप आपणा रूप वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारे वेदां लेखा लिख, ब्रह्मे देवे एका सिख, साची सिख्या सिख समझा रिहा। ब्रह्मा लिख लिख वेद चार, अग्गे कूके दए दुहाईआ। सो पुरख निरँजण तेरी कोए ना पाए सार, तेरा लेखा लिख्त विच ना आईआ। तूं दाता दातार सिरजणहार, तेरी महिमा गणत गणी ना जाईआ। सेवक सेवा करे विच संसार, साची सेवा जो लगाईआ। वेला अन्तिम मेला होए पुरख भतार, नारी कन्त लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका शब्द करे जणाईआ। ब्रह्मे हरि हरि शब्द जणाया, आत्म ब्रह्म समझांयदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरी सेवा लाया, जीव जंत तेरे नाल प्रनांयदा। तेरा रूप ब्रह्म दरसाया, हँ ब्रह्म आप उपजांयदा। तेरा सगला संग निभाया, विष्नूं सिर सिर रिज़क सबांयदा। शंकर लेखा दए मुकाया, जो घढ़या सो भन्न वखांयदा। चार जुग गेड़ा आप चलाया, गेड़ा गेड़े विच रखांयदा। नौं नौ चार प्रभ साचा वेख वखाया, साचे तख्त डेरा लांयदा। चारे खाणी भेव ना राया, भेव अभेदा आप छुपांयदा। सरगुण रूप आप प्रगटाया, लोकमात वेख वखांयदा। आपणी धारा आप चलाया, आप आपणा खेल खिलांयदा। बेअन्त बेअन्त आपणा नाउँ उपजाया, साध सन्त सभ रसना गांयदा। रवि ससि राह रहे तकाया, मंडल मंडप वेख वखांयदा। तेरा गेड़ा ना कोए चुकाया, बिन हरि मेल ना कोए मिलांयदा। नौ नौ चार जुग वक्त दए चुकाया, आप आपणी खेल खिलांयदा। पंज तत्त ना कोए रूप वटाया, काया बंक ना कोए सुहांयदा। निरगुण जोत नूर करे रुशनाया, निरगुण आपणा वेस वटांयदा। निहकलंकी जामा इक्क रखाया, मात पित ना कोए बणांयदा। भैणा भइया ना कोए रखाया, साक सैण ना वेख वखांयदा। धरत धवल किसे दिस ना आया, आकाश प्रकाश ना कोए जणांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव वेला अन्तिम दए वखाया, आप आपणा मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे तख्त तख्त सुल्तानां, आपे बैठा वाली दो जहानां, सचखण्ड वेखे मार ध्याना, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड गगन गगनंतर, लोआं पुरीआं वेखणहारा एका एकंकारया। जुगा जुगन्तर लए अवतारा, निरगुण सरगुण रूप वटा रिहा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, कलिजुग अन्तिम आई वारा, खाणी बाणी करे विचारा, तत्त विरोले सिरजणहारया। साधां सन्तां पावे सारा, आत्म अन्तर ब्रह्म पारब्रह्म खेल नयारया। चारे वेदां दए हुलारा, पुराण अठारां खोज खुजा रिहा। सिमरत शास्त्र करे विचारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटा रिहा। रूप वटंदड़ा हरि भगवाना, महिमा कथ कथी ना जाईआ। खेल खलंदड़ा दो जहानां, लोकमात करे रुशनाईआ। प्रगट हो श्री भगवाना, घर साचा वेख वखाईआ। नौ

खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्याना, सत्तां दीपां पर्दा लाहीआ। चौदां विद्या वेखे जगत ज्ञाना, लक्ख चुरासी मात पढ़ाईआ। राम
रमइया खेल महाना, सीता सुरती कवण प्रनाईआ। लेखा जाणे गोपी कान्हा, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। ईसा मूसा वेख
निशाना, काला सूसा इक्क छुहाईआ। संग मुहम्मद जगत तराना, चार यारी नाल गाईआ। अल्ला राणी खेल महाना, ऐनलहक
वज्जी वधाईआ। हकीर फ़कीर शाह वेखे विच जहानां, पीर दस्तगीर खोज खुजाईआ। आलम उलमा करे ध्याना, आलमगीर
बेपरवाहीआ। जगत जंज़ीर इक्क वखाणा, तकदीर तकसीर विच बंधाईआ। लेखा जाणे शाह सुल्ताना, राज राजाना भेव
खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ।
संग मुहम्मद चार यार, उम्मत उम्मती वेख वखांयदा। नबी रसूलां पावे सार, नौबत आपणी आप वजांयदा। काया काअबा
वेख किवाड़, दो दोआबा मेल मिलांयदा। लेखा जाणे पंचम झूठी धाड़, पंज शैताना आप मिटांयदा। पंचम तराना गाए
वारो वार, लाशरीक खेल खिलांयदा। साचा गानां कर त्यार, मैहन्दी मौली नाम रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप
आपणी किरपा कर, जुग जुग खेल विच संसार, खेलणहार आप खलांयदा। खेल अवल्ला हरि कराया, भेव कोए ना पांयदा।
निरगुण जोती जोत जगाया, नानक निरगुण आप उठांयदा। नाम सति मन्त्र इक्क दृढ़ाया, चार वरनां आप उठांयदा। ग़रीब
५२६ निमाणयां गले लगाया। हउमे गढ़ तुड़ांयदा। उच्ची कूके दए दुहाया, सृष्ट सबाई आप सुणांयदा। एका अक्खर जगत ५२६
०९ पढ़ाया, गुर गुर बाणी नाउँ वखांयदा। एका गुर गुर ल्ए प्रगटाया, जोती जोत जोत जगांयदा। गुर अर्जन सेवा साची ०९
लाया, साचा संग निभांयदा। एका जोती नूर कर रुशनाया, गोबिन्द मेला मेल मिलांयदा। पंचम मेला मेल मिलाया, साची
सीस दस्तार बंधांयदा। अमृत साचा जाम प्याया, एका खण्डा विच फिरांयदा। कागों हँस दए बणाया, सूरबीर वड वड्यांअदा।
चार वरनां एका गोद बहाया, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पन्ध मुकांयदा। मिट्ठा रस एका पाया, एका जाम हथ्थ उठांयदा। आप
आपणा वार वखाया, साची सेवा सेव कमांयदा। अन्तिम वेले गया सुणाया, पुरख अबिनाशी शब्द जणांयदा। कलिजुग अन्तिम
होए रुशनाया, जगत अन्धेरा आप मिटांयदा। निहकलंक कल हरि रूप वटाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा
कर, खेले खेल साचे घर, घर साचा इक्क वड्याआ। घर साचा हरि हरि सुहांयदा, थिर घर सच्चा दरबार। चार दीवार
ना कोए बणांयदा, छप्पर छन्न ना कोए विचार। ना कोई बाढी नाल रलांयदा, घाड़ण घड़े ना विच संसार। सच समाधी
आपे लांयदा, बोध अगाधी शब्द जैकार। विस्मादी रूप समांयदा, इक्क इकल्ला एकँकार। मुल्ला शेख़ मुसायक भेव ना
पांयदा, सच मेहरबाना पावे सार। साचा हाजी हज्ज ना कोए वखांयदा, मक्का काया काअबा ना कोई पावे सार। पंज

गाज़ी ना कोए मिटांयदा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार। साचे ताजी ना कोए चढ़ांयदा, मिले मेल ना शाहसवार। साचा निमाज़ी नज़र ना आंयदा, पंजे वक्त होए ख्वार। धुर दी आवाज़ साचे हुज़रे ना कोए लगांयदा, जगत महिराब ना मारे नाअर। नूरो नूर ज़ाहर ज़हूर दरस ना कोए वखांयदा, कोहतूर राह तक्कण साचे यार। आसा पूर ना कोए करांयदा, अल्ला राणी रोवे ज़ारो ज़ार। गुर गोबिन्द तेरा लेखा लिख्या ना कोए मिटांयदा, कलिजुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार। नौ खण्ड पृथ्मी साची सिख्या इक्क समझांयदा, सो पुरख निरँजण मीत मुरार। हँ ब्रह्म मेल मिलांयदा, शब्दी सुरत कर प्यार। डूँघी कंदर फोल फुलांयदा, सुखमन वेखे डूँघी गार। तरबैणी नैणी पन्ध चुकांयदा, सर सरोवर दए नुहाल। कागों हँस आप करांयदा, सोहँ मोती चोग डार। हँसा रूप आप वटांयदा, निरगुण सरगुण आपणे रंग रवे करतार। साची सरसा आप नुहांयदा, नीले वाला हो उज्यार। गुरमुखां उप्पर तरस कमांयदा, फड़ फड़ बाहों जाए तार। कलिजुग तृष्ना हरस मिटांयदा, देवे नाम शब्द आधार। अमृत मेघ इक्क बरसांयदा, करोड़ छिआनवें होए ख्वार। घर साचा इक्क वखांयदा, दस्म दुआरी खोल्ह किवाड़। बज़र कपाटी तोड़ तुड़ावंदा, एका धक्का देवे मार। लक्ख चुरासी फंद कटावंदा, सिर हथ्थ रक्ख निरँकार। साची दरगाह आप बहावंदा, जोती जोत कर उज्यार। कलिजुग कूड़ा पन्ध मुकावंदा, थिर रहे ना विच संसार। लक्ख चुरासी भाण्डा भन्न वखावंदा, भन्नणहार आप ठठयार। ब्रह्मा विष्न शिव सर्ब कुरलावंदा, वेला अन्तिम आई हार। करोड़ तेतीस ना धीर धरावंदा, सुरपति रोवे ज़ारो ज़ार। साधां सन्तां एका राह वखावंदा, पुरख अकाल सच्ची सरकार। साचा ढोला एका गावंदा, तोला बण आप निरँकार। आपणा चोला आप बदलावंदा, जोती जामा भेख अपार। साचा सोहला एका गावंदा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई दए आधार। कलिजुग झूठा रौला ऐवें पावंदा, अन्त निभे ना कोए नाल। राए धर्म नाल उठालदा, चार जुग जो घालण रिहा घाल। चित्रगुप्त हिसाब वखालदा, हथ्थ फड़ नाम मसाल। लाड़ी मौत आप शंगारदा, घर घर वेखे शाह कंगाल। गुरमुखां उत्तों आप आपणा आपे वारदा, वेले अन्त बणे दलाल। दरगाह साची आपे वाड़दा, नेड़ ना आए माया काल। आपे तोड़े गढ़ हँकार दा, नाता छुट्टे जगत जंजाल। मनमुख त्रैगुण अग्नी आपे साड़दा, वेले अन्त ना सके कोए संभाल। लेखा रक्खया आपणे हथ्थ महीना हाढ़ दा, पुरख अबिनाशी खेल निराल। हरिजन साची घोड़ी चाढ़दा, गुर गोबिन्द हरि गोपाल। कलिजुग जीवां बहत्तर नाड़ी दिसदा घर उजाड़दा, ना कोई सके सुरत संभाल। शब्द गुरू बैठा सभ नूं ताड़दा, ना कोई चौदां लोक झल्ले झाल। वेखे किनारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ दा, सत्त समुंदर वेखे डूँघा ताल। नौ खण्ड पृथ्मी जड़्ह उखाड़दा, पत दिसे ना किसे डाल्ह। निहकलंक नरायण नर

चौथे जुग कर्म विचारदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी चले चाल। चाल निराली जोत अकाली, कलिजुग अन्तिम आप चलाईआ। किसे ना देवे कोए दलाली, सृष्ट सबाई ख़ाली हथ्थ वखाईआ। बूटा पुट्टे आपे माली, लोकमात जो ल्या लगाईआ। शाह सुल्तानां खीसे करे ख़ाली, दर दर भिख्या मंगण भिक्ख कोए ना पाईआ। कलिजुग जड़ उखेड़े साचा हाली, सोहँ तिक्खा फाला अग्गे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेअन्त बेअन्त बेअन्त बेपरवाह भेव ना राईआ। बेपरवाह सो पुरख निरँजण, सर्ब जीआं दातारा। जिस जन नेत्र पाए नाम अंञण, मेट मिटाए अन्ध अँध्यारा। जन भगतां बणे साचा सज्जण, लोकमात लए अवतारा। हरिजन हरि हरि पर्दे कज्जण, एका देवे नाम सहारा। कलिजुग काल नगारे सिर ते वज्जण, सृष्ट सबाई धूंआँधारा। शाह सुल्तान तख्त ताज तज्जण, चारों कुंट हाहाकारा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत हरि चरन दुआरे बह बह सजण, पाया पुरख अगम्म अपारा। जिस जन चरन धूढ़ कराए मजन, अठसठ तीर्थ उतरे पार किनारा। पी पी अमृत गुरमुख रज्जण, निझर झिरे साची धारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल कर, आपणी कल वरते संसारा। कल वरते हरि कलवन्त, कल कालख टिक्का दए मिटाईआ। गुरमुख उभारे साचे सन्त, लक्ख चुरासी विच्चों लए उठाईआ। एका शब्द कराए मणीआ मंत, मन मनूआ लए बंधाईआ। सुरत सवाणी मेला हरि हरि कन्त, गुर शब्द करे कुड़माईआ। लेखा जाणे जीव जंत, जागरत जोत इक्क जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। हरिजन हरि हरि मेलया, मेलणहार निरँकार। लेखा जाणे गुरू गुर चेलया, गुर चेला सोहण सदा इक्क दुआर। प्रभ पाया सज्जण सुहेलया, लक्ख चुरासी उतरे पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए उभार। गुरसिख साचा माणक मोती, हीरे रत्न जड़त जड़ाईआ। सतिगुर पूरा आप जगाए निरगुण जोती, घर दीपक करे रुशनाईआ। लभ्भदे फिरदे कोटन कोटी, तीर्थ तट्टां फेरा पाईआ। चारों कुंट फिरन बन्न् लंगोटी, चक्रवर्ती रहे अख्वाईआ। कोटन कोटि छड्ड छड्ड रोटी, अग्नी धूंणीआँ रहे ताईआ। कोटन कोटि तल तल बोटी, आप आपणा रहे जलाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना कढ्ढे वासना खोटी, तीजा नेत्र ना कोए खुल्हाईआ। चौथे पद ना चाढ़े चोटी, चोटी मुन्न मुन्न बैठे पान्धी राहीआ। जिस जन मिली नाम सोटी, पंजां चोरां दए हटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए उठाईआ। गुरसिख सज्जण उठया, सतिगुर पूरा आप उठांयदा। गुर सतिगुर पूरा तुठया, दे दरस दया कमांयदा। पंच विकारा आपे कुठया, माया ममता मोह गवांयदा। कलिजुग माया ना जाए लुट्टया, साचा हट्ट इक्क वखांयदा। अमृत

जाम प्याए घुट्टया, दिवस रैण खुमार वखांयदा। पूजा पाठ लेखा छुट्टया, जिस जन आपणी गोद बहांयदा। गुरसिख बूटा जाए ना पुट्टया, सतिगुर पूरा आप लगांयदा। सतिगुर पूरा कदे ना रुठ्ठया, रुठ्ठे सिख आप मनांयदा। फड़ फड़ बंधाए एका मुठ्ठया, ज़ातां पातां मेट मिटांयदा। तीर निराला एका छुट्टया, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। दस मास जो टंगया रिहा पुठ्ठया, अन्तिम पन्ध मुकांयदा। सचखण्ड दुआरे आपणे चरनां आपे सुट्टया, दूसर धाम ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, घर साचा वेख वखांयदा। घर साचा आपे पेख्या, काया मन्दिर अंदर सच दुआर। आपे लिख्या साचा लेखया, कलम छाही ना करे प्यार। सतिगुर पूरा निरगुण रूप मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केसया, मूंड मुंडाए ना विच संसार। आदि जुगादि रहे हमेश्या, मरे ना जम्मे निरगुण धार। आपे नर आपे नरेश्या, आपे तख्त ताज सुल्तान सिक्दार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, गुरमुख साचे कर प्यार। गुरसिख गुर गुर प्यारा पाया, जगत जहाना नाता तोड़। सतिगुर गुर दुआरा एका मंगण आया, सति सरूपी चढ़या साचे घोड़। काया चोली रंगण आया, चरन प्रीती नाता जोड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वेले अन्तिम जाए बौहड़। वेला अन्तिम हरि भगवन्त, गुरमुखां होए सहाईआ। लेखा जाणे साचे सन्त, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। मेल मिलाए नारी कन्त, निरगुण सरगुण संग निभाईआ। माण रखाए विच जीव जंत, लक्ख चुरासी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन हरि हरि जाणया, पारब्रह्म करतार। चरन दुआरा एका माणया, घर मेला मीत मुरार। सदा चले चलाए आपणे भाणया, हरि भाणा वड बलकार। दरस दखाए ग़रीब निमाणया, निमाण निमाणयां आप निरँकार। गढ़ तोड़े वड जरवाणयां, शाह सुल्तानां कर ख्वार। इक्क सुणाए साची बाणीआं, सो पुरख निरँजण बोल जैकार। हँ ब्रह्म पाए पद निरबाणीआं, त्रैगुण नाता तोड़ जगत जंजाल। सुणे सुणाए अकथ कहाणीआं, गावणहारा गुर गोपाल। धुर लेखा पए नीसाणीआ, गुरमुख उपजाए साचे लाल। अमृत बख्शे ठंडा पाणीआ, जो जन घालण रहे घाल। शब्द मिलावा साचे हाणीआं, घर वज्जे अनादी ताल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिवस रैण करे प्रितपाल। प्रितपालक वड संसारीआ, हरि दाता गहर गम्भीर। गुरमुख मंगे इक्क दलालीआ, शब्द सरूपी शाह फ़कीर। आपे चले अवल्लड़ी चालीआ, आप विरोले अठसठ नीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख चोटी चाढ़े इक्क अखीर। गुरसिख चोटी साची चढ़या, सचखण्ड साची धर्मसाल। निरगुण अक्खर एका पढ़या, शब्द सरूपी वज्जे ताल। अग्नी हवन कदे ना सड़या, फल लग्गे काया डाल्ह। धर्म राए अग्गे हो किसे ना

फड़या, चित्रगुप्त लेखा लेख ना सके वखाल। लाड़ी मौत मस्तक सड़या, संग हो ना पाए जंजाल। दरगाह साची गुरमुख विरला चढ़या, जिस सतिगुर पूरा करे संभाल। सिँघ महिंदर लड़ एका फड़या, फड़ाया आप बाल गोपाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी घाल आपे रिहा घाल।

✻ २१ विसाख २०१७ बिक्रमी मिर्ज़ा दे मकबरे पर कादीआं ज़िला गुरदास पुर ✻

लाशरीक बेऐब परवरदिगार, नूर नुराना बेपरवाहीआ। आदि जुगादी सांझा यार, एका कलमा नाम पढ़ाईआ। अमाम अमामा शाह सिक्दार, शाह सुल्तान वड वड्याईआ। खेले खेल अगम्म अपार, जल्वा नूर इक्क इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वसे एका घर, एका एक करे रुशनाईआ। एका नूर नूर नुराना, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। पुरख अबिनाशी खेल महाना, दरगाह साची आप कराईआ। एका वसे सच मकाना, चार दीवार ना कोए बणाईआ। एका कलमा करे परवाना, आलमा उलमा करे पढ़ाईआ। एका देवे धुर फ़रमाणा, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। एका बन्ने साचा गाना, साचा सगन इक्क मनाईआ। इक्क सुणाए आत्म धुन नाम तराना, तुआरफ़ आपणा आप दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इलाही नूर इक्क अख्वाईआ। इलाही नूर नूर अल्ला, हक हकीकत वेख वखांयदा। लाशरीक इक्क खुदा, ख़ालक ख़लक रूप वटांयदा। पीर फ़कीर शाह हकीर आपणे रंग दए रंगा, जिस जन आपणी दया कमांयदा। सच मृदंग काया महिराब दए वजा, एका काअबा आप दिखांयदा। दो दो आबा वेख वखा, आबहयात जाम प्यांअदा। पुन्न सवाब इक्क गणा, आप आपणा राह चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा जल्वा जल्वा नूर, इक्क इकल्ला हाज़र हज़ूर, रहिमत रहिमान आप अख्वांयदा। रहिमत रहिमान हरि महिबान बीदो बीखैर या अल्ला नूर इलाहीआ। सर्ब जीआं दा सच ईमान, उम्मत आपणी करे पढ़ाईआ। आपे जाणे आपणी इक्क कलाम, कागद कलम ना लिखे शाहीआ। आपे बणया रहे सद गुलाम, आप आपणी सेव कमाईआ। आपे देवे साचा ताम, जगत तृष्ना भुक्ख गुआईआ। आपे करे करावे आपणा काम, कायनात वेख वखाईआ। आपे मेटे अन्धेरी शाम, साचा चन्द कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप जणाईआ। आपणा लेखा हरि मेहरवान, तालब तुलबा आप पढ़ांयदा। दरगाह साची वखाए इक्क निशान, सच साचा आप झुलांयदा। दो जहानी वेखे मार ध्यान, चौदां तबकां फोल फुलांयदा। लेखा जाणे ज़िमी अस्मान, जीव जंत डेरा लांयदा। करे प्रकाश आप आपणे भान,

दिस किसे ना आंयदा। जिस जन देवे आपणा दान, आत्मक विद्या इक्क सुणांयदा। चौदां विद्या होण हैरान, भेव अभेदा भेव खुल्हांयदा। एका नाद वजाए कान, राग इलाही आप अल्हांयदा। आप सुणाए आपणा कलाम, रसना जिह्वा ना कोए हिलांयदा । सच मुक्दस वेख मुकाम, मुकामे हक राह तकांयदा। ऐनल हक इक्क पैग़ाम, धुरदरगाही आप सुणांयदा। अहिमद मुहम्मद पकड़े दाम, दामनगीर दामन आपणा आप फड़ांयदा। सच दुआरे कर परवान, निगहबान वेख वखांयदा। नेड़ ना आए जगत शैतान, मेहरबान खेल खिलांयदा। हक जमायत कर प्रधान, या हक हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका कलमा आप जणांयदा। एका कलमा लाशरीक, सृष्ट सबाई आप पढ़ाईआ। मेटणहार जगत तारीक, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। हरि का अक्खर इक्क बारीक, जगत नेत्र पढ़न ना पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह एका अल्ला, घर साचे सोभा पांयदा। सच सिँघासण एका मल्ला, घर घर विच डेरा लांयदा। अहिमद सुनेहड़ा एका घल्ला, हुक्मी हुक्म अल्हांयदा। चार वरन फड़ाए पल्ला, जोती नूर डगमगांयदा। करे खेल इक्क इकल्ला, अकल कल आप वरतांयदा। पवण पवणी आपे रल्ला, डूँघी कंदर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पांयदा। कूड़ कुड़यारा करे हल्ला, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप दरसांयदा। दरगाह साची सच बहिश्त, घर साचा सच सुहांयदा। जिस जन देवे आपणा इष्ट, ईश जीव आप मिलांयदा। जगत वासना करे भृष्ट, निरभउ भय सर्ब वखांयदा। कलिजुग अन्तिम लेखा जाणे सर्ब सृष्ट, रूप अनूप आप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार यारी तक्के राह, संग मुहम्मद बण मलाह, अहिमद लेखा दए दिखा, आप आपणा पर्दा लाहीआ। आपणा पर्दा देवे चुक्क, नूरो नूर करे उज्यारया। जूठा झूठा सुनेहड़ा जाए मुक्क, सच सुच्च वरते विच संसारया। प्रगट होवे जो बैठा लुक, डंक वजाए अपर अपारया। हरिभगत बूटा ना जाए सुक्क, मुर्शद मुरीद एका रंग रंगा रिहा। आपणी गोदी ल्ए चुक्क, आप आपणा संग निभा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वेखे सच दुआ, नबी रसूलां नाल रला, पीर पैग़म्बर वेख वखा, दस्तगीर दस्त मिला, दस्त बरदार ना आप अख्वाईआ। दस्त बदस्त वेख तकदीर, तकबीर लेखा आप जणांयदा। आप जणाए आपणी तदबीर, तलकीन इक्क करांयदा। काया काअबा वेखे शाह फ़कीर, कुतब गौंस फोल फुलांयदा। झूठा तोड़े जगत जंज़ीर, जिस जन रहिमत रहिमान आप करांयदा। चोटी चाढ़े इक्क अखीर, साची सदा बांग ऊँची कूक आप सुणांयदा। एका मेला दए मिला, नूर नूर विच रखांयदा। कलमा कलाम दए पढ़ा, कातब भेव कोए ना पांयदा। ख़ादम बणे आप खुदा, बाईबल

दुआ जो मंग मंगांयदा। झूठा निज़ाम नाज़म दए मिटा, जगत निहाद वेख वखांयदा। साचा सालस बणे बेपरवाह, अदल आपणा आप कमांयदा। गालब गुरबत दए गुआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मुकाम मुकामे हक, खुदी खुदा रिहा तक्क, हक हकीकत वेख वखांयदा। हक हकीकत सच्चा हकदार, हाकम हुक्म आप जणाईआ। मेल मिलाए मीत मुरार, अंदर मन्दिर हुक्म सुणाईआ। आप जणाए आपणी गुफ़तार, जगत रफतार ना कोए वखाईआ। अहिबाब रबाब वजाए संसार, सारंग सारंगी ना हथ्थ वखाईआ। अञ्जील कुरान करे पुकार, बीस बीस दए गवाहीआ। ख़ालक ख़लक करे प्यार, दूई द्वैत ना कोए रखाईआ। निन्दक दुष्ट दुराचार, चारों कुंट देण दुहाईआ। प्रगट करे आपणा नूर उज्यार, महिताब बेआब होए कुरलाईआ। सृष्ट सबाई पकड़े वाग, डोर आपणे हथ्थ उठाईआ। साचे घर जगाए चिराग, तेल बत्ती ना कोए पाईआ। तत्त विकारा बुझे आग, माया ममता दए गुआईआ। एका कलमा पढ़ाए अयुध्या कांशी प्राग, मक्का काअबा करे इक्क जणाईआ। जिस जन उपजाए आत्म वैराग, बिस्मिल रूप आप दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नूर शाह सुल्ताना, खेले खेल श्री भगवाना, भारत खण्ड वेख ब्रह्मण्ड, नौ नौ खण्ड फेरा पाईआ। सच दुआ होए कबूल, जिस जन एका एक ध्याया। ना कातल ना दिसे मकतूल, काया मकबरा वेख वखाया। खुदावंद करीम अज़ीम ना जाए भूल, तालीम रोज़ा इक्क पढ़ाया। आपे जाणे आपणा सच असूल, बेकायदगी विच कदे ना आया। आप जणाए आपणा जनून, जागरत जोत करे रुशनाया। पहला मेटे सर्ब कानूंन, ज़ात पात वरन गोत बरन अठारां दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मक्द्स वेखे धाम, एका खेड़ा इक्क ग्राम, एका इच्छया एका काम, एका भिच्छया देवे राम, नाम निधाना एका गाया।

५३२ ०६

५३२ ०६

❋ १ जेठ २०१७ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ❋

लाल रंग हरि गुलाला, सो पुरख निरँजण आप उपजांयदा। बणे लालारी पुरख अकाला, हरि पुरख निरँजण नाल रलांयदा। एकँकारा चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली आपणी आप उपांयदा। अबिनाशी करता वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, धुर दरबारा आप सुहांयदा। श्री भगवान बणे दलाला, दर घर साचे सेव कमांयदा। पारब्रह्म राह वेखे इक्क सुखाला, मार्ग आपणा पन्ध रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लाल रंग रंग रंगीला आप रंगांयदा। लाल रंग हरि अनमोला, एका एक उपजांयदा। सो पुरख निरँजण बणया तोला, साचे कंडे आप तुलांयदा। हरि पुरख निरँजण दर

दरवेश बण बण गोला, आपणी भिख्या मंग मंगांयदा। एकओंकारा बोले एका बोला, एका हुक्मी हुक्म जणांयदा। आदि निरँजण गाए साचा ढोला, रूप रंग ना कोए वखांयदा। श्री भगवान वसे कोला, आप आपणा पर्दा लांहयदा। अबिनाशी करता रंगे चोला, दूसर रंग ना कोए जणांयदा। पारब्रह्म आप मिटाए पर्दा ओहला, आप आपणा रूप प्रगटांयदा। सचखण्ड दुआरे सुणाए एका सोहला, नाद अनादी राग अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग उपांयदा। साचा रंग लाल अपारा, सो पुरख निरँजण आप उपजांयदा। हरि पुरख निरँजण कर प्यारा, आप आपणा खेल खिलांयदा। इकओंकारा बण ललारा, साची सेवक सेव कमांयदा। श्री भगवान करे खेल न्यारा, खेलणहारा दिस ना आंयदा। अबिनाशी करता वसे उच्च चुबारा, महल्ल अटल इक्क सुहांयदा। आदि निरँजण हो उज्यारा, दीपक दीआ इक्क जगांयदा। पारब्रह्म नेत्र नैण इक्क उग्घाड़ा, आपे आपणा दर्शन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग रंगे लाल, लालण आपणा नाउँ धरांयदा। लाल लालण पुरख अगम्मा, दूसर होर ना कोए जणांयदा। आपे जाणे आपणा कम्मा, आदि जुगादी खेल खिलांयदा। मात पित जननी जन ना किसे जणा, रसना रस ना कोए वखांयदा। राग नाद ना सुणाए कोई कन्ना, रसना जिह्वा ना कोए हिलांयदा। ना करे प्रकाश कोए रवि ससि चन्ना, सूरज सूर्या ना कोए चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लाल रंग अपर अपारा, आप उपाए हरि निरँकारा, दर घर साचे आप सुहांयदा। दर घर हरि सुहञ्जणा, पुरख अबिनाशी आप सुहाईआ। खेल करे दर्द दुःख भय भञ्जणा, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। आपणा लेखा आपे जाणे ना घड़या ना भज्जणा, घड़ण भन्नणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, आप आपणा वेस धराईआ। सचखण्ड दुआरे आपे वड़या, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। नर निरँकारा आपणी सेज आपे चढ़या, आप आपणा सगन मनांयदा। आपणा पल्ला आपे फड़या, सालू आपणी गंढु बंधांयदा। आपणा घाढ़ण आपे घड़या, रूप रेख ना कोए वखांयदा। अग्नी पवणी कदे ना सड़या, त्तत्व तत्त ना कोए जलांयदा। विद्या अक्खर कोए ना पढ़या, आप आपणा शब्द सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, हरि निरँकारा आप करांयदा। खेल अपारा श्री भगवान, आपणा आप कराईआ। सचखण्ड दुआरा सुहाए सच मकान, सच सिँघासण आसण लाईआ। आदि जुगादी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ । आपणी जोती नाल रलाए नार रकान, अंग अंगीकार कराईआ। आपणी सेजा करे परवान, परम पुरख वड वड्याईआ। आपणा वेखे मार ध्यान, निरगुण निरगुण नैण मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, इकओंकारा आप

खिलाईआ। इकओंकारा सच महल्ला, सचखण्ड सोभा पांयदा। साची सेजा इक्क इकल्ला, आपणा आसण लांयदा। आप फड़ाए आपणा पल्ला, आप आपणा मेल मिलांयदा। आप वसाए निहचल धाम अटला, अगम्म अथाह आप अख्वांयदा। आपणा आसण आपे मल्ला, आप आपणा चरन टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगांयदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि सच करी कुड़माईआ। हरि हरि बणया नारी कन्त, नर हरि नरायण वेख वखाईआ। आप बणाई आपणी बणत, आप आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। सचखण्ड दुआरा हरि भगवाना, तख्त निवासी सोभा पांयदा। आपणे हथ्थीं बन्न्हे गाना, आप आपणा सगन मनांयदा। आपे बोले सच तराना, तुरीआ राग आप अल्हांयदा। आपे वेखे सच निशाना, दर घर साचे आप झुलांयदा। आपे बण बण नौजवाना, आपणा जोबन रूप सुहांयदा। आपे मस्ती मस्त मस्ताना, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपे आदि शक्ति बणे नौजवाना, निरगुण नार भतार रूप वटांयदा। आपे सौहरे पेईए देवे माणा, आप आपणा हुक्म चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर दिस ना आंयदा। सचखण्ड दुआरा पारब्रह्म, एका रंग समाया। ना मरे ना पए जम्म, तत्व तत्त ना कोए उपाया। आपे जाणे आपणा कम्म, करता कारज आप रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, पुरख अबिनाशा आप कराया। पुरख अबिनाशा खेल करंदड़ा, घर साचे वज्जे वधाईआ। साचे तख्त आप सुहंदड़ा, सोभावन्त बेपरवाहीआ। आपणी रचना आप रचन्दड़ा, रच रच वेखे वेखणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाईआ। निरगुण नारी निरगुण कन्त, निरगुण बणे विचोलया। निरगुण धाम निरगुण काम निरगुण सोभावन्त, निरगुण गाए ढोलया। निरगुण जाम निरगुण मंत, निरगुण बोले बोलया। निरगुण आदि निरगुण अन्त, निरगुण खेले आपणी होलीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे रंगे आपणी चोलीआ। निरगुण नारी कन्त भतारा, सच्चखण्ड डेरा लाया। निरगुण करे सच प्यारा, निरगुण आपणा मेल मिलाया। निरगुण नेत्र नैण वेखे एका धारा, धार धार विच टिकाया। निरगुण गुप्त निरगुण ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। निरगुण मेल पुरख बिधाता, आदि निरँजण वड वड्याईआ। खेले खेल इक्क इकांता, अकल कल भेव ना राईआ। ना कोई दिवस ना कोई राता, घड़ी पल ना कोए बणाईआ। ना कोई बरस ना कोई मास ना कोई लेखा लिखे गाथा, ना कोई करे पढ़ाईआ। ना कोई मंडल मंडप रवि ससि चलाए राथा, हुक्मी हुक्म ना कोए भवाईआ। इक्क इकल्ला हरि समराथा, सचखण्ड बैठा

५३४ ०६

आसण लाईआ। आपणे अंदर मारे साची ठाठा, सर सरोवर आप अख्वाईआ। आपणा बणे आपे बाटा, अमृत आपणा विच टिकाईआ। आपे वेचे आपणे हाटा, चौदां हट्ट ना वणज वखाईआ। आपे सोहे आपणी खाटा, सेज सुहञ्जणी इक्क वछाईआ। आपे जोती नूर होए ललाटा, नूरो नूर डगमगाईआ। आपे वड़े आण बाटा, आपे पर्दा दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल अगम्म अथाहीआ। निरगुण बाटा अमृत भरया, प्रेम प्रेम विच समांयदा। आपे फड़ फड़ अग्गे करया, आपे वेख वखांयदा। आपे नारी नर देवे वरया, वर घर आपणा आप सुहांयदा। आपे आपणा सगन करया, प्रेम रंगण रंग रंगांयदा। लाल रंग पहली वेर पुरख अबिनाशी करया, सचखण्ड दुआरे आपणी सेज सुहांयदा। आपणा पल्लू आपे फड़या, दूसर कोए ना वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ा खेल खिलांयदा। लाल रंग हरि निरँकारा, घर साचे आप रंगाईआ। नारी कन्त मेल भतारा, प्रिआ प्रीतम वेख वखाईआ। साचा सालू होए त्यारा, दीन दयालू आप कराईआ। आदि जुगादी अन्त ना पारावारा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। कोए ना जाणे आर पार किनारा, बेअन्त बेपरवाहीआ। लाल रंग निरगुण धारा, सुते प्रकाश आप कराईआ। सचखण्ड निवासी आपे जाणे आपणी धारा, आप आपणे विच्चों प्रगटाईआ। करे खेल खेलणहारा, साची रचना रच वखाईआ। सचखण्ड दवारिउँ आवे बाहरा, सुन अगम्म समाईआ। सुन अगम्मी हो उज्यारा, पारब्रह्म ल्ए उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ भर भण्डारा, ब्रह्म विद्या इक्क जणाईआ। ब्रह्म ब्रह्म कर उज्यारा, विष्नूं विश्व रूप प्रगटाईआ। शंकर खेल विच संसारा, सतिगुर पूरा आप कराईआ। तिन्नां विचोला बण निरँकारा, त्रैगुण झोली इक्क भराईआ। एका शब्द शब्द जैकारा, धुन आत्मक आप सुणाईआ। चारे वेदां बण लिखारा, चारे मुख दए सालाहीआ। चारे जुग भरे भण्डारा, चारे खाणी वेख वखाईआ। चारे बाणी आपणी धारा, आप आपणा शब्द सुणाईआ। चारे वरन करे पुकारा, चार चारां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप जणाईआ। लेखा हरि भगवन्त, भेव कोए ना पांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटांयदा। आपे नारी आपे कन्त, कन्त कन्तूहल नाउँ धरांयदा। आपे चोली चाढ़े रंग बसन्त, काया कपड़ वेख वखांयदा। आपे मणीआ आपे मंत, आपे शब्द रूप प्रगटांयदा। आपे जीव आपे जंत, लक्ख चुरासी आप समांयदा। आपे साध आपे सन्त, आदि अन्त वेख वखांयदा। आपे हउमे आपे हंगत, ख़िमां ग़रीबी आप हंढांयदा। आपे भुक्खा आपे नंगत, शाह सुल्तान आप हो जांयदा। आपे दर दर भिखारी बणे मंगत, आपे मंग्गयां भिछ ना पांयदा। आपे चोली चाढ़े साची रंगत, रंग रंगीला आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधांयदा।

लाल रंग हरि करतार, आपणा आप रंगाईआ। प्रगट करे विच संसार, गुर सतिगुर बूझ बुझाईआ। निरगुण सरगुण कर प्यार, पीआ प्रीतम दए मिलाईआ। घर सुहञ्जणा खेल अपार, आदि निरँजणा आप कराईआ। दर्द दुःख भय भञ्जणा पावे सार, नेत्र अञ्जणा एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात दए वड्याईआ। लाल रंग लोकमात, गुर सतिगुर आप चढ़ांयदा। पुरख अबिनाशी वेखे मार झात, नेत्र नैण ना कोए दखांयदा। लेखा चुकाए दिवस रात, सवेर संझ ना कोए बणांयदा। हरिभगत सुणाए आपणी गाथ, आप आपणा नाम अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लाल रंग वण्ड वण्डांयदा। लाल रंग वण्डी वण्ड, वण्डणहार करतारा। भेव ना पाए कोई विच ब्रह्मण्ड, लिख लिख थक्का सर्ब संसारा। अन्त ना जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज दिसे ना पार किनारा। दिस ना आए विच नव खण्ड, सत्त दीप ना कोए उज्यारा। पुरख अबिनाशी आपणी सेजा सुत्ता दे कर कंड, नेत्र नैण ना कोए उग्घाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी कारा। लाल रंग हरि सुल्तान, दर घर साचे आप वरतांयदा। जुगा जुगन्तर हो मेहरवान, जन भगतां झोली पांयदा। गुर सतिगुर देवे साचा दान, गुण निधान दया कमांयदा। जिस सखी मिल्या सच्चा काहन, तिस सालू लाल रंगांयदा। लक्ख चुरासी जीव जंत सर्ब पछताण, नेत्र दरस कोए ना पांयदा। कोटन कोटि रसना गाण, काया कोट ना कोए तुड़ांयदा। जिस जन उप्पर होए आप मेहरवान, तिस जन आपणा रंग रंगांयदा। जुग जुग करे मात परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप उठांयदा। गुरसिख लग्गे ना दाग़, गुर सतिगुर आप धुआंयदा। गुरसिख ना होए काग, माणक मोती चोग चुगांयदा। गुरसिख उपजे इक्क वैराग, बिरहों तीर निराला अणयाला आप लगांयदा। गुरसिख जोती जगे चिराग, अन्ध अन्धेरा आप मिटांयदा। गुरसिख पकड़े आप वाग, साची सेवा सेव कमांयदा। गुरसिख तेरी सरन हरि साचा जाए लाग, लोकमात तेरी ओट रखांयदा। तेरे घर लग्गी बुझाए आग, आपणा अमृत मेघ बरसांयदा। तेरे मन्दिर गाए आपणा राग, आपणी धुन आप उपजांयदा। तेरा बणे सज्जण साक, आप कबीला ना कोए दखांयदा। तेरी धूढ़ी मंगे ख़ाक, सचखण्ड दुआरे आप टिकांयदा। आप चढ़ाए फड़ फड़ बाहों साचे राक, शब्द घोड़ा आप दौड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। गुरसिख माणक मोती हीरा लाल, सतिगुर पूरा कीमत पाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। दो जहान करे प्रितपाल, गुर पीर देण गवाहीआ। चारे बाणी करे पुकार, चारे खाणी दए मुकाईआ। सचखण्ड वखाए सच्ची धर्मसाल, दूसर दर ना कोए भुआईआ। जिस जन चाढ़े रंग लाल, उतर कदे ना जाईआ। कलिजुग बणया आप दलाल,

दिस किसे ना आईआ। शब्द सरूपी मारे एको छाल, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लाल रंग इक्क अख्वाईआ। लाल रंग सच दरबारा, हरि साचा आप उपांयदा। जुग जुग रंगे विच संसारा, सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा। कलिजुग अन्तिम आई वारा, नानक निरगुण बोल सुणांयदा। कबीरा ऊँची कूके करे पुकारा, साचे लालण दर्शन पांयदा। वाहवा तेरा वसदा रहे दुआरा, दर तेरा इक्क सुहांयदा। दर दरवेश बणे भिखारा, एका मंगण मंग मंगांयदा। नानक पाया एका वारा, इकओंकारा वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी भर भण्डारा, साची वस्त हथ्थ फड़ांयदा। मिल्या मेल नार भतारा, निरगुण नारी नानक हरि हरि साचा कन्त मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रंगण आप चढ़ांयदा। नानक चढ़या रंग चलूल, चोला त्रैगुण आप रंगाया। एक अक्षर एका मूल, एका मन्त्र नाम सच दृढ़ाया। एका सेजा एका फूल, एका आसण सिँघासण सुहाया। एका कन्त इक्क कन्तूल, एका नारी नर नरायण प्रनाया। एका शब्द पंगूढ़ा रिहा झूल, पावा चूल ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलाया। नानक मेला कन्त भतार, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। पाया पुरख एकँकार, एका मेला साचे माहीआ। दो जहानां एका धार, एका रंग समाईआ। विछड़ ना जाए विच संसार, सगला संग आप निभाईआ। चाढ़े रंग अपर अपार, लाल गुलाला आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। चार जुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी धार, गुरमुख विरले दया कमांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों एका भगत ल्याए चरन दुआर, उच्ची कूक कबीर अलांयदा। बिन नानक ना करे कोई सच प्यार, सचखण्ड दुआरे मेल मिलांयदा। नानक कहे सच पुकार, लोकमात मात समझांयदा। कलिजुग अन्तिम आए वार, रैण अन्धेरी अन्धेरा छांयदा। ना कोई दिसे मीत मुरार, साक सैण ना कोए बणांयदा। नाता तुट्टे गुर पीर अवतार, साध सन्त ना कोए मनांयदा। पढ़ पढ़ बाणी ना करे कोए विचार, कलिजुग आपणा बाण लगांयदा। सर पाणी ना करे कोई ठंडा ठार, सरोवर अग्नी तत्त जलांयदा। जगत विद्या ना करे पार, बेड़ा मात ना कोए तरांयदा। वरन बरन होयण ख्वार, साची सरन ना कोए रखांयदा। हरन फरन ना खुल्ल्हे किवाड़, साध सन्त जूठ झूठ मुख रखांयदा। प्रगट होवे निहकलंक कल कल्की अवतार, जोती जामा वेस वटांयदा। सम्बल नगर होया उज्यार, साढे तिन्न हथ्थ लेख लखांयदा। गोबिन्द मीता बेऐब परवरदिगार, एका नाअरा आप सुणांयदा। शब्द खण्डा फड़े सच कटार, सच सुल्तान हथ्थ उठांयदा। पंज शैतानां मारे मार, जगत विकारा मेट मिटांयदा। भगत दुआरा मंगे बण भिखार, एका अल्फ़ी अल्फ़ आप हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, आप आपणी दया कमांयदा। चौथे जुग हरि अवतारा, निरगुण आपणा खेल खिलांयदा। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, साचा हुक्म सुणांयदा। शाही लशकर ना कोए घोड़ अस्वारा, तीर तलवार ना हथ्थ उठांयदा। नाम खण्डा तेज़ कटारा, दो जहानां आप चलांयदा। लक्ख चुरासी मारे मारा, मारनहारा दिस ना आंयदा। कागद कलम ना लिखणहारा, सत्त समुंदर मस्स बसुधा धार ना कोए धरांयदा। आदि अन्त ना पारावारा, साध सन्त सर्ब कुरलांयदा। आपणी मित गत जाणे आप निरँकारा, दूसर संग ना कोए रलांयदा। कलिजुग खेल करे अपारा, ख़ालक ख़लक वेख वखांयदा। उच्ची कूके बोले नाअरा, ऐनलहक हक मिलांयदा। तन वेस करे शंगारा, महिबान मेहरबान आपणा मेल मिलांयदा। मक्का काअबा दो दो आबा दए हुलारा, चौदां तबकां फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेख वटांयदा। भेख वटाया इलाही नूर, जल्वा नूर विच वखाईआ। आपे वसे कोहतूर, आपे बैठा मुख छुपाईआ। आपे होए हाज़र हज़ूर, हज़रत नूह आप हो जाईआ। आपे बख़्शे सच ज़हूर, शाह ग़फ़ूर वड वड्याईआ। आपे नेड़े आपे दूर, आपे हुजरा रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा दए समझाईआ। आपणा लेखा बण मलाह, लोकमात समझांयदा। नबी रसूलां देवे सच सलाह, अमाम अमामा रूप वटांयदा। फड़ फड़ पाए आपणे राह, कलमी कलमा आप पढ़ांयदा। आपे बिस्मिल रूप हो जाए समा, आप आपणा रूप आप प्रगटांयदा। आपे राणी अल्ला नाउँ धरा, आपणा सालू आप रंगांयदा। लाल रंग इक्क चढ़ा, साची मैहन्दी हथ्थ लगांयदा। अमाम मैहन्दी वेस वटा, वेस अवल्ला आप करांयदा। उम्मत उम्मती वेख वखा, सम्मत सम्मती लेख चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लाल रंग इक्क समझांयदा। मुहम्मद उपजी एका आस, बेऐब आप उपजाईआ। परवरदिगार बुझाए प्यास, बेपरवाह वड वड्याईआ। एका कलमा इक्क स्वास, एका आयत दए पढ़ाईआ। एका करे बन्द ख़लास, बन्दा बन्दीख़ाना लए तुड़ाईआ। एका करे दरगाह साची वास, वसल महबूब इक्क वखाईआ। एका पढ़े सच निमाज़, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ। मुहम्मद तक्कया जल्वा इलाही, एका रंग समाया। चार यार मिलाया बण मलाही, साचा मेला मेल मिलाया। नूरी नूर वसे एका थाँईं, थान थनंतर इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात मार झात, चौदां लोक रक्खे आपणे ख़ात, चौदां तबकां वेखे इक्क बरात, मुहम्मद बंधाया साचा नात, अल्ला राणी नाल प्रनाईआ। अल्ला राणी जुड़या जोड़, लालण लाल रंग रंगाया। शाह सवारा चढ़या साचे घोड़, मौली मैहन्दी गाना हथ्थ बंधाया। साची तसबी आपणी लई तोड़, मन का मणका आप फिराया। मिट्ठा करया रीठा

कौड़, अमृत रस आप भराया। दर्शन दीआ हरि हरि दौड़, आप आपणा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप दरसाया। मुहम्मद वेख्या लाल रंग, बसुधा सुध रहे ना राईआ। चौदां तबक नच्चया बण मलँघ, अल्ला राणी नाल नचाईआ। चौथा यार नाल रिहा नरायण सिँघ कंग, हथ्थ कंगण आप बंधाईआ। जुग जुग मुक्के ना किसे दा पन्ध, ना कोई पान्धी आपणे कदम गणाईआ। चार वरनां सुणाउँदा आया आपणा छन्द, हक हकीकत वेख वखाईआ। आपे वसया परमानंद, निजानंद रूप वटाईआ। जिस जन ढाए भरमां कंध, एका जल्वा नूर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लाल रंग दए वड्याईआ। लाल रंग हरि आप चढ़ाया, दूसर होर ना कोए रंगांयदा। मुहम्मद जल्वा आप वखाया, तूर नाद नाद वजांयदा। सच सरोवर आप रड़ाया, भर प्याला मदि प्यांअदा। सच सुराही हथ्थ उठाया, नूर इलाही सेव कमांयदा। आउँदा जांदा दिस ना आया, वेस अवेसा वेस धरांयदा। जिस जन आपणा कलमा आप दए सुणाया, तीस बतीस शरअ शरीअत आयत ना कोए सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगांयदा। मुहम्मद तक्कया लाल अनमोला, सुध रही ना राईआ। आपणा चुकया जाए ना डोला, चार कुहार रिहा बुलाईआ। परवरदिगार खेले होला, लोकमात वेख वखाईआ। करबला बणया आप विचोला, एका रंगण रंग वखाईआ। सुणाया आपणा साचा ढोला, दे मति गया समझाईआ। चौदां सद रहे रौला, मौला मेल ना कोए मिलाईआ। सदी चौधवीं बदले चोला, अमाम अमामा वडा शहनशाहीआ। लोकमात सुणाए एका ढोला, चार जुग किसे हथ्थ ना आया, एका रंग ना कोए वखाईआ। नानक बणया साचा तोला, तेरां तेरां तेरी धार चलाईआ। बिन हरि हरि जी करे ना कोई भार हौला, धरनी धरत धवल रही कुरलाईआ। कृष्न होया कला सोलां, अर्जन बणया रथ रथवाहीआ। कलिजुग अन्तिम पुरख अबिनाशी शब्द सरूपी मारे गोला, ना सके कोए बचाईआ। जन भगतां अंदर आपणा मन्दिर आपे खोल्ह, आपणा पर्दा दए गुआईआ। सोहँ गाए साचा ढोला, हँ ब्रह्म मेल मिलाईआ। काया रंगे साचा चोला, लाल रंग इक्क वखाईआ। सृष्ट सबाई खेडे होला, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा चोला रंग रंगाया, निरगुण सरगुण तन पहनाया, अंदर आपणा डेरा लाया, वाहवा मन्दिर इक्क सुहाया, लुहार तरखाण ना किसे बणाया, ना कोई बाढी संग रखाईआ। लाल रंग हरि निरँकारा, कलिजुग अन्तिम आप रंगांयदा। सत्त रंग निशाना कर प्यारा, नवां खण्डां आप समझांयदा। गुरसिखां करे पार किनारा, नौ दुआरे पन्ध मुकांयदा। दरस दिखाए खोल्ह किवाड़ा, रातीं सुत्तयां आप उठांयदा। धुरदरगाही एका लाड़ा, लोकमात वेख वखांयदा। गुरसिख प्रनाए साची नारा, साची सखीआं वेख वखांयदा।

आवण जावण तोड़ण विच संसारा, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। लेखे लाए साढे तिन्न हथ्थ मुनारा, माया ममता मोह गुआंयदा। इक्क वखाए सच दुआरा, दरगाह साची आप सुहांयदा। सचखण्ड निवासी बण सिक्दारा, साचा हुक्म चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां करे वड वड भाग, फड़ फड़ हँस बणाए काग, कागों हँस आप उडांयदा। वडभागी हरि पाया, पारब्रह्म सुल्तान। जगत झूठा पन्ध मुकाया, मिटया आवण जाण। हरि साचा कन्त हंढाया, सुंञी सेज ना होए दो जहान। प्रिआ प्रीतम गले लगाया, आप आपणे लए पछाण। लक्ख चुरासी मुख भुआया, करवट बदले ना गुण निधान। साची सखीआं आप हंढाया, पुरख अबिनाशी साचा काहन। घर घर बंसरी नाम वजाया, धुनी राग सुणाए साचे कान। गुआल बाला रूप वटाया, गुरसिख गऊआं चारे विच बीआबान। साचा मुक्ट सीस टिकाया, बणया शाहां दा शाह सुल्तान। सत्त रंग निशाना इक्क उठाया, मेट मिटाए बेईमान। लाल रंग इक्क रंगाया, गुरसिख सारे खुशी मनाण। घर सुहञ्जणा पुरख अबिनाशी वर घर पाया, नाता तुटा जीव जहान। चौथे जुग चौथी लांव, चौथे घर आप दुआया, ग्रन्थी पन्थी ना सकण पछाण। पुरख अबिनाशी सभ ने गाया, दरस किसे ना देवे आण। कलिजुग साचा वक्त सुहाया, सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े मेले आण। राम कृष्न आप घलाया, ईसा मूसा कर परवान। मुहम्मद कलमा आप पढ़ाया, चाली बरस मेट शैतान। नानक मेला सहिज सुभाया, दर घर साचे खेल महान। पूत सपूता इक्क उपजाया, गुर गोबिन्द नौजवान। सन्तां भगतां आप समझाया, काया अंदर खोल्ह दुकान। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, शब्द सरूप हरि भगवान। जोती जामा खेल खलाया, पंज तत्त ना कोए निशान। गुरसिखां रंग चढ़ावण आया, आप आपणा कर ध्यान। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वेख वखाया, वण्ड ना पाए शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी अञ्जील कुरान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लाल रंग करे प्रधान। लाल रंग कर प्रधान, सतिजुग साचा दए वखाईआ। चार वरन चार कुंट लक्ख चुरासी सारे गाण, एका एक करे पढ़ाईआ। जन भगतां देवे एका दान, दाता दानी हरि अख्वाईआ। गुरसिख अन्तिम मिले मेल श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची चोली आप रंगाईआ। गुरसिख तेरी प्रेम रत, लाल रंग रंगाया। तेरी अन्तिम रक्खे पति, तेरा तेरे दुआरे आया। तेरा धीरज तेरा सति, तेरा रथ दए चलाया। तेरी बुध तेरी मत, गुरमति दए समझाया। तेरा बीज़ तेरे वत, तेरी काया दए बजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया क्यारी इक्क वखाया। काया क्यारी लाए केसर, निहकर्मी कर्म कमाईआ। मस्तक टिक्का लग्गे थनेसर, धरत धवल वड वड्याईआ। लेखा जाणे ना ब्रह्मा विष्नूं महेष महेषर, चार वेद भेव ना पाईआ। जोती जोत

५४०
०९

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लाल रंग इक्क वड्याईआ। लाल रंग हरि उपजंदड़ा, निरगुण निरगुण धार। लोकमात खेल खलंदड़ा, सन्त भगत भगवन्त करे प्यार। गुरमुख साचे वेख वखंदड़ा, नाता तोड़े नर नार। आप आपणे अंग लगंदड़ा, अंगीकार करे करतार। भाण्डा भरम भउ भनंदड़ा, दूई द्वैती देवे मार। एका साचा शब्द सुणंदड़ा, दिवस रैण रहे धुन्कार। जगत जंजाला तोड़ तुड़ंदड़ा, लेखा चुक्के तट किनार। ख़ुशी ग़म एका रंग वखंदड़ा, हरिसंगत कर प्यार। सम्मत सोलां राह चलंदड़ा, गुरसिख रोवे ना ज़ारो ज़ार। लाल रंग इक्क चढ़ंदड़ा, चौवी मग्घर दिवस विचार। सच मलाह आप अख्वंदड़ा, भर भर बेड़ा लाए पार। जो जन साची सेव कमंदड़ा, मानस जन्म लए संवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तन करे श्रंगार। सच श्रंगार लाल रंगण, रंग रंगीला आप कराईआ। गुरसिख पाया साचा कंगण, राम नाम आप घड़ाईआ। दूजे दर ना गया मंगण, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। मनमुक्ख जीव दर ते संगण, नेत्र दिसे ना बेपरवाहीआ। बिन गुरसिख ना सुहाए कोई आपणा अंगण, घर बंक ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लाल रंग इक्क वखाईआ। लाल रंग हरि चढ़ाया, एका भट्ठी नाम तपांयदा। त्रैगुण माया भट्ठी हेठां डाहया, इक्की जेठ लिख्त लिखांयदा। नां थेह वाला नाम वड्याआ, आप आपणा रंग रंगांयदा। सोलां साल तपदा रिहा कड़ाहया, पुरख अबिनाशी जोती लम्बू आपे लांयदा। सम्मत सतारां पहली चेत दिवस सुहाया, साचा ताज सीस टिकांयदा। लोकमात शाह पातशाह बण के आया, संसा रोग सर्ब चुकांयदा। आपणी हथ्थीं गुरमुखां तन नाम चोला दए पहनाया, फड़ हथ्थीं ना कोए लांहयदा। सम्मत सत्तरां हाढ़ सतारां दिवस दए सुहाया, कवण रंग सूरा सरबंग जन भगतां आप चढ़ांयदा। सचखण्ड निवास पुरख अबिनाश आपे सोए आत्म सेजा लँघ, सच पलँघ आप सुहांयदा। कलिजुग भन्ने काची वंग, गुरसिख कंगण आप पहनांयदा। दाता दानी सूरा सरबंग आप आपणी दया कमांयदा। शब्द वजाए नाम मृदंग, आपणी इच्छया मरदाना रूप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, रंग अवल्ला इक्क इकल्ला एकओंकार आप चढ़ांयदा। चढ़या रंग रंग मजीठ, उतर कदे ना जाईआ। सतिगुर मिल्या इक्क अणडीठ, जगत नेत्र दिस ना आईआ। जगत पीसण आपे पीठ, पीसण पीस रिहा सेव कमाईआ। निरगुण हो हो वसया चीत, सरगुण भेव ना जाणे राईआ। करे कराए पतित पुनीत, पतित पापी लए तराईआ। जो जन गाए सुहागी गीत, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाईआ। पारब्रह्म मिले प्रभ साचा मीत, मीत मुरारा साचा फेरा पाईआ। इक्क रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। सीस सुहाए पीतम्बर पीत, जस अप जस आप कराईआ। आपे जाणे आपणी रीत, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। साचा वेहड़ा काया काअबा मन्दिर मसीत,

गुरदुआरा इक्क वखाईआ। जिस जन सतिगुर मिल्या इक्क अतीत, त्रैगुण नाता दए तुड़ाईआ। काया करे ठंडी सीत, लाल रंग दए वखाईआ। मानस जन्म गए जीत, जो जन आए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन देवे एका दान, जीआ दान झोली पाईआ।

※ २ जेठ २०१७ बिक्रमी जगीर सिँघ दे घर पिण्ड सोल्ह ज़िला गुरदास पुर ※

सो पुरख निरँजण सद मेहरवान, हरि दाता बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरँजण सच निशान, आदि जुगादि झुलाईआ। इकओंकारा नौजवान, नर हरि ना मरे ना जाईआ। आदि निरँजण जोत महान, परम पुरख आप जगाईआ। श्री भगवान साचा दान, तख्त निवासी आप वरताईआ। अबिनाशी करता खेल महान, इक्क इकल्ला आप कराईआ। पारब्रह्म प्रभ गुण निधान, गुणवन्ता वड वड्याईआ। सचखण्ड वसे सच मकान, महल्ल अटल उच्च मिनार इक्क वखाईआ। दूसर दिसे ना कोए निशान, निरगुण बैठा मुख छुपाईआ। आपे गोपी आपे काहन, आपे सगला संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा रंग रंगाईआ। सो पुरख निरँजण हरि हरि दाता, एका रंग समांयदा। हरि पुरख निरँजण शब्द ज्ञाता, धुन अनादी नाद वजांयदा। एकँकारा गाए आपणी गाथा, बोध अगाध आप अख्वांयदा। श्री भगवान सगला साथा, दर घर साचे आप निभांयदा। अबिनाशी करता आपे खेले खेल तमाशा, मंडल रास आप रचांयदा। पारब्रह्म दर घर साचे कर वासा, बंक दुआरा इक्क सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा जोत प्रकाशा, निरगुण नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एकँकारा खेले खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। सो पुरख निरँजण सोभावन्त, हरि पुरख निरँजण वड वड्याईआ। एकँकारा आदि अन्त, आदि निरँजण सोभा पाईआ। श्री भगवान साचा कन्त, अबिनाशी करता सेज हंढाईआ। पारब्रह्म बणाए आपणी बणत, दूसर संग ना कोए रखाईआ। सचखण्ड दुआरा महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए वखाईआ। आपे आदि आपे अन्त, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, करनी करता नाउँ धरांयदा। करनी करता करने योग, दूसर अवर ना कोए वखांयदा। निरगुण निरगुण करे भोग, सच संजोग आप हंढांयदा। आपे वसे आपणे लोक, दो जहानां आप समांयदा। आपे शब्द सच सलोक, राग तराना आप अल्लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला, थिर घर साचे आसण लांयदा। थिर घर साचा सच महल्ला, सो पुरख

निरँजण आसण लांयदा। हरि पुरख निरँजण आप आपणा फड़ाए पल्ला, आप आपणी वण्ड वण्डांयदा। एकँकारा मार्ग लाए आप सुखल्ला, साचा पौड़ा आप वखांयदा। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बला, बाती तेल ना कोए टिकांयदा। श्री भगवान सच संदेश एका घल्ला, नर नरायण हुक्म सुणांयदा। अबिनाशी करता आपणी जोती आपे रला, तत्व तत्त ना कोए दिखांयदा। पारब्रह्म आपे जाणे आपणा वल छला, अछल अछल आप हो जांयदा। सचखण्ड दुआरा इक्क मुनारा नेहचल धाम अटला, निरगुण दाता आप वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण सच सुल्तान, बैठणहारा हरि मेहरवान, दूसर दर ना कोए उपांयदा। सो पुरख निरँजण सच सुल्ताना, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। हरि पुरख निरँजण आपे जाणे एका पद निरबाणा, निर भय आपणा नाउँ रखाईआ। एकँकार खेल महाना, जूनी रहित वड वड्याईआ। अबिनाशी करता गुण निधाना, अवगुण विच ना कोए टिकाईआ। श्री भगवान वड बलवाना, जोद्धा सूरबीर इक्क अख्वाईआ। पारब्रह्म लेखा जाणे दर दरबाना, दर दरवेश अलक्ख जगाईआ। सचखण्ड दुआरा इक्क मकाना, चार दीवार ना कोए रखाईआ। थिर घर वासा पुरख अबिनाशा, घर घर विच आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर सुहञ्जणा जोत जगाए आदि निरँजणा, नूर नुराना नूर धराईआ। सो पुरख निरँजण साचा नूर, निरगुण आपणा आप धरांयदा। हाज़र हज़ूर, हरि हरि आपणा वेस वटांयदा। एकँकारा आसा मनसा पूर, आपणी आसा आसा विच रखांयदा। आदि निरँजण जोत जगाए हाज़र हज़ूर, दर घर साचे आप रखांयदा। श्री भगवान आपे वसे नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध ना कोए जणांयदा। अबिनाशी करता आपे चाढ़े आपणा रंग गूढ़, लाल गुलाला रंग रंगांयदा। पारब्रह्म मंगे साची धूढ़, आपणी धूढ़ी आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि हरि वसे साचा कन्त, नर हरि वड्डी वड्याईआ। नर हरि नरायण पुरख भतारा, पारब्रह्म अख्वांयदा। सचखण्ड सुहाए एका दुआरा, सच सिँघासण आसण लांयदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, हुक्मी हुक्म सुणांयदा। धुर फ़रमाणा बोल जैकारा, शब्द अनादी नाद वजांयदा। आपे बन्ने आपणी धारा, कागद कलम ना लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वसे साचे घर, दर दरवाज़ा आप खुलांयदा। दर दरवाज़ा परवरदिगार, दरगाह साची आप खुलाईआ। इक्क इकल्ला कर पसार, निरगुण बैठा बेपरवाहीआ। जल्वा नूर नूर उज्यार, नूर नुराना शहनशाहीआ। साचे तख्त सोहे सच्ची सरकार, सीस जगदीश वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचा बंक उपाईआ। बंक दुआरा हरि सुहाए, भेव कोए ना पांयदा। सचखण्ड दुआरा जोत जगाए, जोती जोत डगमगांयदा।

सो पुरख निरँजण आपणा नाउँ धराए, हरि पुरख निरँजण गीत सुहागी आपे गांयदा। एकँकारा सगन मनाए, आप आपणे रंग रंगांयदा। आदि निरँजण एका रूप दरसाए, रेख भेख ना कोए वटांयदा। अबिनाशी करता दर दरवेश फेरी पाए, श्री भगवान मेल मिलांयदा। पारब्रह्म निउँ निउँ दर दुआरे आपणे सीस झुकाए, आपणी झोली अग्गे डांहयदा। शाह सुल्तान आप बण जाए, आप आपणी वण्ड वण्डांयदा। एका वस्त हथ्थ उठाए, नेत्र नैण ना कोए दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड खेल अवल्ला, करे कराए इक्क इकल्ला, एका एक एक अख्वांयदा। एका पुरख अगम्म अपार, दर घर घर साचे आसण लांयदा। आप सुहाए सच दरबार, दर दरबारी वेस वटांयदा। छत्र झुलाए एकँकार, सेवक साची सेव कमांयदा। शाहो भूप बण सिक्दार, चोबदार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दरगाह साची साचा घर, एका वसे हरी हरि, हरि हरि आपणा नाउँ धरांयदा। हरि हरि आपणा नाउँ रक्ख, नर निरँकार आप वड्याईआ। साचे मन्दिर हो प्रतक्ख, हरि मन्दिर दए सुहाईआ। निरगुण अंदर निरगुण बाहर, निरगुण गुप्त निरगुण ज़ाहर निरगुण विच्चों निरगुण होया वक्ख, निरगुण निरगुण विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए सर्बकला समरथ, अकल कल वड वड्याईआ। अकल कला हरि भगवाना, एका रंग समांयदा। सचखण्ड दुआरे गाए इक्क तराना, आप आपणा नाद वजांयदा। एका हुक्म धुर फ़रमाणा, धुर दी धार बंधांयदा। मात पित कर निशाना, पूत सपूता आप अख्वांयदा। पंज तत्त ना कोए ज्ञाना, ब्रह्म मति ना कोए धरांयदा। रत्ती रत्त ना कोए पछाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दरगाह साची वण्डे वण्ड, वण्डणहारा आप अख्वांयदा। वण्डणहारा पुरख अकाल, आप आपणी वण्ड वण्डाईआ। सचखण्ड दुआरे हो दयाल, दयानिध आप अख्वाईआ। लेखा जाणे काल महांकाल, अवल्लड़ी चाल आप चलाईआ। आप आपणा तोड़ जंजाल, आपणा बन्धन दए गंवाईआ। आपणे सरोवर मारे उछाल, आपणा माणक ल्ए उठाईआ। आप सुहाए साचा ताल, अमृत आपणा नाउँ वखाईआ। आप उपजाए आपणा लाल, शब्द दुलारा आप साचा नाउँ रखाईआ। आपे बणे हरि दलाल, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे आपणा तत्त दए ढाल, हड्ड मास नाड़ी रत्त ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर एका वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, रूप रंग ना कोए वखाईआ। आपणे अंदर आपे वड़या, सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा। सो पुरख निरँजण दर दरवेश हो हो अग्गे खड़या, निरगुण निउँ निउँ आपणा सीस झुकांयदा। हरि पुरख निरँजण आपणी विद्या आपे पढ़या, बावन रूप ना कोए धरांयदा। एकँकारा आपणा फड़े आपे लड़या, आपणी ओट आप रखांयदा। आदि निरँजण अग्नी तत्त

कदे ना सड़या, जोती जोत डगमगांयदा। श्री भगवान ना कोई भन्ने ना किसे घढ़या, भन्नण घढ़णहार आप हो जांयदा। अबिनाशी करता साचे पौड़े आपे चढ़या, सचखण्ड दुआरे डेरा लांयदा। पारब्रह्म नर नरेश नरायण नरया, नर हरि हरी आपणा नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवे आपणा वर, आपणी इच्छया आपे भिच्छया झोली पांयदा। साची भिच्छया हरि भगवन्त, आपणी आपे झोली पाईआ। दरगाह साची बणया नारी कन्त, निरगुण निरगुण सेज हंढाईआ। सचखण्ड दुआरा बणाई बणत, ब्रह्मा विष्न शिव भेव ना राईआ। आपणा चाढ़े आपे रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। आपणी धुन उपजाए आपणा मंत, शब्द शब्दी नाउँ रखाईआ। ना कोई साध ना कोई सन्त, सति सतिवादी बैठा जोत जगाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, आप आपणा खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड हरि हरि वसया, आदि जुगादी फिरे नस्सया, आप आपणी सेव कमाईआ। साची सेवा हरि निरँकार, दर घर साचे आप कमांयदा। आपणा रूप कर त्यार, आप आपणे विच रखांयदा। आप आपणा कर पसार, आपे वेख वखांयदा। आप बणाए सच्चा घर बार, सचखण्ड दुआरा नाउँ धरांयदा। घर विच घर कर त्यार, थिर घर आपणा आसण लांयदा। चार कुंट दहि दिशा दिसे ना कोई दुआर, वण्डण वण्ड ना कोए वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणा आपे वेख, आपणी खुशी मनाईआ। आपणा धारया आपे भेख, मात पित ना कोए बणाईआ। आपणा लिख्या आपे लेख, कागद कलम ना रक्खे कोई छाहीआ। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई हरि हरि मूंड मुंडाईआ। गणपति ना कोए गणेश, ब्रह्मा विष्न शिव इष्ट ना कोए जणाईआ। इक्क इकल्ला आप आपणी करे आदेस, आप आपणा सीस झुकाईआ। जुगा जुगन्तर रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर कर पसारा आपे जाणे आपणी कारा, करता पुरख आप अख्वाईआ। करता पुरख करनहारा, आपणी करनी किरत कमांयदा। आपणे घर हो उज्यारा, आपणा दीपक आप जगांयदा। आपणे घर भर भण्डारा, आप आपणा नाउँ वखांयदा। आपणे घर बण वणजारा, आप आपणा वणज करांयदा। आपणे घर बण वरतारा, हरि आपणा हट्ट चलांयदा। आपे वस्त रक्खे इक्क थारा, थिर घर साचे खेल खिलांयदा। निरगुण बन्न्हे निरगुण धारा, निरगुण रंग रंगांयदा। निरगुण हुक्म सच्ची सरकारा, धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। निरगुण बोल सच जैकारा, साचा नाअरा एका लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, खेले खेल नारी कन्त, कन्त कन्तूहल आपणा रूप वटांयदा। कन्त कन्तूहल पारब्रह्म, घर साचे वज्जे वधाईआ। ना मरे ना पए जम्म, लक्ख चुरासी ना कोए भुआईआ। करे कराए

आपणा कम्म, आपणी करनी आप कराईआ। ना खुशी ना कोई ग़म, नेत्र नीर ना कोए वहाईआ। ना कोई पवण स्वासी लए दम, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, तारा मंडल ना कोए दखाईआ। ना कोई गंधर्ब ना कोई गण, करोड़ तेतीसा वेख वखाईआ। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, ना कोई बाढी बणत बणाईआ। ना कोई त्रैगुण माया ममता वसे तन, ना कोई डन्न रखाईआ। ना कोई जननी जणे जन, मात गर्भ ना कोए टिकाईआ। ना कोई बुध मति ना दिसे मन, पंज तत्त ना कोए हंढाईआ। ना कोई दिसे मुख नक्क कन्न, गीत गा ना कोए सुणाईआ। पुरख अबिनाशी आपणे घर नर हरि आपणा बेड़ा आपे बैठा बन्न्, आपे रिहा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खोल्ह् किवाड़, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। निरगुण कन्त निरगुण नारी, निरगुण आपणा आप प्रनाया। निरगुण महल्ल निरगुण अटारी, निरगुण आपणी सेज विछाया। निरगुण तत्त निरगुण शंगारी, निरगुण कमलापत वेख वखाया। निरगुण पाए आपणी सारी, आप आपणा पर्दा लाहया। निरगुण करे इक्क प्यारी, पीआ प्रीतम आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा सगन मनाया। सगन मनंदड़ा हरि हरि काहन, दरगाह साची वेख वखाईआ। आपणे दर दुआर होए प्रधान, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपणा देवे सच फ़रमाण, साचा हुक्मी हुक्म अल्हाईआ। लालण रंगे लाल रंग महान, दीन दयाला हरि गोपाला आपणा रूप आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर हो उज्यार, करे खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी चाल चलाईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी चाल, हरि साचा सच चलांयदा। शब्द सरूप वजाए ताल, नाद अनादी राग अल्हांयदा। आपणी घाल आपे घाल, आप आपणी सेव कमांयदा। आपे करे सदा प्रितपाल, प्रितपालक आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण खेल तमाशन आप करांयदा। खेल तमाशा सच्ची रहिरास, दर घर साचे आप वखाईआ। दाता दानी सर्ब गुणतास, गुणवन्त बेपरवाहीआ। आपणी पूरी करे आस, आपणी तृखा आप बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा शब्द सुत लए उठाईआ। उठ सुत नौजवान, हरि साचा आप उठांयदा। हथ्थ फड़ाए सच निशान, दरगाह साची आप झुलांयदा। मेरी तेरी एको आण, एका रंग रंगांयदा। मेरा हुक्म धुर फ़रमान, तेरी धार बंधांयदा। तूं पूत सपूता बण नादान, हउँ तेरा बिरद रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द आप वड्यांअदा। हरि शब्द बलकार, पुरख अबिनाशी आप उठाया। देवे वड सच्ची सरकार, साचा लहिणा झोली पाया। तेरी वण्ड अपर अपार, निरगुण निरगुण दए समझाया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड महल्ल लए उसार, तेरा मंडल

वेख वखाया। तेरी रसन बणाए रवि ससि सतार, बंस सरबंसा नाउँ रखाया। तेरी जोत जगे अपार, तेरे घर होए रुशनाया। पारब्रह्म करे प्यार, साची सेज आप हंढाया। एका मन्दिर कर त्यार, हरि हरि जू डेरा लाया। तेरा भरे सति भण्डार, सच भण्डार आप वरताया। निराकार होए साकार, निरगुण सरगुण वेस कराया। विष्न रूप अपर अपार, आप आपणा लए प्रगटाया। कँवल नैण कर उज्यार, नैण नैणां विच रखाया। आप आपणा कर पसार, आप आपे वेख वखाया। विष्नूं अंदर अमृत धार, नाभी कँवल आप उपजाया। खिले कँवल होए गुलज़ार, ब्रह्म ब्रह्म लए प्रगटाया। ब्रह्म बोले इक्क जैकार, पुरख अबिनाशी हुक्म सुणाया। घर साचे बैठ सच्चे दरबार, साची वण्डण इक्क रखाया। चारे बाणी कर त्यार, तुरीआ नाद इक्क सुणाया। चारे जुग कर वरतार, चारे खाणी लए उपाया। चार वरनां भर भण्डार, चार मुख दए सलाहया। चार वेदां लए उच्चार, भेव अभेदा भेव खुल्हाया। अछल अछल आप निरँकार, दिस किसे ना आया। आपे शंकर बन्ने धार, धूंआँधार वेख वखाया। सुन्न अगम्म हो उज्यार, आपणा नूर लए चमकाया। एका शब्द भर भण्डार, त्रै त्रै दए वरताया। त्रै त्रै वेस करे सच्ची सरकार, त्रैगुण आपणा तत्त रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि हरि ब्रह्मादि, ब्रह्म ब्रह्म वेख वखाया। पारब्रह्म ब्रह्म पाया, घर ब्रह्मे वज्जी वधाई। विष्नूं वेखण आया, विष्नूं आपणा नाउँ धराई। आपे देवे रिज़क सबाया, राज़क रहीम आप हो जाई। आपे लए अन्त खपाया, शंकर हथ्थ त्रसूल उठाई। आपणा बुरज आपे ढाया, आप आपणा खेल खलाई। आपे त्रैगुण लड़ फड़ाया, रजो तमो सतो करी कुड़माई। आपे पंज तत्त मेल मिलाया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणा अंक बणाई। आप आपणा कर प्रवेश, दर दरवेश खेल खलाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त कर पसारा, खेले खेल एकँकारा, सो पुरख निरँजण रक्खे साची धारा, हरि पुरख निरँजण शब्द अनादी रिहा उच्चारा, आप आपणा नाद वजाई। पंज तत्त हरि हरि घाढ़ण घढ़या, त्रैगुण मेल मिलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव आपे फड़या, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। आपणा अक्खर आपे पढ़या, अक्खर वक्खर आप सुणांयदा। आपणे मन्दिर आपे खड़या, आप आपणा दरस दिखांयदा। आपणे घर आपे लड़या, आप आपणी रचन रचांयदा। आपणे दर हीरे माणक मोती लाल जवाहर आपे जड़या, हरि मन्दिर आप समांयदा। आपणे घर आपे वसे डूँग्घी गारया, अन्ध अन्धेरा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त कर प्रधान, लोकमात वखाए इक्क निशान, जगत निशान आप झुलांयदा। पंज तत्त काया गढ़ कर त्यार, त्रैगुण बन्धन पाया। पंचम पंच कर जैकार, पंच राग नाद वजाया। पंचम काम क्रोध लोभ मोह हँकार, पंचम मेला सहिज सुभाया। पंज दस करे विचार, हस्स हस्स वेख वखाया।

मति बुध दे आधार, निरगुण आपणी वण्ड वखाया। मन मनूआ कर सिक्दार, नौ दुआरे तख्त सजाया। करे खेल आप निरँकार, आपणी रचना वेख वखाया। घर विच घर कर पसार, बज़र कपाटी कुण्डा लाहया। सुखमन टेढी बंक कर त्यार, साची पौड़ी आप छुपाया। अमृत सरोवर भर भण्डार, आपणा कुण्ड रिहा वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे सोहे सच्चा दरबार, आत्म सेजा इक्क आधार, दर घर साचा आप सुहाया। आत्म सेजा खेल अपारा, हरि साचा सच कराईआ। नाद शब्द सच्ची धुन्कारा, हरि बह बह मंगल गाईआ। प्रकाश आकाश कर उज्यारा, वास निवास आप वखाईआ। पवण स्वास ना लए हुलारा, दास दासी आप जणाईआ। निज घर वास निज आत्म करे प्यारा, ईश जीव वड वड्याईआ। जगदीश सोहे सच दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। पारब्रह्म हरि हरि मेला कन्त भष्तारा, हरि साचा कन्त आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण अंदर निरगुण वड़, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। निरगुण सरगुण हरि हरि मेला, लोकमात कराया। लक्ख चुरासी गुरू गुर चेला, गुर हरि हरि रूप वटाया। जुगा जुगन्तर सज्जण सुहेला, साकी आपणा नाउँ धराया। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, वेद कतेब भेव ना आया। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, लोकमात वड वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी कर त्यार, मानस मनुक्ख कर प्यार, रूप अनूप आप दरसाया। रूप अनूपा शाहो भूपा, हरि सतिगुर पुरख अख्वांयदा। वसणहारा चारे कूटा, दहि दिशा फेरी पांयदा। आपे लाए आपणा बूटा, आपे जड़्ह उखड़ांयदा। आपे लेखा जाणे जूठा झूठा, सच सुच्च आप वरतांयदा। आपे करे ख़ाली ठूठा, भर प्याला आपे हथ्थ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव देवे वर, हुक्मी हुक्म आप सुणांयदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, ब्रह्मा विष्न शिव करे जणाईआ। चारे जुग वरते आपणा भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। दो जहानी साचा राणा, पातशाह आप अख्वाईआ। लोकमात सन्त भगत करे प्रधाना, आप आपणा गीत सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तिन्नां देवे एका वर, एका सिख्या सिख समझाईआ। तिन्नां सुत कर ध्यान, हरि साचे सच सुहाया। चार वेद जगत ज्ञान, ब्रह्मे विद्या इक्क पढ़ाया। विष्नूं तेरा रक्खे माण, सच भण्डारा आप वरताया। शंकर तेरी एका कान, बाशक तशका वेख वखाया। सांगोपांग सेज कर परवान, आप बैठा आसण लाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग ब्रह्मे मनवन्तर तेरा झुलदा रिहा निशान, पुरख अबिनाशी आप झुलाया। सतिजुग त्रेता द्वापर चले मात दुकान, चौदां हट्ट वेख वखाया। जुग जुग होए आप मेहरवान, आपणा रूप लए प्रगटाया। निरगुण सरगुण देवे माण, जोत शब्द शब्द जोत विच टिकाया। आपे राम होए बलवान, आपे

रावण दहिसिर घाया। आपे वेखे गोपी काहन, दुष्ट हँकारी मेट मिटाया। आपे भगतां करे परवान, ग़रीब निमाणे गले लगाया। आपे कलिजुग वेखे कूड़ निशान, कूड़ा डंका जगत सुणाया। आपे ईसा मूसा हो प्रधान, काला सूसा तन वखाया। आपे अञ्जील कुरान गाए गाण, तीस बतीसा आप समाया। आपे संग मुहम्मद चार यारी देवे धुर फ़रमाण, अल्ला राणी मता आप पकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा शब्द सच संदेश, आप सुणाए नर नरेश, सचखण्ड बैठा हुक्म सुणाया। साचा हुक्म साचा शाह, हरि साचा सच सुणांयदा। जुगा जुगन्तर बणे मलाह, जुग जुग बेड़ा आप तरांयदा। जन भगतां देवे सच सलाह, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, साची माणक मोती चोग चुगांयदा। दरगाह साची रखाए साचा थाँ, थान थनंतर इक्क वड्यांअदा। करे कराए सच न्याँ, हँकारी दुष्टां आप खपांयदा। कलिजुग खेड़ा वेखे नगर ग्रां, नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां फोल फुलांयदा। नानक निरगुण गया सुणा, बिन हरि कोए ना पार लँघांयदा। एका मन्त्र गया जणा, नाम सति सर्ब पढ़ांयदा। ऊँच नीचां एका रंग रंगा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका धाम बहांयदा। एका कलमा नबी गया लिखा, जगत रसूल आप वड्यांअदा। महिबान बीदो बीखैर या अल्ला बणे सच मलाह, चौदां तबकां बेड़ा आप तरांयदा। एका जोती दस दस नाउँ रखा, नूरो नूर नूर आप धरांयदा। शब्द अगम्मी हुक्म सुणा, सृष्ट सबाई आप जगांयदा। कलिजुग अन्तिम वेला जाए आ, चारों कुंट अन्धेरा छांयदा। नाता तुटे पुतर माँ, पिता पूत ना वेख वखांयदा। ना कोई दिसे भैण भ्रा, भैणा भईआ ना संग रलांयदा। बुध बबेकी काग वांग रही कुरला, चारों कुंट कूक सुणांयदा। किसे ना मिले सच्चा थाँ, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। राज राजान ना करे सच न्याँ, ग़रीब निमाणयां कोए ना गले लगांयदा। जगत निताणयां पकड़े कोई ना बांह, फड़ बाहों ना कोए उठांयदा। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, दरगाह साची वेख वखांयदा। अन्तिम प्रगट होवे आ, निहकलंका नाउँ धरांयदा। शब्द डंका दए वजा, राउ रंकां आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग रक्खे आपणी धार, पुरख अबिनाशी खेल अपार, लोकमात आप खिलांयदा। नानक धार निरगुण रूप, नर नरायण चलाईआ। गोबिन्द सूरा सति सरूप, सुत दुलारा वड वड्याईआ। लेखा जाणे जूठ झूठ, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। पुरख अकाल जाए तूठ, मेहरवान मेहरवान मेहरवान वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधाईआ। जुग जुग धार हरि चलाए, वेद कतेब भेव ना राया। साध सन्त सद रहे गाए, रसना जिह्वा जगत हिलाया। धुर फ़रमाणा आप सुणाए, आप आपणी दया कमाया। बोध अगाधा शब्द अल्लाए, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। आपणा पर्दा दए चुकाए, भगत भगवन्त होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेल खिलाया। कलिजुग वेला अन्तिम आउँणा, चार कुंट जंत कुरलाए। सृष्ट सबाई धीर ना कोए धराउँणा, सति सन्तोख ना कोए वखाए। साचा मन्त्र ना किसे दृढ़ाउँणा, हरी हरि ना कोए मिलाए। पढ़ पढ़ विद्या वाद वधाउँणा, ज्ञान ध्यान ना विच टिकाए। साध सन्त सर्ब कुरलाउँणा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोई मेटे मेट मिटाए। साचा तख्त ना किसे वखाउँणा, साचा अदल ना कोए कमाए। एका रंग ना किसे रंगाउँणा, नाम ललारी दिस ना आए। निहकलंक हरि जामा पाउँणा, जोत नूर करे रुशनाए। साचा शब्द डंक वजाउँणा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां उत्भुज अंड जेरज सेत्ज लए जगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप प्रगटाए। हरि निहकलंक लोकमात अवतारा, दिस किसे ना आईआ। जोती नूर जोत उज्यारा, जोत जोत विच टिकाईआ। शब्द नाम सच्चा जैकारा, साचा नाअरा दए सुणाईआ। चारे वरनां दे हुलारा, चारों कुंट आप उठाईआ। नौ खण्ड वेखे आर पारा, दीप सत्त फोल फुलाईआ। ब्रह्मे नेत्र नैण उग्घाड़ा, आलस निन्दरा दए मिटाईआ। विष्नूं वेखे मात संसारा, दिवस रैण सेव कमाईआ। शंकर चारों कुंट दे ललकारा, उच्ची कूके कूक सुणाईआ। राए धर्म खोल्ह किवाड़ा, दर दरवाजा रिहा खुल्हाईआ। चित्रगुप्त बण लिखारा, आपणा लेखा रिहा समझाईआ। लाड़ी मौत करे श्रंगारा, नैण कज्जल रही पाईआ। कलिजुग आई अन्तिम वारा, सालू रत्तड़ी आपणा रंग रंगाईआ। लक्ख चुरासी वरे कन्त भतारा, घर घर फेरी पाईआ। गुरमुख विरला उतरे पारा, जिस सतिगुर सच्चा मिल्या बेपरवाहीआ। सम्मत सम्मती दे हुलारा, सिंमल रुक्ख सृष्ट सबाईआ। फल ना दिसे किसे डाल्हा, पत डाल्ही रही कुमलाईआ। चारों कुंट आई हारा, शाह सुल्तान पंज शैतान करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोत उजाला हरि गोपाला, निहकलंका नाउँ रखांयदा। लोकमात भगत दलाला बणे रखवाला, सेवक साची सेव कमांयदा। नाल रलाए काल महांकाला, अवल्लड़ी चाला जगत जंजाला तोड़ तुड़ांयदा। काया मन्दिर वखाए सच्ची धर्मसाला, अमृत सुहाए एका ताला, सर सरोवर आप नुहांयदा। एका नाम गल पाए साची माला, मन का मणका आप फिरांयदा। अनहद शब्द वज्जे साचा ताला, धुन आत्मक राग नाद आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई आप उठांयदा। सृष्ट सबाई उठणा जाग, हरि सतिगुर आप जगांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी लग्गी आग, लोकमात ना कोई बुझांयदा। किसे घर ना दिसे चिराग, दीवा बाती ना कोई जगांयदा। चारों कुंट उडणे काग, हँस रूप ना कोए वटांयदा। नारी मिले ना कन्त सुहाग, सुहागी रुत्त ना कोए वखांयदा। माया ममता

जूठा झूठा लग्गा दाग, बिन सतिगुर पूरे ना कोए धुआंयदा। अन्त ना पकड़े कोई वाग, कन्त भगवन्त मुख छुपांयदा। माया ममता डस्सणी डस्से नाग, कलिजुग आपणा खेल वखांयदा। हरिभगत ना उपजे मन वैराग, बिरहों तीर ना कोए लगांयदा। झूठे दिसण सज्जण साक, अन्त संग ना कोए निभांयदा। जो जन हरि सरनाई जाए लाग, सिर समरथ हथ्थ रखांयदा। चरन धूढ़ कराए मजन माघ, अठसठ तीर्थ पन्ध मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जीव जंत आप समझांयदा। जीव जंत उठणा जाग, हरि जागरत जोत करे रुशनाईआ। शब्द सरूपी बन्ने ताग, त्रैगुण अग्नी दए बुझाईआ। इक्क सुणाए साचा राग, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। काया मन्दिर अंदर जोती जगे चिराग, हरि मन्दिर होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, घर साचे मेल मिलाईआ। हरिजन हरि हरि पाया, गुर सतिगुर गहर गम्भीर। कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकाया, लक्ख चुरासी कट्टी भीड़। परमानंद आप समाया, चौथे पद चढ़ अखीर। नेत्र तीजा आप खुल्हाया, अमृत बख्शे ठांडा सीर। दूई द्वैती पन्ध कटाया, एका रंग वखाणे हस्त कीट। एकओंकार मेल मिलाया, वड दाता पीरन पीर। घर सच्चा शाहो पाया, लोकमात मिटे तकसीर। नारी बह बह कन्त मनाया, बिरहों नाठी घरों पीड़। पीआ प्रीतम मंगल गाया, लालण रंगया आपणा चीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे देवे धीर। धीरज देवे सति ज्ञान, चरन कँवल वड्याईआ। आत्म अन्तर मारे बाण, ब्रह्म शस्त्र आप चलाईआ। पंजां चोरां लाहे घाण, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। मेट मिटाए झूठ निशान, गढ़ हँकार रहिण ना पाईआ। एका देवे नाम निधान, निज नेत्र आप खुल्हाईआ। एका शब्द सुणाए कान, आप आपणी धुन उपजाईआ। सचखण्ड दुआरे देवे साचा माण, मुक्ती गुरसिखां चरनां हेठ दबाईआ। ब्रह्मा विष्नूं शिव राह तक्कण आण, जिस मार्ग गुरसिख जाईआ। सतिगुर पूरा सूरबीर बलवान, दो जहानां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख लगाए आपणे लड़, आप आपणा बन्धन पाईआ। बन्धन बंधप देवे पा, पावणहार निरँकारा। सन्त सतिगुर लए मिला, लोकमात खेल अपारा। भगत भगवन्त होए सहा, निरगुण जोत कर उज्यारा। लक्ख चुरासी लए भुला, माया ममता खेल न्यारा। जुग जुग विछड़े लए मिला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप सुहाए बंक दुआरा। बंक दुआरा सोहया, लोकमात वड्याईआ। गुरसिख गुर गुर जिहा होया, जिस जन आपणी दया कमाईआ। आलस निन्दरा विच ना सोया, जिस जन हरि हरि आप जगाईआ। घर साचे लै के आया ढोआ, एका नाम वस्त दिखाईआ। हरि बिन अवर ना जाणे कोआ, नेत्र लोचण दिस किसे ना आईआ। गुरसिख

बीज साचा बोआ, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। करे प्रकाश त्रै त्रै लोआ, लोआं पुरीआं सच रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, साची वस्त झोली पाईआ। साची वस्त नाम जगीर, सिँघ जगीर वखाईआ। संग रखाए अन्त अखीर, चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ। सतिगुर पूरा कट्टणहारा भीड़, जगत जंजाला दए तुड़ाईआ। भर प्याला प्याए अमृत सीर, मदि प्याला दए सुटाईआ। तन पहनाए साचा चीर, बस्त्र आपणा शब्द वखाईआ। अठसठ काया अंदर विरोले नीर, निझर झिरना अमृत आप झिराईआ। जन्म जन्म दी निकले पीड़, मानस जन्म लेखे लाईआ। गुरसिखां गुरसिख मिल्या विछड़या वीर, राह तक्के सर्ब लोकाईआ। रस विच रस जिउँ मिट्ठा रस खीर, दोधी धार आप वहाईआ। किसे हथ्थ ना आए पीर फकीर, मुल्ला शेख़ मुसायक रहे कुरलाईआ। पंडित पांधे नेत्र वहायण नीर, विष्नूं भगवान दरस ना किसे दिखाईआ। गुरसिख साचे बन्नृ धीर, धरनी धरत धवल आपणे रंग रंगाईआ। पहलां कट्टे जगत ज़ंजीर, दूजी डोरी नाम बंधाईआ। तीजे हरन फरन नेत्र वखाए पीरन पीर, चौथे पद आप समाईआ। पंचम रंग रंगाए शाह हकीर, शाह सुल्तान रूप वटाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना दिसे बेनज़ीर, रहिमत रहिमान आप अख्वाईआ। सत्तवें सति सति सति मेटे आप तकदीर, तकसीर आपणी वण्ड वण्डाईआ। अठ्ठवें अठ्ठ तत्त ना पायण वैण कीर, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोए सदाईआ। नौवें नौ दुआरे कट्टे भीड़, नौ दर खोजे सहिज सुभाईआ। दसवें बख़्शे अमृत सीर, भर प्याला आप प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख सज्जण चरन धूढ़ कराए एका मजण, दुरमति मैल आप गंवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच्चा सच्ची शहनशाहीआ।

❋ ३ जेठ २०१७ बिक्रमी लैफ्टीनैंट चेला सिँघ दे घर वज़ारत रोड जम्मू ❋

सो पुरख निरँजण हरि सुल्तान, इक्क इकल्ला वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण महिबान, बीदो बीख़ैर या इलाहीआ। एक ओंकारा नौजवान, परवरदिगार इक्क ख़ुदाईआ। आदि निरँजण जोत महान, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। श्री भगवान दो जहान, आदि जुगादि वेस वटाईआ। अबिनाशी करता इक्क निशान, अकल कल आप झुलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म इक्क ज्ञान, एका कलमा रिहा पढ़ाईआ। धुन अनादि सच्ची धुनकान, अमाम अमामा आप सुणाईआ। सचखण्ड दुआरा खोलृ दुकान, सच सिँघासण आसण लाईआ। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाण, एका इसम आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जल्वा नूर इक्क वखाईआ। जल्वा नूर हरि जलाल रहिमान, रहिमत विच रखांयदा। जुगा जुगन्तर

एका आण, आलमगीर आप रखांयदा। सच झुलाए नाम निशान, चौदां लोकां वेख वखांयदा। चौदां तबकां हो प्रधान, हक हकीकत फोल फुलांयदा। लाशरीक निगहबान, वाहिद आपणा नाउँ उपजांयदा। मालक कुल गुण निधान, ख़ालक आपणा रूप वटांयदा। सालस बणे देवे जीआं दान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला, राम रहीम आप अख्वांयदा। राम रहीम बेऐब परवरदिगारा, एक ओंकारा खेल खिलांयदा। आदि जुगादी सांझा यारा, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। एका कलमा कर त्यारा, नबी रसूलां आप पढ़ांयदा। एका नाम कर उज्यारा, राम नाम आप लखांयदा। एका शब्द बोल जैकारा, जागरत जोत आप जगांयदा। एका वसे धाम न्यारा, उच्च महल्ल अटल आप बणांयदा। पंज तत्त ना कोए अकारा, हड्ड मास नाड़ी रत्त ना कोए वखांयदा। मढ़ी गोर ना कोए पसारा, अग्नी हवन ना कोए करांयदा। रंग रूप ना गुप्त ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शाह इक्क सुल्तान, एका हुक्म इक्क फ़रमाण, आप आपणा हुक्म चलांयदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, कलमा अमाम आप पढ़ाईआ। आपे जाणे आपणा भाणा, वरते वरतावे वड्डा शहनशाहीआ। राज जोग इक्क वखाणा, हुक्मी हुक्म सर्ब फिराईआ। एका गाए राग तराना, नादि अनादी आप सुणाईआ। एका ब्रह्म करे पछाणा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। एका जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, शाह सवार इक्क अख्वाईआ। एका बन्ने साचा गाना, एका मौली मैहन्दी रंग रंगाईआ। एका वेखे मार ध्याना, नेत्र नैण ना कोए खुलाईआ। एका रक्खे तीर कमाना, एका शास्त्र आप चमकाईआ। एका देवे ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म विद्या सर्ब पढ़ाईआ। एका करे सच सन्ताना, विष्नूं अंस उपजाईआ। एका रंग दो जहानां, हरि भगवाना आप चढ़ाईआ। एका देवे विष्नूं दाना, देवे रिज़क सृष्ट सबाईआ। एका शंकर मारे बाणा, एका हथ्थ त्रसूल फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। लेखा लेख इक्क इकल्ला, हरि साचा सच रखांयदा। आपे वसे सच महल्ला, नूरी अल्ला नाउँ धरांयदा। आपणी जोत आपणे नूर बिस्मिल होए आपे रला, भेव कोए ना पांयदा। जुग जुग गुर पीर अवतार साध सन्त दस्तगीर आपे घल्ला, मुल्ला शेख़ मुसायक आप अख्वांयदा। पंडत पांधे अंदर आपे रला, आपणा ज्ञान आप दृढ़ांयदा। चार वरन फड़ाए एका पल्ला, साची सिख्या आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला, आप आपणी कल वरतांयदा। अकल कला हरि मेहरवाना, दूसर अवर ना कोए जणांयदा। लोकमात खेले खेल महाना, ख़ालक ख़लक रूप वटांयदा। एका देवे धुर फ़रमाणा, हुक्मी हुक्म आप सुणांयदा। आपे वसे सच मकाना, दरगाह साची धाम वखांयदा। सर्ब जीआं हरि जाणी जाणा, आप आपणा मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंग रंग करतारा, खेले खेल अगम्म अपारा, आदि जुगादी साची कारा, जुग जुग आपणी धार बंधांयदा। जुग जुग धार बेपरवाह, बेअन्त आप बंधाईआ। आपे बणे सच्चा शहनशाह, राज राजान आप अख्वाईआ। हक हकीकत वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर वेख वखाईआ। लोआं पुरीआं फेरा पा, चौदां तबकां खोज खुजाईआ। मुकामे हक हक एका नाअरा ला, आप आपणा दए जणाईआ। एका बांग इक्क सदा, इक्क महिराब दए सुणाईआ। एका मेटे सर्ब अज़ा, सर्ब गिज़ा रिहा पहुँचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो मेहरवान, एका मार्ग दए वखाईआ। एका मार्ग हरि भगवान, दो जहान आप चलांयदा। सो पुरख निरँजण गुण निधान, हरि हरि आपणा खेल खिलांयदा। हरि पुरख निरँजण नौजवान, बाल बिरध ना रूप वटांयदा। एकओंकारा एका रक्खे आण, दूसर सीस ना कोए उठांयदा। आदि निरँजण दानी दान, साची भिच्छया झोली पांयदा। श्री भगवान खेल महान, दरगाह साची आप खिलांयदा। अबिनाशी करता गाए एका गाण, गीत इलाही आप अलृांयदा। पारब्रह्म हो प्रधान, लोकमात वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर आपे बिध जाणे अन्तर, भेव अभेदा आप खुलृांयदा। भेव अवल्ला इक्क इकल्ला, हरि साचा आप खुलृांयदा। आपे रूप वटाए नूरी अल्ला, ऐनलहक आपे नाअरा लांयदा। आपे वसे जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर आप समांयदा। सच संदेश नर नरेश आपणा आप आपे घल्ला, इज़राईल ज़बराईल मेकाईल असराफील साची सेवा आप लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूरो नूर डगमगांयदा। नूरो नूर नर नरायण, हरी हरि आप अख्वांयदा। रसना जिह्वा ना सके कोई कहिण, वेद कतेब भेव ना पांयदा। हरिजन विरला लेखा जाणे मेटे नुकता ग़ैन, ऐन आपणी अक्ख खुलृांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अल्फ़ अल्फ़ी परवरदिगार निरगुण सरगुण बन्ने धार, आप आपणी धार चलांयदा। साची धार पुरख अकाल, पारब्रह्म आप चलाईआ। आपे वेखे चारे लाल, चार यारी करे कुड़माईआ। संग मुहम्मद कर प्रितपाल, एका जल्वा दए वखाईआ। ख़ालक ख़लक रिहा संभाल, घर घर आपणी जोत कर रुशनाईआ। एका एक बणे दलाल, दूसर होर ना कोए सुहाईआ। घर घर दीपक आपणा बाल, सच चिराग करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका कलमा कायनात, आपे रिहा पढ़ाईआ। कायनात हरि का रूप, चार वरन दरसाया। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरी पाया। लेखा जाणे जूठ झूठ, सच सुच्च इक्क दृढ़ाया। जुग जुग पीर फकीर शाह सुल्तान आपे जाए तुट्ठ, मेहरवान आपणा नाउँ धराया। पंज शैतान जगत विकारा देवे कुठ, साचा मन्त्र नाम इक्क दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग

जुग आपणा खेल खलाया। जुगा जुगन्तर वेस अवल्लड़ा, पुरख अबिनाशी आप करांयदा। दरगाह साची साचे धाम इक्क इकल्लड़ा, नूर नुराना डगमगांयदा। आपणी जोती आपे रलड़ा, जोती जोत जोत जगांयदा। खेले खेल अछल अछलड़ा, वल छलधारी आपणा नाउँ धरांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर आप फड़ाया आपणा पल्लड़ा, जन भगतां आप उठांयदा। शब्द अगम्मी एका घलड़ा, लिखण पढ़ण विच ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी विद्या आप पढ़ांयदा। आपणी विद्या चारे वेद, ब्रह्मे चारे मुख सुणाईआ। आपणा लेखा रक्खे अभेद, भेव अभेदा आप छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सिख्या साख्यात लोकमात लए प्रगटाईआ। साची सिख्या लोकमात, हरि साचा आप चलांयदा। आपे वेखे मार झात, मुख नकाब आपे लांहयदा, आपे लेखा जाणे शाह नवाब, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। आपे अर्श फर्श कुर्श वेखे हो बेताब, आबहयात आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे सहर होए बाद, बादबाना आप झुलांयदा। आप वजाए अगम्मी नाद, तुरीआ राग आप सुणांयदा। आपे होए सच्चा गॉड, आप आपणे रंग रंगांयदा। जन भगतां करे साचा लाड, साची गोदी आप सुहांयदा। जगत चुरासी विच्चों देवे काढ, जम की फांसी आप कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग समांयदा। रंग समाया हरि भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। लेखा जाणे साचे सन्त, सतिगुर पूरा आप अख्वाईआ। मेल मिलावा नारी कन्त, घर साची सेज हंढाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। एका राम नाम मनूआ मंत, सीता सुरती राम प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। खेले खेल दो जहान, आदि निरँजण जोत जगांयदा। आपे बणे साचा काहन, साची सखीआं मेल मिलांयदा। नाम बंसरी वजाए आप भगवान, भगवन भगती भगवन्त आप अलांयदा। आपे ग़रीब निमाणयां देवे दान, बाल अंञाणयां आप उठांयदा। आपे शाह सुल्तानां करे हैरान, तख्त ताज वेख वखांयदा। आपे मेटणहार जीव शैतान, लेख अन्त आपणा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जुग जुग वेस हरि मेहरवाना, आपणा आप कराया। ईसा मूसा हो प्रधाना, काला सूसा रंग रंगाया। संग मुहम्मद चार यार होया प्रधाना, एका पल्लू परवरदिगार आप फड़ाया। अञ्जील कुराना कर प्रधाना, बीस बीसा आपे गाया। चौदां तबकां इक्क निशाना, ज़िमी अस्मानां आप झुलाया। मक्का काअबा इक्क ज्ञाना, दो दो आबा मेल मिलाया। आपे साचे घोड़े चढ़या शाह नवाबा, आपणा अश्व आप दौड़ाया। आपे चरन छुहाए विच रकाबा, महिबान आपणा रूप वटाया। आपे होए ख़ादम ख़ादा, दर दरवेश आप कहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल

अपारा, करे कराए विच संसारा, निरगुण रूप नूर उज्यारा, पंज तत्त ना कोए वखांयदा। साचा नाअरा हरी हरि राम, आपणा आप सुणाईआ। ओअँ रूप श्री भगवान, सोहँ साची धार बंधाईआ। लेखा जाणे कृष्ना काहन, नाम बंसरी आप वजाईआ। एका अक्षर कर परवान, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। एका कलमा वखाए सच अमाम, अमाम अमामा वड शहनशाहीआ। एका हकीकी प्याए जाम, सुराही आपणे हथ्थ उठाईआ। अहिबाब रबाब वजाए विच जहान, सच सितार आप हिलाईआ। लेखा जाणे पुन्न सवाब, महिबानबीदो ना कोए खुदाईआ। एका लेखा लिखे हज़ारा दरूद, बंसरी इस्म आप पढ़ाईआ। आपे होए सच्चा महबूब, आशक इशक विच रखाईआ। आपे वसे विच कलबूत, आपे नूरो नूर नूर अख्वाईआ। आपणा देवे आप सबूत, गुर पीर अवतार देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत करे रुशनाईआ। जोती नूर हरि गोबिन्द, एका रंग उपाया। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर आप अख्वाया। अमृत बरखे सागर सिन्ध, आब हयात आपणे विच टिकाईआ। हरिजन बणाए आपणी बिन्द, नादी सुत नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खलाया। जुग जुग खेल हरि भगवान, लोकमात करांयदा। कलिजुग वेखे मार ध्यान, निरगुण आपणा वेस वटांयदा। नानक देवे पद निरबाण, एका रूप दरसांयदा। एका शब्द इक्क ज्ञान, राग तराना इक्क सुणांयदा। हिन्दू मुस्लिम बद्धा गान, दूई द्वैत ना कोए दखांयदा। मक्का काअबा आप पछाण, कांशी अयुध्या प्राग फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सिख्या हरि सुल्तान, लोकमात आप जणांयदा। एका कलमा नबी रसूल, चार वरन करे पढ़ाईआ। एका कन्त इक्क कन्तूहल, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। एका शब्द पंघूड़ा लैणा झूल, सच बहश्ती आप झुलाईआ। एका बरखणहारा फूल, आपणा रहिम रिहा कमाईआ। हरि का शब्द ना जाणा भूल, घर घर अंदर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक दित्ता एका वर, एका मेला सहिज सुभाईआ। एका अल्फ़ी गल विच पा, नानक निरगुण रूप वटाया। एका सिख्या गया समझा, ऊँच नीच भेव ना राया। सृष्ट सबाई मिथ्या गया गणा, थिर कोए रहिण ना पाया। हिन्दू मुस्लिम बणाए भैण भ्रा, साचा नाता जोड़ जुड़ाया। दरगाह साची मिले एका थाँ, परवरदिगार ना वण्ड वण्डाया। राम अल्ला एको नाँ, एका धाम रिहा सुहाया। एका सजदा सभ नूं रिहा करा, एका सीस झुकाया। एका निमाज़ रिहा पढ़ा, एका बांग दए सुणाया। एका हुजरा दए वखा, एका हज़रत लए मिलाया। एका शजरा सभ दा दए बणा, आप आपणी कलम चलाया। कलमी कलमा आप उपा, आलम उलमा दए पढ़ाया। शरफ़ुल मौला आप खुदा, हरफ़न मौला दए सुहाया। राम नाम इक्क जपा, कान्हा कृष्ना रूप वटाया। ऐली

५५६

०६

शाह आप अख्वा, साचा खण्डा रिहा चमकाया। दुलदुल आपणा आप दौड़ा, आपे वेख वखाया। नानक सिख्या सहिज
सुभा, सृष्ट सबाई रिहा जणाया। उच्ची कूके दए सुणा, आप आपणा पर्दा लाहया। बिन हरि भगवन्त ना कोई कन्त, साची
नार ना कोए अख्वाया। इशक हकीकी ना दए कोई करा, सच माशूक ना कोए मिलाया। पतित पुनीती करे इक्क खुदा,
जो जन नेत्र नैण दर्शन पाया। एका अमृत जाम दए पिला, गोबिन्द मेला सहिज सुभाया। ऊँचां नीचां राउ रंकां एका रंग
रंगा, एका विद्या रिहा पढ़ाया। दूती दुष्टां दए खपा, गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ाया। पीर फ़कीरां शाह हकीरां बेनज़ीरां दए
मिला, पीरन पीरा आप अख्वाया। साचा सीरा मुख चुआ, सांतक सति दए वरताया। अन्त अखीरा गया जणा, कलिजुग
वेला कूके दए दुहाया। चारों कुंट अन्धेरा जाए छा, सच सुच्च ना कोए रुशनाया। रवि ससि रहे मुख शर्मा, आफ्ताब
तलूअ ना किसे कराया। पान्धी भुल्ले आपणा राह, थक्के मांदे देण दुहाया। कलिजुग आंधी वगे वाहो दाह, शाह सुल्तानां
रही हिलाया। हरि की बांधी ना सके कोए छुडा, सदी चौधवीं मुहम्मद एह समझाया। वेद व्यासा गया लिखा, ब्रह्मण गौड़ा
पूत सपूता भेव खुल्हाया। नानक निरगुण धार रिहा चला, निरगुण रूप करे रुशनाया। गुर गोबिन्द पर्दा गया लाह, सृष्ट
सबाई आप उठाया। पुरख अबिनाशी प्रगट होवे बेपरवाह, मन्दिर मस्जिद गुरूदुआर बन्द ना किसे कराया। शिवदुआले मट्ठ
५५७ ना बैठा डेरा ला, घट घट अंदर नूर करे रुशनाया। कलिजुग अन्त जोत जगा, निहकलंका आपणा नाउँ रखाया। सम्बल ५५७
०६ नगरी दए वसा, उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लाया। साचा शब्द सुनेहड़ा दए घला, सृष्ट सबाई आप उठाया। शाह सुल्तानां ०६
राज राजानां ल्ए जगा, सोया कोए रहिण ना पाया। सत्त रंग निशाना ल्ए बणा, नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां ल्ए वखाया।
सोलां साल भेव ल्ए छुपा, सम्मत सतारवें करे रुशनाया। भारत खण्ड जोत जगा, ब्रह्मण्ड वेख वखाया। जेरज अंड फेरी
पा, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाया। चारे वरनां एका राग दए सुणा, दूई द्वैती दए मिटाया। शाह भबीखण ल्ए जगा, आप
आपणा इष्ट वखाया। राष्ट्रपति नेत्र दए खुल्हा, अस्सू तिन्न दिवस सुहाया। पंचम ताज झोली दित्ता पा, भुल्ल रहे ना
राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता खेले खेल इक्क इकांता, आप चलाए
आपणी गाथा, खेले खेल त्रिलोकी नाथा, लहिणा जाणे सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथा, पूजा पाठ वेख वखाईआ। पूजा
पाठ अठसठ नीर, हरि हरि साचा वेख वखांयदा। काया काअबा वेखे पीर फ़कीर, अंदर मन्दिर डेरा लांयदा। आपे कट्टे
आपणी जगत जंजीर, साची डोरी नाम बंधांयदा। आपे चोटी चाढ़े फड़ अखीर, मंज़ल आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे बख्शे
अमृत साचा सीर, निझर धारा आप वहांयदा। आपे लेखा जाणे शाह हकीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, आप आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, खेले खेल शाह नवाबा। शाह सुल्तानां रिहा जगाया, पुरख अबिनाशी बैठ सच्ची महिराबा। एका हुक्म रिहा सुणाया, लेखा जाणे साचा काअबा। एका रूप रिहा दरसाया, हरि साचा मोहण माधव माधा। मुकंद मनोहर लख़मी नरायण नर हरि आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। रंग रतड़ा हरि साचा मीत, एका रंग समाया। सृष्ट सबाई परखे नीत, लुकया कोए रहिण ना पाया। लेखा जाणे हस्त कीट, कीट कीटां रूप वटाया। लक्ख चुरासी लए जीत, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। आपे भन्ने कौड़े रीठ, आप आपणी खेल कराया। कलिजुग तप्या इक्क अंगीठ, त्रैगुण अग्नी रिहा लाया। कोए ना करे ठंडा सीत, नौ खण्ड रहे कुरलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी जोत करे रुशनाया। जोत जगाए श्री भगवाना, श्री धर आपणा नाउँ धरांयदा। चार वरनां देवे इक्क ज्ञाना, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप समझांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई गायण इक्क तराना, एका कलमा आप सिखांयदा। एका घर इक्क मकाना, दरगाह साची इक्क वखांयदा। एका मन्दिर मस्जिद सच निशाना, जो हरि हरि ध्यान लगांयदा। एका होए दाता दानी दाना, साची भिच्छया झोली पांयदा। एका बख़्शे धुर धुर आपणा माणा, माण अभिमाना आप गवांयदा। एका होए साचा राणा, सीस साचा ताज टिकांयदा। एका होए शाह शहाना, शाह सुल्ताना रूप रंग ना कोए वखांयदा। एका होए नर नर कान्हा, साची बंसरी नाम वजांयदा। एका राम राम होए प्रधाना, कलिजुग रावण हँकारी मेट मिटांयदा। एका करबला फड़े तीर कमाना, एका जल जल आप तरसांयदा। एका देवे पद निरबाना, घर साचे आप बहांयदा। एका मुकामे हक वखाए सच निशाना, जगत तारीकी आप मिटांयदा। एका करे प्रकाश कोटन भाना, सूरज चन्द ना कोए चढ़ांयदा। एका बन्ने सगनी गाना, अन्तिम आपणा सगन मनांयदा। एका दोज़ख़ वखाए राह शैताना, सच बहश्ती इक्क बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका हुक्म सर्ब सुणांयदा। हुक्म सुनेहड़ा धुर दरगाह, हरि साचा सच जणांयदा। सृष्ट सबाई रिहा उठा, पर्दा ओहला ना कोए रखांयदा। राष्ट्रपती दए हला, नेत्र नैण आप खुल्लांयदा। चार कुंट नौ खण्ड पृथ्मी रोवे मारे धाह, नेत्र नीर सर्ब वहांयदा। उच्चे मन्दिर उडणे काँ, साचा राग ना कोए अलांयदा। दीन मज़्ब अन्तिम बैठणे एका थाँ, वण्डी वण्ड ना कोए रखांयदा। सांझा यार लोकमात जाए आ, आप अपणा पर्दा लाह मुख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरनां एका रूप दरसांयदा। चार वरन हरि का रूप, पारब्रह्म ब्रह्म उपजांयदा। अंदर वसे सति सरूप, सति सतिवादी खेल खिलांयदा। नौ दुआरे नाता झूठ, पंज शैतान नाल रलांयदा। जिस जन उप्पर

जाए तुट्ट, आप आपणी बूझ बुझांयदा। साचा जाम प्याए घुट्ट, अमृत मुख चुआंयदा। दूई द्वैती जाए छुट, माया ममता मोह चुकांयदा। जगत विकारा जड़ देवे पुट्ट, सच सुच्च बूटा एका लांयदा। वरनां बरनां नाता जाए छुट्ट, एका रूप सर्ब दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया मन्दिर आप सुहांयदा। काया मन्दिर हरि जू वड़, साचा गढ़ सुहाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, एका नूर नूर रुशनाईआ। ना कोई विद्या रिहा पढ़, चौदां विद्या करे पढ़ाईआ। बज़र कपाटी तोड़े गढ़, सुखमन टेढी बंक पार कराईआ। अमृत नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क वखाईआ। कागों हँस दए कर, सतिगुर पूरे वड वड्याईआ। एका रंग रंगाए नारी नर, नर नरायण बेपरवाहीआ। आत्म सेजा दरस दखाए खड़, सच सरूपी रूप वटाईआ। सन्त सुहेले लए फड़, मनमुखां दिस ना आईआ। आपणी करनी आपे कर, करता कुदरत वेख वखाईआ। निर्भय रूप ना रक्खे कोई डर, भय भयानक आपणी खेल खिलाईआ। शाह सुल्तानां लए फड़, राज मन्त्री वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर घर विच करे रुशनाईआ। घर विच दीपक बालया, निरगुण रूप अपार। घर विच वखाए सच्ची धर्मसालया, घर मेला मीत मुरार। घर घर विच जगे जोत ज्वालया, घर सवाणी करे शंगार। घर घर विच सिँघ शेर होए अस्वार। वेखे खेल लाटां वालीआ, लट लट नूर होए उज्यार। घर घर लेखा चुक्के माता कालीआ, कालख टिक्का दए उतार। घर घर करे आप रखवालीआ, पारब्रह्म बेऐब परवरदिगार। जुग चले अवल्लड़ी चालीआ, वेद कतेब ना पावण सार। जगी जोत इक्क अकालीआ, अकल कला कल आपणी धार। चौथे जुग बण आया हालीआ, लेखा मंगे सर्ब संसार। राज राजान फिरन हथ्थां खालीआ, वेले अन्त ना करे कोई विचार। फल दिसे ना किसे डालीआ, सिंमल रुक्ख लए हुलार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, कल्गी तोड़ा सीस रक्खे दस्तार। कल्गी तोड़ा हरि भगवन्त, एका एक रखाया। शब्द वजाए एका डंक, ब्रह्मा विष्न शिव लए उठाया। करोड़ तेतीसा वेखे बंक, गण गंधर्ब फोल फुलाया। लोकमात आप जगाए राउ रंक, नेत्र नैण इक्क वखाया। प्रगट होया वासी पुरी घनक, वार अनक वेख वखाया। गुरमुख उधारे जिउँ जन जनक, जनक सपुत्री सीता सुरती लए प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे वेखे विच संसार, चारों कुंट हाहाकार, दीन मज़्ब रहे कुरलाया। दीन इलाही दीनां नाथ, दर्द दु:ख भय भञ्जण आपणा नाउँ रखांयदा। सृष्ट सबाई सगला साथ, विछड़ कदे ना जांयदा। लेखा जाणे मस्तक माथ, पूर्ब लहिणा आप गिणांयदा। आप चलाए आपणा राथ, रथ रथवाही वेस करांयदा। सर्बकला आपे समराथ, समरथ पुरख

भेव ना आंयदा। हरि की महिमा अकथना अकथ, कागज़ कलम लिखण ना पांयदा। जो दीसे सो जाए ढट्ठ, थिर कोए नज़र ना आंयदा। अञ्जील कुरान कर कट्ठ, एका मसल्ला हेठ वछांयदा। आपे सजदा करे ढट्ठ, आपे आपणे हथ्थ ख़ाली वखांयदा। आपे बहे मस्जिद मट्ठ, आप आपणा रूप प्रगटांयदा। आपे लेखा जाणे नट्ठ नट्ठ, तबक तबकां फोल फुलांयदा। आपे करतब करे पुरख समरथ, आप आपणी रचन रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम पावे सार, सृष्ट सबाई दए हुलार, जगत हुलारा आप दवांयदा। सृष्ट सबाई अन्त हुलारा, सो पुरख निरँजण आप दुआंयदा। कूड़ी क्रिया करे पार किनारा, जूठ झूठ सर्ब रुढ़ांयदा। चार वरनां वखाए इक्क दुआरा, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। सति सन्तोखी भरे नाम भण्डारा, आत्म दोषी सर्ब मिटांयदा। सच्चा गोशा करे विच संसारा, सोहँ कोश इक्क पढ़ांयदा। निरदोष रहे परवरदिगारा, दोष सभना सिर लगांयदा। आप खामोश सुत्ता पैर पसारा, सृष्ट सबाई आप लड़ांयदा। मदहोश ना होए कदे निरँकारा, हरख सोग ना कोए जणांयदा। लोक परलोक इक्क जैकारा, सच्चा सलोक आप अलांयदा। जोती जोश लए हुलारा, घर घर जोती डगमगांयदा। जोतशी जोतश ना किसे कोए विचारा, पंडत पांधा पतरी फोल हिसाब ना कोए लगांयदा। अज़मतो कस्मतो अज़िबवा अतुलहे आपे वसे सभ तों बाहरा, आपणा आसण आप सुहांयदा। आपे जाणे आर पार किनारा, मँझधार आप रुढ़ांयदा। आपे सञ्झ सवेर पाए सारा, रैण अन्धेरी आप मिटांयदा। आपे लेखा जाणे सूरज चन्द सतारा, चौदवीं चन्दन चन्दा रूप आप वटांयदा। आपे वेखे सृष्ट सबाई सति अखाड़ा, चण्ड प्रचण्ड आप चमकांयदा। आपे आपणे ब्रह्मण्ड कर पसारा, आप आपणी वण्ड वण्डांयदा। निरगुण सरगुण खेल निरँकारा, सरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। जागरत जोत नूर होए उज्यारा, कूड़ कुड़यारा पन्ध मुकांयदा। सम्मत सतारां खेल अपारा, हरि निरँकारा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपरा, अपर अपार आपणी धार चलांयदा। साची धार साची रीत, हरि साचे सच चलाईआ। एका मन्दिर इक्क मसीत, एका गुर दर वेख वखाईआ। एका हस्त एका कीट, अणडीठ एका रंग रंगाईआ। एका साजण एका मीत, दामनगीर इक्क अख्वाईआ। एका ठांडा एका सीत, एका अग्नी तत्त वखाईआ। एका शब्द एका नाद एका गीत, एका कलमा आप पढ़ाईआ। एका ब्रह्म करे पुनीत, एका रूह लए बख्शाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। एका साजण एका हरि, एका गुर एका घर, एका दर सुहांयदा। एका नारी एका नर, नर हरि नरायण एका रूप वटांयदा। एका करनी आप कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। एका धरत धवल धरनी उप्पर चरन धर, हौला भार आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, कलिजुग कढ्ढे भरम भुलेखया, लेखा जाणे धारी केसया, मूंड मुंडाए वेख वखांयदा। वेखणहारा घट घट अंदर, दिस किसे ना आंयदा। काया वसया साचे मन्दिर, घर घर विच जोत जगांयदा। करे प्रकाश डूँघी कंदर, काफ़र मोमन रूप वटांयदा। आपे तोड़े लग्गा जंदर, बन्द किवाड़ा आप खुल्हांयदा। लेखा जाणे गोरख मछन्दर, उच्चे टिल्ले फोल फुलांयदा। मनमुख जीव चारों कुंट भौंदे बन्दर, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मति एका बुध एका तत्त एका सुध, एका ब्रह्म निर्मल दुध्ध, एका नीर दए वखाईआ। एका नीर हरि विरोले, काया मन्दिर वेख वखाईआ। जूठी झूठी छाछ कलिजुग कंडे तोले, करता कीमत कोए ना पाईआ। अंदर वड़ आपे बोले, आपणा बिस्मिल रूप वटाईआ। निरगुण होए वसे चोले, काया अल्फ़ी आप हंढाईआ। आपणे रक्खे आपणे पर्दे ओहले, आप आपणा मुख छुपाईआ। मुरीद मुर्शद गाए ढोले, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। सदा सुहेला वसया कोले, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। चार वरन पाए आपणे रौले, हरि का रूप नज़र किसे ना आईआ। कोटी अंदर वड़ वड़ लभ्भदे अक्खां खोल्ह, कोई उच्ची कूके दए दुहाईआ। मौला काया अंदर किसे दे ना मौले, मलकुल मौत दए दुहाईआ। आपे गाए आपणे सोहले, सालेबां साहिब आपणा आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन वखाए इक्क दरवाज़ा, पारब्रह्म प्रभ ग़रीब निवाज़ा, आप वजाए आपणा अनहद वाजा, तार सितार ना कोए रखाईआ। अनहद वाजा वज्जे सितार, हरि साचा आप वजाईआ। गुरमुख विरले करे आप गुफ़्तार, गुप्त ज़ाहर बातनी रूप वटाईआ। सच सुहञ्जणी सेजा करे प्यार, आप आपणा रंग वेखे नूर इलाहीआ। तालब तल्ब करे संसार, आलम इलम भेव ना राईआ। गुरबत तोड़े गढ़ हँकार, आप आपणा बल धराईआ। मुर्शद मिले हो हो ज़ाहर, मक्का काअबा काया विच वखाईआ। सच मुहम्मद उच्ची कूके करे पुकार, आलमीन यामबीन इक्क खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, करे कराए विच संसारा, सतिजुग साची बन्न्हे धारा, साचा मार्ग इक्क रखांयदा। साचा मार्ग सच संदेश, नौ नौ सत्त सत्त आप जणाया। लेखा जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, गणपति लेखा बूझ बुझाया। भेव चुकाए देवी देवत, दर दरवेश अख्वा सच सुच्च लिखाया। प्रगट होए आदि निरँजण सद आदेस, आदि अन्त वेस वटाया। लेखा जाणे रिखी केश, जगत गवर्धन आप हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सृष्ट सबाई बन्न्हे धार, धर धरनी धरत धवल एका रंग रंगाया। धरनी धरत धवल प्रभ देवे रंग, कलिजुग एका रंग रंगाईआ। इक्क वजाए नाम मृदंग, लोआं पुरीआं आप सुणाईआ। लोआं पुरीआं आपे लँघ, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। कलिजुग ढाहे भरमां कंध, भरम भुलेखा दए मिटाईआ।

सति सतिवादी चढ़े चन्द, नूर उजाला कर रुशनाईआ। चार वरन गाण एका छन्द, सो पुरख निरँजण हरि मनाईआ। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीछोड़ बन्द कटाईआ। लेखा जाणे बत्ती दन्द, रसना रस आप भराईआ। इक्क वखाए परमानंद, निज आत्म अमृत रस चुआईआ। आप गंवाए मदिरा मास गंद, नौ खण्ड वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, लेखा जाणे गुरू गुर चेला, मुरीद मुर्शद एका रंग रंगाईआ। एका रंग मुर्शद मुरीद, हरि साचा सच रंगांयदा। एका एक करे साची दीद, दृष्ट इष्ट सृष्ट आप खुल्हांयदा। इक्क वखाए साची ईद, निरगुण आपणा चन्द चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, लोकमात आप करांयदा। खेल अपारा हरि निरँकारा, कलिजुग अन्तिम अन्त कराईआ। बीस बीसा हो उज्यारा, शाह अस्वारा चारों कुंट फेरा पाईआ। संगत हरि हरि भरे भण्डारा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए सच निशाना, सत्त रंग झुल्ले दो जहानां, दो जहान वाली आप झुलाईआ। लोकमात तेरा राज, पंचम पंच वड्यांअदा। वीह सौ बीस बिक्रमी होए काज, हरि साचा आप करांयदा। सीस किसे ना दिसे ताज, तख़्त ताज सर्ब उलटांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी उठाए इक्क आवाज़, स्यासत वरासत ना कोए बणांयदा। ग़रीब निमाणयां प्रभ रक्खे लाज, सृष्ट सबाई एका रंग रंगांयदा। सतिजुग साचा साजन साज, साची सिख्या इक्क समझांयदा। एका शाह इक्क नवाब, एका अदली अदल कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच निशाना हरि मेहरवाना, एका एक उठांयदा। सत्त रंग निशाना सति सतिवाद, लोकमात करे रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी रक्खणा याद, भुल्ल कोए ना जाईआ। हरि का शब्द बोध अगाध, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। सत्तां दीपां लेखा जाणे सन्त साध, लोकमात सोए लए उठाईआ । जमन किनारे वज्जे नाद, नादी सुत आप वजाईआ। अमाम अमामा सिर होए नवाब, सच दमामा इक्क रखाईआ। आपणा नूर आपणे विच्चों काढ, लोकमात करे रुशनाईआ। इका ख़ुदा इक्क आदि, इक्क वाहिगुरू राम नाम रहे विस्माद, एका कृष्न रूप दरसाईआ। एका नानक गोबिन्द सुणे फ़रयाद, आप आपणा दरस दिखाईआ। एका मेटे वाद विवाद, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। सच्चा पीर सभ नूं जाए लाध, हउमे पीड़ दए गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम घाढ़ण घढ़, साचे पौड़े आप चढ़ाईआ। साचा पौड़ा हरि निरँकार, लोकमात लगांयदा। ब्रह्मण गौड़ा रूप अपार, पूत सपूता वेस वटांयदा। मुहम्मद लेखा विच संसार, चौदां तबकां वेख वखांयदा। नानक निरगुण लए उधार, निहकलंक रूप वटांयदा। गोबिन्द खण्डा तेज कटार, नाम प्रचण्ड आप चमकांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड दए हुलार, वरभण्ड

वण्ड वण्डांयदा। खण्ड खण्ड करे संसार, नार दुहागण रंड ना कोए दखांयदा। कलर कंध ढह ढह होए गार, सच महल्ल ना कोए बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोती हो उज्यार, खेले खेल अपर अपार, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार करांयदा। अगम्म अगम्मड़ा नूरी अल्ला, एका एक अख्वांयदा। हड्ड मास नाड़ी चम्मड़ा पंज तत्त कदे ना रल्ला, सच सिँघासण सोभा पांयदा। जुगा जुगन्तर सच संदेश नर नरेश हो प्रवेश आपणा घल्ला, हुक्मी हुक्म आप सुणांयदा। कलिजुग अन्तिम करया वला छला, बल बावन भेख वटांयदा। हज़रत नूर दर दुआर एका मल्ला, साची नईआ हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल गिरवर गिरधार, गृह आपणा वेख वखांयदा। गृह मन्दिर हरि वेख्या, काया काआबा खोल्ह किवाड़। आपणे नेत्र आपे पेख्या, आपणा रूप अगम्म अपार। आपणा आपे लिख्या लेखया, जगत भगत ना पावे सार। रूप वटाए धारी केसया, मूंड मुंडाए सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत लाए पौड़ा, बज़र कपाटी आपे बौहड़ा, शब्द सरूपी रक्खे हथौड़ा, लक्ख चुरासी वेखे जीव मिट्ठा कौड़ा, कौड़ा रीठा आपे भन्न वखाईआ। आपे भन्ने भन्नणहारा, बिध आपणी आप करांयदा। जुग जुग करे पार किनारा, सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखांयदा। लेखा जाणे गुर गुर अवतारा, साध सन्त हुक्म सुणांयदा। भगतां भरे भगती नाम भण्डारा, वणज वणजारा इक्क वणज करांयदा। मुल्ला शेख़ मुसायक पीर सोहण सच दुआरा, भिखक भिच्छया एका झोली पांयदा। एका कूक एका नाअरा, हक बहक आप समझांयदा। एका राम नाम कर प्यारा, एका इष्ट रूप दरसांयदा। एका नानक सतिनाम बोल जैकारा, नाम सति सर्ब दृढ़ांयदा। एका गोबिन्द दए हुलारा, वाहवा गुरू फ़तह गजांयदा। आपे वसया सभ तों न्यारा, नेहचल धाम आप वखांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, निरगुण निरगुण आप करांयदा। आपे मेल मिलाए मुहम्मदी यारा, अहिमद मुहम्मद खेल खिलांयदा। आप ईसा मूसा होए उज्यारा, आप आपणा रूप वटांयदा। आपे नर नरायण खेल करे विच संसारा, निहकलंका कलंक सर्ब गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगजीवणदाता पुरख बिधाता, इक्क सुणाए साची गाथा, लेखा चुक्के मस्तक माथा, साढे तिन्न तिन्न हथ्थ मूल मुकांयदा। साढे तिन्न तिन्न हथ्थ मढ़ी गोर, हिन्दू मुस्लिम वेख वखाईआ। बिन हरि नामे साचे कलमे होए चोर, जगत बेड़ी ना सके कोए तुड़ाईआ। सच ईमान साची शरअ किसे विरले कोल, हरामखोर सर्ब लोकाईआ। आपणे नेत्र खांदे वेखे ढोर, डोर हथ्थ ना नबी फड़ाईआ। अन्तिम वसणा पए अन्धेर घोर, गुर पीर ना कोए छुडाईआ। चारों कुंट करन गुल शोर, ज़ोरो ज़ोर रहे वखाईआ। पुरख अबिनाशी परवरदिगार सभ नूं फड़ के अग्गे

ਲਏ तोर, हाकम हुक्म ना कोए छुडाईआ। चढ़ के आया साचे घोड़, अर्श फर्श ज़िमीं अस्मान ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा फेरा पाईआ। सन्त भगत भगवन्त गुरमुख गुरसिख साचे सूफ़ी आपणे अंग लए जोड़, आप आपणा संग निभाईआ। एका अल्फ़ चुकाए मोर तोर, दूसर राह ना कोए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मुस्लिम हिन्दू सिख ईसाई एका मिले सच गुसाँईं, लेखा जाणे थाउँ थाँईं, यसूह करिसचअन गया समझाईआ। यसूह बेटा मरीआ जाया, नबी खुदा अख्वांयदा। अन्त अन्धेरा सृष्ट सबाई छाया, साचा नूर ना कोए धरांयदा। मेरा खून रहे ध्याया, योरोशलम सर्ब कुरलांयदा। वेला अन्तिम वेख वखाया, आप आपणा रूप प्रगटांयदा। सोया कोए रहिण ना पाया, घर ख़ाली सर्ब दसांयदा। भैण भाई ना साथ रखाया, पिता पूत ना मेल मिलांयदा। बीवी ख़ौत ना कोए हंढाया, साची सेज ना कोए सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नबी होए उज्यार, एका गुर लए अवतार, एका राम खेल संसार, एका नानक जोत उज्यार, एका गोबिन्द बन्ने धार, एका शब्द करे जैकार, निहकलंक आपणा नाउँ रखाईआ। निहकलंक हरि भगवन्त, दूसर अवर ना कोए वखांयदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, चारे वेद सर्ब अलांयदा। अठारां पुराण वेख मणीआ मंत, वेद व्यासा भेव खुलांयदा। शास्त्र सिमरत पढ़ पढ़ थक्के जंत, हरि हरि दिस किसे ना आंयदा। अठारां अध्याए गाए गीता बेअन्त बेअन्त, कान्हा कृष्ना आपणा रूप दरसांयदा। अञ्जील कुरान खेल महाना एका नूर दरसाए श्री भगवन्त, सर सागर आप नुहांयदा। खाणी बाणी इक्क निशानी आपे जाणे जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क खुलाए साचा दर, दूसर दर ना कोए वखांयदा। साचा दर इक्क खुलाउणा, चार वरन सरनाईआ। दीन मज़्ब इस्लाम इक्क बणाउणा, आलमगीर बेपरवाहीआ। दामनगीर दामन इक्क फड़ाउणा, दूलो दूल आप अख्वाईआ। ज़ालमा ज़ुलम आप गुआउणा, ज़िमनी आपणी आपे लए लिखाईआ। राम नाम इष्ट इक्क कराउणा, वशिष्ट गुर शब्द कुड़माईआ। लंका गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ाउणा, पंडत रावण दहि सिर घाईआ। कूड़ कुड़यारा कंस मेट मिटाउणा, कान्हा कृष्ना बल वखाईआ। पंचम पंच गले लगाउणा, दर दर्योधन दए दुरकाईआ। कलिजुग नफ़स बन्द कराउणा, हवस हिरस दए खपाईआ। मोमन रूप सर्ब अख्वाउणा, घर मिल्या मेल सच्चे मलाहीआ। नाम मन्त्र सति इक्क दृढ़ाउणा, सति नाम दए गवाहीआ। वाहिगुरू फ़तह जैकारा जगत बुलाउणा, जो आपणा तन मन चित लए गुरू भेट चढ़ाईआ। पारब्रह्म आपणा भेव खुलाउणा, सो पुरख निरँजण अकाल पुरख जूनी रहित एका रूप दरसाईआ। हँ ब्रह्म जीव जंत सर्ब बुझाउणा, प्रभ आपणी अंस उपजाईआ। त्रै त्रै मेला वेख वखाउणा,

रजो तमो सतो त्रैगुण माया बन्धन ब्रह्म विष्न शिव वण्ड वण्डाईआ। निरगुण सरगुण अंदर रख्या आपणा परमानंदन, चन्दन निज वास महिकाईआ। आप सुणाए साचा छन्दन, पाबन्द रक्खे इक्क खुदा सर्ब खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देवे खोल्, सम्मत सम्मती लोकमात बोल, साचा ढोल दए वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त नाम निधान रक्खे कोल, सृष्ट सबाई दए वरताईआ।

✻ ४ जेठ २०१७ बिक्रमी अंगरेज़ सिँघ मंगल सिँघ दे घर नई बस्ती जम्मू ✻

भगत उधारन आप प्रभ, हरी हरि रूप वटांयदा। जुगा जुगन्तर मेल मिलाए लभ्भ, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। अमृत जाम प्याए मदि, नाम खुमारी इक्क चढ़ांयदा। उलटी करे कँवल नभ्भ, निझर झिरना आप वखांयदा। पंच विकारा देवे दब्ब, माया ममता मोह मिटांयदा। नौ दुआरे कराए पार हद्द, जूठा झूठा नेहों मुकांयदा। इक्क उपजाए साची यद, विष्नूं वंसी खेल खिलांयदा। सबद वजाए अनहद नद, राग तराना आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत वछल हरि मीत मुरारा, खेले खेल विच संसारा, निरगुण सरगुण रूप धरांयदा। भगत वछल हरि गिरधार, एका धाम वड वड्याईआ। जुगा जुगन्तर पावे सार, दयावान बेपरवाहीआ। ग़रीब निमाणे वेखे मार ध्यान, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। बख्शिश करे नाम दान, आत्म भिच्छया एका पाईआ। अन्तर मन्त्र ब्रह्म ज्ञान, निरगुण शब्द करे पढ़ाईआ। एका राग सुणाए कान, कागद कलम ना लिखे शाहीआ। दो जहानां पाए साची आण, साखीआत रूप दरसाईआ। बिरहों तीर निराला मारे बाण, अणयाला तीर आप चलाईआ। घट घट होए जाणी जाण, हर घट बैठा सहिज सुभाईआ। आदि जुगादी श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईआ। हरिजन हरि हरि जाणया, हरि मेला सहिज सुभाए। हरिजन वेखे गुण निधानयां, गुणवन्ता रंग रंगाए। आप चलाए आपणे भाणया, एका अक्खर बूझ बुझाए। आप बणाए चतुर सुघड़ स्याणया, मूर्ख मूढ़े लए तराय। एका सुणाए अकथ कहाणीआं, अकथ कथ आप अलाए। आपे जाणे आपणी बाणीआं, आप आपणा हुक्म सुणाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला विच संसार, आप कराए। एकओंकार, हरिजन साचे कर पछाण। हरिजन हरि हरि एक है, एका रंग समाया। पुरख अबिनाशी करे बुध बबेक है, आत्म अन्तर वेख वखाया। त्रैगुण माया ना लाए सेक है, पंचम तत्त ना तत्त जलाया। सति सरूपी लाए मेख है, ना कोई सके मात उखड़ाया। एका रंग रंगाए धारी केस है, मूंड मुंडाए गोद बहाया। लेखा जाणे

धुर दा लेख है, लिखणहार बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगवन्त आदि अन्त हरिजन साचे लए उठाया, हरिजन साचा सोभावन्त, हरि सतिगुर पुरख मनांयदा। मेल मिलावा हरि हरि कन्त, घर साची सेज हंढांयदा। मानस जन्म बणाई बणत, मन मनूआ आप समझांयदा। तोड़े गढ़ हउँमे हंगत, आसा तृष्ना मेट मिटांयदा। नाता तोड़े भुक्ख नंगत, साची भिच्छया झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन पूरी करे आसा, चरन कँवल बख्शे सच भरवासा, साची सिख्या इक्क समझांयदा। साची सिख्या गुण विचार, हरि साचे सच पढ़ाईआ। एका अक्खर एकँकार, एकओंकार रूप जणाईआ। सो पुरख निरँजण ख़बरदार, आदि जुगादि रिहा समाईआ। हरि पुरख निरँजण मीत मुरार, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। आदि निरँजण हो उज्यार, जोत निरँजण सर्ब जगाईआ। श्री भगवान ठांडा ठार, सांतक सति दए वरताईआ। अबिनाशी करता खेल अपार, घर घर आपणा वेस वटाईआ। पारब्रह्म वसे धाम न्यार, ब्रह्म आपणा रूप दरसाईआ। ईश जीव एका धार, जगत जगदीश वेख वखाईआ। सीस धड़ ना होए उज्यार, पीसण पीस सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां अंदर आपे वसे, आप आपणा धाम सुहाईआ। भगतन अंदर वसया, निरगुण रूप अपार। साचा मार्ग एका दस्सया, नाता तोड़ काम क्रोध लोभ मोह हँकार। करे प्रकाश कोटन कोटि रवि सस्या, रवि ससि होए शर्मशार। जुगा जुगन्तर फिरे नस्सया, लोआं पुरीआं दए हुलार। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज तीर निराला एका कसया, दो जहानां मारे मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन साचा उठया, लोकमात लए अंगड़ाईआ। सो पुरख निरँजण सुत्ता उठया, एका रूप अनूप दरसाईआ। जाम प्याए अमृत घुट्टया, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। नाता तोड़े जूठ झूठया, सच सुच्च वणज वखाईआ। मेल मिलाए अबिनाशी अचुतया, चितवित ठगौरी कोए ना पाईआ। आप सुहाए साची रुतया, बसन्त बहार आप वखाईआ। आपे दरस दिखाए हरिजन सुत्तयां, आलस निन्दरा दए मिटाईआ। पंच विकारा फड़ फड़ कुट्टया, जगत शैतान नेड़ ना आईआ। हरिभगत ना जाए कदे लुट्टया, नाम ख़ज़ाना मिल्या बेपरवाहीआ। आवण जावण छुटया, लक्ख चुरासी रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन हरि हरि तारया, कर किरपा हरि निरँकार। जुग जुग खेले खेल विच संसारया, निरगुण सरगुण हो उज्यार। भगत भगवन्त भगती एका मार्ग ला रिहा, जगत जुगत जोग सच विहार, साची शक्ती आप धरा रिहा। आदि शक्ति अगम्म अपार, एका जोती नूर डगमगा रिहा। जोत सरूपी जोत निरँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा लाए दर, दर दुआर इक्क सुहा ल्या। दर दुआरा हरि भगवन्त, एका

एक सुहांयदा। सचखण्ड दुआर बणाए बणत, आपणा घाड़ण आप घड़ांयदा। गुरमुख विरला वेखे सन्त, जिस जन साचे पौड़े आप चढ़ांयदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, आप आपणे लड़ बंधांयदा। हरिजन हरि हरि मीतड़ा, पारब्रह्म गुर करतार। काया चोली रंगे चीथड़ा, दुरमति मैल दए उतार। नाम जणाए इक्क अनडीठड़ा, साचे मन्दिर खोल्ह किवाड़। करे कराए पतित पुनीतड़ा, पतित पापी लए उधार। आपे जाणे आपणी रीतड़ा, जुगा जुगन्तर लए अवतार। सति पुरख निरँजण ठांडा सीतड़ा, सति सतिवादी खेल न्यार। एका गाए सुहागी गीतड़ा, सोहँ शब्द अगम्म अपार। मानस जन्म हरिजन जीतड़ा, लक्ख चुरासी ना होए ख्वार। एका रंग वखाए हस्त कीटड़ा, चार वरन सोहन इक्क दुआर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे भरे भण्डार। सच भण्डारा नाम वण्ड, हरि सतिगुर आप वण्डांयदा। वसणहारा विच ब्रह्मण्ड, जेरज अंड फोल फुलांयदा। आदि जुगादी कदे ना देवे कंड, जो जन रसना हरि हरि गांयदा। मनमुक्ख जीव नार दुहागण रंड, साचा कन्त ना कोए हंढांयदा। हरिजन ढाए दूई द्वैती कंध, भाण्डा भरम भउ आप भनांयदा। आप मुकाए झूठा पन्ध, साचे पौड़े आप चढ़ांयदा। इक्क वखाए परमानंद, निज आत्म रस चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचा सोहया, घर मन्दिर बंक दुआर। एका बीज साचा बोया, लोकमात खिड़ी गुलज़ार। दरगाह साची मिले ढोआ, ढोला गाए एकओंकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत देवे नाम अधार। हरि हरि नाम अनमोल, सतिगुर साचे हट्ट विकांयदा। जगत तक्कड़ सके ना कोई तोल, नौ खण्ड पृथ्मी मुख शर्मांयदा। आपणी वस्त हरि आपे रक्खे कोल, आपणी कीमत आपे पांयदा। लक्ख चुरासी जीव जंत विरोल, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। शब्द अनाद वजाए ढोल, अनहद मृदंगा आप उठांयदा। साचे मन्दिर आपे बोल, आपणा नाअरा आपे लांयदा। सचखण्ड दुआरा एका खोल्ह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची वस्त इक्क रखांयदा। साची वस्त हरि हरि नाम, हरि सतिगुर आप उपाया। आपे रक्खे काया मन्दिर ग्राम, घर घर विच दए टिकाया। कोए ना लाए हरि जू दाम, कीमत कोए ना सके चुकाया। जिस जन होए आप मेहरवान, तिस देवे आप रघुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाया। हरिजन साचा जागया, नेत्र नैण खोल्ह किवाड़। मन तन उपजे इक्क वैरागया, वाओ लग्गे ना तत्ती हाढ़। त्रैगुण माया बुझे आग्गा, पंज विकार ना सके साड़। दुरमति मैल धोवे दागया, अमृत बख्शे ठंडा ठार। फड़ फड़ हँस बणाए कागया, सर सरोवर दए नुहाल। घर दीपक जोत जगे चरागया, मेट मिटाए अन्ध अँध्यार। मेल

मिलावा कन्त सुहागया, धन्न सुलक्खणी सोभावन्ती नार। चरन धूढ़ मजन कराए माघिआ, हरि सज्जण मीत मुरार। जो जन सरनाई लागया, आवण जावण उतरे पार। लक्ख चुरासी विच्चों काढया, राए धर्म ना करे ख्वार। सचखण्ड निवासी करे लाडया, सिर रक्ख हथ्थ समरथ करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पाए सार। सार समालीअन साख्यात, सर्बकला भरपूरया। गुरसिख बणाए पार ज़ात, पुरख अबिनाशी हाज़र हज़ूरया। हरिभगत बंधाए चरन नात, ज़ात पात ना कोए वखा रिहा। इक्क चढ़ाए साचे राथ, रथ रथवाही खेल खिला रिहा। एका मन्त्र पूजा पाठ, अक्खर वक्खर आप पढ़ा रिहा। एका अमृत सरोवर मारे ठाठ, काया जल आप टिका रिहा। चौदां लोक वखाए एका हाट, वणज वणजारा रूप धरा रिहा। एका सोया साची खाट, आत्म सेजा आसण ला ल्या। एका जाणे नेड़े वाट, दूर दुराडा पन्ध मुका ल्या। एका पूरी करे घाट, स्वच्छ सरूपी दरस दखा ल्या। इक्क नुहाए तीर्थ ताट, अठसठ एका धार बंधा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे एका वार, दूई द्वैती मोह मिटा ल्या। दूई द्वैती देवे तोड़, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, तुरीआ राग आप सुणाईआ। जगत विकारा देवे होड़, दर दुआर रहिण ना पाईआ। मिट्ठा करे रीठा कौड़, अमृत आत्म आप चुआईआ। एथे ओथे जाए बौहड़, दो जहानां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी दया कमाईआ। जिस जन होए दयाल, सो जन पार उतारया। नेड़ ना आए काल महांकाल, गुर सतिगुर दए सहारया। तोड़ तुड़ाए जगत जंजाल, जागरत जोत इक्क जगा रिहा। देवे नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ीना आप वखा रिहा। काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाल, माणक मोती हीरे लाल जड़त जुड़ा रिहा। गगन मस्तक वेखे साचा थाल, रवि ससि सीस झुका रिहा। आदि निरँजण दीपक आपे बाल, अन्ध अन्धेरा सर्ब मिटा ल्या। अनहद शब्द वजाए ताल, पंचम आपणा राग सुणा ल्या। सुरत सवाणी करे संभाल, साचा हाणी शब्द मिला ल्या। आत्म सेजा कर परवान, आप आपणे अंग लगा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, घर साचे सगन वखा ल्या। हरिजन वरया किरपा कर, गुर सतिगुर गहर गम्भीर। लेखा जाणे नरायण नारी नर, आदि जुगादि शाह सुल्तान पीरन पीर। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख करनेहार बन्ने बीड़। कलिजुग चुकाए झूठा डर, गुरमुख चोटी चाढ़े फड़ अखीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत बंधाए एका लड़, गुरमुख वेखे आपे खड़, हरि सन्तन लाए साची जड़, अमृत बख्शे ठांडा सीर। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निर्धन सरधन सरधन निर्धन निराकार निराधार निरवैर एका शब्द वखाए साची धीर।

✻ ४ जेठ २०१७ बिक्रमी गूढ़ा राम दे घर पिण्ड शेख सर ज़िला जम्मू ✻

सो पुरख निरँजण शाह सुल्तानयां, आदिन अन्ता खेल अपार। हरि पुरख निरँजण वड मेहरबानया, निरगुण दाता बेऐब परवरदिगार। एकँकारा खेल महानया, करे कराए आप करतार। आदि निरँजण जोती नूर डगमगानया, दीपक नूर करे उज्यार। श्री भगवान एका रंग समानया, रूप रंग ना कोई विचार। अबिनाशी करता सचखण्ड दुआरा इक्क सुहानया, सच सिँघासण हरि सिक्दार। पारब्रह्म आपे जाणे आपणी अकथ कहाणीआं, गावत गाए आपणी वार। थिर घर साचा इक्क निशानया, आप सुहाए बंक दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार। अगम्म अपार खेल न्यारा, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण मेल मिलावा, एकँकारा आदि निरँजण डगमगांयदा। अबिनाशी करता कर पसारा, श्री भगवान दए हुलारा, पारब्रह्म प्रभ वेख वखांयदा। सचखण्ड निवासी खेल न्यारा, साचा शब्द सच्ची धुन्कारा, राग अनादी आप अलांयदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, आपणी इच्छया भरे भण्डारा, साची सिख्या धुर दरबारा, दरगाह साची धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, पुरख अबिनाशा आप करांयदा। पुरख अबिनाशा इक्क इकल्ला, आदि जुगादी खेल खलाईआ। निरगुण वसे सच महल्ला, निराकार रूप दरसाईआ। ऊँचो ऊँच उच्च अटला, नेहचल आपणा धाम सुहाईआ। आपे फड़या आपणा पल्ला, आपणा बन्धन आपे पाईआ। आपणी शक्ती आपणी जोती आपे रला, आप आपणा बल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, एकँकारा आप कराईआ। एकँकारा निरगुण धार, सचखण्ड दुआरे आप चलांयदा। कमलापाती मीत मुरार, कँवल नैण आप मटकांयदा। साची गाथी कर त्यार, शब्द अनादी नाद वजांयदा। पुरख बिधाती धुर दरबार, दर घर साचा आप सुहांयदा। सति सतिवाद हो उज्यार, अगम्म अगम्मड़ी कार करांयदा। अलक्ख निरँजण बोल जैकार, आपणी अलक्ख आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, आपे वसे श्री भगवन्त, नारी कन्त रूप वटांयदा। नारी कन्त हरि भगवाना, आपणी सेज हंढाईआ। एका मर्द इक्क मरदाना, मेहरवान इक्क अख्वाईआ। एका बन्ने साचा गानां, एका घर घर सगन मनाईआ। एका गाए राग तराना, तुरीआ राग नाद वजाईआ। एका खोले सच दुकाना, दर दरवाज़ा आप खुलाईआ। एका दस्से पद निरबाना, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। एका बख्शे ब्रह्म ज्ञाना, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत उजाला निरगुण दाता खेले खेल पुरख बिधाता, इक्क इकांता आसण लाईआ। साचा आसण शाह सुल्तान, थिर घर

साचे आपे लांयदा। आपे गोपी आपे काहन, आपे मंडल रास रचांयदा। आपे सीता आपे राम, राम आपणा रूप वटांयदा। आपे निरगुण निरगुण करे काम, आपे साचा दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता बेपरवाह, आदि जुगादी सच मलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। साचा बेड़ा हरि भगवन्त, आदि जुगादि चलांयदा। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। आपे शब्द होए मणीआ मंत, आप आपणा नाउँ धरांयदा। आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लेख ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड खोल्ह दरवाज़ा, खेले खेल ग़रीब निवाज़ा, आप वजाए आपणा वाजा, तार सितार ना कोई रखांयदा। सचा शब्द दर घनघोर, घर मन्दिर आप सुणाईआ। करे खेल अन्ध घोर, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। आपे चढ़े आपणे घोड़, दूर दुराडा साचा माहीआ। साचे घर लाए एका पौड़, उच्चा डण्डा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे होए ब्रह्मण गौड़, पूत सपूता बेपरवाहीआ। लोआं पुरीआं रिहा दौड़, दो जहानां ब्रह्मण्डां खण्डां फेरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल पुरख अकाला, आपणी धार आप चलांयदा। आप आपणी करे सदा प्रितपाल, प्रितपालक रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा घर घर सुहञ्जणा, हरि साची जोत जगाईआ। पुरख अबिनाशी आदि निरँजणा, निरगुण बैठा आसण लाईआ। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर आप तराईआ। सर्ब जीआं दा साचा सज्जणा, एकँकारा इक्क अख्वाईआ। ना घड़या ना भज्जणा, घड़े भन्ने सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा घर थिर दरबारा पुरख अबिनाशी पावे सारा, रवि ससि ना कोई सतारा, ज़िमी अस्माना दए हुलारा, एकँकारा खेल खलाईआ। एकँकारा हरि गोबिन्द, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आप उपजाए आपणा सुत दुलारा, शब्द शब्दी नाउँ धराईआ। आपे होए गुणी गहीरा, गहर गम्भीर वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा सुत कर त्यार, अबिनाशी अचुत्त पावे सार, सुहाए रुत्त अगम्म अपार, आप आपणी वेख वखाईआ। सुत दुलारा नौजवाना, हरि साचे घर उपाया। शब्द अनादी धुर फ़रमाणा, आदि जुगादी आप सुणाया। चरन कँवल बख्शे इक्क ध्याना, नेत्र लोचण इक्क खुल्हाया। अन्तर आत्म इक्क ज्ञाना, एका इष्ट देव वखाया। एका मन्दिर इक्क मकाना, इक्क सिँघासण सोभा पाया। एका शाह इक्क सुल्ताना, एका बैठा जोत जगाया। एका चिल्ला तीर कमाना, एका शस्त्र बस्त्र आप सजाया। एका मारनहारा बाणा, आर पार एका रूप दरसाया। एका बन्न्हे साचा गानां, दरगाह साची सगन मनाया। एका देवे साचा दाना, साची भिच्छया झोली पाया। इक्क सुणाए सच तराना, राग अनादी आपे गाया।

इक्क वखाए आपणा भाणा, हरि भाणे सद समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रचना लए रच, अंदर वड़े हो हो सच्च, साचा वेस वटाया। हरि साचा शाह सुल्तान, एका एक एकंकारया। सचखण्ड झुलाए इक्क निशान, दो जहानां पावे सारया। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, चौदां लोकां दए हुलारया। अवण गवण धुर फ़रमाण, पवण पवणी आप सुणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा सुत कर त्यार, अबिनाशी अचुत पावे सार, सुहाए रुत्त सचखण्ड निवासा दासी दासा, सेवक साची सेव कमा रिहा। साची सेवा हरि हरि मीत, एका एक कमांयदा। शब्द सुणाया साचा गीत, सुत दुलारा वेख वखांयदा। आप चलाई आपणी रीत, आपणा बंस आप सुहांयदा। आपे होए ठांडा सीत, सांतक आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वसे सच दुआर, दूजी दस्से ना कोई धार, तीजे खोल्हे बन्द किवाड़, चौथे पद होए उज्यार, पंचम मेला सच्ची सरकार, छेवें छप्पर ना कोई विचार, सत्तवें सति सति करे साची कार, अठवें अठ्ठां तत्तां कर प्यार, नौवें नौ दर खोल्हे बंक दुआर, दसवें आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा घर साचा हरि साचा वर एका कन्त मनांयदा। एका कन्त गाए ढोला, शब्द अनादी गीत गाईआ। निरगुण आपणा बदला चोला, सरगुण आपणा रूप दरसाईआ। शब्द सरूपी बण विचोला, दोहां एका मेल मिलाईआ। आपे विष्नूं होए गोला, आदि जुगादी सेव कमाईआ। आपे पारब्रह्म ब्रह्म बणया तोला, आपणा कंडा हथ्थ उठाईआ। आप चुकाए आपणा पर्दा ओहला, आप आपणा विच टिकाईआ। आपणे कँवल आपे मौला, आपे अमृत ताल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे अंदर बैठा वड़, बाहर मुख आप खुल्हाईआ। आपे अंदर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर ज़हूर आप अख्वांयदा। आपे पुरख आपे नार, नर नरायण आपणी सेज आप सुहांयदा। आपे जोती करे सच प्यार, वरन गोती ना रूप दरसांयदा। आपे उच्ची चोटी चढ़े आप निरँकार, महल्ल अटल आप सुहांयदा। शब्द सरूपी वर घर पा, घर साचे शब्द जणांयदा। पुरख अबिनाशी एका गा, एका हरि अल्हांयदा। एका वेखे साचा थाँ, थान थनंतर आप सुहांयदा। एका पिता एका माँ, रूप रंग ना कोए वखांयदा। एका विष्नूं लए उपजा, एका कँवल नाभ आप उपांयदा। एका फुल्ल लए खिला, एका ब्रह्मा रूप वटांयदा। एका चार मुख लए बणा, चारे कूटां वेख वखांयदा। एका चारे वेदां दए लिखा, चारे नाउँ आप अल्हांयदा। एका चारे खाणी लए रचा, आप आपणी रचन रचांयदा। एका चारे जुग वण्ड वण्डा, वण्डणहारा दिस ना आंयदा। एका लक्ख चुरासी बणत बणा, पंज तत्त मेल मिलांयदा। एका त्रैगुण माया जोड़ जुड़ा, जागरत जोत विच टिकांयदा। एका अप तेज वाए पृथ्मी अकास रंग रंगा, मन मति मेल मिलांयदा। एका

५७१
०६

नौ दुआरे दए खुल्हा, जगत वासना विच भरांयदा। एका रथ रथवाही रथ ल्ए चला, सृष्ट सबाई आप हिलांयदा। एका आपणा रूप वटा, सुन्न समाधी फोल फुलांयदा। एका धूंआँधार रिहा समा, दिस किसे ना आंयदा। एका शंकर ल्ए उपजा, बाशक तशका गल लटकांयदा। एका त्रसूल हथ्थ उठा, चारों कुंट फेरी पांयदा। एका सृष्ट सबाई वेखे थाउँ थाँ, जो घढ़या भन्न वखांयदा। एका बणे आप मलाह, खेवट खेटा आप अख्वांयदा। एका देवे सिफ्त सलाह, साची सिख्या इक्क समझांयदा। इक्क वखाए साचा नाँ, नाउँ निरँकारा आप जपांयदा। एका मार्ग दए दृढ़ा, दो जहानां आप चलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ल्ए समझा, एका अक्खर आप पढ़ांयदा। निष्अक्खर आपणा रूप दरसा, आप आपणे विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बन्न्हे आपणी धार, आदि जुगादी खेल अपार, करे कराए करनेहार, करता पुरख हो उज्यार, अजूनी रहित विच संसार, निर्भय होए सच्ची सरकार, मूर्त अकाल पावे सार, दीन दयाल आपणा नाउँ धरांयदा। लक्ख चुरासी जंत उपाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ रूप वटाया, जगत आपणा नाउँ धराईआ। सोइम रूप सोहँ हो हो लोकमात फेरा पाया, इक्क दूजे नाल करे कुड़माई, एका शब्द सच्ची धार बंधाया, नेत्र लोचण नैण दिस ना आईआ। घट घट अंदर जोत जगाया, ईश जीव मेल मिलाईआ। जगत जगदीश खेल रचाया, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। रफीक तौफीक दए इक्क खुदाया। आप आपणी रचन रचाईआ। लाशरीक पाए आपणी माया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवे आपणा वर, दूसर संग ना कोए रलाईआ। साचा वर त्रैगुण दात, ब्रह्मा विष्न झोली पांयदा। लक्ख चुरासी बध्धा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ांयदा। आपे बैठा रहे इक्क इकांत, दर घर साचे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलांयदा। साची खेल लोकमात, जुग जुग आप करांयदा। आपे वेखे मार झात, आप आपणा मुख छुपांयदा। लेखा जाणे दिवस रात, घड़ी पल गणत गणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वण्डणहारा साची वण्ड, खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वेख वखांयदा। चारे खाणी कर त्यार, हरि साचा वेख वखांयदा। चारे बाणी भर भण्डार, एका शब्द सुणांयदा। चारे जुग वरते वरतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग मेल मिलांयदा। चारे वेदां कर त्यार, साची भिच्छया झोली पांयदा। चार वरनां एका धार, जुगा जुगन्तर आप चलांयदा। मानस मानुश कर प्यार, मानुख आपणी बूझ बुझांयदा। शब्द अगम्मी हरि गुफतार, अन्तर धार आप अल्हांयदा। साचे सन्त कर त्यार, साची सिख्या इक्क समझांयदा। भगत भगवन्त मीत मुरार, घर साचे मेल मिलांयदा। इक्क वखाए सच दरबार, दरगाह साची आप लगांयदा। सीस रक्ख ताज निरँकार, पंचम मुख

सालांयदा। पंचम दर खोल्ह किवाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आप गिणांयदा। साचा लेखा लिखणहारा, जुग जुग आपणी वण्ड वण्डांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करे पार किनारा, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। तोड़णहारा गढ़ हँकारा, हउमे हंगता रोग मिटांयदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड आप चलांयदा। अष्टभुज हो उज्यारा, शाह अस्वारा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेले खेल अगम्म अपार, एका हुक्म सुणांयदा। बोध अगाध शब्द जैकारा, हरि साचा सच लगांयदा। भगत भगवन्त मीत मुरारा, घर सन्तन मेल मिलांयदा। दूती दुष्ट दर दुरकारा, दर दर मेल ना कोई मिलांयदा। लेखा जाणे आर पार किनारा, मँझधारा फेरी पांयदा। लक्ख चुरासी दए सहारा, आपणा गेड़ा आप दवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग दाता बेपरवाह, त्रेता बणे आप मलाह, द्वापर बन्न्हे देवे ला, कलिजुग अन्तिम तक्के राह, चारों कुंट धूंआँधार साचा चन्द ना कोई चढ़ांयदा। शाह सुल्तान गए हार, राज राजान पान्धी राहीआ। साध सन्त होए ख्वार, हरि का पौड़ा नज़र ना आईआ। पढ़ पढ़ वेद ना सके विचार, पुराण अठारां ना मिल्या साचा माहीआ। शास्त्र सिमरत रहे पुकार, उच्ची कूक देण दुहाईआ। गीता ज्ञान दए उच्चार, अठारां अध्याए दए गवाहीआ। अञ्जील कुरान सर्ब पछताण, मुल्ला शेख़ मुसायक पीर सच मसल्ला हेठ ना कोई विछाईआ। खाणी बाणी ना कोई धार, धरत धवल दए वड्याईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, रसना जिह्वा वाद विवाद वधाईआ। गुरमुख विरले मिल्या हरि निरँकार, कलिजुग अन्तिम बेपरवाहीआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, एका सतिगुर लए मनाईआ। साचे शब्द करे प्यार, पुत्तर धी भैण भाई ना कोई धी जवाईआ। वरन गोत तों वसया बाहर, ज़ात पात ना कोई रखाईआ। इक्क इकांत बोल जैकार, बेऐब परवरदिगार मुकामे हक एका नाअरा रिहा लगाईआ। राम नाम बोल जैकार, करे प्यार जो जन रसना जिह्वा रहे गाईआ। एका नाद शब्द धुन्कार, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण नाम बंसरी इक्क वजाईआ। एका अल्ला हू हू करे पुकार, अन्ना हू ऐनलहक वेख वखाईआ। एका बोले नाम सति धुर दी धार, सति सतिवादी लए उठाईआ। एका गुरू फ़तेह कर प्यार, वाह वाह गुरू दए समझाईआ। सर्ब जीआं दा एकँकार, दूसर वण्ड ना कोई वण्डाईआ। चार जुग करौंदा लोकमात विहार, वरन बरन खेल खलाईआ। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कर उज्यार, घर घर आपणी वण्ड वण्डाईआ। आपे वसया सभ तों बाहर, जगत विद्या जुग फड़ाईआ। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मस्जिद गुरदुआर, घर घर बैठा जोत जगाईआ। काया काअबा खोल्ह किवाड़, चौदां तबकां वेखे बण मलाहीआ। सन्त भगत दए अधार, तन मन्दिर सोभा पाईआ। घर शब्द सच्ची धुन्कार, घर सखीआं मंगल गाईआ।

घर अमृत ठंडा ठार, भर प्याला जाम प्याईआ। घर आत्म सेजा करे शंगार, सोलां कलीआं आप सुहाईआ। सोलां इच्छया भरे भण्डार, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। नारी मेला कन्त भतार, घर साचे वज्जे वधाईआ। मूर्ख मुग्ध ना पावण सार, चारों कूट उच्ची कूक देण दुहाईआ। किसे ना मिल्या सांझा यार, सखी सरवर सुल्तान रहे मनाईआ। डूँग्घी कंदर करे प्यार, मन बन्दर आपणी डोर बंधाईआ। बज़र कपाटी लग्गा तोड़े जंदर, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। उच्चे टिल्ले चढ़ चढ़ थक्के गोरख मछन्दर, गुर पीर देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा खेल अपारा, करे कराए हरि निरँकारा, वरते वरतावे विच संसारा, धरत धवल वेख वखाईआ। धरत धवल हरि वेखण आया, लोकमात जोत रुशनाईआ। चार वरनां हरना फरना खोल्ह्ण आया, दिब नेत्र इक्क दरसाईआ। चौथे पद चढ़ चढ़ मेला मेल मिलावण आया, घर साचे वज्जी वधाईआ। पंचम सखीआं बह बह मंगल गाया, गीत गोबिन्द इक्क अल्हाईआ। कागद कलम कोई लिखण ना पाया, सत्त समुंदर रहे कुरलाईआ। बसुधा आपणा मुख छुपाया, बनास्पत रही नैण शर्माईआ। बिन हरिभगत हरि जू हरि मन्दिर दिस ना आया, नेत्र लोचण नैण दरस ना कोई पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेल निराला, किरपा करे पुरख अकाला, चार वरनां एका सरना एका रंग रंगाईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका नाम शब्द पढ़ाईआ। चार वरनां इक्क ध्यान, सति सतिवादी इक्क सरनाईआ। चार वरनां एका दान, आत्म भिच्छया ब्रह्म वखाईआ। चार वरनां एका काहन, साची सखीआं वेख वखाईआ। चार वरनां एका राम, सीता सुरती ल्ए प्रनाईआ। चार वरनां दस्से एका भान, एका नूर करे रुशनाईआ। चार वरन सुणाए एका गान, धुन आत्मक आप अलाहीआ। चार वरनां देवे एका माण, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ना करे वड्याईआ। चार वरनां करे आप पछाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल श्री भगवन्त, लेखा जाणे आदि अन्त, अन्त आदि आप अख्वाईआ। आदि अन्त भेव अभेदा, पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा। लेखा जाणे चार वेदां, वेद विदातां आप उपांयदा। कलिजुग मेटे अन्धेरी राता, अथर्बण अन्त करांयदा। अल्ला राणी पुच्छे वाता, संग मुहम्मद वेख वखांयदा। लेखा जाणे त्रिलोकी नाथा, आप आपणा रूप वटांयदा। सतिजुग चलाए साची गाथा, सो निष्अक्खर आप पढ़ांयदा। लहिणा देण चुकाए मस्तक माथा, पूर्ब लेखा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मन्त्र पूजा पाठा, एका सरोवर मारे ठाठा, तीन लोक खुल्हाए एका हाटा, अमृत प्याए साचे बाटा, लेखा जाणे जोत लिलाटा, जोती नूर आप जगांयदा। जोती नूर जगावण आया, जागरत जोत हरि रघुराईआ। कलिजुग अन्तिम लेख मिटावण आया, हरि सच्चा शहनशाहीआ। सतिजुग साचा मार्ग आप वखावण

आया, निरगुण बणया आप मलाहीआ। जुग जुग विछड़े सन्त कन्त भगवन्त मेल मिलावण आया, आप आपणे लए जगाईआ। मनमुख गूढ़ी नींद सुआवण आया, माया पर्दा उप्पर पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन हिरदे अंदर जाए वस, एका मार्ग देवे दस्स, आप आपणी बूझ बुझाईआ। साचा मार्ग हरि हरि पन्थ, हरी हरि आपणा आप जणांयदा। लेखा जाणे संख असंख, कोटन कोटि गणत गणांयदा। वेद पुराण पुकारन ग्रन्थ, बिन सतिगुर पार ना कोए करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए फड़, आप आपणी बूझ बुझांयदा। हरिजन हरि हरि बुझिआ, किरपा करी आप भगवान। भेव चुकाए एका दूजया, तीजा नेत्र खोल्ह महान। घर आपणा आपे सूज्झया, तन मन्दिर सच मकान। जो जन चरन कँवल हरि हरि झूजया, मिले वडियाई दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा माण। माण निमाणयां आप हरि, जुग जुग वेख वखांयदा। भगत भगवन्त आए दर, दर दरवेश फेरी पांयदा। करनी करता आपे कर, आपणी करवट आप बदलांयदा। लेखा जाणे नारी नर, बिरध बाल जवान ना रूप धरांयदा। लक्ख चुरासी भाण्डा घड़, घट वस्तू थिर धरांयदा। हरिजन साचे लए फड़, आप आपणा मेल मिलांयदा। सतिगुर पूरा ना सीस ना दिसे धड़, पंज तत्त ना कोई वखांयदा। काया अंदर साचे पौड़े आपे जाए चढ़, औंदा जांदा दिस ना आंयदा। हरिजन चुकाए जगत डर, निर्भय आपणा भय करांयदा। जो जन एका अक्खर जाए पढ़, निष्अक्खर वेख वखांयदा। कलिजुग अग्न ना जाए सड़, त्रैगुण तत्व तत्त बुझांयदा। सच भण्डारा आपणा भर, अतोट अतुट रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, वर दाता आप अख्वांयदा। देवे वर रंगण नाम, रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। लेखा जाणे काया माटी चाम, साचा दाम इक्क बंधाईआ। आप वसाए नगर ग्राम, काया खेड़ा सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे वर, नाम निधाना हरि मेहरवाना एका झोली पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीआ दाता पुरख बिधाता, पुरख परखोतम आप अख्वाईआ।

५ जेठ २०१७ बिक्रमी तेज भान दे घर शेखसर ज़िला जम्मू

सति पुरख निरँजण सति सति धार, सति सतिवादी आप चलांयदा। अगम्म अगम्मड़ी खेल अपार, अगम्म अगम्मड़ी खेल खिलांयदा। अलक्ख अलक्खणा अलक्ख जैकार, अलक्ख अगोचर आप लगांयदा। सचखण्ड निवासी हो त्यार, दर घर साचे बणत बणांयदा। शब्द अनादि सच्ची धुन्कार, थिर घर साचे आप सुणांयदा। सो पुरख निरँजण मीत मुरार, हरि

पुरख निरँजण वेस वटांयदा। एकँकारा निराकार, निरगुण आपणा रूप दरसांयदा। आदि निरँजण वेख पसार, आप आपणा पर्दा लांहयदा। अबिनाशी करता वसे सच सच्चे दरबार, घर महल्ला इक्क सुहांयदा। श्री भगवान सिरजणहार, दरगाह साची वेस वटांयदा। पारब्रह्म प्रभ राज राजान, शाह सुल्तान नाउँ धरांयदा। तख्त ताज वड मेहरवान, दो जहानां आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। सच्ची रचना रच करतार, घर मन्दिर सोभा पाईआ। निरगुण निरगुण कर प्यार, निरगुण आपणे अंग लगाईआ। निरगुण सेजा सुत्ता पैर पसार, निरगुण आपणी लए अंगड़ाईआ। निरगुण खेल अगम्म अपार, निरगुण वेखे बेपरवाहीआ। निरगुण दाता देवणहार, सरगुण भिच्छया रिहा पाईआ। निरगुण वणज करे वापार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची एका घर, सति पुरख निरँजण बैठा वड़, दूसर संग ना कोए रखाईआ। सति पुरख निरँजण सच्चा शहनशाह, शाह शहाना आप अख्वांयदा। तख्त निवासी बैठा डेरा ला, रूप रंग ना कोई जणांयदा। अबिनाशी करता जोत जगा, निरगुण दीवा बाती इक्क टिकांयदा। तख्त ताज आप सुहा, राज जोग आप कमांयदा। दर दरबाणा बैठा सीस झुका, दर दरवेशा आप करांयदा। धुर फ़रमाणा हुक्म सुणा, आपणा मार्ग आपे लांयदा। सो पुरख निरँजण आप जगा, आपणी कल आप वरतांयदा। हरि पुरख निरँजण देवे सच सलाह, साची सिख्या झोली पांयदा। एकँकारा बणाए मलाह, साचा खेवट खेटा भार उठांयदा। आदि निरँजण गणत गिणा, आप आपणी वण्ड वण्डांयदा। श्री भगवान आप वखाए आपणा थाँ, धरत धवल ना कोई जणांयदा। साचा मन्दिर रिहा सुहा, छप्पर छन्न ना कोई उपांयदा। सच सिँघासण ल्या डाह, पावा चूल ना कोई जुड़ांयदा। पुरख अबिनाशी उप्पर बैठा बेपरवाह, आप आपणा तख्त सुहांयदा। निरगुण दाता आप अख्वा, आप आपणी कल वरतांयदा। आपणी इच्छया भिच्छया झोली लए पा, पारब्रह्म साची सेव कमांयदा। साची सेवा करे आप खुदा, नूरो नूर डगमगांयदा। आपणा जल्वा आप वखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे सच बिबाणा, आपे रक्खे साचा राणा, दूसर भेव ना कोई जणांयदा। ना कोई दूसर ना दुआर, दर दरवेश ना कोई अख्वांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, थिर घर आसण लांयदा। जगत जुग जोत जगाए अगम्म अपार, प्रभ साचे सच वड्याईआ। सचखण्ड सोहे बंक दुआर, गगन मंडल ना कोई रुशनाईआ। रवि ससि ना कोई सतार, ब्रह्मा विष्न शिव ना सीस झुकाईआ। करोड़ तेतीसा ना कोई आधार, सुरपति राजा इंद ना मिले साचा माहीआ। गण गंधर्ब ना कोई पुकार, गीत गोबिन्द ना कोई अलाईआ। लक्ख चुरासी ना कोई पसार, त्रैगुण माया ना जड़त जड़ाईआ। पंज तत्त ना कोई अधार, निरगुण सरगुण ना कोए दरसाईआ। जंगल जूह ना

कोई पहाड़, जल थल महीअल नज़र कोई ना आईआ। नौ खण्ड ना कोई अखाड़, सत्त दीप ना वण्ड वण्डाईआ। साध सन्त ना गुर पीर अवतार, सीस छत्र ना कोए झुलाईआ। चौदां विद्या ना कोई विचार, रसना जिह्वा ना कोई पढ़ाईआ। चारे वेद ना कोई लिखार, पुराण अठारां ना कोई गाईआ। अञ्जील कुरान ना कोई विचार, गीता ज्ञान ना कोई दृढ़ाईआ। खाणी बाणी ना कोई पसर पसार, इष्ट देव ना कोई मनाईआ। अष्टभुज ना सिँघ अस्वार, चक्र गदा ना कोई हिलाईआ। चार जुग ना कोई धार, चार कुंट ना कोई वखाईआ। दहि दिशा ना कोई पसार, उतर पूर्ब पच्छिम दक्खण वण्ड ना कोई वण्डाईआ। मन मति बुध ना कोई विचार, नौ दर ना खोज खुजाईआ। दसवें नूर ना कोई उज्यार, सुन्न समाध ना कोई समाईआ। अठसठ तीर्थ ना वहे धार, गंगा गोदावरी ना धार वहाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद मट्ठ ना पावे कोई सार, चार दीवार ना कोई जणाईआ। खेले खेल बाज़ीगर नट विच संसार, हरि निरँकार निरगुण बैठा साचे तख्त आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, निरगुण करे कराए बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआरा हरि हरि वसया, पारब्रह्म हरि करतार। ना कोई रैण अन्धेरी दिसे रुस्सया, ना कोई चन्द होए उज्यार। ना कोई तीर निराला किसे कसया, ना कोई राम रावण मारे मार। ना कोई चार कुंट फिरे नस्सया, ना कोई जोद्धा सूरबीर बली बलकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड सच दुआरे करे खेल अगम्म अपारे, एका खेल सूरा सरबगया। सूरा सरबग सर्ब गुण दाता, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आपे वेखे खेल तमाशा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। आपणा नूर करे प्रकाशा, त्रै त्रै मेला सहिज सुभाईआ। आप बुझाए आपणी प्यासा, अमृत धार आप वहाईआ। आपे पाए साची रासा, सांगोंपांग सेज आप हंढाईआ। आपे पूरी करे आपणी आसा, आप आपणी रचन रचाईआ। आपे लक्ख चुरासी कर कर वासा, निज घर बैठा मुख छुपाईआ। आपे होए दासी दासा, सेवक सेवा आप अख्वाईआ। आपे करे पंचम सच प्रकाशा, देवे मात वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि शब्द ब्रह्मादि, साचा नाद आप वजाईआ। साचा नाद हरि निरँकार, एका आप वजांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, घड़ भाण्डे वेख वखांयदा। अंदर धर नाम भण्डार, आपणी हथ्थीं बन्द करांयदा। जीव जंत ना पावे सार, जुगा जुगन्त सर्ब कुरलांयदा। भगत भगवन्त करे खेल अपार, निरगुण सरगुण बूझ बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता आपणी कल आप वरतांयदा। आदि ब्रह्मा शब्द उपाया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। निरगुण चारे कूटां गाया, चारे मुख आप सलाहीआ। निरगुण वाजा सच वजाया, सच सितार आप हिलाईआ। निरगुण पर्दा दए गंवाया, नूरो नूर कर

रुशनाईआ। निरगुण राजा बण के आया, शाह सुल्तान वड वड्याईआ। निरगुण साजण साज वखाया, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश नाल रलाईआ। निरगुण साचा हुक्म सुणाया, ब्रह्मा विष्न शिव समझाईआ। चार जुग जुग गेड़ वखाया, कोहलू चक्की चक्क फिराईआ। गुर पीर अवतार साची सेवा लाया, जुग जुग साचा हुक्म सुणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग एका मार्ग लाया, मनू मनवन्तर आपणे विच टिकाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे खेल सबाया, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। कलिजुग अग्नी अग्ग तपाया, चारों कुंट आप वखाईआ। आप आपणा रूप लए वटाया, निरगुण निरगुण इक्क खुदाईआ। सालस सालस बण के घर घर फेरा पाया, रूप रेख ना कोई वखाईआ। दर दरवेश नर नरेश हो हो अलक्ख जगाया, आपणी खेल खलाईआ। रुतड़ी रुत्त दए सुहाया, अबिनाशी अचुत वड वड्याईआ। एका दिवस मात धराया, वदी सुदी मुख शर्माईआ। अमावस चन्न ना कोई चढ़ाया, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। पहला मन्दिर हरि सुहाया, सचखण्ड दुआर वज्जी वधाईआ। दूजा जंदर तोड़ तुड़ाया, आपणा पर्दा दए गंवाईआ। तीजा सुत लए उपजाया, हरि शब्दी नाउँ धराईआ। चौथे घर घर बह बह आप सुबाया, चौथा पद दए वखाईआ। पंचम मिल मिल मंगल गाया, एका दूजा दूजा एका रंग समाईआ। पंचम शब्द आप अलाया, पंचम राग रागनी रहे सीस झुकाईआ। पंचम लेखा लेख लिखाया, चार वेद भेव ना राईआ। पंचम घोड़े आप चढ़ाया, साची डोर हथ्थ उठाईआ। पंचम पंच सुल्ताना फेरा पाया, घर पंचम वज्जी वधाईआ। लोकमात हो रुशनाया, पंचम जेठ खुशी मनाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव दर दुआर बैठे सीस झुकाया, गल्ल पल्लू रहे वखाईआ। करोड़ तेतीसा नेत्र नीर वहाया, सुरपति राजा इंद मंगे वर बेपरवाहीआ। पुरख अबिनाशी रिहा समझाया, साचा शब्द इक्क अलाईआ। कलिजुग अन्तिम दए मिटाया, जगत अन्धेर रहे ना राईआ। पुरख अबिनाशी फेरा पाया, निरगुण सरगुण कर रुशनाईआ। बल बावन भेख दए चुकाया, भोले भाओ सर्ब लोकाईआ। रावण गढ़ दए तुड़ाया, राम रामा रूप वटाईआ। कंस हँकारी दए खपाया, कलिजुग ज़ोरू ज़र ना कोई धराईआ। मोर मुक्ट सीस टिकाया, एका हुक्म दए सुणाईआ। जूठ झूठ सुंभ निसुंभ रहिण ना पाया, अष्टभुज आपणी कल वखाईआ। एका चक्र दए फिराया, चक्र सुदर्शन निउँ निउँ सीस झुकाईआ। साची गदा लए उठाया, नौ खण्ड पृथ्मी आपणी उँगल लए टिकाईआ। दो जहानां गेड़ा दए दवाया, दिवस रैण आप भवाया। सूरज चन्न रहे कुरलाया, तत्ती अग्नी रही सर्ब जलाईआ। पंचम जेठी हरि हरि फेरा पाया, पंचम बख्शे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम देवे साचा माणा, हरिजन बख्शे सच ध्याना, आत्म उपजाए ब्रह्म ज्ञाना, मेल मिलाए गुण निधाना, अवगुण ना कोए

जणाईआ। पंचम जेठ हरि का दुआर, हरि साचा सच सुहांयदा। भगतन करे सच प्यार, दर घर साचा वेखे वखांयदा। धन्न सुलक्खणी होई नार, नर हरि एका कन्त मनांयदा। नाता तुटा जगत संसार, विभचार जगत विकार नेड़ ना आंयदा। तन बस्त्र होए सच शृंगार, नेत्र नैणां कज्जल नाम पांयदा। सालू रंगे अपर अपार, लाल गुलाला रंग वखांयदा। कंगन पाए हरि निरँकार, लाल मैहन्दी हथ्थ वखांयदा। साची सखी कर त्यार, घर साचे मेल मिलांयदा। चारे पद होए कहार, चौथे घर आप बहांयदा। पंचम मिल्या पीआ भतार, नार मुटयार आप प्रनांयदा। साची सखीआं मंगलाचार, जगत वेद इक्क सुणांयदा। शब्द अनाद वज्जे धुन्कार, धुनी नाद आप सुणांयदा। गावत गावत गाए आप निरँकार, साचा सोहला आप अलांयदा। ढोला रिहा बोल जैकार, सोहँ बोला आप सुणांयदा। साचा तोला बण संसार, नाम घसवट्टी हथ्थ रखांयदा। आपणी दृष्ट सुहागा देवे डार, कंचन आपणे रंग रंगांयदा। गुरमुखां करे सच प्यार, सच सुहञ्जणी सेज सुहांयदा। इक्क वखाए सच दरबार, जगत नाता तोड़ तुड़ांयदा। जुग जुग जोत जगे अपार, दीवा बाती ना कोई रखांयदा। कमलापाती मीत मुरार, घर मन्दिर आप वखांयदा। चतुर्भुज आपणीआं भुजां रिहा पसार, इष्ट आपणा रूप वटांयदा। लेखा जाणे धुर दरबार, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। पंचम जेठी दिवस विचार, नेत्र नैणी रूप वखांयदा। जुग जुग विछड़े मेले यार, सतिजुग त्रेता द्वापर पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। साची सेवा करे करतार, भगत वछल आपणा नाउँ धरांयदा। फड़ फड़ पाथर जाए तार, सती अहल्या चरन छुहांयदा। राम नाम बली बलकार, गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ांयदा। भीलणी कुलक्खणी करे पार, मुख आपणे भोग लगांयदा। ग़रीब निमाणयां पावे सार, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। बिदर सुदामा दए तार, द्रोपद लज्जया आप रखांयदा। अर्जन रथ चलाए विच संसार, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। पंजे पांडो कर प्यार, पंचम आपणे रंग रंगांयदा। जगत हँकारी कर ख्वार, दर्योधन दुष्ट मुकांयदा। कलिजुग अन्तिम हो उज्यार, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। नानक वजाए निरगुण धार, सति सति सरंगी हथ्थ फड़ांयदा। अर्जन बणया लेख लिखार, बोध अगाध शब्द जणांयदा। गुरू गोबिन्द कर प्यार, पंचम नाता जोड़ जुड़ांयदा। अमृत खण्डा तेज कटार, सीस दस्तार आप सुहांयदा। साचे घोड़े हो अस्वार, साचे मार्ग आप रखांयदा। वेले अन्तिम करे पुकार, प्रभ अबिनाशी राह तकांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपणा मेल मिलांयदा। शब्द सुणाए सच्ची धुन्कार, आप आपणा हुक्म जणांयदा। चौथे जुग खेल अपार, कलिजुग अन्तिम हरि हरि आप करांयदा। प्रगट होवे विच संसार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। सम्बल नगरी धाम न्यार, साढे तिन्न हथ्थ रचन रचांयदा। एका दीपक कर उज्यार, तेल बाती ना कोए पांयदा। शब्द डंका वजाए सर्ब संसार, राउ रंकां आप उठांयदा। पंचम जेठ पावे सार, निरगण सरगुण

मेल मिलांयदा। जगत जलन्दे जाए ठार, पापी गंदे मेट मिटांयदा। आपणे बन्दे करे प्यार, आत्म अन्धे दर दुरकांयदा। चन्द नौ चन्द चढ़े विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठ दिवस अपार। प्रगट होया आप निरँकार, सरगुण रूप विच संसार, संसार सागर वेख वखाईआ। संसार सागर डूँग्घी कंदर, जगत अन्धेरा छाया। लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, मन मनूआ ना किसे बंधाया। घर घर ना तोड़या किसे जंदर, त्रैगुण माया बन्धन पाया। सदा वसेरा डूँग्घी कंदर, ज्ञान दीप ना कोई जगाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए मिलाया। दिवस सुभागा पंचम जेठ, लोकमात वड्याईआ। ग़रीब निमाणे रक्खे साया हेठ, जो जन आए सरनाईआ। लक्ख चुरासी भन्ने कौड़े रीठ, मिट्ठा रस ना कोई वखाईआ। अन्तिम चिड़ीआं चुगया खेत, चारों कुण्ट सृष्टी सृष्ट दए दुहाईआ। माया ममता होए प्रीत, जगत जीव ना सके कोई बचाईआ। हरि हरि मिल्या ना नेतन नेत, नेत्र नैण ना दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन साचा तारया, कर किरपा आप भगवान। लक्ख चुरासी गेड़ निवारया, आवण जावण चुक्की कान। इक्क वसाए सच दवारया, दर घर साचे सच मकान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले चतर सुजान। हरिजन चतुर सुजान, मूर्ख मूढ़े धन्दे लाईआ। जिस जन बख्शे चरन ध्यान, मन शैतान रहिण ना पाईआ। आत्म उपजे इक्क ज्ञान, गीता ज्ञान दए गवाहीआ। मेल मिलाए साचे राम, सीता सुरती राम प्रनाईआ। एका शब्द सुणाए कान, ओअँ सोहँ रूप इक्क दरसाईआ। इक्क वखाए सच निशान, सतिगुर पूरा आप झुलाईआ। एका पाए आपणी आण, राए धर्म ना दए सजाईआ। वेले अन्त करे पछाण, हरिजन साचे आपणी गोद बहाईआ। सतिगुर पूरा सद मेहरवान, ना मरे ना जाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, कलिजुग अन्तिम फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम दिवस पंचम दिहाढ़ा, गुरमुख वेखे साचा लाड़ा, करे प्रकाश बहत्तर नाड़ा, काया मन्दिर सच अखाड़ा, गोपी काहन आप नचाईआ। गोपी काहन हरि हरि मेला, सुरती शब्द मिलांयदा। लेखा जाणे गुरू गुर चेला, चेला गुर रंग समांयदा। आदि जुगादी सज्जण सुहेला, नित नवित आपणा वेस वटांयदा। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, वेद कतेब ना कोई लिखांयदा। कलिजुग अन्तिम अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, निरगुण नूर जोत जगांयदा। आपे वसे धाम नवेला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठ दिवस सुभागा, गुरमुख विरला सोया जागा, जिस जन आप जगांयदा। गुरसिख साचा जागया, जगावणहार आप निरँकार। सच सरनाई एका लागया, नाता तोड़ सर्ब संसार। हँस बणया दर घर साचे कागया, चारों कुंट इक्क उडार। मन सिमरत इक्क वैरगया, भगती भगत

५८०

०६

भरे भण्डार। दुरमति मैल धोवे दागया, मानस जन्म दए संवार। आप चढ़ाए सच जहाजया, बेड़ा पार कराए विच मँझधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लाए पार। पार किनारा दिसे घाट, पत्तन बैठा साचा माहीआ। कलिजुग अन्तिम नेड़े आई वाट, पान्धी भुल्ले जगत राहीआ। बिन हरि कोई ना सोए आत्म सेजा खाट, साची सेज ना कोई हंढाईआ। कलिजुग स्वांगी नटूआ खेल करे नाट, घर घर आपणा डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां वखाए एका हाट, दर दरवाज़ा आप वखाईआ। एका हाट हरि हरि खोल्या, नौ खण्ड पृथ्मी बोल जैकारा। एका अक्खर हरि हरि बोलया, सोहँ शब्द सच जैकारा। ज्ञान कंडे साचे तोलया, तोलणहार आप निरँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे करे प्यारा। हरिजन रसीआ हरि रंग रतड़ा, कंचन रंग समाए। पुरख अबिनाशी ना ठंडा ना तत्तड़ा, सीतल धार रखाए। आपणे दर बैठा आपणे रंग रतड़ा, रंग रंगीला मोहण माधव आप अख्वाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठ वीह सद बिक्रमी सतरा, सच बहारा आप लगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे नारी नारा, बिरध बाल जवाना, एका रूप दरसाईआ।

※ ५ जेठ २०१७ बिक्रमी कर्म चन्द दे घर पिण्ड शेख़सर जम्मू ※

हरिभगत सदा तृप्तासया, तीबर इच्छया पूर कराए। हरिभगत बुझाए प्यासया, अमृत आत्म मेघ बरसाए। हरिभगत लेखा जाणे स्वास सवासया, पवण स्वास लेख कराए। हरिभगत उडाए पृथ्मी अकासया, गगन गगनंतर आप फिराए। हरिभगत मेल मिलावा शाहो शाबासया, दरगाह साची आप मिलाए। हरिभगत निज घर साचे करे वासया, महल्ल अटल इक्क सुहाए। हरिभगत मानस जन्म होए रहिरासया, बारां रासी भेव ना राए। हरिभगत नाता तुटे दस दस मासया, मात गर्भ ना फेरा पाए। हरिभगत आदि जुगादि ना कदे विनासया, अबिनाशी करता दया कमाए। हरिभगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगाए। हरिभगत हरि हरि पाया, एका रंग बसन्त। हरिभगत सर्ब सुखदाया, पुरख अबिनाशी मिल्या कन्त। हरिभगत दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाया, घर सज्जण सोभावन्त। हरिभगत ग़रीब निवाज़ इक्क मिलाया, शब्द जणाए मणीआ मंत। हरिभगत एका अक्खर नाम दृढ़ाया, गढ़ तुट्टा हउमे हंगत। हरिभगत लक्ख चुरासी संगल आप तुड़ाया, मेल मिलावा साचे सन्त। हरिभगत साचा मंगल हरि हरि गाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे आदि अन्त। हरिभगत हरि भेटया, निरगुण रूप निराकार। हरिभगत साचा बेटया, मात पित इक्क करतार।

हरिभगत सेजा साची लेटया, सच सिँघासण अपर अपार। हरिभगत मिल्या खेवट खेटया, इक्क इकल्ला एकँकार। हरिभगत मिठ्ठा होए कौड़ा रीठया, अमृत भरया आप भण्डार। हरिभगत आपणे नेत्र हरि हरि आपे वेख्या, आपणा लोचण सच उग्घाड़। हरिभगत हरि कढ्ढे भरम भुलेखया, घर मन्दिर दीपक जोत कर उज्जार। हरिभगत दर्शन पायण ब्रह्मा विष्न महेष गणेश्या, शिव शंकर करे प्यार। हरिभगत सदा अदेसया, मरे ना जम्मे विच संसार। हरि जोती जोत प्रवेश्या, एका शब्द राग सुणाए सच्ची धुन्कार। हरिभगत मेल मिलाया नर नरेश्या, साचे तख्त सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन देवे नाम भण्डार। हरिभगत सहिज सुखदाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। हरिभगत त्रैगुण माया फंदन तोड़ तुड़ाया, आत्म ब्रह्म करी कुड़माईआ। हरिभगत साचा छन्दन एका गाया, रसना जिह्वा एका गुण वखाईआ। हरिभगत परमानंदन आप समाया, निजानंद निज घर आप चवाया। हरिभगतन झूठा बन्धन आप तुड़ाया, माया ममता कट्टी फाहीआ। हरिभगत एका दर्शन हरि हरि पाया, भगत कबीर दए गवाहीआ। उच्च महल्ले चढ़ चढ़ ढोला गाया, आप आपणा राग सुणाईआ। एका साचा बंक सुहाया, कंचन गढ़ नाउँ धराईआ। पुरख अबिनाशी लड़ बंधाया, ना कोए तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगत वेखे थाउँ थाँईंआ। हरिभगत सच भण्डार, पुरख अबिनाशी आप वरतांयदा। दाता दानी देवणहार, अतोट अतुट आप वखांयदा। जुगा जुगन्तर खेल अपार, लोकमात आप करांयदा। आपणी बाणी कर त्यार, सच सवाणी आप उठांयदा। शब्द हाणी मेल भतार, साचा जोड़ा जोड़ जुड़ांयदा। निरगुण बन्ने आपणी धार, धार धार विच्चों आप कढांयदा। सार शब्द एकँकार, सारंगधर आप आपणी कल वरतांयदा। सरगुण अंदर निरगुण वड़, आप आपणा मुख छुपांयदा। आपणा खोल्ह आप किवाड़, आप आपणी धुन सुणांयदा। आपे अंदर आपे आए बाहर, रूप रंग ना कोए वखांयदा। रसना जिह्वा सेव करे अपार, बत्ती दन्द आप हिलांयदा। गुण अवगुण ना करे कोई विचार, निरगुण सरगुण एका रूप दरसांयदा। भगतन अंदर मीत मुरार, बह बह आसण लांयदा। लेखा जाणे रविदास चम्मयार, काया चमड़ा आप हंढांयदा। बाल्मीक वेख बटवार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पांयदा। अंदर रक्ख सच्ची सितार, सति सतिवादी आप वजांयदा। नानक प्रगट करी विच संसार, एकँकारा आपे गांयदा। साचा सारंगा हो उज्जार, आप आपणी सुर सुणांयदा। लेखा धुर दरबार, धुर दरबारी आप अल्हांयदा। भगतन अंदर कर विचार, डूँघी गार खेल खिलांयदा। भेव ना पाए कोई जीव गंवार, कवण रूप हरि वटांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल सच्ची सरकार, साख्यात आपणी बणत बणांयदा। रूप ना दिसे नर नार, नर नरायण वेख वखांयदा। हरिजन साचे लए उभार, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। पूर्ब कर्म लहिणा कर

विचार, तन बस्त्र गहिणा एका पांयदा। दर्शन नैणां गिरवर गिरधार, घर मन्दिर आप वखांयदा। कर्म कुकर्मा करे विचार, नेहकर्मी आपणा कर्म आप करांयदा। बेड़ी संग लोहा जाए तार, जगत भार नाल उठांयदा। जिस जन करया दरस सच्चा दीदार, दीद आपणी आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा मेहरवान, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा।

* ५ जेठ २०१७ बिक्रमी सरदारा सिँघ दे घर जम्मू *

५८३ घर मन्दिर बंक दुआरड़ा, गृह भीतर आप वसाईआ। घर सज्जण मीत मुरारड़ा, हरि बैठा बेपरवाहीआ। घर करे सच प्यारड़ा, जन साजण मेल मिलाईआ। घर चाढ़े रंग अपारड़ा, रंग मजीठी इक्क रंगाईआ। घर करे हरि श्रंगारड़ा, सोलां श्रंगार आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। गृह मन्दिर हरि हरि सजया, गुरमति सुर गहर गम्भीर। घर मन्दिर ताल वज्जया, वजावणहारा गुणी गहीर। घर गढ़ हँकारी भज्जया, घर पाया अमृत सीर। घर पर्दा आपणा कज्जया, घर मिटे तकदीर तकसीर। घर रक्खणहारा लज्जया, घर लेखा जाणे शाह फ़कीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर चोटी चढ़ अखीर। घर मन्दिर सोहणा सोभावन्त, घर सच्ची महल्ल अटारीआ। घर बैठा श्री भगवन्त, अकल कल कल आपणी धारीआ। घर लेखा आदि अन्त, घर जुग जुग पैज संवारीआ। घर शब्द अनडिठड़ा मंत, घर शब्द सच्ची धुन्कारीआ। घर महिमा हरि बेअन्त, घर रूप अगम्म अपारीआ। घर मेला साचे कन्त, घर मेला शाह सरकारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर बणे आप पुजारीआ। गृह मन्दिर घर घर पाठ, सच पूजा आप करांयदा। घर मन्दिर मारे सरवोर ठाठ, सर अमृत आप वखांयदा। घर नूरो नूर नुरानी जोत लिलाट, घर देवी देवा इष्ट मनांयदा। घर शब्द अनाहद नाद, घर अनहत सेव कमांयदा। घर खेल पुरख समराथ, घर ढोल मृदंग वजांयदा। घर उपजाए साची गाथ, घर बोध अगाध सुणांयदा। घर मेल त्रिलोकी नाथ, घर सखीआं मंगल गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बंक दुआरा इक्क सुहांयदा। घर मन्दिर सोहे बंक, हरि साचा आप सुहांयदा। घर बुझाए एका अंक, एका अक्खर नाम पढ़ांयदा। घर मेटे भरमा शंक, संसा रोग आप चुकांयदा। घर भगत बणाए जिउँ जन जनक, जन जननी लेखे लांयदा। घर मेला वासी पुरी घनक, घनी शाम वेख वखांयदा। घर जोती शब्दी लाए तनक, घर तीमत तुरीआ वेस वटांयदा। घर मृदंग वजाए डंक, डौरू आपणे हथ्थ उठांयदा। घर

लेखा घर साचा अंक, नित नवित वेस धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गृह मन्दिर खोज खुजांयदा। गृह मन्दिर हरि फोलया, ऊँचा बंक दुआर। साचे कंडे आपे तोलया, पुरख अबिनाशी तोलणहार। आपणी धारा आपे बोलया, सोहँ शब्द सच जैकार। गृह मन्दिर कदे ना डोलया, साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार। जन भगतां अंदर आपे मौलया, निरगुण जोत कर उज्यार। अमृत भरे साचा कँवलया, उलटी नाभी दए फुहार। आपे होए कला सोलया, आपे कल कल्की लए अवतार। आपे बदले आपणा चोलया, चोले रंगे गुरमुख मीत मुरार। आप मिटाए पर्दा उहलया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे बंक सच्चा घर बार। घर बार हरि हरि पेख्या, काया गढ़ महल्ल। आपे लिखणहारा लेखया, बैठा नेहचल धाम अटल। आपे लेखा जाणे दस दस्मेशया, आपे भरम भुलेखा पाए वल छल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बंक दुआरा आपे बैठा मल्ल। बंक दुआरा सच सिँघासण, हरि हरि साचा सोभा पाईआ। करे खेल पृथ्मी आकाशण, शाह शाबाशण वड वड्याईआ। हरिजन लेखा जाणे रसन स्वासण, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। निज घर आत्म कर कर वासण, घर मन्दिर दए सुहाईआ। हरिभगत ना होए कदे उदासण, चिंता सोग ना कोई वखाईआ। मानस जन्म करे रहि रासन, अजूनी अजून ना कोई भवाईआ। भगत सुहेला सदा दासी दासण, दिवस रैण पीसण पीस सेव कमाईआ। हरिजन साचे सद बलि बलि जासण, जिस पाया हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गृह मन्दिर घर करे पवित, अमृत रस साचा सिंच, फल फुल्ल फुलवाड़ी आप महिकाईआ।

५८४ ०६

⁕ ५ जेठ २०१७ बिक्रमी मेहर सिँघ दे घर शेख़सर जम्मू ⁕

हरि शब्द सच्चा गुरदेव, एका इष्ट सर्ब दरसाईआ। पुरख अबिनाशी अलक्ख अभेव, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। आदि निरँजण वड देवी देव, शाह सुल्तान बेपरवाहीआ। आपे जाणे आपणी सेव, सेवक सेवा सच वखाईआ। नाम जपाए रसना जेहव, गुणवन्त वड वड्याईआ। कौस्तक मणीआ मस्तक लाए थेव, नूरो नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे अगम्म अथाह, साची सेवा हरि मेहरबान, हरिजन इक्क समझाईआ। रसना जिह्वा गुण निधान, एका एक ध्याईआ। एका इष्ट दो जहान, सृष्ट सबाई आप वखाईआ। एका सखी मिले साचा काहन, एका बंसरी नाम वजाईआ। एका देवे सच ज्ञान, अन्ध अन्धेर इक्क मिटाईआ। एका बख्शे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मात गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका सेवक सेवादार, हरिजन साचे करे प्यार, भगत वछल हरि वड गिरधार,

गिरवर आपणा रूप प्रगटाईआ। काया मन्दिर सच दुआरा, घर सच्चा सोभा पांयदा। करे खेल अपर अपारा, थिर दरबारा आप वसांयदा। उच्ची कूक बोल जैकारा, एका नाअरा आपे लांयदा। सार शब्द कर पसारा, ब्रह्मादि ब्रह्म रचन रचांयदा। आपे बख्शे सुत दुलारा, साची भिच्छया झोली पांयदा। आपे वणज कराए बण वणजारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सेवक होए सेवादारा, सेवक बल आपणा आप रखांयदा। सेवक सेव बल एका धार, बली बलवान आप अख्वांयदा। सचखण्ड निवासी हो त्यार, आप आपणा हुक्म जणांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कर त्यार, आपणी वस्त विच टिकांयदा। सेवा लाए सूरज चन्न सतार, मंडल मंडप आप सुहांयदा। आपे जाणे आपणी कार, करता कादर आप करांयदा। जल बिम्ब हरि कर त्यार, धरत धवल आप टिकांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव इक्क प्यार, चरन दुआर इक्क वखांयदा। त्रैगुण माया दर वरतार, दर दर आपणी वण्ड वण्डांयदा। लक्ख चुरासी खेल न्यार, ख़ालक ख़लक आपणी खेल खिलांयदा। घर मन्दिर साचा कर त्यार, घर घर विच बणत बणांयदा। डूँग्घी कंदर खेल अपार, महल्ल अटल आप सुहांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर आप टिकांयदा। घर मन्दिर हरि रख्या, प्रभ आपणा आप संभाल। आदि जुगादि किसे ना लख्या, दीना बंधप दीन दयाल। बिन हरिभगत ना किसे परखया, लक्ख चुरासी होई बेहाल। सतिगुर बिन गुर मार्ग किसे ना दस्सया, साची चले ना कोई चाल। काल महांकाल चरनां हेठ झस्सया, करे खेल पुरख अकाल। गुरमुख विरले हिरदे अंदर वसया, आप वखाए सच्ची धर्मसाल। निरगुण सरगुण पिच्छे फिरे नस्सया, लेखा जाणे शाह कंगाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे कराए सदा प्रितपाल। प्रितपालक प्रितपालदा, प्रतिबिम्ब वेख वखाए। राह जाणे काल महांकाल दा, दीन दयाल आपणा नाउँ धराए। फाह तोड़े जगत जंजाल दा, जिस जन सिर आपणा हथ्थ टिकाए। आपणा दीपक आपे बालदा, अज्ञान अन्धेरा दए चुकाए। गुरमुखां आपे सुरत संभालदा, आलस निन्दरा दए मिटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाए। घर साचा हरि सुहञ्जणा, हीरे मोती जड़त जड़ाया। घर बैठा आदि निरँजणा, आप आपणा आसण लाया। जिस जन मिले साचा सज्जणा, गृह मन्दिर दए वखाया। जो घड़या सो भज्जणा, थिर कोए रहिण ना पाया। काल नगारा सभ दे सिर ते वज्जणा, जो आया सो चल वखाया। कलिजुग अन्तिम सिँघ शेर दलेर हो हो गज्जणा, गुरमुख साचे लए तराया। आप आपणे चरन दुआर कराए मजना, जूठा झूठा पन्ध मुकाया। गुरमुखां विच बह बह आपे सजणा, आपणी सेव नेहकेव निर्धन हो हो आप कमाया। हरिसंगत तेरा दरस कर कर हरि हरि रज्जणा, आपणी तृप्त आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, हरिजन साचे वेले अन्त लए मिलाया, अन्त मिलावा अन्त काल, काल ग्रास ना कोई चबाईआ। अन्त मिलावा अन्त लए संभाल, करे संभाल सतिगुर पूरा बेपरवाहीआ। अन्त मिलावा आप उठाए आपणे लाल, आप आपणे गले लगाईआ। अन्त लेखा वखाए शाह कंगाल, गुरमुख शाह पातशाह आप जणाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों भाल, माणक मोती निरगुण जोती सुरती सोती आप उठाईआ। लभ्भदे फिरदे कोटन कोटी, सतिगुर पूरा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन्म जन्म दी कढ्ढे वासना खोटी, जिस जन आपणे चरन लगाईआ। गुरमुखां उत्तों वारे आपणी बोटी बोटी, तन अग्नी भेंट चढ़ाईआ। निरगुण होए चढ़या चोटी, उतर कदे ना जाईआ। हथ्थ फड़ाई सोहँ सोटी, चोर यार ठग्ग कोए नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वसाए साचे घर, दर दुआर दुआरका आप खुल्हाईआ। काम धेन अमृत रस, हरी हरि नामा आप समझाईआ। गहर गम्भीर होए वस, सति सरूप दए कराईआ। एका मार्ग साचा दस्स, दर्द दु:ख भय भञ्जण दया कमाईआ। लोकमात कराए साचा जस, अपजस ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। हरी मन्दिर हरि हरि हिरदे वस, हरि की पौड़ी दए चढ़ाईआ। जो जन प्रभ मिलण दी रक्खे आस, कर किरपा मेल मिलाईआ। जन्म जन्म दी बुझे प्यास, तृष्ना तृप्त आप वखाईआ। दर दुआर ना दिसे कोए निरास, निर्धन सरधन एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अमृत मुख चुआईआ। काम धेन निर्मल दुध्ध, हरि अमृत रस चखांयदा। उज्जल करे आपे बुध, बुध बिबेकी रूप वटांयदा। कारज करे घर घर सुध, सत रोग सर्ब चुकांयदा। आपणा भेव खुल्हाए गुज्झ, माया पर्दा आपे लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन लेखा लेख गिणांयदा। काम धेन गृह वसे घर, हरख सोग ना कोई जणाईआ। नीतीवान देवे वर, प्रीती परम पुरख सिखाईआ। काया सीती शब्द ज्ञान, ध्यान निधान विच रखाईआ। सति सरूपी इक्क बिबान, परम पुरख पतिपरमेश्वर पति पतयाला आप वखाईआ। हरी हरि हरि कर पछाण, हरि जू हरि हरि वेख वखाईआ। जिस जन उप्पर होए आप मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नाम दए दृढ़ाईआ। एका नाम निधान निरबाण, मेहरबान आप जणांयदा। अवण गवण पवण करे पछाण, बावन जोती वेख वखांयदा। दीनां अनाथा देवे दान, दर्द भण्डारी दर्द वण्डांयदा। किरपा करे शाह सुल्तान, समरथ आपणी वथ झोली पांयदा। चिंता रोग सोग सर्ब मिट जाण, जो जन रसना सोहँ गांयदा। लेखा दस्से सर्ब जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन छुहाए साचे घर, सिल पाथर काया माटी काची गागर आप तरांयदा। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, एका वणज कराए सच्चा सौदागर, साची वस्त एका हट्ट विकांयदा।

✻ ५ जेठ २०१७ बिक्रमी तेज भान दे घर शेखसर ज़िला जम्मू ✻

सो पुरख निरँजण निरगुण धार, निरवैर आप चलांयदा। हरि पुरख निरँजण अकल कल खेल अपार, आदि जुगादी आप खिलांयदा। एकँकारा रूप अगम्म अपार, अलक्ख अलक्खणा आप वखांयदा। आदि निरँजण हो त्यार, सति सरूपी आप दरसांयदा। श्री भगवान बल आपणा धार, दर घर साचे सोभा पांयदा। अबिनाशी करता ना पुरख ना दिसे नार, आपणा तत्त आप उपांयदा। पारब्रह्म शाहो भूप सच्ची सरकार, शाह शहाना नाउँ वटांयदा। सच दुआरा खोल्ह किवाड़, सचखण्ड आपणा तख्त सुहांयदा। थिर घर मन्दिर पावे सार, घर घर विच आप सुहांयदा। बाढी बण आप निरँकार, साची सेवक सेव कमांयदा। सच सिँघासण कर तिआर, पावा चूल ना कोई रखांयदा। आसण लाए धुर दरबार, दरगाह साची आप विछांयदा। ना कोई दिसे चोबदार, दर दरबान ना कोई सुहांयदा। इक्क इकल्ला हो उज्यार, नौजवान आपणा रूप वटांयदा। आपणी इच्छया आपे कर विचार, आपणी मंगण आप मंगांयदा। आपणी सिख्या देवणहार सच्ची सरकार, साचा हुक्म आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचन आप रचांयदा। सो पुरख निरँजण सुते प्रकाश, परम पुरख आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण शाहो शबाश, ना मरे ना जाईआ। एकँकारा पावे रास, मंडल आपणी रास रचाईआ। आदि निरँजण रक्खे वास, वास निवासा इक्क कराईआ। श्री भगवान दासी दास, दासन दास आप हो जाईआ। अबिनाशी करता खेले खेल पृथ्मी आकाश, आप आपणा रूप वटाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्रकाश, जोती जोत जोत जगाईआ। सचखण्ड दुआरा साचे तख्त निवास, निरगुण बैठा हुक्म चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच महल्ला दए उसार, आप आपणा खेल खिलांयदा। सच महल्ला अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ा आप सुहांयदा। उच्चा टिल्ला कर त्यारा, अछल अछल आसण लांयदा। चारों कुंट ना कोई दीवारा, छप्पर छन्न ना कोई सुहांयदा। एका दीपक कर उज्यारा, निरगुण बाती जोत जगांयदा। शहनशाह शाह बण सिक्दारा, शाह भूप आप अख्वांयदा। आपणे रंग रवे करतारा, दूसर रंग ना कोई रंगांयदा। आपणी इच्छया आपणा कर पसारा, आपे वेख वखांयदा। बेऐब खुदाई परवरदिगारा, जल्वा नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा बैठा वड़, दिस किसे ना आंयदा। सचखण्ड दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा, एका एक रखाईआ। शाहो भूप वड राजन राजा, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। आदि जुगादी साजण साजा, सच रचना आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण सोभावन्त, आपे बैठ श्री भगवन्त, भगवन आपणा रूप दरसाईआ। साचे तख्त सच सुल्तान, हरि साचा आप सुहांयदा। साचा रूप श्री भगवान,

घर साचे आप प्रगटांयदा। घर साचे वेखे साचा काहन, घर साचे रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलांयदा। सचखण्ड दुआरा एकँकारा, कल आपणी आप रखाईआ। निरगुण जोत कर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। आपे बणे भूप सिक्दारा, शहनशाह पातशाह आप अख्वाईआ। आपणी घाड़त घड़े बण सुन्यारा, सच कुठाली आप तपाईआ। आपणी जोत लाए अंग्यारा, अग्नी आपणी आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त शाह नवाब, एका बैठा सोभा पाईआ। सोभावन्त हरि भगवान, तख्त निवासी तख्त बराजया। आप झुलाए सच निशान, खेले खेल ग़रीब निवाज़या। आपणा देवे धुर फ़रमाण, शब्द अगम्मी मारे वाजया। आपे बणे राज राजान, आपे रक्खे आपणी लाजया। आपे जोद्धा सूरबीर बली बलवान, आप संवारे आपणा काजया। आपे वेखे आपणा मार ध्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा होए आप मुहताजया। साचे घर उच्चे मन्दिर चढ़, हरि आपणा आप वेख वखांयदा। आपे अग्गे बैठा खड़, आप आपणा मुख भवांयदा। आपे आपणी विद्या रिहा पढ़, आपे आपणा राग अलांयदा। आपे आपणा घाड़ण घड़, घड़ण भन्नणहार आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म सच संदेश, आप सुणाए नर नरेश, नर नरायण आपणा नाउँ धरांयदा। नर नरायण हरि नाउँ रक्ख, आपणा नूर ल्ए प्रगटाईआ। आपे साख्यात होए प्रतक्ख, दर घर साचे सोभा पाईआ। आपे खेले खेल अलक्खणा अलक्ख, अलक्ख अगोचर वड वड्याईआ। आपे आपणा मार्ग दस्स, साचा राह आप चलाईआ। आपे आपणे अंदर वस, आपणा तत्त आप बुझाईआ। आपे आपणे संग रिहा हस्स, आप आपणी खुशी वखाईआ। आपे गाए आपणा जस, आपणा गुण आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेले खेल, अकल कल धार आप चलाईआ। अकल कल धारा खेल अपारा, हरि साचा सच करांयदा। सचखण्ड निवासा धुर दरबारा, दर दरवाज़ा आप खुलांयदा। साचा राणा बण सिक्दारा, आदल अदली हुक्म कमांयदा। एका घर सोहे दरबारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप गणांयदा। सो पुरख निरँजण हो त्यार, आपणी बणत आप बणाईआ। हरि पुरख निरँजण भर भण्डार, एका वस्त रिहा वखाईआ। एकँकारा बण सुन्यार, साची घाड़त रिहा घड़ाईआ। आदि निरँजण साचा दीपक कर त्यार, एका जोत करे रुशनाईआ। श्री भगवान जड़त जड़ाए अगम्म अपार, आपणा रूप अनूप विच टिकाईआ। पंचम बणे सेवादार, साची सेवा सच वखाईआ। पंचम मुख कर त्यार, पंचम मेला मेल मिलाईआ। श्री भगवान सोहे दरबार, आपणी वस्त आप वखाईआ। पारब्रह्म करे निमस्कार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची घाड़त

५८६
०६

आप घड़ाईआ। सो पुरख निरँजण घाड़त घड़, आपणा आप दरसाया। हरि पुरख निरँजण जड़ती जड़, लाल अमोलक विच टिकाया। एकँकारा हथ्थीं फड़, आप आपणे हथ्थ उठाया। आदि निरँजण अग्गे खड़्, साची देवे सिफ्त सलाहया। अबिनाशी करता सीस लए धर, दरगाह साची सगन मनाया। श्री भगवान देवे वर, वाह वा आपणा शब्द सुणाया। पारब्रह्म सरन सरनाई जाए पड़, दर दरवेशा अलक्ख जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दरगाह साची खेल खलाया। सो पुरख निरँजण खेल अपारा, साची बणत बणाईआ। हरि पुरख निरँजण सेवादारा, घर साची सेव कमाईआ। एकँकारा बण पनिहारा, चाकर चाक आप अख्वाईआ। आदि निरँजण बण कहारा, चारों कुंट रिहा उठाईआ। अबिनाशी करता शाह सिक्दारा, साचा तख्त रिहा सुहाईआ। श्री भगवान कर प्यारा, सीस ताज इक्क टिकाईआ। पारब्रह्म बणे भिखारा, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। साचा ताज सच सुल्तान, पंचम मुख उपांयदा। आपणे सीस रक्ख हरि भगवान, साचा हुक्म सुणांयदा। लोआं पुरीआं इक्क ज्ञान, धुर फ़रमाणा इक्क अल्हांयदा। एका शब्द नौजवान, सुत दुलारा आप उठांयदा। सेवा लाए दो जहान, दो जहानां वाली वेस वटांयदा। चरन दुआरा बख्शे माण, दरगाह साची इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी भिच्छया आप वरतांयदा। साची भिच्छया हरि निरँकार, आपणी बूझ बुझाईआ। पंचम मुख ताज कर त्यार, अबिनाशी करता सीस टिकाईआ। श्री भगवान मीत मुरार, निरगुण साचा मेल मिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ करे विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वड्याईआ। सो पुरख निरँजण सच तख्त बराज, आपणा भेव खुल्हाया। हरि पुरख निरँजण बख्शे राज, दरगाह साची धाम सुहाया। एकँकारा करे काज, करता पुरख आप कराया। आदि निरँजण रक्खे लाज, लाजावन्त बेपरवाहया। श्री भगवान ग़रीब निवाज़, घर साचे सोभा पाया। अबिनाशी करता वेखे इक्क ज़हाज़, इक्क इकल्ला रिहा चलाया। पारब्रह्म प्रभ देवे दाज, साची वस्त झोली पाया। एका शब्द मारे वाज, सार शब्द संग रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाया। सति पुरख निरँजण शब्द सार, आप आपणे विच्चों प्रगटांयदा। अगम्म अगम्मड़ा बोल जैकार, अलक्ख अलक्खणा आप सुणांयदा। तीजे घर आए सचखण्ड दुआर, थिर घर आपणा कुण्डा लांहयदा। चौथे घर कर पसार, आपणी रचना वेख वखांयदा। सुन अगम्मी धूंआँधार, रूप अनूप ना कोए दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तख्त साचा ताज, आपे रचे ग़रीब निवाज़, रच रच आपे वेख वखांयदा। साचा ताज सीस सोहे भगवान, सच्चखण्ड साचे वज्जी वधाईआ। एकँकारा नौजवान, बिरध

बाल ना रूप वटाईआ। जोद्धा सूरबीर बलवान, बल धारी आपणा बल वखाईआ। मात पित ना कोए निशान, पिता पूत ना गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा लेखे लए लगाईआ। आपणा लेखा लिखणहारा, वेद कतेब ना कोए रखांयदा। आपणे नेत्र आपणा आप पेखणहारा, दोए दोए लोचण ना कोए खुल्हांयदा। आपणे तख्त ताज सच्चा शाहो बैठणहारा, जगत रईयत ना कोए बणांयदा। आपणे सीस ताज हरि परखणहारा, परीख्या विच कदे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सीस ताज रक्ख आपणी खेल करे प्रतक्ख, निरगुण विच्चों निरगुण होए वक्ख, आप आपणा रंग वटांयदा। निरगुण अंदरों आया बाहर, शब्दी आपणा नाउँ धराईआ। निरगुण जोत मात करे प्यार, धुन शब्द गोद सुहाईआ। पुरख अकाल करे प्यार, पिता पूत वड वड्याईआ। बन्ने सीस सच्ची दस्तार, साचा ताज नाम टिकाईआ। भरे अतुट आप भण्डार, प्रभ वडा शहनशाहीआ। सुत दुलारा ढह ढह पए चरन दुआर, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वण्ड आप वण्डाईआ। निरगुण आपणी वण्डी वण्ड, वण्डणहार आप अख्वाया। आपणे पल्ले बन्नाई आपे गंढ, आपणा भार आप उठाया। सति शब्द सुणाया एका छन्द, हरि साचे आप अलाया। मेरा रूप तेरा परमानंद, तेरा मेरे विच टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अक्खर आप वखाया। सति शब्द हरि अक्खर वेख्या, आपणा नैण उग्घाड़। ना रूप ना दिसे रेख्या, ना कोई दर दुआर। इक्क इकल्ला वसे सच महल्ला निरगुण जोत शब्द प्रवेशया, आप वजाए आपणी सच सितार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द दए अधार। साचे शब्द सुण साचे लाल, हरि साचा सच समझाईआ। तेरे फल लग्गे डाल्ह, तेरी फुलवाड़ी आप महिकाईआ। तेरा बणे आप दलाल, तेरा वणज इक्क कराईआ। तेरी घालण रिहा घाल, वड वडा शहनशाहीआ। तेरी साची चले चाल, सच्चखण्ड बैठा देवे सच सालाहीआ। सार शब्द करे तेरी प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। तेरा वजदा रहे ताल, पुरख अबिनाशी आप वजाईआ। तेरी उपजाए सच्ची धर्मसाल, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मति रिहा समझाईआ। सुत दुलारा सुण संदेश, आपणी आप लए अंगड़ाईआ। पारब्रह्म सद रहे हमेश, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। तिस पुरख को सदा आदेश, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। साचे सज्जण मैं वसां तेरे देस, तेरा घर मोहे भाईआ। तूं पिता हउँ बालक बाल अल्हड़ वरेस, तेरा भेव ना जाणा राईआ। तेरा सति सरूप रिहा वेख, निरगुण जोत तेरी रुशनाईआ। मेरी कोई ना चले पेश, इक्क इकल्ला बैठा राह तकाईआ। मैं बणया रहां तेरा दरवेश, दर तेरे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, सुत शब्द देवे वर, एका भिच्छया झोली पाईआ। सुत शब्द सुण फ़रमाण, सो पुरख निरँजण आप सुणांयदा। हरि पुरख निरँजण होया आप मेहरवान, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। एकँकारा देवे दान, साची भिच्छया झोली पांयदा। आदि निरँजण हो प्रधान, आप आपणा बल वखांयदा। श्री भगवान बख्शे माण, चरन दुआरा इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वण्ड आप वण्डांयदा। सो पुरख निरँजण खेल अवल्लड़ा, एका एक करांयदा। शब्द फड़ाए साचा पल्लड़ा, दे मति आप समझांयदा। तेरे दर निरगुण आपे खलड़ा, आप आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वण्ड वण्डांयदा। साची वण्ड हरि निरँकार, आपणी आप वण्डाईआ। साचे शब्द कर प्यार, आपणी बूझ आप बुझाईआ। आपणा रूप कर त्यार, अनूप महिमा कथ ना जाईआ। एका हँ पसर पसार, शाहो भूप ल्ए वटाईआ। अपणी इच्छया कर विचार, विश्व आपणा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका दूजा वेख वखाईआ। विश्व रूप विष्नूं रंग, हरि हरि आप रंगाया। आपे माणी आपणी सेज पलँघ, आप आपणा कन्त हंढाया। आपे मंगी आपणी मंग, देवणहार आप अख्वाया। आपे रक्खे साचा संग, सगला साथी नाउँ धराया। आपे जाणे आपणा अगला पन्ध, आपे पिछला रिहा मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, आप आपणा रूप प्रगटाया। आपणा रूप आप प्रगटाए, हरि वडा बेपरवाहीआ। आपणा कँवल आप खलाए, आपे अमृत रिहा भराईआ। आपे नाभी बाहर कढाए, आप आपणा ल्ए महिकाईआ। आपे आपणा गुल खिलाए, आपे पंखड़ी वेख वखाईआ। आपे ब्रह्म नाउँ धराए, पारब्रह्म सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरताईआ। आपे ब्रह्मा वेता पाया मीता, नाभी कँवल फुल्ल खिलाईआ। आपे होए खेवट खेटा, आपणा बेड़ा आप चलाईआ। आपे मात पित होए बेटी बेटा, पिता पूत आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण हरि भगवान, आप उपाए आपणा सच निशान, आपे ल्ए झुलाईआ। आपे विष्न ब्रह्मा कर त्यार, शंकर रूप वटांयदा। आपे वसे धूंआँधार, सुंन अगम्म आप समांयदा। आपे बणया मीत मुरार, आप आपणे अंग लगांयदा। आपे सो पुरख निरँजण होया मेहरवान, साचा दान आपे झोली पांयदा। आपे हँ रूप कर प्रधान, त्रै त्रै मेला मेल मिलांयदा। सोहँ अक्खर इक्क निशान, आपणे सीस ताज टिकांयदा। त्रैगुण माया जगत निशान, निरगुण आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ अक्खर कर त्यार, करे खेल अगम्म अपार, ब्रह्मा विष्न शिव आप पढ़ांयदा। ब्रह्मे लेखा आप जणाया, प्रभ वडा वड वड्याईआ। आपणा शब्द आपणा राग अलाया, आपे

दए समझाईआ। आपणा नेत्र आप खुल्हाया, आपे देवे दरस बेपरवाहीआ। आपणे मार्ग आपे लाया, दे मति रिहा समझाईआ। एका वस्त हथ्थ फड़ाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाँईंआ। विष्नूं वंसी कर त्यारा, आपणा बंस सुहांयदा। साची वस्त भर भण्डारा, साचा हुक्म अल्हांयदा। आदि जुगादि रहे वरतारा, सेवक सेवा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे साचा वर, दूजा दर ना कोए बणांयदा। शंकर मीता कर त्यार, साची सिख्या हरि समझाईआ। अनडीठा देवे शब्द भण्डार, दिवस रैण रिहा जगाईआ। भोले नाथ तन श्रंगार, बाशक तशका गल लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां करे एका मेला, आप बणे गुरू चेला, चेला गुरू आप समझाईआ। तिन्नां देवे इक्क ध्याना, प्रभ वडा वड वड्याईआ। तिन्नां देवे इक्क ज्ञाना, एका करे पढ़ाईआ। तिन्नां देवे इक्क निशाना, एका मार्ग लाईआ। तिन्नां जणाए इक्क तराना, एका ताल वखाईआ। तिन्नां बद्धा एका गाना, एका सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, बोध अगाध आपणे हथ्थ रखाईआ। बोध अगाध शब्द अनादि, हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। ब्रह्मे देवे साची दाद, एका विद्या लए पढ़ाईआ। चारे वेद सुणे फरयाद, ऊँची कूके दए दुहाईआ। वेखणहार ब्रह्म ब्रह्मादि, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। वसणहारा

५६२ आदि जुगादि, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। तिन्हां देवे साची दाद, आपणी वण्ड इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप ५६२

०६ हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साचे भाण्डे आप घड़ाईआ। साचा भाण्डा कर त्यार, प्रभ अबिनाशी ०६

एह समझांयदा। त्रैगुण माया भर भण्डार, साचे घर सुहांयदा। पंचम जोड़ सच्ची सरकार, पंचम मेला मेल मिलांयदा। पंच पंच करे आहार, पंज दस सोभा पांयदा। अठ दस ना कोए धार, धरनी धरत धवल आप सुहांयदा। पुरीआं लोआं दए सहार, रवि ससि आप चमकांयदा। मंडल मंडप हो उज्यार, नूरो नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे एका तत्त, आपे पाए आपणी रत्त, रक्त बूंद ना कोए रखांयदा। रक्त बूंद ना पिता मात, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। हँ ब्रह्म रक्खी साची ज़ात, पुरख अबिनाशी आपणा नाउँ धराईआ। आपे होया कमलापात, जीव जंत नारी नर नरायण आप प्रनाईआ। आप सुणाई आपणी गाथ, आपणा ढोला आपे गाईआ। सर्बकला होया समरथ, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। लक्ख चुरासी भाण्डा पथ्थ, कोलू चक्की चक्क आप चलाईआ। मन मति बुध पाई आपे नथ्थ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच समाईआ। पंच शब्द आपे कर प्रगट, घर घर विच दए टिकाईआ। नौ दुआरे खोल्ह जगत खाट, आसा तृष्ना दए सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे लुकया अंदर बज़र कपाट, आपणा

कुण्डा आपे लाईआ। सो पुरख निरँजण वण्ड वण्डाए, वण्डणहार निरँकारा। जीउ पिण्ड प्रभ आप बणाए, आपे देवे सच सहारा। नौ दुआरे इंड हेठ दबाए, खेले खेल धुर दरबारा। ब्रह्मण्ड आपणी रचन रचाए, रवि ससि कर उज्यारा। उप्पर आपणा आसण लाए, घर बैठ सच्ची सरकारा। दर मन्दिर आपणा गीत अलाए, आपे होए सुनणेहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बूझे आपे पावे आपणी सारा। हँ ब्रह्म प्रभ रचन रचाया, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। नौ दस ग्यारां बीस तीस लक्ख चार वेख वखाया, चुरासी लक्ख आप भवाईआ। चारे बाणी रिहा पढ़ाया, चारे वेद रिहा गाईआ। चारे खाणी विच समाया, जाणी जाण आप अख्वाईआ। धुर दी बाणी शब्द अलाया, जुग जुग लोकमात सुणाईआ। अकथ कहाणी भेव ना आया, कथ सके ना जीव लोकाईआ। कागद कलम ना लिखे छाहया, समुंद सागर रहे कुरलाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करते आपणा पर्दा आपे लाहया, जन भगतां दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ अक्खर कर त्यार, ब्रह्मा विष्न शिव करया पसर पसार, लक्ख चुरासी लए उभार, आपणी अंस आप बणाईआ। बंक पसारा एकँकारा, दूजी कुदरत वेख वखांयदा। तीजे दर खेल न्यारा जोत उज्यारा, इष्ट दृष्ट आप खुलांयदा। चौथे दर मीत मुरारा करे प्यारा, घर साचे सोभा पांयदा। पंचम बोले सच जैकारा एका नाअरा, निरगुण आपणा आप लगांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोए सहारा चार दीवारा, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण ना कोई पुरख ना कोई नारा, ना कोई करे तन शंगारा, वेस अवेसा वेस वटांयदा। अठवें अठ्ठ तत्तां वसे बाहरा खेल न्यारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोए रखांयदा। नौ दुआरे दर ना कोए किवाड़ा, वा ना लग्गे तत्ती हाढ़ा, अग्नी अग्ग ना कोए बणांयदा। दसवें बैठा कर पसारा खेल न्यारा, हँ ब्रह्म आपणा मेल मिलांयदा। सोहँ शब्द सच्ची धुन्कारा, आप वजाए वजावणहारा, तुरीआ नाद आप सुणांयदा। सचखण्ड निवासी हो त्यारा, लोकमात लए अवतारा, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जन भगतां देवे चरन प्यारा, साचा नाम भरे भण्डारा, अतोट अतुट आप वरतांयदा। अनहद शब्द वज्जे नगारा, बज़र कपाटी पर्दा पाड़ा, आत्म सेजा आप सुहांयदा। अमृत देवे ठंडी ठारा, सागर विरोले आप निरँकारा, चौदां लोकां फोल फुलांयदा। गुरसिख ना उडे कागां डारा, हँस बणाए विच संसारा, सोहँ माणक मोती चोग चुगांयदा। प्रगट होया बेऐब परवरदिगारा, सिर रक्ख ताज आप निरँकारा, शाह सुल्ताना करे ख्वारा, राज राजान ना कोए रखांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, आपे रक्खे तिक्खी धारा, चारों कुंट दए हुलारा, नौ खण्ड पृथ्मी आप हिलांयदा। सत्तां दीपां पार किनारा, रवि ससि ना कोए उज्यारा, लोआं पुरीआं धूंआँधारा, आप आपणा बल वखांयदा। ब्रह्मा विष्न रहे पुकारा, अठ्ठे

नेत्र खोल् किवाड़ा, कवण कूटे पारब्रह्म आपणा खेल खिलांयदा। सम्बल नगरी धाम न्यारा, गुर गोबिन्द बणया मात लिखारा, वेद व्यासा करे विचारा, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले साचे पर्बत आपणी जोत जगांयदा। लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त लुट्टी जाए दिन दिहाढ़ा, भेव कोए ना पांयदा। कलिजुग तेरा वेखण आया आप अखाड़ा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग ना मुख वखांयदा। जो घलदा रिहा गुरू पीर अवतारा, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। कलिजुग अन्तिम होए उज्यारा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणे चरनां हेठ दबांयदा। जन भगतां करे सच प्यारा, साची गोद आप बहांयदा। करन आया वणज वणजारा, नाम कंडा हथ्थ उठांयदा। तोलण आया झूठ विभचारा, शौह दरयाए आप रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ अक्खर कर त्यार, लक्ख चुरासी करे पसार, आपे अंदर आपे बाहर, आपे गुप्त आपे ज़ाहर, ब्रह्म पारब्रह्म आप अख्वांयदा। ब्रह्म रूप आप निरँकारा, ईश जीव आप अख्वाईआ। जगत जगदीश खेल न्यारा, सीस ताज आप सुहाईआ। इक्क हदीस सर्ब संसारा, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दयावान, प्रगट होए श्री भगवान, धर्म झुलाए सच निशान, मेट मिटाए जीव शैतान, गुरमुख उठाए चतुर सुजान, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आपणी बूझ बुझाए गुर सतिगुर, धुर मस्तक वेख वखांयदा। हरिजन हरिभगत चरन प्रीती जाए जुड़, मनमुख दर दुरकांयदा। एका शब्द एका ताल एका सुर, रंग रतड़ा साचा माही आप वजांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता चढ़ के आया साचे घोड़, सोलां कलीआं आसण पांयदा। निरगुण निरवैर निराकार रिहा दौड़, दो जहानां पन्ध मुकांयदा। जन्म जन्म दी लग्गी औड़, गुरमुखां आप बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचे वेखण आया, आप आपणी कल कलधार। साचा लेखा लिखण आया, धुरदरगाही हो त्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन हरि हरिजन बहाए इक्क दुआर। इक्क दुआरा सचखण्ड, हरि साचे सच सुहाया। सतिजुग त्रेता द्वापर वण्डदा आया साची वण्ड, धरू प्रहलाद दए गवाहया। लेखा चुकाए जेरज अंड, जो जन सरनाई आया। नंगी होण ना देवे अन्तिम कंड, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। राए धर्म ना देवे दंड, चित्रगुप्त ना लेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मीता इक्क अतीता किसे हथ्थ ना आए गुरदुआर, मन्दिर मसीता, घट घट बैठा आसण लाया। घट घट अंदर हरि जू वड़या, हरि मन्दिर आप सुहाईआ। निरगुण रूप किसे ना फड़या, बाहर लभ्भणी फिरे लोकाईआ। निष्अक्खर आत्म अंदर किसे ना पढ़या, पढ़ पढ़ विद्या जगत होई हलकाईआ। आपणी अग्नी कोए ना सड़या, घर घर लम्बू रहे लगाईआ। आपणे पौड़े कोए ना चढ़या, उच्च महल्ल अटल सुत्ते आसण लाईआ।

आपणा तोड़या ना हँकारी गढ़या, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। गुरसिख विरला सतिगुर पूरे सरन सरनाई पड़या, सतिगुर पूरा ल्ए तराईआ। गुर सतिगुर ना जन्मे ना कदे मरया, मढ़ी गोर ना कदे दबाईआ। जन भगतां दर दुआरे अग्गे खड़या, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। कलिजुग अन्तिम आप आपणा आपे फड़या, सोई सुरती ल्ए उठाईआ। सोहँ अक्खर जिस जन पढ़या, लक्ख चुरासी दए कटाईआ। दरगाह सची जा के वड़या, जिस नेत्र दर्शन पाया शहनशाहीआ। अद्धविचकार कदे ना अड़या, जूनी जून ना कोए भवाईआ। मात गर्भ भाण्डा फेर ना घड़या, दस मास ना कोए तपाईआ। जगत जीवां नाल गुरमुख लड़या, मनमुख मारन ताअने रसना बोल होई हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम जेठ देवण आया सच वधाईआ। पंचम जेठ हरिभगत वडियाई, पंचम मीता हरि हरि पाया। गुर सतिगुर होई शब्द कुड़माई, सुरत सवाणी लड़ बंधाया। चौथे पौड़े दए चढ़ाई, वर पाया बेपरवाहया। रसना गौंणा चाँईं चाईं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम जेठ देवे वर, हरिजन साचे आपणीआं भुजां उठाया। आपणीआं भुजां आपे चुक्क, हरिजन साचे पार उतारदा। गुरसिख ना जाए बूटा सुक्क, सतिगुर पूरा पैज संवारदा। मनमुखां पैंडा जाए ना मुक्क, राए धर्म राह विच वंगारदा। वेले अन्त ना जाए कोई लुक, जो मनमतीआ दर हँकारदा। शौह दरया देवे सुट्ट, कुंभी दु:ख ना कोए नवारदा। हरिभगत लाहा रहे लुट्ट, पाया दरस परवरदिगार दा। नेत्र दरस अमृत आत्म पीता घुट्ट, माणस जन्म पैज संवारदा। आवण जावण जाए छुट्ट, लक्ख चुरासी गेड़ नवारदा। मनमुख दर तों कढ्ढे कुट्ट, अन्तिम पासा आया हारदा। पुरख अबिनाशी किसे कोलों ना मंगे वोट, इक्क इकल्ला आपणी खेल आप खलारदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम जेठ वखाए साचा घर, पंचम मीता तन श्रंगारदा। पंचम तन रंगाया, हरि सज्जण वड मेहरवान। नाम मजीठी इक्क चढ़ाया, उतर ना जाए दो जहान। साची रीती इक्क चलाया, चार वरनां इक्क ज्ञान। ऊँचां नीचां एका धाम बहाया, लेखा जाणे राज राजान। साचा मन्त्र इक्क दृढ़ाया, सोहँ शब्द कर प्रधान। ब्रह्म पारब्रह्म मिलाया, इक्क वखाए चरन ध्यान। साचे साकी साचा जाम प्याया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मात पछाण। हरिजन साचे सज्जणा, तेरा दरस अगम्म अपार। तेरे दर दरवेश हरि हरि बह बह करे मजना, तेरा अमृत ठंडा ठार। तेर पर्दा तेरे कज्जणा, तेरी रक्ख सीस दस्तार। तेरे मक्के करे साचा हज्जणा, हाज़ी बण आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे करे प्यार। सच प्यारा हरि निरँकारा, हरी हरि हरिजन आप करांयदा। दए सहारा चरन दुआरा, नैण न्यारा इक्क खुल्हांयदा। शब्द धुन्कारा अंदर बाहरा, ताल अनाद अनाद वजांयदा। जागरत

जोत कर उज्यारा मेटे अँध्यारा, शाह सवारा दरस दिखांयदा। पवण हुलारा ठंडी ठारा, आत्म धारा आप वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा देवे सच संदेश, तख्त बराजे नर नरेश, विशेष आपणी खेल खिलांयदा। भिन्नी रैनड़ीए उठ जाग, हरि साचा आप जगाईआ। लोकमात लग्गा भाग, नव नव होए रुशनाईआ। गुरमुखां बुझावण आया लग्गी आग, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। दीपक जोत जगाए चिराग़, तेरा अन्धेरा दए मिटाईआ। एका बख़्शे नाम वैराग, काग हँस रूप वटाईआ। त्रैगुण डस्से ना डस्सणी नाग, माया ममता मोह मिटाईआ। हरि हरि मिले कन्त सुहाग, साची रैण वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलाईआ। भिन्नड़ी रैण नेत्र खोल्ह, चारों कुंट वेख वखाया। कवण कूट प्रभ रिहा बोल, शब्द अगम्मी आप अल्हाया। कवण कंडे तोले तोल, कवण तराज़ू हथ्थ उठाया। कवण मृदंग वजाए ढोल, सुत्तयां रिहा जगाया। कवण वस्त सद रक्खे कोल, जन भगतां आप वरताया। लक्ख चुरासी सुत्ती रही अनभोल, वेला गया हथ्थ ना आया। पारब्रह्म प्रभ मारन आया रोल, पर्दा ओहला आप रखाया। मनमुखां कोलों कराए मख़ौल, गुरमुखां मुख अमृत आप चवाया। भिन्नी रैनड़ीए तूं रहिणा सदा अडोल, तेरा नाता संगत आप जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रैण दए सुहाया। भिन्नड़ी रैण चढ़या चाअ, प्रभ अबिनाशी शुकर मनाया। धन्न भाग मेरे जे भैण प्यारी मिल्या गुरसिख भ्रा, मेरी लज्जया लए रखाया। मेरे सिर उप्पर रक्खे ठंडी छाँ, दूती दुष्ट नेड़ कोए ना आया। सतिजुग वखाए साचा राह, चार वरनां नाता जोड़ जुड़ाया। ना कोई खाए सूर गां, रत्ती मुख रत्त ना कोए लगाया। घर घर उडणे अन्तिम काँ, सुंञी रैण दए दुहाया। बिन सतिगुर पूरे कोए ना पकड़े बांह, वेले अन्त ना कोए छुडाया। जुग जुग करदा आया सच न्याँ, रामा कृष्ना रूप वटाया। कलिजुग अन्तिम निथावयां देवे साचा थाँ, ग़रीब निमाणयां गोद बहाया। राज राजानां शाह सुल्तानां देवे ख़ाक मिला, सीस ताज ना कोए टिकाया। साचा शब्दी हुक्म दए चला, दूजी धार ना कोए बंधाया। नौ खण्ड पृथ्मी एका मार्ग लए लगा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भिन्नड़ी रैण वखाए साचा घर, हरिसंगत मेल मिलाया। भिन्नड़ी रैण संगत मेला, पंचम जेठ होई कुड़माईआ। लेखा जाणे गुरू गुर चेला, गोबिन्द दाता बेपरवाहीआ। आदि जुगादी सज्जण सुहेला, सुख सागर रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण दए सालाहीआ। भिन्नी रैनड़ीए तेरा सच्चा रंग, हरिसंगत आप चढ़ाईआ। हरिसंगत मंगे एका मंग, गुर दरस नैण तृप्ताईआ। सतिगुर पूरा दाता वड सरबंग, दोहां मेले साचे थाँईंआ। आप लगाए आपणे अंग, आपणे अंगण दए वड्याईआ। शब्द वजाए इक्क मृदंग, आपे सुत्तयां रिहा जगाईआ। लोआं पुरीआं

५९६ ०६

ब्रह्मण्डां खण्डां आया लँघ, लोकमात जोत करे रुशनाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, साचा ढोला आपे गाईआ। कलिजुग जीव भागां मंद, करवट कोए ना सके बदलाईआ। जिस जन देवे आपणा परमानंद, प्रीआ प्रीतम दए मिलाईआ। जिस रसना तजाया मदिरा मास गंद, भरमां कंध आपे ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नी रैनड़ीए तेरा साचा छन्द, दर घर साचे आपे गाईआ। दर घर साचे गावणा, हरि पातशाह सुल्तान। सति पुरख निरँजण इक्क मनावणा, अबिनाशी करता दो जहान। दूसर सीस ना किसे झुकावणा, अन्तिम मिटे सर्ब निशान। पुरख अकाल एका नज़री आवणा, चार वरनां इक्क ज्ञान। एका इष्ट ध्यान लगावणा, साचा इष्ट श्री भगवान। पत्थर कागज़ किसे ना पार लँघावणा, गा गा थक्के वेद पुराण। अञ्जील कुरानां एह समझावणा, साचा नबी देवे सच्चा इक्क ईमान। अमाम अमामा आप अख्वावणा, आपे मेटे पंज शैतान। दामनगीर दामन आप फड़ावणा, आप सुणाए अल्ला इक्क राम। दर दरवाज़ा इक्क खुल्हावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला साचे घर, पंचम मोह आप चुकावणा। पंचम नाता देवे जोड़, गुर सतिगुर वड वड्याईआ। पंचम नाता देवे तोड़, गुर सतिगुर बेपरवाहीआ। पंचम चाढ़े साचे घोड़, गुर सतिगुर सच्चा शहनशाहीआ। पंचम दर ते देवे होड़, देवणहारा आप सज़ाईआ। पंचम मीता पंच प्यारा एकँकारा धुर दरबारा आपे जाए बौहड़, आप आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम जेठ दिवस सुहावणा, हरिसंगत हरि हरि नाम इक्क ध्यावणा, एका लेखा दए मुकाईआ। एका लेखा पार कराए, बन्दी छोड़ आप अख्वांयदा। एका बेड़े लए चढ़ाए, साचा बेड़ा आप चलांयदा। एका खेड़ा दए वसाए, साचे नगर डेरा लांयदा। जगत झेड़ा दए मिटाए, जो जन सोहँ रसना गांयदा। उलटा गेड़ा आप दवाए, मन मणका आप फिरांयदा। खुल्हा वेहड़ा आप वखाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे एका वर, घर साचा आप सुहांयदा। घर साचे सुख पाया, हउमे रोग निवार। पुरख अबिनाशी इक्क मनाया, नाता तोड़ सर्ब संसार। कन्त सुहागी इक्क हंढाया, धन्न सुलक्खणी सोभावन्ती होई नार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन देवे जीआ दान, दाता दानी दया आप कमाईआ।

✻ ६ जेठ २०१७ बिक्रमी राम चन्द दे घर पिण्ड देवा ज़िला जम्मू ✻

एकँकार अकल कल धार, सो पुरख निरँजण वेस वटांयदा। निरगुण रूप अगम्म अपार, आदि जुगादी खेल खिलांयदा।

सचखण्ड सुहाए बंक दुआर, पुरख अबिनाशी डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। जुगा जुगन्तर हरि भगवान, आपणी रचना आप रचाईआ। निरगुण सरगुण खेल महान, रूप अनूप आप वटाईआ। शब्द अनादी धुर फ़रमाण, लोकमात आप सुणाईआ। लक्ख चुरासी इक्क ज्ञान, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। हरि सन्तां देवे साचा माण, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। इक्क वखाए सच मकान, काया मन्दिर गढ़ बणाईआ। दीपक जोत जगे महान, बिमल रूप आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता वड वड्याईआ। जुग करता हरी हरि भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। लक्ख चुरासी बणाए बणत, ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, आपणा गेड़ा आप दवाईआ। हरिजन उपजाए साचे सन्त, साधन सिद्ध आप तराईआ। आप जपाए आपणा मंत, निअक्खर करे पढ़ाईआ। अजूनी रहित साचा कन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लेखा आप चुकाईआ। जुग जुग लेखा हरि मेहरवान, लक्ख चुरासी आप चुकांयदा। हरिभगतन देवे ब्रह्म ज्ञान, आत्म विद्या आप पढ़ांयदा। साचा देवे शब्द निशान, दर घर साचे आप वखांयदा। सृष्ट सबाई एका पाए आण, एका हुक्म सुणांयदा। शाहो भूप वाली दो जहान, राज राजाना आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जुग त्रेता मात हंढाया, द्वापर आपणी खेल खलाईआ। निरगुण सरगुण वेस वटाया, लोकमात कर रुशनाईआ। भगत वछल हरि नाउँ धराया, आपणा बिरद आप धराईआ। एका नईआ नाम चलाया, हरिजन साचे लए चढ़ाईआ। साचा सईआ बण के आया, राम रामा वड वड्याईआ। एका घनईआ रूप वटाया, मुकंद मनोहर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन साचा मीतड़ा, हरि हरि आप जणांयदा। काया चोली रंगे चीथड़ा, रंग रंगीला आप अख्वांयदा। एका नाम वखाए सच अनडीठड़ा, साची सेवा आप कमांयदा। आपे पतित पापी करे पुनीतड़ा, पतित पापी आप तरांयदा। जुग जुग चलाए आपणी रीतड़ा, सतिगुर साची धार बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम अन्धेरी रात, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। सच वस्त ना किसे पास, जीव जंत रहे कुरलाईआ। त्रैगुण माया बद्धा नात, पंच विकार रिहा कुरलाईआ। साचा संग ना दिसे साथ, सगला संग ना कोई निभाईआ। दिस ना आए त्रिलोकी नाथ, तीन लोक पई दुहाईआ। रसना जिह्वा चुक्कया पूजा पाठ, पढ़ पढ़ अक्खर जगत पढ़ाईआ। कोई ना नुहावे साचा घाट, अठसठ तीर्थ नेत्र नीर रहे वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग करे खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग वेला अन्तिम आया, उच्ची कूके दए

५६८ ०६

दुहाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खलाया, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाया, लोकमात वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दए हिलाया, सत्तां दीपां आप जगाईआ। शाह सुल्तानां देवे ख़ाक मिलाया, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। शाह नवाब कोई रहिण ना पाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग करे खेल अगम्म अपार, एकँकारा आप अख्वाईआ। एक एकँकारा इक्क इकल्ला, दर घर साचे सोभा पांयदा। वेखणहारा जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँग्घी कंदर फोल फुलांयदा। सच संदेश नर नरेश नर नरायण एका घल्ला, शब्दी शब्द आप सुणांयदा। गुरमुख विरले फड़ाए एका पल्ला, हरिजन सोया आप उठांयदा। भगतां अंदर भगती रला, भगवन आपणा दरस दिखांयदा। आप भुलाए कर वल छला, बावन भेख धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेल अपार, करे कराए हरि निरँकार, निरगुण सरगुण दोवें धार, साची धारा आप वखांयदा। साची धार हरि भगवन्त, लोकमात चलाईआ। लेखा जाणे जीव जंत, चारे कुंट वेख वखाईआ। तोड़णहारा गढ़ हउंमे हंगत, जिउँ रामा रावण घाईआ। लेखा जाणे साचे सन्त, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। नार दुहागण वेखे कन्त, जो हरि हरि रहे ध्याईआ। लक्ख चुरासी माया पाए बेअन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे आप उठाईआ। हरिजन साचे सज्जण मीत, ग़रीब निमाणयां गले लगांयदा। जुगां जुगां दी साची रीत, सतिगुर साचा आप निभांयदा। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान ना कोई वखांयदा। आपे करे काया ठंडी सीत, अमृत आत्म मेघ बरसांयदा। करे कराए पतित पुनीत, पतित पावण आपणा नाउँ धरांयदा। मानस जन्म हरिभगत जाए जीत, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। एका गाए गोबिन्द गीत, गीत गोबिन्द आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, करे कराए करनेहारा, दो जहानां आप करांयदा। दो जहाना धुर फ़रमाण, हरि शब्दी शब्द जणांयदा। ब्रह्मा देवे इक्क ज्ञान, एका अक्खर आप पढ़ांयदा। विष्नूं देवे साचा माण, आप आपणे रंग रंगांयदा। शंकर करे दर परवान, दर दरवेश वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम मेटे कूड़ कुड़यारा, नौ नौ दए शब्द हुलारा, सत्त सत्त करे पार किनारा, ब्रह्म मति आप समझांयदा। ब्रह्म मति देवे साचा इष्ट, आत्म दृष्ट आप खुल्हाईआ। लेखा जाणे सर्ब सृष्ट, साख्यात रूप वटाईआ। भेव चुकाए रामा वशिष्ट, रूप अनूप इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, रोग सोग चिंत गंवाईआ। रोग सोग मिटे दुक्ख, जिस जन आपणी दया कमांयदा। लोकमात कराए उज्जल मुख, दरुमत मैल आप धवांयदा। करे कराए हरि रघुराय इक्क उपजाए साचा सुख,

५६६
०६

सांतक सति सति आप वखांयदा। कर दरस नेत्र नैण जगत तृष्ना मिटे भुक्ख, आत्म तृप्त आप वखांयदा। धुर दा लेखा दए लिख, लिख्या लेख ना कोई मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे साचा वर, हरि आपणा नाम दृढ़ांयदा। साचा मन्त्र शब्द ज्ञान, गुरमति सुर आप जणाईआ। जन भगतां बख्शे इक्क ध्यान, लिव अन्तर आप लगाईआ। इक्क सुणाए राग कान, छत्ती राग भेव ना राईआ। नेड़ ना आए पवण मसाण, जिस दर्शन पाया साचे माहीआ। घर करे प्रकाश कोटन भान, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। नाम वखाए साची खाण, घर घर विच आप टिकाईआ। सर्ब जीआं दा जाणी जाण, साचे मन्दिर अंदर बैठा आसण लाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों हरिजन साचे लए पछाण, पूर्ब लहिणा वेख वखाईआ। एका देवे नाम निधान, निज नेत्र आप खुल्हाईआ। चौथे पद कर परवान, परम पुरख मेल मिलाईआ। पंचम वखाए सच निशान, दरगाह साची आप झुलाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, एका बणे सज्जण सुहेला, लेखा जाणे गुरू गुर चेला, गुर चेला रूप वटाईआ। गुर चेला हरि नरायण, निरगुण आपणी धार चलांयदा। गुरमुख वेखे साचे साक सज्जण सैण, जुग विछड़े मेल मिलांयदा। दरस दखाए आपणे नैण, दोए लोचण बन्द करांयदा। लाड़ी मौत ना खाए डैण, राए धर्म नेड़ ना आंयदा। जो जन हरि हरि नाउँ रसना कहिण, लहिण देण सर्ब चुकांयदा। माया ममता ना वहणा झूठे वहण, सच्ची वस्त इक्क फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन लगाए आपणे लड़, एका पल्लू नाम वखांयदा। हरिजन साचे पल्लू फड़या, पुरख अबिनाशी आप फड़ाईआ। साचे पौड़े एका चढ़या, घर मन्दिर पौड़ी लाईआ। सुखमन नाड़ कदे ना अड़या, डूँग्घी भँवरी चरनां हेठ दबाईआ। अमृतसर नुहाए साचे सरया, हँस काग रूप वटाईआ। शब्द अनाहद उप्पर धौल पुरख अबिनाशी आपे धरया, सुर ताल आपणे हथ्थ रखाईआ। बज़र कपाटी तोड़ गड़्या, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। आत्म सेजा हरिजन साचे आपे वड़या, आप आपणा मेल मिलाईआ। गुरमुख गुर गुर आप आपणे जेहा करया, एका रंगन रंग चढ़ाईआ। आवण जावण चुक्के डरया, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए फड़, आप आपणा बन्धन पाईआ। बन्धन पाए नाम डोर, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। बन्न्हणहारा पंजे चोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मेट मिटांयदा। आसा तृष्ना देवे होड़, जगत वासना आप खपांयदा। इक्क प्रीती देवे जोड़, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ांयदा। मन मनूआ ना पाए शोर, दहि दिशा ना उठ उठ धांयदा। मति मतवाली ना करे ज़ोर, ज़ोर आपणा आप वखांयदा। गुरमुख चढ़ाए साचे घोड़, शब्द अश्व आप दौड़ांयदा। आप आपणे संग लए तोर,

६०० ०६

दूसर होर ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगतन एका रंग वखांयदा। भगतन हरि रंग रत्तया, आदि जुगादि समाए। एका देवे साची मत्तया, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाए। आपणा मार्ग आपे दस्सया, नौ दुआरे खोज खुजाए। घर दसवें बह बह हस्सया, पुरख अबिनाशी बेपरवाहे। भगत दुआरे फिरे नस्सया, जुग जुग आपणी पैज रखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे देवे वर, दर घर साचा वड वडियाए। दर घर साचा कुली कक्ख, अलक्ख निरँजण आप सुहांयदा। दरस दखाए हो प्रतक्ख, निरगुण आपणा रूप वटांयदा। करणहारा कक्खों लक्ख, लक्ख करोड़ी ख़ाक मिलांयदा। हरि भगत हरिजन लक्ख चुरासी विच्चों करे वक्ख, आपणी वण्डण आप वण्डांयदा। मेल मिलावा नट्ठ नट्ठ, दूर दुराडा पन्ध चुकांयदा। एका पल्ले बन्ने नाम गठ, साची गठड़ी हथ्थ वखांयदा। कलिजुग अन्तिम गेड़े उलटी लट्ठ, जीव जंत सर्ब कुरलांयदा। बिन पीआ खेड़ा दिसे भट्ठ, सौहरा पेईए ना कोए सुहांयदा। वसणहारा घट घट, घट अन्तर खोज खुजांयदा। हरिजन अमृत आत्म निझर धारा देवे झट्ट, साचा झिरना आप झिरांयदा। आप सुहाए साची खाट, आत्म सेजा आसण लांयदा। बज़र कपाटी पत्थर जाए पाट, जो जन नेत्र दर्शन पांयदा। हरिजन ना विके किसे हाट, चौदां लोकां पन्ध मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, घर मन्दिर इक्क सुहांयदा। घर मन्दिर हरि सच मुनारा, एका एक वखाईआ। आपे वसे एकँकारा, ओंकारा रूप वटाईआ। आपे होए शाह सिक्दारा, शाह सुल्तान बेपरवाहीआ। आपे हुक्मी हुक्म करे वरतारा, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। आपे लेखा जाणे रवि ससि सतारा, मंडल मंडप आप भवाईआ। आपे ज़िमी अस्मानां दए हुलारा, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। आपे ब्रह्मा विष्न शिव करे प्यारा, आपे करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इंद लए उठाईआ। आपे त्रैगुण माया भर भण्डारा, पंचम नाता जोड़ जुड़ाईआ। आपे लक्ख चुरासी कर पसारा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। आपे जुगा जुगन्तर लै अवतारा, हरिजन साचे लए तराईआ। आपे सतिजुग त्रेता द्वापर कीता पार किनारा, कलिजुग अन्तिम वेखे बेपरवाहीआ। आपे वेद पुराणां दए हुलारा, शास्त्र सिमरत आप सुणाईआ। आपे वेद व्यासा बण लिखारा, चार लक्ख हज़ार सतारां सलोक गया गणाईआ। आपे अठारां अध्याए कर पसारा, अर्जन ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। आपे अञ्जील कुरानां लेखा जाणे बेऐब परवरदिगारा, मुकामे हक करे रुशनाईआ। आपे कलमी कलमा पढ़े शाह सवारा, उच्चे टिल्ले कूके दए दुहाईआ। आपे जल्वा नूर कर उज्यारा, नूर नुराना रूप दरसाईआ। आपे मक्का काअबा खोल्ह किवाड़ा, दो दो आबा फेरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी खेल अवल्ला, आप कराए इलाही अल्ला, हक हकीकत वेख वखाईआ। हक

हकीकत लाशरीक, परवरदिगार वेख वखांयदा। आपे मेटणहारा जगत तहरीक, आप आपणा चन्द चढ़ांयदा। आपे लेखा लिखे वड बरीक, तीस बतीस ना कोए गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे गाए आपणी धार, प्रगट हो विच संसार, निरगुण तत्त करे विचार, एका तत्त आप सुहांयदा। निरगुण तत्त नानक नरायण नर पाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। मन्त्र नाम सति दृढ़ाया, चार वरनां करे पढ़ाईआ। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाया, ज़ात पात ना कोए वखाईआ। राउ रंकां राज राजानां आप समझाया, जगत दिसे झूठी शाहीआ। साचा डंका इक्क वजाया, चारे कूटां फेरी पाईआ। गोबिन्द खण्डा इक्क चमकाया, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाईआ। जेरज अंड वेख वखाया, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। चौथा जुग दए दुहाया, चारे कूटां फेरी पाईआ। बिन हरि होए ना कोई सहाया, गुर पीर अवतार देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, प्रगट हो विच संसार, निहकलंकी जामा धार, शब्दी डंक वज्जे संसार, सृष्ट सबाई आप उठाईआ। सृष्ट सबाई जगावणहारा, आदि जुगादि समाया। एका शब्द बोल जैकारा, लोआं पुरीआं वेख वखाया। ब्रह्म पारब्रह्म करे सच प्यारा, ईश जीव मेल मिलाया। घर मन्दिर सोहे इक्क दुआरा, सतिगुर साचा आप सुहाया। मेट मिटाए धूंआँधारा, अन्ध अन्धेरा रहिण ना पाया। जिस जन बुझाए दया कमाए इक्क दुआरा, घर घर विच दए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे पार कराया। पार कराया बण मलाह, बेड़ा लोकमात चलाईआ। सोहँ अक्खर देवे सच सलाह, सतिजुग सच करे कुड़माईआ। कलिजुग कूड़ा मिटे नाँ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सदा सुहेला सिर रक्खे ठंडी छाँ, समरथ पुरख हथ्थ वड्याईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सोहँ हँसा मोती चोग चुगाईआ। निथावयां देवे साचा थाँ, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। दो जहानां करे सच न्याँ, तख्त निवासी बेपरवाहीआ। शाह सुल्ताना देवे ख़ाक मिला, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। दर दर घर घर उडण काँ, सृष्टी दृष्टी काग वांग कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे साची वस्त इक्क वखाईआ। साची वस्त नाम अनमोल, हरिजन साची झोली पांयदा। आदि जुगादी रक्खे कोल, जुग जुग आपणी वण्ड वण्डांयदा। सति सतिवादी साचे कंडे तोल, तोलणहारा आप अख्वांयदा। आपणी धारन आपे बोल, सोहँ अक्खर शब्द पढ़ांयदा। सुरती शब्दी जाए मौल, आप आपणा रूप वटांयदा। उलटा करे नाभ कँवल, अमृत आत्म रस भरांयदा। माण रखाए उप्पर धवल, धर धरनी आप वड्यांअदा। दरस दखाए सुंदर साँवल, रूप अनूप आप प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर आप सुहांयदा। घर मन्दिर हरि सोभिआ, दर घर खेल महान। मिले ज्ञान इक्क

अगाध बोध्या, रसना जिह्वा ना करे ब्यान। गुर का शब्द सदा वड जोधन जोध्या, मरे ना जम्मे दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर देवे धुर फ़रमाण। धुर फ़रमाणा साचा राणा, हरी हरि हरि आप सुणाईआ। कलिजुग वरते हरि हरि भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। भेव ना पाए सुघड़ स्याणा जगत विद्या दए दुहाईआ। गुरमुख विरला कर परवाना, आपणी बूझ आप बुझाईआ। एका बख्शे चरन ध्याना, चात्रिक तृखा दए गंवाईआ। दरस दिखाए बहु बिध नाना, आप आपणी कल वरताईआ। सति सन्तोखी बन्ने गाना, धीरज जत इक्क धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वसाए साचे घर, मन्दिर सोहे श्री भगवन्त, लेखा चुक्के जीव जंत, ज़ात पात ना कोई रखाईआ।

❋ ६ जेठ २०१७ बिक्रमी नानक चन्द प्रेम चन्द भोला राम दे घर
पिण्ड सरदारी ज़िला जम्मू ❋

जोत जगाए जगत जोत, जागरत जोत हरि रघराईआ। जगत भवाए कोटी कोटि, कोटन कोटि रूप वटाईआ। शब्द लगाए साची चोट, सच नगारा आप वजाईआ। इक्क रखाए आपणी ओट, पुरख अबिनाशी वड वड्याईआ। ब्रह्मा विष्न शिव बणाए ओत पोत, ब्रह्मा विष्न शिव लोक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उज्यार इक्क कराईआ। जोत उपजाए हरि रघुराय, आदि अन्त ना कोई जणांयदा। सुते प्रकाश आप कराए, आप आपणा रूप वटांयदा। आपणे मन्दिर आप टिकाए, घर बंक आप सुहांयदा। आपणा खेल आप खिलाए, दूसर संग ना कोई रखांयदा। आपणी सोभा आप जणाए, गुणवन्ता नाउँ धरांयदा। आपणी खेल आप खिलाए, आपणा भेव आप खुल्हांयदा। साची करनी किरत कमाए, करता पुरख नाउँ वड्यांअदा। दरगाह साची डेरा लाए, दर सुहञ्जणा इक्क रखांयदा। सो पुरख निरँजण आपणा पर्दा आपे लाहे, आप आपणा रूप प्रगटांयदा। एकँकारा नाउँ रखाए, निरगुण धारा आप चलांयदा। अबिनाशी करता आपणी गति मित आप जणाए, लेखा लेख ना कोई वखांयदा। श्री भगवान साचे तख्त डेरा लाए, शाह सुल्तान आपणा हुक्म चलांयदा। पारब्रह्म निरगुण नूर कर रुशनाए, जोती जोत डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत जोत उजाला, एका नूर पुरख अकाला, दीन दयाला खेल खिलांयदा। साची जोत हरि कर त्यार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाईआ। एका खोल्ह आप किवाड़, आपे वेखे वेख वखाईआ। आपणे उप्पर आपे होए मोहत निरँकार, निरगुण निरगुण लए प्रनाईआ। निरगुण कन्त निरगुण नार, निरगुण साची सेज सुहाईआ। निरगुण कन्त निरगुण भतार, निरगुण सेवक सेवा

करे अपार, दरगाह साची सेव कमाईआ। निरगुण आप आपणा महल्ल लए उसार, जोती बाती कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती जोत जगाईआ। जोती जोत गई जग, श्री भगवान आप जगांयदा। करे खेल सूरा सरबंग, भेव कोई ना पांयदा। आपणी सरनाई आपे लग्ग, आप आपणा हुक्म मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची जोत कर त्यार, जोती अंदरों आए बाहर, साची धारा आप वहांयदा। साची धारा जोती जोत, पुरख अबिनाशी जोत उपांयदा। आपे खेले खेल अलक्ख निरँजण अनक बार कोटी कोटि, कोटि कोटां वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, खेल खलंता आप हो जांयदा। गोबिन्द गाया हरि हरि गीत, अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। ना मन्दिर वड़या किसे मसीत, गुरदुआर ना चरन टिकाईआ। पुरख अगम्मा एका धाम रिहा डीठ, चारों कुंट वेख वखाईआ। आदि जुगादी ना सोए दे कर पीठ, जो जन ध्यान लगाईआ। सदा सुहेला होए मीत, मीत मुरारा बेपरवाहीआ। थिर घर वसे धाम अतीत, त्रैगुण माया बन्धन पाया। लक्ख चुरासी परखे नीत, गुर गोबिन्द वेखे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा गीत दए समझाईआ। साचा गीत गाया ढोला, पुरख अबिनाशी इक्क मनाया। माछूवाड़ा पाटा चोला, सूलां सथ्थर हेठ विछाया। पंज तत्त माटी रक्खया ओहला, आपणा बोला ना किसे सुहाया। निरगुण अंदर करया तोला, आपणा हट्ट आप चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझाया। गोबिन्द गाए हरि हरि करतार, रसना जेहवा ना कोई हिलाईआ। निर्भय होए कदे ना डरदा, भय आपणा सर्ब वखाईआ। अजूनी रहित कदे ना मरदा, जन्म मरन विच ना आईआ। गुरुआं पीरां साधां सन्तां घाड़ण घड़दा, घड़ण भन्नणहार आप अख्वाईआ। पंज तत्त काया चोले अंदर आपे वड़दा, आप आपणी वस्त टिकाईआ। गोबिन्द इक्क अकाल सयदा एका करदा, दूसर सीस ना किसे झुकाईआ। हउँ सेवक होया तेरा बरदा, तेरी बद्धी ना कोई छुडाईआ। करया खेल नरायण नर दा, नर नरेश सभनी थाँईंआ। तेरा भाणा मैं लोकमात जरदा, मात पित नाता तोड़या साक सज्जण सैण ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। शब्द सुनेहड़ा इक्क भगवान, आपणा आप सुणांयदा। पुरख अबिनाशी धुर फ़रमाण, शब्द अगम्मी आप जणांयदा। गोबिन्द सूरा नौजवान, आप आपणे गल लगांयदा। एथे ओथे वेखे दो जहान, विछड़ कदे ना जांयदा। तेरा तेरे उत्तों कर कुरबान, आप आपणी झोली पांयदा। तेरा झुलाए सच निशान, लोकमात आप वखांयदा। सृष्ट सबाई मन्ने आण, एका हुक्मी हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क सुणाए सच संदेश, पारब्रह्म प्रभ नर नरेश, दिस किसे

ना आंयदा। गोबिन्द गाए गोबिन्द हरि, गोबिन्द गोबिन्द विच समाईआ। गोबिन्द नारी कन्त मिल्या वर, गुर गोबिन्द सेज हंढाईआ। गोबिन्द अग्गे गोबिन्द आपणा आप दित्ता धर, गोबिन्द गोबिन्द झोली पाईआ। गोबिन्द भण्डारा रिहा भर, गोबिन्द गोबिन्द रिहा वरताईआ। आपणी करनी आपे लए कर, आदि अन्त भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा करे कौल इकरार, कीता कौल आप निभाईआ। साचा करया हरि इकरार, कलम लेख ना कोई लिखांयदा। निरगुण निरगुण करे प्यार, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। निरगुण शाह बणे सिक्दार, निरगुण निरगुण हुक्म चलांयदा। निरगुण जोत जगे निरँकार, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। निरगुण भट्ठ करे संसार, निरगुण खेड़ा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। पुरख अबिनाशी भेव खुल्हाया, गोबिन्द गुर समझाईआ। तेरा लहिणा आपणी झोली पाया, सिर आपणे रिहा उठाईआ। तेरा चोला लए बदलाया, एका ढोला आपे गाईआ। तेरा होला लए मनाया, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क वखाईआ। गोबिन्द सुणया हरि हरि गीत, सो पुरख निरँजण आप सुणाया। मानस जन्म जाणा जीत, पंज तत्त तत्त मुकाया। कलिजुग अन्तिम चले चलाए साची रीत, लोकमात फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरे तेरे दए लड़ लगाया। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, शाह पातशाह आप जणांयदा। गोबिन्द तेरा संग निभाउणा, पुरख अबिनाशी मेल मिलांयदा। निरगुण हो हो जामा पाउणा, मात पित ना कोई बणांयदा। तेरे अंदर डेरा लाउणा, तेरी पलँघ सेज सुहांयदा। तेरे मन्दिर बह बह गाउणा, तेरा इष्ट आप मनांयदा। तेरी वेखे ठंडी पौण, सांतक आपणा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा हुक्म आप सुणांयदा। साचा हुक्म सुण गोबिन्द, घर साचे खुशी मनांयदा। जगत मिटौणी सगली चिन्द, चिंत सोग ना कोई रखांयदा। मेल मिलावा गुणी गहिन्द, घर साचे सोभा पांयदा। पुरख अबिनाशी आप उपजाई आपणी बिन्द, दुष्ट दमन लेखे लांयदा। ना कोई कराए हवन कुण्ड, नैणां देवी ना देव जगांयदा। हेम कुण्ड ना होणा सुन्न, नेत्र बन्द ना कोई वखांयदा। तेरे अंदर रक्खे आपणी धुन, आपणा राग आप समझांयदा। तेरी पुकार लए सुण, जगत पुकार तेरे अग्गे रखांयदा। तेरे तेरे विच्चों कढ्ढ चुण, जो तेरी सेव लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच संदेशा इक्क सुणांयदा। सच संदेशा सतिगुर सुणया, लोकमात खुशी मनाईआ। लेखा चुक्या गुण अवगुणया, गुणवन्त ना कोई गुण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेल मिलावा करे कराए सहिज सुभाईआ। आपणी कीती कदे ना भुल्ले, अभुल आप अख्वांयदा। झूठे कंडे कदे ना तुले, साचा तोला तोल तुलांयदा।

त्रैगुण माया विच कदे ना रुले, दरगाह साची सोभा पांयदा। वेखणहारा काया कुले, घर घर आपणी जोत जगांयदा। गोबिन्द बूटा कदे ना हुल्ले, पुरख अबिनाशी फल लगांयदा। भाग लगाए साची कुले, कुलवन्ता आप अख्वांयदा। कलिजुग अन्धेरा एका झुल्ले, लक्ख चुरासी जड़ उखड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कीता कौल पूरा करांयदा। कीता कौला हरि भगवान, आपणी खेल आप खिलाईआ। प्रगट होए वाली दो जहान, निहकलंक नाउँ रखाईआ। तेरा करे इक्क ध्यान, सच ज्ञान आपणे विच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे करया कौल इकरार, खेले खेल अगम्म अपार, भुल्ल ना जाए विच संसार, अभुल गुर आप अख्वाईआ। निहकलंका नाउँ धराया, पुरख अबिनाशी जोत जगाईआ। गोबिन्द साजण मेल मिलाया, थिर घर साचे वज्जी वधाईआ। सच सिँघासण आसण लाया, पुरख अबिनाशी सेज सुहाईआ। सम्बल नगरी नाउँ धराया, जोत अक्गरी इक्क जगाईआ। शब्द अनादी नाद सुणाया, ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाईआ। आदि जुगादी वेस वटाया, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। ब्रह्मा विष्न शिव लए जगाया, तेरी सेवक बख्शे सच सरनाईआ। साचे मन्दिर कर रुशनाया, अज्ञान अन्धेर दए मिटाईआ। तेरा बूटा मातलोक दए लगाया, साढे तिन्न हथ्थ रचन रचाईआ। नौ दर मन्दिर आप खुल्हाया, दर दरवाज़ा बेपरवाहीआ। सत्त रंग निशाना तेरी रत आप रंगाया, गुर अर्जन मेल मिलाईआ। पंचम मुखी ताज तेरे सीस टिकाया, गढ़ी चमकौर भुल्ल ना जाईआ। तेरा डुब्बदा बेड़ा साचा जहाज़ आप तराया, सरसा लेखा रिहा मुकाईआ। आपणा साजण साज प्रभ आपे आया, ना कोई देवे होर सालाहीआ। माझे देस डेरा लाया, नर नरेश इक्क अख्वाईआ। पहली चेत दिवस मनाया, वीह सौ सतारां बिक्रमी नाल रलाईआ। यारां नाल यार बण के आया, गंवारां नाल हो गंवार, बण बण हथ्थ रिहा मिलाईआ। आपणी खिच सच्ची कटार, तेरे म्यानों कढ्ढे बाहर, गुरमुखां हथ्थ फड़ाईआ। आपणा सीस दित्ता अद्धविचकार, जगत जगदीश निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरा वेखे राज जोग सच्चा सिक्दार, नौ खण्ड पृथ्मी तेरी सरन तकाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर ब्रह्मण्ड खण्ड करन निमस्कार, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। तेरा वरते सर्ब वरतार, तेरी सिख्या सच पढ़ाईआ। चार वरन करन प्यार, हरि मेला सहिज सुभाईआ। वरन बरन होण ख्वार, मिले दर ना सच्चा कोए थाँईआ। जो जन पुरख अकाल बोले इक्क जैकार, हँ ब्रह्म लए मिलाईआ। करया कौल सच्चा इकरार, बेकरार पूरा लए कराईआ। भुल्ल ना जाए बण के यार, सथ्थर यार जो रिहा हंढाईआ। मित्र प्यारा करे प्यार, आप आपणा रूप वटाईआ। मुरीद मुर्शद सोहण इक्क दुआर, एका हुजरा रिहा बणाईआ। नौ खण्ड करे ख्वार, कलिजुग मुजरा दए वखाईआ। कूड़ कुड़यारा नच्चे घर घर बाहर, मुख घूंगट लए उठाईआ। तेरे तेरे दुआरे फड़

फड़ देवे तार, तेरा पल्लू आप फड़ाईआ। आपे चढ़ के आए घोड़ अस्वार, नीला नीली धारों पार कराईआ। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, जोती जोड़ा शब्द मिलाईआ। तेरा पौड़ा लग्गे विच संसार, ब्रह्मण गौड़ा रूप वटाईआ। पूत सपूता कर त्यार, शब्द अवधूता रिहा दौड़ाईआ। चारे कूटां दए हुलार, जूठा झूठा ठूठा भन्न वखाईआ। तेरी गंढु पवे संसार, ना कोई खोल्ह खोल्ह खुल्हाईआ। करे वण्डां हरि निरँकार, वण्डणहारा दिस ना आईआ। करया कौल सच्ची सरकार, उप्पर धवल पूर कराईआ। गुरसिख ना भुल्लणा ना होणा मात ख्वार, बिन सतिगुर पार ना कोए कराईआ। चारे खाणी करे पुकार, प्रभ मिलण दा मार्ग रही बताईआ। जिस जन सतिगुर पूरा मिले आण, जप तप ना कोए वखाईआ। एका अक्खर पढ़े हरि मेहरवान, सोहँ शब्द सच्ची कुड़माईआ। सखीआं मिल्या साचा काहन, घर घर बंसरी नाम वजाईआ। जगत बनबास कट्टया जिउँ सीता राम, सीता सुरती बण बण खोजण कदे ना जाईआ। घर मिल्या घनईया शाम, अन्धेरी शाम दए मिटाईआ। घर नानक कर प्रनाम, घर गोबिन्द फ़तह गजाईआ। घर देवणहारा माण, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। गोबिन्द तेरे लए पछाण, आदि अन्त भुल्ल ना जाईआ। अन्तिम देवे दरगाह साची माण, सचखण्ड दुआरा आप खुल्हाईआ। जो जन चरनी डिगा आण, लक्ख चुरासी दए कटाईआ। एका देवे ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म मेल मिलाईआ। झुलदा रहे सच निशान, हरि साचा आप झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा कौल कर, पूरे करे अन्तिम वर, भरम भुलेखा दए कढ्ढाईआ। भरम भुलेखा हरिजन चुक्कणा, मिटे रैण अँध्यार। कलिजुग झूठा पन्ध अन्तिम मुक्कणा, सतिजुग सच होए उज्यार। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, गुर गोबिन्द करे प्यार। गुरमुख बूटा कदे ना सुक्कणा, पुरख अबिनाशी अमृत सिंचे ठंडा ठार। मनमुख जीव अंदर वड़ किसे ना लुकणा, अन्त जम डण्ड खाए मार। धर्म राए कुंभी नर्क फड़ फड़ सुट्टणा, जून अजूनी फिराए वारो वार। गुरसिख उच्ची कूक लोकमात विच बुक्कणा, नाल मिल्या सिँघ शेर सच्ची सरकार। आपणा भार गुरसिख किसे ना चुक्कणा, पुरख अबिनाशी चुक्कणहार। दो जहानां पैंडा मुकणा, पान्धी पन्ध ना करे दूजी वार। चरन दुआरे जिस जन झुकणा, लक्ख चुरासी ना होए ख्वार। गुरमुख बाल अंजाणा आपणी गोदी आपे चुकणा, शब्द पंघूड़ा दए हुलार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे करे प्यार। हरिजन तेरा सच प्यार, सतिगुर साचा भुल्ल ना जाईआ। जुग जुग बणया रिहा भिखार, जन भगत दुआरे मंगण आईआ। आवे जावे आपणी वार, वार थित ना कोए रखाईआ। निरगुण सरगुण लए अवतार, नित नवित वेस वटाईआ। ग़रीब निमाणे आप बणाए आपणे गल दा हार, लाल अनमुल्लड़े आपणे गले लटकाईआ। हँकारीआं गढ़ तोड़े विच संसार, दूती दुष्ट आप खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख गुरसिख बन्दीख़ानिउँ लए छुडाईआ। बन्दीख़ाना तोड़ण आया, हरि सूरा वड बलवान। चरन प्रीती जोड़ण आया, देवणहारा धुर फ़रमाण। धर्म दुआरा दर ते होड़ण आया, सचखण्ड दुआरा कर प्रधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे इक्क ज्ञान। इक्क ज्ञान हरि निरँकार, चरन कँवल दरसाईआ। एका नेत्र दरस भगवान, जगत तृष्ना दए मिटाईआ। एका राग सुणाए अनहद कान, धुन आत्मक आप अलाईआ। एका जोत करे प्रकाश कोटन भान, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। एका दर करे परवान, जो जन आए सरनाईआ। कलिजुग जीव अन्त पछताण, लेखा सके ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे आपणा वर, आपे वेखे आपणे घर, घर आपणे पूर कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिरध बाल ना कोए जवान, रूप रंग ना दिसे विच जहान, जोती जोत जगे महान, शब्द नाद धुन आप वजाईआ।

❊ ६ जेठ २०१७ बिक्रमी पूरन चन्द दे घर पिण्ड मलक ज़िला जम्मू ❊

६०८ अमृत सरोवर सतिगुर पास, जुग जुग आप वरतांयदा। जन भगतां बुझाए लग्गी प्यास, आसा तृष्ना पूर करांयदा। ६०८

०६ निज घर अंदर कर कर वास, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा अमृत ०६

आप रखांयदा। साचा अमृत शेख़सर, हरि साचे सच उपजाया। तेजभान अंदर धर, चारों कुंट जीवां जंतां आप प्याया। मनमुख डरदे सरोवर अंदर ना सकण वड़, दूर दुराडे देण दुहाया। सन्त सुहेले लाए आपणे लड़, गुर चेले वेख वखाया। भाण्डा तोड़ हँकारी गढ़, अमृत आत्म जाम प्याया। साचा राजा शाह पातशाह प्रभ आए घर, घर साची सेज हंढाया। सच सिँघासण चरन धर, धुर दा लेखा दए मुकाया। पावे सार नारी नर, नर नरायण रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ताल इक्क वखाया। साचा ताल अमृत धार, हरिजन निझर आप झिराईआ। काया मन्दिर अंदर कर त्यार, दर दुआरा बन्द वखाईआ। जिस जन खोल्हे आप किवाड़, सो जन वेखण पाईआ। शेख़सर वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, सतिगुर पूरा सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुरमुखां जोत जगाए बहत्तर नाड़, दिवस रैण करे रुशनाईआ। आपणा घड़या साचा घाड़, घड़ण भन्नणहार वड वड्याईआ। फड़ फड़ बाहों आपणे ताल देवे वाड़, काग हँस रूप बणाईआ। लेखा चुक्के वसेरा जंगल जूह उजाड़ पहाड़, दरगाह साची धाम सुहाईआ। साचा राजा वेखे सच अखाड़, तख़्त सुल्तान बैठा जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर सरोवर कर त्यार, डुब्बदे पाथर जाए तार, जिस

जन आपणा दरस दिखाईआ। गुरसिख नुहाया साचे ताल, सर सरोवर आप उपांयदा। नाता तोड़ काल महांकाल, दीन दयाल आपणा मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी तुट्टे जगत जंजाल, राए धर्म नेड़ ना आंयदा। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, साचा मन्दिर आप बणांयदा। काया घर साचा दीपक बाल, घर घर विच वेख वखांयदा। फल लगाए साचे डाल, अमृत मेवा मुख खवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका साचा सर वखांयदा। साचा सर सच्ची सरकार, घर साचे आप जणाईआ। नौ दुआरे कराए पार, आपणे मार्ग आपे लाईआ। सुखमन नाड़ी टेढी बंक गुरसिखां हेठां दए लताड़, आपणा पल्लू आप फड़ाईआ। त्रबैणी नैणी दए आधार, ईड़ा पिंगल वेख वखाईआ। साचे सरोवर देवे वाड़, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। अग्गे खड़ करे प्रितपाल, वड दाता बेपरवाहीआ। सुरत सवाणी बन्ने आपणे नाल, शब्द डोरी एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शेख़सर दए वड्याईआ। शेख़सर हरि का रूप, शेख़ी किसे दी रहिण ना पाईआ। हरि का डंका वज्जणा चारे कूट, बारां बारां कोस होए रुशनाईआ। जीवां जंतां नाता तुटे जूठ झूठ, रसना जिह्वा हरि हरि गुण हरि हरि सारे गाईआ। रहिण ना पाए ख़बीस डायण जिन्न भूत, जादूगर करतूत ना कोए वखाईआ। शब्द डोरी बन्ने कच्चे सूत, साचा तन्द ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द डण्डा हथ्थ उठाईआ। जिन्न प्रेत भूत तुटे नाता, गुरमुखां आप तुड़ांयदा। मनमुख जीव होए नार कमज़ाता, साचा कन्त ना कोए हंढांयदा। मिटे ना रैण अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची डायण इक्क समझांयदा। साची डायण मनमति, जीवां जंतां रही सताईआ। गुरमुख विरला जाणे ब्रह्म मति, पारब्रह्म जिस विद्या इक्क पढ़ाईआ। सतिगुर पूरा चरन कँवल बंधाए साचा नत, शब्द खण्डा हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अथाहीआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, जुगा जुगन्तर आप करांयदा। सन्त सुहेले जाए तार, गुरमुख साचा मेल मिलांयदा। भगतां करे इक्क प्यार, नाम भगती सच दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। जन्म जन्म दा पूर्ब पाप, जीवां जंतां रिहा सताईआ। जिस जन लग्गयां खंग ताप, एका भुल्लया हरि रघुराईआ। जो जन रसना जपे सोहँ जाप, तीनों ताप दए मिटाईआ। इक्क वखाए साचा हाट, सतिगुर पूरा नज़री आईआ। गुरमुख गुरमुख गुरमुख ना सोए किसे खाट, हेठां सथ्थर ना कोए विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, दु:ख दलिद्र दए मिटाईआ। खंग ताप जाए मुक्क, जिस हरि हरि दर्शन पाया। काया मन्दिर विच्चों जड़ देवे पुट्ट, सोहँ तिख़ी मुखी आप लगाया। अमृत जाम प्याए घुट्ट,

सांतक सति आप कराया। मनमुखां भाग जाण निखुट, जो बैठे मुख भवाया। कलिजुग अन्तिम पैणी लुट्ट, हरि का रूप बण के हरि हरि आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां कट्टे हउमे रोग, शब्द कराए सच संजोग आत्म सेजा भोगे भोग, जगत विजोग ना कोए रखाया। खंघ ताप करे पुकार, जिस दर हरि हरि चरन टिकांयदा। गुर का शब्द मारे मार, साचा खण्डा हथ्थ चमकांयदा। उच्ची रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बल आप धरांयदा। आपणा बल आपे रक्ख, आपणी दृष्टी आपे पाईआ। आपे काया विच्चों खंग ताप करे वक्ख, किशना सुखला पख वेख वखाईआ। गुरमुखां रच्छया करे नस्स नस्स, आत्म भिच्छया एका झोली पाईआ। साचा मार्ग जाए दस्स, सोहँ साचा शब्द पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ।

हिन्द चीन ना जुड़े जोड़, जोड़ी जोड़ ना कोए जुड़ांयदा। पुरख अबिनाशी चढ़या साचे घोड़, लोकमात फेरा पांयदा। लोआं पुरीआं रिहा दौड़, सत्तां दीपां नौवां खण्डां वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी फल वेखे मिट्ठा कौड़, कौड़ा रीठा भन्न वखांयदा। दोहां दवारिअउँ देवे होड़, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचांयदा। पंजाबी सूबा झूठी मंग, लोकमात रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी नौ खण्ड पृथ्मी रंगे एका रंग, शब्द रंगण इक्क चढ़ाईआ। ग्रन्थी पन्थी होए नंग, हरि का रूप दिस ना आईआ। हरि मन्दिर हरि का पौड़ा ना गए लँघ, साचे सरोवर तारीआं कोए ना लाईआ। माया राणी सिर चुक्की पंड, ना सके सिर कोई भार उठाईआ। पुरख अबिनाशी करे खेल विच ब्रह्मण्ड, जीवां जंतां एका रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लिखणहार करतारा, जीव जंत की करे विचारा, मति बुध ना पाए सारा, मन मनूआ दए दुहाईआ। मनूआ कूके जगत प्यार, साची धार ना कोए वखांयदा। मति मतवाली होए ख्वार, साचा मार्ग दिस ना आंयदा। बुध बिबेकी गई हार, कलिजुग आपणा बल धरांयदा। बिन हरि शब्द ना उतरे कोई पार, खण्डा कटार जीव जहान सर्ब चमकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस धरांयदा। वेखणहारा पाक हिन्द, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जीव जंत की करन चिन्द, जगत चिन्दया हथ्थ किछ ना आईआ। मुस्लिम हिन्दू प्रभ की बिन्द, सर्ब जीआं दा इक्क गोसाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आर पार खेले खेल दो दो धार, आपणी धार आप बंधाईआ। हिन्द पाक ना कोए नाता, साचा मेल ना कोए मिलाईआ। उन्नी उनीसा छुट्टे साथा, सगला संग ना कोए वखाईआ। पुरख

अबिनाशी बणाए एका जमाता, वाहदो लाशरीक इक्क खुदाईआ। परवरदिगार लहिणा देणा वेखे मस्तक माथा, जल्वा नूर नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी बिध आपणे हथ्थ रखाईआ। साची बिध हरि करतार, जगत स्यासत भेव ना आंयदा। जुगा जुगन्तर खेल महान, अबिनाशी करता आप करांयदा। तख्तों लाहे राज राजान, ग़रीब निमाणयां दया कमांयदा। हरिजन साचे कर पछाण, आप आपणा मेल मिलांयदा। एका देवे शब्द निधान, निज आत्म आप वसांयदा। घर राग सुणाए सच्ची धुनकान, अनहद आपणा ताल वजांयदा। तुरीआ राग कर परवान, तूरत तूरत विच रखांयदा। सतिगुर पूरा वड मेहरवान, हरिजन साचे वेख वखांयदा। सखीआं मिले साचा काहन, घर आत्म सेज हंढांयदा। सुरती सीता मिले साचा राम, शब्दी मेला मेल मिलांयदा। हिन्द पाक ना कोए निशान, गुरसिख दोहां दर दुरकांयदा। गुरसिख पार कराए चौदां लोक चौदां हट्ट इक्क वखाए सच मकान, सच्चखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। जिस जन देवे धुर फ़रमाण, रसना जिह्वा ना कोए हिलांयदा। सार शब्द शब्द करे प्रधान, धार धार विच टिकांयदा। अंदर बाहर खेल अपार, गुप्त ज़ाहर रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे धाम सुहांयदा। धाम सुहञ्जणा हरि भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। हरिजन वेखे साचा सन्त, जिस मिल्या साचा माहीआ। लोकमात बणाई बणत, नारी कन्त इक्क हंढाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छंत, वाह वा सतिगुर वड वड्याईआ। खेले खेल आदि जुगादि जुगा जुगन्त, जुग करता आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल पुरख अबिनाशन, आप बराजे सच सिँघासण, साचे मंडल पावे रासण, सूरज चन्न ना कोए चमकाईआ।

६११ ०६

सतिगुर सदा सालाहीए, अन्त ना पारावार। गुर गुर सदा वडियाईए, लोकमात लए अवतार। भगत भगत सदा रसना गाईए, खेले खेल अपर अपार। सन्त साजण वेख वखाईए, नाम जपे अगम्म अपार। गुरमुख एका रंग रंगाईए, रंग मजीठी विच संसार। गुरसिख बलि बलि सद जाईए, जिस मिल्या हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा धुर दरबार। धुर दरबार सुहंदड़ा, पारब्रह्म हरि करतार। जुगा जुगन्तर वेस वटंदड़ा, लोकमात लए अवतार। फुल फुलवाड़ी आप लगंदड़ा, माली बणे सिरजणहार। गुरसिख साची कली आप खलंदड़ा, अठ्ठे पंखड़ीआं कर उज्यार। नाम तागा बन्ह उठंदड़ा, आप आपणी किरपा धार। सोई सुरती वेख वखंदड़ा, वेखणहारा निराकार। फड़

फड़ कली इक्क गुदन्दड़ा, सच बणाए सच्चा हार। सतिगुर पूरे भेट चढ़ंदड़ा, गुर सतिगुर करे प्यार। आपणे नेत्र आपे वेख वखंदड़ा, तीजा नेत्र खोल्ह किवाड़। चौथे घर आप सुहंदड़ा, चौथा घर सच्चा दरबार। पंचम मेला आप मिलंदड़ा, पंचम शब्द सच्ची धुन्कार। पंचम सखीआं राग सुनंदड़ा, गीत गोबिन्द आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करे सच शंगार। सच शंगार हरि फूलण माला, कँवल नैण आप मटकाईआ। गुरमुखां बणे लोकमात दलाला, शब्दी आपणा नाउँ धराईआ। काया मन्दिर अंदर वखाए सच्ची धर्मसाला, हरि मन्दिर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। साची फूलण नाम क्यारी, हरि साचा आप लगांयदा। गुरसिख तेरी काया खारी, आपे भर वखांयदा। आपे तोड़े वारो वारी, आपणी सेवा आप कमांयदा। कीमत कोए ना पाए लक्ख हज़ारी, करता कीमत आप चुकांयदा। जुगा जुगन्तर वेख वखाए सच फलवाड़ी, लोकमात फेरा पांयदा। ब्रह्मे विष्न शिव तेरी पक्की हाढ़ी, त्रैगुण तेरा फल पकांयदा। पंज तत्त तेरी आई वारी, प्रभ साचा वड वखांयदा। करे खेल सिरजणहारी, दूसर संग ना कोए रलांयदा। गुरमुखां उत्तों आप आपणा रिहा वारी, सीस धड़ ना कोई बणांयदा। हरिभगत सुरती ना रहे कुँआरी, सतिगुर पूरा आप प्रनांयदा। तन सोलां करे शंगारी, इच्छया भिच्छया विच टिकांयदा। दिवस रैण फिरे पिच्छे अगाड़ी, पर्दा ओहला ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका फल रिहा फुल्ल, साचे कंडे जाए तुल, तोलणहारा इक्क अख्वांयदा। एका तोला तोलणहारा, दूजा संग ना कोई रखांयदा। तीजी धारन बोलणहारा, चौथे पद आप समांयदा। पंचम दर घर खोल्हणहारा, छेवें छप्पर छन्न ना कोई बणांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण आदि अन्त कदे ना डोलणहारा, ना डोले ना कोई डुलांयदा। अठ्ठां तत्तां वसे बाहरा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोई वखांयदा। लक्ख चुरासी नौ दुआर खोल्ह किवाड़ा, जगत वासना विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सर सरोवर भरे ताल, लग्गी प्रीती निभे नाल, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ांयदा। ताल लगाया किरपा धार, जीव जंत भेव ना राईआ। गुरमुख भाल उठाया विच संसार, संसार सागर आप तराईआ। घर दीपक जोती दीआ दित्ता बाल, तेल बाती ना कोई रखाईआ। शब्द अनादि धुन वज्जे साचा ताल, तार सितार ना कोई हिलाईआ। तेज भान भान हरि कर प्यार, जीआं दान झोली पाईआ। जो जन चरन धूढ़ करे इशनान, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, दरस वखाए अंदर वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, आपणे पौड़े आपे जाए चढ़, उच्च महल्ल अटल मुनार, आपे खोल्हे बन्द किवाड़, आपणी ताकी आप वखाईआ। आपणी ताकी

६१३ ०६

आपे खोल्ह, सतिगुर पूरा दया कमांयदा। शब्द अगम्मी आपे बोल, सच जैकारा शब्द सुणांयदा। इक्क अनादी वज्जे ढोल, वजावणहारा आप वजांयदा। इक्क अतीता वसे कोल, साचा मीता मेल मिलांयदा। साची सेजा करे चोल्ह, आप आपणी गोद बहांयदा। आपे अंदर जाए मौल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले साचे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा। दर दरवाज़ा सच दुआरा हरि सतिगुर आप खुल्हाईआ। चार वरनां करे इक्क प्यारा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोई बणाईआ। एका शब्द सच्चा सिक्दारा दो जहानां राज कमाईआ। गौंदे आए गुर अवतारा, साध सन्त उच्ची कूकण देण दुहाईआ। सचखण्ड वसे आप निरँकारा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। साचे तख़्त बह साचा भूप हो उज्यारा, चोबदार ना कोई बणाईआ। पंचम ताज सीस रक्खे जगदीश एकँकारा, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। सति पुरख निरँजण सत्त रंग निशाना दए हुलारा, पारब्रह्म प्रभ आपणी गंढु बंधाईआ। जुगा जुगन्तर खेल न्यारा, वेद कतेब भेव ना राईआ। आपे करे आपणी कारा, आपे लेखा लिखणहारा, लेखा लिखे ना किसे नाल शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर अंदर जोत धर, निरगुण सरगुण करे रुशनाईआ। निरगुण सरगुण खेल न्यारा, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण साची धारा, निराकार आप टिकांयदा। एकँकारा खेल अपारा, अजूनी रहित वेस वटांयदा। सो पुरख निरँजण हो उज्यारा, जोत निरँजण सर्ब जगांयदा। अबिनाशी करता मीत मुरारा, घर घर आपणा हुक्म सुणांयदा। श्री भगवान देवे पहरा, जन भगतां सेव कमांयदा। पारब्रह्म हरि कर पसारा, अन्तिम वण्ड आप वण्डांयदा। विष्न शिव दए हुलारा, ब्रह्मा आपणा हुक्म सुणांयदा। त्रैगुण माया तेरा पार किनारा, कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकांयदा। पंज तत्त तन होए ख्वारा, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। करे खेल घड़ण भन्नणहारा, समरथ पुरख आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे आप जगांयदा। गुरमुख विरला जागया, सतिगुर पूरा आप जगाए। मन उपजे इक्क वैरागया, प्रभ मिल्या बेपरवाहे। सरन सरनाई साची लागया, मन मनका भरम मिटाए। हँस बणया जीव कागया, रसना काग ना कोई कुरलाए। चरन धूढ़ कराए मजन माघिआ, अठसठ तीर्थ रहे शर्माए। दुरमति मैल धोवे दागया, आप आपणी सेव कमाऐ। मेल मिलाए कन्त सुहागया, साचा ढोला एका गाए। धुर दा वज्जा साचा नादया, सोया कोई रहिण ना पाए। काया मन्दिर अंदर धरया अनहद वाजया, सतिगुर पूरा आप वजाए। जिस जन तेरा साजण साजया, तेरा तन मन आपणे लेखे लाए। गुरमुख नौ दुआर ना फिरे भाजया, मन पंखी उड ना दहि दिश धाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन सच सरोवर आप नहाए। हरि सरोवर हरिजन नहाता, निर्मल नीर पछानया। उत्तम होई

लोकमात ज़ाता, उपजे ब्रह्म ज्ञानयां। मिटे रैण अन्धेरी राता, करे प्रकाश कोटन भानयां। गुरमुख बाल अंञाणे गोद उठाए जिउँ प्यारी माता, पित सिर आपणा हथ्थ रखानयां। एका देवे साची दाता, धुर शब्द श्री भगवानयां। दरस दखाए इक्क इकाता, स्वच्छ सरूपी रूप वटानयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथा, पिछला लेखा आप मिटानया। पिछला लेखा आप मकाउणा, कर्म धर्म जन्म वेख वखाईआ। नेहकर्मी नेहकर्म कमाउणा, एका करे सच पढ़ाईआ। निष्अक्खर जाप आप कराउणा, अजपा जाप वड वड्याईआ। बज़र कपाटी पत्थर परे हटाउणा, आप आपणा पर्दा लए उठाईआ। रंग रंगीला गुरमुख साचा एका रंगाउणा, रंग रतड़ा साचा माहीआ। काया माटी हड्ड मास नाड़ी चम्म आपणे लेखे लाउणा, रत्ती रत्त रहिण ना पाईआ। हरिजन सोहँ सो गाउणा, रातीं सुत्तयां सतिगुर पूरा लए जगाईआ। जगत नाता मोह तजाउणा, माया ममता दर दुरकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन नुहाए साचे सर, डूँग्घा ताल आप वखाईआ। डूँग्घा ताल काया कंदर, जगत अन्धेरा आप रखाया। कलिजुग जीव चारों कुंट भौंदे बन्दर, बिन सतिगुर पूरे हथ्थ किसे ना आया। सतिगुर पूरा पहलों तोड़े आपणा जंदर, आप आपणे संग लए मिलाया।
६१४ फड़ फड़ चाढ़े साचे मन्दिर, हरि का पौड़ा आप सुहाया, मेल मिलावा अंदरे अंदर, पिण्ड इंड ब्रह्मण्ड सचखण्ड आपणा ६१४
थान सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क रखाए साचा सर, खुल्ला रक्खे आपणा दर, जगत
०६ भय चुक्के डर, निरभउ आपणा भय जणाया। निरभउ मूर्त अकाल, अजूनी रहित इक्क अख्वाईआ। आपे काल आप दयाल, ०६
आप आपणी रचन रचाईआ। आपे वसे सच सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड सोभा पाईआ। आपे कुंभी नर्क मारे छाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दोवें धार आप चलाईआ। आपे निरगुण सरगुण दाता, आपे जोती जोत समांयदा। आपे पुरख परखोतम बण बिधाता, पुरीआं लोआं फेरा पांयदा। आपे बणे पित माता, सुत दुलारा शब्द आपणी गोद बहांयदा। आपे दिवस आपे राता, आपे सूरज चन्न चढ़ांयदा। आपे बाणी बोध गाए गाथा, ज्ञान ध्यान आप रखांयदा। आपे बण रथवाही चलाए राथा, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर खेले खेल त्रिलोकी नाथा, दीनां अनाथां गले लगांयदा। आपे वेद पुराणां गाए पूजा पाठा, शास्त्र सिमरत आप पढ़ांयदा। आपे दो जहानी फिरे नाठा, अवण गवण त्रैभवन रूप वटांयदा। आपे भगतां करे पूरा घाटा, आपणी दृष्टी विच टिकांयदा। आपे निरगुण जगे लिलाटा, नूरो नूर डगमगांयदा। आपे तीर्थ आपे ताटा, सर सरोवर आप सुहांयदा। आपे वसे आन बाटा, मात गर्भ अग्नी हवन आप करांयदा। आपे नाभी कँवल अमृत बाटा, आपे अग्नी तत्त तपांयदा। आपे चौदां लोक खोल्ले हाटा, चौदां तबकां डेरा ढांयदा। आपे विके हाटो

६१५ ०६

हाटा, आपणी कीमत कोए ना पांयदा। आपे खेले खेल बाज़ीगर नाटा, गुर पीर अवतार आपणा रूप वटांयदा। आपे बावन बणे खेवट खेटा, बल आपणा रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर साची कार इक्क चलाए हरि निरँकार, लिखण पढ़ण विच ना आंयदा। आपे पीर दस्तगीर, शाह हकीर आप अख्वाईआ। आपे मारनहार जंज़ीर, आपे तन्दन तन्द तुड़ाईआ। आपे चोटी चढ़े अख़ीर, मुकामे हक वेखे इक्क खुदाईआ। आपे आबहयात विरोले नीर, बेआब आप तड़फाईआ। आपे बख़्शे ठांडा सीर, जल थल आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर रूप अनूपा आप दरसाईआ। आपे होए इलाही अल्ला, ऐनलहक आप पुकारदा। आपे रूप समाए बिस्मिला, बिस्मिल आपणा आप करांयदा। आपे वसे उच्च महल्ला, उच्चे टिल्ले आसण लांयदा। आपे लोकमात फिरे बण बण झल्ला, जीव जंत भेव कोए ना पांयदा। आपे साचा हुक्म धुर फ़रमाण आयत अनाइत कर कर घल्ला, शरअ शरीअत आपणा रूप वटांयदा। आपे मक्का काअबा फड़ाए आपणा पल्ला, मुल्ला शेख़ मुसायक आप तड़फांयदा। आपे निरगुण जोती पंज तत्त नानक चोला रला, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। आपे नाम सति सति बोलया बोला, चार वरनां वणज करांयदा। आपे अर्जन चुकाया पर्दा ओहला, बोध अगाधा शब्द सुणांयदा। आपे गोबिन्द बदलया आपणा चोला, सुत दुलारा नाउँ धरांयदा। आपे धरनी धरत धवल जुग जुग भार करदा आया हौला, दुष्ट हँकारी आप मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा खेल आप खलांयदा। साचा खेल खिलावण आया, निरगुण रूप अगम्म अपार। साचा डंक शब्द वजावण आया, दो जहानां हो त्यार। राउ रंकां आप उठावण आया, सोया रहे ना विच संसार। हरिजन साचे मेल मिलावण आया, आप आपणी किरपा धार। दूई द्वैती फंद कटावण आया, तोड़ तुड़ाए गढ़ हँकार। उत्तम ज़ाती आप करावण आया, चार वरन करे प्यार। अन्धेरी राती मेट मिटावण आया, साचा चन्द होए उज्यार। सोहँ अक्खर इक्क पढ़ावण आया, सतिजुग तेरी आई वार। राज राजाना शाह सुल्ताना ख़ाक मिलावण आया, सीस ताज ना रक्खे कोए दस्तार। गुरसिखां साचे अमृतसर विच नुहावण आया, दो जहानां आपणी चुभ्भी मार। माणक मोती हीरे लाल आपणे बाहर कढावण आया, पारखू बण सच्चा सुन्यार। साची कसवटी हथ्थ फड़ के आया, नाम कुठाली कर त्यार। शेख़सर सर हट्टी आप खुल्हावण आया, अमृत भरे हरि भण्डार। मनमुखां चट्टी आप भरावण आया, दर दर करे आप ख्वार। अठसठी नीर सीर गुरसिख चरनां तेरयां हेठ दबावण आया, गंगा सुरस्ती जमना गोदावरी पावे सार। केसवा केसव आपणा रूप वटावण आया, गोवर्धन चुक्या झूठा भार। केसी केस वेख वखावण आया, दस दस्मेश लए अवतार। बाशक

शेश सेज पांगोसांग आप हंढावण आया, आपे सुत्ता पैर पसार। आपणी त्रसूल आप चमकावण आया, शिव शंकर कर त्यार। ब्रह्म विद्या ब्रह्म सर्ब पढ़ावण आया, पारब्रह्म मेला करे आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे आपणे घर, घर सोहे बंक दुआर। घर बंक दुआर सुहंदड़ा, गृह मन्दिर वज्जी वधाईआ। सतिगुर पूरा दरस दिखंदड़ा, दिब नेत्र इक्क खुल्लाईआ। साचा राग इक्क सुनंदड़ा, छत्ती राग रहे शर्माईआ। नारी कन्त मेल मिलंदड़ा, जगत विछोड़ा दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप सुहाए बंक दुआर, घर विच घर कर त्यार, दीपक जोत करे रुशनाईआ। घर मन्दिर गृह सोभावन्त, हरि सच्चा सतिगुर पाया। साची सखी मिल्या हरि हरि कन्त, एका मंगल हरि हरि गाया। लोकमात बणी साची बणत, गुर सतिगुर आप बणाया। आपे रस रसीआ आपे मणीआ मंत। आपे शब्दी शब्द सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचे दर, दर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजणा, निरगुण जोत कर रुशनाया। निरगुण जोत आदि निरँजण, जोत निरँजण रूप वटाईआ। आदि जुगादी दर्द दुःख भय भञ्जण, दीनां अनाथां दुःख मिटाईआ। एथे ओथे दो जहानी साचा सज्जण, सतिगुर पूरा आप अख्वाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डे भज्जण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। काल नगारे सिर ते वज्जण, कलिजुग कूक रिहा कुरलाईआ। अन्त कन्त भगवन्त रक्खे लज्जण, समरथ पुरख वड वड्याईआ। शाह पातशाह तख्त ताज तजण, चारों कुंट जीव कुरलाईआ। ना कोई हाज़ी करे हज्जण, मक्का काअबा ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग खेले खेल सृष्ट सबाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत चार वरन इक्क सरन हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई लक्ख चुरासी विच्चों लए तराईआ।

❊ ७ जेठ २०१७ बिक्रमी भाग सिंघ दे घर पिण्ड मलक ज़िला जम्मू ❊

मन बांछत हरि सरधा पूर, दुःख सुख विच रखाईआ। जैंह वेखे तैंह हाज़र हज़ूर, दिवस रैण दया कमाईआ। पैंडा चुक्के नेड़ा दूर, हाज़र हज़ूर बेपरवाहीआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साची सरन इक्क रखाईआ। चतर बणाए मूर्ख मूढ़, गुर पूरा वड वड्याईआ। देवे दात हरि दानी सूर, सर्बकल समरथ आप अख्वाईआ। जिस जन बख्शे चरन धूढ़, जन्म जन्म दे पाप गंवाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निवण सो अक्खर इक्क समझाईआ।

❋ ७ जेठ २०१७ बिक्रमी रसाल सिँघ साहिब सिँघ दे घर पिण्ड मनावर ज़िला जम्मू ❋

सतिगुर पूरा सर्ब जीआं दाता, वरन गोत ना कोए रखांयदा। सृष्ट सबाई पिता माता, लक्ख चुरासी गोद बहांयदा। हरिभगतां देवे साची दाता, नाम भण्डारा आप वरतांयदा। शब्द चढ़ाए साचे राथा, आदि जुगादि आप चलांयदा। एका मन्त्र जपाए पूजा पाठा, साचा मन्दिर आप सुहांयदा। इक्क सरोवर बणाए तीर्थ ताटा, घट अंदर आप नुहांयदा। एका दरस दिखाए जोत ललाटा, नूरो नूर डगमगांयदा। इक्क सवाए साची खाटा, आत्म सेजा आप सुहांयदा। एका वणज कराए साचे हाटा, सचखण्ड दुआर सोभा पांयदा। एका पूरा करे घाटा, माणस जन्म लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा इक्क अख्वांयदा। सतिगुर पूरा हरि बलवान, लोआं पुरीआं आप समाईआ। जुग जुग देवे धुर फ़रमाण, आपणा नाम आप उपाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां पाए एका आण, एका हुक्मी हुक्म सुणाईआ। हरिजन साचे लए पछाण, लक्ख चुरासी विच्चों आप जगाईआ। अन्तर आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। एका बख्शे चरन ध्यान, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। मेल मिलाए साचे राम, राम रमइया आप अख्वाईआ। दरस दिखाए घनईया शाम, कान्हा आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा शहनशाहीआ। सतिगुर सच्चा पातशाह, पारब्रह्म निरँकार। जन भगतां बणे जगत मलाह, निरगुण सरगुण लए अवतार। हरिजन फड़ फड़ राहे पा, लक्ख चुरासी गेड़ा दए निवार। आपे कट्टे जम का फाह, राए धर्म ना करे ख्वार। नाम जपाए सिफ्त सलाह, जुगा जुगन्तर एका कार। इक्क दुआरा दए वखा, धर्म खण्ड खोल्ह किवाड़। ब्रह्मण्ड हरि फेरी पा, जेरज अंड देवे पैज संवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपार। सतिगुर पूरा साहिब गुणवन्त, एकँकारा इक्क अख्वाईआ। हरिजन उठाए साचे सन्त, साची विद्या इक्क पढ़ाईआ। जुग जुग बणाए साची बणत, लोकमात वेख वखाईआ। कलिजुग वेला आया अन्त, चार कुंट अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता हरि भगवान, प्रगट होवे विच जहान, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा हरि हरि रामा, निरगुण सरगुण वेस करांयदा। नाम वजाए सच दमामा, सच नगारे चोट लगांयदा। खेले खेल घर घर शामा, साची बंसरी आप वजांयदा। आपणा करे पूरन कामा, करता पुरख वेस धरांयदा। गुरमुखां देवे नाम गुण निधाना, गुण अवगुण ना कोए जणांयदा। इक्क वखाए सच निशाना, दरगाह साची आप झुलांयदा। आप बठाए शब्द बिबाना, साचा राणा सेव कमांयदा। आवण जावण चुक्के काना, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जो जन रसना गाए सोहँ गाणा, सो पुरख निरँजण मेल मिलांयदा। लक्ख

चुरासी सिर ते वरते भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। सतिगुर पूरा दीन दयाल, दयानिध आपणा नाउँ धरांयदा। हरिजन वेखे साचे लाल, बाल अंञाणे आप उठांयदा। शब्द सरूपी बण दलाल, कलिजुग अन्तिम सेव कमांयदा। पूर्ब जन्म दा लेखा चुक्के घाली घाल, लहिणा लहणेदार झोली पांयदा। साचा बंक सुहाए सच्ची धर्मसाल, जिस दुआरे चरन टिकांयदा। सदा सुहेला करे सदा प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। फल लगाए काया डाल, पत डाली आप महिकांयदा। गुरमुख तोड़ जगत जंजाल, हरिसंगत साची मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, रोग सोग जगत संताप, जन्म जन्म दे कट्टे पाप, दुरमति मैल आप धुआंयदा। जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जपे जाप, जागरत जोत आप वखांयदा। गुरमुखां करे वड परताप, आप आपणा रूप बणांयदा।

६१८ ❋ ७ जेठ २०१७ बिक्रमी दौलत सिँघ दे घर दया होई पिण्ड नवां चक्क ज़िला जम्मू ❋ ६१८

०६ एका ओट हरिभगत स्वामी, हरिजन साचे आप तरांयदा। आदि जुगादि सदा नेहकामी, निहकर्मी आपणा कर्म कमांयदा। ०६
घट घट वसे अन्तरजामी, घर घर आपणी जोत जगांयदा। आप सुणाए आपणी अनहद बाणी, घर मन्दिर राग अलांयदा। आत्म देवे ठंडा पाणी, अमृत जाम आप प्यांअदा। आपणी सुणाए अकथ कहाणी, अकथ कथा आपे गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच स्वामी इक्क अख्वांयदा। सच स्वामी एका ओट, पुरख अबिनाशी वड वड्याईआ। जन्म जन्म दे पाप उतारे कोटी कोटि, कोटन कोटि जीव आप तराईआ। माया ममता हउमे हंगता वासना कढ्ढे खोट, साची सुरत शब्द लिव लाईआ। आप उठाए आलणिउँ डिगे बोट, हरिजन साचे गोद बहाईआ। तन नगारे लाए चोट, एका डंका नाम वजाईआ। निरगुण निरवैर जगाए अंदर जोत, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच स्वामी बेपरवाहीआ। सच स्वामी हरि सुल्तान, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। शब्द झलाउणा इक्क निशान, लोआं पुरीआं आण रखांयदा। एका देवे धुर फ़रमाण, साचे सन्तां सेवा लांयदा। लोकमात बख्शे चरन ध्यान, ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ांयदा। एका बख्शे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। एका राग सुणाए कान, आपणी विद्या आप पढ़ांयदा। लेखा जाणे दो जहान, चतुर्भुज रूप वटांयदा। साची सखीआं मेला साचे काहन, घर मंडल रास रचांयदा। आदि जुगादी मेहरवान, हरिजन साचे आप तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कुली कक्ख कर परवान, होए

प्रतक्ख श्री भगवान, रंग आपणा रंग रंगांयदा। सच स्वामी पुरख अबिनाशा, दरगाह साची धाम सुहाईआ। जुग जुग खेले खेल तमाशा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। जन भगतां पूरी करे आसा, जिउँ बिपर सुदामा गले लगाईआ। ग़रीब निमाणयां दए दिलासा, बिदर अलूणा साग खाईआ। जिस जन देवे चरन भरवासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाईआ। सच स्वामी पुरख अकाल, काल फास ना कोए रखाईआ। भगत बीठल सद कृपाल, भगत भगवन्त वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी तोड़ जंजाल, आपणे लेखे लए लगाईआ। एका नाम देवे वस्त सच्चा धन माल, साचे हट्ट आप वकाईआ। जो जन सेवा रहे घाल, घाली घाल लेखे पाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए बणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बणदा आया मात दलाल, गुरमुख साचे आप उपजाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल करे गोबिन्द गोपाल, इकओंकारा वेस वटाईआ। सो पुरख निरँजण चले अवल्लड़ी चाल, हरि पुरख निरँजण दए इक्क सालाहीआ। इकओंकारा चले चलाए नाल नाल, आदि निरँजण जोत कर रुशनाईआ। श्री भगवान आप आपणे आपे लए भाल, अबिनाशी करता वेख वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म फल लाए साचे डाल, फुल फुलवाड़ी वेख वखाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव तेरा पूरा करे इक्क सवाल, चारे वेदां वेख वखाईआ। देवे रिज़क रिहा सुरत संभाल, घर मन्दिर बेपरवाहीआ। शंकर लेखा चुक्के जगत काल, जगत ग्रास इक्क वखाईआ। हरिजन वेखे साचे लाल, स्वास स्वास रसना जिह्वा जो जन रहे ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी सच्चा दाता, इकओंकारा पुरख बिधाता, आपे जाणे आपणी गाथा, साचा राथा आप चलाईआ। साचा रथ रथ रथवाही, जुग जुग आप चलांयदा। आपे मार्ग पन्ध मुकाए बण बण पाही, आप आपणी वण्ड वण्डांयदा। आपे ग़रीब निमाणयां पावे सार थाउँ थाँईं, शाह सुल्तानां आप ख़ाक मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता इक्क अतीता ठंडा सीता इक्क अख्वांयदा। ठंडा सीता सीतल धार, सति पुरख निरँजण आप वटाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह करे प्यार, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कमाईआ। निरगुण सरगुण शब्द सरूपी देवे सच सलाह, हरि का नाम वड्डी वड्याईआ। चार वरनां एका पिता एका माँ, पारब्रह्म प्रभ आप अख्वाईआ। अग्गे ज़ात कोए पुच्छे ना, झूठी क्रिया जगत उपाईआ। बिन राम ना पकड़े कोई बांह, दरगाह साची ना कोई बहाईआ। चार कुंट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप माया ममता उडदे काँ, हँस रूप ना कोई वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी दामनगीर आपे तोड़े वज्झा जंजीर, फड़ के चोटी चाढ़े अखीर, आपणी मंज़ल आप वखाईआ। साची मंज़ल उच्चा पौड़ा, काया मन्दिर अंदर आप लगांयदा। जिन जन हरि जू हरि मन्दिर आए

बौहड़ा, फड़ बाहों पार करांयदा। वेद कतेब ना जानण लम्मा चौड़ा, लिख लिख हुक्मी हुक्म सुणांयदा। किसे हथ्थ ना आए ब्रह्मण गौड़ा, पूत सपूता रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी सर्ब गुणवन्ता, आप उठाए साचे सन्ता, सन्त साजण मेल मिलांयदा। साचा सन्त सतिगुर मीत, लोकमात वड्याईआ। एका गाए हरी गोबिन्द दे गीत, रसन जिह्वा सहिज सुखदाईआ। पुरख अगम्मा वसे चीत, ठग्ग ठगौरी कोए ना पाईआ। एका रंग दिसाए हस्त कीट, हस्त कीट हरि आप समाईआ। नाम जणाए धाम अनडीठ, जगत नेत्र दिस ना आईआ। जिस जन काया करे ठंडी सीत, अग्नी तत्त ना कोए तपाईआ। पारब्रह्म प्रभ मिले साचा मीत, घर वजदी रहे वधाईआ। एका गाए सुहागी गीत, रसना जिह्वा एका गुण वखाईआ। करे कराए पतित पुनीत, जो जन रहे सरनाईआ। दरस दिखाए इक्क अतीत, त्रैगुण माया विच ना आईआ। हरिजन माणस जन्म जाए जीत, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सच स्वामी निरगुण निहकामी, निर्धन सरधन आप अख्वाईआ। निर्धन सरधन एका संग, दूई द्वैत ना कोई रखांयदा। हरिजन ढाए भरमां कंध, गढ़ हँकारी आप तुड़ांयदा। इक्क उपजाए परमानंद, निज आत्म रस वखांयदा। जो जन तजाए मदिरा मास गंद, कर किरपा दरस करांयदा। खुशी कराए बन्द बन्द, जिन भूत प्रेत कोई नेड़ ना आंयदा। रसना गाए बत्ती दन्द, सोहँ अमृत मुख चुआंयदा। दिस ना आए नेत्र अन्ध, अज्ञान अन्धेर सर्ब वखांयदा। जन भगतां मेला मिल्या हरि बख्शिंद, बख्शणहारा आपणी बख्शिश आपणे हथ्थ रखांयदा। आवण जावण चुक्या पन्ध, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा एका वर, नाम ख़ज़ाना देवणहारा बीना दाना, हरिजन करे ठंडा सीना, जलमीना आप तरांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा चुकाए लोक तीना, त्रैगुण माया मोह मिटांयदा।

❊ ७ जेठ २०१७ बिक्रमी सन्त राम दे घर पिण्ड बाणीआं ज़िला जम्मू ❊

पंज तत्त मन्दिर काया गढ़, त्रैगुण माया बणत बणांयदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश जड़त जड़, हड्ड मास नाड़ी रत्त मेल मिलांयदा । मन मति बुध अंदर धर, निरगुण आपणी खेल खिलांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार निभाए लड़, आसा तृष्ना विच टिकांयदा। साचा घाड़ण आपे घड़, घर घर विच आप सुहांयदा। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, जीव जंत बणत बणांयदा। निरगुण जोत कर उज्यार, जोत निरँजण डगमगांयदा। शब्द अटल सच्ची धुन्कार, अनहद राग आप अलांयदा।

अंदर वड़ करे प्यार, डूँग्घी कंदर आसण लांयदा। बज़र कपाटी खोलू किवाड़, आपणा मन्दिर आप सुहांयदा। एका देवे सच हुलार, उँणंजा पवण आप झुलांयदा। पवण स्वासी कर त्यार, तन मन्दिर आप टिकांयदा। कर्म निहकर्मी भर भण्डार, साची वस्त आप वखांयदा। मन मनूआ कर सिक्दार, साचे तख्त आप सुहांयदा। साची सिख्या देवे देवणहार, आपणी बूझ आप बुझांयदा। पारब्रह्म प्रभ अंदर वाड़, आपणे आसण सोभा पांयदा। कमलापाती मीत मुरार, बन्द ताकी आप खुलांयदा। साचा साकी बण करे प्यार, अमृत साचा जाम आप प्यांअदा। लहिणा देणा बाकी वेख विच संसार, आपणा लेखा आप गिणांयदा। रोग सोग चिंता दु:ख तृष्ना भुक्ख आपे अंदर देवे वाड़, आपणा हुक्म आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बहत्तर नाड़ी वेख वखांयदा। बहत्तर नाड़ी घाड़ण घड़या, रक्त बूंद मेल मिलाईआ। जगत विकारा आपे भरया, पुरख अबिनाशी भेव ना राईआ। आपणी करनी आपे करया, घर घर देवे रिज़क सबाईआ। मानस मानुख मानुश आपे फड़या, आपे दए सज़ाईआ। आपे फड़ फड़ बाहों रिहा तराया, तारनहारा इक्क अख्वाईआ। आपे जाणे आर पार किनारा, मञ्झधार आपणा डेरा लाईआ। हड्डी हड्ड वेखे वेखणहारा, रसना जिह्वा खाया पारा, रत्ती रत्त विच समाईआ। अठ्ठे पहर लग्गा रहे साड़ा, सांतक सति ना कोई कराईआ। लग्गी अग्ग तत्ती हाढ़ा, आलस निन्दरा गई गंवाईआ। चिंता दु:ख बणया अखाड़ा, साचा सुख ना कोई उपजाईआ। सतिगुर पूरा आया चल दुआरा, काया बंक वेख वखाईआ। जो जन चरन सरन करे निमस्कारा, दु:ख रोग सोग रहिण ना पाईआ। नाम खण्डा मारे तेज कटारा, दो दो धड़ आप वखाईआ। रसना गाए सोहँ शब्द इक्क जैकारा, ब्रह्म ब्रह्माद ब्रह्म मिलाईआ। लक्ख चुरासी होए पार किनारा, जम दंड ना देवे कोई आईआ। दरगाह साचे वखाए धाम न्यारा, एकँकार बैठा निरगुण आसण लाईआ। भिखक मंगे भिक्ख दुआरा, साची भिच्छया हरि हरि झोली पाईआ। करे रिच्छया विच संसारा, रच्छक आपणा नाउँ धराईआ। भगत वछल आप गिरधारा, जन भगतां पैज रखाईआ। बिदर सुदामा करया पार किनारा, भीलणी बेर मुख आपणे पाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, गऊ ग़रीबां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया दु:ख देवे कट्ट, तन पहनाए शब्द पट, आप आपणी दया कमाईआ।

✻ ७ जेठ २०१७ बिक्रमी बेला सिंघ जगत सिंघ दे घर पिण्ड धिंगाली ज़िला जम्मू ✻

हरिसंगत रोग मिटावणा, दु:ख दलिद्र दए गंवाए। घर घर सोग ना किसे मनावणा, साचा सुख इक्क उपजाए। एका

साची चोग चुगावणा, सोहँ रसना हरि हरि गाए। दरस अमोघ आप करावणा, आप आपणा पर्दा दए उठाए। साचा जोग इक्क वखावणा, हरि सरन सच्ची सरनाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत मेघ इक्क बरसाए। अमृत मेघ सुहावणा, हरिसंगत मुख चुआंयदा। काया दुःखड़ा सर्ब मिटावणा, आप आपणी दया कमांयदा। एका शब्द तन शंगार करावणा, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। फड़ फड़ काग हँस बनावणा, सोहँ साची चोग चुगांयदा। लोकमात दाग धवावणा, आपणी सेवा आप कमांयदा। शब्द जैकारा एका गावणा, साची सिख्या आप सिखांयदा। पद निरबाणा एका पावणा, घर साचा आप वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत वेख वखांयदा। हरिसंगत तेरा आत्म महल्ला, प्रभ अबिनाशी आप वसाईआ। आपे फड़े तेरा पल्ला, आपणा पल्लू हथ्थ वखाईआ। तेरी जोती आपे रला, आपणी जोत कर रुशनाईआ। तेरी जोती आपे खला, आप आपणी ल्ए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे माण वड्याईआ। माण वडियाई साचे घर, जन्म मरन कटांयदा। दुःख दलिद्र देवे हर, हरि के पौड़े आप चढ़ांयदा। जो जन सरनाई आए चल, नेहचल धाम आप बहांयदा। जो हरिसंगत विच गया रल, मात गर्भ विच ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सुख इक्क वखांयदा। साचा सुख गुर चरन दुआर, चिंता रोग रहिण ना पाईआ। उज्जल मुख विच संसार, दोए नैण दरस दरस कर तृप्ताईआ। करे सुफल कुक्ख आप निरँकार, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेल मिलावा भैणां भाईआ। भैणां भाईआं सच्चा नाता, हरि सच्चा जोड़ जुड़ांयदा। नारी कन्त इक्क पछाता, दूसर नैण ना कोए उठांयदा। गुरमुख निउँ निउँ तक्के जिउँ लछमण सीता माता, सति नत हरि हरि मति इक्क वखांयदा। जो जन भुल्ले हरि की गाथा, जून अजूनी आप भवांयदा। पूरा करे ना कोई घाटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत आप वड्यांअदा। हरिसंगत तेरा सच प्यार, सच साचा आप बंधाईआ। तेरा घर तेरा दरबार, तेरे दर वज्जी वधाईआ। तेरा शब्द तेरा जैकार, तेरी झोली पाईआ। तेरा नाम तेरा भण्डार, तेरा तेरे दर वरताईआ। तेरा दुःख दलिद्र दए निवार, दूती दुष्ट कोई तेरा रहिण ना पाईआ। तेरे उत्ते करे ना कोई वार, तेरी रक्खया करे आप हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी देवे आप सफाईआ। हरिसंगत तेरा तोड़ जंजाल, दुःख आपणी झोली पांयदा। तेरी प्रीती निभे नाल, चरन कँवल कँवल चरन आप जुड़ांयदा। तेरा प्यार साची ढाल, आपणे हथ्थ रखांयदा। तेरा दर्द वण्डे दीन दयाल, दीनां नाथा सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे पैज संवार, खुशी करावे नर नार, बिरध

बाल जवान आप तरांयदा। बिरध बाल जाए तर, जिस दर्शन हरि हरि पाया। जादू जड़ी जिन भूत ना देवे कोई डर, जिस जन सोहँ रसना गाया। हरिसंगत देवे साचा वर, पुरख अबिनाशी एह समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा शब्द विच टिकाया। हरिसंगत तेरा रक्खे माण, माण अभिमाना दए गंवाईआ। आपणा वखाए सच निशान, दर घर साचे आप झुलाईआ। आपे पाए आपणी आण, आपणा हुक्म आप सुणाईआ। गुरमुख सुणना ला ला कान, चरन कँवल ध्यान वड वड्याईआ। तेरी पाहन करे प्रधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। हरिसंगत साचा माण दवाउणा, बाल बाले आप उठांयदा। एका डण्डा हथ्थ फड़ाउणा, नाम खण्डा आप चमकांयदा। टूणा जादू सर्ब मिटाउणा, लिख लिख जाम ना कोए प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बल धरांयदा। गुरसिख तेरे पैर जुत्ती चम्म, भूत प्रेतां सिर लगाईआ। तेरे दुआरे कोई चेला लै ना सके दम, जो आए जाए कुरलाईआ। तेरा मेटे जगत गम, आपणी रंगण इक्क चढ़ाईआ। तेरा बेड़ा देवे बन्नृ, सिर आपणे भार उठाईआ। तेरी सोहे छप्परी छन्न, महल्ल अटल देवे ढाईआ। ग़रीब निमाणयां अंदर गया रल, औंदा जांदा दिस ना आईआ। सच सिँघासण बैठा मल, मनमुखां दिस ना आईआ। अंदर बैठा वजाए टल्ल, मन्दिर दुआरा इक्क सुहाईआ। पंडत पांधे भुलाए कर कर वल छल, नेत्र नैणां नज़र किसे ना आईआ। कलिजुग अन्तिम वड़या गुरसिखां दी साची झल्ल, आप आपणा मुख छुपाईआ। धुरदरगाही लै के आया साचा फल, हरिसंगत आप खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत एका तन्दन नाम बंधाईआ। तीनों तन्द बंधे बन्नृ, आप आपणा बन्धन पांयदा। घर घर चढ़े नौंचन्दी साचा चन्द, नौ गृह ना कोए वखांयदा। बारां रासी मुकाए पन्ध, बन्द खलासी आप करांयदा। गीत सुणाए साचा छन्द, साचा ढोला आप अलृांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस दिखाए घर घर, हरिसंगत वेख वखांयदा। हरिसंगत वेखे आपणे नेत्र, निज नेत्र आप खुलृाईआ। लक्ख चुरासी वड़या खेत्र, साचा माली फेरा पाईआ। भाग लगाया पहली चेत्र, सीस जगदीश आप टिकाईआ। कलिजुग अग्गे धरया एका , सुध बुध रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत साचा संग रखाईआ। साचा संग सगला साथ, सतिगुर पूरा आप रखांयदा। सगल वसूरे जाण लाथ, जो जन हरि हरि दर्शन पांयदा। लहिणा देणा चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चुमारा लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेला सच दरगाह, पुरख अबिनाशी इक्क मलाह, एकओंकारा जपाए आपणा नाँ, नर निरँकारा आप धरांयदा। नाम निरँकारा निरगुण धार, निराकार आप चलाईआ।

हरिसंगत पैज जाए संवार, जीवण मरन एका रंग वखाईआ। गुरमुख गुरसिख ना रोए धांह मार, धीरज धीर धरत धवल आप जणाईआ। सतिगुर पूरा अमृत बख्श ठंडी ठार, सांतक सति आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेला एका दर, घर साचे आप कराईआ। हरिसंगत तेरी सच प्रभात, सतिगुर पूरा आप वखांयदा। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, रैण अन्धेरी ना कोए वखांयदा। साहिब सच्चा सद वसया इक्क इकांत, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। दाता देवे दानी दात, सच भण्डारा आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संगत चाढ़े नाम रंग, दूजा दर ना लए मंग, एका भिच्छया झोली पांयदा। एका भिच्छया पुरख सुल्तान, हरिजन झोली पाईआ। उपजे अन्तर इक्क ज्ञान, ज्ञान गोझ आप वखाईआ। लेखा चुक्के पवण मसाण, पवण पवणी दए भवाईआ। वेख वखाए पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां फेरा पाईआ। गुरमुख ना होए कदे उदास, सति सन्तोख ज्ञान एका इक्क दृढ़ाईआ। आपणे अंदर आपे करे वास, सुरत शब्द मेल मिलाईआ। लेखा टुट्टे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ भरवास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दुआरे आपे खड़, आपणा रूप लए प्रगटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी पाहनी करे बलवान, विच छम्ब सच निशान, जिन्न ख़बीस रहिण ना पाईआ।

६२४

०६

※ ७ जेठ २०१७ बिक्रमी देवा सिँघ दे घर पिण्ड धिंगाली ज़िला जम्मू ※

०६

हरि सतिगुर पूरा उठया, अबिनाशी करता नौजवान। जन भगतां उप्पर तुठया, निरगुण होया आप मेहरवान। अमृत प्याए साचे घुट्टया, धर्म वखाए इक्क निशान। आपे चढ़या साची चोटीआ, काया मन्दिर वेख मकान। विच्चों कढ्ढे वासना खोटीआ, दाता दानी गुण निधान। एका बख्शे चरन ओटीआ, जुगा जुगन्तर हो मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे ब्रह्म ज्ञान। सतिगुर पूरा जागया, दीनां बंधप दीन दयाल। लोकमात आया भागया, निरगुण खेल करे दो जहान। गुरमुख उपजाए इक्क वैरागया, शब्द अनाद वजाए ताल। जन्म जन्म दा धोवे दागया, आप आपणी करे प्रितपाल। घर घर दीपक जगावे चिरागया, आदि निरँजण एका जोती दीपक बाल। मेल मिलाए कन्त सुहागया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम सच्चा धन माल। सतिगुर सच्चा बौहड़या, पारब्रह्म बेअन्त। गुरमुखां प्यास बुझाए लग्गी औड़या, सोहँ जणाए साचा मंत। आप चढ़ाए सच्चे पौड़या, दरगाह साचे धाम सुहंत। फल वेखे मिट्ठा कौड़या, लक्ख चुरासी जीव जंत। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फिरे दौड़या, वेस अनेका आदि अन्त। वेस अधार ब्रह्मण

गौड़या, पूत सपूता बणाए बणत। गुरसिख आप आपणे नाल जोड़या, गढ़ तोड़या हउमे हंगत। हरिजन उपाया जैसा लोड़या, मिल्या मेल साची संगत। कलिजुग अन्तिम दर तों होड़या, दर दर भिखारी फिरे नंगत। पुरख अबिनाशी चढ़े साचे घोड़या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी मंत। सतिगुर पूरा सूरबीर, सति पुरख निरँजण आप अख्वाईआ। एका चिल्ला फड़या तीर, सोहँ मुखी आप लगाईआ। दो जहानां पैंडा आया चीर, लोकमात जोत जगाईआ। शाह सुल्तानां करे फ़कीर, दर दर आप फिराईआ। गुरमुखां कढ्ढे हउमे पीड़, बिरहों रोग रहिण ना पाईआ। अमृत बख्शे साचा सीर, भर प्याला जाम प्याईआ। चरन दुआर बणाए भिखार वड बीरन बीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सतिगुर सच्चा हरि गोबिन्द, गोबिन्द महिमा कथन ना जाईआ। गोबिन्द मेटे सगली चिन्द, साख्यात दरस दिखाईआ। गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, वड मृगिंद बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा मेल मिलाईआ। सतिगुर पूरा पारब्रह्म, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ांयदा। ना कोई ख़ुशी ना कोई ग़म, चिंता सोग ना कोए रखांयदा। इक्क जपाए साचा नाम, अमृत जाम आप पिलांयदा। पूरन करन आया पूरे काम, पूर्ब लहिणा वेख वखांयदा। पल्ले बन्ह्ने साचा दाम, दामनगीर दया कमांयदा। गुरमुख तेरा नगर खेड़ा वसे ग्राम, घर मन्दिर सोभा पांयदा। लेखा जाणे माटी चाम, रवि ससि आप चमकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप वड्यांअदा। गुरमुख वडियाई धन्न, हरि सतिगुर सच्चा पाया। गुरसिख वडियाई धन्न, घर साचा मंगल गाया। गुरमुख वडियाई धन्न, घर अंजन नेत्र पाया। गुरसिख वडियाई धन्न, दुःख भञ्जण मेल मिलाया। गुरमुख वडियाई धन्न, घर सज्जण वेखण आया। गुरसिख वडियाई धन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लेखा रिहा चुकाया। हरिभगत वडियाई धन्न, घर धन्न हरि नामा पाया। हरि सन्त वडियाई धन्न, घर दीपक जोत जगाया। हरिभगत वडियाई धन्न, घर अनादी शब्द अल्हाया। हरि सन्त वडियाई धन्न, ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाया। हरिभगत वडियाई धन्न, आदि जुगादी एका इष्ट रखाया। हरि सन्त वडियाई धन्न, आत्म दृष्टी इक्क खुल्हाया। हरिभगत वडियाई धन्न, सर्ब सृष्टी दए तजाया। हरि सन्त वडियाई धन्न, एका हरि हरि रिहा मनाया। हरिभगत वडियाई धन्न, निरभउ साचा भउ चुकाया। हरि सन्त वडियाई धन्न, आत्म सेजा साची सोती, घर साचा कन्त हंढाया। हरिभगत वडियाई धन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाया। गुर गुर वडियाई धन्न, लोकमात वेस वटांयदा। सतिगुर वडियाई धन्न, घर साचे सोभा पांयदा। गुर वडियाई धन्न, धुर फ़रमाणा हुक्म जणांयदा। सतिगुर वडियाई धन्न,

हुक्मी हुक्म आप फरांयदा। गुर गुर वडियाई धन्न, एका अक्खर जगत पढ़ांयदा। सतिगुर वडियाई धन्न, दरगाह साची धाम सुहांयदा। गुर गुर वडियाई धन्न, डुब्बदे पाथर मात तरांयदा। सतिगुर वडियाई धन्न, सचखण्ड दुआरा इकओंकारा एका घर दसांयदा। गुर गुर वडियाई धन्न, जीआं जंतां दए आधारा, एका सिख्या सिख समझांयदा। सतिगुर वडियाई धन्न, लक्ख चुरासी कर पसारा, ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगांयदा। गुर गुर वडियाई धन्न, निरगुण शब्द बोल जैकारा, आपणी धारा आप बंधांयदा। सतिगुर वडियाई धन्न, जुगा जुगन्तर खेल अपारा, निराकारा आप करांयदा। गुर गुर वडियाई धन्न, खाणी बाणी करे विचारा, बोध अगाध ज्ञान आप सुणांयदा। सतिगुर वडियाई धन्न, महल्ल अटल उच्च मुनारा, दीपक जोती जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। गुरसिख वडियाई धन्न, धरत धवल मिले वड्याईआ। गुरमुख वडियाई धन्न, घर मन्दिर सोभा पाईआ। हरि सन्त वडियाई धन्न, पीआ प्रीतम वेख वखाईआ। हरिभगत वडियाई धन्न, प्रीत इक्क भगवान लगाईआ। गुर गुर वडियाई धन्न, शब्द शब्दी करे पढ़ाईआ। सतिगुर वडियाई धन्न, आपणी रचना आप रचाईआ। अबिनाशी करता आपणा बेड़ा आपे बन्न्, आदि जुगादि रिहा चलाईआ। सो पुरख निरँजण आप चढ़ाए साचा चन्न, रवि ससि करे रुशनाईआ। हरि पुरख निरँजण देवे ज्ञान आत्म अन्न्, एकँकार रूप समाईआ। आदि निरँजण किसे ना जनणी जणया जन, मात पित ना कोए बणाईआ। अबिनाशी करता पंज तत्त ना दिसे तन, त्रैगुण ना रूप दरसाईआ। श्री भगवान ना देवे कोई डंन, घड़ भन्न ना कोए बणाईआ। अबिनाशी करता पारब्रह्म ना मरे ना पए जम्म, जननी गोद ना कोए उठाईआ। जुगा जुगन्तर जाणे आपणा कम्म, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सतिगुर वडियाई धन्न, अलक्ख निरँजण खेल खिलांयदा। गुर गुर वडियाई धन्न, हो प्रतक्ख दरस दखांयदा। भगत वडियाई धन्न, गीत गोबिन्द एका गांयदा। सन्त वडियाई धन्न, मोहण माधव घर आपणे आप दसांयदा। गुरमुख वडियाई धन्न, दीन दुनी सर्ब तजांयदा। गुरसिख वडियाई धन्न, एका राग सुणे कन्न, दूजा राग ना कोए अल्ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द शब्द संदेश, आप सुणाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, करोड़ तेतीसा आप समझांयदा। सतिगुर पूरा पारब्रह्म, अबिनाशी करता नाउँ धरांयदा। गुर गुर ना मरे ना पए जम्म, नित नवित वेस वटांयदा। भगत भगवन्त गाए दमां दम, आप आपणी किरत कमांयदा। सन्त साजण जाए मन्न, मन मणका आप फिरांयदा। गुरमुख वेखे चढ़या साचा चन्न, अन्ध अन्धेर सर्ब गवांयदा। गुरसिखां भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, एका दूजा भउ चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार, आदि जगादी साची कार, करनेहारा आप करांयदा। गुरसिख

वडियाई धन्न, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। गुरमुख वडियाई धन्न, रसना गौंदी साचा माहीआ। हरि सन्त वडियाई धन्न, दिवस रैण विछड़ ना जाईआ। हरिभगत वडियाई धन्न, अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। गुर गुर वडियाई धन्न, हरि का शब्द दए सुणाईआ। सतिगुर वडियाई धन्न, जुग जुग आपणी करे आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप वखाईआ। सतिगुर वडियाई धन्न, थिर घर साचे सोभा पांयदा। गुर गुर वडियाई धन्न, सुन्न अगम्मी पन्ध मुकांयदा। गुरमुख वडियाई धन्न, चौथे पद सदा रहांयदा। गुरसिख वडियाई धन्न, घर घर मन्दिर हरि हरि दर्शन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। सरगुण बन्ने निरगुण धार, निरगुण निरगुण विच टिकाईआ। निरगुण सरगुण करे प्यार, गुर गुर नाउँ उपजाईआ। गुर गुर किरपा करे विच संसार, गुरमुख साचे लए तराईआ। गुरमुख साचा होए ख़बरदार, गुरसिख साचे लए उठाईआ। गुरसिख उठया विच संसार, आलस निन्दरा दए मिटाईआ। करे दरस हरि निरँकार, चिंता सोग रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा आदि जुगादी इक्क सुणाईआ। सतिगुर पूरा आदि जुगादि, आबिनाशी करता आप समाया। गुर गुर खेले खेल विच ब्रह्माद, जुग जुग आपणा डंक वजाया। भगत वजाए साचा नाद, दर घर साचे आप सुणाया। सन्तन हरि हरि ल्या लाध, दूसर हथ्थ किसे ना आया। गुरमुख मेला माधव माध, घर साचा वेख वखाया। गुरसिख मिली साची दाद, साची भिच्छया झोली पाया। जुग जुग सुणदा आया आप फ़रयाद, जो जन रहे बिल्लाया। मेटणहारा वाद विवाद, साची सिख्या इक्क समझाया। लक्ख चुरासी विच्चों काढ, जम की फाँसी दए तुड़ाया। लेखे लाए चम्म मास नाड़ी हाड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा देवे साचा वर, समरथ पुरख आप अखवाया। सतिगुर पूरा पुरख समरथ, दरगाह साची धाम सुहांयदा। गुर गुर चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही खेल खिलांयदा। भगतां देवे साची वथ, एका वस्त हथ्थ फड़ांयदा। सन्तन सुणाए महिमा अकथ, अकथ कहाणी आप जणांयदा। गुरमुखां सगल वसूरे जायण लथ्थ, दर घर साचे दरस करांयदा। गुरसिख चरन सरन सरनाई जाए ढठ्ठ, फड़ बाहों गले लगांयदा। जुग जुग गेड़े आपणी लठ्ठ, सृष्ट सबाई आप भवांयदा। बिन हरि खेड़ा दिसे भठ्ठ, सथ्थर यार ना कोए सुहांयदा। कलिजुग पैंडा मुक्के ना नठ्ठ नठ्ठ, जीव जंत सर्ब कुरलांयदा। त्रैगुण माया पंज तत्त विकारां पाई नथ्थ, काल कलंदर आप नचांयदा। राए धर्म दूर दुराडा बैठा रिहा हस्स, वेला अन्तिम आंयदा। लाड़ी मौत लाल मैहन्दी हथ्थीं रही झस्स, सम्मत सतारां वेख वखांयदा। सतिगुर पूरा गुरमुखां मार्ग एका दस्स, साचा मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। चार दुआरे कर इक्ट्ठ, दीनां नाथां दर्द वण्डांयदा। अन्तिम

अन्त पति लए रक्ख, पति पतिवन्ता दया कमांयदा। गुरसिख तेरा नेत्र निरगुण अक्ख, नैण नरायण आप मटकांयदा। तेरा बुरज ना जाए ढट्ठ, हरि मन्दिर आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। सतिगुर पूरा गहर गम्भीर, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। गुर गुर दाता पीरन पीर, शाह हकीर वेख वखांयदा। भगतन चढ़ाए चोटी इक्क अख़ीर, जुलाहा कबीर आख सुणांयदा। सन्तन बख्शे ठांडा सीर, सति सतिवाद धर्म दृढ़ांयदा। गुरमुखां दो जहानां पैंडा जाए चीर, अद्धविचकार ना कोए अटकांयदा। गुरसिख तोड़ जगत जंज़ीर, आपणा फंदन आप कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। सतिगुर साचा सर्ब जीआं दाता, लक्ख चुरासी विच समाईआ। गुर गुर देवे इक्क गयाता, ज्ञान गोझ वड वडियाईआ। भगतन देवे साचा साथा, सगला संग बेपरवाहीआ। सन्तन लेखा चुक्के मस्तक माथा, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। गुरमुख विकाए साचे हाटा, करता कीमत आपे पाईआ। गुरसिखां प्याए अमृत बाटा, काया कासा आप भराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्तिम पूर कराए घाटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा संग रखाईआ। गुरसिख तेरी वडियाई धन्न, तेरी गति मित आप जणांयदा। गुरमुख वडियाई धन्न, कमलापति मेल मिलांयदा। हरि सन्त वडियाई धन्न, ब्रह्म मति इक्क समझांयदा। हरिभगत वडियाई धन्न, रत्ती रत्त लेखे लांयदा। गुर गुर वडियाई धन्न, उत्पत सारी झोली पांयदा। सतिगुर वडियाई धन्न, जो घड़या सो भन्न वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी चाल चलांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर चाल निराली, हरि पुरख निरँजण आप चलाईआ। कलिजुग अन्तिम जगी जोत इक्क अकाली, काल दयाल रूप वटाईआ। आपणे हथ्थ रक्खे ख़ाली, खण्डा तीर तुफ़ंग, कटार हथ्थ ना कोए उठाईआ। लक्ख चुरासी ब्रह्मे विष्न शिव तेरी वेखे पत पत डाली, फुल्ल फुलवाड़ी जो मात लगाईआ। चार जुग देंदा आया आप दलाली, गुर पीर अवतार सेव कमाईआ। आपे लेखा जाणे जल्वा नूर जलाली, ज़ाहर ज़हूर हरि ग़फ़ूर आप अख्वाईआ। आपणा बग़ीचा वेखण आया आपे माली, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। साचे बूटे लक्ख चुरासी विच्चों रिहा भाली, गुरमुख सज्जण आप उठाईआ। कली कली वेखी लग्गी पत डाली, चारों कुंट फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। जगत बग़ीचा वेखण आया, नीच नीचां विच समांयदा। सच हदीसा पढ़ावण आया, बीस बीसा राह तकांयदा। छत्र सीस आप झुलावण आया, शाह सुल्तानां मेट मिटांयदा। ख़ाली ख़ीसा सभ दा करन आया, त्रैगुण माया मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे साचा संग रखांयदा। गुरमुख साचा संग, हरि सज्जण आप रखाईआ। घर

घर भिच्छया मंगे मंग, दर दर अलख जगाईआ। नौ दर वेखे आपे लँघ, दसवें पन्ध मुकाईआ। आत्म सेजा सच पलँघ, गुर सतिगुर आप हंढाईआ। काया चोली चाढ़े रंग, रंगणहारा इक्क अख्वाईआ। सुरती डोरी नाम पतंग, ब्रह्मण्ड खण्ड आप उडाईआ। कलिजुग भन्ने काची वंग, काची गगरीआ रहिण ना पाईआ। जूठ झूठ चारों कुंट नच्चे बण मलंग, माया अल्फ़ी गल हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुरमुख लए समाईआ। सतिगुर साचा जागया, गुर गुर मेल मिलाए। हरिभगत उपजाए इक्क वैरागया, सन्तन मेला सहिज सुभाए। गुरमुख मिलावा कन्त सुहागया, गुरसिख मंगल बह बह गाए। मनमुख दहि दिशा फिरे भागया, मन ठौर ना कोए रखाए। कागां डार रल्लया बण बण कागया, सोहँ माणक मोती चोग ना कोए चुगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तख्त ताज इक्क सुहाए। तख्त ताज सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप सुहांयदा। सचखण्ड निवासी बह बह सजणा, धुर दरबारे आसण लांयदा। गुरसिख सुण मीत हमारे सज्जणा, तेरा साचा संग निभांयदा। अन्तिम आपे पर्दा कज्जणा, तेरी लज्ज पत्त आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे सद समांयदा। गुरमुख समाया आप हरि, दिस किसे ना आईआ। गुरसिखां अंदर गया वड़, आपणा रूप आप वटाईआ। सन्त सुहेले लए फड़, जागरत जोत कर रुशनाईआ। भगतां फड़ाया आपणा लड़, एका पौड़े लए चढ़ाईआ। गुर गुर विद्या गया पढ़, साची पढ़े नाम पढ़ाईआ। सतिगुर पूरा अगम्म अथाह बेपरवाह दरस दिखाए अग्गे खड़, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। गुरमुखां लगाए साची जड़, ना सके कोए उखड़ाईआ। मनमुख जीव झूठे वहण जायण हड़, पार किनारा ना कोए दरसाईआ। जम के दूत अद्धविचकार लैण फड़, राए धर्म हथ्थ फड़ाईआ। चित्रगुप्त लेखा लिख्या अग्गे देवे धर, माणस जन्म जो रहे कुकर्म कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए तराईआ। गुरमुख तारनहारा आ गया, कल कल्की अवतार। सीस साचा ताज टिका ल्या, सृष्ट सबाई करे ख्वार। उच्ची कूक शब्द जणा ल्या, आप आपणा पर्दा दए उतार। निरभउ आपणा नाउँ रखा ल्या, लक्ख चुरासी मारे मार। काल महांकाल आपणयां चरनां हेठ दबा ल्या, उत्ते पाए आपणा भार। ब्रह्मा विष्न शिव आप उठा ल्या, पुरीआं लोआं करे ख़बरदार। सुरपति राजा इंद नाल रला ल्या, करोड़ तेतीसा नैण उग्घाड़। गण गंधर्ब आप हला ल्या, किनर यछप करे पुकार। लोकमात जोत जगा ल्या, प्रगट हो चवीआं अवतार। शब्द खण्डा हथ्थ उठा ल्या, तिक्खी रक्खे दोवें धार। धर्म जैकारा एका ला ल्या, चार वरनां कर प्यार। अठारां बरनां मेट मिटा रिहा, करे खेल विच संसार। साची सरना इक्क तका रिहा, नौ खण्ड पृथ्मी खोल्ह दुआर। सत्तां दीपां

६३० ०६

राहे पा रिहा, भुलया रहे ना जीव गंवार। शाह सुल्तानां आप निवा रिहा दो जहानां करे खेल निरँकार। स्यासत विरासत सर्ब मिटा ल्या, एका हुक्म सच्ची सरकार। तख्त ताज आप सुहा ल्या, शाहो भूप बण सिक्दार। गुरमुख साचा आप बहा ल्या, आप आपणे चरन दुआर। सतिगुर उठया पुरख अकालया, कलिजुग काली रैण मेटे अँध्यार। घर घर दीपक गुरमुखां आपे बालया, जिउँ अयुध्या राम करे प्यार। साची धर्मसाल आप बहा ल्या, ना कोई दिसे चार दीवार। छप्पर छन्न ना कोए छुहा ल्या, घर विच मन्दिर इक्क त्यार। गुरमुख तेरा रंग पारब्रह्म आपणी चोली आप चढ़ा ल्या, चुरासी कलीआं कर त्यार। तेरा प्रेम प्यार आपणी अल्फ़ी आप हंढा रिहा, तन करे सच शंगार। तेरा चन्द सतिजुग साचा आप चढ़ा रिहा, निरगुण जोत कर उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे आप बहाए साचे दरबार। दर दरबार पारब्रह्म, ब्रह्मण्ड उप्पर आप रखांयदा। गुरमुखां संवारे आपे कम्म, दिवस रैण सेव कमांयदा। जो जन रसना सोहँ गाए दम, दरगाह साची मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरा साचा घर, सचखण्ड दुआरा आप बणांयदा। सचखण्ड दुआरा जाणीए, जिथे निर्मल जोत होए प्रकाश। सचखण्ड दुआरा जाणीए, जिथे भगतां पूरी होवे आस। सचखण्ड दुआरा जाणीए, जिथे मिले शाहो शाबाश। सतिगुर पूरा एका हुक्म वखाणीए, घर मन्दिर पावे रास। सचखण्ड दुआरा जाणीए, जिथे कोए ना जाए निरास। सचखण्ड दुआरा जाणीए, लेखा चुक्के पृथ्मी आकाश। सचखण्ड दुआरा जाणीए, सतिगुर पूरा गुरसिखां अंदर करे वास। सतिगुर पूरा जाणीए, ग़रीब निमाणयां करे बन्द ख़लास। सचखण्ड साचा जाणीए, जिथे ध्रू प्रहलाद उधारे विच प्रभास। सचखण्ड साचा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां वसे सदा पास। गुरमुख तेरे संग वसेरा, अंग संग होए आप सहाईआ। तेरा घर बणाए आपणा वसेरा, मेरा तेरा रहिण ना पाईआ। तेरा घर मेरा डेरा, तेरा वर मेरी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे फड़ाए आपणा लड़, आप आपणे नाल बंधाईआ। साचा लड़ साचा पल्ला, हरिजन साचे आप फड़ांयदा। पुरख अबिनाशी आदि जुगादि बणया रिहा झल्ला, वल छल धारी खेल खिलांयदा। हरिभगत हरिजन गुरमुख गुरसिख मिटाए दूई द्वैती सल्ला, एका साचे मार्ग लांयदा। करे खेल इक्क इकल्ला, विष्नूं विश्व रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करता हरि भगवान, आपे विष्नूं देवे दान, आपे ब्रह्मा ब्रह्म उत्पत करे सन्तान, आपे शंकर मेटे सर्ब निशान, पुरख अबिनाशी आपणी कल वरताईआ। आपे विष्नूं बाशक सेज हंढाए, सांगोपांग नाम धराईआ। आपे ब्रह्मा चारे वेद सुणाए, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। आपे शंकर हथ्थ त्रसूल फड़ाए, बाशक तशका गल लटकाईआ। आपे समुंद सागर विरोल वखाए,

६३० ०६

चौदां रत्न आप कढ्ढाईआ। आपे जल बिम्ब डेरा लाए, धरत धवल उप्पर आप टिकाईआ। आपे रवि ससि सूरज चन्न चढ़ाए, मंडल मंडप आप सुहाईआ। लोआं पुरीआं आपे रचन रचाए, ब्रह्मण्ड खण्ड आपे वेख वखाईआ। आपे लक्ख चुरासी भाण्डे घड़ वखाए, भन्नणहार आप हो जाईआ। आपे चार जुग जुग जुग वेस वटाए, नित नवित आपणी खेल खिलाईआ। आपे आपणा मन्त्र नाम जपाए दृढ़ाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम हो मेहरवान, सतिजुग झुलाए सच निशान, लेखा जाणे ज़िमीं अस्मान, चौदां तबकां वेखे मार ध्यान, चौदां लोकां देवे इक्क ज्ञान, एका शब्द करे पढ़ाईआ।

❊ ८ जेठ २०१७ बिक्रमी इंदर सिँघ दे घर दया होई पिण्ड धिंगाली ❊

साध संगत हरि बख़्शे दान, दरगाह साची वड वड्याईआ। चरन प्रीती चरन ध्यान, चरन कँवल चित लाईआ। साची नीती विच जहान, जूठ झूठ ना मुख वखाईआ। काया पतित पुनीती सुरती शब्द ज्ञान, एका करे नाम पढ़ाईआ। अमृत बख़्शे साचा पीण खाण, जगत कामना मेट मिटाईआ। धूढ़ कराए सच इशनान, मुख उज्जल आप वखाईआ। बिरहों मारे तीर निराला बाण, मन मनूआ लए ढाहीआ। मति मतवाली पाए एका आण, गुरमति इक्क समझाईआ। बुध बिबेकी कर पछाण, साची सुध आप कराईआ। भेव खुल्ाए गुज्झ सतिगुर पूरा हो मेहरवान, आप आपणी बूझ बुझाईआ। नेत्र लोचण नैण देवे दरस महान, दासी दास सेव कमाईआ। शब्द सुणाए धुर फ़रमाण, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। तोला बणया गुण निधान, राम नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। लक्ख चुरासी करे पछाण, घट घट अंदर खोज खुजाईआ। गुरसिख गुरमुख देवे आपणा दान, इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साध संगत विच समाईआ। साध संगत हरि देवे माणा, जगत अभिमाण रहिण ना पाईआ। एका अक्खर पढ़ाए वड विद्वाना, जगत विद्या मूल चुकाईआ। सति सन्तोखी बन्ने गाना, धीरज धर्म सर्ब सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे वड वड्याईआ। साध संगत विटहो कुरबान, हरि हरि साची सेव कमांयदा। शब्द सरूपी सच बिबाण, गुण निधान आप वखांयदा। आपे होया जाणी जण, जीवण जुगत आप सिखांयदा। लेखा चुक्के पवण मसाण, पवण पाणी धरत धवल वेख वखांयदा। अकथ कहाणी सुणाए एका कान, आप आपणा नाम अल्ांयदा। कलिजुग जीव सर्ब पछताण, वेला गया हथ्थ ना आंयदा। गुरमुख घर घर बैठे खुशी मनाण, गोबिन्द साचा मेल मिलांयदा। हरी हरि नर नरायण नौंजवान, बिरध बालां

वेख वखांयदा। नारी कन्त करे पछाण, रूप बसन्त आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साध संगत मात वड्यांअदा। हरिसंगत हरि दाना बीना, एकँकारा इक्क अख्वाईआ। गुरमुख उधारे जिउँ जल मीना, जल अमृत ताल सुहाईआ। अग्नी तत्त बुझाए ठांडा करे सीना, सीतल सीतल धार वहाईआ। लेखा चुक्के लोक तीनां, त्रैगुण फंदन दए कटाईआ। गढ़ हँकारी भन्ने बीना, मैं तूं ना कोए जणाईआ। गुर चरन दुआरे वसे साचा जीणा, आपे मेटे भरम दी काईआ। आपणा तन पाटा आपे सीणा, सोहँ सूई हथ्थ फड़ाईआ। एका रंग चढ़ाए हरि हरि भीन्ना, भिन्नड़ी रैण नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत संग निभाईआ। साध संगत बख्शे हरि दात, दाता दानी नाउँ धरांयदा। हरि दरस वड करामात, भेव अभेदा भेव खुल्हांयदा। चार वरन बंधाए नात, ज़ात पात ना कोए वखांयदा। कलिजुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। आप उतारे आपणे घाट, साचे पत्तण डेरा लांयदा। सदा सुहेला होए खेवट खाट, खेटा आपणा रूप वटांयदा। एका जोत जगाए ललाट, नूर नुराना डगमगांयदा। गुरमुखां वखाए एका हाट, पुरख अबिनाशी आप खुल्हांयदा। सच वस्त हरि रक्खे पास, मंगण दर ना किसे जांयदा। गुरसिखां लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन रसना सोहँ गांयदा। जन्म जन्म दी लग्गी बुझाए प्यास, घर अमृत मेघ वरसांयदा। हरिसंगत होया हरि दासी दास, दर दर घर घर सेव कमांयदा। करता करे पूरी आस, निज आत्म वास आपणा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साध संगत देवे जीआ दान, जुगत जगत मुक्त हथ्थ भगवान, भगवन भगतन वेख वखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, दर दुआर दीनां अनाथां बख्शे माण, अभिमानीआं माण दए गंवाईआ।

❊ ८ जेठ २०१७ बिक्रमी वकील चन्द दे घर पिण्ड धिंगाली ज़िला जम्मू ❊

हरि घट दीपक बालया, घर घर करे रुशनाईआ। घट घट जोत जवाल्या, लाट ललाटी इक्क वखाईआ। घर घर पुरख अकालया, कालख टिक्का दए मिटाईआ। घर घर बणाए सच्ची धर्मसालया, घर घर साचा नाद सुणाईआ। घर घर तोड़े जगत जंजालया, घर घर वजदी रहे वधाईआ। घर घर करे सदा प्रितपालया, घर घर गुरमुख रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर दए वड्याईआ। घर घर गुरू गुरु गुरदेव, घर घर नमो देव निमस्कार करांयदा। घर घर प्रगट होए अलक्ख अभेव, घर घर आपणी अलख जगांयदा। घर घर देवत सुर लगाए सेव, घर घर आपणा हुक्म चलांयदा। घर घर वसे रसना जिह्व, घर घर बत्ती दन्द सालांहयदा। घर घर अमृत बख्शे

सोहँ साचा मेव, घर घर अमृत फल आप खवांयदा। घर घर कर्म कट्टे नेहकर्मी नेहकेव, घर घर धर्मी धर्म धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच रूप दरसांयदा। घर घर दीवा घर घर बाती, घर घर जोत जगाईआ। घर घर दिवस घर घर राती, घर घर सूरज चन्न करे रुशनाईआ। घर घर बूंद घर स्वांती, घर घर सांतक सति वरताईआ। घर घर मेला कमलापाती, घर घर कँवल नैण नैण मटकाईआ। घर घर बणे हरि हरि राथी, घर घर रथ रथवाही, आप दया कमाईआ। घर घर जणाए पूजा पाठी, घर घर सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। घर घर लहिणा देणा चुकाए बाकी, घर घर साचा साकी जाम प्याईआ। घर घर मन मनूआ तन रहे ना आकी, घर घर गुरमुख रिहा उठाईआ। घर घर खोले बन्द किवाड़ा ताकी, घर घर दस्म दुआरी डेरा लाईआ। घर घर रक्खे चाल बांकी, घर घर अश्व घोड़ा आप दौड़ाईआ। घर घर बंधाए ऐराप्त हाथी, चौदां रत्नां विरोल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। घर मीता घर कँवल नैण, घर नर नरायण सुहांयदा। घर मीता घर सज्जण सैण, घर साक सबंध मिलांयदा। घर नाता वेखे भाई भैण, घर मात पित दरसांयदा। घर नारी कन्त इक्ट्ठे बहण, घर साची सेज सुहांयदा। घर घर चुकाए लहण देण, घर पूर्ब लेखा झोली पांयदा। गुरमुख झूठे वहण कदे ना वहण, साचे बेड़े आप चढ़ांयदा। लाड़ी मौत ना खाए डायण, वेले अन्त आपणी गोद बहांयदा। कलिजुग अन्तिम आया लैण, पिछला पन्ध मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा एका काहन, एका मंडल रास रचांयदा।

❋ ८ जेठ २०१७ बिक्रमी रोलू दे घर पिण्ड बाणीआं ज़िला जम्मू ❋

बिरध अवस्था बणी बिध, बिध बिधना लेख चुकाईआ। हरि करता कारज करे सिद्ध, सिदक सबूरी आप निभाईआ। घर उपजाए नव निध, अठारां सिद्ध फिरे हलकाईआ। आत्म अन्तर देवे विध, सूई सार शब्द हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म अजन्मां वेख वखाईआ। बिरध अवस्था अन्तर गति जाणी, पंज तत्त काया वेख वखाईआ। नाता तुट्टे पंज शैतानी, शाह सुल्तान एका नज़री आईआ। एका बख्शे चरन ध्यानी, ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ाईआ। तीर निराली मारे कानी, आर पार आप कराईआ। घर आया दे के जावे सच निशानी, दर्शन होए रैण सुबाईआ। घर अमृत बख्शे ठंडा पाणी, बाणी आपणी आप पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत बुड़ेपा वेख वखाईआ। जगत बुड़ेपा बुढ्ढा होए नढ्ढा, गुरमुखां घर जन्म दवाईआ। पंज तत्त नाता तोड़ करो अड्डो अड्डा, हड्ड मास

नाड़ी अग्न जलाईआ। दस मास मात गर्भ ना रक्खे डूँघी खड्डा, तत्त आपणे नाल मिलाईआ। नौ महीने अठारां दिवस कुंभ अन्धेरे विच्चों कढ्ढा, पंज तत्त आपणी वस्तू दए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचा इक्क वखाईआ। जगत बुढेपा देणा कट्ट, कट्टणहारा इक्क अख्वांयदा। आपणी कीमत पाए आपणे हट्ट, करता कीमत आप चुकांयदा। इक्क नुहाए साचे तट्ट, सरोवर तीर्थ इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर साचे जन्म दवांयदा। होए जन्म घर साचे मीत, गुरमुख मुख वड्याईआ। तेरा बुढेपा छोटे बच्चिआं दस्से रीत, बाली बुध सोहँ ढोला गाईआ। तेरी काया पतित पुनीत, पतित पावण दए कराईआ। माणस जन्म जाए साची जग जीत, जग जीवण दाता जुगती आपणी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा देवे हर, अग्गे आपणा पन्ध वखाईआ। साचा पन्ध मार्ग हरि, सरन सोभत सोभ सुख पाया। ज्ञान नेत्र खुल्ल्हे हरन फरन, मरन डरन भउ चुकाया। नाता तुट्टा वरन बरन, करनी करन आपणा मेल मिलाया। धन्न सुहञ्जणी सोहे धरती धवल धरन, जिथे हरि हरि दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लहिणा झोली पाया। लहिणा लहिणा देवणहारा, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग देवे भर भण्डारा, वड भण्डारी वेस वटांयदा। आदि जुगादि बणया रहे वरतारा, लोक परलोक वेख वखांयदा। सच सलोक बोले इक्क जैकारा, धुर दरबारा आपे गांयदा। जगत बुड़ेपा होए पार किनारा, आपणी धारा आप बंधांयदा। किरपा करे हरि निरँकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लेख मुकांयदा। हरिजन लेखा मुक्कया, मुक्कया पन्ध अख़ीर। काया पिंजर जो बैठा लुकया, चोटी चढ़े अन्त अख़ीर। जन भगतां दरस प्यासा फिरे भुख्या, आपे होया हाल बेहाल फ़कीर। गुरसिख गुरमुख हरिभगत हरिसन्त लोकमात ना रहे रुस्सया, प्रभ मिले हो हो आप हकीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिरध वेखे लेखा बाल, साची गोदी दए बहाल, आपे करे साची रक्खया। रक्खया करनेहारा हरि गोपाल, गोबिन्द आपणा नाउँ धराईआ। फुल फलवाड़ी महिकाए साचे डाल्ह, आप आपणी महिक महिकाईआ। घर सुहाए सुहञ्जणा ताल, तरवर सरवर पंखी पंछी तारीआं लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन्म कर्म धर्म आपणे हथ्थ रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क रखाए साची सरन, सरनगत इक्क बेपरवाहीआ।

❊ ८ जेठ २०१७ बिक्रमी कथा सिँघ जीवण सिँघ दे घर पिण्ड मोइल ज़िला जम्मू ❊

हरि पुरख निरँजण इक्क इकल्लड़ा, जुगा जुगन्तर खेल खिलांयदा। दरगाह साची धाम सुहंदड़ा, निरगुण आपणी जोत जगांयदा। सरगुण आपणा वेस वटंदड़ा, लोकमात फेरा पांयदा। लक्ख चुरासी वेख वखंदड़ा, घर घर आपणा आसण लांयदा। सन्त सुहेले आप उठंदड़ा, आत्म अन्तर ज्ञान दृढ़ांयदा। साचा शब्द इक्क सुनंदड़ा, धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जुगा जुगन्तर वेस अवल्ला, हरि साचा सच कराईआ। लक्ख चुरासी भुलाए कर कर वल छला, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। कलिजुग अन्तिम लेखा जाणे राणी अल्ला, ऐनलहक वेखे खुदाईआ। संग मुहम्मद फड़ाए आपणा पल्ला, चारों कुंट फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम काला रंग, नौ खण्ड पृथ्मी आप चढ़ांयदा। जूठ झूठ जगत मृदंग, सृष्ट सबाई आप वजांयदा। ग़रीब निमाणे होए नंग, सिर हथ्थ ना कोए रखांयदा। राज राजान शाह सुल्तान माया ममता होए अन्ध, नेत्र नैण ना कोए खुलांयदा। साचा दिसे ना किसे चन्द, रुस्सया रैण सर्ब वखांयदा। वरनां बरनां होई कंध, भाण्डा भरम ना कोए भनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ उपजांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, चारों कुंट दए दुहाईआ। चौदां तबकां खेल न्यारा, ज़िमी अस्मानां वेख वखाईआ। शरअ शरीअत पावे सारा, लाशरीक इक्क खुदाईआ। ग़फ्लत करे ना बेऐब परवरदिगारा, ग़ाफल करे सृष्ट सुबाईआ। उच्ची कूके लाए नाअरा, आपणी सदा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग कूड़ा वज्जया डंक, चारों कुंट उठ कुरलाया। नाता तुटा राउ रंक, शाह सुल्तान देण दुहाया। सच दुआरा दिसे ना कोए बंक, साचा मन्दिर ना कोए सुहाया। प्रगट होया वासी पुरी घनक, अकल कल धारी आपणा नाउँ रखाया। हरिजन वेखे जिउँ जन जनक, जन जननी लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग मेटे कूड़ पसारा, साचा चन्द इक्क चढ़ाया। कलिजुग कंसा अन्तिम अन्त, हरि पुरख निरँजण आप मिटाईआ। चारों कुंट माया पाए बेअन्त, त्रैगुण आपणा रूप दरसाईआ। हरी हरि ना मिले कोई सन्त, चारों कुंट ठगोरी पाईआ। अबिनाशी करता महिमा बेअन्त, लेखा गणत ना कोए गिणाईआ। लेखा जाणे जीव जंत, सृष्ट सबाई आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। लेखा लिखणहार निरँकार, आदि जुगादि समांयदा। विष्नूं करे सच प्यार, वंस आपणा वेख वखांयदा। ब्रह्मा नेत्र रिहा उग्घाड़, चारे कूटां वेख वखांयदा। शंकर

आपणा खोल्ह किवाड़, हथ्थ त्रसूल चमकांयदा। पुरख अबिनाशी करया ख़बरदार, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलांयदा। चौथे जुग आई हार, ब्रह्म मति ना कोए पढ़ांयदा। पंज तत्त काया तप्या अंग्यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार सर्ब जलांयदा। रत्ती रत्त ना दिसे विच संसार, आसा तृष्ना सर्ब भरांयदा। साची खाट ना सोवे कोई पैर पसार, हरि हरि कन्त ना कोए मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा इक्क संसार, विष्नूं उठ हो त्यार, पुरख अबिनाशी आप जगाईआ। तेरा विश्व रूप ना दिसे विच संसार, नर नारी गए भुलाईआ। तेरा भरया इक्क भण्डार, तूं दाता रिज़क सबाईआ। तूं घर घर बणे जगत वरतार, तेरी सेवा सच कमाईआ। तेरा लेखा लिख्या ना सके कोए विचार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति रिहा समझाईआ। ब्रह्मे उठ कर ध्यान, पुरी ब्रह्म आप हलांयदा। चारे जुग गेड़े मेहरवान, चारे वेद मेल मिलांयदा। अथर्बण अन्तिम आई हाण, चारों कुंट सर्ब वखांयदा। अल्ला राणी होई नादान, नेत्र सच ना कोए खुल्हांयदा। विभचारी जीव ना सके कोए पछाण, साचा कर्म ना कोए करांयदा। तेरा तेज लुकया विच जहान, ब्रह्म जोत ना कोए जगांयदा। आत्म ब्रह्म ना सके कोए पछाण, ईश जीव ना कोए मिलांयदा। कलिजुग कूड़ा होया प्रधान, डोरु डंका इक्क वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा अक्खर इक्क पढ़ांयदा। शंकर उठ हो त्यार, हरि साचे सच जणाईआ। कलिजुग अन्तिम कूके करे पुकार, राह तक्के तेरा वाहो दाहीआ। जो घड़या सो भन्न विच संसार, तेरी सेवा सच वखाईआ। लक्ख चुरासी होए ख्वार, साचे तख्त ना किसे वड्याईआ। राज राजान करन हाहाकार, उच्ची कूकण देण दुहाईआ। त्रैगुण माया देणी साड़, पंज तत्त नज़र ना आईआ। एका अग्नी लौणी हाढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां वेखे एको थाँईंआ। विष्नूं तेरी साची कार, हरि करता आप करांयदा। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म प्यार, पारब्रह्म वेख वखांयदा। शंकर तेरा अन्त श्रंगार, बाशक तशका गल लटकांयदा। दो जहानां पावे सार, लोकमात जोत जगांयदा। माया भुल्ले भरमी जीव गंवार, हरि का नाम ना कोए ध्यांअदा। घर घर भरया लोभ हँकार, धीरज जत ना कोए धरांयदा। नारी कन्त ना कोए प्यार, साचा मन्दिर ना कोए सुहांयदा। धर्म राए धुर दरबार बैठा करे विचार, चित्रगुप्त नाल रलांयदा। चौथे जुग खोल्ह किवाड़, आपणा लेखा आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा पन्ध मुकांयदा। कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकाउणा, चार वरन रहिण ना पाईआ। शाह सुल्तानां तख्तों लौहणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाउणा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। हिन्दू मुस्लिम ना किसे अख्वाउणा,

६३६
०६

रोज़ा बांग ना कोए सुणाईआ। साचे हुजरे बह किसे ना गाउणा, मक्का काअबा फोल फुलाईआ। पंडत पांधा वेद शास्त्र सिमरत एका रंग रंगाउणा, रंग रंगीला इक्क अख्वाईआ। सच दुआरा इक्क खलाउणा, ऊँच नीच भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग मेटे कूड़ी शाहीआ। कलिजुग मिटे कूड़ा शाह, जगत सिक्दार रहिण ना पाईआ। एकँकारा बणे इक्क मलाह, श्री भगवान बेड़ा आप चलाईआ। अबिनाशी करता देवे सच सलाह, साची सिख्या मात सिखाईआ। ना कोई सजदा करे सीस नवा, पंज वक्त निमाज़ ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई मुसल्ला सके हेठ विछा, वुज़ू बांग ना कोए जणाईआ। ना कोई मस्तक तिलक ल्ए लगा, जोत ललाटी इक्क वखाईआ। एका ब्रह्म दए दृढ़ा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सतिजुग साचा मार्ग ला, साची सिख्या इक्क समझाईआ। नौ खण्ड पृथमी वसे एका थाँ, सत्तां दीपां मेल मिलाईआ। सच संदेशा दए सुणा, ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा, आपणे रंग रंगाईआ। ना कोई जाणे धारी केसा, मूंड मंडाए आपे वेख वखाईआ। आपे धारे आपणा वेसा, निरगुण सरगुण जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। सतिजुग उतरया पार किनारा, बावण बलि बलि भेख वटाया। त्रेता तेरी पावे सारा, राम रघुवंस आप कहाया। द्वापर तेरा अन्त किनारा, मुकंद मनोहर आप कराया। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाया। वेद व्यासा बण लिखारा, ब्रह्मण गौड़ा गया समझाया। पूत सपूता हो त्यारा, उच्चे टिल्ले पर्बत बैठा आसण लाया। नानक उच्ची कूके करे पुकारा, एकँकारा इक्क मनाया। गोबिन्द बोले सच जैकारा, सम्बल नगरी नाउँ उपाया। प्रगट होए हरि सिरजणहारा, जोती नूर कर रुशनाया। एका डंक वजाए वजावणहारा, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लेखे लाया। कलिजुग कूड़ पसारा कूड़या, कूड़ी रैण अँध्यार। लक्ख चुरासी चुक्के लहण देणया, जीव जंत कोए ना उतरे पार। नाता तुट्टे साक सज्जण सैणया, बेड़ा डुब्बे विच मँझधार। लाड़ी मौत खाए डैणया, तन सोलां कर श्रंगार। गुरमुख विरले हरि हरि रसना कहिण, हरि सतिगुर करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल अगम्म अपार। खेल अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, सति पुरख निरँजण आप कराईआ। सो पुरख निरँजण हो त्यार, आप आपणी रचन रचाईआ। सचखण्ड निवासी खेल अपार, घनक पुर वासी आप कराईआ। बन्द ख़लासी करे विच संसार, गुरमुख सज्जण आप उठाईआ। जम की फांसी दए हुलार, जो जन हरि हरि गए भुलाईआ। पंडत काशी ना करे विचार, ग्रन्थी पन्थी देण दुहाईआ। जोत प्रकाशी निरगुण धार, आदि निरँजण आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा खेड़ा वेख वखाईआ।

कलिजुग खेड़ा नौ खण्ड, धरत धवल आप वसाया। पुरख अबिनाशी वण्डे वण्ड, चारे कूटां वेख वखाया। दहि दिशा वेखे भेख पखण्ड, सच सुच्च ना कोए दृढ़ाया। मन मति नार दुहागण होई रंड, घर कन्त सुहाग नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, गुरमुख साचे लए तराया। साचा खेड़ा साची संगत, हरि साचा संग निभाईआ। अंदरे अंदर बणन मंगत, रसना कहिण ना सकण राईआ। पुरख अबिनाशी कट्टे भुक्ख नंगत, भुख्यां नग्गयां देवे रिज़क सुबाईआ। ग़रीब निमाणे लाए अंगत, अंगीकार आप कराईआ। तुट्टे गढ़ हउमे हंगत, घर घर वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे दरस बेपरवाहीआ। साचा खेड़ा वसया जीव जंतया, बिरध बाल जवान वेख वखांयदा। काया चोली चाढ़े रंग बसंतया, हरी हरि चोला आप रंगांयदा। एका देवे मणीआ मणतया, शब्द शब्दी झोली पांयदा। तुटे गढ़ हउमे हंगतया, हरि हरि रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। साचा खेड़ा संगत वसेरा, घर साचे मेल मिलाया। दुक्खां दरदां ढाहे डेरा, जो जन सरनाई आया। चारों कुंट पाए शब्दी घेरा, किला कोट ना कोए वखाया। आपे वसे नेरन नेरा, निझर घर आपणा डेरा लाया। ग़रीब निमाणयां बन्ने बेड़ा, एका चप्पू हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा वेला दए सुहाया। दुक्खां रोगां तोड़े नाता, जिस जन नेत्र दर्शन पाया। मेटे रैण अन्धेरी राता, अन्ध अन्धेरा दए गंवाया। इक्क वखाए पूजा पाठा, राम नाम इक्क दृढ़ाया। इक्क वखाए साचा हाटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगाया। साचा खेड़ा नगर ग्रां, गृह आपणे विच रखाईआ। सदा सुहेला सिर रक्खे ठंडी छाँ, तत्ती वा ना लग्गे राईआ। दुःख दलिद्र तोड़े फड़ फड़ बांह, दर आया दुखीआ कोए रहिण ना पाईआ। जो जन सोहँ शब्द गाए साचा नाँ, जम की फाँसी दए कटाईआ। निथावयां देवे साचा थाँ, थान थनंतर इक्क सुहाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, एका माणक मणीआ हँसा साची चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा इष्ट इक्क वखाईआ। साचा खेड़ा साचा इष्ट, देवी देवा आप वखांयदा। भगतन खोल्हे भगती दृष्ट, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। नाता तोड़े झूठी सृष्ट, दर घर साचे मेल मिलांयदा। मेल मिलावा जिउँ रामा वशिष्ट, गुर चेला एका रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन आप वड्यांअदा। साचा नगर दया प्रभ धार, दीनां अनाथां वड्डी वड्याईआ। ख़ाली कुक्ख ना रहे कोई घर घर गोदी विच दए हुलार, सुक्के रुखड़े आप हरे कराईआ। आपणा अमृत निझर बरसे ठंडी ठार, सांतक सति सति वरताईआ। जो जन आए चल दुआर, दर दुआरका दए वखाईआ। मेल मिलावा कृष्न मुरार, साची

बंसरी इक्क वजाईआ। राधा कूके करे पुकार, कँवल नैण राह तकाईआ। मोर मुक्ट सीस दस्तार, छैल छबीला साचा माहीआ। पन घट आया वेखे तट किनार, जमन किनारा सोभा पाईआ। गोकल बिन्दराबन बन बन वाज़ां मार, आप आपणी खेल खलाईआ। साची सखीआं करे प्यार, घर मंगल एका गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उठाईआ। नगर खेड़ा ऊँचो ऊँच, पारब्रह्म प्रभ पाया। लेखा चुक्कया नीचो नीच, नीचां अंदर आप समाया। वेखणहारा खेवट खेट, अनडिठ रूप वटाया। पीत पीतम्बर सोहे सीस, जगत जगदीश खेल खलाया। चारों कुंट पीसण रिहा पीस, कलिजुग चक्की इक्क चलाया। अल्ला राणी पढ़े हदीस, कलमा अमाम आप सुणाया। पढ़ पढ़ थक्के राग छतीस, रागां वाला दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन खेड़ा दए वसाया। हरिजन खेड़ा उच्चा घर, महल्ल अटल वखाईआ। सतिगुर पूरा अंदर वड़, दिस किसे ना आईआ। आपणे पौड़े गया चढ़, काया मन्दिर अंदर आप लगाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, साची सेजा रिहा हंढाईआ। आपणी विद्या निष्अक्खर आपे पढ़, गुरमुख साची करे पढ़ाईआ। जिस फड़ाया आपणा लड़, दो जहानी पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए जगाईआ। नगर खेड़ा सच टिकाना, हरिजन साचे सोभा पाईआ। गुर गुर देवे शब्द बबाणा, सेवक साची सेव कमाईआ। धुरदरगाही साचा राणा, सतिजुग साची बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे साचा वर, ख़ाली कुक्ख ना रखाईआ। ख़ाली कुक्ख ना जाए रहि, गुर सतिगुर दया कमांयदा। जो जन संगत विच आए बह, मंद भागी भाग लगांयदा। रसना कोई कहे ना कहे, घट घट अंदर वेख वखांयदा। दुखियां अंदर दुःख ना रहे, बांझ नार ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे फल आप लगांयदा। साचा फल फल आप लगाए, काया कंचन गढ़ सुहाईआ। अमृत सिंच हरा कराए, पत डाल्ही आप महिकाईआ। ख़ाली भाण्डे दए भराय, भरनहार आप अख्वाईआ। माता ना रोवे पुत्तर दे हावे, पूरी इच्छया आस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, डुबदे पाथर लए तराईआ। डुबदे पाथर तारनहार गोपाला, सो पुरख निरँजण दया कमांयदा। हरिजन उपजाए साचे लाला, लाल अनमोला नाउँ रखांयदा। गल विच पाए सोहँ माला, हँ ब्रह्म मेल मिलांयदा। पारब्रह्म प्रभ चले अवल्लड़ी चाला, लोकमात खेल खिलांयदा। संग रखाए काल महांकाला, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। हरिजन बहाए सच सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दुआरा आप वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार करांयदा। हरिसंगत हरि तारया, दीनां नाथ दयानिध धार। गुरमुख उतरे पार किनारया, पाया पुरख

अगम्म अपार। घर वसदा रहे दवारया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे सच प्यार। सच प्यार चरन कँवल, नाभी कँवल मुख खुल्हाईआ। मिले वडियाई उप्पर धवल, धर धरनी दए सालाहीआ। आत्म अन्तर जाए मवल, मौला रूप आप अख्वाईआ। मेल मिलावा सुंदर सँवल, घर वेख सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा लए लगाईआ। हरिजन लेखा लावणा, लिख्या धुर करतार। साचे मन्दिर आप बहावणा, उच्च महल्ल अटल मुनार। साची सखीआं मेल मिलावणा, सोलां कलीआं कर श्रंगार। गीत गोबिन्द एका गावणा, सोहँ शब्द बोल जैकार। पुरख अबिनाशी दर घर पावणा, घर मेला कन्त भतार। आवण जावण फंद कटावणा, नाता छुट्टे सर्ब संसार। सेज रंगीली इक्क हंढावणा, दरगाह साची धुर दरबार। पुरख अगम्मड़ा इक्क मनावणा, जन्मे ना मरे आवे जावे वारो वार। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखावणा, रामा कृष्ना लै अवतार। कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकावणा, निहकलंकी जामा धार। सतिजुग साचा मार्ग लावणा, चार वरन करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन साचा सोहया, तेरा बंक दुआर। हरि जू साचा बीज बोया, फल लग्गे अपर अपार। धुर दा लै के आया ढोआ, कराए वणज सच्चा वपार। मुख अमृत साचा चोया, खिड़या फुल्ल होई गुलज़ार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए सच बहार। सच बहार बसन्ती रुत्त, गुरमुख तेरी आप बणांयदा। लेखा जाणे अबिनाशी अचुत्त, पारब्रह्म प्रभ खेल खिलांयदा। आप उपजाए साचे सुत, ब्रह्म तत्त इक्क वखांयदा। पंच विकारा कढे कुट्ट, एका खण्डा हथ्थ चमकांयदा। अमृत जाम प्याए साचा घुट्ट, भर प्याला हथ्थ उठांयदा। लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, जिस जन आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि रंग रंगांयदा। हरिजन हरि हरि रंगया, रंगे नाम चलूल। देवे दान मूंहों मंगया, जो जन सरनाई आए भूल। गुरमुख गुर दर कदे ना संगया, मेल मिलावा कन्त कन्तूहल। आपे जाणे आपणा बाल भुयंगीआ, जुगा जुगन्तर ना जाए भूल। साचा मेल मिलाया साचे संगीआं, आपणा तोड़े ना कदे असूल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीब निमाणे करे कबूल। ग़रीब निमाणे झोली पा, आपणा शुकर मनांयदा। आपणा कर्ज़ा देवे लाह, मकरूज ना कोए अख्वांयदा। आपणा फ़र्ज़ करे अदा, आदल साचा अदल कमांयदा। गुरसिखां कोलों होए ना कदे जुदा, जुग जुग साचा संग निभांयदा। कलिजुग अन्तिम आपणा आप कर फ़िदा, आपणी फ़ितरत ना कोए वखांयदा। शब्द अगम्मी नाद वजा, हज़रत अपणा नाउँ रखांयदा। कागद कलम कोई लेखा जाणे ना, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सर्ब गांयदा। गुरमुख विरले आपणी बूझ दए बुझा, ज्ञान गोझ आप दृढ़ांयदा। तीजा

नेत्र दए खुल्ह, निज नेत्र वेख वखांयदा। चौथे पद दए बहा, घर चौथे मेल मिलांयदा। पंचम ढोला देवे गा, शब्द विचोला रूप वटांयदा। गुरसिख काया चोला दए बदला, जीवण मुक्त आप करांयदा। सोलां कला रूप प्रगटा, रूप बराटी आप अख्वांयदा। अकल कल कल वेस वटा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। हरिजन साचे लए जगा, जागरत जोत इक्क जगांयदा। साचे खेड़े चरन टिका, उजड़या खेड़ा आप वसांयदा। डुबदा बेड़ा लए तरा, साची सेवा सेव कमांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी उलटा गेड़ा दए दवा, कलिजुग झेड़ा आप मुकांयदा। धरत मात दा खुल्ह वेहड़ा दए करा, चारों कुंट वेख वखांयदा। गुरमुखां उप्पर आपणा हथ्थ टिका, वेले अन्त आप बचांयदा। समरथ पुरख नाउँ धरा, साचा रथ आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे एका वर, राती सुत्तयां ना आवे किसे डर, दुःख रोग सोग चिंता जाए हर, जो जन चरनी सीस निवांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे के जावे जीआं दान, जो जन करे चरन धूढ़ सच्चा अशनान, दुरमति मैल आप गवांयदा।

६४१

०६

✻ ८ जेठ २०१७ बिक्रमी लछमण सिँघ दे घर पिण्ड धिंगाली ज़िला जम्मू ✻

इक इकल्ला एकँकारा, अकल कला वरताईआ। दूजा सचखण्ड वसे सच दुआरा, लोआं पुरीआं बणत बणाईआ। तीजे ब्रह्मण्ड खण्ड कर त्यारा, रवि ससि सतारा आप चमकाईआ। चौथे ब्रह्मा विष्न शिव कर उज्यारा, आपणी रत्त तत्त बणाईआ। पंजवें त्रैगुण माया भर भण्डारा, पुरख अबिनाशी आप वरताईआ। छेवें लक्ख चुरासी कर पसारा, खेले खेल बेपरवाहीआ। सत्तवें शब्द अनादी बोल जैकारा, घर घर विच जोत जगाईआ। अठ्ठवें अठ्ठां तत्तां खेल न्यारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध नाल रलाईआ। नौवें नौ दर खोले विच संसारा, जगत वासना आप भराईआ। दसवें निरगुण जोती कर उज्यारा, घर घर विच करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। इक्क इकल्ला अकल कल धार, दूजी कुदरत वेख वखांयदा। तीजे खोल्हे बन्द किवाड़, चौथे पद आसण लांयदा। पंचम बोल नाम जैकार, छेवें छप्पर छन्न सुहांयदा। सत्तवें सति सतिवादी धार, अठवें आपणी गणत गणांयदा। नौवें नौ खण्ड कर त्यार, दसवें आपणा रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रूप अनूप आप दरसांयदा। इक्क इकल्ला खेल अवल्ला, हरि साचा सच कराईआ। दूजे सचखण्ड वसाए सच महल्ला, उच्चा टिल्ला आसण लाईआ। तीजे जोती नूर आपे बल्ला, आदि निरँजण कर रुशनाईआ। चौथे सच संदेश एका घल्ला, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। पंजवें पंजां तत्तां आपे रला,

काया बंक आप सुहाईआ। छेवें करे आपणा हल्ला, पंज तत्त पंज विकार करे कुड़माईआ। सत्तवें सति सतिवादी फल लगाए एका डाला, पत डाल्ही आप महिकाईआ। अठ्ठवें खेले अवल्लड़ी चाला, लोकमात वेख वखाईआ। नौवें नौ दर वेखे जगत जंजाला, जीव जंत बन्धन पाईआ। दसवें खेल पुरख अकाला, निरगुण सरगुण विच कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। इक्क इकल्ला खेल न्यारा, निरगुण आपणा आप करांयदा। दूजा भरे शब्द भण्डारा, सति सतिवादी आप वरतांयदा। तीजा जाणे आर पार किनारा, मँझधारा आपणी खेल खिलांयदा। चौथा लेखा लिखे पुरख नारा, नर नरायण आपणा नाउँ धरांयदा। पंचम एथे ओथे दए सहारा, धुर दा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। छेवें शास्त्र सिमरत वसे बाहरा, वेद पुराण भेव ना पांयदा। सत्तवें सति सतिवादी ना पुरख ना दिसे नारा, एका जोती जोत डगमगांयदा। अठ्ठवें खेले खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर आपणा नाउँ धरांयदा। नावें नाद वजाए ऊँची कूके करे पुकारा, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। दसवें दर मन्दिर सोहे सच्चा घर बारा, दीआ बाती आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महिमा गणत बेअन्त आप रखांयदा। इक्क इकल्ला आदि जुगादि, पुरख अबिनाशी आप अख्वाईआ। दूजा वजाए साचा नाद, ब्रह्मण्ड खण्ड आप सुणाईआ। तीजे शब्द चलाए बोध अगाध, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। चौथे घर रहे विस्माद, बिस्मिल आपणा रूप वटाईआ। पंचम लेखा जाणे सन्त साध, घर मन्दिर खोज खुजाईआ। छेवें गुरमुख साचे लए लाध, लोकमात वेख वखाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण मेटे अन्धेरी रात, साचा नूर करे रुशनाईआ। अठ्ठवें अठ्ठां तत्तां मिटे जगत विवाद, कूड़ी वख रहिण ना पाईआ। नौवें नौ दर तजे रस स्वाद, फीका रस ना कोए वखाईआ। दसवें घर मेल मिलावा मोहण माधव माध, आप आपणा मेल मिलाईआ। इक्क इकल्ला सूरा सरबंग, सर्बकला भरपूरया। दूजा आसण लाए सच पलँघ, पुरख अबिनाशी हाज़र हज़ूरया। तीजे आपणे अंदर आप लँघ, आपे चाढ़े सति सरूरया। चौथे घर वजाए सति मृदंग, जोत जगाए नूरो नूरया। पंचम पंज तत्त वेखे काया वंग, लेखा चुक्के नेड़ दूरया। छेवें सुणाए सुहागी छन्द, अनहद वज्जे साची तूरया। सत्तवें मेटे अन्धेरी अन्ध, नाता तुट्टे कूड़ो कूड़या। अठवें अठ्ठां तत्तां मुक्के पन्ध, आपे मुकाए शाह ग़फ़ूरया। नौवें नौ चन्दी चाढ़े एका चन्द, एका बख्शे साची धूड़या। दस्म दुआरी वेख वखाए हरि ब्रह्मण्ड, जीउ पिण्ड हाज़र हज़ूरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आसा मनसा आपे पूरया। इक्क इकल्ला सच सुल्ताना, दर हरि साचे सोभा पांयदा। दूजा तख्त श्री भगवाना, दरगाह साची आप सुहांयदा। तीजे झुलाए सच निशाना, उच्च मकाना आप टिकांयदा। चौथे बन्न्हे सगनी गाना, सचखण्ड दुआरे आपणा सगन मनांयदा।

पंचम ताज इक्क महाना, आप आपणी बणत बणांयदा। छेवें बणे साचा कान्हा, घर साचे सोभा पांयदा। सत्तवें मर्द मर्द मरदाना, आप आपणा नाउँ उपजांयदा। अठ्ठवें उठ उठ वेखे दो जहानां, नेत्र नैणां आप वखांयदा। नौवें नौ दर कर परवाना, पारब्रह्म प्रभ रंग चढ़ांयदा। दसवें छुट्टा पीणा खाणा, आसा तृष्ना ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वण्ड वण्डांयदा। इक्क इकल्ला खेल ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म आप कराईआ। दूजी वण्डे साची वण्ड, पुरीआं लोआं वेख वखाईआ। तीजे ढाहे आपणी कंध, आपणा पर्दा दए चुकाईआ। चौथे वखाए परमानंद, परम पुरख बेपरवाहीआ। पंचम मिटाए अन्धेरा अन्ध, निरगुण बाती कमलापाती कर रुशनाईआ। छेवें दरसाए निजानंद, निज घर बैठा ताड़ी लाईआ। सत्तवें जगत जंजाला तोड़े फंद, बन्दी छोड़ आप अख्वाईआ। अठ्ठवें आपे देवे आपणी गंढु, साची गंढु नाम पवाईआ। नौवें नौ दर रक्खे ठंड, अग्नी पोह ना सके राईआ। दसवें मेला हरिगोबिन्द, आप वजाए सच वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। इक्क इकल्ला सच सिँघासण, थिर घर साचा आप सुहांयदा। दूजा खेल पुरख अबिनाशण, पारब्रह्म प्रभ आप करांयदा। तीजा वेखे खेल पृथ्मी आकाशण, आकाश आकाशां उप्पर डेरा लांयदा। चौथे घर रक्खे वासण, चौदां लोक इक्क सलोक सुणांयदा। पंचम घर जोत प्रकाशण, ब्रह्मा विष्न शिव दीप टिकांयदा। छेवें पूरी करे आसण, गुर पीर अवतार, साध सन्त रंग रंगांयदा। छेवें वेखे खेल तमाशण, लोकमात वेस वटांयदा। सत्तवें दर घर साचे करे निवासण, निर्धन आपणा रूप वटांयदा। अठ्ठवें वसे आस पासन, स्वास स्वासण आपणा रंग चढ़ांयदा। नौवें नौ दर आपणी भिख्या भासण, साची भिच्छया झोली पांयदा। दसवें घर शाहो शाबासण, साचा शाह आप मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। इक्क इकल्ला हरि गोबिन्द, गहर गम्भीर समाया। दूजे मेटे सगली चिन्द, आपणी चिंता ना कोए वखाया। तीजे होए सदा बख्शिंद, बख्शणहार बेपरवाहया। चौथे घर नादी सुत उपजाए आपणी बिन्द, मात पित ना कोए बणाया। पंजवें अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, संसा रोग ना कोए जणाया। छेवें लेखा जाणे करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इंद, इंद इंदरासण फोल फुलाया। सत्तवें दाता गुणी गहिन्द, आप आपणे विच समाया। अठवें अठ्ठ तत्त ना सके कोई निन्द, निन्दया विच कदे ना आया। नौवें नौ दर जगत वासना भरी टिंड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच धराया। दसवें घर वसया हरि, लेखा चुक्के पिण्ड इंड, ब्रह्मण्ड आपणी रचन रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाया। पहले घर हरि निरँकार, निरगुण आपणी जोत जगांयदा। दूजे घर हो त्यार, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। तीजे सच सिँघासण कर त्यार, शाहो भूप आसण

लांयदा। चौथे बणे दर दरबान, दर दरवेशा आपणी सेवा आप कमांयदा। पंचम पंचम ताज इक्क भगवान, आपणे सीस आप टिकांयदा। छेवें होए आप मेहरवान, आपणा हुक्म आप सुणांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण नौजवान, आपणा जोबन आप हंढांयदा। आपे सुत जणे श्री भगवान, पूत सपूता शब्दी नाउँ धरांयदा। नौवें रंग रंगे दो जहान, अजूनी रहित आपणी कल वरतांयदा। दसवें सोहे राज राजान, राज राजाना आप अख्वांयदा। इक्क दस गुण निधान, आपणी महिमा आप गणांयदा। आपणे दर झुलाए सच निशान, थिर घर साचा आप वड्यांअदा। दो दस हो प्रधान, दूर दुराडा वेख वखांयदा। तिन्न दस पाए आपणी आण, आपणे भाणे सद रहांयदा। चार दस पारब्रह्म ब्रह्म करे पछाण, आपणी वण्डण आप वण्डांयदा। पंज दस ब्रह्मा विष्न शिव आपणी झोली पाए दान, आपे नाभी कँवली फुल्ल खलांयदा। छे दस करे आपणी आप कल्याण, आपे अंदर आपे बाहर आपे गुप्त आपे ज़ाहर, आप आपणा रूप वटांयदा। दस छे हो त्यार, एका नूर करे उज्यार, ब्रह्म आपणा सुत उपजांयदा। दस सत्त चारे मुख कर त्यार, चारे कूटां वेख वखांयदा। अठ्ठ दस भर भण्डार, चारे वेदां आप पढ़ांयदा। नौ दस कर त्यार, त्रैगुण माया झोली पांयदा। दस दस बीस खेल जगदीश, लक्ख चुरासी रचन रचांयदा। इक्क इकीस सुणाए हदीस, साचा शब्द आप अल्लांयदा। दो बीस आपणा पीसण पीस, आपणा हट्ट आप खुल्लांयदा। तिन्न बीस पारब्रह्म तेरी कोई ना करे रीस, आपणे भाण्डे आपे घड़ वखांयदा। चार बीस करे खेल जगदीश, पंज तत्त मेला मेल मिलांयदा। बीस पंज नेत्र वहाए अंझ, जो घड़या सो भन्न वखांयदा। इक्क इकल्ला हरि अवतारा, दूजा सरगुण रूप वटांयदा। तीजे खेल करे विच संसारा, चौथे दीन दुनी वेख वखांयदा। पंचम शस्त्र तेज़ कटारा, छेवें शंकर हथ्थ फड़ांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण हो उज्यारा, सति सतिवादी धार बंधांयदा। अठ्ठवें खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर आपणा नाउँ धरांयदा। नौवें रंग ना दिसे कोए संसारा, दसवें रूप ना कोए वखांयदा। ग्यारवें मंगे ना कोए सहारा, बारवें मेल ना कोए मिलांयदा। तेरवें मंगे ना कोए दुआरा, चौधवां चौदां लोकां आप खलांयदा। पंदरवें पंडत बण ना बणे भिखारा, सोलवें सोलां कल ना कोए उपजांयदा। सतारवें आपे जाणे आपणी धारा, अठारवें आपणा पर्दा लांहयदा। इक्क नौ उनीसा खेल न्यारा, जगत जगदीशा आप करांयदा। बीस बीसा होए ख़बरदारा, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। इक्क इकीस बोल जैकारा, सच हदीस आप सुणांयदा। दो बीस वेखे सच अखाड़ा, चारों कुंट फेरा पांयदा। तिन्न बीस बुध बबेकी कर उज्यारा, ज्ञान बोध सर्ब दृढ़ांयदा । चार बीस चवीआं निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती जामा भेख वटांयदा। पंजी प्रकृति करे पार किनारा, निरत सुरत वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समांयदा। इक्क

६४४ ०६

इकल्ला रंग अमोला, हरि साचा आप रखाईआ। दूजी कुदरत बणया तोला, तोलणहारा दिस ना आईआ। तीजे बोले साचा ढोला, सच संदेशा दए सुणाईआ। चौथे बदल्लया आपणा चोला, सरगुण निरगुण रूप वटाईआ। पंचम वसे पर्दे ओहला, दिस किसे ना आईआ। छेवें आपे पाए आपणा रौला, आप आपणी धुन उपजाईआ। सत्तवें होए सति पुरख निरँजण मौला, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। अठवें लेखा जाणे धरत धौला, धर धरनी वेख वखाईआ। नौवें नौ दर नौ खण्ड दर दरवाज़ा आपे खोल्हा, आपणी हथ्थीं कुंडा लाहीआ। दसवें घर वसे हरि किसे हथ्थ ना आए भाला भोला, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा लिखाईआ। पहले अंदर एका वड़या, दूजा पर्दा आप चुकाईआ। तीजे पौड़े आपे चढ़या, चौथे घर करे रुशनाईआ। पंचम विद्या एका पढ़या, छेवें करे सर्ब पढ़ाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण आपणा घाड़ण घड़या, अठ्ठवें लक्ख चुरासी जड़त जड़ाईआ। नौवें नौ दर आपणी आसा तृष्ना आपे सड़या, दसवें आपे बैठा जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सुहाए साचा मन्दिर, हरि मन्दिर इक्क वड्याईआ। इक्क इकल्ला सच महल्ला, हरि सज्जण आप सुहांयदा। दूजा वसे जलां थलां, तीजे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरी पांयदा। चौथे करे प्रकाश डूँघी डल्ला, पंचम साचा चन्द चढ़ांयदा। छेवें निरगुण सरगुण आपे रला, सत्तवें साचा हुक्म सुणांयदा। अठ्ठवें शब्द अगम्मी फड़ाए पल्ला, पल्लू आपणे नाल बंधांयदा। नौवें दर दरवाज़े आपे खला, ख़ालक ख़लक रूप वटांयदा। दसवें दूई द्वैती मेटे सल्ला, सालस सच सालसी आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वसे साचा घर, घर साचा आप सुहांयदा। इक्क इकल्ला अकल कल धार, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। दूजी जोत जगे निरँकार, तीजे शब्द वज्जे शनवाईआ। चौथे घर खेल न्यार, पंचम सखीआं मंगल गाईआ। छेवें घर सच्ची सिक्दार, सत्तवें सति सतिवादी आप कमाईआ। अठ्ठवें खेल वड संसार, नव नव वेखे बेपरवाहीआ। दसवें जोत जगे अपार, लाट ललाटी इक्क रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा लेखे विच लगाईआ। इक्क इकल्ला सर्ब गुणतास, कादर करीम आप अख्वांयदा। दूजा घर घर रक्खे वास, तीजा दर दर फेरी पांयदा। चौथे जोत कर प्रकाश, पंचम निरँजण रूप वटांयदा। छेवें देवे पवण स्वास, सत्तवें साची रास रचांयदा। अठ्ठवें वसे विच आकाश, नौवें पृथ्मी खोज खुजांयदा। दसवें होए दासी दास, दर दरवेशा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहांयदा। इक्क इकल्ला अगम्म अथाह, अलक्ख अगोचर भेव ना राया। दो जहानां बणे मलाह, जुग जुग आपणा फेरा पाया। आप उपाए साचा नाँ, नाउँ निरँकारा आप अख्वाया। साची कुदरत दए वसा, सृष्ट सबाई

६४५
०६

लेख लिखाया। आपणी बणत लए बणा, घड़ भाण्डे रूप वटाया। जीव जंत जोत जगा, ब्रह्म तत्त बन्द कराया। हरख सोग ना कोए रखा, आपणा गेड़ा रिहा चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा भेव खुल्हाया। जुग जुग गेड़ा चार, चार वेदां करे पढ़ाईआ। जुग जुग गेड़ा चार, चारे मुख करे सालाहीआ। जुग जुग गेड़ा चार, चारे बाणी करे पढ़ाईआ। जुग जुग गेड़ा चार, चारे खाणी लए उपजाईआ। जुग जुग गेड़ा चार, चारे वरनां रूप वटाईआ। जुग जुग गेड़ा चार, चार जुग चौकड़ी इक्क बणाईआ। जुग जुग गेड़ा चार, चार नौ आप भवाईआ। जुग जुग गेड़ा चार, चार सत्त दए दुहाईआ। जुग जुग गेड़ा चार, चार कुंट वेख वखाईआ। जुग जुग गेड़ा चार, चार यार रहे कुरलाईआ। जुग जुग गेड़ा चार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी विथया देवे दस्स, चार वेद भेव ना पाईआ। जुग जुग गेड़ा हरि करतार, चारों जुग भवांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पावे सार, भगत भगवन्त वेख वखांयदा। सन्तां करे सच प्यार, साची सिख्या इक्क सिखांयदा। गुरमुख सज्जण लए उभार, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। गुरसिख फड़ फड़ लाए पार, जुग जुग बेड़े आप चढ़ांयदा। नित नवित हरि साची कार, वार थित ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, आपणी कल वरतांयदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, आपणे भगत आप उपाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, आपणे सन्त आप उठाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, आपणे गुरमुख मेल मिलाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, आपणे गुरसिख लए समझाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, आपणा लेखा आपे लिख, आपणे अग्गे लए टिकाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, ब्रह्मा विष्न शिव मंगदे आए भिक्ख, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, कोटन कोटि इंदर आपणा तख्त ताज गए तजाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, करोड़ तेतीसा आपणा रूप रहे वटाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, रवि ससि आपणी काया गए पल्टाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, नौ ध्रू आपणा मुख गए छुपाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, कोटन कोटि राम कृष्न बैठे वेस वटाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, पुरख अबिनाशी आपणी खेल आप खिलाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरी औध गई पुग, अग्गे लेखा रहे ना राईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, कोटन कोटि जपी तपी हठी तपीशर मुनी रिखीशर आपणी चोग गए चुगाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, ब्रह्मा ईश्र गुर गोरख उच्चे टिल्ले फेरीआं गए पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, दिवस रैण दाई दाया बण बण सेव गए कमाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, एका माई तिन्न चेले आपणे गए बणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, कोई लेखा ना सकया लिख, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सारे

रहे गाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, तेरा हठ तप अभ्यास जोग जगत जुगत गए वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, तेरे सन्त भगत भगवन्त गुरमुख गुरसिख आपणे पेटे पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरा आया अन्त, कलिजुग आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, सन्त सुहेले जो आपणे संग रखाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, भगत भगवन्त मेल मिलाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, गुरमुख साचे रिहा तराया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, गुरसिख साचे वेख वखाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, तेरा लहिणा आपणे हथ्थ रखाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, पुरख अबिनाशी साचा गहिणा लोकमात आपणा आप लए प्रगटाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, आपणा कहिणा पूरा दए कराया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, तेरा लेखा आपणयां नैणां वेख वखाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, पुरख अबिनाशी साचा साक सज्जण सैण गुरसिख इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दे विछड़े मीत, कलिजुग अन्तिम करे पतित पुनीत, लोकमात जन्म दवाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रक्खे आपणी गोद, सचखण्ड आपणा डेरा लाईआ। कलिजुग अन्तिम करया आपणा जोध, जोद्धा सूरबीर आप अख्वाईआ। आपणा साहा आपे सोध, सच तारीख़ इक्क लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा लहिणा दए चुकाईआ। सच तारीख़ हरि मेहरवान, लोकमात इक्क जणांयदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग करदा आया सदा ध्यान, मेहरवान आपणी सेव कमांयदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंका जामा पांयदा। गुरमुख साचे कर परवान, हरिसंगत नाउँ धरांयदा। बीज बीजया विच जहान, हाढ़ सतारां रुत्त सुहांयदा। अमृत फल दित्ता पीण खाण, रसन विकार सर्ब मिटांयदा। सन्त भगत गुरमुख गुरसिख जुग जुग दे विछड़े कड्ढे कीते आण, सोए मात आप उठांयदा। आपणयां करे आप पछाण, जगत विचोला ना कोए रखांयदा। साचा धाम करे परवान, सच निशाना आप चढ़ांयदा। गुरमुख गुरसिख हरिसंगत रूप होई भगवान, आपणी जोती विच रखांयदा। देवण आया धुर फ़रमाण, सोहँ सोहला इक्क सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिसंगत तेरी सेवा आप कमांयदा। हरिसंगत हरि सेवा कर, आपणा शुकर मनाईआ। जुग जुग विछड़े बन्ने लड़, आपणी हथ्थीं गंढु दवाईआ। दर्शन करन आया घर घर, दरस प्यासा सच्चा माहीआ। गुरसिखां भार सिर आपणे उत्ते धर, चारों कुंट फिरे चाँईं चाँईंआ। हरिसंगत विकारा तेरा आपणी झोली लए भर, तेरा हौला भार कराईआ। गुरसिख तेरा धर्म राए दा चुक्के डर, सतिगुर पूरा आपणा भय इक्क वखाईआ। पहलों गुरसिखां चरनी जाए पड़, फिर गुरसिख अपणे चरन लगाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज आपणी खेल खलाईआ। इक्क इकल्ला दरस प्यासा, दूजा सिखां राह तकांयदा। तीजे संगत अंदर करे वासा, चौथे आपणा मुख वखांयदा। पंचम पावे साची रासा, छेवें छप्पर छन्न छुहांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण पूरी करे आसा, चरन भरवासा इक्क धरांयदा। अठवें तत्तां करे तेरा ख़लासा, बन्दी तोड़ बन्दीखानिउँ आप छुडांयदा। नौवें नौ दर ना झूठा होए वासा, ख़ाली ठूठा आप करांयदा। दसवें घर सर्ब गुणतासा, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा रिहा तज, लोकमात आया भज्ज, हरिसंगत विच रिहा सज, साची सिख्या आप समझांयदा। साची सिख्या सुण जन मीत, अभुल गुर आप समझाईआ। तेरी मेरी इक्क प्रीत, प्रीतीवान आप लगाईआ। अट्ठे पहर गुरसिखां दे हरि गाए गीत, दूसर होर ना कोए सुणाईआ। गुरसिख तेरी काया तेरा मन्दिर मसीत, अंदर बैठा सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात फेरा पाईआ। लोकमात हरि फेरा पाया, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। हरिसंगत साची वेखण आया, दूर दुराडा कर के धाईआ। बिरध बाल जवाना एका रंग रंगाया, नारी पुरष ना वण्ड वण्डाईआ। नर नरायण सिर हथ्थ रखाया, लेखा जाणे थाउँ थाँईंआ। दरस प्यासा फिरे तिहाया, बिन गुरसिख तेरे दरस, तृखा ना कोए बुझाईआ। गुरसिखां घर अमृत रिहा बरस, एका मेघ छहबर लाईआ। हरिसंगत सतिगुर पूरे उत्ते करना तरस, तेरा तरस मेरी वडियाईआ। हरिसंगत गुर वसण देणा उत्ते फर्श, बिन संगत गुर उत्ते फर्श रहिण ना पाईआ। हरिसंगत तेरा वसेरा उत्ते अर्श, पुरख अबिनाशी चारों कुंट पहरा आप रखाईआ। कलिजुग अन्तिम आपणी मेटण आया हरस, गुरसिख तेरा दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे माण वड्याईआ। हरिसंगत तेरा उच्चा दर, पुरख अबिनाशी मंगण आया। आपणे प्रेम झोली देणी भर, दर आया निरासा मुड़ कदे ना जाया। लोकमात देणा साचा वर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत तेरा फड़े लड़, छुट्ट कदे ना जाया। वाह वा सिख तेरी वडियाई, वड वड्डा आप वड्याआ। वाह वा सिख तेरी वडियाई, तेरी दरगाह धाम सुहांयदा। वाह वा सिख तेरी वडियाई, तेरे घर हरि सतिगुर तेरी पूजा आप करांयदा। वाह वा सिख तेरी वडियाई तेरा भेव खोल्हे गूझा, गोबिन्द आपणा पर्दा लांहयदा। वाह वा सिख तेरी वडियाई तेरा दर एका सूझा, नौ खण्ड पृथ्मी सर्ब तजांयदा। वाह वा सिख तेरी वडियाई तेरे उत्तों तेरा सतिगुर झूजा, आप आपणा भेट चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेखे एका घर, साचा घर इक्क उपजांयदा। गुरसिख वड्डा सालाहीए, जिस मिल्या पारब्रह्म गुर करतार। फड़ पल्ला पार लँघ जाईए, बेड़ा डुब्बे ना विच मँझधार। गुरसिख तेरा लक्ख लक्ख

शुकर मनाईए, तेरा सोहया बंक दुआर। गुरसिख तेरे दर निउँ निउँ सीस झुकाईए, तेरा संगत नाल प्यार। साची सिख्या सिख समझाईए, हरिसंगत साचा गुरदुआर। गुरु होर थाँ ना किसे पाईए, कलिजुग आई अन्तिम वार। मन्दिर मस्जिद देण दुहाईए, उच्ची कूकन करन पुकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख देवे एका वर, तेरा वसदा रहे दुआर। गुरसिख दुआरा वसया, लोकमात होए रुशनाईआ। सतिगुर पूरा आया नस्सया, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। हिरदे अंदर आ के वसया, आपणी करी सच पढ़ाईआ। ऊँची कूक किसे ना दस्सया, करे खेल बेपरवाहीआ। मनमुख किसे ना आए हथ्थया, नेत्र रोवण मारन धाईंआ। अबिनाशी करता पुरख समरथया, हरिजन साचे लए मिलाईआ। लेखा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थया, लेखा लेखे लए लगाईआ। जिस जन चरन सीस टिकाया आपणा मथ्थया, मस्तक लेखा दए मुकाईआ। गुरमुख विरले लाहा खट्टया, जीव जंत भरम भुलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस हिरदे अंदर आ के वसया, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा लिखे आप निरँकार, सेवा करे रविदास चुमार, चिट्टे उप्पर पाए काली छाहीआ।

❊ ६ जेठ २०१७ बिक्रमी फरंगी राम दे घर पिण्ड तूतां वाली ❊

बन्धन तोड़ कट्ट जम फास, चम्म माटी लेखे लाईआ। जगत जन्म दी बुझे प्यास, हरि सतिगुर दए बुझाईआ। लेखा लिख्या वेद व्यास, भविख्त पुराण गया जणाईआ। कन्ढी डेरा शाहो शाबाश, शाला आपणा लए लगाईआ। बेआसा करे पूरी आस, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। साचे मन्दिर कर कर वास, दीवा बाती करे रुशनाईआ। एका रंग रहे दिवस रात, सच प्रभाती आप वखाईआ। जुगा जुगन्तर पुच्छे वात, जो जन बैठे राह तकाईआ। सदा सुहेला वसे साथ, जीव जहानां दिस ना आईआ। लहिणा चुकाए मस्तक माथ, देणा पिछला झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। आसा तृष्ना बुझे अग्ग, अग्नी तत्त ना कोई वखाईआ। साचे मन्दिर धरे पग, पृथ्मी झूम झूम खुशी मनाईआ। हरिजन सरनाई जाए लग्ग, घर साचे मेल मिलाईआ। सति सन्तोखी धीरज बन्ने एका तग, एका डोरी पाईआ। दरस दखाए दया कमाए उप्पर शाह रग, शहनशाह आप अख्वाईआ। इंदर लहिणा चुक्के सहँसर भग, हरि साचा दए चुकाईआ। उच्ची कूक सुणाई बांग, आपणा राग आप अलाईआ। पुरख अबिनाशी आपणा आप स्वांग, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कालख टिक्का दए मिटाईआ। कालख टिक्का जाए

लथ्थ, गोतम मस्तक लाया। खेले खेल पुरख समरथ, जीव जवानी वेख वखाया। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथवाही सेव कमाया। पिछला जन्म होया भट्ठ, अगला खेड़ा दए वसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर नाम पढ़ाया। एका अक्खर हरि हरि जपणा नाउँ, निथावयां होए सुहाईआ। आप पार उतारे फड़ फड़ बाहों, भस्मड़ आपणा रूप वटाईआ। सतिजुग करे सच न्याउँ, कलिजुग अन्तिम लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सती अहल्या वेख वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे गुण निधान, गुणवन्त गुण कहिण ना जाईआ।

६५० ✲ ६ जेठ २०१७ बिक्रमी ज्ञान चन्द दे घर पिण्ड तूतां वाली ज़िला जम्मू ✲ ६५०

०६ ०६

हरि गोबिन्द खेल अपारा, पूर्ब वेख वखाईआ। पंखी उकाब नदी किनारा, बैठा आसण लाईआ। चरन रकाब सतिगुर अस्वारा, दोए नैण वेखे इक्क उठाईआ। मन उपज्या चाउ दरस न्यारा, धन्न माणस जो दर्शन रहे पाईआ। निरगुण प्रगटी अंदर निरगुण धारा, निरगुण बूझ बुझाईआ। सतिगुर साहिब सुल्तान पावे सारा, घट घट अन्तर वेख वखाईआ। देवे हुक्म सच्ची सरकारा, शब्दी शब्द करे जणाईआ। तेरा जन्म होए विच संसारा, माणस साचा रूप वटाईआ। निरगुण आए हो उज्यारा, तेरा लेखा दए मुकाईआ। नाउँ रक्ख निहकलंक नरायण नर अवतारा, सतलुज लेखा दए मुकाईआ। कन्ढी ढाब दए सहारा, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। देवे नाम शब्द आधारा, जीवण जुगत इक्क सिखाईआ। सोहँ शब्द सच प्यारा, गुर सतिगुर विच मिलाईआ। तेरी आसा तृष्ना बणे जगत सहारा, तेरा लेखा वेख वखाईआ। पंखी निउँ निउँ करे निमस्कारा, अंदरे अंदर सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला लहिणा रिहा मुकाईआ।

✲ ६ जेठ २०१७ बिक्रमी ज्ञान चन्द दे घर पिण्ड ख़ैर वाला ज़िला जम्मू ✲

सति पुरख निरँजण साहिब सुल्तान, सति सतिवादी सति समाईआ। अगम्म अगम्मड़ा खेल महान, घर अगम्मड़े आप कराईआ। अलक्ख निरँजण वड मेहरवान, अलक्ख अलक्खणा लख्या ना जाईआ। सो पुरख निरँजण गुण निधान, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरँजण नौजवान, इक्क इकल्ला आप अख्वाईआ। एकँकारा वसे सच मकान, सच महल्ला आप

सुहाईआ। आदि निरँजण जोत महान, नूरो नूर डगमगाईआ। अबिनाशी करता शाह सुल्तान, तख्त निवासी इक्क अख्वाईआ। श्री भगवान साचा काहन, रूप रंग ना कोए वखाईआ। पारब्रह्म खेले खेल महान, दर घर साचे खेल खिलाईआ। सचखण्ड दुआरा सच मकान, हरि हरि साचा आसण लाईआ। शाहो भूप वड राज राजान, अकल कल आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे देवे वड्याईआ। सति पुरख निरँजण सोभावन्त, अलक्खणा अलक्ख ना लख्या जाईआ। अबिनाशी करता एका कन्त, एकँकारा रूप वटाईआ। सो पुरख निरँजण बणाए बणत, हरि पुरख निरँजण वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआरा आप सुहाए साचा धाम सुहंत, निरगुण बाती कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची एका नूर करे रुशनाईआ। दरगाह साची सच टिकाणा, थिर घर साचे आसण लांयदा। पारब्रह्म प्रभ श्री भगवाना, परम पुरख आपणा नाउँ धरांयदा। आपणा खेल करे हरि महाना, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। साचे मन्दिर हो प्रधाना, आप आपणा हुक्म चलांयदा। आपे देवे धुर फ़रमाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे तख्त आसण लांयदा। साचे तख्त आसण लाया, सचखण्ड साचा सोभा पांयदा। निरगुण दाता इक्क अख्वाया, दाता दानी रूप वटांयदा। आपणी भिच्छया इक्क वखाया, साची भिच्छया झोली पांयदा। आपणी इच्छया आप कराया, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। आपणा लेखा आप लिखाया, दूसर कोए ना संग रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड महल्ले बैठा चढ़, आसण सिँघासण आप विछांयदा। सच महल्ला उच्च मुनारा, हरि साचा आप सुहांयदा। इक्क इकल्ला वसे सिरजणहारा, आप आपणा धाम सुहांयदा। आपे पुरख आपे नारा, आपे साची सेज हंढांयदा। आपे उपजे सुत दुलारा, हरि शब्दी नाउँ धरांयदा। आपे वेखे आपणा सच अखाड़ा, आपणी धारा आप बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, पुरख अबिनाशा आप करांयदा। सचखण्ड निवासी खेल अपारा, निरगुण आपणा आप कराईआ। सार शब्द सुत कर त्यारा, आदि जुगादि वेस वटाईआ। एका नाद सच्ची धुन्कारा, शब्द अगम्मी आप अलाईआ। एका हुक्म सच्ची सरकारा, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यारा, त्रैगुण माया रंग रंगाईआ। पंज तत्त हरि भर भण्डारा, आपणी वस्त हथ्थ फड़ाईआ। गगन मंडल लोआं पुरीआं हो उज्यारा, रवि ससि करे रुशनाईआ। सुन अगम्मी पार किनारा, रूप अनूपा आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। निरगुण धार सरगुण रूप, सति पुरख निरँजण खेल खिलांयदा। लेखा जाणे चारे कूट, दहि दिशा वेख वखांयदा। शब्द हुलारा एका जोत, लोआं पुरीआं फेरी पांयदा। एका तागा एका सूत, एका तन्दन बंध बंधांयदा।

एका पिता एका पूत, पूत सपूता सर्ब वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप गणांयदा। साचा लेखा लिखणहारा, आदि जुगादि समाया। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यारा, लक्ख चुरासी बणत बणाया। घर घर मन्दिर कर त्यारा, नौ दर जगत वेख वखाया। अंदर वड़ सच्ची सरकारा, पुरख अबिनाशी आसण लाया। पंचम रक्खे बाहर धाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आप वसाया। पंचम बोल शब्द जैकारा, घर साची धुन सुणाया। अमृत भरे ठंडी ठारा, कँवल नाभी आप टिकाया। आपे करया बन्द किवाड़ा, बज़र कपाटी कुण्डा लाया। आपे आत्म सेजा हो उज्यारा, साचा तख्त रिहा सुहाया। आपे ब्रह्म रूप प्रगट हो संसारा, बंक आपणा नाउँ रखाया। सो पुरख निरँजण ना मरे ना पए जम्म, नूरो नूर सदा रुशनाया। ना खुशी ना कोई ग़म, हरख़ सोग विच ना आया। ना तृष्ना ना कोए तम, आलस निन्दरा ना कोए वखाया। जुग जुग बेड़ा लोकमात बन्नृ, लक्ख चुरासी आप चलाया। वसणहारा छप्पर छन्न, महल्ल अटल वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, सरगुण बणे शब्द मलाह, साचा राग इक्क सुणाया। शब्द उपाए हरि निरँकार, आपणी इच्छया आप जणाईआ। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, ब्रह्मण्ड खण्ड आप वसाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, घर घर विच आप बहाईआ। सरगुण निरगुण कर प्यार, आपणा जोड़ा आप जुड़ाईआ। बख्शे नाद सच्ची धुन्कार, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। आपे साध सन्त गुर पीर बण अवतार, लोकमात करे जणाईआ। आपे हरि हरि नाउँ लए उच्चार, आपे बैठा मुख भवाईआ। आपे इष्ट बणे गिरधार, आपे सृष्ट वेख वखाईआ। आपे निरगुण नूर होए उज्यार, आपे सरगुण बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग सन्त कन्त भगवन्त आपणी धार चलाईआ। आपे सन्तन होए मीत, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाईआ। आपे त्रैगुण रहे अतीत, माया बन्धन कोए ना पाईआ। आपे ठांडा आपे सीत, सांतक सति आप वरताईआ। आपे गाए गोबिन्द गीत, लक्ख चुरासी आप पढ़ाईआ। आपे वसे हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। आपे सेज सुहाए धाम अनडीठ, काया मन्दिर अंदर डेरा लाईआ। आपे ब्रह्म पारब्रह्म कराए सच प्रीत, ईश जीव मेल मिलाईआ। आपे जुग जुग चलाए आपणी रीत, आपणा ढोला आपे गाईआ। आपे लेखा जाणे मन्दिर मसीत, आपे गुर दर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप निराधार, निराकार इक्क अख्वाईआ। निराकार हरि हरि गोपाला, वेद कतेब भेव ना पांयदा। जुग जुग चले आपणी चाला, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। सेवा लाए काल महांकाला, जगत जंजाला वेख वखांयदा। भगतां भगती फल लगाए डाल्हा, अमृत मेवा इक्क खवांयदा। हरि सन्तन वखाए काया मन्दिर सच्ची धर्मसाला, चार दीवार ना कोए बणांयदा।

६५३ ०६

जोत निरँजण कर उजाला, घर साचा दीपक जगांयदा। सोहँ पाए सच्ची गल माला, हँ ब्रह्म रंग रंगांयदा। भाग लगाए काया माटी खाला, ख़ालक ख़लक वेख वखांयदा। अनहद वज्जे साचा ताला, ताल तलवाड़ा आप वजांयदा। अमृत सरोवर मारे इक्क उछाला, मानसरोवर आप भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग करता करनेहार, आदि जुगादी इक्क अवतार, साधां सन्तां पावे सार, लेखा जाणे गुर पीर अवतार, हुक्मी हुक्म आप फिरांयदा। सति पुरख निरँजण सच्चा पातशाह, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। अलक्ख निरँजण एका अलक्ख लए जगा, दो जहाना आप सुणाईआ। निरगुण सरगुण रूप वटा, सतिगुर गुर गुर नाउँ धराईआ। सन्त सुहेले लए जगा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। भगत भगवन्त लए उठा, आत्म दृष्टी आप खुल्हाईआ। गुरमुख साचे लए मिला, आप आपणा पर्दा लाहीआ। गुरसिख साचे अंगीकार लए करा, आपणी गोद आप बहाईआ। सतिजुग त्रेता वेख्या द्वापर आपणी फेरी पा, आपणी कल आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ी कार कराईआ। निरगुण सरगुण एका रंग, जिस जन आपणी दया कमांयदा। साहिब सुल्तान सूरा सरबंग, पुरख अबिनशी आप अख्वांयदा। जन भगतां आत्म सेजा सुत्ता सच पलँघ, दूसर सेज ना कोए हंढांयदा। नाम अनडीठा वजाए मृदंग, साची सेवा आप कमांयदा। इक्क चढ़ाए साचा चन्द, रवि ससि मुख शरमांयदा। खुशी कराए बन्द बन्द, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। लेखा चुकाए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज पार करांयदा। चरनां हेठ दबाए कोटन ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म प्रभ वेस वटांयदा। लेखा जाणे सर्ब वरभण्ड, लक्ख चुरासी नाच नचांयदा। जन भगतां सुणाए आपणा छन्द, लिखण पढ़न विच ना आंयदा। ना कोई गाए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस करे अवल्ला, काया मन्दिर वेखे सच महल्ला, उच्च अटला आसण लाईआ। निरगुण सरगुण साचा मीत, मीत मुरारा आप अख्वाईआ। निरगुण सुणाए सुहागी गीत, सरगुण कूके दए दुहाईआ। निरगुण बैठा रहे अतीत, सरगुण चारों कुंट भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार बंधाईआ। जुग जुग धार हरि निरँकार, लोकमात आप चलांयदा। लक्ख चुरासी लेखा करे आर पार, सर्ब संसार वेख वखांयदा। सतिजुग त्रेता देवे हुलार, द्वापर वेला अन्त वखांयदा। कलिजुग कूके करे पुकार, चार कुंट आपणा डोरू वांहयदा। जूठ झूठ कर पसार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलांयदा। आसा तृष्ना भर भण्डार, दर दर आपणी वण्डण वण्ड वण्डांयदा। सृष्ट सबाई कर नार विभचार, आपणा हुक्म चलांयदा। किसे ना मिले कन्त भतार, खुल्ली मींढी सर्ब वखांयदा। साध सन्त गए हार, हरि का पौड़ा ना कोए

चढ़ांयदा। चार वेद रोवण ज़ारो ज़ार, डुबदा बेड़ा ना कोए तरांयदा। पुराण अठारां करन विचार, साचा मता ना कोए पकांयदा। गीता ज्ञान पाए सार, इक्क ध्यान भगत रखांयदा। अञ्जील कुरान कर प्रधान, संग मुहम्मद चार यार वेख वखांयदा। दीन ईमान सर्ब कुरलाण, सच रसूल ना कोए नज़री आंयदा। मक्का काअबा होए वैरान, साचा हज्ज ना कोए करांयदा। खाणी बाणी भुल्ले जीव निधान, निरगुण मेल ना कोए मिलांयदा। घर लग्गे पंज शैतान, पंच शब्द ना कोए सुणांयदा। एका भुल्लया हरि भगवान, साचा मार्ग ना कोए वखांयदा। वरन बरन मुख शर्माण, साचा काहन नज़र ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग कूड़ा कर पसारा, चार वरनां रिहा लड़ाईआ। अठसठ तीर्थ करया पार किनारा, गंगा गोदावरी दए दुहाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर हाहाकारा, माया राणी आपणा रंग चढ़ाईआ। साधां सन्तां मन हँकारा, हरि का रूप ना कोए दरसाईआ। साचा मन्दिर काया वसाए ना कोई गुरदुआरा, घर ठाकर नज़र ना आईआ। अंदर हवन धूप ना होए कोए उज्यारा, साचा घ्रित ना कोए वखाईआ। जोत ललाट ना कोए पसारा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ खोजण दर दर आपणी अलख जगाईआ। घर शब्द ना सुणे कोए धुन्कारा, जगत ताल रहे वजाईआ। घर अमृत पीए ना ठंडा ठारा, दिवस रैण होए हलकाईआ। गुरमुख विरले प्रभ मिल्या एकँकारा, घर साचे वज्जी वधाईआ। सतिगुर रूप अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। प्रगट होए विच संसारा, निरगुण सरगुण नाउँ धराईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। जिस जन किरपा कर वखाए आपणा दर दुआरा, सो जन बूझण पाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक नरायण नर लए अवतारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। एका शब्द बोले जैकारा, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाईआ। नाम सति अन्त ना पारावारा, ओंकारा खेल खलाईआ। आदि निरँजण कर उज्यारा, ओँ रूप सर्ब समाईआ। त्रैगुण माया वसे बाहरा, पंज तत्त खेल खलाईआ। लक्ख चुरासी घर घर मन्दिर पावे सारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, आप कराए हरि करतारा, लोकमात लए अवतारा, तारनहार आप अख्वाईआ। कलिजुग तेरा कूड़ा भेख, चारों कुंट वेख वखाया। ना कोई नर ना नरेश, राज राजान दिस ना आया। बुध बबेकी खुल्हड़े केस, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मति मतवाली आपणे वेखे लेख, लेखा लिख्या ना कोए मिटाया। मन मनूआ मुच्छ दाड़्ही ना दिसे केस, आपणा मूंड आपे रिहा मुंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग वेखे तेरा घर, नौ खण्ड पृथ्मी फोल फुलाया। कलिजुग अन्तिम वेखण आया, निरगुण आपणा जामा धार। चौथे जुग गेड़ा रिहा दवाया, चारे कुंटां दए हुलार। ब्रह्मा विष्न शिव रिहा उठाया,

आप कराए शब्द बेदार। एका हुक्मी हुक्म रिहा सुणाया, लक्ख चुरासी दए हुलार। शाह सुल्तान कोए रहिण ना पाया, राज राजान होए वैरान। गढ़ हँकारी दए तुड़ाया, बिन हरि नामे ख़ाली दिसण मकान। मनमुक्ख जीव दए खपाया, लेखा चुक्के पंज शैतान। एका कलमा नौ खण्ड पृथ्मी दए पढ़ाया, सृष्ट सबाई इक्क ईमान। एका शब्द अनादी दए सुणाया, मेल मिलावा श्री भगवान। नौ दुआरे बन्द कराया, दसवें जोत जगाए इक्क महान। अठ्ठां तत्तां फेरा पाया, सति सरूप वखाए इक्क निशान। छेवें छप्पर छन्न छुहाया, पंचम शब्द राग धुनकान। चौथे पद डेरा लाया, तीजा नेत्र खोल्हे हो निगहबान। दूजा घर इक्क सुहाया, सचखण्ड निवासी वसे सच अस्थान। एका एकँकारा वेख वखाया, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। कलिजुग अन्तिम फेरा पाया, प्रगट होया वाली दो जहान। गुरमुख साचे ल्ए जगाया, देवे नाम सच्चा धन माल। मनमति झूठी दए गंवाया, गुरमति करे घर प्रधान। मन पंखी उड उड दहि दिश ना जाया, आप पाए आपणी आण। सुखमन तेरा टेढा पन्ध मुकाया, गुरसिखां हो आप मेहरवान। ईड़ा पिंगल चरनां हेठ दबाया, पुरख अबिनाशी जाणी जाण। हरिजन साचे संग रलाया, अमृत आत्म सरोवर आप वखाए आपणा कर ध्यान। कागों हँस आप वटाया, साचे सर कराए अशनान। एका राग ब्रह्मादी आप सुणाया, सुणन ना पाए किसे कान। अगाध बोधी भेव खुल्हाया, लेखा जणाए धुर फ़रमाण। सुरती शब्दी मेल मिलाया, कर किरपा आप मेहरवान। आत्म अन्त सेज हंढाया, गुर सतिगुर नौजवान। ना मरे ना कदे जाया, आदि जुगादी साचा काहन। साची सखीआं वेख वखाया, गुरमुख करे परवान। दस्म दुआरी विच्चों बाहर कढाया, आप आपणा फड़ाए सच निशान। सुन अगम्मी पार कराया, जोद्धा सूरबीर बलवान। थिर घर साचे आप टिकाया, पंज तत्त ना कोए निशान। सचखण्ड दुआरा आप खुल्हाया, गुरमुख साचे आप पछाण। अलक्ख अगोचर मेल मिलाया, मिल्या मेल श्री भगवान। सति सतिवादी वेख वखाया, सति पुरख निरँजण जाणी जाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन हरि करे दर परवान। हरिजन साचा सोभावन्त, वेद पुराण सर्ब जस गांयदा। जिस जन मिल्या हरि हरि कन्त, खाणी बाणी रूप प्रगटांयदा। लेखा चुक्के मणीआ मंत, रसना शब्द ना कोए गांयदा। धन्न सुभागी साचा सन्त, जो हरि हरि दर्शन पांयदा। जगत जीवां माया पाई बेअन्त, कलिजुग आपणा पर्दा पांयदा। चारों कुंट भुक्ख नंगत, हरि का नाम ना कोए वरतांयदा। बिन हरि दिसे ना कोए साची संगत, सगला संग ना कोए रखांयदा। बिन हरि नामे कोए ना चाढ़े रंगत, रंग मजीठ ना कोए रंगांयदा। बिन सतिगुर कोए ना तोड़े गढ़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए वखांयदा। बिन गुर माणस जन्म होए भंगत, लक्ख चुरासी फंद ना कोए कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप उठांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ा डंक, नौ खण्ड पृथ्मी वज्जया। नाता तुट्टा राउ रंक, पंच विकारा फिरे भज्जया। ना कोई मेटे किसे दा शंक, ना कोई रक्खे किसे लजया। गुरमुख विरला उधरे जिउँ जन जनक, जिस जन चरन धूढ़ कराए साचा मजया, जोती शब्द लाए तनक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, हरिजन रक्खे साची लज्जया। हरिजन तेरा सच निशाना, सतिगुर पूरा आप झुलांयदा। गुर गुर देवे शब्द बबाणा, लोकमात आप चढ़ांयदा। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म विद्या आप पढ़ांयदा। आत्म अमृत पीणा खाणा, जगत तृष्ना भुक्ख गवांयदा। इक्क वखाए पद निरबाणा, निर्भय आपणा रूप जणांयदा। साचे तख्त सच सुल्ताना, हरि भगवाना आसण लांयदा। जन भगतां बन्ने एका गाना, लोकमात सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, शब्द अखण्ड विच ब्रह्मण्ड आपणा आप चलांयदा। शब्द गुरू गुर मेहरवान, आदि जुगादि समाया। जुग जुग रक्खे सच निशान, लोआं पुरीआं आप झुलाया। जुग जुग पाए आपणी आण, सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराया। जुग जुग होए मात प्रधान, आपणा डंका आप वजाया। जुग जुग मेटे झूठ निशान, सच सुच्च दए दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोग जुगत आपणे हथ्थ रखाया। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, शब्दी गुर रूप वटाए। जन भगतां मार्ग दस्से इक्क सुखल्लड़ा, मनमुख जीव सर्ब भुलाए। दर दुआरे आत्म सेजा सच सिँघासण आपे खलड़ा, आप अपणा दरस दिखाए। निरगण सरगुण फड़ाए पलड़ा, आप आपणे नाल बंधाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग गुर सतिगुर नाउँ धराए। सतिगुर शब्द हरि जगदीश, निरगुण सरगुण विच समांयदा। आपणी पढ़ाए इक्क हदीस, शरअ शरीअत आप जणांयदा। आपे लेखा जाणे राग छतीस, सति सुरसती आप समझांयदा। आपे लहिणा देण चुकाए बीस इकीस, जो घड़या सो भन्न वखांयदा। आपे हरिजन तेरे छत्र झुलाए सीस, दरगाह साची धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेखे घर, हरिजन तेरा बंक वड्यांअदा। साचा बंक बंक दुआरा, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा भगत भगवन्त वणजारा, पुरख अबिनाशी एका वणज कराईआ। साचा सन्त हरि सुत दुलारा, सन्त पुरख निरँजण आप उपजाईआ। साचा गुरमुख सोहे इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। साचा गुरसिख मंगे मंग बण भिखारा, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। साचा सतिगुर बणया रहे वरतारा, देंदयां तोट कोए ना आईआ। आदि जुगादी इक्क अवतारा, एका गुर अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम करे पार किनारा, नव नव लेखा दए चुकाईआ। एका शब्द बोल जैकारा, सोहँ ढोला आपे गाईआ। साचा

तोला बण निरँकारा, सृष्ट सबाई तोल तुलाईआ। गुरसिख ना आए पासा हारा, हार जीत प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। भरमे भुल्ला भरम गंवारा, भरम गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। जूठा झूठा तन श्रंगारा, वेसवा रूप रिहा वटाईआ। घर मिल्या ना पुरख अपारा, साचा कन्त ना दरस दखाईआ। आत्म सेज ना करे कोई प्यारा, सुंजी सेज दए दुहाईआ। सुरत सवाणी कूके रोवे ज़ारो ज़ारा, सतिगुर शब्द साचा हाणी, मिल्या ना बेपरवाहीआ। आर पार ना दिसे कोए किनारा, डूँग्घे सागर भँवरी भवर रही भवाईआ। जिस जन किरपा करे आप निरँकारा, दर घर आए दर्शन देवे जम की फाही दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, गुरसिख कलिजुग सागर जाए तर, जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रसना गाईआ। कलिजुग सागर करना पार, एका नाम बोल जैकारा। गुरसिख तेरा जप तप उतरया पार, तेरे अंदर वड़या आप निरँकारा। तेरा जन्म जन्म दा उतरया भार, तेरा भार चुक्के आप गिरधारा। तेरा दुआरा ठंडा ठार, हरि अमृत बरसे मेघा धारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे करे प्यारा। सच प्यार सुहावी रात, रैण भिन्नड़ी रंग रंगाईआ। सतिगुर बख्शी साची दात, आत्म झोली नाम भराईआ। आपणा दरस दखाए आप वड करामात, कर्म धर्म जरम लेखे लाईआ। मन मति नेड़ ना आए दुहागण नार कमज़ात, गुरमति एका एक सिखाईआ। आदि अन्त पुच्छे वात, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। दरस दिखाए बहु बिध भांत, कर किरपा बेपरवाहीआ। आपे बणे पिता मात, गुरमुख बाल अंञाणे गोद उठाईआ। दरस दखाए इक्क इकांत, इक्क इकल्ला फेरी पाईआ। शब्दी शब्द सुणाए साची गाथ, सोहँ नाम वड्डी वड्याईआ। हरिसंगत चढ़ी साचे राथ, रथ रथवाही रिहा रथ चलाईआ। ना कोई पूजा ना कोए पाठ, जोग अभ्यास ना कोए कराईआ। ना कोई तीर्थ ना कोए ताट, मन्दिर गुरदुआर ना कोए रखाईआ । कर किरपा चढ़ाए आपणे घाट, आपणा बेड़ा आप उठाईआ। गुरसिख तेरी लक्ख चुरासी मुक्की वाट, मात गर्भ ना फेरी पाईआ। प्रभ सेज विछाई साची खाट, दरगाह साची इक्क रखाईआ। गुर चरन दुआरे विकणा एका हाट, चौदां लोक ना भरम भुलाईआ। कलिजुग खेल बाज़ीगर नाट, स्वांगी रिहा स्वांग रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर देवे शब्द ज्ञाना, ज्ञान ध्यान विच रखाईआ। ज्ञान ध्यान चरन गुर टेक, दूजी टेक ना कोए तकांयदा। सतिगुर पूरा करे कराए बुध बबेक काया खोट आप गवांयदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी हाढ़ ना कोए तपांयदा। पूर्ब वेखणहारा लेख, अग्गे लेखा आप मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख वसाए साचे घर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा।

✻ ६ जेठ २०१७ बिक्रमी धर्म चन्द दे घर पिण्ड बाले वाला ज़िला जम्मू ✻

सो पुरख निरँजण खेल अपारया, आदिन अन्ता इक्क रघुराईआ। हरि पुरख निरँजण जोत उजारया, नूर नुराना बेपरवाहीआ। एकँकारा निरगुण धारया, रूप अनूप आप दरसाईआ। आदि निरँजण डगमगा रिहा, अलक्ख अलक्खणा लख्या ना जाईआ। श्री भगवान तख्त सुहा रिहा। दरगाह साची आसण लाईआ। अबिनाशी करता हुक्म चला रिहा, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेस वटा रिहा, वेस अनेका आप रखाईआ। लोआं पुरीआं रचन रचा रिहा, मंडल मंडप आप सुहाईआ। शब्द दुलारा सुत आप उपा रिहा, देवे माण वड्डी वड्याईआ। रवि ससि दीपक आप जगा रिहा, तार सतार करे रुशनाईआ। विष्नूं रूप आप धरा रिहा, विष्नूं मेला सहिज सुभाईआ। नाभी कँवल फुल्ल खिला रिहा, अमृत धारा आप चलाईआ। ब्रह्म आपणा नाउँ धरा रिहा, अंदर बाहर भेव ना राईआ। धूंआँधार आप समा रिहा, सुंन अगम्मी डेरा लाईआ। शंकर आपणा अंग कटा रिहा, हत्थ त्रसूल फड़ाईआ। विष्नूं विश्व इक्क उपा ल्या, दे मति एका समझाईआ। ब्रह्मा चारे मुख खुल्ला ल्या, अट्ठे नेत्र राह तकाईआ। शंकर साचा संग निभा ल्या, एका अकल कल वरताईआ। विष्नूं एका वस्त झोली पा रिहा, दाता देवे रिज़क सबाईआ। ब्रह्मा एका हरि हरि ज्ञान दृढ़ा रिहा, चारे वेदां दए लिखाईआ। शंकर एका रंग रंगा ल्या, बाशक तशका गल लटकाईआ। विष्नूं आपणा रंग वटा ल्या, निरगुण नूर सरगुण नूर करे रुशनाईआ। ब्रह्मा आपणी वण्ड वण्डा रिहा, चार चार करे पढ़ाईआ। शंकर साचा घर वसा ल्या, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी आपणा राह चला रिहा, बेअन्त बेपरवाहीआ। त्रैगुण आपणा तत्त बणा ल्या, रजो तमो सतो नाम रखाईआ। सतो विष्नूं झोली पा रिहा, रजो ब्रह्मे अंग लगाईआ। तामस शंकर हत्थ फड़ा रिहा, लहिणा लहिणा रिहा वखाईआ। तिन्नां एका हुक्म सुणा ल्या, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सति आपणी धार आप बणा रिहा। सो पुरख निरँजण एका गावना, दूसर होर ना कोई जणांयदा। हरि पुरख निरँजण एका गावणा, एका इष्ट आप धरांयदा। एकँकारा निराकारा वेख वखावणा, रूप रंग ना कोई वखांयदा। आदि पुरख निरँजण साचा दीप जोत जगावणा, आदि जुगादी डगमगांयदा। अबिनाशी करता घर घर पावणा, साचे खण्ड साचे आसण लांयदा। श्री भगवान एका संग रखावणा, विछड़ कदे ना जांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म रूप वटावणा, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। त्रै त्रै साचा वेस करावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुल्लावणा। आपणा भेव अगम्मी खोल्ह, आपणा पर्दा दए चुकाईआ। सति पुरख निरँजण साची वस्त रक्खे कोल, दूसर हत्थ ना किसे फड़ाईआ। अलक्ख निरँजण अलक्ख जैकारा एका बोल,

आपणा नाअरा इक्क लगाईआ। सचखण्ड दुआरे वज्जे ढोल, साज मृदंगा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अचरज आपणी रीत चलाईआ। अचरज रीत हरि भगवान, आदि आदि आपणी आप चलांयदा। आपणे तख्त बैठ सुल्तान, साचा हुक्म आप वरतांयदा। शाहो भूप राज राजान, राज जोग आप कमांयदा। साचे मन्दिर बैठ मकान, थिर घर साचा आप सुहांयदा। साचा दीपक जगे महान, तेल बाती ना कोए टिकांयदा। साचा राग गाए गान, गावणहारा दिस ना आंयदा। खेले खेल श्री भगवान, सारिंगधर आप अख्वांयदा। आपणी करे आप पछाण, आपणा मेला आप मिलांयदा। आपे होए नौजवान, आपणा रूप अनूप आपणा आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा आप सुहांयदा। दर घर साचा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। जगे जोत आदि निरँजण एका बैठा हरि हरि कन्त, कन्तूहल वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी दर्द दुःख भय भञ्जण शब्द जाए आपणा सुत, नाद अनादी नाद वजाईआ। सचखण्ड निवासा साचे धाम साचा सज्जण करे खेल बेअन्त, अगम्म अथाह बेअन्त बेपरवाह आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे लेखा जाणे आपणे जंत, जीव जंत लए उपाईआ। ब्रह्मे देवे इक्क ज्ञान, एका अक्खर आप पढ़ाया। विष्नूं देवे धुर फ़रमाण, धुर दा शब्द आप जणाया। शंकर सुणना ला ला कान, सहिंसा रोग रहे ना राया। चौदां लोक खोल्ह दुकान, पुरख अबिनाशी डेरा लाया। त्रैलोक इक्क निशान, आप आपणा दए झुलाया। साचा हुक्म धुर फ़रमाण, धुर दी वादी धुर दी धार बंधाया। लक्ख चुरासी देवे दान, एका झोली वस्त टिकाया। ब्रह्मा करे दर परवान, निउँ निउँ सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी होया मेहरवान, दे मति रिहा समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहया। ब्रह्मा सेवक सेवादार, त्रै पंज जोड़ जुड़ांयदा। घाड़ण घड़े अपर अपार, इट्ट गारा ना कोए वखांयदा। अंदर मन्दिर खेल अपार, डूँग्घी कंदर आप करांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, लोकमात वण्ड वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर आपणा नाउँ धरांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, ब्रह्मा विष्न शिव खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी तेरी सार, हउँ सेवक मूल ना पाईआ। तूं शाह सच्चा सिक्दार, हउँ रईयत सेव कमाईआ। तूं दाता दानी गुर करतार, हउँ भिछक झोली अग्गे डाहीआ। तूं साहिब सच्चा दातार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मति रिहा समझाईआ। ब्रह्मे सुण सच ज्ञान, पुरख अबिनाशी आप जणांयदा। लक्ख चुरासी दित्ता दान, तेरी झोली पांयदा। विष्नूं सेवा करे महान, घर घर रिज़क पुचांयदा। शंकर अन्त करे कल्याण, जो घड़या भन्न वखांयदा। सचखण्ड निवासी करे खेल महान, आपणी वण्डण वण्ड वण्डांयदा।

चारे वेद तेरा ध्यान, तेरी इच्छया भिच्छया झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे साचा वर, साची सिख्या आख सुणांयदा। ब्रह्मा उठ लए अंगड़ाई, नेत्र नैण उग्घाड़या। पुरख अबिनाशी तेरी वडियाई, तेरा भेव किसे ना पा ल्या। तेरा हुक्म मन्नां मेरे सच्चे साँई, तेरा साया सिर रखा ल्या। तेरी सेव कमावां चाँई चाँई, लक्ख चुरासी भार उठा ल्या। तेरा दर्शन मंगां उच्चीआं कर कर बाहीं, नेत्र नैण राह तका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हा रिहा। ब्रह्मे सुण तेरी फ़रयाद, नर हरि साचा दया कमांयदा। एका देवे तेरी दाद, तेरी वस्तू झोली पांयदा। खेले खेल विच ब्रह्माद, आदि जुगादि रचन रचांयदा। चार जुग नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा मेला करदा रहे सन्त साध, गुर पीर अवतार नाल रलांयदा। लोकमात वजौंदा रहे नाद, जुग जुग आपणा हुक्म सुणांयदा। शब्द जणाए बोध अगाध, धुर बाणी लेख लखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हांयदा। ब्रह्मा दोए जोड़ करे निमस्कार, प्रभ चरन सीस झुकाईआ। जुग जुग राह तक्कां तेरा परवरदिगार, बिन तेरे मेरा होए ना कोए सहाईआ। जो लोकमात आवे अवतार, जस तेरा आपणा दए गवाईआ। जो साध सन्त करे पसार, उच्ची कूकण देण दुहाईआ। सृष्ट सबाई करन पुकार, एका अक्खर करन पढ़ाईआ। जुगा जुगन्तर खेल न्यार, रूप अनूपा लए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा दरस मोहे भाईआ। पुरख अबिनाशी दीन दयाला, दयानिध आप अख्वांयदा। ब्रह्मे दस्से राह सुखाला, आप आपणी बूझ बुझांयदा। आपणा नाउँ रखाए काल महांकाला, अवल्लड़ी चाला आप चलांयदा। त्रैगुण माया पाए जंजाला, साचा गाणा आप गणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी गुर पीर अवतार, साध सन्त करे जणाईआ। एका शब्द बोल जैकार, आपणा नाअरा दए सुणाईआ। एका जोत कर आकार, निरगुण धारा दए बंधाईआ। एका खोल्ह बन्द किवाड़, आपणा दरस दए वखाईआ। एका मेल मिलाए साचे लाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। ब्रह्मा लेखा रिहा पुच्छ, घर साचे कर पुकारया। लोकमात तेरा रूप निरगुण सरगुण देवे सुख, साचा सुख कवण वखा रिहा। लक्ख चुरासी मेटे कवण दुक्ख, दुखियां दुःख कवण वण्डा रिहा। निमाणयां मेटे कवण भुक्ख, भुखयां रिज़क कवण पुचा रिहा। मार झात लेखा चुकाए कवण उलटा रुख, मात गर्भ फंद कवण कटा रिहा। पुरख अबिनाशी किरपा कर, दए संदेश ब्रह्मे निरगुण आपे बण मानुख, पंज तत्त चोला आप हंढा रिहा। गुरमुख सन्त भगत लक्ख चुरासी विच्चों चुग, आप आपणी बूझ बुझा रिहा। हथ्थ फड़ाए नाम धुज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी

दया कमांयदा। ब्रह्मा अग्गे करे पुकार, सुण दाता बेपरवाहीआ। कवण पुरख होए विच संसार, गुर पीर अवतार कवण अख्वाईआ। कवण मेटे सोग हरख, एका रंग रंगाईआ। कवण करे तेरी रचना उत्ते तरस, तेरा तेरा होए सहाईआ। कवण अमृत मेघ देवे बरस, सांतक सति दए वरताईआ। कवण मेटे मेरी हरस, हवस रहिण ना पाईआ। कवण लेखा जाणे अर्श फर्श, कुर्श कुरा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर रिहा बुझाईआ। लोकमात अवतार निशानी, ब्रह्मे ब्रह्म रिहा समझाईआ। जुग अन्त करे जीव शैतानी, चोला चोला लए बदलाईआ। आपे जाणे आपणी बाणी, राम नाम करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे अकथ कहाणी, अकथ अकथना आप अख्वाईआ। जन भगतां देवे ठंडा पाणी, अमृत आत्म जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त एका रंग रंगाईआ। सन्त निशाना हरि भगवाना, एका एक समझांयदा। पंज तत्त देवे माणा, अभिमाणा मेट मिटांयदा। आपणा राग सुणाए तराना, धुन आत्मक आप वजांयदा। एका बन्ने साचा गाना, पुरख अबिनाशी सगन मनांयदा। एका देवे धुर फ़रमाणा, आपणा अक्खर आप वखांयदा। जीवां जंतां विच वसे हो हो निमाणा, निमाण निमाणयां आप अख्वांयदा। हरि का सिर ते मन्ने भाणा, सो सन्त मात अख्वांयदा। ब्रह्मे ब्रह्म रूप वखाना, पारब्रह्म आप समझांयदा। गुर गुर वेख जगत विचार, हरि साचा बूझ बुझांयदा। सतिगुर किरपा करे आप करतार, गुर गुर जन्म दवांयदा। मात गर्भ वसे बाहर, दस मास ना अंदर आंयदा। नौ अठारां कर कर पार, आपणा चोला रूप वटांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म कर प्यार, जोती जोत विच टिकांयदा। आप सुणाए सच्ची धुन्कार, धुर दा शब्द आप अलांयदा। आपे लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची आप बहांयदा। आपे वणज कराए वपार, साची वस्तू हट्ट वकांयदा। आपे नाम भरे भण्डार, आपणी वण्डण आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे गंढु पावे संसार, लोकमात जोड़ जुड़ांयदा। आपे सति सति बोल जैकार, जगत जैकारा इक्क वखांयदा। आपे वरन बरन कर प्यार, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। आपे साची सरन दस्से निरँकार, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। गुर गुर करे खेल अपार, गुरमति सिख्या इक्क समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हांयदा। ब्रह्मा सुण उठया नौजवान, प्रभ साचे सच समझांयदा। चार जुग तेरा आवे जावे धुर फ़रमाण, जीव जंत सर्ब गांयदा। तेरा शब्द डंका वज्जे विच जहान, तेरा नाम सर्ब अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, तूं कवण रूप प्रगटांयदा। साचा वर दे प्रितपालक, ब्रह्मा पारब्रह्म सुणांयदा। कवण खेल करे विच ख़ालक, निरगुण निरगुण रूप वटांयदा। कवण जुग बणें सालस, सच सालसी मात करांयदा। कवण रूप होए ख़ालस, सृष्ट सबाई बन्द ख़लास करांयदा।

६६१ ०६

कवण रूप ना निन्दरा ना रक्खे आलस, जूनी रहित कवण अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे साचा वर, आपणा पर्दा आपे लांयदा। पुरख अबिनाशी सच जणाया, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। सचखण्ड दुआरे आसण लाया, थिर घर साचा आप वड्यांअदा। सुत दुलारा इक्क उपजाया, हरि शब्दी नाउँ धरांयदा। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां हुक्म चलाया, लक्ख चुरासी बन्धन पांयदा। गुर पीर अवतार साध सन्त हुक्मी हुक्म फिराया, आपणा भाणा आप मनांयदा। आपणा नाम सच जैकारा इक्क सुणाया, रसना जिह्वा सर्ब गांयदा। इक्क ध्यान इष्ट गुर आप अख्वाया, एका नेत्र नैण खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप वटांयदा। ब्रह्मा रोवे धाहां मार, प्रभ साची कर जणाईआ। कवण जुग सुणे सर्ब पुकार, लोक परलोक ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा राह रहे तकाईआ। कवण रूप सुणाए सच सलोक, लक्ख चुरासी तेरा एका नाउँ गाईआ। कवण रूप बख्शे साची मोख, मुक्ती चरनां हेठ रखाईआ। कवण रूप मेरी रचना देवे झोक, एका जोती लम्बू लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बूझ दए बुझाईआ। ब्रह्मे बूझ कर विचार, हरि पुरख निरँजण आप सुणाया। चार जुग एका बन्न्हे धार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणा बन्धन पाया। इक्क चौकड़ी चवी अवतार, दस अठ्ठ अठारां वेख वखाया। बावन अक्खर करे त्यार, पैंती अक्खर लोकमात प्रगटाया। सतारां अक्खर गुर पीर ना पावण सार, आपणे अंदर बन्द कराया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा कर कर पसार, तेरा लेखा वेख वखाया। विष्नूं दे दे थक्के सर्ब भण्डार, जीव जंत तृप्त ना कोए कराया। अन्तिम आए चल दरबार, आपणी विथिआ दए सुणाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, हउँ ढठ्ठा तेरी सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे एका अक्खर रिहा पढ़ाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी तेरा पसारा, इक्तर मनवन्तर देण गवाहीआ। रवि ससि पाणी हारा, सूरज चन्न नच्चण वाहो दाहीआ। मंडल मंडप इक्क सहारा, शब्द डोरी बन्धन पाईआ। नौ गृह करे चरन भिखारा, धरू दरबारा इक्क सुहाईआ। लेखा चुकाए नौ नौ वारा, चार जुग आप भवाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दए हुलारा, सच हलूणा एका लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा देवे भेव खोल्ह, शब्द अनादी एका बोल, बोलणहारा इक्क अख्वाईआ। शब्द अनादी बोलया, साची धुन जैकार। ब्रह्मे पर्दा खोल्हया, पुरख अबिनाशी खेल अपार। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा बाग़ीचा मौलया, लोकमात खिड़ी गुलज़ार। कलिजुग अन्तिम करे हौलया, चारों कुंट फेरा मार। नर हरि बणे साचा तोलया, नाम कंडा हथ्थ उठाल। तेरा पूरा करे कीता कौलया, भुल्ल ना जाए बेऐब परवरदिगार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे दस्से आपणी धार। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी

६६२ ०६

जुग पन्ध मुकाउणा, चार जुग गेड़ा आप दुआईआ। चार वेद प्रभ भेव खुलाउणा, चारे मुख सालाहीआ। चार कुंट प्रभ फेरा पाउणा, चार वरन वेख वखाईआ। चारे बाणी आप पढ़ाउणा, परा पसन्ती मद्धम बैख़री आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप लिखाईआ। ब्रह्मे कलिजुग अन्तिम आउणा, नौ नौं चार पन्ध मुकावणा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार लँघाउणा, कलिजुग अन्तिम वेख वखावणा। रामा कृष्ना मेल मिलाउणा, ईसा मूसा आप जगावणा। संग मुहम्मद चार यार ढोला गाउणा, ऐनलहक नाअरा लावणा। मुकामे हक इक्क वखाउणा, सच अमाम रूप प्रगटावणा। एका कलमा नबी पढ़ाउणा, नबी रसूलां आप समझावणा। मुल्ला शेख़ मुसायक आप उठाउणा, पीर दस्तगीरां राह वखावणा। हक हकीकत वेख वखाउणा, लाशरीक डंक वजावणा। साची तारीख इक्क जणाउणा, ना कोई मेटे मेट मटावणा। चौदां तबकां डेरा ढाउणा, उच्ची कूक आप सुणावणा। दामनगीर ना किसे अख्वाउणा, हथ्थ दामन ना किसे फड़ावणा। ज़ामन हो ना किसे छुडाउणा, अल्ला राणी मुख शर्मावणा। नानक निरगुण जोत जगाउणा, सरगुण आपणा रूप धरावणा। पुरख अकाल एका गाउणा, एकँकारा घर बहावणा। सति नाम नाम सति मन्त्र दृढ़ाउणा, चार वरनां इक्क पढ़ावणा। हिन्दू मुस्लिम एका रंग रंगाउणा, दूई द्वैती मेट मिटावाणा। कलिजुग मार्ग इक्क वखाउणा, झूठा ठूठा भन्न वखावणा। ताणा पेटा एका पाउणा, एका सूत्र रंग रंगावणा। ऊँचां नीचां राउ रंकां एका धाम बहाउणा, साचा तख्त इक्क वखावणा। अंगद अंगीकार कराउणा, अमरू अमरापद दरसावणा। रामदास साचा सर भराउणा, अमृत ताल सुहावणा। अर्जन लेखा बोध ज्ञान दृढ़ाउणा, गुरू ग्रन्थ इक्क लिखावणा। हरि गोबिन्द साचे घौड़े आप चढ़ौणा, दो धारा आप बंधावणा। हरि राए हरि आप मिलाउणा, हरि कृष्ना वेख वखावणा। तेग़ बहादर तेग़ उठाउणा, धरत धवल हौला भार करावणा। गोबिन्द सुत आप उपजाउणा, तन कटार आप सजावणा। कल्ग़ी तोड़ा सीस टिकाउणा, पंज प्यारे मेल मिलावणा। अमृत बाटे जाम पिआउणा, ऊँचां नीचां रंग रंगावणा। आप आपणा वार वखाउणा, सिर भाणा सच मनावणा। माछूवाड़े इक्क धिआउणा, सूलां सथ्थर हेठ विछावणा। शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाउणा, मित्र प्यारे हाल सुणावणा। पुरख अबिनाशी दया कमाउणा, गुर गोबिन्द मेल मिलावणा। ब्रह्मे तेरा रंग चढ़ाउणा, रंग रतड़ा आप अख्वावणा। गोबिन्द गोबिन्द घर सुहाउणा, गोबिन्द गोबिन्द सोभा पावणा। गोबिन्द डंका इक्क वजाउणा, पुरख अबिनाशी आप वजावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एकँकार, खेले खेल विच संसार, निरगुण सरगुण रक्खे धार, धार अवल्ली आप चलावणा। निरगुण मिल्या गुर गोबिन्द, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। तेरा अमृत सागर सिन्ध, लोकमात दए वहाईआ। चार वरन बणाए तेरी बिन्द,

तेरा डंका इक्क वजाईआ। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला साचे घर, घर साचा इक्क वड्याईआ। ब्रह्मे सुण कर विचार, हरि पुरख निरँजण आप सुणांयदा। वेद व्यासा बणे लिखार, लेखा आपणा आप जणांयदा। गोबिन्द जोद्धा बण बलकार, एका भिच्छया मंग मंगांयदा। नानक बोले सच जैकार, सृष्ट सबाई आप समझांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, जुगा जुगन्तर आप करांयदा। कलिजुग आए अन्तिम वार, चारों कुंट अन्धेरा छांयदा। सृष्ट सबाई होए नार विभचार, साचा कन्त ना कोए हंढांयदा। वरन बरन आपणा धर्म जायण हार, साचा धर्म ना कोए वखांयदा। घर घर भरे इक्क हँकार, माया ममता मोह हलकांयदा। आसा तृष्ना करे ख्वार, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। सिख नाल सिख ना करे प्यार, सिख्या सिख सिक्खी तोड़ ना कोए निभांयदा। अन्तिम लए निहकलंक नरायण नर अवतार, जोती जामा भेख वटांयदा। गोबिन्द तेरा करे सच प्यार, तेरी नगरी आप सुहांयदा। सम्बल तेरा धाम अपार, उच्चे टिल्ले डेरा लांयदा। अमृत जाम भर भण्डार, हरि वरतारा इक्क वरतांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी बोल जैकार, वाहवा गुरू फ़तेह इक्क गजांयदा। राम नाम करे प्यार, कान्हा गीत आपणे आप अलांयदा। एका कलमा सच न्यार, उच्ची कूक आप सुणांयदा। आपे वसे सभ तों बाहर, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग मेटे कूड़ पसार, कूड़ी क्रिया वेख वखांयदा। लोकमात लाए सच दरबार, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा। ब्रह्मे बणना पए भिखार, शिव शंकर नाल रलांयदा। विष्न रूप करे त्यार, त्रै त्रै आपणा खेल खिलांयदा। भगवन जोत जगे संसार, निरगुण दीआ आप जगांयदा। ब्रह्मे तेरी पाए सार, हँ रूप तेरा वेख वखांयदा। सोइम रूप होए सिरजणहार, सो पुरख निरँजण आपणा नाउँ उपजांयदा। सोहँ शब्द कर त्यार, लोकमात आप धरांयदा। सतिजुग बेड़ा करे त्यार, साचा बाढी बणत बणांयदा। लक्ख चुरासी पावे सार, घर घर भाण्डे फोल फुलांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ना करे कोई विचार, ज़ात पात विच ना आंयदा। दीन मज़्ब ना कोए आधार, शरअ शरीअत ना बन्धन पांयदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, पुरख अकाल इक्क अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल करे अपार, निरगुण आपणा रूप वटांयदा। भरमे भुल्ला सर्ब संसार, भरम गढ़ ना कोए तुड़ांयदा। काया चुल्हे तपे इक्क अंग्यार, त्रैगुण माया अग्नी लांयदा। गुरमुखां खुल्ल्हे देवे आप भण्डार, साचा नाम आप वरतांयदा। कलिजुग कल्की लै अवतार, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। अमाम मैहन्दी पावे सार, दिशा लहिंदी फोल फुलांयदा। अञ्जील कुरान इक्ट्ठी हो हो बहन्दी, कवण कूटे हरि हरि जोत जगांयदा। लाल रंगण रंगाए साची मैहन्दी, घर साचा सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नूर आपे डगमगांयदा। नूर नुराना शाह सुल्ताना मेहरवान इक्क

अख्वाईआ। शाहसवार नौजवाना, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। चौदां तबकां वेखे मार ध्याना, जल्वा नूर नूर इलाहीआ। एका कलमा कलाम कर परवाना, उलमा उलमा दए पढ़ाईआ। एका रक्खे तीर कमाना, शाह अफ़गाना वेख वखाईआ। लेखा जाणे ग़फ़ूर ईराना, महिबान भेव ना राईआ। मेट मिटाए पंच शैताना, इक्क निशाना दए लगाईआ। करे खेल वाली दो जहानां, बेऐब परवरदिगार आपणा नाउँ रखाईआ। तालब तुलबा आप पढ़ाणा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। लेखा जाणे अञ्जील कुराना, तीस बतीसा दए गवाहीआ। चार यारी कर प्रधाना, संग मुहम्मद मेल मिलाईआ। इज़राईल ज़बराईल मेकाईल असराफ़ील गायण इक्क तराना, वाहदे लाशरीक एका एक खुदाईआ। पुरख अबिनाशी खेल महाना, अमाम अमामा सिर अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काला सूसा तन छुहाईआ। काला सूसा तन शंगार, आपणी अल्फ़ी आप हंढांयदा। ईसा मूसा पावे सार, मुस्लिम सुन्नी वेख वखांयदा। मक्का काअबा खोल्ह किवाड़, दो दो आबा खोज खुजांयदा। शाह नवाबा सांझा यार, चरन रकाबे आप टिकांयदा। दहि दिशा फिरे शाह सवार, आपणा घोड़ा आप दौड़ांयदा। हरिजन साचे लए उभार, उम्मत उम्मती वेख वखांयदा। सूफ़ीआं सूफ़ी करे प्यार, आपणा नशा नाम चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप चुकाए तेरा लहिणा, तेरा बस्त्र तेरे गल पहनाए गहिणा, जूठ झूठ नाल लटकाईआ। जूठा झूठा तेरा बस्त्र, कलिजुग तेरा संग रखांयदा। माया राणी तेरा शस्त्र, तेरी कमर बंधांयदा। तेरी बिध जाणे अन्तर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार तेरा गढ़ बणांयदा। त्रैगुण माया तेरी बसन्तर, घर घर अग्ग लगांयदा। सतिजुग चलाए आपणा मन्त्र, सोहँ साचा जाप जपांयदा। गुरमुख सदा रहे सुतंतर, दुरमति मैल धवांयदा। आप बणाए भगतां बणतर, ब्रह्म ज्ञान आप दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा खेल न्यारा, करे कराए करणेहारा, करनहार आप अख्वांयदा। कलिजुग तेरा काला चोला, चारे कन्नीआं रिहा वखाईआ। तेरी सृष्टी खेले होला, लाल रंगण इक्क वखाईआ। चारे जुग चुक्कण डोला, नौ खण्ड पृथमी विच बहाईआ। राणी मौत आपणा गीत गाए ढोला, नैण वेखे चाँई चाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा खलाईआ। खेले खेल हरी दुआर, हरी हरि आपणा रूप वटांयदा। राए धर्म हो त्यार, पुरख अबिनाशी हुक्म सुणांयदा। वरन बरन होए ख्वार, साची सरन ना कोए रखांयदा। धीरज जत तुट्टा संसार, साची पति ना कोए रखांयदा। रत्ती रत्त गई हार, ब्रह्म मति ना कोए धरांयदा। अठसठ होया विभचार, नारी पुरष नंगा तारीआं लांयदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद सच धर्म ना दिसे इक्ट्ठ, जगत स्यासत नाच करांयदा। पुरख अबिनाशी वेखणहारा इक्क समरथ,

सर्बकल आपणा नाउँ धरांयदा। कलिजुग अन्तिम होए प्रगट, निहकलंका जामा पांयदा। गुरमुख सज्जण करे वक्ख, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। सतिजुग मार्ग साचा दस्स, भुल्ले पान्धी राहे पांयदा। गुर गोबिन्द मिलाए मेला नट्ठ नट्ठ, दिवस रैण सेव कमांयदा। कलिजुग बुरज रिहा ढट्ठ, कल्लर कंध ना कोए बचांयदा। झूठा खेड़ा होणा भट्ठ, बण यार सथ्थर ना कोए हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। मेल मिलावा हरि गोबिन्द, चिंता सोग रहे ना राईआ। सतिगुर पूरा सदा बख्शंद, ना मरे ना जाईआ। मनमुख लगाए आपणी निन्द, निन्दक निन्दया मुख भराईआ। हरिजन उपजाए साची बिन्द, मात पित आप अख्वाईआ। दर आयां मेटे सगली चिन्द, सांतक सति सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन साचा जागया, प्रभ किरपा करी अपार। शाहो मिल्या वड राजन राजया, नाता तुट्टा सर्ब संसार। मनमुख जीव चारों कुंट फिरे भाजया, मगर लग्गा काम क्रोध हँकार। घर मिल्या ना ग़रीब निवाज़या, देवे पैज संवार। अनहद वज्जे ना साचा वाजया, धुनी सुणे ना नाद धुन्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां आप निवाज़या, निरगुण सरगुण कर प्यार। निरगुण मेला मेलया, सरगुण प्रेम प्यार। निरगुण खेल गुरू गुर चेलया, गुर चेला बन्ने धार। निरगुण सतिगुर सज्जण सुहेलया, सरगुण वेखे इक्क दुआर। निरगुण कट्टे धर्म राए दी जेलया, सरगुण लक्ख चुरासी उतरे पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, लेखा जाणे कल्गी तोड़ा, जोड़ी जोड़ा शाह अस्वार। कल्गी तोड़ा हरि निरँकार, आदि अन्त रखांयदा। शब्द घोड़े हो अस्वार, जुग जुग फेरा पांयदा। मिट्ठा कौड़ा परखे परखणहार, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। गुरमुखां खोल्ले बन्द किवाड़, आपणी दृष्टी आपे पांयदा। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, जोत निरँजण आप जगांयदा। अमृत बख्शे ठंडा ठार, घर सरोवर आप प्यांअदा। आत्म सेजा हो त्यार, सच सिँघासण आसण लांयदा। सुरत सवाणी मेले शब्द भतार, घर सखीआं मंगल गांयदा। पंचम शब्द बोल जैकार, आप आपणा खेल खिलांयदा। रंगण रंग चढ़े अपार, चढ़या रंग उतर ना जांयदा। चारे जुग गए हार, वेला अन्तिम आंयदा। नारद मुन वेस करे अपार, कलिजुग तेरा संग निभांयदा। बारां अख्शर करे त्यार, ब्रह्मा वेता नाल रलांयदा। जगत सुरस्ती करे प्यार, छत्ती राग अलांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। जीव जंत चारों कुंट रहे झक्ख मार, हकीकी जाम ना कोए प्यांअदा। पुरख अकाल दीन दयाल आदि जुगादी इक्क अवतार, दूसर गुरू ना कोए वखांयदा। जिस तन चोले करे प्यार, पंज तत्त बंक सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्बल

नगर बैठा वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई जीव जंत सके फड़, दर दर घर घर बैठ रहे कुरलाईआ। पुरख अबिनाशी करया खेल अपारा, चार जुग मुख शर्माया। लेख ना लिख्या किसे कर उज्यारा, गुर पीर अवतार रहे राह तकाईआ। कवण रूप प्रगटे विच संसारा, निहकलंक कवण अख्वाईआ। गुर गोबिन्द बणया सच लिखारा, लिख लिख लेखा दए गवाहीआ। सोहँ शब्द होए उज्यारा, चिल्ला तीर कमान ना कोए वखाईआ। दो जहानां मारे मारा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, गढ़ हँकारीआं दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, इक्क वजाए साचा डंका, आप उठाए राउ रंका, राज राजान सोया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार वरन एका घर, सतिजुग साचा घाड़ण घड़, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड उत्भुज सेतज जेरज अंड एका एक रंग रंगाईआ।

✻ १० जेठ २०१७ बिक्रमी गुरदित सिँघ दे घर छम्ब ज़िला जम्मू ✻

सतिगुर पूरा हरि निरँकार, इक्क इकल्ला हरि अख्वांयदा। गुर गुर रूप विच संसार, शब्दी ढोला एका गांयदा। भगती भगत कर त्यार, भगवन आपणी बूझ बुझांयदा। सन्तन देवे नाम आधार, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। गुरमुख सज्जण लए उभार, अन्तर आत्म पर्दा लांहयदा। गुरसिख साचे करे प्यार, चरन दुआरा इक्क वखांयदा। आदि जुगादी खेल अपार, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। लोकमात पावे सार, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साचा आप अख्वांयदा। सतिगुर साचा हरि मेहरवान, दर घर साचे सोभा पाईआ। गुर गुर देवे इक्क निशान, शब्द निशाना हथ्थ फड़ाईआ। भगतां देवे भगती दान, साची भिच्छया झोली पाईआ। सन्तन देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। गुरमुख वेखे गुण निधान, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। गुरसिखां चरन धूढ़ कराए अशनान, अमृत साचा जाम प्याईआ। खेले खेल दो जहान, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। दाता दानी श्री भगवान, साची वस्त आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकारा, आदि जुगादी खेल अपारा, दर घर साचे आप कराईआ। सतिगुर सच्चा सर्ब गुणवन्त, सति पुरख निरँजण आप अख्वांयदा। गुर गुर बणाए आपे बणत, आपणी जोती आप जगांयदा। भगतन मेला हरि हरि कन्त, घर साचा वेख वखांयदा। सन्तन काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, रंग मजीठी इक्क रंगांयदा। गुरमुखां देवे एका मंत, मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। गुरसिखां बणाए साची बणत, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। लेखा जाणे आदि अन्त, आदि जुगादी भेव ना आंयदा। त्रैगुण माया रक्खे बेअन्त, लक्ख चुरासी पर्दा पांयदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी धार चलांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवाना, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। गुर गुर शब्द कर प्रधाना, लोकमात करे रुशनाईआ। भगतां बन्ह् साचा गानां, आप आपणा सगन मनाईआ। सन्तन देवे इक्क तराना, अनहद नादी नाद वजाईआ। गुरमुखां बख्शे इक्क ध्याना, अन्तर आत्म हरि लिव लाईआ। गुरसिखां करे आप पछाणा, दूई द्वैती पर्दा दए चुकाईआ। इक्क वखाए पद निरबाणा, परम पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्क इकल्ला, इक्क वसाए सच महल्ला, थिर घर बैठा जोत जगाईआ। सतिगुर पूरा नौजवान, अगम्म अगम्मड़ी कार कमांयदा। गुर गुर रूप श्री भगवान, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। भगतन मेला दो जहान, आप आपणा संग निभांयदा। सन्तन पाए साची आण, आपणे भाणे विच रखांयदा। गुरमुखां चुकाए जम की काण, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। गुरसिखां राग सुणाए एका कान, आपणा ढोला आपे गांयदा। इक्क वखाए सच मकान, घर घर विच आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा भेव खुल्ह्रांयदा। सतिगुर पूरा सति रंग, सति सतिवादी आप समाया। गुर गुर मंगे एका मंग, निरगुण सरगुण झोली पाया। भगत वजायण नाम मृदंग, पुरख अबिनाशी हथ्थ फड़ाया। सन्त सुहेले नहावण साची गंग, अमृत सरोवर इक्क वखाईआ। गुरमुख नौ दुआरे जायण लँघ, आपणा पर्दा आप तुड़ाया। गुरसिख जगत माया ना मारे डंग, ममता मोह दए चुकाया। सतिगुर पूरा साहिब संग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अकल कल आप वरताया। सतिगुर पूरा अकल कल धार, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। गुर गुर रूप विच संसार, पंज तत्त चोला आप हंढांयदा। शब्द नाद धुन जैकार, आपणा राग सुणांयदा। निरगुण जोती कर उज्यार, घर दीपक आप टिकांयदा। हँकारीआं तोड़े गढ़ हँकार, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। एका बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। एक इष्ट गुरदेव वखाए सच्ची सरकार, नमो निमस्कार आप करांयदा। वास्तक रूप विच संसार, विश्व आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क वड्यांअदा। सतिगुर पूरा आदि निरँजण, आदि जुगादि समाया। गुर गुर नेत्र पाए अञ्जण, ज्ञान नेत्र इक्क खुल्ह्राया। दीनां नाथा दर्द दु:ख भय भञ्जण, दीन दुनी वेख वखाया। सर्ब जीआं दा साचा सज्जण, बेपरवाह मौला आपणा नाउँ धराया। जुग जुग आवे भगतां पर्दे कज्जण, मनमुखां दए सजाया। गुरमुखां रक्खे लोकमात लज्जण, नाम दोशाला हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप लए प्रगटाया। सतिगुर पूरा शाहो भूप, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। गुर गुर वेखे चारे कूट, दहि दिशा फेरीआं पाईआ। इक्क इकल्ला सति सरूप, सति सतिवादी आप

अख्वाईआ। नाता तोड़े जूठ झूठ, सच सुच्च दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा शब्द भण्डारा, लोकमात बणे वरतारा, आपणा हट्ट आप खुल्ाईआ। सतिगुर पूरा खोले हट्ट, चौदां लोकां वण्ड वण्डांयदा। गुर गुर लाहा रिहा खट्ट, अग्गे आपणी झोली डांहयदा। लोकमात हो प्रगट, पारब्रह्म ब्रह्म लेखा आप जणांयदा। वेख वखाए काया मट्ट, पंज तत्त फोल फुलांयदा। लेखा जाणे हड्ड मास नाड़ी रत्त, रक्त बूंद वेख वखांयदा। हरिजन देवे साची मत, ब्रह्म मति इक्क दरसांयदा। आपे जाणे मित गति, गति मित आपणे हथ्थ रखांयदा। शब्द जणाई एका तत्त, तत्व तत्त मिटांयदा। नाम चढ़ाए साचे रथ, रथ रथवाही फेरा पांयदा। शब्द सुणाए साची गाथ, अनमोला ढोला आपे गांयदा। जुग जुग वेखे आपणा घाट, साचे पत्तण फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा आपणा नाउँ धरांयदा। सतिगुर सच्चा दीन दयाल, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। गुर गुर उपजाए साचा लाल, शब्द शब्दी वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड बठाए सच्ची धर्मसाल, नव नव लेखा आप गिणाईआ। जन भगतां बणे दलाल, साचा वणज इक्क वखाईआ। एका देवे वस्त नाम धन माल, सच ख़ज़ाना दए लुटाईआ। नेड़ ना आए झूठा काल, दयाल सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। महांकाल करे प्रितपाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा सहिज सुखदाईआ। सतिगुर सच्चा हरि पुरख निरँजण दाता, भेव अभेद ना कोए खुल्ांयदा। गुर गुर रूप हरि आप पछाता, रंग रेख ना कोए वखांयदा। खेल खलाए त्रिलोकी नाथा, लोआं पुरीआं फेरा पांयदा। चतुर्भुज पुरख समराथा, आपणीआं भुजां आप उठांयदा। जन भगतां निभाए साचा साथा, अष्टभुज रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरतांयदा। सतिगुर पूरा पुरख अबिनाशी, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। गुर गुर रूप जोत प्रकाशी, निरगुण सरगुण विच टिकांयदा। भगतां अंदर करे निवासी, निज आत्म डेरा लांयदा। नाम जपाए पवण स्वासी, बन्द ख़लासी आप करांयदा। काया मंडल पावे रासी, रवि ससि आप चमकांयदा। मन मति ना होए कोए उदासी, जगत वैराग ना कोए वखांयदा। सुरत सवाणी रहे प्यासी, हरि दर्शन तृप्त करांयदा। निरगुण जोत आदि जुगादि ना कदे विनासी, जुग जुग आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा रूप वटांयदा। सतिगुर पूरा जोद्धा बलकार, शस्त्र बस्त्र आप उठाईआ। गुर गुर रूप विच संसार, त्रैगुण अतीत बेपरवाहीआ। सतिजुग साचे पाई सार, सनक सनंदन सनातन सन्त कुमार नाउँ रखाईआ। बराह रूप धर अपर अपार, यज्ञे पुरष दए वड्याईआ। हाव ग़रीव खेल न्यार, नर नरायण जोत करे रुशनाईआ। कपल मुन बन्ने धार, एका तत्त ज्ञान दृढ़ाईआ। दत्ता त्रै पावे सार, रिखप देव वज्जे वधाईआ।

पृथू रिड़के ज़िमी अस्मान, पुरख अबिनाशी सेवा लाईआ। मत्स वसे विच जल धार, मीन आपणी कल धराईआ। कच्छप चुक्के साचा भार, मिन्दिरा आपणी पिठ उठाईआ। धनंतर वैद होए उज्यार, औखद सारे वेख वखाईआ। मोहणी रूप वरते वरतार, शंकर लेखा दए चुकाईआ। बावण धर रूप निरँकार, बल राजा लए तराईआ। नर सिँघ जोत कर उज्यार, प्रहलाद अग्नी पोहे ना पाईआ। हँसा चोग चुगे अपार, पंखी पंछीआं विच सुहाईआ। हरी हरि करे प्यार, धरू प्रहलाद नाल तराईआ। हरि नर आपणी खेल अपार, गज तन्दवे तन्द लए कटाईआ। सतिजुग जोत जगे अपार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। त्रेता तेरा कर्म विचार, पारब्रह्म प्रभ खेल खलाईआ। परस राम दए आधार, पिता पूत करे कुड़माईआ। कौरो कुशेतर खेल अपार, साचा सागर इक्क सुहाईआ। राम रामा लै अवतार, घर दसरथ वज्जी वधाईआ। सीता सुरती कर प्यार, जनक सपुत्री लए प्रनाईआ। चढ़े चिल्ला तीर कमान, साचा धनुख आप उठाईआ। बन बन खोजे अपर अपार, जंगल जूह फेरा पाईआ। बानर बांदर दए तार, बाली सुगरीव अंगद गले लगाईआ। हनवन्ता देवे इक्क आधार, महांबीर वड्डी वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां लाए पार, जगत भीलणी आप उठाईआ। लंका तोड़ गढ़ हँकार, हँकारी रावण दए खपाईआ। चार वेद छे शास्त्र ना करे विचार, दहिसिर आपणा नाउँ धराईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, जुग जुग आपणा वेख वखाईआ। द्वापर तेरा हो उज्यार, तेरा रूप वेख वखाईआ। कुँवारी कन्या भरे भण्डार, वेद व्यासा सुत उपजाईआ। पुराण अठारां लिखे लेख अपार, नारद मुन नाल रलाईआ। बारां अक्खर कर त्यार, ब्रह्मे देण सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा इक्क अख्वाईआ। सतिगुर पूरा हरि भगवान, दूसर अवर ना कोए वखांयदा। जामा धारे कृष्ना काहन, मुकंद मनोहर लखमी नरायण नाउँ धरांयदा। पंजां देवे इक्क ज्ञान, साची सिख्या इक्क समझांयदा। द्रोपद सुत करे परवान, आपणा पर्दा उप्पर पांयदा। बिदर सुदामा कर पछाण, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। अर्जन देवे इक्क ज्ञान, अठारां अध्याए आप सुणांयदा। गीता ज्ञान कर प्रधान, लोकमात राह चलांयदा। जूठा झूठा मेट निशान, धर्म युद्ध इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी खेल खिलांयदा। द्वापर तेरा पार किनारा, यादव बंस रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी हो उज्यारा, अथरबन वेद वेख वखाईआ। ईसा मूसा कर उज्यारा, जल्वा नूर करे रुशनाईआ। एका हुक्म धुर दरबारा, कलमा कलमी आप पढ़ाईआ। नबी रसूल कर प्यारा, शरअ शरीअत इक्क वखाईआ। एका धाम वखाए सांझा यारा, मुकामे हक हक वड्याईआ। सच तौफ़ीक बेऐब परवरदिगारा, रहीम रफ़ीक इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संग मुहम्मद चार यार, लेखा जाणे परवरदिगार, बेपरवाह

आपणा नाउँ धराईआ। चार यारी पार किनारा, पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, नानक जोती जोत जगांयदा। एका जोती दस अवतारा, गुर गोबिन्द लेखा आप जणांयदा। पिता पूत कर प्यारा, घर मन्दिर इक्क वखांयदा। सचखण्ड निवासी वसे सच दुआरा, आदि जुगादी वेस वटांयदा। कलिजुग कूड़ा कूड़ कुड़यारा, चार कुंट अन्धेरा छांयदा। वरनां बरनां हाहाकारा एका रंग ना कोए रंगांयदा। गुर पीर लेखा जाणे जीव गंवारा, दे मति सर्ब समझांयदा। कलिजुग तेरी बन्ने धारा, बुध बबेक बबेकी इक्क अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर सच्चा शहनशाह, गुर गुर बणे मात मलाह, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। सतिगुर सदा सालाहीए, निरगुण रूप अगम्म। सतिगुर सदा सालाहीए, ना मरे ना पए जम्म। सतिगुर सदा सालाहीए, गगन पाताल रखाए बिन बिन थम्म। सतिगुर सदा सालाहीए, लोआं पुरीआं बेड़ा रिहा बन्न। सतिगुर सदा सालाहीए, करे प्रकाश सूरज चन्न। सतिगुर सदा सालाहीए, साचा राग सुणाए कन्न। सतिगुर सदा सालाहीए, पंच विकारे देवे डन्न। सतिगुर सदा सालाहीए, लेखा चुकाए छप्परी छन्न। सतिगुर सदा सालाहीए, कर किरपा जाए मन्न। सतिगुर सदा सालाहीए, लेखे लाए जननी जन। सतिगुर सदा सालाहीए, देवे ज्ञान आत्म अन्न। सतिगुर सदा सालाहीए, देवे नाम सच्चा धन्न। सतिगुर सदा सालाहीए, हँकारी गढ़ देवे भन्न। सतिगुर सदा सालाहीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा इक्क भगवान। सतिगुर पूरा सदा सालाहीए, मेहरवान मेहरवाना। सतिगुर पूरा सदा सालाहीए, आदि जुगादी नौजवाना। सतिगुर पूरा सदा सालाहीए, धुन आत्मक नाद सुणाए राग तराना। सतिगुर पूरा सदा सालाहीए, देवे गुण गुण निधाना। सतिगुर पूरा सदा सालाहीए, अन्तर बिध करे आप पछाना। सतिगुर सदा सालाहीए, लेखा जाणे पवण मसाणा। सतिगुर पूरा सदा सालाहीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे धुर फ़रमाणा। सतिगुर पूरा हरि गोबिन्द, सिँघ साचा रूप वटांयदा। आपे मेटे आपणी चिन्द, हरख सोग ना कोए रखांयदा। लेखा जाणे इंदरासण इंद, करोड़ तेतीसा वेख वखांयदा। वेख वखाए ब्रह्मा विष्न शिव मृगिंद, आप आपणा पर्दा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा एका एक, लक्ख चुरासी बख्शे टेक, एका रूप अनूप दरसांयदा। जुग जुग सतिगुर सच्चा एको एका, एका रंग समाया। चार जुग लक्ख चुरासी जीव जंत गुर पीर अवतार साध सन्त रक्खदे आए टेका, रसना जिह्वा गुण गुण गाया। नानक कबीर उप्पर चढ़ चढ़ वेखा, आपणी तृष्ना आप बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेल खलाया। जुग जुग अवतारा हरि निरँकारा, निरगुण धार आप चलांयदा। लोकमात खेल अपारा विच संसारा, पुरख अबिनाशी आप करांयदा। निरगुण जोती

कर उज्यारा पावे सारा, हरिजन साचे आप जगांयदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा अगम्म अपारा, अलक्ख अलक्खणा खेल खिलांयदा। प्रगट होवे विच संसारा, निहकलंक नर अवतारा आपणा नाउँ धरांयदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्डा आप उठांयदा। वण्डे वण्ड वण्डणहारा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी वण्ड वण्डांयदा। सतिगुर पूरा हो त्यारा, लोकमात फेरी पांयदा। करे खेल चवीआं अवतारा, चौदां दस मेल मिलांयदा। आपे जाणे पार किनारा, लेखा आपणा आप लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सज्जण सच्चा एका मीत, बैठा रहे इक्क अतीत, शब्द सुणाए सुहागी गीत, साचा मन्त्र आप दृढ़ाईआ। सतिगुर पूरा जागया, निरगुण जोती जामा धार। कलिजुग तेरी पकड़ी हथ्थ आपणे वागया, चारों कुंट दए हुलार। बादशाह शाह सुल्तानां लथ्थे ताजया, सीस रहिण ना देवे किसे दस्तार। प्रगट होया देस माज्झया, निहकलंकी लै अवतार। सिँघ शेर हो हो गाजया, चार कुंट दहि दिशा मारे ललकार। आपणे चढ़या अश्व ताजया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। सतिगुर पूरा उठया, निरगुण रूप निराकार। गुरमुखां उप्पर तुठया, सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े मेले यार। अमृत जाम प्याए साचा घुट्टया, मिटे रैण अन्धेरी धूंआँधार। आप चढ़ाए साची चोटीआं, शब्द हुलारा एका मार। विच्चों कढ्ढे वासना खोटीआ, पंच विकारा देवे मार। इक्क रखाए चरन ओटीआ, सोहँ शब्द पढ़ाए सच जैकार। लभ्भदे फिरदे कोटन कोटिआ, जंगल जूह विच उजाड़। माणस देही पढ़ पढ़ थक्की पोथीआं, दरस ना पाया हरि निरँकार। हँकारी गल्लां करन थोथीआं, थिर रहिणा किसे ना विच संसार। पुरख अबिनाशी अन्तिम फड़ फड़ मुंने चोटीआं, चारों कुंट करे ख्वार। राए धर्म तोड़े बोटीआं, कुंभी नर्क करे विचार। गुरसिखां घर घर जगण जोतीआं, निर्मल जोत होए उज्यार। आप उठाए रूहां सोतीआं, शब्द हुलारा दए मार। गुरमुख विरले आपणी दुरमति मैल धोतीआ, जो आए चल दुआर। मनमुख ममता दिवस रैण रोंदीआ, उच्ची कूके करे पुकार। दुहागण नार आपणी मींढी खोंहदीआ, सिर नंगी फिरे विच संसार। गुरमुख सवाणी गीत सुहागी गौंदीआ, घर पाया वर करतार। मनमुख तेरा मुल ना पए कौडीआ, ख़ाली हथ्थ जाएं विच्चों संसार। गुरमुख साचे दरगाह साची लाईआं पौड़ीआं, सतिगुर पूरा आप चढ़ावणहार। मनमुखां वेलां होईआं कौड़ीआं, आपे पुट्ट पुट्ट सुट्टे बाहर। गुरमुखां बुझाए लग्गी औड़या, अमृत बरखे ठंडी ठार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा सिरजणहार। सतिगुर पूरा रिज़क सबांयदा, जुगा जुगन्तर कार। सतिगुर पूरा गुरमुखां मेल मिलांयदा, लोकमात लै अवतार। सतिगुर पूरा मनमुखां दर दुरकांयदा, एका धक्का देवे मार। सतिगुर पूरा गुरमुख साचे धाम बहांयदा, सेवा करे सेवादार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक लए अवतार।

निहकलंक हरि बुकया, शब्द डंका वज्जे अनन्त। लोकमात किसे कोलों ना रुक्या, खेले खेल हरि बेअन्त। कलिजुग वेला अन्तिम ढुक्कया, घर घर रोवे जीव जंत। गुरमुख बूटा कदे ना सुक्कया, जो जन सोहँ गाए मणीआं मंत। अन्तिम किसे पाणी ना दिसे हुकया, हरिजन बणाए साचे सन्त। मदिरा मास पैंडा मुक्या, गुरमुख काया चोली चाढ़े रंग बसन्त। गुर का शब्द कदे ना उक्या, आदि जुगादी मारे आदि अन्त। चार कुंट ना रहे कोए लुकया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेअन्त बेअन्त बेअन्त, खेल बेअन्ता बेपरवाह अनुभव प्रकाश वखाईआ। आप उठाए साचे सन्ता, अनडिठ धाम दए वड्याईआ। एका मन्दिर एका बंक एका हरि सुहंता, एका हरिजन वेख वखाईआ। एका राग धुन सुन्न समाध आप उपजंता, पुरख अबिनाशी खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर सच्चा काया माटी भाण्डा वेखे कच्चा, वस्त अमोलक आपणे हथ्थ रखाईआ। वस्त अमोलक काया गोलक, गुर सतिगुर आप टिकांयदा। अनहद वजाए साची ढोलक, तार सितार ना कोए वखांयदा। दरस दखाए इक्क अमोलक, मुल कोए ना लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सतिगुर मीत सतिजुग चलाए साची रीत, चार वरन एका सरन एका बरन वखांयदा।

❋ १० जेठ २०१७ बिक्रमी धूंदा राम दे घर दया होई छम्ब ज़िला जम्मू ❋

नेत्र दर्शन हरि हरि पा, हरिजन चिंता सर्ब मिटाईआ। पूर्ब लहिणा वेख वखा, गुर सतिगुर प्यास बुझाईआ। माणस जन्म लेखे ला, अगला लेखा आप चुकाईआ। सतिगुर पूरा सिर हथ्थ टिका, देवे मात जगत वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। थान थनंतर हरि सुहाया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। घट घट अंदर वेख वखाया, जिस जन अन्तर हरि लिव लाईआ। रसना जिह्वा जो रहे ध्याया, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जगत तृष्ना अग्ग बुझाया, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। जगत जलन्दे आण तराया, डुब्बदे पाथर बाहर कढ्ढाईआ। पुरख अबिनाशी होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन हरि एका बूझ बुझाईआ। मानस जन्म कर्म विचार, नेहकर्मी कर्म कमांयदा। लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची वेख वखांयदा। लोकमात हो उज्यार, हरिजन साचे आपे तरांयदा। ग़रीब निमाणयां पावे सार, शाह सुल्तानां दर दुरकांयदा। जिस अंदर आपणा रक्खे सच प्यार, सो मन्दिर आप सुहांयदा। काया बन्द खोल्ह किवाड़, पंचम धाड़ मेट मिटांयदा। अग्ग ना लग्गे तत्ती हाढ़, सीतल सांतक सति आप करांयदा।

होए प्रकाश बहत्तर नाड़, जोत निरँजण इक्क जगांयदा। दरगाह साची देवे वाड़, सचखण्ड दुआरा इक्क वखांयदा। बिरध अवस्था लाए पार, जगत बुड़ेपा आपणे हथ्थ रखांयदा। कर किरपा लेखा लिखे लिखणहार, लिख लिख आपणे लेखे पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म अन्तर देवे एका रस, रस आपणा इक्क वखांयदा। साचा रस मिठ्ठा नाउँ, हरि नामे वड वड्याईआ। काया वसाए नगर गराउँ, घर वजदी रहे वधाईआ। हरिजन उठाए फड़ फड़ बाहों, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। करे कराए सच न्याउँ, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जन भगतां बणे पिता माउँ, आप आपणी गोद बहाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, कागों हँस आप उडाईआ। भेव अभेदा सिर रक्खे ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे जीआ दान, जगत जुगत भगत भगवन्त चरन सच्ची सरनाईआ।

❋ १० जेठ २०१७ बिक्रमी बीबी राम कौर दे घर छम्ब ज़िला जम्मू ❋

थिर घर साचा सच दरबारा, सो पुरख निरँजण आप बणांयदा। महल्ल अटल उच्च मुनारा, हरि पुरख निरँजण आप सुहांयदा। ना कोई दीसे चार दीवारा, एकँकारा खेल खिलांयदा। छप्पर छन्न ना कोए सहारा, आदि निरँजण जोत जगांयदा। ना कोई मन्दिर दिसे गुरदुआरा, सचखण्ड साचा आप सुहांयदा। अबिनाशी करता हो उज्यारा, सच सिँघासण आसण लांयदा। श्री भगवान आपे होया ख़बरदारा, आपणा हुक्म आप वरतांयदा। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, आप आपणा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा आप वड्यांअदा। थिर घर साचा सच महल्ला, हरि साचे जोत जगाईआ। एका बैठा इक्क इकल्ला, एकँकारा रूप रेख ना कोए वखाईआ। सच सिँघासण एका मल्ला, दरगाह साची सच वड्याईआ। आपणे दीपक आपे बला, तेल बाती ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा सच दरवाज़ा, ग़रीब निवाज़ा आप खुल्हाईआ। थिर घर साचा धुर दरबारा, हरि साचा सच वड्यांअदा। तख्त निवासी एकँकारा, शाहो भूप आप अख्वांयदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, शब्दी शब्द आप जणांयदा। करे खेल विच संसारा, हरिजन साचे आप उठांयदा। एका देवे नाम आधारा, नाम नामा झोली पांयदा। एका वणज कराए वणजारा, साची वस्त हथ्थ रखांयदा। उच्ची कूक बोले जैकारा, साचा ढोला आपे गांयदा। गुरमुख विरला थिर घर बैठे हो न्यारा, मनमुख जीव सर्ब कुरलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा साचा खोल्ह, शब्द अगम्मी एका बोल, हरिजन साचे आप जगांयदा। थिर घर बैठण हरिजन सन्त, दूसर हथ्थ किसे ना आया। गुरमुख नारी मेला हरि

हरि कन्त, साची सेज इक्क हंढाया। दरगाह चढ़े रंग बसन्त, पुरख अबिनाशी आप चढ़ाया। रसना जिह्वा हरि हरि मणीआ मंत, मन मणका दए भुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा इक्क वखाया। थिर घर साचा सोभावन्त, पुरख अबिनाशी आप सुहाया। जन भगतां वखाए जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणी खेल खलाया। लेखा जाणे आदि अन्त, ना मरे ना कदे जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर निवासी पुरख अबिनाशी, मंडल रास आप रचाया। थिर घर साचे खेल अपार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। लोकमात गुर लै अवतार, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। सतिगुर पूरा जन भगतां काज आप संवार, दिवस रैण सेव कमाईआ। घर घर वरते नाम भण्डार, ख़ाली भाण्डे आप भराईआ। मनमुख सुत्ते रहिण पैर पसार, माया पर्दा उप्पर पाईआ। हउमे गढ़ बणे हँकार, हरि का रूप दिस ना आईआ। धन्न सुलक्खणी सोभावन्ती नार, जो एका पुरख रही मनाईआ। असथल सोहण सच सच चुबार, थिर घर साचे मात वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क समझाईआ। दर घर साचा हरि समझावणा, हरि हरि साची सेव कमांयदा। दूती दुष्ट आप मुकावणा, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। साचा इष्ट इक्क जणावणा, गुर गोबिन्द रूप दरसांयदा। फड़ बाहों मार्ग पावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा इक्क वड्यांअदा। थिर घर साचा डूँग्घा सागर, मछली नीर विछुनी रही बिल्लाईआ। गुरमुखां वखाए काया गागर, अमृत जल भरया सच सुराहीआ। देवे नाम रत्ती रत्नागर, साचा वणज इक्क कराईआ। पीआ प्रीतम बणे जगत सौदागर, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। गुरसिखां करे निर्मल कर्म उजागर, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा इक्क सुहाईआ। थिर घर साचा हरि सुहञ्जणा, लेखा जाणे इक्क इकांत। जगे जोत आदि निरँजणा, एका रंग रैण दिवस प्रभात। गुरमुख मेला साचे सज्जणा, लेखा चुक्के ज़ात पात। काया भाण्डा सभ दा भज्जणा, साची वस्त ना किसे कोल रक्खी दात। गुरमुख विरले अमृत पी पी रज्जणा, बन्द कवाड़ा खोलू ताक। थिर घर साचे बह बह सजणा, नाता तुट्टे सज्जण साक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वेखे साचा घर, घर साचा पाकी पाक।

❊ १० जेठ २०१७ बिक्रमी ईश्र सिँघ ध्यान सिँघ दे घर पिण्ड दड़ ज़िला जम्मू ❊

हरि सतिगुर सच्चा पातशाह, पुरख अबिनाशी एकओंकार। आदि जुगादी सिफ्ती सिफ्त सालाह, निरगुण नूर अगम्म

अपार। जुगा जुगन्तर बणे जगत मलाह, लोकमात लै अवतार। लक्ख चुरासी दस्से साचा राह, शब्द अगम्मी बोल जैकार। एका अक्खर जपाए आपणा नाँ, आप आपणी किरपा धार। निथावयां देवे साचा थाँ, निरगुण सरगुण कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी कार। कार करंदड़ा हरि करतार, करता पुरख आप अख्वांयदा। जूनी रहित भेव न्यार, अजून अजूनी वेस वटांयदा। मूर्त अकाल हो उज्यार, दीन दयाल डगमगांयदा। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाल, सच सिँघासण आसण लांयदा। दीपक जोती आपणा बाल, सच प्रकाश करांयदा। आपणी मुशक्कत आपे घाल, आपणी प्रीती आप बन्ांयदा। आपणे मन्दिर वजाए आपणा ताल, शब्द अनादी आपे गांयदा। आपे चले अवल्लड़ी चाल, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। आपे पारब्रह्म ब्रह्म सुरत लए संभाल, आप आपणा वेख वखांयदा। आपे त्रैगुण माया पा जंजाल, लक्ख चुरासी बन्धन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी खेल खिलांयदा। आपे पातशाह सुल्तान, सति पुरख निरँजण आप अख्वांयदा। आपे पुरख अबिनाशी वड मेहरवान, एकँकारा आपणी दया आप कमांयदा। आपे सो पुरख निरँजण झुलाए सच निशान, आपे हरि पुरख निरँजण सेव कमांयदा। आपे अबिनाशी करता होए नौजवान, आपे श्री भगवान संग निभांयदा। आपे पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, ब्रह्म आपणा हुक्म सुणांयदा। आप उठाए सच निशान, दरगाह साची आप झुलांयदा। आपे वसे सच मकान, थिर घर साचा आप बणांयदा। आपे होए निगहबान, निरवैर आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा रूप वटांयदा। शाह पातशाह एकँकारा, अकल कला अख्वाईआ। आदि जुगादी खेल अपारा, निरगुण दाता आप कराईआ। आप आपणा कर पसारा, आपे वेख वखाईआ। आपे निरगुण लै अवतारा, सरगुण साची जोत जगाईआ। आपे पंचम शब्द बोल जैकारा, तन मन्दिर आप सुहाईआ। आपे वसे अंदर बाहरा, गुप्त ज़ाहर आप हो जाईआ। आपे शाहो भूप सिक्दारा, आपे धुर फ़रमाणा हुक्म जणाईआ। आपे तख्त ताज रक्खे सीस दस्तारा, आपे वण्डण वण्ड तुड़ाईआ। आपे अश्व होए शाह अस्वारा, साचा घोड़ा आप दौड़ाईआ। आपे पवण दए हुलारा, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। आपे लेखा जाणे सूरज चन्न सतारा, मंडल मंडप खोज खुजाईआ। आपे पावे सार ज़िमी अस्मान गगन मंडल वेखे आर पारा, धवल सागर डेरा लाईआ। आपे नौ खण्ड पृथ्मी वेखे खाड़ा, सत्तां दीपां जोत करे रुशनाईआ। आपे होए धुरदरगाही सच्चा लाड़ा, सतिगुर साचा नाउँ धराईआ। आपे लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँग्घी कंदर आपे फोल फुलाईआ। आपे भगतां करे सच प्यारा, मनमुखां दए सज़ाईआ। आपे शब्द नाद धुन जैकारा, आपे पंच विकार करे हलकाईआ। आपे अमृत ताल सुहाए ठंडी ठारा, आपे अग्नी तत्त जलाईआ। आपे वसे

अन्ध अँध्यारा, आपे निरगुण जोत आदि निरँजण करे रुशनाईआ। आपे वेखे काया मन्दिर सच दुआरा, आपे बैठा मुख छुपाईआ। आपे खण्डा शब्द तेज़ कटारा, शस्त्र बस्त्र आप सजाईआ। आपे पुरख आपे नारा, नर नरायण आप हो जाईआ। आपे गोबिन्द जाणे धारा, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। आपे गुरमुखां बणे मात सहारा, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। आपे ख़लक ख़ालक वेखे परवरदिगारा, आपे मख़लूक दए सालाहीआ। आपे पंडत पांधा लेखा जाणे आर पारा, ज्ञान ध्यान आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर सच्चा पातशाह, पारब्रह्म इक्क अख्वाईआ। सच्चा पातशाह हरि नरायण, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। लक्ख चुरासी वेखे एका नैण, दूजी अक्ख ना कोए खुल्हांयदा। जुग जुग चुकाए लहिणा देण, जन्म कर्म प्रभ आपणे हथ्थ रखांयदा। जन भगतां पाए बस्त्र नाम गहिण, तन सच शंगार करांयदा। मनमुख झूठे वहण वहण, साचा राह ना कोए चलांयदा। उच्ची कूक सारे कहिण, हरि का दरस ना कोए पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साचा बण मलाह, गुरमुख साचे आप तरांयदा। सतिगुर सिफ्त सलाहणा, सर्ब गुणां गुणवन्त। आप चुकाए लहिणा देणा, आदि जुगादि श्री भगवन्त। कलिजुग अन्तिम वेखे आपणे नैणां, पुरख अबिनाशी महिमा अगणत। जूठा झूठा दिसे साक सज्जण सैणा, बिन हरि नाम ना बणाए साची बणत। थिर दरबार किसे ना बहणा, भरमे भुल्ले जीव जंत। गुरमुख विरला दर्शन करे नैणां, धन्न वडियाई साचे सन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल जुगा जुगन्त। जुगा जुगन्तर खेल अपारा, सति पुरख निरँजण आप कराईआ। एका गुर इक्क अवतारा, एका नाम करे पढ़ाईआ। एका शब्द इक्क जैकारा, नाम सति इक्क वखाईआ। एका राम कृष्न मुरारा, एका अल्ला नूर दरसाईआ। एका फ़तेह बोल जैकारा, वाह वा गुरू इक्क समझाईआ। एक वसे धाम न्यारा, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। खाणी बाणी पावे सारा, नाद धुनी आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल बेपरवाहीआ। जुग जुग खेल श्री भगवान, आपणा आप करांयदा। प्रगट होवे वाली दो जहान, गुर गुर आपणा नाउँ धरांयदा। सतिगुर साचा बण मेहरवान, हरिसंगत मेल मिलांयदा। शब्द जणाई ब्रह्म ज्ञान, साचे सन्तन आप उठांयदा। गुरमुखां बख़्शे इक्क ध्यान, इष्ट देव इक्क उपांयदा। गुरसिख बणाए चतुर सुजान, मूर्ख मूढ़े आपणे धन्दे लांयदा। एका देवे नाम निधान, दाता दानी आप वरतांयदा। आत्म अन्तर दीप जगाए महान, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। साचा शब्द सुणाए कान, अक्खर वक्खर आप पढ़ांयदा। चौदां विद्या होई हैरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी चाल चलांयदा। जुग जुग खेल जगत पसारा, पुरख निरँजण वेख वखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव पावे सारा,

करोड़ तेतीसा फोल फुलांयदा। सुरपति इंद दए हुलारा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी गतमित जाणे अंदर बाहरा, भेव अभेदा भेव खुल्लांयदा। गुरमुख जगाए दया कमाए विच संसारा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा बन्धन पांयदा। जुग जुग बन्धन हरि मेहरवान, आपणा आपे पाईआ। सतिजुग साचे सच निशान, एका एक वण्ड वण्डाईआ। त्रेता राम नाम कर प्रधान, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। द्वापर वेखे कृष्ना काहन, रथ रथवाही बेपरवाहीआ। कलिजुग ईसा मूसा कर प्रधान, संग मुहम्मद चार यार करे कुड़माईआ। अञ्जील कुरान खोल्ह दुकाना, चौदां तबक करे रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी खेल महान, नानक निरगुण जोत करे रुशनाईआ। दरगाह साची कर परवान, सचखण्ड दुआरे मेल मिलाईआ। नाम सति देवे दान, लोकमात मात वड्याईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका अक्खर रिहा पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म आप सुणाईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, नानक निरगुण गांयदा। सतिनाम कर प्रधाना, चार कुंट डंक वजांयदा। एका राग सुणाए गाणा, तार सितार आप हिलांयदा। इक्क वखाए सच बबाणा, लोआं पुरीआं आप उडांयदा। एका होया जाणी जाणा, बोध अगाध शब्द चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग करे साची कार, करनी करता आप अख्वांयदा। करनी करता मार्ग चलाए पन्थ, वड दाता बेपरवाहीआ। गुर अर्जन मेला एका हरि लेखा जाणे गुरू ग्रन्थ, इकवंजा बवन्जा धार चलाईआ। शब्द अनादी वज्जे संख, सन्त भगत लए जगाईआ। नारी मिल्या साचा कन्त, घर साची खुशी मनाईआ। पारब्रह्म महिमा अगणत, बेअन्त कहे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। एका जोती खेल अपारा, घर दसवें आप जगांयदा। आप उपाए सुत दुलारा, गोबिन्द नाउँ धरांयदा। सिँघ रूप कर विच संसारा, खड़ग खण्डा हथ्थ फड़ांयदा। तेज प्रचण्डा कर त्यारा, ब्रह्मण्डां खोज खुजांयदा। पावे वण्डां पावणहारा, आपणी वण्ड वण्डांयदा। एका अमृत भर भण्डारा, पंचम मीता पंच पिलांयदा। आप बण सच्चा सिक्दारा, साची सिख्या सिख समझांयदा। गुर चेला सोहे इक्क दुआरा, एका घर बहांयदा। आप आपणा आपे वारा, आपणा लेखा आप मुकांयदा। आपे मिल्या साचे यारा, ढोला माही एका गांयदा। पुरख अबिनाशी करे प्यारा, दरगाह साची धाम सुहांयदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। कलिजुग कूके चारों कुंट करे पुकारा, दहि दिशा अन्धेरा छांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर खेल अवल्ला, आपे वेखे सच महल्ला, जलां थलां फेरा पांयदा। जल थल महीअल आप समाया, त्रैगुण अतीता वड वड्याईआ। लक्ख चुरासी डेरा लाया, पतित पुनीता दिस ना आईआ। गुरमुख

साचे लए जगाया। जागरत जोत कर रुशनाईआ। सच संदेश इक्क सुणाया, वाहिगुरू फ़तेह आप गजाईआ। एका ओट हरि रखाया, पारब्रह्म तेरी सच्ची सरनाईआ। पुरख अकाल इक्क मनाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। खेल कराए करनेहारा, कादर करता करीम आप अख्वांयदा। आपे प्रगट होवे विच संसारा, रूप अनूप आप वटांयदा। आपे वसे डूँग्घी गारा, उज्जल मुख आप वखांयदा। कागद कलम ना लिखणहारा, हरि का भेव कोए ना पांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, अलक्ख अलक्खणा आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी बणत बणांयदा। बणत बणाए हरि मेहरवाना, कलिजुग वेख वखांयदा। करे खेल हरि वाली दो जहानां, लोकमात वेख वखांयदा। चारों कुंट जीव शैताना, पंज तत्त सर्ब रखांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया बलवाना, ज़ोर आपणा आप धरांयदा। मनूआ मन होए प्रधाना, साचा हुक्म चलांयदा। पंज शब्द होए निधाना, घर सन्तन कोए ना पांयदा। माया राणी नार राकाना, जीव जंत सर्ब प्रनांयदा। मदिरा मास पीणा खाणा, आत्म रस ना कोए वखांयदा। रसना जपे जगत गाणा, अनहद ताल ना कोए वजांयदा। हरि का रूप ना किसे पछाणा, गुर गोबिन्द एह समझांयदा। कलिजुग अन्तिम वरते भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। प्रगट होवे निहकलंक बली बलवाना, कल कल्की अवतार आप अख्वांयदा। शब्द डंका वजाए दो जहानां, सोया कोए रहिण ना पांयदा। पकड़ उठाए राज राजानां, कलिजुग तेरी रईयत वेख वखांयदा। राए धर्म सुणाए धुर फ़रमाणा, आप आपणा हुक्म चलांयदा। धर्म राए उठया नौजवाना, चित्रगुप्त नाल रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल अवल्ला, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। लेखा चुक्के राणी अल्ला, बिस्मिल रूप आप कराईआ। चौदां तबकां मारे एका हल्ला, शब्द अगम्मी फौज चढ़ाईआ। करे खेल अछल अछला, वल छल धारी आपणा नाउँ धराईआ। आपे वसे नेहचल धाम अटला, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, ना मरे ना जाईआ। आपे वसे जलां थलां, जल डूँग्घर आप समाईआ। आपणी जोती आपे रला, आपणा शब्द आपे गाईआ। सच संदेश एका घल्ला, लोकमात करे जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी डूंग्घा डल्ला, ना किसे कोए बचाईआ। सत्तां दीपां फड़ाए ना कोए पल्ला, सगला संग ना कोए रखाईआ। जूठा झूठा कलिजुग होया झल्ला, चारों कुंट फिरे वाहो दाहीआ। मनमुखां दे अंदर रला, मनमति नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जोत करे रुशनाईआ। कलिजुग अन्तिम जोत उजाला हरि गोपाला, पुरख अबिनाशी आप करांयदा। खेले खेल दीन दयाला अवल्लड़ी चाला, लोकमात वेस वटांयदा। गुरमुखां दस्से राह सुखाला तोड़े जगत

जंजाला, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। चरन रखाए काल महांकाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखण आया, पारब्रह्म करतार। निहकलंकी जामा पाया, निरगुण जोत उज्यार। साचा डंका रिहा वजाया, दो जहानां पावे सार। कलिजुग हँकारे रिहा ढाया, ना कोई दीसे चार दीवार। गुरमुख सन्तां रिहा उठाया, देवे शब्द हुलार। साचा कन्ता मेल मिलाया, होई सुभागण नार। पुरख अबिनाशी दर्शन पाया, विसरया संसार। जम की फाँसी दए कटाया, राए धर्म ना करे ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे अगम्मड़ी कार। कार अगम्मड़ी पुरख अगम्मा, आपे आप करांयदा। ना मरे ना कदे जम्मा, मात गर्भ ना फेरा पांयदा। पवण स्वासी लए ना दमां, नेत्र नीर ना कोए वहांयदा। हड्ड मास ना नाड़ी चम्मा, पंज तत्त ना कोए रखांयदा। हरख़ सोग ना कोए ग़मा, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। जुग जुग जन भगतां संवारे कम्मा, आपणी सेवा आप करांयदा। सतिजुग बेड़ा सतिगुर बन्न्हा, सच मलाह आप अख्वांयदा। आप उठाए आपणे कंधा, खेवट खेटा नाउँ धरांयदा। माणस मानुख रहिण ना देवे कोई पापी गंदा, कौड़ा रीठा भन्न वखांयदा। घट घट अंदर सुणाए एका छन्दा, एका नाम जणांयदा। मनमुख जीव ना दीसे कलिजुग अन्धा, अन्ध अन्धेर सर्ब गवांयदा। गुरमुखां उपजाए परमानंदा, निज आत्म रस चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा मात धर, धरती धवल दए वड्याईआ। सन्त सुहेले साचे फड़, आप आपणा मेल मिलाईआ। हरिजन साचा घाड़ण घड़, काचे भाण्डे बणत बणाईआ। निरगुण अंदर बैठा वड़, साचे आसण डेरा लाईआ। अगम्मी पौड़े बैठा चढ़, मार्ग आपणा आपे पाईआ। जगत जीव ना सके कोई फड़, कोटन कोटि फांदी बैठे आपणीआं फाहियां लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप जगाईआ। गुरमुखां अंदर जोत धर, आपणी दया कमांयदा। सतिगुर पूरा किरपा कर, हरिजन साचे आप उठांयदा। शब्द जणाई आत्म दर, परम आत्म मेल मिलांयदा। झूठा तोड़ हँकारी गढ़, माया ममता मोह चुकांयदा। पंच विकारा पुट्टे जड़, सच सुच्च मार्ग एका लांयदा। घर विच वखाए आपणा घर, घर मन्दिर बंक सुहांयदा। अमृत प्याला जाम भर, गुरमुखां आप प्यांअदा। कलिजुग अन्तिम देवे साचा वर, सतिगुर पूरा दया कमांयदा। हरिजन सरनाई गया पढ़, जम का भउ चुकांयदा। आप बन्न्हाए आपणे लड़, अद्धविचकार ना कोए छुडांयदा। दरगाह साची लाए जड़, गुरमुख बूटा आप लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन साचा सच घर, सतिगुर साचा आप बहाईआ। आपणी किरपा आपे कर, आप आपणी गोद उठाईआ। आवण जावण

चुक्के डर, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आप तराईआ। हरिजन साचा तारया, कर किरपा आप भगवान। एका देवे नाम अधारया, सति सरूपी ब्रह्म ज्ञान। इक्क वखाए सच दवारया, चरन कँवल हरि ध्यान। एका वणज कराए जगत वणजारया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख बणाए चतर सजाण। चतर सुजान मूर्ख मूढ़, हरि सतिगुर आप बणाईआ। जिस जन बख्शे चरन धूढ़, दुरमति मैल दए गंवाईआ। काया चोली रंग चाढ़े गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। कलिजुग नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सतिजुग सच करे कुड़माईआ। मनमुखता रक्खे दूरो दूर, गुरमुख नेड़े नेड़ वसाईआ। जगत विकारा करे चूर, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। सतिगुर दाता जोद्धा सूर, बली बलवान आप अख्वाईआ। गुरमुखां आशा मनसा पूर, जगत तृष्ना दए मिटाईआ। जुगा जुगन्तर हाज़र हज़ूर, पर्दा ओहला ना कोई रखाईआ। कलिजुग अन्तिम निरगुण करया प्रगट आपणा नूर, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। वेखणहारा हरि गोपाल, गोबिन्द महिमा कही ना जाईआ। गुरमुख वेखे साचे लाल, लोकमात फेरा पाईआ। शब्द गुर बण दलाल, घर घर वेखे चाँईं चाँईंआ। जन्म जन्म दा तोड़ जंजाल, कर्म कर्म दा फंद कटाईआ। गुरमुख शाह बणाए जगत कंगाल, नाम धन एका झोली पाईआ। फल लगाए काया डाल्, अमृत जिह्वा आप खवाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों भाल, आप आपणे लड़ लगाईआ। दिवस रैण करे प्रितपाल, प्रितपालक सेव कमाईआ। गुरमुख नेत्र नैण दरस कर होण निहाल, मनमुख रोवण मारन धाही उच्ची कूकण देण दुहाईआ। गुरमुख तेरी सच्ची वेखे धर्मसाल, काया बंक खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, पुरख अबिनाशी किरपा कर, लेखा जाणे हरी हरि, हरि नरायण आप अख्वाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे इक्क ज्ञान, वरन बरन ना कोई जणाईआ।

* ११ जेठ २०१७ बिक्रमी बाजा सिँघ दे घर पिण्ड मट्टू *

हरि हरि शब्द अपार, हरिजन रसना गांयदा। राम नाम उरधार, हरि हिरदे अंदर आप टिकांयदा। आपे करे बन्द किवाड़, बन्द ताकी आप रखांयदा। आपे लेखा जाणे अगम्म अपार, भेव अभेद आप जणांयदा। आपे काया मन्दिर वेखे सच दुआर, दर दरवेशा आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेखे एका घर,

जुगा जुगन्तर वेख वखांयदा। काया मन्दिर सच महल्ला, हरि शब्दी नाम टिकाया। आपे वेखे इक्क इकल्ला, निरगुण आपणा रूप जणाया। जिस जन फड़ाए आपणा पल्ला, आप आपणी बूझ बुझाया। पंच विकार ना मारे हल्ला, काम क्रोध दए गंवाया। आप फड़ाए दया कमाए शब्द सरूपी एका पल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि नाम भण्डारा आप वरताया। नाम भण्डारा आपणी वरताए दात, हरि सतिगुर आप वरताईआ। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, वरन बरन ना कोई जणाईआ। हरिभगतां मेटे अन्धेरी रात, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। शब्दी शब्द सुणाए साची गाथ, एका राम नाम वड्याईआ। साचा हवण पूजा पाठ, गायत्री मन्त्र आप पढ़ाईआ। एका अखशर बुज्झे आपणा आप, बारां रासी फोल फुलाईआ। लेखा जाणे पवण स्वास, गुरमुखां बेपरवाहीआ। हरिजन मेला शाहो शाबाश, श्री भगवान आप कराईआ। आदि जुगादी खेल तमाश, जुग जुग लोकमात वेख वखाईआ। घर मन्दिर पावे साची रास, गोपी काहन आप नचाईआ। भगतन करे पूरी आस, ब्रह्म ब्रह्माद खोज खुजाईआ। निज घर आत्म रक्खे वास, निजानंद आप दरसाईआ। महिमा जाणे पृथ्मी आकाश, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची वस्त नाम अतोल आपणे कंडे देवे तोल, तोलणहारा आप अख्वाईआ। तोलणहारा तोले तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। आपणी धारा आपे बोल, पारब्रह्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। निरगुण वसे सरगुण काया चोल, साची वस्त इक्क टिकाईआ। आपणी इच्छया जाए मौल, रूप रंग ना कोई वखाईआ। अमृत भरे साचे कौल, कँवल नाभी आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची वस्त सच वरता, हरि हरि साचा आप वरताईआ। नाम वस्त हरि वरतंत, अनक कला कलधारीआ। जन भगत वेखे साचे सन्त, जुग जुग खेल अपारीआ। नाम जपाए मणीआं मंत, एका राम नाम सहिज सुख धारीआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, आपे रंगे आपणी वारीआ। मेल मिलाए हरि हरि कन्त, हरिजन सोभावन्ती नारीआ। खेले खेल आदि अन्त, पुरख अबिनाशी जगत जुआरीआ। जीवां जंतां माया पाए बेअन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन उठाए देवे दरस अपारीआ। दरस अमोला हरि नरायण, रसना जिह्वा कथ ना सके राईआ। जन भगतां खोल्हे आपणा नैण, दिब दृष्टी आप खुल्हाईआ। जन भगतां मुकाए आपणा देण, शब्द ढोला एका गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साची सिख इक्क समझाईआ। साची सिख्या मंतम नाम गुरदेव, इष्ट दृष्ट आप खुल्हांयदा। अबिनाशी करता पारब्रह्म अलक्ख अभेव, सृष्ट सबाई रिज़क पुचांयदा। अजूनी रहित वड देवी देव, एकँकारा निराकारा निराधार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला एका घर, घर मन्दिर

आप वखांयदा। घर मन्दिर हरि सच मुनारा, काया गढ़ सुहाईआ। निरगुण दीपक कर उज्यारा, जोत निरँजण रिहा डगमगाईआ। शब्द अनाद धुन गाए वारो वारा, अनहद साचा राग अल्हाईआ। अमृत भर हरि भण्डारा, नाम वरतारा इक्क वखाईआ। सरगुण अंदर निरगुण धारा, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। खोल्हे बोले बन्द किवाड़ा, साचा ढोला आपे गाईआ। आत्म सेजा हो त्यारा, रूप अनूप आप दरसाईआ। भगतन मीता एकँकारा, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। इक्क वखाए ठांडा दरबारा, तत्ती वाओ ना लागे राईआ। जिस जन बख्शे चरन प्यारा, जुग जुग आपणा मेल मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार किनारा, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। निहकलंक नरायण नर लै अवतारा, निरगुण आपणी खेल खलाईआ। हरिजन साचे करे प्यारा, शब्द आवाज़न इक्क लगाईआ। सोहँ शब्द बोल जैकारा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। आदि जुगादी इक्क अवतारा, गुर सतिगुर नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन चाढ़े एका भगती रंग, दाता दानी सूरा सरबंग, सेज वखाए आत्म पलँघ, झूठा दर ना कोए जणाईआ। झूठा दर जगत नाता देवे तोड़, माया बन्धन रहिण ना पाईआ। एका राम नाम चढ़ाए साचे घोड़, सोलां कलीआं आसण पाईआ। सुरती शब्द देवे जोड़, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। आप बुझाए बिरहों लग्गी औड़, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। मिट्ठा करे रीठा कौड़, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वसाए आपणे घर, घर मेला सहिज सुभाईआ। घर मिल्या हरि गोपाल, रघनाथ रघपत बेपरवाहीआ। बंस बंसा करे सुरत संभाल, अंसा बंसा वेख वखाईआ। कोटन कोटि जन्म सहँस सहँसा करे रखवाल, आप आपणी सेव कमाईआ। कलिजुग अन्तिम अवल्लड़ी चाल, पुरख अबिनाशी आप रखाईआ। हरिजन साचे लए भाल, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। अंदर वड़ वड़ बणे आप दलाल, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। जो जन पूर्ब जन्म जन्म घालण आए घाल, घाल आपणे लेखे लाईआ। नाता तोड़े जगत जम काल, तत्त काल रूप वटाईआ। प्रगट हो दीन दयाल, अनाथ अनाथां होए सहाईआ। काया मन्दिर वखाए सच्ची धर्मसाल, सतिगुर बैठा तख्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे आपणे घर, घर ठांडा रूप दरसाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, चरन दुआरे बख्शे माण, माण निमाणयां आप रखाईआ।

✻ ११ जेठ २०१७ बिक्रमी भोला राम दे घर पिण्ड जौड़ीआं ✻

आदि शक्ति रूप वटाया, कमलापाती हो उज्यार। साची हवनी हवन कराया, निरगुण जोत घ्रित डार। पवण पवणी

आप समाया, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार। लाट ललाट आप वखाया, मेट मिटाए धूंआँधार। साचे घाट डेरा लाया, लेखा जाणे आर पार। तीर्थ ताट इक्क खुल्हाया, कर किरपा एकँकार। सच हाट इक्क विकाया, कीमत करता आपे डार। नाम वस्त इक्क समझाया, शब्द अनाद सच्ची धुन्कार। बोध अगाधी खेल खुल्हाया, लेखा लिखे ना कोए विच संसार। निरगुण सरगुण रूप धराया, लोकमात लै अवतार। भगतां भगती वेखण आया, पूर्ब कर्मां कर विचार। साची शक्ती नाल ल्याया, आप आपणी किरपा धार। बूंद रक्ती वेख वखाया, लेखा जाणे पंज तत्त आकार। इक्क व्यक्ती आप अख्वाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल खेलणहार। आदि शक्ति आदि भवानी, निरगुण जोत जोत जगाईआ। पुरख अबिनाशी शाह सुल्तानी, दरगाह साची धाम सुहाईआ। गाए जस वेद पुराणी, आपणी महिमा आप सुणाईआ। आपे दस्से अकथ कहाणी, रसना कथ ना सके राईआ। आपे जाणे धुर दी बाणी, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आपे वेखे साची राणी, साचे तख्त बैठा सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप अपणी खेल वखाईआ। आदि शक्ति अनडिठ रूप, आदि पुरख निरँजण आप उपाया। लेखा जाणे साचा भूप, सच सिँघासण आसण लाया। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फोल फुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नूर आप दरसाया। आदि शक्ति नूर नुराना, नूरो नूर डगमगांयदा। उच्चा टिल्ला पर्बत ना कोए मकाना, सचखण्ड साचे आसण लांयदा। शब्द अगम्मी इक्क बबाना, साची राणी आप चढ़ांयदा। लेखा जाणे आवण जाणा, दो जहानां वेस वटांयदा। करे खेल श्री भगवाना, एकँकारा आपणी कल वरतांयदा। आदि निरँजण मिलाए नार रकाना, साचा जोबन आप हंढांयदा। आपे देवे धुर फ़रमाणा, शब्द अगम्मी आप सुणांयदा। आप वखाए सच टिकाणा, सचखण्ड दुआरा इक्क वखांयदा। आपे बख्शे चरन ध्याना, मुख घूँगट आपे लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। आदि शक्ति शस्त्र धार, निरगुण रूप अनूप दरसाईआ। आपे सिँघ होए अस्वार, आप आपणा बल रखाईआ। आपे अष्टभुज कर उज्यार, संख चक्र गदा हथ्थ उठाईआ। आपे खड़ग खण्डा फड़ तेज़ कटार, बण जंगल फेरा पाईआ। आपे मंगे दर हो हो नार, पुरख अबिनाशी इक्क मनाईआ। लोकमात तोड़ हँकार, सुंभ नसुंभ दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। नसुंभ बिदारया शक्ति आदि, एका खण्डा आप चमकाया। वेले अन्तिम हरि जू आया याद, माया ममता मोह तुड़ाया। दुर्गा इक्क वजाया नाद, डौरु आपणे हथ्थ उठाया। धरत धवल डिगा रिहा आराध, प्रभ तेरी सच सरनाया। बिन तेरे कवण सुणे फ़रयाद, होवे कौण सहाया। एका बख्श साची दाद, तेरा दरस मंगां बण तिहाया।

दिवस रैण करां याद, जगत विछोड़ा दे कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अष्टभुज आप समझाया। नसुंभ पुकारे धरत धर, धड़ सीस ना कोए सोभा पाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, तेरी धवल ना दए वड्याईआ। आपणा कीता रहे भर, लोकमात भुलया बेपरवाहीआ। तेरा विछड़या अन्त दर, दरगाह धाम ना कोए सुहाईआ। चुरासी विच्चों आवे डर, नर्क निवास ना कोए रखाईआ। तेरे खण्डे करया वार, मुक्ती मुक्त ना क्यों कराईआ। अन्तिम टोटे हो के डिगा तेरे चरन दुआर, तेरी चरन धूढ़ मस्तक लग्गी छाहीआ। तेरा शब्द शेर रूप रिहा जग तार, उप्पर शक्ती आप टिकाईआ। ब्रह्मा नेत्र खोल्ह रिहा विचार, अठ्ठे नैण राह तकाईआ। चतुर्भुज आपणीआं भुजां आप पसार, अष्टभुज गले लगाईआ। आपणे विच्चों आप निकाल, आप आपणी दए सालाहीआ। मेरा रूप अगम्म अपार, पुरख नार ना वेस वटाईआ। तेरा लहिणा देवां विच संसार, भुल्ल रहे ना राईआ। तिन्न जुग सौणा पैर पसार, सुत्तयां कोए ना ल्ए उठाईआ। कलिजुग अन्तिम आए वार, निरगुण जोत होए रुशनाईआ। निहकलंका जामा धार, तेरा लेखा ल्ए फोलाईआ। कीता वार चण्डी तलवार, ब्रह्मण्डी खोज खुजाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। सिँघ शेर आए आपणी वार, जगत बाणा आप हंढाईआ। झूठा चोला दए उतार, निरगुण निरगुण विच समाईआ। निरगुण दाता हो त्यार, खेले खेल बेपरवाहीआ। अष्टभुज कर प्यार, आप आपणे लड़ बंधाईआ। नारी कन्त करे भतार, लाल भूशन आप रंगाईआ। प्रगट हो गिरवर गिरधार, गृह आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणा दए समझाईआ। कलिजुग वेला अन्त सलौहणा, पुरख अबिनाशी किरपा धार। निसुंभ तेरा मेल मिलाउणा, कर किरपा आप निरँकार। आपणा बल आप धराउणा, रूप रंग दिसे ना विच संसार। आपणा खण्डा शब्द हथ्थ उठाउणा, एका करे फेर वार। तेरा माणस जन्म लेखे लाउणा, तेरे अंदरों मारे काम क्रोध लोभ मोह हँकार। सिँघ चेला नाम धराउणा, बूटा लाए अगम्म अपार। फल लोकमात खवाउणा, तेरी रत्ती रत्त कर उज्यार। बंस सरबंस आप तराउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा कर्ज़ा दए उतार। तेरा कर्ज़ा अन्तिम जाणा लथ्थ, सतिगुर पूरा आप मुकाईआ। तेरा धड़ लथ्था सथ्थर सथ, तेरा सीस दए गवाहीआ। तूं मंगी एका वथ, प्रभ चरन सरन सच्ची सरनाईआ। छपंजा साल रक्खया ढक, उप्पर पर्दा आपणा पाईआ। अन्त जगत कुठाली विच्चों कढ्ढ, आपणे अमृत जल विच टिकाईआ। आपणे ताज जड़ाया हीरा नग, सोहँ विच विच टिकाईआ। आपणा वासा करया रग रग, बलदी अग्ग आप बुझाईआ। नाम प्याई साची मदि, नसुंभ जो प्याला रिहा हथ्थ रखाईआ। चरन दुआरे आपणे सद्द, पिछला लेखा दए मुकाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढ, घर चरन दुआरे आप बहाईआ। जगत

कबीला पिच्छे देवे ना छड्ड, तारनहारा भैणां भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर करतार, आदि शक्ति इक्क प्यार, अष्टभुज सिँघ अस्वार, निरगुण धार आप चलाईआ। निरगुण धार धर निरँकार, आपणा खेल खिलांयदा। सतिजुग कलिजुग कर प्यार, दोहां नाता जोड़ जुड़ांयदा। कलिजुग धक्का देवे मार, सतिजुग साचा राह वखांयदा। सतिजुग साचे करे प्यार, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। कलिजुग कूड़ा कर ख्वार, दर दुआर आप दुरकांयदा। सतिजुग साची बणे बसन्त बहार, गुरमुख फल फुल्ल आप महिकांयदा। कलिजुग रुतड़ी ख़िज़ां डिग्गे पत डालू, पत पंखड़ी रहिण ना पाईआ। गुरमुख भवरा गूंजे गूंजणहार, सच सुगंधी विच महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे घर, घर मन्दिर वेख वखाईआ। घर मन्दिर सुहावणा, जगे जोत अपार। घर पुरख अबिनाशी इक्क मनावणा, इक्क इकल्ला एकँकार। घर गीत सुहागी गावणा, सोहँ शब्द सच्ची जैकार। ब्रह्म पारब्रह्म मिलावणा, नाता तोड़ सर्ब संसार। साची दरगाह आप बहावणा, लोआं पुरीआं कर कर पार। एका गोदी आप उठावणा, राए धर्म ना करे ख्वार। वरन गोती भेव चुकावणा, जोती जगी इक्क निरँकार। सुरती सोई आप उठावणा, शब्द अनादी हलूणा मार। मेरा तेरा भेव मिटावणा, मैं तूं ना करे विचार। पूत सपूता आप अख्वावणा, सुत दुलारा कर प्यार। चारे कूटां वेख वखावणा, भुल्ल ना जाए भुल्लणहार। साचा झूटा आप झुलावणा, शब्द हुलारा दए आप करतार। रस मिट्ठा मुख चुआवणा, निझर बरखे अमृत धार। सतिजुग रुठा आप मनावणा, कलिजुग काचा ठूठा घड़ ठठयार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तेरा वेखे काया महल्ल मुनार। सच मुनारा उच्ची चोटी, हरि साचे तख़्त सुहाया। निर्मल निरगुण जगे जोती, दीवा बाती ना कोए वखाया। दुरमति मैल कलेवर धोती, निर्मल निर्मल रूप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लेखा लेखे लाया। पूर्ब लेखा चुकया लोकमात वज्जे वधाईआ। हरि का भाणा कदे ना रुक्या, गुर पीर गए मनाईआ। आसा तृष्ना बूटा कदे ना सुक्कया, जिस जन प्रभ चरन ओट रखाईआ। हरिभगत कदे ना रहे लुकया, प्रभ साचा लए प्रगटाईआ। उज्जल करे मात मुख्या, मुख आपणे आप सालाहीआ। सुफल कराए मात कुख्या, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। गुर का शब्द तीर निशाना कदे ना उक्या, जिस मारे पार कराईआ। सिँघ शेर शाह अस्वार हो हो बुक्या, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। पंच विकारा जड़ों पुट्टया, तत्व तत्त दए गंवाईआ। गुरमुख कदे ना जाए लुट्टया, ठग्ग चोर यार देण दुहाईआ। गुरसिख मार्ग कदे ना खुथ्थया, जिस आपणे मार्ग लाईआ। आप उठाए कलिजुग सुत्तया, दिवस रैण सेव कमाईआ। सोभावन्त होई साची रुतया, रुत्त रुतड़ी दए गवाहीआ। मिल्या मेल पुरख अचुतया, चित चेतन्न

रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचा लेख चुकाया। लेख चुकाया किरपा कर, पिछला कर्ज़ा उतारया। अग्गे झोली देवे भर, देवे नाम भण्डारया। आपणा सीस जगदीश गुरमुखां पैरां हेठ धर, सिर आपणा भार उठा रिहा। आप आपणा पंज तत्त चोला छड्डया घर, गुरमुखां घर आप वसा रिहा। बाल्मीक बजवाड़ा ल्या फड़, सोलां मग्घर वीह सौ दस बिक्रमी अष्टभुज रूप दरसा रिहा। सिँघ मनजीता लाया अग्गे फड़, गुरमुख साचे राहे पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेड़ा पहले उजाड़, गुरमुखां अंदर आसण ला रिहा।

❋ ११ जेठ २०१७ बिक्रमी प्रकाश चन्द दे घर जम्मू शहर ❋

६८७ सो पुरख साहिब सुल्तान, हरि वड्डा वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण मेहरवान, आदि जुगादि इक्क अख्वाईआ। एकँकारा खेल महान, अगम्म अगम्मड़ी खेल खलाईआ। आदि निरँजण जोत महान, नूर नुराना डगमगाईआ। श्री भगवान हो प्रधान, अकल कल आप अख्वाईआ। अबिनाशी करता नौजवान, एका एक समाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल महान, आप आपणा वेस वटाईआ। ब्रह्म ब्रह्म कर प्रधान, त्रै त्रै वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। सो पुरख निरँजण शाह पातशाह, एका एक अख्वाया। हरि पुरख निरँजण सच मलाह, साचा बेड़ा आप चलाया। एक एकँकारा एका आपणा नाउँ रखा, एका डंका नाम वजाया। आदि निरँजण दर घर साचा कर रुशना, दीपक साचा इक्क वखाया। अबिनाशी करता बेपरवाह, साची सेजा आपणा आसण लाया। श्री भगवान सुहाए थाँ, थिर घर रूप अनूप वटाया। पारब्रह्म करे कराए आपणा आप न्याँ, धुर दर लेखा आपणे हथ्थ रखाया। पारब्रह्म ब्रह्म रूप धरा, निरगुण सरगुण जोत जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाया। सो पुरख निरँजण गहर गम्भीरा, बेअन्त वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण आदि जुगादी ठांडा धीरा, सति सन्तोख इक्क रखाईआ। एकँकारा शाह फ़कीरा, दाता दानी दर घर साचे सोभा पाईआ। आदि निरँजण एका घर करे वसेरा, दूसर दर ना कोई बणाईआ। अबिनाशी करता आपे करे आपणी मेहरा, मेहरवान आप हो जाईआ। श्री भगवान सचखण्ड दुआरा इक्क वसाए साचा डेरा, एका आसण आपे लाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वसे नेड़न नेड़ा, दूर दुराडा ना कोई अख्वाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म पंज तत्त करे वसेरा, त्रै त्रै आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। सो पुरख निरँजण साचा

मीता, एका रंग समाया। हरि पुरख निरँजण सदा अतीता, जन्म मरन विच ना आया। आदि निरँजण जोत जगाए हवनी इक्क अंगीठा, आपणा तत्त आप रखाया। श्री भगवान ठांडा सीता, सीतल धारा आप वहाया। अबिनाशी करता आप आपणा रिहा जीता, हार जित आपणे हथ्थ रखाया। पारब्रह्म सद पुनीता, पतित कोए ना रूप वटाया। ब्रह्म उपजाए हस्त कीटा, घर घर आपणा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरवैर आपणा नाउँ रखाया। सो पुरख निरँजण पुरख अकाला, एका एक अख्वाईआ। हरि पुरख निरँजण दीन दयाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। एकँकारा अवल्लड़ी चाला, जुगा जुगन्तर आप चलाईआ। आदि निरँजण वसे सच सच्ची धर्मसाला, जोत निरँजण डगमगाईआ। श्री भगवान तोड़े जगत जंजाला, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। अबिनाशी करता संग रखाए काल महांकाला, बलधारी आपणा बल धराईआ। पारब्रह्म आपणा नाउँ गल पाए आपणी माला, आप आपणी सेव कमाईआ। ब्रह्म वसाए पंज तत्त सच्ची धर्मसाला, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश गढ़ बणाईआ। त्रैगुण माया तत्त आपे ढाला, ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमाईआ। लक्ख चुरासी खेल निराला, घड़ भाण्डे आप वखाईआ। आपणे फल लगाए डाला, मुच्छ दाढ़ी आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। सो पुरख निरँजण हरि हरि कन्त, घर साचे सोभा पांयदा। हरि पुरख निरँजण एका रंग रंगे बसन्त, दूसर रंग ना कोई चढ़ांयदा। एकँकारा महिमा अगणत, लिख लिख लेख ना कोई वखांयदा। आदि निरँजण लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणा वेस वटांयदा। श्री भगवान देवे जोत जीव जंत, लक्ख चुरासी जीआं दान झोली पांयदा। अबिनाशी करता एका शब्द उपजाए मणीआ मंत, आप आपणी धुन रखांयदा। पारब्रह्म लेखा जाणे साचे सन्त, लोकमात मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। अलक्ख अगोचर श्री भगवाना, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। सचखण्ड दुआरे वसे इक्क मकाना, दरगाह साची धाम सुहाईआ। थिर घर वेखे मार ध्याना, घर घर विच करे रुशनाईआ। शाहो भूप वड सुल्ताना, सच सिँघासण आसण इक्क वछाईआ। उप्पर बैठ राज राजाना, आप आपणा बल धराईआ। आप वखाए सच निशाना, दो जहानां आप झुलाईआ। आपे वेखे पंचम मुख पंचम ताज गुण निधाना, निरगुण निरगुण हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा, खेल तमाशा आपणा आप रचाईआ। सचखण्ड दुआरा उच्च महल्ला, हरि साचा सच सुहांयदा। एकँकारा इक्क इकल्ला, एका आसण लांयदा। वसणहारा जलां थलां, दर घर साचे सोभा पांयदा। करे खेल अछल अछला, वल छल धारी आपणा नाउँ धरांयदा। सचखण्ड दुआरा एका मल्ला, सीस जगदीश आपणा आप

सुहांयदा। शब्दी जोती आपे रला, हुक्मी हुक्म आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेस वटांयदा। लोकमात खेल अपारा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यारा, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डारा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। आदि जुगादी देवणहारा, देंदयां तोट ना आईआ। अजूनी रहित सभ तों वसे बाहरा, अजून अजूनी आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण खेल वेखे बेपरवाहीआ। सरगुण खेल हरि निरँकारा, निरगुण वेख वखांयदा। निरगुण जोत जगे अपारा, सरगुण अंदर आप टिकांयदा। सरगुण देवे नाम आधारा, घर मन्दिर इक्क वखांयदा। निरगुण बोल शब्द जैकारा, सरगुण साचे आप सुणांयदा। सरगुण मंगे बण भिखारा, अग्गे आपणी झोली डांहयदा। निरगुण बणया रहे वरतारा, साचा हट्ट आप खुल्ांयदा। सरगुण ढह ढह पए दुआरा, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। निरगुण मेल मिलाए मेलणहारा, आप आपणा रंग रंगांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्यारा, एका रूप दरसांयदा। सोहँ शब्द शब्द न्यारा, लोकमात आप चलांयदा। जगत रत पार किनारा, ब्रह्म मति इक्क समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर घर जोती आप टिकांयदा। घर घर जोती पुरख अकाला, दीन दयाला लक्ख चुरासी आप जगाईआ। काया माटी वेख धर्मसाला, फल लगाए साचे डाल्ा, लोकमात वड्डी वड्याईआ। शब्द सरूपी बणे दलाला, घर घर धुन नाद शब्द रिहा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, वरते वरतावे विच संसारा, जुगा जुगन्तर साची कारा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। हरि भगवान निरगुण दाता, सरगुण जीव दान झोली पांयदा। उत्तम रक्खे आपणी ज़ाता, वरन गोत ना कोए रखांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म बंधे नाता, नाता बिधाता जोड़ जुड़ांयदा। लेखा जाणे अठ्ठ ताता, नौ दुआरे खोज खुजांयदा। एका मन्त्र एका पूजा एका पाठा, इष्ट देव इक्क अख्वांयदा। एका तीर्थ एका ताटा, सर सरोवर इक्क नुहांयदा। एका जोती इक्क ललाटा, एका घाट आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप निरगुण सरगुण रूप प्रगटांयदा। निरगुण मेला लोकमात, पुरख निरँजण आप कराईआ। सरगुण चेला बख्शे दात, दाता दानी वड वड्याईआ। निरगुण पुच्छे जुगा जुगन्तर वात, सरगुण साची दए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता हरि करणेहारा, आपणा जाणे आप पसारा, लेखा जाणे रवि ससि सूरज चन्न सितारा, मंडल मंडप खोज खुजाईआ। मंडल मंडप वेखे ब्रह्मण्ड, अलक्ख अलक्खणा लख्या ना जाईआ। भेव चुकाए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आपणा पर्दा लाहीआ। आपे वण्डे आपणी वण्ड, वण्डणहारा दिस ना आईआ। लेखा जाणे नौ दुआर नौ खण्ड, नौ गृह आपणे हुक्म चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका खेले खेल सृष्ट सुबाईआ। सृष्ट सबाई खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण हो त्यारा, इकउँकार मेल मिलांयदा। हरि पुरख निरँजण खोल्ह किवाड़ा, अबिनाशी करता राह तकांयदा। श्री भगवान बण सिक्दारा, पारब्रह्म प्रभ आप उठांयदा। ब्रह्म देवे धुर फ़रमाणा, लोकमात हुक्म चलांयदा। शब्द सरूपी अनहद गाणा, घर घर ताल आप वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम तत्त तत्त अपार, आप उपजाए विच संसार, सार शब्द शब्द चलांयदा। पंज तत्त कर पसारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मेल मिलांयदा। बूंद रक्त कर प्यारा, एका दूजा जोड़ जुड़ांयदा। नौ दर खोल्ह जगत कवाड़ा, पंचम धाड़ा नाल मिलांयदा। काया मन्दिर डूँघी गारा, सच अखाड़ा आप वखांयदा। घर विच घर कर त्यारा, महल्ल अटल नाउँ धरांयदा। पंचम शब्द बोल जैकारा, साचा मंगल आपे गांयदा। अमृत भर ठंडी ठारा, कँवल नाभ मुख उलटांयदा। आपे करे बन्द किवाड़ा, आप आपणा कुण्डा लांयदा। आपे साची सेजा कर पसारा, निरगुण आपणा मुख छुपांयदा। आपे वसे दस्म दुआरा, नेत्र नैण दिस किसे ना आंयदा। आपे जाणे सच मुनारा, उच्च अटल एका धाम सुहांयदा। आपे रूप वटाए एकँकारा, अकल कल आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला, गोबिन्द अपणा नाउँ रखांयदा। गोबिन्द गोपाल पुरख अबिनाशा, एका एक अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर वेखे जगत तमाशा, लोकमात वेस वटांयदा। आपणे मंडल पावे साची रासा, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाशा, आकाश प्रकाश आप धरांयदा। लक्ख चुरासी कर कर वासा, निवास निवासा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जागरत जोत इक्क जगांयदा। जागरत जोत घर घर अंदर, ब्रह्म आप टिकांयदा। आपे वसे आपणे मन्दिर, आपणी सोभा आप गणांयदा। ना कोई तोड़े लग्गा जंदर, पर्दा कोए ना परे हटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। निरगुण सरगुण खेल अपारा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। लोकमात लै अवतारा, गुर सतिगुर नाउँ धराईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, एका आपणे हथ्थ उठाईआ। आपे आए भगतन चल दुआरा, साचे सन्त लए उठाईआ। पंच विकारा कर ख्वारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार गंवाईआ। आसा तृष्ना मारे मारा, हउमे हंगता गढ़ देवे ढाहीआ। एका नाम करे उज्यारा, राम नाम सच पढ़ाईआ। अन्तर आत्म सुणे आप पुकारा, घर बैठा सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका अक्खर बोध ज्ञाना, अगाध बोध आप जणांयदा। एका पंडत हरि भगवाना, सृष्ट सबाई आप पढ़ांयदा। एका शाह इक्क राज राजाना, सच सुल्तान इक्क अख्वांयदा । इक्क सिक्दार दो जहानां, दो जहानीं आपणा हुक्म चलांयदा।

६९० ०६

एका हुक्म धुर फ़रमाणा, सन्तां भगतां आप सुणांयदा। एका राग इक्क तराना, गीत अनादी एका गांयदा। एका मन्दिर इक्क मकाना, बंक दुआर इक्क सुहांयदा। एका पुरख चतर सुजाना, दर घर साचे सोभा पांयदा। एका पद पद निरबाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। जुग जुग खेल कर करतार, लोकमात गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। सरगुण सतिगुर लै अवतार, गुर गुर आपणा रूप वटाईआ। शब्द मन्त्र कर उज्यार, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। सन्त भगत भगवन्त देवे तार, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस धराईआ। जुग जुग वेस वटंदड़ा, पुरख अगम्म अथाह। साचा मार्ग आप वखंदड़ा, एका अक्खर नाम जपा। सतिजुग साचा वेख वखंदड़ा, लोकमात बण मलाह। द्वापर त्रेता पार करंदड़ा, ग़रीब निमाणयां गले लगा। गढ़ हँकारीआं आप तुड़ंदड़ा, एका धक्का देवे ला। राम नाम आप जपंदड़ा, दो दो अक्खर दए वखा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कान्हा कृष्ना रूप वटंदड़ा, सोलां कल कल वरता। द्वापर त्रेता सतिजुग उतरया पार, कलिजुग लोकमात लए अंगड़ाईआ। ईसा मूसा होया ख़बरदार, संग मुहम्मद चार यार करी कुड़माईआ। अल्ला राणी बोल जैकार, उच्ची कूक करे सुणाईआ। मुकामे हक एका यार, परवरदिगार साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा रूप प्रगटाईआ। रूप अपारा एकँकारा, वेद कतेब भेव ना पांयदा। लिख लिख थक्का वेद व्यास बण लिखारा, ब्रह्मा चारे मुख सालांहयदा। चारे वेद करे पुकारा, अथर्बण आपणा लेखा आप वखांयदा। गीता ज्ञान इक्क सहारा, बरन अठारां मेट मिटांयदा। चार वरनां करे सच प्यारा, शत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए वण्ड वण्डांयदा। जिस जन मिले आप करतारा, नीचों ऊँच आप करांयदा। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, लाशरीक इक्क अख्वांयदा। हक हकीकत बोल जैकारा, शरअ शरीअत वेख वखांयदा। एका जोती नूर उज्यारा, जल्वा नूर आप वखांयदा। चौदां तबकां पावे सारा, चौदां लोकां खोज खुजांयदा। तिन्नां लोकां वसे बाहरा, लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबांयदा। सचखण्ड निवासी खेल अपारा, पुरख अबिनाशी आप करांयदा। अलक्ख अगोचर हो उज्यारा, अलक्ख अलक्खणा खेल खिलांयदा। कागद कलम ना लिखणहारा, ज्ञान ध्यान ना कोए रखांयदा। राउ रंक ना पावे सारा, राज राजाना मुख शरमांयदा। एका भगतां दए आधारा, आप आपणी दया कमांयदा। साचे सन्तां देवे नाम सच हुलारा, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता हरि करणेजोग, गुरमुखां करे सच संजोग, सतिगुर साचा मेल मिलांयदा। साचा मेला हरि करतार, जन भगतां आप कराईआ। आदि जुगादी खेल अपार, जुगा जुगन्तर आप कराईआ। एका बख्शे चरन

प्यार, इच्छया भिच्छया इक्क वखाईआ। साची सिख्या धुर दरबार, धुर दी धार आप चलाईआ। जुगा जुगन्तर खेल न्यार, इक्क इकल्ला आप कराईआ। कलिजुग प्रगट हो विच संसार, साचा संग आप निभाईआ। मेट मिटाए अन्ध अँध्यार, एका जोत करे रुशनाईआ। नाता तोड़े काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना दए खपाईआ। माया ममता करे ख्वार, जूठ झूठ दए मिटाईआ। शब्द अगम्मी मारे मार, कलिजुग कूड़ा रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा दए मिटाईआ। कलिजुग तेरा लेख मिटाउणा, तेरा लेखा रहे ना राईआ। कूड़ कुड़यारा मेट मिटाउणा, सदी चौधवीं दए मिटाईआ। अल्ला राणी मुख शरमाउणा, मुख घूँगट एका पाईआ। पुरख अबिनाशी कलमा इक्क पढ़ाउणा, कायनात वेख वखाईआ। साची शरीअत इक्क जणाउणा, काया मक्का काअबा दए वखाईआ। एका इष्ट आप मनाउणा, लाशरीक रूप खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा पार किनारा, अन्तिम कूके दए दुहाईआ। कलिजुग अन्तिम उतरना पार, लोकमात रहिण ना पाईआ। वरन बरन होण ख्वार चार वरन देण दुहाईआ। भगत भगवन्त करे प्यार, घर मेला सहिज सुभाईआ। एका गाए शब्द जैकार, गीत गोबिन्द इक्क अलाईआ। एका मन्दिर वेखे दर दरबार, इट्टां गारा ना कोए लगाईआ। छप्पर छन्न ना करे त्यार, काया मन्दिर सोभा पाईआ। आपणा दीपक कर उज्यार, दीवा बाती ना कोए टिकाईआ। अठ्ठे पहर शब्द धुन्कार, ढोलक छैणा ना कोए वजाईआ। मनमुख भुलाए बाहर, सतिगुर बैठा अंदर ताड़ी लाईआ। कलिजुग कूड़ा करे ख्वार, मन मनूआ टिकण ना पाईआ। दहि दिशा मारे उडार, शांत सति ना कोए कराईआ। मति मतवाली होई ख्वार, माया ममता मोह हलकाईआ। बुध बबेकी गई हार, घर मिल्या ना साचा माहीआ। जूठ झूठ कर प्यार, कलिजुग जीव भुल्ले पान्धी राहीआ। साचे दर ना चढ़े कोई दुआर, बन्द ताक ना कोए खुल्हाईआ। अमृत मिल्या ना ठंडा ठार, अठसठ तीर्थ नुहावण रहे नुहाईआ। घर जोत ना जगी निरँकार, मन्दिर दीपक रहे टिकाईआ। घर मिल्या ना मीत मुरार, पढ़ पढ़ विद्या रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, अन्तिम करे पार किनारा, मातलोक रहिण ना पाईआ। कलिजुग मेटे अन्धेरा अन्ध, रुस्सया रैण आप चुकाईआ। जूठा झूठा मुक्के पन्ध, अगला मार्ग आप वखाईआ। चार वरन बख्शे परमानंद, निज आत्म वज्जे वधाईआ। सतिजुग साचे कोए ना लाए रसना मदिरा मास गंद, अमृत जाम इक्क प्याईआ। पसू पंखी पंछी माणस गौण इक्क सुहागी छन्द, सोहँ शब्द वड्डी वड्याईआ। घर घर दीपक होए उजाला चढ़े चन्द, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। द्वैती दूई ढाए कंध, भरमां गढ़ आप तुड़ाईआ। कदे ना सोवे दे कर कंड, गुरमुखां मुख वेख वखाईआ। दाता दानी

सतिगुर सदा बख्शंद, बख्शणहारा इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा मार्ग दए वखाईआ। कलिजुग तेरा तोड़े नाता, वरन बरन मेट मिटांयदा। मन मति रहे ना नार कमज़ाता, गुरमति इक्क समझांयदा। एका पूजा एका पाठा, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। एका खोल्हे साचा हाटा, हरिजू घट घट नज़री आंयदा। एका निभाए सगला साथा, आदि जुगादि सेव कमांयदा। एका चलाए साचा राथा, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। एका चुकाए लहिणा मस्तक माथा, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। एका वेखे आदि शक्ति जोत ललाटा, आदि भवानी एका रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा इष्ट देव गुर वास्तक रूप आप समांयदा। वास्तक रूप विश्व धार, विष्न नाउँ करे प्रगटाईआ। ब्रह्मा लेखा जाणे वेद चार, चारे जुग आप भवाईआ। शंकर तेरी साची सार, जगत सँघार सेवा लाईआ। तिन्नां विचोला आप निरँकार, निरगुण निरवैर इक्क अख्वाईआ। आपे आपणी करे विचार, विचार विच किसे ना आईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग करया खेल अगम्म अपार, चार जुग चौकड़ी इक्क गणाईआ। ब्रह्मे मनवन्तर इकत्तर करे पार किनार, आपणी धार वखाईआ। साचा शस्त्र ना तन कटार, ज़रा बख्तर ना तन वखाईआ। एका अस्त्र हरि निरँकार, शब्द घोड़ा रिहा दौड़ाईआ। लोआं पुरीआं करे पार, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। लोकमात खेल अपार, नौ खण्ड पृथ्मी खोज खुजाईआ। सत्तां दीपां पर्दा दए उतार, सत्त समुंदर विरोले छाछ, नाम मधाणा एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम खेल अवल्ला, लेखा जाणे राणी अल्ला, बिस्मिल रूप आप समाईआ। बिस्मिल रूप आप अनादि, ब्रह्माद वेख वखांयदा। जोती जगे आदि जुगादि, जुग जुग आपणा रूप आप प्रगटांयदा। लेखा जाणे सन्त साध, भगत भगवन्त मेल मिलांयदा। प्रगट हो मोहण माधव माध, आपणी बंसरी नाम वजांयदा। जन भगतां सुणे सद फरयादि, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। एका देवे साची दाद, हरि का नाम झोली पांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों काढ, आपणी गोदी आप बहांयदा। सदा सदा प्रभ करे लाड, लाल लालण वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा जावे मुक्क लक्ख चुरासी बूटा जाए सुक्क, हरया अमृत सिंच ना कोए करांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ा रंग, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाईआ। कलिजुग तेरी झूठी कंग, जीवां जंतां रही हंढाईआ। कलिजुग तेरी सेज पलँघ, काम कामनी रूप वटाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम मंग, संग मुहम्मद चार यार होए कुड़माईआ। कलिजुग तेरी ढाए कंध, कल्लर कंध रहिण ना पाईआ। कलिजुग तेरा मुक्के गंद, जगत विकार ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरा लेखा दए चुकाईआ। कलिजुग तेरा चुक्कणा लेखा,

वेला अन्तिम आंयदा। पुरख अबिनाशी कढ्ढे भरम भुलेखा, सृष्ट सुबाई आप समझांयदा। ना कोई जाणे धारी केसा, मूंड मुंडाए सर्ब भुलांयदा। आपे होए नर नरेशा, दस दस्मेशा रूप वटांयदा। आपे होए दर दरवेशा, भगत भिखारी नाउँ धरांयदा। आपे लेखा जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा, शिव शंकर मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा पन्ध मुकांयदा। तेरा पन्ध हरि मुकावणा, कलिजुग अन्तिम खेल अपार। सतिजुग साचा मार्ग लावणा, बीस बीसा कर विचार। जगत जगदीशा इक्क अख्वावणा, दूजा इष्ट ना विच संसार। राम कृष्न मेल मिलावणा, नानक गोबिन्द इक्क प्यार। ईसा मूसा लड़ बंधावणा, संग मुहम्मद चार यार। वेद पुराणां आपे गावणा, गीता ज्ञान दए आधार। अञ्जील कुराना हुक्म सुणावणा, सच ईमाना परवरदिगार। खाणी बाणी वेख वखावणा, परा पसन्ती मद्धम बैख़री इक्क विचार। सतिजुग साचा रंग चढ़ावणा, एका खोल्ह सच दुआर। एकँकार सभ नूं नज़री आवणा, जगमग जोत जगे अपार। पंज तत्त ना कोए वखावणा, मनमति ना कोए धार। गुर दर मन्दिर मस्जिद एका रूप वटावणा, शिवदुआला मढ्ढ पावे सार। काया बंक इक्क खुल्हावणा, सुखमन टेढी बंक कर पार। त्रबैणी नैणी आप नुहावणा, सिर रक्ख हथ्थ करतार। अमृत साचा जाम प्यावणा, निझर झिरना झिरे अपार। उलटी नाभी मुख उलटावणा, कँवल नाभ खिड़े गुलजार। फड़ कागों हँस बणावणा, सोहँ हँसा करे प्यार। बज़र कपाटी तोड़ तुड़ावणा, दूई द्वैती दए निवार। अनहद शब्द इक्क सुणावणा, धुन आत्मक सच्ची धुन्कार। आत्म सेजा पर्दा लाहवणा, दस्म दुआरी मेला कन्त भतार। हिन्दू मुस्लिम सिख ना कोए वखावणा, ब्रह्म पारब्रह्म अंस विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची चले चाल। सतिजुग चले चाल निराली, महिमा गणत गणी ना जाईआ। कलिजुग मेटे रैण अन्धेरी काली, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। फल ना दिसे किसे डाल्ही, पतझड़ आप वखाईआ। वेले अन्त ना देवे कोए दलाली, जूठ झूठ ना दए गवाहीआ। चार वरन दिसण हथ्थां ख़ाली, राम कृष्न नानक गोबिन्द ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार मिल्या मेल ना साचे माहीआ। सम्मत सतारां धर्म राए वखाए हक हलाली, चित्रगुप्त आप उठाईआ। प्रगट होया दो जहानां वाली, वरभण्ड खोज खुजाईआ। सभ तों मंगण आया आपणा हाली, लक्ख चुरासी काया धरती फोल फुलाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव लगाया बूटा वेखणहारा हरि हरि माली, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गुरमुख वेखे जिन्हां घाल घाली, हरि हरि का नाम रहे ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा मार्ग दस्स, हर हिरदे अंदर जाए वस, हरि के पौड़े आप चढ़ाईआ। सतिजुग मार्ग साचा दस्सणा, चार वरनां इक्क प्यार। कूड़ कुड़यारां कोलों नस्सणा, जो जन सोहँ बोले शब्द जैकार। मेटे रैण अन्धेरी मस्सणा, घर दीपक जोत जगे

निरँकार। भगत भगवन्त एका घर वसणा, दूसर कोए ना होर विचार। करे प्रकाश कोटन रवि ससिना, रवि ससि करन निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा करे विहार। सतिजुग साचा मात रक्ख, बीस बीसा करे कुड़माईआ। निरगुण रूप हो प्रतक्ख, जगत जगदीसा वेख वखाईआ। ईसा मूसा उडणे कक्ख, उन्नी उनीसा दए दुहाईआ। नव नव करे वखो वक्ख, बन्धन बंध ना कोए बंधाईआ। आपे करे लक्खों कक्ख, हट्टो हट्ट आप विकाईआ। अञ्जील कुराना बह बह रही हस्स, सदी चौधवीं ख़ुशी मनाईआ। चार यार नस्स नस्स, आपणा पन्ध रहे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सतिजुग साचा धरना मात, धरत धवल आप वड्यांअदा। कलिजुग तेरी कोई ना दिसणी ज़ात, वरन बरन ना कोए रखांयदा। सतिजुग बणे सच जमात, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। कलिजुग तेरा करे घात, दस अठ्ठ अठारां राह तकांयदा। सतिजुग तेरी होए प्रभात, अमृत वेला आप सुहांयदा। कलिजुग मेटे अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेर ना कोए वखांयदा। सतिजुग तेरा उपजे धीरज सति, कलिजुग धीरज जत ना कोए धरांयदा। सतिजुग बीज बीजे आपणे वत, कलिजुग तेरी जड़्ह उखड़ांयदा। वसणहारा घट घट, जीव जंत वेख वखांयदा। स्वांगी स्वांग रचया बाज़ीगर नट, नट नटूआ रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी खेल खिलांयदा। खेल खलावणहारा हरि भगवान, महिमा कथ कथी ना जाईआ। सतिजुग रूप हो मेहरवान, बल बावण भेख धराईआ। त्रेता राम नाम कर प्रधान, दहिसर बाणां नाल घाईआ। द्वापर रूप वटाए कृष्ना काहन, मोर मुक्ट सीस टिकाईआ। एका भगत दए ज्ञान, ज्ञान गीता आप दृढ़ाईआ। सोल कला हो प्रधान, सोलां इच्छया पूर कराईआ। सोलां कलीआं सच निशान, वलीआ छलीआ आप वखाईआ। साची गोपीआं देवे माण, जो कृष्न कृष्न कृष्न ध्याईआ। ग़रीब निमाणयां वेखे मार ध्यान, बिदर सुदामा गले लगाईआ। जुगा जुगन्तर खेल महान, हँकारी दुष्ट दए खपाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, सृष्ट सबाई रही कुरलाईआ। किसे हथ्थ ना आए सच ज्ञान, चौदां विद्या दए दुहाईआ। पंडत पांधा मुल्ला शेख़ ग्रन्थी पन्थी कोए ना वड़या आपणे सच मकान, दूर दुराडे बैठे राह तकाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद बह बह गाण, काया मन्दिर ना कोए वसाईआ। पढ़ पढ़ सुणौंदे नाम भगवान, भगवन दर्शन कोए ना पाईआ। माया ममता लोभी होए नादान, गुण निधान दिस ना आईआ। नाता तुट्टा ना पंज शैतान, पंज वक्त निमाज़ सुणाईआ। बाणी मारे ना साचा बाण, मन धायल ना कोए कराईआ। गायत्री मन्त्र ना देवे देवंद पुराण, देवी देवा दिस ना आईआ। कलिजुग सुंञा जीव नादान, घर वस्त ना सच टिकाईआ। जूठ झूठ पीण खाण आसा तृष्ना जिह्वा हलकाईआ। कलिजुग अन्तिम पुरख

अबिनाशी करे पछाण, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणा नाउँ रखाईआ। निहकलंक हरि भगवान, पंज तत्त ना कोए रखांयदा। शब्द सरूपी इक्क ज्ञान, आत्म ब्रह्म आप जणांयदा। सच वखाए इक्क निशान, सचखण्ड दुआरे आप झुलांयदा। निर्मल जोत जगे भगवान, वरन गोत ना कोए रखांयदा। चौदां लोकां वेखे आप दुकान, आप आपणा खेल खिलांयदा। लोकमात होए मेहरवान, हरिजन साचे आप उठांयदा। दरस दखाए दर घर आण, पूर्ब लहिणा वेख वखांयदा। नाम निधाना बख्शे साची खाण, चार यार लुट्ट कोए ना जांयदा। इक्क रखाए आपणी आण, दूसर दर ना किसे फिरांयदा। शब्द अगम्मी इक्क बबाण, भगत भगवन्त आप चढ़ांयदा। लक्ख चुरासी मिटे काण, राए धर्म ना डन्न लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा अन्त किनारा, प्रगट होए हरि अवतारा, लोकमात खेल वखांयदा। लोकमात खेल न्यारा, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। चौथे जुग चवीआं अवतारा, कल कल्की आप अख्वाईआ। शब्दी जोती जोड़ा कल्गी तोड़ा सीस दस्तारा, नाम घोड़ा इक्क दौड़ाईआ। गुरमुखां बौहड़ा आप निरँकारा, जन्म जन्म दी लग्गी औड़ प्यास बुझाईआ। अमृत बरखे ठंडी ठारा, निझर झिरना अनडिठा रस मुख चुआईआ। दरस दखाए अगम्म अपारा, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। सम्मत वीह सौ सतारां बिक्रमी हो उज्यारा, भारत खण्ड करे रुशनाईआ। इलाबुत केतमाल दए हुलारा, हरवरख वेख वखाईआ। किंपुरख करे प्यारा, भद्र निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शाह सुल्तानां एका शब्द सुणाए बोल जैकारा, वाली हिन्द आप उठाईआ। बिन हरि नर नरायण कोए ना बेड़ा लाए पार किनारा, कलिजुग नईया रिहा डुबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां बणे साचा सय्या, धर्म राए ना कढ्ढे वहीआ। बाकी लेखा दए मुकाईआ। गुरमुख लेख मुकावणा, कर किरपा आप करतार। साचे बेड़े नाम चढ़ावणा, आपे लाए पार किनार। खेवट खेटा आप अख्वावणा, सेवा करे विच संसार। मस्तक लेखा आप चुकावणा, पुरख अबिनाशी किरपा धार। औलीआ पीर शेख़ मुसायक मेट मिटावणा, उच्ची कूक ना करे कोए पुकार। सतिजुग साचा राह चलावणा, सति पुरख निरँजण साची कार। गुरमुख रंग रंगीला आप रंगावणा, चार वरनां कर प्यार। नौ खण्ड पृथ्मी सृष्ट सबाई कबीला इक्क बणावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खलावणा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क कबीला, घर मन्दिर इक्क सुहाईआ। सोहँ शब्द बणे वसीला, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी मिले मेल छैल छबीला, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा लए उपजाईआ। सतिजुग साचा प्रगटाए, प्रगट आप निरँकार। वणज वणजारा एका हट्ट

वखाए, पुरख अबिनाशी चरन दुआर लक्ख चुरासी फड़ उठाए, सोया रहे ना कोए विच संसार। सोहँ शब्द आप पढ़ाए, एका अक्खर बोल जैकार। घट घट मन्दिर दीप जगाए, कमलापाती नैण मुँधार। नैण कँवल हरि आप मटकाए, विष्नूं करे खेल अपार। सांगोपांग सेज आप हंढाए, बाशक तशका कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आपणी वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत नूर महान, करे प्रकाश दो जहान, नव सत्त इक्क ज्ञान, ब्रह्म मति देवे दान, आत्म वत एका बीज बजाईआ।

✻ १२ जेठ २०१७ बिक्रमी सेवा राम रसीआ राम दे घर दया होई पिण्ड कलोए ✻

इकओंकारा अगम्म अथाह, अलक्ख अगोचर नाउँ धरांयदा। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, बेऐब परवरदिगार जोत जगांयदा। श्री भगवान सिफ्त सालाह, महिमा अगणत ना कोए गणांयदा। अबिनाशी करता जगत मलाह, जुग जुग बेड़ा मात चलांयदा। निरगुण सरगुण वेस वटा, अकल कल आपणी खेल खिलांयदा। शब्द अगम्मी ढोला गा, राग नाद इक्क वजांयदा। लक्ख चुरासी डेरा ला, घट घट आपणा मन्दिर सुहांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव सेवा ला, त्रैगुण पल्ले गंढु बंधांयदा। पंज तत्त कर रुशना, जोत निरँजण दीप जगांयदा। नौ दुआरे वेख वखा, जगत तृष्ना विच भरांयदा। मन मति बुध दए टिका, रूप अनूप आप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल आप खलांयदा। खेलणहारा हरि समरथ, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। पुरख अकाल चलाए आपणा रथ, दीन दयाल सच्चा रथवाहीआ। सचखण्ड निवासी एका रक्खे साची वथ्थ, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप वरताईआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ाए पूजा पाठ, निष्अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। इक्क सरोवर वखाए तीर्थ ताट, अमृत आत्म ताल भराईआ। इक्क वजाए नगारे अनहद सट्ट, शब्द अनादी आप सुणाईआ। एका सोए साची खाट, सच सिँघासण आप हंढाईआ। एका जाणे आपणी वाट, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। एका खोल्हे चौदां हाट, चौदां लोक निरगुण जोत कर रुशनाईआ। एका लेखा जाणे आन बाट, जीव जंत फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता वड वड्याईआ। इक्क इकल्ला हरि निरँकारा, जुगा जुगन्तर खेल खिलांयदा। सचखण्ड निवासी इक्क सुहाए सच दुआरा, थिर घर साचे आसण लांयदा। शाहो भूप वड बण सिक्दारा, राजन राज आप अखवांयदा। सति सरूपी सच निशाना दए हुलारा, दरगाह साची आप झुलांयदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। विष्नूं वंसी कर उज्यारा, घर घर आपणा रिज़क सबांयदा। ब्रह्मा आत्म अन्तर भर भण्डारा, शब्द शब्दी

झोली पांयदा। चारे वेदां बण लिखारा, चारे जुग चारे मुख आप सालांहयदा। शंकर साचे घर कर प्यारा, आप आपणे रंग रंगांयदा। एका बख्शे साची कारा, जो घड़या भन्न वखांयदा। त्रैगुण अतीता एकँकारा, अनडीठा खेल खिलांयदा। लोकमात लै अवतारा, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। गुर गुर रूप वरते आप करतारा, जोती शब्दी मेल मिलांयदा। भगत भगवन्त वखाए इक्क अखाड़ा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। सन्तां देवे सच हुलारा, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। गुरमुखां करे इक्क प्यारा, घर मन्दिर मेल मिलांयदा। गुरमुखां देवे अमृत ठंडा ठारा, भर प्याला जाम प्यांअदा। जुगा जुगन्तर खेल न्यारा, पुरख अबिनाशी आप करांयदा। कागद कलम ना लिखणहारा, वेद पुराण सर्ब जस गांयदा। आपे वसे सच महल्ल उच्च अटल मुनारा, धुर दरबारा आप सुहांयदा। सो पुरख निरँजण खेल अपारा, दो जहानी आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण मीत मुरारा, दर घर साचे सोभा पांयदा। एकँकारा कर पसारा, आप आपणा वेख वखांयदा। आदि निरँजण हो उज्यारा, घर घर दीवा बाती आप टिकांयदा। श्री भगवान भर भण्डारा, अतोट अतुट्ट आपणा नाउँ रखांयदा। अबिनाशी करता बण वरतारा, लोकमात आप वरतांयदा। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारा, ख़ालक ख़लक रूप वटांयदा। राम रूप एका धारा, रंग रेख ना कोई जणांयदा। जुगा जुगन्तर आप वरते आपणा वरतारा, दूसर संग ना कोई रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण आपणा डेरा लांयदा। सच महल्ला एकँकार, सचखण्ड दुआर आप सुहाईआ। जल थल महीअल कर पसार, आप आपणी रचन रचाईआ। धरत धवल कर प्यार, रूप अनूप सति सरूप आप वटाईआ। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँग्घी कंदर उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। लक्ख चुरासी वेख विचार, हरिभगतां लए उठाईआ। एका देवे नाम अधार, राम नाम करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे काया माटी नगर ग्राम, साचा खेड़ा वेख वखाईआ। अमृत अंमिउँ रस प्याए साचा जाम, सतिगुर पूरा हथ्थ उठाईआ। सन्तां करे पूरा काम, काम कामनी मेट मिटाईआ। आसा तृष्ना मिटाए अन्धेरी शाम, हउँमे हंगता रहिण ना पाईआ। सच प्रकाश करे एका भान, भगवन भगतन होए सहाईआ। एका बख्शे दानी दान, नाम निधाना झोली पाईआ। चरन दुआरे बख्शे माण, जगत अभिमाना दए मिटाईआ। इक्क वखाए सच निशान, सचखण्ड दुआरे आप झुलाईआ। लोकमात हो प्रधान, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। सतिजुग साचा कर परवान, आप आपणे विच टिकाईआ। त्रेता लेखा जाणे सीआ राम, रावण लंका गढ़ तुड़ाईआ। द्वापर दोए जोड़ करे प्रनाम, कान्हा बंसरी एका नाम वजाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए वाली दो जहान, निरगुण आपणा नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता हरि करनहार, आदि जुगादी इक्क अवतार, भगत भगवन्त पाए सार, साचे

सन्तन देवे नाम आधार, गुरमुख सज्जण लाए पार, गुरसिख साचे मेल मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल अवल्लड़ा, सो पुरख निरँजण आप करावणा। आदि जुगादी इक्क इकल्लड़ा, रूप अनूप आप वटावणा। सचखण्ड दुआर सुहाए सच महल्लड़ा, थिर घर साचे डेरा लावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लोकमात वेस वटावणा, लोकमात वेस अपारा, हरि पुरख निरँजण आप कराईआ। निरगुण रूप अगम्म अपारा, जोती बाती आप जगाईआ। सरगुण करे सच प्यारा, घर घर विच मेल मिलाईआ। मेट मिटाए अन्ध अँध्यारा, धूंआँधार ना कोए वखाईआ। सुन्न अगम्मी पार किनारा, आपणा पन्ध आप चुकाईआ। इक्क वसाए सच दुआरा, घर घर विच कर रुशनाईआ। सतिगुर खेल अपर अपारा, गुर गुर आपणा नाउँ वटाईआ। दोहां विचोला बणे आप निरँकारा, शब्दी आपणा नाउँ धराईआ। शब्द सरूपी बोल जैकारा, हरि हरि नाउँ लए प्रगटाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, निहकलंका आपणा नाउँ रखाईआ। बेऐब खुदाई परवरदिगारा, जल्वा नूर नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, आप बुझाए लग्गी बसन्तर, अमृत मेघ आप बरसाईआ। कलिजुग अन्तिम लग्गी अग्ग, चार कुंट कुरलांयदा। कोई ना देवे धीरज जत, सति सन्तोख मुख भवांयदा। शाहां पातशाहां लथ्थी पति, राज राजान कोए नज़र ना आंयदा। लक्ख चुरासी उबली रत्त, सांतक सति ना कोए वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस धरांयदा। कलिजुग अन्तिम कूक पुकार, जीव जंत रिहा कुरलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी हाहाकार, सत्त दीप देण दुहाईआ। वरनां बरनां कोए ना करे सच प्यार, साची सरन ना कोए रखाईआ। हरनां फरनां नेत्र खुल्ले ना बन्द किवाड़, साध सन्त बैठे ताड़ीआं लाईआ। घर घर अग्नी लग्गी हाढ़, पंज तत्त रही जलाईआ। उब्बले रत्त बहत्तर नाड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाईआ। जूठ झूठ बणाया इक्क अखाड़, सच सुच्च ना कोए वखाईआ। एका भुल्लया हरि करतार, रसना जिह्वा कोए ना गाईआ। कलिजुग कूक करे प्यार, चारे कुंटां रिहा सुणाईआ। चौदां तबकां दयां हुलार, संग मुहम्मद दए गवाहीआ। चौदां लोकां बणावां इक्क अखाड़, नौ खण्ड पृथ्मी चरनां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। कलिजुग कूड़ा वड बलवान, झूठ शस्त्र हथ्थ उठांयदा। चारों कुंट करे वैरान, गढ़ बंक ना कोए सुहांयदा। लेखा तोड़े अञ्जील कुरान, सच ईमान ना कोए धरांयदा। नाल रलाए पंज शैतान, कलमा नबी ना कोए पढ़ांयदा। घर घर गल गल तसबी पाए बेईमान, मन का मणका ना कोए भवांयदा। अल्ला राणी नैण शर्माण, वेला अन्तिम आंयदा। चार यार रोण कुरलाण, पीर दस्तगीर ना कोए मिलांयदा। पुरख अबिनाशी खेल महान, जुग जुग आपणी कार कमांयदा। पंडत पांधा

ना देवे कोए ज्ञान, साचा मन्त्र ना कोए दृढ़ांयदा। अठसठ तीर्थ नहावण नहाण, दुरमति मैल ना कोए कटांयदा। मन्दिर बह बह एका गाण, काया मन्दिर ना कोए वसांयदा। ठाकर पूजा करन भगवान, भगवन हथ्थ ना किसे आंयदा। जूठी झूठी खोल्ह दुकान, माया राणी नाल प्रनांयदा। कलिजुग वेखे मार ध्यान, आप आपणा हुक्म चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग मेटे कूड़ पसारा, प्रगट होए विच संसारा, सतिजुग त्रेता द्वापर पार उतारा, कलिजुग अन्तिम वारी आईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम वार, चारों कुंट अन्धेरा छाया। दीनां अनाथां कोए ना सुणे पुकार, दर्द दुःख ना कोए वण्डाया। ग़रीब निमाणे धाहां रहे मार, बाल बिरध जवान उच्ची कूकण देण दुहाया। नेत्र रोवे नर नार, ज़ारो ज़ार नीर वहाया। जूठे झूठे होए सिक्दार, साचा अदल ना कोए कमाया। चारों कुंट होए विभचार, काम क्रोध लोभ मोह हलकाया। हँकार आपणा गढ़ कर त्यार, काया मन्दिर अंदर डेरा लाया। पुरख अबिनाशी पावणहारा सार, लक्ख चुरासी वेख वखाया। साध सन्त करन पुकार, हरि का पौड़ा दिस ना आया। अन्तिम डिग्गे मूंह दे भार, फड़ बाहों ना कोए उठाया। कलिजुग पाए गल विच हार, आप आपणे अंग लगाया। चारों कुंट झूठ श्रंगार, तन वेसवा रूप वटाया। मिले मेल ना हरि निरँकार, नेत्र नैण दरस किसे ना पाया। घर मन्दिर ना जोत उज्यार, हवन धूप दीप ना किसे वखाया। घर कन्त ना कोए प्यार, नार दुहागण सर्ब कुरलाया। रुत्त बसन्त ना खिड़ी गुलज़ार, पत डाल्ही ना कोए महिकाया। भँवरा गूंजे ना सिरजणहार, सच सुगंधी ना वेख वखाया। मनमुख जीव आपणा जन्म गए हार, जम का जेड़ा ना किसे कटाईआ। कलिजुग आई अन्तिम वार, नव सत्त सत्त नव हरि हरि वेख वखाया। ब्रह्म मति प्रभ पावे सार, तत्व तत्त इक्क बुझाया। गति मित जाणे नर नार, नर नरायण आपणा नाउँ रखाया। रथ चलाए सर्ब संसार, जुग जुग आपणा नाउँ वटाया। महिमा अकथ बोल जैकार, साचा नाअरा एका लाया। साढे तिन्न तिन्न हथ्थ रिहा विचार, धरत धवल धरनी तेरी वण्ड वण्डाया। जो दीसे सो जाए ढठ्ठ अन्तिम वार, भठ्ठ खेड़ा आप कराया। उलटी गेड़े लठ्ठ आप निरँकार, जुग चौथा वेख वखाया। अथर्बण आए हरि दुआर, गल पल्लू एका पाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, कलिजुग नाता दे तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे साचा वर, साचा शब्द आप जणाया। अथर्बण सुणी हरि पुकार, एका हुक्म जणाया। ब्रह्मे सद्दे विच दरबार, सच दरबारा आप लगाया। तेरी चौकड़ी होया पार किनार, तेरा जुग सरनाई आया। औध गई पुग विच संसार, जगत चोग ना कोए वखाया। ख़ालक ख़लक सुणे पुकार, मख़लूक वेखे सहिज सुभाया। आफताब तलूह ना होए आपणी धार, नबी नूह दए दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम

वर, तेरा लेखा दए मुकाया। कलिजुग सूरा सूरबीर सरबंग, बल आपणा आप वखाईआ। सृष्ट सबाई वजाए मृदंग, साचा डौरु हथ्थ उठाईआ। राज राजानां करे नंग, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। लेखा जाणे गोदावरी गंग, जमना सुरस्ती अठसठ तीर्थ फेरा पाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद आपणी भिख्या रिहा मंग, दर दरवेशा आप अख्वाईआ। नौ दुआरे आपे लँघ, नव नव खोज खुजाईआ। रसन आहार कराया मदिरा मास गंद, बत्ती दन्द हरि का नाम ना कोए सालाहीआ। जोत निरँजण चढ़े ना चन्द, अन्ध अन्धेरे सुत्ती सर्ब लोकाईआ। भरमां ढाए ना कोए कंध, दूजा पर्दा ना कोए उठाईआ। किसे हथ्थ ना आए परमानंद, निज आत्म गए गंवाईआ। घर सुणे ना साचा छन्द, अनहद शब्द ना कोए सुणाईआ। खुशी होए ना बन्द बन्द, त्रैगुण माया बन्धन पाईआ। मन इच्छया ना करे कोए खण्ड खण्ड, मनमति ना कोए समझाईआ। ब्रह्म मति ना वण्डे वण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल आप कराईआ। कलिजुग कूड़ा राजा, चार कुंट अख्वांयदा। दहि दिशा फिरे भाजा, आप आपणा वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी रचया काजा, साचा सगन मनांयदा। राए धर्म मारे वाजां, सुत्तयां आप उठांयदा। लाड़ी मौत देवे दाजा, साची वस्त हथ्थ उठांयदा। नाता तोड़े सन्तां साधां, साचा सन्त ना कोए वखांयदा। मिले मेल ना कृष्न राधा, सच स्वामी ना कोए मनांयदा। सीता राम ना माधव माधा, सुरती सीता शब्द ना कोए प्रनांयदा। खाणी बाणी शब्द ना जाणे बोध अगाधा, पढ़ पढ़ रसन विवाद वधांयदा। घर घर वजाए ना कोए नादा, धुन आत्मक ना कोए सुणांयदा। अमृत भोजण किसे ना ख़ाधा, जूठ झूठ मुख वखांयदा। नज़र ना आया मक्का काअबा, साचा हाजी हज्ज ना कोए करांयदा। कलिजुग उठ उठ वेखे शाह नवाबा, चरन रकाबा आप टिकांयदा। सत्तां दीपां फिरे भाजा, दिवस रैण रैण दिवस एका रंग वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा आप मुकांयदा। कलिजुग तेरा साजन साज़, चौथे जुग करी कुड़माईआ। तेरी सुरती रही बांझ, साचा सुत ना कोए वखाईआ। तेरे नेत्र नीर अंझू आंझ, अक्ख प्रतक्ख वेख वखाईआ। तेरा नाता तुट्टे जगत सांझ, सतिगुर पूरा दए तुड़ाईआ। अन्तिम कल प्रगट होए देस माझ, निहकलंक नाउँ रखाईआ। सतिजुग साचे साचा बख्शे राज, सच सुच्च दए वड्याईआ। सति धर्म दा सीस रखाए ताज, धीरज जत इक्क वखाईआ। जन भगतां सन्तां रक्खे लाज, जो हरि हरि रसना गाईआ। पिछला लग्गा धोवे दाग़, अग्गे निर्मल आप कराईआ। चरन धूढ़ कराए मजन माघ, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, सोहँ साची माणक मोती चोग चुगाईआ। घर घर दीपक जोत जगे चिराग, अनहद शब्द वज्जे वधाईआ। सृष्ट सबाई आपणे हथ्थ पकड़े वाग, चारों कुंट आप फिराईआ।

७०१ ०६

सति सतिवादी चलाए इक्क जहाज़, चारे वरनां लए चढ़ाईआ। अठारां बरन ना करन नाच, स्वांगी सांग ना कोए वखाईआ। लेखा जाणे काया माटी काच, घर सच सुच्च दए वखाईआ। त्रैगुण लग्गी बुझाए आंच, सीतल धार आपणी आप चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे दए वड्याईआ। सतिजुग साचा लावणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। बल बावन भेख वटावणा, निरगुण रूप अगम्म अपार। कलिजुग हँकारी मारे रावणा, शब्द खण्डा तेज़ कटार। जूठ झूठ कंसा पकड़ गिरावणा, कृष्ना कान्हा हो उज्यार। तेरा कूड़ा पन्ध मुकावणा, मिटे रैण अन्धेरी धूंआँधार। सतिजुग साचा चन्न चढ़ावणा, जगे जोत इक्क निरँकार। चार वरनां एका रंग रंगावणा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करन प्यार। सिख ईसाई हिन्दू मुस्लिम एका धाम बहावणा, इक्क वखाए मन्दिर मस्जिद गुरूदुआर। एका राम नाम दरस करावणा, मिटे हरस सर्ब संसार। पारब्रह्म प्रभ तरस कमावणा, ब्रह्म मेले किरपा धार। एक अक्खर जाप जपावणा, सो पुरख निरँजण निराकार। हँ हंगता मेट मिटावणा, साची संगतां बख्शे इक्क आधार। काया चोला रंग रंगावणा, उतर ना जाए दूजी वार। भाण्डा भरम भउ भन्नावणा, शब्द हथौड़ा एका मार। सोहँ सो साचा जाप जपावणा, जागरत जोत होए उज्यार। घर घर मंगल एका गावणा, एका रंग रंगाए नर नार। सति सतिवादी खेल खिलावणा, ब्रह्म ब्रह्मादी करे विचार। आदि जुगादी रूप वटावणा, जुगा जुगन्तर साची कार। जन भगतां मेल मिलावणा, सन्तन खोल्हे बन्द किवाड़। गुरमुखां अमृत जाम प्यावणा, गुरसिखां तृष्ना दए निवार। धुर दा लेखा आप समझावणा, थिर रहे ना कोई विच संसार। ग़रीब निमाणे गले लगावणा, शाह सुल्ताना कर ख्वार। सृष्ट सबाई तेरा मार्ग इक्क वखावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भगवन्त भगवन आदि जुगादी जाए तार।

❋ १२ जेठ २०१७ बिक्रमी सरदारा सिँघ फ़कीर सिँघ दे घर पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ❋

सति पुरख निरँजण सर्ब गुणवन्त, आदि जुगादि समांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेअन्त, बेपरवाह एका नाउँ धरांयदा। सो पुरख निरँजण महिमा अगणत, भेव अभेद ना कोई पांयदा। हरि पुरख निरँजण साचा कन्त, घर साचा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा आपणी खेल खिलांयदा। एकँकारा हरि निरँकार, दर घर साचे सोभा पाईआ। आदि निरँजण हो उज्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता बेऐब परवरदिगार, जल्वा नूर नूर उपजाईआ। श्री भगवान एका वसे सचखण्ड सच्चे दुआर, थिर घर आपणा आसण लाईआ। पारब्रह्म प्रभ

जाए आपणी धार, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अकल कल आप अख्वाईआ। सो पुरख निरँजण अकल कल धारी, रूप अनूप रेख रंग ना कोई जणांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल अपारी, इक्क इकल्ला आप करांयदा। एकँकारा सहिज सिक्दारी, दरगाह साची आप कमांयदा। आदि निरँजण निरगुण रूप अगम्म अपारी, आप आपणा आप प्रगटांयदा। अबिनाशी करता शाहो भूप राजन राज एका वसे उच्च महल्ल अटल मुनारी, तख्त ताज आप सुहांयदा। श्री भगवान आप उठाए सच निशान, दो जहानां आप झुलांयदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, निरगुण खेल करे महान, खेल अवल्लड़ी आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दरगाह साची आप सुहांयदा। सो पुरख निरँजण हरि भगवाना, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। हरि पुरख निरँजण वसे सच मकाना, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। एकँकारा गुण निधाना, गुण अवगुण ना कोई जणाईआ। आदि निरँजण आपणी कल आप वरताना, दूसर संग ना कोई रखाईआ। श्री भगवान नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। अबिनाशी करता जुगा जुगन्तर करे खेल महाना, ना मरे ना जाईआ। पारब्रह्म आपणे घर मंगे दाना, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला वेस वटाईआ। सो पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। हरि पुरख निरँजण वसे सच महल्ला, दरगाह साची धाम सुहांयदा। एकँकारा आपणी जोती आपे रला, मात पित ना कोई बणांयदा। आदि निरँजण सुते प्रकाश आपे बला, बाती तेल ना कोई टिकांयदा। श्री भगवान सच सिँघासण एका मल्ला, पावा चूल ना कोई रखांयदा। अबिनाशी करता वसे नेहचल धाम अटला, दिस किसे ना आंयदा। पारब्रह्म आपे फड़े आपणा पल्ला, आपणा संग आप निभांयदा। सो पुरख निरँजण सोभावन्त, एका रंग समाया। हरि पुरख निरँजण साचा कन्त, निरगुण आपणा रूप वटाया। एकँकारा आपणी महिमा आपे जाणे अगणत, आपणा लेखा आपणे विच टिकाया। आदि निरँजण खेले खेल आदि अन्त, मध आपणा वेस वटाया। श्री भगवान दो जहान बणाए बणत, निश्अक्खर आप उपाया। पारब्रह्म आपे होए दर दरवेशा मंगत, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सतिवादी आदि जुगादी आपणी रचन आप रचाया। सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान, तख्त ताज इक्क हंढांयदा। हरि पुरख निरँजण राज राजान, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणांयदा। एकँकारा बण दरबान, दर घर साचे सोभा पांयदा। आदि निरँजण आपणी मन्ने आपे आण, आपणा हुक्म आप चलांयदा। श्री भगवान वेखे मार ध्यान, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। अबिनाशी करता आपे होए जाणी जाण, आपणा लेखा आप गणांयदा। पारब्रह्म एका मंगे दान, दाता दानी आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण

दाता हरि बेअन्त, आपे नार आपे कन्त, आपणी सेज आप हंढांयदा। सो पुरख निरँजण नारी कन्ता, घर साचे सोभा पांयदा। हरि पुरख निरँजण आप बणाए आपणी बणता, आपणी सेजा आप हंढांयदा। एकँकारा आपणी चोली आपे रंगदा, दूसर संग ना कोए वखांयदा। आदि निरँजण आपणा दर आपे लँघणा, दूसर दर ना कोए खुल्ह्रांयदा। अबिनाशी करता लेखा जाणे सेज पलँघ दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे आपे वड़, आप आपणा आसण लांयदा। दर घर साचे आपे वड़या, निरगुण आपणी खेल खिलांयदा। आपणे पौड़े आपे चढ़या, दिस किसे ना आंयदा। आपणा घाड़ण आपे घड़या, सचखण्ड दुआरा नाउँ धरांयदा। सचखण्ड अंदर थिर घर आपे करया, घर घर विच आप समांयदा। आपे पुरख नारी नरया, नर नरायण आपणा नाउँ धरांयदा। आपणा आप आपे वरया, हरि जू आपणे मन्दिर सोभा पांयदा। आपणा भोग बिलास निरगुण निरगुण संग करया, तत्व तत्त ना कोए करांयदा। आपणे अंदर आपे वड़या, आपणी बिन्द आप टिकांयदा। आपे बाहर दर दुआर आए खड़या, रूप अनूप आप वटांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़या, निष्अक्खर आपणा जाप जपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा कर त्यार, जोत जगाए अगम्म अपार, एकँकारा खेल न्यार, खेल अवल्ला आप करांयदा। सच महल्ला कर त्यारा, हरि साचा खेल खिलांयदा। एका दीपक कर उज्यारा, आदि जुगादी डगमगांयदा। रवि ससि ना कोए सितारा, सूरज चन्न ना कोए चढ़ांयदा। मंडल मंडप ना कोए हुलारा, आकाश प्रकाश ना कोए वखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ना सोहे दुआरा, त्रैगुण तत्त ना कोए जणांयदा। पंज तत्त ना कोए अधारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश ना रूप वटांयदा। जंगल जूह ना कोए पहाड़ा, जल थल ना कोए डेरा लांयदा। साध सन्त ना गुर पीर कोई अवतारा, एकँकारा आपणी कल वरतांयदा। ना कोई नाम शब्द बोले जैकारा, धुन नाद ना कोए वजांयदा। ना कोए अमृत वेखे ठंडा ठारा, जल धारा ना कोए बणांयदा। ना कोई निउँ निउँ करे निमस्कारा, सीस जगदीश ना कोए झुकांयदा। लक्ख चुरासी ना कोए पसारा, घड़ भाण्डे ना कोए बणांयदा। ना कोई चिल्ला तीर कमान तेज़ कटारा, शस्त्र बस्त्र ना कोए रखांयदा। ना कोई पुरख ना कोई नारा, जगत सेज ना कोए हंढांयदा। ना कोई दिसे वड भण्डारा, फड़ हथ्थ ना कोए वरतांयदा। चौदां लोक ना कोए अखाड़ा, त्रैभवन ना कोए फिरांयदा। करोड़ तेतीस ना करे कोए प्यारा, सुरपति राजा इंद, राग ताल ना कोए वजांयदा। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, राज राजान ना कोए अख्वांयदा। ना कोई दर दरवेश मंगे बण भिखारा, गल अल्फ़ी ना कोए हंढांयदा। चार वरन ना कोए सहारा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रंग ना कोए रंगांयदा। ना कोई बन्न्हे सीस दस्तारा, मूंड मुंडाया ना कोए रखांयदा। सति पुरख निरँजण अगम्म

अपारा, अलक्ख अगोचर आपणी रचना आप रचांयदा। सचखण्ड सुहाए इक्क दुआरा, आदि आदि आपणा खेल करांयदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, हुक्मी हुक्म आप सुणांयदा। निरगुण रूप आपे पाए आपणी सारा, मन मति बुध ना कोए धरांयदा। काम क्रोध लोभ मोह ना कोए हँकारा, आसा तृष्ना ना मेल मिलांयदा। पूत सपूत ना सुत दुलारा, मात गर्भ ना कोए फेरी पांयदा। रंग रंलीआं माणे ना नाल कोई नार भतारा, सगला संग ना कोए वखांयदा। चार वेद ना कोए लिखारा, चारे मुख ना कोए गांयदा। अठारां पुराण ना कोए सहारा, चौदां विद्या ना कोए पढ़ांयदा। गीता ज्ञान ना करे आधारा, दस अठ्ठ अठारां ना मेल मिलांयदा। नौ निधां ना दिसण दुआरा, अठारां सिद्धां ना रूप वटांयदा। जोग अभ्यास जप तप हठ सति संजम नेम ना कोए करे दरबारा, हवनी हवन ना कोए वखांयदा। धूप दीप घृत दीवा बाती ना करे कोए उज्यारा, इष्ट देव ना कोए मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा, खेल तमाशा पुरख अबिनाशा आपणा आप करांयदा। सचखण्ड दुआरा हरि मेहरवान, एकँकारा जोत जगाईआ। सति पुरख निरँजण खेल महान, दर घर साचे आप कराईआ। साचे तख्त बैठ सच्चा सुल्तान, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। आपे होए वड मेहरवान, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। सति सरूपी इक्क चढ़ाए सच निशान, जोती धारा आप बदलाईआ। पहले घर गुण निधान, लालण लाल रूप वटाईआ। दूजे दर कर ध्यान, कंचन आपणा गढ़ सुहाईआ। तीजा वेस श्री भगवान, सूहा सालस आप अख्वाईआ। चौथे घर हो प्रधान, सति सफैदी धार वहाईआ। पंचम आपणा आप कर पछाण, पीला रूप वटाईआ। छेवें वेखणहारा छप्पर छन्न मकान, नीली धार धार बंधाईआ। अबिनाशी करता वाली दो जहान, काला रंग सूरा सरबंग, दर घर साचे आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची सच वसेरा दर घर साचा आप सुहाईआ। दर घर साचा हरि सुहञ्जणा, थिर घर साचे सोभा पाईआ। पुरख अबिनाशी आदि निरँजणा, निरगुण बैठा डेरा लाईआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जणा, दीनां नाथ आप अख्वाईआ। आपे बणे आपणा सज्जणा, आप आपणा संग रखाईआ। आपे करे आपणा मजणा, आप आपणा अमृत लए प्रगटाईआ। ना घड़या ना भज्जणा, घड़ण भन्नणहार आप अख्वाईआ। साचे तख्त साचे भूप, हरि भगवान बह बह सजणा, दरगाह साची धाम सुहाईआ। आपणा पर्दा आपे कज्जणा, दूसर होर ना कोए वखाईआ। आपणा चलाए सच जहाज़ना, निरगुण निरगुण बण रथवाहीआ। आपे रचया आपणा काजना, करता पुरख वड्ड वड्याईआ। आपणा साजण आपे साजणा, अकाल मूर्त बेपरवाहीआ। आपे होए शाह नवाबणा, जूनी रहित भेव ना राईआ। आपणी करे आप आराधणा, आपणा नाउँ आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

सचखण्ड दुआरे आपे वसया, आदि जुगादी फिरे नस्सया, नस्सणहारा दिस ना आईआ। सच महल्ला उच्च अटारी, थिर घर साचा आप सुहांयदा। जोत जगाए एकँकारी निराकारी, निरगुण आपणी खेल खिलांयदा। घर मन्दिर सोहे बंक दुआरी, धुर दरबारी आप सुहांयदा। आपणा मेला करे पुरख नारी, आप आपणी सेज हंढांयदा। जोती शक्ती खेल न्यारी, जुगती आपणी आप बणांयदा। आपे मात पित बणे वड संसारी, पूत सपूता आपणा आप प्रगटांयदा। सुत दुलारा कर त्यारी, शब्दी नाउँ रखांयदा। सार शब्द इक्क आधार, आप आपणे विच टिकांयदा। आपे अंदर आपे बाहर, आपे गुप्त आपे ज़ाहर, आपे सचखण्ड वसाए सच दुआर, थिर घर आसण आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे मंडल पावे रास, रवि ससि ना कोए प्रकाश, गगन गगनंतर ना कोए वखांयदा। साचे मन्दिर खेल अपारा, सुत दुलारा आपणा आप उपजाईआ। साचे सुत करे प्यारा, आपणी गोद बहाईआ। आपे कराए वणज वणजारा, एका वस्तू हथ्थ फड़ाईआ। तेरा रूप मेरी धारा, मेरी जोत तेरा सहारा, तेरा नाम मेरा जैकारा, तेरा घर मेरा दरबारा, दर दरबारा इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा सुत कर त्यार, सार शब्द भरे भण्डार, सचखण्ड दुआरा आपणा हुक्म सुणाईआ। साचा हुक्म साचा राणा, हरि साचा सच उपजांयदा। पूत सपूते मन्नणा पए भाणा, भाणे अंदर सभ वखांयदा। तेरा रक्खां दो जहान माणा, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। मेरा ताल तेरा गाणा, तेरा राग मेरा नाद सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे देवे एका वर, साचे सुत आप समझांयदा। शब्द दुलारा सुत, सति पुरख निरँजण अग्गे सीस झुकाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत्त, हउँ सेवक सेव कमाईआ। तेरी सोहे साची रुत्त, रुत्त बुतड़ी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर घर साचा झोली पाईआ। वर घर साचा हरि निरँकार, शब्द शब्दी आप सुणांयदा। तेरी सेवा अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ा आप लगांयदा। तेरे सिर हथ्थ इक्क करतार, तेरी रचना आप रचांयदा। तेरा रूप निरगुण धार, दिस किसे ना आंयदा। तेरी वण्ड वण्डे अपर अपार, तेरी झोली आप भरांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड कर त्यार, धुर फ़रमाणा हुक्म जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगांयदा। सुत दुलारा उठया, हरि शब्दी नौजवान। प्रभ सतिगुर मेरा तुठया, होया आप मेहरवान। साची वस्त देणी एका मुठ्ठया, हउँ मंगे भिखक दान। मेरा दर ना जाए लुट्टया, आदि जुगादी झुलदा रहे निशान। मेरा बूटा ना जाए पुट्टया, पुरख अबिनाशी हउँ तेरी सन्तान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर श्री भगवान। श्री भगवान अगम्म जणाई, शब्द सार समझाया। तेरी रचना आप रचाई, मात पित आप अख्वाया।

तेरी सेवा रिहा कमाई, दाई दाया ना कोए लगाया। तेरी कदे ना होई जुदाई, तेरा विछोड़ा मोहे ना भाया। तेरी वजदी रहे वधाई, सचखण्ड साचे सोभा पाया। तेरे सिर समरथ हथ्थ रिहा टिकाई, आपणी वथ वण्ड वण्डाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे साचा वर, दरगाह साची धाम सुहाया। दरगाह साची वर घर पा, हरि शब्द खुशी मनांयदा। पुरख अबिनाशी मिल्या बेपरवाह, ना कोई नाता तोड़ तुड़ांयदा। एका देवे सिफ्त सलाह, साची सिख्या इक्क समझांयदा। एका बणे सच मलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। इक्क वखाए आपणा राह, आपणा मार्ग आपे लांयदा। इक्क धराया आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप अख्वांयदा। मेरी सेवा दित्ती ला, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। हुक्म वरते थाउँ थाँ, थान थनंतर नज़र कोए ना आंयदा। सचखण्ड बैठा मता रिहा पका, थिर घर आपणा कुण्डा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचा आप सुहांयदा। सुण शब्द कर ध्यान, हरि साचे सच जणाया। एका रूप श्री भगवान, दूसर वेस ना कोए कराया। तेरा पाए तेरी आण, मेरा भाणा तेरे सिर रखाया। मेरा शब्द तेरा ज्ञान, मेरा हुक्म तेरा फ़रमाण, दो जहानां दए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, साची इच्छया पूर कराया। साची इच्छया भिच्छया झोली भर, साचे सुत खुशी मनाईआ। निरभउ चुकाया आपणा डर, निरवैर आपणा रूप दरसाईआ। अकाल मूर्त करनी कर, करता पुरख करे कुड़माईआ। अजूनी रहित मिल्या हरि, आदि जुगादि होए सहाईआ। एकँकारा लड़ ल्या फड़, ना कोई छोड़े ना छोड़ छुड़ाईआ। एका अक्खर आपणा आपे पढ़, आप आपणे विच बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका लेखा लेख समझाईआ। सुत दुलारा हो मेहरवान, आपणी रचना आप रचांयदा। आपणे मन्दिर मार ध्यान, आपणा अंदर फोल फुलांयदा। आपे वेखे आपणा हाण, आप आपणा मेल मिलांयदा। आप आपणा कर परवान, आप आपणे गले लगांयदा। आपे वसे सच मकान, साचा डेरा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचांयदा। साची रचना हरि रचाए, खेले खेल बेपरवाहीआ। आपणी वण्ड आप वण्डाए, इक्क किरन सचखण्ड दवारिउँ बाहर कढ्ढाईआ। लोआं पुरीआं बणत बणाए, रवि ससि करे रुशनाईआ। मंडल मंडप वेख वखाए, दीपक तारका आप जगाईआ। आपणा रूप आप प्रगटाए, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। निराकार साकार आप हो जाए, विश्व खेल बेपरवाहीआ। विष्नूं आपणा नाउँ धराए, घर अमृत ताल सुहाईआ। अमृत जल आप भराय, आपणी नाभी लए टिकाईआ। आपणा बूटा आपे लाए, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। आपणा फुल्ल आप खलाए, अठ्ठ पंखड़ीआं वेख वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रूप वटाए, ब्रह्म आपणा

७०७ ०६

नाउँ धराईआ। शब्द दुलारा सेव कमाए, साची रचना वेख वखाईआ। धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाए, एका शब्द करे पढ़ाईआ। सुन्न अगम्मी फोल फुलाए, धूंआँधार वेख वखाईआ। आपणा शंकर रूप वटाए, लेखा करे बेपरवाहीआ। त्रै त्रै लेखा वेख वखाए, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। त्रैगुण माया रचन रचाए, रजो तमो सतो करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारा वड बलवान, खेले खेल हर घट थाँईआ। त्रैगुण माया कर प्रधान, ब्रह्मे विष्न शिव झोली पाईआ। पंज तत्त तत्त निशान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आप आपणा रंग रंगाईआ। पंज पंजी मेल विच जहान, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। सरगुण साचा कर परवान, बूंद रक्त मेल मिलाईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्म बणाए इक्क मकान, बहत्तर नाड़ी तिन्न सौ सट्ठ हाडी जोड़ जुड़ाईआ। नौ दर खोल्ह दुकान, जगत वासना विच भराईआ। नाल रलाए काम क्रोध लोभ मोह हँकार पंज शैतान, आसा तृष्ना मेल मिलाईआ। हउमे हंगता गड्ड निशान, उच्चा बुरज दए वखाईआ। मन मनूआ कर प्रधान, सच सिक्दार इक्क बणाईआ। मति मतवाली खेल महान, निरगुण आपणी अंस उपजाईआ। बुध बबेकी करे पछाण, आपणी वस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। करे खेल श्री भगवान, घर घर विच रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त करे प्यारा, करे खेल अपर अपारा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। काया मन्दिर बणया बंक दुआर, नौ दर हरि हरि वेख वखांयदा। पावे सार अन्धेरी डूँग्घी गार, डूँग्घी कंदर फोल फुलांयदा। करे खेल अपर अपार, आपणी रचना आप रचांयदा। सुखमन टेढी बंक अन्ध अँध्यार, धूंआँधार सर्ब वखांयदा। त्रबैणी नैणी खेल अपार, आप आपणा रंग रंगांयदा। घर मन्दिर अमृत धार, नाभी कँवल आप भरांयदा। घर मान सरोवर कर त्यार, साचा जल विच टिकांयदा। घर अनहद शब्द सच्ची धुन्कार, दिवस रैण ताल वजांयदा। घर पंचम सखीआं गायण वारो वार, गीत गोबिन्द इक्क अल्हांयदा। घर बज़र कपाटी लाए पाड़, बन्द दरवाज़ा आप करांयदा। घर आत्म सेजा कर त्यार, घर घर विच जोत जगांयदा। जोत निरँजण कर उज्यार, रूप अनूप आप दरसांयदा। घर सुरत सवाणी करे प्यार, आपणा मेला मेल मिलांयदा। घर शब्द हाणी मिले साचा यार, साची सेज हंढांयदा। घर रंग रलीआं माणे नाल भतार, प्रेम प्यार इक्क वखांयदा। घर नाता तुट्टे सर्ब संसार, नाता बिधाता जोड़ जुड़ांयदा। घर कोटन कोटि रवि ससि करन उज्यार, बारां रासी मुख शर्मांयदा। आपणी वस्त हथ्थ रक्ख करतार, काया मन्दिर अंदर बन्द करांयदा। साचा गुर सतिगुर हो त्यार, आप आपणा वेस वटांयदा। लोकमात खेले खेल अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचांयदा। साची रचना हरि हरि रच, ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमांयदा। हरि का शब्द अंदर वसे सच, दिस किसे

ना आंयदा। मन मनूआ दहि दिशा रिहा नच्च, चारों कुंट फेरा पांयदा। काया माटी भाण्डा दिसे कच्च, कंचन गढ़ ना कोई बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी पौणी सार, लोकमात लए अवतार, आपणी धारा आप बंधांयदा। निरगुण सरगुण खेल अपारा, करता पुरख आप कराईआ। पंज तत्त करे प्यारा, पारब्रह्म ब्रह्म वेख वखाईआ। शब्द अगम्मी भेव न्यारा, भेव अभेदा आप खुलाईआ। गुर गुर रूप प्रगट हो विच संसारा, आपणा नाउँ दए जणाईआ। साचे भगतां करे प्यारा, भगत भगवन्त मेल मिलाईआ। मेट मिटाए पंच विकारा, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। आसा तृष्ना करे ख्वारा, हउँमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। काया मन्दिर कर उज्यारा, धूंआँधार दए गंवाईआ। आपणा नाम बोल जैकारा, पंचम तत्त दए समझाईआ। ज्ञान ध्यान हरि निरँकारा, एका इष्ट दए वखाईआ। बोध अगाध बोल जैकारा, बुध बबेक आप कराईआ। सतिगुर रूप वखाए अगम्म अपारा, शब्दी शब्द आपणा शब्द सुणाईआ। नौ दुआरे करे पार किनारा, अद्धविचकार ना कोए रखाईआ। सुखमन नाड़ी हो उज्यारा आपणा दरस दए कराईआ। फड़ फड़ बाहों करे पार किनारा, डूँग्घी गारा पन्ध मुकाईआ। जोत निरँजण कर उज्यारा, घर साचा वेख वखाईआ। भगतां वखाए इक्क दुआरा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। साचे अमृत नुहाए ठंडे ठारा, काग हँस रूप वटाईआ। एका चोग चुगाए चुगावणहारा, आपणा नाउँ रसना मुख लगाईआ। इक्क सुणाए सच्ची धुन्कारा, धुन आत्मक नाद वजाईआ। बज़र कपाटी करे पार किनारा, आर पार आपणा रूप दरसाईआ। सुरती शब्दी मेला कन्त भतारा, आत्म सेज वज्जे वधाईआ। दस्म दुआरी खेल न्यारा, सतिगुर पूरा आप कराईआ। घर मन्दिर सोहे उच्च मुनारा, असथिल वेखे बेपरवाहीआ। आपणी जाणे आपे कारा, सन्त सुहेले नाल मिलाईआ। दस्म दुआरी होए बाहरा, सुन्न अगम्मी पार कराईआ। करे खेल एकँकारा, अकल कल वड्डी वड्याईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चौदां लोकां करे पार किनारा, ब्रह्मा विष्न शिव रहे राह तकाईआ। जन भगतां वखाए इक्क दरबारा, दरगाह साची धाम जणाईआ। अलक्ख अलक्खणा करे खेल न्यारा, लेखा लेख ना लिख्या जाईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कारा, अगम्मड़े धाम आप वखाईआ। सति पुरख निरँजण आपे करे आपणे सति वरतारा, सच साचे लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण जोती शब्दी जोड़ा, पंज तत्त मेल मिलांयदा। सो पुरख निरँजण सस्से उप्पर लाया होड़ा, ब्रह्म हँ रूप वटांयदा। आदि जुगादी जुगा जुगन्तर जन सन्तां आपे बौहड़ा, आप आपणा रूप दरसांयदा। उच्च महल्ल अटल लगाया आपणा पौड़ा, चौथा डण्डा इक्क रखांयदा। गुरमुखां लग्गी बुझाए प्यास आत्म औड़ा, अमृत मेघ आप बरसांयदा। लक्ख चुरासी रीठा वेखे कौड़ा, घर घर अंदर फोल फुलांयदा।

दो जहानां फिरे दौड़ा, सेवक साची सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर शब्दी आपणा नाउँ धरांयदा। सतिगुर पूरा हरि निरँकार, सचखण्ड साचे डेरा लांयदा। गुर गुर रूप विच संसार, नाम निधान एका एक प्रगटांयदा। भगत भगवन्त खेल महान, दर घर साचे मेल मिलांयदा। साचे सन्तां करे प्रधान, आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ांयदा। गुरमुखां लक्ख चुरासी चुकाए कान, मात गर्भ फंद कटांयदा। गुरमुखां बख्शे चरन ध्यान, दर दुआरा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका गुर इक्क अवतार, एका शब्द इक्क भण्डार, एका दाता देवणहार, जुग जुग लोकमात वरतार, एका शब्द देव गुर इष्ट, हरि साचा सच वड्याईआ। एका शब्द खुल्हाए दृष्ट, एका दृष्ट वेख वखाईआ। एका रूप दिसे सर्ब सृष्ट, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द गुर मेहरवान, एका जाणे दो जहान, दो जहानां खेल खिलांयदा। शब्द गुर सूरा मेहरवाना, आपणी दया कमांयदा। जन भगतां बन्ने भगती गाना, साचा सगन मनांयदा। सन्तां देवे इक्क निशाना, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। गुरमुखां सुणाए एका राग काना, धुनी धुन नाद वजांयदा। गुरमुखां चरन धूढ़ धूढ़ सच अशनाना, दुरमति मैल गंवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर साची कार, आप कराए एकँकार, शब्द शब्दी सेव कमांयदा। शब्द उजाला गुर गोपाला, पारब्रह्म पुरख समरथया। लेखा जाणे काल महांकाला, आप चलाए आपणा रथिआ। आपे तोड़े जगत जंजाला, आपे वसे घट घटया। आपे फल लगाए साचे डाल्ही, आपे वेखे वखाए पत डाल्ही पतया। आपे फिरे हथ्थ खाला, आपे भगतां झोली आपणे नाम रच्छया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, लोकमात लए अवतारा, निरगुण सरगुण आपणा रूप वटांयदा। निरगुण सरगुण साचा मेला, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण गुरू गुर चेला, गुर चेला रूप वटांयदा। एकँकारा सज्जण सुहेला, जुग जुग संग निभांयदा। आदि निरँजण जोत निरँजण चाढ़े तेला, घट घट दीप आप जगांयदा। अबिनाशी करता आप जाणे आपणा वक्त वेला, वेद पुराण भेव ना पांयदा। श्री भगवान जुग जुग आपणा खेल अचरज आपे खेला, महिमा गणत ना कोए गणांयदा। पारब्रह्म आपणे धाम आपे वसे इक्क इकेला, रूप अनूप ना कोए दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता हरि करणेहारा, निरगुण सरगुण लै अवतारा, लक्ख चुरासी पावे सारा, लोकमात जोत जगांयदा। लोकमात जगे हरि जोत, निरगुण सरगुण विच टिकाईआ। सतिगुर पूरा ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। लेखा जाणे कोटी कोटि, कोटी कोटि रूप वटाईआ। जन भगतां तन नगारे लगाए चोट, शब्द डंका इक्क वजाईआ। माया ममता वासना कढ्ढे खोट, सच सुच्च

आप समझाईआ। आप उठाए आहलणिउँ डिग्गे बोट, गुर मन्त्र नाम दृड़ाईआ। इक्क रखाए चरन ओट, दूजी होर ना कोए सरनाईआ। नाम भण्डारा दए अतोट, चोर यार ठग्ग लुट्ट कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। जुग जुग अवतार हरि भगवन्त, भगतां पैज रखांयदा। लेखा जाणे साचे सन्त, सन्त सतिगुर मेल मिलांयदा। गुरमुख मेला नारी कन्त, घर मन्दिर सेज हंढांयदा। गुरसिख काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जांयदा। कर किरपा गढ़ तोड़े हउमे हंगत, भुक्ख नंगत आप कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचे पेख्या, परम पुरख करतार। आपे लिखणहारा लेखया, आपे वेखे विच संसार। आपे धारे आपणा भेख्या, आपे गुर सतिगुर लै अवतार। आपे लेखा जाणे मुच्छ दाढ़ी केसया, आपे मूंड मुंडाए सिरजणहार। आपे वेखे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश्या, आपे वेद वेदांता पावे सार। आपे सच्चा नर नरेश्या, आपे भूप होए सिक्दार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे भगतन करे प्यार। आपे भगत दुआरा मंगदा, जुगा जुगन्तर साची कार। आपे सन्तन चोली रंगदा, रंग मजीठी एका चाढ़। आपे गुरमुखां अंदर लँघणा, आपणा बन्द खोल्ह किवाड़। आपे गुरसिखां नाल हंढदा, मरे ना जम्मे विच संसार। आपे नाम अनमुल्ला आपणा वण्डदा, साचे कंडे तोलणहार। आपे लेखा चुकाए भेख पखण्ड दा, कूड़ी क्रिया दए निवार। आपे लेखा जाणे जेरज अंड दा, उत्भुज सेत्ज पावे सार। आपे पर्दा लाहे खण्ड ब्रह्मण्ड दा, नव सत्त होए उज्यार। आपे वेखे प्रकाश सूरज चन्न दा, आप आपणी किरन कर उज्यार। आपे धरत धवल आकाश बेड़ा बन्न्हदा, शब्द डोरी अपर अपार। आपे सचखण्ड दुआरे दरगाह साची बह बह वसदा, आपे लक्ख चुरासी करे पसार। आपे जूनी रहित हो हो नस्सदा, आपे जूनां अंदर खावे मार। आपे तीर निराला कसदा, शब्द अगम्मी मारे बाण। आपे त्रैगुण माया हो हो डस्सदा, आपे बणे पंज शैतान। आपे अमृत जाम प्याए साचे रस दा, आपे होए निगहबान। आपे पंच विकारा पैरां हेठां झस्सदा, आपे नाल रलाए वड बलवान। आपे गुरमुखां आपणा मार्ग दस्सदा, जुगा जुगन्तर खेल महान। आपे गुरसिखां अंदर वसदा, काया मन्दिर सच मकान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत सरूपी हरि भगवान। हरि भगवान पुरख अगम्मड़ा, अगम्मड़ी कार करांयदा। हड्ड मास ना दिसे चम्मड़ा, रत्ती रत्त ना कोए वखांयदा। माल धन ना कोई दमड़ी दमड़ा, ख़ाली हथ्थ सद फिरांयदा। मात पित ना अम्मी अमड़ा, साची गोद ना कोए सुहांयदा। आपे जाणे आपणा कम्मड़ा, जुग जुग आपणी चाल चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर करे खेल अपारा, जन भगतां देवे शब्द हुलारा, चौदां लोकां पार किनारा, सच दुआरा

इक्क वखांयदा। सच दुआरा सतिगुर मीत, गुरसिख इक्क वखाईआ। अठ्ठे पहर परखे नीत, हरिजन सगला संग निभाईआ। करे कराए पतित पुनीत, गुर पूरे वड वड्याईआ। मन मनूआ ना जाए जीत, शब्द डोरी तन्द बंधाईआ। काया करे ठंडी सीत, अग्नी तत्त ना कोए रखाईआ। इक्क बंधाए चरन प्रीत, साची रीत मात वखाईआ। शब्द सुणाए सुहागी गीत, घर मन्दिर अंदर अनहद ताल वजाईआ। एका रंग वखाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। धाम वखाए इक्क अनडीठ, जगत नेत्र दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल महाना, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, घर साचे सोभा पांयदा। दूजा आपणा कर पसार, आप आपणा खेल खिलांयदा। तीजा भगतां नेत्र दए अपार, दोए लोचण बन्द वखांयदा। चौथे पद सच्ची सरकार, घर साचा आसण लांयदा। पंचम शब्द धुन जैकार, आप आपणा राग सुणांयदा। छेवें मन्दिर अगम्म अपार, ना कोई दीसे चार दुआर, छप्पर छन्न ना कोए छुहांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण सति सतिवादी करे साची कार, जुगा जुगन्तर खेल खिलांयदा। अठवें अठ्ठां तत्तां वसे बाहर, मन मति बुध अप तेज वाए पृथ्मी आकाश तत्त ना कोए बणांयदा। नावें नौ दर बेड़ा करे पार, डूँघी कँवरी भँवरी पावे सार, जिस सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। दसवें दर घर मेला सच्ची सरकार, सुरत शब्दी मेल मिलांयदा। गुरमुख गुरसिख हरिभगत हरिजन आप सुहाए आपणे सच दरबार, दर घर साचे आप बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुर मेहरवान, सतिगुर देवे धुर फ़रमाण, धुर दी बाण आप रखांयदा। सतिगुर पूरा सच्चा जाणीए, पंज तत्त करे पछाण। सतिगुर पूरा जाणीए, रत्ती रत देवे माण। सतिगुर पूरा जाणीए, नाता तोड़े पंज शैतान। सतिगुर पूरा जाणीए, चरन वखाए इक्क ध्यान। सतिगुर पूरा जाणीए, बिरहों मारे एका बाण। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे नाम गुण निधान। सतिगुर पूरा जाणीए, शब्द बिठाए इक्क बबाण। सतिगुर पूरा जाणीए अमृत देवे पीण खाण। सतिगुर पूरा जाणीए, दर घर साचे देवे माण। सतिगुर पूर जाणीए, एका बख्शे ब्रह्म ज्ञान। सतिगुर पूरा जाणीए, उपजाए धुन सच्ची धुनकान। सतिगुर पूरा जाणीए, नाता तोड़े पवण मसाण। सतिगुर पूरा जाणीए, एका आपणी रक्खे आण। सतिगुर पूरा जाणीए, काया मन्दिर अंदर वखाए सच दुकान। सतिगुर पूरा जाणीए, दो जहानां होवे संग मातलोक लक्ख चुरासी फंद कटान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे धुर माण। सतिगुर पूरा जाणीए, दरस दखाए साख्यात। सतिगुर पूरा जाणीए, गुरसिख बणाए पारज़ात। सतिगुर पूरा जाणीए, शब्द अगम्मी देवे दात। सतिगुर पूरा जाणीए, चरन कँवल बंधाए नात। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्क बबाणा सुहाए आत्म सेजा साची खाट। सतिगुर पूरा जाणीए, नाता तोड़े तीर्थ ताट। सतिगुर

पूरा जाणीए, दो जहानां नेड़े रक्खे वाट। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत जगाए इक्क ललाट। सतिगुर पूरा जाणीए, पारब्रह्म पुरख समरथ। सतिगुर पूरा जाणीए, जुग जुग चलाए रथ। सतिगुर पूरा जाणीए, एका देवे नाम वथ्थ। सतिगुर पूरा जाणीए, लेखा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ। सतिगुर पूरा जाणीए, काया मन्दिर अंदर आपणी बदले आप करवट। सतिगुर पूरा जाणीए, जगत विछोड़ा मेटे फट्ट। सतिगुर पूरा जाणीए, हरि मन्दिर साचे वसे आदि जुगादि ना जाए ढट्ठ। सतिगुर पूरा जाणीए, आपणी हथ्थीं गेड़े आपणी लट्ठ। सतिगुर पूरा जाणीए, शब्द पहनाए तन पट्ट। सतिगुर पूरा जाणीए, अमृत आत्म देवे झट्ट। सतिगुर पूरा जाणीए, लेखा चुकाए आन बाट। सतिगुर पूरा जाणीए, गहर गम्भीर गुणी गहिन्द। सतिगुर पूरा जाणीए, अमृत आत्म देवे सागर सिन्ध। सतिगुर पूरा जाणीए, गुरमुख उपजाए आपणी बिन्द। सतिगुर पूरा जाणीए, जगत जहानां मिटाए चिन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादि सदा बख्शिंद। सतिगुर पूरा जाणीए, एका एकँकारा। सतिगुर पूरा जाणीए, वसे सचखण्ड सच्चे दुआरा। सतिगुर पूरा जाणीए, थिर घर खोल्हे बन्द किवाड़ा। सतिगुर पूरा जाणीए, सुन्न अगम्मी करे पार किनारा। सतिगुर पूरा जाणीए, दस्म दुआरी पावे सारा। सतिगुर पूरा जाणीए, बन्द कवाड़ी खोल्हे ताला। सतिगुर पूरा जाणीए, अमृत मारे इक्क उछाला। सतिगुर पूरा जाणीए, एका राग सुणाए सच्ची धुनकाना। सतिगुर पूरा जाणीए, मेल मिलाए काया मन्दिर सच मकाना। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादि श्री भगवाना। सतिगुर सच्चा जाणीए, हरि सच्चा साहिब कन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, काया चोली चाढ़े रंग बसन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका शब्द जणाए मणीआ मंत। सतिगुर सच्चा जाणीए, मूर्ख मूढ़ बणाए चतुर सुघड़ देवे वडियाई विच जीव जंत। सतिगुर पूरा जाणीए, गढ़ तोड़े हउमे हंगत। सतिगुर पूरा जाणीए आप मिलाए आपणी संगत। सतिगुर पूरा जाणीए, अमृत जाम प्याए आप बहाए आपणी पंगत। सतिगुर पूरा जाणीए, अंगी कार करे आप लगाए आपणे अंगत। सतिगुर पूरा जाणीए, दूजे दर ना जाए मंगत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका सतिगुर सच्चा शाह, गुरमुखां बणे आप मलाह, लक्ख चुरासी कट्टे फाह, मानस जन्म पैज संवारीआ। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे सति सन्तोख ज्ञान। सतिगुर पूरा जाणीए, जन्म कर्म पाए नीशान। सतिगुर पूरा जाणीए, आपणे नेत्र वेखे मार ध्यान। सतिगुर पूरा जाणीए, आपणी दृष्टी देवे ज्ञान। सतिगुर पूरा जाणीए, लक्ख चुरासी सर्ब सृष्ट करे पहचान। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल वाली दो जहान। सतिगुर पूरा जाणीए, नाता तोड़े जोग अभ्यास।

७१३ ०६

सतिगुर पूरा जाणीए, जन भगतां होवे दासी दास। सतिगुर पूरा जाणीए, गुरमुखां अंदर करे वास। सतिगुर पूरा जाणीए, जगत तृष्ना बुझाए प्यास। सतिगुर पूरा जाणीए, आदि जुगादि ना जाए विनास। सतिगुर पूरा जाणीए, लेखा जाणे पृथ्मी आकाश। सतिगुर पूरा जाणीए, घर मंडल पावे रास। सतिगुर पूरा जाणीए, पूरी करे आस। सतिगुर पूरा जाणीए, जगत जंजाला तोड़े झूठा बनवास। सतिगुर पूरा जाणीए, घर निर्मल जोत करे प्रकाश। सतिगुर पूरा जाणीए, घर तख्त बैठे शाहो शाबास। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, एका जाणे आपणी रास। सतिगुर पूरा जाणीए, दीन दर्द दुःख भञ्जण। सतिगुर पूरा जाणीए, नेत्र नाम पाए इक्क अंजन। सतिगुर पूरा जाणीए, चरन धूढ़ कराए साचा मजन। सतिगुर पूरा जाणीए, दो जहानां बणे सज्जण। सतिगुर पूरा जाणीए, आदि अन्त पर्दे कज्जण। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप चलाए सच जहाजन। सतिगुर पूरा जाणीए, हरि सच्चा शहनशाह। सतिगुर पूरा जाणीए, वड सिफ्ती सिफ्त सलाह। सतिगुर पूरा जाणीए, जन भगतां बणे आप मलाह। सतिगुर पूरा जाणीए, गुरसिखां भार आपणे सीस लए उठा। सतिगुर पूरा जाणीए, फड़ फड़ बाहों आपणे राहे देवे पा। सतिगुर पूरा जाणीए, अन्तिम करे सच न्यॉं। सतिगुर पूरा जाणीए, हँस बणाए कॉं। सतिगुर पूरा जाणीए, गुरमुखां लाड लडाए जिउँ बालक मॉं। सतिगुर पूरा जाणीए, सिर रक्खे सदा ठंडी छॉं। सतिगुर पूरा जाणीए, कर किरपा दरगह साची लए बहा। सतिगुर पूरा जाणीए, निथावयां देवे साचा थॉं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा नॉं। सतिगुर पूरा जाणीए, दिब दृष्ट दए खुल्हाईआ। सतिगुर पूरा जाणीए, मेहरवान इक्क अख्वाईआ। सतिगुर पूरा जाणीए, जप तप हठ ना कोई कराईआ। सतिगुर पूरा जाणीए, धूणी अग्ग ना कोई तपाईआ। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मेल मिलाईआ। सतिगुर सो बलवान, गुरसिखां दया कमांयदा। एका देवे नाम बिबान, फड़ बाहों उप्पर बहांयदा। आपणी दृष्टी लेखा चुकाए दो जहान, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर सच्चा आप अख्वांयदा। सतिगुर सच्चा सच है, सर्बकला भरपूर। सतिगुर सच्चा सच है, सदा सदा हाज़र हज़ूर। सतिगुर सच्चा सच है, एका एक जोती नूर। सतिगुर सच्चा सच है, नाता तोड़े कूड़ो कूड़। सतिगुर सच्चा सच है, गुरमुखां बख्शे चरन धूढ़। सतिगुर सच्चा सच है, एका रंग रंगाए गूढ़। सतिगुर सच्चा सच है, सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़। सतिगुर सच्चा सच है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा चुकाए नेड़े दूर। सतिगुर सच्चा एक है, एको पुरख अख्वाए। जुग जुग भगतां बख्शे साची टेक है, आप

७१४ ०६

आपणी दया कमाए। करे कराए बुध बबेक है, जगत द्वैती वेख वखाए। आपे लिखणहारा लेख है, आपणा लेखा दए समझाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर आप चलाए आपणा मन्त्र, लोकमात बुझाए लग्गी बसन्तर, सांतक सति आप वरताए। सतिजुग त्रेता द्वापर राम नाम अपारा, सोलां कल खेल खलाईआ। ओम रूप सच्ची सरकारा, इष्ट देव सृष्ट सबाईआ। वास्तक रूप अगम्म अपारा, विष्नूं आपणा नाउँ धराईआ। नमो देव करे निमस्कारा, नमो नमो सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर आपणा नाउँ धराईआ। सतिजुग त्रेता उतरया पार, द्वापर अन्त रहिण ना पाया। गुर पीर साध सन्त लए अवतार, हुक्मी हुक्म सर्ब फिराया। हरि हरि नाउँ बोल जैकार, जीवां जंतां गए समझाया। पुरख अबिनाशी एका एक घर साचे वसणेहार, दूजा दर ना कोई दिसाया। चौथा जुग करे पुकार, ऐड़ा अथर्बण अक्ख खुल्हाया। बोध ज्ञाना विच संसार, एका रसना तीर चलाया। पुरख अबिनाशी भेव न्यार, आप आपणा खेल खलाया। आपणा कलमा कर त्यार, आपणा बंस आप पढ़ाया। साचा सजदा परवरदिगार, सीस जगदीश आप झुकाया। ईसा मूसा खोल्ह किवाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रूप आप वटाया। ईसा मूसा काला सूसा शाह आपणे तन पहनाईआ। एका शब्द इक्क हदीसा, एका हुक्म सुणाईआ। लेखा जाणे तीस बतीसा, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, परवरदिगार सांझा यार, नूरो नूर अल्हाईआ। नूर इलाही अल्ला नूर, मुकामे हक सुहांयदा। आपणा वजाए साचा तूर, नाद अनादी आप अल्हांयदा। आपे होए जल्वा हज़ूर, बेपरवाह आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाए इक्क इकल्ला, लेखा लेख ना लिख्या जाईआ। आपे नाउँ धराए राणी अल्ला, ऐनलहक नाअरा लाईआ। आपणे हथ्थ उठाए जगत मसला, आपे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आपे कलमा अमाम कायनात सच संदेश घल्ला, अञ्जील कुरान करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संग मुहम्मद चार यार आपे वसे सच महल्ला, चौदां तबकां वेख वखाईआ। चौदां तबकां कुण्डा खोल्ह, ज़िमी अस्मानां फोल फुलांयदा। एका ऊँची कूके बोल, नाअरा हक आप लांयदा। एका तोले साचा तोल, तोलणहारा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, आदि जुगादि आपणी रचना वेख वखांयदा। आपणी रचना वेखणहारा, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। निरगुण जोती कर उज्यारा, नानक पंज तत्त करे कुड़माईआ। सचखण्ड सुहाए इक्क दुआरा, सरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। एका नाम सति बोल जैकारा, चार वरनां करे पढ़ाईआ। एका जोत नूर दस उज्यारा, गोबिन्द फ़तह इक्क गजाईआ। कलिजुग चारों

कुंट बण अँध्यारा, साचा चन्द ना कोई वखाईआ। सृष्ट सबाई धूंआँधारा, धरत धवल दए दुहाईआ। शाह सुल्तान ना कोई सिक्दारा, साचा तख्त ना कोई हंढाईआ। साध सन्त आत्म अन्तर ना दए कोई हुलारा, शब्द हलूणा ना कोई लगाईआ। माया राणी घर घर सुती पैर पसारा, लोकमात ना लए अंगड़ाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा करे ख्वारा, जूठ झूठ वज्जी वधाईआ। कोई ना चढ़े काया मन्दिर उच्च मुनारा, घर घर थक्के पान्धी राहीआ। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, हरिजन साचे लए जगाईआ। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मस्जिद गुरदुआरा, काया काअबा बैठा रूप छुपाईआ। जिस जन करे आप सच प्यारा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। तुरीआ राग बोल जैकारा, सुपन सखोपत जागरत पन्ध मुकाईआ। बैख़री मद्धम पसन्ती करे पार किनारा, आप आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पुरख अबिनाशी आपणी खेल खलाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आया, सो पुरख निरँजण खेल खिलांयदा। जोती जामा भेख वटाया, निहकलंक नाउँ धरांयदा। शब्द डंका इक्क वजाया, लोआं पुरीआं ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर आप उठांयदा। राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां रिहा जगाया, साधां सन्तां पर्दा लांहयदा। गुरमुखां फड़ फड़ मेल मिलाया, आप आपणी गोद बहांयदा। सच सुच्च जप तप इक्क वखाया, चरन सरन इक्क तकांयदा। जोग अभ्यास विच प्रभास डेरा इक्क वखाया, जो जन सोहँ सो रसना गांयदा। जन्म मरन दा गेड़ कटाया, लक्ख चुरासी रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मिलण दी साची बिध, आपणी आप समझांयदा। हरि मिले हरि दुआर, हरी हरि का रूप वटाईआ। घर मन्दिर बैठा कर पसार, जल थल हथ्थ किसे ना आईआ। कलिजुग ठग्गया ठग्ग बण सर्ब संसार, शाह रग उप्पर चढ़ कोए ना जाईआ। तप्या अग्नी अग्ग झूठ अंग्यार, पंज तत्त रिहा जलाईआ। सुरत सवाणी होई नार विभचार, शब्द कन्त ना कोए हंढाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, पढ़ पुस्तक वाद वधाईआ। पीआ प्रीतम ना करया सच प्यार, सुंञी सेज विछाईआ। कलिजुग अन्तिम निरगुण जोत कर उज्यार, गुरसिख ग़रीब निमाणे लए उठाईआ। फड़ फड़ आपणे मन्दिर आपे देवे वाड़, राह विच ना कोए अटकाईआ। गुरसिख तेरे चरनां हेठ दबाए पंचम धाड़, नौ निध अठारां सिद्ध तेरे दुआरे रोवण देण दुहाईआ। राए धर्म ना करे ख्वार, चित्रगुप्त ना हिसाब वखाईआ। लाड़ी मौत ना करे शंगार, वेले अन्त ना लए प्रनाईआ। सतिगुर पूरा करे प्यार, आपणी गोदी लए उठाईआ। सचखण्ड दुआरे देवे वाड़, उच्चे डण्डे आप चढ़ाईआ। गुरसिख कोई ना डुब्बे विच मँझधार, जिस हरि मिल्या बेपरवाहीआ। एका शब्द सोहँ गाउणा बोल जैकार, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। चार जुग दा करजा दए उतार, चौथे जुग वेख वखाईआ। प्रगट हो सच्ची सरकार, साचे तख्त डेरा

७१६
०६

लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे साचा वर, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। गुरसिख साचे दर्शन पाउणा, नेत्र नैण नैण दरसांयदा। माणस जन्म पन्ध मुकाउणा, साक सज्जण सैण आप हो जांयदा। आपणी गोद आप उठाउणा, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा दस्से जाप, कोट जन्म दे उतारे पाप, त्रैगुण माया रही कांप, तीनों ताप मेट मिटांयदा। सतिगुर सच्चा हरि हरि आया, घर साचे वज्जी वधाईआ। गुरमुख साचे लए जगाया, जागरत जोत कर रुशनाईआ। आप आपणा मेल मिलाया, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। चिंता सोग हरख़ दए गंवाया, अमृत मेघ आप बरसाईआ। ग़रीब निमाणयां उप्पर तरस कमाया, त्रैकाल दरसी आपणा फेरा पाईआ। अर्श फर्श कुर्श कुरा वेख वखाया, कादर कुदरत रूप वटाईआ। साचा सालस बण के आया, कलिजुग सतिजुग करे निआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे घर, मेल मिलावा साची थाँईंआ। हरिजन हरि हरि पावणा, गुर सतिगुर साचा मीत। घर मंगल एका गावणा, सो पुरख निरँजण सुहागी गीत। डूँग्घी कंदर वड़ ना किसे ध्यावणा, हरि वसणहारा चीत। उच्ची कूक ना किसे सुणावणा, किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीत। घर घर आपणा मन्दिर आप सुहावणा, गुरसिख कर कर पतित पुनीत। दीपक जोती आप जगावणा, आपे बीह बह गाए गीत। आपणा दरस आप करावणा, धाम वखाए इक्क अनडीठ । सोहँ हँसा चोग चुगावणा, सतिजुग साची चले रीत। बंस सरबंसा आप तरावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग रंगाए हस्त कीट। गुरसिख सज्जण सच्चा पाया, सतिगुर दीन दयाल। जगत विछोड़ा फंद कटाया, कलिजुग अन्तिम एका घाली घाल। गुर चरन मन चित जोड़ जुड़ाया, फल लग्गा साचे डाल्ह। सतिगुर पूरा साची घोड़ी लए बहाया, आपे चले नाल नाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे एका वर, लेखा जाणे शाह कंगाल। शाह कंगाल कलिजुग लुटया, साची वस्त ना किसे कोल। कलिजुग जीवां भाग निखुटया, माया ममता रही विरोल। धुर दरगाहों नाता तुटया, नौ खण्ड पृथ्मी वज्जे ढोल। हरि का शब्द तीर निराला छुट्टया, लक्ख चुरासी पर्दा देवे खोल्ह। जूठा झूठा बूटा जाए पुटया, लग्गा रहे ना उप्पर धवल धौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा पूरा करे कौल। गुरमुख मन वज्जी वधाई, मन ममता जगत गंवाईआ। मन पंखी उड उड दहि दिश ना जाई, निउँ निउँ बैठा सीस झुकाईआ। सतिगुर सोटी शब्द हथ्थ उठाई, आपणा बल आप वखाईआ। आत्म वासना खोटी कढ्ढ धराई, झूठी वख रहिण ना पाईआ। माया राणी चोटी आप कटाई, दर दर देवे अन्त दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, गुरमुखां सिर हथ्थ धर, समरथ सेव कमाईआ। साहिब समरथ सर्ब गुणवन्ता, जीआं दाता इक्क अखवांयदा। सतिजुग बणाए साची बणता, कलिजुग कूड़ कुड़यारा मेट मिटांयदा। गुरमुखां दुआरे आपे बणे मंगता, प्रेम भिच्छया मंग मंगांयदा। औंदा जांदा आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद कदे ना संगदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निराकार सरगुण साकार दोहां विचोला शब्द धार, आर पार आपणी खेल खिलांयदा। गुरमुख गुरसिख भगत भगवन्त सन्त कन्त लए उभार, आप आपणे गले लगांयदा। सतिगुर पूरा जोद्धा सूरबीर बली बलकार, आपणा बल आप रखांयदा। गुरसिखां करे सच प्यार, साची समग्री हथ्थ फड़ांयदा। जो जन इक्क वार एकँकार करे निमस्कार, मँझधार ना कोए डुबांयदा। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, निराहार निराकार निराधार निर्धन आपणे रंग रंगांयदा। जगत महल्ले विच्चों कढ्ढ आपणे महल्ले लए वाड़, दर दरवाज़ा बन्द करांयदा। मनमुखां मगर लगाई पंचम धाड़, अग्गे हो ना कोए बचांयदा। घर घर दर दर तपे अग्नी तत्ती हाढ़, त्रैगुण लम्बू एका लांयदा। नौ दुआरे नौ खण्ड होई उजाड़, साचा घर ना कोए दसांयदा। गुरमुख विरले बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। फड़ फड़ डुब्बदे पाथर जाए तार, जिस जन आपणा चरन छुहांयदा। सतिजुग बद्धी साची धार, एका मन्त्र अन्तर मुख रखांयदा। किसे आपणा नाम ना दस्से अंदर वाड़, उच्ची कूक आप सुणांयदा। साचे पौड़े देवे चाढ़, जो जन सरनाई आंयदा। गुरसिख बणाए साचा लाड़, नारी कन्त रूप वटांयदा। गुरमुख गुरसिख सखीआं गावण मंगलाचार, घर घर आपणा गीत सुणांयदा। वाह वा हरि हरि पाया कन्त भतार, विछड़ कदे ना जांयदा। कलिजुग जीव उच्ची कूकण रोवण बांह हुलार, पीआ प्रीतम ना कोए मिलांयदा। नार दुहागण होई विभचार, जूठ झूठ तन शंगार करांयदा। गुरमुख पाया एका कज्जल आपणा नैण उग्घाड़, नाम निधाना हरि भगवाना इक्क वखांयदा। जो जन मंगे हरि हरि नाउँ बण भिखार, काया नगर खेड़ा आप वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, निहकलंक लै अवतारा, निरगण सरगुण साची धारा, शब्द शब्द शब्दी शब्द रूप समांयदा।

❋ १३ जेठ २०१७ बिक्रमी दौलत राम दे घर कोटली राईआं ज़िला जम्मू ❋

हरिभगत वडियाई जुग चार, जुगा जुगन्तर लए प्रगटाईआ। हरिभगत वडियाई जुग चार, भगत भगवन्त मेल मिलाईआ। हरिभगत वडियाई जुग चार, लोकमात करे कुड़माईआ। हरिभगत वडियाई जुग चार, पुरख अबिनाशी लए उठाईआ। हरिभगत वडियाई जुग चार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। हरिभगत वडियाई सच

घर, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। हरिभगत वडियाई मेला पुरख नर, नरायण मेल मिलांयदा। हरिभगत वडियाई एका अक्खर जाए पढ़, निरगुण आपणा आप पढ़ांयदा। हरिभगत वडियाई चुक्के डर, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। हरिभगत वडियाई एका मिले साचा हरि, हरि की पौड़ी आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिभगत वडियाई हरि चरन लेख, लेखा लिख बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर आपे वेख, नेत्र नैण दए खुल्हाईआ। करे कराए अवल्लड़ा वेस, रूप रंग ना कोए रखाईआ। सूरबीर हरि नर नरेश, वड मृगेश इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन मेला हरि करतार, आदि जुगादि करांयदा। एका बख्शे शब्द आधार, आत्म अन्तर बूझ बुझांयदा। एका जोत कर उज्यार, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। एका खोल्ह बन्द कवाड़, धर्म दुआर इक्क वखांयदा। इक्क चलाए नाम सार, आर पार आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगत वसाए साचे घर, घर मन्दिर आप सुहांयदा। घर मन्दिर हरि काया गढ़, जन भगतां आप वखाईआ। पंच विकारा मारे फड़, दूत दुष्ट रहिण ना पाईआ। साचा घाड़ण आपे घड़, घर घर विच लए टिकाईआ। साची वस्तू अंदर धर, अमृत साचा ताल भराईआ। जन भगतां देवे साचा वर, भर प्याला जाम प्याईआ। एका रूप दसाए हरी हरि, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। किला तोड़ हँकारी गढ़, एका मन्दिर दए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा वेख वखाईआ। हरिभगतन मेल ग़रीब निवाज़ा, पुरख अबिनाशी आप मिलांयदा। आपे खोल्हे बन्द दरवाज़ा, अपणा पर्दा आपे लांहयदा। पावे सार वड राजन राजा, शाह सिक्दार दया कमांयदा। घर मन्दिर वजाए आपणा वाजा, अनहद साचा राग सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां अंदर भगती भर, भाण्डा भरम भउ भनांयदा। हरिभगतां भगती कर प्यार, आत्म शक्ती इक्क वखाईआ। बूंद रक्ती लेखे लाए विच संसार, आपणे रंगण इक्क रंगाईआ। जगे जोत अगम्म अपार, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। देवे दरस ठांडे दरबार, घर घर विच वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन लेखा दए समझाईआ। भगतन लेखा अपर अपारा, कथनी कथ ना सके कोई राईआ। भगतां अंदर एका धारा, निरगुण आपणी आप रखाईआ। भगतन अंदर शब्द हुलारा, शब्द शब्दी आप चलाईआ। भगतन अंदर हो उज्यारा, दीपक जोत करे रुशनाईआ। भगतां अंदर अमृत धारा, निझर झिरना आप झिराईआ। भगतां बणे आप सहारा, जुग जुग लोकमात वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन एका बूझ बुझाईआ। भगतन एका दर बुझया, पाया पुरख हरि करतार। लेखा चुक्के एका

दुजया, तीजा नैण होए उज्यार। चौथे पद हरि चरन कँवल लम्भया, पंचम मिले शब्द धुन्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां देवे नाम भण्डार। नाम भण्डारा वस्त अनमोल, हरिभगतन झोली पांयदा। आदि जुगादी रक्खे कोल, जुग जुग आप वरतांयदा। आपणे कंडे आपे तोल, आप आपणा भार वखांयदा। आपे होए कला सोल, अकल कलधारी आप अख्वांयदा। आपे वसे काया चोल, आपे निरगुण रूप वटांयदा। आप वजाए साचा ढोल, आपे सुन्न समाध समांयदा। आपे पर्दा देवे खोल्ह, आपे आपणा मुख भवांयदा। आपे लक्ख चुरासी लए विरोल, हरिजन साचे बाहर कढांयदा। आपे शब्द अगम्मी नाम जैकारा देवे बोल, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। आपे खेले होली होल, धरत हौला भार आप करांयदा। आपे बैठा रहे अडोल, जीव जंत आप डुलांयदा। आपे नौ खण्ड पृथ्मी वेखे घोल, घर घर आपणा बल वखांयदा। आपे सच्चखण्ड दुआरा देवे खोल्ह, साचे भगतां मेल मिलांयदा। आपे सुरती शब्दी जाए मौल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगतां देवे एका वर, एका वस्त झोली पांयदा। सुरत शब्द सच प्यार, तन मन्दिर आप कराईआ। घर पीआ प्रीतम कन्त भतार, अंक सुहेलड़ी वेख वखाईआ। आपणे रंग रवे निरँकार, निरगुण दाता इक्क अख्वाईआ। आत्म सेजा सोवे पैर पसार, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। गुरमुख साचे लए उठाल, जिस जन आपणी दया कमाईआ। घर दीपक बाती देवे बाल, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा बेपरवाहीआ। नाता तोड़ जगत जंजाल, काल फास दए मिटाईआ। जो जन घालण रहे घाल, अन्तिम लेखे लए पाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, लोकमात वणज वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतां अंदर आपे वड़, काया गढ़ आप सुहाईआ। काया गढ़ सच मुनारा, पंज तत्त बंक बणाया। करे खेल पुरख निरँकारा, निरगुण सरगुण वेख वखाया। भगत भगवन्त कर उज्यारा, लोकमात पैज धराया। जुग जुग लए आप अवतारा, सतिजुग त्रेता द्वापर वेस वटाया। कलिजुग नर हरि अन्तिम वारा, निहकलंक आपणा नाउँ रखाया। हरिजन साचे करे सच प्यारा, सच सरनाई इक्क दृढ़ाया। इक्क वखाए चरन दुआरा, चार वरन मेल मिलाया। एका भरे नाम भण्डारा, देवणहार इक्क अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां देवे नाम निधान, इक्क वखाए सच निशान, सच महल्ले आप झुलाया। सच निशाना हरि झुलाउणा, चार कुंट वज्जे वधाईआ। गुरमुख सज्जण मीत साचा माण दवाउणा, माया ममता मोह मिटाईआ। एका अक्खर ब्रह्म विद्या आप पढ़ाउणा, पारब्रह्म करे कुड़माईआ। साचे सरोवर आप नुहाउणा, ताल सुहावा इक्क वखाईआ। लक्ख चुरासी फंद बन्द बन्द कटाउणा, बन्दी छोड़ दया कमाईआ। सतिजुग साचा चन्द चढ़ाउणा, घर घर दीपक करे रुशनाईआ। कूड़ कुड़यारा

पन्ध मकाउणा, जूठा झूठा नाता दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगतन देवे जगत वड्याईआ। हरिभगत सदा सालाहीए, मिल्या मेल श्री भगवान। हरिभगत सदा गुण गाईए, प्रगट होवे दो जहान। हरिभगत सदा दर्शन पाईए, जिस मिल्या आप मेहरवान। हरिभगत सदा संग रखाईए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन देवे ब्रह्म ज्ञान। ब्रह्म ज्ञान भगत भगवन्त दृढ़ीता, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। आपे करे पतित पुनीता, पतित पावन बेपरवाहीआ। लेखा जाणे राम सीता, राम रामा इक्क अख्वाईआ। भेव खुल्हाए ज्ञान गीता, कान्हा बंसरी नाम वजाईआ। गुरमुखां देवे नाम अनडीठा, भगतन गाए चाँईं चाँईंआ। जुग जुग चलाए आपणी रीता, चाल अवल्लड़ी इक्क वखाईआ। कलिजुग अन्तिम अन्त आपणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे शब्द सालाहीआ। शब्द सालाह सालाहणा, साहिब सच्चा एक। दरस वेखे हरि हरि नैणां, तन मन ना लग्गे सेक। दरगाह साची सचखण्ड दुआरे साचे बहणा, गुर चरन दुआरा एका एक। हरि हरि नाउँ पाउणा शब्द गहिणा, पुरख अबिनाशी लए वेख। एका भाणा सिर ते सहिणा, हरि हरि जू हरि मन्दिर बह बह लिखे लेख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मेला एका घर, घर साचा लए वेख। घर साचा हरी हरि मन्दिर, कमलापाती आसण लाईआ। मेल मिलावा डूँग्घी कंदर, आपणा पल्लू आप फड़ाईआ। आपे तोड़े हँकारी जंदर, हउमे हंगता दए मिटाईआ। दरस दखाए अंदरे अंदर, दर दर आपणी अलक्ख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगत बंधाए आपणे लड़, एका बन्धन आपणा पाईआ। हरिभगतन बन्धन नाम पा, डोरी आपणे हथ्थ रखांयदा। लक्ख चुरासी कोलों मुख छुपा, गुरमुखां दरस दखांयदा। आपणा लेखा आपे दए गणा, भेव अभेदा आप खुल्हांयदा। माया ममता मोह दए चुका, साची संगता मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवे भगती दान, अन्तर आत्म इक्क ज्ञान, गुण निधान वेख वखांयदा। गुण निधाना श्री भगवाना, जुगा जुगन्तर खेल खलाईआ। आपे गाए आपणा गाना, आपणा नाउँ आप प्रगटाईआ। आपणा उडाए सच बबाणा, हरिजन साचे आप चढ़ाईआ। आपे देवे दरगाह साची माणा, माण निमाणयां होए सहाईआ। आपे वरते आपणा भाणा, लक्ख चुरासी आपणे भाणे विच रखाईआ। लेखा जाणे राज राजाना, शाहो भूप साचे तख्त आसण लाईआ। जन भगतां वखाए इक्क निशाना, सचखण्ड दुआरे आप झुलाईआ। गीत गोबिन्द गाए तराना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां अंदर आपे वस, आपणा मार्ग देवे दस्स, जगत नाता तोड़ तुड़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी निगहवान, जन हरि हरि जन वेख वखाईआ।

✲ १३ जेठ २०१७ बिक्रमी देवी सिँघ आसला दे घर मघो वाली ज़िला जम्मू ✲

जन्म जन्म दी मेटे थकावट, जो जन आए सरनाईआ। माणस जन्म बणाए बनावट, पंज तत्त काया वेख वखाईआ। रसना जिह्वा हरि हरि घट मन्दिर जो जन रहे गावत, गावणहारा वेस वटाईआ। कलिजुग अन्तिम देवण आया दावत, शब्द ढोला एका गाईआ। निरगुण सरगुण बणया महावत, नाम नेज़ा हथ्थ उठाईआ। पिच्छे जुग जुग रहे कहावत, दर दुआर गुरमुख दर्शन पाईआ। चरन धूढ़ जो जन नहावत, दुरमति मैल रहे ना राईआ। पंच विकारा करे बग़ावत, घर घर पई लड़ाईआ। बिन सतिगुर पूरे ना करे कोई सखावत, रहिमत हथ्थ ना किसे रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत बुड़ेपा वेख वखाईआ। जगत बुड़ेपा गया थक्क, लोकमात पन्ध मुकण ना पाईआ। काया माटी सुक्की रत्त, हड्ड मास नाड़ी पिंजर रिहा ना राईआ। बीज ना बीजया आत्म वत, फुल फुलवाड़ी दिस ना आईआ। झूठया खोल्ले रक्खया खाता खत, नाम वस्त ना विच टिकाईआ। मिटी ना अन्ध अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। पुत्त पोतरा ना कोई दिसे साथ, सगला संग गए तजाईआ। बिन हरि कोए ना लहिणा चुकाए मस्तक माथ, पूर्ब जन्म ना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका लेखा दए समझाईआ। माणस जन्म मिल्या मात, दस दस मास अग्नी कुण्ड तपाया। धुरदरगाही मिली एका दात, नाम अमोला झोली पाया। बंस सरबंस बध्धा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाया। घर मन्दिर वखाए साचा हाट, नर हरि साचा रिहा खुल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा पूर्ब वर, माणस मानुक्ख फोल फोलाया। पूर्ब जन्म मारी मार, कर्मगत ना कोए कटाईआ। पिता पूत नाता तुटा विच संसार, तागा सूत ताणा पेटा ना कोए वखाईआ। आर पार बैठा इक्क किनार, आपे बूझे आपे दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा जाए जग, पिता पुत्तर लग्गी बिरहों अग्ग, शाह रग रही तड़फाईआ। पिता पूत होया विछोड़ा, बरस बरसी दए गवाहीआ। हित्त प्यार किसे ना बौहड़ा, मेला मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे अंदर वड़, काया मन्दिर खोज खुजाईआ। काया मन्दिर जगत प्यासी, दिवस रैण रहे बिल्लाईआ। कवण करे बन्द ख़लासी, जगत बन्धन तोड़ तुड़ाईआ। बिरध अवस्था निर्धन जोत साचा नूर ना कोए प्रकाशी, अन्ध अन्धेरा गया छाईआ। पूरी होई ना मात आसी, आसा निरासा दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिरध बुड़ेपा रिहा जाण, सच संदेश दए गुण निधान, एका अक्खर दए सुणाईआ। सच संदेशा सुणना कर ध्यान, हरि सज्जण आप सुणांयदा। तेरा पूत जगत निशान, चीचो मल्लीआं डेरा लांयदा। ओथे

खोल्ह जगत दुकान, पंसारी हट्ट सेव कमांयदा। कर सुन्नत होया मुस्लिमान, ईमान शरअ आपणे गल लगांयदा। पंज निमाज़ां पढ़े कुरान, मक्का काअबा वेख वखांयदा। इक्क वखाए सच ईमान, शरअ शरीअत बन्द करांयदा। पूत भुलया पिता नादान, जगत नाता तोड़ तुड़ांयदा। घर नारी कन्त मिली रकान, माया ममता मोह हंढांयदा। मगर लग्गे पंज शैतान, सिर कोए ना दूसर होर उठांयदा। बिरध अवस्था सुरत सवाणी एका मंगे साचा दान, हरि हरि नाम इक्क वखांयदा। आवण जावण चुक्के काण, जम की फाँसी फंद कटांयदा। मिले मेल श्री भगवान, आपणा नेत्र आप खुल्हांयदा। दोए नेत्र जगत वखाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत थकावट देवे चुक्क, अगला पैंडा रिहा मुक्क, साचा पान्धी आप मुकांयदा। आया दुखीआ दर दुआर, दुःख आपणा फोल सुणाईआ। जगत विछोड़ा मारे मार, विजोग रोग टिकण ना पाईआ। सतिगुर पूरा किरपा करे अपार, एका सिख्या दए समझाईआ। बिन हरि करतार कोई ना सच्चा यार, मात पित भैण भाई साक सज्जण पुत्तर धीआं अन्त ना संग निभाईआ। एका हरि का नाउँ रसना जिह्वा लैणा उच्चार, त्रैगुण माया फंद कटाईआ। अठानवें बरस उमर उतरे पार, नौ अठ वज्जे वधाईआ। नौ नौ खोल्हे आप किवाड़, दसवें मेला शहनशाहीआ। तीजा नेत्र कर उज्यार, काया खेत्र वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीब निमाणे देवे वर, दर्द दुःख भय भञ्जण आप अख्वाईआ। दीनां अनाथां दीन दयाला, आपणी दया कमांयदा। इक्क वखाए सच सच्ची धर्मसाला, साची सिख्या इक्क समझांयदा। फल लगाए काया डाल्ह, पत डाल्ही वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी तोड़ जंजाला, आप आपणे रंग रंगांयदा। सोहँ पाए गल साची माला, मन का मणका आप फिरांयदा। नेड़ ना आए काल महांकाला, पुरख अबिनाशी सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिखक भिच्छया देवे वर, जो जन सरन सरनाई मंगण आंयदा। जगत थकेवां जाणा लथ्थ, पंज तत्त चोला रंग रंगाईआ। सगल वसूरे जायण लथ्थ, चिंता चिखा दए मुकाईआ। जिस जन चढ़ाए आपणे रथ, दर घर साचे मेल मिलाईआ। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, आपणी वण्ड आप कराईआ। वसणहारा घट घट, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लहणे झोली पाईआ। निरगुण खेल हरि निरँकार दा, आदि जुगादी आप कराए। भेव अवल्लड़ा परवरदिगार दा, रूप रेख ना कोए वखाए। करे खेल सांझे यार दा, वरन बरन ना कोए जणाए। तोड़े गढ़ हँकार दा, नाम खण्डा हथ्थ उठाए। जन भगतां पैज संवारदा, जुग जुग आपणी जोत जगाए। साचे सन्तां फड़ फड़ तारदा, मार्ग पन्थ इक्क वखाए। गुरमुखां रोग निवारदा, हउमे रोग रहिण ना पाए। गुरमुख साचे पार उतारदा, सतिगुर

पूरा सेव कमाए। आप आपा उत्तों वारदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत साची वेख वखाए। हरिसंगत साचा रंग, सतिगुर पूरा आप चढ़ाईआ। घर घर आत्म वेखे सच पलँघ, दस्म दुआरी डेरा लाईआ। नौ दुआरे रिहा लँघ, टेढी बंक पार कराईआ। हथ्थ फड़ नाम मृदंग, साचा नाद इक्क सुणाईआ। दूई द्वैती ढाए कंध, पर्दा ओहला दए चुकाईआ। इक्क उपजाए परमानंद, निजानंद आपणा रूप दरसाईआ। सच सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ ढोला आपे गाईआ। गुरमुखां खुशी करे बन्द बन्द, बन्दीख़ाना दए कटाईआ। आप चढ़ाए साचा चन्द, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। जिस जन गाया बत्ती दन्द, अन्तिम मेले थाउँ थाँईंआ। मनमुखां सुत्ता दे कर कंड, नेत्र दिस किसे ना आईआ। करे खेल विच वरभण्ड, जोती जामा भेख वटाईआ। पावे सार जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज खोज खुजाईआ। वसणहारा हरि ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म नाउँ धराईआ। जुग जुग वण्डे आपणी वण्ड, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणी वण्डी रिहा पाईआ। आपे करे खण्ड खण्ड, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाईआ। आप रखाए चण्ड प्रचण्ड, तिक्खी धार आप चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। गुरमुख साचा लाल अनमुल्लड़ा, गुर सतिगुर वेख वखांयदा। जुगा जुगन्तर साचे कंडे तुलड़ा, करता कीमत आपे पांयदा। त्रैगुण माया विच कदे ना रुलड़ा, ख़ाकी ख़ाक ना कोए मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेला सच दुआर, चार वरनां करे इक्क प्यार, ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका धाम बहांयदा। चार वरनां इक्क ज्ञाना, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। चार वरनां इक्क भगवाना, परम पुरख मेल मिलाईआ। चार वरनां एका दाना, नाम निधाना झोली पाईआ। चार वरनां देवे ब्रह्म ज्ञाना, आत्म अन्तर करे जणाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट हो निहकलंक बली बलवाना, बल आपणा आप वखाईआ। सत्त रंग झुलाए इक्क निशाना, सत्तां दीपां करे रुशनाईआ। गुरमुखां बन्न्हे हथ्थीं गाना, घर घर आपणा सगन मनाईआ। सम्मत सतरां हो प्रधाना, बीस बिक्रमी करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेला एका घर, घर वजदी रहे वधाईआ। हरिसंगत हरि कर परवान, सच परवाना हथ्थ फड़ांयदा। सचखण्ड दुआरे एका माण, धर्म दुआरा इक्क वखांयदा। आवण जावण चुक्के काण, श्री भगवान मेल मिलांयदा। गुरमुख बूटे लोकमात सदा महिकान, सच सुगंधी नाम भरांयदा। भगत वाष्ना भरे विच जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे एका वर, हरि साचा खेल खिलांयदा। हरिसंगत हरि पाया, हरि हरि का रूप अपार। दर दर घर घर वेख वखाया, गुरमुखां कर प्यार। जेठ अग्नी तपश दए बुझाया, अमृत वरखे ठंडी ठार। तृष्ना हरस दए मिटाया, आत्म अन्तर धर प्यार। आपणा

तरस आप कमाया, गुरमुख साचे लाए पार। निरगुण सरगुण दरस दिखाया, नेत्र नैणां आप उग्घाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे होए सहाया। हरिजन तेरी साची मत, ब्रह्म मति इक्क वखाईआ। सतिगुर पूरा रक्खे पत्त, लोकमात होए सहाईआ। तेरी लेखे लग्गे रत्त, रत्ती रत्त आपणे लेखे पाईआ। सतिगुर सच्चा जाणे मित गत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन साचा तारया, कर किरपा आप करतार। जन्म जन्म दा रोग निवारया, एका बख्शे चरन प्यार। घर मन्दिर कर उज्यारया, मेट मिटाए अन्ध अँध्यार। देवे दरस अगम्म अपारया, बन्द ताकी खोल्ह किवाड़। जेठ अग्न किसे ना साड़या, तत्ती वाओ ना करे ख्वार। जो जन बोले सोहँ शब्द सच जैकारया, माणस जन्म ना आए हार। पूर्ब लहिणा लेखा पार उतारया, लेखा देवणहार सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां भरे नाम भण्डार। नाम भण्डारा हरि भगवन्त, जुगा जुगन्तर आप वरतांयदा। गुरमुख विरले वेखे सन्त, जिस जन झोली नाम भरांयदा। लक्ख चुरासी माया पाए बेअन्त, त्रैगुण पर्दा इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला नारी कन्त, घर मन्दिर आप सुहांयदा। घर मन्दिर हरि सुहावणा, निरगुण नूर जोत उज्यार। गुरसिख साचा वेख वखावणा, अंदर मन्दिर गुप्त ज़ाहर। दर दरवेशा फेरा पावणा, अलक्ख निरँजण बोल जैकार। शब्द अनादी इक्क सुणावणा, आत्म धुन वज्जे अपार। गुरसिख गुरमुख एका धाम वसावणा, जिस घर वसे आप निरँकार। दर आयां लेखे लावणा, जाए पैज संवार। मनमुखां मुख शर्मावणा, मन रक्खया इक्क हँकार। गुरमुख विरले सीस झुकावणा, जिस झुकया आप निरँकार। दिवस दिहाढ़ा सच सुहावणा, तेरां तेरा करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पावे सार। सार समालीअन दिवस रैण प्रभात, घड़ी पल पल वेख वखाईआ। वसणहारा कायनात, चार कुंट दहि दिश आपणा खेल खलाईआ। लक्ख चुरासी मारे झात, हरिजन साचे लए उठाईआ। आपे पुछणहारा वात, वास्तक आपणा रूप दरसाईआ। चरन कँवल बंधाए साचा नात, धरत धवल दए वड्याईआ। गुरमुखां होए पिता मात, मात पिता आप अख्वाईआ। वरन बरन ना कोए ज़ात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत मेला विच जहान, दो जहानां वाली आप कराईआ।

✻ २८ जेठ २०१७ बिक्रमी शब्द सिँघासण पर लिख्त होई मकान नं० ६७८६ गली नं० ७ मुलतानी ढांडा पहाड़ गंज नवीं दिल्ली ✻

हस्त कीट हरि करतार, जून अजूनी खेल खिलांयदा। रूप अनूप बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर डगमगांयदा। सति सरूप शाहो भूप सच्ची सरकार, सच सुल्तानां नाउँ धरांयदा। लक्ख चुरासी खेल अपार, घट घट बाती आप टिकांयदा। कमलापाती मीत मुरार, निरगुण आपणी रचन रचांयदा। आदि जुगादी निराकार, साकार रूप वटांयदा। सृष्ट सबाई पावे सार, घट घट अंदर फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हस्त कीट जेरज अंड रूप रेख ना कोए वखांयदा। हस्त कीट हरि की धार, हरि साचा सच उपजाईआ। इक्क इकल्ला खेल अपार, एकँकारा आप कराईआ। सचखण्ड निवासी हो उज्यार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाईआ। एका नूर कर उज्यार, शब्दी धार विच टिकाईआ। शब्द नाद धुन जैकार, पवण पवणी आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हस्त कीट एका हथ्थ वड्याईआ। हस्त कीट हरि समाया, भेव अभेद भेव जणांयदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाहया, आपणा नाउँ धरांयदा। आपणी कल अप वरताया, जुगा जुगन्तर खेल खिलांयदा। पुरख अबिनाशी सच मलाह बण के आया, खेवट खेटा आप चलांयदा। हरिजन साचे सन्त सुहेले निरगुण सरगुण रूप आप आपणा मेल मिलाया, आपणा हित आपे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हस्त कीट एका संग, साचा संग आप निभांयदा। हस्त कीट सगला साथ, हरि साचा सच निभाईआ। पारब्रह्म पुरख अबिनाश, आदि जुगादि दए वड्याईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशा आपणा रूप समाईआ। जन भगतां होया रहे दास, जुगा जुगन्तर सेव कमाईआ। घट घट अंदर रक्खे वास, निरगुण सरगुण बेपरवाहीआ। मंडल बह बह पावे रास, घर मन्दिर आप सुहाईआ। गुरमुखां पूरी करे आस, ऊँच नीच ना वेख वखाईआ। सदा सुहेला वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हस्त कीट एका रूप दरसाईआ। एका रूप हरि करतार, आपणा आप उपजांयदा। अजून अजूनी हो त्यार, निरगुण हर घट डेरा लांयदा। एका अक्खर कर विचार, साची सिख्या आप समझांयदा। लेखा लिख ना सके वेद चार, पुराण शास्त्र भेव ना पांयदा। आदि जुगादी खेल अपार, जुगा जुगन्तर आप करांयदा। बोध अगाधी नाम जैकार, सच जैकारा आप सुणांयदा। सचखण्ड निवासी हो त्यार, लोकमात वेस वटांयदा। त्रै काल दरसी भेव न्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हस्त कीट वेख वखांयदा। वेखणहारा हरि भगवान, आदि जगादि समाया। वेखणहारा जुगा जुगन्त, महिमा अगणत लेखा लेख

ना कोई लिखाया। हरिजन वेखे साचे सन्त, लक्ख चुरासी खोज खुजाया। घर मन्दिर उपजाए हरि हरि नाउँ मणीआ मंत, आपणी विद्या आप पढ़ाया। दो जहानां बणाए साची बणत, सति पुरख निरँजण आपणी सेवा आप लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर हरि हरि वेस, करे कराए नर नरेश, हस्त कीट मेल मिलाया। हस्त कीट मेला भगवान, हरि साचा आप कराईआ। जुग करता देवणहार दान, करता पुरख नाउँ धराईआ। मूर्त अकाल वड मेहरवान, अजूनी रहित नाउँ धराईआ। आदि जुगादी नौजवान, ना मरे ना जाईआ। शब्द उठाए सच निशान, दरगाह साची आप झुलाईआ। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां पाए एका आण, रवि ससि रहे सीस झुकाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करन ध्यान, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इंद, नैनण नैण रहे उठाईआ। पुरख अबिनाशी वड मेहरवान, आप आपणी कल वरताईआ। हरिजन साचे करे परवान, दर घर साचा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मंडल साची रास, पारब्रह्म ब्रह्म कर प्रकाश, निरगुण पूरी करे आस, हस्त कीट एका भिच्छया झोली पाईआ। पाई भिच्छया नाम निधान, एका झोली भरांयदा। सो पुरख निरँजण वड मेहरवान, एकँकारा खेल खिलांयदा। आदि निरँजण देवे दान, अबिनाशी करता संग रखांयदा। श्री भगवान बख्शे माण, निमाणयां गले लगांयदा। पारब्रह्म एका पाए आपणी आण, दूसर हुक्म ना कोई जणांयदा। गुरमुख साचे चतुर सुजाण, जुगा जुगन्तर वेख वखांयदा। लोकमात खोल्ह सच दुकान, साचा हट्ट इक्क वखांयदा। जीव जंत ना सके कोई पछाण, लक्ख चुरासी भरम भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हस्त कीट पावे सार, लक्ख चुरासी अगम्म अपार, भेव अभेद आप खुल्हांयदा। हस्त कीट हरि रंग राता, रंग रतड़ा साचा माहीआ। आप सुणाए आपणी गाथा, जुगा जुगन्तर करे इक्क पढ़ाईआ। लेखा जाणे लहिणा देणा मस्तक माथा, पूर्ब पूर्ब वेख वखाईआ। पंज तत्त काया माटी चलाए राथा, महांसार्थी बेपरवाहीआ। करे खेल त्रिलोकी नाथा, चौदां लोक कर रुशनाईआ। जन भगतां पूरा करे घाटा, एका वस्त हथ्थ फड़ाईआ। निरगुण जोती नूर जगे लिलाटा, आदि निरँजण कर रुशनाईआ। सर सरोवर वखाए तीर्थ ताटा, तट किनारा सोभा पाईआ। लेखा चुकाए आन बाटा, मात गर्भ फंद कटाया। अग्गे नेड़े आए वाटा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हस्त कीट सद मेहरवान, सच निशान इक्क वखाईआ। सच निशान धुर दरबार, हरि साचा सच वखांयदा। महल्ल अटल उच्च मिनार, पुरख अबिनाशी आप झुलांयदा। गुरमुख साचे कर त्यार, जुगा जुगन्तर आप वखांयदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, लोचण लोयण आप दरसांयदा। चौथे पद आपे वाड़, पंचम जोड़ा आप जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हस्त कीट लाए लड़,

एका पल्लू नाम फड़ांयदा। नाम पल्लू सच गंढु, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। जुगा जुगन्तर वण्डे आपणी वण्ड, दूसर संग ना कोई रखाईआ। वसणहारा हरि ब्रह्मण्ड, लोआं पुरीआं खोज खुजाईआ। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज भुल्ल ना राईआ। पावे सार सूरज चन्द, रवि ससि वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा पन्ध, आपणा लेखा वेख वखाईआ। ऊँच नीच हस्त कीट सर्ब जी दाता, एका रंग समाया। पारब्रह्म प्रभ पुरख बिधाता, भेव किसे ना पाया। जुग जुग मेटी अन्धेरी राता, अन्ध अन्धेरा दए गंवाया। जन भगतां निभाए सगला साथा, सगला संग आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हस्त कीट हरि संजोग, हरि साचे आप कराया। लेखा जाणे चौदां लोक, चौदां चौदां वेख वखाया। पुरी ब्रह्म इक्क सलोक, सिँघ शेर नाम सुणाया। विष्नूं विश्व भाणा ना सके रोक, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाया। हरिभगत ना मंगे कोई मोख, प्रभ दरस रहे तृप्ताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हस्त कीट एका संग निभाया। हस्त कीट एका संग, हरि सतिगुर संग रखांयदा। कलिजुग औध रही लँघ, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। सृष्ट सबाई धरत मात साची सेज मांगे पलँघ, नव सत्त इक्क विछांयदा। जलधार ना दिसे कोई गंग, सर सरोवर अमृत बूंद ना कोई मुख चुआंयदा। चारे कुंट होए नंग, साचा पर्दा ना कोई पांयदा। सो पुरख निरँजण एका अश्व कसे तंग, हरि पुरख निरँजण सेव कमांयदा। एकँकारा सच्चखण्ड दुआरा आपे लँघ, आदि निरँजण वेख वखांयदा। अबिनाशी करता वजाए मृदंग, श्री भगवान हथ्थ उठांयदा। पारब्रह्म हरिजन साचे लाए आपणे अंग, ब्रह्म ब्रह्म वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी जीव जंत माया ममता झूठी गंढु, हउमे हंगता गढ़ ना कोई तुड़ांयदा। सतिगुर पूरा गहर गम्भीरा सूरा सरबंग, सो पुरख निरँजण इक्क अख्वांयदा। गुरमुखां अंदर निरगुण रूप निराकार आपे लँघ, आत्म सेजा आप सुहांयदा। काया माटी काची वंग, कंचन गढ़ आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हस्त कीट चुकाए डर, निर्भय आपणा भय वखांयदा। निर्भय रूप हरि निरँकारा, हरिजन साचे आप जगाईआ। एका बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। शब्द जणाई धुन जैकार, नाद अनादी आप वजाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, खेलणहारा आप खलाईआ। निरगुण रूप निराकार, निर्धन सरधन वेख वखाईआ। साकत निन्दक दुष्ट दुराचार, साध सन्त भगत भगवन्त मेल मिलाईआ। सन्त कन्त मेला नार भतार, गुरमुख वेखे सहिज सुभाईआ। गुरमुख सोहे बंक दुआर, घर वजदी रहे वधाईआ। मनमुख डुब्बे विच मँझधार, जुगा जुगन्तर रिहा रुढ़ाईआ। ना कोई दीसे पार किनार, नईआ नाम ना कोए चढ़ाईआ। सगला संग छुटा संसार, भैणा भईआ दिस ना आईआ। कढु वहीआ धर्म राए

करे ख्वार, लेखा लिख्या ना सके कोई चुकाईआ। गुरमुख साचा उच्ची कूके करे पुकार, सतिगुर तेरी सच सच्ची सरनाईआ। सतिगुर पूरा फड़ फड़ बाहों लाए पार, वेले अन्त होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हस्त कीट नाता, आपे तोड़े पुरख बिधाता, लड़ आपणा इक्क वखाईआ। हस्त कीट जगत खेल, ऊँच नीच वण्ड वण्डाईआ। हरीजन हरि साचा लए मेल, हरिजन आपणी दया कमाईआ। घर मन्दिर जोत जगाए बिन बाती बिन तेल, दिवस रैण इक्क रुशनाईआ। सति सतिवादी बणे सज्जण सुहेल, घर मेला सहिज सुभाईआ। लेखा जाणे गुरु गुर चेल, चेला गुर रूप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा जगत माण वड्याईआ। हस्त कीट सोहे बंक, सचखण्ड निवासी आप सुहांयदा। लेखा जाणे राउ रंक, एका डंक आप वजांयदा। एका नाम वजाए साचा डंक, चार वरनां आप सुणांयदा। प्रगट होया वासी पुरी घनक, घनक पुर वासी आपणी खेल आप खलांयदा। हरि जन जन हरि माण रखाए जिउँ जन जनक, घर घर आपणा रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, हस्त कीट कर प्यार, थिर घर देवे शब्द धार, पीत पतम्बर सीस सुहांयदा। पीत पतम्बर हरि जगदीश, शाह सुल्तान आप झुलाईआ। आपणा पीसण आपे पीस, कलिजुग चक्की रिहा चलाईआ। चार कुंट चार जुग चार वरन चार बाणी चार खाणी चार वेद चार यार इक्क हदीस, इक्क कलमा उलमा आप पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वास्तक रूप सर्ब संसार, हस्त कीट दए आधार, पतित उधारन आपणा नाउँ आप धराईआ। पतित उधारन दीन दयाला, दयानिध पुरख अबिनाश्या। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाला, करे कराए शाहो सबासया। चरन दुआर रक्खे भिखार काल महांकाला, बह खेले खेल खेल तमाश्या। लक्ख चुरासी वणज वपार, दो जहान पृथ्मी अकाश्या। गुरमुख साचे लए उभार, घर मन्दिर निरगुण जोत कर प्रकाश्या। कागद कलम ना लिखणहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हस्त कीट दासण दासया। हस्त कीट हरि वसेरा, आप अपणा खेल खिलांयदा। आपे फिरे नेरन नेरा, दूरन दूर आप हो जांयदा। आप चुकाए मेरा तेरा, तेरा मेरा ना कोई रखांयदा। आपे ढाए भरमां डेरा, भरम गढ़ आप तुड़ांयदा। आपे कराए संझ सवेरा, रैण अन्धेरा ना कोई वखांयदा। आपे शब्द सरूपी पाए घेरा, चार कुंट आपणा घेरा पांयदा। आपे करे हक नबेड़ा, जुग जुग वेस वटांयदा। गुरसिखां वेखे काया खेड़ा, पंज तत्त मन्दिर खोज खुजांयदा। आपे धरत मात करे खुल्हा वेहड़ा, जो घड़या भन्न वखांयदा। आपे त्रैगुण माया लाए उखेड़ा, आपे पंचम जड़्ह पुटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हस्त कीट बेड़ा बन्न्ह, करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी खेल खिलांयदा। हस्त कीट वस्त अनमोल, सो पुरख निरँजण झोली पांयदा।

हरि पुरख निरँजण तोले साचा तोल, जगत कंडा नाम हथ्थ उठांयदा। आदि निरँजण आपणी धारन आपे बोल, श्री भगवान साची सिख्या दे समझांयदा। अबिनाशी करता वसे कोल, पारब्रह्म मुख पर्दा आपे लांहयदा। ब्रह्म ब्रह्म प्रभ आपे बोल, सरगुण ढोल मृदंग वजांयदा। दूई द्वैती पर्दा खोल्ह, साचा मन्दिर इक्क सुहांयदा। उलटा करे नाभ कँवल, अमृत कँवला आप भरांयदा। सुरती शब्दी जाए मवल, मवला आपणा नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हस्त कीट चुक्के डर, साची सिख्या आपणे हथ्थ रखांयदा। हस्त कीट लेख चुकाउणा, सतिगुर साचा रंग रंगाईआ। चार वरनां एका बरन रखाउणा, सरनगत बेपरवाहीआ। चार कुंट एका शब्द पढ़ाउणा, अक्खर वक्खर जाप बेपरवाहीआ। चार जुग पन्ध मुकाउणा, चार यार देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, हस्त कीट आपणी गोद उठाईआ। हस्त कीट दया कर, आपणी दया कमांयदा। सतिजुग साचा मात धर, धरत धवल धवल आप वड्यांअदा। नौ नौ सत्त सत्त एका वर, हरि हरि आपणी झोली पांयदा। हस्त कीट चुक्के डर, ऊँच नीच ना कोए वखांयदा। राउ रंक ना दिसे नारी नर, नर नरायण आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हस्त कीट लेखा जाए मुक्क, हरि साचा आप मुकांयदा। हस्त कीट सर्ब सुखदेव, चार वरन करे कुड़माईआ। पारब्रह्म अबिनाशी

७३० करता अलक्ख अभेव, परम पुरख इक्क अख्वाईआ। एका इष्ट एका देव, देवी देव इक्क मनाईआ। लक्ख चुरासी रसना ७३०

०६ जिह्व, पुरख अकाल इक्क वड्याईआ। मानस मानुख मस्तक थेव, कौस्तक मणीआ जोत रुशनाईआ। पारब्रह्म सदा नेहकेव, ०६

केवल आपणे नाउँ दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हस्त कीट सर्ब हरि मीत, सतिजुग चलाए साची रीत, मन्दिर मसीत ना कोई वखाईआ। साचा मन्दिर देहुरा मसीत, काया गढ़ चार वरन इक्क जणांयदा। सति पुरख निरँजण बैठा अतीत, अंदर वड़ दिस किसे ना आंयदा। जिस जन फड़ाए आपणा लड़, फड़ मार्ग आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हस्त कीट एका वर, आपणी भिच्छया झोली पांयदा। साचा मन्दिर हरि मुनार, काया मन्दिर इक्क दरसाईआ। दीपक जोत जगे उज्यार, बिमल रूप इक्क दरसाईआ। शब्द नाद वज्जे धुन्कार, धुन आत्मक आप सुणाईआ। सोहे बंक बंक दुआर, दर दरवाजा ना कोई खुल्हाईआ। बणे बणत ना चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हस्त कीट एका कर, हरि मन्दिर आप वखाईआ। हरि मन्दिर हरी दुआरका, हरि साचा सच दरसाईआ। पावे रास मंडल तारका, रवि ससि करे रुशनाईआ। करे कराए घर आरत साची आरता, गगन मंडल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हस्त कीट वखाए

एका घर, घर साचा इक्क समझाईआ। घर साचा हरि सुहञ्जणा, उच्च अटल मुनार। जगे जोत इक्क निरँजणा, दिवस रैण होए उज्यार। ना घड़या ना भज्जणा, ना ढह ढह होए ख्वार। अंदर वड़ फेर फेर ना तजणा, मिले मेल हरि मीत मुरार। दर दुआर बह बह सजणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हस्त कीट वखाए इक्क घर बार। हस्त कीट लेखा सचखण्ड, प्रभ सची सच सरनाईआ। सति जुग चलाए साची वण्ड, ब्रह्मण्ड इक्क सरनाईआ। त्रैगुण देवणहारा दंड, पंचम वेखे थाउँ थाँईंआ। लेखा जाणे जेरज अंड, अंडज जेरज खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हस्त कीट एका धाम बहाईआ। हस्त कीट धाम सुहावणा, जिस मिल्या सतिगुर मीत। घर मन्दिर एका पावणा, सतिजुग चले साची रीत। इष्ट दृष्ट इक्क वखावणा, रंग रंगीला हस्त कीट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता हस्त कीट। हस्त कीट वर पाया, हरि मिल्या बेपरवाह। एका दूजा भउ चुकाया, तीजा सतिगुर शब्द मलाह। चौथा दर इक्क समझाया, घर मन्दिर मेला शहनशाह। पंचम नाता तोड़ तुड़ाया, पंचम नाद शब्द धुन रिहा सुणा। छेवें छहबर एका लाया, अमृत मेघ दए बरसा। सत्तवें सति पुरख निरँजण सति सतिवादी जोत जगाया, अन्ध अन्धेरा दए गंवा। अठवें अठ्ठां तत्तां वेख वखाया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध दए समझा। नौ दुआरे खोज खुजाया, जगत वासना बाहर कढा। दसवें मेला सहिज सुभाया, बज़र कपाटी पर्दा लाह। आत्म सेजा रंग रंगाया, सच सुहञ्जणी सेज हंढा। पीआ प्रीतम वेख वखाया, घर मन्दिर बेपरवाह। आसा तृष्ना रहे ना राया, सहिंसा रोग दए चुका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हस्त कीट देवे वर, एका आपणा बन्धन पाया। हरि हरि बन्धन नाम अपारा, दिस किसे ना आईआ। गुरमुखां देवे सच सहारा, सारिंग धर भगवान बीठलो आपणी दया आप कमाईआ। कलिजुग अन्तिम सतिजुग खेल करे न्यारा, अद्धविचकार डेरा लाईआ। दोहां विचोला सिरजणहारा, वड दातारा खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेखे खड़, हस्त कीट आपणी अंश बणाईआ। हस्त कीट अंश सपूत, मात पित हरि अख्वांयदा। एका धागा एका सूत, ताणा पेटा एका पांयदा। एका वसणहारा चारे कूट, एका आपणा खेल खिलांयदा। एका कलिजुग नाता तोड़े जूठ झूठ, एका सच सुच मार्ग आपणा आपे लांयदा। एका गुर गुरमुखां उप्पर जाए तुठ्ठ, अमृत घुट्ट आप प्यांअदा। एका सुहाए आपणी रुत्त, रुत्त बसन्ती फुल्ल फलवाड़ी आप महिकांयदा। मेले मेल पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, सुत्त दुलारे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हस्त कीट वेखे एका दर, दर दुआरा आप खुल्हांयदा।

७३१
०६

✱ पहली हाढ़ २०१७ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✱

धन्न भाग दिहाढ़ा पहली हाढ़, हरि आपणी एकम वेख वखाईआ। मातलोक वेखे पुरख अबिनाशी इक्क अखाड़, दो जहानां वेस वटाईआ। शाह सुल्ताना साचा लाड़, त्रै त्रै आपणा भेव खुल्हाईआ। लक्ख चुरासी टोहे नाड़ नाड़, चौथे घर करे खेल बेपरवाहीआ। पंच विकारा देवे साड़, पंचम शब्द धुन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी एकम वेख वखाईआ। हरि एकम अपार, वदी सुदी ना कोए रखांयदा। रवि ससि ना पायण सार, पुन्नया अमावस ना रूप वटांयदा। बरस मास ना कोई धार, दिवस रैण ना कोए जणांयदा। घड़ी पल ना कोए प्यार, वेला वक्त ना कोए वखांयदा। आपणी इच्छया आपे धार, आपणी कल वरतांयदा। ना कोई सिख्या सिक्खे विच संसार, बेपरवाह आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी एकम आप सुहांयदा। साची एकम हरि निरँकार, आपणी आप उपाईआ। सचखण्ड दुआरे बैठ सच्ची सरकार, साची वण्डण वण्ड वण्डाईआ। लोआं पुरीआं होया बाहर, गगन पताल ना कोए वखाईआ। मंडल मंडप ना कोए सहार, ज़िमी अस्मान ना रूप दरसाईआ। जल बिम्ब ना कोए अकार, महीअल रूप ना कोए वटाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए वणजार, चौदां लोक ना हट्ट खुल्हाईआ। त्रैभवन ना कोए आधार, अवण गवण ना कोए फिराईआ। उँणंजा पवण ना कोए हुलार, रूप रेख ना कोए वखाईआ। साचे मन्दिर बैठ सच्ची सरकार, दर घर साचा आप सुहाईआ। आपणी इच्छया कर विचार, आपणी भिच्छया झोली पाईआ। साचा नाम भण्डारा कर त्यार, दाता दानी आपणे हथ्थ रखाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, लेखा मंगे ना कोए छाहीआ। जगत जुगत ना कोए विचार, भगत भगवन्त ना कोए सालाहीआ। नार कन्त ना कोए प्यार, सेज सुहञ्जणी ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी एकम आप बणाईआ। एका एकम हरि भगवान, आपणी आप उपांयदा। दूसर ना कोई दिसे निशान, ना कोई रचन रचांयदा। महल्ल अटल ना कोए मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहांयदा। धुन नाद ना कोए गान, रागनी राग ना कोए सुणांयदा। पवण पाणी ना कोए मसाण, अग्नी तत्त ना कोए रखांयदा। विद्या मन्त्र ना कोए ज्ञान, सिख्या सिख ना कोए समझांयदा। सरवण सुणे ना कोए कान, अन्तर ध्यान ना कोए लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी एकम आप उपजांयदा। आपणी एकम हरि करतार, दर घर साचे आप बणाईआ। सो पुरख निरजण कर त्यार, हरि पुरख निरँजण मेल मिलाईआ। एकँकारा बण बण मीत मुरार, आदि निरँजण अंग रखाईआ। अबिनाशी करता खोल्ह किवाड़, श्री भगवान वेख वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर त्यार, एका एक दए वड्याईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक इक्क समझाईआ। एका एक इक्क करतारा, एका घर सुहांयदा। एका जोत नूर उज्यारा, एका दीप जगांयदा। एका नाम बोल जैकारा, आप आपणा घर सुहांयदा। एका वस्त नाम हरि थारा, थिर घर साचे आप टिकांयदा। एका वणज करे वणजारा, एका हट्ट खुल्हांयदा। एका कीमत पाए पावणहारा, एका मुल चुकांयदा। एका मंगे बण भिखारा, एका भिच्छया हथ्थ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी एकम आपणे रंग रंगांयदा। एका एकम सचखण्ड, हरि साचे सच उपजाईआ। ना कोई दिसे ब्रह्म ब्रह्मण्ड, जेरज अंड ना कोए वड्याईआ। ना कोई सुणाए सुहागी छन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। ना कोई जाणे दो जहानां पन्ध, आपणा डग ना कोए उठाईआ। ना कोई वेखे परमानंद, निजानंद ना कोए वड्याईआ। ना कोई अमृत धारा सागर सिन्ध, भर प्याला जाम ना कोए प्याईआ। ना कोई मात पित उपजाए पूत सपूत आपणी बिन्द, रक्त बूंद ना कोए वखाईआ। शाह पातशाह नरिंद, मृगिन्द रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा नाउँ धराईआ। एका आपणा नाउँ धर, हरि एकम रूप दरसाया। सचखण्ड दुआरे खेल कर, निष्अक्खर आपणा हुक्म चलाया। शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना अग्गे धर, अक्खर विद्या ना कोए पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक रूप वटाया। एका एकम पुरख अकाल, आदि आदि आदि आपणी आप बणाईआ। सति पुरख निरँजण सति सतिवाद, घर साचे खुशी मनाईआ। अन्तिम वेखे खेले जुगादि, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। इक्क उपजाए आपणी औलाद, मात पित इक्क अख्वाईआ। एका रूप सन्त साध, एका नैण दरस दखाईआ। एका शब्द बोध अगाध, एका नाम करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एकम आपणा नाउँ रखाईआ। एकम आपणा नाउँ रक्ख, हरि साचे खेल खलाया। सचखण्ड दुआरे हो प्रतक्ख, निरगुण आपणा रूप वटाया। लेखा लेख अलखणा अलक्ख, लेखे विच ना किसे गणाया। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपणी वण्डण आप वण्डाया। आपे अंदर जाए वस, आप आपणा बंक सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपर, एका आपणा नाम धराया। एका नाम हरि मेहरवान, आपणा आप जणाईआ। आपे वेखे मार ध्यान, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आप वखाए एका सच निशान, सचखण्ड दुआरे आप उठाईआ। सत्त रंग लेखा जोत महान, सो पुरख निरँजण दए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा पर्दा आपे लाहीआ। इक्क निशाना कर त्यार, सचखण्ड दुआरे आप सुहाया। साचा खेल अगम्म अपार, पुरख अकाल दीन दयाल आप वखाया। फल लगाए आपणे डाल्ह, आपे चले अवल्लड़ी चाल, आप आपणा वेस धराया। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआरा इक्क वड्याआ। सचखण्ड दुआरा वसया, पुरख अबिनाशी आप वसांयदा। एकँकारा बह बह हस्सया, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपणी नगरी फिरे नस्सया, सच समग्री हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अगम्मा अगम्मड़ी कार कमांयदा। अगम्मड़ी कार करनहारा, आपणी कल वरतांयदा। निरगुण अंदर निरगुण धारा, निरगुण आप टिकांयदा। निरगुण निरगुण करे प्यारा, निरगुण संग समांयदा। निरगुण अंदर निरगुण बाहरा, निरगुण रूप अनूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी एकम आप बणांयदा। निरगुण खेल कर करतार, घर बंक आप सुहाया। आपणी दिशा आप विचार, आपणा हिस्सा आपे पाया। आपणा लेखा लिखणहार, लेखा लेख ना कोए जणाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, साचा सगन आप मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आपणी रचन रचाया। आपणी रचना रचणहारा, आपणी बणत बणांयदा। आपणी एकम कर त्यारा, निराकारा साकार रूप वटांयदा। विष्नूं विश्व हो त्यारा, दीप उज्यारा आप करांयदा। आपणे मन्दिर रक्खी आपणी धारा, आपणी वण्डण हरि वड्यांअदा। आपे बरस मास दिवस रैण घड़ी पल कर विचारा, आप आपणे विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा पर्दा आपे पांयदा। विष्नूं कर हरि त्यार, आपणी एकम आप सुणाईआ। निरगुण मास बरस निरगुण करे विचार, निरगुण दिवस रैण आपणे विच टिकाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, करे कराए बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका लेखा दए लिखाईआ। एका लेखा लिखणहारा, दूजा अवर ना कोए जणांयदा। पहली हाढ़ दिवस विचारा, हरि निरँकारा विष्नूं जन्म दवांयदा। आपणे अंदरों कढिआ बाहरा, मात पित ना कोए वखांयदा। रंगया रंग रंग करतारा, दूसर रंग ना कोए चढ़ांयदा। आप वखाया दर दरबारा, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा। आपे अमृत भरया अमर भण्डारा, आप आपणी धार चुआंयदा। झिरना झिरे अपर अपारा, बूंद बूंद आप बरसांयदा। एका एकम निउँ निउँ करे निमस्कारा, अगला राह ना कोए समझांयदा। एका साता हो उज्यारा, सो पुरख निरँजण हरि पुरख निरँजण एकँकारा मेल मिलांयदा। आदि निरँजण हो उज्यारा, अबिनाशी करता खेल खिलांयदा। श्री भगवान लेखा जाणे चरन धूढ़ मजन, पारब्रह्म मूल चुकांयदा। विष्नूं नेत्र पाया अञ्जण, अन्ध अन्धेर ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। इक्क सत्त कर प्यार, अमृत बूंद स्वांती आप चुआईआ। विष्नूं अंदर भर भण्डार, कँवल कँवला आप टिकाईआ। आदि जुगादी बणया ठंडा ठार, विस्मादी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं अंदर आपणी वस्त आप टिकाईआ।

विष्नूं अंदर नाभी धार, पुरख अबिनाशी आप चलांयदा। चरन कँवल हरि अमृत कर प्यार, निराकार साकार झोली पांयदा। साढे तिन्न करोड़ बूंद कर त्यार, आपणी वण्ड वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। विष्नूं अंदर अमृत धारा, हरि साचे आप टिकाईआ। एका एकम दए हुलारा, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। आपणा जाणे आप दिहाढ़ा, दूसर हथ्थ ना कोए वड्याईआ। तत्त ना दिसे बहत्तर नाड़ा, रक्त बूंद ना मेल मिलाईआ। कमलापत मीत मुरारा, मिल आपणी सेज हंढाईआ। बीजे बीज अगम्म अपारा, पत डाली आप महिकाईआ। सतारां दिवस सच विहारा, निरगुण निरगुण निरगुण आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरताईआ। सतारां दिवस विश्व रस, हरि हरी आप प्यांअदा। निरगुण रूप अंदर वस, निराकार खेल खिलांयदा। आपणा मार्ग देवे दस्स, बोध अगाध ज्ञान दृढ़ांयदा। मेरा रूप होए प्रकाश, तेरी नाभी फुल्ल खलांयदा। निरगुण जोत होए प्रकाश, अन्ध अन्धेर ना कोए जणांयदा। आपणी पूरी करे आस, आपणी भिच्छया झोली पांयदा। तेरे अंदर करया वास, मुख मुखी बाहर रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बणत आप बणांयदा। आपणी बणत बणावणहारा, आदि जुगादि समांयदा। विष्नूं नाभी कँवल कर त्यारा, सच वणजारा वेख वखांयदा। कँवल कँवला कर त्यारा, जल जल आप टिकांयदा। आपे पंखड़ीआं बण खोल्हे मुख किवाड़ा, आप आपणा पर्दा लांहयदा। आपे पारब्रह्म रूप कर प्यारा, ब्रह्म आपणा रूप वटांयदा। धन्न सुभाग होए सतारां हाढ़ा, ब्रह्मा विष्नूं गोद बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता आप अख्वांयदा। ब्रह्मा विष्न कर त्यार, इच्छया इच्छया विच रखाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, लेखा लिख्या दए समझाईआ। अंदरे अंदर सच प्यार, सति सितार दए वजाईआ। खिचणहारा वारो वार, दिस किसे ना आईआ। पावे सार धूंआँधार, सुन्न अगम्म डेरा लाईआ। आपे शंकर कर उज्यार, आपणा संसा लए चुकाईआ। साचा बंस कर त्यार, आपणी अंस नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एकम दए वधाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार, त्रैगुण माया आप उपजांयदा। पंज तत्त भर भण्डार, लक्ख चुरासी जोड़ जुड़ांयदा। पवण स्वासी कर श्रंगार, मन मति बुध नाल रलांयदा। आत्म ब्रह्म दए आधार, ईश जीव वेख वखांयदा। कर्म कुकर्म भर भण्डार, आसा तृष्ना विच टिकांयदा। जन्म मरन विच संसार, रीती नीती आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म चलांयदा। हुक्म चलाए धुर फ़रमाणा, शाहो भूप वड्डी वड्याईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा साचा राणा, आपणी रइयत वेख वखाईआ। आप जणाए आपणा भाणा, त्रै त्रै लेखा बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, हुक्मी हुक्म रक्खे वड्याईआ। हुक्मे अंदर सूरज चन्न, मंडल मंडप आप भवांयदा। हुक्मे अंदर ब्रह्मा विष्न शिव बेड़े बन्न्ह, लक्ख चुरासी नईया आप वखांयदा। हुक्मे अंदर वसाए छप्परी छन्न, हुक्मे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फिरांयदा। हुक्मे अंदर देवे माल धन, हुक्म हुक्मी भिक्ख मंगांयदा। हुक्मे अंदर देवणहारा डंन, सिर सिर आपणा हुक्म मनांयदा। हुक्मे अंदर राग सुणाए कन्न, सोया कोए रहिण ना पांयदा। हुक्मे अंदर जननी जणे जन, हुक्मे अंदर जो घड़या भन्न वखांयदा। हुक्मे अंदर रक्खे नेत्र अन्न्ह, हुक्मे अंदर ज्ञान नेत्र आप खुल्ह्ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप समझांयदा। हुक्मे अंदर कर उत्पत, हुक्मी हुक्म फिराईआ। हुक्मे अंदर मेल मिलाए बूंद रक्त, हुक्मे अंदर जेरज अंड उत्भुज सेत्ज लए उपजाईआ। हुक्मे अंदर रक्खे ब्रह्म मति, हुक्मे अंदर एका तत्त वखाईआ। हुक्मे अंदर बंधाए नत, हुक्मे अंदर तोड़ तुड़ाईआ। हुक्मे अंदर सुणाई गाथ, ब्रह्मा चार वेद करे पढ़ाईआ। हुक्मे अंदर विष्नूं जणाया आपणा पाठ, सोहँ पूजा इक्क समझाईआ। हुक्मे अंदर शंकर पूरा करे घाट, कंठ माला गल लटकाईआ। हुक्मे अंदर वेखे चौदां हाट, हुकमे अंदर ज़िमीं अस्मान देण दुहाईआ। हुक्मे अंदर जुग जुग नेड़े रक्खे वाट, हुक्मे अंदर पन्ध मुकाईआ। हुक्मे अंदर उपजाए दिवस रात, मास बरस हुक्मे आप बणाईआ। हुक्मे अंदर आपे बैठा रहे इक्क इकांत, आपणा हुक्म ना तोड़े ना कोए तुड़ाईआ। हुक्मे अंदर वेखे मार झात, हुक्मे अंदर बैठा मुख छुपाईआ। हुक्मे अंदर बणाई ज़ात पात, हुक्मे अंदर दए खपाईआ। हुक्मे अंदर निभाए साथ, हुक्मे अंदर सगला संग तजाईआ। हुक्मे अंदर चलाए राथ, हुक्मे अंदर रथ रथवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एकम दए समझाईआ। एका एकम हरि करतारा, आपणा आप समझांयदा। निरगुण घर निरगुण लै अवतारा, निरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण शाह निरगुण सिक्दारा, निरगुण हुक्म सुणांयदा। निरगुण दर दरबान बणे दुआरा, निरगुण सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वण्डण आपे हथ्थ रखांयदा। लोकमात वण्ड वण्डाए, रवि ससि हिस्सा आप वण्डाईआ। वदी सुदी झोली पाए, ब्रह्मा लेखा दए लिखाईआ। बारां मास जोड़ जुड़ाए, तीस बतीस एका गाईआ। पुरख अबिनाशी भेव ना राय, कवण रुत्तड़ी हरि सुहाईआ। कवण मास आप वडियाए, कवण दिवस वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बणत आप बणाईआ। बणत बणा हरि बनवारी, आपणे विच टिकांयदा। आपणा लेखा लिख लिखारी, सच्चखण्ड दुआरे आप टिकांयदा। चारे वेदां लोकमात यारी, लक्ख चुरासी आप बंधांयदा। वण्डे वण्ड वड संसारी, जगत सागर वेख वखांयदा। सतिजुग त्रेता बन्न्ही धारी, द्वापर आपणी खेल खिलांयदा। कलिजुग बणया जगत जुआरी, आपणा पेशा आप कमांयदा। नौ नौ गई वारी, चार

चार चार कुरलांयदा। चार चार टुट्टी यारी, चार चार मुख भवांयदा। चार चार नार विभचारी, सच श्रंगार ना कोए करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आप सुहांयदा। नव नौ चार पार किनारा, चार नौ नव वेख वखाईआ। नव नईआ वेखे मँझधारा, नौ दुआरे देण दुहाईआ। चार वरन रोवन ज़ारो ज़ारा, चार यारी ना संग वखाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, जुग चौकड़ी रिहा भवाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल करे करतारा, ख़लक समझ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी एकम आप समझाईआ। आपणी एकम हरि निरँकार, आपे आप समझांयदा। विष्नूं सुहाए तेरा दुआर, तेरा जन्म खुशीआं नाल मनांयदा। ब्रह्मा तेरा पूरा करे विहार, तेरा लेखा लेख चुकांयदा। शंकर तेरा करे प्यार, तेरा तेरी गोद सुहांयदा। एका साता एकँकार, निराकार घर वसांयदा। सचखण्ड निवासी खोल्ह किवाड़, धुर दरबारा डेरा लांयदा। कलिजुग वाओ तत्ती हाढ़, सृष्ट सबाई आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरतांयदा। एका कल अकल कल धार, धर धरनी वेख वखांयदा। आकाश प्रकाश हो उज्यार, सच निवासी निवास करांयदा। आपे वसे अद्धविचकार, मध आपणा डेरा लांयदा। आपे लोकमात लए अवतार, नौ सौ चुरानवें

७३७ चौकड़ी जुग भवांयदा। आपे कलिजुग अन्तिम हो त्यार, पंज तत्त ना कोए रखांयदा। आपे निरगुण नूर हो उज्यार, आपणा ७३७

०६ दीपक आप जगांयदा। आपे शब्द रूप वरते विच संसार, सतिगुर साचा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी ०६

किरपा कर, जुग जुग आपणा राह तकांयदा। जुग जुग राह तक्कदा आया, तक्कणहारा बेपरवाह। जुग जुग भगतां पैज रक्खदा आया, निरगुण सरगुण बण मलाह। जुग जुग गुरसिखां पर्दे ढकदा आया, ढाकण को पति आपणा नाउँ रखा। जुग जुग मनमुखां अग्नी साड़दा आया, आपणा लम्बू आपे ला। जुग जुग साचे पौड़े चढ़ चढ़ दरस दखाया, उच्च महल्ल अटल डेरा ला। जुग जुग जीवां जंतां माया ममता रौला विच रखाया, आपणा पर्दा ओहला ना सके चुका। जुग जुग आपणा ढोला गौंदा आया, सतिजुग त्रेता द्वापर बावन रामा कृष्ना दए सलाह। जुग जुग आपणा बोला गौंदा आया, आपणा कलमा नबी पढ़ा। जुग जुग डुबदे तरौंदा आया, सतिनाम मन्त्र इक्क पढ़ा। जुग जुग आपणी फ़तह गजौंदा आया, वाहिगुरू आपणा नाउँ रखा। जुग जुग विछड़े मेल मिलौंदा आया, सोहँ आपणा रूप वटा। जुग जुग आपणा नां धरौंदा आया, कलिजुग अन्तिम दए समझा। पहली हाढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एकम दए वखाया। एका एकम आई जग, हरि साचा आप लिआंयदा। इक्क सत्त वसे उप्पर शाह रग, घर साचे डेरा लांयदा। इक्क सत्त बन्न्हे सति तग, त्रैगुण माया फंद कटांयदा। इक्क सत्त प्याए मदि पार कराए हद्द, राए धर्म ना मुख वखांयदा। पहली हाढ़ विष्नूं तेरी वेखी

यद, तेरा बंस आप उपांयदा। गुरमुख सज्जण साचे सद्द, आप आपणे अंग लगांयदा। ब्रह्मा तेरे गेड़े विच्चों कढ्ढ, आपणी झोली पांयदा। शंकर तेरी लाड़ी मौत ना लडाए कोई लड, चित्रगुप्त ना हिसाब वखांयदा। दरगाह साची सचखण्ड दुआरे सच निशाना दित्ता गड्ड, ना कोई जड़ उखड़ांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ कुड़यारा फाह दित्ता वढ्ढ, नाम खण्डा आप चलांयदा। सतारवें दिन हरिसंगत कर देणी अड्ड, सम्मत सतारां आप सुहांयदा। गुरसिखां अंदर वड़ वेखे अन्धेरी खड्ड, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विश्व रूप आप वखांयदा। विष्नूं तेरा सच तिवहार, हरि साचा सगन मनांयदा। गुरमुखां करे सच प्यार, साची सेवा आप कमांयदा। त्रैगुण माया बणे पनिहार, जगत पनिहारी दर दुरकांयदा। तेरा काया कंचन गढ़ बणाए आप सुन्यार, सच कुठाली आपे पांयदा। विष्नूं बणया भगवन यार, भगत साचे मेल मिलांयदा। चार कुंट कराए जै जै जैकार, एका डंका नाम वजांयदा। सतारां दिवस रातीं सुतिआं गुरसिखां गल जा जा पाए हार, औंदा जांदा दिस ना आंयदा। नारी कन्त करे प्यार, आत्म सेजा आप हंढांयदा। आप आपणा उत्तों वार, हौला भार सर्ब करांयदा। दुःख भञ्जण मिल्या मीत मुरार, नेत्र अञ्जण नाम पांयदा। साचा सज्जण विच संसार, विछड़ कदे ना जांयदा। डुब्बदे पाथर देवे तार, पाहन आपणा चरन छुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एकम रंग रंगांयदा। एकम हरि रंग रंगया, रंगणहार निरँकारा। विष्नूं दुआरा एका मंगया, प्रभ साचा सिरजणहारा। आदि जुगादि ना भुक्खा नँग्यां, भरया रहे सद भण्डारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल विच संसारा। खेल अपारा विच संसारा, हरि निरँकारा आप करांयदा। निरगुण निरगुण लै अवतारा, सरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। आपणी रुत्तड़ी कर प्यारा, रुत्ती रुत्त आप सुहांयदा। आपणी फुल्ल फुलवाड़ी पाए सारा, पत डाली वेख वखांयदा। माली बणे हरि निरँकारा, मालण जोत अकालण नाउँ धरांयदा। सच खारी सीस उठाए सेवा करे अगम्म अपारा, लोकमात फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एकँकार, करे खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह आपणा नाउँ धरांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंज तत्त ना कोए निशान, जगत विद्या ना कोए ज्ञान, पुतर धीआं ना कोए माण, गुरसिख बणाए सच निशान, दो जहान आप झुलांयदा।

७३८
०६

❋ २ हाढ़ २०१७ बिक्रमी सरैण सिँघ दे घर जंडिआला गुरू ज़िला अमृतसर ❋

पुरख अगम्मड़ा खेल अपारा, निराकारा आप करांयदा। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। घर

विच घर कर त्यारा, थिर दरबारा नाउँ धरांयदा। निर्मल जोती कर उज्यारा, दीपक दीआ आप टिकांयदा। एका राग इक्क धुन्कारा, नाद अनादी शब्द अलांयदा । साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शाहो भूप रूप वटांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, अकल कल आप वरतांयदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, हुक्मी हुक्म आप फिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहांयदा। धाम अगम्मड़ा पुरख अकाल, जूनी रहित आप सुहाईआ। एका वसे दीन दयाल, दूसर संग ना कोए रखाईआ। अलक्ख निरँजण अवल्लड़ी चाल, अगम्म अथाह आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धारा आप बंधाईआ। निरगुण धारा हरि भगवान, आपणी आप चलांयदा। सचखण्ड दुआरे सच निशान, थिर घर साचे आप झुलांयदा। आदि जुगादी खेल महान, भेव कोए ना पांयदा। रूप रंग ना सके कोए वखाण, नेत्र नैण ना कोए दरसांयदा। सच तख्त निवासी वाली दो जहान, सच सिँघासण सोभा पांयदा। एका वसे इक्क मकान, दूजा दर ना कोए खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। कल वरतंता हरि भगवन्त, पुरख अबिनाश वड्डी वड्याईआ। आपे जाणे आदि अन्त, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। निरगुण बणाए निरगुण बणत, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण नारी निरगुण कन्त, निरगुण निरगुण सेज हंढाईआ। निरगुण होए सोभावन्त, घर साचे वज्जे वधाईआ। निरगुण लेखा आदि अन्त, निरगुण आपणा भेव खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निर्भय आपणा नाउँ रखाईआ। निर्भय हरि हरि नाउँ रक्ख, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। आप आपणा कर प्रतक्ख, आप आपणी खेल खिलांयदा। लेखा जाणे अलक्खणा अलक्ख, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह आपणा नाउँ जणांयदा। आपे वसे सभ तों वक्ख, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे घर वखांयदा। आपणी दिशा आपे नस्स, आपणा पन्ध मुकांयदा। आपणे मन्दिर आपे वस, सचखण्ड दुआर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार बंधांयदा। आपणी धार हरि निरँकार, आदि आदि बंधाईआ। निरगुण निरगुण कर अकार, निरगुण निराकार समाईआ। निरगुण जोत जोत उज्यार, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। निरगुण नाद नाद धुन्कार, निरगुण शब्द शब्द शनवाईआ । निरगुण महल्ल अटल मुनार, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। निरगुण थिर घर बणाए इक्क दरबार, दर दरवाज़ा ना कोए वखाईआ। निरगुण सुत निरगुण दुलार, निरगुण पिता पूत अख्वाईआ। निरगुण मात दए आधार, दाता दानी बेपरवाहीआ। निरगुण बैठ इक्क इकांत सच्ची सरकार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, थिर घर साचा आप वड्याईआ। थिर घर साचा हरि सुहञ्जणा, आपणा

गढ़ बणाया। जोत जगाए आदि निरँजणा, उप्पर चढ़ आसण लाया। आदि जुगादी दर्द दुःख भय भञ्जणा, निर्भय आपणा नाउँ धराया। सदा सुहेला साचा सज्जणा, ना मरे ना जाया। ना घड़या ना भज्जणा, घड़ण भन्नणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सच महल्ला पुरख अबिनाशी वसया इक्क इकल्ला, दूसर संग ना कोए रलाया। सचखण्ड दुआरा साचा थान, हरि साचा आप सुहांयदा। प्रगट हो श्री भगवान, अबिनाशी करता खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजण नौजवान, हरि पुरख निरँजण मेल मिलांयदा। आदि निरँजण जोत महान, जोती जोत डगमगांयदा। पारब्रह्म हो प्रधान, आप आपणी खेल वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार करांयदा। अगम्म अगम्मड़ा पुरख अकाला, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड निवासी वसे सच सच्ची धर्मसाला, थिर दरबारा सोभा पाईआ। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाला, आप आपणी आप रखाईआ। संग रखाए काल महांकाला, दीन दयाला बेपरवाहीआ। आपणा फल लगाए आपणे डाल़ा, पत डाल़ी आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्मड़ी कार आप कमाईआ। अगम्मड़ी कार करावणहारा, आपणी खेल खिलांयदा। सचखण्ड खोल़ दुआरा, घर साचे आसण लांयदा। साची सेजा कर त्यारा, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। मेल मिलावा कन्त भतारा, घर साचा सगन मनांयदा। आपे अंदर आपे बाहरा, गुप्त ज़ाहरा रूप धरांयदा। आपे मात पित बण वणजारा, साची वस्त आपणे हट्ट टिकांयदा। आपे प्रगट होए सुत दुलारा, शब्दी नाउँ धरांयदा। आपे शाहो भूप बण सिक्दारा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणांयदा। आपे निउँ निउँ करे निमस्कारा, सीस जगदीश आप झुकांयदा। आपे बेऐब होए परवरदिगारा, नूरो नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, पुरख अबिनाशा आपणा आप करांयदा। सुत दुलारा कर त्यार, हरि साचा सच समझांयदा। तेरा रूप मेरी धार, तेरा रंग सर्ब समांयदा। तेरा मृदंग सुणे सच सरकार, सति पुरख निरँजण घर साचे आप सुणांयदा। तेरा अंग करे अंगीकार, आप आपणे अंग लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत दुलारे एह समझांयदा। शब्द सुत कर ध्यान, हरि साचा सच जणांयदा। पुरख अबिनाशी वड मेहरवान, आप आपणी दया कमांयदा। चरन कँवल वखाए इक्क ध्यान, दूसर ओट ना कोए रखांयदा। मेरा हुक्म तेरा फ़रमाण, दर दरबान विच रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क रखांयदा। साची सिख्या सुण ला कन्न, हरि साचा सच समझांयदा। पुरख अकाल तेरा बणया जननी जन, मात पित ना कोए वखांयदा। पंज तत्त ना दिसे तन, त्रैगुण ना वण्ड वण्डांयदा।

दूसर कोए ना देवे डंन, ना कोई घड़े भन्न वखांयदा। कदे वसेरा ना होवे छप्पर छन्न, मन्दिर अंदर बन्द ना कोए करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त झोली पांयदा। साची वस्त पारब्रह्म, एका झोली पाईआ। शब्द शब्दी ना मरे ना पए जम्म, जून अजूनी ना कोए फिराईआ। ना खुशी ना कोए ग़म, चिंता सोग ना कोए वखाईआ। तेरा जाणे तेरा कम्म, तेरे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। लोआं पुरीआं बेड़ा बन्न्ह, रवि ससि कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका अक्खर दए पढ़ाईआ। साची सिख्या सुण सुत दुलारा, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। पुरख अबिनाशी तेरा धाम न्यारा, निराकारा वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं बणे मुनारा, मंडल मंडप आप उपजांयदा। रवि ससि उपजाए चन्न सतारा, आकाश प्रकाश आप रखांयदा। आपे वणज करे वणजारा, आप आपणा हट्ट खुल्ह्यांयदा। आपे विश्व पाए सारा, विष्नूं आपणी कल धरांयदा। आपे अमृत जल जल धारा, नाभी बन्द वखांयदा। आपे प्रगट हो आए बाहरा, कँवल कँवला रूप वटांयदा। आपे पारब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, ब्रह्म आपणा नाउँ धरांयदा। आपे शंकर दए हुलारा, सुन अगम्म आप समांयदा। आपे तिन्नां वसे बाहरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्ह्यांयदा। दर दरवाज़ा खोल्ह्या, शब्द सुत नौजवान। विष्नूं अंदर वड़ वड़ बोलया, ब्रह्मे देवे इक्क ज्ञान। शंकर आपणे कंडे तोलया, तोलणहार श्री भगवान। निरगुण निरगुण बदले चोलया, दिसे ना कोए निशान। इक्क सुणाए साचा ढोलया, सो पुरख निरँजण वड मेहरवान। हँ रूप आपे मौलया, अंस बंस कर पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे पाए आपणी आण। त्रै त्रै मीता इक्क अतीता, त्रै त्रै धार बंधाईआ। दरगाह साची बैठा ठांडा सीता, सांतक सति रूप वटाईआ। सार शब्द चलाई आपणी रीता, पतित पुनीता बेपरवाहीआ। आपे बणया साचा मीता, करे खेल रथ रथवाहीआ। चलाए शब्द नाम अनडीठा, रूप रंग ना कोए वखाईआ। आपणा रंग आपणा रूप आपणा भेख आपे कीता, वेस अवल्लड़ा आप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव लए उपजाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार, शब्द शब्दी हुक्म सुणांयदा। अगम्म अगम्मड़ा भेव न्यार, हड्ड मास नाड़ी चमड़ा ना कोए वखांयदा। अम्मी अम्मड़ा ना कोए विच संसार, मात पित ना कोए बणांयदा। दमड़ी दमड़ा ना करे प्यार, माया रूप ना कोए वटांयदा। अगम्मड़ी करे अगम्मड़ा कार, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। आपणा खोल्ह सच भण्डार, सति सतिवादी आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया पाए भिच्छया, भिखक भिच्छया इक्क वखांयदा। साची भिच्छया हरि करतार, आपणी आप

उपाईआ। त्रैगुण माया कर त्यार, त्रै त्रै वण्ड वण्डाईआ। सतो करे सति शृंगार, विष्नूं अंग लगाईआ। रजो देवे इक्क आधार, ब्रह्मे झोली पाईआ। तमो तत्त इक्क विचार, शंकर रंग रंगाईआ। तिन्नां मेला हरि निरँकार, त्रैगुण माया जोड़ जुड़ाईआ। शब्द सुत बोल जैकार, एका नाअरा दए सुणाईआ। तिन्नां करे ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोए वखाईआ। साची सेवा सेवक करे विचार, चाकर चाकरी इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि करता इक्क अख्वाईआ। आदि करता करने जोग, निराकार हरि अख्वांयदा। आपणा करे आपे भोग, आप आपणा संग रखांयदा। आपे करनहार संजोग, दर घर साचा आप सुहांयदा। आप उपजाए आपणा सच सलोक, आप आपणा राग अल्लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा नाम इक्क वखांयदा। साचा नाम अनमोल, हरि साचे आप उपजाया। आपणे कंडे आपे तोल, विष्नूं झोली पाया। विष्नूं रहिणा सदा अडोल, पुरख अबिनाशी सीस हथ्थ टिकाया। मेरी वस्त तेरे कोल, दर तेरा बन्द वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द शब्दी वेख वखाया। ब्रह्मे वेख कर ध्यान, हरि साचा सच समझांयदा। मेरा नाम तेरी दुकान, साचा हट्ट खुल्लांयदा। मेरा रूप तेरा निशान, दो जहान आप झुलांयदा। मेरा नाद तेरी धुनकान, धुन धुन विच रखांयदा। मेरा दर तेरा माण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा हुक्म जणांयदा। शंकर सुण लै अंगड़ाई, हरि साचे सच जणाया। हरि शब्द करी कुड़माई, एका बन्धन बंध बंधाया। तेरी सेवा सेव लगाई, सेवक सेवा दए समझाया। वेखणहारा सभनीं थाँईं, भुल्ल कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा सुणाया। विष्न ब्रह्मा शंकर हरि मेहरवाना, एका शब्द करे जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल महाना, महिमा गणत गणी ना जाईआ। शाहो भूप वड सुल्ताना, तख्त ताज रिहा सुहाईआ। त्रैगुण माया कर प्रधाना, त्रै त्रै अंग लगाईआ। एका बध्धा साचा गाना, साचा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दुआरे बैठा हुक्म सुणाईआ। सचखण्ड दुआरा वसया, हरि साचा आप वसांयदा। आपणे मन्दिर बह बह हस्सया, आप आपणा वेख वखांयदा। आपणे रस आपे होए रसया, रसना रस ना कोए जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा आप वड्यांअदा। दर घर साचा वड्डी वडियाई, सो पुरख निरँजण सोभा पांयदा। शब्द सुत वज्जी वधाई, घर साचे मंगल गांयदा। विष्नूं विश्व रिहा समझाई, नाम भण्डारा झोली पांयदा। जगत वणजारा बण सभनीं थाँईं, घर घर रिज़क पुचांयदा। ब्रह्मे फड़ उठाए बाहीं, सच हलूणा एका लांयदा। एका विद्या रिहा सिखाई, चारे वेदां मुख सालांहयदा। तेरे हथ्थ देवे वडियाई,

ब्रह्म रूप पारब्रह्म तेरी झोली पांयदा। लक्ख चुरासी रचन रचाई, रच रचना वेख वखांयदा। काया माटी कच्च बणाई, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त तेरी झोली पांयदा। मन मति बुध विच धराई, निरगुण आपणी वण्ड वण्डांयदा। नौ दुआरे खोल्ह वखाई, दसवां बन्द रखांयदा। ब्रह्म अणस ना रूप जणाई, आत्म आपणा रंग रंगांयदा। परम आत्म संग निभाई, ईश जीव वेख वखांयदा। मन्नणा हुक्म इक्क गोसाँई, गहर गम्भीर आप समझांयदा। लक्ख चुरासी वेखीं चाँई चाँई, चार कुंट दहि दिशा वण्ड वण्डांयदा। शंकर सोया रहिण ना पाई, पारब्रह्म आप जगांयदा। जो घड़या सो भन्न वखाई, थिर दिस कोए ना आंयदा। चाकर बण के सेव कमाई, साची सिख्या इक्क सिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना रचाए सच्च, सच सच्चा खेल खिलांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव मन्नया भाणा, दोए जोड़ करन निमस्कारया। तूं साहिब सुल्तान पातशाह शाह सच्चा राणा, हउँ तेरे दरबार दरबानयां। तेरी मन्नीए सदा आणा, तेरा हुक्म धुर फ़रमाणयां। तूं रक्खणा चरन दुआरे साचा माणां, हउँ बालक बाल निधानयां। तेरा नाम मिले एका गाणा, दूसर दिसे ना राग तरानयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका देवे धुर फ़रमाणयां। धुर फ़रमाणा साचा बोल, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। हरि पुरख निरँजण वजाए एका ढोल, एकँकारा ताल वखाईआ। आदि निरँजण पर्दा आपणा देवे खोल्ह, श्री भगवान वेख वखाईआ। अबिनाशी करता करे सदा चोल्ह, पारब्रह्म होए कुड़माईआ। ब्रह्म रहिणा मात अडोल, ना कोई डोले डोल डुलाईआ। अगम्म अगम्मड़ा वसे कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। विष्नूं अंदर आपे मौल, कँवल तेरी नाभ खुल्हाईआ। तेरी रचना रचे उप्पर धवल, जल बिम्ब आप टिकाईआ। आपणी इच्छया जाए मवल, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त रिहा समझाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव दोए जोड़ दर मंगण बण भिखारया। पारब्रह्म तेरी साची लोड़, तेरा दर हउँ वणज वणजारया। कवण सु वेला साडी मिटे औड़, अमृत झिरना तेरा झिरे अगम्म अपारया। कवण रूप जाए बौहड़, लोकमात विच संसारया। कवण रंग वेखे दौड़ दौड़, अजूनी रहित बेऐब परवरदिगारया। कवण मंडल लाए पौड़, गगन गगनंतर दए सहारया। कवण तन्द बंधे डोर, खिच्ची आए चरन दवारया। कवण राज कवण दिसे ज़ोर, कवण जुगत नर निरंकारया। कवण रूप करें प्रकाश अन्ध घोर, लेखा वेखें सूरज चन्न सतारया। कवण संग लक्ख चुरासी निरगुण सरगुण देवें तोड़, कवण बेड़ा पार कराए जगत किनारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, ढह पए तेरे दवारया। पुरख अबिनाशी साचा मीता, एका शब्द सुणांयदा। विष्नूं रहिणा सदा अतीता, हरि साचा वेख वखांयदा। ब्रह्मे तेरी ब्रह्म रीता, पारब्रह्म आप चलांयदा। शंकर

७४४ ०६ ७४४ ०६

तेरा जगत अंगीठा, आपणे तत्त आप तपांयदा। लक्ख चुरासी हस्त कीटा, जून अजूनी आप उपजांयदा। घर विच धाम बणाया इक्क अनडीठा, साचा मन्दिर आप सुहांयदा। गुरदुआर ना मन्दिर मसीता, शिवदुआला मट्ठ ना कोए रखांयदा। कंचन गढ़ आपे कीता, दस्म दुआरी सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रूप आप सुहांयदा। विष्न ब्रह्मे शिव हरि समझाया, अन्तर इक्क ज्ञान दृढ़ाईआ। निरगुण आपणा रूप धराया, सार शब्द वज्जे वधाईआ। सचखण्ड दुआरा बंक बणाया, थिर घर बैठा आसण लाईआ। तख्त ताज आप वड्याआ, शहनशाह करे सच्ची पातशाहीआ। सीस ताज इक्क टिकाया, पंचम मुखी बेपरवाहीआ। सत्त रंग निशाना रिहा झुलाया, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाया, हुक्मी हुक्म करे खेल बेपरवाहीआ। ब्रह्मा विष्न शिव तेरा रूप वटाया, अंस बंस वड्डी वड्याईआ। लक्ख चुरासी गोद बहाया, लोकमात वेख वखाईआ। चौदां लोक हट्ट खुल्हाया, त्रैभवण आप समाईआ। नाम नगारा डंक वजाया, एका नाद हरि अल्हाईआ। बोध अगाध भेव खुल्हाया, ब्रह्मे करे पढ़ाईआ। चारे वेदां चारे मुख सालाहया, चारे कुंट फेरा पाईआ। चारे जुग गेड़ दवाया, चार वरनां वेख वखाया, चारे बाणी रूप वटाईआ । चारे खाणी विच समाया, चारे यारी बन्धन पाया, परमानंदन आप दसाईआ। सच सुहागी छन्दन गाया, बत्ती दन्दन ना ताल वजाया, रसना जिह्वा ना कोए जणाईआ। शब्द अगम्मी तार हलाया, सच सितार आप वजाया, जगत सारंग ना हथ्थ उठाईआ। पुरख अकाल वेख वखाया, दीन दयाल दया कमाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। निष्अक्खर वक्खर ब्रह्म पढ़ना, ब्रह्म पारब्रह्म समझांयदा। साचे पौड़े एका चढ़ना, अद्धविचकार ना कोए अटकांयदा। सचखण्ड दुआरे साचे वड़ना, सच दुआरा आप जणांयदा। श्री भगवान लड़ एका फड़ना, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वण्डण वण्ड वण्डांयदा। साची वण्ड हरि निरँकार, आपणी आप वण्डाईआ। ब्रह्मे विद्या दित्ती वेद चार, वेद वेदांत मुख सालाहीआ। आपणा भेव रक्खे न्यार, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। देवे हुक्म सच्ची सरकार, सिर सिर मन्नणा सभनीं थाँईंआ। नौ नौ चार चौकड़ी खेल विच संसार, मन मनवन्त देण गवाहीआ। एका साता करे प्यार, एकम आपणी कल वरताईआ। चार चार चार जुग उतरन पार, चार चार वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी पसर पसार, अलक्ख अलक्खणा खेल खलाईआ। आवे जावे विच संसार, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग वखाईआ। निरगुण सरगुण खेल अपारा, हरि साचा सच सुहांयदा। पारब्रह्म प्रभ लै अवतारा, जुग जुग वेस वटांयदा। गुर गुर रूप वरते विच संसारा, सतिगुर आपणा रूप

दरसांयदा। सन्तन देवे नाम भण्डारा, साची वस्त झोली पांयदा। भगत वखाए इक्क दुआरा, सच दुआरा आप खुल्हांयदा। गुरमुखां देवे हरि हुलारा, हरी हरि हरि मेल मिलांयदा। गुरसिखां करे सच प्यारा, आत्म साची सेज हंढांयदा। जोत निरँजण कर उज्यारा, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। शब्द सुणाए सच्ची धुन्कारा, अनहद नाद वजांयदा। अमृत बख्शे ठंडी ठारा, भर प्याला जाम प्यांअदा। काग उडाए हँस डारा, कागों हँस रूप वटांयदा। खोल्हणहारा बन्द किवाड़ा, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। पंज तत्त विकारा अग्नी हाढ़ा, आसा तृष्ना आप मिटांयदा। दस्म दुआरी कर प्यारा, हरि आपणा खेल खिलांयदा। सुरत सवाणी पावे सारा, शब्द हाणी मेल मिलांयदा। नारी कन्त सोहण इक्क दुआरा, एका सेज हंढांयदा। एका मीत इक्क मुरारा, एका सखीआं मंगल गांयदा। विष्न ब्रह्मे शिव तेरी सुणे अन्त पुकारा, आपणा कीता कौल आप निभांयदा। चार जुग करे आर पारा, नौ नौ चार वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ नौ चार चौकड़ी जुग, आपणा गेड़ा आप दवांयदा। जुग जुग गेड़ा आप दवाउणा, हरि साचे कल वरताईआ। गुर पीर अवतार आप अख्वाउणा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। शब्दी शब्द नाम धराउणा, शब्दी शब्द करे जणाईआ। सति पुरख निरँजण डंक वजाउणा, उच्ची कूके दए दुहाईआ। सच सलोक एका गाउणा, सो पुरख निरँजण बणत बणाईआ। हँ रूप सर्ब दरसाउणा, ब्रह्म ईश जीव करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग करता आप अख्वाईआ। जुग करता हरि समरथ, सति सतिवादी नाउँ धरांयदा। अबिनाशी करता चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही वेस वटांयदा। देवणहारा साची वथ, जुग जुग आपणी वण्ड वण्डांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर दए मथ, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पाए नथ्थ, गगन पातालां वेख वखांयदा। अंडज जेरज करे भठ्ठ, उत्भुज सेत्ज फोल फुलांयदा। आपे जाणे आपणा घाट, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। पान्धी पाही आपणी जाणे वाट, आपणा पैंडा आप मुकांयदा। चौदां तबकां वेखे हाट, चौदां लोकां खोज खुजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कमांयदा। जुग जुग कार करे करतारा, कादर करता करीम आपणा नाउँ धराईआ। लोकमात लै अवतारा, करे खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम दए हुलारा, चारे वरनां वेख वखाईआ। चारे कूटां पावे सारा, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचे दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा धुर दरगाह, दर दरवेशा आप खुल्हांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर बणया आप मलाह, जगत नईया आप चलांयदा। बावण रामा रूप वटा, कान्हा कृष्ना खेल खिलांयदा। तीर कमाना हथ्थ उठा, रथ रथवाही रथ चलांयदा। अन्तिम लेखा गया मुका, लहिणा लहणे

झोली पांयदा। भगत भगवन्त लए मिला, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। स्वच्छ सरूपी दरस दिखा, जगत तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। नेत्र ज्ञान इक्क खुल्हा, निज नेत्र आपणा रूप दरसांयदा। साचे पौड़े दए चढ़ा, चौथे पद समांयदा। पंचम धुन राग अल्हा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार करांयदा। जुग जुग कार करन कारन करतार, कलिजुग आपणा खेल खलाईआ। ईसा मूसा कर त्यार, संग मुहम्मद चार यार एका घर करी कुड़माईआ। अञ्जील कुरानां दए आधार, कलमा अमाम आप पढ़ाईआ। नबी रसूलां कर उरधार, नूर नुराना नूर दरसाईआ। हक हकीकत वखाए सांझा यार, बेऐब परवरदिगार आपणा नाउँ धराईआ। दो जहानां पावे सार, हक हकीकत वेखे थाउँ थाँईंआ। सालस बणे विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। एकँकार वेस अवल्लड़ा, आदि जुगादि करांयदा। गुरमुखां करे भारी पलड़ा, बेमुख हौले भार रखांयदा। आपणा मार्ग दस्से सुखलड़ा, साचे मार्ग आप चलांयदा। नेहचल धाम वखाए अटलड़ा, सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा। आपणी जोती आपे रलड़ा, शब्द शब्दी ढोला गांयदा। आपे होए अछल अछलड़ा, वल छल धारी आपणा खेल खिलांयदा। आपे निरगुण सरगुण अंदर सच सिँघासण मलड़ा, दर घर साचे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप निराकार, आदि जुगादी इक्क अवतार, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। हरि अवतारा खेल अपारा, निरगुण धारा नर हरि आपणी आप चलांयदा। कलिजुग अन्तिम पावे सारा, रूप अनूप सच्ची सरकारा, रेख भेख ना कोए वखांयदा। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़ा, आपे बन्न्हे आपणी धारा, पंज तत्त कर प्यारा, दीवा बाती आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, घर साचा इक्क वखांयदा। घर सच्चे साहिब सुल्तान, सति पुरख निरँजण एका वसया। सतिगुर पूरा हो मेहरवान, लोकमात फिरे नस्सया। धुरदरगाही सच निशान, हरिजन साचे एका दस्सया। शब्द सुणाए साचे कान, मेटे रैण अन्धेरी मस्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे रवि सस्या। लेखा जानणहारा हरि निरँकार, दूसर अवर ना कोए जणांयदा। लोकमात खेल अपार, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। नाम सति बोल जैकार, नानक आपणा रंग रंगांयदा। त्रैगुण माया वसया बाहर, आप आपणी कल वरतांयदा। चार वरनां करे प्यार, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान ना कोए वखांयदा। मुल्लां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर देवे इक्क ज्ञान, अञ्जील कुरान एका सबक पढ़ांयदा। पंडत पांधे वेखे मार ध्यान, निगहवान आपणा नाउँ धरांयदा। नाता तोड़े पंज शैतान, जो जन सरनाई आंयदा। इक्क उपजाए ब्रह्म ज्ञान, आत्म विद्या इक्क पढ़ांयदा। अमृत बख्शे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख गवांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर अवतार रूप अनूप आप वटांयदा। नानक सतिगुर सर्ब जीअ दाता, लोकमात वेख वखाईआ। चौथे जुग सति निशान झुलाता, बोध अगाध वड्डी वड्याईआ। मिटे रैण अन्धेरी राता, साचा चन्द इक्क चढ़ाईआ। सतिनाम साची गाथा, ऊँचां नीचां करे पढ़ाईआ। सर्ब जीआं दा एको पिता माता, पुरख अकाल रिहा समझाईआ। बिन सतिगुर पूरे वेले अन्त ना पुच्छे कोई वाता, राए धर्म दए सज़ाईआ। मानस जन्म पूरा करे ना कोई घाटा, कलिजुग जूए जन्म गया हराईआ। लेखा चुक्के तीर्थ ताटा, जिस सतिगुर मिल्या बेपरवाहीआ। जोत जगाए काया माटा, दिवस रैण होए रुशनाईआ। लेख जाणे मस्तक लिलाटा, लेखा लिख्या दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग एका आपणी कल वरताईआ। कलिजुग कल नानक धार, निरगुण सरगुण आप चलांयदा। सृष्ट सबाई कर प्यार, नौ खण्ड पृथ्मी गले लगांयदा। सत्तां दीपां हो उज्यार, सति सतिवादी हुक्म सुणांयदा। हरि का शब्द सच्चा प्यार, साचा शब्दी मात लगांयदा। हरि का नाउँ मीत मुरार, सगला संग वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणी कल वरतांयदा। सतिगुर नानक चार वरन जणाया, ऊँच नीच रहिण ना पाईआ। जो घड़या सो भन्न वखाया, थिर कोए दिस ना आईआ। हँकारीआं गढ़ दए तुड़ाया, नाम खण्डा एका चमकाईआ। ब्रह्मंडां खण्डां खोज खोजाया, जेरज अंडां फोल फोलाईआ। सद बख्शंद आपणा नाउँ धराया, गुणी गहिन्दा बेपरवाहीआ। मनमुख जीवां निन्दया रिहा कराया, निन्दक निन्दया मुख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। नानक हरि हरि जाणया, सचखण्ड निवासी गहर गम्भीर। आपणा मूल आप पछाणया, सति होया सांत सरीर। आपे चले हरि हरि भाणया, चोटी बैठा चढ़ अख़ीर। पाया पुरख इक्क सुल्तानया, वड जोद्धा सूरबीर। साचे घर होया परवानया, अमृत मिल्या ठंडा सीर। गुणवन्ता गुण निधानया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथे जुग लेखा जाणे पीरन पीर। एका जोत जोत अकाला, अकल कला अख्वाईआ। एका जोत दस दस माला, मूंड मुन्नयां आप लटकाईआ। एका जोत त्रै त्रै काला, त्रै दरसी खेल खलाईआ। एका जोत सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड वसे बेपरवाहीआ। एका जोत काल महांकाला, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोती खेल अपारा, नानक गोबिन्द साची धारा, सिँघ आपणा रूप वटाईआ। नानक गोबिन्द हरि करतार, माटी तत्त भेव ना राया। शब्द डंका अपर अपार, बाज़ीगर नाटी खेल खलाया। कलिजुग हाटी वणज वपार, तीर्थ ताटी वेख वखाया। औखी घाटी चढ़नेहार, आपणा पैंडा रिहा मुकाया । उच्ची कूक करे पुकार, सृष्ट सबाई दए समझाया।

कलिजुग अन्तिम पावे सार, वड दाता बेपरवाहया। निहकलंक लए अवतार, नानक निरगुण इक्क जणाया। गोबिन्द सच्चा शाह अस्वार, साचा घोड़ा रिहा दौड़ाया। लोआं पुरीआं आर पार, आपणे चरनां हेठ रखाया। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, जोती जोड़ा शब्द मिलाया। पंचम मीता मीत मुरार, भर प्याला जाम प्याया। आपे ढह ढह पए दुआर, आपणी झोली अग्गे डाहया। जीव जंत ना पाए सार, पुरख अकाल खेल रचाया। कलिजुग अन्तिम आए वार, गुर गोबिन्द आपणा तन लए छुपाया। गुरसिखां अंदर करे जोत आकार, निरगुण नूर होए रुशनाया। उच्ची कूके शब्द जैकार, साचा नाअरा दए सुणाया। कलि कल्की लै अवतार, कल कलिका रूप वटाया। सम्बल नगरी धाम न्यार, घर साचे डेरा लाया। जोत इक्ग्री जगे विच संसार, तेल बाती ना कोए रखाया। कमलापाती बणे सांझा यार, सगला संग इक्क रखाया। अन्धेरी राती होए धूंआँधार, रवि ससि मुख शर्माया। राज राजान शाह सुल्तान जायण हार, कलिजुग अन्तिम कूके दए दुहाया। चार वरन रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराया। धरती कूके करे पुकार, काल खुल्ह्ड़े केस वखाया। पीर फ़कीर ना कोए सहार, अल्ला राणी नैण मटकाया। पुरख अबिनाशी पावे सार, जोती जामा भेख वटाया। प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां वेख वखाया। साचे सन्तां करे प्यार, काया मन्दिर खोज खोजाया। भगतां देवे भगती आधार, भगवन आपणा मेल मिलाया। गुरमुखां करे तन श्रंगार, नाम बस्त्र एका पाया। गुरसिखां अमृत देवे ठंडा ठार, नाम निधाना जाम प्याया। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढे बाहर, आप आपणी गोद उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रंग रंगाया। रंग रतड़ा पारब्रह्म, आदि निरँजण वड वड्याईआ। पुरख अबिनाशी ना मरे ना पए जम्म, श्री भगवान मात गर्भ ना डेरा लाईआ। सो पुरख निरँजण ना ख़ुशी ना कोई ग़म, हरि पुरख निरँजण आलस निन्दरा विच ना आईआ। पारब्रह्म पवण स्वासी लए ना दम, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। आपे करे आपणा कम्म, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। लेखा जाणे छप्परी छन्न, उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँग्घी कंदर वेख वखाईआ। जल थल महीअल बेड़ा देवे बन्न्ह, समुंद सागर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जुग जुग वडियाई हथ्थ करतार, ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमांयदा। हुक्मे अंदर गुर पीर अवतार, साध सन्त फेरी पांयदा। करे खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर आपणा नाउँ धरांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, घट घट भाण्डे आप बणांयदा। एका वस्त रक्खे हरि थार, दर घर साचे आप टिकांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर उज्यार, ईश जीव बणत बणांयदा। आपे घड़े भन्ने बण ठठयार, कोलू चक्की चक्क आप भवांयदा। आपे रक्खे तिक्खी

धार, आपे आपणा मुख भवांयदा। आपे सुख जाणे संसार, आपे दुक्खी दुःख फिरांयदा। आपे माणस मानुख लए उभार, आपे ख़ाकी ख़ाक मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी खेल अपारा, आवे जावे वारो वारा, जुगा जुगन्तर लै अवतारा, लोकमात वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल कर, साचे मन्दिर बैठा वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़ दिस किसे ना आंयदा।

✻ ३ हाढ़ २०१७ बिक्रमी सुरैण सिँघ दे घर जंडिआला गुरु ज़िला अमृतसर ✻

गुरसिख जोबन वन्त, जोबन हरि हरि नाम वड्याईआ। गुरमुख सोभावन्त, घर सच शंगार कराईआ। गुरमुख वर मंगे साचा कन्त, सति पुरख निरँजण इक्क रघुराईआ। गुरमुख आसा मनसा पूर करंत, पारब्रह्म वड वड्याईआ। गुरमुख इक्क वखाणे मणीआ मंत, जिह्वा रसना हरि हरि गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन जोबन वेख वखाईआ। गुरसिख जोबन रतड़ा, लाल गुलाला रंग अपार। दर घर साचे बैठा वक्खरा, आप आपणी कर विचार। सगल विसूरा जगत लथड़ा, चिंता सोग ना कोए प्यार। लाल रंगीला रंग चढ़ाए हथड़ा, जगत मैंहदी होए ख्वार। मेल मिलावा कमलापतड़ा, पति पतिवन्ता हरि करतार। इक्क चढ़ाए साचे रथड़ा, रथ रथवाही सच्चा सिक्दार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन जोबन दए हुलार। हरिजन जोबन जगत जवानी, सतिगुर सच्ची सरनाईआ। शब्द मिलावा एका हाणी, हरि हरि कन्त मनाईआ। घर अंदर अमृत ठंडा पाणी, नीर सीर वहाईआ। बंक दुआरा अनहद बाणी, दिवस रैण आप जणाईआ। सच मकाना पद निरबानी, पारब्रह्म आप वखाईआ। अकथ कथ सुणाए कहाणी, कथनी कथ ना सके राईआ। गुरमुख बणाए साची राणी, सच महल्ल आप वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन जोबन दए वड्याईआ। हरिजन जोबन साचा सुख, सुख सागर रूप समांयदा। सतिगुर मेटे हउमे दुक्ख, घर प्रीआ प्रीतम मेल मिलांयदा। दरस दिखाए पड़दा चुक, नेत्र नैण मटकांयदा। बाल अवस्था जो रिहा लुक्क, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। वेखणहारा झुक झुक, आप आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोबन रंग इक्क चढ़ांयदा। गुरमुख जोबन रंग करतार, सतिगुर साचा आप रंगाईआ। लोकमात लै अवतार, हरिजन साचे वेख वखाईआ। शब्द विचोला बणे विच संसार, दिस किसे ना आईआ। गोला बणे दर पनहार, पक्खा फेर सेव कमाईआ। सच कराए तन शंगार, एका अल्फ़ी हथ्थ उठाईआ। अंदर बाहर एका धार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, हरि जोबन वेखे शहनशाहीआ। गुरमुख जोबन पाया, सतिगुर चरन दुआर। सतिगुर पूरा दया कमाया, एका भरे सच भण्डार। सच भण्डारा आप वरताया, असथल सोहण घर चुबार। घर चुबारे फेरा पाया, आप आपणी किरपा धार। किरपा निध नाउँ रखाया, दिस ना आए विच संसार। संसार सागर वरोल वखाया, नाम निधाना दए हुलार। नाम निधाना एका पाया, पेखणहार सच्ची सरकार। साचे शाहो रूप वटाया, करे खेल अगम्म अपार। अगम्म अपार भेव ना राया, हरिजन वेखे सच दुलार। हरिजन आपणे अंग लगाया, गुरमुख करे मात उज्यार। गुरमुख साचा रंग चढ़ाया, उतर ना जाए दूजी वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे करे प्यार। हरिजन जोबन रंग अपारा, दिस किसे ना आंयदा। रंगणहारा आप निरँकारा, निराकार सेव कमांयदा। आदि जुगादी बणया रहे ललारा, जगत वणजारा फेरी पांयदा। लेखा जाणे आर पारा, सच किनारा डेरा लांयदा। त्तत्व तत्त कराए इक्क शंगारा, ब्रह्म मति भूशन इक्क वखांयदा। एका सीस जगदीस दस्तारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। गुरमुख जोबन माणया, हरि मिल्या सच्चा शाहो। पाया पद इक्क निरबाणया, मिल्या मेल अगम्म अथाहो। आपणा घर आप पछाणया, आपे चल्लया सच्चे राहो। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि हरिजन बणे सच मलाहो। सच मलाह पुरख अकाल, काल जंजाल तुड़ाईआ। भगत भगवन्त आपे भाल, दीन दयाल दया कमाईआ। साध सन्त बणे रखवाल, आदि अन्त बेपरवाहीआ। जीव जंत करे संभाल, जो जन रहे सरनाईआ। हँ ब्रह्म वेखे धर्मसाल, काया बंक आप सुहाईआ। गुरमुख बणाए साचे लाल, हरिजन आपणा संग रखाईआ। तोड़णहारा जगत जंजाल, जागरत जुगत इक्क जणाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख जोबन जोग कमाईआ। गुरमुख जोबन धुर संजोग, हरि साचा मेल मिलाया। अन्तर आत्म रसीआ भोगे भोग, भस्मड़ आपणा खेल खलाया। जगत विछोड़ा कट्टे विजोग, हउमे रोग दए मिटाया। अनहद अनाहत सुणाए सच सलोक, अक्खर वक्खर आप पढ़ाया। चरन दासी कराए मुक्त मोख, सिर आपणा हथ्थ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ना हरख़ ना कोए सोग, गुरमुखां चुगाए एका चोग, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाया। आत्म तृष्ना होए दूर, गुर सतिगुर दया कमांयदा। घर मन्दिर वसे सदा हज़ूर, हरि मन्दिर हरि की पौड़ी आपे लांयदा। निरगुण दीपक जोत जगाए नूर, ज़ाहर ज़हूर खेल खिलांयदा। आसा मणसा सदा सद पूर, सिर सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। जगत जोबन दिसे कूड़, हरिजन जोबन सच हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहारा साची धूढ़, मस्तक टिक्का नाम लगांयदा। साची

धूढ़ मस्तक माथ, ब्रह्म मति दृढ़ाईआ। जोबन जवानी एका साथ, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। लाल रंगण वेखे हाथ, नेत्र नैण आप खुल्हाईआ। बंक दुआरे बह बह गाए गाथ, नाथ अनाथां वेख वखाईआ। हवन घृत वेखे पूजा पाठ, पाठशाला तन सुहाईआ। सरोवर सहाए तीर्थ ताट, अमृत जल आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोबन रंग अवल्ला आपणे हथ्थ रखाईआ। चार जुग जगत जोबन, सरगुण सरगुण नाल हंढाया। साध सन्त एक नाम बीज साचा बोवण, पत्त डाल्ही फुल महिकाया। आत्म सेजा चढ़ चढ़ साची सोवण, साचा पौड़ा नाम लगाया। दुरमति मैल मल मल धोवण, माया ममता मोह चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खलाया। चार जुग जगत जोबन होए ख्वार, काची माटी रहिण ना पाईआ। फ़रीद कूके करे पुकार, काग नैण मुख लगाईआ। सृष्ट सबाई जाए हार, हरि का रूप दिस ना आईआ। गुरमुख विरला पाए सार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। चढ़े महल्ल अट्टल मुनार, दूई द्वैती पड़दा देवे लाहीआ। कूड़ी क्रिया कर्म तजे श्रंगार, साची अल्फ़ी इक्क हंढाईआ। नाम निधाना पाए कज्जल धार, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। सोलां कलीआं सच प्यार, सोलां इच्छया पूर वखाईआ। जोबन हंढाए नार मुटयार, गुरमुख घर साचे सोभा पाईआ। कन्त भतारा हरि निरँकार, दूल्हो दूल्ह करे प्यार पारब्रह्म बेपरवाहीआ। साची सेजा फूलन बरसे बरखा धार, सच सुगंधी इक्क महिकाईआ। रवि ससि ना कोए होए उज्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अमृत बरखे ठंडा ठार, घर साचे सगन मनाईआ। निरगुण रूप सच्ची सरकार, साचा तख्त आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोबन वेख वखाईआ। सरगुण जोबन सरगुण मेला, सरगुण संग रखाया। सरगुण गुरू सरगुण चेला, चार जुग खेल खलाया। सरगुण सज्जण सरगुण सुहेला, सरगुण सरगुण वेख वखाया। निरगुण वसया इक्क इकेला, दिस किसे ना आया। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ आपणा खेला, कलिजुग वेला अन्तिम आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरताया। निरगुण हरि निरँकार, निरगुण आत्म ब्रह्म जणाईआ। निरगुण कन्त हरि भतार, निरगुण सुरती लए प्रनाईआ। निरगुण शब्द सच जैकार, निरगुण नाम मृदंग वजाईआ। निरगुण जोबन लए हुलार, रूप रंग बेपरवाहीआ। निरगुण मन्दिर कर त्यार, घर घर विच वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खलाईआ। निरगुण जोबन दिस ना आए, गुरमुखां रंग रंगांयदा। कलिजुग हिस्सा आप वण्डाए, आपणी वण्डण वण्ड वखांयदा। दहि दिशा उठ उठ फेरी पाए, दो जहानां पन्ध मुकांयदा। गुरमुख साचे मेल मिलाए, गोबिन्द सगला संग निभांयदा। लाल गुलाला रंग चढ़ाए, आपणा जोबन वेख वखांयदा। जोती जोत

७५१ ०६

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलांयदा। निरगुण जोबन अपर अपारा, निरगुण ईश जीव रंगाईआ। निरगुण तत्त ना कोए धारा, निरगुण हरि हरि रूप समाईआ। निरगुण रंग ना दिसे विच संसारा, निरगुण सगला संग निभाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, सरगुण रूप ना कोए दरसाईआ। अंदर मन्दिर करे प्यारा, सतिगुर सच्चा शहनशाहीआ। रंग चढ़ाए अगम्म अपारा, रंगणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोबन वेख वखाईआ। गुरसिख अंदर साचा जोबन, हरि साचे नाम रखाया। रंग रंलीआं माणण एका सेजे सोवण, सुरती शब्दी खेल खलाया। आपणे अग्गे आपे होवण, दूजा रूप ना कोए वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा पड़दा लाहया। सुरती जोबन सच घर, आपणा वेख वखाईआ। गुर शब्द मिल्या साचा वर, घर वजदी रहे वधाईआ। मेल मिलावा नारी नर, नर हरि एका धाम बहाईआ। निर्भय चुकाया जगत डर, भय आपणा इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंगण वेख वखाईआ। सुरती रंग शब्द ललारा, हरि करता आप रंगांयदा। दस्म दुआरी दए हुलारा, साचा जोबन वेख वखांयदा। सेज सुहञ्जणी सोए कन्त भतारा, जोत निरँजण डगमगांयदा। दर्द दुःख भय भंजन करे खेल आपणी वारा, चौथा जुग मुख सालांहयदा। निरगुण रूप लए अवतारा, जोती जामा भेख वटांयदा। निरगुण आत्म पावे सारा, परम आत्म वेख वखांयदा। निरगुण धाम कर त्यारा, घर घर विच डेरा लांयदा। निरगुण जोबन वेखणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। गुरमुख मिल्या हरि सरनाई, मिटे जगत अंदेसा। पुरख अबिनाशी दया कमाई, कलिजुग अन्तिम देवे सच संदेशा। निहकलंका जामा पाई, प्रगट होए माझे देसा। सम्बल नगरी इक्क सुहाई, तख्त सुहाया नर नरेशा। हरि मन्दिर साची जोत जगाई, दर मंगण ब्रह्मा विष्नूं शिव बण दरवेशा। आपणी कल आप वरताई, रूप रंग ना कोए जणाई, दिस ना आए मुच्छ दाढ़ी केसा। जोती जोत कर रुशनाई, लोकमात खुशी मनाई, जूनी रहित धारे भेसा। पुरख अकाल वज्जी वधाई, निरगुण ढोला गाए चाँईं चाँईं, आप चुकाए आपणा लेखा। गुरमुख उठाए फड़ फड़ बांहीं, करे कराए सच न्याईं, लोकमात कोए ना चले किसे दी पेशा। सिर देवण आया ठंडीआं छाईं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वसे आपणे देसा। देस दसन्तर सुहावणा, हरि साचा सच सुहांयदा। निरगुण निरगुण मेल मिलावणा, सरगुण सरगुण पन्ध मुकांयदा। निरगुण निरगुण खेल खलावणा, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ांयदा। निरगुण निरगुण जोग कमावणा, जगत हठ ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेले आपणे घर, घर जोबन इक्क वखांयदा। घर जोबन जोग जुगत, जागरत जोत करे रुशनाईआ।

घर भोगी भोग करे आपणी भुगत, भगवन भगतन संग रखाईआ। लोक परलोक दो जहान, बणाए आपणी युगत जुग करता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख लगाए आपणे लड़, निरगुण निरगुण संग रखाईआ। निरगुण सुरती शब्द प्यारी, सन्त कन्त मेल मिलन्नया। गुरमुख घर शाहो पाया सच्चा सिक्दारी, गृह मन्दिर बह बह मन्नया। दर घर साचे लग्गी यारी, पुरख अकाल एका मन्नया। जोबन वेखे तन शृंगारी, करवट लए नौजवन्नया। गुरमुख साचे लए उभारी, लोकमात वेख वखन्नया। उच्ची कूक करे पुकारी, आप आपणा राग सुणन्नया। चरन कँवल लेखा धुर दरबारी, सचखण्ड दुआरा खेल खलन्नया। कलिजुग आई अन्तिम वारी, साचा तख्त ना कोए सुहन्नया। शाह सुल्ताना आए हारी, हरि का रूप किसे ना मन्नया। गुरमुख होया शाह अस्वारी, साचे घोड़े चरन रकाब टिकन्या। अबिनाशी करता पावे सारी, लेखा जाणे दो जहन्नया। गुरमुख नार ना रहे कुँवारी, घर कन्त कन्तूहला फिरे भन्नया। जोबन हंढाए आपणी वारी, पावे सारी छप्पर छन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, मात पित ना किसे जणया। मात पित ना कोई दादा, बंस सरबंस ना कोई जणाईआ। करे खेल आदि जुगादा, इक्क इकल्ला वड वड्याईआ। लेखा जाणे बोध अगाधा, शब्द शब्दी रूप समाईआ। आपणा मन्दिर आपे लाधा, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। आप वजाए आपणा नादा, तुरीआ नाद आप वखाईआ। आपे होए रहे विस्मादा, विस्मादी आपणा नाउँ धराईआ। आप लडाए आपणा लाडा, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। आपे लेखा जाणे सन्तन साधा, सतिगुर आपणा नाउँ धराईआ। आपे गुरमुख साजण साचे लाधा, लक्ख चुरासी खोज खोजाईआ। आप वजाए आपणा अनहद वाजा, तार सितार ना कोई हिलाईआ। आपे संवारे गुरमुखां काजा, गुर सतिगुर वड वड्याईआ। आपे रक्खणहारा लाजा, समरथ पुरख आप अख्वाईआ। आपे शाहो भूप बण वड राजन राजा, तख्त ताज इक्क सुहाईआ । आपे चलाए सच जहाजा, साचा बेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी बणत आप बणाईआ। आपणी बणत हरि बनवारी, दरगह साची आप बणांयदा। निरगुण जोत निराकारी, निराधारी वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम लै अवतारी, साची धारी मात बंधांयदा। गुरमुख जोबन वेखे एका वारी, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां वखाए सच निशान, घर घर दर दर हरि हरि आप उठांयदा।

७५४ ०६

✻ ७ हाढ़ २०१७ बिक्रमी डाक्टर पाल सिँघ दे घर पिण्ड भलाईपुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✻

सो पुरख निरँजन साहिब सुल्तान, अगम्म अथाह बेपरवाह अख्वांयदा। हरि पुरख निरँजण वड मेहरवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणी कार कमांयदा। एकँकारा खेल महान, अकल कल धारी भेव कोई ना पांयदा। आदि निरँजण जोत महान, अजूनी रहित नूरो नूर डगमगांयदा। श्री भगवान खेल महान, भेव अभेदा अछल अछेदा दिस किसे ना आंयदा। अबिनाशी करता नौजवान, मूर्त अकाल रूप अनूप वटांयदा। पारब्रह्म खेले खेल दो जहान, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। सचखण्ड दुआर वसणहारा गुण निधान, गुणवन्ता गुण आप जणांयदा। घर विच घर हरि मकान, थिर दरबारा आप सुहांयदा। शाहो भूप बण वड राजान, सति सतिवादी सति सति आसण लांयदा। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण, नाद अनादी नाद वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकारा, आदि जुगादी खेल अपारा, निरगुण जाणे निरगुण धारा, दूसर रूप ना कोई वखांयदा। सो पुरख निरँजण हरि हरि मीता, एका रंग समांयदा। हरि पुरख निरँजण ठांडा सीता, दरगह साची आसण लांयदा। एकँकार पतित पुनीता, पतित पावण नाउँ धरांयदा। आदि निरँजण सदा अनडीठा, नेत्र लोचण नैण दिस ना आंयदा। श्री भगवान आपे जाणे आपणी रीता, जुगा जुगन्तर खेल खिलांयदा। अबिनाशी करता आपे बणे आपणा मीता, दूसर संग ना कोई रखांयदा। पारब्रह्म एका रंग समाए हस्त कीटा, ऊँच नीच ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला अगम्म अपार, थिर घर बैठ सच्चे दरबार, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि साचा आप सुहाईआ। एकँकारा नर हरि कन्त, नर नरायण सच सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। सो पुरख निरँजण एका रंग चढ़ाए बसन्त, आदि अन्त उतर ना जाईआ। एका गीत गाए सुहागी छंत, घर मन्दिर बेपरवाहीआ। आपणा लेखा जाणे आदि अन्त, दूसर हथ्थ ना कोई वड्याईआ। पुरख पुरखोतम महिमा अगणत, अलक्ख अगोचर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत अकाला दीन दयाला, दर घर साचे सोभा पाईआ। दर घर साचा थिर दरबारा, हरि साचे आप उपाया। निरगुण जोत कर उज्यारा, हरी हरि बैठा खेल खिलाया। चार कुंट ना कोई किवाड़ा, दहि दिशा ना कोई वखाया। करे खेल एकँकारा, निराकारा एका रूप वटाया। साची धुन सच्ची धुन्कारा, शब्द अगम्मी नाद वजाया। राग रागनी ना पावे सारा, लेखा लेख ना कोई गिणाया। अलक्ख निरँजण आप आपणा बोल जैकारा, आप आपणा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा

सच महल्ला, पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, सच सिँघासण सोभा पाया। सच सिँघासण श्री भगवान, एका आसण लांयदा। सचखण्ड निवासी नौजवान, नर हरि आपणा रूप वटांयदा। सति सन्तोखी सति निशान, सति सतिवादी नाउँ धरांयदा। दो जहानां एका माण, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां एका हुक्म सुणांयदा। एका शब्द इक्क धुनकान, पुरख अबिनाशी बैठ सच मकान, सचखण्ड दुआरे आपे गांयदा। सुर ताल ना कोई वखाना गण गंधर्ब ना कोई पछान, करोड़ तेतीस ना मुख सलांहयदा। सुरपति ना करे कोई ध्यान, शंकर सुणे ना ला ला कान, ब्रह्मा वेखे ना मार ध्यान, विष्नूं कोई ना खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी ना कोई प्रधान, पंज तत्त ना कोई माण, मन मति बुध ना कोई ज्ञान, रसना जिह्वा ना कोई हिलांयदा। ना कोई ज़िमी ना अस्मान, पाणी पवण ना कोई निशान, अग्नी हवन ना मारे बाण, तत्व तत्त ना कोई उपजांयदा। चार वेद ना कोई पुराण, चारे खाणी ना कोई कल्याण, चारे बाणी ना कोई गाण, चारे जुग ना कोई निशान, चार वरन ना कोई वखांयदा। इक्क इकल्ला हरि भगवान, थिर घर वसे नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, करता पुरख आपणा नाउँ धरांयदा। करता पुरख हरि भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। दरगह साची सोभावन्त, सचखण्ड निवासी बेपरवाहीआ। थिर दरबारे मेल मिलावा नारी

७५५ ०६

कन्त, नर हरि वड्डी वड्याईआ। एका नाम जणाए मणीआ मंत, नर निरँकारा आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द अगम्मी हरि हरि धार, जोती जोत करे उज्यार, कोटन कोटि रूप अपार, रेख रंग ना कोई वखाईआ। रेख रंग ना कोए रूप, हरि का भेव कोए ना पांयदा। आदि जुगादी सति सरूप, सति पुरख निरँजण आपणा नाउँ रखांयदा। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका घर हरि सुहाए, कमालपाती दीप जगाए, तेल बाती ना कोए रखांयदा। तेल बाती ना कोए प्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। कमलापाती मीत मुरार, थिर घर साचे करे रुशनाईआ। रवि ससि ना कोए उज्यार, सूरज चन्न ना कोए चढ़ाईआ। मंडल मंडप पावे सार, करे खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क वड्याईआ। दर घर साचा हरि वड्याआ, सचखण्ड दुआर सोभा पांयदा। घर घर विच आप टिकाया, थिर घर साचा नाउँ धरांयदा। सच सिँघासण इक्क विछाया, पावा चूल ना कोए बणांयदा। सोलां कलीआं आसण पाया, आप आपणा खेल खिलांयदा। निरगुण नूर कर रुशनाया, जोती जामा भेख वटांयदा। शाहो भूप वड राज राजाना आपणा नाउँ धराया, सच सिँघासण चरन टिकांयदा। दर दरबान दर दरवेश आप अखवाया, निरगुण आपणी अल्फ़ी एका आपणे अंग लगांयदा। आपे निउँ निउँ सीस झुकाया, आपे आपणा

हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा उच्च अटला, पुरख अबिनाशी आपे मल्ला, आप आपणा बंक सुहांयदा। बंक सुहाए साचा घर, घर साचे वज्जी वधाईआ। ना कोई नारी ना कोई नर, नर नरायण आपणी रचन रचाईआ। आपणा भोग आपे कर, आपणी सेज हंढाईआ। आपे उत्पत बण बण देवे वर, आपे आपणी गोद सुहाईआ। आपे सुत दुलारा लाए लड़, अंगीकार आप कराईआ। निरगुण निरगुण घाड़न घड़, निरगुण निरगुण झोली पाईआ। निरगुण निरगुण लाए जड़, ना सके कोए उखड़ाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, रक्त बूंद ना मेल मिलाईआ। अक्खर विद्या ना जाए पढ़, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। आपणे मन्दिर आपे खड़, स्वच्छ सरूपी आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा एकँकारा निराकारा निराधारा आप हो जाईआ। निराकार निरगुण दाता, निरवैर आपणा नाउँ धरांयदा। आदि जुगादी पुरख बिधाता, आपणा बिरद आप रखांयदा। आपे पिता आपे माता, आपे बालक रूप वटांयदा। आपे देवे आपणी साची दाता, आपे भिक्खक आपणी झोली अग्गे डांहयदा। आपे जाणे जणाए आपणी गाथा, आपे आपणा शब्द अलांयदा। आपे चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। आपे निभाए आपणा साथा, सगला संग आप रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द अगम्मी एका बोल, सचखण्ड दुआरा देवे खोल, आपणा भेव आप जणांयदा। भेव अभेदा हरि जणाया, आपणी इच्छया पूर कराईआ। सति सतिवादी सेव कमाया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी वेस वटाया, आप आपणी कल वखाईआ। आप आपणा रूप वटाया, निरगुण निरगुण लए अंगड़ाईआ। विश्व आपणी गोद बहाया, विष्नूं मेला सहिज सुभाईआ । घर अमृत नाभ चवाया, कँवल कँवला लए उपजाईआ। आपणी डाली फल लगाया, पत्त पंखड़ीआं वेख वखाईआ। आपणा रूप आप वटाया, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। उपज्या पूत ब्रह्मा सुत, विष्नूं कँवल मुख खुलाया। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, आपणा लेखा दए समझाया। वार थित ना कोई रुत्त, दिवस मास बरख ना कोए जणाया। पंज तत्त ना कोई बुत्त, त्रैगुण माया ना बन्धन पाया। निरगुण धरी निरगुण जोत, जोती जोत कर रुशनाया। ना कोई वरन ना कोई गोत, वण्डण वण्ड ना कोए वण्डाया। ना कोई तृष्ना ना कोई खोट, माया ममता ना कोए तपाया। हउमे हंगता ना लाए कोई चोट, जूठ झूठ ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म रूप कर, आप आपणा बंस सुहाया। विष्नूं अंस ब्रह्म दुलारा, ब्रह्मा बंस सरबंस वड्याईआ। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, आपणी महिमा आप कराईआ। आपणी इच्छया बण वरतारा, साची भिच्छया त्रैगुण

७५६
०६

रूप दरसाईआ। त्रैगुण देवे इक्क हुलारा, त्रै लोकां करे कुड़माईआ। त्रै त्रै सेवक लाए सेवादारा, शंकर आपणी बूझ बुझाईआ। एका वस्त वस्त हरि थारा, थिर आपणे हथ्थ रखाईआ। लोआं पुरीआं बणाया महल्ल मुनारा, इट्ट गारा ना कोए लगाईआ। बन्धन पाया सूरज चन्न सितारा, आकाश प्रकाश आप टिकाईआ। आपे वसया सभ तों बाहरा, बेअन्त बेपरवाह हरि वड्डा वड वड्याईआ। करे खेल गुप्त ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर शहनशाहीआ। जोती नूर कर उज्यारा, आपणी धारा आप बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, आप आपणी दया कमाईआ। वर दाता हरि भण्डारी, त्रै त्रै वस्त आप वरतांयदा। करे खेल एकँकारी, ओंकारा आपणा नाउँ दरसांयदा। एका वणज इक्क वपारी, एका हट्ट खुल्लांयदा। एका दर दरवेश बणे भिखारी, दर दर आपणी अलख जगांयदा। एका इष्ट गुर वड पनहारी, हरि आपणा नाउँ रखांयदा। एका पूजा इक्क पुजारी, एका निउँ निउँ सीस झुकांयदा। एका शाह सच्चा सुल्तान करे सिक्दारी, एका हुक्मी हुक्म फिरांयदा। एका वसे महल्ल अटल उच्च मुनारी, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। एका त्रैगुण माया दए आधारी, विष्न ब्रह्मा शिव नाल प्रनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। साची सिख्या हरि भगवान, ब्रह्मे विष्न शिव आप सुणांयदा। आदि उपजाया हरि निशान, आदि आदी आप अख्वांयदा। जगत जुगत पाए आपणी आण, जागरत जोत इक्क टिकांयदा। धुरदरगाही धुर फ़रमान, दो जहान आप चलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव रक्खी आण, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। लक्ख चुरासी कर प्रधान, जीव जंत रूप वटांयदा। चारे खाणी कर पछाण, अंडज जेरज उत्भुज सेतज मेल मिलांयदा। नौ नौ चार चौकड़ी जुग इक्क ज्ञान, चार जुग आपणा गेड़ रखांयदा। ब्रह्मा सुणे ला ला कान, हरि का हुक्म ना कोए भवांयदा। विष्नूं करे चरन ध्यान, नेत्र नैणां नीर वहांयदा। शंकर वेख होया हैरान, भय भयानक रूप हरि दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्क इकेला, लक्ख चुरासी सज्जण सुहेला, आपे जाणे आपणा वेला, थित वार ना कोए रखांयदा। थित वार ना दिवस मास, वदी सुदी ना कोए रखाईआ । पुरख अबिनाशी खेल तमाश, दरगाह साची आप खलाईआ। सचखण्ड दुआरे पावे साची रास, साचा तख्त आप सुहाईआ। आदि जुगादी कर प्रकाश, परम पुरख आप अख्वाईआ। आपणी करे आपे पूरी आस, बेआस ना होए खुदाईआ। सालस बणे शाहो शाबाश, शाह सुल्ताना भुल्ल ना जाईआ। लक्ख चुरासी कर कर वास, पवण स्वासी दए सलाहीआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मंडल फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्म मति एका तत्त रिहा समझाईआ। ब्रह्म मति इक्क ज्ञान, हरि शब्दी शब्द जणाया। पुरख

अबिनाशी सच निशान, दर घर साचे आप झुलाया। एका हुक्म इक्क फ़रमाण, एका नादी नाद वजाया। एका रूप श्री भगवान, रूप अनूपा दए वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आप चुकाया। साचा लेखा जगत धार, पारब्रह्म ब्रह्मे झोली पाईआ। शब्द जणाई वेद चार, चारे जुग करे कुड़माईआ। चारे खाणी कर त्यार, चारे बाणी करे पढ़ाईआ। चार जुग कर वरतार, चार वरन वेख वखाईआ। चार यारी पावे सार, सार पाशा खेल खलाईआ। अन्तिम बाज़ी जाए हार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। नौ नौ चार चौकड़ जुग कर ख्वार, गुर पीर अवतार साध सन्त सेवा लाईआ। पंडत पांधे उच्ची कूकण करन पुकार, वेद सिमरत शास्त्र देण दुहाईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक पीर रोवण ज़ारो ज़ार, दस्तगीर रहे कुरलाईआ। हरि का खेल अपर अपार, अञ्जील कुरान ना सके गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। चार जुग जगत गेड़ा, हरि साचा आप दवांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर चुक्कया झेड़ा, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। हक हकीकत लाशरीक करे हक नबेड़ा, बेऐब ऐब सर्ब वेख वखांयदा। जन भगतां बन्ने आपे बेड़ा, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां धरत मात दा खुल्ला करे वेहड़ा, पृथ्मी आकाश आप आपणी रचन रचांयदा। लक्ख चुरासी मनमति उलटा देवे गेड़ा, बुध बिबेक ना कोए रखांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार काया नगर वसे खेड़ा, हरि का नाम ना कोए दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दए हुलारा, आपे जाणे आर पार किनारा, दूर दुराडा वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम आई वार, धरती कूके दए दुहाईआ। माणस मानुख आप आपणा गए हार, धीरज जत सति सन्तोख ना कोए रखाईआ। ना कोई पुरख ना कोई नार, साचा कन्त ना कोए हंढाईआ। सृष्ट सबाई होई विभचार, कूड़ी क्रिया कर्म कुड़माईआ। हरि मिल्या ना कन्त भतार, आत्म सेज ना कोए सुहाईआ। घर मन्दिर ना होए उज्यार, दीवा बाती ना कोए जगाईआ। सुरत सवाणी रोवे ज़ारो ज़ार, बेआब मरे तिहाईआ। अमृत झिरना झिरे ना ठंडा ठार, भर प्याला जाम ना कोए प्याईआ। अठसठ तीर्थ गए हार, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। साध सन्त साचा करे ना कोए शंगार, तन झूठी भिबूत रहे रमाईआ। मिले मेल ना पीआ प्रीतम यार, त्रिया तृखा ना कोए बुझाईआ। त्रैगुण माया जगत भण्डार, पंच विकारा वण्ड वण्डाईआ। आसा तृष्ना करे ख्वार, घर घर जोबन रही वखाईआ। मनमुख जीव ना पाए सार, हरि का रूप ना कोए दरसाईआ। गुरमुख विरला उतरे पार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्ह किवाड़, पंचम धाड़ दए मिटाईआ। किरपा कर आप निरँकार, निरगुण सरगुण ल्ए मिलाईआ। एका नैण दए उग्घाड़, दोए लोचन बन्द वखाईआ। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़,

बख्शे सतिगुर चरन सच्ची सरनाईआ। साचे पौड़े देवे चाढ़, चौथे पद मेल मिलाईआ। पंचम नाद शब्द धुन्कार, घर मन्दिर दए सुणाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, कागद कलम ना लिखे शाहीआ। ब्रह्मा वेता ना पावे सार, चार वेद करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साची कार, करे कराए करनेहार, लोकमाती लै अवतार, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। जुगा जुगन्तर इक्क अवतारा, सो पुरख निरँजण रूप वटांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल न्यारा, ख़ालक ख़लक विच करांयदा। एकँकारा हो उज्यारा, आदि निरँजण जोत जगांयदा। श्री भगवान पावे सारा, अबिनाशी करता मेल मिलांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म दए हुलारा, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। सरगुण रूप विच संसारा, पंज तत्त नाता जोड़ जुड़ांयदा। गुरमुख साजण कर प्यारा, त्रैगुण माया फंद कटांयदा। जोत निरँजण दीपक कर उज्यारा, अज्ञान अन्धेर गवांयदा। अनहद शब्द सच्ची धुन्कारा, पंचम मिल सखीआं मंगल गांयदा। वेखे विगसे करे विचारा, वेखणहारा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम आपणा वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम हरि प्रवेश, जोती जामा भेख वटांयदा। आपे नर आप नरेश, आपे सेवक सेव कमांयदा। आपे लेखा जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, दर दर आपे अलक्ख जगांयदा। आपे वेखणहारा मुच्छ दाढ़ी केस, आपे आपणा मूंड मुंडांयदा। आपे बह बह लिखणहारा लेख, लिख्या लेखा आप मिटांयदा। आपे चार जुग कर प्रवेश, आपणी चौकड़ी आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी खेल आप खलांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल करतार, आपणी आप कराईआ। निहकलंका लै अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शब्द डंका विच संसार, चारों कुंट दए सुणाईआ। नौ खण्ड करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। ब्रह्मण्ड मारनहारा मार, चौदां लोक दए हिलाईआ। चौदां तबकां कर ख्वार, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। चौदस चन्न ना होए उज्यार, अमावस रैण सर्ब लोकाईआ। बिन सतिगुर पूरे ना पावे कोए सार, भव सागर पार ना कोए कराईआ। राए धर्म करे ख्वार, चित्रगुप्त दए गवाहीआ। लाड़ी मौत कर शंगार, कलिजुग जीवां लए प्रनाईआ। हरिजन साचे उतरन पार, जिस जन मिल्या हरि सच्चा पातशाहीआ। एका नाम दए आधार, हरि हिरदे विच टिकाईआ। अजप्पा जाप कर त्यार, कंठ माला आप पहनाईआ। रसना जिह्वा ना कोए विचार, स्वास स्वास विच समाईआ। बत्ती दन्द ना करे पुकार, उच्ची कूक ना कोए सुणाईआ। हरि का छन्द सुहागी निझर धार, धुन आत्मक आप अल्लाईआ। ब्रह्म आत्म करे प्यार, ईश जीव कर कुड़माईआ। जगत जगदीश पावे सार, जुगत जगत जुग आपणे हथ्थ रखाईआ। लक्ख चुरासी करे पार, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। घनकपुर वासी मीत मुरार, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दीआ एका बाती, आप जगाए कमलापाती, मेटे रैण अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। सतिजुग साचा चन्द चढ़ाउणा, पारब्रह्म ब्रह्म दया कमांयदा। गुरमुख गुरसिख दीपक आप जगाउणा, तन मन्दिर आप सुहांयदा। अमृत जाम प्याला इक्क प्याउणा, निझर झिरना इक्क झिरांयदा। अनहद नाद इक्क वजाउणा, काया बंक आप सुणांयदा। ब्रह्म ब्रह्मादी भेव खुल्हाउणा, दूई द्वैती पड़दा आप उठांयदा। बोध अगाध शब्द जणाउणा, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। वाद विवाद सर्ब मिटाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल कर, घर आपणा मेल मिलांयदा। घर मेला अन्तिम धार, काया कंचन गढ़ सुहाया। सतिगुर पूरा कर प्यार, तन मन्दिर वेख वखाया। डूँग्घी कंदर कर प्यार, हँकारी जंदर तोड़ तुड़ाया। मन बन्दर फड़ हँकार, गुर शब्दी बन्धन पाया। एका बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चवाया। दुरमति मैल दए उतार, जो जन सरनाई आया। कादर कुदरत करे प्यार, कुदरत कादर वेख वखाया। हरिजन साचे कर प्यार, सतिजुग साचा मार्ग लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच समग्री झोली पाया। सच समग्री नाम धन रास, गुरमुखां झोली पांयदा। निज घर आत्म कर कर वास, बन्द खुलासी आप करांयदा। अन्धेरी कंदर कर प्रकाश, कोटन कोटि रवि ससि आप चढ़ांयदा। सति सन्तोख धीरज जति दए धरवास, धर्म दया इक्क वखांयदा। गुरसिखां पूरी करे आस, पूर्ब जन्म लेखे लांयदा। हरिजन होए ना मात उदास, हरि की पौड़ी आप चढ़ांयदा। लेखा कट्टे दस दस मास, मात गर्भ ना अग्न तपांयदा। लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन सोहँ रसना गांयदा। पार कराए पृथ्मी आकाश, सचखण्ड दुआरे आप बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां बणे मीत मुरार, आदि जुगादी लै अवतार, गुर गुर आपणा नाउँ धरांयदा। गुर चेला गुर साख्यात, गुर गहर गम्भीर समांयदा। गुरसिख सज्जण बणाए पार ज़ात, गुर गुरमुख सेव कमांयदा। गुर हरिजन मेटे अन्धेरी रात, गुर सति सति सति साचा चन्द चढ़ांयदा। गुर गहर गम्भीरा पुच्छे वात, आदि अन्त संग निभांयदा। गुर कढ्ढे हउमे पीड़ा, अमृत सीरा मुख चुआंयदा। गुर तोड़े जगत ज़ंजीरा, नाम डोरी आप बंधांयदा। गुर चोटी चाढ़े फड़ अख़ीरा, चौथे घर आप बहांयदा। गुर लेखा जाणे शाह हकीरा, ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका धाम बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर इष्ट देव नमो वास्तक रूप, विश्व आपणा नाउँ धरांयदा। गुर विश्व चार वरन, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वेख वखाईआ। गुर सतिगुर पूरा बख्शे एका सरन, चरन कँवल वड्डी वड्याईआ। सतिगुर पूरा लेखा चुकाए मरन डरन, तरनी तरन आप अख्वाईआ। गुर गुर खोल्हे हरन फरन, निज नेत्र करे रुशनाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन साचा तारया, सिर हथ्थ रक्ख करतार। आवण जावण गेड़ निवारया, लक्ख चुरासी उतरे पार। एका बख्शे चरन प्यारया, घनक पुर वासी हो उज्यार। पिछला लेखा आपणी हथ्थीं पाड़या, लेखा चुकया धर्म दुआर। पाया दरस हरि निरंकारया, दरस देवे आप करतार। माणस जन्म ना जूए हारया, मिल्या मेल मीत मुरार। घर सोहे बंक दवारया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन हरि हरि मेला गुरू गुर चेला नारी कन्त भतार। कन्त भतार सर्ब सुख स्वामी, गहर गम्भीर अख्वांयदा। नेहकर्म करे नेहकामी, निर्धन सरधन आपणे लेखे लांयदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर अन्तरजामी, अन्तरगति आपे वेख वखांयदा। जन भगतां अमृत आत्म देवे ठंडा पाणी, भर प्याला जाम प्यांअदा। अगम्म अगम्मड़ा सुणाए अगम्मी बाणी, नाद अनाद आपणा आप वजांयदा। गुरमुख गुरसिख पाया पद पद निरबाणी, सच निशानी, इक्क वखांयदा। चार वरन चार जुग हरिजन गाए अकथ कहाणी, कथ कथा कथ आप सुणांयदा। गुरसिख धुरदरगाहे बणी साची राणी, दरगह साची सच महल्ल उच्च अट्टल मुनार आप बहांयदा। सतिगुर सच्चा साहिब सुल्तान आदि जुगादि जुगा जुगन्त करे सदा प्रितपाली, प्रितपालक आपणा नाउँ रखांयदा। कलिजुग अन्तिम बणया वाली, गुरमुखां भण्डारे भरे खाली, खाली आपणे हथ्थ रखांयदा। निरगुण चली अवल्लड़ी चाली, सरगुण भेव ना कोए पांयदा। ग़रीब निमाणयां करे आप दलाली, शब्द विचोला नाउँ धरांयदा। काया मन्दिर अंदर वसे सच्ची धर्मसाली, छप्पर छन्न चार दीवार ना कोए बणांयदा। घर घर अंदर निरगुण जोत जगे अकाली, पुरख अकाल आप जगांयदा। हरिसंगत बूटा लाया माली, कुल मालक ख़ालक आपणी ख़लक वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणी किरपा आपे कर, गुरमुख सज्जण लए वर, घर आपणा मेल मिलांयदा। घर मेला भगवन्त, घर घर विच वधाईआ। घर मेला गुरू गुर सन्त, घर घर विच खुशी वखाईआ। घर शब्द नाद धुन मंत, घर अनहद राग अलाईआ। घर माया पाए बेअन्त, घर घर विच गूढ़ी नींद सवाईआ। घर घर विच उठाए हरिजन साचा सन्त, जिस जन आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला नारी कन्त, मेल मिलावा हरि भगवन्त, आदि जुगादी महिमा अगणत, साध सन्त वेद पुराण शास्त्र सिमरत रहे जस गाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निराकार निरगुण एका रूप समाईआ।

❋ १७ हाढ़ २०१७ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल दरबार विच शब्द धार ❋

सति पुरख निरँजण निरगुण गुण निधान, गुणवन्ता वड वड्याईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपहचान, रूप रंग रेख ना कोई जणाईआ। सचखण्ड दुआरे वसे धाम मकान, थिर घर साचे आसण लाईआ। शब्द अनादी धुर फ़रमाण, धुर दरबारे आप सुणाईआ। आदि जुगादी खेल महान, अगम्म अगम्मड़ा खेल खिलाईआ। सति सरूपी नौजवान, ना मरे ना जाईआ। सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, आपणी कल वरताईआ। हरि पुरख निरँजण देवे दान, देवणहार बेपरवाहीआ। एकँकारा सच निशान, सति सतिवादी इक्क बणाईआ। आदि निरँजण नूर महान, नूर नुराना जोत जगाईआ। अबिनाशी करता आप आपणी कर पछान, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। श्री भगवान करे खेल महान, घर मन्दिर सोभा पाईआ। पारब्रह्म आप आपणी रक्खे आण, दूसर हुक्म ना कोए फिराईआ। तख्त निवासी राज राजान, शाहो भूप वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वसे निरगुण घर, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण हरि हरि वसया, साचे तख्त सच सुल्तान। भेव अभेद किसे ना दस्सया, जुगा जुगन्तर खेल महान। आपणी सेजा आपे बह बह हस्सया, आपे जाणे धुर फ़रमाण। आपे रस माणे बण बण रसीआ, आपे वेखे मार ध्यान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल श्री भगवान। श्री भगवान सर्ब गुणवन्ता, गुण अवगुण कहिण ना जाईआ। आपे आदि आपे अन्ता, मध आपणी रचन रचाईआ। आपे लेखा जाणे जुगा जुगन्ता, जागरत जोत आप वखाईआ। आपे धाम खण्ड सच सुहंता, आपे थिर घर करे रुशनाईआ। आपे महल्ल अटल रचन रचंता, उच्च मिनार वेख वखाईआ। आपे जोबन रूप हढंता, आपे नूर नूर दरसाईआ। आपे नारी आपे कन्ता, आपे फूलन बरखा लाईआ। आपे दर दरवेश बणे मंगता, आप आपणी अलख जगाईआ। आपे सालस चोली रंगन रंगता, निरगुण रंगीला साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल अगम्म अथाहीआ। अगम्म अथाह बेपरवाह, परवरदिगार अख्वांयदा। नूर नुराना सिफ्त सलाह, सिफ्ती सिफ्त विच ना आंयदा। दो जहानां धुर मलाह, साचा बेड़ा आप उठांयदा। एका आपणा नाउँ धरा, एका अल्फी तन हंढांयदा। एका बस्ती दए वखा, एका नगर ग्राम सुहांयदा। एका मीत घोड़ा लए दौड़ा, शाह अस्वार इक्क बणांयदा। एका पौड़ा लए चढ़ा, दरगह साची आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेले खेल पुरख समरथ, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण चलाए रथ, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। एकँकारा आपणी झोली पावे वथ्थ, आपणी वस्त आप वण्डाईआ। आदि निरँजण निरगुण नूर घत, साचा दीप करे रुशनाईआ।

७६२
०६

श्री भगवान आपे वेखे आपणी पति, पतिपरमेश्वर नाउँ धराईआ। अबिनाशी करता आप आपणा कर उत्पत, आपे लेखा लए लखाईआ। पारब्रह्म आपे वेखे जाणे आपणा हट्ट, दूसर दर ना फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण लए उपाईआ। निरगुण पुरख अकाल, आपणी कल वरतांयदा। निरगुण पुरख दयाल, दीन दयाल आप हो जांयदा। निरगुण रूप महांकाल, आप आपणा खेल खिलांयदा। निरगुण करे कराए सदा प्रितपाल, प्रितपालक दिस ना आंयदा। निरगुण पाए आपणा आप जंजाल, काल रूप आप वटांयदा। निरगुण वसे सच सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेव अभेदा अछल अछेदा आप आपणा भेव खुलांयदा। सचखण्ड वसे आप निरँकार, निरगुण नूर आप रुशनाईआ। दूसर दिसे ना कोए धार, कुदरत करता ना कोए बणाईआ। रवि ससि ना कोए उज्यार, गगन मंडल ना कोए वड्याईआ। धरत धवल ना कोए सहार, ज़िमीं अस्मान ना कोए बणाईआ। जंगल जूह ना कोए पहाड़, समुंद सागर ना कोए वखाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, लेखा जाणे ना कोए छाहीआ। पंज तत्त ना कोए वरतार, त्रैगुण रंग ना कोए रंगाईआ। मन मति बुध ना कोए विचार, चतुर सुघड़ ना कोए वखाईआ। मनमुख मूढ़े ना कोए गंवार, हउमे हंगता ना कोए वरताईआ। भुक्खा नंगता ना दिसे कोए दरबार, शाह सुल्तान ना सीस ताज टिकाईआ। खड़ग खण्डा ना दिसे कटार, शस्त्र बस्त्र ना कोए सज़ाईआ। जोरु ज़र ना कोए भतार, तीर कमान ना हथ्थ उठाईआ। शाही लशकर ना शाह अस्वार, अश्व घोड़ा ना कोए दौड़ाईआ। तीर तुफ़ंग ना मारे मार, काल रूप ना कोए वटाईआ। लाड़ी मौत ना करे शंगार, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त ना करे विचार, लेखा लिखे ना थाउँ थाँईआ। लक्ख चुरासी ना कोए पसार, चारे खाणी ना वेख वखाईआ। चारे बाणी ना कोए शब्द नगार, चारे वेद ना कोए पढ़ाईआ। चारे मुख ना कोए पुकार, चारों कुंट ना कोए सुणाईआ। चार जुग ना कोए कल्याण, चार चार ना वज्जे वधाईआ। नौ खण्ड ना कोए निशान, सत्त दीप ना रूप दरसाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए प्रधान, ब्रह्मा विष्न शिव ना हुक्म जणाईआ। इष्ट देव ना पूजा ज्ञान, सिमरत रूप ना कोए वखाईआ। दृष्ट वशिष्ट राम ना देवे कोए माण, कान्हा बंसरी ना कोए उठाईआ। निरगुण खेल श्री भगवान, नर हरि आपणा आप कराईआ। सचखण्ड निवासी वसे सच मकान, आप आपणा घर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वसे सच दुआर, इक्क इकल्ला एकँकार, निरगुण रूप अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। सचखण्ड दुआर हरि निरँकार, एका एक वसांयदा। निरगुण नूर नूर उज्यार, नूरो नूर डगमगांयदा। सच सिँघासण कर त्यार, पुरख अबिनाशन आसण लांयदा। उप्पर बैठ सच्ची सरकार,

सो पुरख निरँजण एका नाउँ धरांयदा। हरि पुरख निरँजण बणे चोबदार, दर दरबान अलक्ख जगांयदा। एकँकारा बोल जैकार, उच्ची नाअरा इक्क अलांयदा। आदि निरँजण हो उज्यार, घर दीपक डगमगांयदा। श्री भगवान बण पनिहार, दर साची सेव कमांयदा। अबिनाशी करता करे सच विहार, घर साचे सच कमांयदा। पारब्रह्म ढह ढह पए चरन दुआर, आप आपणा सीस झुकांयदा। सति पुरख निरँजण सच विचार, आदि पुरख आदि जुगादी खेल अपार, आपणी धार आप रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला वेस वटांयदा। इक्क इकल्ला अकल धार, आप आपणी कल वरतांयदा। सचखण्ड दुआर खोल्ह किवाड़, आप आपणा आसण लांयदा। आपे बणे सच्ची सरकार, साचे तख्त आप सुहांयदा। आपणी करनी कर विचार, करता पुरख आप अख्वांयदा। आपणी सरनी पड़ मंगे मंग बण भिखार, आपणी झोली अग्गे डांहयदा। आपे वर देवे देवणहार, दाता दानी नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, एकँकारा निराधारा निरवैर आपणा नाउँ रखांयदा। निरवैर अकाल मूर्त, अज़ूनी रहित भेव ना आंयदा। पुरख अबिनाशी साची सूरत, सचखण्ड दुआरे आप बणांयदा। आपणी मनसा आपे पूरत, एका रंग रंगांयदा। ना कोई नेड़ ना कोई दूरत, घर घर विच जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर घर विच कर त्यार, आपे वेखे वेखणहार, आदि जुगादी साची कार, हरि साचा आप करांयदा। घर विच घर घर न्यार, हरि साचे खेल खिलाया। सचखण्ड निवासी निराकार, निरगुण नूर करे रुशनाया। थिर घर पाए आपे सार, आप आपणा बंक वखाया। ऊँचो ऊँच बेऐब परवरदिगार, जल्वा नूर नूर टिकाया। तख्त निवासी शाहो शबाशी भेव न्यार, आप आपणा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बंक आप वड्याआ। साचा बंक सोहे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी हरी हरि, हरी हरि आपणा रूप वटाईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख खेल खिलाईआ। एकँकारा एका हरि, निरँकारा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप चुकाया आपणा डर, निर्भय आपणा नाउँ रखाईआ। निर्भय होया शाहो भूप, शाह सुल्ताना आप अख्वांयदा। ना कोई रंग ना कोई रूप, रूप रंग ना कोई रखांयदा। ना कोई दिशा ना कोई कूट, ना कोई वण्डन वण्ड वण्डांयदा। ना कोई सच ना कोई झूठ, ना कोई वणजी वणज वखांयदा। ना कोई ठग्ग चोर यार सके लूट, चोग नखुट्ट ना कोई वखांयदा। पुरख अकाल निरगुण शाहो भूप, मूर्त अकाल आपणा नाउँ धरांयदा। एका खेल बार अनक कोटन कोटि कोट रूप, आपणा डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड सच दुआर, एका वसे वसणहार, दूसर कोए ना संग रखांयदा। ना कोई संग सगला साथा, ना कोई

७६४ ०६

मेल मिलन्नया। ना कोई बह बह गाए गाथा, वेद पुराण ना कोई पढ़न्नया। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, मन्दिर मस्जिद चार दिवार ना कोई रखन्नया। अमृत रस ना मारे ठाठा, सर सरोवर ना कोई नुहन्नया। ना कोई पवण पवणी ना कोई जोत लिलाटा, अग्नी लाटा ना कोई रखन्नया। ना कोई पंज तत्त वसे काया माटा, ना कोई निउँ निउँ सीस झुकन्या। चौदां लोक ना दिसे चौदां तबक विछाई खाटा, ना कोई सेज हढन्नया। करे खेल पुरख अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर इक्क सुहन्नया। सचखण्ड दुआर सोभावन्त, निरगुण साचा इक्क सुहांयदा। पुरख अबिनाशी साचा कन्त, हरि हरि नारी नर नरायण आप प्रनांयदा। आप आपणी बणाए बणत, वाह वाह अपणा खेल खिलांयदा। आदि जुगादि जुगां जुगन्तर महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। ना कोई साध ना कोई सन्त, गुर पीर अवतार ना कोई अख्वांयदा। ना कोई रसना जिह्वा मणीआ मंत, मन मति बुध ना कोई धरांयदा। ना कोई हउमे ना कोई हंगत, ना कोई गढ़ हँकार वखांयदा। ना कोई वरन बरन एका रूप ना दिसे कोई संगत, तत्व तत्त ना कोई मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खेल अपार, करे कराए करनेहार, कादर आपणी खेल खिलांयदा। कादर करीम बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर जल्वा अलाहीआ। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, पुरख अबिनाशी दिस ना आईआ। श्री भगवान हो त्यार, आप आपणा घर वसाईआ। साचे तख्त सच्ची सरकार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। राज जोग इक्क निरँकार, निरगुण आपणा रूप दरसाईआ। हुक्मी हुक्म कर विचार, हुक्मी हुक्म विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बणत वखाईआ। बणत बणाए हरि भगवान, सचखण्ड दुआर सुहांयदा। निरगुण निरगुण हो मेहरवान, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। निरगुण गोपी बण बण काहन, निरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण सति बण सन्तान, निरगुण अपणा घर वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर आप सुहांयदा। सचखण्ड दुआर वड वडियाई, हरि वड्डा वड वड्यांअदा। पुरख अबिनाशी करी कुड़माई, निरगुण निरगुण आपणा आप प्रनांयदा। सो पुरख निरँजण घर वज्जे वधाई, हरि पुरख निरँजण गीत सुहागी आपे गांयदा। एकँकारा वेखे चाँई चाँई, आदि निरँजण नाल रलांयदा। श्री भगवान पकड़े बांही, अबिनाशी करता आप उठांयदा। पारब्रह्म आपणी सेवा रिहा कमाई, सेवक सेवादार नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआर आप सुहाए करे खेल बेपरवाहे, बेपरवाह आपणी कल वरतांयदा। सचखण्ड दुआर सुहञ्जणा, हरि साचा आप सुहांयदा। जोत जगाए आदि निरँजणा, आदि अन्त वेख वखांयदा। दाता बण दर्द दु:ख भय भंजना, निर्भय आपणा नाउँ धरांयदा। निर्मल निरवैर कर

कर मजना, अमृत साचा ताल सुहांयदा। सदा सुहेला बण बण सज्जणा, साचा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक एकँकारा, आपे जाणे आपणा आप पसारा, दूसर होर ना कोई वखांयदा। एकँकारा पुरख अगम्म, अलक्ख अगोचर भेव ना राया। आपणी गोदी आपे प्या जम्म, मात पित ना कोई बणाया। आपणा बेड़ा आपे बन्न्, आपे रिहा चलाया। आपे वसया आपणी छप्पर छन्न, सचखण्ड दुआरा आप सुहाया। आप राग सुणाए आपणे कन्न, नाद अनादी आप वजाया। आप आपणे मन्दिर बह बह गया मन्न, आप आपणा हुक्म सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाया। भेव खुल्हाए सचखण्ड, सति पुरख निरँजण वड वड्याईआ। पहली वण्डी आपणी वण्ड, सो पुरख निरँजण नाउँ धराईआ। दूजी खोल्ही निरगुण गंढ, हरि पुरख निरँजण वेख वखाईआ। तीजे होया आप बख्शंद, एकँकारा नाउँ उपजाईआ। चौथे आपे जाणे आपणा पन्ध, आदि निरँजण कर रुशनाईआ। पंजवें मेल गुणी गहिन्द, अबिनाशी करता संग रखाईआ। छेवें घर दर वर हरि नर एका बिन्द, श्री भगवान ल्ए उपजाईआ। सत्तवें दर गुणी गहिन्द, पारब्रह्म रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए बुझाईआ। पहला लेखा हरि करतार, सो पुरख निरँजण नाउँ धराया। दूजा लेखा धुर दरबार, हरि पुरख निरँजण वेस वटाया। तीजा दर खोल्ह किवाड़, एकँकारा अंग लगाया। चौथा अंदर कर त्यार, आदि निरँजण जोत जगाया। पंचम मेला मेलणहार, अबिनाशी करता वेख वखाया। पंचम मेला धुर दरबार, निरगुण निरगुण आप कराया। साचा तख्त कर त्यार, सच सिँघासण आसण लाया। पंचम पंचम कर प्यार, पंचम वेखे थाउँ थाया। पंचम एका दए आधार, पंचम एका रूप समाया। पंचम इक्क कर सिक्दार, पंचम एका ताज वखाया। पंचम वखाया इक्क दरबार, पंचम एका हुक्म जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आप आपणी कल वरताया। सो पुरख निरँजण हरि पुरख निरँजण पाया, आदि निरँजण वज्जी वधाईआ। अबिनाशी करता मंगल गाया, आप आपणा गीत अल्हाईआ। साचा बंक आप सुहाया, घर साचा सिफ्त सालाहीआ। शाहो भूप इक्क धराया, शाह सुल्ताना वेख वखाईआ। पंचम मुख मुख सालाहया, पंचम देवे आप वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राणा आप बणाईआ। साचा राणा हरि सुल्तान, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। पंचम पंच कर परवान, पंचम पंच प्रधान आप बणांयदा। पंचम देवे सच निशान, पंचम ताज मुख सालांहयदा। पंचम जाणे इक्क ज्ञान, पंचम इक्क रूप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी साचा भूप, हरि साचा आप अख्वांयदा। पंच मुख पंच निशाना, हरि साचे सच उपाया। निरगुण बण

बण राज राजाना, राजन राज आप अख्वाया। सति सन्तोखी बध्धा गानां, सति सति अपणा सगन मनाया। गति मित जाणे आप भगवाना, भगवन आपणी खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम ताज सोभावन्त, आप सुहाए श्री भगवन्त, आदि अन्त आप सुहाया। पंचम ताज कर त्यार, पंचम मुख मुख सालाहीआ। तख्त निवासी बैठ तख्त सरकार, निरगुण आपणे सीस टिकाईआ। सचखण्ड निवासी आप परवरदिगार, जल्वा जल्वा विच तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मुख सच्चा ताज, आप रखाए सीस ग़रीब निवाज़, दूसर होर ना कोए वड्याईआ। सीस रक्ख ताज निरँकार, निरगुण सच्ची खेल खिलांयदा। दूजी बन्ने साची धार, श्री भगवान सेव लगांयदा। पारब्रह्म करे ख़बरदार, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। सति सरूपी सति वरतार, घर साचे आप वरतांयदा। निरगुण जोत होए उज्यार, आप आपणा रंग वटांयदा। सुते प्रकाश कर निरँकार, निराकार खेल खिलांयदा। लाल गुलाला रंग चाढ़, कंचन आपणा रूप वटांयदा। सूहा वेस हरि आप सरकार, चिट्टी धार मेल मिलांयदा। पीला मेल अगम्म अपार, नीला नीली धार पार करांयदा। काला वेस करे अनेक अनक कल कल विचार, आप आपणी कल वरतांयदा। एका जोत खेल न्यार, घर घर विच आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती इक्क झमकार, आपे वेखे खोल् आपणी अक्ख, आपणा नैण आप खुल्हांयदा। एका जोती साची धार, सत्त सत्त रंग समाईआ। सचखण्ड दुआरे कर उज्यार, थिर घर साचे दए बहाईआ। थिर घर साचे आपे वाड़, आपणा कुण्डा आपणी हथ्थीं लाहीआ। सचखण्ड दुआरे कर उज्यार, थिर घर साचे दए बहाईआ। ना कोई पुरख ना दिसे नार, निरगुण खेल करे बेपरवाहीआ। सोलां करे ना कोई श्रंगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। एका जोती सत्त रंग, सति सतिवादी आप वटांयदा। आपे लाए आपणे अंग, अंगीकार आप अख्वांयदा। आप वखाए आपणा इष्ट इष्ट विच वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचे घर, घर साचा आप वखांयदा। साचे घर खेल अपार, साची जोत जोत रुशनाईआ। रंगे रंग निरगुण निरगुण धार, एका रंग चढ़ाईआ। वण्डे वण्ड सच्ची सरकार, वण्डणहारा दिस ना आईआ। एकँकारा खेल अपार, निराधार सच्ची सरकार, शाहो भूप आप अख्वाईआ। साचे तख्त बैठ करे विचार, साचे हथ्थ सच्ची वड्याईआ। आदि जुगादी हुक्मी हुक्म वरते वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। उच्चा मन्दिर हो उज्यार, सचखण्ड वसे वसणहार आप अख्वाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर पुरख अबिनाशी सर्ब घट वासी आपणा मार्ग आपे दस्से, दूसर मार्ग कोई ना लाईआ। साचे मन्दिर आपे वसे, थिर घर साचा आप वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, सच महल्ला सच पसारा, करे कराए हरि करतारा, सच सिँघासण खेल अपारा, पंचम ताज सीस दस्तारा, सति पुरख निरँजण आप सज़ाईआ। पुरख निरँजण साजण साजया, सुहाए साचा घर। पुरख अबिनाशी ग़रीब निवाजया, आपे देवणहारा वर। आपे रक्खे सीस ताजया, आपे दर दरवेश बणे दर। आपे रचया आपणा काजया, आपे घाड़न लए घड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि। साचा हरि हरि सुल्ताना, हरि सज्जण बेपरवाह अख्वांयदा। पंचम ताज ताज महाना, तख्त निवासी सीस टिकांयदा। छेवें घर घर फ़रमाना, दर दर आप समझांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण गुण निधाना, आपणा गुण आप वखांयदा। सत्त रंग निशाना दो जहानां, हरि भगवाना आप झुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वण्डण आप वण्डांयदा। सत्त रंग निशाना देवे चाढ़, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। आपे बन्ह्रे आपणी धार, हार जित ना कोए वखाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरार, दूती दुश्मण ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण खेल करे हरि, हरि की गति ना कोए जणाईआ। सत्त रंग निशाना सच दुआरे, हरि साचा सच चढ़ांयदा। सो पुरख निरँजण कर विचारे, हरि पुरख निरँजण आख सुणांयदा। एकँकारे तेरी कारे, कार करता आप कमांयदा। आदि निरँजण हो उज्यारे, जोती जोत डगमगांयदा। अबिनाशी करता पावे सारे, लै अवतारे खेल खिलांयदा। पारब्रह्म भेव न्यारे, आप आपणी कल वरतांयदा। साचे मन्दिर अस्थिल बैठ चुबारे, आप आपणा मता पकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। साचा मता हरि पकाया, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। सत्त रंग निशाना इक्क चढ़ाया, आदि जुगादि झुलाईआ। पंचम मुख ताज पहनाया, पंचम देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपणे विच रखाईआ। आपणी इच्छया आपणे अंदर धर, आपे बाहर कढांयदा। आपे देवणहारा वर, वर दाता नाउँ रखांयदा। आपे आपणी किरपा कर, कर किरपा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार बंधांयदा। किरपा कर श्री भगवान, आपणी इच्छया पूर कराईआ। करे खेल वाली दो जहान, दो दो धार आप चलाईआ। आपे निरगुण नूर महान, आपे आदि आदि वड्याईआ। आपे शक्ति होए प्रधान, आप आपणी खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे घर आपणी रचना वेख वखाईआ। घर विच घर रचन रचाया, रच रचना वेख वखाईआ। साचे मन्दिर हो उज्यार आप आपणा रंग रंगाया, हरि साचा मेल मिलाईआ। नाता बिधाता जोड़ जुड़ाया, इक्क इकांता खेल खलाईआ। दिवस राता ना खेल खलाया, दाई दाया ना सेव कमाईआ। जोती जाता आप हरि जाया, जागरत जोत इक्क

जणाईआ। आपणा नूर नूर दरसाया, नूर नुराना नूरो नूर डगमगाईआ। आप आपणा वेला वक्त सुहाया, थित वार ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बीज बजाईआ। बोया बीज आपणे खेत्र, आपे हल चलांयदा। आपे वेखे आपणे नेत्र, आपणी दृष्टी आप खुल्हांयदा। आपे रुत्त जाणे आपणी बसन्त बसन्ती चेत्र, आपे मेल मिलांयदा। आपे करे साचा हेतड़, नित नवित आपणी धार बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा पड़दा लांहयदा। हरि पड़दा आप चुकाया, आप आपणी किरपा धार। सचखण्ड दुआर सच वसाया, निरँकार निरँकार निराकार। जोती जोत मेल मिलाया, घर घर विच भरया भण्डार। घर घर विच कर रुशनाया, घर घर होए उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बणया नारी कन्त भतार। नारी कन्त बणया हरि हरि, हरि सच्चा बेपरवाहया। आपणी जोत आपणे अंदर धर धर, आप आपणा मेल मिलाया। आपणे मन्दिर आपे खड़ खड़, आप आपणा दरस दिखाया। आपणे पौड़े आपे चढ़ चढ़, आप आपणा कुण्डा लाहया। आप आपणा नूर आपे धर धर, आप आपणा अंग लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण आपणा लेखा दए समझाया। सो पुरख निरँजण इच्छया धार, आपणी खेल खिलांयदा। हरि पुरख निरँजण कर प्यार, आपणी गोद बहांयदा। एकँकारा अंदर देवे वाड़, अन्तर आपणा बीज बजांयदा। आदि निरँजण निरगुण जोत कर त्यार, आप आपणा मेल मिलांयदा। अबिनाशी करता आपे अंदर आपे बाहर, रसीआ भोगी आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति संजोगी आपणा नाउँ धरांयदा। सचखण्ड दुआरे भोगे भोग, भस्मड़ आपणा रूप वटाया। एका एक निरगुण जोत, आप आपणा खेल खिलाया। ना कोई किला ना कोई कोट, ना कोई दर सहाया। ना कोई नगारा ना कोई चोट, ताल तलवाड़ा ना कोई वजाया। किसे रक्खे ना कोई ओट, आप आपणा खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, करता पुरख आपणा नाउँ धराया। करता पुरख नाउँ रक्ख, आप आपणी कल वरतांयदा। सचखण्ड दुआरे हो प्रतक्ख, निरगुण निरगुण रूप वटांयदा। साचे मन्दिर आपे वस, आप आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी सोभा पाया। सति पुरख निरँजण धरया भेस, हरि पुरख निरँजण आप वटांयदा। एकँकारा तेरे लिखे लेख, आदि निरँजण नाल रलांयदा। श्री भगवान करे आदेस, देस आपणा आप सुहांयदा। अबिनाशी करता नर नरेश, आपणी अल्फी आप हंढांयदा। पारब्रह्म आप आपणा रिहा वेख, शाहो भूप सचखण्ड साचे आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, पुरख अबिनाशा आप

करांयदा। एका वसया सचखण्ड निरँकारा, आप आपणी जोत जगाया। इक्क सुहाए सच दुआरा, साचा तख्त सुहाया। शाहो भूप सच्ची सरकारा, सचखण्ड आपणा आसण लाया। सत्त रंग निशाना कर त्यारा, दो जहानां आप चढ़ाया। सति पुरख निरँजण साची धारा, धुर दी धार आप सुहाया। सति पुरख निरँजण बोल जैकारा, एका आपणी अलक्ख जगाया। थिर घर वसया वसणहारा, बन्द किवाड़ा आप खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरताया। सति दुआरा खोल्हया, खोलणहार आप निरँकार। आपणा वज़ूद निरगुण निरगुण आपे तोलया, तोलणहारा बोले एका धार। आदि जुगादि रहे अडोलया, ना डोले डोलणहार। सचखण्ड निवासी सच दुआरा एका खोल्हया, अतोट अतुट रक्खे भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल अपार। आदि जुगादी एका हरि सच्चा पातशाह, साचे तख्त होए तुठया। धुरदरगाही इक्क मलाह, जुगा जुगन्तर कदे ना रुठ्ठया। देवणहारा सच सलाह, लुकया बैठा एका गुठ्ठया। सचखण्ड दुआरे मुख छुपा, किसे कोलों जावे ना कदे लुट्टया। ठग्ग चोर ना लए चुरा, हरि का चोग ना कदे नखुटया। भण्डारा आपणा रिहा वरता, पुरख अबिनाशी बूटा कदे ना जावे पुट्टया। लक्ख चुरासी रिहा लगा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा आदि आपे समझा। आदि पुरख आप उपाया, आपणी दया कमाईआ। आपणी वण्ड रिहा वण्डाया, आप आपणी सेव लगाईआ। सच दुआरा आप उपजाया, वस्त अतोट अतुट झोली पाईआ। आपणी लज्जया आप रखाया, आपे देदां रहे वधाईआ। आपणा मन्दिर आप सुहाया, आपणी जोत कर रुशनाईआ। आपणा मंगल आपे गाया, सुर ताल ना कोई वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआर एकँकार, करे खेल अगम्म अपार, पारब्रह्म आपणी कल वरताईआ। कुलवन्ता काल दयाल, आपणी कल वरतांयदा। सर सरोवर इक्क उछाल, पुरख अबिनाशी आप लगांयदा। आपणी करे आप संभाल, आप आपणा वेख वखांयदा। आपणा तोड़ आप जंजाल, आप आपणी चाल वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर बंक इक्क सुहांयदा। घर बंक हरि सुहावणा, सुहाए हरि करतार। पुरख अबिनाशी भेव खुलावना, घर मन्दिर बैठ सच्ची सरकार। एका सुत सुत उपजावना, अबिनाशी अचुत्त खेल अपार। पंज तत्त ना तत्त बणावना, रक्त बूंद ना कोई प्यार। ब्रह्म जोत ना कोए जगावना, मन मति ना दए अधार। काया बंक ना कोई वसावना, करे खेल अगम्म अपार। आप आपणी गोद धरावना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर देवणहार। सो पुरख निरँजण वर घर पाया, वड दाता बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरँजण खुशी मनाया, घर वज्जदी रहे वधाईआ। एकँकारा गावण आया, आप आपणा रूप वटाईआ। जोत निरँजण

कर रुशनाया, आदि निरँजण खेल खिलाईआ। श्री भगवान बणे मलाहया, आपणा बेड़ा रिहा चलाईआ। अबिनाशी करता चप्पू लाया, आप आपणा बल धराईआ। पारब्रह्म ब्रह्म सलाहया, घर साचे सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप जणाईआ। सो पुरख निरँजण वस्त अमोल, आपणी आप जणांयदा। हरि पुरख निरँजण तोले तोल, एका कंडा हथ्थ रखांयदा। एकँकारा धारन बोल, सच जैकारा एका लांयदा। आदि निरँजण मन्दिर खोल्ह, आपणे अंदर आप टिकांयदा। अबिनाशी करता जाए मौल, मौला आपणा नाउँ रखांयदा। श्री भगवान पूरा करे कौल, कीता कौल आप निभांयदा। पारब्रह्म ना कोई रूप साँवल सौल, अलक्ख अभेद ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बणत बणांयदा। सो पुरख निरँजण सच प्यार, हरि पुरख निरँजण नाल करांयदा। एकँकारा साची सेज कर त्यार, घर साचे आप सुहांयदा। आदि निरँजण फिरे चारों तरफ़ एका वार, चारों कुंट फेरा पांयदा। अबिनाशी करता अंदरे अंदर भुंच भण्डार, सच भण्डार आप वरतांयदा। श्री भगवान आए बाहर, आप आपणी कल वरतांयदा। पारब्रह्म हो उज्यार, आप आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जोत समांयदा। जोत उजाला हरि गोपाला, जोती जोत करी रुशनाईआ । पुरख अबिनाशी दीन दयाला, दया निध वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड वसाए सच्ची धर्मसाला, थिर घर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण वेस वटाईआ। निरगुण रूप श्री भगवाना, आपणी खेल खिलांयदा। निरगुण मात पित बणे बाल निधाना, बाली बाला आप अख्वांयदा। निरगुण विष्नूं बण अञ्याणा, आप आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा साचा माणा, आप आपणा माण रखांयदा। आपे वसया निराकार, निरगुण नूर नूर उपाया। आप आपणा भर भण्डार, आपे दए वरताया। आपे अन्तिम करे प्यार, आप आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण विच टिकाया। आपे अंदर हरि करतार, आपे कल वरतांयदा। आपे अमृत भर भण्डार, नाभी आप उलटांयदा। आपे नूर कर उज्यार, आपे बाहर वखांयदा। आपे पारब्रह्म पावे सार, ब्रह्म आपणा आप उपांयदा। आपे फुल खिड़ी गुलज़ार, आपे पंखड़ीआं मुख खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, पारब्रह्म वेख वखांयदा। करे कम्म सच्ची सरकार, नेहकर्मी कर्म कमांयदा। मानस जन्म आपणे हथ्थ वण्डे करतार, आपणा भाणा आप समझांयदा। वरन बरन ना कोए प्यार, साची सरन इक्क रखांयदा। चरन सरन सरन चरन इक्क सरकार, सच्ची सरन इक्क वखांयदा। तरनी तरन तारनहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी जोत जगांयदा। ब्रह्मा

वेता पारब्रह्म, ब्रह्म ब्रह्म करी कुड़माईआ। विष्नूं अंदर आपे जम्म, आप आपणा रूप वटाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, आपे खेल खिलाईआ। आपे शंकर चाढ़े चन्न, धूंआँधार आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे विच्चों बाहर कढाया। ब्रह्मा विष्न कर त्यार, हरि आपणा खेल खिलाया। दरगह साची सच दरबार, तख्त निवासी हुक्म सुणाया। शब्द अनादी धुर जैकार, अनादी नाद वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वार एका अक्खर आप पढ़ाया। एका वार एका अक्खर आप पढ़ाए, पारब्रह्म ब्रह्म समझांयदा। विष्नूं तेरा लेखा प्रभ आपणे हथ्थ रखाए, तेरी सेवा आप कमांयदा। शंकर तेरा जोर तेरा बल धराए, तेरा तेरी झोली पांयदा। तिन्ना विचोला आप रघुराय, त्रै त्रै साचा वेस वटांयदा। आपणी वस्त दए वरताए, त्रैगुण तत्त उपजांयदा। रजो तमो सतो अंग लगाए, आप आपणी कल वखांयदा। तिन्ना त्रै त्रै रंग चढ़ाए, रंगणहारा रंग रंगांयदा। सूरा सरबंग आप अखवाए, आपणा अंग ना भंग करांयदा। सति सरूप सर्ब समाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल वरतांयदा। साची रचना रच करतार, त्रैगुण त्रै त्रै मेल मिलाया। एका हुक्म धुर दरबार, धुर फ़रमाणा आप जणाया। शब्दी शब्द शब्द जैकार, शब्द गुर आप वखाया। शब्द नूर नूर उज्यार, शब्द शब्द प्रकाश वखाया। शब्द लोआं पुरीआं लए उसार, शब्द ब्रह्मण्ड खण्ड बणत बणाया। शब्द सूरज चन्न करे उज्यार, मंडल मंडप वेख वखाया। शब्द वणज शब्द वापार, शब्द हट्टो हट्ट विकाया। शब्द महल्ल शब्द अटार, शब्द साची सेज हंढाया। शब्द नारी शब्द कन्त भतार, शब्द अंगी अंगीकार कराया। शब्द सुत होए दुलार, शब्द गोदी गोद सुहाया। शब्द जोद्धा सूरबीर बलकार, शब्द खड़ग खण्डा तेज़ चमकाया। शब्द गुर पीर होए अवतार, शब्द साध सन्त रूप वटाया। शब्द विष्नूं भरे भण्डार, साची वस्त झोली पाया। शब्द ब्रह्मा करे प्यार, आपणा लेखा आप समझाया। शब्द विष्नूं करे श्रंगार, सच अल्फी इक्क रखाया। शब्द अंदर आप निरँकार, दूसर हट्ट ना कोई वखाया। शब्दी शब्द करे परउपकार, उपकार आपणा इक्क कमाया। शब्द जित शब्द हार, शब्द झण्डा इक्क लहराया। शब्द खण्ड ब्रह्मण्ड जेरज अंड होए उज्यार, लोक परलोक होए सहाया। शब्द करे खण्ड खण्ड शब्द नार दुहागण रंड, शब्द साचा कन्त हंढाया। शब्द भेख शब्द पखण्ड, शब्द सच सच दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर आप समझाया। एका शब्द साची वस्त अनमोल, विष्नूं हरि समझांयदा। आपे तेरा तोले तोल, हरि शब्दी खण्डा हथ्थ उठांयदा। शंकर तेरा तैनूं रक्खे अडोल, तेरी धारन आप चलांयदा। शब्द अगम्मी वसे कोल, विछड़ कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा शब्द इक्क समझांयदा। साचा शब्द हरि निरँकार,

७७२ ०६

विष्नूं आप दरसाया। शब्द वसे सचखण्ड दुआर, एका गूंज गूंज विच टिकाया। शब्द सुणाए एका धार, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाया। विष्नूं चारे कुंट करे विचार, हरि का शब्द दिस ना आया। दोए जोड़ करे निमस्कार, पुरख अबिनाशी तेरी दासी सेव कमाया। सेवक बण सेवादार, चरन धूढ़ी मस्तक खाक रमाया। तेरी वस्त मेरा आधार, मेरा आधार तेरी सहाया। तूं पिता हउँ सुत दुलार, क्यों बैठा मुख छुपाया। हउँ भिक्खक मंगे बण भिखार, विष्नूं अग्गे झोली डाहया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, शब्द अगम्मी हुक्म सुणाया। विष्नूं वंसी कर उज्यार, तेरा मेरा रूप वटाया। मेरा हुक्म तेरी निमस्कार, मेरे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाया। विष्नूं सुण कर ध्यान, हरि साचा आप समझांयदा। पहलां बणाया तेरा मकान, आपणा आसण विच लगांयदा। दूसर ना दिसे कोई निशान, रूप रंग ना कोए वखांयदा। ना कोई सखी ना कोई काहन, ना कोई नारी कन्त हंढांयदा। किसे हट्ट ना दिसे दुकान, ना कोई वणज वणजारा वणज करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलांयदा। विष्नूं सुणया धुर फ़रमाण, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तूं शाह पातशाह सच सुल्तान, शहनशाह वड्डी वड्याईआ। हउँ दर दरवेशा बणे दरबान, तेरी अल्फी गल विच पाईआ। तेरा मन्दिर इक्क मकान, तूं वसे बेपरवाहीआ। हउँ मंगण आए दान, दाता दानी एका भिच्छया झोली पाईआ। तूं मेरा जाणी जाण, मैं तेरी अंस अख्वाईआ। तूं मेरा निगहवान, मैं तेरी ओट तकाईआ। तूं मेरा सच निशान, हउँ मंगां सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका विष्नूं दए समझाईआ। विष्नूं तैनूं आदि उपाया, तेरा पिता आप निरँकार। तेरा बूटा आप लगाया, माली बणया सिरजनहार। साचा अमृत आप चवाया, आपणी बरखे निझर धार। करोड़ छिआनवे मेघ ना कोए वखाया, ना कोई सेवा करे सेवादार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खोल्हे भेव आप निरँकार। विष्नूं तेरा माण रखावणा, हरि साचे सच जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरा मुख ना किसे दिसावणा, चार चार जुग चौकड़ी गेड़ा दए गिड़ाईआ। तेरा भण्डारा आप वरतावणा, तेरी वस्त हथ्थ रक्खी रघुराईआ। तेरा अन्तिम खेल खिलावणा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। अन्त तेरा चोला आप वटावणा, काया चोली भेव ना राईआ। तेरा गोला हरि अख्वावणा, तेरा तोला बणे सहाईआ। तेरा डोला आपणे कंध उठावणा, होए कहार सच्चा शहनशाहीआ। तेरा मुख ना किसे वखावणा, घूँगट एका ल्ए कढ्ढाईआ। आपणा पड़दा आप उठावणा, आपणी नार आपणे अंग लगाईआ। दूसर हथ्थ ना किसे लगावणा, लोकमात तेरी कोए ना करी कुड़माईआ। तेरी जोत आपणे विच टिकावणा, जोती जोत करे रुशनाईआ। वरन गोत विच ना आवणा, कोटन कोटि जन्म दए भवाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं देवे एका वर, एका अक्खर दए समझाईआ। विष्नूं सुणया सच संदेश, पुरख अबिनाशी आप सुणाया। निउँ निउँ करे चरन कँवल अदेश, मस्तक धूढ़ी टिक्का लाया। कवण रूप मिले नर नरेश, तेरा भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं देवे एका वर, निरगुण रूप दए दरसाया। विष्नूं हरि सुणांयदा, उठ सुत बाल नादान। तेरा नेत्र इक्क खुल्हांयदा, सचखण्ड वेख सच्चा मकान। पुरख अबिनाशी आसण लांयदा, सत्त रंग झुलाए इक्क निशान। पंचम मुख सीस ताज टिकांयदा, निरगुण जोत श्री भगवान। तेरा वेला अन्तिम सुहांयदा, लोकमात करे खेल महान। जोती जामा रूप वटांयदा, तेरा लेखा चुकाए आण। निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा, खेले खेल खेलणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची भिच्छया झोली पांयदा। विष्नूं वेला अन्तिम आवणा, हरि साचा दए समझाईआ। आप आपणा रूप वटावणा, आप आपणा खेल खिलाईआ। तेरा नाम वडियावणा, आप आपणी कर कुड़माईआ। निरगुण तेरा मेल मिलावणा, निरगुण वज्जदी रहे वधाईआ। साची सेजा आप सुहावणा, सुंञी सेज सर्ब वखाईआ। निरगुण निरगुण मेल मिलावणा, नौ नौ चार लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे तख्त सुहाईआ। साचा सगन बन्न्हे डोर, हरि साचे सच कमाया। आप आपणे नाल लए तोर, आप आपणे भाणे विच रखाया। जुग जुग चलण ना देवे दिसे दा ज़ोरू ज़ोर, बल बावन आपणी खेल खिलाया। हरि बिन अवर ना दिसे कोई होर, रूप अनूप ना कोई वटाया। लेखा जाणे अन्ध घोर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाया। विष्नूं लेखा जाणया, हरि सच्चे शहनशाह। तेरा हुक्म धुर फरमाणया, मेरा बणे जगत मलाह। तूं साहिब सच्चा राणया, तूं सिफ्ती सिफ्त सलाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे आपणा नाँ। विष्नूं मंगे नाम दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी कर कल्याण, तेरी कल वड्डी वड्याईआ। कवण रूप तेरा ध्यान, निरगुण निरगुण लए मिलाईआ। पुरख अबिनाशी आपणा देवे आप ब्यान, दूसर कोई ना गवाह रखाईआ। सो रूप श्री भगवान, हँ तेरी करे कुड़माईआ। तूं अंस मेरा निशान, सरबंस तेरा लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप बंधाईआ। विष्नूं सोहँ गाया, पाया हरि भगवान। दूसर कोए नज़र ना आया, एका दस्सया सच निशान। घर मन्दिर इक्क दिसाया, उच्च अटल मकान। गीत गोबिन्द इक्क अल्हाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होया जाणी जाण। जाणी जाण पारब्रह्म, एका आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। ब्रह्म उपजाए आपणी धुन, धुन धुन विच समाईआ। आप बुझाए आपणा गुण, गुणवन्ता गुण जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आप चुकाईआ। ब्रह्मे हरि समझांयदा, पारब्रह्म हरि करतार। एका शब्दी शब्द अलांयदा, अलाही नूर आप निरँकार। सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालांहयदा, सिफ्त सलाही परवरदिगार। उलफत आपणी आप करांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अल्फ कर उज्यार। शब्द उच्चारन कर भगवान, एका अक्खर आप पढ़ाया। एका बख्शे चरन ध्यान, दूसर सथ्थ ना कोई विछाया। बख्शणहारा दानी दान, दाता दानी आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल आपणी विच रखाया। आपणी कल अंदर धार, धर्म दया आप कमाईआ। सूतक सूतक कर विचार, प्रसूतक वेख वखाईआ। दर घर साचे खेल अपार, हरि साचा आप कराईआ। उलटा रुख ना कोई विचार, एका मुख मुख सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोहझ गोहझ दए खुलाईआ। गोहझ ज्ञान ध्यान प्रभ देवे ब्रह्म विचार, एका अक्खर नाम पढ़ाया। चेतन्न चित हरि निरँकार, साचा गेड़ा आप वखाया। गेड़ा गेड़े गेड़णहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए करनेहार। एका गेड़ा शब्द नाद, नाद अनादी आप वजाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म वखाए ब्रह्मादि, ब्रह्म ब्रह्म वज्जी वधाईआ। रूप वखाए आदि जुगादि, आदि अन्त बेपरवाहीआ। एका नारी मिले कन्त सुहाग, सुहागी कन्त इक्क अख्वाईआ। एका नेत्र खोले जाग, नैणां एका रूप दरसाईआ। एका घर लाए भाग, श्री भगवान आपणी दया कमाईआ। एका इक्क उपजाए वैराग, वैरागी आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त अंदर धर, धर धर वेख वखाईआ। अंदर धरया धाम अपारा, नूरो नूर नूर उज्यारया। पुरख अबिनाशी भरया सच भण्डारा, कराए वणज वणज वणजारया। आपे बणे हरि वरतारा, वरतावणहार अगम्म अपारया। लेखा जाणे लिखणहारा, लेखा लिख ना पावे कोई सारया। चारे वेदां खोले किवाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप लगाए एका नाअरया। आपणा नाअरा सच जैकार, ओअँ रूप आप लगाया। सोहँ रूप साची धार, ब्रह्म पारब्रह्म चलाया। दोइम रंग रंगे सच्ची सरकार, घर साचे रंग चढ़ाया। शब्द मृदंग वज्जे सच्ची धुन्कार, नाद अनादी आप सुणाया। बोध अगाधी शब्द जैकार, भेव अभेदा आप सुणाया। चारे वेदां बण लिखार, चारे खाणी मेल मिलाया। चारे बाणी कर प्यार, चारे जुग गेड़ गिड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाया। ब्रह्मे मिल्या सच दरबार, हरि साचे तख्त सुहाया। उप्पर बैठ सच्ची सरकार, आप आपणा रूप दरसाया। निउँ निउँ करे निमस्कार, नेत्र नैण नैण शर्माया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरताया। ब्रह्मा नैण नीर वरोले, नेत्र नैण ना धीर धराईआ। पुरख अबिनाशी तख्त निवासी बैठा अडोल ना बोले, शब्दी शब्द जणाईआ।

आप सुणाए आपणे सोहले, गीत ज्ञान विच टिकाईआ। आपे वसया आपणे ओहले, आपणा पर्दा आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म ब्रह्म रक्खे सरनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म उपाया, घर मन्दिर इक्क सुहांयदा। पुरी ब्रह्म वेख वखाया, चरनां आपणयां हेठ दबांयदा। उप्पर आपणा भार टिकाया, ब्रह्मा भार ना सीस उठांयदा। चारे मुख रौला पाया, चारों कुंट कूक सुणांयदा। निउँ निउँ सीस दए झुकाया, सच हदीस इक्क पढ़ांयदा। आप आपणा हुक्म चलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव चुकांयदा। भेव चुकाया हरि भगवन्त, ब्रह्मे ब्रह्म जणाया। तेरी बणाई आप बणत, तेरा रूप वटाया। तूं नारी हरि साचा कन्त, तेरी सेज हंढाया। तेरा लेखा आदि अन्त, हरि आपणे हथ्थ रखाया। तेरी महिमा नाम मंत, साचा मन्त्र सुणाया। हरि की महिमा सदा बेअन्त, तेरे मुख सलाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे घर वखाया। ब्रह्मे पाया हरि का भाओ, भेव अभेद मिटाया। निथावयां देवे साचा थाउँ, मंगन दर दरवाजे तेरे आया। पुरख अबिनाशी पकड़ी बांहों, हउँ सेवक सेव कमाया। तूंही पिता तूंही माउँ, हउँ बालक रूप रखाया। तेरा नाउँ हँस हउँ काउँ, हँस मुख चोग चुगाया। सदा देणी ठंडी छाउँ, सिर मेरे हथ्थ रखाया। मेरा नगर तेरा गाउँ, तेरा खेड़ा तूही दईं वसाया। तेरे चरनां बलि बलि जाओ, चरन धूढ़ मस्तक टिक्का लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दए बुझाया। ब्रह्मे दित्ती एका बूझ, पारब्रह्म समझांयदा। तेरा ब्रह्म ना कोई दूज, मेरी अंस अख्वांयदा। तेरी अंस मेरे चरन कँवलां जाए जूझ, चरन चरन कँवलां विच टिकांयदा। एका भेव रक्खे गूझ, तेरी झोली ना कोई पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। सुणया हुक्म ब्रह्म धार, धीरज धीर ना कोई धराईआ। पुरख अबिनाशी तेरी धार, तेरे विच समाईआ। हउँ मूर्ख मुग्ध की जाणा गंवार, तूं बेअन्त बेपरवाहीआ। हउँ बालक मंगां बण भिखार, तूं समरथ दातार, देवणहार अख्वाईआ। हउँ मूर्ख लाउणा आपणी कार, सेवक सेवा लए कमाईआ। तेरे दर बणया रहां भिखार, तेरी भिच्छया मोहे भाईआ। तेरा मंगदा रहां दुआर, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त हथ्थ अडोल, दस्तगीर बणया साचा माहीआ। दस्तगीर हरि आप सुणाया, शाह पातशाह नाउँ धरांयदा। ब्रह्मे सीर इक्क प्याया, अमृत आप चुआंयदा। सच जंजीर इक्क बंधाया, आपणा बन्धन आपे पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप लिखांयदा। लेखा ब्रह्मे ब्रह्म धार, पारब्रह्म जणाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरा रहे पसार, लोकमात वेख वखाया। लक्ख चुरासी तेरा करे जै जैकार, तेरा रंग रंगाया। अन्तिम अन्त प्रभ करया खेल आपणी वार, आप आपणी

कल वरताया। चारे वेद ना पावन सार, तेरी विद्या ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्ह्राया। सुणया भेव हरि भगवान, ब्रह्मा खुशी मनांयदा। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। तेरा झुलाए आप निशान, जुगा जुगन्तर आप झुलांयदा। तूं मेहरबाना मेहरवान, मेहर आपणी इक्क रखांयदा। तेरा प्रेम निराला बाण, हउँ आपणे विच लगांयदा। तेरे चरन मेरा माण, निमाणया माण आप रखांयदा। तेरा हुक्म धुर फ़रमाण, तेरी आण सर्ब पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमांयदा। दया निध सहिज गुण पूरा, आपणी दया कमांयदा। ब्रह्मे तेरा अन्त करे पूरा, वक्त आपणे हथ्थ रखांयदा। लोकमात प्रगट होए हाज़र हज़ूरा, निरगुण आपणी खेल खिलांयदा। आपणा शब्द नाद वजाए तूरा, तुरीआ राग आप अल्ह्रांयदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, कूड़ी क़िया आप मिटांयदा। तेरे मस्तक लाए आपणी धूढ़ा, तेरा लेखा लेखे पांयदा। करया कौल करे पूरा, भुल्ल कदे ना जांयदा। अबिनाशी करता सतिगुर सूरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। ब्रह्मे वेला अन्तिम आउणा, हरि साचा दए जणाईआ। पुरख अबिनाशी वेस वटाउणा, दिस किसे ना आईआ। विष्नूं आपणे अंग लगाउणा, तेरा लेखा दए मुकाईआ। तेरी जोत आपणे विच टिकाउणा, जोती जोत लऐ मिलाईआ। आपणा किला कोट फेर वसाउणा, तेरी पुरी ना कोई दरसाईआ। आपणा डंक आप वजाउणा, चारे वेद दए खपाईआ। साचा भेव किसे ना पाउणा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दए दुहाईआ। उच्ची कूक शब्द सुणाउणा, वाह वाह तेरी कुदरत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरताईआ। ब्रह्मे सुणया ला कर कन्न, प्रभ तेरा भेव न्यारा। तेरे दर सोहे सूरज चन्न, कोटी कोटि करन निमस्कारा। हउँ जणया तूं बण के जननी जन, उपज्या सुत दुलारा। तूं बेड़ा दित्ता बन्नृ, हउँ खड़ा अद्धविचकारा। तेरा हुक्म ल्या मन्न, दोए दोए जोड़ करां निमस्कारा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए सच प्यार। ब्रह्मे तेरा सच प्यार, हरि साचे अन्त कमावना। तेरा लहिणा देणा दए उतार, आप आपणा कर्ज़ा लाहवणा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, जोती जामा भेख वटावना। शाह सुल्ताना नाउँ धर पंचम मुख सीस रक्ख दस्तार, लोकमात वेख वखावणा। आपणी अंस कर उज्यार, साचा रथ फेर चलावणा। तेरी पुरी कर ख्वार, आपणा धाम आप वसावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा आपे करे पूरा कौल, भुल्ल कदे ना जावणा। लेखा जाणे धरती धरत धवल धौल, आकाश आकाशा वेख वखाईआ। आपे घट घट रिहा मौल, आप आपणी कल वरताईआ। आपे अमृत भरया नाभ कँवल, आपे भरया दए डुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आपे शंकर धूंआँधार, रूप अनूप दरसाईआ। एका रूप सच्ची सरकार, जोती जोत जगांयदा। एका वसे उच्च मुनार, महल्ल अटल इक्क सुहांयदा। शंकर कर आप प्यार, आप आपणी अंस सुहांयदा। बाशक तशका कर त्यार, कंठ माला आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच त्रिसूल हथ्थ फड़ांयदा। शंकर मंगी चरन धूढ़ी, हरि साचा दया कमांयदा। एका रंगन चाढ़े गूढ़ी, इक्क भिबूत वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल वरतांयदा। चरन धूढ़ी मिल्या दान, शंकर खुशी मनाईआ। इक्क झुलाए सच निशान, आपणा बल धराईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या साचा काहन, नारी कन्त मेल मिलाईआ। वाह वाह वसया घर मकान, पीआ प्रीतम वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शंकर एका वस्त आप वरताईआ। शंकर मंगे वस्त अपार, पुरख अबिनाशी आप वरतांयदा। मेरा दरस नूर अपार, एका आपणी मंग वखांयदा। तेरी लग्गी रहे प्यास, नाता कोए ना तोड़ तुड़ांयदा। तेरे नैण मेरा श्रंगार, मेरा संग तेरी तोड़ निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। रक्खया हथ्थ सिर हरि करतार, समरथ समरथ दया कमांयदा। पाए नथ्थ आप निरँकार, आपणी डोरी नाल बंधांयदा। ब्रह्मा विष्न कर प्यार, एका शंकर संग निभांयदा। थिर रहे ना कोई विच संसार, जो घड़या सो भन्न वखांयदा। तिन्नां लोकां पावे सार, त्रैगुण तेरे नाल प्रनांयदा। तेरा तत्त करे विचार, आप आपणी रत्त वखांयदा। सच सच सच्ची सरकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेल मिलांयदा। शिव शंकर मंगी सच भिबूती, प्रभ चरन धूढ़ लगाया। पुरख अबिनाशी तेरी इक्क अहूती, जगत हवन तपाया। लक्ख चुरासी वेखां चारे कूटी, जो घड़या सो भन्न वखाया। तेरी भुल्ले ना कदे अकाल मूर्ति, मूर्त अकाल दया कमाया। तेरा वज्जदा रहे नाद तूरती, तूरत तुरीआ आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे आपणा वर, आपणा लेखा दए समझाया। शंकर तेरा साचा नाता, हरि साचा जोड़ जुड़ांयदा। तेरी गाए आपे गाथा, तेरा हुक्म सुणांयदा। तेरी धूढ़ लाए माथा, तेरा मस्तक आप चमकांयदा। जटा जूट तेरी हरि पूजा पाठा, तेरा साचा मट्ठ खुल्लांयदा। तेरे अंदर भरया एका बाटा, अक्खर लेख ना कोई लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमांयदा। दयानिध गहर गुण सागर, शंकर एह समझाया। आपे वेखणहारा गागर, आप आपणा रूप वटाया। तेरा सिन्ध तेरा सागर, तेरी लहर लहर विच समाया। तेरा कर्म करे उजागर, नेहकर्मी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म सुणाया। शंकर सुण गोबिन्द गीत, हरि साचा आप सुणाईआ। आदि बंधाई तेरी रीत, तेरा भेव

दए खुल्हाईआ। ना कोई मन्दिर ना मसीत, शिवदुआला मट्ठ ना कोई वखाईआ। एका एक पतित पुनीत, पापी लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। विष्नूं सुणया अन्तिम लेखा, लिख्या हरि भगवान। आप मेटे आपणा भरम भुलेखा, सतिवादी सति दिसे इक्क निशान। निरगुण रूप दरसाया मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केसा, मूंड मुंडाए ना कोई जहान। भेव अभेद करे अवल्लड़ा वेसा, लेखा लिखे ना कोई महान। शंकर निउँ निउँ कर अदेसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर फ़रमाण। धुर फ़रमाणा शब्द जणाई, हरि साचे सच जणाया। शंकर तेरी बणत बणाई, बनावणहारा आप अख्वाया। अन्तिम लहिणा देण चुकाई, नौ नौ चार पन्ध मुकाया। तेरा बंक आप सुहाई, आप आपणा खेल खिलाया। तेरी जोती जोत मिलाई, जोती जोत लए समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाया। विष्नूं अन्तिम जाणया, हरि का खेल अपार। पुरख अबिनाशी तेरा सच्चा भाणया, हउँ मन्नां मन्नणहार। तूं दानी देवणहार दानया, हउँ भिक्खक मंगदे रहे भिखार। तेरा वेला वक्त ना किसे जाणया, कवण रूप होए उज्यार। हउँ गावां तेरा गाणया, लिव अन्तर कर प्यार। तेरी बसन्तर जगे दो जहानया, मन्त्र फिरे विच संसार। तेरा मन्त्र गुण निधानया, तत्व तत्त करे ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे लिखणहार। लेखा लिखणहार गोपाला, एका खेल खिलांयदा। शंकर तेरा तोड़ जंजाला, तेरी जोती जोत मिलांयदा। अन्त आदि होए रखवाला, आप आपणी सेव कमांयदा। आपणे गल पावे तेरी माला, मूंड मणके आप बणांयदा। आपे चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा नर नरेशा इक्क सुणांयदा। सच संदेशा हरि मेहरवाना, ब्रह्मा विष्नूं शिव सुणाया। लक्ख चुरासी कर प्रधाना, जीव ईश मेल मिलाया। पंज तत्त तत्त मकाना, हरि हरिजन ब्रह्म मति विच टिकाया। बूंद रक्त इक्क निशाना, लोकमात इक्क वखाया। शब्द शब्दी धुर फ़रमाणा, घर घर विच आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर दए पढ़ाया। एका अक्खर सच पढ़ाई, पुरख अबिनाशी आप जणांयदा। ब्रह्मे विष्न शिव करी कुड़माई, तिन्नां मेला मेल मिलांयदा। साचे दर वज्जे वधाई, दर दुआर आप सुहांयदा। करे खेल बेपरवाही, बेपरवाह आपणी बणत बणांयदा। कल वरतंता गहर गम्भीर, भेव कोई ना पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवे धीर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। अमृत बख्शे ठांडा सीर, अवर हथ्थ किसे ना आंयदा। ब्रह्मण्ड खेले खेल अखीर, आपणा बेड़ा आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अगम्मड़ी कार कमांयदा। तिन्ना शब्द इक्क हुलारा, हरि साचे आप सुणाया। लक्ख चुरासी

कर पसारा, लोकमात वेस वटाया। रवि ससि कर उज्यारा, सूरज चन्न मंडल मंडप आप सुहाया। ज़िमीं अस्माना लाए पौड़ा, आप आपणी कल वरताया। धरत धवल वेख वखाया, जल बिम्ब आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाया। साचा भेव हरि करतार, अभेद भेद खुल्हांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म आप उपाया, आप आपणी धार बंधांयदा। शंकर तेरी सेव कमाया, विष्नूं खेल खिलांयदा। पुरख अबिनाशी बेपरवाहया, थिर घर बैठा वेख वखांयदा। सचखण्ड निवासी सच दुआरा इक्क सुहाया, जोती जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग चढ़ांयदा। चढ़या रंग त्रैगुण तत्त, हरि साचा आप चढ़ांयदा। आप आपणी उपजाए मति, ब्रह्म मति भेव खलांयदा। आपे बीजे आपणे वत्त, आप आपणी सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मे विष्न शिव आप समझाया। ब्रह्मे विष्न शिव शाह सुल्तान, हरि साचा आप समझांयदा। तिन्नां मेला आप जहान, दो जहानां वाली हरि करांयदा। लक्ख चुरासी कर प्रधान, सच निशान आप झुलांयदा। चारे जुग करे कल्यान, चारे वेदां आप पढ़ांयदा। साध सन्त देवे माण, गुर पीर अवतार आप उपांयदा। शब्द जणाए धुर फ़रमाण, नादी नाद सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव छुपांयदा। भेव छुपाउणा साहिब जन मीत, अभेद अभेद अख्वांयदा। चारे जुग बोध अगाध गाए गीत, गुर पीर अवतार आप आपणा राग अल्हांयदा। आपे बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आंयदा। सदा सुहेला वसे मन्दिर मसीत, सांतक आपणा नाउँ धरांयदा। जुग जुग चलाए आपणी रीत, जुग चौकड़ी आप भवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप बंधांयदा। बन्न्हे धार लोकमात, त्रैगुण जोड़ जुड़ाया। पंज तत्त जगत करामात, कर्म कर्मी बन्धन पाया। अगम्म अगम्मड़ी अंदर धर सुगात, साचा संग रखाया। नौ दुआरे वेखे मार झात, वासना वासना विच टिकाया। आपे अंदर वेखे डूंघा खात, दर घर साचे डेरा लाया। आपे वेखे आपणा खात, आपणा लेखा आप जणाया। आपे विकाए आपणे हाट, दूसर हट्ट ना कोई वखाया। आपे खोल्हे चौदां हाट, चौदां तबकां वण्ड वण्डाया। आपे होए आत्म परमात्म सच्चा साक, सज्जण सैण नाउँ धराया। आपे ईश जीव होए पाकी पाक, जगदीसर जगदीस सेव कमाया। आपे अश्व शब्द घोड़े चढ़े मार पलाक, आपे आपणा आसण लाया। आपे बोध अगाध बोले शब्द भविख्त वाक, आपे खाणी बाणी लए समझाया। आपे होए सभ तों आक, आपे निउँ निउँ सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा विष्न शिव लए समझाया। ब्रह्मा विष्न शिव हरि समझाया, भुल्ल रहे ना राईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी आपणा गेड़ बणाया, गेड़ा गेड़ा दए गंवाईआ। जुग जुग आपणा पन्ध मुकाया, सतिजुग

त्रेता द्वापर कलिजुग दए गवाहीआ। जुग जुग रामा कृष्न बावन भेख वटाया, ईसा मूसा संग मुहम्मद दए सलाहीआ। जुग जुग नानक गोबिन्द भेख वटाया, पुरख अबिनाशी आपणी दया कमाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग निरगुण रूप ना किसे दरसाया, निहकलंक ना नाउँ धराईआ। ब्रह्मे विष्न शिव पुरख अबिनाशी फड़ के आप उठाया, फड़ बांहों लए मिलाईआ। मेरा हुक्म भुल्ल ना जाया, वेद शास्त्र सिमरत पुराण अञ्जील कुरान देण गवाहीआ। गुर पीर अवतार साध सन्त चार कुंट लोकमात जो उपजाया, अन्तिम आपणे विच मिलाईआ। उच्ची कूक ना कोए देवे दुहाया, हउँ भाणा देणा उलटाईआ। शाह पातशाह आप अख्वाया, विष्नूं तेरा संग निभाईआ। ब्रह्मे तेरा पन्ध दए मुकाया, तेरी पुरी आपणे चरनां हेठ दबाईआ। चार चौकड़ी नौ सौ चुरानवे जुग गेड़ा दए मुकाया, कोहलू चक्की चक्क आप भवाईआ। नानक निरगुण सेवादार बणके आया, उच्ची कूके दए दुहाईआ। छत्ती जुग भेव खुल्हाया, कोए हरि का भेव ना पाईआ। निरगुण आपे आप आपणा पड़दा पाया, ना सके कोई लाहीआ। सचखण्ड बैठा आपे आसण लाया, दो जहानां वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव तेरा लेखा दए जणाया, तेरा जन्म आपणे हथ्थ रखाईआ। तेरा जन्म आपणे विच टिकाया, तेरा वरन ना कोई बणाईआ। करनी करता आप अख्वाया, करता पुरख सच्ची सरनाईआ। धरनी धरत धवल दए वड्याआ, आकाश प्रकाश करे रुशनाईआ। रवि ससि सूरज चन्न चरनां हेठ लए दबाया, आप आपणा भार टिकाईआ। निरगुण जोत करे रुशनाया, इक्क इकल्ला फेरी पाईआ। दूसर अग्गे ना सीस झुकाया, आप आपणा बल धराईआ। जो घड़े सो भन्न वखाया, ब्रह्मा विष्न शिव नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मे देवे साचा वर, विष्न शिव अग्गे खड़, शंकर लेखा चुक्के सीस धड़, तन ख़ाकी ख़ाक ना कोई रमाईआ। तिन्नां सुणया हरि का हरि संदेश, त्रै चेले निउँ निउँ सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी तेरे अग्गे चले ना कोई पेश, तेरा वेस अवल्लड़ा दिस ना आया। कोटन कोटि जन्म अजन्म धारे वेस, ब्रह्मा विष्न महेष तेरी सेवक सेव कमाया। तूं आदि जुगादी रहे हमेश, जुग जुग तेरी साची साया। हउँ भाणा तेरा लए वेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक एक दए जणाया। अन्तिम भाणा हरि वखावना, करया कौल इकरार। पुरख अबिनाशी जामा पावणा, निरगुण नूर होए उज्यार। शब्द डंका इक्क वजावणा, शब्द अगम्मी एका तार। पंज तत्त ना कोई रखावणा, त्रैगुण वेस ना विच संसार। दीपक दीआ इक्क जगावणा, विष्नूं नूर उज्यार। ब्रह्म पारब्रह्म मिलावणा, पारब्रह्म करे प्यार। ब्रह्म तेरा रूप पारब्रह्म मिलावणा, पारब्रह्म करे प्यार। शंकर तेरा ठूठा आपणे हथ्थ रखावणा, निरगुण चारों कुंट बणे भिखार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल खेलणहार। विष्नूं शिव करन पुकार, शंकर

नाल रलाया। कवण रूप लए अवतार, लोकमात होए रुशनाया। कवण जन लए अधार, जन जननी लेखे लाया। कवण मन लए संवार, मन मनका दए फिराया। कवण तन करे अधार, तन तन का भेव चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आप दए समझाया। अन्तिम अन्त खेल खिलावणा, भेव अभेद हथ्थ रखांयदा। निरगुण निरगुण जामा पावणा, निरगुण निरगुण वण्ड वण्डांयदा। विष्नूं तेरा संग निभावणा, सगला संग निभांयदा। शब्द गुर इक्क उपजावणा, गुर गुर मेल मिलांयदा। चार जुग आपणे हथ्थ रखावणा, सन्त साजन मेल मिलांयदा। भगतां भगती लेखे लावणा, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमांयदा। चार जुग हरि करे ध्याना, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। गुरमुख साचे चतुर सुघड़ मेल मिलाणा, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। गुरसिखां अन्तिम देवे इक्क दरबाना, एका रूप दरसाईआ। हरिभगतन देवे ब्रह्म ज्ञाना, पारब्रह्म मेल मिलाईआ। सन्तन हथ्थीं बन्न्हे गाना, साचा सगन आप कराईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग अन्तिम जुग लोकमात होए प्रधाना, निहकलंक नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे लए उपजाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वेला अन्तिम आउणा, अन्त अन्त खेल खिलांयदा। गुरमुख साचे शब्द जगाउणा, सतिगुर साचा आपणी दया कमांयदा। गुरमुख गुरमुख साचा बेड़ा उठाउणा, दिवस रैण सेव कमांयदा। एका एक मेल मिलाउणा, दूई द्वैती हरि गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगांयदा।

कलिजुग वेला अन्तिम आया, हरि साचा दया कमांयदा। चौथे जुग फेरा पाया, निहकलंका नाउँ रखांयदा। जुग जुग विछड़े मेल मिलाया, पूर्ब लहिणा मूल चुकांयदा। आप आपणा संग निभाया, सगला संग रखांयदा। राम कृष्ना रूप वटाया, राम रामा आप हो जांयदा। ईसा मूसा अंग लगाया, संग मुहम्मद जोत जगांयदा। नानक निरगुण नाउँ धराया, मन्त्र सतिनाम दृढ़ांयदा। गोबिन्द जोत आप जगाया, वाहिगुरू फतिह आप गजांयदा। निरगुण निरगुण खेल खिलाया, खेलणहारा दिस ना आंयदा। आपणी चौकड़ फेरा पाया, चौथे जुग मुख भवांयदा। गुरमुखां औकड़ कट्टण आया, आप आपणा भेट चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगांयदा। कट्टण आया धुर दी फाँसी, जम की फाँसी रहिण ना पाईआ। निरगुण सरगुण कलीआं चोली पाई चुरासी, गुरसिख चुरासी विच कोई ना आईआ। प्रगट होया घनकपुर वासी, शाहो शबाशी नाउँ धराईआ। अंदर वड़ वड़ आपणे मन्दिर करे वासी, वास निवासा आप वखाईआ। भेव ना पायण

पंडत कासी, ज्ञानी ध्यानी दिस ना आईआ। हरिजन मानस जन्म करे रहिरासी, घर मंडल रास रचाईआ। सोहँ शब्द पवण स्वासी, सो पुरख निरँजण आप जपाईआ। जुग जुग करदा आया पूरन आसी, पूरन पतिपरमेश्वर नाउँ धराईआ। कलिजुग अन्तिम निरगुण जोत होए प्रकाशी, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। जन भगतां बणया दासन दासी, सेवक सेवा आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग खेले खेल बेपरवाहीआ। गुरसिखां फाँसी कट्टण आया, हरिजन बण जगत मलाह। स्वास स्वासी गुरसिखां दा नाम जपण आया, आपणा तन कर स्वाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत तेरा लेखा दए लिखा। हरिसंगत लेखा आप लिखावणा, लिखणहार आप अख्वाया। सम्मत सतारां हाढ़ सतारां दिवस वडियावणा, वड वड्डा वेख वखाया। सो पुरख निरँजण दर्शन पावणा, दरदीआं दर्द दए मिटाया। चौथे जुग हरिसंगत तेरी चरन धूढ़ी मस्तक तिलक आप लगावणा, तेरी लिलाट जोत करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सवा रत्ती एका केसर जुग जुग आपणे हथ्थ रखाया। सवा रत्ती केसर जगत जलाल, लालो लाल रंग चढ़ांयदा। गुरसिख नेड़ ना आए काल, महांकाल सीस झुकांयदा। हरिजन मेला दीन दयाल, सतिगुर पूरा आप मिलांयदा। लक्ख चुरासी विचो भाल, आप आपणा तोल तुलांयदा। भाग लगाए काया माटी खाल, पंज तत्त काया वेख वखांयदा। जन्म जन्म घालन जो रहे घाल, कीती घाल लेखे लांयदा। सच सुहाए सच्ची धर्मसाल, छप्पर छन्न ना कोई छुहांयदा। देवे नाम सच्चा धन माल, सच ख़जाना इक्क वखांयदा। आपे बणया रहे कंगाल, गुरसिख आपणे शाह बणांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत तेरा साचा लेखा, लिखणहार दस दस्मेशा, दर घर साचे आप लिखांयदा। केसर सवा रत्ती, गुर गोबिन्द लोकमात वण्ड वण्डाईआ। गुरमुखां वा ना लग्गे तत्ती, अग्नी तपे सृष्ट सबाईआ। पुरख अबिनाशी देवे एका मती, एका ब्रह्म चार वरन जणाईआ। गुर चरन दुआरा साची हट्टी, दूसर हट्ट ना कोई वखाईआ। गुरमुख लाहा रहे खट्टी, मनमुख गूढ़ी नींद सवाईआ। कूड़ कुड़यारा जड़ रिहा पुट्टी, झूठा बूटा कोई रहिण ना पाईआ। सतिजुग साची पौह आपे फुट्टी, सतिगुर नूर होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्न जुग दा साचा लेखा, राम भरत जिउँ आपे वेखा, शत्रुघन मेल मिलाईआ। भरत भारत भवन भय कर, भय भयानक खेल खिलांयदा। गुर गुर चरन सीस धर, धुर मस्तक टिक्का लांयदा। राम नाम एका हरि, हरि हरि रूप समांयदा। राज तिलक मिल्या सच्चे घर, पिता पूत ना कोई वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपे कर, आपे हुक्म सुणांयदा। हुक्म सुणना सिँघ प्रगट, प्रगट हो

७८३ ०६

हरि जणाईआ। पुरख अबिनाशी वसणहारा घट घट, घट घट जोत करे रुशनाईआ। सवा रत्ती केसर लिआउणा झट्ट, पहली चेत जो मंग मंगाईआ। तिलक जोत लगाए ललाट, आपणी लिलाट गुरसिखां विच टिकाईआ। दूई द्वैती मिटे फट्ट, फट्टड़ गुरसिख कोई दिस ना आईआ। सतिगुर पूरा तोले आपणे तक्कड़, आपणा कंडा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अलक्ख लेखा फेर दए समझाईआ।

चौथे जुग खेल अपारा, चार वरनां आप करांयदा। निरगुण नर नरायण ल्ए अवतारा, नर हरि आपणा रूप वटांयदा। जुगा जुगन्तर वेखणहारा, जुग जुग आपणी कल वरतांयदा। सन्तन दए नाम हुलारा, राम नाम इक्क वड्यांअदा। भगतन मेला धुर दरबारा, हरि गिरधारा आप करांयदा। गुरमुखां करे सच प्यारा, साची सिख्या इक्क समझांयदा। गुरसिख मेला विच संसारा, चेला गुर रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची वण्डन वण्ड वण्डांयदा। वण्डी वण्ड सतिगुर पूरे, साचा हिस्सा आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग नाते दिसन कूड़े, कूड़ो कूड़ जगत वड्याईआ। मनमुख जीव माया ममता मूढ़े, हउमे हंगता घर हलकाईआ। गुरमुख विरले बख्शे चरन धूढ़े, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़े, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। काया रंगन रंग चढ़ाए गूढ़े, उतर कदे ना जाईआ। दर्शन पा उतरन सगल विसूरे, वख आत्म रहे ना राईआ। शब्द सरूपी देवे तत्त, रत्ती रत्त विच टिकांयदा। सति सन्तोखी धीरज जति, हठ तप आप सिखांयदा। एका बीज आत्म घत, फुल फुलवाड़ी मात महिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा बूटा मात लगांयदा। नौ जन्म मानुस मानुख, मन ममता विच भवाईआ। मात गर्भ आए उलटा रुक्ख, अग्न कुण्ड आप तपाईआ। दिवस रैण सुखणा सुख, नौ अठारां पन्ध मुकाईआ। सुफ़ल कराए मात कुक्ख, मुख आपणा बाहर रखाईआ। दरस देवे जीओ अंदर लुक, बैठा पड़दा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन लेखा दए समझाईआ। नौ जन्म नौ वार, मानस मानस आप उपांयदा। आप आपणा दए आधार, आप आपणा नाम दृढ़ांयदा। आप आपणी किरपा धार, आप आपणा मेल मिलांयदा। नौ जन्म जप तप करे संसार, हठ मठ आप रखांयदा। तीर्थ तट करे ख्वार तट, तट किनारे आप फिरांयदा। गुर दर मन्दिर मट्ठ करे पुकार, शिवदुआले राह तकांयदा। जोत ज्वाला लट लट करे उज्यार, घर घर दीपक आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस धरांयदा। नौ जन्म लोकमात, मानस रूप वटाईआ। देवणहारा साची दात, साची वस्त झोली पाईआ। एका अक्खर वड करामात,

हरि हरि की करे पढ़ाईआ। उत्तम रक्खे गुरमुख ज़ात, वरन बरन ना कोई रखाईआ। इक्क रंग रंगाए दिवस रात, रैण अन्धेरी ना कोई वखाईआ। आपे वेखे मार झात, आप आपणा पड़दा लाहीआ। खोल्हणहारा बन्द ताक, बन्द किवाड़ आप तुड़ाईआ। पुच्छणहार उत्तम ज़ात, पुरख अबिनाशी इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा दए समझाईआ। पहला जन्म मानस पा, आपणी बूझ ना कोई रखांयदा। बाल जवानी लए गंवा, हरि का नाम ना कोई ध्यांअदा। अन्तिम वेला राह तका, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। पुरख अबिनाशी दया कमा, आप आपणा हथ्थ रखांयदा। मानस जन्म दए दवा, दूजी वार जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन लेखा आप समझांयदा। दूजी वार मानस जोत, तन माटी आप महिकाईआ। आप बंधाए विच वरन गोत, ब्रह्म रूप ना कोई जणाईआ। तन ना लग्गे शब्द चोट, मन मनका ना कोई भवाईआ। वासना कढ्ढे ना कोई खोट, निरवैर ना कोई दरसाईआ। पुरख अकाल ना दिसे ओट, एका इष्ट ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमाईआ। वेला अन्तिम बिरध अवस्थ, जन्मी जन्म संवारदा। आप जणाए आपणा अस्त, आपे पैज संवारदा। लेखा जाणे कीट हस्त, खेले खेल सच सरकार दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलाए धुर दरबार दा। अन्त बुड़ेपा सन्तन संग, हरिजन आप कराईआ। कर दरस ना कोई सके मंगे मंग, नेत्र नैण रहे शर्माईआ। मानस जन्म ना होए भंग, लेखा लेखे लए लगाईआ। तीजे चोले चाढ़े रंग, मानस जन्म दए उपाईआ। आप फिराय तीर्थ तट जमना सुरस्ती गंग, चारों कुंट फेरा पाईआ। हरि का नाम ना लाए अंग, दुरमति मैल ना कोई धवाईआ। बण बण सन्त भिच्छया रिहा मंग, साची भिच्छया ना कोई वखाईआ। सृष्ट सबाई दर दरवाज़ा रिहा लँघ, आपणा कुण्डा ना कोई खुल्हाईआ। अन्त बुड़ेपा आए पन्ध, जम की फाँसी ना कोई कटाईआ। साचे भगत मेल मिलाए करे विछोड़ा बन्दी बन्द, एका बन्दना दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौथे लेखा दए वखाईआ। चौथा जन्म लोकमात, मानस मनुख आप धराया। बिरध जवाना ना पुच्छे वात, वेला गया हथ्थ ना आया। हरि हरि नाउँ ना गाए गाथ, हिरदे हरि ना कोई वसाया। मन मति फिरे हाटो हाट, साचे हट्ट ना कोई विकाया। अन्तिम काया चोला जाए पाट, थिर कोई रहिण ना पाया। आत्म हिरदे रक्खे वास, हरि का नाम ना मात ध्याया। पुरख अबिनाशी कर प्रकाश, आपणी दया कमाया। पंचम जामा दए धरवास, पूत सपूता रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा खेल खिलाया। पंचम जामा मात धर, धरत धवल सुहांयदा। जवानी अवस्था मिले वर, आप आपणा मुल पुआंयदा। सन्त साजन लभ्भे

घर घर, दर दर फेरी पांयदा। वक्त लँघाए डर डर, भय भयानक इक्क जणांयदा। हरि के पौड़े ना सके चढ़, डण्डा हथ्थ ना कोई फड़ांयदा। माया ममता बैठे अड़, दूसर भार ना कोई वण्डांयदा। काचे पत्तर जायण झड़, साचा फल ना कोई खवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस धरांयदा। जवान अवस्था जोबन जवानी, जुग जुग हंढाईआ। हरि का नाम नाम निशानी, लभ्भदे फिरदे थाउँ थाँईंआ। तीर निशाना ना वज्जे कानी, तीर अणयाला ना कोई चलाईआ। अमृत हथ्थ ना आए ठंडा पाणी, सर सरोवर फेरी पाईआ। वेले अन्तिम गाए हरि की बाणी, अन्तिम हरि हरि लिव लाईआ। पुरख अबिनाशी जाण जाणी, जानणहार दया कमाईआ। छेवां जामा देवे दो जहानी, लोकमात कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुरत सवाणी लए उठाईआ। सुरत सवाणी आप जगाए, आपणी दया कमांयदा। जोबन अवस्था रंग रंगाए, एका तत्त समझांयदा। जगत विद्या आप पढ़ाए, गुर गुरमुखां गिण गिण आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छेवां रूप आप दरसांयदा छेवां जामा छे छे धार, छे घर आप लगाईआ। जोबन जवानी पाए सार, मस्त मस्तानी रहे ना राईआ। लभ्भे हाणी विच संसार, सुरत सवाणी दए दुहाईआ। उच्ची कूके करे पुकार, चारों कुंट फेरा पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा आसा विच समाईआ। अन्तिम आसा प्रभ मिलण का चाउ, चाउ घनेरा इक्क रखांयदा। आदि जुगादी करे पसाओ, आप आपणा खेल खिलांयदा। वेखणहारा थाँईं थाउँ, थान थनंतर आप सुहांयदा। काया खेड़ा वेखे नगर गराउँ, आपणा भेव खुल्हांयदा। आपे मार्ग पाए फड़ फड़ बांहों, पार किनारा आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति आपणा रूप वटांयदा। सत्तवां जामा लोकमात दे, एका मति समझांयदा। सतिगुर लग्गे साचा नेह, बिन सतिगुर कोए ना पार करांयदा। अमृत बरखे ना कोई मेंह, मेघ रूप ना कोई वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमांयदा। अठ्ठवें जामे सुरत प्यासी, आत्म अन्तर रही बिल्लाईआ। चार कुंट दहि दिशा फिरे बण बण दासी, कोई सन्त लए मिलाईआ। कवण रूप निज घर करे वासी, स्वासी स्वास कवण समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बिध आपणे हथ्थ रखाईआ। अठ्ठवें जामे हरि बिल्लाए, सांतक सति सति ना कोई करांयदा। बाल जवानी बिरध अवस्था हरी गुण गाए, गुण गा गा सेव कमांयदा। अठ्ठे पहर एक लिव लाए, नेत्र नैण ना कोई खुल्हांयदा। विकार हँकार सर्ब गंवाए, प्यार अधार इक्क रखांयदा। कवण यार मेल मिलाए, सुंञी सेज कवण हंढांयदा। कवण नार कन्त रलाए, दो जहानां पन्ध मुकांयदा। कवण नैण श्रंगार कराए, सोलां इच्छया पूर करांयदा। कवण कंगन तन पहनाए,

७८६ ०६

ठग्ग चोर यार कवण वखांयदा। कवण सुरत मिशराणी लए मनाए, कवण ब्रह्मण रूप वटांयदा। कवण गंगा तीर्थ यात्रा लए कराए, राम नाम कवण सुणांयदा। कवण अठ्ठां तत्तां लेखा दए मुकाए, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध समझांयदा। कवण मानस जन्म रास कराए, कवण जम की फाँसी फंद कटांयदा। कवण चौथे पद लए मिलाए, चौथे घर कवण बहांयदा। कवण ब्रह्म नद वजाए, राग अनादी सुणांयदा। कवण साची हद्द टपाए, आदि जुगादी खेल खिलांयदा। धुर दी वादी कवण रखाए, एका शब्द बोल सुणांयदा। पुरख अबिनाशी हरि रघुराय, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। सन्त साजण दए समझाए, भरम भुलेखा सर्ब कढांयदा। वेले अन्त हरि भगवन्त जो जन लिव अन्तर लाए, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौवां जामा फेर दवांयदा। नौवां जामा मानुस धार, लोकमात लए अंगड़ाईआ। गुरसिख बणे विच संसार, सतिगुर पूरा लए बणाईआ। पुरख अबिनाशी लए अवतार, आप आपणा मेल मिलाईआ। सिर रक्ख हथ्थ समरथ करतार, पिछला लहिणा झोली पाईआ। चढ़े रथ सच्ची सरकार, रथ रथवाही बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरा जन्म दए समझाईआ। नौवें जामे जन्म रक्ख, सतिगुर सच्चे मेल मिलाया। जुगां जुगन्तर हो प्रतक्ख, गुरमुख साचे गोद बहाया। लक्ख चुरासी विच्चों करे वक्ख, नौ दुआरे ना कोई फिराया। करनहारा कक्खों लक्ख, लक्खों कक्ख दए बणाया। दरस दिखाए हो प्रतक्ख, जोती नूर नूर रुशनाया। कलिजुग विच्चों अन्तिम लए रक्ख, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। मानस जन्म ना होए भठ्ठ, कलिजुग भठयाले ना कोई तमाया। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, पिछला लेखा आपणे हथ्थ रखाया। ना कोई धूणी लाए फड़ फड़ काठ, अग्नी हवन ना कोई कराया। ना कोई जाए तीर्थ ताट, सर सरोवर ना कोई नहाया। ना कोई मन्दिर मस्जिद मठ्ठ, शिवदुआला ना कोई वखाया। एका चरन दुआरे कर अकट्ठ, आप आपणे गले लगाया। गुरमख तेरा खोल्ह्या साचा हट्ट, सतिगुर वणजारा बण के आया। तेरी सेजा सुत्ता साचे पट, आप आपणा आसण लाया। तूं आपणी करवट आपे लई वट्ट, वेला अन्तिम दए दुहाया। बिन निहकलंक किसे ना मेटणा लग्गा फट, कोटन कोटि साध सन्त देण दुहाया। सावण रस हरि चरन रहे चट्ट, दिवस रैण इक्क ध्यान लगाया। गुरसिख तेरी नेड़े वाट, पिछला दूर दुराडा पन्ध मुकाया। अन्तिम उतरना आपणे घाट, अद्धविचकार ना कोई रुढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नौ नौ लेखा दए मुकाया। नौ जन्म दर चुक्या भार, नौ नौ चुरासी गेड़े आप भवाईआ। नौ चार वाष्ना कर ख्वार, नौ नौ करे हलकाईआ। नौ दुआरे रो रो ज़ार, नौ नौ दए दुहाईआ। कलिजुग आई अन्तिम वार, पुरख अबिनाशी खेल खिलाईआ। हरिजन साचे लए उभार, जिउँ बालक

माता गोद बिठाईआ। सालस बणे आप निरँकार, हक हकीकत दए वखाईआ। ख़ालस करे सर्ब संसार, चार वरन इक्क पढ़ाईआ। बालक बिरध ना करे विचार, जो जन जगत ना दए वड्याईआ। गुरमुख सज्जण कर प्यार, चरन धूढ़ी मजन इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन साचा तारया, गुरसिख गोबिन्द ज़ात। कर किरपा पार उतारया, वेले अन्तिम पुच्छी वात। झूठा खेल ना कोई खिलारया, जिउँ लिख्या लेख सुलखणी सच दवात। आपे आपा उत्तों वारया, कलिजुग मिटी अन्धेरी रात। गुरसिख तेरी पैज संवारया, अंदर बह बह रिहा झात। तेरा झूठा मन्दिर पाड़या, आप वखाया आपणा घाट। दिवस सुहाया सतारां हाढ़या, सतिगुर पूरा पुच्छे वात। गुरसिख साचे लाड़या, तेरी चढ़ी सच बरात। सचखण्ड दुआरे तेरी जोती माता तेरे उत्तों पाणी वारया, निरगुण बध्धा साचा नात। तेरी सुरत ना रहे कुँवारया, नाम मिले सोहँ सच्ची दात। तेरा वज्जदा रहे नगारया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी वाट। गुरसिख सोहणे सज्जण, उठ मीत प्यारे मीत। कलिजुग काया भाण्डे भज्जण, ना दिसन देहुरे मसीत। शाह सुल्तान राज राजान घर तजण, सुहागी गाए ना कोई गीत। मक्का काअबा हाजी ना हजन, मुल्ला शेख़ ना दिसे मसीत। गुरसिख गुर चरन दुआरे बह बह सजण, लोकमात होए पतित पुनीत। मदिरा मास जो जन तजण, अन्तिम मिट्टी ना होए पलीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग रंगाए हस्त कीट। गुरसिख सच्चे दूल्हिआ, तेरी दूल्हन हरि निरँकार। तेरे गल अद्रिश फूलया, फुल फुलवाड़ी होई उज्यार। पुरख अबिनाशी चुकाए मूलया, बण मालण पाए हार। तेरी सूली होई सूलया, सतिगुर पूरे चुक्या भार। गुरसिख बूटा कदे ना हुल्लया, लोकमात खिड़ी गलज़ार। आए दर जो फिरे भुलया, दूजे घर ना कोई वापार। किसे अग्ग ना मिलणी चुलया, नारी कन्त ना करे प्यार। कलिजुग माया ममता अंदर रुलया, फल दिसे ना किसे डाल। गुरसिख तेरा सतिगुर पूरा पाए मुलया, कीमत करता दर विचार। लाल अनमुल्लड़ा कदे ना रुलया, लाल लालां विच करे शंगार। जो जन दर दर आए भुलया, चरन सरन करे निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख गुरसिख हरिजन हरिभगत कर किरपा जाए तार।

❊ १८ हाढ़ २०१७ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल ❊

सचखण्ड निवासी हरि निरँकार, घर साचा सच सुहांयदा। पुरख अबिनाशी निराकार, निरवैर आपणा नाउँ धरांयदा। जोत प्रकाशी अगम्म अपार, खण्ड ब्रह्मण्ड सुहांयदा। सर्ब निवासी सिरजणहार, आदि अन्त वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर सच दुआरा आप सुहांयदा। सच दुआर सुहञ्जणा, परम पुरख करतार। जोत जगाए आदि निरँजणा, इक्क इकल्ला एकँकार। साचे मन्दिर बह बह सजणा, आप सुहाए बंक दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे कराए साची कार। कार करदंड़ा पुरख अकाल, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर खेल न्यार, खेलणहार आप खिलाईआ। लक्ख चुरासी फल वेखे डाल, पत्त डाली फोल फोलाईआ। हट्ट विकाए काल दयाल, निरगुण निरगुण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना वेख वखाईआ। आपणी रचना लक्ख चुरासी वेखणहार, त्रै त्रै आपणी खेल खिलांयदा। निरगुण दीआ कर उज्यार, साचा मन्दिर आप सुहांयदा। कँवल नैण मीत मुरार, आप आपणी कल वरतांयदा। शब्द अगम्मी सच जैकार, धुर दरबारा आप सुणांयदा। घट घट अंदर कर पसार, आप आपणा आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सगन आप मनांयदा। लक्ख चुरासी रचन रचा, हरि साचा खेल खिलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव सेवा ला, साचा हुक्म जणांयदा। धुर फ़रमाणा इक्क सुणा, रसना जिह्वा ना कोई हिलांयदा। आपणा ताणा आप तणा, आपणा पेटा आप वखांयदा। साचा राणा बण धुर दरगाह, बेपरवाह आपणा नाउँ वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगांयदा। रंग रतड़ा पारब्रह्म बेअन्त, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। लेखा लिखे जुगा जुगन्त, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, अन्त आदि भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका लेखा दए समझाईआ। एका लेखा हरि समझाया, ब्रह्मा विष्न शिव उठांयदा। साची सेवा सेवादार कराया, भेव अभेदा आप खलांयदा। देवी देवा आप अख्वाया, आप आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वस्त आपणे हथ्थ रखांयदा। साची वस्त लाल गुलाल, हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। दो जहानां बणे दलाल, दर घर साचे दए वड्याईआ। लेखा चुकाए काल महांकाल, दीन दयाल होए सहाईआ। वसाए धर्म सच्ची धर्मसाल, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। करे कराए सदा प्रितपाल, प्रितपालक आप हो जाईआ। आपणे फल लगाए डाल, ब्रह्मा विष्न शिव उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वस्त आपणे संग निभाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करन ध्यान, चरन कँवल चित

७८६ ०६

लाया। पुरख अबिनाशी बख्शे दान, तेरा दान जीआं रिज़क सबाया। हउँ सखी मंगे बण बण काहन, कान्हा तेरा रूप समाया। हरि रक्खणा एका माण, माण निमाणयां गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार दए समझाया। साची धार हरि निरँकार, त्रै त्रै आप समझांयदा। मेरा रूप थिर दरबार, सचखण्ड दुआर वेस वटांयदा। अंस बंस खेल न्यार, पूत सपूता वेख वखांयदा। साचा सच दए हुलार, सच साची खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला आप मिलांयदा। मेल मिलावणहार गोपाल, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। विष्नूं उठाया आपणा लाल, ब्रह्मे आपणी गोद सुहाईआ। शंकर बणया आप दलाल, सच विचोला बेपरवाहीआ। चरन प्रीत निभाए लग्गी निभे नाल नाल, साची जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रीत इक्क वखाईआ। साची रीती हरि निंरकार, आपणी आप चलांयदा। तिन्नां करे इक्क प्यार, दया नाथ दया कमांयदा। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़, चरन कँवल बाहर कढांयदा। आपणा रस आपे कर त्यार, अमृत नाउँ रखांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, निरगुण निरगुण आप खिलांयदा। विष्नूं फड़या निराकार, अकार अकार अकारा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलांयदा। अमृत साचा सतिगुर साहिब सुल्तान, सचखण्ड दुआरे हथ्थ रखांयदा। पुरख अबिनाशी खेल महान, तख्त निवासी आप करांयदा। विष्नूं शिव ब्रह्मा कर प्रधान, आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरतांयदा। साचा अमृत हरि भण्डार, पुरख अकाल भराया। विष्नूं करे सच प्यार, पूत सपूता गले लगाया। आपणी रत्त कढ्ढे बाहर, लाल रंगण रंग रंगाया। ब्रह्म तत्त कर त्यार, एका मति दए समझाया। साचा सति विच संसार, निरगुण धार बन्धन पाया। शंकर मेला सच दुआर, घट घट वासी आप वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रस आप चवाया। विष्नूं रत्त अमृत रस, हरि अमर अमर वखाया। पुरख अबिनाशी करया खेल हस्स हस्स, निरगुण आपणा रूप वटाया। पुरख अगम्मड़ा आपणा मार्ग साचा दस्स, साचा राह इक्क चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लाल गुलाला रंग चढ़ाया। एका अमृत हरि करतारा, साचा सच वखांयदा। दूजी विष्नूं रतड़ी धारा, रत्ती रत्त रंगांयदा। दोहां मेला अपर अपारा, पुरख करतार आप करांयदा। ना जल ना रत्त पसारा, दोहां मेल मिलांयदा। आपणा रंग आपे चाढ़ा, रंग रंगीला वेख वखांयदा। लहू मिझ ना दिसे गारा, हड्ड मास ना जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खलांयदा। अमृत रत्त तत्त कर त्यार, हरि साचे बणत बणाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव बहाए उठाल, दे मति आप समझाईआ।

सचखण्ड निवासी वसे त्रै त्रैकाल, त्रैकाल दरसी भेव ना राईआ। आपणा रक्खे अग्गे इक्क सवाल, सवाल स्वामी दए समझाईआ। कवण रूप होए महांकाल, कवण दुआरे काल वखाईआ। कवण तोड़े तोड़णहार जंजाल, जागरत जोत कवण रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर दए वधाईआ। साचे मन्दिर घोलन घोलया, अमृत रत्त कर त्यार। पुरख अबिनाशी एका बोलया, विष्नूं सुण तेरी पुकार। आदि जुगादी रहे अडोलया, ब्रह्मा तेरी पावे सार। शंकर तेरा लाहे चोलया, चोली रंगे आप निरँकार। आपे खेलणहारा साची होलया, लाल गुलाला रंग चाढ़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करे सच विहार। सच विहारा हरि निरँकारा, धुर दरबारा आप करांयदा। आदि आदि खेल अपारा, दिस किसे ना आंयदा। अमृत रस रत्त रतड़ी धारा, रत्ती रत्त रत्त रंगांयदा। साचा तिलक कर त्यारा, पुरख अबिनाशी आपणे हथ्थ टिकांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव लगाए वारो वारा, तिन्नां आपणे विच बन्द करांयदा। उच्ची कूक बोल जैकारा, एका हुक्म सुणांयदा। लक्ख चुरासी वरते वरतारा, अजून अजूनी गेड़ वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी मति आप रखांयदा। लक्ख चुरासी भरे भण्डार, वड भण्डारी आप अख्वांयदा। जीवां जंतां दए अधारा, जीवण आपणा नाउँ धरांयदा। नारी कन्त करे श्रंगारा, साची सेज हंढांयदा। बणाए बणत अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ा मेल मिलांयदा। हड्ड मास नाड़ी चमड़े वसे बाहरा, अम्मड़ा अम्मड़ी ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क अलांयदा। धुर फ़रमाणा शब्द जणाया, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। लक्ख चुरासी गेड़ बणाया, जून अजूनी वेख वखाईआ। चारे जुगां बन्धन पाया, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अंक लगाईआ। ब्रह्म ब्रह्म वेता ब्रह्म वटाया, रूप अनूप आप दरसाईआ। खेवट खेटा नाउँ धराया, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। मात पिता जननी जन जन जाया, धन्न धन्न जणेदी माईआ। कागद कलम लिख लिख थक्की शाहया, चारे वेद देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तिलक लए लगाईआ। मस्तक लग्गा तिलक लिलाट, विष्नूं कूक कूक पुकारया। पुरख अबिनाशी तेरा कवण किनारा पार घाट, कवण दुआरे बैठ करे खेल निरंकारया। कवण घर तेरा खुल्ले हाट, कवण वणज होए वणजारया। कवण नूर तेरा जोत लिलाट, कवण नूरो नूर उज्यारया। कवण लेखा चुकाए आन बाट, लक्ख चुरासी पावे सारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खोल्ले भेव अगम्म अपारया। पुरख अबिनाशी भेव खुल्लाया, विष्नूं एका इक्क सुणांयदा। आदि जुगादी इक्क रघुराया, दूसर होर ना कोई दसांयदा। आपणा गेड़ा रिहा चलाया, गेड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग एका बन्धन पाया, दूसर बंध ना कोई रखांयदा।

आपणा तन्दन तन्द वखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग कवण धार, प्रभ साचे सच वरतावनी। कवण रूप आवे विच संसार, पूरन करे भावनी। कवण सोहे बंक दुआर, कवण मेटे रैण अन्धेरी शामनी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, भेख वेख वगे बावनी। पुरख अबिनाशी आप अलाया, निरगुण निराकार अडोल। विष्नूं तेरा लेखा दए वखाया, शब्द अगम्मी अनादी बोल। जुग जुग पन्ध दए मुकाया, चौकड़ी जुग हट्ट वरोले खोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम अन्त हरि भगवन्त तेरी मूर्त जाए मौल। साची मूर्ति मूर्त अकाल अकाल, मूर्ति वड वड्याईआ। पुरख अबिनाशी आप आपणे लए भाल, दो जहानां वेख वखाईआ। आपे बणे सालस साल, सच सालसी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप लिखाईआ। चौकड़ी जुग अन्त करावणा, नौ नौ चार रहिण ना पाईआ। विष्नूं भगवान मेला आप मिलावणा, आप आपणा रूप अनूप दरसाईआ। आपणा तिलक हथ्थीं फेर लगावणा, तेरी लिलाट विच रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग जुग गेड़ा तिलक लिलाटी आप वखाईआ। ब्रह्मे तिलक लिलाट लगाया, आत्म ब्रह्म होई जणाईआ। पड़दा ओहला आप हटाया, साची हाट वज्जी वधाईआ। आत्म खाट साची सेज नर हरि पाया, नारी कन्त खुशी मनाईआ। नेड़े वाटी पन्ध मुकाया, औखी घाटी आप चढ़ाईआ। दीवा बाती मन्दिर सुहाया, कमलापाती मेल मिलाईआ। गाई गाथी शब्द अलाया, चार वेदां करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तिलक लए लगाईआ। तिलक तिलक लोकमात धर, धरन धवल सुहाया। साध सन्त मंगां मंगदे रहे दर, पुरख अबिनाशी भिच्छया पाया। बावन रूप अग्गे खड़, बल दुआरा मंग मंगाया। पहली वार मस्तक लाया हरि, निरगुण सरगुण वेस धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाया। बावन तेरी साची धार, रत्त रत्त विच टिकाईआ। तेरी आसा जगत प्यार, तृष्ना तृष्ना वेख वखाईआ। तेरा फल सच्ची गुलज़ार, पत्त डाली आप महिकाईआ। तेरा बूटा होया उज्यार, कली कली आप महिकाईआ। नाम धर विच संसार, एका केसर नाउँ रखाईआ। ना कोई जाणे जीव जंत गंवार, भेव अभेदा आप छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बावन तेरी रत्ती रत्त, अंदर पाई ब्रह्म मत, पुरख अबिनाशी एका तत्त, धरनी धरत धवल दए समझाईआ। साचा केसर कर त्यार, चार जुग आप समझाया। जगत जगदीश खेल अपार, पंडत पाधां वेख वखाया। थक्का मांदा जीव गंवार, हरि का रूप दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाया। सतिजुग

७६२ ०६

साचा राह चलाया, हरि साचे वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण वेस वटाया, वरन गोत ना कोई जणाईआ। ब्रह्मे सुत आप उपजाया, एका विद्या करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए खिलाईआ। बावन धरया बावन रूपा, भेख अवल्लड़ा इक्क रखांयदा। वसणहारा चारे कूटा दहि दिशा फेरी पांयदा। इक्क लगाया साचा बूटा, रत्न अमोलक आप कढांयदा। आपे देवे साचा झूटा, सच हुलारा नाम रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगांयदा। ब्रह्मे सेत्ज तेरी जूनी, बावन आपणा रंग रंगाया। पुरख अबिनाशी पुकार सुणी, सुण दातार वेस वटाया। लेखा जाणे गुण अवगुणी, गुणवन्ता बेपरवाहया। आपणी रत्त आपे छाण पुणी, पुण छाण आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका फल दए खुआया। साचा केसर कर त्यार, चार जुग आप समझांयदा। सतिजुग त्रेता उतरे पार किनार, द्वापर आपणा मुख छुपांयदा। त्रेता पहलों आए वार, त्रीया वेख वखांयदा। गौतम अहल्लया कर ख्वार, एका हुक्म सुणांयदा। वलीआ छलीआ आप निरँकार, अछल अछल भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप वटांयदा। रूप वटाए पुरख करतार, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। त्रीया त्रेता कर पसार, राम रामां नाउँ धराईआ। दसरथ होए सुत दुलार, जगत अयुध्या भाग लगाईआ। वशिष्ट गुरु कर प्यार, एका रंग रंगाईआ। सृष्ट सबाई बण वणजार, साचा वणज इक्क कराईआ। घर मन्दिर तज गढ़ दुआर, बन धार फेरी पाईआ। साची सीता कर प्यार, जनक सपुत्री आप प्रनाईआ। धनुक्ख चिल्ला कर उज्यार, उच्ची कूके दए दुहाईआ। फिरे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। भरत भईआ कर सिक्दार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। एका लाया अंगीकार, लछमण आपणे अंग लगाईआ। शत्रुघन सोहे दुआर, छत्र एका हत्थ उठाईआ। भरत मंगे बण भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। किरपा करे राम अवतार, एका केसर रत्ती हत्थ फड़ाईआ। सवा रत्ती तेरा होए वणज वणजार, चार जुग लेखा तेरा सके ना कोई गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। साची वस्त झोली पा, भरत खुशी मनांयदा। साहिब सच्चे तेरी सरना, सिदक सबूरी नाल हंढांयदा। सच दीप इक्क जगा, तेरा हवन वेख वखांयदा। तेरे दर दर सीस झुका, आपणा बिरध रखांयदा। तूं कमलापाती हओं निरगुण सृष्ट सबाई जाणे भ्रा, हउँ सेवक नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, राम रामा आप समझांयदा। राम राम आप समझाया, भरत आपणी वण्ड वण्डाईआ। तेरी झोली एका रत्ती केसर पाया, लोकमात वज्जी वधाईआ। लक्ख चुरासी सेसर बणके आया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

७६४

०६

आपणी किरपा कर, एका वस्त वस्त अनमोल, साचे कंडे आपे तोल, साचे तक्कड़ आपे पाईआ। साचे तक्कड़ आपे तोलया, तोल तोले आपे गिरवर गिरधार। राम राम अक्खर बोलया, राम रूप आप करतार। आप चुकाए पड़दा ओहलया, दिस ना आए विच संसार। जगत काया बदले चोलया, निरगुण सरगुण कर प्यार। शब्द अगम्मी बोले ढोलया, एका बोले सच जैकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए आपणी कार। साची वस्त साचे घर, हरि साचा आप टिकाईआ। पुरख अबिनाशी दित्ता वर, एका कंडा दए फड़ाईआ। त्रेता तेरा चुक्के डर, गढ़ हँकार दए तुड़ाईआ। हनवन्ता अंदर आपे वड़, बलवन्ता बल धराईआ। सुगरीव बाली लए फड़, अंगद अंग वखाईआ। जामावन्त मंगे मंग, देवणहारा बेपरवाहीआ। तोड़णहारा लंका गढ़, एका इक्क करे चढ़ाईआ। तीर कमाना हथ्थीं फड़, शाह सुल्ताना दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरताईआ। साची रत्ती कर त्यार, लोकमात वेस वटाया। त्रेता तेरा पार किनार, द्वापर वेला दए सुहाया। सोलां कलीआं कर श्ंगार, सोलां कल रूप वटाया। सोहे सीस मुक्ट सच्ची दस्तार, साची सखीआं मंगल गाया। बण गुरू विच संसार, बण खण्ड आपणा फेरा पाया। मथरा गोकल बन्ने धार, बिन्दराबन आप सुहाया। जमना किनारा आर पार मंझ धार, काली नाग फंदन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त हथ्थ टिकाया। साची वस्त नाम रत्ती, रत्ती रत्त रंगांयदा। सर्ब जीआं दा कमालपती, कँवल नैण नैण मटकांयदा। आपणी लिखे आपे पट्टी, आपणा अक्खर आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। साची रत्ती कर त्यार, केसर आपणे हथ्थ उठाईआ। रथ रथवाही खेल अपार, खेल अवल्लड़ी आप चुकाईआ। जगत थनेसर कर विचार, भूम भूमका दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रत्ती सच लिलाट, पंचम अधारे आपणे घाट, मस्तक टिक्का दए लगाईआ। साची रत्ती तिलक लगाया, केसर आपणा नाउँ धरांयदा। जगत थानेसर पाया, सृष्ट सबाई आप खपांयदा। आपणा वेस आप वटाया, निरगुण निरगुण जोत जगांयदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डेरा लाया, चरन कँवल आप रखांयदा। बधक हो हो बाण चलाया, तीर निशाना इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार रखांयदा। बधक मारया तीर निराला, चरन कँवल कँवल छुहाईआ । लए अंगड़ाई कृष्ना कान्हा, कान्हा आपणा रूप वटाईआ। आपे वेखे मार ध्याना, पिछला लेखा रिहा मुकाईआ। आपे जाणे साचा भाणा, हरि भाणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क रत्ती दए वड्याईआ। एका रत्ती नाल नाल प्यार, काहन घनईआ आप करांयदा।

७६४

०६

चरन कँवल रत्त आई बाहर, एका हिस्सा वण्ड वण्डांयदा। चौथा हिस्सा कर त्यार, चौथे जुग तेरी झोली पांयदा। आपणी रसना कहे पुकार, सवा रत्ती नाउँ रखांयदा। अठारां भार ना तुले कोई भार, बनास्पत वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा केसर इक्क उपजांयदा। सवा रत्ती वर दतार, एका एक रखाया। द्वापर करया पार किनार, कलिजुग लोकमात फेरा पाया। जीव जंत वणज वापार, बेअन्त आप वखाया। साध सन्त करन श्रंगार, जगत बिभूत रहे हंढाया। चारे कूट करन पुकार, लाल रंग ना कोए चढ़ाया। जूठ झूठ होए हाहाकार, आसा तृष्ना मन लुभाया। पंज तत्त तत्त विकार, रत्ती रत्ती ना कोई दसाया। चौदां हट्ट होए ख्वार, चौदां तबक रहे कुरलाया। ईसा मूसा रो रो गए ज़ारो ज़ार, साचा केसर हथ्थ ना आया। संग मुहम्मद आहीं रिहा मार, अल्ला राणी नैण शर्माया। पुरख अबिनाशी खेल अपार, आपणी वस्त आपणे हथ्थ रखाया। निरगुण सरगुण लए अवतार, पंज तत्त दए वड्याआ। जगी जोत अगम्म अपार, नानक आपणा नाउँ धराया। एका केसर कर त्यार, आपणे अमृत विच मिलाया। साचा अमृत कर त्यार, आपणे मुख चुआया। लहिणा उतरया पार किनार, देणा कोए रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका केसर दए समझाया। साचा केसर हरि करतार, एका वेख वखांयदा। एका बूटा कर उज्यार, पत्त डाली आप महिकांयदा। रुती बसन्त रुत प्यार, अमर अमर फल लगांयदा। अमृत फल होया त्यार, रामदास आप अख्वांयदा। रस वेखे अर्जन धार, पक्का बूटा वढु वखांयदा। सच अहूती देवे चाढ़, लोहां उप्पर बहांयदा। लेखा जाणे आपणी वार, हरि साचा आप करांयदा। गुर तेग बहादर साची भट्ठी देवे चाढ़, उप्पर आपणा घोल घुमांयदा। रंग रत्ते रंग कर त्यार, सच लिलारी वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी करे कराए करनेहार, आप आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा केसर इक्क उपजांयदा। साचा केसर केसर रत्ती, रत्ती रत्त विच मिलाईआ। दुष्ट दमन उपजाया जती सती, सति सति नाउँ धराईआ। साची नारी मिल्या एका पती, पति पतिवन्ता वड वड्याईआ। घर जगाए बैठा निरगुण बत्ती, बत्ती तेल ना कोई वखाईआ। सचखण्ड दुआर वखाए एका हट्टी, चौदां लोक चरनां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बूटा दए लगाईआ। साचा बूटा केसर कर त्यार, अर्जन भेट चढ़ाया। आपे वढ्ढे आपणी वार, सच किरसाना हरि अख्वाया। साची भट्ठी देवे चाढ़, तेग बहादर जोती लम्बू अग्नी लाया। सच लिलारी रंग करतार, गोबिन्द चोला इक्क बणाया। सचखण्ड खेल अपार, लोकमात वेखण आया। केस गढ़ हो त्यार, सीस धड़ आप रंगाया। उप्पर चढ़ बोले कूक करे पुकार, गुरमुखां एह समझाया। आपे खण्डा खिच कटार, आपणे हथ्थ रिहा चमकाया। कोई आए पहली

वार, गुर गुर का रूप समाया। सिँघ दया कर प्यार, उठ उठ आपणा सीस निवाया। सतिगुर पूरा जाए चरन बलिहार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाया। आपणा खण्डा आपणी गरदन आपे मार, आर पार आप कराया। गुरसिखां कर प्यार, साचे सुत गोद बहाया। आपणी रंगी लहू धार, गुरसिख रंग ना कोई चढ़ाया। गुर तेग बहादर तेरा प्यार, गुर गोबिन्द आपणी तेग चढ़ाया। जगत ज़ुलम करे ख्वार, मज़लूमां लए बचाया। पंच प्यारे कर त्यार, साचा बस्त्र तन सजाया। आप आपणा करे खेल करतार, खेलणहारा दिस ना आया। साचा रंग कर त्यार, लाल गुलाला रंग चढ़ाया। सतिजुग कूके उठे करे पुकार, गुर गोबिन्द अग्गे आया। तेरी जोती जगी अपार, तेरे दरस हरि दर पाया। त्रेता आया आपणी वार, कीता कौल दए समझाया। दर द्वापर रोवे ज़ारो ज़ार, पंचां प्रीती भुल्ल ना जाया। युधिष्टर ढह ढह पए चरन दुआर, चरन चरनोदक मुख चवाया। कलिजुग आई अन्तिम वार, नानक बूटा इक्क वखाया। गुर अर्जन आपा उत्तों वार, साचा मेवा फल लगाया। गुर तेग बहादर कर त्यार, आपणा सीस विच रखाया। सच्चा वखाए जगत विहार, गुर गोबिन्द आपणा भेव ना किसे जणाया। साचा अमृत बाटा कर त्यार, आपणी रीती रिहा चलाया। जगत पतासे पाए करे मिट्ठा खार, मिट्ठा रस रस विच टिकाया। साची रत्त विच करे अमृत रास, साचा सच प्याला इक्क बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

७९६ आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग साचे दए समझाया। सतिजुग त्रेते द्वापर कलिजुग, गुर गोबिन्द एह ७९६

०६ समझांयदा। जुग जुग औध जाए लँघ, थिर कोई रहिण ना पांयदा। हरि का भेव ना रहे गुझ, लोकमात आप प्रगटांयदा। ०६

आपणा भाणा आपे रिहा सुझ, आपणे भाणे विच आप रहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द एह समझांयदा। सतिजुग उठ नौजवान, तेरा लेखा दए मुकाईआ। साचा सुत मेरा बलवान, सिँघ अजीत तेरी झोली पाईआ। मस्तक टिक्का लाए इक्क निशान, निरगुण आप होए रुशनाईआ। त्रेता तेरे वेखे मकान, जुझार झूज झूज समाईआ। द्वापर तेरी मिटे आण, ज़ोरावर आपणा बल धराईआ। कलिजुग सके ना कोई पछाण, फतिह डंका फतिह रिहा वजाईआ। चौहां लेखा चुक्के विच जहान, गुर गोबिन्द दए मुकाईआ। कोए जीव जंत ना सके कर पछान, भेव अभेदा गया ना किसे समझाईआ। एका वसया सच निशान, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। गुरू ग्रन्थ गुरू गुर आण, गुर मन्त्र नाम पढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी सद मेहरवान, जुग जुग आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सवा रत्ती साचा केसर, गुर गोबिन्द आपणी झोली पाईआ। सवा रत्ती केसर पल्ले बन्नी गंढ, सतिगुर पूरा खुशी मनांयदा। गुरसिखां अंदर पाए ठंड, अमृत आत्म मुख चुआंयदा। लक्ख चुरासी देवे वण्डां वण्ड, आपणा हिस्सा आप करांयदा। आपे सुत्ता दे कर कन्ढ,

करवट आपणी ना बदलांयदा। कलिजुग वेला जाए हंढ, माछूवाड़े एह समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल इक्क मनांयदा। पुरख अकाल हरि हरि मन्नया, गुर गोबिन्द वज्जी वधाईआ। चार सुत चार जुग चाढ़े चन्नया, चार जुग होए रुशनाईआ। कलिजुग बेड़ा तेरा बन्नया, डूँघी धार ना कोई वहाईआ। गुरसिखां दुआरे फिरे भन्नया, गुरसिखां सेव कमाईआ। गुरसिख आपणी कुक्खों जम्मया, तिक्खी धार कटार मिलाईआ। तेरी ताब सके ना कोई झल्लया, मन मनका दए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा लिखाईआ। गुर गोबिन्द सच दुआर, एका एक सुहांयदा। पुरख अकाल करे प्यार, घर साचे मेल मिलांयदा। दोहां रंग एका धार, ब्रह्मण्ड रूप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप समझांयदा। साचा लेखा हरि निरँकार, गुर गोबिन्द आप समझाया। तेरी रत्त करे प्यार, अन्तर कोई रहिण ना पाया। तेरा बीज बीजे साचे वत विच संसार, चार वरन दए मिटाया। एका मति करे करतार, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाया। एका हट्ट खोल्ह दुआर, दूसर हट्ट ना कोई जणाया। तीर्थ तट मारे मार, अठसठ लेखा दए चुकाया। तेरी खोल्हे गठ्ठ आप निरँकार, जो पल्ले बन्न्ह ल्याया। प्रगट होए विच संसार, निहकलंक नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप समझाया। सुणया भाणा हरि भगवान, गुर गोबिन्द खुशी मनांयदा। पुरख अबिनाशी तेरा कवण मकान, कवण दुआरे डेरा लांयदा। कवण वखाए मात निशान, कवण रूप दरसांयदा। कवण होए तेरा मकान, कवण ढोला नाम अल्हांयदा। कवण मारे निराला बाण, चिल्ला तीर कमान, कवण उठांयदा। कवण सके तेरा रूप पछाण, कवण विचोला मेल मिलांयदा। अबिनाशी करता जाणी जाण, भेव अभेदा आप खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमांयदा। गोबिन्द विचोला लोकमात, मातलोक करे कुड़माईआ। शब्द ढोला तेरी दात, दो जहानां वज्जे वधाईआ। तेरा नाम सच्ची करामात, लोआं पुरीआं दए वड्याईआ। तेरे मन्दिर खोल्हे ताक, आपणा नूर करे रुशनाईआ। तेरा हट्ट वेखे साचा हाट, चौदां चौदां वेख वखाईआ। तेरी सेजा सोहे साची खाट, दूसर आसण ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर घर साचा इक्क रखाईआ। गोबिन्द हरि हरि जाणया, एका नाउँ करतार। तेरा खेल श्री भगवानया, वरते विच संसार। आपा आप करे कुरबानया, पंज तत्त ना कोए अकार। एका घर सोहे मेहरवानया, सम्बल नगरी धाम न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आपणी वार। सम्बल नगरी सच दुआर, हरि साचे सच समझाया। प्रगट होए आप निरँकार, निरगुण नूर करे रुशनाया। शब्द शब्दी वाज लए मार, उच्ची कूके

दए सुणाया। चार वरनां करे प्यार, चौथा जुग रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाया। कलिजुग वेला अन्तिम आवणा, हरि साचा खेल खिलांयदा। पुरख अबिनाशी जामा पावणा, निरगुण आपणा रूप वटांयदा। बवन्जा अक्खर वेख वखावणा, बावन आपणी कल वरतांयदा। पैंतीस अक्खर रंग रंगावणा, सतारां अक्खर आपणी झोली पांयदा। दोए रूप इक्क करावणा, दोआ अक्खर इक्क वखांयदा। तिन्नां लोकां सिफर सिफर सिफर आप करावना, बीस बीस आपणा खेल खिलांयदा। बीस सौ आपणा रंग चढ़ावना, रंग होर ना कोई बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचांयदा। वीह सौ बिक्रमी खेल अपारा, आपणी रत्त दए जलाईआ। रत्ती रत्त कर उज्यारा, अग्न लाट इक्क वखाईआ। अग्न लाट भर भण्डारा, अस्माना धूंआँधार बणाईआ। धूंआँधार करे उज्यारा, जोती जोत कर रुशनाईआ। गोबिन्द सच करे प्यारा, बंक दुआरा इक्क वखाईआ। साचे मन्दिर कर पसारा, सम्बल आपणा गढ़ वसाईआ। शब्द बोल सति जैकारा, गोबिन्द तेरा नाउँ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी वेखणहारा, एका एक अख्वाया। कलिजुग आई अन्तिम वारा, ब्रह्मा विष्नूं शिव लए अंगड़ाया। पुरख अबिनाशी जोत जगाई लोकमात होया उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बन्ने आपणी धारा। एका जोती एका धार, दूजे आपणी खेल खिलाईआ। तीजे बरस हो त्यार, चौथे सृष्टी वण्ड वण्डाईआ। पंचम पंचां पावे सार, छेवें छेवें घर वज्जे वधाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण साची कार, अठ्ठां तत्तां आप वखाईआ। नौंवे दर खेल करे आप करतार, दसवें आपणा लेखा दए गणाईआ। साचा बाला कर त्यार, जोत ज्वाला दए बुझाईआ। शाह कंगालां पावे सार, प्रितपालक वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रत्ती रत्त रहिण ना पाईआ। रत्ती रत्त पाई हवन, आहूती आप वखांयदा। लेखा चुकाए अवण गवण, पवण पवणां विच समांयदा। अमृत मेघ बरसे सवण, सावण आपणा रूप वटांयदा। लेखा जाणे पौण पवण, वल छलधारी खेल खिलांयदा। तोड़े हँकारी गढ़ रावण, राम रामा बाण उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। हुक्म सुणाया धुर फ़रमाण, हरि साचा शब्द जणांयदा। शब्द फट होए कुरबान, सिख शूरा सो अख्वांयदा। हथ्थ फड़ाए ना कोई कृपान, जगत म्यान ना कोई बणांयदा। निरगुण रूप निगहबान, निरगुण आपणा तीर चलांयदा। सतिगुर जोद्धा नौजवान, इक्क अतीता आप उठांयदा। पतित पुनीता करे पुण छाण, साची रीता आप वखांयदा। रत्ती रत्त गुण निधान, तत्त नत्त ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रंग आप रखांयदा। साचा

रंग चाढ़नहारा, दस इक्क करे कुड़माईआ। साचा बणे मात मुनारा, साढे तिन्न हथ्थ वेख वखाईआ। दस्म दुआरी पार किनारा, वीह सौ दस बिक्रमी नाल रलाईआ। सोलां मग्घर कर शंगारा, साची चोली आप रंगाईआ। आपे खिच्चे चरन दुआरा, सचखण्ड दुआरा इक्क वड्याईआ। आपे देवे सच सहारा, साचा साची करे खेल रघुराईआ। अंदर मन्दिर सोहे अंदर धारा, शब्द सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। लाल गुलाला रंग अनडिठा, रंग रंगे रंगणहार। खेले खेल अबिनाशी अचुत्ता, आदि जुगादी साची धार। आलस निन्दरा विच कदे ना सुत्ता, सुत्ता रहे सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप सुहाए आपणी रीता, करे खेल अगम्म अपार। साची रुत्त सुहावनी हरि साचा आप सुहांयदा। गुर गोबिन्द तेरी पूर कराए भावनी, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। तेरी पक्की हाढ़ी सावणी, फल बूटा वेख वखांयदा। आपणी हथ्थीं आपे गाहवनी, दूसर नाल ना कोई रलांयदा। तेरी रक्खे विच ज़ामनी, ज़ामन इक्क गुर बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा अंग इक्क वखांयदा। साची रत्त सवा रत्ती केसर हरि निरँकार, साची सच करे जणाईआ। वीह सौ ग्यारां करया ख़बरदार, पंजां प्यारयां लए उठाईआ। साची सच करे करतार, करनी करता आप कराईआ। लाल किला वेख विचार, दिल्ली फेरा पाईआ। आपणा पड़दा उत्तों उतार, गुरसिखां हेठ विछाईआ। सेवा कराए करनेहार, साची सेवक सेव कमाईआ। मौली तन्द बने तन्द शंगार, साचा सगन रिहा मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वीह सौ बिक्रमी ग्यारा दस दो वार पार किनारा, एका मिल्या साचा यारा, यारी यारां नाल निभाईआ। दस्म दुआरी नाता गया तुट्ट, पुरख अकाल प्रभ पाया। काया मन्दिर लेखा गया छुट्ट, सचखण्ड दुआरे आपे बहाया। लोकमात त्रैगुण माया लुट्ट, गुरसिख खाली हथ्थ रखाया। धर्म राए दवारिउँ कढ्ढया कुट्ट, चित्रगुप्त नेड़ ना आया। लाड़ी मौत गुत सुट्टी पुट्ट, दर दुआर ना फेरा पाया। आवण जावण गुरसिखां गया छुट्ट, जिस जन आपणी गोद बहाया। लक्ख चुरासी विच्चों लभ्भी एका मुट्ठ, नौ खण्ड पृथ्मी फोल फोलाया। अबिनाशी करता गया तुठ्ठ, गुर गोबिन्द दए सलाहया। भर प्याला जाम प्याया एका घुट, नशा उतर कदे ना जाया। विच्चों कढ्ढे वासना खोट, शब्द चोट इक्क लगाया। आप उठाए आलूणिउँ डिगे बोट, आप आपणे अंग लगाया। देवे नाम भण्डारा अतोट, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाया। गुरसिखां उप्पर सतिगुर पूरा तुठ्ठ, घर घर आपणा आपणा ताण गुरसिखां विच टिकाया। गुरसिखां दी रक्खी सदा ओट, गुरसिख आपणा सीस ताज सुहाया। गुरसिखां नगारा घर घर वज्जे चोट, सतिगुर पूरा डंका आप लगाया। लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि, दिस किसे ना आया।

कलिजुग जीआं माया ममता भरी ना पोट, आसा तृष्ना ना भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे किले दित्ता वर, नानक लेखा नाल मिलाया। नानक लेखा अगम्म अथाह, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। शब्द गुरू इक्क मलाह, चार वरनां गया समझाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई भैण भ्रा, ऊँच नीच ना कोई वखाईआ। सतिगुर पूरा सदा मलाह, सभ दा बेड़ा रिहा तराईआ। निमाणयां गले लए लगा, ग़रीब निमाणे गोद सुहाईआ। जरवाणयां दर दए दुरका, वड दाता बेपरवाहीआ। लालो तेरा लेखा दए मुका, काया किला वेख वखाईआ। लाल किले चरन छुहा, लाल रंग गुर नानक दए चढ़ाईआ। दोहां विचोला बण मलाह, पुरख अबिनाशी सेव कमाईआ। अंगीकार लए करा, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत सम्मती सच विहारा, हरि साचा आप वखाईआ। सम्मत ग्यारां सच विहारा, हरि साचे सच कराया। लेखा लिख्या अपर अपारा, ना कोई मेट मिटाया। सम्मत सतारां सतारां हाढ़ा, नौ महीने अठारां दिन मात गर्भ फंद दए कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे विच लगाया। सम्मत बारां सच दिहाढ़ा, हाढ़ सतारां वज्जी वधाईआ। सम्मत तेरां करया सच विहारा, लोकमात रिहा चलाईआ। ना कोई गुर ना अवतारा, गुरसिखां दए वड्याईआ। एका भरे सच भण्डारा, सच अवतारा आप अख्वाईआ। ऊँचां नीचां करया पार किनारा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका गोद रखाईआ। अठारां बरन ना कोई वणजारा, एका रंगन रंग चढ़ाईआ। एका शब्द इक्क जैकारा, सोहँ सो करे पढ़ाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआरा, गुर सरन इक्क सरनाईआ। एका रक्खे रक्खणहारा, जुग जुग हरिजन पैज रखाईआ। भगत वछल हरि गिरधारा, हरिभगत लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रचना आप रचाईआ। सम्मत तेरां तेरी धार, त्रैलोकां आप चलांयदा। कलिजुग सन्तां मारे मार, साचे मंतां मेल मिलांयदा। चौथे जुग मारे मार, ख़ाकी बन्दे ख़ाक मिलांयदा। शाह सुल्तानां कर ख्वार, तख्त ताज मिटांयदा। गुरमुख साचे कर प्यार, साचे दर सुहांयदा। वाली हिन्द करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पांयदा। कलिजुग आई अन्तिम वार, दर घर संग ना कोई निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत चौदां सच विहार, एका इक्की पावे विच संसार, साची सिक्खी आप उपांयदा। साची सिक्खी एका रंग, हरि हरि आप रंगाया। सतिगुर पूरा सूरा सरबंग, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। नाम वजाए इक्क मृदंग, धुन अनादी नाद सुणाया। आत्म सेजा सच पलँघ, आत्म सेजा डेरा लाया। गुरमुखां भिच्छया रिहा मंग, एका झोली अग्गे डाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौदां हट्टां वेख वखाया। चौदां हट्टां पार किनारा, पंदरां पंदरां वेख वखाईआ। तीर्थ तट्टां पार किनारा, तट किनारा ना

८०० ०६

कोई सुहाईआ। गुरमुख साचे कर त्यारा, चार कुंट आप फिराईआ। एका शब्द शब्द जैकारा, सृष्ट सबाई रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा खेल खिलाईआ। किरपा कर खेल खिलांयदा, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। सम्मत सोलां वेस वटांयदा, बालक बिरध ना कोई रखाईआ। शाहो भूप नाउँ धरांयदा, सति सरूप अन रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तेरा साचा वर, हरि साचा पूर कराईआ। सम्मत सोलां सोलां धार, सोलां सोलां विच टिकाईआ। चार जुग दा भरया भण्डार, कलिजुग अन्तिम दए वरताईआ। एका गुर गुरू दुआर, गुरचरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर सच दुआर, हरि साचा सच सुहाईआ। पैंती अक्खर वसया बाहर, भेख कोई ना पांयदा। ब्रह्म वेता ना करे विचार, वेद कतेब ना कोई गांयदा। सतारां अक्खर निरगुण धार, साल सतारां आप रखांयदा। साल सतारवें हो उज्यार, आप आपणी कल वरतांयदा। पंचम सीस ताज कर उज्यार, लोकमात वेस वटांयदा। शब्द अनादी बोल जैकार, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरतांयदा। कल वरतंता हरि भगवान, अन्तिम खेल खिलांयदा। इक्क वखाए सच निशान, सतिजुग साचा आप उठांयदा। सम्मत सतारां हो प्रधान, मन का भरम मिटांयदा। सच सखीआं मेले साचा काहन, मिल सखीआं मंगल गांयदा। साचा मेला सुरती राम, राम सुरती आप प्रनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा राह वखांयदा। सम्मत सतारां सच विहारा, हरि साचे सच कराया। कलिजुग तेरा पार किनारा, सतिजुग साचा रंग चढ़ाया। रत्ती केसर कर त्यारा, सिँघ प्रगट हथ्थ फड़ाया। नाल रलाया प्रीतम सिँघ दुलारा, भरत शत्रुघन मेल मिलाया। करे कराए आपणी कारा, कल आपणी आप वरताया। आया अन्तिम सच दिहाड़ा, हाढ़ सतारां खुशी मनाया। गुरसिख तेरा सच प्यारा, हरि साचे आप उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अमृत आप वखाया। हरिसंगत तेरा सति प्यार, हरि अमृत रूप वटांयदा। रत्ती केसर कर त्यार, सवा रत्ती मेल मिलांयदा। पुरख अबिनाशी बन्ने धार, त्रैगुण रूप ना कोई दरसांयदा। रंग रंगीला मोहण साचा यार, साची सेज हंढांयदा। पतित पुनीता करे इक्क विहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलांयदा। साची रत्ती गुरसिखां रत्त, हरि अमृत विच समाईआ। एका देवणहारा ब्रह्म मति, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। हरिसंगत तेरा एका नत्त, तत्व तत्त ना कोई रखाईआ। रक्खे हथ्थ सिर समरथ, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। सोहँ सो पूजा पाठ, पूजस पूजस पूज पुजाईआ। आप उतारे औखे घाट, कलिजुग बेड़ा रिहा चलाईआ। अग्गे नेड़े रक्खे वाट, पिछला पन्ध मुकाईआ। घर घर जोत जोत

जगे ललाट, गुरसिख तेरा मस्तक टिक्का आप छुहाईआ। तेरी सेजा सोए खाट, आपणा आसण आप विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे वड वड्याईआ। हरिजन वड वडियाई देवणहारा, वड वड्डा आप अख्वांयदा। पंजां मेलां मेल मिलावणहारा, आप आपणा मेल करांयदा। एका केसर फड़के विच संसारा, हरिसंगत रंग रंगांयदा। भुक्ख नंग ना रहे दुआरा, काल महांकाल दर दुरकांयदा। साचा संग सच्ची सरकारा, सतिगुर पूरा आप निभांयदा। आत्म अन्ध चुक्के अन्धेरा, संझ सवेर इक्क वखांयदा। भरम गंवाए हेरा फेरा, भरम गढ़ रहिण ना पाईआ। लेखा चुक्के तेरा मेरा, मेरा तेरा रूप वटाईआ। प्रगट होया सिँघ शेर दलेरा, सिँघ रूप गुरसिख सर्ब वखाईआ। हरि शब्द मन चाउ घनेरा, पुरख अबिनाशी खुशी मनाईआ। गुरसिख वसदा रहे घर तेरा, सतिगुर पूरा आप वसाईआ। भाग लगाए काया खेड़ा, घर रुत्तड़ी आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा हरिसंगत विच टिकाईआ। साचा केसर चरन कँवल, गुर संगत प्यार समांयदा। देवे वडियाई उप्पर धवल, धरती धरत धवल भार मिटांयदा। तेरा कर्जा लाहया कृष्ना साँवल सँवल, बधक बाण ना कोई चलांयदा। गुरसिखां अंदर आपे मवल, आपणा रंग रंगांयदा। गुर गोबिन्द छकाई एका पवल, अमृत जाम आप प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप सलांहयदा।
सवा रत्ती केसर कृपानिध, कर्म कांड मेट मिटाईआ। गुरसिख तेरा कारज करे सिद्ध, नौ निध तेरे चरनां सेव कमाईआ। आप बणाई आपणी बिध, गुरमुख साचे लए मिलाईआ। तीर निराला गया विध, तिक्खी मुखी आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सवा रत्ती साचा केसर तेरा अन्त विहारा विच संसार, सम्मत सतारां हाढ़ सतारां दए कराईआ। चार जुग लेखा पूर कराया, सम्मत सतारां वज्जी वधाईआ। साची संगत रंग चढ़ाया, दूसर रंग किसे रहिण ना पाईआ। हरि का रूप विच संसार दिस ना आया, विभचार सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लाल रंगन इक्क रंगाईआ। लाल रंग गया चढ़, सतिगुर साचे आप चढ़ाया। गुरसिख साजन लए फड़, चरन दुआर आप बहाया। आप बंधाए आपणे लड़, एका पल्लू हथ्थ रखाया। किला कोट हँकारी तोड़ गढ़, आप आपणा दर वखाया। एका अक्खर विद्या पढ़, हँ ब्रह्म रिहा पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेला आप सुहाया।
सम्मत सतारां लाल रंग, हरिसंगत आप चढ़ाईआ। सृष्ट सबाई होए नंग, चारों कुंट दए दुहाईआ। पंज तत्त तुटे काची वंग, कलिजुग अन्तिम भन्न वखाईआ। मानुस मानख होए भंग, थिर कोए रहिण ना पाईआ। आकाश ना डोरी उडे पतंग, गुडीया लोकमात कुरलाईआ। जो जन नर निरँकार सच दुआर नौ दर आए लँघ, मिले मेल साचे माहीआ। दो जहानां मिटे

पन्ध, जम की फाँसी तुटे फंद, तन्दन तन्द आप कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा केसर हरिसंगत रूप बटाया थनेसर, थिर घर साचा इक्क वसाईआ। थिर घर वसया हरि करतार, हरिसंगत आप वखांयदा। उच्च बणाए इक्क दरबार, लोकमात वेस वटांयदा। एका रंग रंगे रंगणहार, लाल गुलाला रंग चढ़ांयदा। सवा रत्ती केसर कर त्यार, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अन्तिम धार आप वखांयदा। अन्तिम धार हरि हरि करया, किसे तोट रहिण ना पाईआ। चार जुग चार वेद चार वरन चार बाणी चार खाणी आसा पूर करया, निरासा रहिण कोई ना पाईआ। गुरसिखां अंदर वासा रक्खे हरया, चरन भरवासा इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, रत्ती रत्त आप खिचाईआ। रत्ती रत्त खिच्ची डोर, गुर संगत मेल मिलांयदा। अर्श फर्श रिहा होड़, अन्ध घोर फोल फोलांयदा। लेखा चुकाए तोर मोर, मनमुख दर तों होड़ आप दुरकांयदा। गुरसिख चढ़ाए आपणे घोड़, साचा राकी नाम दौड़ांयदा। हरिजन आपणे आपे लोड़, लुड़ींदड़ा साजन मेल मिलांयदा। पुरख निरँजण आपे बौहड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काली शाही आप मिटांयदा। कालख शाही मिटया दाग़, सम्मत सतारां वज्जी वधाईआ। हाढ़ सतारां जगे चिराग़, गुरसिख घर होए रुशनाईआ। फड़ बणाया हँस काग, सोहँ मोती चोग चुगाईआ। सोई सुरती गई जाग, जागरत जोत इक्क वखाईआ। त्रैगुण बुझी आग, तत्व तत्त विच समाईआ। हरिसंगत होया वड वड भाग, वडभागी खुशी मनाईआ। आप कराया मजन माघ, धूढ़ी टिक्का मस्तक ख़ाक रमाईआ। जो जन सरनाई गया लाग, राए धर्म ना दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत एका केसर तेरी रत्ती रत्त बणाईआ। तेरी रत्त सच उछाल, लोकमात कराया। करे खेल हरि तत्त काल, त्रैगुण तत्त आप तपाया। दिवस रैण होए रखवाल, गुरसिखां साचे लए बचाया। फल लगाए काया डाल, अमृत फल आप खवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक्क वखाया। साचा मन्दिर सुहावणा, सुहाए आप निरँकार। कलिजुग अन्तिम रंग रंगावणा, चाढ़े रंग सच्ची सरकार। पंज प्यारे जोत जगावणा, इक्की इकी इकीआं उत्तों वार। एका सिक्खी सिख बणावणा, चार वरन कर ख्वार। तेरी तिक्खी धार रखावणा, वालों निक्की विच संसार। नेत्र पेख पेख रूप दरसावणा, दीनां नाथा दए अधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत लाए पार। हरिसंगत बेड़ा चुक्या, कर किरपा दीन दयाल। गुरसिख बूटा कदे ना सुक्कया, होए सहाई आप कृपाल। कलिजुग वेला अन्तिम ढुक्कया, फल दिसे ना किसे डाल। लक्ख चुरासी चोग निखुटया, घर घर वेस कराए

काल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होया मेहरवान। पुरख अबिनाशी आपणा खेल आपे खेलया, देवण आया दानी दान। लक्ख चुरासी कट्टे जेलया, बख्शे चरन धूढ़ अशनान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा दानी दान। दान अवल्लड़ा पुरख अकाला, एका सोहँ जाप जपांयदा। अजपा जाप पाए गल माला, भगत भगती भगतां विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साची वण्ड वडांयदा। गुरमुख वण्डी वण्ड अपार, सतिगुर पूरा आप वण्डाईआ। सम्मत सतारां हाढ़ सतारां दिवस विचार, दिवस रैण वेख वखाईआ। कालख काल मेटे धार, लाल लाल लाल रंगाईआ। एका केसर करे प्यार, सवा रत्ती रत्त समाईआ। परमेश्वर मेला विच संसार, परम पुरख आप मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिसंगत देवे माण वड्याईआ। साचा अमृत भरया भण्डार, केसर रत्ती नाल रंग रंगाया। सिँघ बिशन बणे इक्क वरतार, हरिसंगत दए वरताया। रोग सोग चिंता दुःख लथ्थे दुःखड़ा भार, जो जन चरन ध्यान लगाया। उज्जल मुखड़ा होए विच संसार, उलटा रुखड़ा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मा विष्न शिव देवण आया दान। नौ सौ चुरानवी चौकड़ी जुग करे कल्याण, हरि सिखां वेखे मार ध्यान, गुरसिखां मेल मिलाया। हरिसिख हरि हरि वेखण आया, हरि जोती जोत जगा। गुरसिख गुर गुर गोद बहाया, गुर गोबिन्द गया समझा। माणक मोती चोग चुगाया, सुरती सोती लए उठा। वरन गोती पन्ध मुकाया, एका चोटी दए चढ़ा। पांधा पोथी ना कोई पढ़ाया, मुल्लां मसीती ना दए सुणा। ग्रन्थी पन्थी ना राह तकाया, ना कोई बणे जगत मलाह। सतिगुर पूरा आपे आपणे वेखण आया, कलिजुग अन्तिम लाया आपणा दाअ। निरगुण सरगुण विच समाया, एका पड़दा उप्पर पा। गुर नानक ढाकन को पति एका शब्द गा उच्ची कूक गया सुणाया, इक्क उतरे निहकलंक कलिजुग अन्तिम फेरी जाए पा। प्रेम पटोला गुरसिख तेरा रूप वखाया, गजां फीतीआं नाल लए मिणा। सिर आपणे उत्ते लए टिकाया, सिर रक्खे ठंडी छाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत लए तरा। तारनहारा आ गया, निरगुण रूप पुरख अकाल। दीवा बाती जोत जगा गया, काया बैठ धर्म सच्ची धर्मसाल। गुरसिख उपजे मन वैरागया, कोटन कोटि कोटि ना सके भाल। घर जगे जोत चरागया, मुर्शद मुरीदां आपे रिहा भाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुरदरगाही बणया मात दलाल। जगत दलाल बणके आया, निरगुण आपणा रूप वटांयदा। काल महांकाला आपणे सज्जे हथ्थ फड़के आया, आप आपणा संग निभांयदा। काल चरना हेठ दब्बके आया, उप्पर आपणा भार रखांयदा। ब्रह्मा

विष्न शिव आपणी उँगली ला, चरन दुआरा इक्क दरसा, एका अक्खर आप पढ़ा, सृष्ट सबाई पढ़ावन आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सतारां हाढ़ सतारां करे कराए सच विहार, गुरमुखां करे इक्क प्यार, एका आपणे अंग लगाईआ। गुरसिख सज्जण जिस आप जगाया, जगवाणहार सदा अतीत। सृष्ट सबाई रिहा सुआया, हरि का भेव किसे ना पाया, लक्ख चुरासी रही बीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां देवे साचा वर, अमृत देवे ठंडा सीत। धुरदरगाही साचा माण, हरिसंगत मेल मिलांयदा। कलिजुग अन्तिम करे पछान, गुरसिख तेरे ढोले गांयदा। आपे बैठ सच मकान, दो जहानां तेरा राह तकांयदा। शब्द सरूपी लए बिबान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची खेल देवे कर, खेलणहारा आप अख्वांयदा। सम्मत सतारा जाए लँघ, सतिगुर पूरा दया कमांयदा। गुरसिख तेरी माणे सेज पलँघ, आपणा आसण आप विछांयदा। पंजां प्यारया चाढ़े रंग, गुर गोबिन्द गोद सुहांयदा। इकीआं मंगी एका मंग, एका सिक्खी रूप वटांयदा। एका डोरी हरिसंगत पतंग, दो जहानां आप उडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत उत्तों आप आपणा कर कुरबान, देवण आया दानी दान, गुर आपणी रत्त गुरसिखां ब्रह्म मति समझांयदा।

❋ २३ हाढ़ २०१७ बिक्रमी रेछम सिँघ दे घर पिण्ड खहिरा ज़िला जलन्धर ❋

सति पुरख निरँजण निरगुण धार, आदि जुगादि रखांयदा। सो पुरख निरँजण खेल अपार, जुगा जुगन्त आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, भेव अभेदा भेव ना आंयदा। एकँकारा नूर उज्यार, आदि निरँजण जोत जगांयदा। अबिनाशी करता वसणहारा सचखण्ड दुआर, थिर घर साचे सोभा पांयदा। श्री भगवान आपे जाणे आपणी कार, करनी करता पुरख आप अख्वांयदा। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, जूनी रहित आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस अवल्ला एकँकारा, आदि जुगादि वटाईआ। निरगुण नूर कर उज्यारा, जोती नूर डगमगाईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे वसणहारा, थिर घर बैठा सेज हंढाईआ। महल्ल अट्टल उच्च मुनारा, हरि मन्दिर आप सुहाईआ। शाहो भूप सच्चा सिक्दारा, राज राजानां हुक्म सुणाईआ। धुर फ़रमाणा इक्क जैकारा, शब्द अनादी नाद वजाईआ। दर दरवेश बण भिखारा, नर नरेश अलक्ख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा आप आपणा खेल खिलाईआ। सचखण्ड दुआरा सच महल्ला,

सति पुरख निरँजण आप वसांयदा। सो पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, आदिन अन्ता आसण लांयदा। हरि पुरख निरँजण अछल अछला, वल छल आपणा आप वखांयदा। एकँकारा आपणे दीपक आपे बला, आदि निरँजण डगमगांयदा। श्री भगवान आपणी जोती आपे रल्ला, दूसर संग ना कोए वखांयदा। अबिनाशी करता करे खेल जलां थलां, जल थल महीअल डेरा लांयदा। पारब्रह्म सच सिँघासण एका मल्ला, साची सेजा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, पुरख अबिनाशी भेव ना राईआ। आदि जुगादी बेपरवाह, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। निरगुण बणे निरगुण मलाह, निरगुण खेवट खेटा बेड़ा आप चलाईआ। निरगुण सिफ्ती सिफ्त सालाह, बेऐब परवरदिगार आपणा नाउँ धराईआ। निरगुण वसे सचखण्ड दुआरे साचे थाँ, थिर घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप निराकार, अकाल मूर्त खेल अपार, अजूनी रहित वड वड्याईआ। अजूनी रहित पुरख अकाला, भेव कोए ना पांयदा। आदि जुगादी दीन दयाला, दयानिध आपणा नाउँ रखांयदा। एका वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, छप्पर छन्न ना कोए छुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा सच दुआरा, निर्मल दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती वेख वखांयदा। कमलापाती हरि भगवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आदि जुगादी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। सदा सुहेला सद मेहरवान, अनुभव प्रकाश समाईआ। जुगा जुगन्तर खेल महान, चारों कुंट जोत करे रुशनाईआ। इक्क वखाए सच निशान, शब्द निशाना हथ्थ उठाईआ। पावे सार दो जहान, दो जहानां वेख वखाईआ। एका नाउँ कर उज्यार, सृष्ट सबाई हरि करतार दए सुणाईआ। आपणे घर हो प्रधान, आपणी बाणी आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वसे सच महल्ला, पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, एकँकारा एका जोत रुशनाईआ। इक्क इकल्ला कर पसारा, एकँकारा आदि आदि आपणा आप प्रभ साचा आप उपांयदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, शाह सुल्तान नाउँ धरांयदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, हुक्मी हुक्म आप चलांयदा। सच सिँघासण खेल न्यारा, पुरख अबिनाशी आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता, आप आपणी कल वरतांयदा। आपणी कल हरि वरतंता, हरि वड्डा वड वड्याईआ। निरगुण रूप श्री भगवन्ता, सारंगधर आप अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर वेस वटंता, रूप रेख ना कोए वखाईआ। शब्द अनादी नाद वजंता, सुर ताल ना कोए जणाईआ। थिर घर साचा धाम सुहंता, सचखण्ड वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ।

तिन्नां लेखा आपणे हथ्थ रखाया, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। सचखण्ड निवासी साचे तख्त आसण लाया, शाहो भूप आपणा हुक्म चलांयदा। पंचम ताज सीस टिकाया, पंचम मुख सालांहयदा। तिन्नां लोकां तिन्नां एका रंग रंगाया, चौथा गुण आप समझांयदा। चारे मुख दए खुल्हाया, चारे वेदां आप पढ़ांयदा। चारे जुग वण्ड वण्डाया, चारे खाणी आप उपजांयदा। चारे बाणी धुन अनादि वजाया, शब्द अनादी इक्क रखांयदा। चारे वरनां वेस वटाया, चार यारी मेल मिलांयदा। चारों कुंट वेख वखाया, आप आपणा मुख छुपांयदा। विष्नूं तेरी सेवा लाया, सेवक तेरा नाउँ धरांयदा। तेरा रूप आप वटाया, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। ब्रह्मा वेता ब्रह्म धराया, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा अंग कटांयदा। एका अक्खर शब्द पढ़ाया, नाम नामा हट्ट चलांयदा। शंकर संसा दए चुकाया, निरगुण आपणा रूप दरसांयदा। जो घड़या सो भन्न वखाया, थिर कोए रहिण ना पांयदा। आदि जुगादी हरि रघुराया, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाया, आप आपणा संग निभांयदा। उत्भुज सेत्ज जेरज अंड पंज तत्त तेरी झोली पाया, त्रैगुण साचा जोड़ जुड़ांयदा। लक्ख चुरासी वण्ड वण्डाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त झोली पांयदा। साची वस्त नाम अनमोल, हरि विष्नूं झोली पाईआ। पुरख अबिनाशी वसे तेरे कोल, जीआं दाता रिज़क सबाईआ। त्रैगुण तेरा वजाए ढोल, राजस तेरा रूप दरसाईआ। सांतक सति सरूपी जाए मौल, किरपा करे बेपरवाहीआ। तमो तत्त जाए खोल्ह, अग्नी तत्त इक्क जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वणज इक्क वणजारा, एका खोल्हे हट्ट दुआरा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा खोल्हया, कर किरपा आप करतार। निरगुण विष्नूं अंदर बोलया, एका शब्द राग जैकार। अबिनाशी करता सुणाए साचा ढोलया, तेरा रूप अगम्म अपार। निरगुण सरगुण बदले चोलया, सोहँ शब्द भरे भण्डार। तेरी आत्म अन्तर मौलया, अमृत खिड़ी सच्ची गुलज़ार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वस्त इक्क अपार। विष्नूं वस्त एका पा, पुरख अबिनाशी सीस झुकांयदा। तूं पातशाह सच्चा पातशाह, निउँ निउँ आपणा सीस झुकांयदा। तेरा दर तेरा घर मैं मंगदा रहवां, सदा सद एका वर दर घर साचा इक्क सुहांयदा। तूं पिता तूं मेरी माँ, बालक तेरा नाउँ ध्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा चरन तेरा कँवल तेरा रूप दरसांयदा। पुरख अबिनाशी वर घर दीआ, विष्नूं देवे वड वड्याईआ। करता पुरख कर निर्मल जीआ, जीआं जोत कर रुशनाईआ। चारे जुग सेवा करनी कर कर हीआ, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दए भवाईआ। तेरा बीज आपे बीआ, फुल फुलवाड़ी वेखे साचा माहीआ। कलिजुग अन्तिम तेरी वण्ड वण्डा साढे तिन्न हथ्थ सीआं, धरत धवल करे रुशनाईआ। जोती जोत

८०८
०६

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं देवे एका वर, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग सेवक तेरी सेवा धर, अन्त धरनी धरत धवल सुहाईआ। विष्नूं वर हरि एका पाया, घर साचे खुशी मनांयदा। निउँ निउँ सीस दर झुकाया, सीस आपणा भार आप उठांयदा। हरि जगदीस नज़री आया, जागरत जोत इक्क जगांयदा। छत्र सीस इक्क झुलाया, पंचम मुख ताज बणांयदा। छेवें घर डेरा पार कराया, छप्पर छन्न ना कोए छुहांयदा। सत्तवें सत्त रंग निशाना इक्क चढ़ाया, सुते प्रकाश वखांयदा। सो पुरख निरँजण हथ्थ उठाया, हरि पुरख निरँजण वेख वखांयदा। एकँकारा सगन मनाया, आदि निरँजण खेल खिलांयदा। अबिनाशी करता वेखण आया, श्री भगवान आपणे हथ्थ उठांयदा। पारब्रह्म प्रभ दए झुलाया, दर घर साचे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख निरँजण साची धार आप चलाए अगम्म अपार, लेखा लेख ना कोए लिखाया। लेखा किसे ना लिख्या, हरि साहिब सच्चा बेअन्त। नेत्र नैण किसे ना दिसया, आदि जुगादी साचा कन्त। ब्रह्मा विष्न वण्डाया आपणा हिस्सया, नाम मिल्या मणीआ मंत। पुरख अबिनाश देवे साची सिख्या, वड दाता गुणी वन्त। धुरदरगाही पाए भिच्छया, लक्ख चुरासी उपाउणा जीव जंत। अमृत झिरना एका रिसया, अमृत बख्शे साचा कन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे एका वर, दर बणाए साची बणत। पारब्रह्म ब्रह्म उपजाया, पुरख अबिनाशी किरपा धार। आपणी अंस आप उपजाया, रूप अनूप सति सरूप साहिब सच्ची सरकार। पाती पाती आप महिकाया, कमलापाती मीत मुरार। साचे साकी जाम प्याया, अमृत भरया सच भण्डार। साची ताकी खोल्ह वखाया, आपणा खोल्हया आप किवाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ब्रह्म करे उज्यार। पारब्रह्म ब्रह्म उपजाया, निरगुण करया खेल अपारा। आपणी कल आप वरताया, निरगुण वरते सच वरतारा। जोती जोत जोत जगाया, दीपक दीआ कर प्यारा। मात पित ना कोए बणाया, रक्त बूंद ना लाया गारा। हड्ड मास नाड़ी ना जोड़ जड़ाया, त्रैगुण भरया ना कोए भण्डारा। मन मति बुध ना विच टिकाया, आसा तृष्ना ना कोए विचारा। आप आपणा अंग कटाया, खेले खेल सूरा सरबंग निरँकारा। घर साचा शब्द वजाया, निरगुण नाद धुन जैकारा। एका विद्या अक्खर पढ़ाया, निःअक्खर ना पावे कोई सारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे इक्क हुलारा। ब्रह्मा उत्पत कमलापात, पत डाल्ही आप महिकाईआ। ना कोई वरन गोत ना दीसे ज़ात, बरन बरन विच ना कोए लगाईआ। ना कोई भैण ना भ्रात, साक सैण ना कोए अख्वाईआ। ना कोई दिवस ना कोई रात, सूरज चन्न ना कोए चढ़ाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, इष्ट देव ना कोए वखाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई घाट, अठसठ ना कोए नुहाईआ। ना कोई सेजा ना कोई खाट, आसण सिँघासण ना कोए वछाईआ।

ना कोई चौदां लोक दिसे हाट, त्रैभवण ना रचन रचाईआ। ना कोई लेखा जाणे आन बाट, मात गर्भ ना अग्न तपाईआ। ना कोई खेले खेल बाज़ीगर नाट, स्वांगी स्वांग ना कोए वखाईआ। ना कोई बजर ना कपाट, तुरीआ नाद ना कोए वजाईआ। ना कोई जोत ना ललाट, नूर नूर ना कोए दरसाईआ। पुरख अबिनाशी आप उतारया आपणे घाट, पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म लए उपजाईआ। आपे जाणे आपणी वाट, दूसर पन्ध ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सुत किया उत्पत आपे देवे ब्रह्म मत, दूजा सुत ना कोए जणाईआ। ब्रह्मा वेता आपे जाया, आप आपणी गोदी गोद सुहाईआ। दाई दाया नाउँ धराया, सेवक सेवा सेव कमाईआ। आपणी गोदी आप उठाया, निरगुण दिस किसे ना आईआ। साचे साकी साचा जाम प्याया, अमृत झिरना इक्क झिराईआ। अलक्खणा लाखी अलक्ख आपणा खेल खलाया, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। पुरख अबिनाशी दया कमाया, निज घर वासी डेरा लाईआ। पवण स्वास ना कोए चलाया, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा वेता सुत दुलारा, आप उपाए हरि निरँकारा, विष्नूं साचा संग मिलाईआ। ब्रह्मा सुत कर प्यार, निरगुण आपणी दया कमांयदा। शब्द अनादी दए धुन्कार, साचा नाद वजांयदा। सुणे सुणाए सुणनेहार, घर मन्दिर सोभा पांयदा। हरि मन्दिर साचे मीत मुरार, आपणा रूप दरसांयदा। ठांडा सीता धुर दरबार, दर साचा घर आप वड्यांअदा। अनडीठा वखाए धाम न्यार, नेत्र नैण ना कोए खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे साचा वर, साचा हुक्म आप सुणांयदा। ब्रह्मे सुणना कर ध्यान, हरि साचा शब्द सुणांयदा। तेरा नाउँ होया प्रधान, पारब्रह्म तेरा रंग आप रंगांयदा। तेरे हथ्थ रखाए निशान, सच निशान आप झुलांयदा। तेरी झोली पाए इक्क ज्ञान, आपणी भिच्छया वण्ड वण्डांयदा। आदि जुगादि रहे निगहवान, जुग जुग वेख वखांयदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग रक्खे आपणी आण, हुक्मी हुक्म आप फिरांयदा। सिर सिर मन्नणा पए भाण, हरि भाणा वड धरांयदा। दो जहानां एका आण, एका आपणी कल वरतांयदा। तेरी वस्त चार खाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साची वण्डण आप वण्डांयदा। साची वण्डण वण्डणहारा, पुरख अकाल अख्वांयदा। ब्रह्मे देवे नाम भण्डारा, आत्म अन्तर आप टिकांयदा। घर मन्दिर दीआ कर उज्यार, निरगुण जोत जोत जगांयदा। शब्द अनादि नाद धुन्कारा, धुन आत्मक आप सुणांयदा। चार कुंट हो उजिअरा, दहि दिशा डगमगांयदा। चार वेदां बण लिखारा, चार युगां झोली पांयदा। चार वरन कर वणजारा, अठारां बरन वेख वखांयदा। चारे बाणी बोल जैकारा, चौथा पद आप सुहांयदा। लेखा चुक्के चार यारा, पंचम जोती जोत डगमगांयदा। लेखा जाणे एकँकारा, आप आपणी कल वरतांयदा। नौ नौ चार

होए पार किनारा, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। मनवन्तर इकत्तर ना कोए सहारा, जुग चौकड़ी ना कोए वखांयदा। तेरा वेद ना पाए सारा, आप आपणा आप छुपांयदा। आपे जाणे आपणी अन्तिम वारा, लेखा लेख ना कोए लिखांयदा। तेरा करे पार किनारा, तेरा लेखा मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे एका वर, एका तत्त समझांयदा। ब्रह्मे अन्त हरि बूज्झया, प्रभ साचे दया कमाईआ। पुरख अबिनाशी भेव खुल्हाया गूज्झया, भेव रहे ना राईआ। लेखा चुक्के एका दूजया, तीजे नैण होए रुशनाईआ। चौथे पद हरि दरस कर कर लूज्झया, पंचम घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्दिर दए सुहाईआ। मन्दिर सुहाया हरि भगवान, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। ब्रह्मे दीआ एका दान, जीआ दाता आप अख्वाईआ। त्रैगुण माया सति निशान, सति सतिवादी झोली पाईआ। पंज तत्त कर प्रधान, अप तेज़ वाए पृथमी आकाश मेल मिलाईआ। लक्ख चुरासी तेरी सन्तान, तेरी अंस आप वखाईआ। मन मति बुध इक्क निशान, निरगुण आपणी वण्ड वण्डाईआ। ब्रह्म मति होए प्रधान, ईश जीव करे कुड़माईआ। नौ दुआरे जगत दुकान, आसा तृष्ना विच टिकाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार पंज शैतान, पंचम मेला लए मिलाईआ। पंचम शब्द नाद धुनकान, घर घर विच दए वजाईआ। अनहद नाद सच्ची धुनकान, हरि मन्दिर दए सुणाईआ। सुखमन टेढी बंक निशान, ईड़ा पिंगल संग निभाईआ। सर सरोवर इक्क महान, अमृत आत्म जल भराईआ। बजर कपाटी घट दुकान, आपणी हथ्थीं बन्द कराईआ। शब्द वखाए सच निशान, घर साचे आप झुलाईआ। पुरख अबिनाशी खेल महान, काया बंक गढ़ आप सुहाईआ। निरगुण जोत जगे महान, जोत निरँजण डगमगाईआ। आत्म सेजा होए प्रधान, दस्म दुआरी दर खुल्हाईआ। सुरत सखी मिले साचा काहन, घर वज्जदी रहे वधाईआ। पीआ प्रीतम एका जाण, प्रेम प्याला दए प्याईआ। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, निअक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। बोध अगाधा हरि भगवान, शब्द अनादा नाद वजाईआ। ब्रह्मे पंज तत्त माणस मानुख रक्खे तेरा जगत निशान, हरि दाता बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण खेल करे महान, आपणा रूप आप वटाईआ। लक्ख चुरासी करे पुण छाण, आपणी वण्डण वण्ड वण्डाईआ। आपे जोती दीप जगे महान, आप आपणी कल धराईआ। आपे शक्ती रूप होवे नौजवान, आदि शक्ति आपणा जोबन आप हंढाईआ। आपे गुर पीर देवे दान, साची वस्त झोली पाईआ। आपे प्रगट होवे वाली दो जहान, चतुर्भुज आपणा रूप आप वटाईआ। आपे गाए साचा गाण, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। आपे पवण पाणी मसाण, स्वास स्वास आप चलाईआ। आपे खाणी बाणी पाए आण, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड परा पसंती मद्धम बैखरी आपणी धार बंधाईआ। आपे चार जुग वण्डण वण्डे वण्ड, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग

८१० ०६

आपणे अंग लगाईआ। आपे पाए सार हरि हरि ब्रह्मण्ड, ब्रह्मा विष्न शिव वेख वखाईआ। आपे रवि ससि सूरज चन्न तारा मंडल देवे डंन, जो घड़या सो भन्न वखाईआ। आपे होए नार दुहागण रंड, आपे साचा कन्त हंढाईआ। आपे वेस वटाए भेख पखण्ड, आपे सच सुच्च दए दृढ़ाईआ। आपे होए परमानंद, निजानंद आपणा डेरा लाईआ। आपे दूई द्वैती ढाए आपणी कंध, आपे हउमे गढ़ वसाईआ। आपे सोवे दे कर कंड, आपणी करवट ना दए बदलाईआ। आपे आपणा आप लाए आपणे अंग, ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाईआ। आपे सुणाए सुहागी छन्द, जुग जुग ढोला आपणा आपे गाईआ। आपे ब्रह्मा तेरा मुकाए नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे वसणहारा सच्चे सचखण्ड, आपे धरत धवल निरगुण सरगुण रूप लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे साची सिख्या दए समझाईआ। ब्रह्मे सुणया हरि संदेश, दोए जोड़ करे निमस्कारा। तूं साहिब सच्चा नरेश, बेऐब परवरदिगारा। हउँ ठाकर करां आदेश, मंगां मंग बण भिखारा। आदि जुगादी तेरा वेस, जुगा जुगन्तर गुर पीर अवतारा। मेरी कोई ना चले तेरे अग्गे पेश, हउँ सेवक सेवादारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मिले साचा हरि, छुट्ट जाए ना तेरा दुआरा। पुरख अबिनाशी हुक्म जणाया, ब्रह्मा सुण लए अंगड़ाईआ। चारे वेद तेरी धार बंधाया, चार जुग करे कुड़माईआ।
८११ लक्ख चुरासी तेरी झोली पाया, घड़ भाण्डे आप वखाईआ। अन्तिम वेला आपणे हथ्थ रखाया, कोई लिख ना सके राईआ। ८११
०६ चौकड़ी जुग गेड़ा रिहा दवाया, त्रिताली लक्ख बीस हज़ार एका रंग वखाईआ। साची वण्डन आप वण्डाया, आपे वेखणहार ०६
होए बेपरवाहीआ। लोआं पुरीआं धरत धवल जेरज अंड आपणा खेड़ा लवां वसाया, वसदा खेड़ा लवां उजड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे एका वर, वर दाता आप अख्वाईआ। ब्रह्मे मन्नया हरि का भाणा, नेत्र नीर वहाया। पुरख अबिनाशी साचा राणा, साचे तख्त सुहाया। सचखण्ड निवासी बेमुहाणा, हरि किसे ना पाया। आपे होए जाणी जाणा, जानणहार दिस ना आया। जो घड़या सो भन्न वखाणा, थिर कोए रहिण ना पाया। आपे जाणे आपणा भाणा, हरि भाणे सद समाया। मेरा खेल आवण जाणा, जावण आण रचन रचाया। लक्ख चुरासी पेटा ताणा, ताणा पेटा आपे पाया। घट घट अंदर गाए गाणा, शब्द अनादी नाद सुणाया। लक्ख चुरासी देवे पीणा खाणा, सृष्ट सबाई रिज़क सबाया। दर दुआरे बख्शे माणा, सच सरनाई इक्क वखाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग चौथे आए हाणा, वेला अन्त दए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी आपणा वेस, करे कराए नर नरेश, नर हरि आपणा खेल खलाया। नर हरि खेल खलंदड़ा, जोद्धा सूरबीर बलवान। सचखण्ड दुआरा आप वसंदड़ा, सत्त रंग झुलाए

इक्क निशान। तख्त ताज इक्क वखंदड़ा, पुरख अबिनाशी वड मेहरवान। एका हुक्म आप सुनंदड़ा, जुगा जुगन्तर धुर फ़रमान। ब्रह्मा एका मार्ग आप चलंदड़ा, चार जुग कर प्रधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका पाए साची आण। साची आण शब्द जणाया, ब्रह्मे भुल्ल रहे ना राईआ। पुरख अबिनाशी खेल खलाया, विष्न ब्रह्मा शिव सेवा लाईआ। त्रै त्रै चेले रूप वटाया, एका मात गोद बहाईआ। सिर समरथ हथ्थ टिकाया, अनाथ अनाथां आप हो जाईआ। एका मन्त्र गाथ पढ़ाया, इष्ट देव इक्क जणाईआ। एका दृष्ट दए खुल्हाया, सृष्ट सबाई वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे दित्ता एका वर, अन्तिम लेखा दए चुकाईआ। अन्तिम लेखा हरि चुकावणा, पारब्रह्म ब्रह्म समझांयदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकावणा, हुक्मी हुक्म आप फिरांयदा। लक्ख चुरासी भाण्डा भन्न वखावणा, घड़या कोए रहिण ना पांयदा। ब्रह्म तेरा पन्ध मुकावणा, जोती जोत मेल मिलांयदा। रवि ससि मुख शर्मावणा, जगत अन्धेरा पड़दा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। साची सिख्या धुर दरबार, विष्न ब्रह्मे आप समझाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, किरपन आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, सरगुण निरगुण वेख वखाईआ। दोहां विचोला आप करतार, शब्द मेला सहिज सुभाईआ। गावे ढोला विच संसार, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। बदले चोला अगम्म अपार, जोती जोत करे रुशनाईआ। कला सोलां ना कोए अवतार, चौदां लोक ना हुक्म चलाईआ। अकल कला कल आपे धार, आप आपणा खेल वरताईआ। कूड़ी क्रिया पावे सार, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाउणा, हरि साचा लेख लिखांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराउणा, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। रामा कृष्ना वेस वटाउणा, रावण लंका गढ़ तुड़ांयदा। ग़रीब निमाणयां गले लगाउणा, बिदर सुदामा आप तरांयदा। ईसा मूसा संग निभाउणा, काला सूसा तन छुहांयदा। कलमा अमाम आप पढ़ाउणा, कायनात आप जगांयदा। शरअ शरीअत इक्क वखाउणा, लाशरीक खेल खिलांयदा। बेऐब परवरदिगार रूप वटाउणा, नूरो नूर डगमगांयदा। उच्ची कूक नाअरा इक्क सुणाउणा, हक बहक वेख वखांयदा। ऐनलहक मेल मिलाउणा, हक हकीकत जोड़ जुड़ांयदा। जग तारीकी इक्क गवाउणा, एका नूर डगमगांयदा। तुलबा तालिब इक्क अख्वाउणा, एका सबक सुख़न जणांयदा। रहिमत रहिमान नाउँ धुराउणा, अज़मत आपणे हथ्थ रखांयदा। संग मुहम्मद मेल मिलाउणा, चार यारी जोड़ जुड़ांयदा। मक्का काअबा फेरा पाउणा, दो दो आबा वेख वखांयदा। शाह नवाबा नाउँ धराउणा, शाह सवार अश्व घोड़ा आप दौड़ांयदा। आब हयाता जाम प्याउणा, बेआब ना कोए तड़फांयदा। साबत ईमान

इक्क रखाउणा, अञ्जील कुरान आपे गांयदा। तीस बतीस आप सुणाउणा, बीस बीसा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग साचा वेख वखांयदा। कलिजुग साचा वेखणहारा, एका एकँकार। करे खेल अगम्म अपारा, लोकमात लै अवतार। नानक निरगुण दीपक जोत कर उज्यारा, लक्ख चुरासी पावे सार। सचखण्ड दुआरे पार किनारा, दो जहानां इक्क आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त भरे भण्डार। साची वस्त नाम भण्डार, हरि साचे हथ्थ रखाईआ। नानक निरगुण करया इक्क प्यार, वस्त अमोलक झोली पाईआ। नाम सति वणज वपार, निरगुण सरगुण दए कराईआ। चार वरनां दए आधार, ऊँचां नीचां मेल मिलाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। मिल्या मेल मीत मुरार, इक्क तौफीक शहनशाहीआ। सच रफ़ीक हरि निरँकार, बेऐब इक्क अख्वाईआ। महबूब मिल्या कर प्यार, मैख़ाना इक्क प्रगटाईआ। काया काअबा कर त्यार, सच महिराबे बैठा आसण लाईआ। उच्ची कूक करे पुकार, मुकामे हक इक्क खुदाईआ। नूरो नूर जल्वा सच्ची सरकार, साख्यात रूप वटाईआ। हिन्दू मुस्लिम करे प्यार, नानक निरगुण एका तत्त समझाईआ। वरन गोत तों वसया बाहर, कलमा कलमी सिफ्त सालाहीआ। खाणी बाणी करे पुकार, हरि हरि साची महिमा रही गाईआ। अक्खर लिखण पढ़न विच ना करे कोए विचार, हरि का नाउँ दिस ना आईआ। चारे वेद लिख लिख गए हार, पुराण अठारां देण गवाहीआ। वेद व्यासा करे पुकार, चार लक्ख सतारां हज़ार, सलोक गया गणाईआ। शास्त्र सिमरत बण भिखार, मंगण भिख्या बेपरवाहीआ। हरि का नाम अगम्म अपार, बिन सतिगुर पूरे हथ्थ किसे ना आईआ। पंडत कूकण करन पुकार, वाचक विद्या रहे गाईआ। याचक गुरमुख मंगे दान, देवणहारा इक्क रघुराईआ। नाम सति कर प्रधान, नानक सिख्या सिख समझाईआ। एका बाणी शब्द निशान, धुर फ़रमाना आख सुणाईआ। जुगा जुगन्तर खेल महान, श्री भगवान आप कराईआ। अन्तिम कलिजुग प्रगट होवे वाली दो जहान, निहकलंक आपणा नाउँ धराईआ। चार कुंट वाजे शब्द निशान, सच नगारे चोट लगाईआ। चारे वरन होण हैरान, अठारां बरन मुख शर्माईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड ब्रह्मा विष्न शिव राह तकाण, करोड़ तेतीसा राजा सुरपति इंद मंगे दान, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। एका जोत बली बलवान, निरगुण निरगुण ल्ए उपजाईआ। दस रूप विच जहान, गोबिन्द आपणी खेल खलाईआ। साचा खण्डा नाम कृपाल, तिक्खी धार आप उठाईआ। पंचम मीता पंचम कर प्रधान, पंचम अमृत जाम प्याईआ। पंचम देवे धुर फ़रमान, शब्द संदेश इक्क सुणाईआ। कलिजुग मिटे कूड़ निशान, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। चौदां तबक होण वैरान, अल्फ़ी अल्फ़ ना कोए हंढाईआ। माया मन्दिर ना दिसे निशान, डूँग्घी कंदर वेख वखाईआ। कट्टे जंदर पंज शैतान, हउमे गढ़ दए तुड़ाईआ। प्रगट होवे वाली

८१३
०६

दो जहान, शाहो भूप आपणा बल धराईआ। सम्बल नगरी सच मकान, साचा तख्त दए सुहाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, एका खण्डा हथ्थ रखाईआ। लोआं पुरीआं पावे आण, नौ खण्ड पृथ्मी एका हुक्म चलाईआ। सत्तां दीपां करे पछाण, सत्त समुंद सागर एका गेड़ा दए दवाईआ। प्रगट प्रगटाए गुरमुख चतुर सुजान, आप आपणी बूझ बुझाईआ। एका राग सुणाए कान, दिवस रैण नाद धुन शनवाईआ। मिले मेल श्री भगवान, संसा रोग रहे ना राईआ। घर मन्दिर वसाए इक्क मकान, आत्म सेजा दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम आपणा खेल आप खलाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल खेलणा, निरगुण नूर हरि निरँकार। भगत भगवन्त आप आपणा मेल मेलणा, लक्ख चुरासी कर विचार। आपे जाणे आपणा वक्त वेलना, थित वार ना पावे सार। लेखा जाणे गुरू चेलना, चेला गुर हरि अवतार। आपे वसे रंग नवेलना, सचखण्ड निवासी थिर दरबार। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेलणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। गुरमुखां कट्टे धर्म राए दी जेलणा, राए धर्म ना मारे मार। जोत निरँजण चाढ़े तेलना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन सच उभारया, कर किरपा हरि गोबिन्द। देवे दरस अगम्म अपारया, मेटे सगली चिन्द। काया कपड़ आपे ठारया, अमृत प्याए सागर सिन्ध। आवण जावण गेड़ नवारया, मेल मिलाया गुणी गहिन्द। लक्ख चुरासी पार किनारया, हरि मिल्या सद बख्शिंद। घर मन्दिर सोहे दवारया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेटे सगली चिन्द। हरिजन चिंता चिखा टुटा नाता, रोग सोग रहिण ना पाईआ। मिल्या मेल पुरख बिधाता, आत्म अन्तर वज्जी वधाईआ। मिटी रैण अन्धेरी राता, सच सुच्च करे रुशनाईआ। हरिजन सुणाए हरि हरि साची गाथा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। लेख चुकाए मस्तक माथा, धुर मस्तक वेख वखाईआ। आप चढ़ाए आपणे राथा, सतिगुर पूरा सेव कमाईआ। गुरसिख ना विके किसे हाटा, चौदां लोक चरनां हेठ दबाईआ। चार जुग दा पूरा करे घाटा, जो जन आए सरनाईआ। अग्गे नेड़े रक्खे वाटा, पिछला पन्ध मुकाईआ। अमृत प्याए काया बाटा, सर सरोवर दए नुहाईआ। दो जहानां रक्खे साथा, सगला संग आप निभाईआ। लहिणा देणा चुक्या तीर्थ अठसाठा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती गुरसिख तेरे चरन वहाईआ। मस्तक जोत जगे ललाटा, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, सच भण्डारा नाम वरताईआ। गुरसिख सोवे साची खाटा, सतिगुर पूरे आप विछाईआ। देवणहारा साची दाता, दाता दानी आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन साचा तारया, कर किरपा आप करतार। जुग जुग दा कर्म निवारया, नेहकर्मी कर्म विचार। माणस जन्म आप सुआरया, फिर आए ना दूजी वार। साचे पौड़े आपे

चाढ़या, दस्म दवारिउँ कढुया बाहर। शब्द घोड़े शाह अस्वारया, आपे बन्ने आपणी धार। सचखण्ड दुआरे आपे वाड़या, थिर घर खोल्ह आप किवाड़। जोती जोत मेल मिला रिहा, पंज तत्त ना कोए प्यार। वासना खोटी सर्ब कढा रिहा, आत्म जोती कर उज्यार। कोटन कोटि दर दुरका रिहा, गुरमुख साचे लए उभार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम लै अवतार। कलिजुग अन्तिम हरि हरि जामा, निरगुण जोत जगाईआ। लेखा जाणे सीआ रामा, राधा कृष्ना वेख वखाईआ। ईसा मूसा पहरे बाणा, संग मुहम्मद करे रुशनाईआ। नानक गोबिन्द कर प्रधाना, लोकमात करे रुशनाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे वाली दो जहानां, निहकलंका नाउँ धराईआ। हथ्थ रखाए सच निशाना, नौ खण्ड पृथमी दए झुलाईआ। मेट मिटाए शाह सुल्ताना, सीस ताज ना कोए हंढाईआ। लक्ख चुरासी बन्ने गाना, लाड़ी मौत लए प्रनाईआ। गुरमुख विरला चतुर सुजाना, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। गोबिन्द रूप खेले खेल श्री भगवाना, गोबिन्द आपणा रूप वटाईआ। काल महांकाल रखाए चरन ध्याना, आदि शक्ति सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आया, चार कुंट कूके दए दुहाईआ। ब्रह्मे आपणा नैण उठाया, चारे कूटां वेख वखाईआ। चारे वेदां मुख शर्माया, अथर्बण संग ना कोए निभाईआ। चारे खाणी भेव ना राया, तुरीआ नाद ना कोए वजाईआ। चारे वरनां नाता दए तुड़ाया, सगला संग ना कोए निभाईआ। चौथे जुग धीर ना कोए वखाया, चार यारी नेत्र नैणां नीर रहे वहाईआ। अल्ला राणी मुख कुमलाया, झूठा घूँगट रही वखाईआ। धरत मात दए दुहाया, धीरज जति सति ना कोए धराईआ। मावां पुतरां नेंह लगाया, भैणां भईआ संग रखाईआ। पिता पूत ना कोए सुहाया, लेखा चुक्या सर्ब लोकाईआ। चारों कुंट अन्धेरा छाया, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। साध सन्त कोई दिस ना आया, काया बंक ना कोए वड्याईआ। धीआं भैणां रहे तकाया, अठसठ तीर्थ फेरा पाईआ। मन का मणका ना किसे फिराया, माला अठोतरी रहे चलाईआ। जन जनका मेल ना किसे मिलाया, सीता राम ना कोए कुड़माईआ। राधा कृष्न ना मेल मिलाया, नाम बंसरी ना कोए वजाईआ। सति नाम ना नज़री आया, निरगुण निराकार नानक नाम ना किसे दृढ़ाईआ। पंजां डेरा किसे ना ढाया, गुरदर मन्दिर पई लड़ाईआ। हरि का मन्दिर दिस ना आया, कलिजुग पड़दा रिहा पाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खलाया, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। निहकलंकी जामा पाया, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गोबिन्द डंका इक्क वजाया, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। राउ रंकां आप उठाया, सोया कोए रहिण ना पाईआ। सभ दा शंका दए मिटाया, सम्मत वीह सौ सतारां दए गवाहीआ। वासी पुरी घनका आप अख्वाया, वार अनका जोत जगाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचा लए उठाईआ। गुरमुख साचा जागया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। हरि हरि पाया कन्त सुहागया, मेल मिलावा कन्त भतार। सुन्न उपजे इक्क वैरागया, दर भगतन होए ख्वार। जो जन सरनाई लागया, सतिगुर पूरा खोल्हे बन्द किवाड़। त्रैगुण माया डस्से ना डस्सणी नागया, पंच विकारा देवे दर दुरकार। फड़ फड़ हँस बणाया कागया, सोहँ मोती चुगे चोग अपार। दुरमति मैल धोवे दाग़िआ, निर्मल अमृत उप्पर डार। माया ममता बुझे आग्ना, काया होए ठंडी ठार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लाए पार। हरिजन पार उतारया, कर किरपा हरि भगवान। अन्तिम मेल विच संसारया, शब्द वखाए धुर निशान। आवण जावण गेड़ निवारया, लक्ख चुरासी फंद कटान। पाया पुरख इक्क करतारया, वड दाता गुणी निधान। माणस जन्म जन्म पैज संवारया, साची सखी मिल्या हरि हरि एका काहन। सचखण्ड दुआरे आपे वाड़या, ब्रह्मा विष्न शिव होए हैरान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे करे परवान। गुरसिख होए परवानया, दरगह साची मेल मिलाए। अन्तिम देवे शब्द बबाणया, सतिगुर पूरा आप चढ़ाए। राए धर्म मुख शर्मानया, चित्रगुप्त ना लेख वखाए। ब्रह्मा निउँ निउँ सीस झुकानया, जिस मार्ग गुरसिख जाए। विष्नूं दोए जोड़ करे ध्यानया, वाह वा रसना हरि गुण गाए। पुरख अबिनाशी सद मेहरवानया, हरिजन साचे गोद बहाए। दरगह साची धाम वखानया, सचखण्ड दुआरा सोभा पाए। तख्त निवासी खेल महानया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे धाम वसाए। हरि का धाम अवल्लड़ा, सचखण्ड दुआरा सोभावन्त। पुरख अबिनाशी वसे इक्क इकल्लड़ा, खेले खेल आदि जुगादी जुगा जुगन्त। हरिजन फड़ाए साचा पलड़ा, मेल मिलाए साचे सन्त। जोती शब्दी आपे रलड़ा, आपे महिमा जाणे बेअन्त। गुरसिख साचे सच फड़ाया पलड़ा, लेखा चुकाए आदि अन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे दर, मेल मिलावा नारी कन्त। नारी कन्त हरि पाया, कन्त कन्तूहल नौजवान। साची सेजा इक्क हंढाया, मिल्या मेल श्री भगवान। संसा रोग रहे ना राया, घर वसया सच मकान। सति सन्तोखी एका पाया, सति सतिवादी वड मेहरवान। धुर संजोगी मेल मिलाया, विछड़ ना जाए दो जहान। हउँ रोगी रोग चुकाया, अंगीकार कर आप निगहबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए पछाण। गुरसिख रेशम साचा पट, पुरख अबिनाशा तन्द तन्द उँणाया। सचखण्ड दुआरा खोल्हू हट्ट, साचे हट्ट विकाया। ब्रह्मा विष्न शिव लाहा रहे खट्ट, गुरसिख तेरा दर्शन पाया। तेरा किनारा एका तीर्थ तट, सचखण्ड दुआरा आप बणाया। तेरी जोत जगे लट लट, आदि शक्ति भवानी तेरा रूप वटाया। तेरी काया साचा मट, पुरख अबिनाशी डेरा

लाया। तेरा लहिणा देणा चुक्या पूजा पाठ, एका नेत्र हरि हरि दर्शन पाया। तेरा बेड़ा उतरया पार घाट, मँझधार ना कोए रुढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा रेशम ताणा पेटा, हरि हरि बणया खेवट खेटा, मात पित लेखा जाणे बेटी बेटा, बाल बाला लए तराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण रूप दो जहान, सरगुण निरगुण आपणा खेल खलाया। सो पुरख निरँजण निराकार, हरि पुरख निरँजण वेस वटांयदा। एकँकारा हो त्यार, आदि निरँजण जोत जगांयदा। अबिनाशी करता सच दरबार, सच सिँघासण आसण लांयदा। श्री भगवान बण भिखार, दर दरवेश अलक्ख जगांयदा। पारब्रह्म इक्क भण्डार, आपणी झोली आपे पांयदा। सति पुरख निरँजण साची कार, सचखण्ड दुआरे आप करांयदा। घर विच घर खोल्ह किवाड़, थिर घर आपणा वेख वखांयदा। आपणे मन्दिर हो त्यार, आसण सिँघासण आप सुहांयदा। आपणी सेजा कर विचार, सेज सुहञ्जणी आप सुहांयदा। आपे नार कन्त भतार, नर नरायण आप अख्वांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार, लक्ख चुरासी रचन रचांयदा। आपे त्रैगुण माया भर भण्डार, पंज तत्त जोड़ जुड़ांयदा। आपे अन्तिम मारे मार, चारे खाणी वेख वखांयदा। आपे लेखा जाणे सर्ब संसार, लेखा लेखे आपे पांयदा। आपे जुग जुग गेड़ा गेड़नहार, कोहलू चरख़ा चक्की चक्क आप भवांयदा। आपे रक्खे रक्खणहार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। आपे लक्ख चुरासी करे आर पार, जो घड़या सो भन्न वखांयदा। कलिजुग अन्तिम होए ख्वार, धीरज धर्म ना कोए धरांयदा। निहकलंका नर हरि नरायण इक्क अवतार, लोकमात जोत जगांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी बणे सच्चा सिक्दार, सत्तां दीपां इक्क निशान झुलांयदा। शाह सुल्ताना कर ख्वार, राज राजानां दर दर फिरांयदा। बीस बीसा मारे मार, जगत जगदीसा आप अख्वांयदा। राग छतीसा पाए सार, जगत हदीसा फोल फोलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन मेले एका दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा।

* २४ हाढ़ २०१७ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे घर ऐहमद पुरा दया होई ज़िला कपूरथला *

सति पुरख निरँजण दीन दयाला, सति सतिवादी खेल खिलांयदा। अबिनाशी करता जोत अकाला, अकल कल कलधारी नाउँ रखांयदा। आदि शक्ती नूर ज्वाला, जागरत जोत डगमगांयदा। निरगुण रूप अनूप हरि महांकाला, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। धुर दरबार वसाए सच्ची धर्मसाला, दर दरबारा आप सुहांयदा। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क रखांयदा। शब्द अगम्मी बण दलाला, लोआं पुरीआं फेरा पांयदा। नाम निधाना एका माला, लक्ख चुरासी फोल हंढांयदा।

सच सिँघासण सोहे साची शाला, शाह सुल्ताना आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप वरतांयदा। आपणी कल हरि वरताए, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। जुगा जुगन्तर वेस वटाए, लोकमात वज्जे वधाईआ। सतिगुर साचा नाउँ धराए, गुर गुर एका बूझ बुझाईआ। सन्तन मेला सहिज सुभाए, घर साचे लए मिलाईआ। हरिजन साचे लए उठाए, एका अक्खर लए पढ़ाईआ। नाम निधाना झोली पाए, बजर कपाटी दए तुड़ाईआ। दिवस रैण करे प्रितपाले, देवी देव सेव कमाईआ। सेवक सेवादार आप अख्वाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर साचा आप सालाहीआ। हरि घर साचा वसया, पारब्रह्म करतार। दो जहानां फिरे नस्सया, नित नविता साची कार। साचे मन्दिर बह बह हस्सया, हरिजन वेखे मीत मुरार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए उभार। गुरमुख साचा जाणया, गुर गुर किरपा धार। आप चलाए आपणे भाणया, देवे राम नाम उरधार। लेखा जाणे दो जहानया, लोकमात खेल न्यार। हरिजन साचा सुघड़ स्याणया, गुरमुख विरला उतरे पार। लक्ख चुरासी बाल नादानया, आत्म ब्रह्म ना कोए विचार। हरि का रंग हरिजन साचे माणया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। करता खेल करंदड़ा, हरि सच्चा साहिब सुल्तान। गुरमुख वेख वखंदड़ा, साचे भगत वड मेहरवान। एका रचना राम रचन्दड़ा, रच रच वेखे आप भगवान। साचा छत्र सीस सुहंदड़ा, करोड़ तेतीसा देवे दान। इंदर मेघ आप वसंदड़ा, गुरसिख तृखा मिटे दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचे होए प्रधान। दर घर साचा सोहया, सतिगुर पूरा आप सुहांयदा। गुरमख करे नवां नरोआ, निर्मल अमृत जाम प्यांअदा। एका बीज साचा बोया, फल साचा आप खवांयदा। धुर दरगाही लै के आया ढोआ, हरिजन साचे तन पहनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए उठाए। गुरमुख साचा उठया, मिल्या हरि गोबिन्द। गोबिन्द सूरा तुठ्ठया, मिटाए सगली चिन्द। भाग लगाए बुत्तया, अमृत बख्शे सागर सिन्ध। आप सुहाए आपणी रुत्तया, वड दाता गुणी गहिन्द। नाम चढ़ाए साची चोटीआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे सुरपति इंद। आप बणाए साचा राणया, गुरमुख मात पछाण। आप चलाए आपणे भाणया, देवे नाम निधान। लेखा लिखे सुघड़ स्याणया, बिरहों मारे निराला बाण। एका अक्खर कर प्रधानया, दो जहान जपाए साचा नाम। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे वेखे इक्क निशान। सच निशाना गुरसिख धार, गुर सतिगुर वेख वखाईआ। जन्म जन्म दी बुझे प्यास, चातृक चित ना फिर बिल्लाईआ। सतिगुर पूरा

पूरी करे आस, दे दरस तृप्त कराईआ। निज घर निज आत्म करे वास, घर मन्दिर सोभा पाईआ। साची जोत जोत प्रकाश, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। हरिजन पूरी करे आस, आस निरासा ना कोए वखाईआ। लेखा जाणे पृथमी आकाश, पुरीआं लोआं खोज खोजाईआ। तख्त निवासी साचे तख्त बह बह पाए आपणी रास, आपणी खेल आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। बुझी प्यास मन तृप्ताया, गुर सतिगुर दया कमाईआ। जन्म जन्म दा लेख चुकाया, घर मिल्या साचा माहीआ। आवण जावण फंद कटाया, भय भयानक होए सहाईआ। अचन अचानक खेल वरताया, पूर्ब लहिणा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म अजन्मा दए समझाईआ। पूर्ब लहिणा वेख्या, कर किरपा हरि निरँकार। आपे जुग जुग लिख्या लेखया, आपे कर्ज़ा दए उतार। आपे द्वापर धारे भेख्या, कान्हा कृष्ना रूप अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे गोवर्धन लए उभार। आप गोवर्धन धारी हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आपे ग्वाल बाला बण बण देवे वर, गोकल मथरा होए सहाईआ। आपे बिन्दराबन वेखे खड़, आपणी सेव आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे नंद मेहर दए वड्याईआ। आपे नंद नंद प्यारा, भाई भईआ संग रखांयदा। आपे लम्भया सुत दुलारा, आपे सय्या मेल मिलांयदा। आपे मंगे बण भिखारा, दोए दोए चरनी सीस झुकांयदा। कवण रूप दिसे गिरवर गिरधारा, गोवर्धन हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी छहबर आपणा मेघ आपणे हुक्म चलांयदा। साचा मेघ साची धार, हरि कृष्ना कृष्न जणाईआ। बाल बाले उतरे पार, चौथे जुग वज्जे वधाईआ। तेरा जन्म जन्म होए संसार, लोकमात दए हरि वड्याईआ। पुरख अबिनाशी करे खेल अपार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। चरन कँवल कराए सच प्यार, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। कलिजुग अग्नी तपे हाढ़, चारों कुंट रही जलाईआ। सतिगुर पूरा हो त्यार, सति सतिवादी खेल खलाईआ। गुरमुख करे सच प्यार, घर मन्दिर खोज खोजाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दा लहिणा मूल चुकाईआ। देवे दरस दर घर आण, आप आपणी दया कमाईआ। द्वापर करे कल पछाण, कलि कल्की वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मेघ एका धार, एका छहबर सच्चे घर बार, दर घर साचे आप वखाईआ। दर घर सच सुहावणा, होई रुत्त बसन्त। गुरमुख गुर गुर एका रंग रंगावणा, एका जिह्वा मणीआ मंत। एका शब्दी नाद वजावणा, धन्न वडियाई साचे सन्त। दर मन्दिर आप सुहावणा, पारब्रह्म प्रभ बेअन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, मेल मिलावा साची संगत। संगत संग निभाया, कर किरपा गुण निधान। गुरसिख गुर गुर लेखे लाया,

लेखा मिटया दो जहान। नेत्र पेख पेख दर्शन पाया, दरदीआं दर्द मिटाए आण। नर नरेशा वेस वटाया, दर दरवेशा खेल महान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, गुरमुख साचे चतुर सुजान। गुरबचन बचन गुर मन्नया, द्वापर चुक्की काण। कलिजुग भाण्डा भन्नया, भरमी मिटे कूड़ निशान। सतिजुग साचा चढ़े चन्नया, जोत जगे दो जहान। देवे नाम सच्चा धन्न धनया, सच ख़ज़ीना आप पछाण। एका राग सुणाए कन्नया, सोहँ शब्द श्री भगवान। लक्ख चुरासी देवे डन्नया, नौ खण्ड होए वैरान। जो घड़या सो भन्नया, पंज तत्त दिसे ना कोए मकान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे करे पछाण। गुरबचन गुर एक है, एक टेक रघुनाथ। त्रैगुण माया ना लाए सेक है, पुरख अबिनाशी सगला साथ। कलिजुग अन्तिम रिहा वेख है, आप पढ़ाए आपणी गाथ। लेखा जाणे मस्तक रेख है, लहिणा चुक्के ललाटी माथ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख चुकाए जगत डर, इक्क वखाए साचा घर, सगल विसूरे जायण लाथ। सगल विसूरा चुकया, पाया पारब्रह्म गुर करतार। हरिजन बूटा कदे ना सुक्कया, हरया होए विच संसार। गुरमुख कदे ना रहे लुकया, प्रगट करे आप निरँकार। जो जन सरन सरनाई झुकया, फड़ फड़ बांहों आपे करे पार। उलटा मात गर्भ ना रुख्या, दस दस मास ना होए ख्वार। उज्जल करे मात मुख्या माणस जन्म पैज संवार। गुरसिखां भार सतिगुर पूरे आपे चुकया, गुरसिख रक्खे हौले भार। चित्रगुप्त लेखा लैण कदे ना ढुक्कया, राए धर्म ना करे ख्वार। कलिजुग वेला अन्तिम ढुक्कया, चारों कुंट अग्ग अंग्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लाए पार। हरिजन साचे पेख्या, परम पुरख करतार। पूर्ब जन्म जन्म दी मेटे रेख्या, लेखा लिखणहार अगम्म अपार। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केसया, मूंड मुंडाए ना हरि निरँकार। आपणा रूप आपे वेख्या, आपे वेखणहार। हुक्मे अंदर ब्रह्मा विष्न महेष गणेश्या, त्रैगुण माया करे श्रंगार। आदि जुगादी धारे भेख्या, निरगुण सरगुण लै अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए साचा सच दरबार। सच दुआरा सोभावन्त, गुर चरन सच्ची सरनाईआ। गुर गुर मिलावा हरि हरि कन्त, नारी कन्त सेज हंढाईआ। काया चोली चढ़ाए रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। एका अक्खर एका नाउँ मणीआ मंत, मन मनसा दए मिटाईआ। हरिजन विरला जाणे सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी माया पाए बेअन्त, त्रैगुण आपणा ताल वजाईआ। कलिजुग अन्तिम हउमे हंगत, माया ममता गढ़ सुहाईआ। चारों कुंट भुक्ख नंगत, हरि का नाम ना कोए ध्याईआ। गुरसिख विरला मिले साची संगत, जिस जन सतिगुर पूरा आप मिलाईआ। मेल मिलावा साची संगत, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, लक्ख चुरासी फोल फोलाईआ। लक्ख चुरासी फोलण फोलया, काया गढ़ हँकार। पुरख अबिनाशी तोले तोलया, तोलणहारा एकँकार। आदि जुगादी बदले चोलया, निरगुण सरगुण लै अवतार। शब्द अनाद सुणाए ढोलया, उच्ची कूक करे पुकार। कलिजुग अन्तिम खेले होलया, सृष्ट सबाई जाए हार। गुरमुख विरले उलटा करे नाभ कौलया, झिरना झिरे अमृत धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साजण करे श्रंगार। गुरसिख तन श्रंगारया, तन बस्त्र नाम निधान। आप बिठाए सच दवारया, सचखण्ड निवासी वड मेहरवान। साचा काज आप सुआरया, दो जहानां बण निगहबान। रक्खे लाज विच संसारया, आदि अन्त कर पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए फड़, आत्म अन्तर कर पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल कर, करे खेल मात पित जिउँ बाल अञ्याण।

८२१

०६

✻ २४ हाढ़ २०१७ बिक्रमी जसवन्त सिँघ दे घर करतार पुर ज़िला जलन्धर ✻

हरि तख्त निवासी सिर सोहे ताज, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। दो जहानां साचा राज, राज राजान शाह सुल्तान शहनशाह आप कमाईआ। आदि जुगादी ग़रीब निवाज, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। शब्द अगम्मी इक्क अवाज, श्री भगवान आप लगाईआ। करता पुरख रच रच काज, कादर करीम वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव साजण साज, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। त्रैगुण माया देवे दाज, पंचम वस्त झोली पाईआ। आदि जुगादी रक्खे लाज, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी चलाए जहाज़, एका चप्पू नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर शाहा शाह आप हो जाईआ। सीस ताज श्री भगवान, पारब्रह्म प्रभ आप टिकांयदा। सो पुरख निरँजण खेल महान, अबिनाशी करता आप करांयदा। एकँकारा धुर फ़रमाण, सचखण्ड दुआरे आप अलांयदा। आदि निरँजण नूर महान, निरगुण जोत डगमगांयदा। साचे तख्त हो प्रधान, आसण सिँघासण आप सुहांयदा। एका देवे धुर फ़रमान, धुर फ़रमाना आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शाह पातशाह वेस वटांयदा। शाह पातशाह शाह सुल्ताना, हरि साचा वड वड्याईआ। मन्दिर वसे सच मकाना, थिर घर साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड महल्ल उच्च टिकाणा, निरगुण बैठा जोत जगाईआ। शब्द अनादी गाए तराना, तुरीआ नाद इक्क वजाईआ। आपे जाणे पद निरबाना, परम पुरख सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। घर साचा हरि सुहञ्जणा, निर्भय रूप हरि निरँकार। जोत

जगाए इक्क निरँजणा, नूरो नूर होए उज्यार। दरगाह साची साचा सज्जणा, सति पुरख निरँजण मीत मुरार। ना घड़या ना भज्जणा, मरे ना जम्मे विच संसार। आपणा पड़दा आपे कज्जणा, निरगुण आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाहो भूप सच्ची सरकार। सच सरकार शाहो भूप, सतिगुर साचा नाउँ धरांयदा। ना कोई रंग ना कोई रूप, रेख भेख ना कोए दसांयदा। ना कोई तागा ना कोई सूत, ताणा पेटा ना कोए पांयदा। ना कोई मास बरस ना कोई दिसे रुत्त, बसन्त बहार ना कोए जणांयदा। आदि जुगादि अबिनाशी अचुत्त, आप आपणा खेल खिलांयदा। आप पिता आपे बणे सुत, साची गोद आप सुहांयदा। आपे निर्मल नूर उजाला जगे जोत, दर घर साचे डगमगांयदा। आपे रूप वटाए कोटी कोटि, आपे रूप रंग ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वसे साचे घर, शाह पातशाह आपणा नाउँ रखांयदा। शाह पातशाह हरि राजन राज, राज जोग इक्क हंढाईआ। दो जहानां साजण साज, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। आपे जाणे आपणा काज, करनी करता किरत कमाईआ। खेले खेल शाह नवाब, दर दरवेश नर नरेश एका अल्फ़ी गल हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका कार, करे कराए करनेहार, आपणी कल आप वरताईआ। कल वरतंता हरि मेहरवाना, दर घर साचे सोभा पांयदा। सति सरूपी नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वखांयदा। एका बन्ने साचा गाना, थिर घर साचे सगन मनांयदा। शब्द अनादी बोल तराना, अनहद एका ताल वजांयदा। पावे सार रवि ससि सूरज चन्न कोटन भाना, आकाश प्रकाश डगमगांयदा। धरत धवल वेखे इक्क निशाना, आप आपणा कर्म कमांयदा। निरगुण निरवैर नर हरि पहरे आपणा बाणा, रूप अनूप आप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल श्री भगवाना, दिस किसे ना आंयदा। हरि साचा खेल खलंदड़ा, खेलणहार बेपरवाह। दरगाह साची धाम सुहंदड़ा, आदि जुगादी जगत मलाह। धुर फ़रमाणा हुक्म जणंदड़ा, दो जहानां मार्ग ला। त्रै त्रै चेले रंग रगंदड़ा, एका अक्खर विद्या दए पढ़ा। शब्द निराला तीर चलंदड़ा, आपणे हथ्थ उठा। सच निशाना इक्क लगंदड़ा, आर पार दए करा। साचा तख्त आप सुहंदड़ा, तख्त निवासी शहनशाह। सीस ताज इक्क टिकंदड़ा, पंचम मुखी मुख भवा। चारे वेदां भेव खुलदंड़ा, चारे जुग वण्डण पा। चारे खाणी खोज खोजदंड़ा, चार वरनां दए सलाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वसे साचे थाँ। थान थनंतर सोभावन्त, सति पुरख निरँजण आप सुहाया। पुरख अबिनाशी हरि हरि हरिजू हरि मन्दिर बैठा एका कन्त, दूल्हे दूल्हा नाम धराया। लाल गुलाला रंग चाढ़े एका रुत्त वखाए बसन्त, आपणी महिक आप महिकाया। लेखा जाणे आदि अन्त, मदि आपणा भेव छुपाया। लक्ख चुरासी जीव

जंत, जून अजूनी आप भवाया। आपे वेखे गढ़ हउमे हंगत, आपे काम क्रोध लोभ मोह हँकार झोली पाया। आपे लेखा जाणे साची संगत, सतिगुर साचा संग निभाया। आपे नाम भिच्छया मंगे मंगत, दर दर आपणी अलख जगाया। आपे हरिजन लाए आपणे अंग अंगद, अंगीकार दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तख्त इक्क वड्याआ। साचा तख्त सचखण्ड दुआरा, शाह पातशाह आप सुहाईआ। आसण लाए एकँकारा, ओंकारा रूप वटाईआ। मन्दिर सोहे बंक दुआरा, निरगुण जोत होए रुशनाईआ। नाद धुन उपजे सच्ची धुन्कारा, अनादी नाद आप सुणाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादि पावे सारा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। अगाध बोध इक्क जैकारा, जै जैकार आप कराईआ। साचे मन्दिर खोल्ह किवाड़ा, आपणा पड़दा दए चुकाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची धाम सुहाईआ। कराए वणज सच्चा वणजारा, एका हट्ट चलाईआ। एका खोल्ह नाम भण्डारा, पुरख अबिनाशी दए वरताईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सेवादारा, आदि जुगादि सेव कमाईआ। रवि ससि कर उज्यारा, मंडल मंडप वेख वखाईआ। ज़िमीं अस्मान बन्ह्हे धारा, धरत धवल जल बिम्ब आप टिकाईआ। शब्द अगम्मी खेल न्यारा, बिन थम्मी गगन रहाईआ। अग्नी हवन कर उज्यारा, पवण पवणी दए टिकाईआ। करनी करे आप निरँकारा, आप आपणी खेल खलाईआ। वरते वरतावे विच संसारा, वास्तक आपणा रूप वटाईआ। विश्व नाम इक्क वरतारा, वासदेव आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तख्त शाह पातशाह आप सुहाईआ। तख्त सुहाया धुर दरबार, तख्त निवासी चरन टिकांयदा। जोत प्रकाशी एकँकार, निरगुण आपणी कल वरतांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, आदि जुगादी वेस वटांयदा। बन्द खुलासी करे सर्ब संसार, जम की फाँसी आप लटकांयदा। पवण स्वामी दए आधार, निज घर वासी मेल मिलांयदा। मंडल रास गिरवर गिरधार, गृह आपणा वेख वखांयदा। साचा साकी बण निरँकार, निर्मल अमृत आत्म सच प्याला जाम प्यांअदा। खोल्हे ताकी बन्द किवाड़, आपणा पड़दा आप उठांयदा। लहिणा देणा बाकी चुक्के विच संसार, जिस जन आपणा दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। सतिगुर सच्चा शब्द गुरदेव, देव देवा वड वड्याईआ। आदि जुगादी अलक्ख अभेव, अलक्ख अलक्खणा लख्या ना जाईआ। जन भगतां करे साची सेव, निरगुण सरगुण साची सेव कमाईआ। ना रसना ना गाए जिह्व, बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। गुरमुखां वखाए अमृत आत्म एका मेव, साचा फल आपणे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहान वसाए एका घर, घर सच्चा सहिज सुखदाईआ। दो जहानां वसया, हरि सच्चा परवरदिगार। आदि जुगादी फिरे नस्सया, जुगा जुगन्तर साची कार। जुग जुग मेटे रैण

अन्धेरी रुस्सया, लोकमात लै अवतार। गुरमुख विरले मार्ग दस्सया, आप आपणा कर प्यार। घर मन्दिर बह बह हस्सया, बन्द ताकी खोल्ह किवाड़। करे प्रकाश कोटन रव सस्या, मेट मिटाए अन्ध अँध्यार। हरिजन हिरदे अंदर आपे वसया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त सोहे सच्ची सरकार। सच सरकार सच सुल्ताना, सूत्रधारी भेव ना आंयदा। जोद्धा सूर बली बलवाना, बल आपणा आप रखांयदा। गुणवन्ता गुण निधाना, नाम निशाना हथ्थ उठांयदा। साचा चिल्ला तीर कमाना, दो जहानां आप वखांयदा। जन भगतां देवे साचा माणा, माण निमाणयां गले लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह वेस वटांयदा। शाह पातशाह प्रभ वेस वटाए, जुग जुग कार कमांयदा। भगत भगवन्त लए उठाए, साचे सन्त आप जगांयदा। गुरमुख साजण संग रलाए, आप आपणी गोद बहांयदा। गुरमुखां अंदर नाम मृदंग वजाए, दिवस रैण सेव कमांयदा। काया चोली रंग चढ़ाए, उतर कदे ना जांयदा। धुर दीबाण निरगुण सरगुण भिच्छया मंगण आपे आए, रूप अनूप आप वटांयदा। दहि दिशा चार कुंट फेरी पाए, नव नव आपणी कल वरतांयदा। हरिजन साचे लए जगाए, जागरत जोत इक्क डगमगांयदा। स्वच्छ सरूपी दरस दिखाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कल वरतांयदा। गुरमुख सज्जण दरस दिखाया, दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजण। आप आपणा तरस कमाया, गुर चेला मिल्या साचा सज्जण। अमृत मेघ बरस वखाया, चरन धूढ़ कराया एका मजन। हउमे हंगता रोग गंवाया, गढ़ हँकारी भांडे भज्जण। लग्गी प्रीत तोड़ निभाया, अन्तिम आया पड़दे कज्जण। जगत विछोड़ा दए कटाया, दरगाह साची हरिजन साचे बह बह सजण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र पाए एका अंजन। एका अंजन नाम गुर मन्त्र, मदन मूर्त दए दरसाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, त्रैगुण भेव ना भरम भुलाईआ। आदि जुगादि बणाए बणतर, लक्ख चुरासी भाण्डा घड़ घर घर विच दए टिकाईआ। पाए सार गगन गगनंतर, गहर गम्भीर आप अख्वाईआ। तत्त विकार लगाए बसन्तर, अग्नी हवन आप जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन मिल्या चरन दुआर, चरन चरनोदक मुख चवाया। कोटन कोटि पाप दए उतार, पतित पापी लए तराया। वड प्रतापी बण सच्ची सरकार, सच सिँघासण आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन वेखण आया, निरगुण रूप सच्ची सरकार। लक्ख चुरासी फोल फोलाया, नौ खण्ड पृथ्मी पावे सार। सत्तां दीपां ढोला गाया, एका शब्द धुन जैकार। आपणा चोला आप बदलाया, सरगुण निरगुण लै अवतार। पड़दा ओहला इक्क रखाया, दिस ना आए जीव गंवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, हरिजन साचे करे प्यार। सच प्यार करंदड़ा, घर साचे धुर संजोग। गुरमुख सज्जण मेल मिलंदड़ा, हउमे चुक्के रोग। घर मन्दिर आप सुहंदड़ा, दर दरस वखाए अमोघ। आवण जावण फंद कटंदड़ा, पार कराए चौदां लोक। एका साचे धाम बहंदड़ा, जो जन सोहँ गाए सच सलोक। पुरख अबिनाशी मेल मिलदंड़ा, अद्धविचकार ना सके कोई रोक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची मोख। साची मोख मुक्त गुर चरन दासी, गुरमुख तेरी सेव रही कमाईआ। प्रगट होया शाहो शाबाशी, जगत जुगत इक्क बणाईआ। वेस वटाया घनकपुर वासी, साची शक्ति इक्क धराईआ। गुरमुखां पूरी करे आसी, नेत्र नैणां दरस दिखाईआ। निज आत्म निरगुण जोत इक्क प्रकाशी, परम पुरख वेख वखाईआ। पार कराए पवण स्वासी, रसना जिह्वा जो जन रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा दीन दयाल, हरिजन उठाए आपणे लाल, लालन लाल गोद सुहाईआ। गुरमुख लाल उठाया, लक्ख चुरासी विच्चों भाल। आप आपणी गोद बहाया, कर किरपा दीन दयाल। तख्त निवासी तख्त वखाया, सचखण्ड दुआर सच्ची धर्मसाल। पुरख अबिनाशी आसण लाया, उप्पर बैठ शाह कंगाल। जोत प्रकाशी जोत जगाया, आप आपणा दीपक बाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन दिवस रैण करे प्रितपाल। प्रितपालक प्रभ प्रितपालदा, दिवस रैण प्रभात। हरिजन साचे तेरी सुरत संभालदा, मेट मिटाए अन्धेरी रात। करे खेल शाह कंगाल दा, लेखा जाणे ऊँच नीच ज़ात पात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां देवे साची दात। सच दात नाम वडियाई, गुर सतिगुर हट्ट विकांयदा। गुरमुख मंगण चाँईं चाँईं, गुर पूरा झोली पांयदा। देवणहारा सभनी थाँईं, अतोट अतुट वरतांयदा। जुग जुग करे सच नयाईं, साचा सालस आप अख्वांयदा। हरिजन पार कराए फड़ फड़ बांहीं, मँझधार ना कोए रुढ़ांयदा। सिर रक्खे ठंडीआं छाईं, समरथ पुरख आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लाए पार, पार किनारा इक्क वखांयदा। पार किनारा लोकमात, लोक परलोक होए सहाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी निज घर आत्म वेखे मार झात, काया झरोखा इक्क खुल्हाईआ। चरन कँवल उप्पर धवल आप बंधाए साचा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। साची सखी नर नरायण मिल्या मेला हरि हरि कमलापात, विछड़ कदे ना जाईआ। बोध अगाध शब्द अनादा सुणाए साची गाथ, नाम वक्खर करे पढ़ाईआ। लहिणा देणा चुक्या पूजा पाठ, पारब्रह्म प्रभ मिली सच सरनाईआ। गुरसिख उतरया आपणे घाट, सच्चा बेड़ा बन्ने लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शाह पातशाह देवे वर, साचे तख्त उप्पर चढ़, किला कोट ना दिसे गढ़, चार दीवार छप्पर छन्न ना

कोए वखाईआ। छप्पर छन्न ना कोए दरवाजा, पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा। करे खेल ग़रीब निवाजा, माण निमाणयां वेख वखांयदा। अश्व घोड़ा रक्खे ताजा, शब्द शब्दी आप दौड़ांयदा। अनहद वजाए आपणा वाजा, अनहद साची तार हलांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फिरे भाजा, गगन पाताल फेरी पांयदा। दो जहानां साचा राजा, शाहो भूप मस्तक टिक्का तिलक ललाटी जोत जगांयदा। अन्तिम कलिजुग प्रगट होए देस माझा, मात पित ना कोए वखांयदा। सम्बल नगरी शाह नवाबा, तन रबाबा सितार हलांयदा। काया गढ़ मक्का काअबा, हुजरा हाज़ी वेख वखांयदा। गुरमुखां प्याए हयात आबा, बेआब ना कोए तड़फांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे सुहाए दर, दर घर साचा आप वखांयदा। दर घर साचा खोलया, कर किरपा गुण निधान। सोहँ अक्खर एका बोलया, सतिजुग सच करे प्रधान। अबिनाशी करते एका कंडे तोलया, तोला बण श्री भगवान। आपणा पड़दा आपे फोलया, वेख वखाए दो जहान। साची वस्त रक्खे कोलया, गुरमुखां देवे आण। निज आत्म निज घर निज रूप हो हो मौलया, जीव जंत ना सके पछाण। उलटा करे नाभ कौलया, अमृत झिरना झिरे महान। देवे वडियाई उप्पर धौलया, धरत धवल कर परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन मेले आपणे घर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

❋ २७ हाढ़ २०१७ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे घर पिण्ड मैंहणीआं ज़िला अमृतसर ❋

सो पुरख निरँजण ठांडा सीत, आदि जुगादी हरि अख्वांयदा। हरि पुरख निरँजण इक्क अतीत, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। एकँकारा आप चलाए आपणी रीत, जुगा जुगन्तर खेल खिलांयदा। आदि निरँजण साचा मीत, सगला साथी सगला संग निभांयदा। अबिनाशी करता वसे धाम अनडीठ, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। श्री भगवान गाए आपणा सुहागी गीत, आपणा ढोला आप अल्लांयदा। पारब्रह्म प्रभ पतित पुनीत, रूप रंग ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजण सर्ब गुण दाता, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। हरि पुरख निरँजण आप बंधाए आपणा नाता, आप आपणा मेल मिलाईआ। एकँकारा चलाए साचा राथा, रथ रथवाही दिस ना आईआ। आदि निरँजण जोती नूर ललाटा, नूरो नूर डगमगाईआ। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणी वाटा, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। श्री भगवान आप चलाए साचा राथा, जुगा जुगन्तर सेव कमाईआ। पारब्रह्म आपणा चुकाए लहिणा देणा मस्तक माथा, लेखा लेख रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगाईआ। सो पुरख निरँजण नूर नुराना,

रूप रंग ना कोए वखांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल महाना, सति सतिवादी आप करांयदा। एकँकारा गुण निधाना, गुण अवगुण ना कोए जणांयदा। आदि निरँजण जोत महाना, जुगा जुगन्तर डगमगांयदा। श्री भगवान आपे जाणे आपणा आवण जाणा, आवण जावण आपणी रचन रचांयदा। अबिनाशी करता खेले खेल दो जहानां, दो जहानां वाली आप अख्वांयदा। पारब्रह्म साचे मन्दिर हो प्रधाना, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। थिर घर वेखे इक्क टिकाणा, निरगुण आपणा आप सुहांयदा। साचा तख्त शाह सुल्ताना, तख्त निवासी इक्क वखांयदा। भूप सति सरूप बण राज रजाना, आसण सिँघासण आपे लांयदा। अनादी नाद धुर फ़रमाना, शब्द शब्दी आप अल्ांयदा। आपे होए दर दरबाना, निउँ निउँ आपणा सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार अलक्ख अगोचर भेव कोए ना पांयदा। अलक्ख अगोचर भेव न्यारा, सो पुरख निरँजण वड दाता बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर साची कारा, हरि पुरख निरँजण आप कराईआ। थिर घर वसाए सच दुआरा, एकँकारा आपणी कल वरताईआ। सचखण्ड दुआरा खोल् किवाड़ा, नूर नुराना डगमगाईआ। आदि निरँजण दीपक हो उज्यारा, दीवा बाती ना कोए टिकाईआ। रवि ससि ना कोए सितारा, सूरज चन्न ना कोए चढ़ाईआ। मंडल मंडप ना कोए उज्यारा, दूसर रंग ना कोए रंगाईआ। गगन गगनंतर ना कोई पावे सारा, मंडल मंडप ना वेख वखाईआ। ज़िमी अस्मान ना बन्न्हे धारा, चौदां लोक ना हट्ट खुल्हाईआ। लोआं पुरीआं ना कोए अखाड़ा, ब्रह्मा विष्न शिव ना रचन रचाईआ। सुरपति राजा इंद ना कोई प्यारा, करोड़ तेतीसा ना मेल मिलाईआ। गण गंधर्ब ना बोले कोए जैकारा, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। त्रैगुण माया ना कोए भण्डारा, पंज तत्त ना कोए कुड़माईआ। लक्ख चुरासी ना दिसे खेल गुप्त ज़ाहरा, अंदर बाहर ना वेख वखाईआ। ना कोई पुरख ना कोई नारा, ना कोई कन्त सेज हंढाईआ। पुत्तर धीआं ना करे कोए वणजारा, मात पित ना कोए बणाईआ। साक सैण ना दिसे संसारा, सज्जण ठग्ग ना कोए रखाईआ। नाद शब्द धुन ना कोए जैकारा, बत्ती दन्द ना कोए हलाईआ। मन्दिर मस्जिद ना कोए गुरदुआरा, शिवदुआला मट्ठ ना कोए सुहाईआ। अठसठ तीर्थ ना कोए किनारा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती ना धार वहाईआ। गुर पीर ना कोए अवतारा, साध सन्त ना रूप वटाईआ। पंज तत्त ना कोए हँकारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना वेस वटाईआ। मन मति बुध ना कोए सहारा, आसा तृष्ना ना संग मिलाईआ। आदि जुगादी खेल अपारा, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। श्री भगवान खेल न्यारा, निरगुण आपणे विच छुपाईआ। पारब्रह्म प्रभ सांझा यारा, दर घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जूनी रहित पुरख अकाला, घर साचे बैठा साचा माहीआ। दर घर साचा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहांयदा।

हरि पुरख निरँजण साचा कन्त, निरगुण मेला मेल मिलांयदा। एकँकारा बणाए बणत, आदि निरँजण संग निभांयदा। अबिनाशी करता आपणी महिमा आपे जाणे अगणत, वेद कतेब भेव ना पांयदा। अबिनाशी करता लेखा जाणे आदि अन्त, मदि आपणी खेल खिलांयदा। पारब्रह्म प्रभ मंगे मंगत, दर आपणे आपणी भिच्छया झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़ा, निरगुण लाए इक्क अखाड़ा, गोपी काहन आप नचांयदा। गोपी काहन हरि भगवाना, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। सचखण्ड वसे सच मकाना, थिर घर बैठा जोत जगाईआ। शाहो भूप शाह सुल्ताना, राज राजाना बेपरवाहीआ। नूरो नूर नूरी नूर नुराना, परवरदिगार नाउँ धराईआ। एका गावे सच तराना, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। दो जहाना देवणहारा साचा धुर फ़रमाणा, आपणी इच्छया दए वखाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, दरगाह साची साचे धाम दए वड्याईआ। ना कोई चिल्ला तीर कमाना, खड़ग खण्डा ना हथ्थ उठाईआ। एका हुक्मी हुक्म फ़रमाना, लेखे विच सर्ब भवाईआ। खेले खेल दो जहानां, त्रै त्रै आपणी वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, पुरख अबिनाशा आप कराईआ। पुरख अबिनाशी खेल अवल्ला, भेव कोए ना पांयदा। सति पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, निरगुण आपणी कल वरतांयदा। सचखण्ड दुआरे वसे सच महल्ला, उच्च अटला आप वसांयदा। आपणी जोती दीपक आपे बला, नूरो नूर डगमगांयदा। आपणी शक्ती आपे रला, आदि शक्ति विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर सुहञ्जणा जोत जगाए आदि निरँजणा, नूर नुराना आप अख्वांयदा। नूर नुराना पारब्रह्म, हरि सच्चा वड वड्याईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। पवण स्वास ना ल्ए दम, पंज तत्त ना करे कुड़माईआ। ना कोई जननी जणे जन, बालक गोद ना कोए सखाईआ। ना कोई बेड़ा देवे बन्न्ह, सीस भार ना कोए चुकाईआ। किसे ना वसया छप्पर छन्न, चार दीवार ना बन्द वखाईआ। आदि जुगादि ना देवे कोए डंन, जुग जुग आपणी खेल आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर थिर घर साचे दए वड्याईआ। थिर घर साचा हरि वड्याआ, पुरख अबिनाशी दया कमांयदा। घर विच घर दए उपजाया, सचखण्ड दुआरा नाउँ धरांयदा। निरगुण दीआ बाती कमलापाती आप टिकाया, आपणी सेवा आप कमांयदा। आपणा नाती पुरख बिधाता आप अख्वाया, निरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। आपणा साकी बण बण जाम प्याया, सच प्याला हथ्थ उठांयदा। आपणा राम बण बण दरस दिखाया, राम रूप आप हो जांयदा। आपणा लेखा आप लिखाया, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। आपणा भरम भुलेखा आप कढाया, भरम गढ़ आप तुड़ांयदा। आपणे अंदर वड़ आपणा आसण आप सुहाया,

सच सिँघासण डेरा लांयदा। पुरख अबिनाशी नाउँ धराया, जन्म मरन विच ना आंयदा। साची मंडल रास आप रचाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि हरि वसे एका कन्त, कन्त कन्तूहल आप अख्वांयदा। कन्त कन्तूहल लाल गोपाल, हरि सच्चा बेपरवाहीआ। सतिगुर सच्चा दीन दयाल, घर साचे सोभा पाईआ। चरन भिखार बणाए महांकाल, आप आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खेल न्यारा, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर नूर नूरानया। मुकामे हक एका यार, लाशरीक दो जहानया। महिबान बीदो खेल न्यार, रहिमत रहिमान श्री भगवानया। नूरी जल्वा नूर उज्यार, नूर नुराना डगमगानया। तालब तल्ब तालबगार, हक हकीकत खेल महानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दरगाह साची नौजवानया। दरगाह साची सच निवासा, हरि साचा सच सुहाईआ। निरगुण करे खेल तमाशा, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। निरगुण अंदर करया निरगुण वासा, निरगुण निरगुण गोद बहाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाशा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा खोल्हया, सचखण्ड निवासी एकँकार। निष्अक्खर आपणा आपे बोलया, आप आपणी कर पुकार। आपणा लेखा आपे तोलया, तोलणहार सच्ची सरकार। आपे बणे हरि विचोलया, लेखा जाणे धुर दरबार। सचखण्ड ना कोई पड़दा ना कोई उहलया, एका नूर होए उज्यार। साहिब सुल्तान ना कोई कल दिसे सोलया, अकल कल आप करतार। एका नाम शब्द अनमोलया, आप आपणा लए उभार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वणज करे वपार। सच वणजारा हरि निरँकारा, सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा। एका हट्ट खोल्ह किवाड़ा, साची वस्त विच टिकांयदा। दर दरवेश बण भिखारा, दर दरबान अलख जगांयदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, साचा हुक्मी हुक्म आप अल्हांयदा। एका देवणहार हरि भण्डारा, साची वस्त झोली पांयदा। आपणा नाउँ रक्ख निरँकारा, आपे वेख वखांयदा। आदि जुगादी खेल न्यारा, दिस किसे ना आंयदा। वेद कतेबां वसे बाहरा, शास्त्र सिमरत भेव ना पांयदा। खाणी बाणी ना करे विचारा, त्रैगुण मेल ना कोए मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप धरांयदा। आपणा नाउँ हरि हरि रक्ख, आपणी दया कमांयदा। साचे मन्दिर हो प्रतक्ख, सचखण्ड दुआरे जोत जगांयदा। आप आपणा कीता वक्ख, आप आपणा अंग कटांयदा। आपे होए अलक्खना अलक्ख, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे राह चलांयदा । आपणे अग्गे आपे होया वस, आप आपणा सीस झुकांयदा। आपे रसीआ भोगे रस, रस रस विच टिकांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण अंदर निरगुण वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, साचे पौड़े बैठा चढ़, थिर घर साचा आप सुहांयदा। साचे पौड़े हरि हरि चढ़या, आदि आदि वड्डी वड्याईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़या, आप आपणे विच समाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़या, ना कोई भन्ने भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप वटाईआ। रूप अपारा हरि निरँकारा, आपणा आप वटांयदा। जोती जोत कर पसारा, जोती जोत डगमगांयदा। जोती नारी कन्त भतारा, साची सेज हंढांयदा। एका उपजे सुत दुलारा, शब्द शब्दी नाउँ रखांयदा। शब्दी शब्द भरे भण्डारा, अतोट अतुट आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रक्ख आपणे हथ्थ, समरथ आपणा नाउँ धरांयदा। सो पुरख निरँजण हरि समरथ, साख्यात जोत जगाईआ। एकँकारा चलाए रथ, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। एकँकारा महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। आदि निरँजण आपणी देवे एका वथ्थ, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। अबिनाशी करता निभाए सगला साथ, साचा संग इक्क खुदाईआ। श्री भगवान आपे वसया आपणे घाट, दर घर साचा आप सुहाईआ। पारब्रह्म एका नाता बंधाए आपणे संग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलाईआ। निरगुण मेल मिलाया, निरगुण नारी कन्त भतार। निरगुण सेज हंढाया, सोहे सचखण्ड दुआर। थिर घर साचा वेख वखाया, कमलापाती मीत मुरार। सति पुरख निरँजण दया कमाया, दीन दयाला सांझा यार। जोती जोत जोत रुशनाया, पूत सपूता कर प्यार। शब्द शब्दी नाउँ धराया, नाद वजाया एकँकार। आप आपणी गोद बहाया, समरथ पुरख प्रभ किरपा धार। सिर आपणा हथ्थ रखाया, वर दए सच्ची सरकार। तेरी साची सेव लगाया, सेवक बणना ख़बरदार। आलस निन्दरा विच ना आया, त्रैगुण ना कोए प्यार। आपणी कुक्खों आपे जाया, रक्त बूंद ना कोए आधार। माणस मानुख ना रूप वटाया, निरगुण निरगुण खेल अपार। संसा दुःख ना कोए जणाया, रोग सोग ना कोए धार। दरस अमोघ इक्क कराया, आप आपणा कर प्यार। पुरख अबिनाशी अमृत एका चोग चुगाया, चरन कँवल ठंडी ठार। सचखण्ड दुआरे सच संजोग वखाया, होए विजोग ना अन्तिम वार। एका आपणा सलोक सुणाया, सोहँ रूप अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दूजी बन्ने धार। एका एकँकार है, दूजी खेल खलाईआ। एका पुरख अकाला मीत मुरार है, दूजे घर वज्जे वधाईआ। एका मात पित होए उज्यार है, दूजे सुत दुलारा जाईआ। दोहां विचोला आप करतार है, शब्दी शब्द होए कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारा वेखे सुत, पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, आपणी रुत्त आप सुहाईआ। साची रुत्तड़ी हरि सुहाया, सचखण्ड वज्जी

वधाईआ। सुत दुलारा इक्क उपजाया, शब्द दाता बेपरवाहीआ। आप आपणी गोद बहाया, बाल निधाना गले लगाईआ। धुर फ़रमाना इक्क जणाया, तेरी सेवा सच लगाईआ। तेरा निरगुण नूर नूर नुराया, निराकार आप अख्वाईआ। तेरा वेस आप वटाया, शाह पातशाह शाह करे शहनशाहीआ। आपणा खेल दए वखाया, निरगुण निराकार आकार हो जाईआ। आपणा नाउँ लए रखाया, प्रतक्ख रूप गोसाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपे कर, सुत दुलारे दए समझाईआ। शब्द सुत हरि समझाया, एका एक करे पढ़ाईआ। तेरा मेरा भेव ना राया, तेरा रूप मेरी शनवाईआ। तेरा तेरी सेव कमाया, तेरा लेखा दए मुकाईआ। बोध अगाध भेव अभेद अलक्ख निरँजण खेल खलाया, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। सति पुरख निरँजण सति सतिवादी दया कमाया, दरगाह साची बैठा आसण लाईआ। आपणा अंग लए कटाया, तेरा संग संग निभाईआ। विष्नूं रूप आप धराया, विश्व लेखा रिहा गणाईआ। नाभी कँवली फुल उपजाया, अमृत झिरना दए झिराईआ। साचा फल आप लगाया, पत्त पंखड़ीआं वेख वखाईआ। गुल गुंचा आप खिलाया, निरगुण नूर रूप महिकाईआ। ब्रह्मा वेता आप जाया, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। साचा लेखा आप समझाया, एका विद्या अक्खर पढ़ाईआ। चारे कूटां राह तकाया, चारे मुख दए खुल्हाईआ। चारे वेदां भेव चुकाया, चारे बाणी दए जणाईआ। चारे खाणी लेख समझाया, चार
८३१ जुग वज्जे वधाईआ। चार वरनां रंग रंगाया, चार यारी नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ८३१
०६ लेखा लिखे साचा हरि, लिखणहारा दिस ना आईआ। लेखा हरि हरि लिख्या, थिर घर बैठ सच्चे दरबार। ब्रह्मे देवे साची ०६
सिख्या, निरगुण शब्द धुन सुणाए सच्ची धुन्कार। जो उपजे सो मिथ्या, थिर रहे ना विच संसार। पुरख अकाल एका वसे धाम अनडिठया, धाम अवल्लड़ा एकँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा साचा राणा, आप सुणाए आपणी वार। ब्रह्मे सुणया सच संदेश, दोए जोड़ करे निमस्कारा। पारब्रह्म प्रभ सदा आदेश, हउँ सेवक सेवादारा। तेरा रूप ना जाणां अवल्लड़ा वेस, तूं साहिब सच्ची सरकारा तूं वसे साचे देस, तेरा वसदा रहे दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे सच भण्डारा। सच भण्डारा ब्रह्मे मंगया, प्रभ अग्गे झोली डाह। दरगाह साची मूल ना संगया, नेत्र नैणां नीर वहा। पुरख अकाल सूरा सरबंगया, एका देवे सच सलाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा दए चुका। पुरख अबिनाशी पड़दा चुक्या, ब्रह्मे पाया दरस करतार। आसा मनसा संसा मुक्कया, मिल्या पुरख दीन दयाल। दोए जोड़ चरनां उत्ते झुकया, चरन सेवक तेरा लाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा उठाया छोटा बाल। छोटा बाल बाल निधाना, सो पुरख निरँजण आप उठाईआ। हरि पुरख

निरँजण देवे माणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एकँकारा कर ध्याना, एका इश्ट दए वखाईआ। जोत निरँजण जगाए जोत महाना, आदि निरँजण दया कमाईआ। अबिनाशी करता हो मेहरवाना, आपणी वण्डण ल्ए वण्डाईआ। श्री भगवान धुर फ़रमाना, धुर दीबाण दए समझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करे पछाना, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। ब्रह्मे तेरा हरि निशाना, निरगुण निरगुण ल्ए उपजाईआ। एका देवे दाता दानी दाना, तेरी झोली आप भराईआ। त्रैगुण माया तत्त वखाना, तत्व तत्त विच टिकाईआ। ब्रह्म रत्त रंग रंगे दो जहानां, कमलापत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी झोली दए भराईआ। ब्रह्मे सुणया धुर फ़रमाणा, पारब्रह्म प्रभ आप जणाया। साचे तख्त वेख्या साचा राणा, निरगुण निरगुण नज़री आया। जुग जुग मन्नणा पए भाणा, भाणे विच सद रहाया। एका देवणहारा माणा, माण निमाणयां आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका वर दए समझाया। वर समझाया हरि करतार, ब्रह्मे भुल्ल रहे ना राईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, तेरी झोली आप वखाईआ। विष्नूं करे सेवक सेवादार, सगला संग निभाईआ। संत्र अगम्मी धूंआँधार, शंकर नूर रुशनाईआ। तिन्नां मेला सिरजणहार, सिर सिर देवे रिज़क सबाईआ। ताणा तणया आप करतार, त्रैगुण आपणे हथ्थीं तन्द वटाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश करे प्यार, पंज तत्त रूप वटाईआ। लक्ख चुरासी तेरा होए वणजार, घड़ भाण्डे आप वखाईआ। घाड़न घड़े सच्चा ठठयार, नाम कुठाली एका ताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती लम्बू अग्नी लाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डा घड़णा, जून अजूनी आप समझांयदा। पुरख अबिनाशी अंदर वड़ना, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। आपणा खेल आपे करना, नौ दुआरे खोल्ह वखांयदा। घर विच घर आपे धरना, घर मन्दिर सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। साची सिख्या हरि भगवान, ब्रह्मे विष्न शिव समझाईआ। खोल्हणहारा हरि दुकान, दो जहानां वेस वटाईआ। चौदां लोक कर प्रधान, रवि ससि करे रुशनाईआ। मंडल मंडप खेल महान, ब्रह्मण्ड खण्ड वेस वटाईआ। जेरज अंड होए प्रधान, उत्भुज सेत्ज अंग लगाईआ। पंज तत्त काया वेख मकान, काया बंक दए सुहाईआ। तख्त निवासी हो मेहरवान, घर घर विच दए वड्याईआ। आत्म सेजा हो प्रधान, आपणा नूर ल्ए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव कर सलाह, तिन्नां हरि हरि इक्क मनाया। पुरख अबिनाशी तेरा पन्थ मार्ग सच्चा राह, लोकमात वेख वखाया। घट घट अंदर ब्रह्मे तेरा नाँ, नाउँ निरँकारा आप अख्वाया। थान थनंतर वसे साचे थाँ, थिर दरबारा आप खुल्हाया। तूं सृष्ट सबाई पिता माँ, हउँ सेवक

सेव कमाया। कवण वेला करें सच न्याँ, लक्ख चुरासी लहिणा देणा दए चुकाया। कवण वक्त पकड़े बांह, हउँ निमाणे निउँ निउँ बैठे सीस झुकाया। तूं साहिब सदा सुहेला रक्खणी ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। अन्तिम करना सच न्याँ, अभुल्ल अभुल्ल आप रघुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव दए समझाया। हरि समझाए दया कर, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। ब्रह्मे विष्न शिव सेवा कर, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरी वण्ड वण्डाईआ। जुगा जुगन्तर जोत धर, निरगुण सरगुण करे रुशनाईआ। पंज तत्त काया चोला लए वर, घर मन्दिर बेपरवाहीआ। साचे पौड़े आपे चढ़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। माणस मानुख आपे फड़, आप आपणी बूझ बुझाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, चोटी जड़ ना कोए वखाईआ। ना कोई विद्या रिहा पढ़, ब्रह्मे विष्न शिव करे पढ़ाईआ। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कदे दबाईआ। हथ्थो हथ्थ ना सके कोई फड़, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी भाण्डे रिहा घड़, घड़नहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला अन्तिम दए समझाईआ। लक्ख चुरासी वेला अन्तिम आउणा, हरि साचे सच समझाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा आप दवाउणा, चार जुग गेड़ वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नाउँ धराउणा, नाम नामा आप उपजाईआ। चारे वेदां संग रलौदा, चारे खाणी वेख वखाईआ। उत्भुज सेत्ज जेरज अंड डेरा लाउणा, आप आपणी रचन रचाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाउणा, चारे बाणी करे पढ़ाईआ। चार वरनां रूप वटाउणा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रंग रंगाईआ। जुग जुग आपणा वेस धराउणा, निरगुण सरगुण कल वरताईआ। बल बावण हरि भेव खुल्हाउणा, राम रामा वज्जे वधाईआ। लंका गढ़ गढ़ तुड़ाउणा, दहिसिर देवे घाईआ। भगत भगवन्त मेल मिलाउणा, आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाईआ। साचे सन्तां संग रखाउणा, विछड़ कदे ना जाईआ। ग़रीब निमाणयां गले लगाउणा, धुर दी बाणी इक्क वखाईआ। जुग जुग दा पन्ध मुकाउणा, आपणा गेड़ा आप भवाईआ। हक नबेड़ा आप कराउणा, आप आपणी कल वरताईआ। कान्हा कृष्ना रूप वटाउणा, कँवल नैण नैण मटकाईआ। सीस ताज इक्क सुहाउणा, सीस आपणे आप उठाईआ। साची सखीआं मंगल गाउणा, पीया प्रीतम इक्क मनाईआ। रथ रथवाही फेरा पाउणा, खेवट खेट बणे मलाहीआ। ग़रीब निमाणे भगत भगवन्त गोद बहाउणा, बिपर सुदामा लए तराईआ। द्रोपद लजया आप रखाउणा, पंचम देवे माण वड्याईआ। कलिजुग आपणा गेड़ गढ़ाउणा, ईसा मूसा बख्शे शहनशाहीआ। काला सूसा रंग रंगाउणा, एका अल्फ़ी आप हंढाईआ। सच हदीसा इक्क पढ़ाउणा, कायनात करे पढ़ाईआ। आब हयात जाम पिआउणा, मिले महबूब साचा माहीआ। अज़मतो करमतो अजिबवा अतिलहे भेव खुल्हाउणा, महिबान बीदो लेखा जाणे

धुर दरगाहीआ। कलमा कलमी आप पढ़ाउणा, लेखा लिख ना सके कलम शाहीआ। संग मुहम्मद इक्क निभाउणा, मुख नकाब दए चुकाईआ। अहिबाब रबाब इक्क वजाउणा, शाह नवाब दए समझाईआ। मक्का काअबा भेव खुलाउणा, एका मकतब करे पढ़ाईआ। हक हकीकत लेख लिखाउणा, लाशरीक इक्क खुदाईआ। सालस बण बण फेरा पाउणा, नूरो नूर जल्वा इलाहीआ। आपणी कल आप वरताउणा, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। जोती जोत जोत जगाउणा, नानक निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाउणा, नारी कन्त वज्जी वधाईआ। आपणा घूँगट आप उठाउणा, मुख नैण नैण शर्माईआ। नेत्र लोचन नैणां दर्शन पाउणा, दरस तरस विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। जोती नूर निरँकार, निरगुण नानक नाउँ धराया। नाम सति सति वपार, साचा वणज कराया। ब्रह्म मति पावे सार, त्रैगुण तत्त मेट मिटाया। धीरज जति विच संसार, सति सन्तोख दए दृढ़ाया। मितगत जाणे आप करतार, करता पुरख वेख वखाया। एका जोती दस दस धार, गोबिन्द साचा गढ़ सुहाया। नानक लेखा लिखे अपार, ना कोई सके मेट मिटाया। गुर गुर बाणी शब्द आधार, गुर का रूप आप दरसाया। अमृत भर भर ठंडी ठार, भर प्याला जाम प्याया। गोबिन्द बोल सच जैकार, वाहिगुरू फ़तेह इक्क गजाया। पंचम मीता पंचम प्यार, पंचम लेखा दए समझाया। पुरख अबिनाशी सुत दुलार, निराकार इक्क उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव देवे वर, लेखा रहे ना राया। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा दए भवाईआ। नानक गोबिन्द जोत जगाउणा, एका नूर करे रुशनाईआ। एका लेखा आप समझाउणा, लेखा लेखे लवे पाईआ। लक्ख चुरासी तेरा पन्ध मुकाउणा, जो घड़या भन्न वखाईआ। राए धर्म आप उठाउणा, चित्रगुप्त सोया रहिण ना पाईआ। लाड़ी मौत हुक्म सुणाउणा, धुर दी बाण आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका इष्ट दए समझाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव हरि इष्ट समझाया, निरगुण इक्क इष्ट अख्वांयदा। आदि पुरख आप आपणा आप उपजाया, दूजी कुदरत वेख वखांयदा। तीजा नेत्र इक्क खुल्हाया, चौथे पद मेल मिलांयदा। पंचम ढोला साचा गाया, घर घर शब्द अनाद सुणांयदा। छेवें छपर छन्न ना कोए वखाया, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। सति पुरख निरँजण नाउँ धराया, आदि जुगादी वेस वटांयदा। अठ्ठां तत्तां विच कदे ना आया, नौ दुआरे खोज खोजांयदा। दस्म दुआरी लोकमात वण्ड वण्डाया, अद्धविचकारे डेरा लांयदा। ब्रह्म रूप शाहो भूप करे रुशनाया, ईश जीव आप अख्वांयदा। जगत जगदीस भेव ना आया, छत्र सीस इक्क झुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव देवे एका वर, आपणा लेखा आप लखांयदा। ब्रह्मे करे शब्द जणाई, त्रै त्रै आप समझाया।

ਨੰ ८३५

०६

जुगा जुगन्तर पन्ध मुकाई, गेड़ा गेड़ा दए भवाया। गुर पीर अवतार साध सन्त सेवा लाई, धुर फ़रमाना दए जणाया। भगत भगवन्त करे कुड़माई, आप आपणा बन्धन पाया। सन्त कन्त मिले चाँईं चाँईं, साची नारी सेज हंढाया। गुरमुख वेखे थाउँ थाँईं, नौ खण्ड पृथ्मी फोल फोलाया। गुरसिखां पकड़ उठाए बांहीं, जो जन अन्तर आत्म रहे गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम वेला दए समझाया। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, हरि साचा सच जणांयदा। पुरख अबिनाशी जामा पाउणा, निरगुण आपणा खेल खिलांयदा। निहकलंका नाउँ धराउणा, मात पित ना कोए बणांयदा। साक सैण ना नज़री आउणा, भाई भैण ना कोए वखांयदा। मन्दिर मस्जिद मट्ठ ना डेरा लाउणा, छप्पर छन्न ना कोए छुहांयदा। सम्बल नगरी धाम सुहाउणा, गुर गोबिन्द वेख वखांयदा। साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाउणा, साढे तिन्न तिन्न मूल चुकांयदा। रविदास चुमारा नाल रलाउणा, साची सीआं वण्ड वखांयदा। शब्द अनादी ढोला एका गाउणा, चार वरनां एह समझांयदा। पुरख अकाल इष्ट इक्क मनाउणा, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। कलिजुग कूड़ा पन्ध मुकाउणा, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। सतिजुग साचा सुहागी छन्द सुणाउणा, सोहँ ढोला एका गांयदा। गुरमुखां परमानंद वखाउणा, निज आत्म मेल मिलांयदा। अमृत जाम भर पिआउणा, काया सरोवर इक्क नुहांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार गंवाउणा, आसा तृष्ना मेट मिटांयदा। डूँघी कंदर सच प्रकाश कराउणा, जोत निरँजण आप जगांयदा। अनहद शब्द ताल वजाउणा, तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। साची सखीआं बह बह मंगल गाउणा, गीत सुहागी आप अल़ांयदा। बजर कपाटी तोड़ तुड़ाउणा, दूई द्वैती पड़दा लांहयदा। सुखमन अन्धेर आप गवाउणा, आप आपणा रूप दरसांयदा। ईड़ा पिंगल मुख शर्माउणा, सतिगुर पूरा वेख वखांयदा। गुरसिखां आपणा पल्ला आप फड़ाउणा, दो जहानां ना कोए तुड़ांयदा। साचे पौड़े आप चढ़ाउणा, दस्म दुआरी कुण्डा लांहयदा। आत्म सेजा जोत जगाउणा, नूर नुराना डगमगांयदा। नारी कन्त इक्क मनाउणा, विभचार ना कोए वखांयदा। सच सवाणी साचे धाम बहाउणा, धुर दी राणी वेख वखांयदा। शब्द हाणी मेल मिलाउणा, विछड़ कदे ना जांयदा। धुर दी बाणी शब्द सुणाउणा, बोध अगाध अल़ांयदा। निज आत्म निज घर निज वेस कराउणा, निज नेत्र आप खुल़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। कलिजुग वेला अन्त सुहावणा, ब्रह्मे विष्न शिव समझाया। निहकलंक जामा पावणा, वेद व्यासा रिहा लिखाया। ईसा एका अक्खर पढ़ावणा, नूरो नूर करे रुशनाया। नानक एका राह तकावणा, निहकलंकी फेरा पाया। गोबिन्द आपणी कल वरतावणा, कल कल्की वेस वटाया। सम्बल नगरी धाम सुहावणा, पुरी घनकी जोत जगाया। एका डंक शब्द वजावणा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दए सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण

दाता बेपरवाह, कलिजुग अन्तिम बणे मलाह, सतिजुग बेड़ा दए चला, एका चप्पू नाम लगाया। सतिजुग बेड़ा आप चलावणा, सतिगुर साचे हथ्थ वड्याईआ। कलिजुग कूड़ा कूड़ मिटावणा, रैण अन्धेरी रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा चन्द चढ़ावणा, चार कुंट होए रुशनाईआ। कलिजुग कूड़ा पन्ध मुकावणा, वेला अन्त दए दुहाईआ। सतिजुग साचा छन्द सुणावणा, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाईआ। कलिजुग भरमां कंध ढाहवणा, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा शाह पातशाह गुर शब्द इक्क बणाईआ। हरि पातशाह शाह सुल्तान, तख्त निवासी आप अख्वांयदा। लेखा जाणे दो जहान, लोकमात वेस वटांयदा। देवणहारा धुर फ़रमाण, जुग जुग आपणा हुक्म जणांयदा। लेखा जाणे श्री भगवान, भगवन भगतन आपणे राह चलांयदा। दाता देवे दानी दान, चरन धूढ़ इक्क अशनान, आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, माया ममता मोह चुकांयदा। धर्म वखाए सच निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सचखण्ड निवासी खोलू दर, दर घर साचा इक्क वखांयदा। दर घर साचा थिर दरबारा, हरि साचा सच सुहांयदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, लोकमात फेरी पांयदा। कलिजुग आई अन्तिम वारा, चारों कुंट अन्धेरा छांयदा। सृष्ट सबाई हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। साध सन्त रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नीर सर्ब वहांयदा। हरि मिले ना साचा कन्त भतारा, सुंञी सेज सर्ब वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग लेखा मुक्कणा, आई अन्तिम वार। लक्ख चुरासी बूटा सुक्कणा, हरया होए ना विच संसार। शाह सुल्तानां जंगल जूह उजाड़ बह बह लुकणा, तख्त ताज ना कोए सिक्दार। उज्जल होए ना मात मुखणा, नौ खण्ड होए ख्वार। ना कोई पूजा ना कोई सुखणा, ना कोई दिसे तट किनार। सिँघ शेर शब्द एका बुक्कणा, आदि जुगादी गुर अवतार। नौ खण्ड पृथमी पुरख अबिनाशी अग्गे झुकणा, ना कोई झल्ले पहला वार। डूँघी कंदर किसे ना लुकणा, समुंद सागर पावे सार। हरि का तीर कदे ना उकणा, निशाना मारे आपणी वार। ब्रह्मे विष्न शिव तेरा पैंडा मुक्कणा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रिहा पुकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण लै कलि कल्की अवतार। निरगुण शब्द अपार है, गुर गुर रूप समाया। जुगा जुगन्तर साची कार है, लोकमात वेस वटाया। गुर पीर बण अवतार है, लक्ख चुरासी दए समझाया। शब्द अनादी बोल जैकार है, बाणी बाण दए लगाया। ब्रह्म ब्रह्मादी पावे सार है, आदि जुगादी रचन रचाया। बोध अगाधी नाम धुन धुन जैकार है, धुर तराना इक्क सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका शब्द वजाया। डंका

शब्द वज्जया, लोआं पुरीआं होया जैकार। ब्रह्मा विष्न शिव उठ उठ भज्जया, सोया दिसे ना विच संसार। कवण कूटे निरगुण रूप हो हो गज्जया, निहकलंका लै अवतार। कवण मन्दिर बह बह सजया, निरगुण जोत कर उज्यार। काल नगारा सभ दे सिर ते वज्जया, राए धर्म उच्ची कूक करे पुकार। जो घड़या सो भज्जया, थिर रहे ना विच संसार। जन भगतां रक्खे हरि जू लज्जया, वेले अन्त करे संभाल। दो जहानां फिरे भज्जया, चतुर्भुज अश्व अस्वार। गुरमुखां पड़दा अन्तिम कज्जया, शब्द दोशाला एका डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल अगम्म अपार। अगम्म अपारा खेल न्यारा, निरगुण तत्त ना कोए वखांयदा। अलक्ख अगोचर साची धारा, धरत धवल आप टिकांयदा। अलक्ख निरँजण बोल जैकारा, आपणी अलख आप जगांयदा। सचखण्ड सच साची पावे सारा, साची वस्त आप उठांयदा। थिर घर खोल्हे बन्द किवाड़ा, आपणा पड़दा आपे लांहयदा। सुन अगम्मी पार किनारा, धूंआँधार ना कोए वखांयदा। गुरमुखां करे सच प्यारा, दस्म दुआरा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, मूर्त अकाल अकाल मूर्त, नाद वजाए साची तूरत, तुरीआ राग आप अल्हांयदा। तुरीआ राग हरि तराना, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। तुरीआ राग अगम्मी गाणा, पुरख अबिनाशी आपे गाईआ। तुरीआ राग वसे सच मकाना, थिर घर साचे आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे एका वर, घर मन्दिर मेल मिलाईआ। घर मन्दिर हरि गुरसिख मेलणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। लेखा चुक्के गुरू गुर चेलणा, गुर चेला इक्क दुआर। प्रभ मिले सज्जण सुहेलणा, संसा मुक्के विच संसार। सतिगुर पूरा चाढ़े तेलना, सगन मनाए आपणी वार। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेलणा, चारे वेद ना पायण सार। गुरसिखां गुरमुखां लक्ख चुरासी धर्म राए दी कट्टे जेलणा, आवण जावण गेड़ नवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लाए पार। हरिजन साचा पार उतारना, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। माणस जन्म पैज संवारना, वेले अन्त होए सहाईआ। कागों हँस आप बणावणा, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। दरगाह साची आप बहावणा, आप आपणी गोद उठाईआ। पतित पापी आप तरावणा, जो चल आए सरनाईआ। पूर्ब लहिणा आप चुकावणा, पिछला लेखा रहिण ना पाईआ। अग्गे मार्ग इक्क वखावणा, चार वरन बणाए भैणां भाईआ। अठारां बरनां पन्ध मुकावणा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाईआ। शाह सुल्तानां राज राजानां ख़ाक मिलावणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। ऊँचां नीचां एका धाम बहावणा, राउ रंकां मेल मिलाईआ। सोहँ ढोला सृष्ट सबाई गावणा, बीस बीसा कूके दए दुहाईआ। जगत जगदीसा इक्क मनावणा, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जुग जुग विछड़े लए मिलाईआ। जुग जुग वछोड़ा कट्टया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। गुरमुख मेटे दूई द्वैती फट्टया, अमृत आत्म उप्पर डार। चौदां लोक वखाए एका हट्टया, गुर चरन दुआर भिखार। लेखा चुक्के तीर्थ तटया, पाया पुरख इक्क निरँकार। गुरमुख विरले लाहा खटया, सृष्ट सबाई सुत्ती पैर पसार। कलिजुग सीस पावे घट्टया, धृग जीवण दस्से करे धृग धृग धृगकार। गुरमुख दुआरे आए नट्ठया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, निरगुण सरगुण जोत धर, जोती जामा अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं देवे इक्क आधार ।

✲ पहली सावण २०१७ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल ✲

सो पुरख निरँजण साहिब सुल्तान, निरगुण निराकार अख्वांयदा। हरि पुरख निरँजण मेहरवान, बेऐब परवरदिगार नाउँ धरांयदा। एकँकारा खेल महान, आदि जुगादी वेस वटांयदा। आदि निरँजण नूर महान, जोत उजाला डगमगांयदा। अबिनाशी करता गुण निधान, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। श्री भगवान सच निशान, दर घर साचे आप झुलांयदा। पारब्रह्म एका रक्खे आण, दूसर हुक्म ना कोए वखांयदा। सचखण्ड दुआरे वसे सच मकान, सच सिँघासण सोभा पांयदा। थिर घर साचा कर पछाण, शाह सुल्तान वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जूनी रहित पुरख अकाल, अनुभव प्रकाश करांयदा। सो पुरख निरजंण हरि हरि नरायण, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। हरि पुरख निरँजण साक सैण, दर घर साचे सोभा पाईआ। एकँकारा आप चुकाए आपणा लहण देण, सगला संग आप निभाईआ। आदि निरँजण आपे वेखे आपणे नैण, निरगुण आपणा नाउँ धराईआ। अबिनाशी करता दर दरवेशा नर नरेशा धुर दरबारा खोल्ह किवाड़ा अगम्म अपारा एकँकारा आपणा नाउँ आपे कहिण, आप आपणा बल धराईआ। श्री भगवान हरि मेहरवान, आपे जाणे आपणा लहण देण, दूसर होर ना संग रखाईआ। पारब्रह्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचे घर, घर साचा इक्क वड्याईआ। घर साचा हरि सुहाया, सोभावन्त बेपरवाह। पुरख अबिनाशी डेरा लाया, निरगुण दीपक जोत जगा। हरि मन्दिर आप सुहाया, अगम्म अगम्मड़ी खेल करा। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह आपणी अलक्ख आप जगाया, शब्द अगम्मी नाअरा ला। आपणी मंगण मंग मंगाया, इच्छया भिच्छया झोली पा। साचा मृदंगन ताल वजाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी खेल अपारा, आपे खेले खेलणहारा, रूप रंग ना कोए वखा। रूप रंग ना

कोई रेख, आदिन अन्ता दिस ना आंयदा। सचखण्ड दुआरे आपे करे आपणा वेस, वेस अनेका आप वटांयदा। मुच्छ दाढ़ी ना दीसे केस, सीस जगदीस ना कोए धरांयदा। ना कोई ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, दर दरवेस ना बुझांयदा। ना कोई करे आदेस, निउँ निउँ सीस ना कोए झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वसे साचे घर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा खेल अवल्ला, हरि साचा सच करांयदा। सो पुरख निरँजण वसया इक्क इकल्ला, हरि पुरख निरँजण मेल मिलांयदा। एकँकारा आप फड़ाए आपणा पल्ला, आदि निरँजण संग निभांयदा। अबिनाशी करते सच सिँघासण एका मल्ला, श्री भगवान डेरा लांयदा। पारब्रह्म लेखा जाणे नेहचल धाम अटला, उच्च महल्ला आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड खोल्ह दुआरा, थिर घर करे आप पसारा, दर दरवाजा आप खुल्हांयदा। थिर घर साचे सच दरवाज़ा, दरगाह साची आप खुल्हाईआ। एका वसे ग़रीब निवाज़ा, रूप रंग ना कोए रखाईआ। आपे रचे आपणा काजा, करता पुरख नाउँ धराईआ। आपे मारे आपणी वाजा, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। शाहो भूप वड राजन राजा, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। आपे रक्खे आपणी लाजा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा साचा खोल्ह, आप वजाए अगम्मी ढोल, ताल तलवाड़ा ना कोए रखांयदा। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा, आपणा आप सुहांयदा। दीवा बाती कमलापाती कर उज्यारा, नूर नुराना डगमगांयदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शाहो भूप वेस वटांयदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाना आप जणांयदा। आदि जुगादी करे आपणी कारा, करनी करता किरत कमांयदा। वेखे विगसे करे विचारा, वेखणहारा दिस ना आंयदा। दर दरवेस बण भिखारा, आपणी भिच्छया मंग मंगांयदा। अल्फ़ी पाए चोबदारा, आप आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, ख़ालक आपणा खेल खिलांयदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि साचा सच सुहांयदा। निरगुण मेला नारी कन्त, नर नरायण वेख वखांयदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी कल वरतांयदा। ना कोई साध ना कोई सन्त, गुर पीर अवतार ना कोए रखांयदा। ना कोई रसना जिह्वा मणीआ मंत, शब्द नाद ना कोए वजांयदा। आपणी महिमा आपे जाणे बेअन्त, बेअन्त आपणा नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहांयदा। दर घर साचा हरि सुहञ्जणा, पुरख अबिनाशी आप सुहाया। दीप जगाया इक्क आदि निरँजणा, नूरो नूर नूर रुशनाया। आपे बणया साक सैण सज्जणा, मात पित भाई भैण आप हो जाया। ना घड़या ना भज्जणा, मढ़ी गोर ना कोए दबाया। आपणे सरोवर आपे करे मजना, आपणा ताल आप सुहाया। आपणे नगारे आपे वजणा,

८३६ ०६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे वस, आपे रसीआ आपणा जाणे रस, आपे भोगी भोग वखाया। सचखण्ड दुआरे साचा भोग, निरगुण निरगुण आप कराईआ। दरगाह साची धुर संजोग, पुरख अकाल मेल मिलाईआ। मूर्त अकाल दरस अमोघ, जूनी रहित आप कराईआ। आपणा बोल सच सलोक, आप आपणा आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे अंदर वड़, बैठा सेज सुहाईआ। सचखण्ड दुआरे हरि जू वड़या, निरगुण आपणा थान सुहाया। साचे पौड़े आपे चढ़या, आप आपणा महल्ल अटल वेख वखाया। आपणा अक्खर आपणी विद्या आपणा नाउँ आपे पढ़या, आप आपणा बल धराया। आपणा पल्लू परवरदिगार नूर इलाही आपे फड़या, बिस्मिल रूप हो विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वड़या साचे घर, सचखण्ड दुआरा इक्क खुल्हाया। सचखण्ड दुआर सच्ची सरकार, साचे तख्त सुहाईआ। शाह पातशाह भूप बण सिक्दार, शहनशाह आप अख्वाईआ। आपे जाणे आपणी कार, करनहार आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे मन्दिर आपे वड़, आप आपणा वेख वखाईआ। आपणा आप हरि हरि वेख्या, निरगुण निरगुण हो उज्यार। आपे वसया आपणे देसया, महल्ल अट्टल उच्च मुनार। आपणी जोत आप प्रवेशया, जोती जोत हो उज्यार। आपे धर धर आपणा वेसया, आप आपणा करे प्यार। आपे लिखणहारा लेखया, बैठा दरगाह साची धुर दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपणा भरे भण्डार। सच भण्डारा आपणा भरया, आपणी भिच्छया इच्छया झोली पाईआ। आपणी करनी आपे करया, आप आपणा खेल खलाईआ। आपणी नारी आपे वरया, कन्त सुहाग आप हंढाईआ। आपणी सेज आपे चढ़या, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। आपणे अंदर आपे वड़या, आपे आपणा संग रखाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़या, तत्व तत्त ना मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण लए उपजाईआ। निरगुण निरगुण उपजाया, आप आपणी कल धार। पूत सपूता नाउँ धराया, शब्दी शब्द कर पुकार। नाउँ निरँकारा आप अख्वाया, निरगुण नूर जोत उज्यार। सचखण्ड दुआरा आप सुहाया, थिर घर वसया सिरजणहर। तख्त निवासी डेरा लाया, अबिनाशी करता खेल अपार। पवण स्वामी ना कोए चलाया, लक्ख चुरासी ना कोए प्यार। जोत प्रकाशी जोत जगाया, जोती जोत होए आधार। सूरज चन्न ना कोए चढ़ाया, रवि ससि ना कोए सतार। धरत धवल ना कोए वड्याआ, जल बिम्ब ना पावे सार। आकाश प्रकाश ना कोए टिकाया, लोआं पुरीआं ना कोए विचार। ब्रह्मण्ड खण्ड ना वेख वखाया, गगन गगनंतर ना कोए आधार। जेरज अंड ना रंग रंगाया, उत्भुज सेत्ज ना लए उभार। चारे बाणी ना कोए पढ़ाया, विद्या वखम ना कोए पावे सार। त्रैगुण

रूप ना कोए दरसाया, पंज तत्त ना तत्त जैकार। सचखण्ड साचे आसण लाया, निरगुण बैठ निराकार। साकार रूप ना कोए वखाया, रेख भेख अगम्म अपार। आप आपणा देस सुहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आपणी वार। सचखण्ड दुआर वसाया, कर किरपा आप करतार। साचे तख्त आसण लाया, सति सुल्ताना बण सिक्दार। सीस ताज इक्क टिकाया, पंचम मुख कर विचार। सत्त रंग निशाना इक्क चढ़ाया, सति पुरख निरँजण हो उज्यार। दरगाह साची धाम सुहाया, उच्च अटल अगम्म अपार। आप आपणा हुक्म सुणाया, हुक्मी हुक्म करे कराए साची कार। निरगुण सरगुण रूप लए वटाया, शब्दी शब्द होए आधार। शब्द विचोला इक्क बणाया, पूत सपूता कर प्यार। नारी कन्त खुशी मनाया, आदि निरँजण वेखणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे वसणहार। वसणहारा वसया, थिर घर खोल्ह किवाड़ा। आपणा मार्ग आपे दस्सया, निरगुण निरगुण कर पसारा। निरगुण अंदर मन्दिर बह बह हस्सया, ना कोई नारी कन्त भतारा। निरगुण मेटे रैण अन्धेरी मसया, जुगा जुगन्तर खेल अपारा। निरगुण शब्द निराला तीर कसया, आदि जुगादी मारे मारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा करे आप पसारा। आपणा पसारा आपे कर, हरि आपणी कल वरतांयदा। निरगुण अंदर निरगुण धर, निरगुण जोड़ जुड़ांयदा। निरगुण जननी जन आपणी गोदी धर, धुर दा लेखा आप समझांयदा। सति सतिवादी देवे वर, पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्मादी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। निरगुण प्यार सच दुआरे, घर घर मंगल गाया। निरगुण गुप्त निरगुण ज़ाहरे, निरगुण आपणा वेस वटाया। निरगुण मात पित उपजाए सुत दुलारे, निरगुण गोद सुहाया। निरगुण जननी जन जणे अपारे, अगम्म अगम्मड़ा वेख वखाया। निरगुण भरे निरवैर भण्डारे, नर हरि आपणा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क वड्याआ। वडि वडियाई सचखण्ड, हरि साचा सच सुहांयदा। आपे वण्डी आपणी वण्ड, वण्डणहारा खेल खिलांयदा। आपणे अंदर आपे दित्ती गंढु, आपे खोल्ह खुल्हांयदा। ना कोई जेरज ना कोई अंड, उत्भुज सेत्ज ना रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे रक्खे आपणी कुक्ख, आपे करे उज्जल मुख, आप आपणा नूर दरसांयदा। आपणी कुक्ख आपे जाया, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। निरगुण निरवैर बणया पित माया, दाई दाया ना कोए लगाईआ। आपणा खेल आप रचाया, रच रच वेखे बेपरवाहीआ। विष्नूं आपणी गोद बहाया, विश्व वास्तक दए समझाईआ। अमृत आत्म जल भराया, चरन चरनोदक इक्क चुआईआ। साचा बीज आप बजाया, कँवल कँवला लए खलाईआ। फुल पंखड़ीआं आप लगाया, गुंचा आपे फोल फोलाईआ।

भँवरी भँवरा विच समाया, गूंज गूंजे बेपरवाहीआ। पारब्रह्म रूप वटाया, ब्रह्म आपणी अंस उपाईआ। आप आपणे रंग रंगाया, रंग रंगीला साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म लेखा दए समझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म उपजाया, कँवल कँवला कर उज्यार। आपणी वासना विच टिकाया, तृष्ना भुक्ख ना कोए विचार। आसा आसा पूर कराया, मनसा मन ना पाए प्यार। दासी दासा आप बणाया, सेवक सेवा दए आधार। शब्द स्वांग विच टिकाया, मंडल रासा होए उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे सुत दुलार। ब्रह्मा सुत उपनया, पारब्रह्म उपजाया। वेखणहारा साची जननी एका जन जनया, निरगुण नूर होए उज्यारा। एका भाणा हरि हरि मन्नया, हरि भाणे सर्ब वरतारा। किसे दिसे ना छप्पर छन्नया, महल्ल अटल ना कोए मुनारा। पुरख अबिनाशी बेड़ा बन्न्हया, देवणहार आप सहारा। एका राग सुणाए कन्नया, धुर दा शब्द बोल जैकारा। आदि जुगादि ना जाए डन्नया, जिस मिल्या हरि निरँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे खोल्हे बन्द किवाड़ा। ब्रह्मे खोल्हया बन्द किवाड़, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। अंदर रक्खी आपणी धार, साचे मन्दिर वज्जी वधाईआ। निरगुण जोत कर उज्यार, नूरो नूर करे रुशनाईआ। कमलापाती मीत मुरार, घर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे ब्रह्म लेखा दए समझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म समझांयदा, आप आपणी किरपा धार। तेरा रूप अनूप वटांयदा, निरगुण नूर जोत उज्यार। अंस बंस आप सुहांयदा, सहँस सहँसा कर विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे इक्क विचार। ब्रह्मे देवे ब्रह्म मति, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। निरगुण जानणा एका तत्त, रत्ती रत्त ना कोए वखाईआ। पुरख अबिनाशी साचा पित, पीत पीतम्बर सीस सुहाईआ। तेरी जाणे मित गति, गति मित आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे लेखा दए जणाईआ। ब्रह्मे मन्नया हरि का भाणा, नेत्र नैण नीर वहाया। तूं शाह पातशाह हरि साचा राणा, हउँ सेवक सेव कमाया। तेरी सितार तेरा गाणा, तूही तूही राग अल्हाया। हउँ ग़रीब दर भिखारी बणे निमाणा, निवण सो निवण सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा तेरे लेखे विच रखाया। पुरख अबिनाशी साचा बोल, एका एक सुणांयदा। ब्रह्मे तेरा तोलणा तोल, कंडा आपणे हथ्थ वखांयदा। आदि जुगादी बैठा रहे अडोल, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। साची वस्त सद रक्खे कोल, विष्न ब्रह्मे आप वरतांयदा। भोला नाथ आप उपजाए अनभोल, महिमा गणत ना कोए गणांयदा। आपणा आप लए वरोल, आपणा मधाणा आप चलांयदा। आपणा पड़दा आपे फोल, आपणी वस्त बाहर कढांयदा। पुरख अबिनाशी दर दरवाज़ा साचा खोल्ह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी

रचन रचांयदा। आपणी रचना आपे रच, हरि साचे खेल खलाया। ब्रह्मे शिव विष्न वखाया एका सच्च, सच्चो सच सच दृढ़ाया। हर घट अंदर रिहा रच, तिन्नां मेला मेल मिलाया। एका शब्द लैणा वाच, आप आपणा दए दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाया। साची सिख्या हरि समझाए, ब्रह्मे विष्न शिव जगाईआ। निरगुण मेला मेल मिलाए, मेलणहारा इक्क अख्वाईआ। सज्जण सुहेला साचे धाम बहाए, धाम अवल्लड़ा वड वड्याईआ। एका अक्खर दए पढ़ाए, आपणा नाउँ आप जपाईआ । साचा पलड़ा दए फड़ाए, छुट्ट कदे ना जाईआ। सच दुआरा एका मलड़ा, पुरख अबिनाशी रुठ ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव एका रंग रंगाईआ। एका रंग रंगाया चलूल, उतर कदे ना जांयदा। अबिनाशी करता ना जाणा भूल, अभुल्ल अभुल्ल आप अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर पावे मुल्ल, करता कीमत आपणे हथ्थ रखांयदा। साचे कंडे जाणा तुल, तोलणहारा तोल तुलांयदा। इक्क दुआरा जाणा खुल्ह, साचा हट्ट इक्क उपांयदा। विष्नूं तेरा कँवल फुल, ब्रह्म रूप दरसांयदा। ब्रह्मे तेरी आसा पुन, शंकर संग निभांयदा। शंकर शंकर आपे चुण, शाकर आपणा मेल मिलांयदा। तिन्नां जणाए एका गुण, एका अक्खर आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। निरगुण रूप निराकार, सो पुरख निरँजण आप अख्वांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल अपार, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आप खलांयदा। एकँकारा अकल कल धरा, आप आपणी कल वरतांयदा। आदि निरँजण डगमगा, नूर नुराना नूर वखांयदा। अबिनाशी करता डेरा ला, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। श्री भगवान बणे मलाह, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। पारब्रह्म बणे पिता माँ, ब्रह्मा विष्न शिव आप उपजांयदा। आपणा नाउँ दए सुणा, आप आपणी खेल खिलांयदा। एका दूजा रूप धरा, तिन्नां जोड़ा जोड़ जुड़ांयदा। साचा घोड़ा दए वखा, शब्द अगम्मी आप उपांयदा। धुर दा पौड़ा दए लगा, एका डण्डा आप लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप दरसांयदा। निरगुण रूप हरि दरसाया, लालन लाल लाल समाईआ। सुते प्रकाश आप कराया, सुत जननी कोए ना जाईआ। कंचन रूप आप वटाया, कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। सूहा वेस जोत रघुराया, थिर घर वेखे बेपरवाहीआ। साची धार आप बंधाया, सत्त सफ़ैदी गया समाईआ। पीआ प्रीतम वेस वटाया, पीला रंगण रंग रंगाईआ। नीला रूप आप दरसाया, निरगुण आपणी जोत जोत रुशनाईआ। काला काली धार इक्क समझाया, काल महांकाल पाए फाहीआ। दीन दयाल आपणा नाउँ रखाया, दो जहानां बणे मलाहीआ। शहनशाह पातशाह बेपरवाह सीस आपणे ताज टिकाया, पंचम पंचम दए वड्याईआ। सत्त रंग जोती रंग रंगाया, दर घर साचे कर रुशनाईआ। एका झलक

फ़लक वखाया, बेऐब ऐब खुदाईआ। सालस आपणा बण के आपे आया, ना देवे कोए सलाहीआ। आलस निन्दरा ना कोए रखाया, सेज सुहावी ना कोए हंढाईआ। हाणी हाण ना कोए मिलाया, गलवकड़ी ना कोए रखाईआ। जल पाणी पान ना कोए कराया, बाणी बाण ना कोए पढ़ाईआ। निरबाण एका पद आप सुहाया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। एका सद धुन उपजाया, नाद अनादि आप सुणाईआ। बोध अगाध खेल रचाया, अगाध अबोधा इक्क रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव लए समझाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव ध्यान लगाउणा, हरि साचा सच समझांयदा। तेरा बूटा आप लगाउणा, अमृत सिंच हरा करांयदा। विष्नूं आपणे अंग लगाउणा, अंगीकार आप हो जांयदा। ब्रह्मा चरनां हेठ बहाउणा, चरन चरनोदक उप्पर पांयदा। शंकर अद्धविचकार टिकाउणा, हथ्थ त्रिसूल फड़ांयदा। तिन्नां लोकां तिलक लगाउणा, इक्क त्रिलोकी वण्ड वण्डांयदा। इक्क सलोक हरि सुणाउणा, हरि हरि का नाम पढ़ांयदा। ओअँ रूप आप दरसाउणा, सोइम आपणा रूप दरसांयदा। दोइम दर आप खुल्हाउणा, दर दरवेस वेस वटांयदा। निरगुण सरगुण चोला पाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप धरांयदा। निरगुण सरगुण भेख वटाया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए उपजाया, छैल छबीला बेपरवाहीआ। त्रै त्रै वेसा वेस कराया, विश्व आपणी धार बंधाईआ। वास्तक रूप विच समाया, वासना होर ना कोए रखाईआ। एका आपणा नाउँ दृढ़ाया, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। विष्नूं धुन नाद सुणाया, ब्रह्मे अनहद ताल वजाईआ। शंकर दीपक जोत जगाया, दीवा बाती आप टिकाईआ। धुर संजोगी मेल मिलाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। सच सलोक एका गाया, सोहँ शब्द दए पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण आप अख्वाया, हँ ब्रह्मा विष्न शिव लए उपजाईआ। दोहां विचोला बण के आया, बणया तोला शहनशाहीआ। एका ढोला आपणा आपे गाया, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हँ भेव दए खुल्हाईआ। हँ हँ हँ भेव न्यारा, त्रैगुण विच कदे ना आंयदा। त्रै त्रै लोकां वसया बाहरा, त्रै त्रै मेल ना कोए मिलांयदा। त्रै त्रै रंग ना कोए विचारा, त्रै त्रै संग ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हँ आपणा रूप दरसांयदा। विष्नूं सुणना कर ध्यान, हरि साचे आप जणाया। हँ रूप श्री भगवान, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी अंस उपजाया। ब्रह्मे देवे इक्क ज्ञान, एका नेत्र नैण खुल्हाया। सो पुरख निरँजण इक्क वखाए सच निशान, ब्रह्म ब्रह्मादि आप झुलाया। तेरा खेत होए प्रधान, रुत्त बसन्ती वड वड्याआ। शंकर तेरी करे कल्याण, कल काती वेस वटाया। इक्क जमाती इक्क फ़रमाण, कलम दवाती ना लेख लिखाया। हँ ब्रह्म कर प्रधान, पारब्रह्म वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेश नर नरेश निरगुण आपणा आप समझाया। सच

संदेशा धुर फ़रमाणा, विष्न ब्रह्मे शिव आप समझांयदा। त्रैगुण माया देवे दाना, त्रै त्रै साची वण्ड वण्डांयदा। आदि अन्त मन्नणा पए भाणा, हरि भाणा वड वखांयदा। एका अक्खर गाउणा गाणा, सोहँ शब्द आप पढ़ांयदा। लक्ख चुरासी तणना ताणा, पंज तत्त वस्तू झोली पांयदा। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश संग निभाणा, सगला संग आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां वखाए एका घर, घर साचा आप दरसांयदा। दर घर साचा सोहया, सुहाए आप निरँकार। एका बीज साचा बोया, निरगुण आपणी किरपा धार। आपणे जेहा आपे होया, आपे वेखे फुल फुलवाड़। आपे लै के आए ढोया, मालण बण हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अपर अपार। अपर अपारा खेल खेलया, आपणी वण्डण आप वण्डांयदा। त्रैगुण घर साचे मेल मेलया, रजो तमो सतो वेख वखांयदा। आपे वसे धाम नवेलया, धाम अवल्लड़ा इक्क वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे घर, देवणहारा एका वर, वर दाता आप हो जांयदा। वर दाता बेपरवाह, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहया। तिन्नां दस्सया एका राह, त्रैगुण मेला मेल मिलाया। लक्ख चुरासी बणे मलाह, बेड़ा बेड़ा लए चलाया। निरगुण सरगुण रूप लए वटा, निराकार साकार आप अख्वाया। ब्रह्मे विद्या लए पढ़ा, चारे वेदां मुख सालाहया। चारे मुख लए खुल्ला, आप आपणी बूझ बुझाया। साची वण्डण लए वण्डा, चार जुग रंग रंगाया । चारे बाणी लए जणा, चारे खाणी संग रखाया। चारे वरनां माण दवा, माण अभिमाना आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग आपणा संग निभाया। ब्रह्मे विष्न तेरा संग, हरि साचे सच निभावणा। सतिजुग त्रेता द्वापर वज्जे मृदंग, कलिजुग तेरा राग अल्लावणा। जुगा जुगन्तर खेले खेल सूरा सरबंग, सारंगधर आप अख्वावणा। एका वस्त एका वार लैणी मंग, अतोट अतुट भण्डार आप वरतावणा। त्रैगुण माया ना होए नंग, सिर आपणा हथ्थ रखावणा। लेखा जाणे विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खेल खलावणा। एका गाउणा सुहागी छन्द, सोहँ अक्खर जाप जपावणा। आदि जुगादी देवे परमानंद, निजानंद इक्क वरतावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा गेड़ दवावणा। सोहँ शब्द हरि घर पाया, विष्न ब्रह्मा शिव खुशी मनांयदा। तूं साहिब ठाकर वड रघुराया, दर तेरा मोहे भांयदा। हउँ सेवक चाकर सेव कमाया, घोली घोल घोल घुमांयदा। तेरी चरन धूढ़ मस्तक ख़ाक रमाया, ख़ाकी ख़ाक रूप वटांयदा। पाकी पाक तेरा जल्वा नूर इक्क दरसाया, मुकामे हक हक सालांहयदा। एका नग़मा आपे गाया, तार सितार ना कोए वजांयदा। साचा चशमा आप वहाया, आब हयात आप प्याया, एका कलमा आप पढ़ांयदा। कातब लिख ना सके कोई राया, सच महिराबे आप बहांयदा। शाह नवाबा

दया कमाया, आदि जुगादी खेल खिलांयदा। ख़ालक ख़लक रूप वटाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव समझाया। विष्न ब्रह्मा शंकर उठ बल धार, दोए जोड़ करन निमस्कारया। पुरख अबिनाशी तेरा रूप अगम्म अपार, तेरा भेव कोए ना आ रिहा। कोटन कोटि वार पए जम्म, तेरी गोद भाग लगा ल्या। आदि अन्त बेड़ा रिहा बन्नृ, बन्नृणहार सर्ब संसारया। तेरी विद्या सुणी आपणे कन्न, भरम गढ़ ना कोए बणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सोहँ रूप कवण रखा ल्या। कवण रूप सोहँ धार, विष्न ब्रह्मा शिव आप पुछांयदा। निरगुण रूप तेरा करतार, त्रै त्रै लोकां दिस ना आंयदा। त्रैगुण माया होए पनहार, लोकमात पनघट इक्क वखांयदा। सूरज चन्न लए अवतार, तेरी किरनी किरन डगमगांयदा। इक्क नाल इक्क करे प्यार, इक्क एका मेल मिलांयदा। जुगा जुगन्तर मेरी कार, ब्रह्मा विष्न शिव भेव ना पांयदा। कवण रूप वरते विच संसार, लक्ख चुरासी कवण खेल खिलांयदा। कवण ब्रह्म करे प्यार, कवण पारब्रह्म अख्वांयदा। कवण धरनी धरत धवल दए सहार, धीरज धीर कवण धरांयदा। कवण नार होए भतार, कवण कन्त बसन्त रुत्त हंढांयदा। कवण जीव जंत पावे सार, बेअन्त कवण अख्वांयदा। कवण मणीआ होए मंत, कवण शब्द जैकार लगांयदा। कवण लेखा जाणे साध सन्त, भगत भगवन्त कवण मिलांयदा। कवण बणाए हरि हरि बणत, हरि की पौड़ी कवण चढ़ांयदा। कवण जाणे आदि अन्त, मदि कवण रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव मंग मंगांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव मंगे मंग, दर खड़े बण दरबानया। सो पुरख निरँजण तेरा कवण रंग, आदि जुगादि चढ़े दो जहानया। हरि पुरख निरँजण कवण रूप वजाए मृदंग, सुणाए राग सच तरानया। एकँकारा गाए कवण छन्द, सुहागी गीत इक्क भगवानया। आदि निरँजण जोत उजाला चाढ़े कवण चन्द, नूरो नूर नूर धरानया। अबिनाशी करता होए कद बख्शंद, मेहरवान मेहरवान मेहरवान कवण अख्वानया। पारब्रह्म ब्रह्म कवण मिटाए पन्ध, जुग जुग गेड़ा कवण दवानया। लक्ख चुरासी कवण पाए फंद, बन्दी बन्धन कवण वखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव चरन कँवल करन ध्यानया। ब्रह्मा विष्न शिव चरन कँवल ध्यान, नेत्र नैण नैण बिगसाईआ। पुरख अबिनाशी निमाणया देणा माण, ढह पए तेरी सरनाईआ। तूं दाता श्री भगवान, देवणहारा रिज़क सबाईआ। तूं सर्ब सखीआं साचा काहन, मंडल रास इक्क रचाईआ। तूं साहिब शब्द दीबाण, नाम बबाण इक्क उडाईआ। तेरा नाम साची आण, दो जहान तेरी शहनशाहीआ। चतुर्भुज रूप महान, आदि शक्ति तेरी वड्याईआ। तूं आदि जुगादी साचा राम, रहिमत रहीम रहिमान इक्क अख्वाईआ। तूं साबत सच ईमान, तेरा इष्ट बेपरवाहीआ। हउँ

भिखक मंगदे दान, भिच्छया झोली देणी पाईआ। कवण रूप प्रगट होवे विच जहान, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। कवण रूप करें खेल गुण निधान, तेरा खेल दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। हरि साचा भेव खुल्हांयदा, ब्रह्मा विष्न शिव जणाईआ। सच सिँघासण आसण लांयदा, सचखण्ड वड वड्याईआ। जोती जोत डगमगांयदा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। मात पित ना कोए बणांयदा, सफ़ल कुक्ख ना कोए वखाईआ। आपणा मुख आप वखांयदा, आप आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणा पड़दा लाहीआ। विष्नूं हरि भेव खुल्हाया, घर साचे सच दृढ़ांयदा। तेरा लहिणा आपणी झोली पाया, आपणा नाउँ तेरा रूप धरांयदा। तेरा गहिणा तन हंढाया, बस्त्र भूशन आप सुहांयदा। तेरे नैणां नैण मिलाया, कँवल नैण आप हो जांयदा। तेरा अमृत ताल भराया, ताल सुहावा आप सुहांयदा। उप्पर बूटा एका लाया, कँवल नाभी फुल्ल खिल्हांयदा। ब्रह्मा वेता बाहर कढाया, पारब्रह्म समझांयदा। चारे वेदां लए गणाया, चार चार वण्ड वण्डांयदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग एका आपणा अंक रखाया, अग्गे धार ना कोए बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। ब्रह्मे सुणना साची कार, लक्ख चुरासी तेरी झोली पाईआ। पुरख अबिनाशी पावे सार, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। घर विच घर कर त्यार, काया मन्दिर आसण लाईआ। माणस मानुख कर उज्यार, लक्ख चुरासी दए वड्याईआ। जम की फाँसी पाए हार, राए धर्म सेवा लाईआ। चित्रगुप्त बणे लखार, आपणी वस्त हथ्थ फड़ाई शाहीआ। लाड़ी मौत कर श्रंगार, धर्म राए दी सच सपुत्री कुँवारी कन्या लए उठाईआ। लक्ख चुरासी वेखे वारो वार, चारों कुंट फेरा पाईआ। दहि दिशां दए हुलार, सृष्ट सबाई खोज खोजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी खेल अपार, जुग जुग करे आप करतार, आप आपणी कार कमाईआ। लक्ख चुरासी बूटा लावणा, निरगुण सरगुण कर प्यार। विष्नूं रिज़क इक्क पुचावणा, घर घर मन्दिर खोल्ह किवाड़। शंकर अन्तिम जो घड़्या भन्न वखावणा, दिस ना आए विच संसार। आदि जुगादी वेस वटावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण लै अवतार। निरगुण रूप वटावणा, सरगुण खेल अपारा। पंज तत्त जोती जोत जगावणा, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश दए आधारा। मन मति बुध पन्ध मुकावणा, शब्दी शब्द बोल जैकारा। नौ दुआरे पार करावणा, बन्द किवाड़ी खोल्ह किवाड़ा। आत्म सेजा इक्क सुहावणा, दस्म दुआरी मेल कन्त भतारा। डूँग्घी कंदर वेख वखावणा, टेढी बंक आर पारा। शब्द ढोला एका गावणा, शब्द सुणाए आपणी वारा। आपणा चोला आप बदलावणा, निरगुण लै मात अवतारा। सतिजुग साचा वेस करावणा, सति सति

वरते वरतारा। सति सतिवादी आप अख्वावणा, ब्रह्म ब्रह्मादी भर भण्डारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेले खेल अपारा। सतिजुग खेल खलावणा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। गुर पीर अवतार आप अख्वावणा, भगत भगवन्त दए सालाहीआ। मूर्ख मुग्ध अंञाण आप हो जावणा, बल बावण भेख वटाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां सीस ताज टिकावणा, दर दरवेस दर दर फिरे फेरी पाईआ। नाम नामा एका गावणा, ओअँ रूप सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग बेड़ा पार कर, त्रेता मात लए प्रगटाईआ। त्रेता हरि प्रगटाया, त्रैगुण तत्त रखांयदा। राम रामा रूप वटाया, रावण हँकारी मेट मिटांयदा। हँकारी गढ़ आप तुड़ाया, गढ़ हँकार रहिण ना पांयदा। साचा चिल्ला हथ्थ उठाया, तीर कमान इक्क सुहांयदा। ग़रीब निमाणे गले लगाया, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। दोए दोए आपणा वेस धराया, निरगुण सरगुण साकी जाम प्यांअदा। साचा राकी आप दौड़ाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, साचा लेखा आप समझांयदा। त्रेता उतरया साचे घाट, द्वापर लोकमात वड्याईआ। वेखणहारा एका हाट, चौदां लोकां फोल फोलाईआ। सोलां इच्छया सुत्ता खाट, सोलां कल आप वरताईआ। स्वांगी स्वांग करे बाज़ीगर नाट, नट नटूआ भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ।
८४८ लेखा लिखणहार दातारा, लेखा लेखे विच ना आंयदा। चार वेद करन पुकारा, ब्रह्मा उच्ची कूके कूक सुणांयदा। शास्त्र ८४८
०६ सिमरत करन हाहाकारा, पुराण अठारां सर्ब कुरलांयदा। वेद व्यास मारे नाअरा, उच्ची कूक इक्क सुणांयदा। कान्हा कृष्ना ०६
दए आधारा, अर्जन गीता इक्क दृढ़ांयदा। रथ रथवाही शाह अस्वारा, महांसार्थी भेव ना आंयदा। भगतां देवे भगती भण्डारा, साची वस्त झोली पांयदा। बिदर सुदामा पार किनारा, द्रोपद सुत लाज रखांयदा। पंचम देवे नाम आधारा, मस्तक टिक्का इक्क वखांयदा। कलिजुग आए विच संसारा, धरनी धरत धवल सर्ब कुरलांयदा। एका रूप हो उज्यारा, नूरो नूर डगमगांयदा। हक हकीकत पावे सारा, लाशरीक इक्क अख्वांयदा। साचा कलमा बोल नाअरा, कायनात आप सुणांयदा। सच हदीस करे पुकारा, तीस बतीसा आपे गांयदा। ईसा मूसा खेल न्यारा, काला सूसा तन छुहांयदा। लेखा जाणे संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी पड़दा लांहयदा। नेत्र रोवे नार मुटयारा, नेत्र नीर सर्ब वखांयदा। हरि हरि मिल्या ना कन्त भतारा, साची सेज ना कोए हंढांयदा। राह तक्के परवरदिगारा, दूर दुराडा पन्ध ना कोए मुकांयदा। मुहम्मद बैठा अद्धविचकारा, आपणी ख़ाहिश आपणी इच्छया अल्ला राणी नाउँ रखांयदा। पावे भिच्छया सच्ची सरकारा, दिवस रैण राह तकांयदा। इजराईल जबराईल मेकाईल असराफ़ील निउँ निउँ करन निमस्कारा, चार यारी वेख वखांयदा। कागद कलम ना लिखणहारा, अञ्जील कुराना

आप पढ़ांयदा। मुकामे हक एका नाअरा, हरि जू हरि हरि साचा लांयदा। दरगाह वसे धाम न्यारा, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। कलिजुग वरते तेरा वरतारा, त्रैगुण मेला मेल मिलांयदा। काला सूसा तन शंगारा, काली धार आप चलांयदा। वरते वरतावे विच संसारा, आदि जुगादि आपणी खेल खिलांयदा। शास्त्र सिमरत ना पावण सारा, वेद कतेब कुरान अञ्जील सर्ब कुरलांयदा। साध सन्त करन पुकारा, मुल्लां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर, उच्ची कूक सर्ब सुणांयदा। पुरख अबिनाशी पाई इक्क ज़ंजीर, तौफ़ीक ख़ुदाए इक्क रखांयदा। आपे चढ़या चोटी अख़ीर, दिस किसे ना आंयदा। वसणहारा शाह हकीर, घट घट आपणी जोत जगांयदा। बेआब तड़फे आपे बिन बिन नीर, नीर सीर आपणा आप चुआंयदा। आपे बणे तकदीर तदबीर, आप आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गेड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। आपणा गेड़ा आप दवाउणा, हरि साचा सच दृढ़ांयदा। विष्नूं इक्क ध्यान रखाउणा, चरन कँवल आप समझांयदा। ब्रह्मे अमृत मुख चुआउणा, अमृत आत्म आप धरांयदा। शंकर सीस भेट चढ़ौणा, बाशक तशका गल सुहांयदा। कंठ माला इक्क पहनाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा आप आप समझांयदा। कलिजुग करे खेल अवल्ला, कुदरत कादर वेख वखाईआ। निरगुण वसे सच महल्ला, बेऐब बेपरवाहीआ। लेखा जाणे राणी अल्ला, ऐनलहक खोज खोजाईआ। आपे करे वल छल्ला, अछल अछल भेव ना राईआ। आपणा संदेस धुर फ़रमाणा आपे घल्ला, आप आपणी करे पढ़ाईआ। जोती शब्दी आपे रला, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। वसणहारा सच धाम उच्च अटला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरताईआ। कल वरते हरि भगवाना, त्रैगुण विच कदे ना आंयदा। निरगुण पहरे जोती जामा, पंज तत्त चोला आप हंढांयदा। नानक रक्खे नाम विच जहानां, निराकार खेल खिलांयदा। आपणे दर करे परवाना, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। नाम सति सुणाए एका गाणा, धुर तराना आप अलांयदा। आप वखाए आपणा बाणा, जोती जोत जोत जगांयदा। वरन गोत ना कोए पछाना, चार वरन इक्क रखांयदा। ग़रीब निमाणयां देवे माणा, माण निमाणयां आप हो जांयदा। चारों कुंट तणया ताणा, ताणा पेटा इक्क वखांयदा। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सुणाए गाणा, मन्त्र नाम सति दृढ़ांयदा। कलमा अमाम जिस पहचाना, माण मोह सर्ब मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। नानक निरगुण जामा पाया, पंज तत्त वज्जी वधाईआ। सतिनाम मन्त्र दृढ़ाया, पुरीआ लोआं होई रुशनाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाया, जेरज अंड माण धराईआ। भेख पखण्ड सर्ब मिटाया, निरगुण चन्द इक्क चढ़ाईआ। परमानंद विच समाया, निजानंद सर्ब दरसाईआ। भरमां कंध

डेरा ढाया, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। एथे उथे पन्ध मुकाया, जो जन आया सरनाईआ। एका जोती चन्द चढ़ाया, लोकमात होई रुशनाईआ। दस दस जामे भेस वटाया, गुर गोबिन्द करी कुड़माईआ। पूत सपूता आपे जाया, जननी जन आप अख्वाईआ। सुत दुलारा नाउँ धराया, शब्द शब्दी मेल मिलाईआ। साचा धौंसा नाम वजाया, रणजीत नगारा इक्क वखाईआ। साचा अमृत जाम प्याया, भर प्याला दए वरताईआ। साचा साकी बण के आया, धुरदरगाही लै के सच सुराहीआ। इक्क पैमाना हथ्थ उठाया, मेहरवाना आप वरताईआ। पंज शैताना दए मिटाया, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। नौजवाना दए बणाया, बिरध बाल एका रंग वखाईआ। जाम हकीकी इक्क प्याया, बन्द ताकी दए खुल्हाईआ। साचे राकी आप चढ़ाया, सोलां कलीआं आसण पाईआ। पाकी पाक इक्क खुदाया, ख़लक ख़ालक दए समझाईआ। आकी कोए रहिण ना पाया, जल्वा तक्के ना साचे माहीआ। लहिणा देणा बाकी दए चुकाया, एका ओट अकाल रखाईआ। वरन गोत दए मिटाया, भेव कोए रहिण ना पाईआ। कोटन कोटि वार रूप वटाया, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। ब्रह्मे विष्न शिव दए समझाया, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। साची सेवा सेव लगाया, भुल्ल रहे ना राईआ। इक्क चौकड़ी चार जुग बणाया, गुर पीर अवतार लए उपजाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी गेड़ा गेड़े लए लगाया, कोहलू चक्की चक्क आप भवाईआ। आपणा लेखा लए मुकाया, भुल्ल ना जाए बेपरवाहीआ। ब्रह्मे तेरा लक्ख चुरासी रचया मन्दिर देवे ढाया, घड़ भाण्डे आप भन्नाईआ। नौ सौ चुरानवे जुग वेला अन्तिम दए वखाया, आपणा नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलाए थाउँ थाँईआ। मेल मिलाउणा थाउँ थाँईं, भुल्ल कदे ना जांयदा। विष्नूं उठाए फड़ फड़ बांहीं, आप आपणे गले लगांयदा। ब्रह्मे मिलणा चाँईं चाँईं, तेरा अन्तिम पन्ध मुकांयदा। शंकर करे सच नयाईं, सहिंसा रोग ना कोए वखांयदा। आपे करे सच नयाईं, सच्चा शहनशाह आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा आपे लांहयदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा अन्तिम आउणा, हरि साचा दए समझाईआ। ब्रह्मे तेरे चारे वेदां पन्ध मुकाउणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग वार अठारां जोत जगाउणा, त्रेता दो दो नूर करे रुशनाईआ। द्वापर वेद व्यासा भेव खुल्हाउणा, पुराण अठारां दए लिखाईआ। अठारां अध्याए गीता ज्ञान दृढ़ाउणा, अठ दस करे लड़ाईआ। कलिजुग कलमा नबी आप पढ़ाउणा, रसूल रसूलां दए समझाईआ। शरअ शरीअत इक्क वखाउणा, अञ्जील कुरानां करे पढ़ाईआ। मन्त्र सति इक्क दृढ़ाउणा, नानक निरगुण बूझ बुझाईआ। वाहिगुरू फतिह इक्क गजाउणा, वाह वा गुरू वड्डी वड्याईआ। सतिगुर साचे वेस वटाउणा, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी अन्तिम

धार, वेद व्यासे दए हुलार, सच हुलारा इक्क लगाईआ। वेद व्यास हरि जणाया, वेला अन्तिम आंयदा। द्वापर लेखा दए लिखाया, निहकलंक कल आपणी आप वरतांयदा। महांकाल हरि बण के आया, काल चरनां हेठ दबांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलांयदा। कलिजुग अन्तिम कर विचार, निरगुण नानक करे जणाईआ। प्रगट होवे हरि निरँकार, अन्तिम वेला दए सुहाईआ। निहकलंका लै अवतार, मात पित ना कोए वखाईआ। गोबिन्द लेखा लिखे अपार, संग रलाए कलम शाहीआ। प्रगट होवे हरि गिरधार, नूरी जल्वा नूर रुशनाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यार, सच सिँघासण लए वछाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, पुरख पुरखोतम आप कराईआ। कल कल्की लए अवतार, कलिजुग कूड़ा पन्ध मुकाईआ। सृष्ट सबाई होए नार विभचार, साचा कन्त ना कोए हंढाईआ। पिता पूत ना कोए प्यार, भैया भैणां रहे तकाईआ। साचा सय्या मिले ना हरि निरँकार, ख़ाली बहीआ रहे वखाईआ। हथ्थ कंगण ना करे कोए शंगार, नेत्र नैण कज्जल ना कोए पाईआ। साची सेज ना बरखे फूलन धार, फूल माला कंठ ना कोए पहनाईआ। अमृत मिले ना ठंडी ठार, सुरत सवाणी दए दुहाईआ। घर मन्दिर रोवे ज़ारो ज़ार, गृह बंक ना कोए वड्याईआ। आत्म सेजा सोए ना कोए पैर पसार, आपणी करवट लए ना कोए बदलाईआ। सृष्ट सबाई धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। साध सन्त जायण हार, हरि का पौड़ा ना कोए वखाईआ। अठसठ तीर्थ पवे मार, उच्ची कूकण देण दुहाईआ। गंगा जमना सुरस्ती रोवे ज़ारो ज़ार, गोदावरी खुल्ह्ड़े केस गल वखाईआ। दस दस्मेश ना करे कोए प्यार, कन्ढ्ढा घाट ना कोए सुहाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद मढ्ढ होए ख्वार, हट्टो हट्ट जगत विकाईआ। घट घट वसे आप निरँकार, जुग जुग आपणी खेल खलाईआ। प्रगट होवे चवीआं अवतार, निहकलंक नाउँ धराईआ। गुर गोबिन्द सिँघ सिँघ करे मीत मुरार, सिँघ शेर वज्जे वधाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, फ़तवा किसे उप्पर ना लाईआ। मुल्लां शेखां मारे मार, पंडत पांध्या दए सज़ाईआ। जिन्हां भुलया हरि निरँकार, कलिजुग अन्तिम वेखे थाउँ थाँईआ। प्रगट हो विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव दित्ता वर, वेले अन्त लए मिलाईआ। वेले अन्त हरि मिलाउणा, निहकलंका जामा पांयदा। शब्द डंक इक्क वजाउणा, लोआं पुरीआं आप उठांयदा। राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका धाम बहाउणा, ऊँच नीच ना कोए वखांयदा। तख्त ताज सर्ब मिटाउणा, सीस ताज ना कोए धरांयदा। वरन बरन कोए रहिण ना पाउणा, ज़ात पात ना कोए जणांयदा। अन्धेरी रात पन्ध मुकाउणा, कलिजुग कूड़ा कूड़ गवांयदा। सतिजुग साचा चन्द चढ़ाउणा, जागरत जोत इक्क जगांयदा। लक्ख चुरासी फोल फुलाउणा, ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखांयदा। गुरमुख साचे मेल मिलाउणा, हरिजन आपणे रंग रंगांयदा। भगतां भगती मार्ग

लाउणा, गुरसिख आपणी गोद बहांयदा। कलिजुग वेला अन्त सुहाउणा, गुर पीर ना कोए अख्वांयदा। ब्रह्मे विष्न शिव तेरा रूप आप वटाउणा, आप आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगांयदा। कलिजुग वेला अन्त आए, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव तेरी घाल लेखे लाए, घाली घाल जो सेव कमाईआ। धुर दा माली फेरा पाए, जगत दलाली आप कमाईआ। जोत अकाली इक्क जगाए, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। सच धर्मसाल नौ खण्ड पृथमी इक्क बणाए, सत्तां दीपां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा अंक दए समझाईआ। ओंकारा एका अंक एकँकारा नाउँ रखांयदा। शब्द अगम्मी वज्जे डंक, धुन अनादी नाद वजांयदा। लेखा जाणे राउ रंक, भरम भुलेखा ना कोए पांयदा। साधां सन्तां कढ्ढे शंक, जो जन सरनाई आंयदा। गुरमुखां लाए जोती तनक, आप आपणा मेल मिलांयदा। नाउँ रखाए वासी पुरी घनक, घनक पुर वासी आप हो जांयदा। लेख चुकाए ब्रह्मा सुत सनक, सन्त कुमार पन्ध मुकांयदा । लेखा जाणे वार अनक, वार अनक आपणी कल वरतांयदा। कलिजुग कूड़ा तोड़े धनश, राम रामा वेस वटांयदा। यादव वेखण आया बंस, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। बाशक सेजा सुत्ता सुणे नाद रसना जिह्वा दो सहँस, मुख सहँसर आप हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा वेला आप सुहांयदा। साचा वेला हरि सुहञ्जणा, निरगुण जोत करी रुशनाईआ। दीप जगाया आदि निरँजणा, नूर नुराना डगमगाईआ। पुरख अबिनाशी साचा सज्जणा, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरसिखां अन्त कराए चरन धूढ़ी साचा मजना, दुरमति मैल गंवाईआ। इक्क वखाए मक्का काअबा हाज़ी हज्जणा, काया काअबा आप खुल्हाईआ। ताल नगारा, अनहद ताल एका वज्जणा, नौबत नव नौ आप वजाईआ। जो घड़या सो भज्जणा, ब्रह्मे विष्न शिव आप समझाईआ। जगत सिँघासण सभ ने तजणा, त्रैलोक रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल एका पड़दा कज्जणा, वेले अन्त होए सहाईआ। सो पुरख निरँजण आपे मारे आपणी वाजणा, धुन धुन विच टिकाईआ। कलिजुग रचे साचा काजणा, कालख टिक्का मेटे शाहीआ। चढ़े अश्व साचे ताजणा, धुरदरगाही सच्चा शहनशाहीआ। गुरसिखां रक्खे लाजणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मनमुखां खोल्हे पाजणा, गुर गोबिन्द दए गवाहीआ। सतिजुग साचा साजण साजणा, चार वरन इक्क पढ़ाईआ। गायत्री मन्त्र ना कोए पढ़े नमाज़ना, जंजू तिलक ना कोए लगाईआ। शाह सुल्तान ना दिसे कोए राजणा, रईयत मुख ना हुक्म चलाईआ। पुरख अबिनाशी ग़रीब निवाजणा, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। इक्क चलाए सच जहाज़णा, खेवट खेटा सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न शिव ब्रह्मे दित्ता एका वर, वेले अन्त

लए मिलाईआ। वेला अन्तिम आ गया, कलिजुग तेरी काली धार। हरि जोती जोत जगा गया, निहकलंका लै अवतार। नाम डंका इक्क वजा ल्या, शाह सुल्तानां करया ख़बरदार। दुआर बंका इक्क सुहा ल्या, सम्बल नगर कर विचार। गुर गोबिन्द मेल मिला ल्या, सिँघ रूप आप निरँकार। शेर दलेर आप अखवा रिहा, सृष्ट सबाई मारे मार। एका घेरा नाम पा ल्या, शाही फौज संग रक्खे ना कोए अस्वार। नाम चण्डी इक्क चमका ल्या, चण्डी ढह ढह डिगे दुआर। भेख पखण्डी सर्ब तका ल्या, टेढी डण्डी ना दिसे विच संसार। नार दुहागण रंडी धर्म राए दे घर बहा ल्या, नौ खण्ड पृथ्मी कर ख्वार। गीत सुहागी छन्द इक्क सुणा ल्या, निरगुण सरगुण बन्ने धार। सृष्ट सबाई अन्धी भेव ना पा ल्या, गूढ़ी नींद सुत्ते पैर पसार। कल्लर कंध ढहन्दी ना कोए बचा ल्या, शौह दरयाए दए हुलार। दिशा लहिंदी फेरा पा ल्या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी धार। कलिजुग वेला अन्तिम आया, त्रैगुण रही कुरलाईआ। पुरख अबिनाशी फेरा पाया, माया ममता दए दुहाईआ। निरगुण जोती जामा भेख वटाया, आसा तृष्ना होई हलकाईआ। शब्द खण्डा हथ्थ उठाया, काम क्रोध लोभ मोह हँकार भज्जे वाहो दाहीआ। चन्द नौचन्दा गुरमुख चढ़ाया, सूरज चन्न मुख शर्माईआ। विष्नूं तेरा पन्ध आप मुकाया, पान्धी बणया हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा पूरा लए कराईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, हरि साचे सच दृढ़ाया। पुरख अबिनाशी जामा पाउणा, निहकलंका नाउँ रखाया। गोबिन्द डंका इक्क वजाउणा, गुर गोबिन्द होए सहाया। चार वरन एका धाम बहाउणा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए वखाया। चारे बाणी मेल मिलाउणा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी एका धुन सुणाया। तुरीआ नाद इक्क वजाउणा, घर घर आप अलाया। बोध अगाध शब्द जणाउणा, लेखा लेख ना किसे सुणाया। सोहँ शब्द इक्क पढ़ाउणा, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। हँ ब्रह्म पारब्रह्म विच टिकाउणा, आपणी वस्त आपणी झोली आप भराया। विष्न जोती जोत मिलाउणा, जोती जोत कर रुशनाया। ब्रह्मे तेरा बेड़ा पार कराउणा, लेखा लेखे लए लगाया। तेरा नगर खेड़ा आप वसाउणा, गुरमुख साचे दए वड्याआ। शिव शंकर एका गोद बहाउणा, बाल बाला सीर प्याया। सुत दुलारा एका धाम वसाउणा, गोबिन्द रत्त रत्त संचाया। सुरपति राजा इंद तख़्तों लौहणा, करोड़ तेतीसा ना हुक्म सुणाया। छोटा बाला आप सुहाउणा, साचे तख़्त तख़्त सजाया। वेला वक्त आपणे हथ्थ रखाउणा, भेव अभेदा कोए ना सके पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए मिलाया। हरिजन मिलाया किरपा धार, धरनी धरत धवल सुहांयदा। बख़्शश बख़्शे चरन प्यार, बख़्शिश हरिजन झोली पांयदा। रख़्शिश होए विच संसार, कलिजुग सागर पार करांयदा। निर्मल कर्म करे उजागर हरि निरँकार,

जो जन सरनाई आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्त चेले गुरू गुर चेले आप आपणा मेल मिलांयदा। मेल मिलावा गुर गोबिन्द, चिंता चिखा रहिण ना पाया। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। गुरमुख बणाए आपणी बिन्द, नादी सुत बिन्द उपजाईआ। दाता दानी गुणी गहिन्द, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। माण गंवाए सुरपति राजा इंद, शिव शंकर रहिण ना पाईआ। ब्रह्मे मेटे सगली चिंत, अन्तिम अन्त दए समझाईआ। विष्नूं मेला हरि हरि कन्त, नार सुहागण खुशी मनाईआ। घर रुत्तड़ी खिड़े बसन्त, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। लेख चुकाए जीव जंत, कन्त भगवन्त होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे पार कराईआ। हरिजन तेरा वसया खेड़ा, काया नगर ग्राम आप वसांयदा। पंजां चोरां चुकया झेड़ा, पंच विकार ना कोए सतांयदा। मन मति बुध देवे उलटा गेड़ा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। काया मन्दिर करे वेहड़ा, माया ममता मोह चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कट्टणहारा जम का जेड़ा, राए धर्म फंद कट्टांयदा। राए धर्म कट्टया फंद, सतिगुर पूरे दया कमाईआ। जिस जन गाया बत्ती दन्द, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जैकार दो जहान आप वखाईआ। मदिरा मास तजाया रसना गंद, गुर गोबिन्द लए मिलाईआ। जगत तृष्ना मेटे चिन्द, चिंता चिखा दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए तराईआ। गुरमुख साचा तारया, कल कल्की लै अवतार। जुग जुग दा गेड़ नवारया, लक्ख चुरासी उतरे पार। राए धर्म ना करे ख्वारया, वेले अन्त ना मारे मार। लाड़ी मौत ना करे श्ंगारया, आए चल ना सिख दुआर। सतिगुर पूरा देवे दर दुरकारया, शब्द अगम्मी मारे मार। वेले अन्तिम पैज सुआरया, आप आपणा करे प्यार। आपणी गोद आप बहा ल्या, शब्द बबाणे लेवे चाढ़। दरगाह साची आपे वाड़या, सचखण्ड दुआरा धाम न्यार। अन्तिम जोती जोत मेल मिला ल्या, वासना रहे ना विच संसार। सतिगुर पूरा दया कमा रिहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन देवे जीआ दान, दाता दानी इक्क अख्वा रिहा।

❊ पहली भाद्रों २०१७ बिक्रमी दरबार विच दया होई जेठूवाल ❊

सो पुरख निरँजण सतिगुर पूरा, साहिब सुल्तान वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण हाज़र हज़ूरा, आदि जुगादि सच्चा शहनशाहीआ। एकँकारा वसणहारा नेरन दूरा, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। आदि निरँजण नूरन नूरा, जोत उजाला

दीप जगाईआ। अबिनाशी करता सर्बकल भरपूरा, ना मरे ना जाईआ। श्री भगवान नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, सच सुच्च वड्डी वड्याईआ। पारब्रह्म आसा मनसा करे पूरा, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खलाईआ। सो पुरख निरँजण गहर गम्भीरा, मेहरवान वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण चोटी चाढ़े इक्क अख़ीरा, महल्ल अटल ना कोए दसाईआ। एकँकारा वड पीरन पीरा, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। आदि निरँजण एका रस अमृत सीरा, हरि मन्दिर आप भराईआ। श्री भगवान देवणहार धीरा, धीरज धीर ना कोए वड्याईआ। अबिनाशी करता शाह हकीरा, ऊँच नीच ना रूप धराईआ। पारब्रह्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बल आप वखाईआ। सो पुरख निरँजण वड बलकारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। हरि पुरख निरँजण खेल अपारा, इक्क इकल्ला आप कराईआ। एकँकारा वसणहारा सच दुआरा, सचखण्ड साचा आप सुहाईआ। आदि निरँजण बेऐब परवरदिगारा, नूरी जल्वा नूर इलाहीआ। श्री भगवान सांझा यारा, दूसर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। अबिनाशी करता निरगुण धारा, निरगुण आपणी आप चलाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, आपणी रचना वेख वखाईआ। आपे वसे सभ तों बाहरा, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। रूप रंग ना किसे विचारा, रेख भेख ना कोए दरसाईआ। पंज तत्त ना कोए आकारा, रत्ती रत्त ना कोए वड्याईआ। आपे जाणे आपणी कारा, करता पुरख आपणा नाउँ धराईआ। वसणहारा ठांडे दरबारा, थिर घर साचा इक्क उपाईआ। ना पुरख ना दिसे नारा, नर हरि आपणी खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, आप आपे बणे मलाह, खेवट खेटा रूप वटाईआ। खेवट खेटा हरि भगवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आपे वसे सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। ना ज़िमीं ना कोए अस्मान, गगन मंडल ना कोए सुहाईआ। सूरज चन्न ना कोए भान, तेज़ प्रकाश ना कोए चमकाईआ। शब्द राग ना कोए गान, तार सितार ना कोए हिलाईआ। पवण पाणी ना कोए मसाण, तत्व तत्त ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकारा, करे खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना आईआ। अलक्ख अगोचर हरि बेअन्त, भेव कोए ना पांयदा। आपणी महिमा जाणे बेअन्त, लेखा लेख ना कोए वखांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणी धार बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा सच दुआरा आप उपाए हरि निरँकारा, निरगुण आपणा धाम आप सुहांयदा। निरगुण धाम अवल्लड़ा, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। हरि पुरख निरँजण इक्क इकल्लड़ा, एकँकारा आसण लाईआ। आदि निरँजण दीपक बलड़ा, निज घर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता सच सिँघासण एका मलड़ा, साचे तख़्त बैठा बेपरवाहीआ।

८५६

०६

श्री भगवान फड़ाए पलड़ा, एका पल्लू आपणा आप वखाईआ। पारब्रह्म सच संदेश एका घलड़ा, धुर फ़रमाना हरि जणाईआ। सुहाए धाम नेहचल अटल अटलड़ा, उच्च दुआरा वेख वखाईआ। आपणी जोती आपे रलड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरवैर निराकार मूर्त अकाल बेऐब परवरदिगार दर घर साचे आप सुहाईआ। दर घर सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर आप तराईआ। दीन दयाल दया निध सागर गहर गम्भीर एका पाए आपणा अंञणा, नेत्र नैण इक्क दरसाईआ। दो जहानां खेल महानां पारब्रह्म अबिनाशी करता साक सैण सज्जणा, सगला संग आप निभाईआ। ना घड़या ना भज्जणा, जन्म मरन ना कोए वड्याईआ। आप चलाए आपणा सच जहाज़ना, निरगुण बेड़ा आप तराईआ। सचखण्ड निवासी आप रचाए आपणा काजणा, ना कोई दूसर सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचे वड़, आपणी इच्छया आपे पूर कराईआ। थिर घर साचे हरि हरि वड़या, रूप रंग ना कोए जणाया। सचखण्ड दुआरे साचे पौड़े आपे चढ़या, महल्ल अटल आप सुहाया। आपणे मन्दिर आपे खड़या, आप आपणा वेख वखाया। ना कोई सीस ना कोई धड़या, तत्व तत्त ना कोए धराया। अक्खर विद्या कोए ना पढ़या, राग रागनी ना कोए सालाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर सच दुआरा, पुरख अबिनाशी खेल अपारा, दर घर साचे आप करांयदा। दर घर साचा हरि सुहावणा, निरगुण जोत नूर उज्यार। दीपक जोत इक्क जगावणा, तेल बाती ना कोए प्यार। रवि ससि ना कोए चढ़ावणा, मंडल मंडप ना कोए सितार। गगन गगनंतर ना कोए वखावणा, जल बिम्ब ना कोए धार। धरत धवल ना कोए उपावणा, आकाश प्रकाश ना होए उज्यार। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए वखावणा, त्रैगुण तत्त ना कोए भण्डार। ब्रह्म वण्ड ना कोए वण्डावणा, लक्ख चुरासी ना कोए पसार। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना कोए वखावणा, समुंद सागर ना कोए जाणे पार किनार। काया गागर ना कोए रखावणा, मन मति बुध ना कोए प्यार। जागरत जोत इक्क जगावणा, दर घर साचे आप करतार। गुर पीर अवतार ना कोए वखावणा, साध सन्त ना पावे सार। निरगुण आपणा रूप आप वटावणा, साचे तख्त बैठ सच्चा सिक्दार। शाहो भूप आप अख्वावणा, दो जहानां खेल अपार। तख्त निवासी एका तख्त हंढावणा, दूसर कोए ना चोबदार। लोआं पुरीआं ना कोए बणावणा, करोड़ तेतीस ना कोए श्रंगार। गण गंधर्ब ना नाच नचावणा, यच्छ अपच्छरां ना गाए आपणी वार। पुरख अबिनाशी आपणी कल आप वरतावणा, कागद कलम ना लिखणहार। ब्रह्मा वेद लिख ना गाए चार चार जुग ना कोए धरावणा, चारे खाणी ना कोए पसार। चारे बाणी ना कोए अलावणा, चार वरन ना कोए पसार। चार यारी ना

मेल मिलावणा, इक्क इकल्ला एकँकार। दरगाह साची धाम सुहावणा, निरगुण जोत कर उज्यार। घर मन्दिर डेरा लावणा, सचखण्ड दुआरे पाए सार। सति सति सति आपणा रूप धरावणा, ब्रह्म मति ना कोए विचार। तत्व तत्त ना कोए रखावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा करे कराए करनेहारा, ना कोई वेखे जीव संसारा, एका इक्क बेपरवाहीआ। इक्क इकल्ला बेपरवाह, आदि जुगादि समाया। सति पुरख निरँजण नाउँ धरा, आपणी कल वरताया। अगम्म अगम्मड़ा थान सुहा, थान थनंतर आप सुहाया। अलक्ख अलक्खणा अलक्ख जगा, अलक्ख अलक्खणा आपणी मंग आप मंगाया। सुन्न समाधी रिहा समा, मोन रूप आप वटाया। गुण अवगुण ना सके कोए जणा, निरगुण आपणी धार आप बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वसे एका घर, घर मन्दिर आप सुहाया। घर मन्दिर हरि सुहांयदा, चार दीवार ना कोए बणाईआ। मूर्त अकाल विच टिकांयदा, दूसर इष्ट ना कोए मनाईआ। रसना जिह्वा ना कोए हिलांयदा, धुन नाद ना कोए वजाईआ। अक्खर विद्या ना कोए पढ़ांयदा। कागद कलम ना लिखे शाहीआ। मात पित ना कोए बणांयदा, नाता दिसे ना भैणां भाईआ। ज़ात पात ना कोए रखांयदा, वरन गोत ना कोए रखाईआ। एका आपणा थान सुहांयदा, दरगाह साची वड्डी वड्याईआ। साची सेज आप हंढांयदा, आप आपणा मेल मिलाईआ। नारी कन्त आप प्रनांयदा, नार भतार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा साचा घर, आपे वसे एका हरि, दूजा दर ना कोए सुहांयदा। साचा दर सुहावणा, पुरख अबिनाशी आप सुहाया। सो पुरख निरँजण एका पावणा, हरि पुरख निरँजण मेल मिलाया। एकँकारा नज़री आवणा, आदि निरँजण दए दरसाया। श्री भगवान सगन मनावणा, अबिनाशी करता वेख वखाया। पारब्रह्म प्रभ झोली पावणा, साची वस्त अमोलक आपणी आप वरताया। सचखण्ड दुआर बणाए साची गोलक, आपणा कुण्डा आपे लाहया। आपे जाणे आपणी खेल अनबोलत, बोलत बोलत ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वेखे साचा दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाया। दर दरवाज़ा साहिब बेऐब परवरदिगार, आपणा खेल आप खिलाईआ। मुकामे हक हक हो त्यार, हक हक विच टिकाईआ। आपणी लज्जया आपे रक्ख, आपणा होए आप सहाईआ। आपणा पड़दा आपे ढक, आपे पल्लू रिहा पाईआ। आपे लेखा जाणे पुरख समरथ, समरथ पुरख भेव ना राईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणी महिमा गाए अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। निरगुण चलाए आपणा रथ, आपणी सेवा आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा वर, आपणी वण्डन आप वण्डाईआ। साची वण्डण हरि करतार, सचखण्ड दुआरे आप वण्डांयदा। निरगुण दाता निरगुण भिखार,

निरगुण भिक्खक निरगुण भिच्छया झोली पांयदा। निरगुण वणज निरगुण वपार, निरगुण हट्ट पसारा आप वखांयदा। निरगुण मीत निरगुण मुरार, निरगुण कन्त निरगुण नार, निरगुण साची सेज हंढांयदा। निरगुण पूत सुत दुलार, निरगुण मात पित करे प्यार, रूप रंग ना कोए वखांयदा। निरगुण सति सति दए हुलार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे मन्दिर आपे वड़, आपणा बल आप धरांयदा। आपणा बल आपे धार, आपणी करनी आप कमाईआ। सो पुरख निरँजण खेल अपार, निरगुण निरगुण लए उपजाईआ। निरगुण करे सति वरतार, निरगुण सांतक सहिज सुखदाईआ। निरगुण राज निरगुण जोग सच्चा सिक्दार, निरगुण शाह सच्चा पातशाह निरगुण दर दरवेश बणे भिखार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आपे रिहा चलाईआ। कल कलवन्ता महांकाल, भेव अभेद छुपांयदा। सति सरूप दीन दयाल, दया निध आप अख्वांयदा। शाहो भूप आपणा कारज करे सिद्ध, साचा मार्ग आपे लांयदा। पुरख अबिनाशी आपे जाणे आपणी बिध, आपणी धार आप बंधांयदा। ना कोई दिसे नव निध, अठारां सिद्ध ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सच पसारा, करे कराए करनेहारा, करता पुरख आपणी खेल खिलांयदा। करता पुरख सच्चा सुल्तान, कादर करीम आप अख्वांयदा। सच दुआरे सच निशान, सचखण्ड निवासी आप झुलांयदा। साचे तख्त श्री भगवान, सच सिँघासण आसण लांयदा। साचा हुक्म धुर फ़रमान, आपणी इच्छया आप उपांयदा। शब्दी शब्द देवे माण, पूत सपूता एका जांयदा। आपे गोपी आपे काहन, आपे आपणी रास रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसे साचे घर, दर दरवाज़ा दर दरबारा इक्क सुहांयदा। दर दरबारा हरि सुहाया, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। पुरख अगम्मड़े अगम्मड़ा हुक्म चलाया, लेखा लिखण विच ना आईआ। आपणा नामा आपणा शब्द आपे गाया, आपे करे शनवाईआ। आपणा मृदंग सारंग आप वजाया, दूसर हथ्थ ना कोए वड़्याईआ। आपणा मृदंग आप उठाया, आपणी सेवा आप कमाईआ। आपणा रंग आप चढ़ाया, उतर कदे ना जाईआ। आपणा संग आप निभाया, सगला साथी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेसा नर नरेश साचे तख्त आप सुणाईआ। शब्द संदेसा सच वरतारा, हरि साचे सच जणाया। पूत सपूता कर उज्यारा, एका शब्द उठाया। निरगुण निरगुण खेल अपारा, निरगुण निरगुण लए कराया। निरगुण हुक्म निरगुण वरतारा, निरगुण हुक्मी हुक्म सुणाया। निरगुण घर निरगुण मन्दिर निरगुण दुआरा, निरगुण दर दर अलख जगाया। निरगुण वणज निरगुण वपारा, निरगुण झोली आप भराया। निरगुण शाह सिक्दारा, निरगुण आपणी झोली अग्गे डाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप

८५८ ०६

८५६ ०६

समझाया। धुर फ़रमाणा हरि समझांयदा, शब्द सुत कर त्यार। आपणा खेल आप खिलांयदा, खेलणहार आप निरँकार। रूप रंग ना कोए वखांयदा, रंग रतड़ा साचा यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म करे वरतार। हरि हुक्म वरताया, शब्दी शब्द जणाईआ। साचा भाणा आप सुणाया, हरि भाणे रिहा समाईआ। राजा राणा आप अख्वाया, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। अदल अदालत इक्क वखाया, साख्यात नूर रुशनाईआ। आपणा लेखा आपे रिहा पढ़ाया, आप आपणी दया कमाईआ। आपणी वण्डण रिहा वण्डाया, वण्ड वण्ड वेखे थाउँ थाँईंआ। एका शब्द सेवा लाया, सतिगुर साचा सेव कमाईआ। सचखण्ड दुआरा वेख वखाया, वेखणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द दुलारा इक्क उठाईआ । शब्द दुलारा जागया, किरपा करी आप करतार। सरन सरनाई साची लागया, निउँ निउँ करे निमस्कार। धन्न धन्न सुभाग मेरे वडभागया, प्रभ पाया एका वार। आदि जुगादि मन्नां तेरी आज्ञा, तेरा हुक्म मेरा सिक्दार। तेरे हुक्मे अंदर फिरां भागया, करां करावां साची कार । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे वस्त इक्क अपार। शब्द सुत मंगे मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। सतिगुर दाते चाढ़ रंग, सति पुरख निरँजण तेरी वड वड्याईआ। एका वार मेरा कज्जणा नंग, पड़दा उतर कदे ना जाईआ। तेरा नाउँ मेरा मृदंग, वज्जदा रहे सभनी थाँईंआ। तूं दाता सूरा सरबंग, हउँ सेवक सेव कमाईआ। तेरी गोद मेरा अंग, अंगीकार सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शब्द दुलारा ढह ढह पए सरनाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपणी दया कमांयदा। निरगुण निरगुण कर प्यार, आपणे अंग लगांयदा। पिता पूत इक्क प्यार, साचा नाता जोड़ जुड़ांयदा। साचे दूत रहिणा ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोए वखांयदा। तेरा हुक्म वरते कूट चार, दहि दिशा तेरी वण्ड वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द आप समझांयदा। हरि शब्दी शब्द समझाया, आप आपणा पड़दा लाह। एका मार्ग सच वखाया, पुरख अबिनाशी बणे मलाह। तेरी सेवा इक्क वखाया, निरगुण आपणा भेव दए खुल्हा। तेरी रचना आप रचाया, रच रच वेखे सर्ब रज़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दित्ता सुणा। शब्द सुणाया हरि निरँकार, सुत दुलारा माण रखाईआ। एकँकारा करे प्यार, निराकार सहिज सुखदाईआ। जोती देवे साची धार, जोत शब्द करे कुड़माईआ। पुरख अबिनाशी अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार आप कमाईआ। वरते वरतावे आपणा वरतार, वरतंत भगवन्त इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। हरि खुल्हाया आपणा भेव, आपणा पड़दा आपे लांहयदा। पुरख अबिनाशी अलक्ख अभेव, महिमा गणत

ना कोए गणांयदा। साचे शब्द तेरी साची सेव, साचा कर्मी कर्म करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच्चा संदेसा इक्क सुणांयदा। सच संदेश अल्हाया, कर किरपा आप निरँकार। आप आपणा हुक्म जणाया, आपे खोल्या बन्द किवाड़। आपणी रचना आप वखाया, निरगुण निरगुण कर पसार। सुत दुलारा आप उठाया, सिर रक्ख हथ्थ समरथ करतार। महिमा अकथ आप जणाया, एका लिव इक्क गुफ़तार। तार सितार ना कोए हलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाया। भेव जणाया पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता दया कमांयदा। शब्द दुलारे तेरा खेल तमाश, तेरी मंडल रास रचांयदा। तेरा गगन होए प्रकाश, लोआं पुरीआं तेरा रूप धरांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड होए तेरा निवास, तेरी डोरी बन्धन पांयदा। तेरा रंग पृथ्मी आकाश, रंग रंगीला आप चढ़ांयदा। तेरा नेत्र रवि ससि करे प्रकाश, निज नेत्र सेवा आप करांयदा। इक्क किरन होए दासी दास, इक्क इक्क इक्क नाल वण्ड वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या झोली पांयदा। शब्द सुत वर हरि साचा पाया, घर साचे खुशी मनांयदा। गगन मंडल रचन रचाया, रवि ससि तार सितार आप लटकांयदा। बहमंड खण्ड रूप वटाया, आप आपणी कल धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची सेवा आप लगांयदा। सेव लगाया सेवादार, सेवक सेवा सेव कमाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, साचे शब्द बख्शी इक्क सरनाईआ। तेरा महल्ल अटल मुनार, उच्च दुआर हरि वेख वखाईआ। आदि आदि बन्न्ह आपे धार, आदि आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आपणा मेला मेल मिलाईआ। मेल मिलावा हरि हरि कन्त, कन्त कन्तूहल आप हंढाईआ। आपे आदि आपे अन्त, आपे मध रिहा समाया। आपे जाणे आपणी बणत, आप आपणी रचन रचाईआ। आपे नाम आपे मंत, आप आपणा रिहा दृढ़ाईआ। आपे पूरन जोत श्री भगवन्त, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द साहिब शब्द सुल्तान एका एक वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं रचन रचाया, हरि शब्दी खेल खिलांयदा। आपणा अंग सूरा सरबंग भंग कराया, आपणी वण्डण आपणे हथ्थ रखांयदा। आपणा अनन्द आपणे विच टिकाया, दूसर रस ना कोए सुहांयदा। आपणा बन्द आप खुल्हाया, आप आपणा पन्ध मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे शब्द खेल पसार, आपे शब्द वरते वरतार, गुप्त ज़ाहर आप हो आंयदा। गुप्त ज़ाहर हरि खेल अपारा, साचे शब्द दए वड्याईआ। निरगुण अंदर निरगुण धारा, निरगुण निरगुण दए टिकाईआ। निरगुण बीज निरगुण फल क्यारा, निरगुण पत डाल्ही आप महिकाईआ। निरगुण भँवरा गूंजे अपर

अपारा, निरगुण रस रसीआ साचा माहीआ। निरगुण भोगी निरगुण वियोगी निरगुण संजोगी करे खेल आप करतारा, आपणी करनी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपणे विच समाईआ। आपणी इच्छया आपणे अंदर धर, आपणा बीज आप बिजांयदा। ना कोई पुरख नारी नर, नर नरायण आपणा मेल आप मिलांयदा। ना कोई चोटी ना कोई जड़, अद्धविचकार ना कोए सुहांयदा। आपणे अंदर आपे वड़, आपणा बूटा आपे लांयदा। आपे वेखे अग्गे खड़, आप आपणा रूप वटांयदा। आपणा घाड़न आपे घड़, घड़न भन्नणहार आपणी खेल खिलांयदा। आपणा लड़ आपे फड़, आपणा पल्लू आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचे घर, दर घर साचा आप सुहांयदा। दर घर सुहावणा, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी वेस वटावणा, शब्दी शब्द दए सलाहीआ। आपणा नाउँ आप प्रगटावणा, परम पुरख बेपरवाहीआ। आपणी कल आप वरतावणा, अकल कल आप धराईआ। आपणी अंस आप उपजावणा, आपणा बंस आप अख्वाईआ। विश्व आपणा नाउँ धरावणा, विष्नूं खेल करे शहनशाहीआ। शब्दी मेला मेल मिलावणा, विछड़ कदे ना जाईआ। साचा मन्दिर आप सुहावणा, दीवा बाती कर रुशनाईआ। आप आपणा वेख वखावणा, नेत्र नैण आप खुल्हाईआ। आपणा राग आपे गावणा, गावणहारा दिस ना आईआ। विष्नूं आपणा मेल मिलावणा, वास्तक रूप आप समाईआ। मात पित ना कोए बणावणा, रक्त बूंद ना कोए वखाईआ। दस दस मास ना गर्भ तपावणा, हवन कुण्ड ना अग्न जलाईआ। आपणी इच्छया आप प्रगटावणा, आपे बणे पिता माईआ। सुरत सीर इक्क प्यावणा, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। साची धार विच टिकावणा, कँवल कँवल रूप वटाईआ। कँवल आपणी नाभ सुहावणा, नाभी रूप बेपरवाहीआ। बेआबी खेल खलावणा, आब हयात लए प्रगटाईआ। बेआफ़ताबी आफ़ताब चमकावणा, कर किरपा खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप धराईआ। विष्न हरि उपजाया, कर किरपा मेहरवान। आपणी बूझ आप बुझाया, आपे देवणहारा दान। आपणा भेव आप खुल्हाया, प्रगट हो श्री भगवान। आपणा संजोग आप जणाया, आदि जुगादी खेल महान। आपणा भोग आप भोगाया, भस्मड़ होए ना विच जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप वटाया। सो पुरख निरँजण रूप वटाए, हँ विष्नूं रूप समाईआ। ओंकारा एकँकारा निराकार खेल खलाए, साकार ना कोए वड्याईआ। पुरख अकाल आपणी मूर्त आप प्रगटाए, अनुभव प्रकाश टिकाईआ। नेहचल धाम इक्क वखाए, असथल बैठा साचा माहीआ। अमृत जाम इक्क प्याए, अमर अमर अमर आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं वंस आप सुहाईआ। विष्नूं उठया जागया, नेत्र नैण खुल्हाया। अन्तर

उपज्या इक्क वैरागया, पुरख अबिनाशी भेव ना पाया। कवण कन्त कवण नारी मिले सच सुहागया, ना मरे ना जाया। कवण सेवक रहे सदा विच आज्ञा, धुर फ़रमाणा सीस उठाया। कवण भिखारी फिरे भागया, दर दर घर घर फेरी पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंगे साचा वर, पुरख अबिनाशी अग्गे सीस झुकाया। विष्नूं सीस झुकांयदा, प्रभ चरन कँवल ध्यान। नेत्र रो रो नीर वहांयदा, ख़ाली झोली मंगे दान। आपणा गुण ना कोए वखांयदा, नेत्र नैण सर्ब शर्मान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंगे साचा वर, आदि जुगादी तेरी आण। विष्नूं मंगया घर अपारा, पुरख अबिनाशी दया कमांयदा। मेरा नाम तेरा जैकारा, विष्नूं तेरी चोली आप हंढांयदा। मेरा शब्द तेरा आधारा, तेरा आधार मोहे रखांयदा। मेरा भण्डार तेरा वरतारा, तेरी वस्त तेरी झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा पड़दा आपे लांहयदा। पुरख अबिनाशी पड़दा लाह, विष्न आप समझाईआ। विष्नूं तेरा बणां मलाह, मेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। तेरे अंदर आपणी वस्त टिका, आपणी वण्डण लवां वण्डाईआ। कँवल नैण कँवल आप उगा, कँवल कँवल विच समाईआ। कँवल बणया आप शहनशाह, पत्त डाल्ही ना कोए वखाईआ। आपणा मुख आप खुल्हा, आपे वेखणहारा वेखे आपणी थाँईंआ। आपणी अंस आप बणा, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न एका राह दसाईआ। साचा मार्ग हरि दरसाया, विश्व विष्नूं कर प्यार। एका आपणा भेव खुल्हाया, आप आपणी किरपा धार। तेरी साची सेव लगाया, सेवक कर अपर अपार। तेरा लेखा आपणे हथ्थ रखाया, दूसर कोए ना लिखणेहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर सच्ची सरकार। विष्नूं दर दरबार खड़, आपणी अग्गे झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी पकड़ाउणा लड़, छुट्ट कदे ना जाईआ। आदि जुगादि चुकाउणा डर, निरभउ आपणा भय वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर, शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। वर दीआ जीआ हरि भगवाना, दयानिध दया कमाईआ। अमृत पीआ कर कर हीआ होया नौजवाना, बल आपणा आप वखाईआ। बीज बीआ मिल्या पीआ श्री भगवाना, सिर सिर आपणा रिज़क सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दए चढ़ाईआ। विष्नूं चढ़या रंग चलूल, सच ललारी आप चढ़ांयदा। आदि जुगादि ना जाए भूल, अभुल्ल आपणी खेल खिलांयदा। आप चुकाए आपणा मूल, लहिणा होर ना कोए जणांयदा। साहिब सच्चा कन्त कन्तूहल घर साचा आप सुहांयदा। आपे नाभी आपे फूल, आपे ब्रह्म रूप प्रगटांयदा। आपे लाए आपणी धूल, आपे मस्तक वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त इक्क वखांयदा।

साची वस्त हरि नरायण, आपणी आप बुझाईआ। विष्नूं वेखे आपणे नैण, कँवल नैण नैण खुल्हाईआ। पीआ प्रीतम साक सैण, सज्जण सच्चा इक्क अख्वाईआ। मंगे दर साचा घर नेत्र पावे वैण, नेत्र नैणां धार बंधाईआ। आप चुकाउणा मेरा लहिण देण, जुग जुग तेरी सेव कमाईआ। हउँ मन्नां सदा तेरा कहिण, तेरा हुक्म मेरी रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा अन्तिम वर, कवण खेल रिहा खलाईआ। हरि आपणी खेल जणांयदा, विष्नूं खोल्ह किवाड़। ब्रह्मा तेरी धार बंधांयदा, तेरे अंदर वाड़। विष्नूं आपणा अंग रंगांयदा, शंकर करे आप प्यार। धूंआँधार आप समांयदा, सुन्न अगम्मी आप उज्यार। तख्त ताज आप सुहांयदा, आपे बणे सच्चा सिक्दार। हथ्थ त्रिसूल आप उठांयदा, करनी करे आप विचार। तिन्नां मेला मेल मिलांयदा, दर वखाए चरन दुआर। मस्तक टिक्का एका लांयदा, धूढ़ी धूढ़ करे श्ंगार। साचा सिक्का आप चलांयदा, भाणा वरते हरि करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं देवे साचा वर, ब्रह्मा फड़े एका लड़, शंकर पौड़े जाए चढ़ आपणा पौड़ा आप वखांयदा। साचा पौड़ा, हरि बलवान, आपणे हथ्थ रखाईआ। ना कोई ज़िमी ना अस्मान, धरत धवल ना कोए वड्याईआ। खेले खेल दो जहान, त्रिलोकी रचन ना कोए रचाईआ। चौदां लोक ना कोए मकान, हट्टो हट्ट ना कोए विकाईआ। पुरख अबिनाशी मेहरवान, आपणी दया आप कमाईआ। विष्न वखाया इक्क निशान, सच दुआरे रिहा झुलाईआ। ब्रह्मा वेखे मार ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाईआ। शंकर मंगे मंगणहारा दान, दर आपणी अल्फ़ी आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां देवे एका वर, एका रूप रिहा दरसाईआ। त्रै समझाए आप प्रभ, त्रै त्रै आपणा रूप वटांयदा। आपणा रूप आपे लभ्भ, आपे वेख वखांयदा। आपणा अमृत आपणी नभ, आपणे कँवल चुआंयदा। आपणा रस आपणी मदि, आपणा सरवर आप रखांयदा। आपे करे आपणी पार हद्द, आप आपणा वेस वटांयदा। आप उपजाए आपणी यद्द, यद्द आपणी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा विष्न शिव घाड़न घड़, आपणे लड़ आप बंधांयदा। घाड़न घड़या हरि अपारा, ब्रह्मा विष्न शिव उपजाईआ। अंदर रक्ख निरगुण धारा, आपणी बूझ बुझाईआ। शब्दी हुक्म वरते वरतारा, हुक्म हाकम इक्क सुणाईआ। मार्ग पन्थ वखाए आप निरँकारा, आपणे मार्ग आपे लाईआ। विष्नूं होए सेवादारा, घर घर साची सेव कमाईआ। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म पसारा, पारब्रह्म प्रभ वण्ड वण्डाईआ। शंकर तेरी साची धारा, हरि साचे आप बंधाईआ। जो उपजे सो पार किनारा, जो घड़या भन्न वखाईआ। तिन्नां विचोला बणे निरँकारा, आप आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त रिहा समझाईआ। एका एक हरि समझाया, इक्क इक्क नाल जोड़ जुड़ांयदा। एका

८६४ ०६

इक्क इक्क रघुराया, इक्क एका वेख वखांयदा। एका इक्क सहिज सुखदाया, एक एका मेल मिलांयदा। एका गीत एका गाया, शब्द साचा नाउँ धरांयदा। विष्नूं तेरे अंग लगाया, ब्रह्मा आपणा बंध वखांयदा। शंकर आपणे कंठ सुहाया, कंठ माला आप लटकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सेवा इक्क वखांयदा। साची सेव कमावणी, त्रै त्रै लेखा हरि समझाया। पुरख अबिनाशी पूरी करे भावणी, त्रैगुण मेला मेल मिलाया। देवे धुरदरगाही साची ज़ामनी, जुग जुग आपणा वेस वटाया। साचा नगर खेड़ा ग्रामनी, हरि मन्दिर दए सुहाया। सांतक राजस वेखे तमो तामनी, तामस आपणी धार बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे खड़, आप आपणा हुक्म सुणाया। सुणया हुक्म धुर फ़रमान, ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकांयदा। तूं दाता श्री भगवान, तेरा भेव कोए ना पांयदा। तूं तख्त निवासी शाह सुल्तान, हउँ चाकर सेव कमांयदा। आदि जुगादी तेरी रहे आण, सीस अग्गे ना कोए उठांयदा। हउँ सखीआं तूं साचा काहन, तेरी मंडल तेरी रास तेरी समग्री इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण दुआरा मेल कन्त भतारा, जगत विछोड़ा पन्ध मुकांयदा। कवण वेला मुक्के पन्ध, ब्रह्मा विष्न शिव रहे कुरलाया। तेरा भेव ना पावण सूरज चन्न, मंडल मंडप तेरे हुक्म रिहा फिराया। कवण गाए सुहागी छन्द, तार सितार ना कोए हलाया। कवण रूप खुशी करे बन्द बन्द, बन्दी छोड़ बेपरवाहीआ। कवण रूप होए बख्शंद, बख्शणहार तूं अख्वाया। कवण रूप देवे दंड, तेरा दंड कोई सहि ना सके राया। कवण रूप वेखे भेख पखण्ड, तेरा भेख ना किसे जणाया। कवण रूप वेखे नार दुहागण रंड, कवण रूप साचा कन्त मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर अग्गे सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी दया कमाए, दीनां नाथ आप अख्वांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव तेरी सेवा लाए, त्रैगुण तेरी झोली पांयदा। लक्ख चुरासी भाण्डा आप घड़ाए, पंज तत्त मेल मिलांयदा। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश खेल खलाए, मन मति बुध आप धरांयदा। घट घट अंदर डेरा लाए, सिँघासण आसण लांयदा। दीवा बाती जोत जगाए, जोत निरँजण डगमगांयदा। धुन अनादि अनहद शब्द वजाए, सुर ताल ना कोए रखांयदा। आपे बह बह मंगल गाए, बोध अगाधा आप सुणांयदा। साची वण्डण वण्ड वण्डाए, आपणा शब्द आप अल्हांयदा। चारे वेदां लए लिखाए, चारे जुग खेल करांयदा। निरगुण सरगुण रूप प्रगटाए, सरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। भेव अभेदा भेव खुल्हाए, काया चोला आप बदलांयदा। गुर पीर साध सन्त आप मेल मिलाए, गुरमुख गुरसिख साचे मेल मिलांयदा। जुग चौकड़ी जुग जुग खेल खिलाए, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणा बन्धन पांयदा। चारे बाणी आप अल्हाए, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गांयदा।

८६४ ०६

चारे वरन आप बणाए शास्त्र सिमरत वेद पुराण आप लिखांयदा। आपणा रूप आप प्रगटाए, कोटन कोटि वेस धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सच उपदेश इक्क सुणांयदा। सच उपदेश सुणना कर ध्यान, भुल्ल रहे ना राईआ। पुरख अबिनाशी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। प्रगट होवे विच जहान, लोकमात करे रुशनाईआ। जुगा जुगन्तर देवे दान, आपणी भिच्छया आप वरताईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग खेल महान, ब्रह्मे विष्न शिव तेरी सेव लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वल छल आपणी धार चलाईआ। अछल अछल हरि अछेदा, वल छल धारी खेल करांयदा। भेव ना पायण चारे वेदा, ब्रह्मा लिख लिख मुख सालांहयदा। अन्त ना जाणे रसना जिह्वा, बत्ती दन्द ना कोए गांयदा। भेव ना पाए जगत कतेबा, कादर कुदरत विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आपणा वक्त आपणे हथ्थ रखांयदा। वेला वक्त वार थित, हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जुग जन भगतां करे साचा हित, नित नवित जोत प्रगटाईआ। आपे मात आपे पित, बाल अञ्याणे गोद उठाईआ। अमृत आत्म देवे सित, काया कंचन गढ़ सुहाईआ। मन मनूआं मन लए जित, मन की मनसा दए मिटाईआ। इक्क वखाए धाम अनडिठ, छप्पर छन्न ना कोए बणाईआ। आपणी रक्खे साया हेठ, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। जुग जुग भन्ने कौड़े रेठ, रीठा कौड़ा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। लेखा हरि समझाया, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग कर विचार। ब्रह्मे विष्न शिव एह वखाया, पुरख अबिनाशी खेल अपार। घट घट अंदर विष्नूं तेरा डेरा लाया, ब्रह्म मेला कन्त भतार। शंकर आपणा मुख छुपाया, वसणहारा धूंआँधार। सतिजुग त्रेता द्वापर जुग जुग देवे पन्ध मुकाया, जुगा जुगन्तर साची कार। लग्गी बसन्तर दए बुझाया, अमृत बख्शे ठंडी ठार। सृष्ट सबाई वेख वखाया, लक्ख चुरासी पावे सार। सुर असुर आप तराया, करे कराए आपणी कार। गुर सतिगुर नाउँ आप धराया, पुरख अबिनाशी खेल अपार। धुर दा लेखा दए समझाया, कलिजुग आए अन्तिम वार। लक्ख चुरासी फोल फोलाया, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी करे ख्वार। गुरमुख साचे लए जगाया, बख्शे साचा चरन प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव तेरा कर्ज़ा दए उतार। त्रै त्रै तेरा कर्ज़ा लौहणा, त्रैगुण मात रहिण ना पाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, चौथे जुग दए दुहाईआ। निरगुण निरगुण जोती जोत जगाउणा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। निहकलंकी जामा पाउणा, मात पित ना कोई भैण भाईआ। सज्जण साक सैण ना कोए अख्वाउणा, जगत बन्धन ना कोए रखाईआ। पंज तत्त ना कोए उपजाउणा, रक्त बूंद ना मेल मिलाईआ। मन मति बुध ना कोए धराउणा, नौ दुआर ना खोज खोजाईआ। एका

८६५ ०६

निरगुण जोत ना कोई वरन ना कोई गोत आपणा रूप आप प्रगटाउणा, प्रगट होवे सच्चा शहनशाहीआ। गोबिन्द गुर शब्द उपजाउणा, गुर गोबिन्द मरे ना जाईआ। विष्नूं तेरा सीस झुकाउणा, आपणा चरन कँवल वखाईआ। ब्रह्मे तेरा पन्ध मुकाउणा, तेरी जोत जोत विच टिकाईआ। आपणी जोत फेर प्रगटाउणा, गुरमुख देवे माण वड्याईआ। शंकर तेरा बाशक तशका गलों लौहणा, हथ्थ तिसूल ना कोए रखाईआ। अन्तिम आपणे पेटे पाउणा, तेरा पेट ना भरया लक्ख चुरासी खा खा ख़लक खुदाईआ। तेरे दर साचा बाला आप बहाउणा, निरगुण निरगुण रूप लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। निरगुण अक्खर जणाया, निष्अक्खर आप उपांयदा। विष्नूं अक्खर इक्क पढ़ाया, सोइम रूप नज़री आंयदा। ब्रह्मा पारब्रह्म वेख वखाया, बेअन्त बेअन्त बेअन्त रसना गांयदा। शंकर आपणा बल धराया, बलधारी आपणा हुक्म सुणांयदा। तिन्नां अन्तिम वेख वखाया, लोकमात वेस वटांयदा। जोती नूर करे रुशनाया, दीपक दीआ आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा लेखा पूर करांयदा। हरि लेखा पूर करावणा, भुल्ल रहे ना राईआ। ब्रह्मा विष्न शिव आपणे विच मिलावणा, त्रैगुण माया आपणा तत्त वखाईआ। एका जोती लम्बू लावणा, सृष्ट सबाई एका हवन वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि नरायण आप अख्वाईआ। नर हरि आप अख्वाया, सतिगुर दाता दीनां नाथ। आपणा मन्दिर आप सुहाया, आपे गाए आपणी गाथ। दूसर इष्ट ना कोए मनाया, ना कोई पूजा ना कोई पाठ। सोहँ मन्त्र इक्क दृढ़ाया, आप उतारे आपणे घाट। हँ ब्रह्म पारब्रह्म विच टिकाया, कोई साड़े ना अग्नी काठ। मढ़ी गोर ना किसे दबाया, ना कोई सुट्टे डूँघे खात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण पुच्छणहारा वात। निरगुण वक्त पछाणया, कल कल्की लै अवतार। सृष्ट सबाई गाए गाणया, दिस ना आए हरि निरँकार। जगत मधाणा पाणी छाणया, सीर दिसे ना विच संसार। कोए चले ना हरि हरि भाणया, मूर्ख मूढ़ होए गंवार। तख्तों लाहे राजे राणयां दर दर मंगण फिरन भिखार। गुरमुख विरला आप पछाणया, मेल मिलाए विच संसार। मेल मिलावा साचे हाणीआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक लए अवतार। निहकलंक हरि अवतारा, दरगाह साची आप सुहांयदा। सचखण्ड निवासी सच घर बारा, सचखण्ड साचा आप वसांयदा। थिर घर वासी खोल्ह किवाड़ा, घर मन्दिर वेख वखांयदा। अबिनाशी करता हो उज्यारा, लोकमात जोत जगांयदा। सृष्ट सबाई करे ख़बरदारा, जीव जंत साध सन्त आप उठांयदा। करे खेल अगम्म अपारा, कलिजुग आपणी कल वरतांयदा। चारों कुंट

८६६ ०६

दए ललकारा, शब्द हुलारा इक्क लगांयदा। दो जहानां सच जैकारा, ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीसा आप सुणांयदा। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे ख़बरदारा, सोया कोए रहिण ना पांयदा। कलिजुग कल वरते कल्की अवतारा, काल दयाल आपणा रूप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणी खेल खिलांयदा। नर हरि खेल खलाया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जोती जामा भेख वटाया, शब्द सुणाए साची वार। बोध अगाधा आप अख्वाया, विद्या पढ़े ना कोए संसार। चौदां विद्या चरनां हेठ दबाया, पुरख अबिनाशी खेल न्यार। गुरमुख साचे लए उठाया, उठया जोद्धा सूरबीर बलकार। निरगुण सरगुण उप्पर तुठया, त्रैगुण माया कट्ट जंजाल। पंच विकारा फड़ फड़ कुठया, लुटया जाए ना सच्चा धन माल। गुरमुख विरला सिखे साची सिख्या, काया मन्दिर वेखे सच्ची धर्मसाल। सतिगुर बैठा अंदर लुकया, ना शाह ना दिसे कंगाल। आदि जुगादि एका शब्द बुक्कया, उप्पर पहने बुरका खाल। कलिजुग वेला अन्तिम ढुक्कया, आपणा जल्वा दए वखाल। जीवां जंतां भाग निखुटया, साची वस्त ना सके संभाल। कलिजुग दिन दिहाढ़े रिहा पुट्टया, फल रहिण ना देवे किसे डाल। जगत विद्या बूटा पुट्टया, गुरमुख विरले घालण रहे घाल। सतिगुर दुआरे लाहा एका लुट्टया, नाता तुटा जगत जंजाल। अमृत पीता एका घुट्टया, सति पुरख निरँजण दए प्याल। आवण जावण नाता छुट्टया, राए धर्म ना करे बेहाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए भाल। गुरसिख साचा भालया गुर गोबिन्द कर प्यार। साची नगरी आप बहा ल्या, सम्बल देस कर उज्यार। हरि मन्दिर आप सुहालया, निरगुण जोत कर उज्यार। बोध अगाध शब्द सुणा ल्या, लिखे पढ़े ना विच संसार। साचे पौड़े आप चढ़ा ल्या, लेखा जाणे पार किनार। ब्रह्मण गौड़े आप उठा ल्या, पूत सपूता कर त्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख लगाए आपणे लड़, लक्ख चुरासी विच्चों फड़, किला तोड़ हँकारी गढ़, बजर कपाट ना कोए रखा ल्या। बजर कपाट तुड़ाया, कर किरपा सतिगुर बलवान। रातीं सुत्तयां दरस दिखाया, फड़ सच्चा हथ्थ निशान। सचखण्ड दुआरे आप झुलाया, अन्तिम वेखे ज़िमीं अस्मान। साधा सन्तां उच्ची कूक कूक सुणाया, चारे जुग करन गान। नानक नाम इक्क अलाया, मन्त्र सति कर प्रधान। गोबिन्द पुरख इक्क मनाया, पुरख अकाल श्री भगवान। साचा सुत आप अख्वाया, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। अन्तिम लेखा गया समझाया, नाता छुटा विच जहान। सम्बल नगरी धाम वखाया, धाम अवल्लड़ा बेपहचान। रविदास चुमारा लेख लिखाया, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर मकान। गणपति गणेश ना कोए मनाया, इष्ट देव ना कोए वखान। निरगुण निराकार निरवैर एका नज़री आया,

मूर्त अकाल चतर सुजान। चित वित ठगौरी कोए ना पाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन देवे साचा माण। माण निमाणयां आप हरि, जुग जुग सेव कमांयदा। निरगुण सरगुण रूप धर, धरनी धरत धवल सुहांयदा। हँकारीआं तोड़े हँकारी गढ़, दूतां दुष्टां आप मिटांयदा। जन भगतां वखाए साचा दर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा आप खुल्हांयदा। आप नुहाए साचे सर, सर सरोवर आपणा ताल भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जो घड़या सो भन्न वखांयदा। जो घड़या सो भन्नणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। लक्ख चुरासी देवे डनणा, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड ना कोए विचार। गुरमुख विरला जनणी जनणा, जिस मेला हरि करतार। अन्तिम बेड़ा आपणा बन्न्हणा, भव सागर डुब्बे ना विच मँझधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भगवन्त सन्त कन्त आप वसाए सच घर सच सच्चे दरबार।

रसना कहिणा राम राम, राम राम नज़र ना आईआ। रसना कहिणा जाम जाम, जाम मदि ना कोए प्याईआ। रसना कहिणा शाम शाम, शाम बंसरी ना कोए वजाईआ। रसना कहिणा भान भान, भान प्रकाश ना कोए वखाईआ। रसना कहिणा गान गान, गा गीत ना कोए सुणाईआ। रसना कहिणा दान दान, जीअ दान ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कबीर करी इक्क पढ़ाईआ। कबीर किया जीआ दान, जीअ जगत रहिण ना पाया। कबीर हीआ किया गाया राम, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। कबीर नगर खेड़ा वसाया साढे तिन्न हत्थ ग्राम, छप्पर छन्न ना कोए छुहाया। कबीर भेख रखाया माटी चाम, माटी अंदर राम आपणा बन्द कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राम आपे दए वखाया। आपे कबीर आपे रामा, आपे रामा नंद गोसाँईआ। आपे पहरे आपणा जामा, आपे चोला पंज तत्त हंढाईआ। आपे रैण अन्धेरी होए शामा, आपे प्रकाश प्रकाश वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रसना राम दए समझाईआ। रसना गाए राम जगत, गा गा थक्की सर्ब लोकाईआ। राम गाए एका भगत, बत्ती दन्द ना देण सालाहीआ। अठ्ठे पहर ना कोई वेला ना कोई वक्त, संझ सवेर ना कोए बणाईआ। जगत औकड़ ना सके कोई हटक, जो कबीरा राम रिहा गाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी मन दे फट्टे उत्ते रही लटक, राम नाम डोरी गल कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कबीरा एका राम समझाईआ। कबीर गाया राम

अवल्लड़ा, रूप रेख ना कोए जणांयदा। धाम वसाया इक्क अवल्लड़ा, दर दरवाज़ा ना कोए खुल्हांयदा। आपणे राम अंदर आपे रलड़ा, कबीर राम राम कबीर भेव कोए ना पांयदा। लक्ख चुरासी मन्दिर मस्जिद कर कर जाए हलड़ा, चार दीवारी अंदर राम हथ्थ किसे ना आंयदा। उच्ची कूकण गल पायण पलड़ा, मथ्थे तिलक सर्ब वखांयदा। राम चरन शरन कोए ना रलड़ा, चरन कँवल कँवल चरन ध्यान ना कोए रखांयदा। कबीर एका राम फड़्या पल्लड़ा, लोकाई कहिण कबीर शर्मांयदा। कबीर रसना ना सके कह, जो राम रामा पाया। एका मन्दिर बैठा रहे, घर एका बंक सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कबीर का राम कहिण विच ना आया। कबीर राम किसे ना जाणया, रविआ अन्तर मीत। कबीर एका राम पछाणया, ना ठंडा ना सीत। कबीर एका रंग माणया, आदि जुगादी गाए एका गीत। आप सुणाए आपणी अकथ कहाणीआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे वस्त अनडीठ। लोगो राम पछाणो, कबीर कूके दए दुहाईआ। आपणे अंदर आपणा राम जाणो, बाहर लभ्भे ना किसे थाँईआ। एका सतिगुर साचा चरन कँवल ध्यानो, धरत धवल दए वड्याईआ। गुर का शब्द मिले बबाणो, साचे राम लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कबीर दित्ता एका वर, एका राम राजा राम आप दरसाईआ।

❋ २ भाद्रों २०१७ बिक्रमी नरैण सिँघ दे घर नजाम पुरा जिला अमृतसर ❋

सो पुरख निरँजण शाहो शाबाशा, शहनशाह वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण खेल तमाशा, पुरख अकाल आप कराईआ। एकँकारा आदि जुगादी पाए रासा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। आदि निरँजण जोती नूर नूर प्रकाशा, परम पुरख सिफ्त सालाहीआ। श्री भगवान घट घट वासा, जूनी रहित नज़र ना आईआ। अबिनाशी करता पृथ्मी आकाशा, आपणी रचना आप रचाईआ। पारब्रह्म प्रभ दासी दासा, जुगा जुगन्तर सेव कमाईआ। सचखण्ड दुआरा नर हरि निरँकारा करे निवासा, सच सिँघासण आसण लाईआ। थिर घर साचा खोल्ह किवाड़ा, आपणी धार विच टिकाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त ताज इक्क वखाईआ। महल्ल अटल उच्च मुनारा, बेऐब परवरदिगार आप बणाईआ। ना कोई दिसे चार दीवारा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। रवि ससि ना कोए सितारा, मंडल मंडप ना कोए रुशनाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए पसारा, त्रैगुण रूप ना कोए वटाईआ। पंज तत्त ना खेल न्यारा, सरगुण रंग ना कोए चढ़ाईआ। नौं सत्त ना कोए हुलारा, रत्ती रत्त ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, करे कराए करनेहारा,

करता पुरख आप अख्वाईआ। करता पुरख साहिब सुल्तान, दर घर साचा आप सुहांयदा। सो पुरख निरँजण वड मेहरवान, आपणी कल आप वरतांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल महान, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। एकँकारा दानी दान, दर्द दुःख भय भंजन नाउँ रखांयदा। आदि निरँजण नूर महान, जोत उजाला डगमगांयदा। अबिनाशी करता नौंजवान, बिरध बाल ना कोए वखांयदा। श्री भगवान खेले खेल दो जहान, आवण जावण आपणी रचन रचांयदा। पारब्रह्म वखाए इक्क निशान, सति सतिवादी आप उठांयदा। सचखण्ड दुआरा सच मकान, निरभउ साचा धाम सुहांयदा। ना कोई राग ना कोई गान, धुन नाद ना कोए वजांयदा। ना कोई सीता ना कोई राम, ना कोई बंसरी काहन सुणांयदा। ना कोई नगर ना ग्राम, ना कोई खेड़ा गढ़ वखांयदा। ना कोई माटी ना कोई चाम, भर प्याला जाम ना कोए प्यांअदा। ना कोई तीर ना कोई बाण, हथ्थ कमान ना कोए रखांयदा। ना कोई हुक्म ना फ़रमान, निउँ निउँ सीस ना कोए झुकांयदा। पुरख अबिनाशी खेल महान, सचखण्ड दुआरे आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, आपणी कल आप वरतांयदा। वरते कल श्री भगवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। तख्त निवासी शाह सुल्तान, सच सिँघासण आसण लाईआ। एका हुक्म इक्क फ़रमान, धुर दीबाण आप जणाईआ। एका दाता एका दान, एका झोली रिहा भराईआ। इक्क भिखारी इक्क दरबान, एका सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खेल न्यारा, करे कराए एकँकारा, करनी करता आप करांयदा। करनी करता करनेहारा, थिर घर साचा आप सुहांयदा। निर्मल दीआ कर उज्यारा, बाती जोती इक्क वखांयदा। थान थनंतर वेखे आप घर बारा, बन्द किवाड़ा आप खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। समरथ पुरख खेल करे कराए थाउँ थाँ, दर घर साचे सोभा पाईआ। अबिनाशी करता नाउँ धरा, आदि जुगादि वेस वटाईआ। श्री भगवान करे कराए सच न्यां, अदल अदालत इक्क वखाईआ। आदि निरँजण पकड़े बांह, अभुल्ल अभुल्ल अभुल्ल रूप रंग ना कोए वखाईआ। एकँकारा दए सलाह, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। हरि पुरख निरँजण वसणहारा साचे खेड़े इक्क गरा, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। सो पुरख निरँजण वड मेहरवान, आदि अन्त इक्क रघुराईआ। इक्क वखाए सच निशान, अगम्म अगम्मड़ा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, निरगुण धारा आप चलाईआ। निरगुण धारा हरि भगवान, आपणी आप चलांयदा। दूसर होर ना कोए निशान, सगला संग ना कोए धरांयदा। करे कराए खेल महान,

महिमा अगणत ना कोए गणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया पाए भिच्छया, आपणा लेखा आप लिखांयदा। लेखा लिखणहार गोपाल, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड दुआर वसे सच्ची धर्मसाल, दूसर दर ना कोए रखाईआ। अनाद अनादी वज्जे ताल, ताल तलवाड़ा इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आपे कर, आपे वेखे बेपरवाहीआ। अलक्ख अगोचर खेल अपारा, अगम्म अगम्मड़ा आप करांयदा। निरगुण नूर नूर उज्यारा, आदि जुगादी डगमगांयदा। एका वसे धाम न्यारा, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। थिर घर साचे पावे सारा, आप आपणा रंग रंगांयदा। सति सरूपी ठांडा ठारा, तत्व तत्त ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जुग जुग वेस हरि अवल्ला, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। एकँकारा इक्क इकल्ला, अकल कल आप अख्वाईआ। आपे वसे सच महल्ला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। आपणी जोत आपे रल्ला, मात पित ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप वरताईआ। अकल कल धारा एकँकारा, आदि जुगादि समाया। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़ा, निरगुण निरवैर कर पसारा, अचल्ल मूर्त वेस वटाया। आपणी करनी करे कराए करनेहारा, करता पुरख आप अख्वाया। वेस अवल्लड़ा सिरजणहारा, सति पुरख निरँजण आप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आपे खोल्ह, आपणे मन्दिर आपे बोल, आपणा नाम आप अल्हांयदा। सचखण्ड दुआरा खोल्हया, कर किरपा आप निरँकार। निरगुण अंदर वड़ वड़ बोल्हिआ, दिस ना आए अगम्म अपार। ना कोई तन ना कोई चोलया, ना कोई तत्व तत्त आकार। आपणी शक्ती आपे मौलया, आपे पावे आपणी सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे करे सच पसार। सच पसारा हरि करतारा, आपणा आप करांयदा। आपे अंदर आपे बाहरा, गुप्त ज़ाहरा वेस वटांयदा। आपे नारी कन्त भतारा, आपे साची सेज हंढांयदा। आपे पूत सपूता सुत दुलारा, आपे आपणी गोद सुहांयदा। आपे शब्द नाद धुन जैकारा, अनबोलत आपणा रूप दरसांयदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, आप आपणा भाणा आपणे विच टिकांयदा। आपे राज राजाण बण सिक्दारा, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। आपे आपणा कर पसारा, आपणी इच्छया आपणी भिच्छया आपणी झोली आपे पांयदा। आपे वणज आप वणजारा, आपे आपणा हट खुल्हांयदा। आपे निरगुण नूर नूर नूर कर ऊजयारा, आप आपणा संग निभांयदा। आपे विष्नूं आपे कँवल कँवल उज्यारा, आपे ब्रह्म ब्रह्म समांयदा। आपे शंकर पावे सारा, साची आपणी धार बंधांयदा। आपे तिन्नां वसे बाहरा, भेव कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप वरतांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर

८७१ ०६

त्यार, हरि साचा रचन रचांयदा। एका जोत नूर उज्यार, घर मन्दिर आप टिकांयदा। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, घर साचे आप करांयदा। अलक्ख अलक्खणा बोल जैकार, आपणा नाअरा आपे लांयदा। ब्रह्म ब्रह्मादी खेल अपार, आदि जुगादी वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धार रखांयदा। साची धार हरि नरायण, आपणी आप चलाईआ। ना कोई महिमा रसना जिह्वा कहिण, साचा दर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे मन्दिर आपे वड़, साचा मन्दिर आप सुहाईआ। साचा मन्दिर सोभावन्त, पुरख अबिनाशी आप सुहाया। नर हरि नरायण हरि हरि कन्त, घर सुहञ्जणा सेज हंढाया। निरगुण नूर रूप बसन्त, लाल गुलाला रंग चढ़ाया। आपणी महिमा जाणे आदि अन्त, मध आपणा वेस धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा विष्न शिव देवे वर, एका वस्त झोली पाईआ। एका वस्त सच्ची सरकार, दरगाह साची आप वरताईआ। त्रैगुण माया कर त्यार, त्रै त्रै लेखा दए समझाईआ। लक्ख चुरासी कर पसार, रक्त बूंद मेल अपार, दर दुआर आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल आपे कर, सरगुण साचा वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण धार हरि, आपणी आप चलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवे वर, वर दाता आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी भाण्डा घड़, घट घट आपणी जोत जगांयदा। डूँघी कंदर आपे वड़, आप आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ धरांयदा। जुग करता हरि करतार, करता पुरख खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, नौं दुआर वेख वखांयदा। घर विच घर कर त्यार, काया मन्दिर आप सुहांयदा। अमृत आत्म जल ठांडी ठार, सर सरोवर इक्क धरांयदा। निर्मल दीआ कर उज्यार, जोत निरँजण आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जाता आप जणांयदा। जोती जाता हरि मेहरवाना, जात पात ना कोए रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल महाना, ब्रह्म आपणी अंस उपजाईआ। ईश जीव इक्क तराना, ईशवर आपणा राग सुणाईआ। सच हदीस धुर फ़रमाना, एका अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मे ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म आप समझाईआ। ब्रह्मे हरि हरि जानणा, हरि साचा आप जणांयदा। हरि रंग एका मानणा, दूसर रंग ना कोए वखांयदा। देवणहारा साचा दानणा, दाता दानी वेस वटांयदा। दो जहाना देवे दानणा, अभिमान विच ना कोए जणांयदा। हथ्थ फड़ाए सच निशानणा, लोआं पुरीआं आप झुलांयदा। आपणा तत्त बन्ने गाना, ब्रह्म मति आप वखांयदा। लक्ख चुरासी कर प्रधाना, काया हट आप खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मे ब्रह्म मति इक्क वखांयदा। ब्रह्मे हरि समझाया, कर किरपा आप

निरँकार। तेरी सेवा सच लगाया, जुगा जुगन्तर खेल न्यार। घड़ भाण्डे आप बणाया, दिस ना आए सच ठठयार। आपणी वस्तू विच टिकाया, रूप जणाए निराकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका वस्त दए संभाल। साची वस्त साचे घर, हरि साचा आप वरतांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवे वर, तिन्नां एका मेल मिलांयदा। अनुभव रखाए आपणा डर, भय भयानक ना कोए जणांयदा। आपणी मूर्त आप घड़, अकाल आपणा वेस वटांयदा। त्रैगुण माया वेखे गढ़, आप आपणी कल धरांयदा। ना कोई चोटी ना कोई जड़, हथ्थ किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता बैठा रहे इक्क इकांता, कल धारी आप हो जांयदा। कलधारी कल खेलया, खेल अगम्म अपार। निरगुण सरगुण मिल्या मेलया, मेल मिलावा विच संसार। रूप वटाए गुरू गुर चेलया, गुर शब्द धुन जैकार। लेखा जाणे सज्जण सुहेलया, दरगाह साची वेख विचार। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेलया, लेखा लिखण ना वेद चार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी पावे सार। लक्ख चुरासी वेखणहारा, घट घट रिहा समाईआ। घर दीपक जोती कर उज्यारा, दिवस रैण रिहा डगमगाईआ। शब्द अनादि सुणाए सच्ची धुन्कारा, आत्म अन्तर आप वजाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठारा, सच प्याला जाम आप प्याईआ। मेटणहारा अन्ध अँध्यारा, सति प्रकाश इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे वण्ड इक्क वण्डाईआ। ब्रह्मे वण्ड आपणी वण्ड, हरि साचा सच दृढ़ांयदा। उत्भुज सेत्ज जेरज अंड, चारे खाणी तेरी झोली पांयदा। विष्नूं तेरा देश ब्रह्मण्ड, लोआं पुरीआं आप सुहांयदा। शंकर फड़ एका खण्ड, हथ्थ त्रिशूल उठांयदा। लक्ख चुरासी देणा डंन, जो घड़या सो भन्न वखांयदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी सुत्ता दे कर कंड, करवट कोए ना आप बदलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वण्डणहारा साची वण्ड, आपणा हिस्सा आप करांयदा। ब्रह्मा वण्ड वण्डा सुणया धुर फ़रमाणा, महांकाल हुक्म जणांयदा। काल होए होए चरन निमाणा, थिर घर वासी खेल खिलांयदा। तख्त निवासी शाह सुल्ताना, विष्नूं निउँ निउँ सीस झुकांयदा। ख़ाली झोली मंगे दाना, पुरख अबिनाशी एका वस्त झोली पांयदा। चरन कँवल बख्शे सच ध्याना, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। ब्रह्मा मेल श्री भगवाना, बिन थम्मां गगन रहांयदा। आपे जाणे आपणा भाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बल वखांयदा। विष्न ब्रह्मा दोए जोड़ वेखण नेता, नेतन नेत आप अख्वाईआ। एका माता एका पिता, गुर गोबिन्द रिहा मनाईआ। एका पुत एका हिता, एका सूत तन्द बंधाईआ। एका गुर एका पिता, एका बंक सुहाईआ। एका खेल करे नित नविता, जुग दाता बेपरवाहीआ। एका सतिगुर साचा डिठ्ठा, ना मरे ना जाईआ। एका मिठ्ठा करे कौड़ा

रीठा, अमृत फल खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए समझाईआ। जगत सुत पुत दुलारे, गुर गोबिन्द वेख वखांयदा। माता गुजरी ना कोए प्यारे, तन बन्धन ना कोए वखांयदा। सतिजुग बणया जीत जुझारे, त्रेता द्वापर फ़तेह डंका आप वजांयदा। कलिजुग ज़ोरावर बल आपणा आप विचारे, बाहू बल आप वखांयदा। आपे खण्डा खड़्ग तेज़ कटारे, तिक्खी धार आप वखांयदा। आपे आर आपे पारे, आपे आपणा वार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द सेवा साची सच वखांयदा। गोबिन्द गुर सुत दुलारा, पुरख अकाल उपाया। घर मन्दिर कर इक्क उज्यारा, दीपक आपणा आप जगाया। आप सुहाए सुहावणा ऊँच मुनारा, महल्ल अटल दए वड्याआ। चारे कुंट चार मुनारा, चार सुत दए वखाया। जीत जुझार फ़तेह जोरा, ज़ोर एका रंग रंगाया। कलिजुग आए अन्तिम वारा, अन्ध अन्धेर दए गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंज तत्त नाता ना कोए वखाया। पंज तत्त नाता कदे ना तुटया, जिस जन दया कमाया। गुरमुख लाल ना जाए कद्दे लुटया, तेज कटार ना कोए घाया। चार वरनां मेटे फुट्टया, लाल रंग इक्क रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, साचे लाल आप उपाया। साचे लाल उठ उठ सुत, हरि साचा आप उठाईआ। किरपा करी अबिनाशी अचुत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलिजुग संवारे तेरी रुत्त, रुत्ती रुत्त वेख वखाईआ। घर मन्दिर ना पाए कोए लुट्ट, ठग्ग चोर यार रहिण ना पाईआ। अमृत प्याए जाम घुट्ट, उतर कदे ना जाईआ। माता गुजरी सुफल कुक्ख, धन्न जणेदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, माता गुजरी इक्क समझाईआ। लक्ख चुरासी जीव अंञाण, ख़ाकी ख़ाक सर्ब छाणदा। साचा सीर भर प्याला, सुत दुलारे आपे प्याल दा। नाता तोड़े काल महांकाला, चारे सुत आपणी गोद बहाईआ। शस्त्र बस्त्र तीर कमान, ना किसे दूसर हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साचा शस्त्र हथ्थ फड़ाईआ। साचा शस्त्र हथ्थ तलवार, एका एक फड़ाईआ। कलिजुग अन्तिम करे पार किनार, दूतां दुष्टां दए मिटाईआ। जोती माता पाणी देवे आपणी वार, जगत जल ना मुख छुहाईआ। एका पिता इक्क प्यार, एका घर बैठे चाँईं चाँईआ। एका नाम इक्क आधार, एका रूप दए दरसाईआ। मात पित भाई भैण साक सैण ना कोए प्यार, ना कोए लाड लडाया। गोदी गोद ना कोए हुलार, कुक्खी कुक्ख ना कोए रखाया। पंज तत्त ना कोए धार, माणस मनुक्खी ना वेस वटाया। मन मति बुध ना कोए उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाया। चारे लाल लाल गुलाला, हरि हरि साचा रंग रंगाईआ। गुरसिखां उप्पर पाए दोशाला,

चार कन्नीआं रिहा फड़ाईआ। आपणी जपाए आपे माला, मन का मणका आप भवाईआ। एका दस्सया राह सुखाला, गुर चरन सरन साची सरनाईआ। जो जन झूझे विच मैदाना, मर जीवत मरे ना राईआ। एकँकारा दर साचा सूझे, नानक सतिगुर मिले शाह पातशाहीआ। भेव चुकाए एका दूजे, द्वैत दुःख रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रूप अनूप एका रूप दरसाईआ। नीहां हेठ रखाई ख़ाक, सतिगुर पूरे खेल खलाया। उप्पर चढ़या पाकी पाक, पतित पापी लए तराईआ। आप सुणाए भविख्त वाक, सृष्ट सबाई वेख वखाया। आपे चढ़े साचे राक, शब्द घोड़ा लै दौड़ाया। मेरा पूरा करे भविख्त वाक, कलिजुग अन्तिम साढे तिन्न हथ्थ सीआं लए सुहाया। अग्गे कोए ना दिसे आक, नौं खण्ड पृथ्मी लए झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच समग्री आपणे हथ्थ रखाया। सच समग्री धरनी धर, नीहां हेठ आप दबाईआ। पुरख अबिनाशी खेल कर, गोबिन्द मेला चाँई चाँईआ। आपणा गेड़ गेड़ हरि, गेड़ा गेड़े विच टिकाईआ। अन्तिम करे हक नबेड़, हक हकिकत वेख वखाईआ। बाल अञ्याणे छेड़ां गए छेड़, डूँग्घी कंदर आपणा आसण लाईआ। हेठां सुत्ते कलिजुग जड़ रहे उखेड़, गुर गोबिन्द एका बूटा पुटया काहीआ। ना कोई नगर ना कोई खेड़, शहर गराँ ना कोए दसाईआ। धरत मात दा खुल्हा करे वेहड़, नौं खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रीती आपणे हथ्थ रखाईआ। साची रीती हरि भगवान, जुग जुग आप चलांयदा। चारे सुत चारे जुग झुलदे रहे निशान, कलिजुग अन्तिम मेल मिलांयदा। सति सतिवादी सद मेहरवान, भुल्ल कदे ना जांयदा। सतिजुग प्रगटाए वाली दो जहान, चार वरनां एका घर बहांयदा। ऊँचा नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुलतानां पाए एका आण, एका हुक्म सुणांयदा। सिँघ सूरबीर होए बलवान, बल बावन रूप धरांयदा। घर घर वेखे सुरती काहन, सीता सुरती आप प्रनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर वेस अवल्ला करे कराए इक्क इकल्ला, आपणी कल धरांयदा। गोबिन्द सूर वड बलकार, आपणा खेल खलाया। गढ़ी चमकौर हो त्यार, साचे सुत लए लड़ाया। साचे सिखा कर प्यार, रण भूमी रंग रंगाया। खेले खेल सूरा सरबंग, हरि हरि भाणा वड वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव विच रखाया। आपणा भेव गुर गोबिन्द, आपणे विच रखाया। गुरमुखां मेट सगली चिन्द, सुत दुलारे भेट चढ़ाईआ। किरपा कर गुणी गहिन्द, गुर साचे माण दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भाणे दए वड्याईआ। गुरमुखां दित्ता निजानंद, निज आत्म वज्जी वधाईआ। जगत तजाया रसना गंद, आत्म रस इक्क वखाईआ। कलिजुग अन्तिम चाढ़े साचे चन्द, सूरज चन्न डगमगाईआ। गुर गोबिन्द खेल

कर, तेग बहादर दए वड्याईआ। नानक मेला साचे घर, अंगद अंग समाईआ। अमरदास अमर पद, एका घर वखाईआ। रामदास वजाया नद, गुर अर्जण शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सहेले एका घर बहाईआ। शब्द नाद धुन वज्जया, घर मन्दिर सोभावन्त। रामदास गुर सतिगुर साचा गुझिआ, काया चोली चाढ़े रंग बसन्त। जगत विकारा दर तों भज्जया, रसना जेहवा एका नाम मणीआ मंत। पुरख अबिनाशी पर्दा कज्जया, मेल मिलावा नारी कन्त। साची सेज बह बह सजया, रूप चढ़ाए श्री भगवन्त। निरगुण हवन कदे ना दझिआ, लेखा जाणे ना जीव जंत। ग़रीब निमाणयां पर्दा किसे ना कज्जया, सतिगुर पूरा होए सहाई आदि अन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे मणीआं मंत। एका शब्द सति धार, सतिगुर साचे विच टिकाईआ। अर्जन गाए आप निरँकार, नानक सितार हिलाईआ। चौथे पद उतरे पार, दूजा हुक्म ना कोई जणाईआ। बोध अगाधी शब्द जैकार, दिवस रैण आप सुणाईआ। सन्त भगत भगवन्त कर विचार, एका रंग रंगाईआ। चार वरनां दए सहार, एका नाम वड्याईआ। मनमुख जीव ना पायण सार, भरमे भुल्ली भरम लुकाईआ। कलिजुग अग्नी तपे ना कोई ठंडी ठार, चार कुंट नज़र कोई ना आईआ। सतिगुर पूरा हो त्यार, आपणी सेवा आप कमाईआ। उथले देग ना अग्नी सके साड़, तेग तलवार ना सीस कटाईआ। आपणे भाणे निभ सच्ची सरकार, आपणा शुकर रिहा मनाईआ । क्या कोई मेहणा देवे विच संसार, आपणी गति मित ना वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल करया अपार, निहकलंक जामा पाईआ। पंज तत्त ना कोई अकार, फड़ सके ना कोई शाहीआ। फट्टे फ़ाँसी ना देवे कोई हुलार, उच्चे पर्बत ना सके रुढ़ाईआ। डूँग्घी सुट्टे ना कोई गार, अग्नी अग्न ना कोई तपाईआ। निरगुण रूप कर करतार, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। गुरमुखां आपे पावे सार, महां पुरख महां मूर्ख वेख वखाईआ। देवत देवा सिर दए आधार, साधक सिद्ध लए तराईआ। आपे गोबिन्द माता गुजरी करे प्यार, आपे सुत दुलारे लए प्रनाईआ। लाड़ी मौत ना करे कोई श्रंगार, वेले अन्त मैहन्दी लाल ना कोई रंगाईआ। सृष्ट सबाई ना पावे कोई सार, पुरख अबिनाशी आपणा सगन आप मनाईआ। पाया कंगन हथ्थ करतार, रंगण रंग इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चारे लाल लए वर, आप आपणा दर सुहाईआ ।

✳ ३ भाद्रों २०१७ बिक्रमी केहर सिँघ दे घर रजी वाला ज़िला फिरोज़ पुर ✳

सो पुरख निरँजण खेल अपारा, आदिन अन्ता आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण करे विचारा, आपणी इच्छया आपणे

८७६
०६

विच टिकाईआ। एकँकारा पावे सारा, आपणा लेखा जाणे सहिज सुभाईआ। आदि निरँजण हो उज्यारा, आपणा पर्दा दए चुकाईआ। अबिनाशी करता खोल्ह किवाड़ा, हरि मन्दिर दए सुहाईआ। श्री भगवान ठांडा दरबारा, हरि घर साचा इक्क वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म प्रभ बैठ न्यारा, निरगुण आपणी कल वरताईआ। तख्त निवासी बण सिक्दारा, शाहो भूप आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आसण सिँघासण खेल न्यारा, पुरख अबिनाशन, आप कराईआ। सचखण्ड सुहाए असथल चुबारा, महल्ल अटल सच्चा शहनशाहीआ। दर दरबान बणे भिखारा, दर दरवेश अलक्ख निरँजण आपणी अलक्ख जगाईआ। अगम्म अगम्मड़ा भरे भण्डारा, अगम्मड़ी वस्त आप उपजाईआ। थिर घर साचे हो उज्यारा, करे खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साहिब सुल्तान इक्क अख्वाईआ। साहिब सुल्तान हरि करतारा, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। सचखण्ड सुहाए सच दुआरा, थिर घर साचे आप उपांयदा। हुक्मे हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाणा आप अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हांयदा। भेव अभेद खुल्हाया, सो पुरख निरँजण किरपा धार। आपणा रूप आप प्रगटाया, हरि पुरख निरँजण हो उज्यार। एकँकारा नाउँ धराया, निरगुण बन्ने साची धार। आदि निरँजण डगमगाया, रूप अनूपा शाह अस्वार। श्री भगवान संग रखाया, सगला संग अगम्म अपार। अबिनाशी करता वेख वखाया, वेखणहारा बेऐब परवरदिगार। पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाया, घर मेला कन्त भतार। सच सुहञ्जणी सेज सुहाया, दरगाह साची खोल्ह किवाड़। निरगुण नर नरायण हरि नर आपणा आसण लाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी कार। कार कराए हरि निरँकारा, निरगुण भेव कोए ना पांयदा। वेखे विगसे करे विचारा, कलधारी कल वरतांयदा। साचे मन्दिर खेल न्यारा, थिर घर वासी आप करांयदा। निर्मल दीआ कर उज्यारा, दीपक आपणा आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बल आप वखांयदा। आपणा बल आपे धर, आप आपणे विच समाईआ। आपणा भण्डारा आपे भर, आपे वेखे बेपरवाहीआ। आपे नारी आपे नर, नार कन्त आप हंढाईआ। हरि मन्दिर सुहाए साचा घर, सचखण्ड दुआर सच्ची वड्याईआ। आपे चोटी बैठा चढ़, दूर दुराडा साचा माहीआ। आपे निरगुण आपणा घाड़न घड़, निरगुण निरगुण विच टिकाईआ। आप फड़ाए आपणा लड़, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर लाए जड़, जुग करता खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि हरि महिमा अगणत गणी ना जाईआ। महिमा अगणत अगम्म अथाह, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, बेऐब आपणा नाउँ धरांयदा। जुगा जुगन्तर बणे मलाह, खेवट खेटा आपणा रूप वटांयदा। एका शब्द जणाए साचा नाँ, गुर मन्त्र इक्क

वखांयदा। एका वेखणहारा थाउँ थाँ, गगन मंडल फोल फोलांयदा। एका पकड़नहारा बांह, आप आपणी सेव कमांयदा। इक्क इकल्ला करे सच न्यां, दर घर साचे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर आपणी कल वरतांयदा। अलक्ख अगोचर हरि बेअन्त, लेखा लिख ना सके राईआ। सचखण्ड निवासी महिमा अगणत, वेद कतेब भेव ना पाईआ। लेखा जाणे जीव जंत, साध सन्त दए वड्याईआ। रस जणाए मणीआ मंत, रस आत्म इक्क भराईआ। पूरन जोत श्री भगवन्त, पारब्रह्म इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेव अभेदा अछल अछेदा वल छल धारी आपणी खेल आप कराईआ। खेल अवल्ला इक्क इकल्ला, एकँकारा आप करांयदा। सचखण्ड दुआर मल्लया सच महल्ला, ऊँच अटला आप सुहांयदा। आपणी जोती आपे रला, मात पित ना कोई बणांयदा। आपणा फड़या आपे पल्ला, आपणा संग आप निभांयदा। आपणा सिंघासण आपे मल्ला, शाह सुल्तान साचा चरन टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिंघासण पुरख अबिनाशण, आप आपणी धार वहांयदा। धार वहाए हरि करतारा, धरत धवल ना कोए वड्याईआ। जल बिम्ब ना कोए पसारा, पवण हवण ना कोए कराईआ। त्रैगुण माया ना कोए भण्डारा, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए वरताईआ। गुर पीर ना कोए अवतारा, साध सन्त ना कोए वखाईआ। लख चुरासी ना कोए पसारा, पंचम नाता ना कोए जुड़ाईआ। काम क्रोध लोभ मोह ना कोए हँकारा, आसा तृष्ना ना मेल मिलाईआ। नाद धुन शब्द ना कोए जैकारा, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। नार कन्त ना करे प्यारा, जगत सेज ना कोए विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, आप सुहाए हरि हरि कन्त, दर घर बैठा आसण लाईआ। दर सुहाया हरि करतार, करनी करता आप कमांयदा। जुगा जुगन्तर भेव न्यार, भेव अभेदा आप खुल्हांयदा। थिर घर साचा खोल्ह किवाड़, आपणी इच्छया विच टिकांयदा। सुन्न समाध करे पार, शब्द नाद इक्क वजांयदा। लोआं पुरीआं खण्ड ब्रह्मण्ड महल्ल उसार, आपणी रचना वेख वखांयदा। रवि ससि कर उज्यार, मंडल मंडप आप सहांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर प्यार, त्रै त्रै मेला आप मिलांयदा। एका वस्त अगम्म अपार, आपणी आप आप वरतांयदा। कागद कलम ना लिखणहार, लेखा लेख ना कोए वखांयदा। ब्रह्मा लिखे वेद चार, हरि का भेव ना कोए जणांयदा। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, नैण नैणा नीर बरसांयदा। विष्नूं करे विश्व पुकार, वास्तक रूप ना कोए दरसांयदा। शंकर खेल धुर दरबार, संसा रोग ना कोए उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर आप सुहांयदा। हरि मन्दिर हरि हरि उपाया, दूसर होर ना कोए बणाईआ। साचा दीपक

आप जगाया, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। गीत सुहागी एका गाया, शब्द नाद धुन सुणाईआ। कन्त सुहागी इक्क हंढाया, ना मरे ना जाईआ। प्रीत लागी ना कोई दए तुड़ाया, एका रंगण आप रंगाईआ। अंदर वड़ आप आपणा आसण लाया, सच महल्ला आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा वेख वखाईआ। सच दुआरा सचखण्ड, हरि साचा आप सुहांयदा। आप वण्डाए आपणी वण्ड, ब्रह्मण्ड आपणी रचन रचांयदा। आपे लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आपे खेल खिलांयदा। आपे गाए सुहागी छन्द, आपणा नाउँ आप धरांयदा। आपे दो जहानां मेटे पन्ध, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। आपे भरमां तोड़नहारा कंध, भाण्डा भरम भउ आप भनांयदा। आपे रसीआ समाए परमानंद, निजानंद आपणी धार वखांयदा। आपे दाता दानी होए बख्शंद, गहर गम्भीर आपणी दया आप करांयदा। आपे करनहारा खण्ड खण्ड, खड़ग खण्डा इक्क चमकांयदा। आपे नार दुहागण होए रंड, साचा कन्त आप हंढांयदा। आपे सुत्ता दे कर कंड, आपणी करवट आप बदलांयदा। लेखा जाणे सूरज चन्द, रवि ससि हुक्मी आप फिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा हरि दुआर, आपे वसे एकँकार, निरगुण निराकार आपणी कल आप वरतांयदा। कल वरताए हरि भगवाना, दिस किसे ना आंयदा। जोद्धा सूर बली बलवाना, बल आपणा आप धरांयदा। मन्दिर वेख सच मकाना, सच सिँघासण आप सुहांयदा। शाहो भूप राज राजाना, तख्त ताज आप हंढांयदा। निरगुण चढ़ाए सच निशाना, सति सतिवादी साचा रंग रंगांयदा। आपणा रक्खे आपे माणा, जोती जोत सरूप हरि आप अपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच समग्री साची रास, पुरख अबिनाशी रक्खे पास, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ांयदा। साची वस्त हरि मेहरवान, आपणे हथ्थ रखाईआ। शब्दी शब्द देवे दान, शब्दी शब्द वड वडियाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बख्शे इक्क ध्यान, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख ना कोए वखाईआ। एका नैण नैण महान, नैनण नैण दए खुलाईआ। एका गोपी एका काहन, एका रामा राम दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, सच्चखण्ड दुआरा साचा घर, एकँकारा वेखे खड़, निरगुण आपणा रूप आप प्रगटाईआ। निरगुण वेस अवल्लड़ा, रूप रेख रंग ना कोए जणांयदा। आदि जुगादी इक्क इकल्लड़ा, दरगाह साची सोभा पांयदा। सच सिँघासण एका मलड़ा, सीस आपणा ताज टिकांयदा। सच संदेश नर नरेश एका घल्लड़ा, हुक्मी हुक्म आप वरतांयदा। आपणे दीपक जोती आपे बलड़ा, आदि अन्त ना कोए बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, दर घर साचा आप सुहांयदा। दर घर साचा हरि सुहाया, साहिब सुल्तान सतिगुर वड्डी वड्याईआ। एका वस्त आप वरताया, ब्रह्मा विष्न शिव उठाईआ। त्रैगुण नाता जोड़

८७६
०६

जुड़ाया, त्रै त्रै लेखा जाणे शहनशाहीआ। एका एक दए समझाया, इक्क इकल्ला जल्वा नूर इलाहीआ। एका अल्फी गल हंढाया, रंग रंगे साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, घर साचा आप उपजाईआ। साचा घर उपजाया, आप आपणी किरपा धार। बाढी बणत ना कोए बणाया, ना कोई दिसे चार दीवार। दीपक दीवा ना कोए जगाया, तेल बाती ना कोए पसार। सूरज चन्न ना कोए चढ़ाया, मंडल मंडप ना कोए सहार। आपणी कल आप वरताया, निरगुण करे खेल अपार। रूप अनूप आप प्रगटाया, पुरख अबिनाशी हो त्यार। दर घर साचा आप सुहाया, सुहावणहारा बंक दुआर। जोत उजाला हरि गोपाला नजरी आया। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, एका वस्त करे वरतार। साची वस्त हरि वरताए, आपणी सेवा आप कमाईआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ाए, सो पुरख निरँजण सहिज सुखदाईआ। हरि पुरख निरँजण रिहा समझाए, भुल्ल रहे ना राईआ। एकँकारा उच्ची कूके कूक कूक सुणाए, आप आपणा राग अलाईआ। आदि निरँजण कर प्रकाश आपणा मन्दिर वेखण आए, आप अपणा पर्दा पाईआ। अबिनाशी करता दर घर बैठा सगन मनाए, घर घर विच वज्जे वधाईआ। श्री भगवान मिल मिल मंगल गाए, निरगुण दाता वड वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ निउँ निउँ सीस झुकाए, निवण सो अक्खर इक्क समझाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव हरि हरि दर्शन पाए, चरन कँवल, ध्यान लगाईआ। त्रैगुण माया झोली दए भराय, सांतक राजस तामस एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दुआरे आपे खड़, थिर घर साचा आप सुहाईआ। थिर घर साचा सच दुआरा, हरि साचा आप सुहांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव पावे सारा, तिन्नां मेला मेल मिलांयदा। एका बन्नृणहारा धारा, धुर दी बाण आपणे हथ्थ रखांयदा। एका हुक्म धुर फ़रमाणा, शब्द निरबाणा आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव भेव खुलाया, प्रभ साचे शब्द जणाईआ। तिन्ना सेवा इक्क वखाया, नेत्र नैण आप दरसाईआ। लुक लुक आपणा पर्दा लाहया, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। फड़ फड़ बाहों आप जगाया, आलस निन्दरा रहे ना राईआ। विष्नूं दाता आप बणाया, देवणहारा रिज़क सबाईआ। ब्रह्मे घाड़त घड़ वखाया, लक्ख चुरासी भाण्डे लए घड़ाईआ। शंकर तेरी सेवा इक्क वखाया, जो घड़या भन्न वखाईआ। तिन्नां मेला मेल मिलाया, डोरी बन्धन एका पाईआ। शब्द विचोला विच धराया, पुरख अबिनाशी खेल्ह खल्हाईआ। साचा ढोला एका गाया, सो पुरख निरँजण आपणी धुन आप जणाईआ। हँ रूप सर्ब दृष्टाया, लक्ख चुरासी जीव आत्म आपणी वण्ड वण्डाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म एका रूप बणे परम आत्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका अक्खर

खोल्ह अक्ख, आपणी कल आप वरतांयदा। निरगुण सरगुण कर प्रतक्ख, दोए धारा आप चलांयदा। सो पुरख निरँजण साहिब समरथ, हँ आपणा अंग कटांयदा। आपणी वस्त आपणे अंदर आपे घत्त, आपे बाहर कढांयदा। आपे वसणहारा घट घट, घर घर मन्दिर आप सुहांयदा। आपे खोल्हे साचा हट्ट, वणज वणजारा इक्क वखांयदा। आपे जोती नूर उजाला बले लट लट, अज्ञान अन्धेर आप चुकांयदा। आपे सोया आपणी साची सेजा खाट, आसण सिँघासण पुरख अबिनाशी आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव आप समझांयदा। त्रै त्रै भेव आप खुल्हाया, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। तिन्नां सेवा इक्क वखाया, त्रै लोकां बणत बणाईआ। शब्द सलोकी एका गाया, सोहँ आपणा निरगुण सरगुण रूप धराईआ। आदि आदि आपणी धार बंधाया, गुर पीर अवतार ना कोए वखाईआ। लक्ख चरासी रचन रचाया, घड़ भाण्डे वेखे थाउँ थाँईआ। मन मति बुध विच टिकाया, निरगुण निरगुण आपणा अंग कटाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आपणी अंस उपजाया, बंस सरबंसा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द एका धार, सो पुरख निरँजण कर उज्यार, हँ मेला सहिज सुभाईआ। हँ ब्रह्म जुड़या नाता, पुरख अबिनाशी आप जुड़ाया। करे खेल इक्क इकांता, दिस किसे ना आया। आपे गाए आपणी गाथा, आपणा मन्त्र नाम आप दृढ़ाया। आप चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही बेपरवाहया। आपे पूजा आपे पाठा, इष्ट देव आप मनाया। आपे जोत ललाटी होए ललाटा, आदि निरँजण डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव दित्ता एका वर, सोहँ साचा मन्त्र नाम दृढ़ाया। सोहँ मन्त्र त्रैगुण गा, त्रैगुण भिन नज़र ना आईआ। इक्क अतीता बैठा बेपरवाह, ठांडा सीता नज़र ना आईआ। पतित पुनीता वसे एका थाँ, दरगाह साची दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द आपणा आपणे अग्गे धर, आपे वेख वखाईआ। सोहँ शब्द कर पसारा, ब्रह्म पारब्रह्म उपजाया। लक्ख चुरासी कर पसारा, घट घट अंदर आसण लाया। नौं दुआरे खोल्ह किवाड़ा, जगत वासना वेख वखाया। घर विच घर कर त्यारा, आपणा मन्दिर आपणा दीप जगाया। बोध अगाध बोल जैकारा, धुन आत्मक राग सुणाया। लिखण पढ़न विच ना आए लेखा लिखे ना कोई संसारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाया। हरि हरि मार्ग साचा ला, सो पुरख निरँजण दया कमांयदा। हँ ब्रह्म सृष्ट उपा, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। आपणा नाउँ आप उपजा, मन्त्र अन्तर आप पढ़ांयदा। ब्रह्मा विष्नूं शिव वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर फोल फुलांयदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रूप सति सरूप, दोए दोए धार आप बंधांयदा। एका धार एकँकार, आपणी आप

८८१
०६

चलाईआ। दूजी कुदरत वेख संसार, सृष्ट सबाई बैठा आसण लाईआ। तीजा नेत्र खोल्ह किवाड़, घर मन्दिर आपणा पर्दा दए चुकाईआ। चौथे घर चौथा पद मेल मिलावा सच्ची सरकार, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। पंचम नाद शब्द धुन्कार, धुनी धुनी विच टिकाईआ। छप्पर छन्नां वसया बाहर, छेवें घर वड्डी वड्याईआ। सति सतिवादी खेल्ह अपार, सति सरूपी आप कराईआ। अठ्ठां तत्तां करे पार किनार, पंज तत्त वेखे थाउँ थाँईआ। नौं दुआरे दए हुलार, नईया नौका आप चलाईआ। दस्म दुआरी खेल अपार, आत्म सेजा आप खुल्हाईआ। एका ब्रह्म कर उज्यार, पारब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। ईश जीव कन्त भतार, घर साचे रंग एका रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि सोहँ शब्द दित्ती दाद, ब्रह्मा विष्न शिव कर फ़रयाद, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कुरलाया, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। तेरा हुक्मी हुक्म वरताया, आदि जुगादि समांयदा। हउँ सेवक बण बण सेव कमाया, सेवक सेवा लेखे लेखे कवण लगांयदा। दर भिखारी मंगण आया, विष्नूं अग्गे झोली डांहयदा। कवण रूप शाहो भूप तेरी रचना वेख वखाया, लोकमात जोत प्रगटांयदा। चौदां हट्ट कवण खुल्हाया, चौदां तबकां कवण फोलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि अन्त तेरा भेव कोए ना पांयदा। पुरख अबिनाशी दया कमाए, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। विष्नूं तेरा पन्ध मुकाए, नौं नौं चार पार कराईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म वेख वखाए, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। शंकर तेरी त्रिशूल हथ्थों दए सुटाए, बाशक तशका गलों लाहीआ। जुग चौकड़ी आपणा गेड़ा आप दवाए, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। निरगुण सरगुण वेस धर धर आए, पंज तत्त वज्जे वधाईआ। साध सन्त ल्ए मिलाए, भगत भगवन्त वेख वखाईआ। ग़रीब निमाणे ल्ए उठाए, हँकारीआं गढ़ तुड़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराए, कलिजुग अन्तिम वेखे चाँईं चाँईआ। निराकार निराकार निरगुण निरवैर मूर्त अकाल जूनी रहित आपणी जोत आप प्रगटाए, लोकमात करे रुशनाईआ। निहकलंका नाउँ धराए, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। साचा डंका इक्क वजाए, सोहँ ढोला एका गाईआ। राउ रंकां आप उठाए, जगत विचोला बणे शहनशाहीआ। एका बोला कूक सुणाए, नौं खण्ड पृथ्मी पए दुहाईआ। पर्दा ओहला दए चुकाए, नूर नूराना एका नज़री आईआ। एका मार्ग दए वखाए, चार वरन बख़्शे सच सच्ची शरनाईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां एका थान बहाए, धाम अवल्लड़ा इक्क दरसाईआ। साचा पलड़ा हरि का नाम फड़ाए, दूसर करे ना कोए पढ़ाईआ। राह सुखलड़ा इक्क चलाए, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। सच सुच मार्ग एका लाए, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। चारे कुंट एका रूप नज़री आए, पारब्रह्म ब्रह्म वेख्या चाँईं चाँईआ। सोहँ रूप सर्ब दरसाए, इकओंकारा आपणा मेल मिलाए, एकँकारा वेख वखाईआ। भगत दुलारा

आप जगाए, जागरत जोत कर रुशनाईआ। लक्ख चुरासी गूढ़ी नींद सवाए, नेत्र सके ना कोए खुल्हाईआ। त्रैगुण माया पर्दा पाए, पापां झोली आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस वटांयदा, सतिगुर साचा दीन दयाल। निरगुण सरगुण जोत जगांयदा, लेखा जाणे काल महांकाल। गुरमुख साचे आप उठांयदा, लक्ख चुरासी विच्चों भाल। साचे सन्तां मेल मिलांयदा, शब्द सरूपी बण दलाल। भगत भगवन्त रंग रंगांयदा, नाता तोड़ जगत जंजाल। गुरसिख आपणे चरन बहांयदा, सच दुआर वखाए सच्ची धर्मसाल। हरिजन काया कंचन सोना आपे ढालदा, नाम कुठाली पाए हरि गोपाल। लेख चुकाए त्रैदरसी त्रैकाल दा, त्रैगुण माया नेड़ ना आए। नाता तोड़े राए धर्म पंज शैतान दा, चित्रगुप्त ना लेख वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, आप आपणी बूझ बुझाए। बूझ बुझाए हरिजन, सतिगुर पूरा दया कमाईआ। कलिजुग अन्तिम चाढ़े चन्न, गुरसिख साची करे रुशनाईआ। सतिगुर पूरा बेड़ा देवे बन्नृ, मँझधार ना कोए डुबाईआ। एका वस्त देवे नाम धन, सच ख़ज़ीना इक्क भराईआ। एका राग सुणाए कन्न, अनहद धुन नाद वजाईआ। गुरसिख आत्म जाए मन्न, मन मनका भउ रहिण ना पाईआ। भाग लगाए काया तन, जिस जन चरन शरन बख़्शे सच शरनाईआ। राए धर्म ना देवे डंन, लाड़ी मौत ना फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईआ। थान थनंतर फोलया, ब्रह्मण्ड खण्ड कर विचार। सतिगुर पूरा बणया साचा तोलया, लेखा जाणे अठारां भार। जुगा जुगन्त रहे अडोलया, अडोल अडुल्ल आप करतार। कलिजुग अन्तिम विष्नूं रूप हो हो मौलया, सोहँ शब्द साची जैकार। ब्रह्मे ब्रह्म रूप हरि मौलया, कँवला कँवल खिले गुलज़ार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए संभाल। हरिजन आप संभालदा, जुगा जुगन्तर साची कार। दिवस रैण सदा प्रितपालदा, प्रितपालक आप निरँकार। दर दर घर घर पैज संवारदा, जो जन सतिगुर चरन करे निमस्कार। लेखा चुकाए शाह कंगाल दा, एका रंग रंगे संसार। कलिजुग अन्तिम वेस करया आप दलाल दा, दिस ना आए जीव गंवार। भउ चुकावे काल महांकाल दा, दीन दयाल करे प्यार। गुरसिख साचे आपे भालदा, लक्ख चुरासी विच्चों लए निकाल। मन का मणका वेखे आपणे हार दा, आपणी हथ्थीं लए उठाल। कलिजुग अन्तिम आप शंगार दा, वेखणहारा फुल फुलवाड़ी पत डाल्ह। कदे ना आवे पासा हारदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन उठाए साचे लाल, लाल अनमुल्लड़ा माणक मोती, रत्न जवाहर गुरमुख इक्क वखाईआ। आदि जुगादि जगदी रहे निर्मल जोती, जगत जुगत ना सके कोए बुझाईआ। लभ्भदे फिरदे कोटन कोटी, हरि हरि नज़र किसे ना आईआ।

तीर्थ तटां फिरदे बन्न् लंगोटी, तन बोटी बोटी रहे कटाईआ। कोटन कोटि मुन्नी बैठे चोटी, तन बैठे ख़ाक रमाईआ। कोटन कोटि भंग बैठे घोटी, धतूरा सुरा पान रसना जिह्वा करी हलकाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना कढ्ढे वासना खोटी, गुरू गुर सतिगुर नानक दए गवाहीआ। बिन हरिभगत ना चढ़े कोए चोटी, कबीरा कूक कूक रिहा सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम गुरसिखां उठाए आत्मा सोती, शब्द सोटी हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन लेखा आपणे लेखे लाईआ। गुरसिख लेखा लावणा, आपणे घर करतार। पूर्ब लहिणा आप चुकावणा, माणस जन्म संवार। पतित पवित आप करावणा, पतित पापी जाए तार। साचा हित इक्क करावणा, नित नवित साची कार। अमृत सिंच हरा करावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए संभाल। गुरसिख आप संभालदा, हरि सतिगुर सच्चा मीत। आपणी गोदी आप उठाल दा, आदि जुगादी साची रीत। लेखा जाणे गगन मस्तक थाल दा, पति परमेश्वर ठांडा सीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए इक्क प्रीत। सच प्रीत चरन गुर देवा, गुर गुर इष्ट जणाईआ। पुरख अबिनाशी साची सेवा, एका एक इक्क लिव लाईआ। पारब्रह्म प्रभ अलक्ख अभेदा, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, आपणा मार्ग दए वखाईआ। एका नाउँ गाउणा रसना जिह्वा, अठ्ठ पहर इक्क लिव लाईआ। अमृत आत्म साचा मेवा, पुरख अबिनाशी इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। मेल मिलाया मिलण योग, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। दर घर साचे होया सच संजोग, एका पल्लू नाम फड़ाईआ। जगत जुग कट्टया विजोग, लोक परलोक वज्जी वधाईआ। चरन भिखारी करे मुक्त मोकश मोख, गुरसिख तेरे चरनां हेठ दबाईआ। तेरा नाउँ गायण चौदां लोक, ब्रह्मा विष्न शिव रहे जस सुणाईआ। तेरा ढोला सच सलोक, सोहँ बोला वड वड्याआ। हरि का भाणा कोई ना सके रोक, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। लक्ख चुरासी देवे झोक, जो घड़या भन्न वखाईआ। इक्क नगारे लाए चोट, लोआं पुरीआ आप सुणाईआ। जीव जंत आहलणिउँ डिग्गे बोट, ना सके कोए उठाईआ। कलिजुग माया ममता आशा तृष्ना भरी ना पोट, दिवस रैण रसना जिह्वा होई हलकाईआ। गुरसिखां अंदरों कढ्ढे विकारी खोट, चरन ध्यान इक्क वखाईआ। विष्नूं वेखे आपणा ओत पोत, ब्रह्मा ब्रह्म जोत रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख वसाए आपणे घर, हरी हरि हरि आपणी दया कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विश्व रूप आदि जुगादि शाहो भूप ना मरे ना जाईआ।

❊ ४ भाद्रों २०१७ बिक्रमी मल सिँघ दे घर रजी वाला ज़िला फिरोज़पुर ❊

भैरों भँवरी देवे सुट्ट, भावी आपणे हथ्थ रखांयदा। दर दवारिउँ कढ्ढे कुट्ट, घर साचे रहिण ना पांयदा। फड़ फड़ बांहों ल्ए लुट्ट, ख़ाली हथ्थ फिरांयदा। आउणा जाणा जाए छुट्ट, दर घर मुख ना फेर फिरांयदा। गुर शब्द कमाए एका ओट, ओत पोत वेख वखांयदा। किरपा निध निर्मल जोत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेज बल आप चुकांयदा। तेज बल चुक्के भउ, भयानक, रूप नज़र ना आईआ। आपणी सेजे जाए सौं, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। नाता तुटे ग्रह ग्राउँ, सतिगुर पूरा आप छुडाईआ। गुरसिख मन सदा चाउ, चाउ घनेरा हरि हरि दर्शन पाईआ। निर्धन निरगुण करे न्याउँ, निगहवान हर घट थाँईआ। पकड़ उठाए डिग्गे बाहो, आप आपणी गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर करे सफाईआ। गृह मन्दिर होया साफ, सुथरा ताल ना कोए वजांयदा। हरिजन बूझे आपणा आप, आप आपा विच्चों मोह चुकांयदा। साची थापण जाए थाप, हुक्मी हुक्म आप वरतांयदा। त्रैगुण माया कम्बे ताप, तिन्नों ताप मेट मिटांयदा। दुक्खां मिटे अन्धेरी रात, सुख सहिज सहिज समांयदा। रोग सोग दुक्खड़ा काट, तीर कटाकश एका लांयदा। स्वामी सुंदर आपणा जाप, तन मन्दिर आप करांयदा। सज्जण सुहेला माई बाप, पिता पूत मेल मिलांयदा। जगत पर्दा जाए पाट, दूई द्वैती परे हटांयदा। भैरों खेल ना नटूआ नाट, काला रंग ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दात एका वस्त झोली पांयदा।

❊ ४ भाद्रों २०१७ बिक्रमी मुखत्यार सिँघ दे घर पिण्ड रामू वाला (नवां) ज़िला फ़िरोज़पुर ❊

पुरख अकाल अकल कल धार, अनुभव आपणा रूप प्रगटाईआ। निरगुण निरवैर खेल अपार, जूनी रहित आप खुल्हाईआ। थिर घर साचे हो त्यार, सचखण्ड निवासी आपणी धार बंधाईआ। सच सिँघसण बण सिक्दार, तख्त निवासी निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह पुरख सुल्तान, सति सतिवादी रूप वटांयदा। सचखण्ड दुआरा खेल महान, दरगाह साची आप करांयदा। एका मन्दिर इक्क मकान, धुर दरबारा आप सुहांयदा। एका नूर श्री भगवान, एका शब्द नाद वजांयदा। एका राग एका गाण, एका गीत गोबिन्द अल्हांयदा। एका हुक्म इक्क फ़रमाण, शब्दी शब्द आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रूप आप दरसांयदा।

रूप अवल्ला हरि करतारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। थिर घर वेखे इक्क दुआरा, ग़रीब निवाजा सिफ्त सालाहीआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अलक्खणा लख्या ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कार आप कराईआ। आपणी कार आपे कर हरि जू साची बणत बणांयदा। आपणी इच्छया भण्डारा आपे भर, आदि जुगादी आप वरतांयदा। आपणी सिख्या विद्या आपे पढ़, आपणा नाम आप दृढ़ांयदा। आपणे मन्दिर अंदर आपे वड़, सच सिँघासण सोभा पांयदा। आपणा दरस दिखाए आपे खड़, रूप अनूपा आप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ला आप सुहांयदा। सच महल्ला उच्च मुनारा, अचरज हरि हरि बणत बणाईआ। इक्क इकल्ला शाह सिक्दारा, हरि सुल्ताना आसण लाईआ। खेल खलाए अगम्म अपारा, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी महिमा आप जणाईआ। आपणी महिमा आपे जाण, आपणा भेव आप खुल्ह्यांयदा। शाह पातशाह हरि बण राजान, राज जोग आप कमांयदा। आदिन अन्त जुगा जुगन्ता देवणहारा दानी दान, दाता दानी नाउँ रखांयदा। लेखा जाणे मन्दिर मकान, थिर घर साचा वेख वखांयदा। राग अनादी एका गाण, गृह आपणे आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एकँकार, आपणी धारा आप चलांयदा। आपणी धारा हरि निरँकार, सतिगुर साचा कर्म कमाईआ। गुर गुर रूप खेल अपार, शब्दी शब्द नाद वजाईआ। भगतन भगवन्त करे प्यार, वेखणहारा थाउँ थाँईआ। सन्तन देवे साचा नाम आधार, लिव अन्तर बूझ बुझाईआ। गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़, अज्ञान अन्धेर दए मिटाईआ। गुरसिख साचे घोड़े चाढ़, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। इक्क वखाए सच अखाड़, साची मंडल रास आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खल्हाईआ। हरि सतिगुर सूरा वड बलवान, आदि जुगादी वेस वटांयदा। गुर गुर रूप श्री भगवान, लोकमात जोत जगांयदा। भगतां देवे भगती दान, वस्त अमोलक झोली पांयदा। सन्तन देवे नाम निधान, काया गोलक आप टिकांयदा। गुरमुखां बख्शे चरन ध्यान, चतुर्भुज दया कमांयदा। गुरसिख साचे कर पछाण, आप आपणे अंग लगांयदा। आदि जुगादि खेल महान, जुग करता आप करांयदा। सति सतिवादी सति निशान, सतिगुर पूरा हथ्थ उठांयदा। गुर गुर रूप होए मेहरवान, दया निध आपणी कल आप वरतांयदा। भगतन वेखे जगत जहान, जागरत जोत सर्ब जगांयदा। सन्तन राग सुणाए कान, धुन आत्मक आप अलांयदा। गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म आपणा मेल मिलांयदा। गुरसिख साचे चतर सुजान, हरि मन्दिर आप सुहांयदा। शाहो भूप हरि वड राजान, तख्त ताज आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी कार करांयदा। सतिगुर पूरा हरि सूरबीर, दरगाह साची

८८६
०६

धाम सुहाईआ। गुर गुर रूप मेल मिलावा पंज तत्त शरीर, मन मति बुध ना कोई लड़ाईआ। भगतन चोटी चाढ़े अख़ीर, एका अक्खर नाम पढ़ाईआ। सन्तन कट्टे जगत जंजीर, नाम डोरी बन्धन पाईआ। गुरमुखां कढ्ढे हउमे पीड़, बिरहों अग्नी ना कोई जलाईआ। गुरमुखां बख़्शे अमृत सीर, भर प्याला जाम प्याईआ। अथ्थर वरोले आपणा नीर, नेत्र नैण ना कोई दरसाईआ। लेखा जाणे शाह फ़कीर, पीरन पीर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला हरि गोपाला, जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, लेखा लेख ना कोई वखाईआ। सतिगुर पूरा सच्चा दाता, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। गुर गुर रूप ना किसे पछाता, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। भगतन दर्शन देवे इक्क अकांता, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। सन्तन मेला जोती जाता, वरन गोत ना कोए रखांयदा। गुरमुखां चरन कँवल बंधाए साचा नाता, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का लांयदा। गुरमुखां वखाए एका पूजा पाठा, इष्ट देव आप हो जांयदा। लेखा जाणे तीर्थ ताटा, तट सरोवर खोज खुजांयदा। भेव चुकाए चौंदा हाटां, लोक परलोक फेरा पांयदा। आपे सोया आपणी खाटा, साचा भूशन आप वछांयदा। आपे जोती नूर लिलाटा, निरगुण आपणा रंग वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, पुरख अबिनाशा आप करांयदा। पुरख अबिनाशा सतिगुर मीत, सांतक सति सति वरताईआ।
८८७ जुगा जुगन्तर ठांडा सीत, गुर गुर शब्दी नाउँ धराईआ। भगतन आपे आपे चीत, मन चित ठगौरी कोए ना पाईआ। सन्तन ८८७
०६ बख़्शे इक्क प्रीत, पीआ प्रीतम मेल मिलाईआ। गुरमुखां एका रंग वखाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोई वड्याईआ। गुरमुखां ०६
धाम वखाए इक्क अनडीठ, ठांडा दर सच्चा बैठा पातशाहीआ। जुगा जुगन्तर गाए आपणा गीत, दूसर संग ना कोए रखाईआ। ना कोई मन्दिर ना मसीत, गुरदुआरा शिवदुआला मढ्ढ ना कोए जणाईआ। बैठा रहे इक्क अतीत, त्रैगुण बन्धन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा दीन दयाला, लेखा जाणे काल महांकाला, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सतिगुर पूरा उच्च अगम्म, एका एकँकारीआ। गुर गुर रूप ना मरे ना पए जम्म, निरगुण सरगुण लए अवतारया। भगत लगाए आपणा कम्म, साची किरत इक्क वखा रिहा। सन्ता नाम जपाए दमा दम, पवण स्वास आप हिला रिहा। गुरमुखां बेड़ा देवे बन्नृ, जुग जुग खेवट खेटा एका चप्पू नाम लगा रिहा। गुरमुख चढ़ाए साचे चन्न, सीतल धारा आप सुहा रिहा। आदि जुगादी बेड़ा बन्नृ, भव सागर आप तरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देखे साचे घर, दर घर साचा इक्क वडिया रिहा। सतिगुर पूरा दया निध सागर, गहर गम्भीर अख्वांयदा। गुरसिख करे कराए सच सौदागर, नाम वणजारा हट्ट खुलांयदा। भगतन देवे नाम रत्ती रत्नागर, रत्न अमोलक इक्क वखांयदा।

सन्तन भाग लगाए काया गागर, गृह मन्दिर खोज खुजांयदा। गुरमुखां चरन दुआरे करे आदर, आप आपणे दर बहांयदा। गुरसिख मिलाए दया कमाए करता कादर, करीम रहीम आपणा मेल मिलांयदा। शब्द दोशाला देवे चादर, चात्रिक चित ना कोई बिलांयदा। आपे शाह आपे कादर, आपणा हुक्म आप वरतांयदा। आपे सूरा आप बहादर, शाह सुल्तान आपणा खेल आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अजूनी रहित अनुभव प्रकाशा, करे कराए पुरख अबिनाशा, दीवा बाती ना कोई रखांयदा। सतिगुर सच्चा दीन दयाला, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। गुर गुर रूप वसे सच्ची धर्मसाला, दर घर साचा आप सुहाईआ। भगतन दस्से राह सुखाला, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। सन्तन तोड़ जगत जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। गुरमुखां फल लगाए काया डाल्हा, काल ग्रास ना कोई कराईआ। गुरसिख जपाए एका माला, मन का मणका आप भवाईआ। सर सरोवर वखाए साचा ताला, अमृत आत्म जाम भराईआ। शब्द सरूपी बण दलाला, जुगा जुगन्तर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। सतिगुर पूरा आदि निरँजण, नर हरि निरवैर आप अख्वांयदा। गुर गुर रूप दर्द दुःख भय भंजन, भावी भव सागर आप तरांयदा। जन भगतां देवे नाम अंजन, नेत्र नैण आप मटकांयदा। सन्तन बख्शे चरन धूढ़ी मजन, दुरमति मैल आप धुआंयदा। गुरमुखां आए पर्दे कज्जण, सच दोशाला उप्पर पांयदा। गुरसिख ताल नगारे एका वज्जण, अंदर मन्दिर आप वजांयदा। आप चलाए सच जहाजन, आपणा बेड़ा आप तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जागरत जोत इक्क प्रगटांयदा। सतिगुर पूरा सर्ब गुणवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। गुर गुर रूप नारी कन्त, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। दरस दिखाए पूरन भगवन्त, भगतन वेखे चाँईं चाँईंआ। सन्तन लेखा आदि अन्त, जुगा जुगन्त रिहा समझाईआ। गुरमुखां काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। गुरमुखां गढ़ तोड़े हउमे हंगत, माया ममता आसा तृष्ना दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची इक्क सुहाईआ। दरगाह साची सतिगुर पूरा थान सुहांयदा। धरत धवल ना कोई प्यार, गुर गुर आपणा रूप वटांयदा। लोकमात लै अवतार, भगतन लेखा आप समझांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, नैनण नैण दरस दरसांयदा। आत्म तृखा दए निवार, गुरसिख एका रंग रंगांयदा। रंग रंगीला कर प्यार, गुरसिख सोए आप जगांयदा। सुरत सवाणी दए हुलार, आलस निन्दरा आप चुकांयदा। भट्ठ खेड़ा दिसे संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। सतिगुर पूरा पारब्रह्म, पुरख अबिनाश वड्डी वड्याईआ। गुरू गुर जाणे आपणा कम्म, करता पुरख आपणी कार आप कमाईआ। भगत भगवन्त आदि

अन्त बेड़ा देवे बन्न्, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सन्त कन्त आप वसाए बिन छप्पर छन्न, महल्ल अटल उच्च मुनार दर घर साचा इक्क वखाईआ। गुरमुख कहे धन्न धन्न जनणी जणया एका जन, जन जनणी लेखे लाईआ। गुरसिख राग सुणे साचा कन्न, पंच विकारा होए खन खन, एका मन्त्र अन्तर नाम दृढ़ाईआ। दूसर कोए ना देवे डंन, राए धर्म ना कोए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उठाईआ। सतिगुर पूरा दया कमांयदा, श्री भगवान सच्चा सिक्दार। गुर गुर आपणा नाउँ धरांयदा, सरगुण जोत कर उज्यार। शब्दी डंका इक्क वजांयदा, आप सुणाए सुनणेहार। लोआं पुरीआं वेख वखांयदा, ब्रह्मण्ड खण्ड करे विचार। ब्रह्मा विष्न शिव समझांयदा, एका हुक्म सच्ची सरकार। करोड़ तेतीसा आप उठांयदा, सुरपति राजा इंद दए हुलार। गण गंधर्ब वेख वखांयदा, घर मन्दिर बैठा खोल् किवाड़। लक्ख चुरासी अंदर फोल फुलांयदा, करे खेल गुप्त ज़ाहर। जुग जुग आपणा रूप वटांयदा, पुरख अबिनाशी हो त्यार। घट घट वासी निरगुण जोत जगांयदा, पृथ्मी आकाश पावे सार। बन्द खलासी आप करांयदा, बन्दी तोड़ आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे वसे वसणहार। सतिगुर पूरा एका एक, दूजा अवर ना कोई जणाईआ। गुर गुर रक्खे साची टेक, इष्ट देव ना कोई रखाईआ। भगत भगवन्त लिखे आपे लेख, ब्रह्मा वेद ना कोई पढ़ाईआ। सन्तन लाए मस्तक रेख, बिधना लेख ना कोई वखाईआ। गुरमुखां आपे लए पेख, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। गुरमुखां वखाए साचा देश, घर मन्दिर आप सुहाईआ। लेखा जाणे गणपति गणेश, सिल पूजस बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खोल्णहारा साचा दर, दर दरवाज़ा आप खल्ाईआ। सतिगुर पूरा दर दरवाज़ा खोल् किवाड़, बेऐब परवरदिगार आपणी कल वरतांयदा। गुर गुर रूप हो त्यार, शब्दी ढोला आपे गांयदा। भगवन तोला बण निरँकार, साचा सोहला आप सुणांयदा। सन्तन तोला बणे सिरजणहार, नाम कंडा हथ्थ उठांयदा। गुरमुखां पर्दा ओहला चुकाए विच संसार, बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। गुरसिखा उलटा कँवल करे उज्यार, अमृत नाभी मुख चुआंयदा। धरती धरत धवल पावे सार, सुंदर साँवल आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्क इकल्ला आप वसाए सच महल्ला, उच्च अटला आप सुहांयदा। सतिगुर साचा चतर सुजान, सति सरूप आपणा रूप दरसाईआ। गुर गुर वेखे इक्क निशान, दो जहानां हथ्थ उठाईआ। भगतन मेला गोपी काहन, सीता सुरती राम प्रनाईआ। सन्तन बख्शे साचा माण, जगत अभिमान रहिण ना पाईआ। गुरमुखां एका राग सुणाए कान, घर वज्जदी रहे वधाईआ। गुरसिख करे प्रकाश कोटन भान, सूरज चन्न बैठे मुख छुपाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका घर दए वखाईआ। एका

शरअ इक्क ईमान, एका कलमा इक्क पढ़ाईआ। एका इष्ट देव करे प्रनाम, एका निउँ निउँ सीस झुकाईआ। एका राम राम होए गुण निधान, कथनी कथ ना सके राईआ। एका नाम करे पढ़ाई, सति सतिवादी बेपरवहीआ। बोध अगाधी धुर फ़रमाण, जुगा जुगन्तर आप सुणाईआ। ब्रह्मा वेता होए हैरान, चार वेद भेव ना राईआ। शंकर सुणे ला ला कान, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। विष्नूं मंगे एका दान, पुरख अबिनाशी अग्गे झोली डाहीआ। सभ दा दाता श्री भगवान, देवणहारा इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, घर आपणा आप उपाईआ। सतिगुर पूरा तख्त ताज, सचखण्ड दुआरे आप सुहांयदा। गुर गुर रूप करे हरि काज, पंज तत्त काया चोला आप हंढांयदा। हरिभगत बणाए सच समाज, साची सिख्या इक्क समझांयदा। सन्तन मारे शब्द आवाज़, अगम्म अगम्मड़ी तार हलांयदा। गुरमुखां देवे साचा राज, राज जोग इक्क वखांयदा। गुरसिख आदि अन्त तेरी रक्खे लाज, सिर आपणा हथ्थ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सगला संग आप रखांयदा। सतिगुर पूरा सगला संग, सति पुरख निरँजण आप निभाईआ। गुर गुर चाढ़े एका रंग, रंगण रंग नाम रंगाईआ। भगतन डोरी नाम पतंग, सुरती शब्द जोड़ जुड़ाईआ। सन्तन लाए आपणे अंग, साची गोद आप सुहाईआ। गुरमुखां दूई द्वैती ढाए कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। गुरमुखां मुकाए चुरासी पन्ध, जूनी जून ना कोए भवाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, जुगा जुगन्तर आपे गाईआ। सृष्ट सबाई होए बख्शंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। इक्क जणाए परमानंद, निजानंद निज रस मुख रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे थाउँ थाँईआ। सतिगुर पूरा थान थनंतर, हरी हरि आपणा आप जणांयदा। गुर गुर सुणाए एका मन्त्र, लिखण पढ़न विच ना आंयदा। भगतां बुझाए लग्गी बसन्तर, अमृत मेघ आप बरसांयदा। सन्तां बणाए साची बणतर, ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलांयदा। गुरमुखां लेखा चुकाए गगन गगनंतर, लोआं पुरीआं पार करांयदा। गुरसिख लेख चुकाए जुगा जुगन्तर, जुग करता दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवन्त, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर गुर वेस नर हरि नरायण कन्त, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। भगतन लेखा जाणे आदि अन्त, अन्त आदि सहिज सुखदाईआ। सन्त रूप दरसाए दया कमाए बेअन्त, बेऐब परवरदिगार आपणी खेल खलाईआ। गुरमुख नाता तोड़े जीव जंत, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। गुरसिख पढ़े नाम मंत, रसना जिह्वा सेव कमाईआ। तोड़े गढ़ हउमे हंगत, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे धुर दरगाहीआ। सतिगुर साचा धुर दरगाह, दयावान दया कमांयदा। गुर गुर रूप बण मलाह, जगत

सागर बेड़ा आप तरांयदा। भगतन देवे इक्क सलाह, सिफ्त सलाही रूप वटांयदा। सन्तन पकड़े आपे बांह, दर घर साचे मेल मिलांयदा। गुरमुखां देवे साचा थाँ, चरन दुआरा इक्क समझांयदा। गुरसिख बाल अञ्याणे उठाए जिउँ पिता माँ, साची गोदी आप बहांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कांगों हँस आप उडांयदा। निथाविआं देवे साचा थाँ, दरगाह साची आप सुहांयदा। फड़ फड़ बांहो जाए तरा, त्रैगुण माया विच ना आंयदा। लक्ख चुरासी फंद कटा, जम की फ़ाँसी आप कटांयदा। पवण स्वासी आप चला, मंडल रासी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। सतिगुर पूरा उठया, पुरख अबिनाशी दीन दयाल। गुर गुर रूप अनूपा तुठ्ठया, भाग लगाए सच्ची धर्मसाल। भगतन अमृत देवे घुटया, भर प्याला जाम बणे दलाल। सन्तन हरि घर ना जाए लुट्टया, बख्शे नाम धन सच्चा धन माल। गुरमुख भाग ना कदे निखुटया, हरि हरि घालण रहे घाल। गुरसिख दए भण्डार अतुटया, फल लगाए साचे डाल्ह। लक्ख चुरासी बन्न्हे एका मुठ्ठया, दूसर वज्जे ना कोए ताल। जगत विकारा फड़ फड़ कुठया, पंज तत्त करे बेहाल। कूड़ कुड़यार बूटा पुट्टया, फल लग्गे ना किसे डाल्ह। आप सुहाए आपणी रुत्तया, सतिगुर पूरा दीन दयाल। गुर गुर मेल अबिनाशी अचुतया, जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाल। भगत उठाए आपे सुत्तया, सुरती सुरत संभाल। सन्तन पैडां अन्तिम मुक्या, पान्धी पन्ध मुकाए काल। गुरमुख लोकमात रहे ना लुकया, जगत चले अवल्लड़ी चाल। गुरसिख जोद्धा सूरबीर हो हो बुकया, नाता तुटा जगत जंजाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए संभाल। सतिगुर पूरा जागया, आलस निन्दरा ना कोए रखाईआ। गुर गुर सूरा फिरे भागया, दो जहानां फेरी पाया। भगतां जगे जोत चिरागया, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। सन्तन होए वड वड भागया, प्रभ मिल्या सहिज सुखदाईआ। गुरमुख चरन सरन सरनाई एका लागया, लोक लजया मात तजाईआ। गुरसिख मन्ने गुर गुर आज्ञा, हरि भाणा शब्द रज़ाईआ। धन्न पाया कन्त सुहागया, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। हरिजन हरि लक्ख चुरासी विच्चों काढया, नेहकर्मी कर्म कमाईआ। करे कराए साचा लाडिआ, आप आपणी गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। सतिगुर पूरा वेख वखांयदा, वेखणहारा हरि गोपाल। गुर गुर आपणी धार चलांयदा, धरनी धरत धवल वेख सच्ची धर्मसाल। भगतन लेखा आप चुकांयदा, लेखा मुके शाह कंगाल। सन्तन मस्तक टिक्का इक्क लगांयदा, जोती बाती वेखे गगन थाल। गुरमुख निक्का वड्डा ना कोए रखांयदा, आदि जुगादी रिहा सुरत संभाल। गुरसिख फिका रस ना कोए चखांयदा, अमृत फल लगाए साचे डाल्ह। दहि दिशा वेख वखांयदा, चारे कुंट अवल्लड़ी चाल। जुग जुग आपणा हिस्सा आप वण्डांयदा, भुल्ल ना जाए

हरि भगवान। सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकांयदा, मेट मिटाए जगत निशान। कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा, प्रगट होए श्री भगवान। सतिगुर पूरा आप अख्वांयदा, सूरबीर बली बलवान। गुर गुर एका शब्द सुणांयदा, राग धुन सच्ची धुनकान। भगतन साचे दर बहांयदा, काया कपड़ इक्क मकान। सन्तन एका मेल मिलांयदा, नाता छुट्टे आवण जाण। गुरमुख साचे रंग रंगांयदा, चोली रंगे पुरख सुजान। गुरसिख एका मंग मंगांयदा, चरन कँवल कर ध्यान। साचे घोड़े तंग कसांयदा, पुरख अबिनाशी वड मेहरवान। सोलां कलीआं आसण पांयदा, नौं खण्ड सत्तां दीपां पाए आण। चतुर्भुज आपणा चरन टिकांयदा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। एका शस्त्र हथ्थ उठांयदा, सोहँ चिल्ला तीर कमान। दो जाहाना वेख वखांयदा, लोआं पुरीआं करे पछाण। ब्रह्मा विष्न शिव आप हिलांयदा, सोया रहे ना कोए नादान। करोड़ तेतीसा आप जगांयदा, लेखा जाणे जीव शैतान। लक्ख चुरासी आप उठांयदा, धरनी वेखे सुंञ मसाण। ज़िमी अस्मानां फेरा पांयदा, वेखे प्रकाश रवि ससि भान। एका आपणा हुक्म चलांयदा, शाहो भूप सच्चा सुल्तान। कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा, जोती जामा वेस महान। कागद कलम ना लेख लखांयदा, जगत लिखारी होए हैरान। चारे वेद मुख शर्मायदा, पुराण अठारां मुख शर्मान। अञ्जील कुरान नैण ना कोए उठांयदा, तीस बतीसा ना कोए गान। खाणी बाणी बेअन्त समझांयदा, अन्त ना पावे कोए श्री भगवान। जुग जुग आपणा वेस वटांयदा, करनी करता करे आप निगहबान। निहकलंका आपणा नाउँ धरांयदा, फ़तह डंका दो जहान। सृष्ट सबाई वेख वखांयदा, तख्तों लाहे राज राजान। गुरमुख साचे आप जगांयदा, दरस दिखाए दर घर आण। जीव जंत गूढ़ी नींद सवांयदा, हरि का रूप सके ना कोई पछाण। माया ममता मोह वधांयदा, कूड़ी क्रिया कर प्रधान। भैणा भइया नाता जोड़ जुड़ांयदा, धीआं पुत्तर वेखे इक्क निशान। साढे तिन्न तिन्न हथ्थ सीआं वण्ड वण्डांयदा, ख़ाली दिसण मन्दिर मकान। बिन सतिगुर पूरे कोए ना पार लँघांयदा, वेले अन्त सर्ब पछताण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, आप आपणे लए पछाण। हरिजन आप पछाणया, कर किरपा सतिगुर मीत। एका बख्शे चरन ध्यानया, आदि जुगादी साची रीत। एका नाम धुर फ़रमाणया, आप जणाए हरि अनडीठ। राग सुणाए सच तरानया, त्रैगुण माया रहे अतीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन काया करे ठंडी सीत। काया ठंडी सीत उज्जल मुखड़ा, मोह ममता रहिण ना पाईआ। गुरसिख मात गर्भ ना होवे उलटा रुखड़ा, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। आवण जावण मिटे दु:खड़ा, दु:ख दर्द ना कोए वखाईआ। सफल कराए मात कुखड़ा, जो जन रहे सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख साचे लए प्रनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ।

✻ ५ भाद्रों २०१७ बिक्रमी बिकर सिँघ पिण्ड रामू वाला दे गृह फिरोज़ पुर ✻

सतिगुर पूरा धुर संजोग, सति सतिवादी सति करांयदा। गुर गुर देवे दरस अमोघ, हरि हरि मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। भगतन भगती आत्म चोग, नाउँ निरँकार मुख लगांयदा। हरि सन्त सुणाए सच सलोक, बोध अगाध शब्द अलांयदा। गुरमुखां कट्टे हउमे रोग, हरि के पौड़े आप चढ़ांयदा। गुरसिखां मेटे हरख सोग, चिंता दु:ख ना कोए वखांयदा। लेखा जाणे चौदां लोक, पुरीआं लोआं फोल फोलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पांयदा। सतिगुर पूरा साख्यात, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। गुर गुर रूप पुरख अबिनाश, करता करनी आपणी आप कमाईआ। भगतन अंदर कर कर वास, अन्तर आत्म करे पढ़ाईआ। सन्तन पूरी करे आस, सांतक सति आप वरताईआ। गुरमुखां होए सहाई पृथमी आकाश, जुगा जुगन्तर सेव कमाईआ। गुरसिख ना होए कोए निरास, जिस मिल्या हरि हरि माहीआ। जुगा जुगन्तर दासी दास, सेवक सेवा सच कमाईआ। एका जोत नूर प्रकाश, जोती जोत डगमगाईआ। एका शब्द इक्क धरवास, धीरज धीर इक्क वखाईआ। एका पवण इक्क स्वास, एका रूप अनूप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वखाईआ। सतिगुर पूरा अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर कहिण ना जाईआ। गुर गुर रूप विच संसारा, लोकमात वेस वटाईआ। भगतन बख्शे इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा खोल्ह खुलाईआ। सन्तन देवे सच हुलारा, साचा झूला नाम झुलाईआ। गुरमुखां बेड़ा कराए पार किनारा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। गुरसिखां देवे सच सहारा, आप आपणे अंग लगाईआ। जागरत जोत जोत कर उज्यारा, अन्ध अँध्यारा, दए मिटाईआ। वरते वरतावे विच संसारा, वास्तक आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। सतिगुर बेपरवाह नूर अल्ला, आलमगीर खेल खिलांयदा। गुर गुर रूप वसे सच महल्ला, मुकामे हक डेरा लांयदा। भगतन भाव वखाए इक्क बिस्मिला, बिस्मिल आपणा नाउँ करांयदा। सन्तन फड़ाए साचा पल्ला, हक हकीकत फोल फुलांयदा। गुरमुख सच संदेश एका घल्ला, कलमा अमाम आप पढ़ांयदा। गुरसिख दर दुआरे आपे खल्ला, नूरो नूर डगमगांयदा। आदि जुगादि वला छला, अछल छलधारी आप करांयदा। आपे इसमी नूरी नूर अल्ला, इलाही नूर आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी महिमा आप गणांयदा। सतिगुर साजण सक्खा सुहेला, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। गुर गुर रूप गुरू गुर चेला, लेखा जाणे धुरदरगाहीआ। भगत भगवन्त साचा मेला, घर मन्दिर सोभा पाईआ। सन्तन वखाए धाम नवेला, दिस किसे ना आईआ। गुरमुखां कट्टे लक्ख चुरासी धर्म राए दी जेला, जै जै जैकारा इक्क कराईआ। गुरसिखां जाणे वक्त

८६३
०६

वेला, जुग जुग विछड़े मेल मिलाईआ। आपणा खेल अबिनाशी करते पारब्रह्म प्रभ आपे खेला, खेलणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जीवण दाता वड वड्याईआ। सतिगुर पूरा जीवण दाता, जीआ दान झोली पांयदा। गुर गुर रूप पिता माता, साची सेवक सेव कमांयदा। भगत सुणाए साची गाथा, गोबिन्द आपणा नाउँ अलांयदा। सन्तन रक्खे उत्तम जाता, वरन गोत ना कोए बणांयदा। गुरमुखां मेटे अन्धेरी राता, निरगुण साचा चन्द चढ़ांयदा। गुरसिखां पूरा करे घाटा, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। लहिणा जाणे मस्तक माथा, तिलक ललाटी खोज खुजांयदा। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, पिछला घाटा वेख वखांयदा। इक्क वखाए तीर्थ ताटा, सर सरोवर आप नुहांयदा। अग्गे नेड़े दिसे वाटा, कूड़ कुड़यारा पन्ध मुकांयदा। सति सतिवादी सच खुलाए हाटा, साचे मन्दिर सोभा पांयदा। लेखा जाणे आदि जुगादा, जुग जुग आपणा रूप धरांयदा। प्रगट होए ब्रह्म ब्रह्मादा, पारब्रह्म आपणी खेल खिलांयदा। शब्द वजाए तुरीआ रागा, राग रागनी ना कोए सुणांयदा। पुरख अबिनाशी माधव माधा, मोहण आपणा रूप धरांयदा। गुरमुख सज्जण विरला लाधा, लालन आपणा रंग रंगांयदा। लेखा जाणे सन्तन साधा, सिदक सबूरी आप हंढांयदा। भेव खुलाए बोध अगाधा, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव सुणे फ़रयादा, दर दरबारा आप सुहांयदा। लख चुरासी वेखे डूँग्घा खाता, पुरख बिधाता फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, आपणी कल आप धरांयदा। सतिगुर पूरा अकल कल धार, काल फास ना कोए दसाईआ। गुर गुर खेल अपर अपार, कीमत करता आपे पाईआ। भगतन जोत कर उज्यार, दीवा बाती इक्क वखाईआ। सन्तन खोले बन्द किवाड़, निज मन्दिर करे रसाईआ। गुरमुख साचे पौड़े देवे चाढ़, चौथे पद आप बहाईआ। गुरसिखां तीजा नैण दए उग्घाड़, जगत नेत्र लेखे लाईआ। त्रैगुण अग्नी देवे साड़, तत्व तत्त ना कोए वखाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, नूरो नूर नूर दरसाईआ। पंच विकारा देवे झाड़, मन मति ना होए हलकाईआ। बुध मति घड़े घाड़, बण ठठयारा सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिगुर पूरा लेखा लिखणहारा, लेखा लेखे विच ना आंयदा। गुर गुर रूप कर पसारा, निरगुण सरगुण नाउँ धरांयदा। भगतन बणे मीत मुरारा, आपणा बन्धन आपे पांयदा। सन्तन मेला पुरख नारा, कन्त कन्तूहला सेज हंढांयदा। गुरमुखां अमृत बख्शे ठंडी ठारा, निझर झिरना आप झरांयदा। गुरसिखां वखाए इक्क दुआरा, चरन कँवल उप्पर धवल ध्यान धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बन्दी छोड़ आप अख्वांयदा। बन्धन तोड़े बन्धन पा, बन्दीखाना रहिण ना पाईआ। साचे घोड़े चढ़े बेपरवाह, शब्दी घोड़ा इक्क दौड़ाईआ। जुग जुग बौहड़े घट घट थाँ,

८६४ ०६

थान थनंथर वेख वखाईआ। आदि जुगादी करे सच न्याँ, पातशाह शाह शहनशाह आप अख्वाईआ। लख चुरासी काईआ खेड़ा वेखे नगर ग्रां, जगत भूमका फोल फुलाईआ। नव नव सत्त सत्त जाणे जणाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा सहिज सुखदाईआ। वख वख करे हँस काँ, काग हँस संग ना कोए निभाईआ। निमाणयां देवे साचा थाँ, निथावयां आपणे गले लगाईआ। हँकारीआं देवे ख़ाक रला, ख़ाकी ख़ाक छार सीस पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर बणाए बणतर, आपणा बेड़ा आप चलाईआ। सतिगुर पूरा बेड़ा बन्न्हदा, सचखण्ड दुआरे कर विचार। गुर गुर रूप पुरख अकाल दा, जोती जामा अगम्म अपार। करे खेल दीन दयाल दा, भगत वछल भगतन जाए तार। नाता तोड़े काल महांकाल दा, साचे सन्तन लए उभार। कंचन सोना सच कुठाली आपे गालदा, गुरमुख चाढ़े रंग अपार। गुरसिख बाल अंञाणे गोद बहाल दा, जिउँ बाल मात करे प्यार। साचा मन्त्र इक्क सिखाल दा, हँ ब्रह्म होए उज्यार। सो पुरख निरँजण आपणा कीता आपे जाणदा, दूसर कोए ना करे विचार। कलिजुग जीव ना कोए पछाणदा, माया ममता करे ख्वार। लख चुरासी पुण छाणदा, अठसठ नीर वरोले विच संसार। वेला अन्तिम आया हाण दा, चार कुंट होए हाहाकार। गुरमुख विरला हरि रंग माणदा, जिस मिल्या सतिगुर पूरा मेहरवान। आपणा आप लोकमात पछाणदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल दो जहान दा। सतिगुर पूरा वाली दो जहान, दोए दोए लोचन ना कोए जणाईआ। गुर गुर हत्थ उठाए सच निशान, सति सति एका रूप दरसाईआ। भगतन देवे इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म ब्रह्म वड्याईआ। सन्तन वखाए सच मकान, उतर पूर्ब पछम दक्खण चार कुंट ना कोए भवाईआ। गुरमुखां एका राग सुणाए कान, छत्ती राग देण गवाहीआ। गुरसिखां एका बख्शे माण, चरन कवण सच्ची सरनाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। साचा ढोला एका गाण, पुरख अबिनाशी सिफ्त सालाहीआ। नाता तुट्टे जीव जहान, साक सैण मात पित भाई भैण बंधप बन्धन ना कोए पाईआ। लाड़ी मौत ना खाए डायण, जम का भउ ना कोए जणाईआ। चित्रगुप्त ना लेखा वखाए लैण देण, राए धर्म दए ना कोए सज़ाईआ। सतिगुर पूरा दरस दिखाए एका नैण नैनण नैण आप खुल्हाईआ। तन बस्त्र पाए साचा गहिण, शब्द दोशाला हत्थ उठाईआ। गुरमुख वहे ना झूठे वहिण, वाह वा पूरे गुर वड्डी वड्याईआ। आप चुकाए लहण देण, मकरूज बणे शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर खेल कर, जग जीवण दाता आप अख्वाईआ। जग जीवण दाता जागया, सतिगुर सच्चा पातशाह। गुर गुर रूप फिरे भागया, शब्द गुर बण मलाह। भगतन मेल कन्त सुहागया, गीत सुहागी रिहा गा। सच्चा जगया इक्क चिरागया, दीपक जोत डगमगा। गुरमुख उपजे मन वैरागया, मन

की मनसा दए मिटा। गुरसिख सरन सरनाई साची लागया, नाता सके ना कोए तुड़ा। फड़ फड़ हँस बणाए कागया, अमृत आत्म जाम प्या। दुरमति मैल धोवे दागया, कालख टिक्का देवे लाह। त्रै गुण माया डस्से ना डस्सणी नागया, नागण देवे दर दुरका। लक्ख चुरासी विच्चों फड़ फड़ काढया, जिन भूत भरेत ख़बीस ना सके कोए दबा। जगत विकारा फड़ फड़ वाढया, नाम कटारा इक्क चला। डूँघे खाते आपे गाडया, ना कोई सके बाहर कढा। नाता तुट्टा मास नाड़ी चम्म हड्डी हाडया, जोड़ी जोड़ ना सके बणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी होए सहा। सदा सहायक आदि जुगदि, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। गुर गुर वजाए साचा नाद, नाम फुंकारा एका लाईआ। भगतन देवणहारा दाद, दरदी दुःख रिहा वण्डाईआ। सन्त सुहेले साचे लाध, सहिज जोग इक्क समझाईआ। गुरमुखां लडाए आपणा लाड, आप आपणी गोद बहाईआ । गुरसिख दिवस रैण रक्खे याद, रसना जिह्वा हरि गुण गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनां नाथ दर्द दुःख भय भञ्जण, गुरमुख वेखे साचे सज्जण, सगला संग आप निभाईआ। सगला संग पुरख समरथ, जुगा जुगन्तर आप निभांयदा। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही सेव कमांयदा। लेखा जाणे महिमा अकथ, कथनी कथ ना कोए अलांयदा। वसणहारा घट घट, लख चुरासी डेरा लांयदा। शब्द जणाई पूजा पाठ, वाह वा गुर गुर इष्ट मनांयदा। इक्क खुलाए साचा हाट, चौदां चौदां रूप वटांयदा। जोती नूर त्रलोकी नाथ, त्रैगुण माया खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उज्यारा नूर उज्यार, हरि गोपाला खेल अपार, दीन दयाला एकँकार, अकल कल आप वरतांयदा। अकल कल वरताया, महिमा शब्द अनूप। साचे तख्त सुहाया, हरि सतिगुर सच्चा भूप। गुर गुर साचा दूत दौड़ाया, वेखणहारा चारे कूट। जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ, पंज तत्त ना कोए कलबूत। कागद कलम ना लेख लिखाईआ, आपणा देवे आप सबूत। औंदा जांदा दिस ना आया, तांणा पेटा दिसे ना कोए सूत। आपणा खेल आप खलाया, पारब्रह्म अबिनाशी अचुत। जुगा जुगन्तर वेस वटाया, आप सुहाए सुहञ्जणी रुत्त। कादर करीम वेख वखाया, गुरमुख सज्जण साचे सुत। दूई द्वैती पर्दा लाहया, पंज विकारा कढ्ढे कुट्ट। एका अमृत जाम प्याया, भर प्याला हरि हरि घुट्ट। साचे मन्दिर आप बहाया, आवण जावण जाए छुट्ट। एका मन्त्र नाम दृढ़ाया, फड़ झड़ाए उच्ची चोट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, लेखा जाणे ओत पोत। पोत ओत बंस बंसाँवली, ब्रह्मा विष्न शिव रूप दरसाया। पुरख अबिनाशी खेल करावनी, करन करावणहार आप हो जाया। आपे पकड़े आपणी दामनी, दामनगीर दर्द दुःख वण्डाया। आपे मेटे रैण अन्धेरी शामनी, शमा दीपक इक्क जगाया। आपे करे

प्रकाश कोटन भाननी, अनुभव आपणा रूप दरसाया। आपे चमके एका दामनी, दमक आपणे विच रखाया। आपे पूरी करे भावनी, भावनी भय ना कोए वधाया। आपे कामन आपे कामनी, आपे सति सन्तोख समाया। आपे निरगुण जोत इक्क वखावनी, पुरख अकाल आपणा रूप धराया। आपे अमृत मेघ बरसे सावनी, आपे चार कुंट रिहा तरसाया। आपे नगर खेड़ा वसे ग्रामनी, आपे ढह ढह ढेर वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा धुर संदेशा आप सुणाया। सतिगुर पूरा सति संदेश, सचखण्ड निवासी आप सुणाईआ। गुर गुर दाता नर नरेश, शब्द विधाता वड वड्याईआ। भगतन देवे इक्क आदेश, आदि जुगादि बेपरवाहीआ। सन्तन मेला कर कर वेस, वेस अनेका आप धराईआ। गुरमुखां रखाए एका टेक, बुध बिबेक करे सफाईआ। गुरसिखां लिखे साचा लेख, हथ्थ रक्खे ना कोए कलम शाहीआ। साचे मन्दिर बैठा रिहा वेख, वेखणहार दिस ना आईआ। जुगा जुगन्तर करे भेख, निहकलंक निरगुण जोती जामा पाईआ। लेखा चुकाए मुला शेख, कुतब गौंस पीर दस्तगीर वेख वखाईआ। जगत जहाना मिटे रेख, रिखी मुनी रहे कुरलाईआ। मंगे मंग सहँसर मुख शेश, विष्नूं विश्व नाल रलाईआ। ब्रह्मा खुलड़े कर कर केस, निउँ निउँ बैठा सीस झुकाईआ। शंकर मंगे इक्क अदेस, सिर रक्ख हथ्थ समरथ पुरख बेपरवाहीआ। तेरा मेला त्रै त्रै देश, त्रैगुण तेरे रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप समझाईआ। लेखा हरि समझांयदा, सतिगुर पुरख सुजान। गुर गुर नाउँ धरांयदा, वाली दो जहान। भगतन मेल मिलांयदा, घर मन्दिर सच मकान। सन्तन आप उठांयदा, देवे ब्रह्म ज्ञान। गुरमुख लेखे लांयदा, जिन सज्जण लए पछाण। गुरसिख मार्ग पांयदा, एका हुक्म धुर फ़रमाण। आदि जुगादी आपणा ढोला आपे गांयदा, जुगा जुगन्तर खेल महान। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा, कलिजुग अन्तिम वेखे आण। निहकलंका जामा पांयदा, शब्द खण्डा तीर कमान। वासी पुरी घनक आप अख्वांयदा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। साचा डंका आप वजांयदा, वेख वखाए राज राजान। साचा बंका आप सुहांयदा, बंक दुआरी श्री भगवान। मन मनका आप फिरांयदा, जो जन चरनी डिग्गे आण। हउमे शंका रोग गवांयदा, एका सच नाम निधान। जन जनका वेख वखांयदा, गुरमुख साचे चतर सुजान। धन धन झोली पांयदा, देवणहारा माल धन सच्चा खज़ान। राउ रंकां खेल खिलांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बख्शे साचा माण। हरिजन साचे माण चरन दुआरे, सतिगुर सेवा आप वखाईआ। गुर गुर रूप लए अवतारे, गोबिन्द मेला सच मिलाईआ। अस्थिल सोहन वसदे रहिण चुबारे, भगत भगवन्त दए सलाहीआ। सन्तन चाढ़े रंग अपारे, रंग मजीठी उतर ना जाईआ। गुरमुख कूके करे पुकारे, हरि हरि एका रसना गाईआ। गुरमुख

ढए ढए पए दुआरे, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। सतिगुर पूरा गुरमुखां उत्तों आप आपणा आपे वारे, आपणी भेटा आप चढ़ाईआ। चारे जुग सुत दुलारे, पिता पूत वेख वखाईआ। लेखा जाणे अजीत जुझारे, भुल्ल रहे ना राईआ। फ़तह ज़ोरावर मार ललकारे, लहिणा देणा दए चुकाईआ। नीले घोड़े हो अस्वारे, नीले वाला फेरी पाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी लग्गा वेखे इक्क अखाड़े, शाह पातशाह आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। गुरमुख उठाए साचे लाड़े, रंग बसन्ती इक्क रंगाईआ। दिवस सुहाए सतारां हाढ़े, जो चढ़या उतर ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए फड़, वेखणहारा थाउँ थाँईआ। थान थनंतर वेखदा, वेखणहार करतार। धारे रूप दस दस्मेश दा, गुर शब्दी लए अवतार। कलिजुग वेला अन्तिम ठेसदा, धरनी धरत ना चुक्के भार। ब्रह्मा विष्न शिव सतिगुर चरन दुआरे लेटदा, धूढ़ी मंगे खाक अपार। पुरख अबिनाशी आपणे अंदर आपे लपेटदा, दिस ना आए विच संसार। करे खेल खेवट खेट दा, बेड़ा चलाए विच मँझधार। ल्या जन्म महीना जेठ दा, जेठा पुत हरि करतार। गुरमुखां अंदर वड़ वड़ वेखदा, खेले खेल अगम्म अपार। मनमुखां नाल करे संग झेड दा, झिड़क झिड़क दर दवारिउँ दए दुरकार। गुर गोबिन्द वेला हक निबेड़दा, निबेड़ा करे आप निरँकार। उलटा गेड़ा आपे गेड़दा, चारों कुंट दए हुलार। कलिजुग कूड़ कूड़ कुड़यारा छेड़ां छेड़दा, उच्ची कूके करे पुकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन लाए पार। सतिगुर पूरा ताड़दा, दीनां नाथ दयाल। मानस जन्म पैज संवारदा, दिवस रैण करे प्रितपाल। कलिजुग सुत्तयां वाजां मारदा, शब्द धुन लए उठाल। गढ़ तोड़े गढ़ हँकार दा, शब्द खण्डा फड़ फड़ ढाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेखणहारा साचे लाल। लाल अणमुलड़ा माणक मोती, गुरसिख महिमा कहिण ना जाईआ। घर मन्दिर जगदी रहे जोती, दिवस रैण ना कोई बुझाईआ। सुरत सवाणी रहे ना सोती, सुत्तयां रैण ना कोई विहाईआ। सतिगुर पूरा कढ्ढे वासना खोटी, जगत बनबास दए गंवाईआ। फड़ चढ़ाए साची चोटी, चितवत ठगोरी कोए ना पाईआ। हथ्थ फड़ाए नाम सोटी, डूँग्घी कंदर पार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दु:ख दर्द दए गंवाईआ। दु:ख दर्द दर छुट्टया, निर्मल होया शरीर। आप सुहाई साची रुतया, कढ्ढे हउमे पीड़। दीन दयाला एका तुठया, अमृत बख्शे ठांडा सीर। नाता तोड़े जूठा झूठया, वड दाता गुणी गहीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहारा साचा नीर। निर्मल नीर आत्म जीआ, बिरहों अग्न मिटाईआ। गुरमुख विरले मात पीआ, नाम खुमारी इक्क वखाईआ। नाता तोड़े साढे तिन्न हथ्थ सीआं, दर घर साचे वज्जी वधाईआ। सतिगुर मिल्या साचा पीआ, पीत पीतम्बर सीस सुहाईआ। गुर गुर करे आपणा

८९८ ०९

हीआ, गुरमुख वड वड्याईआ। भगतन अंदर आपे थीआ, थिर घर वासी भेव ना राईआ। सन्तन अंदर बीजया बीआ, रक्त बूंद ना कोए टिकाईआ। गुरमुखां कराए साचा हीआ, हरि के पौड़े आप चढ़ाईआ। गुरसिख तेरी डूँघी रखाई नीआं, नीआं हेठ निउँ निउँ आपणा आप दबाईआ। जोत अकालण बणी त्रीया, पुरख अकाल खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे आप तराईआ। हरिजन दुःख दलिद्र नासया, मिटया जगत अन्धेरा। एका रसना पूजा पाठया, मन अन्तर चाउँ घनेरा। जगत विकारा विच्चों काटया, पंचम पंचम ढह ढह होए ढेरा। पन्ध मुकाया औखी घाटया, सुख उपजे नेरन नेरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि बन्नृणहारा बेड़ा। बेड़ा बन्नृे सतिगुर मीत, मित्र प्यारा इक्क अख्वाईआ। गुरू गुर मन्त्र नाम दृढ़ाए साचा गीत, गृह गृह वेख वखाईआ। पंज तत्त तन करे ठंडा सीत, सांतक सति सति वरताईआ। इक्क वखाए साची रीत, पतित पुनीत बेपरवाहीआ। काया मन्दिर देहुरा मसीत, घर ठाकर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां आपे दए बुझाईआ। एका ठाकर एका स्वामी, एका सतिगुर नाउँ धरांयदा। एका कर्म करे उजागर होए नेहकामी, नेहकर्मी आपणी कल वरतांयदा। एका नगर खेड़ा वसे ग्रामी, सच सिँघासण एका लांयदा। एका शब्द नाद एका गाए बाणी, बावन आपणा रूप धरांयदा। एका अमृत ठंडा पाणी, आदि जुगादि आप वरतांयदा। एका महिमा अकथ कहाणी, जुग जुग आप सुणांयदा। एका राजा एका राणी, एका तख्त आप वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सेवा आप कमांयदा। सतिगुर पूरा सेवा कर, सेवादार अख्वाईआ। गुर गुर रूप मात धर, धरत धवल दए वड्याईआ। भगत फड़ाए आपणा लड़, छुट्ट कदे ना जाईआ। सन्तन अंदर आपे वड़, वरन गोत दए गंवाईआ। गुरमुखां घर विच वखाए घर, घर घर दीप जोत रुशनाईआ। गुरमुखां चुकाए झूठा डर, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। साचा घाड़न आपे घड़, ऐहरन मति वेख वखाईआ। जति पहारा वेखे दर, आपणी पवण पवण हिलाईआ। धीरज सुनिआरा आपे बण, आपणी कल आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बणत आप बणाईआ। ना कोई वेद दिसे हथिआर, आपणा घाड़न आप घड़ांयदा। जति पहारा ना कोई सुन्यार, अग्नी तत्त ना कोई मिलांयदा। ऐहरन मति ना कोए उज्यार, हठ मठ ना कोए ठगांयदा। ठांडे घर बैठ सच्ची सरकार, साची खेल आप खिलांयदा। एका मन्त्र कर त्यार, आपणा फुरना बाहर कढांयदा। आदि जुगादी पावे सार, जुग जुग वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विसर कदे ना जांयदा।

❊ ५ भाद्रों २०१७ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे घर रामूवाला ज़िला फिरोज़पुर ❊

पुरख अगम्मड़ा बेपरवाह, अलक्ख अभेव भेव ना राईआ। सति सतिवादी सच्चा शहनशाह, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। सचखण्ड निवासी सच मलाह, साचा बेड़ा रिहा चलाईआ। जुगा जुगन्तर चलाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। करे कराए सच न्याँ, निरगुण आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जूनी रहित आप अख्वाईआ। जूनी रहित पुरख अकाला, दर घर साचा आप सुहांयदा। शाहो भूप दीन दयाला, दीनां नाथ आप अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क रखांयदा। वसणहारा सच्चखण्ड सच्ची धर्मसाला, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। तख्त निवासी तख्त निराला, पुरख अबिनाशी आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनुभव आपणा रूप वटांयदा। अनुभव रूप श्री भगवान, रूप रेख ना कोए जणाईआ। साचे तख्त सच राजान, राज राजाना सोभा पाईआ। सति सतिवादी सति निशान, सतिगुर साचा आप झुलाईआ। एकँकारा इक्क इकल्ला देवणहारा धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी बाण चलाईआ। पावे सार दो जहान, पुरीआं लोआं वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड होए प्रधान, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, दिस ना आईआ। लक्ख चुरासी जीव जहान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। वेस अवल्लड़ा गुण निधान, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। गुर गुर रूप होए आप मेहरवान, शब्दी डंका इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साचा साची सेज आप सुहाईआ। गुर गुर खेल अगम्म अपार, निरगुण सरगुण आप करांयदा। लोकमाती लै अवतार, पंज तत्त काया चोला आप हंढांयदा। एका ब्रह्म करे विचार, पारब्रह्म वेख वखांयदा। सो पुरख निरँजण मीत मुरार, हरि पुरख निरँजण खेल खिलांयदा। एकँकारा कन्त भतार, आदि निरँजण संग निभांयदा। अबिनाशी करता गुप्त ज़ाहर, श्री भगवान भेव खुलांयदा। पारब्रह्म निराकार साकार, आपणी कल धरांयदा। शब्द विचोला बण संसार, साचा ढोला आपे गांयदा। तोला बणे तोलणहार, एका कंडा हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धारा आप वखांयदा। गुर गुर हरि हरि खेल अपारा, कुदरत कादर आप कराईआ। नूर इलाही हो उज्यारा, एका कलमा आप पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणां वसे बाहरा, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। साध सन्त रहे पुकारा, आदि जुगादि इक्क लिव लाईआ। सरगुण निरगुण बण भिखारा, अग्गे आपणी झोली डाईआ। आदि जुगादी इक्क वरतारा, सतिगुर सच्चा आप अख्वाईआ। गुर गुर करे साची कारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, बेऐब आप अख्वाईआ। गुर गुर सूरा सूरबीर, साचे तख्त सुहांयदा। लेखा जाणे शाह हकीर, राउ रंक राज राजान वेख

वखांयदा। एका बख्शे अमृत आत्म ठंडा सीर, आदि जुगादी आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुर लेखा जाणे आपणा धुर, धुर दा लेखा आप समझांयदा। गुर गुर हथ्थ वड्याईआ, हरि साचा शब्द जणांयदा। लक्ख चुरासी आप समझाईआ, भरम भुलेखा भरम मिटांयदा। ब्रह्म ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ, ब्रह्म मेला आप करांयदा। नेत्र नैण इक्क खुलाईआ, अज्ञान अन्धेर चुकांयदा। शब्द नाद धुंन वजाईआ, अनहद साची सेवा लांयदा। आत्म सेजा इक्क सुहाईआ, घर मन्दिर सोभा पांयदा। जोत निरजंण कर रुशनाईआ, दिवस रैण डगमगांयदा। सतिगुर पूरा सच्चा शहनशाहीआ, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। वेखणहारा थाउँ थाँईआ, नव नव आपे फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा नाउँ वटांयदा। गुर मन्त्र हरि नाम दृढ़ाया, एका बूझ बुझाईआ। निष्अक्खर वक्खर आप पढ़ाया, कलम दवात ना लिखे शाहीआ। बसुधा कागज़ ना कोए बणाया, सत्त समुंद मस वरोले ना राईआ। बोध अगाधा शब्द जणाया, घर साचे वज्जे वधाईआ। आदि जुगादी नाउँ धराया, ना मरे ना जाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाया, घट घट आपणी सेज हंढाईआ। चौदां लोकां वेस वटाया, चौदां तबकां दए सलाहीआ। त्रैगुण माया तोड़ तुड़ाया, बन्दी बन्द ना कोए रखाईआ। पंचम मेला सहिज सुभाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणी खेल खलाईआ। गुरू गुरू गुर गुर सूरा सूरबीर, साहिब सुल्तान सच्चा पातशाहीआ। जन भगतां कट्टे जगत जंजीर, जागरत जोत करे रुशनाईआ। अमृत बख्शे ठांडा सीर, सांतक सति सति वरताईआ। भर प्याला प्याए साचा नीर, बिरहों अग्ग ना कोए तपाईआ। बजर कपाटी देवे चीर, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। हउमे हंगता कढ्ढे पीड़, माया ममता रहे ना राईआ। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, कबीर जोलाहा दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। कबीर कबीरा पाया, काया कंचन गढ़ अपार। चढ़ अख़ीरा दर्शन पाया, महल्ल अटल उच्च मुनार। नेरन नेरा नज़री आया, दूर दुराडा पन्ध करया पार। पीरन पीरा दरस दिखाया, शाह हकीरा करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवे इक्क आधार। भगत उधारीअन आप हरि, चार वेद रहे जस गाईआ। एका जोत एका शब्द अंदर धर, धरत धवल दए वड्याईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, निरगुण निरवैर आपणी खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला इक्क अतीता, आदि जुगादी ठंडा सीता, करे कराए पतित पुनीता, पतित पापी आप तराईआ। भगतन मेला हरि भगवन्त, पारब्रह्म शरनाया। नाता तुट्टे लख चुरासी जीव जंत, हरि हरि सज्जण एका पाया। रसना जिह्वा मणीआ मंत, मन अन्तर नाम दृढ़ाया। मेल मिलावा

साचे कन्त, आत्म सेजा आप सुहाया। चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाया। महिमा गाए अकथ कहाणी बेअन्त, अगणत रसना जिह्वा ना कोए हलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन वेखे सहिज सुभाया। भगतन मेल मिलंदड़ा, कर किरपा गुण निधान। दीपक जोती इक्क जगंदड़ा, घर वखाए सच निशान। शब्द नाद इक्क वजंदड़ा, अनहद धुन सच्ची धुंनकान। अमृत जाम पलंदड़ा, एका घर सच्चा बेनाम। अन्ध अन्धेर आप मिटंदड़ा, जोत निरँजण कर प्रधान। गीत सुहागी इक्क सुणंदड़ा, सो पुरख वड मेहरवान। हँ ब्रह्म मेल मिलंदड़ा, नाता तुट्टे पंज शैतान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवे भगती दान। भगत भगवन्त घर सुहाया, दिवस रैण प्रभात। सतिगुर साचा रंग रंगाया, बैठा रहे इक्क इकांत। गुर गुर आपणा रूप वटाया, देवणहारा साची दात। हरिभगत आपणे लेखे लए लगाया, आदि अन्त पुच्छे वात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल बंधाए नात। चरन कँवल जन नाता जोड़या, घर पाया बेपरवाह। शब्द मिलाए गुरू गुर घोड़या, वेख वखाए शहनशाह। भगतां अन्तिम आपे बौहड़या, लोकमात होए सहा। जुगा जुगन्तर फिरे दौड़या, वसणहारा साचे थाँ। चौथे घर लाया पौड़या, आप आपणा पन्ध मुका। रस वेखे मिट्ठा कौड़या, आपणा रस आप वखा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन पकड़नहारा बांह। भगतन पैज संवारिअन, जुगा जुगन्तर साची कार। सन्तां देवे नाम आधारिअन, आप आपणा कर प्यार। निरगुण जोती कर उज्यारिअन, निरगुण नूर करे उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त वसाए साचे घर, आप वखाए सच दुआर। सन्त दुआरा सचखण्ड, सतिगुर साची वण्ड वण्डाईआ। गुर गुर दरस मंगण मंग, रसना जिह्वा नेत्र नैण जगत जगदीश सीस झुकाईआ। सूरा सुरबंग लाए अंग, वजाए नाम मृदंग करे शनवाईआ। आत्म सेज पलँघ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन मेला मेल मिलाईआ। सन्तन मेल मलंदड़ा, कर किरपा गुण निधान। लोकमात वेख वखंदड़ा, लक्ख चुरासी कर पछाण। आप आपणे आप उठंदड़ा, देवणहारा धुर फ़रमाण। शब्द अनादी राग सुणंदड़ा ,आप सुणाए आपणे कान। घर मन्दिर जोत जगंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन बख्शे चरन ध्यान। सन्त मिलावा एका हरि, हरि जू वेख वखाईआ। नाता तोड़े नव दर, जगत वासना रहे ना राईआ। आशा तृष्ना जाए मर, माया ममता ना कोए सताईआ। वर घर पाए एका नर, नर नरायण इक्क हंढाईआ। निरभउ चुकाए जगत डर, भय भयानक होए सुहाईआ। इक्क नुहाए साचे सर, अमृत सरोवर आप भराईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़, साचे सन्तां करे पढ़ाईआ। ना कोई चोटी ना कोई जड़, सचखण्ड

दुआरे बैठा आसण लाईआ। ना कोई सके घाड़न घड़, नेत्र नैण ना कोए वखाईआ। आपणे मन्दिर बैठा वड़, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सन्तन फड़ाए आपणा लड़, जुग जुग आपणी खेल खलाईआ। आपे तोड़े हँकारी गढ़, निवण सो अक्खर आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन सति सति वरताईआ। सति सतिवादी सति भण्डारा, हरि सन्तन आप वरतांयदा। सो पुरख निरँजण खेल न्यारा, निरगुण आपणा आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण सांझा यारा, सगला संग वखांयदा। एकँकारा पावे सारा, आपणी धारा आप बंधांयदा। आदि निरँजण हो उज्यारा, घर दीपक जोत जगांयदा। अबिनाशी करता लाए नाअरा, उच्ची कूक आप सुणांयदा। श्री भगवान बोल जैकारा, आपणी कल आप वरतांयदा। पारब्रह्म प्रभ आपणा कर पसारा, आपणी रचना वेख वखांयदा। त्रैगुण तत्त आप विचारा, त्रै त्रै मेला आप मिलांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यारा, न्यारा मार्ग आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन रूप आप समझांयदा। विष्न वटाया रूप हरि, ब्रह्मे ब्रह्म जोत जगाईआ। शंकर आपणे अग्गे धर, वेखे शहनशाहीआ। तिन्नां फड़ाया एका लड़, छुट्ट कदे ना जाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़, आपे भाण्डे बन्द कराईआ। आपणे अंदर आपे वड़, आपे आसण लाईआ। अग्नी हवन ना जाए सड़, ना मरे ना जाईआ। आपणी किरपा आपे कर, आपणी वस्त झोली रिहा पाईआ। ब्रह्मे देवणहारा वर, लक्ख चुरासी रचन रचाईआ। ईश जीव एका घर, बैठा सेज हंढाईआ। धरनी धरत धवल धरनापत, धर धर आपणी धीर धराईआ। रक्त बूंद ना दिसे रत, रती रत ना जोड़ जुड़ाईआ। रूप आकारा ना कोए पंज तत्त, साकार ना कोए वड्याईआ। खेले खेल हरि कमलापति, नारी सेज ना कोए हंढाईआ। आपणी वस्त आपणे अंदर रक्ख, आपे वेखे वेखणहारा दिस ना आईआ। सर्बकल आपे समरथ, समरथ हथ्थ वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी भाण्डा घड़या, निरगुण सरगुण अंदर वड़या, आपणी विद्या आपे पढ़या, ब्रह्मा मुख चार सालाहीआ। चार मुख सालाहण, चार जुग रचन रचाईआ। आपणी जिह्वा आपे गायण, चार वेद करे पढ़ाईआ। चार बाणी रंग रंगायण, चारे खाणी भेव खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी महिमा आपणे हथ्थ रखाईआ। लख चुरासी कर पसार, पंज तत्त चोला आप हंढांयदा। घर विच घर कर त्यार, घर आसण सेज सुहांयदा। दीआं बाती कर उज्यार, कमलापाती वेख वेखांयदा। बूंद स्वांती ठंडी ठार, कँवला मुख आप भरांयदा। साचा साकी हो त्यार, भर प्याला जाम प्यांअदा। बन्द ताकी खोल्ह किवाड़, अनहद ताल वजांयदा। अंदर बैठा मारे झाकी सिरजणहार, मुख आपणा पर्दा पांयदा। आपणी पुच्छे आपे वाती प्रगट होवे विच संसार, भगवन सन्तन आपणा रूप दरसांयदा। फड़

फड़ बाहों जाए तार, भेव अभेदा आप खुल्हांयदा। अठ्ठे पहर इक्क गुफ्तार, गुफ्तम आपणी आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची वस्त, आपणी किरन इक्क इक्क नाल वण्ड वण्डआंयदा। इक्क किरन रच ब्रह्मण्ड, इक्क इक्क विच टिकाईआ। इक्क इक्क इक्क करे खण्ड खण्ड, इक्क इक्क लेखा लिख ना पाईआ। इक्क इक्क आपणी वण्डण साची वण्ड, इक्क एका इक्क आपे दए मिलाईआ। ब्रह्म मंगे साची मंग, आपणे अग्गे झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी सूरा सरबंग, सूरबीर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे आपणा वर, सन्तन अन्तर आपणी बूझ बुझाईआ। सन्तन अन्तर किरन कटाकस, तीर निराला आप लगांयदा। मन विकार मारे राकश, रक्षस आपणे हथ्थ रखांयदा। आपणी कराए आप शनाखत, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। आपणी बख्शे आप विरासत, आपणा लेखा झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन वखाए साचा घर, घर साचा आप सुहांयदा। सन्तन पर्दा लांहयदा, दूई द्वैती दए उतार। एका अमृत जाम प्यांअदा, काया करे ठंडी ठार। साचा मन्त्र इक्क दृढ़ांयदा, सो पुरख निरँजण किरपा धार। हँ ब्रह्म मेल मिलांयदा, मेल मिलावा अगम्म अपार। हड्ड मास नाड़ी चम्म पंज तत्त वेख वखांयदा, मन मति बुध पाए सार। खुशी गम ना कोए जणांयदा, हरख सोग वसया बाहर। साची चोग इक्क चुगांयदा, माणक मोती कर त्यार। सुरती सोती आप उठांयदा, शब्द सोटी फड़ हथिआर। कोटन कोटि पापी तरांयदा, कर किरपा आप निरँकार। वासना खोटी बाहर कढांयदा, त्रिया वेस ना करे कबुद्धि नार। निर्मल दीआ जोत जगांयदा, दिवस रैण होए उज्यार। साचा नाद शब्द वजांयदा, धुन आत्मक सच्ची धुन्कार। सन्तन पर्दा आपे लांहयदा, शब्द विचोला बण संसार। आपणा लेखा आप जणांयदा, पुरख अबिनाशी मीत मुरार। भरम भुलेखा सर्ब कढांयदा, हउमे हंगता रोग निवार। एका अक्खर आप सिखांयदा, निष्अक्खर दए आधार। साचे सन्तां सवाल आपे हल्ल करांयदा। दूसर पट्टी कोए ना करे त्यार। होर तापा ना कोए वखांयदा, पूरन गुर इक्क अवतार। पूर्ब लिख्या लेखा जणांयदा, आप आपणी कर विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन बख्शे चरन प्यार। सन्तन हरि रंग माणया, देवणहारा दीन दयाला। आपणा आप लोकमात पछाणया, नाता तुट्टा शाह कंगाला। पाया पुरख श्री भगवानया, सतिगुर पूरा गुर गोपाला। चले चलाए साचे भाणया, जुगा जुगन्तर खेल निराला। तख्तों लाहे राजे राणया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन मेला साचे घर, घर साचा एका जाणया। घर साचा सच गुर दर, घर साचे सोभा पाईआ। सन्तन मिल्या एका वर, वर दाता झोली पाईआ। सच भण्डारा देवे भर, अतोट अतुट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

६०४
०६

आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त कन्त एका रंग रंगाईआ। सन्त कन्त सेज सुहांयदा, आत्म अन्तर कर प्यार। पलँघ रंगीला इक्क विछांयदा, छैल छबीला सति करतार। आपणी दिशा वेख वखांयदा, कर कर हीला एकँकार। आपणा कबीला आप बणांयदा, सन्त भगत कर उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वस्त अगम्म अपार। सन्तन वस्त अमोलक, झोली पाईआ। शब्द अनादी वज्जे ढोलक, दर घर मन्दिर आप वजाईआ। हरि का नाउँ रखाए काया गोलक, त्रैगुण आपणा कुण्डा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। सन्त वजाए सच नगारा, मृदंगा आपणे हथ्थ उठांयदा। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, जुग करता आप करांयदा। जुगा जुगन्तर लए अवतारा, लोकमात वेस वटांयदा। भगत मिलाए सच दुआरा, दरगाह साची धाम सुहांयदा। सन्तन मेला विच संसारा, साख्यात रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत सवाली वेख वखांयदा। जगत सवाली, जगत जग जग माया बन्धन पांयदा। दोहां हथ्थां रक्खे ख़ाली, सृष्ट सबाई आप भवांयदा। कलिजुग रैण अन्धेरी काली, साचा चन्द ना कोए चढ़ांयदा। काम क्रोध करे दलाली, जूठ झूठ वणज वखांयदा। आपणी हथ्थीं बूटा पुट्टे माली, हरी सिंच क्यारी ना कोए करांयदा। फल ना दिसे किसे डाल्ही, सिम्मल रूप सर्ब लहरांयदा। जगत ना दिसे कोए पाली, प्रितपालक मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे इक्क सवाली, रसना जिह्वा आप समझांयदा। भगत सवाल भगती दान, भगवन वेख वखाईआ। सन्तन मंगे हरि हरि नाम, हरि हरि जू झोली पाईआ। जुगा जुगन्तर पूरा करे काम, काम कामनी दए मिटाईआ। वेखणहारा नगर खेड़ा सच ग्राम, काया माटी चाम फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सन्त सवाल सुणाया, मन मति बुध कर विचार। पुरख अबिनाशी दया कमाया, त्रैगुण माया वसे बाहर। आपणा तत्त ना कोए रखाया, तत्तव तत्त लए उभार। लक्ख चुरासी रिहा समाया, निरगुण जोत कर उज्यार। सरगुण साचा संग निभाया, मेल मिलाए विच संसार। गुरसिख साची मंग मंगाया, गुरमुख बणे दर भिखार। सिँघ तारा क्यों रिहा कुरलाया, प्रभ भरे वस्त भण्डार। दूजा सवाल ना कोए जणाया, नेहकर्मी कर्म रिहा विचार। पहला लेखा जो ल्या लिखाया, कलिजुग अन्तिम लाहे भार। वेस अनेका आप कराया, दाढ़ी मुछ दिसे ना सिरजणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर लए विचार। गुरसिख अक्खर इक्क इक्क बोलया, हरि साचा सच विचार। घट मन्दिर बैठा बणके तोलया, साचा कंडा लए हुलार। पिछला फोलण गुरसिख तेरा कदे ना फोलया, अवगुण पापी लए तार। कलर कँवल आपे मौलया, खिड़ी रहे सदा गुलज़ार। दरस

दिखाया उप्पर धवलया, निहकलंका लए अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कबुध कुलखणी देवे मार। कबुध कलक्खनी डूमनी, नार दुहागन रंग। जुग जुग रही सूमनी, सिर चुक्या भार गंढु। थान ना सोहे भुमका भूमनी, जिस घर बैठी दुहागण आपणी आपणी वण्डण वण्ड। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा सर्ब ब्रह्मण्ड। सवालीआं हल सवाल करांयदा, सदा हथ्थ समरथ महिमा कथी ना जाईआ। घड़ी पल मानस जन्म लेखे लांयदा, वल छल खेल कराईआ। नौं जामा मानस जन्म दवांयदा, गुरसिख सिख फेर बणाईआ। इक्क सौ इक्क वार दरस दिखांयदा, इक्क इकल्लड़ा आप हो जाईआ। बाल नादाना तारा सिँघ क्यों घबरांयदा, हरि जू हरि मन्दिर बैठा भुल ना जाईआ। गुरमुखां दी ख़ाक फिरे छाणदा, आपणी हथ्थीं भार उठाईआ। आपणी कुरीती करता पुरख आपे जाणदा, गुर पीर देण गवाहीआ। सन्त साचे घर मिल सतिगुर हरि रंग माणदा, रंग रंग विच टिकाईआ। वेला चुक्या पुच्छ पछाणदा, पुछणहारा अंदर बैठा ताड़ी लाईआ। नाता तुटया जगत हाण दा, हाणी मिल्या शहनशाहीआ। भेव चुक्या जगत मकान दा, हरि जू हरि मन्दिर जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी आप पछाणदा, भुल्ल रहे ना राईआ। बन्धन पाए नाम डोर, अडोल अडुल्ल दया कमांयदा। बन्न्हणहारा पंजे चोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार गवांयदा। वेखणहारा अन्ध घोर, जोत निरँजण दीप जगांयदा। शब्द सुणाए सच्ची घनघोर, आप आपणा बोल अल्हांयदा। लेखा चुक्के तोर मोर, तेरा तेरा ना कोए वखांयदा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, वागां आपणे घर रखांयदा। लग्गी प्रीत निभे तोड़, अद्धविचकार ना कोई तुड़ांयदा। हरिजन साचे लए जोड़, आप आपणा मेल मिलांयदा। मनमुख दर तों देवे होड़। हरि का रूप नज़र ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख नुहाए साचे सर, दुरमति मैल आप धुआंयदा। दुरमति मैल देवे कट्ट, सतिगुर हथ्थ वड्डी वड्याईआ। दाता दानी मेटे फट्ट, एका रंगण नाम रंगाईआ। अमृत आत्म देवे झट, निझर झिरना आप झिराईआ। शब्द नगारे मारे सट्ट, अनहद ताल आप वजाईआ। आत्म सेज सुहाए खाट, श्री भगवान आपणा आसण लाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात वरन बरन ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सर्ब जीआं इक्क गोसाईआ।

✻ ५ भाद्रों २०१७ बिक्रमी उजागर सिँघ दे घर
रामू वाला (नवां) ज़िला फिरोज़पुर ✻

सो पुरख निरँजण ठांडा दरबारा, दर घर साचा आप सुहांयदा। हरि पुरख निरँजण निरगुण धारा, आप आपणी विच रखांयदा। एकँकारा कर पसारा, आप आपणी कल वरतांयदा। आदि निरँजण नूर उज्यारा, जोती नूर डगमगांयदा। श्री भगवान सच सिक्दारा, साचा तख्त आप सुहांयदा। अबिनाशी करता हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। पारब्रह्म वरते वरतावे सच भण्डारा, वड भण्डारी नाउँ धरांयदा। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़ा, थिर घर साचे सोभा पांयदा। शब्द अगम्मी सुत दुलारा, हरि निरँकारा आप उपजांयदा। एका रंग रंगे करतारा, साची रंगण आप रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत आपणे हथ्थ रखांयदा। साचा शब्द हरि मेहरवान, निरगुण आपणा आप उपाईआ। आपणे मन्दिर बैठ मकान, थिर दरबारे वेख वखाईआ। साचे तख्त राज राजान, आसण सिँघासण सोभा पाईआ। दर दरवेश बण दरबान, दर भिखारी मंग मंगाईआ। वस्त अमोलक इक्क महान, पुरख अबिनाशी आपणे हथ्थ रखाईआ। देवणहारा साचा दान, दाता दानी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाईआ। जोती खेल पुरख अकाला, निरगुण नूर डगमगांयदा। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाला, ब्रह्मण्ड सोभा पांयदा। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाला, जागरत जोत आप जगांयदा। आपणा मार्ग इक्क सुखाला, सति सतिवादी आप लगांयदा। लेखा जाणे काल महांकाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा आप सुहांयदा। महिमा अगणत अनूप, हरि मन्दिर बह बह आसण लांयदा। आदि जुगादी सति सरूप, दीवा बाती इक्क जगांयदा। एका देवणहारा धूप, शब्द अनादी ताल वजांयदा। आप सुणाए दहि दिशा चारे कूट, पारब्रह्म प्रभ खेल खिलांयदा। आपणे उप्पर आपे तुट्ठ, थिर घर साचे सोभा पांयदा। आपे चढ़या साची चोट, साचा तख्त आप सुहांयदा। दो जहानां आपणी रक्खे आपे ओट, आपणे भाणे आप रहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच नगारे लाए चोट। सच नगारा हरि निरँकार, दरगाह साची आप रखाईआ। शब्द अनादि सच्ची धुन्कार, हरि मन्दिर आप वजाईआ। सुणे सुणाए सुनणेहार, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। गावत गाए अगम्म अपार, राग रागनी ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। शब्द वडा हरि वड्यांअदा, वड दाता बेपरवाह। शब्द आपणा रूप प्रगटांयदा, जोती जोत जोत जगा। शब्द साचा मार्ग लांयदा, लोआं पुरीआं महल्ल वसा। शब्द एका रंग रंगांयदा, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाए थाउँ थाँ। शब्द

एका हुक्म सुणांयदा, निरगुण सरगुण रूप लए वटा। शब्द एका वेख वखांयदा, विष्न ब्रह्मा शिव पकड़े बांह। शब्द त्रैगुण पन्ध चुकांयदा, रजो तमो सतो पकड़णहारा बांह। शब्द एका गुण जणांयदा, पंज तत्त साची गोदी लए बहा। शब्द एका नाद वजांयदा, बोध अगाधा भेव खुल्हा। शब्द एका हुक्म जणांयदा, ब्रह्मा चारे वेदां दए लिखा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया शब्द उपजांयदा। शब्द संदेशा हरि निरँकार, आपणा आप सुणाईआ। शब्द नरेशा वड संसार, सिक्दार सच्चा पातशाहीआ। शब्दी करे कराए साची कार, करता पुरख आपणी खेल कराईआ। शब्द शब्दी शब्द दुआर, शब्द इष्ट देव रूप वटाईआ। शब्द कन्त शब्द भतार, शब्द नारी सेज विछाईआ। शब्द गीत गोबिन्द गाए मंगलाचार, शब्द अमृत मेघ बरसाईआ। शब्द वखाए ठांडा दर दरबार, थिर घर साचा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे शब्द सच्ची सरनाईआ। शब्द सूरा हरि बलवान, महिमा गणत गणी ना जाईआ। सो पुरख निरँजण देवे माण, हरि पुरख निरँजण होए सहाईआ। एकँकारा वड दाता दानी दान, साची वस्त अमोलक एका झोली पाईआ। आदि निरँजण खेल महान, जोती नूर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता बख्शे इक्क ध्यान, दूजा दर ना कोए वखाईआ। श्री भगवान नज़री आए एका काहन, एका मंडल साची सखीआं नाच नचाईआ। पारब्रह्म होए निगहबान, निज नेत्र इक्क दरसाईआ। शब्द गुर आदि जुगादि रक्खे आपणी आण, ना मरे ना जाईआ। जुगा जुगन्तर होए बेपहचान, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वड्याईआ। शब्द दाता पुरख बिधाता, पारब्रह्म अख्वांयदा। शब्द पिता शब्द माता, शब्द रूप अनूप धरांयदा। शब्द दिवस शब्द राता, रवि ससि सूरज चन्न आप चढ़ांयदा। शब्द पूजा शब्द पाठा, शब्द मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। शब्द सरोवर तीर्थ ताटा, घर घर ताल सुहांयदा। शब्द खेले खेल बाज़ीगर नाटा, स्वांगी आपणा सांग रचांयदा। शब्द सोया आत्म सेजा साची खाटा, काया मन्दिर अंदर आसण लांयदा। शब्द खोल्हे चौदां हाटा, चौदां तबकां फोल फुलांयदा। शब्द चलाए जुगा जुगन्तर आपणी गाथा, एका अक्खर आप पढ़ांयदा। शब्द रूप वटाए त्रिलोकी नाथा, भेव अभेदा भेव रखांयदा। शब्द गुर सर्बकला समराथा, अकल कलधारी आपणा नाउँ वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द एका हरि, एका गुर गुर बन्धन पांयदा। एका शब्द गुरदेव इष्ट, आदि जुगादि समाया। एका रूप दरसाए सर्ब सृष्ट, वेस अनेका आप धराया। लेखा जाणे जगत परविशट, घड़ी पल लेख लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर निरगुण आपणा खेल खलाईआ। निरगुण शब्दी धार, सति पुरख निरँजण आप चलाईआ। निरगुण जोत निराकार, निरवैर

रूप वटाईआ। निरगुण कोट कर त्यार, महल्ल अटल सोभा पाईआ। निरगुण भूप बण सिक्दार, तख्त ताज रिहा हंढाईआ। निरगुण चारों कूट होया ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण शब्द सूरा सरबंग, जुग जुग वजाए इक्क मृदंग, तुरीआ नाद हथ्थ उठाईआ । तुरीआ राग हरि तराना, पुरख अबिनाशी आपे गांयदा। साचे मन्दिर हो प्रधाना, आप आपणा ताल वजांयदा। सचखण्ड दुआर झुलाए इक्क निशाना, नाम निशाना हथ्थ उठांयदा। पुरख पुरखोतम वड मेहरवाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर आप सुहांयदा। साचा मन्दिर तुरीआ राग, त्रैगुण भेव ना राईआ। पारब्रह्म प्रभ गाए आदि जुगादि, सुर ताल ना कोए रखाया। निष्अक्खर वेखो बोध अगाध, रूप रेख ना कोए दरसाया। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्मादि, भेव अभेदा भेव चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर आप सुहाया। तुरीआ राग शब्द तुरंग, त्रैकाल दरसी आप दौड़ाईआ। निरवैर वजाए इक्क मृदंग, मूर्त अकाल सेव कमाईआ। पुरख अकाल निभाए साचा संग, करनी करता करता पुरख आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। साचे मन्दिर आपे लँघ, श्री भगवान सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द एका नाद, आप वजाए आदि जुगादि, जुग जुग तार सितार आप हलाईआ। तुरीआ राग सुणांयदा, हरि सतिगुर सच्चा शहनशाह। गुर गुर आपे मेल मिलांयदा, सतिगुर पूरा बेपरवाह। भगतन भउ इक्क चुकांयदा, निरभउ आपणा नाउँ धरा। सन्तन सिख्या इक्क समझांयदा, साख्यात जोत दए जगा। गुरमुख आपणे लड़ बंधांयदा, शब्द सरूपी बन्धन पा। गुरसिख सोए मात उठांयदा, लख चुरासी फंदन पर्दा लाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी बणे मलाह। हरि शब्द खेवट खेटया, आदि जुगादि समाए। पुरख अबिनाशी उपजाया बेटया, जुगा जुगन्तर सेव कमाए। सचखण्ड दुआरे आपे लेटया, दरगाह साची धाम सुहाए। आपणा मन्दिर आपणे नेत्र आपे पेख्या, आपे बैठा आसण लाए। आपे भूप नर नरेश्या, हुक्मी हुक्म रिहा वरताए। आपे बणे भिखारी दर दरवेश्या, अलख अलखणा अलख जगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वडियाए। शब्द सुल्ताना श्री भगवाना, दर घर साचे सोभा पांयदा। राग तराना एका गाणा, तुरत तुरीआ नाद वजांयदा। करे प्रकाश रवि ससि भाना, सूरज चन्न आप चमकांयदा। मंडल मंडप आप सुहाना, शब्द शब्दी वेख वखांयदा। आपणी हथ्थीं बन्ने आपे गानां, आप आपणा सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मन्दिर आप सुहांयदा। साचा गानां हथ्थ करतार, आपणी इच्छया पूर कराईआ। शब्दी शब्द करे वरतार, शहनशाह सिफ्त सालाहीआ। जोती शब्दी इक्क प्यार, एका घर दए वड्याईआ। साची चोटी चढ़

महल्ल मुनार, उच्चा टिल्ला वेखे चाँईं चाँईआ। वरन गोती वसया बाहर, निर्मल जोत इक्क रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द हरि अवतारा, गुर गुर रूप विच संसारा, भगतन देवे नाम अधारा, नाम आपणी झोली पाईआ। नाम आधारा हरि निरँकारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। शाहो भूप वड सिक्दारा, मीत मुरारा धुर दरबारा वेख वखाईआ। आदि जुगादी कर पसारा, एकँकार आपणी कल आप वरताईआ। शब्द भण्डारा हरि वरतारा, दो जहानां पावे सारा, लोआं पुरीआं फोल फोलाईआ। लख चुरासी कर त्यारा, अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर आपणी सेजा आप हंढाईआ। गुर पीर लए अवतारा, साधां सन्ता करे प्यारा, अन्तर मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। जोती बाती कर उज्यारा, कमलापाती दए सहारा, दिवस राती सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी रूप आप वटाईआ। शब्दी रूप वटांयदा, पारब्रह्म करतार। आपणे मन्दिर बह बह, आपणा लेखा आप समझांयदा। गुणवन्ता गुण विचार। कागद कलम ना कोए रखांयदा, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी वरते शब्द वरतार। शब्द वरताया हरि निरँकार, आपणी वस्तू वेख वखांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड कर त्यार, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। लक्ख चुरासी भर भण्डार, घट घट वासी डेरा लांयदा। जोत प्रकाशी विच संसार, निरगुण सरगुण रूप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द देवे साचा वर, वर दाता दर घर आपे पांयदा। शब्द दाता दातार, दरगाह साची धाम सुहांयदा। जुगा जुगन्तर लए अवतार, लोकमात फेरा पांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर साधा सन्तां देवे इक्क आधार, भगतां भगती वेख वखांयदा। गुर गुर रूप प्रगट होए गुप्त ज़ाहर, आप आपणी कल धरांयदा। उच्ची कूक करे पुकार, आपणा ढोला आपे गांयदा। सो पुरख निरँजण खेल अपार, हँ ब्रह्म आपणी अंस बणांयदा। जगत विचोला बण गिरधार, शब्द सोहला आप सुणांयदा। साचा तोला बणे तोलणहार, तेरां तेरां धार चलांयदा। चोला बदले वारो वार, एका जोती डगमगांयदा। पर्दा ओहला वेखे विच संसार, भेव कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक्क अख्वांयदा। एका शब्द एका गुर, सतिगुर साचा आप उपजाईआ। एका ताल एका सुर, एका नाद वजाईआ। एका चढ़े साचे घोड़, चारों कुंट फेरी पाईआ। इक्क इकल्ला रिहा दौड़, पुरख अबिनाशी वड वड्याईआ। शब्द अगम्मी लाए पौड़, चौथा डण्डा हथ्थ उठाईआ। लक्ख चुरासी वेखे जीव जंत मिट्ठा कौड़, लुकया कोई रहिण ना पाईआ। जन भगतां बुझाए लग्गी औड़, सतिगुर शब्द अमृत जाम प्याला हथ्थ उठाईआ। आदि जुगादी बुझाए औड़, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी शब्द समझाईआ। गुर शब्द सच्चा पातशाह, मात

पित ना कोए रखांयदा। आदिन अन्ता बेपरवाह, निरगुण निर्धन आप अख्वांयदा। हुक्मी हुक्म दए सलाह, शब्द शब्दी नाउँ प्रगटांयदा। जन भगतां बणे पिता माँ, आप आपणी गोद बहांयदा। निथावयां देवे साचा थाँ, दरगाह साची आप सुहांयदा। काग हँस लए बणा, माणक मोती चोग आप चुगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द भण्डारा हरि निरँकारा, जुगा जुगन्तर लै अवतारा, एका गुर समझांयदा। एका गुर इक्क अवतार, शब्दी शब्द वज्जे वधाईआ। एका मन्दिर इक्क दरबार, एका घर रिहा दिसाईआ। एका अंदर कर प्यार, साची सेज रिहा हंढाईआ। एका खण्डा तेज़ कटार, एका शस्त्र हथ्थ चमकाईआ। एका ब्रह्मण्डां पावे सार, जेरज अंडां फोल फुलाईआ। एका पार कन्ढ्ढा जाणे किनार, सतिजुग त्रेता द्वापर आपे पन्ध मुकाईआ। एका वेखे उच्चे टिल्ले चढ़ मिनार, चोटी पर्बत आपणा आसण लाईआ। एका ढह ढह पए चरन दुआर, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। एका दर दर बणे भिखार, एका अल्फ़ी गल हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द गुर वसे एका घर, घट मन्दिर आप सुहाईआ। घट मन्दिर हरि सुहांयदा, निरगुण सरगुण कर प्यार। धर्मसाला इक्क वखांयदा, धर्म धर्मी कर विचार। दीपक जोत जगांयदा, निरगुण दीपक इक्क उज्यार। शब्द राग इक्क सुणांयदा, अनहद बोल धुन जैकार। अमृत जाम इक्क प्यांअदा, भर प्याला ठंडा ठार। गुरमुख साचे मेल मिलांयदा, एथे उथे पावे सार। शब्द गुर इक्क समझांयदा, हरि मूर्त अकाल। काल विच कदे ना आंयदा, महांकाल करे ना कोई सवाल। आपणा भाणा आप वरतांयदा, जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाल। कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा, सतिगुर पूरा दीन दयाल। जोती जामा भेख वटांयदा, आपे चले अवल्लड़ी चाल। शब्द शब्दी नाद वजांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मंगल आपे गांयदा। शब्द गाए सुहागी गीत, सोभावन्त बेपरवाहीआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण बैठा रहे अतीत ठांडा सीत, दर दरबारा आप सुहाईआ। आदि जुगादी पतित पुनीत, गुर शब्द चलाए साची रीत, मन्दिर मसीत वेख वखाईआ। चार कुंट एका रंग रंगाए हस्त कीट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम एका शब्द दए वड्याईआ। शब्द उठाया हरि बलवान, लक्ख चुरासी लए नचाईआ। हथ्थ फड़ाया हरि निशान, लोआं पुरीआं आप झुलाईआ। एका देवे धुर फ़रमाण, दर घर साचे हुक्म सुणाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी होए हैरान, नौं सत्त भेव ना राईआ। मन मति बुध ना सके पछाण, गुरमति हथ्थ किसे ना आईआ। चारे वेद जगत कुरलान, पुराण अठांरा देण दुहाईआ। गीता गाए आपणा गाण, अठ्ठ दस वज्जे वधाईआ। अञ्जील कुरान सर्ब कुरलान, हरि दा मसला हल ना कोए कराईआ। खाणी बाणी पढ़न विद्वान, जगत विद्या मात वड्याईआ। हरि का रूप लए पछाण, परा

पसन्ती रही गाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, निरगुण आपणा बल धराईआ। प्रगट होवे वाली दो जहान, दोए दोए आपणा नाम धराईआ। गोबिन्द करे पछाण, लेखा लिख्या धुर आप समझाईआ। अनन्द पुर सच मकान, साढे तिन्न हथ्थ सम्बल नगर आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द आपणा आप दरसाईआ। शब्द उपाया आप हरि, आदि जुगादी कार। आपणा नूर आपे धर, वेख वखाए सर्ब संसार। लख चुरासी भाण्डे घड़, आपे बणे ठठयार। गुरमुख सज्जण लए फड़, जुगा जुगन्तर लाए पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी देवे साचा वर, घर साचे सच दरबार। दर दरबारा खोल्या, कर किरपा गुण निधान। शब्द अमोला आपे बोलया, निरगुण सरगुण कर पछाण। काया पर्दा लाहे चोलया, त्रै त्रै वेखे जगत दुकान। लख चुरासी चुक्के डोलया, चार कुंट होए हैरान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग सतिगुर शब्द होए बलवान। सतिगुर शब्द साख्यात, गुणवन्ता गहर गंभीरया। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, काला बस्त्र लाहे चीरया। चार वरन बणाए एका जात, अमृत जाम प्याए साचा सीरया। चरन कँवल बंधाए एका नात, ऊँच नीच शाह हकीरया। इक्क वखाए पूजा पाठ, तीर्थ तट बख्शे अमृत सीरया। इक्क खुल्हाए साचा हाट, चौंदां लोक होए फकीरया। पार कराए अन्तिम घाट, दो जहानां पन्ध चीरया। कलिजुग अन्तिम नेड़े वाट, कोई ना बन्ने किसे धीरया। घर घर स्वांगी स्वांग करे नटूआ नट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे तोड़े जगत जंजीरया। जगत जंजीर सतिगुर तोड़, गुरमुखां पन्ध मुकाईआ। शब्द चढ़ाए एका घोड़, लोआं पुरीआं पार कराईआ। निरगुण सरगुण जाए बौहड़, जुगा जुगन्तर मेल मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम बुझाए औड़, प्रेम प्याला जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरि सज्जण वेख वखाईआ। हरि सज्जण गुरसिख मिठड़ा, बिरहों रोग ना कोई वखांयदा। मेल मिलाए धाम अनडिठड़ा, चार दीवार ना कोए बणांयदा। लेख चुकाए मात गर्भ उलटा रुखड़ा, दस दस मास ना कोए तपांयदा। उज्जल करे मात मुखड़ा, जो जन हरि हरि रसना गांयदा। तन वजूद लथ्था दुःखड़ा, दुःख दर्द ना कोई मिटांयदा। गुरसिख दरस प्यासा रहे भुखड़ा, तृष्ना भुक्ख जगत आप गवांयदा। सुफल कराए मात कुक्खड़ा, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तरांयदा। हरिजन साचा तारया, दुःख दलिद्र दए निवार। कर किरपा पार उतारया, छल छिद्र ना मारे मार। घर मन्दिर पैज संवारया, दुःखी दुःखड़ा छुट्टा विच संसार। इक्क सुणाए शब्द जैकारया, सोहँ ढोला अगम्म अपार। बदले चोला आप निरंकारया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। दर दर गोला बणे भिखारया, गुरमुख सज्जण लए भाल।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द गुर बणाए दलाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्त भगत भगवन्त साचे सन्त करे कराए सदा प्रितपाल।

❋ ६ भाद्रों २०१७ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे घर पिण्ड चूहड़ चक्क ज़िला फिरोज़ पुर ❋

सो पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण खेल महाना, रूप रंग ना कोई वखाईआ। एकँकारा वसणहारा सच मकाना, दर घर साचा आप सुहाईआ। आदि निरँजण जोत महाना, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। श्री भगवान नौजवाना, बिरध बाल ना कोए अख्वाईआ। अबिनाशी करता देवणहारा दाना, साची वस्त हथ्थ रखाईआ। पारब्रह्म उठाए इक्क निशाना, दर घर साचे आप झुलाईआ। इक्क इकल्ला राज राजाना, तख्त निवासी शहनशाहीआ। दर दुआर बणे दरबाना, आप आपणी सेव कमाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, बल आपणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। अगम्म अगम्मड़ा हरि निरँकारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। एका वसे धाम न्यारा, सच महल्ला आप वसाईआ। सचखण्ड निवासी खेल न्यारा, निरगुण निरवैर आप कराईआ।
६१३
शाहो भूप बण सिक्दारा, साचे तख्त सोभा पाईआ। सच निशाना कर उज्यारा, श्री भगवान आप झुलाईआ। दो जहानां पावे सारा, आप आपणा भेव खुल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उजाला हरि गोपाला, थिर घर बैठा आसण लाईआ। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहांयदा। आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लेख ना कोए वखांयदा। आपे नारी आपे कन्त, कन्त कन्तूल साची सेज आप हंढांयदा। आप बणाए आपणी बणत, दूसर कोए ना संग रखांयदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकार, निरगुण जोती निराकार, साकार ना रूप वटांयदा। एकँकारा खेल अपारा, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। साचे धाम वसे वसणहारा, नेहचल धाम महल्ल अटल आप सुहाईआ। दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जूनी रहित पुरख अकाला, आपे चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क रखाईआ। चाल निराली हरि भगवन्त, आपणी आप रखांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणी धार बंधांयदा। शब्द नाद वजाए साचा तुरीआ नाद सुणाए तुरंत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, निरगुण निराकार आप करांयदा। सचखण्ड दुआरा खोल्या, हरि आपणी किरपा धार। सो पुरख निरँजण

एका बोलया, आप आपणी इच्छया भर भण्डार। हरि पुरख निरँजण वसे कोलया, रूप रेख रंग ना कोए विचार। एकँकारा रहे अडोलया, अडोल अडुल वड बेपरवाह परवरदिगार। आदि निरँजण आपणी जोती आपे मौलया, नूरो नूर नूर उज्यार। श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी कार। साची कार करांयदा, हरि पुरख हरि निरँकारा। अनुभव प्रकाश आप वखांयदा, जूनी रहित खेल न्यारा। पुरख अकाल नाउँ धरांयदा, अकल कल वरते वरतणहारा। आपणा भेव आप जणांयदा, निर्भय वसे धाम न्यारा। अटल महल्ल आप सुहांयदा, सचखण्ड निवासी सच दुआरा। सच सिँघासण इक्क सुहांयदा, पुरख अबिनाशन हो उज्यारा। सीस ताज इक्क टिकांयदा, पंचम रूप अगम्म अपारा। छप्पर छन्न ना कोए जणांयदा, दर घर साचे खेल अपारा। सत्त रंग निशाना आप चढ़ांयदा, एका जोती साची धारा। निरगुण आपणा रूप धरांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बंक सुहांयदा। बंक सुहाए हरि भगवाना, एका एक वड्डी वड्याईआ। सति सरूप सति निशाना, दर घर साचे आप झुलाईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, इक्क दुआर सुहाईआ। एका देवे धुर फ़रमाना, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। सो पुरख निरँजण हो मेहरवाना, आपणी दया आप कमाईआ। हरि पुरख निरँजण करे ध्याना, आप आपणा वेख वखाईआ। एकँकारा आपणे आप पछाणा, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। आदि निरँजण जोत जगाए इक्क महाना, आदि जुगादि डगमगाईआ। श्री भगवान हो प्रधाना, घर दर साचा आप सुहाईआ। अबिनाशी करता गाए इक्क तराना, तुरीआ राग आप अलाईआ। पारब्रह्म वेखे पद निरबाना, घर साचे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राज राजान शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, साचे तख्त आप सुहांयदा। निरगुण दाता निरगुण भिखारा, निरगुण आपणी भिच्छया इच्छया झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हांयदा। भेव खुलाए पारब्रह्म, आपणा पर्दा आपे लाहीआ। आपणे मन्दिर आपे पए जम्म, मात पित ना कोए बणाईआ। आप संवारे आपणा कम्म, करनी करता किरत आप कमाईआ। ना कोई खुशी ना कोई ग़म, हरख सोग ना कोए वड्याईआ। ना कोई पवण स्वासी ल्ए दम, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। ना कोई खुशी ना कोई ग़म, हरख सोग ना कोई जणाईआ। ना कोई तृष्ना ना कोए तम, आलस निन्दरा ना कोई जणाईआ। ना कोई घड़े ना देवे भन्न, घड़न भनणहार भेव ना आईआ। ना कोई जननी ना कोई जन, पूत सपूत ना कोई अख्वाईआ। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, मन्दिर मस्जिद गुरदुआर ना कोई बणाईआ। ना कोई तत्त ना कोई तन, माटी खाक ना कोई समाईआ। ना कोई देवणहारा डंन, राए धर्म ना कोए जणाईआ। ना कोई छप्पर ना

कोई छन्न, मन्दिर मस्जिद गुरूदुआर ना कोई जणाईआ। इक्क इकल्ला एक ओंकार, श्री भगवान अबिनाशी करता आपणा रूप आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, निरँकारा आप कराईआ। साची खेल करावणहारा, एका रंग समाया। सो पुरख निरँजण हो त्यारा, निरगुण आपणा नाउँ रखाया। हरि पुरख निरँजण बण वणजारा, साचा हट्ट इक्क समझाया। एकँकारा वस्त रक्खे थारा, देवणहारा हरि सबाया। आदि निरँजण हो उज्यारा, एका नूर करे रुशनाया। श्री भगवान पावे सारा, आपणा भेव आप खुल्ाया। अबिनाशी करता बण वरतारा, साचा एका तोल तुलाया। पारब्रह्म प्रभ बणे भिखारा, आपणी अग्गे झोली डाहया। सति पुरख निरँजण आपे जाणे आपणी धारा, धार धार विच टिकाया। आपे कन्त आपे नारा, नारी नर नरायण आप प्रनाया। आप उपजाए सुत दुलारा, हरि शब्दी नाउँ धराया। सचखण्ड सुहाए उच्च मुनारा, थिर घर आपणा आसण लाया। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाना आप जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत दित्ता वर, भुल्ल कदे ना जाया। शब्द सुत करे ख़बरदार, एका हुक्म जणाईआ। थिर घर साचे हो त्यार, आप आपणी धार बंधाईआ। पुरख अबिनाशी तेरा हुक्म सच्ची सरकार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। हउँ सेवक सेवादार होए दो जहाना, आदि जुगादि तेरी सेव कमाईआ। तेरा राग तेरा तराना, तेरी धुन तेरी शनवाईआ। सच सुल्तान तूं साहिब गुण निधान बीना दाना, हउँ भिखक भिख्या दर दुआरे मंगे एका मंगण रिहा मंगाईआ। पुरख अबिनाशी खेल महाना, सचखण्ड दुआरे आप कराईआ। सुत दुलारा कर परवाना, एका हुक्मी हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी खेल करे अगम्म अपार, भेव अभेद आप जणाईआ। शब्द सुत उठ नौजवान, हरि साचा आप जगांयदा। तेरा मेरा इक्क ध्यान, ध्यान ध्यान विच रखांयदा। मेरा तेरा इक्क निशान, एका एक वखांयदा। तेरा मेरा एका माण, माण आपणे विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, दर सुहञ्जणा हरि हरि सोभा पांयदा। सुत दुलारा उठया, दोए जोड़ करे अरदास। पुरख अकाल साहिब साचा तुठया, सद वसे तेरे पास। लेखा जाणे चारे कूट गुठया, दहि दिशा वेखे वेखणहार पूरी करे आस। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच धरवास। सच धरवासा सतिगुर मीत, हरि शब्दी शब्द जणाईआ। पुरख अबिनाशी चलाए आपणी रीत, आप आपणा बल धराईआ। मेरा नाद तेरा गीत, गहर गम्भीर वड वड्याईआ। तेरा मन्दिर इक्क अतीत, थिर दरबारा आप वखाईआ। आदि जुगादी ठंडा सीत, सांतक सति सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आपणा मेला आप मिलाईआ। शब्द मिलाया साचा मेला,

निरगुण जोत जोत जगांयदा। आपे गुरू आपे चेला, दर घर साचे सोभा पांयदा। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेला, सगला संग निभांयदा। आदि जुगादी वसे इक्क इकेला, अकल कलधारी आपणी खेल खिलांयदा। ना कोई वक्त ना कोई वेला, थित वार ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप समझांयदा। शब्द दुलारा जागया, निरगुण आपणी लए अंगड़ाईआ। एका उपजे हरि वैरागया, दूसर होर ना वण्ड वण्डाईआ। सरन सरनाई साची लागया, ना मरे ना जाईआ। सचखण्ड दुआरे फिरे भागया, मिल्या मेल सच्चे शहनशाहीआ। ना कोई मैल ना कोई दागया, निर्मल नूर इक्क दरसाईआ। दीवा बाती ना जगे चिरागया, एका जोती जोत डगमगाईआ। पीआ प्रीतम कन्त सुहागया, वर पाया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बूझ आप बुझाईआ। हरि साचा बूझ बुझांयदा, शब्दी शब्द कर त्यार। आपणा भेव आप खुल्हांयदा, निरगुण निरगुण कर प्यार। साचे तख्त आप सुहांयदा, शाहो भूप सच्ची सरकार। धुर फ़रमाणा आप अल्हांयदा, सो पुरख निरँजण हो उज्यार। हरि पुरख निरँजण ढोला गांयदा, एकँकारा सुणनेहार। आदि निरँजण संग निभांयदा, श्री भगवान वजाए ताल। अबिनाशी करता वेख वखांयदा, पारब्रह्म प्रभ चले नाल नाल। शब्द दुलारा सीस झुकांयदा, सति पुरख निरँजण करनी सदा प्रितपाल। दर तेरा इक्क सोभा पांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, देवे वस्त सच्चा धन माल। देवणहारा हरि निरँकारा, शब्द करे जणाईआ। अतोट अतुट हरि भण्डारा, तेरे हथ्थ फड़ाईआ। आपणी कल वरते वरतारा, तेरा रूप बेपरवाहीआ। तेरा रंग अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर आप रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। शब्द सुत उठ दुलारे, हरि साचा सच जणांयदा। तेरी सेवा अपर अपारे, निरगुण निरँकारा आप लगांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड कर पसारे, लोआं पुरीआं तेरी रचन वखांयदा। रवि ससि कर उज्यारे, मंडल मंडप मेल मिलांयदा। निरगुण सरगुण पावे सारे, तेरा बन्धन इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दित्ता वर, एका दर बुझांयदा। शब्द दाता बोलया, एका सच जैकार। पुरख अबिनाशी तेरा तोलण तोलया, तेरा तेरी जाणे धार। तेरा रूप मेरा विचोलया, दो जहानां सच प्यार। सच भण्डारा एका खोल्हया, करया वणज वणज वपार। तूं बदलणहारा आपणा चोलया, हउँ सेवक सेवादार। दर भिखारी बैठा गोलया, गृह मन्दिर करे निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा लए विचार। पुरख अबिनाशी जाणया, भेव अभेदा भेव। आपणा रूप आप पछाणया, एकँकार बण नेहकेव। आपणा मन्दिर आप सुहानया, आपे करे साची सेव। आपे वरते आपणे भाणया, जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, खेले खेल अलक्ख अभेव। अलक्ख अभेव अगम्म अथाह, आपणी रचना रचांयदा। शब्दी शब्द बण मलाह, साचा बेड़ा आप तरांयदा। हुक्मी हुक्म हुक्म सलाह, धुर फ़रमाणा आप जणांयदा। आपणा नाउँ आप प्रगटा, नाउँ निरँकारा आप धरांयदा। आपणा मन्दिर आप सुहा, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। थिर घर साचे जोत जगा, रूप अनूप आप हो जांयदा। साचे शब्द मेल मिला, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाणा इक्क अलांयदा। धुर फ़रमाण अलाया, निरगुण आपणी कर विचार। साचे शाह हुक्म सुणाया, बैठ तख्त साचे दरबार। दरगाह साची धाम सुहाया, आप आपणी किरपा धार। दूसर संग ना कोए रलाया, ना कोई मीत मुरार। गुर पीर अवतार ना कोए अख्वाया, ना कोई साध सन्त करे प्यार। भगत भगवन्त ना कोए गाया, ना कोए सिख सज्जण सोहे बंक दुआर। गुरमुख रंग ना कोए रंगाया, रंगे रंग ना रंगणहार। लक्ख चुरासी ना खेल खलाईआ, निरगुण सरगुण ना बन्ने धार। धरत धवल ना कोए सुहाया, जल बिम्ब ना कोए पसार। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना डेरा लाया, समुंद सागर ना वसे डूँग्घी गार। जल थल महीअल ना कोए रखाया, उच्चे टिल्ले ना दए हुलार। राग नाद ना कोए सुणाया, ना कोए गाए आपणी वार। ब्रह्म ब्रह्मादी ना कोए दसाया, गगन मंडल मंडप ना कोए विचार। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए रखाया, त्रैगुण माया ना कोए वरतार। इक्क इकल्ला सच सिँघासण बैठा आसण लाया, पुरख अबिनाशी खेल अपार। साचा शब्द आप उपजाया, आपणी इच्छया कर भर भण्डार। आपणा वर झोली पाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे शब्द देवे वर, एका सिख्या सच समझाया। साची सिख्या हरि समझांयदा, शब्दी शब्द अगम्मी बोल। सुत दुलारा आप उठांयदा, आपे वसणहारा कोल। तेरी सेवा सच करांयदा, पूरा करे तेरा कौल। लोआं पुरीआं तेरी रचन वखांयदा, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे तेरा ढोल। रवि ससि तेरी अंस बणांयदा, गगन गगनंतर तोले तेरे तोल। जल बिम्ब तेरे चरन सुहांयदा, धरत धवल जाए मौल। ब्रह्मा विष्न शिव तेरी गोद बहांयदा, तूं देवणहारा साची पौहल। त्रैगुण तेरा रंग रंगांयदा, आदि जुगादी रक्खे अडोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दाता पुरख बिधाता, एका इक्क आप अख्वांयदा। हरि सच्चा सच जणाईआ, सुण लाल अमुलड़े लाल। लक्ख चुरासी तेरी वण्ड वण्डाईआ, तेरे चरन बहाए काल महांकाल। विष्नूं तेरा रंग रंगाईआ, आपे बणे दलाल। घर मन्दिर वेख वखाईआ, नाभी कँवल लए उछाल। साचा फुल इक्क खिलाईआ, रंग चाढ़े लाल गुलाल। अंदर बाहर आप समाईआ, वेखणहारा पत डाल्ह। पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रूप वटाईआ, हड्ड मास नाड़ी ना दिसे खाल। रक्त बूंद ना कोए मिलाईआ, दस दस मास ना कोए प्रितपाल। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वड्याईआ। शब्द हुलारा साचे सुत, हरि साचा आप दुआंयदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, भेव कोए ना पांयदा। आप सुहाई आपणी रुत्त, वार थित ना कोए वखांयदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, आपणा बन्धन आप रखांयदा। ना कोई किला ना कोई कोट, चार दीवार ना कोए बणांयदा। ना कोई नगारा ना कोई चोट, ना ताल कोई वजांयदा। पुरख अकाल एका ओट, हरि शब्दी शब्द समझांयदा। आदि जुगाद भण्डारा दए इक्क अतोट, निखुट कदे ना जांयदा। वेस वटाए कोटन कोटि, तेरी धार विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा शब्द एका रंग रंगांयदा। रंगे रंग रंगणहारा, रंग रंग विच चढ़ाईआ। देवे सच सच हुलारा, हरि हरि महिमा कहिण ना जाईआ। करे खेल अपर अपारा, दर घर साचे सोभा पाईआ। आपे वणज आप वणजारा, आपे साचा हट्ट खुलाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यारा, त्रैगुण माया झोली पाईआ। पंज तत्त तत्त कर प्यारा, घर घर बैठा सोभा पाईआ। आपे गाए आपणी वारा, बोध अगाध वड्डी वड्याईआ। करे खेल सच्ची सरकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका वण्डण वण्ड वण्डाईआ। पुरख अबिनाशी वण्डी वण्ड, हरि शब्दी झोली पांयदा। लेखा जाणे खण्ड ब्रह्मण्ड, चौदां लोक वेस वटांयदा। आपे सुत्ता दे कर कंड, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी बणत बणांयदा। शब्द सुत साचे पौड़े चढ़या, हरि हरि दर्शन पाया। शाह पातशाह मेरा घाड़न घड़या, बेपरवाह दए सलाहया। आदि जुगाद कदे ना मरया, तेरे तेरे विच रखाया। थिर दरबारा साचा घरया, घर मेरा इक्क वसाया। एका लड़ तेरा फड़या, छुट्ट कदे ना जाया। लक्ख चुरासी भाण्डा घड़या, घट घट आपणा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, कवण सो वेला मेला होए साचे घर, घर साचा लए सुहाया। पुरख अबिनाशी बोल सुणाया, शब्द सुत तेरी वड्याईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरी सेवा लाया, लोकमात करे रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे नाल रलाया, हुक्मी हुक्म लए फिराईआ। लक्ख चुरासी वण्ड वण्डाया, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी वेख वखाईआ। तेरा नाद इक्क वजाया, चारे बाणी रूप वटाईआ। चारे जुग रचन रचाया, चारे मुख रिहा चारे वेद सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा वेखे थाउँ थाँईआ। लक्ख चुरासी रचया काज, हरि सतिगुर हुक्म सुणाया। शब्द अगम्मी साजण साज, त्रैगुण मेल मिलाया। पंचम मारी इक्क आवाज़, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश लए रलाया। मन मति बुध देवे दाज, निरगुण आपणी वण्ड वण्डाया। तन माटी चलाए इक्क जहाज, हड्ड मास नाड़ी जोड़ जुड़ाया। निरगुण बणया आप मुहताज,

६१८ ०६

घर घर विच दए उपाया। आप होए ग़रीब निवाज़, निज घर बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा वेस वटाया। वेस वटंदड़ा हरि भगवन्ता, भगवन आपणी धार चलाईआ। लोकमात आपणी खेल खिलंता, वरभण्डी खोज खुजाईआ। एका नाउँ निधाना नाद सुणंता, सो पुरख निरँजण आपे गाईआ। हँ ब्रह्म प्रभ वेख वखंता, आप आपणा नैण खुलाईआ। निरगुण बणाए निरगुण बणता, निरगुण चोला तन पहनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द वेख वखाईआ। शब्द शब्दी करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। कवण सो वेला कवत करे विचार, आपणा मेला मेल मिलाया। जो उपज्या सो भन्ने करे ख्वार, घड़न भन्नणहार तूं बेपरवाहया। जुग जुग वरते तेरा वरतार, तेरे भाणे सद रहाया। तूं खेलें खेल खेलणहार, ख़ालक ख़लक रूप वटाया। तूं नूर इलाही बेऐब परवरदिगार, जल्वा जल्वा आप धराया। मुकामे हक हो त्यार, दर घर साचा इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देणा साचा वर, लक्ख चुरासी ल्या घड़, कवण वेले भन्न वखाया। पुरख अबिनाशी इक्क जणाई, हरि हरि साचा आप सुणांयदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग आप भवाई, चार चार करे कुड़माईआ। चार वेद ना सके गाया, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया, जुगा जुगन्तर आपणी वण्ड वण्डाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाया, एका ब्रह्म दए दरसाईआ। दूसर तत्त ना कोए रखाया, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। जागरत जोत करे रुशनाया, नूर नुराना साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। लक्ख चुरासी पन्ध मुकाउणा, नौं नौं चार गेड़ दुआंयदा। शब्द सुत तेरी आसा मनसा पूर कराउणा, आस निरास ना कोए वखांयदा। सालस बण बण आपे आउणा, लोकमात वेख वखांयदा। आलस निन्दरा विच ना सौणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग आपणा खेल खिलांयदा। सतिजुग साचा मार्ग ला, लोकमात दए वड्याईआ। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, हँ ब्रह्म लए समझाईआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ा, तन मन्दिर दए सुहाईआ। निरगुण बाती जोत जगा, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। अमृत आत्म जाम प्या, सर सरोवर एका रंग वखाईआ। बजर कपाटी तोड़ तुड़ा, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। आत्म सेजा आप सुहा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। शब्द अनादी एका नाद वजा, अनहद राग अल्हाईआ। पंचम सखीआं मिले एका थाँ, थान थनंतर दए वड्याईआ। मेल मिलावा सहिज सुभा, आप आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। कागद कलम कोई लिखे ना, सत्त समुंदर मस्स रो रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा वेस वटाईआ। सतिजुग वेस वटंदड़ा, पारब्रह्म करतार। आपणे खेल आप खिलंदड़ा, खेले खेल अगम्म अपार। भगतन

साचा मेल मिलंदड़ा, काया मन्दिर हो त्यार। सन्तन साचा राह वखंदड़ा, थिर घर वासी एका धार। एका हरि हरि जाप जपंदड़ा, सो पुरख निरँजण मीत मुरार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग बन्ने आपणी धार। जुग जुग धार बंधांयदा, धरत धवल हो उज्यार। साचा मार्ग आपे लांयदा, आपे वेखे वेखणहार। लक्ख चुरासी आप समझांयदा, साचे सन्तन कर प्यार। काया चोला आप बदलांयदा, जोती जामा भेख न्यार। वरन गोती ना कोए बणांयदा, जातां पातां वसया बाहर। एका डंका नाम रखांयदा, आप वजाए वजावणहार। राउ रंकां आप उठांयदा, दर घर साचा सोहे दरबार। दरबार बंका आप सुहांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी कार। करे कार आदि निरँजण, आपणी कल आप वरतांयदा। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागर बेड़ा आप तरांयदा। गुरमुखां पाए नेत्र नाम अञ्जण, अज्ञान अन्धेर चुकांयदा। धुर दरगाही मिले साचा सज्जण, घर दर साचे आपणा मेल मिलांयदा। ना घड़या ना भज्जण, घड़न भन्नणहार आप अख्वांयदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आदि जुगादि पर्दे कज्जण, नाम दोशाला हथ्थ उठांयदा। जुग जुग रक्खे आप आपणी लज्जण, दूसर हक ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी कार, करे कराए करनेहार, कुदरत कादर वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम वेख वखावणा, पंज तत्त रहे कुरलाईआ। पुरख अबानाशी खेल खिलावणा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डा वेख वखावणा, जगत बैठा सेज विछाईआ। अन्ध अन्धेर आप मिटावणा, कूड़ कुड़यारा मेटे शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती दस अवतार, एका शब्द शाह सच्चा सिक्दार, सतिगुर साचा आप अख्वाईआ। गोबिन्द सिँघ सतिगुर पूरा, पुरख अकाल मनाया। आदि जुगादी हाजर हजूरा, ना मरे ना जाया। आसा मनसा आपे करे पूरा, दूसर दर ना मंगण जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर आप पढ़ाया। एका अक्खर आप पढ़ांयदा, आप आपणा पर्दा खोल्ह, पुरख अकाल दया कमांयदा। सुत दुलारे वसे कोल, एका वस्त विच टिकांयदा, आप आपणा नाम अडोल। चिंता फिकर ना कोई रखांयदा, ब्रह्मण्ड खण्ड तोले आपणा तोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे अंदर आपे जाए मौल। आपणे अंदर मौलणहारा, निरगुण निरगुण खेल खिलांयदा। आपे गुर गुर रूप कर पसारा, लोकमात वेख वखांयदा। दर दरबार खोल्ह दुआरा, ठांडा घर आप वसांयदा। आपे फड़ तेज कटारा, आपणे हथ्थ चमकांयदा। आपे शब्द बोल जैकारा, वाह वाह गुरू आप हो जांयदा। आपे अमृत कर त्यारा, भर प्याला, जाम प्यांअदा। आपे करे सच प्यारा, चतर सुघड़ आप बणांयदा। आपे रक्खे तिक्खी धारा, आर पार आप करांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर साचा इक्क वखाईआ। खेले खेल पुरख अकाल, महिमा गणत गणी ना जाईआ। आपणी करे आप प्रितपाल, आपे वेखे थाउँ थाँईआ। आपणा पाए आप जंजाल, आपे तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाईआ। एका रंग श्री भगवान, आपणा आप जणाया। सूरबीर वड बलवान, एका एक अख्वाया। सति सरूपी लै निशान, लोकमात उठ धाया। गुर गोबिन्द सिँघ नौजवान, ना मरे ना जाया। साचा चिल्ला तीर कमान, एका हथ्थ उठाया। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, चारे कूटां फोल फुलाया। सृष्ट सबाई दए ज्ञान, गुरू ग्रन्थ इक्क वड्याआ। जीव जंत होवण बेईमान, साध सन्त धीरज धीर ना कोए धराया। नारी कन्त ना कोई खेले खेल महान, कुंट चार सृष्ट सबाई होए हलकाया। अठसठ तीर्थ ना कोई अशनान, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती ना कोई पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द ए समझाया। बाई सो कोस वेख खड़, आपणा नैण खुलांयदा। धरनी धरत धवल दया कर, हरि साचा आप समझांयदा। पुत सपूता देवे वर, सति सन्तोख झोली पांयदा। ज्ञान ध्यान अग्गे धर, एका मुख सलांहयदा। भय भयानक चुक्के डर, निरभउ भय वखांयदा। साची तरनी जाणा तर, सर सरोवर इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आप सुहांयदा। आपणा वेला सुहावण आए, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। धवला तेरा भार चुकाए, हौला भार इक्क वखाईआ। दुष्ट हँकारी मेट मिटाए, लोकमात रहिण ना पाईआ। एका खण्डा हथ्थ चमकाए, दुष्ट दमन आपणा आप चमकाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाए, त्रै भवन फेरा पाईआ। अवण गवण डेरा ढाए, कलिजुग वेखे झूठी शाहीआ। निहकलंका नाउँ धराए, तेरा शंका दए मिटाईआ। सनक सनंदन सनातन संग रलाए, सन्त कुमारा ढह पए सरनाईआ। बराह यज्ञै रूप वटाए, हाव ग़रीब सच्ची सरनाईआ। नर नरायण सीस झुकाए, कपिलमुन रिहा जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा हौला भार कराईआ। हौला भार करावण आए , दत्ता त्रै सीस झुकांयदा। रिखव देव भेव न्यार, आपणा रंग रंगांयदा। पृथू धरनी पावे सार, अन्न धार वखांयदा। मत्सय मेला अपार, कच्छप एका भार उठांयदा। धनंतर औखद कर त्यार, मोहण माधव मोहणी रूप वटांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता हो त्यार, आप आपणी जोत आदि जुगादि जगांयदा। हँसा चोग आप चुगाए, माणक मोती वेख वखांयदा। नर सिँघ रूप रूप वखाए, भगत प्रहलाद गोद बहांयदा। नर नरायण आप हो जाए, बाली बुध धरू समझांयदा। नर हरि आपणी खेल खलाए, गज फंदन फंद कटांयदा। छत्री खत्री वेख वखाए, पारस परस रूप धरांयदा। लंका गढ़ हँकार तुड़ाए, रामा हथ्थ चक्र रखांयदा। सीता

६२१
०६

सवाणी आप प्रनाए, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। सति सरोवर वेख वखाए, जगत भीलणी मेल मिलांयदा। आपणा बेड़ा आप चलाए, रूप अनूपा नाउँ धरांयदा। वेद व्यासा लेख लिखाए, कुँवारी कन्या भाग लगांयदा। अठारां पुराण आप जणाए, ब्रह्मा नारद संग रलांयदा। बारां अक्षर धार बंधाए, विस्माद आपणा रूप धरांयदा। कान्हा कंस मेट मिटाए, नाम बंसरी इक्क सुणांयदा। मोर मुक्ट सीस टिकाए, मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण नाउँ उपजांयदा। पंचम पांडो मेल मिलाए, द्रोपद लज्जया आप रखांयदा। गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाए, अठारां अध्याए भेव खुलांयदा। अर्जन शब्द इक्क समझाए, एका बूझ आप बुझांयदा। बिदर सुदामा पार कराए, घर अलूणे साग भोग लगांयदा। एका तन्दल मुट्ठ वखाए, यार यारी आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी खेल अपारा, जुगा जुगन्तर लै अवतारा, धरत कराए हौला भारा, रथ रथवाही सेव कमांयदा। सेव कमाए हरि करतार, जुग जुग वेस वटांयदा। बुध बिबेक कर त्यार, कलिजुग वेख वखांयदा। एका ब्रह्म मति पावे सार, एका तत्त वखांयदा। एका जोत कर उज्यार, घर घर दीपक आप जगांयदा। एका रत भरे भण्डार, अतोट अतुट वखांयदा। एका नबी एका रसूल एका बेऐब परवरदिगार, एका आपणा नाउँ वटांयदा। एका ईसा एका मूसा कर त्यार, संग मुहम्मद चार यार आपणा कलमा आप पढ़ांयदा। एका नबी उम्मत रसूल, शरअ शरीअत इक्क वखाईआ। एका उम्मत करे कबूल, एका आपणा हुक्म वरताईआ। एका कन्त इक्क कन्तूल, एका वेखे थाउँ थाँईआ। आदि जुगादि ना जाए भूल, आपणी कार आप कमाईआ। धरत धवल चुकाए तेरा मूल, हौला भार कराईआ। आपणा जाणे आप असूल, अञ्जील कुरान देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाईआ। आपणा भेव आप खुलाणा, आपणी बूझ बुझांयदा। आपे वरते आपणा भाणा, आपणे भाणे सद रहांयदा। आपे चार यारी सुणाए इक्क तराना, हक हक आप समझांयदा। आपे वरते वरतावे दो जहाना, दोज़ख बहश्त आपणे रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग धरनी तेरा भार वण्डांयदा। तेरा भार वण्डावन आया, नानक निरगुण जामा धार। चार वरनां आप समझावन आया, सतिनाम कर उज्यार। पंडत पांधे आप समझावण आया, ब्रह्म मति कर उज्यार। मुल्ला शेख मुसायक पीर मार्ग लावन आया, दस्तगीरां दरस दिखाए गुप्त ज़ाहर। सत्ता दीपां एका रंग रंगावण आया, वड पीरन गुर अवतार। एका जोती जामा वेस वटावण आया, दस दस मेला गुणी गहीर। आपणी कल आप वरतावन आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया चोला बदले चीर। काया बदल्लया हरि हरि चोला, चोली रंगण रंग रंगाईआ। जुगा जुगन्तर बणया गोला, लोकमात सेव कमाईआ। सति सतिवादी एका तोला, त्रैगुण माया तोल तुलाईआ।

कलिजुग अन्तिम पाए रौला, गुर गोबिन्द वेख वखाईआ। जन भगतां ग़रीब निमाणयां अमृत भराय आत्म कँवला, सच प्याला जाम प्याईआ। मिले वडियाई उप्पर धवला, धरत धवल दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग मेटे झूठी शाहीआ। कलिजुग अन्तिम हौला भार, गुर गोबिन्द आप कराईआ। चारे सुत दुलारे वार, मात पित भेट चढ़ाईआ। सतिजुग रंग चढ़े अजीत त्रेता तेरा रूप जुझार, झूज्झ झूज्झ खुशी मनाईआ। द्वापर फतिह डंका वज्जे अपार, वजावणहारा इक्क वजाईआ। कलिजुग जोरावर ज़ोर धरे विच संसार, बल आपणा आप वखाईआ। सतिजुग साची नीआं गए उसार, कलिजुग कूड़ा कूड़ी जड़ उखड़ाईआ। साचा बूटा कर त्यार, लोकमात गुर लगाईआ। फुल फुलवाड़ी करे त्यार, साची हाढ़ी वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम वारी प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, नौं खण्ड पृथमी वेख वखाईआ। धरत धवल तेरा हौला करे भार, साँवल सुंदर मीत मुरार, राम रमईआ आप निरँकार, ईसा मूसा खेल करे संसार, निरगुण आपणा वरन ना कोई रखाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, निहकलंक हरि आप अख्वांयदा। थिर घर साचे निर्मल जोत, जोती जाता जोत जगांयदा। आदि जुगादी एका ओट, पुरख अकाल आप रखांयदा। जुगा जुगन्तर शब्द नगारे लाए चोट, गुर अवतार आप उपजांयदा। अन्तिम कढ्ढे लक्ख चुरासी वासना खोट, जगत जुग मनवन्तर गेड़ा आप दवांयदा। आपे जाणे आपणा ओत पोत, बंस सरबंसा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे पार करांयदा। हरिजन पार करावणा, कर किरपा हरि करतार। घर मन्दिर इक्क सुहावणा, मेल मिलाए हरि हरि मीत मुरार। लक्ख चुरासी फंद कटावणा, मानस जन्म पैज संवार। मात गर्भ फेर ना आवणा, जिस जन दरसन पाया हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन लए उभार। गुरमुख सज्जण सच घर, हरि साचा सच सुहांयदा। धरनी देवे एका वर, हुक्मी हुक्म सुणांयदा। गुरमुखां लड़ आपणा फड़, सतिगुर पूरा आप फड़ांयदा। तेरा भार हौला देणा कर, वेले अन्त वण्ड वण्डांयदा। दिवस रैण अठ्ठे पहर एका जपण हरी हरि, हरि बिन अवर ना कोई भांयदा। साची तरनी जायण तर, सतिगुर पूरा आप तरांयदा। कूड़ कुड़यारा चुक्के डर, भय भयानक ना कोई वखांयदा। सति दुआरे जाणा वड़, दरगाह साची धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा भाणा हरि हरि राणा, आपणे हथ्थ रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग चलाए एका गाणा, राग नाद इक्क वजांयदा।

हरि का नाम साचा गुर मन्त्र, पुरख अबिनाशी आप उपांयदा। जुगा जुगन्तर बुझाए बसन्तर, त्रैगुण माया तत्त गवांयदा। निरगुण सरगुण सर्ब जिआं बिध जाणे अन्तर, अन्तर आत्म वेख वखांयदा। लोकमात बणाए आपणी बणतर, निरगुण सरगुण वेस धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप उपांयदा। हरि का नाउँ अगम्म अपार, हरि साचा आप उपाईआ। थिर घर वासी खोल्ह किवाड़, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। सुन्न अगम्मी कढ्ढे बाहर, अलक्ख अलक्खणा भेव ना राईआ। लक्ख चुरासी कर पसार, घर घर विच आप टिकाईआ। आपे करे बन्द किवाड़, बजर कपाटी कुंडा लाईआ। नेत्र नैण दिस ना आए विच संसार, लक्ख चुरासी बैठी राह तकाईआ। साचे मन्दिर भर भण्डार, पुरख अबिनाशी बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप समझाईआ। आपणा नाउँ अंदर धर, आपे वेख वखांयदा। आपणी किरपा आपे कर, आपे मेल मिलांयदा। आपे देवणहारा वर, वर घर साचा आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर जगत वक्खर, आपणा नाउँ आप दृढ़ांयदा। हरि का नाम नाम अमोला, दिस किसे ना आंयदा। आदि जुगादी शब्द विचोला, गुर गुर रूप वटांयदा। लक्ख चुरासी बणे तोला, जीव जंत आप तुलांयदा। आपे बोले आपणा बोला, अक्खर वक्खर नाम पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम अक्खर वक्खर निरगुण साचा उपांयदा। नाम वस्त अमोलक, पुरख अबिनाशी आप उपजाईआ। आपे रक्खे आपणी गोलक, आप आपणे विच टिकाया। सेवा कमाए नाद वजाए अनहद ढोलक, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव हरि नेहकेव, आपे आप समझाईआ। हरि हरि आप बुझांयदा, कर किरपा आप निरँकार । निरगुण सरगुण रूप वटांयदा, गुर गुर लए मात अवतार। जोती जोत जोत जगांयदा, नूर नुराना हो उज्यार। धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा, एका शब्द नाद जैकार। साची सेवा आप कमांयदा, लक्ख चुरासी पावे सार। भगत भगवन्त वेख वखांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे सच प्यार। गुर गुर सदा सालाहीए, लोकमात लए अवतार। एका मन्त्र नाम दृढ़ाईए, सतिगुर रसना दए उच्चार। गुर चरन ध्यान लगाईए, भवजल उतरे पार। गुर सतिगुर दरसन पाईए, मिटे अन्ध अँध्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे नाम अधार। शब्द भण्डारी आप हरि, गुर गुर रूप समांयदा। जिस जन किरपा देवे कर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। पंच विकारा जाए हर, हरि का शब्द धुन उपजांयदा। आप नुहाए साचे सर, सतिगुर पूरा चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का लांयदा। गुरसिख ग़रीब निमाणे शब्द सरूपी लए फड़, सुरती शब्दी मेल मिलांयदा। किला तोड़ हँकारी

गढ़, माया ममता मोह चुकांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, गुरमुखां आप पढ़ांयदा। काया मन्दिर बैठा वड़, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, रूप रंग ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा आपणा खेल खिलांयदा। सतिगुर साचा सेवणा, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार। गुर गुर रूप नेत्र पेखणा, निज नेत्र नैण उग्घाड़। मुछ दाढ़ी ना दिसे केसणा, मूंड मंडाए ना विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम वखाए साची धार। नाम धार धार निराली, पुरख अकाल आप चलाईआ। सेवा करे जोत अकाली, जुग जुग वेस वटाईआ। गुर गुर शब्द बणे दलाली, जगत दलाल आप अख्वाईआ। जो जन घालण रहे घाली, हरि हरि घाल थाएं पाईआ। फल लगाए काया डाल्ही, फुल फलवाड़ी आप महिकाईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाली, आपणा नाउँ आप उपजाईआ। लेखा जाणे धुर दा वाली, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। धुर दरगाही साचा माली, नाम बूटा मात लगाईआ। मनमुख जीव रहिण ख़ाली, फल अमृत ना कोए वखाईआ। सतिगुर दुआरे जो बणे सवाली, नाम भिच्छया झोली पाईआ। सुरत सवाणी ना होए बेहाली, मन मनूआ ना दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि एका मार्ग लाईआ। जुग जुग मार्ग लांयदा, गुर सतिगुर लै अवतार। एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा, शब्द अगम्मी बोल जैकार। गुरमुख साचे आप उठांयदा, बख्शे चरन कँवल प्यार। दुरमति मैल आप धुआंयदा, पतित पापी देवे तार। नौं दुआरे खोज खोजांयदा, सुखमन नाड़ी पावे सार। टेढी बंक पार करांयदा, त्रबैणी नैणी दए हुलार। अमृत साचा जाम प्यांअदा, निझर झिरना खोल्ह किवाड़। कागों हँस आप उडांयदा, माणक मोती चोग चुगाए अगम्म अपार। साची सोटी हथ्थ फड़ांयदा, गुर मन्त्र शब्द आधार। हरि का मन्त्र लिखण पढ़ण विच ना आंयदा, वेद शास्त्र सिमरत खाणी बाणी अञ्जील कुरान करन पुकार। निष्अक्खर आप रखांयदा, बोध अगाधा खेल अपार। कागद कलम मुख शर्मायदा, लेखा लिख ना सके कोई जीव संसार। सतिगुर पूरा एका मन्त्र गुरमुख साचे आप बुझांयदा, आप आपणी किरपा धार। बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा, शब्द खण्डा एका मार। दस्म दुआरी पर्दा लांहयदा, निरगुण नूर कर उज्यार। आत्म सेजा आप सुहांयदा, आप आपणा कर प्यार। साचे मन्दिर सोभा पांयदा, सोभावन्त पुरख भतार। गुरसिख विछड़ कदे ना जांयदा, जिस मिल्या गुर करतार। साचा मार्ग इक्क वखांयदा, सतिगुर पूरे चरन दुआर। रसना जिह्वा आप सुहांयदा, बत्ती दन्द करे विचार। आत्म अन्तर अजपा जाप आप करांयदा, सुरती लिव गाए गुफ़तार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साचा मन्त्र, एका आपणा आप बुझांयदा। लक्ख चुरासी जीव जंत, जुग जुग कुरलाईआ। भेव

६२५
०६

खुलाए विरले सन्त, जिस जन आपणी दया कमाईआ। मेल मिलावा नारी कन्त, घर सुहञ्जणी सेज हंढाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। एका गुर एका मंत, इष्ट देव इक्क अख्वाईआ। लेखा जाणे पूरन भगत, पारब्रह्म पारब्रह्म बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी माया पाए बेअन्त, पर्दा कोई ना लाहीआ। गढ़ बणाए हउमे हंगत, पंज तत्त करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द गुर वखाईआ। शब्द गुर सूरबीर सुल्ताना, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। एका शब्द धुर फ़रमाणा, धुर दी बाणी आप अलांयदा। आत्म अन्तर इक्क ब्रह्म ज्ञाना, पारब्रह्म आप समझांयदा। साचा मन्दिर सच मकाना, निरगुण दीआ बाती आप टिकांयदा। अनहद राग सुणाए गाणा, छत्ती राग ना कोए अलांयदा। आप वखाए आपणा सच टिकाणा, सच बबाण आप उडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा शब्द आप उपजांयदा। शब्द चलाए आप हरि, निरगुण सरगुण लै अवतारा। गुरमुख वखाए इक्क दर, लक्ख चुरासी करे ख्वारा। निरभउ चुकाए जगत डर, पंज तत्त मारे मार विकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दस्से राह सुखाला। जुग जुग राह चलांयदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कार। ओअँ सोहँ रूप आप हो जांयदा, निरगुण सरगुण खेल अपार। ओंकारा आपणा रूप वटांयदा, दूसर होए ना कोए संसार। ब्रह्म पारब्रह्म उपजांयदा, करे खेल अपर अपार। एका अक्खर आप बुझांयदा, बावण अक्खर कर त्यार। बावन रूप आप वटांयदा, पुरख अबिनाशी खेल न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इक्क इकल्ला एकँकारा, सच महल्ला आप वखांयदा। सतिजुग सति महल्ल वसांयदा, कर किरपा हरि निरँकार। एका आपणा नाम दृढ़ांयदा, सो पुरख निरँजण अलक्ख अगम्म अपार। हँ ब्रह्म मेल मिलांयदा, नाता तोड़ सर्ब संसार। आपणी धार बंधांयदा, एका राग सच्ची धुन्कार। हरि शब्द नाद सुणांयदा, दिवस रैण रहे धुन्कार। ठांडा जल आप प्यांअदा, अमृत बख्शे ठंडी ठार। जिस सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा, कर किरपा जाए तार। पूजा पाठ ना कोए वखांयदा, एका दरस सतिगुर सच्चा दीदार। अंदर मन्दिर खोज खुजांयदा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ पाए सार। उच्चे टिल्ले आप बहांयदा, रोग सोग चिंता दुःख दए निवार। माया ममता मोह चुकांयदा, आसा तृष्ना करे ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साचा दर, आपणे घर आप वखांयदा। नाम दृढ़ाए दया कमाए, रसना जिह्वा आप हिलाईआ। भगत भगवन्त भगती लाए, भावना भावना विच टिकाईआ। सन्त कन्त जीव जंत हरि आप समझाए, गुर मन्त्र नाम पढ़ाईआ। राम रामा रूप वटाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत अक्खर हरि नाउँ वड्याईआ। जगत अक्खर सरगुण धार, निरगुण नाम सालांहयदा। निरगुण दाता खेल करे अपार,

दिस किसे ना आंयदा। शब्द विचोला बण संसार, जीवां जंतां साधां सन्तां वेख वखांयदा। आपणा ढोला गाए आपणी वार, आप आपणा राग अलाॖ आपणा बन्धन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग पन्थ आप रखांयदा। साचा मार्ग स्वच्छ सरूप, एका एका आप लगाईआ। धुर दरगाही साचा भूप, सिँघासण आसण बैठा सोभा पाईआ। एका नाम चलाए चारे कूट, दहि दिशा इक्क वड्याईआ। सतिगुर पूरा आपे तुट्ठ, गुर गुर आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साचा हरि, हरिजन साचे लए मिलाईआ। गुर गुर देह बुझांयदा, तत्तव तत्त कर विचार। एका शब्द नाम सुणांयदा, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार। अलक्ख अलक्खना पारब्रह्म करतार। प्रतक्ख आपणा रूप वटांयदा, निरगुण सरगुण हो उज्यार। समरथ पुरख आपणा बेड़ा आप चलांयदा, नाम मुहाणा कर त्यार। जगत सागर वेख वखांयदा, डूँग्घी भँवरी करे पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए आधार। नाम अपारा हरि निरँकारा, सतिगुर हथ्थ फड़ाईआ। सतिगुर बणे आप वरतारा, गुर गुर झोली दए भराईआ। गुर गुर होए सेवादारा, भगतां सेव कमाईआ। भगत वखाए इक्क दुआरा, सन्तन मेला सहिज सुभाईआ। सन्तन खोलॖे बन्द किवाड़ा, गुरमुखां एह समझाईआ। गुरमुखां कराए वणज वपारा, सच वणजारा हट्ट खुलॖाईआ। साचा हट्ट खोलॖ दुआरा, गुरसिखां दए लुटाईआ। मनमुख ना पाए कोई सारा, जुग जुग बैठे मुख छुपाईआ। जिस जन मिल्या गुर करतारा, एका रूप दए दरसाईआ। पत परमेश्वर सच स्वामी मेल मिलाए कन्त भतारा, सुरत शब्द करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरे दए वड्याईआ। सतिगुर पूरा साख्यात, जुग जुग दया कमांयदा। मेट मिटाए अन्धेरी रात, साचा चन्द चढ़ांयदा। गुरसिखां नाता चरन कँवल बंधाए नात, आप आपणा बन्धन पांयदा। शब्द सुणाए आपणी गाथ, रसना जिह्वा ना कोई हलांयदा। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूर्ब कर्मा वेख वखांयदा। दिवस रैण एका पाठ, शब्द अनाद धुन वजांयदा। घर मन्दिर सरोवर मारे ठाठ, अमृत आत्म जल भरांयदा। इक्क वखाए साचा घाट, तीर्थ तट ना कोए जणांयदा। आपे खोलॖे बजर कपाट, तीजा लोयण आप प्रगटांयदा। पन्ध मुकाए चौथे पद वाट, साचे पौड़े आप चढ़ांयदा। सतिगुर पूरा खेवट खेट, गुरसिख बेड़ा आप तरांयदा। शब्द दोशाले लए लपेट, आप आपणी गोद बहांयदा। लभ्भदे फिरदे कोटी कोटि, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँग्घी कंदर जीव जंत सर्ब कुरलांयदा। गुरमुख विरला दया कमाए, दरस वखाए नेतन नेत, नित नवित आपणी कार कमांयदा। जुग जुग करे साचा हेत, हितकारी आप हो जांयदा। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले आपे वेख, गुर सतिगुर मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अभ्यास

इक्क दृढ़ांयदा। सच अभ्यास गुर चरन ध्याना, नेत्र नैण नैण शर्माईआ। सच अभ्यास गुर मन्नणा भाणा, हरिजन भाणे सद समाईआ। सच अभ्यास गुर शब्द गाणा, सच तराना इक्क सुणाईआ। सच अभ्यास मन का मणका फिराणा, मन चिन्दया रहिण ना पाईआ। सच अभ्यास सतिगुर पूरा एका दए शब्द बबाणा, गुरसिख साचे लए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन साचे मेल मिलाईआ। कलिजुग जीव भुलया, पंज तत्त दए दुहाईआ। त्रैगुण माया अंदर रुलया, माया ममता होई हलकाईआ। मिल्या नाम जगत अनमुलया, नाम अमोलक हीरा बैठे गंवाईआ। सतिगुर नानक भण्डारा एका खोल्या, नाम सति गया वरताईआ। चरन प्रीती जो जन घोली घोलया, घोल घुमाई लेखे लाईआ। आठ पहर दिवस रैण कदे ना भुल्लया, साचा मार्ग इक्क वखाईआ । अमृत आत्म गुरसिख कदे ना डुलया, मूधा कँवल आप भराईआ। जो जन साचे कंडे गुर गुर पूरे तोल तुल्या, तेरा तेरा तेरी धार चलाईआ । लोकमात फलया फुलया, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बिध दए बताईआ। हरि का नाम साची बिध, गुर सतिगुर आप समझांयदा। चरन दासी करे नौ निध, अठारां सिद्ध सेव कमांयदा। गुरसिख उपजाए आपणी बिन्द, नादी सुत नाम धरांयदा। दाता दानी गुणी गहिन्द, गुर सतिगुर आपणा रूप वटांयदा। आदि जुगादि सदा बख्शंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखांयदा। मनमुख लगाए आपणी निन्द, गुरमुख रसना जिह्वा आपणा नाम जपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वाह वा गुरू रूप वटांयदा। वाह वा गुरू गुर गुर करतार, गुर गोबिन्द शब्द जणांयदा। चरन कँवल कँवल चरन सच प्यार, धरत धवल वेख वखांयदा। आत्म मवल पवण हुलार, उँणंजा पवण मुख शर्मायदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मार्ग आप लगांयदा। साचा मार्ग सतिगुर लाया, लोकमात वज्जी वधाईआ। गुरसिख मनमति दए तजाया, मनमति रहिण ना पाया, गुरमति साची लए प्रनाया। गुर इष्ट देव इक्क मनाया, शब्द गुरू गुर जगत अख्वाया, जुग जुग आपणी धीर धराईआ। अलक्ख अभेव आदि निरँजण जोत जगाया, ना मरे ना जाईआ। चारे बाणी रही जस गाया, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणी वार अल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पन्थ इक्क चलाईआ। साचा पन्थ मार्ग अवल्ला, गुर गुर बंस चलाया। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, निरगुण सरगुण रूप धराया। गुरमुखां अंदर सच सिँघासण मल्ला, आप आपणी सेज हंढाया। मनमुख भुलाए कर कर वल छला, अछल अछल भेव ना आया। पंच विकारा बोले हल्ला, काम क्रोध लोभ मोह हँकार कूक कूक सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विछड़ी सुरत अकाल मूर्त, आपणी अंस आपणे बंस लए मिलाया। सुरत सवाणी जगत कुरलाए,

६२८ ०६

नर हरि साचा नज़र ना आईआ। एका सतिगुर वेख वखाए, घर मन्दिर बैठा आसण लाईआ। जगत दुहागण लए तराए, सच सुहागण आप कराईआ। मन वैरागण इक्क उपजाए, आपणा तीर लगाईआ। विकार तयागण मेल मिलाए, आप आपणे अंगण बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द दए समझाईआ। शब्द गुर गुरू गुर बलवाना, गुर गुर एका रंग समाया। गुरमुखां बन्ने साचा गाना, जुग जुग आपणा सगन मनाया। कलिजुग अन्तिम हो प्रधाना, नानक निरगुण जामा पाया। सतिनाम धुर फ़रमाणा, लोकमात आप सुणाया। एका मार्ग इक्क टिकाणा, इष्ट देव इक्क वखाया। चार वरनां इक्क ध्याना, ऊँच नीच ना कोए बणाया। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वसण इक्क मकाना, दूई द्वैत रहिण ना पाया। गुरमुख चले हरि हरि भाणा, हरि भाणा वड अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग विछड़े मेल मिलाया। ईश जीव हरि हरि मेला, घर मन्दिर आप करांयदा। एका घर वसे गुरू गुर चेला, गुर गोबिन्द वेख वखांयदा। सूरा सरबंग सज्जण सुहेला, नाम मृदंग इक्क वजांयदा। जगत विकारा करे भंग, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। अश्व घोड़े कसे तंग, लोआं पुरीआं पार करांयदा। गुरमुखां दुआरा आपे लँघ, आपणी झोली अग्गे डांहयदा। हरिजन ना होए कदे नंग, खिमा ग़रीबी आप हंढांयदा। सतिगुर पूरा वसे सदा संग, विछड़ कदे ना जांयदा। दूर दुराडा मुकाए पन्ध, शब्द बिबाणे आप बिठांयदा। जगत मिटाए अन्धेरा अन्ध, ज्ञान भान इक्क वखांयदा। शब्द सुणाए सुहागी छन्द, आपणा राग आप अल्लांयदा। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दी तोड़ दया कमांयदा। घर मन्दिर चाढ़े साचा चन्द, जोत निरँजण आप जगांयदा। दूई द्वैत भरमां मेटे कंध, ढाह ढाह ढेरी आप करांयदा। इक्क उपजाए परमानंद, निज आत्म वेख वखांयदा। हरिजन रसना लाए ना मदिरा मास गंद, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। शब्द अनादि बत्ती दन्द, धुन सितार आप वजांयदा। जगत जगदीशर जुग जुग आपणी वण्डण आपे वण्ड, गुरमुखां झोली पांयदा। नाता तोड़े भेख पखण्ड, गुरमति साची इक्क समझांयदा। गुरसिख नार ना होए रंड, जो जन हरि हरि कन्त मनांयदा। लेखा चुकाए जेरज अंड, लक्ख चुरासी पन्ध मुकांयदा। गुरसिखां भार सतिगुर पूरा आपणे सिर चुक्के पंड, गुर गोबिन्द साचा मार्ग मात लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग विछड़े आप मिलांयदा। सतिगुर पूरे राखो टेक, दूसर अवर ना कोए सरनाईआ। बुध सवाणी करे बबेक, नाम बबेक नाल मिलाईआ। मति मतवाली लए वेख, दर दुआरा फोल फुलाईआ। मन मनूआं ना करे भेख, दहि दिशां ना फेरी पाईआ। मेटणहारा बिधना लेख, आपणी बिध दए जणाईआ। नेत्र लोचण नैणा दरसन लैणा पेख, सतिगुर सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका पूजा पाठ करे पढ़ाईआ। साची पूजा पाठ काया

६२६
०६

घर, हरि मन्दिर आप सुहांयदा। गुरमुख अक्खर लैणा पढ़, जगत विद्या मोह चुकांयदा। साची किरपा आपे कर, अकृतघन आप तरांयदा। आलस निन्दरा देवे हरि, सुफ़न सखोपत वेख वखांयदा। जागरत फड़ाए आपणा लड़, तुरीआ नाद वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन मेल मिलांयदा। सतिगुर पूरा दीन दयाल, गुरसिखां आप तराईआ। एका वस्त देवे नाम सच्चा धन माल, चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ। राम कृष्न नाम सति वहिगुरू अक्खर इक्क सखाल, मन सुख एका रंग रंगाईआ। ऐनलहक बण दलाल, कलमा अमाम नबी रसूल आप पढ़ाईआ। दो जहानां रिहा राह तक्क, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे नाम रक्खे वड्याईआ। हरि नाम वडियाई वड, वड वड्डा आप उपांयदा। जुग जुग निशाना मात गड्ड, लोकमात आप झुलांयदा। गुरमुख गुरसिख लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, आप आपणा लाड लडांयदा। लेखा जाणे अन्धेरी खड्ड, डूँघी कंदर फोल फुलांयदा। जिस जन अमृत जाम प्याए मदि, अठ्ठे पहर खुमार वखांयदा। नाम वजाए धुन नाद, साचा अनहद आप आपणी कल धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इष्ट रूप दृढ़ांयदा। एका इष्ट पुरख अकाल, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। कलिजुग चले अवल्लड़ी चाल, बेहंगम इक्क रखाईआ। नाल रखाए काल महांकाल, दो जहानां फेरा पाईआ। लोआं पुरीआं बण दलाल, ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे थाउँ थाँईआ। लक्ख चुरासी आदि जुगादि करे प्रितपाल, शब्द सरूपी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका राह दए वखाईआ। सतिगुर सच्चा राह, लोकमात चलांयदा। गुरमुखां देवे सच सलाह, जगत हँकार विकार मिटांयदा। सृष्ट सबाई जानणा भैण भ्रा, पिता माँ सर्ब रूप वटांयदा। एका नारी अंग लगा, कन्त सुहागी सेज सुहांयदा। एका इष्ट गुरदेव मना, घर एका सीस झुकांयदा। साध सन्त एका मंत रहे जपा, जपत जपत जपत सुख पांयदा। बिन सतिगुर पूरे कोए ना पकड़े बांह, बेड़ा पार ना कोए करांयदा। कोटी कोटि सहँसर मुख शेश गाए नाँ, दो सहँसर जिह्वा आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ वखांयदा। जुग जुग नाउँ वखाणदा, बेअन्त बेपरवाह। सन्त सुहेले आपे जाणदा, आप आपणी दया कमा। नाता तोड़े जीव जहान दा, जीवण जुगत इक्क जणा। मेल मिलाए श्री भगवान दा, जो जन चरनी डिगे आ। पन्ध मुक्के मन शैतान दा, पंचम चोट ना सके ला। प्रकाश वखाए सच मकान दा, निरगुण दीप जोत जगा। राग सुणाए शब्द धुनकान दा, घर अनहद शब्द वजा। पन्ध मुकाए दो जहान दा, फड़ बाहों गले लगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मार्ग दए समझा। एका मार्ग सतिगुर चरन, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। सतिगुर पूरा खोल्हे हरन फरन, निज नेत्र

कर रुशनाईआ। राए धर्म चुक्के डरन, लाड़ी मौत ना करे कुड़माईआ। आपणी वरनी आपे वरे, वरन गोत ना कोए वखाईआ। आपणी किरपा आपे करे हरि हरे, आपणी सेव आप लगाईआ। गुरसिख विरला मात ना डरे, धर्म राए ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त ना हथ्थ लेखा फड़े, हिसाब किताब ना कोए वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना फेर घाड़न घड़े, घड़ भाण्डे ना कोए भन्नाईआ। सतिगुर पूरा आप बंधाए आपणे लड़े, नाम पल्लू इक्क रखाईआ। उच्च महल्ले लै के चढ़े, दिस किसे ना आईआ। आप वसाए आपणे घरे, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। जोती जोत आपे रले, जोती जोत जोत टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए तराईआ। तारनहारा इक्क गुरदेव, शब्दी शब्द सुणांयदा। अंदर मन्दिर साची सेव, दिवस रैण करांयदा। दुःख निवारन अलक्ख अभेव, सुख सहिज सहिज समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग सच सलाह, सतिगुर पूरा बणे मलाह, इक्क जपाए साचा नाँ, नाम निधाना श्री भगवाना आदि जुगादि विच ब्रह्माद, ब्रह्म पारब्रह्म ईश जीव जगत जगदीशर सर्ब जीआं बण एका ईश्र, एक देव देव आत्मा आप समझांयदा। जीव जंत, सतिगुर पूरा शब्द चलांयदा। जुग जुग महिमा गणत अगणत, आपणा लेखा आप लिखांयदा। करे खेल आदि अन्त, अकल कलधारी रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि की बाणी हरि हरि आप अलांयदा। हरि की बाणी हरि का रूप, जीव जंत सके ना कोए जणाईआ। मन मति बुध दर दुआर खलोती मंगे मंग, पुरख अबिनाशी साची वस्त ना झोली पाईआ। दरगाह साची वज्जे इक्क मृदंग, सूरा सरबंग आप हो वजाईआ। साचे पौड़े सचखण्ड दुआर सुहाए लँघ, आपणा आसण पुरख अबिनाशन आपे रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी खेल कर, शब्दी आपणा नाउँ धराईआ। शब्दी बोले आपणा बोल, बोल जैकारा इक्क रखांयदा। एका कंडा एका तोल, तोलणहारा इक्क अख्वांयदा। एका हट्ट वणजारा खोल्ह, साची वस्त आप धरांयदा। आदि जुगादी रहे अडोल, सृष्ट सबाई आप डुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाद हरि ब्रह्माद, आदि जुगादि वजांयदा।

✻ ७ भाद्रों २०१७ बिक्रमी बूड़ सिँघ दे घर नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ✻

सो पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, दर घर साचे सोभा पाईआ। हरि पुरख निरँजण गुण निधाना, निरगुण निरवैर आपणा नाउँ रखाईआ। एकँकारा खेल महाना, अकल कल आपणी आप उपजाईआ। आदि निरँजण जोत महाना, नूरो नूर डगमगाईआ।

अबिनाशी करता जोद्धा सूर बली बलवाना, बलधारी भेव ना राईआ। श्री भगवान सच निशाना, दरगाह साची आप झुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधाना, लोकमात वेस वटाईआ। एका ब्रह्म लक्ख चुरासी वण्ड वण्डाना, घड़ भाण्डे आप टिकाईआ। जुगा जुगन्तर वेख वखाना, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। नाम सुणाए सच तराना, शब्द अनादी नाद वजाईआ। जुगा जुगन्तर वेख वखाना, जुग करता शहनशाहीआ। जन भगतां बन्ने साचा गानां, नाम डोरी तन्दन पाईआ। हरि सन्तां बख़्शे चरन ध्याना, चरन कँवल वड्डी वड्याईआ। गुरमुखां राग सुणाए काना, साचा राग इक्क समझाईआ। गुरसिख वखाए सच निशाना, दर घर साचे आप झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी महिमा आपणे हथ्थ रखाईआ। हरि महिमा अकथ, कथनी कथ सके ना राईआ। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही सेव कमाईआ। लख चुरासी बैठा काया मठ्ठ, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। जुग जुग खुल्हाए एका हट्ट, नाम वस्त इक्क विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। सो पुरख निरँजण गहर गम्भीरा गुणवन्त, गोबिन्द आपणी धार रखांयदा। आदि जुगादि श्री भगवन्त, पुरख अकाल इष्ट वखांयदा। वसणहारा साचे धाम आपणा गुण वखाए बेअन्त, लेखा लिख ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस धरांयदा। वेस धराए हरि भगवाना, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सति पुरख निरँजण खेल महाना, सति सतिवादी आप कराईआ। सो पुरख निरँजण धुर फ़रमाणा, हरि पुरख निरँजण दए सुणाईआ। आदि निरँजण मंगे दाना, श्री भगवान झोली पाईआ। अबिनाशी करता करे परवाना, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। निरगुण वेखे सच टिकाणा, सरगुण साची सेज हंढाईआ। आसा तृष्ना लेखा जाणे गुण निधाना, गुण आपणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। भेव खुलंदड़ा वड मेहरवाना, आपणी दया आप कमांयदा। आपे याचक बण बण मंगे दाना, जगत भिखारी रूप वटांयदा। आपे साहिब सुल्तान सतिगुर बण बण देवे माणा, चरन दुआरा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणांयदा। हरि हरि भेव जणाईआ, जागरत जोत इक्क जगा। लोकमात वेस वटाईआ, इक्क इकल्ला जामा पा। लक्ख चुरासी वेख वखाईआ, निरगुण सरगुण मेला सहिज सुभा। गुरमुखां गुरसिखां एका अक्खर करे पढ़ाईआ, इक्क जपाए आपणा नाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिला। हरि मिलांयदा, मेलणहारा आप निरँकार। नौं नौं जामे माणस धरांयदा, इक्क सौ इक्क करे आधार। इक्क घर आपणा रूप वखांयदा, इक्क इकल्ला खोल्ह किवाड़। सच महल्ला आप वसांयदा, करे कराए सच प्यार। सच सिँघासण सोभा पांयदा, तख़्त निवासी मीत मुरार। जोती

जामा भेख वटांयदा, गुरमुख सज्जण लाए पार। दहि दिशां फेरी पांयदा, चारों कुंट कर विचार। गगन मंडल फोल फुलांयदा, लोआं पुरीआं पर्दा दए उतार। ब्रह्मा विष्न शिव आप उठांयदा, करोड़ तेतीस दए हुलार। निरगुण निरगुण वेख वखांयदा, सरगुण दिसे ना विच संसार। नौं नौं जामे गुरसिख आप भुगतांयदा, नौं नौं दुआरे करे पार। कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी धार। कलिजुग अन्तिम आंयदा, करे खेल श्री भगवान। हरिजन साचे वेख वखांयदा, प्रगट होए दो जहान। एका अंक नाम दृढ़ांयदा, शब्द धुन नाद महान। आपणा संसा आप चुकांयदा, संसे भरया जीव जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी आण। नौं नौं वेस अवल्लड़ा, एकँकार वेख वखाईआ। सति पुरख निरँजण सति सतिवादी आप फड़ाए आपणा पल्लड़ा, एका पल्लू हथ्थ फड़ाईआ। सच संदेश नर नरेश सच दुआरे एका घल्लड़ा, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौं नौं लेखा दए मुकाईआ। नौं नौं लेख मुकावणा, जन्म मरण ना कोए विचार। हरिजन साचे आप उठावणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। साचा मन्त्र इक्क दृढ़ावना, सोहँ शब्द नाम जैकार। रसना जिह्वा हरि गुण गावणा, दिवस रैण रहे ख़मार। साचा भाण्डा आप सुहावणा, रक्खे वस्त हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए सच विहार। सच विहारा करने आया, कादर कुदरत वेख वखाईआ। गुरमुख साचे वरने आया, वर दाता बेपरवाहीआ। डुब्बदे सागर ल्ए तराया, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। काया गागर भेव चुकाया, नाम रत्ती रत्त एका झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। हरि हरि भेव खुल्हणा, नौं नौं उतरे पार। पुरख अबिनाशी कदे ना भुल्लणा, वरते वरतावे विच संसार। साचा निशान एका झुलणा, आप झुलाए एकँकार। ना कोई कीमत ना कोई मुलणा, ना कोई वणज ना वपार। जिस जन साचे कंडे तुलणा, दोवें छाबे दए हुलार। कलिजुग अन्तिम आत्म डुलणा, रोवे ज़ारो ज़ार। गुरमुख कर दरस चरन प्रीती घोल घुलणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी करे विचार। सच विहार सच विचार सर्ब दुःख दीनन, दीनां नाथा दया कमाईआ। गुरसिख नाता जोड़े जिउँ जल मीनन, थल मारू ना कोए तपाईआ। काया चोली रंग चढ़ाए भीन्नन, भिन्नड़ी रैण दए सालाहीआ। जन भगतां करे ठांडा सीनन, सिख्या आपणे हथ्थ रखाईआ। करे प्रकाश लोक तीनन, त्रैगुण पैंडा पन्ध मुकाईआ। मनमुखां तोड़े हँकारी बीनन, एका खण्डा हथ्थ चमकाईआ। लेख चुकाए चौदां लोक चौदां हट्ट भीन्नन, लाशरीक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन हरि हरि छेड़ां छेड़दा, नौं खण्ड पृथ्मी खेल अपार।

राष्ट्र राजाना आपे भेड़दा, मुल्ला शेख मुसायक अन्तिम पायण सार। अन्तिम साचा वेला हक नबेड़दा, नाता छुट्टे विच संसार। सतिगुर पूरा आपणे शब्द लपेटदा, तन तन दए आधार। करे खेल खेवट खेटदा, फड़ फड़ बांहो लाए पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दस्से सच प्यार। चार वरन सच प्यार, हरि सतिगुर आप समझांयदा। वेद व्यासा लिख्या लेख अपार, लेखा आपणा फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बाणी साचे हाणी, दर घर साचे आप सुणांयदा। शब्द हाणी दर परवान, पारब्रह्म प्रभ मुख सालांहयदा। पूर्ब कर्मा चुक्के आण, लहिणा देण ना कोए वखांयदा। सर्ब जीआं होए जाणी जाण, जाणनहारा भुल्ल ना जांयदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, बल बावन रूप वटांयदा। तख्त निवासी नौजवान, आपणा लेखा आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे एका मन्त्र अन्तर नाम दृढ़ांयदा। अन्तर नाम आत्म रस, रसक रसीआ वेख वखांयदा। आप बुझाए लग्गी बसन्तर, अग्नी तत्त ना कोए रखांयदा। एका नाम शब्द गुर मन्त्र, सृष्ट सबाई आप पढ़ांयदा। साचा मार्ग दस्से सुतंतर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी लीला आप रचांयदा। सतिजुग तेरा वेख पसारा, पारब्रह्म प्रभ वेस वटांयदा। ख़ाली छड्डे सर्ब परवारा, माया ममता ना कोए रखांयदा। हठीआ हठ करे अपार, तीर्थ तट ना कोए नुहांयदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगांयदा। हरिजन साचा आप जगाया, कलिजुग अन्तिम वार वेख वखाईआ। रक्त बूंद लेखे लाया, चार जुग वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, रूप अनूप आप दरसाईआ। शाहो भूप नाउँ धराया, राज राजाना सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन गुरमुख वेखणा, पीआ प्रीतम साचा यार। एका लिखणहारा लेखणा, लेखा हथ्थ रक्खे करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम होए वरतार। नाम वरताए एका हरि हरि, नाम नामा झोली पाईआ। भगत जगाए किरपा कर कर, कर किरपा होए सहाईआ। दोहां विचोला आपे बण बण, लोकमात वेख वखाईआ। जन भगतां लेखा चुकाए गिण गिण, आपणा पल्लू साफ कराईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत साढे तिन्न हथ्थ सीवां देवां मिण मिण, ख़ाली दस्त ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पढ़ पुस्तक वाद वधाईआ। गुरसिख पुस्तक पढ़या हरि हरि गीत, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। घर मन्दिर ना कोए मसीत, इष्ट देव ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख वेखे थाउँ थाईआ। गुरसिख साचा वेख्या, गुर सज्जण मीत मुरार। जगत संसा चुक्के भुलेखया, भरमी भरम ना कोए विचार।

सतिगुर पूरा लिखणहारा लेखया, गोबिन्द लेखा अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लाए पार। गुरमुख पार उतारदा, पुरख अबिनाशी हरि करतार। करे खेल सच्ची सरकार दा, आप आपणी बन्ह धार। निउँ निउँ सीस सर्ब झुकांयदा, घर ठांडा दिसे दरबार। चारे वरनां रंग रंगांयदा, आप आपणी किरपा धार। दूसर दर ना कोए वखांयदा, ख़ाली भरे दिसण भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे पाए सार। हरिजन हरि हरि एक है, दोऊँ दूसर ना कोए होए। मन मति बुध आप बिबेक है, निर्मल अमृत आत्म आपे चोए। उलटी करे नाभ कँवल है, अमृत रस इक्क भरोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचे ढोए। साचा ढोआ लै के आया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। आपणा मार्ग कह के आया, भुल्ल ना जाए अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे बख्शे चरन दुआर। चरन दुआरा सच घर बारा, हरि करतारा आप वड्याईआ। नाम नगारा जोत उज्यारा, नाद अनादी इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा आप लिखाईआ। हरिजन लेखा लिख्या, लिखणहार गोपाल। चारे कुंट एका रंग वसे दहि दिश्या, शब्द पंघूड़ा लैणा झूल। दूई द्वैती मेटे विसया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच दलील, सच दलील जगत भरवासा, भरमी भरम रहिण ना पाईआ। साचे सन्त इक्क धरवासा, धीरज जति दए वखाईआ। करे खेल मंडल मंडप आपणी रासा, गोपी काहन आप नचाईआ। आपे राम रावण पूरी करे आसा, आपणे बाणा आपे घाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग हरिजन लए मिलाईआ। सतिगुर मेल मिलंदड़ा, दीनां अनाथां नाथ। दर घर साचे आप सुहंदड़ा, सदा सुहेला रक्खे एका साथ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरसिखां लाहे तीनो ताप। त्रैगुण ताप मिटांयदा, हरि पुरख निरँजण एकँकार। गीत सुहागी इक्क सुणांयदा, सोहँ शब्द इक्क पुकार। सज्जण साचे मेल मिलांयदा, मेला मिल्या रहे संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बख्शे इक्क आधार। इक्क आधारा सतिगुर चरन, धरत धवल वड्याईआ। सवच्छ सरूपी रूप दरसाए आपणे नैण कँवल, कँवल कँवला मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख इक्क दए बुझाईआ। इक्क देह इक्क देह, देह दाता आप हो जाईआ। एका घर लगा नेह, पिता पूत वेख वखाईआ। कर किरपा बरखे अमृत मेह, साचा झिरना दए झिराईआ। लग्गा तुट ना जाए नेह, निहकलंका आप लगाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डा फुट्टे होवे ख़ाकी देह, ख़ाक ख़ाक आपणे चरना हेठ दबाया। अमृत धारा बरसे मेह, साँवल सुंदर रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईआ। थान थनंतर फोलया, कर किरपा हरि निरँकार। लक्ख चुरासी ख़ाक विरोलया, घर घर दिसे छार। उच्चा कूक आपे बोलया, पुरख अबिनाशी बेऐब परवरदिगार। धुर दरगाही लै के आया ढोलया, सोहँ शब्द सच जैकार। आसा मनसा आपे मौलया, निरगुण सरगुण दए आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कलि कल्की लै अवतार। कल कल्की हरि सीस धर, धरनी धरत धवल सुहांयदा। गुरमुखां देवे एका वर, एका वस्त झोली पांयदा। आवण जावण चुक्के डर, जम की फ़ासी आप तुड़ांयदा। आपणी किरपा आपे कर, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। साची वस्त अंदर धर, धरनापत साचा मन्दिर आप सुहांयदा। दरस दिखाए अग्गे खड़, रूप अनूपा रूप वटांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, साची विद्या इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, जगत विछोड़ा पन्ध मुकांयदा। मुकाए पन्ध दो जहाना, नेरन नेरन वेख वखाईआ। शब्द सरूपी बन्ने गानां चौदां चौदस करे रुस्सया, रैण अन्धेर एका छाईआ। गुरसिख अमृत आत्म साची पौहल छके, पल पल विसर ना जाईआ। आपणी इच्छया आपे पले, आपे दाता रिज़क सबाईआ। सच सुनेहड़ा आपे घल्ले, रसना जिह्वा बत्ती दन्द हलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे घर, पूर्ब लेखा वेख वखाईआ। पूर्ब लेखा मुक्कया, आई अन्तिम वार। सतिगुर पूरा शेर दलेरा हो हो बुक्या, सिँघ सरूपी लै अवतार। लक्ख चुरासी जीव जंत कलिजुग संग दिन दिहाढ़े जाए लुट्टया, ख़ाली भरे रहिण भण्डार। माणस जीवां चोग निखुटया, मिले मेल ना हरि करतार। दूती दुश्मण बूटा पुट्टया, फल लग्गे ना विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दस्से जगत नुहार। जगत नुहारी नूर उजाला, निरगुण आपणा वेख वखाईआ। शब्द जणाई काल महांकाला, कालख टिक्का दए वखाईआ। इक्क वखाए सचखण्ड साची धर्मसाला, थिर दरबारा आप खुल्हाईआ। सचखण्ड दुआरे करया खेल निराला, हाली साचा हल चलाईआ। आपे तिक्खा रख्या फाला, मनमुखां जड़ उखड़ाईआ। फल लग्गे साचे डाल्हा, डाल्ही पत ना कोए महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग चले अवल्लड़ी चाला, सच संदेश नर नरेश इक्क सुणाईआ। सच संदेश मन चाउ घनेरा, गुरसिख खुशी मनाईआ। सतिगुर नज़री आए नेरन नेरा, निरगुण आपणी जोत जगाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड ना पाए फेरा, अवण गवण ना कोए जणाईआ। आपे देवणहारा गेड़ा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। दिवस रैण करे झेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बेड़ा आप तराईआ। साचा बेड़ा तारना, गुरमुख कर्म विचार। माणस मानुख जन्म संवारना, लेखा जाणे धुर दरबार। हरख सोग ना कोए वखावणा,

नेत्र रोवे ना ज़ारो ज़ार। सुत दुलारा ख़ाकी ख़ाक ना कोए दबावणा, अग्नी तत्त करे भण्डार। पुरख अबिनाशी बूझ बुझवाणा, भुल्ल रहे ना विच संसार। कलिजुग अन्तिम संग निभावणा, निहकलंक कल कल्की लए अवतार। साचा छत्र सीस झुलाउणा, झुलोंदा रहे सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख़्शे चरन दुआर। चरन दुआरा भेटया, मिल्या हरि हरि राए। दर घर साचे बणे खेवट खेटया, एका बेड़ा लए उठाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा बन्धन आपे पाए। कलिजुग अन्तिम बन्धन पाया, लेखा लिखे ना कोई राईआ। सोहँ शब्द सुहागी छन्दन एका गाया, एका दए समझाईआ। दीन दयाला सर्ब बख़्शंदन, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। ग़रीब निमाणे गले लगाए जिउँ सुदामा चब्बे तन्दन, आपणी मुट्ठी आप भराईआ। गुरमुखां तोड़े ख़ाना बन्दन, बन्दी छोड़ आप हो जाईआ। मस्तक टिक्का लाए एका चन्दन, निम वास संग महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सुणाए सुहागी छन्दन, गीत गोबिन्द आप अल़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बंधाए साचा तन्दन, गुरमुख आपणी वण्ड वण्डाईआ।

६३७

✻ ८ भाद्रों २०१७ बिक्रमी इंदर सिँघ दे घर नाथेवाल फिरोज़पुर ✻

०६
०६

सतिगुर पूरा सर्ब गुण ठाकर, पुरख अकाल नाउँ धरांयदा। जुग जुग वेखे जगत सागर, कलिजुग अन्तिम फेरा पांयदा। वस्त अमोलक देवे नाम रत्ती रत्नागर, रत्ती रत्त मेट मिटांयदा। गुरमुख बणाए साचे सौदागर, दर घर साचा हट्ट इक्क खुलांयदा। निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा खेल खिलांयदा। दीना नाथ सर्ब गुणवन्ता, दीनन दया आप कमाईआ। जुगा जुगन्तर वेस वटंता, कलिजुग अन्तिम फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी त्रैगुण माया वेखे संस्था, जगत समाज फोल फुलाईआ। वरनां बरनां बणया बंसा, साचा बंस ना कोए सुहाईआ। त्रैगुण माई बणी अंसा, प्यार आधार इक्क वखाईआ। मन हँकारी बणया कंसा, जूठा झूठा खण्डा हथ्थ चमकाईआ। जीव विकारी होए सहँसा, सहँसर गुण ना कोए गाईआ। काया मेला माया मोह जगत अहिंसा, सगला संग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल करे बेपरवाहीआ। पुरख अबिनाशी दीन दयालण, दया निध ठाकर गहर गंभीरया। आदि जुगादी खेल निरालण, जोत अकालण लोकमात लए अवतारया। चले चलाए अवल्लड़ी चालण, वेद कतेब भेव ना पा रिहा। खेले खेल दो जहानण, दो जहानां वाली आपणा नाउँ धरा रिहा। जन भगतां करे हरि हरि

पालण, हरि जू मन्दिर आप सुहा रिहा। सन्तन मेटे अन्धेरी शामन, शमा दीपक इक्क जगा रिहा। गुरमुखां बख्शे नाम निधानन, सच मन्त्र आप दृढ़ा रिहा। गुरसिखां करे प्रकाश कोटन भानन, भावी भरम भउ चुका रिहा। एका शब्द फड़ाए साचा दामन, दामनगीर आपणी सेव कमा रिहा। नेड़ ना आए कामनी कामन, कादर करता आपणी किरत आप कमा रिहा। दो जहाना बणे ज़ामन, लोकमात वेख वखा रिहा। ना कोई छत्री ना कोई ब्रह्मण, शूद्र वैश ना कोए उपा ल्या। निरगुण रूप सर्ब घट चानण, गृह मन्दिर घर घर डेरा ला ल्या। ताणा पेटा तणया तानण, त्रैगुण माया तन्द उँणा ल्या। करे खेल श्री भगवानन, भेव अभेदा आप चला रिहा। जुगा जुगन्तर बणे दलालण, जगत दलील वेख वखा रिहा। भगत भिखारी होए सवालण, इच्छया भिच्छया मंग मंगा रिहा। मंगे वस्त नाम धन मालण, धन धनाडी आप अखवा रिहा। पंज तत्त विकारा कलिजुग अग्नी जाले बालण, धूंआँधार सर्ब समा ल्या। हरि का रूप ना कोए पछानण, हरि के पौड़े ना कोए चढ़ा रिहा। अनहद शब्द ना कोए गानण, रसना जिह्वा सर्ब हिला रिहा। तुट्टे माण ना जगत अभिमानण, हउमे हंगता गढ़ सुहा ल्या। गुर चरन धूढ़ करया ना सच अशनानण, अठसठ भउ भउ वक्त लँघा ल्या। आत्म उपज्या ना ब्रह्म ज्ञानण, पढ़ पढ़ रसना जगत सुणा ल्या। वज्जा तीर ना सच निशानण, झूठा खण्डा हत्थ वखा ल्या। मिल्या मेल ना गुण निधानण, कोट कोटी रूप वटा ल्या। कलिजुग अन्तिम रैण अन्धेरी वेखे कालण, पुरख अबिनाशी आपणा नैण खुल्हा ल्या। निरगुण सरगुण चढ़या भालण, लोकमात फेरा पा ल्या। सुरती सोई आया उठालण, शब्द डण्डा हत्थ रखा ल्या। स्वच्छ सरूपी आया दरस दिखालण, निरवैर आपणा नाउँ उपजा ल्या। धुर दरगाही साचा माही आपे आया बण के मालण, साची खारी फूलन सीस उठा ल्या। गुरमुख वेखे साचे लालण, रत्न अमोलक हीरा लाल लख चुरासी विच्चों आप उठा ल्या। एका गल पाए सोहँ साची मालन, ब्रह्म पारब्रह्म सगन मना ल्या। चौथे जुग आपणे नाउँ पूरा करे सवालण, योग अभ्यास ना कोई वखा रिहा। चरन कँवल इक्क ध्यानण, चरन चरनोदक मुख चवा रिहा। फल लगाए साचे डालण, पत डाल्ही आप महिका रिहा। गुरमुखां दस्से राह सुखालण, सुख सागर आपणा रूप वटा ल्या। कलिजुग जीव डिगे पंछी आहलण, फड़ बाहों ना कोए टिका ल्या। लाड़ी मौत पाए धमालण, घर घर आपणा नाच निचा ल्या। वेखणहारी जोत अकालण, कलिजुग अन्तिम वेस वटा ल्या। विष्नूं भण्डारा करे खालण, खालक खलक सर्ब तड़फा रिहा। ब्रह्मा ब्रह्म तुट्टे मानण, वेला अन्तिम इक्क जणा ल्या। शंकर पूरी करे घालण, कीती घाल लेखे ला रिहा। चित्रगुप्त वेखे खोल्ह दुकानण, लख चुरासी लेखा जगत हिसाब आप गिणा ल्या। राए धर्म उठया नौजवानण, पुरख अबिनाशी हुक्म सुणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग

६३८
०९

तेरी अन्तिम वर, हरिजन आपणे खाते पा ल्या। हरि जू रक्खे आपणा खाता, दूसर हथ्थ ना कोए वड्याईआ। जुग जुग वरतावे आपणी दाता, दाता दानी नाउँ धराईआ। आपणे अंदरों आपणी वस्त आपे कढ्ढे बहु बहु भांता, भेव अभेदा भेव ना राईआ। आपे गाए सुणाए साची गाथा, सच्चखण्ड दुआर वज्जे वधाईआ। खेले खेल त्रलोकी नाथा, त्रै त्रै वेस अनेक वटाईआ। एका मन्त्र पूजा पाठा, जुगा जुगन्तर जगत पढ़ाईआ। एका खोल्हणहारा हाटा, एका वस्त नाम विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम अनमोला पुरख अबिनाशी बणया तोला, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। साचा कंडा हरि निरँकार, आपणे हथ्थ रखांयदा। नाम वस्त अगम्म अपार, अतोल अतुल आपणे छाबे आपे पांयदा। आदि जुगादि रक्खे अडोल, जुग जुग ना कोए डुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम नाम वस्त अपार, देवणहार हरि दातार, दर घर साचे आप वरतांयदा। नाम वरतन्दड़ा हरि भगवन्ता, दीन दयाला दया कमांयदा। जुग जुग मेला साचे सन्ता, सन्त साजण वेख वखांयदा। तोड़े गढ़ हउमे हंगता, माया ममता मोह चुकांयदा। दर भिखारी बणाए मंगता, दर दरवेशा अलक्ख जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाम वड्यांअदा। जगत वडियाई हरि हरि नाउँ, वेद पुराण रहे जस गाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्त जन भगतां दस्से साचा थाउँ, थान थनंतर इक्क सुहाईआ। सन्तन मेला अगम्म अथाहो, अलक्ख अगोचर बेपरवाह वेख वखाईआ। गुरमुखां पकड़े आपे बाहों, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। गुरसिख बणाए हँस काउँ, कागों हँस आप उडाईआ। सतिगुर पूरा सदा सदा सद रक्खे चाउ, हरिजन वेखे आपणा नैण उठाईआ। आपे फड़ फड़ पाए राहो, राह खेड़ा आप जणाईआ। जुग जुग करे सच न्याउँ, कलिजुग अन्तिम फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जू हरि मन्दिर बैठा सोभा पाईआ। कलिजुग अन्तिम आया, वेला वक्त विचार। गुरमुख ल्ए जगाया, कर किरपा आप निरँकार। लक्ख चुरासी दए मिटाया, फंदन तोड़ सच्ची सरकार। बन्द खुलासी आप कराया, जम की फ़ाँसी दए उतार। पवण स्वासी शब्द चलाया, दिवस रैण रहे धुन्कार। साचा मन्दिर आप सुहाया, हरिमन्दिर काया सच्चा घर बार। दीआ दीपक जोती इक्क टिकाया, जोत निरँजण रहे उज्यार। आत्म सेजा इक्क सुहाया, शब्द विछोड़ा अपर अपार। सति सरूपी आसण लाया, आपे सुत्ता पैर पसार, दिवस रैण जन भगतां राह रिहा तकाया, आप आपणा नैण उग्घाड़। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, गुरमुख गुरसिख ग़रीब निमाणे साचे लाड़। साचे घोड़े ल्ए चढ़ाया, शब्द अगम्मी कर त्यार। हँ ब्रह्म आप समझाया, सो पुरख निरँजण किरपा धार। जोती जामा मेल मिलाया, मेल मिलावा कन्त भतार। सुरत सवाणी पकड़ उठाया, सोई रहे ना नार विभचार। एका कज्जल नैण

पवाया, तिक्खी रक्खी आपे धार। साचा भूशन तन सुहाया, रंगे रंग लाल गुलाल। एका पीहड़ा रंगील वछाया, बाढी बण आप करतार। साचे डोले आपे पाया, बणया रहे आप कहार। साढे तिन्न हथ्थ लम्मां आप रखाया, अंदर लुकया लुकणहार। आपणे कंध आप टिकाया, आपे चुक्के सच्चा भार। आपणे राह आप चलाया, डूँग्घी गारों कढुया बाहर। पंज तत्त त्रैगुण अग्गनी दए बुझाया, अमृत प्याया ठंडा ठार। सुरत सवाणी नैण खुलाया, इक्क वखाया सच दरबार। गुर शब्दी मात प्रनावण आया, आप आपणा सगन विचार। एका पल्लू हथ्थ फड़ाया, चौथे जुग लावां लए चार। उलटा गेड़ा आप गड़ाया, काया कँवरी कढे बाहर। सौहरे पेइए वेख वखाया, प्या प्रीतम मीत मुरार। साची जोती आप जगाया, थिर घर बैठ सच्चे दरबार। साचा सगन इक्क वखाया, अमृत एका उत्तों वार। सच सवाणी पर्दा दए उठाया, मुख घूँगट दए उतार। साची सेज इक्क सुहाया, बेऐब परवरदिगार। मैहन्दी रंगण रंग रंगाया, उतर ना जाए दूजी वार। साचा सालू सीस टिकाया, मेंडी गुंदे सिरजणहार। मस्तक टिक्का इक्क लगाया, जोत निरँजण कर उज्यार। छोटा बाला गोद बहाया, देवर भाबी करे प्यार। साचा मेला मेल मिलाया, करे खेल आप करतार। आपणी हथ्थीं दीप जगाया, घर मन्दिर होए उज्यार। तेल बाती ना कोए टिकाया, ना कोई मारे फूँक फुँकार। चारे कुंट उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण आपणा दरवाज़ा आपे बन्द कराया, ना कोई खोल्ह़े बन्द किवाड़। लाड़ी लाड़ा एका रंग समाया, करे खेल खेलणहार। गुरसिख तेरा काया खेड़ा आप वसाया, आपे बणया चोबदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां कर्ज़ा दए उतार। गुरसिख तेरा करज उतारना, मकरूज हरि करतार। तेरी गर्ज पूर करावणा, फ़र्ज पूरा करे संसार। तेरी झूठी मर्ज मिटावना, तर्ज सुणाए शब्द धुन्कार। तेरा हर्ज ना कोए वखावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे लाए पार। गुरसिख साचा पार उतारना, कलिजुग डूँग्घा सागर गार। एका चप्पू नाम लगावणा, वेख वखाए वहिदी धार। साचे बेड़े आप चढ़ावना, निरगुण नईया कर त्यार। साचा सय्या संग निभावणा, छुट्ट ना जाए अन्तिम वार। फड़ फड़ बहीआ मेल मिलावणा, भैणा भया इक्क आधार। धर्म राए वहीआ कढु ना कोए वखावणा, लेखा मंगे ना अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे धाम लए बहाल। धाम अवल्लड़ा पुरख अकाला, गुरमुखां गुर गुर आप समझाईआ। आदि जुगादी खेल निराला, शब्द सरूपी बणे दलाला, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। लेखा जाणे काल महांकाला, त्रैगुण तोड़े तत्त जंजाला, एका मन्त्र अन्तर नाम दृढ़ाईआ। दिवस रैण करे प्रितपाला, गल पाए सोहँ साची माला, अठ तत्त अठोतरी ना कोए फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क अकोतरी

आपणी हथ्थीं आपे पाईआ। एका सिफ़रा एका लिख, इक्क इक्क नाल मिलांयदा। एका देवणहारा भिक्ख, एका झोली डांहयदा। एका मेटे तृष्ना तृख, एका अमृत जाम प्यांअदा। एका धारे आपणा भेख, एका रूप वेस अनेक करांयदा। एका दाता इक्क नरेश, एका निर्धन नाउँ धरांयदा। एका ब्रह्मा विष्न महेष, एका त्रैगुण झोली पांयदा। एका आदि जुगादि करे आदेश, एका निउँ निउँ सीस झुकांयदा। एका सुत्ता बाशक सेज, एका दोए सहँसर जिह्वा आप हिलांयदा। एका ब्रह्म करे प्रवेश, एका पारब्रह्म रूप वटांयदा। एका शंकर बिभूती धारे भेस, ख़ाकी ख़ाक रमांयदा। एका करोड़ तेतीसा रिहा वेख, एका आपणा नैण बन्द करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क अकोतर आपणा नाउँ धरांयदा। इक्क इक्कोतर कल्ला यार, इक्क इक्क नाल दो जुड़ांयदा। दो जहानां हो उज्यार, अद्धविचकार ना कोए उपांयदा। आपे निरगुण आपे सरगुण आपे दोहां तो वसे बाहर, दोहां विच आप समांयदा। आपे खेल करे अगम्म अपार, आपे प्रगट हो हो रूप वटांयदा। आपे तख्त निवासी बैठे सच्ची सरकार, आपे दर दर मंगण भिख्या जांयदा। आपे आपणी अल्फी करे तन श्रंगार, आपे लक्ख चुरासी काया चोला हंढांयदा। आपे आपणी बरसी मनाए जुग जुग एका वार, चार जुग एका बरसी नाउँ धरांयदा। नौं नौं इक्क इक्क जोड़ा जोड़े आप करतार, जोड़नहारा दिस ना आंयदा। नौं इक्क दस वरते वरतार, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। दस दस मेला दस्म दुआर, दहि दिशा फेरी पांयदा। एका एका कर त्यार, दस अग्गे आप लगांयदा। इक्क इकोतर होया ख़बरदार, जोजन वण्ड ना कोए वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साची कार करे कराए करनेहार। करता पुरख दीन दयाला, गुरमुख वेखे साचे लाला, लालण आपणे रंग रंगांयदा। रंग रतड़ा पारब्रह्म पुरख बिधाता, बेअन्त अन्त आप हो जाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे खेल तमाशा, साध सन्त जीव जंत आत्म अन्तर खोज खुजाईआ। गुरमुख गुरसिख बणाए साची बणत, आपणा भाण्डा आपे घड़ वखाईआ। शब्द जणाई मणीआ मंत, मन दा संसा दए गंवाईआ। सोहँ सो मेला हरि हरि कन्त, एका सिफ़रा एका वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे आप तराईआ। तारनहारा ग़रीब निवाज़ा, गुरमुख साचे आप निवाज़दा। धुर दरगाही साचा राजा, हरिजन साचे वाजां मारदा। साचे अश्व चढ़े ताजा, करे खेल शाह अस्वार दा। प्रगट होए देस माझा, कलिजुग रूप अनूप सच्ची सरकार दा। गुरमुखां रक्खे अन्तिम लाजा, फड़ फड़ बांहो पार उतारदा। सो पुरख निरँजण वखाए इक्क जहाजा, बेड़ा चले परवरदिगार दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आर पार दा।

✻ ८ भाद्रों २०१७ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ सौदागर सिँघ नाज़र सिँघ पूरन सिँघ दे घर नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ✻

अगम्म सरूप अनुभव प्रकाश, अलक्ख अगोचर कथन ना जाईआ। अचल मूर्त सर्ब घट निवास, नूर ज़हूर इक्क दरसाईआ। महल्ल अटल सर्ब प्रभास, पृथ्मी आकाश सोभा पाईआ। जल थल मंडल रास, समुंद सागर सेज विछाईआ। पुरीआं लोआं खेल तमाश, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। सचखण्ड निवासी थिर घर साचे पूरी करे आस, सुन्न समाध रूप समाईआ। जोती शब्दी कर कर दास, सेवक सेवा कमाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव उपाए बिन बिन स्वास, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। त्रैगुण माया ना होए विनास, त्रै त्रै झोली आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणी धार चलाईआ। सति पुरख निरँजण अनुभव धार, पारब्रह्म प्रभ आप चलांयदा। निरगुण नरायण खेल अपार, नेत्र नैण आप खुल्हांयदा। जूनी रहित खेल अपार, अकल कल धार आप वखांयदा। पुरख अकाल हो त्यार, रूप अनूप आप वटांयदा। भउ ना रक्खे कोए गिरधार, भय आपणा सर्ब वखांयदा। पंज तत्त काया कर प्यार, साचा मन्दिर बंक सुहांयदा। पंज तत्त पाए सार, रत्ती रत्त जोड़ जुड़ांयदा। अंदर बाहर हरि करतार, निरगुण धार आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणा रूप वटांयदा। अनुभव रूप पुरख अकाला, आपणा आप आप दृढ़ाईआ। जोती नूर बेमिसाला, नेत्र नैण ना कोई रखाईआ। आपे वसे सच सच्ची धर्मसाला, आपे मन्दिर रिहा सुहाईआ। आपे बणे सद रखवाला, आदि जुगादि सेव कमाईआ। आपे बणे सच दलाला, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। आपे नूर उपाए महांकाला, काल दयाल आप हो जाईआ। आपे मार्ग लाए इक्क सुखाला, थिर घर साचे बैठा करे सलाहीआ। आपे चले अवल्लड़ी चाला, निरगुण सरगुण लए उपजाईआ। आप वजाए शब्दी ताला, जोती शब्द शब्द अल्हाईआ। आपे करे खेल निराला, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणी धार बंधाईआ। अनुभव आपणी धार बंधांयदा, रूप रेख ना कोई जणाईआ। प्रकाश प्रकाश विच टिकांयदा, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। आकाश आकाश आपणे रंग रंगांयदा, रंग रंगीला बेपरवाहीआ। दासी दास सेव कमांयदा, सेवक सेवादार सहिज सुखदाईआ। निरगुण सरगुण आपणा नाउँ धरांयदा, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ओम रूप आप हो जाईआ। ओम रूप श्री भगवाना, ब्रह्मे विष्न शिव दर्शन पाया। तोज त्रैगुण देवे माना, आप आपणा रंग रंगाया। खेले खेल दो जहाना, दो जहानी वेस वटाया। सचखण्ड दुआरे गाए हरि रघराय सच तराना, निरगुण आपणा राग अल्हाया। विष्नूं कहे गुण निधाना, गुणवन्ता भेव ना राया। ब्रह्मा जै जै जैकार कर ध्याना, चारे मुख सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

६४२
०९

आपणी किरपा कर, अनुभव आपणी धार चलाना। अनुभव धार कहिण ना जाई, सो पुरख निरँजण रूप अनूप समाया। हरि पुरख निरँजण गहर गम्भीर वड वडियाई, वड वडा सिफ्त सलाहया। एकँकारा दिसे सभनी थाँईं, ना मरे ना जाया। आदि निरँजण जोत जगाए अगम्म अथाही, जुगा जुगन्तर डगमगाया। श्री भगवान सच गोसाँईं, निज घर बैठा सेज हंढाया। अबिनाशी करता वेखे विगसे चाँईं चाँईं, चार जुग आपणी धार बंधाया। पारब्रह्म प्रभ देवे सच सलाही, सालस साचा रूप वटाया। ब्रह्म ब्रह्म वेखे थाउँ थाँईं, लक्ख चुरासी फोल फुलाया। घट घट दीपक रिहा जगाई, निरगुण जोती नूर रुशनाया। सरगुण अंदर वड़ पकड़े बांही, औंदा जांदा दिस ना आया। अनुभव प्रकाश सर्ब घट रिहा समाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणा नाउँ धराया। अनुभव हरि का रूप, दिस किसे ना आंयदा। आदि जुगादी सति सरूप, सति सतिवादी नाउँ धरांयदा। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरी पांयदा। आपणे उप्पर आपे तुट्ठ, आप आपणी सेव कमांयदा। आपे लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां थिर घर वासी सचखण्ड दुआरे बहे लुक, आपे लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। आपे शब्द दुलारा चुक्के आपणी कुक्ख, आपे उज्जल मुख वखांयदा। आपे निर्भय चुकाए जगत दुःख, सुख आपणी वण्ड वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणा बन्धन पांयदा। अनुभव हरि हरि बन्धन, आदि
६४३ जुगादी पाया। रूप वटाए विच ब्रह्मण्डन, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा वेस वटाया। लेखा जाणे जेरज अंडन, उत्भुज सेत्ज वेख ६४३
०६ वखाया। शब्द सुणाए सुहागी छन्दन, शरअ शरीअत ना कोई बणाया। भगतन रस वखाए परमानंदन, रसिक बैरागी आप ०६
हो जाया। सन्तां लाए मस्तक चन्दन, निम्म वास आप महिकाया। गुरमुखां करे दोए बन्दन, दोए दोए लोचन वेख वखाया। गुरसिख मंग एका मंगण, मन इच्छया पूर कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव घर घर डेरा लाया। अनुभव घर घर वसया, पारब्रह्म करतार। आपणा रूप रवि ससि निरगुण जोत दस्सया, सीस धड़ कर प्रकाश। त्रै त्रै देसां फिरे नस्सया, जुगा जुगन्तर पावे साची रास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव खुल्हाए अनुभव प्रकाश। अनुभव हरि खेल न्यारा, जुगा जुगन्तर आप कराईआ। निरगुण सरगुण लए अवतारा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। आपणा नूर आपणा ज़हूर करे बन्द किवाड़ा, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाईआ। अनुभव रूप सतिगुर खेल, गुर गुर आप कराईआ। ना कोई वक्त ना कोई वेल, थित वार ना कोई जणाईआ। अबिनाशी करता सज्जण सहेल, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा आपणे विच टिकाईआ। आपणे मन्दिर आपे वड़या, अनुभव नज़र ना आया। आपणा घाड़न आपे घड़या,

बाढी कोए ना बणत बणाया। आपणे दुआरे आप खड़या, आप आपणा रूप वटाया। आपणा अक्खर आपे पढ़या, निष्अक्खर नाउँ धराया। आपणा पल्लू आपे फड़या, आप आपणा बन्धन पाया। आपणा खेल आपे करया, हरि आपे वेख वखाया। आपे नारी आपे नरया, नर नरायण आप हो जाया। आपणा वर आपे वरया, आप आपणा मेल मिलाया। आपणी धरनी आपणा आप आपे धरया, धरत धवल दए सुहाया। निरभउ आप चुकाए आपणा डरया, निर्भय आपणी खेल खलाया। आपणा वसया आपे घरया, घर बंक आप सुहाया। आपणी तरनी आपे तरया, तारनहार सृष्ट सबाया। आपणा घाड़न आपे घड़या, पुरख अबिनाशी वेस वटाया। निरगुण सरगुण अगम्म अपरया, ना मरे ना जाया। पंज तत्त अनुभव सरूप आपणा आपे अंदर धरया, गुर गुर नाउँ जगत वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म पारब्रह्म समाया। अनुभव रूप पारब्रह्म, अवर ना कोए जणाईआ। पंज तत्त काया मन्दिर गुर गुर रूप पए जम्म, मात पित ना कोई बणाईआ। हरख सोग ना ख़ुशी ग़म, नेत्र नैण ना नीर वहाईआ। लाट ना रक्खे सूरज चन्न, दिवस रैण सदा रुशनाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्नृ, खेवट खेटा लए चलाईआ। आपणी वस्त नाम अमोलक वेखे धन, घर ख़ज़ीना आप भराईआ। भाग लगाए काया तन, सतिगुर गुर गुर रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव नजर किसे ना आईआ।
अनुभव हरि हरि धार अवल्ली, आदि जुगादि चलांयदा। करे खेल निरगुण जोत इकल्ली, दूसर संग ना कोए वखांयदा। गुर गुर मन्दिर बैठी मल्ली, पंज तत्त किला कोट बणांयदा। करे खेल वल छली, अछल छल धारी दिस ना आंयदा। धाम वसाए नेहचल अटली, उच्च मुनार डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे सूरा आपे बली, बलि बलिवान आप अख्वांयदा। अनुभव रूप श्री भगवाना, घर सहिजे सहिज समाया। करे खेल दो जहाना, दोए दोए आपणी धार चलाया। निरगुण सरगुण कर परवाना, धुर फरमाणा दए सुणाया। घर नाद घर सितार घर उपजाए इक्क तराना, घर तुरीआ राग अलृाया। घर मन्दिर घर मकाना, घर मिले हरि पुरख सुजाना, सोभावन्त आप आपणी दया कमाया। घर याचक घर मंगे दाना, घर भिखारी घर भिखक, भिच्छया झोली पाया। घर मर्द घर मरदाना, घर सूरा सरबंग घर शाह सुल्ताना, घर साची सेज सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटाया। अनुभव रूप सो पुरख निरँजण, नर हरि महिमा कथन ना जाईआ। ना कोई नेत्र ना कोई अंजन, कजल धार ना कोए बंधाईआ। ना कोई सखा ना कोई सज्जण, सखी सीस ना कोए गुंदाईआ। ना कोई सरोवर ना कोई मजन, तीर्थ तट ना कोए वखाईआ। पुरख अबिनाशी एकँकार खेल अपार, आपे रक्खे आपणी लज्जण, अनुभव आपणा नाम धराईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, घर आपे वेख वखाया। अनुभव अम अम वेखदा, ब्रह्मा विष्न शिव कर प्यार। तोज त्रैगुण लेखा लिखे लेख दा, लेखा हथ्थ किसे ना आया। दूर दुराडा धुर दरगाही साचा माही अनुभव रूप आपे वेखदा, आपणा नैण आप खुलाया। करे खेल सच नरेश दा, तख्त निवासी तख्त सुहाया। माण रखाए आपणे भेख दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खलांयदा। अनुभव खेल खलाया, जुगा जुगन्तर कार। गुर सतिगुर मात प्रगटाया, सरगुण निरगुण लै अवतार। भगत भगवन्त वेख वखाया, काया मन्दिर डूँघी गार। सन्त कन्त लए मिलाया, लेखा जाणे सुहागण नार। गुरमुख साचे लए उठाया, शब्द सुणाए सच्ची धुन्कार। गुरसिख आपणी गोद बहाया, आपणीआं भुजां मात उभार। सतिजुग त्रेता वेख वखाया, द्वापर करी साची कार। कलिजुग आपणा नाउँ प्रगटाया, निरगुण सरगुण कर विचार। सच दुलारा एका जाया, गोबिन्द रूप अगम्म अपार। त्रै त्रै अक्खर नाउँ धराया, गोर मढ़ी वसया बाहर। बिन्द आपणी आप उपजाया, मात पिता कर प्यार। दस दस मास ना डेरा लाया, अंदर वड़या ना हरि करतार। माता गुजरी बालक जाया, ब्रह्म सुत कर प्यार। पुरख अबिनाशी दया कमाया, ब्रह्म पारब्रह्म करे पसार। आपणा रूप काया मन्दिर आप टिकाया, करे खेल अगम्म अपार। चेला ब्रह्म नाल मिलाया, सतिगुर मिल्या हरि करतार। दोहां विचोला भेव खुलाया, अनुभव रूप होए उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए आपणी कार। अनुभव हरि प्रकाशया, गुर गोबिन्द कर प्यार। साचे मन्दिर करे निवासया, निरगुण जोती जामा धार। साचे मंडल पावे रासया, आठ पहर मंगलाचार। ब्रह्मा विष्न शिव दर मंगण भिखक होए दासी दासया, निउँ निउँ करन निमस्कार। कहे शब्द सर्ब गुण तासया, त्रैगुण माया जगत विहार। जै जैकार होए प्रभासया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लए विचार। आपणा हरि विचारया, किरपा निध गुणवन्त। अनुभव रूप कर उज्यारया, लेखा जाणे साचे सन्त। गृह मन्दिर कर पसारया, रुत सुहाए इक्क बसन्त। आप लगाए सच फुलवाड़या, अबिनाशी करता महिमा अगणत। जोती जोत कर पसारया, वेखणहार श्री भगवन्त। नाद शब्द धुन जैकारया, आप वजाए आदि अन्त। गोबिन्द सूरा इक्क ललकारया, गढ़ तोड़े हउमे हंगत। कलिजुग अन्तिम पावे सारया, नौं खण्ड पृथ्मी एका रंग रंगाए आत्म बोध होए पंडत। मुल्ला शेख़ करे विचारया, शरअ शरीअत लाशरीक मंगण भेख बण बण मंगत। एका नाम करे जैकारया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव एका रूप पसारया। अनुभव खेल खिलांयदा, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। तख्त निवासी तख्त सुहांयदा, सतिगुर सच्चा शहनशाह। सचखण्ड दुआरा आप खुल्हांयदा, दर दरवाज़ा दए तुड़ा। थिर घर साचा राह वखांयदा,

पुरख अगम्मा बण मलाह। कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा, ब्रह्मा विष्न शिव दए सलाह। गोबिन्द साचा संग निभांयदा, हरि जू पल्लू लए फड़ा। अनुभव आपणा मेल मिलांयदा, पुरीआं लोआं जलां थलां रिहा समा। उच्ची कूक एका नाअरा लांयदा, वाहिगुरू अल्ला राम वेखे आप खुदा। नाम सति आप जणांयदा, सभ दी जणेंदी जोती एका माँ। पुरख अकाल पिता आप अख्वांयदा, जुग जुग देवे ठंडी छाँ। कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा, नौं खण्ड पृथमी थाँ थाँ। लक्ख चुरासी घट घट डेरा लांयदा, आप आपणा मुख छुपा। गुरमुख साचे पकड़ उठांयदा, दिवस रैण सेव कमा। चारे कूटां फेरी पांयदा, हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई ना कोई रिहा वण्ड वण्डा। चारे वरनां एका रंग रंगांयदा, जो रसना जिह्वा रहे ध्या। काली चोली एका रंग चढ़ांयदा, दुरमति मैल दए धवा। साची अल्फ़ी गल हंढांयदा, जगत आरफ़ दए समझा। उल्फ़त विच कदे ना आंयदा, साची मारफ़त मार्ग दए वखा। कलिजुग रुस्तम आपे ढांयदा, शब्द सरूपी गुरज उठा। लंका गढ़ आप तुड़ांयदा, मन हँकारी मुर्च्छा दए करा। शब्द खण्डा इक्क चमकांयदा, जोद्धा सूरबीर आपणा नाउँ धरा। एका डंका नाम वजांयदा, शब्द शब्दी चोट लगा। अनुभव आपणा रूप आप प्रगटांयदा, आपे वेखणहार होए मेहरवां। नौं खण्ड पृथमी फेरा पांयदा, सत्तां दीपां दीप जगा। ग़रीब निमाणे गले लगांयदा, हँस बणाए फड़ फड़ काँ। माणक मोती चोग चुगांयदा, सोहँ शब्द साचा नाँ। कलिजुग दुःखड़े अन्त मिटांयदा, मुखड़े उज्जल दए करा। सुक्के रुखड़े हरे करांयदा, अमृत सिंचे करे न्याँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। अनुभव रूप अकल कल धार, त्रैगुण माया बन्धन तोड़ तुड़ाईआ। सगल समग्री वेखे सगल पसार, जोत इक्ग्री बेपरवाहीआ। कलिजुग नगरी पावे सार, रूप अनूप सति सरूप आपणा आप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणा नाउँ धराईआ। अनुभव नाउँ आपणा रक्ख, दिस किसे ना आंयदा। सरगुण अंदर हो प्रतक्ख, निरगुण आपणी जोत जगांयदा। गुरमुख विरले मार्ग दस्स, आप आपणा मेल मिलांयदा। तीर निराला मारे कस, शब्द कमान हथ्थ उठांयदा। दो जहानां रिहा नस्स, कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकांयदा। पंच विकारा देवे झस्स, गुरमुखां माया ममता मोह चुकांयदा। मेल मिलावा हस्स हस्स, हँस मुख आप सालांहयदा। आत्म रसीआ अन्तर आत्म रस रस, अमृत झिरना आप झिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणा पर्दा लांहयदा। अनुभव आपणा पर्दा लाहया, कलिजुग अन्तिम वज्जी वधाईआ। सरगुण निरगुण बण के आया, निरगुण सरगुण लए उठाईआ। पूत सपूता जननी बण के जणके आया, गोबिन्द सूरा नाउँ धराईआ। आपणा भाणा आपे मन्न के आया, सृष्ट सबाई दए मनाईआ। गुरसिखां अंदर रल के आया, जोती जोत रिहा समाईआ। आपणा

नेहचल धाम अटल छड्ड के आया, गुरसिख वछोड़ा छड्डया ना जाईआ। निरवैर घोड़े चढ़ के आया, कलिजुग कहर वेखे ख़लक ख़दाईआ। फ़लक आफ़ताब रूप बण के आया, जगत महिताब करे रुशनाईआ। मुख नकाब एका पल्लू धर के आया, त्रैगुण माया पर्दा पाईआ। आब हयात प्याला फड़ के आया, सच महबूब सच्चा हरि माहीआ। एका हरूफ़ पढ़ के आया, एका अल्फ़ दए वखाईआ। एका नुक्ता अगे रक्ख ते आया, कलिजुग नुकता दए मिटाईआ। साचा मुक्ता बण के आया, मुक्ती गुरसिखां पैरां हेठ झसाईआ। साचा बकता बण के आया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणा खेल खलाईआ। अनुभव खेल खिलांयदा, खेलणहार पुरख करतार। जोती जामा भेख वटांयदा, लोकमात लै अवतार। त्रै त्रै लेखा इक्क समझांयदा, सिफ्रा रूप सर्ब संसार। एका आपणा नाउँ अग्गे लांयदा, अग्गे पिच्छे खेल करे खेलणहार। दोए दोए धारा आप बंधांयदा, अलक्ख अगम्म अगोचर करे साची कार। नौं नौं लेखा आप समझांयदा, नव नव बैठा मीत मुरार। सत्त सत्त बन्धन आपे पांयदा, सति सतिवादी हो उज्यार। बोध अगाधी शब्द चलांयदा, भेव अभेदा खेल न्यार। साचा हाजी एका हज्ज करांयदा, इक्क वखाए परवरदिगार। एका पंडत ज्ञान दृढ़ांयदा, एका राम रूप अवतार। एका सखिआँ मंगल गांयदा, एका नाम बंसरी वजाए मधुर सुर ताल करे विचार। एका उच्ची कूक नाअरा लांयदा, हक हक कहे पुकार। एका सति नाम दृढ़ांयदा, सति सतिवादी साची कार। एका वाहिगुरू फ़तेह गजांयदा, रसना जिह्वा गुण विचार। एका निरगुण अनुभव आपणा रूप वखांयदा, रेख रंग दिसे ना विच संसार। गुरूआं पीरां शब्द सुणांयदा, जुग जुग करे कराए सच गुफ़तार। अक्खर वक्खर आप पढ़ांयदा, ऐन ग़ैन ना कोई रही मुख उग्घाड़। नुकता नून ना कोई समझांयदा, मीम मुख मोड़े ना कोए दरबार। हमज़ा अंग ना कोए भवांयदा, वावास्ता पाए ना कोई अवगुण हार। बसता बन्न्ह ना मक्तब जांयदा, बे बल ना सके कोई धार। पे पुस्तक ना कोए पढ़ांयदा, ते तल्ब ना मंगे तल्बगार। से साबत रूप ना कोए जणांयदा, सख़ी सरवर खेल न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खलांयदा। करे खेल ओंकार, एकँकार आपणी कल वरताईआ। एका ऊड़ा कर त्यार, त्रै त्रै मन्दिर दए सुहाईआ। तिन्नां बणाए आप सिक्दार, सतिगुर सच्चा शहनशाहीआ। ऐड़ा अक्ख लए उग्घाड़, नेत्र लोचण आप खुल्ल्हाईआ। सस्सा किला कर त्यार, सतिगुर आपणा आसण लाईआ। ईड़ी इष्ट इक्क करतार, दूसर रूप ना कोए दरसाईआ। हाहा हरि का पौड़ा कर त्यार, हरि मन्दिर आप सुहाईआ। कक्का कागद कलम लिखणहार, खक्खा खोल्ह दुकान ना कोए वखाईआ। गग्गा गोबिन्द जाणे आपणी धार, घग्घा घोड़ा ना कोए दौड़ाईआ। नन्ना निगहबान करे आप आपणे सच्चे दरबार, निरगुण

निरगुण करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे पंडत आपे पांधा, आपणी पाठशाला आप सुहाईआ। साची शाला साचा पाठ, साचा मक्तब आप सुहांयदा। साचा तीर्थ साचा घाट, सच महल्ला आप वसांयदा। साचा बस्त्र साची खाट, सच सिँघासण आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मन्दिर इक्क आकार, एका अक्खर इक्क विचार, एका अल्फ़ इक्क प्यार, आपणा भेव आपणे विच टिकांयदा। आपणा भेव अभेद रखाया, जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती धार आप वहाया, आप आपणा ल्ए प्रगटाईआ। एका नूर नूर जणाया, नूरो नूर नूर उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा प्रकाश आपणे विच टिकाईआ। सच प्रकाश पुरख अबिनाश, आपणे विच रखांयदा। दासी दास शाहो शाबास, आपणी आस आपे पूर करांयदा। मंडल रास पृथ्मी आकाश, गगन मंडल सोभा पांयदा। लक्ख चुरासी वास वसे जल थल प्रभास, घट घट वास आप करांयदा। गुर सतिगुर पूरी करे आस, देवे शब्द सच धरवास, धरत धवल आप वड्यांअदा। जन भगतां वसे पास, लेख चुकाए दस दस मास, दहि दिशा फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव खेल अगम्म अपारा, आप कराए करनेहारा, कादर कुदरत विच समांयदा। कुदरत कादर वेखणहारा, घट घट जोत जगांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, रूप अनूप आप धरांयदा। नीले बस्त्र कर शंगार, नाम मैहन्दी रंग रंगांयदा। सिर अमामा परवरदिगारा, शब्द दमामा इक्क वजांयदा। करे काया रूप संसारा, संसा रोग ना कोए जणांयदा। गढ़ तोड़े काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, उच्चे टिले पर्बत चढ़ चढ़ फेरा पांयदा। लेखा वेखे सिरजणहारा, मुला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर फोल फुलांयदा। हाज़र हज़ूर गुप्त ज़ाहरा, हज़रत हरि जू आपणा नाउँ धरांयदा। कलिजुग अन्तिम करन आया जगत मुशाअरा, गुरमुख साचे संग रलांयदा। सवा पहर एका कहरा, लहर बहर आपणी आप वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी करे सैरा, सैरगाह लोकमात उपांयदा। कलिजुग सागर दिसे गहरा, बेड़ा पार ना कोए करांयदा। नव नव तेरा ढाए डेरा, शब्द घेरा इक्क वखांयदा। गोबिन्द उठया सुत दलेरा, सिँघ शेरा नाल रलांयदा। लक्ख चुरासी चुक्के मेरा तेरा, तूं मैं ना कोए वखांयदा। गुरसिख वसे तेरा एका खेड़ा, दूजा नगर कोए ना सोभा पांयदा। पुरख अबिनाशी हथ्थ विच फड़या एका जेवड़ा, लक्ख चुरासी बन्धन पांयदा। धरत मात दा करे खुल्ा वेहड़ा, लाड़ी मौत नाच नचांयदा। अन्तिम करे हक नबेड़ा, ख़ालक ख़लक मख़लूक आप समझांयदा। आवण जावण चुक्के झेड़ा, कलिजुग आफ्ताब तलूअ ग़रूब आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल अगम्म अपार, अनुभव आपणा बन्धन पांयदा। अनुभव रूप शब्द जणाया, गुर गोबिन्द रसन उच्चारया। जापु साहिब

जपु साहिब उपजाया, जीव जंत ना करे विचारया। इक्क नौं नौं छन्द बन्द सुणाया, बन्दी बन्द ना कोए अपारया। अमितोज आपणे विच टिकाया, कह कह ढोला एका गा ल्या। जै जैकार सृष्ट सबाया, कलिजुग वेला अन्त सुहा ल्या। निरगुण आपणा रूप आप प्रगटाया, अनुभव नज़र किसे ना आ रिहा। गुरमुख विरले मेल मिलाया, पूर्ब लहिणा वेख वखा रिहा। माणस जन्म लए तराया, त्रैगुण माया फंद कटा ल्या। आपणे नेत्र आपणे नैण आपणे लोचण वेखण आया, दो जहानां पन्ध मुका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए फड़, आपणा पर्दा आप उठा ल्या। गुरसिख पर्दा उठया, चुक्या जम का भउ। सतिगुर पूरा तुठया, घर घर पकड़े आए बाहों। गुरमुख कदे ना जाए लुट्टया, सतिगुर पूरा सिर रक्खे ठंडी छाउँ। अमृत आत्म देवे घुट्टया, हँस बणाए काउँ। अन्तिम भाग ना कोए निखुटया, लेखे लाए पिता माउँ। गुरमुख साचा सूरया लोकमात फुट्टया, दिवस रैण करे रुशनाओ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले थाईं थाउँ। थान थनंतर सुहावणा, हरिसंगत मेल अपार। सतिगुर दरदी दर्द वण्डावणा, दीनां नाथां करे प्यार। गुरसिख आत्म जगत मरदी आप बचावणा, हिकमत करे अपर अपार। गरमी सरदी पन्ध मुकावणा, एका रंग रंगे करतार। बेड़ी रुढ़दी पार करावणा, वंज मुहाणा कर त्यार। काया सड़दी अग्न बुझावणा, अमृत पाए ठंडी ठार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे करे प्यार। मित्र प्यारा मीतड़ा, प्यिा प्रीतम इक्क भगवन्त। काया चोली चाढ़े रंग मजीठड़ा, पुरख अबिनाशी साचा कन्त। आप जणाए आपणी रीतड़ा, लेखा जाणे जुगा जुगन्त। पतित पापी आप पुनीतड़ा, खेले खेल आप बेअन्त। कलिजुग सतिजुग आप चलाए रीतड़ा, लेखा जाणे जीव जंत। गुरसिखां धाम वखाए इक्क अनडीठड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप बणाए साची बणत। साची बणत बणांयदा, साची दरगाह सच निवास। साचे सन्त मिलांयदा, कलिजुग जंगल जूह वेख प्रभास। एका मंत कन्त पढ़ांयदा, हँ ब्रह्म करे प्रकाश। साचा मन्दिर इक्क वखांयदा, अनुभव सति पुरख अबिनाश। सीस चँवर ना कोए झुलांयदा, ना कोई चेला ना दासी दास। गुर पीर कोए नज़र ना आंयदा, तख्त निवासी शाहो शाबास। आपणी जोत डगमगांयदा, दिवस रैण ना कोए रात। सो पुरख निरँजण आप अख्वांयदा, सचखण्ड दुआरे करे सच नवास। जुग जुग हरिजन साचे मेल मिलांयदा, जन भगतां पूरी करे आस। गुरमुखां बन्धन तोड़ तुड़ांयदा, गुरसिखां लेखे लाए रसन स्वास। कलिजुग वेला आप सुहांयदा, निरगुण सरगुण वसे पास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रूप रंग ना दिसे रेख, मेल मिलावा दस दस्मेश, रूप वटाए अनुभव प्रकाश।

✻ ६ भाद्रों २०१७ बिक्रमी सौदागर सिँघ दे गृह नाथेवाल ज़िला फिरोज़ पुर ✻

सो पुरख निरँजण सति सतिवाद, हरि हरि साचा तख्त सुहांयदा। हरि पुरख निरँजण आदि आदि, अनुभव प्रकाश करांयदा। एकँकारा जुगा जुगादि, आपणी वण्ड वण्डांयदा। आदि निरँजण आपणी वस्त आपे लाध, आपणे घर टिकांयदा। श्री भगवान माधव माध, रूप रंग ना कोए वखांयदा। अबिनाशी करता देवणहारा साची दाद, साची वण्डन वण्ड वण्डांयदा। पारब्रह्म आपणा गुण आपे रिहा अराध, अवगुण कोए ना वेख वखांयदा। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्मादि, आपणी कल आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा तख्त आप सुहांयदा। तख्त निवासी शाह सुल्ताना, शहनशाह वड्डी वड्याईआ। जोती नूर श्री भगवाना, अनुभव प्रकाश कराईआ। वसणहारा सच मकाना, सचखण्ड बैठा जोत जगाईआ। थिर घर खोल्ले इक्क दुकाना, घर घर विच आप टिकाईआ। आपे मर्द आप मरदाना, रूप अनूप आप दरसाईआ। आपे राज आप राजाना, आपे रईअत रूप वटाईआ। आपे हुक्मी हुक्म देवे धुर फ़रमाणा, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। आपे सति सरूपी बन्ने गाना, सति सतिवादी साचा माहीआ। आपे राग गाए धुन तराना, आपणा नाद आप वजाईआ। आपे होए हरि प्रधाना, आपणे भाणे आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त तख्त निवासी, इक्क इकल्ला पुरख अबिनाशी, आसण सिँघासण आप सुहाईआ। आसण सिँघासण सोभावन्त, पुरख अबिनाशी आप सुहांयदा। निरगुण नरायण हरि हरि कन्त, हरि हरि आपणी जोत जगांयदा। पति परमेश्वर पूरन जोत एका रंग रंगाए बसन्त, आपणी रंगण आप चढ़ांयदा। साचे धाम महिमा अगणत, लेखा लिख ना कोए वखांयदा। ना कोई साध ना कोई सन्त, गुर अवतार ना कोए बणांयदा। ना कोई जीव ना कोई जंत, ईश जीव ना वण्ड वण्डांयदा। आपे आदि आपे अन्त, आप आपणा धाम सुहांयदा। आपे होए हरि बेअन्त, आपणी महिमा आपणे विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आप सुहांयदा। सच सिँघासण अनुभव प्रकाश, शाहो भूप सतिगुर सच्चा आसण लाईआ। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा रिहा समाईआ। अगम्म अगम्मड़ा आपे तुट्ठ, आप आपणी रचन रचाईआ। आपे चढ़या साची चोट, महल्ल अटल उच्च मीनार बैठा सेज वछाईआ। आप उपाए निर्मल जोत, बिमल आपणा रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन, एका एक सुहाईआ। एका एक सुहांयदा, घर सच्चा सच दरबार। पुरख अकाला आसण लांयदा, आदि जुगादि एकँकार। अलक्ख अगोचर अगम्म आप अख्वांयदा, मरे ना जम्मे विच संसार। साचे तख्त चरन टिकांयदा, जोद्धा सूरबीर बली बलकार। दीपक जोती इक्क जगांयदा, आदि जुगादि रहे उज्यार। साचा

मन्दिर आप सुहांयदा, सोभावन्त पुरख करतार। आपणा बल आप धरांयदा, मंगे भिक्ख ना किसे दुआर। आपणा शाह आप हो जांयदा, शहनशाह सच्ची सरकार। आपणी सेवा आप करांयदा, घाड़न घड़े अपर अपार। सो पुरख निरँजण सच सुन्यारा आपणा नाउँ धरांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटांयदा। सच सुन्यार सच कुठाली, साची वस्त विच टिकाईआ। लेखा जाणे जोत अकाली, अकल कल बेपरवाहीआ। आपणी दात आप संभाली, आपणे हथ्थ आप रखाईआ। आपणी चले चाल निराली, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सच्चा शाह आप अख्वाईआ। सच्चा शाहो हरि मेहरवान, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। सचखण्ड दुआरा खोल्ह दुकान, एका वस्त विच रखाईआ। बण सुन्यार श्री भगवान, साचा कंचन हथ्थ उठाईआ। रूप रंग ना कोए निशान, आकार ना कोए वखाईआ। आपे घड़े कर ध्यान, आपे वेखे नैण उठाईआ। आपणा लहिणा आपे जाणे जाणी जाण, जानणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राज राजान इक्क अख्वाईआ। राज राजाना हरि निरँकारा, भेव अभेद छपांयदा। सचखण्ड वसे सच दुआरा, दरगाह साची धाम सुहांयदा। अकाल मूर्त हो उज्यारा, जूनी रहित डगमगांयदा। अनुभव प्रकाश अपर अपारा, अपर अपरम्पर आप करांयदा। साचा सीस जगदीस आप आपणा कर प्यारा, आपे वेख वखांयदा। सति सरूपी बन्न्हे दस्तारा, साचा सगन मनांयदा। निरगुण दर निरगुण भिखारा, निरगुण सेवक सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर आप सुहांयदा। गृह मन्दिर हरि सुहाया, निरगुण जोत कर उज्यार। तख्त निवासी साचे तख्त डेरा लाया, आप आपणी किरपा धार। आप आपणा सीस सुहाया, सिर रक्ख सच्ची दस्तार। साचा बस्त्र इक्क वखाया, नूर नुरानी नूर प्यार। नूरो नूर वेख वखाया, जोती जोत दए आधार। जोती जाता आप अख्वाया, इक्क इकल्ला एकँकार। आपणा साथ आप निभाया, साचे मन्दिर खेल अपार। साचा ताज हथ्थ उठाया, निरगुण निरगुण पावे सार। आपणे मस्तक आप छुहाया, आपे बणया सेवादार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तख्त निवासा पुरख अबिनाशा, खेले खेल परवरदिगार। सीस ताज सुहांयदा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। आदि पुरख आपणी रचन रचांयदा, जुगादि रूप ना कोए दरसाईआ। सति नाम ना कोए उपांयदा, शब्द नाद ना कोए वजाईआ। अमृत मेघ ना कोए बरसांयदा, गीत गोबिन्द ना कोए अल्हाईआ। ताल तलवाड़ा ना कोए वजांयदा, भर प्याला जाम ना कोए प्याईआ। अपच्छर नाच ना कोए नचांयदा, रूप रंग ना कोए वखाईआ। दर दरबान ना कोए बहांयदा, निउँ निउँ सीस ना कोए झुकाईआ। सीस चँवर ना कोए झुलांयदा, उच्ची करे ना कोए बांहियां। इक्क इकल्ला साचे तख्त आसण

लांयदा, सतिगुर सच्चा शहनशाहीआ। साचा ताज सीस टिकांयदा, निरगुण आपणा आप वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर सुहञ्जणा इक्क वड्याईआ। घर सुहञ्जणा हरि सुहाया, सांतक सति सति वरतांयदा। आदि निरँजण वेख वखाया, अनुभव आपणा रूप वटांयदा। प्रकाश प्रकाश आप समाया, रेख रंग ना कोए जणांयदा। आदेश आदेश आपणा ढोला गाया, राग नाद ना कोए अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तख्त एका ताज, एका हरि ग़रीब निवाज़, आदि आदि आदि आप आपणा साजण साज, साजणहारा वेस वटांयदा। हरि जू हरि हरि साजया, हरि मन्दिर खेल अपार। वेखे खेल ग़रीब निवाज़या, गृह अंदर हो उज्यार। तख्त निवासी शाहो शाबासी, सीस रखाए साचा ताजया, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। धुर फ़रमणा मारे वाजया, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार। आपणे मंडल आपे फिरे भाजया, दूसर संग ना कोए प्यार। निरगुण रचया आपणा काजया, करे खेल हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एक जगदीस एक सीस एका राज एका काज एका ताज हरि करतार। हरि करतार सीस सुहांयदा, जगत जगदीस कर प्यार। आपणी बणत आप बणांयदा, बणावणहार अगम्म अपार। सच सुन्यार रूप वटांयदा, निरगुण निरगुण कर प्यार। आपणी कुठाली आपे पांयदा, अग्नी जोत इच्छया फुँकार देवे मार। आप आपणा आपे सोध, घाड़न घड़े अपर अपार। चारे मुख करे बोध, अगाध बोध एकँकार। पंचम मुख सुणाए आपणा सच सलोक, अक्खर वक्खर खेल न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मुख आप सुहाया, आपणी किरपा धार। पंचम मुख हरि हरि ताजा, ताजदार आप अख्वांयदा। शाहो भूप बण बण राजा, रयत आपणा वेस वटांयदा। सचखण्ड दुआरे रच रच काजा, शख़सीयत आपणा बल वखांयदा। आदि आदि रचया काजा, करता पुरख आपणी नईया आप चलांयदा। अगम्म अगम्मड़ी मारे वाजा, साचा सय्या हुक्म सुणांयदा। शाहो भूप बण नवाबा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलांयदा। साचा ताज कर त्यार, सचखण्ड दुआरे मता पकांयदा। इक्क जगदीश इक्क सरकार, आपणी वण्डण आप वण्डांयदा। एका हुक्म एक वरतार, हुक्मी हुक्म आप चलांयदा। एका वस्त इक्क भण्डार, एका एक झोली पांयदा। एका नाम इक्क जैकार, जै जैकार इक्क करांयदा। एका दर इक्क दरबार, एका निउँ निउँ सीस झुकांयदा। एका खड़ग इक्क कटार, एका खण्डा आप चमकांयदा। एका तरकश तीर कमान, एका तुरंग तुफँग हथ्थ रखांयदा। एका बख्शश करे आप निरँकार, बख्शणहारा दिस ना आंयदा। एका अकशर कर त्यार, निश्अक्खर नाउँ धरांयदा। एका वक्खर वस्त अपार, शब्द शब्दी वण्ड वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

आपणे भाणे सद रहांयदा। एका ताज तख्त निवासा, राज राजानां इक्क अख्वाईआ। एका भूप पुरख अबिनाशा, तागा सूता ताणा पेटा एका पाईआ। एका पूरन पुरख पूरी करे आसा, पूरन परमेश्वर इक्क अख्वाईआ। एका खेले खेल तमाशा, एका बैठा मुख छुपाईआ। एका मंडल पाए रासा, एका जोती जोत रुशनाईआ। एका साचे घर करे निवासा, निरगुण आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तख्त सुहंदा साचे थान दए वड्याईआ। साचे थान सुहाया ताज, पुरख अबिनाशी वड वड्याईआ। आपे गुरू ग़रीब निवाज़, गोबिन्द आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। धुर दरगाही सच मलाही शब्द सरूपी एका काज, अनरंग रूपी रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे घाड़न घड़, निरगुण निरगुण लए मनाईआ। निरगुण घाड़न घड़या अपार, रूप रेख ना कोए जणाया। सच सिँघासण बैठ सच्ची सरकार, आपणा हुक्म आप सुणाया। एका हुक्म वरते वरतार, हुक्मी हुक्म खेल खलाया। एका सुत उपजे दुलार, शब्द सपूता नाउँ रखाया। दर दुआर बणे दरबान, दर दरवेश दए सलाहया। आदि जुगादि मन्ने आण, निउँ निउँ जुग जुग सीस झुकाया। सुणे सुणाए एका कान, नाद अनादी नाद वजाया। पिता पूत मेला श्री भगवान, साचा दूत इक्क दौड़ाया। आप उपाए आपणा इक्क निशान, दर घर साचे आप झुलाया। एका बख्शे चरन ध्यान, धुर दीबाण बाण लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द बलकार धुर दरबारा आप समझाया। शब्द बलकारी कर ध्यान, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तेरा हुक्म सच्चा फ़रमाण, हउँ सेवक सेव कमाईआ। तेरा मन्दिर मेरा मकान, तेरा मकान मेरी पातशाहीआ। तेरा दर हउँ दरबान, दर दरवेश सोभा पाईआ। तूं शाहो मेरा राजान, हउँ रइयत रूप वटाईआ। तूं सतिगुर सच्चा काहन, हउँ गोपी सेव कमाईआ। तूं दाता गुण निधान, हउँ अवगुण रिहा समझाईआ। चरन कँवल बख्शणा एका माण, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। सुत दुलारा ढह ढह पए बाल नादान, बाली बुध रिहा सुणाईआ। बाली बुध रिहा कुरला, पिता पूत वेख वखांयदा। श्री भगवान तेरी सरना, सरनगत ना कोए जणांयदा। निरभउ चुका मेरा डरना, भय भयानक ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हउँ याचक मंग मंगांयदा। याचक मंगे दान, शब्द सुत सच्ची सरनाईआ। किरपा कर श्री भगवान, सेवक सेवा लेखे लए लगाईआ। एका मंगां साचा दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। तेरा खेल दो जहान, हउँ वेखां थाउँ थाँईआ। लोआं पुरीआं बण तेरा मकान, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी सेज सुहाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव उपजे तेरा निशान, त्रैगुण झूला दए झुलाईआ। पंज तत्त होए प्रधान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश तेरी वण्ड वण्डाईआ। मन मति बुध करे वख्यान, त्तत्व तत्त तत्त समाईआ। घर विच घर उपजे महान, तेरा बंक

सुहाईआ। तेरा रूप ब्रह्म गुण निधान, ना मरे ना जाईआ। लक्ख चुरासी तेरी खाण, शब्द भण्डारी आप भराईआ। जुग जुग करे वेस महान, कोटन कोटि रूप धराईआ। इक्क इकल्ला पावे आण, हुक्मी हुक्म चले रज़ाईआ। तख़्त निवासी नौजवान, तेरा भय सर्ब वखाईआ। हउँ सेवक बाल बाला नादान, जोबन तेरा प्रेम हंढाईआ। आदि जुगादि रहिणा निगहबान, नेत्र नैण ना कोए भवाईआ। लोकमात झुलावां तेरा सच निशान, जुग जुग आपणे हथ्थ उठाईआ। कवण गुण पुकार सुण कर पीआ परवान, वेले अन्त लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत मंगे वर, अग्गे बैठा सीस झुकाईआ। सीस झुकाया गया झुक, नेत्र नैण ना कोए उठाया। हरि जू तेरा भाणा ना जाए रुक, आदि जुगादि तूं हीं वरताया। हउँ चरन दुआरे बैठा झुक, दर दरवेशा मंगण आया। कवण रूप बह लुक, लोकमात नज़र ना आया। कवण वेस गोदी लए चुक्क, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाया। कवण धार मेटे दुःख, तेरा विछोड़ा झलया ना जाया। कवण रंग चाढ़े आपणी कुक्ख, मात जोती जाता विच रखाया। कवण मुख सुखणा लवां सुख, तेरा इष्ट देव मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। श्री भगवान शब्द अगम्मी बोलया, शब्दी शब्द कर प्यार। तेरा बदले हरि जी चोलया, ब्रह्मा विष्न शिव कर पसार। लक्ख चुरासी बणे तेरा डोलया, नारी रूप अंदर वड़े आप करतार। चार जुग नौं सौ चुरानवें चौकड़ी फिरे आला भोलया, ख़बर ना पाए विच संसार। कलिजुग अन्तिम आए निरगुण पूरा करे कौलया, जोती जामा लै अवतार। प्रगट होए उप्पर धवलया, निहकलंक नाउँ धराए अगम्म अपार। रूप वखाए ना साँवल सँवलया, पंज तत्त ना कोए विचार। तेरा करे भार हौलया, सिर आपणे चुक्के भार। आदि जुगादि कदे ना डोलया, अडोल अडुल इक्क निरँकार। साचे कंडे तोल देवे तोलया, तोला बणे विच संसार। बल ना जाणे कला सोलया, अकल कल वरते वरतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेले अन्तिम पावे सार। शब्द भरवासा रक्खणा, शहनशाह सच्चा दृढ़ांयदा। कलिजुग अन्तिम नौं खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी भाण्डा होवे सक्खणा, तेरा बीज ना कोए बजांयदा। तेरा रूप किसे ना लखणा, साध सन्त सर्ब कुरलांयदा। तेरी कीमत कोए ना पावे कक्खणा, लक्ख करोड़ी माया ममता मोह वधांयदा। तेरा रूप वरोले ना कोई मक्खणा, सृष्ट सबाई छाछ वखांयदा। नज़र ना आए उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खणा, चारों कुंट ख़ाली हट्ट वखांयदा। तेरा पर्दा किसे ना ढकणा, नंगा दोज़ख़ सर्ब फिरांयदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी शाहो शाबासी होए प्रतक्खणा, निरगुण आपणा रूप वटांयदा। पंचम मुखी ताज आपणे सीस रक्खणा, निरगुण सरगुण धार वखांयदा। दो जहानां मिले जसना, जस आपणा इक्क सुणांयदा। घर मन्दिर बह बह हस्सणा, सतिगुर

पूरा मेल मिलांयदा। गुरमुखां मार्ग एका दस्सणा, मनमुख दर दुरकांयदा। त्रैगुण माया लथ्थे विसणा, जो जन तेरा संग निभांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता दीन दयाला, पुरख अकाला एका दिसणा, निरगुण दाता जोत जगांयदा। सचखण्ड दुआरे साचे वसणा, दर घर साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारे दित्ता वर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। निरगुण दाता निरगुण भिखारी, निरगुण वण्ड वण्डांयदा। निरगुण वस्त निरगुण वरतारी, निरगुण झोली पांयदा। निरगुण हस्त निरगुण अस्वारी, निरगुण चरन रकाब टिकांयदा। निरगुण शाह निरगुण सुल्तान निरगुण सिक्दारी, निरगुण हुक्म सुणांयदा। निरगुण जोत निरगुण शब्द निरगुण कूके वारो वारी, आपणी कूक आप अलांयदा। निरगुण ताज निरगुण ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणया पावे सारी, निउँ निउँ आपणा सीस झुकांयदा। निरगुण खण्डा निरगुण कटारी, निरगुण रक्खे तिक्खी धारी, आर पार आप वखांयदा। निरगुण सरगुण पैज रिहा संवारी, सर्ब घट दाता आपणी दया कमांयदा। कागद कलम ना लिखणहारी, ब्रह्मा वेद ना कोए सालांहयदा। वाह वा गुरू गुर गुर शब्द सच्ची यारी, यार यारी तोड़ निभांयदा। वाह वा कन्त वाह वा नारी, वाह वा रंग रंगीली सेज हंढांयदा। वाह वा पति पतिवन्त साची पत्नी करे प्यारी, पीत पीतम्बर सीस सुहांयदा। वाह वा सगनी सगन मनाए आपणी वारी, जोती जोत ना रहे कुँवारी, जोती जोत आप प्रनांयदा। वाह वा रूप वाह वा श्रंगारी, वाह वा नेत्र नैण आप मटकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द विचोला आपे बण आप आपणा मेल मिलांयदा। मेल मिलावा अगम्म अथाह, थिर घर साचे वेख वखाईआ। आदि पुरख दित्ती आदि सलाह, जुगादि वेखे खेल बेपरवाहीआ। एका नाद दित्ता वजा, ब्रह्म ब्रह्मादि रिहा सुणाईआ। एका ताज सीस ल्या टिका, जगत जगदीस वड्डी वड्याईआ। साचा काज ल्या रचा, रच रच वेखे वेखणहारा दिस ना आईआ। भगतन भगती रिहा समझा, भगवन भावी भगत भगवत भगौती आपणे हथ्थ रखाईआ। साची सख़ावत सख़ी आपणा आप करे फ़िदा, फ़ितरत होर ना कोए जणाईआ। इस्मे आज़म अज़मुल आपणा आप करे जुदा, रहिमत रहिमान आप कमाईआ। अज़मतो कस्मतो अजिबवा अतिलहे आपणी सेवा लए लगा, महिबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला रहे सरनाईआ। हुक्मी हुक्म दए वरता, सृष्ट सबाई एका फ़तवा देवे ला, वेले अन्त सके ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे मता रिहा पका, मति बुध ना देवे कोए सलाहीआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि गुर शब्द धुर ब्रह्मादि, सुर ब्रह्मा आपणा ताल वजाईआ।

❋ ६ भाद्रों २०१७ बिक्रमी माहला सिँघ दे घर दया होई, पिण्ड शमाल सर ज़िला फिरोज़ पुर ❋

सो पुरख निरँजण सर्ब व्याप्या, जूनी रहित पुरख अकाल। हरि पुरख निरँजण वड प्रताप्या, आदि जुगादी दीन दयाल। एकँकारा खेल तमासया, खेले खेल दो जहान। आदि निरँजण नूर प्रकाशया, जोती नूर जल्वा जलाल। श्री भगवान शाहो शाबासया, तख्त निवासी वड मेहरवान। अबिनाशी करता दासन दासया, सेवक सेवा करे महान। पारब्रह्म प्रभ पाए मंडल रासया, आदि जुगादी साचा काहन। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहासया, सोभावन्त गुण निधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला नौंजवान। इक्क इकल्ला एकँकारा, आदि जुगादि समाया। जुगा जुगन्तर खेल अपारा, निरभउ आपणा आप कराया। अनुभव प्रकाश हो उज्यारा, रूप अनूप आप वटाया। सति सरूप सिरजणहारा, सति सतिवादी वेस वटाया। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ा थान सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खलाया। हरि हरि खेल खिलांयदा, निरगुण रूप अगम्म अपार। सो पुरख निरँजण आपणा रूप वटांयदा, हरि पुरख निरँजण साची कार। एकँकारा नाउँ धरांयदा, जूनी रहित आदि निरँजण हो त्यार। अबिनाशी करता धाम सुहांयदा, श्री भगवान साचा मीत मुरार। पारब्रह्म प्रभ पर्दा लांहयदा, आप आपणी किरपा धार। सच सिँघासण इक्क सुहांयदा, साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार। सचखण्ड दुआरा आप खुलांयदा, आपे खोल्हे बन्द किवाड़। दीवा बाती आप जगांयदा, आपणी जोती कर उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अपर अपार। सच सिँघासण हरि सुहांयदा, महिमा गणत अगणत। आपणे मन्दिर डेरा लांयदा, आपे जाणे आपणी बणत। आपणा तख्त आप सुहांयदा, पुरख अबिनाशी सोभावन्त। साचा सीस ताज टिकांयदा, नर नरायण हरि हरि कन्त। सच निशाना आप झुलांयदा, दरगाह साची धाम सुहंत। हुक्मी हुक्म आप वरतांयदा, पूरन जोत श्री भगवन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, एकँकारा आप करांयदा। सचखण्ड दुआरा सुहावणा, हरि साचा आप सुहाईआ। सो पुरख निरँजण रूप वटावणा, एकँकारा वेखे चाँई चाँईआ। हरि पुरख निरँजण सगन मनावणा, आदि निरँजण दए वधाईआ। अबिनाशी करता अंग लगावणा, श्री भगवान गोद सुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्हावणा, अनुभव आपणा रूप प्रगटाईआ। रूप रेख ना कोए रखावणा, निरगुण आपणी धार वखाईआ। अकल कल आपणा नाउँ धरावणा, काल महांकाल ना कोए वड्याईआ। साची धर्मसाल इक्क वखावणा, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। थिर घर वासी आपणा पर्दा आपे लाहवणा, आप आपणा नूर कर रुशनाईआ। साचे तख्त बह बह हुक्म सुणावणा, शाहो भूप सच्चा शहनशाहीआ। राज राजाना आप

अख्खावणा, राउ रंक ना कोए वड्याईआ। एका डंका नाम वजावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह करे खेल अवल्ला, दरगाह साची आप करांयदा। पुरख अबिनाशी वसया इक्क इकल्ला, दूसर संग ना कोए रखांयदा। सच सिँघासण आपे मल्ला, आप आपणी सेज हंढांयदा। आपणी जोती आपे रल्ला, आप आपणा मेल मिलांयदा। वसे नेहचल धाम अटला, उच्च मन्दिर आप सुहांयदा। सच संदेशा एका घल्ला, घर शब्दी नाद वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आप हुक्म सुणांयदा। साचा हुक्म साचा राणा, हरि हरि आप जणाईआ। तख्त निवासी शाह सुल्ताना, घर घर बैठा जोत जगाईआ। दर दरवेश बण दरबाना, एका अल्फ़ी गल हंढाईआ। सालस बणे दो जहानां, शब्द परवाना हथ्थ उठाईआ। खेले खेल श्री भगवाना, भगवन आपणी कल वरताईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, बल आपणा आप वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे सोभा पाईआ। दर घर हरि सुहावणा, सोभावन्त करतार। हुक्मी हुक्म इक्क वरतावणा, शब्दी शब्द नाद धुन्कार। साची रचना आप रचावणा, आपणी इच्छया भर भण्डार। साची भिच्छया झोली पावणा, देवणहार हरि निरँकार। आपणा लेखा आप लिखावणा, कागद कलम ना पावे सार। बोध अगाधा आप अख्खावणा, आदि जुगादी साची कार। सचखण्ड दुआरे साचा नाम आप उपावणा, नाम उपाए एकँकार। आपणा मन्त्र आप दृढ़ावणा, एका इष्ट सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर साचा धाम न्यार। धाम न्यारा सचखण्ड, हरि साचा सच सुहांयदा। पुरख अकाल वण्डे वण्ड, दूसर संग ना कोए जणांयदा। ना कोई रूप ना कोई रंग, रेख भेख ना कोए वखांयदा। जूनी रहित वसे संग, अनुभव आपणा रूप धरांयदा। शब्द अनाद वजाए मृदंग, सुर ताल ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहांयदा। दर घर साचा हरि सुहाए, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। निरगुण निरगुण वेख वखाए, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण चेला सीस झुकाए, निउँ निउँ आपणा आप वेख वखाईआ। निरगुण मेला आप मिलाए, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। निरगुण सज्जण सुहेला आप बण जाए, इक्क इकेला साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण लए उपजाईआ। निरगुण उपजाए निरगुण सुत, अबिनाशी अचुत खेल खिलांयदा। वार थित ना कोए रुत, मास बरख ना वेख वखांयदा। आपे जाणे आपणी जुगत, जागरत जोत आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द नाउँ धरांयदा। शब्द उपाया हरि हरि प्यारा, परम पुरख वड वड्याईआ। एका दर एका भिखारा, एका वस्त आप वरताईआ। एका शब्द इक्क जैकारा, एका हुक्मी

हुक्म सुणाईआ। एका तख्त इक्क सिक्दारा, शहनशाह इक्क हो जाईआ। एका एक वरते वरतारा, आप आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर सच्चा पातशाहीआ। आपणा वर आपणी झोली पा, आपे दया कमांयदा। आपे जोत डगमगा, शब्दी धार आप चलांयदा। आपे पिता आपे माँ, नादी सुत आप अख्वांयदा। आपे सचखण्ड दुआरे वसे साचे थाँ, थान थनंतर वेख वखांयदा। आपे थिर घर कुण्डा देवे लाह, आप आपणा पर्दा लांहयदा। आपे हुक्मी हुक्म दए सुणा, धुर फ़रमाणा आप जणांयदा। आपे लोआं पुरीआं रचन रचा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी सेव कमांयदा। आपे रवि ससि सूरज चन्न मंडल मंडप कर रुशना, आप आपणी जोत टिकांयदा। आपे धरत धवल जल बिम्ब टिका, जल थल महीअल आपणा रूप समांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न शिव नाउँ धरा, आपणी धारा आप वखांयदा। आपे त्रैगुण माया रचन रचा, त्रै त्रै बन्धन आपे पांयदा। आपे पंचम लेखा जाणे सहिज सुभा, पंचम पंचम मेल मिलांयदा। आपे घर विच घर रिहा उपा, हरि मन्दिर नाउँ धरांयदा। ईश जीव हरि रूप वटा, जगत जगदीसा खेल खिलांयदा। पारब्रह्म प्रभ नाउँ धरा, आप आपणी वण्ड वण्डांयदा। लक्ख चुरासी घट घट अंदर डेरा ला, आप आपणा मुख छुपांयदा। आदि निरँजण डगमगा, जोती नूर इक्क चमकांयदा। अनहद शब्द नाद वजा, ताल तलवाड़ा आप सुणांयदा। अमृत सरोवर कँवल नाभी आप भरा, साचा झिरना आप झिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग वेस वेस अनेका आप करांयदा। लक्ख चुरासी कर पसारा, त्रैगुण नाता जोड़ जुड़ांयदा। पंज तत्त बोल जैकारा, सच वरतारा आप वरतांयदा। मन मति बुध भर भण्डारा, काया मन्दिर आप सुहांयदा। निरगुण सरगुण कर पसारा, दीवा बाती आप टिकांयदा। आदि आपणी रचन रचांयदा। विष्नूं ब्रह्मा सेवादारा, चार वेद मुख सालांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव आप खुलांयदा। हरि भेव अवल्लड़ा, कथनी कथ ना सके राईआ। आदि जुगादी इक्क इकल्लड़ा, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। सच दुआरा एका मलड़ा, दूसर धाम ना कोए वड्याईआ। आपे फड़या आपणा पलड़ा, आप आपणा मेल मिलाईआ। शब्द संदेश नर नरेश एका एक एका घलड़ा, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलांयदा, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार। विष्नूं विश्व आप उठांयदा, वास्तक रूप हरि करतार। नमो देव इष्ट वखांयदा, देव देवा सच्ची सरकार। घर मन्दिर आप सुहांयदा, आप आपणा खोल्ह किवाड़। सच भण्डारा इक्क वरतांयदा, बख्शश करे बख्शणहार। धुर फ़रमाणा हुक्म सुणांयदा, विष्नूं होणा ख़बरदार। चरन ध्यान इक्क रखांयदा, दूसर होर ना कोए दुआर। तेरी सेवा मात लगांयदा, जुग जुग करनी साची

६५८ ०६

कार। पुरख अबिनाशी वेख वखांयदा, मरे ना जम्मे विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हुक्म वरते वरतार। हुक्मी हुक्म वरतांयदा, पारब्रह्म पुरख अबिनाश। ब्रह्मा वेता आप समझांयदा, साहिब सतिगुर शाहो शाबास। आपणा भेव आप खुल्हांयदा, आपे पूरी करे आस। ब्रह्मे तेरी वण्ड वण्डांयदा, ब्रह्म जोत सर्ब प्रकाश। तेरा अंदर मन्दिर आप सुहांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल शाहो शाबास। ब्रह्मा हरि समझांयदा, कर किरपा गुण निधान। तेरी सेवा सच लगांयदा, लक्ख चुरासी हो प्रधान। जुग जुग तेरी जोत जगांयदा, करे खेल श्री भगवान। तेरा रूप आप प्रगटांयदा, आदि जुगादी नौजवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा धुर फ़रमाण। धुर फ़रमान शब्द जणाया, पारब्रह्म ब्रह्म दया कमाईआ। ब्रह्म आपणा भेव खुल्हाया, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। पारब्रह्म ढोला एका गाया, ब्रह्म सुणे चाँईं चाँईआ। ब्रह्म निउँ निउँ सीस झुकाया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। पुरख अबिनाशी आपणा विचोला आप प्रगटाया, एका शब्द नाउँ धराईआ। साचा सोहला आप सुणाया, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। साचा तोला तोल तुलाया, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। आपणा पर्दा ओहला दए उठाया, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। आपणा बोला आप जणाया, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। आपणा कँवल आप उलटाया, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द नाद धुन वजाईआ। शब्द अनादी धुन ब्रह्मादी, हरि साचा सच वजांयदा। बोध अगाधी देवे दादी, भेव अभेदा भेव खुलांयदा। करे खेल आदि जुगादी, आपणी कल आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका धुन इक्क धुन्कार, आप सुणाए सुणनेहार, ब्रह्मा वेता कर प्यार, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। ब्रह्म प्यारा पारब्रह्म, पुरख अबिनाशी दया कमांयदा। आपणे मन्दिर आपे जम्म, आप आपणा रूप प्रगटांयदा। आप उपजाए आपणा नाम, नाम निधान आप अख्वांयदा। आप वखाए आपणा सच निशान, सच निशाना आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलांयदा। भेव खुलाए हरि भगवान, ब्रह्मे ब्रह्म समझाया। जुगा जुगन्तर इक्क ध्यान, लिव अन्तर चरन वखाया। साचा मन्दिर इक्क मकान, सच दुआरे सोभा पाया। पुरख अबिनाशी देवे ज्ञान, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। ना कोई सुरती ना कोई काहन, मूर्त अकाल वेख वखाया। नाद तूरत बेपछाण, तुरया राग आप अल्हाया। ब्रह्मा ब्रह्म कर परवान, प्रभ आपणे लेखे ल्ए लगाया। शब्द जणाए सच फ़रमाण, भेव अभेदा भेव खुलाया। चारे वेदां खोल्ह दुकान, चारे जुग वण्ड वण्डाया। चारे खाणी वेख निशान, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड रंग रंगाया। चारे बाणी बोल ज़बान, चार वरनां आप समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द शब्द उपजाया।

शब्द उपजाए आदि आदि, पारब्रह्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। घर मन्दिर वज्जया साचा नाद, गृह साचे खुशी मनाईआ। अबिनाशी करता देवे दाद, आपणी वस्त आप वरताईआ। नाम निधाना बोध अगाध, निष्अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। चारे वेदां एका राग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार आप वड्याईआ। चारे वेद झोली पा, सिर ब्रह्मे हथ्थ टिकाया। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, आपणा हुक्म सुणाया। चारे जुग जगत मलाह, तेरा मार्ग दए वखाया। चारे कूटां वण्ड वण्डा, दहि दिशा फोल फुलाया। काया माटी भाण्डा पंज तत्त घड़ा, लक्ख चुरासी बणत बणाया। तेरा मन्दिर दए सुहा, ब्रह्म तेरा रूप वटाया। तेरी जोती दए जगा, जोत निरँजण सेव लगाया। तेरा शब्द दए सुणा, अनहद राग अलाया। तेरा जाम दए प्या, अमृत आत्म ताल सुहाया, तेरा पड़दा दए उठा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाया, तेरा आसण दए सुहा, आत्म सेजा आप हंढाया। तेरा मेला लए मिला, आप आपणी दया कमाया। एका रंग लए रंगा, लाल गुलाला आप चढ़ाया। साचे तख्त लए बहा, तख्त निवासी शाह सुल्ताना आप अख्वाया। जुग जुग बणे तेरा मलाह, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। गुर पीर आप अख्वा, आप आपणा नूर करे रुशनाया। तेरी विद्या वेखे थाउँ थाँ, मूल मन्त्र आप पढ़ाया। आपणी सिख्या दए समझा, आदि जुगादी वेस धराया। धुर दा लेखा दए वखा, एका पट्टी नाम पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे एका वर, चारे वेद झोली पाया। चारे वेद मिली दात, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। पुरख अबिनाशी कमलापात, कँवल नैण साचा माहीआ। शब्द सुणाए साची गाथ, भेव अभेदा आप खुलाईआ। आप रखाए सगला साथ, आदि जुगादि विछड़ ना जाईआ। लेखा जाणे आर पार घाट, मँझधार रिहा समाईआ। पर्दा लाहे चौदां हाट, चौदां लोक वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण खेले खेल बाज़ीगर नाट, स्वांगी आपणा सांग वरताईआ। भेव चुकाए तीर्थ ताट, सर सरोवर वेखे थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ब्रह्म पारब्रह्म लक्ख चुरासी वण्ड वण्डाईआ। लक्ख चुरासी वण्डणहारा, एका रूप समांयदा। शास्त्र सिमरत वेद पढ़नहारा, आपणी विद्या आप पढ़ांयदा। चारे मुख चारे कुंट अठ्ठे नेत्र खोलूणहारा, आपणा नैण आप मटकांयदा। आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी, एका तोला तोलणहारा, सृष्ट सबाई आप तुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मे देवे एका वर, वर वर दाता आप हो जांयदा। वर दाता श्री भगवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। चरन धूढ़ सच्चा अशनान, एका एक एक अख्वाईआ। बण के बैठा साचा काहन, सचखण्ड साचा सच सुहाईआ। खेले खेल दो जहान, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। इक्क जणाए धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मा विष्न शिव लए जगाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका ब्रह्म पारब्रह्म लेखा लिखणहारा आप अख्वाईआ। ब्रह्मे सुण कर ध्यान, हरि साचा सच सुणांयदा। मेरा हुक्म धुर फ़रमाण, तेरी धार बंधांयदा। तूं बालक जगत अंजाण, तेरी सार आपे पांयदा। हउँ दाना बीना चतर सुजान, मूर्ख मुग्ध कारे धन्दे आपे लांयदा। तेरी खोल्हे आप दुकान, लक्ख चुरासी तेरे हट्ट विकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म सुणांयदा। ब्रह्मे सुण गुणवन्त, गुण गहर गम्भीर सुणाया। लक्ख चुरासी बणाए तेरी बणत, विष्नूं तेरा संग निभाया। तेरा रूप जीव जंत, जागरत जोत हरि जगाया। तेरी महिमा होए अगणत, पुरख अबिनाशी वाक सुणाया। तेरा रूप प्रगटाए साध सन्त, भगत भगवन्त तेरा नाउँ धराया। तेरा लेखा जाणे आदि अन्त, मध तेरा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे दित्ता एका वर, लक्ख चुरासी भाण्डा घड़, निरगुण सरगुण अंदर वड़, साचे पौड़े आपे चढ़, सच सिँघासण आप सुहाया। ब्रह्मे वर हरि पाया, दोए जोड़ करे निमस्कार। पुरख अबिनाशी बेपरवाहया, सतिगुर साहिब सच्चा दातार। हउँ सेवक साची सेव कमाया, जुग जुग तेरा हुक्म वरते वरतार। लक्ख चुरासी भाण्डा घड़ वखाया, घड़नहार इक्क ठठयार। कवण वस्त विच टिकाया, सरगुण दए आधार। एका भिच्छया मंग मंगाया, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर मंग मंगे भिखार। दर भिखारी मंगदा, ब्रह्मा आपणा सीस झुका। करे खेल सूरे सरबंग दा, तूं दाता बेपरवाह। लक्ख चुरासी चोली रंगदा, रंगण रंग इक्क चढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त झोली पा। एका वस्त किरपा करदे हरि, ब्रह्मा साची मंग मंगांयदा। निरगुण जोती अंदर धर, घर घर दीप जगांयदा। निरभउ चुक्के तेरा डर, सृष्ट सबाई भय वखांयदा। ईश जीव आपे बण, जगत जगदीश आपणी वण्ड वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप सुणांयदा। साचा हुक्म हरि सुणाया, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। वेद शास्त्र ना किसे लिखाया, ब्रह्मे ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाया, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे दित्ता एका वर, आपणी अंस सृष्ट सरबंस, एका आप प्रगटाईआ। एका जोत जोत उजाला, पुरख अबिनाशी रूप वटांयदा। एका गुर गुर गोपाला, एका गुर समांयदा। एका मन्दिर इक्क धर्मसाला, एका कन्त सोभा पांयदा। एका शब्द एका ताला, एका नाद वजांयदा। एका मार्ग दस्से सुखाला, ब्रह्म पारब्रह्म वखांयदा। आदि निरँजण जोत अकाला, निरगुण आपणा नाउँ वटांयदा। लक्ख चुरासी फल लगाए डाल्हा, जुग जुग आपणा गेड़ भवांयदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग करे खेल निराला, ब्रह्मे तेरी सेवा आप लगांयदा। अन्तिम लहिणा चुकाए, जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमांयदा। कवण रूप हरि लेख चुकाउणा, ब्रह्म पारब्रह्म मंग मंगांयदा। कवण रूप हरि खेल खलाउणा, लोकमात वेस वटांयदा। कवण रूप हरि रंग चढ़ाउणा, उतर कदे ना जांयदा। कवण रूप हरि मृदंग वजाउणा, दो जहानां आप सुणांयदा। कवण रूप नव खण्ड खण्ड खण्ड कराउणा, ब्रह्मण्ड कवण वेख वखांयदा। कवण रूप चण्ड प्रचण्ड चमकाउणा, कवण चिल्ला तीर कमान उठांयदा। कवण रूप हरि खुशी बन्द बन्द कराउणा, जगत विछोड़ा पन्ध मुकांयदा। कवण रूप निजानंद समाउणा, निज आत्म रस चखांयदा। कवण रूप लक्ख चुरासी डेरा ढाउणा, कवण भाण्डे घड़ भन्न वखांयदा। कवण रूप आपणा खेल वरताउणा, चार वेदां कवण रूप मुकांयदा । कवण रूप आपणा नाम प्रगटाउणा, एका ढोला आप सुणांयदा। कवण रूप तोला अख्वाउणा, साचा कंडा हथ्थ उठांयदा। कवण रूप लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबाउणा, कवण ब्रह्म भार टिकांयदा। कवण रूप विष्नूं मेल मिलाउणा, कवण भण्डारा हथ्थ उठांयदा। कवण रूप ब्रह्म लेखे लाउणा, ब्रह्म रो रो नीर वहांयदा। कवण रूप शंकर वेख वखाउणा, बाशक तशका कवण सुहांयदा। कवण सरूप करोड़ तेतीसा मात वखाउणा, कवण सरूप पन्ध मुकांयदा। नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां फेरा पाउणा, एका हुक्म कवण सुणांयदा। कवण रूप अवण गवण त्रैभवन डंक वजाउणा, कवण रूप रवि ससि सूरज चन्न आपणे विच समांयदा। कवण रूप मंडल मंडप आण हलाउणा, कवण रूप धरत धवल जल बिम्ब विच टिकांयदा। कवण रूप एका इष्ट लक्ख चुरासी आप दरसाउणा, चारे वेद माण गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम वेला केहड़ा, हरि जग विछड़े मेल मिलाउणा। हरि जू हरि हरि बोलया, कर किरपा आप निरँकार। आपणा दुआरा आपे खोलया, प्रगट होए आप निरँकार। नौं नौं चार बणे तोलया, तोल तोले तोलणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग करे साची कार। जुग जुग चौकड़ी जग खेल खलावणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेख वखाईआ। गुर अवतार आप अख्वाउणा, सन्त भगवन्त रूप वटाईआ। गुरमुख आपणे रंग रंगाउणा, गुरसिख एका दए बुझाईआ। जुग जुग आपणा नाम चलावणा, पीर दस्तगीर शाह हकीर आप हो जाईआ। जुग जुग आपणा नाउँ प्रगटावणा, वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान रहे जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खाणी बाणी देवे वर, ब्रह्मे ब्रह्म मति इक्क समझाईआ। ब्रह्मे चार जुग उतरे पार, चवी अवतार सेव कमाईआ। नौं नौं चार चौकड़ी खेल करे अपार, मनवन्तर गेड़ा गेड़ा दए लगाईआ। एका मन्त्र फुरे सच्ची सरकार, लोआं पुरीआं दए दुहाईआ। लग्गे बसन्तर सर्ब संसार, आत्म अन्तर ना कोए बुझाईआ। बणाए बणतर आप निरँकार, आपणा भेव दए खुलाईआ। नौं नौं चार उतरे

पार, लोकमात रहिण ना पाईआ। अन्तिम खेल करे अपार, निरगुण जोत रुशनाईआ। शब्द नाद सच्ची धुनकान, धुर दी बाणी आप सुणाईआ। पंज तत्त ना करे कोई आकार, साकार ना रूप वटाईआ। निरगुण खेल अगम्म अपार, कलिजुग अन्तिम आप वखाईआ। ब्रह्मे तेरी पावे सार, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाईआ। विष्नूं मेला कन्त भतार, हरि जू साची सेज हंढाईआ। शंकर करे इक्क प्यार, हत्थ त्रिशूल ना कोए फड़ाईआ। शब्द वचोला बणे आप करतार, ब्रह्म वेखे थाउँ थाँईंआ। चारे वेदां पावे सार, शाम रिग युजर अथर्बण भुल्ल रहे ना राईआ। चारे खाणी करे प्यार, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाईआ। चारे बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाईआ। आपे सभ तों वसे बाहर, दिस किसे ना आईआ। प्रगट होवे विच संसार, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। रक्खे नाउँ निहकलंक सच्ची सरकार, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। तेरी आपे पावे सार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। तेरा कर्जा दए उतार, लक्ख चुरासी आपणी झोली पाईआ। आपणा घाड़न घड़े आप निरँकार, आपणी रचना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका हरि हरि करे पढ़ाईआ। एका ब्रह्म पारब्रह्म समावणा, निरगुण जोती जोत मिला। पुरख अबिनाशी खेल खिलावणा, जोती जामा भेख वटा। शब्द विचोला इक्क बणावणा, दो जहानां फेरा पा। निरगुण निरगुण वेख वखावणा, सरगुण पकड़नहारा बांह। आपणी विद्या आप पढ़ावणा, आपणा लेखा दए समझा। साची सिख्या इक्क सिखावणा, चार वरनां नाता तुट्टे एका रंग रंगाए एका भूमका दए वसा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म मेला पारब्रह्म जिउँ बालक पिता माँ। ब्रह्म पारब्रह्म हरि मेल मिलाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी सगन मनाया, चार कुंट होए रुशनाईआ। एका मृदंगन हत्थ उठाया, त्रै त्रै लोकां रिहा सुणाईआ। चौदां तबकां जाग खुलाया, नेत्र नैण ना बन्द कराईआ। ब्रह्मे भविख्त वाक आप सुणाया, आदि आदि आप अख्वाईआ। चार चौकड़ पन्ध मुकाया, अन्तिम ओकड़ रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे मेला साचे घर, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखण आया, निरगुण जोती जामा धार। विष्नूं सेवादार नाल रलाया, सो पुरख निरँजण किरपा धार। लक्ख चुरासी फोल फुलाया, ब्रह्म ब्रह्म करे विचार। हँ हँ हँ सर्ब कुरलाया, कलिजुग कूके करे पुकार। पुरख अबिनाशी मृदंग इक्क वजाया, धुन नाद सच्ची धुन्कार। सूरा सरबंग उठ उठ वेखण आया, प्रगट हो हरि करतार। आपणे अश्व तंग कसाया, पुरख अबिनाशी शाह अस्वार। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पैंडा आप मुकाया, लोकमात पावे सार। जेरज अंडां फोल फुलाया, दूई द्वैती पर्दा दए उतार। साचा खण्डा हत्थ चमकाया, भेख पखण्डा जगत निवार। पारब्रह्म प्रभ दए सलाहया, साची सिख्या इक्क विचार। धुर

दा लेखा दए मिटाया, पूर्ब पूर्ब वेखे विगसे वेखे पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम निरगुण लए अवतार। निरगुण नरायण हरि हरि, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। लोकमात हरि जोत धर, धरती धवल धरत सुहाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म मिलाए फड़ फड़, भेव अभेद भेव चुकाईआ। आप बनाए आपणे लड़, लड़ आपणा पल्लू इक्क फड़ाईआ। साचे पौड़े आपे चढ़ चढ़, गुरमुख सुरती आप जगाईआ। किला तोड़ हँकारी गढ़ गढ़, हउँमें हंगता दए मिटाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नड़ नड़, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़ पढ़, हरिजन साचे लए पढ़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आपे वर वर, नारी कन्त रूप वटाईआ। आपणी सेजा आपे खड़ खड़, सवच्छ सरूपी आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, ब्रह्मे पारब्रह्म प्रभ मेला, लेखा चुक्या गुरू गुर चेला, हरि सतिगुर सज्जण आप चुकाईआ। सतिगुर सज्जण सच्चा पातशाह, इक्क इकल्ला एकँकार। बेऐब परवरदिगार सिफ्त सालाह, सिफ्ती सिफ्त ना कोई विचार। जुगा जुगन्तर बणे मलाह, निरगुण सरगुण लए उभार। कलिजुग अन्तिम निहकलंक नरायण नर अवतार आपणा नाउँ धरा, धरती धरत धवल करे हौला भार। नौं खण्ड पृथ्मी वेख वखाए थाउँ थाँ, लक्ख चुरासी करे ख्वार। गुरसिखां उठाए फड़ फड़ बांह, आप कराए सच प्यार। दो जहानां करे सच न्याँ, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, ब्रह्मे वेता आपे फड़, दरस दिखाए अगे खड़, सुहाए बंक दुआर। बंक दुआर सुहावणा, हरि हरि मेला पारब्रह्म। जोती जोत जोत मिलावणा, ना मरे ना पए जम्म। साचे धाम आप सुहावणा, सति सतिवादी बेड़ा बन्नॄ। लक्ख चुरासी फेरा ना पावना, मात गर्भ ना कोई डंन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे जननी आपे जन। आपे जननी जन जाया, जोती माता सुत दुलार। आपे धन धन धन झोली पाया, कराया साचा वणज वपार। आपे धुन धुन राग सुणाया, धुन धुन बोल शब्द जैकार। आपे गुरसिख गुरसिख चुण चुण मेल मिलाया, मेल मिलावा धुर दरबार। आपे हरि हरि घर घर मंगल गाया, गीत सुहागी शब्द उच्चार। वडभागी हरि सतिगुर दरसन पाया, मिटया सहिसा सर्ब संसार। गुरसिख वैरागी दरस दुआरे आया, जिस जन किरपा करे आप करतार। चरन धूढ़ी माघी सच नुहावण आप नुहाया, दुरमति मैल दए उतार। फड़ फड़ कागी हँस बणाया, सोहँ माणक मोती चुगे अपार। ज़ात पाती मेट मिटाया, ऊँच नीच ना कोई विचार। अन्धेरी राती दए गंवाया, साचा भान होए उज्यार। ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखाया, घर मन्दिर खोल्ह् किवाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम वेस धर, ब्रह्म पारब्रह्म एका रंग रवे करतार।

❊ १० भाद्रों २०१७ बिक्रमी जगीर दास दे गृह
ख्याली वाला ज़िला बठिंडा ❊

सो पुरख निरँजण सर्ब गुणवन्त, अकल कल वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोई जणाईआ। एकँकारा आदि अन्त, अनुभव आपणा रूप दरसाईआ। आदि निरँजण जुगा जगंत, जोत निरँजण डगमगाईआ। अबिनाशी करता खेल इक्क बेअन्त, बेअन्त आप अख्वाईआ। श्री भगवान मेल मिलावा साचे सन्त, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। पारब्रह्म लेखा जाणे जीव जंत, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्मादि, शब्द अनाद नाद वजाईआ। सति पुरख निरँजण साची धार, इक्क इकल्ला आप चलांयदा। सचखण्ड दुआरे खेल अपार, निरगुण नरायण आप करांयदा। महल्ल अटल अचल्ल सोहे दरबार, सच सुल्ताना आप सुहांयदा। सति सरूप भूप बण सिक्दार, महिमा अनूप आप दरसांयदा। तख्त निवासी हो त्यार, सच सिँघासण सोभा पांयदा। आदि जुगादी लए अवतार, हुक्मी हुक्म आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआरा एकँकारा, धाम सुहञ्जणा आप सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा सच टिकाणा, हरि साचा सच सुहाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवाना, अबिनाशी करता बैठा आसण लाईआ। शाहो भूप बण राज राजाना, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाणा, धुर दी बाणी आप सुणाईआ। जुगा जुगन्तर खेल महाना, पारब्रह्म प्रभ आप कराईआ। लेखा जाणे दो जहाना, आप आपणा बल धराईआ। निरगुण नरायण आप आपणा वेखे मार ध्याना, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। आपे मर्द आप मरदाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धराईआ। सति सरूप सर्ब गुण दाता, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आदि जुगादी पुरख बिधाता, जुग करता वड वड्याईआ। आपे जाणे आपणी गाथा, बोध अगाधा बेपरवाहीआ। शब्द चलाए एका राथा, रथ रथवाही सेव कमाईआ। सचखण्ड दुआरे आप निभाए आपणा साथा, थिर घर साचा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अजूनी रहित पुरख अकाल, दीना बंधप दीन दयाल दयानिध आप हो जाईआ। दीन दयाला हरि गोपाला, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। आदि जुगादी खेल निराला, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। जुगां जुगन्तर चले अवल्लड़ी चाला, भेव अभेद आप आपणे विच छुपांयदा। सचखण्ड दुआरा वसे सच्ची धर्मसाला, थिर दरबारा आप सुहांयदा। आपे जाणे आपणा सच जंजाला आप आपणी कल धरांयदा। आपे करे कराए सदा प्रितपाला, आप आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे

घर, दर घर साचा आप वड्यांअदा। दर घर हरि वसांयदा, पारब्रह्म बेअन्त। दर घर साचे सोभा पांयदा, पुरख अबिनाशी हरि हरि बेअन्त। दीवा बाती इक्क जगांयदा, दाना बीना सोभावन्त। घर मंगल एका गांयदा, महिमा गाए आप बेअन्त बेअन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आदि अन्त। आदि अन्त हरि समाया, आपणा लेखा आपणे विच टिकाईआ। सुते प्रकाश आप कराया, अचल मूर्त बेपरवाहीआ। अजूनी रहित नाउँ धराया, मरे ना जम्मे सच्चा शहनशाहीआ। थिर घर घर आसण लाया, सच्चखण्ड दुआरा दुआरा रिहा आप सुहाईआ। शाहो भूप आपणा नाउँ धराया, राज राजानां इक्क अख्वाईआ। आपणा हुक्म आप चलाया, आपे वेखे थाउँ थाँईआ। दर दरबाना सेव कमाया, दर दरवेश एका आपणी कल रखाईआ। नर नरेशा वेस वटाया, नर नरायण आप अख्वाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव लए उपाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हट्ट आप खुल्हाईआ। आपणा पर्दा दए चुक्का, आपणी दया कमांयदा। करे खेल बेपरवाह, आपणा नाउँ आप वरतांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव लए उपा, त्रै त्रै मेल मिलांयदा। आपणी वस्त आपणे अंदर लए भरा, सच भण्डारा आप वरतांयदा। निरगुण सरगुण रूप धरा, जोती जाता आप अख्वांयदा। सर्बकला आपे समरथ, सगल समग्री आप वरतांयदा। आपे पूजा आपे पाठ, आपणा मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। चरन कँवल बंधाए साचा नात, ब्रह्मा विष्न शिव दोए जोड़ सीस झुकांयदा। आप सुणाए आपणी शब्द अगम्मी गाथ, सच नाअरा आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, देवे नाम वस्त अनमोल, पुरख अबिनाशी आपणे कंडे तोल, ब्रह्मा विष्न शिव आप जगांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव भण्डार हरि भरया, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। एका हुक्म दर दुआरे आपे करया, साची सेवा सच लगाईआ। आपणी तरनी आपे तरया, तारनहार आप हो जाया। आपणी करनी आपे करया करता पुरख वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन आप रचाईआ। आपणी रचना रचनहारा, आप आपणी खेल खिलांयदा। ब्रह्मा वेता कर त्यारा, नाभी फुल आप खिलांयदा। विष्नूं तेरा इक्क सहारा, दोए दोए धार आप चलांयदा। अमृत कँवल ठंडा ठारा, निझर झिरना आप झिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणी अंस आपणा बंस आप सुहांयदा। आपणी अंस पारब्रह्म, आप आपणा रूप वटांयदा। आपणी कुक्खों आपे जम्म, मात पित ना कोई वखांयदा। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, दो जहानां आप चलांयदा। दरगाह साची धाम अवल्ला ना कोई सूरज ना कोई चन्न, मंडल मंडप ना कोई सुहांयदा। ना कोई घड़े ना कोई लए भन्न, घड़न भन्नणहार पुरख समरथ आपणी खेल आप खिलांयदा। ना कोई देवणहारा डन्न, जूनी जून ना कोई भवांयदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे एका वर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। ब्रह्मे सुण कर ध्यान, पुरख अबिनाशी आप सुणांयदा। मेरा हुक्म सच्चा फ़रमाण, तेरी दर दर सेव लगांयदा। मेरा राग तेरी धुनकान, तेरे मन्दिर ताल वजांयदा। मेरा शब्द तेरा ब्यान, निगहबान आप अख्वांयदा। मेरा चरन तेरा माण, कँवल नैण नैण मिलांयदा। मेरा नाद तेरा गाण, शब्द शब्दी इक्क सुणांयदा। मेरा तेज तेरा भान, नूरो नूर डगमगांयदा। मेरा घर तेरा मकान, दर दुआरा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप जणांयदा। हुक्म जणाया हरि निरँकारा, ब्रह्मा सुण लए अंगड़ाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, हरि हरि आपणी वण्ड वण्डाईआ। त्रैगुण माया कर त्यारा, त्रै त्रै लेखा दए लिखाईआ। पंज तत्त होए सहारा, अप तेज वाए पृथमी आकाश संग निभाईआ। आपे वसे सभ तों बाहरा, दिस किसे ना आईआ। सेवक सेवा करे बण भिखारा, जुग जुग आपणी कार कराईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लेखा लिख ना सके शाहीआ। मेरा शब्द सच्ची धुन्कारा, ब्रह्मे चारे वेद तेरी पढ़ाईआ। तेरा रूप वरते विच संसारा, लक्ख चुरासी तेरी वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची भिच्छया झोली पाईआ। साची भिच्छया झोली पा, पुरख अबिनाशी दया कमांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगा, त्रैगुण मेला मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी घाड़न ल्या घड़ा, घट घट आपणी जोत जगांयदा। निरगुण बाती इक्क टिका, सरगुण कमलापाती वेख वखांयदा। शब्द दाती बेपरवाह, अनहद रागी राग सुणांयदा। साजन साजी अगम्म अथाह, काया मन्दिर डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर अंदर आपे वड़, आप आपणा मुख छुपांयदा। लक्ख चुरासी हरि पसारा, सो पुरख निरँजण वेख वखांयदा। लोकमात खेल न्यारा, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचांयदा। लोआं पुरीआं इक्क सहारा, गगन पताला सोभा पांयदा। रवि ससि कर उज्यारा, मंडल मंडप डेरा लांयदा। जल बिम्ब हो न्यारा, धरत धवल आप उपजांयदा। नौं खण्ड पृथमी पावे सारा, सत्तां दीपां फोल फुलांयदा। चौदां लोकां इक्क अखाड़ा, त्रै त्रै वासी वेस वटांयदा। एका शब्द नाम जैकारा, पुरख अबिनाशी आप अल़ांयदा। ब्रह्मा सुणे सुणनेहारा, सति सतिवादी आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआरा इक्क वड्यांअदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, हरि ब्रह्मे शब्द जणाया। धुर दरगाही एका राणा, हरि जू साचे तख्त आपणा आसण लाया। साचा मन्दिर सच मकाना, थिर घर आपणा घर वखाया। एका रूप एका गाणा, एका तुरीआ नाद वजाया। एका जोत श्री भगवाना, आदि जुगादी डगमगाया। एका सति सरूपी सति निशाना, सति सति सति आप चढ़ाया। एका तख्त ताज वखाना, सच्चा ताज आप वखाया। जोद्धा

सूरबीर बली बलवाना, बल आपणा आप वखाया। ब्रह्मा वेखे मार ध्याना, अठ्ठे नेत्र नैण रखाया। अबिनाशी करता सुणाए इक्क फ़रमाणा, साचा हुक्म आप जणाया। लोकमात जुगा जुगन्तर सुणाए आपणा भाणा, हरि भाणे वड वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आप समझाया। ब्रह्मा उठया नेत्र खोल्ह, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। नाद अनादी बोले बोल, ब्रह्म ब्रह्मादी आप सुणाया। कवण कंडे तोले तोल, लक्ख चुरासी कवण वण्ड वण्डांयदा। कवण माया ममता दए वरोल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मार्ग साचा दस्स, कवण धाम कवण राम मेल मिलांयदा। पुरख अबिनाशी भेव खुलंदड़ा, ब्रह्म पारब्रह्म कर प्यार। लक्ख चुरासी जोत जगंदड़ा, घर घर दीप होए उज्यार। निरगुण सरगुण वेख वखंदड़ा, इक्क इकल्ला एकँकार। जुग जुग आपणी धार चलंदड़ा, चाल निराली सिरजणहार। ब्रह्मा एका दर सुहंदड़ा, घर मन्दिर होए उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लए मात अवतार। जुग जुग अवतार मात धराउणा, हरि साचा सच जणांयदा। साचे सन्तां आप उठाउणा, शब्द शब्दी वेख वखांयदा। अमृत मेघ इक्क वरसाउणा, अग्नी तत्त आप बुझांयदा। अनहद शब्द राग अल्हाउणा, धुनी नाद आप वजांयदा। अमृत साचा जाम प्याउणा, नाम प्याला हथ्थ उठांयदा। जुग जुग आपणा वेस वटाउणा, हरिजन साचे वेख वखांयदा। एका अक्खर नाम पढ़ाउणा, लिखण पढ़न विच ना आंयदा। काया मन्दिर बह बह गाउणा, रसना जिह्वा ना कोई हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त आप उठांयदा। सन्तन मीता हरि भगवाना, आदि जुगादि समाया। जुगा जुगन्तर धुर फ़रमाणा, शब्द शब्दी मात सुणाया। दो जहानां बख्शे माणा, आवण जावण पन्ध चुकाया। सति सन्तोखी बन्न्हे गानां, एका हुक्म मनाया। हरि मन्दिर वखाए हरि मकाना, बजर कपाटी कुण्डा लाहया। दीपक जोती इक्क जगाणा, आदि निरँजण सेव लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर साची कार, करे कराए करनेहार, हरि सन्तन वेख वखाया। सन्तन लेखा लिख्या धुर, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। पारब्रह्म प्रभ चढ़या घोड़, शब्दी घोड़ा इक्क दौड़ाईआ। दो जहानां लाया एका पौड़, एका डण्डा हथ्थ रखाईआ। लक्ख चुरासी वेखे परखे जीव जंत मिठ्ठा कौड़, घट घट आपणा आसण लाईआ। एथे ओथे दो जहानां पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां रिहा दौड़, औंदा जांदा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कराईआ। जुग जुग कार कमांयदा, सतिगुर सच्चा पातशाह। साचा बेड़ा आप चलांयदा, निरगुण सरगुण बण मलाह। एका चप्पू नाउँ लगांयदा, नाउँ निरँकारा आप अख्वा। गुरमुख साचे मेल मिलांयदा, लक्ख चुरासी विच्चों लए उठा। आप आपणा मन्त्र नाम दृढ़ांयदा, एका अक्खर लए पढ़ा। सतिजुग

९६८
०९

साचे फेरी पांयदा, इक्क इकल्ला बेपरवाह। जन भगतां महल्ला आप वसांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन राहे देवे पा। हरिजन पार उतारदा, आप आपणी किरपा धार। जुग जुग पैज संवारदा, देवे नाम शब्द अधार। जोती शब्दी बण मलाह, साचे घोड़े आपे चाढ़दा, शहनशाह सच्चा अस्वार। तोड़े गढ़ जगत हँकार दा, नाम खण्डा एका मार। गुरमुख साचे आप शंगारदा, जुगा जुगन्तर साची कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द अगम्मी मारे वाज। शब्द अगम्मी सच तराना, तुरीआ राग अलांयदा। सन्तन मेला दो जहानां लोकमात वेख वखांयदा। एका राग सुणाए काना, धुन आत्मक आप अलांयदा। अमृत आत्म देवे पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख ना कोई रखांयदा। चरन कँवल बख्शे सच ध्याना, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। सति सन्तोखी बन्ने गाना, सतिगुर साचे घर सगन मनांयदा। सर्ब जीआं होए जाणी जाणा, जानणहार भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त मिलावा साचे घर, दर घर साचा आप सुहांयदा। सन्तन हरि हरि पाया, आत्म वज्जे वधाईआ। जुगां जुगन्तर खेल खलाया, सतिजुग त्रेता वेखे चाँईं चाँईआ। द्वापर आपणे अंग लगाया, लोकमात वज्जे वधाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, नौं खण्ड पृथ्मी फोल फुलाईआ। हरिजन साचे लए जगाया, आप आपणा मेल मिलाईआ। दूई द्वैती पर्दा दए उठाया, दुरमति मैल धोवे झूठी शाहीआ। आत्म अन्तर एका शब्द सुणाया, दिवस रैण ना कोई रखाईआ। कमलापाती मेल मिलाया, बूंद स्वांती अमृत जाम प्याईआ। बजर कपाटी साची हाटी नज़री आया, चौदां लोक रहे मुख शर्माईआ। साचे सन्त सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा साचा साथी इक्क बणाया, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साचे घर, घर सज्जण इक्क सुहाईआ। निरगुण निराकार, हरि सोभावन्त आप सुहांयदा। सन्त साजण मीत मुरार, पीआ प्रीतम वेख वखांयदा। नारी कन्त मेला भतार, घर साची सेज सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन संग निभांयदा। सन्तां संग निभावणहारा, इक्क इकल्ला वेस वटांयदा। आदि जुगादी लए अवतारा, गुर गुर आपणा नाउँ धरांयदा। शब्द अनाद बोल जैकारा, सृष्ट सबाई आप सुणांयदा। वरनां बरनां वसे बाहरा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना रूप वटांयदा। इक्क सुहाए धाम न्यारा, सचखण्ड दुआर आप सुहांयदा। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, हँकारीआं हँकार तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन हरि हरि वेखणहारा, जुगां जुगन्तर खेल खिलांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा। चारे वेदां पावे सारा, पुराण अठारां खोज खुजांयदा। खाणी बाणी दए हुलारा, अञ्जील कुरानां पर्दा लांहयदा। एका नाम सति वरतारा, सति सति आप करांयदा।

एका सतिगुर एका गुर गुर अवतारा, एका धुर दा लेख लखांयदा। एका शब्द नाम सच कटारा, दो जहान आप चमकांयदा। एका मन्दिर एका गुरदुआरा, एका हरि हरि सोभा पांयदा। एका ठाकर बणे पुजारा, एका निउँ निउँ सीस झुकांयदा। एका राम रूप वरते विच संसारा, एका बंसरी नाम वजांयदा। एका ऐनलहक बोले नाअरा, हक हकीकत इक्क सलांहयदा। लाशरीक इक्क परवरदिगारा, बेऐब आपणा नाउँ धरांयदा। इक्क इकल्ला एका वरते आपणा सच वरतारा, एका एकँकारा आपणा रूप वटांयदा। आपे सतिनाम करे प्यारा, चार वरनां इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। आपे वाहिगुरू फ़तेह बोल जैकारा, ऊँचां नीचां गले लगांयदा। आपे शब्द गुरू बण संसारा, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जागरत जोत होए उज्यारा, अन्ध अन्धेर सर्ब गवांयदा। सति सति वरते वरतारा, त्रैगुण अग्नी तत्त बुझांयदा। सन्तां सुहाए सच दुआरा, ठांडा दरबारा इक्क वखांयदा। वेद कतेब शास्त्र सिमरत करन पुकारा, हरि का भेव कोई ना पांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, नर हरि नरायण आप करांयदा। जोती जाता हो उज्यारा, साचे मन्दिर सोभा पांयदा। सम्बल नगर पुरख अकाल दीन दयाल इक्क विचारा, गोबिन्द मेला मेल मिलांयदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, सच नगारा आप सुणांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलारा, करोड़ तेतीसा आप उठांयदा। सुरपति रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहांयदा। राए धर्म मंगे बण भिखारा, गल आपणे पल्लू पांयदा। चित्रगुप्त लेखा लिख्या आपणी करे विचारा, विचार विच ना कोई आंयदा। लाड़ी मौत करे शंगारा, लाल शब्दी हथ्थ रखांयदा। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, तख्त निवासी सोभा पांयदा। सन्तन करे सच प्यारा, साची सेजा आप हंढांयदा। आपणा वणज इक्क वपारा, एका हट वखांयदा। एका जगत इक्क भण्डारा, एका भगवन्त वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहागी हरि हरि कन्त, काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जांयदा। रंग बसन्ती एका चाढ़, काया कंचन गढ़ सुहाईआ। दर घर साचे देवे वाड़, महल्ल अटल इक्क वखाईआ। गुरमुख बणाए धुरदरगाही लाड़, सीस जगदीस वड्डी वड्याईआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, दोए लोचण होए रुशनाईआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँग्घी कंदर वेख वखाईआ। त्रैगुण माया ना सके साड़, अग्गनी तत्त ना कोई जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। सन्त सतिगुर पाया, पारब्रह्म गुर करतार। गुर सिक्खी बह बह मंगल गाया, सच सुहञ्जणी गाई वार। नेत्र अंजन इक्क वखाया, निज नेत्र नैण उग्घाड़। तन बस्त्र इक्क छुहाया, शब्द सरूपी कर प्यार। शाहो भूपी नज़री आया, निरगुण दाता बेऐब परवरदिगार। चारे कूटां होए सहाया, दहि दिशा होए सहार। अंडज जेरज आपणी गोद बहाया, उत्भुज सेत्ज रिहा उठाल। चारे बाणी आप पढ़ाया, परा पसन्ती मद्धम बैखरी घाले घाल।

चारे खाणी वण्ड वण्डाया, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वेखे शाह कंगाल। सृष्ट सबाई रंड आप कराया, चारों कंट दिसे दुहागण नार। कलिजुग कूके दए दुहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त लए उठाल। सन्त उठाए आप प्रभ, लक्ख चुरासी पुण छाण। लक्ख चुरासी विच्चों लभ्भ, आप उपजाए आपणे लाल। झिरना झिराय कँवल नभ, अमृत आत्म साचा डालृ। सति सन्तोखी प्याए मदि, नेड़ ना आए काल महांकाल। सच निशाना फड़ाए हथ्थ, दो जहानां तोड़ जंजाल। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढ, सचखण्ड बहाए सच्ची धर्मसाल। जुगा जुगन्तर लडाए लड, आदि जुगादि करे प्रितपाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए संभाल। हरिजन हरि संभालदा, जुगा जुगन्तर साची कार। निरगुण सरगुण आपे पालदा, देवणहार अपर अपार। मार्ग दस्से इक्क निगहबान दा, निरवैर रूप मूर्त अकाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त साजन आपे भाल। सन्त सतिगुर इक्क घर, अन्त अन्त समाया। जुगा जुगन्तर देवे वर, दर दरवेशा फेरी पाया। आपणी करनी रिहा कर, करता पुरख भेव ना राया। निर्भय चुकाए जगत डर, भय आपणा सर्ब वखाया। धरनी धरत धवल उप्पर आप आपणी जोत धर, धुर दी धार आप चलाया। घट घट अंदर आसण ला साची सेज बैठा चढ़, सच सिँघासण आप सुहाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई विद्या अक्खर गाया पढ़, आप आपणा शब्द सुणाया। ना जन्मे ना जाए मर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईआ। थान थनंतर पेख्या, निरगुण सरगुण कर प्यार। गुरसिख गुरमुख आपे वेख्या, आप आपणा नैण उग्घाड़। सन्तां चुक्के धुर दा लेखया, मेल मिलावा कन्त भतार। भगतां मेटे पिछली रेख्या, अग्गे लेखा दए वखाल। कलिजुग अन्तिम धारे भेख्या, भेव अवल्ला हरि निरँकार। मुछ दाढ़ी ना दिसे केसया, मूंड मुंडाए ना विच संसार। जोत जगाए दस दस्मेशया, दहि दिशा होए उज्यार। लेखा जाणे गणपति गणेश ब्रह्मा विष्न महेश्या, शिव शंकर पावे सार। साचे सन्त करे अदेसया, जिस मिल्या हरि करतार। लक्ख चुरासी कूड़ा भेसया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार। अगम्म अपार अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, पारब्रह्म अबिनाशी करता वड वड वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम निरगुण निरवैर बणे सच मलाह, पुरख अबिनाशी आपणा बेड़ा आप चलाईआ। मूर्त अकाल दीन दयाल देवणहारा सच सलाह, साख्यात जोत करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई नौं नौं सत्त सत्त दए समझा, ब्रह्म मति इक्क पढ़ाईआ। मन मति दए तजा, गुरमति इक्क सिखाईआ। चार वरनां आपणा रूप धरा, बन्द खुलासी दए कराईआ। जन हरि रसना रहे गा, राए धर्म ना दए सजाईआ। साचा मेला दए मिला, गुर चेला एका थाउँ बहा, गुर गुर वेखे थाउँ थाईंआ। उच्ची कूक दए सुणा, शब्द

अगम्मी नाअरा ला, सो पुरख निरँजण बेपरवाह, जगत बह करे कुड़माईआ। त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ा, पंचम आपणी झोली पा, हरि देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़ा, अन्तर आत्म ब्रह्म डोरी एका पाईआ। ब्रह्म डोरी पुरख सुजान, निरगुण आपणे हथ्थ रखांयदा। जुग जुग तिन्नां पाए आण, आपणा बन्धन इक्क वखांयदा। सन्तन देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ांयदा। गुरमुखां बख्शे चरन ध्यान, चातक तृखा आप बुझांयदा। गुरमुख राग सुणाए कान, नाद अनादी नाद अलांयदा। करे खेल श्री भगवान, शब्द भगौती हथ्थ उठांयदा। भगत रूप सर्ब जहान, वास्तक आपणी धार बंधांयदा। अस्तिक खेल दो जहान, नास्तिक सर्ब मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्त साजण वेख वखांयदा। सन्त सतिगुर तुठ्ठया, वड दाता हरि मेहरवान। अमृत जाम प्याए घुट्टया, मेल मिलावा श्री भगवान। जगत विकारा तन तन छुट्टया, हरि चरन इक्क ध्यान। नाम धन ना जाए लुट्टया, नेड़ ना आए पंज शैतान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख देवे एका दान। गुरमुख दान अवल्लड़ा, गुरमति सुर झोली पांयदा। आप फड़ाए आपणा पलड़ा, जुग जुग आपणा संग निभांयदा। दर दुआर आपे खलड़ा, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। सुहाए बंक नेहचल धाम अटलड़ा, सचखण्ड दुआरा आप वड्यांअदा। सच सिँघासण एका मलड़ा, शाहो भूप राज राजान सीस ताज इक्क सुहांयदा। शब्द सुनेहड़ा लोकमात जुगा जुगन्तर एका घलड़ा, जुग जुग गुर पीर अवतार आप समझांयदा। आपणी जोती आपे रलड़ा, आपे शब्दी शब्द मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त बैरागन आप अख्वांयदा। सन्त वैरागी सच वैरागीआ, नाम वैराग इक्क जणाईआ। सन्त त्याग जगत त्यागीआ, त्रैगुण माया नाता तोड़ तुड़ाईआ। सन्त सुहाग सन्त सुहागीआ, कन्त कन्तूल पुरख अकाल इक्क हंढाईआ। सन्त जाग खुलाए आप सदा जागीआ, आलस निन्दरा विच ना आईआ। आप बणाए फड़ फड़ हँस कागया, माणक मोती चोग चुगाईआ। जो जन सतिगुर सरन सरनाई साची लागया, सहिंसा रोग रहे ना राईआ। फड़ बाहों शौह दरयाए आपे काढीआ, नाम नईआ लए चढ़ाईआ। किरपा करे ग़रीब निवाजया, ग़रीब निमाणे गोद बहाईआ। कलिजुग अन्तिम साजण साजया, कुदरत कादर वेख वखाईआ। निर्भय हो हो लोकमात गाजया, शाह सुल्तानां दए उठाईआ। ना कोई दिसे जगत नवाब्या, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। ना कोई हाजी ना कोई हाजया, हज़रत मेल ना कोई कराईआ। उच्ची कूक मुकामे हक ना मारे कोई वाजया, हक बहक ना कोई जणाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता इक्क इकल्ला एकँकारा आप चढ़या साचे ताजया, सचखण्ड दुआरा आप खुलाईआ। थिर घर वासी भूपन राजया, राज जोग इक्क वखाईआ। जन

भगतां रक्खे लाजया, जुग जुग आपणा रूप धराईआ। गुरसिख विरला लक्ख चुरासी विच्चों लाध्या, घर घर भाण्डा फोल फुलाईआ। डूँघी भँवरी आपे काया, सुखमन बेड़ा पार कराईआ। त्रैबैणी दुआर लडाए लाडया, संगम आपणा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सहेला इक्क अकेला, गुर चेला वेखे थाउँ थाँईआ। चेला गुर एका रंग, सतिगुर पुरख आप रंगांयदा। घर घर वजाए नाम मृदंग, मर्द मरदाना सेव कमांयदा। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत नंगी होण ना देवे कंड, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। लेखा जाणे हरि जू हरि ब्रह्मण्ड, ब्रह्म ब्रह्मादि वेख वखांयदा। नाद वजाए सुहागी छन्द, ब्रह्मा विष्न शिव नाल रलांयदा। भेव ना पायण रसना जिह्वा बत्ती दन्द, बोल बोल ना कोई सुणांयदा। गुरमुख विरला जाणे परमानंद, परम पुरख जिस आप वखांयदा। निज निझर देवे निजानंद, निज घर आपणा रस चखांयदा। सगल संसारी मेटे चिन्द, चिंता चिखा ना कोई रखांयदा। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर गुरमुख आपणे नाल मिलांयदा। आप बणाए नादी बिन्द, सुरती शब्दी मेल मिलांयदा। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, जल थल महीअल आपणा रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त वसाए साचे घर, दर घर साचा आप सुहांयदा। सन्तन दर सुहाया, गृह मन्दिर हरि निरँकार। घर दीपक जोत जगाया, दिवस रैण होए उज्यार। अनहद साचा शब्द अलाया, निरगुण वज्जदी रहे सितार। मिल मिल सखीआं घर घर मंगल गाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन देवे नाम अधार। नाम अधार अतुट भण्डारा, गुर सतिगुर आप वरताईआ। जुगा जुगन्तर लए अवतारा, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। गुरमुख साजन पावे सारा, सारिंग धर आपणी दया कमाईआ। सन्तन देवे इक्क हुलारा, सिम्मल रुख फुल लगाईआ। भगतन भगवन हो उज्यारा, आप आपणा लए प्रगटाईआ। लेखा चुकाए अन्तिम वारा, जोती जोत मेल मिलाईआ। लक्ख चुरासी ना होए ख्वारा, जूनी अजून ना कोई भवाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार किनारा, भगत भगवन्त वेखे थाउँ थाँईआ। कलिजुग अन्तिम चारों कुंट उच्ची कूक बोले जैकारा, सृष्ट सबाई रिहा सुणाईआ। नौं सत्त होया अँध्यारा, साचा दीप ना कोई जगाईआ। घर घर विच मेला जूठ झूठ लोभ मोह हँकारा, काम क्रोध दए दुहाईआ। आसा तृष्ना कर श्रंगारा, हउमे हंगता नाल रलाईआ। नाता तुटा पुरख नारा, विभचार सर्ब लुकाईआ। पुत्तर धीआं ना कोई विचारा, मात पूत सेज हंढाईआ। साक सज्जण सैण ना पावे कोई सारा, बन्दन बंधप गए छुडाईआ। घर घर वसे धूंआँधारा, साची जोत ना कोई रुशनाईआ। रसना जिह्वा इक्क विकारा, विश्व शान्ती ना कोई कराईआ। दुरजन होया सर्ब संसारा, निन्दक निदिआ मुख भवाईआ। हरि का नाउँ भुल्लया जीव गंवारा, काया मन्दिर सोभा कोए पाईआ। मिल्या मेल ना प्रीतम प्यारा, प्रेम रंग ना कोई रंगाईआ।

काया तुट्टा ना गढ़ हँकारा, मन रावण ना कोई ढाईआ। सीता सुरती ना करे कोई प्यारा, सीता राम ना कोई अख्वाईआ। गीता गाए ना कोई आपणी वारा, बंसरी कृष्न ना कोई वजाईआ। पनघट दिसे ना कोई पनिहारा, अठसठ दर दर देण दुहाईआ। गंगा गोदावरी मारे नाआरा, जमना सुरस्ती खुलड़े केस रही वखाईआ। अमृत जल ना मिले ठंडी ठारा, कलिजुग अग्नी रही तपाईआ। सर सरवोर रिहा ना सच भण्डारा, कलिजुग जीव नारी पुरष नंगे रहे तारीआं लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचे सन्त लए प्रनाईआ। हरि जोत प्रनांयदा, निरगुण रूप अनूप सच्ची सरकार। दर घर साचे सगन मनांयदा, सचखण्ड निवासी हो त्यार। एका तन्दन हथ्थ उठांयदा, नाम डोरी अगम्म अपार। लोकमात फेरी पांयदा, गुरमुख साचे लए विचार। आपणी हथ्थीं बन्न् वखांयदा, ना कोई तोड़े अन्तिम वार। साचे घोड़े आप चढ़ांयदा, आप आपणी किरपा धार। साचे डोले आप बहांयदा, पुरख अबिनाशी खेल न्यार। निरगुण कहार आप हो जांयदा, चारे कूटां वेख विचार। गुरमुख तेरा भार आप उठांयदा, सिर चुक्के आपणा भार। लोआं पुरीआं पार करांयदा, ब्रह्मण्ड खण्ड चरना हेठ दए लताड़। ब्रह्मा विष्न शिव तेरा राह तकांयदा, निउँ निउँ करे निमस्कार। सतिगुर साचे धाम बहांयदा, थिर घर खोल्ले बन्द किवाड़। सचखण्ड दुआरा आप सजांयदा, सन्त सहेले आपे वाड़। आपणी जोती आप जगांयदा, जोती जोत आप निरँकार। वरन गोत ना कोई रखांयदा, ऊँच नीच ना कोए धार। जो जन हरि हरि रसना गांयदा, वेले अन्तिम लए उभार। कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा, निहकलंका लए अवतार। हरिजन साचे मेल मिलांयदा, मेल मिलावा विच संसार। जगत जिज्ञासू पन्ध मुकांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेला नित नवित भगतन करे साचा हित, वार थित ना कोई रखांयदा। वार थित ना दिवस मास, बरस बरख ना खेल खिलांयदा। जुग जुग जन भगतां उत्ते करे तरस, आप आपणा वेस वटांयदा। जगत तृष्ना मेटे हरस, सहिंसा रोग सर्ब चुकांयदा। अमृत मेघ एका बरस, सांतक सति सति करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप उठांयदा। हरिजन शब्द जगाया, कर किरपा गुण निधान। सति सति मेल मिलाया, पंज तत्त होया निगहवान। धुर दी बाणी बाण लगाया, नाता तोड़ पंज शैतान। पंचम शब्द इक्क सुणाया, घर मन्दिर होए धुनकान। अनहद साचा ताल वजाया, आप वजाए गुण निधान। बंक दुआरी बंक सुहाया, निरगुण सरगुण हो प्रधान। आप आपणा भेव खुलाया, इक्क वखाए पद निरबान। इक्क इकल्ला एकँकारा आपणी कल वरताया, दूजी कुदरत वेखे जीव जहान। तीजा लोचण आप खुल्लाया, चौथे पद देवे माण। पंचम राग इक्क सुणाया, छेवें छप्पर छन्न ना कोई मकान। सत्तवें सति सतिवादी

सति सति वरताया, ना ज़िमी ना अस्मान। चार दिवार ना बणत बणाया, छप्पर छन्न ना कोई निशान। सच सिँघासण इक्क विछाया, उप्पर बैठ श्री भगवान। आप आपणा हुक्म अलाया, नूर अलाही नौजवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन साचे लए जगाया। जागरत जोत हरि जगा, गुरमुख सज्जण आप जगाईआ। माया फंदन बन्द कटा, पतित पुनीत करे बेपरवाहीआ। सांतक सति तन वरता, मन पंखी उड ना दहि दिस जाईआ। मति मतवाली दए समझा, बुध बिबेकी आप कराईआ। शरअ शरिअत इक्क वखा, कलमा अमाम आप पढ़ाईआ। नबी रसूलां राहे पा, मुल्ला मुशायक शेख़ पीर दस्तगीर आप उपाईआ। नूरो नूर जल्वा आप खुदा, नूर नुराना डगमगाईआ। आफताब आप रिहा चमका, ज़ाहर ज़हूर खेल खलाईआ। नेरन दूर वसे साचे थाँ, दूर नेड़ आपणा पन्ध मुकाईआ। आसा पूर जन भगतां पकड़े बांह, मनसा मनसा विच टिकाईआ। जगत विकारा करे दूर सच न्याँ, सालस आपणा नाउँ रखाईआ। निरगुण निरवैर जोती जामा पा, हरि हरि आपणा बल आप धराईआ। सन्त सतिगुर लेखे लए ला, पूर्ब लेखा लेखे पाईआ। भरम भुलेखा रहे ना रा, भुल्ल अभुल्ल बेपरवाह, अभुल्ल मार्ग इक्क चलाईआ। सुलाहकुल दो जहां, आलम इलम इक्क पढ़ाईआ। एका मार्ग दए वखा, कायनात काया शरअ आप जणाईआ। आबेहयात जाम प्या, महव महबूब दए मिलाईआ। एकँकारा आपणा वेस वटा, नानक निरगुण दए सलाहीआ। एका मन्त्र सच पढ़ा, इष्ट दृष्ट सृष्ट इक्क वखाईआ। एका जोती जोत डगमगा, पूत सपूता सुत दुलारा एका जाईआ। गोबिन्द सूरा नाउँ धरा, पुरख अकाल रिहा ध्याईआ। धरनी धरत धवल तेरी पैज लए रखा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या शब्द गुरदेव, देव आत्मा सर्ब जगांयदा। पुरख अबिनाशी अलक्ख अभेव, अनुभव आपणा रूप वटांयदा। जन भगतां देवे साचा मेव, अमृत आत्म रस चखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे आपणे घर, घर मन्दिर आप सुहांयदा। घर मन्दिर बंक सुहाया, हरिसंगत कर प्यार। सति सतिवन्ता मेल मिलाया, पति पतिवन्ता करे प्यार। भुखा नंगता फेरी पाया, मंगदा फिरे दर दुआर। पुरख अबिनाशी जगत भिखारी आप हो जाया। गुरसिख लभ्भणा दुआर आपणी अल्फी इक्क हंढाया, दूजा बस्त्र ना कोए प्यार। साचा शस्त्र इक्क चमकाया, नाम खण्डा तेज कटार। लोहार तरखान ना किसे घड़ाया, ऐहरन तत्त ना मारे मार। जगत कुठाली किसे ना पाया, अग्गनी अग ना देवे साड़। गुरसिख तेरे रंग रंगाया, साचा खण्डा तिक्खी धार। जोरावर हथ्थ उठाया, कलिजुग आई अन्तिम वार। रविदास चुमारा ढोरां ढोए सुट्टण लाया, लेखा लिखे सर्ब संसार। साढे तिन्न

हथ्थ वण्ड वण्डाया, शाह सुल्तानां मारे मार। ब्रह्मण्ड खण्ड डेरा ढाया, ब्रह्मा विष्न शिव करे पुकार। शंकर बाशक तशका गलों लाहया, हथ्थ त्रसूल सुटी नेत्र नीर वहाए वारो वार। ब्रह्मा चारे मुख उठाया, अठ्ठे नेत्र रिहा उग्घाड़। विष्नूं बाशक तशका सांगोपांग सेज तजाया, चरन दुआर बणे भिखार। पुरख अबिनाशी घट घट वासी शाहो शाबासी कलिजुग अन्तिम जोत जगाया, प्रगट होए विच संसार। निहकलंक नाउँ धराया, चौथा जुग वेख वखाया, नौं सौ नड़िनवें चौकड़ी जुग करे ख्वार। समरथ पुरख आप अख्वाया, सृष्ट सबाई हठ गंवाया, गुर दर मन्दिर मस्जिद मठ वेख वखाया, शिवदुआला पावे सार। तीर्थ तट फोल फुलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा करे पार किनार। कलिजुग तेरा पार किनारा, करता पुरख आप कराईआ। सम्मत सम्मती मारे मारा, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। वेद व्यासा विश्व लिखारा, आपणा लेखा गया समझाईआ। नानक निरगुण तिक्खी धारा, त्रिलोकी रिहा जणाईआ। गोबिन्द सूरबीर बलकारा, खड़ग खण्डा इक्क चमकाईआ। चारो कुंट धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। चारो कुंट आए पासा हारा, सार पास खेल खलाईआ। प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतारा, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। जोती शब्दी एका रंग रवे निरँकारा, निरगुण निरगुण विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी कल मिटाईआ। कलिजुग तेरा कल कलेश, कल कल्की आप मिटावना। तेरी अल्फी दर दरवेश, दर दर भिखारी मंग मंगावणा। तेरी कोए ना चले पेश, पुरख अबिनाशी आपणा भाणा आप वरतावना। दर मंगण मंग ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, वेला अन्त ना किसे बचावना। धरत धवल वखाए खुलड़े केस, नेत्र रो रो नीर वहावना। गुरमुख राह तक्कन दस दस्मेश, नीला नीली धारों पार करावना। विष्न ब्रह्मा शिव बाशक शेश, सहँसर मुख आप सलाहवणा। कलिजुग अन्तिम पारब्रह्म अबिनाशी करता जन भगता करे इक्क आदेस, जिस बह बह रसना गावणा। सूरबीर बलवाना नर नरेश, नर हरि नरायण आपणा रूप आप प्रगटावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन रक्खे साची टेक, इष्ट रूप इक्क अख्वावणा। चार वरनां एका टेक, सृष्ट सबाई हरि रखांयदा। शब्दी शब्द बुध बिबेक, मति मतवाली आप समझांयदा। स्वच्छ सरूपी आप आपणे लए वेख, पूर्ब लहिणा आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग अन्तिम उखड़े मेख, थिर कोई रहिणा ना पांयदा। लेखा जाणे रिखी केस, गवर्धन आपणे हथ्थ उठांयदा। खण्डा वेखे दस दस्मेश, श्री भगौती भगवत आप चमकांयदा। गुरमुख सज्जण सतिगुर शाह सुल्तान आपणे नेत्र लए पेख, जगत नेत्र लोचण नैण बन्द करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सन्त रसना जिह्वा मणीआ मंत, मन मनका आप भवांयदा। मन का मणका आप भवाए, मन वासना

रहिण ना पाईआ। तुनका तन आप लगाए, जोती तिलक इक्क रखाईआ। शब्द डंका इक्क वजाए, अनहद साचा ताल वजाईआ। वासी पुरी घनका दया कमाए, घनक पुर वासी सच्चा शहनशाहीआ। बार अनेका जोत जगाए, अकल कल आप अख्वाईआ। नाम धनुष हथ्थ टिकाए, कलिजुग रावण ल्ए खपाईआ। कूड़ा कंस आप मिटाए, बल कृष्ना आप रखाईआ। ईसा मूसा संसा दए चुकाए, संग मुहम्मद चार यार दए सलाहीआ। अल्ला राणी अंका अंग लगाए, अंगीकार आप हो जाईआ। साचा बंका आप सुहाए, गुरमुख बंक दुआरी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन वेखे काया गढ़, जोत सरूपी अंदर वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, आपणा धाम आप सुहाईआ। काया मन्दिर धाम न्यारा, गुर सतिगुर आप सुहांयदा। नौं दुआरे पार किनारा, पंच विकारा मेट मिटांयदा। सुखमन नाड़ी अन्ध अँध्यारा, टेडी बंक पार करांयदा। ईड़ा पिंगल दए सहारा, आप आपणी उँगल लांयदा। अमृत आत्म ठंडी ठारा, भर प्याला मदि प्यांअदा। अनहद शब्द सच्ची धुन्कारा, धुन आत्मक आप सुणांयदा। शब्द अनादी मंगलचारा, वाह वाह गीत गोबिन्द अलांयदा। पंचम राज जोग सिक्दारा, साचा हुक्म आप सुणांयदा। बजर कपाटी खोल किवाड़ा, साचा मन्दिर वेख वखांयदा। दस्म दुआरी खेल न्यारा, हरि निरँकारा जोत जगांयदा। आत्म सेजा कर श्रंगारा, आप आपणा आसण लांयदा। आपे सुत्ता पैर पसारा,

६७७

करवट आपणी ना कोए बदलांयदा। गुरमुख विरला चढ़े दुआरा, मंज़िल आपणा पन्ध मुकांयदा। एका दूजा पार उतारा,

०६

तीजा नैण आप प्रगटांयदा। चौथे पद सच सहारा, पंचम मेला मेल मिलांयदा। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखांयदा। सुरती शब्दी कर प्यारा, नारी कन्त मेल मिलांयदा। ईश जीव मेला इक्क दुआरा, घर घर साचे आप करांयदा। जगत जगदीश दए सहारा, जगतेशवर आपणा भेव खुलांयदा। सन्तन सोहे इक्क मुनारा, घर मन्दिर सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन अंदर आपे वड़, सच सिँघासण सोभा पांयदा। सच सिँघासण सोभावन्त, गुरमुख आत्म सेज सुहाईआ। पुरख अबिनाशी एका कन्त, निज घर बैठा खुशी मनाईआ। एका चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। एका मणीआ एका मंत, एका शब्द नाम दृढ़ाईआ। एका साध एका सन्त, एका सतिगुर रूप वटाईआ। एका लेखा जाणे जीव जंत, एका लक्ख चुरासी रिहा भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि, सुंन समाध हरि सन्तन दए बुझाईआ। सुन्न समाध पिण्ड ब्रह्मण्ड, हरि साचा खोज खुजांयदा। लक्ख चुरासी वण्डन वण्ड, हरि आप आपणी झोली पांयदा। कलिजुग अन्तिम शब्द सुणाए सुहागी छन्द, सो पुरख निरँजण ढोला गांयदा। हँ ब्रह्म इक्क वखाए परमानंद, पीआ प्रीतम मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी गा गा थक्की बत्ती दन्द, कलिजुग बन्धन ना कोई

तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सहेले गुरू गुर चेले मेले आपणे घर घर बन्द दुआर, सोभावन्त होए विच संसार, हरिजन साचा आप सुहांयदा। निहकलंक नरायण नर अवतार, जोती जोत जोत उज्यार, रूप रंग रेख ना कोई वखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा होए प्रधान, कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकांयदा।

❋ ११ भाद्रों २०१७ बिक्रमी मकंद सिँघ दे गृह पिण्ड महराज ज़िला बठिंडा ❋

पुरख अकाल सर्ब गुणवन्ता, सति सति वड्डी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण जुगा जुगन्ता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। हरि पुरख निरँजण साचा धाम सुहंता, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। एकँकारा एका धाम वसन्ता, थिर घर साचे सोभा पाईआ। आदि निरँजण जोती नूर वखंता, नूर नुराना डगमगाईआ। अबिनाशी करता बेअन्त बेअन्ता, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। श्री भगवान आप आपणा अंगीकार करे लाए अंग अंगदा, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। पारब्रह्म दर दरबान दर दरवेश बणे मंगता, आपणी भिख्या आपे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नूर आप प्रगटाईआ। आपे जोत आपे जाता, जोती जोत आप जगांयदा। आपे पुरख आप बिधाता, आपणी बुध आप रखांयदा। आपे पिता आपे माता, आपे बालक गोद सुहांयदा। आपे देवणहारा साची दाता, दाता दानी आप अख्वांयदा। आपे निरगुण रक्खे निरगुण साथा, आदि जुगादि संग निभांयदा। त्रै त्रै भवन चलाए राथा, रथ रथवाही सेव कमांयदा। आपे शब्द अनादी गाए गाथा, नाउँ निरँकारा आप अलांयदा। आपे खेले खेल तमाशा, मंडल मंडप आप सुहांयदा। आपे रवि ससि करे प्रकाशा, सूरज चन्न आप चढ़ांयदा। आपे दिवस आपे राता, घड़ी पल आपणी वण्ड वण्डांयदा। आपे पूजा आपे पाठा, इष्ट गुरदेव आप हो जांयदा। आपे सरोवर मारे ठाठा, अमृत ताल आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप धरांयदा। आपे आपणी कल धार, आपणी महिमा आप जणाईआ। आपे रूप अनूप सच्ची सरकार, साचे तख्त आप सुहाईआ। आपे अबिनाशी करता हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। आपे वसे सचखण्ड सच्चे दरबार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। आपे राजन भूप बण सिक्दार, शहनशाह आप हो जाईआ। आपे हुक्मी हुक्म वरते वरतार, आपे भाणे रिहा समाईआ। आपे सीस बन्न्ह दस्तार, साचा ताज आप उठाईआ। आपे सति सतिवादी निशाना देवे चाढ़, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। आपे बणे साचा लाड़, निरगुण नरायण वड वड्याईआ। आपे घड़े आपणा घाड़, घड़न भन्नणहार आप हो जाईआ। आपे गुप्त आपे ज़ाहर, ज़ाहर जहूर आपणी खेल खलाईआ। आपे शब्द नाद तूर वजाए सितार, शब्द जैकारा आप कराईआ।

आपे थिर घर खोल्हे बन्द किवाड़, थिर घर वासी आपणी महिमा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि इक्क इकल्ला, करे खेल उच्च महल्ला, नेहचल अटला आप सुहाईआ। आपे महल्ल आप अटार, निरगुण निरँकार आप अख्वांयदा। आपे जोती जोत हो उज्यार, नूरो नूर नूर समांयदा। आपे शब्द शब्द जैकार, आपे धुन धुन उपजांयदा। आपे सति सति वरते वरतार, सति सतिवादी आप अख्वांयदा। अगम्म अगम्मड़ी करे कार, अगम्म अथाह भेव ना आंयदा। आपे अलक्ख अलक्खणा उच्ची कूक करे पुकार, आपणी अलक्ख आप जगांयदा। आपे सच महल्ला पैज संवार, आपे आपणी बणत बणांयदा। आपे जलां थलां करे विचार, महीअल आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर सुहञ्जणा आदि निरँजण इक्क वखांयदा। आपे दाता धुर संजोगी, जुगत आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे रसीआ रस रस भोगी, भस्मड़ रूप ना कोई वटांयदा। आपे देवे दरस अमोघी, स्वच्छ सरूप आप प्रगटांयदा। आपे होए अगाध बोधी, बोध अगाधा शब्द अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे दर, दर दरवाजा आप खुलांयदा। आपे दर आप दरवाजा, खोलणहार आप हो जाईआ। आपे होए ग़रीब निवाजा, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। आपणा साजण आपे साजा, तख्त निवासी सच्चा पातशाहीआ। आपे भूप आपे राजा, आपे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आपे दर दरवेश बण बण मारे वाजा, सचखण्ड दुआरे सेव कमाईआ। आपे रक्खे आपणी लाजा, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। आपे अश्व चढ़े ताजा, साचा घोड़ा आप दौड़ाईआ। आपे चलाए नाम जहाजा, एका चप्पू हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एकँकार, करे खेल अपर अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आईआ। आपे राज जोग सिक्दार, शाह पातशाह आप अख्वांयदा। आपे रईयत करे प्यार, राम रूप आप वटांयदा। आपे विष्नूं विश्व कर अकार, निराकार साकार खेल खिलांयदा। आपे कँवला बन्ने धार, अमृत नाभी आप टिकांयदा। आपे फूल फूलन होए उज्यार, साची मालन आप हो जांयदा। आपे पत डाली पाए सार, साची खारी सीस उठांयदा। शब्द दलालण बण वणजार, विष्नूं अंदर फेरा पांयदा। जोत अकालण सेवादारा, रूप रंग ना कोई वखांयदा। आपे शाहो भूप हरि निरँकार, साचे मन्दिर सोभा पांयदा। आपे पंखड़ीआं आपे गुलज़ार, आपे गुंचा मुख खुलांयदा। आपे भवरा गूंजे दर दुआर, अजूनी रहित अनुभव प्रकाश आप करांयदा। आपे ब्रह्मा पारब्रह्म करे न्यार, निरगुण आपणी वण्ड वण्डांयदा। आपे साजण साचे करे प्यार, साचे मेला आप मिलांयदा। आपे ताकी खोल्हे बन्द किवाड़, धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। आपे चारे मुख लए उग्घाड़, रसना जिह्वा आप हिलांयदा। आपे निष्अक्खर वक्खर देवे धार, आपणी महिमा आप

६८०
०९

सुणांयदा। आपे चारें वेदां भर भण्डार, विद्दत आपणे विच टिकांयदा। आपे खेल करे निरँकार, खेल खिलाड़ी वेस वटांयदा। निरगुण निरगुण पावे सार, रूप रंग रेख आपणे विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे विष्न आपे ब्रह्मा, आपणे मन्दिर आपे जम्मा, मात पित ना कोई रखांयदा। आपे विष्नूं करे प्यार, सो पुरख निरँजण एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। हउमे हंगता ब्रह्म कर पसार, पारब्रह्म आपणी वण्ड वण्डाईआ। आपे शंकर देवे धार, धूंआँधार आप समाईआ। आपे सुंन समाधी होए उज्यार, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। आपे अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर, चारे कूटां वेख वखाईआ। आपे दहि दिशा दए हुलार, लोआं पुरीआं खोज खुजाईआ। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड वरते वरतार, गगन पतालां आप समाईआ। आपे निरगुण सरगुण करे खेल अगम्म अपार, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, हरि जू हरि मन्दिर रिहा समाईआ। हरि मन्दिर हरि सुहांयदा, आप आपणी किरपा धार। निरगुण दीवा बाती इक्क जगांयदा, पुरख अकाल हो उज्यार। दीन दयाला दया कमांयदा, सति सरूपी साची धार। सच सिँघासण इक्क सुहांयदा, निरगुण राजा बण सिक्दार। साचा छत्र आप झुलांयदा, उँणंजा पवण ना कोई हुलार। ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकांयदा, त्रै त्रै मीता करन चरन निमस्कार। एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा, सोहँ शब्द सच्ची जैकार। पारब्रह्म आपणा रूप आप प्रगटांयदा, एका ब्रह्म कर पसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अपर अपार। आपे त्रैगुण दाता हरि निरँकार, करता पुरख वड वड्याईआ। आपे त्रैगुण माया करे पसार, रजो तमो सतो आप प्रगटाईआ। आपे पंज तत्त करे अकार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आप उपाईआ। आपे लक्ख चुरासी भाण्डे घड़े विच संसार, ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगाईआ। आपे रक्त बूंद करे प्यार, नारी कन्त आप सुहाईआ। आपे मन मति बुध दए अधार, आसा तृष्ना आप भराईआ। आपे काम क्रोध मोह लोभ हँकार, आपे हंगता गढ़ वसाईआ। आपे वसया अन्ध अन्ध अँध्यार, डूँघी कंदर डेरा लाईआ। आपे जोती जोत करे उज्यार, आदि निरँजण सेव कमाईआ। आपे सुखमन टेडी गार, ईड़ा पिंगल आपणा राह वखाईआ। आपे अमृत ठंडी ठार, काया मन्दिर आप टिकाईआ। आपे शब्द धुन सच जैकार, अनहद ताल आप वजाईआ। आपे सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द आपे गाईआ। आपे बजर कपाटी लाए पाड़, दूई द्वैती दए चुकाईआ। आपे आत्म सेजा हो उज्यार, निज घर साचा आप सुहाईआ। आपे ब्रह्म पारब्रह्म हो पावे सार, ईश जीव वेख वखाईआ। आपे जगदीश सच्ची सरकार, जगत जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे दाता दानी दर्द भण्डारी, आपणी वण्डन आप वण्डाईआ। आपे भण्डारी आपे दाता, देवणहार आप अखवांयदा।

आपे संसारी आपे ज्ञाता, ज्ञान ध्यान आप जणांयदा। आपे शब्द आपे राथा, आपे जुग जुग सेव कमांयदा। आपे जोती नूर लिलाटा, नूर नुराना डगमगांयदा। आपे जाणे आदि जुगादी वाटा, आपणा पन्ध आप मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल साचे घर, दर दर घर घर आप सुहांयदा। आपे दर आप दरवेश, दीना नाथ वड्डी वड्याईआ। आपे नर आप नरेश, नर नरायण आप अख्वाईआ। आपे विष्न ब्रह्मा बणे महेष, आपणी कल आप धराईआ। आपे त्रैगुण माया धारे भेख, पंचम आपणा रंग रंगाईआ। आपे बाशक सुत्ता सेज, सांगोपांग आप हंढाईआ। आपे ब्रह्मा नेत्र रिहा पेख, आपणा नैण आप खुलाईआ। आपे पूजा गणपति गणेश, बाशक तशका गल हंढाईआ। आपे दो जहानां धारे भेख, गुर पीर अवतार आपणा नाउँ धराईआ। आपे भगतां देवे भगती टेक, भगवन भावनी आप पूर कराईआ। आपे सन्तन करे बुध बिबेक, दुरमति मैल आप धुआईआ। आपे गुरमुखां लिखणहारा लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे गुरमुख सज्जण लए पेख, जुग जुग आपणा मेल मिलाईआ। आपे मेटणहारा जगत लग्गी मेख, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा होए सहाईआ। आप सहायक सर्ब गुणवन्ता, आपे रछक रिच्छया भगत करांयदा। आपे मेल मिलावा साचे सन्ता, जुग जुग आपणी धार बंधांयदा। आपे शब्द मणीआ मंता, रसना जिह्वा आप सुणांयदा। आपे तोड़े गढ़ हउमे हंगता, निवण सु अक्खर आप पढ़ांयदा। आपे दर दरवेश बणे मंगता, जुग जुग जन भगत दुआरे आंयदा। आपे काया चोली साची रंगदा, नाम मजीठी इक्क चढ़ांयदा। आपे लोआं पुरीआं लँघणा, ब्रह्मण्ड खण्ड चरनां हेठ दबांयदा। आपे करे खेल सूरे सरबंग दा, सतिगुर पूरा आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मेल आप मिलांयदा। आपे पारब्रह्म बल बावन भेखा धार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपे दर दर मंगे मंग करतार, किरती आपणी किरत कमाईआ। आपे धरत धवल कर उज्यार, जल बिम्ब आप टिकाईआ। आपे सेवक करे सेवादार, शास्त्र सिमरत देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप वखाईआ। आपे भाणा आपे राणा, आपे हुक्म चलांयदा। आपे चतर सुघड़ स्याणा, मूर्ख मूढ़ आप अख्वांयदा। आपे राग आपे गाणा, नाद धुन आप वजांयदा। आपे पवण आपे मसाणा, पवण पवणी आप समांयदा। आपे पीणा आपे खाणा, आपे घर घर रिज़क पुचांयदा। आपे दाना आपे बीना, बीना दाना आप हो आंयदा। आपे जल आपे मीना, आपे बालू तत्त तपांयदा। आपे अमृत आत्म ठंडा सीता, सर सरोवर आप अख्वांयदा। आपे लेखा जाणे लोकां तीनां, चौदां हट्ट फोल फुलांयदा। आपे आपणे रंग होए भीन्ना, भिन्नड़ी रैण आप सुहांयदा। आपे मरना आपे जीणा, लक्ख चुरासी आप भवांयदा।

आपे पाटा आपे सीणा, आपे दोए दोए जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगांयदा। आपे रंग रंगीला, छैल छबीला साचा माहीआ। आपे करे आपणा हीला, हलत पलत आप समाईआ। आपे रूप वटाए लाल कंचन सूहा पीला, चिट्टी धार आप समाईआ। आपे काला रंग होए अधीना, आपे नीली धार पार कराईआ। आपे भन्ने हँकारी बीना, गढ़ हँकार आप तुड़ाईआ। आपे मज़हब आपे दीना, शरअ शरीयत आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। आपे बेऐब परवरदिगार, आपे नूरो नूर अख्वांयदा। आपे मुकामे हक वसे साचा यार, सांझा यार नाउँ वड्यांअदा। आपे हक हकीकत राह रिहा तक्क, आपणी तदबीर आप बणांयदा। आपे वेखे ख़लक खुदाई हो प्रगट, नूरो नूर डगमगांयदा। आपे चौदां तबकां खोल्हे हट्ट, ज़िमी अस्माना डेरा ढांहयदा। आपे पीर फ़कीर दस्तगीर शाह हकीर खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी स्वांग आपणा आप वखांयदा। आपे कुतब गौंश मुल्ला शेख़ नटूआ नट, तसबी माला आप लटकांयदा। आपे अञ्जील कुरानां एका मसला रिहा रट, कायनात आप सुणांयदा। एका आबेहयात पीए गट गट, सति प्याला हथ्थ रखांयदा। एका मक्का काअबा बैठा डट, सच महिराबे आसण लांयदा। एका दूई द्वैती लाए फट, एका कलमा नबी आप सिखांयदा। एका अहिबाब रबाब वजाए सट्ट, सति सितार आप हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला आपणी कल वरतांयदा। आपे जल्वा नूर जलाल, बिस्मिल आपणा नाउँ धराईआ। आपे फ़लक आपे ख़लक आपे अर्श आपे कुर्श आपे धमाल, मलंग आपणा अंग आप प्रगटाईआ। आपे पत डाल्ही डाल्ह, फुल फलवाड़ी आप महिकाईआ। आपे संग मुहम्मद चार यार चले नाल नाल, हक हकीकत दए गवाहीआ। आपे अल्ला राणी बणे दलाल, मुख घूँगट मात उठाईआ। आपे काल आपे महांकाल, दीन दयाल आप अख्वाईआ। आपे राए धर्म लए उठाल, अठाई कुण्डा आप खुलाईआ। आपे चित्रगुप्त दए वखाल, लक्ख चुरासी भुल्ल ना राईआ। आपे लाड़ी मौत सिर चुन्नी रंगे लाल, हथ्थीं मैहन्दी मात रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। जुग जुग कार करांयदा, इक्क इकल्ला एकँकार। आपणे मार्ग आपे पांयदा, आप आपणी किरपा धार। आपणा शब्द आप अल्हांयदा, नाम निधाना बोल जैकार। आपणा रूप आप प्रगटांयदा, गुर सतिगुर लए अवतार। भगत भगवन्त वेख वखांयदा, सन्तन मेला कन्त भतार। गुरमुख चोली रंग रंगांयदा, गुरसिख सोहे बंक दुआर। सतिजुग त्रेता खेल खिलांयदा, त्रैगुण माया वसया बाहर। राम रामा नाउँ धरांयदा, लंका गढ़ तोड़ हँकार। रावण आपणे लेखे पांयदा, नाता तुटे सर्ब संसार। साचा चिल्ला हथ्थ उठांयदा, धनुष धनाडी मारे मार। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे रामा आपे राम, आपे जाणे आपणा काम, आपे सीता सुरती करे प्रनाम, आपे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बनबास फेरा पांयदा। आपे बन आपे बनबास, आपे दर दर अलक्ख जगाईआ। आपे पृथ्मी आपे आकाश, आपे गगन गगनंतर रिहा समाईआ। आपे मंडल आपे रास, आपे गोपी काहन नचाईआ। आपे पवण आप स्वास, स्वास स्वासा आप समाईआ। आपे जुग जुग पूरी करे आस, आपणी इच्छया आप भराईआ। आपे दाता सर्ब गुणतास, गुणवन्ता वड वड्याईआ। आपे पुरख पुरख अबिनाशी, ना मरे ना जाईआ। आपे त्रेता त्रीया करया वासी, आपणा लेखा दए चुकाईआ। आपे द्वापर करे बन्द खुलासी, वेद व्यासा आप पढ़ाईआ। आपे पुराण अठारां कर प्रकाशी, चार लक्ख हज़ार सतारां सलोक गिणाईआ। आपे ग़रीब निमाणयां करे बन्द खुलासी, आपणा पर्दा आपे पाईआ। आपे रथ रथवाही बणे दास दासी, सेवक सेवा आप कराईआ। आपे भगत भगवन्त पूरी करे आसी, अर्जन गीता इक्क पढ़ाईआ। आपे लक्ख चुरासी करे वासी, आपे घड़े भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे जुगा जुगन्तर, आप बुझाए लग्गी बसन्तर, एका नाम चलाए साचा मन्त्र, मति मतवाली भेव ना पाईआ। मति मतवाली ना पावे भेव, गहर गम्भीर हरि अख्वांयदा। पुरख अबिनाशी अलक्ख अभेव, गुणवन्ता नाउँ धरांयदा। बुध निमाणी करे सेव, जगत बिबेक ना कोई रखांयदा। इक्क इकल्ला वड देवी देव, देव आत्मा आपणा नाउँ धरांयदा। परम आत्मा सदा नेहकेव, नेहचल आपणा धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे पूजा आप पुजारी, आपे इष्ट गुर अवतारी, आपे निउँ निउँ करे निमस्कारी, सीस जगदीस आप झुकांयदा। आप जगदीस हरि जू हरि, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपणी जोत आपे धर, निरगुण निरगुण करे रुशनाईआ। साचे मन्दिर आपे वड़, पंज तत्त काया बंक वड्याईआ। शब्द अगम्मी अक्खर पढ़, निष्अक्खर आप सुणाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, चोटी जड़ ना कोए रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बंधाया आपणे लड़, आपणा बेड़ा आप चलाईआ। जुग जुग करता करनी रिहा कर, करनहार इक्क अख्वाईआ। निरभउ चुकाया आपणा डर, निर्भय वखाए सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी वण्ड वण्डाईआ। आपे सतिजुग आपे त्रेता, आपे द्वापर पार करांयदा। आपे बणे साचा नेता, आपे हुक्मी हुक्म सुणांयदा। आपे लेखा जाणे ब्रह्मा वेता, ब्रह्म विद्या आप पढ़ांयदा। आपे बन्धन पाए करोड़ तेतीसा देवी देवता, गण गंधर्ब आपणे अंदर आपे बन्द करांयदा। आपे नौं खण्ड पृथ्मी वेखे झुक झुक, सच किरसाना आपणा रूप वटांयदा। आपे सत्तां दीपां रूप प्रगटाए चुण चुण, चितवत ठगौरी कोए ना पांयदा। आपे खेवट आपे खेटा, सच मलाह आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग

आपणा रूप प्रगटांयदा। आपे काला तन श्रंगार सूसा, आपणी रंगन आप रंगाईआ। आपे मूसा आपे ईसा, ईस असल्ला हरि आपणी रहिमत विच टिकाईआ। आपे शब्द आप हदीसा, आपे अल्फ उल्फत फेर कराईआ । आपे जगत आप जगदीसा, आपे जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। आपे अञ्जील आपे कुरान, आलम इलमी आप अख्वांयदा। आपे मस्जिद काअबा दो दो आबा करे पहिचाण, आपे निउँ निउँ सयदा सीस झुकांयदा। आपे शरअ आपे ईमान, आपे उम्मत वेख वखांयदा। आपे आशक आपे माशूक आपे अब्बा आपे हैवान, महिबान बीदो आप अख्वांयदा। आपे मजलस आपे महिमान, आपे आपणी आण जणांयदा। आपे तीस बतीसा गाए गाण, आपणी तसबी आप फरांयदा। आपे मुल्ला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर होए प्रधान, अमाम अमामा आप हो जांयदा। आपे संग मुहम्मद चार यारी देवे माण, चौदां तबकां आप हिलांयदा। आपे चौदां सदी करे परवान, लोकमात खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रूप हरि रघराय, बिस्मिल आपणा नाउँ धराए, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। आपे निरगुण धार, सरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। आपे नानक गुर लै अवतार, लोकमात फेरा पांयदा। आपे वसे सचखण्ड दुआर, सचखण्ड सिँघासण सोभा पांयदा। आपे खिच्चे चरन दुआर, नाम डोरी हथ्थ रखांयदा। आपे दरस वखाए अगम्म अपार, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। नानक पाया सतिगुर एका घर बार, दर घर मन्दिर आप सुहांयदा। जगे जोत सच्ची सरकार, तख़्त शब्द आप सुहांयदा। उच्ची कूक करे पुकार, हउँ सेवक ठाकर अबिनाश दर दुआरे मंगण आंयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, साची वस्त नाम अमोलक झोली पांयदा। नाम सति जगत वरतार, साची सिख्या इक्क समझांयदा। तेरा मेरा रूप अपार, ब्रह्म पारब्रह्म समांयदा। मेरा नाउँ तेरी धार, निरगुण नानक आप पढ़ांयदा। सोहँ शब्द सच्चा जैकारा, दर घर साचे आप सुणांयदा। मिली वस्त अपर अपार, चोर यार ठग्ग कोए लुट ना जांयदा। नानक सतिगुर हो त्यार, लोकमात फेरा पांयदा। चार वरनां करे प्यार, ऊँचां नीचां राउ रंकां, राज राजाना शाह सुल्तानां एका रंग रंगांयदा। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश फड़ फड़ बांहो देवे तार, तारनहारा आप हो जांयदा। ग़रीब निमाणे बणाए गल दा हार, खिमां ग़रीबी आप हंढांयदा। हँकारीआं तोड़ गढ़ हँकार, साची विद्या आत्म अन्तर आप पढ़ांयदा। सति नाम सच जैकार, वाह वाह सतिगुर आप सणांयदा। हठीआं तपीआं पावे सार, जपी तपी हठी सती वेख वखांयदा। आत्म ब्रह्म जोत उज्यार, दीवा बाती डगमगांयदा। कमलापाती मीत मुरार, हरि निरँकार घर साचे सोभा पांयदा। गुरमुख होए सुहागण नार, साची मेंढी सीस गुंदांयदा। नेत्र नैणां कजल धार, नाम निधाना आप मटकांयदा। हथ्थीं मैहन्दी रंग चाढ़े अपार, चरन कँवल सेव कमांयदा। तन बस्त्र

वखाए इक्क श्रंगार, सोलां इच्छया पूर करांयदा। हथ्थ कंगन गहिणा पाए करतार, आपणे अंगन गोद बहांयदा। सेज सुहावी करे प्यार, आपणा मेला आप मिलांयदा। गुर चेला सोहन इक्क दुआर, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। धर्म राए ना मारे मार, चित्रगुप्त ना हिसाब वखांयदा। लाड़ी मौत देवे दुरकार, नाम खण्डा हथ्थ चमकांयदा। गुरमुख साचे करे प्यार, साची सेजा आप हंढांयदा। साची सेजा सुते पैर पसार, आपणी करवट आप बदलांयदा। नानक निरगुण सरगुण करे प्यार, महल्ल अटल उच्च मनार हरि मन्दिर हरि दुआर आप वड्यांअदा। मिल्या मेल एका वार, मिल्या मेल विछड़ ना जांयदा। दूजी कुदरत पावे सार, तीजे ब्रह्मा विष्न शिव आप जगांयदा। चौथे पद हो त्यार, चौथे घर सोभा पांयदा। पंचम नाद शब्द धुन्कार, साची सखीआं मिल बह बह मंगल गांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोए उसार, मन्दिर गुरदुआर ना कोए वखांयदा। सत्तवें सति सतिवादी साची कार, सचखण्ड दुआरे आप करांयदा। अठ्ठां तत्तां वसया बाहर, मन मति बुध बन्धन कोए ना पांयदा। नौं दर ना करे कोए ख्वार, जगत वासना ना कोए वखांयदा। नाता तुट्टे काम क्रोध लोभ मोह हँकार, माया ममता हउमे हंगता आसा तृष्ना अग्नी जोत आप जलांयदा। एका बख्शे चरन प्यार, पुरख अबिनाशी किरपा धार, नर नरायण पैज संवार, आत्म ब्रह्म कर प्यार, पारब्रह्म वेख वखांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म जाया, आपणी गोद सुहा। साचा सुत उपजाया, ब्रह्म मति इक्क पढ़ा। साचे मन्दिर आप टिकाया, पंज तत्त काया जड़त जड़ा। एका दीपक हथ्थ फड़ाया, जोत निरँजण कर रुशना। शब्द अनादी नाद सुणाया, धुन आत्मक राग अला। सृष्ट सबाई दए जणाया, नानक सतिगुर बेपरवाह। चौथा जुग दए दुहाया, कलिजुग कूके थाउँ थाँ। दहि दिशा अन्धेरा छाया, रवि ससि रहे शर्मा। साधा सन्तां मुख भवाया, नाता तुटा पिता माँ। पिता पूत ना गोद सुहाया, नारी कन्त ना लए हंढा। जगत दुहागण नार सृष्ट सबाया, विभचार रही कमा। चारे वेद ना करन सहाया, पुराण अठारां बैठण मुख छुपा। गीता ज्ञान ना कोई दृढ़ाया, नौं अठारां पन्ध ना सके कोई मुका। बहत्तर नाड़ ना होए रुशनाया, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी लेखा सके ना कोई गिणा। वेद शास्त्र साची सिख्या ना कोई पढ़ाया, धुर दा लेखा ना दए मुका। अञ्जील कुराना रो रो नाअरा एका लाया, ईसा मूसा संग मुहम्मद कूक रही सुणा। वेले अन्त रच्छया ना कोई कराया, नाता जोड़े ना नाल खुदा। ख़ालक खुदी रूप वटाया, खलक वेखे बेपरवाह। सालस आपणा नाउँ धराया, सृष्ट सबाई वेखे थाउँ थाँ। नानक अक्खर एका गाया, नौं खण्ड पृथ्मी कर रुशना। कलिजुग वेला अन्त दए सहाया, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। निहकलंका जामा पाया, जोती जोत लए जगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल लए खलाया। आपे नानक निरगुण धार, सतिनाम आप पढ़ाईआ। आपे

जोती गुर अवतार, अंगद अमरदास सहाईआ। आपे रामदास कर प्यार, सर सरोवर इक्क सुहाईआ। आपे अर्जन खोल्ह किवाड़, शब्द नाद धुन वजाईआ। आपे गुरू ग्रन्थ गुर कर त्यार, गुरमुखां एह समझाईआ। आपे हरि गोबिन्द हो अस्वार, दोए धारा रूप वटाईआ। आपे हरिराय सच्ची सरकार, आपे बाली बुध हरिकृष्न लेखे लाईआ। आपे तेग बहादर हो उज्यार, हिन्द चादर रूप वटाईआ। आपे करता कादर करे कार, अज़मत आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे सुत दुलारा हो उज्यार, गुर गोबिन्द नाउँ प्रगटाईआ। आपे पुरख अकाल पावे सार, दीन दयाल दया कमाईआ। आपे अमृत बख़्शे ठंडी ठार, भर प्याला जाम प्याईआ। आपे खड़ग खण्डा चण्ड प्रचण्ड तेज़ कटार, आपे नैणां हवन कराईआ। आपे पंजां करे इक्क प्यार, इक्क नाल इक्क सीस गुंदाईआ। आपे निउँ निउँ पए चरन दुआर, आपे ढह ढह मंगे सच सरनाईआ। आपे चार चारे जुग करे पार, चार दुलारे सेव कमाईआ। आपे जाणे सरसा धार, सतिगुर आपणा इष्ट विच रखाईआ। आपे भगत भविख्ती रखे कर प्यार, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। आपे जुगत जगत करे विचार, आपे सथ्थर सूलां सेज हंढाईआ। आपे सनेहड़ा देवे मीत मुरार, आपणा ढोला आपे गाईआ। आपे पुरख पुरखोतम पावे सार, परम पुरख बेपरवाहीआ। आपे गोबिन्द हरि हरि करे प्यार, सिँघ रूप सहिज सुखदाईआ। आपे खोल्हे आपणा भेव न्यार, भेव अभेद भेव जणाईआ। सुत दुलारा सच विहार, सच्ची सरकार आप कराईआ। नाता छुटणा सर्ब संसार, पंज तत्त रहिण ना पाईआ। एका जोती दस अवतार, गुरू ग्रन्थ दए वड्याईआ। कलिजुग आवे अन्तिम वार, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। पुरख अबिनाशी लए अवतार, निहकलंका नाउँ धराईआ। गोबिन्द सूरा वड बलकार, गुर चेला वेख वखाईआ। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, तीर कमान हथ्थ उठाईआ। एका चिल्ला वेख निशान, सच निशाना इक्क लगाईआ। वलीआ छलीआ हरि भगवान, उच्च अटलीआ साचे महल्ले डेरा लाईआ। सम्बल नगरी करे मुकाम, जगत क्यामत दए वखाईआ। लेखा जाणे रम्मईआ काहन, कृष्ना बंसरी आप वजाईआ। ईसा मूसा दए पैग़ाम, जबराईल मकाईल असराफील असराईल आप वड्याईआ। पूरन करे आपणा काम, पूरन परमेश्वर बेपरवाहीआ। आप उठाए आपणा सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्यान, नौं दुआरे खोज खुजाईआ। चारे वेदां करे परवान, आप आपणे विच टिकाईआ। चारे खाणी दए ज्ञान, चारे बाणी दए पढ़ाईआ। चारे जुग बण नादान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बाल बाला रूप वटाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणा चोला लए बदलाईआ। एका ढोला गाए दो जहान, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। हँ ब्रह्म करे पछाण, सोहँ लाल मन्त्र इक्क समझाईआ। अल्ला वाहिगुरू राम कृष्न एका रूप श्री भगवान, वाह वा सिफ्ती करन सिफ्त सलाहीआ। अबिनाशी करता इकउँकार आप पकड़ाए

आपणा दामन, दामनगीर सृष्ट सबाईआ। लेखा जाणे हड्ड मास नाड़ी चाम, तत्व तत्त वेख वखाईआ। पंज तत्त काया खेड़ा नगर ग्राम, घर बैठा साचा माहीआ। जन भगतां भर प्याला प्याए जाम, अठ्ठे पहर खुमार इक्क वखाईआ। मनमुख जीव सर्ब पछतान, जुग जुग वेला गया हथ्थ ना आईआ। मानस मानुख होण हैरान, मन मति कूक रही कुरलाईआ। कलिजुग अन्तिम अन्त हरि भगवन्त साचे सन्त लए पछाण, लोकमात वेस वटाईआ। निहकलंक बली बलवान, निरगुण आपणा बल धराईआ। कलिजुग मेटे झूठ दुकान, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। हँकारीआं तोड़े माण अभिमाण, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। गुरसिख वेखे चतर सुजान, जिस जन आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। चार वरनां देवे माण, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। चार वेद सदा जस गान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। आपणी करनी करे आप भगवान, भगवन साची खेल खिलाईआ। सतिजुग देवे साचे दान, जीआ दान झोली पाईआ। आपे वेखे भिन्नड़ी रैण आण, गुरसिखां संग समाईआ। दोए दोए लोचण नैण उठ उठ वेखे मार ध्यान, कवण कूटे हरि प्रगटया पारब्रह्म इक्क रघराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक आप अख्वाईआ। आपे निहकलंक निरँकार, निरगुण आपणा रूप प्रगटांयदा। आपे शब्द डंका अगम्म अपार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड आप सुणांयदा। आपे बार अनेका करे खेल करतार, ख़ालक ख़लक रूप वटांयदा। आपे हरिजन जनका जाए तार, जनक सपुत्री सीता सुरती आप प्रनांयदा। आपे कान्हा कृष्ना नाम बंसरी वजाए सत्त सितार, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण सीस मुक्ट आपणे आप सुहांयदा। आपे काला सूसा कर श्रंगार, चुरासी कलीआं वेख वखांयदा। आपे अश्व शाह हो अस्वार, चार कुंट फेरा पांयदा। आपे नाम नामा बोल जैकार, जै जैकार आप करांयदा। आपे सृष्ट सबाई करे ख्वार, थिर कोए रहिण ना पांयदा। आपे कलिजुग पासा करे हार, हार जित आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे शब्द खण्डा फड़ तेज कटार, लोक परलोक वेख वखांयदा। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड लए विचार, उत्भुज सेत्ज आपे पन्ध मुकांयदा। आपे सतिजुग साचे करे प्यार, सतिजुग आपे दया कमांयदा। आपे लक्ख चुरासी विच्चों गुरसिख साचे लए उभार, दर घर साचे मेल मिलांयदा। आपे आपणे गल पाए फूलन हार, गुरसिख कली कली आप महिकांयदा। आपे तागा सूत देवे डार, नाम सोटी हथ्थ उठांयदा। आपे मालण बणे नर निरँकार, जगत बागीचा वेख वखांयदा। जोत अकालण सेवादार, साची सेवा आप करांयदा। घालण घाली दर दरबार, धुर दी घाल लेखे लांयदा। पाली बणया आप गिरधार, आदि जुगादि खेल करांयदा। कलिजुग सवाली रोवे ज़ारो ज़ार, वेला अन्त सर्ब पछतांयदा। नाता तुटा साक सज्जण सैण मीत मुरार, सगला संग ना कोए निभांयदा। काया कन्ती होई दुख्यार, दरदी दुःख ना कोए वण्डांयदा । आपणा हल्फ़ीआ

दए ब्यान, साचा कर्म ना कोए गणांयदा। वरन बरन भुलाया जीव जहान, चार वरन अठारां बरन धीरज धीर ना कोए वखांयदा। कलिजुग अन्तिम एका एक करनी करन, करता पुरख नाउँ धरांयदा। जिस जन बख्शे आपणी सरन, जन्म मरन फंद कटांयदा। नेत्र खोले हरन फरन, गुर गोबिन्द दरस वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग बेड़ा आप चलांयदा। जुग जुग बेड़ा आप चलाया, सतिगुर साचा वड वड्याईआ। कलिजुग खेवट बण के आया, खेले खेल ख़लक खुदाईआ। आलस निन्दरा तज के आया, दिवस रैण एका रंग समाईआ। बन बिन्दरा गोपी काहन बण के आया, गोकल मथरा रास रचाईआ। साची सखीआं रल के आया, गुरमुख साचे नाल प्रगटाईआ। सोलां हजार कन्या वर के आया, सम्मत सोलां बीस बीसा खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। ईसा मूसा बण के आया, राम रामा आप अख्वांयदा। साचा ताणा तण के आया, ताणा पेटा आपे पांयदा। साचा राजा बण के आया, कलिजुग अन्तिम हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वल छलधारी आप अख्वांयदा। साचा बणया मुहम्मद मलाह, चार यारी मता पकाईआ। अल्ला राणी दए सलाह, सलाहगीर इक्क खुदाईआ। ख़ालक ख़लक वेखे आप खुदा, अजमतो करस्मतो मेहरबान मिहबां नूर जल्वा आप अलाहीआ। उच्ची कूक दए सदा, आपणा करे फ़र्ज अदा, साचे हुजरे आपे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुलाईआ। नानक निरगुण बण के आया, जनणी जन गोद बहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल पिता बण के आया, पिता पूत दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखण आया, निहकलंक बली बलकार। फल रेखा मेटण आया, नाता तोड़ सर्ब संसार। जूठ झूठ माया ममता हउमे हंगता भेख पेखण आया, नेत्र नैण आप उग्घाड़। मुल्ला शेख़ मुसायक पीर कुतब गौंस मेटण आया, चौदां तबकां तोड़ जंजीर। ब्रह्मा विष्न शिव लेखा मंगण आप लगाया, चारे वेदां करे अख़ीर। पंडत पांधे आप पढ़ावन आया, चौदां विद्या कट्टे भीड़। गुरमुख साचे आप सुहावण आया, वड दाता गहर गम्भीर। साचा मार्ग इक्क वखाया, ठांडा घर अमृत ठांडा सीर। गुरमुख विरले मुख चवाया, दूई द्वैती कढ्ढी पीड़। साचे मन्दिर आप बहाया, चोटी चाढ़ इक्क अख़ीर। निर्मल दीपक आप जगाया, मेल मिलावा पीरन पीर। पीत पितम्बर सीस सुहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां कट्टे भीड़। जन भगतां सुरत संभालदा, जुगा जुगन्तर साची कार। सतिजुग त्रेता द्वापर आपणे चरनां हेठ लताड़दा, कलिजुग आई अन्तिम वार। लेखा जाणे अग्नी तत्त हाढ़ दा, त्रैगुण तपे मात अंग्यार। गुरमुख साचे लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढ दरगाह

साची आपे वाड़दा, आप आपणा करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन पैज संवारीअन, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। एका देवे नाम अधारीअन, चरन कँवल सच प्यार। आपे खोल्ह बन्द किवाड़ीअन, नाता तुटे जगत विकार। पंच विकारा आप पछाड़ीअन, आपे मारन हारा मार। आपे गुरमुखां फिरे पिच्छे अगाड़ीअन, एथे ओथे पावे सार। आपे लहिणा चुकाए चरन छुहाई दाढ़ीअन, नारी पुरख पुरष एका धार। बिरध बाल पार उतारीअन, मँझधार ना डोबे कोई विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि पावे साची सार। नर हरि बनवारी नमो सति, नमो देव वास्तक रूप सर्ब समाईआ। एका जोत निरँकारी अस्तिक, विश्व धार इक्क बंधाईआ। सतिजुग साची करे कारी, चार वरनां इक्क आधारी, दर दरबारा इक्क वखाईआ। सोहँ शब्द जैकारी, गुर गुर चेला लावण वाहो दाहीआ। ब्रह्मा विष्न शिव करन निमस्कारी, जगत जगदीश वड्डी वड्याईआ। सृष्ट सबाई होए पनिहारी, कागद कलम ना लिखणहारी, नेत्र रोवे धरत बसुधा, सति सरोवर लेखा चुक्के ना जगत छाहीआ। भगत कबीर वाजां रिहा मारी, सच महल्ले बैठ अटारी, गुरसिखां राह तकाईआ। कलिजुग तेरी आई अन्तिम वारी, सतिगुर पूरा जाए पैज संवारी, गुरमुख साचे पौड़े गया चाढ़ी, उच्चा डण्डा विच ब्रह्मण्डां हरि साचा आप लगाईआ। गुरमुख सुरती रहे ना कुँवारी, मिल्या मेल हरि कन्त भतारी, दरगाह वसे सच अटारी, जोती जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख सज्जण लए फड़, फड़नहारा दिस ना आईआ। गुरमुख फड़या किरपा निध, कर किरपा मेल मिलाया। अन्तिम कारज करे सिद्ध, सिदक सबूरी इक्क वखाया। चरन दास कराए नौं निध, अठारां सिद्ध फिरे हलकाया। आप जणाए आपणी बिध, आपणा मन्त्र आप पढ़ाया। मन मति अन्तर आत्म जाए विध, तीर निराला एका लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे थाउँ थांया। थान थनंतर सुहाया, कर किरपा आप निरँकार। गुरसिख बंक वेख वखाया, लोकमात लै अवतार। आपणे अंक आप लगाया, अंगीकार करे निरँकार। धुर दा साचा संग निभाया, जुग जुग विछड़या मिल्या साचा यार। बिरहों विछोड़ा आप कटाया, अठ्ठे पहर दरस दीदार। निज आत्म साची सेजा डेरा लाया, पुरख अबिनाशी किरपा धार। आपणा गेड़ा आप दवाया, चारों कुंट गेड़नहार। हरिजन खेड़ा आप वसाया, काया मन्दिर खोल्ह किवाड़। धुँधूकार अन्धेर आप मिटाया, दीप जोती बाती कर उज्यार। कमलापाती रूप प्रगटाया, अमृत बूंद स्वांती प्याए ठंडी ठार। रातीं सुत्तया लए उठाया, सुपन सखोपत जाग्रत तुरीआ एका धार। आपणा मेला लए मिलाया, हरिसंगत

६८६
०६

बख्शे चरन प्यार। गुर चेला एका धाम सुहाया, सम्बल नगरी कर विचार। रविदास चम्मयार लेख लिखाया, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर मुनार। जगत बाढी ना किसे बणाया, घाड़न घड़े ना कोई विच संसार। रक्त बूंद मेल मिलाया, सेवा करे सेवादार। गुर गोबिन्द विच वसाया, शब्द गुर वड बलकार। पुरख अकाल आप अख्वाया, जोती जामा भेख अपार। एका सोटी हथ्थ रखाया, शब्द खण्डा नाम कटार। कोटी कोटि जीव जगाया, जगत जुगत कर करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे खेड़े देवे वर, गुरसिख बंधाए आपणे लड़, एका पल्लू हथ्थ वखाया। एका पल्लू साची डोर, नाम नामा हथ्थ फड़ांयदा। लेखा जाणे पंज चोर, तत्व तत्त मेट मिटांयदा। पावे सार अन्धघोर, अज्ञान अन्धेर गवांयदा। जगत विकारा देवे होड़, माया ममता मोह मिटांयदा। आपणे मार्ग देवे तोर, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे मेल मिलाया। गुरमुख मेल मिलाया, कर किरपा आप निरँकार। पूर्ब लहिणा झोली पाया, मानस जन्म कर विचार। नेत्र नैणां दरस दिखाया, जोती जामा भेख अपार। साक सज्जण सैण इक्क अख्वाया, मात पित भाई भैण आप निरँकार। पिता पूत गुरमुख जोड़ जुड़ाया, नाता तोड़ सर्ब संसार। वरन गोती पन्ध मुकाया, ज़ात पात ना कोई विचार। वासना खोटी आप कढाया, एका रंग रंगाए सच्ची सरकार। जोती जोत जगाया, जीवण मरन दए अधार। ओत पोत आप बणाया, विष्नूं वंसी खेल अपार। बंस सरबंसा आप सुहाया, सहँस सहँसा रूप करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची सिख्या कर विचार। सिख्या सिख विचार, शब्द जणांयदा। धुर दरगाही धार, धर्म वखांयदा। नेहकर्मी कर्म विचार, पार करांयदा। वरनी बरनी वसया बाहर, एका रंग समांयदा। हरन फरन खोलू किवाड़, नेत्र नैण दरस करांयदा। साचे घोड़े देवे चाढ़, वागां आपणे हथ्थ रखांयदा। गुरमुख गुरसिख हरिभगत हरिजन आपणे मन्दिर देवे वाड़, हरि मन्दिर आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख बहाए आपणे दर, दर दरवाज़ा आप सुहांयदा।

❊ १२ भाद्रों २०१७ बिक्रमी वधावा सिँघ दे गृह पिण्ड महराज ज़िला बठिंडा ❊

इक इकल्ला गुण निधान, अकल कल हरि अख्वांयदा। इक्क इकल्ला श्री भगवान, निरगुण दीप जोत जगांयदा। इक्क इकल्ला जोद्धा सूरबीर बलवान, अकल कल आपणी खेल खिलांयदा। इक्क इकल्ला सचखण्ड वसे सच मकान, छप्पर छन्न ना कोई छुहांयदा। इक्क इकल्ला वड मेहरवान, आपणी दया आप कमांयदा। इक्क इकल्ला नौजवान, रूप रंग रेख ना

कोई वखांयदा। इक्क इकल्ला शाहो भूप बण राज राजान, दर घर साचे सोभा पांयदा। इक्क इकल्ला आप वखाए सच निशान, दो जहानां आप झुलांयदा। इक्क इकल्ला वड दानी दान, देवणहारा इक्क अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगांयदा। इक्क इकल्ला श्री भगवान, भेव अभेद आप छुपांयदा। इक्क इकल्ला शाह सुल्तान, तख्त निवासी खेल खिलांयदा। इक्क इकल्ला राज राजान, सीस आपणे ताज टिकांयदा। इक्क इकल्ला जोती नूर जोत महान, अनुभव प्रकाश समांयदा। इक्क इकल्ला देवणहारा धुर फ़रमाण, शब्द अगम्मी नाद वजांयदा। इक्क इकल्ला दर दरवेश बणे दरबान, दर घर साचे आपणा हुक्म आप अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप प्रगटांयदा। इक्क इकल्ला शाहो भूप, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। इक्क इकल्ला सति सरूप, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। इक्क इकल्ला महिमा अनूप, ना मरे ना जाईआ। एका वसे चारे कूट, दहि दिशा फेरी पाईआ। एका आप आपणे उप्पर जाए तुट्ठ, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची धाम सुहाईआ। एका एक शाह सुल्ताना, दरगाह साची धाम सुहांयदा। एका एक जीआ दाना, जीवन जुगत आप बणांयदा।

एका एक पीणा खाणा, अमृत एका धार वहांयदा। एका एक शब्द बबाणा, पुरख अकाल आप उडांयदा। एका एक वेखे मार ध्याना, निरगुण आपणा नेत्र आप खुल्हांयदा। एका एक चतर सुघड़ स्याणा, मन मति बुध ना कोई धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा खेल खिलांयदा। इक्क इकल्ला खेल खिलाए, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। सचखण्ड दुआरे सोभा पाए, दरगाह साची जोत जगाईआ। थिर घर साचा आप खुल्हाए, दर दरवाज़ा बेपरवाहीआ। आपणा काजा आप रचाए, साचा सगन आप मनाईआ। आपणा ताजा आप सुहाए, तख्त नाम वड्डी वडियाईआ। आपणा राजा आप अख्वाए, रईयत आपणा रूप वटाईआ। आपणा ताजा आप दौड़ाए, शाह अस्वार शहनशाहीआ। आपणा रागा आप अल्हाए, तुरीआ राग आप सुणाईआ। आपणी रबाबा आप वजाए, सुर ताल ना कोए रखाईआ। आपणा रहिबाबा आप अख्वाए, महबूब नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, करे कराए हरि निराकारा, निरगुण निरवैर आपणा बल धराईआ। आपणा बल आपे रक्ख, आपणा वेस वटांयदा। निरगुण अंदर निरगुण हो प्रतक्ख, निरगुण दीवा बाती कमलापाती आप जगांयदा। निरगुण निरगुण विच्चों होए वख, आपणा आप प्रगटांयदा। निरगुण निरगुण होए सर्बकल समरथ, आपणी कथा अकथ आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार आप बंधांयदा। इक्क इकल्ला एका धार, एकँकारा आप चलाईआ। अबिनाशी करता खेल अपार, अलक्ख

अगोचर भेव कोए ना पाईआ। श्री भगवान हो उज्यार, आदि निरँजण डगमगाईआ। सो पुरख निरँजण वसणहारा धाम न्यार, निहचल धाम अटल आप सुहाईआ। हरि पुरख निरँजण आदि जुगादी ख़बरदार, जन्म मरन विच ना आईआ। श्री भगवान लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दी बाण आपणे हथ्थ रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ मीत मुरार, मेल मिलावा सहिज सुखदाईआ। करे खेल सच्ची सरकार, शाह पातशाह बेपरवाह आप अख्वाईआ। निरगुण बणे निरगुण मलाह, निरगुण बेड़ा आप चलाईआ। निरगुण देवे सच्ची सलाह, सिफ्त सलाह आपणा नाउँ धराईआ। बोध अगाधा शब्द सुणा, घर मन्दिर नाद वजाईआ। सचखण्ड दुआरा वेख वखा, वेखणहारा दिस ना आईआ। तख्त निवासी सच्चा पातशाह, हुक्मी हुक्म आप चलाईआ। आपणी वस्त आपे झोली पा, आपणी हथ्थीं भिख्या मंग मंगाईआ। आप आपणी रच्छया करे सभनी थाँ, सिर आपणा हथ्थ आप टिकाईआ। अजूनी रहित पुरख अकाल दीन दयाल अनुभव प्रकाश आप करा, मूर्त अकाल वड्डी वड्याईआ। थिर घर साचा मन्दिर दए सुहा, धुर दरबार आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा एका खोल्ह, शब्द अनादी आपे बोल, आपणा नाम आप जणाईआ। इक्क इकल्ला एका नाउँ, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। इक्क महल्ला इक्क गराउँ, सच सिँघासण सोभा पांयदा। एका पिता एका माउँ, एका बालक रूप वटांयदा। एका रक्खे ठंडी छाँ, समरथ पुरख इक्क अख्वांयदा। एका करे सच न्याउँ, अदल आदल आप हो जांयदा। एका हँस बणाए काउँ, काग हँस आप उडांयदा। एका पकड़नहारा बाहों, इक्क इकल्ला आपणी सेव आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी खेल अपार, करे कराए करनेहार, आपणी कल आप धरांयदा। अकल कलधारा हरि निरँकारा, महिमा कथ कथी ना जाईआ। निरगुण नरायण निर्भय हो उज्यारा, दर घर साचे जोती जोत करी रुशनाईआ। इक्क वसाए ठांडा दरबारा, अग्नी तत्त ना कोए तपाईआ। सूरज चन्न ना कोए उज्यारा, मंडल रास ना कोए वखाईआ। गगन मंडल ना कोए अधारा, पुरीआं लोआं ना बन्धन पाईआ। ज़िमी अस्मान ना कोई पाड़ा, धरत धवल ना कोए वखाईआ। जल बिम्ब ना कोए धारा, सिन्ध सागर ना फेरा पाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए पसारा, त्रैगुण माया वण्डन ना कोए वण्डाईआ। ब्रह्मा वेद ना कोए लिखारा, चारे बाणी ना कोए सुणाईआ। चारे खाणी ना कोए वणजारा, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड नौं खण्ड वण्ड ना कोए वखाईआ। लक्ख चुरासी ना कोए पसारा, काया खेत ना कोए वखाईआ। अठसठ सरोवर ना कोए ठंडी ठारा, तीर्थ तट ना कोए उपाईआ। मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआला ना कोए गुरूदुआरा, गुर पीर अवतार साध सन्त कोए ना नज़री आईआ। आदि आदि पुरख अगम्म अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, आप आपणा रूप आप वखाईआ। सचखण्ड

सुहाए इक्क मनारा, निहचल बैठा आसण लाईआ । धाम अवल्लड़ा कर पसारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणा नाउँ आप उपजाईआ। आपणा नाउँ रक्ख निरँकार, निरगुण आपणा बल धराया। आपे वणज आप वणजार, आपे आपणा हट्ट खुल्हाया। आपे वसे रक्खे हर थाँ, थिर घर साचे आप वरताया । आपे जोती जाता करे प्यार, जागरत जोत कर रुशनाया। आपे पुरख बिधाता बणे नार, नर नरायण कन्त आप अख्वाया। आपे दोहां विचोला सिरजणहार, रूप रंग ना कोए प्रगटाया। आपे आपणा चोला जाणे गिरवर गिरधार, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्दिर एका घर, एका वसे साचा हरि, दूसर संग ना कोए रखाया। ना कोई दूसरा संग, मीत सज्जण ना कोए अख्वाईआ। पुरख अबिनाशी बैठा सच पलँघ, नूर नुरानी सेज हंढाईआ। इक्क वजाए नाम मृदंग, नाम निधाना इक्क सितार हिलाईआ। आपणे मन्दिर आपे लँघ, आपे वेखे आपणा पर्दा लाहीआ। आपणी भिच्छया आपे मंग, आपे झोली रिहा भराईआ। आपे भुक्ख आपे नंग, शाह पातशाह आप हो जाईआ। आपे सूरा सरबंग, आपे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आपे अश्व घोड़े कसे तंग, आपे चारे कुंट रिहा दौड़ाईआ। आपे आपणा करे खण्ड खण्ड, आपे जोड़ी जोड़ा जोड़ जुड़ाईआ। आपे मेटे अन्धेरा अन्ध, सति प्रकाश आप कराईआ। आपे गाए सुहागी छन्द, आपणी

९९३ महिमा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला सच महल्ला, दर घर साचा आप ९९३

०९ सुहाईआ। सच महल्ल सुहञ्जणा, पुरख अबिनाशी आप सुहांयदा। दीप जगाए इक्क निरँजणा, नर नरायण वेख वखांयदा। ०९

दाता दानी दर्द दुःख भय भंजना, निरभउ आपणा खेल करांयदा। सचखण्ड निवासी साचा सज्जणा, घर साचे सोभा पांयदा। ना घड़या ना भज्जणा, घड़न भनणहार आप अख्वांयदा। आपणा मन्दिर आपे तजणा, आपणा रूप आप धरांयदा। आप चलाए आपणा सच जहाजना, साची सेवा आप कमांयदा। आपे होए ग़रीब निवाजना, आपे निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आपे रक्खणहारा लाजना, एका पर्दा हथ्थ उठांयदा। आपे दो जहानां मारे वाजना, बोध अगाध शब्द सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला सच्चा शहनशाह, आपणा बणे आप मलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। निरगुण निरगुण बण मलाह, घर मन्दिर सोभा पाईआ। निरगुण अंदर निरगुण आसण ला, निरगुण वेखे सहिज सुभाईआ। निरगुण पिता निरगुण माँ, निरगुण पूत सपूता बाल एका शब्द जाईआ। निरगुण धुर फ़रमाणा दए सुणा, साचे बाल सच वखाईआ। लोआं पुरीआं रचन रचा, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी वण्ड वण्डाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव तेरी झोली दित्ता पा, विश्व तेरा रूप समाईआ। वास्तक एका रंग दए रंगा, रंगणहारा बेपरवाहीआ। आपणा अंग आप कटा, निरगुण वण्ड एका दए

वखाईआ। विष्नूं विष्नूं नाउँ धरा, विष्नूं महिमा कथी ना जाईआ। अमृत प्याला साचा जाम प्या, घर कँवला कँवल खुल्हाईआ। ब्रह्मा वेता नाउँ धरा, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। एका अक्खर आप सुणा, निज अक्खर दए वखाईआ। इक्क इकल्ला देवे सच सलाह, धूंआँधार सुन्न अगम्म करता पुरख आपे जन्म आपणा रूप लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे विष्न ब्रह्मा कर प्यार, आपे शंकर अंदरों कढ्ढे बाहर, रूप अनूप आप दरसाईआ। आपे शब्द आप वरतारा, आपे झोली हरि भरांयदा। आपे विष्नूं कर उज्यारा, जोती जोत जगांयदा। आपे ब्रह्मा कर पसारा, पारब्रह्म वेख वखांयदा। आपे शंकर बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मस्तक टिक्का एका लांयदा। आपे तत्तां वसे बाहरा, दरगाह साची धाम सुहांयदा। आपे होए सच भण्डारा, साची वस्त विष्नूं झोली पांयदा। आपे ब्रह्मा बणाए सुत दुलारा, साचा हुक्मी हुक्म सुणांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यारा, घड़ भाण्डे वेख वखांयदा। आपे शंकर दए हुलारा, हथ्थ त्रशूल वखांयदा। बाशक तशका गल शृंगारा, आप आपणा मेल मिलांयदा। आपे शांगो पांग लए हुलारा, साची सेज आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आपणा बन्धन आपे पांयदा। आपणा बन्धन आपे पा, सो पुरख निरँजण वेख वखाईआ। हरि पुरख निरँजण जोत जगा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। एकँकारा बण मलाह, आपणा बेड़ा आप चलाईआ। आदि निरँजण दीपक जगा, साचे मार्ग करे रुशनाईआ। श्री भगवान सगला संग रखा, सगला साथी फिरे वाहो दाहीआ। पुरख अबिनाशी सेवक सेव रिहा कमा, सेवक सेवा सच्ची बण आईआ। पारब्रह्म आपणी वण्ड वण्डा, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म आपणा रूप धराईआ। एका वस्त आपणे हथ्थ लगा, त्रैगुण माया खेल खिला, तिन्ना मेला सहिज सुभा, विचोला बणे बेपरवाहीआ। इक्क इकल्ला खेल खिला, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डा घाड़न ल्या घड़ा, पंज तत्त मेला सहिज सुभाईआ। नौं दुआरे आप खुल्हा, जगत वासना विच टिकाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार रला, तत्त्व तत्त इक्क समझाईआ। आसा तृष्ना झोली पा, माया ममता करी कुड़माईआ। पंज दस मेला एका थाँ, पंजी वेखे थाउँ थाँईआ। निरगुण आपणा सच आप छुपा, आपे बैठा मुख छुपाईआ। सुखमन नाड़ी टेढा बंक बणा, डूँग्घी गार आप रखाईआ। ईड़ा पिंगला अग्गे रखा, आपणा दरवाज़ा बन्द कराईआ। सर सरोवर आत्म अमृत जल भरा, उलटी नाभी कँवल भवाईआ। शब्द अनाद धुन वज्जे सहिज सभा, दिवस रैण एका राग सुणाईआ। बजर कपाटी पर्दा लाह, बन्द किवाड़ा आप खुल्हाईआ। दस्म दुआरी सच वखा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। निर्मल जोती जोत डगमगा, एका नूर करे रुशनाईआ। हरि हरि रूप आप प्रगटा, घर घर विच रिहा समाईआ। रवि ससि रहे शर्मा, नेत्र लोचण नैण ना सके कोई उठाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, घट घट

६६५ ०६

आपणी जोत रिहा जगाईआ। जोत निरँजण डगमगा, दिवस रैण करे रुशनाईआ। साचा मन्दिर आप सुहा, हरि मन्दिर देवे माण वड्याईआ। धूंआँधार परे हटा, सुन्न अगम्म पन्ध मुकाईआ। सचखण्ड दुआरे जोत जगा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। अलक्ख अलक्खणा आपणी अलक्ख दए सुणा, अलक्ख अगोचर आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सति सतिवादी आपणा थान रिहा सुहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल न्यारा, आदि जुगादी कर पसारा, ब्रह्मा विष्न शिव दए भण्डारा, आपणी वस्त आप वरताईआ। साची वस्त हरि अनमोल, आपणे हथ्थ रखांयदा। निरगुण निरवैर तोले तोल, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। लक्ख चुरासी लए वरोल, काया खेड़ा वेख वखांयदा। लेखा जाणे धरत धौल, धवल धरनी आपणे लेखे पांयदा। अमृत वेखे भरया कौल, कँवला आपणा मुख खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। इक्क इकल्ला खेल अपारा, हरि निरँकारा निरगुण निराधार आप चलाईआ। लक्ख चुरासी कर पसारा, वेखणहारा घट घट बैठा आसण लाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर प्यारा, सेवादार दिवस रैण सेव कमाईआ। काया मन्दिर बंक दुआरा अमृत ठांडा ठारा सच प्याला इक्क वखाईआ। शब्द अनादी नाद धुन्कारा, अनहद कूके बोले बोल सुणाए इक्क जैकारा, जै जैकार आप कराईआ। खेल खेल अगम्म अपारा, निरगुण सरगुण लए अवतारा, लोकमात करे कुड़माईआ। ब्रह्म पारब्रह्म मेला नारी कन्त भतारा, गुर सतिगुर आपणा रूप वटाईआ। साधां देवे इक्क अधारा, सन्तन एका बूझ बुझाईआ। भगतन वखाए इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। गुरमुखां बख्शे चरन प्यारा, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। सिख सिख्या गुर गुर धारा, धारन गुर आप बंधाईआ। एका शब्द गुर अवतारा, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, जुगा जुगन्तर लए अवतारा, लोकमात होए उज्यारा, सृष्ट सबाई पाए सारा, नौं नौं सत्त सत्त वेख वखाईआ। शब्द गुर वड बलवाना, सति सति आप उपाया। सो पुरख निरँजण हरि मेहरवाना, साचा हुक्मी हुक्म सुणाया। हरि पुरख निरँजण धुर फ़रमाणा, धुर दी दात वण्ड वण्डाया। एकँकारा गाए तराना, आपणा नाम आप सुणाया। आदि निरँजण करे खेल महाना, घर घर करे रुशनाया। सर्ब जीआं दाना बीना, बीना दाना भेव ना राया। अबिनाशी करता लेखा पावे त्रैगुण तीना, तीना मार्ग इक्क वखाया। पारब्रह्म लेखा जाणे मरना जीणा, जगत जुगत आप बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द इक्क वरतार, एका नाम वणज वपार, सृष्ट सबाई वेख वखाया। सृष्ट सबाई एका वसया, पारब्रह्म गुर करतार। जुगा जुगन्तर फिरे नस्सया, निरगुण सरगुण लए अवतार। मिटे रैण अन्धेरी रुस्सया, साचा चन्न कर उज्यार। जन भगतां मार्ग एका दस्सया,

दूई द्वैती कर ख्वार। आत्म रस माणे रसीआ, रस आत्म कर विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जाणे आपणी कार। जुग जुग कार कमांयदा, इक्क इकल्ला एकँकार। सचखण्ड साची वण्ड वण्डांयदा, आप आपणी कर विचार। विष्नूं विश्व लेखा आप समझांयदा, सृष्ट सबाई भरे भण्डार। ब्रह्मे ब्रह्म रूप प्रगटांयदा, लक्ख चुरासी कर पसार। शंकर अन्तिम मेट मिटांयदा, सेवा करे अपार अपार। चारे वेद मुख सलांहयदा, देवे नाम धन निरँकार। चारे जुग वण्ड वण्डांयदा, चारे खाणी कर प्यार। चारे बाणी धार बंधांयदा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी कर उज्यार। सतिजुग साचा नाम धरांयदा, धरनी धरत धवल दए सहार। भगत भगवन्त मेल मिलांयदा, नित नवित खेल अपार। त्रेता आपणा बन्धन पांयदा, त्रै त्रै लेखा करे ख्वार। तुरीआ वेस आप करांयदा, राम रामा कन्त भतार। हँकारी गढ़ आप तुड़ांयदा, दुष्ट रावन देवे मार। द्वापर आपणा वेस वटांयदा, कान्हा कृष्ना मीत मुरार। नाम बंसरी इक्क वजांयदा, सखीआं गाए मंगलाचार। मुकंद मनोहर लख़मी नरायण आप अख्वांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग करे खेल अपार। इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा, चार वेद भेव ना राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा, कलिजुग नूर करे रुशनाईआ। जलवा आपणा आप प्रगटांयदा, बेताब साचा माहीआ। आबे हयात हथ्थ रखांयदा, एका फड़ी नाम सुराहीआ। भर प्याला जाम प्यांअदा, सच सरूर इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग एका कार कराईआ। इक्क इकल्ला परवरदिगार, बेऐब आपणा नाउँ धरांयदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, सालस आपणा पर्दा आपे लांहयदा। लोकमात पावे सार, कायनात वेख वखांयदा। आलम उल्मा लए विचार, जगत तुलबा आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एकँकारा, करे खेल विच संसारा, सतिगुर आपणा रूप वटांयदा। आपे सतिगुर साचा दीन, दयानिध आप अख्वांयदा। आपे जल आपे मीन, आपे थल विच तड़फांयदा। एका लेखा जाणे त्रै तीन, त्रैगुण आपणी वण्ड वण्डांयदा। आपे होए नेत्रहीण, नैण मूंद आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर साची कार, करता पुरख आप करांयदा। करता पुरख करने योग, कादर कुदरत वेख वखाईआ। लेखा जाणे धुर संजोग, धुर दा मेल सहिज सबाईआ। जुग जुग कट्टे माया ममता हउमे हंगता रोग, साची सिख्या इक्क पढ़ाईआ। नाता तोड़े चौदां लोक, चौदां तबकां वेख वखाईआ। इक्क इकल्ला इक्क सुणाए सच सलोक, ढोला गाए बेपरवाहीआ। प्रभ का भाणा सके कोई ना रोक, सतिजुग त्रेता द्वापर गए मुख शर्माईआ। लक्ख चुरासी देवे झोक, जोती शब्दी अग्नी एका लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर आपणा वेस वटाईआ। गुर सतिगुर मीत

हरि करतारा, कादर कुदरत विच समांयदा। राम रूप हो उज्यारा, एका डंका नाम वजांयदा। नील बस्त्र कर श्रंगारा, बन बनवारी फेरा पांयदा। हक हकीकत खोल्ह किवाड़ा, लाशरीक दर सुहांयदा। एका जोती जोत उज्यारा, पंज तत्त काया चोली आप हंढांयदा। नानक निरवैर पावे सारा, गोबिन्द साचा मेल मिलांयदा। करे खेल अगम्म अपारा, पुरख अकाल वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगां जुगन्तर जुग पैंडा आप मुकांयदा। सतिजुग त्रेता पन्ध चुकाया, द्वापर लोकमात रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे थाउँ थाया, थान थनंतर खोज खुजाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण आपणी महिमा आपे लाया, गुर पीर अवतार साध सन्त रहे जस गाईआ। बेअन्त बेअन्त आप अखवाया, इक्क इकल्ला सच्चा शहनशाहीआ, जलां थलां डेरा लाया, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी फोल फुलाया, काया मन्दिर झूठा जूठा डेरा ढाहीआ। मन पंखी दहि दिशां उडदा फड़ वखाया, नाम डोरी हथ्थ रखाईआ। मति मतवाली नैण शर्माया, नेत्र नीर रही वहाईआ। बुधी भेव ना हरि हरि पाया, हरि हरि रूप दिस ना आईआ। घर घर दर दर मन्दिर बह बह सभ ने गाया, रसना जिह्वा जगत हिलाईआ। अंदर वड़ दरस किसे ना पाया, कलिजुग भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जूठा झूठा मोह वधाया, नाता जुड़या मात पित भैणा भाईआ। साक सज्जण सैण संग रखाया, नारी कन्त सेज सुहाईआ। पीआ प्रीतम परम पुरख दयाला दीनां नाथा दर्द दुःख भय भंजन दिस किसे ना आया, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। नाम नेत्र ज्ञान अंजन किसे ना पाया, कलिजुग कजल धार वेखे काली शाहीआ। मस्तक चन्दन पंडत पांधे रहे लगाया, जोत लिलाट ना कोई जगाईआ। बारा अक्खर रहे सुणाया, वेद व्यासा रूप वटाईआ। अठसठ तीर्थ रहे नुहाया, हरि का पौड़ा ना कोई चढ़ाईआ। गुर दर मन्दिर फेरा पाया, हरि मन्दिर पर्दा कोई ना लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, कलिजुग करे अन्तिम वारा, निरगुण आपणा नाउँ प्रगटाईआ। कलिजुग काली वेखी धार, पुरख अबिनाशी जोत जगांयदा। रवि ससि होए शर्मसार, जूठा झूठा नाता तोड़ तुड़ांयदा। सच सुच करे वरतार, चार वरनां एका धाम बहांयदा। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोई विचार, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। एका गुर इक्क अवतार, एका विद्या आप पढ़ांयदा। चौदां विद्या मारे मार, चौदां तबकां फोल फुलांयदा। चौदां लोकां पावे सार, चौदस चन्द आप चढ़ांयदा। सदी चौदवीं आए हार, ईद दीद आप मनांयदा। बईद परवरदिगार, साचा सजदा सीस झुकांयदा। जगत मसल्ला धरत धवल करे विचार, एका कूज़ा हथ्थ उठांयदा। रोज़ा बांग पावे सार, निमाज़ निमाज़ी आप हो जांयदा। मक्के काअबे हज्ज रिहा गुजार, एका एक कूक बांग सुणांयदा। सच महिराबे साचा यार, मुख नकाब आप उठांयदा। आपणा

६६८ ६६८

०६ ०६

पर्दा दए उतार, आलम उलमा वेख वखांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, साची अल्फ़ इक्क सिखांयदा। आरफ जगत जायण हार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला करे खेल न्यार, खेल न्यारा हरि करांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। नौं खण्ड पृथ्मी पावे सार, सत्तां दीपां आप जगांयदा। सृष्ट सबाई दए हुलार, मन मति आप दुरकांयदा। दर दवारिउँ कढ्ढे बाहर, कलिजुग कूड़ कुड़यारा सर्ब कुरलांयदा। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर सर्ब तड़फांयदा। जीव जंत पासा गए हार, साध सन्त उठ उठ राह तकांयदा। कौण कूट हरि साचा लए अवतार, गोबिन्द लेखा इक्क समझांयदा। लिख्या लेख अपर अपार, वेद व्यासा मेल मिलांयदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा कर विचार, उच्चे टिले पर्बत जोत जगांयदा। आदि शक्ति नूर उज्यार, हरन फरन आप समांयदा। सच समग्री इक्क दातार, जोत इकग्री डगमगांयदा। त्रैगुण वसया सदा बाहर, जूनी रहित आपणा नाउँ धरांयदा। पुरख अकाल सच्ची सरकार, साची नगरी आप वड्यांअदा। निर्मल दीआ धर निरँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रूप प्रगटांयदा। जुग जुग खेल अवल्लड़ा, सति पुरख निरँजण आप कराईआ। जन भगतां फड़ाए नाम पल्लड़ा, जगत नाता दए तुड़ाईआ। एका मार्ग दिसे सुखल्लड़ा, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। पंच विकार ना करे हलड़ा, हौला भार आप रखाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म हरि निरगुण सरगुण रलड़ा, ईश जीव करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नूर करे रुशनाईआ। नूर उजाला हरि गोपाला, हरि गोबिन्द वेस वटाया। वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, दीन दयाला दयानिध नाम धराया। संग रखाए काल महांकाला, अवल्लड़ी चाला लोकमात वेख वखाया। गुरमुख वेखे साचे लाला, रंग चढ़ाए इक्क गुलाला, रंग रंगीला दया कमाया। लेखा चुक्के शाह कंगाला, बख्शणहारा नाम सच्चा धन माला, धन धनाड आप वरताया। गुरमुखां फल लगाए काया डाला, भगती मेवा नाम खवाया। सन्त साजन साची घाल रहे घाला, दिवस रैण हरि हरि नाउँ रसना जिह्वा गाया। लक्ख चुरासी तोड़ जंजाला, राए धर्म फंद रहिण ना पाया। एका गल पाए सोहँ साची माला, हँ ब्रह्म मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, इक्क इकल्ला वेस वटाया। इक्क इकल्ला निहकलंक, निरगुण निरवैर आपणी खेल खिलांयदा। इक्क इकल्ला वजाए डंक, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां सृष्ट सबाई आप सुणांयदा। प्रगट होया वासी पुरी घनक, बार अनक आपणी कल वरतांयदा। गुरमुख लेखे लाए जिउँ जन जनक, जन जननी वेख वखांयदा। नौं खण्ड पृथ्मी कढ्ढे शंक, शंकर ब्रह्मा विष्न आपणी सेवा लांयदा। इक्क सुहाए दुआर बंक, बंक दुआरी वेख वखांयदा।

लेखा चुक्के कामनी कनक, पुरख अबिनाशी आप चुकांयदा। साचा उठाए एका धुनश, धनख आपणे हथ्थ रखांयदा। पावे सार मानस मानुख, मात कुक्ख फोल फुलांयदा। लेखा जाणे उलटा रुख, दस दस मास अग्न तपांयदा। कलिजुग वेला अन्तिम गया ढुक, हरि का भेव कोए ना पांयदा। कलिजुग बूटा जाणा सुक्क, हरया सिंच ना कोए करांयदा। पुरख अबिनाशी सति सरूपा शाहो भूपा अनरंग रूपा एका रिहा बुक्क, चारों कुंट आवाज़ सुणांयदा। अंदर वड़ बहे ना लुक, पर्बत टिल्ले फोल फुलांयदा। विष्नूं भण्डारा रिहा मुक्क, राज़क रिजक ना कोए पुचांयदा। ब्रह्मा मोड़नहारा मुख, ब्रह्म पारब्रह्म झोली पांयदा। शंकर सुखना रिहा सुख, कौण वेला हरि जू मेल मिलांयदा। राए धर्म निउँ निउँ निमस्कार करे झुक, एका भिच्छया मंग मंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग अन्तिम पार कराउँणा, पान्धी आपणा पन्ध मुकांयदा। नौं नौं चार लेखा रहिण ना पाउँणा, नौं नौं आपणा मूल वखांयदा। दहि दिश धार इक्क बंधाउणा, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा इक्क वडियाउँणा, थिर घर साचे मेल मिलांयदा। सोया सुत आप उठाउणा, चौथे जुग वेख वखांयदा। धरत मात दी गोद बहाउणा, सिर आपणा हथ्थ धरांयदा। पूत सपूता इक्क उपजाउणा, सतिजुग नाउँ रखांयदा। साधा सन्तां संग निभाउणा, मनमुखां मेट मिटांयदा। चार वरनां एका रंग चढ़ाउँणा, ऊँच नीच एका धाम बहांयदा। अमृत एका जाम प्याउँणा, दुरमति मैल आप धवांयदा। सोहँ सो साचा जाप जपाउणा, अजपा जाप आप वखांयदा। तीनो ताप मगरों लौहणा, त्रैगण अग्ग ना कोए तपांयदा। काग हँस आप बणाउँणा, सोहँ हँसा साची चोग चुगांयदा। आत्म जोती चराग आप जगाउणा, तेल बाती ना कोए रखांयदा। शब्द नाद धुन आप उपजाउणा, घर अनहद राग सुणांयदा। सर अमृत आत्म आप नहाउँणा, काया मन्दिर सोभा पांयदा। दर घर साचे मेल मिलाउणा, आप आपणी गोद सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आप जगांयदा। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, चारों कुंट अन्धेरा छाया। सति सन्तोखी बुझिआ चिराग, धीरज जत तेल कोए ना पाया। मनमुख जीव होए काग, जूठ झूठ विष्टा मुख रखाया। बिन सतिगुर पूरे कोए ना पकड़े वाग, वेद कतेब रहे सुणाया। सच सरनाई एका लाग, पुरख अकाल इक्क मनाया। जन्म जन्म दा धोवे दाग, जो जन सरनाई आया। लक्ख चुरासी विच्चों ल्ए काढ, राए धर्म ना दए सजाया। साची गोद लडाए लाड, जिउँ मात पिता गोद पूत सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेखण आया। वेखणहारा गुर गोबिन्द, कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा। गुरमुखां मेटे सगली चिन्द, चिंता चिखा ना कोए तपांयदा। आप उपजाए

आपणी बिन्द, आप आपणे गले लगांयदा। अमृत देवे सागर सिन्ध, अतोट अतुट आप रखांयदा। गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, गुर सागर आप हो जांयदा। मनमुख लगाए आपणी निन्द, निन्दक मुख भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग बेड़ा पार करांयदा। जुग जुग बेड़ा पार उतारनराहा, त्रैगुण विच कदे ना आया। इक्क इकल्ला शाह सिक्दारा, साचे तख्त आप सुहाया। सीस रक्ख जगदीस दस्तारा, तख्त ताज दए वड्याआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, लोकमात खेल खलाया। कूड़ा मेटे धुँधूकारा, धरू प्रहलाद आप उठाया। कलिजुग करे खेल अपारा, ग़रीब निमाणे गले लगाया। एका बख्शे चरन प्यारा, चातृक तृखा दए बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि नरायण बन बनवारी, भगत भगवन्त सन्त कन्त रिहा तारी, गुरमुखां पैज संवारी, गुरमुख आपणे लेखे लाईआ। गुरसिख लेखे लावणा, पूर्ब कर्मा आप विचार। जुग जुग विछड़े मेल मिलावणा, जगत विछोड़ा कर ख्वार। साचे घोड़े आप चढ़ावणा, शब्दी घोड़ा कर त्यार। जोती जोड़े मेल मिलावणा, सुरत सवाणी ना होए ख्वार। शब्द हाणी गले लगावणा, दिवस रैण करे प्यार। ठंडा पाणी आप प्यावणा, अमृत आत्म इक्क उछाल। धुर दी बाणी आप सुणावणा, लेखा लिख्या पढ़े ना विच संसार। पुरख अबिनाशी दरस वखावणा, स्वच्छ सरूपी हो त्यार। घर घर सोए आप जगावना, आलस निन्दरा दए उतार। आत्म सुहावी सेज सुहावणा, फूलन बरखा करे आप करतार। सच सुगंधी आप महिकावणा, भवरा गूंजे आपणी धार। परमानंदी नंद समावना, नंद चन्द सुत दुलार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए उभार। भगत अधारीअन सहिज सुख प्यार, पीआ प्रीतम वेख वखांयदा। पैज संवारीअन विच संसार, नित नवित सेव कमांयदा। शब्द अधारीअन नाद धुन्कार, धुन आत्मक आप अलांयदा। एका जोग जगत विचारीअन, देवणहारा दाद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाए साचे घर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विश्व रूप सति सरूप, तख्त निवासी शाहो भूप, इक्क इकल्ला सच महल्ला, धाम न्यारा कर पसारा एकँकारा मूर्त अकाल दीन दयाल जल्वा जलाल नूर अलाही जगत मलाही शब्द सलाही दीना नाथ, सगला साथ घट घट वास, पुरख अबिनाशी पृथ्मी आकाश मंडल रास, हरिजन साचे सदा वसे पास, गुरसिख तेरा संग आप निभाईआ। ऐथे उथे रक्खे संग, दो जहाना वेख वखांयदा। जगत जुगत जुग गए केख लँघ, माया ममता आसा तृष्ना हउमे हंगता भुखा नंगता आपणी झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त साजन साचे मीत, आदि जुगादि रक्खे अतीत, काया अन्तर आत्म ठांडा सीत, सीतल धार

नर निरँकार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी आप चलाईआ। साची धारा हरि करतारा, अगम्म अपारा हो उज्यारा, लोकमात चलांयदा। विष्न भण्डारा हरि हरि दातारा, शंकर सँघारा देवत पुकारा, गण गंधर्ब धुन्कारा, नौं खण्ड हुलारा दहि दिशा पसारा, चार कूटां वेख वखांयदा। वरभण्ड सिक्दारा ब्रह्मण्ड पसारा, जेरज अंड अधारा, उत्भुज सेत्ज मेल मिलांयदा। राउ रंक हँकारा, जीव जंत विभचारा, साध सन्त ख्वारा, भगत भगवन्त मेल ना कोए मिलांयदा। दहि दिशा धूंआँधारा, धरनी धरत धवल करे पुकारा, खुलड़े केस रोवे ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। पुरख अबिनाशी लै अवतारा, करे खेल अगम्म अपारा, शब्द अगम्मी बोल जैकारा, गुरमुख साचे पावे सारा, दरस वखाए गुप्त ज़ाहरा, सृष्ट सबाई दिस ना आंयदा। चरन कँवल उप्पर धवल वखाए सच्चा दरबारा, आवण जावण नाता छुट्टे सर्ब संसारा, जूनी जून ना कोए भवांयदा। आप सुहाए बंक दुआरा, दर घर आए सेवादारा, सेवक चाकर पाकी पाक ख़ाकी ख़ाक आप अख्वांयदा। राम कृष्न होए उज्यार, ईसा मूसा संग मुहम्मद लाए नाअरा, नानक गोबिन्द बन्ने धारा, कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निहकलंक आपणा डंक आप वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जाता पुरख बिधाता, मेटे रैण अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द आप चढ़ांयदा। सतिजुग साचा चढ़े चन्द, बीस बीसा राह तकाईआ। गुरसिखां खुशी कराए बन्द बन्द, सृष्ट सबाई अग्नी तत्त तपाईआ। लेखा चुक्के बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। पुरख अकाल करे प्रितपाल इक्क सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। चरन बहाए काल महांकाल, दो जहाना बणे दयाल, दीनां नाथ दीनन होए आप सहाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, सर सरोवर ना कोई मारे ठाठ, इक्क जैकारा हरि निरँकारा, आपणा नाउँ वड्याईआ। वरना बरना वसे बाहरा, मार्ग दस्से इक्क संसारा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका मार्ग दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निराकार सरगुण साकार, दोहां विचोला बण करतार, कुदरत कादर कादर कुदरत दीन दुनी दोवें एका रंग वखाईआ।

✲ १३ भाद्रों २०१७ बिक्रमी भाग सिँघ दे गृह पिण्ड कबड़ीखाना ज़िला बठिंडा ✲

सो पुरख निरँजण अनुभव प्रकाश, आदि आदि वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण खेल तमाश, अजूनी रहित आप कराईआ। एकँकारा सर्ब गुणतास, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। आदि निरँजण शाहो शाबास, जोत नूराना डगमगाईआ। अबिनाशी करता सच महल्ले रक्खे वास, उच्च अटल मनार आप सुहाईआ। श्री भगवान पावे रास, सचखण्ड दुआरा वज्जे वधाईआ।

पारब्रह्म आप आपणी पूरी करे आस, इच्छया आपणी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। आदि जुगादी बेपरवाह, दरगाह साची धाम सुहांयदा। निरगुण दीपक जोत जगा, नूर नुराना डगमगांयदा। साचा धाम आप सुहा, रूप अनूप आप प्रगटांयदा। सच सिँघासण आप वछा, थिर दरबारा वेख वखांयदा। शाहो भूप राज राजान आपणा नाउँ धरा, नर नरायण आपणी खेल खिलांयदा। सति सतिवादी सीस ताज टिका, तख्त ताज आप सुहांयदा। धुर फ़रमाणा हुक्म सुणा, भेव अभेदा भेव खुलांयदा। दर दरबाना सीस झुका, दर दरवेश सेव कमांयदा। इक्क इकल्ला बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचा आप सुहांयदा। दर घर साचा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। इक्क इकल्ला नारी कन्त, कन्त कन्तूल साची सेज हंढाईआ। इक्क इकल्ला मणीआ मंत, शब्द अनादी तूर चलाईआ। इक्क इकल्ला आदि अन्त, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। इक्क इकल्ला बणाए बणत, दूसर संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचा आप खुल्हाईआ। दर घर साचा हरि खुल्हा इक्क इकल्ला एकँकार, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार करांयदा। जोती जोत नूर उज्यार, अलक्ख अलक्खणा अलक्ख
१००२ अल्हांयदा। आप आपणा बोल जैकार, सचखण्ड दुआरा आप वड्यांअदा। ना कोए दीसे नौ दुआर, सूरज चन्न ना कोए १००२
०६ चढ़ांयदा। रवि ससि ना कोए सतार, पुरख अबिनाशी आपणा खेल आप खलांयदा। जूनी रहित परवरदिगार, राम रामा ०६
आपणा बल आप धरांयदा। जोद्धा सूरबीर बली बलकार, साचे तख्त आप सुहांयदा। तख्त निवासी सच्ची सरकार, हुक्मी हुक्म हुक्म वरतांयदा। धुर फ़रमाणा साची धार, शब्द अनादी सुत प्रगटांयदा। जोती जाता कर उज्यार, मात पित आप हो जांयदा। पूत सपूता करे प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, पुरख अबिनाशा आप करांयदा। पुरख अबिनाश खेल अगम्म, अलक्ख अगोचर महिमा अकथ कथी ना जाईआ। ना मरे ना पए जम, आदि जुगादी वेस वटाईआ। निरगुण निराकार नर नरायण आपे जाणे आपणा कम्म, करता करनी किरत आप कराईआ। ना कोई पवण स्वासी लए दम, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। हरख सोग ना खुशी ग़म, आलस निन्दरा ना कोए रखांयदा। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, दरगाह साची आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा सच महल्ला, आप वसाए इक्क इकल्ला, एकँकारा बैठा आसण लाईआ। एकँकार श्री भगवान, दर घर साचा आप सुहांयदा। सति सरूपी सति निशान, सति सतिवादी आप उठांयदा। साचे तख्त बैठ राज राजान, शाह पातशाह वेख वखांयदा। आपणा

भाणा साचा राणा दए समझा, हुक्मी हुक्म आप उठांयदा। सुत दुलारा सेवा ला, सच भण्डारा आप वरतांयदा। सच कटारा तन छुहा, आपणा नाम शस्त्र बस्त्र इक्क वखांयदा। सीस समरथ हथ्थ टिका, कथनी कथ कथा आप अल्र्हांयदा। लोआं पुरीआं रचन रचा, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी वण्ड वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आपे खोल्ह, पुरख अगम्मा रिहा बोल, तत्व तत्त ना कोई रखांयदा। ना कोई तत्तव ना कोई तत्त, त्रैगुण माया ना कोई बणाईआ। ना कोई विष्नूं करे उत्पत, ब्रह्मा रत ना कोई वखाईआ। ना कोई शंकर देवे मत, करोड़ तेतीसा ना कोई वड्याईआ। इक्क इकल्ला पुरख समरथ, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। ना कोई बुध ना कोई मति, मन वासना ना कोई रखाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, इष्ट देव ना कोई मनाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, सर सरोवर ना कोई नुहाईआ। ना कोई बस्त्र ना कोई सेजा दिसे खाट, काया ओड़ ना कोई रखाईआ। ना कोई खोल्हे चौदां हाट, चौदां तबक ना अंग लगाईआ। ना कोई ज़िमी अस्मान वेखे वाट, गगन मंडल ना कोई वड्याईआ। इक्क इकल्ला पुरख अबिनाश, थिर घर साचे बैठा जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, थिर दरबारा आप सुहाईआ। थिर घर साचा हरि सुहांयदा, घर घर विच कर त्यार। सचखण्ड वासी साची जोत जगांयदा, निरगुण दीआ बाती इक्क निरँकार। साचे मन्दिर सोभा पांयदा, स्वच्छ सरूपी खेल अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे मन्दिर बैठा चढ़, सच सिँघासण आप सुहांयदा। साचे मन्दिर आपे चढ़या, निरगुण निरगुण वेस वटांयदा। दर दरवाज़े आपे खड़या, रूप अनूप आप प्रटगांयदा। सति सरूप ना कोई सीस धड़या, सति सतिवादी साचा रंग आप रंगांयदा। बाढी घाड़त कोई ना घड़या, घड़न भन्नणहार खेल खिलांयदा। अग्नी हवन कदे ना सड़या, मढ़ी गोर ना कोई दबांयदा। आपणा पल्लू आपे फड़या, सगला संग रखांयदा। आपणा कन्त आपे वरया, आपणी नारी सेज हंढांयदा। निरभउ चुकाए आपणा डरया, भय भउ ना कोई रखांयदा। आपणे तीर्थ नहावे सरया, अमृत साचा नाल लिआंयदा। आपणे अग्गे आपे खड़या, शाह पातशाह आपणा हुक्म आप अल्र्हांयदा। आपे निउँ निउँ करे निमस्कारया, चरन कँवल ध्यान लगांयदा। थिर घर वासा पुरख अबिनाशा आपणी विद्या आपे पढ़या, निष्अक्खर आप पढ़ांयदा। कागद कलम शाही लिख लिख अग्गे किसे ना धरया, रूप रेख ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा वेखे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्र्हांयदा। दर दरवाज़ा परवरदिगार, एका एक खुल्र्हाईआ। मुकामे हक खेल महान, ख़ालक आपणा रूप वटाईआ। जोद्धा सूर बली बलवान, तेज बल आपणा आप धराईआ। साक सज्जण सैण ना रक्खे कोई गुण निधान,

आपणे गुण दए वड्याईआ। मन्दिर मस्जिद ना कोई दिसे जगत मकान, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवान, साचे तख्त बैठा साचा माहीआ। आदि जुगादी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, थिर घर खोल्हे आप किवाड़ा, आपणा बन्धन आप तुड़ाईआ। आपणा बन्धन आपे तोड़, हरि हरि आपणी दया कमांयदा। हरि हरि चढ़े आपणे घोड़, शब्द घोड़ा इक्क वखांयदा। आपणे मन्दिर आपणे हथ्थ रक्खे डोर, डोरी आपणे नाल बंधांयदा। आपणा वरते आपे ज़ोर, ज़ोर ज़र दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला साचा हरि, सचखण्ड दुआरा खेल अपारा हरि निरँकारा आप करांयदा। थिर घर वासा पुरख अबिनाशा, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह पाए रासा, जोती जोत कर रुशनाईआ। दीन दयाल सदा कृपाल वेखणहारा तमाशा, आपणा नैण लोचण लए खुल्हाईआ। शब्द सुत देवे सच भरवासा, भावी भगवान आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सचखण्ड दुआर वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड दुआर सुहावणा, पुरख अबिनाशी आप सुहाईआ। आपणी पूरी करे आपे भावना, आपणी इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। आप पकड़ाए आपणा दामना, दामनगीर सच्चा शहनशाहीआ। निरगुण निरगुण होए ज़ामना, ज़ाहर ज़हूर वड्डी वड्याईआ। थिर घर वसे नगर ग्रामना, साचा खेड़ा आप सुहाईआ। आपे प्रकाश आपे अन्धेरी शामना, नूर नूर आप डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द लए उपजाईआ। शब्द उपजाया साचा सुत, जुग जुग आप उपजाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। ना कोई वार थित जाणे रुत, रुतड़ी आपणी आप सुहाईआ। आपणे अंदरों आपे फुट्ट, आपणा बूटा आपे लाईआ। आपे अमृत बख्शे घुट्ट, साचा जाम हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे भण्डारा अतुट, अतोट अतुट वरताईआ। शब्द दुलारा उठया, हरि साचा आप उठांयदा। पारब्रह्म मीत मुरार एका तुठ्ठया, फड़ बांहो गले लगांयदा। अमृत जाम प्याए घुट्टया, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। आदि जुगादि ना जाए लुट्टया, साचा दामन हथ्थ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एकँकारा हरि निरँकारा, एका दर सुहांयदा। एका दर दर्द दु:ख भंजन, आप आपणी बूझ बुझाईआ। दो जहानां बणे सज्जण, त्रैभवण वेख वखाईआ। आदि जुगादी बणे पर्दा कज्जण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्दी शब्द रक्खे तेरी लज्जन, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। विष्नूं झोली डाह डाह मंगण, नेत्र नैण रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका वस्त अमोलक आपणी आप वरताईआ। साची वस्त

१००४
०६

नाम अनमोल, सति पुरख निरँजण आप उपांयदा। आपणे कंडे तोलया तोल, तोलणहारा दिस ना आंयदा। आपणा अक्खर आपे बोल, सो पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा। पारब्रह्म प्रभ बदले चोल, हँ आपणा रूप वटांयदा। त्रैगुण भण्डारा देवे खोल्ह, शंकर मेला घर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भाणा आप जणांयदा। हरि भाणा बलवान, भेव कोए ना पांयदा। सो पुरख निरँजण खेल महान, दर घर साचे आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण इक्क ज्ञान, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। एकँकारा सति सतिवादी खोल्ह दुकान, साचा हट्ट इक्क सुहांयदा। आदि निरँजण दीप महान, घर मन्दिर आप टिकांयदा। अबिनाशी करता कर परवान, बह बह मंगल गांयदा। श्री भगवान देवे दान, दाता दानी दया कमांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर परवान, आपणा लेखा लेख समझांयदा। शब्दी शब्द नौजवान, साचे मार्ग आपे पांयदा। विष्नूं रक्खे एका आण, विश्व वास्तक रूप सर्ब समांयदा। ब्रह्मे बख्शे इक्क ध्यान, चरन कँवल आप बहांयदा। शंकर मेला गुण निधान, गुणवन्ता वेख वखांयदा। तिन्नां विचोला बण भगवान, धुर फरमाणा आप सुणांयदा। लोकमात वेखणा जगत शैतान, लक्ख चुरासी वण्ड वण्डांयदा। त्रैगुण माया कर प्रधान, पंज तत्त जोड़ जुड़ांयदा। रजो तमो सतो रक्खे आण, आप आपणा मेल मिलांयदा। घट घट अंदर जोत महान, निरगुण आपणा रूप आप प्रगटांयदा। मन मति बुध करे प्रकाश, आपणे भाणे तत्व तत्त आप
१००५ समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां देवे एका वर, लक्ख चुरासी भाण्डा आपणा घड़, वस्त १००५
०६ अमोलक इक्क वरतांयदा। लक्ख चुरासी भाण्डा घड़या, पुरख अबिनाशी हुक्म सुणांयदा। पारब्रह्म प्रभ आपे दाना, नारी ०६
कन्त रूप वटांयदा। आप सुहाए आपणा दरना, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा। आपणे गढ़ आपे वड़ना, घर घर विच बणत बणांयदा। उच्चे टिल्ले आपे चढ़ना, बजर कपाटी आप खुलांयदा। शब्द धुन आपे पढ़ना, अनहद धुन धुन उपांयदा। जोत प्रकाश निरगुण करना, दीवा बाती ना कोए रखांयदा। ब्रह्म रूप पए साची सरना, पारब्रह्म साची सेज हंढांयदा। कोटी कोटि ना कोई दाना, बरन रूप ना कोए धरांयदा। ना कोई भय ना कोई डरना, भय भयानक खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव आप समझांयदा। ब्रह्मा विष्न हरि समझाया, त्रैगुण लेखा वेख वखाईआ। जुग जुग साची सेव लगाया, लक्ख चुरासी मेल मिलाईआ। आपणा हुक्म आप वरताया, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। आपणा रूप आप वटाया, महांकाल वड्डी वड्याईआ। दर दुआरा आप तजाया, निरगुण खेले खेल बेपरवाहीआ। आपणे भाणे आप समाया, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। धूंधकारा वेख वखाया, सुन्न अगम्मी फेरा पाईआ। काल रूप आप वटाया, निरगुण नूर नज़र ना आईआ। विष्नूं तेरी वण्ड वण्डाया, देवे रिज़क सृष्ट सबाईआ। ब्रह्मे तेरा

ब्रह्म रूप इक्क दरसाया, एका जोत जोत रुशनाईआ। शंकर हथ्थ त्रशूल रखाया, जो घड़या भन्न वखाईआ। काल दयाल मेल मिलाया, सगला संग आप निभाईआ। अवल्लड़ी चाल आप चलाया, चितवत आपणा चित्रगुप्त रूप वटाईआ। धर्म राए धर्म कमाया, धुर दीबान आप रखाईआ। दर दुआरे माण धराया, हुक्मी हुक्म शब्द सुणाईआ। सुत दुलारा नाल रलाया, अबिनाशी अचुत वेख वखाईआ। कुँवारी कन्या आप उठाया, जोबन वेखे शहनशाहीआ। लाड़ी मौत नाउँ धराया, दिस किसे ना आईआ। शंकर तेरी गोदड़ी रही उठाया, तेरी धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। लक्ख चुरासी वेखे थाउँ थाया, आदि जुगादी फेरा पाईआ। लाड़ी मौत मंगे वर, ऊँची कूक दए दहाईआ। जीव जंत नेत्र लोचण वेख वेख, आपणा मन रही तड़फाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करते दीन दयाल हो कृपाल देणी इक्क आदेस, काल रूप हो प्रवेश, नौं खण्ड पृथमी फिरी देस प्रदेस, सत्तां दीपां फेरीआं पाईआ। वरभण्डी तेरा मेट कलेश जेरज अंडी धारे भेख, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। तख्तों लाहवां नर नरेश, आपणा मार्ग आपे वेख, जो घड़या भन्न वखाईआ। जुग जुग रक्खां खुल्ह़े केस, दर दर मंगा बण दरवेश, एका अल्फी गल हंढाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लैण वेख, चित्रगुप्त लिखे लेख, धर्म राए वेखे आपणा खेल, काल करे एक
१००६ हेत, लाड़ी मौत लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे वसया हरि, आपणी १००६
रचना आप रचाईआ। आपणी रचना रचनहारा, आपे रच रच वेख वखांयदा। आपे वसे सचखण्ड दुआरा, थिर घर साचा
०६ आप सुहांयदा। आपे गगन मंडल पावे सारा, मंडल मंडप आप उपांयदा। आपे रवि ससि सूरज चन्न कर उज्यारा, प्रकाश ०६
प्रकाश आप टिकांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न शिव दए हलारा, आपणी गोदी आप सुहांयदा। आपे शब्द नाद धुन जैकारा, ब्रह्म ब्रह्मादि आप सुणांयदा। आपे बोध अगाध बण लिखारा, चारे वेदां भेद खुल्ह़ांयदा। आपे तुरीआ राग पावे सारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे वसया एका हरि, हरि जू आपणा मन्दिर आप सुहांयदा। हरि जू हरि मन्दिर सोभावन्त, लेखा लिख्त विच ना आईआ। एका वसया पारब्रह्म अबिनाशी करता साचा कन्त, कन्त कन्तूल सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव दित्ता एका वर, लक्ख चुरासी तेरी वण्ड वण्डाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव उठ करन ध्यान, प्रभ अगे सीस झुकाईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, हउँ सेवक सेव कमाईआ। तूं दाता श्री भगवान, हउँ भिखक झोली रहे डाहीआ। एका दरस तेरे चरन कँवल ध्यान, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन और ना कोए वसाईआ। साचा वर हरि झोली पावना, आए दर भिखार। कवण रूप लोकमात प्रगटावना, प्रगट होए विच संसार। कवण रंग आप चमकावणा, लाल

गुलाला कर त्यार। कवण कंचन कच वखावणा, कौण सुहदा वेस करे परवान। कौण चिटी धारी धार बनावणा, सुत शब्दी रंग अपार। कवण पीला बस्त्र तन सजावणा, पंज तत्त कर अकार। कवण नीली धारों डेरा पार रखावणा, निरगुण सरगुण लै अवतार। काला सूसा कवण रूप गलों लाहवणा, कूड़ कुड़यारा वेख विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव करे प्यार। निरगुण सरगुण बणे मलाह, लोकमात वेस वटांयदा। भगत भगवन्त लए जगा, आत्म अन्तर वेख वखांयदा। सन्त कन्त लए मिला, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ांयदा। गुरमुख साचे आप उठा, आप आपणी गोद बहांयदा। गुरसिख साचे रंग रंगा, दुरमति मैल सर्ब धवांयदा। जुग जुग आपणा नाउँ धरा, अक्खर वक्खर जाप जपांयदा। सतिजुग साचा खेल खिला, रूप अनूप आप धरांयदा। त्रेता पन्ध दए मुका, त्रिया लेखा लेखे पांयदा। कलिजुग पसारा दए ढाह, शब्द खण्डा हथ्थ चमकांयदा। कलिजुग काला सूसा वेखे थाउँ थाँ, सृष्ट सबाई फोल फुलांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा कूड़ कुड़यारा वेखे थाउँ थाँ, लक्ख चुरासी जीव जंत काया मन्दिर खोज खुजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खोल, शब्द अगम्मी एका बोल, लिखण

१००७ पढ़न विच ना आंयदा। हरि का शब्द ना लेखा कोए, ब्रह्मा विष्न शिव ध्यान लगाया। आदि जुगादी आप होए, निरगुण १००७

सरगुण रूप वटाया। लेखा जाणे त्रै त्रै लोए, लोआं पुरीआं रिहा सुहाया। शब्द अगम्मी निरगुण लै के आवे ढोए, लोकमात

०६ नाउँ प्रगटाया। जन भगतां आत्म अन्तर बूंद स्वांती कँवल नाभी आपे चोए, दिस किसे ना आया। सन्त सुहेले आप उठाए ०६

सोए, शब्द हुलारा इक्क लगाया। गुरमुखां दुरमति मैल पापां धोए, पतित पापी लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल आप खलाया। जुग जुग खेल करनहार करतारा, कादर कुदरत रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, रामा कृष्ना आपणा रूप वटाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, ईसा मूसा मुहम्मद चार यार करे पढ़ाईआ। नानक गोबिन्द बण सहारा, चार वरन बख्शे इक्क सरनाईआ। ऊँचां नीचा पार किनारा, राउ रंकां राज राजानां एका धाम वखाईआ। खड़ग खण्डा नाम कटारा, तेज प्रचण्ड आप चमकाईआ। मेट मिटाए कूड़ कुड़यारा, अन्ध अन्धेरा रहिण ना पाईआ। नाम सति सति वरतारा, वाह वाह गुरू इक्क जैकारा, फ़तेह डंका नाम सणाईआ। नानक निरगुण बण लिखारा, मंगे मंग एका वारा, कलिजुग करे पार किनारा, निहकलंक निरगुण जोत कर रुशनाईआ। गोबिन्द बण सच्चा सिक्दारा, जोद्धा सूरबीर बली बलकारा, वेखे विगसे करे विचारा, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। कलिजुग आए अन्तिम वारा, प्रगट होए हरि निरँकारा, सम्बल नगरी धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ महल्ल आप सुहाईआ। वेद व्यासा

बणे लिखारा, पुराण अठारां करे विचारा, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा बन्ने धारा, उच्चे टिल्ले पर्बत जोती जोत दए वड्याईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता, आदि जुगादी एकँकारा, त्रैगुण माया भिन वसे बाहरा, करे खेल विच संसारा, जोती जामा वेस वटाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, चारे वेद करन पुकारा, शास्त्र सिमरत करन हाहाकारा, हरि का लेख समझ ना सके कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि, गुर अवतार आप हो जाईआ। आपे गुर आप अवतार, सन्त भगत आप अखवांयदा। आपे गुरमुख गुरसिख दए हुलार, आपे मनमुख दर दुरकांयदा। आपे आसा तृष्ना करे ख्वार, आपे हउमें हंगता गढ़ बणांयदा। आप शब्द नाद धुन्कारा, धुनी नाद आप वजांयदा। आपे लेखा जाणे नौं दुआरा, आपे सुखमन टेढी बंक डेरा लांयदा। आपे त्रिबैणी नैणी जाणे पार किनारा, आपे अमृत आत्म कँवल नाभी ताल भरांयदा। आपे काग होए उडारा, आपे हँसा रूप वटांयदा। आपे शब्द अनहद गाए आपणी वारा, पंचम ताल आप वजांयदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, आपणा कुण्डा आपे लांहयदा। आपे आत्म सेजा कर पसारा, साची सेज आप सुहांयदा। आपे वसया दस्म दुआरा, थिर घर आपे वेख वखांयदा। आपे नारी कन्त भतारा, आपणा मेला आप मिलांयदा। आपे ब्रह्म पारब्रह्म करे प्यारा, शब्द विचोला इक्क रखांयदा। आपे दीवा बाती हो उज्यारा, कमलापाती खेल खिलांयदा। आपे निरगुण सरगुण वसे बाहरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा बन्धन पांयदा। जुग जुग बन्धन पाए परवरदिगार, बेऐब नाम खुदाया। सृष्ट सबाई सांझा यार, रहिमत रहिमान इक्क वखाया। चौदां तबक खोल्ह दुकान, ज़िमी अस्मान दए सहाया। अमाम अमामा हो सिर बलवान, मुल्ला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर एका कलमा दए पढ़ाया। कायनात इक्क निशान, निगहबान वेख वखाया। देवणहारा धुर फ़रमाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ प्रगटाया। निरगुण सरगुण आप निरँकार, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। नौं खण्ड पृथ्मी पावे सार, लक्ख चुरासी जीव जंत सर्ब कुरलांयदा। धीरज धीर करे ना कोई प्यार, आत्म ब्रह्म ना कोई वखांयदा। जगत रही विद्या विचार, चार वरन रंग ना कोई रंगांयदा। खण्डा खड़के दो दो धार, भुक्ख नंग ना कोई कटांयदा। शाह सुल्तान रहे झक्ख मार, सच मृदंग ना कोई वजांयदा। नाम धौंसा अगम्म अपार, हँसा रूप ना कोई वटांयदा। कलिजुग जीव रले कागां डार, माणक मोती चोग ना कोई चुगांयदा। सीस पाई बैठे छार, आत्म जोत ना कोई जगांयदा। दिवस रैण रहे अँध्यार, साचा इष्ट ना कोई मनांयदा। पुरख नारी होए विभचार, घर घर मन्दिर सोभा कोए ना पांयदा। एका विसरया करतार, पिता पूत ना सीस झुकांयदा। मात पित ना करे प्यार, भईआं भैणां सेज हंढांयदा। नारी कन्त ना कोई

अधार, सतिगुर पूरा नज़र किसे ना आंयदा। राम कृष्न वाहिगुरू अल्ला कूक कूक करन पुकार, पुरख अबिनाशी निरगुण रूप सति सरूप आपणा बल आप धरांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, जोती जामा भेख वटांयदा। जागरत जोत कर उज्यार, साचा खण्डा नाम चमकांयदा। दो जहाना मारे मार, कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकांयदा। थिर रहे ना विच संसार, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। धरत मात पैज संवार, बीस बीसा राह तकांयदा। जगत जगदीसा होए उज्यार, गुरमुख साचे आप उठांयदा। आत्म अन्तर कर प्यार, काया अंगीठा तत्त बुझांयदा। सांतक सति वरते वरतार, मन मति आप समझांयदा। चार वरन इक्क सहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगां जुगन्तर खेल कर, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत हरी हरि लए उभार।

✻ १३ भाद्रों २०१७ बिक्रमी गुलज़ार सिंघ दे गृह पिण्ड शाहोके ज़िला फिरोज़ पुर ✻

सति पुरख निरँजण वड मेहरवान, अकल कल बेपरवाहीआ। सो पुरख निरँजण रूप महान, जोती जोत नूर रुशनाईआ। हरि पुरख निरँजण गुण निधान, गुणवन्ता भेव ना राईआ। एकँकारा खेले खेल महान, कुल आपणी आप उपजाईआ। श्री भगवान वसे सच मकान, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। अबिनाशी करता हो मेहरवान, थिर घर साची सेज सुहाईआ। पारब्रह्म आपणा घर पछाण, आपणा पर्दा दए चुकाईआ। इक्क इकल्ला जोद्धा सूरबीर बलवान, शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। दो जहानां राज राजान, सच सिँघासण सोभा पाईआ। तख्त ताज इक्क निशान, दरगाह साची आप झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा नाउँ धराईआ। निरगुण दाता हरि निरँकार, निरवैर आपणी खेल खिलांयदा। पुरख बिधाता शाह सिक्दार, घर साचा तख्त सुहांयदा। उत्तम ज़ाता गिरवर गिरधार, कमलापाता नूर नूर विच टिकांयदा। नादी गाथा धुर जैकार, शब्द शब्दी राग अलांयदा। पुरख समरथा अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर आपणी खेल खिलांयदा। चलाए राथा बेऐब परवरदिगार, साची सेवा आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वेस वटांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सचखण्ड वसे सच दुआर, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। थिर घर खोल्ह इक्क किवाड़, निज घर बैठा जोत जगाईआ। तख्त निवासी बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर नूर अलाहीआ। शाहो भूप बण सिक्दार, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हथ्थ वडियाई रक्ख करतार, आपणी खेल आप

खलांयदा। निरगुण रूप हो उज्यार, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। निरगुण कन्त निरगुण भतार, निरगुण साची सेज हंढांयदा। निरगुण मीत निरगुण मुरार, निरगुण साचा संग निभांयदा। निरगुण दर घर साचे वसे वसणहार, तख्त सुहञ्जणा सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बल रखांयदा। आपणा बल रक्खणहारा, आदि जुगादि समाया। इक्क इकल्ला एकँकारा, आपणी करनी आप कमाया। सचखण्ड वसे सच दुआरा, महल्ल अटल आप सुहाया। छप्पर छन्न ना कोई सहारा, चार दिवार ना कोई बणाया। ना कोई रागी नादी गाए वारा, ताल तलवाड़ा ना कोई वजाया। ना कोई खाणी बाणी करे पुकारा, ऊँची कूक ना कोई सुणाया। ना कोई ब्रह्मा विष्न शिव वण्डे भण्डारा, त्रैगुण मूल ना कोई रखाया। पंज तत्त ना करे कोई अकारा, सरगुण रूप ना कोई वटाया। साध सन्त ना कोई दुलारा, भगत भगवन्त ना कोई उठाया। गुर पीर ना कोए अवतारा, रूप रेख ना कोए प्रगटाया। इक्क इकल्ला खेल न्यारा, निरगुण नर हरि नरायण आपणा आप कराया। शाहो भूप बण वणजारा, पुरख अबिनाशी आपणा वणज आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रूप आप प्रगटाया। आपणा रूप अनुभव प्रकाश, पुरख अबिनाशी आप उपजाईआ। आदि जुगादि रहे अबिनाश, निहचल धाम डेरा लाईआ। दरगाह साची रक्खे वास, घर आपणे जोत जगाईआ। आप आपणी पूरी करे आस, आसा मनसा ना कोए बणाईआ। ना कोई पृथ्मी ना आकाश, गगन मंडल ना कोए उपाईआ। ना कोई गोपी काहन पाए रास, सगला यार ना कोए वखाईआ। ना कोई पवण ना स्वास, पवण पवण ना कोई समाईआ। ना कोई सेवक ना कोई दास, दासी रूप ना कोए वटाईआ। ना कोई करे बन्द ख़लास, लक्ख चुरासी ना कोए भवाईआ। ना कोई लेखा दस दस मास, मात गर्भ ना डेरा लाईआ। पारब्रह्म आपणे घर खेले खेल तमाश, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। आपणी जोती जोत प्रकाश, जोती जाता नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा सच महल्ला, निरगुण निरवैर निराकार वसया इक्क इकल्ला, आपणा बंक आप सुहाईआ। अबिनाश सुहाए सोभावन्त हरि करतार, जूनी रहित रूप वटांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, मूर्त अकाल आप प्रगटांयदा। आप उपजाए आपणी धार, सति सतिवादी खेल खिलांयदा। मरे ना जम्मे विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड सुहाए सच दुआर। सचखण्ड दुआरा भेव अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप खुल्हाईआ। आप वसाए आपणा सच महल्ला, दीवा बाती कर रुशनाईआ। सच सिँघासण एका मल्ला, शाहो भूप बण वड वड्याईआ। आपणा संदेश नर नरेश आपे घल्ला, धुर दी बाणी बाण चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दए वड्याईआ। सचखण्ड उपाया

१०१० ०६

आप हरि, आपणी सेवा आप कमांयदा। चार दीवारी ना दिसे घर, सूरज चन्न ना कोए चढ़ांयदा। इक्क इकल्ला अंदर बैठा वड़, रूप रंग ना कोए वखांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, चेतन्न जड़ ना रूप धरांयदा। ना कोई विद्या अक्खर गया पढ़, इष्ट देव ना कोए मनांयदा। धुर दरबार हरि निरँकार सच दुआरे आपे खड़, आप आपणी अलक्ख जगांयदा। साचे पौड़े आपे चढ़, साचे मन्दिर सोभा पांयदा। आपणा घाड़न आपे घड़, हरि जू हरि मन्दिर आपे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा एकँकारा आपणा दुआरा आप सुहांयदा। साची सेजा सुत्ता हरि हरि कन्त, आपणी सेज आप हंढांयदा। आपे रंग रंगीला रंग रंगाए इक्क बसन्त, उतर कदे ना जांयदा। आपे आदि आपे अन्त, मध आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआरा आप वड्यांअदा। सचखण्ड दुआरा वड वडियाई, पुरख अकाल आप वड्यांअदा। आदि निरँजण निरगुण जोत कर रुशनाई, दीप उजाला इक्क वखांयदा। आपणे मन्दिर आपणे घर हरि हरि करे आप कुड़माई, साचा सगन आप मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा देवे वर, सचखण्ड दरवाज़ा आप सुहांयदा। सचखण्ड

१०११ सच दरवाजा, हरि हरि आप खुल्हांयदा। अंदर वड़ ग़रीब नवाजा, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। आपे शाहो भूप बण राजन १०११

०६ राजा, तख्त निवासी साचे तख्त आसण लांयदा। आपे चलाए आपणा जहाजा, आपणा बेड़ा आप तरांयदा। आपे रक्खे ०६

आपणी लाजा, लाजावन्त आप हो जांयदा। आपे आदि जुगादि फिरे भाजा, निरगुण निरगुण सेव कमांयदा। सचखण्ड दुआरे रचया काजा, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क उपांयदा। सचखण्ड दुआरा पाया, साचा हरि बेअन्त। आपणा रूप आप प्रगटाया, दर घर साचे सोभावन्त। शब्द अगम्मी इक्क चलाया, तुरीआ राग नाद सुनंत। पुरख अबिनाशी खेल खिलाया, महिमा गाए हरि बेअन्त। वेद कतेब भेव ना राया, राह तक्कण साध सन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खोल्हया, एकँकारा आपे बोलया, आपे मणीआ आपे मणत। सचखण्ड दुआरा हरि सुहञ्जणा, नर हरि नरायण आप सुहाईआ। दीपक जोत जगे इक्क निरँजणा, आदि निरँजण आप जगाईआ। साचे तख्त बैठा दर्द दुःख भय भंजना, भय भउ आपणे हथ्थ रखाईआ। ना घड़या ना भज्जणा, मरन जन्म विच ना आईआ। आदि जुगादी साचा सज्जणा, सचखण्ड बैठा सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला, आपे चले आपणी चाला, धुर दी चाल इक्क रखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल, दयानिध हरि अख्वांयदा। सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, सच सिँघासण सोभा पांयदा। एका जोती एका बाल, प्रकाश

प्रकाश विच टिकांयदा। आपणी घाले आपे घाल, घाल घाली आपे लेखे पांयदा। निरगुण निरगुण बण दलाल, निरगुण साची सेव कमांयदा। निरगुण मात निरगुण पिता निरगुण उपजे आपणा लाल, शब्द दुलारा नाउँ प्रगटांयदा। देवे सच सच्चा धन माल, आप आपणी झोली विच भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा श्री भगवान, साचा तख्त सुहाईआ। सति सरूपी सति निशान, नौजवान आप झुलाईआ। दो जहानां रक्खे आण, हुक्मी हुक्म हुक्म सुणाईआ। आदि जुगादि आपणी करे आप पछाण, बेपछाण बेपरवाहीआ। शब्दी शब्द देवे दान, साची वस्त वण्ड वण्डाईआ। घर विच घर सच मकान, थिर घर साचा लए उपाईआ। अंदर वड़ गुण निधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे आपे वसे वसणहारा, दिस ना आईआ। सुत दुलारा इक्क उठावना, शब्द नाद धुन जैकार। आपणे मार्ग आपे पावणा, पुरख अगम्मा करे कराए साची कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेखे आप दरबार। करे खेल पुरख करतार, करता कीमत आपणी आपे पाईआ। वेखे विगसे करे विचार, नेत्र लोचण नैण आप खुलाईआ। आपे बणे वड सिक्दार, दर दरवेश आपे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वेखे एका दर, दर दुआरा सोभा पाईआ। थिर घर अमृत रस, हरि साचे चरन टिकाया। पुरख अबिनाशी हो प्रतक्ख, आपणा प्याला हथ्थ उठाया। आपणे मन्दिर आपे रक्ख, आपे वेख वखाया। सर्बकला आप समरथ, समरथ पुरख नाउँ धराया। आपणी बाणी गाए अकथ, अकथ कथा आप अल्ाया। थिर घर दुआरा आदि जुगादि ना जाए ढठ्ठ, पारब्रह्म प्रभ आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे दर, दर आपणा वेख वखाया। थिर घर साचा उच्च महल्ल अटल मीनारा, घर घर विच आप सुहांयदा। सचखण्ड वेखे चार दीवारा, चारों कुंट आप सुहांयदा। आपे वसे डूँघी गारा, आपणा मुख आप छुपांयदा। आपे होए आप उज्यारा, नेत्र नैण डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, थिर घर वेखे हरि हरि खड़, आपणा भेव आप खुलांयदा। इक्क इकल्ला करे कराए साची सेव, सेवक सेवादार आप हो जाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार, निराकार अजूनी रहित पुरख अकाल आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। शब्दी शब्द भण्डारा दाता दानी बणे दातार, साची वण्ड आप वण्डाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड कर त्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज ब्रह्मा विष्न शिव झोली पाईआ। त्रैगुण माया कर त्यार, पंज तत्त दए अधार, मन मति बुध करे कुड़माईआ। पारब्रह्म प्रभ पाए सार, शब्द शब्दी हो त्यार, लोकमात लै अवतार, सतिगुर आपणी खेल खलाईआ। गुर गुर नाउँ बोल

१०१२ ०६

जैकार, सृष्ट सबाई पावे सार, नौं खण्ड दए हलार, सत्त सति वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि, नाद अनादी आप वजाईआ। शब्द अनादी सच तराना, पारब्रह्म प्रभ आप सुणांयदा। सच महल्ला एका गाणा, सुर ताल इक्क वखांयदा। एका मर्द इक्क मरदाना, रूप अनूप इक्क वटांयदा। एका वरते आपणा भाणा, भाणे विच आप समांयदा। एका राज एका राजाना, शाह सुल्तान इक्क अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेस कर, गुर सतिगुर आपणा रूप प्रगटांयदा। सतिगुर सच्चा पातशाह, पारब्रह्म करतार। गुर गुर बणे जगत मलाह, लोकमात लै अवतार। भगतां देवे सच सलाह, हरि सिफ्ती नाम भण्डार। सन्तां पकड़े आपे बांह, निरगुण सरगुण कर प्यार। गुरमुख वेखे थाउँ थाँ, जुगां जुगन्तर साची कार। गुरसिख गोद बहाए जिउँ बालक पिता माँ, सिर रक्ख हथ्थ समरथ पुरख निरँकार। दो जहानां देवे ठंडी छाँ, नाता तोड़ जगत संसार। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, काग हँस उडाए एका डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण पावे सार। निरगुण रूप पुरख अकाल, शब्द गुर मात वड्याईआ। शब्द रूप हरि महांकाल, भूपत भूप आप अख्वाईआ। सुत दुलारा वेखे लाल, लाल लालन रंग रंगाईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, जुग करता बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी बण दलाल, लोकमात करे

१०१३ रुशनाईआ। सृष्ट सबाई फल लग्गा वेखे काया डाल्, पत डाल्ही फोल फुलाईआ। गुरमुख सज्जण साचे लाल, आप आपणा १०१३

०९ मेल मिलाईआ। जुग जुग चल्लया आया नाल, ना मरे ना जाईआ। अन्त कन्त ना खाए काल, जम का भय ना कोए ०९

डराईआ। सुरती शब्द करे संभाल, नारी कन्त मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका गुर शब्द वड्याईआ। शब्द गुर सूरबीर, जोद्धा जोध बलि बलिकारया। जुगा जुगन्तर संगती आए वेर लोकमात खेले खेल अपर अपारया। दो जहानां पान्धी पन्ध दए चीर, लोआं पुरीआं चरनां हेठ लताड़या। गुरमुखां मिटाए हउमे हंगत दूई द्वैती लग्गी पीड़, एका मन्त्र नाम दृढ़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ रखा रिहा। जुग जुग सतिगुर खेल खिलांयदा, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह। गुर गुर आपणा नाउँ धरांयदा, पिता पूत दए सच सलाह। साचा मार्ग एका लांयदा, एका अक्खर दए पढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप वखा। आपणा बल आपे धार, गुर शब्द लए अंगड़ाईआ। प्रगट होवे विच संसार, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। करे खेल अगम्म अपार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, लख लख लिख्त जगत शाहीआ। सतिगुर पूरा आप आपणी पावे सार, दूसर भेव कोए ना राईआ। जुगां जुगन्तर हो त्यार, हरिजन साचे वेख वखाईआ।

सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। चारों कुंट अन्ध अँध्यार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। नाता तुटा कन्त भतार विभचार, तिन्नां लोकां माया ममता करन अहार, आसा तृष्ना जगत वधाईआ। नाता जुड़या काम क्रोध लोभ मोह हँकार, हउमे हंगता गढ़ बणाईआ। जूठा झूठा वणज वापार, मन सिक्दार रिहा कराईआ। मति मतवाली हो ख्वार, दर दर कूके दए दुहाईआ। बुध कड़ूमनी गई हार, कलिजुग मिल्या डूम कसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार आपणा रूप वटाईआ। आपे गुर आप अवतारा, आप आपणा बल धरांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न शिव दए सहारा, आपे आपणी सेवा लांयदा। आपे त्रैगुण वसे बाहरा, आपे त्तत्व तत्त रखांयदा। आपे खड़ग खण्डा तेज कटारा, चण्ड प्रचण्ड आप चमकांयदा। आपे निरगुण सरगुण दए अधारा, आपे सरगुण निरगुण पर्दा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग एका शब्द चलांयदा। एका शब्द गुर साचा पीर, पीरन पीरां आप अख्वाईआ। आपे शाह सुल्ताना दस्तगीर, दस्तबरदार करे सर्ब लोकाईआ। आपे चोटी चढ़े अख़ीर, मुकामे हक नूर अलाहीआ। आपे लक्ख चुरासी पाए जंजीर, आपे बन्धन तोड़ तुड़ाईआ। आपे कट्टणहारा पीड़, जम की फ़ाँसी रिहा लटकाईआ। आपे अमृत सिंच ठांडा सीर, आपे अग्नी तत्त तपाईआ। आपे शाह आप हकीर, आपे आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग गुर सतिगुर आपणा नाउँ धराईआ। सतिगुर सच सुल्तान, दर घर साचे सोभा पांयदा। आपे गुर गुर रूप श्री भगवाना, लोकमात वेस धरांयदा। आपे भगतां करे पछाण, भगवन्त भगती लेखे लांयदा। आपे सन्तन देवे ब्रह्म ज्ञान, आत्म ब्रह्म इक्क जणांयदा। आपे गुरमुखां बख्शे सच अशनान, दुरमति मैल मात धवांयदा। आपे गुरसिखां मेल मिलाए साचे काहन, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ांयदा। आपे देवणहारा धुर फ़रमाण, जुग जुग आपणा नाउँ प्रगटांयदा। आपे जाणे आपणी सच कलाम, कायनात आप पढ़ांयदा। आपे बिदर सुदामा होए अमाम, आपणी रंगण आप रंगांयदा। आपे दर दरवेश बणे गुलाम, आपणा बन्धन आप रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, गुर सतिगुर नाउँ धरांयदा। सतिगुर आपणा नाउँ रक्ख, हरि साचा वेस वटांयदा। गुर गुर रूप हो प्रतक्ख, लोकमात फेरी पांयदा। भगत भगवन्त लए रक्ख, आप आपणा मेल मिलांयदा। सन्तन मार्ग एका दस्स, साचे मार्ग आप चलांयदा। गुरमुखां हिरदे अंदर वस, जगत तृष्ना हिरस मिटांयदा। गुरसिखां करे प्रकाश कोटन रवि ससि, दीपक जोती आप जगांयदा। जगत विकारा देवे मथ, हरि खण्डा हथ्थ चमकांयदा। निरगुण सरगुण मेल मिलाए नस्स नस्स, हरि जू हरि मन्दिर सोभा पांयदा। भगतन भगवन होया वस, शब्द डोरी हथ्थ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, जुग जुग गुर शब्दी आपणा नाउँ उपजांयदा। शब्द गुर शब्द दातार, शब्द सिख्या सच सिखांयदा। शब्द चरन शब्द दुआर, शब्द कँवला विच रखांयदा। शब्द नाम शब्द जैकार, शब्द नादी नाद वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा। बाशक तशका शंकर गलों लाहया, हथ्थ त्रशूल लए एका वार। विष्नूं सांगोपांग सेज बैठा राह तक्के साचे यार। सतिगुर पूरा शब्द मेहरवान, सति दुआरे सोभा पांयदा। आदि जुगादी बणाया हट्ट, हट्ट वेख वखांयदा। इक्क निशाना सति निशान, दरगाह साची आप झुलांयदा। तख्त निवासी श्री भगवान, भगवन आपणी धार बंधांयदा। आपे दाता देवे दान, दानी आप अख्वांयदा। आपे निरगुण सरगुण हो प्रधान, पारब्रह्म प्रभ आपणा आप धरांयदा। आपे काया मन्दिर वसे पंज तत्त मकान, घर घर विच सोभा पांयदा। आपे चौदां लोकां खोल्ह दुकान, चौदां हट्ट आपणा वणज करांयदा। चौदां तबकां पाए आण, एका हुक्मी हुक्म सुणांयदा। कलिजुग अन्तिम करे पछाण, लेखा लेख ना कोए रखांयदा। नाता तोड़े जीव शैतान, पंचम तत्त मेट मिटांयदा। तीर निराला मारे बाण, शब्दी चिल्ला हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द गुर गुर एका रूप प्रगटांयदा। प्रगटयो रूप हरि गोबिन्द, अनुभव प्रकाश समाया। सगल सृष्टी मेटे चिन्द, चिंता चिखा वेख वखाया। दाता दानी गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, समुंद सागर नाम मधाणे वरोल वखाया। जन भगत उभारे आपणी बिन्द, आप आपणा मेल मिलाया। मनमुख लगाए जगत निन्द, निन्दक निन्दया मुख सलाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण निरवैर नर हरि, आपणा रूप आप प्रगटाया। रूप प्रगटाए निहकलंक, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सति सरूप वजाए डंक, एका डौरु नाम वजाईआ। आप उठाए राउ रंक, राज राजानां शाह सुल्तानां दए हलाईआ। वेस वटाए वासी पुरी घनक, घनक पुर वासी सच्चा शहनशाहीआ। गुरमुख अधारे जिउँ जन जनक, जन जननी लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणे नूर करे रुशनाईआ। हरि का नूर नूर उज्यारा, नूरो नूर समाया। ब्रह्मा चारे वेदां पावे सारा, अठारां पुराण रहे जस गाया। गीता ज्ञान करे निमस्कारा, पारब्रह्म प्रभ सिफ्त सलाहया। अगम्म अथाह बेपरवाह, वसणहारा धाम न्यारा, धाम अवल्लड़ा इक्क उपाया, जुगां जुगन्तर जाणे आपणी कारा। दूसर भेव ना कोए खुल्हाया, पुरख अकाल खेल न्यारा। निरगुण आपणा आप लए प्रगटाया, सम्बल नगरी वेखे धाम न्यारा, साढे तिन्न तिन्न रचन रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। कलिजुग वेखे अन्तिम अन्तरजामी, अन्तसकरण वेख वखाईआ। निरगुण निरवैर सदा निहकामी, निहकर्मी वड वड्याईआ। शब्दी शब्द बणया बानी, दाता दानी सहिज

सुखदाईआ। कलिजुग तेरी वेखे जगत कहाणी, रसना जिह्वा खोज खुजाईआ। कवण गुरमुख गाए अमृत बाणी, चौथे पद रिहा समाईआ। कवण हरि मेल मिलाए साचे हाणी, जगत विछोड़ा दए कटाईआ। कवण अमृत आत्म पीवे ठंडा पाणी, अठसठ तीर्थ भुल्ल ना जाईआ। कौण सुरत होए सच सवाणी, घर साचा कन्त लए मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम सृष्ट सबाई जगत दुहागण आपणा आप ना सकी पछाणी, माया पर्दा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख हिरदा आप बणाईआ। गुरमुख हिरदा सेवक सेवादार, चाकर चाक अख्वांयदा। सतिगुर पूरा करे प्यार, आपणे दर आप बहांयदा। गुर गुर खोल्हे बन्द किवाड़, निज नेत्र पर्दा लांहयदा। डूँघी भँवरी कढ्ढे बाहर, साचे धाम आप सुहांयदा। बंस हँस रलाए हँसा डार, सोहँ माणक मोती चोग चुगांयदा। झिरना झिरे ठंडा ठार, अमृत मेवा रसन आप खुआंयदा। दुरमति मैल आप उतार, निर्मल निरवैर आप करांयदा। बजर कपाटी पर्दा आपे पाड़, आपणा ओहला आप हटांयदा। आत्म सेजा कर शंगार, सेज सुहञ्जणी सच सुहांयदा। निरगुण जोत कर उज्यार, जोत निरँजण डगमगांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म पावे सार, गुर चेला एका रंग रंगांयदा। सज्जण सुहेला हरि निरँकार, साचा साकी साचा जाम प्यांअदा। इक्क इकल्ला एकँकार, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। गुरमुख मेला नारी कन्त भतार, कन्त कन्तूल साची सेज सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरि पुरख अकाल आप अख्वांयदा। निहकलंक श्री भगवन्त, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, गुर पीर अवतार देण गवाहीआ। मेल मिलावा साचे सन्त, सति सतिवादी वेखे थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग विछड़े मेले हरि, हरिजन साचे आप उठाईआ। हरिजन साचा आप जगाया, जागरत जोत इक्क जगाए। स्वच्छ सरूपी दरस वखाया, अन्ध अन्धेर मिटाए। चारे कूट नज़री आया, इक्क इकल्ला हरि रघुराय। जूठा झूठा नाता तोड़ तुड़ाया, बख्शी चरन सच्ची सरनाए। जुग जुग रुठा आप मनाया, सिर आपणा हथ्थ टिकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखाए। गुरमुख साचा जागया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। सतिगुर सरनाई साची लागया, एका शब्द गुर कर प्यार। दिवस रैण रहे वैरागया, इक्क वैराग सिरजणहार। लोकमात वड वड भागया, पाया पुरख पुरख करतार। दुरमति मैल धोवे दागया, पतित पापी लए उभार। चरन धूढ़ कराए साचा मजन माघिआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे कर प्यार। गुरमुख साचा मीतड़ा, मेल मिलाया हरि भगवान। अन्तिम रक्खे काया चोली चीथड़ा, देवे नाम सच निशान। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, अमृत रस भर श्री भगवान। इक्क सुणाए सुहागी गीतड़ा, सोहँ शब्द गुण

निधान। धाम वखाए इक्क अनडीठड़ा, सतिगुर एका राज राजान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिख साचे लए पछान। गुरसिख पछानया साचे घर, लोकमात वज्जी वधाईआ। किरपा कर हरी हरि, हरिजन साचे वेख वखाईआ। शब्द बंधाए नाम लड़, साची डोरी हत्थ उठाईआ। कलिजुग किला कोट तोड़ हँकारी गढ़, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाईआ। चार वरनां लड़ रिहा फड़, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। घट घट अंदर आपे वड़, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रूप प्रगटाईआ। माया भुल्ले नारी नर, नर नरायण नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख सज्जण मेले चाँईं चाँईआ। गुरसिख मन चाउ घनेरा, गुर सतिगुर दरसन पाया। सतिगुर वसे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाया। हरिजन वेख काया खेड़ा, बंक दुआरा आप खुलाया। कलिजुग अन्तिम बन्ने बेड़ा, शौह दरयाए ना कोए रुढ़ाया। करे कराए हक नबेड़ा, अन्त कन्त भगवन्त हरिजन साचे मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले आपणे दर, दर भिखारी आपणा मेल मिलाया।

❋ १४ भाद्रों २०१७ बिक्रमी राज सिँघ दे गृह फरीदकोट ज़िला फिरोज़ पुर ❋

जीउ पिण्ड जन प्रतीत, जीवन जगत जुगत हरिजन जस गाईआ। काया ब्रह्मण्ड बैठा रहे अतीत, त्रैगुण भिन अनडिठ रूप समाईआ। तत्व तत्त कराए ठंडां सीत, चरन प्रीत इक्क समझाईआ। अगम्मी ढोला गाए सुणाए सुहागी गीत, धुन अनहद आप उपजाईआ। नाता तोड़ जगत बेप्रीत, मन बिपर लए समझाईआ। आदि जुगादि भगत भगवन्त लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच वेखे सर्ब घट थाईंआ। हत्थ वखाए सीस टिकाए पितंमबर पीत, पति परमेश्वर वडी वड्याईआ। चेतन्न वसे सदा चीत, चात्रिक रूप सदा बिल्लाईआ। तन कप्पड़ करे पतित पुनीत, दुरमति मैल आप धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीउ पिण्ड वेख वखाईआ। जीउ पिण्ड जगत जुग रास, जोती जाता वेख वखांयदा। ब्रह्म दाता पारब्रह्म पुरख अबिनाश, पुरख बिधाता खेल खिलांयदा। उत्तम जाता सर्ब गुणतास, आपणा राथा आप चलांयदा। सुणाए गाथा घट घट वास, शब्द अनादी धुन वजांयदा। सगला साथा जोत प्रकाश, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। त्रै त्रै पूरी करे आस, चौथा गेड़ा आप रखांयदा। भगवन्त भिखारी भगत रहे उदास, दिवस रैण राह तकांयदा। गहर गम्भीरा काया सरीरा वसे आस पास, आसन सिँघासण सोभा पांयदा। जीउ पिण्ड जगत दाता दास, सेवक साची सेव कमांयदा। भगती भाव पूरी करे आस, भगवन आपणी वस्त झोली पांयदा। लोकमात बुझाए लग्गी प्यास, अग्न तत्त

ना कोए तपांयदा। भगत विछोड़ा करे नास, अस्तिक आपणे अंग लगांयदा। दो जहानां करे बन्द ख़लास, बन्धन बन्दी तोड़ दया कमांयदा। लेखा जाणे इक्क इक्क सास, सालस बैठा लेख लिखांयदा। आदि जुगादि ना होए विनास, अबिनाशी आपणा नाउँ धरांयदा। जीउ पिण्ड सद रक्खे वास, घर मन्दिर सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलांयदा। जीउ पिण्ड अन्धेरा घुप, रवि ससि ना कोए रुशनाईआ। निरगुण नरायण नर हरि अंदर बैठा छुप, मुख आपणा पर्दा पाईआ। ना कोई छाँ ना कोई धुप्प, दिवस रैण ना कोए वखाईआ। ना कोई मात ना कोई पित, पिता गोद ना कोए सुहाईआ। ना कोई थित वार दिसे रुत, घड़ी पल ना वण्ड वण्डाईआ। ना कोई अमृत जाम प्याए घुट्ट, प्याला सुराही ना हथ्थ उठाईआ। ना कोई धन दौलत रिहा लुट्ट, ठग्ग चोर यार दिस कोए ना आईआ। ना कोई मीत मुरार बण बण बहे रुट्ठ, ना कोई रुठड़ा रिहा मनाईआ। इक्क इकल्ला जीउ पिण्ड ब्रह्म पारब्रह्म जाए तुट्ठ, आप आपणा लए मिलाईआ। आपणी गोदी आपे चुक्क, आपणीआं भुजां आप सुहाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप जणाईआ। जीउ पिण्ड जग जीवन दाता, जीवन मुक्त आप अख्वांयदा। आठे पहर एका गाथा, गहर गम्भीर आप सुणांयदा। जुगा जुगन्तर सगला साथा, सगला संग आप निभांयदा। दीपक जोती जोत प्रकाशा, प्रकाश प्रकाश विच टिकांयदा। दीना नाथ अनाथ अनाथा, माण निमाणयां आप रखांयदा। चरन कँवल कँवल भरवासा, धरत धवल धवल सुहांयदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाशा, गगन मंडल फोल फुलांयदा। अप तेज वाए रक्खे वासा, आपणा तत्त आप उपांयदा। जीउ पिण्ड करे खेल तमाशा, खेलणहारा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मन्दिर आप सुहांयदा। जीउ पिण्ड हरी हरि मन्दिर, हरि कंचन गढ़ सुहाईआ। निरगुण निरवैर वड़या अंदर, मूर्त अकाल कर रुशनाईआ। आपणा लाए आपे जिंदर, ना कोए तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। मन मनूआ नौं दुआरे फिरे बन्दर, दहि दिशा फेरी पाईआ। जगत वासना बण कलंदर, चारों कुंट रही नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीउ पिण्ड आपणा आप धर, धुर धाम वेख वखाईआ। जीउ पिण्ड हरि महल्ला हरि, हरि जू आप वसांयदा। एकँकारा बैठ इकल्ला, अकल कल आपणी आप धरांयदा। अनुभव प्रकाश अछल अछला, वल छलधारी खेल खिलांयदा। वसणहारा जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँग्घी कंदर फोल फुलांयदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन एका मल्ला, आत्म सेजा सेज सुहांयदा। सुरत सवाणी फड़ाए पल्ला, शब्द गुर हाणी वेख वखांयदा। अमृत आत्म ठंडा पाणी प्याए जला, निझर झिरना आप झिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग

आप रंगांयदा। जीउ पिण्ड हरि रंग रंगीला, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ छैल छबीला, आपणा जोबन आप हंढाईआ। आपणी सेजे आपे सुत्ता कर कर हीला, आपणी करवट आप बदलाईआ। आपणा बणाए आप कबीला, नारी कन्त आप अख्वाईआ। आपणी करे आप दलीला, इच्छया आपणी वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीउ पिण्ड आपणा जोबन वेख वखाईआ। जीउ पिण्ड हरि जोबन जवानी, शब्दी शब्द शब्द हंढांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा दिसे सच निधानी, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। धुर दी धार अगम्मी बाणी, दो जहाना आप सुणांयदा। आपणा आप आपणे उत्तों कर कुरबानी, काया कुरा वेख वखांयदा। सच दुआरा पद निरबानी, परम पुरख प्रभ आसण लांयदा। निर्धन सरधन बणे दानी, नाम दान आप वरतांयदा। जोत जगाए पुरख सुल्तानी, अन्ध अन्धेर गवांयदा। आपणी गाए अकथ कहाणी, रसना जिह्वा ना कोए हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बंक आप सुहांयदा। जीउ पिण्ड बंक सुहावणा, हड्ड मास नाड़ी रत पंज तत्त जोड़ जुड़ाईआ। तख्त निवासी तख्त सुहावणा, आत्म सेजा पारब्रह्म वड्याईआ। गायण गीत गोबिन्द एका गावणा, नेत्र लोचण नैण निज आपणे दरसन पाईआ। मुख आपणा पर्दा आपे लाहवणा, स्वच्छ सरूपी रूप प्रगटाईआ। हरिजन साचे मेल मिलावणा, वरनां बरनां कट्टे फाहीआ। अंगीकार आप अख्वावणा, आपणा अंगन लए सुहाईआ। ऊँच नीच भेव चुकावणा, भेव खुल्हाए बेपरवाहीआ। दीनां नाथा दर्द वण्डावणा, दुखियां दुःख आपणी झोली पाईआ। निमाण निमाणयां गले लगावणा, नितान नितानयां होए सहाईआ। आप फड़ाए आपणा दामना, दामनगीर सच्चा शहनशाहीआ। जीउ पिण्ड हरिजन पूरी करे भावणा, भावी भेव ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मेला एका घर, हरिजन हरि हरि मिल्या वर, वर नर कन्त कन्तूल आत्म सेजा सुहाए बरखे साचे फूल, पवण पवणी सेवा आप लगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं का एका दाता, देवणहार सृष्ट सबाईआ।

१०१६ ०६

✻ १४ भाद्रों २०१७ बिक्रमी कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड पिपली ज़िला फिरोज़ पुर ✻

सति पुरख निरँजण राजन राज, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। सचखण्ड दुआरे साजन साज, आपणी बणत आप बणांयदा , अगम्म अगम्मड़ा रच रच काज, अनुभव आपणा वेख वखांयदा। आदि जुगादी सति जहाज, पुरख अकाल आप चलांयदा। शब्द अगम्मी देवे दात, निरगुण आपणी वण्ड वण्डांयदा। थिर घर बैठा थिर घर निवासी आपे पुच्छे वात, समरथ पुरख आपणा बल धरांयदा। निरगुण नरायण नर हरि जोती शब्द बधाए नात, जोड़ी जोड़ा जोड़ जुड़ांयदा। बोध अगाधी

एका गाथ, अलक्ख अलक्खणा आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा भूप रूप वटांयदा। साचा भूप हरि सुल्ताना, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। दरगाह साची वसे सच मकाना, दर दुआरा आप सुहाईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरा आप सुहाणा, सोभावन्त सहिज सुखदाईआ। थिर घर साचा दर परवाना, सच सिंघासण रिहा सुहाईआ। तख्त निवासी बण बण साचा कान्हा, हरि मन्दिर सोभा पाईआ। दीपक जोत जगाए महाना, तेल बाती ना कोए टिकाईआ। तुरीआ राग गाए एका गाणा, आप आपणी धुन उपजाईआ। सति सरूपी सति सतिवादी इक्क झुलाए सच निशाना, आप आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बल आप जणाईआ। सति सतिवादी साची कार, सति पुरख निरँजण आप करांयदा। सो पुरख निरँजण हो उज्यार, आप आपणा रूप प्रगटांयदा । हरि पुरख निरँजण पावे सार, सगला संग आप रखांयदा। एकँकारा करे खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी धार चलांयदा। आदि निरँजण दीपक जोती कर उज्यार, नूर नुराना डगमगांयदा। अबिनाशी करता हो त्यार, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। श्री भगवान अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर, आपणी कल धरांयदा। पारब्रह्म प्रभ मीत मुरार, आपणा मेला मेल मिलांयदा। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकार, आप आपणा कर पसार, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, तख्त निवासी तख्त सुहांयदा। बेऐब खुदाई परवरदिगार, नूर नुराना डगमगांयदा। निरवैर निराकार हो त्यार, अजूनी रहित आपणा खेल खिलांयदा। अनुभव प्रकाश कर पसार, प्रकाश प्रकाश विच टिकांयदा। आपे हुक्म आप वरतार, धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। आपे सेवक चोबदार, दर दरवेश आप अख्वांयदा। आपे निउँ निउँ करे निमस्कार, आपणा सीस आप झुकांयदा। आपे शाह शाहाना बण सिक्दार, शाह पातशाह आप अख्वांयदा। आपे राज राजाना हो उज्यार, सीस ताज आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख सति सतिवाद साची धारा आप बंधांयदा। साची धार बन्न्हणहारा, एका रंग समाईआ। वसणहारा ऊँच अटल मनारा, निहचल धाम इक्क वड्याईआ। निरगुण दीआ निरगुण बाती कमलापाती कर उज्यारा, घर साचे सोभा पाईआ। निरगुण नरायण नारी नर कन्त भतारा, आपणी सेज आप सुहाईआ। निरगुण वणज निरगुण वणजारा, निरगुण वस्त अमोलक आप वरताईआ। निरगुण शब्द निरगुण भण्डारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। सचखण्ड दुआर सुहावणा, पारब्रह्म आप सुहांयदा। आपणा बल आप रखावणा, श्री भगवान मेल मिलांयदा। आपणा राज आप कमावणा, अबिनाशी करता खेल खिलांयदा। आपणा नूर आप प्रगटावणा, आदि निरँजण जोत जगांयदा। आपणा हुक्म आप सुणावणा, एकँकारा आपणा नाउँ धरांयदा। आपणा तख्त आप वडियावणा, हरि पुरख

१०२०
०६

निरँजण चरन टिकांयदा। आपणा पातशाह आप बण जावणा, आप आपणा सीस जगदीस सीस टिकांयदा। सति पुरख निरँजण अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा बेड़ा आप चलावणा, चलावणहार इक्क अख्वाईआ। साचा मन्दिर आप सुहावणा, सचखण्ड दुआरे वज्जे वधाईआ। थिर दरबारा दर दरवाज़ा आप खुल्हावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप वरताईआ। सो पुरख निरँजण कल वरतंता, दरगाह साची धाम सुहांयदा। एका नूर श्री भगवन्ता, नूर नुराना डगमगांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। आप बणाए आपणी बणता, घड़न भन्नणहार आप अख्वांयदा। आपे आदि आपे अन्ता, मध आपणा रूप प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा साचा खोल्ह, शब्द अनादी एका बोल, आपणा नाउँ आप प्रगटांयदा। सचखण्ड दुआरा खोल्हया, पुरख अगम्म किरपा धार। तख्त निवासी दर घर साचे हरि हरि मन्दिर आपे बोलया, आप आपणा तोले तोल। निरगुण नर हरि निरगुण बदले चोलया, आदि जुगादि रहे अडोल। आपणी जोत आपे बोलया, आपे करे आपणा कौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खेल न्यारा, एकँकारा रिहा खोल्ह। सचखण्ड दुआरा सच वडियाई, हरि वड्डा वड वड्यांअदा। पुरख अबिनाशी बणत बणाई, साचा पान्धी आप हो जांयदा। श्री भगवान साची छप्पर छन्न आप सुहाई, असथल आपणा नाउँ धरांयदा। पारब्रह्म निरगुण निरवैर अजूनी रहित आदि निरँजण आपणी जोत आप टिकाई, नूर नुराना डगमगांयदा। चार कुंट दहि दिशा ना कोई वण्ड वण्डाई, वण्डणहारा दूसर कोए दिस ना आंयदा। इक्क इकल्ला बैठा सच महल्ला आसण लाई, पुरख अबिनाशी सच सिँघासण सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे वसे हरि, हरि जू मन्दिर हरि आप सुहांयदा। हरि जू मन्दिर हरि जू हरि जू सोभा पांयदा। हरि जू अंदर हरि जू बाहर, हरि जू गुप्त ज़ाहर खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड उजाला हरि गोपाला, दीन दयाला आप करांयदा। दीन दयाला गहर गम्भीर, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। शाह सुल्तान हकीर फ़कीर, एकँकारा एका बैठा आसण लाईआ। परवरदिगार पीरन पीर, दस्तगीरा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, आप सुहाए हरि हरि कन्त, कन्त कन्तूल वड्डी वड्याईआ। कन्त कन्तूल श्री भगवाना, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। आदि जुगादी नौंजवाना, एका रंग समांयदा। साचे तख्त बैठ सुल्ताना, साचा हुक्म आप वरतांयदा। आपे जाणे आपणा भाणा, आपणे भाणे सद समांयदा। आपे मन्दिर वेखे सच टिकाना, उच्च अटला आप बणांयदा। आपे चार कुंट वेखे मार ध्याना, आपणा लोचण नैण नेत्र आप खुल्हांयदा। आपे गाए आपणा गाणा, तार सितार ना कोए हिलांयदा।

१०२१
०६

आपे जाणे पद निरबाणा, आपणे पद आप समांयदा। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा इक्क वखाए सच टिकाणा, सच घराना आप बणांयदा। साचा घर ठांडा दरबार, पुरख अकाल आप उपाईआ। सति सरूपी दीन दयाल, दयानिध बैठा जोत जगाईआ। आदि जुगादि इक्क धर्मसाल, धुर दी धार आप बंधाईआ। करे खेल शाह कंगाल, शहनशाह शाह पातशाहीआ। आपणी चले अवल्लड़ी चाल, आपणी इच्छया आपे पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन आपणी खेल आप खलाईआ। आपणी खेल खिलावणहारा, एका रंग समाया। निरगुण निरगुण हो उज्यारा, निरगुण निरगुण रूप प्रगटाया। आपणा खोल्ह बन्द किवाड़ा, आप आपणा पर्दा लाहया। आपे मेला मेल मिलाए आपे रंग रंगाए अपर अपारा, रंग रेख आप अख्वाया। आपे नारी कन्त भतारा, सुत दुलारा शब्दी आपे जाया। आपे हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाणा आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी साचा राज, दो जहानां आप चलाईआ। दो जहानां साचा राजा, राउ रंक ना कोए रखाईआ। इक्क इकल्ला ग़रीब निवाज़ा, आपणी लाज आप धराईआ। शब्दी शब्द रचया काजा, शब्द सुत आप प्रगटाईआ। आप चढ़ाए सच जहाजा, आपणी सेवा आप कराईआ। एका देवे साचा दाजा, आपणी इच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरे साची खेल खलाईआ। सुत दुलारा जागया, निरगुण निरगुण निराकार। पारब्रह्म अबिनाशी करता मिल्या मेल कन्त सुहागया, विछड़ ना जाए हरि करतार। आदि जुगादि रहां विच आज्ञा, जुग जुग सेवा करां बण बण सेवादार। दर दरवेश फिरां भागया, नर नरेश हुक्मी हुक्म वरते सच्ची सरकार। निउँ निउँ सदा करां आदेसया, हरि पुरख चरन निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपणे वरते आप वरतार। सुत दुलारा हरि समझाया, सिर रक्ख हथ्थ करतार। एका सिख्या साहिब सुणाया, अभुल्ल गुर आप निरँकार। तेरी सेवक सेवा इक्क जणाया, भुल्ल ना जाणा बण गंवार। लोआं पुरीआं रचन रचाया, ब्रह्मण्ड खण्ड होए तेरा अधार। सूरज चन्न तेरी जोत टिकाया, इक्क किरन अपर अपार। इक्क इक्क इक्क नाल मेल मिलाया, तिन्नां विचोला आप निरँकार। सचखण्ड दुआर पल्लों हरि कढाया, थिर घर खोल्ह आप किवाड़। सुन्न अगम्मी पन्ध मुकाया, पुरख अबिनाशी खेल अपार। दीनां नाथ दयानिध गहर गम्भीर सिर आपणा हथ्थ रखाया, लेखा जाणे आर पार। आपणा हुक्म आप जणाया, धुर फ़रमाणा दस्से सच्ची सरकार। पारब्रह्म आपणी वण्ड तेरी झोली पाया, वस्त अमोलक दए दातार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एक शब्द करे प्यार। शब्द सुणया हरि संदेश, निउँ निउँ सीस झुकाया। लोआं पुरीआं करां तेरा वेस, तेरा बन्धन एका पाया। तूं साहिब सुल्तान

नर नरेश, तेरा हुक्म आप वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे भाणे बल रखाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, शब्द गुर आप जगाईआ। तेरा रूप अगम्म अपार, हरि हरि साचा वेख वखाईआ। निरगुण निराकार तेरा खेल करे साकार, साहिब सुल्तान वड्डी वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर त्यार, अंसा बंसा आप अख्वाईआ। निरगुण मात पित करे खेल अपार, पूत सपूता दए वधाईआ। अमृत बूंद करे करतार, दरगाह साची धाम सुहाईआ। आपणा रंग सूरा सरबंग मुक्ट करे त्यार, निरगुण दिस किसे ना आईआ। आपे विश्व वरते धार, विष्नूं आपणा बल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सरूपी अंदर वड़, शब्दी शब्द लए उपजाईआ। निरगुण अंदर निरगुण वड़या, आप आपणी कल धार। निरगुण अग्गे निरगुण खड़या, रूप अगम्म अपार। निरगुण अक्खर निरगुण पढ़या, लेखा लिखे ना कोई संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रगटे निराकार निराकार अकार। निराकार रूप वटाया, भेव अभेदा अभेद। सुत दुलारा सेव लगाया, करे खेल अछल अछेद। विष्नूं आपणा नाउँ रखाया, आपे खेडां रिहा खेड। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा भेव। भेव अवल्ला हरि करतारा, आपणे विच रखाईआ। इक्क इकल्ला हो उज्यारा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। विष्नूं फड़ाया आपणा पल्ला, आपणा बन्धन आपे पाईआ। आपणी जोती आपे रला, आपे वेखे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न अंदर आपे वड़, आपे आपणा रूप प्रगटाईआ। विष्न अंदर हरि हरि धार, आपणी आप रखांयदा। आपणा प्यार अमृत विचार, रस एका एक आप वहांयदा। आपणी इच्छया बण दातार, पारब्रह्म हरि आपणा खेल खिलांयदा। आपे कँवला हो उज्यार, आपे नाभी फुल्ल खिलांयदा। आपे पंखड़ीआं पावे सार, आपे भँवरा गूंज गुंजांयदा। आपे ब्रह्म रूप होए उज्यार, शब्दी धारा आप प्रगटांयदा। करे खेल सिरजणहार, एका आपणे हथ्थ रखांयदा। एका हुक्म करे वरतार, हुक्मी हुक्म सर्ब भवांयदा। शब्द नाद धुन सच्ची सरकार, ब्रह्म पारब्रह्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे विष्न आपे ब्रह्म, ब्रह्म आपणा नाउँ धरांयदा। विष्न ब्रह्मा हरि नाउँ धराया, निरगुण आपणी वण्ड वण्डाईआ। आपणा रूप आप प्रगटाया, सुन्न अगम्म वेख वखाईआ। धुर दी धार पर्दा लाहया, आपणी करवट लए बदलाईआ। आपणा फुल्ल आप उपाया, शंकर मेला सहिज सुभाईआ। गुर चेला शब्द बणाया, वेखणहारा थाउँ थाँईआ। सज्जण सहेला आप अख्वाया, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आपणी उत्पत आपे रिहा कराया। आपे निरगुण निराकारा, हरि निरँकार आपे जोती जोत जगांयदा। आपे शब्दी शब्द नाद धुन्कारा, आपे आपणा नाउँ प्रगटांयदा। आपे निराकार होए साकारा,

विष्नूं आपणा खेल खिलांयदा। आपे कँवल ब्रह्म कर पसारा, पारब्रह्म प्रभ आपणी वण्ड वण्डांयदा। आपे शंकर करे धूंआँधारा,
आपणा बन्धन आपे पांयदा। आपे वसे सचखण्ड दुआरा, साचे तख्त आप सुहांयदा। आपे राज जोग करे सच्चा सिक्दार,
सीस ताज आप टिकांयदा। लेखा लिखे अगम्म अपारा, मोर मुक्ट भेव खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
किरपा कर, देवणहारा साचा निरगुण ताज, निरगुण राज निरगुण हुक्मी हुक्म सुणांयदा। निरगुण शाह निरगुण सुल्तान, निरगुण
तख्त सुहाईआ। निरगुण दरवेश निरगुण दरबान, निरगुण दो जहान अलक्ख जगाईआ। निरगुण रचया आपणा काज, निरगुण
वेखे बण मलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचा ताज, आप बणाए ग़रीब
निवाज़, दूसर संग ना कोई रखाईआ। साचा घाड़न हरि हरि घड़दा, एकँकारा आपणी दया कमाईआ। साचा खेल आपे
करदा, आपणी सेवा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी कुठाली आपे धरदा, जोत अग्नी आप जगाईआ। आपणे पासे आपे
ढलदा, आपे खेल करे बेपरवाहीआ। चारे मुख आपे बणदा, आपे बकता होए सच्चा शहनशाहीआ। आपे पंचम मुख उप्पर
रखाए हरी हरि दा, हरि का भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ताज दए वड्याईआ।
 साचा ताज चार मुख, नर नरायण आप घड़ाया। पंचम रूप आपे चुक्क, आप आपणे हथ्थ टिकाया। आपे निमस्कार करे १०२४
 निउँ निउँ झुक, आपे सजदा सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, ०६
आप आपणी खेल खलाया। चारे मुख हरि हुलारा, हरि साचा आप दवाईआ। विष्नूं करे सच प्यारा, विष्नूं रूप आप प्रगटाईआ।
आपे खोल्ले ब्रह्म किवाड़ा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। चारे मुख इक्क सहारा, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। चारे वेदां बण लिखारा,
चारे जुग वण्ड वण्डाईआ। चारे खाणी कर पसारा, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड नाल रलाईआ। चारे बाणी बोल जैकारा, उच्ची
कूक परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाईआ। चारे वरनां दए हुलारा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाईआ। आपे वसे
सभ तों बाहरा, आपे हर घट रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मा
विष्न शिव आप समझाईआ। विष्न विश्व धार, हरि हरि समझांयदा। ब्रह्मे कर प्यार, पारब्रह्म मेल मिलांयदा। शंकर कर
शंगार, तन सुहांयदा। दोहां विचोला मीत मुरार, वेख वखांयदा। विष्नूं सच भण्डार, रिज़क सभांयदा। ब्रह्मा लक्ख
चुरासी कर पसार, ब्रह्म जोत सर्ब टिकांयदा। शंकर अन्तिम दए सँघार, जो घड़या भन्न वखांयदा। तिन्नां विचोला आप
निरँकार, सचखण्ड सोभा पांयदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, सुत दुलारा आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप
आपणी किरपा कर, तिन्नां विचोला आपे बण, आपे जननी जन जणे जन, जन जणेंदी आप हो जांयदा। आपे जन जणेंदी

माई, आपणी बणत आप बणांयदा। आपे त्रैगुण रिहा उपाई, रजो तमो सतो वेख वखांयदा। आपे विष्नूं रिहा उठाई, नेत्र नैण इक्क खुल्हांयदा। आपे ब्रह्मे करे पढ़ाई, चारे वेद आप सुणांयदा। आपे शंकर सेव लगाई, हथ्थ त्रशूल वखांयदा। आपे चले आपणी रज़ाई, आपे आपणा हुक्म वरतांयदा। आपे शब्द करे कुड़माई, गीत सुहागी आपे गांयदा। आपे विष्नूं सांगोपांग सेज रिहा सुहाई, कँवल नैण आप मटकांयदा। आपे ब्रह्मे पारब्रह्म ब्रह्म वण्ड वण्डाई, लक्ख चुरासी डेरा लांयदा। आपे शंकर बाशक तशका गल हंढाई, कंठ माला सोभा पांयदा। आपे वसे आपणी थाँईं, थान थनंतर आप सुहांयदा। आपे बणे साची माई, तिन्न चेले आपणी सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एकँकार, आदि जुगादी खेल अपार, सचखण्ड निवासी हो त्यार, लोआं पुरीआं पावे सार, ब्रह्मण्ड खण्ड सोभा पांयदा। सचखण्ड सुहावणहारा, सचखण्ड दुआरा वेख वखाईआ। रवि ससि कर उज्यारा, निरगुण नूर नूर करे रुशनाईआ। मंडल मंडप दए सहारा, आप आपणा बन्धन पाईआ। आपणा वरते आप वरतारा, आपणी वारता आप सुणाईआ। आपे शब्द बोल जैकारा, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। निरगुण रूप निराकारा, निरवैर आपणी रचना आप रचाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लेखा जाणे ना कोई छाहीआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यारा, त्रैगुण मेला मेल मिलाईआ। साचे घर खेल अपारा, शाह पातशाह आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप वखाईआ। शब्द भण्डारी आप हरि, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। शब्द संसारी आप हरि, आपणा रथ आप चलाईआ। शब्द सँघारी आप हरि, थिर कोई रहिण ना पाईआ। तिन्नां पुजारी आप हरि, इष्ट देव आप अख्वाईआ। तिन्नां सिक्दारी आप हरि, साचा राणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा साचा दर, दर दुआर वज्जे वधाईआ। वज्जे वधाई सचखण्ड, हरि साचा सगन मनांयदा। रचन रचाए पुरी लोआं ब्रह्मण्ड, सुत दुलारा सेव कमांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव लगाया अंग, सूरा सरबंग दया कमांयदा। नाद धुन वजाया मृदंग, धुर दी बाणी शब्द सुणांयदा। प्रकाश कराया सूरज चन्द, मंडल मंडप आप सुहांयदा। त्रैगुण माया वण्डण वण्ड, तिन्नां झोली पांयदा। निरगुण निरवैर सुणाए सुहागी छन्द, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा भेव खुल्हांयदा। आदि पुरख हरि भेव खुल्हाए, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। जोती जोत जोत रुशनाए, आपणी धारा धार वहाए, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। शब्दी शब्द हुक्म जणाए, धुर फ़रमाणा बेपरवाहीआ। धुर दा राणा खेल खिलाए, अकल कल आप वरताईआ। आपणी कल आप धराए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आपणा रंग रंगाईआ। आदि आदि हरि भगवाना, आपणी खेल खिलांयदा।

सचखण्ड सुहाए सच मकाना, थिर घर साचे आसण लांयदा। नाद अनादी धुर तराना, तुरीआ राग आप सुणांयदा। शब्द सरूपी वड बलवाना, आपणा बल आप वखांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर परवाना, अपणी सेवा आप कमांयदा। त्रैगुण माया देवे दाना, साची झोली आप भरांयदा। इक्क इकल्ला खेले खेल दो जहाना, आप आपणा रूप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बन्धन आपे पांयदा। बन्धन पाए नाम करतार, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करया ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोई रखाईआ। एका हुक्म सच्ची सरकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। त्रैगुण माया हरि का तत्त वरतार, त्रै त्रै मेला सहिज सबाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। पंज तत्त तत्त पसार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश तेरी गोद सुहाईआ। विष्नूं तेरी सेवा अपार, घर घर देणा रिज़क सबाईआ। ब्रह्मे तेरा रूप निराकार, ब्रह्म आपणा रूप प्रगटाईआ। शंकर अन्तिम लैणा सँघार, थिर कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां एका तत्त रिहा समझाईआ। तिन्नां करी इक्क सलाह, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। तूं साहिब सुल्तान बणना सच मलाह, बेड़ा तेरे हथ्थ रखाया। तूं पिता तूं माँ, हउँ बालक हरि रघुराया। होए सहाई सबनी थाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। लक्ख चुरासी बणत लए बणा, घड़ भाण्डे दए वखाया। कवण वस्त आपणे अंदर दए
१०२६ टिका, पंज तत्त खेड़ा आप सुहाया। निरगुण निरगुण रिहा समझा, आप आपणा मेल मिलाया। जीव आत्म आपणा नाउँ १०२६
०६ रखा, परम आत्म वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणी धार आप वखाया। ०६
लक्ख चुरासी भाण्डा घड़ना, तेरी महिमा गणत गणी ना जाईआ। निरगुण हो के अंदर वड़ना, सरगुण साचा वेख वखाईआ। आपणे दुआरे आपे चढ़ना, आपणा पौड़ा आपे लाईआ। आपे मन्दिर आपे खड़ना, आपणा रूप आप प्रगटाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़ना, रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। आपणा खेल आपे करना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी महिमा आप जणाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव दोए जोड़ करन प्रनाम, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। आदि जुगादि जुग जुग तेरा उपजे नाम, तेरे नाम वज्जे वधाईआ। लोकमात रचया तेरा ग्राम, जगत खेड़ा आप सुहाईआ। आपणा पूरा करे आपे काम, अभुल्ल दाता इक्क बेपरवाहीआ। वक्त सुहाउणा दिवस रैण शाम, घड़ी पल वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणी खेल खलाईआ। आदि आदि तेरा खेल खिलाउँणा, लक्ख चुरासी रचन रचाईआ। कवण वेला कवण वक्त हरि मेल मिलाउणा, ब्रह्मा विष्न शिव रहे सुणाईआ। तेरा विछोड़ा सदा ना भाउणा, तेरे भाणे सद समाईआ। कवण रूप हरि नजरी आउणा, स्वच्छ सरूप रूप प्रगटाईआ। कवण धाम मात सहाउणा, तिन्नां

लेखा दए मुकाईआ। कवण सेजे आप सुआउणा, फूलन बरखा एका लाईआ। कवण खेड़ा ग्राम वसाउणा, कवण नगर देवे ढाईआ। कवण जग जोत जगाउणा, कवण चौकड़ी दए भवाईआ। कवण लोक वेस वटाउणा, चौदां लोक कवण रुशनाईआ। कवण रंग विष्न आप रंगाउणा, श्री भगवान मेल मिलाईआ। कवण रूप ब्रह्मे पन्ध मुकाउणा, जुग चौकड़ी खेल खलाईआ। कवण रूप शंकर जोत मलाउणा, अन्तिम लेखा दए मुकाईआ। कवण रूप सुरपति तख्तों लौहणा, कवण रूप करोड़ तेतीसा माण देण गंवाईआ। कवण रूप गण गंधर्ब किनर यच्छप वक्त सुहाउणा, राग नाद ना कोई सुणाईआ। कवण रूप सृष्ट हरि फेरा पाउणा, लक्ख चुरासी दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देणा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव बैठे सीस झुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ हुक्म जणाया, भुल्ल रहे ना राईआ। निरगुण आपणा खेल खलाया, सरगुण जोत करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी वण्ड वण्डाया, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड गगन पताल रिहा सुहाया, धरत धवल समुंद सागर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका लेखा रिहा समझाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव हरि समझाए, आपणी दया कमांयदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग सेवा लाए, मनवन्तर जगत वण्ड वण्डांयदा। गुर पीर अवतार आपणा रूप वटाए, निरगुण सरगुण जोत जगांयदा। भगतन भगती मार्ग लाए, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। सन्तन साची सेज हंढाए, नारी कन्त वेख वखांयदा। गुरमुख चोली रंग रंगाए, रंग चलूल इक्क रंगाईआ। गुरमुख साजण लए मिलाए, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। नौं दरवाजे खोज खुजाए, जगत वासना बन्द करांयदा। नौं खण्ड पृथमी फेरा पाए, नौं नौं आपणा रंग रंगांयदा। चार जुग वेस वटाए, चार चौकड़ मेल मिलांयदा। एका छीका जोड़ जुड़ाए, चार वेद छे शास्त्र फोल फुलांयदा। पुराण अठारां आपे गाए, आपणी सेवा आप कमांयदा। गीता ज्ञान आप दृढ़ाए, आपणी महिमा आप सुणांयदा। अञ्जील कुराना आप लिखाए, बाईबल आपणी मति रखांयदा। खाणी बाणी आप पढ़ाए, चारे वरनां वेख वखांयदा। निरगुण सरगुण कर रुशनाए, सतिजुग त्रेता द्वापर फेरी पांयदा। साचे तख्त बैठा सच्चा शहनशाहे, सीस आपणे ताज रखांयदा। सत्त रंग निशाना इक्क झुलाए, सत्तां दीपां आप उठांयदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग गेड़ा आप दवाए, चवीआं अवतार सेव कमांयदा। दस दस गुर मेल मिलाए, एका जोती जोत डगमगांयदा। मुला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर आप हो जाए, संग मुहम्मद चार यार वेख वखांयदा। ईसा मूसा काला सूसा आप रंगाए, एका अल्फ़ी आप हंढांयदा। सच हदीसा आप पढ़ाए, शरअ शरीयत आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव आप समझांयदा। हरि समझौदा हरि निरँकार, भेव रहे ना राईआ। जुगां जुगन्तर हरि अवतार, जुग चौकड़ी खेल खलाईआ।

निरगुण सरगुण पावे सार, अगम्म अगम्मड़ा भेव ना राईआ। हड्ड मास नाड़ी चमड़े वसे बाहर, मन मति बुध ना कोए धराईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म दए अधार, पारब्रह्म आपणे अंग लगाईआ। विष्नूं तेरा विश्व भण्डार, नौं खण्ड पृथ्मी आप वरताईआ। आपे तेरा ब्रह्म पसार, लक्ख चुरासी वेखे जगत लोकाईआ। बेऐब खुदाई परवरदिगार, जल्वा नूर नूर अलाहीआ। मुकामे हक सांझा यार, शाह नवाब बैठा तख्त सुहाईआ। ऐनलहक लाए नाअर, हक हकीकत वेख वखाईआ। अहिबाब रबाब वजाए सितार, आपणा तार सितार आप हिलाईआ। चौदां तबकां वसे बाहर, आलम उलमा भेव ना राईआ। ना कोई कातब बणे लिखार, मकतब करे ना कोई पढ़ाईआ। खलक खुदाई वेखणहार, ख़ालक आपणा रूप वटाईआ। अल्ला राणी वेखे वेखणहार, आपणी इच्छया आपे लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा विष्न शिव आप समझाईआ। ब्रह्मे शिव रक्खणा ध्यान, हरि साचा सच जणांयदा। कलिजुग वेखे एका काहन, निरगुण आपणा नूर आप प्रगटांयदा। सरगुण मेला विच जहान, पंज तत्त चोला आप हंढांयदा। नानक नाम कर प्रधान, एका बूझ बुझांयदा। सचखण्ड दुआरे कर परवान, साची वस्त अमोलक झोली पांयदा। नाम सति एका दान, चार वरनां वण्ड वण्डांयदा। अठसठ तीर्थ वेखे मार ध्यान, आपणा नेत्र इक्क उठांयदा। माण तुड़ाए राज राजान, शाह सुल्तान ख़ाक मिलांयदा। एका हुक्म धुर फ़रमाण, सृष्ट सबाई आप सुणांयदा। कलिजुग कूड़ा होए प्रधान, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटांयदा। लक्ख चुरासी जीव शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोई वखांयदा । आसा तृष्ना पीण खाण, सति सन्तोख ना कोई जणांयदा। पंडत पांधे खोल्ह झूठ दुकान, हरि का नाम साचे हट्ट ना कोई वकांयदा। रसना बह बह गाण, नेत्र लोचण दरसन कोई ना पांयदा। चार दिवारी मस्जिद मठ मन्दिर पूजा करन जीव निधान, काया मन्दिर हरि जू हरि ना कोई बहांयदा। प्रगट होवे हरि मेहरवान, निहकलंक आपणा नाउँ धरांयदा। मात पित ना कोई निशान, गोदी गोद ना कोई सुहांयदा। शब्द अगम्मी गाए गान, लोआं पुरीआं फोल फुलांयदा। विष्नूं तेरी सार पाए आण, ब्रह्मा तेरा पन्ध मुकांयदा। शंकर तेरा वेखे थान, आप आपणा चरन टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साची वस्त इक्क वरतांयदा। विष्न सच ध्यान लगाउणा, हरि साचा सच जणांयदा। एका जोती जोत जगाउणा, दस दस रूप वटांयदा। गोबिन्द गुर गुर नाउँ रखाउँणा, सिँघ आपणा बल धरांयदा। पुरख अकाल इक्क मनाउणा, पिता पूत गोद सुहांयदा। एका खण्डा आप चमकाउणा, चण्ड प्रचण्ड आप चमकांयदा। दो जहानां वेस धराउणा, धरनी धवल चरन टिकांयदा। अन्तिम लेखा लेख लिखाउणा, आप आपणा बन्द रखांयदा। सच संदेशा इक्क सुणाउणा, लक्ख चुरासी जीव जगांयदा। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, साचा चन्द

ना कोई चढ़ांयदा। मावां पुतरां संग रखाउणा, भैणा भईआ ना कोई वेख वखांयदा। नारी कन्त ना किसे हंढाउणा, विभचार सर्ब कमांयदा। साध सन्त साचे अंदर बह हरि का दरस किसे ना पाउणा, नौं दुआरे सर्ब फिरांयदा। उच्ची कह कह जगत सुणाउणा, रसना जिह्वा सर्ब हिलांयदा। देवी देवा दिस ना आउणा, देव आत्मा मेल ना कोई मिलांयदा। अलक्ख अभेव आपणा वेस वटाउणा, रूप रंग ना कोई जणांयदा। साचा खेड़ा आप वसाउणा, सम्बल एका गराउँ जणांयदा। निहकलंका डंक वजाउणा, ब्रह्मण्डां खण्डां आप उठांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां तख्तों लौहणा, तख्त निवासी सीस आपणे ताज टिकांयदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाउणा, वेला अन्तिम आपणे हथ्थ रखांयदा। रामा कृष्ना मेल मिलाउणा, सीता सुरती आप प्रनांयदा। राधा बंसरी इक्क सणाउणा, गीत गोबिन्द मकंद मनोहर लख्मी नरायण आपे गांयदा। चार वेदां आप जणाउणा, अक्खर अक्खर आप सुणांयदा। नारद सुरस्ती भार लौहणा, छत्ती रागां फोल फुलांयदा। धुर दा राग इक्क सुनाउणा वेद कतेब भेव ना पांयदा। गायत्री मन्त्र ना किसे दृढ़ाउणा, बारां अक्खर ना कोई वखांयदा। चार चार ना पाठ कराउणा, चौथे जुग पन्ध मुकांयदा। निरगुण सरगुण मेल मिलाउणा, हँ ब्रह्म पारब्रह्म समांयदा। सतिजुग साचा मात धराउणा, एका मार्ग आप वखांयदा। चार वरन एका रंग रंगाउणा, चार यारी ख़ाक मिलांयदा। पंचम ताज पंचम मुख पंचम मीता सीस पहनाउणा, पंचम राज जोग कमांयदा। शब्द अनादी ढोला एका गाउणा, कलिजुग चोला आप बदलांयदा। साचा तोला एका धार सणाउणा, तेरां आपणी धार चलांयदा। गोबिन्द मेला मेल मिलाउणा, शब्द गुर इक्क अख्वांयदा। निहकलंका नाउँ धराउणा, निरवैर निराकार आपणा बल आप उपांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव तेरा कीता कौल पूर कराउणा, आदि अन्त हरि भगवन्त, जुगा जुगन्तर आपे आपणा पाए बन्धन, आपे तोड़नहारा तन्दन, आपणा खेल आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल कर, हरि सन्त साचे लए फड़, अंदर मन्दिर डूँघी कंदर काया खोज खुजांयदा। काया अंदर डूँघी गार, सतिगुर पूरा वेख वखाईआ। गुर गुर करे सच प्यार, हरिजन वेखे थाउँ थाँईआ। नाता तोड़ नौं दुआर, जगत वासना दए मुकाईआ। एका बख्श चरन प्यार, चरन चरनोदक दए प्याईआ। सुखमन करे आर पार, टेढी बंक आप सुहाईआ। ईड़ा पिंगल कर ख्वार, आपणे मार्ग आपे लाईआ। जोत निरँजण कर उज्यार, घर घर विच करे रुशनाईआ। शब्द सुणाए सच्ची धुन्कार, अनहद साची सेव कमाईआ। पंचम सख़ीआं मंगलचार, दिवस रैण ना कोई वखाईआ। घर मन्दिर सोहे बंक दुआर, वज्जदी रहे वधाईआ। दूई द्वैती पर्दा देवे पाड़, बजर कपाटी आप तुड़ाईआ। साची हाटी वणज वापार, आत्म सेजा वेख वखाईआ। दस्म दुआरी चिट्टी धार, एका आप लए प्रगटाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म

कर पसार, सूरज चन्न मुख शर्माईआ। सुरती सुरत करे प्यार, सतिगुर सच्चा शहनशाहीआ। अकाल मूर्त दए अधार, जीव मूर्त वेख वखाईआ। ईश जीव इक्क अधार, जगत जगदीश वड वड्याईआ। गुरमुख बणे सोभावन्ती नार, घर मिल्या मेल प्रीतम पीआ सच्चा माहीआ। सति सति कराए सच शंगार, नेत्र कजला नाम पाईआ। बस्त्र भूशन कर त्यार, शब्दी चोली आप रंगाईआ। अगम्मी डोली कर त्यार, गुरमुख साचे विच बहाईआ। दस्म दुआरीओं कढ्ढे बाहर, धूंआँधार रहिण ना पाईआ। सुन्न अगम्मी आर पार, सतिगुर पूरा आपणी गोद उठाईआ। थिर घर साचा खोल्ह किवाड़, आपणा मन्दिर दए वखाईआ। चौथे पौड़े आपे चाढ़, चौथे पद रिहा समाईआ। तत्व तत्त ना कोई विचार, रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। साचे सन्त कर प्यार, सति सतिवादी सचखण्ड दुआरा आप खुल्हाईआ। अलक्ख अलक्खना बोल जैकार, आपणा नाअरा दए सुणाईआ। सोहँ रूप आप निरँकार, निरगुण मेला एका थाँईंआ। सचखण्ड दवारिउँ कढ्ढे बाहर, आपणी उँगल आपे लाईआ। अगम्म अथाह करे खेल न्यार, साचा धाम आप सुहाईआ। धाम अवल्लड़ा एकँकार, साचे तख्त बैठा आसण लाईआ। पंचम मुख सीस ताज दस्तार, शाह पातशाह आप सुहाईआ। सन्त कन्त भगवन्त चरन कँवल करे पनहार, स्वच्छ सरूप अनरंग रूप आपणा दरस दिखाईआ। महांकाल ना दिसे चारे कूट, बैठा मुख शर्माईआ। जिस जन उप्पर साहिब सतिगुर सच्चा जाए

१०३० तुट्ठ, जुग जुग विछड़े आपणा मेल मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम नौं खण्ड पृथ्मी पैणी लुट्ट, ना सके कोई बचाईआ। मनमुखां १०३०

०६ भाग गया निखुट, पंखी पंछी तरवर सरवर रहे डुलाईआ। किसे ना पीआ अमृत घुट्ट, अठसठ तीर्थ रहे कुरलाईआ। साचे ०६

मन्दिर ना चढ़या कोई चोट, मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआले मुल्ला शेख़ पीर पंडत पांधे रहे टल्ल खड़काईआ। गोबिन्द सूरा ज़ाहर ज़हूरा शब्द निराला मारे तीर, एका चिल्ला हथ्थ उठाईआ। तीर कमाना तोड़ जंजीर, पीरन पीर शाह फकीर वेखे थाउँ थाईंआ। गुरमुखां बख्शे अमृत आत्म ठांडा सीर, जो जन अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। बीस इकीसा लए फड़ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लाड़ी मौत घर घर जा जा लाहे चीर, सृष्ट सबाई नग्न फिराईआ। नारी पुरख कोई ना वण्डे किसे दी पीड़, दर दर घर घर कूकण देण दुहाईआ। राए धर्म हथ्थ फड़ ज़ंजीर, दूर दुराडा राह तक्के नौं खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी वेखे झूठी शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव लए फड़, सोया कोए रहिण ना पाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव हरि साचे फड़ना, कलिजुग वेला अन्तिम आया। आपणे पौड़े आपे चढ़ना, चढ़नहार दिस ना आया। चौदां लोक त्रैभवन अवण गवण नौं सत्त शाह सुल्तान किसे ना अड़ना, जो घड़या भन्न वखाईआ। कलिजुग फल अन्तिम झड़ना, कलिजुग अन्धेर रिहा झुलाईआ। माया ममता हउमे हंगता शौह दरयाए हड़ना, साचा हड़ इक्क वखाईआ। त्रैगुण

माया तेरी अग्नी पंज तत्त जीव जंत सड़ना, सांतक सति ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, ब्रह्मा विष्न शिव आप उठाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव उठना जाग, हरि साचा सच सुणांयदा। लक्ख चुरासी होई काग, हँस रूप ना कोई वटांयदा। साध सन्तां लग्गा दाग, दुरमति मैल ना कोई धुआंयदा। दीपक जोत ना जगे कोई चिराग, घुप अन्धेरा छांयदा। माया डसनी डस्से नाग, गुर पीर ना कोई मनांयदा। ना कोई सज्जण ना कोई साक, भैण भाई ना कोई अख्वांयदा। धीआं भैणां रहे ताक, गुरदर मन्दिर मस्जिद सर्ब कुरलांयदा। अठसठ तीर्थ रिहा ना पाक, नारी पुरष नंगां तारीआं लांयदा। ग़रीब निमाणे रुले ख़ाक, फड़ बांहो गले ना कोई लगांयदा। प्रगट होए पारब्रह्म अबिनाशी करता गोबिन्द तेरा पूरा करे भविख्त वाक, लिख्या लेख ना कोई मिटांयदा। किसे हथ्थ ना आए वरन ज़ात, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश उच्चे टिल्ले चढ़ चढ़ सर्ब कुरलांयदा। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती चरन धूढ़ मंगे ख़ाक, पुरख अबिनाशी एका धूढ़ ना मस्तक लांयदा। त्रैगुण अग्नी लग्गी आग, मिले मजन ना साचा माघ, आत्म उपजे ना इक्क वैराग, मन बांध ना कोई वखांयदा। गुरमुख विरले मेला हरि हरि कन्त सुहाग, दिवस रैण दीआ बाती इक्क जगाए चराग, आपणा मन्दिर सोभावन्त आप सुहाए साचा कन्त, लेखा जाणे जुग जुग सन्त, भगत भगवन्त आपणे लेखे पांयदा।

✻ १५ भाद्रों २०१७ बिक्रमी धर्म सिँघ दे गृह पिण्ड पिपली ज़िला फिरोज़ पुर ✻

सति पुरख निरँजण बेपरवाह, इक्क इकल्ला वड वड्याईआ। सो पुरख निरँजण सच्चा शहनशाह, साचे तख्त सिँघासण सोभा पाईआ। हरि पुरख निरँजण अगम्म अथाह, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। एकँकारा वसे साचे थाँ, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। आदि निरँजण नूर नुराना डगमगा, अनुभव प्रकाश आप कराईआ। अबिनाशी करता साचा मन्दिर रिहा सुहा, थिर दरबारा वेख वखाईआ। श्री भगवान ना कोई पिता ना कोई माँ, गोदी गोद ना कोए सुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ आपे जाणे आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप धराईआ। आदि जुगादी करे सच न्याँ, शाहो भूप वड्डी वड्याईआ। आपणे भाणे सोहया , दूसर होर ना हुक्म जणाईआ। जूनी रहित नाउँ धरा, दीपक जोत करे रुशनाईआ। पुरख अकाल आप अख्वा, आपणा बल आप रखाईआ। करता पुरख वेस वटा, आपणी करनी करे दिस ना आईआ। आदि जुगादी इक्क मलाह, निरगुण बेड़ा रिहा चलाईआ। वंज मुहाणा इक्क रखा, एका चप्पू हथ्थ उठाईआ। नाम सहारा दए लगा, शब्द अनादी आप प्रगटाईआ। बोध अगाधी भेव खुल्हा, आपणा राग आप सुणाईआ। आपणा मन्त्र आप दृढ़ा, आपणी बूझ आप

बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा आप सुहाईआ। सति पुरख निरँजण ऊँच अपारा, बेअन्त भेव ना आंयदा। सो पुरख निरँजण खेल न्यारा, निरगुण नरायण निरवैर आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण सुहाए इक्क मुनारा, अस्थिल चुबारा आप बणांयदा। एकँकारा आपे बणे शाहो भूप सच्चा सिक्दारा, तख्त निवासी तख्त सुहांयदा। आदि निरँजण कर पसारा, जोत उजाला जोत करांयदा। श्री भगवान वेखे सच अखाड़ा, दरगाह साची आप लगांयदा। अबिनाशी करता एका लाड़ा, आपणा जोबन आप सुहांयदा। पारब्रह्म प्रभ मीत मुरारा, आपणा संग आप निभांयदा। आदि जुगादी साची कारा, करता पुरख आप करांयदा। नाद अनादी बोल जैकारा, शब्द शब्दी डंक वजांयदा। शब्द शब्दी कर प्यारा, दर घर साचे मेल मिलांयदा। दर घर साचे बण वणजारा, वणज वपार इक्क करांयदा। वणज वपारी परवरदिगारा, गहर गम्भीर आप अख्वांयदा। गहर गम्भीर सभ तों वसे न्यारा, निराकार दिस ना आंयदा। निराकार कर पसारा, आपणी धारा आप बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा आप वड्यांअदा। सति पुरख निरँजण परवरदिगार, बेऐब नाउँ धरांयदा। सो पुरख निरँजण सांझा यार, दर घर साचे डेरा लांयदा। हरि पुरख निरँजण करे खेल अपर अपार, अपर अपरम्पर आपणा मुख छुपांयदा। आदि निरँजण वेखे विगसे पावे सार, वेखणहारा दिस ना आंयदा। श्री
१०३२ भगवान रूप रंग तों वसया बाहर, रेख भेख ना कोए बणांयदा। अबिनाशी करता खड़ग खण्डा ना कोए कटार, बस्त्र शस्त्र १०३२
०६ ना कोए उठांयदा। पारब्रह्म जोद्धा सूरबीर बली बलकार, बलधारी आप हो जांयदा। अछल अछल करे कराए आपणी कार, ०६
आपणी कल आप वरतांयदा। अकल कला हो उज्यार, हुक्मी हुक्म आप वरतांयदा। हुक्मी हुक्म कर पसार, इक्क इकल्ला वेख वखांयदा। धुर दरगाही दर दरबार, साचा तख्त आप सुहांयदा। राज राजाना हो त्यार, शाह सुलताना आसण लांयदा। सति सतिवादी सच निशाना देवे चाढ़, नाम डोरी इक्क रखांयदा। पंचम मुख ताज सीस धार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आपणी कार आप कमांयदा। कार करावणहारा एकँकार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सचखण्ड दुआरा कर पसार, निरगुण बैठा जोत जगाईआ। ना कोई साजण मीत मुरार, सगला संग ना कोए वखाईआ। ना कोई गुर पीर अवतार, साध सन्त ना रूप वटाईआ। ना कोई भगत करे जै जैकार, भगवन मेल ना कोए मिलाईआ। राम नाम ना कोए प्यार, कान्हा बंसरी ना कोए वजाईआ। ऐनलहक ना कोए नाअर, मुकामे हक ना कोए खुदाईआ। नाम सति ना कोए प्यार, फ़तह वाहिगुरू ना कोए बुलाईआ। नानक गोबिन्द ना कोए धार, पंज तत्त ना कोए वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना करे कोए पुकार, त्रैगुण वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, करे कराए खेल अपार, बलधारी

१०३३ ०६

आप हो जाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवान, दर घर साचे सोभा पांयदा। ना कोई शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान ना कोए दृढ़ांयदा। ना कोई अञ्जील ना कुरान, तीस बतीस ना कोए गांयदा। खाणी बाणी ना गाए गान, रसना जिह्वा ना कोए हलांयदा। अठसठ ना पाणी कोई रिहा छाण, सर सरोवर ना कोए उपांयदा। चार जुग ना कोए निशान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग रूप ना कोए वटांयदा। चारे मुख ना कोए प्रधान, चारे कुंट ब्रह्मा राग ना कोए अलांयदा। सांगोपांग ना कोए सुहान, विष्नूं सेज ना कोए हंढांयदा। बाशक तशका ना कोए कल्याण, शंकर गल ना कोए लटकांयदा। अक्खर वक्खर ना जाणे कोई कलाम, गाइत्री मन्त्र ना कोए पढ़ांयदा। निउँ निउँ करे ना कोई प्रनाम, सीस जगदीस ना कोए झुकांयदा। ना कोई रसना कहे राम राम, जनक सपुत्री सीता ना कोए प्रनांयदा। ना कोई बण ना बनबास, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरी कोए ना पांयदा। ना कोई नगर ना ग्राम, बंक दुआर ना कोए वखांयदा। ना कोई सुबाह ना कोई शाम, दिवस रैण ना वण्ड वण्डांयदा। ना कोई तृष्ना ना कोई ताम, आलस निन्दरा ना कोए बणांयदा। ना कोई मदि ना कोई जाम, ना कोई साकी बण प्यांअदा। ना कोई पल्लू ना कोई दाम, दामनगीर ना कोए अख्वांयदा। ना कोई चिल्ला तीर कमान, धनुष हथ्थ ना कोए रखांयदा। ना कोई रथ रथवाही करे कल्याण, महांसार्थी ना कोए अख्वांयदा। इक्क इकल्ला श्री भगवान, अकाल पुरख खेल महान, सचखण्ड दुआरे आपे सोभा पांयदा। ना कोई धरत धवल आकाश, पृथ्वी रूप ना कोए वटाईआ। ना कोई दिसे जगत बनास्पत बनास, फुल फुलवाड़ी ना कोए महिकाईआ। ना कोई नंदन ना कोई रास, गोपी काहन ना कोए नचाईआ। ना कोई सेवक दासी दास, दर दरबान ना कोए अख्वाईआ। ना कोई करे बन्द ख़लास, लक्ख चुरासी ना कोए भवाईआ। ना कोई राए धर्म पाए गल फाँस चित्रगुप्त हिसाब ना कोई वखाईआ। ना कोई बरस ना कोई मास, घड़ी पल वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ना कोई सूरज चन्द करे प्रकाश, किरन किरन ना कोए चमकाईआ। ना कोई थल ना अस्गाह, जल जल रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकार, सचखण्ड वसे धाम न्यार, निरगुण आपणा नूर धराईआ। निरगुण नूर उजाला हरि गोपाला, पारब्रह्म भेव ना आंयदा। आदि जुगादी खेल निराला, चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क रखांयदा। सचखण्ड दुआर वसे सच्ची धर्मसाला, जोती नूर रंग गुलाला, नूरो नूर डगमगांयदा। इक्क इकल्ला बण रखवाला, जुग जुग करे सच्ची प्रितपाला, प्रितपालक आपणा नाउँ धरांयदा। अबिनाशी आपणा नाउँ आपे माला, आप आपणी सेव कमांयदा। आपे मात पित करे हित, आपे सुत दुलार बणे लाला, बालक बाल आपणा रूप वटांयदा। आपे काल आपे महांकाला, आपे घाले आपणी घाला, घाली घाल आपे लेखे

पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वासा पुरख अबिनाशा, खेल तमाशा पुरख बिधाता आप कराईआ। पुरख बिधाता इक्क अकल्लड़ा, एका रंग समाया। सचखण्ड दुआरा साचा मलड़ा, थिर घर साचे सोभा पाया। आप वसाए नेहचल धाम अटलड़ा, उच्च महल्ल अटल आप वखाया। आपणे नूर आपे बलड़ा, जोती जोत आप जगाया। निरगुण निरवैर नर हरि आपणा फड़े आपे पल्लड़ा, आपणा बन्धन आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि हरि सोहे एका कन्त, हरि मन्दिर आप उपाया। हरि मन्दिर हरि उपांयदा, सोभावन्त सच्चा पातशाह। निराकार आसण लांयदा, बेऐब नाउँ खुदा। आपणा नूर आप प्रगटांयदा, आपे मेल मिलाए आपे होए जुदा। सच सिँघासण सोभा पांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अगम्म आपणा खेल खिलांयदा। अगम्म पुरख वडियाई वड, वड्डा आप सलाहया। आपणे विच्चों आपणा आप कढ्ढ, हरि आपे वेख वखाया। आप लडाए आपणा लड, समरथ पुरख आपणा नाउँ धराया। सति निशाना आपे गड्ड, सति सतिवादी आपे रिहा समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अगम्मड़ा आप अखवाया। अगम्म पुरख भेव अवल्ला, सचखण्ड दुआरा रिहा तकाईआ। आपणे सिँघासण बैठा इक्क इकल्ला, अकल कल आपणा बल धराईआ। आपे होए अछल अछला, वल छल आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म आपणा वेस वटाईआ। अगम्म धाम धाम न्यारा, निरगुण निरवैर आप उपांयदा। चार कंट ना कोई सहारा, छप्पर छन्न दा कोई उपांयदा। कमलापाती एका एक हो उज्यारा, एक एकँकारा खेल खिलांयदा। आप आपणा कर पसारा, आपणी रचना आप रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। आपणा लेखा आपणे रक्ख हथ्थ, दरगाह साची सोभा पांयदा। सो पुरख निरँजण साहिब समरथ, महिमा अकथ आप जणांयदा। हरि पुरख निरँजण साचे धाम वसे ना जाए ढठ्ठ, घाड़न घड़त ना कोई घड़ांयदा। एकँकारा एक उत्पत, आपणी पति आप करांयदा। आदि निरँजण आपणे बैठ आपे रथ, साचा दर आप सुहांयदा। श्री भगवान आपणी वेखे आपे वथ, सच समग्री आप उपांयदा। अबिनाशी करता आपणा पन्ध मुकाए नठ्ठ नठ्ठ, आपणी कार आप करांयदा। पारब्रह्म पति परमेश्वर इक्क इकल्ला वसे सच महल्ला सच सुल्ताना ग़रीब निमाणा आपणे दुआरे आपे जाए ढठ्ठ, आपणी भिख्या मंग मंगांयदा। निरगुण निराकार आपणा मार्ग आपे दस्स, आपणा राह आप चलांयदा। आपणा मेल मिलावा करे हस्स हस्स, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। आपणा माणे आपे रस, रसक बैरागी आप हो जांयदा। आपणे तख्त आपे बह सज, सच सिँघासण सोभा पांयदा। आपणे नगारे आपे जाए वज्ज, एका धौसां नाम

१०३४ ०६

वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सुहाए साचा दर, दर दरवाजा आप सुहांयदा। दर दुआर सुहावना, हरि ठांडा दरबार। पुरख अबिनाशी डेरा लावना, इक्क इकल्ला कर पसार। तख्त ताज सीस टिकावना, राज राजाना हरि निरँकार। वड भाणा हुक्मी हुक्म सुणावना, शब्द अगम्मी बोल जैकार। निरगुण निरवैर निराकार आपणा सीस आप झुकावना, राज राजाना हरि निरँकार। धुर फ़रमाणा आपणी झोली आपे पावना, आपे वरते वरतावे साची कार। साचा शब्द आप वडियावना, वड वडा कर पसार। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं रचन रचावना, आकाश प्रकाश दए सहार। विष्न ब्रह्मा शिव अंस बणावना, त्रैगुण माया भर भण्डार। पृथ्मी प्रकाश आप करावना, जल बिम्ब दए अधार। ब्रह्म आपणा नाउँ धरावणा, पारब्रह्म करे खेल न्यार। लोकमात जोत जगावणा, लक्ख चुरासी हो उज्यार। चार जुग वण्ड वण्डावणा, नौं खण्ड पृथ्मी बन्ने धार। सत्तां दीपां रंग चढ़ावणा, राजस वरते आपणी कार। सांतक सति सरूप भेव ना आवणा, सति सतिवादी खेल न्यार। तामस आपणा तत्त तपावणा, लेखा जाणे जानणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग करे आप पसार। जुग पसारा जगत जोग, हरि साचा रचन रचांयदा। आपे भोगे साचा भोग, ब्रह्मा विष्न शिव आप उपजांयदा। आपे लक्ख चुरासी देवे चोग, वस्त अमोलक झोली पांयदा। आपे लेखा जाणे चौदां लोक, लोक परलोक आप सुहांयदा। आप सुणाए सच सलोक, शब्द नाद आप वजांयदा। आपे बख्शणहारा मोख, आपे गेड़ा गेड़ दवांयदा। आपे लक्ख चुरासी देवे झोक, आपे जोती जोत मिलांयदा। आपे नाता जोड़े हरख सोग, आपे हउमें रोग वखांयदा। आपे रूप प्रगटाए कोटन कोटि, कोटन कोटि आपणा रंग रंगांयदा। आपे तन नगारे लाए शब्द चोट, अनहद साचा ताल वजांयदा। आपे वासना कढ्ढे झूठी खोट, आपे काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकांयदा। आपे खोलणहारा बन्द सोत, आपे दूई द्वैती पर्दा पांयदा। आपे करे प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर आप रखांयदा। आपे बन्धन पाए वरन गोत, दीन मज़्ब आप वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकारा, आदि जुगादी खेले खेल विच संसारा, वड संसारी आप हो जांयदा। वड संसारी खेल करंदड़ा, ख़ालक ख़लक रिहा समाए। जुग जुग आपणा वेस वटंदड़ा, जोती जोत करे रुशनाए। गुर सतिगुर नाउँ रखंदड़ा, पंज तत्त चोला आप हंढाए। शब्द ज्ञान इक्क दृढ़ंदड़ा, धुर दी बाणी बाण लगाए। हरि भगवन मेल मिलंदड़ा, हरि सन्तन लए जगाए। गुरमुख एका धाम सुहंदड़ा, चरन कँवल सच्ची सरनाए। गुरसिख साचे धन्दे आप लगंदड़ा, एका मार्ग दए वखाए। जुगा जुगन्तर वेस वटंदड़ा, निरगुण सरगुण मेला सहिज सुभाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करे सच न्याँए। जुग जुग जोत जगांयदा, जोती जाता आप निरँकार।

लक्ख चुरासी वेख वखांयदा, नौं नौं सत्त सत्त पावे सार। दर दर आपणी अलक्ख जगांयदा, ऊँची कूक करे पुकार। आपणा ढोला आपे गांयदा, आपणा अक्खर आप विचार। आपणा सोहला आप सुणांयदा, सृष्ट सबाई कर प्यार। साचा तोला आप हो जांयदा, नाम कंडा फड़ दातार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग करे अवल्लड़ी कार। जुग जुग कार कमांयदा, करता पुरख करनेयोग। सतिजुग आपणा रूप वटांयदा, बावन भोगे आपणा भोग। आपणी सेजा आप हंढांयदा, आप उसारे आपणा किला कोट। आपणा खेल आप करांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा बन्धन पांयदा। हरि हरि बन्धन आपणा पा, जुग जुग बन्दी तोड़ तुड़ाईआ। लक्ख चुरासी वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर फोल फुलाईआ। लग्गी बसन्तर दए बुझा, गुरमुख हरिभगत अमृत मेघ बरसाईआ। साचा सगन लए मना, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। आपणा चोला लए बदला, रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा मार्ग आप वखाईआ। सतिजुग आपणा मार्ग लाया, सच सच वरतांयदा। भगत भगवन्त वेख वखाया, दुरबाशा दर दुरकांयदा। भगत लेखा लेखे लाया, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। हरि के पौड़े लए चढ़ाया, साचा मन्दिर आप सुहांयदा। रूप अनूप आप प्रगटाया, दस अठ्ठ खेल खिलांयदा। अठ दस मात पित किसे ना जाया, गोदी गोद ना कोई वखांयदा। आलम इल्म ना किसे पढ़ाया, पंडत पांधा ज्ञान ना कोई दृढ़ांयदा। मस्तक तिलक ना कोई लगाया, जोती जोत डगमगांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह आपणा रथ रिहा चलाया, आपणी सेवा आप कमांयदा। आपणी महिमा अकथ कहाणी आपे रिहा गाया, चार वेद भेद ना राया। ब्रह्मा विष्न शिव निउँ निउँ रहे सीस झुका, चरन कँवल ध्यान रखाया। जुगा जुगन्तर आपणी बणत बणा, लोकमात फेरा पाया। त्रेता तेरा तख्त सुहा, तख्त निवासी चरन टिकाया। आपणा लेखा आप गिणा, आपणी झोली आपे पाया। आपणा माण आप धरा, अभिमान आपे मेट मिटाया। आपणा चिल्ला आप उठा, आपणा निशान आप वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर आपणी वण्ड वण्डाया। जुग जुग पार करांयदा, सतिजुग त्रेता पार किनार। द्वापर लेखा वेख वखांयदा, मोहण रूप कर करतार। कान्हा कृष्ना वेस वटांयदा, रथ रथवाही तन श्रंगार। गीता ज्ञान इक्क दृढ़ांयदा, विश्व वैराटी हो त्यार। आपणा काल आप वरतांयदा, आपे मारनहारा मार। अठ दस आप खपांयदा, अठ दस कर अधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर करे कराए साची कार। साची कार करंदड़ा, पारब्रह्म बेपरवाह। द्वापर पन्ध मुकंदड़ा, लेखा लेखे लए पा। कलिजुग लोकमात उठंदड़ा, एक देवे जगत सलाह। जूठा झूठा रंग रंगदड़ा, माया ममता चोली लए हंढा। मन मति मेल

मिलंदड़ा, बुध निमाणी रही शर्मा। मन राज जोग कमंदड़ा, उच्ची कूक रिहा गा। सृष्ट सबाई आप हिलंदड़ा, उलटा गेड़ा दए गिड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी खेल रिहा खला। जुग जुग खेल अवल्ला, हरि साचा आप करांयदा। आपे रूप प्रगटाए राणी अल्ला, बिस्मिल आपणा नाउँ धरांयदा। आपे होए वल छला, जल थल महीअल आप समांयदा। आप फड़ाए आपणा पल्ला, चारों कुंट वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग फड़ाए आपणा आपे पल्ला, आपणा संग आप निभांयदा। कलिजुग अन्तिम पल्लू आप फड़ाउणा, निरगुण निरवैर खेल कराईआ। पुरख अकाल वेख वखाउणा, वाह वाह वजदी रहे वधाईआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ाउणा, वाह वाह सति सति रसना जिह्वा गाईआ। नानक विचोला इक्क रखाउणा, गोबिन्द वेखे थाउँ थाँईआ। अन्तिम चोला आप बदलाउणा, जोती जामा भेख वटाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खिलाउणा, नर नरायण बेपरवाहीआ। सालस बणके आपे आउणा, कूड़ी क्रिया दए मुकाईआ। चार कुंट नौं खण्ड पृथमी ख़ालस रूप आप प्रगटाउणा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग एका जोत करे रुशनाईआ। एका जोत हरि उजागर, जागरत जोती जोत डगमगांयदा। एका नाम रती रत्नागर, रती रत विच समांयदा। एका शब्द सच्चा सौदागर, वणज वणजारा हट खुलांयदा। एका भाण्डा काया गागर, पंज तत्त आप घड़ांयदा। करता पुरख देवे आदर, घर घर विच डेरा लांयदा। मेल मिलावा करीम कादर, रहिमत रहिमान आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस आप धरांयदा। वेस वटंदड़ा हरि भगवन्त, भेव कोए ना पांयदा। कलिजुग वेखे वेला अन्त, अन्तिम आपणी धार चलांयदा। गुरमुख विरला उठाए सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। जीआं जंतां साधां सन्तां माया पाए बेअन्त, काया गोदड़ी फोल ना कोई वखांयदा। नर नरायण नज़र ना आए साचा कन्त, जगत दुहागण सर्ब कुरलांयदा। चोली ना चढ़े रंग बसन्त, नाम भट्ठी ना कोई तपांयदा। मानस जन्म ना बणे बणत, लक्ख चुरासी फंद ना कोई कटांयदा। कलिजुग कूड़ कुड़यारा गढ़ बणया हउमे हंगत, हँकारी बुरज कोई ना ढांयदा। दर दर मंगन राज राजान होए मंगत, साची भिच्छया झोली कोई ना पांयदा। चार वरन किसे हथ्थ ना आए साची संगत, चार कुंट सर्ब कुरलांयदा। पाटा चीथड़ा दिसे नंगत, कलिजुग पर्दा ना कोई रखांयदा। रसना जिह्वा होई गंदत, गीत गोबिन्द ना कोई अलांयदा। काया मन्दिर अंदर कँवल फुल ना दिसे सच सुगंधत, काग विष्टा सर्ब फुलांयदा। सतिगुर पूरा किसे ना लाए अंगत, अंगीकार ना कोए करांयदा। मानस जन्म ना होए भंगत, मनमुख जीव लेखा लेख ना कोई मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग

आपणा रूप प्रगटांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखण आया, निहकलंका जामा धार। जोती जामा भेख वटाया, पुरख अबिनाशी हो त्यार। साचे अश्व तंग कसाया, सोलां कलीआं कर शंगार। सोलां इच्छया झोली पाया, दाता दानी देवे वड भण्डार। सर्ब रच्छया आप कराया, रखशक होए आप निरँकार। साची सिख्या दए समझाया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। धुर दा लेखा सके ना कोई मिटाया, चौथे जुग आई हार। कलिजुग रुठ्या ना किसे मनाया, नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार। धन माल लुट्टया ना कोए सहाया, नाता जुड़या ठग्ग चोर यार। गुरमुख बैठे मुख छुपाया, उप्पर आपणा पर्दा डार। कलिजुग जीव देण दुहाया, ताना रहे मार। पुरख अबिनाशी दया कमाया, वेले अन्तिम होए सहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर लए अवतार। कलिजुग कूड़ा रिहा कुरला, कूक कूक सुणाईआ। नाता तुटा भैण भ्रा, सज्जण साक सैण दिस ना आईआ। चार यारी बैठी मुख भवा, ना कोई देवे जगत सलाहीआ। मदि प्याला रिहा रुढ़ा, भर जाम ना कोई प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी दए सजाईआ। लक्ख चुरासी वेखणहारा, घट घट आसण लांयदा। जुगा जुगन्तर इक्क अवतारा, गुर गुर रूप वटांयदा। कलिजुग वेखे पार किनारा, रुतड़ी रुत सुहांयदा। फल फुलवाड़ी वेखे जगत क्यारा, पत टहिणी फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम लेखा, हरि साचा वेख वखाईआ। अन्तिम मिटदी जाए रेखा, जगत चिन्न रहिण ना पाईआ। दर मंगण दर दरवेशा, ब्रह्मा विष्न महेषा दर बैठे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। धरत मात करे अदेसा, रो रो नेत्र नीर वहाईआ। गुरमति रोवे वखाए खुलड़े केसा, साचा सीस ना कोई गुंदाईआ। राह तके दस दस्मेशा, दहिसिर रावण कलिजुग रिहा घाईआ। दो सहँसर जिह्वा कम्म ना करे शेषा, सहँसर मुख बैठा बन्द कराईआ। पारब्रह्म आपणा पक्ख आपे वेखा, किशना सुखला ना कोई दृढ़ाईआ। प्रगट होए नर नरेशा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। करे प्रकाश देस प्रदेसा, दहि दिशा फेरी पाईआ। आदि जुगादी एको एका, दूसर नज़र ना कोई आईआ। सृष्ट सबाई देवे टेका, ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ाईआ। त्रैगुण माया चुकाए लेखा, लिखणहारा बेपरवाहीआ। कलिजुग मति कबुध डूमनी कमाया पैसा, नार वेसवा रूप वटाईआ। नर नरायण आपणे नेत्र पेखा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग लहिणा झोली पाईआ। कलिजुग तेरा जगत लहिणा, हरि साचा आप चुकांयदा। काम क्रोध तेरे नैणां, कजल धार वखांयदा। जूठ झूठ झूठी सेजे बहिणा, माया ममता भोग बिलास करांयदा। लोकमात अन्त ना रहिणा, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। वरन बरन तेरा मन्नया कहिणा, दूई द्वैती जड़ उखड़ांयदा। हरि का भाणा

१०३८
०६

सहिणा पैणा, गुर पीर अवतार साध सन्त ना कोई बचांयदा। हउमे हंगता बुरज अन्तिम ढहिणा, कल्लर कंध आप वखांयदा। सतिगुर पूरे दा मन्नणा कहिणा, वेला गया हथ्थ ना आंयदा। बाकी रहे ना किसे दा देणा, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। करे श्रंगार लाड़ी मौत डैणा, राए धर्म हुक्म सुणांयदा। चित्रगुप्त लेखा कढ्ढ कढ्ढ अग्गे बहिणा, सम्मत सतारां वक्त लिआंयदा। महल्ल अटल राज राजान शाह सुल्तान दिसे ना बहिणा, ख़ाकी ख़ाक सर्ब रुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बन्धन आपे पांयदा। कलिजुग मिटे कूड़ पसारा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। चारों कुंट इक्क जैकारा, चार वरन दए सुणाईआ। चारे जुग करन पुकारा, कलिजुग अन्तिम रिहा कुरलाईआ। प्रगट होए हरि करतारा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। शब्द अश्व हो अस्वारा, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां दए हुलारा, सूरज चन्न आप जगाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव नेत्र इक्क उग्घाड़ा, एका हुक्म दए सुणाईआ। त्रैगुण माया जगत अखाड़ा, पंज तत्त करे लड़ाईआ। मेल मिलाए रक्त बूंद गारा, हड्ड मास नाड़ी वेख वखाईआ। मन मति रोवें ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणा नीर वहाईआ। चार वरन ना कोई सहारा, घर घर जीव जंत करे लड़ाईआ। साध सन्त किसे ना मिल्या मीत मुरारा, पान्धी भुल्ले आपणा राहीआ। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, निरगुण निरवैर एका जोत करे रुशनाईआ। शब्द वजाए सच नगारा, ताल तलवाड़ा हथ्थ उठाईआ। गुरमुख साचे पाए सारा, घर घर दर दर मन्दिर फोल फुलाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कर प्यारा, आप आपणा मेल मिलाईआ। कलिजुग मिटे धूंआँधारा, धुँधूकार रहिण ना पाईआ। अमृत बख्शे ठंडा ठारा, चरन चरनोदक आप प्याईआ। एका वणज कराए सच वणजारा, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बहाए इक्क दरबारा, हँ पारब्रह्म आप समझाईआ। पंचम मेला कन्त भतारा, आत्म सेजा दए वड्याईआ। सारंगी सारंग विच संसारा, वजावणहार आप वजाईआ। गावणहारा गाए आपणी वारा, धुन आत्मक धुन सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतारा, मात पित ना कोई बणाईआ। मात पित ना किया प्यारा, पुत्तर धी ना कोई वड्याईआ। गुरमुखां दर मंगे बण भिखारा, अगे आपणी झोली डाहीआ। आपणा करे खेल करतारा, करता कीमत आपे पाईआ। गुरमुख तेरा उच्च मुनारा, पारब्रह्म अबिनाशी करता आपे रिहा सुहाईआ। बणे दरवेश दर दरबान जुगा जुगन्तर साची कारा, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। खाली हथ्थ रक्खे गिरवर गिरधारा, गुरमुखां नाम भण्डारा झोली पाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, जम की फाँसी दए कटाईआ। गुरसिख तेरे चरन राए धर्म करे निमस्कारा, चित्रगुप्त मंगण हिसाब कोई ना आईआ। सतिगुर पूरे एका शब्द सीस धरया दस्तारा, जगदीश आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां करे तेरा पार किनारा, तेरा धाम अवल्लड़ा इक्क वखाईआ।

शाह पातशाह बैठा हरि सच्चा सिक्दारा, साचे तख्त आसण लाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिभगत हरिजन साचे सन्त सोहण इक्क दुआरा, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। कलिजुग अन्तिम पूर्ब करजा लाहे सिर रक्खे ना कोई अधारा, मकरूज आपणा कर्ज़ा पूरा दए कराईआ। नाता तोड़ सर्ब संसारा, आपणे चरन जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे लए जगाईआ। गुरमुख सज्जण मीत प्यारा उठया, किरपा करी गुण निधान। साहिब सुल्तान गुर पूरा तुठया, पुरख अबिनाशी वड मेहरवान। अमृत जाम प्याए घुट्टया, धुर धाम वखाए इक्क निशान। देवे नाम ख़ज़ाना अतुटया, मुक ना जाए विच जहान। चोर यार किसे ना लुट्टया, जो जन चरनी डिगे आण। मानस जन्म ना भाग नखुटया, सतिगुर पूरा करे पछाण। विच्चों भुल्ले कोटन कोटया, आप आपणा देवे दान। हउमे कढ्ढे वासना खोटीआ, आत्म उपजाए ब्रह्म ज्ञान। बाहों पकड़ चढ़ाए चोटीआ, लेखा मंगे ना कोई आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कलिजुग गुरमुख उठाए बाल अंञाण। गुरसिख अंञाणा बाला, बाली बुध भेव ना आंयदा। पुरख अबिनाशी दीन दयाला, पूर्ब लहिणा वेख वखांयदा। निरगुण अंदर पाए माला, ब्रह्म पारब्रह्म जपांयदा। काया मन्दिर वेख धर्मसाला, सच दरवाज़ा आप खुलांयदा। अमृत ठाठ मारे उछाला, निझर झिरना आप झिरांयदा। शब्द दमामा वज्जे ताला, ताल तलवाड़ा आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन हरिभगत शब्द जोड़ी जोड़ जुड़ांयदा। सुरत शब्द हरि हरि जोड़, सुरत शब्द संग रखाईआ। पंचम विकारा होए ख्वार, पंचम मोह रहे ना राईआ। पंचम शब्द सुणाए अनहद सच्ची घनघोर, पंचम नाद आप वजाईआ। पंचम आपणे हथ्थ रक्खे डोर, पंचम चार कुण्ट भवाईआ। पंचम डूँघी कंदर पावण शोर, दिवस रैण रहे कुरलाईआ। पंचम ठग्ग चोर हराम खोर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन लेखा लेखे पाईआ। हरिजन लेख अपारड़ा, वेद कतेब भेव ना आया। गुरमुख वसे धाम न्यारड़ा, निरगुण साचे आप सुहाया। मिल्या मेल मित्र प्यारड़ा, यार सथ्थर रिहा हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन गुरसिख साचा मीत, पीआ प्रीतम वेख वखाईआ। काया करे ठंडी सीत, सति सन्तोख नाम दृढ़ाईआ। चार वरन कराए अतीत, त्रै त्रै अग्न ना कोई तपाईआ। एका इष्ट गुरदेव सच प्रीत, एका मन्दिर दए वसाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोई वड्याईआ। गुरसिख धाम रखाए इक्क अनडीठ, जगत नेत्र दिस ना आईआ। पार कराए दया कमाए पतित पुनीत, पतित पावन रूप प्रगटाईआ। लक्ख चुरासी परखे नीत, घर घर लेखा रिहा गिणाईआ। सतिजुग चलाए साची

रीत, सतिजुग साची धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण मेल मिलाईआ। गुरसिख सज्जण सहेलया, जगत विछोड़ा कट्ट। एका रंग रंगाए गुरू गुर चेलया, शब्द लगाई साची सट्ट। धाम रखाया इक्क नवेलया, निरगुण सरगुण हो प्रगट। आदि निरँजण चाढ़े तेलया, जोत निरँजण मेला घट घट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए रक्ख। रक्खणहारा दीनां नाथ दर्द दु:ख भय भञ्जण, भव सागर आप तराईआ। नेत्र पाए ज्ञान नाम अंजन, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल कट्ट वखाईआ। अन्तिम आया पर्दे कज्जण, निहकलंक नरायण नर आपणा रूप आप प्रगटाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डे भज्जन, जो घड़या भन्न वखाईआ। गुरसिख सतिगुर दुआरे बह बह सजण, सतिगुर पूरा सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। अमृत जाम पी पी रज्जण, सच प्याला इक्क वखाईआ। नाम चढ़ाए इक्क जहाज़न, पार किनारा दए जणाईआ। शब्द अगम्मी मारे वाजण, सुत्तयां लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रूप रंग ना कोई निशान, जीव जंत ना सके कोई पछाण, दाता दानी आप अख्वाईआ।

१०४१ १०४१

०६ ❋ १६ भाद्रों २०१७ बिक्रमी कृपाल सिँघ दे गृह पिण्ड गोले वाला ज़िला फिरोज़ पुर ❋ ०६

सति पुरख निरँजण अगम्म अथाह, इक्क इकल्ला भेव ना आंयदा। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, आप आपणा रूप प्रगटांयदा। हरि पुरख निरँजण वसे साचे थाँ, अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहांयदा। एकँकारा आपणा नाउँ धरा, नाउँ निरँकारा आप अख्वांयदा। आदि निरँजण आपणा आप कर रुशना, जोती जोत जोत प्रगटांयदा। श्री भगवान करे सच न्याँ, आप आपणा खेल खिलांयदा। अबिनाशी करता बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। पारब्रह्म बणया पिता माँ, पूत सपूता आपे जांयदा। शब्द अनादी नाउँ धरा, निरगुण आपणा रूप प्रगटांयदा। करता पुरख खेल खिला, साचा काम आप करांयदा। मूर्त अकाल अनुभव प्रकाश करा, अनुभव आपणा रूप वसांयदा। अजूनी रहित ना कोई निशान, रूप रंग रेख ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणी कल आप वरतांयदा। सति पुरख निरँजण सर्ब गुणवन्ता, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सो पुरख निरँजण आदिन अन्ता, एका रंग रिहा समाईआ। हरि पुरख निरँजण बणाए बणता, निरगुण आपणा घाड़न आप घड़ाईआ। आदि निरँजण धाम सुहंता, दीपक नूर कर रुशनाईआ। अबिनाशी करता वेस वटंता, रूप अनूप आप दरसाईआ। श्री भगवान साचा घर सुहंता, थिर दरबार वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ बणे मंगता,

आपे आपणी झोली डाहीआ। निरगुण निरवैर निराकार आप लगाए आपणे अंगता, अंगीकार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा घर आप सुहाईआ। सति पुरख निरँजण सति वसेरा, दरगाह साची धाम सुहांयदा। सो पुरख निरँजण गहर गम्भीरा, लेखा लेख ना कोई जणांयदा। हरि पुरख निरँजण चोटी चढ़े इक्क अख़ीरा, महल्ल अटल आप उपांयदा। एकँकारा ना कोई बस्त्र ना कोई चीरा, आपणा रूप आप सुहांयदा। आदि निरँजण वड पीरन पीरा, शाह पातशाह रूप प्रगटांयदा। अबिनाशी करता आपणा मंगे आपे सीरा, अमृत आपणा आप उपांयदा। श्री भगवान बण हकीरा, आपणी भिच्छया झोली पांयदा। पारब्रह्म आपे बख़्शे आपणी धीरा, धीरज आपणी आप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगांयदा। सो पुरख निरँजण बण दलाला, दो जहाना वेख वखाईआ। हरि पुरख निरँजण वसे सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। एकँकारा हरि गोपाला, थिर घर बैठा सेज हंढाईआ। आदि निरँजण जोत उजाला, नूरो नूर डगमगाईआ। अबिनाशी करता रूप प्रगटाए महांकालां, बल आपणा आप वखाईआ। श्री भगवान मारे इक्क उछाला, सर सरोवर धार वहाईआ। पारब्रह्म करे खेल निराला, निरगुण निरवैर आपणी कल वरताईआ। शब्द सुत निधाना बाला, पूत सपूता दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकार,
१०४२ करे खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। अलक्ख अगोचर भेव ना राया, ब्रह्म रूप ना कोई दिसांयदा। १०४२
०६ आदि आदि आपणा नाउँ धराया, धरनी धरत धवल ना कोई सुहांयदा। ब्रह्म ब्रह्मादि ना कोई रचाया, ब्रह्मण्ड ना रास रचांयदा। ०६
विष्न शिव ना कोई जगाया, ब्रह्मा नाउँ ना कोई रखांयदा। रवि ससि ना कोई चमकाया, दिवस रैण ना कोई बणांयदा। इक्क इकल्ला सति पुरख निरँजण दर घर साचा आप सजाया, सच दुआरा वड वड्यांअदा। सो पुरख निरँजण आपणी कल आप धराया, अकल कल आपणी खेल आप खिलांयदा। हरि पुरख निरँजण सेवा लाया, सेवक चाकर आप बण जांयदा। एकँकारा राह तकाया, सच मलाह रूप प्रगटांयदा। आदि निरँजण करे खेल दाई दाया, दूसर होर ना कोई दिसांयदा। अबिनाशी करता साचा तख़्त रिहा सुहाया, सच सिंघासण सोभा पांयदा। अबिनाशी करता राज राजान सच निशान रिहा झुलाया, सति दुआरे आप उठांयदा। पारब्रह्म निउँ निउँ रिहा सीस झुकाया, दोए जोड़ चरन ध्यान लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड महल्ला कर त्यार, एका वसे एकँकार, निरगुण निरवैर अजूनी रहित अनुभव प्रकाश आप करांयदा। अनुभव प्रकाश समाया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। अबिनाशी करता वेख वखाया, श्री भगवान वज्जी वधाईआ। आदि निरँजण संग निभाया, एकँकारा अंग समाईआ। हरि पुरख निरँजण रंग रंगाया, सो पुरख निरँजण वेखे चाँईं चाँईआ। सति पुरख

निरँजण सति सतिवाद आपणी रचना आप रचाया, दूसर वण्ड ना कोई वण्डाईआ। सचखण्ड दुआरा आप सुहाया, निर्मल जोत कर रुशनाईआ। साचे तख्त शाह सुल्ताना डेरा लाया, तख्त ताज इक्क वड्याईआ। हुक्मी हुक्म आप वरताया, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। आपणी कार आप कमाया, करता आपे वेख वखाईआ। थिर घर साचे रूप प्रगटाया, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। चार दिवार ना कोई वखाया, ना कोई बाढी बणत बणाईआ। गुर पीर अवतार साध सन्त ना कोई नज़री आया, आदि पुरख आपणी जोत आप जगाईआ। साचा मन्दिर रिहा सुहाया, हरि जू हरि मन्दिर डेरा लाईआ। उतर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारे दिशा ना वेख वखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला कर पसारा, आपे वेखे वेखणहारा दिस किसे ना आया। सति पुरख निरँजण सति सतिवाद, दर घर साचा आप सुहांयदा। खेले खेल आदि जुगादि, जुग करता नाउँ धरांयदा। शब्द अगम्मी एका नाद, धुन तराना आप सुणांयदा। शब्द दुलारा आपे लाध, पूत सपूत सेवा लांयदा। नाम जणाए बोध अगाध, निश अक्खर वक्खर आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी महिमा आप अलांयदा। आपणी महिमा आप जणा, आपे भेव खुलाईआ। आपणा तख्त आप सुहा, आपे बैठा आसण लाईआ। आपणा राज आप कमा, आपे रईयत वेख वखाईआ। आपणा हुक्म आप चला, हुक्मी हुक्म दए वड्याईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचा, ब्रह्मा विष्न शिव तेरी झोली पाईआ। त्रैगुण माया हथ्थ उठा, एका कंगन तन पहनाईआ। पंज तत्त घाड़न आप घड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश दए वड्याईआ। लक्ख चुरासी रचन रचा, घट घट जोत करे रुशनाईआ। आपणी विद्या आप पढ़ा, चारे वेदां करे सुणाईआ। चारे जुग वण्ड वण्डा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेख वखाईआ। चारे बाणी आप अला, चारे खाणी आप समझाईआ। लक्ख चुरासी डेरा ला, काया खेड़ा आप वसाईआ। निरगुण निबेड़ा दए करा, पंचम झेड़ा वेखे थाउँ थाँईआ। साचा बेड़ा रिहा चला, जुग जुग दाता बेपरवाहीआ। आपणा गेड़ा रिहा दवा, गेड़नहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकार, आदि जुगादी साची कार, जुग करता आप कराईआ। साची कार कमांयदा, पारब्रह्म गुर करतार। निरगुण सरगुण रूप प्रगटांयदा, लोकमात लै अवतार। भगतन भगती मेल मिलांयदा, आत्म अन्तर कर प्यार। साचे सन्तन रंग रंगांयदा, उतर ना जाए विच संसार। गुरमुख आपणी गोद बहांयदा, दर घर साचे कर प्यार। गुरसिख साचे एका नैण खुलांयदा, नेत्र लोचण कर उज्यार। माया ममता पर्दा लांहयदा, हउमे हंगता कर ख्वार। आसा तृष्ना मेट मिटांयदा, देवे शब्द नाम भण्डार। पंच विकारा आप खपांयदा, कागद कलम ना लिखणहार। पंचम धुन आप उपजांयदा, अनहद शब्द सच्ची धुन्कार। अमृत

जाम आप प्यांअदा, निझर झिरना ठंडा ठार। बजर कपाटी पर्दा लांहयदा, किरपा कर आप करतार। गुर शब्दी मेल मिलांयदा, नाता तोड़ सर्ब संसार। साचे मन्दिर आप बहांयदा, हरि सन्तन करे प्यार। आत्म सेजा सोभा पांयदा, घर घर विच कर त्यार। निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा, जीव आत्म पाए सार। परम आत्म वेख वखांयदा, ब्रह्म पारब्रह्म नारी कन्त भतार। दोहां विचोला शब्द जणांयदा, जुगां जुगन्तर साची कार। आपणा ढोला आप सुणांयदा, निरगुण बोल नाम जैकार। आपणा चोला आप बदलांयदा, मरे ना जम्मे विच संसार। साचा तोला इक्क अख्वांयदा, त्रैगुण माया तोलणहारा आपणा तत्त तोले भार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेले खेल अपर अपार। साचा खेल खिलंदड़ा, पारब्रह्म बेअन्त। जुग जुग वेस वटंदड़ा, लेखा जाणे साचे सन्त। साचा धाम इक्क सुहंदड़ा, पुरख अबिनाशी महिमा अगणत। आपणा भेव आप खुलंदड़ा, गुरमुख मेला नारी कन्त। गीत सुहागी आप सुनंदड़ा, आपे मणीआ आपे मंत। दीपक जोत इक्क जगंदड़ा, अन्ध अन्धेरा करे खण्डत। साचा अक्खर आप पढ़ंदड़ा, भेव ना जाणे पांधा पंडत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए करनेहार, दूसर दर ना जाए मंगत। दूसर दर ना मंगदा, बेऐब परवरदिगार। करे खेल सूरे सरबंगदा, निरगुण निरवैर निराकार। आपणा दामन आपे रंगदा, रंगणहार आप करतार। आपणे अश्व आपे तंग कसदा, आपे होए अश्व अस्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त खेले खेल श्री भगवन्त, आपणा रूप करे अपार। रूप अपारा हरि निरँकारा, वेद कतेब कहिण ना जाईआ। विष्नूं करे निउँ निउँ निमस्कारा, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। ब्रह्मा दर बणे भिखारा, ख़ाली झोली रिहा भराईआ। शंकर वेखे इक्क दुआरा, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। तिन्नां विचोला बण सच्ची सरकारा, साचा हुक्म आप सुणाईआ। एका ढोला शब्द जैकारा, निरगुण निरगुण लए उपजाईआ। सरगुण साचा कर त्यारा, महल्ल मुनारा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर आप बुझाए लग्गी बसन्तर, त्रैगुण तत्त वेख वखाईआ। आदि जुगादि होए प्रगट, आदि बैठा वेस वटाईआ। शब्द नाद वजाए सट्ट, धुन अनहद ताल रलाईआ। वसणहारा घट घट, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। खेले खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा सांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणे लेखे लाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार उतारया, कर किरपा गुण निधान। निरगुण सरगुण लए अवतारा, भगत भगवन्त कर पछाण। ग़रीब निमाणयां देवे सहारया, हँकारीआं मेटे जगत निशान। एका वणज करे वापारया, वड दाता बेपरवाहया गुण निधान। एका राम नाम जैकारया, इक्क झुलाए सच निशान। एका लेखा जाणे आर पार किनारया, एका बेड़ा चलाए दो जहान। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग करे खेल महान। खेल महाना श्री भगवाना, आपणा आप करांयदा। सति सतिवादी सति निशाना, लोकमात आप चलांयदा। गुरमुख अंदर ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ांयदा। गुरमुखां इक्क सुणाए धुन तराना, अनहद साची तार हिलांयदा। एका बख्शे पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख सर्ब मिटांयदा। इक्क वखाए पद निरबाना, महल्ल अटल आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। जुग जुग खेल खिलावणहारा, एका एक एकँकार। त्रै त्रै करया पार किनारा, चौथे जुग आई वार। चारे वेदां पावे सारा, पुराण अठारां खोल्ह किवाड़। शास्त्र सिमरत दए हुलारा, लेखा जाणे अंदर बाहर। जगत ज्ञान इक्क अधारा, देवणहार श्री भगवान। अञ्जीला कुरानां करे किनारा, शरअ शरीअत वेखे विच जहान। खाणी बाणी बण वरतारा, दाता दानी गुण निधान। कलिजुग अन्तिम रोवे ज़ारो ज़ारा, दिवस रैण सके ना कोई पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर आप उठाए आपणा बाण। जुग जुग बाण उठांयदा, हरि सतिगुर सच्चा पातशाह। गढ़ हँकारी आप तुड़ांयदा, शब्द निशाना एका ला। गुर पीर आप अख्वांयदा, कलधारी बेपरवाह। खड़ग खण्डा इक्क चमकांयदा, चण्ड प्रचण्ड हथ्थ उठा। ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखांयदा, त्रैभवन फेरा पा। लोआं पुरीआं फेरा पांयदा, ब्रह्मा विष्न शिव दए जगा। करोड़ तत्तीसा रहिण ना पांयदा, सुरपति रोवे मारे धा। शाह सुल्तानां हरि भगवाना आपणा बल आप धरांयदा, आपणीआं भुजां रिहा उठा। दो जहाना वेख वखांयदा, त्रिलोकी चरनां हेठ दबा। चौदां लोकां कुण्डा लांहयदा, चौदां तबकां पन्ध मुका। रवि ससि मुख शर्मांयदा, नेत्र नीर रिहा वहा। पारब्रह्म प्रभ खेल खिलांयदा, कलिजुग वेला अन्तिम गया आ। वेद कतेब भेव ना पांयदा, गुर पीर दे दे थक्के सलाह। वेद व्यासा लेख लिखांयदा, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा जाए पा। नानक निरगुण वेख वखांयदा, जोती जोत जोत जगा। हरि हरि आपणा रूप प्रगटांयदा, कलिजुग वेखे थाउँ थाँ। ज़िमी अस्मानां फेरी पांयदा, जुगां जुगन्तर छड्डे ना कोई थाँ। सत्तां दीपां डेरा ढांयदा, नौं खण्ड पृथमी दए हिला। नौं दुआरे खोज खुजांयदा, लक्ख चुरासी मन्दिर वेखे आ। मात पिता ना कोई बणांयदा, जनणी कुखों ना लए जा। महांबली आप अख्वांयदा, सूरबीर बेपरवाह। निहकलंक नाउँ धरांयदा, जोती जामा भेख वटा। एका जोती डगमगांयदा, वेख वखा। पुरख अकाल इक्क मनांयदा, दो जहाना पिता माँ। दूसर इष्ट ना कोई जणांयदा, चार वरनां रिहा समझा। कलिजुग जीव भेव ना पांयदा, भरमे भुल्ला सर्ब जहां। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश साचा कर्म ना कोई कमांयदा, नेहकर्मी करे खेल बेपरवाह। वरन बरन आप मिटांयदा, ऊँचां नीचां लए मिला। राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका थाँ बहांयदा, राजे राणे तख्तों देवे लाह। वेले

१०४५
०६

अन्तिम आप सुहांयदा, कलिजुग रैण अन्धेरी मेटे छाँ। साचा खण्डा हथ्थ चमकांयदा, शब्द अगम्मी घाड़त लए घड़ा। लुहार तरखान ना कोई बणांयदा, कलिजुग मुट्ठी ना देवे ला। जगत ज्ञान ना कोई रखांयदा, त्रैगुण माया ना सके छुपा। पुरख अबिनाशी आपणा खेल आप खलांयदा, आप आपणी कल वरता। निहकलंक नाउँ धरांयदा, धरती धवल भाग लगा। साचा खण्डा आप चमकांयदा, ब्रह्मण्डां दए डरा। जेरज अंडां वेख वखांयदा, उत्भुज सेत्ज दए हिला। सत्त समुंदर फोल फुलांयदा, सागर रिड़के आपणी बांह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाउँ आप प्रगटांयदा। आपणा नाउँ आप प्रगटाउणा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सति पुरख निरँजण वेस वटाउणा, अलक्ख अलक्खणा एका अलक्ख दए जगाईआ। अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहाउणा, धाम अवल्ला इक्क बणाईआ। सम्बल नगरी नाउँ रखाउणा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। इट्ट गारा ना कोई लगाउणा, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी विच फिराउणा, सति सति डेरा रिहा ढाईआ। चार वरन चार जुग चार खाणी चार बाणी राह तकाउणा, चार वरन ध्यान लगाईआ। उच्च महल्ल अटल इक्क वसाउणा, थिर दरबारा आप बणाईआ। राग अनादी एका गाउणा, छत्ती राग भेव ना राईआ। नारद सुरस्ती मुख शरमाउणा, नेत्र

१०४६ नैणां नीर रिहा वहाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता एका आपणा खेल खिलाउणा, ख़ालक ख़लक वेखे बेपरवाहीआ। एका १०४६

०६ कलमा आप पढ़ाउणा, शरअ शरीयत इक्क जणाईआ। आलम उलमा आप समझाउणा, तालब तुलबा आप समझाईआ। नून ०६

नुकता मेट मिटाउणा, पारब्रह्म आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। साबत ईमान इक्क जणाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा हथ्थ करतार, कागद कलम ना लिखे शाहीआ। ब्रह्मा वेद ना पावे सार, चारे मुख दए दुहाईआ। पुराण अठारां करन पुकार, वेद संग रलाईआ। शास्त्र सिमरत होए लाचार, जीव जंत करन पढ़ाईआ। गीता गोझ इक्क ज्ञान ज्ञान विच टिका बीस बीसा अञ्जील कुरान, रसना जिह्वा रहे गाईआ। खाणी बाणी गुण निधान, गुणवन्त कहिण ना जाईआ। कलिजुग निहकलंक ना सके कोई पछाण, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। सच धर्म ना कोई निशान, जूठ झूठ वज्जे वधाईआ। हरि का नाउँ रसना गान, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। अठसठ तीर्थ करन अशनान, आत्म सरोवर ना कोई नहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखणहारा, निरगुण रूप समांयदा। लक्ख चुरासी वेखे काया महल्ल मुनारा, घर घर आपणी जोत जगांयदा। अंदर मन्दिर डूँघी गारा, अन्ध अन्धेर आप समांयदा। पावे सार गढ़ हँकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण आपणी खेल खिलांयदा। निरगुण खेल सरगुण

धार, गुर सतिगुर नाउँ धरांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कल रूप प्रगटांयदा। जुगा जुगन्तर हो त्यार, लोकमात वेख वखांयदा। शब्द अनादी बोल जैकार, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। कूड़ कुड़यारा करे ख्वार, सच सुच्च मार्ग एका लांयदा। कलिजुग दुहागण दिसे नार, कन्त सुहाग ना कोई हंढांयदा। मन बैरागण कवण मिले यार, पीआ प्रीतम कवण सेज सुहांयदा। कवण बाणी बोल करे जैकार, कवण नाद धुन वजांयदा। कवण पाणी मिले ठंडा ठार, निरगुण तत्त कवण बुझांयदा। कवण मन्दिर सोहे गुरूदुआर, जिस दुआरे सतिगुर वेस वटांयदा। कलिजुग जीव होए गंवार, मनमति सर्ब प्रनांयदा। मनमति ना करे कोई प्यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार सर्ब तड़पांयदा। जागरत जोत ना जगे होए उज्यार, गोबिन्द मेल ना कोई मिलांयदा। सुरत सवाणी सुत्ती पैर पसार, आलस निन्दरा ना कोई गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, तेरा रंग रिहा रंगाईआ। चारों कुंट हाहाकारा, सति सन्तोख ना कोई दसाईआ। साचा दिसे ना कोई दरबारा, ठांडा दर ना कोई वखाईआ। पंडत पांधे मुल्ला शेख़ मुसायक उच्ची कूकन करन पुकारा, रसना जिह्वा काग वांग कुरलाईआ। मिल्या मेल ना सांझे यारा, खुदी खुद ना कोई गंवाईआ।

१०४७ नाता तुट्टे ना जगत संसारा, साची सिख्या ना कोई समझाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी बणया जगत अखाड़ा, स्यासत विरासत दए दुहाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए पारब्रह्म अबिनाशी करता धुर दरबारा साचा लाड़ा, नर हरि आपणा रूप प्रगटाईआ। १०४७

०६ चारों कुण्ट करे ख्वारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग भगतन मेल मिलाईआ। जगे जोत जोत निरँकारा, कलिजुग अन्तिम अन्त सुहांयदा। मिले मेल भगत भगवन्त धुर दरबार, दर दरवाज़ा आप खुलांयदा। लोकमात पावे सारा, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। दर दर बणे आप भिखारा, दर दरवेश वेस वटांयदा। एका अल्फ़ी हरि श्रंगारा, चुरासी कलीआं रंग रंगांयदा। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, हँकारीआं गढ़ तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले आपणे घर, घर साचा आप सुहांयदा। हरिजन साचा मेलणहारा, पारब्रह्म इक्क अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम पावे सारा, जुग विछड़े वेख वखांयदा। घर दीपक जोती कर उज्यारा, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। शब्द सुणाए सच्ची धुन्कारा, अनहद साचा ताल वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी विरोले छाछ, लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। गुरमुख सज्जण मीत, सतिगुर साचा मीत मेल मिलाईआ। आदि जुगादी धुर दी रीत, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच दए इक्क वड्याईआ। धाम वखाए इक्क अनडीठ, जगत नेत्र दिस ना आईआ। गुरसिख करे पतित पुनीत, पतित पावन दया कमाईआ। काया करे ठंडी सीत, ०६

बिरहों विछोड़ा सरगुण दए कटाईआ। मानस जन्म जन जाए जग जीत, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख लेखा लेखे लाईआ। गुरसिख वेखणहारा गोपाला, गोबिन्द महिमा कहिण ना जाईआ। जुगा जुगन्तर तोड़े जगत जंजाला, अग्न बसन्तर दए बुझाईआ। एथे उथे होए रखवाला, सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाला, राए धर्म ना दए सजाईआ। धाम वखाए सचखण्ड साची धर्मसाला, इक्क इकल्ला आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, मानस मानस लए मिलाईआ। मानस उपज्या मानस जात, पुरख अकाल दया कमांयदा। लक्ख चुरासी ना कोई नात, जूनी जून ना कोई फिरांयदा। जीव आत्म ना होए घात, परम आत्म मेल मिलांयदा। ना कोई वरन ना कोई ज़ात, ज़ात अज़ाती आप अख्वांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा पिता मात, आप आपणी गोद बहांयदा। जुग जुग वेस करे बिध नात, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। जन भगतां निभाए आपणे साथ, एका संग आप रखांयदा। जिउँ द्वापर मेला गोपी नाथ, कान्हा कृष्ना वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप जणांयदा। जुग जुग लेखा जानणहारा, सचखण्ड निवासी आप अख्वाईआ। गुरमुख साजन साचे कर पसारा, लोकमात वेख वखाईआ। मानस मानस दए सहारा, मानुख आपणा रूप प्रगटाईआ। पिता पूत करे प्यारा, गोदी मात आप सहाईआ। आपे वणज आप वणजारा, आपे खेवट खेटा बेड़ा रिहा चलाईआ। आपे पावणहारा सारा, महांसार्थी शहनशाहीआ। द्वापर तेरा खेल न्यारा, रथ चलाए बण रथवाहीआ। तीर कमान ना कोई सहारा, अर्जन बल ना कोई वखाईआ। पुत्तर धी ना कोई सहारा, भैण भाई ना लाड लडाईआ। ना कोई पुरख ना दिसे नारा, रूप अनूप खेल खलाईआ। सीस पग ना कोई दस्तारा, चूंडी गुंद ना कोई वखाईआ। वेखण वेखे जगत अठारां अक्षूणीआं ध्यान लगाईआ। अठाई लक्ख दए हुलारा, एका नैण नैण खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी पावे सारा, आपणी धारा धार विच टिकाईआ। देवे हुक्म गुप्त ज़ाहरा, गुप्त गुप्ती आप अख्वाईआ। तेरा मेरा इक्क प्यारा, लोकमात वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका तत्त रिहा समझाईआ। द्वापर नाता तुट्टणा, रहे ना विच संसार। कलिजुग लोकमात बुक्कणा, काला सूसा कर श्रंगार। नौं खण्ड पृथ्मी बूटा सुक्कणा, हरया होए ना पत डाल्ह। सरोवर अठसठ पाणी मुक्कणा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती ना दए उछाल। सति धर्म पैंडा मुकणा, ना कोई दिसे राह सुखाल। साधां सन्तां काया झूठे गढ़ विच लुकणा, माया पर्दा उप्पर डाल। पुरख अबिनाशी घट घट वासी निरगुण रूप हो हो बुक्कणा, लोकमात लए अवतार। ब्रह्मा विष्न शिव दर दुआरे सीस झुकना, रवि ससि करन निमस्कार। धरत मात दी सुफ़ल कराए कुक्खणा,

१०४८
०६

दु:खी दु:ख दए निवार। जन भगतां भार आपणे सीस चुक्कणा, निहकलंक लए अवतार। मनमुखां मुख पैणा थुक्कना, चारों कुंट होयण ख्वार। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, ना कोई रोके विच संसार। कन्ढ्डी बूटा तेरा सुक्कणा, फल दिसे ना किसे डाल। सिम्मल समेरू दिसे रुखना, ऊँची कूक करे पुकार। प्रभ तेरे दरस इक्क भुक्खणा, नेत्र नैणां कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे आप करतार। पूर्ब लेखा झोली पाया, हरि वड्डा वड वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, मानस मानस रूप वटाईआ। नपुंसक रंग ना कोए रंगाया, रंग रंगीला बेपरवाहीआ। काया चोली रंग दए रंगाया, जगत वासना दए मिटाईआ। निर्मल निरवैर आप कराया, वड दाता शहनशाहीआ। सच भण्डारा खोल्ह वखाया, वरतावणहार इक्क अख्वाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव झोली रिहा भराया, लक्ख चुरासी जून धराईआ। पंज तत्त घाड़न दए घड़ाया, रक्त बूंद मेल मिलाईआ। आत्म ब्रह्म आपणी अंस उपाया, निरगुण आपणी वण्ड वण्डाईआ। सरबंस बंस आप सुहाया, सहँस सहँसा वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, पूर्ब लेखा दए चुकाईआ। पहला पूर्ब लेख चुकावना, कर्म कुकर्मा कर विचार। दूजा आपणा नाम जपावणा, कर किरपा आप निरँकार। तीजा नेत्र नैण खुल्हावणा, नैण वखाए अगम्म अपार। चौथा पद इक्क वखावणा, घर सच सच्चा घर बार। पंचम मेला सहिज सुभावणा, मेल मिलाए गुर करतार। छेवें छप्पर छन्न रंग रंगावणा, रंग रंगे अपर अपार। सत्तवें सति सतिवादी दया कमावणा, आप आपणी किरपा धार। अठवें अठ्ठा तत्तां खोज खुजावणा, अंदर बाहर पावे सार। नौंवे नौं दर वासना बाहर कढावणा, दसवें दस्म दुआरी कर प्यार। गुरमुख आत्म सेजा डेरा लावणा, घर मन्दिर जोत कर उज्यार। सो पुरख निरँजण एका नाम जपावणा, हँ ब्रह्म कर प्यार। हँ झोली आप भरावणा, घर घर विच कर त्यार। दर दरवाज़ा आप खुलावणा, नाभी कँवली पावे सार। पति परमेश्वर रूप वटावणा, आप आपणा कर विचार। सुखला पक्ख आप सुहावणा, किशना मारे मार। बूंद रक्त लेखे लावणा, नाता जुड़े विच संसार। साची वस्त एका वण्ड वण्डावणा, निखुट ना जाए अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहार प्यार। सच प्यारा नाम वस्त अनमोल, हरिजन हरि हरि झोली पांयदा। पहलां आपणे कंडे देवे तोल, दूजी धार वहांयदा। तीजा नेत्र खोल्ह वसे कोल, मृदंग ढोल आप वजांयदा। चौथे पद पए बोल, पंज तत्त ना कोई हड्ड मास नाड़ी रत ना कोई रखांयदा। पंचम पूर करे कीता कौल, देवे वडियाई उप्पर धौल, धरनी बूटा आपे लांयदा। फुल फुलवाड़ी जाए मौल, रुत बसन्ती आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, वर दाता आप हो जांयदा। फुल फुलवाड़ी लाए बूटा, कँवल

१०४६ ०६

कँवला आप उपजाईआ। लोकमात हुलारा देवे साचा झूटा, मात पित खुशी मनाईआ। रस वखाए इक्क अनूठा, रसना जेहवा चख ना पाईआ। जिस जन उप्पर सतिगुर पूरा तुट्ठा, देवे वस्त सहिज सभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, द्वापर नाता तुटा, कलिजुग लए मिलाईआ। कलिजुग आप मिलावणहारा, शब्द शब्दी खेल खिलांयदा। पूत सपूता सुत दुलारा, हरि निरँकारा झोली पांयदा। वसदा रहे जगत दुआरा, साचा खेड़ा आप सुहांयदा। भुल्ल ना जाए विच संसारा, अभुल्ल गुर भुल्ल कदे ना जांयदा। गुरमुखां करे जगत प्यारा, जागरत जोत जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका दाता एका एक रंग रंगांयदा। एका रंग रंगे करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। जिस जन बख्शे चरन प्यारा, चात्रिक जीव ना कोई बिल्लाईआ। बूंद स्वांती देवे ठंडी ठारा, घर प्याला अमृत बूंद जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे तेरा लेखा लेखे पाईआ। लेखा लेखे पावना, लिख्या धुर दरबार। वेला वक्त आप सुहावणा, सोहे बंक दुआर। फल फुल आप महिकावणा, फुल फुलवाड़ी खिड़े सच गुलज़ार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, बख्शिश करे आप निरँकार।

१०५०

०६

❊ १७ भादों २०१७ बिक्रमी हजूरा सिँघ दे गृह पिण्ड गोले वाला ज़िला फिरोज़ पुर ❊

सतिगुर पूरा हरि निरँकारा, आदि जुगादि समांयदा। गुर गुर रूप विच संसारा, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। भगतन देवे नाम भण्डारा, साची भगती झोली पांयदा। सन्तन वखाए इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा। गुरमुखां बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। गुरमुखां लेखा लिखे अपर अपारा, पूर्ब लहिणा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साचा रूप धरांयदा। सतिगुर सच्चा शाह सुल्तान, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। गुर गुर रूप प्रगट होए विच जहान, लोकमात कर रुशनाईआ। भगतन देवे ब्रह्म ज्ञान, आत्म ब्रह्म इक्क वड्याईआ। सन्तन वखाए इक्क निशान, दर घर साचे आप सलाहीआ। गुरमुखां रक्खे एका माण, आप आपणे अंग लगाईआ। गुरमुख वेखे बाल निधान, बाली बुध बुध समझाईआ। गुरमुख बणाए चतर सुजाण, तत्व तत्त इक्क रखाईआ। गुरमुखां पाए आपणी आण, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। सन्तन राग सुणाए साचा कान, अनहद धुन आप वजाईआ। भगतां आत्म जगे महान, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। गुर गुर रूप श्री भगवान, पंज तत्त चोला आप हंढाईआ। सतिगुर पूरा देवणहारा दानी दान,

पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल, दयानिध भेव ना राईआ। जुगा जुगन्तर चले अवल्लड़ी चाल, गुर मूर्त रूप प्रगटाईआ। सन्तां दस्से राह सुखाल, साचे मन्दिर आप सुहाईआ। सन्तन तोड़ जगत जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। गुरमुखां बख्शे पीण खाण, अमृत आत्म सच प्याला जाम प्याईआ। गुरसिखां देवे इक्क ज्ञान, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। खेले खेल दो जहान, गुरमुख साचे लए मिलाईआ। सन्तन मेला साचे काहन, सुरत शब्द करे कुड़माईआ। भगतन वखाए इक्क दुकान, दर दरवाज़ा आपे लाहीआ। गुर गुर रूप नौजवान, ना मरे ना जाईआ। सतिगुर पूरा सद मेहरवान, इक्क इकल्ला आदि जुगादि आपणा खेल रिहा खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बंक आप सुहाईआ। सतिगुर पूरा सोभावन्त, बंक दुआरी आप अख्वांयदा। आपे नारी आपे कन्त, आपे आपणी सेज हंढांयदा। आपे रूप प्रगटाए श्री भगवन्त, गुर गुर मात वेख वखांयदा। गुर गुर महिमा अगणत, वेद कतेब भेव ना पांयदा। भगतन वडियाई जीव जंत, आप आपणा घर सुहांयदा। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग करता वेख वखांयदा। सन्तन देवे मणीआ मंत, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। आप बणाए साची बणत, दूसर घाड़न ना कोए घड़ांयदा। गुरमुखां तोड़े गढ़ हउमे हंगत, माया ममता मोह चुकांयदा। नाता तोड़े भुक्ख नंगत, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। गुरमुखां काया चोली चाढ़े रंगत, नाम मजीठी रंग रंगांयदा। दूजे दर ना जाए मंगत, शब्द भण्डारी आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खलांयदा। सतिगुर पूरा शाह पातशाह, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सच सिँघासण रिहा सुहा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। धुर फ़रमाणा रिहा सुणा, हुक्मी हुक्म आपे वरताईआ। शब्द गुर जोत जगा, लोकमात लए अंगड़ाईआ। वरन गोत ना कोए वखा, बरनी बरन ना वड वड्याईआ। किला कोट आप सुहा, पंज तत्त डेरा रिहा लगाईआ। भगतन मीता भगत लए जगा, शब्द नाद धुन सुणाईआ। साची रीता दए वखा, मन्दिर मसीत ना कोए बणाईआ। धाम अनडीठा सोभा रिहा पा, दीवा बाती ना कोए जगाईआ। सन्तन मेला मेल मिला, मिल मिल आपणे रंग रंगाईआ। गुर चेला एका रूप वखा, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। सज्जण सुहेला पकड़े बांह, जुग जुग आपणी सेवा आप कराईआ। गुरमुखां बणे पिता माँ, पूत सपूता गोद सुहाईआ। इक्क जपाए आपणा नाँ, नाम निधाना झोली पाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस आप उडाईआ। गुरसिख निमाणयां देवे साचा थाँ, दरगाह साची इक्क सुहाईआ। अमृत आत्म जाम दए प्या, मदि प्याला हथ्थ उठाईआ। एका मार्ग देवे ला, पूर्ब लहिणा मूल चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराईआ। सतिगुर सच्चा अलक्ख अभेव, अगम्म अगोचर भेव ना आंयदा। सचखण्ड निवासी करे साची

सेव, साचा हुक्म आप मनांयदा। दाता दानी वड देवी देव, देव आत्मा सर्ब समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि सदा नेहकेव, नेहचल धाम सोभा पांयदा। गुर गुर रूप सूरा सरबंग, निरगुण निरवैर आप अख्वाईआ। शब्द नाद वजाए मृदंग, दो जहाना रिहा सुणाईआ। आपणा दुआरा आपे लँघ, आपे वेखे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे अश्व कसे तंग, शाह अस्वार आप हो जाईआ। भगतन मीता हरि भगवाना, भेव अभेदा आप खुलांयदा। साची रीता विच जहाना, नाम गीता इक्क पढ़ांयदा। इक्क अतीता निगहबाना, दिस किसे ना आंयदा। ठांडा सीता एका बख्शे चरन ध्याना, चरन कँवल आप समझांयदा। सन्तन मेला हरि भगवाना, भावी भय ना कोए वखांयदा। अन्तर आत्म इक्क निशाना, धुर दा बाण लगांयदा। ना कोई तीर ना कमाना, मुखी तिक्खी ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द अनादी मारे इक्क निशाना, ब्रह्म ब्रह्मादि खोज खुजांयदा। गुरमुखां रंग रंगांयदा, रंग अमोल अमुल। काया चोली वेख वखांयदा, तोलणहारा साचा तोल। एका अक्खर नाम पढ़ांयदा, निज अक्खर वक्खर आपे बोल। एका रूप अनूप दरसांयदा, काया माटी पंज तत्त फोल। गुरमुख साचे आप जगांयदा, दिवस रैण वसे कोल। घर नाद धुन सुणांयदा, अनहद वजाए ढोल। बजर कपाटी खोल्ह वखांयदा, सुरती शब्दी रिहा मौल। कीता कौल पूर करांयदा, भुल्ल ना जाए उप्पर धौल। धरत धवल आप सुहांयदा, आदि जुगादी रहे अडोल। सच सिँघासण सोभा पांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे आपणी सेवा कर, आपे आप आपणा घोली रिहा घोल। सतिगुर पूरा गहर गम्भीरा, सति पुरख निरँजण आप अख्वांयदा। सचखण्ड दुआरा उच्च मुनारा सच सिँघासण बैठा पीरन पीरा, शाह हकीरा नाउँ धरांयदा। सीस ताज साचा चीरा, पंचम राज जोग कमांयदा। लेखा जाणे अन्त अख़ीरा, आदि आपणी कल वरतांयदा। आपणा चुक्के आपे बीड़ा, दूसर संग ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर रूप लोकमात, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। इक्क इकल्ला वेखे मार झात, घर मन्दिर सोभा पांयदा। बन्द किवाड़ी खोल्हे ताक, दीवा बाती आप जगांयदा। बोध अगाधी भविख्त वाक, शब्द अनादी आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी पति आपे राख, ढाकण को पत आप हो जांयदा। भगत मेला साचे घर, घर सुहञ्जणा इक्क सुहांयदा। पारब्रह्म प्रभ मिले वर, नारी कन्त अन्त प्रनांयदा। इक्क खुल्हाए साचा दर, दरगाह साची धाम सुहांयदा। लेखा चुक्के नारी नर, नर नरायण मेल मिलांयदा। आप बंधाए आपणे लड़, एका बन्धन हथ्थ रखांयदा। सन्त साजन मीतड़ा, पारब्रह्म गुर करतार। एका शब्द जणाए मीठड़ा, रस रसक झिरना झिरे अपार। शब्द सुणाए सुहागी गीतड़ा,

१०५२
०६

पंचम गाईण वारो वार। करे कराए ठंडा सीतड़ा, अग्नी तत्त दए निवार। मीठा करे कौड़ा रीठड़ा, अमृत रस भरे भण्डार। गुरमुख साचा सोभावन्त, हरि सज्जण आप मिलांयदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, वेद कतेब सर्ब जस गांयदा। एका मणीआ एका मंत, एका मन्त्र शब्द दृढ़ांयदा। एका आदि एका अन्त, मध एका खेल खिलांयदा। एका बणावणहारा बणत, घड़न भन्नणहार इक्क अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर लगाए आपणे अंग, अंगीकार आप हो जांयदा। सिख गुरसिख सिख साख्यात, गुर गुर दरसन पांयदा। गुर गुर मेला पारजात, जात अजाती मेट मिटांयदा। नाता तुटे अन्धेरी रात, साचा चन्द आप वखांयदा। शब्द अगम्मी जणाए गाथ, लिखण पढ़ण विच ना आंयदा। दुरमति मैल देवे काट, पतित पापी आप तरांयदा। जुगां जुगन्तर खोल्हे हाट, हट हटवाणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साहिब देवे वर, गुर गुर जोत मात धर, भगत भगवन्त ल्ए फड़, सन्त लगाए आपणे लड़, गुरमुखां अंदर आपे चढ़, गुरसिख सरन सरनाई जाए पड़, जिस जन आपणी दया कमांयदा। गुरसिख सोया जागया, हरि साचा आप जगांयदा। गुरमुख उपजे मन वैरागया, नर हरि आप उपजांयदा। सन्तन मिले कन्त सुहागया, सच सुहञ्जणी सेज हंढांयदा। भगतन बह बह मारे वाजया, दिवस रैण एका रंग रंगांयदा। गुर गुर फिरे भाजया, चार कुंट दहि दिशा लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। सतिगुर पूरे रचया काजया, अनुभव प्रकाश रूप रंग रेख ना कोए जणांयदा। आदि जुगादी ग़रीब निवाजया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलांयदा। सतिगुर पूरा सूरबीर, शहनशाह वडा पातशाहीआ। गुर गुर फड़ाए एका तीर, दो जहाना रिहा चलाईआ। भगतन पैंडा देवे चीर, पान्धी आपणा पन्ध मुकाईआ। सन्तन अमृत बख्शे ठांडा सीर, निझर झिरना आप झिराईआ। गुरमुखां कढ्ढे हउमे पीड़, बिरहों रोग रहिण ना पाईआ। गुरसिखां लक्ख चुरासी कट्टे जंजीर, राए धर्म ना दए सजाईआ। जुगा जुगन्तर घत्तदा रिहा वहीर, आउँदा जांदा दिस ना आईआ। लेखा जाणे शाह फकीर, दस्तगीर वेखे थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साची कार, करे कराए करनेहार, करता कादर बेऐब परवरदिगार, नूरी जल्वा नूर इलाहीआ। सतिगुर सच्चा सर्ब गुण दाता, गुणवन्ता गुण निधानया। गुर गुर बणे पिता माता, पूत सपूता वेखे श्री भगवानया। भगतां देवे साची दाता, वस्त अमोलक इक्क वखानया। सन्तन बन्न्हे एका नाता, ना कोई तोड़न तोड़ तुड़ानया। गुरमुखां सुणाए आपणी गाथा, बोध अगाध शब्द नाद तरानया। गुरसिखां लहिणा देणा चुकाए तीर्थ अठ साठा, चरन कँवल धूढ़ बख्शे सच अशनानया। पन्ध मुकाए चौदां हाटा, चौदां लोकां वेखणहारा उच्च निशानया, आपे सोया साची खाटा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आपे होए बीना दानया। बीना दाना सतिगुर साहिब सुल्तान, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। लोकां तीनां देवे दान, वड प्रधान भेव ना आंयदा। भगवन मेला गोपी काहन, सन्तन सुरती सीता राम प्रनांयदा। गुरमुखां वसाए नगर ग्राम, गुरसिखां खेड़ा आप सुहांयदा। जुगा जुगन्तर करे खेल श्री भगवान, सति सतिवादी आपणी धार चलांयदा। ब्रह्म ब्रह्मादी हो त्यार, आदि जुगादी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम एका रंग रंगांयदा। एका धार सतिगुर, दूजी गुर गुर विच समाईआ। तीजे भगत चढ़ाए आपणे घोड़, चौथे सन्त वज्जे वधाईआ। पंचम गुरमुखां आपे जाए बौहड़, छेवें गुरसिख आपे लए तराईआ। सत्तवें सति सतिवादी जुगां जुगां दी लग्गी बुझाए औड़, अमृत मेघ आप बरसाईआ। लक्ख चुरासी रीठा कराए मिट्ठा कौड़, पत डाली फोल फुलाईआ। दो जहानां लाए एका पौड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर गुरू गुरदेव, भगत भगवान सन्त कन्त लाए एका सेव, गुरमुख गुरसिख करे जणाईआ। सतिगुर पूरा उठया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। तेरा वकारा फड़ फड़ कुठया, त्रैगुण मारनहारा मार। जूठा झूठा धन जाए लुट्टया, ना कोई रहे हट्ट बाज़ार। शाह सुल्तान हथ्थ फड़ाए ख़ाली ठूठया, घर घर मंगण भिक्ख भिखार। सतिगुर सूरा एका रुठया, कोई ना पावे किसे सार। जगत जीव दिन दिहाढ़े जाए लुट्टया, कलिजुग मारे अन्तिम मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साहिब होए त्यार। सतिगुर साचा गुण निधाना, आपणी करवट आप बदलांयदा। जुगां जुगन्तर खेले खेल महाना, सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध चुकांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखे कूड़ प्रधाना, चारों कुंट अन्धेरा छांयदा। सच सुच्च ना कोए निशाना, गुर पीर ना कोए मनांयदा। सतिगुर भुल्लया जीव नादाना, ब्रह्म पारब्रह्म ना कोए समझांयदा। माया ममता बध्धा गाना, आसा तृष्ना सगन मनांयदा। हउमे हंगता बणया जगत मकाना, कंचन गढ़ ना कोए वड्यांअदा। एका मिले ना नाम श्री भगवाना, रसना जिह्वा सर्ब हलांयदा। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराणा, शास्त्र सिमरत भेव ना आंयदा। गीता अठारां अध्याए कर ज्ञाना, अठ्ठ दस पन्ध ना कोए मुकांयदा। अञ्जील कुरान सुणायण तराना, बीस तीस बतीस सर्ब अलांयदा। नूर इलाही ना मिल्या इक्क निशाना, जल्वा जलाल ना कोए रखांयदा। पढ़ पढ़ बाणी बाण लाण पंज शैताना, धायल कर ना कोए वखांयदा। अठसठ तीर्थ कर अशनाना, दुरमति मैल ना कोए धवांयदा। पूजा कर कर थक्के सीता रामा, राम इष्ट ना नज़री आंयदा। पा पा रास मंडल थक्के कृष्ना कान्हा, नाम बंसरी ना कोए वजांयदा। उच्ची कूक सुणायण बांगां, सच महिराब एका हुजरे सयदा नबी ना कोए करांयदा। पीर फ़कीर पढ़न कलामां, इलाही कलाम ना कोए सुणांयदा। छत्ती राग गायण गाणा, धुन नाद ना कोए वजांयदा। रूप नज़र ना आए हरि भगवाना,

१०५४ ०६ १०५४ ०६

हरि की पौड़ी चढ़ चढ़ जीव जंत सभ तारीआं लांयदा। मनमुख जीव होया अञ्याणा, कलिजुग कूड़ा कप्पड़ तन सुहांयदा। माया ममता मन लोभाना, काम क्रोध लोभ मोह हँकार साचा मेला मेल मिलांयदा। अंगीकार करे पंज शैताना, पंचम शब्द ना कोए सुणांयदा। लाड़ी मौत बद्धा गानां, सतिगुर पूरा नज़र ना आंयदा। चार कुंट दहि दिशा नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप होए वैराना, कलिजुग आपणा डौरू वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर वेस धर, लोकमात फेरी पांयदा। लोकमात हरि जुग जुग आए, जुगा जुगन्तर सेव कमाईआ। भगत भगवन्त लए तराय, भावी भगत नेड़ ना आईआ। सन्त साजण लए मिलाए, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। गुरमुख गुर गुर लए उठाए, गुर शब्दी शब्द सुणाईआ। गुरसिख साचे मार्ग आपे पाए, पिछला पैंडा दए मुकाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल रचाए, निरगुण निरवैर आपणी कल धराईआ। जूनी रहित रूप प्रगटाए, पुरख अकाल नज़र ना आईआ। करता करनी किरत कमाए, जोती जोत करे रुशनाईआ। निहकलंका नाउँ धराए, शब्द डंका इक्क वजाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दए हलाए, ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इंद रहिण ना पाईआ। एका खण्डा हथ्थ चमकाए, ब्रह्मण्डां देवणहार सजाए, लक्ख चुरासी डेरा ढाहीआ। जेरज अंडां फोल फुलाए, उत्भुज सेत्ज वेखे थाउँ थाएं, जंगल जूह ऊजाड़ पहाड़ डूँग्घी कंदर समुंद सागर फोल फुलाईआ। कलिजुग अन्तिम पंज तत्त काया वेखे मन्दिर, हट वणजारा फेरी पाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़े जंदर, नाम हथौड़ा एका लाईआ। सृष्ट सबाई करे खण्डर, खण्ड खण्ड आपणी वण्ड वण्डाईआ। गुरसिखां मेल मिलाए अंदरे अंदर, सुरत शब्द कर कुड़माईआ। मनूआ मन ना भवे बन्दर, दहि दिशां ना उठ उठ धाईआ। पाए डोरी डूँग्घी कंदर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। उच्चे टिल्ले लाहे ग़ोरख मछन्दर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए तराईआ। गुरमुख साचा तारया, तारनहार निरँकार। गुर गुर पैज मात सुआरया, भवजल करे पार। माणस जन्म ना आए हारया, जिस पाया धुर दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सच्चे लए उभार। गुरमुख सज्जण सर्ब गुणवन्त, सतिगुर पूरा आप बणांयदा। नारी नर एका रंग चढ़ाए बसन्त, नारी पुरष वण्ड ना कोए वण्डांयदा। सतिगुर दुआरे एका संगत, दूजा रूप ना कोई वखांयदा। एका भिख्या मंगे मंगत, नाम भिच्छया झोली पांयदा। लेखा जाणे जिउँ गुर नानक अंगद, अंगीकार आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। गुरमुखां दुःख निवार, दुःख सुख विच समाईआ। किरपा कर आप करतार, कूड़ी क्रिया दए उठाईआ। सफा उठे मलेछ विच संसार, माया ममता रहिण ना पाईआ। गणपति गणेश ना कोई अधार, ब्रह्मा विष्न शिव कोए ना सीस झुकाईआ।

दर खोल्हे इक्क निरँकार, चार वरनां करे पढ़ाईआ। ऊँचां नीचां इक्क घर बार, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। पुरख अकाल करे प्यार, सृष्ट सबाई पिता माईआ। गुरसिख सज्जण सोहन सच दरबार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां देवे साचा वर, जगत दलिद्र देवे कट्ट, दूई द्वैती मेटे फट्ट, रती रत आप रंगाईआ। रती रत रंग चाढ़े गूढ़, उतर कदे ना जाया। चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाया। हरिजन बख्शे एका धूढ़, चरन चरनोदक तिलक लगाया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच समग्री, इक्क इक्क वखाया। आसा मनसा करे पूर, जो जन सरनाई आया। मनमुखां तों वसे दूर, मुख आपणा पड़दा पाया। गुरमुखां अग्गे हाज़र हज़ूर, जुग जुग रूप अनूप वटाया। सर्बकला आपे भरपूर, समरथ पुरख आपणा नाउँ धराया। जगत विकारा करे चूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणी सेज सुहाया। गुरसिख सेज सुहावनी रंगीला पलँघ, लुहार तरखान ना कोई बणाईआ। पारब्रह्म प्रभ चाढ़े आपणा रंग, रंगणहार एका माहीआ। उप्पर बैठ सूरा सरबंग, आपणी सेजा आप सुहाईआ। शब्द अगम्मी इक्क मृदंग, निरगुण आपणा आप वजाईआ। गुरमुखां कोलों मंगे मंग, सच प्रीती वड वड्याईआ। हो निधड़क दस्म दुआरी लँघ, अद्धविचकार ना कोई लटकाईआ। त्रैगुण माया ना मारे डंग, पंज चोर ना करन लड़ाईआ। सुखमन नाड़ी ना अन्धेरा अन्ध, ईड़ा पिंगल ना मुख भवाईआ। सतिगुर पूरा गुरसिख तेरा आप मुकाए पन्ध, आउणा जाणा लेखे लाईआ। मदिरा मास तजाया रसना गंद, घर मेला सहिज सुभाईआ। जोत निरँजण चाढ़े चन्द, सूरज चन्न मुख शर्माईआ। अठ्ठे पहर परमानंद, निज रस आपणा आप वखाईआ। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना तोड़ साचे घोड़ लए चढ़ाईआ। रसना गायण बत्ती दन्द, जिह्वा रसना रस ध्याईआ। आपे ढाहे भरमां कंध, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। जिस जन गाया सोहँ सुहागी छन्द, जन्म मरन विच ना आईआ। तख्त सुल्तान श्री भगवान हो मेहरवान आप सुहाए आपणा पख, आसण सिँघासण खेल तमाशण पृथ्मी आकाशन सोभा पाईआ। गुरमुखां कट्टे भुक्ख नंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जन्म जुग धराए, कलिजुग अन्तिम लए मिलाईआ।

✻ १७ भाद्रों २०१७ बिक्रमी सूबेदार राम सिँघ दे गृह गवाल टोली मकान नं० ३८६ फिरोज़पुर छाउँणी ✻

सो पुरख निरँजण गुण निधान, हरि वड वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण वाली दो जहान, अगम्म अगम्मड़ा खेल कराईआ। एकँकारा रखाए सच निशान, दर घर साचे आप झुलाईआ। आदि निरँजण नूर महान, जोती जोत डगमगाईआ।

अबिनाशी करता आप सुहाए सच मकान, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। श्री भगवान वड दाना दानी दान, देवणहार इक्क अख्वाईआ। पारब्रह्म सुणे सुणाए धुर फ़रमाण, हुक्मी हुक्म आप जणाईआ। करे खेल होए निगहबान, निरवैर आपणा बल आप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त इक्क वड्याईआ। सो पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, तख्त ताज आप सुहांयदा। सचखण्ड दुआर वसे सच मकाना, दरगाह साची आसण लांयदा। रूप रंग ना रेख कोई वखाना, अनुभव प्रकाश आप करांयदा। हुक्मी हुक्म सुणाए सच तराना, धुर तराना आप जणांयदा। एका राग एका गाणा, राग अनादी आप वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क उपांयदा। दर घर साचा आप उपाया, आपे आपणा आसण लाईआ। इक्क इकल्ला खेल खलाया, खेलणहार दिस ना आईआ। निरगुण आपणा नाउँ धराया, ना मरे ना जाईआ। थिर दरबार आप खुल्हाया, महल्ल अटल अचल्ल सोभा पाईआ। कमलापाती दीपक इक्क रिहा जगाया, तेल बाती ना कोई रखाईआ। साची हाटी इक्क खुल्हाया, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। सर्बकला समरथ आप अख्वाया, अकल कल हरि रघराईआ। आपणी खाणी आपणा भण्डारा आप वखाया, आपे मन्दिर रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मन्दिर डेरा लाईआ। हरि मन्दिर हरि सुहावना, पारब्रह्म बेअन्त। आपणी कीमत करता आपे पावना आदि जुगादि महिमा अगणत। आपणा थान आप सुहावना, आपे होए सोभावन्त। आपणा रूप आप प्रगटावना, आपे खेले खेल नारी कन्त। आपे साची सेज हंढावना, आपे चाढ़े रंग बसन्त। आपे सगला संग निभावना, आपे लेखा जाणे आदि अन्त। आपे जुग जुग रूप धरावना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वसाए साचा घर, दर घर साचा इक्क सुहंत। दर घर साचा हरि सुहांयदा, सोभावन्त गहर गम्भीर। सति पुरख सति सतिवादी आपणा आसण लांयदा, आदि जुगादी ठांडा सीर। तत्व तत्त ना कोई वखांयदा, ना कोई बस्त्र पहने चीर। निरगुण जोत इक्क जगांयदा, चोटी चढ़या इक्क अख़ीर। शब्द नाद धुन अल्हांयदा तुरीआ राग सुणाए पीरन पीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आपे खोल्ह, पुरख अगम्मा आपे बोल, आदि जुगादि ना जाए डोल, अडुल आपणा नाउँ धरांयदा। सचखण्ड दुआरा खोल्हया, कर किरपा गुण निधान। निरगुण अंदर वड़ वड़ बोलया, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। आपे बणया साचा तोलया, तोलणहार दो जहान। आपे बणे सच विचोलया, निरगुण निरगुण हो प्रधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, आप सुहाए हरि हरि कन्त, दूसर अवर ना कोई जणाईआ। सचखण्ड दुआर सुहांयदा, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह। निरगुण आपणा आसण लांयदा, दीपक जोती

जोत जगा। नूरो नूर डगमगांयदा, निरवैर खेल रिहा खिला। अकाल मूर्त आप प्रगटांयदा, रूप रेख ना रिहा जणा। साचे तख्त चरन टिकांयदा, शाहो भूप बणे सच्चा पातशाह। सति पुरख निरँजण साची कार कमांयदा, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह। सच निशाना आप झुलांयदा, अगम्म अगम्मड़ा आपणे हथ्थ टिका। आपणी वण्डण आप वण्डांयदा, आपे करे सच न्याँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाह। बेपरवाह हरि निरँकारा, निरवैर आपणा खेल खिलांयदा। साचे तख्त बैठा सच्ची सरकारा, तख्त ताज आप सुहांयदा। रचया काज परवरदिगारा, नूर अलाही नूर समांयदा। मुकामे हक हक करे प्यारा, लाशरीक खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा आप वड्यांअदा। थिर घर वडा वड वडिआए, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सो पुरख निरँजण आसण लाए, हरि पुरख निरँजण सोभा पाईआ। एकँकारा वेख वखाए, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। श्री भगवाना पर्दा लाहे, अबिनाशी करता दया कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ पए सरनाए, आपणा सीस जगदीस आप झुकाईआ। रूप रंग ना कोई वखाए, रेख भेख ना कोई वटाईआ। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाए, छप्पर छन्न ना कोई बणाईआ। दीवा बाती इक्क जगाए, कन्त कन्तूल डगमगाईआ। साची हाटी इक्क खुल्हाए, वणज वणजारा भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

१०५८ इक्क इकल्ला एकँकारा, करे खेल अगम्म अपारा, निरगुण निरवैर उपजाए साची धारा, धार धार विच समाईआ। आपणी १०५८

०६ धार समालीअन, पारब्रह्म बेअन्त। आपे खेले खेल नरायण, श्री भगवान साहिब गुणवन्त। आपे जोत जगाए इक्क अकालीअन, ०६

अबिनाशी करता महिमा अगणत। आपणा दीप प्रगटाए इक्क ज्वालीअन, आदि निरँजण साचा कन्त। आपे साचा धाम सुहालीअन, एका एकँकारा आदि अन्त। आपे लेखा जाणे दो जहानीअन, हरि पुरख निरँजण सर्ब गुणवन्त। आपे दरगाह साची धाम सुहालीअन, सो पुरख निरँजण आदि अन्त। सति पुरख निरँजण आपणी आप करे प्रितपालीअन, आपे करे आपणी मंत। सो पुरख निरँजण दर सुहावना, दीना नाथ वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा सोभा पावना, सो पुरख निरँजण जोत जगाईआ। थिर घर साचा एका रंग रंगावना, हरि पुरख निरँजण सेव कमाईआ। एकँकारा नाद अनादी इक्क वजावना, तुरीआ राग आप सुणाईआ। आदि निरँजण डगमगावना, सूरज चन्न ना कोई चढ़ाईआ। अबिनाशी करता रूप वटावना, निरभउ आपणा नाउँ धराईआ। श्री भगवान संग निभावना, ना मरे ना जाईआ। पारब्रह्म प्रभ आपणा खेल खिलावना, मात पित ना कोई भैण भाईआ। इक्क इकल्ला वसे सच महल्ला उच्च अटला आप सुहावना, आपे बैठा सेज विछाईआ। शाह पातशाह बेपरवाह आप अख्वावना, शहनशाह करे सच्ची पातशाहीआ। निरगुण रूप मलाह आप बणावना, सति पुरख सहिज सुखदाईआ। आपणी

दिशा आपणी कूट वेख वखावना, चार कुंट ना वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर सुहञ्जणा, जोत जगाए आदि निरँजणा, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। आदि पुरख नाद अनाद, एका रंग समांयदा। खेले खेल आदि जुगादि, जुग जुग वेस धरांयदा। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्मादि, पारब्रह्म आपणा सीस सुहांयदा। शब्द जणाई बोध अगाध, थिर घर साचे आपे गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वड्यांअदा। सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, परम पुरख आप कराईआ। निरगुण दीआ कर उज्यारा, कमलापाती जोत जगाईआ। रवि ससि ना कोई सतारा, मंडल मंडप ना कोई रुशनाईआ। गगन गगनंतर ना कोई अखाड़ा, लोआं पुरीआं रचन रचाईआ। विष्नूं सेज ना सांगोपांग कोई हुलार, सहँसर मुख बाशक रसना कोई ना गाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ना करे पसारा, चार वेद ना कोई पढ़ाईआ। शंकर हथ्थ त्रशूल ना फड़े कटारा, बाशक तशका ना गल लटकाईआ। करोड़ तेतीसा ना कोई अखाड़ा, सुरपति राजा इंद ना सोभा पाईआ। गण गंधर्ब ना गाए वारा, किन्नर यच्छप ना नाच नचाईआ। ज़िमी असमान ना कोई अधारा, धरत धवल ना कोए उपाईआ। जल बिम्ब ना कोए अधारा, समुंद सागर ना कोए वखाईआ। त्रैगुण माया ना कोए भण्डारा, लोकमात ना कोए वरताईआ। पंज तत्त ना कोई उज्यारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश जोड़ ना कोई जुड़ाईआ।

१०५६ ना कोई मात पुत सुत दुलारा, भैण भाई साक सैण ना कोई अख्वाईआ। ना कोई शाह सुल्तान दिसे दारा, राज राजान १०५६

०६ ना कोई बणाईआ। सीस ताज ना कोई दस्तारा, हुक्मी हुक्म ना कोई वरताईआ। गुर पीर ना कोई अवतारा, कंचन गढ़ ना कोई वखाईआ। रसना जिह्वा ना कोई हुलारा, बत्ती दन्द ना कोई हिलाईआ। मन मति बुध ना कोई दुआरा, निरगुण वण्ड ना कोई वण्डाईआ। लक्ख चुरासी ना कोए पसारा, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड ना रूप प्रगटाईआ। चार खाणी ना कोए हुलारा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए अख्वाईआ। चार बाणी ना कोए जैकारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी उच्ची कूक ना कोए सुणाईआ। चार जुग ना कोए अखाड़ा, शस्त्र बस्त्र ना कोए सुहाईआ। तीर तलवार तुफ़ंग ना रक्खे कोए तिक्खी धारा, चण्ड प्रचण्ड ना कोए चमकाईआ। चतुर्भुज ना कोए निराकारा, आदि शक्ति ना रूप वटाईआ। अष्टभुज ना करे पुकारा, सिँघ अस्वार ना कोए बणाईआ। राम कृष्न ना कोई अवतारा, जनक सपुत्री ना कोए विआहीआ। सखीआ मंगलचार ना कोए संसारा, मुकंद मनोहर रूप ना कोइ वटाईआ। ईसा मूसा ना कोए हुलारा, काला सूसा ना कोए रंगाईआ। नानक गोबिन्द ना करे कोए पुकारा, पुरख अकाल कूक कूक ना कोए सुणाईआ। आदि जुगादी इक्क इकल्ला एकँकारा, सचखण्ड दुआरे बैठा सोभा पाईआ। आपे पाए आपणी सारा, दूजा संग ना कोए वखाईआ। तीजा खोल्हे ना कोए किवाड़ा, चौथे

पद ना कोए बहाईआ। पंचम मिले ना मीत मुरारा, छेवें घर ना दए सलाहीआ। सत्तवें सति सतिवादी ना करे कोए पुकारा, अठ तत्त ना रंग रंगाईआ। नौं दर ना होए ख्वारा, लक्ख चुरासी जीव वासना ना विच भराईआ। आत्म अन्तर ना करे कोई विचारा, ब्रह्म रूप ना कोई प्रगटाईआ। अनहद शब्द ना कोए धुन्कारा, धुन आत्मक ना कोए सुणाईआ। अमृत जाम ना ठंडा ठारा, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। सुखमन टेढी ना दिसे गारा, ईड़ा पिंगल ना बैठा ताड़ी लाईआ। मेरू डण्ड ना करे पुकारा, हड्ड मास नाड़ी रत ना कोई मेला मेल मिलाईआ। बूंद रक्त ना कोए आधारा, नारी कन्त ना संग रखाईआ। पिता पूत ना कोए प्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी इक्क इकल्ला आपे वसे सच महल्ला, सचखण्ड दुआरे जोत जगाईआ। जोत उजाला हरि गोपाला, गोबिन्द आपणा नाउँ धरांयदा। दीना नाथ दीन दयाला, आपणा खेल करे निराला, निरगुण धारा आप चलांयदा। आपे पत आपे डाल्ह, आप फुल फुलवाड़ी वेखे दो जहाना, दो जहानां वाली आप अख्वांयदा। आपे वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, आपे शाह आपे कंगाला, शाह पातशाह आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा भेव खुलांयदा। सचखण्ड दुआरा भेव खुलाउणा, पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कराईआ। सति सतिवादी आपणा रंग आप रंगाउणा, रंग रंगीला एका माहीआ।
१०६० चारों कुंट बन्द कराउणा, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण दिशा ना कोए गणाईआ। चार दीवार ना कोए बणाउणा, उप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। दीवा बाती ना कोए टिकाउणा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। इक्क इकांती आपणा आसण लाउणा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। तख्त ताज प्रभ आप सुहाउणा, आपणी बणत आप बणाईआ। साचा घाड़न घड़ आप आपणा वेख वखाउणा, नेत्र लोचण नैण ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वण्डण आप वण्डाईआ। साचे तख्त बैठ भगवान, आपणी वण्ड वण्डांयदा। सुते प्रकाश जोत महान, नूर नुराना डगमगांयदा। सति पुरख निरँजण वेखे मार ध्यान, आपणी रचना आप रचांयदा। आपणा रंग रूप महान, मेहरवान आप वटांयदा। लाल गुलाला खेले कर ध्यान, कंचन आपणा मेल मिलांयदा। सूहा रंग करे प्रधान, चिट्टी धार धार बनांयदा। पीला रंग इक्क निशान, नीली धारों धार करांयदा। काला अकल कला भगवान, निरगुण आपणी खेल खिलांयदा। सत्तां मेला सच जहान, दरगाह साची आप सुहांयदा। सत्त रंग निशाना गुण निधान, सचखण्ड दुआरे आप झुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तख्त आसण सोभा पांयदा। भूपन भूप वड वड राजा, पारब्रह्म इक्क अख्वांयदा। सति सरूप रचया काजा, लेखा लेख ना कोए लिखांयदा। शब्द अगम्मी मारे वाजा, दर दरबान आप अख्वांयदा। आपे आपणा साजण साजा, आपे

हुक्म चलांयदा। आपे अंदर बाहर फिरे भाजा, गुप्त ज़ाहर खेल खिलांयदा। आपे शाह आपे नवाबा, आपे रइयत रूप वटांयदा। आपे अश्व आपे आसण आपे चरन टिकाए विच रकाबा, शाहअस्वार आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणांयदा। साचा हुक्म हरि करतार, आपणा आप सुणाईआ। पंचम मुख ताज करना त्यार, दरगाह साची घाड़त आप घड़ाईआ। चारे मुख चार दीवार, चारों कुंट बन्द कराईआ। पंजवां मुख आप करतार, निरगुण आपणा लए खुलाईआ। तख्त निवासी बण सिक्दार, सो पुरख निरँजण करे सच सच्ची शहनशाहीआ। चारों कुंट दए हुलार, चारे मुख मुख सालाहीआ। चारे अंदर कर प्यार, साचा मन्दिर वेख वखाईआ। सो पुरख निरँजण खेल न्यार, आपणी कल आप वरताईआ। आपणी वण्ड वण्डे अपर अपार, वण्डणहारा दिस ना आईआ। निराकार रूप करे साकार, निरगुण सरगुण आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खलाईआ। खेल खलाए हरि भगवन्त, आपणा रूप आप प्रगटांयदा। आपणी महिमा जाणे आदि अन्त, दूसर भेव कोए ना पांयदा। दरगाह साची धाम सुहंता इक्क बसन्त, सोभावन्त चरन टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मुख आप सालांहयदा। पंचम मुख बणत बणाए, सतिगुर पूरा बेपरवाहया। चारे मुख आप लगाए, चारे बाणी राग अलाया। चारे
१०६१ वेदां दए लिखाए, ब्रह्म पारब्रह्म पढ़ाया। चारे जुग वण्ड वण्डाए, चार वरन रहे सरनाया। चार यारी मूल चुकाए, लेखा १०६१
०६ मात रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मुख ताज आप बणाया। पंचम मुख घड़या घाड़, ०६
पुरख अबिनाशी सेव कमांयदा। साचे तख्त सोहे साचा लाड़, दरगाह साची सोभा पांयदा। सेवक सेवा करे आप करतार, दर दरवेश दरबान अख्वांयदा। भूप शाह बणे नरेश, निरवैर आपणा नाउँ रखांयदा। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, सीस जगदीस ना मूंड मुंडांयदा। इक्क इकल्लड़ा करे अवल्लड़ा वेस, वेस अनेका रूप प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची धाम सुहांयदा। पंचम मुख कर त्यार, हरि सतिगुर हथ्थ उठांयदा। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़, आपणे अंदर आपे आंयदा। आपे तख्त बैठ सच्ची सरकार, आप आपणा हुक्म चलांयदा। आपे दोए जोड़ करे निमस्कार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकांयदा। आपे आपणी पैज लए संवार, साचा मुक्ट सीस टिकांयदा। खड़ग खण्डा ना कोए कटार, तीर कमान ना हथ्थ उठांयदा। जोद्धा सूरबीर ना कोए नाल बलकार, सगला संग ना कोए रखांयदा। इक्क इकल्ला कर पसार, सचखण्ड दुआरे वेख वखांयदा। सोहे ताज सच्ची सरकार, निरगुण साचा आप सुहांयदा। पंचम मुख अपर अपार, सो पुरख निरँजण आप प्रगटांयदा। हुक्मी हुक्म करे वरतार, धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। विश्व रूप

कर त्यार, विष्न जोत आप जगांयदा। आपे कँवला अमृत भर भण्डार, फुल नाभी आप खुलांयदा। आपे अंदरों आए बाहर, आपे भवरा गूंज गुंजांयदा। आपे पारब्रह्म ब्रह्म हो त्यार, ईश जीव आपणी वण्ड वण्डांयदा। आपे परमात्म आत्म खेल न्यार, लोकमात वेख वखांयदा। आपे शंकर सुन्न अगम्मी धूंआँधार, आपणा इष्ट आप जणांयदा। आपे तिन्नां मेला करे करतार, आपे आपणा मुख छुपांयदा। आपे बण भण्डारी भण्डार, साची वस्त आप उपांयदा। त्रैगुण माया कर प्यार, विष्न ब्रह्मा शिव झोली पांयदा। लक्ख चुरासी तन श्रंगार, काया गढ़ आप बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तख्त ताज सुहांयदा। तख्त ताज सुहांयदा, हरि सतिगुर दीन दयाल। दरगाह साची सोभा पांयदा, निरगुण जोत पुरख अकाल। आपणा बल आप वखांयदा, आदि जुगादि करे प्रितपाल। आपणे सीस आप सुहांयदा, जगदीश चले अवल्लड़ी चाल। साचा ताज आप टिकांयदा, पारब्रह्म प्रभ घालण घाल। काल महांकाल दर दुरकांयदा, बैठ सचखण्ड सच्ची धर्मसाल। आपणा नाउँ आप धरांयदा, नाउँ निरँकारा हक हलाल। इक्क जैकारा बोल सुणांयदा, सो पुरख निरँजण हो उज्यार। पहला मुखड़ा आपणा आप खुल्हांयदा, इक्क ललकारा देवे मार। ब्रह्म रूप अनूप प्रगटांयदा, आपे बणे सच दलाल।
१०६२ ब्रह्मा विष्न मेल मिलांयदा, शंकर उठाए साचा लाल। तिन्नां आपणा रूप जणांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १०६२
किरपा कर, साचा सीस ताज धर, दरगाह साची आप सुहांयदा। ब्रह्मे विष्न शिव हरि दरस दखाया, पंचम ताज सीस हरि रक्ख। निरगुण आपणा रूप प्रगटाया, थिर घर साचे हो प्रतक्ख। अनुभव आपणा प्रकाश जणाया, आप आपणा कर कर वक्ख। स्वै शक्ती आप प्रगटाया, आदि शक्ति अलक्खणा अलक्ख। चतुर्भुज रूप वटाया, आपणा मार्ग आपे दस्स। आपणा गोझ खुल्हाया, तीर निराला मारे कस। विष्न निउँ निउँ सीस झुकाया, मानणहारा एका रस। ब्रह्मा नेत्र नीर वहाया, तेरा विछोड़ा अन्धेरी रैण मस। शंकर खुल्हड़े केस वखाया, तेरा दर ना मिले नस्स नस्स। तूं दाता बेपरवाहया, हउँ सेवक तेरे चरन रहे झस्स। साची भिच्छया झोली पाया, साडी पूरी कर आस। दर भिखारी बणके मंगण आया, सतिगुर पूरे शाहो शाबास। तेरी मंडल रास वेख वखाया, ना कोई पृथमी ना कोई आकाश। सूरज चन्न ना कोई चढ़ाया, ना कोई जंगल ना कोई प्रभास। इक्क इकल्ला डेरा लाया, सचखण्ड दुआरे खेल तमाश। तेरे सीस ताज सुहाया, आदि जुगादि ना होए विनास। एका तेरा दरसन पाया, दूजी वस्त ना कोई पास। रुत रुतड़ी ना कोई वखाया, घड़ी पल बरस ना मास। दिवस रैण वण्ड वण्डाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ सेवक चाकर दासी दास। सतिगुर पूरा दया कमांयदा, ब्रह्मा विष्न शिव करे प्यार। एका एक हुक्मी हुक्म सुणांयदा, हरि भाणा वरते विच संसार।

त्रैगुण तेरी झोली पांयदा, रजो तमो सतो कर श्रंगार। लक्ख चुरासी भाण्डे आप घड़ांयदा, पंज तत्त वस्तू देवे डार। पंज दस एका रंग रंगांयदा, पंज पंज करे जैकार। पंज तिन्न मेला मेल मिलांयदा, मन मति बुध दए अधार। नौं दुआरे खोल्ह खुलांयदा, आसा तृष्ना भरे भण्डार। काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलांयदा, झूठ जूठ कर पसार। माया ममता झोली पांयदा, हउमे हंगता गढ़ हँकार। भुक्खा नंगा आप फिरांयदा, मन मनुआ कर ख्वार। घर घर विच आप सुहांयदा, बाढी बण सच्ची सरकार। साचे तख्त आसण लांयदा, निरगुण जोत कर उज्यार। ब्रह्म आपणा रूप प्रगटांयदा, ब्रह्मे तेरी पावे सार। विष्नूं घर घर रिज़क पुचांयदा, देवणहार आप करतार। शंकर जो घड़या भन्न वखांयदा, मारनहारा डाहडी मार। तिन्नां विचोला खेल खिलांयदा, बोले शब्द नाम जैकार। धुर दा तोला आप हो जांयदा, साचा कंडा कर त्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वरते सच वरतार। सतिगुर भाणा हरि समझांयदा, कर किरपा गुण निधान। विष्नूं तेरी सेवा लांयदा, लोकमात कर प्रधान। ब्रह्मे तेरी वण्ड वण्डांयदा, ब्रह्म रूप श्री भगवान। शंकर हथ्थ त्रशूल रखांयदा, अठ्ठे पहर निगाहबान। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेरी झोली पांयदा, एका चौकड़ा जगत निशान। गुर पीर अवतार तेरी गोद बहांयदा, लै के आवण धुर फ़रमाण। साचे सन्ता कन्त मिलांयदा, इक्क इकल्ला नौजवान। भगतां भगती इक्क दृढ़ांयदा, आत्म भिच्छया देवे दान। गुरमुख साचे आप जगांयदा, आलस निन्दरा नाता तोड़ जगत जहान। गुरसिख सज्जण वेख वखांयदा, निरगुण सरगुण हो प्रधान। जुग जुग आपणा रूप धरांयदा, करे खेल वाली दो जहान। नौं नौं चार गेड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा, चार वेद ना करन पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका देवे धुर फ़रमाण। धुर फ़रमाणा हरि जणांयदा, पुरख अबिनाशी बोल जैकार। विष्न तेरा बंस सुहांयदा, बंस बंसा कर त्यार। ब्रह्मा तेरी ब्रह्म बिन्द उपजांयदा, नादी सुत कर श्रंगार। शंकर तेरा बल वखांयदा, बल धारे आप करतार। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग खेल खिलांयदा, लेखा जाणे त्रिताली लक्ख बीस हज़ार। बावन रूप आप प्रगटांयदा, लोकमात लए अवतार। राम रामा आप अख्वांयदा, दुष्ट हँकारी करे ख्वार। कान्हा कृष्ना कंसा केसा पकड़ आप गिरांयदा, नाता तोड़ जीव गंवार। ईसा मूसा डंक वजांयदा, बीस बीसा कूक करे पुकार। नानक निरगुण मेल मिलांयदा, निरगुण इष्ट पुरख अकाल। गोबिन्द सूरा सूरबीर नाउँ धरांयदा, जगत जहाना बण दलाल। कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा, सृष्ट सबाई खाए काल। चार कुंट अन्धेरा छांयदा, ना कोई करे प्रितपाल। नारी नार विभचार कमांयदा, सन्त कन्त ना कोई प्यार। आत्म सेजा ना कोई हंढांयदा, घर घर काम क्रोध वड़या चण्डाल। जोती दीपक ना कोई जगांयदा, काया सेजा वसे धर्मसाल। घर शब्द ना

कोई अलांयदा, गीत गोबिन्द ना गाए सुखाल। अमृत जाम ना कोई प्यांअदा, अठसठ तीर्थ रहे नुहाल। काया माटी पोच ना कोई पुचांयदा, चिकड़ भरया जीव जहान। साध सन्त ना कोई बचांयदा, झूठी रसना करन ज्ञान। आत्म राम ना कोई दिसांयदा, बिरहों मारे ना कोई बाण। नाम बंसरी ना कोई वजांयदा, नज़र आए ना साचा काहन। घनईआ रास ना कोई नचांयदा, सखीआं जंगल मिले ना आण। कलिजुग प्रभास अन्तिम डेरा ढांयदा, मथरा गोकल ना कोई निशान। खाणी बाणी सर्ब अलांयदा, पाए पद ना कोई निरबान। नाम सति ना कोई गांयदा, कलिजुग काग विष्टा मुख रखान। आत्म ब्रह्म ना कोई जणांयदा, मिले मेल ना श्री भगवान। साचे मन्दिर हरि का दरस कोई ना पांयदा, भरमे भुल्ले जीव निधान। बजर कपाटी तोड़ ना कोई चढ़ांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव आपणी दस्से इक्क पछाण। ब्रह्मे विष्न शिव दए दिलासा, सतिगुर दया कमाईआ। नौं नौं चार खेल तमाशा, त्रैगुण वण्डण वण्ड वण्डाईआ। गगन गगनंतर पावे रासा, आकाश प्रकाश रूप वटाईआ। अन्तिम पूरी करे आसा, जगत निरास ना कोई बणाईआ। पंज तत्त वेखे काया कासा, कवण खप्परी हथ्थ उठाईआ। तोल तोलणहारा तोला मासा, रत्ती रत्त आप तुलाईआ। लेखा जाणे पवण स्वासा, सास ग्रास आपणे विच टिकाईआ। आदि जुगादि ना कदे विनासा, अबिनाशी करता आपणा नाउँ धराईआ।
१०६४ अन्तिम करे बन्द खुलासा, बन्दी तोड़े बन्धन रहे ना फाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां १०६४
०६ विचोला आपे बण, आपणा लेखा दए समझाया। लेखा हरि समझाया, कर किरपा गुण निधान। वेला अन्तिम दए सुहाया, ०६
लोकमात हो प्रधान। लहिणा देणा दए चुकाया, मूल रहे ना कोई निशान। अन्त कन्त लए गल लाया, नार सुहागण कर पछाण। विष्नूं तेरा जोड़ जुड़ाया, नाता जोड़े आप भगवान। ब्रह्मे तेरा रूप वखाया, हँ ब्रह्म इक्क निशान। शंकर तेरा तख्त सुहाया, तेरा लेखा चुकावे आण। करोड़ तेतीसा रहिण ना पाया, सुरपति राजा इंद मंगे चरन ध्यान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दस्से सच निशान। सच निशाना हरि समझाए, तिन्नां एका मति जणाईआ। नौ नौ चार गेड़ा आप दवाए, देवणहार दिस ना आईआ। गुर पीर अवतार साध सन्त सेवा लाए, जुग जुग आपणी कार कराईआ। कर्म धर्म जरम आपणे लेखे लाए, वरन बरन वण्ड वण्डाईआ। साची सरन इक्क रघुराय, एका इष्ट देव अलक्ख अभेव मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा दए वखाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, पुरख अबिनाशी खेल खलावणा। निरगुण निरवैर नर हरि जामा पाउणा, जोती जोत दीप जगावणा। मात पित ना कोए बणाउणा, गोदी गोद ना कोए सुहावना। पंज तत्त ना कोए रखाउणा, दस दस मास ना गर्भ तपावणा। अन्न

जल ना पान कराउणा, आसा तृष्ना ना कोए प्रगटावणा। नारी कन्त ना कोए हंढाउणा, पुत्तर धीआं ना कोई वखावणा। रंग बसन्त ना कोए चढ़ाउणा, जोती रंग ना कोए चमकावणा। गोली बण ना सेव कमाउणा, दर दर फेरी कोई ना पावणा। एका आपणा नाम धराउँणा, साचा डंक आप वजावणा। कल काती कूड़ कुड़यारा मेट मिटाउणा, साचा मार्ग इक्क वखावणा। निहकलंका नाउँ धराउणा, शाहो भूप आप हो जावणा। आपणा पड़दा आपे लौहणा, मुख नकाब ना कोई पावणा। दो जहाना जहाज आप चलाउणा, एका चप्पू नाम रखावणा, राज राजाना शाह सुल्ताना तख्तों लौहणा, सीस ताज ना कोई टिकावणा। लक्ख चुरासी बन्दर घर घर नचाउणा, कलिजुग डौरु हथ्थ रखावणा। गुरमुख विरले दरस दिखाउणा, पूर्ब जन्मां वेख वखावणा। विष्नूं तेरा नाउँ प्रगटाउँणा, तेरी सेवा इक्क जणावणा। काया चोला तेरा नाउँ धराउँणा, शब्द अनमोला विच समावणा। ब्रह्म भोला फड़ उठाउणा, पारब्रह्म वेख वखावणा। शंकर अंगड़ाई लै लै आउणा, वेला अन्त आप समझावणा। तिन्नां एका हुक्म सुणाउणा, अभुल्ल गुर आप अल्ल़ावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी शब्द आप सुणावणा। ब्रह्म विष्न शिव कर निमस्कार, दोए जोड़ पए सरनाईआ। कवण वेला वक्त सोहे विच संसार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। कवण रूप वरते वरताए एकँकार, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। कवण जोत जगे निरँकार, निरगुण
१०६५ निरवैर आपणा नाउँ धराईआ। कवण हउँ करे प्यार, तेरा मेरा रहिण ना पाईआ। कवण विष्नूं विश्व मिले दातार, वास्तक १०६५
०६ आपणा रूप दरसाईआ। कवण पारब्रह्म ब्रह्म करे आपणी कार, साची नारी कन्त प्रनाईआ। कवण रूप करे श्रंगार, कवण ०६
नैण नैण कवण मटकाईआ। कवण रूप करे प्यार, आपणीआं भुजां आप उठाईआ। कवण शंकर दए हुलार, सहिंसा सागर दए मुकाईआ। कवण काया गागर मारे मार, हथ्थ त्रिशूल इक्क वखाईआ। कवण निर्मल कर्म करे उजागर बेड़ा जाए तार, वंझ मुहाना कवण लगाईआ। कवण कूटे प्रगट होए आप निरँकार, कवण खेड़ा दए वसाईआ। कवण बिध तेरा दरसन करीए आण, लोकमात मिले वड्याईआ। साचे तख्त बैठ श्री भगवान, एका हुक्म रिहा समझाईआ। प्रगट हो विच जहान, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सरगुण वेखे मार ध्यान, घट घट आपणी सेज सुहाईआ। पंचम मुख ताज महान, पारब्रह्म प्रभ आपणे सीस टिकाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव तेरा विचोला बणे आण, एका शब्द सुनेहड़ा दए घलाईआ। गुरमुख साचे कर प्रधान, तेरी पुरी वेख वखाईआ। सिँघ पाला नौंजवान, ना मरे ना जाईआ। ब्रह्मे देवे इक्क ज्ञान, सो पुरख निरँजण रिहा पढ़ाईआ। किरपा करे गुण निधान, छोटे बाले बाल वड्याईआ। शंकर तेरा रक्खे माण, अन्तिम आपणे रंग रंगाईआ। सुरपति राजा इंद होए हैरान, मिटदी जाए अन्तिम शाहीआ। बाल निधान लै के आया धुर फ़रमाण, कढु परवाना रिहा वखाईआ। उप्पर

लिख्या नाम महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोआं पुरीआं रिहा उलटाईआ। गुर पीर अवतार मंगदे दर दरबान, देवणहार इक्क अख्वाईआ। लेखा जाणे सीता राम, राधा कृष्न मेल मिलाईआ। नानक गोबिन्द कर परवान, नमो नमो रहे सुणाईआ। राम रूप श्री भगवान, एकँकारा आप अख्वाईआ। इक्क इक्क वरते सर्ब संसार, वारता आपणी आपे गाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव तेरा रक्खे माण, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, लोकमात वेखे मार झात, लक्ख चुरासी भुल्ल रहे ना राईआ। लक्ख चुरासी वेखणहारा, सतिगुर आपणा नाउँ धरांयदा। गुर गुर रूप प्रगटाए विच संसारा, शब्द शब्दी मेल मिलांयदा। भगतन वखाए सच दरबारा, भाउ भगत पूर करांयदा। सन्तन देवे नाम अधारा, नाम रस अनडिठा इक्क चखांयदा। गुरसिखां बणाए चरन भिखारा, धूढ़ी टिक्का मस्तक लांयदा। गुरसिख गायण वारो वारा, अजपा जाप आप करांयदा। अंदरे अंदर खेल न्यारा, निरगुण सरगुण आप खलांयदा। पंज तत्त तन कर ख्वारा, मन मति बुध दर दुरकांयदा। बुध बिबेकी दए हुलारा, नेत्र पेखी पेख पेख दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। जुग जुग जगत विछड़िआं मिलणहार करतार। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़या, जिस जन बख्शे चरन प्यार। करे पवित पतित पापी पुनीतड़या, पतित पावन आप गिरधार। आदि

१०६६ ०६ जुगादी ठंडा सीतड़या, कलिजुग अग्नी देवे ठार। गुरसिख काया अंदर वखाए शिवदुआला मन्दिर मठ ना कोए मसीतड़या, १०६६ ०६

ना कोई लाए इट्टां गार। छन्द गाए सुहागी गीतड़या, दिवस रैण इक्क धुन्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पैज दए संवार। हरिजन पैज संवारदा, निरगुण सरगुण कर प्यार। लक्ख चुरासी गेड़ निवारदा, राए धर्म ना करे ख्वार। चित्रगुप्त ना हिसाब वखालदा, दर दरवारिउँ कढ्ढे बाहर। सतिगुर पूरा सार समालदा, आदि जुगादी साची कार। लेखा जाणे शाह कंगाल दा, ऊँच नीच ना कोई विचार। ग़रीब निमाणयां पार उतारदा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बन्ने धार। करे खेल सच्ची सरकार दा, साचे तख्त बैठ करे साची कार। जुग जुग गेड़ा गेड़ आप निवारदा, सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार। कलिजुग तोड़े किला गढ़ हँकार दा, निहकलंका लए अवतार। लक्ख चुरासी पुण छाणदा, गुरमुख साचे लए निकाल। इक्क मधाणा दीन दयाल दा, छाछ विरोले दो जहान। गुरसिख सुरत सवाणी शब्द हाणी रंग माणदा, मिल्या मेल श्री भगवान। घर सोहया गोपी काहन दा, मंडल रास रचाए आण। विछोड़ा तोड़े सीता राम दा, रावण तोड़ झूठा निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग भगतां मेले आण। भगत मिलावा सच घर, दर दर सतिगुर दया कमांयदा। सन्त साजण लए फड़, घर मन्दिर आप सुहांयदा। गुरमुख लगाए आपणे लड़, एका पल्लू

हथ्थ उठांयदा। गुरसिख एका अक्खर जाए पढ़, गुर गुर सूरा आप पढ़ांयदा। साचे पौड़े जाए चढ़, अद्धविचकार ना कोई अटकांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव गुरसिख तेरे चरन रहे फड़, समरथ सिर हथ्थ आप टिकांयदा। कलिजुग अन्तिम मिल्या वर, लोकमात मेल मिलांयदा। धरनी धरत धवल उप्पर आपणा आप धर, धरत धवल आप सुहांयदा। करता पुरख आपणी करनी कर, कलिजुग क्रिया मेट मिटांयदा। गुरसिख बूटा होया हर, अमृत आत्म सिंच हरा करांयदा। फुल फुलवाड़ी लाए पत डाल्ह, फुल गुंचा आप खिलांयदा। भवरा भँवरी अंदर वड़, डूँग्घी कँवरी आप महिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जिस जन फड़ाए आपणा लड़, दो जहानां पार उतारदा। दो जहाना पार कराउणा, लक्ख चुरासी रहिण ना पाईआ। जिस जन नेत्र लोचण दरस पाउणा, राए धर्म ना दए सजाईआ। साध संगत विच बहके जिस रसना गाउणा, जन्म मरन विच ना आईआ। गुरसिख अवण गवण किसे ना पाउणा, त्रै भवण तेरे चरनां हेठ दबाईआ। कलिजुग अन्तिम दे बांह सरहाणे सौणा, सतिगुर पूरा होए सहाईआ। पूजा पाठ इक्क रखाउणा, तीर्थ तट इक्क नुहाउणा, चौदां हट्ट इक्क खुल्हाउणा, शब्द सुत इक्क मलाउणा, द्वैती फट इक्क मिटाउणा, नाम शब्द पट पहनाउणा, सोहँ शब्द वड्डी वड्याईआ। दुरमति मैल कट्ट निर्मल जाम पिआउणा, राती सुत्तया उठ उठ दरस दिखाउणा, गुरसिख बाल अंञाणा आपणी गोद बहाउणा, कलिजुग फड़ फड़ काग हँस माणक मोती चोग चुगाउणा, आपणी सेवा आप कमाईआ। जुग जुग दा विछोड़ा पन्ध कटाउणा, जगत विजोग दिस ना आउणा, हउमे रोग ना किसे मिटाउणा, तिन्नां लोकां पार बहाउणा, एका रूप अनूप सति सरूप आपणा दरस दिखाउणा, स्वच्छ सरूपी रूप दरसाईआ। गुरसिख साचे माण रखाउणा, उँणंजा पवण चँवर झुलाउणा, छिआनवे करोड़ मेघ माला उप्पर बरसाउणा, करोड़ तेतीसा दर दुआरे आए निउँ निउँ सीस झुकाउँणा, समरथ पुरख महिमा अकथ आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। हरिसंगत तेरा रथ आप चलाउणा, जगत विकारा मथ बाहर कढाउणा, अमृत धारा इक्क वखाईआ। सगल विसूरा जाए लथ्थ जिस जन आए दरसन पाउणा, मन का बंक हँकारी जाए ढठ्ठ, किला कोट आप तुड़ाउणा, हरि मन्दिर दए सुहाईआ। लट लट दीप जोत जगाउणा, घट घट सुहञ्जणी सेज वछाउणा, ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाउणा, अन्त जोती जोत समाईआ। दरगाह साची आप बहाउणा, सचखण्ड दुआर भाग लगाउणा, थिर घर वासी वेख वखाउणा, दूसर वेखणहारा ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरा उच्चा घर, दूसर कोए ना सके वड़, जीव जंत रहे राह तकाईआ। राह तक्कण जीव जंत, कलिजुग साध सन्त कुरलाया। किसे ना मिल्या हरि हरि कन्त, नार दुहागण दए दुहाया। नाउँ ना जप्या मणीआं मंत, मन का मणका ना कोए भवाया।

मिल मिल बैठे जगत संगत, हरिसंगत रंग ना कोए चढ़ाया। गा गा थक्के नानक अंगद, अंगीकार ना कोए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग हरिजन साचे लए मिलाया। मेलणहार गोबिन्द गोपाल, ठाकर अबिनाशी करतारा। आदि जुगादि करे प्रितपाल होए रखवाल, एथे ओथे बण सहारा। शब्द सरूपी होए दलाल अवल्लड़ी चाल, जुगां जुगन्तर जाणे पार किनारा। जो जन घालण रहे घाल, देवे नाम वस्त धन माला। सेवा करे जोत अकाल, गुरसिख तेरा भार उठाए आपणे सीस खारा। नेड़ ना आए काल महांकाल, सतिगुर पूरा वेले अन्त करे संभाल, गुरसिख आए तेरे चल दुआरा। लाड़ी मौत ना पाए धमाल, रंग मैहन्दी ना लाए लाल, सीस मींढी ना गुंदे वाल, नैण कज्जल ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख अन्तिम लए वर, शब्द अगम्मी घोड़े चढ़, ना कोई सीस ना कोई धड़, दरस दिखाए अग्गे खड़, किरपा निध गुण निधान, दीनन दीन लए तराईआ। दीन दयाल सर्ब प्रितपालक, पल पल छिन्न छिन्न वेख वखांयदा। मेहरवान महिबां वेखे ख़ालक, ख़लक ख़लक ख़ालक वेख वखांयदा। इक्क सुणाए आप अजां, सच महिराब अहिबाब कूक सुणांयदा। अन्तिम कल शाह नवाब, अमाम अमामां सिर रक्खे ख़िताब, शाह शहाना आप हो जांयदा। लै के आया आबेहयात, दो दो आबा मेल मिलांयदा। लेखा चुकाए मक्का काअबा, काया काअबा आप सुहांयदा। मुर्शद मुरीद ना देवे कोए अज़ाबा, अज़मत आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन बहाए एका दर, ऊँच नीच राउ रंक चुक्के डर, राज राजान शाह सुल्तान एका; हुक्म सुणांयदा। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरि सन्त हरिभगत भगवन्त मेला एका घर, दर घर नर हरि साचा इक्क सुहांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्म पारब्रह्म आप आपणे विच टिकांयदा।

✻ १८ भाद्रों २०१७ बिक्रमी सुलक्खण सिँघ दे गृह पिण्ड मूंगले ज़िला फिरोज़पुर दया होई ✻

चरन प्रीत सतिगुर पूरा, आदि जुगादि इक्क वखांयदा। जुगा जुगन्तर हाज़र हज़ूरा, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। गुरमुखां नाता तोड़े जगत कूड़ा, दर घर साचे जोड़ जुड़ांयदा। सतिगुर बख़्शे साची धूढ़ा, दुरमति मैल धवांयदा। चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, जिस जन साची सरन लगांयदा। जोती नूर करे उज्यार नूरा, दीपक जोत डगमगांयदा। आसा मनसा करे पूरा, आस निरास ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन प्रीत आप बंधांयदा। चरन प्रीती साचा नाता, सतिगुर पूरा आप बंधाईआ। लेखा जाणे पुरख बिधाता, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। सृष्ट सबाई

पिता माता, इक्क इकल्ला शहनशाहीआ। जुग जुग वेखे अन्धेरी राता, गुर सतिगुर रूप धराईआ। लक्ख चुरासी काया
मन्दिर अंदर वेखे आपणी खाटा, सच सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। करे प्रकाश जोती जोत ललाटा, अन्ध अन्धेर रहिण ना
पाईआ। सर्बकल आपे समराथा, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। जन भगत निभाए सगला साथा, दो जहाना होए सहाईआ।
निरगुण निरवैर चलाए राथा, महांसार्थी सेव कमाईआ। अगम्म अगम्मड़ी सुणाए गाथा, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। जोती
जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन प्रीती इक्क समझाईआ। चरन प्रीती शाह सुल्तान, सतिगुर पूरा आप जणांयदा।
जुगां जुगन्तर हो मेहरवान, भगत भगवन्त वेख वखांयदा। सन्तन देवे एका माण, माण अभिमाण मेट मिटांयदा। अमृत
बख्शे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख गवांयदा। दरस दिखाए दर घर आण, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। आदि जुगादी खेल
महान, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। धर्म उठाए सति निशान, सति सतिवादी आप झुलांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां
इक्क ज्ञान, नव खण्ड सृष्ट दृष्ट इक्क खुलांयदा। आत्म ब्रह्म देवे दान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ांयदा। गुरमुख साचे मात
पछाण, आप आपणा मेल मिलांयदा। एका राग सुणाए कान, दूजी धुन ना कोए उपजांयदा। आप वखाए सच मकान,
मन्दिर अंदर बैठा सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन प्रीती साची रीती, साहिब सतिगुर
१०६६ आप समझांयदा। चरन प्रीती साचा घर, हरि हरि दरसन पाया। आवण जावण चुक्के डर, जिस जन मेल मिलाया। पारब्रह्म १०६६
०६ प्रभ देवे वर, वरन अवर ना सेव कमाया। लेखा जाणे नारी नर, नर नरायण आपणा नाउँ उपजाया। लक्ख चुरासी भाण्डे ०६
घड़, घट घट बैठा वेख वखाया। गुरमुखां बन्हाए आपणे लड़, एका पल्लू नाम उठाया । आप नुहाए साचे सर, चरन
धूढ़ अशनान कराया। किला तोड़े हँकारी गढ़, पंज तत्त रहिण ना पाया। आप चुकाए जम का डर, भय भयानक होए
सहाया। आपणी किरपा आपे कर, गुरमुख साचे लए जगाया। जागरत जोत अंदर धर, अज्ञान अन्धेरा दए गंवाया। त्रैगुण
माया जाए सड़, तत्व तत्त रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन प्रीत हरि अतीत, पतित
पुनीत आप समझाया। चरन प्रीत धुर दी बाण, धुर मस्तक लेख वखाईआ। आदन अन्ता हरि भगवान, जुगा जुगन्ता वेख
वखाईआ। प्रगट हो हो वाली दो जहान, चौदां लोकां फोल फुलाईआ। लेखा जाणे ज़िमी अस्मान, रवि ससि आपणे लेखे
पाईआ। शब्द जणाई धुर फ़रमाण, ब्रह्मा वेता इक्क सुणाईआ। चारे वेदां इक्क ज्ञान, बोध अगाधा आप सुणाईआ। करे
वेस गुण निधान, अनक कल आपणा रूप प्रगटाईआ। निरगुण सरगुण दाता दानी दान, इच्छया भिच्छया आप वरताईआ।
लेखा जाणे धुर फ़रमाण, कलम कागद लिखे ना कोए शाहीआ। जन भगतां उप्पर होए आप मेहरवान, आप आपणी बूझ

बुझाईआ। चरन कँवल रखाए इक्क ध्यान, धरनी धरत धवल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन प्रीती बख्शे नीती, निज घर बैठे आसण लाईआ। सतिगुर पूरा सच सिँघासण, आत्म ब्रह्म जणांयदा। खेले खेल पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता वेस वटांयदा। लेखा जाणे शाहो शाबाशन, राज राजाना हुक्म सुणांयदा। वरते वरतावे पृथ्मी आकासण, लोआं पुरीआं डेरा लांयदा। जन भगतां होए दासी दासण, लोकमात सेव कमांयदा। लेखा जाणे रसना जिह्वा पवण स्वासण, स्वास स्वास आप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन प्रीती नाता जोड़, आप चढ़ाए साचे घोड़, शब्दी घोड़ा इक्क दौड़ांयदा। शब्दी घोड़ा हरि सुल्तान, सति पुरख निरँजण आप दौड़ाईआ। सचखण्ड दुआरे बैठ श्री भगवान, आपणा बल आप वखाईआ। लेखा जाणे धुर फ़रमाण, धुर दा बाण आप चलाईआ। सूरबीर उठे नौजवान, रूप अनूप आप प्रगटाईआ। सति सतिवादी खेल महान, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कराईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह बोल जैकार, आपणा नाअरा दए सुणाईआ। शब्द गुर लोकमात लै अवतार, पंज तत्त काया चोला आप हंढाईआ। पंच पचीसा पावे सार, मन मति बुध वेखे थाउँ थाईंआ। काया मन्दिर डूँघी गार, अन्ध अन्धेरा फोल फुलाईआ। कमलापाती हो उज्यार, जोत निरँजण दीपक दीआ हथ्थ रखाईआ। बूंद स्वांती ठंडी ठार, निझर झिरना सच प्याला दीन दयाला एका एक प्याईआ। गुरमुखां करे सद प्यार, भगत भगवन्त लए उभार, सन्तन वेखे चाँईं चाँईआ। बख्शणहारा चरन प्यार, कँवल कँवल दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन कँवल सच सहारा, ग़रीब निमाणयां लाए पारा, साचे बेड़े आप चढ़ाईआ। साचा बेड़ा हरि निरँकार, एका शब्दी शब्द उपांयदा। जुगा जुगन्तर हो त्यार, लोकमात आप चलांयदा। लक्ख चुरासी पावे सार, जेरज अंड उत्भुज सेत्ज वेख वखांयदा। भगत भगवन्त करे कराए साची कार, आपणे धन्दे आपे लांयदा। नाता तोड़ जगत विकार, नाम आधार इक्क वखांयदा। आत्म ब्रह्म कर प्यार, पारब्रह्म प्रभ सेव कमांयदा। साचा बख्शे चरन प्यार, नाता नाता जुड़या ना कोए तुड़ांयदा। गुरमुख मंगे बण भिखार, सतिगुर पूरा आपणी भिच्छया झोली आपे पांयदा। एका रंग रंगे करतार, रंग मजीठी इक्क चढ़ांयदा। चरन प्रीत वखाए सच्चा दरबार, सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि जू हरि मन्दिर आप सुहांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता एका बैठा कन्त, सन्त भगवन्त वेख वखांयदा। लेखा जाणे जीव जंत, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। जिस जन बणाए साची बणत, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। नाता तोड़े हउमें हंगत, माया ममता मोह चुकांयदा। आप मिलाए साची संगत, गुरमुख साचे रंग

रंगांयदा। हरिजन हरिभगत दर भिखारी एका मंगत, एका वस्त झोली पांयदा। चरन प्रीती चाढ़े रंगत, लाल गुलाला आपे रंग रंगांयदा। नाता तोड़े भुक्ख नंगत, खिमां ग़रीबी आप हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन प्रीती याचक दान, देवणहार श्री भगवान, दूसर हथ्थ ना कोए रखांयदा। चरन प्रीती वस्त अनमोल, अमोलक झोली पाईआ। शब्द भण्डार अगम्मी खोल्ह, गुरमुखां आप वरताईआ। निरगुण सरगुण तोले तोल, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। भाग लगाए काया चोल, काया चोला दए बदलाईआ। सुरती शब्दी जाए मौल, रूप अनूप आप दरसाईआ। उलटा करे नाभ कँवल, अमृत झिरना दए झिराईआ। देवे वडियाई उप्पर धवल, जिस जन बख्शे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन प्रीती मेला मीत, मित्र प्यारा दरस दिखाईआ। मित्र प्यारा हरि गोबिन्द, गहर गम्भीर समांयदा। गुरमुखां मेटे सगली चिन्द, चिखा ना कोई वखांयदा। दाता दानी गुणी गहिन्द, आप आपणी दया कमांयदा। नादी सुत उपजाए आपणी बिन्द, मात पित रूप प्रगटांयदा। अमृत धार बख्शे सागर सिन्ध, सच प्याला जाम प्यांअदा। लेखा जाणे जीउँ पिण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खुजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन प्रीती वखाए साचा घर, घर सुहञ्जणा आप सुहांयदा। घर सुहञ्जणा सुहाए निरँकार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। निरगुण सरगुण खेल

१०७१ अपार, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। त्रैगुण माया वसे बाहर, पंज तत्त ना कोई लड़ाईआ। शब्दी ढोला सति जैकार, गुर १०७१

०६ अवतार आप लगाईआ। भगत भगवन्त सन्त लेखा जाणे विच संसार, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। गुरमुख गुरमुख मेल ०६

मिलाए आपणी वार, मिल्या मेल ना विछड़ जाईआ। चरन प्रीती दस्से सच प्यार, सिदक सबूरी इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन सरन सरन चरन बख्शे सच सरनाईआ। सच सरनाई चरन गुरदेव, देव आत्मा वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ अलक्ख अभेव, अलक्ख अगोचर महिमा कथ ना कोई सुणाईआ। जुगा जुगन्तर करे साची सेव, जन भगत दुआरे फेरी पाईआ। अमृत रस खवाए साचा मेव, रस फीका ना कोई दसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन प्रीत जुग जुग गुरसिखां आप समझाईआ। चरन प्रीती समझावनहारा, एका रंग समाया। आदिन अन्ता गुर अवतारा, निरगुण सरगुण रूप वटाया। सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा वेखे आप सहारा, वेखवहारा दिस ना आया। भगत भगवन्त मेल मिलाए धुर दरबारा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाया। धरनी धरत धवल उप्पर बोल जैकारा, एका फ़तेह डंका नाम वजाया। पकड़ पछाड़े दुष्ट हँकारा, ग़रीब निमाणे लए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन प्रीती इक्क रखाया। चरन प्रीती एका एक, दूसर अवर ना कोई जणांयदा। सतिगुर साहिब सुल्तान साची टेक,

पारब्रह्म पति परमेश्वर वेख वखांयदा। निर्मल निरवैर बुध बिबेक, धुर दा लेखा आप समझांयदा। जोती जामा धारे भेख, अनुभव आपणी खेल खिलांयदा। आपे लेखा मेटणहारा लेख, लेखा आपणा आप समझांयदा। शाहो भूप वड नरेश, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म हो प्रवेश, जीव आत्म अंस आप अख्वांयदा। जिस जन बख्शे साची सेव, सिर हथ्थ धर समरथ भेव खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल चात्रिक तृख त्रैगुण आप मिटांयदा। त्रैगुण मिटे भरम भउ लाथा, हउमे रोग रहे ना राईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूर इक्क जणाए पूजा पाठा, आपणे नाम करे पढ़ाईआ। लहिणा देणा चुकाए तीर्थ अठ साठा, सर सरोवर चरन सरन बख्शे इक्क सरनाईआ। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, पूर्ब लहिणा वेख वखाईआ। नाता तोड़े आण बाटा, मात गर्भ फेर ना आईआ। दो जहाना पन्ध मुकाए दूर दुराडी वाटा, लक्ख चुरासी फंदन दए कटाईआ। अमृत प्याए जाम भर बाटा, शब्द प्याला हथ्थ उठाईआ। नाता तोड़े तत्त आठा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध बन्धन कोए ना पाईआ। जुग जुग जन भगतां करे पूरा घाटा, साचा तोला इक्क अख्वाईआ। आप आपणा खोले हाटा, चौदां लोक भिच्छया मंगण थाउँ थाँईआ। गुरमुखां सतिगुर मिले पूरन पुरख समराथा, समरथ पुरख दया कमाईआ। आत्म अन्तर पूरी करे आसा, पूरी आसा आप वखाईआ। चरन प्रीती बख्शे सच भरवासा, भरम गढ़ रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। चरन प्रीती चात्रिक रस, अनुठा मेघ आप बरसांयदा। हरी ओम हरी हरि नर नरायण मेल मिलावा हस्स हस्स, हो प्रतक्ख रूप दरस दिखांयदा। सन्त सहेले जुगा जुगन्तर मेले रूप दसाए नस्स नस्स, अन्ध अन्धेर रहे ना राया। तीर निराला मारे कस कस, हिरदे अंदर वस वस, माया ममता मोह दए चुकाया। पंच विकारा झस झस, गुरमुखां गाए आप जस, जुग जुग साची सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन प्रीती चरन दुआरा मिले मेल हरि निरँकारा, जगत दुआर ना कोई फिराया। चरन प्रीत हरी हरि मन्दिर, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। सतिगुर पूरा मेल मिलाए अंदरे अंदर, सुरती शब्द जोड़ जुड़ांयदा। मन मनूआ ना भवे बन्दर, नाम डोरी हथ्थ रखांयदा। लेखा जाणे डूँग्घी कंदर, जोत उजाला दीना दयाला दीपक प्रकाश आप करांयदा। आपे तोड़े आपणा जंदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल सच दुआरा, धुर दरबारा आप वखांयदा। चरन प्रीती साचा माण, निमाणयां होए सुहाईआ। जुग जुग करे जगत पछाण, अभुल्ल गुर वड वड्याईआ। दर दर घर घर हरिजन साचे देवे दान, दाता दानी भिच्छया झोली पाईआ। आत्म उपजे इक्क ज्ञान, ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ाईआ। धूढ़ कराए चरन अशनान, दुरमति मैल कटाईआ। अमृत ठांडा पीण

खाण, अमिउँ रस एका मुख चुआईआ। आवण जावण चुक्के काण, राए धर्म ना दए सजाईआ। जो जन सतिगुर पूरे चरन डिगे आण, जगत प्रीती तोड़ निभाईआ। चुरासी भवे ना कोई मसाण, गोर कफ्न ना कोई हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन सरन हरन फरन इक्क खुल्हाईआ। चरन गुरदेव दरस अमोघ, छुट्टया जगत संसारा। सतिगुर पूरा कट्टे रोग, एका बख्शे नाम सहारा। लेखा चुक्के लोक परलोक, मिल्या हरि निरँकारा। शब्द अगम्मी गाए सलोक, सो पुरख निरँजण इक्क जैकारा। हँ ब्रह्म देवे मोख, मुक्ती करे पार किनारा। ना कोई हरख ना कोई सोग, चिंता दुःख ना कोई विचारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन प्रीती आप जणाए बणे जगत वणजारा। चरनी प्रीती साची भिख्या, गुरमुख विरले झोली पांयदा। जिस दा लेखा धुर दरबारे बह बह लिख्या, लोकमात मेल मिलांयदा। औदां जांदा किसे ना दिसया, कोटन कोटि जीव राह तकांयदा। आपणा वण्डे आपे हिसया, खण्ड ब्रह्मण्ड आपणी रचन रचांयदा। जन भगतां देवे साची सिख्या, चरन प्रीती प्रीत वखांयदा। सृष्ट सबाई जाणो मिथ्या, थिर कोए रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन सरन इक्क जणांयदा। चरन गुर गुरू गुर धाम, हरि जू हरि हरि मेल मिलाया। सीता सुरती मिलाए साचे राम, शब्द शब्दी जोड़ जुड़ाया। राधा कृष्न आत्म सेज करे बिसराम, नाम बंसरी इक्क अल्हाया। ईसा मूसा दए पैग़ाम, हज़रत नबी रसूल अल्ला राणी मेल मिलाया। नानक निरगुण जणाए सतिनाम, नाम सति मन्त्र आप पढ़ाया। गोबिन्द वाहिगुरू फ़तह बोल जैकारा मेटे अन्धेरी शाम, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाया। चार वरनां छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्क जणाए हरि का नाम, पुरख अकाल इष्ट वखाया। पल्लू फड़ाए आपणा दाम, दामनगीर दया कमाया। आदि अन्त हरि भगवन्त जन भगतां करे पहचान, पहचान विच आप किसे ना आया। चरन प्रीती लोकमात वखाए साचा काम, बिन गुर चरन बेड़ा पार ना कोए कराया। नौं खण्ड पृथ्मी झूठा ग्राम, सति दीप खेड़ा दिस ना आया। किसे लेखे लग्गे ना हड्ड मास नाड़ी चाम, बिन सतिगुर साचे वेले अन्त ना कोए सहाया। किसे कम्म ना आउणा मदिरा जाम, अमृत जाम ना किसे प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग देवे एका वर, आपणी रीती आप जणाया। साची रीती इक्क इकल्ला, हरि सतिगुर आप सिखांयदा। लोकमात वेखे जगत महल्ला, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। पावे सार जलां थलां, समुंद सागर वरोल नाम मधाणा एका पांयदा। जन भगत मिलाए इक्क इकल्ला, दूसर संग ना कोई निभांयदा। आत्म सिँघासण पुरख अबिनाशन एका मल्ला, सच सुनेहड़ा इक्क सुणांयदा। नाद धुन उपजाए ब्रह्मण्ड आप फड़ाए आपणा पल्ला, आपणा रूप आप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग चरन प्रीत

१०७४
०६

गुरमुखां वखाए साची रीत, देहुरा मन्दिर मसीत ना कोई जणांयदा। काया मन्दिर देहुरा मसीत, मन्दिर मस्जिद मठ गुरूदुआरा आप वखाईआ। काया अंदर तीर्थ अठसठ, दिवस रैण सेव कमाईआ। काया मन्दिर जोत लट लट, नूर नुराना डगमगाईआ। काया अंदर सतिगुर पूरा हो प्रगट, स्वच्छ सरूप दरस दए वखाईआ। काया मन्दिर खेले खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा सांग वरताईआ। काया अंदर ब्रह्म आत्म साची खाट, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन साचा जाणया, चरन दुआरा खोल्ह। गुरमुख चतर सुघड़ स्याणयां आप पछाणया, सुरती शब्दी आपे मौल। आप वखाए आपणा सच टिकाणया, शब्दी अगम्मी हरि हरि बोल। खेले खेल दो जहानया, कलिजुग अन्तिम तोले तोल। पकड़ उठाए ग़रीब निमाणया, लक्ख चुरासी सुत्ती मात अनभोल। नौं खण्ड भुज्जणा वागर दाणया, गुरमुख विरला रहे अडोल। जिस जन बख्शे चरन ध्यानया, सतिगुर सहाई वसे कोल। रसना जिह्वा गाए गाणया, सोहँ अक्खर वक्खर बोल। पुच्छे गाए जगत कहाणीआ, लक्ख चुरासी वज्जे ढोल। तख्तों लाहे राजे राणया, काया कपड़ देवे फोल। नाम जहाज़ चलाया इक्क बेमुहाणया, वंझ मुहाणा रक्खे आपणे कोल। दिस ना आए चतर सुघड़ स्याणया, कलिजुग माया पाया घोल। पढ़ पढ़ थक्के चारे बाणीआ, अमृत आत्म चक्खी ना किसे पौहल। राम कृष्न गायण गाणया, राम रामा ना गया मौल। कलिजुग होए बेमुहानया, नौं खण्ड पृथ्मी रही अडोल। गुरमुख विरला चले सतिगुर भाणया, हरि भाणा जिउँ जल कँवल फुल। चरन प्रीती सच टिकाणया, मिले वडियाई उप्पर धवल। चार वरन एका रंग रंगानया, ऊँचां नीचां पूरा करे कौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भरमी भरम भुलाए पंडत पांधे रौल। पंडत पांधे पढ़ पढ़ थक्के, हरि का भेव किसे ना आया। मुल्ला शेख़ मुसायक पीर बैठे मक्के, महिरम दिस किसे ना आया। चार कुंट नव खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी पैंदे धक्के, धरती धवल रही कुरलाया। खाणी बाणी पढ़ पढ़ अक्के, अकल आकालां विच रहे ना राया। पारब्रह्म अबिनाशी करता गुरमुखां पर्दा आपे चुक्के, मुख घूँगट दए उठाया। करे खेल आप आपणी रुत्ते, रुत बसन्ती आप सुहाया। अंदर बाहर आपे तक्के, निरगुण सरगुण वेस वटाया। ग़रीब निमाणे गुरसिख बाल अंञाणे आपणी गोदी आपे चुक्के, सिर आपणे भार बंधाया। आपे सुफल करे आपणी कुक्खे, आपे धन्न जणेंदी माया। कलिजुग जीव हरि के नाम रहे भुक्खे, जगत तृष्ना मोह वधाया। पंच विकारा दिवस रैण गिल्ला ईंधन धुखे, जोती जोत ना कोए जगाया। कल कलेश दर दर घर घर फड़ फड़ कुट्टे, कूड़ी क्रिया वेख वखाया। गुरमुख विरला लहिणा देणा छुट्टे, जिस जन आपणा मेल मिलाया। चरन प्रीती सतिजुग साची पौह फुट्टे, गुरसिख साचा सूरया चन्न चमकाया। जीव

जंत दिन दिहाढ़े जायण लुट्टे, घर मन्दिर रहिण कोए ना पाया। गुरसिख गुरमुख हरिभगत हरि सन्त बांह सरहाणे दे के सुते, कोई सके ना मात उठाया। करे मेहर पुरख अबिनाशी अचुते, चितवत ठगौरी कोए ना पाया। चरन प्रीती लुट्ट गुरसिख विरला लुट्टे, जिस जन आपणा राह वखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा एका दान, गुरसिख मनाए पिछले रुट्ठे, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाया।

* १६ भाद्रों २०१७ बिक्रमी करनैल सिँघ दे गृह पिण्ड आलेवाला ज़िला फिरोज़पुर *

दाता दातार सर्ब जीआ टेक, नाथ अनाथां होए सहाईआ। जुगा जुगन्तर करे बुध बिबेक, नाम निधाना झोली पाईआ। पूर्ब कर्मा हरिजन वेख, हरि हरि लेखा लेखे पाईआ। धुर मस्तक लाए आपणी मेख, आपे देवे सिफ्त सालाहीआ। लक्ख चुरासी विच्चों हरिजन वेख, जन भगत भगवन्त आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीअ दाता आप हो जाईआ। जीअ दाता एको भगवान, भरम भउ ना कोए जणांयदा। जुगा जुगन्तर खेल महान, महांबली आप करांयदा। लोकमात हो प्रधान, निरगुण सरगुण नाउँ धरांयदा। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण, लक्ख चुरासी आप सुणांयदा।
१०७५ सति सतिवादी खेल महान, सतिगुर आपणी धार बंधांयदा। गुर गुर रूप अगम्म अपार, काया गोर आप सुहांयदा। शब्दी १०७५
०६ शब्द नाद धुन्कार, आत्मक धुन आप उपजांयदा। जोती जाता खेल न्यार, दीपक जोती डगमगांयदा। कमलापाता हरि करतार, ०६
कुदरत कादर वेख वखांयदा। हरिजन सन्तन कर प्यार, लाल अनमुल्लड़े वेख वखांयदा। चरन प्रीती दए आधार, आप आपणा दर वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक एका रंग समांयदा। जीअ दाता हरि भगवन्त, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि जुगादि महिमा अगणत, वेद कतेब भेव ना राईआ। आप उठाए साचे सन्त, भगतन आपणी बूझ बुझाईआ। गुरमुख मेल मिलावा हरि हरि कन्त, गुरसिख नारी नर नरायण आप प्रनाईआ। एका नाद एका शब्द मणीआ मंत, रसना जिह्वा आप चलाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, इक्क इकल्ला सहिज सुखदाईआ। गुरसिख काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, त्रैगुण माया पर्दा दए उठाईआ। पंज तत्त बणाए साची बणत, आपणी दया कमाईआ। देवे वडियाई विच जीव जंत, जीअ दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा बल धराईआ। जीअ दाता जागरत जोत, जोती जाता आप अख्वांयदा। ना कोई वरन ना कोई गोत, दीन मज़्ब ना वण्ड वण्डांयदा। रूप प्रगटाए कोटी कोटि, लक्ख चुरासी अंदर डेरा लांयदा। शब्द अगम्मी मारे चोट, अनहद आपणा ताल वजांयदा।

लेखा जाणे ओत पोत, पिता पूत बंस बंसा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग आप रंगांयदा। जीअ दाता दातार सूरबीर, सूरा सरबंग वड वड्याईआ। हरिजन चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, लक्ख चुरासी ज़ंज़ीर रहिण ना पाईआ। अमृत बख्शे ठांडा सीर, अग्नी तत्त दए बुझाईआ। दूई द्वैती कढ्ढे पीड़, माया ममता रहिण ना पाईआ। चरन कँवल भरवासा बख्शे साची धीर, ज्ञान ध्यान इक्क वड्याईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। सर्ब जीआं दा सांझा मीत, पीत पीतम्बर सीस सुहाईआ। जुग जुग सुणाए आपणा गीत, बोध अगाधा शब्द अलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाई रीत, एका नाम वज्जे वधाईआ। आपे वसे धाम अनडीठ, सचखण्ड महल्ला सोभा पाईआ। लक्ख चुरासी सुत्ता रहे दे कर पीठ, गुरमुख विरला दरसन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एको दाता खेले खेल सर्ब घट थाँईआ। एको दाता जीअ भिखारी, भगवन आपणा खेल खिलांयदा। एका जोत जोत उज्यारी, नूरो नूर डगमगांयदा। एका मन्दिर महल्ल अटारी, एका एक सोभा पांयदा। एका शाह सुल्तान सिक्दारी, एका एक हुक्म चलांयदा। एका दर दरबान करे निमस्कारी, एका निउँ निउँ सीस झुकांयदा। एका सीस ताज रक्खे करे सच्ची सरदारी, शाह पातशाह आप हो जांयदा। एका खड़ग इक्क कटारी, एका खण्डा नाम चमकांयदा। एका धरत धवल
१०७६ रिहा पैज संवारी, जुग जुग आपणा रूप प्रगटांयदा। एका ग़रीब निमाणे लए उभारी, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। एका १०७६
०६ गुरसिख सज्जण जाए तारी, तारनहारा आप अख्वांयदा। एका साचे पौड़े फड़ फड़ जाए चाढ़ी, चौथे पद मेल मिलांयदा। ०६
एका तीजा नैण रिहा उग्घाड़ी, निज नेत्र वेख वखांयदा। एका दो दो अक्खर बोल जैकारी, हँ ब्रह्म मेल मिलांयदा। इक्क इकल्ला करे सच शंगारी, साचे तख्त सोभा पांयदा। पंचम कूक करे पुकारी, शब्दी शब्द आप अलांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोए पसारी, सति सतिवादी आसण लांयदा। अठ्ठां तत्तां खेल न्यारी, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। नौं दुआरे जगत ख्वारी, ख़ालक ख़लक वेख वखांयदा। दसवां घर पाए पुरख अगम्मड़ा पारी, आप आपणा मेल मिलांयदा। गुरसिख साचे बणाए चरन भिखारी, भिखक भिच्छया एका झोली पांयदा। बख्शे नाम अमृत सच खुमारी, दिवस रैण एका रंग रंगांयदा। आपे दाता बण भिखारी, जीआ दान मंगण आंयदा। आपे दाता देवणहार दातारी, आपे वस्त झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखांयदा । एको दाता इक्क भगवान, एका वस्त आप वरतांयदा। इक्क ज्ञाता एका शब्द निशान, इक्क बबाण आप उडांयदा। एको पिता माता एका देवे पीण खाण, दो जहान माण इक्क रखांयदा। एका उत्तम रक्खे ज़ाता, वरन बरन ना कोए आण, सच निशान आप झुलांयदा। एका मन्त्र पूजा पाठ दूसर

विद्या ना कोए वखान, ज्ञान ध्यान ना कोए दृढ़ांयदा। इक्क सरोवर तीर्थ ताटा दूसर अवर ना कोए इश्नान, जल धारा ना कोए वहांयदा। इक्क इकल्ला खेल महान, करे कराए श्री भगवान, हरिजन साचे वेख वखांयदा। शब्द अगम्मी देवे दान, जीआ ब्रह्म ब्रह्म कर पछाण, ईश जीव मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दाता पुरख बिधाता, पुरख पुरखोतम आपणा नाउँ धरांयदा। जीअ दाता जुगा जुगन्तर, जोग जुगत इक्क जणाईआ। घड़ भाण्डा बणाए लक्ख चुरासी बणतर, अग्नी जोती लम्बू आपे लाईआ। आपणा जणाए अगम्मी मन्त्र, शब्द अनादि करे पढ़ाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, लिव आत्म मेल मिलाईआ। काया कंचन गढ़ वेखे गगनंतर, गगन मंडल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जीआ जीअ जीवण आपणे हथ्थ रखाईआ। जीवण जीव जन जाणया, कर किरपा आप करतार। लक्ख चुरासी खेल महानया, खेलणहारा हरि निराकार। आदि जुगादि गाए आपणा गाणया, धुर दी बाणी शब्द पुकार। वरते वरताए आपणे भाणया, भाणा वेखे सर्ब संसार। गुरमुख विरले मात जाणया, जिस जन किरपा करे आप निरँकार। देवे दरस श्री भगवानया, सगला संसा दए उतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार। अगम्म अपार जीअ अभेद, जीव भेव कहिण ना जाईआ। लेखा जाणे ना चारे वेद, ब्रह्मा मुख रिहा
१०७७ शर्माईआ। अबिनाशी करता अछल अछेद, अछल छल आपणा आप आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप १०७७
०६ आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हथ्थ वडियाई हरि करतार, महिमा अकथ कथी ना जाए। लेखा जाणे ०६
धुर दरबार, दरगाह साची आसण लाए। खेले खेल अगम्म अपार, शब्द शब्दी हुक्म वरताए। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार, लक्ख चुरासी बणत बणाए। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश कर शंगार, मन मति बुध विच भण्डार टिकाए। आत्म ब्रह्म कर पसार, घर घर विच डेरा लाए। ईश जीव निराकार, साकार संग निभाए। आत्म परमात्म कर प्यार, परम पुरख खेल खलाए। आदि जुगादी साची कार, जुग करता वेख वखाए। विस्मादी विस्माद रहे विच संसार, बिस्मिल आपणा नाउँ धराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीव ईश रूप प्रगटाए। जीव ईश हरि हरि अंस, पिता पूत आप अख्वाईआ। आपे लेखा जाणे विश्व सहँस, कोटन कोटि सहँसर आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दाता एका वस्त हथ्थ रखाईआ। आत्म ब्रह्म वस्त अपार, पारब्रह्म प्रभ वण्ड वण्डांयदा। साचा मन्दिर कर त्यार, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण ना दिसे कोए किवाड़, बन्द दरवाज़ा आप करांयदा। ना कोई पुरख ना कोई नार, इंदरी लिंग ना कोए लगांयदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण सोभा पांयदा। आपणी वण्ड

कर निरँकार, आपणा लेखा बह समझांयदा। एका किरन लक्ख चुरासी भरे भण्डार, सहँस गुण आप हो जांयदा। इक्क सहँस माणस धार, आपणा बल विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। इक्क सहँस मनुख ज़ात, किरनी किरन वण्ड वण्डाईआ। इक्क इक्क खेल करे बनास्पत, पत बनास अबिनाश पुरख वड वड्याईआ। जेरज उत्भुज सेत्ज पावे रास, इक्क इक्क नाल लड़ बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दाता दानी इक्क अख्वाईआ। दाता दानी दीना नाथ, दीन दयाल खेल खिलांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म वसे साथ, सगला संग निभांयदा। आप चलाए साचा राथ, रथ रथवाही सेव कमांयदा। जुगा जुगन्तर अगम्मी गाथ, धुर दी बाणी शब्द अलांयदा। आत्म अन्तर एका पाठ, पूजा इष्ट देव मनांयदा। गुरसिखां वसे सदा साथ, विछड़ कदे ना जांयदा। हुक्मे अंदर रक्खे त्रिलोकी नाथ, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां हुक्मे अंदर आप फिरांयदा। जुगा जुगन्तर आप आपणा वेखे घाट, अन्तिम निरगुण सरगुण रूप प्रगटांयदा। कलिजुग नेड़े आई वाट, दूर दुराडा पन्ध मुकांयदा। नौं खण्ड पृथ्मी जगत विकारा विके हाट, सच वणजारा नज़र कोए ना आंयदा। एका सुत्ता लक्ख चुरासी आत्म सेजा खाट, आपणा लेखा बह समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दाता भिखारी वेस अनेक आप वटांयदा। आपे देवे जीआ दान, पंज तत्त करे कुड़माईआ। आपे खेले खेल जहान, लोकमात वड्डी वड्याईआ। आपे बख्शे पीण खाण, आपे सेवक सेव कमाईआ। आपे पूजा पाठ दए ज्ञान, ज्ञान ध्यान आप दृढ़ाईआ। आपे बख्शे सर सरोवर अशनान, तीर्थ तट आप नुहाईआ। आपे बख्शे खड़ग खण्डा कृपाल, शस्त्र बस्त्र आप सुहाईआ। आपे बख्शे तीर कमान, आपे चिल्ला रिहा चढ़ाईआ। आपे बख्शे चार दीवारी जगत मकान, आपे बैठा आसण लाईआ। आपे देवे जोबन नार रकान, पुतर धीआं आपे बन्धन पाईआ। आपे देवे पंज शैतान, आपे दिवस रैण तुड़ाईआ। आपे देवे सच शब्द धुनकान, आपे आठ पहर शनवाईआ। आपे लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेखे मार ध्यान, आपे लुक लुक मुख छुपाईआ। आपे चार वेद छे शास्त्र पुराण अठारां गाए ज्ञान, गीता ज्ञान आप दृढ़ाईआ। आपे अञ्जील कुरान करे पछाण, बाणी बाण आप लगाईआ। आपे गुर पीर साध सन्त होए अवतार, आपे जोती जोत करे रुशनाईआ। आपे माया ममता मोह हँकार, आपे आसा तृष्ना अग्न जलाईआ। आपे नाता जोड़े सर्ब संसार, आपे वेखे थाउँ थाँईआ। आपे लक्ख चुरासी रोड़े वहिंदी धार, शौह दरया आप सुटाईआ। आपे विष्न ब्रह्मा शिव कर्ज़ा दए उतार, सिर भार ना कोए रखाईआ। आपे कलिजुग अन्तिम करे ख्वार, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। आपे जीव दाता जीव आत्म करे प्यार, आपणी वस्त आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

जीअ दाता देवणहारा दान, आपे मेटे अन्त निशान, खेले खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लेखे लाईआ। गुरमुख जीव जीअ जुग चार, जगत जुगत बणांयदा। कर किरपा बख्शे चरन प्यार, मूर्ख मूढ़ चतर सुघड़ सुजान आप बणांयदा। दुरमति मैल दए उतार, अमृत सरोवर आप नुहांयदा। काग ना रले कागां डार, हँस हँसा मोती चोग चुगांयदा। जगत कबीला होए ख्वार, भैण भाई ना पार लँघांयदा। गुर चरन वसीला धुर दरबार, लक्ख चुरासी पन्ध मुकांयदा। छैल छबीला आवे वारो वार, जुगा जुगन्तर सेव कमांयदा। कलिजुग अन्तिम जीव कर लै हीला, वेला गया हथ्थ ना आंयदा। अठ्ठे पहर पाखर पाए शाहसवार रक्खे त्यार नीला, नीली धार भेव ना राय। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा मेल मिलाए। मेल मिलावा जीअ जगत, जुग जुग मेल मिलाया। भगवन भगती जाणे जुगत, निर्भय भउ ना कोए वखाया। दासी दास मुक्ती मुक्त, मुक्त दुआरा गुरसिख चरनां हेठ दबाया। आत्म परम आत्म एका शक्त, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। अन्तिम कलिजुग वेला वक्त, मुला काज़ी शेख़ मुसायक पंडत पांधे हथ्थ किसे ना आया। लेखे लग्गे बूंद रक्त, जो जन सरनाई आया। जीव ब्रह्म ना करे कोई हत्त, सच हथिआर हथ्थ ना किसे फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सर्ब जीआं का एका दाता, जुग जुग मेटे अन्धेरी राता, सन्त सज्जण आपणे संग रखाया।

१०७६ ०६

❋ १६ भाद्रों २०१७ बिक्रमी अर्जन सिँघ दे गृह ख़लील बस्ती ज़िला फिरोज़ पुर ❋

सचखण्ड दुआरे साचे तख्त, हरि जू हरि मन्दिर बह बह सजया। अबिनाशी करता ना कोई जणाए वेला वक्त, आदि जुगादि ना घड़या ना भज्जया। आदि जुगादी नूर नुराना आदि शक्ति, शाहो भूप आपणी रक्खे आपे लज्जया। मेल मिलावा ना कोई बूंद ना कोई रक्त, आपणा पर्दा आपे कज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप चलाए सच जहाज़या। सच जहाज़ धुर दरबार, हरि निरँकार आप चलाईआ। इक्क इकल्ला खेल अपार, दूसर संग ना कोए वखाईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, लोकमात वेस वटाईआ। भगत भगवन्त लए उभार, सन्तन मेला सहिज सुभाईआ। गुरमुख आत्म देवे ठार, गुरसिख सीतल धार वहाईआ। करे कराए सच प्यार, सच दरबारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खलाईआ। जुग जुग खेल खिलांयदा, खेलणहार भगवान। भगत भगवन्त वेख वखांयदा, प्रगट वाली दो जहान। सन्तन साचा संग निभांयदा, देवे दरस दर घर आण। गुरमुख साचे मात जगांयदा,

काया मन्दिर मार ध्यान। गुरसिख आपणे रंग रंगांयदा, रंग रंगीला इक्क महान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन हरि जू हरि हरि हरि मेला, दरगाह साची आप मिलांयदा। लोकमात गुरू गुर चेला, गुर शब्दी खेल खिलांयदा। जुगा जुगन्तर सज्जण सुहेला, सगला संग आप निभांयदा। करे खेल इक्क इकेला, अकल कल धारी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। भेव खुल्हाए भगत भगवन्त, अन्तर आत्म वेख वखाईआ। संसा चुकाए साचे सन्त, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। गुरमुख मेला नर हरि कन्त, घर वज्जे नाम वधाईआ। गुरसिख गाए सुहागी छन्द, गीत गोबिन्द इक्क अल्हाईआ। आप बणाए साची बणत, हरिजन वेखे थाउँ थाँईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेख वखाईआ। लोकमात सुहाया, जुगां जुगन्तर साची कार। हरिजन वेखे थाउँ थाया, निरगुण सरगुण लै अवतार। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, कल कल्की हो त्यार। निहकलंका नाउँ धराया, मरे ना जम्मे विच संसार। आवण जावण खेल खिलाया, खेलणहारा अगम्म अपार। लक्ख चुरासी फोल फुलाया, जीव जंत ना पाए सार। नाम मृदंग ढोल वजाया, शब्द अगम्मी बोल जैकार। काया चोला आप बदलाया, त्रैगुण माया वसया बाहर। साचा सोहला आपे गाया,
१०८०
०६
आप सुणाया सोहँ शब्द बोल जैकार। एका तोला बणके आया, तोले तोल कलिजुग अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए संभाल। हरिजन सुरत संभालदा, काया मन्दिर खोज खुजाईआ। करे खेल श्री भगवान दा, भगवन भेव रहे ना राईआ। लेखा जाणे दो जहान दा, लक्ख चुरासी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुरमुख हरिभगत भगवन्त मेले एका थाईंआ। आप मिलाए दया कमाए, गुरमुखां वेख वखाईआ। संगत साचा नाउँ धराए, धरत धवल दए वड्याईआ। आपणा रंग आप रंगाए, रंगणहारा इक्क अख्वाईआ। सच्चा सगन अन्त मनाए, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। हरिसंगत हरि सच दुआरा, एका एक सुहांयदा। एका गुर इक्क अवतारा, एका भेव खुलांयदा। एका मन्दिर इक्क उज्यारा, एका दीपक जोत जगांयदा। एका शब्द नाद धुन्कारा, एका राग नाद अल्हांयदा। एका अमृत ठंडा ठारा, एका भर प्याला जाम प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेख वखांयदा। हरिसंगत हरि वेखणहारा, हरि मन्दिर आप सुहाईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निरगुण निरवैर खेल खलाईआ। चार वरनां करे इक्क प्यारा, ऊँच नीच भेव ना राईआ। राउ रंकां देवे इक्क सहारा, चरन कँवल वड वड्याईआ। अमृत बख्शे ठंडी ठारा, भर प्याला जाम

प्याईआ। दिवस रैण रहे ख़ुमारा, उतर कदे ना जाईआ। जन्म मरन जग रोग निवारा, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। नाता तोड़ धर्म दुआरा, राए धर्म ना दए सजाईआ। साचा बेड़ा इक्क न्यारा, लोकमात आप चलाईआ। हरिसंगत करे सच प्यारा, गुरमुख साचे आप चढ़ाईआ। आपे जाणे आपणा पार किनारा, अद्धविचकार ना कोई डुबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। हरिसंगत तेरा पूर्ब मूल, कलिजुग अन्तिम आप चुकांयदा। गुरमुख वेखे साचे फूल, सच फुलवाड़ी आप महिकांयदा। करे खेल हरि कन्त कन्तूल, लोकमात वेख वखांयदा। जुगा जुगन्तर ना जाए भूल, जुग जुग आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे एका वर, एका मन्दिर आप सुहांयदा। एका मन्दिर हरि दुआरा, हरी हरि आप सुहांयदा। हरिसंगत करे सच प्यारा, सगला संग आप निभांयदा। एका शब्द सच्ची धुन्कारा, धुन आत्मक नाद वजांयदा। रसना रस बोल जैकारा, सो पुरख निरँजण आप अलांयदा। हँ ब्रह्म दए आधारा, पारब्रह्म दया कमांयदा। लक्ख चुरासी होए ख्वारा, कलिजुग अन्तिम वेला आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेल मिलांयदा। हरिसंगत तेरा साचा संग, सति पुरख निरँजण आप निभाईआ। गृह मन्दिर वजाए मृदंग, नाम मृदंगा हथ्थ उठाईआ। साचे अश्व कसया तंग, शाह सवारा फेरी पाईआ।

आप लगाए आपणे अंग, अंगीकार इक्क रघराईआ। कट्टणहारा भुक्ख नंग, जुग जुग ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। प्रगट होए सूरा सरबंग, सूरबीर सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मिलावा एका थाँईआ। थान थनंतर सोहया, हरि सतिगुर आप सुहांयदा। थान थनंतर सोहया, हरि सतिगुर चरन टिकांयदा। थान थनंतर सोहया, हरि सतिगुर दया कमांयदा। थाण थनंतर सोहया, हरि हरिजन मेल मिलांयदा। थान थनंतर सोहया, हरि हरि हरि राग सुणांयदा। थान थनंतर सोहया, हरि दर घर इक्क वखांयदा। थान थनंतर सोहया, हरि दर दर अलक्ख जगांयदा। थान थनंतर सोहया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी जोत जगांयदा। धरत सुहावी थान सुहञ्जणा, सतिगुर पूरा आप सुहांयदा। पुरख अकाला दीन दयाला जोत जगाए आदि निरँजणा, निरवैर निरगुण आपणा खेल खिलांयदा। दीना नाथ दयाल ठाकर दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर पार करांयदा। चरन धूढ़ी अठसठ अशनान सरोवर मजना, काग हँस रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धाम आप वड्यांअदा। सोहे घर दर दरवाज़ा, दर भिखारी दया कमांयदा। प्रगट हो ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। जुगा जुगन्तर रक्खे लाजा, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी रचया काजा, नव सत्त आपणा फेरा पांयदा। दो जहानां फिरे

१०८१ ०६

भाजा, सेवक साची सेव कमांयदा। शाहो भूप बण वड राजन राजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खलांयदा। खेल खलंदड़ा गोपी काहन, कलिजुग वेस वटाईआ। देवणहारा धुर फ़रमाण, शब्दी शब्द नाद सुणाईआ। गुरमुख साचे वेखे आण, गुर करता कीमत आपे पाईआ। गुर मूर्त वखाए इक्क ध्यान, अनुभव आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेला सहिज सुभाईआ। हरिसंगत हरि पाया, सतिगुर गहर गम्भीर। जन्म मरन दु:ख गंवाया, सांतक सति सरीर। कर्म धर्म मिटाया, तुटा लक्ख चुरासी ज़ंजीर। वरन बरन शर्माया, सतिगुर बदलणहारा तकदीर तकसीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन कट्टे तेरी भीड़। हरिजन भीड़ आपे कट्ट, दुखियां दु:ख निवारदा। सच खुल्हाए एका हट्ट, वणज वणजाए धुर दरबार दा। जोत जगाए लट लट, अज्ञान अन्धेर निवारदा। वसणहारा घट घट, गुरमुखां पैज संवारदा। साचा मार्ग दस्स दस्स, राह वखाए परवरदिगार दा। मेल मिलाए हस्स हस्स, ऊँच नीच ना कोए विचारदा। हिरदे अंदर वस वस, आपणा नाउँ आप उच्चार दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जुग जुग जन भगतां पैज आप संवारदा।

❋ २० भाद्रों २०१७ बिक्रमी पिण्ड ख़लील बस्ती ❋

सतिगुर पूरे हथ्थ वडियाई, जुग जगत जोग कमांयदा। भगत भगवन्त होए सहाई, धुर संजोगी संजोग मिलांयदा। सन्तन वेखे थाउँ थाई, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। गुरमुख उठाए फड़ फड़ बांहीं, दिवस रैण सेव कमांयदा। गुरसिखां मेल मिलाए चाँईं चाँईं, दर दरवेश आपणी अलक्ख जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ धरांयदा। सतिगुर पूरा साख्यात, एका एकंकारया। भगतन देवे साची दात, नाम वस्त अनमुल्ल भण्डारया। सन्तन पुच्छे आपे वात, लेखा जाणे अन्ध अँध्यारया। गुरमुखां चरन कँवल बंधाए नात, तुट ना जाए विच संसारया। गुरसिखां बणे पित मात, बाल अंञाणे गोद बहा रिहा। शब्द रक्खी वड करामात, एका भाणा हुक्म जणा रिहा। बोध अगाधी सुणाए गाथ, नाम निधाना आप प्रगटा रिहा। धरत धवल सगला साथ, सगला संग निभा रिहा। इक्क चढ़ाए आपणे राथ, रथ रथवाही आप अख्वा रिहा। जुगा जुगन्तर पूजा पाठ, लोकमात बणत बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कार आप करा रिहा। सतिगुर पूरा दीना बन्धन, बंधप आपणा नाउँ धराईआ। भगतन बख्शे परमानंदन, परम आत्मा मेल मिलाईआ। सन्त सुणाए सुहागी छन्दन, गीत गोबिन्द आप अल्हाईआ। गुरमुख चढ़ाए साचे चन्दन, रवि ससि मुख

शरमाईआ। गुरसिखां कट्टे फंदन, आवण जावण पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खलाईआ। सतिगुर पूरा आदि जुगादि, निरवैर रूप समाया। भगत भगवन्त साचे लाध, लहिणा देणा मूल चुकाया। सन्तन सुणाए एका नाद, घर मन्दिर रिहा वजाया। गुरमुखां लडाए आपणा लाड, आप आपणा मेल मिलाया। गुरसिख जगत विकारे विच्चों काढ, साचे मार्ग लए लगाया। धुर दी बाणी देवे दाद, नाम नामा इक्क वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर आपणा वेस वटाया। सतिगुर पूरा हरि भगवाना, एका रंग समांयदा। भगतन देवे ब्रह्म ज्ञाना, एका विद्या आप पढ़ांयदा। सन्तन सुणाए सच तराना, एका राग आप अलांयदा। गुरमुखां बठाए नाम बबाणा, आकाश प्रकाश पुरख अबिनाश पार करांयदा। गुरसिखां बख्शे चरन ध्याना, धरत धवल डेरा लांयदा। एथे ओथे बख्शे माणा, माण निमाणयां आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग आपणी रचन रचांयदा। सतिगुर पूरा सगला साथा, अंग संग समाया। भगतन लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथा, पूर्ब लेखा वेख वखाया। सन्तन पूरा करे घाटा, एका कंडे साचे तोल तुलाया। गुरमुखां नेड़े करे वाटा, दूर दुराडा पन्ध मुकाया। गुरसिखां मेल मिलाए आत्म सेज साची खाटा, घर मन्दिर सोभा पाया। अमृत जाम प्याए एका बाटा, रस मिट्ठा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन लेखा लेख मुकाया। सतिगुर पूरा लेख मुकांयदा, लेखा लिख्त विच ना आईआ। कागद कलम ना हथ्थ रखांयदा, मस रूप ना कोए छाईआ। अंदर बन्द ना किसे करांयदा, हिसाब किताब ना कोए जणाईआ। इक्क इकल्ला; खेल खिलांयदा, ख़ालक वेखे थाउँ थाईंआ। जुग जुग आपणी जोत जगांयदा, निरगुण सरगुण बेपरवाहीआ। हरिजन साचे वेख वखांयदा, आपणा बल आप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए उठाईआ। गुरसिख गुर उठाया, सतिगुर किरपा धार। उज्जल मुख आप कराया, दरुमत मैल उतार। आत्म सुख इक्क उपजाया, अमृत बख्शे ठंडी ठार। कलिजुग कूड़ा रोग मिटाया, सोग रहे ना विच संसार। चरन प्रीती जोग सिखाया, दिवस रैण इक्क प्यार। अजपा जाप आपणा आपे रिहा गाया, जीव जंत ना पायण सार। जिस जन सिर आपणा हथ्थ टिकाया, तिस जन चारे बाणी करन निमस्कार। हरि की बाणी हरि का रूप वटाया, गुर शब्दी शब्द जैकार। गुर का शब्द गुर इच्छया बाहर वखाया, भिच्छया पाए आप निंराकार। औंदा जांदा दिस ना आया, लिख लिख कलम करे विचार। सरगुण बाणी रूप प्रगटाया, चार खाणी होए उधार। चारे खाणी रंग रंगाया, मन मति बुध पैज संवार। मन मति बुध दए समझाया, पद एका एकँकार। तिन्नां लेखा रहिण ना पाया, घर चौथे मेला कन्त भतार। साची सखी मिल हरि कन्त सगन मनाया,

सोहया बंक दुआर। एका अल्फ़ी तन शंगार कराया, लक्ख चुरासी चोली गलों उतार। पारब्रह्म अबिनाशी करते हल्फ़ीआ ब्यान आप सुणाया, उच्ची कूक कूक पुकार। जुग जुग भगत तेरा संग निभाया, विछड़ ना जावां विच संसार। तेरा तन मृदंग रखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए खेल अपार। खेल अपार सतिगुर मीत, गुरदेव आप कराईआ। आदि जुगादी अचरज रीत, प्रीत बिप्रीत रूप वटाईआ। जीव जहानां परखे नीत, हस्त कीट वेख वखाईआ। गुरमुख विरला गोबिन्द गाए गीत, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। अंदर मेला धाम अनडीठ, हरि हिरदे विच समाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म काया कपड़ करे पतित पुनीत, पतित पावण आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हरिजन रक्खे ठांडा सीत, अग्नी तत्त ना लगे राईआ। जिस जन सतिगुर पूरा रक्खया चीत, चेतन रूप सर्ब दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन लेखा लेखे पाईआ। हरिजन लेखा लेखे पावणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, गुरमुखां एका राह वखावणा, चार वरनां दए आधार। ऊँच नीच पार करावणा, राउ रंक दए आधार। एका शब्द दो अक्खर आप पढ़ावणा, चौथे जुग करे ख्वार। ब्रह्म पारब्रह्म मिलावणा, विछोड़ा रहे ना पुरख नार। जिस जन सोहँ रसना गावणा, वेले अन्त ना होए ख्वार। निरगुण घर घर फेरा पावणा, जोती जामा भेख अपार। शब्द बबाणा आपणे कंध उठावणा, संग रक्खे ना कोए कहार।
१०८४ ग़रीब निमाणा गुरसिख आपणी डोली आप बहावणा, सगन मनाए सिरजणहार। प्रेम रसालू तन पहनावणा, नाम बस्त्र करे १०८४
०६ शंगार। सति कज्जल धार बंधावणा, ब्रह्म नेत्र नीर रोवे ज़ारो ज़ार। प्रेम रंगण इक्क रंगावणा, मैहन्दी दिसे ना विच संसार। ०६
साची सखी आप अख्वावणा, सीस गुंदे नैण बण निरँकार। आपणे अमृत मुख जुठावणा, जूठी झूठी क्रिया दए नवार। साची डोली आप चढ़ावना, सूरज चन्न ना दिसे कोए उज्यार। दो जहाना पैंडा आप मुकावणा, कोटन कोटि जो जन रहे पुकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां देवे एका वर, सतिगुर चरन प्रीती साची कार। चरन प्रीत दरस परस गुरदेव, आसा तृष्ना रहे ना राईआ। अन्त काल मिले मेल अलक्ख अभेव, अर्श फर्श होए सहाईआ। जन जननी जग लाए सेव, जुग चार वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख लेखा आप मुकाईआ। गुरसिख लेखा मुक्कया, लक्ख चुरासी तुटा फंद। कलिजुग वेला अन्तिम ढुक्कया, सृष्ट सबाई नेत्र अन्ध। फुल फलवाड़ी बूटा सुक्कया, नव नव होए खण्ड खण्ड। निरगुण नौं नौं चार रिहा लुकया, अन्तिम मुकाए आपणा पन्ध। गुरमुखां अग्गे आपे झुकया, आपणा गीत गाए आप सुणाए छन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एक इक्क अनेक वखाए परमानंद।

✻ २० भाद्रों २०१७ बिक्रमी सुरैण सिँघ दे गृह पिण्ड निधां वाली ज़िला फिरोजपुर ✻

सति पुरख निरँजण शाह सुल्तान, अगम्म अगम्मड़ी कार करांयदा। सो पुरख निरँजण वड मेहरवान, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। हरि पुरख निरँजण वाली दो जहान, जूनी रहित वेस वटांयदा। एकँकारा वड बलवान, बल धारी आप अख्वांयदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जोत डगमगांयदा। अबिनाशी करता देवणहारा धुर फ़रमाण, हुक्मी हुक्म आप वरतांयदा। श्री भगवान दर दरवेश बण दरबान, दर घर साचे अलक्ख जगांयदा। पारब्रह्म आप आपणा कर परवान, आपणा लेखा आपे लांयदा। वसणहारा निरगुण सच मकान, सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, करता पुरख आपणा नाउँ धरांयदा। सति पुरख निरँजण उच्च अगम्म, भेव कोए ना पांयदा। हरि पुरख निरँजण ना मरे ना पए जम्म, जूनी जून ना कोए भवांयदा। सो पुरख निरँजण ना कोई तृष्ना ना कोई तम, खुशी ग़म ना कोए वखांयदा। एकँकारा आदि जुगादि जाणे आपणा कम्म, आपणी करनी आपणे हथ्थ रखांयदा। आदि निरँजण आपणा कर आप प्रकाश ना कोई वखाए सूरज चन्न, नूरो नूर नूर डगमगांयदा। अबिनाशी करता बेड़ा बन्न्ह, सच मलाह आप हो जांयदा। श्री भगवान आपणा हुक्म आपे मन्न, आपे निउँ निउँ सीस झुकांयदा। पारब्रह्म किसे जननी ना जणया जन, मात पित ना कोए बणांयदा। ना कोई राग नाद सुणे कन्न, ताल तलवाड़ा ना कोए वजांयदा। ना कोई माल दौलत दिसे धन, जगत खज़ीना ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहांयदा। सति पुरख निरँजण खेल अपारा, निरगुण निरगुण आप करांयदा। सो पुरख निरँजण हो उज्यारा, हरि पुरख निरँजण वेख वखांयदा। एकँकारा वसणहारा धाम न्यारा, उच्च महल्ल अटल आप सुहांयदा। आदि निरँजण आपणा रूप करे न्यारा, रूप अनूप आप हो जांयदा। श्री भगवान बण शाह सिक्दारा, साचे तख्त सोभा पांयदा। अबिनाशी करता सोहे दर दरबारा, दर दरवाज़ा आप सुहांयदा। पारब्रह्म प्रभ सेवादारा, याचक सेवा आप कमांयदा। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़ा, निरगुण धारा आपणी आप चलांयदा। घर विच घर कर त्यारा, थिर घर बैठे सच्ची सरकारा, शाह सुल्तान आपणा नाउँ धरांयदा। आपे नारी कन्त भतारा, सच सुहञ्जणी सेज आप सुहांयदा। आपे करे अगम्मी कारा, अगम्म अगम्मड़ा वेख वखांयदा। सुत उपजाए शब्द दुलारा, मात पित साचा हित आप करांयदा। चरन कँवल अमृत बख्शे ठंडी ठारा, सांतक सति सति वरतांयदा। दूसर अवर ना कोए सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि जू बैठा एका कन्त, कन्त कन्तूल साचा धाम सुहाईआ। साचा धाम सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप

सुहांयदा। हरि पुरख निरँजण आपणे दर आपे करे मजना, आपणा सरोवर आप सुहांयदा। हरि पुरख निरँजण आपे रक्खे आपणी लजणा, आपणा पर्दा आपे पांयदा। एकँकारा ना घड़या ना भज्जणा, घड़न भन्नणहार पुरख समरथ आपणा नाउँ धरांयदा। आदि निरँजण साचे मन्दिर आपणे दीपक आपे जगणा, तेल बाती ना कोए टिकांयदा। श्री भगवान साचा सज्जणा, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सगला संग निभांयदा। श्री भगवान साचे मन्दिर आपे वसणा, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। पारब्रह्म प्रभ निरगुण निरगुण मिल मिल हस्सणा, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाए, निरगुण निरवैर जोत जगाए, रूप रंग रेख ना कोए जणांयदा। रूप रंग ना कोए रेखा, वेस अवल्लड़ा आप कराईआ। सो पुरख निरँजण नर नरेशा, नर नरायण बैठा आसण लाईआ। हरि पुरख निरँजण आपणे नेत्र आपे पेखा, दोए लोचण ना कोए खुलाईआ। एकँकारा ना कोई मुच्छ दाढ़ी दिसे केसा, सीस जगदीस ना मूंड मुंडाईआ। आदि निरँजण करया वेसा, निराकार आपणी कल धराईआ। श्री भगवान आपे जाणे आपणा लेखा, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। अबिनाशी करता आपणे जोत आप प्रवेशा, तत्व तत्त ना कोए बणाईआ। पारब्रह्म प्रभ करे आदेसा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह, निरगुण निरवैर देवे सच संदेशा, शब्द अनादी आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचे दए वड्याईआ। दर घर साचे वड वडियाई, हरि वड्डा वड वड्यांअदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण निरवैर बैठा जोत जगाई, अलक्ख निरँजण आपणी अलक्ख आप जगांयदा। हरि पुरख निरँजण वेखणहारा थाउँ थाई, सो पुरख निरँजण मेल मिलांयदा। सति पुरख निरँजण खेले खेल बेपरवाही, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत जोत उजाला, पारब्रह्म प्रभ वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, दूसर दर ना कोए वखांयदा। सचखण्ड दुआरे वसया, एका रंग समाए। आपणे मन्दिर बह बह आपे हस्सया, आप आपणा सगन मनाए। आपणी जोत आपे करे प्रकाशया, प्रकाश प्रकाश विच टिकाए। आपणा नाउँ धराए पुरख अबिनासया, ना मरे ना जाए। जुगा जुगन्तर होए दासी दासया, सेवक सेवा सेव कमाए। लेखा रक्खे ना पृथ्मी आकासया, मंडल मंडप ना कोए सुहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एकँकारा, करे खेल अगम्म अपारा, सचखण्ड दुआर आप सुहाए। सचखण्ड दुआर सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप सुहांयदा। जोत जगाए इक्क निरँजणा, नूरो नूर डगमगांयदा। थिर घर वासी पुरख अबिनाशी ना घड़या ना भज्जणा, रूप अनूप आप प्रगटांयदा। थिर घर मेला आप मिलाए आपणे सज्जणा, सज्जण मीत आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे दर, थिर घर साचा आप

सुहांयदा। थिर घर सच सुहावणा, पारब्रह्म सुहाईआ। आपणा गीत आपे गावणा, आपणी इच्छया पूर कराईआ। आपणा कन्त आप हंढावणा, आप आपणी सेज सुहाईआ। आपणी बणत आप बणावणा, आपे वेखे चाँईं चाँईआ। आपणा रंग आप रंगावणा, रंग रंगीला साचा माहीआ। आपणा कबीला आप उपजावणा, पूत सपूता आपे जाईआ। सुत दुलारा नाउँ धरावणा, शब्दी शब्द शब्द सलाहीआ। एका अक्खर आप पढ़ावणा, दूजी विद्या ना कोए पढ़ाईआ। एका सथ्थर आप विछावणा, आपणीआं भुजां रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, अलक्ख अगम्म अथाह आपणी दया आप कमाईआ। दया कर करे उत्पत, शब्दी सुत दुलारा जाया। हड्ड मास नाड़ी ना दिसे रत, रक्त बूंद ना मेल मिलाया। रूप प्रगटाए ना कोई पंज तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश ना रंग रंगाया। त्रैगुण माया ना रंगे रत, मन मति बुध ना कोए धराया। करे खेल हरि कमलापत, आप आपणी रचन रचाया। वेस अनेका करे अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म प्रभ आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। देवे माण साचे सुत, धन्न धन्न जणेंदी माया। आप सुहाए आपणी रुत्त, सचखण्ड दुआरे सोभा पाया। आपणी गोदी आपे चुक्क, आपे रिहा खडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाए, जोती जोत आप जगाया। जोती जाता हरि निरँकार, आपणी कल आप वरतांयदा। बेऐब खुदाई परवरदिगार,
१०८७ नूरो नूर डगमगांयदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, साचा हुक्म आप चलांयदा। शाहो भूप बण सिक्दार, राज राजान १०८७
०६ आपणा नाउँ धरांयदा। सीस बन्न्ह सच्ची दस्तार, साचा ताज आप टिकांयदा। पंचम मुख मुख कर त्यार, शब्द नाद धुन ०६
वजांयदा। तुरीआ राग अपर अपार, पारब्रह्म आपणा आपे गांयदा। बोध अगाधी एका कार, हरि जू हरि हरि आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचा आप वड्यांअदा। दर घर साचा हरि वड्यांअदा, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। साचे सुत दया कमांयदा, एका हुक्म रिहा समझाईआ। आपणा वेला वक्त आपणे हथ्थ रखांयदा, थित वार ना बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचे वर, धुर फ़रमाणा इक्क जणाईआ। धुर फ़रमाणा हरि भगवान, आपणा आप सुहांयदा। साचे तख्त बैठ सुल्ताना, आदल अदल कमांयदा। एका मन्दिर इक्क टिकाणा, इक्क बबाणा आप उडांयदा। एका राज इक्क राजाना, एका रईयत वेख वखांयदा। एका राग इक्क तराना, एका नाद धुन सुणांयदा। एका वरते आपणा भाणा, आपणे भाणे सद रहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द देवे वर, साची वस्त झोली पांयदा। साची वस्त नाम आधार, आपणी झोली आप भराईआ। एका हुक्म वरते वरतार, हुक्मी हुक्म सर्ब फिराईआ। सति वणजारे करना साचा वणज वपार, भुल्ल

रहे ना राईआ। किरपा करे आप करतार, तेरी सेवा सच लगाईआ। लोअ पुरी ब्रह्मण्ड खण्ड महल्ल उसार, ब्रह्मा विष्न शिव तेरी अंस उपजाईआ। त्रैगुण तेरा तत्त भण्डार, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका भिच्छया रिहा वरताईआ। एका भिच्छया नाम अनमोल, आपणी झोली आप भरांयदा। सचखण्ड निवासी बोले साचा बोल, आपणा हुक्म आप जणांयदा। इक्क इकल्ला निरगुण निरवैर बैठा तोले तोल, तोलणहारा दिस ना आंयदा। आदि जुगादि रहे अडोल, अडुल आपणी कार करांयदा। आपे वसे आपणे कोल, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। आपे मृदंग नाम ढोल, आपे धुन नाद सुणांयदा। आपे शब्दी शब्द रिहा मौल, रूप रंग ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा एका घर, घर साचा इक्क उपांयदा। एका घर एका हरि, एका मन्दिर सोभा पाईआ। एका नारी एका नर, नर नरायण इक्क अख्वाईआ। इक्क दुआर इक्क दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। इक्क सरोवर इक्क सर, एका रिहा नुहाईआ। एका घाड़न एका रिहा घड़, एका भन्न वखाईआ। एका अंदर इक्क धर, इक्क इक्क नाम जोड़ जुड़ाईआ। विश्व रूप आपे कर, विष्न आपणा बंस सुहाईआ। विष्न अंदर आपे वड़, कँवल नाभी फुल्ल खिलाईआ। कँवला अमृत वेखे सर, नाभी धारा आप चलाईआ। आपे आपणा प्रकाश कर, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द देवे साचा वर, साची वण्ड आप वण्डाईआ। आपे विष्न आपे अन्तर, आपे बाहर समांयदा। आपे शब्द आपे गुर मन्त्र इष्ट रूप प्रगटांयदा। आप बणाए आपणी बणतर, आपे कँवला कँवल समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आपणा रंग आप चढ़ांयदा। आपणा रंग आपे रंग, आपे वेख वखाईआ। अबिनाशी करता सूरा सरबंग, घर बैठा सोभा पाईआ। विष्नूं दुआरे आपे लँघ, पारब्रह्म रूप प्रगटाईआ। ब्रह्म ब्रह्म वज्जे मृदंग, कँवल कँवल दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार धार विच्चों प्रगटाईआ। धार विच्चों धार कढ्ढ, हरि साचा वेख वखांयदा। सो पुरख निरँजण लडाए लड, आप आपणा मेल मिलांयदा। निरगुण निरगुण करया अड्ड, आपणी वण्ड आपणे हथ्थ रखांयदा। वेखणहार हरि ब्रह्मण्ड, ब्रह्म जोती जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खलांयदा। खेल खलंदड़ा वड खलारी, एका एकंकारया। पारब्रह्म ब्रह्म कर पसारी, विष्न देवे इक्क आधारया। एका जोत जोत निराकारी, आपणा दीपक आप जगा रिहा। एका शब्द शब्द धुन्कारी, नाद अनादी आप सुणा रिहा। एका रूप अगम्म अपारी, अगम्म अगम्मड़ा आप वखा रिहा। इक्क महल्ल इक्क अटारी, नेहचल धाम आप सुहा रिहा। एका शाहो भूप सच्चा सिक्दारी, तख्त ताज इक्क जणा रिहा। एका हुक्म

१०८८ ०६

इक्क वरतारी, एका भाणा सद रखा रिहा। एका सुत इक्क दुलारी, एका मात पित रूप प्रगटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, आपे खेले खेल तमाशा, आपणे मंडल आपणी रास आप रचा रिहा। विष्न ब्रह्मा कर त्यार, शंकर संग निभाया। तिन्नां विचोला सिरजणहार, दिस किसे ना आया। शब्द सोहला एकँकार, आप आपणा आपे गाया। जाणे ढोला आपणी वार, आपणा बोला आप जणाया। बणया तोला पावे सार, एका कंडा हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाया। सचखण्ड दुआरे हरि निरँकारा, आपणा खेल खिलांयदा। निरगुण निरवैर हो त्यारा, अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर आपणी कल वरतांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव तन कर श्ंगारा, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म मेल मिलांयदा। ना कोई दूसर देवे होर सहारा, तृष्ना भुक्ख ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, साचा मन्दिर आप सुहांयदा। सचखण्ड खेल रचाई, ब्रह्मा विष्न शिव कर प्यार। साचे शब्द करे कुड़माई, शब्द सुत जाए बलिहार। सेवक सेवा इक्क समझाई, तिन्नां विचोला इक्क निरँकार। विछड़ कदे ना जाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप वरतार। शब्दी हुक्म वरतांयदा, पारब्रह्म गुर करतार। ब्रह्मा विष्न शिव समझांयदा, तिन्नां मेला एका वार। एका माई गोद बहांयदा, एका पिता करे प्यार। एका कंगण आप सुहांयदा, एका करे सच श्ंगार। एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा, एका खाण पीण दए अहार। एका मन्दिर आप सुहांयदा, रवि ससि ना कोई उज्यार। एका गीत अनादी गांयदा, सारंग सारंगी वज्जे ना कोई सितार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। अपर अपार हरि हरि खेल, सचखण्ड दुआरे रिहा कराईआ। लेखा जाणे गुरू गुर चेल, गुर चेला एका अंक समाईआ। आपे वसे धाम नवेल, धाम अवल्लड़ा इक्क वड्याईआ। अचरज पारब्रह्म प्रभ खेल, ब्रह्मा विष्न शिव रिहा समझाईआ। आदि निरँजण चाढ़े तेल, घर साचे सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन दुआरा इक्क सुहाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव चरन दुआर, सो पुरख निरँजण आप बहांयदा। हरि पुरख निरँजण कर प्यार, निरगुण आपणा दरस दिखांयदा। एकँकारा दए अधार, धीरज धीर धीर धरांयदा। आदि निरँजण हो उज्यार, नूरो नूर इक्क चमकांयदा। अबिनाशी करता मीत मुरार, सिर आपणा हथ्थ धरांयदा। श्री भगवान सांझा यार, तिन्नां एका मार्ग लांयदा। पारब्रह्म प्रभ ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। शब्द अनादी सच जैकार, धुर दरबार आप सुणांयदा। करे खेल हरि करतार, दूसर संग ना कोई निभांयदा। शब्दी शब्द वरते करतार, वरतावणहार दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा लेख वखांयदा।

धुर दा लेखा अगम्म अपारा, ब्रह्मे विष्न शिव वखाईआ। शब्दी करे शब्द प्यारा, दोहां विचोला बेपरवाहीआ। आदि जुगादी वसे कोला, दूर नेड़े ना पन्ध जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द तेरी अंस आप सुहाईआ। साचे सुत तेरी साची अंस, ब्रह्मा विष्न शिव उपाया। प्रभ आपणा वेखे आपे बंस, बंस सरबंसा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां एका रंग रंगाया। ब्रह्मा विष्न शिव शब्द सच मीत, एका धार वखाईआ। सच दुआरा ठांडा सीत, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। कवण जणाए आपणी रीत, कवण मार्ग दए वखाईआ। कवण प्रगटाए सच प्रीत, चरन दुआर कवण बहाईआ। कवण सुणाए एका गीत, दूसर दर ना कोई पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव अभेदा दए खुलाईआ। तिन्नां मेला एका धार, शब्दी संग निभाया। ब्रह्मा विष्न शिव कर विचार, गुर गुर रिहा ध्याया। कवण बन्ने साडा भार, कवण बेड़ा लए तराया। कवण लेखा जाणे आर पार, कवण मध वेस वटाया। कवण रूप होए करतार, निरगुण आपणा दरस दिखाया। कवण शब्द मिले भण्डार, कवण वस्त दए वरताया। कवण खण्डा तेज कटार, कवण शस्त्र लए चमकाया। कवण होए शाह अस्वार, कवण रूप अनूप प्रगटाया। कवण साचे
१०६० तख्त बणे सिक्दार, कवण हुक्मी हुक्म सुणाया। तेरा रूप अगम्म अपार, निरगुण दिस किसे ना आया। ना कोई दिसे जगत १०६०
पसार, लक्ख चुरासी रचन ना कोई रचाया। त्रैगुण माया भरे ना कोई भण्डार, पंज तत्त ना कोई रखाया। जंगल जूह
०६ ना उजाड़ पहाड़, समुंद सागर नीर ना कोए वहाया। गुर पीर ना कोए अवतार, साध सन्त दिस ना आया। सूरज चन्न ०६
ना कोई उज्यार, मंडल मंडप ना कोई सुहाया। नाम शब्द ना कोई जैकार, इष्ट देव ना कोई बणाया। ब्रह्मा विष्न शिव दोए जोड़ जोड़ करन निमस्कार, दर बैठे सीस झुकाया। शब्द विचोला उच्ची करे पुकार, आपणा ढोला रिहा सुणाया। पारब्रह्म हरि करे कराए करनेहार, आपणी कल आप वरताया। जुगा जुगन्तर पावे सार, भुल्ल कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे तख्त रिहा सुहाया। ब्रह्मा विष्न शिव मंगण मंग, अगे आपणी झोली डाहीआ। सदा निभाउँणा आपणा संग, हउँ भिखक भिखारी दर आईआ। इक्क चढ़ाउणा, आपणा रंग, उतर कदे ना जाईआ। तेरे मन्दिर तेरे दुआर तेरे घर हरि जू आए लँघ, चरन दुआर बैठे रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्श सच्ची सरनाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाला, पुरख अकाल अख्वांयदा। सचखण्ड वसाए सच्ची धर्मसाला, साची दरगाहि आसण लांयदा। सुत दुलारा वेखे बाला, बाल निधाना राह तकांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव होए कंगाला, वस्त हथ्थ ना कोए रखांयदा। हरि जी हरि हरि होए आप कृपाला, कृपानिध आपणी दया आप कमांयदा।

एका फल लगाए तिन्नां डाल्हा, फुल फुलवाड़ी आप महिकांयदा। मार्ग दस्से इक्क सुखाला, चरन कँवल ध्यान समझांयदा। प्रभ चले अवल्लड़ी चाला, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। लोकमात बणे दलाला, साची वण्डण वण्ड वण्डांयदा। त्रैगुण माया जगत दोशाला, इक्क इक्क नाल जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क सिखांयदा। साची सिख्या सिखावणहारा, एका हुक्म सुणांयदा। पारब्रह्म वरते वरतारा, भेव कोई ना पांयदा। विष्न शिव तेरा भरे भण्डारा, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। लक्ख चुरासी भाण्डा कर त्यारा, घट घट आपणी जोत जगांयदा। करे खेल अपर अपारा, निरगुण सरगुण वण्ड वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक झोली पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दर बण भिखार दर बैठे सीस झुकाई, पारब्रह्म अबिनाशी करते तेरी सच सरनाया। जगत जगदीश तेरे हथ्थ वडियाई, हउँ याचक सेवक सेव कमाया। तेरे हुक्म रहे रज़ाई, तेरा हुक्म इक्क भाया। प्रभ लेखा लिखण ना जाई, आदि आदि आपणी खेल खलाया। ब्रह्म ब्रह्मादि वज्जी वधाई, साची दाद झोली पाया। नाम नामा साचे शहनशाही, बोध अगाध शब्द सणाया। आपणी करे आप पढ़ाई, विष्न आपणे रंग रंगाया। एका तत्त रिहा समझाई, जीअ दाता दया कमाया। सच भण्डार दए वरताई, ब्रह्म आपणा नाम सुहाया। निष्अक्खर करे

१०६१ पढ़ाई, साचा ढोला आपे गाया। चारे वेदां दए लिखाई, विष्नूं तेरे सिर हथ्थ टिकाया। ब्रह्मा मेला सहिज सुभाई, शंकर १०६१

०६ तेरा माण वधाया। जो घड़या भन्न वखाई, पुरख अबिनाशी खेल रचाया। रचनहारा दिस ना आई, सुत दुलारा नाल रलाया। ०६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाया। ब्रह्मा विष्न शिव कर सलाह, ढह ढह पए सरनाईआ। पुरख अबिनाशी लोकमात कवण रूप बणे मलाह, जुग जुग बेड़ा बन्न्ह तराईआ। कवण नाम दए सलाह, सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। कवण खेड़ा दए वसा, कवण नगर सोभा पाईआ। कवण झेड़ा दए मुका, अन्तिम आपणा पन्ध मुकाईआ। कवण रूप जोती जोत ल्ए मिला, ब्रह्मा विष्न शिव एका मंग मंगाईआ। शब्द सुत आपणा बोला दए सुणा, भेव अभेदा आप खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचे सोभा पाईआ। विष्न ब्रह्मे शिव हरि जणांयदा, किरपा कर अगम्म अपार। लक्ख चुरासी सेवा लांयदा, घाड़न घड़ बण ठठयार। चार जुग वण्ड वण्डांयदा, चारे वेदां बण लिखार। चारे बाणी आप पढ़ांयदा, चारे खाणी कर त्यार। चार वरनां रंग रंगांयदा, चार यारी दए अधार। चार चार वेस वटांयदा, चार कुंट ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी कार। चार जुग इक्क चौकड़, लोकमात वण्ड वण्डाईआ। आपणे अक्खर थल्ले लाए एका औंकड़, लकीर तकदीर आप खिचाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। एका चौकड़ी नौं नौं चार, नौं सत्त रहिण ना पाईआ। इक्क चवी अवतार गुर गुर आपणा रूप धराईआ। सन्त भगवन्त जगत करे प्यार, गुरमुख गुरसिख लए जगाईआ। मूर्ख मुग्ध अज्ञान मनमुख मारे मार, दूती दुष्ट दए खपाईआ। एका मन्त्र कर उज्यार, जुगा जुगन्तर करे मात पढ़ाईआ। लक्ख चुरासी वेखे वेखणहार, निरगुण सरगुण थाउँ थाईंआ। ब्रह्मे विष्न शिव तेरा इक्क प्यार, पुरख अबिनाशी आप निभाईआ। घट घट अंदर कर पसार, तेरा मन्दिर दए सुहाईआ। नौं नौं चार अन्तिम उतरे पार, चौकड़ी जुग रहिण ना पाईआ। कलिजुग होए रैण अन्धेरी अन्ध अँध्यार, साचा चन्द ना कोई चढ़ाईआ। लक्ख चुरासी होए विभचार, नार कन्त ना कोए हंढाईआ। लेखा चुक्के गुर पीर अवतार, साध सन्त ना कोए सहाईआ। धुर दी बाणी मारे बाण अपार, धुर फ़रमाणा शब्द जणाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, हुक्म अटल आप शहनशाहीआ। शाह पातशाह हो त्यार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। लोकमात खेल अपार, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव समझाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव सुण कर ध्यान, पारब्रह्म प्रभ आप समझांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, लोकमात वेस वटांयदा। निहकलंक प्रगट होए बली बलवान, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। सति निशाना देवे चाढ़, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। खेले खेल दो जहान, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड चुकाए कान, जेरज अंड फोल फुलांयदा। नाता तोड़ जीव शैतान, शब्द कमान हथ्थ उठांयदा। देवणहारा धुर फ़रमाण, एका अक्खर नाम पढ़ांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखे आण, रूप अनूप आप धरांयदा। विष्नूं करे आप परवान, आप आपणा मेल मिलांयदा। ब्रह्मे तेरी चुक्के काण, ब्रह्म आपणी अंस बणांयदा। शंकर चुक्के पीण खाण, लहिणा देणा अन्त ना कोई वखांयदा। प्रगट होए श्री भगवान, निहकलंक नाउँ धरांयदा। डंका वज्जे विच जहान, हरि साचा आप वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप समझांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दोए दोए जोड़, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म कवण कूटे आए दौड़, कवण रुतड़ी मात सुहाईआ। कवण लगाए दो जहान पौड़, कवण डण्डा हथ्थ रखाईआ। कवण रूप वेखे लक्ख चुरासी फल मिट्ठा कौड़, कवण रीठे भन्न वखाईआ। कवण रूप बुझाए लग्गी औड़, अमृत मेघ मेघ बरसाईआ। कवण रूप लक्ख चुरासी तृष्ना देवे होड़, भाण्डे घड़ ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ याचक ढह पए सरनाईआ। सतिगुर साचा आप सुणाए, पुरख अकाल दया कमांयदा। कलिजुग वेला अन्तिम आए, नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग गेड़ा आप दवांयदा। पंज तत्त गुर ना कोई अख्वाए, शब्द गुर इक्क धरांयदा। जोती जोत डगमगाए, अजूनी

रहित वेस वटांयदा। सरगुण वेखे थाउँ थाएं, नौं खण्ड पृथ्मी फोल फुलांयदा। सत्तां दीपां फेरा पाए, औदां जांदा दिस ना आंयदा। लोआं पुरीआं दए हिलाए, करोड़ तेतीसा सर्ब कुरलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव लए जगाए, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। चारे मुख चारे बाणी वेखे थाउँ थाएं, चारे वेदां खोज खुजांयदा। शास्त्र सिमरत फोल फुलाए, अञ्जील कुरानां पर्दा लांहयदा। गीता ज्ञान वेखे अठारां अध्याए, धुर दी धार आप जणांयदा। कलिजुग अन्तिम करे रुशनाए, निरगुण रूप डगमगांयदा। सो पुरख निरँजण रूप प्रगटाए, आपणा बल आप वखांयदा। निहकलंका कल वरताए, कल कल्की आप अख्वांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव लए मिलाए, त्रै चेले एका माता गोद बहांयदा। लक्ख चुरासी भाण्डे भन्न वखाए, थिर कोए रहिण ना पांयदा। आपणी साजण हरि आपे साज वखाए, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रूप प्रगटांयदा। इक्क चौकड़ी चार जुग उतरे पार, नौं नौं चार गेड़ा आप दवाईआ। प्रगट होए निहकलंक हरि अवतार, निरगुण आपणा रूप प्रगटाईआ। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, शब्दी जोड़ा जोती जोत होए कुड़माईआ। अगम्मी घोड़ा हरि निरँकार, दो जहाना आप भवाईआ। दरगाह साची लाया एका पौड़ा, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ आपे बौहड़ा, निरगुण सरगुण लेखा थाउँ थाईंआ। कलिजुग भन्ने रीठा कौड़ा, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। रूप प्रगटाए ब्रह्मण गौड़ा, वरन गोत ना कोई जणाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत आपे चढ़या गहर गवरा, गहर गम्भीर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, कलिजुग मेटे अन्धेरी राता, काली धार रहिण ना पाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल, अगम्म अगम्मड़ी कार कमांयदा। चरनां हेठ दबाए काल महांकाल, दो जहाना फेरी पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव लए उठाल, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। लक्ख चुरासी वेखे घाली घाल, घट घट अंदर आप फोलांयदा। शब्द अनादी वज्जे ताल, छत्ती राग भेव ना आंयदा। सृष्ट सबाई वेखे पत डाल्, फुल फलवाड़ी फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला, दरगाह साची धाम सुहांयदा। दरगाह साची धाम सुहाया, पुरख अबिनाशी डेरा ला। कलिजुग अन्तिम खेल खलाया, निरगुण निरगुण रूप धरा। सरगुण जोती जोत जगाया, नूर नुराना डगमगा। काया कोट किला वसाया, सम्बल नगर नाउँ धरा। गोबिन्द लेखा दए चुकाया, लिख्या लेख ना कोए मिटा। गुरसिखां देवे ठंडी छाया, सिर आपणा हथ्थ रखा। बाल निमाणे लए उठाया, आपणी गोद लाड लडाए जिउँ पिता माँ। मात पित आप हो जाया, फड़ फड़ हँस बणाए काँ। जो जन सरनाई आया, लक्ख चुरासी फंद दए तुड़ा। राए

धर्म ना दए सज़ाया, चौथे पौड़े दए चढ़ा। चौथा पद आप वखाया, तीजा नेत्र दए खुल्हा। राती सुत्तयां दरस दिखाया, दोए दोए अक्खर जाप जपा। सोहँ मन्त्र इक्क दृढ़ाया, इक्क इकल्ला फेरी पा। सृष्ट सबाई रिहा हिलाया, गुरमुखां बणे अन्त मलाह। कलिजुग बेड़ा लए तराया, एका देवे सच सलाह। सतिगुर चरन सच्ची सरनाया, निथाव्यां देवणहारा साचा थाँ। दरगाह साची धाम सुहाया, फड़ फड़ पार कराए बांह। भव सागर ना कोए रुढ़ाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण आपणा खेल खलाया। निरगुण दाता सूरबीर, जोद्धा बली बलवान बलकारया। शब्द निशाना मारे एका तीर, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां करे पार किनारया। त्रैगुण माया घत्ती जाए वहीर, पंज तत्त रोवे ज़ारो ज़ारया। लक्ख चुरासी लथ्थे चीर, चारों कुंट हाहाकारया। ना कोई सहाई पीर फ़कीर दस्तगीर, मुल्ला शेख़ मुसायक मुख शर्मा रिहा। पंडत पांधा कट्टे ना कोए ज़ंज़ीर, अमृत आत्म सीर ना कोए प्या रिहा। बिन सतिगुर पूरे चोटी चढ़े ना कोए अख़ीर, ग्रन्थी पढ़ पढ़ रसना जिह्वा सर्ब हिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी वेख वखा रिहा। लक्ख चुरासी वेखण आया, निरगुण जोती जामा धार। गुरमुख

१०६४ साचे परखण आया, गुर गोबिन्द कर प्यार। लक्ख चुरासी विच्चों रक्खण आया, निहकलंकी जामा धार। सतिजुग साचा १०६४

मार्ग दस्सण आया, सोहँ शब्द सच्चा जैकार। लस्सी विच्चों मक्खण वरोलण आया, नाम मधाणा एका डार। घर घर अंदर

०६ डूँघी कंदर फोलण आया, काया कप्पड़ खोल्ह बन्द किवाड़। गुरमुखां अंदर आपे बह बह बोलण आया, नाद सुणाए सच्ची धुन्कार। धुर दी प्रीत गुरमुखां उत्तों घोल घोली घोलण आया, निरगुण सरगुण कर प्यार। काया चोली आप बदलावण आया, रंग रंगीला देवे चाढ़। गुरमुख जुग जुग विछड़े मेल मिलावण आया, कल कल्की लै अवतार। सम्मत सतारां एका ढोला गावण आया, उच्ची कूक करे पुकार। चार वरनां लोकमात वरोलण आया, ख़ाकी ख़ाक पावे सार। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आपणे कंडे तोलण आया, ऊँच नीच करे विचार। राज राजान शाह सुल्तान जगत ख़ज़ीना फोलण आया, माया राणी आए हार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम करे ख्वार। कलिजुग अन्तिम ख्वारया, चारों कुंट हाहाकार। नाता तुट्टे चार यारया, अल्ला राणी रोवे ज़ारो ज़ार। संग मुहम्मद ना करे प्यारया, ऐनलहक ना कोए विचार। मुकामे हक ना कोए नाअरया, मिले मेल ना बेऐब परवरदिगार। नाता तुटे जीव गंवारया, एका भुलया सांझा यार। चारों कुंट पासा हारया, हरि जू मारे शब्दी मार। खेले खेल जगत जवारीआ, सार पाशा कर त्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कलिजुग क्रिया दए नवार। कलिजुग कूड़ा नाता तुटणा,

अन्त रहिण ना पाईआ। जूठा झूठा पन्ध मुकणा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। लक्ख चुरासी बूटा सुक्कणा, हरया सिंच ना
कोए कराईआ। सिँघ शेर दलेर एका बुक्कणा, कलिजुग झल्ल कूक कूक सुणाईआ। शाह सुल्तानां राज राजानां तख्त छड्ड
छड्ड लुकणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, गोबिन्द लेखा गया लिखाईआ। गुरमुख विरले
सतिगुरू दुआरे आ के झुकणा, जिस सिर उप्पर हथ्थ टिकाईआ। दाणा पाणी सभ दा मुक्कणा, विष्नूं देवे ना रिज़क सबाईआ।
ब्रह्मा नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग सुखदा रिहा सुखणा, कवण वेला प्रभ साचे सच मिले सरनाईआ। शंकर हथ्थ त्रशूल ना
कोए रक्खणा, बाशक तशका ना गल लटकाईआ। गुरमुख विरला पारब्रह्म अबिनाशी करते आपणी सरन रक्खणा, सरनगत
इक्क वड्याईआ। लक्ख करोड़ी करे कक्खणा, करता कीमत कोए ना पाईआ। नौं खण्ड पृथमी होवे घर सक्खणा, दीवा
बाती ना कोई जगाईआ। करे खेल प्रभ अलक्ख अलक्खणा, अलक्ख अगोचर आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सति सतिवादी
साचा मार्ग शाह पातशाह एका दस्सणा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग
तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन उठाए चार वरन, सोया कोए रहिण ना
पाईआ। नेत्र खोले हरन फरन, निज नेत्र नूर रुशनाईआ। किरपा करे हरि करनी करन, करता पुरख दया कमाईआ।
१०६५ ०६ आपे होए तरनी तरन, गुरसिख साचे लए तराईआ। लेखा चुक्के मरन डरन, लक्ख चुरासी ना कोए भवाईआ। बख्शे टेक १०६५ ०६
धुर दरगाही एका चरन, चरन कँवल कँवल फुल महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग
तेरी अन्तिम वर, गुरमुख आपणे रंग समाईआ। गुरमुख अंगीकार कर कर, आपणा भेव जणांयदा। आत्म जोती नूर धर
धर, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। चरन धूढ़ नुहा सर सर, दुरमति मैल गंवांयदा। नाम भण्डारा आपे भर भर, पूजा पाठ
ना कोए करांयदा। दरस दिखाए घर घर, रूप अनूप आप वटांयदा। चार जुग दे विछड़े फड़ फड़, कलिजुग अन्तिम
मेल मिलांयदा। आप बंधाए आपणे लड़ लड़, एका पल्लू नाम उठांयदा। दरस दिखाए अगे खड़ खड़, जोती जोत जोत
डगमगांयदा। साची वस्तू अगे धर धर, त्रै वस्तू मूल चुकांयदा। लेखा चुक्के नारी नर नर, ब्रह्म पारब्रह्म समांयदा। कलिजुग
अन्तिम आपणी किरपा आपे कर, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। पारब्रह्म पति परमेश्वर स्वासी ना कोई सीस ना कोई धड़, रूप
रंग ना कोए वखांयदा। गुरसिखां अंदर जाए वड़, औदां जांदा दिस ना आंयदा। किला तोड़ हँकारी गढ़, माया ममता
मोह चुकांयदा। पंच विकारा मारे मार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आंयदा। आत्म सेजा चरन धर, सुहञ्जणी
सेज आप सुहांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ लए फड़, आप आपणे अंग लगांयदा। जोत अंदर जोती धर, जोती जोत विच समांयदा।

ना जन्मे ना जाए मर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। कलिजुग कूड़ा चुक्के डर, जिस जन आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे पार लँघांयदा। गुरसिख उतरे पार किनारा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। सतिगुर साहिब सुल्तान इष्ट दृष्ट देवे इक्क सहारा, नाम निधान झोली पाईआ। ईश जीव आत्म परमात्म निज घर कर प्यारा, पिण्ड ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। शब्द नाद धुन अगम्म जैकारा, अनहद राग अवल्लड़ा आप सुणाईआ। अमृत आत्म सरोवर ठंडा जल निझर धारा, सच प्याला दीन दयाला नाम प्याईआ। प्रगट हो गुर करतारा, पावे सार निरँकार निराकारा, निरवैर मूर्त अकाल वड वड्याईआ। गुरसिख सोहण सच दुआरा, सतिगुर पूरा पावे सारा, एथे उथे दो जहान वेखणहारा, वेखे मार ध्यान, इक्क जणाए सच निशान, नाम निशाना हथ्थ उठाईआ। गुरमुख गोपी मेला काहन, सीता सुरती पाए राम, सवाणी गोबिन्द करे प्रनाम, साचा हाणी घर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेले मेले आपणे घर, गुर चेले एका आपणे रंग रंगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क इकल्ला अनुभव रूप प्रकाश प्रकाश विच रखाईआ।

❊ २१ भाद्रों २०१७ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह पिण्ड सदा सिँघ वाला, ज़िला फिरोज़ पुर ❊

०६ सो पुरख निरँजण हरि समरथ, दीन दयाल वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण महिमा अकथ, अवल्लड़ी चाल बेपरवाहीआ। एकँकारा चलाए आपणा रथ, आदि जुगादि सेव कमाईआ। आदि निरँजण हरि प्रगट, नूर उजाला जोत करे रुशनाईआ। श्री भगवान आपणी रक्खे अमोलक वथ, आप आपणे विच टिकाईआ। अबिनाशी करता साचा मार्ग एका दस्स, आप आपणा वेख वखाईआ। पारब्रह्म गाए गाथ, आपणा नाउँ आप उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणे रंग आप समाईआ। निरगुण रंग अवल्लड़ा, दिस किसे ना आंयदा। करे खेल इक्क इकल्लड़ा, अकल कल धारी नाउँ धरांयदा। सच सिँघासण एका मलड़ा, पुरख अबिनाशी आसण लांयदा। नेहचल धाम उच्च अटलड़ा, निरवैर आपणा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप बंधांयदा। निरगुण धार बंधांयदा, पारब्रह्म बेअन्त। जोती जोत डगमगांयदा, खेले खेल श्री भगवन्त। मधु सूदन आप अख्वांयदा, अकाल मूर्त आदि अन्त। दीवा बाती डगमगांयदा, आदि अनादी खेले खेल जुगा जुगन्त। आपणी बणत आप बणांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खलांयदा। निरगुण खेल कर अपारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सचखण्ड निवासी खोल्

दुआरा, सचखण्ड साची सेज सुहाईआ। घर मन्दिर दीपक कर उज्यारा, प्रकाश प्रकाश विच टिकाईआ। सच सिँघासण शाह सिक्दारा, एका हुक्म सुणाईआ। निरगुण अंदर निरगुण बाहरा, निरगुण गुप्त ज़ाहरा रूप वटाईआ। निरगुण शब्द निरगुण जैकारा, निरगुण नाअरा आपणा लाईआ। निरगुण सुन्न अगम्म वसे धूंआँधारा, सुन्न समाध बैठा मुख छुपाईआ। निरगुण निराकार कर अकारा, आप आपणा रूप वटाईआ। निरगुण कँवल निरगुण अमृत धारा, निरगुण फुल फल महिकाईआ। निरगुण ब्रह्म निरगुण पारब्रह्म कर पसारा, निरगुण रूप अनूप दरसाईआ। निरगुण शंकर शाह सवारा, निरगुण वसे हर घट थाँईआ। निरगुण रवि ससि नूर कर उज्यारा, जोत जोत विच टिकाईआ। निरगुण वण्डे वण्ड अगम्म अपारा, आपणी वण्डण आपणे हथ्थ रखाईआ। निरगुण लक्ख चुरासी कर त्यारा, घट घट आपणा रूप दरसाईआ। निरगुण चार खाणी भर भण्डारा, त्रैगुण माया बन्धन पाईआ। निरगुण आत्म ब्रह्म ईश जीव दे सहारा, जगत जगदीश दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ी कार करांयदा। लक्ख चुरासी हो उज्यारा, घर घर विच जोत जगांयदा। लेखा जाणे सूरज चन्न सितारा, मंडल मंडप आप उपांयदा। लोआं पुरीआं बन्ने धारा, ब्रह्मण्डां खण्डां रंग रंगांयदा। रवि ससि मंगण दर भिखारा, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। प्रभ अबिनाशी कोटी रूप वरते तेरा वरतारा, कवण धार रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर आप पढ़ांयदा। रवि ससि हरि शब्द जणाए, आपणा भेव खुलाईआ। आपणी जोत जोत जगाए, जोती जाता बेपरवाहीआ। कोटन कोटि कोट रूप आप प्रगटाए, घट घट करे रुशनाईआ। सगला साथी बण रघुराय, आदि जुगादी वेख वखाईआ। महांसार्थी खेल खिलाए, दो जहानां वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। रवि ससि तेरी साची कार, हरि साचा आप समझांयदा। अठ्ठे पहर चरनां रक्खां उप्पर भार, नेत्र नैण दिस ना आंयदा। नैण मूंद होए करतार, एका नेत्र तेरे तेज सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। इक्क इकल्ला खेल खलाईआ, हरि ख़ालक बेपरवाह। सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ, पुरीआं लोआं रिहा राह तका। आपणी जोत कर रुशनाईआ, थिर घर कुण्डा देवे लाह। कोटन कोटि किरन धराईआ, गिणती विच ना सके आ। इक्क किरन आपणी वण्ड वण्डाईआ, ब्रह्मण्डां खण्डां विच जाए समा। इक्क इक्क इक्क नाल हिस्सा रिहा कराईआ, रवि ससि देवे झोली पा। पारब्रह्म प्रभ होए सहाईआ, तेरी जोत ना सके कोए खिचा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग आपणा गेड़ा आप भवाईआ, बैठण देवे ना किसे थाँ। चारों कुंट आपणे चरनां भार दबाईआ, लेखा जाणे थाउँ

थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जोती जोत जोत प्रगटाईआ। हरि चरन खेल अपारा, रवि ससि सीस उठांयदा। पुरख अबिनाशी निझर धारा, निरवैर आप वहांयदा। चरन कँवल सच सहारा, किरन किरन आप प्रगटांयदा। पावे सार सर्ब संसारा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखांयदा। लोकमात दए आधारा, लक्ख चुरासी वक्त सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे दर, आपणा वेला आप सुहांयदा। रवि ससि दे प्रकाश, प्रभ साचे सगन मनाया। ब्रह्मा विष्न शिव होए दासी दास, दिवस रैण सेव कमाया। करे खेल पुरख अबिनाश, पृथ्मी आकाश वण्ड वण्डाया। विष्नूं तेरा सास ग्रास, पारब्रह्म आपणा भण्डारा रिहा वरताया। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म प्रकाश, लक्ख चुरासी जीव आत्म ईश जीव रंग रंगाया। शंकर तेरा तृखा स्वास, त्रैगुण माया दए बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाया। त्रैगुण माया लक्ख चुरासी बणत बणा, घट भाण्डे आप समाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर सोभा पाईआ। रवि ससि आप चमका, आपणे चरनां हेठ रखाईआ। आपणा गेड़ा रिहा गिढ़ा, गेड़नहारा दिस ना आईआ। एका रंग रिहा रंगा, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खलाईआ। सूरज चन्न हरि जोत जगा, एका रंग रंगाया। ब्रह्मा विष्न शिव लक्ख

१०६८ चुरासी बणत बणा, पारब्रह्म अबिनाशी करते अगे बैठे सीस झुकाया। तेरा लेखा कोई जाणे ना, तेरा भेव किसे ना पाया। १०६८

०६ कवण रूप खेल दए खला, लोकमात होए सहाया। कवण जीव जंत धन्दे देवे ला, कवण मार्ग दए सलाहया। जोती जोत ०६

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेखे घर, माणस मनुख आप उपजाया। माणस तेरी साची वण्ड, पुरख अबिनाशी आप वण्डाईआ। तिन्न सौ सठ्ठ हाडी दित्ती गंढ, आपणी हथ्थीं गंढु पवाईआ। बाहर रक्खया मारु डण्ड, सीस जगदीस वेख वखाईआ। चार रलाए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज खेल खलाईआ। तिन्न सौ पैंठ जीव इंड पिण्ड ब्रह्मण्ड, काया गढ़ आप सुहाईआ। अंदर सुत्ता दे कर कंड, आपणा रवि आपणा ससि आपणा तेज विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मे विष्न शिव समझाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव हरि समझांयदा, माणस मानुख वेख विचार। रवि ससि वण्ड वण्डांयदा, तिन्न छे पंज दए आधार। आपणी खेल आप खलांयदा, चार वरन चार जुग चार बाणी कर प्यार। बारां रासी वेख वखांयदा, निरगुण निरगुण खेल न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, भेव अभेदा आप जणांयदा। बारां रासी खेल अपारा, हरि साचा सच समझांयदा। एका गुण ढाई घर, चन्द उप्पर सूरज धर, जोती जोत जगांयदा। बेअन्त बेपरवाह उप्पर खड़, आप आपणा वेख वखांयदा।

बारां ढइया तीस दर, जगदीस खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दर सुहञ्जणा आप सुहांयदा। बारां तीस वण्ड वण्डा, ब्रह्मे विष्न शिव समझांयदा। बारां तीस लेख लिखा, गुण निधान गुण पांयदा। तिन्न सौ सठ्ठ जोड़ जुड़ा, आपणा कठ्ठ आप करांयदा। एका एक ल्ए उपजा, सो पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा। एका चौका नाल रला, चारे मुख ब्रह्मे सालांहयदा। पंचम मुख ताज बणा, सीस जगदीश आप टिकांयदा। तिन्न सौ पैंठ आपणे रंग रंगा, तिन्न पंच छे संग वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। आपणा पर्दा लाहवणहारा, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश कर उज्यारा, मन मति बुध विच टिकाईआ। अठ्ठां तत्तां खेल न्यारा, अठ्ठे पहर करे रुशनाईआ। अठ्ठ पहर वण्ड संसारा, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। दोहां विचोला बेपरवाह हरि मीत मुरारा, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। अद्धविचकारे रक्खे आपणी धारा, शाह सवार फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा हरि, दरगाह साची सोभा पाईआ। आठ पहर वण्डण वण्ड, दोए दोए रूप प्रगटाया। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, वरभण्डी खोज खुजाया। एका हिस्सा जेरज अंड, दूजा उत्भुज सेत्ज नाल रलाया। अद्धविचकारे सुत्ता दे कर कंड, पुरख अबिनाशी बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचा आप वसाया। त्रैगुण धार हरि निरँकार, एका पहर समाईआ। एका पहर कर विचार, अठ्ठ तत्त करे कुड़माईआ। अठ्ठां तत्तां पावे सार, नौं दर लेखा सहिज सुभाईआ। नौं दर लेखा जाणे जानणहार, सति पुरख निरँजण वड वड्याईआ। नौं अठ्ठ सत्त कर विचार, चवी धार आप बंधाईआ। चवीआं विच्चों होए बाहर, चौपट सार आपणी खेल खलाईआ। एका ढईया मारे मार, आपणी चाल आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घड़ी पल आप हो जाईआ। आपणी वण्ड वण्ड करतार, दर घर साचे सच कराईआ। ब्रह्मे विष्न शिव दए आधार, एका मति तत्त समझाईआ। रवि ससि होया उज्यार, सेवक सेवा सच कमाईआ। जुगा जुगन्तर खेल न्यार, दिवस रैण वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका वस्त झोली पाईआ। कवण रूप होए रैण, कवण रूप दिवस सुहाया। कवण रूप नाता बणे साक सज्जण सैण, कवण रूप मात पित भैण भाया। कवण रूप लेखा चुकाए लहिणा देण, कवण रूप नेत्र नैण दरस कराया। कवण रूप वखाए साचा गहिण, कवण बस्त्र हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अंक दए समझाया। पारब्रह्म समझाए, त्रैगुण अतीता भिन्न। आपणी खेल आप खिलाए, दिवस रैण वण्ड वण्डाए, दिस ना आए कोए चिन्न। जुगा जुगन्तर सेवा लाए, आपणा

पन्ध ना सके कोई गिण। हुक्मी हुक्म आप फिराय, आपे वेखे छिन्न छिन्न। साची वस्त पहलां झोली पाए, भिनड़ी रैण प्यारी भिन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव दित्ता एका वर, आप आपणी वस्त चिन्न। भिनड़ी रैण मिली दात, ब्रह्मा विष्न शिव खुशी मनांयदा। पुरख अबिनाशी कमलापत, साची वण्ड हथ्थ फड़ांयदा। लक्ख चुरासी तन मन नाता तुटे रात, आलस निन्दरा विच भरांयदा। रसना जिह्वा ना गाए कोई गाथ, सगला साथ ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण नाउँ धरांयदा। भिनड़ी रैण आई मात, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। धुर दरगाही एका दात, जीव जंत सर्ब वरताईआ। आपणे नाल जुड़ाया नात, नाता जुड़या विछड़ ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिनड़ी रैण दए वड्याईआ। भिनड़ी रैण पहली वार, आपणा रूप प्रगटाया। आपणे मुख घूँगट लए उतार, सूरज चन्न मुख छुपाया। धरत धवल दए सहार, आपणा पल्लू आप उठाया। लक्ख चुरासी चारों कुंट वेखे वारो वार, आपणा गेड़ा आप दवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा बह समझाया। भिनड़ी रैण पैंडा गया मुक्क, रवि ससि करे चढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे लुक लुक, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। आदि जुगादि सीस जगदीस सभ दा रिहा झुक, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रीती आप चलाईआ। साची रीत चलांयदा, जुगा जुगन्तर साची कार। दिवस रैण वण्ड वण्डांयदा, घड़ी पल कर त्यार। मास बरस खेल खिलांयदा, आठ पहर एका धार। जगत चौकड़ी पार करांयदा, लेखा जाणे आप निरँकार। ब्रह्मे विष्न शिव समझांयदा, लोकमात चले कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। ब्रह्मे विष्न शिव कर अरदास, दर साचे सीस झुकाया। कवण जुग तेरी मुक्के रास, कवण लीला वेख वखाया। कवण रूप होए प्रकाश, नूरो नूर कर रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला पन्ध मुकाया। कवण वेले मुके पन्ध, दिवस रैण रहिण ना पाईआ। कवण वेला मुख छुपाए सूरज चन्द, कवण वेला अन्ध अन्धेरा दए दुहाईआ। कवण वेला होए बख्शंद, लोकमात बख्शश झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अन्त आपणा भेव खुल्हाईआ। भेव खुल्हाए हरि भगवन्त, शब्दी शब्द जणाया। करे खेल प्रभ बेअन्त, बेअन्त प्रभ दी माया। नौं नौं चार चौकड़ी खेले खेल हरि हरि कन्त, दिवस रैण दाई दया सेव कमाया। लक्ख चुरासी गोद बहाए नाल रलाए गुर पीर अवतार साध सन्त, सभ दा लेखा आप लिखाया। जुग जुग महिमा जाणे जणाए हरि अगणत, लेखा लिख ना सके कोई राया। कलिजुग वेला आए अन्त, नौं सौ चुरानवें

चौकड़ी जुग गेड़ा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुलाया। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, निरगुण नरायण आप समझांयदा। निहकलंकी जामा पाउणा, तत्व तत्त ना कोए वखांयदा। आत्म परमात्म वेख वखाउणा, ईश जीव खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आप सुहांयदा। आपणा वेला आप सुहावणा, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जामा भेख वटावणा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। लक्ख चुरासी फोल फुलावणा, घर घर फेरा पाईआ। भगत भगवन्त आप उठावणा, आपणा लेखा दए समझाईआ। दूई द्वैती पर्दा लाहवणा, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। जोत प्रकाश इक्क करावणा, नूरो नूर नूर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेले अन्त बेपरवाहीआ। वेला अन्त सुहावणा, पारब्रह्म हरि करतार। निहकलंकी जामा पावणा, निरगुण निरवैर अगम्म अपार। भिन्नड़ी रैण आप सुहावणा, करे खेल विच संसार। गुरमुख विरले आप उठावणा, मेल मिलाए धुर दरबार। जीव जंत गूढ़ी नींद सवावणा, त्रैगुण माया पर्दा डाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे पावे आपणी सार। भिन्नी रैनड़ीए हरि पाए सार, कलिजुग वेला दए दुहाईआ। गुरसिखां नाल कर सच प्यार, तेरा कन्त खुशी मनाईआ। बणया विचोला धुर दरबार, साचा ढोला रिहा गाईआ। पर्दा ओहला चुक्के अन्तिम वार, तेरे नेत्र नैण वेख वखाईआ। कलिजुग कूड़ा घूँगट दए उतार, मस्तक रहे ना टिक्का छाहीआ। जागरत जोत होए उज्यार, जगत जगदीस दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भिनड़ी रैण दए वड्याईआ। भिनड़ी रैण चढ़आ चा, उठ उठ खुशी मनाईआ। सतिगुर पूरा मिल्या इक्क मलाह, बेड़ा बन्ने देवे लाईआ। गुरसिख मिलाए जिउँ भैण भ्रा, विछड़ कदे ना जाईआ। बांहो फड़ फड़ ल्ए उठा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। घर घर दर दर जा जा देवे दरस दिखा, नेत्र नैण ना कोए तरसाईआ। आपदा पर्दा आपे देवे लाह, पारब्रह्म ब्रह्म वेखे थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिनड़ी रैण दए वड्याईआ। भिनड़ी रैनड़ीए उठ जाग, सतिगुर पूरा आप जगांयदा। वेला आया अन्त सुहाग, गीत सुहागी हरि हरि गांयदा। गुरसिखां दी फड़ वाग, साची मीढी तेरे हथ्थों गुंदांयदा। हँस बणाए आपणी हथ्थी काग, सोहँ हँसा मोती चोग चुगांयदा। तेरे मन्दिर जगया इक्क चिराग, लोकमात ना कोए बुझांयदा। दुरमति धोवे पिछला दाग, स्वच्छ सरूप आपणी दया कमांयदा। गुरसिखां देवे इक्क वैराग, जगत वैरागी आप हो जांयदा। त्रैगुण माया बुझे आग, तेरी सीतल धारा आप बरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण देवे वर, वर दाता आप हो जांयदा। भिनड़ी रैण मिल्या वर, गुरसिख मेला सहिज

सुभाईआ। कलिजुग अन्तिम चुक्या डर, भय कोए दिस ना आईआ। नर निरँकारा वसया घर, सुहञ्जणी सेज ना कोए वखाईआ। गुरसिखां नाल बंधाया लड़, आपणी हथ्थीं गंढु पवाईआ। लक्ख चुरासी माया ममता अग्नी रही सड़, चारों कुंट भट्ठ तपाईआ। भिनड़ी रैण कहे हरि हरि, हरि जू मिल्या सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रैण भिनड़ी आप समझाईआ। भिनड़ी रैण हरि समझांयदा, गुर सतिगुर वड मेहरवान। आदि तेरा रूप प्रगटांयदा, अन्तिम आपे वेखे आण, आदि लक्ख चुरासी तेरी झोली पांयदा, अन्तिम मिटे जगत निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

✳ २२ भाद्रों २०१७ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड सदा सिँघ वाला ज़िला फिरोज़ पुर ✳

मनमति दुरमति दाग, गुर सतिगुर आप धवाईआ। अनद बिनोदी उपजाए आपणा राग, दिवस रैण एका इक्क बुझाईआ। हँसां हँस मिल्या काग, एका साची चोग चुगाईआ। जगत तृष्ना बुझे आग, अग्नी तत्त रहे ना राईआ। हरि सरनाई चरन कँवल लाग, सरन चरन इक्क तकाईआ। जगत विछुन्नी गई जाग, सुरत निरत वज्जी वधाईआ। पुरख अकाल वर पाया

१९०२ वड भाग, भगती भगवन लेखे लाईआ। गृह मन्दिर जगे चिराग, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, १९०२

०६ आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा दए कटाईआ। जग विछोड़ा कट्टया, हरि सतिगुर सज्जण मीत। गुरमुख विरले ०६

लाहा खट्टया, चरन कँवल सच प्रीत। हरि सतिगुर धाम वखाए इक्क अनडिठया, अगम्म अथाह ऊँचो ऊँच। गुरमुख साची सिक्खी सिख्या, तन मन होया सूचो सूच। सतिगुर धुर दरगाही लेखा लिख्या, लेखा लिखणहार भगवान। गुरमुख विरले मंगी भिख्या, हरि जी देवे जीअ दान। सतिगुर पूरा साजण मीतड़ा, गहर गम्भीर समाए। गुरमुख विरले रंगया काया चीथड़ा, जो जन सरनाई आए। सतिगुर पूरा साहिब सुल्तान, सज्जण पातशाह। गुरमुखां देवे नाम दान, जुगा जुगन्तर बण मलाह। सतिगुर पूरा पाया, मिटया हउमे रोग। गुर सतिगुर दया कमाया, मेल मिलाया धुर संजोग। जगत विछोड़ा रहिण ना पाया, वज्जे वधाई तीनां लोक। जै जैकारा आप कराया, ब्रह्मा विष्न शिव गायण नाम सलोक। सचखण्ड दुआर आप खुलाया, बख्शश कीती चरन ओट। वेले अन्तिम अन्त कन्त भगवन्त सन्त लए मिलाया, आप मिलाए आपणी गोत। वरन बरन विच ना आया, रूप अनूप प्रगटाए कोटी कोटि। हरिजन वेखे थाउँ थांया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देण चुकाए लाड़ी मौत। गुरसिख गुर गुर पेख्या, गुर नेत्र खोलृ ज्ञान। गुर सतिगुर लिखणहारा लेखया,

लेखा जाणे दो जहान। जुगा जुगन्तर धारे भेख्या, सन्त सुहेले वेखे आण। शाहो भूप नर नरेश्या, करे खेल श्री भगवान। मुछ दाढ़ी ना दिसे केसया, रूप रंग ना विच जहान। हरिजन हरिभगत हरी हरि नरायण विरले लोकमात पेख्या, जिस जन कर किरपा दरसन देवे आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्मादि भगत भगवन्त साध सन्त लक्ख चुरासी विच्चों लाध, नाम दाद एका वस्त झोली पाईआ।

❋ २२ भाद्रों २०१७ बिक्रमी सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड मनावां ज़िला फिरोज़पुर ❋

सतिगुर पूरा शाहो भूप, बेअन्त बेपरवाहया। सतिगुर पूरा अनरंग रूप, रूप रेख रंग ना कोए जणाया। सतिगुर पूरा सति सरूप, सति सतिवादी भेव ना राया। सतिगुर पूरा वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा आपणा खेल खलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर आपणा नाउँ धराया। सतिगुर पूरा साहिब सुल्तान, साचे तख्त बिराजया। सतिगुर पूरा वड मेहरवान, आदि जुगादि रचे आपणा काजया। सतिगुर पूरा वड दानी दान, जुगा जुगन्तर चलाए सच जहाजया। सतिगुर पूरा देवणहारा धुर फ़रमाण, सचखण्ड निवासी आपे रचे आपणा काजया। सतिगुर पूरा श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे रक्खे आपणी लाजया। सतिगुर पूरा सो पुरख निरँजण, एका रंग समांयदा। सतिगुर पूरा दीना नाथ दर्द दुःख भय भंजन, दर घर साचे सोभा पांयदा। सतिगुर पूरा दो जहाना साचा सज्जण, सगला संग निभांयदा। सतिगुर पूरा पर्दे होए कज्जण, नाम दुशाला हथ्थ उठांयदा। सतिगुर पूरा राज राजन, शाह सुल्तान आप अखवांयदा। सतिगुर पूरा साचे अश्व चढ़े ताजन, आदि जुगादि आप दौड़ांयदा। सतिगुर पूरा शब्द अगम्मी मारे वाजन, अगम्म अगम्मड़ा बोल अलांयदा। सतिगुर पूरा ग़रीब निवाज़न, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बल धरांयदा। सतिगुर पूरा हरि पुरख निरँजण एक, सच महल्ला सोभा पांयदा। सतिगुर पूरा बख्शी साची टेक, सृष्ट सबाई इष्ट इक्क वखांयदा। सतिगुर पूरा आदि जुगादि लिखणहारा लेख, लिख्या लेख ना कोए मिटांयदा। सतिुगर पूरा थिर घर बैठा रिहा वेख, नेत्र नैण ना कोए उपांयदा। सतिगुर पूरा मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, मूंड मुंडाए ना रूप वटांयदा। सतिगुर पूरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। सतिगुर पूरा एकँकार, अकल कला अखवांयदा। सतिगुर पूरा खेल अपार, खेलणहारा दिस ना आंयदा। सतिगुर पूरा वसे धाम न्यार, उच्च महल्ल अटल आप सुहांयदा। सतिगुर पूरा सचखण्ड दुआरे हो त्यार, सच सिँघासण आसण लांयदा। सतिगुर पूरा

जूनी रहित मरे ना जम्मे विच संसार, पुरख अकाल आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आपे वेख वखांयदा। सतिगुर पूरा निरँजण आदि, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। सतिगुर पूरा खेले खेल जुगादि, जुग करता नाउँ धराईआ। सतिगुर पूरा रहे सदा विस्माद, बिस्मिल आपणा रूप वटाईआ। सतिगुर पूरा शब्द वजाए साचा नाद, तुरीआ धार आप चलाईआ। सतिगुर पूरा बोल सुणाए बोध अगाध, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। सतिगुर पूरा आप लडाए आपणा लाड, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक्क अख्वाईआ। सतिगुर पूरा अबिनाशी पुरख, जन्म मरन विच ना आंयदा। सतिगुर पूरा पंज तत्त ना दिसे सूरत, मन मति बुध ना कोए उपांयदा। सतिगुर पूरा नाता रक्खे ना कूड़ो कूड़त, बन्धन बंध ना कोए बंधांयदा। सतिगुर पूरा एका नूर नुराना नूरत, जोती जोत डगमगांयदा। सतिगुर पूरा आप आपणी आसा मनसा पूरत, आप आपणा वेस धरांयदा। सतिगुर पूरा वसणहारा नेड़े दूरत, दो जहाना खेल खिलांयदा। सतिगुर पूरा नाद वजाए एका तूरत, धुन धुन विच समांयदा। सतिगुर पूरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप रखांयदा। सतिगुर पूरा श्री भगवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सतिगुर पूरा हथ्थ रखाए सच निशान, दरगाह साची आप झुलाईआ। सतिगुर पूरा वड राज राजान, तख्त निवासी बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा देवणहारा धुर फ़रमाण, जुग जुग आपणा हुक्म चलाईआ। सतिगुर पूरा साचा कान्ह, लक्ख चुरासी सखीआं नाच नचाईआ। सतिगुर पूरा एका बख्शे अनेक ज्ञान, एका मन्त्र नाम पढ़ाईआ। सतिगुर पूरा घट घट होए जाणी जाण, अभुल्ल अभुल्ल वड वड्याईआ। सतिगुर पूरा सद मेहरवान, महिबान आपणा नाउँ उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका घर रिहा सुहाईआ। सतिगुर पूरा पारब्रह्म, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। आदि जुगादि ना पए जम्म, जन्म मरन ना कोए रखांयदा। पवण सुआस ना कोए दम, रसना जिह्वा ना कोए हिलांयदा। हरख सोग ना ख़ुशी ग़म, चिंता चिखा ना कोए बणांयदा। सतिगुर पूरा आपे करे आपणा कम्म, आपणी खेल खिलांयदा। सतिगुर पूरा जुगा जुगन्तर बेड़ा बन्न्ह, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। सतिगुर पूरा जोत जगाए बिन छप्पर छन्न, महल्ल अटल ना कोए वसांयदा। सतिगुर पूरा आपणे दीपक आपे बल, प्रकाश प्रकाश विच टिकांयदा। सतिगुर पूरा वसणहारा जल थल, जल थल महीअल आपणा भेव खुल्हांयदा। सतिगुर पूरा करे खेल घड़ी घड़ी पल पल, दिवस रैण बरस मास आपणी धार बंधांयदा। सतिगुर पूरा सच संदेश रिहा घल्ल, एका अक्खर नाम पढ़ांयदा। सतिगुर पूरा सच सिँघासण बैठा मल्ल, निरगुण आपणा कर्म कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दर घर

साचा आप सुहांयदा। सो पुरख निरँजण सतिगुर पूरा, हरि पुरख निरँजण दए सलाहीआ। एकँकारा सतिगुर पूरा, आदि निरँजण दए वड्याईआ। अबिनाशी करता सतिगुर पूरा, श्री भगवान बेपरवाहीआ। पारब्रह्म प्रभ सतिगुर पूरा, इक्क इकल्ला खेल खिलाईआ। निरगुण निरवैर सतिगुर पूरा, मूर्त अकाल वड्डी वड्याईआ। अजूनी रहित सतिगुर पूरा, ना मरे ना जाईआ। शब्द अनाद सतिगुर पूरा, सचखण्ड दुआरे वज्जे वधाईआ। धुर फ़रमाणा सतिगुर पूरा, हुक्मी हुक्म सर्ब फिराईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरताए सतिगुर पूरा, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रचाए सतिगुर पूरा, लोआं पुरीआं आप प्रगटाईआ। लोआं पुरीआं आप प्रगटाए सतिगुर पूरा, विष्न ब्रह्मा शिव लए उपजाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव आपणी गोद बहाए सतिगुर पूरा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। निष्अक्खर रूप सतिगुर पूरा, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा आपणी रचन आप रचाईआ। आदि निरँजण सतिगुर पूरा, हरि पुरख निरँजण खेल खिलांयदा। एकँकारा जोत निरँजण अबिनाशी करता हाज़र हज़ूरा, श्री भगवान वेख वखांयदा। पारब्रह्म वसणहारा नेड़े दूरा, ब्रह्म आपणा रूप प्रगटांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दिसे हाज़र हज़ूरा, दर घर साचे सोभा पांयदा। जोत उजाला जोती नूरा, जोती जोत डगमगांयदा। सर्बकल आपे भरपूरा, समरथ पुरख नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटांयदा। सतिगुर पूरा साहिब मेहरवान, एकँकार वडी वड्याईआ। खेले खेल श्री भगवान, दरगाह साची भेव ना राईआ। सचखण्ड दुआरा खोल्ह् दुकान, थिर घर आपणी सेज सुहाईआ। साचे तख्त बैठ सुल्तान, सीस ताज अगम्म टिकाईआ। एका देवे धुर फ़रमाण, शब्दी शब्द सुणाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां लोआं पुरीआं ब्रह्मा विष्न शिव इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। सतिगुर पूरा हो मेहरवान, साची भिच्छया झोली पाईआ। शब्दी मेला दो जहान, दो दो धार वखाईआ। निरगुण सरगुण होए प्रधान, निरवैर आपणी कल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, दर घर साचा आप सुहाईआ। शब्द सुणया हरि फ़रमाण, निरगुण सरगुण रूप प्रगटांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव लगाया कान, धुर फ़रमाणा हरि जणांयदा। करे खेल श्री भगवान, अगम्म अगम्मड़ी कार करांयदा। लक्ख चुरासी करे प्रधान, त्रैगुण माया मति मन बुध पंज तत्त निशान, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। घर मन्दिर घर इक्क मकान, घर घर विच आप सुहांयदा। उप्पर बैठा शाह सुल्तान, आप आपणा आसण लांयदा। पारब्रह्म प्रभ देवे दान, आपणी वण्ड अन्त वण्डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर आपणा नाउँ धरांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव पड़दा खोल्ह्, पुरख अबिनाशी भेव जणांयदा। नाद अनादी एका बोल, अगम्म अगम्मड़ा आप सुणांयदा। सचखण्ड

निवासी सच दुआरे करे कौल, दे मति आप समझांयदा। करे खेल उप्पर धौल, धरनी धरत धवल सुहांयदा। लक्ख चुरासी जाए मौल, ब्रह्मा बूटा मात लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा सतिगुर, साची सिख्या आप समझांयदा। सतिगुर पूरा हरि भगवान, ब्रह्मा विष्न शिव पढ़ाईआ। सतिगुर पूरा नौजवान, ना मरे ना जाईआ। दरगाह साची करे इक्क बिसराम, सच सुहञ्जणी सेज हंढाईआ। नौं नौं चार वेखे आपणा काम, नेहकर्मी खेल खलाईआ। त्रै त्रै बणाए नगर ग्राम, जगत खेड़ा दए वसाईआ। वरभण्डी बोले इक्क कलाम, जुग जुग आपणा नाउँ प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका अक्खर हरि हरि पढ़, त्रै त्रै सीस झुकाया। कवण दुआरे सतिगुर साचा आदि जुगादि रहे खड़, कवण दुआर जगत सुहाया। कवण पौड़े जाए चढ़, कवण मंडल डेरा लाया। कवण रूप दरस दिखाए अगे खड़, जोती जोत डगमगाया। कवण सो वेला किरपा देवे कर, कर किरपा होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ सेवक ढह पए सरनाया। विष्न ब्रह्मा शिव ढह ढह सरनाई, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सतिगुर पूरे तेरी झल्ली ना जाए जुदाई, तेरा विछोड़ा सहि ना सके राईआ। कवण वेला कवण वक्त ब्रह्म पारब्रह्म होए कुड़माई, ब्रह्म लेखा झोली पाईआ। कवण दर विष्नूं वज्जे वधाई, विश्व आपणा मंगल गाईआ। कवण घर शंकर मंगे चाँईं चाँईं, भिखक भिच्छया इक्क वखाईआ। कवण वेला सतिगुर पूरा पकड़े बांही, आप आपणे गले लगाईआ। कवण वेला सतिगुर पूरा देवे ठंडीआं छाईं, बिरहों अग्ग रहे ना राईआ। कवण वेला एका नज़र आए पिता माई, पिता पूत एका रंग समाईआ। कवण वेला नौं नौं चार घाल पाए थाईं, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। कवण वेला कर सच नयाईं, जुग जुग आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिगुर कवण रूप प्रगटाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आप सुहाया, एका तत्त वखांयदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा रिहा दवाया, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाया, सूरज चन्न हुक्मे आप फिरांयदा। लक्ख चुरासी जोत आप उपाया, अजूनी रहित जोत जगांयदा। चार चार वक्ख कराया, चारे मुख सलांहयदा। चारे बाणी आप पढ़ाया, चारे खाणी रंग रंगांयदा। चार वरनां लए समझाया, चार जुग रूप प्रगटांयदा। नौं नौं चार वेस धराया, गुर पीर अवतार साध सन्त जोत जगांयदा। भगत भगवन्त मार्ग लाया, आपणा पन्ध आप वखांयदा। शब्द अनादि इक्क धराया, जुग जुग नाद वजांयदा। करे खेल बेपरवाहया, वेद कतेब भेव ना पांयदा। चारे वेद पुराण अठारां मुख शर्माया, हरि का रूप दिस ना आंयदा। अठारां अध्याए गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाया, मूर्ख मूढ़े धन्दे लांयदा। अञ्जील

कुराना कलमा आप पढ़ाया, नबी रसूलां आयत शरीयत आप सुणांयदा। नाम सति आप उपजाया, वाह वाह गुरू फ़तह बोल सुणांयदा। निरगुण सरगुण लए उठाया, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा दए चुकाया, वेला आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल करे बेपरवाहया, बेपरवाह भेव ना आंयदा। राह तक्कण दिवस रैण दाई दाया, पूत सपूता कवण जांयदा। जोती जोत आप अख्वाया, पारब्रह्म ब्रह्म नाता आप जुड़ांयदा। पुरख बिधाता निरगुण निरवैर नूरो नूर डरमगाया, नूर नुराना खेल खिलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव तेरा पन्ध दए मुकाया, आपणा पन्ध पान्धी आप वखांयदा। त्रैगुण डोरी तन्द दए तुड़ाया, कच्ची तन्द दिस ना आंयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा आपणा रंग दए चढ़ाया, रंग रंगीला इक्क वखांयदा। लोकमात वेखे खेल थाउँ थांया, नौं सत्त फेरा आपे पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हांयदा। नौं नौं चार गुर पीर लए अवतार, सतिगुर ओट इक्क रखाईआ। सतिगुर पूरा एकँकार, एका वसे धाम न्यार, सचखण्ड बैठा सेज हंढाईआ। चारे जुग बणे भिखार, दर मंगण वारो वार, देवणहारा इक्क अख्वाईआ। करे खेल अपर अपार, शब्द अनादि सच्ची धुन्कार, गुर सतिगुर आप सुणाईआ। सरगुण होए वरते विच संसार, निरगुण रूप ना कोए जणाईआ। जो आया कूके करे पुकार, पुरख अकाल ओट रखाईआ। सृष्ट सबाई करे पुकार, बिन हरि अवर ना कोए सहाईआ। जुग जुग मारनहारा मारे मार, गुर पीर देण गवाहीआ। कलिजुग अन्तिम करे ख्वार, नौं नौं चार पन्ध मुकाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव रहिणा ख़बरदार, तेरी निन्दरा दए गंवाईआ। विष्नूं करे दर भिखार, ब्रह्मे ब्रह्म नेत्र इक्क खुल्हाईआ। शंकर चरन धूढ़ बख्शे खार, ख़ाकी ख़ाक मस्तक टिक्का इक्क रमाईआ। निरगुण निरवैर प्रगटे लोकमात लै अवतार, निहकलंका आपणा नाउँ धराईआ। सतिगुर रूप प्रगट होए विच संसार, गुरू गुर ना वण्ड वण्डाईआ। आपणे हुक्म वरते वरतार, दूजे दर ना मंगण जाईआ। साचा घर करे त्यार, आपणी सेव आप कमाईआ। सम्बल वेखे विगसे पावे सार, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक्क अख्वाईआ। सतिगुर सच्चा दीन दयाला, दया निध अख्वांयदा। सचखण्ड सुहाए सच्ची धर्मसाल, जिस दर आपणा चरन टिकांयदा। आदि जुगादी ब्रह्म पाए पारब्रह्म साची माला, अजपा जाप करांयदा। चरनां हेठ दबाए काल महांकाला, आप आपणा बन्धन पांयदा। कलिजुग अन्तिम तोड़े झूठ जंजाला, कूड़ कुड़यारा रहिण ना पांयदा। ब्रह्मे विष्न शिव तेरा बणे दलाला, पुरीआं लोआं वेख वखांयदा। हरिभगत हरिसन्त गुरमुख गुरसिख जुग जुग घाल जो रहे घाला, वेले अन्त मेल मिलांयदा। निरगुण सरगुण दस्से राह सुख़ाला, चरन प्रीती जोड़ जुड़ांयदा। अमृत आत्म वखाए साचा ताला, सर सरोवर इक्क नुहांयदा।

११०७

०६

घर प्रकाश कराए कोटन भाना, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। शब्द अगम्मी मारे बाणा, पंचम मोह चुकांयदा। इक्क वखाए सच निशाना, सति सतिवादी आप झुलांयदा। अनहद अनाहद गाए गाणा, छत्ती राग भेव ना आंयदा। गुरमुख नाम मस्ती रहे मस्ताना, मस्तक लहिणा झोली पांयदा। सति सतिवादी बन्ने गाना, दरगाह साची सगन मनांयदा। प्रगट होए जोद्धा सूर बली बलवाना, सतिगुर पूरा एका नाउँ धरांयदा। पावे सार दो जहाना, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। गुरमुख आवण जाण चुकाए काना, राए धर्म डन्न ना कोई लगांयदा। ब्रह्मे विष्न शिव तेरी वेखे अस्थाना, थान थनंतर आप सुहांयदा। गुरमुख साचे करे प्रधाना, ब्रह्मा शिव आपणी जोत मिलांयदा। करोड़ तेतीसा मेट निशाना, सुरपति डेरा आपे ढांयदा। देवे माण बाल निधाना, निर्धन साचे तख्त सुहांयदा। विष्नूं शिव तेरा पूरा करे कौल श्री भगवाना, कीता कौल भुल्ल ना जांयदा। ब्रह्मे तेरा पारब्रह्म टिकाना, ब्रह्म पारब्रह्म समांयदा। सतिगुर पूरा एका एक एकँकारा खेले खेल दो जहाना, दो जहाना वाली आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा सबाई सृष्ट इक्क इष्ट जणांयदा। आपणा इष्ट इष्ट देव गुर, नमो वास्तक आप समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण बणाए बणतर, शब्द चलाए आपणा मन्त्र, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ।

✱ २३ भाद्रों २०१७ बिक्रमी करनैल सिँघ दे गृह पिण्ड शाहवाला तहिसील ज़ीरा ज़िला फिरोज़पुर ✱

सतिगुर पूरा जाणीए, इक्क इकल्ला एकँकार। सतिगुर पूरा जाणीए, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार। सतिगुर पूरा जाणीए, निरगुण नूर जोत उज्यार। सतिगुर पूरा जाणीए, सचखण्ड वसे धाम न्यार। सतिगुर पूरा जाणीए, शब्द अगम्मी बोले जैकार। सतिगुर पूरा जाणीए, जुगा जुगन्तर करे खेल अपार। सतिगुर पूरा जाणीए, निरगुण सरगुण दए अधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी कार। सतिगुर पूरा जाणीए, हरि सज्जण साचा मीत। सतिगुर पूरा जाणीए, आदि जुगादी इक्क अतीत। सतिगुर पूरा जाणीए, जुगा जुगन्तर ठांडा सीत। सतिगुर पूरा जाणीए, शब्द अनादि सुणाए सुहागी गीत। सतिगुर पूरा जाणीए, पतित पापी करे पतित पुनीत। सतिगुर पूरा जाणीए, एका रंग रंगाए हस्त कीट। सतिगुर पूरा जाणीए, एका वसे धाम अनडीठ। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी रीत। सतिगुर पूरा जाणीए, साहिब सच्चा सुल्तान। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्क उडाए शब्द निशान। सतिगुर पूरा जाणीए, लेखा जाणे दो जहान। सतिगुर पूरा जाणीए, जुग जुग लक्ख चुरासी वेखे

११०६ ०६

आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर फ़रमाण। सतिगुर पूरा जाणीए, हरि सज्जण सच्चा पातशाह। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्क इकल्ला बेपरवाह। सतिगुर पूरा जाणीए, सचखण्ड वसे सच महल्ला सिफ्ती सिफ्त सालाह। सतिगुर पूरा जाणीए, पाए सार जलां थलां जल थल महीअल रिहा समा। सतिगुर पूरा जाणीए, शब्द संदेश एका घल्ला हुक्मी हुक्म आप वरता। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मार्ग दए वखा। सतिगुर पूरा जाणीए, दाता गुण निधान। सतिगुर पूरा जाणीए, लोकमात वेखे मार ध्यान। सतिगुर पूरा जाणीए, शब्द जणाए धुर फ़रमाण। सतिगुर पूरा जाणीए, जुग जुग खेले खेल श्री भगवान। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी आण। सतिगुर सच्चा आखीए, एका पुरख अकाल। सतिगुर सच्चा साखीए, दीनां बंधप दीन दयाल। सतिगुर सच्चा भाखीए, जोती जल्वा नूर जलाल। सतिगुर पूरा अलक्खणा अलाखीए, अलक्ख अलक्खणा बेमिसाल। सतिगुर पूरा दासी दासीए, सेवक सेवा करे सदा सखाई रहे प्रितपाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे चले आपणी चाल। सतिगुर पूरा वडियाई वड, हरि वड्डा आप अख्वांयदा। आप आपणा आपणे विच्चों कढ्ढ, आपे वेख वखांयदा। आप लडाए आपणा लड, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखांयदा। आप वजाए आपणा नाद, धुन नाद आप सुणांयदा। आपे जाणे भेव बोध अगाध, जुग जुग लेखा आप मुकांयदा। लेखा जाणे सन्त साध, भरम भुलेखा ना कोए जणांयदा। गुरमुख साचे लए काढ, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। गुरसिखां रक्खे दे कर हथ्थ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। पारब्रह्म पुरख समरथ, सगला संग आप निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खलांयदा। सतिगुर पूरा खेल खलंदड़ा, ख़ालक ख़लक रूप समाए। जुग जुग आपणा वेस वटंदड़ा, सतिजुग त्रेता द्वापर फेरी पाए। भगत भगवन्त वेख वखंदड़ा, सन्त साजण मेल मिलाए। गुरमुखां हउमे रोग मिटंदड़ा, आसा तृष्ना रहिण ना पाए। गुरसिखां एका चोग चुगंदड़ा, नाम रस रसीआ मुख चवाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस धराए। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, सतिगुर पूरा आप करांयदा। जन भगत फड़ाए आपणा पलड़ा, दो जहानां खेल खिलांयदा। आपणी जोती आपे रलड़ा, आपे शब्द डंक आप वजांयदा। आपे दस्से राह सुखलड़ा, आपे पान्धी मार्ग पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। जुग जुग खेल खलाया, सतिजुग त्रेता लै अवतार। द्वापर आपणी जोत जगाया, निरगुण सरगुण मेला विच संसार। कलिजुग कप्पड़ आप हंढाया, काला सूसा तन श्रंगार। मैहन्दी रंगण रंग रंगाया, दिशा लहिंदी कर विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार। सतिगुर पूरा धुर दरबारी, दरगाह साची धाम सुहांयदा। प्रगट करे जोत निरँकारी, निरगुण आपणा वेस वटांयदा। रूप अनूपा शाहो भूप सच्चा सिक्दारी, शाह सुल्ताना आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लहिणा आप मुकांयदा। सतिजुग लहिणा दुआर पाल, प्रभ आपणी सेव कमाईआ। त्रेता तेरा बणे रखवाल, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। खरदूखण आपे सुरत संभाल, लछमण तीर कमान चलाईआ। द्वापर जोद्धा बलि बलिवान, दोशाषन देवे वड वड्याईआ। कलिजुग करे खेल महान, एका जोती जोत डगमगाईआ। नानक मिल्या निरगुण निगहबान, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा बेपरवाहीआ। नानक सतिगुर पूरा पाया, पारब्रह्म करतार। आप आपा विच समाया, दूई द्वैती ना कोए विचार। एका अक्खर आपणी वस्त रखाया, दूजी वस्त ना कोए आधार। एका सथ्थर आपणे हेठ विछाया, जगत सथ्थर कर ख्वार, घर वक्खर इक्क सुहाया, मिल्या मेल एकँकार। जोती जोत डगमगाया, जोती जोत होए उज्यार। किला कोटी कोटि कोट गढ़ वसाया, लक्ख चुरासी दए अधारा। आपणी चोटी आपे आसण लाया, पलँघ रंगीला सेजा कर त्यार। छैल छबीला कन्त हंढाया, आप आपणी भुजां पसार। जगत कबीला आप वसाया, जोती जाता करे प्यार। दीपक दीआ आप टिकाया, अन्ध अन्धेरा दए

१११० ०६ निवार। अंगीकार आप कराया, आपणे अंगण रक्ख निरँकार। साचा संगी जगत बणाया, पुरख अबिनाशी पावे सार। जोती १११० ०६

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका नूर होए उज्यार। एका नूर हरि उज्यारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। एका जोत दस अवतारा, काया कंचन गढ़ सुहाईआ। एका मात पित एका सुत दए हुलारा, एका गोदी गोद सुहाईआ। एका खड़ग इक्क कटारा, एका चण्ड प्रचण्ड चमकाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआरा, घर बारा इक्क वसाईआ। एका वसे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, एका सथ्थर रिहा हंढाईआ। एका सतिजुग त्रेता द्वापर पावे सारा, पूर्ब विछड़े लए मिलाईआ। एका हथ्थ तीर कमान सुट्टे कटारा, एका गल अल्फ़ी आप हंढाईआ। नीले बस्त्र कर त्यारा, करे खेल नीले वाला माहीआ। ढाई गज़ बन्नृ दस्तारा, साढे तिन्न हथ्थ अल्फ़ी तन छुहाईआ। चवी चुरासी कलीआं कर श्रृंगारा, चार वरनां लड़ बंधाईआ। हिन्दू मुस्लिम करे प्यारा, द्वैती दर रहिण ना पाईआ। सच सिँघासण कर त्यारा, जगत खाट इक्क सुहाईआ। उप्पर बैठ परवरदिगारा, कलमा अमाम आपणा आपे गाईआ। खुल्ल्हे केस दरवेश बणे भिखारा, वेस अवल्लड़ा रूप वटाईआ। पीर मुर्शद मुरीद करे एका कारा, ईद दीद आप हो जाईआ। चौधवीं चन्द चमके सितारा, नौं चन्द करे रुशनाईआ। बकर ईद सईद शाह शिकारा, शीआ सुन्नी लए पढ़ाईआ। चरन कँवल उप्पर पर्दा पाए आप गुर करतारा, चरन

११११
०६

कँवल ना किसे दसाईआ। नेत्र नैण कर शंगारा, गुरसिखां प्रेम रत नैणां विच छुहाईआ। करे खेल कमलापत उत्ते धौल धरत, धरनी सीस रही झुकाईआ। कवण जाणे प्रभ तेरी गति मित, तेरी महिमा कथन ना जाईआ। जुग जुग करे साचा हित, पतित पापी लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। सतिगुर पूरा खेल खिलांयदा, ख़ालक ख़लक विच समा। अल्फ़ अल्फ़ी एका पांयदा, गल तसबी लई लटका। गुरसिख सीस माला आप लटकांयदा, आपणे हथ्थां नाल रिहा फिरा। मन का मणका सर्ब भवांयदा, लक्ख चुरासी गेड़ कटा। आपणा वेस आप वटांयदा, आपे वेखे आपणा थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग बणे सच मलाह। जुग जुग मलाह हरि दस्तगीर, दरदीआं दर्द वण्डांयदा। चोटी चढ़े इक्क अख़ीर, शाह हकीर वेख वखांयदा। तबक तौक ज़ंज़ीर, रहिमत आपणे हथ्थ रखांयदा। आब हयात अमिउँ रस नीर, भर प्याला जाम हकीकी आप पिलांयदा। बण दरवेश करे खेल वड पीरन पीर, पीर पैग़म्बर जगत अडम्बर आप रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुअम्बर वेख वखांयदा। नीले बस्त्र बन बनवारी, भूशन सोभा पाईआ। असा मुसल्ला कासा खेल न्यारी, तसबी तसबी नाल बंधाईआ। अल्ला हू अन्ना हू बोल जैकारी, वाह वा तेरी वड वड्याईआ। तूं पीर बेऐब परवरदिगारी, तेरा नूर जल्वा इलाहीआ। तेरी सेव करे सेवक बण बरखुरदारी, सेवक सेवा सच वखाईआ। उच्च पीर बण जोत निरँकारी, जगत सूसा तन हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणी खेल आप खलाईआ। चारे जुग उठे हो त्यार, माणस रूप वटाईआ। माणस जन्म मिल्या विच संसार, सतिगुर पूरे बूझ बुझाईआ। दर आया परवरदिगार, चरन धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। चार फ़रिशते गए हार, जबराईल मेकाईल असराफ़ील अज़राईल रो रो देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। निरगुण खेल अपारा, सरगुण वेस वटांयदा। सरगुण रूप गुर अवतारा, जुग जुग नाउँ धरांयदा। कलिजुग अन्तिम हो उज्यारा, गोबिन्द सिँघ रूप वटांयदा। सथर यार कर प्यारा, सूलां सेज हंढांयदा। घर बार छड्ड सिक्दारा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पांयदा। मिल्या मेल विछड़या यारा, यार यारी आप निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा दर, जुग जुग आपणा बंक सुहांयदा। मेल मिलाया आप हरि, आपणी दया आप कमाईआ। चार वणजारे लए फड़, एका वणज हट वखाईआ। चारे कूटां लगाए आपणे लड़, चारे कन्नीआं हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणी वण्ड आप वण्डाईआ। वण्ड वण्डाए बणाए बणतर, चौखट सेजा आप

सुहाईआ। आपणी बिध जाणे अन्तर, दूजा भेव कोए ना पाईआ। उत्तर दक्खण जोड़ी जोड़ जुड़ाए, लेखा लेख आप समझाईआ। कंध भार आप चुकाए, करनैल नछत्र नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निराकार करे खेल अपर अपार, पूर्ब पच्छिम लेखा दए जणाईआ।

✻ २३ भाद्रों २०१७ बिक्रमी जरनैल सिँघ दे गृह शाह वाला ज़िला फिरोज़पुर ✻

सतिगुर पूरा बेपरवाह, बेपरवाही खेल खिलांयदा। चुरासी कलीआं अल्फ़ी पा, आरफ़ां मूल चुकांयदा। दोहरफी लेखा लिखे खुदा, लेखा लेख दिस ना आंयदा। आयत शरायत आप पढ़ा, शरअ शरीअत विच टिकांयदा। ऐन ग़ैन अक्ख खुल्हा, ऐनलहक रूप प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। एका अल्फ़ी सत्त रंग, कली कली नाल बंधाईआ। सतिगुर पूरा बणया आप मलंग, नाम मतिहरा हथ्थ उठाईआ। मन का मणका वजाए मृदंग, दो जहानां आप सुणाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, सूरत रब्ब दी आपणे विच छुपाईआ। आपे सुत्ता जगत पलँघ, दिशा कूट ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। एका अल्फ़ी तन शृंगार, बस्त्र बनवारी आप सुहांयदा। कल्गी तोड़ा ना कोई दस्तार, सीस जगदीश ना कोई सुहांयदा। अश्व घोड़े ना होए अस्वार, शाह अस्वारा रूप प्रगटांयदा। खड़ग खण्डा ना कोई कटार, चण्ड प्रचण्ड ना कोई चमकांयदा। कमर कसा ना कोई त्यार, तरकश तीर ना हथ्थ उठांयदा। खिच्चे चिल्ला ना कोई कमान, सच निशान ना कोई वखांयदा। गफ्लत वेखे बेईमान, जगत ईमान डेरा ढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धरांयदा। एका अल्फ़ी तन तन बस्त्र, पंज तत्त सोभा पांयदा। आप बणाए आपणी बणतर, दूसर संग ना कोई रखांयदा। शब्द अगम्मी फड़या शस्त्र, लोहार तरखाण ना कोई घड़ांयदा। वाहिगुरू पढ़े ना कोई मूल मन्त्र, नाम सति ना कोई जणांयदा। आपणी बिध जाणे अन्तर, जगत बसन्तर आप बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार वखांयदा। साची चोली खेल करतार, काया डोली आप सुहाईआ। हौली हौली अंदर वड़या निरगुण निराकार, निरवैर नज़र ना आईआ। करे कराए सच प्यार, उम्मत उम्मती वेख वखाईआ। नबी रसूल बुलाए दर दरबार, कलमा अमाम इक्क सुणाईआ। मुला शेख़ मुसायक करे शृंगार तालीम, ताज़ीम इक्क दरसाईआ। रूप अनूप हरि अज़ीम, अज़मत दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ। शहनशाह गुर सतिगुर पूरा, निरगुण सरगुण

खेल खलाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कीता कौल करे पूरा, आदि जुगादि भुल्ल ना जाया। भगत भगवन्त हाज़र हज़ूरा, ज़ाहर ज़हूर दरस दिखाया। नूर अलाही नूरो नूरा, नूर नुराना डगमगाया। बांग सदा सुणाए शब्द अनादी तूरा, सच महिराबे आसण लाया। खुदी खुदाई तोड़ गरूरा, आसा मनसा पूर कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनरंग आपणा वेस वटाया। चोली रंग अनमोल, लालन लाल रंगाईआ। आपे तोले आपणा तोल, तोलणहारा इक्क खुदाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, दरगाह साची धाम सुहाईआ। कलमी कलमा आपे बोल, आपणी करे सच पढ़ाईआ। आप वजाए अगम्मी ढोल, धुनी धुन विच उपजाईआ। आपणा मन्दिर आपे फोल, आपणा काअबा वेख वखाईआ। आपणी फुलवाड़ी आपे मौल, मौला आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाईआ। लक्ख चुरासी सुण पुकार, एका अल्फ़ी गल सुहांयदा। चार वेद करन पुकार, पुराण अठारां नीर वहांयदा। गीता ज्ञान हाहाकार, नाम निधान ना कोई झोली पांयदा। अञ्जील कुरान उच्ची कूक गावण वारो वार, हक हकीकत ना कोई सलांहयदा। खाणी बाणी करे विचार, साचे हाणी ना कोई मिलांयदा। सृष्ट सबाई होई विभचार, शतरी ब्रह्मण शूद्र वैश एका कन्त ना कोई

१११३ हंढांयदा। चार वरन भृष्टाचार, इष्ट दृष्ट ना कोई खुलांयदा। शाह सुल्तान गए हार, साचा धर्म ना कोई धरांयदा। ग़रीब १११३

निमाणयां सुणे ना कोई पुकार, फड़ बांहो गले ना कोई लगांयदा। धीआं भैणां होए वापार, कुँआरी कन्या हट्ट विकांयदा।

०६ तीर्थ तट होए भिखार, अमृत सरोवर हथ्थ कोए ना आंयदा। भगत भगवन्त ना कोई अधार, भगती भाव ना कोई जणांयदा। ०६

साध सन्त ना दिसे कोई सहार, साचे पौड़े ना कोई चढ़ांयदा। मुल्ला शेख़ होए गंवार, कलिजुग गफ्लत सभ ते पांयदा। पीर दस्तगीर ना चुक्के कोई भार, लक्ख चुरासी फंद ना कोई कटांयदा। पंडत पांधे दर दुआरे करन पुकार, उच्ची कूक सर्ब कुरलांयदा। राम नाम ना पाए कोई तन हार, सीता सुरती ना कोए प्रनांयदा। कान्हा बसंरी वजाए ना उच्ची कूक बोले जैकार, सखीआ मंगल रास ना कोई रचांयदा। चारों कुंट आई हार, कलिजुग कूड़ा डौरु वांहयदा। पुरख अबिनाशी भेव न्यार, शब्द अनादी हुक्म सुणांयदा। गोबिन्द सूरा कर त्यार, सुत दुलारा आप उठांयदा। मेटे रैण अन्धेरी अन्ध अँध्यार, धूंआँधार सर्ब चुकांयदा। आप आपणा आपा वार, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। भाणा मन्ने इक्क करतार, एका अल्फ़ी तन रखांयदा। एका हलफीआ दए ब्यान, हिन्दू मुस्लिम आप समझांयदा। मेरी इच्छया अञ्जील कुरान, जगत भिच्छया झोली पांयदा। मेरा दरस सिदक ईमान, शरअ शरीअत इक्क वखांयदा। चारे मुगल नौजवान, आप आपणे अंग लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेस आप धरांयदा। आपे मुगल मुगलाना, शाह नवाब आप अख्वाईआ।

आपे बेईमान होए शैताना, आपे दूई द्वैती वण्ड वण्डाईआ। आपे देवणहारा धुर फ़रमाणा, धुर दी कार आप कराईआ। आपे शाहो भूप बण सुल्ताना, दरगाह साची धाम सुहाईआ। आपे सचखण्ड उडाए इक्क बिबाना, नाम बिबाण बेपरवाहीआ। आपे देवे धुर फरमाणा, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। आपे खेले खेल दो जहानां, लोआं पुरीआं आपणा बल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी चोली आप हंढाईआ। साची चोली सतिगुर पूरा, आपणे रंग रंगांयदा। गुरमुखां आसा मनसा करे पूरा, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। अमृत आत्म बख्शे सति सरूरा, दिवस रैण खुमार रखांयदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, मस्तक टिक्का धूढ़ लगांयदा। चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, जिस सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। किरपा निध सतिगुर पूरा, कारज सिद्ध आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उत्तर दक्खण वाली वण्ड वण्डांयदा। उत्तर दक्खण वाली वण्ड, पारब्रह्म आप कराईआ। पूर्ब पच्छिम खेल ब्रह्मण्ड, वड वड्डा दए सलाहीआ। चारों वखाए एका कंड, आपणी करवट आप बदलाईआ। इक्क सुणाया सुहागी छन्द, कलमा नबी आप अलाईआ। सोहँ रूप परमानंद, गोबिन्द गोबिन्द विच टिकाईआ। हँ ब्रह्म इक्क अनन्द, आत्म परमात्म वेख वखाईआ। परमात्म सदा बख्शंद, बख्शणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची सेवा आप लगाईआ।
१११४ साची सेवा चार कहार, उच्च पीर उठाया। हक मुसल्ला कर त्यार, बगल कुरान इक्क ईमान शरअ शरीयत दए समझाया। १११४
०६ अमृत रस पीण खाण, लेखा चुक्के दो जहान, नाम खण्डा विच फिराया। नेड़ ना आयण पंज शैतान, करे खेल श्री भगवान, ०६
साख्यात आपणा रूप कराया। वेखे कुरा ज़िमी अस्मान, आलम उलमा मार ध्यान, भेव अभेदा भेव खुल्हाया। झूठी शाही मिटे निशान, सच सुच्च होए मात प्रधान, एका कूके सूरा शूरबीर नौंजवान, दूसर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खलाईआ। चार कहार चुक्कया भार, कदम कदम उठाया। चौदां तबकां बेड़ा पैरां थल्ले दए लताड़, उप्पर आपणा भार रखाया। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, जोती जोत डगमगाया। चारे जुग इक्क जुग, जुग आपणा मेल मिलाया। कलिजुग औध रही पुग, वेला वक्त रिहा समझाया। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जो बैठा रिहा लुक, वेले अन्त जोती नूर करे रुशनाया। चार कुहारा आपणी गोद लए चुक्क, गोबिन्द सेवा आप कराया। आपणी रक्खे उलटा कुक्ख, धन्न धन्न जणेंदी माया। दो जहाना मेटे तृष्ना भुक्ख, त्रैगुण माया नेड़ ना आया। उज्जल करे मात मुख, बचन अमोलक आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए लिखाया। चार कहार कर निमस्कार, दोए मंग मंगाईआ। कवण रूप तेरा करतार, कवण घर वज्जे वधाईआ। कवण मन्दिर तेरा

दरबार, कवण बंक लए सुहाईआ। कवण डंक वजे संसार, कवण वेखे थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी भिच्छया आपे झोली पाईआ। सतिगुर पूरा हो मेहरवान, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। नौं नौं जन्म देवे दान, मानस मानस रूप प्रगटांयदा। ईसा मूसा चुक्के कान, काला सूसा इक्क वखांयदा। शब्द अगम्मी झुल्ले निशान, परवरदिगार आप झुलांयदा। नौं खण्ड पृथ्मी वखाए इक्क ईमान, एका कलमा नबी पढ़ांयदा। एका मस्जिद मन्दिर वसे मकान, वुज़ू नमाज़ इक्क करांयदा। एका वाहिद होए प्रधान, दूसर संग ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा आप समझांयदा। अन्तिम लेखा गुर समझाया, भुल्ल रहे ना राईआ। कलिजुग वेला दए मुकाया, ढईआ नईआ मात चलाईआ। चौदां चौदां पन्ध मुकाया, थिर कोए रहिण ना पाईआ। गुर पीर अवतार दए सलाहया, जुगां जुगन्तर गाईआ। पुरख अकाल होए रुशनाया, निरगुण आपणा नाउँ धराईआ। गोबिन्द सूरा संग निभाया, ना मरे ना जाईआ। मेरा नाउँ शब्द तूरा, घर घर राग सुणाईआ। अन्तिम मनसा करां पूरा, आसा आशा विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अल्फ़ रिहा पढ़ाईआ। एका अल्फ़ लैणी पढ़, दूई पर्दा रहिण ना पांयदा। एका मन्दिर जाणा चढ़, सच महल्ला आप बुझांयदा। एका लड़ लैणा फड़, ना पल्लू कोई छुडांयदा। एका अन्तिम

वेखणा साचा घर, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हांयदा। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, गुर गोबिन्द गया समझाईआ। पुरख अबिनाशी जामा पाउणा, निहकलंक नाउँ धराईआ। गोबिन्द साचा संग निभाउणा, दिस किसे ना आईआ। चौथे जुग चार कहारा जन्म दवाउणा, लोकमात वेख वखाईआ। साची सेवा आप कराउणा, सेवक सेवा इक्क समझाईआ। चुरासी कलीआं अल्फ़ी तन सुहाउणा, सोहणी रचना आप रचाईआ। टिक्का ताज सीस फेर टिकाउणा, प्रगट होवे सच्चा शहनशाहीआ। चार मुख चार कहार दरसाउणा पंजवां मुख पातशाह शाह पातशाह आप अख्वाईआ। गुरसिखां मिटाउणा दुःख, जगत दलिद्र रहे ना राईआ। आपणी गोदी लए चुक्क, जिउँ बालक माता गोद सुहाईआ। जन जननी करे उज्जल मुख, रवि ससि मुख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग दाता आप अख्वाईआ। कलिजुग अन्त सुहावणा, किरपा करे श्री भगवान। चारे जुग पन्ध मुकावणा, लेखा चुक्के जगत निशान। साचा सगन आप मनावणा, चार वरनां इक्क ज्ञान। सृष्ट सबाई रंग रंगावणा, लेखा जाणे दो जहान। धुर फ़रमाणा आप सुणावणा, नाता तोड़े बेईमान। हरिजन साचे वेख वखावणा, पूरन करे आपणा काम। नगर खेड़ा ग्राम वसावणा, लेखे लाए हड्ड मास नाड़ी चाम। आपणा दामन आप फड़ावणा, चरन कँवल बख्शे माण। जरनैल गुरदास संग

समावणा, जिउँ आकाश चमके रवि ससि सूरज भान। पूर्ब लहिणा आप मुकावणा, देवे दरस श्री भगवान। आपणा निउँ निउँ सीस झुकावणा, गुरसिखां उत्तों विटुह कुरबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, लेखा जाणे दो जहान। गुरमुख लेख चुकाया, कर किरपा आप निरँकार। चार वरनां वेख वखाया, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दए आधार। साची सरन इक्क बहाया, मरे ना जम्मे विच संसार। कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाया, पुरख बिधाता मिल्या एका यार। जगत सथ्थर परे हटाया, सथ्थर विछाया एकँकार। एका अक्खर आप पढ़ाया, अक्ख खोलृ बन्द किवाड़। उतर पूर्ब पच्छिम दक्खण फेरा पाया, आप आपणा बल धार। दर दरवेश नाउँ धराया, भिखक बणे आप निरँकार। गोबिन्द सगला संग रखाया, पंज तत्त ना कोए विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि सर्ब जीआं दा सांझा यार।

* २४ भाद्रों २०१७ बिक्रमी गुरदास सिँघ दे गृह पिण्ड शाह वाला ज़िला फिरोजपुर *

जुग जुग खेल निरँकार दा, करे कराए करने जोग। जुग जुग जन भगतां पैज संवारदा, लेखा जाणे धुर संजोग। जुग जुग साचे सन्त वाजां मारदा, दरस दिखाए दर अमोघ। जुग जुग गुरमुख साचे आप उभारदा, शब्द जणाए इक्क सलोक। जुग जुग गुरसिख साचे तारदा, चरन प्रीती बख्शे साची मोख। जुग जुग शब्द विचोला बणे सर्ब संसार दा, लेखा जाणे लोक परलोक। जुग जुग भेस अवल्ला करे गुर करतार दा, इक्क इकल्ला ना कोई हरख सोग। जुग जुग लेखा आपणा आप विचार दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रूप प्रगटाए कोटी कोटि। जुग जुग चाल निरालीआ, निरगुण निरवैर खेल खलाए। जुग जुग जोत अकालीआ, अकल कल रूप प्रगटाए। जुग जुग वेखे सचखण्ड सच्ची धर्मसालीआ, लोकमात बंक वडियाए। जुग जुग रंगे रंग गुलालीआ, रंग गुलाला आप चढ़ाए। जुग जुग गगन मस्तक वेखे साची थालीआ, दीपक दीआ आप टिकाए। जुग जुग जपाए आपणा नाम सुखालीआ, मन्त्र नाम इक्क दृढ़ाए। जुग जुग फेरे साची मालीआ, नाम माला इक्क वखाए। जुग जुग तोड़े जगत जंजालीआ, जागरत जोत कर रुशनाए। जुग जुग घाले साची घालीआ, घालणहारा दिस ना आए। जुग जुग लक्ख चुरासी फल लाए डालीआ, फुल फुलवाड़ी वेख वखाए। जुग जुग धुर दरगाही बणे सच्चा मालीआ, मालक आपणी दया कमाए। जुग जुग ख़ालक ख़लक बणे सवालीआ, आपणी मंगण मंग मगाए। जुग जुग करे प्रितपालक करे खेल दो जहानया, लोआं पुरीआं वेस धराए। जुग जुग करे प्रकाश रवि ससि कोटन भानया, अन्ध

अन्धेर आप गंवाए। जुग जुग पढ़े अनहद अनादी साची बाणीआ, शब्द अगम्मी राग अल्लाए। जुग जुग जाणे अकथ कहाणीआ, कथनी कथ ना सके राय। जुग जुग बणे सच सवाणीआ, साचा कन्त आप हंढाए। जुग जुग देवे धुर फ़रमाणया, आपणी सिख्या सिख समझाए। जुग जुग होवे जाण जाणया, जानणहार बेपरवाहे। जुग जुग जन भगतां देवे माण निमाणया, ग़रीब निमाणे गले लगाए। जुग जुग वेखे चतर सुघड़ स्याणया, मूर्ख मूढ़े भेव ना राय। जुग जुग तख़्त बहाए राजे राणया, जुग जुग ख़ाकी ख़ाक मिलाए। जुग जुग इष्ट देव गुर वेख वखानया, जुग जुग निउँ निउँ सीस झुकाए। जुग जुग होए दर दरबानया, जुग जुग अलक्ख निरँजण अलक्ख जगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला बेपरवाहे। जुग जुग शाह सुल्तान, तख़्त ताज हंढाईआ। जुग जुग वसे सच मकान, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। जुग जुग खेले खेल श्री भगवान, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। जुग जुग ब्रह्मा विष्न शिव पाए आण, जुग जुग हुक्मी हुक्म चलाईआ। जुग जुग लक्ख चुरासी उपजाए इक्क निशान, जुग जुग गेड़ा गेड़ दवाईआ। जुग जुग एका राग सुणाए कान, जुग जुग वेद ब्रह्मा मुख पढ़ाईआ। जुग जुग नाता तोड़े पंज शैतान, जुग जुग मेल मिलाए पंचम सहिज सुखदाईआ। जुग जुग आपणी करे आप पछाण, आपणा पर्दा आप उठाईआ। जुग जुग आपणा आप करे परवान, आप आपणे गले लगाईआ।

११९७ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर साची कार, करे कराए एकँकार, कल कुदरत रूप प्रगटाईआ। ११९७

०६ जुग जुग पुरख समरथ, सर्बकला अख्वांयदा। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही सेव कमांयदा। जुग जुग सुणाए गाथ, बोध अगाधी शब्द उपांयदा। जुग जुग जपाए पूजा पाठ, इष्ट देव गुर रूप प्रगटांयदा। जुग जुग सर सरोवर मारे ठाठ, जलधारा नीर समांयदा। जुग जुग खोले आपणा हाट, वणज वणजारा आप अख्वांयदा। जुग जुग आत्म सेजा सोए खाट, पलँघ रंगीला इक्क सुहांयदा। जुग जुग स्वांगी स्वांग करे नटूआ नाट, ठग्ग ठगौरी आपे पांयदा। जुग जुग होए कमलापात, कन्त कन्तूल आपणी खेल खिलांयदा। जुग जुग उपजाए कँवल फूल, कँवल आपणा नाउँ रखांयदा। जुग जुग जल बंधाए धरत धवल धौल, धरनी धरत आप सुहांयदा। जुग जुग लक्ख चुरासी जाए मौल, रूप रेख रंग ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता वेस वटांयदा। जुग जुग जोग अभ्यास, मन्त्र अन्तर नाम दृढ़ांयदा। जुग जुग खेल पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर वेख वखांयदा। जुग जुग लेखा जाणे पवण स्वास, रसना जिह्वा आप हलांयदा। जुग जुग मंडल मंडप पावे रास, गोपी काहन आप नचांयदा। जुग जुग करे खेल पुरख अबिनास, अबिनासी करता आपणा नाउँ धरांयदा। जुग जुग जन भगतां होए दासी दास, सेवक सेवा आप करांयदा। जुग जुग सन्तन पूरी करे आस, निरासा

कोए ना मात दसांयदा। जुग जुग गुरमुखां बुझाए प्यास, अमृत आत्म मेघ बरसांयदा। जुग जुग गुरसिखां अंदर करे वास, साची सिख्या इक्क पढ़ांयदा। जुग जुग होए ना कदे विनास, आवण जावण खेल खिलांयदा। जुग जुग लहिणा देणा जाणे दस दस मास, मात गर्भ फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधांयदा। जुग जुग नाम शब्द भण्डार, एका एक वरताईआ। गुर गुर रूप विच संसार, जुग करता भेव ना राईआ। जुग जुग लेखा लिखे अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। जुग जुग मात पित अम्मड़ी ना कोए प्यार, गोदी गोद ना कोए सुहाईआ। जुग जुग बाली बुध ना कोए आधार, जवानी जोबन ना कोए हंढाईआ। जुग जुग बुढ़ापा ना करे मात ख्वार, वेले अन्त ना कोए दु:खदाईआ। जुग जुग करे खेल आप निरँकार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। जुग जुग वरते वरतावे सच वरतार, वरतावणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता भेव ना राईआ। जुग करता सिफ्त सालाहीआ, सर्ब गुणां भरपूर। जुग जुग वेस वटाईआ, आदिन अन्ता हाज़र हज़ूर। जुग जुग जोत जगाईआ, जोत उजाला नूरो नूर। जुग जुग जोग कमाईआ, जुग जुग वेखे चरनां धूढ़। जुग जुग रोग मिटाईआ, लक्ख चुरासी कट्टे

जूड़। जुग जुग लोक परलोक सहाईआ, लेखा जाणे नेड़ा दूर। जुग जुग सच सलोक सुणाईआ, राग अनादी एका तूर। जुग जुग हरख सोग मिटाईआ, चिंता दु:ख करे चूर। जुग जुग दरस अमोघ कराईआ, इक्क इकल्ला हाज़र हज़ूर। जुग जुग जन भगतां घर भोग लगाईआ, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आसा मनसा पूर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सर्बकल भरपूर। सर्बकल भरपूरया, पूरन ब्रह्म समाए। करे खेल जोती नूरया, नूरी जल्वा डगमगाए। तन कफ़नी वेखे भूरया, गल माला मणका लए लटकाए। वेस वटाए कूड़ो कूड़या, कूड़ी क्रिया दए खपाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप मनाए। जुग जुग भाणा जाणया, जानणहार करतार। जुग जुग रंग माणया, रंग माणे विच संसार। जुग जुग होए निमाणया, दर भगतां बणे भिखार। जुग जुग तख्तों लाहे राजे राणयां, शब्द खण्डा फड़ कटार। जुग जुग तोड़े माण अभिमानया, ग़रीब निमाणया जाए तार। जुग जुग चिल्ला फड़े तीर कमानया, जुग जुग अश्व होए अस्वार। जुग जुग पाए सार दो जहानया, लोकमात लए अवतार। जुग जुग पहरे नीला बाणया, नीले वाला परवरदिगार। कलिजुग वेला वक्त पछाणया, मेल मिलाया मुहम्मदी यार। चार कहार कर परवानया, सेवा लाए दर दरबान। गोबिन्द बणया माण निमाणया, गल अल्फ़ी तन श्रंगार। खुलड़े केस इक्क वखानया, दर दरवेश परवरदिगार। ब्रह्मा विष्न शिव सीस निवानया, नेत्र रोवण ज़ार ज़ार। कवण जाणे तेरे भाणया, कवण रूप वरते विच संसार। विष्नूं देवे

तेरा दित्ता पीणा खाणया, वरते वरतावे आप करतार। ब्रह्मे रंग एका माणया, ब्रह्म रूप सिरजणहार। शंकर हथ्थ त्रशूल वखानया, तिन्नां लोकां मिले बाहर। करे खेल श्री भगवानया, लोकमात लए अवतार। पुरख अकाल खेल दो जहानया, निरगुण सरगुण बन्ने धार। सुत दुलारा आप उठानया, जोती जोत कर प्यार। आपणा इष्ट आप वखानया, नाता तोड़ सर्ब संसार। मात पित पुत्तर धीआ संग ना कोए वखानया, किला कोट ना महल्ल उसार। गुरमुख गुरसिख भगत भगवन्त शब्द सरूपी आपणे रंग रंगानया, आप आपणा करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जाणे आपणी कार। जुग जुग कार कमांयदा, वेखे झूठी शाह। जुग जुग हुक्म सुणांयदा, वड दाता बेपरवाह। जुग जुग तख्त ताज उलटांयदा, लक्ख चुरासी करे सफ़ा। जुग जुग आपणा भेस धरांयदा, निरगुण निरवैर रूप खुदा। जुग जुग आपणा नाम वड्यांअदा, नाउँ निरँकारा आप अख्वा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। जुग जुग झूठी शाही कर त्यार, लोकमात दए वड्याईआ। जुग जुग सुहाए गढ़ हँकार, माया ममता मेल मिलाईआ। जुग जुग आसा तृष्ना करे प्यार, जुग जुग जूठ झूठ करे कुड़माईआ। जुग जुग हउमे हंगता करे उडार, जुग जुग काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाईआ। जुग जुग राज राजानां शाह सुल्तानां घर घर कराए विभचार, विद्या अक्खर जगत पढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, मुख मुख चार वेख वखाईआ। बत्ती दन्द गए हार, बत्ती हज़ार रहिण ना पाईआ। काला वेस करया गुर करतार, गोबिन्द अल्फ़ी तन छुहाईआ। चार वरनां वसया बाहर, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आपणा वरन ना कोए जणाईआ। नेहकर्मी कर्म करे संसार, कर्म कांड मूंड मुंडाईआ। साचा धर्म इष्ट पूजा पुरख अकाल, दूसर गुर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत भोजन वेखे बेपरवाहीआ। जगत भोजन चार जुग, चारे रंग वटांयदा। नौं चार वेखे चुग चुग, छत्ती गेड़ा आप रखांयदा। आपे लेखा जाणे लुक लुक, जीअ दान दाता आप उपजांयदा। आपे तृष्ना आपे भुक्ख, आपे तृप्त करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आपणे हस्त रखांयदा। वस्त रखाए दामनगीर, दहि दिशा वेख वखाईआ। नीले बस्त्र पहनया चीर, गुणी गहीर वड वड्याईआ। आपणी रसना मुखी रक्खी तीर, तन कमान इक्क सुहाईआ। लक्ख चुरासी बणया दर फ़कीर, शाह हकीर ना कोए वड्याईआ। आपणा तोड़ आप ज़ंजीर, आपणा रूप आप वटाईआ। आपे बणया उच्च पीर, गोबिन्द सीस कल्गी तोड़ा ना कोए रखाईआ। उच्ची कूक बोले अखीर, चार यारां रिहा समझाईआ। कलिजुग वेला आउणा अन्त अख़ीर, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई लभ्भण थाउँ थाँईआ। किसे हथ्थ ना आवे दस्तगीर, दामन फड़े ना कोए शाहीआ। आपणी खिच्चे आप लकीर, आर पार आपणे

हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे विच टिकाईआ। जगत शाही खेल अपार, निउँ निउँ सीस झुकाया। कलमी कलमा कर शिकार, बिस्मिल अगे रूप टिकाया। सवा गिठ खिच कटार, कवच आपणे हथ्थ उठाया। उत्तर पच्छिम खिच्चे पहली वार, पच्छिम पूर्ब फेर फराया। गेड़ा देवे चार दीवार, नौं खण्ड पृथ्मी घेरा आपे पाया। नाता तोड़ शरअ शरीयत करे ख्वार, अमाम अमामां सिर आप हो जाया। हथ्थीं महिदी रंग लगाए अपर अपार, लहिंदी दिशा वेख वखाया। साची देग कर त्यार, नाम तेग विच फिराया। कलिजुग अंतम पावे सार, अमाम मैहन्दी आपणा रूप वटाया। गोबिन्द सूरा सूरबीर बलकार, शब्द निशान तीर चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा दए मुकाया। शब्द खण्डे भोग लगांयदा, तिक्खी रक्खी धार। आपणा ईमान आप धरांयदा, ईमान ईमानां सिर सिक्दार। सच कलाम आप सुणांयदा, एका बोल हक जैकार। एका कलमा आप पढ़ांयदा, काया काअबा कर विचार। एका आबे हयात आप पिलांयदा, पीवत पी होए खुमार। एका दर्दी दर्द वण्डांयदा, दोज़ख़ बहश्त पावे सार। एका ग़रज़ी ग़रज रखांयदा, कायनात करे प्यार। एका अर्ज़ी चार हथ्थीं आप लिखांयदा, आपे बोल शब्द जैकार। आपणी असती तुहाढ्ढे सीस टिकांयदा, अर्थी चुक्के ना कोए विच संसार। अन्तिम अन्त तुहाढ्ढा प्रेम आपणी अग्नी लम्बू लांयदा, जोती नूर होए उज्यार। काला सूसा तन छुहांयदा, नीला करे ख़बरदार। हक जैकारा एका लांयदा, मल्कुल मौत करे ख्वार। रूह बुत ना कोए अख्वांयदा, सुत मिले पुरख अकाल। दूजी रुत आप सुहांयदा, फल लगाए आपणे डाल्ह। चौथा जुग वेख वखांयदा, कलिजुग अन्तिम खेल निराल। निहकलंकी जामा पांयदा, अबिनाशी करता नौंजवान। मेरी सेवा संग रखांयदा, किरपा कर श्री भगवान। नाम मृदंग इक्क वजांयदा, हथ्थ रखाए सच निशान। चार चारे मेल मिलांयदा, चोरी करे गुण निधान। सतारां सौ बिक्रमी वेख वखांयदा, सम्मत सतारां पूरी करे आण। कलिजुग जीव सर्ब कुरलांयदा, दिस ना आए गुण निधान। गुरमुख विछड़े मेल मिलांयदा, निरगुण सरगुण कर पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

❊ २४ भाद्रों २०१७ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड मुंडी जुम्माल ज़िला फिरोज़ पुर ❊

सो पुरख निरँजण अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ी कार करांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल न्यारा, निरगुण निरवैर आप करांयदा। एकँकारा वसे धाम न्यारा, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। आदि निरँजण जोत उज्यारा, नूर नुराना डगमगांयदा।

११२०
०६

अबिनाशी करता शाह सुल्तान सच्चा सिक्दारा, साचे तख्त आसण लांयदा। श्री भगवान दर दरबान बणे चोबदारा, दरगाह साची सेव कमांयदा। पारब्रह्म आप आपणी चरन करे निमस्कारा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वसे सच महल्ला, धाम अवल्लड़ा आप सुहांयदा। सो पुरख निरँजण सर्ब गुणवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। हरि पुरख निरँजण बेअन्त बेअन्त, बेअन्त निरगुण दाता बेपरवाहीआ। एकँकारा खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग करता नाउँ धराईआ। आदि निरँजण दरगाह साची धाम सुहंत, दीपक जोती जोत कर रुशनाईआ। अबिनाशी करता बणे साचा कन्त, श्री भगवान सेज हंढाईआ। पारब्रह्म आपे जाणे आपणा आदि अन्त, दूसर हथ्थ ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल खलाईआ। सो पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, एका रंग समांयदा। हरि पुरख निरँजण उच्च अटला, नेहचल धाम डेरा लांयदा। एकँकारा वसणहारा जलां थलां, घट घट आपणा खेल खिलांयदा। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बला, जोत निरँजण डगमगांयदा। अबिनाशी करता आप फड़ाए आपणा पल्ला, सगला संग आप निभांयदा। श्री भगवान अछल अछला, वल छल आपणा खेल खिलांयदा। पारब्रह्म सच सिँघासण एका मल्ला, सेज सुहञ्जणी सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण जोत जोत उजाला,

११२१

करे खेल पुरख अकाला, अकल कल आपणी खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजण अकल कल धार, आपणा लेखा आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण हो उज्यार, करे खेल बेपरवाहीआ। एकँकारा सुहाए सच सच्चा दरबार, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। आदि निरँजण हो उज्यार, थिर घर साचे करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता खोल्ह किवाड़, स्वच्छ सरूप अनूप प्रगटाईआ। श्री भगवान करे प्यार, आप आपणा मेल मिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, धुर संजोगी आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर सुहञ्जणा इक्क सुहाईआ। सो पुरख निरँजण घर सुहांयदा, ऊँचो ऊँच अगम्म अथाह। हरि पुरख निरँजण आसण लांयदा, इक्क इकल्ला बेपरवाह। एकँकारा सोभा पांयदा, आदि जुगादी इक्क मलाह। आदि निरँजण डगमगांयदा, दीपक दीआ इक्क टिका। अबिनाशी करता वेख वखांयदा, आपणा मन्दिर रिहा सुहा। श्री भगवान रंग रंगांयदा, रंग रंगाए एका नाँ। पारब्रह्म प्रभ सेव कमांयदा, सोभावन्त सुहाए आपणा थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे करे सच न्याँ। सो पुरख निरँजण थाँ सुहंदड़ा, सोभावन्त हरि करतार। हरि पुरख निरँजण वेख वखंदड़ा, इक्क इकल्ला कर पसार। एकँकार संग रखंदड़ा, आप आपणा बल धार। आदि निरँजण जोत जगंदड़ा, जोती जोत होए उज्यार। श्री भगवान तख्त सुहंदड़ा, सोभावन्त शाह सिक्दार। अबिनाशी

करता हुक्म चलंदड़ा, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। पारब्रह्म आपणी धार आप वखंदड़ा, करे खेल अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपे रिहा विचार। सो पुरख निरँजण सर्ब गुणवन्त, भेव अभेद छुपांयदा। हरि पुरख निरँजण महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए लिखांयदा। एकँकारा आदि अन्त, आपणी धारा आप बंधांयदा। आदि निरँजण जुगा जुगन्त, जागरत जोत डगमगांयदा। श्री भगवान साचा कन्त, दरगाह साची सेज सुहांयदा। अबिनाशी करता बणे मंगत, दर दरवेश फेरी पांयदा। पारब्रह्म लेखा जाणे धुर दरबारा आदि अन्त, मध आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरतांयदा। आपणा हुक्म धुर फ़रमाणा, पुरख अकाल जणाईआ। आप बणाए आपणा सच मकाना, आपणी सेवा आप निभाईआ। आपणा तख्त आप सुहाए राज राजाना, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। आपणा बह बह गाए गाणा, आपणा नाद आप वजाईआ। आपणा दीपक डगमगाना, आपणे घर करे रुशनाईआ। आपणे मन्दिर पीणा खाणा, आपणा अमृत लए उपजाईआ। आपणे दर बणे दरबाना, दर दरवेश सेव कमाईआ। आपणे घर होए नौजवाना, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। आपणा हुक्म वरते करतार, दूजा संग ना कोए रखांयदा। निरगुण निरवैर हो त्यार, मूर्त अकाल रूप वटांयदा। जूनी रहित सच्ची सरकार, साचे तख्त सोभा पांयदा। अनुभव प्रकाश कर उज्यार, निरभउ आपणी खेल खिलांयदा। सति सतिवादी साची धार, सति पुरख निरँजण आप चलांयदा। सो पुरख निरँजण कर प्यार, हरि पुरख निरँजण मेल मिलांयदा। एकँकारा मीत मुरार, आदि निरँजण गले लगांयदा। अबिनाशी करता सांझा यार, श्री भगवान विछड़ ना जांयदा। पारब्रह्म बणे पनहार, दर साची सेव कमांयदा। निरगुण खेल करे बेऐब परवरदिगार, नूरी जल्वा डगमगांयदा। एका हुक्म सच्चे दरबार, धुर दरबारी आप सुणांयदा। साचा मन्दिर होए त्यार, घाड़न साची आप घड़ांयदा। ना कोई बाढी कढ्ढे वगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरतांयदा। सो पुरख निरँजण हुक्म वरताए, लेखा लिख्त विच ना आईआ। हरि पुरख निरँजण बाढी लए उठाए, भेव अभेदा भेव खुलाईआ। एकँकारा सेव कमाए, दूसर कोए ना संग रखाईआ। आदि निरँजण कर रुशनाए, एका रंग वखाईआ। श्री भगवान आपणीआं भुजां आप उठाए, आपणा बल आप धराईआ। अबिनाशी करता एका एक एक लिव लाए रूप अनूप इक्क दरसाईआ। पारब्रह्म आपणी भेंटा आप चढ़ाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खलाईआ। धुर फ़रमाणा धुर दरगाहि, सति पुरख निरँजण आप जणांयदा। इक्क इकल्ला बण मलाह, साचा बेड़ा आप उठांयदा। सिफ्ती सिफ्त सिफ्त दे सलाह, सिफ्त सलाही नाउँ धरांयदा। आपणी

११२२ ०६

रचना आप रचा, आपे वेख वखांयदा। आपे बंक दुआरा दए सुहा, गढ़ आपणा आप उपांयदा। आपे दर दरबारा दए बणा, दरगाहि साची वेस वटांयदा। आपे दीप उज्यारा दए करा, जोती नूर नूर डगमगांयदा। आपे बन्द कुआड़ा दे खुल्हा, अंदर मन्दिर सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरतांयदा। आपणा हुक्म आप मनाया, मन्नणहार आप हो जाईआ। निरगुण दाता निरगुण शाह पातशाह बण जाया, निरगुण निउँ निउँ सीस झुकाईआ। निरगुण दर दरवेश दरबान अख्वाया, निरगुण सीस ताज टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर आप उपाईआ। पुरख अबिनाशी घर उपांयदा, आप आपणी किरपा धार। निरगुण साची सेव कमांयदा, सेवक बणया आप निरँकार। सचखण्ड दुआरा आपणी वण्ड वण्डांयदा, ना कोई दीसे चार दीवार। छप्पर छन्न ना कोए छुहांयदा, करे खेल अगम्म अपार। सूरज चन्न ना कोए चढ़ांयदा, दीपक दीआ ना कोए पसार। धरत धवल ना कोए वखांयदा, मंडल मंडप ना कोए अकार। लोआं पुरीआं ना कोए वसांयदा, ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए भण्डार। शब्दी सुत ना कोए प्रगटांयदा, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए अधार। त्रैगुण माया ना जोड़ जुड़ांयदा, पंज तत्त ना कोए पसार। मन मति बुध ना कोए वण्ड वण्डांयदा, नौं दर ना कोए कुआड़। दस्म दुआरी ना जोत जगांयदा, ना सुत्ता अन्ध अँध्यार। जल थल महीअल ना रूप

११२३ वटांयदा, नाता गंढे ना जंगल जूह उजाड़ पहाड़। उच्चे टिल्ले ना आसण लांयदा, डूँग्घी गार सुत्ता ना पैर पसार। लक्ख ११२३

०६ चुरासी ना रूप वटांयदा, चारे वेद ना रिहा उच्चार। चारे खाणी ना बणत बणांयदा, चारे बाणी ना करे पुकार। पुराण ०६

अठारां ना कोए ध्यांअदा, गीता ज्ञान ना कोए वीचार। अञ्जील कुरान ना कोए पढ़ांयदा, तीसा बतीसा हदीसा ना पावे कोई सार। बाणी बाण ना कोए लगांयदा, रसना जिह्वा ना कोए उच्चार। बत्ती दन्द ना कोए हिलांयदा, छत्ती राग ना गाए वार। राम कृष्न ना कोए अख्वांयदा, ध्रू प्रहलाद ना जाए कोई तार। ईसे मूसे ना रंग रंगांयदा, काला सूसा ना तन शृंगार। चार यारी ना रंग रंगांयदा, मेला मिले ना मुहम्मदी यार। अल्ला राणी ना कूक सुणांयदा, रूप वटाए ना परवरदिगार। मुकामे हक ना राह तकांयदा, मुल्ला शेख़ मुसायक पीर ना पावे सार। पंडत पांधा ना कोए नाउँ धरांयदा, तिलक ललाटी ना करे विचार। ग्रन्थ पूजा पाठ पढ़ ना कोए सुणांयदा, गायत्री हवन ना कोए संसार। बारां अक्षर ना कोए सुणांयदा, नारद सुरस्ती ना कोए आधार। सूरज चन्न ना सीस कोए झुकांयदा, जल नीर ना कोए निमस्कार। ख़्वाजा ख़िजर ना कोए अख्वांयदा, इंदर छैबर ना बरसे धार। करोड़ तेतीसा ना वण्ड वण्डांयदा, गण गंधर्ब ना कूक करे पुकार। अठारां भार ना भार वखांयदा, ना कोई तोला दिसे विच संसार। अक्खर वक्खर ना कोए पढ़ांयदा, विद्या वखम ना कोए प्रचार। छत्री

ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोई अख्वांयदा, अठारां बरन ना हाहाकार। धरत धवल ना कोए सुहांयदा, गुर पीर ना ल्ए अवतार। भगत भगवन्त ना कोए ध्यांअदा, सन्तन कूक कूक रहे ना वाजां मार। गुरमुख खेल ना कोए खलांयदा, गुरसिख करे ना प्यारी नार। नार कन्त सेज ना कोए हंढांयदा, भोगी भोग ना करे अपर अपार। जोगी जोग ना कोए कमांयदा, ख़ाकी ख़ाक ना पाए सिर छार। तन बिभूत ना कोए लगांयदा, सुन्न समाध ना वड़या अन्ध अँध्यार। अठसठ तीर्थ ना कोए नहावण नहांयदा, सर सरोवर ना दए कोए वखाल। पारब्रह्म अबिनाशी करता इक्क इकल्ला एकँकारा आप आपणी खेल खिलांयदा, आप बणाए आपणा घर सचखण्ड सच्ची धर्मसाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे चले आपणी चाल। सचखण्ड दुआरा उपावणा, कर किरपा आप निरँकार। आपणा बाढी आप अख्वावणा, सेवा करे सिरजणहार। आपणी जोत आपणी धार रखावणा, दहि दिशा होए उज्यार। साचा पलँघ आप सुहावणा, निरगुण निरगुण कर प्यार। पावा चूल ना कोए बणावणा, ना कोई घड़े लोहार तरखाण। सति पुरख निरँजण उप्पर आसण लावणा, दिस ना आए अगम्म अपार। सीस साचा ताज सुहावणा, शाहो भूप बण सिक्दार। आप आपणा हुक्म वरतावणा, दरगाहि साची हो त्यार। आपणा चरन
११२४ चरन नाल छुहावणा, अमृत जल दए ठंडी धार। अमृत धारी आप बहावणा, आपे खोल्ले आपणा बन्द किवाड़। सचखण्ड ११२४
दुआरे अंदर थिर घर साचा आप बणावणा, घर घर विच कर त्यार। साचे बह बह आपणी इच्छया आपणी विच रखावणा,
०६ आपे भिच्छया बणे वरतार। आपणा दामन अग्गे डाहवणा, आपे निउँ निउँ करे निमस्कार। निहकर्मी आपणा कर्म कमावणा, ०६
कर्म कांड तों वसया बाहर। सचखण्ड दुआरा आप सुहावणा, थिर घर आए आप करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा सच प्यार। थिर घर वासी पुरख अकाला, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरे गुण निधाना, थिर घर वासा बेपरवाहीआ। थिर घर वासी सच निशाना, सचखण्ड दुआर झुलाईआ। सचखण्ड निवासी हो प्रधाना, थिर घर डेरा लाईआ। थिर घर वासी खेल महाना, सचखण्ड निवासी वेख वखाईआ। सचखण्ड निवासी श्री भगवाना, थिर घर खेल करे बेपरवाहीआ। थिर घर वासी आपणे हथ्थीं फड़या गाना, सचखण्ड निवासी हथ्थ बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। सचखण्ड दुआरे हरि भगवन्त, आपणी सोभा पांयदा। थिर घर वासी बणे नार वेखे सुहागी कन्त, मेल मिलावा आप करांयदा। आपे आदि आपे अन्त, मध आपणा वेस धरांयदा। थिर घर दुआरे बणाए बणत, निरगुण निरगुण जोड़ जुड़ांयदा। निरगुण निरगुण लाया अंगत, अंगीकार आप हो जांयदा। निरगुण दाता निरगुण भिखारी मंगत, निरगुण भिच्छया झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, दर घर साचा आप सुहांयदा। सचखण्ड दुआर कन्त कन्तूल, आपणा खेल खलाईआ। थिर घर विछाई साची सेज फूल, फूलण सेजा आप हंढाईआ। आपे जाणे आपणा कौल, अनुभव आपणी धार रखाईआ। थिर घर वासी सच पंघूड़ा रिहा झूल, नार कन्त खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साची वण्ड वण्डाईआ। थिर घर वण्ड आप निरँकारी, आपणी वण्ड आप करांयदा। आपे बणे कन्या कुँआरी, आपे कन्त सुहाग हंढांयदा। आपे सेज रिहा श्रंगारी, भोग बिलास आप करांयदा। आपे अंदर आपे बाहरी, गुप्त ज़ाहरी खेल खिलांयदा। करे खेल अगम्म अपारी, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। थिर घर साचा बंक दुआरी, दर दरबारा सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप प्रगटांयदा। आपे निरगुण मात पित, नारी कन्त आप अख्वाईआ। आपे निरगुण करे साचा हित, आप आपणा वेख वखाईआ। आपे निरगुण जाणे आपणी रित, रित बूंद आप समाईआ। आपे निरगुण आपणा आपे करे उत्पत, थित वार ना कोए वखाईआ। आपे आपणा आप उपाए साचा सुत, धन्न धन्न बणे जणेंदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे अंदर वड़, आपणा जणेपा आप कटाईआ। थिर घर अंदर सुत दुलारा जाया, पुरख अबिनाशी दया कमांयदा। आपणा पसारा आप वखाया, आप आपणी कल धरांयदा। आपणा भाणा आप
११२५ जणाया, आपणे भाणे सद समांयदा। आपणा फ़रमाणा आप सुणाया, धुर फ़रमाणा आप अल्हांयदा। आपणा मकाना आप सुहाया, ११२५
०६ दर घर साचे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत कर त्यार, एका वर दे निरँकार, ०६
वर दाता आप अख्वांयदा। सुत दुलार उठाया, कर किरपा गुण निधान। थिर घर वासी थिर दरवाज़ा आप खुल्हाया, इक्क वखाया सच निशान। सत्त रंग रूप आप प्रगटाया, निरगुण जोती खेल महान। किला कोटी आप वसाया, दरगाह साची सच मकान। साची चोटी आप बहाया, ना कोई ज़िमी ना अस्मान। गगन मंडल ना कोए वखाया, रवि ससि ना कोए भान। पुरख अबिनाशी एका नज़री आया, जोती जोत नूर महान। सीस साचा ताज टिकाया, पंचम मुख राज राजान। धुर फ़रमाणा रिहा सुणाया, गुण गाए गुण निधान। सुत दुलारा सीस झुकाया, दोए जोड़ मंगे दान। देवणहारा बेपरवाहया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता बेपरवाह, शब्दी देवे सच सलाह, आदि जुगादी मलाह इक्क अख्वाया। शब्द सुत हरि समझांयदा, कर किरपा आप निरँकार। थिर घर दुआरयों बाहर कढांयदा, सुन्न अगम्म वखाए धूंआँधार। तेरी सेवा सच लगांयदा, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। लोआं पुरीआं तेरी झोली पांयदा, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा पसार। सूरज चन्न तेरी किरन चमकांयदा, इक्क इक्क नाल करे प्यार। इक्क तेरी गोद बहांयदा, विष्न विश्व रूप धार। पारब्रह्म

तेरा संग निभांयदा, ब्रह्म कँवल होए उज्यार। शंकर तेरी धार रखांयदा, लेखा जाणे धुर दरबार। साचे सुत सिर तेरे हथ्थ टिकांयदा, भुल्ल ना जाए हरि निरँकार। तेरी रुत आप सुहांयदा, फुल फुलवाड़ी वेखे गुलज़ार। लक्ख चुरासी तेरी वण्ड वण्डांयदा, त्रैगुण माया भर भण्डार। पंज तत्त तेरे अंग लगांयदा, खेले खेल अगम्म अपार। धरत धवल आप सुहांयदा, जल बिम्ब लए उसार। पवणी पवण आप चलांयदा, हवनी हवन करे अधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत दित्ता वर, आप आपणा कर प्यार। सुत दुलारे कर ध्यान, हरि सतिगुर आप जणाईआ। मेरा नाउँ तेरा ज्ञान, तेरा ज्ञान जगत जुग समझाईआ। मेरा हुक्म तेरा फ़रमाण, तेरा फ़रमाण सृष्ट सबाई नाद वजाईआ। तेरा मन्दिर तेरा मकान, तेरा मकान लक्ख चुरासी भाण्डे घड़ बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका शब्द दे वड्याईआ। सुत दुलारे तेरी वण्ड, सति पुरख निरँजण आप उपांयदा। तेरी इच्छया कोट ब्रह्मण्ड, जेरज अंड नाल रलांयदा। तेरी भिच्छया उत्भुज सेत्ज सूरज चन्द, साची सिख्या इक्क सिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका हुक्म आप वरतांयदा। सुत दुलारे उठ बल धार, पुरख अबिनाशी शब्द जणांयदा। तेरी रचना रचे आप करतार, तेरी सेवा सच वखांयदा। तेरे दर पनिहार ब्रह्मा विष्न शिव मंगण वारो वार, जुग जुग आपणी कार करांयदा। तेरा नाम शब्द जैकार, तेरा बन्धन सर्ब बंधांयदा। तेरा खण्डा तेज कटार, चण्ड प्रचण्ड तेरा नाउँ रखांयदा। तेरा ब्रह्मण्ड होए अखाड़, दो जहानां तेरा दर सुहांयदा। तेरा हुक्म वरते वरतार, लोआं पुरीआं आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। धुर फ़रमाणा सुझिआ, सतिगुर साचे आप सुणाया। चरन कँवल दुआरे लुझिआ, निउँ निउँ सीस झुकाया। मात पित भेव खुलाउँणा गुझिआ, पूत सपूता मंग मंगाया। लेखा चुक्के एका दूजया, एका निरगुण रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा दर इक्क सुहाया। दर सुहाए श्री भगवन्त, मंगे मंग भिखारया। तेरी सेवा जुगा जुगन्त, कराई विच संसारया। तूं दाता दानी श्री भगवन्त, तेरी महिमा अपर अपारया। तूं साहिब सुल्तान साचा कन्त, हउँ दासी दास सेवक पनिहारया। तूं मणीआ मेरा मणत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण खेल करे वड बलकारीआ। किरपा कर गुण निधान, आपणी बूझ बुझाए। तेरी सेवा करां दो जहान, नां सदा रखाए। लक्ख चुरासी हो प्रधान, घर घर डौरु डंक वजाए। काल महांकाल वखाए इक्क निशान, दो जहाना आप रखाए। राए धर्म देवां धुर फ़रमाण, चित्रगुप्त लेख जणाए। लाड़ी मौत रखाए नाल रकान, लक्ख चुरासी लै प्रनाए। भगतां सिख्या इक्क समझाए विच जहान, अक्खर

वक्खर नाम पढ़ाए। साचे सन्तां मेले आण, आप आपणी गोद बहाए। गुरमुख राग सुणाए कान, धुन अनादी नाद वजाए। गुरसिख साचे करे पछाण, त्रैगुण माया पर्दा लाहे। तेरा हुक्म श्री भगवान, जुगा जुगन्तर भुल्ल ना जाए। हउँ याचक मंगे दान, साची वस्त झोली पाए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बणया रहिणा निगहबान, सिर आपणा हथ्थ टिकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वर मंगां ढह प्या सरनाए। सुत दुलारा मंगे मंग, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। पारब्रह्म सूरा सरबंग, साची सिख्या इक्क समझाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वज्जे मृदंग, ब्रह्मा विष्न शिव डौरु हथ्थ उठाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघ, जेरज अंडां फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्तिम लेखा इक्क समझाईआ। सुत दुलारे हरि समझाया, भेव रहे ना राईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरा खेल खलाया, चार जुग चौकड़ी एका वण्ड वण्डाईआ। गुर पीर अवतार तेरी सेवा लाया, साध सन्त रहे जस गाईआ। मनमुखां मुख रिहा भुआया, आपणी करवट ना लए बदलाईआ। भरम भुलेखा आपणे हथ्थ रखाया, भरम भुलाए जगत लोकाईआ। जन भगतां मस्तक लेखा वेख वखाया, लेखा लिख्या धुरदरगाहीआ। नर नरेशा अलक्ख जगाया, निरगुण सरगुण कर रुशनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आपणा नाउँ रखाया, पंज तत्त करे कुड़माईआ।

मन मति बुध विच टिकाया, काया हउमे गढ़ सुहाईआ। आसा तृष्ना मेल मिलाया, जूठ झूठ वज्जे वाधाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच समाया, दिस किसे ना आईआ। पंचम नाद शब्द धुन आप वजाया, अनहद सेवा साची लाईआ। टेढी बंक पार कराया, त्रैबैणी नैणी बैठा आसण लाईआ। सर सरोवर सोभा पाया, अमृत साचा ताल रिहा सुहाईआ। कागों हँस लए बणाया, जिस जन आपणी दया कमाईआ। बजर कपाटी तोड़ तोड़ाया, दस्म दुआरी आसण लाईआ। दस्म दुआरी आसण इक्क विछाया, सच सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। निरगुण नूर कर रुशनाया, जोत निरँजण डगमगाईआ। शब्द शब्दी मेल मिलाया, सुरती मिली चाँईं चाँईंआ। चात्रिक तृखा आप बुझाया, बूंद स्वांती जाम प्याईआ। ब्रह्म पारब्रह्म समाया, दूसर रंग ना कोए वखाईआ। सुत दुलारे तेरा पन्ध दए मुकाया, पान्धी बणे सच्चा माहीआ। रवि ससि दिवस रैण सेव लगाया, आदि जुगादि रिहा भुआईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे थाउँ थांया, थान थनंतर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल दीन दयाल सुत दुलारे छोटे बाल, बाल अंञाणे आप समझाईआ। सुत दुलारा छोटा बाला, दीन दयाला आप समझांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, तेरी चाल आप समझांयदा। तेरे वस कराए काल महांकाला, तेरी सेवा सच वखांयदा। निरगुण सरगुण बणे दलाला, लोकमात वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी फल फुलवाड़ी लेखा जाणे

पत डाल्ा, पत पंखड़ीआं फोल फुलांयदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा बणया रहे रखवाला, तेरे सिर हथ्थ रखांयदा। कलिजुग अन्तिम दो जहाना तोड़े जंजाला, आपणा हुक्म आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण आप समझांयदा। निरगुण हुक्म निरगुण फ़रमाण, निरगुण रिहा सुणाईआ। निरगुण आण निरगुण जाण, निरगुण गेड़ा रिहा भुआईआ। निरगुण दाता निरगुण दानी दान, निरगुण भिखक निरगुण भिच्छया झोली पाईआ। निरगुण राग निरगुण गाण, गावणहारा निरगुण अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप वखाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, नौं नौं चार पन्ध मुकाईआ। शब्द सुत तेरा भेव खुल्ाउणा, आप आपणी गोद बहाईआ। जोती जामा जोत जगाउणा, जोती नूर नूर रुशनाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव तेरे संग रलाउणा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। करोड़ तेतीसा फड़ उठाउणा, सुरपति राजा इंद दए हलाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी डंक वजाउणा, सत्तां दीपां भेव ना राईआ। लक्ख चुरासी गेड़ मुकाउणा, गेड़ा गेड़े विच टिकाईआ। निहकलंकी जामा पाउणा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। निरगुण लेखा निरगुण मुकाउणा, सरगुण संग ना कोए निभाईआ। सुत दुलारा आपणी गोद बहाउणा, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप वरताईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आया, अन्त रहिण ना पाईआ। जोती जामा श्री भगवन्त रखाया, भगवन रूप दिस ना आईआ। गुरमुख साचे सन्त उठाया, जुग विछड़े लए मिलाईआ। नारी कन्त इक्क दरसाया, दरस दरस नैण बिगसाईआ। अबिनाशी करते तरस कमाया, हरिजन साचे लए उठाईआ। कलिजुग तृष्ना हरस मिटाया, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। निरगुण शब्द निरगुण ढोला, निरगुण रिहा गाईआ। निरगुण दाता निरगुण विचोला, निरगुण गुर गुर रूप वटाईआ। निरगुण गीत निरगुण सोहला, निरगुण रिहा सुणाईआ। निरगुण कंडा निरगुण तोला, निरगुण तोलणहार अख्वाईआ। निरगुण बदल्लया आपणा चोला, काया चोली ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका शब्द करे कुड़माईआ। शब्द कुड़माई जुड़या नाता, जोती जाता वेख वखांयदा। मेल मिलावा पुरख बिधाता, साची गाथा आप सुणांयदा। लेखा जाणे दानी दाता दिवस राता, सगला साथा आप निभांयदा। मेटे अन्धेरी रैण राता, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। चार वरन प्याए काया अमृत बाटा, अमृत आत्म सर सरोवर इक्क वखांयदा। लहिणा देणा चुक्के तीर्थ ताटा, अठसठ फेरी कोई ना पांयदा। घर घर जोत जगाए लिलाटा, नूरो नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा दर आपे वेख

११२८ ०६

वखांयदा। आपणा दर वेखण आया, कल कल्की लै अवतार। नेत्र लोचण नैण आपणे आपे पेखण आया, प्रगट हो विच संसार। आपणा लेखा धुर दा आपे मेटण आया, आपे लेखा लिखे आपणी वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग कूड़ी क्रिया दए निवार। कलिजुग कूड़ा नाता तोड़ना, तुट्टे सर्ब संसार। जूठा झूठा विकार होड़ना, गृह मन्दिर ना कोई पसार। पंच विकार ना पाए शोरना, आसा तृष्ना ना करे ख्वार। आपणे हथ्थ पकड़े डोरना, मन मनुआ ना होए उडार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए उभार। लक्ख चुरासी खेल अपारा, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। पंज तत्त कर अकारा, निराकार वेख वखाईआ। रक्त बूंद कर पसारा, हड्ड मास नाड़ी रत लाए इटां गारा, बंक गढ़ आप बणाईआ। पंज पंजी खेल न्यारा, तत्व तत्त नाल मिलाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश दए सहारा, मन मति बुध करे कुड़माईआ। कर्मी कर्म भर भण्डारा, नेहकर्मी विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खलाईआ। आपे पंज तत्त पसारा, जीआं दान झोली पांयदा। आपे कर्मां कर वरतारा, कर्म कुकर्मा वेस वटांयदा। आपे धर्म धर संसारा, साचा मार्ग आपे लांयदा। आपे जन्म जन्म लै अवतारा, आपे जूनी जून फेरा पांयदा। आपे पाप पुन्न कर विचारा, साचे कंडे आपे तोल तुलांयदा। आपे मूर्ख मुग्ध होए गंवारा, आपे ब्रह्म ज्ञान दृढ़ांयदा। आपे मारे दोज़ख़ मारा, सच बहश्ती आप सुहांयदा। आपे सचखण्ड वखाए इक्क अखाड़ा, कुंभी नर्क आप फिरांयदा। आपे ज़ोरु ज़र वखाए विच संसारा, हुक्मी हुक्म आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुण अवगुण आपणे हथ्थ रखांयदा। गुण अवगुण खेल करतार, पंच तत्त आप लिखांयदा। आपे सुहाए गढ़ हँकार, माया ममता आप उपांयदा। आपे कूड़ कुड़यारा करे श्रंगार, नार वेसवा रूप वटांयदा। आपे जुग जुग जन्म जन्म पावे सार, पूर्ब आपे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे दोषी आपे निरदोष, आपे दोष सीस लगांयदा। आपे करे पाकी पाक, पतित पावन आप अख्वाईआ। आपे देवे वर सराफ़, आपे चार कुंट भवाईआ। आप सुहाए आपणी खाट, आपे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे पापियां देवे डन्न, आपणा हुक्म आप वरतांयदा। आपे मुशकां देवे बन्न्, आपे तन्दन तन्द हथ्थ उठांयदा। आपे आपणे उत्ते जाए मन्न, मन मनूआ आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात खेल खिलांयदा। लोकमात जीव जंत राजा, रईयत सिक्दार वखाईआ। हुक्मी हुक्म बण नवाबा, हुक्मी हुक्म रिहा वरताईआ। हुक्म मन्ने बण गुलामा, गफ्लत विच कदे ना आईआ।

मुशकां बन्ने विच जहाना, दौलत कोई नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुष्टी राजा इक्क वखाईआ। दुष्टी हुक्म देवणहारा, मन्नणहार निरदोष रखांयदा। पापी डंन देवे विच संसारा, जीव जंत ना कोई बचांयदा। दोहां विचोला आप निरँकारा, आप आपणी खेल खिलांयदा। भोला भाला जीव गंवारा, हरि का भेव कोई ना पांयदा। आपणी बुधी करे विचारा, अनुभव खेल ना वेख वखांयदा। कर्म कुकर्म जुर्म मारे मारा, पूर्ब लेखा आप मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे पापी पाए जूड़, आपे फंद कटांयदा।

✻ २५ भाद्रों २०१७ बिक्रमी बगीचा सिँघ दे गृह पिण्ड मुंडी जमाल ज़िला फिरोज़ पुर ✻

दीन दयाल ठाकर गुणवन्त, प्रितपाल सर्ब सुखदाईआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, नित नवित कार कमाईआ। हरिजन वेखे साचे सन्त, गुर सतिगुर रूप प्रगटाईआ। देवे नाम मणीआ मंत, मंत नाम इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह गहर गुण सागर, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जन भगतां निर्मल कर्म करे उजागर, जुगा जुगन्तर सेव कमाईआ। लेखा जाणे काया सागर, पंचम विचोला सच्चा शहनशाहीआ। नाम वणज

११३० कराए सच सौदागर, हट्ट हटवाना इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता वेस वटाईआ। ११३०

०९ नाम ख़ज़ाना शब्द भरपूर, गुर सतिगुर आप वरतांयदा। आदि जुगादि हाज़र हज़ूर, जुग जुग खेल खिलांयदा। गुरमुखां ०९

आसा मनसा करे पूर, साची भिच्छया झोली पांयदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। जिस जन बख़्शे चरन धूढ़, जन्म जन्म दी दुरमति मैल मिटांयदा। दरस दिखाए दाता सूर, सूरबीर आपणा बल धरांयदा। जोती जाता बख़्शे नूर, अन्ध अन्धेर अज्ञान चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर खेल खिलांयदा। खेल अवल्लड़ा बेपरवाह, आदि जुगादि करांयदा। निरगुण निरवैर बण मलाह, लोकमात वेस वटांयदा। भगत भगवन्त लए उठा, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। शब्द अगम्मी दए सलाह, साचे मन्दिर आप सुहांयदा। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांह, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। सदा सुहेला सिर रक्खे ठंडी छाँ, समरथ पुरख आपणी दया कमांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। गुरसिख बाल अंञाणे उठाए जिउँ बालक गोदी माँ, पिता पूत वेख वखांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सोहँ हँसा चोग चुगांयदा। लेखा जाणे काया नगर खेड़ा ग्रां, सच बंक आप सुहांयदा। निथांवयां देवे साचा थाँ, चरन दुआरा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन सरधन आपणे रंग रंगांयदा।

निर्धन मीतड़ा हरि निरँकार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। गुरसिख काया चोलड़ा रंगे विच संसार, रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। साचा तोला बणे आप निरँकार, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। गुरमुख सज्जण कर त्यार, वेखणहारा थाउँ थाँईआ। बनास्पत वण्ड वण्डाए अठारां भार, गुरसिख चरन धूढ़ तुल ना राईआ। करे खेल अगम्म आपार, अलक्ख अगोचर दिस ना आईआ। आदि जुगादी कर पसार, जुगा जुगन्तर वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, कलिजुग अन्तिम वज्जी वधाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करन पुकार, नेत्र नैण रहे उठाईआ। करोड़ तेतीसा हाहाकार, उच्ची कूक देण दुहाईआ। सुरपति राजा इंदर धाहां रिहा मार, तख्त ताज ना सोभा पाईआ। धरत धवल करे पुकार, पापी जीव रहे कुरलाईआ। चारों कुंट होया विभचार, सति धर्म ना कोए रखाईआ। जीवां जंतां आई हार, हरि का नाम ना कोए ध्याईआ। पढ़ पढ़ विद्या होए ख्वार, आत्मक विद्या ना कोए जणाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना उतरे पार, कलिजुग चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। शाह पातशाह होयण ख्वार, राज राजान रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निर्धन मेला सहिज सुभाईआ। निर्धन हरि हरि मेलया, कर किरपा आप करतार। लेखा जाणे गुरू गुर चेलया, सोहे सच दरबार। धुर दरगाही सज्जण सुहेलया, बेऐब परवरदिगार। आपणा मेल आपे मेलया, पूर्ब लहिणा कर्म विचार। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेलया, भेव ना पायण वेद चार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार। धुर दरबार सुहञ्जणा, हरि साचा आप सुहाए। जोत जगाए आदि निरँजणा, कँवल नैण डगमगाए। दाता दानी दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भय भयानक वेख वखाए। लोकमात जन भगतां बणे साचा सज्जणा, जुगा जुगन्तर साची सेव कमाए। नेत्र पाए नाम अञ्जणा, अन्ध अन्धेर दए मिटाए। चरन धूढ़ कराए मजना, कोटन कोटि जन्म दी मैल धुआए। जो घड़या सो भज्जणा, थिर कोए रहिण ना पाए। बिन सतिगुर पूरे पर्दा किसे ना कज्जणा, लक्ख चुरासी रही कुरलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निर्धन मेला सहिज सुभाए। निर्धन आसा पूरीआ, पूरन ब्रह्म वीचार। पुरख अबिनाशी हाज़र हज़ूरीआ, दर दरवेश बणे भिखार। नाद वजाए एका तूरीआ, तुरीआ धार अगम्म अपार। लेखा चुक्के नेड़ा दूरीआ, दूर नेड़े ना कोए विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे करे प्यार। हरिजन प्रेम पीआ प्रीती, परम पुरख इक्क जणाईआ। आदि जुगादि परखणहारा नीती, घर घर विच आसण लाईआ। गुरमुख विरले काया करे ठंडी सीती, जिस जन त्रैगुण अग्न बुझाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीटी, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। इक्क सुणाए सुहागी गीती, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। पंज तत्त काया होए पतित पुनीती, पतित पावन सतिगुर पूरा मिल्या साचा माहीआ। वख निकले

११३१
०६

कौड़ी रीठी, मिट्ठा रस इक्क चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन शब्द मिलाया, मेल मिलावा धुर संयोग। गुर सतिगुर वेख वखाया, कट्टे हउमे रोग। एका मन्त्र नाम दृढ़ाया, सोहँ शब्द अगम्मी चोग। धुर दरगाही जोग इक्क वखाया, शब्द अनादी गाए सलोक। हरख सोग रहे ना राया, चरन दासी मुक्ती मोख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे लोक परलोक। लोक परलोक वखाणदा, दो जहाना खेल अपार। ब्रह्मण्डां खण्डां पुण छाणदा, लोआं पुरीआं ख़बरदार। लक्ख चुरासी खेल श्री भगवान दा, ब्रह्म पारब्रह्म करे उज्यार। विष्नूं कम्म करे प्रितपालदा, ब्रह्मा जोत होए उज्यार। शंकर हुक्म अन्तिम सँघारदा, हुक्मी हुक्म वरतार। तिन्नां बेड़ा आपे तारदा, त्रैगुण अतीता हरि निरँकार। गुरमुख साचे पैज संवारदा, जुगां जुगन्तर लए अवतार। निरगुण सरगुण मेला नारी कन्त भतार दा, पंज तत्त काया करे शंगार। शब्द सुनेहड़ा साचे यार दा, लोकमात सुणाए वारो वार। सतिजुग त्रेता द्वापर पार उतारदा, कलिजुग आई अन्तिम वार। लेखा जाणे धुर दरबार दा, धुर दरगाही सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। अलक्ख अगम्म अगम्मड़ा, निरगुण निरवैर अकाल। हड्ड मास नाड़ी ना दिसे चमड़ा, जोती जल्वा नूर जलाल। माया ममता ना दमड़ी दमड़ा, दोवें हथ्थ ख़ाली रिहा वखाल। जन भगतां दस्से राह इक्क सुख़लड़ा, जुगत जग अवल्लड़ी चाल। सच सिँघासण आपे मलड़ा, सचखण्ड दुआर सच्ची धर्मसाल। हरिजन फड़ाए आपणा पल्लड़ा, जुगा जुगन्तर चले नाल। हरख सोग ना ख़ुशी गमड़ा, आलस निन्दरा ना खाए काल महांकाल। साचे धाम आप सुहंदड़ा, उच्च महल्ल अटल मुनार एकँकार। शब्द अनादी नाद वजंदड़ा, धुर दी बाणी सच्ची धुन्कार। कलिजुग अन्तिम वेस वटंदड़ा, निहकलंका लै अवतार। हरिजन साचे वेख वखंदड़ा, डुब्बदे पाथर लाए पार। जिस दुआरे चरन छुहंदड़ा, होए बंक मात उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे पावे सार। हरिजन सार संभालदा, सर्ब गुणां गुणवन्त। करे खेल सदा प्रितपाल दा, पारब्रह्म पूरन भगवन्त। रूप प्रगटाए दीन दयाल दा, लेखा चुकाए जीव जंत। माण गुआए काल महांकाल दा, हरिजन वडियाए साचे सन्त। धर्मसाल इक्क वखालदा, हरि मन्दिर मेल मिलावा नारी कन्त। नाता तोड़ जगत जंजाल दा, काया चोली चाढ़े रंग बसन्त। जो जन चरन प्रीती घालण घालदा, सतिगुर पूरा होए सहाई अन्त। लेखा जाणे पत पत डाल्ह दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी महिमा जाणे अगणत। महिमा अगणत पुरख अकाल, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। जुगा जुगन्तर वेस वटाए दीन दयाल, दयानिध बेपरवाहीआ। भगत भगवन्त लए उठाल, पूर्ब कर्मां वेख वखाईआ। सन्तन बणे

आप दलाल, शब्द विचोला फेरा पाईआ। गुरमुख वेखे साचे लाल, लाल अणमुलड़े गोद बहाईआ। गुरसिख फल लगाए काया डाल्, पत डाली आप महिकाईआ। चले चलाए अवल्लड़ी चाल, वेद कतेब भेव ना राईआ। खाणी बाणी करे पुकार, बेअन्त सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। हरिजन गुरमुख गुरसिख, निवण सु अक्खर इक्क पढ़ांयदा। धुर दी बाणी धुर दा लेखा लिख, मस्तक लेखा आप चुकांयदा। नाम अनादी पाए भिक्ख, साची झोली आप भरांयदा। जगत तृष्ना मेटे तृख, माया ममता मोह चुकांयदा। हउमे हंगता लहे विस, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। हरि मन्दिर घर विच घर पए दिस, सतिगुर पूरा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरि मन्दिर सोहे काया गढ़, गुर सतिगुर आप सुहांयदा। निरगुण सरगुण अंदर बैठा वड़, दिस किसे ना आंयदा। आपणे पौड़े आपे चढ़, आपणा बंक सुहांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, आपणा जाप आप जपांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, निरगुण आपणा रूप प्रगटांयदा। दरस दिखाए अगे खड़, स्वच्छ सरूपी खेल खिलांयदा। ना जन्मे ना जाए मर, जूनी जून ना कोए भुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचे वेखणहारा, घट घट रिहा समाईआ। लक्ख चुरासी करे खेल न्यारा, निरगुण सरगुण

११३३ जोत जगाईआ। गुरमुख विरले पाए सारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। अन्ध अन्धेर मिटाए धूंआँधारा, जोत निरँजण ११३३

०६ कर रुशनाईआ। शब्द अनाद सुणाए सच्ची धुन्कारा, धुन आत्मक आप वजाईआ। अमृत बख्शे ठंडी ठारा, चरन चरनोदक ०६

मुख चुआईआ। देवे दरस नैण मुँधारा, नेत्र नैण आप खुल्हाईआ। रोगां सोगां करे पारा, चिंता सोग रहे ना राईआ। जिस मिल्या गुर करतारा, करता कीमत आपे पाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, हरि का भेव ना सके कोए जणाईआ। जुगा जुगन्तर इक्क अवतारा, गुर इष्ट इक्क अख्वाईआ। जन भगतां देवे नाम आधारा, नाम निधाना झोली पाईआ। सृष्ट सबाई करे ख्वारा, चारों कुंट कुंट हलकाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाईआ। नौं सति दए हुलारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा जाणे बेपरवाहीआ। बेपरवाह गहर गम्भीर, गुण अवगुण ना कोए रखांयदा। लेखा जाणे अन्त अखीर, लिख्या लेख ना कोए वखांयदा। शब्द निराला पकड़े तीर, चिल्ला हथ्थ ना कोए उठांयदा। लक्ख चुरासी मारे ज़ंजीर, आपणी आपे गंढु पुआंयदा। नाता तोड़े पीर फ़कीर, शाह हकीर रहिण ना पांयदा। राज राजान होए दिलगीर, धीरज धीर ना कोए रखांयदा। अठसठ तीर्थ वरोले नीर, नाम मधाणा एका पांयदा। माया ममता हउमे हंगता कढ्ढे पीड़, साची संगता मेल मिलांयदा। जूठा झूठा वेखे बस्त्र चीर, तन कफ़नी कौण हंढांयदा।

११३४ आपे चोटी चढ़े अख़ीर, दरगाह साची धाम सुहांयदा। गुरमुखां बख्शे साचा सीर, भर प्याला आप प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कमांयदा। जुग जुग कार कमांयदा, निहकर्मी कर्म वीचार। ग़रीब निमाणे गले लगांयदा, शाह सुल्ताना मारे मार। राउ रंक एका रंग रंगांयदा, इक्क सुहाए बंक दुआर। शब्द अगम्मी डंक वजांयदा, चार कुंट होए जैकार। भगत भगवन्त वेख वखांयदा, नेत्र नैण खोल्ह किवाड़। साचे सन्तां आप उठांयदा, वा लग्गे ना तत्ती हाढ़। गुरमुख आपणी गोद सुहांयदा, दर घर साचे लए वाड़। गुरसिख आपणे अंग लगांयदा, करे प्रकाश बहत्तर नाड़। लाड़ी मौत दर दुरकांयदा, राए धर्म ना करे ख्वार। चित्रगुप्त ना लेख वखांयदा, जो जन चरन सरन करे निमस्कार। वेले अन्त मेल मिलांयदा, लक्ख चुरासी उतरे पार। सतिगुर पूरा दया कमांयदा, भव जल बेड़ा लाए पार। मानस जन्म लेखे लांयदा, नाता तोड़ सर्ब संसार। पुरख बिधाता वेख वखांयदा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। उत्तम ज़ाता आप धरांयदा, वरन बरन ना कोए अधार। जोती जाता आप अख्वांयदा, जोती जोत करे प्यार। इक्क इकांता वेख वखांयदा, दिस ना आए वेखणहार। अंदर मन्दिर जाम प्यांअदा, भर प्याला ठंडा ठार। गुरमुख नारी कन्त मिलांयदा, घर सख़ीआं मंगलचार। जगत विछोड़ा पन्ध मुकांयदा, टुट्टी गंढे गंढुणहार। आपणा लेखा लेखे पांयदा, लेखा कोए ना मंगे दूजी वार। जिस जन आपणी सरन लगांयदा, दो जहानां दए अधार। अन्तिम जोती जोत मिलांयदा, ब्रह्म पारब्रह्म करे प्यार। दरगाह साची धाम बहांयदा, सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़। गुरसिख जन्म मरन विच ना आंयदा, जिस पाया हरि निरँकार। जुग जुग लेखा आप मुकांयदा, शाहो भूप बण सच्ची सरकार। साचे तख्त आप सुहांयदा, सचखण्ड निवासी एकँकार। कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा, रैण अन्धेरी धूंआँधार। गुरसिख गुरमुख आप जगांयदा, सन्त भगत भगवन्त करे प्यार। एका मन्दिर सोभा पांयदा, हरि जू हरी हरि खेल न्यार। गुरमुख साचे चरन बहांयदा, आप आपणी किरपा धार। निर्धन सरधन वेख वखांयदा, दोहां विचोला सिरजणहार। घर घर आपे रिज़क सबांयदा, विष्नूं वंसी सेवादार। सच भण्डार आप वरतांयदा, अतोट अतुट वरते विच संसार। गुरसिख साचे मेल मिलांयदा, गुर पूरा कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा जीआ दान, दाता दानी आप करतार। ११३४

०६ ०६

※ २५ भाद्रों २०१७ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह पिण्ड कादरवाला ज़िला फिरोज़पुर ※

पुरख अकाल इक्क अख्वांयदा, आदि जुगादी एकँकार। सति पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा, जूनी रहित बेऐब परवरदिगार।

दरगाह साची धाम सुहांयदा, सचखण्ड दुआरा उच्च मुनार। दीपक दीआ इक्क जगांयदा, निरगुण बाती कर त्यार। थिर घर साचे सोभा पांयदा, तख्त निवासी अगम्म अपार। आपणी रचना आप रचांयदा, आपे वेखणहार। आपणा हुक्म आप वरतांयदा, आपे बणे सच्चा सिक्दार। आपणे मंडल रास रचांयदा, निरगुण खेल करे अपार। आपणा शब्द अनादी आपे गांयदा, धुन वजाए साची तार। अकल कल आपणी खेल खिलांयदा, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह करे खेल निराकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी कार। इक्क इकल्ला खेल अपारा, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। सति पुरख निरँजण वसे धाम न्यारा, धाम अवल्लड़ा सोभा पाईआ। सचखण्ड निवासी खेल न्यारा, थिर घर साचे आप खिलाईआ। अगम्म अगम्मड़ी करे कारा, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। आपणा खोल्ह आप किवाड़ा, दर दरवाज़ा आप सुहाईआ। आपे प्रगट होए निरगुण निराकारा, साकारा आपणा रूप धराईआ। आपे लक्ख चुरासी कर पसारा, विष्न ब्रह्मा शिव उपजाईआ। आपे त्रैगुण दात बणे वरतारा, दाता दानी शहनशाहीआ। आपे घट घट लक्ख चुरासी भाण्डा घड़े ठठयारा, भन्नणहारा आप अख्वाईआ। आपे पंज तत्त तत्त कर पसारा, ब्रह्म पारब्रह्म वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल खलाईआ। इक्क इकल्ला खेल अवल्ला, श्री भगवान आप करांयदा। वसणहारा सच महल्ला, थिर घर साचे सोभा पांयदा। धाम सुहाए उच्च अटला, निहचल आपणा रंग रंगांयदा। सरूप समाए जलां थलां, जल थल महीअल वेख वखांयदा। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जलां झलां, डूँग्घी कंदर सोभा पांयदा। लक्ख चुरासी जीव जंत चारे खाणी आपे रला, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड वेख वखांयदा। शब्द अनाद हरि ब्रह्मादि, सच सुनेहड़ा एका घल्ला, नाद अनादी धुन सुणांयदा। बोध अगाधी अछल अछला, भेव कोए ना पांयदा। सच सिँघासण हरि जू हरि मन्दिर एका मल्ला, सच दुआरा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, आदि जुगादि समांयदा। आप आपणा कर पसारा, निरगुण निरवैर वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं बन्न्हे धारा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा बन्धन पांयदा। रवि ससि ना कोए पसारा, मंडल मंडप आप सुहांयदा। ज़िमी अस्माना बन्न्हे धारा, धरनी धरत धवल उपजांयदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, नाद अनादी नाद वजांयदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, हुक्मी गेड़ा आप चलांयदा। जुगा जुगन्तर खेल अपारा, जुग करता आप करांयदा। विष्नूं बख्शे चरन प्यारा, विश्व रूप आप समांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, ब्रह्म साची सेवा लांयदा। धुर दरगाही धुर फ़रमाणा, शब्द अगम्मी आप सुणांयदा। चारे वेदां बण लिखारा, लोकमात राह चलांयदा। शंकर मेला धुर दरबारा, दर दरवाजा आप खुलांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वेस वटांयदा। इक्क इकल्ला पुरख अबिनाश, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सचखण्ड दुआरे पाए आपणी रास, गोपी काहन ना कोए नचाईआ। शाहो भूप सच सुल्तान शाह शाबास, शहनशाह बेपरवाहीआ। चरनां हेठ रखाए पृथमी आकाश, कोटन कोटि मंडल धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। आदि जुगादी आप आपणी पूरी करे आस, आपणी महिमा आपणे विच समाईआ। सूरज चन्न कर प्रकाश, दिवस रैण वण्ड वण्डाईआ। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ प्रभास, समुंद सागर फोल फुलाईआ। जूनी रहित ना होए विनास, अबिनाशी करता आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला सच महल्ला रिहा वसाईआ। सच महल्ला श्री भगवन्त, सचखण्ड दुआर आप सुहांयदा। आदि जुगादी एका कन्त, कन्त कन्तूल वेस वटांयदा। आप बणाए आपणी बणत, दूसर संग ना कोए रखांयदा। आदि जुगादि महिमा अगणत, वेद पुराण सर्ब जस गांयदा। आपणा लेखा आपे जाणे आदि अन्त, मध भेव ना कोए रखांयदा। लेखा जाणे गुरमुख साचा सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। शब्द जणाई मणीआ मंत, नाम निधाना झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी खेल खिलंदड़ा, आदि निरँजण पुरख अगम्म। जुग जुग आपणा वेस वटंदड़ा, निरगुण निरवैर ना मरे ना पए जम्म। लक्ख चुरासी जीव जंत वेख वखंदड़ा, करता पुरख करे कराए आपणा कम्म। गुरमुख साचे वेख वखंदड़ा, पवण स्वासी लेखा जाणे दमा दम। सन्त सुहेले रंग रगंदड़ा, काया चोली रंगे हड्ड मास नाड़ी चम्म। जम का तरास आप मिटंदड़ा, दो जहानां बेड़ा देवे बन्नृ। साचा मार्ग इक्क वखंदड़ा, राए धर्म ना देवे डंन। साचे पौड़े आप चढ़ंदड़ा, चौथा पद आप सुहाया ना कोई सूरज ना कोई चन्न। गीत सुहागी आप सुनंदड़ा, राग अनादी एका कन्न। निरगुण सरगुण मेल मिलंदड़ा, गढ़ हँकारी भाण्डा भन्न। जोती जोत इक्क जगंदड़ा, किरपा कर श्री भगवान। लक्ख चुरासी वेख वखंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, आदि जुगादी धन्न धन्न। इक्क इकल्ला साची कार, दो जहानां आप चलाईआ। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, आपणा बल आप वखाईआ। एकँकारा कर पसार, वेखणहारा थाउँ थाँईआ। आदि निरँजण जोत उज्यार, जोत निरँजण घट घट रिहा जगाईआ। श्री भगवान दिवस रैण कर प्यार, भगतन मेला बेपरवाहीआ। अबिनाशी करता रहे ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। पारब्रह्म प्रभ कर पसार, आपणी कल आप वरताईआ। निरगुण जोत जोत उज्यार, जोती जाता वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआर सच्चा दरबार, सति पुरख निरँजण आप लगाईआ। सच सिँघासण कर त्यार, पुरख अबिनाशन आसण लाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, धुर फ़रमाणा

शब्द जणाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां पावे सार, लोक परलोक वेख वखाईआ। दो जहाना इक्क जैकार, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। शाह सुल्ताना बेऐब परवरदिगार, नूरी जल्वा नूर अलाहीआ। सृष्ट सबाई सांझा यार, सृष्ट सबाई वेखे थाउँ थाँईआ। लाशरीक बोले एका नाअर, कलमा कायनात आप पढ़ाईआ। आपे गुप्त आपे ज़ाहर, अंदर बाहर आपणी धार चलाईआ। आपे जुगा जुगन्तर लै अवतार, निरगुण सरगुण रूप ल्ए प्रगटाईआ। आपे गुर पीर अवतार, आपणा मार्ग दए वखाईआ। आपे भगत भगवन्त करे उज्यार, सिर रक्ख हथ्थ समरथ दए वड्याईआ। आपे सन्तन दए हुलार, नाम हुलारा इक्क रखाईआ। आपे गुरसिख साचे साचे बेड़े देवे चाढ़, मँझधार ना कोई रुढ़ाईआ। आपे गुरसिखां फड़ फड़ लाए पार, आदि जुगादी सेव कमाईआ। जगत विचोला बणे हरि निरँकार, शब्द ढोला एका गाईआ। तोला बणे अगम्म अपार, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। बदले चोला जोती धार, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। कोटी कोटि करे विचार, कोटी कोटि जीव तराईआ। शब्द सोटी हथ्थ फड़ निरँकार, नौं खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। सत्तां दीपां करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां रिहा जगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलिजुग कूक दए दुहाईआ। सृष्ट सबाई जीव नार विभचार, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। मूर्ख मूढ़े सुते पैर पसार, पुरख अकाल मिल्या ना किसे थाँईंआ। चारे वरन रोवण ज़ारो ज़ार, साची मिले ना कोई सरनाईआ। अठारां बरन करन पुकार, मिल्या मेल ना पीआ प्रीतम साचे माहीआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, जुग करता आपणा वेस आप धराईआ। शब्द अगम्मी अगम्म जैकार, दो जहानां आप सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, निरगुण आपणा नाउँ रखाईआ। जोती जामा विच संसार, रम्मईआ रामा वेस वटाईआ। घनईआ शामा पावे सार, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। ईसा मूसा काला सूसा करे तन श्रंगार, तन अल्फ़ी इक्क हंढाईआ। संग मुहम्मद वेखे चार यार, अल्ला राणी मुख घूँगट दए उठाईआ। नानक निरगुण एका नाम सति करे जैकार, सति नाम सच्ची सरनाईआ। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे प्यार, दूई द्वैती ना कोई रखाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, एका एक खुदाईआ। ख़ालक ख़लक रिहा पसार, ख़लक ख़ालक वेखे बेपरवाहीआ। आदि जुगादी जाणे आपणी कार, जुग जुग सेवक सेवा आप वखाईआ। कलिजुग रैण अन्धेरी अन्ध अँध्यार, साचा चन्द ना कोई चढ़ाईआ। राज राजान ना करे कोई विचार, ग़रीब निमाणे रहे कुरलाईआ। चारों कुंट धूंआँधार, साचा हवन ना कोई वखाईआ। पवण सुगंधी ना विच संसार, दुरगंधी आपणा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर खेल हरि, इक्क इकल्ला आप कराईआ। इक्क इकल्ला पारब्रह्म, ब्रह्म वेखे लक्ख चुरासीआ। ना मरे ना पए जम्म, जुग जुग खेले खेल तमासया। आदि जुगादी आपणा कम्म,

करे कराए मंडल रासीआ। गगन पताल रखाए बिन बिन थम्म, अग्न जोत जोत प्रकाशया। जुग जुग देवणहारा डन्न, लक्ख चुरासी वेखे जम की फाँसीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल घनक पुर वासीआ। इक्क इकल्ला घनक पुर वास, साची पुरी आप सुहाईआ। निरगुण सरगुण होया दासी दास, दास दासी सेव कमाईआ। बवन्जा अक्खर पवण स्वास, सर्ब मास बीत बताईआ। पैंतीस अक्खर त्रैगुण वेख रास, जगत रचना आप रचाईआ। एका साता अंदर कर कर वास, दस सत्त करे रुशनाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, पिृथम आपणा आप प्रगटाईआ। चरना हेठ दबाए करे खेल पुरख अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। इक्क इकल्ला जुगा जुगन्तर, जागरत जोत करे रुशनाईआ। लोकमात बुझाए लग्गी बसन्तर, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। शब्द जणाए साचा मन्त्र, धुर दी बाणी आप अलाईआ। लेखा जाणे सर्ब जी अन्तर, घट घट बैठा सेज हंढाईआ। लेखा जाणे गगन गगनंतर, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता हरि बेपरवाहीआ। शब्द अगम्मा बण मलाह, लोकमात फेरा पांयदा। इक्क इकल्ला जगत मलाह, जुग जुग बेड़ा आप चलांयदा। शब्दी शब्द दए सलाह, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। आपणा प्रगटाए आपे नाँ, नाउँ निरँकारा आप अख्वांयदा।
११३८ आपे वसे हर घट थाँ, थान थनंतर सोभा पांयदा। आपे करे सच न्याँ, शाह पातशाह आपणा नाउँ धरांयदा। आपे जन ११३८
०६ भगतां पकड़े बांह, लक्ख चुरासी विच्चों बाहर कढांयदा। आपे हँस बणाए फड़ फड़ काँ, कागों हँस आप उडांयदा। आपे ०६
निथावयां देवे साचा थाँ, दरगाह साची धाम सुहांयदा। आपे हँकारीआं देवे गढ़ु तुड़ा, नाम खण्डा हथ्थ चमकांयदा। आपे ब्रह्मण्डां वेखे ठंडी छाँ, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी कार करांयदा। इक्क इकल्ला कार कमांयदा, करता पुरख करतार। चार वेद भेव ना आंयदा, ब्रह्मा चारे मुख रिहा पुकार। जुगा जुगन्तर आपणी कल वरतांयदा, अकल कल खेल अपार। कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा, सृष्ट सबाई पावे सार। निहकलंका नाउँ धरांयदा, निरगुण सरगुण लए अवतार। सरगुण आपणे लेखे लांयदा, पंज तत्त ना कोई प्यार। एका शब्दी डंक वजांयदा, सुणे सुणाए सुणनेहार। राउ रंकां आप जगांयदा, शाह सुल्तानां करे ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। शाह पातशाह सच्चा शहनशाह, गुरू गुर आप अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम निरगुण निरवैर बणे इक्क मलाह, बेपरवाह बेड़ा आप चलांयदा। सन्त सहेले गुरू गुर चेले पकड़े बांह, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। गुरसिख गोद उठाए जिउँ बालक माँ, नित नवित वेख वखांयदा। भाग लगाए नगर खेड़ा काया ग्रां, नौं

दुआरे खोज खुजांयदा। सुरत सवाणी शब्द हाणी दए मिला, अमृत आत्म ठंडा पाणी मुख चुआंयदा। धुर दी बाणी शब्द दए सुणा, अनहद साचा ताल वजांयदा। जम की फ़ासी दए कटा, राए धर्म नेड़ ना आंयदा। चारे खाणी लेखा दए चुका, मात गर्भ ना फेर फिरांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म दए मिला, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। मानस जन्म लेखे ला, गुरमुख साचा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हर घट आपे वेख वखांयदा। हरिजन हरि दरस दरसाया, किरपा कर गुण निधान। ग़रीब निमाणे गले लगाया, आदि जुगादी धुर दी बाण। एका अक्खर नाम पढ़ाया, निष्अक्खर कर प्रधान। बजर कपाटी पत्थर तोड़ तुड़ाया, फड़ शब्द तीर कमान। पंच विकारा सथ्थर लाहया, मनूआ उठे ना नौंजवान। मति मतवाली डेरा ढाहया, बुधी वेखे चरन ध्यान। सतिगुर पूरा काया खेड़ा आप वसाया, शब्द जणाए सच्ची धुनकान। घर मन्दिर राग इक्क अल्लाया, मिल सख़ीआं मंगल गान। साची सेजा आप सुहाया, दस्म दुआरी हो प्रधान। सुरत सवाणी शब्द मिलाया, एका हाणी मिल्या हाण। जोबन जवानी इक्क वखाया, बाल बुड़ेपा ना कोई निशान। अमृत पाणी मुख चुआया, निझर झिरना झिरे महान। कँवल कँवला आप भवाया, गुरमुखां देवे साचा दान। ब्रह्म पारब्रह्म मिलाया, नाल रलाया श्री भगवान। जन्म मरन विच ना आया, नाता तुट्टा दो जहान। जिस जन सतिगुर पूरा दर्शन पाया, दरगाह साची होए परवान। सचखण्ड दुआरे आप बहाया, धर्म दिखाए इक्क निशान। सच निशाना आप झुलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि इक्क इकल्ला होए निगहबान।

❋ २६ भाद्रों २०१७ बिक्रमी बीबी हरनाम कौर पिण्ड तलवण्डी ज़िला फीरोज़ पुर ❋

पुरख अकाल सर्ब जीआ दाता, आदि जुगादि समांयदा। जुगा जुगन्तर मेटे अन्धेरी राता, निरगुण जोती जोत जगांयदा। शब्द जणाए अगम्मी गाथा, धुर मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। जन भगतां निभाए सगला साथा, सगला संग आप हो जांयदा। लहिणा देण चुकाए मस्तक माथा, पूर्ब कर्मा वेख वखांयदा। चरन सरोवर सच वखाए तीर्थ ताटा, दुरमति मैल मैल धवांयदा। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, नर नरायण खेल खिलांयदा। चार वरन कराए उत्तम ज़ाता, वरन गोत ना कोए वखांयदा। अनहद शब्द अनादी धुन अगम्मी पूजा पाठा, रसना जिह्वा ना कोए हलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकार, करे खेल अगम्म अपार, जुग जुग आपणी धार बंधांयदा। पुरख अकाल सर्ब गुणवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। जोती नूर श्री भगवन्त, आदि निरँजण वड वड्याईआ। दरगाह साचा धाम सुहंत, सचखण्ड दुआरे सोभा

पाईआ। निराकार बणाए आपणी बणत, दूसर संग ना कोए वखाईआ। लक्ख चुरासी त्रैगुण माया पंज तत्त फुल फुलवाड़ी वेखे रुत बसन्त, पत डाली आप महिकाईआ। लेखा जाणे जीव जंत, पकड़ उठाए साचे सन्त, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, माया ममता मोह चुकाईआ। नाता तोड़े भुक्ख नंगत, सच सुच्च इक्क वरताईआ। मेल मिलावा साची संगत, वेख वखाए थाउँ थाँईआ। नाम चाढ़े साची रंगत, रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता वेस वटाईआ। पुरख अकाल पारब्रह्म श्री भगवान, भेव कोए ना आंयदा। अबिनाशी करता ना मरे ना पए जम्म, सो पुरख निरँजण खेल खिलांयदा। हरि पुरख निरँजण आदि जुगादि जाणे आपणा कम्म, करता पुरख रूप अनूप आप धरांयदा। सचखण्ड निवासी साचे तख्त बराज करे आपणा कम्म, करनी किरत आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर आपणी धार चलांयदा। पुरख अकाल ठांडा दरबारा, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, निरगुण सच सिँघासण सोभा पांयदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, हुक्मी हुक्म आप वरतांयदा। थिर घर वासी खोल्ह किवाड़ा, एका रूप आप प्रगटांयदा। लोआं पुरीआं दए सहारा,
११४० ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा बन्धन पांयदा। रवि ससि कर उज्यारा, जोती नूर डगमगांयदा। शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, तुरीआ ११४०
राग आप अल्हांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यारा, अंस बंस आप सुहांयदा। त्रैगुण माया भर भण्डारा, पंचम पंचम जोड़
०६ जुड़ांयदा। लक्ख चुरासी कर पसारा, घट घट आसण लांयदा। घर विच घर कर त्यारा, घर मन्दिर सोभा पांयदा। दीपक जोती कर उज्यारा, नूर नुराना डगमगांयदा। हरि शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, अनहद साचा ताल वजांयदा। सर सरोवर अमृत ठंडी ठारा, कँवल नाभी आप रखांयदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। जुगा जुगन्तर वरते वरतावे विच संसारा, गुर पीर अवतार आपणा नाउँ धरांयदा। निरगुण सरगुण बन्न्हे धारा, धार अवल्ली इक्क वखांयदा। सन्त भगत भगवन्त मेल मलाए आपणी वारा, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखांयदा। गुरसिखां वखाए सच दुआरा, बन्द किवाड़ा आप खुलांयदा। गुरमुख बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। एका बख्शे शब्द भण्डारा, वस्त अमोलक आप वरतांयदा। लेखा जाणे लिखणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला पुरख अकाल, दीना बंधप दीन दयाल, सगला संग आप निभांयदा। सगला संग सतिगुर मीत, पुरख अकाल निभाईआ। आदि जुगादी साची रीत, जुगा जुगन्तर आप चलाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच वेख वखाईआ। गुरमुख विरले बख्शे चरन प्रीत, लक्ख चुरासी विच्चों फोल फुलाईआ। शब्द सुणाए सुहागी गीत, धुन आत्मक आप वजाईआ। करे कराए पतित पुनीत,

पतित पापी लए तराईआ। काया करे ठंडी सीत, पंज तत्त अग्नी आप बुझाईआ। लेखा जणाए देहुरा मन्दिर मसीत, घर हरि मन्दिर दए वखाईआ। सतिगुर पूरा वसया धाम अनडीठ, आत्म सेजा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साची कार, करे कराए करनेहार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। वेखणहारा पुरख अकाला, जुगा जुगन्तर वेख वखांयदा। जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाला, लोकमात वेख वखांयदा। निरगुण सरगुण दस्से राह सुखाला, शब्द अगम्मी मार्ग आपे पांयदा। दिवस रैण करे प्रितपाला, प्रितपालक आपणी सेव कमांयदा। नाता तोड़े जगत जंजाला, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। चरन कँवल रखाए काल महांकाला, हुक्मी हुक्म आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साची कार, करे कराए विच संसार, दूसर संग ना कोए रखांयदा। पुरख अकाल खेल अपारा, निरँकारा आप कराईआ। सतिजुग त्रेता लै अवतारा, द्वापर निरगुण जोत जोत समाईआ। पंज तत्त शब्द भण्डारा, आप आपणा कर त्यारा, आपणा नाअरा दए सुणाईआ। खेले खेल खेलणहारा, रूप अनूप वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम हो उज्यारा, नूर इलाही डगमगाईआ। बेऐब खुदाई परवरदिगारा, मुकामे हक वज्जी वधाईआ। लाशरीक वसे सभ तों बाहरा, अनुभव आपणा रूप दरसाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारा, एका कलमा नबी पढ़ाईआ। अमाम अमामां
११४१ ११४१
बण वरतारा, मुल्ला शेख़ मुसायक पीर एका राह वखाईआ। अञ्जील कुराना भर भण्डारा, तीस बतीसा रिहा सुणाईआ।
०६ ०६
जुगां जुगन्तर साची धारा, लोकमात आप रखाईआ। नानक निरगुण कर प्यारा, पंज तत्त जोती जोत जगाईआ सचखण्ड निवासी खेल अपारा, थिर दरबारे आप वखाईआ। मेल मिलावा कन्त भतारा, दर घर साचे वज्जी वधाईआ। पाया पुरख सच्चा भतारा, आदि जुगादि ना मरे ना जाईआ। मिल्या मेल एका वारा, विछड़ कदे ना जाईआ। पुरख अकाल मीत मुरारा, नानक निरगुण वेखे चाँईं चाँईआ। एका मंगे मंग दुआरा, देवणहारा बेपरवाहीआ। नाम सति भर भण्डारा, वस्त अमोलक हथ्थ फड़ाईआ। चार वरन बण वरतारा, जीव जंत लए तराईआ। हँकारीआं तोड़े गढ़ हँकारा, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सोहण इक्क दुआरा, हिन्दू मुस्लिम वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, इक्क इकल्ला वेख वखाईआ। उच्ची कूक करे पुकारा, सृष्ट सबाई गया समझाईआ। कलिजुग अन्तिम होवे अन्ध अँध्यारा, सूरज चन्न ना कोई रुशनाईआ। लक्ख चुरासी होए नार विभचारा, हरि हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। ना कोई दिसे शाह दुआरा, सच गुलाम ना कोई वड्याईआ। साध सन्त होए ख्वारा, हरि के पौड़े ना कोई चढ़ाईआ। अठसठ तीर्थ मारन नाअरा, नर नरयण दिस ना आईआ। धरत धवल करे पुकारा, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। पुरख अबिनाशी बेऐब परवरदिगारा, दरगाहि

साची बैठा करे खेल बेपरवाहीआ। लोकमात पावे सारा, लोक चौदां चौदां तबकां चरनां हेठ दबाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां दए हुलारा, ब्रह्मा विष्न शिव लए उठाईआ। करोड़ तेतीसा मारे मारा, सुरपति राजा इंद आप उठाईआ। एका खण्डा तेज़ कटारा, नाम निधान हथ्थ उठाईआ। सति पुरख निरँजण साची कारा, सति सतिवादी आप धराईआ। प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतारा, मात पित ना कोए अख्वाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, शब्द निश अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, चारे वेद देण गवाहीआ। पुराण अठारां करन निमस्कारा, गीता ज्ञान सीस झुकाईआ। अञ्जील कुरान रोवण ज़ारो ज़ार, वेला अन्त ना दिसे कोई सहाईआ। खाणी बाणी मारे तीर करारा, शब्द निशाना आप लगाईआ। गुरमुख साचे करे प्यारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। वरते वरतावे शब्द वरतारा, जूठ झूठ दए मिटाईआ। चार वरनां वखाए इक्क दुआरा, ऊँच नीच रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि खेल ब्रह्म ब्रह्मादि, शब्द अनाद धुन वजाईआ।

❋ २६ भाद्रों २०१७ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह पिण्ड उसमा ज़िला अमृतसर ❋

सति पुरख निरँजण सच्चा पातशाह, सति सतिवादी सति समांयदा। सो पुरख निरँजण गुणवन्ता बेपरवाह, अलक्ख अगोचर आपणा नाउँ धरांयदा। हरि पुरख निरँजण सिफ्त सलाह, सलाही भेव ना आंयदा। एकँकारा निरगुण रूप आप धरा, निरवैर आपणी धार बंधांयदा। आदि निरँजण जोत उजाला डगमगा, नूर नुराना आप अख्वांयदा। श्री भगवान वसणहारा साचे थाँ, दरगाह साची धाम सुहांयदा। अबिनाशी करता इक्क उपाजाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप रखांयदा। पारब्रह्म आपे बणे पिता माँ, पूत सपूता आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला कर पसार, आपे वेखे वेखणहार, निरगुण आपणी कल वरतांयदा। निरगुण रूप अकल कल धार, आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत कर उज्यार, नूर ज़हूर आप प्रगटांयदा। वसणहारा दर घर सच्चे दरबार, सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा। सचखण्ड अंदर खेल न्यार, पुरख अकाल आप करांयदा। थिर घर खोल्हे इक्क किवाड़, आप आपणा पर्दा लांहयदा। साचा मन्दिर कर त्यार, शाह सुल्तान वेख वखांयदा। छप्पर छन्न ना कोए सहार, बाढी बणत ना कोई बणांयदा। निरगुण दीपक दीआ कर उज्यार, जोती नूर डगमगांयदा। कमलापाती खेल न्यार, निज घर आपणे आप खलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचा आप वड्यांअदा। दर घर साचा सचखण्ड दुआरा, सति पुरख

निरँजण आप उपांयदा। इक्क इकल्ला कर पसारा, आप आपणा बल रखांयदा। आपणे नूर हो उज्यारा, नूर नूर विच समांयदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त ताज वेख वखांयदा। सिँघासण बैठ सच्ची सरकारा, हुक्मी हुक्म आप सुणांयदा। आदि जुगादि वरते वरतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खलांयदा। खेलणहारा पुरख समरथ, इक्क इकल्ला एकंकारया। आप चलाए आपणा रथ, निरगुण रथवाही शाह अस्वारया। हरि की महिमा कथनी अकथ, कथनी कथ ना करे विचारया। दरगाह साची धाम न्यार आप उपाए आपणी वथ, आपे वणज करे वपारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे दर, दर दुआर करे प्यारया। दर दुआर सुहांयदा, सोभावन्त करतार। सो पुरख निरँजण वेख वखांयदा, हरि पुरख निरँजण पावे सार। एकँकारा भेव चुकांयदा, आदि निरँजण कर उज्यार। श्री भगवान खेल खिलांयदा, अबिनाशी करता दए अधार। पारब्रह्म प्रभ एका नाउँ धरांयदा, अजूनी रहित बेऐब परवरदिगार। साचे तख्त सोभा पांयदा, शाह सुल्तान सच्ची सरकार। आपणी इच्छया भिच्छया आपे वेख वखांयदा, ना कोई दूसर मीत मुरार। थिर घर वासी थिर दरबारे रंग रंगांयदा, रंगे रंग अगम्म अपार। अलक्ख अलक्खणा आपणी अलक्ख जगांयदा, शब्द अगम्मी बोल जैकार। सुर ताल ना कोई वजांयदा, सति सरूपी साची धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, थिर घर वेखे अगे खड़, आप आपणा कर पसार। सचखण्ड दुआरा खोल्हया, कर किरपा गुण निधान। थिर घर साचे मन्दिर बह बह बोलया, शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण। निरगुण निरवैर आपे बणे विचोलया, आपे वेखे मार ध्यान। सचखण्ड थिर घर आपणे कंडे आपे तोलया, तोलणहार श्री भगवान । आदि जुगादि रहे अडोलया, तख्त निवासी शाह सुल्तान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बणे आप मलाह, खेवट खेटा आप अखवा रिहा। खेवट खेटा पारब्रह्म करतारा, एका रंग समाया। दरगाहि साची हो उज्यारा, रूप अनूप आप वटाया। सति सरूपी हो न्यारा, अनरंग रूपी दिस ना आया। आप आपणा खोल्हे बन्द किवाड़ा, आपणा मन्दिर आप सुहाया। आपे बणे साचा लाड़ा, आप आपणा वेस वटाया । आपे नारी कन्त भतारा, आपे साची सेज हंढाया। आपे दर मंगे बण भिखारा, आपे लहिणा झोली पाया। आपे शाह आपे दारा, आपे दर दरबान सीस झुकाया। पुरख अगम्म अगम्मड़ी कारा, इक्क इकल्ला रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाया। अगम्म अगम्मड़ी कार, निरगुण जोती जोत डगमगांयदा। सति सरूप सच्ची सरकार, शब्द अगम्मी नाद वजांयदा। तुरीआ राग कर त्यार, हरि मन्दिर साचे सोभा पांयदा। थिर घर खोल्हे बन्द किवाड़, अंदर बह बह मंगल गांयदा। आप आपणा कर प्यार, आपणा

बन्धन आपे वेख वखांयदा। निरगुण निरगुण कर पसार, सूरज चन्न ना कोई चढ़ांयदा। दीवा बाती ना कोई अधार, प्रकाश प्रकाश विच टिकांयदा। पारब्रह्म हरि पुरख करतार, खुशी ग़म ना कोई रखांयदा। हरख सोग वसया बाहर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दरगाह साची धाम सुहांयदा। दरगाह साची सच दुआर , सति पुरख निरँजण आप वसाया। सो पुरख वसे इक्क इकल्ला, हरि पुरख निरँजण रंग रंगाया। एकँकारा सच सिँघासण बैठा मला, आदि निरँजण करे रुशनाया। श्री भगवान शब्द सनेहड़ा एका घल्ला, अबिनाशी करता हुक्मी हुक्म आप वरताया। पारब्रह्म प्रभ फड़या पल्ला, आप आपणा अंग लगाया। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, अकल कलधारी खेल खिलाया। आपणी जोती आपे रला, मात पित ना कोई बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाया। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहांयदा। करे खेल नारी कन्त, कन्त कन्तूल सेज हंढांयदा। आप बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नणहार ना कोई अख्वांयदा। लेखा जाणे आदि अन्त, अन्त आदि आपणा बल धरांयदा। आपे उपजाए आपणा नाउँ मणीआ मंत, शब्द शब्दी नाद वजांयदा। पुरख अबिनाशी महिमा अगणत, भेव अभेद आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, बंक दुआरा इक्क सुहांयदा। बंक दुआर सुहाया, हरि सतिगुर गहर गम्भीर। आप आपणा दर खुलाया, आपे वेखे बेनज़ीर। आप आपणा घर वसाया, आपे शाह आपे फ़कीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा एका घर, हरि मन्दिर सोभा पाया। हरि मन्दिर उच्च मुनारा, पुरख अकाल आप उपांयदा। जूनी रहित कर पसारा, निरवैर आसण लांयदा। मूर्त अकाल खेल न्यारा, निर्भय आपणा वेस वटांयदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त निवासी तख्त सुहांयदा। आपणा हुक्म आप कर वरतारा, धुर फ़रमाणा आप जणांयदा। शब्द उठाए सुत दुलारा, साची सेवा इक्क वखांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कर पसारा, विष्न आपणी अंस सुहांयदा। कँवल कँवला कर उज्यारा, नाभी एका अमृत रखांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर न्यारा, निरगुण निराकारा साची वण्ड वण्डांयदा। लेखा जाणे धूंआँधारा, साचा शंकर आप प्रगटांयदा। त्रै त्रै मेला पुरख करतारा, करता पुरख आप करांयदा। आपे वसे सभ तो बाहरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाहि साची धाम सुहांयदा। त्रै त्रै मीता इक्क अतीता, विष्न ब्रह्मा शिव लए उपजाईआ। धाम वखाए इक्क अनडीठा, पुरख अगम्म वड्डी वड्याईआ। धुर दरबारा ठांडा सीता, सांतक सति सति वरताईआ। आप चलाए आपणी रीता, राज जोग दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचे दए वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, पुरख अकाल खेल खिलांयदा। नाम

अनादी बोल जैकार, साचा नाद आप सुणांयदा। साची वस्त अगम्म अपार, वण्डणहारा वण्ड वण्डांयदा। त्रैगुण माया तत्त विचार, रजो तमो सतो आपणी इच्छया आप प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। साचे घर हो प्रधान, आपणी दया कमाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव मिल्या दान, पुरख अबिनाशी आप वरताईआ। त्रैगुण माया कर प्रधान, त्रै त्रै अंग लगाईआ। लक्ख चुरासी ब्रह्म निशान, घट भाण्डा आप बणाईआ। घर विच घर सच मकान, मेहरबान आप उपाईआ। आदि जुगादी वेखे निगहबान, निरवैर नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक एक एक सुहाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव लै अगंड़ाई, प्रभ चरन ध्यान लगाया। पुरख अबिनाशी तेरी सरनाई, हउँ सेवक भुल्ल ना जाया। तूं करता करतार तेरी चलना हुक्म रज़ाई, हुक्मी हुक्म आप वरताया। लक्ख चुरासी तेरी रचना रच वेखे थाँउँ थाँईं, थान थनंतर आप सुहाया। आदि अन्त पकड़ी बांही, दूसर दर ना कोई जणाया। जुगा जुगन्तर रक्खी ठंडी छाईं, समरथ पुरख तेरी वड वड्याआ। कवण वेला करे न्याँई, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देणा साचा वर, हउँ ढह पए सरनाया। सरन सरनाई

त्रै त्रै मीत, दोए जोड़ सीस झुकाया। एका गायण तेरा गीत, तेरा नाम ढोला इक्क सुणाया। सदा सहेला वसणा चीत, विसर कदे ना जाया। लोकमात चले तेरी रीत, तेरा तेरी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला होए सहाया। पुरख अबिनाशी दया कमा, विष्न ब्रह्मा शिव समझाईआ। जुग जुग तेरी सेवा ला, तेरा रूप सृष्ट सबाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वण्ड वण्डा, आपणा अंग कटाईआ। विष्नूं देणा रिज़क सबा, सिदक सबूरी तेरे हथ्थ रखाईआ। शंकर लेखा देणा चुका, अन्त रहिण ना पाईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग गेड़ा दए दवा, गेड़ा आपणा आप रखाईआ। गुर पीर अवतार साध सन्त लए उपजा, एका नाम शब्द करे कुड़माईआ। भगत भगवन्त वेखे थाउँ थाँ, आप आपणे लए जगाईआ। गुरमुखां पकड़े आपे बांह, जगत विछोड़ा फंद कटाईआ। जुग जुग करे सच न्याँ, शाह सुल्ताना बेपरवाहीआ। चित्रगुप्त लेखा रिहा लिखा, हरि हरि साची सेव लगाईआ। राए धर्म दए सज़ा, भुलया कोए रहिण ना पाईआ। लाड़ी मौत लए प्रना, लक्ख चुरासी वेखे थाउँ थाँईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता गुरमुख विरले लए बचा, जुग जुग आपणा मेल मिलाईआ। निष्अक्खर वक्खर लए पढ़ा, धुन अनादी नाद वजाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजा, लेखा लेखे लए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, वर साचा झोली पाईआ। हरि करता शब्द जणांयदा, धुरदरगाही अगम्मी बोल। विष्न तेरी सेव लगांयदा, नौं नौं चार करना घोल। ब्रह्मा तेरी वण्ड वण्डांयदा,

लक्ख चुरासी जाणा मौल। शंकर तेरा कौल निभांयदा, लेखा चुक्के उप्पर धौल। रवि ससि तेरा पन्ध मुकांयदा, पुरख अबिनाशी रहे अडोल। दो जहानां वेख वखांयदा, नव सत्त फोलण लए फोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे तोले आपणा तोल। हरि सतिगुर आप समझांयदा, विष्नूं कर ध्यान। पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा, लेखा जाणे दो जहान। तेरा सगला संग निभांयदा, मेल मिलावा श्री भगवान। आपणे अंगी अंग रखांयदा, आप आपणी दए पछाण। साचा नाम मृदंग वजांयदा, धुर दरगाही धुर फ़रमाण। सांगोपांग सेज विछांयदा, कँवल नैण सिँघासण वेखे आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुलांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म आप जणाया, एका हुक्म सुणाईआ। नौं नौं चार तेरा मृदंग वजाया, घट घट तेरी जोत करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी मन्दिर काया पलँघ विछाया, साची सेजा दए वसाईआ। परमानंद धाम वखाया, निजनंद वज्जे वधाईआ। अनहद शब्द मृदंग तेरे हथ्थ फड़ाया, पुरख अबिनाशी वजाए चाँईं चाँईआ। जगत दुआरा लँघ तेरा बंक सुहाया, सोहे बंक इक्क रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मे एका ब्रह्म जणाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमांयदा, बोले शब्द जैकार। शंकर अक्खर इक्क पढ़ांयदा, निष्अक्खर कर प्यार। एका चौकड़ी जुग वण्ड वण्डांयदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चले कार। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा आप दवांयदा, लेखा लिखे लिखणहार। दूसर भेव ना कोए रखांयदा, लिख लिख सके ना कोए विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा वक्त आप सुहांयदा। साचा वेला अन्तिम आउणा, नौं नौं चार रहिण ना पाईआ। लक्ख चुरासी मूल चुकाउणा, जो घड़या भन्न वखाईआ। चार वेद किसे ना गाउणा, पुराण अठारां ना कोए अलाईआ। गीता ज्ञान ना कोए दृढ़ाउणा, अञ्जील कुरान ना कोए सुणाईआ। खाणी बाणी ना राग अलाउणा, छत्ती राग ना देण गवाहीआ। पुरख अबिनाशी वेस वटाउणा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। गुर पीर अवतार साध सन्त कोई दिस ना आउणा, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। शब्द सुहागी छन्द किसे ना गाउणा, घर घर विद्या जगत पढ़ाईआ। सुरत सवाणी सीता राम ना किसे प्रनाउणा, राधा कृष्न ना कोए मिलाईआ। ईसा मूसा चोली रंग ना किसे रंगाउणा, काला सूसा वेखे लग्गी शाहीआ। संग मुहम्मद चार यार कलमा नबी अमाम ना किसे पढ़ाउणा, अल्ला राणी नेत्र रोवे नीर वहाईआ। पीर दस्तगीर सिर हथ्थ ना किसे टिकाउणा, मुल्ला शेख़ मुसायक बैठण मुख छुपाईआ। पंडत पांधे ज्ञान ना किसे दृढ़ाउणा, साचा मार्ग ना कोए रखाईआ। चार वरन ना सरन कोए तकाउणा, अठारां बरन देण दुहाईआ। पुरख अबिनाशी साचे मन्दिर दिस किसे ना आउणा, काया मन्दिर ना कोए सुहाईआ। सच सरोवर किसे ना नहाउणा, अमृत

११४६ ०६

ताल ना कोए वड्याईआ। साचा चन्द ना किसे चढ़ाउणा, रवि ससि बैठण मुख शर्माईआ। नारी कन्त ना किसे हंढाउणा, विभचार सर्ब लोकाईआ। गुर इष्ट देव ना किसे मनाउणा, सति सति ना कोए वरताईआ। ब्रह्म तत्त ना किसे वटाउणा, हड्ड मास नाड़ी उब्बले रत्त घर घर अग्न लगाईआ। कमलापत साची सेज ना किसे सुहाउणा, अंगीकार ना कोए कराईआ। अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी साचा संग ना किसे निभाउणा, चारे बाणी वेख वखाईआ। चारे जुग पन्ध मुकाउणा, नौं नौं वेला दए वखाईआ। हउमें हंगता भरमां कंध किसे ना ढाउणा, दूई द्वैती ना कोए मिटाईआ। परमानंद ना किसे समाउणा, चौथे पद ना वज्जे वधाईआ। पंचम नाद धुन शब्द किसे ना गाउणा, सुंजी सेज सृष्ट सबाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करते नेहकर्मी आपणा कर्म कमाउणा, आपणा वेला लए सुहाईआ। जोती जामा जोत जगाउणा, निरगुण निरगुण जोत करे रुशनाईआ। विष्नूं तेरा माण रखाउणा, आप आपणे अंग लगाईआ। ब्रह्मे तेरा पन्ध मुकाउणा, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। शंकर तशका हार लौहणा, त्रशूल हथ्थ ना कोए उठाईआ। अन्तिम जोती जोत मिलाउणा, जोती जाता इक्क अख्वाईआ। तिन्नां वचोला आप अख्वाउणा, आदि जुगादि खेल खिलाईआ। आपणा ढोला आपे गाउणा, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। हँ ब्रह्म प्रभ मेल मिलाउणा, दरगाह साची धाम सुहाईआ। पिछला लहिणा झोली पाउणा, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ।

११४७ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा रूप प्रगटाईआ। जुग जुग खेल अवल्लड़ा, सति पुरख ११४७

०६ निरँजण आप करांयदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए इक्क इकल्लड़ा, दूसर संग ना कोए रखांयदा। जन भगतां फड़ाए ०६

आपणा पलड़ा, नाम पल्लू आप वखांयदा। साचे सन्तां नाम संदेश एका घलड़ा, बोध अगाधी शब्द जणांयदा। गुरमुखां जोती सुरती शब्दी आपे रलड़ा, आप आपणा मेल मिलांयदा। गुरसिखां दस्से राह सुखलड़ा, सोहँ अजपा जाप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता खेल खिलांयदा। जुग करता हरि करनेहारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। कादर करता खेल अपारा, करे खेल बेपरवाहीआ। मुकामे हक खोल्ह किवाड़ा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। अमाम अमामां सिर शाह सिक्दारा, शाह सुल्ताना वड वड्याईआ। उच्ची कूक बोले एका नाअरा, हक हकीकत वेखे भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खलाईआ। आपणा खेल खिलांयदा, पारब्रह्म बेअन्त। नौं नौं चार पन्ध मुकांयदा, जुगा जुगन्तर महिमा अगणत। कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा, पारब्रह्म श्री भगवन्त। जोती जामा आपे पांयदा, साचा धाम सुहाए सोभावन्त। हरि मन्दिर आसण लांयदा, पुरख अबिनाशी साचा कन्त। सम्बल नगर आप वड्यांअदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए फड़, आप आपणा मेल मिलांयदा।

हरिजन साचा हरि जू फड़या, लेखा लिख्त विच ना आईआ। निरगुण सरगुण अंदर वड़या, काया मन्दिर फोल फुलाईआ। डूँग्घी भँवरी आपे खड़या, सुखमन टेढी बंक पार कराईआ। अमृत आत्म सर सरोवर वेखे ठांडा ठरया, कँवल नाभी मुख भवाईआ। अनहद शब्द अनादी तूर आप वजाए साचे घरया, घर मंगल गीत गोबिन्द अलाईआ। आपे गढ़ हँकारी तोड़े शब्द खण्डा एका फड़या, तिक्खी धार वखाईआ। बजर कपाटी पार करया, आर पार आपणी खेल वखाईआ। आत्म परम आत्म आत्म सेजा आपे चढ़या, अनुभव आपणा रूप प्रगटाईआ। कन्त सुहागी आपे वरया, वाह वा घर साचे वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी निरगुण सरगुण खेल करया, सरगुण निरगुण मेला एका थाईंआ। दस्म दुआरी सोहे दरया, दर घर साचे मिल्या साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। सहिज सुभाए हरिजन मेलया, कर किरपा गुर करतार। गृह मन्दिर वसे गुरू गुर चेलया, घर साचे होए उज्यार। ब्रह्म पारब्रह्म बणया सज्जण सुहेलया, आदि जुगादि करे प्यार। थित वार सुहाए साचा वेलया, वक्त सुहञ्जणा मीत मुरार। धाम वखाए इक्क नवेलया, निरगुण वसे सचखण्ड सच्चे दरबार। कलिजुग अन्तिम खेल आपणा खेलया, अकल कलधारी बेऐब परवरदिगार। गुरमुखां कट्टे धर्म राए दी जेलया, लक्ख चुरासी उतरे पार। कर किरपा आपे मेलया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत बूंद स्वांती बख्शे ठंडी ठार। अंमित बूंद शब्द प्याला, सतिगुर पूरा आप प्यांअदा। जुगा जुगन्त बणे रखवाला, जन भगतां सेव कमांयदा। दीना बंधप दीन दयाला, दयानिध गहर गुण सागर आपणी कार आप कमांयदा। कलिजुग अन्तिम चली अवल्लड़ी चाला, वेद कतेब भेव ना पांयदा। शब्द गुरू बण दलाला, लोकमात खेल खिलांयदा। चरनां हेठ दबाए काल महांकाला, कलिजुग काली धार मिटांयदा। गुरमुख वेखे साचे लाला, लाल अनमुल्लड़े आपणी गोद बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दो जहानां वेख वखांयदा। दो जहानां वेखण आया, विष्नूं पावे सार। चतुर्भुज हरि खेल खलाया, आदि शक्ति हो उज्यार। नादी सुत एका जाया, शब्दी शब्द करे प्यार। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाया, खोजणहारा आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार। धुर दरबार हरि हरि लेखा, पारब्रह्म ब्रह्म वण्ड वण्डाईआ। रूप रंग ना दिसे रेखा, निरगुण निरगुण विच समाईआ। मुछ दाढ़ी ना दिसे केसा, मूंड मुंडाए ना शहनशाहीआ। लेखा चुकाए विष्न महेषा, ब्रह्मा शंकर भेव ना राईआ। पुरख अकाल इक्क रखाए सद अदेसा, दूसर सीस ना कोई झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाईआ। नौं नौं चार चौकड़ी खेल महान, हरि साचा दया कमाईआ। शब्द

मारे तीर निशान, सच निशान लगाईआ। कलिजुग मेटे झूठ दुकान, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। चौदां लोक वेखे मार ध्यान, त्रै त्रै आपणा वेस वटाईआ। जन भगतां राग सुणाए कान, धुन अगम्मी नाद वजाईआ। सति सरूपी देवे धुर फ़रमाण, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरि सन्त मेले आपणे घर, गुरमुखां चुकाए जम का डर, गुरसिख लगाए आपणे लड़, आपणा बन्धन आपे पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल दो जहान, दाता दानी शाह सुल्तान, शहनशाह पातशाह आप हो जाईआ।

✻ १ अस्सू २०१७ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✻

सो पुरख निरँजण शहनशाह, इक्क इकल्ला खेल महान। हरि पुरख निरँजण बेपरवाह, आदि जुगादी वड मेहरवान। एकँकारा अगम्म अथाह, खेले खेल दो जहान। आदि निरँजण नूर धरा, जोती जोत जगे महान। श्री भगवान आपणी अलक्ख जगा, शब्द गाए अनादी गान। अबिनाशी करता आपे वसे आपणे थाँ, सचखण्ड दुआरा सच मकान। पारब्रह्म प्रभ भेव ना रा, रंग रूप ना कोए निशान। तख्त निवासी बण सच्चा शहनशाह, सिँघासण सुहाए राज राजान। सति सरूपी रंग रंगा, सति सतिवादी झुलाए इक्क निशान। छेवें छप्पर ना कोई बणा, निरगुण वसे साचे धाम इक्क मकान। पंचम मुख सीस ताज टिका, धुर दरगाही देवे धुर फ़रमाण। चौथे घर करे सच न्याँ, रूप अनूप एका एक पकड़े बांह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला कर पसारा, नूर नुराना हो उज्यारा, बेऐब ख़ुदा परवरदिगारा, मूर्त अकाल निरगुण निरवैर अजून अजूनी रहित आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। चौथे दर दरवाज़ा खोल्ह, हरि साचा दया कमांयदा। शब्द अगम्मी एका बोल, नाद अनादी ढोल वजांयदा। आपणा तोले आपे तोल, तोलणहारा आप अख्वांयदा। आपणी शक्ती जोती आपे मौल, आप आपणा बल धरांयदा। आपे निरगुण निरगुण करे कौल, आपणा हुक्म आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप वखांयदा। साचे घर साची धार, निरगुण आपणी आप चलाईआ। शब्द अगम्मी कर पसार, हुक्मी हुक्म वरताईआ। आप आपणा कर प्यार, साची सेज आप हंढाईआ। नारी कन्त बण भतार, पूत सपूता सुत दुलारा एका जाईआ। शब्द रक्ख नाउँ निरँकार, आपणी कल आप वरताईआ। आपणी इच्छया भर भण्डार, साची वस्त इक्क वरताईआ। आपणे मन्दिर हो उज्यार, आप आपणी खेल खिलाईआ। आपणे अंदरों आए बाहर, विष्न आपणा रूप वटाईआ। आपणा प्याला अमृत धार, कँवल नाभ रखाईआ। आपणा रंग रंग निरँकार, पत डाल्ही फुल महिकाईआ।

११५०
०६

आपणी वण्ड कर अपर अपार, पारब्रह्म ब्रह्म रूप प्रगटाईआ। आपणा खेल कर करनेहार, करता पुरख आपणी धार बंधाईआ। आपणा वैराग वेखे सुहाग, शंकर नाउँ रखाईआ। तिन्नां पकड़े आपणे हथ्थ वाग, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। निर्मल जोती जगे चिराग, घर नूर करे रुशनाईआ। शब्द जणाए बोध अगाध, निश अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार हरि आप वखाईआ। त्रै त्रै धार हरि निरँकार, एका जोती मात उपाईआ। सुत दलारे कर प्यार, अबिनाशी अचुत सेव वखाईआ। पंज तत्त काया बुत घड़ ठठयार, लक्ख चुरासी भाण्डे दए घड़ाईआ। त्रैगुण माया बण वरतार, आपणी भिच्छया झोली पाईआ। हड्ड मास नाड़ी रत कर पसार, ब्रह्म मति विच रखाईआ। मन मति बुध कर पसार, निरगुण आपणे विच टिकाईआ। देवे हुक्म सच्ची सरकार, शहनशाह सच्चा पातशाहीआ। ब्रह्मा विष्न शिव दर खड़े भिखार, पुरख अबिनाशी वेखे आपणा नैण उठाईआ। लोकमात पावे सार, पुरी लोअ होए सहाईआ। जेरज अंडज उत्भुज सेत्ज करे विचार, वण्डणहारा इक्क अख्वाईआ। नौं नौं चार दए आधार, चार वेद इक्क पढ़ाईआ। नौं दर खोल्ह् किवाड़, नौं खण्ड पृथ्मी दए वखाईआ। चार जुग पावे सार, आप आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाईआ। नौं नौं चार खेल खलाया, लोकमात वज्जी वधाईआ। लक्ख चुरासी रचन रचाया, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। धरत धवल आप सुहाया, मंडल मंडप फेरा पाईआ। पृथ्मी आकाश रंग रंगाया, रंग रंगीला आप वखाईआ। पवण स्वास सर्ब समाया, सर्ब गुणतास वड्डी वड्याईआ। जोत प्रकाश दीपक दीआ आप कराया, जोत निरँजण इक्क रुशनाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म वेखे थाउँ थाया, आप आपणी दया कमाईआ। आपणा बल लए धराया, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। गुर गुर आपणा रूप वटाया, शब्द दाता सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाईआ। चार जुग वण्ड वण्डा, हरि साचा खेल खिलांयदा। चारे वेदां लेख लिखा, लिख लिख लेखा आप समझांयदा। चारे बाणी आपणा भेव खुल्ह्, आपणा अक्खर आप समझांयदा। चारे खाणी रचन रचा, चारों कुण्ट वेख वखांयदा। चारे पद रिहा समा, आप आपणी जोत टिकांयदा। विष्न शिव ब्रह्मा सेवा ला, साचा हुक्म सुणांयदा। नौं नौं चार गेड़ दवा, जुगा जुगन्तर आप भवांयदा। सतिजुग लेखा जाणे बेपरवाह, रूप अनूप आप प्रगटांयदा। त्रेता देवे पन्ध मुका, राम रामा नाउँ धरांयदा। हँकारीआं गढ़ दए तुड़ा, साचा चिल्ला हथ्थ रखांयदा। द्वापर आपणा रूप वटा, मुंकद मनोहर नाउँ धरांयदा। ग़रीब निमाणे गले लगा, माया ममता वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस धरा, निरगुण सरगुण जोत जगांयदा। ईसा मूसा आप प्रगटा, काला सूसा तन छुहांयदा। चार यारी संग निभा, मुहम्मद अंग समांयदा। नानक

निरगुण दरसन पा, नाम सति वरतांयदा। गोबिन्द मेला सहिज सुभा, वेला अन्तिम राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल आप खिलांयदा। जुग जुग खेल खलाया, पारब्रह्म हरि निरँकार। जगत चौकड़ी वेख वखाया, निरगुण सरगुण लै अवतार। भगत भगवन्त लए मिलाया, सच भगौती खिच कटार। हरिजन साचे सन्त उठाया, सति सतिवादी कर प्यार। गुरमुख मुखी मुख सालाहया, शब्द निराला तीर मारे मार। गुरसिख आपणे कंठ लगाया, लक्ख चुरासी करे पार। जुग जुग आपणा वेस धराया, गुर पीर लै अवतार। भेव अभेदा दए खुलाया, वेद व्यासा बण लिखार। नानक निरगुण इक्क समझाया, भुल्ल रहे ना विच संसार। गोबिन्द उठ उठ राह तकाया, पुरख अबिनाशी मेला कन्त भतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपर, अलक्ख अगोचर आपे जाणे आपणी कार। करता पुरख कार कमांयदा, जुगा जुगन्तर खेल अपार। धरनी धरत धवल वेख वखांयदा, लक्ख चुरासी पावे सार। ब्रह्मा कँवल कँवल मुख खुलांयदा, उच्ची कूक करे पुकार। विष्न रो रो नैण नीर वहांयदा, राह तक्के परवरदिगार। शंकर हथ्थ त्रशूल सुटांयदा, उठाया जाए ना जगत भार। कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा, निरगुण पावे साची सार। आपणा कीता कौल निभांयदा, भुल्ल ना जाए अभुल्ल गुर करतार। आदि आदि आपणा हुक्म सुणांयदा, मध खेल करे सर्ब संसार। अन्तिम आपणी जोत

११५१ ११५१

जगांयदा, जोती जामा भेव न्यार। नानक गोबिन्द राह तकांयदा, राह तक्के मीत मुरार। पुरख अबिनाशी वेख वखांयदा,

०६ ०६

सचखण्ड दुआरे बैठ सच्ची सरकार। निहकलंकी जामा पांयदा, आप आपणा कर पसार। सम्मत सम्मती राह तकांयदा, आदि जुगादी साची कार। वीह सद बिक्रमी माण दवांयदा, दो जहानां सांझा यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे धुर दरबार। धुर दरबारी हरि निरँकारा, एका रंग समाया। दूजी कुदरत कर पसारा, तीजे नेत्र वेख वखाया। चौथे पद हो उज्यारा, पंचम आपणा नाद सुणाया। छेवें छप्पर छन्न ना कोए पसारा, सत्तवें सति पुरख निरँजण आसण लाया। अठ्ठां तत्तां दए सहारा, अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुध नाल रलाया। नौं दर खोल्हे जगत किवाड़ा, पंचम धाड़ा मेल मिलाया। दसवें घर ब्रह्म पसारा, ब्रह्म जोती जोत जगाया। पारब्रह्म वसे धाम न्यारा, इक्क दस रंग रंगाया। दो दस गुप्त ज़ाहरा, सूरा सरबंग मृदंग हथ्थ उठाया। त्रै दस साधां सन्तां करे पार किनारा, शाह सुल्ताना सीस ताज ना कोए टिकाया। चार दस गुरमुखां मेला हस्स हस्स करे प्यारा, पूर्ब लहिणा झोली पाया। दस पंज पंदरां नस्स नस्स तीर्थ तट्टां करे ख्वारा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती पावे सारा, गुरदर मन्दिर मस्जिद मठ फोल फुलाया। वीह सद सोलां ख़ाली करे भण्डारा, नौं खण्ड पृथमी फेरा पाया। सत्तां दीपां दए हुलारा, हरि का भेव किसे ना आया। वीह सद सतारां हो उज्यारा,

निहकलंक नरायण लए अवतारा। सीस आपणे ताज सुहाया, सृष्ट सबाई करे ख़बरदारा, भुल्ल रहे ना राया। लिख्या लेख धुर दरबारा, धुर दी बाणी बाण लगाया। गूढ़ी नींदे सुत्ते हो गंवारा, कलिजुग कूड़ा पर्दा पाया। माया ममता मोह विकारा, हउमे हंगता रही जलाया। मिल्या मेल ना साचे यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुलाया।

❋ १ अस्सू २०१७ बिक्रमी राष्ट्रपती डाकटर रजिंदर प्रसाद नूं ❋

पहली चेत्र लेख लिखाया, पारब्रह्म दया कमाईआ। राष्ट्रपति आप उठाया, श्री भगवान भेव ना राईआ। गति मित ना कोए जणाया, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। पंज तत्त काया रत्त तपाया, आदि निरँजण ना जोत रुशनाईआ। एकँकारा नज़र ना आया, दूई द्वैती पर्दा ना कोए लाहीआ। हरि पुरख निरँजण हरि का रूप दिस ना आया, वेले अन्त ना कोए सहाईआ। सो पुरख निरँजण सीस आपणे ताज टिकाया, जगत जगदीश बेपरवाहीआ। अस्सू तिन्न दिवस समझाया, भुल्ल रहे ना राईआ। सिँघ शेर शेर बण के लोकमात आया, शब्द रूप करे चढ़ाईआ। रातीं सुत्तयां लए दबाया, आपणा जल्वा दए वखाईआ। पंचम मुख ताज अग्गे नज़री आया, नेत्र रोवे नीर वहाईआ। सगला संग ना कोए दसाया, झूठी दिसे सर्ब शहनशाहीआ। एका जोत निरगुण निरवैर करे रुशनाया, इष्ट गुर गोबिन्द रूप दरसाईआ। शब्द विचोला विच धुनी धुनी नाद वजाया, आपणी तार आपणी सितार आप हलाईआ। इक्क इक्क पंज पंज वक्त लिखाया, लेखा लिख्या ना मेटे कोई मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला कौल पूर कराईआ। रातीं सुत्तयां दरसन देणा, नेत्र नैण खुल्हाईआ। शाह भबीखण चुक्के लहिणा, रामेशवर पन्ध मुकाईआ। तेरे कोलों लए आपणा गहिणा, सिर आपणे ताज सुहाईआ। कलिजुग अन्तिम वहण वहणा, शाह सुल्ताना दए रुढ़ाईआ। ना कोई मेटे गुरू गोबिन्द कहिणा, पुरख अकाल पूरा रिहा कराईआ। पहली चेत्र वीह सौ अठारां बिक्रमी वेखणा आपणे नैणां, पंज प्यारे आवण वाहो दाहीआ। ख़ाली खण्डा पुरख अबिनाशी आपणे हथ्थ रखाउँणा, उप्पर म्यान ना कोए चढ़ाईआ। पंजां प्यारयां पीले बस्त्र तन छुहाउँणा, उच्ची कूक दए सुणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा नाम जपाउँणा, तेरे कन्न वाज एका नाद वजाईआ। बांह दे सराणे मूल ना सौणा, लुट्टी जाए जगत शहनशाहीआ। पुरख अबिनाशी आपणा हुक्म मनाउँणा, हुक्में अंदर सर्ब लोकाईआ। नौं खण्ड पृथमी एका राग अल्हाउँणा, तेरी रसना करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीजी अस्सू देवे दरस, पहली चेत्र मेटे हरस, अर्श फ़र्श करे रुशनाईआ।

पुरख अकाल खेल रचाया, गोबिन्द सूरा नाल रलांयदा। नाम खण्डां हथ्थ उठाया, लोहार तरखाण ना कोए घड़ांयदा। धुर दा ताज सीस टिकाया, राज राजान ना कोए सुहांयदा। शब्द अगम्मी बाज उडाया, लोआं पुरीआं आप फिरांयदा। दो जहानां काज रचाया, निरगुण आपे वेख वखांयदा। फ़तेह डंका इक्क वजाया, नौं खण्ड पृथ्मी आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार आप बंधांयदा। पन्थ ख़ालसा उठणा जाग, गुर गोबिन्द सिँघ सूरबीर जोत जगाईआ। पहली चेत्र दिल्ली दुआरे लाए भाग, नंगी कटार हथ्थ उठाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी जगाए इक्क चराग, घर घर दीवा दए बुझाईआ। शब्द उपजाए धुन वैराग, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। कलिजुग अन्तिम जीव क्यों बणया काग, हँस हँसा चोगी चोग चुगाईआ। जिस उपजाया तिस पकड़ी वाग, डोरी हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। त्रैगुण माया डरसणी नाग, घर घर आपणा डंग चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा धुर फ़रमाणा दए समझाईआ। धुर फ़रमाणा हरि भगवाना, आपणा आप जणांयदा। निहकलंकी पहरया बाणा, जोती जामा भेख वटांयदा। गोबिन्द सूरा सिँघ बलवाना, शस्त्र बस्त्र तन सजांयदा। साचा खण्डा रक्खे सच म्याना, दो जहाना आप चमकांयदा। नौं खण्ड पृथ्मी सुणाए एका गाणा, एक अक्खर आप अलांयदा। सभ नूं मन्नणा पए भाणा, पुरख अबिनाशी सद भाणे विच रहांयदा। तख्तों लाहे राजा राणा, सीस ताज ना कोए टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म सुणांयदा।

राम राम हरि जोत जगाई, सृष्ट सबाई सुरत ल्ए प्रनाया। सीता सुरत होए कुड़माई, घर साचे वज्जे वधाईआ। शास्त्र सिमरत देण गवाही, जुगा जुगन्तर सेव कमाईआ। कलिजुग अन्तिम कट्टे फ़ाही, निहकलंक वड्डी वड्याईआ। काया बण फिरे साचा माही, दिवस रैण फेरी पाईआ। जन भगतां मेटे लग्गी शाही, दुरमति मैल धुआईआ। सीता राम गाउँदे भुल्ले राही, आपणा पन्ध ना कोए मुकाईआ। पंडत पांधे थक्के मांदे साचा राह ना कोए वखाई, साचे पौड़े ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका तत्त दए समझाईआ। राधा कृष्न कर ध्यान, निरगुण निरवैर आपणा खेल खलाया। अठारां अध्याए गीता देवे इक्क ज्ञान, जिस जन आपणा दरस दिखाया। कूड़ा तोड़े माण अभिमान, माया ममता मोह चुकाया। सति सतिवादी वखाए इक्क निशान, दर घर साचे आप झुलाया। कलिजुग अन्तिम वेखे आण, वेद व्यास गया लिखाया। निहकलंक बली बलवान, ना मरे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, करे खेल बेपरवाहया। खेल अवल्ला इक्क इकल्ला, कायनात आप करांयदा। आपणा रूप बणाए हरि बिस्मिला, बिस्मिल आपणी धार चलांयदा। लेखा जाणे राणी अल्ला, संग मुहम्मद संग जणांयदा। चौदां तबकां एका बल्ला, ऐनलहक बोल सुणांयदा। हक हकीकी लाशरीकी हक मकान एका मल्ला, दूसर दर ना कोए सुहांयदा। नूर नुराना नूर इलाही आपे रला, नूरी जल्वा डगमगांयदा। अमाम महिदी दिशा लहिंदी फड़ाए आपणा पल्ला, एका पल्लू हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। वाली हिन्द कर ध्यान, हरि शब्द सच्ची जणाईआ। चार वरन कर पछाण, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश हरि समझाईआ। प्रगट होया हरि मेहरवान, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। देवणहारा धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। कलिजुग अन्तिम चुक्कणी काण, लोकमात रहिण ना पाईआ। वरन बरन सर्ब मिट जाण, दीन मज़्ब ना कोए वड्याईआ। सृष्ट सबाई एका पीण खाण, इष्ट देव गुर इक्क अख्वाईआ। पन्थ ख़ालसा ना बण अंञाण, वेला गया हथ्थ ना आईआ। मुस्लिम सुन्नी तेरा इक्क ईमान, आलमगीर बेपरवाहीआ। पंडत पांधे कवण करे तेरी कल्याण, आप मेटे झूठी शाहीआ। जगत समाज वेखे विधान, आप आपणी जोत कर रुशनाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी देवे एका दान, पारब्रह्म प्रभ आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर,

११५४
निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा बल रखाईआ। बल रखाए हरि भगवन्त, महिमा कथ कथी ना जाईआ। कलिजुग

०६
लहिणा देण चुकाए अन्त, अन्तिम आपणी कल वरताईआ। सतिजुग फुलवाड़ी लाए सुहाए रुत बसन्त, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीवां देवे इक्क ज्ञान, जीआ दान आप अख्वाईआ।

हरि सतिगुर भोग लगांयदा, कर किरपा गुण निधान, हरिसंगत घाल लेखे पांयदा, पुरख अबिनाशी वाली दो जहान। काल महांकाल हरिसंगत चरनां हेठ रखांयदा, उप्पर बिठाए साचे लाल। शब्द सरूपी ताल वजांयदा, दो जहानां बण दलाल। नाम धन वस्त झोली पांयदा, नाता तोड़ जगत जंजाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए सदा प्रितपाल। हरि रसना भोग अपारा, निरगुण सरगुण चोग चुगांयदा। हरि अमृत भर भण्डारा, आपणी दृष्टी विच समांयदा। हरि वस्त वेख हरि थारा, दर घर साचे आप सुहांयदा। हरिभगतन करे प्यारा, पीआ प्रीतम वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रस रस भोगी आप अख्वांयदा। रसना भोग निरगुण धार, सरगुण सतिगुर रूप समांयदा।

११५५
०६

आदि जुगादी साची कार, सति सतिवादी आप करांयदा। पहला भोग लाया हरि निरँकार, विष्नूं आपणा जल प्यांअदा। दूजा रंग चाढ़े अपर अपार, ब्रह्मे कँवल नाभ भरांयदा। तीजे शंकर कर प्यार, संसा रोग सर्ब मिटांयदा। चौथे रक्ख सचखण्ड सच्चे दरबार, आपणे चरनां हेठ दबांयदा। जुग जुग गुरूआं पीरां देवे बण वरतार, आपणी भिच्छया झोली पांयदा। साध सन्त मंगदे रहिण बण भिखार, नेत्र नैण सर्ब राह तकांयदा। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, करे खेल अगम्म अपार, साचा अमृत साचा रस आपणे हथ्थ रखांयदा। जुग जुग गुरमुख विरले देवे हस्स हस्स, लक्ख चुरासी सर्ब तरसांयदा। अठसठ तीर्थ नौं खण्ड पृथ्मी रहे नट्ठ, साचा अमृत हथ्थ ना आंयदा। सतिगुर पूरा गहर गम्भीर गुणी गहीरा गया दस, सच प्याला सतिगुर हथ्थ उठांयदा। जिस जन हिरदे अंदर जाए वस, तिस अमृत जाम प्यांअदा। मेटे रैण अन्धेरी मस, कोटन कोटि रवि ससि आप चमकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे साचा भोगी, निरगुण निरगुण भोग वखांयदा। निरगुण भोग हरि संजोग, सचखण्ड दुआरे आप लगाईआ। ना कोई लेखा जाणे चौदां लोक, चौदां तबक भेव ना राईआ। ना कोई चारे बाणी गाए सलोक, ब्रह्मा वेद ना दए गवाहीआ। ब्रह्मा विष्न शंकर मंगे मोख, प्रभ अमृत रिहा प्याईआ। हरि का अमृत मिटाए हरख सोग, चिंता दुःख नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भोग आप लगाईआ। लगाए भोग भव प्रसादि, त्रैगुण भेव मिटाया। पुरख अकाल आदि जुगादि, जुग जुग आपणा वेस वटाया। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्मादि, पारब्रह्म भेव ना राया। शब्द वजाए साचा नाद, दूजा संख ना हथ्थ उठाया। हथ्थ जोड़ ना किसे अगे करे कोई अरदास, आपणा भोग आप लगाया। गुरमुखां लहिणा देणा कट्टे दस दस मास, मात गर्भ फेर ना आया। रसना गाया लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन सरनाई आया। लहिणा देणा चुक्या पृथ्मी आकाश, गगन मंडल गुरसिख चरनां हेठ दबाया। सतिगुर साहिब सुल्तान जन भगतां करे पूरी आस, हरिजन निरास ना कोए रखाया। निज घर निज आत्म निज दाता करे वास, निज खेड़ा आप सुहाया। निरगुण सरगुण होया दासी दास, जुग जुग आपणी सेव कमाईआ। नाता तुटा जंगल जूह उजाड़ प्रभास, गुरमुख तीर्थ तट नहावण कोए ना जाया। घर मन्दिर मस्जिद जोत करे प्रकाश, घर गुर शब्दी मेल मिलाया। दूजे दर ना रक्खणी कोई आस, कलिजुग कूके दए दुहाया। साची वस्त ना किसे पास, कलिजुग सन्त ख़ाली ठूठे हथ्थ रखाया। प्रगट होया शाहो शाबास, शाह सुल्तान वड्डी वड्याआ। आपणी खेली आपे रास, देवणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रसादि गुर किरपा नाउँ धराया। सच प्रसादि शब्द भण्डारा, सतिगुर पूरा आप वरताईआ। जन भगत सोहण सच दुआरा, घर साचे वज्जी वधाईआ। जिस

जन नेत्र लोचण नैण दरसन पाया एका वारा, शिवदुआला मठ ना पूजण जाईआ। हरि का रूप अगम्म अपारा, घर घर बैठा मुख छुपाईआ। जिस जन किरपा करे आप निरँकारा, निरगुण निरवैर दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डारा नाम वरताईआ। सच भण्डारा रस रसना भोग, रस रसीआ आप करांयदा। नाता तोड़े जगत विजोग, जुगत जग आपणे हथ्थ रखांयदा। गुर शब्द मिलावा धुर संजोग, दर घर साचा आप सुहांयदा। लेखा चुक्के लोक परलोक, मोख मुक्त चरन दासी आप करांयदा। हरिसंगत पुरख अकाल रक्खणी एका ओट, शब्द गुरू संग निभांयदा। कलिजुग माया ममता मनमुख जीवां भरी ना पोट, दिवस रैण सर्ब कुरलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साचा रस अमृत धार गुरसिखां मुख चुआंयदा। गुरमुखां मुख अमृत धार, निझर झिरना आप झिराईआ। कँवल कँवला कर उज्यार, पत डाल्ही फूल महिकाईआ। फुल फलवाड़ी वेख संसार, साची मालण बेपरवाहीआ। जोत अकालण हो त्यार, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। गुरमुखां दुआरे बणे सवालण ख़ाली झोली अगे डाहीआ। जिस जन सतिगुर पूरा मिल्या प्रितपालण, पूरी इच्छया दए कराईआ। जो जन पहली अस्सू आए घाल घालण, कोटन कोटि जन्म दे पाप दए मिटाईआ। कलिजुग तेरी गले ना कोए दालण, दलिद्री दुःख आप मिटाईआ। त्रैगुण हड्डीआं ना पाए बालण, चिंता चिखा ना कोए वखाईआ। जोत निरँजण बख्शे चानण, चन्द चांदनी मुख शर्माईआ। आप उठाए पंछी डिगे आहलण, गुरमुख आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन अमृत रस चखाईआ। जिस जन अमृत चाख्या, मिटया जगत अन्धेर। गुर सतिगुर पूरा भाख्या, नाता तुटा संझ सवेर। गुण गाया अलक्ख अलाख्या, अलक्ख अलक्खणा मेले अन्तिम वेर। धुर दरगाही मिल्या साचा साकीआ, भर प्याला देवे सिँघ शेर दलेर। लहिणा देणा चुक्के बाकीआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लहिणा दए नबेड़। पूर्ब लहिणा मुकाया, कर किरपा आप करतार। अमृत आत्म जाम प्याया, भर सुराही मीत मुरार। साचे हुजरे बह बह पर्दा लाहया, मुख नकाब दए उतार। अहिबाब रबाब इक्क वजाया, सति सतिवादी सच सितार। आदि जुगादी खेल खलाया, बोध अगाध शब्द धुन्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे लाए पार। लग्गयां भोग होया परवान, परम पुरख पति परमेश्वर दया कमाईआ। साची सखीआं मिल्या साचा काहन, जिउँ सीता राम सुहाईआ। साचे मन्दिर प्रकाश कोटन भान, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। सच दुआर धर्म निशान, दरगाह साची आप झुलाईआ। कलिजुग अन्त करे पछाण, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े मेले आण, वेखणहारा दिस ना आईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि नरायण आप अख्वाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला लेखा दए नबेड़, बिन कागद कलम छाहीआ। कागद कलम छाही करे प्यार, तेरा लेख लिख्या ना जाईआ। अलक्ख अलक्खना जगत लेखे वसे बाहर, जुगत जगत ना कोए रखाईआ। नौं नौं चार चौकड़ी जुग निरगुण सरगुण करया खेल गुप्त ज़ाहर, कलिजुग अन्तिम गुप्त धार वखाईआ। गुरमुखां करे आप प्यार, प्रेम प्याला जाम प्याईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, दीन दयाला दया कमाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, सत्त समुंदर बणे मस, कोटन कोटि कोटि जुग सेव कमाईआ। बनास्पत अठारां भार ना कोए विचार, मुखी मुख ना कोए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि अन्त अन्त हरि भगवन्त, आपणी कल आप वरताईआ।

❋ ५ अस्सू २०१७ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह पिण्ड मांगा सराय ज़िला अमृतसर ❋

सो पुरख निरँजण ठांडा दरबार, सचखण्ड दुआर आप सुहांयदा। थिर घर खोल्ह किवाड़, निरगुण निरवैर आसण लांयदा। एकँकारा रूप अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। आदि निरँजण नूर उज्यार, जोत उजाला डगमगांयदा। श्री भगवान वसे धाम न्यार, नेहचल महल्ल अटल आप सुहांयदा। अबिनाशी करता बेऐब परवरदिगार, जूनी रहित दिस ना आंयदा। पारब्रह्म निराकार, रूप रेख रंग ना कोए रखांयदा। जोती जोत कर प्रकाश, आप आपणी धार बंधांयदा। जुगा जुगन्तर खेल तमाश, करता पुरख आप करांयदा। आदि जुगादि ना जाए विनास, आपणी रचना वेख वखांयदा। निरगुण निरगुण होए दास, निरगुण निरगुण सेव कमांयदा। निरगुण वसे निरगुण पास, निरगुण संग समांयदा। निरगुण मंगे निरगुण पूरी करे आस, निरगुण भिच्छया आपणी इच्छया झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, इक्क इकल्ला आपणी खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजण सच महल्ला, हरि पुरख निरँजण आप सुहाईआ। एकँकारा इक्क इकल्ला, आदि निरँजण जोत जगाईआ। अबिनाशी करता आपे वसया उच्च अटला, श्री भगवान सेव कराईआ। पारब्रह्म सच सिँघासण बैठा मला, दरगाह साची धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर निराकार मूर्त अकाल खेल अपार, अनुभव आपणी धार चलाईआ। अनुभव धार हरि मेहरवान, एकँकारा आप चलांयदा। सचखण्ड दुआरे हो त्यार, निरगुण आपणा रूप प्रगटांयदा। थिर घर साचे खोल्ह किवाड़, आपणा पर्दा आप उठांयदा। आप आपणा कर प्यार, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे जोती जाता

हो उज्यार, दर घर साचे साचा वेस धरांयदा। आपे कमलापाती मीत मुरार, नर नरायण भेव ना आंयदा। आपे नारी कन्त खेले खेल अगम्म अपार, आपे साची सेज सुहांयदा। आपे वेखे विगसे करे विचार, दूसर संग ना कोए धरांयदा। अनुभव रूप हो प्रकाश, पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा। साचे मंडल पावे रास, सूरज चन्न ना कोए चढ़ांयदा। ना कोई पृथमी ना आकाश, गगन मंडल ना सोभा पांयदा। त्रैगुण माया ना कोए दासी दास, ब्रह्मा विष्न शिव ना संग रलांयदा। पंज तत्त ना कोए वास, मन मति बुध ना कोए धरांयदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना कोए प्रभास, समुंद सागर ना वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी कोए ना करे पूरी आस, साध सन्त गुर पीर अवतार चोला तन ना कोए हंढांयदा। शब्द नाद ना कोए धुन्कार, चारे वेद ना कोए सुणांयदा। अक्खर वक्खर ना कोए प्यार, जगत विद्या ना कोए पढ़ांयदा। रसना जिह्वा ना कोए जैकार, बत्ती दन्द ना कोए हलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, दर घर साचे सोभा पांयदा। सोभावन्त श्री भगवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। तख्त निवासी हरि मेहरवान, सच सिँघासण रिहा सुहाईआ। सचखण्ड दुआरे नौंजवान, इक्क इकल्ला रूप वटाईआ। शाहो भूप बण सुल्तान, राज राजान आप अख्वाईआ। धर्म उठाए सच निशान, दरगाह साची आप झुलाईआ। खेले खेल गुण निधान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। दर दरवेश बणे दरबान, आपणी सेवा आप कराईआ। आपे देवे धुर फरमाण, शब्दी शब्दी शब्द जणाईआ। सचखण्ड सुहाए सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, करे कराए एकँकारा, अकल कल आपणा नाउँ रखाईआ। अकल कला हरि भगवन्त, वेद कतेब भेव ना राया। आदि जुगादी महिमा अगणत, लेखा लिख ना सके कोए राया। सच सिँघासण सोभावन्त, पुरख अबिनाशी डेरा लाया। ना कोई शब्द ना कोई मंत, अकशर अक्खर ना कोए पढ़ाया। ना कोई नारी ना कोई कन्त, सेज सुहञ्जणी ना कोए हंढाया। ना कोई चाढ़े रूप बसन्त, फुल फलवाड़ी ना कोए महिकाया। लेखा जाणे आदि अन्त, आदिन अन्त बेपरवहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला, अनुभव आपणा रूप दरसाया। अनुभव रूप पारब्रह्म, नेत्र नैण ना कोए दरसाईआ। मात गर्भ ना पए जम्म, रक्त बूंद ना मेल मिलाईआ। जुगां जुगन्तर जाणे आपणा कम्म, करता करनी आपणी किरत आप कमाईआ। ना कोई ख़ुशी ना कोई ग़म, हरख सोग विच ना आईआ। ना कोई पवण स्वासी ल्ए दम, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। हड्ड मास नाड़ी ना दिसे चम्म, अप तेज वाए पृथमी आकाश पंज तत्त ना कोए हंढाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्नृ, पारब्रह्म प्रभ आप चलाईआ। आपे जननी जने जन, जोती जाता जोत कर

११५८ ०६

रुशनाईआ। आपे राग सुणाए आपणे कन्न, धुनी नाद आप वजाईआ। आपे वसे बिन छप्पर छन्न, महल्ल अटल सोभा पाईआ। आपे घड़े आपे लए भन्न, घड़न भन्नणहार समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। आपे देवणहारा डंन, आपे वेखे थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती नूर उज्यार, आदि जुगादी खेल अपार, खेलणहारा दिस ना आईआ। खेलणहारा बेपरवाह, एका रंग समाया। सचखण्ड दुआरे वसे साचे थाँ, थिर घर साचा बंक सुहाया। जुगा जुगन्तर करे सच न्याँ, निरगुण निरवैर आपणा वेस वटाया। आप उपजाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप धराया। आपे पिता आपे माँ, पूत सपूता आपे गोद उठाया। आपे देवणहारा ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण जोत साचे धाम वसे, ना कोई किला ना कोई कोट, चार दीवार ना कोए वखाया। साचा किला हरि करतार, आपणा आप उपजाईआ। सचखण्ड निवासी खेल अपार, थिर घर साचे रिहा कराईआ। दरगाह साची खोल्ह किवाड़, अनुभव रूप करे रुशनाईआ। जोती जोत कर प्यार, जोती जाता नाउँ वड्याईआ। सुत दुलारा होए उज्यार, पूत सपूता शब्दी नाउँ उपजाईआ। शब्दी सुत खेल न्यार, अबिनाशी करता आपणी इच्छया इक्क समझाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कर त्यार, लोआं पुरीआं रचना रचाईआ। लेखा जाणे जणाए अगम्म अपार, आपणी धारा धार वहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यार, बंस बंसा दए वड्याईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, रजो तमो सतो करे कुड़माईआ। पंज तत्त दर दर भिखार, दर दरवेश वेख वखाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, हरि लेखा बेपरवाहीआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, आप आपणा भेव चुकाईआ। विष्नूं विश्व पावे सार, हरि हरि एका नज़री आईआ। एका ब्रह्म कर पसार, पारब्रह्म आपणी वण्ड वण्डाईआ। शब्द नाद नाद धुन्कार, धुन आत्मक आप सुणाईआ। चारे वेदां भर भण्डार, चारे खाणी चारे बाणी दए समझाईआ। चारे जुग पावे सार, चार यारी लए मिलाईआ। चारों कुंट होए उज्यार, चौथे पद बह बह आपणा मंगल गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अगम्म अपार, सृष्ट सबाई रचन रचाईआ। सृष्ट सबाई रचन रचांयदा, पारब्रह्म हरि करतार। मंडल मंडप आप सुहांयदा, रवि ससि कर उज्यार। ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लांयदा, तिन्नां देवे नाम आधार। लक्ख चुरासी भाण्डा आप घड़ांयदा, घाड़न घड़े बण ठठयार। गृह गृह घर घर अंदर मन्दिर वण्ड वण्डांयदा, माणस मानुश कर विचार। नौं दुआरे खेल खिलांयदा, जगत वासना भर भण्डार। काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलांयदा, आसा तृष्ना करे प्यार। हउमें हंगता गढ़ बणांयदा, दूई द्वैती बन्ने धार। शरअ शरायती इक्क रखांयदा, लाशरीक खेल अपार। घर घर विच आप उपजांयदा, आप आपणी किरपा धार। आपणा मार्ग आप वखांयदा, डूँघी कंदर खेल न्यार। सुखमन

टेढी बंक सुहांयदा, ईड़ा पिंगल करे विचार। आत्म सरोवर इक्क सुहांयदा, नाभी भरया आप करतार। जोत निरँजण आप जगांयदा, कमलापाती मीत मुरार। बजर कपाटी कुण्डा लांहयदा, नेड़ ना आए पंचम धाड़। आप आपणा खेल खिलांयदा, लेखा जाणे गुप्त ज़ाहर। आत्म सेजा आप सुहांयदा, दस्म दुआरी होए करे खेल अगम्म अपार, आप आपणा नाउँ धरांयदा, नूर नुराना हो उज्यार। शब्द अनादी धुन सुणांयदा, पंचम सखीआं मिल मिल गायण वारो वार। सुरत सवाणी वेख वखांयदा, शब्द हाणी कर प्यार। अमृत ठंडा जल पाणी आप प्यांअदा, आपे होए पीवणहार। आपे हँस काग रूप वटांयदा, आपे काग उडे हँसां डार। आपे आपणी चोग चुगांयदा, सो पुरख निरँजण हो त्यार। हँ रूप सर्ब दरसांयदा, सोहँ पारब्रह्म ब्रह्म एका धार। आदि आपणी रचन रचांयदा, रचना रचे हरि निरँकार। काया माटी भाण्डे कच हरि सुहांयदा, त्रैगुण तत्त कर वरतार। ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकांयदा, पुरख अबिनाशी दर दुआर। तेरा भेव कोए ना आंयदा, हउँ सेवक सेवादार। कवण रूप लोकमात मेल मिलांयदा, निरगुण सरगुण पावे सार। पुरख अबिनाशी शब्द जणांयदा, नाद अनादी इक्क धुन्कार। निरगुण सरगुण रूप धरांयदा, लोकमात खेल करे अपार। ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलांयदा, दोहां विचोला सिरजणहार। साचा ढोला आपे गांयदा, जुगा जुगन्तर करे साची कार। पंज तत्त चोला आप हंढांयदा, मात गर्भ वसे बाहर। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म लेखा लेखे पांयदा, गुर रूप आप निरँकार। अवतार आपणी खेल खिलांयदा, जुग जुग करे सच विहार। साचे भगत आप जगांयदा, लक्ख चुरासी विच्चों लए उठाल। एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा, मार्ग दस्से राह सुख़ाल। साचे सन्त वेख वखांयदा, नेड़ ना आए काल महांकाल। गुरमुख आपणे लेखे पांयदा, नाता तोड़ जगत जंजाल। गुरसिख साचे धाम बहांयदा, निरगुण सरगुण करे प्रितपाल। कलिजुग जीव जूनी जून आदि अन्त लक्ख चुरासी गेड़ा आप दवांयदा, ना कोई सके सुरत संभाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क वखांयदा। साची सिख्या धुर दरबार, ब्रह्मे विष्न शिव हरि समझांयदा। पुरख अबिनाशी लै अवतार, गुर गुर आपणा रूप वटांयदा। सतिगुर खेल करे संसार, संसा रोग सर्ब मिटांयदा। भगत भगवन्त लए उधार, साध सन्त मेल मिलांयदा। गुरमुखां बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। गुरसिख साचे लाए पार, डुबदे पाथर आप तरांयदा। लक्ख चुरासी मारे मार, जम की फ़ाँसी इक्क वखांयदा। राए धर्म करे ख्वार, चित्रगुप्त वेख वखांयदा। लाड़ी मौत कराए श्रंगार, वेले अन्त सर्ब प्रनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त हरि समझांयदा। एका तत्त हरि जणाया, भुल्ल रहे ना राईआ। विष्नूं विश्व आप उठाया, आप जल्वा नूर दरसाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म रंग रंगाया, उतर कदे ना जाईआ। शंकर लेखा रिहा वखाया, अन्तिम आपणा

भेव खुलाईआ। तिन्नां विचोला बण के आया, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। अगम्मी ढोला एका गाया, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। लक्ख चुरासी काया चोला जीव जंत बणाया, जुग जुग आपणी सेज सुहाईआ। निरवैर तोला इक्क अख्वाया, तोलणहार सृष्ट सबाईआ। आपणा पर्दा ओहला दए चुकाया, ब्रह्मे विष्न शिव नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा अछल अछेदा चारे वेदां वेख वखाईआ। चारे वेद हरि का ज्ञान, पारब्रह्म ब्रह्म आत्म आप जणांयदा। शब्द अगम्मी इक्क निशान, लोकमात झुलांयदा। चार जुग वेखे आण, अन्तिम पन्ध मुकांयदा। नौं दरवाज़े खोल्ह दुकान, माणस जीव आप भवांयदा। नौं खण्ड पृथ्मी हो प्रधान, नव नव आपणी धार चलांयदा। चार जुग पावे सार, एका रंग रंगांयदा। जुगा जुगन्तर आवे जावे वारो वार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणी वण्ड वण्डांयदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग उतरे पार, पारब्रह्म ब्रह्म एह समझांयदा। गुर पीर अवतार गावण आपणी वार, वार सोहला ढोला आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सचा वर, आपणी भिच्छया इक्क वखांयदा। विष्नूं रक्खणा इक्क ध्यान, सो पुरख निरँजण आप जणांयदा। ब्रह्मे देवे इक्क ज्ञान, पारब्रह्म आप वड्यांअदा। शंकर बख्शे साचा माण, नेत्र नैणां दरस दिखांयदा। तिन्नां विचोला जाणी जाण, जानणहारा खेल खिलांयदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग चुक्कणी आण, थिर कोए रहिण ना पांयदा। सतिजुग तेरा चुक्के माण, बावण रूप ना कोए धरांयदा। त्रेता त्रिया आवे हाण, राम रावण ना कोए घांयदा। द्वापर दिसे ना कोए निशान, कान्हा बंसरी ना कोए वजांयदा। कलिजुग अन्तिम झूठ निशान, सृष्ट सबाई छांयदा। ना कोई दीसे राज राजान, शाह सुल्तान सीस ताज ना कोए रखांयदा। नव नव नाता पंज शैतान, पंच प्रपंच खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी साचा हरि, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। सो पुरख निरँजण सूरा बलवान, हरि पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। एकँकारा नौजवान, ना मरे ना जाईआ। आदि निरँजण खेल महान, श्री भगवान आप कराईआ। अबिनाशी करता देवे दान, पारब्रह्म प्रभ आपणी झोली पाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव खोल्ह दुकान, त्रैगुण माया हट्ट चलाईआ। चौदां लोक हो प्रधान, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। निष्अक्खर गुण निधान, आप आपणे विच रखाईआ। लोकमात हो प्रधान, पंज तत्त मेला सहिज सुभाईआ। गुर रूप गुण निधान, सतिगुर साचा वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता वेखे आण, द्वापर आपणा बन्धन पाईआ। कलिजुग करे कूड़ कल्याण, कालख टिक्का वेखे शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौं नौं चार गेड़ा रिहा भवाईआ। नव नौ चार गेड़ भवाया, जुग करता खेल खिलांयदा। सति सतिवादी साची धार बंधाया, सतिजुग साचा राह चलांयदा। ब्रह्म

११६१
०६

ब्रह्मादी खोज खुजाया, आप आपणी खेल खिलांयदा। नाद अनादी शब्द वजाया, बोध अगाधी आप अलांयदा। वार अठारां खेल अपारा, हरि निरँकारा सतिजुग साचे जोत जगाया, भगत भगवन्त वेख वखांयदा। त्रेता तेरी धार बंधाया, गढ़ हँकारी रहिण ना पाया, एका चिल्ला हथ्थ उठांयदा। सच सवाणी लए प्रनाया, ग़रीब निमाणे गले लगाया, धुर दी बाणी राग अलाया, राम राम राम वड वड्याईआ। नूरी जोत जोत रुशनाया, काया चोला लए बदलाया, पर्दा ओहला इक्क रखाया, भेव अभेदा भेव खुलाईआ। कान्हा कंसा नाउँ धराया, आपणा बंसा आप सुहाया, ज्ञान गीता इक्क दृढ़ाईआ। वेद व्यासा भेव जणाया, अठ दस अठारां पुराण लिखाया, लक्ख चार सतारां हज़ार सलोक गणाया, अक्खर अक्खर करे पढ़ाईआ। कलिजुग आपणा रूप वटाया, काला सूसा तन छुहाया, ईसा मूसा खेल खलाया, चार यार संग मुहम्मद बेऐब परवरदिगार नूरी अल्ला एको गाया, मुकामे हक इक्क खुदाईआ। हक हकीकत वेख वखाया, लाशरीक इक्क खुदाया, नूरी जल्वा सच्चा शहनशाहीआ। सच महिराबे आसण लाया, मुख नकाब ना कोए धराया, आपणा नूर आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधाईआ। जुग जुग धार हरि निरँकार, आपणी आप चलांयदा। कलिजुग वेख कूड़ अँध्यार, पारब्रह्म प्रभ दया कमांयदा। पंज तत्त तन कर प्यार, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। नानक नाम हो उज्यार, नाम सति मन्त्र इक्क दृढ़ांयदा। चार वरनां करे प्यार, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान आपणे गल लगांयदा। देवणहारा धुर फ़रमाण, शब्द अनादी नाद वजांयदा। चारे खाणी कर प्यार, साची बाणी आप अलांयदा। परा पसन्ती एका धार, मद्धम बैखरी आप सुणांयदा। नौं खण्ड पृथ्मी उच्ची कूक रिहा पुकार, बिन हरि साचा कोए नज़र ना आंयदा। जुग जुग बेड़ा लाए पार, सतिजुग त्रेता द्वापर आप तरांयदा। कलिजुग अन्तिम आए वार, सगला संग ना कोए रखांयदा। नाता तुट्टे मीत मुरार, मात पित भाई भैण लोकमात मुख भवांयदा। चारों कुंट आसा तृष्ना हउमे हंगता फिरे डायण, सति सन्तोख धीरज धीर ना कोए धरांयदा। गुर का दरस ना पेखे कोए नैण विभचार, सृष्ट सबाई जणांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता आप चुकाए लहिणा देण, कलिजुग अन्तिम निहकलंकी जामा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द शब्द फ़रमाणा, देवणहारा दो जहाना, लोआं पुरीआं ब्रह्मंडां खण्डां आप सुणांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड हरि शब्द जणाया, नानक निरगुण सरगुण सेव कमाईआ। शब्द गुरू गुर इक्क समझाया, आदि जुगादि सेव कमाईआ। इक्क इकेला फेरी पाया, जुगां जुगन्तर वड वड्याईआ। सज्जण सुहेला दिस ना आया, दहि दिशा सेव कमाईआ। काया चोला लए बदलाया, एका जोती दस अवतार, गुर गोबिन्द वज्जे वधाईआ। साचा बोला इक्क समझांयदा, वाह वा गुरू फ़तेह गजाईआ। अन्तिम तोला इक्क समझाया, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ।

कलिजुग हौला भार दए कराया, धरती धरत धवल धरनी होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वसे आपणे घर, घर सुहञ्जणां इक्क सुहाईआ। घर सुहञ्जणा हरि सुहाया, तख्त निवासी बेपरवाह। पुरख अकाल डेरा लाया, शहनशाह सच्चा पातशाह। गुर गोबिन्द दरसन पाया, मिल्या मेल धुर दरगाहि। आपणा बोला आप सुणाया, गल पल्लू एका पा। हउँ गोला सेव कमाया, पिता पूत सेव कमा। पंज तत्त प्यार ना कोए रखाया, तेरी जोती जोत रिहा समा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा एका दित्ता जणा। धुर फ़रमाणा हरि जणाया, गुर गोबिन्द वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी होए सहाया, कलिजुग अन्त रहिण ना पाईआ। तेरा तेरे विच टिकाया, तेरी सरन सच्ची सरनाईआ। तेरी रत्त लेखे लाया, तेरा तत्त तत्त वड्याईआ। पुरख समरथ जोत जगाया, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे थाउँ थांया, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां फोल फुलाईआ। साढे तिन्न तिन्न हथ्थ लेखा दए चुकाया, रविदास चुमारा गया लिखाईआ। नाम खण्डा हथ्थ उठाया, चारों कुंट वेख वखाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी वेखे थाउँ थांया, सत्तां दीपां फेरा पाईआ। शाह सुल्तानां दए हलाया, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। चारे वरन दए मिटाया, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाईआ। एका इष्ट सर्ब जणाया, पुरख अकाल सच्ची सरनाईआ। सतिगुर पूरा ना मरे ना जाया, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। जीव जंत ना वण्ड वण्डाया, घट घट आपणा रूप रिहा टिकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा आसण आप सुहाया, लोआं पुरीआं करे रुशनाईआ। ब्रह्मा विष्न सेव लगाया, आदि जुगादी भुल्ल ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम आपणा रूप लए प्रगटाया, निहकलंका नाउँ रखाईआ। नाम डंका इक्क वजाया, नव नव सत्त सत्त चार चार आप सुणाईआ। साचा बंका दए सुहाया, सम्बल नगरी वड वड्याईआ। आदिन अन्ता फेरा पाया, जुगा जुगन्त भेव ना राईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी रिहा गाया, बेअन्त बेअन्त बेअन्त लक्ख चुरासी कूके सर्ब लोकाईआ। आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया, भावी सभ दे सिर ते आप वरताईआ। गुर पीर अवतार साध सन्त पंज तत्त भाण्डा कोई रहिण ना पाया, जो घड़या भन्न वखाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक रूप शाहो भूप सति सरूप निरवैर मूर्त अकाल जूनी रहित बण के आया, फड़ ना सके कोई शहनशाहीआ। शब्द अगम्मी घोड़े चढ़ के आया, नाम खण्डा रिहा चमकाईआ। सचखण्ड दुआरे उच्चे पौड़े साचे डण्डे खड़ के आया, आपणा पर्दा रिहा उठाईआ। गुरमुखां गुरसिखां लड़ फड़ के आया, सन्त भगत भगवन्त लए मिलाईआ। साची नारी हरि कन्त वर के आया, हरिजन आत्म सेज सुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम खेले खेल महान, जूठ झूठ मिटे दुकान, सतिजुग सतिजुग सतिवाद सति पुरख निरँजण साचा मार्ग आप लगाईआ।

❋ ६ अस्सू २०१७ बिक्रमी पिण्ड मांगा सराय ज़िला अमृतसर ❋

सतिगुर पूरा हरि भगवान, हरी हरि एका एकंकारया। आदि जुगादी खेल महान, जुगा जुगन्तर लै अवतारया। धर्म वखाए सच निशान, दो जहानां आप झुला रिहा। कलिजुग अन्तिम होए प्रधान, निरगुण आपणा रूप वटा ल्या। पुरख अबिनाशी नौजवान, निरगुण नेहकर्मी कर्म कमा रिहा। साचे तख्त बैठ सुल्तान, हुक्मी हुक्म आप वरता रिहा। कलिजुग कूड़ी क्रिया वेखे आण, नौं खण्ड पृथ्मी अन्धेरा छा रिहा। ब्रह्मण्ड खण्ड होए सुंञ मसाण, हरि हरि गीत ना कोए अल्ला रिहा। घट घट अंदर पंज शैतान, जगत विकारा संग निभा रिहा। चौदां लोक होए हैरान, साचा हट्ट ना कोए खुला रिहा। चार वरन ना कोए ज्ञान, अठारां बरन भरम भुल्ला रिहा। सखी सुल्तान ना देवे कोई दान, साची भिच्छया ना कोए वरता रिहा। सच प्रकाश ना कोए भान, अन्ध अन्धेर ना कोए गंवा रिहा। धुनी नाद ना कोए कान, अनहद शब्द ना कोए सुणा रिहा। सतिगुर पूरा ना कोए पछाण, गुर गुर मन्त्र ना कोए दृढ़ा रिहा। अमृत सरोवर ना पीण खाण, दुरमति मैल ना कोए धवा रिहा। चरन कँवल ना कोए माण, हरि चरन सेव ना कोए कमा रिहा। पुरख अकाल ना कोए आण, एका इष्ट ना कोए वखा रिहा। चारों कुंट जूठ झूठ जगत प्रधान, माया ममता मोह वधा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रूप आप धरा ल्या। चारों कुंट अन्धेरा अन्ध, सच प्रकाश ना कोए जणाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां ना कोए मुकाए पन्ध, पूरी आस ना कोए कराईआ। आत्म उपजाए ना कोए परमानंद, निजानंद ना कोए रसाईआ। भरमां ढाहे ना द्वैती कंध, दूई पर्दा ना कोए उठाईआ। शब्द सुणाए ना कोए सुहागी छन्द, साची सखीआं मिल मिल मंगल गीत ना कोए गाईआ। जोत उजाला ना चढ़े चन्द, निरवैर जोत ना कोए रुशनाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता सुत्ता दे कर कंड, लक्ख चुरासी करवट सके ना कोए बदलाईआ। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। भेव जणाए ब्रह्म ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। शाह सुल्तानां राज राजानां तोड़नहारा जुग जुग घमंड, घुम्मण घेर वेखे सृष्ट सबाईआ। एकँकारा हरि निरँकारा, जोद्धा सूर बली बलकारा शब्द फड़े चण्ड प्रचण्ड, चण्डी चण्डिका हथ्थ उठाईआ। गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा, लक्ख चुरासी वेखे नार दुहागण रंड, कन्त कन्तूल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग अन्तिम वेस कर, निरगुण निरगुण निरगुण आपणी चाल चलाईआ। जुग जुग वेख वखाया, कर किरपा आप करतार। सतिजुग त्रेता द्वापर पार लँघाया, कलिजुग आई अन्तिम वार। निहकलंकी जामा पाया, प्रगट हो विच संसार। चारे वरन दए गंवाया, रंग चाढ़े अगम्म अपार। ऊँच नीच ना कोए रखाया, ज़ात पात वसया बाहर। शब्द गुर इक्क

समझाया, सृष्ट सबाई सांझा यार। दरगाह साची आप बहाया, नूर खुदाई परवरदिगार। राम रामा रूप प्रगटाया, राम रामा सिरजणहार। साचे तख्त आप सुहाया, तख्त निवासी सच्चा शाहकार। शहनशाह आपणा नाउँ धराया, पातशाह सच्ची सरकार। सच निशाना हथ्थ उठाया, चाढ़े रंग अपर अपार। दरगाह साची आप झुलाया, सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़। थिर घर साचे आप गढ़ाया, आप आपणी किरपा धार। पंचम सीस ताज सुहाया, जगदीस करे विचार। ब्रह्मा विष्न शिव भेव ना राया, गुर पीर अवतार निउँ निउँ करदे रहे निमस्कार। नानक गोबिन्द जगत वखाया, राह तक्के परवरदिगार। पुरख अबिनाशी होए सहाया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जोती जामा भेख वटाया, शब्द अगम्मी फड़ कटार। सच म्यान आप छुहाया, दिस ना आए विच संसार। तिक्खी धारा मुख रखाया, ना कोई घड़े लोहार तरखाण। नौं खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी जीव जंत दिस किसे ना आया, आपे वसे सभ तों बाहर। आपणा हिस्सा आप वण्डाया, कलि कल्की लै अवतार। साची नगरी धाम सुहाया, ना कोई दीसे चार दीवार। जागरत जोत कर रुशनाया, नूरो नूर पसर पसार। धुन अगम्मी नाद वजाया, तुरीआ राग करया ख़बरदार। सच बसन्ती रुत्त सुहाया, पुरख अबिनाशी खिड़ी गुलज़ार। तख्त निवासी वेख वखाया, सतिगुर पूरा सच्ची सरकार। आपणी वण्डण वण्ड वण्डाया, वण्डणहारा निरगुण निराकार। गुरमुख साचे लए जगाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगां जुगन्तर जाणे आपणी कार। कलिजुग अन्धेरा छाया, सच सुच्च ना कोए वड्याईआ। चारों कुंट त्रैगुण माया, त्रै त्रै लोकां पर्दा रही पाईआ। सच सलोक ना कोए जणाया, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। चौदां लोक पन्ध ना किसे मुकाया, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। जगत मोख चरनां हेठ ना कोए दबाया, जगत मुक्ती राह तकाईआ । चार जुग चार वरन हरख सोग ना किसे चुकाया, गुर पीर नेत्र नीर वहा वहा गए जुग जुग पान्धी राहीआ। कलिजुग अन्तिम खेल खलाया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। नौं नौं चार पन्ध मुकाया, नव नौं आपे वेख वखाईआ। चार यारी सथ्थर हेठ विछाया, पंचम मुख मुख वड्याईआ । धुर दा राज जोग इक्क वखाया, स्यासत विरासत रहिण ना पाईआ। शब्द सलोक ढोला साचा गाया, शब्दी बोला इक्क अल्हाईआ। निरगुण सरगुण चोला इक्क हंढाया, पंज तत्त माटी वेख वखाईआ। जन भगतां गोला बण के आया, दिवस रैण सेव कमाईआ। साचा तोला नर नरायण साचा कंडा हथ्थ फड़ के आया, आपणा भार आप वण्डाईआ। अठारां भार चरनां हेठ मल के आया, जगत बनास्पत रही कुरलाईआ। गुरसिखां हौला भार सिर आपणे धर के आया, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर साची कार, करे कराए करनेहार, आदि पुरख अबिनाशी करता आपणी धार आप बंधाईआ। कलिजुग

रैण अन्धेरी रात, चार कुंट रिहा कुरलाईआ। चार वरन ना गाए कोई गाथ, घर घर जगत विद्या पई लड़ाईआ। किसे ना मिले त्रिलोकी नाथ, कँवल नैण नैण ना मुख कोए सालाहीआ। कोई ना करे पूरा घाट, माणस जन्म लेखे कोए ना लाईआ। कोए ना खोल्हे बजर कपाट, दुरमति पर्दा ना कोए लाहीआ। कोए ना जगाए जोत ललाट, जोत निरँजण ना कोए रुशनाईआ। कोए ना वखाए तन पाट, पीत पीतम्बर ना कोए सुहाईआ। कोए ना जणाए नेड़े वाट, चल चल थक्के पान्धी राहीआ। कोए ना दुरमति मैल देवे काट, अठसठ तीर्थ देण दुहाईआ। कोए ना सोए आत्म सेजा साची खाट, पीआ प्रीतम कोए ना दए मिलाईआ। कोए ना अमृत आत्म रस लए चाट, बिख वेखे सृष्ट सबाईआ। कलिजुग अन्तिम खेले खेल बाज़ीगर नटूआ नाट, स्वांगी आपणा सांग रचाईआ। गुरमुख गुर गुर वेखे पंज तत्त काया चोला माटी माट, तन हाटी आप सुहाईआ। लेख चुकाए आन बाट, मात गर्भ फेर ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरवैर निराकार मूर्त अकाल जूनी रहित बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्ध अँध्यार, चार वरन कुरलाया। घर मन्दिर ना कोए उज्यार, गृह अन्धेर ना कोए मिटाया। तन बंक ना कोए प्यार, नाम डंक ना कोए वजाया। तन बस्त्र ना कोए शंगार, कजला धार नैण नैण ना कोए सुहाया। बस्त्र भूशन ना कोए आधार, साचा वेला ना कोए सुहाया। कलिजुग दूशन जीव विभचार, दूती दुष्ट सर्ब कुरलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण आपणा नाउँ धराया। निरगुण निरँकार निरवैर आपणा नाउँ रक्ख, लोकमात वेस वटाईआ। दीन दयाल हो प्रतक्ख, पुरख समरथ खेल खिलाईआ। हरि सज्जण साचे लए रक्ख, मीत मुरारा दया कमाईआ। लेखे जाणे किशना सुख़ला पक्ख, वदी सुदी वेख वखाईआ। सूरज चन्न राह तक्कण आपणा पक्ख, घड़ी पल रहे गणत गणाईआ। चार वेद मार्ग दस्स, अन्तिम पन्ध ना सके कोए मुकाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खलाए हस्स हस्स, हरि हरि महिमा अकथ कथी ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे नस्स नस्स, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। गुरमुखां अंदर वस वस, वास्तक आपणा रूप दरसाईआ। मेटे रैण अन्धेरी मस, साचा भान करे रुशनाईआ। तीर निराला मारे कस, बिरहों आपणी धार बंधाईआ। जुगा जुगन्तर जन भगतां गाए जस, वेद पुराण करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आप आपणे लए मिलाईआ। कलिजुग अन्त अन्धेरा चुकया, जिस मिल्या बेपरवाह। दो जहानां पैंडा मुक्कया, लक्ख चुरासी तुट्टा फाह। गुर का बूटा कदे ना सुक्कया, सतिगुर पूरा बणे मलाह। हरि का भाणा कदे ना रुक्या, जुग जुग रिहा वरता। गुरमुखां उज्जल करे मुख्या, सोहँ अक्खर जाप जपा। जुगां जुगां दा मिटे दुख्या, दुःख दलिद्र दए गंवा। आत्म रस देवे हरिजन भुख्या,

तृष्ना भुक्ख रहे ना रा। सुफ़ल कराए मात कुख्या, जो जन दरसन पाए आ। गुरमुख सीस जगदीस सदा झुकया, झुक झुक आपणा सीस रिहा निवा। हरि सन्त सुहेला आपणी गोदी आपे चुक्कया, चुकणहारा बेपरवाह। कलिजुग अन्तिम रहे ना लुकया, आपणा पर्दा दए उठा। सिँघ शेर दलेर एका बुकया, लक्ख चुरासी जम्बक रूप लए छुपा। तीर निराला दो जहानां छुट्टया, साचा चिल्ला हरि उठा। कलिजुग बूटा जाए पुट्टया, ना कोए सके मात लगा। गुरमुखां अमृत जाम प्याए घुट्टया, सच प्याला हथ्थ उठा। जन्म जन्म दा मेल मिलाया रुसया, चार कुंट दहि दिशां फेरी पा। तन पहनाए साचा सूसया, नाम अल्फ़ी इक्क वखा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन साचे सचखण्ड दुआरे दए बहा। सचखण्ड दुआर आप वसाउणा, थिर घर आपणा चरन टिकाईआ। सुन्न अगम्मी पन्ध मुकाउणा, सुन्न समाध ना कोए वखाईआ। रवि ससि अद्धविचकारे राह तकाउणा, ब्रह्मा विष्न शिव ध्यान लगाईआ। नेहकर्मी नेहकर्म कमाउणा, कर्म गति ना कोए जणाईआ। जिस जन आपणा दरस दिखाउणा, त्रैगुण कट्टे गलों फाहीआ। हँस मुख सोहँ हँसा चोग चुगाउणा, सहँस दुःख रहिण ना पाईआ। विष्नूं वंसी आप वडिआउणा, पारब्रह्म ब्रह्म वेखे थाउँ थांया। शंकर मेला इक्क कराउणा, भोले नाथ दीनां नाथ दया कमाईआ।
११६७
पूजा पाठ इक्क दरसाउणा, पुरख अकाल रसना जिह्वा गाईआ। दूसर दर ना सीस झुकाउणा, बिन करते कीमत कोए ना पाईआ। गुरसिख साचे लेखे आप लगाउणा, आपे लेखा लिखणहार सच्चा शहनशाहीआ। कागद कलम मुख शर्मौणा, सत्त समुंदर मस्स लिख ना सके लेख राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए वर, एका बन्धन नाम पाईआ। बन्धन पाया आत्म डोर, दिस किसे ना आया। करया खेल अन्धघोर, चोर चोरी आप कमाया। जीव जंत भुलाए कर कर शोर, आत्म रस ना किसे वखाया। गुरमुख गुरसिख आपणे संग लए तोर, आपणा मन्त्र नाम दृढ़ाया। मनमुखां चाढ़े मन के घोड़, मन मनका गेड़ा आप दवाया। भरम भुलेखे रहे दौड़, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाया। गुरमुखां वखाए एका पौड़, चौथे पद आप लगाया। हँ ब्रह्म लेख मुकाए ब्रह्मण गौड़, सो पुरख निरँजण रूप प्रगटाया। कलिजुग अन्तिम बुझाए औड़, जुग जुग तृष्ना रहे ना राया। गुरसिख बणाए साचे कौर, आपणा टिक्का मस्तक आप लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम रस अनडिठा आपणा आपे रस चखाया।

✻ ६ अस्सू २०१७ बिक्रमी बेला सिंघ दे गृह पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ✻

सो पुरख निरँजण अगम्म अथाह, अलक्ख अगोचर बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरँजण सच्चा शहनशाह, शाह पातशाह इक्क अख्वाईआ। एकँकारा आदि जुगादी इक्क मलाह, रूप अनूप दिस ना आईआ। आदि निरँजण सुते प्रकाश करा, जोती नूर करे रुशनाईआ। श्री भगवान साचा धाम सुहा, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। अबिनाशी करता सच सिँघासण डेरा ला, थिर घर साचा वेख वखाईआ। पारब्रह्म देवणहार सलाह, सच सुच्च इक्क दृढ़ाईआ। महल्ल अटल उच्च मुनार आप रचा, निरगुण आपणी बणत बणाईआ। सर्ब सुख दाता वसया साचे थाँ, दर घर साचे सोभा पाईआ। राज राजान शाह सुल्तान नौजवान नाम धरा, नाउँ निरँकारा आप अख्वाईआ। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण सच निशाना हथ्थ उठा, दरगाह साची आप झुलाईआ। साचा ताज सीस प्रभ आप टिका, सच सिँघासण दए वड्याईआ। धुर फ़रमाणा हुक्म सुणा, साचा राणा दए सलाहीआ। लोआं पुरीआं रचन रचा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी धार बंधाईआ। शब्द अगम्मी सुत उठा, साची सेवा इक्क वखाईआ। इच्छया भिच्छया झोली पा, नाम भण्डार हरि वरताईआ। दहि दिशा एका रंग रंगा, चारे कूटा होए सहाईआ। आपणा बंस आप बणा, आपणी अंस आप सुहाईआ। आपणा विष्नूं नाउँ धरा, ब्रह्म सुत आप प्रगटाईआ। लेखा जाणे बेपरवाह, शंकर मेला सहिज सुभाईआ। तिन्नां जपाए एका नाँ, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता आपणी धारा आप बंधाईआ। सो पुरख निरँजण धार चलांयदा, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार। हरि पुरख निरँजण खेल खिलांयदा, सचखण्ड बैठ सच्चे दरबार। एकँकारा सोभा पांयदा, इक्क इकल्ला हो उज्यार। आदि निरँजण डगमगांयदा, नूर नुराना बेऐब परवरदिगार। अबिनाशी करता वेस वटांयदा, आदि जुगादी सांझा यार। श्री भगवान तख्त सुहांयदा, तख्त निवासी शाह सच्चा सिक्दार। पारब्रह्म आपणा हुक्म आप वरतांयदा, हुक्मी हुक्म कराए साची कार। बोध अगाधी शब्द जणांयदा, धुन अनादी आप सुणाए आपणी वार। ब्रह्म ब्रह्मादी वेख वखांयदा, ब्रह्मा विष्न शिव दए आधार। आपणी वण्डण आप वण्डांयदा, त्रैगुण माया भर भण्डार। साचे मन्दिर आप रखांयदा, थिर घर साचे खोल्ह किवाड़। दूसर हथ्थ ना कोए फड़ांयदा, ना कोई वेखे वेखणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकारा, आदि अनादी कर पसारा, आपणा भेव आप खुल्हांयदा। सो पुरख निरँजण भेव खुल्हाउणा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। हरि पुरख निरँजण वेस वटाउणा, रूप रेख ना कोए वखाईआ। एकँकारा साचा मन्दिर आप सुहाउणा, महल्ल अटल उच्च मुनारे सोभा पाईआ। आदि निरँजण जोती जोत दीपक इक्क जगाउणा, थिर घर साचे

करे रुशनाईआ। अबिनाशी करते सीस ताज टिकाउणा, पंचम मुख मुख सालाहीआ। श्री भगवान आपणा हुक्म आप फ़रमाउणा, धुर फ़रमाणा इक्क पढ़ाईआ। पारब्रह्म निउँ निउँ सीस झुकाउणा, दर दरवेश आप हो जाईआ। सुत दुलारा शब्द इक्क उपजाउणा, एका एक दए वड्याईआ। विष्नूं विश्व धार धराउणा, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आप बहाउणा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। शंकर संसा इक्क चुकाउणा, साख्यात रूप परटाईआ। तिन्नां मेला एका थाँ कराउणा, चरन कँवल वड्डी वड्याईआ। चरन चरनौदक मुख पिआउणा, अमरा पद इक्क सुहाईआ। स्वच्छ सरूपी रूप प्रगटाउणा, पंज तत्त ना लए कोए अंगड़ाईआ। आपणा मेला आप मिलाउणा, मेलणहार दिस ना आईआ। चेला गुर आप अख्वाउणा, एका माई करे कुड़माईआ। साचा मार्ग इक्क रखाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सचखण्ड दुआरे बह बह हुक्म चलाउणा, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जूनी रहित खेल खिलाउणा, जून अजूनी वण्ड वण्डाईआ। मूर्त अकाल रूप प्रगटाउणा, अकल कल आप धराईआ। इक्क इकल्ला खेल खलाउणा, ओंकारा वेस धराईआ। ब्रह्मा विष्न शिव साची सेवा लाउणा, सेवक सेवा इक्क जणाईआ। त्रैगुण मेला मेल मिलाउणा, एका वस्त झोली पाईआ। एका अक्खर आप पढ़ाउणा, ब्रह्म मुख करे पढ़ाईआ। चारे वेदां आप अलाउणा, चार बाणी खोज खोजाईआ। चारे जुग खेल खिलाउणा, चारे खाणी वेखे थाउँ थाँईआ।
११६९ चौथे पद रंग चढ़ाउणा, चतुर्भुज भेव ना राईआ। आदि शक्ति रूप प्रगटाउणा, बिमल जोत कर रुशनाईआ। आपणी वण्डण आप वण्डाउणा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हिस्सा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न एका तत्त समझाईआ। विष्न हरि समझाया, पारब्रह्म खेल अपार। अगम्म अगम्मड़ा रूप वटाया, रूप रंग रेख ना कोए करे विचार। अम्मी अम्मड़ा ना कोए बणाया, मात पित ना कोए आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका बोले शब्द जैकार। विष्नूं शब्द जणाया, पुरख अबिनाशी एका बोल। आपणे कंडे आप तुलाया, आपे बैठा रहे अडोल। तेरी साची सेव वखाया, जुगा जुगन्तर पूरा करना कौल। धरनी धरत धवल लए उपाया, जल बिम्ब आपे जाए मौल। तेरे अंदर काया कँवला नाभी आप भराया, आपणी फलवाड़ी आपे जाए मौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, दर दरवाज़ा साचा खोल्ह। दर दरवाज़ा खोल्हया, सचखण्ड दुआर निरँकार। शब्द अगम्मी एका बोलया, निरगुण खेल अपर अपार। विष्नूं मेल आपे मेलया, मेल मिलावा धाम न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म करे वरतार। एका हुक्म धुर फ़रमाणा, तख्त निवासी आप सुणांयदा। जुग जुग मन्नणा पए भाणा, सद भाणे आप रहांयदा। पुरख अकाल एका राणा, दूजा तख्त ना कोए वखांयदा।

मेरा नाउँ अगम्मी गाणा, धुनी नाद नाद वजांयदा। मेरा बंस सुघड़ स्याणा, मन मति बुध ना कोए वखांयदा। चरन कँवल बख्शे माणा, इक्क ध्यान वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया साची भिच्छया एका वस्त झोली पांयदा। एका वस्त नाम अमुला, पुरख अबिनाशी आप वरताईआ। आपणी करनी करता कदे ना भुल्ला, अभुल्ल अभुल्ल वड बेपरवाहीआ। आपणी नाभी आपणे कँवल आपणी शक्ती आपे मौला, आपणी फुलवाड़ी आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न एका घर वखाईआ। विष्न वखाया सच घर, चार दीवार ना कोए बणाईआ। छप्पर छन्न ना उप्पर बैठा धर, ना कोई बाढी संग रखाईआ। इक्क इकल्ला आपणा घाड़न घड़, अंदर वड़या शहनशाहीआ। सचखण्ड दुआरे साचे चढ़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़, आपे करे पढ़ाईआ। आपे हुक्म सुणाए दर दुआरे खड़, आपे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आपे निरगुण विष्नूं बाहों फड़, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। आपे भेव खुलाए हरी हरि, हरी हरि बह एका थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए साचा हरि, हरी विष्नूं नाउँ धराईआ। हरी हरि एका मेला, पुरख अबिनाशी आप कराया। एका धाम वसया गुर चेला, चेला गुर रूप वटाया। धुर दरगाही सज्जण सुहेला, सति सतिवादी वेख वखाया। आपणी खेल

११७० पारब्रह्म प्रभ आपे खेला, दूसर भेव कोए ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्न वखाए एका ११७०

०६ घर, घर सुहञ्जणा सोभा पाया। घर सुहञ्जणा सोभावन्त, सति पुरख निरँजण आप अख्वाईआ। इक्क इकल्ला बैठा हरि ०६

हरि कन्त, सेज सुहञ्जणी आप हंढाईआ। निरगुण निरवैर बणाई बंत, आपणा घाड़न आप घड़ाईआ। थिर घर वेखे महिमा अगणत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। ना कोई साध ना कोई सन्त, गुर पीर अवतार दिस कोए ना आईआ। ना कोई जीव ना कोई जंत, लक्ख चुरासी रंग ना कोए वखाईआ। ना कोई मणीआ ना कोई मंत, ना कोई अक्खर करे पढ़ाईआ। ना कोई दरवेश ना दिसे मंगत, साची भिच्छया कोए ना झोली पाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा साचे धाम सोभावन्त, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। आप बणाए आपणी बणत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं वखाए साचा घर, आपणा बंक आप खुल्हाईआ। विष्न घर सुहावणा, हरि साचा सच दृढ़ांयदा। आदि जुगादी आसण लावणा, तख्त निवासी सोभा पांयदा। जुगा जुगन्तर हुक्म चलावणा, धुर फ़रमाणा आप अल्हांयदा। आपणा भाणा आप वरतावणा, सद भाणे रहिणा इक्क समझांयदा। जुग जुग आपणा गाणा आपे गावणा, अक्खर वक्खर आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न वखाए साचा घर, दरगाह साची आप सुहांयदा। दरगाह साची थान सुहंतर, हरि पुरख निरँजण

आप सुहाया। विष्नूं तेरी बिध जाणे अन्तर, तेरी जोती मेरी रुशनाया। मेरा नाउँ तेरा गुर मन्त्र, सो पुरख निरजण एका जाप दिसाईआ। हँ ब्रह्म बणाए बणतर, अंस बंस रूप प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए साचा दर, दर घर साचा आप सुहाया। दर घर साचा हरि सुहांयदा, दरगाह साची धाम अनडीठ। आपणी ताकी आपे लांहयदा, करे खेल पुरख समरथ। साचा साकी जाम प्यांअदा, किरपा करे सिर रक्खे दे कर हथ्थ। आपणा लहिणा देणा बाकी सर्ब समझांयदा, नाम देवे अगम्मी वथ। जोती जोत डगमगांयदा, विष्नूं विश्व चलाए रथ। सच भण्डारा हथ्थ फड़ांयदा, महिमा जणाए अकथना अकथ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरी सेवा सच लगांयदा, लोकमात रक्खणा हठ। ब्रह्मण्ड तेरी वण्ड वण्डांयदा, पन्ध मुकाए नट्ठ नट्ठ। दो जहानां खेल खिलांयदा, वसणहारा घट घट। तेरा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे एका नाम साची वथ। नाम वथ साची दात, हरि हरि झोली पाईआ। चरन कँवल बंधाए नात, नौं नौं चार लेखा दए समझाईआ। चार चार लेखा कमलापात, कँवल नैण नैण मिलाईआ। आपे वेखे साची खाट, साची सेज आप सुहाईआ। जुग चौकड़ी मुकाए तेरी वाट, गेड़ा आपणा आप भवाईआ। लेखा वेखे मस्तक माथ, जो लिख्या बेपरवाहीआ। एका पूजा एका पाठ, इष्ट देव गुर इक्क जणाईआ। एका तीर्थ एका ताट, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। एका बस्त्र एका खाट, एका भूशन तन पहनाईआ। एका वणज वणजारा कराए साचा हाट, एका करता कीमत पाईआ। एका खेले खेल बाज़ीगर नाट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न एका रूप दरसाईआ। विष्न रूप हरि दरसाया, रूप रेख ना कोए वखांयदा। अनुभव प्रकाश डगमगाया, नूर नुराना डगमगांयदा। दरगाह साची धाम सुहाया, सच सिँघासण इक्क विछांयदा। सचखण्ड दुआरे चरन टिकाया, साचे मन्दिर सोभा पांयदा। थिर घर साचे बन्द किवाड़ा आप खुल्हाया, आप आपणा वेस वटांयदा। विष्नूं मेला सहिज सुभाया, पुरख अबिनाशी मेल मिलांयदा। तेरी सेवा सच सुणाया, लक्ख चुरासी घर घर रिज़क पुचांयदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा गेड़ा दए दवाया, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, वर दाता आप हो जांयदा। विष्नूं सुणया कर ध्यान, हरि जू साचा छन्द सुणाईआ। निरगुण निरवैर तेरा इक्क ज्ञान, निष्अक्खर मेरी पढ़ाईआ। हउँ याचक भिखक मंगे दान, तूं देवणहार बेपरवाहीआ। जुग जुग तेरा दरस नेत्र लोचण नैण पेखां आण, चरन ध्यान लगाईआ। लोकमात करे आप पछाण, तेरा तेरे अगे सीस झुकाईआ। कवण सु वेला चुक्के काण, थित वार वार समझाईआ। जोत मिले जोती आण, जोती जोत जोत समाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तोट रहे ना राईआ। विष्नूं मंगे दान, प्रभ अग्गे झोली डांहयदा। हउँ सेवक बाल निधान, तेरा अन्त कोए ना पांयदा जुग जुग मंगां चरन ध्यान, नेत्र नैणां तेरा राह दिसांयदा। हउँ सखी तूं साचा काहन, घर साचे सोभा पांयदा। आदि अन्त जुगां जुगन्त रक्खणा मेरा माण, होए निमाणा सीस झुकांयदा। एका देणा धुर फ़ुरमाण, शब्द संदेशा इक्क अल्लांयदा। तेरी लक्ख चुरासी करां परवान, घर घर तेरी सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम देणा एका वर, दूजा दर मंगण कोई ना जांयदा। एका दर तेरा शाह सुल्तान, वड वड्यांअदा। आदि जुगादि श्री भगवान, भगवन आपणी खेल खिलांयदा। विष्नूं चरन डिगा आण, नेत्र नैणा नीर वहांयदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा कवण रूप करां पछाण, कवण वेला वक्त सुहांयदा। कवण महल्ला कवण कूचा कवण गढ़ी दरस देवे आण, कवण मन्दिर सोभा पांयदा। कवण वेला कवण घड़ी कवण पल वखाए सच निशान, कवण रुती रुत वड्यांअदा। कवण मास कवण बरख कवण पुरख करे वाली दो जहान, कवण कसवट्टी हथ्थ रखांयदा। कवण रूप मिले साचा काहन, कवण नाद धुन सुणांयदा। कवण धार हरि निरँकार सुणाए धुर फ़रमाण, कवण तार सितार हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम वेला देणा वर, कवण

रंग रंग रंगांयदा। कवण रंग हरि चढ़ाउणा, रंग रंगीला हरि समझाईआ। कवण मृदंग नाम वजाउणा, कवण ढोला एका गाईआ। कवण सगला संग निभाउणा, दो जहाना होवे कवण सहाईआ। कवण अंगी अंगकार कराउणा, कवण आपणी गोद बहाईआ। कवण मंगी मंग पूर कराउणा, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाईआ। कवण शब्द नाम जपाउणा, कवण अक्खर करे पढ़ाईआ। कवण फरज़ंद गले लगाउणा, सुत दुलारा कवण जणाईआ। कवण सद बख्शिंद पूर्ब लहिणा झोली पाउणा, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। कवण तन्द तन्द बंधाउणा, कवण डोरी हथ्थ रखाईआ। कवण रूप बन्दी तोड़ नाम धराउणा, माया बन्धन दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं मंगे एका वर, नेत्र नैणा नीर वहाईआ। नेत्र नैणा नीर वहाया, चरन कँवल ध्यान लगांयदा। एका पल्लू गल विच पाया, निउँ निउँ आपणा सीस झुकांयदा। हउँ भिखारी बणके आया, ख़ाली झोली अग्गे डांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वर घर एका मोहे भांयदा। दर घर एका रहिणा हरि करतार, तेरा तेरे अग्गे सीस झुकांयदा। तूं पुरख करता हउँ चरन दासी नार, सेवक सेवा सच कमांयदा। तूं शाहो भूप सच्चा सिक्दार, हउँ दर दरवेश सीस निवांयदा। तूं दरगाह साची वसे धाम न्यार, हउँ चरन कँवल राह तकांयदा। तूं धुर दरगाही देवे धुर फ़रमाण, हउँ हउँ हुक्मी हुक्म

११७२ ०६

सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे साचा दर, नेहकर्मी आपणा कर्म कमांयदा। पारब्रह्म प्रभ करे जणाई, भेव अभेद रहे ना राईआ। विष्नूं तेरे अंदर आपणी धार टिकाई, अमृत रस इक्क वखाईआ। नाभी कँवला फुल उपजाई, रूप अनूप बेपरवाहीआ। ब्रह्म पारब्रह्म लए प्रगटाई, आप आपणी वण्ड वण्डाईआ। एका अक्खर करे पढ़ाई, चार वेदां करे लिखाईआ। सृष्ट सबाई लए रचाई, त्रैगुण माया झोली पाईआ। पंज तत्त करे कुड़माई, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। शंकर धार लए जणाई, निराकार बेपरवाहीआ। साची मति इक्क दरसाई, इक्क त्रसूल हथ्थ वखाईआ। जो घड़या सो भन्ने चाँईं चाँईं, थिर कोए रहिण ना पाईआ। तिन्नां विचोला एका माही, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। आदि अन्त पकड़े बांही, आपणा मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। विष्नूं खेल करना चाँईं चाँईं, लोकमात भुल्ल रहे ना राईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग गेड़ा रिहा दवाई, जुग जुग आपणा गेड़ा रिहा भवाईआ। गुर पीर अवतार साध सन्त नाउँ धराई, भगत भगवन्त सेज हंढाईआ। चारे जुग करे कुड़माई, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणे अंग लगाईआ। चारे खाणी वज्जे वधाई, चारों कुंट होए रुशनाईआ। चार जुग वेखे जीव प्राणी, ईश जीव बेपरवाहीआ। आपे गाए अकथ कहाणी, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आपे लेखा जाणे दो जहानी, दोहां विचोला आप अख्वाईआ। आपे लेखा जाणे धुर दी
११७३ बाणी, आपणी इच्छया मात प्रगटाईआ। आपे होए सुघड़ सवाणी, सीता सुरती राम प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप ११७३
०६ आपणी किरपा कर, विष्नूं देवे एका वर, अभेद अभेदा दए खुल्हाईआ। भेव अभेद खुल्हांयदा, कर किरपा गिरवर गिरधार। ०६
सतिजुग साख्यात रूप प्रगटांयदा, निरगुण सरगुण लए अवतार। त्रेता त्रैगुण पार करांयदा, राम नाम हो उज्यार। पारब्रह्म आपणी वण्ड वण्डांयदा, वेद व्यासा बणे लिखार। कान्हा कृष्ना रूप प्रगटांयदा, गीता ज्ञान करे उज्यार। रथ रथवाही रथ चलांयदा, सेवा करे विच संसार। कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा, पुरख अबिनाशी खेल अपार। आपणा चोला आप बदलांयदा, काला सूसा तन श्रंगार। ईसा मूसा रंग रंगांयदा, मेल मिलावा मुहम्मदी यार। एका नाअरा हक सुणांयदा, ऐनलहक करे प्यार। मुल्ला शेख़ मुसायक पीर समझांयदा, आप आपणी किरपा धार। बेपरवाह परवरदिगार आप अख्वांयदा, नूर अलाही हो उज्यार। सच तराना इक्क सुणांयदा, अञ्जील कुराना कर त्यार। वड अमामा आप हो जांयदा, नबी रसूलां करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगां जुगन्तर जाणे साची कार। जुगां जुगन्तर कार कमावंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। निरगुण सरगुण रूप प्रगटावंदा, नानक पंज तत्त करे प्यार। दरगाह साची सचखण्ड दुआरे आप बहावंदा, एका वणज कराए सच वणजार। सच नाम वस्त अमोलक झोली पावंदा, चार वरन बणे वरतार। ऊँच नीच राउ रंक राज

राजान आप सुहावंदा, अमृत आत्म सरोवर ठंडा ठार। साचा साकी भर भर जाम प्यांअदा, लेखा जाणे डूँघी गार। बन्द ताकी आप खुल्हांयदा, काया मन्दिर खोल्ह किवाड़। पाकन पाकी रूप प्रगटांयदा, ख़ाकी ख़ाक ना दिसे कोए छार। एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा, उच्ची कूक करे पुकार। सृष्ट सबाई आप समझांयदा, छत्ती राग करे प्यार। छत्ती जुग मूल चुकांयदा, नारद सुरस्ती जाए हार। अथरबन वेद बह कुरलांयदा, उच्ची कूकां रिहा मार। एका जोती जोत जगांयदा, गोबिन्द सुत आप उठ, जोद्धा सूरबीर बली बलकार। साचा खण्डा तन चमकांयदा, लेखा जाणे गुप्त ज़ाहर। विष्नूं लेखा इक्क वखांयदा, पुरख अबिनाशी बेपरवाह परवरदिगार। नूर नुराना डगमगांयदा, सर्ब जीआं दा सांझा यार। कलिजुग अन्तिम चौथे जुग फेरा पांयदा, वेस अवल्लड़ा रूप करतार। नौं नौं लेखा पन्ध मुकांयदा, चार यारी करे ख्वार। चार वरन ना कोए दसांयदा, अठारां बरनां मारे मार। चारे वेदां पन्ध मुकांयदा, पंडत पांधे गए हार। साचा हुक्म आप सुणांयदा, धुर दी बाणी धुर दी कार। अगला लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा, गुर पीर अवतार उच्ची कूक वाजां रहे मार। प्रभ का भेव कोए ना पांयदा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सच्ची सरकार। विष्नूं तेरा रंग रंगांयदा, रंगणहारा सिरजणहार। कलिजुग अन्तिम आपणा नाउँ धरांयदा, प्रगट हो विच संसार। निरगुण निरगुण जोत जगांयदा, जोती जगे अगम्म अपार। शब्दी शब्द डंक वजांयदा, सुणे सुणाए सुणनेहार।

ब्रह्मा शंकर सीस झुकांयदा, तेरी आए अन्तिम वार। तेरा मेला मेल मिलांयदा, गुर चेला सोहे इक्क दुआर। तेरा बस्त्र

तन भूशन चोला आप हंढांयदा, अंदर बैठ हरि निरँकार। तेरा ढोला आप अल्हांयदा, उच्ची कूक करे पुकार। लक्ख चुरासी पन्ध मुकांयदा, गेड़ा रहे ना दूजी वार। तीजा नैण आप वखांयदा, चौथे पद करे प्यार। पंचम लेखा बह समझांयदा, छेवें छप्पर छन्न ना कोए आधार। सत्तवें सति पुरख निरँजण सोभा पांयदा, अठ्ठां तत्तां वसया बाहर। लक्ख चुरासी नौं दुआरे खोज खुजांयदा, दसवें खेल करे सच्ची सरकार। भगत भगवन्त मेल मिलांयदा, जुगा जुगन्तर पावे सार। आप आपणी गोद बहांयदा, दरगाह साची करे प्यार। कागों हँस आप उडांयदा, हँस रले ना कागां डार। माणक मोती चोग चुगांयदा, सोहँ हँसा कर प्यार। कोटन कोटि जीव जंत लक्ख चुरासी जून भवांयदा, राए धर्म करे ख्वार। कोटन कोटि चित्रगुप्त लेख वखांयदा, माणस जन्म गए हार। कोटन कोटि जीव लाड़ी मौत नाल प्रनांयदा, अन्तिम अन्त करे शंगार। गुरमुख विरले वेख वखांयदा, आप आपणा खोल्ह किवाड़। दरगाह साची सोभा पांयदा, साचे तख्त सच्ची सरकार। कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा, गुर पीर रहे पुकार। नानक गोबिन्द रसना गांयदा, प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार। कलिजुग कूड़ा मेट मिटांयदा, सतिजुग वरते साची धार। राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलांयदा, ऊँचां नीचां करे इक्क प्यार।

वरन बरन गोत ना कोए रखांयदा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्क बहाए सच्चे दरबार। साचा हुक्म आप सुणांयदा, चारों कुंट बोल जैकार। जो घड़या भन्न वखांयदा, शंकर रहिणा ख़बरदार। ब्रह्मे तेरा तत्त तेरे विच रलांयदा, ब्रह्म रूप आप निरँकार। विष्न भण्डार ना कोए वरतांयदा, कलिजुग अन्तिम जाए हार। पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा, निरगुण निरवैर लै अवतार। विष्नूं लहिणा लहिणा आप मुकांयदा, तन गहिणा बस्त्र कर श्रंगार। साची पुरी फेरा पांयदा, पूरन गुर आप करतार। आपणा रूप आप प्रगटांयदा, स्वच्छ सरूपी हो उज्यार। जोत उजाला दीप डगमगांयदा, पुरख अकाला भेव न्यार। दीन दयाला खेल खिलांयदा, ख़ालक ख़लक करे विचार। राज़क रिज़क रहीम आप अख्वांयदा, दाता दानी सिरजणहार। कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकांयदा, कागद कलम ना लिखणहार। सत्त समुंदर सर्ब कुरलांयदा, मस्स छाही रोवे ज़ारो ज़ार। बनास्पत धीर ना कोए धरांयदा, अठारां तुले ना कोए भार। प्रभ का भेव किसे ना आंयदा, चार वेद करन पुकार। सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकांयदा, कलिजुग आई अन्तिम वार। निहकलंका जामा पांयदा, शब्द डंका वज्जे विच संसार। सम्बल नगरी धाम सुहांयदा, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर कर त्यार। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा डेरा लांयदा, उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ सच्ची सरकार। विष्नूं तेरा वेला वक्त सुहांयदा, विश्व रूप करे संसार। ब्रह्म तेरा ब्रह्म रूप सर्ब दसांयदा, पारब्रह्म करे पसार। शंकर तेरी

११७५ त्रसूल लेखे लांयदा, बाशक तशका सोहे कंठ हार। अन्त वेला वक्त मुकांयदा, नौं नौं चार उतरे पार। जोती जोत जोत ११७५

०६ मिलांयदा, जोती जाता इक्क आधार। गुरमुख साचे आप प्रगटांयदा, कलिजुग अन्तिम कर विचार। सतिजुग साचा मार्ग लांयदा, पुरी लोअ करे ख़बरदार। ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म सुणांयदा, दूसर अवर ना कोए वरतार। पुरख अकाल सृष्ट सबाई इष्ट जणांयदा, सो पुरख निरँजण हो त्यार। हँ ब्रह्म नाउँ रखांयदा, सोहँ शब्द साची धार। ओअँ सोहँ एका रंग रंगांयदा, सोइम रूप निराकार। दूजी कुदरत वेख वखांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, विष्नूं लेखा चुकाए दर दर, घर साचा आप सुहांयदा। दर घर हरि सुहाया, कर किरपा गुण निधान। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, नौं खण्ड पृथ्मी कूड़ दुकान। सत्त दीप रहे कुरलाया, चार कुंट होया वैरान। चार वरन रहे बिल्लाया, घर घर वड़या पंज शैतान। साचा रंग ना कोए रंगाया, कलिजुग ललारी बेईमान। नाम दान भिच्छया कोए ना पाया, साधां सन्तां टुट्टा माण। मन का मणका ना कोए भवाया, धूढ़ी बख्शे ना कोए अशनान। जन का जन लेखे ना कोए लाया, लेखा चुक्के ना आवण जाण। कलिजुग गनका रूप वटाया, घर घर होए प्रधान। कूड़ी क़िया मुख घूँगट इक्क उठाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल श्री भगवान। श्री भगवान खेल खिलांयदा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। गुरमुख ०६

साचे मेल मिलांयदा, लक्ख चुरासी विच्चों कर प्यार। पूर्ब लहिणा झोली पांयदा, माणस जन्म लए सुधार। नेत्र नैणां दरस दिखांयदा, जोती जोत हो उज्यार। जुग जुग दी हरस मिटांयदा, कर तरस बेऐब परवरदिगार। अमृत मेघ इक्क बरसांयदा, निझर झिरना ठंडा ठार। ग़रीब निमाणे गले लगांयदा, कल काती कर ख्वार। जम की फ़ाँसी आप कटांयदा, राए धर्म ना मारे मार। रसन स्वासी जो जन गांयदा, चरन दासी बणे निरँकार। पूरी आसी आप करांयदा, गुरमुख निरासा रहे ना विच संसार। जोत प्रकाशी दीप जगांयदा, मेट मिटाए अन्ध अँध्यार। घनक पुर वासी संग निभांयदा, शाहो शाबासी मीत मुरार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख गुरमुख गुर गुर सज्जण जाए तार।

११७६

✻ ७ अस्सू २०१७ बिक्रमी हरबंस सिँघ बलवन्त सिँघ दे गृह पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ✻

पारब्रह्म ब्रह्म उपाया, आप आपणी उत्पत कर सन्तान। साचे मन्दिर आप बहाया, सति जणाए धुर फ़रमाण। हुक्मी राजा इक्क अख्वाया, अबिनाशी करता वाली दो जहान। आपणा पर्दा आप उठाया, नर निरँकारा होए निगहबान। दर घर बरदा आप बणाया, सेवा बख्शे श्री भगवान। आपणा पल्लू आप फड़ाया, लेखा जाणे आवण जाण। साचा सालू रंग रंगाया, रंग वेखे गुण निधान। दीन दयालू दया कमाया, चरन दुआरे बख्शे माण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए आपणी आण। ब्रह्म उपाया हरि हरि सुत, करे खेल वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे अबिनाशी अचुत, दूसर भेव कोए ना राईआ। पंज तत्त ना दीसे बुत्त, रक्त बूंद ना संग निभाईआ। आप सुहाए बसन्ती रुत, सोभावन्त बेपरवाहीआ। लेखा जाणे ओत पोत, बंस सरबंसा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रूप अनूप प्रगटाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म सुत उपाया, जन जननी आप अख्वांयदा। साची गोदी आप सुहाया, दर घर साचे मेल मिलांयदा। अमृत साचा सीर प्याया, रस रसीआ एका रस चखांयदा। थिर घर ठांडे नीर वहाया, साचा झिरना आप झिरांयदा। शब्द निराला तीर लगाया, तिक्खी मुखी धार वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आप जणाया। सुत उपजाया सच दुलारा, दुल्हा दुल्हन खुशी मनाईआ। सो पुरख निरँजण करे खेल अगम्म अपारा, हरि पुरख निरँजण आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। एकँकारा कर पसारा, आपणी रचना आप रचाईआ। आदि निरँजण गुप्त ज़ाहरा, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता देवे सच भण्डारा, वस्त अमोलक आप वरताईआ। श्री भगवान बण सिक्दारा, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ दए आधारा, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, एका लाल दीन दयाल वेख वखाईआ। एका लाल बाल निधाना, पारब्रह्म प्रभ आप उपजांयदा। शब्द सुणाए अगम्म तराना, श्री भगवान आप अलांयदा। एका बख्शे पीणा खाणा, अबिनाशी करता अमृत जाम प्यांअदा। चरन कँवल सच ध्याना, आदि निरँजण राह वखांयदा। एका तत्त चतर सुघड़ स्याणा, एकँकारा वेख वखांयदा। एका रत पद निरबाना, हरि पुरख निरँजण सोभा पांयदा। एका समरथ पुरख खेल महाना, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। लेखा जाणे दो जहानां, सचखण्ड साचे सोभा पांयदा। थिर घर रखाए इक्क बबाणा, आदि जुगादी आप उडांयदा। इक्क इकल्ला हो प्रधाना, सुन्न अगम्मी रूप समांयदा। आपे होए जाणी जाणा, जानणहार भेव ना आंयदा। तख्त निवासी बण सुल्ताना शाहो भूप राज कमांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे माणा, निमाण निमाणयां आप हो आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप सुणांयदा। छोटा बाला बाली बुध, ब्रह्म पारब्रह्म समझाईआ। चरन ध्यान साची सुध, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। सच प्रीती जाणा लुझ, अन्तर गति इक्क लिव लाईआ। आपणा आप लैणा बुझ, कवण पिता कवण माईआ। भेव खुलाए हरि हरि गुझ, गुप्त ज़ाहर वड वड्याईआ। एका रूप नाउँ दुज, सोहँ आपणा खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। ब्रह्मे सुण पारब्रह्म जणाया, ब्रह्म भेव रहे ना राईआ।
११७७ अंस बंसा रूप धराया, सहँस सहँसा खेल खलाईआ। साचा मार्ग पन्था आप लगाया, नाम ग्रन्था करे पढ़ाईआ। चारे वेद ११७७
०६ अक्खर इक्क जणाया, एकँकार रूप दरसाईआ। ओंकार तेरी सेवा लाया, कुदरत वेखे बेपरवाहीआ। दोहां विचोला आप ०६
बेपरवाहया, आपणी रचना आप रचाईआ। साचा ढोला इक्क सुणाया, नाद अनादी धुन उपजाईआ। सोहँ बोला बोल बुलाया, पारब्रह्म ब्रह्म एका रूप जणाईआ। धुर दा तोला इक्क अख्वाया, साचा कंडा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी आदि ब्रह्म, पारब्रह्म सहिज सुखदाईआ। ब्रह्म बाल उत्पत हरि, दर घर साचे वज्जी वधाईआ। नारी नर किरपा कर, नर नरायण खुशी मनाईआ। आपणे मन्दिर आपे वड़, आपे वेखे बेपरवाहीआ। आपे फिरे पिच्छे अगाड़, आपणी सेवा आप कमाईआ। आप बणाए साचा लाड़, साची चोली आप रंगाईआ। आप वखाए सच अखाड़, जगत अखाड़ा इक्क वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत उठाए फड़, आप आपणा हुक्म वरताईआ। हुक्म वरताए हरि भगवान, ब्रह्म पारब्रह्म जणाया। विष्नूं संग मेल महान, ब्रह्म मित्र सखाई आप हो आया। एका देवे देवणहारा दान, दाता दानी नाम वरताया। हँ ब्रह्म रूप पछाण, सो पुरख निरँजण खेल खिलाया। इक्क वखाए सच निशान, दरगाह साची आप झुलाया। साचे तख्त बैठ वड राज राजान, सीस ताज इक्क टिकाया। आदि आदि देवे इक्क फ़रमाण, सच

संदेशा शब्द अलाया। नौं नौं चार करना परवान, नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग एका हुक्म वरताया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रक्खे एका आण, लोकमात आपणा वेस धराया। त्रैगुण माया बख्शे माण, आपणी इच्छया तेरी भिच्छया झोली पाया। लक्ख चुरासी कर प्रधान, चारे खाणी वण्ड वण्डाया। जेरज रूप होए निगहबान, ब्रह्मे रत तत्त तपाया। अंडज खेले खेल महान, ब्रह्म पथ इक्क वखाया। उत्भुज वेखे मार ध्यान, चरन कँवल दए वड्याआ। सेत्ज बख्शे एका दान, आपणा रोम रोम खुलाया। लेखा जाण गुण निधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा एका अक्खर पढ़ाया। एका अक्खर सो सो सो धार, त्रै त्रै त्रै रंगण रंग रंगाईआ। हँ हँ हँ सर्ब पसार, हँ ब्रह्म रूप दरसाईआ। सोहँ रूप आप निरँकार, पंज तत्त ना कोए रखाईआ। लक्ख चुरासी करे प्यार, पंज तत्त काया चोला आप हंढाईआ। जुग जुग चलाए आपणी कार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। ब्रह्म तेरा रूप अपार, घट भीतर डेरा लाईआ। तेरे मन्दिर मंगलाचार, घर खुशी वज्जे वधाईआ। तेरी आवाज़ अनहद धुन्कार, साचा शब्द तेरी रसाईआ। तेरी सेज अपर अपार, पावा चूल ना कोए बणाईआ। तेरा कन्त हरि भतार, दूसर अंग ना कोए लगाईआ। तेरा रंग बसन्त बहार, तेरी महिक नाम महिकाईआ। तेरा अन्त घर हरि दुआर, दूसर मन्दिर ना सोभा पाईआ । तेरा अंदर इक्क गुलज़ार, ग़रीब निवाज़ आप खलाईआ। तेरा राज सच्चा सिक्दार, लक्ख चुरासी जोग वखाईआ। तेरा ताज भूप निरँकार, धुर फ़रमाणा शब्द सुणाईआ। तेरी लाज रक्खे विच संसार, जुग जुग आपणा रूप धराईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी कर विहार, अन्तिम लेखा लेखे पाईआ। आपणा रूप जणाए पुरख करतार, कुदरत कादर वेखे थाउँ थाँईआ। हँ ब्रह्म लए उभार, सो पुरख निरँजण सहिज सुखदाईआ। सोहँ शब्द बोल जैकार, पंज तत्त पूजा दए मिटाईआ। एका रूप दरसाए हरि निरँकार, घर घर पुरख अकाल वज्जे वधाईआ। जगत जुग जुगत चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। सो पुरख निरँजण बण दलाल, हँ ब्रह्म लए मिलाईआ। लेखा जाणे काल महांकाल, काल दयाल आपणा रूप वटाईआ। राए धर्म भेव खुलाए आण, चित्रगुप्त गुप्त समझाईआ। लाड़ी मौत वखाए हाणी हाण, लक्ख चुरासी नारी कन्त पूरन भगवन्त वेखे थाउँ थाँईआ। हरिजन गुरमुख गुरसिख जो जन घालन रहे घाल, घाली घाल लेखे लाईआ। गगन मंडल वेखे मस्तक थाल, रवि ससि सूरज चन्न तारका मंडल आपणे गेड़े आप भवाईआ। एका देवे नाम सच्चा धन माल, सच खज़ाना बेपरवाहीआ। गुरसिख ना होए कदे कंगाल, धन दौलत जगत बदौलत दीन दुनी दए गवाहीआ। इक्क वखाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, दरगाह साची धाम सुहाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां सदा चले नाल, बिखम मार्ग ना कोई जणाईआ। शब्द अनादि वजाए ताल, सुरत सवाणी आप उठाईआ। मूर्त

अकाल बेमिसाल, जोती नूर करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले साचे भाल, नौं खण्ड पृथ्मी आप उठाईआ। तन पहनाए साची माल, मन का मणका आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्म मिलाए साचे घर, पारब्रह्म आपणी दया कमाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाउणा, एका रंग वखांयदा। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, सृष्ट सबाई अन्धेरा छांयदा। ज्ञान ध्यान ना किसे दृढ़ाउणा, जोग अभ्यास ना कोए वखांयदा। सुरत शब्द ना किसे मेल मिलाउणा, साध सन्त सर्ब कुरलांयदा। पंज तत्त नाता ना किसे तुड़ाउणा, पंचम शब्द ना जोड़ जुड़ांयदा। अनहद राग ना किसे अलाउणा, सारंग ढोलक सर्ब वजांयदा। अगम्मी शब्द ना किसे अलाउणा, रसना बोल सर्ब कुरलांयदा। तुरीआ राग ना किसे उपजाउणा, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी दया कमाउणा, जुग जुग जन भगतां मेल मिलांयदा। आप आपणा पर्दा लौहणा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। बण बण साकी जाम पिआउणा, नाम सुराही हथ्थ उठांयदा। खोल्ह ताकी दरस दिखाउणा, आत्म ब्रह्म आप जणांयदा। साची सेजा डेरा लाउणा, सच सिँघासण सोभा पांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म रंग चढ़ाउणा, उतर कदे ना जांयदा। सो पुरख निरँजण खेल खलाउणा, हँ ब्रह्म सर्ब उठांयदा। लक्ख चुरासी पन्ध मुकांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप जणाउणा। पारब्रह्म ब्रह्म करे जणाई, जागरत जोत कर रुशनाईआ। एका
११७६ घर वखाए साचा थाँई, थान थनंतर सोभा पाईआ। एका बख्शे सच सरनाई, सरनगत बेपरवाहीआ। एका पकड़ उठाए ११७६
०६ फड़ फड़ बांही, पुरख अबिनाशी वड वड्याईआ। एका मेल मिलाए चाँई चाँई, चातरक तृखा दए बुझाईआ। एका करे ०६
सच न्याँई, जुगां जुगन्तर आपणा वेस वटाईआ। कलिजुग अन्तिम मेटे कूड़ी शाही, शहनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। ब्रह्म पारब्रह्म जाए समाई, निरगुण निरगुण अंग लगाईआ। सोहँ शब्द अगम्म पढ़ाई, चारे बाणी जिस उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मे देवे पारब्रह्म वर, ब्रह्म तेरी अंस सुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आदि जुगादि श्री भगवन्त, खेले खेल जुगा जुगन्त, ब्रह्म पारब्रह्म आपणी खेल खिलाईआ।

७ अस्सू २०१७ बिक्रमी सविंदर सिँघ दे गृह पिण्ड भुलर ज़िला अमृत सर

सो पुरख निरँजण अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ी धार चलांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल न्यारा, निरगुण निरवैर आप करांयदा। एकँकारा ऊँच अपारा, बेपरवाह भेव ना आंयदा। आदि निरँजण जोत उज्यारा, नूर नुराना डगमगांयदा। अबिनाशी करता इक्क सुहाए सच दुआरा, सचखण्ड साचे सोभा पांयदा। श्री भगवान खोल्ह किवाड़ा, थिर घर मन्दिर आप

वड्यांअदा। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, निराकार आपणा आप वेख वखांयदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शाह भूप आपणा हुक्म वरतांयदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, आप आपणा रंग रंगांयदा। आपणी इच्छया भर भण्डारा, साची भिच्छया आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण हरि मेहरवान, सचखण्ड दुआर झुलाए इक्क निशान, सति सतिवादी आप प्रगटांयदा। सति सतिवादी साहिब गुणवन्त, इक्क इकल्ला अकल कल धारीआ। सचखण्ड दुआरे सोभावन्त, सति पुरख निरँजण मीत मुरारीआ। आप बणाए आपणी बणत, पुरख अकाल शाह सिक्दारीआ। आपणा लेखा जाणे आदि अन्त, दूसर अवर ना कोए लखारीआ। आपे नार आपे कन्त, कन्त कन्तूल आपे पैज संवारीआ। आपे शब्द आपे मंत, आपे नाउँ निरँकार करे उज्यारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वसे एका हरि, सचखण्ड दुआरा आप सुहा रिहा। सचखण्ड दुआर सुहांयदा, सो परख निरँजण बेपरवाह। थिर घर साचे खेल खिलांयदा, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह। एकँकारा रूप प्रगटांयदा, जूनी रहित नाउँ धरा। आदि निरँजण रूप प्रगटांयदा, मूर्त अकाल डगमगा। श्री भगवान वेस वटांयदा, रूप रंग ना रिहा कोए वखा। अबिनाशी करता बंक सुहांयदा, दरगाह साची धाम बणा। पारब्रह्म प्रभ वेख वखांयदा, इक्क इकल्ला खेल खला। सति सतिवादी साची धारा आप चलांयदा, आपणी रचना
११८० लए रचा। निरगुण निरगुण मेल मिलांयदा, वड दाता पातशाह। शहनशाह आपणा हुक्म चलांयदा, तख्त निवासी तख्त सुहा। ११८०
०६ धुर फ़रमाणा आप अलांयदा, नाम निधाना नाद वजा। तुरीआ रूप आप प्रगटांयदा, आपणी धुन रिहा समा। भेव अभेद ना कोए खुलांयदा, अलक्ख अभेव आप खुदा। निरगुण निरवैर नाउँ धरांयदा, सचखण्ड निवासी वसे साचे थाँ। शब्दी सुत इक्क उठांयदा, आपे पकड़नहारा बांह। आपणा रंग आप रंगांयदा, रंग रंगीला पिता माँ। दर घर साचे सोभा पांयदा, थान थनंतर इक्क वडिया। सच महल्ला आप वसांयदा, पुरख अबिनाशी दया कमा। निरगुण जोती जोत जगांयदा, विष्नूं विश्व रूप धरा। आपणा रस आप वखांयदा, चरन चरनोदक धार वहा। साची बूंद आप सुहांयदा, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह। विष्नूं अंदर आप टिकांयदा, हरि का लेखा कोए जाणे ना। कँवल कँवला आप खिलांयदा, पत डाली फुल महिका। ब्रह्म आपणा रूप धरांयदा, पुरख अबिनाशी वण्ड वण्डा। एकँकारा खेल खिलांयदा, इक्क इकल्ला सहिज सुभा। सच महल्ला आप वसांयदा, सतिगुर सच्चा पातशाह। आपणा हुक्म आप सुणांयदा, विष्न ब्रह्मा सेवा ला। धार धार विच रखांयदा, धुर दरगाही पर्दा दए उठा। शंकर आपणे रंग रंगांयदा, लेखा जाणे पिता माँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आदि आदि आपणी खेल रिहा खला। आदि आदि हरि खेल खिलाया, महिमा अकथ कथी ना जाईआ।

सो पुरख निरँजण वेस वटाया, हरि पुरख निरँजण वेखे चाँई चाँईआ। एकँकारा सच महल्ला आप वसाया, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी सोभा पाया, श्री भगवान रिहा जस गाईआ। पारब्रह्म निउँ निउँ सीस झुकाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। सति पुरख निरँजण आपणा खेल आप वखाया, साचे तख्त चरन छुहाईआ। शाहो भूप सिक्दार शहनशाह बण के आया, सिर पातशाहां करे सच्ची पातशाहीआ। धुर फ़रमाणा साचा राणा एका हुक्म आपणे अग्गे धर के आया, देवणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दरगाह साची सच महल्ला, आप वसाए इक्क इकल्ला, दूसर संग ना कोए रखाईआ। ना कोई संग ना सगला साथ, सो पुरख निरँजण खेल खिलांयदा। आदि जुगादि चलाए आपणा राथ, रथ रथवाही दिस ना आंयदा। शब्द जणाई बोध अगाध, एका मन्त्र नाउँ दृढ़ांयदा। आपणे विच्चों आपा काढ, विष्न रूप आप प्रगटांयदा। आपे विश्व करे प्रताप, ब्रह्म सुत नाउँ धरांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म आपे लए लाध, आपे शंकर संग निभांयदा। आपे धुर फ़रमाणा देवे दाद, हुक्मी हुक्म आप अलांयदा। आप सुणाए अगम्मी नाद, सच तराना आप अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां मिलाए एका दर, दर दरवाज़ा आप खुलांयदा। दर दुआर खुलंदड़ा, पारब्रह्म प्रभ बेअन्त। साचा तख्त आप सुहंदड़ा, श्री भगवान साचा कन्त। साचा हुक्म आप सुणंदड़ा, अबिनाशी करता महिमा अगणत। साचा राज आप कमंदड़ा, आदि निरँजण आदि अन्त। साचा मेल आप मिलंदड़ा, एकँकारा हरि निरँकारा लेखा जाणे जुगा जुगन्त। हरि पुरख निरँजण वेस वटंदड़ा, सो पुरख निरँजण बणाए साची बणत। विष्नूं जोत आप जगंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे आपणी रुत्त बसन्त। विष्न उपाया किरपा धार, दयानिध वड वड्याईआ। पारब्रह्म करया ब्रह्म पसार, अनुभव आपणा रूप दरसाईआ। शंकर रविआ धूंआँधार, सुन्न समाध वेख वखाईआ। तिन्नां करे इक्क प्यार, एका तत्त समझाईआ। एका माई दए हुलार, आदि शक्ति रूप वटाईआ। एका हुक्म सच वरतार, धुर दा भाणा शब्द सुणाईआ। एका शहनशाह सच्ची सरकार, पुरख अकाल सच्चा पातशाहीआ। एका वरते हरि वरतार, करता पुरख आपणी करनी रिहा कमाईआ। एका गावत गाए गावणहार, एका निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। एका जोती जोत करे उज्यार, घट घट दीपक जोत इक्क रुशनाईआ। एका विष्नूं लए उभार, विश्व आपणा खेल खलाईआ। एका ब्रह्म उपाए सुत दुलार, पारब्रह्म सिर हथ्थ रखाईआ। एका शंकर देवे आपणा आहार, अमृत आत्म जाम प्याईआ। तिन्नां विचोला बण निरँकार, त्रैकाल दरसी आपणी खेल खलाईआ। शब्द ढोला बोल जैकार, सोहँ जाप आप जपाईआ। बणया तोला तोलणहार, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा सेवादार, आप लगाए

धुर दरबार, धुर दा लेखा दए समझाईआ। धुर लेखा हरि समझांयदा, पुरख अबिनाशी वड मेहरवान। विष्नूं आपणे रंग रंगांयदा, रिज़क देवे जीआ दान। ब्रह्मे ब्रह्म रूप सर्ब प्रगटांयदा, वण्डण वण्डे दो जहान। शंकर एका राह चलांयदा, मेट मिटाए दूई निशान। तिन्नां एका धाम बहांयदा, शब्द अगम्मी दए ज्ञान। चरन कँवल इक्क वखांयदा, पारब्रह्म श्री भगवान। नाभ कँवल अमृत आप भरांयदा, लेखा जाणे धुर दी बाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि देवे एका वर, जुगादि आपणा राह वखांयदा। आदि पुरख हरि हुक्म सुणाया, ब्रह्मा विष्न शिव उठाईआ। तिन्नां एका रूप रंगाया, रंगया रंग उतर ना जाईआ। मेरी इच्छया साची भिच्छया तिन्नां झोली इक्क भराया, पारब्रह्म प्रभ वण्ड वण्डाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डा घाड़न घड़ जीव जंत जगत उपाया, आत्म ब्रह्म ब्रह्म वड्याईआ। ईश जीव खेल खिलाया, हरि जगदीश दए सलाहीआ। साचा छत्र सीस झुलाया, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। साची सिख्या सच्ची सिक्ख, भुल्ल रहे ना राया। आदि जुगादि पारब्रह्म पतिपरमेश्वर रिहा दस्स, रूप रेख रंग ना कोए रंगाया। ब्रह्मे विष्न शिव वण्डाया तेरा हिस्स, दहि दिशां वेख वखाया। त्रैगुण माया पीसण पीस, पुरख अकाल चक्की हथ्थ रखाया। करे खेल जगत जगदीस, कलिजुग अन्तिम आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची घाड़त घड़न घड़ाया। साची घाड़न आप घड़ांयदा, कर किरपा गुण निधान। ब्रह्म रूप सर्ब प्रगटांयदा, पंज तत्त काया मन्दिर कर त्यार मकान। आपणी इच्छया विच भरांयदा, साची सिख्या दो जहान। एका शब्द नाद वजांयदा, नाद अनादी धुर फ़रमाण। आपणा हुक्मी हुक्म वरतांयदा, धुर दरगाही नौजवान। पुरीआं लोआं वेख वखांयदा, ब्रह्मण्ड खण्ड करे प्रधान। रवि ससि सूरज चन्न आपणी किरन जोत जगांयदा, इक्क इक्क इक्क वण्डे वण्ड मेहरवान। मंडल मंडप डेरा लांयदा, आपणी धूढ़ ख़ाक कतरा कतरा कर पछाण। साचे तख्त सोभा पांयदा, दीन दुनी जाणे वाली दो जहान। लक्ख चुरासी घट घट मन्दिर आप सुहांयदा, निरगुण रूप श्री भगवान। ब्रह्म आपणी अंस उपजांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, सच महल्ला इक्क वसांयदा। सच महल्ल वसांयदा, ऊँच अगम्म अपार। सो पुरख निरँजण आसण लांयदा, निरगुण नूर कर उज्यार। जोती जोत डगमगांयदा, इक्क इकल्ला बेऐब परवरदिगार। तख्त निवासी सोभा पांयदा, पुरख अबिनाशी सांझा यार। मंडल रासी रास रचांयदा, रवि ससि कर उज्यार। ब्रह्मा विष्न शिव स्वास स्वासी नाम जपांयदा, सोहँ शब्द दए आधार। पृथ्मी आकाश खेल खिलांयदा, आकास आकासां वसे बाहर। साचे तख्त सोभा पांयदा, निरगुण दाता बेऐब परवरदिगार। विष्नूं एका हुक्म सुणांयदा, लक्ख

चुरासी भर भण्डार। ब्रह्म रूप सर्ब प्रगटांयदा, पारब्रह्म सच्ची सरकार। शंकर एका राहे पांयदा, लेखा जाणे अन्तिम वार। धुर फ़रमाणा शब्द सुणांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल साचा हरि, हरि की पौड़ी आप चढ़ांयदा। हरि की पौड़ी हरि हरि चढ़या, दूजा अवर ना कोए वखांयदा। सच महल्ले आपे वड़या, सच सिँघासण आसण लांयदा। आपणा नाउँ आपणा अक्खर आपे पढ़या, दूसर वस्त ना कोए वण्डांयदा। आदि जुगादी एकँकारा हरि निरँकारा सचखण्ड दुआरे आपे खड़या, अनुभव आपणा रूप दरसांयदा। ना जन्मे ना कदे मरया, मात गर्भ ना कोए हंढांयदा। ब्रह्म रूप सृष्ट सबाई वरया, पारब्रह्म साचा कन्त लक्ख चुरासी सखी आप हंढांयदा। आपे आदि आपे अन्त करया, मध आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शंकर ब्रह्मा विष्न देवे एका वर, एका अक्खर आप जणांयदा। एका अक्खर ओंकार, निश अक्खर रूप दरसाईआ। साचा सथ्थर मीत मुरार, साची सेज वड्याईआ। एका नेत्र अक्ख नैण उग्घाड़, लोचण नूर इक्क रुशनाईआ। एका महल्ल अटल उच्च मुनारा मन्दिर देवे वाड़, एका कंदर सोभा पाईआ। एका कन्त भगवन्त मेल मिलावा साची नार, रुत बसन्त इक्क सुहाईआ। एका जोग जुगत जाणे संसार, जागरत जोत कर रुशनाईआ। एका कोटन कोटि कोट कोटि जीव जंत कर त्यार, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज वण्ड वण्डाईआ। एका शब्द नगारे लाए चोट सच्ची धुन्कार, घर घर घर विच आप सुणाईआ। एका वरन गोत वसया बाहर, सति सरूप बेपरवाहीआ। एका लाड़ी मौत ना करे श्रंगार, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे एका वर, शंकर विष्न ब्रह्मा एका सेव लगाईआ। साची सेवा हरि निरँकार, त्रै त्रै आप जणांयदा। त्रै त्रै भिन्न बेऐब परवरदिगार, गिण गिण आपणा हुक्म सुणांयदा। छिन छिन रूप प्रगटे अगम्म अपार, आपणा चिन ना कोए वखांयदा। रात दिन कर पसार, सूरज चन्न आप फिरांयदा। मास बरख कर त्यार, घड़ी पल वण्ड वण्डांयदा। आपणी थित ना जणाए हरि निरँकार, वदी सुदी सर्ब कुरलांयदा। विष्नूं रोवे बण भिखार, प्रभ अग्गे झोली डांहयदा। कवण सु वेला कवण वक्त, कवण वार कवण थित, कवण घर पसार करांयदा। कवण रूप करे हित, कवण मात कवण पित, कवण बूंद कवण रित, कवण जोड़ जुड़ांयदा। कवण होए नेतन नित, कवण अमृत रिहा सित, कवण शब्द भण्डार वरतांयदा। कवण दो जहानां बणे मित, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वखा साचा घर, नेत्र नैण सर्ब तरसांयदा। विष्नूं उठ पुकारया, प्रभ अग्गे सीस झुका। तेरा रूप अगम्म अपारया, लेखा सके ना कोए लिखा। हउं याचक खड़ा दवारया, अगे आपणी झोली डाह। एका बख्श चरन प्यारया, बख्शीं बख्शिश सच्ची सरना। तेरा नाउँ वणज वणजारया, सच ख़ज़ीना

११८४
०६

इक्क भरा। तूं शाहो भूप सच्चा सिक्दारया, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणा। दर तेरे मंगां बण भिखारया, सुण बेनन्ती बेपरवाह। पुरख अबिनाशी करे प्यारया, निरगुण निरगुण लए उठा। लक्ख चुरासी तेरी सेव लगा रिहा, घट घट देणा रिज़क पुचा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग गेड़ा आप दवा रिहा, लक्ख चुरासी रिहा भवा। अन्तिम वेला इक्क सुणा रिहा, पान्धी आपणा पूरा करे राह। निरगुण निरवैर पुरख अकाल जूनी रहित अनुभव प्रकाश आपणा रूप वटा ल्या, जोती जोत रिहा जगा। तेरा लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखा ल्या, अन्तिम लेखा दए मुका। कलिजुग चौथा जुग नौं सौ चुरानवे चौकड़ी तेरा राह तका रिहा, अन्तिम औध जाए पुग। नर नरायण निराकार निरवैर आपणा रूप प्रगटा ल्या, लक्ख चुरासी जीव जंत वेखे लुक लुक। विष्नूं तेरा डंक इक्क वजा ल्या, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड निउँ निउँ वेखण झुक। तेरा अन्तिम संग निभा ल्या, तेरा वेखण आए मुख। तेरी सुफ़ल कुक्ख करा ल्या, तेरा मेटे विछोड़ा दुक्ख। तेरी चोग जगत चुगा ल्या, अन्तिम तेरा दाणा पाणी जाए मुक। दरस अमोघ आप करा ल्या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साचा हुक्म आप सुणा ल्या। साचा हुक्म शब्द जणाया, हरि हरी हरि दया कमांयदा। नौं नौं चार पन्ध मुकाया, लक्ख चुरासी गेड़ा आप भवांयदा। जुगां जुगन्तर वेस वटाया, लोकमात वेख वखांयदा। धरनी धरत धवल दए सुहाया, धुर दी बाणी बाण लगांयदा। अबिनाशी करता करता पुरख करनी किरत कमाया, शब्द निशाना इक्क झुलांयदा। जीव जंत साध सन्त गुर पीर अवतार आपणे हुक्म फिराया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणा मेल मिलांयदा। शब्द जणाई धुर फ़रमाणा, भावी भगवन हथ्थ रखाईआ। विष्नूं सुण इक्क तराना, पुरख अबिनाशी एका गाईआ। हँ ब्रह्म वेखे गुण निधाना, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। सो पुरख निरँजण होए प्रधाना, वेद कतेब शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी भेव कोई ना पाईआ। करे खेल गुण निधाना, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम मेटे झूठ निशाना, कूड़ी क़िया रहिण ना पाईआ। सति सतिवादी बन्न्हे गाना, दर घर साचे सगन मनाईआ। प्रगट होए निहकलंक बली बलवाना, श्री भगवान निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं देवे एका वर, वेले अन्तिम लाए लड़, आपणा बन्धन आपे पाईआ। ब्रह्मा खोल्ह चार मुख, चारे वेद कूक पुकारया। पारब्रह्म सुख माणया तेरी कुक्ख, आया बाहर होया अँध्यारया। निरगुण अंदर निरगुण बैठा लुक, भेव कोए ना पा रिहा। चार मुखी रिहा झुक, सीस जगदीस चरन टिका रिहा। हउँ प्यास तेरे दरसन भुक्ख, तेरा विछोड़ा मोहे सता रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ब्रह्मा रो रो नीर वहा रिहा। ब्रह्मा रोवे करे गिरयाज़ार,

धीरज धीर ना कोई धराईआ। पारब्रह्म तेरा सच प्यार, तेरी रंगन मेरी वड्याईआ। तेरा मन्दिर मेरा दुआर, तेरा चरन मेरी सरनाईआ। तेरा शब्द मेरी धुन्कार, मेरी धुन तेरी शनवाईआ। तेरा दरस मेरा प्यार, मेरी हरस तूं मिटाईआ। हउँ बैरागण फिरां दुहागण नार, तुध बिन ना कोए प्रनाईआ। नेत्र नैण आदि जागन, निन्दरा आलस ना कोई रखाईआ। जुग जुग रहिणा मैं सुहागण, सीस जगदीस इक्क हंढाईआ। साचा गाना बन्नां तागन, जुग जुग ना कोए तुड़ाईआ। तेरे नाम ना लग्गे दागन, निर्मल इक्क रूप वखाईआ। सदां संग वसां घर मन्दिर बह बह हसां गावां तेरा रागन, तेरा राग मेरा सुहाग पतिपरमेश्वर तेरी वड्याईआ। लक्ख चुरासी तेरी जाग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी सरन रिहा पड़, पल्लू गल एका पाईआ। गल पल्लू पाए निमाणा, निर्धन आपणा रूप प्रगटांयदा। शाहो भूप सच सुल्ताना, शहनशाह साचे तख्त आप सुहांयदा। हउँ मंगां दान बण नादाना, दाता दानी तेरी सरन इक्क तकांयदा। तेरा सरूप ब्रह्म पछाणा, पारब्रह्म तेरा माण इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची मंग आप मंगांयदा। साची मंगे मंग, बण भिखारीआ। हरि हरि चढ़े साचा रंग, पारब्रह्म रंगे इक्क लिलारीआ। तूं साहिब सूरा सरबंग, वड दाता शब्द भण्डारीआ। हउँ निमाणा नेत्र अन्ध, चारे मुख होए जुआरीआ। किरपा कर सर्ब
११८५ बख्शिंद, दर मंगे बण भिखारीआ। तेरा रूप सदा अनन्द, परमानंद सहिज सुखदारीआ। तेरी सीआं मेरा चन्द, चारे पद ११८५
०६ जोत उज्यारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि अन्त आवे ना पासा हारीआ। ०६
पुरख अबिनाशी दया कमा, साचा तत्त समझांयदा। ब्रह्मे ब्रह्म बीज बिजा, लक्ख चुरासी तेरा बूटा लांयदा। घट घट हरया दए करा, अमृत सिंच सेव कमांयदा। जुग जुग फुल फुलवाड़ी दए महिका, जुग चौकड़ी आप वखांयदा। नौं नौ वेखे थाउँ थाँ, चार चार वण्ड वण्डांयदा। विष्नूं संग लए निभा, सच भण्डारा हथ्थ रखांयदा। तेरा रूप दए दरसा, तेरी गणत आप गणांयदा। पंज तत्त काया मन्दिर रचन लए रचा, अप तेज वाए पृथमी आकाश तेरी झोली पांयदा। घर विच घर दए सुहा, आत्म ब्रह्म रूप प्रगटांयदा। ईश जीव जोत जगा, आदि निरँजण सेव कमांयदा। सच महल्ला आप वसा, शब्द अनादी धुन अलांयदा। घर अमृत ताल सरोवर दए भरा, साचा झिरना आप झिरांयदा। हरि हरि मेला पारब्रह्म लए मिला, भेव अभेदा आप खुल्हांयदा। आपणा चेला आपणे चरन लए बहा, वेला वक्त ना कोई जणांयदा। सज्जण सुहेला बेपरवाह, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बेड़ा पार करा, कलिजुग अन्तिम जोत जगांयदा। निहकलंका नाउँ रखा, लोकमात वेस वटांयदा। ब्रह्मा तेरा लेखा दए सुहा, पारब्रह्म संग निभांयदा। आपणी जोती जोत लए मिला,

थिर कोए रहिण ना पांयदा। साची रचना फिर रचा, गुरमुख साचे तख्त सुहांयदा। पुरी ब्रह्म जो बैठा डेरा ला, आपणा हुक्म सुणांयदा। सोहँ ढोला साचा गा, आदि अन्त वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, उत्तम रक्खे आपणी ज़ाता, वरन गोत ना वण्ड वण्डांयदा। ब्रह्मा विष्न शब्द जणाया, शंकर आप उठांयदा। शंकर तेरी सेव वखाया, जो घड़या सो भन्न वखांयदा। इक्क त्रसूल हथ्थ रखाया, त्रलोका पार करांयदा। कंठ माला इक्क सुहाया, बाशक तशका गल लटकांयदा। भोला नाथ वड वड्याआ, दीना नाथां वेख वखांयदा। सगला संग आप निभाया, दो जहाना फेरी पांयदा। एक हथ्थ मृदंग फड़ाया, उच्ची कूक सर्ब सुणांयदा। आपणी धूणी रिहा रमाया, ख़ाकी ख़ाक आपे छाणदा। ख़ाकी ख़ाक नेत्र नैण राह तकाया, आपणी दृष्ट आपणा इष्ट विच टिकांयदा। शंकर दृष्टी वेखे रघुपत, पारब्रह्म प्रभ खेल खिलांयदा। ना कोई बीरज दित्ता घत, नारी सेज ना कोई सुहांयदा। चित्रगुप्त करया उत्पत, पारब्रह्म प्रभ हुक्म सुणांयदा। एकँकारा देवे मत, एका तत्त तत्त रखांयदा। आपे जाणे मित गत, हरि दाता वेस वटांयदा। अंदर रक्खी आपणी रत, तिन्नां विच उपजांयदा। करे खेल कमलापत, साची सेज आप सुहांयदा। चित्रगुप्त अंदर साची वस्त घत, आपणी धारा आप वखांयदा। राए धर्म कर प्रगट, पारब्रह्म प्रभ वेख वखांयदा। खेल खलाए साचे हट्ट, दर दुआर ना कोई वखांयदा। शंकर नेत्र वेखे पट, सुन्न समाध आप लगांयदा। तन अंग ना ल्या कट्ट, रूप अनूप ना कोई दरसांयदा। पारब्रह्म प्रभ करया खेल झट पट, ख़ाकी ख़ाक वेख वखांयदा। चित्रगुप्त राए धर्म बँधा नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ांयदा। लक्ख चुरासी फड़ां हथ्थ, लहिणा देणा इक्क समझांयदा। राए धर्म तेरा खोल्ले हट्ट, हट्ट हटवाणा आप अख्वांयदा। शंकर अन्तिम खेड़ा सभ दा करे भट्ठ, जो घड़या भन्न वखांयदा। राए धर्म आपणे खाते देवे घत्त, बांहों फड़ ना कोई कढांयदा। सताई जुग ना आई कोई मति, राए धर्म आपणा हुक्म आप चलांयदा। करी किरपा श्री भगवन्त, भगवन आपणी धार चलांयदा। राम राणा दित्ता एका तत्त, तत्त तत्त विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर आपणी धार चलांयदा। राए धर्म कर प्यारा, दया निध दया कमाईआ। सताई जुग करया पार किनारा, आपणी वण्डण वण्ड आप वण्डाईआ। दूल्हा दुल्हन बणया एका लाड़ा, एका घर वज्जी वधाईआ। एका सेज कन्त भतारा, एका सुत्ता बेपरवाहीआ। एका भिच्छया भरे भण्डारा, इच्छया इच्छया विच टिकाईआ। राए धर्म ना रहे कुँवारा, करता करनी आप वखाईआ। घाड़त घड़े बण ठठयारा, रूप रंग रेख ना कोई वड्याईआ। सुन्न अगम्मी धूंआँधारा, चित्रगुप्त राए धर्म आप बहाईआ। दोहां दृष्ट करे प्यारा, इष्ट नार रूप प्रगटाईआ। आपणे अंदर आपे निमे आपे वेखणहारा,

११८७ चित्रगुप्त भेव ना राईआ। राए धर्म ना करे विचारा, कवण रूप होई कुड़माईआ। नौं जुग करया खेल न्यारा, अंदरे अंदर वेख वखाईआ। छत्ती जुग कर पार किनारा, शहनशाह आपणी कल वरताईआ। धर्म राए घर जन्म दवाए, कुँवारी कन्या सद वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। कुँआरी कन्या जन्म दवाया, पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा। धर्म राए घर मंगल गाया, चित्रगुप्त मृदंग वजांयदा। भोला नाथ वेखण आया, तन ख़ाकी ख़ाक रमांयदा। हथ्थ त्रसूल उठाया, उच्ची कूक अलक्ख जगांयदा। अलक्ख निरँजण बेपरवाहया, भेव कोए ना पांयदा। राए धर्म उठ सीस झुकाया, गुरदेव नमो सुणांयदा। चित्रगुप्त सेव कमाया, अन्तर लिव इक्क रखांयदा। शंकर एका नैण उठाया, कुँआरी कन्या वेख वखांयदा। कवण सपुत्री नाउँ धराया, कवण दुआरे आप बहांयदा। राए धर्म रिहा शर्माया, हरि का भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्ांयदा। कुँआरी कन्या कर प्रनाम, दोए दोए लोचण दरसन पाईआ। गुरदेव नमो नमस्ते देणा एका नाम, दिवस रैण कवण गीत गाईआ। भोला नाथ कर पछाण देवे माण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तेरी खेल वेखे जगत महान, लक्ख चुरासी तेरा संग निभाईआ। तेरा नाउँ करा प्रधान, नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग रहे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरताईआ। भोले नाथ धरया नाउँ, लाड़ी मौत करे पुकारया। लक्ख चुरासी तेरा ग्राउँ, घर मन्दिर आप सुहा रिहा। नौं खण्ड पृथ्मी वेखणा तेरा थाउँ, सृष्ट सबाई सेवा ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त आप समझा रिहा। लाड़ी मौत नाउँ रखाया, धर्म सपुत्री दए वड्याईआ। जो घड़या सो भन्न वखाया, अन्त कोए रहिण ना पाईआ। इक्क दुआरा दए समझाया, भुल्ल रहे ना राईआ। जुगा जुगन्त हरि भगवन्त साचे भगत लए उठाया, आपणे नाम करे पढ़ाईआ। साचे सन्तां लए समझाया, साची सिख्या इक्क वखाईआ। गुरमुख गुर गुर लए जगाया, रूप अनूप इक्क दरसाईआ। गुरसिख रंग लए रंगाया, रंग रंगण इक्क वड्याईआ। वेले अन्त पुरख अबिनाशी होए सहाया, निरगुण आपणा रूप धराईआ। लक्ख चुरासी तेरा कन्त, जुग जुग लैणा प्रनाईआ। कलिजुग अन्तिम नर हरि नरायण बणाए आपणी बणत, निहकलंका जामा पाईआ। लहिणा देणा चुकाए अन्तिम अन्त, अन्त लेखा दए मुकाईआ। आप बणाए आपणी बणत, साची रचना फेर रचाईआ। नाता तुटे जीव जंत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचे सोभा पाईआ। दर घर साचा हरि सुहाया, निरगुण निरवैर पुरख अकाल। कलिजुग वेख वखाया, संग रखाए काल महांकाल। ब्रह्मा विष्न शिव उठाया, त्रैगुण माया तोड़ जंजाल। पंज तत्त चोला आप वटाया, लेखा जाणे शाह कंगाल। साचा ११८७

०६ ०६

ढोला नाम सुणाया, शब्द अगम्मी बण दलाल। धुर दा गोला वेख वखाया, हाल मुरीदां वेखे आण। साचा तोला बण के आया, धर्म रखाया हथ्थ निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि की महिमा कोई कथ ना सके राईआ। हरि हरि महिमा सदा अकथ, रसना कथ ना सके राईआ। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही धुरदरगाहीआ। नाम दृढ़ाए साची वथ, सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, निहकलंका नाउँ रखाईआ। सर्बकला आप समरथ, समरथ पुरख वड वड्याईआ। गुरमुखां गुरसिखां अंदर साची वस्त घत्त, नाम रत रती रत रंगाईआ। सोहँ शब्द देवे वथ, आदि ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। जगत विछोड़ा देवे कट्ट, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए फड़, काया मन्दिर पौड़े चढ़, जीव जंत लक्ख चुरासी भरम भुलेखे आप भवाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं का एको दाता, जीअ दान आपणे हथ्थ रखाईआ।

❋ ८ अस्सू २०१७ बिक्रमी मंगल सिंघ दे गृह पिण्ड सारिंगड़ा ज़िला अमृतसर ❋

सो पुरख निरँजण हरि सुल्तान, इक्क इकल्ला आदि जुगादि समांयदा। हरि पुरख निरँजण वड मेहरवान, महिबान बीदो आपणा नाउँ धरांयदा। एकँकारा खेल महान, अनुभव आपणा रूप प्रगटांयदा। आदि निरँजण जोत महान, नूर नुराना डगमगांयदा। अबिनाशी करता वाली दो जहान, दरगाह साची धाम सुहांयदा। श्री भगवान उठाए सच निशान, पुरख अगम्मड़ा आप झुलांयदा। पारब्रह्म प्रभ होए प्रधान, निरगुण आपणा नाउँ रखांयदा। सचखण्ड दुआरे नौंजवान, सूरबीर आपणा बल धरांयदा। सच सिँघासण कर परवान, तख्त ताज आप वड्यांअदा। एका हुक्म धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी आप अलांयदा। तख्त निवासी राज राजान, शाहो भूप आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेले खेल न्यार, करे कराए करनेहार, दूसर संग ना कोई रखांयदा। सो पुरख निरँजण सर्ब गुणवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। हरि पुरख निरँजण आदि अन्त, इक्क इकल्ला वेस वटाईआ। एकँकारा आप बणाए बणत, साचा घाड़न आप घड़ाईआ। आदि निरँजण दर घर साचा आप सुहञ्जणा, निर्मल दीआ बाती जोत करे रुशनाईआ। श्री भगवान साचा कन्त, सच सुहञ्जणी सेज हंढाईआ। अबिनाशी करता आदि अन्त, मधि आपणी धार समाईआ। पारब्रह्म आपे रंगे आपणी रंगत, रूप रंग रेख ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकार, करे खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। अलक्ख अगोचर अभेव न्यारा, अकल कलधारी आप करांयदा। सचखण्ड निवासी

साचा खोल्ह दुआरा, थिर घर साचे सोभा पांयदा। तख्त निवासी शाह सिक्दारा, शाहो भूप वड वड्यांअदा। इक्क इकल्ला खेल न्यारा, आदि जुगादी आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, धाम सुहञ्जणा आप सुहांयदा। साचा धाम हरि सुहांयदा, एका रंग रंगाया। पुरख अबिनाशी डेरा लांयदा, दर घर साचे सोभा पाया। तख्त ताज आप सुहांयदा, सति पुरख निरँजण वेख वखाया। आदि आदि आपणी कल धरांयदा, जूनी रहित अनुभव प्रकाश वखाया। पुरख अकाल आपणा नाउँ धरांयदा, मात पित ना कोए बणाया। सुते प्रकाश आप करांयदा, नूर नुराना डगमगाया। छप्पर छन्न ना कोई छुहांयदा, अटल दुआरा आप वड्याआ। निरगुण आपणा रूप प्रगटांयदा, निरवैर आपणा खेल खलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, करनी किरत आप कमांयदा। खेल अवल्ला एकँकार, आदि जुगादी आप करांयदा। सच महल्ला कर त्यार, सति सतिवादी आसण लांयदा। एका रूप निराकार, निरगुण आपणा आप प्रगटांयदा। आपे जाणे आपणी धार, त्रै त्रै विच समांयदा। आपे गुप्त आपे ज़ाहर, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपे कन्त आपे नार, आपे सुहञ्जणी सेज हंढांयदा। आपे नित नवित करे सच प्यार, दर घर साचा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे मन्दिर सोभा पांयदा।

११८६ ०६ साचा मन्दिर उच्च महल्ला, सो पुरख निरँजण आप वसांयदा। हरि पुरख निरँजण बैठा इक्क इकल्ला, एकँकारा वेख वखांयदा। ११८६ ०६

आदि निरँजण निरगुण जोती दीपक आपे बला, प्रकाश प्रकाश विच टिकांयदा। श्री भगवान सच सिँघासण एका मल्ला, दरगाहि साची धाम सुहांयदा। अबिनाशी करता आपे फड़ाए आपणा पल्ला, आपणा संग आप निभांयदा। पारब्रह्म आपणा खेल करे अछल अछला, आपणी कल आप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता बेपरवाह, आदि आदि बण मलाह, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। आदि आदि खेल अपारा, निरगुण निरवैर आप करांयदा। आपणी जोत हो उज्यारा, आप आपणा नूर डगमगांयदा। आपणा मन्दिर कर त्यारा, सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा। थिर घर साचे खोल्ह किवाड़ा, घर घर विच डेरा लांयदा। सच सिँघासण करे प्यारा, पुरख अबिनाशी वेख वखांयदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। मेल मिलावा नारी कन्त भतारा, नर नरायण सेज हंढांयदा। ना कोई जाणे सुत दारा, वेला वक्त ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणा रूप प्रगटांयदा। अनुभव रूप प्रकाशया, आदि पुरख अगम्म। सचखण्ड दुआर करे खेल तमाश्या, निरगुण आपणा बेड़ा बन्न्ह। एका जोत दीप प्रकाशया, ना कोई सूरज चन्न। ना कोई पृथ्मी ना अकासया, धरत धवल ना करे कोई धन्न धन्न। ब्रह्मा विष्न शिव

ना कोई गाए रसन स्वासया, लक्ख चुरासी जणे ना कोई जन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, आपणा बेड़ा रिहा बन्न्ह। आपणा बेड़ा बन्न्हणहारा, एका पुरख अख्वाया। आदिन आदि भेव न्यारा, लेखा लेख ना कोई जणाया। निरगुण रूप हो उज्यारा, दर घर साचा आप सुहाया। साचा भूप बण सिक्दारा, साचा सीस ताज टिकाया। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, साचा अदल आप कमाया। आपे होए चोबदारा, निरगुण निरगुण सीस झुकाया। आपे मंगे मंग भिखारा, भेखाधारी आपणा वेस वटाया। आपे बणे सच वरतारा, साची वस्त आपणे हथ्थ रखाया। साचे मन्दिर निरगुण नरायण बैठ निरँकारा, निराकारा रूप धराया। मंडल मंडप ना कोई सतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा एका घर, घर सुहञ्जणा आप वड्याआ। घर सुहञ्जणा हरि सुहांयदा, सोभावन्त भगवान। निरगुण आपणा आसण लांयदा, गुणवन्त गुण निधान। दूसर अवर ना कोई रखांयदा, ना कोई दीसे होर निशान। आपणी कल आप वरतांयदा, आपणे मन्दिर हो प्रधान। सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा, सति सतिवादी वेखे आण। बोध अगाधी खेल खिलांयदा, शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण। नाद अनादी आप वजांयदा, तुरीआ नाद कर परवान। त्रैगुण रूप ना कोई दरसांयदा, पंज तत्त ना खेल जहान। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वण्ड ना कोई वण्डांयदा, ब्रह्म देवे ना जीआ दान। विष्नूं रिज़क ना कोई पुचांयदा,
११६० ब्रह्मा ब्रह्म ना करे कोई परवान। शंकर त्रसूल ना कोई हथ्थ उठांयदा, बाशक तशका ना कोई निशान। सांगोपांग ना कोई ११६०
०६ हंढांयदा, कँवल नैण ना कोई मटकान। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डेरा कोई ना लांयदा, ना कोई दिसे सुंञ मसाण। धूंआँधार ०६
ना कोई वखांयदा, सर सरोवर ना कोई धुनकान। जोत निरँजण ना कोई जगांयदा, आत्म ब्रह्म ना कोई ज्ञान। गुर पीर अवतार ना कोई अख्वांयदा, साध सन्त ना कोई निशान। सीस ताज ना कोई टिकांयदा, शाहो भूप ना कोए राजान। दर दर भिख्या मंग ना कोई मंगांयदा, दाता दानी दान ना देवे कोई आण। अक्खर वक्खर ना कोई पढ़ांयदा, रसना जिह्वा ना कोई कल्याण। बत्ती दन्द ना कोई हिलांयदा, करे खेल श्री भगवान। सचखण्ड साचे एका सोभा पांयदा, इक्क इकल्ला नौजवान। आपणा मृदंग आप वजांयदा, आपे खेल करे महान। सो पुरख निरँजण आपणा नाउँ धरांयदा, हरि पुरख निरँजण कर परवान। एकँकारा संग रखांयदा, आदि निरँजण मेला दो जहान। श्री भगवान वेख वखांयदा, अबिनाशी करता होए मेहरवान। पारब्रह्म प्रभ निउँ निउँ सीस झुकांयदा, जगत जगदीस वेखे मार ध्यान। सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, आदि आदि आपणा करे आप पसार। आपणी धार आप चलांयदा, निरगुण रूप पुरख अकाल। जोती जोत डगमगांयदा, इक्क इकल्ला दीन दयाल। सचखण्ड दुआरा सोभा

पांयदा, अबिनाशी करता अवल्लड़ी चाल। आपणे मन्दिर डगमगांयदा, दीपक जोती एका बाल। धर्मसाल आप सुहांयदा, दरगाह साची धाम न्यार। आप आपणा वेख वखांयदा, निराकार निराकार निराकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करे आपणा सच पसार। सच पसारा आप कर, आप आपणा वेख वखाईआ। आपणे अंदर आप धर, आपणी आप करे कुड़माईआ। आपणा आप आपे वर, आपे सगन मनाईआ। आपे नारी आपे नर, नर हरि वड्डी वड्याईआ। आपणी सेजा आपे चढ़, आपणा रस आप हो जाईआ। आपणे अंदर आपे वड़, आपणा बंक सुहाईआ। आपे दरस दिखाए खड़, वेखणहार आप हो जाईआ। आप फड़ाए आपणा लड़, आपणा बन्धन आपे पाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपणा निष्अक्खर आपे पढ़, आपे करे सच पढ़ाईआ। आदि जुगादि ना जाए मर, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणी रचना आपे रच, आपणा आप उपाया। आपे वेखे आपणा आप सच्च, सच्चा आप अख्वाया। आपणे मन्दिर आपे रिहा नच्च, गोपी काहन आप हो जाया। आपणे अंदर आपे रच, आप आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आप अख्वाया। आदि पुरख पुरख अबिनाशा, पारब्रह्म प्रभ खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजण वेखे आप तमाशा, श्री भगवान संग निभांयदा। हरि पुरख निरँजण पावे रासा, अबिनाशी करता नाच नचांयदा। एकँकारा आपणा बख्शे आप भरवासा, आदि निरँजण सेव कमांयदा। सचखण्ड दुआरे आपणी पूरी करे आपे आसा, आपणी इच्छया इच्छया विच टिकांयदा। आदि अन्त ना कोए विनासा, निरगुण आपणा रंग रंगांयदा। थिर घर साचे कर कर वासा, घर घर विच सोभा पांयदा। असुत्ते प्रकाश प्रकाश प्रकाशा, अनुभव रूप ना कोए धरांयदा। आपणे दुआरे आपे होवो दासी दासा, आपे निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आपे शाह आपे शबासा, शाह सुल्तान आपणा बल आप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणी खेल आप खिलांयदा। आदि पुरख हरि खेल खलाया, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। आपणा आप आप प्रगटाया, मात पित ना कोई भैण भाईआ। आप आपणा संग निभाया, साक सज्जण सैण कोए दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर आप सुहाईआ। हरि मन्दिर आप सुहांयदा, सोभावन्त गहर गम्भीर। आपणी जोत आप जगांयदा, आपे चोटी चढ़या इक्क अख़ीर। आपणा हुक्म आप सुणांयदा, वड वड्डा पीरन पीर। आपणी खेल आप खिलांयदा, आपे शाह बण फ़कीर। आपणी इच्छया आप प्रगटांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा बल धरांयदा। आपणी इच्छया आपणे अग्गे रक्ख, आप आपणी दया कमांयदा। निरगुण अग्गे निरगुण हो

११६१
०६

प्रतक्ख, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। निरगुण रूप अलक्खना अलक्ख, अलक्ख अलक्खणा भेव ना आंयदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, निरगुण साचा राह चलांयदा। आपणे अंदर आपे वस, आपणा भेव खुलांयदा। आपणा पन्ध मुकाए नस्स नस्स, आप आपणी चाल बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप बंधांयदा। एका धार कर त्यार, एकँकारा वेख वखाईआ। साचे मन्दिर होए उज्यार, पुरख अबिनाशी वेस वटाईआ। सो पुरख निरँजण बणया कन्त भतार, पारब्रह्म प्रभ नारी रूप समाईआ। दोहां विचोला सिरजणहार, आपणी आपे गंढ पुआईआ। आपे खेल करे अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी कार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप सुहाईआ। साचा मन्दिर सचखण्ड, सच साचे आप सुहाया। निरगुण आपणी वण्डी वण्ड, थिर घर हिस्सा इक्क रखाया। ना कोई चार दिवारी दिसे कंध, ना कोई बाढी बणत बणाया। ना कोई गाए रसना छन्द, गीत गोबिन्द ना कोई अलाया। पुरख अबिनाशी इक्क बखशिंद, बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आपणा हुक्म चलाया। सचखण्ड दुआरा कर पसारा, हरि निरँकारा खेल खिलांयदा। थिर घर साचे खोल्ह किवाड़ा, निरगुण धारा जोती जोत डगमांयदा। आपणी इच्छया भर भण्डारा, आपणी दात आपणी झोली आप भरांयदा। आप आपणा कर पसारा, दर दुआरा आप सुहांयदा। आप उपाए सुत दुलारा, हरि शब्दी नाउँ धरांयदा। एका हुक्म इक्क वरतारा, इक्क अखाड़ा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सुत शब्द आप उठांयदा। सुत शब्द हरि आप उपाया, बूंद रक्त ना कोई मिलाईआ। जोती जोत जोत प्रगटाया, इच्छया भिच्छया वेख वखाईआ। आपणी धारा विच समाया, सार शब्द नाउँ रखाईआ। सारंगी सारिंग ना कोई तार रखाया, सच सितार आप वजाईआ। निराकार हरि खेल खलाया, निरगुण वेखे चाँई चाँईआ। धुर फ़रमाणा हुक्म जणाया, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वड्याईआ। शब्द बाल उठया, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। सूरा सरबंग एका तुठया, आपणा बन्धन इक्क वखाईआ। आदि जुगादि ना जाए लुट्टया, दो जहान वड्डी वड्याईआ। सति पुरख निरँजण लाया तेरा बूटया, पत डाल्ही आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए समझाईआ। शब्द निधाना कर निमस्कार, प्रभ अगे सीस झुकांयदा। हउँ सेवक याचक सेवादार, तेरी सेवा सद कमांयदा। एका मंगां मंग बण भिखार, मस्तक धूढ़ी टिक्का लांयदा। नित नवित रहे दिदार, तुध बिन अवर ना कोए भांयदा। तेरी धार मेरा प्यार, प्यार तेरी गुफ़तार समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शब्द शब्दी मंग

मंगांयदा। पुरख अबिनाशी दया कमा, शब्दी शब्द समझाया। तेरी सेवा इक्क लगा, एका हुक्म सुणाया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचा, सूरज चन्न किरन किरन जोत रुशनाया। आपणी भिच्छया तेरी इच्छया दए भरा, निराकार साकार आप हो जाया। विष्नूं आपणा अंग कटा, अंसा बंसा भेव ना राया। जोती जोत लए प्रगटा, जोती जाता नाउँ धराया। एका हुक्म दए सुणा, धुर फ़रमाणा आप अलाया। आपणे चरन कँवल धुआ, तेरे हथ्थ फड़ाया। विष्नूं आपणा जाम प्या, नाभी बूटा कँवल लगाया। कँवल कँवला फुल खिला, पारब्रह्म वेख वखाया। हरि हरि लेखा लए लिखा, पुरख अबिनाशी एका वण्ड वण्डाया। धुर दा लेखा दए समझा, शब्द अनादी ताल रखाया। सुन्न समाधी फोल फुला, अलक्ख अगोचर वेख वखाया। धूंआँधार दए मिटा, रूप अनूप आप प्रगटाया। विष्नूं मेला सहिज सुभा, एका कँवल फुल उपजाया। शंकर आपणे रंग रंगा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। तिन्नां विचोला बण मलाह, एका बेड़े लए चढ़ाया। शब्द सरूपी चप्पू ला, चार चार वेख वखाया। आदि जुगादि खेल खला, निरगुण आपणी धार आप समझाया। एका पुरख अकाल लैणा मना, दूजा इष्ट ना कोई जणाया। निरगुण वसे हर घट थाँ, थान थनंतर सोभा पाया। शब्द सुत तेरी पकड़े बांह, आदि जुगादी
११६३ मेल मिलाया। जुगा जुगन्तर करे सच नया, थिर घर साचे सोभा पाया। सचखण्ड दुआरे बैठा जोत जगा, निरगुण रूप ११६३
बेपरवाहया। एका हुक्म दए वरता, तेरी सेवा सच वखाया। विष्नूं लहिणा देणा चुका, साची भिख्या वण्ड वण्डाया। ब्रह्मा
०६ ब्रह्म मति दए समझा, दूसर तत्त ना कोई रखाया। शंकर आपणा आप उपजा, रत्ती रत्त नाम समाया। मति तत्त आप ०६
जाणे बेपरवाह, भेव अभेदा भेव खुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आपणा रूप धराया। आपणा रूप आपे धर, सो पुरख निरँजण खेल खिलांयदा। हरि पुरख निरँजण हरि जू दर, हरी हरि मन्दिर सोभा पांयदा। इक्क एकँकारा उच्च महल्ल अटल मुनारे चढ़, आप आपणी सेज सुहांयदा। आदि निरँजण उच्च अगम्म वेखे खड़, आप आपणा राह तकांयदा। श्री भगवान आप सुहाए साचा गढ़, थिर घर साचे सोभा पांयदा। अबिनाशी करता अंदर वड़, रूप अनूप आप दरसांयदा। पारब्रह्म आपणी किरपा आपे कर, कर किरपा खेल खिलांयदा। शब्द दुलारे एका दर, धुर दी धार आप बंधांयदा। विष्न फड़ाउणा एका लड़, साचा पल्लू हथ्थ उठांयदा। ब्रह्म विद्या एका धर, ब्रह्म पारब्रह्म समझांयदा। शंकर मेला साचे घर, सहिंसा रोग ना कोई वखांयदा। तिन्नां एका घाड़न घड़, एका रंग आप रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे शब्द आप उठांयदा। शब्द उठाया किरपा निध, भेव किसे ना आया। आपणा कारज करे सिद्ध, करता पुरख खेल खिलाया। निरगुण रची आपणी बिध, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव लए तराया। विष्न उपाया किरपा धार, आप आपणी कल धराया। शंकर करया इक्क प्यार, इक्क इकल्ला खेल खलाया। एका अक्खर कर त्यार, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। चारे कुंट पावे सार, दिवस रात घड़ी पल वण्ड वण्डाईआ। विष्नूं देवे एका दात, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। ब्रह्मे सुणाई साची गाथ, चार लक्ख चार वेद करे पढ़ाईआ। शंकर उतारे एका घाट, हरि के पौड़े आप चढ़ाईआ। निरगुण निरगुण निरगुण बणे खेवट खेट, साचा बेड़ा वेख वखाईआ। लेखा जाणे मात पित बेटी बेट, भेव अभेदा भेव खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त इक्क वखाईआ। साची वस्त हरि करतार, आपणे हथ्थ रखांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रै त्रै मेला मेल मिलांयदा। एका गुण दोए वरतार, निरगुण भेव कोई ना पांयदा। शब्द अनादी नाद बोल जैकार, ब्रह्म ब्रह्मादी आप सुणांयदा। बोध अगाधी खेल अपार, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, त्रैगुण माया आपणे रंग रंगाया। त्रैगुण माया भिख्या पा, रजो तमो सतो वेख वखांयदा। विष्नूं विश्व रूप दरसा, सांतक सति सति झोली पांयदा। ब्रह्मे ब्रह्म रूप

११६४ धरा, आप आपणे रंग रंगांयदा। शंकर लेखा रिहा वखा, अन्त भगवन्त खेल खिलांयदा। एका हुक्म दए वरता, हुक्मी ११६४

हुक्म आप सुणांयदा। साची सिख्या सच समझा, साख्यात आप भवांयदा। स्वच्छ सरूपी रूप प्रगटा, रूप अनूप आप धरांयदा।

०६ निरगुण बण बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। विष्नूं वेखे नैण उठा, पुरख अबिनाशी नज़री आंयदा। दोए जोड़ ०६

रिहा सीस झुका, चरन कँवल ध्यान लगांयदा। अठ्ठे नेत्र वेख वखा, चारे वेद मुख सलांहयदा। शंकर सुन्न समाध खुल्ला, कवण नैण डगमगांयदा। आत्म अन्तर एका रंग रंगा, रस रस आप हो जांयदा। पुरख अबिनाशी देवे सच सलाह, तिन्नां एका गुण वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि खेल ब्रह्मादि, पारब्रह्म प्रभ आप उपांयदा। पारब्रह्म प्रभ खेल खिलाया, विष्न आपणी धार चलाईआ। ब्रह्म रूप पारब्रह्म प्रगटाया, हरि दर वज्जी वधाईआ। शंकर खेल आप खिलाया, खेलणहार दिस ना आईआ। एका मात गोद बहाया, त्रै चेले लए जणाईआ। जागरत जोत कर रुशनाया, नूरो नूर दरसाईआ। धुन नाद नाद वजाया, आत्मक धुन करे शनवाईआ। सच सुनेहड़ा इक्क अल्लाया, धुर दी बाणी शब्द अल्लाईआ। त्रैगुण माया वण्ड वण्डाया, साची वस्त हथ्थ फड़ाईआ। लक्ख चुरासी घाड़न घड़या, जीव जंत वण्ड वण्डाईआ। उत्भुज सेत्ज आपे वरना, जेरज अंड मेल मिलाईआ। पंज तत्त सुहाए दरना, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सोभा पाईआ। मन मति बुध आपे घड़ना, सच ठठयारा सच्चा शहनशाहीआ। नौं दुआरे खोल्हे दरना, जगत वासना विच टिकाईआ। अंदर

रक्खे हरना फ़ुरना, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लक्ख चुरासी रचन रचाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डा घड़ना, पुरख अबिनाशी आप समझांयदा। निरगुण सरगुण अंदर वड़ना, आपणा मन्दिर आप रखांयदा। आपणी करनी आपे करना, करता पुरख खेल खिलांयदा। आपणी धरनी सोहे धरना, धरत धवल जल बिम्ब टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी आप उपाया, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। निराकार साहकार रूप प्रगटाया, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। काया मन्दिर इक्क बणाया, नौं दुआरे ताक खुलाईआ। घर विच घर रिहा सुहाया, दिस किसे ना आईआ। नौं दुआरे पन्ध मुकाया, आपणा मार्ग लए उपाईआ। सुखमन टेढी बंक पार कराया, ईड़ा पिंगल ढेरी ढाहीआ। आत्म सरोवर लए नुहाया, निझर झिरना आप झिराईआ। भर प्याला जाम प्याया, प्यावणहारा साचा माहीआ। जोत निरँजण कर रुशनाया, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। बजर कपाटी तोड़ तुड़ाया, दूई द्वैती दए मिटाईआ। पंच विकारा सथ्थर रिहा विछाया, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हलकाईआ। आसा तृष्ना दए खपाया, हउमे हंगता गढ़ रहिण ना पाईआ। ब्रह्म मंगता पारब्रह्म बणाया, निउँ

११६५ निउँ सीस रिहा झुकाईआ। साचा बरदा शब्द अख्वाया, घर मन्दिर सोभा पाईआ। अनहद धुन नाद वजाया, अनाहत आपणी ११६५

खेल खलाईआ। आपे सखीआं मिल मिल मंगल गाया, आपे पंचम वेखे चाँईं चाईआ। आपे बैठा मुख छुपाया, नेत्र नैण

०६ रहे शर्माईआ। पुरख अबिनाशी खेल खलाया, पंज तत्त वज्जे वधाईआ। ब्रह्म तेरी सेव लगाया, ईश जीव रंग रंगाईआ। ०६

जगत जगदीश होए सहाया, आप आपणा बन्धन पाईआ। रथ रथवाही बेपरवाहया, दो जहाना आप चलाईआ। साची गाथा दए जणाया, आपणा नाउँ लए प्रगटाईआ। सर्बकल समराथा आप अख्वाया, समरथ पुरख भेव ना राईआ। लक्ख चुरासी विच्चों मानस मनुख करे वक्ख, आप आपणी बूझ बुझाया। शब्द सरूपी मार्ग दस्स, गुर गुर आपणा रूप धराया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे नस्स नस्स, जेरज अंडज पन्ध मुकाया। आपणे हिरदे आपे वस वस, हरिजन साचे लए समझाया। आपणा तीर निराला मारे कस, तिक्खी मुखी ना कोई भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी भाण्डा घड़, घट घट आपणा नूर दरसाया। घट घट हरि जोत जगा, दीवा बाती इक्क वखाईआ। निरगुण सरगुण कर रुशना, निरवैर वेख वखाईआ। मूर्त अकाल आप धरा, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। दीन दयाल बणे पिता माँ, सृष्ट सबाई लेखा रिहा लिखाईआ। विष्नूं तेरी पकड़े बांह, देवे रिज़क सबाईआ। ब्रह्मा तेरा बंस सुहा, ब्रह्म घर घर जोत जगाईआ। शंकर तेरी त्रिसूल वेखे थाउँ थाँ, जो घड़या भन्न वखाईआ। आदि अन्त आपणे हथ्थ रक्खे न्याँ, गुर पीर

अवतार देण गवाहीआ। बिन हरि जू सके ना कोई छुडा, लक्ख चुरासी आपणा बन्धन पाईआ। शब्द डोरी गंढु रखा, दो जहान ना सके कोई खुल्हाईआ। आदि पुरख अबिनाशी करता आपणी रचना आप रचा, निरगुण सरगुण बणे मलाहीआ। पंज तत्त काया माटी काचा भाण्डा रिहा समा, वस्त थार आपणी आप टिकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रिहा समझा, एका मार्ग पाईआ। लोकमात धरनी धरत धवल दए सुहा, नौं नौं आपणी वण्ड वण्डाईआ। सति सति गेड़ा आप दवा, सति सतिवादी रचन रचाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड खेड़ा ल्या वसा, सोभावन्त आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वण्ड आपे रिहा कराईआ। आपणी वण्डे हरि हरि वण्ड, साचा खण्डा नाम उठाया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां इक्क सुणाए सुहागी छन्द, नाउँ निरँकारा आप उपाया। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वेख वखाया। चारे वेद गाया एका बन्द, बन्दीख़ाना आप सुहाया। आपणे अंदर रक्खया आपणा परमानंद, पारब्रह्म सच्ची सरनाया। ब्रह्म बख्शे निजानंद, निज घर साचे सोभा पाया। निज मन्दिर चाढ़े आपणा रंग, रंग मजीठी इक्क वखाया। आपे ढाए द्वैती कंध, दर दरवाज़ा दए खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वण्डणहारा आप हो जाया। वण्ड वण्डाए अगम्म अपार, चार वेद भेव ना राईआ। ब्रह्मा चारे मुख करे पुकार, उच्ची कूके दए दुहाईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान वड मेहरवान, तेरा भेव कोए ना पाईआ। हउँ याचक मंगे दान, ढह प्या सरनाईआ। जुग जुग रक्खणी आपणी आण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आदि अन्त मेरी करनी इक्क पछाण, हउँ पूत सपूता धूढ़ी ख़ाक रिहा रमाईआ। तेरा शब्द मेरा फ़रमाण, तेरा नाम मेरी पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देणा साचा वर, देवणहार बेपरवाहीआ। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका तत्त समझांयदा। ब्रह्म रूप प्रभ लए प्रगटा, पारब्रह्म खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी विच समा, घट घट आपणी जोत जगांयदा। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां पृथ्मी आकाश रिहा सुहा, गगन गगनंतर सोभा पांयदा। रवि ससि जोत चमका, नूरो नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला कर पसारा, आपे वेखे एकँकारा, निरँकारा आपणी धार चलांयदा। साची धार हरि निरँकार, निरगुण दाता आप चलाईआ। विष्नूं करया सेवादार, साची सेवा आप समझाईआ। ब्रह्मे करे ब्रह्म पसार, पारब्रह्म वेखे चाँईं चाँईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग करे खेल आप करतार, कुदरत कादर दए वड्याईआ। चार जुग आवे वारो वार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणी खेल खिलाईआ। निरगुण सरगुण पावे सार, पंज तत्त काया चोला आप हंढाईआ। आपे बणे गुर पीर अवतार, भगत भगवन्त आप अख्वाईआ। आपे साचे सन्त करे प्यार, सतिगुर पूरा होए सहाईआ। आपे नारी कन्त रंग रलीआ माणे सेज भतार,

भस्मड़ आपणा भोगी भोग भगाईआ। आपे सुत्ता रहे पैर पसार, दिस किसे ना आईआ। आपे प्रगट होवे विच संसार, जोती जाता रूप वटाईआ। आपे तोड़े गढ़ हँकार, ख़िमां ग़रीबी आपे वेख वखाईआ। आपे अमृत मेघ बरसे ठंडा ठार, आपे अग्न तत्त जलाईआ। आपे सतिजुग साचे लए अवतार, वार अठारां खेल खलाईआ। आपे त्रेता करया पार, दोए दोए आपणा रंग रंगाईआ। आपे राम राम कर पसार, आपे राम राम वेखे थाउँ थाँईआ। आपे द्वापर कर श्रंगार, आपणा रूप अनूप प्रगटाईआ। आपे सख़ीआं मंगलचार, आपे रास रचाईआ। आपे रथ रथवाही बण संसार, महांसार्थी आप अख्वाईआ। आपे ग़रीब निमाणे जाए तार, आप आपणा मेल मिलाईआ। जुगा जुगन्तर खेल करे करतार, कुदत कादर वेख वखाईआ। कलिजुग होए आप उज्यार, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। एका शब्द नाउँ जैकार, कलमी कलमा आप पढ़ाईआ। कायनात वेखे मार ध्यान, नौं सत्त फेरा पाईआ। ईसा मूसा इक्क निशान, धुर फ़रमाण आप समझाईआ। संग मुहम्मद वड मेहरवान, चार यारी यार निभाईआ। एका देवे धुर फ़रमाण, अञ्जील कुराना आपे गाईआ। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, नूर अलाही डगमगाईआ। मुकामे हक सांझा यार, ऐनलहक राह तकाईआ। पीर पैग़म्बर दस्तगीर पावे सार, लाशरीक इक्क ख़ुदाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक जाए तार, जो जन सजदा सीस रहे झुकाईआ। सच मसल्ला कर त्यार, अर्श कुर्श आप विछाईआ। एका कलमा कर उज्यार, उच्ची कूक दए सुणाईआ। हक हकीकत करे विचार, शरअ शरीअत इक्क वखाईआ। आपे सत्त नौ वसया बाहर, नूरी जल्वा नूर अलाहीआ। दरगाह साची धाम अपार, धुर दरगाही बैठा आसण लाईआ। चौदां तबकां करे विचार, आपणे चरना हेठ दबाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, जुग जुग करे खेल बेपरवाहीआ। शब्द गुर हो त्यार, लोकमात लए अंगड़ाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, भुल्ल रहे ना राईआ। निरगुण निरगुण कर प्यार, सरगुण सरगुण जोत करे रुशनाईआ। नानक चोला कर त्यार, पारब्रह्म प्रभ आपणी सेज विछाईआ। पुरख अबिनाशी मेल मिलाया कन्त भतार, साची सख़ीआं मंगल गाईआ। सचखण्ड सुहाया इक्क दुआर, दर दरवाजा आप खुल्हाईआ। बंक दुआरा खोल्ह किवाड़, थिर घर बैठा आसण लाईआ। निरगुण मिल्या निरगुण कर प्यार, निरगुण गुर निरगुण सरकार, सतिगुर आपणी खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर साचा हरि, लोकमात दए वड्याईआ। निरगुण नानक निरगुण मिलाया, एका घर वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी दर्शन पाया, एका नैण वेखे चाँईं चाँईआ। आप आपणी हरस मिटाया, हवस होर ना कोई रखाईआ। दोए जोड़ सीस झुकाया, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। तेरा मेरा भेव ना राया, सोहँ रूप इक्क दरसाईआ। हँ ब्रह्म पारब्रह्म समाया, नानक लिख्या लेखा आप मुकाया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, दर घर साचा सहिज सुभाईआ। नानक मिल्या पारब्रह्म, एका रंग समाया। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरा पाया। हरख सोग ना खुशी ग़म, चिंता दुःख ना कोई वखाया। हड्ड मास ना दिसे चम्म, पंज तत्त ना कोई वखाया। त्रैगुण माया ना तृष्ना तम, एका आपणे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साचा मन्त्र इक्क दृढ़ाया। साचा मन्त्र सति नाम, हरि हरि नानक झोली पांयदा। नानक निरगुण करे प्रनाम, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। काया खेड़ा वेख्या इक्क ग्राम, साचे मन्दिर सोभा पांयदा। दो जहानां वाली मिल्या माण, लोकमात आप वड्यांअदा। शब्द लगाया निराला बाण, अणयाला तीर आप चलांयदा। नानक निरँकार बैठ इक्क बबान, काया बबान आप उडांयदा। पुरख अबिनाशी देवे धुर फ़रमाण, बोध अगाधी शब्द सुणांयदा। चार वरन रखाउणा एका माण, ऊँच नीच ना वण्ड वण्डांयदा। राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां देणा इक्क ज्ञान, एका अक्खर आप पढ़ांयदा। सतिनाम करे प्रधान, लोकमात धरांयदा। जो जन रसना जिह्वा गाण, हरि के पौड़े आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। एका जोत हरि हरि धार, वरन गोत ना कोई वखाईआ। नानक मिल्या हरि निरँकार, विछड़ कदे ना जाईआ। अंगद करया अंगीकार, लहिणा लहणै झोली पाईआ। अमरु अमरा पद पाया इक्क घर बार, अमर अमर सदा सहिज सुखदाईआ। राम दास दास हो उज्यार, घर मन्दिर वड वड्याईआ। गुरू अर्जन बण लिखार, बोध अगाध शब्द जणाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर कर त्यार, सृष्ट सबाई गया समझाईआ। सन्त भगत भगवन्त सोहण इक्क दुआर, इकवंजा बवन्जा धार आप चलाईआ। पैंतीस अक्खर कर विचार सतारां अक्खर आपणे विच छुपाईआ। बावन अक्खरी निराकार, निरँकार कर पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई उच्ची कूक गया पुकार, गुर शब्द दए गवाहीआ। कलिजुग अन्तिम आए वार, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। नानक लेखा लेख अपार, बाले जट्ट गया समझाईआ। गुर गोबिन्द जोद्धा सूरबीर बली बलकार, एका जोती दस दस रूप करे रुशनाईआ। साचा खण्डा फड़ कटार, नाम चण्डी दए चमकाईआ। भेख पखण्डी मारे मार, साची डण्डी इक्क लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेल करे साचा हरि, हरि का भेव कोई ना पाईआ। नानक निरगुण बण लिखारा, वेला अन्त गया समझाईआ। गुर अर्जन उच्ची बोल दए ललकारा, गुरू ग्रन्थ दए गवाहीआ। गुर गोबिन्द आपणा वरते सच वरतारा, अभुल्ल गुर इक्क अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम उतरे पार किनारा, लक्ख चार आयू बीते ना बत्ती हज़ारा, अध विचकार तोड़ तुड़ाईआ। लक्ख चुरासी कुकर्मा मारे मारा, नेहकर्मी दए सजाईआ। प्रगट होवे जोद्धा सूरबीर बली बलकारा, बल बावन रूप धराईआ। मेट

मिटाए अन्ध अँध्यारा, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। निहकलंक नरायण सच्ची सरकारा, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। साचा धाम करे उज्यारा, सम्बल नगर दए वड्याईआ। उच्चे पर्बत चोटी चढ़ बोले जैकारा, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा नाउँ धराईआ। सतिजुग सति सति करे वरतारा, चार वरनां करे पढ़ाईआ। एका फ़तेह बोल जैकारा, साचा डंका दए सुणाईआ। वाह वाह गुरू जोद्धा बीर बली बलकारा, सूरबीर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, करनहार करतार। जन भगतां फड़ाए आपणा पल्लड़ा, निरगुण सरगुण पावे सार। मार्ग दस्से इक्क सुखलड़ा, चरन कँवल सच्चा प्यार। सुरती शब्दी आपे रलड़ा, आत्म ब्रह्म दए अधार। ईश जीव फड़ाए पल्लड़ा, छुट्ट ना जाए विच संसार। दर दरवाज़े अग्गे आपे खलड़ा, जो जन हरि हरि रिहा उच्चार। माटी ख़ाक कदे ना रुलड़ा, पाकी पाक करे परवरदिगार। अग्नी हवन कदे ना बलड़ा, जिस मिल्या हरि निरँकार। आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि सच संदेशा एका घलड़ा, धुर दी बाणी साची धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, जुगा जुगन्ता जाणे आपणी कार। जुग जुग कार कमांयदा, करता पुरख हरि निरँकार। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा, कलिजुग आए अन्तिम दुआर। गुर गोबिन्द खेल खिलांयदा, वेद व्यासा करे प्यार। निहकलंका नाउँ धरांयदा, निरगुण जोत जोत उज्यार। शब्द डंका इक्क वजांयदा, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। शाह सुल्ताना ख़ाक मिलांयदा, दर दिसे ना कोई चोबदार। चार वरन एका रंग रंगांयदा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्क वखाए सच्चा दरबार। पुरख अकाल एका इष्ट मनांयदा, गुर शब्द करे प्यार। कलिजुग कूड़ा मेट मिटांयदा, रैण अन्धेरी रहे ना धूंआँधार। सतिगुर साचा चन्द आप चढ़ांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगां जुगन्तर खेल कर, हरिजन सज्जण लए उभार। गुरमुख आप उठांयदा, सतिगुर पूरा सद मेहरवान। गुरमुख आपणे अंग लगांयदा, अंगीकार करे भगवान। सन्त साचे वेख वखांयदा, अन्तर आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। भगत भगवन्त मेल मिलांयदा, इक्क वखाए सच निशान। सति निशाना आप झुलांयदा, दरगाहि साची हो मेहरवान। सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा, गुरमुख तेरे चरना हेठ दबाए ज़िमी अस्मान। ब्रह्मा विष्न शिव तेरा राह तकांयदा, जिस जन होया आप मेहरवान। जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा, पूर्ब जन्मां कर पछाण। सृष्ट सबाई लेखा आप वखांयदा, एका ओट श्री भगवान। लक्ख चुरासी खेड़ा भन्न करांयदा, अन्त दिसे ना कोई निशान। गुरमुख साचे साचे धाम बहांयदा, दरगाह साची कर परवान। एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा, निरगुण सरगुण कर पछाण। कागों हँस आप बणांयदा, जिस जन देवे नाम दान। सोहँ हँसा चोग चुगांयदा, दरगाह साची करे परवान। कागद कलम भेव ना

आंयदा, सत्त समुंदर मस होई हैरान। सप्त लेखा ना कोई वखांयदा, अठारां भार तोले ना कोई आण। नानक निरगुण बह बह समझांयदा, बिन गुर शब्द ना दीसे कोई होर निशान। मन इच्छया मन ही विच रखांयदा, मन कूके बेईमान। मन जोत रूप प्रगटांयदा, मन मन ही करे पछाण। मन सतिगुर पूरा आप समझांयदा, जिस उप्पर होए आप मेहरवान। मन पंखी उड ना दहि दिस धांयदा, चार कुंट ना होए वैरान। आसा आसा विच रखांयदा, मनसा मनसा मारे बाण। मन मन मेट मिटांयदा, मन रावण मिटे शैतान। एका नाम कोटन कोटि सहिंस सैंहसा आप तरांयदा, जिस जन देवे गुण निधान। गुरमुख विरला झोली पांयदा, लक्ख चुरासी काया होई वैरान। साचे हट्ट सच वणजारा कोई ना जांयदा, कलिजुग लुट्टी जाए दुकान। मन मति बुध जीव जंत सर्ब कुरलांयदा, गुर का चरन ना कोई ध्यान। नानक गोबिन्द दरस ना कोई पांयदा, नाता जुड़या पंज शैतान। माया पर्दा ना कोई उठांयदा, अंदर दिसे ना गुण निधान। साची सेज ना कोई सुहांयदा, नारी कन्त ना करे परवान। विभचार सर्ब दरसांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए पछाण। गुरमुख आप पछाणदा, जुगां जुगन्तर साची कार। लक्ख चुरासी पुण छाणदा, पारब्रह्म प्रभ सांझा यार। सुरती शब्दी मेला हाणी हाणदा, हरि मन्दिर करे प्यार। शब्द सुणे सुणाए धुर फ़रमाण दा, अगम्म अगम्मड़ी करे कार। अठसठ तीर्थ वरोल आपे छाणदा, बण सतिगुर पूरा अमृत कोई ना देवे ठंडा ठार। ज़रा ज़रा कतरा कतरा आपणा रंग आपे माणदा, आपे अंदर आपे बाहर। ब्रह्म रूप श्री भगवान दा, पारब्रह्म करया खेल निराकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्क अवतार, गुर गुर रूप प्रगटे विच संसार, कलिजुग अन्तिम करे ख्वार, निहकलंका आपणा नाउँ धरांयदा।

❋ ६ अस्सू २०१७ बिक्रमी बूटा सिंघ दे गृह पिण्ड लेलीआँ ज़िला अमृतसर ❋

सो पुरख निरँजण एका गावणा, आदि जुगादि समाए। हरि पुरख निरँजण इक्क ध्यावना, जुगा जुगन्तर खेल खलाए। एकँकारा इष्ट वखावना, जूनी रहित बेपरवाहे। आदि निरँजण घर बहावणा, गृह मन्दिर करे रुशनाए। श्री भगवान तख्त सुहावणा, तख्त निवासी सच्चा शहनशाहे। अबिनाशी करता हुक्म वरतावणा, सद भाणे रिहा समाए। पारब्रह्म प्रभ भेव खुलावणा, निरगुण नूर करे रुशनाए। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहावणा, थिर घर साचा वेख वखाए। शाहो भूप आपणा रंग रंगावणा, दूसर मंग ना कोई रखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरताए। आदि जुगादी वरते कल, अकल कल आप अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर खेले खेल अछल अछल, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सच सिंघासण

सोभावन्त बैठा मल्ल, दरगाह साची धाम सुहाईआ। पावे सार जल थल, जल थल महीअल आप समाईआ। धाम वडियाए नेहचल महल्ल अटल, उच्च अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। धुर दा लेखा हरि गोपाल, पुरख अबिनाशी आपणे हथ्थ रखांयदा। आदि जुगादी जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाल, निरगुण निरवैर आप चलांयदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रंग रंगीला रंग रंगे एका लाल, कंचन गढ़ आप सुहांयदा। सूहा वेस करे सच्ची धर्मसाल, जोत उजाला नूर डमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल खिलांयदा। जुग जुग खेल खिलावणहारा, एका रंग समाया। आदि जुगादी लै अवतारा, गुर सतिगुर रूप वटाया। दो जहाना पावे सारा, ज़िमी अस्मानां वेख वखाया। गगन मंडल दए सहारा, पुरी लोआं करे रुशनाया। लोकमात हो उज्यारा, पंज तत्त मेला सहिज सभाया। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारा, धुर दी बाणी आप अलाया। वरते वरतावे विच संसारा, नौं सत्त आपणा फेरा पाया। पारब्रह्म ब्रह्म करे विचारा, आपणा मेला मेल मिलाया। घर मन्दिर सोहे इक्क दुआरा, गृह साचा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा बन्धन पाया। जुग जुग बन्धन पाए दीना नाथ, दीन दुनी आपणे हथ्थ रखांयदा। निरगुण सरगुण चलाए राथ, रथ रथवाही दिस ना आंयदा। नाता बिधाता धुर फ़रमाणा जपाए पूजा पाठ, एका मन्त्र सच वरतांयदा। जगत वणजारा खोल्हे हाट, चौदां लोक वेख वखांयदा। शब्द सुणाए सच सलोक, अक्खर वक्खर आप अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। जुगा जुगन्तर वेस अवल्ला, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, अकल कल आपणा रूप वटाईआ। लोकमात मार झात जन भगतां मेटे दूई द्वैती सला, श्री भगवान बीठलो आपणी दया आप कमाईआ। जीव जंत भुलाए कर कर वल छला, अछल अछल खेल खलाईआ। आपणी जोती आपे रला, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। सच संदेश धुर नर नरेश एका घल्ला, घर घर दर दर आत्म अन्तर करे पढ़ाईआ। दीपक जोती आपे बला, प्रकाश प्रकाश विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर साची कार, करे कराए करनेहार, करता पुरख बेपरवाहीआ। करता पुरख करन जोग, आदि जुगादि खेल खिलांयदा। जन भगतां मिलाए धुर दा संजोग, धुर दा लेखा वेख वखांयदा। नाम चुगाए साची चोग, आत्म रस इक्क वखांयदा। शब्द सुणाए अगम्मी सलोक, रसना जिह्वा ना कोई हिलांयदा। पन्ध मुकाए चौदां लोक, आपणा मन्दिर आप सुहांयदा। ना कोई हरख ना कोई सोग, चिंता दु:ख ना कोई वखांयदा। गुरमुखां देवे दरस अमोघ, जगत तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन हरि वेखणहारा, आदि जुगादि दया कमाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, लोकमात करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी पावे सारा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी फोल फुलाईआ। चारे बाणी बोल जैकारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणी रिहा सुणाईआ। चारे जुग वेख पसारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग मेले चाँईं चाँईआ। चार कुंट दए हुलारा, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण फेरा पाईआ। चौथे जुग कर पसारा, निरगुण निरगुण बैठा आसण लाईआ। अंदर मन्दिर सोहे इक्क दुआरा, हरि मन्दिर आप वड्याईआ। आदि जुगादि रहे उज्यारा, सूरज चन्न ना कोई चढ़ाईआ। सचखण्ड वसे आप निरँकारा, निरगुण आपणा नाउँ धराईआ। आपे वरते सच वरतारा, दूसर भेव ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता आप अख्वाईआ। जुग करता श्री भगवान, जागरत जोत इक्क जगांयदा। दो जहानां उठाए इक्क निशान, सति सतिवादी आप झुलांयदा। लोआं पुरीआं होए निगहबान, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी जीव जंत परखे जाण, नाम कसवटी हथ्थ उठांयदा। शब्द जणाए धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी आप अल्लांयदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि सन्त सहेले आप पछाण, धुर दा मेला मेल मिलांयदा। चरन कँवल कँवल चरन बख्शे इक्क ध्यान, अन्तर आत्म इक्क वखांयदा। अमृत बख्शे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। अनहद शब्द वजाए सच्ची धुनकान, नाद अनादी ताल वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर साची कार, हरिजन साचे ल्ए उभार, लहिणा देणा झोली पांयदा। हरिजन साचा उभारया, कर किरपा गुण निधान। एका मन्त्र नाम दृढ़ा रिहा, शब्द अगम्मी धुर फ़रमाण। साचा मार्ग इक्क वखा ल्या, गुर सतिगुर चरन ध्यान। दीना नाथ दया कमा ल्या, तन बन्ने साचा गान। मस्तक टिक्का इक्क लगा ल्या, जोत लिलाट जगे महान। भाण्डा भरम भउ भना ल्या, माया ममता हउमे हंगता नाता तोड़े पंज शैतान। साचा मन्दिर इक्क सुहा ल्या, हरिजन काया बंक मकान। घर घर विच डेरा ला ल्या, चतुर्भुज होए निगहबान। साची सेजा आप सुहा ल्या, आत्म ब्रह्म करे पछाण। ईश जीव वेख वखा ल्या, जगत जगदीश होए मेहरवान। निरगुण सरगुण सीस झुका ल्या, सरगुण निरगुण करे परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां देवे साचा दान। दाता दानी हरि भगवन्त, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। हरिजन वेखे साचे सन्त, सतिगुर पूरा सच्चा शहनशाहीआ। लोकमात बणाए साची बणत, घड़न भन्नणहार आप अख्वाईआ। नर हरि नरायण बणे नारी कन्त, हरि जू हरि मन्दिर सोभा पाईआ। आप जणाए आपणा मंत, एकँकारा करे पढ़ाईआ। शब्द अगम्मी वजाए डंक, तुरीआ नाद आप अल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि होए

सहाईआ। हरिजन हरि हरि पालदा, आदि जुगादी कार। लेखा जाणे धुर दरबार दा, धुर दरगाही मीत मुरार। जुग जुग जन भगतां पैज संवारदा, निरगुण सरगुण लए अवतार। फड़ फड़ साचे बेड़े चाढ़दा, नाम बेड़ा कर त्यार। किला तोड़ गढ़ हँकार दा, शब्द खण्डा एका मार। नाता तुट्टे जगत प्यार दा, सतिगुर मिले साचा यार। लक्ख चुरासी फंद निवारदा, जम की फ़ासी लाहे गलों हार। शाहो शबास खेल करे सच्ची सरकार दा, तख्त निवासी एकँकार। हरिजन साचे पौड़े आपे चाढ़दा, हरि मन्दिर खोल्ह किवाड़। चौथा घर इक्क वखालदा, तीजा नैण होए उज्यार। पंचम शब्द सच्ची धुन्कार दा, धुन उपजे अनहद धार। छेवें छप्पर छन्न ना कोई वखालदा, निरगुण बैठा सचखण्ड सच्चे दुआर। सति सतिवादी आपणा वेला आप संभालदा, थित वार ना जाणे कोई संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां करे प्यार। भगत प्यारा मीतड़ा, सो पुरख निरँजण गहर गम्भीर। काया चोली रंगे चीथड़ा, तन करे ठंडा सीर। नाम सुणाए सुहागी गीतड़ा, हउमें बिरहों कढ्ढे पीर। जुग जुग चलाए रीतड़ा, लेखा जाणे आदि अन्त अखीर। ना कोई मन्दिर देहुरा दिसे मसीतड़ा, घट घट अंदर वसया पीरन पीर। वेखणहारा लक्ख चुरासी कौड़ा रीठड़ा, अमृत बख्शे साचा नीर। गुरमुख पतित पापी करे पुनीतड़ा, नाम बस्त्र पहनाए साचा चीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
जुग जुग जन भगतां देवे साची धीर। जन भगतां धीर धरांयदा, नाथ अनाथा होए सहाए। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाए। चार कुंट नौं खण्ड पृथ्मी जीव जंत सर्ब कुरलांयदा, दिवस रैण रिहा बिल्लाए। अमृत सीर मुख ना कोई पांयदा, अग्नी तत्त ना कोई बुझाए। हरि का दरस ना कोई वखालदा, वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी रही गाए। नाता तोड़े ना कोई जगत जंजाल दा, लक्ख चुरासी पन्ध ना कोई मुकाए। लेखा चुक्के ना शाह कंगाल दा, एका रंग ना कोई रंगाए। चार वरन सुरत ना कोई संभालदा, अठारां बरन रहे बिल्लाए। साचे मन्दिर ना कोई बहालदा, पंडत पांधे जगत महल्ले टल्ल रहे खड़काए। हरि का रूप ना कोई दरसाए साचे यार दा, साचा सथ्थर हेठ ना कोई विछाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन साचे आप मिलाए। हरिजन आप मिलांयदा, जुगा जुगन्तर साची कार। कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा, निरगुण नरायण सच्ची सरकार। सचखण्ड निवासी वेस वटांयदा, जोती जामा भेव न्यार। घनक पुर वासी खेल खिलांयदा, लोआं पुरीआं पावे सार। गुरमुख साचे मेल मिलांयदा, आत्म अन्तर कर प्यार। एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा, निश्अक्खर करे विचार। सो पुरख निरँजण दया कमांयदा, हँ ब्रह्म लए अधार। दो जहाना विचोला आप अख्वांयदा, दिस ना आए विच संसार। आपणा चोला आप बदलांयदा, पंज तत्त ना कोई प्यार।

गुरमुखां पर्दा ओहला आप उठांयदा, लक्ख चुरासी सुत्ती पैर पसार। हरि का भेव कोई ना पांयदा, जुगा जुगन्तर करे साची
कार। गुरमुख साचे वेख वखांयदा, वेखणहारा आप निरँकार। जिस सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा, अन्तिम बेड़ा करे पार।
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता इक्क मलाह, जन भगतां देवे शब्द सलाह, दूजा राह ना
कोई वखांयदा। शब्द सलाही आप करतारा, लोकमात वेस वटाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, निरगुण निरवैर आप
कराईआ। निहकलंकी लै अवतारा, अकल कल रूप प्रगटाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, ब्रह्मण्डां आप चमकाईआ। भेख
पखण्डा करे पार किनारा, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। मानुस मानुख गंदा फड़ फड़ मारे मारा, जिस भुलया बेपरवाहीआ।
एका सुहागी छन्द गाए आपणी वारा, चार वरन करे पढ़ाईआ। दूई द्वैती पार किनारा, शरअ शरीअत इक्क वखाईआ। चार
वरन सोहण इक्क दुआरा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड वण्डाईआ। सतिजुग साचे करे सति विहारा, सतिगुर सच्चा शहनशाहीआ।
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन लेखा आप मुकाईआ। हरिजन लेखा
मुकावना, पूर्ब कर्म विचार। आवण जावण गेड़ कटावना, राए धर्म ना करे ख्वार। चित्रगुप्त डेरा ढाहवणा, लाड़ी मौत
ना करे प्यार। एका आपणा दरस दिखावना, स्वच्छ सरूपी प्रगट हो हरि निरँकार। गुरसिख आपणी गोद बहावणा, शब्द
१२०४ बिबाणे देवे चाढ़। थिर घर साचे आप सुहावणा, सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़। आपणी जोत आप मिलावणा, जोती जोत १२०४
०६ हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन हरी हरि आपे फड़, ०६
लेखा जाणे धुर दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साकत निन्दक दुष्ट दुराचार दो जहानी करे ख्वार।

❊ २०१७ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड लोपे ज़िला अमृतसर ❊

हरिजन कीमत हरि हरि पांयदा, हरी हरि मन्दिर वेख दुआर। लक्ख चुरासी मुल ना कोई रखांयदा, जून अजूनी
जाए हार। गुरमुख लेखा लेखे पांयदा, धुर दरगाही खेल खेलणहार। मनमुख जीव सर्ब कुरलांयदा, जन्म जूए बाज़ी हार।
गुरमुख दिवस रैण बिल्लांयदा, गुर दरसन नेत्र प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन हरि जू
जाए तार। करता कीमत पाईआ, गुण अवगुण ना कोई जणाए। लक्ख करोड़ी मुल ना कोई चुकाईआ, माणक मोती साचे
हट्ट विकाए। एका खण्डा हथ्थ उठाईआ, साचा तोला बेपरवाहे। लोआं पुरीआं वण्ड वण्डाईआ, लक्ख चुरासी हिस्सा पाए।
गुरमुख साचे सज्जण वरोल बाहर कढ्ढाईआ, नाम निधाना इक्क रखाए। हरिजन अतोल अतुल तोल सके ना कोई राईआ,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे थाउँ थाँएँ। साची कीमत करता आपे पा, आपणे हट्ट विकांयदा। आपणे दर लए बहा, दर घर साचा आप सुहांयदा। सच बिबाणे लए चढ़ा, दो जहाना आप दुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे सदा सलांहयदा। कीमत करता पांयदा, गुर करता गहर गम्भीर। दो जहाना मुल चुकांयदा, एथे उथे चुक्के भीड़। साचे कंडे आप तुलांयदा, चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर। लाल अनमुल्लड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा, शहनशाह वड पीरन पीर। दूसर हथ्थ ना कोई लगांयदा, एकँकारा एका वारा कट्टे जंजीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे बन्ने बीड़। पाए कीमत हरि भगवान, अमोल अमुल बेपरवाहीआ। दर घर वखाए सच निशान, सच दुआरा इक्क वखाईआ। गुरमुख बणाए चतर सुजान, चात्रिक तृखा आप बुझाईआ। नाम निधाना देवे गुण निधान, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा लेखा लेखे पाईआ। कीमत पाए गहर गम्भीरा, गुण अवगुण ना कोई जणांयदा। लक्ख चुरासी झूठे हट्ट वकाए कीमत कसीरा, साचा वणज ना कोई करांयदा। गुरमुख विरले चरन चरनोदक बख्शे साचा अमृत सीरा, सांतक सति सति करांयदा। आवण जावण कट्टे भीड़ा, वास निवासा गर्भ कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार करांयदा। हरिजन पार कराया, कर किरपा गुण निधान। गुरमुख मुख सलाहया, देवे नाम निधान। साचे मार्ग आपे लाया, पावणहारा वाली दो जहान। साचा राग इक्क अलाया, दीन दुनी होए हैरान। पुरख अबिनाशी खेल खलाया, पारब्रह्म ब्रह्म करे पछाण। साचे मन्दिर आप सुहाया, डूँग्घी कंदर नूर महान। त्रै त्रै जंदर आप तुड़ाया, मन बन्दर ना भवे शैतान। अंदरे अंदर मेल मिलाया, आत्म ब्रह्म बख्शे सच ज्ञान। गुरमुख साचे लए उठाया, लक्ख चुरासी पुण छाण। बाल निमाणे गले लगाया, देवणहारा धुर फ़रमाण। साचे पौड़े आप चढ़ाया, चढ़ चढ़ वेखे निगहबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि जू रक्खे माण ताण। माण निमाणयां आप प्रभ, आदि जुगादि समाया। गुरमुख साचे सज्जण लभ्भ, दर घर साचे मेल मिलाया। अमृत प्याए आत्म मदि, मखमूरी इक्क रखाया। शब्द वजाए नाद अनहद, निरगुण आपणी दया कमाया। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढ, काग हँसां मेल मिलाया। पंच विकारा देवे बध, शब्द खण्डा तीर चलाया। विष्नूं विष्नूं वेखे यद, बंस सरबंसा आप सुहाया। लक्ख चुरासी कूड़ा भार रही लद्द, अन्त सीस लए ना कोई उठाया। गुरसिख सतिगुर पूरा अन्तिम आपणे घर लए सद्द, दरगाह साची धाम सुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस लडाए लड, लाडले सुत गुरमुख आपणी गोद बहाया।

१२०५
०६

❊ ६ अस्सू २०१७ बिक्रमी पिण्ड काउँके जिला अमृतसर अवतार सिँघ दे घर ❊

सो पुरख निरँजन साचे घर, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। हरि पुरख निरँजन एका हरि, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। एकँकार खोल्हे आपणा दर थिर घर साचा आप वडआंयदा। आदि निरँजन दीपक धर, जोत उजाला नूर नुराना डगमगांयदा। अबिनाशी करता आप आपणी किरपा कर, आपणी बणत आप बणांयदा। श्री भगवान साचा दर सुहाए अग्गे खड़, अनुभव आपणा रूप दरसांयदा। पारब्रह्म प्रभ इक्क इकल्ला सच महल्ला निरगुण निरगुण घाड़न घड़, निरवैर आपणी कल वरतांयदा। आदि जुगादी सच सिँघासण बैठा चढ़, दरगाह साची आप सुहांयदा। शाहो भूप राज राजान बण, तख्त निवासी हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबनासी करता, अगम्म अगम्मड़ी खेल खिलांयदा। अगम्म अगम्मड़ा खेल अवल्ला, निरगुण निराकार आप कराईआ। अलक्ख अगोचर वसे सच महल्ला, धुर दरबारा आप सुहाईआ। अगम्म अथाह अटल अटला, ऊँचो ऊँच बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। आपणा खेल आप वरताए, दूसर संग ना कोई रखाईआ। आपणी उत्पुत आप कराए, दूसर मेल ना कोई मिलाईआ। आपणी रुत आप सुहाए, आप आपणी महिक महिकाईआ। आपणी वार थित आप जणाए, घड़ी पल ना वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जूनी रहित बेपरवाहीआ। जूनी रहित पुरख अकाला, घर घर विच सोभा पांयदा। आदि जुगादी दीन दयाला, निरगुण निरवैर सेव कमांयदा। जुगा जुगन्तर खेल निराला जागरत जोत डगमगांयदा। आदिन अन्त चले अवल्लड़ी चाला, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। सच्चखण्ड सुहाए सच्ची धर्मसाला, सूरज चन्द ना कोई चढ़ांयदा। दीपक जोती एका बाला नूरो नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चखण्ड दुआरा एकँकारा इक्क इकल्ला आप वसांयदा। सच्चखण्ड दुआर आप वसांयदा, सो पुरख निरँजण वड वडियाईआ। हरि पुरख निरँजन सोभा पांयदा, एकँकारा वेखे चाँईं चाँईंआ। आदि निरँजन डगमगांयदा, अबिनासी करता सोभा पाईआ। श्री भगवान खेल खिलांयदा, पारब्रह्म वज्जे वधाईआ। पुरख अकाला रूप वटांयदा दीन दयाला बेपरवाहीआ। धर्मसाला इक्क सुहांयदा, थिर घर साचे कुण्डा लाहीआ। आपणी धार आप उपजांयदा, धार धार विच टिकाईआ, आपणी कार आप करांयदा, करता पुरख नाउँ अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, आप सुहाए श्री भगवन्त, साजन मीत आप अख्वाईआ। आपे साजन मीत हरि निरँकार, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। आपे वसे धाम न्यार, मुनी रिखी सोभा पाईआ। करे खेल परवरदिगार, बेऐब आपणी कल वरताईआ। आदि आदि एका कार, एकँकारा

१२०६ ०६

आप कमाईआ। अपणे अंदरों कढ्ढे धार, जोती धार नाउँ धराईआ। शब्द शब्दी करे पसार, शब्द अनादी नाद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। दर घर साचा हरि सुहावणा, एका रंग रंगाए। सचखण्ड साचे डेरा लावणा, अस्थिल दुआरा वेख वखाए। निरगुण आपणा रंग रंगावणा, उतर कदे ना जाए। साचा दीपक आप जगावणा, तेल बाती ना कोए रखाए। साचे तख्त सोभा पावणा, सच सिँघासण आप हंढाए। धुर फ़रमाणा हुक्म जणावणा, आप आपणा नाउँ उपजाए। दरगह साची वेख वखावना, छप्पर छन्न ना कोई छुहाए। निराकार निरवैर अजूनी रहित आपणा नाउँ प्रगटावणा, रूप रेख रंग ना कोई वखाए। सो पुरख निरँजण आपणी गति मित आपणे हथ्थ रखावणा, दूसर नाउँ ना कोई जणाए। महिमा अकथ कथ आपणी आपे गावणा, कथनी कथे ना कोई राय। एकँकार समरथ पुरख आपणा नाउँ धरावणा, अकल कल वड वडियाए। आदि निरँजन घट घट आपणा दीप जगावणा, जोत उजाला कर रुशनाए। श्री भगवान साचा रथ चलावणा, रथ रथवाही दिस ना आए। अबिनासी करता एका वस्त झोली पावणा, नाम निधाना आप वरताए। पारब्रह्म निउँ निउँ सीस झुकावणा, सीस जगदीस हरि हरि राए। आपणा पीसन पीस आप कमावणा, निरगुण साची सेव कमाए। सच हदीस इक्क सुणावाणा, शब्द अगम्मी नाद वजाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा धर, आदि जुगादी खेल अपारा करे कराए करनेहारा, एकँकारा आपणी धार आप बंधाए। साची धार हरि करतार, आपणी आप बणाईआ। आदि पुरख प्रभ खेल न्यार, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह खेले खेल सर्ब घट थाँईआ। निरगुण निरगुण बणे मलाह, खेवट खेटा रूप वटाईआ। निराकार साकार आप अख्वा त्रै त्रै मेला एका थाईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव रंग रंगा, रंग रंगे साचा माहीआ। निष्अक्खर विद्या आप पढ़ा, आत्म परमात्म दए समझाईआ। साचा मार्ग इक्क वखा, लोक परलोक ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पूरीआं दए वण्डाईआ। सच सलोक इक्क सुणा, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। एका जोत दए जगा, एका सिख्या करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अपणी खेल अपणे हथ्थ रखाईआ। पुरख अकाल खेल खिलांयदा, आदि जुगादी साची कार। लक्ख चुरासी घाड़न आप घड़ांयदा, निरगुण सरगुण बण घुमिआर। काया माटी पोच पुचांयदा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त वाड़। त्रैगुण माया रंग रंगांयदा, रजो तमो सतो करे श्गार। नौ दुआरे खोल्ह वखांयदा, जगत वासना भर भण्डार। आसा तृष्ना नाल मिलांयदा, माया ममता कर विचार। काम क्रोध लोभ मोह हँकार संग रखांयदा, जूठ झूठ दए अधार। तन मन्दिर आप टिकांयदा, डूँघी कंदर कर विचार। मन बन्दर आप नचांयदा, दहि दिशा मारे उडार। मति मतवाली आप भुलांयदा, बुध बिबेकी खेल न्यार। मानुस मानुख वेख वखांयदा,

१२०७ ०६

१२०८ ०६

कर किरपा आप निरँकार। घर घर विच आप सुहांयदा, घाड़न घड़े अपर अपार। चार दिवार ना कोई वखांयदा, छप्पर छन्न ना कोई सहार। साचा मन्दिर आप बणांयदा, आपे वेखे वेखणहार। टेढी बंक राह वखांयदा, कोई चढ़े ना जीव गंवार। अग्गे मषारग आपे लांयदा, त्रबैणी मेला एका धार। साचा अमृत ताल भरांयदा, सर सरोवर ठंडा ठार। निझर झिरना आप झिरांयदा, बूंद स्वांती किरपा धार। बन्द किवाड़ा आप खुलांयदा, दूई पड़दा दए उतार। आत्म सेजा आप वखांयदा, पुरख अबिनासी कर त्यार। बाढी बणत ना कोई बणांयदा, ना कोई घड़े लोहार तरखान। पावा चूल ना कोई वखांयदा, बणत बणाए श्री भगवान। सच सिँघासण आप विछांयदा, निरगुण सरगुण कर परवान। जोत निरँजण दीप जगांयदा, आदि निरँजण हो मेहरवान। श्री भगवान हुक्म सुणांयदा, अनहद शब्द सच्ची धुनकान। अबिनासी करता वेख वखांयदा, तीजा नेत्र खोल्ह महान। आदि निरँजण डगमगांयदा, चौथे पद होए परवान। एकँकार रंग रंगांयदा, रंग रंगीला नौजवान। हरि पुरख निरँजण वेख वखांयदा, दर घर साचे मन्दिर आण। सो पुरख निरँजण सोभा पांयदा, आदि जुगादी वड मेहरवान। आपणा अंग आप कटांयदा, पारब्रह्म प्रभ देवे दान। रसना जेहवा आप हिलांयदा, दन्द बतीसा गाए गाण। बोध अगाधा शब्द जणांयदा, धुर दी बाणी धुर फ़रमाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। लक्ख चुरासी भाण्डा घड़या, हरि हरि पारब्रह्म सेव कमाईआ। निरगुण निरगुण विष्नूं फड़या, घर घर सेवा इक्क वखाईआ। पुरख अबिनाशी आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादि आपे फिरया, धरत धवल आकाश प्रकाश आप कराईआ। अजूनी रहित कदे ना डरया, आदि जुगादि कदे ना मरया, जुग अपणी धार बंधाईआ। लक्ख चुरासी बूटा करया हरया, करे खेल नरायण नरया, साचे पौड़े आपे चढ़या, साचा मन्दिर आप सुहाईआ। साचा नाद एका फड़या, लेखा जाणे सीस धड़या, जगत जगदीस वड्डी वड्याईआ। आपणा अक्खर एका पढ़या, चौदां विद्या दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी थापन थाप, थिर घर साचे सोभा पांयदा। अबिनासी करता पतिपरमेश्वर बणया माई बाप, पिता पूत वेख वखांयदा। आपे जाणे आपणा आप, आपणी रचन आप रचांयदा। साचे मन्दिर साचे अंदर हरि जू हरि हरि वेखे आपणा वड प्रताप, परम आत्म सोभा पांयदा। आदि जुगादि ना जाए विनास, अबिनासी करता आपणा नाउँ धरांयदा। लक्ख चुरासी घट घट मन्दिर रखे वास, वास निवासा, आप हो जांयदा। लेखा जाणे सास ग्रास, दस दस मास खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। रंग रंगाए हरि चलूल, रसना जेहवा गुण ना कोए गाईआ। आपणी महिमा ना जाए भूल, अकथ कथा प्रभ आप सुणाईआ। आपे हथ्थ फड़े त्रसूल,

त्रैगुण माया बन्धन वेखे थाउँ थाँईआ। आपे आदि जुगादि चुकाए आपणा मूल, जुग जुग आपणी वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वण्डणहारा साची वण्ड, खेले खेल हरि ब्रह्मण्ड, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड चारे खाणी आप उपाईआ। चौथे घर खोलृ किवाड़, ब्रह्मा विष्न शिव त्रै त्रै सेवा लांयदा। चौथा बणया माई बाप, चारे जुग वेख वखांयदा। करे कराए वड प्रताप, चारे बाणी आप अलृांयदा। भेव खुलाए आपणा आप, चारे वेद आपे गांयदा। आपे देवणहारा दात, चार वरन आप तरांयदा। करे खेल अलक्खणा अलाख, चारे जुग वेख वखांयदा। जुगां जुगन्तर देवे साची भाख, आपणा मन्त्र आप दृढ़ांयदा। आपणे अंदरों आपे काढ, आपणा नाद आप वजांयदा। आपे वजावणहारा साज, आपे लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। आपे घर घर रचया काज, आपे दर दर मन्दिर सोभा पांयदा। आपे शब्द अगम्मी मारे वाज, आपे हुक्मी हुक्म चलांयदा। आपे दो जहाना करे सच्चा राज, आपे साची सरन इक्क तकांयदा। आपे रक्खणहारा लाज, आपे लक्ख चुरासी भाण्डे घड़ वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग रचना वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी खेल अपारा, हरि निरँकारा आप कराईआ। मानस मनुख कर उज्यारा, एका एक दए वड्याईआ। एका नाम शब्द अधारा, सच सुच्च करे पढ़ाईआ। एका गुर लै अवतारा, रूप अनूप इक्क दरसाईआ। एका वरते सच वरतारा, सांतक सति सति समाईआ। एका करे मात पसारा, एका वेखे वेखण आईआ। एका शब्द बोल जैकारा, एका आपणा नाउँ सुणाईआ। एका खोलृे बन्द किवाड़ा, एका मन्दिर सोभा पाईआ। एका राज जोग सिक्दारा, शहनशाह इक्क अख्वाईआ। एका वरते सति वरतारा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। एका वरते नाम भण्डारा, अतोट अतुट इक्क रखाईआ। एका कागद कलम लिखणहारा, एका चारे वेदा रिहा सुणाईआ। एका ब्रह्मा विष्न शिव उज्यारा, साची सेवा इक्क कमाईआ। एका अंदर एका गुप्त एका ज़ाहरा, एका बाहर रूप प्रगटाईआ। एका हुक्म इक्क वरतारा, देवणहारा इक्क हो जाईआ। एका निउँ निउँ करे निमस्कारा, एका एक सीस झुकाईआ। एका लक्ख चुरासी कर पसारा, आदि अन्त वेख वखाईआ। एका चार जुग वण्डे विच संसारा, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणी वण्ड वण्डाईआ। एका जुग जुग लए अवतारा, बल बावन भेख धराईआ। एका करे कराए साची कारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। एका कूटे बोले नाअरा, एका राम नाम करे पढ़ाईआ। एका चिल्ला एका तीर एका फड़े सच्चा सिक्दारा, शाह सुल्ताना इक्क अख्वाईआ। एका तोड़े गढ़ हँकारा, एका निवण सु अक्खर करे पढ़ाईआ। एका रंग रलीआ माणे विच संसारा, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण इक्क अख्वाईआ। एका रथ रथवाही बणे गिरवर गिरधारा, गृह आपणा पन्ध मुकाईआ। एका वेद पुराणां बणे लिखारा, अठ दस आपणा गुण जणाईआ।

एका सभ तों वसे बाहरा, सचखण्ड बैठा सेज सुहाईआ। एका नूर हो उज्यारा, नूरो नूर करे रुशनाईआ। एका मुकामे हक होया ख़बरदारा, एका ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। एका उच्ची कूक करे पुकारा, ऐनलहक हक सुणाईआ। एका ईसा मूसा बणे सहारा, एका शाह सुल्तान वड्डी वड्याईआ। एका लेखा जाणे मुहम्मदी यारा, चार यारी करे कुड़माईआ। एका अञ्जील कुराना दए अधारा, तीस बतीसा एका गाईआ। एका अल्ला राणी करे प्यारा, मुहम्मद इच्छया इक्क प्रनाईआ। एका वेखे सच दरबारा, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। एका निरगुण जोत कर उज्यारा, पंज तत्त वेख वखाईआ। एका पंज तत्त बोले सच जैकारा, साचा शब्दी नाद वजाईआ। एका गुर इक्क अवतारा, एका नानक नाउँ धराईआ। एका नाम सति वरतारा, सति सतिवादी इक्क अख्वाईआ। एका चार वरन बहाए सच दुआरा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना वण्ड वण्डाईआ। एका जोती दस अवतारा, सुत दुलारा एका जाईआ। एका कल्गी तोड़ा सीस दस्तारा, साचा घोड़ा इक्क दुड़ाईआ। एका खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड इक्क चमकाईआ। एका अमृत बख्शे ठंडी ठारा, एका अमृत जाम प्याईआ। एका ऊँचां नीचां राउ रंकां करे पार किनारा, एका शाह सुल्ताना दए वड्याईआ। एका एक अक्खर करे विचारा, एका पैंतीस अक्खर पढ़ाईआ। एका रूप बावन रूप बणे धारा, बावन आपणा वेस वटाईआ। एका लोकमात मंगे बण भिखारा, पुरख अबिनाशी अग्गे झोली डाहीआ। एका सतिजुग करे पार किनारा, एका त्रेता पन्ध मुकाईआ। एका द्वापर करे ख्वारा, एका कलिजुग वेख वखाईआ। एका अन्तिम निहकलंक लए अवतारा, गुर पीर अवतार देण गवाहीआ। शास्त्र सिमरत बण लिखारा, उच्ची कूक गया सुणाईआ। सृष्ट सबाई पावे सारा, इक्क इकल्ला साचा माहीआ। सम्बल नगर वसाए धाम न्यारा, उच्च महल्ला डेरा लाईआ। शब्द अनादी नाद बोले इक्क जैकारा, चार बाणी भेव ना राईआ। छत्ती रागां वसे बाहरा, राग रागनी रहे कुरलाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, सत्त समुंदर रोवे मस छाहीआ। कलम ना लिखे अठारां भार बनास्पत विच संसारा, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। कलिजुग करे पार किनारा, थिर घर कोए रहिण ना पाईआ। विष्नूं आया चल दुआरा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। ब्रह्मा नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारा, गिरयाज़ारी इक्क वखाईआ। शंकर मंगे मंग इक्क दुआरा, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। त्रैगुण तेरा तत्त वरतारा, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डा घड़या अपर अपारा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। कलिजुग अन्तिम कूड़ पसारा, कूड़ी रैण अन्धेरी छाईआ। साचा नाम ना कोई उज्यारा, धूंआँधार सर्ब लोकाईआ। किसे हथ्थ ना आए राम प्यारा, कान्हा कृष्ना साची सखी ना अंग लगाईआ। ईसा मूसा मिल्या ना परवरदिगारा, मुल्ला शेख़ मुसायक देण दुहाईआ। कायनात बणया झूठ अखाड़ा, अजराईल जबराईल असराफील मेकाईल वेखे थाउँ थाँईआ।

नानक निरगुण मिल्या ना धुर दरबारा, कलिजुग जीव मानस जन्म रहे गंवाईआ। गुर गोबिन्द अमृत जाम प्याए ना ठंडी ठारा, नीले वाला ना सेव कमाईआ। घर घर दर दर होए विभचारा, नार दुहागण सृष्ट सबाईआ। पुरख अकाल मिल्या ना कन्त प्यारा, साची सेज ना कोए सुहाईआ। धरत धवल रोवे ज़ारो ज़ारा, पुरख अबिनाशी अग्गे आपणा सीस झुकाईआ। खुलड़े केस करे पुकारा, महिंडी सुहाग ना कोई गुंदाईआ। कलिजुग आई अन्तिम वारा, मात पित सेज हंढाईआ। भैणा भईआ ना कोई प्यारा, साचा सईआ नार ना कोई सुहाईआ। हरि का नाउँ ना किसे विचारा, रसना जिह्वा जगत पढ़ाईआ। गढ़ तोड़े ना कोई हँकारा, हरि के पौड़े ना कोई चढ़ाईआ। मन मति रंग रलीआं माणे विच संसारा, गुरमति बैठी मुख छुपाईआ। वरनां बरनां जगत अखाड़ा, साची सरन ना कोई रखाईआ। कलिजुग अग्नी तत्ती हाढ़ा, जीवां जंतां रही जलाईआ। पंज विकारा लग्गा चिकड़ गारा, दुरमति मैल ना कोई धुआईआ। साचा मिल्या ना कोई दरबारा, द्वैती पर्दा ना कोई उठाईआ। हरि का रूप किसे दिस ना आए विच संसारा, मन्दिर मस्जिद मठ गुरूदुआर चार दुआरी बैठे राह तकाईआ। निरगुण निरवैर निराकार, आदि जुगादि सदा सद वसया पंज तत्त काया मुनारा, घर घर विच सेज हंढाईआ। गुरमुख साचे लए उभारा, जिस जन आपणी दया कमाईआ। मेल मिलाए धुर दरबारा, घर वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
१२११ जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता गुरमुखां रक्खे उत्तम जाता, वरन बरन ना कोई रखाईआ। १२११
०६ वरन बरन प्रभ नाता तोड़, एका सरन जणांयदा। शब्द अगम्मी चाढ़े घोड़, सुरत सवाणी आप बहांयदा। लग्गी प्रीती निभे ०६
तोड़, अद्धविचकार ना कोई तुड़ांयदा। जुग जुग गुर पूरे नूं गुरसिखां दी सदा लोड़, बिन सतिगुर ना कोई अख्वांयदा। दो जहाना पन्ध मुकाए दौड़ दौड़, इक्क इकल्ला फेरा पांयदा। जन भगतां बुझाए लग्गी औड़, अमृत मेघ आप बरसांयदा। कलिजुग लक्ख चुरासी बूटा फल वेखे मिट्ठा कौड़, रस रसीआ आपणा रस आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत उजाला हरि गोपाला, दीन दयाला चरन रखाए काल महांकाला, गुरमुखां वखाए सच्ची धर्मसाला, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। दर घर इक्क सुहञ्जणा, हरि सतिगुर आप सुहाए। किरपा करे दर्द दुःख भय भंजना, गुरसिख भव सागर पार तराए। नेत्र पाए नाम अंजना, अज्ञान अन्धेर मिटाए। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, जो जन सरनाई आए। आदि अन्त सतिगुर पूरे पर्दा कज्जणा, काचा गुर जगत हट्ट वकाए। घर घर हरि हरि ताल वज्जणा, पुरख अकाल आप वजाए। जो घड़या सो भज्जणा, थिर कोई रहिण ना पाए। राज राजाना शाह सुल्ताना जगत मन्दिर सभ ने तजणा, काल डोरु रिहा वजाए। गुरसिख उठ प्यारे सज्जणा, पारब्रह्म सतिगुर पूरा आप उठाए। बिन हरि पर्दा किसे ना कज्जणा,

ख़ाली हथ्थ सृष्ट सबाई रिहा वखाए। गुरसिख गुरमुख गुर चरन दुआरे बह बह सजणा, मनमुखां राए धर्म दए सजाए। कुंभी नर्क फड़ फड़ कुसणा, अग्नी तत्त आप जलाए। अग्गे हो किसे ना पुच्छणा, नाता तुटे मात पित भाई भैण साक सैण ना कोई छुडाए। कलिजुग अन्तिम गुरसिख किसे ना रुस्सणा, कलिजुग रोसा रिहा वखाए। झूठा राज जग चों कुसणा, सीस ताज ना कोई टिकाए। नौं खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी अंदर वड़ किसे ना लुकणा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँग्घी कंदर हरि हरि फेरी पाए। निरगुण निरवैर सिँघ शेर एका बुक्कणा, कलिजुग झल्ल रही कुरलाए। अठसठ तीर्थ पाणी सुक्कणा, जमना सुरस्ती गंगा गोदावरी कोई ना नुहाए। चार वेदां पैंडा मुक्कणा, वेद अथर्बण रिहा कुरलाए। पुराण अठारां भार किसे ना चुक्कणा, वेद व्यास रिहा समझाए। अञ्जील कुरानां अन्तिम लुकणा, काला सूसा ना कोई रंगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह बेपरवाह एकँकारा आदि जुगादि समाए।

1212 ✻ १० अस्सू २०१७ बिक्रमी नरायण सिँघ दे गृह पिण्ड गुमान पुरा, ज़िला अमृतसर ✻ 1212

०६ सो पुरख निरँजण खेल न्यारा, आदि जुगादी आप करांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल न्यारा, निरगुण निरवैर भेव ना आंयदा। एकँकारा अगम्म अथाह वसे उच्च मुनारा, महल्ल अटल सोभा पांयदा। आदि निरँजण जोत उज्यारा, नूर नुराना डगमगांयदा। अबिनाशी करता साचा घर सोहे सच्चा सिक्दारा, शाहो भूप आपणा नाउँ धरांयदा। श्री भगवान वरते वरतारा, हुक्मी हुक्म आप सुणांयदा। पारब्रह्म बणे दर दरबाना सच दरबारा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकांयदा। सचखण्ड खोल्हे सच किवाड़ा, सच अखाड़ा एका लांयदा। थिर घर चलाए आपणी धारा, धार धार विच उपजांयदा। आप आपणा कर प्यारा, आप आपणा मेल मिलांयदा। लेखा जाणे नारी कन्त भतारा, सेज सुहञ्जणी आप हंढांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेऐब परवरदिगारा, नूरी जल्वा नूर नुराना डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सतिवादी आपणा नाउँ रखांयदा। सति सतिवादी इक्क इकल्ला, एका रंग समाईआ। सचखण्ड वसाए सच महल्ला, सच बैठा जोत जगाईआ। थिर घर साचा आपे मल्ला, आप आपणे भगत दए वड्याईआ। आप आपणी जोती आपे रला, निरगुण निरगुण विच समाईआ। आपणा फड़या आपे पल्ला, आप आपणा संग निभाईआ। आपणा संदेश नर नरेश आपे घल्ला, हुक्मी हुक्म आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त श्री भगवन्त, आपणी धार आप चलाईआ। आपणी धार हरि निरँकार, आदि पुरख आप चलांयदा। सचखण्ड वसे साचे धाम न्यार, थिर घर साचे सोभा पांयदा। कमलापाती

मीत मुरारा, दीवा बाती इक्क रखांयदा। साचा साकी बण वरतारा, आपणा जाम आपणे हथ्थ प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे बैठा वड़, छप्पर छन्न ना कोई छुहांयदा। सचखण्ड दुआरा सच सिंघासण, एकँकारा आप सुहांयदा। इक्क इकल्ला पुरख अबिनाशन, निरगुण निरगुण सोभा पाईआ। आपे सेवक दासी दासन, शाहो भूप आप हो जाईआ। आपे पावे आपणी रासन, आपणी खेल आप खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, एका बैठा श्री भगवन्त, दूसर संग ना कोई रखाईआ। ना कोई संग ना कोई साथा, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। इक्क इकल्ला पुरख समराथा, समरब्ब पुरख आपणा नाउँ धरांयदा। एका जाणे आपणी गाथा, इष्ट देव आप मनांयदा। आपे वरते वरताए आपणी वस्त, देवणहारा आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव अभेदा अछल अछेदा आपणा आप खुल्हांयदा। सचखण्ड दुआर सुहावणा, पुरख अकाल आप सुहाईआ। मूर्त अकाल डगमगावणा, हरि निरवैर वड्डी वड्याईआ। अजूनी रहित रूप वटावणा, अनुभव प्रकाश समाईआ। शाह सुल्तान आप अख्वावणा, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। साचा तख्त आप हंढावणा, तख्त निवासी बेपरवाहीआ। धर्म दुआरा इक्क वसावणा, थिर घर किवाड़ खुलाईआ। घर घर विच मन्दिर बणावना, चार दिवार ना कोई वखाईआ। सूरज चन्न ना कोई चढ़ावणा, मंडल मंडप ना कोई वड्याईआ। इक्क इकल्ला डगमगावणा, नर नरायण बेपरवाहीआ। सच महल्ला सोभा पावणा, आदि जुगादि रहे रुशनाईआ। साचा मेला मेल मिलावना, विछड़ कदे ना जाईआ। दामनगीर दामन फड़ावणा, हरि दामन दिस किसे ना आईआ। आपणा ज़ामन आप करावणा, निरगुण निरगुण दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता, आपणी धार आप बंधाईआ। साची धार हरि करतार, आदि पुरख बणांयदा। सो पुरख निरँजण हो त्यार, हरि पुरख निरँजण वेख वखांयदा। एकँकारा मीत मुरार, आदि निरँजण संग निभांयदा। अबिनाशी करता बोल जैकार, आपणा नाउँ आप प्रगटांयदा। श्री भगवान सांझा यार, दर घर साचे सोभा पांयदा। पारब्रह्म प्रभ बणे भिखार, आपणी भिच्छया मंग मंगांयदा। शब्द विचोला निराकार, निरगुण आपणी वण्ड वण्डांयदा। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर धाम आपणी खेल खिलांयदा। आपे नारी कन्त बण भतार, साची सेज आप हंढांयदा। आपे सुत दुलारा कर त्यार, शब्दी शब्द उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचांयदा। मात पित सुत खेल अपारा, पुरख अबिनाशी आप करांयदा। निरगुण अंदरों निरगुण आया बाहरा, निरगुण आपणे अंग उठांयदा। निरगुण राज निरगुण सिक्दारा, निरगुण भूप सति सरूप अख्वांयदा। निरगुण भिखारा निरगुण करे निमस्कारा, निरगुण दर

घर अलक्ख जगांयदा। निरगुण वरते वरतारा, निरगुण वेखे वेखणहारा, निरगुण आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण करे प्यारा। निरगुण प्यार शब्द सुत, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, आपणा रूप आप धराईआ। आप सुहाए आपणी रुत्त, रुत रुतड़ी वेख वखाईआ। थिर घर उपाया साचा कोट, हरि कन्त वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। शब्द सुत उपाया, कर किरपा गुण निधान। सचखण्ड दुआरा आप वसाया, हथ्थ फड़ाया धुर निशान। सत्त रंग आप रंगाया, रंगणहार श्री भगवान। रूप रंग रेख ना किसे जणाया, करे वेस वाली दो जहान। सच संदेश इक्क सुणाया, आदि आदि धुर फ़रमाण। आपणा हुक्म आप वरताया, इक्क रखाए साची आण। चरन ध्यान इक्क जणाया, एका देवे साचा दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप बंधाया। साची धार सत्त रंग, सति सतिवाद आप बंधाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। दूसर दर ना मंगे मंग, घर साचे सोभा पाईआ। आदि जुगादि ना होए भंग, साची डोरी एका पाईआ। नाम निधाना पाया तन्द, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। सति सुहागी गाया छन्द, सति सतिवादी आप उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति देवे इक्क वड्याईआ। सत्त रंग निशाना सति घर, सति सति आप सुहाया। शब्द सुत दित्ता वर, एका रूप दरसाया। आदि जुगादि वेखे खड़, मध आपणा नाउँ धराया। सचखण्ड दुआरा किला गढ़, पारब्रह्म प्रभ आप सुहाया। कोए ना सके अंदर वड़, दर दरवाज़ा बन्द रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सत्त रंग लेखा आप जणाया। सत्त रंग सति गुण, सति सति आप जणाईआ। शब्द दुलारे पुकार सुण, तेरा होए सुहाईआ। अगम्म अगम्मी वज्जे धुन, तुरीआ राग इक्क वड्याईआ। हरि का भेव जाणे कवण, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग दए सुहाईआ। एका रंग लाल गुलाला, निरगुण आपणा आप उपाया । सच ललारी बणया सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, दूसर धार ना कोई जणाया। करे खेल पुरख अकाला, अकल कल आपणी आप वरताया। आपणा मार्ग वेख सुखाला, आपणा पान्धी आपे पन्ध मुकाया। आपे चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा रिहा सुहाया। दर घर साचा खेल अपारा, हरि जू हरि मन्दिर आप कराईआ। कंचन रूप हो न्यारा, निरवैर वड्डी वड्याईआ। आपणा देवे आप सहारा, सगला संग आप निभाईआ। आपे जाणे आर पार किनारा, दो जहाना खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवाद वड्डी वड्याईआ। सति सतिवादी बेपरवाह, बेऐब परवरदिगार

अख्वांयदा। सूहा वेस एका रंग रंगा, रंग रंगीला ख़ुशी मनांयदा। दर दरवाज़ा बन्द खुल्हा, आपणा बंक आप सुहांयदा। आपणे मन्दिर सोभा पा, आपणा गुण आप जणांयदा। आदि जुगादि बणया रहे बेपरवाह, निरभउ भय ना कोई जणांयदा। आपे होए शहनशाह, शाह पातशाह सुल्तान आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलांयदा। साची खेल साची धार, सच सच आप चलाईआ। एका रंग कर प्यार, एका शब्द वड्डी वड्याईआ। सारिंग सारिंग ना कोई सितार, तार सितार ना कोई हिलाईआ। आपे अंदर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर वेस वटाईआ। चिट्ठी धार कर प्यार, हरि निरँकार अगम्म अपार बोध अगाध करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। साचा भेव छैल छबीला, आपणा आप जणाईआ। आप शब्द सरूपी रंग रंगाए पीला, पीत पितम्बर आप सुहाईआ। आपे सचखण्ड निवासी आपणा बणाए इक्क कबीला, आपणा बंस आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे सोभा पाईआ। दर घर साचा इक्क अकेला, एका एक सुहांयदा। आपे वसे धाम नवेला, दर दुआरा आप खलांयदा। आपे रंग रूप रंगाए आपणा नीला, शब्द शब्दी गुण वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बन्धन पांयदा। आपणा बन्धन आपे पा, आपे खेल खिलांयदा। सचखण्ड दुआरा आप वसा, आपे जोत जगांयदा। आपे निरगुण बणे मलाह, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। आप उपजाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप अख्वांयदा। आपणा शब्द आप उपजा, आपणी धुन आप अल्हांयदा। आपणा गीत आपे गा, आपे गोबिन्द ख़ुशी मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रंग आप रंगा, काली धार पार करांयदा। सति सतिवाद साची धार, शब्दी शब्द शब्द कुड़माईआ। निरगुण करे सच विहार, तख्त नवासी सच्चा शहनशाहीआ। सुत दुलारा करया ख़बरदार, शब्द अगम्मी आप जगाईआ। वर दित्ता एका वार, अतोट अतुट भण्डार वरताईआ। साचा हुक्म सच्ची सरकार, दर घर साचे रिहा सुणाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां लैणा उसार, तेरी सेवा इक्क समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रैगुण वण्डण इक्क वण्डाईआ। एका जोत निराकार, निरगुण निरवैर आपणे विच रखाईआ। शब्द सुत तेरी धार, आपणे प्यार विच समाईआ। आपा देवे आपे वार, आप आपणी वण्ड वण्डाईआ। लेखा करे धुर दरबार, लिखणहार इक्क अख्वाईआ। एका शब्द शब्द वरतार, शब्द भण्डारा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द शब्द वड्याईआ। शब्द वडियाई हरि निरँकार, रूप रंग रेख ना कोई जणाया। उपजे धुन अगम्मी धार, ताल तलवाड़ा आप वजाया। सुणे सुणाए सुणनेहार, पुरख अकाल खेल खलाया। करनी करता करे अपर अपार, पारब्रह्म भेव

ना राया। दरगाहि साची हो त्यार, आप आपणा बंक खुलाया। ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलार, शब्द हुलारा इक्क जणाया। एका हुक्म सच्चा वरतार, धुर फ़रमाणा आप सुणाया। लक्ख चुरासी कर त्यार, पंज तत्त साची वस्त हथ्थ फड़ाया। घड़े घड़ाए घड़नेहार, सच घुमिआरा नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणा शब्द इक्क सलाहया। आदि शब्द हरि निरँकार, आपणा आप उपजांयदा। शब्द शब्दी कर पसार, शब्द शब्दी वेख वखांयदा। शब्द निरगुण निराकार, शब्द सरगुण रूप वटांयदा। शब्द पंज तत्त करे अकार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मेल मिलांयदा। शब्द वण्ड करे संसार, मन मति बुध आपणी अंस बणांयदा। शब्द बणे लेख लिखार, धुर दा लेखा आप जणांयदा। शब्द गुण जाणे मुख चार, चारे वेदां मुख सलांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर शब्द पढ़ांयदा। एका अक्खर शब्द निराला, लिखण पढ़न विच ना आया। आप उपजाए पुरख अकाला, आपणा मन्दिर आप रखाया। आपे होए दीन दयाला, दयानिध बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव एका आपणा नाउँ दृढ़ाया। एका आपणा नाउँ दृढ़ाए, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण खेल खिलाए, शब्दी गुर इक्क सलाहीआ। लक्ख चुरासी घाड़न आप घड़ाए, घट घट आपणी जोत करे रुशनाईआ। दर दर देवे रिज़क सबाए, विष्नूं वंसी भुल्ल ना जाईआ। पारब्रह्म प्रभ रूप प्रगटाए, जोती जोत रुशनाईआ। शंकर लेखा रहे ना राए, लेखा आपणे लेखे पाईआ। बणे विचोला बेपरवाहे, आपणी सेवा आप कमाईआ। साचा तोला इक्क अख्वाए, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल हर घट थाँईंआ। साचा कंडा हथ्थ उठाया, निरगुण आपणी जोत जगा। ब्रह्मा विष्न शिव आप सुणाया, एका अक्खर नाम पढ़ा। शब्द विचोला विच रखाया, घर घर गया समा। औदां जांदा दिस ना आया, आपणी बैठा नज़र छुपा। चार वेद रहे जस गाया, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्दी खेल खला। हरि शब्द खेल खिलांयदा, लोकमात साची कार। लक्ख चुरासी बणत बणांयदा, काया मन्दिर कर त्यार। घर घर विच आप सुहांयदा, लेखा जाणे डूँग्घी गार। नौं दुआरे जगत वखांयदा, जगत वासना भर भण्डार। आपणा मार्ग आपे लांयदा, आपे वेखणहार। डूँग्घी भँवरी आप सुहांयदा, काया कँवरी हो त्यार। आत्म सेजा सोभा पांयदा, ब्रह्म रूप सच्ची सरकार। सच सिँघासण इक्क विछांयदा, आप आपे करे प्यार। अमृत जल इक्क भरांयदा, निझर झिरना ठंडा ठार। साचा शब्द विच टिकांयदा, आदि पुरख प्रभ किरपा धार। आपणी हथ्थीं कुण्डा लांहयदा, ना कोई खोल्हे बन्द किवाड़। बजर कपाटी अग्गे टिकांयदा, करे कराए साची कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

शब्द वरते वरतार। शब्द वरतार वरताया, कर किरपा गुण निधान। ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमाया, त्रैगुण दीआ एका दान। एका मेला मेल मिलाया, नाता जुड़या दो जहान। साचा सईआ आप अख्वाया, स्वच्छ सरूपी नौजवान। जगत नईआ आप चलाया, लक्ख चुरासी कर प्रधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर फ़रमाण। धुर फ़रमाणा हरि जणांयदा, विष्नूं सुण कर ध्यान। ब्रह्मा तेरी जाग खुलांयदा, करे खेल श्री भगवान। शंकर तेरा रंग रंगांयदा, आपे होए जाणी जाण। लक्ख चुरासी वेख वखांयदा, इक्क इकल्ला श्री भगवान। चारे जुग वण्ड वण्डांयदा, चारे बाणी कर प्रधान। चारे खाणी खेल खिलांयदा, शब्द हाणी हो मेहरवान। दाता दानी दान झोली पांयदा, किरपा करे हर मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, शब्द शब्दी इक्क समझांयदा। सच शब्द हरि सेव कमा, करता आपणी खेल खलाईआ। गुर पीर अवतार लए नाउँ धरा, भगत भगवन्त करे कुड़माईआ। सन्तन गले लए लगा, सच दुआरा इक्क समझाईआ। गुरमुख गुर गुर लए उठा, आप आपणा मेल मिलाईआ। गुरसिख सिख्या दए समझा, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। इक्क इकल्ला आपणा नाउँ जपा, आपे कीमत लए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चारे जुग वण्ड वण्डाईआ। चार जुग हरि वण्ड वण्डाया, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। लोकमात राह चलाया, चौदां

१२१७ लोक वेख वखांयदा। एका अक्खर जगत सलोक दए पढ़ाया, दूसर ढोल ना कोई वजांयदा। एका मन्त्र दए दृढ़ाया, जोती १२१७

०६ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आपणे विच रखांयदा। सतिजुग खेल अपर अपार, शब्द धार ०६

ना कोई चलाईआ। चार वेद करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ करे पसार, लेखा जाणे थाउँ थाँईआ। भगत भगवन्त लए अधार, नित नवित रूप प्रगटाईआ। दस अठ्ठ जाए पार किनार, करे खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बोध अगाध ना कोई वखाईआ। सतिजुग उतरे पार किनारा, त्रेते वज्जे वधाईआ। दोए दोए अक्खर कर उज्यारा, राम राम वड्याईआ। तोड़नहारा गढ़ हँकारा, तीर कमाना हथ्थ उठाईआ। हरि का शब्द ना कोई उच्चारा, रसना जिह्वा बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द खेल खलाईआ। त्रेता हरि हरि खेल खिलाया, द्वापर वेस वटांयदा। कान्हा कृष्ना नाउँ रखाया, मुकंद मनोहर लखमी नरायण आपणा रूप प्रगटांयदा। अठ दस लेखा गया गणाया, आपणा नाउँ मुख रखांयदा। निरगुण आपणे विच छुपाया, तत्व तत्त ना कोई रखांयदा। गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाया, जगत वासना सर्ब चुकांयदा। हरि का शब्द भेव ना राया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप करांयदा। द्वापर उतरया पार किनारा, कलिजुग वेस वटाईआ। पुरख अबिनाशी

खेल न्यारा, आपणी कल आप वरताईआ। निरगुण लगाए आपणा नाअरा, सरगुण करे पढ़ाईआ। वण्डे वण्ड विच संसारा, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। तीस बतीसा साची धारा, शरअ शरीयत वेख वखाईआ। हक मुकामे एका यारा, हक हकीकत दए गवाहीआ। एका उम्मत करे त्यारा, नबी रसूल नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद, ब्रह्म आपणा वेस वटाईआ। हरि शब्द वेस वटंदड़ा, जुगा जुगन्तर साची कार। काया चोला आप हढंदड़ा, पंज तत्त करे प्यार। आपणा खेल आप खलंदड़ा, खेलणहारा अगम्म अपार। ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलंदड़ा, निरगुण निरगुण दए आधार। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहंदड़ा, सोभावन्त सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपे लए विचार। आपणा लेखा आप विचारया, कर किरपा गुण निधान। पंज तत्त होए उज्यारया, नानक नाम नाम प्रधान। साचा मन्दिर इक्क सुहा रिहा, साढे तिन्न हथ्थ जगत मकान। महल्ल अटल डेरा ला रिहा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। आपणा हुक्म आप जणा ल्या, उच्चे देवे धुर फ़रमाण। सचखण्ड दुआरे आप सदा ल्या, निरगुण निरगुण कर परवान। सतिजुग साचा रंग आप रंगा ल्या, रंग रंगे गुण निधान। सो पुरख निरँजण वेख वखा ल्या, हरि पुरख निरँजण करे पछाण। एकँकारा नैण खुल्हा ल्या, आदि निरँजण नूर करे महान। श्री भगवान गुण गा रिहा, अबिनाशी करता गाए एका गान। पारब्रह्म प्रभ सगन मना ल्या, दर घर साचे होए परवान। नानक निरगुण वेख वखा ल्या, मेल मिलावा दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआर हरि निरँकार, आपणी करे आप पछाण। नानक हरि हरि एका एक, दूसर रंग ना कोई रंगाईआ। आदि जुगादी लिखणहारा लेख, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। निरगुण सरगुण धारे भेख, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम लए वेख, सृष्ट सबाई फेरा पाईआ। साचा शब्द तेरी आदेस, नर नरायण होए सहाईआ। चरन दास कराए ब्रह्मा विष्न महेष, त्रैगुण तेरी धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। इक्क इकल्ला नेत्र लए पेख, ना मरे ना जाईआ। शब्द अगम्मी सच संदेश, सति सतिवादी आप सुणाईआ। तेरा शब्द गुरू गुर रहे हमेश, पुरख अबिनाशी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका तत्त रिहा समझाईआ। नानक निरगुण हरि हरि धार, एका एक उपजाईआ। सचखण्ड दुआरे इक्क प्यार, थिर घर साचा दए वसाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, उच्ची कूक दए सुणाईआ। मेरा नाउँ सति वरतार, सतिनाम सच्ची पढ़ाईआ। जगत जलन्दा लैणा तार, कलिजुग अग्नी अग्ग बुझाईआ। तेरी जोत शब्द गुफ़तार, सच रफ़तार इक्क रखाईआ। महिरम बणे साचा यार, महबूब इक्क वड्याईआ। चारे बाणी कर त्यार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी एका गाईआ। चारे जुग मारे मार, चार वरन देण दुहाईआ।

१२१८
०६

१२१६

०६

चार यारी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणा नीर वहाईआ। एका शब्द सच्चा प्यार, सतिगुरू गुर आप समझाईआ। सति सतिवादी पावे सार, आपणा कीता भुल्ल ना जाईआ। करे कौल सच्चे दरबार, पुरख अबिनाशी दए सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी इक्क इकल्ला, जुग जुग आपणा रंग रंगाईआ। नानक निरगुण दया कमा, चार वरन समझाया। एका मन्त्र नाम दृढ़ा, एका रंग रंगाया। ग़रीब निमाणे गले लगा, हँकारीआं गढ़ तुड़ाया। शब्द ढोला एका गा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग जीआं काया चीथड़ा दए रंगाया। कलिजुग चीथड़ा रंगे रत, रती रत रहिण ना पाईआ। इक्क वखाए साचा तत्त, तत्व तत्त डेरा ढाईआ। इक्क उपजावे ब्रह्म मत, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। एका बीज देवे घत, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। एका नार वखाए कमलापत, कन्त कन्तूल बेपरवाहीआ। एका बहे सथ्थर घत, एका सेज सच हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द गुरू गुर देवे मात वड्याईआ। शब्द गुर हरि आप उपाया, अचरज खेल खिलांयदा। निरगुण रूप अनूप वटाया, दिस किसे ना आंयदा। आपणा चोला ल्ए बदलाया, काया चोली वेख वखांयदा। अंगद अंगीकार कराया, लहिणा लहिण आप मुकांयदा। बस्त्र गहिणा तन सुहाया, नेत्र नैणा कजला नाम पांयदा। दर घर साचे लहिणा हुक्म सुणाया, जगत जंजाला आप तुड़ांयदा। भाणा सहिणा घर सच वड्याआ, भावी भाणे विच टिकांयदा। साचा राणा इक्क अख्वाया, तख्त निवासी साचे तख्त डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा भेव खुल्हांयदा। लहणे गुर गुर मूल चुकाया, शब्द गुरू दए वड्याईआ। शब्द गुर होए सहाया, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। बिरधां बालां वेख वखाया, जगत जीवां आप हंढाईआ। अमरु निथावां आप जगाया, अमरा पद इक्क वखाईआ। दर घर साचे सद मेल मिलाया, ब्रह्म नद नाद वजाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढ आपणी गोद बहाया, बख्शी सच सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची धारा आप प्रगटाईआ। साची धारा आप प्रगटा, आपणा रंग रंगांयदा। राम रामदास गुर दया कमा, दासी दास वेख वखांयदा। बन्द खुलासी आप करा, साची सालसी सालस ना आप कमांयदा। आलस निन्दरा दए गंवा, नाम प्याला इक्क प्यांअदा। आत्म जोती जोत दए जगा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। शब्द अनाद धुन दए सुणा, धुन आत्मक आप अल्हांयदा। राग रागनी रहे शर्मा, नेत्र नैण ना कोई उठांयदा। सतिगुर पूरा मिल्या इक्क मलाह, खेवट खेटा बेड़ा आप तरांयदा। हरि मन्दिर बैठा डेरा ला, हरि जू हरि का जोड़ा आप उपांयदा। आपणा निशाना वेखे साचे थाँ, सतिगुर साचे घर झुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा आप वड्यांअदा।

शब्द निशाना साचे घर, सति सतिवादी आप झुलाईआ। एका गुर दित्ता वर, सतिगुर दया कमाईआ। एका अक्खर ल्या पढ़, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका मन्दिर बैठा वड़, एका थान थनंतर रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। गुर सतिगुर भेव खुलांयदा, कर किरपा गुण निधान। गुर शब्द मात प्रगटांयदा, इक्क इकल्ला श्री भगवान। सुत सुत नाल मेल मिलांयदा, निरगुण सरगुण करे परवान। निरगुण शब्द सरगुण अर्जन अंदर डेरा लांयदा, दोहां विचोला श्री भगवान। सिर आपणे छत्र झुलांयदा, पंच मुखी ताज राज राजान। सति रंग निशाना हथ्थ उठांयदा, दो जहाना निगहबान। अकल कल आपणी आप वरतांयदा, बिन नानक सके ना कोई पछाण। इक्क कबीरा निउँ निउँ सीस झुकांयदा, सृष्ट सबाई होए वैरान। दूजा दर आप वड्यांअदा, आपे खोल्हे सच दुकान। तीजे घर सोभा पांयदा, जोती नूर जगे महान। चौथे घर सेज हंढांयदा, नारी कन्त खेल महान। पंचम आपणा रंग रंगांयदा, शब्द नाद सच्ची धुनकान। छेवें छप्पर ना कोई वखांयदा, पुरख अगम्मा वसे आपणे सच मकान। दोवें सति सतिवादी आपणी कल आप वरतांयदा, गुरू अर्जन देवे धुर फ़रमाण। अर्जन आपणा माण सर्ब गवांयदा, अंञाणा बाला बणे नादान। निउँ
१२२० निउँ आपणा सीस झुकांयदा, प्रभ अग्गे मंगे दान। निरगुण निरवैर संग निभांयदा, नानक जोती जोत जगे महान। अंञाणी १२२०
बाली आप उठांयदा, नारी कन्त करे परवान। सुघड़ स्याणी वेख वखांयदा, शब्द हाणी दयावान। अमृत ठंडा पाणी आप
०६ प्यांअदा, सर सरोवर कर पछाण। बोध अगाधी शब्द जणांयदा, अगम्म अगम्मड़ी इक्क धुनकान। पंचम गुर छेवां घर उप्पर ०६
चढ़ वेख वखांयदा, मंगे मंग वड मेहरवान। काया चोला चीथड़ा नाम रंग रंगांयदा, उतर जाए ना विच जहान। माया ममता मोह चुकांयदा, झूठा नाता तुट्टे माण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सतिवादी साची धार, सति शब्द आप सुणांयदा। सति शब्द हरि सति प्यारा, सति सतिगुर सेव कमाईआ। सतिगुर सति अवतारा, सति निराकारा जोत रुशनाईआ। सति नाम सति वरतारा, सति साची झोली रिहा भराईआ। सति शब्द सति धुन्कारा, घर नादी नाद वजाईआ। सति अनहद सुणे पुकारा, सति अनहद दए मिटाईआ। सति बोले इक्क जैकारा, सति सति करे पढ़ाईआ। सति भगत भगवन्त वणजारा, सति वेखे थाउँ थाईंआ। सति वेखे सुत दुलारा, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। सति गुरमुखां करे प्यारा, मुख गुर गुर रहे सलाहीआ। सति गुरमुखां दए अधारा, बख्शे सरन सच्ची सरनाईआ। सति शब्द गुर अर्जन बोल जैकारा, गुरू ज्ञान दए वड्याईआ। मन मति बुध ना पावे सारा, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। शब्द गुरू प्रगटया कलिजुग अन्तिम वारा, गुर नानक ल्ए प्रगटाईआ। शब्द हज़ारे हरि जू बण लिखारा, हरि की महिमा दए

गणाईआ। आपणा आप उतो वारा, तन ख़ाकी ख़ाक समाईआ। मंगी मंग इक्क दुआरा, पीआ प्रीतम विछड़ कदे ना जाईआ। तन माटी दिसे झूठा दुआरा, हरि मन्दिर हरि जू डेरा लाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, सत्त समुंदर मस रही कुरलाईआ। बनास्पत पावे ना कोई सारा, अठारां भार तुल तुल आपणा भार रही गणाईआ। गुर नानक मेला इक्क अर्जन दुआरा, सचखण्ड साचे वज्जी वधाईआ। सति शब्द मंगी मंग पुरख निरँकारा, एका इष्ट देव मनाईआ। साचे मन्दिर बण भिखारा, सन्त भगत भगवन्त गुरमुख गुरसिख एका धाम बहाईआ। गुरू ग्रन्थ कर त्यारा, लक्ख चुरासी गया समझाईआ। आदि जुगादी इक्क अवतारा, ना मरे ना जाईआ। सचखण्ड दुआरे वसे धाम न्यारा, हरि जू हरि हरि मन्दिर सोभा पाईआ। कलिजुग जीव जंत होए गंवारा, वेला अन्त दए गवाहीआ। चारों कुंट होए अँध्यारा, साचा चन्द ना कोई चढ़ाईआ। रसना गाए जीव जंत गंवारा, आत्म अन्तर दरस कोई ना पाईआ। पंच विकार बणे अखाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे लड़ाईआ। बहत्तर नाड़ी वज्जे ताड़ा, त्रैगुण माया वजाईआ। मन मनूआ बणे जगत लाड़ा, बुध मति लए प्रनाईआ। नाल रलाए पंचम धाड़ा, जूठ झूठ हथ्थ कमान उठाईआ। लक्ख चुरासी होए नार विभचारा, साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। गुर का शब्द ना करे कोई प्यारा, गुर की बाणी बाण ना कोई लगाईआ। काया खोले ना कोई बन्द किवाड़ा, हरि मन्दिर मिले ना साचा माहीआ। सारंग ढड्ड गाए वारा, अनहद तार सितार ना कोई हिलाईआ। पीए मदि सर्ब संसारा, आत्म रस ना कोई चखाईआ। गुर का शब्द आदि जुगादि करे पार किनारा, बिन सतिगुर पूरे होए ना कोई सहाईआ। एका जोत दस अवतारा, गुर गोबिन्द वज्जे जगत वधाईआ। पुरख अकाल इक्क जैकारा, वाह वाह गुरू फ़तेह गजाईआ। कलिजुग अन्तिम आए पासा हारा, बेड़ा पार ना कोई कराईआ। निरगुण निरवैर निराकार, कलि कल्की लै अवतारा, मात पित ना कोई बणाईआ। सम्बल नगर वसे धाम न्यारा, घर घर विच करे रुशनाईआ। शब्द खण्डा फड़े तेज कटारा, लुहार तरखाण ना कोई घड़ाईआ। तिक्खीआं रक्खे दोवें धारा, गुरमुख मनमुख वेखे थाउँ थाँईआ। काल महांकाल करे चरन भिखारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस आप वटाईआ। कलिजुग अन्तिम वेस वटाए, पारब्रह्म वड्डी वड्याआ। निहकलंका आपणा नाउँ धराए, पंज तत्त ना कोई जणाया। शब्द मृदंग इक्क वजाए, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चारे खाणी दए सुणाया। अन्तिम मेटे भेख पखण्डा, पार कराए कलिजुग जीव आत्म रंडा, गुरमुख साचे लए तराया। आदि जुगादि जुग जुग गुर शब्द सतिगुर सदा बख्शंदा, बख्शणहार इक्क अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द एका धार, एका गुर इक्क अवतार, एका मन्दिर इक्क दुआर, एका नाम इक्क भण्डार, एका मीत इक्क मुरार, एका बंक रिहा सुहाया।

ज़ुग जुग विछड़े सन्त भगवन्त गुरमुख गुरसिख आपणे यार, सथ्थर यारड़ा आप हंढाया। आपे सुत्ता सूला पैर पसार, गुरमुख आपणी गोद रखाया। हरिजन हरिभगत आदि जुगादि ना जाए हार, जिस जन हरि हरि रसना गाया। सतिजुग साची बन्ह धार, सति सतिवादी वेख वखाया। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां बहाए इक्क दरबार, धुर फ़रमाणा इक्क सुणाया। बीस बीसा होए ख़बरदार, जगत जगदीशा शहनशाह सच्ची सरकार, हुक्म हदीसा इक्क पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता शब्द मलाह, गुरमुख फड़ फड़ पार कराए बांह, साचा बेड़ा आप चलाया।

✻ ११ अस्सू २०१७ बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह पिण्ड गुमान पुरा जिला अमृतसर ✻

सो पुरख निरँजण सतिगुर पूरा, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। हरि पुरख निरँजण हाज़र हज़ूरा, थिर घर साचा आप वसांयदा। एकँकारा वसणहारा नेड़े दूरा, गृह मन्दिर आप आपणा रूप धरांयदा। आदि निरँजण जोती नूरा, सुते प्रकाश आप वखांयदा। अबिनाशी करता सति सरूरा, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखांयदा। श्री भगवान आपणी आसा मनसा आपे करे पूरा, इच्छया भिच्छया झोली आप भरांयदा। पारब्रह्म आपणी मंगे आपे धूढ़ा, आपणी बख्शिश आप वखांयदा। जोती
१२२२ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, अकल कल आपणा खेल खिलांयदा। अकल कल १२२२
०६ हरि खेल अपारा, निरगुण निरवैर धार चलाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, बेपरवाह सहिज सुखदाईआ। सचखण्ड ०६
वसे सच दुआरा, दरगाह साची सोभा पाईआ। सति सतिवादी बोल जैकारा, शब्द सार सार पाईआ। दो जहाना खेल न्यारा, खेल खिलंता दिस ना आईआ। जुगा जुगन्तर बन्ह धारा, जुग करता जोत जगाईआ। लक्ख चुरासी कर पसारा, घट आपणी जोत जगाईआ। वण्डे वण्ड अपर अपारा, चार नौं वज्जे वधाईआ। रंग रलीआं माणे हरि करतारा, भस्मड़ आपणी सेज हंढाईआ। त्रैगुण तत्त कर वणजारा, पंचम नाता वेख वखाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, गृह मन्दिर आप सुणाईआ। आदि जुगादी खेल न्यारा, अन्तिम अकार आप कराईआ। गुर गुर लै मात अवतारा, ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला उच्च अटला, निरगुण सरगुण रूप प्रगटाईआ। निरगुण सरगुण वेस वटाए, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। पारब्रह्म हरि हरि वेख वखाए, आपणी रंगण आप रंगाईआ। आपणा मृदंग आप वजाए, तार सितार ना कोई हिलाईआ। सूरा सरबंग खेल खलाए, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। साचा सालस बण के आए, साचा शाह पातशाहीआ। जगत मार्ग आप वखाए, लक्ख चुरासी राह चलाईआ।

एका मन्त्र नाम दृढ़ाए, निष्अक्खर ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल साचा हरि, हरि आपणी खेल खलाईआ। हरि हरि खेल खिलांयदा, जुगा जुगन्तर साची कार। लोकमात जोत प्रगटांयदा, खेले खेल अपर अपार। भगत भगवन्त मेल मिलांयदा, अंदर मन्दिर पावे सार। डूँघी कंदर फोल फुलांयदा, मेट मिटाए अन्ध अँध्यार। जोत निरँजण दीप जगांयदा, दिवस रैण करे उज्यार। साचा मन्दिर आप सुहांयदा, अठ्ठे पहर शब्द धुन्कार। गुर सतिगुर वेस वटांयदा, शब्दी नाउँ अपर अपार। रूप रंग रेख ना कोई वखांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता बेऐब परवरदिगार। जुग करता हरि करनेहारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। खेले खेल विच संसारा, जगत सागर फोल फुलाईआ। वरतावे नाम सचा वरतारा, एका वस्त वण्ड वण्डाईआ। गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़ा, आत्म ब्रह्म वेख वखाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़ा, जोती जोत रुशनाईआ। लग्गे अग्ग ना तत्ती हाढ़ा, त्रैगुण अग्नी दए बुझाईआ। पंज तत्त ना कोई अखाड़ा, पंचम शब्द नाद धुन आप वजाईआ। पंचम मिले मीत मुरारा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जुगा जगंतर साची कारा, हरि सन्तन वेखे थाउँ थाँईआ। मन्दिर सोहे इक्क दुआरा, जिस दर आपणा चरन छुहाईआ। मूर्ख मूढ़े लावे पारा, पतित पापी आप तराईआ। एका देवे नाम अधारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगां जुगन्तर एका दाता, मेटे रैण अन्धेरी राता, सच सुच्च करे रुशनाईआ। जुग जुग अन्धेर मिटांयदा, जन भगतां देवे ब्रह्म ज्ञान। आपणा मन्त्र आप दृढ़ांयदा, धुर दरगाही धुर फ़रमाण। साचा राग इक्क अलांयदा, धुन अनादि सच्ची धुनकान। साचा शब्द आप सुणांयदा, रसना जिह्वा ना कोए गान। साचा मन्दिर आप वसांयदा, घर घर विच हो मेहरवान। बन्द ताकी आप खुलांयदा, सतिगुर पूरा सूरबीर बली बलवान। साचे तख्त सोभा पांयदा, शाहो भूप बण सुल्तान। आत्म सेजा आप हंढांयदा, गुणवन्ता, गुण निधान। गुरमुख काया चोली रंग रंगांयदा, रंगणहार श्री भगवान। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलांयदा, ईश जीव कर परवान। झूठा नाता तोड़ तुड़ांयदा, लेखा चुक्के पंज शैतान। साचा हुक्म आप सुणांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धार, जुगा जुगन्तर देवे वर, गुरमुख साचे मात पछाण। जुग जुग भगत सलांहयदा, इक्क इकल्ला एकँकार। आपणे भाणे आप रहांयदा, भाणा जाणे अगम्म अपार। शाह सुल्तानां ख़ाक रलांयदा, तोड़नहारा गढ़ हँकार। ग़रीब निमाणे गले लगांयदा, किरपा कर विच संसार। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखांयदा, जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल आप करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे कर प्यार। गुरमुख साचा मीतड़ा, हरि सतिगुर वेख वखांयदा। देवे नाम इक्क अनडीठड़ा, साचे मन्दिर आप बिठांयदा। मिट्ठा करे काया रीठड़ा,

अमृत आत्म रस चखांयदा। शब्द सुणाए सुहागी गीतड़ा, साचे मन्दिर बह बह गांयदा। मन मनूआ करे पतित पुनीतड़ा, पतित पापी तरांयदा। जुग जुग चलाए आपणी रीतड़ा, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग चौथा जुग अन्तिम बीतड़ा, थिर कोए रहिण ना पांयदा। वेखणहारा चार कुंट दहि दिशा हस्त कीटड़ा, इक्क इकल्ला विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन साचा मेलया, कर किरपा गुर करतार। लेखा जाणे गुरू गुर चेलया, आप सुहाए बंक दुआर। सख़ा सख़ाई सज्जण सहेलया, आदि जुगादी मीत मुरार। आपे जाणे आपणा वक्त वेलया, थित वार ना पावे कोई सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सुहाए बंक दुआर। बंक दुआरा सोभावन्त, गुर सतिगुर सज्जण पाया। पुरख अबिनाशी मिल्या एका कन्त, घर सुहञ्जणी सेज सहाया। शब्द जणाए मणीआ मंत, मन का मणका आप भवाया। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणा खेल खलाया। जुग जुग महिमा अगणत, अगणत वेद पुराण रहे जस गाया। लेखा लाए साचे सन्त, सति सतिवादी होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए मिलाया। गुरमुख शब्द मिलांयदा, सुरती सुरत कर विचार। मूर्त अकाल वेख वखांयदा, निरगुण रूप निराकार। नाम ढोल मृदंग वजांयदा, धुन अगम्मी इक्क धुन्कार। जूनी रहित दिस ना आंयदा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। साचा डंका इक्क वखांयदा, दो जहानां करे ख़बरदार। राउ रंकां आप उठांयदा, शाह सुल्ताना मारे मार। गुरसिख जनका आप तरांयदा, जन जननी लाए पार। आपणी बणता आप बणांयदा, आपे बेड़ा बन्न्हणहार। गुरमुख सन्ता वेख वखांयदा, गुर सूरा कर प्यार। आसा मनसा पूर करांयदा, फुल फुलवाड़ी लाए पत्त डाल्ह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन एका बन्धन पांयदा। हरिजन बेड़ा आपे बन्न्ह, जुग जुग दया कमांयदा। गुरमुख वडियाई धन्न धन्न, सतिगुर पूरा रसना जिह्वा गांयदा। लेखा जाणे गोकल मथरा बिन्दराबन, जगत दुआरका आपणे चरना हेठ दबांयदा। भाग लगाए हरिजन तेरी छप्परी छन्न, साचे मन्दिर सोभा पांयदा। निरगुण जोत प्रकाश सूरज चन्न, कोटन भान मुख शर्मांयदा। एका राग सुणाए कन्न, अनुभव आपणा रूप दरसांयदा। मन पंखी शब्द डोरी लए बन्न्ह, उड उड ना दहि दिश धांयदा। काया चोली भाग लगाए पंज तत्त तन, धन साचा विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त इक्क वखांयदा। साची वस्त नाम गुरदेव, गुर गुरमुख झोली पांयदा। अबिनाशी करता अलक्ख अभेव, अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा खेल आप खिलांयदा। जुग जुग जाणे जाणणहार सेव, पूर्ब जन्मां वेख वखांयदा। वड वडा आत्म परमात्म देव, देवी देव आप अख्वांयदा। आदि जुगादि

सदा नेहकेव, नेहचल आपणा धाम वसांयदा। गुरमुखां देवे अमृत रस साचा मेव, साचा फल आप खवांयदा। जिस जन गाया रसना जिहु, जीवण जुगत लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। गुरमुख साचे वेखणहार आया, निरगुण जोती जामा धार। कलिजुग सतिजुग बणे दाई दाया, सेवा करे आप निरँकार। धरत धवल दए सुहाया, धर धरनी सुण पुकार। आकाश प्रकाश दए कराया, निरगुण दीपक कर उज्यार। स्वच्छ सरूपी रूप प्रगटाया, पारब्रह्म प्रभ खेल न्यार। दहि दिशा चार कूटी एका शब्द जणाया, शब्द नाद सच्ची धुन्कार। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फुलाया, करे खेल निरगुण निराकार। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, रूप रंग रेख ना सके कोई विचार। गुरमुख साचे लए जगाया, घर मन्दिर खोलु किवाड़। हरि मन्दिर दए इक्क सुहाया, त्रैगुण नाता तोड़ जंजाल। अंदरे अंदर मेल मिलाया, पारब्रह्म करे हरि हरि इक्क प्यार। सुरत सवाणी बण वखाया, जगत वासना कर ख्वार। साचे हाणी शब्द मिलाया, दर सोहे नारी पीआ भतार। गीत सुहागी एका गाया, दिवस रैण मंगलाचार। अनन्द अनन्द गुर इक्क वखाया, परमानंद रहे ख्वार। बन्दी बन्धन गुर वखाया, नाता तोड़े तोड़नहार। वासना गंदी दए कढाया, जिस सिर हथ्थ धरे करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सुहाए सच दरबार। गुरमुख दुआर सुहञ्जणा, सुहावणहार आप निरँकार। जगे दीपक इक्क निरँजणा, निरगुण नूर होए उज्यार। सतिगुर मिल्या दर्द दु:ख भय भंजना, भव सागर करे पार। नेत्र पाए नाम अंजना, मेट मिटाए अन्ध अँध्यार। अन्त काल कलि रक्खे लज्जणा, राए धर्म ना करे ख्वार। घर नाद अनादी वज्जणा, शब्दी शब्द करे गुफ्तार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, फल लगाए साचे डार। साचा फल बूटा लाए जग, जड़ आपणे हथ्थ रखाईआ। चेतन्न रूप सूरा सरबग्ग, करे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण वसे उप्पर शाह रग, साचा मन्दिर आप सुहाईआ। जन भगतां बन्ने भगती तग, नाम डोरी तन्द बंधाईआ। हरि शब्द बुझाए अग्नी अग्ग, तत्व तत्त ना कोई जलाईआ। गुरमुखां मेटे दूर दुराडा पन्ध, साचा पान्धी बेपरवाहीआ। बेपरवाह गुरसिखां सुणाए एका छन्द, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। हउमें हंगत ढाए कंध, हँ ब्रह्म इक्क वखाईआ। निज घर वखाए निजानंद, निज अमृत जाम प्याईआ। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना रहे ना राईआ। सर्ब जीआं दाता बख्शंद, बख्शणहार इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग गुरमुख लए उठाईआ। गुरमुख शब्द जगाया, जागरत जोत इक्क जगा। गुरसिख शब्द सुणाया, अनहद अनादी राग अलु। गुरमुख मेल मिलाया, दूई द्वैती पर्दा लाह। गुरसिख रंग रंगाया, रंग रंगीला इक्क चढ़ा। गुरमुख सेज हंढाया, आत्म सेजा सोभा पा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, हरिजन साचे होए सहाया। हरिजन सदा सहायक, सतिगुर दीन दुनी वेख वखांयदा। लेखा जाणे धुर मस्तक आपे जाए बौहड़, पूर्ब कर्मा फोल फुलांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों फल वेखे मिट्ठा कौड़, करता कीमत आपे पांयदा। आदि जुगादि शब्द गुरदेव दो जहाना रिहा दौड़, लोकमात वेस वटांयदा। निरगुण सरगुण अंदर लाए पौड़, चौथा डण्डा हथ्थ रखांयदा। जन भगतां बुझाए लग्गी औड़, जन्म जन्म दी प्यास आप बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगां जुगन्तर भगत आपणे लेखे लांयदा। हरिभगत लेखा मंगणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। सृष्ट सबाई नौं खण्ड पृथ्मी अग्नी तत्त वगणा, कोई करे ना ठंडा ठार। कलिजुग जीव हँस होए कगना, काग रले कागां डार। काल नगारा सभ दे सिर ते वज्जणा, उच्ची कूके करे प्यार। जो घड़या सो भज्जणा, थिर रहे ना विच संसार। गुर गोबिन्द सूरा एका गज्जणा, सिँघ रूप शाह अस्वार। गुरमुखां पर्दा अन्तिम कज्जणा, दिवस रैण पावे सार। सच चलाए नाम जहाजणा, गुरमुख साचे लए चाढ़। अंदर मन्दिर मारे वाजणा, सोई सुरती लए उठाल। निरगुण सरगुण रचया काजना, काज करे आप करतार। शाहो भूप वड राजन राजना, निहकलंका नर अवतार। आपे होए ग़रीब निवाजना, ग़रीब निमाणे लाए पार। साचे अश्व चढ़े ताजना, त्रिलोकी चरना हेठ लताड़। ब्रह्मा विष्न शिव तेरी वेखे रची साजना, निरगुण निरगुण हो उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साची कार। जुग जुग कार कमांयदा, करता पुरख दीन दयाल। जुग जुग आपणा रूप वटांयदा, जुग जुग सेव लगाए काल महांकाल। जुग जुग शस्त्र खण्डा हथ्थ चमकांयदा, जुग जुग वेखे चिल्ला तीर कमान। जुग जुग लक्ख चुरासी रथ चलांयदा, रथ रथवाही बेमिसाल। जुग जुग अकथ कहाणी आप सुणांयदा, कोई कथे ना विच संसार। जुग जुग सृष्ट सबाई मथ वखांयदा, नाम मधाना एका डार। जुग जुग आपणा हथ्थ उठांयदा, जन भगतां करे सच प्यार। जुग जुग समरथ पुरख खेल खिलांयदा, सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार। कलिजुग अन्तिम जोत जगांयदा, निहकलंका लए अवतार। जूठ झूठ जगत मिटांयदा, कूड़ कुड़यारा, करे ख्वार। राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलांयदा, सीस ताज रक्खे ना कोई दस्तार। चार वरनां एका दर वखांयदा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कर प्यार। साचा खण्डा हथ्थ चमकांयदा, बहत्तर नाड़ी मारे मार। ब्रह्मण्डां वेख वखांयदा, ब्रह्मा विष्न शिव लए उभार। करोड़ तेतीसा पन्ध मुकांयदा, सुरपति राजा इंद बाजी जाए हार। शंकर आपणा हार सुटांयदा, बाशक तशका ना कोई विचार। हरि हरि पारब्रह्म राह तकांयदा, मेल मिलाए अन्तिम वार। विष्नूं सांगोंपांग सेज परे हटांयदा, दर दुआर बणे भिखार। पुरख अबिनाशी हुक्म जणांयदा, तिन्नां लोकां एका वार। चौदां लोक हट्ट खुल्हांयदा, चौदां तबकां मारे मार। चौदां विद्या पन्ध

मुकांयदा, चौदस चौदां होए अँध्यार। सदी चौधवीं वेख वखांयदा, वेखणहारा आप निरँकार। त्रैगुण अग्नी मठ तपांयदा, जोती लम्बू लाए आप करतार। पंज तत्त हड्डीआं बालण विच डांहयदा, काल सेवा करे दुआर। महांकाल दया कमांयदा, दिवस रैण करे विचार। लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख गुरसिख फड़ फड़ आप उठांयदा, ल्याए खिच सतिगुर चरन दुआर। निहकलंक नर हरि नरायण जोती जामा भेख वटांयदा, गुर पीर अवतार रसना गा गा गए विचार। अन्तिम लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा, गुर गोबिन्द करे प्यार। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर बणांयदा, नौं दर करे श्रंगार। दसवें आपणा आसण लांयदा, दिस ना आए विच संसार। गुरसिखां दस्म दुआरी बन्द घर आप खुल्हांयदा, शब्द खण्डां फड़ तेज कटार। पूजा पाठ जप तप ना कोई करांयदा, सति हठ ना करे कोई विचार। अठसठ तीर्थ ना कोई नहांयदा, ना कोई घाले जगत घाल। जिस सिर आपणा हथ्थ रखांयदा, गुरमुख बणाए साचे लाल। होए प्रतक्ख दरस दिखांयदा, नाता तोड़ काल महांकाल। जन्म जन्म दी हरस मिटांयदा, लक्ख चुरासी तोड़ जंजाल। दरगाहि साची धाम वखांयदा, शब्द बिबाणे लए बहाल। सचखण्ड दुआरा मन्दिर आप सुहांयदा, कर किरपा गुण निधान। सत्त रंग निशाना आप झुलांयदा, साचे तख्त बैठ श्री भगवान। गुरमुख चरनां विच रखांयदा, नाता तुट्टे विच जहान। आपणी जोत आपणे विच मिलांयदा, ब्रह्म पारब्रह्म करे परवान। सोहँ आपणी खेल खिलांयदा, सो मेटे सर्ब निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि शब्द अनादि, जुग करता आप वजांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्म ब्रह्मादि जन भगतां देवे साची दात, दाता दानी दया निध गहर गुण ठाकर ठग्ग ठगौरी जगत आप वखांयदा।

१२२७ ०६

* ११ अस्सू २०१७ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गो बूआ, ज़िला अमृतसर *

सो पुरख निरँजण खेल खिलांयदा, आदि जुगादी वड मेहरवान। हरि पुरख निरँजण वेस वटांयदा, इक्क इकल्ला वाली दो जहान। एकँकारा रूप प्रगटांयदा, रूप अनूप शाह सुल्तान। आदि निरँजण नाउँ रखांयदा, जोती जोत जगे महान। श्री भगवान आपणा बल आप धरांयदा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। अबिनाशी करता आपणी कार आप करांयदा, करता पुरख नौजवान। पारब्रह्म प्रभ साचा दर सुहांयदा, दर घर साचा कर परवान। सचखण्ड दुआरा आप उपांयदा, आप रखाए सच निशान। घर घर विच आप खुल्हांयदा, थिर दरबारा कर परवान। सच सिँघासण इक्क विछांयदा, निरगुण निरवैर आप आपणा कर कुरबान। तख्त ताज सोभा पांयदा, उप्पर बहे राज राजान। शब्द ताज इक्क टिकांयदा, जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरवैर आप अख्वांयदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाला, अकल कल बेपरवाहीआ। आदि जुगादी दीन दयाला, दो जहानां वेख वखाईआ। सचखण्ड सुहाए सच्ची धर्मसाला, दर घर साचे सोभा पाईआ। थिर घर साचे खेल निराला, अनुभव आपणा रूप प्रगटाईआ। आपे चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क रखाईआ। निरगुण निरगुण बण दलाला, लाल लाल आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे मन्दिर दए वड्याईआ। थिर घर मन्दिर सच दुआरा, पुरख अबिनाशी आप वसांयदा। सचखण्ड दुआरे हो उज्यारा, जोती जोत डगमगांयदा। निरगुण खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। अजूनी रहित निराकारा, निरवैर आपणी धार बंधांयदा। नेहचल वसे धाम न्यारा, महल्ल अटल आप सुहांयदा। साची करनी वरते सच वरतारा, करता करनी आपणी आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीवा बाती इक्क रखांयदा। दीवा बाती कमलापात, हरि साचे घर टिकाईआ। आदि जुगादि खेल तमाश, दरगाह साची वेख वखाईआ। आपे मंडल पाए आपणी रास, आप आपणा रूप नचाईआ। आपणे अंदर करे आपणा वास, वास निवासा आप हो जाईआ। आपे पुरख होए शाहो शाबास, शहनशाह आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआर दए वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि जू हरि मन्दिर आप सुहांयदा। निरगुण जोत श्री भगवन्त, इक्क इकल्ला डेरा लांयदा। आप बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नणहार आप अख्वांयदा। आपे आदि आपे अन्त, अन्त आदि आपणी धार चलांयदा। आपे नार आपे कन्त, कन्त कन्तूल आपणी सेज आप हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा एका खोल्ह, शब्द अगम्मी दए बोल, अगम्म अगम्मड़ा खेल खिलांयदा। शब्द अगम्मी एका ढोला, पुरख अबिनाशी एका गाईआ। निरगुण निराकार बण विचोला, मेल मिलाए साचे थाँईआ। सचखण्ड दुआरा एका खोल्हा, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द अगम्मी दए बोल अगम्म अगम्मड़ा खेल वखाईआ। शब्द अगम्मी एका ढोला, पुरख अबिनाशी आपे गाईआ। निरगुण निराकार बण विचोला, मेल मिलाए साचे थाँईआ। सचखण्ड दुआरा एका खोल्हा, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाद अनादी आप अल्हाईआ। नाद अनादी हरि निरँकारा, एका एक वजांयदा। आपे जाणे सति सितारा, सति सतिवादी आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे पाए आपणी सारा, आपणी धार आप प्रगटांयदा। आपे गाए आपणी वारा, महिमा अकथ आप सुणांयदा। आपे जाए बलि बलिहारा, आपे वाह वाह सलोक अल्हांयदा। आपे वसे गुप्त ज़ाहरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। सचखण्ड दुआरे

वज्जे नाद, सति सतिवादी आप वजाईआ। शब्द खुल्हाए बोध अगाध, लिखण पढ़न विच ना आईआ। नाम जणाए आदि जुगादि, नर निरँकारा आप हो जाईआ। आपणा गुण आपे अराध, आपणी करे आप पढ़ाईआ। आपे देवे साची दाद, आपणी भिच्छया झोली आप भराईआ। आप आपा विच्चों काढ, अग्गे आपणा आप टिकाईआ। आपणा नाम आपे लाध, आपे लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल साचा हरि, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। दर घर साचा हरि सुहांयदा, अंदर वड़ हरि निरँकार। दीवा बाती इक्क टिकांयदा, कमलापाती खेल न्यार। साचा साथी आप अख्वांयदा, साचा बेड़ा करे त्यार। आपणा राथी रथ चलांयदा, रथ रथवाही निराकार। साची गाथी आपे गांयदा, गावत गाए गावणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरे साचे वड़, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा। दर दरवाज़ा खोल्हणहारा, निरगुण निरवैर आप अख्वांयदा। अजूनी रहित हो उज्यार, मूर्त अकाल डगमगांयदा। अनुभव खेल करे अगम्म अपारा, निर्भय अवर ना कोई जणांयदा। जोती जोत कर पसारा, जोती जाता आपणा नाउँ धरांयदा। थिर घर साचे पावे सारा, घर घर विच आप सुहांयदा। आपे नार कन्त बण भतारा, सुत दुलारा आपे जांयदा। शब्दी नाउँ रक्ख हरि करतारा, साची गोदी आप सुहांयदा। देवे हुक्म धुर दरबारा, आपणी इच्छया भिच्छया विच टिकांयदा। एका रूप हरि निरँकारा, आपणा आप दरसांयदा। एका नाउँ कर उज्यारा, हरि निरँकारा वेस वटांयदा। एका दए सच भण्डारा, सति वरतारा आप हो जांयदा। एका कूके बोल जैकारा, कूक कूक आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सुत शब्द धार, आप प्रगटाए हरि निरँकार, थिर घर साचे आप समझांयदा। थिर घर साचे शब्द पसारा, सचखण्ड जोत जोत रुशनाईआ। सचखण्ड वसे हरि निरँकारा, थिर घर शब्दी सेव कमाईआ। थिर घर बणे शब्द भिखारा, सचखण्ड बैठा सच्चा शहनशाहीआ। सचखण्ड बणे आप वरतारा, थिर घर शब्दी झोली पाईआ। थिर घर करे वणज वणजारा, सचखण्ड दुआरे एका रास वखाईआ। सचखण्ड दुआरा उच्च मुनारा, थिर घर घर घर विच आप प्रगटाईआ। करे खेल आप करतारा, दूसर संग ना कोई रखाईआ। आदि आदि हो उज्यारा, रूप अनूप आप दरसाईआ। अबिनाशी अचुत साचे सुत करे प्यारा, शब्द शब्दी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर अंदर आपे वड़, सुत दुलारा लाए लड़, एका रंगण रंग रंगाईआ। एका किरन देवे दात, सो पुरख निरँजण दया कमांयदा। हरि शब्द उपाई आपणी ज़ात, ज़ात पात ना कोई रखांयदा। एकँकारा बन्न्हे नात, साचा नाता जोड़ जुड़ांयदा। आदि निरँजण पुच्छे वात, जोत उज्यारा डगमगांयदा। श्री भगवान गाए गाथ, आपणा बोला आप सुणांयदा। अबिनाशी करता चलाए राथ, रथ रथवाही

१२२६ ०६

सेव कमांयदा। पारब्रह्म निभाए सगला साथ, सगला संग इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका किरन दित्ता वर, इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। एका किरन बख्शे हरि, करे किरपा गुण निधानया। शब्द भण्डारा दित्ता भर, सुत दारा होया परवानया। लेखा जाणे हरि, नर नरायण खेल महानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे धुर फ़रमाणया। शब्दी शब्द जणांयदा, हरि दाता बेपरवाह। सेवक सेवा सच वखांयदा, निरगुण निरगुण बण मलाह। एका किरन वण्ड वण्डांयदा, एका जोती जोत चमका। एका हुक्म आप सुणांयदा, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचा। इक्क इक्क इक्क आपे वण्ड वण्डांयदा, इक्क इकल्ला सभनी थाँ। इक्क ब्रह्मा विष्न शिव उपजांयदा, एका जोती नूर जगा। इक्क सूरज चन्न चढ़ांयदा, निरगुण नूर डगमगा। लक्ख चुरासी वेस वटांयदा, त्रैगुण माया घाड़त घड़ा। निरगुण आपणा वेस वटांयदा, भेव अभेदा भेव छुपा। अछल अछेदा छल कमांयदा, लेखा लिख ना सके कोई रा। शब्द शब्दी वण्ड वण्डांयदा, घर घर आपणा डेरा ला। नाद अनादी नाद वजांयदा, आदि पुरख आप अख्वा। विष्न शिव ब्रह्मा सेवा लांयदा, रिज़क पुचाए थाउँ थाँ। आत्म ब्रह्म सर्ब मनांयदा, ईश जीव रूप वटा। अन्त कलि आपणी कल आप वरतांयदा, लेखा लेखे लए लगा। शब्द धार इक्क उपजांयदा, दो जहाना फेरा पा। ब्रह्मण्ड खण्ड आप वसांयदा, गगन गगनंतर रिहा सुहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द शब्द वरता। शब्द वरतारा आपे हरि, शब्दी शब्द आप अख्वाईआ। निरगुण सरगुण खेल कर, सरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। त्रैगुण देवे एका वर, पंचम पंच करे कुड़माईआ। काया माटी भाण्डा घड़, साची हाटी इक्क वखाईआ। बन्द ताकी खोलृ दर, घर घर विच इक्क रुशनाईआ। साचा साकी जाम भर, नाम प्याला इक्क प्याईआ। जोत निरँजण अंदर धर, नूरो नूर करे रुशनाईआ। आत्म ब्रह्म वेखे खड़, सच सुहञ्जणी सेज हंढाईआ। मेल मिलाए आपणे घर, हरि मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि विष्नूं आदि ब्रह्मा, आदि शंकर आपणा नाउँ धराईआ। विष्नूं आदि हरि का नाउँ, हरि निरँकारा आप प्रगटांयदा। आदि ब्रह्मा हरि का नाउँ, पारब्रह्म आपणा नाउँ रखांयदा। आदि शंकर हरि का नाउँ, हरि आपणा अंग कटांयदा। तिन्नां बणे पिता माउँ, साची मईआ गोद बहांयदा। करे कराए सच न्याउँ, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जांयदा। तख्त बहाए फड़ फड़ बाहों, साची पुरीआं आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि हरि भगवन्त, आपणी कल आप वरतांयदा। आदि विष्नूं आप उपाया, विश्व आपणी शक्ति धराईआ। आदि ब्रह्मा जोत जगाया, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। आदि शंकर आप उठाया, सुन्न अगम्मी फोल फुलाईआ। चरन चरनोदक अमृत इक्क प्याया, अमृत आत्म इक्क वखाईआ।

बोध अगाध शब्द जणाया, हरि आपणे नाउँ वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादा खेल वखाया, ना मरे ना जाईआ। प्यो दादा किसे दिस ना आया, फड़ बाहों गले लगाईआ। धुन अगम्मी वाजा आप वजाया, ब्रह्मा विष्न शिव सुण इक्क ध्यान लगाईआ। वड वड्डा राजा हुक्म सुणाया, हुक्म हुक्मी रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वड्याईआ। शब्द विष्न ब्रह्मा शंकर धार, शब्द त्रैगुण वण्ड वण्डांयदा। शब्द रवि ससि उज्यार, शब्द नूर नूर डगमगांयदा। शब्द हुक्म शब्द वरतार, शब्द शब्दी खेल खिलांयदा। शब्द भूप शब्द सिक्दार, शब्द राज जोग कमांयदा। शब्द नाद शब्द धुन्कार, शब्द सुन्न समाध समांयदा। शब्द नार शब्द कन्त भतार, शब्द सुहञ्जणी सेज हंढांयदा। शब्द खेल करे अपर अपार, शब्द रूप दिस किसे ना आंयदा। शब्द लोआं पुरीआं महल्ल लए उसार, विष्न ब्रह्मा शिव आप बहांयदा। विष्न दाता बणे भण्डार, सचखण्ड वासी सच भण्डारी रूप धरांयदा। शब्द ब्रह्म करे पसार, लक्ख चुरासी जोत जगांयदा। शब्द शंकर करे सँघार, जो घड़या भन्न वखांयदा। तिन्नां विचोला आप निरँकार। तख्त निवासी सोभा पांयदा। शाहो भूप सच्ची सरकार, एकँकारा आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द धुर फ़रमाणा, साचा राणा दो जहाना आप वरतांयदा। विष्न ब्रह्मे शिव हरि जणाया, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। लक्ख चुरासी रचना रच वखाया, पंज तत्त घाड़न लए घड़ाईआ। निरगुण वड करे रुशनाया, नूर नुराना डगमगाईआ। त्रैगुण पल्ला इक्क फड़ाया, भुल्ल रहे ना राईआ। आपणा वेला वक्त ना किसे जणाया, थित वार ना कोई लिखाईआ। आपणा बंस आप सुहाया, सरबंस वेखे शहनशाहीआ। आपणी अंस आप उपजाया, आपे होए सदा सहाईआ। आपणा बंक आप सुहाया, बंक दुआरे सोभा पाईआ। आपणा रंग आप रंगाया, रंग रंगीला आप चढ़ाईआ। आपणा पलँघ आप विछाया, आत्म सेजा दए वड्याईआ। आपणा बंक आप सुहाया, बंक दुआरे सोभा पाईआ। आपणा डंक आप वजाया, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। आपणा अंक आप जणाया, निश्अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव समझाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, घट घट आपणा नूर प्रगटांयदा। नूर नुराना हो उज्यार, शब्द तराना एका गांयदा। दिवस रैण रहे धुन्कार, सच निशाना इक्क वखांयदा। काया मन्दिर खोल्ह किवाड़, आपणा मेला आप मिलांयदा। मेल मिलाए मिलावणहार, त्रैगुण लेखा आप जणांयदा। पंज तत्त दए अधार, सुरती सुरत आप प्रगटांयदा। मूर्त अकाल कर प्यार, तुरीआ तूरत नाद आप वजांयदा। त्रैगुण वसणहारा बाहर, आसा पूरत आप अख्वांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, लक्ख चुरासी भर भण्डार। लक्ख चुरासी भण्डारा, भरपूर भगवान आपणी दया कमाईआ। लेखा

जाणे हाज़र हज़ूर, हरि हरि जू वड्डा बेपरवाहीआ। दाता दानी जोद्धा सूरबीर, वड बलवाना इक्क अख्वाईआ। वेखणहारा चोटी चढ़ अख़ीर, उच्चे मन्दिर सोभा पाईआ। अमृत रक्खे साचा सीर, घर घर झिरना आप झिराईआ। आदि पुरख आदि बन्ने बीड़, बेड़ा बन्नणहार भेव ना राईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मारया शब्द ज़ंज़ीर, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। आपणे दर बणाए हकीर, शाह फ़कीर आप हो जाईआ। आपे होए पीरन पीर, ब्रह्मा विष्न शिव दर बैठे सीस झुकाईआ। आपे देवणहारा धीर, चरन कँवल बख्शे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची रचना ल्ए रचाईआ। लक्ख चुरासी रचना रच, हरि आपणी खेल खिलांयदा। वेस वटाया सच्चो सच्च, सच आपणी धार बंधांयदा। भाग लगाया काया माटी कच, कंचन गढ़ बणांयदा। निरगुण सरगुण अंदर रच, आपणा आप छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, आपे वेखे आपणा सच तमाशा, वेखणहारा एकंकारया। विष्न ब्रह्मा शिव कर सलाह, तिन्ने नेत्र नैण उठाईआ। पुरख अबिनाशी चरन ध्यान लगा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। हउँ सेवक दरवेश दर बैठे आ, खुलड़े केस रहे रखाईआ। एक दस्सणा आपणा नाँ, कवण नाउँ तेरे वड्याईआ। लक्ख चुरासी भाण्डा ल्या घड़ा, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। लोकमात कवण रूप होए रुशना, कवण मेल मिलाए बेपरवाहीआ। कवण वेला अन्त दए जणा, तुध बिन अवर ना कोई जणाईआ। हउँ भिखक भिखारी झोली बैठे डाह, आपणी दात अतोट अतुट निखुट्ट कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेद अभेदा दए खुलाईआ। भेव अभेद खुलांयदा, कर किरपा गुण निधान। विष्न ब्रह्मा शिव आपणा हुक्म आप जणांयदा, अन्तिम करे हरि पछाण। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तिन्नां सेव इक्क लगांयदा, भुल्ल ना जाए बण अंञाण। चार जुग तेरी गोद बहांयदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग एका रक्खे आण। चार मुख तेरे ब्रह्मे पारब्रह्म सलांहयदा, चार वेद करे वख्यान। चारे बाणी बाण लगांयदा, पारब्रह्म कर ध्यान। चारे खाणी रचन रचांयदा, चारे जुग होए प्रधान। नौं नौं गेड़ा आप दवांयदा, गेड़ा गेड़े श्री भगवान। गुर पीर अवतार जुग जुग आपणे हुक्म घलांयदा, लक्ख चुरासी देवे धुर फ़रमाण। आदि विष्नूं तेरा वक्त ना कोए चुकांयदा, आदि ब्रह्मा ना होए वैरान। आदि शंकर ना पन्ध मुकांयदा, लेखा मिटे ना दो जहान। नौं नौं चार आपणा खेल खिलांयदा, देंदा रहे धुर फ़रमाण। आपणा भेव ना किसे खुलांयदा, भेव अभेदा हरि भगवान। कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा, नौं नौं चार कर परवान। अन्त आपणी कल वरतांयदा, वेद कतेब शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान होयण हैरान। एका जोती नूर डगमगांयदा, आदि पुरख वड मेहरवान। दूजा शब्द संग रखांयदा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्डां देवे इक्क ज्ञान। तीजे तीजा नेत्र इक्क

१२३२ ०६

खुल्हांयदा, विष्न ब्रह्मा शिव कर पछाण। चौथे चौथे पद डेरा लांयदा, त्रैगुण माया करे वैरान। पंचम पंचम नाद शब्द वजांयदा, पंचम मेटे पंच शैतान। छेवें छेवां घर सुहांयदा, छप्पर छन्न ना कोए मकान। सत्तवें सति पुरख निरँजण खेल खिलांयदा, लेखा जाणे ज़िमी अस्मान। गुर पीर अवतार साध सन्त जुग जुग जुग बेअन्त बेअन्त सर्ब गांयदा, बेअन्त होए आप श्री भगवान। त्रै त्रै अन्त आपणे हथ्थ रखांयदा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। विष्न ब्रह्मा शिव आप समझांयदा, पुरख अबिनाशी नौजवान। कलिजुग अन्तिम निहकलंक आपणा नाउँ रखांयदा, आपणा गुण जाणे गुण निधान। तिन्नां लेखा लेखे पांयदा, लेखा लिखणहार इक्क मेहरवान। कागद कलम ना कोई रखांयदा, ना कोई कातब होए परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर फ़रमाण। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, आदि पुरख समझांयदा। विष्न तेरा विश्व रूप प्रगटाउणा, पारब्रह्म प्रभ संग निभांयदा। ब्रह्म तेरा रूप ब्रह्म सर्ब दरसाउणा, हँ रूप आप हो जांयदा। शंकर तेरा लहिणा देणा तेरी झोली पाउणा, पूर्ब लेखा वेख वखांयदा। भाणा सहिणा हुक्म जणाउणा, हरि भाणे आप समांयदा। लक्ख चुरासी जो घड़या सो भन्न वखाउणा, ठीकर चरना हेठ दबांयदा। गुरमुख विरला आप जगाउणा, जिस जन आपणी दया कमांयदा। गुरसिख साचा संग रखाउणा, जुग विछड़े मेल मिलांयदा। सन्त सहेला रंग रंगाउणा, सांतक सति सति वरतांयदा। भगत भगवन्त एका घर बहाउणा, सुहञ्जणी सेज आप विछांयदा। गुरमुखां हरि माण दवाउणा, साचा मार्ग इक्क लगांयदा। विष्न ब्रह्मे शिव तेरा पन्ध मुकाउणा, पान्धी आपणा राह आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, अन्त आदि अन्त हरि भगवन्त, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगां जुगन्तर एका काहन, हँ ब्रह्म करे पछाण, सो पुरख निरँजण गुण निधान, गुण अवगुण ना कोई जणाईआ।

✻ १२ अस्सू २०१७ बिक्रमी बख्शीश सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गोबूआ ✻

पारब्रह्म ब्रह्म पाए सारा, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म रखाए चरन दुआरा, चरन कँवल इक्क जणांयदा। पारब्रह्म हरि बणाए सच्चा घर बारा, घर घर विच आप टिकांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म दए सहारा, अमृत आपणा जाम प्यांअदा। ब्रह्म ब्रह्म वड अधारा, आपणा मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म करे पसारा, इक्क इकल्ला वेख वखांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म सुहाए बंक दुआरा, घट मन्दिर वेख वखांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म सुणाए सच जैकारा, धुन अनादी अनहद शब्द वजांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कराए वणज वापारा, वस्त हरि थारा झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म

एका रंग रंगांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म रंग रंगाए, रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म अंग लगाए, निरगुण निराकार आप हो जाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म संग निभाए, सगला संग विछड़ कदे ना जाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म सच तुरंग दुड़ाए, सूरा सरबंग वेख वखाईआ। पारब्रह्म हँ रूप वटाए, सो आपणा रूप प्रगटाईआ। पारब्रह्म सोहँ धार चलाए, धुर दीबाण बाणी आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म ब्रह्म वडियाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे वडियाई, आदि जुगादि होए सहाया। पारब्रह्म ब्रह्म करे कुड़माई, साचा नाता जोड़ जुड़ाया। पारब्रह्म ब्रह्म बख्शे सरनाई, सरनगत इक्क जणाया। पारब्रह्म पकड़े बांही, आप आपणा मेल मिलाया। पारब्रह्म ब्रह्म सिर रक्खे ठंडी छाईं, शाह सुल्तान होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म ब्रह्म एका वेख वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वेखणहारा, निरगुण आपणा खेल खिलांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म हो उज्यारा, जोती नूर डगमगांयदा। पारब्रह्म वखाए ठांडा दरबारा, दर दरवाजा आप खुल्हांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म बणाए भखारा, साची भिच्छया झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्म पारब्रह्म हरि आपणी वण्ड वण्डांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म वण्डे वण्ड, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दसाए ब्रह्मण्ड खण्ड, आप आपणी कल वरताईआ। पारब्रह्म ब्रह्म धरे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आपणा आप समाईआ। पारब्रह्म प्रभ चाढ़े चन्न, सूरज सूर्या करे रुशनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बेड़ा बन्न्ह, जुग जुग रथ चलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे धन्न, धन्न धनवन्ता इक्क अख्वाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे डंन, जूनी जून आप भवाईआ। पारब्रह्म करे वसेरा बिन छप्परी छन्न, हरि हरि घट घट बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निरवैर वड्डी वड्याईआ। पारब्रह्म करे प्रकाश, घट घट आप सुहांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म रक्खे वास, जुग जुग हुक्म चलांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे दरस स्वास, स्वास पवण धरांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म वखाए पृथ्मी आकाश, आप आपणा नैण खुल्हांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म करे निवास, वास निवासा आपणा धाम सुहांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे ग्रास, गृह गृह वेख वखांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म पूरी करे आस, आसा तृष्ना मेट मिटांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म करे बन्द खुलास, आपणी बन्दी आपे तोड़ तुड़ांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म नाता तोड़े जगत प्रभास, ब्रह्म सच महल्ल वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, नर हरि हरि नर एका खेल खिलांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे जोबन, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। पारब्रह्म मिटाए हरख सोगन, चिंता दु:ख ना कोई रखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे सच्चा जोगन, जोग जगत इक्क जणाईआ। पारब्रह्म लेखा जणाए चौदां लोकन, त्रै त्रै लोआं मुकाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करे सम्बोधन, आप आपणा नाउँ जपाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बख्शे दात बोध अगाधन, निश्अक्खर

१२३४ ०६

करे पढ़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रूप दरसाए जोध जोधन, जोद्धा सूरबीर दया कमाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वखाए एका ओटन, एका ओट सच्ची सरनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म लाए साची चोटन, ताल नगारा इक्क वजाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रूप वटाए कोटी कोटिन, कोटी कोटि आपणी सेव लगाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे भण्डारा इक्क अतोटन, अतोट अतुट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवे दात, आपणा भेस आप वटांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म करे उत्तम ज़ात, वरन गोत ना कोई रखांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म वेखे इक्क अकांत, इक्क इकल्ला वेख वखांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म बंधाए चरन नात, नाता बिधाता आप जुड़ांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म चलाए राथ, रथ रथवाही सेव कमांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म सुणाए साची गाथ, शब्द अगम्मी ढोला आपे गांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म वखाए साचा हाट, साचे तख्त सोभा पांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे आपणी लाट, लिलाट जोती जोत डगमगांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म सवाए साची खाट, घर घर सेज आप विछांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ब्रह्म पारब्रह्म पसारा, एका दर धुर दरबारा, हरि साचा आप सुहांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म नाउँ धराए, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म लक्ख चुरासी विच समाए, आप आपणी कल धराईआ। पारब्रह्म मंडल रास एका पाए, ब्रह्म गोपी काहन नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पारब्रह्म हरि वेखे थाउँ थाँईंआ। पारब्रह्म ब्रह्म वेखणहारा, जुग जुग लए अवतारया। पारब्रह्म ब्रह्म दए अधारा, गुरमुख साचा नाउँ धरा रिहा। पारब्रह्म ब्रह्म खिच ल्याए चरन दुआरा, आप आपणी बूझ बुझा रिहा। आदि जुगादी साची कारा, धुर दरबारा खेल खिला रिहा। कलिजुग आई अन्तिम वारा, पारब्रह्म ब्रह्म वेख वखा ल्या। लक्ख चुरासी विच्चों कर उज्यारा, आप आपणे रंग रंगा ल्या। गुरसिख गुरमुख आत्म ब्रह्म ब्रह्म सोहे इक्क दुआरा, पारब्रह्म प्रभ गोद गोद बहा ल्या। निहकलंक नरायण नर अवतारा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्म दाता आप अखवा रिहा।

❊ १२ अस्सू २०१७ बिक्रमी मंगल सिँघ दे घर पिण्ड सोहल ज़िला अमृतसर ❊

पारब्रह्म ब्रह्म वेखणहारा, एकँकारा खेल खिलांयदा। इक्क इकल्ला कर पसारा, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। अबिनाशी करता आपे बन्ने आपणी धारा, धार धार विच रखांयदा। अजूनी रहित कर पसारा, घट घट आपणी जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म वेखण जोग, एका रंग समाया। आदि जुगादी धुर संजोग, धुर दा मेला मेल मिलाया। देवणहारा दरस अमोघ, रूप अनूप आप प्रगटाया। लेखा जाणे चौदां

लोक, लोक परलोक होए सुहाया। नाम सुणाए सच सलोक, साचा अक्खर आप पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलाया। पारब्रह्म ब्रह्म खेल खिलाए, खेलणहारा इक्क अख्वाया। सो पुरख निरजंण वेस वटाए, हरि पुरख निरँजण बेपरवाहया। एकँकारा भेव ना राए, आदि निरँजण सच्चा शहनशाहीआ। श्री भगवान आपणा पड़दा आप उठाए, अबिनाशी करता वेख वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रचन रचाए, ब्रह्म वेता अंस उपजाईआ। आपणा रंग आप रंगाए, रूप रेख ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला वेस वटाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म एका रंग, आदि जुगादि रंगाया। सति पुरख निरँजण सूरा सरबंग, सचखण्ड दुआरे सोभा पाया। थिर घर वजाए इक्क मृदंग, नाद तराना इक्क सुणाया। साची सेजा बैठ पलँघ, निरगुण आपणा थान सुहाया। आपे मंगणहारा मंग, निउँ निउँ रिहा सीस झुकाया। सदा सुहेला होए संग, सगला संग आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा जोग वखाया। पारब्रह्म प्रभ मार्ग ला, बह बह एका तत्त समझांयदा। एका मन्दिर दए वसा, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। एका नाम धन अंदर दए टिका, साचा जंदर आप लगांयदा। जोती जोत

१२३६ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि का भेव कोई ना पांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्रतक्ख, निरगुण १२३६

०६ नूर नूर रुशनाईआ। आपणे मन्दिर आपे रक्ख, आपे वेख वखाईआ। आपे सेवा लाए सूरज चन्न रवि ससि, हुक्मी हुक्म ०६

आप भवाईआ। आपे लेखा जाणे दो जहाना नस्स नस्स, नेड़े दूर आपणी खेल खलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म खेल खिलांयदा, आदि पुरख अगम्म अपार। दीपक जोती आप जगांयदा, जोती जोत कर उज्यार। साचे मन्दिर आप टिकांयदा, थिर घर खोल्ह बन्द किवाड़। विष्न शिव सेव कमांयदा, ब्रह्म करे ख़बरदार। तिन्नां एका संग वखांयदा, इक्क इकल्ला एकँकार। सच दुआर मृदंग वजांयदा, धुन अनादि शब्द धुन्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्म देवे इक्क प्यार। ब्रह्म प्यारा हरि निरँकारा, पारब्रह्म सरनाईआ। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़ा, थिर घर साचा वेख वखाईआ। थिर घर साचे गुप्त ज़ाहरा, गहर गम्भीर रूप धराईआ। अंदर बाहर वसे न्यारा, निरगुण निरवैर भेव ना राईआ। सुन्न अगम्मी साची कारा, सुन्न समाध दरसाईआ। करे खेल अपर अपारा, लेखा लेख ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्म लेखा दए समझाईआ। कर किरपा गुण निधानन, आपणी अंस आप बणांयदा। देवणहारा धुर फ़रमानन, साचा बंस आप सुहांयदा। तख्त निवासी श्री भगवानन, मंडल रासी रास रचांयदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवानन, इक्क अकादसी आपणा रंग रंगांयदा। रंग रंगाए दो जहानन, साचे मन्दिर आप सुहांयदा। ऊँच महल्ल अटल मकानन, निरगुण

जोत इक्क जगांयदा। दीवा बाती ना कोई निशानन, कमलापाती सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल श्री भगवान। श्री भगवान पुरख समरथ, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आप उपजाए आपणी वथ्थ, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणा मार्ग आपे दए दस्स, आपणा भेव आप खुलाईआ। आपणे अंदर आपे वस, आप आपणा मन्दिर रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी खेल खलाईआ। पारब्रह्म वसे धुर दरबारा, निराकारा खेल खिलांयदा। निरवैर रूप हो उज्यारा, मूर्त अकाल डगमगांयदा। अजूनी रहित सभ तों वसे बाहरा, काल महांकाल ना कोई खांयदा। आदि जुगादि जुगां जुगन्तर आपे जाणे आपणी कारा, करता पुरख कार करांयदा। कागद कलम ना लिखणहारा लेख, अलेख आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म रूप वटांयदा। पारब्रह्म प्रभ रूप वटाया, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। निराकार निराहार आपणा प्रकाश आप वखाया, प्रकाश प्रकाश कर रुशनाईआ। आपणा दासी दास आप बण जाया, सेवक सेवा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वण्ड आप वण्डाया। वण्ड वण्डाए पारब्रह्म, ब्रह्म आपणा रंग रंगाया। आदि जुगादि ना पए जम्म, जन्म मरन विच ना आया। करे कराए साचा कम्म, करनी करता आप अख्वाया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां
१२३७ खण्डां बेड़ा देवे बन्नृ, गगन मंडल वेख वखाया। देवे प्रकाश सूरज चन्न, धरत धवल होए सहाया। एका नाउँ गाए धन्न १२३७
धन्न, घर साचे आप वसाया। पुरख अबिनाशी साची जननी ब्रह्म जणया एका जन, धन्न धन्न जणेंदी माया। तुरीआ राग सुणाया कन्न, सचखण्ड दुआरे आप अलृाया। आप वसाया बिन छप्परी छन्न, चार दीवार ना कोई बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल आप खिलाया। पारब्रह्म खेल अवल्ला, हरि साचा आप कराईआ। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, एकँकारा बेपरवाहीआ। सच सिँघासण एका मल्ला, साचा भूप सच्चा शहनशाहीआ। दर दरवेश दर दुआर खला, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। धुर दी बाणी धुर संदेश एका घल्ला, धुर फ़रमाणा करे पढ़ाईआ। पारब्रह्म हरि फड़ाए पल्ला, साचा पल्लू इक्क वखाईआ। जोती जोत आपे रला, जोती जोत करे रुशनाईआ। आपणे दीपक आपे बला, तेल बाती ना कोई रखाईआ। धाम सुहाए नेहचल धाम अटला, उच्च महल्ल दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म ब्रह्म वेख वखाईआ। पारब्रह्म बेअन्त, भेव कोई ना आंयदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, अलक्खणा अलक्ख ना लख्या जांयदा। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणी धार बंधांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म बणाए बणत आपणा खेल आप खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुलृांयदा।

१२३८ ०६

पारब्रह्म प्रभ दया कमा, निरगुण निरगुण करे कुड़माईआ। आपणा अंगीकार आप करा, अंग आपणा दए वखाईआ। आपणा संग आप निभा, आपे होए सहाईआ। आपणा रूप आप प्रगटा, आपे वेख वखाईआ। आपणा नाउँ विष्न विश्व रूप दरसा, आपणे अंदर अमृत आप चवा, आपणे विच टिकाईआ। आपणी बूंद आप टपका, आप आपणे विच रखाईआ। आपणा बीज आप बिजा, आपे लए उपजाईआ। आपे सिंच हरा करा, पत डाली आप महिकाईआ। आपे फुल फुलवाड़ी दए लगा, कवण फुल आप उपजाईआ। आपे कँवल कँवला नाउँ धरा, आपणा खेल आप खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाईआ। आपे कँवल आप उपांयदा, अमृत भर भण्डार। आपे अंदर आसण लांयदा, निरगुण निरवैर हरि निरँकार। आपे विश्व मेल मिलांयदा, आपे विष्न करे प्यार। आपे आपणी अंस उपांयदा, बंस सरबंसा खेल न्यार। आपे नूर नूर विच रखांयदा, नूर नूर होए उज्यार। आपे आपणा पर्दा लांहयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे आपणा आप करे त्यार। कँवल उपाया किरपा कर, अमृत झिरना नाभ झिराईआ। विष्नूं अंदर विष्नूं वड़, बैठा मुख छुपाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, रूप रेख ना कोई वखाईआ। ना कोई किला कोट दिसे गढ़, चार दिवार ना कोई बणाईआ। ना कोई चोटी ना कोई जड़, नेत्र नैण ना कोई वखाईआ। कँवल कँवला अंदर बैठा वड़, आपणीआं पंखड़ीआं आपे रिहा खिलाईआ। आपे जल उप्पर धर, जल्वा नूर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी उत्पत आपे आप कराईआ। आपे कँवल पसारया, निरगुण रूप निराकार। आपे आए अंदरों बाहरया, जोती जोत कर उज्यार। आपे वेखे आपणा पसारया, आपे वण्डे वण्डां वण्डणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म लए आप उभार। पारब्रह्म ब्रह्म पाया, कँवल बंक दुआर। कँवल कँवला लेखे लाया, आप आपणी किरपा धार। आपणा नूर आप दरसाया, नूर नुराना हरि करतार। धुर फ़रमाण शब्द जणाया, शब्द अगम्मी बोल जैकार। नाद तराना इक्क वखाया, आप वजाए वजावणहार। बन्दीख़ाना ना कोई वखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे ब्रह्म करे विचार। ब्रह्म उपाया आप प्रभ, पारब्रह्म दया कमाईआ। लेखा जाणे कँवल नाभ, नाभी कँवल मुख खुलाईआ। अमृत प्याआ जाम मदि, सच ख़ुमार इक्क वखाईआ। इक्क वजाया नाद अनहद, आपणी धुन धुन सुणाईआ। सच दुआर आपे सद, साची सिख्या इक्क पढ़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म लडाए लाड, जुगा जुगन्तर खेल खिलाईआ। आपा आपे विच्चों कीता अड्ड, तेरा मेरा भेव ना राईआ। सो पुरख निरँजण निशाना दित्ता गड्ड, हँ ब्रह्म वेख वखाईआ। मेरा चरन दुआरा तेरी हद्द, उप्पर रहे सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म रिहा

सुणाईआ। ब्रह्म तेरा उच्च मुनारा, पुरख अबिनाशी आप जणांयदा। तेरा नैण मेरा चरन घर बारा, दूजा दर ना कोई रखांयदा। तेरा सैण सच्चा सिक्दारा, भाई भैण मात पित आप अख्वांयदा। तेरा वणज मेरा वपारा, नाम अनमुल्ला इक्क वखांयदा। मेरा दरस तेरा दिदारा, तेरी हरस आप बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे साचा वर, साचा हुक्म आप सुणांयदा। ब्रह्मे रक्खणा चरन ध्यान, सच दुआरा इक्क समझाया। पुरख अबिनाशी होए मेहरवान, चरन चरनोदक दए मुख चुआया। अमृत झिरना झिरे महान, कपाल रेखा खोल्ह वखाया। चारे कुंट दए ज्ञान, चारे मुख मुख सलाहया। चारे बाणी मारे बाण, तीर निराला शब्द उठाया। चारे वेद करे विख्यान, चारे जुगां वण्ड वण्डाया। चारे खाणी होए प्रधान, चार वरनां वेस वटाईआ। चार यारी वखाए निशान, चार जुग बन्धन पाया। नौं दुआरे खोल्ह दुकान, नौं खण्ड पृथ्मी हिस्सा इक्क वखाया। तेरा रूप श्री भगवान, आदि अन्त वेख वखाया। तेरी जोत जगे महान, जोती जाता आप जगाया। तेरा कोटन कोटि बणे मकान, लक्ख चुरासी भाण्डा दए घड़ाया। तेरी महिमा होए जहान, लोकमात वेख वखाया। मेरा नाउँ तेरा ज्ञान, तेरा ज्ञान जगत सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म दित्ता एका वर, पारब्रह्म आप समझाया। पारब्रह्म ब्रह्म समझांयदा, एका अक्खर शब्द ज्ञान। तेरी सेवा सच वखांयदा, वड दाता हो मेहरवान। लक्ख चुरासी भाण्डा आप घड़ांयदा, त्रैगुण देवे एका दान। सच वस्त झोली पांयदा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश कर परवान। साचा नाता जोड़ जुड़ांयदा, जोड़नहारा गुण निधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त इक्क वरतांयदा। साचा नाता देवे जोड़, ब्रह्म पंज तत्त करे कुड़माईआ। पारब्रह्म चढ़या रहे अगम्मी घोड़, शब्द घोड़ा इक्क दुड़ाईआ। दो जहाना लाए साचा पौड़, धुर दा पौड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि अन्त जाए बौहड़, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। ब्रह्मा बुझाए प्यास लग्गी औड़, पारब्रह्म अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। लेखा मुकाए दौड़ दौड़, दो जहाना होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका ब्रह्म दए वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आप उपाया, आपणी महिमा आप जणांयदा। धुर संजोगी मेल मिलाया, जगत संजोग आप हंढांयदा। दरस अमोघी इक्क वखाया, दर सुहञ्जणा आप वखांयदा। साचा चोगी चोग चुगाया, अमृत आत्म रस प्यांअदा। शब्द सलोकी सलोक सुणाया, सो पुरख निरँजण एका गांयदा। हँ ब्रह्म ब्रह्म वेख वखाया, पर्दा ओहला आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ जणांयदा। सो पुरख निरँजण पारब्रह्म, ब्रह्म हँ रूप दरसाईआ। आदि जुगादि ना पए जम्म, जुगा जुगन्तर खेल खलाईआ। हरख सोग ना कोई ग़म, चिंता दु:ख जीव रहे ना राईआ। हड्ड

मास ना नाड़ी चम्म, रक्त बूंद ना मेल मिलाईआ। आसा तृष्ना ना तृखा तम, हँकार विकार ना कोई वखाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्नृ, आपे रिहा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, ब्रह्म आपणी करे पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण दया कमा, एका तत्त समझांयदा। हँ ब्रह्म प्रभ आप उपा, आपणा राह वखांयदा। जुग जुग वेस मात धरा, जगत विचोला फेरा पांयदा। चार जुग खेल खिला, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वण्ड वण्डांयदा। नौं नौं गेड़ा आप दवा, जगत झेड़ा वेख वखांयदा। आपणा खेड़ा आप वसा, आपे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्म एका शब्द जणांयदा। सो पुरख निरँजण हरि करे जणाई, ब्रह्म भुल्ल रहे ना राया। हँ रूप हरि रिहा समाई, लक्ख चुरासी जीव उपाया। जुगा जुगन्तर करे कुड़माई, आप आपणा मेल मिलाया। घर वज्जदी रहे वधाई, शब्द अनादी नाद सुणाया। चार जुग गुर पीर अवतार बणाए राही, साचा पान्धी आपणे मार्ग आप लाया। करे खेल सच्चा शहनशाही, आपणी रईयत वेख वखाया। एका हुक्म रिहा जणाई, हुक्मी हुक्म दए सुणाया। एका कौल रिहा निभाई, कीता कौल भुल्ल ना जाया। ब्रह्म ब्रह्म धवल टिकाई, पंज तत्त चोले बन्द कराया। आपणी शक्ती आपे मौल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुलृाया। ब्रह्म सुणया ब्रह्म ज्ञान, अन्तर इक्क लिव लाईआ।
१२४० चरन कँवल कँवल चरन कर ध्यान, बैठा सीस झुकाईआ। हउँ बाली बुध बाल अंञाण, तूं साहिब सच्चा पित माईआ। आपणी १२४०
०६ बख्शश दित्ता दान, मेरी रख्शस होवे सहाईआ। निषअक्खर तेरा इक्क निशान, रूप रेख ना कोई बणाईआ। तेरा सथ्थर ०६
दो जहान, वेख वखावां थाउँ थाईंआ। लक्ख चुरासी करे परवान, धुर परवाना मिल्या शहनशाहीआ। लोकमात वखाए इक्क दुकान, चौदां लोक हट्ट खुलाईआ। चार जुग धुन सुणावा एका कान, राग रागनी नाल रलाईआ। मन्दिर सुहावां तन मकान, घर घर विच जोत जगाईआ। सो पुरख निरँजण होणा आप मेहरवान, हउँ सेवक सीस झुकाईआ। हँ ब्रह्म लैणा पछाण, आत्म ब्रह्म कर कुड़माईआ। चार जुग करे खेल महान, जुग चौकड़ी आप बिताईआ। नौं नौं लेखा मुकाउणा आण, नौं नौं रहिण ना पाईआ। चौथे पद इक्क ध्यान, चौथे घर वज्जे वधाईआ। चारे जुग कर कल्यान, कीती घाल लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ब्रह्म आपणी मंग मंगाईआ। हँ ब्रह्म प्रभ अग्गे मंगे मंग, ख़ाली हथ्थ रखांयदा। सो पुरख निरँजण सूरा सरबंग, आपणा हुक्म आप जणांयदा। नौं नौं चार चौकड़ी काल जाए लँघ, काल महांकाल सेव कमांयदा। कलिजुग अन्तिम वज्जे मृदंग, निरगुण निरवैर आप वजांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आए लँघ, धरत धवल वेख वखांयदा। सोहँ रूप चार जुग चढ़या रहे रंग, रंग रंगीला आप रंगांयदा। गुर पीर

अवतार हरि का नाम रहे मंग, नाम निधाना आप वरतांयदा। आपे सुत्ता रहे सचखण्ड दुआर सच पलँघ, सच सिँघासण आप सहांयदा। नौं नौं चार कराए पन्ध, पान्धी आपणे घर मिलांयदा। ब्रह्म तेरा बणे आप सन्बंध, दूसर संग ना कोई रखांयदा। आदि सुणाया सोहँ छन्द, ब्रह्म पारब्रह्म रूप वटांयदा। अन्तिम खेल करे गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्म वेला वक्त आपणा आप जणांयदा। आदि उपाया सोहँ रूप, वड भूप दया कमाईआ। करया प्रकाश चारे कूट, दहि दिशा जोत रुशनाईआ। ब्रह्म उपजाया आपणा सूत, ताणा पेटा आप हो जाईआ। करया खेल अबिनाशी अचुत्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। थिर घर सुहाई साची रुत्त, रुत रुतड़ी आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आपणी रचन रचाईआ। आदि रचना सोहँ धार, पारब्रह्म ब्रह्म रूप वटाया। अन्तिम जाणे आपणी कार, भेव किसे ना पाया। बेअन्त बेअन्त कह गए उच्चार, जो जन लोकमात विच आया। पंज तत्त ना पाए हरि की सार, काया गठड़ी भार उठाया। निरगुण सरगुण देवे धार, गुर पीर अवतार सेवा लाया। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वजौंदा रिहा सितार, निरगुण सरगुण सारिंगा इक्क बणाया। नानक एका उच्ची कूक गया पुकार, एकँकारा भेव ना राया। कलिजुग अन्तिम आए वार, निहकलंक होए सहाया। लक्ख चुरासी पाए सार, ब्रह्म पर्दा दए उठाया। सोहँ अक्खर रसना गया उच्चार, सो अकाल वण्ड वण्डाया। गोबिन्द जोद्धा सूरबीर बोले बलकार, एका मंगन मंग मंगाया। कलि कल्की लए अवतार, कालख टिका दए गंवाया। ब्रह्म पारब्रह्म पाए सार, सोहँ आपणा खेल खलाया। सो पुरख जाणे जणाए अगम्मी धार, सोहँ सो अगला पिछला, बेड़ा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो उपज्या पारब्रह्म, हँ बणाया इक्क ब्रह्म, सो आपणे विच समाया। आदि अन्त हरि सो सो, हँ मधि विच समाईआ। नौं नौं चार बीज बो बो, लक्ख चुरासी फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। धुर फ़रमाणा शब्द ढोआ ढो ढो, गुर पीर अवतारा रिहा सुणाईआ। साधां सन्तां अमृत आत्म चो चो, निझर झिरना रिहा झिराईआ। भगतां नाता तोड़े दोअँ दो दो, एका रूप रूप दरसाईआ। गुरमुखां तीजे लोचण करे लो, अन्ध अन्धेर आप मिटाईआ। गुरमुखां चुकाए जगत मोह, माया ममता नेड़ ना आईआ। कलिजुग अन्तिम जिस जन गाया रसना सोहँ सो, पारब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म विच समाईआ। हरि का भेव ना जाणे को, वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी रही जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि नरायण एका एक अख्वाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति असति वेखे थाउँ थाँईआ।

१२४१ ०६

✲ १२ अस्सू २०१७ बिक्रमी सुरजन सिँघ दे घर, पिण्ड भुच्चर ज़िला अमृतसर ✲

सो पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। हरि पुरख निरँजण वसे सच मकाना, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। एकँकारा रूप महाना, निराकारा डगमगांयदा। आदि निरँजण जोत महाना, नूरो नूर नूर उपांयदा। अबिनाशी करता वाली दो जहाना, थिर घर साचे सोभा पांयदा। श्री भगवान झुलाए सच निशाना, दरगाह साची आप उठांयदा। पारब्रह्म बणे राज राजाना, साचे तख्त डेरा लांयदा। निराकार आप जणाए आपणा धुर फ़ुरमाणा, शब्द अनादी नाद वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपणी खेल खिलावणहारा, एका रंग समांयदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड खोल्ह दुआरा, दर घर साचे आसण लांयदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, साचा ताज सीस टिकांयदा। दर दरवेश बण भिखारा, एका संग निभांयदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़ुरमाणा आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा वेस आप धरांयदा। सो पुरख निरँजण वेस अवल्ला, एका एक करांयदा। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, दर घर साचे सोभा पांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह वसे धाम उच्च अटला, नेहचल धाम आप सुहांयदा। आपणी जोती आपे रला, जोती जोत डगमगांयदा। आपणा संदेश आपे घल्ला, शब्द शब्दी नाउँ उपजांयदा। आपणा फड़े आपे पल्ला, दरगाहि साची वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरजंण वेस वटांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल न्यारा, निरगुण निरवैर आप कराईआ। दर घर साचे खोल्हे बन्द किवाड़ा, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। निरगुण दीआ बाती कर उज्यारा, एका जोत करे रुशनाईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शाहो भूप आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। एकँकारा खेल महाना, भेव अभेद छुपांयदा। थिर घर वसे सच मकाना, दर घर साचे सोभा पांयदा। शब्द अनादी गाए तराना, तुरीआ राग आप अल्हांयदा। आपे जाणे आपणा भाणा, सद भाणे विच समांयदा। दो जहानी साचा राणा, एका तख्त हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। आदि निरँजण जोत उजाला, नुरो नूर डगमगाईआ। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाला, दर घर साचे सोभा पाईआ। निरगुण निरवैर चले अवल्लड़ी चाला, अजूनी रहित भेव ना राईआ। प्रगट होए पुरख अकाला, अकल कला आप अख्वाईआ। शब्द उपजाए इक्क दलाला, दो जहाना सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकार, निरगुण निरगुण कर पसार, सच महल्ले आप वसाईआ। श्री भगवान सोभावन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आप बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नणहार

बेपरवाहीआ। लेखा जाणे आदि अन्त, अन्त आदि इक्क अख्वाईआ। रूप वटाए नारी कन्त, कन्त कन्तूल सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा रिहा सुहाईआ। दर घर सुहाए श्री भगवान, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। इक्क उठाए सच निशान, दो जहाना आप झुलांयदा। आदि जुगादी नौजवान, जुग जुग वेस वटांयदा। शब्द सुणाए धुर फ़रमाण, नादी नाद वजांयदा। दर घर साचे हो प्रधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचा इक्क वसांयदा। दर घर वसाए पारब्रह्म, दूसर अवर ना कोई जणाईआ। करे खेल पुरख अगम्म, अलक्ख अगोचर बेपरवाहीआ। एका वस्त रक्खे नाम धन, सति दुआरे आप टिकाईआ। ना कोई जननी जणे जन, जन जणेदी दिसे ना कोई माईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्नृ आदि पुरख आप चलाईआ। सो पुरख निरँजण कहे धन्न धन्न, हरि पुरख निरँजण सिफ्त सलाहीआ। एकँकारा जाए मन्न, आदि निरँजण सगला संग वखाईआ। श्री भगवान बेड़ा बन्नृ, अबिनाशी करता लए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क वसाईआ। दर घर साचा हरि वसांयदा, सचखण्ड सच्चा दुआर। सति पुरख निरँजण आसण लांयदा, हरि पुरख निरँजण किरपा धार। एकँकारा वेख वखांयदा, आदि निरँजण हो उज्यार। श्री भगवान खेल खिलांयदा, अबिनाशी करता मीत मुरार। पारब्रह्म प्रभ सीस झुकांयदा, नौ नौं करे निमस्कार। एका वस्त मंग मंगांयदा, बैठ सच सच्चे दरबार। आपणी इच्छया आपे पूर करांयदा, आपे दाता देवणहार। आपणी वण्ड आप वण्डांयदा, वण्डे वण्ड आप निराकार। साचा सुत सेवा लांयदा, शब्द शब्दी कर वरतार। अबिनासी करता रुत्त सुहांयदा, ना कोई थित ना कोई वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे खोलृ किवाड़। सच किवाड़ा साचे मन्दिर, सो पुरख निरँजण आप खुलृाईआ। निरगुण वेखे पेखे आपणा अंदर, निरगुण साची सेज हंढाईआ। निरगुण लग्गा तोड़े जंदर, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआर सुहाया, कर किरपा गुण निधान। थिर घर मन्दिर वेख वखाया, पुरख अबिनाशी नौजवान। सुन्न अगम्मी डेरा ढाया, प्रगट हो वाली दो जहान। स्वच्छ सरूप रूप दरसाया, महिमा अनूप श्री भगवान। चारे कूट दहि दिशा वेख वखाया, ना कोई ज़िमी ना अस्मान। सूरज चन्न ना कोई चढ़ाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वेखे सच मकान। सच मकान सुहाया, पुरख अबिनाशी किरपा धार। आपणा मन्दिर आप उपाया, अंदर वड़ सच्ची सरकार। आपणा खेड़ा आप वसाया, आपे होए वेखणहार। आपणा बेड़ा आप चलाया, आपे बणे सेवादार। आपणा संग आप निभाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आपणी इच्छया करे विचार। हरि आपणा आप प्रगटांयदा, निरगुण जोत पुरख अकाल। साचा मन्दिर आप वसांयदा, सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़। अंदर निरगुण जोत जगांयदा, दीपक दीआ आपे बाल। सच सिँघासण सोभा पांयदा, शाहो भूप राज राजान। पुरख अबिनाशी वेस वटांयदा, वेस वटाए दीन दयाल। आपणा मार्ग आपे लांयदा, लेखा जाणे शाह कंगाल। आपणा घाड़न आप घड़ांयदा, आपे बणे हरि दलाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चले चलाए अवल्लड़ी चाल। चले चाल इक्क निराली, हरि का भेव कोई ना पांयदा। नूर प्रकाश जोत अकाली, अकल कल आपणी खेल खिलांयदा। आदि पुरख बणे साचा माली, आपणा बूटा आप लगांयदा। निरगुण रहे हथ्थां ख़ाली, कोई वस्त ना हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वसाए साचा घर, दर घर साचा आप सुहांयदा। साची वस्त नाम अनमोल, आपणे घर उपजाईआ। सति सति तोले तोल, आपणा कंडा इक्क उठाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, ना डोले कोई डुलाईआ। आपणे नाल आपणा करे कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। आपणे अंदर आपे मौल, नारी कन्त आप अख्वाईआ। आपणे अंदर आपे बोल, नाउँ निरँकारा आप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। करया खेल बेपरवाह, नाउँ निरँकारा आप प्रगटांयदा। निरगुण बणया सच मलाह, दरगाहि साची साचा धाम सुहांयदा। पारब्रह्म प्रभ आप प्रगटा, धार धार विच जगांयदा। जोती जोत डगमगा, नूरो नूर नूर अख्वांयदा। शब्द अनादी नाद वजा, आपणी इच्छया आप वखांयदा। आपणा सुत आप उपजा, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। सुत दुलारा बेपरवाह, साचे धाम आप सुहांयदा। धुर फ़रमाणा दए जणा, एका हुक्म आप वरतांयदा। निरगुण निराकार निरवैर आप अख्वा, आपणा वेस आप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए साचा दर, सचखण्ड दुआरा इक्क वसांयदा। सचखण्ड दुआर वसावणहारा, एका घर सुहाया। साचे मन्दिर पावे सारा, हरि मन्दिर खेल खिलाया। उच्ची कूक लाए नाअरा, आप आपणा नाउँ जपाया। जागरत जोत करे उज्यारा, जोती नूरा आप जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाया। हरि पुरख निरँजण भेव खुल्हांयदा, कर किरपा गुण निधान। सो पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा, हरि पुरख निरँजण होए आप मेहरवान। एकँकारा कल वरतांयदा, आदि निरँजण देवे दान। अबिनाशी करता संग निभांयदा, श्री भगवान सुणाए धुर फ़रमाण। पारब्रह्म ब्रह्म एका रंग रंगांयदा, विश्व रूप करे परवान। साची हरि हरि जोत जगांयदा, कँवला कँवला देवे दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आप अख्वांयदा। आदि पुरख हरि अबिनाशा, वड वडा वड वड्याईआ। अकल कला कल खेले तमाशा,

बेअन्त बेपरवाहीआ। आपे मंडल पावे रासा, आप आपणी रचन रचाईआ। आपणा बख्शे आप भरवासा, आपणी ओट आप तकाईआ। आपणे दरस रहे प्यासा, आपणी तृखा आप बुझाईआ। आपणी आपे पूरी करे आसा, निरासा आस विच रखाईआ। आपणी जोत कर प्रकाशा, जोती जोत लए जगाईआ। ब्रह्मा विष्न कराए दासी दासा, सेवक साची सेव कमाईआ। एका शब्द सर्ब गुणतासा, हरि वण्डन वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू हरि मन्दिर बैठा सोभा पाईआ। हरि आपणा भेव खुलांयदा, निरगुण रूप निराकार। निरगुण निरगुण आप उपजांयदा, निरगुण नाद शब्द धुन्कार। निरगुण विश्व खेल खिलांयदा, निरगुण ब्रह्म करे पसार। निरगुण शंकर मेल मिलांयदा, निरगुण जोत होए उज्यार। निरगुण धूंआँधार समांयदा, निरगुण सभ तों वसे बाहर। निरगुण आदि पुरख अख्वांयदा, निरगुण अन्तिम जाणे आपणी कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। अगम्म अपारा खेल खिलांयदा, निरगुण रूप श्री भगवान। विष्नूं ब्रह्मा शिव उपजांयदा, देवणहारा साचा दान। नाम निधाना झोली पांयदा, शब्द निशाना धुर फ़रमाण। एका आपणा रंग रंगांयदा, रंग रंगीला नौजवान। सगला संग आप वखांयदा, लेखा जाणे दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा दर आप सुहांयदा। दर सुहञ्जणा हरि सुहाए, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। एका शब्द सुत उपजाए, वड वडा सन्त सलाहीआ। समरथ पुरख सिर हथ्थ रखाए, आदि जुगादि मरे ना जाईआ। निरगुण निरवैर रथ चलाए, रथ रथवाही दिस ना आईआ। महिमा अकथ सुणाए, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर परवान, एका हुक्म चलाया। एका हुक्म धुर फ़रमाण, शाहो भूप इक्क मनाया। एका शब्द नाम बिबान, लोआं पुरीआं आप उडाया। एका बख्शे पीण खाण, अमृत रस इक्क रखाया। एका बख्शे चरन ध्यान, बिन हरि अवर ना कोई सुहाया। एका देवे जीआ दान, त्रैगुण माया झोली पाया। एका सखीआं साचा काहन, एका मंडल रास रचाया। एका सुत्ता बीआबान, एका दिस किसे ना आया। एका रूप श्री भगवान, एका ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाया। एका देवे पद निरबान, एका महल्ला दए वसाया। एका खेले खेल गुण निधान, आपणी खेल आप रचाया। एका वसे सच मकान, सचखण्ड दुआरे सोभा पाया। इक्क उठाए सच निशान, दरगाहि साची आप झुलाया। एका देवे शब्द ज्ञान, ब्रह्मा विष्न शिव आप पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता आपणी रचना आप रचाया। एका शब्द हरि जणाया, लिखण पढ़न विच ना आईआ। निरगुण आपणा ढोला आपे गाया, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। निरगुण आपणा चोला आपे वेख वखाया,

पंज तत्त ना कोई कुड़माईआ। निरगुण आपणा सोहला आपे गाया, राग रागनी ना कोई वखाईआ। निरगुण आपणा पर्दा ओहला आप चुकाया, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। निरगुण ब्रह्मा विष्न शिव दरस दिखाया, जोती जोत कर रुशनाईआ। निरगुण तिन्नां हरस मिटाया, एका माई खुशी वखाईआ। निरगुण तोला बणके आया, साचा कंडा हथ्थ चमकाईआ। निरगुण त्रैगुण माया वण्ड वण्डाया, आपणी इच्छया भिच्छया झोली रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, आपणा वेखे खेल तमाशा, दूसर संग ना कोई रखाईआ। दूसर ना कोई दीसे संग, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। पारब्रह्म सूरा सरबंग, सति पुरख निरँजण आपणा नाउँ धरांयदा। सो पुरख निरँजण वजाए मृदंग, सचखण्ड दुआरे आप सुणांयदा। हरि पुरख निरँजण आपे जाणे आपणा परमानंद, परम पुरख भेव ना आंयदा। एकँकारा आदि जुगादि होए बख्शंद, बख्शणहारा दिस ना आंयदा। श्री भगवान विष्न ब्रह्मे शिव तेरा आवण जावण जाणे पन्ध, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। पारब्रह्म इक्क सुणाए सुहागी छन्द, आपणा नाउँ आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तिन्नां देवे एका वर, वर दाता आप हो जांयदा। एका शब्द कर पढ़ाई, एका अक्खर दए बुझाया। एका शब्द कर कुड़माई, एका नाता दए जुड़ाया। एका पिता एका माई, एका पूत सपूता गोद बहाया। एका

१२४६ देवे दाना सभनीं थाँईं, देवणहारा भुल्ल ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मे शिव देवे १२४६

०९ वर, एका हुक्म सुणाया। हुक्म सुणाया धुर फ़रमाणा, भुल्ल रहे ना राईआ। सति पुरख निरँजण होया हैराना, दर घर ०९

साचे खुशी मनाईआ। तिन्ने चेले कर प्रधाना, त्रैगुण माया बन्धन पाईआ। आपे बणे राज राजाना, शाह सुल्ताना सीस ताज टिकाईआ। पंचम मुख आप वखाना, पंचम तत्त लए प्रगटाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश नाउँ रखाना, खेले खेल बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी घड़ मकाना, मेहरबाना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, अभुल्ल अभुल्ल आप अख्वाईआ। वर दीआ भगवान, भेव किसे ना आया। विष्नूं मेला दो जहान, विश्व धार वखाया। ब्रह्म पारब्रह्म करे प्रधान, घट घट अंदर जोत जगाया। आदि ब्रह्म प्रभ दए ज्ञान, निश्अक्खर इक्क पढ़ाया। बोध अगाधा धुर फ़रमाण, धुन अनादी नाद वजाया। चारे वेद कर प्रधान, चारे चार वण्ड वण्डाया। चारे जुग करन कल्यान, चारे कूटां वेख वखाया। चारे वरन देवे इक्क ज्ञान, साची सरना इक्क सरनाया। चारे बाणी वखाए इक्क निशान, इक्क दुआरा दए सुहाया। करे खेल श्री भगवान, हरि का भेव किसे ना राया। आदि पुरख हो मेहरवान, ब्रह्मा विद्या इक्क पढ़ाया। चौदां विद्या देवे दान, जगत भिच्छया रिहा भराया। चार जुग करे कल्यान, नौं नौं चार गेड़ रखाया।

जुग जुग लए मात अवतार, निरगुण सरगुण रूप वटाया। गुर पीर दए सहार, भगत भगवन्त वेख वखाया। साचे सन्त लए उभार, सति सतिवादी मेल मिलाया। गुरमुख नेत्र दए उग्घाड़, लोचण नैण आप खुल्हाया। गुरमुख बणाए साचे लाड़, एका पल्लू हथ्थ फड़ाया। जुगां जुगन्तर करे साची कार, जुग करता वेस वटाया। आदि ब्रह्मा लए उभार, आदि विष्नूं मेल मिलाया। आदि शंकर करे सँघार, साची सेव सेव कमाया। तिन्नां विचोला हरि निरँकार, दिस किसे ना आया। साचा ढोला गाए अगम्म अपार, जुग जुग आपणा नाउँ अलाया। गुर पीर अवतार रहे पुकार, रसना जिह्वा हरि हरि गाया। आपे वसे सभ तों बाहर, आपे घट घट जोत जगाया। आदि जुगादी साची कार, जुग करता आप कराया। निरगुण सरगुण पावे सार, शब्द विचोला इक्क धराया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग उतरे पार, विष्नूं तेरा मेला लए मिलाया। ब्रह्मे तेरा कर्ज़ा दए उतार, लक्ख चुरासी जो चढ़ाया। शंकर तेरा पन्ध दए नवार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। धरनी करे हौला भार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न शिव दित्ता एका वर, ब्रह्मे साचा संग निभाया। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म साथ, पारब्रह्म आप रखाईआ। जुग जुग जणाए आपणी गाथ, अक्खर अक्खर करे पढ़ाईआ। लोकमात चलाए एका राथ, आप आपणा वेस वटाईआ। करे खेल त्रिलोकी नाथ, चौदां लोकां खोज खुजाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां सुणाए आपणी गाथ, एका वक्खर नाम पढ़ाईआ। लक्ख चुरासी खोल्हे हाट, एका मन्दिर वेख वखाईआ। लेखा जाणे तीर्थ ताट, सर सरोवर बेपरवाहीआ। जुग जुग जाणे आपणी वाट, वड वड्डा पान्धी राहीआ। घर घर जोत जगाए ललाट, मस्तक नूर नूर रुशनाईआ। लेखा जाणे आन बाट, मात गर्भ होए सहाईआ। दस दस मास लए राख, अग्नी कुण्ड आप तपाईआ। आपे करे सदा रहिरास, वड दाता सहिज सुखदाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म वसे तेरे पास, जगत विछोड़ा दए मुकाईआ। वेले अन्त ना करे निरास, आपणे बेड़े लए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मे शिव दित्ता एका वर, एका वस्त दए वखाईआ। एका वस्त हरि अमोलक, आप आपणे हथ्थ रखांयदा। एका रक्खे साची गोलक, नाम कुंजी एका लांयदा। आदि जुगादि ना सके कोई बोलत, अनबोलत आपणा हुक्म सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका दात वड करामात, साची झोली पांयदा। वड करामात हरि का नाउँ, विष्न ब्रह्मे शिव समझाया। होए सहाई सभनीं थाउँ, ना मरे ना जाया। आदि जुगादि करे न्याउँ, जुग जुग वण्ड वण्डाया। भगत भगवन्त पकड़े बांहों, सन्त साजण लए तराया। गुरसिख बणाए हँस काउँ, माणक मोती चोग चुगाया। गुरमुखां बणे पिता माउँ, बाल अंञाणे गोद बहाया। पंज तत्त नगर खेड़ा वेखे ग्राउँ, ब्रह्म तेरा घर सुहाया। सदा सुहेला रक्खे छाउँ,

सिर आपणा हथ्थ टिकाया। लक्ख चुरासी नौं खण्ड पृथ्मी जुग जुग वेखे उडदे काउँ, मुख विष्टा जूठ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं देवे एका वर, ब्रह्मा मेला साचा घर, शंकर वेला ल्ए सुहाया। हरि वेला सदा सुहावणा, खेले खेल अपार। आपणा भेव आप खुल्हावणा, खुल्हावणहार एकँकार। त्रै त्रै तेरी धार चलावणा, त्रैगुण माया दए आधार। पंज तत्त साचा गढ़ सुहावणा, गृह मन्दिर कर त्यार। मन मति बुध विच टिकावणा, कर खेल अपर अपार। काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलावणा, आसा तृष्ना भर भण्डार। जूठ झूठ मेल मिलावणा, माया ममता नाल रलाए नार विभचार। लक्ख चुरासी खेल खिलावणा, मर जम्मे विच संसार। राए धर्म तख्त बहावणा, चित्रगुप्त कर प्यार। लाड़ी मौत रंग रंगावणा, जुगा जुगन्तर पावे सार। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग होली होला आप खलावणा, निरगुण सरगुण लै अवतार। कलिजुग अन्तिम नौं नौं चार पन्ध मुकावणा, निहकलंक हो उज्यार। विष्नूं तेरा रिज़क आपणे हथ्थ रखावणा, आपे बणे हरि वरतार। ब्रह्मे तेरा भाण्डा लक्ख चुरासी ख़ाली आप करावणा, आपे घड़े आपे होए भन्नणहार। शंकर तेरी त्रसूल हथ्थ सुटावणा, पुरख अबिनाशी आपणी मारे आपे मार। तिन्नां आपणी गोद बहावणा, लेख चुकाए अगम्म अपार। हरख सोग ना कोए वखावणा, नेत्र रोवे ना ज़ारो ज़ार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि
१२४८ आपे जाणे आपणी कार। ब्रह्मा विष्न शिव करे चरन ध्यान, दोए दोए बैठे सीस झुकाईआ। पुरख अकाल होणा मेहरवान, १२४८
०६ दर भिखारी मंगण आईआ। एका देणा साचा दान, दीन दुनी ना कोए वड्याईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग सेवा करे ०६
महान, सेवक सेवा बण आईआ। आदि अन्त रहिणा निगहबान, मध तेरा वेस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे लैणा लाईआ। विष्नूं कुरलाए नेत्र नैण नीर वहा, दोए जोड़ करे निमस्कारया। ब्रह्मा मंगे इक्क सरना, पारब्रह्म सच्ची सरकारया। शंकर दिवस रैण रिहा ध्या, आठ पहर इक्क लिव तारया। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग वेला ल्या मुका, वेला अन्तिम नेड़े आ रिहा। नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां ब्रह्मण्डां खण्डां ना दीसे कोए सहा, सिर हथ्थ ना कोए टिका रिहा। भाणा वरते आपणा बेपरवाह, गुर पीर अवतार भाणे विच रखा रिहा। अगे करे ना कोए नांह, सरगुण निरगुण अग्गे सीस झुका रिहा। सृष्ट सबाई पिता माँ, पारब्रह्म प्रभ इक्क अख्वा रिहा। कलिजुग अन्तिम करे सच न्याँ, लक्ख चुरासी जीव जंत कर्म कुकर्मा वेख वखा रिहा। त्रैगुण माया तेरा करे अन्त, अन्त आपणे विच समा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे साचा वर, नर नरायण एका हुक्म सुणा ल्या। एका हुक्म धुर फ़रमाणा, धुर दीबाण बाण लगाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट हो निहकलंक बली बलवाना, जोद्धा सूरबीर अख्वाईआ। शब्द चिल्ला

तीर कमाना, शस्त्र धारी, सच्चा शहनशाहीआ। एका मर्द मर्द मरदाना, मात पित ना कोई जाईआ। लक्ख चुरासी बन्ने गाना, एका ब्रह्म करे कुड़माईआ। घट घट अंदर मारे तीर निशाना, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। पावे सार दो जहानां, चौदां लोक चौदां तबक आपणे चरनां हेठ दबाईआ। गुरमुखां देवे धुर फ़रमाणा, सोए मात लए उठाईआ। एका बख्शे चरन ध्याना, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। तख्तों लाहे राजा राणा, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। मन्नणा पए सभ नूं भाणा, कलिजुग मेटे झूठी शाहीआ। गुरसिख वेखे माण निमाणा, निमाण निमाणयां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका जोत करे रुशनाईआ। निहकलंक निरगुण जोत, रूप रेख ना कोए वखांयदा। ना कोई वरन ना कोई गोत, बरन वण्ड ना कोई वण्डांयदा। ना कोई किला ना कोई कोट, मन्दिर मस्जिद गुरदुआर मठ ना डेरा लांयदा। ना कोई वासना ना कोई खोट, हँकार विकार ना कोए जणांयदा। नाम भण्डार रक्खे अतोट, गुरमुखां आप वरतांयदा। पंज तत्त नगारे लाए चोट, घर अनहद ताल सुणांयदा। पुरख अकाल वखाए एका ओट, दूजी सरन ना कोई तकांयदा। कलिजुग जीव आहलनिउँ डिग्गे बोट, फड़ फेर ना कोए टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणा बन्धन आपे पांयदा। आपणा बन्धन आपे पाए, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। दीन दयाल दयानिध ठाकर दया कमाए, दीना अनाथां होए सहाईआ। कलिजुग डूंघा सागर वेख वखाए, आपणा चप्पू विच रखाईआ। जन भगतां बेड़ा लए तराए, तारनहार आप हो जाईआ। जुग जुग विछड़े लए मिलाए, पूर्ब कर्मां लेखा आप मुकाईआ। भाण्डा भरम भउ दए भनाए, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जम का भय रहे ना राए, वेले अन्त ना दए सज़ाईआ। हरिजन हरि हरि मेल मिलाए, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। पारब्रह्म प्रभ निहकलंक, निरगुण आपणा रूप वटांयदा। शब्द वजाए साचा डंक, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। आप उठाए राउ रंक, शाह सुल्ताना हुक्म जणांयदा। प्रगट होया वासी पुरी घनक, घनक पुर वासी आपणी खेल खिलांयदा। गुरमुख उभारे जिउँ जन जनक, जन जननी लेखे लांयदा। शब्द अगम्मी लाए तनक, तार सितार आप वजांयदा। गुरसिख सुहाए तेरा बंक, सूरज चन्न सीस निवांयदा। एथे उथे बणाए बणत, हरि कन्त मेल मिलांयदा। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, साची संगत संग रलांयदा। नाता तोड़े भुक्ख नंगत, भुक्ख्यां नग्गयां आपणी गोद बहांयदा। जुग जुग जन भगत दुआरे बणया रहे मंगत, नित नवित वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणी खेल खिलांयदा। नर हरि खेल खलंदड़ा, एका

एकँकार। कलिजुग अन्तिम वेस वटंदड़ा, कलि कल्की लए अवतार। सम्बल नगरी धाम सुहंदड़ा, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर मुनार। घर घर विच जोत जगंदड़ा, घर घर मेला नारी कन्त भतार। घर साची सेज सुहंदड़ा, घर सुत्ता पैर पसार। घर शब्द नाद गीत सुणंदड़ा, घर गाए आपणी वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दूसर अवर ना कोए सुनार। दूसर अवर ना कोई दीसे, लोकमात वेख वखाया। करे खेल जगत जगदीसे, जागरत जोत जगत रुशनाया। शाह सुल्ताना करे ख़ाली ख़ीसे, कौडी कौडी हथ्थ विकाया। लहिणा देणा चुकाए मूसा ईसे, संग मुहम्मद चार यारी वेख वखाया। नौं खण्ड पृथ्मी करे प्रकाश बीस इकीसे, बीस बीसा राह तकाया। एका छत्र झुलाए हरि हरि सीसे, दूसर सीस ना कोई टिकाया। चार वरन पढ़े इक्क हदीसे, पुरख अबिनाशी लए पढ़ाया। लेखा जाणे राग छतीसे, बहत्तर नाड़ी ताड़ा आप वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेले खेल वाली दो जहान जीवां जंतां वेख वखाया।

१२५०

✻ १३ अस्सू २०१७ बिक्रमी मोता सिँघ दे गृह पिण्ड कल्सीआं ✻

०६

पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, चेतन्न आपणी खेल खिलांयदा। इक्क उपजाए आपणा सुत, शब्द दुलारा नाउँ धरांयदा। जुग जुग लोकमात वेखे रुत्त, धरत धवल डेरा लांयदा। निरगुण सरगुण कर उत्पत, सरगुण निरगुण विच समांयदा। लेखा जाणे आपणी मति, ब्रह्म मति इक्क वखांयदा। चरन कँवल साचा नत, नाता बिधाता आप जुड़ांयदा। अमृत आत्म एका घत्त, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। नाम बीजे साचे वत, फुल फलवाड़ी आप महिकांयदा। आदि अन्त आपे लए कट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वस्त आपणे हथ्थ रखांयदा। अबिनाशी अचुत सर्ब गुण ठाकर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। करे खेल करता करीम कादर, कुदरत आपणी वेख वखाईआ। साचे सुत देवे आदर, जुग जुग होए सहाईआ। सच दोशाला एका चादर, नाम धारा इक्क वखाईआ। दर कराए वणज सौदागर, साची वस्त हट्ट वकाईआ। भाग लगाए पंज तत्त काया गागर, गृह मन्दिर होए सहाईआ। आदि जुगादि देवे आदर, चरन कँवल बख्शे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत दए वड्याईआ। साचा सुत अनमुल्लड़ा लाल, पुरख अबिनाशी इक्क उपाया। आदि जुगादि चले नाल, जुग जुग सेव कमाया। आप वसाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, साचा मन्दिर आप सुहाया। अमृत आत्म रस अंमिउँ रसीआ एका दए खवाल, तृप्त तृप्तास तृखा रहे ना राया। निरगुण निरवैर घाले घाल, सरगुण

घाली घाल लेखे पाया। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, लोकमात राह चलाया। कलिजुग अन्तिम बण दलाल, शब्द विचोला फेरी पाया। साचा ढोला गाए दो जहान, जगत जहान वेख वखाया। एका सुत सूरबीर बलवान, साहिबज़ादा आपणी ज़द विच रखाया। जुगा जुगन्तर बणया रहे काहन, साचे तख़्त सोभा पाया। लक्ख चुरासी देवे दान, मंगण घर ना किसे जाया। एका ओट श्री भगवान, भगवन हर घट होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सुत एका पूत, आप वसाए चारे कूट, ख़ाली दर ना कोए रखाया। साचा सुत जुग चार मालक, दीन दुनी वेख वखाईआ। लेखा जाणे ख़लक ख़ालक, बेपरवाह बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण बण बण सालस, लहिणा देणा दए मुकाईआ। दिवस रैण ना निन्दरा आलस, गफ्लत होर ना कोए वखाईआ। लेखा चुकाए पुन्न अमावस, वदी सुदी सेव लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सुत सर्ब सुखदाईआ। सुत दुलारा हरि निरँकार, एका एक रखांयदा। जुगा जुगन्तर करे प्यार, लोकमात मेल मिलांयदा। दाता दानी हरि दातार, वस्त अमोलक झोली पांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर देंदा आया आप भण्डार, कलिजुग अन्त आप वरतांयदा। नाता तोड़ सर्ब संसार, जगत कुटम्ब ना कोए सुहांयदा। निरगुण जोत कर उज्यार, साचे मन्दिर सोभा पांयदा। अनादी सुत करे प्यार, सृष्ट सबाई सिख्या इक्क समझांयदा। जोती जोत

१२५१ सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आप आपणी दया कमांयदा। एका सुत एका मात पित, पीत १२५१

०६ पीतम्बर इक्क सुहाईआ। एका पुरख अबिनाशी करे हित, एका वेखे थाउँ थाँईआ। एका जोत प्रगटाए नित नवित, रूप ०६

अनूप आप दरसाईआ। एका लेखा चुकाए वार थित, थित वार ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल साचा हरि, लक्ख चुरासी करे पढ़ाईआ। लक्ख चुरासी रिहा पढ़ा, निरगुण शहनशाह पातशाह। सुत दुलारा इक्क उपजा, शब्द नाद रिहा वजा। एका अक्खर जगत धरा, जीव जंत लए समझा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपे होए मेहरबां। मेहरवान हरि निरँकारा, कलिजुग अन्तिम खेल खिलांयदा। गुरसिखां देवे सच भण्डारा, शब्द दुलारा आप वरतांयदा । सिख़ी सिख्या कर विचारा, सिख सतिगुर रूप वटांयदा। सतिगुर सिख सोहे इक्क दुआरा, दूसर संग ना कोए रखांयदा। जगत वासना तज गुर चरन करे निमस्कारा, सो गुरसिख सतिगुर पूरे भांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेले आपणे दर, दूजे दर ना फेरा पांयदा। सुत शब्द कर प्यार, लोकमात खेल खलाईआ। गुरसिख साचे लए उभार, आप आपणे दर बहाईआ। मेल मिलाए साचे यार, जगत सथर रहिण ना पाईआ। दिवस रैण पावे सार, घर सज्जण साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, गुरमुख साचे लए वड्याईआ। गुरसिखां देवे दात, जन्म कर्म दुःख दलिद्र भउ गवांयदा। मेटे रैण अन्धेरी रात, सतिगुर साचा चन्द चढ़ांयदा। दर दर घर घर पुच्छे वात, जो जन मन का माण गवांयदा। गुरमुखां वसे सदा पास, दूसर बंस ना कोए बणांयदा। निरगुण ना कोई भोग ना बिलास, जगत सेज ना कोए हंढांयदा। काम कामनी खेल तमाश, पंज तत्त काया रंग रंगांयदा। आपणी कर पहले बन्द ख़लास, गुरसिखां बन्द ख़लासी फेर करांयदा। जो जन चरन कँवल रक्खे धरवास, धुर दी धार आप समझांयदा। सर्ब वस्त हरि साचे पास, अतोट अतुट भण्डार आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे साचा हरि, अवर भेव कोए ना पांयदा। अवर भेव ना जाणे कोए, हरि हरि महिमा कहिण ना जाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां सुणे साची सोए, सोया कोए रहिण ना पाईआ। ग़रीब निमाणयां आपे देवे साचे ढोए, ढोए ढोर जिउँ रविदास चुमारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लाए लड़, दूसर अवर ना कोए सहारया। ना कोई घर ना कोई घाट, ना कोई मन्दिर चार दीवार बणांयदा। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, जल सरोवर ना कोए भरांयदा। ना कोई बस्त्र ना कोई खाट, ना कोई भूशन तन सुहांयदा। ना कोई मस्तक ना कोई ललाट, जोती जोत ना कोए जगांयदा। ना कोई पन्ध ना कोई वाट, ना कोई कदम उठांयदा।
१२५२ ना कोई शब्द ना कोई गाथ, ना कोई राग नाद सुणांयदा। ना कोई सेवा ना कोई हाथ, पंज तत्त ना कोए उपांयदा। १२५२
०६ निरगुण रूप पुरख समरथ, निहकलंक खेल खिलांयदा। पुत्तर धीआं ना जगत नत, नाता बिधाता इक्क रखांयदा। गुरमुख ०६
गुरसिख आपणे अंगण आपे रक्ख, आप आपणी गोद सुहांयदा। नव नौं चार भाण्डे करे सख, दर दर घर घर हरि हरि वेख वखांयदा। साचा मार्ग एका दस्स, गुरसिख प्रभ मिलण का चाउ, दिवस रैण राह तकांयदा। गुरमुख सज्जण सतिगुर पूरा पकड़े बांहों, जम फ़ास कट्ट जगत हरस मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी खेल महान, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा।

❊ १३ अस्सू २०१७ बिक्रमी गंडा सिँघ दे घर पिण्ड दराजके ज़िला अमृतसर ❊

सो पुरख निरँजण खेल खिलांयदा, जुगा जुगन्तर साची कार। निरगुण निरवैर आपणा वेस वटांयदा, जूनी रहित अगम्म अपार। निरभउ आपणा नाउँ धरांयदा, भय जणाए सर्ब संसार। मूर्त अकाल आप अख्वांयदा, अनुभव प्रकाश कर उज्यार। साचे तख़्त सोभा पांयदा, करता पुरख हरि करनेहार। त्रैगुण माया विच ना आंयदा, आदि जुगादी खेल न्यार। धुर फ़ुरमाणा

शब्द जणांयदा, अगम्म अगम्म अगम्मड़ी कार। अलक्ख निरँजण एका अलक्ख जगांयदा, दर घर साचे बोल जैकार। शब्द अनादी नाद वजांयदा, लोआं पुरीआं करे ख़बरदार। विष्न ब्रह्मा शिव आप उठांयदा, उठावणहार हरि निरँकार। भेव अभेदा आप खुलांयदा, लोकमात लै अवतार। गुर पीर आप अख्वांयदा, भगत भगवन्त मेल मिलाए नारी कन्त भतार। साचे सन्त संग रखांयदा, शब्द जणाए बोध ज्ञान। गुरमुख आपणे रंग रंगांयदा, सूरबीर वड बलवान। गुरसिख आपणी गोद बहांयदा, देवणहारा धुर फ़रमाण। नाम अनमुल्ला झोली पांयदा, लेखा जाणे दो जहान। सतिजुग साचा सच वरतांयदा, तख़्त निवासी वड मेहरवान। त्रेता त्रै त्रै वेस वटांयदा, रूप अनूप श्री भगवान। द्वापर दोए दोए नैण खुलांयदा, कँवल नैण नौजवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्ची सरकार। जुग जुग खेल खिलांयदा, इक्क इकल्ला एकँकार। निरगुण आपणा रथ चलांयदा, दरगाह साची खोल्ह किवाड़। साचे मन्दिर सोभा पांयदा, थिर घर बैठ सच्चे दरबार। धुर फ़रमाणा हुक्म सुणांयदा, हुक्मी हुक्म कर आकार। ब्रह्मा विष्न शिव उठांयदा, त्रैगुण माया भर भण्डार। लक्ख चुरासी भाण्डा आप घड़ांयदा, निरगुण सरगुण कर प्यार। त्तत्व तत्त विच टिकांयदा, जोती जाता हो उज्यार। शब्द नाद धुन वजांयदा, धुनी नाद सच्ची सरकार। आपणा हुक्म आप वरतांयदा, वेखे विगसे करे विचार। लोकमात खेल खिलांयदा, पंज तत्त सुहाए बंक दुआर। मन मति बुध राह चलांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेल करे अपार। जुग जुग खेल अवल्लड़ा, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। सचखण्ड दुआरे बैठा इक्क इकल्लड़ा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणांयदा। लक्ख चुरासी फड़ाए पल्लड़ा, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। शब्द संदेश एका घलड़ा, गुर शब्दी रूप वटांयदा। सच सिँघासण एका मलड़ा, ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखांयदा। आपणी जोती आपे रलड़ा, जोती जोत डगमगांयदा। जुग जुग मार्ग लाए इक्क सुखल्लड़ा, लक्ख चुरासी पान्धी आप तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। जुग जुग मन्दिर सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। खेले खेल दर्द दुःख भय भंजना, रूप अनूप आप वटाईआ। जोत जगाए आदि निरँजणा, एका नूर नूर रुशनाईआ। जन भगतां बणे साक सैण सज्जणा, एका नाता जोड़ जुड़ाईआ। चरन कँवल कराए साचा मजना, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। जाम प्याए एका मधना, अमृत झिरना आप झिराईआ। लेखा जाणे विष्नूं यदना, विश्व आपणा रूप दरसाईआ। आदि अन्त किसे ना बध्धना, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अन्तकाल घर आपणे सद्दणा, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप जीव जंत लक्ख चुरासी आपे होया रहे अदना, माण निमाणा आप हो जाईआ। आपे वसे चौथे घर साचे

पदना, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपे ब्रह्म ब्रह्मादि वजाए नदना, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां शब्द सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुगा जुगन्तर बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर बेपरवाह, साचा खेल खिलांयदा। निरगुण निरवैर बण मलाह, साचा बेड़ा आप तरांयदा। जन भगतां देवे सच सलाह, सिफ्त सालाही आप अख्वांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, नाउँ निरँकारा आप प्रगटांयदा। दो जहानां पकड़े बांह, सगला संग निभांयदा। आदि जुगादि करे सच न्याँ, साचे तख्त सोभा पांयदा। गुरमुखां बणे पिता माँ, बाल अंञाणे गोद बहांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस आप उडांयदा। जिस सिर रक्खे ठंडी छाँ, सो जन दर घर साचे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर साची कार, करे कराए एकँकार, इक्क इकल्ला वेस वटांयदा। वेस वटाए इक्क इकल्ला, श्री भगवान वड्डी वड्याईआ। वसे नेहचल धाम अटला, सचखण्ड दुआर सुहाईआ। करे खेल अछल अछला, वल छल धारी भेव ना राईआ। सच सिँघासण एका मल्ला, शाहो भूप सोभा पाईआ। आपे रविआ जला थला, जल थल महीअल आप समाईआ। एका शब्द अनादि जुगा जुगन्तर लोकमात घल्ला, गुर पीर अवतार देण गवाहीआ। हरि सन्त फड़ाए साचा पल्ला, सति सतिवादी डोरी हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग आपणी
१२५४ जोत करे रुशनाईआ। जुगा जुगन्तर साची जोत, निरगुण निरवैर आप प्रगटांयदा। ना कोई किला ना कोई कोट, साचे १२५४
०६ मन्दिर आप सुहांयदा। लक्ख चुरासी अंदर लाए शब्द चोट, घट घट नगारा आप वजांयदा। ना कोई वरन ना कोई गोत, ०६
ज़ात पात ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। जुग जुग आपणा नाउँ रक्ख, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। सति सरूपी हो प्रतक्ख, ब्रह्म पारब्रह्म दया कमांयदा। आप आपा करे वक्ख, आप आपणी कल धरांयदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, गुर पीर अवतार सेवा लांयदा। सन्तन हिरदे आपे वस, हरि की पौड़ी आप चढ़ांयदा। भगतां मारे तीर निराला कस, बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। गुरमुख मेल मिलाए हस्स हस्स, हँस मुख सोभा पांयदा। गुरसिखां देवे एका रस, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। करे प्रकाश मेटे अन्धेर रैण मस, साचा चन्द आप चढ़ांयदा। त्रैगुण माया ना डस्सणी सके डस्स, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा रंग रंगांयदा। जुग जुग रंग रतड़ा, पारब्रह्म गुर करतार। आदि जुगादी ना ठंडा ना तत्तड़ा, एका वसे धाम न्यार। जन भगतां देवे एका मतड़ा, ब्रह्म मति कर उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग बन्ने अपणी धार। जुग जुग धार चलांयदा, धरनी धरत धवल कर विचार। जुग जुग कार कमांयदा, लक्ख चुरासी पावे सार। जुग

जुग वेख वखांयदा, चार वरन कर प्यार। जुग जुग भेख वटांयदा, शब्द अनादि बोल जैकार। जुग जुग लेख लिखांयदा, चारे वेद करन पुकार। जुग जुग जोग सिखांयदा, जागरत जोत कर उज्यार। जुग जुग भोग भोगांयदा, नारी कन्त दए आधार। जुग जुग संजोग हंढांयदा, गुरमुख सज्जण कर त्यार। जुग जुग हउमे रोग मिटांयदा, चिंता सोग दए निवार। जुग जुग साची चोग चुगांयदा, हरि का नाउँ अपर अपार। जुग जुग दरस अमोघ वखांयदा, मातलोक लै अवतार। जुग जुग चौदां लोक फेरा पांयदा, इक्क इकल्ला एकँकार। जुग जुग आप सलोक सुणांयदा, निरगुण बोले बोलणहार। जुग जुग वेद पुराण शास्त्र सिमरत लेख लिखांयदा, जुग जुग गीता ज्ञान दए आधार। जुग जुग अञ्जील कुरान पढ़ांयदा, लेखा जाणे ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार। जुग जुग नानक निरगुण वेख वखांयदा, सति नाम करे प्रधान। जुग जुग जोती जोत डगमगांयदा, एका शब्द इक्क ज्ञान। जुग जुग चारे बाणी वेख वखांयदा, जुग जुग चारे खाणी करे कल्याण। जुग जुग सुरत सवाणी शब्द मिलांयदा, अमृत पाणी देवे ठंडी आण। जुग जुग सुत दुलारा आपणा नाउँ रखांयदा, गोबिन्द सूरा नौजवान। जुग जुग चण्ड प्रचण्ड चमकांयदा, जुग जुग लेखा जाणे दो जहान। जुग जुग ब्रह्म ब्रह्मण्ड वेख वखांयदा, लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान। जुग जुग जेरज अंडज डेरा ढांयदा, उत्भुज सेत्ज करे वैरान। जुग जुग खण्ड खण्ड करांयदा,
१२५५ ख़ालक मेटे जीव बेईमान। जुग जुग लक्ख चुरासी रंड वखांयदा, नाता तोड़े श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप १२५५
०६ आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। जुग जुग धार चलावणहारा, एका रंग समाईआ। ०६
आदि जुगादी लै अवतारा, गुर गुर वेस धराईआ। शब्द अनादी बोल जैकारा, ब्रह्म ब्रह्मादी आप सुणाईआ। भगत भगवन्त बख़्शे चरन प्यारा, सन्त साजण लए मिलाईआ। गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़ा, गुरसिख एका रंग रंगाईआ। मनमुखां मारे आदि अन्त मारा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार किनारा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग आई अन्तिम वारा, चारों कुंट रैण अन्धेरी छाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी बणया जगत अखाड़ा, चार वरन देण दुहाईआ। उच्ची कूके पंचम धाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होए हलकाईआ। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़ा, सांतक सति ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस वटांयदा, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार। निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा, खेलणहार बेऐब परवरदिगार। नूरो नूर डगमगांयदा, ख़लक खुदाई सांझा यार। साचे दर सोभा पांयदा, हक हकीकत करे विचार। लाशरीक रूप वटांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग साची धार बंधांयदा। जुग जुग धार बंधांयदा, पारब्रह्म बेअन्त।

कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा, पूरन जोत श्री भगवन्त। निरगुण नर नरायण आपणा नाउँ रखांयदा, लेखा जाणे आदि अन्त। निहकलंका वेस वटांयदा, सृष्ट सबाई साचा कन्त। लक्ख चुरासी आप प्रनांयदा, बचया रहे ना कोए जीव जंत। गुरमुख नारी सुघड़ सवाणी साचे दर बहांयदा, माया राणी करे भस्मंत। सर सरोवर अमृत आत्म ठंडा पाणी आप प्यांअदा, हरि हरि महिमा गणत अगणत। खाणी बाणी फोल फुलांयदा, लेखा जाणे साचे सन्त। शब्द हाणी इक्क मिलांयदा, मेल मिलावा आदि अन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेस वटाए जुगां जुगन्त। जुग जुग वेस वटांयदा, निर्धन सरधन करे प्यार। कलिजुग अन्तिम खेल खिलांयदा, कल कल्की लै अवतार। सम्बल नगरी धाम सुहांयदा, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर कर त्यार। निहकलंक जोत जगांयदा, जोती जोत होए उज्यार। शब्द डंका इक्क वजांयदा, शाह सुल्ताना करे ख़बरदार। एका अंक शब्द सुणांयदा, सोहँ रूप सच्ची सरकार। ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा, एका दूजा दूजा एका लेखा चुक्के एका वार। अंदर बाहर आपणी खेल खिलांयदा, गुप्त ज़ाहर करे प्यार। साचा साकी जाम प्यांअदा, अमृत प्याला भर भण्डार। गुरमुख बन्द ताकी आप खुलांयदा, डूँघी कंदर कर उज्यार। साचा राकी शब्द दौड़ांयदा, साचे अश्व हो अस्वार। जुग जुग लहिणा देणा बाकी आप चुकांयदा, कलिजुग रहे ना विच संसार। अन्तिम अन्त काल ख़ाकी ख़ाक मिलांयदा,
१२५६ चारों कुंट उडे छार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेल करे करतार। जुग जुग खेल करे १२५६
०६ करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम आई वारा, बिस्मिल वेखे थाउँ थाईंआ। ऐनलहक हकीकत नाअरा, ०६
लाशरीक आप सुणाईआ। लेखा जाणे मुल्ला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर सांझा यारा, लाशरीक इक्क ख़ुदाईआ। चौदां तबकां खोल्ह किवाड़ा, नूरी जल्वा दए दरसाईआ। ज़िमी अस्मानां चुक्के पाड़ा, महिबान मेहरवान खेल खलाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी मलक उल मौत बहत्तर नाड़ वजाए ताड़ा, कायनात रही कुरलाईआ। धुरदरगाही छैल छबीला इक्क इकल्ला साचा लाड़ा, साचे अश्व सोलां कलीआं आसण पाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी वेखे इक्क अखाड़ा, पंचम धाड़ा नाल मिलाईआ। करे खेल जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, समुंद सागर फेरा पाईआ। कूड़ी क्रिया करे पार किनारा, जूठ झूठ बेड़ा दए डुबाईआ। ना कोई दीसे शाह सिक्दारा, सीस ताज ना कोए रखाईआ। लक्ख चुरासी आवे हारा, एका भुल्लया हरि हरि सच्चा माहीआ। चार वरन अठारां बरन रोवण ज़ारो ज़ारा, ज़ाहर ज़हूर दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल आप खलाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल खलावणा, पुरख अबिनाशी साची कार। जीव जंत जगत रुलावणा, चारों कुंट धूंआँधार। गुरमुख विरला आप बचावणा, जिस जन बख़्शे चरन प्यार। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावणा, ख़ाकी ख़ाक उडे

छार। माया ममता हउमे हंगता गढ़ तुड़ावणा, नाम खण्डा मार कटार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेल करे अगम्म अपार। अगम्म अपार अलक्खणा अलक्ख, लेखा लिख्त विच ना आईआ। लक्ख चुरासी भाण्डे करे सख, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे विच समाईआ। जून अजून होए प्रतक्ख, बेअन्त सच्चा शहनशाहीआ। भगत भगवन्त साचे सन्त करे वक्ख, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। मनमुख जीवां अन्तिम मुल पए ना कौडी कक्ख, हट्टो हट्ट आप विकाईआ। गुरसिखां सगल विसूरे जायण लथ्थ, जिस सतिगुर पूरा दरस दिखाईआ। एका देवे वस्त नाम साची वथ्थ, वाह वा गुरू वड्डी वड्याईआ। गुर गोबिन्द सिँघ सूरा एका मार्ग गया दस्स, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। गुरसिख तेरा सीस दूजे दर ना जाए ढट्ठ, तेरी कीमत करता आपे पाईआ। आदि जुगादि लए रक्ख, रक्खणहारा इक्क अख्वाईआ। जिस दा सथ्थर हउँ बैठा घत, लेखा जाणे थाउँ थाँईआ। गुरसिख तेरा बूटा लगाया आपणी रत्त, रत्ती रत आप सुकाईआ। मेरा नाउँ तेरी मत, दूजी धार ना कोए वखाईआ। एका मिले कमलापत, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। वेले अन्तिम लए रक्ख, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। देवे दरस हो प्रतक्ख, निहकलंक निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। हरि का मन्दिर गुरूदुआर कदे ना जाए ढट्ठ, इट्ट गारा ना कोए लगाईआ। दिवस रैण वजाए अनहद सट्ट, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। तेरे अंदर दूई द्वैत ना होवे फट, आपणा
१२५७ फट अन्तिम गया खुलाईआ। नौं खण्ड वखाए तेरा हट्ट, लोकमात दए वड्याईआ। आवण जावण छुट्टे तीर्थ तट्ट, गंगा १२५७
०६ गोदावरी जमना सुरस्ती फेरा कोए ना पाईआ। साचा मार्ग एका दस्स, सतिजुग साचा राह वखाईआ। एका तख्त बहे सज, ०६
तख्त ताजां वाला सच्चा शहनशाहीआ। आपणा चरन दुआर वखाए साचा हज, मक्का मदीना फेरा कोए ना पाईआ। सृष्ट सबाई पर्दा लए कज, जो जन आए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुर पीर अवतार इष्ट देव नमो नमो आपणा सीस आप झुकाईआ।

* १३ अस्सू २०१७ बिक्रमी लछमण सिँघ दे गृह पिण्ड भूरे ज़िला अमृतसर *

सो पुरख निरँजण सच सुल्ताना, तख्त निवासी खेल खिलांयदा। हरि पुरख निरँजण खेले खेल दो जहानां, इक्क इकल्ला वेस वटांयदा। एकँकारा वड बलवाना, जोद्धा सूरबीर बली बलवान आप अख्वांयदा। आदि निरँजण नूर महाना, जोती जोत डगमगांयदा। श्री भगवान वसे सच मकाना, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। अबिनाशी करता दर दुआर होए दरबाना, दर दरवेश सेव कमांयदा। पारब्रह्म प्रभ गुण निधाना, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। साचा तख्त कर परवाना, आसण सिँघासण

इक्क सुहांयदा। आदि जुगादी धुर फ़रमाणा, शब्द अनादी नाद सुणांयदा। जुगा जुगन्तर खेले खेल महाना, खेलणहारा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला वेस वटांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, आदि जुगादि समाया। सचखण्ड सुहाए इक्क दुआरा, थिर घर साची सेज हंढाया। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, बेपरवाह भेव ना राया। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, जुग करता नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आदि आदि आपणी धार आप चलाया। साची धार हरि चलांयदा, पारब्रह्म करतार। दरगाह साची धाम सुहांयदा, निरगुण जोत कर उज्यार। आप आपणा रूप प्रगटांयदा, निरवैर निराकार। जूनी रहित आप अख्वांयदा, मूर्त अकाल हो उज्यार। सति नाम आपणा आप धरांयदा, आदि जुगादी साची कार। करता पुरख किरत करांयदा, दर घर साचा खोल्ह किवाड़। हुक्मी हुक्म इक्क सुणांयदा, धुर फ़रमाणा बोल जैकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दरगाह साचे धाम वड्यांअदा। दरगाह साची धाम अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। हरि पुरख निरँजण बैठा इक्क इकल्ला, एकँकारा रूप वटाईआ। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बला, नूर नुराना डगमगाईआ। अबिनाशी करता सच सिँघासण नेहचल धाम आपे खला, श्री भगवान संग निभाईआ। पारब्रह्म सच संदेश नर नरेश निराकार एका घल्ला, एका धुन नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा सच सिँघासण आप सोहे पुरख अबिनाशन, दूजा संग ना कोए रखांयदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सति पुरख निरँजण आप सुहांयदा। निरगुण बणाए निरगुण बणत, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। निरगुण नार निरगुण कन्त, निरगुण साची सेज हंढांयदा। निरगुण महिमा गाए अगणत, बोध अगाधा आपणा नाउँ उपजांयदा। निरगुण आदि निरगुण अन्त, निरगुण आपणा वेस वटांयदा। निरगुण नाम निरगुण मंत, निरगुण शब्दी शब्द धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़ा, एकँकारा आसण लांयदा। सचखण्ड दुआरा हरि सुहांयदा, इक्क इकल्ला एकँकार। दीपक जोती इक्क टिकांयदा, आदि जुगादि रहे उज्यार। सूरज चन्न ना कोए चढ़ांयदा, मंडल मंडप ना कोए सहार। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए वेख वखांयदा, त्रैगुण माया ना कोए भण्डार। पंज तत्त ना जोड़ जुड़ांयदा, काया गढ़ ना कोए आकार। वेद पुराण ना कोए गांयदा, शास्त्र सिमरत ना कोए विचार। चारे खाणी ना कोए बणांयदा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज ना बन्न्हे कोए धार। चारे बाणी ना कोई सुणांयदा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ना दए उच्चार। चारे जुग ना वण्ड वण्डांयदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग कोए ना जाणे वार। गुर पीर ना कोए अख्वांयदा, साध सन्त ना कोए पसार। भगत भगवन्त ना कोए गांयदा,

रसना जिह्वा कर आधार। बत्ती दन्द ना कोए सालांहयदा, पवण स्वास ना पावे सार। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना कोए वखांयदा, समुंद सागर ना कोए जलधार। करोड़ तेतीसा ना नाच नचांयदा, सुरपति इंद ना वाजां रिहा मार। गण गंधर्ब ना कोए वखांयदा, किन्नर यच्छप ना कोए नचार। चौदां विद्या ना कोए पढ़ांयदा, चौदां लोक ना कोए पसार। चौदां तबक ना हट्ट खुल्लांयदा, खेले खेल अगम्म अपार। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा, आप आपणी किरपा धार। निरगुण साचा सोभा पांयदा, पारब्रह्म सच्ची सरकार। सच सिँघासण इक्क सुहांयदा, शाहो भूप बण सिक्दार। सीस आपणे ताज टिकांयदा, पंचम मुख मुख प्यार। सत्त रंग निशाना आप चढ़ांयदा, दरगाह साची परवरदिगार। मुकामे हक डेरा लांयदा, जोती नूर कर उज्यार। आदि जुगादी डगमगांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वसे साचे घर, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा हरि सुहांयदा, एका रंग समाए। पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा, जूनी रहित बेपरवाहे। अनुभव आपणा प्रकाश करांयदा, प्रकाश प्रकाश विच टिकाए। निरभउ भय ना कोए जणांयदा, भय भयानक आपणा आप होए सहाए। अचन अचानक आपणा रूप प्रगटांयदा, मात पित ना कोए सुहाए। जगत स्याणप ना कोए रखांयदा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाए। वणज वणजारा हट्ट ना कोए खुलांयदा, दर घर साचा इक्क उपाए। आप आपणी जोत जगांयदा, बिमल रूप सच्चा शहनशाहे। सच सिँघासण आसण लांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वसे साचे घर, सचखण्ड दुआरा आप वडियाए। सचखण्ड दुआर सुहञ्जणा, पुरख अबिनाशी आप सुहाया। जोत जगाए इक्क निरँजणा, आदि जुगादि रहे रुशनाया। ना घड़या ना भज्जणा, ना मरे ना जाया। ना कोई सरोवर ना कोई मजना, नहावण नहौण ना कोए नुहाया। ना कोई नगारा ना कोई ताल वज्जणा, नाद अनाद ना कोए सुणाया। इक्क इकल्ला घर साचे बैठा एका सजणा, आप आपणा संग निभाया। आदि जुगादि चलाए आपणा जहाजना, रथ रथवाही हरि रघराया। सचखण्ड दुआरे बह करे आपणा काजना, करता पुरख सेव कमाया। शब्द अगम्मी मारे वाजणा, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाया। आपे देवे आपणा दाजना, आपणी वस्त आपे झोली पाया। आपे करे आपणी साजणा, साजणहार आप अख्वाया। आपे रक्खे आपणी लाजना, पारब्रह्म वड वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया। सचखण्ड दुआर सुहावणा, सो पुरख निरँजण आप सुहाए। हरि पुरख निरँजण डेरा लावणा, एकँकारा जोत जगाए। आदि निरँजण डगमगावणा, साचे मन्दिर होए रुशनाए। श्री भगवान तख्त सुहावणा, अबिनाशी करता सेज हंढाए। पारब्रह्म निउँ निउँ आपणे अग्गे सीस झुकावणा, एका मंगण मंग मंगाए। सति पुरख निरँजण दया कमावणा, देवणहारा बेपरवाहे।

आपणी वण्ड आप वण्डावणा, निरगुण निरगुण वेस धराए। आपणा रंग आप रंगावणा, रूप रंग ना कोए जणाए। आपणा संग आप निभावणा, दूसर संग ना कोए वखाए। आपणा बंक आप सुहावणा, सचखण्ड वज्जे वधाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता आप हो जाए। निरगुण दाता बण भण्डारी, निरगुण वस्त वण्डांयदा। निरगुण दरवेश बणे भिखारी, निरगुण भिच्छया झोली पांयदा। निरगुण खेले खेल अगम्म अपारी, निरगुण अलक्ख अगोचर आप अख्वांयदा। निरगुण जोत जगे निरँकारी, निरगुण नर नरायण आपणा नाउँ धरांयदा। निरगुण जोती रहे कुँवारी, निरगुण नारी कन्त आप प्रनांयदा। निरगुण सेज रिहा संवारी, सच सिँघासण इक्क वछांयदा। निरगुण मेला हरि भतारी, कन्त कन्तूल सोभा पांयदा। निरगुण अंदर निरगुण बाहरी, निरगुण गुप्त ज़ाहरी वेस वटांयदा। निरगुण भोग बिलास करांयदा। निरगुण सुहाए उच्च महल्ल अटल मुनारी, निरगुण सोभा पांयदा। निरगुण जोत जगाए इक्क उज्यारी, दीवा बत्ती ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण मेला आपणा आप मिलांयदा। निरगुण मेल मिलांयदा, निरगुण कर प्यार। निरगुण अंग लगांयदा, निरगुण दए आधार। निरगुण निरगुण विच समांयदा, निरगुण निरगुण विच्चों आए बाहर। निरगुण सुत दुलारा जांयदा, जननी बणे आप निरँकार। आपे आपणी

१२६० गोद सुहांयदा, आपे वेखे नैण उग्घाड़। आपे आपणा रस प्यांअदा, रस रसीआ रसां वसे बाहर। आपे आपणा दास बणांयदा, १२६०

०६ कर किरपा हरि मेहरवान। आपे आपणा वास रखांयदा, देवणहारा साचा दान। आपे जोत प्रकाश करांयदा, आदि जुगादि ०६

रहे निगहबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क उपजाए साचा सुत, देवणहारा साचा वर, शब्द शब्दी खेल खिलांयदा। शब्द दुलारा साचा लाल, सो पुरख निरँजण आप उपाया। हरि पुरख निरँजण करे सदा प्रितपाल, आदि जुगादि होए सहाया। एकँकारा बणे दलाल, दो जहानां वेख वखाया। आदि निरँजण दीपक बाल, करे कराए सच्ची रुशनाया। अबिनाशी करता देवे सच सच्चा धन माल, सच ख़ज़ीना इक्क भराया। श्री भगवान दास बणाए काल महांकाल, धर्मसाल इक्क सुहाया। पारब्रह्म प्रभ लाए फुल डालृ, फुल फुलवाड़ी वेख वखाया। आदि पुरख चले अवल्लड़ी चाल, लेखा लेख ना कोए लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया। सचखण्ड दुआरा हरि उपाया, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। चार दीवार ना कोए बणाया, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। इक्क इकल्ला बैठा आसण लाया, स्वच्छ सरूप बेपरवाहीआ। शाहो भूप बंक सुहाया, आदि अन्त खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच्चा शहनशाहीआ। शहनशाह शाह पातशाह, पारब्रह्म आप

अख्वांयदा। अकाल पुरख बण मलाह, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। निरगुण निरवैर देवे इक्क सलाह, सिफ्त सालाही भेव ना आंयदा। सचखण्ड दुआरा रचन रचा, आपणा मन्दिर वेख वखांयदा। आपणी इच्छया आपणी भिच्छया आपे झोली दए भरा, आसा आसा विच टिकांयदा। सचखण्ड अंदर थिर घर लए उपा, घर घर विच जोत जगांयदा। शब्द सुत विच दए बहा, धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलांयदा। घर विच घर घर उपाया, थिर घर खुशी मनाईआ। आपणा जाया विच बहाया, जोती जाता वेख वखाईआ। दाई दाया सेव कमाया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। हुक्मी हुक्म आप वरताया, वरते हुक्म सच्चा शहनशाहीआ। हरि हरि करते खेल रचाया, आपणा बंस आप उपाईआ। आपणा पर्चा आपणे अग्गे आपे पाया, दूजा करे ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वेखे एका हरि, सुत दुलारा रिहा सुहाईआ। सुत दुलारा बाल अंञाणा, शब्दी सीस झुकांयदा। तूं साहिब सुल्ताना सच्चा राणा, साचे तख्त सोभा पांयदा। हउँ याचक ग़रीब निमाणा, दर तेरे अलक्ख जगांयदा। समरथ पुरख सिर हथ्थ टिकाना, तेरी ओट इक्क तकांयदा। तेरा नाउँ मेरा गाणा, मेरा गाणा तेरा नाउँ अल़ांयदा। तेरा हुक्म मेरा भाणा, मेरा भाणा तेरा हुक्म मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा वेखे खड़, आपणा दुआरा आप खुलांयदा। शब्द दुलारा करे पुकार, प्रभ अगे सीस झुकाईआ। हउँ सेवक वरदा सेवादार, तूं पातशाहां सिर पातशाहीआ। आदि जुगादि बणया रहां भिखार, सचखण्ड दुआरा राह तकाईआ। तूं बणया रहिणा वरतार, मेरी तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। बिन तुध अवर ना मंगां कोए दरबार, दूजी अवर ना कोए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, बख्शिश तेरे हथ्थ वड्याईआ। पुरख अबिनाशी दीआ दान, साचे सुत सुत समझांयदा। आदि जुगादि सुणाए धुर फ़रमाण, आपणा नाउँ तेरी झोली पांयदा। तेरा नाउँ मेरा निशान, दो जहान इक्क वखांयदा। तेरा माण मेरा ताण, निगहबान आप अल़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साचा मेला मेल मिलांयदा। शब्द सुत निवाए सीस, निउँ निउँ करे निमस्कारा। पारब्रह्म सच जगदीश, हउँ सेवक खड़ा दुआरा। एका छत्र वेखां तेरे सीस, दो जहान बणया रहे सच्चा सिक्दारा। जुगा जुगन्तर तेरा पीसण लवां पीस, हुक्मी हुक्म वरते वरतारा। इक्क उपजाए सच हदीस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, देवे वर एकँकारा। एकँकार दया कमांयदा, दयानिध श्री भगवान। आपणे सुत सेव लगांयदा, अबिनाशी अचुत्त वड मेहरवान। धुर फ़रमाणा इक्क सुणांयदा, वण्डे वण्ड गुण निधान। निरगुण निरगुण अंग कटांयदा, विश्व रूप कर परवान।

विष्न आपणी अंस बणांयदा, आपे रक्खणहारा माण। निराकार साकार हो जांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साचा तख्त आप सुहांयदा। शब्द दुलारा उठया, थिर घर साचे ल्ए अंगड़ाईआ। सो पुरख निरँजण एका तुठ्ठया, वस्त अमोलक झोली पाईआ। आदि जुगादि ना जाए लुट्टया, जुग जुग वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण सु वेला सोहां दर, आदि पुरख दए समझाईआ। आदि पुरख समझांयदा, कर किरपा मेहरवान। सुत शब्द आप उठांयदा, दाता दानी दयावान। हुक्मी हुक्म आप वरतांयदा, शाहो भूप हुक्मरान। आपणा भेव आप खुलांयदा, लेखा लिखे ना कोए गुण निधान। तेरी साची वण्ड वण्डांयदा, वण्डणहारा आप भगवान। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी झोली पांयदा, अंस बंस कर सन्तान। त्रैगुण माया रूप प्रगटांयदा, करे खेल खेल महान। लक्ख चुरासी भाण्डे आप घड़ांयदा, घाड़न घड़े वड मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साचे शब्द आप समझांयदा। सुत दुलारे कर ध्यान, हरि साचा सच जणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं तेरा इक्क निशान, गगन मंडल तेरी वड्याईआ। सूरज चन्न मंगण तेरे कोलों दान, किरन किरन विच समाईआ। मंडल मंडप ज़िमी अस्मान, तेरी गोद बहाईआ। जल बिम्ब कर परवान, नीर नीर विच समाईआ। लक्ख चुरासी निगहबान, घट घट जोत करे रुशनाईआ। तेरा संग निभाए ब्रह्मा विष्न शिव एका देणा साचा दान, दाता दानी आप समझाईआ। विष्नूं घर घर रिज़क पुचाए आण, भुल्ल रहे ना राईआ। ब्रह्मा ब्रह्म करे प्रधान, कोटन कोटि गढ़ वसाईआ। शंकर अन्त करे कल्याण, त्रैगुण त्रसूल हथ्थ उठाईआ। करे खेल श्री भगवान, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, थिर घर साचे आपे खड़, एका शब्द दए वड्याईआ। शब्द दुलारा नौंजवान, आपणी सेव कमांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर प्रधान, साची सिख्या इक्क समझांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म चरन ध्यान, दूजी लिव ना कोए धरांयदा। निश अक्खर देवे इक्क ज्ञान, लिखण पढ़ण विच ना आंयदा। नाम निधाना मारे बाण, तिखी मुखी मुख सालांहयदा। चारों कुंट हो प्रधान, दहि दिशां वेख वखांयदा। चारे वेद गाए गाण, गीत गोबिन्द अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे साचा वर, साचे सुत हरि समझांयदा। हरि समझाए आपणी धार, निश अक्खर करे पढ़ाईआ। लक्ख चुरासी कर पसार, घट घट बैठा जोत जगाईआ। निरगुण सरगुण दए आधार, सरगुण निरगुण विच टिकाईआ। बणे वचोला आप करतार, साचा ढोला शब्द सुणाईआ। बणया तोला तोलणहार, अतोल अतुल आप अख्वाईआ। करे खेल अपर अपार, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, सत्त समुंदर मस्स रोवे छाहीआ। पुरख

अबिनाशी सभ तों वसया बाहर, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। आपणी रचना रच संसार, लोकमात वेख वखाईआ। घाड़न घड़े अपर अपार, साची भट्ठी अग्न तपाईआ। जोती लम्बू लाए एका वार, तत्व तत्त इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे शब्द भेव खुल्हाईआ। भेव खुलाए पारब्रह्म, महिमा कथ ना सके कोई राईआ। आदि जुगादि ना मरे ना पए जम्म, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। जुगा जुगन्तर करता पुरख करे कारज कम्म, करनहार आप हो जाईआ। लक्ख चुरासी देवे दम, पवण स्वासी स्वास समाईआ। चारे खाणी बेड़ा बन्न्ह, धुर दी बाणी आप अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका सिख्या हरि समझाईआ। सिख्या सिख छोटा बाला, शब्दी सीस झुकांयदा। तेरा खेल पुरख अकाला, लोकमात खलांयदा। तूं दीनां बंधू दीन दयाला, दे दया तेरी मंग मंगांयदा। लक्ख चुरासी रची धर्मसाला, घर घर तेरा मन्दिर बणांयदा। एका शब्द वजाए ताला, अनहद साची सेव लगांयदा। आपणा मार्ग दस्सणा इक्क सुखाला, कवण वेला मेल मिलांयदा। कवण जुग पूरी होए घाला, चौकड़ी जुग कवण बितांयदा। कवण रूप होए दलाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची मंगण मंग मंगांयदा। देवे वर पुरख अबिनाशा, भेव रहे ना राईआ। साचे सुत रख भरवासा, पुरख अकाल अकाल समझाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रहिणा दासी दासा, लक्ख चुरासी सेव कमाईआ। गगन मंडल लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पौणी रासा, लक्ख चुरासी गोपी काहन नचाईआ। गुर अवतार देवण आयण जगत दिलासा, हुक्मी हुक्म इक्क सुणाईआ। भगतां अंदर कर कर वासा, जगत वासना बाहर कढ्ढाईआ। सन्तन पूरी करे आसा, आलस निन्दरा रहे ना राईआ। गुरमुखां अमृत रस चवाए काया कासा, निझर झिरना आप झिराईआ। गुरसिखां अंदर करे वासा, गुर मन्त्र करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। निरगुण निरगुण भेव खुलांयदा, लिखण पढ़न विच ना आया। पिता पूत आप समझांयदा, साचा लेखा लेखे लए लगाया। नौं नौं चार पन्ध मुकांयदा, जुग चौकड़ी गेड़ा आप दवाया। सूरज चन्न आप भवांयदा, ज़िमी अस्मान वेख वखाया। लक्ख चुरासी खेल खिलांयदा, ख़ालक ख़लक रूप वटाया। जुग जुग आपणा मृदंग वजांयदा, एका नाउँ कर रुशनाया। जुग जुग आपणा पन्ध मुकांयदा, पान्धी होए हरि शहनशाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका नाउँ दए दृढ़ाया। नाउँ दृढ़ाए आप निरँकार, निरवैर खेल खलाईआ। जुग जुग बेड़ा जाए तार, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। लेखा जाणे लक्ख चुरासी कर विचार, नव सत्त फोल फुलाईआ। ब्रह्म मति दए आधार, एका तत्व तत्त समझाईआ। गति मित हथ्थ रक्खे करतार,

आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नौं नौं चार भेव खुलाईआ। नव नौं चार भेव खुल्हाया, नर नरायण दया कमांयदा। आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि साचा नाद वजाया, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। आपणे विच्चों काढ आपणी सेवा लाया, आपे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। लेखा हथ्थ रक्खे करतार, करता भेव ना कोए पांयदा। आदि जुगादी लै अवतार, गुर गुर आपणा नाउँ धरांयदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, लोकमात मात प्रगटांयदा। भगत भगवन्त कर प्यार, साचे सन्त मेल मिलांयदा। पंज तत्त काया करे श्रंगार, रंग मजीठी इक्क चढ़ांयदा। जोत जगाए डूँघी गार, अन्ध अन्धेर सर्ब मिटांयदा। सुखमन नाड़ी करे पार, टेढी बंक वेख वखांयदा। ईड़ा पिंगल कर विचार, साचे मार्ग आपे लांयदा। नाभी कँवला अमृत धार, निझर झिरना आप झिरांयदा। कँवल कँवला मुख उग्घाड़, अमृत रस आप वहांयदा। आपणा नेत्र आप उग्घाड़, आपणा रूप आप दरसांयदा। नाता तोड़े पंचम धाड़, पंचम धुन शब्द उपजांयदा । अनहद गाए आपणी वार, गीत अनादी आप सुणांयदा। साचा लाए इक्क अखाड़, साची सखीआं मेल मिलांयदा। साचा हाणी शब्द करे प्यार, सुरत सवाणी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा सुत शब्द वड्यांअदा। सुत शब्द बल लैणा रक्ख, समरथ पुरख दए वड्याईआ। जुग जुग होए आप प्रतक्ख, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी कीमत करता आपे पाए करोड़ी लक्ख, कक्ख कक्ख आप विकाईआ। निरगुण निरवैर मार्ग एका दस्स, चार वरन राह वखाईआ। शब्द बाण मारे कस, बजर कपाटी दए तुड़ाईआ । आत्म सेजा बहे हस्स हस्स, घर साची सेज सुहाईआ। भोग बिलास देवे एका रस, रस भिन्नां इक्क समझाईआ। रैण भिन्नड़ी राह तक्के नस्स नस्स, मिले मेल साचे माहीआ। गुरमुख प्यार अंदर जाए फस, लक्ख चुरासी तोड़े फाहीआ। घर करे प्रकाश कोटन कोटि रवि ससि, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि, जुग जुग गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जुग गेड़ गड़ांयदा, गेड़नहार आप निरँकार। सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकांयदा, कलिजुग आए अन्तिम वार। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग कोलू चक्की चक्क भवांयदा, त्रैभवन कर ख्वार। अवण गवण वेख वखांयदा, निरगुण रूप निराकार। लक्ख चुरासी पन्ध मुकांयदा, जो घड़या भन्ने विच संसार। थिर कोए रहिण ना पांयदा, खेले खेल अगम्म अपार। सुत दुलारा आप सुहांयदा, पारब्रह्म प्रभ कर विचार। कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा, निरगुण रूप होए उज्यार। तेरी कीमत आपे पांयदा, गुण अवगुण लए विचार। सुण पुकार दया कमांयदा, धरत धवल दए सहार। विष्नूं लेखा मूल चुकांयदा, पावे सार आप

भण्डार। ब्रह्मे ब्रह्म मेल मिलांयदा, मेलणहारा एकँकार। शंकर हथ्थ त्रिशूल सुटांयदा, पुरख अबिनाशी करे विचार। चारों कुंट अन्धेरा छांयदा, रैण अन्धेरी धूंआँधार। भैणां भइया सेज हंडांयदा, सुत मात करे विभचार। नारी कन्त ना कोए मनांयदा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग आई हार। पुरख अबिनाशी दया कमांयदा, शब्द सुत करे प्यार। आपणा भेव आप खुलांयदा, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार। देवी देव ना कोए वखांयदा, गुर पीर ना कोए अवतार। विष्नूं सेज ना कोए हंढांयदा, सांगोपांग करे प्यार। ब्रह्मा वेद ना कोए लिखांयदा, वेदां वाला पावे सार। शंकर बाशक तशका ना गल लटकांयदा, कंठ माला ना सोहे हार। इंदर सेज ना कोए हंडांयदा, करोड़ तेतीस ना मीत मुरार। लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा, इक्क इकल्ला एकँकार। घट घट आपणी सेज विछांयदा, आपे सुत्ता पैर पसार। आपणी करवट नर हरि प्रगटांयदा, बदले करवट ना निराकार। कलिजुग कूड़े धन्दे लांयदा, कूड़ी क्रिया दए आहार। जूठ झूठ हथ्थ फड़ांयदा, चारों कूंट करे पुकार। आसा तृष्ना मेल मिलांयदा, गढ़ वसाए काम क्रोध लोभ मोह हँकार। हरि का नाम ना कोए ध्यांअदा, रसना जेहवा भरया इक्क विकार। इष्ट देव ना कोए मनांयदा, दृष्ट खोल्हे ना कोए संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका शब्द दए आधार। शब्द दुलारा हरि समझाउणा, आदि पुरख बेपरवाहीआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग

१२६५ ०६ पन्ध मुकाउणा, काल काल बीत बिताईआ। कलिजुग वेला अन्त सुहाउणा, निरगुण निरवैर खेल खलाईआ। बल बावन हरि भेख वटाउणा, राम रावण दए घाईआ। कान्हा कंसा मेट मिटाउणा, कँवल नैण इक्क अख्वाईआ। ईसा मूसा काला सूसा तन छुहाउणा, कलमा कायनात इक्क पढ़ाईआ। संग मुहम्मद चार यार ढोला एका गाउणा, ऐनलहक नाअरा लाईआ। नानक निरगुण वेस वटाउणा, सति नाम नाम पढ़ाईआ। चार वरनां मेल मिलाउणा, ऊँच नीच रहिण ना पाईआ। आदि शब्द गुर इक्क वखाउणा, गुर अर्जन गुर गुर समझाईआ। जोद्धा सूरबीर नाउँ धराउणा, पुरख अकाल सुत दुलारा इक्क प्रगटाईआ। चण्ड प्रचण्ड हथ्थ उठाउणा, तिक्खी धार आप वखाईआ। कलिजुग अन्तिम राह तकाउणा, नानक गोबिन्द दए सलाहीआ। वेद व्यासा लेख लिखाउणा, पुराण अठारां सलोक लक्ख चार हजार सतारां गया लिखाईआ। निहकलंक प्रभ जामा पाउणा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। कलि कल्की अवतार इक्क अख्वाउणा, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। पुरख अकाल इक्क मनाउणा, आदि जुगादि सचा गोसाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादि जुगादि आदि आपणे हुक्म आप फिराईआ। आपणे हुक्म अंदर आपे वसया, बाहर हुक्म ना कोए। पुरख अबिनाशी फिरे नस्सया, जुगां जुगन्तर तीनों लोए। जन भगतां मार्ग साचा दस्सया, नाम सुणाए साची सोए। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगादि आदि आपणा बीज आपे बोए। आपणा बीज आपे बीजदा, बीजणहार आप निरँकार। आपणे अमृत आपे सीजदा, सिंच क्यारी वेखे हरि अवर ना जाणे कोए। आपणे अंदर आपे भिंच दा, रस लहिणा देवे साचे ढोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि आपणे जेहा आपे होए। आपणे जेहा आपे होया, दूसर रूप ना कोए वटाईआ। ना जन्मे ना कदे मोआ, आवण जावण खेल खलाईआ। आलस निन्दरा विच ना कदे सोया, दिवस रैण ना कोए वड्याईआ। जुगा जुगन्तर देवे साचा ढोआ, नाम नामां ल्ए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगादि आदि आपणी खेल खलाईआ। आपे खेले खेल खिलारी, खेलणहारा आप अख्वाया। आपे निरगुण जोत करे उज्यारी, आपे सुन्न समाध समाया। आपे जुग जुग लै अवतारी, करता पुरख आपणा वेस वटाया। आपे आपणी बाज़ी जाए हारी, जित हार आपणे हथ्थ रखाया। आपे आपणी पैज जाए संवारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वसे साचे घर, घर सचखण्ड दुआरा साचा खोल्ह, शब्द रागी एका बोल, आदि जुगादि तोले तोल, लक्ख चुरासी अंदर जाए मौल, आप आपणा रूप दरसाईआ। रूप दरसाए पुरख अकाला, घट घट जोत रुशनाईआ। जन भगतां करे सदा प्रितपाला, प्रितपालक इक्क अख्वाईआ। सचखण्ड वखाए सच्ची धर्मसाला,
१२६६ जिस जन आपणी दया कमाईआ। लक्ख चुरासी तोड़े जंजाला, राए धर्म ना दए सजाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म गल पाए माला, १२६६
०६ सोहँ अक्खर हँ ब्रह्म पढ़ाईआ। सतिजुग चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप ०६
आपणा देवे वर, शब्दी शब्द वड वड्याईआ। शब्द गुर वड बलवाना, आदि जुगादि समाया। जुगां जुगन्तर नौजवाना, दो जहाना खेल खलाया। लेखा जाणे मर्द मरदाना, महिरम आपणा भेव खुल्हाया। कलिजुग अन्तिम होए प्रधाना, निरगुण निरवैर नाउँ रखाया। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन बन्न्हे गानां, जो जन हरि हरि रहे ध्याया। नाम जणाए धुर फ़रमाणा, धुर दी बाणी बाण लगाया। इष्ट देव गुर शब्द मनाणा, पंज तत्त नाता तोड़ तुड़ाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरी हरि वरताए आपणा भाणा, हरि भाणे विच समाया। कलिजुग अन्तिम तख्तों लाहे राजा राणा, सीस ताज ना कोए रखाया। नौं खण्ड पृथ्मी रक्खे एका आणा, बीस बीसा होए रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, शब्दी डंका इक्क वजाया। हरि डंका शब्द वजांयदा, निरगुण चोट अगम्म अपार। राउ रंकां आप उठांयदा, शाह सुल्तानां करे बेदार। मुल्ला शेख मुसायक पीर आप जगांयदा, सोया रहे ना कोए विच संसार। पंडत पांधे अक्ख खुलांयदा, जोत ललाटी करे विचार। साधां सन्तां भेव जणांयदा, आत्म खोल्हे बन्द किवाड़। गुरमुख साचे दर बहांयदा, नाता तोड़

पंचम धाड़ । काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आंयदा, जिस जन सतिगुर पूरा करे प्यार। गुरसिख विरला नानक गोबिन्द दर्शन पांयदा, लक्ख चुरासी सुत्ती पैर पसार। कान्हा कृष्ना नज़र किसे ना आंयदा, कलिजुग गोपी कूड़ा करया तन श्रंगार। सीता सुरत ना कोए प्रनांयदा, जनक सपुत्री ना कोए दुलार। राम धनुख ना कोए उठांयदा, घर घर काज रचया विभचार। नमो नमो सर्ब कुरलांयदा, पारब्रह्म करे ना कोए निमस्कार। रसना जिह्वा जीव जंत सभ गांयदा, अजपा जाप ना करे प्यार। दोए दोए लोचण वेख वखांयदा, तीजा नेत्र खोल्हे ना कोए किवाड़। अठसठ तीर्थ जा जा नहावण नहांयदा, दुरमति मैल ना देवे कोए उतार। बिन सतिगुर पूरे बन्द ताक ना कोए खुल्हांयदा, आत्म ब्रह्म ना पाए सार। ईश जीव ना मेल मिलांयदा, जीवण जुगती दए संवार। आदि शक्ती शक्ति धरांयदा, चतुर्भुज खेल अपार। सच भवानी आप प्रगटांयदा, सच निशानी हथ्थ निरँकार। दो जहानी खेल खिलांयदा, कलिजुग वेखे अन्तिम वार। सूरबीर बलकार आपणा बल धरांयदा, इक्क इकल्ला परवरदिगार। मुख नकाब पर्दा लांहयदा, अहिबाब रबाब वजाए सितार। गुरमुख साचे मेल मिलांयदा, पूर्ब कर्मा कर विचार। जन्म जुग विछड़े मेल मिलांयदा, मेल मिलाए मेलणहार। कलिजुग सुतड़े आप उठांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरि नर नरायण नर हरि सच्ची सरकार।

१२६७ १२६७

०६ ०६

❋ १४ अस्सू २०१७ बिक्रमी बली सिँघ दे घर पिण्ड कैरों ज़िला अमृतसर ❋

सो पुरख निरँजण खेल खिलांयदा, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह। हरि पुरख निरँजण वेख वखांयदा, आदि जुगादी इक्क मलाह। एकँकारा बंक सुहांयदा, सचखण्ड दुआरा आप उपा। आदि निरँजण जोत जगांयदा, घर साचे करे रुशना। श्री भगवान सेव कमांयदा, थिर घर साची बणत बणा। अबिनाशी करता सोभा पांयदा, सच सिँघासण वेख वखा। पारब्रह्म प्रभ आपणा चरन टिकांयदा, शहनशाह सच्चा पातशाह। निरगुण आपणी धार बंधांयदा, निरवैर कल वरता। जूनी रहित नज़र ना आंयदा, अनुभव प्रकाश रिहा वखा। पुरख अकाल नाउँ धरांयदा, नाउँ निरँकार आप प्रगटा। आपणा आप आपे वेख वखांयदा, आपणा पर्दा लए उठा। दरगाह साची सोभा पांयदा, आदि जुगादी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसे आपणे थाँ। साचा थान सुहांयदा, सोभावन्त गहर गम्भीर। इक्क इकल्ला आसण लांयदा, एकँकारा चोटी चढ़ अख़ीर। साची सेज आप हंढांयदा, पातशाह वड पीरन पीर। एका हुक्म आप वरतांयदा, आपे देवणहारा धीर। आपणा राज आप कमांयदा, आपे होए शाह फ़कीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण बन्हे आपणी

बीड़। निरगुण दाता हरि भगवन्त, एका रंग समाया। आप बणाए आपणी बणत, दूजा घाड़न ना कोए घड़ाया। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग जुग आपणा खेल खलाया। आप उपजाए आपणा नाउँ मंत, एका मन्त्र आप दृढ़ाया। लेखा जाणे नारी कन्त, नर नरायण सेज हंढाया। इक्क सुहाए रुत बसन्त, दरगाह साची धाम वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आपणा खेल आप खलाया। आपणा खेल खलंदड़ा, एका एकँकार। सचखण्ड दुआर सुहंदड़ा, निरगुण दीवा बाती कर उज्यार। साचा तख्त आप वछंदड़ा, हरि सच सिँघासण कर त्यार। शाहो भूप आसण आप लगंदड़ा, राज राजाना बण सिक्दार। हुक्मी हुक्म आप वरतन्दड़ा, दो जहानां पावे सार। शब्द नाद इक्क वजंदड़ा, नाद अनादी कर त्यार। थिर घर साचा आप खुलंदड़ा, बंक दुआरी खोल्ह किवाड़। आपणा रूप आप रगंदड़ा, रेख रंग ना कोए विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपे बन्न्हे आपणी धार। आपणी धार बंधांयदा, निरगुण रूप श्री भगवान। सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा, साचे तख्त बैठ सुल्तान। शब्दी शब्द हुक्म वरतांयदा, देवणहारा धुर फ़रमाण। शाहो भूप इक्क अख्वांयदा, वड दाता राज राजान। लोआं पुरीआं रचन रचांयदा, ब्रह्मण्ड खण्ड करे प्रधान। आपणा बंस आप सुहांयदा, विष्न देवे एका दान। अमृत रस आप चुआंयदा, नाभी कँवल हो मेहरवान। ब्रह्म रूप आप प्रगटांयदा, पारब्रह्म कर पछाण। सुन्न अगम्म आप समांयदा, आपे होए जाणी जाण। आपणा पर्दा आपे लांहयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल हरि महान। हरि साचा खेल खिलांयदा, खेलणहार पुरख अगम्म। सचखण्ड दुआर सुहांयदा, आपणा बेड़ा आपे बन्न्हु। निरगुण आपणा नूर रखांयदा, ना मरे ना पए जम्म। जागरत जोत जोत डगमगांयदा, करे प्रकाश रवि ससि सूरज चन्न। विष्न ब्रह्मा शिव आप प्रगटांयदा, एका राग सुणाए कन्न। त्रैगुण माया रंग रंगांयदा, देवे वस्त अमुलड़ा धन। पंज तत्त नाता जोड़ जुड़ांयदा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश लेखा जाणे छप्पर छन्न। साचा मार्ग आपे लांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आपे जननी आपे जन। आपे जन जणेंदी माई, पारब्रह्म अख्वांयदा। आपे निरगुण जोत नूर कर रुशनाई, आदि शक्ति वेस वटांयदा। आपे चतुर्भुज साचा थान रिहा सुहाई, दरगाह साची सोभा पांयदा। आपे नाद धुन धुन नाद रिहा वजाई, शब्द अनादी नाद अल्हांयदा। आपे अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह बेड़ा रिहा चलाई, सच मलाह सेव कमांयदा। आपे सच सिँघासण पुरख अबिनाशन सोभा रिहा पाई, सीस ताज आप टिकांयदा। आपे सति निशाना सति सतिवादी रिहा झुलाई, सति पुरख निरँजण आपणी कार आप करांयदा। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड रचना रिहा रचाई, रच रच आपे वेख वखांयदा। आपे विष्न ब्रह्मा शिव रिहा उपजाई, आपे आपणा हुक्म सुणांयदा। जोती जोत

१२६६ ०६

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, आपे वेखे आपणा खेल तमाशा, दूसर संग ना कोए रखाईआ। ना कोई संग ना कोई साथा, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। पारब्रह्म प्रभ पुरख समराथा, दर घर साचे सोभा पांयदा। आप चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही दिस ना आंयदा। शब्द अगम्मी गाए गाथा, लिखण पढ़न विच ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि सो एका अक्खर निष्अक्खर आप उपांयदा। निष्अक्खर हरि की धार, जोती जोत जोत जगाईआ। निष्अक्खर एकँकार, ओंकार लए वड्याईआ। निष्अक्खर सांझा यार, आदि जुगादि रिहा समाईआ। निष्अक्खर हरि भण्डार, जुगा जुगन्तर रिहा वरताईआ। निश अक्खर वसे धाम न्यार, दरगाह साची आप बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी महिमा आप गणाईआ। आपणी महिमा आपे गाए, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। आपणी धुन आप उपजाए, धुन धुन विच टिकाईआ। आपणी सुन्न आप खुल्हाए, सुन्न समाध वेख वखाईआ। आपणी कुल आप प्रगटाए, कुलवन्ता सच्चा शहनशाहीआ। आपणी जोत आप जगाए, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। आपणा कोट आप बणाए, थिर घर साचा हरि मन्दिर आप सुहाईआ। आपणी ओट आप तकाए, आपे होए सदा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सुहाए दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा, दर घर साचे आप खुल्हांयदा। सच सिँघासण साचा राजा, तख्त निवासी सोभा पांयदा। शब्द अगम्मी मारे वाजा, आपणा नाउँ आप सालांहयदा। लेखा जाणे अनहद वाजा, हद हद ना कोए वखांयदा। साचे मन्दिर बह बह रचया काजा, करता पुरख कार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता, आपणी करनी आप करांयदा। आपणी करनी आपे कर, आपे दए सलाहीआ। आपे देवणहारा वर, आपे झोली रिहा भराईआ। आपे करे सच प्यार, नारी कन्त रूप वटाईआ। आपे करे सति श्रंगार, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। आपे गाए आपणा मंगलाचार, घर वज्जदी रहे वधाईआ। आपे लेखा जाणे अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। आपे सुत दुलारा करया ख़बरदार, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। आपे विष्न विश्व देवे धार, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। आपे पारब्रह्म ब्रह्म लए आधार, आप आपणी गोद सुहाईआ। आपे शंकर संसा दए नवार, एका हुक्मी हुक्म सुणाईआ। आपे तिन्नां करे सच प्यार, एका चेला गुर गुर माईआ। आपे देवे दाता दान, गुण निधान वस्त अमोलक झोली पाईआ। आप जणाए धुर फ़रमाण, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। हँ रूप होए प्रधान, सोहँ आपणी बणत बणाईआ। ना कोई ज़िमी ना अस्मान, धरत धवल ना कोए वड्याईआ। लेखा जाणे श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। श्री

१२६६ ०६

भगवान गहर गुण सागर, भेव कोए ना आंयदा। आदि जुगादी इक्क सौदागर, साचा वणज इक्क करांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर उजागर, आपणा अक्खर आप पढ़ांयदा। आपे देवे साचा आदर, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे साचा हरि, दूसर भेव कोए ना पांयदा। हरि का भेव ना जाणे कोए, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सचखण्ड दुआरे एका सोए, निरगुण बैठा सेज विछाईआ। आदि जुगादी एका होए, ना मरे ना जाईआ। निरगुण जोत बख्शे लोए, लोयण आपणा आप खुलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बीज आपे बोए, मात पित ना कोए बणाईआ। एकँकारा देवे साचे ढोए, नाम वस्त अमोलक झोली पाईआ। अमृत मुख सच्चा चोए, चरन चरनोदक सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकारा, आदि पुरख आपणा करे सच पसारा, सच साची जोत टिकाईआ। विष्न पसारा सच्चे हरि, सच साचा मेल मिलाया। कँवल कँवला कर उत्पत, नाभी अमृत आप भराया। पारब्रह्म ब्रह्म उपजाए आपणी रत, रक्त बूंद ना मेल मिलाया। आपणे मन्दिर आपे रक्ख, आपे बणे जणेंदी माया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख खेल अपारा, करे कराए करनहारा, धुर दरबारा आप सुहाया।
१२७० धुर दरबारा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहांयदा। हरि पुरख निरँजण एका कन्त, नर नरायण नाउँ वड्यांअदा। एकँकारा १२७०
बणाए आपणी बणत, साचा घाड़न वेख वखांयदा। आदि निरँजण महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। श्री भगवान
०६ रूप अनूप आदि अन्त, जुग जुग आपणी खेल खिलांयदा, अबिनाशी करता आप उपाए आपणा मंत, नाउँ निरँकारा आप ०६
सुणांयदा। पारब्रह्म प्रभ बणया रहे मंगत, आपणी झोली आपणे अग्गे डांहयदा। विष्नूं चाढ़े एका रंगत, रंग रंगीला रंग इक्क वखांयदा। ब्रह्मा दर भिखार प्रभ लाए आपणे अंगद, अंगीकार आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल साचा हरि, दर घर साचे सोभा पांयदा। साचा घर पुरख बिधाता, एका एक सुहाईआ। आदि जुगादी गाए आपणी गाथा, निरवैर करे पढ़ाईआ। एका पूजा एका पाठा, एका मन्त्र ल्ए उपजाईआ। एका सतिगुर एका साथा, एका सगला संग निभाईआ। एका देवणहारा दाता, दाता दानी इक्क अख्वाईआ। एका त्रैगुण माया रूप पछाता, करे किरपा सच्चा गोसाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव आपणी जोत धर, नूरो नूर करे रुशनाईआ। नूर उजाला हरि गोपाला, पारब्रह्म प्रभ दया कमांयदा। करे खेल सच्ची धर्मसाला, दर दुआर आप सुहांयदा। शब्द सरूपी बण दलाला, आदि पुरख सेव कमांयदा। आपणी चली अवल्लड़ी चाला, लेखा लेख ना कोए वखांयदा। शब्द जणाए दया कमाए सेव लगाए रूप महांकाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा।

वेस वटाए इक्क इकल्ला, एका रंग समाया। वसणहारा उच्च महल्ला, सच मुनारा सोभा पाया। सच संदेश एका घल्ला, विष्न ब्रह्मा शिव समझाया। त्रैगुण माया फड़ाए पल्ला, रजो तमो सतो संग निभाया। आपे करे खेल कर कर वल छला, अछल छल धारी आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेश नर नरेश, नर नरायण आप अल्लाया। सच संदेशा हरि का नाउँ, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। सचखण्ड दुआर वसे एका नगर ग्राउँ, साचे खेड़े मिले वडियाईआ। तिन्नां मेला एका पिता एका माउँ, एका नैण वेख वखाईआ। एका पकड़नहारा बाहों, समरथ पुरख इक्क हो जाईआ। एका देवे ठंडी छाउँ, जुग जुग होए सदा सहाईआ। एका करे सच नयाउँ, निरँकार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे घाड़न घड़, लोआं पुरीआं आपे वड़, निरगुण निराकार साकार खेल खलाईआ। साकार खेल अपारा, निराकारा आप खिलांयदा। जोती जोत कर उज्यारा, तत्व तत्त मेल मिलांयदा। त्रैगुण माया इक्क भण्डारा, हरि निरँकारा आप वरतांयदा। विष्नूं बणे सेवादारा, साची सेवा इक्क वखांयदा। ब्रह्मा बणे घाड़न घड़नहार ठठयारा, लक्ख चुरासी भाण्डे आप घड़ांयदा। शंकर लेखा अन्तिम दए नवारा, सति त्रिसूल हथ्थ फड़ांयदा। तिन्नां विचोला बण गिरधारा, गृह आपणे सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या शाह सुल्तान एका एक समझांयदा। एका सिख्या एका गुर, एका रूप दए दरसाईआ। एका मेला पारब्रह्म प्रभ दरगाह साची धुर, धुर बैठा सच्चा शहनशाहीआ। आदि जुगादि चढ़या रहे आपणे घोड़, शाह सवारा नाउँ रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हरि साचा जाए बौहड़, एका दूजा भउ चुकाईआ। एका नैण दिसे ना कोए अवर और, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। चौथे पद लाया पौड़, घर सुहञ्जणा सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, वर दाता सच्चा शहनशाहीआ। देवे वर श्री भगवान, दाता दानी इक्क अख्वाईआ। लक्ख चुरासी होए परवान, घट घट आपणी जोत करे रुशनाईआ। पंज तत्त वेखे जगत मकान, काया बंक आप सुहाईआ। नौं दर वेखे मात दुकान, वेखणहारा दिस ना आईआ। घर विच घर खेल महान, डूँग्घी कंदर फोल फुलाईआ। आदि निरँजण जोत निरँजण जगाए महान, दीपक दीआ डगमगाईआ। अमृत आत्म देवे दान, निझर झिरना आप झिराईआ। आत्म सेजा करे परवान, ब्रह्म मेला सहिज सभाईआ। शब्द नाद वजाए अनहद धुनकान, तार सितार ना कोए हलाईआ। ईश जीव करे कल्याण, कागद कलम ना लिखे छाहीआ। जुग जुग होए मात प्रधान, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका करे सच पढ़ाईआ। सच पढ़ाई एकँकार, एका अक्खर आप जणांयदा।

त्रैगुण माया वसे बाहर, त्रैगुण अतीता खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, घट घट आपणा नूर टिकांयदा। माणस मानुश करे विचार, मानुख आपणा मेल मिलांयदा। धरत धवल पावे सार, आदि जुगादि वेस वटांयदा। जुगां जुगन्तर साची कार, करनेहारा आप करांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव रहिणा ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोए वखांयदा। जुग चौकड़ी वरते वरतार, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणांयदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, आपणा हुक्म आप अल़ांयदा। चारे मुख करे पुकार, चारे कूटां फोल फुलांयदा। चारे जुग बन्न्हे धार, चारे वेदां आपे गांयदा। एका चौकड़ कर पसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि खेल अपारा, विष्न ब्रह्मा शिव अवतारा, लोकमात हरि कर उज्यारा, वसे धाम न्यारा, साची सेवा सेव लगांयदा। साची सेवा कर परवान, तिन्ने बैठे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे मार ध्यान, नैनण नैण इक्क खुल़ाईआ। एका देवे नाम निधान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जुग जुग आपणे हथ्थ रक्खे निशान, सृष्ट सबाई आप उठाईआ। लक्ख चुरासी बणया रहे काहन, नव सत्त गोपी आप नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका अक्खर रिहा समझाईआ। एका अक्खर लैणा पढ़, ब्रह्म पारब्रह्म पढ़ाया। अग्नी हवन ना

१२७२ जाणा सड़, मढ़ी गौर ना कोए दबाया। ताणा पेटा बहत्तर नड़, हड्ड मास नाड़ी रत जोड़ जुड़ाया। अप तेज वाए पृथ्मी १२७२

आकाश घाड़न घड़, मन मति बुध विच रखाया। घर विच सुहाए घर, ब्रह्म साची वण्ड वण्डाया। डूँग्घी कंदर बैठा वड़,

०६ दिस किसे ना आया। इक्क फड़ाए आपणा लड़, एका डोरी हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा ०६

कर, देवणहारा साचा वर, जुग चौकड़ी खेल खलाया। जुग चौकड़ी खेले जुग चार, चार वेद करे पढ़ाईआ। चारे खाणी पावे सार, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड वण्ड वण्डाईआ। चारे बाणी करे प्यार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाईआ। चारे वरनां दए आधार, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाईआ। चारों कुंट होए उज्यार, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण फेरा पाईआ। चारे जुग करे विचार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। चारे घर करे ख़बरदार, चौथे पद इक्क वड्याईआ। त्रैगुण माया तेरी धार, लोकमात आप चलाईआ। ठांडा सीता वसे सच दरबार, सचखण्ड निवासी बेपरवाहीआ। आपणी रीता जाणे आप निरँकार, पतित पुनीता भेव ना राईआ। नौं दर खोल्हे जगत दुआर, दसवां आपणे हथ्थ रखाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी कर पसार, लक्ख चुरासी जून गेड़ा रिहा दुआईआ। चारे जुग कर खुवार, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। नौं नौं चार एका धार, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जोड़ जुड़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणया रहिणा सेवादार, तेरा मनवन्तर तेरी झोली पाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता अन्तिम लहिणा देणा लए विचार, अभुल्ल अभुल्ल सच्चा शहनशाहीआ। करता कीमत

१२७३ पाए विच संसार, निरगुण निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। कलिजुग आए अन्तिम वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तिन्नां एका गुण रिहा समझाईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी पन्ध मुकाउणा, आपणा गेड़ा आप दुआईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, पुरख अबिनाशी होए सहाईआ। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां फेरा पाउणा, गगन गगनंतर वेखे थाउँ थाईंआ। ज़िमी अस्मानां पन्ध मुकाउणा, पान्धी बणे सच्चा माहीआ। चौदां लोक वेख वखाउणा, चौदां तबकां हट्ट कुण्डा लाहीआ। तीर्थ तट्टां भेव खुलाउणा, अठसठ फोले फोल फुलाईआ। चार वरन चार कुंट अठारां बरन अंदर मन्दिर वेख वखाउणा, काया बंक कवण सुहाईआ। गुर पीर अवतार साध सन्त भगवन्त साचे मन्दिर आप बहाउणा, महल्ल अटल उच्च मुनार सोभा पाईआ। शब्द अनादि ब्रह्मादि हुक्म सुनाउणा, नाद अनादी ढोला गाईआ। त्रैगुण माया फंद कटाउणा, जगत जंजाल रहिण ना पाईआ। निहकलंका नाउँ धराउणा, निरगुण निरवैर पुरख अकाल ब्रह्मा विष्न शिव रिहा समझाईआ। विष्नूं साचा संग रखाउणा, विछड़ कदे ना जाईआ। ब्रह्मे पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाउणा, एका घर वज्जे वधाईआ। शंकर जोती जोत समाउणा, हथ्थ त्रसूल रहिण ना पाईआ। एका ढोला दो जहानां सभ ने गाउणा, सोहँ शब्द सच्ची पढ़ाईआ। तख्त निवासी साचा तख्त सुहाउणा, साचे तख्त बहे सच्चा शहनशाहीआ। चारे बाणी एका राग अलाउणा, चारे खाणी दए वड्याईआ। १२७३

०६ चारे वरनां एका रंग रंगाउणा, ऊँच नीच राउ रंक कोए रहिण ना पाईआ। सृष्ट सबाई इष्ट दृष्ट इक्क वखाउणा, एका रूप अनूप प्रगटाईआ। घर घर दीपक मन्दिर जोत जगाउणा, घर घर विच करे रुशनाईआ। घर घर अनहद शब्द वजाउणा, छत्ती राग रहे जस गाईआ। घर घर ब्रह्म पारब्रह्म मिलाउणा, जगत विछोड़ा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आप चलाए आपणा मन्त्र, आपणे नाम करे पढ़ाईआ। साचा नाम हरी हरि मन्त्र, नमो देव वास्तक रूप सर्ब समाईआ। लेखा जाणे जुगा जुगन्तर, जुग करता सच्चा पातशाहीआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट घट बैठा आसण लाईआ। सतिजुग साची बणाए बणतर, कलिजुग मेटे झूठी शाहीआ। एका नाउँ प्रगटाए गगन गगनंतर, लोकमात पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां एका पुरख अकाल दीन दयाल आपणा नाउँ रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता उत्तम रक्खे आपणी ज़ाता, सृष्ट सबाई पिता माता, लक्ख चुरासी पूत सपूता वेखणहारा दहि दिशां चारे कूटां, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत मेल मिलाए थाउँ थाईंआ। सति सतिवादी लाए बूटा, अमृत सिंच हरया आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, लेखा जाणे दो जहान, आपणा लेखा आपणे लेखे पाईआ।

१२७३
०६

✻ १४ अस्सू २०१७ बिक्रमी मक्खण सिँघ दे गृह पिण्ड जौड़ा ज़िला अमृतसर ✻

सति पुरख निरँजण साहिब सुल्ताना, आदि जुगादि समांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल महाना, इक्क इकल्ला आप करांयदा। एकँकारा जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। आदि निरँजण नूरो नूर महाना, जोत उजाला डगमगांयदा। श्री भगवान गुण निधाना, गहर गम्भीर भेव ना आंयदा। अबिनाशी करता खेले खेल दो जहाना, सच सिँघासण आसण लांयदा। पारब्रह्म प्रभ आपे होए जाणी जाणा, भेव अभेदा आप खुल्हांयदा। साचे तख्त बैठ हरि राज राजाना, शाहो भूप हुक्म सुणांयदा। नाद अनादी धुर फ़रमाणा, शब्द अनादी नाद वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाह, आदि जुगादी इक्क मलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। साचा बेड़ा चलावणहारा, एका रंग समाया। दरगाह वसे साचे धाम न्यारा, महल्ल अटल उच्च आप उपाया। निरगुण दीवा बाती कर उज्यारा, जोती जोत करे रुशनाया। थिर घर खोल्हे ठांडा दरबारा, निराकारा वेस वटाया। सच सिँघासण अपर अपारा, अलक्ख अगोचर आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि आपणा रूप आप प्रगटाया। हरि निरगुण रूप प्रगटांयदा, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। मात पित ना कोए वखांयदा, साक सज्जण ना कोए बणाईआ। रूप रंग रेख ना कोए जणांयदा, सुते प्रकाश आप कराईआ। सच्चा शहनशाह अनुभव आपणी धार चलांयदा, अलक्ख अलक्खना भेव ना राईआ। सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा, एकँकारा आपणी कल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, नर नरायण इक्क अख्वाईआ। नर नरायण एकँकारा, अकल कल आप अख्वाईआ। आपे जाणे आपणी धारा, धार धार धार विच टिकाईआ। आपे अंदर आपे बाहरा, गुप्त ज़ाहरा आपणी खेल खलाईआ। सो पुरख निरँजण साचा मन्दिर कर त्यारा, जूनी रहित बैठा तख्त सुहाईआ। मूर्त अकाल खेल अपारा, दीन दयाल वड्डी वड्याईआ। जागरत जोत होए उज्यारा, आदि निरँजण इक्क रुशनाईआ। श्री भगवान सांझा यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे दए वड्याईआ। दर घर साचा पुरख अकाल, इक्क इकल्ला आप सुहांयदा। आदि जुगादी चले अवल्लड़ी चाल, हरि का भेव कोए ना पांयदा। सचखण्ड दुआरे निरगुण निरगुण बणे दलाल, थिर घर वासी वेख वखांयदा। आपणी करे आप प्रितपाल, जुग जुग साची सेव कमांयदा। साचे मन्दिर वजाए एका ताल, शब्द अनादी नाद सुणांयदा। आपणी इच्छया आप प्रगटाए महांकाल, शब्दी सेवा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचा आप सुहांयदा। दर सुहञ्जणा सोभावन्त, सति पुरख निरँजण आप सुहाईआ।

निरगुण निरवैर बैठा एका कन्त, नर हरि वड्डी वड्याईआ। आप बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नणहार भेव ना राईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग करता सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दर दरवाज़ा इक्क खुलाईआ। दर दरवाज़ा खोल्हणहारा, एका एक रंग समाईआ। सचखण्ड दुआरे भेव न्यारा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। एका शब्द बोल जैकारा, एका नाम दए वड्याईआ। थिर घर वासी मीत मुरारा, पीआ प्रीतम इक्क अख्वाईआ। सच सिँघासण कर त्यारा, पुरख अबिनाशी डेरा लाईआ। सेवक बण कर सेवादारा, दर दरवेश आपणी सेव कमाईआ। आपे भूप राज राजान बणे सिक्दारा, पातशाह शाह पातशाह आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुलाईआ। हरि आपणा भेव खुलांयदा, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा, निरगुण नूर कर उज्यार। आपणा वेस आप वटांयदा, वेस अवल्ला कर करतार। आपणी रचन आप रचांयदा, आपे बणे वेखणहार। आपणी वण्ड आप वण्डांयदा, निरगुण निरगुण कर प्यार। निरगुण साचा ताज आप सुहांयदा, सीस जगदीस रक्ख एकँकार। साचे मन्दिर सोभा पांयदा, सति सतिवादी झुलाए इक्क निशान। धुर फ़रमाणा इक्क अल्हांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप बंधांयदा। आपणी धार बंधावणहारा, निरगुण निरवैर अख्वाईआ। साचे मन्दिर हो उज्यारा, आपणी करनी किरत कमाईआ। निरगुण निरगुण कर प्यारा, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण उपजाए सुत दुलारा, निरगुण विष्न ब्रह्मा शिव आप उपजाईआ। निरगुण त्रैगुण देवे तत्त भण्डारा, निरगुण पंचम करे कुड़माईआ। निरगुण लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां लाए इक्क अखाड़ा, निरगुण लोआं पुरीआं ताल वजाईआ। निरगुण गगन मंडल देवे सहारा, निरगुण ज़िमी अस्मानां होए सहाईआ। निरगुण जोत जगाए रवि ससि सतारा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। निरगुण आपणा खोल्हे बंक किवाड़ा, आपणा भेव आप जणाईआ। निरगुण शब्द अगम्मी बोल जैकारा, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। निरगुण विष्नूं दए आधारा, चरन कँवल बख्शे सच सरनाईआ। निरगुण ब्रह्मे पावे सारा, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता, आपणी कुदरत आप रचाईआ। कुदरत रचन रचांयदा, हरि कादर बेपरवाह। हक मुकामे डेरा लांयदा, नूरो नूर जल्वा इक्क खुदा। साचा खेल आप खिलांयदा, बिस्मिल आपणा रूप वटा। घर मन्दिर सोभा पांयदा, दीवा बाती दए जगा। एका कलमा नबी पढ़ांयदा, एका शरीअत दए वखा। एका हुक्म हुक्म अल्हांयदा, कागद कलम ना लिखे रा। एका आपणी आयत सुणांयदा, किसे आयत विच ना जाए आ। एका आपणी धार बंधांयदा, दो जहानां वाली बेपरवाह। आदि जुगादी आपणा नाउँ धरांयदा, ना जम्मे ना मर जा।

किला कोट इक्क वखांयदा, सचखण्ड दुआरा रिहा वसा। थिर घर साचे आपणा कातब शब्द रखांयदा, दूसर संग ना लए कोए निभा। विष्न ब्रह्मे शिव एका लेखा लिख लिख आप पुचांयदा, एका हुक्म दए वरता। धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा, गावणहारा आपे गा। निरगुण आपणी वण्ड वण्डांयदा, सरगुण मेला सहिज सुभा। सरगुण साचा जोड़ जुड़ांयदा, पंज तत्त घाड़न लए घड़ा। त्रैगुण माया बन्धन पांयदा, बन्दी पावे सच्चा शहनशाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख हरि खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, आपणी करनी आप कमाईआ। करे कराए करता पुरख, बेअन्त बेपरवाहया। आदि जुगादि ना सोग हरख, चिंता रोग ना कोए वखाया। आपणा नाउँ आपे करे परख, वेखणहार आपणा रूप वटाया। निरगुण निरवैर देवे आपणा दरस, विष्न ब्रह्मा शिव आप तृप्ताया। आपे मेटणहारा हरस, चरन चरनोदक मुख चुवाया। आपे लेखा जाणे आपणे अर्श, दूजा कुरा ना कोए वण्डाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आदि आपणी खेल आप खिलाया। हरि साचा खेल खिलांयदा, ख़ालक ख़लक कर विचार। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगांयदा, त्रैगुण माया भर भण्डार। एका तत्व तत्त समझांयदा, रती रत कर प्यार। गति मित आप जणांयदा, ब्रह्म मति अपर अपार। साचा सति इक्क वखांयदा, जोत जगत जुगत सच कार। जोती जोत सरूप हरि, आप
१२७६ आपणी किरपा कर, आपणा कर आप पसार। आपणा पसारा करनेहारा, आपणा खेल खलाईआ। निरगुण निरगुण बण वरतारा, १२७६
०६ निरगुण भिच्छया हथ्थ उठाईआ। निरगुण वेखे दर दुआरा, निरगुण दर दर अलक्ख जगाईआ। निरगुण जोत निरगुण उज्यारा, ०६
निरगुण शब्द धुन उपजाईआ। निरगुण सरोवर अमृत ठंडा ठारा, निरगुण भर प्याला जाम प्याईआ। निरगुण लक्ख चुरासी घाड़न घड़े विच संसारा, सरगुण साचा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी घाड़न घड़या, ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमांयदा। करे खेल प्रभ साचा हरया, हरी हरि आपणा मेल मिलांयदा। घर विच घर एका धरया, बंक दुआरा इक्क सुहांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म अंदर वड़या, दिस किसे ना आंयदा। साचे पौड़े आपे चढ़या, चौथा पौड़ा आप लगांयदा। साचे मन्दिर आपे खड़या, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। आपणा अक्खर आपे पढ़या, बोध अगाधी शब्द सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख अबिनाशी करता, आपणी रचन आप रचांयदा। रचन रचाए हरि ब्रह्मण्ड, आपणी रचन आप रचाईआ। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वेखे थाउँ थाँईआ। घर घर जोत जगाए सूरा सरबंग, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, अनहद धुन आप अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी रचना रच, अंदर वड़ के बैठा सच्च,

काया माटी भाण्डा कच्च, नौं दुआरे खोज खुजाईआ। नौं दुआरे खेल अपारा, जगत वासना विच भरांयदा। मन मति बुध पावे सारा, डूँग्घी कंदर फोल फुलांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार जगत शंगारा, आसा तृष्ना वेख वखांयदा। हउमे हंगता गढ़ हँकारा, निरगुण सरगुण बुरज सुहांयदा। जूठ झूठ कर पसारा, मन आहारा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी घाड़न घड़, घट घट आपणा खेल खिलांयदा। घट अंदर दीवा बाती, हरि साची जोत जगाईआ। घट अंदर बूंद स्वांती, प्रभ कँवल नाभ भराईआ। घर खोल्हे बन्द ताकी, बजर कपाट तुड़ाईआ। घर बणे साचा साकी, भर प्याला जाम प्याईआ। घर देवे शब्द राकी, शाह सवारा सच्चा शहनशाहीआ। घर लेखा मुकाए बाकी, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। घर सुहाए सेजा खाटी, आत्म अन्तर वेख वखाईआ। घर लेखा चुक्के चौदां हाटी, चौदां तबकां चरनां हेठ दबाईआ। घर जगे जोत ललाटी, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। घर नेड़े वखाए वाटी, अगला पन्ध मुकाईआ। घर तट तीर्थ दस्से साचा ताटी, तट किनारा सोभा पाईआ। घर पुच्छणहारा वाती, आलस निन्दरा विच ना आईआ। घर उत्तम करे ज़ाती, वरन गोत ना कोए वखाईआ। घर मिटे अन्धेरी राती, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। घर मिले कमलापाती, कँवल नैण आप खुलाईआ। घर विगसे साचा साथी, सगला संग इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी रचना रच, काया मन्दिर आपे रिहा सुहाईआ। काया मन्दिर बणाया गढ़, सतिगुर सति पुरख निरँजण दया कमांयदा। निरगुण उप्पर बैठा चढ़, सच सिँघासण सोभा पांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, चोटी जड़ ना कोए वखांयदा। आपणा निष्अक्खर आपे पढ़, आपणा शब्द आप अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव देवे वर, वर दाता भेव ना आंयदा। विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाया, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। त्रैगुण घाड़न आप घड़ाया, पंज तत्त होई कुड़माईआ। मन मति बुध राह चलाया, आत्म ब्रह्म बैठा मुख छुपाईआ। शब्द अनादी आपणे हथ्थ रखाया, ताल तलवाड़ा आप वजाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी खेल रचाया, रच रच वेखे धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर सलाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तूं दाता दतार बेपरवाह, तेरा भेव कोए ना आईआ। दर दरवेश बण भिखार बैठे आ, निउँ निउँ चरनां सीस झुकाईआ। आपणा हुक्म इक्क जणा, कवण हुक्म सच्चा शहनशाहीआ। लक्ख चुरासी घाड़न ल्या घड़ा, तेरा रूप सृष्ट सबाईआ। कवण वेस लए धरा, धरनी धरत धवल लए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव रिहा खुलाईआ। भेव खुलाए श्री भगवान, त्रै त्रै आप जणांयदा। लोकमात रखाए आपणा इक्क निशान, जुग

जुग वेस वटांयदा। चारे वेद जगत ज्ञान, चार जुग वण्ड वण्डांयदा। चारे खाणी करे परवान, चारे बाणी मुख सालांहयदा। बिन हरि ना चुक्के किसे काण, अन्त पन्ध ना कोए मुकांयदा। प्रगट होए विच जहान, निरगुण आपणा भेव खुलांयदा। सरगुण ब्रह्म करे परवान, पारब्रह्म मेल मिलांयदा। शब्द वखाए सच निशान, धुर दी बाणी बाण लगांयदा। चारे जुग वेखे आण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणे अंग लगांयदा। आपणी इच्छया देवे दान, लक्ख चुरासी विच्चों भगत भगवन्त आप उठांयदा। सुरती शब्द मिलाए आण, शब्द गुर राह वखांयदा। सन्तन देवे एका माण, मन का मणका आप भुवांयदा। गुरमुख लेखे लाए आण, लिख लिख अक्खर आप पढ़ांयदा। गुरसिख बख्शे चरन धूढ़ अशनान, दुरमति मैल आप धुवांयदा। सतिजुग सति करे कल्याण, सति सतिवादी वेस वटांयदा। त्रेता त्रिया हो प्रधान, राम रामा डंक वजांयदा। द्वापर खेले खेल भगवान, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला, आपे चले अवल्लड़ी चाला, जुग करता चाल चलांयदा। चाल चलाए हरि निराली, लिखण पढ़न विच ना आईआ। जोत जगाए इक्क अकाली, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां करे सच दलाली, दो जहान फेरा पाईआ। बूटा लाए एका माली, गुरसिख फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। लेखा जाणे पत डाल्ही, कली कली आप महिकाईआ। आपे

१२७८ फिरे हथ्थां ख़ाली, ख़ालक ख़लक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, १२७८

०६ साची भिच्छया झोली पाईआ। साची भिच्छया झोली पा, एका हुक्म सुणांयदा। सतिजुग बेड़ा दए चला, रूप अनूप आप ०६

प्रगटांयदा। वार अठारां जोत जगा, निरगुण सरगुण वेस धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, हरि जू हरि हरि आप करांयदा। करे खेल इक्क इकल्लड़ा, अकल कल आपणी धार वहांयदा। वसाए नेहचल धाम अटल अटलड़ा, उच्च मुनारा हरि निरँकारा सोभा पांयदा। सतिजुग फड़ाया आपणा पल्लड़ा, पार किनारा आप वखांयदा। त्रेते लोकमात आसण मलड़ा, त्रैगुण लेखा आप जणांयदा। सच संदेश एका घलड़ा, नर नरेश रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि हरि आपणी कार कमांयदा। आपणी कार कमावण जोग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। निरगुण सरगुण धुर संजोग, धुर दा मेला मेल मिलाईआ। लेखा जाणे चौदां लोक, चौदां विद्या करे पढ़ाईआ। राम नाम सुधाखर इक्क सलोक, निश अक्खर आप उपाईआ। आपे दाता दानी देवणहारा मुक्त मोख, आपे मुक्ती चरनां हेठ दबाईआ। आपे मिटाए हरख सोग, हरि मेला सहिज सुभाईआ। आपे चुगाए साची चोग, नाम माणक मोती हथ्थ रखाईआ। आपे देवे दरस अमोघ, रूप अनूप

आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस धराईआ। जुग जुग वेस धरांयदा, पारब्रह्म करतार। अनुभव आपणा खेल खिलांयदा, मूर्त अकाल हो उज्यार। जूनी रहित जून विच ना आंयदा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज पावे सार। धुर फ़रमाणा हुक्म सुणांयदा, राम नामा कर प्यार। जनक सपुत्री आप प्रनांयदा, रावण तोड़े गढ़ हँकार। बिदर सुदामा आप तरांयदा, जुगा जुगन्तर साची कार। सखीआ मंगल आपे गांयदा, लेखा जाणे गोपी काहन। एका बंसरी नाम वजांयदा, बाल ग्वाला गऊआं चारे आण। ग़रीब निमाणे गले लगांयदा, लज्जया रक्खे सभा विच भगवान। दुष्ट हँकारी आप मिटांयदा, घर दर बण निगहबान। एका अक्खर आप पढ़ांयदा, अठारां अध्याए कर प्रधान। वेद व्यासा मुख सालांहयदा, पुराण अठारां दए ज्ञान। नारद ब्रह्मा संग रलांयदा, लेखा जाणे धुर फ़रमाण। आपणी कल आप वरतांयदा, काल उठाए आप भगवान। महांकाल हुक्म सुणांयदा, बैठा सच सच्ची धर्मसाल। जो घड़या भन्न वखांयदा, गुर पीर अवतार चलण नाल नाल। आपणे भाणे सद समांयदा, शब्द सरूपी बण दलाल। लक्ख चुरासी ब्रह्मा विष्न शिव पत डाली आप महिकांयदा, आपे फुल फलवाड़ी वेखे आण। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा, झूठी शाही मिटे निशान। दर घर साचे सोभा पांयदा, साचे तख्त बहे श्री भगवान। कलिजुग वेला लोकमात आंयदा, उठ उठ चारों कुंट करे ध्यान। कवण दाता हुक्म सुणांयदा, कवण देवे धुर फ़रमाण। कवण राजा रईयत वेख वखांयदा, कवण देवे पीण खाण। कवण महल्ल दुआर वसांयदा, कवण आदि जुगादि करे पछाण। पुरख अबिनाशी शब्द आवाज लगांयदा, एका देवे धुर फ़रमाण। कलिजुग कर किरपा मेल मिलांयदा, पारब्रह्म प्रभ चतर सुजान। साची सिख्या इक्क समझांयदा, देवणहारा इक्क ज्ञान । एकँकारा ओंकारा आपणा रूप प्रगटांयदा, ऐड़ा अक्खर करे प्रधान। एका तेरी अक्ख खुलांयदा, कलिजुग उठाउणा इक्क निशान। लक्ख चुरासी कीता तेरी झोली पांयदा, तेरी चोली रंगे हरि भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, देवणहारा दानी दान। सुणया नाउँ शब्द निरँकारा, कलिजुग लए इक्क अंगड़ाईआ। नेतर खोल पाया दरस अगम्म अपारा, रो रो रिहा कुरलाईआ। लोकमात रुत्त आई चौथे जुग अन्तिम वारा, धरत धवल तिन्न पैर रही भन्नाईआ। चौथे पैर ना चुक्कया जाए भारा, लक्ख चुरासी भार रही दबाईआ। तेरा हुक्म मेरा वरतारा, चार कुंट दयां वरताईआ। घर घर अंदर करां धूंआँधारा, धुर दी बाणी इक्क भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अन्त मिले सच्ची सरनाईआ। हरि सतिगुर सच्चा बोलया, निरगुण दाता गुण निधान। कलिजुग तेरा कंडा तोलया, तोलणहार श्री भगवान। कलिजुग वज्जे एका ढोलया, मृदंग दिसे ना कोए निशान। सच वस्त रक्खे ना कोए कोलया, जूठ

झूठ होए प्रधान। राम नाम ना किसे मौलया, कान्हा कृष्ना ना मिले माण। धरनी भार ना चुक्के आपणा धौलया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, देवे धुर फ़रमाण। कलिजुग कूड़ा कर पसारा, हरि साचा सच जणाईआ। तेरा लेखा अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर आप लिखाईआ। सृष्ट सबाई कर खुवारा, पंज तत्त तत्त हलकाईआ। रैण अन्धेरी होए अँध्यारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। तेरा संग रखाए ईसा मूसा संग मुहम्मदी यारा, अल्ला राणी वज्जे वधाईआ। एका कलमा करे पसारा, कायनात खुदी खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महिबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला बिस्मिल आपणी खेल खलाईआ। कलिजुग मंगे मंग अपार, दोए चरन सीस निवाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, दर भिखारी मंगण आया। काला सूसा तन श्रंगार, हथ्थीं मैहन्दी रंग रंगाया। ईसा मूसा दए आधार, एका आपणा खेल खलाया। एका रूप प्रगटाए आप करतार, संग मुहम्मद जोड़ जुड़ाया। चार यारी सच धार, कलिजुग चौथा जुग वेख वखाया। सृष्ट सबाई करे ख्वार, एका कलमा अमाम पढ़ाया। राह तक्के परवरदिगार, चौदां चौदां वण्ड वण्डाया। चौदां तबकां दए आधार, चौदस चन्द आप चढ़ाया। चौदां सद बणे सिक्दार, अन्त ताज सीस ना कोए टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जुग जुग आपणा खेल खलाया। देवे वर हरि करतार,
१२८० आपणी बूझ बुझाईआ। कलिजुग रहिणा ख़बरदार, पुरख अबिनाशी एह समझाईआ। नानक निरगुण लए अवतार, सुणे पुकार १२८०
०६ सच्चा शहनशाहीआ। नाम सति मन्त्र दए उच्चार, चार वरन करे पढ़ाईआ। इक्क वखाए सचखण्ड दुआर, लोआं पुरीआं ०६
ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ रखाईआ। इक्क वजाए रबाब सितार, आपणी सारंगी सारंग आप वजाईआ। रसना गाए करतार करतार, करता कीरत आप कराईआ। एका जोती नूर उज्यार, घर घर मन्दिर करे रुशनाईआ। डुब्बदे पाथर जाए तार, जो जन आयण सरनाईआ। लेखा लिखे अगम्म अपार, लिखावणहारा बेपरवाहीआ। एका वसे धाम न्यार, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। निरगुण सरगुण कर प्यार, लोकमात वज्जे वधाईआ। इक्क इकल्ला कर पसार, एक आकार सृष्ट सबाई रिहा वखाईआ। सति नाम भर भण्डार, आपणा नाउँ सति सति जणाईआ। करता पुरख हो त्यार, आपणी करनी रिहा कमाईआ। अकाल मूर्त महांकाल रक्खे चरन दुआर, काल आपणी सेवा आप समझाईआ। निरभउ खेल करे आप करतार, भय वखाए सृष्ट सबाईआ। जूनी रहित आवे जावे वारो वार, जुगा जुगन्तर आपणी बणत बणाईआ। कलिजुग जीवां सुणे पुकार, अंदर मन्दिर बह बह डेरा लाईआ। दुखियां देवे दर्द निवार, दर्द वण्डे साचा माहीआ। जगत ग़रीबी आपणे गल पाए हार, जगत चाकरी आप कमाईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां करे प्यार, अठारां बरनां बख्शे इक्क सरनाईआ। एका शब्द

बोल जैकार, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। ऊँची कूक गया पुकार, कलिजुग अन्त अन्धेरा छाईआ। निहकलंक उतरे आपणी वार, कोई जन्मे ना पिता माईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दा दाता इक्क रघुराईआ। नौं खण्ड पृथ्मी होए उज्यार, सत्तां दीपां करे रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया दए निवार, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ गुर का शब्द जो जन रहे विचार, गुर करता गुर करनी योग गुर कीमत आपणी आपे पाईआ। एका जोती नूर उज्यार, दोए दोए धारा वेख वखाईआ। अंगद करया अंगीकार, अमरदास अमरापद बहाईआ। राम दास वखाया इक्क दरबार, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। गुर अरजण शब्द जणाया सच्ची धुन्कार, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। एका वर पाया पुरख करतार, एका सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। सन्त भगवन्त भगत कर प्यार, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। गुरू ग्रन्थ गूरू कर त्यार, लक्ख चुरासी गया समझाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी बेड़ा करे पार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। देह जोत करे प्यार, हरि गोबिन्द शाह अस्वार इक्क शहनशाहीआ। हरिराय दए आधार, हरिकृष्न जोती जोत मिलाईआ। गुर तेग बहादर रक्खी तिक्खी धार, दो जहानां आप रखाईआ। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा दए निवार, आपणा साचा चन्द चढ़ाईआ। उपज्या चन्द विच संसार, गोबिन्द किरन किरन चमकाईआ। पुरख अबिनाशी करे प्यार, सुत दुलारा वेख वखाईआ। एका देवे सच भण्डार, सति सतिवादी आप वरताईआ। एका बख्शे नाम कटार, चण्ड प्रचण्ड हथ्थ फड़ाईआ। एका अश्व इक्क अस्वार, एका आसण सिँघासण रिहा लगाईआ। एका भूप इक्क सिक्दार, एका हुक्म रिहा वरताईआ। एका भिखारी भिखक मंगे आण, एका दाना झोली पाईआ। एका शब्द धुर फ़रमाण, आदि जुगादि रिहा सुणाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका बैठा आसण लाईआ। एका जोत श्री भगवान, नानक गोबिन्द करी रुशनाईआ। लोकमात वेखे मार ध्यान, कलिजुग जीव कूकण देण दुहाईआ। घर घर भुलया सीता राम, राधा कृष्न ना कोए अल्हाईआ। उठया जोद्धा सूरबीर बली बलवान, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। चिल्ले चढ़या तीर कमान, सच निशान इक्क लगाईआ। लेखा जाणे दो जहान, दो जहानां वाली बेपरवाहीआ। आपणी रीती करे आप प्रधान, पतित पुनीती खेल खलाईआ। चारे वरन इक्क ज्ञान अमृत पान आप कराईआ। तन गात्रा इक्क वखान, नाम शस्त्र विच टिकाईआ। ना कोई घड़े लोहार तरखाण, तिक्खी साण ना कोए कराईआ। पहलां काम क्रोध लोभ मोह हँकार लाहवे घाण, दूजी आसा तृष्ना दए मिटाईआ। तीजी तीजे नेत्र दरस कराए श्री भगवान, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। चौथे पद करे परवान, चौथे घर वज्जे वधाईआ। पंचम देवे सच निशान, पंचम देवे माण वड्याईआ। पंच प्यारे कर प्रधान, पंचम मुख आप सालाहीआ। पंचम अग्गे मंगे दान, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। आपे हुक्म सुणाए धुर फ़रमाण, शब्द अगम्मी आप अल्हाईआ।

कोई ना लिखे बण निधान, कागद कलम शाही सभ दे हथ्थों दए सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करया खेल अगम्म अपार, लोकमात वेस वटाईआ। गोबिन्द गुर कर निमस्कार, पंजां अग्गे सीस झुकांयदा। सिर रक्ख अग्गे सच्ची सरकार, आपणा आप भेट वखांयदा। मेरा मुनारा उच्च निशान, पंचम रंग रंगांयदा। पंचम ताज श्री भगवान, आदि पुरख आपणी हथ्थीं आप घड़ांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल करे महान, लेखा लेख ना कोए लिखांयदा। मेरा तन ना दिसे कोए निशान, मेरा शब्द सर्ब समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग एका वेस वटांयदा। दया सिँघ इक्क बोल जैकारा, गोबिन्द अग्गे सीस झुकाया। तूं साहिब सतिगुर हउँ चाकर सेवादारा, कवण रूप खेल खलाया। हउँ भिखारी मंगदे रहे तेरा दुआरा, क्यों मंगण दाता तूं बणके लोकमात विच आया। आपणी दस्स दे साची गाथा, पर्दा ओहला दे उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द आपणा भेव खुलाया। गुर गोबिन्द भेव खुलांयदा, चौंह अक्खर रसना बोल। चारे जुग मूल चुकांयदा, मेरा सीस तोले तोल। जगदीस खेल खिलांयदा, सुत्ते रहिणा ना बण अनभोल। कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा, नौं खण्ड पृथ्मी जाए डोल। चारों कुंट अन्धेरा छांयदा, चार वरनां पैणां घोल। गुर पीर ना कोए छुडांयदा, भाणा वेखे आपणा होल। पारब्रह्म आपणा खेल आप खलांयदा, गुर गोबिन्द पंजां प्यारयां नाल करे कौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हर घट आपे रिहा मौल। गुर गोबिन्द कौल ल्या कर, पंज प्यारे मेल मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम जाए हर, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। गोबिन्द सूरा आए चढ़, नीले वाला साचा माहीआ। शब्द अगम्मी खण्डा हथ्थ विच फड़, बहत्तर नाड़ी दए सज़ाईआ। पुरख अकाल बणाए एका गढ़, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर सुहाईआ। सम्बल नगर जोत धर, एका नूर करे रुशनाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, शब्दी शब्द हुक्म वरताईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा उखेड़े जड़, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे विच छुपाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, गुर सतिगुर आप जणांयदा। निहकलंक कल जामा पाउणा, जोती जामा भेख वटांयदा। वासी पुरी घनक अकल कल आप वरताउणा, कलधारी दिस ना आंयदा। अछल छल खेल खिलाउणा, वल छल आपणी खेल आप खिलांयदा। जल थल महीअल आप समाउणा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर डेरा लांयदा। गगन मंडल वेख वखाउणा, मंडल मंडप फेरा पांयदा। करोड़ तेतीसा मूल चुकाउणा, सुरपति राजा इंद रहिण ना पांयदा। शंकर अंकर विच समाउणा, आप आपणा हुक्म वरतांयदा। ब्रह्मे ब्रह्म जोत जगाउणा, पारब्रह्म आपणे रंग रंगांयदा। विष्नूं विश्व धार चलाउणा, वास्तक आपणी खेल खिलांयदा। चारे वेदां

पन्ध मुकाउणा, चारे जुग पार करांयदा। पुराण अठारां राह तकाउणा, वेद व्यासा राह तकांयदा। गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाउणा, बोध ज्ञाना विच समांयदा। अञ्जील कुरानां पार कराउणा, सच अमामा वेस धरांयदा। लाशरीक एका ढोला गाउणा, साचा सोहला आप अलांयदा। खाणी बाणी वेख वखाउणा, धुर दी बाणी बाण लगांयदा। छत्ती रागां भेव चुकाउणा, नारद सुरस्ती आप सुहांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव आपणे लेखे लाउणा, पिछला लहिणा झोली पांयदा। त्रैगुण माया फंद कटाउणा, जगत जंजाला तोड़ तुड़ांयदा। चित्रगुप्त लेख वखाउणा, राए धर्म संग रलांयदा। लाड़ी मौत शंगार कराउणा, नैणां कज्जल एका पांयदा। लक्ख चुरासी फोल फुलाउणा, जो घड़या भन्न वखांयदा। सूरज चन्न मुख शर्मौणा, किरन किरन विच समांयदा। मंडल मंडप डेरा ढाउणा, दूजा गढ़ ना कोए बणांयदा। पुरख अबिनाशी वेख वखाउणा, वेखणहारा दिस ना आंयदा। गोबिन्द सूरा इक्क प्रगटाउणा, नाम खण्डा हथ्थ चमकांयदा। कलिजुग कूड़ा पार कराउणा, ठूठा ख़ाली हथ्थ वखांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां तख़्तों लौहणा, सीस ताज ना कोए टिकांयदा। निहकलंक कल्की अवतार जामा पाउणा, काल कलंदर आप नचांयदा। रंग महल्ल इक्क वसाउणा,
सम्बल नगरी डेरा लांयदा। आत्म रंगीला पलँघ विछाउणा, पावा चूल ना कोए बणांयदा। सूरज चन्न ना कोए चढ़ाउणा, निरगुण जोत डगमगांयदा। लिख्या लेख ना कोए अलाउणा, निष्अक्खर आपे गांयदा। आपणा हुक्म आप वरताउणा, पुरख अकाल
१२८३ खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजण सच निशाना हथ्थ उठाउणा, सति सतिवातदी आप झुलांयदा। हरि पुरख निरँजण हरि १२८३
०६ मन्दिर आप वडिआउणा, वड्डी वडियाई हरि वड्डा आपणे हथ्थ रखांयदा। एकँकारा एका कार कमाउणा, करता कीमत आपणी ०६
आपे पांयदा। आदि निरँजण जोत उजाला नूरो नूर डगमगाउणा, नूरी नूर आप अख्वांयदा। अबिनाशी करता ख़ालक ख़लक वेख वखाउणा, मख़लूक आपणा ताल वजांयदा। श्री भगवान सांझा दर दुआर इक्क वखाउणा, दर दरवाज़ा आप सुहांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा खेल खिलांयदा। खेल खलाए हरि निरँकारा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। चौथे जुग लै अवतारा, निरगुण निरगुण करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई पावे सारा, नव सत्त वज्जे वधाईआ। लेखा जाणे मन्दिर मस्जिद मठ गुरुदुआरा, अठसठ तीर्थ तट किनारा वेख वखाईआ। साधां सन्तां जीआं जन्तां काया मन्दिर वेखे बंक किवाड़ा, पंचम धाड़ा मूल चुकाईआ। चारों कुंट नार दुहागण विभचार लगाया इक्क अखाड़ा, कुलखणी नार मति डूमणी रही नचाईआ। सतिगुर पूरा गुरसिखां गुर करे प्यारा, गुर गुर आपणी दया कमाईआ। हरिजन हरिभगत देवे नाम सहारा, रसना जिह्वा एका गुण वखाईआ। अजपा जाप ना विसरे हरि करतारा, जपत जपत सहिज सुख पाईआ। कलिजुग अन्तिम निरगुण निरवैर पुरख अकाल जूनी रहित

पावे सारा, जो जन रहे ध्याईआ। आवण जावण लक्ख चुरासी जम की फ़ाँसी करे पार किनारा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। नाता टुटे कूड़ कुड़यारा, मात पित भाई भैण साक सैण बंधप ना कोए प्यारा, जिस जन बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। लेखा जाणे आर पार किनारा, मँझधार बेड़ा आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह शहनशाह सच्चा शहनशाहीआ। शहनशाह हरि वड वड्डा राजा, राज जोग इक्क कमांयदा। कलिजुग सतिजुग रचया काजा, दोहां विचोला आप अख्वांयदा। प्रगट जोत देस माझे पाया माझा, चारे जुग चारों कुंट फिरांयदा। नव सत्त चलाए आप जहाज़ा, एका चप्पू हथ्थ उठांयदा। गुरसिखां सुत्तयां मारे शब्द वाजा, रैण दिवस सेव कमांयदा। जुगा जुगन्तर रक्खे लाजा, भगत वछल आपणा बिरद धरांयदा। आदि जुगादि फिरे भाजा, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। दर घर साचा हरि सुहांयदा, सम्बल नगर धाम न्यार। गुर गोबिन्द जोत जगांयदा, जोती जाता आप करतार। आदि अन्त आपणी खेल खिलांयदा, एका गुर इक्क अवतार। आपणी महिमा आपे गांयदा, आपे होए गावणहार। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा, कलिजुग अन्तिम करे ख्वार। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकांयदा, करे खेल आप करतार। गुरमुख साजण मीत मुरार कर प्यार गले लगांयदा, जिउँ बालक माता सुत करे प्यार। अमृत सीर इक्क प्यांअदा, काया करे ठंडी ठार। पंज चोर नेड़ ना आंयदा, ठगौरी ठग्गे ना कोए हँकार। त्रैगुण अग्नी तत्त बुझांयदा, सच शब्द दए सच्ची धुन्कार। वाह वा सख़ीआं मंगल गांयदा, काया मन्दिर बैठ सच्चे दुआर। हरि मन्दिर सोभा पांयदा, निर्मल जोत जगे अगम्म अपार। तेल बाती ना कोए रखांयदा, एका हवन सच्ची सरकार। आदि जुगादि साकत निन्दक दुष्ट आप मिटांयदा, गुरमुख साचे लाए पार। सतिजुग सति सतिवादी राह वखांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका वसे दरगाह साची ठांडे दरबार। नानक निरगुण हरि हरि पाया, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। निरगुण नानक विच समाया, नानक निरगुण भेव ना राईआ। निरगुण नानक चोला आप हंढाया, नानक निरगुण रंग चढ़ाईआ। निरगुण नानक गोला आप बणाया, नानक गोला निरगुण सेवा कमाईआ। निरगुण नानक तोला आप बणाया, तोले तोल सच्चा पातशाहीआ। नानक निरगुण आपणा हुक्म आप जणाया, नानक निरगुण हुक्म विच समाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खलाया, लोकमात वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अभुल्ल अभुल्ल इक्क अख्वाईआ। नानक निरगुण शब्द धार, सति पुरख निरँजण आप जणांयदा। सति पुरख निरँजण वजाए सितार, सच सितार आप हलांयदा।

निरगुण सरगुण करे प्यार, सरगुण निरगुण वेख वखांयदा। लालो बणे आप निरँकार, आपणा रूप अगे आप दरसांयदा। विचोला बण सच्ची सरकार, सृष्ट सबाई आप समझांयदा। पंज तत्त ना कोए आकार, मन मति बुध ना कोए वखांयदा। आपे सुणाए आपे सुणनेहार, आपे लालो नां धरांयदा। आपे गाए आपणी वार, आपे ख़सम हुक्म मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लांयदा। निरगुण अंदर नानक निरगुण धार, सरगुण विच सरगुण रूप वटाईआ। निरगुण अंदरे अंदर करे गुफ़्तार, सरगुण नानक रसना जिह्वा हलाईआ। निरगुण निरवैर करे प्यार, परा पसन्ती आपे गाईआ। सरगुण सुणाए सर्ब संसार, मद्धम बैखरी रूप वटाईआ। लालो लालन सद बैठा रहे विचकार, शब्दी शब्द रूप प्रगटाईआ। नानक अक्खर कोई ना सके विचार, मन मति बुध भेव ना राईआ। त्रैगुण वसया बाहर, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। नानक ख़सम दी बाणी रिहा विचार, एका लालो करे जणाईआ। लिखण पढ़ण तों रक्खी बाहर, जो हरि हरि बाणी रिहा सुणाईआ। जो नानक रसना दए उच्चार, कलिजुग जीवां राह वखाईआ। लक्ख चुरासी वखाए एकँकार, जगत इशारा इक्क समझाईआ। पिच्छे साचे तख़्त बैठा आप निरँकार, नानक सेवा रिहा कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द अनादि सच्ची धुन्कार, काया मन्दिर अंदर देवे कर प्यार, रसना जिह्वा कढ्ढे बाहर, कलम छाही दए आधार, कागद लेखा अपर अपार, जीवां जंतां करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक निरगुण निरगुण नानक एका हरि आपे अक्खर आपे वक्खर आपे रिहा पढ़ाईआ।

✻ १५ अस्सू २०१७ बिक्रमी केशोदास दे घर पिण्ड जंडोके सिरहाली ज़िला अमृतसर ✻

आदि जुगादी हरि भगवान, हरि जू हरी हरि मन्दिर सोभा पाईआ। हरी ओम देवे तत्त शब्द ज्ञान, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सुंदरी बाला करे परवान, सरीअँ आपणा रूप दरसाईआ। बन महि खेल दो जहान, बस अप यस आपणी धार चलाईआ। जुगा जुगन्तर हो प्रधान, निगहबान रूप प्रगटाईआ। निष्अक्खर बणाए वेदांत विधान, विद्वत आपणा रूप दरसाईआ। राग नाद अगम्म धुनकान, शब्द शमशान आप समाईआ। करे खेल गुण निधान, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। चतुर्भुज नौजवान, ना मरे ना जाईआ। इष्ट दृष्ट रूप साचा काहन, वास्तक वशिष्ट खेल खिलाईआ। लेखा जाणे धुर दी बाण, धुर फ़रमाणा आप अल्लाईआ। गावत गीत गोबिन्द गाए महान, अक्खर वक्खर अलक्ख पढ़ाईआ। गुण निधान वखाए इक्क निशान, निर्धन निरवैर आप झुलाईआ। ओअँ खेल करे बेपहचान, महिबान आपणी धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, हरि मंदर रिहा सुहाईआ। हरि मन्दिर सोहे उच्च महल्ला, परम पुरख सुहाईआ। निराकार निज घर वासी बैठा इक्क इकल्ला, अकल कल आपणी खेल खलाईआ। जुगा जुगन्तर रूप अनूप अछल अछला, वल छलधारी भेव ना राईआ। सच संदेश नर नरेश निराकार एका घल्ला, धुन अनाद ब्रह्मादि आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, एका मन्दिर दए वड्याईआ। हरि मन्दिर वडियाई वड, सो पुरख निरँजण आप वड्यांअदा। आपणे विच्चों आपा कढ्ढ, आप आपणा रूप धरांयदा। आपणे मन्दिर आप लडाए लड, प्रेम प्यार पीआ प्रीतम प्रिया नारी आप करांयदा। अगम्म अगम्मड़ा अलक्ख अलक्खणा आप सुणाए आपणा छन्द, बोध अगाध आप अलांयदा। आपे आपणा लेखा जाणे बन्दी बन्द, दूसर बन्धन ना कोए वखांयदा। एकँकारा इक्क इकल्ला सदा सुहेला सद बख्शिंद, बख्शश आपणी आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, हरि मन्दिर थान सुहांयदा। हरि मन्दिर थान सुहंदड़ा, सुहाए आप करतार। अनुभव प्रकाश करंदड़ा, निर्मल जोत जोत उज्यार। आदि जुगादी वेख वखंदड़ा, जुग करता बेऐब परवरदिगार। दाता दानी गुणी गहिन्दड़ा, गहर गम्भीर सच्ची सरकार। निरगुण निरगुण खेल खिलंदड़ा, खेले खेल अगम्म अपार। एका मन्त्र नाउँ दृढ़ंदड़ा, हरी ओम एका तत्त विचार। रूप अनूप आप

१२८६ दसंदड़ा, शाहो भूप सच्चा सिक्दार। दो जहानां लेख लिखंदड़ा, लिख लिख लेखा वेखे वेखणहार। कागद कलम ना १२८६

०६ कोए रखंदड़ा, मस्स बनास्पत ना कोए आधार। आपणी इच्छया आपे पूर करंदड़ा, भविख्त भिच्छया पाए हरि गिरधार। जोती ०६

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर सोहे एका घर, दर घर साचा आप सुहांयदा। दर घर हरि नर सुहांयदा, निरगुण निरवैर पुरख अकाल। जूनी रहित आपणा रूप आप प्रगटांयदा, भाग लगाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाल। जोती जाता खेल खिलांयदा, जागरत जोत दीन दयाल। आपणा वेला वक्त आप सुहांयदा, थित वार ना सके कोए सुरत संभाल। एका अक्खर आप प्रगटांयदा, इक्क ओम हो मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर रंग रंगांयदा। हरि मन्दिर रंग रंगीला, रंग रंग विच चमकाईआ। आदि निरँजण छैल छबीला, जोबनवन्त सहिज सुखदाईआ। रूप प्रगटाए लाल कंचन सूहा चिट्टा पीला, नीला काला भेव ना राईआ। दरगह साची आदि जुगादी आपणा बणया रहे आप वकीला, आपणी दलील दए सवाईआ। दूसर करे ना कोए अपीला, हुक्मी हुक्म ना कोए सुणाईआ। निरगुण निरगुण बणाए इक्क कबीला बंस सरबंस आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मन्दिर वखाए एका घर, घर मन्दिर सोभा पाईआ। घर मन्दिर हरि सुहावणा, सति पुरख निरँजण आप सुहाया। मूर्त अकाल आसण लावणा,

१२८७
०६

भेव अभेदा भेव छुपाया। भगवन भगवन्त रूप इक्क दरसावणा, आदि शक्ति जोत रुशनाया। रक्त बूंद ना मेल मिलावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर साचा इक्क सुहावणा। दर सुहाए पारब्रह्म, उच्च अगम्म अथाह। आप उपजाए आपणा नाम, दो जहान बणाए सच मलाह। पूरन करे आपणा काम, सिफ्ती देवे सिफ्त सालाह। दरगाह साची वसे धाम, धाम अवल्लड़ा रिहा सुहा। करे प्रकाश एका राम, रमिआ रहे सभनी थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी साचा हरि, आपणा हुक्म आपे रिहा सुणा। एका हुक्म हरि करतार, एका सिख्या सच जणाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआर, एका हरि हरि सोभा पाईआ। एका शब्द इक्क जैकार, एका नमो नमो निमस्कार, एका बैठा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि नमो आपणी आपे रीत चलाईआ। आदि नमो नमस्कार गुरदेव, देव देवा खेल खिलांयदा। पारब्रह्म प्रभ अलक्ख अभेव, अगम्म अथाह बेपरवाह दर घर साचा आप सुहांयदा। आपे जाणे आपणी सेव, सेवक सेवादार साची सेवा आप करांयदा। रूप अनूप भूप शाहो सच्ची सरकार, साचे तख्त सोभा पांयदा। तख्त ताज सिर रक्ख दस्तार, एका हुक्म नाम दृढ़ांयदा। नमो सति वरते वरतार, सति सति आपणी धार बंधांयदा। सति रूप हरि करतार, सति रूप पारब्रह्म आधार, सति रूप सभ तों वसे बाहर, सति सिँघसण सति पुरख अबिनाशन सति सतिवादी आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वसे साचा हरि, साचा मन्दिर आप वड्यांअदा। साचा मन्दिर सोभावन्त, सति पुरख निरँजण आप सुहाया। आपणी गाए महिमा अगणत, गावणहारा दिस ना आया। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग करता बेपरवाहया। आपणी इच्छया बणाए आपणा मंत, आपणा नाउँ आप दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका सति एका तत्त, पारब्रह्म प्रभ आपणा आप प्रगटाया। सति सति सति कर प्रधान, सति पुरख निरँजण खेल खिलांयदा। सति शब्द नाद धुनकान, सति नादी नाद वजांयदा। सति सचखण्ड दुआरा इक्क मकान, सति थिर घर साचा आप सुहांयदा। सति निरगुण निरगुण देवे दान, सति वस्तू झोली आप भरांयदा। सति विष्न कर प्रधान, सति अमृत कँवल टिकांयदा। सति ब्रह्मा ब्रह्म निशान, सति सरूप आप वखांयदा। सति शंकर गुण निधान, गुणवन्ता वेख वखांयदा। एका सति कर परवान, तिन्नां एका रंग रंगांयदा। एका सति देवे दान, सांतक सति सति समझांयदा। एका सति देवे ज्ञान, ब्रह्मा चारे वेद गांयदा। एका सति करे पछाण, शंकर हथ्थ त्रिसूल उठांयदा। एका सति करे ध्यान, विष्नूं सांगोपांग सेज हंढांयदा। एका सति होए मेहरवान, त्रैगुण वण्डण वण्ड वण्डांयदा। एका सति पाए आण, पंज तत्त आप प्रगटांयदा। एका सति करे वख्यान, आपणा हुक्म आप

सुणांयदा। एका सति लक्ख चुरासी घाड़न घड़े आण, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगांयदा। एका सति काया मन्दिर अंदर घर विच घर वखाए सच मकान, आत्म ब्रह्म आप बहांयदा। एका सति अमृत आत्म देवे पीण खाण, एका आपणे रंग रंगांयदा। एका सति शब्द नाद वजाए सच्ची धुनकान, अनहद आपणा ताल वजांयदा। एका सति ईश जीव कर परवान, परम आत्मा आपणा खेल खिलांयदा। एका सति पंज तत्त देवे दान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार जगत वासना विच रखांयदा। एका सति आसा तृष्ना खोल्ह दुकान, जूठ झूठ विच विकांयदा। एका सति होए जाणी जाण, जानणहारा दिस ना आंयदा। एका सति दो जहानां वण्डे वण्ड श्री भगवान, लोकमात फेरा पांयदा। एका सति सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग करे कल्याण, सति सति आपणी धार वखांयदा। एका सति गुर अवतार होए मेहरवान, सन्त भगवन्त सति सतिवादी मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क उपजाया नाम सति, शब्द अगम्मी रचना रच, पारब्रह्म प्रभ खेल खिलांयदा। खेल खिलाए सति करतार, सति बाणी शब्द चलाईआ। आदि जुगादी साची कार, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। हरि जू हरि मन्दिर सुहाए बंक दुआर, घर सुहञ्जणा इक्क वड्याईआ। नमो सति ब्रह्ममत इक्क तत्त, लक्ख चुरासी जीव जंत आत्म ब्रह्म सहिज सुखदेव, नेहकेव नेहकर्मी करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मन्दिर बैठा साचा हरि, साचा पौड़ा इक्क लगाईआ। हरि जू हरि मन्दिर लाए पौड़ा, चौथा जुग वेख वखाईआ। रूप अनूप वटाए ब्रह्मण गौड़ा, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। सम्बल नगर कोए ना जाणे उच्चा लम्मां चौड़ा, रविदास चम्मयार गया समझाईआ। चार कुंट चार दीवार चार जुग सस्से उप्पर पाए होड़ा, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। हँ ब्रह्म आप बुझाए लग्गी औड़ा, अमृत मेघ मेघ बरसाईआ। लक्ख चुरासी वेखे फल मिट्ठा कौड़ा, सति असति आपणी धार बंधाईआ। निराकार निरवैर पुरख अकाल, आदि जुगादि जुगा जुगन्त फिरे दौड़ा, सख़ी सुल्तान दाता दानी गहर गम्भीर गुणी गहिन्द गुर गुर आपणा रूप वटाईआ। शाहो भूप वड पीरन पीर, नाम निधान सागर सिन्ध, भगत वछल मीत मुरार, दर दरवेश दर दर अलक्ख जगाईआ। भगत भगवन्त लए उभार, साचे सन्त इक्क प्यार, गुरमुख गुरसिख आत्म अन्तर मेल मिलाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, देवे नाम इक्क आधार, ब्रह्म तत्त करे विचार, मन मति बुध भेव ना राईआ। सुहाए एका बंक दुआर, हरि मन्दिर खोल्ह किवाड़, सति सरूप सति सतिवादी करे साची कार, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आदि अन्त एका हरि, ना जन्मे ना जाए मर, हरि मन्दिर अंदर बैठा वड़, सच सिँघासण आसण सोभा पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन लगाए आपणे लड़, लक्ख चुरासी लड़ छुडाईआ।

१२८६

०६

✻ १५ अस्सू २०१७ बिक्रमी सन्ता सिंघ दे घर, तरनतारन ज़िला अमृतसर ✻

सति पुरख निरँजण अगम्म अथाह, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। सो पुरख निरँजण बण मलाह, निरगुण आपणी कल वरतांयदा। हरि पुरख निरँजण सच्चा शहनशाह, दर घर साचे सोभा पांयदा। एकँकारा आपणा नाउँ प्रगटा, नाम नामा आप उपांयदा। आदि निरँजण नूर नुराना डगमगा, निरगुण जोती जोत जगांयदा। अबिनाशी करता आपणा खेल आप खिला, हरि आपे वेख वखांयदा। श्री भगवान आपणी रचना आप रचा, आपणा बन्धन आपे पांयदा। पारब्रह्म वसणहारा साचे थाँ, दर घर साचा आप सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा आप वडिया, आप आपणा रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, आप आपणी धार चलांयदा। धार चलाए हरि करतार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सचखण्ड सुहाए इक्क दरबार, दर घर साचे सोभा पाईआ। निरगुण दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती वेख वखाईआ। साचे तख्त बैठ सच्चा सिक्दार, राज राजाना शाह सुल्ताना आप अख्वाईआ। एका हुक्म वरते वरतार, हुक्मी हुक्म खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा वेस आप वटाईआ। वेस वटाए इक्क इकल्ला, दर घर साचे सोभा पांयदा। सच सिँघासण एका मल्ला, पुरख अबिनाशी आसण लांयदा। आपणी जोती आपे रला, नूरो नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर आप सुहांयदा। हरि मन्दिर सोभावन्त, हरि पुरख निरँजण आप सुहाईआ। एकँकारा वसे साचा कन्त, कन्त कन्तूल बेपरवाहीआ। आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लेख ना कोए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर सुहञ्जणा आप सुहाईआ। साचा घर कर उज्यारा, आपणी धार चलाईआ। आदि पुरख हरि खेल अपारा, एकँकारा आप कराईआ। निरगुण नूर कर उज्यारा, नूरो नूर डगमगाईआ। सचखण्ड वसाए इक्क दुआरा, धुर दरबारा बेपरवाहीआ। सच सिँघासण कर त्यारा, अगम्म अपारा आप सुहाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, राज राजान वड वड्याईआ। एका हुक्म वरते वरतारा, हुक्मी हुक्म आप अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनुभव आपणी धार चलाईआ। अनुभव धार हरि प्रकाश, नूरो नूर समाया। करे खेल पुरख अबिनाश, अबिनासी करता वेस वटाया। आदि जुगादि ना जाए विनास, जुग करता भेव ना राया। साचे मंडल पावे रास, एकँकारा खेल खलाया। शाहो भूप वड शाहो शाबास, सच सुल्ताना नाउँ धराया। आपणे अग्गे आपणी आप करे अरदास, आपणी भिच्छया मंग मंगाया। आपणी वस्त आपे रक्खे पास, निरगुण निरगुण दए वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि,

हरि मन्दिर आप सुहाया। हरि मन्दिर हरि सुहांयदा, दरगाह साची धाम न्यार। सो पुरख निरँजण आसण लांयदा, हरि पुरख निरँजण मीत मुरार। एकँकारा मेल मिलांयदा, आदि निरँजण जोत उज्यार। श्री भगवान छत्र झुलांयदा, अबिनाशी करता बणे भिखार। पारब्रह्म मंग मंगांयदा, देवणहार आप निराकार। साची वस्त वण्ड वण्डांयदा, आप आपा विच्चों कढे बाहर। आप आपणी कल वरतांयदा, खेले खेल अपर अपार। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा बेड़ा आप चलांयदा, आपे होए सेवादार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका घर आप वसांयदा। एका घर हरि वसाया, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सचखण्ड दुआरा आप वड्याआ, आपणा रूप आप प्रगटाईआ। सूरज चन्न ना कोए चढ़ाया, दीवा बाती ना कोए रुशनाईआ। कमलापाती वेख वखाया, दिवस राती ना कोए वड्याईआ। जिमी अस्मान ना कोए सुहाया, गगन मंडल ना कोए रुशनाईआ। इक्क इकल्ला खेल खलाया, ना आदि पुरख सच्चा शहनशाहीआ। आपणा भाणा आपणे विच टिकाया, आपणे भाणे आपे रिहा फिराईआ। साचा राणा आप अखवाया, साचे तख्त सोभा पाईआ। साची वण्डण आप वण्डाया, आदि आदि बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा आपे खोल्ह, आपे तोले आपणा तोल, तोलणहारा इक्क अखवाईआ। तोलणहारा तोले तोल, आदि जुगादि आपणा तोल तुलांयदा। आपणे मन्दिर दर दरवाजा आपे खोल्ह, आपे वेख वखांयदा। आपे बैठा रहे अडोल, अडुल आपणी धार आप चलांयदा। आपे जाणे आपणा कौल, कीता कौल आपे पूर करांयदा। आपणी जोत आपे जाए मौल, आपणे मन्दिर अंदर आपे सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप सुणांयदा। आपे राणा धुर दरबार, शहनशाह आप अखवाईआ। आपे फ़रमाणा देवे सच्ची सरकार, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। आपे करे आपणा आकार, निराकार निरवैर आपणी खेल खलाईआ। जूनी रहित ना कोए धार, मूर्त अकाल बेपरवाहीआ। साचे मन्दिर पैज संवार, करे खेल सच सच्ची दरगाह एका धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, वस्त अमोलक आपणे हथ्थ रखाईआ। साची वस्त हरि करतार, आपणी आप उपांयदा। निरगुण निरगुण कर प्यार, निरगुण निरगुण विच टिकांयदा। निरगुण नार निरगुण भतार, निरगुण कन्त सुहाग हंढांयदा। निरगुण सेजा सुत्ता पैर पसार, निरगुण आलस निन्दरा विच ना आंयदा। निरगुण सचखण्ड खोल्ह किवाड़, निरगुण थिर घर कुण्डा लांहयदा। साची जननी बण करतार, आपणा जन इक्क उपांयदा। सुत दुलारे कर प्यार, आपणी गोद बहांयदा। देवे हुक्म सच्ची सरकार, धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं एका महल्ल लैणा उसार, जोग जुगत आप जणांयदा। जोती जाता देवे धार, इक्क इकांता वेस

१२६१ ०६

वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे देवे वर, शब्द सुत आप समझांयदा। शब्द सुत उठाया दुलारा, पुरख अबिनाशी करे जणाईआ। एका बख्शे चरन प्यारा, एका ओट पुरख अकाल वखाईआ। एका वस्त देवे हरि थारा, अतोट अतुट आप वरताईआ। एका रंग रंगाए हरि हरि अपारा, उतर कदे ना जाईआ। दो जहानां करया ख़बरदारा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्डां सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणी बूझ आप बुझाईआ। हरि हरि आपणी बूझ बुझांयदा, शब्द सुत कर त्यार। सचखण्ड दुआरे खुशी मनांयदा, थिर घर साचा रिहा संवार। नाद अनादी ताल वजांयदा, धुनी धुन करे विचार। अलक्ख अगोचर खेल खिलांयदा, बेऐब परवरदिगार। आपणी रचना आप रचांयदा, एका सुत दए हुलार। साचा मंडल मंडप आप सुहांयदा, आप आपणी किरपा धार। आपणा अंग आप कटांयदा, करे खेल आप करतार। विष्न ब्रह्मा शिव उपजांयदा, शब्दी शब्द कर विचार। त्रैगुण माया बन्धन पांयदा, पंज तत्त दए आधार। विष्नूं वंस आप सुहांयदा, लेखा जाणे धुर दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, करे खेल अपार। विष्न ब्रह्मा शिव उपाया, हरि शब्द वड्डी वड्याआ। शब्द राग शब्द धुन शब्द नाद शब्द शब्दी रिहा सुणाया। शब्द सुन्न शब्द समाध, शब्द बाणी बोध अगाध, शब्द ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दी बाणी बाण लगाया। धुर दी बाणी शब्द निश्अक्खर, हरि पुरख निरँजण आप जणाईआ। विष्न नेत्र नीर वरोले अथ्थर, रो रो चरन कँवल मंगे इक्क सरनाईआ। ब्रह्मा वछाए आपणा सथ्थर, पारब्रह्म अग्गे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणी इच्छया पाए भिच्छया, सच भण्डार आप वरताईआ। शब्द सूरबीर सुल्तान, सो पुरख निरँजण आप उठाया। शब्द आदि जुगादी नौजवान, ना मरे ना जाया। शब्द ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं वसाए इक्क मकान, शब्द शब्दी वेख वखाया। शब्द विष्न ब्रह्मा शिव देवे इक्क ज्ञान, एका मन्त्र आप दृढ़ाया। शब्द त्रैगुण माया करे प्रधान, सतो तमो रजो मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव आप खुलाया। हरि शब्दी भेव खुलांयदा, पारब्रह्म पुरख अगम्म। विष्नूं वंस आप उठांयदा, इक्क जणाए साचा कम्म। ब्रह्मा ब्रह्म रूप प्रगटांयदा, पारब्रह्म बण जननी जन। शंकर सुन्न समाध उठांयदा, एका राग सुणाए कन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा खेल आप खिलांयदा। खेल खिलंदड़ा श्री भगवान, ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगाईआ। देवणहारा दाता दानी दान, दयानिध बेपरवाहीआ। हुक्मी हुक्म करे फ़रमाण, धुर फ़रमाणा आप

१२६१ ०६

सुणाईआ। लक्ख चुरासी कर प्रधान, घड़ भाण्डे आप घड़ाईआ। लेखा जाणे गुण निधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची वस्त आप उपाईआ। लक्ख चुरासी घाड़न घड़, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगांयदा। पंज तत्त अंदर आपे वड़, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। निरवैर पुरख अकाल नूरी दरस देवे खड़, आत्म ब्रह्म नाउँ धरांयदा। ईश जीव बंधाए लड़, जगदीश वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव आप जणांयदा। हरि का भेव बोध अगाध, शब्दी शब्द करे सुणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे एका दाद, एका वस्त वण्ड वण्डाईआ। सरगुण वजाए अनादी नाद, तुरीआ राग आप अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक इक्क वखाईआ। वस्त अमोलक देवे कर प्यार, आपणे नाउँ रक्खे वड्याईआ। चारे मुख पावे सार, चारे कूटां देण गवाहीआ। चारे वेद दए उच्चार, चारे जुग वण्ड वण्डाईआ। चारे बाणी दए हुलार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाईआ। चार वरन दए आधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप समझाईआ। हरि लेखा आप समझांयदा, रचना रच रच वेद चार। विष्नूं साचा हुक्म सुणांयदा, लक्ख चुरासी देणा आधार। ब्रह्मा ब्रह्म रूप प्रगटांयदा, घट घट अंदर करे उज्यार। शंकर अन्तिम लेख मुकांयदा, जो घड़े सो भन्ने विच संसार। तिन्नां मेलां आप मिलांयदा, गुर चेला खेल अपार। साचा सईया वेख वखांयदा, नईया चलाए हरि करतार। विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ सीस झुकांयदा, दर बैठे बण भिखार। तेरा भेव कोए ना आंयदा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहिण करतार। कवण रथ मात चलांयदा, रथ रथवाही होए अस्वार। कवण गाथ मात चलांयदा, रसना गाए जीव जंत आधार। कवण सगला संग निभांयदा, आदि जुगादी चले नाल। कवण ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजांयदा, लेखा जाणे शाह कंगाल। कवण शब्द अनादी ताल वजांयदा, कवण देवे धुर फ़रमाण। कवण आदि आदि आपणी खेल खिलांयदा, कवण जुगादि करे संभाल। कवण मधि वेस वटांयदा, लोकमात चले अवल्लड़ी चाल। कवण ब्रह्म मेल मिलांयदा, पारब्रह्म कर ध्यान। कवण काया बंक सुहांयदा, पंज तत्त वखाए निशान। कवण अमृत जाम प्यांअदा, कवण लेखा मंगे आण। कवण साचा बंक सुहांयदा, कवण सोभा होए सच्ची धर्मसाल। कोटी जन्म जन्म जूनी जून भवांयदा, लक्ख चुरासी करे परवान। कवण जुग जुग वण्ड वण्डांयदा, कवण होए निगहबान। कवण सतिजुग राह वखांयदा, कवण त्रेते करे कल्याण। कवण द्वापर पन्ध मुकांयदा, कवण कलिजुग मेटे निशान। कवण चार वेद लिखांयदा, देवणहारा धुर फ़रमाण। कवण आपणा विच्चों आपा काढ घट घट जोत जगांयदा, आदि निरँजण इक्क निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा

वर, विष्न ब्रह्मा शिव सच जणांयदा। पुरख अबिनाशी उठया, निरगुण दाता बेपरवाह। शब्द सरूपी हो हो तुठया, जोती नूर डगमगा। चार जुग निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल करे लुकया, काया चोला तत्त हंढा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझा। लेखा हरि समझांयदा, विष्न करना इक्क ध्यान। ब्रह्म आप जणांयदा, देवे पारब्रह्म ज्ञान। विष्नूं आपणे रंग रंगांयदा, शब्द जणाए धुर फ़रमाण। चारे जुगां वण्ड वण्डांयदा, वण्डणहार श्री भगवान। गुरू पीर अवतार साध सन्त सेवा लांयदा, जुग जुग देवे इक्क फ़रमाण। राग अनादी कन्न सुणांयदा, ब्रह्म ब्रह्मादी कर पहचान। साचा नाउँ राह चलांयदा, मार्ग पन्थ इक्क वखान। धरत धवल आप सुहांयदा, निरगुण सरगुण हो प्रधान। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वेख वखांयदा, उच्चे टिल्ले पर्बत वेखे मार ध्यान। समुंद सागर वरोल वखांयदा, नाम मधाणा एका डाल्। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल करे भगवान। भगवन आपणी खेल खिलांयदा, आदि जुगादी साची कार। विष्न ब्रह्मा शिव आप समझांयदा, चारे जुग कर विचार। चारे वेदां आपे गांयदा, देवणहारा धुर दी धार। आपणी वण्ड आप वण्डांयदा, करे खेल अपर अपार। सतारां लक्ख अठाई हज़ार सतिजुग झोली पांयदा, पुरख अबिनाशी किरपा धार। बारां लक्ख छिआनवें हज़ार त्रेता रंग रंगांयदा, रंग रंगीला कन्त भतार। अठ्ठ लक्ख चौसठ हज़ार द्वापर झोली पांयदा, गोकल मथरा कर विचार। कलिजुग साचा संग निभांयदा, लेखा जाणे चार लक्ख बत्ती हज़ार। चार तिन्न बीस बीस आपणी खेल खिलांयदा, पारब्रह्म सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि, दूसर अवर ना कोए विचार। लेखा लिख्या धुर दरगाह, पुरख अबिनाशी आप लिखांयदा। जुगा जुगन्तर बण मलाह, निरगुण सरगुण बेड़ा आप चलांयदा। शब्द सरूपी देवे सच सलाह, आपणे मार्ग आपे लांयदा। गुर पीर अवतार आप अखवा, रूप अनूप आप प्रगटांयदा। सतिजुग दुआरे लए बहा, आपणा हुक्म आप वरतांयदा। सति सति सति इक्क समझा, सांतक सति रूप दरसांयदा। मित गत जाणे बेपरवाह, रती रत ना कोए तपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जगत अवतार लाए कार, गुरू गुर उपदेश दए संसार, हरि साचा हुक्म चलांयदा। भाणे अंदर गुर अवतार, भाणे अंदर सृष्ट सबाईआ। भाणे अंदर रवि ससि उज्यार, भाणे अंदर मंडल मंडप आप सुहाईआ। भाणे अंदर लक्ख चुरासी कर पसार, भाणे अंदर डेरा ढाहीआ। भाणे अंदर आयू देवे आप करतार, भाणे अंदर लए मिलाईआ। सतिजुग त्रेता आपणा आप गया हार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। द्वापर रोवो ज़ारो ख़ार, पूरा तोल ना कोए तुलाईआ। कलिजुग निहकलंक मारनी मार, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, साची खेल आप खलाईआ। चौथा वेद अथरबन धार, ऐड़ा अक्ख इक्क खुलांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, अगम्म अपारा आप करांयदा। ईसा मूसा कर त्यार, काला सूसा तन छुहांयदा। संग मुहम्मद कर प्यार, चार यारी चौथे जुग वेख वखांयदा। एका कलमा कर त्यार, चार लक्ख पन्ध मुकांयदा। शरअ शरीअत मारे मार, हक हकीकत आप जणांयदा। लाशरीक सांझा यार, भेव कोए ना पांयदा। कूड़ कूड़ा कर पसार, कूड़ कूड़ी खेल खिलांयदा। नानक जोती इक्क अवतार, वरन गोती पार करांयदा। शब्दी सोटी फड़ निरँकार, लोकमात फेरा पांयदा। एका नूर दस दस धार, गोबिन्द सूरा आप रखांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप पहनांयदा। पंज पंज पंज पंज पंज कर त्यार, पंज पंज हज़ार इक्क इक्क चरनां हेठ दबांयदा। फ़तह ज़ोरावर सिँघ चुकया पार, इक्क दो पंज सत्त खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि का भेव कोए ना पांयदा। चार लक्ख बत्ती हज़ार कलिजुग वणजारा, काची वंग हथ्थ उठाईआ। चारों कुंट उच्ची कूक कूक सुणाए हलकारा, दिवस रैण दए दुहाईआ। फिरे दुआरे गली महल्ला, घर घर वाजां मारे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि का भेव कोए ना पाईआ।
१२६४ कलिजुग वणज वणजारड़ा, चार कुंट उठ धाया। पुरख अबिनाशी खेल न्यारड़ा, चौथे जुग आप वरताया। चार यारी चार १२६४
लक्ख करे प्यारड़ा, चार लक्ख माणस जून वेख वखाया। नौं दस ग्यारां बीस तीस दए आधारड़ा, चुरासी पन्ध आप मुकाया।
०६ पंचम मिल्या मीत मुरारड़ा, पंज पचीस नाता दए तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा ०६
हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा झोली पाया। जीव जंत हरि उपांयदा, जुगा जुगन्तर साची कार। जन्म कर्म आपणे हथ्थ रखांयदा, धर्म नाता जोड़ संसार। मात कुक्ख कोटन कोटि गिरांयदा, दस दस मास ना दए आधार। कोटन कोटि बाल रूप मेट मिटांयदा, तन माटी करे छार। कोटन कोटि जोबन अवस्था पन्ध मुकांयदा, नाता तोड़ सर्ब संसार। कोटन कोटि जगत बुढ़ेपा वेख वखांयदा, काया गढ़ पैज संवार। उलटी खेल आप खलांयदा, उलटा कूआं गगन धार। उलटा रुक्ख आप लटकांयदा, मात गर्भ खेल अपार। बुढ़ेपा सतिजुग रूप वखांयदा, पुरख अबिनाशी साची कार। जोबन त्रेता मात हंढांयदा, त्रिया तरीमत कर प्यार। द्वापर बाली बुध शर्मांयदा, बाली बाला जाए हार। कलिजुग कच्चा फल आपे तोड़ तुड़ांयदा, नाता तोड़ चार लक्ख बत्ती हज़ार। जीव जंत कर्म कुकर्म वेख वखांयदा, माया भरम सर्ब संसार। हरि का नाम ना कोए ध्यांअदा, चारों कुंट कूड़ कूड़यार। साचा कन्त ना कोए हंढांयदा, जीव जंत नार विभचार। निरगुण सरगुण दरस कोए ना पांयदा, मिले मेल ना मीत मुरार। चार वरन एका रंग ना कोए समांयदा, सृष्ट सबाई होई खुवार। जागरत

जोत ना कोए जगांयदा, नौं खण्ड पृथ्मी धूंआँधार। सत्त दीप साचा इष्ट ना कोए वखांयदा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गए हार। कलिजुग आपणी कालख आपणे मुख लगांयदा, आपणे कर्म कुकर्मा कर विचार। पुरख अबिनाशी अग्गे सीस झुकांयदा, हउँ मूर्ख मुग्ध गंवार। धरत धवल मेरा भार ना कोए उठांयदा, धरनी रोवे ज़ारो ज़ार। विष्न रिज़क ना कोए पुचांयदा, घर घर ग़रीब निमाणे करन गिरयाज़ार। ब्रह्मा ब्रह्म रूप ना कोए दरसांयदा, आत्म जोती कर उज्यार। शंकर त्रिशूल ना कोए उठांयदा, बाशक तशका ना कोए श्रंगार। तिन्नां एका रंग वखांयदा, वखावणहार आप करतार। त्रैगुण माया बन्धन पांयदा, लक्ख चुरासी इक्क जंजाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग लेखा चुकाए काल महांकाल। काल वण्डे वण्ड, चार यारी संग निभाईआ। महांकाल फिरे ब्रह्मण्ड, पंज पचीस रहिण ना पाईआ। दोए धार करे रंड, दो जहाना सच्चा शहनशाहीआ। पंचम चढ़ाए साचा चन्द, पंचम मोख देवे सच्चा पातशाहीआ। चौदां लोक करे खण्ड खण्ड, चौदां तबकां दए सज़ाईआ। दूई द्वैती मेटे झूठी कंध, किला कोट ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग आयू आपणे विच समाईआ। कलिजुग आयू मुके पन्ध, पुरख अबिनाशी आप मुकांयदा। लेखा जाणे बन्दी बन्द, बन्दीख़ाना खोल्ह खुल्हांयदा। आदि जुगादी होए सदा बख़्शंद, बख़्शणहारा भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आपे रक्ख, कलिजुग क़िया करे वक्ख, पंज पंज विच टिकांयदा। पंज पंज कर बाहरा, पंज पचीस दए मुकाईआ। चारे जुग पावे सारा, चार यारी दए वड्याईआ। जुग जुग गेड़ा अपर अपारा, लक्ख लक्ख गेड़ा आप भुवाईआ। रसना जिह्वा ना करे विचारा, मन मति बुध भेव ना राईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवारा, अलक्ख निरँजण लख्या ना जाईआ। रागां नादां वसे बाहरा, छत्ती राग देण गवाहीआ। आपणा खेल करे आप करतारा, जुग करता साचा माहीआ। आपे घड़े आपे भन्नणहारा, समरथ पुरख वड वड्याईआ। जगत लेखा जगत जीवां विचारा, जगत जुगत जगत हथ्थ रखाईआ। आपणा भेव सभ तों रक्खे बाहरा, वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान भेव कोए ना पाईआ। करे खेल गुप्त ज़ाहरा, ज़ाहरा जहूर शहनशाहीआ। देवणहारा राज जोग सच्चा सिक्दारा, जोत जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। नव नौं चार लेखा जाणे आर पार किनारा, मँझधार आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर साची कार, करे कराए करनेहार, करता पुरख इक्क अख्वाईआ। करता पुरख हरि करने जोग, आदि पुरख अबिनासया। जुग जुग लेखा जाणे धुर संजोग, पारब्रह्म पुरख अबिनासया। इक्क इकल्ला सुणाए सच सलोक, लक्ख चुरासी रसना जिह्वा आप प्रकाशया। आपणा भाणा आदि अन्त आप

१२६५
०६

ना सके रोक, करे खेल हरि तमासया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लक्ख चुरासी करे बन्द खुलासया। साची वस्त आप उपा, चार लक्ख बत्ती हज़ार नाउँ धरांयदा। आपणी हथ्थीं दए वण्ड वण्डा, वण्डणहारा आप अख्वांयदा। करे खेल निरगुण नूरी नूर खुदा, जल्वा जलाल आप प्रगटांयदा। मुकामे हक डेरा ला, लाशरीक खेल खिलांयदा। कलमा अमाम इक्क बणा, कायनात वेस वटांयदा। सति सतिवादी एका अक्खर ल्या पढ़ा, सति सति सति आप समझांयदा। दोए जोड़ करे दुआ, सीस जगदीस इक्क झुकांयदा। इक्क चार लए मिला, एका चौका रंग रंगांयदा। चौदां चौदां वण्ड वण्डा, चौदस चौदां खेल खिलांयदा। चार यारी देवे इक्क पनाह, बेपरवाह सीस हथ्थ रखांयदा। सदी सदीव करे गुनाह, अबलीस मेल मिलांयदा। ऐली अल्ला नाउँ रखा, दो जहानां फेरा पांयदा। बिस्मिल रूप आप वटा, किला कोट आप सुहांयदा। चौदां सद छिला लए कमा, चार यारी संग निभांयदा। चार लक्ख आपणी झोली लए पा, वक्ख वक्ख वेख वखांयदा। कादर करीम बख्शे सर्ब गुनाह, सिफ्त सलाह दया कमांयदा। पीर पीरां आए पकड़े बांह, दस्तगीरां वेख वखांयदा। मुल्ला शेख़ मुसायक कोई ना अगों करे नाह, मुरीद मुर्शद मुर्शद मुरीद एका धाम बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लक्ख चार बत्ती हज़ार आपे वर, आपणी झोली आपे पांयदा। आपे

१२६६ देवणहारा दात, आपे वण्ड वण्डाईआ। आपे जाणे आपणी गाथ, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। आपे लेख लिखाए सीआं साढे १२६६

०६ तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चुमारा दए गवाहीआ। आपे लेखा जाणे पूजा पाठ, अन्तर मन्त्र करे पढ़ाईआ। आपे भेव खुल्हाए ०६

तीर्थ अठसाठ, सर सरोवर इक्क जणाईआ। आपे जुग जुग जाणे आर पार आपणा घाट, मँझधार बेड़ा आप चलाईआ। आपे लक्ख चुरासी आत्म सेजा सुत्ता खाट, आपे बैठा मुख छुपाईआ। आपे चौदां लोक विके हाटो हाट, करता कीमत कोए ना पाईआ। आपे खेले खेल बाज़ीगर नाट, स्वांगी आपणा सांग रचाईआ। आपे कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकाए झूठी वाट, गेड़ा गेड़े विच भुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुगां जुगन्तर आप बुझाए लग्गी बसन्तर, सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, शब्द मन्त्र इक्क प्रगटाईआ। नाउँ प्रगटाए गहर गम्भीर, गुण निधान दया कमांयदा। लेखा जाणे आदि अन्त अख़ीर, दो जहान वेख वखांयदा। जन भगतां बख्शे अमृत आत्म सीर, नाम प्याला इक्क प्यांअदा। सन्तन देवे साची धीर, धीरज जत सति सन्तोख एका रंग रंगांयदा। गुरमुखां बन्न्हे आपे बीड़, जुग जुग पीड़ा आप चुकांयदा। गुरसिखां तन पहनाए बस्त्र साचा चीर, शब्द दोशाला हथ्थ उठांयदा। कलिजुग अन्तिम नेत्र रोवे वहाए नीर, सगला संग ना कोए वखांयदा। नव सत्त पंज तत्त वज्झा इक्क ज़ंजीर, त्रै त्रै बन्धन ना कोए तुड़ांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दाता पुरख बिधाता आपणी कल आप वरतांयदा। वरताए कल निहकलंक निरँकार, कलिजुग कूड़ी मेटे शाहीआ। शब्द डंक वज्जे संसार, नौं खण्ड पृथ्मी सोया कोए रहिण ना पाईआ। राउ रंकां शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, राज राजानां दए उठाईआ। सत्त रंग निशाना झुलाए आप सच्ची सरकार, सति सतिवादी राह वखाईआ। बोध अगाधी शब्द धुन्कार, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। धुर दी वादी धुर दी बाण, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। चार वरनां देवे इक्क ज्ञान, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे इक्क पढ़ाईआ। रूप प्रगटाए सीता राम, कान्हा बंसरी आप वजाईआ। ईसा मूसा करे सलाम, दीन इस्लाम आपे होए सहाईआ। चार यारी संग मुहम्मद देवे इक्क पैग़ाम, अज़मतो कस्मतो अजिबवा अतिलहे महिबान बीदो इक्क ख़ुदाईआ। नानक निरगुण सरगुण करे परवान, नाम सति मन्त्र दृढ़ाईआ। गोबिन्द सिँघ सूरबीर नौजवान, ना मरे ना जाईआ। नाम खण्डा तेज़ कृपान, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाईआ। सृष्ट सबाई वेखे मार ध्यान शब्द गुरू बेपरवाहीआ। चार कुंट मेटे कूड़ निशान, पंज शैतान दए खपाईआ। अन्त कल ना दीसे कोई बेईमान, नानक कंडा तेरां तेरां तोल तुलाईआ। राह तक्के निहकलंक बली बलवान, साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर सेज सुहाईआ। प्रगट होए वाली दो जहान, कलिजुग मेटे झूठी शाहीआ। सृष्ट इष्ट दृष्ट वखाए इक्क भगवान, पुरख अकाल इक्क सरनाईआ। हँ ब्रह्म देवे माण, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। चार जुग एका एक गान, बत्ती दन्द दन्द सलाहीआ। बत्ती दन्द बत्ती हजार मोहण मुकाण, जिस भुल्लया बेपरवाहीआ। चार लक्ख चौथे जुग चार कुंट ख़ाली करया मकान, सति नाम किसे ना हट्ट विकाईआ। प्रगट होवे पारब्रह्म सख़ी सुल्तान, शहनशाह सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि हरि ब्रह्मादि, शब्द नाद इक्क वजाईआ। शब्द नाद जग वज्जया, सो पुरख निरँजण आप वजांयदा। कूड़ कुड़यारा जाए भज्जया, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। एकँकारा साचे मन्दिर बह बह सजया, सच निशान आप झुलांयदा। आदि निरँजण फिरे भज्जया, दो जहानां जोत जगांयदा। अबिनाशी करता चढ़े साचे ताजया, शब्द अश्व आप दौड़ांयदा। श्री भगवान राजन राजया, लक्ख चुरासी रईयत वेख वखांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म आपे साजण साजया, जीव जंत आप उपांयदा। जुग जुग रचया आपणा काजया, सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकांयदा। कलिजुग अन्तिम निरगुण निरवैर हो हो गाजया, पुरख अकाल रूप वटांयदा। भाग लगाए सम्बल नगर देस माज्झया, हरि मन्दिर छे छे जोजन वेख वखांयदा। करे खेल कल कि आजया, हरि का भेव कोए ना पांयदा। तख़्तों लाहे शाह नवाब्या, सीस ताज ना कोए टिकांयदा। जन भगतां रक्खे हरि जू लाजया, हरी हरि साची सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि,

१२६८
०६

आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता निराकार, कलिजुग अन्तिम पावे सार, महांसार्थी आप हो जांयदा। महांसार्थी चलाए रथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। नौं खण्ड सत्त दीप लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, शब्द डोरी हथ्थ उठांयदा। वरन बरन दूई द्वैत हउमे हंगत पंच विकारा करे भट्ठ, त्रैगुण अग्नी जोती लम्बू एका लांयदा। जुगा जुगन्तर आपे गेड़े आपणी लट्ठ, कलिजुग गेड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। लहिणा देणा चुक्के अठसठ, घर घर अमृत झिरना निझर आप झिरांयदा। गुरमुखां मार्ग एका दस्स, सन्त सतिगुर मेल मिलांयदा। गुरू बाणी गुरू का रस, मुख रसना आप सालांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। हरि मन्दिर हरि सुहांयदा, सोभावन्त श्री भगवान। एका अक्खर आपे गांयदा, गावणहारा गुण निधान। भगत भगवन्त आप उठांयदा, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। सन्त साजण मेल मिलांयदा, शब्द जणाए धुर फ़ुरमाण। गुरमुख आपणे रंग रंगांयदा, काया चोली करे पछाण। गुरसिख आपणे दर बहांयदा, चरन कँवल हरि भगवन बख्शे इक्क ध्यान। एका मन्दिर सोभा पांयदा, सचखण्ड दुआरा सच निशान। ब्रह्मा विष्न शिव गुरमुख साचे सीस झुकांयदा, जिस मिल्या हरि भगवान। कलिजुग कूड़ा रहिण ना पांयदा, नाता तोटे जगत नादान। सतिजुग साचा बल धरांयदा, लोकमात होए प्रधान। बीस बीसा राह तकांयदा, जगत जगदीसा देवे इक्क फ़रमाण। गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा जागरत जोत इक्क जगांयदा, लक्ख चुरासी पाए आण। नौं खण्ड पृथमी एका हुक्म सुणांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि हरि आपणा खेल खिलांयदा।

✻ २२ अस्सू २०१७ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✻

पारब्रह्म प्रभ आत्म धार, निरगुण निरवैर आप चलांयदा। पुरख अकाल खेल अपार, अलक्ख अगोचर आप खिलांयदा। सचखण्ड वसे धाम न्यार, धाम अवल्लड़ा सोभा पांयदा। कमलापाती एकँकार, इक्क इकल्ला आप सुहांयदा। दीवा बाती कर उज्यार, आदि निरँजण डगमगांयदा। सगला साथी मीत मुरार, आदि जुगादी संग निभांयदा। लक्ख चुरासी कर पसार, घट घट आपणी जोत जगांयदा। तत्व तत्त इक्क विचार, रती रत रत रंगांयदा। रवि ससि सूरज चन्न पावे सार, मंडल मंडप वेस वटांयदा। गगन गगनंतर दए सहार, जल थल महीअल डेरा लांयदा। निरगुण सरगुण खेल अपार, निराकार भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म आपणा नाउँ धरांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, आदि जुगादी खेल खिलांयदा। मूर्त अकाल हो उज्यारा, घर घर मन्दिर सोभा पांयदा। शब्द अनाद वजाए सच्ची धुन्कारा,

गीत सुहागी आप अल्लांयदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, दर घर साचा आप सुहांयदा। रंग रंगीला मोहण माधव हरि निरँकारा, छैल छबीला भेव ना आंयदा। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण साचे धाम वसे न्यारा, थिर घर साचे आसण लांयदा। सच सिँघासण कर प्यारा, रूप अनूप आप प्रगटांयदा। कागद कलम ना लिखणहारा, वेद कतेब भेव ना पांयदा। जूनी रहित वसे सभ तों बाहरा, निरभउ आपणी कल आप धरांयदा। जोती जाता हो उज्यारा, नूर नुराना नूर धरांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म दए आधारा, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा मेल मिलांयदा। पारब्रह्म प्रभ पुरख बिधाता, आदि जुगादी एका रंग समाया। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म देवे साची दाता, निरगुण निरगुण वण्ड वण्डाया। नाद अनादी सुणाए एका गाथा, शब्द अगम्मी नाद वजाया। रथ रथवाही चलाए एका राथा, जुगा जुगन्तर सेव कमाया। आपे जाणे आपणी पूजा पाठा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश चौदां लोक एका हाटा, घर मन्दिर खोज खुजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म आपे लए उपाया। पारब्रह्म ब्रह्म आप उपाया, अंस बंस आप सुहांयदा। आपणा फुल आप उपाया, कँवल कँवला नाउँ धरांयदा। साचे मन्दिर आप टिकाया, निरवैर अमृत सिंच हरा करांयदा। चोटी जड़ ना कोई वखाया, आपणी धार धार विच टिकांयदा। आपणा रूप आप प्रगटाया, पत डाल्ही वेख वखांयदा। साची कली आप महिकाया, नाम सुगंधी विच रखांयदा। बन्दीख़ाना तोड़ आपणा बन्धन आप कटाया, रूप रंग रेख ना कोए वखांयदा। शब्द सुहागी छन्दन एका गाया, रसना जिह्वा ना कोए हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म देवे वर, दर घर साचा इक्क समझांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म पावे सार, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। इक्क इकल्ला करे प्यार, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। ना कोई जाणे थित वार, रुतड़ी रुत ना कोए वड्याईआ। इक्क इकल्ला निरँकार, लेखा जाणे सहिज सुभाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणे रंग रवे करतार, करता पुरख पुरख वड्याईआ। लक्ख चुरासी भर भण्डार, एका वस्त अतोट अतुट वरताईआ। नाम दाता सिरजणहार, सिर सिर देवे रिज़क सबाईआ। घट घट अंदर हो उज्यार, जोत निरँजण आप जगाईआ। अमृत बूंद स्वांती ठंडी ठार, भर प्याला जाम प्याईआ। सांतक सति सति करे वरतार, सति सन्तोखी बेपरवाहीआ। राग रागनी करन पुकार, उच्ची कूकण देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्म आपणा खेल खलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म खेल अवल्ला, निरगुण निरगुण आप करांयदा। सच सिँघासण बैठ उच्च अटला, थिर दरबारे सोभा पांयदा। करे खेल वला छला, अछल छल धारी भेव ना आंयदा। सच सिँघासण एका मल्ला, निरगुण निराकार सोभा पांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म फड़ाए आपणा पल्ला, शब्द डोरी

१२६६
०६

नाल बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ब्रह्म पारब्रह्म उपांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, घट आपणी जोत जगाईआ। नूरो नूर नूर उज्यारा, नूर नुराना सच्चा शहनशाहीआ। तत्व तत्त दए आधारा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। मन मति बुध पावे सारा, सारंगधर भगवान बीठलो इक्क अख्वाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, निरगुण सरगुण अंग लगाईआ। सरगुण मेला विच संसारा, निरगुण वेखे थाउँ थाँईआ। शब्द ढोला गाए आपणी वारा, एका अक्खर कर पढ़ाईआ। तोला बणे गिरवर गिरधारा, लक्ख चरासी तोल तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म मेला साचे घर, पारब्रह्म मेल मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलांयदा, कर किरपा गुण निधान। साचे तख्त आप सुहांयदा, सोभावन्त श्री भगवान। आत्म ब्रह्म वेख वखांयदा, धुर दरगाही हरि मेहरवान। आपणा भेव आप खुल्हांयदा, इक्क वखाए सच निशान। आपणी सेवा आप कमांयदा, आपे देवे धुर फ़रमाण। आपणा राग आप अल्हांयदा, आपे गीत गावण गाए गाण। आपणा मृदंग आप वजांयदा, आपे सारंग सारंगी कर पछाण। नाम सितार इक्क हिलांयदा, लेखा जाणे धुर दीबाण। आपणा माण आप धरांयदा, पारब्रह्म ब्रह्म देवे एका दान। जीआ दाता आप अख्वांयदा, जीवण जुगत दए जहान। साची सिख्या इक्क समझांयदा, साख्यात सर्ब ज्ञान। एका अक्खर आप पढ़ांयदा, लेखा जाणे ना वेद पुराण। शास्त्र सिमरत सर्ब सालांहयदा, सिफ्त सालाही वड मेहरवान। ब्रह्म आपणे लेखे पांयदा, पारब्रह्म कर कल्याण। आपणे रंग आप रंगांयदा, रंग रंगीला गुण निधान। साचे मन्दिर आप सुहांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म देवे एका माण। पारब्रह्म ब्रह्म माण रखांयदा, जुगा जुगन्तर साची कार। विष्न साची सेव कमांयदा, भगवन जोती कर प्यार। ब्रह्मा पारब्रह्म राह तकांयदा, एका नेत्र नैण उग्घाड़। शंकर शहनशाह एका सीस झुकांयदा, एका ओट श्री भगवान। पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा, जुगा जुगन्तर खेल महान। नाम निधाना मन्त्र अन्तर इक्क पढ़ांयदा, जोती जाता कर परवान। बोध अगाधा भेव ना आंयदा, शब्द अनादा धुर फ़रमाण। सन्तन साध आप समझांयदा, भगत भगवन्त खेल महान। गुरमुख चतर सुघड़ आप बणांयदा, गोबिन्द मेला एका राम। गुरसिख एका मार्ग लांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म मेला एका घर, पारब्रह्म संग निभांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म सगला साथ, विछड़ कदे ना जाया। जुगा जुगन्तर चलाए राथ, रथ रथवाही सेव कमाया। निरगुण सरगुण सुणाए आपणी गाथ, निष्अक्खर ढोला आप अल्हाया। आपे जाणे आपणी वाट, आप आपणा पन्ध मुकाया। आपे सुत्ता आपणी खाट, आपे सेजा रिहा हंढाया। आपे ब्रह्मा मेला कमलापात, पारब्रह्म सहिज सुखदाया। आपे मेटे अन्धेरी रात, साचा चन्द आप

चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पारब्रह्म ब्रह्म सच्ची सरनाया। पारब्रह्म ब्रह्म इक्क सरनाई, एका इष्ट वखांयदा। हरि मन्दिर वज्जे नाम वधाई, पुरख अबिनाशी आप वजांयदा। ब्रह्म मेला चाँईं चाँईं, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। लेखा जाणे बेपरवाही, बेपरवाह आपणे रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका ब्रह्म पारब्रह्म धार, धरनी धरत धवल दए सहार, पंज तत्त चोला आप हंढांयदा। पंज तत्त चोला काया गढ़, पारब्रह्म ब्रह्म एका घर वखांयदा। निरगुण निर्धन बहे अंदर वड़, दिस किसे ना आंयदा। दस्त बदस्त ना सके कोई फड़, बन्दी बन्धन ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला खेल अपारा, पारब्रह्म ब्रह्म दए आधारा, अंस बंस आप सुहांयदा। अंस बंसा सूरबीर सूरा सरबंग, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जुग जुग वजाए आपणा मृदंग, सति मृदंगा हथ्थ उठाईआ। कलुजग अन्तिम काल महांकाल रक्खे संग, जगत संगत वेखे थाउँ थाँईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघ, नव खण्डां फेरी पाईआ। सत्त दीप वण्डे वण्ड, जेरज अंड वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी तोड़े माण घुमंड, घनक पुर वासी सच्चा शहनशाहीआ। गुरमुखां वखाए एका परमानंद, निजानंद निज घर निज रस दए चुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म मेला एका दर, दर सुहञ्जणा इक्क सुहाईआ। दर सुहञ्जणा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहांयदा। भगत वछल महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए लिखांयदा। जगत जुग जगत गावे भगत भगवन्त, साचे सन्त आप उठांयदा। रसना जिह्वा मणीआ मंत, मन वास्तक रूप दरसांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म बणाए बणत, घड़न भन्नणहार दिस ना आंयदा। लक्ख चुरासी जीव जंत, घट घट आपणा रूप वखांयदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मधि आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म ब्रह्म रुत्त बसन्त आप सुहांयदा। रुत बसन्त जाए मौल, पारब्रह्म ब्रह्म खेल खलाईआ। लेखा जाणे धरत धवल धौल, धरनी धर वेख वखाईआ। अमृत रस भरे एका नाभ कँवल, कँवल कँवला वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म वेखे थाउँ थाँईआ। थान थनंतर वेखणहारा, एका एकंकारया। आदि जुगादी लै अवतारा, लोकमात होए उज्यारया। कलिजुग अन्तिम पावे सारा, चारों कुंट मेटे अन्ध अँध्यारया। नाम खण्डा फड़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड आप चमका रिहा। वरभण्डी करे ख्वारा, मूर्ख मूढ़े अंञाणे कूड़े धन्दे आप लगा रिहा। गुरमुख सज्जण करे प्यार, काया चोली रंग चाढ़े गूढ़ा, एका रंगण आप रंगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म मेला एका घर, घर मन्दिर आप सुहा रिहा। घर मन्दिर सोभावन्त, हरी हरि हरि खेल खिलांयदा। घर फुलवाड़ी रुत बसन्त, घर

कली कली महिकांयदा। घर घर लेखा जाणे जीव जंत, जंत जीव वेख वखांयदा। घर घर नाम मणीआ मंत, दिवस रैण आप सुणांयदा। घर घर मेला पूरन भगवन्त, पूरन ब्रह्म ब्रह्म ज्ञान आप दृढ़ांयदा। घर घर सेज सुहाए हरि हरि कन्त, सुहञ्जणी सेज आप हंढांयदा। घर घर ज्ञान बोध अगाधा पंडत, आपणी विद्या आप पढ़ांयदा। घर घर हँकार विकार करे खण्डत, घर घर खड़ग खण्डा आप चमकांयदा। घर घर बणया रहे मंगत, पारब्रह्म ब्रह्म भिच्छया मंग मंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे सोभा पांयदा। दर घर हरि सुहांयदा, पारब्रह्म ब्रह्म किरपा धार। काया बंक वेख वखांयदा, कंचन गढ़ अगम्म अपार। निरगुण अंदर आसण लांयदा, सरगुण मेला नारी कन्त भतार। सच सुहञ्जणी सेज हंढांयदा, पीआ प्रीतम मीत मुरार। एका आपणा हुक्म सुणांयदा, सुणे सुणावे सुणनेहार। राग रागनी भेव ना आंयदा, गा गा थक्के वेद चार। शास्त्र सिमरत सर्ब कुरलांयदा, पुरख अबिनाशी सभ तों वसे बाहर। जो जन आपणा पर्दा लांहयदा, दूई द्वैती करे पार। ब्रह्म पारब्रह्म समांयदा, नाता तुटे सर्ब संसार। साचे मन्दिर सोभा पांयदा, जगमग जोत जगे अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर वेखे इक्क दुआर। हरि मन्दिर हरि सुहाया, गुण अवगुण ना जाणे कोए। इक्क इकल्ला वेख वखाया, वेखणहार आपे होए। नेत्र नैण आप खुल्हाया, आपे लोयण देवे आपे लोए। चौथे पद आप समाया, पंचम देवे साचे ढोए। छेवें छप्पर छन्न छुहाया, सत्तवें सति पुरख निरँजण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म ब्रह्म लए वर, आपणा नूर आप बलोए। नूर नुराना कर प्रकाश, पृथ्मी आकाश वेख वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दासी दास, सेवक साची सेवा सच कमाईआ। गृह मन्दिर पावे रास, हरि मन्दिर कर रुशनाईआ। सच सिँघासण कर निवास, तख्त सुहाए सच्चा शहनशाहीआ। करे खेल शाहो शाबास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म ब्रह्म एका धार, वरते वरतावे विच संसार। लेखा जाणे आर पार, आदि अन्त इक्क अख्वाईआ। आदि अन्त श्री भगवान, एका एक अख्वांयदा। जुगां जुगन्तर दानी दान, आपणा भण्डार आप वरतांयदा। खेले खेल दो जहान, लोकमात वेख वखांयदा। शब्द अगम्मी देवे धुर फ़रमाण, लक्ख चुरासी आप सुणांयदा। गुरमुख गुरसिख कर पछाण, आप आपणा मेल मिलांयदा। हउमें हंगता तुट्टे माण, माया ममता मोह चुकांयदा। इक्क वखाए सच निशान, दरगाह साची आप झुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका ब्रह्म लए फड़, पारब्रह्म आपणा बन्धन पांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म बन्धन डोर, शब्दी तन्द हथ्थ रखाईआ। लेखा जाणे अन्ध घोर, घोरी रूप भेव ना राईआ। पकड़नहारा ठग्ग चोर, जगत ठगोरी आपे पाईआ। फल वेखे लक्ख चुरासी रीठा कौड़, पत डाल्ही फोल फुलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वखाए एका पौड़, सच महल्ला

१३०२ ०६

सोभा पाईआ। जन भगतां आपे जाए बौहड़, अन्त कन्त भगवन्त होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म मिलाए आपणे घर, दर घर हरि नर सच्चा सुहाईआ।

✻ १ कत्तक २०१७ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✻

गुरसिख अन्त कदे ना आया, ना मरे ना जाईआ। जिस सतिगुर पुरख मनाया, प्रभ पाया साचा माहीआ। एथे उथे होए सहाया, दो जहानां लए तराईआ। एका आपणा नाम जपाया, रसना जपत जपत सुख पाईआ। काया नगर खेड़ा वेख वखाया, अंदर बैठा बेपरवाहीआ। गुरसिख जेठा सुत आपे जाया, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। दाई दया आप अख्वाया, दिवस रैण सेव कमाईआ। कागद कलम ना लिखे छाहया, चार वेद रहे जस गाईआ। गुरमुख तेरा अन्त किसे ना पाया, चारे बाणी रही कुरलाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग अलाया, नाद अनादा नाद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगां जुगन्तर, जन भगतां बुझाए लग्गी बसन्तर, लेखा जाणे आत्म अन्तर, आपणी अन्तरगत जणाईआ। गुरमुख कदे ना रुलया, जिस मिल्या बेपरवाह। दर दुआर जो आया भुलया, पुरख अबिनाशी, आपणे
१३०३ गले लए लगा। साचे कंडे जो जन तुल्या, तोलणहारा रिहा तुला। बाज सिँघ तेरा बूटा लोकमात फलया, पत डाली दए १३०३
०६ महिका। लोकमात ना रुलया, करता कीमत देवे पा। देवे नाम अनमुलया, सच वस्त अमोलक आप वरता। अमृत आत्म ०६
अजे ना डुल्लया, नाभी कँवल रक्खया बन्द करा। वेले अन्तिम पावे मुलया, अमल आपणा नाउँ अख्वा। गुरसिख बूटा कदे ना हुल्लया, सतिगुर पूरा दीन दयाला वड कृपाला एका हथ्थ सीस दए टिका। जो जन चरन प्रीती घोल घुलया, लक्ख चुरासी देवे फंद कटा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एकँकारा, लक्ख चुरासी वेखणहारा, निरगुण सरगुण बन्ने धारा, गुरमुख साचे पार करांयदा। गुरमुख लेख अवल्लड़ा, पारब्रह्म आप लिखांयदा। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्लड़ा, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। मार्ग दस्से इक्क सुखलड़ा, चरन प्रीती जोड़ जुड़ांयदा। नाम फड़ाए एका पल्लड़ा, साचा पल्लू आप उठांयदा। जोती शब्दी आपे रलड़ा, सुरती शब्दी मेल मिलांयदा। अनुभव प्रकाश शब्द अनादि धुर दरगाही विच ब्रह्मादि आपे घलड़ा, पारब्रह्म हरि वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे रंग रंगांयदा। गुरमुख रंग रंगांयदा, कर किरपा गुण निधान। एका वस्त झोली पांयदा, शब्द अनादी धुर दीबाण। नेत्र नैण इक्क खुल्लांयदा, आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान। आत्म सेजा आप सुहांयदा, निरगुण रूप श्री भगवान। शब्द डंका इक्क

वजांयदा, अनहद धुन सच्ची धुनकान। सच मकान आप बहांयदा, चौदां लोक बन्द कराए दुकान। तख्त निवासी दया कमांयदा, शाहो भूप वड राजान। दलीप सिँघ क्यों घबरांयदा, जिस सतिगुर मिल्या आण। आलृणिउँ डिगे बोट आप उठांयदा, प्रगट होया जोद्धा सूरबीर बली बलवान। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलांयदा, हथ्थ रक्खे ना कोए तीर कमान। नौं खण्ड पृथ्मी फेरा पांयदा, सत्तां दीपां करे पछाण। ब्रह्मा विष्न शिव आप उठांयदा, करोड़ तेतीसा दए ज्ञान। रवि ससि जोत टिकांयदा, पुरख अबिनाशी वड मेहरवान। मंडल मंडप डेरा लांयदा, धरत धवल ज़िमी अस्मान। बोध अगाधा शब्द जणांयदा, शाहो भूप वड सुल्तान। धुर फ़रमाणा आप अलृांयदा, तख्त निवासी राज राजान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। गुरमुख साचा मेलया, कर किरपा गुण निधान। एका रंग रंगाए गुरू गुर चेलया, गुर चेला सूरबीर बलवान। प्रभ मिल्या सज्जण सुहेलया, लक्ख चुरासी विच्चों करे पछाण। लेखा जाणे इक्क इकेलया, इक्क इकल्ला गुण निधान। आपे जाणे आपणा वक्त वेलया, थित वार ना कोई पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा लिखे काया मन्दिर बैठ मकान। काया मन्दिर हरि दुआर, हरि जू हरि हरि आप सालांहयदा। अंदर बैठ श्री भगवान, निरगुण साची सेज हंढांयदा। अमृत आत्म देवे पीण खाण, अमिउँ रस आपणा आप चखांयदा। नाता तोड़े पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आंयदा। इक्क सुणाए साचा गान, गीत गोबिन्द आप अलृांयदा। करे प्रकाश कोटन भान, अज्ञान अन्धेर गवांयदा। लक्ख चुरासी पुण छाण, गुरमुख लाल अनमुल्लड़े वरोल आपणे कंडे आपे पांयदा। देवणहारा दानी दान, दाता दानी सेव कमांयदा। गुरमुख सखी हरि हरि मिल्या साचा काहन, नाम बसंरी इक्क वजांयदा। नाता जुड़या सीता राम, सीता सुरती आप प्रनांयदा। करे कराए पूरा काम, पूरन इच्छया भिच्छया विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क चरन ध्यान इक्क वखांयदा।

सो पुरख निरँजण सच्चा पातशाह, आदि जुगादि समांयदा। हरि पुरख निरँजण बेपरवाह, इक्क इकल्ला भेव ना आंयदा। एकँकारा धुर मलाह, धुर दा बेड़ा आप चलांयदा। आदि निरँजण निरगुण जोत जगा, दर घर साचा आप सुहांयदा। अबिनाशी करता आपणा नाउँ धरा, श्री भगवान आपे जस गांयदा। पारब्रह्म प्रभ वेस वटा, वेस अवेसा आप करांयदा। सचखण्ड दुआरा इक्क उपा, छप्पर छन्न ना कोए छुहांयदा। घर विच घर लए टिका, थिर घर साची रचन रचांयदा। सति पुरख निरँजण डगमगा, नूर नूर आप धरांयदा। आपणी दया आप कमा, आपणी कल वरतांयदा। आपणा रंग आप रंगा, आपे

१३०४
०६

वेख वखांयदा। आपे बणे शाह पातशाह, राज राजान आप अख्वांयदा। आपणा खेल आप करा, खेलणहारा वेस धरांयदा। आपणा तख्त आप बणा, सच सिँघासण नाउँ उपांयदा। सच दुआरे आपे डाह, आपे आसण लांयदा। आपणा हुक्म आप चला, हुक्मी हुक्म आप वरतांयदा। आपणे भाणे आप समा, वड भाणा हथ्थ रखांयदा। इक्क इकल्ला बेपरवाह, तख्त निवासी सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क उपांयदा। दर घर साचा सोभावन्त, सचखण्ड दुआर वड्डी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण बैठा एका कन्त, निरवैर खेल खलाईआ। एकँकारा महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। आदि निरँजण दीप जगंत, जोती जाता बेपरवाहीआ। अबिनाशी करता आदि अन्त, आपणी धार आप बंधाईआ। श्री भगवान साचे धाम सोभावन्त, थिर दरबारा वड वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ बणे मंगत, निरगुण निरगुण झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता, आपणी धार आप चलाईआ। सो पुरख निरँजण साची धार, सचखण्ड दुआरे आप चलांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल अपार, मूर्त अकाल रूप प्रगटांयदा। एकँकारा हो त्यार, अनुभव प्रकाश आप वखांयदा। आदि निरँजण नूर उज्यार, नूर नुराना डगमगांयदा। श्री भगवान आप सुहाए बंक दुआर, सच दुआरा सोभा पांयदा। अबिनाशी करता कर पसार, आप आपणा वेख वखांयदा। पारब्रह्म भेव न्यार, गुप्त ज़ाहर आपणी कल धरांयदा। सचखण्ड दुआर खेल अपार, करे कराए करनेहार, करता पुरख आप करांयदा। निरभउ रूप अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर दिस ना आंयदा। आपे बणे सच्ची सरकार, साचे चरन टिकांयदा। आपे बणे चोबदार, आपे निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आपे हुक्मी हुक्म करे वरतार, हुक्म हाकम आपणा आप अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचांयदा। आपणी रचना हरि भगवान, आपा आप उपाईआ। आदि आदि खेल महान, खेल खलंता भेव ना राईआ। मात पित ना कोई बाल नादान, गोदी गोद ना कोए सुहाईआ। इक्क इकल्ला नौजवान, ना मरे ना जाईआ। आपणा रूप आप पछाण, अनूप सति सरूप शाहो भूप वड वड्याईआ। आप वसाए आपणा सच मकान, सचखण्ड दुआरा बणत बणाईआ। तख्त निवासी राज राजान, सोभावन्त सोहँ इक्क रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बणत आप बणाईआ। आपे घाड़न घड़े घड़नेहारा, ना कोई भन्ने भन्न भनांयदा। आपणे मन्दिर आपे वरे वरनेहारा, दर दरवाज़ा ना कोए वखांयदा। आपणी करनी करे आपे करनेहारा, करता पुरख नाउँ धरांयदा। आपणी सरनी आपे पड़े पड़नेहारा, दूसर सीस ना किसे झुकांयदा। आपणी मरनी आपे मरे मरनेहारा, जीवण मरन विच ना आंयदा। आपणी तरनी आपे तरे तरनेहारा, तरनेहार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा, निरगुण वेखे सच तमाशा, आपणा वासा आप करांयदा। आपणा वासा आपे रक्ख, आप आपा वेख वखाईआ। निरगुण रूप कर प्रतक्ख, निरगुण निरगुण लए जाईआ। निरगुण अंदर निरगुण वक्ख, निरगुण आपणा पक्ख निभाईआ। निरगुण निरगुण मार्ग देवे दस्स, साचा राह आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, दरगाह साची धाम सुहाईआ। दरगाह साची धाम न्यारा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। एका वसे एकँकारा, अकल कल बेपरवाहीआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, ऊँचो ऊँच सच्चा शहनशाहीआ। अलक्ख अलक्खणा भेव न्यारा, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। निरगुण नूर हो उज्यारा, आदि जुगादि डगमगाईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सिक्दारा, शाह सुल्तान आप कमाईआ। आपणा ताज कर त्यारा साची सेवा सेव कमाईआ। पंचम मुख मुख आप उग्घाड़ा, मुखी मुख ना कोए सलाहीआ। ना कोई नारी ना कोई नारा, नर नरायण खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मुख ताज सीस जगदीस आपणा आप टिकाईआ। साचा ताज निरगुण रंग, पुरख अबिनाशी आप चढ़ाया। दाता बण सूरा सरबंग, सति पुरख निरँजण खेल खिलाया। अबिनाशी करता दर दुआरा आपणा लँघ, दर दरवाजा दए खुल्हाया। सचखण्ड दुआर वछाई साची सेज पलँघ, निरवैर आप हंढाया। पारब्रह्म निर्धन होए मंगे मंग, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि का भेव किसे ना आया। हरि का भेव अगम्म अपार, एका एक एक जणांयदा। आदि आदि नूर उज्यार, जोती जोत डगमगांयदा। सीस रक्ख शब्द दस्तार, ताज ताजां आप रखांयदा। आपणा काज करे करतार, आपणी करनी किरत वखांयदा। आपणा राज करे सिक्दार, साचे तख्त सोभा पांयदा। आपे अंदर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। सचखण्ड दुआर सुहाया, कर किरपा गुण निधान। आपणा रूप आप प्रगटाया, पुरख अबिनाशी चतर सुजान। आपणी सेजा आप हंढाया, नारी कन्त मेला मेल श्री भगवान। जन जननी आप अख्वाया, दाई दाया बण गुण निधान। साचा सुत एका जाया, शब्द अगम्मी हो मेहरबान। थिर घर साचे आप बहाया, आपे देवे धुर फ़रमाण। साचा ताज हथ्थ टिकाया, पंचम मुख कर परवान। छेवें छप्पर छन्न ना कोए वखाया, साचे मन्दिर बैठ होए निगहबान। सति पुरख निरँजण खेल खलाया, आपे देवे दानी दान। सत्त रंग निशान आपणा आप चढ़ाया, ना कोई दिसे ज़िमी अस्मान। सूरज चन्न ना कोए रुशनाया, जोत जगाए ना कोटन भान। इक्क इकल्ला आसण लाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे शब्द सुत दुलारा।

आपे मात पित दए हुलारा, जनणी जन आप अख्वाया। जनणी जन जणया पूत, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी आपे जाणे आपणा सूत, प्रसूत आपणा बन्धन आपे पाईआ। आपे लेखा जाणे दहि दिशा चारे कूट, कूट कूटां आप समाईआ। आपणे उप्पर आपे जाए तूठ, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जाया सुत दुलार, शब्दी नाउँ अगम्म अपार, ना मरे ना जाईआ। शब्द सुत उठया बलवान, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, हउँ सेवक सेव कमांयदा। निरगुण रूप श्री भगवान, दिस किसे ना आंयदा। हउँ भिखक मंगे दान, अग्गे आपणी झोली डांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा साचा दर, हरि जू हरि मन्दिर आप सुहांयदा। हरि जू हरिमन्दिर सुहावणा सति पुरख निरँजण गुर करतार। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतावणा, वरते वरतावे वरतावणहार। शब्द अनादी नाद वजावणा, ना कोई हिलाए तार सितार। बोध अगाधी खेल खलावणा, बोध अगाधा हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि, थिर घर बैठ सच्चे दरबार। थिर घर साचा खोल्या, कर किरपा गुण निधान। निष्अक्खर शब्द आपे बोलया, सुत दुलारा बण जवान। अबिनाशी करते एका कंडे तोलया, तोलणहारा निगहबान। आदि जुगादि रहे अडोलया, ना डोले विच जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क उपजाए साचा सर, दर घर साचा आप सुहाईआ। दर घर हरि सुहांयदा, थिर घर वड्डी वड्याईआ। एका शब्द विच टिकांयदा, पारब्रह्म सुत एका जाईआ। गुण अवगुण ना कोए जणांयदा, लेखा लिख ना कोए सुणाईआ। साचे मार्ग आपे पांयदा, आपणे नाम करे कुड़माईआ। एका राग एका ताल आप वजांयदा, ताल तलवाड़ा जगत सितार, ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, थिर घर साचा आप सुहाईआ। थिर घर साचा सतिगुर दीन दयाला, एका रंग रंगाईआ। करे खेल गुर गोपाला, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। निरवैर चले अवल्लड़ी चाला, मूर्त अकाल भेव ना राईआ। शब्दी सुत उपजाया साचा लाला, लालो लाल लालन रंग रंगाईआ। चरनां कोल बहाए महांकाला, आप आपणी धार धार विच्चों उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वखाए साचा घर, धर्मसाल इक्क उपजाईआ। धर्मसाल हरि वसया, पारब्रह्म हरि निरँकार। आदि जुगादी फिरे नस्सया, आपे करे आपणी कार। आपणा मार्ग आपे दस्सया, दस्सणहारा भेव न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि, इक्क उपजाए सुत दुलार। सुत दुलारा शब्द उपाया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण डंक वजाया, निरवैर आप सुणाईआ। पुरख अकाला आपे गाया, दीन दयाला सुणनेहार भेव ना राईआ। अवल्लड़ी चाला आप चलाया, सचखण्ड वेखे थाउँ थाँईआ।

आपणी घाला आप घुमाया, घोली घोल ना कोए घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द उपन्नया, पारब्रह्म पुरख परमेश्वर आपे जणया, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। धन्न माता धन्न पिता, परम पुरख अकाल आप अख्वांयदा। आपे देवे साची दाता, वण्डणहारा आपणी वण्ड वण्डांयदा। आपे जाणे आपणी उत्तम ज़ाता, ज़ात पात ना कोए रखांयदा। आपे जाणे आपणी गाथा, आपणा अक्खर वक्खर आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा साथा आप निभांयदा। साचा साथ सगला संग, एका एकँकारा आप निभाईआ। सुत दुलारे मंगी मंग, पुरख अबिनाशी झोली पाईआ। एका डोरी इक्क पतंग, एका रिहा उडाईआ। एका वसे सदा संग, विछड़ कदे ना जाईआ। आदि जुगादी जुगा जुगन्तर ना होए भंग, समरथ पुरख दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या दए समझाईआ। सुत दुलारे जागणा, पुरख अबिनाशी आप जगांयदा। तेरे अंदर इक्क वैरागना, वैरागी वैराग आप उपजांयदा। मेरा तेरा मेल कन्त सुहागणा, सच सुहागी सच सुहाग हंढांयदा। मेरा हुक्म तेरा नादना, नादी नाद इक्क वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। भेव खुलाए हरि करतार, शब्दी शब्द समझाया। तेरा रूप अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर आप उपाया। सचखण्ड दुआरे करे प्यार, सचखण्ड निवासी आपणा मेल मिलाया। थिर घर मेला सच्ची सरकार, शाह शाहाना होए सहाया। आपणे रंग रंगे करतार, रंग रंगीला उतर कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साची वस्त झोली पाया। साची वस्त श्री भगवान, एका झोली पांयदा। निरगुण निराकार देवे दान, साकार वण्ड वण्डांयदा। दोहां वचोला बणे आप करतार, आपणा भेव आप खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। हरि मन्दिर सोभनीक, सति पुरख निरँजण आप सुहाया। वाहद वसे लाशरीक, परवरदिगार नूरो नूर डगमगाया। आपणे दुआरे आपणी रक्खी इक्क तरीक, आप आपणा हुक्म सुणाया। शब्द मंगे इक्क भिखारी भीख, साची भिच्छया झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा सच्चा वर, आपणा पर्दा दए उठाया। आपणा पर्दा आप उठांयदा, कर किरपा गुण निधान। साचे सुत आप समझांयदा, निरगुण निरगुण हो मेहरवान। तेरा महल्ल इक्क वसांयदा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड बणाए दुकान। आपणी धारा धार चलांयदा, निराकार साकार होए मेहरबान। विश्व आपणा रूप वटांयदा, विष्नूं देवे साचा दान। अमृत चरन कँवल बहांयदा, नाभी कँवल करे परवान। तेरा रूप सिंच हरा करांयदा, बीज बीजे आप मेहरवान। मात पित ना कोए बणांयदा, लेखा जाणे गोपी काहन। कँवल कँवला आप खुल्हांयदा,

१३०८
०६

नाभी रूप हो प्रधान। विष्नूं साची सेव कमांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे शब्द आप समझांयदा। विष्नूं उपाया विश्व धार, वास्तक रूप आप प्रगटाईआ। कँवल कँवला कर उज्यार, नाभी अमृत आप वखाईआ। फुल पंखड़ी कर त्यार, फुल फलवाड़ी आप महिकाईआ। आपे अंदर आपे बाहर, रूप अनूप आप वण्डाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म हो त्यार, ब्रह्म आपणा रूप धराईआ। उच्ची कूक करे पुकार, दोए जोड़ पए सरनाईआ। विष्नूं ब्रह्मे एका धार, पुरख अबिनाशी पिता माईआ। आपे वसे धूंआँधार, सुन्न अगम्मी डेरा लाईआ। शब्दी शब्द कर पसार, शब्द शब्दी खेल खलाईआ। शंकर मेला हरि करतार, हरि का रूप अनूप वटाईआ। एका गुर इक्क अवतार, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका शब्द सुत समझाईआ। एका शब्द सुत दुलारा, पुरख अबिनाशी आप उपाया। एका रूप हरि निरँकारा, निरगुण आपणा नाउँ रखाया। एका जोती जोत उज्यारा, जोती जोत डगमगाया। एका मात पित करे प्यारा, एका मईआ नाउँ वखाया। एका करे सति पसारा, विष्न ब्रह्मा शिव आपे जाया। इक्क बणाए सेवादारा, साची सेवा आप समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि, साचे शब्द शब्द वड्याआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवे दान, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। एका अक्खर इक्क ज्ञान,
१३०६ एका इक्क करे पढ़ाईआ। एका नूर श्री भगवान, रूप अनूप इक्क दरसाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका बैठा आसण १३०६
०६ लाईआ। एका देवे धुर फ़रमाण, एका हुक्मी हुक्म चलाईआ। एका रक्खे साची आण, आदि जुगादि सच्चा शहनशाहीआ। ०६
ब्रह्मा विष्न शिव भुल्ल ना जाणा बण नादान, प्रभ वेखणहारा थाउँ थाँईआ। दो जहान रक्खे माण, बख्शे चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे शब्द आप समझाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सुणया कर ध्यान, जो सतिगुर पुरख सुणाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर तेरे चरन कँवल इक्क ध्यान, दूसर ओट ना कोए तकाया। तेरा रूप श्री भगवान, एका इष्ट इष्ट मनाया। ओम ओम नौजवान, म्स्वम तेरा दर सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेव दए खुल्हाया। विष्न ब्रह्मा शिव करन पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। कवण नाउँ तेरा लईए उच्चार, नाउँ निरँकारा बेपरवाहीआ। कवण गुण गाए वारो वार, गावत गावत गीत गोबिन्द अल्हाईआ। कवण घर मंगे बण भिखार, दर अलक्खणा अलक्ख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपणी वस्त अमोलक आप वखाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमांयदा, किरपा निध गुण निधान। ब्रह्मे विष्न शिव आप समझांयदा, देवणहारा दानी दान। आदि पुरख आपणी कल वरतांयदा, रूप

रंग ना दिसे कोए पछाण। पुरख अकाल आप अख्वांयदा, आपणा लेखा जाणे आप श्री भगवान। साचा शब्द ताल वजांयदा, एका नाद सच्ची धुनकान। त्रै त्रै आपणा मेल मिलांयदा, चेला गुर होए मेहरवान। एका हुक्मी हुक्म सुणांयदा, निरगुण सरगुण वेख निशान। सो पुरख निरँजण आपणा नाउँ धरांयदा, धुर दी बाणी मारे बाण। हरि पुरख निरँजण वेख वखांयदा, दरगाह साची सच निशान। एकँकारा पंचम ताज सीस आप टिकांयदा, तख्त सोहे राज राजान। आदि निरँजण दर दरवेश हुक्म कमांयदा, जोती जोत जगे महान। अबिनाशी करता उठ उठ वेख वखांयदा, आदि जुगादी निगहबान। श्री भगवान आपणा संग आप निभांयदा, विछड़ जाए ना दो जहान। पारब्रह्म ब्रह्म आपणी वण्ड वण्डांयदा, आपे वेखे मार ध्यान। एका दूआ आप हो जांयदा, एकँकारा श्री भगवान। अनुभव प्रकाश आपणा आप वखांयदा, रूप रंग ना कोए निशान। मूर्त सूरत डगमगांयदा, नूरी नूर नूर नूर महान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा नाउँ आप जपांयदा। आपणा नाउँ हरि जणांयदा, कर किरपा गुण निधान। विष्नूं बाहों फड़ उठांयदा, पुरख अबिनाशी वड मेहरवान। ब्रह्मे एका राग अलांयदा, आत्म धुन सच्ची धुनकान। शंकर हथ्थ त्रिसूल फड़ांयदा, एका बख्शे चरन ध्यान। दूई कुदरत वेख वखांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दाता दानी गुण निधान। ब्रह्मा विष्न शिव हरि समझाया, आपणा नाउँ गहर गम्भीर। सोहँ रूप आप वटाया, ना कोई बस्त्र पहरे चीर। हँ ब्रह्म सरूप सबाया, करे खेल अन्त अख़ीर। साची धीर आप धराया, त्रै त्रै बन्नणहारा बीड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, लेखा जाणे शाह हकीर। ब्रह्मे विष्न शिव हरि जणाया, सोहँ रूप भेव ना राईआ। हँ ब्रह्म प्रभ मेल मिलाया, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। ना मरे ना पए जम्म अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कराया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका तत्त आपणा आप वखाईआ। हरि हरि तत्त जणांयदा, निरगुण रूप अपार। विष्नूं विश्व धार वखांयदा, आप आपणी कर विचार। पारब्रह्म ब्रह्म वण्ड वण्डांयदा, अलक्ख अलक्खणा खेल न्यार। शंकर संसा रोग मिटांयदा, आप आपणा कर प्यार। आपणी इच्छया भिच्छया झोली पांयदा, त्रैगुण माया कर वरतार। सतो रजो तमो संग रखांयदा, सगला संग आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, देवे इक्क सच्चा भण्डार। सच भण्डार वरतांयदा, ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार। त्रैगुण माया झोली पांयदा, देवे हुक्म सच्ची सरकार। लक्ख चुरासी बणत बणांयदा, पंज तत्त कर उज्यार। पृथ्मी आकाश खेल खिलांयदा, अप तेज़ वाए करे प्यार। एका रंगण रंग चढ़ांयदा, आपे वसे सभ तों बाहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, साचा हुक्म आप सुणांयदा। विष्नूं सुणना कर ध्यान, हरि पुरख निरँजण आप जणांयदा। तूं दाता रिज़क दो जहान, घर घर रिज़क पुचांयदा। ब्रह्मा तेरी ब्रह्म सन्तान, लक्ख चुरासी आप वखांयदा। शंकर तेरे हथ्थ निशान, जो घड़या भन्न वखांयदा। तिन्नां होए निगहबान, सचखण्ड दुआर सुहांयदा। शब्दी देवे धुर फ़रमान, आदि जुगादी आप अल्हांयदा। शाहो भूप बण राजान, सीस आपणे ताज टिकांयदा। त्रैगुण माया कर प्रधान, एका पल्ले गंढु बंधांयदा। पंज तत्त देवे माण, आप आपणा रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर विचार, प्रभ अग्गे ढह ढह पए सरनाईआ। तेरा हुक्म सच्ची सरकार, सीस आपणे लए टिकाईआ। लक्ख चुरासी महल रहे उसार, घड़ भाण्डे आप घड़ाईआ। तेरी वस्त निराधार, निरगुण तेरे विच समाईआ। तूं किरपा कर अन्तिम वार, आत्म ब्रह्म मेल मिलाईआ। ईश जीव इक्क प्यार, जगत जगदीश तेरी वड्याईआ। तेरे सीस सोहे दस्तार, शाह पातशाह तूं इक्क अख्वाईआ। तूं दाता दानी देवणहार, हउँ मंगदे त्रै त्रै भिखारी दर तेरे बैठे अलक्ख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, भुल्ल कदे ना जाईआ। साचा वर पुरख अबिनाशी देणा, भुल्ल कदे ना जाईआ। तेरा बस्त्र साचा गहिणा, साचे नैणां रंग चढ़ाईआ। तेरे भाणे सदा रहिणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर साचे सच्ची सच मिले सरनाईआ। पुरख अबिनाशी दीन दयाला, आपणी दया कमांयदा। आप उठाए सुत महांकाला, साचा संग वखांयदा। आपे चले अवल्लड़ी चाला, चाल अवल्लड़ी इक्क रखांयदा। त्रैगुण तेरा जंजाला, आपणी हथ्थीं आप तुड़ांयदा। आपे लक्ख चुरासी फल लगाए डाल्हा, पंचम भस्म आपणे आप करांयदा। आपे होए शाह कंगाला, राज राजन शाहो भूप दर दरबान आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव आपणे भाणे आप रखांयदा। मन्नणा भाणा हरि करतार, भुल्ल रहे ना राईआ। आवां जावां विच संसार, लोकमात कर रुशनाईआ। निरगुण सरगुण बन्न्हां धार, दो जहान वड वड्याईआ। रवि ससि सूरज चन्न करां उज्यार, मंडल मंडप आप सुहाईआ। धरत धवल दए सहार, जल बिम्ब आप टिकाईआ। लक्ख चुरासी कर पसार, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड रचन रचाईआ। एका शब्द धुन जैकार, चारे वेदां रिहा गाईआ। एका नाद वजाए वजावणहार, चारे बाणी आप सुणाईआ। एका वण्डण वण्ड वण्डे करतार, चारे जुगां वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव एका घर वखाईआ। एका घर इक्क विचोला, पारब्रह्म प्रभ आप अख्वांयदा। एका शब्द एका ढोला, एका आपे गांयदा।

एका रसना एका बोला, एका गुण आप वखांयदा। एका वस्त एका तोला, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। एका बदले आपणा चोला, जुग जुग आपणा रूप प्रगटांयदा। एका गाए साचा सोहला, कलि कल आपणी आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, ब्रह्मा विष्न शिव भेव जणांयदा। भेव जणाया पुरख अकाल, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। करे खेल दीन दयाल, दयानिध वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड बह सच सच्ची धर्मसाल, बंक दुआरा आप सुहाईआ। आप उठाया महांकाल, काल भय ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका घर वेख वखाईआ। एका घर सुहञ्जणा, हरि साचा आप सुहांयदा। जोत जगे आदि निरँजणा, दीवा बाती ना कोई टिकांयदा। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजना, आपणी धारा आप बंधांयदा। आपणा करे आपे मजना, आपणी मैल गंवांयदा। आपे बणे आपणा सज्जणा, आदि जुगादी संग निभांयदा। ना घड़या ना भज्जणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे शब्द आप उपजांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव करन पुकार, प्रभ साचे तेरी वड वड्याईआ। कवण रूप लोकमात लए अवतार, कवण रूप नाउँ वखाईआ। कवण गुण गाए विच संसार, कवण अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। कवण जन लए पछाण, आप आपणा रंग रंगाईआ। कवण तन करे प्यार, कवण तत्त तत्त

१३१२ बंधाईआ। कवण जन दए अधार, कवण बुधी रहे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका १३१२

०६ देणा साचा वर, लोकमात तेरी कवण वड्याईआ। पारब्रह्म समझांयदा, ब्रह्मा विष्न शिव उठ उठ वेख विचार। लक्ख चुरासी ०६

जोत जगांयदा, घट घट करे आप पसार। प्रभ आपणा रूप वटांयदा, ईश जीव दए अधार। पंज तत्त चोला आप हंढांयदा, त्रैगुण माया खेल निरँकार। अठ्ठां तत्तां बन्धन पांयदा, घर मन्दिर सोहे बंक दुआर। घर घर विच आप रखांयदा, घर दीपक जोत करे उज्यार। घर सर सरोवर अमृत आत्म आप भरांयदा, घर रक्खे ठंडा ठार। घर जोत निरँजण दीप जगांयदा, आठ पहर होए उज्यार। घर अनहद शब्द वजांयदा, धुनी धुन सुणाए सच्ची धुन्कार। घर साची सेज वछांयदा, घर पलँघ रंगीला कर त्यार। घर नारी कन्त हंढांयदा, घर सखीआं मंगलचार। घर गीत गोबिन्द अलांयदा, घर मेला कन्त भतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव देवे वर, सेवा करे विच संसार। ब्रह्मे विष्न शिव तेरी साची सेवा, त्रैगुण माया जोड़ जुड़ाया। पंज तत्त करे खेल अलक्ख अभेवा, आदि निरँजण भेव ना राया। करोड़ तेतीसा देवी देवा, साचे मार्ग आपे लाया। लक्ख चुरासी जीव जंत गावे रसना जिह्वा, आपणा नाउँ लए दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जड़ चेतन्न आपणा खेल खिलाया। आपे जाणे जड़ चेतन्न खेल करे करतार, कन्त भतार

बेपरवाहीआ। आपे वरते आपणा वरतार, लक्ख चुरासी जून अजूनी आप भवाईआ। आपे नौं दस ग्यारा बीस तीस दए अधार, चार यार जोड़ जुड़ाईआ। आपे सभ तों वसे बाहर, आपे सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। आपे आदि निरँजण हो उज्यार, घट घट जोत निरँजण करे रुशनाईआ। आपे थिर घर वजाए शब्द धुन्कार, जीव जंत आप सुणाईआ। आपणा रूप प्रगटे आप करतार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। आपणी करे आप पछाण, आपणा गुण आप बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मे विष्न शिव करे पढ़ाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव अक्खर एका पढ़ना, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाया। साचे मन्दिर एका वड़ना, चार दिवार ना कोई वखाया। अग्नी हवन कदे ना सड़ना, मढ़ी गोर ना कोई दबाया। बिन सतिगुर पूरे तेरा घाड़न किसे ना घड़ना, ना कोई पल्ले बन्न् बन्नाया। आपणा मस्तक आपणी मोती हीरा लाल जवाहर आपे जड़णा, आपे वेख वखाया। आपणे पौड़े आपे चढ़ना, आपणा मन्दिर आपे दए सुहाया। ना कोई सीस ना कोई धड़ना, धरत धवल ना कोए वड्याआ। तेरे दुआरे आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्मादि हरि जू आपे खड़ना, हरि मन्दिर सोभा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव आप समझाया। ब्रह्मा विष्न शिव चेला गुर, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। मेल मिलावा लिख्या धुर, धुर दरवाज़ा आप खुलांयदा। एका राग एका ताल एका सुर, एका नाद वजांयदा। एका चरन प्रीती गई जुड़, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ांयदा। एका शब्द अगम्मी चढ़या घोड़, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। एका विष्न ब्रह्मे शिव जाए बौहड़, लोक परलोक आपणा हुक्म चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा तख्त आप वड्यांअदा। साचे तख्त शाह सुल्ताना, साची हिकमत हुक्म चलाईआ। जोद्धा सूर बली बलवाना, बल आपणा आप रखाईआ। लोकमात वेखे मार ध्याना, चौदां लोकां फोल फुलाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव देवे इक्क ज्ञाना, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। आपणा पहरे आपे बाणा, बावन अक्खरी अक्खर अक्खर अक्खर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि, इक्क इकल्ला एकँकार, दूजी बन्न्हे कुदरत धार, तीजा नैण रहे उग्घाड़, चौथे पद पावे सार, पंचम मेला कन्त भतार, छेवें छप्पर लए उसार, सत्तवें सति सतिवादी साची कार, अठ्ठां तत्तां बन्धन पाए सर्ब संसार, नौ दुआरे खोल्हे किवाड़, दस्म दुआरे आपणा डेरा लाईआ। दस्म दुआरी साचा डेरा, पुरख अबिनाशी आप लगांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव जाणे आपणा हेरा फेरा, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। आपे जाणे आपणा दूर नेड़ा, नेड़ दूरा आपणा पन्ध मुकांयदा। आपे गेड़ा आपणा गेड़ा, गेड़नहारा आप अख्वांयदा। आपे पाए आपणा झेड़ा, काया मन्दिर अंदर पंज तत्त आपणी खेल खिलांयदा। आपे करे हक निबेड़ा, जुग

जुग आपणा वेस वटांयदा। आपे बन्ने आपणा बेड़ा, खेवट खेटा सच मलाह बेपरवाह एका एक बण जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। साचा खेवट खेटा दातार, आदि जुगादि अख्वाया। जुग जुग बेड़ा चलाए विच संसार, रथ रथवाही भेव ना राया। लक्ख चुरासी पावे सार, घर घर मन्दिर जोत जगाया। गुरमुख साचे लए उभार, साध सन्त लए उठाया। भगत भगवन्त दए अधार, आप आपणी बूझ बुझाया। नारी कन्त सच भतार, कन्त कन्तूहल सेज सुहाया। आत्म सेजा बरखे फूल , फुल फुलवाड़ी आप महिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका वस्त अमोलक काया गोलक विच टिकाया। काया गोलक सच टिकाणा, हरि साची वस्त टिकाईआ। शब्द सरूपी एका गाणा, धुन आत्मक आप सुणाईआ। आदि जुगादी एका राणा, एका हुक्म रिहा सुणाईआ। त्रैगुण वरते एका भाणा, त्रै त्रै भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बूझ बुझाईआ। ब्रह्मे सुणया ला कर कन्न, विष्न नाल रलाया। शंकर करे धन्न धन्न, प्रभ तेरी वड वड्याआ। तूं दाना बीना तूं जननी जन, धन्न धन्न जणेंदी माया। आदि जुगादि बेड़ा बन्न, बिन तुध अवर ना कोई चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साचा हुक्म आप सुणाया। आदि

१३१४ अन्त बेड़ा बन्न चलावणा, भुल्ल रहे ना राईआ। पुरख अबिनाशी खेल खलावणा, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। आदि शक्ति १३१४

०६ मेल मिलावणा, नूरो नूर नूर बेपरवाहीआ। परवरदिगारा नाउँ धरावणा, अकल कल आप अख्वाईआ। विष्नूं आपणा रंग ०६

रंगावणा, विश्व एका रूप दरसाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म विद्या आप पढ़ावणा, चारे मुख मुख सालाहीआ। चारे वेदां आपे गावणा, चारे जुग वण्ड वण्डाईआ। सतिजुग साचा सति वरतावणा, सति सतिवादी सच्चा शहनशाहीआ। बावन आपणा रूप वटावणा, वल छल खेले खेल धुरदरगाहीआ। वार अठारां जोत जगावणा, जोती जोत डगमगाईआ। त्रेता त्रीया रूप प्रगटावणा, रूप रेख ना कोए वखाईआ । राम रामा धनुख उठावणा, साचा चिल्ला आप चढ़ाईआ। गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ावणा, त्रैगुण माया फंद ना कोए पाईआ। आप आपणी चाल चलावणा, चाल निराली इक्क रखाईआ। ज़िमी अस्मानां वेख वखावणा, धरत धौल धरनी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मे विष्न शिव दए समझाईआ। सतिजुग त्रेता करना पार, पुरख अबिनाशी खेल खलावणा। जुग जुग लए आपणा अवतार, रूप अनूप आप वटावणा। निरगुण सरगुण करे प्यार, कागद कलम भेव ना लावणा। चारे वेद ना करन विचार, लिख लिख लेखा ना किसे सुणावणा। ब्रह्मे तेरी ब्रह्म धार, लोकमात आप प्रगटावणा। घर घर मन्दिर कर त्यार, काया बंक सुहावणा। अंदर

वड़ सच्ची सरकार, आपणा तख़्त वखावणा। भगत भगवन्त कर प्यार, आप आपणा मेल मिलावणा। साचे सन्त दए हुलार, साचे पौड़े आप चढ़ावणा। डूँग्घी कंदर कर कर पार, सुखमन टेढी बंक पन्ध मुकावणा। त्रबैणी नैणी कर ख्वार, आप आपणा दरस दिखावणा। अमृत बख़्शे ठंडी ठार, कँवल नाभी फुल्ल खिलावणा। दुरमति मैल दए उतार, साची कल आप सुहावणा। हँस ना उडे कागां डार, कागों हँस आप बणावणा। आत्म सेजा कर प्यार, आत्म ब्रह्म मेल मिलावणा। नारी कन्त इक्क श्रंगार, पीआ प्रीतम इक्क हंढावणा। सतिजुग त्रेता उतरे पार, सीता सुरती एका राम प्रनावणा। शब्द निशाना मारे मार, तीर निराला इक्क चलावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव आप समझावणा। ब्रह्मे विष्न शिव सतिजुग त्रेता उतरे पार, द्वापर दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी पावे सार, निरगुण निरगुण बेपरवाहीआ। सरगुण रूप प्रगट होए आप करतार, पंज तत्त मेला सहिज सुभाईआ। त्रैगुण माया दए आधार, रूप अनूप वड्डी वड्याईआ। साचा गाए मंगलाचार, साची सख़ीआ वेख वखाईआ। मुकंद मनोहर लख़मी नरायण सुंदर कुण्डल मुक्ट बैण, सीस जगदीस आप सुहाईआ। नाम बंसरी वजाए बजावणहार, गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। भगत भगवन्त करे प्यार, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। दूतां दुष्टां मारे कर खुवार, चारों कुंट दए हलाईआ । धरत धवल करे पुकार, धरनी नेत्र नैणां नीर वहाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, पुराण अठारां दए लिखाईआ। चार लक्ख हज़ार सतारां सलोक गिणे आपणी वार, भद्र पुराण मुख बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव देवे वर, लेखा लेखे आपणे पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरे आपणे घाट, पुरख अबिनाशी आपणा खेल खलावणा। माणस देही चोला जाए पाट, जोती जोत मिलावणा। आपे सोहे आपणी खाट, आपणा पलँघ आप हंढावणा। आपे जगे आपणी जोत ललाट, आपणा नूर आपणे विच टिकावणा। आपे विके आपणे हाट, आपणी कीमत आपे पावणा। आपे करे आपणा पूरा घाट, आपणा लेखा आपे लाहवणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव देवे वर, आपणा पर्दा आप वखावणा। ब्रह्मे विष्न शिव सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराईआ। ना कोई मात पित बपड़ी बापड़, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। ना कोई गोद सुहाए थापड़, आलस निन्दरा ना कोए मिटाईआ। लक्ख चुरासी वेले पापड़, हरि का भेव कोए ना पाईआ। वरन बरन शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान देवण आदर, आदर्श रूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव देवे वर, आपणा तत्त आप बुझाईआ। आपणा तत्त समझांयदा, पारब्रह्म पुरख अगम्म। आपणी मति आपणे विच टिकांयदा, ना हरख सोग ना ख़ुशी ग़म। आपणा सति आप जणांयदा, ना मरे ना पए जम्म।

१३१५ ०६

बिन थम्मां गगन रहांयदा, आपे जाणे आपणा कम्म। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपे घड़े आपे देवे भन्न। घड़न भन्नणहार समरथ, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। ब्रह्मे विष्न शिव लक्ख चुरासी चलाए तेरा रथ, रथ रथवाही बेपरवाहीआ। शब्द जणाए महिमा अकथ, आपणा नाउँ आप प्रगटाईआ। कलिजुग देवे साची वथ्थ, चौथे जुग वड्डी वड्याईआ। चारे बाणी वखाए हठ, हठ तप जोग अभ्यास इक्क सिखाईआ। पन्ध मुकाए नट्ठ नट्ठ, दो जहानां सच्चा माहीआ। वसणहारा घट घट, लक्ख चुरासी जोत कर रुशनाईआ। लेखा जाणे तीर्थ तट, अठसठ फोल फुलाईआ। पावे सार मन्दिर मठ, शिवदुआले खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचे वर, ब्रह्मे विष्न शिव एका अक्खर करे पढ़ाईआ। कलिजुग धार चलाए हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। लोकमात आया धर, माणस जन्म दुआईआ। लक्ख चुरासी अंदर वड़, आपणी हिकमत हुक्म लए चलाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, औदां जांदा दिस ना आईआ। आपणी विद्या आपे पढ़, पंज तत्त दए पढ़ाईआ। काया चोले आपे वड़, जगत वजूद आप हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, ब्रह्मे विष्न शिव इक्क समझाईआ। काया तत्त आप हंढाउणा, लाशरीक खेल खिलांयदा। महिबान बीदो आपणा रंग रंगाउणा, महबूब आपणा रूप आप वटांयदा। साचा मन्दिर आप सुहाउणा, मुकामे हक डेरा लांयदा। एका कलमा आप पढ़ाउणा, एका नबी आप अख्वांयदा। एका हक बहक आपणा वेख वखाउणा, लाशरीक आपणा भेव जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। जुग जुग धार चलाए अवल्ली, अव्वल अल्ला आपणा नाउँ रखांयदा। निरगुण जोत इक्क इकल्ली, काल महांकाल खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचे आप समझांयदा। लोकमात खेल अपारा, कलिजुग वेखे वेख वखांयदा। ईसा मूसा कर त्यारा, काला सूसा तन छुहांयदा। एका शब्द इक्क हुलारा, एका कलमा आप पढ़ांयदा। एका नबी रसूल करे प्यारा, एका आपणा रूप वटांयदा। एका खोल्हे खोल्हणहार किवाड़ा, बन्द दरवाज़ा इक्क वखांयदा। एका मुहम्मद मुहम्मदी यारा, चार चारां मेल मिलांयदा। एका हक हक नाअरा, ऐनलहक रंग रंगांयदा। एका राह रिहा तक, साचे तख्त सोभा पांयदा। एका आपणा पर्दा बैठा ढक, मुख नकाब रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, जुग जुग आपणी रचन रचांयदा। जुग जुग रचन रचाए सलोक, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। संग मुहम्मद चार यार लेखा जाणे चौदां लोक, तबक तबकां फेरा पाईआ। ना कोई हरख ना कोई सोग, आलम उलमा करे पढ़ाईआ। आपणा भाणा आपे लए रोक, आपणे भाणे आप समाईआ।

लक्ख चुरासी देवे झोक, ना कोई मेटे ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव वखाए इक्क दर, दर दरवाजा आप खुल्हाईआ। गुर गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, डंका वजाए धुर दरबारा, राउ रंकां शाह सुल्तानां दए जगाईआ। एका डंका वज्जया, पारब्रह्म आप वजाया। गोबिन्द सूरा आया भज्जया, लोकमात ल्ए अंगड़ाया। ग़रीब निमाणयां पर्दा कज्जया, एका शब्द पर्दा पाया। एथे ओथे रक्खे लज्जया, जो जन सरनाई आया। आपणा घर आपे तजया, गुरसिखां खेड़ा दए वसाया। इक्क चलाए सच जहाजया, चप्पू नाम हथ्थ उठाया। अंदर मन्दिर बैठ मारे वाजया, ब्रह्मा विष्न शिव भेव ना राया। धुर दरगाही लै के आया दाजया, सिर आपणे भार उठाया। कलिजुग अन्तिम रचे काजया, जुग जुग आपणी रचन रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मे शिव तेरी अक्ख खुल्हाया। ब्रह्मे शिव नेत्र लैणा खोल्ह, प्रभ साचा आप समझांयदा। चौथे जुग प्रभ तोले तोल, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। चार कुंट अगम्मी वजाए ढोल, शब्द नगारा हथ्थ उठांयदा। आपणा अक्खर आपे बोल, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। गुरसिखां अंदर वड़ वड़ करे चोल्ह, आप आपणे मेल मिलांयदा। सुरती शब्दी जाए मौल, मौला आपणा नाउँ रखांयदा। उलटा करे नाभ कँवल, अमृत साचा जाम प्यांअदा। माण वडियाई देवे उप्पर धवल, धरनी धरती धौल हौला भार करांयदा। लक्ख चुरासी पंच विकार त्रैगुण माया उब्बले रत, ना कोई समांयदा। सृष्ट सबाई जाणे मित गति, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव आप समझांयदा। ब्रह्मे विष्न शिव नेत्र नैण उग्घाड़, प्रभ साचा आप उठांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखे इक्क अखाड़, गुर गोबिन्द फेरा पांयदा। चारे सुत दुलारे आपे वार, सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकांयदा। आपे नीआं हेठ दए उसार, आपे कल्लर कंध ढांयदा। आपे रक्खे तिक्खी तेज धार कटार, आर पार आप करांयदा। आपे सीस धड़ लेखे लाए आपणे आप निरँकार, चोटी जड़ आप सुहांयदा। आपे अंदर वड़ करे पुकार, आपे उच्ची कूक सुणांयदा। आपे सुत्ता पैर पसार, आपे आपणी निन्दरा मेट मिटांयदा। आपे पुरख अकाल बणाए मीत मुरार, सथर सार आप हंढांयदा। आपे राखा बणे सर्ब संसार, रखक आपणी इच्छया आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव देवे वर, भोले नाथ आप उठांयदा। भोले नाथ उठ उठ जाग, पुरख अबिनाशी आप जगांयदा। कलिजुग अन्तिम लग्गणा भाग, नर हरि साचा खेल खिलांयदा। ब्रह्मे तेरी पकड़े वाग, लक्ख चुरासी आपणे हथ्थ वखांयदा। विष्नूं तेरे मन उपजे इक्क वैराग, तेरा भण्डार ना कोई वरतांयदा। तिन्नां गुर बन्न्हे एका

ताग, तिन्ने चेले वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी वेखे जीव काग, चारों कुंट सर्ब कुरलांयदा। बिन गुरसिख किसे मिले ना हरि जू कन्त सुहाग, जगत रंडेपा सर्ब हंढांयदा। त्रैगुण माया तपे अग्नी आग, पंज तत्त चोला सर्ब जलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मे विष्न शिव एका नैण नेत्र आप समझांयदा। ब्रह्मे नेत्र नैण उग्घाड़ना, पुरख अबिनाशी हुक्म सुणांयदा। हरि के शब्द हरि जू तारना, त्रैगुण माया भेट चढ़ांयदा। नव नव वेखे इक्क अखाड़ना, सति सति सरूप जणांयदा। भाग लगाए एका हाढ़का हाढ़ना, एका साचा मेल मिलांयदा। नाता तुटे पुरख नारना, नारी सेज ना कन्त हंढांयदा। गोबिन्द आपा आप उत्तों वारना, वारी वारी भेट चढ़ांयदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग खेल खिलावणा, गुर पीर अवतार रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव आप खुलांयदा। नौं सौ चुरानवें जुग वरतारा, जुग करता आप कराईआ। आदि जुगादी लए अवतारा गुर गुर रूप वटाईआ। भगत भगवन्त दए सहारा, सन्त साजन लए मिलाईआ। नौं नौं उतरे पार किनारा, नौं नौं डेरा देवे ढाईआ। चार चार कर खुवारा, चार चार लए मिलाईआ। चौथे पद सुहाए इक्क दुआरा, दर दरवाजा आप खुलाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पार किनारा, कलिजुग अन्तिम दए वखाईआ। इक्क व्यासा बण लिखारा, लोकमात दए गवाहीआ।
१३१८
ईसा मूसा करे निमस्कारा, प्रभ अगे सीस झुकाईआ। राह तक्के मुहम्मदी यारा, चौदां लोक अद्धविचकारे डेरा लाईआ। नानक
०६
निरगुण हो उज्यारा, एका जोत करे रुशनाईआ। राह तक्के एकँकारा, एका नैण नैण उठाईआ। कलिजुग आवे अन्तिम वारा, पुरख अबिनाशी लए मिलाईआ। महांबली उतरे विच संसारा, मात कुक्ख ना कोई जाईआ। पंज तत्त ना कोई अकारा, मन मति बुध ना कोई वड्याईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ी चाल चलाईआ। रक्खे निहकलंक नाउँ निरवैर करे खेल विच संसारा, वरन बरन ना कोई बणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना पावण सारा, खाणी बाणी रही जस गाईआ। कलिजुग आवे आपणी वारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव तेरा लेखा वेख वखाईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग उतरना पार किनार, पार किनारा आप करांयदा। पुरख अबिनाशा लए अवतार, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। नानक राह तक्के इक्क दातार, दर दुआरा मंग मंगांयदा। तेरा रूप अपर अपार, निरवैर खेल खिलांयदा। तेरी शब्द सच्ची धुन्कार, ब्रह्मण्ड खण्ड नाद वजांयदा। जेरज अंडज दए हुलार, उत्भुज सेत्ज वेख वखांयदा। परा पसन्ती तेरी घाल, मद्धम बैखरी आपे गांयदा। एका जोती देवे दोए धार, जोती जाता वेस वटांयदा। अंगद अमर कर प्यार, रामदास सरोवर अमृत इक्क नुहांयदा। अर्जन लेखा अगम्म अपार, बोध अगाधा शब्द

जणांयदा। एका गुरू कर त्यार, गुर शब्दी गुरू ग्रन्थ वड्यांअदा। निरगुण निरगुण भर भण्डार, त्रै त्रै वण्ड वण्डांयदा। चोला बदले विच संसार, काया डोला वेख वखांयदा। हरि गोबिन्द हरि हरि धार, तेज कटार आप चमकांयदा। हरि राए रूप अपार, हरि कृष्न संग निभांयदा। गुर तेग बहादर धरनी धवल तेरा हौला करे भार, आपणी रत्त भेट चढ़ांयदा। उच्ची कूक करे पुकार, प्रभ तेरा भाणा मोहे भांयदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पिच्छों आई मेरी वार, मेरा तेरा तेरा मेरा मूल चुकांयदा। तेरा रंग सच्ची सरकार, उतर कदे ना जांयदा। तेरा खेल अपर अपार, दिस किसे ना आंयदा। तूं माता तूं पिता करे प्यार, गोबिन्द तेरा सुत दुलारा अख्वांयदा। पुरख अकाल तेरी जैकार, तेरा डंक इक्क वजांयदा। नौं नौं लेखा कर कर पार, चौथा जुग वेख वखांयदा। बाल अवस्था खेल अपार, नौवें साल गुर गोबिन्द आप जगांयदा। नौं दुआरे करे पार, काया खेड़ा पन्ध मुकांयदा। अमृत बख्शे निझर धार, सच प्याला हथ्थ उठांयदा। दीन दयाला आप करतार, करता पुरख वेस वटांयदा। जोद्धा सूरबीर बली बलकार, बल आपणा आप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चौथे जुग आप समझांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, कलिजुग अन्तिम वारी आईआ। ब्रह्मा विष्न शिव लए हुलारा, पुरख अबिनाशी सोए आप जगाईआ। गुर गोबिन्द गोबिन्द सिँघ सुत दुलारा, हरि करतारा आप उठाईआ। शस्त्र खण्डा तेज कटारा, चण्ड प्रचण्डा आप चमकाईआ। वण्डां वण्डे अगम्म अपारा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। तोड़नहारा गढ़ हँकारा, चारों कुंट वेखे ख़लक खुदाईआ। नूर नुराना हो उज्यारा, नूरो नूर डगमगाईआ। आपणा लेखा आपे लिखणहारा, आपे लिख लिख दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि, सीस जगदीस दए वड्याईआ। कल्गी तोड़ा हरि जगदीस, गुर गोबिन्द सिँघ आप सुहांयदा। आपे गाए तीस बतीस, तीस बतीस लहिणा आप चुकांयदा। आपे भेव खुल्हाए बीस इकीस, इकीस बीस आपे हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मुख वेख दस्तार, दर्शन पाया हरि निरँकार, गुर गोबिन्द खुशी मनांयदा। हरि निरँकार गोबिन्द दर्शन पा, काया घर खुशी मनांयदा। प्रभ मिल्या बेपरवाह, पुरख अकाल विछड़ ना जांयदा। डगमग जोत रिहा डगमगा, नूरो नूर आप प्रगटांयदा। ना कोई दूसर देवे कोई होर सलाह, मता होर ना संग पकांयदा। इक्क इकल्ला बण खुदा, ख़ालक आपणी ख़लक वेख वखांयदा। जुगा जुगन्तर चलाए राह, गुर पीर अवतार साध सन्त आपणा हुक्म सुणांयदा। गुर गोबिन्द चेला ल्या बणा, सतिगुर आपणा नाउँ वखांयदा। सज्जण सहेला होए सहाई, सभनी थाँ सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। पंचम मुख ताज दए वखा, पर्दा ओहला आप हटांयदा। एका हुक्म दए सुणा, धुर फ़रमाणा आप जणांयदा। चौथे जुग चार

यारी यारां नाल लई हंढा, थिर कोई रहिण ना पांयदा। पंच प्यारे जोत जगा, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। कागों हँस दई बणा, काग हँस तेरी चाल चलांयदा। एका अमृत जाम दई प्या, पुरख अकाल हथ्थ फड़ांयदा। नानक मिल्या इक्क मलाह, कलिजुग बेड़ा आप चलांयदा। गुर अर्जन लेखा गया लिखा, लिख्या लेख ना कोई मिटांयदा। पंचम पंचम पंचम कर रुशना, पंचम प्रधान आपणा नाउँ धरांयदा। पंचम विच जाए समा, पंचम रोग गवांयदा। पंचम चोग दए चुगा, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। पंचम जोग दए सिखा, वड जुगीशर सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। दरसन अमोघ दए करा, गुर गोबिन्द मेल मिलांयदा। चौदां लोक रोवण मारन धा, तेरा तेज ना झल्लया जांयदा। पुरख अबिनाशी एका अक्खर दए पढ़ा, वाह वाह आपणा रूप वटांयदा। एका डंक दए वजा, चारों कुंट आप सुणांयदा। एका फ़तह दए गजा, एका हुक्म सुणांयदा। चार वरन ख़ालस ख़ालसा दए बणा, हँकार विकार नेड़ ना आंयदा। सालस बणे आप मेहरबां, मेहरबान मेहरबान मेहरबान आपणा नाउँ धरांयदा। जगत नईआ दए चला, ग़रीब निमाणे उप्पर बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला साचे घर, पुरख अकाल आप करांयदा। गोबिन्द सुणया हरि फ़रमाणा, घर साचे वज्जी वधाईआ। तूं साहिब सुल्तान साचा राणा, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। पंचम रूप शाहो भूप करे कल्याणा, कलिजुग काल नेड़ ना आईआ।
१३२० जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, बिन तुध और ना कोई ध्याईआ। दाना बीना हरि १३२०
०६ करतारा, आदि जुगादि समाया। गुर गोबिन्द मेला विच संसारा, गुर चेला रूप वटाया। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर ०६
दी धार धार बंधाया। एका हवन हवन कर उज्यारा, नैनण नैण वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर प्यारा, शब्द अगम्मी खण्डा हथ्थ फड़ाया। ना कोई घड़े लुहार तरखाणा, जगत पाण ना कोई लगाया। पुरख अबिनाशी पहरे आपणा बाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका तत्त दए समझाया। एका तत्त हरि समझांयदा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। चार वरन मेल मिलांयदा, गुर गोबिन्द करे कुड़माईआ। अमृत साचा आप बणांयदा, गुर अर्जन बाणी बाणी विच समाया। गुरसिखां प्यार मिठास विच पांयदा, शब्द अगम्मी खण्डा रिहा फिराईआ। पुरख अकाल एका रसना गांयदा, नानक निरगुण दए सलाहीआ। जगत विचोला दिस ना आंयदा, भुल्ली झूठी शाहीआ। उच्ची कूक बोल सुणांयदा, वाहिगुरू फ़तह इक्क गजाईआ। पंच प्यारे मोख धरांयदा, पंचम देवे माण वड्याईआ। पंचां अग्गे आपणा सीस झुकांयदा, निउँ निउँ पए सरनाईआ। पंचम आपे मंग मंगांयदा, भिख्या मंगे सच्चा शहनशाहीआ। आपणी वस्त ना कोई वखांयदा, आपे चले हुक्म रजाईआ। गुरसिखां काया कोट किला बणांयदा, अंदर रिहा सेज वछाईआ। उप्पर आपणा आसण लांयदा, सिँघ

दया दया कमाईआ। सरगुण रूप आप प्रगटांयदा, निरगुण वेखे चाँईं चाँईआ। तेज धार तलवार आप चमकांयदा, खण्ड ब्रह्मण्ड रहे कुरलाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव निउँ निउँ सीस झुकांयदा, गुर गोबिन्द तेरी सच सच्ची सरनाईआ। तेरा प्यार गुरसिखां विच्चों नज़री आंयदा, तेरा बंस होर ना कोई दसाईआ। तेरी रत्त गुरसिखां रत रंगांयदा, रंग रंगीला इक्क चढ़ाईआ। तेरा खण्डा आर पार दो जहाना पार करांयदा, अद्धविचकार ना कोई अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द देवे हुक्म सुणाईआ। गुर गोबिन्द शब्द सुणाया, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। शब्द अगम्मी खण्डा हथ्थ फड़ाया, दामनी दमके दो जहान। चण्ड प्रचण्ड रिहा वखाया, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। पंच प्यारे मंग मंगाया, मंगे सीस करे परवान। नंगी कटार रिहा चमकाया, आपे वेखे मार ध्यान। आपणा मेला आप मिलाया, दुष्ट दमन दमन परवान। सिँघ दया अग्गे आया, आज्ञा करी आप भगवान। तेरा तेरे विच समाया, विछड़ ना जाए दो जहान। गोबिन्द आपणा खण्डा आपणे हथ्थ उठाया, आपणा सीस करे कुरबान। आर पार धार चलाया, लहू रंगे नाल म्यान। उच्ची कूक सर्ब सुणाया, लेखा जाणे श्री भगवान। साचा बंस आप उपजाया, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रहे निशान। चौथा जुग मेट मिटाया, नौं खण्ड पृथ्मी होए बीआबान। सुंञ मसाण दीवा बत्ती ना कोए जगाया, सूरज चन्न रोशन होए ना कोए भान। पुरख अकाल मृदंग वजाया, नाता तुटे जगत शैतान। कूड़ी कलिजुग काया कंग रुढ़ाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करया खेल विच जहान। पंचम मीता इक्क अतीता, पंचम रंग रंगांयदा। पंचम दर ठांडा पंचम सीता, पंचम लेखा जाणे हस्त कीटा, पंचम ऊँच नीच मेट मिटांयदा। पंचम अमृत जाम प्याए अनडीठा, पंचम रस भराए एका मीठा, कौड़ा रीठा ना कोए वखांयदा। पंचम वसे आपे चीता, पंचम करे पतित पुनीता, पंचम लहिणा देणा चुकाए मन्दिर मसीता, गुरचरन ध्यान इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचा आप सुहांयदा। पंचम मेला आप कराया, पंचम पंचम रहे ना राईआ। पंचम रंग आप रंगाया, उतर कदे ना जाईआ। पंचम मृदंग आप वजाया, सारंग सारंगा ना कोए हलाईआ। पंचम संग आप निभाया, विछड़ कदे ना जाईआ। पंचम परमानंद आप समाया, निजानंद करे रुशनाईआ। पंचम बह बह मंगल गाया, घर वज्जदी रहे वधाईआ। पंचम कन्त कन्तूला मेल मिलाया, साची नारी खुशी मनाईआ। पंचम गुरमुख लए जगाया, पंच प्यारे दए वड्याईआ। पंच नाद शब्द धुन आपे गाया, राग रागनी मुख शर्माईआ। छत्ती राग रहे राह तकाया, पारब्रह्म तेरी वड्डी वड्याईआ। गुर गोबिन्द ऊँच अगम्म अपारा एका पाया, पारब्रह्म अबिनाशी करता शाह पातशाह सच्ची सरनाईआ। आवण जावण खेल रचाया, जुगा जुगन्तर फेरी पाईआ। गुर पीर अवतार

इक्क अख्वाया, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला साचे घर, पंचम देवे जगत वड्याईआ। पंचम पंचम कर त्यार, पंचम रंग रंगांयदा। आपा आपा उत्तों वार, चार चार लेखा मूल चुकांयदा। चार यारी कर खुवार, चार दुलारे भेट चढ़ांयदा। माता गुजरी दए आधार, धरत धवल तेरा हौला भार करांयदा। ग़रीब निमाणे लए उभार, आप आपणी गोद बहांयदा। भगतां भगवन्त करे प्यार, साचे सन्तां इक्क उठांयदा। धन्न धन्न जणेंदी माई पूत सपूता जिन्ह जम्मया विच संसार, जागरत जोत जोती जाता इक्क जगांयदा। वरन गोत वसे बाहर, हरख सोग ना कोए वखांयदा। किला कोट ना ल्या महल्ल उसार, शब्द नगारे चोट इक्क लगांयदा। रणजीत नगारा वजाए आप करतार, धुर दरबारे आप सुणांयदा। हँकारीआं तोड़ गढ़ हँकार, गढ़ी चमकौर सुहांयदा। सरसा तेरी डूँग्घी धार, गुरमुख आप बहांयदा। बाई करोड़ कर ना कोई प्यार, हीरे जवाहर माणक मोती तेरे विच टिकांयदा। ग्रन्थ ग्रन्थ ग्रन्थ आपणी अंस पावे सार, शब्द नाद धुन जल वायू विच समांयदा। आपणा खेल कर करतार, करता पुरख करनी किरत किरत विच टिकांयदा। कुदरत कादर दए आधार, करीम ग़नीम सनीम सादक सबर सबूरी आप हंढांयदा। आपणी तरमीम करे आप निरँकार, त्रैगुण विच कदे ना आंयदा। कलिजुग तेरा खेल अपार, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वेख वखांयदा। जुगा जुगन्तर साची कार, करनहारा आप करांयदा। गोबिन्द बणे लेख लखार, आपणा लेखा भविख्त आप जणांयदा। सथ्थर चंगा करे यार त्यार, सूलां सेज आप हंढांयदा। राह तक्के मीत मुरार, नेत्र नैण इक्क उठांयदा। पवण स्नेहा देवे जांदी वार, उँणंजा पवणा मुख शर्मांयदा। पुरख अकाल हो त्यार, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। लोकमात आए किरपा धार, दिस किसे ना आंयदा। गुर गोबिन्द ल्या उठाल, साची गोद आप बहांयदा। अमृत जाम इक्क प्याल, अमरापद इक्क वखांयदा। नेड़ ना आए काल महांकाल, काल महांकाल तेरे दर दुआर बहांयदा। तेरी चले अवल्लड़ी चाल, चार जुग भेव ना आंयदा। तेरा अमृत इक्क उछाल आपणे प्याले आप रखांयदा। तेरा रूप साचे लाल, चार वरन नौ खण्ड पृथ्मी आप प्रगटांयदा। तेरी घालण आपे घाल, पुरख अबिनाशी तेरी घाल लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवण आया साचा वर, लोकमात फेरी पांयदा। लोकमात पुरख अकाला, निरगुण निरगुण आपणा खेल खलाईआ। गोबिन्द सुत्ता सेज दोसाला, सूलां सथ्थर हेठ वछाईआ। पुरख अबिनाशी आपणी चली अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क रखाईआ। आपणा मार्ग दस्स सुखाला, बोध अगाधा करे सुणाईआ। लिख्या लेख बैठ सच्ची धर्मसाला, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि, आपणा तत्त दए समझाईआ। गुर गोबिन्द शब्द पाया धुर फ़रमाणा, पुरख अबिनाशी

मेल मलानया। एका घर दूजा टिकाणा, तीजे घर होए परवानया। चौथे पद होए परवाना, पंचम मेल श्री भगवानया। छेवें छप्पर छन्न ना कोए सहाना, सति पुरख निरँजण एका रंग रंगानया। लोकमात करे प्रधाना नाद अनादी एका नाद वजन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे दो जहानया। गुर गोबिन्द आत्म अन्तर एका बूझ, बूझ बुझंतर आप बुझांयदा। लेखा चुक्के एका दूज, दूज एका एका रंग समांयदा। आपणा लेखा जाणे गूझ, गूझ गोझ आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि, नव नव चार वेख वखांयदा। नौं नौं चार पन्ध मुकाउणा, गुर गोबिन्द शब्द जणाया। भविख्त वाकी वाक लिखाउणा, लिख लिख लेखा आपणा आप उपाया। मुछ दाढ़ी केस ना कोए रखाउणा, ना कोई मूंड मुंडाया। दस दस्मेशी वेस वटाउणा, शब्द अनादी नाद वजाया। चार कुंट फेरा पाउणा, दहि दिशां चरनां हेठ दबाया। चौदां लोक चरनां हेठ दबाउणा, चौदां लोक फोल फुलाया। ब्रह्मा विष्न शिव तेरा वक्त चुकाउणा, थिर कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणी रचना आप रचाया। कलिजुग वेला खेल खिलंदड़ा, गुर गोबिन्द बणत बणांयदा। लेखा लेख अगम्म अगम्मड़ा, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता हड्ड मास नाड़ी ना कोई चमड़ा, अम्मड़ी अम्मड़ा ना कोए रखांयदा।
१३२३ ना कोई रक्खे पल्ले पैसा दमी दमड़ा, त्रैगुण माया आपणा खेल खिलांयदा। ना मरे ना कदे जम्मड़ा, मात गोद ना कोए १३२३
०६ सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख अकाल, आदि जुगादी दीन दयाल, एका ०६
एक काल महांकाल, आपणे रंग रंगांयदा। गोबिन्द लेखा लेख अपारा, पुरख अबिनाशी आप लखाया। कलिजुग आए अन्तिम वारा, चौदां चौदां पन्ध मुकाया। चौदां चौदां दए हुलारा, चौदां लोक रहे ना राया। तेरा नाम होए उज्यारा, तेरा डंका इक्क सुणाया। तेरा नगर वसाए अगम्म अपारा, सम्बल एका नाउँ धराया। दीवा जोती कमलापाती करे उज्यारा, नूरो नूर नूर होए रुशनाया। साचा साकी बणे आप निरँकारा, एका जाम दए प्याया। लेखा चुकाए बाकी अगम्म अपारा, लेखा लेखे विच पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुलाया। गुर गोबिन्द लेख लिखांयदा, सूरबीर बलवान। सृष्ट सबाई आप समझांयदा, शब्द जणाई धुर फ़रमाण। कलिजुग अन्तिम राह तकांयदा, चौथा जुग मार ध्यान। चार कुंट अन्धेरा छांयदा, जूठ झूठ होए प्रधान। काम क्रोध हँकार लोभ मोह वण्ड वण्डांयदा, आसा तृष्ना खुल्हे दुकान। सूरज चन्न मुख शर्मांयदा, प्रकाश दिसे ना कोए भान। गगन आकाश पाताल वेख वखांयदा, धरत धौल करे ध्यान। नारी कन्त ना कोए हंढांयदा, विभचार होया जीव जहान। मात पुत्तर सेज वसांयदा, भैणा भईआ

नाता तोड़े जीव शैतान। काया चोली रंग ना कोए रंगांयदा, नज़र ना आए श्री भगवान। गुर का मन्त्र ना कोए दृढ़ांयदा, गुर चरन ना धरे कोए ध्यान। नानक निरगुण मेल ना कोए मिलांयदा, कलिजुग जीव होवण बेईमान। नौं दुआरे पन्ध ना कोए मुकांयदा, तेग बहादर नौवां गुर ना चुकाए आण। दस्म दुआरी ना कोए खुलांयदा, दस्म गुरू ना करे कोई परवान। पंचम शब्द नाद धुन ना कोए तन वजांयदा, कलिजुग काया होए वैरान। रसना बह बह जीव जहान सर्ब गांयदा, हथ्थ आए ना गुण निधान। जूठा झूठा वाक सुणांयदा, ज्ञानी ज्ञान ना करे ध्यान। मन का मणका ना कोए फिरांयदा, माया ममता तोड़े ना कोए अभिमान। हउमे शंका रोग ना कोए गवांयदा, अमृत मिले ना पीण खाण। चार कुंट सर्ब कुरलांयदा, गुर अर्जन बाणी मारे ना कोए तन बाण। अञ्जील कुरान तीस बतीस ना कोए सुहांयदा, मुल्ला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर होए हैरान। पंडत पांधा गीता ज्ञान ना कोए दृढ़ांयदा, माया ममता हउमे हंगता उत्तों आपणा आप कर रहे कुरबान। साचा मठ ना कोए तपांयदा, नाम अहूती ना देवे विच जहान। कलिजुग काया सर्ब तपांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप खुलांयदा। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, नौं नौं चार रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी जामा पाउणा, जोती जोत करे रुशनाईआ। निहकलंक नाउँ रखाउणा, निरवैर वड्डी वड्याईआ। अनादी नाद डंक वजाउणा,
१३२४ ब्रह्म ब्रह्मादि दए सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आप जगाउणा, आप आपणा हुक्म वरताईआ। जगत जगदीस खेल रचाउणा, १३२४
०६ जगत विद्या वेख पढ़ाईआ। पैंतीस अक्खरी फोल फुलाउणा, त्रै पंज वज्जे वधाईआ। बावन अक्खरी आपणा अंक चलाउणा, ०६
बावन बावन करे पढ़ाईआ। एका साता जोड़ जुड़ाउणा, दस सत्त सतारां दए सलाहीआ। बीह सौ सतारां बिक्रमी निरगुण नूर डगमगाउणा, जोती जोत करे रुशनाईआ। निहकलंक नरायण नर आपणा आप मात प्रगटाउणा, सृष्ट सबाई दए सुणाईआ। सीस ताज इक्क टिकाउणा, पंचम मुख मुख वड्याईआ। चारे मुख चार जुग चार वेद चारे खाणी चारे बाणी भेव खुलाउणा, भुल्ल रहे ना राईआ। पंचम मुख पंच प्यारे मात वडिआउणा, पंचम राज जोग इक्क समझाईआ। पंचम शब्द नाद धुन उपजाउणा, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, विष्न ब्रह्मे शिव तेरा पन्ध दए मुकाईआ। निहकलंक कल जामा पा, ब्रह्मे विष्न शिव तेरी सार समालया। चौथे जुग पन्ध दए मुका, जोती नूर होए इक्क अकालया। गुरमुख साचे लए जगा, आप बहाए सच्ची धर्मसालया। सिँघ शेर शेर आपणा रूप वटा, फुल वेखे पत डालिआ। शाहो भूप सच सिँघासण डेरा ला, पर्दा चुक्के दो जहानया। ब्रह्मा वेता आपणे विच लए मिला, ब्रह्म आपणा रूप करे प्रधानया। शंकर लेखा दए चुका, नाल रलाए शास्त्र सिमरत वेद पुराणया। आपणी रचना आप रचा,

आपे अन्त मिटानया। गुरमुख साजण आप उठा, देवणहारा धुर फ़रमानया। पंज तत्त चोला दए छुडा, आत्म अन्तिम करे ध्यानया। निरगुण निरगुण ल्ए मिला, निरगुण जोत खेल श्री भगवानया। पहलां आपणा हुक्म वरता, दूजा भाणा इक्क वखानया। आपणा चोला आप तजा, आपणा रूप प्रगट करे विष्नूं भगवानया। सो सो आपणी रचन रचा, हँ वेखे जगत निशानया। महाराज ग़रीब निवाज़ दया कमा, ग़रीब निमाणे करे परवानया। शेर रूप आप वटा, सिँघ गरजे विच मैदानया। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग आपणा मुख आप छुपा, गुरूआं पीरां देंदा रिहा धुर फ़रमानया। कलिजुग अन्तिम वेस वटा, प्रगट होया वाली दो जहानया। ब्रह्मे तेरी सफ़ा दए उठा, कलिजुग सथ्थर इक्क विछानया। सतिगुर पूरा दया रिहा कमा, गुर तेग बहादर तेरा झुलाए इक्क निशानया। तेरा सीस जगदीस लेखे ला, लेखा जाणे गुण निधानया। फुल फलवाड़ी मात उपा, सिँघ पाला करे परवानया। ब्रह्म पुरी दए टिका, मस्तक टिका लाए आप भगवानया। अमृत झिरना रिहा झिरा, आदि जुगादि इक्क महानया। दूजे दर ना मंगण जा, देवणहार आप अख्वानया। सभ दा संसा रिहा चुक्का, जगे जोत इक्क महानया। शंकर लेखा दए लिखा, लिखणहार आप अख्वानया। हथ्थ त्रिसूल दए सुटा, जटा जूट करे परवानया। धूढ़ी ख़ाक रिहा रमा, अवधूत होए परवानया। चार कूट डंक दए वजा, जो घड़या भन्न वखानया। पुरख अबिनाशी रिहा सुणा, साचे तख़्त बैठ सुल्तानया। कलिजुग अन्तिम गया आ, ना कोई दिसे राज राजानया। शाह सुल्तानां करना सुआह, सीस ताज ना कोए टिकानया। प्रगट होया एका एकँकार सच्चा शहनशाह, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। वीह सौ सतारां बिक्रमी आपणा हुक्म रिहा वरता, तख़्तों लाहे राजे राणया। शब्द खण्डा हथ्थ चमका, निर्भय आपणा रूप प्रगटानया। जगत स्यासत दए मिटा, वरासत दिसे ना कोए निशानया। नास्तिक अस्तिक एका रंग दए रंगा, आपणा बल आप अख्वानया। आपणी विद्या सर्ब दए पढ़ा, आत्म परमात्म वेख वखानया। घर घर राम रामा दए जणा, सीता सुआणी सुरत आपणे अंग लगानया। घर घर सखी ल्ए प्रना, कान्हा गोपी वेख वखानया। घर घर कलमा दए पढ़ा, कायनात चतर सुजानया। घर घर दमामा दए वजा, सच अमामा वड मेहरबानया। घर घर शामा दए मिटा, अन्ध अन्धेर रहिण ना पानया। घर घर बन्दीख़ाना दए तुड़ा, बन्दी छोड़ होए मेहरबानया। घर घर अमृत आत्म दए भरा, सच भण्डार इक्क वरतानया। घर घर मेले ख़लक ख़ुदा, अर्श फर्श कुर्श फ़लक वेखे वड मेहरबानया। महिबान बीदो आपणी रहिमत आप कमा, बी ख़ैर या अल्ला अज़मतो कस्मतो आपणी धार वखानया। चारे चार सेवा रहे कमा, अज़राईल जबराईल मेकाईल असराफ़ील होए दरबानया। इक्क मुहम्मद चरनी डिगा आ, चार यारी गल विच पल्लू पानया। अल्ला राणी निउँ निउँ सीस रही झुका, नेत्र नैण नैण शर्मानया।

पुरख अबिनाशी तेरे दुआरे मंगां इक्क दुआ, दोजक दिसे जगत जहानया। कलिजुग वेला अन्तिम पल्ला फड़ा, दामनगीर वड मेहरबानया। जामन होए आप शहनशाह, निहकलंक श्री भगवानया। चौदां तबकां कलंक दए मिटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल खेल महानया। चौदां लोक एका नाअरा, एका रूप दरसांयदा। चौदां तबकां इक्क हुलारा, इक्क हुलार बणांयदा। चौदां लोक इक्क पसारा, एका एक वेख वखांयदा। चौदां लोक इक्क अखाड़ा, एका नाच करांयदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला आपणा रंग रंगांयदा। आपणा रंग रंगावणहारा, पीरन पीर आप अख्वाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारा पावे सारा, शरअ शरीअत वेख वखाईआ। रूप अनूप प्रगटाए मुहम्मदी यारा, अहिमद मुहम्मद दए सलाहीआ । नौबत वज्जे धुर दरबारा, नौवीअत होर ना कोई बणाईआ। सखी सरवर बणे सच्चा सिक्दारा, रहिमत रहिमान रहीम बिस्मिल आपणी भेट चढ़ाईआ । तल्ब तालब करे तलीम बेऐब परवरदिगारा, एका अल्फ़ नुकता नून ना कोई वखाईआ। हमजा दए ना कोई सहारा, हवस मेटे ख़लक खुदाईआ । ऐन गैन वसे बाहरा, हज़ारा दरूद करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे आशक आपे माशूक, आपे आपणे उप्पर होए मशकूक, आपे अहिबाब रबाब सितार वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मे शिव इक्क समझाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कल आप अख्वांयदा। वेस वटाए वारो वार, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। नानक निरगुण कर प्यारा, सतिनाम नाल सति मन्त्र इक्क दृढ़ांयदा। सृष्ट सबाई बण वणजारा, घर घर वणज इक्क वखांयदा। एका नूर करे प्यारा, ज़ाहर ज़हूर आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आदि जुगादि खेल ब्रह्मादि, शब्द अनाद आपणा आप सुणांयदा। शब्द अनादी उठया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। पुरख अकाल तुठया, सुणाए धुन सच्ची धुन्कार। गुरसिख मनाए चार जुग दा रुठया, पूर्ब कर्मा लए विचार, लुकया रहे ना कोई गुठ्ठया, लक्ख चुरासी पावे सार। शंकर तेरा वेला अन्तिम मुक्या, जगत जगदीसा होए उज्यार। सतिगुर पूरा एका बुक्कया, कलिजुग जगत आई हार। हरि का भाणा कदे ना रुक्या, ना कोई रोके तीर तलवार। निरगुण रूप हो हो उठया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। वाली हिन्द ना रहिणा सुत्तया, सोए कोए ना पैर पसार। पहली चेत सुहौणी रुत्तया, सीस रक्ख पंज पंज वस्त अपार। खिच कटार नंगी आए तेरे दर ढुक्कया, पंज प्यारे करे शंगार। गोबिन्द तेरा बूटा कदे ना सुक्कया, पुरख अकाल लाया नाल प्यार। तेरा भार आपणे सीस चुक्या, सुत दुलारे साचे वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए साची कार। साची कार करनेहार, जुग जुग

वेस वटांयदा। निरगुण सरगुण लए अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा। कलिजुग आई अन्तिम वार, चार वेदां फोल फुलांयदा। शास्त्र सिमरत लए उठाल, खाणी बाणी फोल फुलांयदा। बाणी मारे निराला बाण, शब्द गुर इक्क वड्यांअदा। हरि का रूप ना सके कोई पछाण, नानक सतिगुर इक्क सुणांयदा। एका अंग कर परवान, कलिजुग अन्तिम राह तकांयदा। खेले खेल श्री भगवान, निहकलंका वेस वटांयदा। आदि जुगादी नौजवान, गुर गोबिन्द मेल मिलांयदा। मेल मिलावा दो जहान, साची पुरीआं धाम सुहांयदा। नेहचल वसे इक्क अस्थान, सम्मत सतारां लोकमात मार झात, गुरमुख दुआरा सचखण्ड बणांयदा। थिर घर वसे आप भगवान, शब्द अनादी नाद वजांयदा। धुर दरगाही इक्क फ़रमाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला नौजवान। नौजवान प्रभ आ गया, कलिजुग कल आपणी धार। सृष्ट सबाई आप सुवा रिहा, त्रैगुण माया उप्पर डार। गुरमुख साचे आप जगा रिहा, जुगा जुगन्तर पावे सार। त्रै अग्नी आप बुझा रिहा, अमृत बख्शे ठंडी ठार। जोग अभ्यास ना कोई करा रिहा, देवे दरस आप करतार। लक्ख चुरासी फंद कटा रिहा, राए धर्म ना करे खुवार। चित्रगुप्त हिसाब वखा रिहा, लाड़ी मौत गीत सुणार। जून अजूनी ना कोई फिरा रिहा, जूनी रहित आप निरँकार। गुरमुख साचे मेल मिला रिहा, जो आए चरन दुवार। राती सुत्तयां घर घर दरस दिखा रिहा, पान्धी बणया सिरजणहार। दो जहानां पन्ध मुका ल्या, पाई गंढु विच संसार। गुरमुखां आपणे रंग रंग रिहा, मनमुखां करे खुवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, शिव शंकर शिवपुरी विच्चों लए उठाल। पारब्रह्म बेअन्त, निहकलंक जामा पाया। प्रगट होए श्री भगवन्त, तन ख़ाकी ख़ाक रलाया। कन्त नारी फेर प्रनावण आया, गुर पीर बणाई बणत। साचे सन्त लए जगाया, लेखा जाणे आदि अन्त। जीव जंत सर्ब कुरलाया, प्रभ माया पाए बेअन्त। शाह सुल्तान देण दुहाया, गढ़ तोड़े ना हउमे हंगत। बिन सतिगुर पूरे कोई ना दया कमाया, तन नानक लाए ना कोई अंगद। कलिजुग वेला अन्तिम आया, हरि जू वेखे साची संगत। निरगुण बण भिखारी मंगण आया, आदि जुगादि बणया बहे मंगत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुखां कट्टे भुक्ख नंगत। गुरमुख सतिगुर मेलया, मेल मिलाया चरन दुआर। सतिगुर मिल्या सज्जण सहेलया, नाता तुटे सर्ब संसार। दर पाया इक्क अकेलया, नारी कन्त मेल भतार। घर वसया सज्जण सुहेलया, गृह मन्दिर होया उज्यार। कलिजुग अन्तिम सुहाए वेलया, गुरमुखां पाए सार। शंकर तेरा धाम इक्क नवेलया, करे खेल आप करतार। गुरमुख आप अपणा रिहा, कर किरपा दीन दयाल। गोबिन्द सुत इक्क रलाया, जगत जगदीशा छोटा बाला लाल। तिन्नां लेख आप समझाया, लेखा तोड़े जगत जंजाल। सत्त रंग निशाना हथ्थ

उठाया, दर भिखारी काल महांकाल। पंचम ताज सोहे हरि गिरधारया, भगत वछल बणे कृपाल। गुरमुख साचे पौड़े आपे चाढ़या, आपे बणया हरि रखवाल। पुरी शिव आपे वाड़या, आपे देवे सच्चा धन माल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, करे खेल हरि निराल। खेल निराली जोत अकाली, कलिजुग अन्तिम आप कराईआ। प्रगट होया दो जहाना वाली, निरँकार करे प्रितपाली, प्रितपालक बेपरवाहीआ। दूसर घर करे पाली, पत ना दिसे किसे डाल़ी, सिम्मल रुख सर्ब लहराईआ। कलिजुग कूड़ा करे दलाली, किसे ना दिसे हक हलाली, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, चार कुंट करे रुशनाईआ। चार कुंट उजाला, हरि गोपाला एका नूर डगमगाईआ। दीन दयाला खेल निराला, दो जहानां आप कराईआ। गोबिन्द तेरी घाल घाला, लेखे लाए दीन दयाला, एका हथ्थ वड्डी वड्याईआ। नौं खण्ड एका रूप बणाए सच्ची धर्मसाला, एका अक्खर पढ़ाए विच पाठशाला, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। गल पाए एका माला, सोहँ तोड़े जगत जंजाला, त्रैरंग वज्जा रहे ना कोई ताला, बजर कपाटी आप तुड़ाईआ। सतिजुग दस्से राह सुख़ाला, ब्रह्म मेला सिँघ पाला, शिव शंकर सिँघ जगदीस होए रखवाला, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। इंद इंदासण कढ्ढे दिवाला, करोड़ तेतीसा ना सुरत संभाला, सर्ब देवत ना कोई वड्याईआ। लेखा चुक्के आदि शक्ति ज्वाला, सुंभ निसुंभ ना ढाले कोई ढाला, सिँघ अस्वार अष्टभुज ना रूप प्रगटाईआ। आपणा लेखा जाणे बेपरवाह दीन दयाला, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोई रखवाला, लोकमात ना कोई सहाईआ। अठसठ तीर्थ ना कोई रखवाला, दुरमति मैल ना कोई धुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका हुक्म दए जणाईआ। बन्द अन्न दाना विष्नूं तेरा कीता , जगत भण्डार ना कोई वरतांयदा। पारब्रह्म ब्रह्मे मार्ग एका दस्सणा, रूप अनूप आप धरांयदा। लोकमात मेरी कोई ना करे लखना, ब्रह्म बूटे आपे लांयदा। कलिजुग तेरा कढ्ढे दुःखना, दुखियां दुःख आप गवांयदा। गुरमुख जुग जुग सुखदे रहे सुखणा, कवण वेला सतिगुर मेल मिलांयदा। बीस बीसा गुरसिख गुर इक्क दूजे घर आपे ढुकणा, नारी कन्त कन्त नारी आपणा रूप प्रगटांयदा। सन्त जनां एका मार्ग दस्सणा, जगत विकार दए गंवाईआ। मनमुखां चारों कुंट नस्सना, ख़ाली ठूठा सर्ब वखाईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना तख्त ताज तजणा, सीस ताज ना कोई हंढाईआ। पारब्रह्म पति परमेश्वर निहकलंक एका बुकणा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख साचे आप मिलाईआ। गुरमुख मेल मिलनया, मेला हरि दुआर। सतिगुर पूरा चढ़ाए चन्नया, निरगुण जोत करे आकार। जो घड़या सो भन्नया, थिर रहे ना विच संसार। कलिजुग जीव अन्तिम जाणा

१३२८
०६

डन्नया, जिस भुल्लया हरि करतर। धृग जन्म जन्म माँ जिस हरिभगत मात ना जणया, माणस जन्म होया ख्वार। बांझ रहिन्दी मात कन्या, सेज आए ना कन्त भतार। माणस मनुख जो वेले अन्तिम जाए डन्नया, लक्ख चुरासी होए खुवार। बिन गुरसिख हरि का राग ना सुणे कोई कन्नया, सतिगुर पूरा आप सुणाए सच्ची गुफ़तार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिखां पैज रिहा संवार। गुरसिखां पैज संवारदा, कर किरपा गुण निधान। पूर्ब पूर्ब जन्म विचारदा, लेखा लिखणहार भगवान। कलिजुग कन्ढा आया पार दा, नाता तुटा जीव जहान। कलिजुग आपणा खेल खिलारदा, सार पाशा दीन ईमान। वरनी वरन वरन वखाण दा, भरमी भरम भरम शैतान। बिन गुरमुख इक्क सरन ना कोई जाणदा, दीन मज़्ब होए हैरान। आत्म अन्तर कोई नाम ना जाणे ब्रह्म ज्ञान दा, जगत विद्या करन वखान। साचा घर ना कोई पछाणदा, झूठे धन जगत मकान। किसे फ़िकर नहीं पीण खाण दा, जगत माया होए ग़लतान। किसे भय नहीं शाह सुल्तान दा, झूठी रइयत होई हुक्मरान। कलिजुग वेला अन्तिम श्री भगवान दा, प्रगट होए वाली दो जहान। कलिजुग नाता तुटे झूठे निशान दा, सच निशान होए प्रधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे एका माण। गुरमुख माण निमाणयां, देवे देवणहार। रातीं सुत्तयां खड़ा रहे सरहाणया, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। घर घर सुणाए गाणया, आप आपणे कर परवान। बेड़ा चलाए बिन वंझ मुहाणया, सतिगुर पूरा होया मेहरवान। कोई रहिणे नहीं तहिसील ठाणया, ना कोई किसे फड़े आण। एका वरते हुक्म भगवानया, धुर दी बाणी मारे बाण। कलिजुग झूठा ना दिसे जहानया, अन्तिम करे वैरान। पहली चेत्र इक्क समझानया, नौं खण्ड पृथमी एका प्रगट होए हुक्मरान। पंच मुख सीस ताज टिकानया, शब्द खण्डा तेज़ कृपान। वाली हिन्द करना चरन ध्यानया, सृष्ट सबाई देणा फेर ज्ञान। पंडत नैहरु बहत्तर देश लिखणा लिख लिख भेजणा इक्क परवानया, पुरख अबिनाशी आया विच जहान। जिस टुटया जगत निशानया, लक्ख चुरासी करनी वैरान। इक्क झुलाउणा सत्त रंग निशानयां, ज़िमी अस्मान करन सलाम। सूरज चन्न सीस झुकानया, ब्रह्मा विष्न शिव करे प्रनाम। लोक परलोक राह तकानया, गण गंधर्ब गायण गाण। गुर पीर वेख वखानया, साध सन्त भगत भगवन्त गुण निधान। सभ दा दाता इक्क श्री भगवानया, कलिजुग खेल करे महान। झूठा नाता तोड़े जीव जहानया, सतिजुग साचा करे प्रधान। दिल्ली दुआरे चरन टिकानया, साचे तख्त बहे राज राजान। नौं खण्ड पृथमी सुणाए इक्क फ़रमानया, सत्तां दीपां पाए आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आपे वरते आण। आपणा हुक्म आप वरतावणा, लोकमात हो उज्यार। चार वरनां एका गावणा, इक्क इकल्ला एकँकार। गुरदुआर

मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआला एका रंग रंगावणा, एका इष्ट सच्ची सरकार। दृष्ट सृष्ट आप खुल्लावणा, मेल मिलावा जिउँ वशिष्ट राम अवतार। एका ज्ञान ज्ञान दृढ़ावणा, जिउँ गीता अर्जन करे प्यार। एका कलमा आप पढ़ावणा, ऐनलहक बोल जैकार। एका मन्त्र नाम दृढ़ावणा, सति नाम करे प्यार। एका वाहिगुरू फ़तह गजावणा, फ़तेह डंका विच वज्जे संसार। निहकलंक नौं खण्ड पृथ्मी घर घर आपणा दीप जगावणा, कलिजुग मिटे रैण अँध्यार। आत्म परमात्म एका रंग रंगावणा, ईश जीव दए आधार। सो पुरख निरँजण वक्त सुहावणा, हरि पुरख निरँजण करे विचार। एकँकारा गीत गावणा, आदि निरँजण जाए बलिहार। श्री भगवान सुहाग हंढावणा, अबिनाशी करता कन्त भतार। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलावणा, मेल मिलाए एका वार। सचखण्ड दुआर लोकमात सुहावणा, सतिजुग साची चले धार। हँ ब्रह्म वेख वखावणा, सोइम रूप आप निरँकार। सोहँ अक्खर जाप जपावणा, ब्रह्म पारब्रह्म दए आधार। वरन गोत ना कोए वखावणा, अठारां बरन ना कोए सहार। चार वरन पन्ध मुकावणा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्डण वण्ड वण्डे ना कोए संसार। मन्नू सिमरती पन्ध चुकावणा, आपणा लेखा जाणे आप गिरधार। सृष्ट सबाई साचा भूप इक्क अख्वावणा, घर घर बणे ना कोए सिक्दार । वीह सौ वीह बिक्रमी पंदरां कतक जगत विधान आप बणावणा, लेखा लिख आप निरँकार। ताज़ीरात हिन्द तेरा पन्ध मुकावणा, गोबिन्द बिन्द शाही

१३३० बणे विच संसार। सागर सिन्ध मुख शर्मावणा, अठारां भार बनास्पत लिखे ना लिखणहार। सत्त समुंदर मस्स कुरलावणा, अन्त १३३०

०९ पाए ना पारावार। पुरख अबिनाशी आपणी रती रत कढावणा, सवा रत्ती करे पंज प्यार। पंजां हथ्थ डोर फड़ावणा, सृष्ट ०९

सबाई करे प्यार। जूठ झूठ सतिजुग विच रहिण ना पावणा, ना कोई वेखे दूजी नार। नारी एका कन्त हंढावणा, मातलोक रहे ना कोए विभचार। बिन पुत्तर ख़ाली ना कोए जावणा, वेले अन्त ना रोवे धाहीं मार। बिन सतिगुर दरस देह ना किसे तजावणा, जिस मिल्या गुर करतार। एका अक्खर आप समझावणा, वाली हिन्द करना ख़बरदार । आपणा पर्दा उप्परों लाहवणा, प्रगट हो विच संसार। साकी बण साचा जाम प्यावणा, जो आए चल दरबार। फड़ बाहों तख्त बहावणा, सचखण्ड दुआरे हरि निरँकार। राह विच ना किसे अटकावणा, थिर घर वसाए धाम न्यार। लाड़ी मौत मुख शर्मावणा, मुख घूँगट पा रोवे ज़ारो ज़ार। ब्रह्मे विष्न शिव तेरा राह तकावणा, चारे कूटां रहे विचार। धरत धवल तेरे चरन चुम्म चुम्म ख़ुशी मनावणा, जिस चरनां आया चल दरबार। तेरे चरनां धूढ़ तिन्नां लोकां पार करावणा, आप रमाई हरि करतार। विष्नूं जटा जूट आए आपणा सीस खुल्लावणा, गुरसिख तेरी ख़ाक लाए तन छार। जगत जगदीसा बह बह उच्ची गावणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान प्रगट होया विच संसार। राग छतीसा रहिण ना पावणा, गुर नानक बणया इक्क लिखार। हरि का रूप प्रगट

नज़री आवणा, सतिगुर पूरा किरपा करे आप निरँकार। तीर्थ तट ना किसे नहावणा, अठसठ करे आप ख्वार। गुरसिख तेरे चरन चुम्मे आण। मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआले सीस ना किसे झुकावणा, काया मन्दिर अंदर आपणे सच्चा गुरूदुआर। घर राम रामा सीता सुरती आप प्रनावणा, साचा चिल्ला खिच्चे धनुष बाण। कान्हा कृष्ना बंसरी इक्क वजावणा, राधा सुरती करे ध्यान। साचा स्वामी संग निभावणा, मेल मिलाए श्री भगवान। नाम सति सति नाम साचे घर बहावणा, नानक निरगुण मेला दो जहान। गुर गोबिन्द दरस गुरमुख विरले पावणा, कलिजुग जीव ना सके कोए पछाण। हउमे हंगता दुःख सर्ब कुरलावणा, उज्जल मुख ना कोए जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे आप तरावणा। गुरमुख तेरा पार किनारा, तेरी तरनी तरन कोए ना जाणया। तेरा मेल इक्क निरँकारा, किसे हथ्थ ना आए राजे राणया। तेरा खुल्हिआ सचखण्ड दुआरा, मिल्या हरि पूरन भगवानया। लोकमात करे प्यारा, देवे दान साचा दानीआ। चरन कँवल इक्क सहारा, शब्द जणाए अकथना अकथ धुर दरगाही धुर दी बाणीआ। पारब्रह्म एका पुरख समरथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेले चतर सुजानया। गुरमुख मेला साचे घर, घर सुहञ्जणा आप सुहांयदा। जगत वखाए नौं दुआर, गुरमुखां नौं दुआरे पन्ध मुकांयदा। सत्त रंग निशाना रिहा चढ़, सति सतिवादी आप चढ़ांयदा। निरगुण अंदर सरगुण वड़, सरगुण अंदर निरगुण वड़, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। जगत हकूमत ना कोई सके फड़, हथ्थ किसे ना आंयदा। सिँघ पूरन बद्धा आपणे लड़, काया तत्त हंढांयदा। झूठयां नाल जूठ रिहा कर, सच ना किसे वखांयदा। राष्ट्रपती भवन जाए वड़, महाराज शेर सिँघ दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अछल अछेदा भेव अभेदा आपणा भेव आपणे विच रखांयदा। आपणा भेव आपणे विच टिकाया, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। बिन गुरमुख पूरे पूरन बूझ ना किसे बुझाया, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जिस नूं कहे गोबिन्द आया, अगों करदे जगत लड़ाईआ। सृष्ट सबाई रिहा समझाया, भरम भुलेखा रहे ना राईआ। जिस आपणे सीस ताज टिकाया, करके जाए सच्ची शहनशाहीआ। आपणे हथ्थ बन्द रखाया, कोई पकड़े सच्चा माहीआ। गुरसिखां दा डर आपे लाहया, तीर तलवार ना हथ्थ फड़ाईआ। वालों निक्की खंडिउँ तिक्खी फड़ के आया, लोहार तरखाण ना किसे घड़ाईआ। गोबिन्द कीता कौल भुल्ल ना जाया, अभुल्ल दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणी रचना वेख वखाईआ। गुरसिखां हौला भार करांयदा, सिर आपणे चुक्कया भार। आपणी ख़ाक ख़ाक विच रलांयदा, जोती जोत करे उज्यार। शेर सिँघ दिस किसे ना आंयदा, उच्ची कूक ना सके कोई

१३३१ ०६

१३३२ पुकार। गोबिन्द बाज ना हथ्थ कोई टिकांयदा, नीला घोड़ा ना कोई अस्वार। शब्द आपणा नाउँ वखांयदा, ना जन्मे ना मरे विच संसार। साचा भाणा आपणयां आप जणांयदा, कलिजुग तेरी अन्तर धार। रैण अन्धेरी आप मिटांयदा, साचा सुत करे उज्यार। कूड़ कुड़यारा कूड़े धन्दे पांयदा, कूड़ी रइयत कूड़ी शख़सयत कूड़ा मेटे सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुखां करे सच प्यार। गुरमुख तेरा मूल चुकाउणा, करता कीमत आपे पाईआ। रसना जिह्वा एका गाउणा, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। दूसर ओट ना कोए रखाउणा, पुरख अकाल सच्ची सरनाईआ। पंज तत्त ना गुर कोई बणाउणा, गुर गुर पंज तत्त करे कुड़माईआ। जिस दुआरे शब्द वजाउणा, तिस दुआरे सुर ताल रखाईआ। सो पुरख निरँजण क्यों मनों भुलाउणा, जिस भुलिआं मिले ना कोए थाईंआ। भगती मार्ग कलिजुग अन्तिम औखा कोए किसे ना पूर कराउणा, साची घाटी ना कोए चढ़ाईआ। कबीर रविदास सभ ने गाउणा, कबीर रविदास रूप ना कोए वटाईआ। जोग अभ्यास तप हठ डूँग्घी भँवर ना कोए पार लँघाउणा, सृष्ट सबाई रही रुढ़ाईआ। नेत्र मूंद ना किसे मिलाउणा, कँवल नैण ना कोए सरनाईआ। अठसठ तीर्थ नहा नहा दुरमति मैल ना किसे गवाउणा, काग हँस ना रूप वटाईआ। दीपक दीवाली जोत जगत जगाउणा, आत्म जोती जोत ना करे कोए रुशनाईआ। जिस जन सतिगुर पूरे दरसन पाउणा, आसा तृष्ना रहे ना राईआ। वेला अन्त कन्त भगवन्त मनाउणा, साचे सन्त खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सतरां इक्क सत्त धार, करे खेल अपर अपार, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। गरमुख साचा पेख्या, कर किरपा हरि मेहरवान। पिछला कर्म चुक्या लेखया, अगला लेखा करे परवान। जो जन रहे भरम भुलेखया, चारों कुंट किसे हथ्थ ना आए सच्ची दुकान। हरि का रूप मुछ दाढ़ी ना दिसे केसया, मूंड मुंडाए ना विच जहान। सतिगुर पूरा दस दस्मेशया, दहि दिशां होए प्रधान। सतिजुग बणे इक्क नरेसया, निरवैर होए निगहबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। १३३२

०६ ०६

❋ १६ कतक २०१७ बिक्रमी अजीत सिँघ दे घर बटाले ❋

हरि सुल्तान श्री भगवन्त, आदि जुगादि समांयदा। एकँकारा महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोई जणांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग करता वेस वटांयदा। आप बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नणहार पुरख समरथ आपणा नाउँ धरांयदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, निरगुण निरवैर आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा

साचे घर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, पुरख अबिनाशा आप करांयदा। सच सुल्तान शाह पातशाह, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। इक्क इकल्ला सच मलाह, निरगुण बेड़ा बन्न्ह आप चलाईआ। दो जहानां मार्ग एका ला, पुरख अकाल वेख वखाईआ। सचखण्ड निवासी धुर दरबारे करे सच सलाह, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। आपणी पकड़े आपे बांह, आपे वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकार, करे खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर बेपरवाहीआ। सच सुल्तान आदि निरँजण, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। थिर घर वासी दर्द दुःख भय भंजन, निर्भय आपणा नाउँ धराईआ। निर्भय बणे साचा सज्जण, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। इक्क दुआरा एका मजन, एका घर आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, आपणी कल आप वरताईआ। सच सुल्तान अकल कल धार, अजूनी रहित नाउँ धरांयदा। जोती जोत जोत उज्यार, नूर नुराना डगमगांयदा। सचखण्ड सुहाए बंक अपार, चार दिवार ना कोई जणांयदा। तख्त निवासी साचा शाहकार, शहनशाह आपणा नाउँ धरांयदा। ना कोई दीसे चोबदार, सीस जगदीस ना कोई झुकांयदा। इक्क इकल्ला खेल अपार, अबिनाशी करता आप करांयदा। सच

१३३३ महल्ले सोभावन्त , आप सुहाए सच्चा दरबारा आप खिलांयदा। आपे रईयत बण सच्ची सरकार, आसण सिँघासण आप १३३३

सुहांयदा। आपे हुक्मी हुक्म वरते वरतार, हुक्म हाकम आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

०६ सचखण्ड दुआरा एका खोल्ह, आपणा अक्खर आपे बोल, निष्अक्खर वेख वखांयदा। सच सुल्तान गहर गम्भीरा, भेव अभेद ०६

ना कोई पांयदा। आदि जुगादी शाह हकीरा, निरगुण निर्धन आपणा खेल खिलांयदा। आपे होए पीरन पीरा, शाह पातशाह आपणा नाउँ धरांयदा। आपे बणे दर हकीरा, आपे आपणी अलक्ख जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला सच महल्ला, थिर दरबारा आप सुहांयदा। सच सुल्तान पारब्रह्म, एका रंग समाया। ना मरे ना पाए जम्म, निरगण नूर डगमगांयदा। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, खेवट खेटा आप मिलाया। आपे जननी आपे जन, जन जणेंदी आपे माया। आपे राग धुन आपे सुणनेहारा रिहा सुण, तार सितार ना कोई हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचा आप सुहाया। सच सुल्तान दर सुहांयदा, सचखण्ड दुआरा इक्क बणा। सो पुरख निरँजण आसण लांयदा, निरगुण रूप अगम्म अपार। हरि पुरख निरँजण वेस वटांयदा, रूप रेख वसया बाहर। एकँकारा आपणी धार बंधांयदा, धरनी धरत धवल ना कोई उज्यार। अबिनाशी करता सोभा पांयदा, इक्क इकल्ला निरगुण निराकार। श्री भगवान आपणी रचना आप रचांयदा, आपे होए घड़न भन्नणहार। पारब्रह्म ब्रह्म आपणा नाउँ धरांयदा, आपणी

इच्छया आपणी भिच्छया आपे भरे भण्डार। एका रूप अनूप आप प्रगटांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। सच सुल्तान दीन दयाला, दीनां नाथ वड्डी वड्याईआ। करे खेल पुरख अकाला, अकल कलधारी भेव ना राईआ। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाला, दिस किसे ना आईआ। चले चलाए अवल्लड़ी चाला, मार्ग पन्थ आपणा वेख वखाईआ। आदि जुगादी दीन दयाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सच सुल्तान हरि हरि मीता, एका एकंकारया। आदि जुगादी ठांडा सीता, जुगा जुगन्तर खेल अपारया। निरगुण रहे इक्क अतीता, त्रैगुण बन्धन कोई ना पा रिहा। आपणा नाम निधान आपे पीता, अमृत आपे रस बणा रिहा। आपे हस्त आपे कीटा, आपणी खेल आप खला रिहा। आपे जाणे आपणा भाणा मीठा, सद भाणे विच समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचे घर, थिर घर साचा आप सुहा रिहा। सिँघासण थिर घर सुहांयदा, घर घर विच कर त्यार। सच आसण सोभा पांयदा, सति पुरख निरँजण अगम्म अपार। सो पुरख निरँजण रूप प्रगटांयदा, हरि पुरख निरँजण दए अधार। एकँकारा कल धरांयदा, आदि निरँजण हो उज्यार। अबिनाशी करता वेख वखांयदा, श्री भगवान पावे सार। पारब्रह्म हरि आपणी अलक्ख जगांयदा, अलक्ख अलक्खना परवरदिगार। थिर
१३३४ घर साचा इक्क सुहांयदा, लेखा जाणे अंदर बाहर। सचखण्ड दुआरा एका रंग रंगांयदा, रंग रंगीला मीत मुरार। जोती १३३४
०६ जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, दर ठांडा इक्क दरबार। हरि सुल्ताना ठांडा दरबारा, तख्त ०६
निवासी तख्त सुहांयदा। साचा मन्दिर कर उज्यारा, दीपक जोती जोत जगांयदा। आदि आदि वेखणहारा, अनुभव आपणा प्रकाश आप धरांयदा। रवि ससि ना कोई सितारा, मंडल मंडप ना कोई सुहांयदा। शब्द नाद ना कोई धुन्कारा, ताल तलवाड़ा ना कोई वजांयदा। इक्क इकल्ला खेल अपारा, निरगुण आपणा आप करांयदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त निवासी आपणी कल आप वरतांयदा। पंचम मुख सीस दस्तारा, एकँकारा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा पड़दा आपे लांहयदा। हरि जू खेल अगम्म अपारा, आपणा भेव आप खुलाईआ। सो पुरख निरँजण हो उज्यारा, नूर नराना डगमगाईआ। सचखण्ड वसाए इक्क दरबारा, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। रूप अनूप सच्ची सरकारा, बेऐब परवरदिगार आपणा नाउँ रखाईआ। जल्वा जलाल हो उज्यारा, नूर ज़हूर इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, घर मन्दिर वड वड्याईआ। घर मन्दिर हरि वड्यांअदा, इक्क इकल्ला एकँकार। सुते प्रकाश आप करांयदा, अनुभव खेल करे अपार। सति सतिवादी साची धार चलांयदा, चलावणहार

इक्क करतार। कागद कलम ना लेख लखांयदा, ना कोई लेखा लिखणहार। आपणी बणत आप बणांयदा, सो पुरख निरँजण हो त्यार। नारी कन्त आपणा रूप प्रगटांयदा, आपे पीआ प्रीतम बणे सच भतार। निरगुण आपे साची सेज हंढांयदा, निरगुण मेला ठांडे दरबार। साचा पलँघ आप सुहांयदा, पावा चूल ना दिसे कोई घाड़न घड़े ना कोए तरखाण। शब्द अगम्मी डेरा लांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचा आप उपांयदा। दर घर साचा हरि उपांयदा, सचखण्ड दुआरा खोल्ह। पुरख अबिनाशी आसण लांयदा, निरगुण निरगुण अंदर जाए मौल। कँवल नाभ ना कोए बणांयदा, ना कोए अमृत भरया कौल। जोती जोत जोत जगांयदा, नाद अनादि नाद बोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे अंदर आपे वड़, आपे वेख वखांयदा। आपे नारी कन्त भतारा, हरि साचा खेल खिलांयदा। आपे निरगुण निरगुण करे प्यारा, निरवैर साची सेज हंढांयदा। आपे गाए आपणा मंगलचारा, गीत गोबिन्द आप अल्हांयदा। आपे अंदर आपे बाहरा, गुप्त ज़ाहरा आपे खेल खिलांयदा। आप सुहाए सच दुआरा, सचखण्ड दुआरा सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नारी कन्त एका बंक वड्यांअदा। बंक वडियाई देवणहार, दर दरवाज़ा आप सुहांयदा। निरगुण जणे सुत दुलार, निरगुण पिता पूत वेस वटांयदा। निरगुण माता इक्क आधार, निरगुण दाई दाया नाउँ

१३३५ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा बंस आप उपजांयदा। सच १३३५

०६ सुल्ताना हरि निरँकारा, एका रंग समाया। आप आपणा कर पसारा, आपे वेख वखाया। आपे जननी जणे सुत दुलारा, ०६

शब्दी नाउँ धराया। आपे जोद्धा सूरबीर बली बलकारा, बल आपणा आप वखाया। आपे शाह भूप बण सिक्दारा, साचे तख्त सोभा पाया। आपे हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर संदेशा आप अल्हाया। आपे शब्द सुत करया ख़बरदारा, आलस निन्दरा ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका आपणा भेव जणाया। हरि पुरख निरँजण भेव जणांयदा, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार। सो पुरख निरँजण हुक्म सुणांयदा, साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार। एकँकारा वेख वखांयदा, वेखणहार आप करतार। आदि निरँजण डगमगांयदा, नूर नुराना हो उज्यार। श्री भगवान सीस झुकांयदा, अबिनाशी करता फ़रमाबरदार। पारब्रह्म अग्गे आपणी झोली डांहयदा, भरनहार आप हरि भण्डार। देवणहार आप अख्वांयदा, आदि जुगादी साची कार। शब्द दुलारा इक्क उठांयदा, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। आपणा बंस आप उपजांयदा, मात पित बण दुलार। आपणी गोद आप सुहांयदा, आपे वेखे वेखणहार। किला कोट ना कोए बणांयदा, दाई दाया एकँकार। कागद कलम ना लेख लिखांयदा, घाड़न घड़े ना कोए सुन्यार। साचे मन्दिर सोभा पांयदा, सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़।

इक्क इकल्ला डेरा लांयदा, मरे ना जम्मे परवरदिगार। बेअन्त बेअन्त बेअन्त आप अख्वांयदा, आपणे अंदर आपणी पाए आपे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू आपणा खेल खिलांयदा। हरि जू खेल खिलाया, आदि पुरख वड वड्याईआ। आपणा हुक्म आप सुणाया, हुक्मी हुक्म इक्क इलाहीआ। शब्द दुलारा आप उठाया, आपणा बल आप धराईआ। एका बंक आप सुहाया, बंक दुआरी सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वड दाता वर दाता दानी भुल्ल ना जाईआ। वर देवणहार दातार, दाता दानी आप अख्वांयदा। आपणी वस्त आप विचार, आपे झोली पांयदा। आपे वेखे वेखणहार, निरगुण दिस किसे ना आंयदा। आपणे मन्दिर आपणा आपा कर त्यार, आपणा घाड़न आप घड़ांयदा। आपे बणया मीत मुरार, आपे सथ्थर यार विछांयदा। आपे पुरख पुरखोतम हो त्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे शब्द आप सुणांयदा। शब्द जणाए हरि निरँकारा, एका राग अलाया। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यारा, तेरी सेवा सति दृढ़ाया। निरगुण वेस निराकारा, निरवैर खेल खलाया। आपणी बन्ने आपे धारा, धार धार विच टिकाया। जोती जोत जोत उज्यारा, नूरो

१३३६ नूर नूर समाया। शब्द नाद नाद धुन्कारा, नादी नाद नाद वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका १३३६

०६ देवे साचा वर, शब्द शब्दी आप उठाया। शब्द दुलारा उठया, किरपा करी आप भगवान। पुरख अबिनाशी एका तुठया, ०६

देवणहारा साचा दान। आपणे अंदर बह बह आपे लुकया, आपे होए हरि प्रधान। आपे उच्ची कूक कूक बुक्कया, आपे वसया सच मकान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर फ़रमाण। शब्द सुणया धुर फ़रमाणा, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। तूं शाह पातशाह साचा राणा, हउँ सेवक सेव कमांयदा। निरगुण तेरा रूप निरगुण पहरया मैं तेरा बाणा, दिस किसे ना आंयदा। निरगुण पीणा निरगुण खाणा, आसा तृष्ना ना कोए जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचा शब्द आप उपांयदा। शब्द सुणाए हरि निरँकार, दोए जोड़ करे निमस्कारया। तेरा हुक्म सच्ची सरकार, वरते वरतावे सच दरबारया। करे सेवा शब्द दुलार, पूत सपूता सीस झुका रिहा। एका मंग मंगे एका वार, भुल्ल ना जाए अगम्म अपारया। विष्नूं उपजे तेरी धार, विश्व तेरा रूप दरसा रिहा। तेरा रूप अपर अपार, सति सरूप इक्क समा रिहा। चारे कूट होए उज्यार, दहि दिशां वण्ड वण्डा रिहा। तेरा प्यार मेरी धार, अमृत नाउँ रखा रिहा। अमृत रक्खे तेरे किवाड़, तेरी खेल खिला रिहा। तेरे अंदरों आए बाहर, निरगुण सरगुण रूप प्रगटा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सुत दुलारा सीस झुका रिहा। शब्द दुलारा सीस झुकांयदा,

कर किरपा श्री भगवान। विष्न विश्व रूप वेख वखांयदा, आत्म अन्तर एका अमृत पीण खाण। अमृत अमर अमर करांयदा, करे खेल गुण निधान। निरगुण अंदर निरगुण बीज बिजांयदा, कँवल कँवला होए प्रधान। नाभी कँवल आप सुहांयदा, लेखा लिखे ना कोए जहान। पत फुल पंखड़ीआं आप खिलांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। एका फुल कँवला धार, कँवल कँवल मुख सलाहीआ। तेरा रूप अगम्म अपार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। विष्नूं अंदर विश्व बाहर, ब्रह्म रूप अनूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वास्तक तेरी वड वड्याईआ। वास्तक रूप अकल कल धार, ब्रह्म आपणा वेस वटाया। विष्न तेरा इक्क प्यार, भुल्ल कदे ना जाया। दोहां विचोला शब्द दुलार, शब्द शब्दी गंढु पुवाया। करे खेल साचे दरबार, दर दरवेश ना कोए बहाया। नर नरेश सच्ची सरकार, सीस ताज इक्क टिकाया। आदि जुगादि रहे हमेश मरे ना जम्मे एकँकार, जन्म मरन विच कदे ना आया। आपणी करे आपे कार, करता पुरख आपणी खेल खिलाया। जूनी रहित सांझा यार, तत्व तत्त ना कोए बणाया। वसणहारा धूंआँधार, सुन्न अगम्म डेरा लाया। रक्त बूंद ना कोए प्यार, जोड़ी जोड़ ना कोए वखाया। आपणी इच्छया कर करतार, शंकर आपणा रूप धराया। एका गुण देवे देवणहार, रूप अनूप दए दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द विचोला विच धर, आपणा खेल करे बेपरवाहया। करे खेल करनेहारा, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यारा, त्रै त्रै मेला सहिज सुभाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दी धार इक्क वखाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, एका रंग रिहा समाईआ। साख्यात सज्जण मीत प्रगट होए अगम्म अपारा, निरभउ निर्भय निरवैर आपणी कल धराईआ। विष्न करे निउँ निउँ निमस्कारा, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। ब्रह्मा बणे दर भिखारा, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। शंकर नेत्र नीर वहाए ज़ारो ज़ारा, भोला भाउ इक्क वखाईआ। तिन्नां विचोला शब्द दुलारा, दर घर साचे मेला ल्ए मिलाईआ। मंगे मंग बण भिखारा, आपणी अलक्ख अलक्ख निरँजण अग्गे आप जगाईआ। एका भरना सच भण्डारा, तोट रहे ना राईआ। तेरा बंस सरबंस बणाया अपर अपारा, त्रै त्रै मेला एका थाईंआ। त्रैगुण अतीत तेरा नाउँ निराकारा, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। तेरा वसदा रहे दुआरा, उजड़ कदे ना जाईआ। तूं शाह पातशाह सुल्तान, तेरे दर तेरे घर चरन कँवल सच्ची निमस्कारा, निउँ निउँ जगदीस सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव निउँ निउँ बैठे सीस झुकाईआ। पारब्रह्म सर्ब गुणवन्ता, आपणा खेल आप खलांयदा। पूरन जोत श्री भगवन्ता, परम पुरख आपणा नाउँ धरांयदा। आपणी खेल करे बेअन्ता, भेव कोए

ना पांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी बणाई बणता, आपणा अंग सूरा सरबंग आप कटांयदा। आपणी चोली आपे रंगदा, रंग मजीठी इक्क चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। विष्न सुणना कर ध्यान, हरि साचा सच दृढ़ांयदा। ब्रह्मा देवे इक्क ज्ञान, पारब्रह्म आपणी विद्या आप पढ़ांयदा। शंकर बख्शे इक्क ज्ञान, लिव अन्तर इक्क समझांयदा। बण विचोला श्री भगवान, आपणा बन्धन आपे पांयदा। लेखा जाणे दो जहान, दो जहानां खेल खिलांयदा। शब्दी शब्द बण बलवान, बल आपणा आप वखांयदा। तख्त निवासी राज राजान, शाह सुल्तान डेरा लांयदा। एका हुक्म धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी आप सुणांयदा। भुल्ल ना जाए गुण निधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आपे कर, आपे वेख वखांयदा। विष्न तेरा सच विहारा, सति पुरख निरँजण आप जणांयदा। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म पसारा, पारब्रह्म प्रभ सेव लगांयदा। शंकर तेरा खेल न्यारा, संसा सर्ब चुकांयदा। शब्दी शब्द रंग रवे आप निरँकारा, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका हुक्म सुणांयदा। एका हुक्म हरि जणांयदा, पारब्रह्म बेपरवाह। विष्न तेरी सेव लगांयदा, सच भण्डार हथ्थ फड़ा। ब्रह्मा तेरा नाउँ धरांयदा, पारब्रह्म आपणी अंस उपजा। शंकर तेरा खेल खिलांयदा, आप आपणा भेव चुका। आपणी रचना आप रचांयदा, आपे बण सच मलाह। आपे घर घर रिज़क पुचांयदा, आपे लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ा। आपे त्रैगुण रूप प्रगटांयदा, रजो तमो सतो वेख वखा। आपे आपणा भेव जणांयदा, पंज तत्त एका रंग रंगा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणी धार वखांयदा, आप आपणे विच्चों लए प्रगटा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आपणी इच्छया आपे पूर करांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव वर घर पाया, प्रभ पूरन बूझ बुझाईआ। भण्डारी संसारी खेल रचाया, लाए दीबाण इक्क लगाईआ। एका हुक्म आप सुणाया, हुक्मी हुक्म आप फिराईआ। आपणा ताणा आप तणाया, त्रैगुण एका तन्द बंधाईआ। पंचम नाता जोड़ जुड़ाया, पंचम वेखे थाउँ थाँईआ। कादर आपणा खेल खिलाया, कुदरत आपणी रचन रचाईआ। आपणा नूर नूर प्रगटाया, रवि ससि करे रुशनाईआ। मंडल मंडप आप सुहाया, आपे धरत धवल जल बिम्ब लए टिकाईआ। आपणा राग आप सुणाया, चारे मुख करे पढ़ाईआ। चारे वेदां आपे गाया, एका बूझ बुझाईआ। चारे बाणी आप सुणाया, परा पसन्ती मद्धम बैखरी एका दए समझाईआ। चारे खाणी आपणे रंग रंगाया, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज सति सति दए वड्याईआ। आपणा बन्धन आपे पाया, जुग चौकड़ी खेल खलाईआ। आपे वण्डण रिहा वण्डाया, आपणा हिस्सा आप रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणी झोली पाया, गेड़ा गेड़ आप भुवाईआ। शब्द दुलारा सुत इक्क

१३३८ ०६

१३३८
०६

समझाया, पुरख अबिनाशी हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे सच्चा शहनशाहीआ। शब्द दुलारा बोलया, कर किरपा गुण निधान। एका तोल साचा तोलया, तोलणहारा दो जहान। आदि जुगादि कदे ना डोलया, डुलावणहार ज़िमी अस्मान। साची वस्त रक्ख कोलया, एका नाम देवें दान। घट घट अंदर आपे मौलया, आत्म ब्रह्म कर पछाण। आपे भरया अमृत कौलया, आपे अन्तर होए प्रधान। आप सुणाए साचा ढोलया, अनहद शब्द गाए गान। आपे वसे पर्दे ओहलया, करे खेल पंज तत्त काया जगत मकान। आपे चारों कुंट पाए रौलया, आपे लेखा जाणे पंज शैतान। आप भार उठाए धरत धौलया, आपे गाए आपणा गाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सो वेला कवण वक्त ब्रह्मा विष्न शिव लेखा मुक्के आण। साचा वेला हरि समझाउणा, हरि शब्द करे अरजोईआ। कवण वेला वक्त सुहाउणा, निरगुण निरगुण ल्ए मिलाईआ। कवण जुग भाग लगाउणा, लोकमात वज्जे वधाईआ। कवण कुक्ख आप सुहाउणा, कवण मात मिले वड्याईआ। कवण सुख ब्रह्मे विष्न शिव उपजाउणा, जगत नाता तोड़ तुड़ाईआ। कवण रूप मुख वखाउणा, अनुभव प्रकाश कराईआ। कवण गोदी चुक्क आपणे धाम बहाउणा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा तेरे विच जाए समाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क समझांयदा, शब्दी शब्द ज्ञान। ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लांयदा, त्रै त्रै कर प्रधान। इक्क इकेला वेख वखांयदा, वेखणहारा शाह सुल्तान। नौं सौ चुरानवे जुग गेड़ा इक्क बणांयदा, जुग चौकड़ी मिटे निशान। लोकमात लक्ख चुरासी खेल खिलांयदा, पंज तत्त कर प्रधान। आपणा नाम आप प्रगटांयदा, सच संदेशा देवे गुण निधान। माणस मानुख आप वड्यांअदा, आप आपणी करे पछाण। नाद धुन इक्क सुणांयदा, शब्द अगम्मी हरि फ़रमाण। लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा, साचे सन्त करे प्रधान। भगत आपणी भगती लांयदा, एका देवे ब्रह्म ज्ञान। साची शक्ती विच रखांयदा, आदि शक्ति बख्शे माण। गुर पीर अवतार आपणी जोत जगांयदा, लोकमात वेस करे आप मेहरवान। अन्तिम चौकड़ी रंग रंगांयदा, नौं नौं चार चुक्के काण। सत्त सत्त आपणा रंग रंगांयदा, सति सतिवादी हो मेहरवान। सति पुरख निरँजण शाह पातशाह आपणी कल धरांयदा, रूप अनूप चारे कूट इक्क निशान। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा, कलिजुग अन्तिम वेखे आण। चारे वेदां फोल फुलांयदा, लेखा जाणे अठारां पुराण। शास्त्र सिमरत आप पढ़ांयदा, आपे देवे गीता ज्ञान। अञ्जील कुरानां आप सुणांयदा, तीस बतीसा हो प्रधान। खाणी बाणी आप उपांयदा, पुरख अबिनाशी वड मेहरवान। नित नवित आपणा रूप प्रगटांयदा, जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल। कलिजुग अन्तिम खेल खिलांयदा, ख़ालक ख़लक वेखे आण। जुग चौथे भार उठांयदा, नौं नौं चार करे

पछाण। गुरमुख साचे मेल मिलांयदा, मेलणहार श्री भगवान। पूर्ब लहिणा झोली पांयदा, वेखणहारा चौदां लोक दुकान। चौदां तबकां डेरा ढांयदा, शब्द अगम्मी मारे बाण। शब्द सुत इक्क समझांयदा, पारब्रह्म गुण निधान। विष्न ब्रह्मा शिव मेल मिलांयदा, त्रैगुण पैंडा मुक्के आण। जो घड़या सो भन्न वखांयदा, थिर रहे ना कोए निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तिन्नां देवे एका माण। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, हरि साचा सच जणांयदा। ब्रह्मा हरि आपणे पाउणा, लेखा होर ना कोए वखांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाउणा, जगत विछोड़ा पन्ध मुकांयदा। शंकर संसा दूर कराउणा, साख्यात आपणी गोद सुहांयदा। आपणे पेटे आपे पाउणा, पवण पाणी सेव ना कोए कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द देवे वर, एका सिख्या आप पढ़ांयदा। साची सिख्या हरि समझाए, साख्यात रूप प्रगटाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाए, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। निरगुण निरवैर जोती जोत डगमगाए, अन्ध अँध्यार रहिण ना पाईआ। शब्द सोटी हथ्थ उठाए, साचा खण्डा नाम चमकाईआ। उच्ची चोटी डेरा लाए, सच सिँघासण सोभा पाईआ। कोटन कोटि हथ्थ ना आए, लभ्भ लभ्भ थक्की सर्ब लोकाईआ। वासना खोटी दए मिटाए, आपणी दृष्टी सृष्ट सबाई एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द देवे साचा वर, वाह वा वज्जदी रहे वधाईआ।
१३४० वाहवा चौथा जुग आउणा, नौं सौ चुरानवें चौकड़ी पन्ध मुकांयदा। बावन रूप ना किसे वटाउणा, सीता राम ना कोए प्रनांयदा। १३४०
०६ रावण गढ़ ना कोए तुड़ाउणा, चिल्ला धनुष ना कोए चढ़ांयदा। सखीआं मंगल कोए ना गाउणा, साची रास ना कोए रचांयदा। ०६
रथ रथवाही कोए दिस ना आउणा, गीता ज्ञान ना कोए दृढ़ांयदा। पंज तत्त ना कोए रखाउणा, पंचम मेल ना कोए मिलांयदा। काला सूसा ना तन छुहाउणा, ईसा मूसा ना मेल मिलांयदा। कलमा अमाम ना कोए पढ़ाउणा, नबी रसूल ना कोए अख्वांयदा। कायनात ना फेरा पाउणा, नूर ज़हूर ना कोई वखांयदा। ऐनलहक नाअरा किसे ना लाउणा, उच्ची कूक ना कोए सुणांयदा। जगत मसल्ला ना कोए वछाउणा, सजदा सीस ना कोए झुकांयदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल ना किसे खिलाउणा, नानक नाम ना कोए रखांयदा। खड़ग खण्डा ना कोए चमकाउणा, तीर कमान ना हथ्थ उठांयदा। अमृत जाम ना किसे पिआउणा, अमृत मेघ ना कोए बरसांयदा। पुरख अबिनाशी रूप प्रगटाउणा, साचे सुत शब्द समझांयदा। ब्रह्मे विष्न शिव तेरा पन्ध मुकाउणा, लिख्या लेख ना कोए पढ़ांयदा। आपणा रूप आप प्रगटाउणा, पारब्रह्म आपणी जोत आप जगांयदा। वरन गोत विच किसे ना आउणा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डांयदा। मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआले किसे ना बहाउणा, गुरसिखां अंदर डेरा लांयदा। अठसठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती बाहों फड़ ना किसे गले लगाउणा, आपणी

धूढ़ गुरसिखां मस्तक टिक्का लांयदा। उच्चे टिल्ले चढ़ चढ़ हथ्थ किसे ना पाउणा, जोगी जती सती जटा जूट धार सर्ब कुरलांयदा। सन्यास वैराग ना कोए वखाउणा, ब्रह्मचारी गृहस्ती आपणे चरनां नाल मिलांयदा। जिस जन उप्पर आपणी दया कमाउणा, कोटन कोटि कोट जन्म दे पाप गवांयदा। निहकलंक आपणा नाउँ रखाउणा, शब्द डंका हथ्थ रखांयदा। शाह सुल्तानां राज राजानां राउ रंकां ऊँचां नीचां एका रंग रंगाउणा, वरन गोत ना कोए बणांयदा। एका ब्रह्म सर्ब समझाउणा, पारब्रह्म प्रभ पर्दा लांहयदा। घट घट अंदर दीप जोत जगाउणा, जोत निरँजण सेवा लांयदा। दूई द्वैती पर्दा लौहणा, माया ममता मोह मिटांयदा। हउमे हंगता गढ़ तुड़ाउणा, मन रावण आप खपांयदा। सीता सुरत सवाणी आप प्रनाउणा, निरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। कलिजुग जीव काग फड़ फड़ हँस बणाउणा, जिस जन आपणे नाम चोग चुगांयदा। लोक परलोक आप सुहाउणा, अन्त भगवन्त मेल मिलांयदा। राए धर्म दर दुरकाउणा, चित्रगुप्त नेड़ ना आंयदा। कलिजुग कूड़ा पन्ध मुकाउणा, जूठ झूठ डेरा ढांयदा। विश्व रूप सर्ब दरसाउणा, विष्न आपणा नाउँ रखांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म प्रगटाउणा, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ांयदा। शंकर हथ्थ त्रसूल सुटाउणा, ताशक तशका मुख शर्मांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द देवे वर, पुरख अबिनाशी किरपा कर, कर किरपा खेल खिलांयदा। शब्द दुलारे सच विचारना, बिन रसना जिह्वा हरि गुण गाईआ। कागद कलम ना किसे विचारना, जगत विद्या भेव ना राईआ। गुर पीर अवतार दर दुवार बणन सवालना, मंगण भिच्छया भिखक भिच्छया झोली पाईआ। आपे आपणी पूरी करे कामना, करता पुरख सच्चा शहनशाहीआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गुर पीर अवतार बणदा रिहा ज़ामना, राम कृष्न राधा कृष्न अल्ला हू अकबर सतिनाम वाहिगुरू जुग जुग करे पढ़ाईआ। अन्तिम अन्त श्री भगवन्त नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चौदां लोक त्रैभवन ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीसा गण गंधर्ब सुर नर मुन जन किनर यच्छप आपे मेटे अन्धेरी शामना, इक्क निरगुण जोत करे रशनाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां वसे बाहर इक्क रखाए सच ग्रामना, सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा नगर खेड़ा आप वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरि जू हरि हरि बैठा वेस वटाईआ। वेस अवल्ला एकँकारा, हरि साचा सच करांयदा। लोकमात मात लए अवतारा, मात पित पिता पूत वेख वखांयदा। चारों कुंट हो उज्यार, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण फेरा पांयदा। सृष्ट सबाई वेखे इक्क अखाड़ा, पंचम धाड़ आप उठांयदा। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी गारा, समुंद सागर फोल फुलांयदा। जोद्धा सूरबीर बली बलकारा, हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, हरि निरँकारा शस्त्र हथ्थ ना कोई उठांयदा। चारों कुण्ट करे ख्वारा, धरनी धरत

१३४१
०६

धवल करे पुकारा, ज़िमी अस्माना धूंआँधारा, सुच्च सुच्च ना कोई दृढ़ाईआ। लक्ख चुरासी नार विभचारा, मिले मेल ना हरि करतारा, पंच विकार होया शंगारा, मन मति बैठी वेस वटाईआ। आत्म ब्रह्म ना किसे विचारा, चार वरन अठारां बरन रोवण ज़ारो ज़ारा, पारब्रह्म ना कोई मिलाईआ। कलिजुग चारों कुंट होए धूंआँधारा, उच्ची कूक लावे नाअरा, सृष्ट सबाई रिहा भुलाईआ। साचा मन्दिर गुरू दर दुआरा, गुरमुख विरला पावे सारा, काया मन्दिर खोज खुजाईआ। अठ्ठे पहर रहे धुन्कारा, साची सखीआं मंगलचारा, अंमृत आत्म ठंडा ठारा, सर सरोवर इक्क सुहाईआ। आत्म सेजा कन्त भतारा, रंग रलीआं माणे अगम्म अपारा, भस्मड़ होए मरे ना जाईआ। जिस मिल्या पुरख करतारा, नाता तुटा सर्ब संसारा, घर पाया इक्क दुआरा, मिल्या मेल कन्त भतारा, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरसिख तेरा वसदा रहे दुआरा, पंच विकारा मेटे झूठी धाड़ा, करे प्रकाश बहत्तर नाड़ा, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। तेरा मन्दिर तेरे घर विच सोहया घर उज्यारा, दीवा बाती तेल ना कोई पसारा, जगावणहारा इक्क अख्वाईआ। दरस दिखाए अगम्म अपारा, सर्ब जीआं इक्क दातारा, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जगत जुगत करे साची कारा कार कमावणहारा विष्न ब्रह्मा शिव दए अधारा, लक्ख चुरासी वेखे थाउँ थाँईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि वजाए धुन नाद, नर नरायण घट घट मन्दिर अंदर बैठा सोभा पाईआ।

✻ २० कत्तक २०१७ बिक्रमी सन्त भगवान सिँघ दे घर पिण्ड सैद पुर ज़िला अमृतसर ✻

सति पुरख निरँजण सच सुल्तान, सतिगुर दाता इक्क अख्वांयदा। निरगुण रूप जोत महान, अनुभव आपणी धार बंधांयदा। इक्क इकल्ला श्री भगवान, दर घर साचे सोभा पांयदा। अगम्म अगम्मड़ा देवे दान, देवणहारा इक्क अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर हो प्रधान, आपणी कल आप धरांयदा। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्ड खण्ड वखाए इक्क निशान, सति निशाना आप उठांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे इक्क ज्ञान, अन्तर आपणा नाम दृढ़ांयदा। त्रैगुण माया बख्शे माण, पंचम डोरी हथ्थ रखांयदा। घाड़त घड़े दो जहान, घड़न भन्नणहार समरथ पुरख आपणी बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि हरि साचा धाम सुहांयदा। साचा दानी देवे दान, देवणहार इक्क अख्वांयदा। आपणी करे आप पछाण, हरि आपे वेख वखांयदा। आपे वसे आपणे सच मकान, धुर दरबारा आप सुहांयदा। आदि जुगादी बण जाणी जाण, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। लक्ख चुरासी बणे साचा काहन, घट घट मंडल रास रचांयदा। एका गाए आपणा गाण, नाद अनादी धुन उपजांयदा। अमृत अमिउँ रस पीण खाण, सर सरोवर इक्क सुहांयदा। जोत निरँजण निरगुण भान, घट भीतर

आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त हथ्थ रखांयदा। साची वस्त नाम अनमुल्ल, भगवन आपणे हथ्थ रखांयदा। आदि जुगादि ना जाए तुल, तोलणहारा दिस कोए ना आंयदा। आपणी कीमत करता आप चुकाए मुल, सच वणजारा आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त इक्क रखांयदा। साची वस्त नाम भण्डारा, सो पुरख निरँजण आप वरतांयदा। हरि पुरख निरँजण खेल अपारा, एकँकारा कल धरांयदा। आदि निरँजण ठांडा दरबारा, सीतल धारा प्रकाश वखांयदा। श्री भगवान खोल्ह किवाड़ा, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। अबिनाशी करता मीत मुरारा, मिल मिल आपणी खुशी मनांयदा। पारब्रह्म बणे भिखारा, निरगुण अग्गे निरगुण सीस झुकांयदा। सतिगुर सच्चा शहनशाह सच्ची सरकारा, शाह सुल्तान आपणा हुक्म आप सुणांयदा। देवणहारा अतुट भण्डारा, शब्द वणजारा इक्क वखांयदा। आपणे नाम दए आधारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच ख़ज़ीना बेपरवाह, पारब्रह्म प्रभ आपणे हथ्थ उठा, आपणा मार्ग वेख वखांयदा। सच ख़ज़ीना हरि का नाउँ, सति पुरख निरँजण आप उपाया। आपे रक्खे आपणे थाउँ, नगर खेड़ा ना कोए वसाया। आपे देवे फड़ फड़ बाहों, आपणी इच्छया भिच्छया झोली आप भराया। आपे लेखा जाणे पिता माउँ, पूत सपूता आपे जाया। आपे लेखा जाणे हँस काउँ, आपे हँस कागां डार उडाया। आपे देवणहारा ठंडी छाउँ, समरथ पुरख सदा सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे दानी दान, आदि जुगादी सच निशान, ना मरे ना जाया। साचा दान श्री भगवन्त, दर घर साचे आप वरतांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग करता आपणी धार बंधांयदा। एका नाम जणाए मंत, मन्त्र नाम आप दृढ़ांयदा। करे खेल नारी कन्त, वाह वा सतिगुर भेव ना आंयदा। त्रैगुण धारी माया बेअन्त, त्रैगुण वेसा वेस वटांयदा। लक्ख चुरासी जीव जंत, घाड़न घड़ घट घट अंदर आपणा रूप प्रगटांयदा। आदि जुगादि ना होए भस्मंत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम आप वरतांयदा। सच नाम पारब्रह्म प्रभ इच्छया, दूसर वस्त ना कोए जणाईआ। जुग जुग देवणहारा आपणी भिच्छया, ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं जेरज अंड लक्ख चुरासी वेखे सर्ब लोकाईआ। निरगुण निरवैर निराकार, जन भगतां देवे साची सिख्या, एका आत्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। चौदां लोक चौदां विद्या लेख किसे ना लिख्या, ब्रह्मा चारे वेद लिख लिख नेत्र नैण गया शर्माईआ। हरि का नाउँ किसे ना दिसया, हथ्थ फड़ लोचण नैण ना कोए बिगसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम वस्त अमोलक आपे रक्खे आपणी गोलक, दूसर हथ्थ ना दए वड्याईआ। हरि का नाउँ अगम्म अथाह, हरि आपणे हथ्थ रखांयदा। जुगा जुगन्तर बेपरवाह, आपणी

खेल खिलांयदा। पंज तत्त मेला मेल मिला, निरगुण सरगुण धार बंधांयदा। आपणी दया आप कमा, आपणा लेखा बह समझांयदा। सन्त भगवन्त लए उपजा, साचा कन्त वेख वखांयदा। आदि अन्त आपणा गुण जणा, अवगुण लेखा सर्ब मुकांयदा। अनहद राग धुन वजा, धुनी धुन आप उपांयदा। सुन्न मुन दए तुड़ा, चुण चुण आपणे लेखे पांयदा। पुण छाण करे सभनी थाँ, घट भाण्डा फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम नाम अतुट, एकँकारा आप वरतांयदा। हरि का नाउँ हरि का रंग, हरि बिन अवर ना कोए चढ़ाईआ। हरि दाता सूरा सरबंग, सतिगुर आपणा भेव जणाईआ। हरि शब्द हरि मृदंग, हरि ताल तलवाड़ा रिहा वजाईआ। हरि सेजा हरि पलँघ, हरि बैठा आसण लाईआ। हरि भिखारी मंगे मंग, हरि भिच्छया झोली पाईआ। हरि भुक्ख हरि नंग, हरि तृष्ना तृप्त कराईआ। हरि लेखा जाणे काया माटी काची वंग, हरि काया गढ़ सुहाईआ। हरि हरि मन्दिर वेखे आपे लँघ, बन्द किवाड़ा आप खुल्हाईआ। हरि सन्तन वसया सदा संग, विछड़ कदे ना जाईआ। हरि का नाम पूरी करे उमंग, अमका मूल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा नाउँ, नेहचल वखाए एका थाउँ, महल्ल अटल मिनार थिर दरबारा सोभा पाईआ। हरि का नाम निरगुण धार, रूप रंग रेख ना कोई जणांयदा। आपणे विच्चों आपे लए उभार, वेखणहारा आप

१३४४ हो जांयदा। ना कोई सारंग ना सितार, हथ्थ समरथ ना कोई रखांयदा। ना कोई गज खिच्चे आपणी वार, तम्बुर कंध १३४४

०६ ना कोई लटकांयदा। करे खेल अगम्म अपार, आपणी धुन आपणे विच्चों आप उपजांयदा। साचे सन्तां कर प्यार, लोकमात ०६

आप सुणांयदा। इक्क वखाए साची कार, साची कारे आपे लांयदा। नाता तोड़ काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना मेट मिटांयदा। चरन कँवल कँवल चरन बख्शे इक्क प्यार, पूजा पाठ ना कोई बणांयदा। अंदर मन्दिर डूँघी कंदर, आप सुणाए सच्ची गुफ्तार, रसना जिह्वा ना कोई हिलांयदा। निरगुण जोती कर उज्यार, अठ्ठे पहर डगमगांयदा। बिन तेल बाती करे खेल खेलणहार, महल्ल अटल सोभा पांयदा। आपे सखी सुल्तान मिले साचा यार, सुहञ्जणी सेज आप सुहांयदा। आपे गाए मंगलाचार, आपणा गीत आप अल्हांयदा। आपे मेला मेल मिलाए मेलणहार, एकँकार आपणी कल आप धरांयदा। एका शब्द सच्चा वरतार, हरि आपणा नाउँ आप आपणे हथ्थ रखांयदा। नानक कबीर कह कह गए पुकार, हरि हथ्थ किसे ना आंयदा। घड़े भन्ने घड़न भन्नणहार, विष्न ब्रह्मा शिव त्रिलोकी नाथ कोटन कोटि सीस झुकांयदा। बिन हरि नामे ना कोई उतरे पार, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लग्गी बसन्तर ना कोई बुझांयदा। जिस जन किरपा करे आप निरँकार, जन्म जन्म दे रोग गवांयदा। कागद कलम ना लिखणहार, वेद शास्त्र सिमरत पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी चार

जुग गुर पीर अवतार साध सन्त सभ हरि का जस गांयदा। पुरख अबिनाशी करे खेल अपार, एका नाम वस्त अपार, आपणे हथ्थ रक्खे करतार, सभ दी झोली पांयदा। आपे वसे सभ तों बाहर, बैठा रहे इक्क दरबार, शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहनशाह आपणा नाउँ रखांयदा। सतिगुर पूरा कोटन कोटि ब्रह्मण्डां करे इक्क प्यार, कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न शिव दए अधार, कोटन कोटि गुर पीर अवतार आपणी कुखों लए उभार, कोटन कोटि एका शब्द नाम दृढ़ांयदा। आदि जुगादी साची कार, जुगा जुगन्तर करे विच संसार, लोकमात वेस वटांयदा। बिन हरिभगत दूसर जाए ना किसे दुवार, गुर दर मन्दिर मस्जिद मठ, सतिगुर पूरा कदे ना आसण लांयदा। किसे ना होवे बन्द किवाड़, सति सति गंढ्ढी गंढ्ढ ना कोई रखांयदा। किसे ना सिर रक्खे आपणा भार, सीस चुक्क चारों कुंट ना कोई फिरांयदा। गुरमुख गुरसिख हरिभगत हरिसन्त आपणी गोदी लए आप उठाल, शाह कंगाल आपणे लेखे पांयदा। एका बणया रहे दलाल, नेड़ ना आए काल महांकाल, गुर शब्दी सेव कमांयदा। सतिगुर पूरा कोई ना बन्नृ के रक्खे विच रुमाल, अलमारी विच ना कोई रखांयदा। दीन मज़्ब वरन गोत सतिगुर पूरे पवे ना कोई जंजाल, दाड़ी मुछ केस मूंड ना मुंडाए निरगुण आपणा रूप आप प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच्चा साहिब पुरख समरथ, आपणी महिमा जाणे अकथना अकथ, वेद कतेब सर्ब जस गांयदा। गा गा थक्के हरि का जस, चार वरन वड्डी वड्याईआ। अठसठ तीर्थ रहे नस्स, आपणा पन्ध ना सके कोई मुकाईआ। पढ़ पढ़ पुस्तक जगत मार्ग रहे दस्स, आपणा मार्ग हथ्थ किसे ना आईआ। कर किरपा जिस हिरदे गया वस, दूजे घर ना मंगण जाईआ। अंदरे अंदर मेला मेले हस्स हस्स, घर साचे वज्जे वधाईआ। गुरसिख आपणा सथ्थर तेरे मन्दिर बैठा घत, तेरी त्रैगुण सूला सेज रिहा हंढाईआ। माया ममता मोह अन्त काल ना डस्से डसनी डस्स, जगत नागनी नेड़ ना आईआ। एका तीर निराला मारे कस, शब्द कमान आप उठाईआ। नौं ग्रां नौं खण्ड नौं दुआर नौं काल चरन डिगण ढट्ठ, ढह ढह ढेरी आप बणाईआ। हरि का नाम सदा रक्खे पति, जिस सिर सतिगुर पूरा हथ्थ टिकाईआ। गुरमुखां अन्तिम सांभण आया वत्त, आपणा बीज आपणी हथ्थीं देवे पाईआ। आपणी फसल आपे लए कट्ट, दूजा वाढा वढ्ढण कोई ना आईआ। आपणे खाते लए घत, सचखण्ड दुआर खुल्हाईआ। आपणी हथ्थीं लक्ख चुरासी छट्टण रिहा छट, नाम हुलारा इक्क लगाईआ। आपणा रूप विचकार रखाई वट, लक्ख चुरासी दिस किसे ना आईआ। एका तोला तोल तुलाए घट घट, आपणा खण्डा आपणे हथ्थ रखाईआ। चौथे जुग चार जुग दे विछड़े गुरसिख मेले नट्ठ नट्ठ, जगत चौकड़ी दए गवाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे आपणा दान, सखी मिले साचा काहन, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म एका घर लए मिलाईआ।

❋ २० कत्तक २०१७ बिक्रमी नाज़र सिँघ दे घर पिण्ड मल्लीआं ज़िला अमृतसर ❋

सति पुरख निरँजण अगम्म अपारा, अलक्ख अलक्खणा इक्क अख्वांयदा। सो पुरख निरँजण वसे ठांडे दरबारा, निरगुण निराकार वेस वटांयदा। हरि पुरख निरँजण सोहे मन्दिर दुआरा, सचखण्ड दुआरा आप उपांयदा। एकँकारा करे खेल न्यारा, निरवैर आपणी कल धरांयदा। आदि निरँजण नूर उज्यारा, जोती जोत डगमगांयदा। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणी धारा, धार धार विच रखांयदा। श्री भगवान उच्च महल्ल अटल सुहाए इक्क मुनारा, आसण सिँघासण इक्क सुहांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, अनुभव आपणा रंग रंगांयदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, शाह सुल्तान आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला, दर घर साचे आप सुहांयदा। सति पुरख निरँजण सोभावन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सो पुरख निरँजण बेअन्त बेअन्त बेअन्त, बेपरवाह भेव ना राईआ। हरि पुरख निरँजण आदि अन्त, आपणी कल आप वरताईआ। एकँकारा हरि निरँकारा धाम सुहाए सोभावन्त, सचखण्ड दुआर दए वड्याईआ। आदि निरँजण आप बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नणहार होर दिस कोए ना आईआ। अबिनाशी करता करे खेल नारी कन्त, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। श्री भगवान आप आपणे लाए अंगत, अंगीकार आप हो जाईआ। पारब्रह्म प्रभ बणे मंगत, दर दरवेश अलक्ख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आपणी रचना आप रचाईआ। सति पुरख निरँजण ठांडा दरबारा, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। अगम्म अगम्मड़ा रूप अपारा, महिमा अनूप ना कोए जणांयदा। जोती जाता हो उज्यारा, जागरत जोत डगमगांयदा। घर विच घर कर त्यारा, थिर घर साचा आप सुहांयदा। कमलापाती बण बण मीत मुरारा, नारी कन्त सेज हंढांयदा। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहरा, आपणा मेला आप मिलांयदा। लेखा जाणे सच्ची सरकारा, शाह सुल्तान भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। हरि मन्दिर उच्च मुनारा, पुरख अबिनाशी आप उपजांयदा। सचखण्ड निवासी खोल्ह किवाड़ा, आपणा कुण्डा आपे लांहयदा। थिर घर साचे पावे सारा, आपणी कल आप धरांयदा। चार कुंट ना कोए सहारा, दहि दिशां ना वण्ड वण्डांयदा। इक्क इकल्ला खेल न्यारा, निरगुण आपणा आप करांयदा। रवि ससि ना कोए सतारा, प्रकाश प्रकाश ना कोए जणांयदा। शब्द धुन ना कोए जैकारा, राग नाद ना कोए सुणांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए पसारा, मंडल मंडप ना कोए वखांयदा। नौं खण्ड ना कोए अखाड़ा, सत्त धार ना कोए बणांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए पसारा, त्रैगुण माया बन्धन ना कोए रखांयदा। पंज तत्त ना कोए पसारा, मन मति बुध ना मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी ना कोई घाड़न घड़े ठठयारा,

खाणी बाणी ना कोए वखांयदा। जल बिम्ब ना कोए आधारा, धरनी धरत धवल ना कोए प्रगटांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, आपणे मन्दिर आप सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जूनी रहित पुरख अकाला, सचखण्ड दुआर वसे सच्ची धर्मसाला, धुर दरबारा आप सुहांयदा। धुर दरबार सुहांयदा, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। आपणी रचना आप रचांयदा, निरगुण निरगुण बण मलाह। साची सेवा आप करांयदा, आपे सिफ्ती सिफ्त सालाह। आपणा भार आप उठांयदा, खेवट खेटा बण मलाह। आपणा रंग आप रंगांयदा, रंगणहारा एका थाँ। आपणा नाउँ आप प्रगटांयदा, नाउँ निरँकारा लए रखा। आपणी धारा आप चलांयदा, जोती जोत जोत जगा। आपणा गाणा आपे गांयदा, शब्द नाद धुन सुणा। आपणा मन्दिर आप सुहांयदा, आदि निरँजण जोत प्रगटा। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण वण्ड ना कोए वण्डांयदा, चारे दिशां एका रूप रिहा दरसा। थिर घर साचा आप सुहांयदा,। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा, आपे जाणे आपणे खेल तमासा, आपणी रास आप वखांयदा। सति पुरख निरँजण गहर गम्भीरा, एका रंग समाया। आपे पहने आपणा बस्त्र चीरा, आपणा श्रंगार आप वखाया। आपे होए जोद्धा सूरबीरा, आपणा बल आप धराया। आपे होए पीरन पीरा, सतिगुर आपणा नाउँ रखाया। आप आपणा बन्धन पाए ज़ंजीरा, तोड़नहार आप रघराया।
१३४७ आपे चोटी चढ़या अख़ीरा, आपे निउँ निउँ सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड महल्ला १३४७
०६ पुरख अबिनाशी वसे इक्क इकल्ला, दूसर संग ना कोए रखाया। ना कोई संग रखांयदा, इक्क इकल्ला एकँकार। दरगाह साची सोभा पांयदा, धुर दरगाही साचा यार। अमाम अमामां सिर आप अख्वांयदा, नूर इलाही बेऐब परवरदिगार। हक हक मुकामे हक आपणा जल्वा नूर प्रगटांयदा, शाह पातशाह सच्ची सरकार। साचे तख्त सोभा पांयदा, राजन राज वड मेहरवान। हुक्म हाकम आप सुणांयदा, धुर फ़रमाणा बोल जैकार। शब्द अनादी नाद वजांयदा, सुणे सुणाए सुणनेहार। दूसर संग ना कोई वखांयदा, ना कोई दिसे गुर पीर अवतार। साचे मन्दिर डेरा लांयदा, अनुभव प्रकाश निरगुण जोत कर उज्यार। पुरख अकाल आपणा नाउँ रखांयदा, निरभउ खेल करे सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग सूरा सरबंग, रूप अनूप आप प्रगटांयदा। रूप अनूपा शाहो भूपा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सति पुरख निरँजण सति सरूपा, सांतक सति सति सहिज सुखदाईआ। आदि जुगादि वसणहारा चारे कूटा, आपणी दिशां आपणा हिस्सा आपे वण्ड वण्डाईआ। अबिनाशी अचुत निरगुण निरवैर निराकार आलस निन्दरा विच कदे ना सुत्ता, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आपे खोल्ह, आपणा नाउँ आपे बोल, हरि जू हरि मन्दिर आपे

लए सुणाईआ। हरि मन्दिर हरि खोल्या, कर किरपा गुण निधान। पुरख अकाल शब्द अगम्मी बोलया, शाह पातशाह सच्चा सुल्तान। आपणा आप आपणे कंडे आपे तोलया, तोलणहारा श्री भगवान। आदि जुगादि रहे अडोलया, अडोल गुर गुरू मेहरवान। सद वसे आपणे कोलया, हथ्थ उठाए इक्क निशान। आपणी शक्ती आपे मौलया, आपे देवणहारा दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा लेखा जाणे जाणी जाण। जानणहार पुरख समरथ, एका रंग समाया। सो पुरख निरँजण महिमा अकथ, हरि पुरख निरँजण रिहा जस गाया। एकँकारा आपणे मन्दिर आपे वस, आदि निरँजण दीपक डगमगाया। श्री भगवान आपणा मार्ग आपे दस्स, अबिनाशी करता राह चलाया। पारब्रह्म आपणा पन्ध मुकाए नस्स नस्स, आपणा लेखा लेखे पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी महिमा आप सुणाया। हरि महिमा शब्द जणांयदा, इक्क इकल्ला एकँकार। आदि पुरख आप अख्वांयदा, जूनी रहित मीत मुरार। धुर दरबारा सोभा पांयदा, जगमग जोत जगे अपार। सचखण्ड दुआरा इक्क वड्यांअदा, थिर घर खोल्ह किवाड़।

१३४८ सच सिँघासण इक्क वछांयदा, पुरख अबिनाशी हो त्यार। आपणा हुक्म आप सुणांयदा, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। आपणा चोबदार आप बणांयदा, आपे सेवक सेवा करे बण भिखार। आपणा ताज आपणे आप उठांयदा, आपे होए पहनणहार। आपणा निशाना आप चढ़ांयदा, सति सतिवादी साची कार। आपणा जोबन वेख वखांयदा, पुरख अबिनाशी हो त्यार। साचे तख्त चरन टिकांयदा, वड भूप जोद्धा सूरबीर बलकार। आपणी रचना आपे वेख वखांयदा, रच रच वेखे वेखणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर साचा आप सुहांयदा। आपणी रचना हरि रचांयदा, रचणहार दीन दयाल। जोती जोत नूर प्रगटांयदा, नेड़ ना आए काल महांकाल। साचा मन्दिर आप सुहांयदा, आदि जुगादि करे प्रितपाल। छप्पर छन्न ना कोए बणांयदा, चार दीवारी ना रक्खे नाल। सचखण्ड दुआरा इक्क वड्यांअदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेद आप खुल्हांयदा। भेव अभेदा खोल्हणहारा, निरगुण रूप समाया। आदि पुरख निरँजण हो उज्यारा, रूप अनूप आप दरसाया। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, तख्त निवासी आसण लाया। एका हुक्म वरते वरतारा, आपणा बन्धन आपे पाया। लेखा जाणे गुप्त ज़ाहरा, नारी कन्त खेल खिलाया। रंग रलीआं माणे कन्त भतारा, निरगुण निरगुण सेज हंढाया। आपे उत्पत किया सुत दुलारा, शब्द शब्दी नाउँ रखाया। दाई दया अगम्म अपारा, रूप रेख ना कोए बणाया। विष्न शिव कर त्यारा, ब्रह्मा आपणे अंग लगाया। शंकर तेरा खोल्ह किवाड़ा, साची धारा विच समाया। त्रैगुण माया भर भण्डारा, त्रै त्रै लेखा दए समझाया। पंज तत्त दए अधारा, आप आपणा मेल

मिलाया। रवि ससि कर उज्यारा, आकाश प्रकाश विच समाया। लोआं पुरीआं दए सहारा, गगन मंडल आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दाता पुरख बिधाता, पारब्रह्म वड वड्याआ। हरि वड्डा वडियाई वड, आपणा लेखा आप लिखांयदा। आपणे अंदरों आपा कढ्ढ, विष्न ब्रह्मा शिव प्रगटांयदा। शब्द सरूपी लडाए लड, शब्द शब्दी धार रखांयदा। आपे पेखणहारा वरभण्ड, भगत भिखारी आप अख्वांयदा। त्रैगुण माया आपे वण्ड, रजो तमो सतो संग निभांयदा। आपे बन्धन पाए बंध, एका डोरी नाम हथ्थ रखांयदा। आपे पंज तत्त जोती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा घाड़न आप घड़ांयदा। घाड़न घड़नहार हरि, हरि का भेव किसे ना पाया। आपणी किरपा आपे कर, ब्रह्मा विष्न शिव उपजाया। आप बहाए आपणे दर, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। आपे लेखा देवे साचे घर, एका अक्खर आप पढ़ाया। आपे नारी आपे नर, नर नरायण आपणा रंग आप रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा एका दर, दर दर आप खुलाया। दर दुआरा खोल्या, कर किरपा गुण निधान। शब्द अगम्मी एका बोलया, विष्न ब्रह्मा शिव देवे ज्ञान। पारब्रह्म अबिनाशी करता सति सतिवादी बणया एका तोलया, तोलणहारा इक्क भगवान। त्रै अंदर मन्दिर आपे मौलया, रूप रंग ना चतर सुजान। ब्रह्मा तेरा उलटा करे नाभ कवलया, दानी देवे साचा दान। शंकर हौला भार करे धवलया, लेखा जाणे धरत धवल ज़िमी अस्मान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच्चा वर, दरगाह साची सच्चा धुर फ़रमाण। सच फ़रमाणा हरि जणाया, भुल्ल रहे ना राईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा लाया, शंकर हथ्थ त्रसूल रखाईआ। लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ाया, वड ठठयारा सच्चा शहनशाहीआ। मन मति बुध विच दए टिकाया, डूँघी कंदर सेवा लाया। आपणा अंग आप कटाया, पारब्रह्म आपणा नाउँ उपजाईआ। आपणी इच्छया भिच्छया वेख वखाया, ईश जीव वड्डी वड्याईआ। जगत जगदीश वेख वखाया, छत्र सीस आप टिकाईआ। पंज दस बीस रचन रचाया, राग छतीस करे पढ़ाईआ। इक्क इकीस फेरा पाया, गुण अवगुण ना सके कोई जणाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमाया, त्रैगुण एका रंग रंगाईआ। आत्म वत बीज बिजाया, पुरख समरथ खेल खलाया। ख़ालक ख़लक रूप वटाया, तेरी नथ्थ आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड दुआरा बैठा आसण लाया, एका वथ्थ आप वरताईआ। सच भण्डारा नाम समझाया, ब्रह्मा विष्नूं शिव दए चाँईं चाँईंआ। सो पुरख निरँजण आप पढ़ाया, हँ रूप सृष्ट सबाईआ। पारब्रह्म आपणी कुखों आपे जाया, सोहँ नाम दए वड्याईआ। निरगुण सरगुण रूप वटाया, करे खेल बेपरवाहीआ। जगत परवाह आप चलाया, लेखा जाणे एका माईआ। त्रै त्रै चेले सेव कमाया, वाह वा वज्जदी रहे

वधाईआ। सतिगुर साचे खेल खलाया, कागद कलम ना लिखे छाहीआ। चारे मुख चारे वेद ब्रह्म सुत रिहा कुरलाया, अबिनाशी अचुत भेव ना राया, मन मति बुध ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजणा, निरगुण निरवैर आपणा नूर आप धराईआ। हरि आपणा नूर धरांयदा, पुरख अकाल अगम्म। सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा, ना मरे ना पए जम्म। मात पित ना कोए रखांयदा, भैण भाई जननी जणे ना कोए जन। काया तत्त ना कोए हंढांयदा, ना कोई पीण ना कोई खाण। धन वस्त ना कोए लुटांयदा, ना कोई भार बैठा बन्न्। दीवा बाती ना कोए जगांयदा, ना कोई रखाए सूरज चन्न। आपणा संग आप निभांयदा, आपणे मन्दिर आपे मन्न। आपणा खेल आप खिलांयदा, अबिनाशी करता सूरा सरबंग। साचा नाम मृदंग वजांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। दर घर साचा हरि सुहांयदा, पारब्रह्म सच्चा शहनशाह। लक्ख चुरासी रचन रचांयदा, चारे खाणी बणत बणा। जेरज अंडज फोल फुलांयदा, उत्भुज सेत्ज लेखा लिखे थाउँ थाँ। नौं खण्ड पृथ्मी वण्ड वण्डांयदा, सत्तां दीपां हिस्सा पा। सत्त सरोवर फोल फुलांयदा, समुंद सागर बेपरवाह।
१३५० एका हुक्म नाम चलांयदा, बिन हुक्मे दिसे ना कोए थाँ। ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकांयदा, दर मंगण भिख्या बैठे आ। पुरख १३५०
अबिनाशी दया कमांयदा, साची वण्डण दए वण्डा। तिन्नां एका मार्ग लांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा
०६ कर, देवणहारा साचा वर, साचे तख्त सोभा पांयदा। तख्त निवासी सतिगुर सूरा, साहिब सच्चा सुल्तान। आदि जुगादी ०६
हाज़र हज़ूरा, हरि वाली दो जहान। जोत उजाला नूरो नूरा, महिमा अनूप श्री भगवान। शब्द नाद वजाए साची तूरा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां देवे इक्क ज्ञान। आत्म ब्रह्म देवे सति सरूरा, अमृत बख्शे पीण खाण। ब्रह्मा विष्न शिव त्रै त्रै मंगण चरन धूढ़ा, ख़ाकी ख़ाक मिले दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आज्ञा शब्द आपे करे पूरा, ना कोई मेटे हरि निशान। सच निशाना हरि झुलांयदा, जुगा जुगन्तर साची कार। सचखण्ड दुआरे आप उठांयदा, लेखा जाणे धुर दरबार। त्रै त्रै जगदीस सीस झुकांयदा, लोक परलोक मन्नण आण। करोड़ तेतीसा थर थरांयदा, सुरपति रोवे बाल अञ्याण। लक्ख चुरासी भरम मिटांयदा, शब्द अगम्मी मारे बाण। त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ांयदा, पंचम लेखा चुक्के जगत मकान। साचे मन्दिर जोत जगांयदा, निरगुण सरगुण देवे एका दान। काया माटी फोल फुलांयदा, डूँग्घी भँवरी काया कँवरी आपे वेखे आण। जोत निरँजण डगमगांयदा, अनहद शब्द सुणाए सच्ची धुनकान। आपणा राग आप अल्लांयदा, पंचम मीता गुण निधान। ठांडा सीता दर रखांयदा, नाता तोड़े पंज शैतान। घर घर विच आप सुहांयदा,

आत्म सेजा इक्क निशान। निरगुण निरवैर आसण लांयदा, आत्म ब्रह्म हो प्रधान। पारब्रह्म प्रभ खेल खिलांयदा, ख़ालक रूप श्री भगवान। ब्रह्मा विष्न शिव सेव कमांयदा, भुल्ल ना जाए बण नादान। त्रैगुण अतीता आपणा रंग रंगांयदा, रंग वेखे निगहबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम इक्क दृढ़ांयदा। साचा नाम शब्द अनमोल, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। आपणे मन्दिर आपणे अंदर लैणा फोल, दूजे दर ना मंगण जाईआ। दिवस रैण वज्जे मृदंग ढोल, अनहद तार सितार हिलाईआ। आपणा पर्दा आपे लैणा खोल्ह, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। आपणी सुरती आपणे शब्द जाणा मौल, शब्द सुरत होए कुड़माईआ। घर घर अंदर भरया अमृत नाभ कँवल, साचा झिरना आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव एका तत्त दृढ़ाए, ब्रह्म मति एका रूप अनूप दरसाईआ। ब्रह्म मति ब्रह्म ब्रह्म धारा, पारब्रह्म जणांयदा। सति सरूप निराकारा, निरवैर आपणा नाउँ रखांयदा। लक्ख चुरासी कर पसारा, घट घट आसण लांयदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर आपणी अलक्ख आप जगांयदा। वण्डण वण्ड वण्डे संसारा, आपणा हिस्सा आपणे हथ्थ रखांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कर त्यारा,
१३५१ कलिजुग एका मंग मंगांयदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बण वरतारा, लक्ख चुरासी खेल वखांयदा। जूनअजूनी बण १३५१
वरतारा, वास्तक आपणा रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका लेखा लिखणहारा, लक्ख
०६ चुरासी वसे बाहरा, हुक्मी हुक्म वरते सच वरतारा, साचा हुक्म इक्क चलाईआ। हुक्म वरते हरि निरँकार, आदि जुगादि ०६
चलाया। जुग चौकड़ी करे विचार, निरगुण सरगुण रूप वटाया। भगत भगवन्त लए अधार, आप आपणा मेल मिलाया। सन्त साजन लए उभार, सतिजुग साचा दर सुहाया। गुरमुखां खोल्ह बन्द किवाड़, साची हाटी वणज कराया। गुरसिख फड़ फड़ लाए पार, जगत बेड़ा आप तराया। लोकमात लए अवतार, गुर गुर आपणा नाउँ धराया। नित नवित साची कार, हरि हरि साचे खेल खलाया। नौं नौं चार उतरे पार, नौं नौं लेखा दए वखाया। चौथे जुग पावे सार, चारे वेद रहे कुरलाया। चारे खाणी करे पुकार, चारे बाणी दए दुहाया। चारे यार रोवण ज़ारो ज़ार, चार वरन धीर ना कोई धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जुगा जुगन्तर आपणा रूप आप प्रगटाया। जुगा जुगन्तर हरि निरँकारा, सति पुरख खेल खिलांयदा। सतिजुग करया पार किनारा, सति सतिवादी दया कमांयदा। त्रेता लेखा आप विचारा, भेव कोई ना पांयदा। द्वापर वेखे जगत धाड़ा, सृष्ट अखाड़ा आप लगांयदा। कलिजुग अन्तिम धूंआँधारा, चारों कुंट अन्धेरा छांयदा। साचा चन्न ना कोई उज्यारा, सांतक सति ना कोई करांयदा। हरि का रूप ना किसे विचारा, वरन

बरन सर्ब कुरलांयदा। जूठा झूठा जगत अखाड़ा, माया ममता मोह नाल रलांयदा। नाल रलाया काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, आसा तृष्ना नाच नचांयदा। नाता तुटा मन्दिर गुरुदुआरा मस्जिद मठ शिवदुआला, साचा रंग ना कोई रखांयदा। एका भुल्लया हरि निरँकारा, हरि का रूप ना कोई दरसांयदा। साध सन्त करन विभचारा, आत्म सेज ना कोई सुहांयदा। कलिजुग कूके जोद्धा सूरबीर बली बलकारा, उच्ची कूक सर्ब सुणांयदा। जूठा झूठा दए ललकारा, सति धर्म पैरां हेठ दबांयदा। कोई ना मन्ने गुर अवतारा, गुर का हुक्म सीस ना कोई रखांयदा। कोटन कोटि लभ्भदे फिरदे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, काया मन्दिर कोए ना फोल फुलांयदा। कोटन कोटि पढ़ पढ़ करन विचारा, चौदां विद्या भेव ना आंयदा। कोटन कोटि उच्ची कूकण करन पुकारा, रसना जिह्वा सर्ब हिलांयदा। बिन सतिगुर पूरे दूई द्वैती पड़दा कोए ना लांहयदा। मेल मिले ना हरि जू हरि हरि कन्त भतारा, साची सेज ना कोए सुहांयदा। घर दिसे ना मीत मुरारा, दीन ईमान ना कोए रखांयदा। भरमे भुल्ला जीव गंवारा, एका नाम पुरख अकाल सर्ब जणांयदा। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश उतरन पारा, निज आत्म निज घर निज मन्दिर जो जन ध्यान लगांयदा। देवे दरस अगम्म अपारा, कलिजुग कूड़ा अन्धेरा रहिण ना पांयदा। सच दीपक होए उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग भगत भगवन्त साध सन्त इक्क वखाए सच दरबारा, हरिभगत सदा वड्यांअदा। जुगा जुगन्तर साची कार, हरि सन्त सदा सालांहयदा। लोकमात खेल अपार, सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा। कलिजुग अन्तिम आई वार, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। आप आपणी किरपा धार, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। पूर्ब लहिणा कर्म विचार, नेत्र नैणां दरस दिखांयदा। तीजा लोचण कर उज्यार, चौथे पद आप समांयदा। पंचम लेखा छुट्टे संसार, छेवें छे घर फोल फुलांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण साची कार, अट्ठां तत्तां मूल चुकांयदा। नौं दुआरे कर ख्वार, दसवें घर आप बहांयदा। जोत शब्द शब्द जोत वखाए इक्क प्यार, किला कोट इक्क वखांयदा। काया गढ़ सच्ची सरकार, शब्द नगारे चोट आप लगांयदा। अनहद धुन सच्ची धुन्कार, गुरमुख चुण चुण मेल मिलांयदा। आप आपणी किरपा धार, कलिजुग तेरा पन्ध मुकांयदा। झूठी क्रिया करे ख्वार, सृष्ट सबाई एका छन्द सुणांयदा। एका वरते सच वरतार, इष्ट देव इक्क मनांयदा। आत्म ब्रह्म करे प्यार, त्रैगुण बन्धन तोड़ तुड़ांयदा। राए धर्म ना करे ख्वार, चित्रगुप्त ना लेख वखांयदा। लाड़ी मौत ना करे शंगार, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। दो जहानां करे पार, कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा। निहकलंका जामा धार, शब्द शब्दी आप अख्वांयदा। जोती जोत कर पसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणी खेल खिलांयदा।

१३५२ ०९

✳ २१ कत्तक २०१७ बिक्रमी मोहण सिँघ दे घर पिण्ड सकयां वाली ज़िला अमृतसर ✳

सति पुरख निरँजण सच्चा शहनशाह, आदि जुगादि समांयदा। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। हरि पुरख निरँजण अगम्म अथाह, रूप रंग ना कोए रखांयदा। एकँकारा आपणा नाउँ प्रगटा, आप आपणी धार बंधांयदा। आदि निरँजण जोत जगा, नूर नुराना डगमगांयदा। अबिनाशी करता अलक्ख जगा, अलक्ख अलक्खणा भेव खुलांयदा। श्री भगवान साचा मन्दिर रिहा सुहा, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। पारब्रह्म आपे वेखे आपणा थाँ, थिर घर साचे डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, आपणी खेल आप खिलांयदा। सो पुरख निरँजण हरि निरँकारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। एका वसे धाम न्यारा, सचखण्ड दुआर वड वड्याईआ। नूर नुराना जोत उज्यारा, शहनशाह बेपरवाहीआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त निवासी इक्क अख्वाईआ। करनी करे करनेहारा, करता पुरख बेऐब नाम खुदाईआ। नूर ज़हूर अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर आप प्रगटाईआ। सच महल्ला उच्च अटला कर त्यारा, नेहचल धाम दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती जाता हरि भगवाना, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। निरगुण निरवैर सच सुल्ताना, शाहो भूप वड वड्याईआ। साचे तख्त

१३५३ ०६

बैठे जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, अनुभव आपणी धार बंधाईआ। एका जोती नूर नूर नुराना, सुते प्रकाश डगमगाईआ। सो पुरख निरँजण हो मेहरवाना, हरि पुरख निरँजण लए उठाईआ। एकँकारा देवे दाना, आदि निरँजण नेत्र नैण खुल्हाईआ। श्री भगवान अबिनाशी करता आपे वसे सच मकाना, सच दुआरे सोभा पाईआ। पारब्रह्म प्रभ गुण निधाना, गुणवन्ता कहिण ना जाईआ। आदि जुगादी खेल महाना, खेले खेल बेपरवाहीआ। शाहो भूप बण साचा राणा, आपणी कल आप उपाईआ। आपे देवे धुर फ़रमाणा, धुर दी धारा आप उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, दर घर साचे सोभा पाईआ। दर घर साचा सोभावन्त, सति पुरख निरँजण आप सुहांयदा। आपे नारी आपे कन्त, नर नरायण वेस वटांयदा। आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। आपे मणीआ आपे मंत, आपे आपणा नाउँ दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर नूर उजाला, आदि पुरख दीन दयाला, दयानिध इक्क अख्वांयदा। दयानिध साहिब सुल्ताना, पारब्रह्म प्रभ आप अख्वांयदा। श्री भगवाना बण राज राजाना, हुक्म आपणा आप वरतांयदा। अबिनाशी करता वेखे सच मकाना, थिर दरबारे डेरा लांयदा। आदि निरँजण जोती नूर जगाए महाना, प्रकाश प्रकाश विच रखांयदा। एकँकारा आपे जाणे आपणा भाणा, सद भाणे विच समांयदा। हरि पुरख निरँजण

चतर सुघड़ सयाड़ा, इक्क इकल्ला वेस वटांयदा। सो पुरख निरँजण आपे होए जाणी जाणा, जानणहार दिस ना आंयदा। साचे तख्त बैठ सच्चा सुल्ताना, निरगुण आपणा हुक्म आप वरतांयदा। ना कोई चोबदार दिसे दर दरबाना, सीस जगदीस ना कोए झुकांयदा। ना कोई राग ना कोई गाना, तार सितार ना कोए वजांयदा। ना कोई पवण ना मसाणा, अग्नी तत्त ना कोए बणांयदा। ना कोए विष्न ब्रह्मा शिव वखाए पद निराबाणा, रूप रंग रेख ना कोए बणांयदा। ना कोए ज़िमी ना अस्माना, गगन मंडल ब्रह्मण्ड खण्ड रचन ना कोए रचांयदा। ना कोए धरत धवल ना कोई जल बिम्ब ना कोई खेले खेल दो जहाना, लोक परलोक ना कोए सुहांयदा। ना कोए चौदां लोक बन्ने गानां, चौदां तबक ना वण्ड वण्डांयदा। ना कोई त्रैगुण माया देवे दाना, रजो तमो सतो ना रंग रंगांयदा। ना कोए सूरज चन्न ना दिसे निशाना, मंडल मंडप ना कोए सुहांयदा। सचखण्ड दुआर वसे एका श्री भगवाना, साचे तख्त सोभा पांयदा। आपे वरते आपणा भाणा, भाणे विच आप रहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, दर दरबारा आप सुहांयदा। दर दरबारा ठांडा घर, सति पुरख निरँजण आप सुहांयदा। निरगुण निरवैर निराकार देवणहारा वर, सति सरूप झोली सति भरांयदा। आपे मंगे दर दरवेश अग्गे खड़, नर नरेश आप हो जांयदा। आप फड़ाए आपणा लड़, आपे पल्लू गंढु दवांयदा। आपणा घाड़न आपे घड़,
१३५४ घड़न भन्नणहार समरथ आपणा नाउँ धरांयदा। सचखण्ड दुआरे बैठा वड़, सच सिंघासण सोभा पांयदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख खेल खिलांयदा। ना जन्मे ना जाए मर, जूनी रहित वेस वटांयदा। मूर्त अकाल आपे धर, आपणा प्रकाश आपे डगमगांयदा। निरभउ आपणे दुआरे आपे खड़, भय होर ना कोए रखांयदा। आदि जुगादि ना जाए हर, आपणा बल आप धरांयदा। आपणी सरनी आपे पड़, आपे सीस झुकांयदा। आपे शाहो भूप बण सिक्दार, आपे रईयत नाउँ रखांयदा। आपे धुर फ़रमाणा देवे भण्डारा भर, आपणी हथ्थीं आप वरतांयदा। आपे थिर घर वेखे साचा नर, नर नरायण रूप प्रगटांयदा। आपणी नारी आपे लए वर, कन्त सुहाग आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकार, आप आपणा कर पसार, आपे होए वेखणहार, दूजा संग ना कोए रखांयदा। एकँकारा कर पसारा, आपे वेख वखाईआ। वसणहारा सचखण्ड दुआरा, थिर घर साचे दए वड्याईआ। निरगुण रूप अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर बेपरवाहीआ। करे खेल सच दरबारा, ठांडा घर वज्जे वधाईआ। आपे पुरख आपे नारा, नारी कन्त आप हो जाईआ। आपे सेजा सुत्ता पैर पसारा, आपे लए हरि अंगड़ाईआ। आपे अंदर आपे बाहर आपे गुप्त ज़ाहरा, आपे वेखे थाउँ थाँईआ। आपे सुत आप दुलारा, आपे होए बख्शंदी माहीआ। आपे राखे राखणहारा, आपे आपणा सीस हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा साचा घर, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। सो पुरख निरँजण घर सुहांयदा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। हरि पुरख निरँजण आसण लांयदा, एकँकारा पेखे चाँईं चाँईआ। आदि निरँजण डगमगांयदा, अबिनाशी करता पकड़े बाहींआ। श्री भगवान खुशी मनांयदा, पारब्रह्म आपणी चले आप रज़ाईआ। धुर दरबारा आप सुहांयदा, आपे बख्शे आपणी सच सरनाईआ। आपणा रंग आप रंगांयदा, रंग रंगीला साचा माहीआ। छैल छबीला आप अख्वांयदा, रूप अनूप सच्चा शहनशाहीआ। आपणा सीस जगदीस आप सुहांयदा, आपे वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, आपे करे सच न्याईंआ। सच न्याईं करनेहारा, एका एक अख्वाया। जुगा जुगन्तर हो उज्यारा, नाउँ निरँकारा आपणा नाउँ रखाया। आपे पिता आपे माई, आपे बाल सुत दुलारा जाया। आपे देवणहारा ठंडीआं छाईं, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। आपे थिर घर बैठा कुण्डा लाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुवारा एका घर, घर सुहञ्जणा आदि निरँजणा, एका दीपक रिहा जगाया। एका दीपक होए प्रकाश, पारब्रह्म प्रभ आप करांयदा। अबिनाशी करता ना जाए विनास, बिस्मिल आपणा रूप वटांयदा। श्री भगवान दासी दास, आपणी सेवा आप कमांयदा। आदि निरँजण आपे करे पूरी आस, इच्छया भिच्छया झोली पांयदा। एकँकारा साचे घर कर निवास,
१३५५ इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। हरि पुरख निरँजण शाहो शाबास, तख्त निवासी भेव ना आंयदा। सो पुरख निरँजण सर्ब १३५५
०६ गुणतास, आपणा रंग आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, दर दरवाज़ा ०६
इक्क वड्यांअदा। दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा, आपणा आप खुल्हांयदा। परवरदिगारा साजण साजा, नूर इलाही डगमगांयदा। निरवैर रचया आपणा काजा, निरगुण निराकार वेख वखांयदा। आपे बणया शाहो भूप वड राजन राजा, तख्त निवासी तख्त सोभा पांयदा। आपे शब्द अगम्मी मारे वाजा, चोबदार ना कोए रखांयदा। आपणे मन्दिर चार कुंट दहि दिशां आपे फिरे भाजा, आपणा पन्ध आप मुकांयदा। आपे शाह आपे नवाबा, आपे नौबत नाम वजांयदा। आपे रक्खे मुख नकाबा, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। आपे आपणे हथ्थ रखाए आबेहयाता, आपे अमृत जाम भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वसे साचे घर, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। दर घर साचा सुहञ्जणा, सति पुरख निरँजण आप सुहाया। जोत जगाए आदि निरँजणा, बिमल रूप डगमगाया। आदि जुगादी साचा सज्जणा, एकँकारा खेल खलाया। ना घड़या ना भज्जणा, ना कोई बणत वखाया। ना कोई धूढ़ ना कोई मजना, सरोवर नहावण ना कोए नहाया। आपणा आप चलाए जहाज़ना, सचखण्ड बैठा जोत जगाया। शब्द अगम्मी चढ़े ताजणा, अश्व आपणा आप उपाया। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला पुरख अकाल, करे खेल दीन दयाल, सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाल, दर दरवाज़ा ना कोए वखाया। सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, सो पुरख निरँजण आप उपाईआ। हरि पुरख निरँजण वड़या दीन दयाला, निज घर आपणा आप सुहाईआ। एकँकारा आपणी आप करे प्रितपाला, प्रितपालक वड वड्याईआ। आदि निरँजण जोत उजाला, नूरो नूर नूर समाईआ। श्री भगवान खेल निराला, काल महांकाल रिहा दबाईआ। अबिनाशी करता अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क जणाईआ। पारब्रह्म आपणी घालन आपे रिहा घाला, घाली घाल लेखे पाईआ। आपणा मार्ग इक्क सुखाला, सति पुरख निरँजण आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण घाड़न आपणा घड़, आपणे मन्दिर बैठा वड़, महल्ल अटल उच्च मुनार, आप सुहाए हरि निरँकार, दूसर संग ना कोए रखाईआ। दूसर ना कोई दीसे संग, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। सचखण्ड दुआर वजाए मृदंग, धुन नाद ना कोए वखांयदा। आपणे मन्दिर आपे लँघ, आपे वेख वखांयदा। आपे सूरा साहिब सरबंग, शाह पातशाह आपणा नाउँ वड्यांअदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, निरगुण जोत डगमगांयदा। चार दीवार ना दीसे कंध, छप्पर छन्न ना कोए छुहांयदा। ना कोई गाए सुहागी छन्द, रसना जेहवा ना कोए हिलांयदा। ना कोई गुर पीर अवतार मंगे मंग, साध सन्त ना सीस झुकांयदा। इक्क इकल्ला हरी
१३५६ हरि गोबिन्द, आपणा दर आप वड्यांअदा। आपे जाणे आपणा पन्ध, साचा पान्धी आप हो आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, १३५६
०६ आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा हरि वसनीक, इक्क इकल्ला लाशरीक, वाहिद आपणा नूर प्रगटांयदा। नूर नुराना ०६
परवरदिगार, मुकामे हक डेरा लांयदा। आदि जुगादी एका यार, मुकामे हक इक्क वखांयदा। लाशरीक मीत मुरार, आपणा अहिबाब आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा एका दर, दर दुआरा आप सुहांयदा। दर दुआर सुहाया, कर किरपा गुण निधान। आपणी इच्छया आप उपाया, आपे वेखे मार ध्यान। आपणी भिच्छया वण्ड वण्डाया, दाता दानी देवे दान। सुत दुलारा आप उठाया, शब्दी जोद्धा सूरबीर बलवान। धुर फ़रमाणा आप सुणाया, धुर दी बाणी लाया बाण। एका मार्ग दए जणाया, सति वखाए इक्क निशान। शाहो भूप हथ्थ उठाया, तख्त निवासी राज राजान। सीस आपणे ताज टिकाया, पंचम मुख देवे ज्ञान। सो पुरख निरँजण आपणा नाउँ प्रगटाया, शब्दी पाए एका आण। एका दोआ दोआ एका रंग समाया, मेल मिलावा हाणीआं हाण। सचखण्ड दुआरा इक्क खुलाया, अबिनाशी करता करे पछाण। सुत दुलारा एका जाया, जननी बणे श्री भगवान। दाई दया आप अख्वाया, करे खेल खेल महान। आपणा पर्दा आपे लाहया, आपे वसया लामकाम। सिफ्त सालाही आप खुदाया, आपणी रहिमत करे आप रहिमान। आपणा रूप आप प्रगटाया,

एका अक्खर गुण निधान। सोहँ साची धार जणाया, ना कोई लिख लिख करे ब्यान। शब्द दुलारा उठ उठ धाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, दरगाह साची धुर फ़रमाण। शब्द दुलारा सीस झुकांयदा, दोए जोड़ करे प्रनाम। प्रभ तेरा हुक्म सीस टिकांयदा, मिल्या धुर फ़रमाण। तेरी रचना रच वखांयदा, विष्नूं तेरा धरे ध्यान। अन्तर आत्म कँवल भरांयदा, नाभी प्रगट करे गुण निधान। ब्रह्म तेरी धार बंधांयदा, पारब्रह्म एका दान। शंकर सुन्न अगम्म समांयदा, धूंआँधार करे पछाण। तिन्नां एका रंग रंगांयदा, एका वेखणहारा करे पछाण। रूप अनूप आप दरसांयदा, महिमा अनूप श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपे देवे साचा दान। हरि साचा दान वरतांयदा, वड दाता गुणी गहीर। सुत दुलारा झोली पांयदा, मंगी मंग इक्क अख़ीर। बेपरवाह सिर हथ्थ रखांयदा, शाहो भूप वड पीरन पीर। मस्तक तिलक इक्क लगांयदा, एका बन्नॄ साचा चीर। तेरी खेल आप खिलांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत दित्ता वर, आपे बन्नॄणहार बीड़। हरि शब्दी बेड़ा बन्नॄया, कर किरपा साहिब सुल्तान। विष्न ब्रह्मा शिव आपे जणया, निरगुण निरगुण देवे माण। एका राग सुणाए कन्नया, वड दाता हो मेहरवान।
१३५७ आपणा भाण्डा आपे भन्नया, भन्नणहार श्री भगवान। शब्द सुत दुलारा मन्नया, तिन्नां लेखा लिखे आण। जोती जोत सरूप १३५७
०६ हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हथ्थ वखाउणा सच निशान। सुत दुलारा मंगदा, दोए जोड़ करे ०६
निमस्कारा। विष्न ब्रह्मा शिव खेल सूरे सरबंग दा, ना कोई जाणे पार किनारा। वेखे खेल परमानंद दा, घर मन्दिर होए उज्यारा। आपणा बन्नॄण किवें बन्नॄदा, आपणे हथ्थ डोर रक्खे करतारा। करे खेल सूरे सरबंग दा, शाह पातशाह सच्ची सरकारा। आपणी डोरी आपे गंढुदा, दिस ना आए अगम्म अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्न ब्रह्मा शिव देवे इक्क हुलारा। सच हुलारा आप दुवांयदा, ब्रह्मा विष्न शिव लए अंगड़ाईआ। शब्द दुलारा विच रखांयदा, विचोला बणया बेपरवाहीआ। धुर फ़रमाणा इक्क सुणांयदा, कागद कलम ना लिखे शाहीआ। सच गुफ्तार आप रखांयदा, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। जोत प्रकाश इक्क करांयदा, नूरो नूर डगमगाईआ। शब्द धुन इक्क उपजांयदा, बोध अगाध दए वड्याईआ। चरन ध्यान इक्क रखांयदा, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। हरन फरन आप खुलांयदा, आपणी बूझ आप बुझाईआ। निरवैर निराकार निरगुण एका वार ब्रह्मे विष्न शिव दरस दिखांयदा, साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार। पंचम मुख ताज आप टिकांयदा, आपे आपणी कर विचार। आपणी धार शब्द बणांयदा, पहलां आपणी करे कार। इक्क भण्डारा नाम वरतांयदा, विष्नूं विश्व करे प्यार। सच वरतारा आप अख्वांयदा, देवणहार निरँकार। ब्रह्मा

ब्रह्म दरसन पांयदा, नेत्र नैण उग्घाड़। चारे मुख मुख वखांयदा, पंचम मुख सीस दस्तार। आपणी वण्ड तेरी झोली पांयदा, देवे वस्त अपर अपार। आपणा राग नाद अल़ांयदा, धुन वजाए सच्ची धुन्कार। शंकर एका भेव खुल़ांयदा, आपणा खोल़े बन्द किवाड़। स्वच्छ सरूप नज़री आंयदा, अन्ध अन्धेर ना कोए अँध्यार। तिन्नां एका संग वखांयदा, शाह पातशाह बण सिक्दार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव वखाए आपणा दर, आपणा रूप अनूप आप प्रगटांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव दरसन पाया, दोए जोड़ करन निमस्कारा। पारब्रह्म वड्डी वड्याआ, सति सतिवादी तेरा सति दुआरा। हउँ सेवक बण के दर ते आया, मंगण आए मंग भिखारा। चरन कँवल कँवल चरन बैठे ध्यान लगाया, तेरा नूर ज़हूर अगम्म अपारा। निरगुण सरगुण खेल खिलाया, करया खेल आपणी धारा। तेरा दरस कवण दुआरे दूजी वार पाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच संदेशा इक्क सुणाया। सच संदेशा दए श्री भगवान, विष्न ब्रह्मा शिव भुल्ल ना जाईआ। तेरी खोल़ां इक्क दुकान, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाईआ। लोआं पुरीआं वेखां मार ध्यान, मंडल मंडप आप सुहाईआ। त्रैगुण माया देवां दान, पंज तत्त करां कुड़माईआ। लक्ख चुरासी रूप प्रगटाए विच जहान, लोकमात मिले वड्याईआ। जीव जंत हरि भगवन्त वेखणहारा साचा काहन, आत्म ब्रह्म एका रंग समाईआ। ईश जीव करे पछाण, जगदीश भेव ना राईआ। पंज तत्त देवे माण, पंचम विकार करे कुड़माईआ। पंचम शब्द इक्क ज्ञान, एका धुन वजाईआ। घर विच घर सच मकान, काया बंक दए वड्याईआ। आदि निरँजण नूर महान, जोत निरँजण दए जगाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, कँवल नाभ आप भराईआ। आत्म सेजा हो प्रधान, साची सेज हंढाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुनकान, गृह मन्दिर करे शनवाईआ। सख़ी मिले साचा काहन, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। चारे खाणी इक्क निशान, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज माण वखाईआ। चारे बाणी इक्क ज्ञान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाईआ। चारे वेद होण कुरबान, चारे जुग वण्ड वण्डाईआ। चार वरन बरन नादान, अठारां बरन वेखे थाउँ थाँईआ। लेखा जाणे ज़िमी अस्मान, एका एक सच्चा शहनशाहीआ। एका हुक्म धुर फ़रमाण, जुगा जुगन्तर आप सुणाईआ। माणस मानुख कर प्रधान, जीव आत्म दए वड्याईआ। देवणहारा साचा दान, दाता दानी इक्क अख्वाईआ। सन्त भगत आप आपणा रंग आपे माण, आपे मेले सहिज सुभाईआ। जुगा जुगन्तर खेले खेल सच्चा शहनशाह सुल्तान, सुरती शब्द वज्जे वधाईआ। लक्ख चुरासी गेड़ बणाए जीव जहान, कर्म कुकर्मा बन्धन पाईआ। चौदां विद्या कर प्रधान, नौ खण्ड पृथ्मी आप सुणाईआ। सत्तां दीपां करे पछाण, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, शब्द अनादी

१३५८
०६

१३५६
०६

नाद सुणाईआ। शब्द अनादी बोलया, कर किरपा हरि करतार। एका कंडे हरि जू तोलया, त्रैगुण माया तत्त भण्डार। सचखण्ड दुआरा आपे फोलया, निरगुण निरगुण पावे सार। आदि जुगादि रहे अडोलया, डोल जाए ना विच संसार। साची वस्त रक्खे कोलया, जुगा जुगन्तर बणे वरतार। आपणी सृष्टी आपे मौलया, मौला रूप सिरजणहार। आपे प्रगटे उप्पर धौलया, निरगुण सरगुण लै अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, भुल्ल ना जाए अभुल्ल गुर अवतार। भुल्लणहार अभुल्ल कदे ना भुल्लया, आदि जुगादि समाए। जुगा जुगन्तर पाए मुल्लया, करता कीमत आप चुकाए। लक्ख चुरासी फुल फलवाड़ी मौलया, पत टहिणी आप महिकाए। आपे भौरा गूंजे बण बण उप्पर धौलया, हरिजन साचे लए मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जूनी रहित पुरख अकाला, आपे जाणे आपणी चाला, ब्रह्मा विष्न शिव आप समझाए। ब्रह्मा विष्न शिव हरि समझांयदा, शब्द निष्अक्खर एका बोल। तिन्नां सेवा एका लांयदा, साची वस्त भण्डारा देवे खोल्ह। लक्ख चुरासी जीव उपांयदा, घट घट अंदर जाए मौल। सन्त भगत भगवन्त आप जगांयदा, लेखा जाणे धरनी धरत धौल। आपणा कौल आप निभांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा देवे वर, शिव आपणे हुक्म चलांयदा। ब्रह्मे तेरा जगत विहारा, पारब्रह्म ब्रह्म समझाया। लक्ख चुरासी कर प्यारा, त्रैगुण बन्धन पाया। विष्नूं तेरा वस्त भण्डारा, एका वार वरताया। शंकर तेरा जगत अखाड़ा, थिर कोए रहिण ना पाया। जो उपजे सो बिनसे अन्तिम वारा, पुरख अबिनाशी रचन रचाया। तिन्नां वचोला बणे सुत दुलारा, जगत विहारा रिहा वखाया। सतिजुग साचा कर पसारा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। सो पुरख निरँजण हो त्यारा, निरगुण आपणा रंग रंगाया। हँ ब्रह्म दए आधारा, स्वैम रूप सो पुरख निरँजण सोहँ आपणा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव रिहा खुलाया। हरि आपणा भेव खुलांयदा, आदि पुरख अगम्म अपार। तिन्नां एका गुर समझांयदा, कर किरपा निराकार। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लांयदा, जुग चौकड़ी आवे वारो वार। सतिजुग त्रेता द्वापर रूप प्रगटांयदा, कलिजुग वेखे काली धार। नौं नौं गेड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा, हरि का भेव ना जाणे कोई गुर पीर अवतार। बेअन्त बेअन्त बेअन्त सर्ब गांयदा, बेअन्त सच्ची सरकार। जुग करता आपणा रूप प्रगटांयदा, आदि जुगादी साची कार। सतिजुग धरत मात दी गोद सुहांयदा, सिर रक्ख हथ्थ समरथ करतार। साचा मार्ग इक्क वखांयदा, एका ब्रह्म कर पसार। आत्म ब्रह्म भेव चुकांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा साची कार ब्रह्मा सुत लए उभार। बराह रूप प्रगटाए निरँकार, यज्ञे पुरष दए अधार, हाव गरीव होए उज्यार, नर नरायण वड

वड्याईआ। कपल मुन पाए सार, दत्ता त्रै दए अधार, रिखभ बख्शे चरन प्यार, पृथू मंगे बण भिखार, मत्सय वसे जल धार, कच्छप आपणा रूप प्रगटाईआ। वैद धनंतर रिहा विचार, बावन रूप अगम्म अपार, हँसा बोले हँसा डार, हरी हरनाक्ष आपे मार, आपणा बल आप धराईआ। आपे नर नरायण बणे करतार, बेड़ा गज लाए पार, बालक ध्रू लए उभार, आपणा रूप आप धराईआ। सतिजुग आए अठारां वार, निरगुण सरगुण लै अवतार, नित नवित खेल खलाईआ। त्रेता रूप अपर अपार, करे खेल सच्ची सरकार, एका कल दोए विचार, ब्रह्मण सुत लाए पार, परस पारस रूप प्रगटाईआ। राम रामा हो उज्यार, दसरथ बेटा होए ख़बरदार, जनक सपुती करे प्यार, साचा चिल्ला आपे चाढ़, आपणा बल आप धराईआ। आपे फिरे जंगल विच पहाड़, आपे सीता स्वाणी करे खुवार, आपे रावण देवे गढ़ हँकार, आपे बानर गले लगाईआ। आपे मारनहारा मार, आपे डुब्बदे जाए तार, तीर कमान आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे ग़रीब निमाणयां पावे सार, आपे फूलन करे तन शंगार, जूठे बेरां आपे भोग लगाईआ। आपे उतरे आपणे पार किनार, त्रेते वेखे दोए दोए वार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। आपे त्रेता लए सँघार, आपे द्वापर करे पसार, आपे कुँवारी कन्या अंदर बन्ने आपणी धार, वेद व्यासा आपे रूप प्रगटाईआ। आपे पुराण अठारां गाए आपणी वार, चार लक्ख हजार सतारां सलोक गणाईआ। आपे नारद दए अधार, आपे सुरस्ती मारे वाज एका वार, छत्ती राग मुख सालाहीआ। आप मुकंद मुनोहर लख़मी नरायण होए उज्यार, आपे बंसरी नाम वजाईआ। आपे सख़ीआं मंगलचार, आपे गोकल मथरा बिन्दराबन करे आपणा विहार, आपे ग्वाला बण बण वेस वटाईआ। आपे बिदर सुदामा लाए पार, आपे द्रोपत सुत लज्जया रक्खे विच संसार, आपे गीता अर्जन आप दृढ़ाईआ। आपे पंजे पांडों बणाए चरन भिखार, आपे तोड़े गढ़ हँकार, दुष्ट दर्योधन आप खपाईआ । आपे रथ रथवाही बणे सच्ची सरकार, करे कराए आपणी कार, महांसाथी नाउँ धराईआ। आपे द्वापर करे ख्वार, आपे कलिजुग साचा लए उसार, लोकमात धरत मात रंग रंगाईआ। कलिजुग जगत कर पसार, हरि हरि खेल खिलाईआ। वेखणहारा हरि निरँकार, आपणा रूप प्रगटाईआ। एका हुक्म सच्ची सरकार, करे कराए करनेहार, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। मन मति बुध भरे हँकार, काम क्रोध लोभ मोह हलकाईआ। आसा तृष्ना करे शंगार, हउमे हंगता गढ़ बणाईआ। बुध बिबेकी इक्क उज्यार, बोध ज्ञान इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी खेल अवल्ला, करे कराए एका अल्ला, आलम भेव किसे ना आईआ। इक्क अलाही अल्ला नूर, आपणा खेल आप खलांयदा। एका कलमा सच तम्बुर, चौदां तबकां आप सुणांयदा। एका जोती नूर ज़हूर, लोकमात प्रगटांयदा। ईसा मूसा आसा मनसा पूर, मन मनसा आप गवांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी साचा हरि, आपणा खेल खिलांयदा। आपे कलमा कायनात, आलम उलमा आप पढ़ाईआ। आपे वेखे मार झात, ब्रह्म आपणा नाउँ रखाईआ। आपे ख़लक खुदाई वेखे इक्क इकांत, मुकामे हक सोभा पाईआ। आपे देवणहारा निजात, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे सदा पुच्छे वात, आप आपणा नूर दरसाईआ। आपे चार यारी बणे सज्जण साक, सालस आपणा खेल खलाईआ। आपे होया पाकी पाक, पतित पवित वड वड्याईआ। आपे चढ़या साचे राक, शाह पातशाह नाउँ धराईआ। आपे मारे इक्क पलाक, दो जहानां चरन पार कराईआ। आपे लक्ख चुरासी करे ख़ाक, उम्मत उम्मती वेख वखाईआ। आपे उतरे आपणे घाट, खेवट खेटा भेव ना राईआ। आपे विके आपणे हाट, दूसर कीमत कोए ना पाईआ। आपे सुत्ता आपणी खाट, पलँघ रंगीला इक्क हंढाईआ। आपे जाणे आपणी वाट, आपणा पन्ध आप मुकाईआ। आपे जाणे आपणी बातन बात, गुफ़तार गुफ़तार विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, अनक कल इक्क रघुराईआ। इक्क इकल्ला कल आपे धार, निरगुण सरगुण रूप वटाया। पुरख अबिनाशी खेल अपार, भेव अभेदा भेव दरसाया। पंज तत्त कर प्यार, काया चोला इक्क हंढाया। नानक निरगुण निराकार हो उज्यार, लोकमात वेस वटाया। धरनी धरत धवल हौला करे भार, सीस आपणे भार उठाया। मंगी मंग इक्क दुवार, दूजे दर ना मंगण जाया। पुरख अबिनाशी भर भण्डार, सति नाम मन्त्र इक्क दृढ़ाया। चार वरनां कराए वणज वापार, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाया। सृष्ट सबाई सांझा यार, पुरख अकाल इक्क वड्याआ। उच्ची कूक कूक गया पुकार, कलिजुग जीवां आप समझाया। महांबली उतरे निहकलंक नरायण नर अवतार, मात पित ना कोई जाया। साक सज्जण दिसे ना कोई संसार, जगत नारी ना कन्त प्रनाया। निरगुण जोत होए उज्यार, शब्द गुर डंका हथ्थ उठाया। सृष्ट सबाई पावे सार, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाया। ब्रह्मा विष्न शिव लए उठाल, सोया कोए रहिण ना पाया। करोड़ तेतीसा करे बेहाल, सुरपति राजा इंद दए दुहाया। किन्नर यच्छप ना गायण आपणा गाण, मृदंग अंग ना कोई लगाया। भुक्ख नंग कट्टे सर्ब जहान, सूरा सरबंग दया कमाया। किसे कोलों मंगण ना जाए कोई दान, पुरख अकाल देवणहार आप अख्वाया। जन भगतां तोड़े जगत जंजाल, लक्ख चुरासी दए कटाया। दीपक मस्तक वखाए साचा थाल, रवि ससि रहे शर्माया। नाम वस्त देवे सच्चा धन माल, चोर यार लुट कोए ना जाया। गुर नानक सिख्या गया सिखाल, बिन शब्द गुर अवर ना कोए जणाया। काया मन्दिर वेखणा सच्ची धर्मसाल, अठ्ठे पहर रिहा धुन गाया। बहत्तर ताल तलवाड़ा वज्जे एका ताल, भेव किसे ना पाया। गुरसिख गुर चरन प्रीती रीती घालण लैणी घाल, साचा मार्ग इक्क दरसाया। सतिगुर पूरा आदि जुगादि

जुगा जुगन्तर चले नाल नाल, ना मरे ना जाया। नेड़ ना आए काल महांकाल, जिस जन सतिगुर पूरे दरसन पाया। लाड़ी मौत होए बेहाल, नेत्र नैण ना किसे उठाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान, आप आपणा बल धराया। सृष्ट सबाई पाए एका आण, चार वरन करे सरनाया। एका हुक्म धुर फ़रमाण, नौं खण्ड पृथ्मी दए सुणाया। भगत भगवन्त लए पछाण, लक्ख चुरासी विच्चों बाहर कढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि जुग जुग आपणा वेस वटाया। नानक जोत अगम्म अपार, पुरख अकाल आप जगाईआ। अंगद करया अंगीकार, अंग लाया बेपरवाहीआ। वखाया घर सच्ची धर्मसाल, गृह मन्दिर वज्जी वधाईआ। चरन प्रीती निभी नाल, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। बिरध अवस्था अमृत आत्म मारया इक्क उछाल, अमरु अमृत रस चखाईआ। अमरदास हो किरपाल, रामदास जोत करे रुशनाईआ। रामदास मेला इक्क अकाल, अर्जन शब्द धुन शनवाईआ। करे खेल दो जहान, शाह पातशाह सच्ची वड्याईआ। सन्त भगत भगवन्त आपे भाल, गुरमुख गुरसिख सज्जण एका थाँ बहाईआ। गुरू ग्रन्थ त्रैगुण माया पंज तत्त लक्ख चुरासी फल लगाया डालू, अमृत रस विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इष्ट इक्क गुरदेव, एका शब्द आदि जुगादि करे सेव, गुर शब्द वड्डी वड्याईआ। गुर शब्द भेव न्यारा, हरि गोबिन्द खेल खिलांयदा।
१३६२ खड़ग खण्डा तेज कटारा, दोए धारा रूप प्रगटांयदा। शब्द गुर वसे न्यारा, गुरू ग्रन्थ वण्ड वण्डांयदा। जोत देह कर १३६२
०९ पसारा, हरि गोबिन्द घोड़े आप चढ़ांयदा। करे खेल सच्ची सरकारा, हरि हरि हरराय रूप समांयदा। बाल अवस्था पार ०९
किनारा, हरकृष्न भेव ना आंयदा। गुर तेग बहादर ठांडा दरबारा, तिक्खी धार नाल बंधांयदा। पुरख अकाल आपणा एका सुत दुलारा, गुर गोबिन्द नाउँ रखांयदा। सिँघ सूरबीर बलकारा, सिँघ आपणा वेस वटांयदा। एका शब्द बोल जैकारा, वाह वाह गुरू फ़तह गजांयदा। वाहिगुरू शब्द अपारा, वास्तक एका धाम सुहांयदा। पीआ प्रीतम मिल्या साचा यारा, दर घर साचे वेख वखांयदा। एका मंगे मंग भिखारा, नैण नैणां आप उठांयदा। हवनी हवन पार किनारा, जोती जोत डगमगांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा कर एका बख्शे खण्डा दो धारा, लुहार तरखाण ना कोई घड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि अजूनी रहित पुरख अकाल वरते वरतारा, आपणी कार कमांयदा। निरगुण रूप पुरख अकाल, गुर गोबिन्द अंग लगांयदा। साचे घर सच्ची धर्मसाल, एका वस्त झोली पांयदा। लेखा जाणे शाह कंगाल, अमृत भण्डारा हथ्थ फड़ांयदा। निराकार बण दलाल, लोकमात वेख वखांयदा। ग़रीब निमाणयां कर प्यार, चार वरन मेट मिटांयदा। वरन अवरनी हो त्यार, साची खेल आप खिलांयदा। करे खेल सति करतार, ऊँचां नीचां एका धाम बहांयदा। राउ रंक

इक्क प्यार, दीना नाथ अनाथ अनाथां गले लगांयदा। आप आपणा बन्ने हार, सगला साथ आप रखांयदा। आपणी रचना आप विचार, अमृत ताल इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, लोकमात लग्गी बसन्तर आप बुझांयदा। लग्गी बसन्तर लोकमात, जीव जंत रहे कुरलाईआ। पारब्रह्म सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट घट आपणा आसण लाईआ। आपणा जाणे जणाए आपे मन्त्र, गुर मन्त्र दए वड्याईआ। गुर गोबिन्द बणाए बणतर, अमृत आत्म इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच भण्डारा इक्क वरताईआ। सच भण्डारा अमृत रस, गुर सतिगुर आप बणाया। खण्डा फेरे हस्स हस्स, पंचम रूप आप धराया। बाणी बाण मारे कस, जप जी जाप जपत विच राया। आपणा मार्ग आपे दस्स, गुरमुख तेरा सच प्यार मिठ्ठा रस इक्क जणाया। धुर दरगाही आया नस्स, औदां जांदा दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका रूप रिहा दरसाया। एका रूप हरि दरसांयदा, निरगुण निरवैर पुरख अकाल। घट घट अंदर गोबिन्द नज़री आंयदा, चार वरन ना कोई विचार। ऊँच नीच अंदर आसण लांयदा, पारब्रह्म सच्ची सरकार। गुर गोबिन्द मेल मिलांयदा, फड़ फड़ मेले विछड़े यार। सतिजुग त्रेता द्वापर खेल खिलांयदा, कलिजुग आई अन्तिम वार। सच

१३६३ कटारा हथ्थ उठांयदा, दामनी दमके चमके एका वार। उच्ची कूक आप सुणांयदा, गुरमुख आए चल दुआर। मेरा खण्डा १३६३

०९ मुख तरसांयदा, रत्त पीवे कर प्यार। ब्रह्म मति इक्क जणांयदा, गुर मति दए अधार। सिँघ सूरा आप उठांयदा, सिँघ ०९

दया कर प्यार। गोबिन्द आपणी चाली आप चलांयदा, पहलों आपणे उप्पर करया वार। सीस धड़ धड़ सीस ना कोई रखांयदा, जगत जगदीस सच्ची सरकार। पंज प्यारे लेखे लांयदा, लेखा जाणे ना कोए जीव गंवार। साचा मन्त्र इक्क दृढ़ांयदा, एका इष्ट पुरख अकाल। आदि जुगादि वेस वटांयदा, गुर पीर लए अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे हरि, हरि साचा मेल मिलांयदा। गोबिन्द मेल मिलानया, पाया पारब्रह्म करतार। हथ्थ फड़ाए तीर कमानया, नीले चढ़या शाह अस्वार। जोद्धा सूरबीर बली बलवानया, खण्डा फड़े इक्क दो धार। लेखा जाणे दो जहानया, आप पछाणे आपणी वार। पिता पूत करे कुरबानया, सुत दुलारे आपे वार। सूलां सथ्थर सेज आप हंढानया, आपे राह तक्के साचे यार। साचा भण्डारा इक्क रखानया, ना कोई लिखे लिखणहार। पुरख अकाल होया मेहरवानया, गोबिन्द मिल्या आपे आण। लेखा मुके दो जहानया, पारब्रह्म देवे सच फ़रमाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका रूप श्री भगवान। सच संदेशा हरि नरेशा, गुर गोबिन्द आप जणाईआ। कलिजुग अन्तिम चुक्के लेखा, नौं

सौ चुरानवें जुग देण दुहाईआ। राह तक्कण तेरा ब्रह्मा विष्न महेषा, बैठे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका हुक्म रिहा सुणाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमाणा, पुरख अकाल आप जणाया। कलिजुग वरते एका भाणा, हरि भाणा वड वड्याआ। निहकलंक हरि पहरे बाणा, रूप रेख ना कोई वखाया। तेरा संग इक्क निभाणा, शब्दी तेरा नाउँ प्रगटाया। सम्बल वसे इक्क मकाना, लुहार तरखाण ना कोई बणाया। साढे तिन्न हथ्थ देवे दाना, घर घर विच लए बहाया। ना कोई पीणा ना कोई खाणा, आसा तृष्ना ना कोई वखाया। ना कोई राग ना कोई गाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे साचा वर, सच सनेहड़ा आप जणाया। गुर गोबिन्द सुणया हरि संदेश, घर साचे वज्जी वधाईआ। पुरख अकाल इक्क नरेश, साचे तख्त बैठा सच्चा पातशाहीआ। आदि जुगादि इक्क आदेस, जुगा जुगन्तर वड वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम लए वेख, निरगुण निरवैर पुरख अकाल जोती जामा भेख वटाईआ। शब्द गुर प्रगटे दस दस्मेश, गुर नानक मार्ग इक्क वखाईआ। सतिगुर पूरा ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव तेरा लेखा लए वेख, आदि आदि जो गया समझाईआ। चौथे जुग किसे ना चले कोई पेश, चारे वेद देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका जोत करे रुशनाईआ। एका जोत हरि निरँकारा, कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा। नाउँ रक्ख निहकलंक नर अवतारा, ब्रह्मा विष्न शिव वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां करे पार किनारा, त्रैभवण एका डंक वजांयदा। चौदां लोक लगाए इक्क अखाड़ा, निरगुण आपणा नाच नचांयदा। नौं खण्ड पृथ्मी वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, समुंद सागर फोल फुलांयदा। सत्तां दीपां लाए एका नाअरा, सो पुरख निरँजण एका ढोला गांयदा। चार वरनां करे ख्वारा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डांयदा। एका घर वखाए सच्चा दरबारा, थिर घर वासी आप खुलांयदा। निरगुण जोत करे उज्यारा, घट घट दीवा बाती आप जगांयदा। कमलापाती मीत मुरारा, पीआ प्रीतम संग निभांयदा। आलस निन्दरा वसे बाहरा, सुफ़न सखोपत जागरत तुरीआ आपणा नाद वजांयदा। आपे वसे साची पुरीआ, पुरी अनन्द आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका डंक शब्द दमामा, आप वजाए रमईया रामा, लेखा जाणे घनईया शामा, साची खेल आप खलांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, निहकलंक बली बलवान। शाह सुल्ताना रिहा जगाया, भुल्ला रहे ना कोए नादान। सम्मत वीह सौ सतारां बिक्रमी दए दुहाया, प्रगट होए वाली दो जहान। नौं खण्ड पृथ्मी एका चक्र दए फिराया, लेखा जाणे ज़िमी अस्मान। वाली हिन्द दए उठाया, हुक्मी हुक्म देवे धुर फ़रमाण।

१३६५ ०६

तख़्त ताज रहिण ना पाया, कलिजुग झूठा मिटे निशान। नौं खण्ड पृथ्मी जगत अखाड़ा दए वखाया, ख़ाली हथ्थ फिरे बलवान। सीस आपणे ताज टिकाया, दूजी मन्ने ना किसे दी आण। वीह सौ अठारां बिक्रमी एका डंका दए सुणाया, धुन उपजाए श्री भगवान। उन्नी उनीसा मूल चुकाया, मुख नकाब उठाए नौजवान। बीस बीसा राह तकाया, नाता तुटे पंज शैतान। काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाया, दीन मज़्ह़ब ना देवे कोए ज्ञान। राम किशन ओम सति ब्रह्म मति कलमा कायनात इक्क अमाम जणाया, सजदा सीस ना कोए झुकाईआ। नाम सति वाहिगुरू फ़तेह एका रंग रंगाया, एका रूप सर्ब दरसाईआ। एका इष्ट एका सृष्ट एका दृष्ट दए खुल्हाया, दूई द्वैती पर्दा आप चुकाईआ। सच बहिशत दए समझाया, सतिगुर चरन सच्ची सरनाईआ। सच स्वर्ग दए वखाया, सतिगुर पूरा एका नज़री आईआ। नूरो नूर नूर डगमगाया, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। बण के साकी साचा जाम दए प्याया, धुर दरगाही लै के आया सच सुराहीआ। सतिजुग बूटा दए लगाया, ना कोई सके मात उखड़ाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी विच्चों यारां लक्ख लए बचाया, बाकी राए धर्म दी झोली पाईआ। बिन हरि अन्त वेले ना होए कोए सहाया, नानक गोबिन्द दए गवाहीआ। गुरू ग्रन्थ ना किसे मनाया, मन दी मैल ना कोए धुआईआ। दूई द्वैती पर्दा ना किसे उठाया, घर घर पई लड़ाईआ। गुर गोबिन्द सूरबीर नज़र किसे ना आया, जगत सिख रोवण मारन धाहीआ। गुरमुख विरले दरसन पाया, जिस किरपा करी सच्चे शहनशाहीआ। कोट कोट जन्म दे पाप गंवाया, अमृत जाम इक्क प्याईआ। कलिजुग जीव आहलनिउँ डिगे बोट आप उठाया, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। साचा किला कोट आप बणाया, सम्बल नगर धाम वसाईआ। शब्द नगारे चोट लगाया, रणजीत नगारा वजाए बेपरवाहीआ। वरन गोत ना कोए बणाया, आत्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। पारब्रह्म सर्ब दए वखाया, जो चल आए सरनाईआ। कर्म कुकर्मा दए कटाया, जम की फ़ासी दए तुड़ाईआ। घनक पुर वासी जोत जगाया, अकल कल आप हो जाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद मठ बन्द ना किसे रखाया, शिवदुआले पा ना बैठा कोए फाहीआ। घट घट अंदर आपणा डेरा लाया, स्वांगी बैठा सांग रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, लक्ख चुरासी घाड़न घड़, आपे भन्न वखाईआ। ब्रह्मे तेरा घाड़न घड़या, हरि हरि वेख वखांयदा। विष्नूं तेरा भण्डार अपरया, लक्ख चुरासी कवण वरतांयदा। शंकर तेरा त्रिसूल फड़या, वेला अन्त सर्ब समझांयदा। नर नरायण एका हरया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, कलिजुग अन्तिम वेखे जगत तमाशा, त्रैगुण अतीता भगतन मीता, ठांडा सीता इक्क अखवांयदा। ठांडा सीता सतिगुर धार, गुर शब्दी नाउँ रखांयदा। सन्त भगत भगवन्त लए उभार,

१३६५ ०६

१३६६
०६

गुरमुख आपणे लेखे पांयदा। गुरसिखां करे सच प्यार, सच सुहञ्जणी सेज सुहांयदा। नौं दुआरे पार किनार, डूँघी भँवरी कँवरी फोल फुलांयदा। सुखमन नाड़ी टेढी बंक दए आधार, ईड़ा पिंगल पन्ध मुकांयदा। जोत निरँजण कर उज्यार, अन्ध अन्धेर गवांयदा। अमृत आत्म बख्शे ठंडी ठार, भर प्याला जाम प्यांअदा। बजर कपाटी तोड़ किवाड़, सच सिँघासण इक्क सुहांयदा। आत्म सेजा कर प्यार, सुरती शब्दी मेल मिलांयदा। साचा मन्दिर हरि निरँकार, आपणा खेल खिलांयदा। भगत वछल भगतन दए आधार, भगती मार्ग आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरा उजाड़े खेड़ा, सृष्ट सबाई भेड़ भेड़ा, धरत मात दा खुल्हा वेहड़ा, आप कराईआ। धरत मात तेरी सुण पुकार, निरगुण आपणी दया कमांयदा। कलिजुग अन्तिम चवीआं लै अवतार, निहकलंक नाउँ रखांयदा। दहि दिशां पावे सार, चार कुंट वेस वटांयदा। गुरमुख करे सच प्यार, साची सिख्या इक्क सुणांयदा। सतिगुर पूरा दीन दयाला, आदि अन्त होए कृपाला, कृपानिध गहर गुण ठाकर, सर्ब स्वामी सदा नेहकामी, अन्तिमजामी आपणी गति आप जणांयदा। गति मित जणाए जानण योग, गुरमुखां दए वड वडियाईआ। एका रस एका भोग, एका आत्म सुख समझाईआ। एका मुक्त एका मोख, गुरसिख तेरे चरनां हेठ दबाईआ। सति सतिवादी बख्शे साची ओट, सति पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। मनमुखां जीवां माया ममता भरी ना अजे पोट, जेहवा काग वांग कुरलाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना कढ्ढे वासना खोट, दुरमति मैल ना कोए धुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख सज्जण आपणी गोद उठाईआ। गुरसिख गोद उठांयदा, गुर सतिगुर वड मेहरवान। बोध अगाध जणांयदा, धुर दी बाणी ब्रह्म ज्ञान। हँकारी किला कोट आपे ढांयदा, शब्द अगम्मी मारे बाण। जगत वासना मूल चुकांयदा, बख्शे चरन कँवल ध्यान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां देवे जीआ दान। जीआ दान देवणहार दातारा, त्रैगुण विच कदे ना आया। स्वच्छ सरूपी भर भण्डारा, अनुभव रूप होए सहाया। एका एक एकँकारा, आपणी कल आप वखाया। कल मेटणहारा धुँदूकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा एका दान, नाम अमोलक काया गोलक, गुरसिख झोली आप भराया।

❊ २२ कत्तक २०१७ बिक्रमी ज्ञान सिँघ दे घर पिण्ड भोरछी ज़िला अमृतसर ❊

सति पुरख निरँजण ठांडा दरबारा, आदि जुगादी आप उपांयदा। सो पुरख निरँजण कर पसारा, महल्ल मुनारा आप

सुहांयदा। हरि पुरख निरँजण निराकारा, निरगुण आपणा खेल खिलांयदा। एकँकारा अगम्म अपारा, रूप रेख रंग ना कोए जणांयदा। आदि निरँजण नूर उज्यारा, जूनी रहित डगमगांयदा। पुरख अबिनशी भेव न्यारा, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह आप अख्वांयदा। श्री भगवान सच्ची सरकारा, शाहो भूप सच सुल्तान, तख्त निवासी सोभा पांयदा। पारब्रह्म प्रभ बण भिखारा, निरगुण निरगुण अगे करे निमस्कारा, सीस जगदीस आप झुकांयदा। सचखण्ड दुआरा इक्क किवाड़ा, आपणा आप उपांयदा। घर विच घर खेल न्यारा, करे कराए करनेहारा, थिर दरबारा वड वड्यांअदा। जोती जाता हो उज्यारा, सति सरूप शाह दारा, आपणी कल आप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला, नेहचल धाम आप उपांयदा। सति पुरख निरँजण सर्ब गुणवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सो पुरख निरँजण आदि अन्त, अनुभव प्रकाश समाईआ। हरि पुरख निरँजण महिमा बेअन्त, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। एकँकारा नारी कन्त, सच सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। आदि निरँजण बणाए बणत, आपणी रचना आप रचाईआ। अबिनाशी करता आपणा लेखा जाणे अगणत, लिखणहारा दिस ना आईआ। श्री भगवान सच सुहञ्जणा धाम सुहंत, सति सरूप सहिज सुखदाईआ। पारब्रह्म प्रभ बणे मंगत, दर दरबार अलक्ख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकारा,
१३६७ करे खेल अपर अपारा, आदि आदि आपणी खेल आप खलाईआ। सति पुरख निरँजण आदी आदि, आदि पुरख आपणा १३६७
०६ नाउँ धरांयदा। ना कोई ब्रह्म ना ब्रह्मादि, शब्द नाद ना कोए वजांयदा। ना कोई सन्त ना कोई साध, गुर पीर अवतार ०६
ना कोए अख्वांयदा। त्रैगुण माया वस्त ना लए कोए लाध, पंज तत्त ना कोए उपांयदा। ना कोई पृथ्मी ना आकाश, गगन मंडल सोभा कोई ना पांयदा। रवि ससि ना कोए प्रकाश, धरनी धरत धवल जल बिम्ब ना कोए टिकांयदा। ना कोई मंडल ना कोई रास, गोपी काहन ना कोए नचांयदा। ना कोई सेवक ना कोई दासी दास, इष्ट देव ना कोए मनांयदा। ना कोई अंदर मन्दिर बह बह करे वास, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर फेरा कोए ना पांयदा। ना कोई मात गर्भ वसे दस दस मास, नौं अठारां खेल ना कोए करांयदा। ना कोई विष्न ब्रह्मा शिव पूरी करे आस, करोड़ तेतीसा गण गंधर्ब नाच ना कोए करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकारा, आपे वसे सच मुनारा, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा हरि पसारा, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। ना कोई सुत ना दुलारा, मात पित ना कोए अख्वाईआ। ना कोई वस्त ना भण्डारा, ना कोई झोली रिहा भराईआ। ना कोई वणज ना वणजारा, चौदां हट्ट ना कोए खुलाईआ। त्रैगुण ना कोए पसारा, अवण गवण ना कोए वड्याईआ। ना कोई तीर्थ तट किनारा, जल

धारा ना कोए वहाईआ। ना कोई पवण ना सवारा, पवण पाणी ना कोए बणाईआ। ना कोई पुरख ना कोई नारा, ना कोई सेज रिहा हंढाईआ। ना कोई विद्या दूत करे पुकारा, सलोक गीत ना कोए गाईआ। ना कोई वेखे वेखणहारा, लक्ख चुरासी घाड़न ना कोए घड़ाईआ। ना कोई अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज दए हुलारा, खाणी बाणी ना कोए सुणाईआ। ना कोई वेद शस्त्र करे पुकारा, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, वसणहारा सच दरबारा, सचखण्ड दुआरा इक्क वड्याईआ। सचखण्ड दुआर सुहांयदा, कर किरपा गुण निधान। दूसर संग ना कोए रखांयदा, ना कोई शाहो भूप राज राजान। जगत मृदंग ना कोए वजांयदा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां ना करे कोए ध्यान। इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा, आदि जुगादी श्री भगवान। साचे तख्त सोभा पांयदा, पारब्रह्म सच्चा सुल्तान। हुक्मी हुक्म आप वरतांयदा, देवणहारा धुर फ़रमाण। दर दरबान ना कोए रखांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनुभव प्रकाशा खेल तमासा, पुरख अबिनाशा आदि निरँजण दर्द दु:ख भय भञ्जण, सचखण्ड दुआरे निरगुण जोती कर उज्यारे, निरवैर आपणी खेल खिलांयदा। निराकार निरवैर पुरख अकाल, इक्क अख्वांयदा। आदि जुगादी दीन दयाल, जागरत जोत डगमगांयदा। सचखण्ड दुआर वसे सच्ची धर्मसाल, थिर घर आपणा बंक वड्यांअदा। आपे शाह आपे कंगाल, आपणा वेस आप धरांयदा। आपणी आप करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सच दरवाज़ा ग़रीब निवाजा, आपणा रचे आपे काजा, रचनहार भेव ना आंयदा। हरि हरि काज रचांयदा, सचखण्ड दुआरा खोल्ह। आपणी बणत आप बणांयदा, आपे तोलणहारा तोल। निरगुण निरगुण वेख वखांयदा, आदि जुगादि वसे कोल। एका मन्दिर फोल फुलांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा एका हरि, निरगुण एका रूप प्रगटांयदा। निरगुण शाह सुल्तान, शाह सच्चा पातशाहीआ। निरगुण राजा राज राजान, निराकार इक्क अख्वाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप उपाईआ। ना कोई तीर ना कमान, चिल्ला हथ्थ ना कोए उठाईआ। ना कोई गात्रा रक्खे म्यान, हथ्थ कटार ना कोए उठाईआ। करे खेल वाली दो जहान, आपणी कल आप वरताईआ। हुक्मी हुक्म इक्क फ़रमाण, आपणा आपे दए सुणाईआ। सचखण्ड दुआरे हो मेहरवान, शाहो भूप सच राजन राज करे सच सच्ची शहनशाहीआ। साचे तख्त सुहांयदा, सो पुरख निरँजण आदि अन्त। हरि पुरख निरँजण सेव कमांयदा, लेखा जाणे आपणी बणत। एकँकारा वेख वखांयदा, आदि निरँजण होए सोभावन्त। अबिनाशी करता धुर फ़रमाणा आप अल्हांयदा, श्री भगवान मन्ने मंत। पारब्रह्म आपणी झोली आपे पांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका धुर धुर फ़रमाणा,

देवणहारा हरि हरि राणा, आपणा हुक्म आप वरतांयदा। सच्चा हुक्म सच्चा करतार, सच साचा आप वरताईआ। तख्त निवासी हो उज्यार, आपणी इच्छया आपणे विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। आपणी देवे आपे सिख्या, आपणी करे आप पढ़ाईआ। आपणा लेख आपे लिख्या, ना कोई रक्खे कलम शाहीआ। आदि जुगादि ना होए मिथ्या, अबिनाशी करता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म रिहा सुणाईआ। हरि एका हुक्म जणांयदा, कर किरपा गुण निधान। आपणा मेल आप मिलांयदा, निरगुण निरगुण देवे दान। निरगुण निरगुण संग निभांयदा, इक्क इकल्ला कर पछाण। सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा, दूसर अवर ना कोए मकान। चार दीवार ना कोए वखांयदा, छप्पर छन्न ना रक्खे कोए पछाण। अनुभव आपणी धार बंधांयदा, जोती नूर नूर महान। आपणा वेस आप वटांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा एका घर, नर हरि आपणा रंग रंगांयदा। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा, आपणा खेल खलाईआ। रूप वटाए अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। सति सतिवादी हो त्यारा, निराकारा आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे नारी आपे नारा, नारी कन्त आप हो जाईआ। आपे सेजा सुत्ता बण भतारा, आपे खेले खेल बेपरवाहीआ। आपे अंदर आपे बाहरा, आपे निरगुण मात पित बणे सुत दुलारा, दाई दाया आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा साचा घर, हरि जू अंदर बैठा वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, निरगुण आपणा रूप आप प्रगटाईआ। निरगुण अंदर निरगुण धार, सति पुरख निरँजण आप रखांयदा। सो पुरख निरँजण मीत मुरार, हरि पुरख निरँजण अंग समांयदा। एकँकारा कर प्यार, आदि निरँजण वेख वखांयदा। श्री भगवान ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। अबिनाशी करता ठांडा दरबार, सच दुआरा इक्क वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ दए आधार, आपणा आधार आप हो जांयदा। शब्द बणाया सुत दुलार, गोदी गोद जणांयदा। एका देवे धुर फ़रमाण, आपणा हुक्म आप सुणांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड कर त्यार, तेरी सेवा सच वखांयदा। ईशवर अंदर विश्व धार, विष्न एका रूप प्रगटांयदा। एका अमृत भर भण्डार, कँवल कँवला आप प्रगटांयदा। आपे अंदर आपे बाहर, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी वण्ड वण्डांयदा। सुन्न अगम्म हो उज्यार, नूर नूर नूर दरसांयदा। शंकर मीता एकँकार, साची रचना आप रचांयदा। तिन्नां विचोला बण शब्द दुलार, साचा मेला मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, आपे पिता आपे माता, जननी जन आप अख्वांयदा। आपे जननी जन जाया, सुत दुलारा साचा सुत। हरि जू हरि हरि खेल खलाया, वेस वटाया अबिनाशी अचुत। पुरख अकाल दया कमाया, आप सुहाई आपणी रुत। जूनी रहित वेस वटाया,

आपणा नूर किया उत्पत। पत डाल्ही आप महिकाया, आप सुहाए साची रुत। ब्रह्मा विष्न शिव आप धराया, शब्द नाल रलाया जेठा पुत। पुरख अबिनाशी आपणा मार्ग आपे लाया, लेखा जाणे दहि दिशा चार कुंट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वर एका हरि, एका नर नर नरायण आप हो जाया। नर नरायण सर्ब सुख दाता, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी इक्क ज्ञाता, ज्ञान ज्ञान विच रखाईआ। जुगा जुगन्तर बन्ह्रे नाता, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। विष्न शिव ब्रह्मा पुच्छे वाता, वास्तक एका रूप दरसाईआ। आपणी सुणाए आपे गाथा, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। एका जोत जोत ललाटा, नूर नूर नूर दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव एका इच्छया पूरी आप कराईआ। हरि इच्छया पूर करांयदा, आदि जुगादी गहर गम्भीर। साची सिख्या इक्क समझांयदा, शब्द अनादी देवे धीर। त्रै त्रै मेला आप मिलांयदा, नाम अगम्मी पाए ज़ंजीर। चेला रूप सर्ब प्रगटांयदा, सचखण्ड दुआरे बन्ह्रे बीड़। धुर फ़रमाणा धुर दी बाण लगांयदा, चरन चरनोदक बख्शे अमृत सीर। नेत्र नैणां दरस वखांयदा, सच महल्ले चढ़ अख़ीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, वड दाता गुणी गहीर। गुणी गहीर गहर गुण सागर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। विष्नूं देवे एका आदर, साची वस्त इक्क वखाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म रूप लोकमात होए उजागर, लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ाईआ। शंकर बणे अन्त सौदागर, जो घड़या भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां वचोला आपे बण, तत्त रिहा समझाईआ। एका तत्त हरि निरँकार, आत्म ब्रह्म जणांयदा। अन्तर अन्तर कर प्यार, एका रूप दरसांयदा। साचे मन्दिर हो उज्यार, निरगुण निरवैर डगमगांयदा। बूंद स्वाती ठंडी ठार, चरन चरनोदक मुख चुवांयदा। इक्क इकांती साचा यार, सगला संग आप निभांयदा। कमलापाती हो त्यार, तिन्नां एका रंग वखांयदा। महांसार्थी होए उज्यार, रथ रथवाही रथ चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची कारे आपे लांयदा। साची कार कमावणी, हरि सच संदेश सुणाया। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी पूरी करे भावनी, जिस तेरी बणत बणाया। जुग जुग पकड़ाए दामनी, दामनगीर आप हो जाया। लोकमात देवे ज़ामनी, वेले अन्त होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप खुल्हाया। ब्रह्मा विष्न शिव करन पुकार, दोए जोड़ चरन सरन निमस्कारा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी कवण रूप आवे विच संसार, पावे साडी सारा। लक्ख चुरासी तेरा वरतार, हउँ सेवक सेवादारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण सो वेला कवण वक्त, निरगुण दरस होए तुहारा। निरगुण दया कमांयदा,

पारब्रह्म करतार। विष्नूं ब्रह्मा शिव समझांयदा, पुरख अबिनाशी खेल अपार। त्रैगुण तेरा संग निभांयदा, पंज तत्त दए आधार। मन मति बुध तेरी झोली पांयदा, आत्म ब्रह्म निराकार। ईश जीव खेल खिलांयदा, लक्ख चुरासी वरते वरतार। जुग जुग आपणा वेस धरांयदा, माणस मानुख कर प्यार। आपणा नाउँ विच टिकांयदा, नाम दमामा वज्जे विच संसार। गुर पीर आप हो आंयदा, साध सन्त दए आधार। चारे वेद वेद समझांयदा, चारे मुख लए उग्घाड़। पुराण अठारां आप गणांयदा, शास्त्र सिमरत लए उभार। गीता ज्ञान आप दृढ़ांयदा, एका भगतन करे प्यार। अञ्जील कुराना आपे गांयदा, तीस बतीसा होए सहार। खाणी बाणी आप सुणांयदा, धुर दी बाणी मारे बाण। चार जुग चौकड़ी इक्क बणांयदा, गेड़ा देवे वारो वार। लक्ख लक्ख गेड़ा आप दुवांयदा, पुरख अबिनाश सच्ची सरकार। हुक्म अंदर सर्ब रखांयदा, चन्द सूरज फिर फिर थक्के आपणी वार। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग ब्रह्मे विष्न शिव तेरी सेवा लांयदा, जगत मनवन्तर कर खुआर। आपणा वेला आप सुहांयदा, नौं नौं चार उतरे पार। वेद व्यास गवाह रखांयदा, लेखा लिखे आपणी वार। नानक निरगुण कूक जणांयदा, निहकलंक उतरे महां बली अवतार। गोबिन्द साचा मार्ग इक्क सुहांयदा, सृष्ट सबाई पावे सार। वरना बरना पन्ध मुकांयदा, चार वरनां दस्से एका धार। अमृत जाम इक्क प्यांअदा, दूई द्वैती हउमे हंगता कर ख्वार। साचा ताज सीस टिकांयदा, शाहो भूप बण सिक्दार। पुरख अकाल इक्क मनांयदा, दोए जोड़ करे निमस्कार। लक्ख चुरासी आप समझांयदा, कलिजुग आए अन्तिम वार। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल निहकलंक जामा पांयदा, गोबिन्द सूरा हो कृपाल। सतिगुर सच्चा संग निभांयदा, जगत जुग जागरत जोत चले अवल्लड़ी चाल। वेद कतेब भेव ना आंयदा, ब्रह्मा विष्न शिव तेरी सुरत लए संभाल। कीता कौल भुल्ल ना जांयदा, ब्रह्मा ब्रह्म पुरी विच्चों लए उठाल, जोती जोत मेल मिलांयदा। शंकर तेरा बणे ना कोई दलाल, हथ्थ त्रिसूल आप सुटांयदा। सुरपति राजा इंद आपणी घालण जाए घाल, करोड़ तेतीसा संग ना कोई रखांयदा। विष्नूं बणे अन्त दलाल, विश्व आपणा रूप प्रगटांयदा। नाल रखाए काल महांकाल, दो जहानां फेरी पांयदा। गुरमुख सज्जण मीत मुरार, हरि निरँकार सच्ची सरकार, जुगां जुगन्तर लए भाल, लक्ख चुरासी विच्चों फोल फुलांयदा। लेखा तोड़े शाह कंगाल, ग़रीब निमाणे आप उठांयदा। आत्म अन्तर दीपक जोती देवे बाल, अज्ञान अन्धेर गवांयदा। अमृत आत्म रस देवे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकार, आदि जुगादी इक्क अवतार, निरभउ रूप सच्ची सरकार, भय सीस ना कोई रखांयदा। ना कोई भय भउ रक्खे सीस, भयानक रूप आप निरँकारा। करे खेल जगत जगदीश, कलिजुग अन्तिम हो उज्यारा। लेखा जाणे बीस इकीस, नौं खण्ड पृथ्मी

लावे एका नाअरा। छत्र झुलाए साचे सीस, लेखा जाणे धुर दरबारा। कूड़ी क्रिया जाए पीस, नाता तुटे काम क्रोध लोभ मोह हँकारा। शाह सुल्तानां करे ख़ाली खीस, दर दरबान ना कोई सहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला हरि जू हरि, हरी हरि मन्दिर बैठा वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, जोती जोत नूर उज्यारा। नूर उजाला हरि गोपाला, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। कलिजुग अन्तिम वेख वखाए शाह कंगाला, जगत जुगत वेस वटांयदा। लेखा जाणे काल महांकाला, आपणा मृदंग सूरा सरबंग एका नाम वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, वर दाता इक्क अख्वांयदा। हरिजन साचा हरि धराना, वरन गोत ना कोई जणांयदा। आपे खोले हरना फरना, नेत्र नैणा दरस दिखांयदा। नाता तोड़े मरना डरना, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। राए धर्म अन्त ना फड़ना, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। गुरमुख साचे शब्द घोड़े एका चढ़ना, सतिगुर पूरा आप चढ़ांयदा। वेले अन्त कन्त सन्त भगवन्त इक्क दुआरे वड़ना, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुरमुखां बख्शे साची सरना, सरन सरनाई इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इष्ट देव देव गुर दाता, सर्ब जीआं जीआं पित माता, मात पित पित पूत एका रंग रंगांयदा। एका रंग रंगावणहारा, रंग रंगीला इक्क चढ़ाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, सत्त समुंदर सागर मस रोवे शाहीआ। बसुधा कागद ना कोए पसारा, बनास्पत ना सेव कमाईआ। अठारां भार तुले आपणी वारा, एका तोला शहनशाहीआ। हरि का गुण ना किसे विचारा, बेअन्त कहे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता गहर गम्भीर, लेखा जाणे आदि अन्त अख़ीर, मधि आपणी खेल खलाईआ। हरि साची खेल खिलांयदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेखे आ। आपणा भेव ना किसे जणांयदा, सन्त साजण जुगा जुगन्तर रहे गा। आपणा मार्ग आपे लांयदा, आपे बणे जगत मलाह। आपणा नाम आप दृढ़ांयदा, राम कृष्न नानक गोबिन्द आपे जोत जगा। आपणा अक्खर आप पढ़ांयदा, निष्अक्खर रूप वटा। पैंतीस अक्खर रंग रंगांयदा, सतारां अक्खर बैठा आपणे विच टिका। बावन अक्खरी आप पढ़ांयदा, जिस गुरमुख दूई द्वैती पर्दा दए चुक्का। चारे कुंट दहि दिशां नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चौदां लोक चौदां तबक ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं आकाश प्रकाश गगन मंडल धरत धवल ज़िमी अस्मान दो जहान एका रूप दरसांयदा, निरगुण दाता पकड़े बांह। मूर्त अकाल सर्ब प्रितपाल घट घट वसे सभनी थाँ, थान थनंतर आप सुहांयदा। गुरसिखां बणे पिता माँ, बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, माणक मोती सोहँ सो चोग चुगांयदा। सदा सुहेला सिर रक्खे ठंडी छाँ, सतिजुग

१३७२ ०६

साचा राह वखांयदा। अन्तिम कलिजुग करे इक्क न्याँ, सालस कोए ना नाल लिआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा, करे कराए साची कारा, करता पुरख ना कोई सोग ना कोई हरख़, चिंता दुःख ना कोए रखांयदा। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निरगुण जोत ना सके कोई परख, जगत सुन्यार कसवटी हथ्थ ना कोए रखांयदा। गुरमुख विरला करे दीदार, जिस जन किरपा करे आप निरँकार, निर्धन सरधन सरधन निर्धन आपणे रंग रंगांयदा।

✻ २२ कत्तक २०१७ बिक्रमी ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे घर पिण्ड भलाई पुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✻

सद दरबारा हरि निरँकारा, आदि जुगादि लगांयदा। वस्त अमोलक इक्क भण्डारा, निरगुण आपणे हथ्थ रखांयदा। साचे कंडे तोले अगम्म अपारा, अतोल अतुल भेव ना आंयदा। सचखण्ड निवासी खोल्ह किवाड़ा, थिर घर साचे आप टिकांयदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शाहो भूप हुक्म सुणांयदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, नर नरायण धार चलांयदा। करे खेल अपर अपारा, आप अपरम्पर रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दरबारा आप सुहांयदा। सच दरबार श्री भगवान, आपणा आप सुहाईआ। तख्त बैठ नौजवान, शहनशाह करे सच्ची शहनशाहीआ। सति चढ़ाए इक्क निशान, निरवैर रूप दरसाईआ। आपणी रक्खे आपे आण, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। साचे मन्दिर बैठ मकान, सचखण्ड करे रुशनाईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाण, नर हरि आपणा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा एकंकरा, एका एक वखाईआ। सच दरबारा शाह सुल्तान, एका एक सुहांयदा। तख्त निवासी वड मेहरवान, आपणी रचना आप रचांयदा। निरगुण बण बण दानी दान, दाता दातार दया कमांयदा। सति सति सति कर वरतार, सति सतिवादी खेल खिलांयदा। एका वस्त अपर अपार, अनादी आपणे हथ्थ रखांयदा। आपणे दर बण भिखार, आपणी इच्छया भिच्छया झोली पांयदा। आपणा रंग रंग निरँकार, रंग रंगीला इक्क हो जांयदा। आपणा कबीला कर त्यार, बंस सरबंस आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा आप सुहांयदा। सच दरबारा सोभावन्त, सति पुरख निरँजण आप सुहांयदा। उप्पर बैठ श्री भगवन्त, पुरख अकाल आसण लांयदा। आपणी महिमा आपे जाणे बेअन्त, बेपरवाह भेव ना आंयदा। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, आदि मध अन्त वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दरबारा थिर घर वासा, निरगुण जोत जोत प्रकाशा, अनुभव आपणा रूप धरांयदा। सच दरबारा

अनुभव धार, सति सति विच समाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, खेले खेल सहिज सुखदाईआ। दर घर सुहाए ठांडा ठार, सीतल धार आप वहाईआ। ना कोई दीसे चार दीवार, दिशा वण्ड ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा हरि निरँकारा, एका एक सुहाईआ। सच दरबार सुहांयदा, इक्क इकल्ला एकँकार। आसण सिँघासण आप विछांयदा, अबिनाशी करता बेऐब परवरदिगार। साची रासी रचन रचांयदा, करे खेल आप करतार। शाहो शाबासी भेव ना आंयदा, कहिणी कथनी वसे बाहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दरबारा इक्क सुहाए, सचखण्ड दुआरे आप रखाए, पावा चूल ना कोए बणांयदा। सच दरबारा साचे घर, हरि साचा सच सुहांयदा। सो पुरख निरँजण घाड़न घड़, पुरख समरथ दया कमांयदा। हरि पुरख निरँजण आपे फड़, आप आपणा जोड़ जुड़ांयदा। एकँकारा अंदर वड़, निज घर आपणे वेख वखांयदा। आदि निरँजण जोती नूर अग्गे धर, प्रकाश प्रकाश डगमगांयदा। श्री भगवान देवे वर, वर घर एका एक वड्यांअदा। अबिनाशी करता सरनी पड़, सर्ब सुख इक्क वखांयदा। पारब्रह्म आप बंधाए आपणा लड़, दूसर संग ना कोए रखांयदा। सच दरबार हरि निरँकार सच सिँघासण पुरख अबिनाशन आपे बैठा चढ़, साचे तख्त आसण लांयदा। ना कोई किला कोट दिसे गढ़, बाढी बणत ना कोए बणांयदा। ना कोई दरबान सोहे दर,
१३७४ दर दरवेश ना कोए वखांयदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख कार कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १३७४
०६ किरपा कर, सच दरबारा हरि निरँकारा, आपणा आप सुहांयदा। सच दुआर सहिज सुख मन्दिर, सो पुरख निरँजण आप ०६
उपाया। आपे वेखे आपणे अंदर, वेखणहारा दिस ना आया। आपे लेखा जाणे आपणी डूँघी कंदर, महल्ल अटल ऊँच मुनार आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दरबारा इक्क पसारा, दहि दिशा सहारा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाया। दर दरवाज़ा खोल्हया, कर किरपा गुण निधान। पुरख अबिनाशी आपणा तोल आपे तोलया, निरगुण होया मेहरवान। एका तख्त आदि जुगादि रहे अडोलया, अडोल अडुल श्री भगवान। साची वस्त रक्खे कोलया, देवणहारा आपे दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा धुर फ़रमाण। धुर फ़रमाणा हरि का नाउँ, हरि हरि आप जणांयदा। सचखण्ड दुआरे वसे सच ग्राउँ, नेहचल आपणा आसण लांयदा। आपे करे आपणा सच न्याउँ, अदल आदल आप हो जांयदा। आपे रक्खे आपणी ठंडी छाउँ, समरथ पुरख आपणा हथ्थ आपणे सीस टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा निर्भय रूप उपाए सच्चा करतारा, भय अवर ना कोए जणाया। सच दरबारा उच्च अपारा, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार आप उपांयदा। ज़िमी अस्मान ना देवे कोए सहारा, धवला भार

ना कोए चुकांयदा। रवि ससि सूरज ना कोए उज्यारा, आफ्ताब ना रूप वटांयदा। निरगुण निराकार करे खेल अपर अपारा, दीवा बाती कमलापाती निरगुण जोत डगमगांयदा। आपणे मन्दिर आपे खोल्हे ताकी, वेखे मार झाती, अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर आपणा रूप प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड धुर दरबारा वसया पारब्रह्म प्रभ आप वसांयदा। सच दुवारा सच्चा शहनशाह, सच दुवारे सचखण्ड दुआरे आप वसाईआ। करे खेल सच्ची दरगाह, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। उप्पर बैठ करे इक्क सलाह, वड दाता सिफ्त सलाहीआ। आपणा मार्ग आपे पा, आपे वेखे थाउँ थाँईआ। आपणा नाउँ आप प्रगटा, नाउँ निरँकारा आप सुणाईआ। आपणे दर दरबान दर दरवेश ल्ए बहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे सोभा पाईआ। सच दरबार उपाया, कर किरपा गुण निधान। सचखण्ड दुआर सहाया, सत्त रंग झुलाए निशान। तख्त निवासी तख्त उपाया, शाहो भूप राज राजान। निरगुण बह बह आसण लाया, जोद्धा सूरबीर बलवान। सीस एका ताज टिकाया, किरपा कर श्री भगवान। हुक्मी हुक्म आप वरताया, आप आपणी कर पछाण। आपणी रचना आप रचाया, देवणहारा साचा दान। विष्न ब्रह्मा शिव जाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार करे परवान। साचे दर कर परवाना, आपणा खेल खिलांयदा। त्रै त्रै देवे एका दाना, त्रै जोड़ जुड़ांयदा। एका नाद एका गाना, एका धुन उपजांयदा। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका घर वखांयदा। इक्क नूर इक्क ज़हूर एका जोत श्री भगवाना, एका हरि डगमगांयदा। एका पीणा एका खाणा, एका तृप्त करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म आप सुणांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव आप उपाया, आपणा दर दए वखाईआ। सच दरबारे आसण लाया, शाहो भूप वड वड्याईआ। तिन्नां एका दर दरसन पाया, नेत्र नैण नैण बिगसाईआ। चरन कँवल सीस झुकाया, हरि तेरी वड वड्याईआ। तूं दाता सर्ब सुखदाया, हउ सेवक भिखक आए चल सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देणा साचा वर, एका वस्त हथ्थ फड़ाईआ। एका वस्त हथ्थ फड़ौणी, विष्न उच्ची कूक पुकारया। ब्रह्मा मंगे मंग एका नूर तेरा रूप दरसौणी, दरस तरस अगम्म अपारया। शंकर करे पूर भौणी, भावन भावना विच समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सरूप शाहो भूप आप जणा रिहा। सति सरूप हरि जणाया, रूप रंग रेख ना कोए। जोती जोत डगमगाया, स्वच्छ सरूपी आपे होए। साचे तख्त सोभा पाया, देवणहारा साचे ढोए। एका शब्द नाम दृढ़ाया, एका बीज साचा बोए। एका लड़ आप फड़ाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारे बैठा चढ़, आलस निन्द्रा विच कदे

ना सोए। ब्रह्मे विष्न शिव हरि जणांयदा, शब्द अगम्मी एका बोल। निरगुण आसण इक्क विछांयदा, आदि जुगादी हरि अडोल। सच दरबारा आप वड्यांअदा, वजदा रहे अगम्मी ढोल। आपणी जोत आप जगांयदा, आपणे अंदर आपे जाए मौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादि ना जाए भुल्ल। आदि जुगादि कदे ना भुलया, पारब्रह्म करतार। भाग लगाए आपणी कुलीआ, विष्नूं विश्व कर त्यार। ब्रह्मा विष्न शिव देवे भण्डार अनमुलया, वड दाता हरि निरँकार। सच दुआरा एका खोलया, आदि पुरख साची कार। आपणे कंडे आपे तोलया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जाता पुरख बिधाता, आपे करे आपणी कार। साची कार करावणहारा, एका रंग समाया। तिन्नां देवे इक्क सहारा, एका गुण जणाया। एका तत्त सति भण्डारा, त्रैगुण दरसी आप वरताया। त्रै त्रै करे सच प्यारा, पंचम लेखा आप समझाया। लक्ख चुरासी बण भिखारा, घट घट भाण्डा आप सुहाया। निरगुण दीपक जोती कर उज्यारा, घर मन्दिर करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा वड वड्याआ। वड वडियाई देवण योग, एका एक अख्वांयदा। आदि अन्त ना होए विजोग, साचा मेला मेल मिलांयदा। लेखा आपणे हथ्थ रक्खया धुर संजोग, दूसर संग ना कोई रखांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव सुणाया इक्क सलोक, सो पुरख निरँजण आपे

१३७६ गांयदा। हँ बणाए चौदां लोक, लक्ख चुरासी विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा १३७६

०९ साचा वर, साचा भेव आप जणांयदा। आपणा भेव आप जणाया, आपणी दया कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा लाया, लक्ख ०९

चुरासी घाड़त रिहा घड़ाईआ। नौं नौं चार गेड़ आप दवाया, साचे तख्त बैठ सच्चा शाहीआ। गुर पीर अवतार साची सेव लगाया, एका वस्त झोली पाईआ। आपणा नाउँ दए सुणाया, निरगुण निरवैर आपणा नाउँ धराईआ। जुग चौकड़ी खेल खिलाया, कोहलू चरखा चक्की चक्क आप भवाईआ। साध सन्त गुर पीर अवतार कोई रहिण ना पाया, जो भेजे सो आपणे विच मिलाईआ। आपणी सेजे आपे बह बह आसण लाया, वाह वाह सतिगुर वड्डी वड्याईआ। पुरख अकाल शाह पातशाह, आप अख्वाया, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड आपणे हुक्म विच फिराईआ। जेरज अंड विच कदे ना आया, मात गर्भ ना सेज सुहाईआ। पंज तत्त काया चोला दए वड्याआ, जिस विच आपणी धार टिकाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग ब्रह्मा विष्न शिव तेरा पन्ध मुकाया, करे खेल साचा राहीआ। साचे अश्व सच सिँघासण पुरख अबिनाशी एका पाया, शाह अस्वार एका आसण लाईआ। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां रिहा दौड़ाया, आप आपणा बल धराईआ। चार जुग जुग रहे ना राया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा आप सुहाईआ। चार जुग हरि गेड़ चुकाया,

नौं नौं पन्ध मुकांयदा। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, निरगुण रूप प्रगटांयदा। सति सतिवादी फेरा पाया, ब्रह्म ब्रह्मादि खोज खुजांयदा। अनादी नाद इक्क वजाया, तुरीआ राग अलांयदा। स्वांगी स्वांग इक्क वटाया, भेव कोई ना पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव तेरी फांदी लए कटाया, त्रैगुण तोड़ तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए साचा घर, दर घर साचा आप सुहांयदा। दर घर सच्चा सुहावण आया, निरगुण जोती जामा धार। ब्रह्मा विष्न शिव तेरी आस पूरी करावन आया, निहकलंका लए अवतार। लोकमात आपणा खेल खिलावण आया, ख़ालक खलक वेखे परवरदिगार। ख़लक नूर आप चमकावण आया, नूर नुराना हो उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्ची सरकार। सच्ची सरकार हरि निरँकारा, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। जो उपजे सो बिनसे आपणी वारा, थिर मात रहिण ना पाईआ। जुग चौकड़ी गए हारा, गुर पीर अवतार सेव कमाईआ। आदि अन्त ना जाणे कोई किनारा, अद्धविचकार तारीआं लाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव मंगन इक्क सहारा, घाट बैठे साचे माहीआ। नौं नौं चार उतरे पारा, करे खेल बेपरवाहीआ। चप्पू लाए अगम्म अपारा, सो पुरख निरँजण घाड़न आप घड़ाईआ। हँ ब्रह्म दए सहारा, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ । लोकमात होए उज्यारा, जोती जोत कर रुशनाईआ। सच वखाए इक्क दरबारा, जिस तख्त हरि जू आसण लाईआ। सिँघ सवरन तेरी सुणे पुकारा, पूर्ब जन्म भुल्ल ना जाईआ। मुस्लिम सुन्नी दए सहारा, शरअ शरीअत मेट मिटाईआ। तेरी भुल्ले ना तिक्खी धारा, नकाब काया विच लगाईआ । तेरा सलब किया आपणा खून ठंडी ठारा, रत्ती रत्त जगत रंगाईआ। इक्क वखाए सच्चा दरबारा, सतिगुर पूरा आप उपाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, चार वेद मुख शर्माईआ। हरि का तख्त सभ तों न्यारा, राज राजान शाह सुल्तान लोकमात हथ्थ किसे ना आईआ। जो जन बणे दर भिखारा, कर किरपा दए वखाईआ। आसा तृष्ना करे दूर किनारा, सांतक सति सति कराईआ। नाटक चेटक नटूआ करे अगम्म अपारा, कलिजुग बाजी रिहा पाईआ। मुल्ला काज़ी शेख़ मुसायक पीर जूए जन्म हारा, हार जित हथ्थ किसे ना आईआ। पंडत पांधा रोवे ज़ारो ज़ारा, जोत लिलाट मस्तक टिक्का ना कोई लगाईआ। ग्रन्थी पन्थी मारे नाअरा, पतित पुनीत पतित पावन दिस किसे ना आईआ। लक्ख चुरासी जीव रिहा कुँवारा, हरि कन्त ना कोई प्रनाईआ। गुरमुखां वखाए सच दरबारा, कर किरपा हरि रघराईआ। जिस जन दया कमाए दरस दिखाए सिरजणहारा, सगली चिंत दए गंवाईआ। घर सख़ीआं मंगलचारा, वाह वाह वज्जदी रहे वधाईआ। सतिगुर पाया एका वारा, विछड़ कदे ना जाईआ। ठांडा दिसे इक्क दरबारा, अग्नी तत्त दए बुझाईआ। करया खेल अपर अपारा, कलिजुग जीव भेव ना राईआ। पहलों आपणा आप पंज तत्त काया चोली साड़ा, जगत

निशान दए मिटाईआ। फेर लाया शब्द अखाड़ा, गुरमुख सखीआं नाच नचाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता आप वजाए ताल तलवाड़ा, घर तार सितार हिलाईआ। दिवस सुहाया सतारां हाढ़ा, गुरसिख तेरी अग्नी आपणी झोली पाईआ। इक्क बणाया सच दरबारा, सचखण्ड रूप दरसाईआ। जगत वखाए नौं दुआरा, गुरसिखां नौं दुआरे पन्ध मुकाईआ। आदि अन्त करे पार किनारा, लक्ख चुरासी दए छुडाईआ। गुरमुख गुरमुख हरिजन हरिजन वखाया, इक्क सच्चा दरबारा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन कँवल कँवल चरन सच्ची सरनाईआ।

१३७८

०६

०६

❊ २३ कत्तक २०१७ बिक्रमी ऊधम सिँघ दे घर जलालाबाद ज़िला अमृतसर ❊

सतिगुर पूरे धन खट्टया, एका नाम वस्त अनमोल। तोल तुले ना किसे वट्टया, आदि जुगादि रहे अडोल। हट्टी विच टंगे ना कोई फड़के उत्ते फटया, बणया रहे सदा अनभोल। जन भगतां आवण जावण हरि जू कट्टया, निज आत्म वसे कोल। कूड़ी ख़ाक ना घट्टया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच भण्डारा देवे खोल्ह। सच भण्डारा खोल्हया, हरि सज्जण मीत मुरार। बिन रसना जिह्वा रिहा बोलया, शब्द अनादी कूक पुकार। करे खेल हौली हौलया, निरगुण सरगुण दए अधार। आपणी शक्ती आपे मौलया, रूप रंग ते वसया बाहर। पूरा करे कीता कौलया, भुल्ल ना जाए विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कराए वणज सच्चा वपार। वणज वापारा साचा हट्ट, घर मन्दिर आप खुल्हांयदा। आपणी कीमत आपे वट्ट, आपणे पल्ले गंढु बनांयदा। जुगा जुगन्तर खेल बाज़ीगर नट, नर नरायण वेस वटांयदा। वसणहारा घट घट, लक्ख चुरासी डेरा लांयदा। सन्त साजण कर प्रगट, पारब्रह्म ब्रह्म वेख वखांयदा। साची वस्त थाएँ घत्त, साचा खाता आप भरांयदा। सिर रक्खे आपणा हथ्थ, अतोट अतुट वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आपणा नाउँ आप वड्यांअदा। वड वडियाई हरि हरि नाउँ, पारब्रह्म आप वड्याईआ। लेखा जाणे पिता माउँ, बालक सुत दए वड्याईआ। आदि जुगादी करे सच न्याउँ, जुग जुग दाता सच्चा शहनशाहीआ। हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, अमृत रस अमिउँ रस चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अभुल्ल वड्डी वड्याईआ। अभुल्ल हरि करतारा, भेव कोए ना पांयदा। कोटन कोटि जुग आपणी चले आपे कारा, करता पुरख खेल खिलांयदा। जन्म अजन्म वेखे विच संसारा, कर्म कुकर्मा खेल खिलांयदा। भगत भगवन्त खेल न्यारा, सन्त साजण दया कमांयदा। खेवट खेटा बण सहारा, साचा बेड़ा आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग एका लांयदा। हरि मार्ग अपार, आदि जुगादि लगाया। राह जाणे निरगुण धार, मघ पन्थ ना कोए दसाया। निरवैर गुफ्त करे शुनीद दीद अपर अपार, वाहिद आपणा राग अल्लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग बेड़ा रिहा चलाया। जुग जुग बेड़ा हरि बन्नू, आपणी खेल खिलांयदा। आपणी वण्ड वण्डाए साचे धन, नाम निधाना आपणे हथ्थ रखांयदा। आपणी सिख्या आपे मन्न, आपे हुक्म वरतांयदा। आपे घड़े आपे लए भन्न, घड़न भन्नणहार पुरख समरथ, आपणी चाल आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अचरज रूप आप प्रगटांयदा। अचरज रूप हरि करतारा, आचारीआ वरन कोए ना जाईआ। ब्रह्मण ब्रह्म ना कोए पसारा, पारब्रह्म ना कोए सरनाईआ। रवी रवि ना कोए उज्यारा, दासी दास ना सेव कमाईआ। कंगण तन ना कोए शंगारा, जोबन जगत ना कोए हंढाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, दो जहानां वेख वखाईआ। पूर्ब लहिणा जन्म कर्म विचारा, भरमी भरम दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बिरद आपे रिहा तराईआ। आपणा बिरद आपे रक्ख, आदि जुगादि समांयदा। जुगां जुगन्तर हो प्रतक्ख, रूप अनूप आप प्रगटांयदा। आपे जाणे आपणा पक्ख, किशना सुकला मुख शर्मांयदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, साचे मरग आपे पांयदा। आपे हिरदे अंदर जाए वस, हरि के पौड़े आप चढ़ांयदा। आपे लेखा जाणे नस्स नस्स, दूर दुराडा पन्ध मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव आप जणांयदा। भेव जणावे जीव जंत, जगत जहान दया कमाईआ। त्रैगुण माया रूप बेअन्त, नाना प्रकार करे रुशनाईआ। इक्क विसरे हरि हरि कन्त, घर मन्दिर ठौर ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लहिणा वेखे थाउँ थाँईआ। पूर्ब लहिणा कर विचार, नौं नौं जन्म दुवांयदा। रविदास चुमारा मारे मार, नेत्र नैणा तीर चलांयदा। ख़ाकी ख़ाक मिलाए दर दरबार, शाह सुल्तान सीस ताज ना कोए टिकांयदा। गंगा गोदावरी ना कोए आधार, रूप अनूप ना कोए तरसांयदा। गंगा राम की करे पुकार, आपणी कीती आपे भुल्ल जांयदा। साचे दर मंगी मंग बण भिखार, निउँ निउँ दोए जोड़ सीस झुकांयदा। रविदास चुमार एका डोर बंधी कर प्यार, तन्दन तन्द हथ्थ रखांयदा। ढोए ढोर विच संसार, जगत खलड़ी आपणी सेज सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पूर्ब लहिणा वेख विखांयदा। गंगा राम कर पुकार, रविदास चुमार अग्गे कुरलाया। तेरा संग भुलया मीत मुरार, तेरा कसीरा हथ्थ किसे ना आया। राह भुल्लया बेनज़ीर, खुदी रूप इक्क वटाया। जगत माया पाया इक्क ज़ंजीर, ना सके कोए तुड़ाया। वेला आया अन्त अख़ीर,

१३७६ ०६

देवणहारा शाह सज़ाया। ना कोई कट्टे मेरी भीड़, श्री भगवान दिस किसे थाँ ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पूर्ब लेखा दए वखाया। जगत ब्रह्मण कर प्यार, नेत्र नैणां नीर वहांयदा। लेखा जाणे रविदास चुमार, रवीदास आपणा खेल खिलांयदा। एका नेत्र एका वार नैण उग्घाड़, नौं दुआरे वासना खोटी आप कढांयदा। पतित पापी कवण दुआरे उतरे पार, पतित पुनीत कवण करांयदा। कवण गीत ढोला गाए विच संसार, साचा सोहला कवण सुणांयदा। कवण तोला बणे तोलणहार, कवण कंडा हथ्थ उठांयदा। कवण विचोला होए अन्तिम वार, जगत लहिणा मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आपणा आप जणांयदा। नौं दुआर मार झात, रवीदास दया कमाईआ। जगत ब्रह्मण नौं जन्म तेरी लोकमात चढ़े बरात, माणस माणस रूप वटाईआ। अठ्ठ तत्त अठ्ठ जन्म पए खात, खात खाता सके ना कोए फोलाईआ। कलिजुग अन्तिम आए अन्धेरी रात, तेरा रूप अनूप लए प्रगटाईआ। तेरी दुरमति मैल देवे काट, जिस तेरी बणत बणाईआ। इक्क वखाए साचा हाट, दूजा हट्ट ना कोए जणाईआ। तेरा लहिणा देणा चुकाए तीर्थ ताट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आपणे चरनां हेठ दबाईआ। लेखा जाणे जिउँ बालक पिता मात, पूत सपूता गले लगाईआ। तेरा लेखा चुकाए हाथों हाथ, गंगा माई प्रेम कंगण आपणे हथ्थ छुहाईआ। सदा सुहेला वसे साथ, वेला वक्त ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे आप सुहाईआ। साचा लेखा लिखणहारा, आदि जुगादि समाया। गवाह रखाया रविदास चुमारा, भुल्ल रहे ना राया। दोहां विचोला बण निरँकारा, निरगुण एका रूप वटाया। साचा तोला विच संसारा, साचा कंडा लै के आया। एका बोले उच्च जैकारा, हँ ब्रह्म मेल मिलाया। ब्रह्मण ब्रह्मणी जगत जुगत जुग होए खुवारा, नौं नौं लेखा सके ना कोए मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग अपणे भाणे सद समाया। क्या ब्रह्मण क्या शूद्र धार, छत्री वैश भेव ना राईआ। जन्म जन्म दी दुरमति मैल दए उतार, दीन दयाल सच्चा शहनशाहया। नौं नौं जामे जन्म माणस मानुख दे विच संसार, लेखा लेखा लेखे पाईआ। कलिजुग आए अन्तिम वार, पावे सार बेपरवाहीआ। ना कोई पुरख ना कोई नार, कन्त कन्तूल इक्क अख्वाईआ। हरिजन करे सच श्रंगार, सोलां इच्छया पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा रूप धराईआ। जुग जुग रूप धरांयदा, हरिजन साचे लए जगा। लोकमात सुत्ते आप उठांयदा, आलस निन्दरा पर्दा लाह। आपणा नाउँ आप दृढ़ांयदा, आपणी विद्या दए पढ़ा। गुरमुख साचे गले लगांयदा, पूर्ब लहिणा दए मुका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या सिख समझा। साची सिख्या हरि समझांयदा, सुण बेनन्ती करे विचार। हरि का लेख समझ विच किसे ना आंयदा, मन मति बुधी जाए हार। हाढ़ सतारां जो फ़रमांयदा, कागद कलम ना लिखणहार। नौं नौं चार राह तकांयदा, गुर पीर अवतार ना पावण सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वसणहारा सच दुआर। सच दुआर सुहांयदा, हरि दाता बेपरवाह। कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा, जोती जामा सच्चा शहनशाह। गुरमुखां संग सदा समांयदा, निरगुण आपणा रूप धरा। जगत हट्टी विच बह बह तोल ना कोए तुलांयदा, धड़ी वट्टी हथ्थ ना लए उठा। माल मवेशी ना कोए चुरांयदा, गुरसिखां सुरती बन्ह चरन लगा। ठंडा पाणी ना राह तकांयदा, खालां उत्ते बहे ना मंजा डाह। गुरमुख आसण सेजा सोभा पांयदा, आत्म अन्तर जोत जगा। ठंडी छाँ ना कोए जणांयदा, सभ दे सिर ते देवणहारा ठंडी छाँ। पूर्ब लहिणा आप मुकांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे कराए सच न्याँ। क्या बेनन्ती क्या पुकार, आपणी गति जीवण जुगत कहिण ना जाईआ। मन मति बुध ना सके विचार, हरि का भेव भेव ना राईआ। कागद कलम करे पुकार, नेत्र रोवे जगत शाहीआ। हरि जू हरि मन्दिर वसया सभ तों बाहर, आपणा घाड़न आप घड़ाईआ। जो बोले सो सुणे सुणनेहार, भुल्ल कदे ना जाईआ। हरि का बोलया जीव ना सके कोए विचार, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गुरमुख गुरसिख अपणे कंडे आपे तोलया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, एका एक सहिज सुखदाईआ। आपणी बेनन्ती जाणे कवण, रसना जिह्वा जगत कुरलाईआ। देवे स्नेहा उँणंजा पवण, आदि जुगादि सेव कमाईआ। लेखा जाणे अवण गवण, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। काया मन्दिर अंदर त्रैगुण आहूती पंज तत्त हवन, अग्नी जोती लम्बू लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बेपरवाह बेपरवाह इक्क अख्वाईआ। जगत बेनन्ती भगत जवाब, सतिगुर पूरा आप सुणांयदा। कोटन कोटि जो जपदे रहे जाप, सुफ्ने विच नज़र किसे ना आंयदा। लोकमात ना गाए जस प्रगट हो प्रभ आप, चार जुग मुख शर्मांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपे रिहा कर, आपणा रंग आप रंगांयदा। क्या मांगे क्या दीजे दान, मंगण मंगण कोए ना जाईआ। आपणा आप ना सके कोए पछाण, क्या लेखा लिख्त जगत बाणीआ। सतिगुर पूरा होए जिस आप मेहरवान, आपणी सुणाए अकथ कहाणीआ। गुरसिख बाला बणया रहे नादान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अमृत आत्म बख्शे ठंडा पाणीआ। क्या कहिणा क्या सुणना क्या बोलणा, रसना जिह्वा कर विचार। सुण बेनन्ती गुर सतिगुर पूरा तोल तोलणा, झूठा होए ना अगम्म अपार। आपणा भण्डारा आपे खोल्हणा, वरतावणहार

१३८१
०६

सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब शक्ती इक्क व्यकती, भगत भगती आपणे हथ्थ रक्खे निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन जन हरि देवे इक्क आधार।

⁕ २३ कत्तक २०१७ बिक्रमी सोहण सिँघ दे घर पिण्ड राम पुर ज़िला अमृतसर ⁕

सति पुरख निरँजण सच्चा पातशाह, आदि जुगादि समांयदा। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, आप आपणा खेल खिलांयदा। हरि पुरख निरँजण बण मलाह, निरगुण आपणा बेड़ा आप तरांयदा। एकँकारा देवे सच सलाह, सिफ्त सालाही आप अख्वांयदा। आदि निरँजण जोत जगा, नूर नुराना रूप प्रगटांयदा। अबिनाशी करता संग निभा, सगला संग आप हो जांयदा। श्री भगवान वसे साचे थाँ, दर घर साचा सोभा पांयदा। पारब्रह्म एका आपणा नाउँ लए प्रगटा, नाउँ निरँकारा आप अख्वांयदा। मूर्त अकाल रूप धरा, अनुभव प्रकाश समांयदा। जूनी रहित अगम्म अथाह, अलक्ख अगोचर आपणी कल वरतांयदा। निरवैर खेले खेल सभनी थाँ, भेव अभेदा भेव खुलांयदा। आदि आदि आपणी बणत बणा, आप आपणी रचन रचांयदा। सचखण्ड
१३८२ दुआरा इक्क सुहा, चार दीवार ना कोए बणांयदा। निरगुण दीवा बाती कमलापाती आप टिका, नूर ज़हूर इक्क चमकांयदा। १३८२
०६ साची ताकी बन्द खुल्ला, दर दरवाज़ा आप सुहांयदा। घर विच घर दए टिका, थिर दरबारा आप उपांयदा। आपणी इच्छया ०६
फुरना आप फुरा, साची भिच्छया वण्ड वण्डांयदा। आपणा हुक्म आप वरता, हुक्मी हुक्म खेल खिलांयदा। आपे दाता बणे बेपरवाह, दाता दानी नाउँ धरांयदा। आपणी वस्त आपणे हथ्थ उठा, हरि आपे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख खेल अपारा, जोती नूर नूर उज्यारा, रूप रंग रेख ना कोए जणांयदा। सति पुरख निरँजण साची कार, सति सतिवादी आप कराईआ। सो पुरख निरँजण हो त्यार, हरि पुरख निरँजण लए अंगड़ाईआ। एकँकारा वसे ठांडे दरबार, आदि निरँजण रूप प्रगटाईआ। अबिनाशी करता मीत मुरार, श्री भगवान साचा संग निभाईआ। पारब्रह्म खेले खेल अपर अपार, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा दए सुहा, सोभावन्त इक्क अख्वाईआ। आपणी रचना आप रचा, वेखणहारा आप हो जाईआ। आपे बणे सच्चा शहनशाह, शाहो भूप राज राजान शाह सुल्तान इक्क अख्वाईआ। आपणा निशाना आप लए उठा, सति पुरख आप झुलाईआ। आपणा ताज आपणे सीस आपे लए टिका, निरगुण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख पुरख अकाला, करे

खेल दीन दयाला, भेव कोई ना आंयदा। सति पुरख निरँजण वड वडियाई, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सो पुरख निरँजण खेल रचाई, अनुभव आपणा रूप धराईआ। हरि पुरख निरँजण वेखे चाँईं चाँईं, मूर्त अकाल डगमगाईआ। एकँकारा दए सलाही, आदि निरँजण वेखणहारा थाउँ थाईंआ। अबिनाशी करता बण मलाही, श्री भगवान साचा लेखा दए समझाईआ। पारब्रह्म इक्क गोसाँईं, आप आपणी कल धराईआ। सचखण्ड दुआर हरि निरँकार सच सिँघासण एका रिहा विछाई, पुरख अबिनाशी सेज सुहाईआ। उप्पर बैठ सच्चा शहनशाही, साचे तख्त दए वडियाईआ। आपे चले आपणी सच रज़ाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एकँकारा, आदि पुरख लै अवतारा दर घर साचे सोभा पाईआ। सति पुरख निरँजण हरि निरँकारा, एका रंग समाया। सचखण्ड सुहाए सच दुआरा, तख्त निवासी डेरा लाया। एका हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाणा आप जणाया। साचा भूप साचा राणा, हरि हरि साचा खेल खलाया। आपे जाणे आपणा भाणा, आपणे भाणे सद समाया। आपे बीना आपे दाना, आपे दात झोली पाया। आपणा खेल आपे कीना, करता पुरख वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला साची कार, करे कराए करनेहार, दूसर संग ना कोई रखाया।
१३८३ इक्क इकल्ला हरि निरँकार, दरगाह साची डेरा लांयदा। सचखण्ड दुआर खोल्ह किवाड़, निरगुण दीवा बाती इक्क जगांयदा। १३८३
०६ ना कोई दीसे अन्ध अँध्यार, आपणी खाटी सेज सुहांयदा। उप्पर बैठ सच्ची सरकार, साचा ताज सीस टिकांयदा। निरगुण रूप हरि निरँकार, मूर्त अकाल डगमगांयदा। अजूनी रहित अपर अपार, साची खेल आप खिलांयदा। इक्क इकल्ला करनेहार, उच्च महल्ल अटल आप वसांयदा। थिर घर साचा खोल्ह दुवार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा आप करे उज्यार। आपणा आप आप उपाया, मात पित ना कोई बणाईआ। दाई दाया ना कोई लगाया, सेवक सेव ना कोई कमाईआ। बूंद रक्त ना मेल मिलाया, तत्व तत्त ना कोई रखाईआ। निरगुण निराकार सुते प्रकाश आप कराया, अनुभव आपणा रूप दृढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण वेखण आया, पंचम पर्दा आप चुकाईआ। एकँकारा आप आपणा रंग रंगाया, आदि निरँजण लाड लडाईआ। श्री भगवान दए सलाहया, अबिनाशी करता गीत अल्हाईआ। पारब्रह्म आपणा रूप आपे वेखे ना कोई दूसर दिसे छाया, ना कोई बणत बणाईआ। एका घर एका नर एका हरि डेरा लाया, एका वज्जदी रहे वधाईआ। सचखण्ड दुआरा सोभा पाया, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। थिर दरबारा आप खलाया, अंदर मन्दिर वेख वखाईआ। आपणा रूप आप दरसाया, आपे वेखणहारा वेखे चाँईं चाँईंआ। एका जोती जोत जगाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। हरि वड्डा शाह सुल्तान, एका एक एकंकारया। सचखण्ड

दुआरे वसे इक्क मकान, निरगुण जोत कर उज्यारया। आपे बख्शे आपणा माण, माण ताण एका एक वखा रिहा। आपे देवे देवणहारा दान, आपे भिखक रूप वटा रिहा। आपे गाए आपणा गाण, आप आपणी इच्छया बाहर कढा रिहा। आपणी इच्छया करे धुर फ़रमाण, शब्द अनादी नाउँ धरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर साचा इक्क वडिया ल्या। घर वडियाए हरि दुआरा, हरि हरि आपणा रूप प्रगटांयदा। एका वसे एकँकारा, आप आपणी कल रखांयदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शाह शहाना रूप प्रगटांयदा। रूप अनूप सति सरूप गुप्त ज़ाहरा, अंदर बाहर आप हो जांयदा। आपणा दीन आप लाए नाअरा, आपणा नाउँ आपे गांयदा। आपे करे सच विहारा जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वसे साचे घर, दर साचा आप खुल्हांयदा। सचखण्ड दुआरा खोल्ह, सो पुरख निरँजण दया कमांयदा। हरि पुरख निरँजण आपणा नाउँ आपे बोल, सति जैकारा एका लांयदा। एकँकारा वजाए ढोल, मृदंगा दिस किसे ना आंयदा। आदि निरँजण तोले तोल, साचा कंडा हथ्थ उठांयदा। अबिनाशी करता एका वस्त कोल, आदि अन्त भुल्ल ना जांयदा। श्री भगवान आपणी धारन आपे बोल, आपणा गणत आपे गणांयदा। पारब्रह्म आपणे अंदर आपे मौल, रूप अनूप आपणे विच टिकांयदा। सचखण्ड दुआरे हरि निरँकारा आपणा करे आपे कौल, कीता कौल पूर करांयदा। थिर घर दुआरा रक्खे अडोल, आदि जुगादि ना कोए डुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे तख्त बैठा चढ़, ना कोई सीस ना कोई धड़, इक्क इकल्ला एकँकारा, करे खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अलक्खणा खेल खिलांयदा। अलक्ख अलक्खणा हरि निरँकार, लेखा लेख ना कोई जणांयदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, साची कार आप करांयदा। शब्दी शब्द सति वरतार, सति सतिवादी आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, इक्क इकल्ला वेस वटांयदा। वेस वटंदड़ा श्री भगवान, रूप अनूप प्रगटांयदा। सति झुलाए इक्क निशान, दरगाहि साची आप झुलांयदा। धुर दीबाणी धुर फ़रमाण, धुर दी धार आप सुणांयदा। धुर दा मन्दिर सच मकान, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। धुर दा राज धुर दी बाण, धुर दा हुक्म आप वरतांयदा। खेले खेल दो जहान, आप आपणा बल रखांयदा। ना कोई चिल्ला तीर कमान, शस्त्र हथ्थ ना कोई चमकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला साचा हरि, आपणी धार आप बंधांयदा। हरि साची धार बंधांयदा, अनुभव कर प्रकाश। आपणी रचना आप रचांयदा, आपणे अंदर करे वास। नारी कन्त आप अख्वांयदा, आपणी पूरी करे आस। आपणी सेज आप हंढांयदा, आपणे वसे सदा पास। आपणी कुक्ख आप सुहांयदा, आपे करे बन्द खुलास। आपणी गोद आप बहांयदा, आपे होए दासी

दास। आपणी सेवा आप कमांयदा, आदि जुगादि ना जाए विनास। आपणा हुक्म आप वरतांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल शाहो शाबास। साचा हुक्म आप कराया, कर किरपा गुण निधान। आपणी इच्छया पूर कराया, भिच्छया पाए श्री भगवान। सुत दुलारा एका जाया, शब्दी नाउँ इक्क महान। सचखण्ड दुआरे आप बहाया, थिर घर वसदा रहे मकान। सिर आपणा हथ्थ टिकाया, भुल्ल ना जाए बण निधान। एका रंगण रंग रंगाया, रंगणहारा रूप महान। सगला संग आप निभाया, निरगुण रूप हो आप मेहरवान। सच मृदंग आप वजाया, आप सुणाए सच्ची धुनकान। सूरा सरबंग खेल खलाया, जोद्धा बीर बली बलवान। सत्त रंग निशान इक्क चढ़ाया, आपे होए निगहबान। आपणीआं मंगां आपे पूर कराया, आपे देवणहारा धुर फ़रमाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख खेल अपारा, करे कराए एकँकारा, इक्क इकल्ला नौजवान। इक्क इकल्ला नौजवाना, आपणा बल रखांयदा। पारब्रह्म खेले खेल महाना, श्री भगवान भेव ना आंयदा। अबिनाशी करता जाणी जाणा, आदि निरँजण मेल मिलांयदा। एकँकारा करे पछाणा, हरि पुरख निरँजण वेख वखांयदा। सो पुरख निरँजण मर्द मरदाना, आप आपणा नाउँ प्रगटांयदा। सति पुरख निरँजण साचा कान्हा, साचे मन्दिर सोभा पांयदा। एका शब्द कर परवाना, हुक्मी हुक्म आप सुणांयदा। सति सरूपी बन्ने गाना, साचा सगन मनांयदा। करे खेल दयावाना, दयानिधि भेव खुल्लांयदा। एका रूप दोए वखाना, दोए रूप इक्क हो जांयदा। आपे विष्न देवे माणा, आपे विश्व वास्तक रूप सुहांयदा। आपे अमृत कँवल भराना, आपे नाभी कँवल खुल्लांयदा। आपे ब्रह्मा देवे एका दाना, पारब्रह्म आपणी वण्ड वण्डांयदा। आपे शंकर वेखे मार ध्याना, सुन्न अगम्मा वेख वखांयदा। तिन्नां सुणाया एका गाणा, बोध अगाध आप अल्लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला, सचखण्ड साचे सोभा पांयदा। सचखण्ड महल्ला उच्च अटारी, सो पुरख निरँजण आप उपांयदा। एका जोत जगे निरँकारी, निरवैर आपणा रूप प्रगटांयदा। एका अश्व एका शाह सवारी, एका आसण लांयदा। एका भूप इक्क सिक्दारी, एका हुक्म चलांयदा। एका खेल करे अगम्म अपारी, अगम्म अगम्मड़ा रूप प्रगटांयदा। एका खड़ग इक्क कटारी, एका चण्ड प्रचण्ड चमकांयदा। एका करे सच श्रंगारी, एका आपणा मृदंग वजांयदा। एका जोत एका धारी, एका धार धार समांयदा। एका विष्न एका ब्रह्मा, एका शिव एका अक्खर निअक्खर नाम पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यारा, साची हरि हरि करे पढ़ाईआ। एका मेला धुर दरबारा, धुर दुआरा इक्क वखाईआ। एका हुक्म इक्क सरकारा, शहनशाह इक्क वड्याईआ।

एका जगत वरते वरतारा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। एका शक्ति भर भर भण्डारा, आदि शक्ति नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका नाम रिहा वड्याईआ। हरि का नाम वड्डा वड, तिन्नां हरि हरि आप समझांयदा। आपणे विच्चों आपे कढ्ढ, आपणे अग्गे आप प्रगटांयदा। आप लडाए साचा लड, साची गोद आप सुहांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव तिन्नें लवे बंध, एका बन्धन साचा पांयदा। कर किरपा देवे एका अनन्द, परमानंद आप वखांयदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, आकाश प्रकाश ना कोए धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आदि आदि आपणा वेस वटांयदा। आदि पुरख खेल अपारा, ब्रह्मा विष्न शिव उपजाया। निरगुण निरगुण भर भण्डारा, वस्त अमोलक इक्क दरसाया। सेवा लाए सेवादारा, सेवक सेवक सेवा सच जणाया। एका मात करे प्यारा, एका एक दए वड्याईआ। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका घर रिहा सुहाया। एका पुरख एका नारा, एका जननी बण बण जाया। एका जाणे साची कारा, एका होए दाई दाया। एका बोल सुणाए एका नाअरा, शब्द अनादी नाद वजाया। एका बणया रहे वरतारा, विष्नूं तेरा भण्डार इक्क सुहाया। ब्रह्मा तेरा लग्गे ब्रह्म अखाड़ा, लक्ख चुरासी वेस वटाया। शंकर हथ्थ फड़ाए तिक्खी धारा, त्रसूल तिन्नां मूल चुकाया। करे खेल अगम्म अपारा, लेखा लिख्त विच ना आया। आपे वसे तिन्नां बाहरा, निरगुण आपणा नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण बैठा चढ़, तख्त ताज इक्क सुहाया। तख्त ताज हरि सुहांयदा, सचखण्ड दुआर सच्ची सरकार। ब्रह्मा विष्न शिव आप प्रगटांयदा, तिन्नां मेला एका वार। रूप अनूप आप दरसांयदा, जोती जल्वा नूर अपार। साची सोटी शब्द उठांयदा, आपणे हथ्थ रक्ख करतार। किला कोट इक्क वखांयदा, थिर घर ठांडा दरबार। विष्नूं नेत्र इक्क खुल्ांयदा, प्रभ चरन कँवल लगाए ध्यान। नेत्र नैणा नीर वहांयदा, दोए जोड़ करे प्रनाम। प्रभ तेरा विछोड़ा मोहे ना भांयदा, तेरा प्यारा लग्गे ग्राम। तेरे चरना सेव कमांयदा, हउँ पकड़ां तेरा दाम। तेरा रंग इक्क वखांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भुल्ल ना जाए तेरा नाम। ब्रह्मा नैण उठांयदा, चार कुंट ध्यान। पुरख अबिनाशी एका नज़री आंयदा, जोती जल्वा नूर महान। प्रकाश प्रकाश विच रखांयदा, अबिनाशी पुरख चतर सुजान। आपणे मंडल रास रचांयदा, ना कोई गोपी ना कोई काहन। आपणी बंसरी आप वजांयदा, इक्क सुणाए मधुर धुनकान। आपणा राग आप अल्ांयदा, आपे होए जाणी जाण। ब्रह्मा चरनां हेठ सीस रखांयदा, कर किरपा श्री भगवान। हउँ तेरी अंस अख्वांयदा, ब्रह्म रूप तेरी टेक मंगे माण। बिन तेरे दर ना कोए सुहांयदा, ना कोई मेरी करे पछाण। हउँ याचक भिखक बण के दुआरे

आंयदा, एका देणा साचा दान। तेरा विछोड़ा ना मोहे सुखांयदा, हउँ बाला बाल नादान। बिना पित पूत ना सोभा पांयदा, सुंञा दिसे सर्ब मकान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि जुगादि रहिणा निगहबान। शंकर कूक पुकारया, प्रभ नेत्र दरसन पा। भोला नाथ लाए नाअरया, हथ्थ त्रिसूल सुटा। तेरा दर अगम्म अपारया, दरगाह साची रिहा सुहा। हउँ सेवक चाकर सेव कमा रिहा, सेवक सेवा लैणी लेखे ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, तिन्नां लए हरि समझा। विष्न ब्रह्मा शिव हरि समझांयदा, शब्द अनादि अगम्मी बोल। तिन्नां रचना वेख वखांयदा, पुरख अबिनाशी तोले साचा तोल। निरगुण सरगुण रूप वटांयदा, त्रैगुण भण्डारा खोल्ह। रजो तमो सतो मेल मिलांयदा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त करे चोल्ह। लक्ख चुरासी वण्ड वण्डांयदा, मन मति बुध रक्खे कोल। जेरज अंड रंग रंगांयदा, उत्भुज सेत्ज जाए मौल। नौं नौं चार खेल खिलांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। देवे वर शाह सुल्ताना, हरि जू हरि वड्डा वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा वसाए इक्क मकाना, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणी रचन रचाईआ। गगन मंडल मंडप करे प्रकाश रवि ससि सूरज भाना, चन्न चन्न विच टिकाईआ। धरती जल बन्ह्रे गाना, जल बिम्ब रूप प्रगटाईआ। लेखा जाणे ज़िमी अस्मानां, गगन गगनंतर सोभा पाईआ। लक्ख चुरासी होए प्रधाना, पंज तत्त मेला सहिज सुभाईआ। घर विच घर वसे मकाना, घट घट आपणी जोत करे रुशनाईआ। आत्म ब्रह्म देवे दाना, ईश जीव करे कुड़माईआ। नौं दुआर जगत वखाना, दसवें आपणा बन्धन पाईआ। साचा अमृत इक्क महाना, घर घर विच दए टिकाईआ। शब्द अनादि सच्ची धुनकाना, गृह मन्दिर दए वजाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तिन्ने सेव कमाना, त्रैबैणी एका संगम दए बणाईआ। ईड़ा पिंगल सुखमन गाए गाणा, वाह वा वज्जदी रहे वधाईआ। बजर कपाटी इक्क वखाना, एका पर्दा रिहा उठाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार कर प्रधाना, मन मति दए वड्याईआ। आसा तृष्ना संग रलाना, हउमे हंगता वेस वटाईआ। भुक्खा नंगता बीना दाना, घर घर अलक्ख जगाईआ। बोध अगाधी धुन तराना, आदि जुगादि सुणाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कर प्रधाना, मानुस मानुख दए वड्याईआ। आपणा रूप दरसाए श्री भगवाना, अनुभव प्रकाश वखाईआ। भगत भगवन्त बन्ह्रे गाना, साचे सन्त करे कुड़माईआ। गुरमुखां देवे आत्म ज्ञाना, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। आपणी वण्ड आप वण्डाना, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ। आपणा हुक्म धुर फ़रमाणा, ब्रह्मा वेता करे जणाईआ। चारे वेदां लेख लिखाना, चारे जुग दए सलाहीआ। चारे बाणी कर परवाना, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाईआ। चारे वरन खेल महाना, ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड वण्डाईआ। चारे जुग बण

निधाना, गुर पीर अवतार आपणा रूप प्रगटाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग विष्न ब्रह्मे शिव तेरा खेल खिलाना, जुग चौकड़ी खेले खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग वेला अन्तिम इक्क सहाउणा, लोकमात वज्जे सच वधाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल जोती जामा पाउणा, रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। निहकलंका नाउँ रखाउणा, शब्द डंका हत्थ उठाईआ। जुग चौकड़ी वेला पार कराउणा, आपणा पान्धी पन्ध मुकाईआ। विष्न तेरा लेखा तेरे हत्थ फड़ाउणा, भुल्ल रहे ना राईआ। ब्रह्मा ब्रह्म जोत मिलाउणा, थिर कोई रहिण ना पाईआ। शंकर बाशक तशका गलों सुटाउणा, अन्तिम आपणी अक्ख खुल्हाईआ। करोड़ तेतीसा दर दर फिराउणा, सुरपति राजा इंद तख्त ताज दए तजाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डा भन्न वखाउणा, त्रैगुण माया घड़ घड़ पंचम माटी पोच पुचाईआ। शब्द खण्डा इक्क चमकाउणा। निरभउ भय आपणा इक्क जणाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी वेख वखाउणा, सत्तां दीपां फेरा पाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां तख्तों लौहणा, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। शब्द नगारा इक्क वजाउणा, उच्ची कूक सुणाईआ। वरन बरन डेरा ढौहणा, नौं अठारां रही कुरलाईआ। एका मार्ग सृष्ट सबाई वखाउणा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। विष्नूं तेरा विश्व रूप आप आपणे लेखे पाउणा, लेखा लेखे लए लाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म संग निभाउणा, हँ ब्रह्म करे कुड़माईआ। भोला नाथ साचे संग निभाउणा, आपणा खेल आप खलाईआ। साचा मार्ग हरि करतार आप लाउणा, करनी किरत करता आप कराईआ। मूर्त अकाल दीन दयाल काल महांकाल वेख वखाउणा, आप आपणा बल रखाईआ। राए धर्म फड़ उठाउणा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। चित्रगुप्त हिसाब लिखाउणा, लिख लिख थक्का आपणी शाहीआ। पुरख अबिनाशी आपणा वेला वक्त आप सुहाउणा, थित वार ना कोई जणाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव तेरा पन्ध मुकाउणा, मनवन्तर देवे ना कोई गवाहीआ। सूरज चन्न मुख शर्मौणा, अन्ध अन्धेरा रिहा कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आदि पुरख अबिनाशा, जुग जुग करे खेल तमाशा, मध आपणी धार चलाईआ। मध धार हरि चलांयदा, त्रैगुण भिन्न अनूप। साचा खेल आप खिलांयदा, पुरख अकाल सति सरूप। लक्ख चुरासी वेख वखांयदा, वसणहारा दहि दिशां चारे कूट। जुग जुग गेड़ा आप दवांयदा, आपे पंघूड़ा आपे रिहा झूट। सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढांयदा, कलिजुग आई अन्तिम रुत। अबिनाशी करता खेल खिलांयदा, इक्क प्रगटाए शब्द साचा सुत। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां एका दूत दुड़ांयदा, आपे बैठा अंदर लुक। हुक्मी हुक्म इक्क वरतांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मे विष्न शिव देवे वर, कलिजुग अन्तिम अन्त लोकमात धर, एका वेखे साचा हरि, त्रैगुण बूटा जाए सुक्क। त्रैगुण बूटा सुक्कणा, विष्न ब्रह्मा शिव कर ध्यान। नौं नौं चार पैंडा मुक्कणा, अन्त

मिटे निशान। लोकमात पुरख अबिनाशी सिँघ शेर एका बुक्कणा, जोद्धा सूरबीर बलवान। जम्बुक होए सभ ने लुकणा, हथ्थ फड़े ना अग्गे कोई तीर कमान। सूरा जम्मे ना कोई कुखना, विभचार होए सर्ब जहान। सन्त गोद किसे ना चुक्कणा, मात सीर प्याए ना सच्चा आण। जूठ झूठ काम क्रोध लोभ मोह हँकार काया मन्दिर सभ ने रक्खणा, हरि का नाउँ करे ना कोई प्यार। लक्ख चुरासी भाण्डा दिसे सखणा, अमृत आत्म दिसे ना किसे दुवार। पारब्रह्म अबिनाशी करता छाछ विरोले साचे मक्खणा, गुरमुख साचे लए निकाल। अन्तिम अन्त श्री भगवन्त कीमत कोए ना पाए कक्खना, जिस भुलया श्री भगवान। बिन सतिगुर पूरे मार्ग किसे ना दस्सणा, नानक गोबिन्द गुर दे दे गया धुर फ़रमाण। अन्त काल पर्दा ना ढकणा, सभ दे सिर ते कूके काल। घर घर लाड़ी मौत लैण आए प्रदक्खणा, नारी कन्त मात पित भाई भैण साक सज्जण कोई ना चले नाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ब्रह्मा विष्न शिव इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल। सच्ची धर्मसाल सतिगुरू दुआरा, दूसर अवर ना कोई जणाईआ। तिन्नां देवे इक्क अधारा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। नौं सौ चुरानवे जुग ढए तेरा पसर पसारा, जून अजूनी फेरा पाईआ। कलिजुग आए अन्तिम वारा, जुग चौकड़ी देण गवाहीआ।
१३८६ लिख लिख थक्के वेद चारा, वेद व्यासा रिहा समझाईआ। लेखा जाणे संग मुहम्मद चार यारा, चौदां चौदां वण्ड वण्डाईआ। १३८६
०६ निरगुण नानक बोले सच जैकारा, सृष्ट सबाई इक्क समझाईआ। गोबिन्द सूरा बण लिखारा, लेखा अग्गे गया टिकाईआ। ०६
अन्तिम कलिजुग प्रगटे निहकलंक नरायण नर अवतारा, मात पित ना कोई बणाईआ। नाल रखाए सुत दुलारा, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। करे खेल शाह अस्वारा, शहनशाह सच्चा शहनशाहीआ। गोबिन्द मीता सिरजणहारा, इक्क अतीता बेपरवाहीआ। खड़ग खण्डा तेज कटारा, तिक्खी धार लए चमकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, करोड़ तेतीसा आप उठाईआ। शाह सुल्ताना करे ख्वारा, राज राजाना खाक मिलाईआ। कलिजुग मेटे अन्ध अँध्यारा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। चार वरनां करे इक्क प्यारा, ऊँच नीच ना कोई रखाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, बेऐब नाउँ ख़ुदाईआ। ख़ालक ख़लक रूप वरते अपर अपारा, बिस्मिल होए बेपरवाहीआ। मन मनसा लाए नाअरा, लाशरीक बोल सुणाईआ। नूरो नूर हो उज्यारा, जल्वा नूर इक्क वखाईआ। प्रगट होए अगम्म अपारा, अकल कल आपणा नाउँ धराईआ। गुरमुख साचे लए उभारा, आपे पूर्ब जन्मां वेख वखाईआ। साची सखीआं वखाए इक्क अखाड़ा, वाह वाह मंडल रास रचाईआ। गाए गीत एकँकारा, इक्क इकल्ला राग अलाईआ। हँ ब्रह्म पावे सारा, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। सोहँ रूप आप करतारा, ब्रह्म पारब्रह्म अख्वाईआ। घट घट अंदर कर पसारा, बैठा मुख छुपाईआ। गुरमुख बणाया इक्क वणजारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ।

सद वण्डदा रहे नाम भण्डारा, अतोट अतुट रखाईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सारा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। निहकलंक नरायण नर लै अवतारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यारा, पुरख अबिनाशी दए वड्याईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा हो उज्यारा, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। हरि का रूप अपर अपारा, नारी पुरख ना कोई दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, विष्न ब्रह्मा शिव एका अक्खर सुणाए पढ़, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। एका अक्खर हरि पढ़ाया, सोहँ आपणा रूप दरसांयदा। आपणे मन्दिर बन्द कराया, आपणे अंदरों बाहर कढांयदा। निरगुण सरगुण दए वरताया, सरगुण निरगुण दया कमांयदा। औदां जांदा दिस ना आया, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत जुगा जुगन्तर लए फड़, आपणा बन्धन आपे पांयदा। स्वच्छ सरूपी शाहो भूप अनरंग रूपी दरस दिखाए अग्गे खड़, रूप अनूप आप प्रगटांयदा। जिस जन उप्पर किरपा देवे कर, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वसे साचे घर, कलिजुग अन्तिम वेस धर, लोकमात मार झात इक्क इकांत गृह मन्दिर हरिजन हरि जू आप सुहांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि, जन्म मरन मरन जन्म विच ना आंयदा।

१३६०

०६

❊ २४ कतक २०१७ बिक्रमी सुखदेव सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ❊

सो पुरख निरँजण खेल खिलांयदा, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार। हरि पुरख निरँजण रूप प्रगटांयदा, इक्क इकल्ला खेल अपार। एकँकारा आपणी धार बंधांयदा, रूप रंग ते वसया बाहर। आदि निरँजण जोत जगांयदा, आदि पुरख नूर उज्यार। अबिनाशी करता वेख वखांयदा, साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, श्री भगवान संग निभांयदा, दरगाहि साची कर प्यार। पारब्रह्म आपणा मार्ग आपे लांयदा, भेव अभेदा खोलॣ किवाड़ । सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा, थिर घर वसे वसणहार। शब्द अनादी नाद वजांयदा, आप आपणी कर विचार। आपणा वेस आप प्रगटांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला अकल कल अख्वांयदा। अकल कल हरि खेल अपारा, आपणा रूप आप धराईआ। सचखण्ड दुआरे हो उज्यारा, निरगुण निरवैर नाउँ धराईआ। मूर्त अकाल अनुभव प्रकाश दर घर साचे पावे सारा, आपणा मेल आप मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला, निरगुण आपणा रूप प्रगटाईआ। रूप प्रगटाए हरि निरँकारा, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। सति सरूपी हो उज्यारा, सति सतिवादी डगमगाईआ।

साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शाहो भूप राज राजान शहनशाह आप अख्वाईआ। आपणी करे आपे कारा, करता पुरख वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। भेव अभेदा हरि भगवान, आदि पुरख आप अख्वांयदा। सचखण्ड वसे सच मकान, निरगुण आसण सिँघासण सोभा पांयदा। निरवैर रूप शाह सुल्तान, मूर्त अकाल डगमगांयदा। देवणहारा साचा दान, वस्त अमोलक आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, आपे जाणे आपणा खेल तमाशा, आपणा वेस आप वटांयदा। वेस वटाए पुरख सुल्ताना, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। निरगुण निरगुण देवे दाना, निरगुण दाता निरगुण भिखारी, निरगुण बैठा सीस झुकाईआ। निरगुण जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, निरगुण निर्धन आपणा खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। नर नरायण जोद्धा बलकारा, अनुभव आपणा खेल खिलांयदा। आदि जुगादी हो उज्यारा, आपणी धारा आप बंधांयदा। शब्दी शब्द कर प्यारा, जोती धारा आप प्रगटांयदा। आपणे रंग रवे निरँकारा, रेख रंग ना कोए वखांयदा। आपणा घाड़न घड़े अपर अपारा, घड़न भन्नणहार समरथ पुरख आपणा नाउँ धरांयदा। आपे वणज आप वणजारा, साची वस्त आपणे हट्ट विकांयदा। आपे मात
१३६१ पित बणे सुत दुलारा, गोदी गोद आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख पुरख १३६१
०६ अकाला, आदि जुगादी दीन दयाला, सचखण्ड दुआरे वसे सच्ची धर्मसाला, सति पुरख निरँजण आपणी खेल खिलांयदा। ०६
सति पुरख निरँजण अगम्म अपारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। साचे मन्दिर हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। थिर घर खोल्हे आप किवाड़ा, आपे वेखणहारा धुरदरगाहीआ। साचे तख्त बहे साचा लाड़ा, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। आपणे मन्दिर अंदर आपे लाए इक्क अखाड़ा, आपणी रचना आपे वेख वखाईआ। आपे देवणहारा सति हुलारा, सति सतिवादी भेव ना राईआ। आपे अंदर आपे बाहरा, आपणी कल आप प्रगटाईआ। आपे विष्न ब्रह्मा शिव कर उज्यारा, त्रै त्रै मेला जोड़ जुड़ाईआ। आपे जुगा जुगन्तर करे साची कारा, जुग करता इक्क अख्वाईआ। आपे पंचम पंच कर कर प्यारा, आपे पंचम नाता तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला कर पसारा, करे खेल अगम्म अपारा, अनुभव आपणा रूप प्रगटाईआ। अनुभव रूप हरि निरँकारा, दिस किसे ना आंयदा। आपे जाणे आपणी धारा, निरगुण सरगुण रूप प्रगटांयदा। शब्द शब्दी बण वणजारा, आदि जुगादी फेरा पांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दए सहारा, सूरज चन्न संग निभांयदा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़े हरि करतारा, त्रैगुण माया बन्धन पांयदा। घर घर दीपक कर उज्यारा,

आदि निरँजण डगमगांयदा। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारा, धुन आत्मक आप वजांयदा। आपे गाए आपणी वारा, बोध अगाध शब्द दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, लेखा जाणे जुगा जुगन्ता जुग जुग आपणा रूप प्रगटांयदा। जुगा जुगन्तर साची कार, आदि पुरख आप कराईआ। विष्न देवे एका धार, विश्व रूप सर्ब दरसाईआ। ब्रह्मा सुत कर त्यार, ब्रह्म रूप लए प्रगटाईआ। शंकर देवे इक्क आधार, आसा तृष्ना रहे ना राईआ। तिन्नां विचोला बण करतार, शब्द ढोला आपे गाईआ। आपे लेखा जाणे वेद चार, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। आपे सभ तों वसया बाहर, हथ्थ किसे ना आईआ। कागद कलम ना लिखणहार, मस्स नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख अकाला, जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाला, चाल निराली आपणे हथ्थ रखाईआ। जुगा जुगन्तर खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे बैठा रहे इक्क इकल्ला, दूसर संग ना कोए रखांयदा। पुरख अबिनाशी सच सिँघासण एका मल्ला, तख़्त निवासी डेरा लांयदा। आप फड़ाए आपणा पल्ला, आदि जुगादि संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,
१३६२ जूनी रहित अनुभव प्रकाश, रूप रंग रेख ना कोए जणांयदा। रूप रंग रेख वसया बाहरा, सति पुरख निरँजण आपणा रूप १३६२
प्रगटाईआ। सचखण्ड दुआरे हो उज्यारा, एका जोत नूर रुशनाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता आपणा भरे आप भण्डारा,
०६ आपे वेखणहारा साचे थाईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव बण वरतारा, एका वस्त झोली पाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यारा, आप ०६
आपणा रंग रंगाईआ। ब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म दित्ता अधारा, ईश जीव खेल खिलाईआ। घर विच घर कर त्यारा, त्रैगुण अतीता बैठा साचा माहीआ। आपे जाणे आपणी रीता, सदा सहेला ठंडा सीता, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, इक्क इकल्ला आदि अन्त, आपणी रचना आपे वेख वखाईआ। आपणा खेल वेखणहारा, एका रंग समांयदा। जुगा जुगन्तर लए अवतारा, लोकमात जोत प्रगटांयदा। वरनां बरनां वसे बाहरा, ज़ात पात ना कोई रखांयदा। शब्द नाद सच्ची धुन्कारा, नाद अनादी आप वजांयदा। साचा मन्दिर कर उज्यारा, धूंआँधार सर्ब मिटांयदा। एका दीपक कर उज्यारा, अन्ध अन्धेर गवांयदा। गुरमुख साचे लए उभारा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। भगतां देवे इक्क सहारा, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। सन्तन वखाए इक्क दुआरा, चरन कँवल सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्क इकल्ला एकँकारा, वसणहारा धाम न्यारा, घट घट आपणा आसण लांयदा। घट घट आपणा आसण लांयदा, निरगुण रूप अगम्म अथाह। जुग जुग बेड़ा आप चलांयदा, पुरख अबिनाशी बण मलाह। एका

चप्पू हथ्थ उठांयदा, नाम निधाना नाउँ धरा। गुरमुख साचे पार करांयदा, हरिभगत उठाए फड़ फड़ बांह। एका धाम आप वखांयदा, सच सिँघासण ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी जाणे आपे सति सलाह। सिफ्त सलाही हरि निरँकारा, एका रंग समाया। आदि जुगादी हो उज्यारा, निरगुण सरगुण रूप वटाया। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार किनारा, भेव अभेदा भेव खुलाया। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, पुरख अबिनाशी वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा धाम आप सुहाया। हरि साचा धाम सुहांयदा, निरगुण दाता शाहो भूप। साचे तख्त आसण लांयदा, ना कोई रंग ना कोई रूप। लोआं पुरीआं वेख वखांयदा, घर वेखे चारों कूट। एका आपणा हुक्म सुणांयदा, शब्द निराला जाए छूट। गुरमुख गुरसिख सज्जण सहेले आप जगांयदा, जिस जन हरि हरि जाए तुट्ठ। आपणा पर्दा आपे लांहयदा, अमृत आत्म देवे घुट। पंच विकारा आप मिटांयदा, जूठ झूठ जड़ देवे पुट्ट। साचा मन्दिर आप सुहांयदा, निरगुण जोत जगाए लट लट। बन्द ताकी आप खुलांयदा, शब्द अनहद मारे सट। बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा, भाग लगाए काया हट्ट। सच प्याला जाम आप प्यांअदा, गुरमुख विरला पीवे गट गट। आत्म सेजा आप सुहांयदा, निरगुण निरवैर हो प्रगट। साची नारी कन्त मिलांयदा, सुरत सुवाणी विके एका हट। गुर शब्दी तन पहनांयदा, सति सूरपी एका पट। साचा सालू हथ्थ उठांयदा, दुरमति मैल देवे कट्ट। आपणा सीस हथ्थ टिकांयदा, वसणहारा घट घट। कलिजुग अन्तिम जोत जगांयदा, किसे हथ्थ ना आए तीर्थ तट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला, दर घर साचे सोभा पांयदा। दर घर साचा सोभावन्त, हरि जू हरि मन्दिर आप सुहांयदा। थिर घर वसया एका कन्त, नर नरायण आपणा नाउँ धरांयदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, बेअन्त भेव कोए ना पांयदा। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिस जन आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला करनेहारा, निरगुण सरगुण लै अवतारा, सरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। सरगुण निरगुण मेल मिलाया, कर किरपा गुण निधान। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, जोद्धा सूरबीर बलवान। जोती जामा भेख वटाया, पंज तत्त ना दिसे कोए निशान। मन मति बुध ना मेल मिलाया, रक्त बूंद ना कोए परवान। मात पित ना कोए बणाया, दाई दाया ना चतर सुजान। भाई भैण ना कोए अख्वाया, नारी मिले ना गोपी काहन। जगत सेज ना कोए हंढाया, करे खेल श्री भगवान। अबिनाशी करता रूप धराया, लेखा जाणे दो जहान, विश्व विष्न आप उठाया, देवणहारा धुर फ़रमाण। ब्रह्मा वेता पकड़ हलाया, पुरी ब्रह्म वेखे मार ध्यान। शंकर सोया रहिण ना पाया, लेखा जाणे जाणी जाण। करोड़ तेतीसा आप उठाया, सुरपति इंद होए

हैरान। लोकमात एका डंका शब्द वजाया, नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां एका देवे धुर फ़रमाण। शाह सुल्ताना आप जगाया, शब्द अगम्मी मारे बाण। तीर निराला इक्क चलाया, पुरख अबिनाशी सति कमान। ज़िमी अस्मानां दए हलाया, चौदां तबक होण वैरान। त्रै भवण फोल फुलाया, किरपा कर गुण निधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल साचा हरि, वेद कतेब भेव ना राया। वेद कतेब भेव ना पांयदा, चारे वेद करन पुकार। अठारां पुराण रसना गांयदा, शास्त्र सिमरत मंगे आधार। अठारां अध्याए गीता एका गुण वखांयदा, एका भगत करे प्यार। अञ्जील कुराना हुक्म सुणांयदा, धुर दी बाणी धुर दी धार। जगत मुसल्ला वेख वखांयदा, अबिनाशी करता बेऐब परवरदिगार। निरगुण निरवैर आपणी बाणी बाण लगांयदा, लक्ख चुरासी मारे मार। रसना जिह्वा आदि जुगादि जुगां जुगन्तर हरि का जस सर्ब गांयदा, उच्ची कूक करन पुकार। लोकमात मार्ग आपे लांयदा, लेखा जाणे वरन चार। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड वण्डांयदा, नीचां ऊँचां कर पसार। त्रैगुण माया पर्दा पांयदा, आपे लुकया रहे अंदर वड़ सच्ची सरकार। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा आप दुआंयदा, चार जुग एका चौकड़ी होए आर पार। पुरख अबिनाशी रूप वटांयदा, निहकलंका जामा धार। शब्द खण्डा हथ्थ उठांयदा, आपे रक्खे तिक्खी धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे साचा हरि,

१३६४ दूसर भेव कोए ना पांयदा। हरि का भेव किसे ना पाया, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढाया, १३६४

०६ भगतन मेला मेल मिलाईआ। सन्तन साचा राह वखाया, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म पढ़ाईआ। गुरमुख एका पौड़े लए चढ़ाया, चौथे पद आप समाया। गुरसिख एका लड़ फड़ाया, शब्दी शब्द नाउँ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोग अभ्यास जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच प्रभास, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरी पाईआ। दो जहानां वेखणहारा, जागरत जोत इक्क रुशनाईआ। जती सती तपी हठी पावे सारा, निओली कर्म वेखे थाउँ थाईंआ। सन्यास वैराग देवे इक्क आधारा, आप आपणा बल धराईआ। एका नाम बोल जैकारा, राम राम रूप प्रगटाईआ। एका शब्द नाद धुन्कारा, पुरख अगम्मा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग करे खेल साचा हरि, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण मेला, आदि पुरख खेल खलाया। बण के आया गुरू गुर चेला, चेला गुर रूप धराया । शब्द बणाया सज्जण सुहेला, साचा संग रखाया। आपे कट्टणहारा धर्म राए दी जेला, आपे कुंभी नरक नवास वखाया। आपे वसे इक्क इकेला, आपे लक्ख चुरासी रिहा समाया। आपे जाणे आपणा आदि अन्त वेला, मध भेव किसे ना राया। अचरज खेल पारब्रह्म कलिजुग तेरी अन्तिम वार खेला, निहकलंका जामा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका डंका रिहा वजाया। एका डंका हरि वजांयदा, कलि कल्की लै अवतार। ब्रह्मा विष्न शिव आप उठांयदा, शब्द हलूणा देवे मार। शाह सुल्ताना हुक्म सुणांयदा, लेखा लिखे अगम्म अपार। कलिजुग वेला अन्तिम आया, लक्ख चुरासी होए ख़ुवार। सीस ताज ना कोए टिकांयदा, दर दिसे ना कोए दरबान। शाह पातशाह इक्क हो जांयदा, दो जहानां करे कार। कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा, जूठा झूठा नाता तोड़े सर्ब संसार। जो घड़या सो भन्न वखांयदा, आपे होए भन्नणहार। ब्रह्मा वेता उठ उठ नैणा नीर वहांयदा, दोए जोड़ करे निमस्कार। शंकर आपणा बल मिटांयदा, चरन धूढ़ी मंगे एका ख़ाक ख़ाकछार, विष्न आपणी झोली अग्गे डांहयदा, सच दिसे ना कोए भण्डार। पुरख अबिनाशी तेरा भाणा मिट कदे ना जांयदा, सृष्ट सबाई मेटणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू हरि मन्दिर बैठ सच्ची सरकार। हरि मन्दिर हरि बराजया, आदि पुरख अकाल। आपे बणया साचा राजन राजया, देवणहारा धुर फ़रमाण। एका सीस रक्खे ताजया, दो जहाना निगहबान। लेखा जाणे ग़रीब निवाजया, ग़रीब निमाणे वेखे आण। साचे अश्व घोड़े चढ़े ताजया, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे फिरे भाजया, जेरज अंडज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी करे पछाण। जन भगतां रक्खे लाजया, वड दाता हो मेहरवान। माणस जन्म संवारे काजया, लक्ख चुरासी फंद कटान। इक्क चढ़ाए सच ज़हाज़या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर अवतारा, करे खेल आपणी वारा, दूसर संग ना कोए रखाण। ना कोई संग ना कोई साथा, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। करे खेल पुरख समराथा, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। आपे जाणे आपणी गाथा, आदि जुगादि करे आप पढ़ाईआ। आपे पूरा करे आपणा घाटा, आपणा लेखा लेखे पाईआ। आपे आपणा जोड़े नाता, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। आपे वेखे अन्धेरी राता, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। आपे भेव चुकाए जातां पातां, चार वरन आप समाईआ। आपे जाणे पूजा पाठा, एका शब्द सति पढ़ाईआ। आपे लहिणा देणा चुकाए तीर्थ ताटा, अठसठ मूल रहे ना राईआ। आपे जुगा जुगन्तर पन्ध मुकाए दूर दुराडी वाटा, नेड़न नेड़ आप हो जाईआ। आपे नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां लक्ख चुरासी लहण देण चुकाए मस्तक माथा, जीव जंत साध सन्त भुल्ल कदे ना जाईआ। आपे भेव खुलाए नौं नौं नाथा, आपे सिद्ध चुरासी लेखे पाईआ। आपे वेखणहारा अठ तत्त अप तेज वाए पृथ्मी अकासा, मन मति बुध वेखे थाउँ थाँईआ। आपे सृष्ट सबाई होए कमलापाता, कँवल नैण सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका नाम वजाईआ। डंका नाम अगम्म अपारा,

आदि जुगादि वजाया। सुणे सुणाए सुणनेहारा, आप आपणी खेल खलाया। गुरमुखां अंदर हो उज्यारा, साचा मन्दिर वेख वखाया। अनहद धुन सच्ची धुन्कारा, धुन आत्मक आप सुणाया। रागां नादां वसे बाहरा, छत्ती राग रहे जस गाया। कागद कलम ना लिखणहारा, हरि का शब्द दिस किसे ना आया। सो पुरख निरँजण बण मीत मुरारा, हँ ब्रह्म दए समझाया। सोहँ शब्द सरगुण निरगुण धारा, सरगुण निरगुण विच टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ एका ग्राउँ एका वसे हर घट थाउँ, थान थनंतर आप सहाया। सो पुरख निरँजण एकँकारा, दूसर अवर ना कोई जणाईआ। हँ रूप सर्ब संसारा, ब्रह्म एका रूप समाईआ। दोहां विचोला सिरजणहारा, अनुभव आपणी खेल खिलाईआ। सोहँ शब्द कर त्यारा, ब्रह्मा विष्न शिव करी कुड़माईआ। निरगुण सरगुण इक्क प्यारा, सरगुण निरगुण बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वड्याईआ। सो पुरख निरँजण साची धार, हँ ब्रह्म प्रगटाईआ। हँ ब्रह्म निरँकार, स्वैम रूप सर्ब घट थाईंआ। ओम करे खेल निरँकार, दूजी कुदरत साचे वखाईआ। तीजा नेत्र इक्क अपार, आपणी जोत रक्ख रुशनाईआ। चौथा पद सच्ची सरकार, चौथे घर दए वड्याईआ। पंचम मीता परवरदिगार, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। छेवें छप्पर छन्न वसया बाहर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग जुग हथ्थ ना आए मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआला गुरूदुआर, गुरमुखां अंदर डेरा लाईआ। गुरमुखां अंदर हरि जू वड़या, दिस किसे ना आंयदा। आपणे पौड़े आपे चढ़या, आपणा मार्ग आप वखांयदा। अद्धविचकार किसे ना अड़या, सुखमन टेढी बंक बन्द ना कोए करांयदा। ईड़ा पिंगल त्रिबैणी नैणी कदे ना तरया, तारनहार आप हो जांयदा। डूँघी कंदर कदे ना वड़या, जोत निरँजण डगमगांयदा। आत्म सरोवर कदे ना ठरया, साची धारा आप वहांयदा। सच दुआरे आपे खड़या, स्वच्छ सरूपी रूप वटांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़या, चोटी जड़ ना कोए बणांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़या, गुरूआं पीरां अवतारां साधां सन्तां आप पढ़ांयदा। अग्नी हवन कदे ना सड़या, मढ़ी गौर ना कोए दबांयदा। अग्गे हो किसे ना फड़या, शाह पातशाह हथ्थ कोए ना लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला साचा हरि, जुग जुग आपणा वेस धरांयदा। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, करे कराए करनेहार। कलिजुग अन्तिम मार्ग दस्से इक्क सुखल्लड़ा, चार वरनां सच प्यार। शब्द अनादि फड़ाए पल्लड़ा, ब्रह्मा दए आधार। आपणी जोती आपे रलड़ा, जोत जगाए अगम्म अपार। गुरसिखां दर दुआरे आपे खलड़ा, आपे बणया रहे भिखार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दाता पुरख बिधाता, एका

गाए आपणी गाथा, एका सुणाए साची वार। साची वार हरि का नाउँ, आदि जुगादि सुणाया। हरिभगत उठाए फड़ फड़ बांहों, जिउँ बालक पिता माया। सिर रक्खे ठंडी छाउँ, सतिगुर पूरा आपणा नाउँ धराया। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, जो जन सरनाई आया। नथाविआँ देवे साचा थाउँ, दरगाह साची धाम वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन साचा तारया, गुर सतिगुर हो मेहरवान। कोटन कोटि जन्म दा पाप निवारयाँ, कर किरपा श्री भगवान। माणस जन्म पैज सुआरया, आत्म अन्तर एका देवे ब्रह्म ज्ञान। डुब्बदा पत्थर आपे तारया, पाहन लेखा जाणे जाणी जाण। राए धर्म ना करे खुवारया, चित्रगुप्त लेखा मंगे ना आण। लाड़ी मौत ना करे शंगारया, जिस जन उप्पर होया आप मेहरवान। वेले अन्त श्री भगवन्त गुरसिख बठाए सच बबाणया, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पातालां कढ्ढे बाहर। इक्क वखाए सच दवारया, सचखण्ड सच्चा मकान। अबिनाशी करता डेरा ला रिहा, जोती नूर नूर महान। सति सतिवादी साचा सीस ताज सुहा रिहा, पंचम पंचम पंचम पंच कर प्रधान। सति सतिवादी सति निशाना इक्क चढ़ा रिहा, आदि जुगादि रक्खे एका आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत हरी हरि आपे लए पछाण।

❋ २५ कतक २०१७ बिक्रमी हरी सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ❋

सतिगूर पूरा साहिब सच्चा सुल्तान, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी सति निशान, सति दुआरे आप झुलाईआ। जुगां जुगन्तर धुर फ़रमाण, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। लेखा जाणे दो जहान, इक्क इकल्ला सच्चा शहनशाहीआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां एका पाए आण, हुक्मी हुक्म आप फिराईआ। लक्ख चुरासी होए जाणी जाण, घट घट आपणी जोत जगाईआ। गुरमुख वेखे चतर सुजान, चातरक आपणी तृखा बुझाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढ पछाण, आप आपणा मेल मिलाईआ। एका देवे ब्रह्म ज्ञान, आत्म ब्रह्म नूर दरसाईआ। अमृत बख्शे पीण खाण, अमिउँ रस झिरना आप झिराईआ। चरन कँवल वखाए सच मकान, सच दुआरा इक्क समझाईआ। राग सुणाए अगम्मी कान, निरवैर आप अलाईआ। चार वरन बख्शे माण, ऊँच नीच राउ रंक ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा दीन दयाला, लेखा जाणे काल महांकाला, दर घर साचा इक्क समझाईआ। सतिगुर पूरा सर्ब गुणवन्त, एका रंग रंगाया। आदि जुगादी महिमा अगणत, वेद कतेब भेव ना राया। लेखा जाणे साचे सन्त, भगत भगवन्त होए सहाया। नाम निधाना

देवे मणीआं मंत, मन पंखी उड उड दहि दिश ना कोए धाया। लेखा जाणे नारी कन्त, विभचार रूप ना कोए वटाया। देवे माण विच जीव जंत, जागरत जोत कर रुशनाया। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, निवण सो अक्खर इक्क समझाया। मेल मिलावा साची संगत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा हरि निरँकारा, लेखा जाणे दर दरबारा, धुर दी कार आप करांयदा। सतिगुर पूरा अगम्म अथाह, आदि जुगादि समांयदा। जुगा जुगन्तर चलाए आपणा राह, साचा मार्ग आप वखांयदा। गुरमुख साजण हरिजन साचे लए उठा, आलस निन्दरा मूल चुकांयदा। एका अक्खर वक्खर दए पढ़ा, कागद कलम भेव ना आंयदा। साचे पौड़े आप चढ़ा, घर मन्दिर सोभा पांयदा। लेखा जाणे धुर दरगाह, गृह आपणा खोज खुजांयदा। कमलापाती मेल मिलाए सहिज सुभा, बूंद स्वांती जाम प्यांअदा। मेटे अन्धेरी राती लेखा जाणे थाउँ थाँ, अभुल्ल गुर भुल्ल कदे ना जांयदा। गुरसिख बाल अञ्याणे आपणी गोद उठाए जिउँ बालक माँ, अमृत साचा सीर प्यांअदा। सख़ा सहेला इक्क इकेला समरथ सिर रक्खे ठंडी छाँ, दो जहानां सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा शाह पातशाह, शहनशाह आपणा नाउँ धरांयदा। सतिगुर सच्चा शाहो भूप, राजन राज इक्क अख्वांयदा। वेखणहारा चारों कूट, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण फेरी पांयदा। एका नाम एका तागा
१३६८
एका सूत, एका वट आप चढ़ांयदा। एका वरख एका मास एका रुत्त, थित वार आपणे हथ्थ रख। करे खेल अबिनाशी
०६
अचुत, अलक्ख अलक्खणा दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख उपजाए साचे सुत, नादी बिन्द नाउँ धरांयदा। लेखा जाणे हरि जू हरि हरि पित, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा अलक्ख निरँजण, एका नेत्र पाए नाम अञ्जण, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। सतिगुर साहिब गहर गम्भीर गुणनिध दाता, अलक्ख अलक्खणा इक्क अख्वाईआ। आपणी रक्खे उत्तम ज़ाता, ज़ात पात ना कोए वड्याईआ। जन भगतां लेखा जाणे मस्तक माथा, पूर्ब कर्मा वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी पूरा करे घाटा, नाम दात झोली पाईआ। एथे उथे दो जहान निभाए सगला साथा, सगला संग निभाईआ। सगल विसूरा गुरमुख विरले लाथा, जिस जन आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, दीन दयाल दयानिध ठाकर आपणी इच्छया पाए भिच्छया, इष्ट देव आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा होए सहाईआ। दीना नाथा नाथ अनाथा गले लगाईआ। नाथ अनाथा सतिगुर देव, सर्बकल आप समाया। लेखा जाणे अलक्ख अभेव, अगम्म अथाह बेपरवाह रूप रंग रेख ना कोई जणाया। जन सन्तां जुगा जुगन्तर जाणे साची सेवा, सेवक आपणा रूप प्रगटाया। भेव चुकाए देवी देव, देव आत्मा वास्तक आपणा रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए जगाया। हरिजन साचा आप जगांयदा, कर किरपा गुण निधान। एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा, अन्तर आत्म सच्ची धुनकान। दीवा बाती डगमगांयदा, लेखा चुक्के रवि ससि सूरज चन्द भान। आत्म अन्तर अमृत जाम प्यांअदा, अठसठ लेखा मुक्के जगत इश्नान। काया कंचन आप वखांयदा, पंज तत्त माटी कर परवान। सुरती शब्द डोर बंधांयदा, लहिणा चुक्के पंज शैतान। एका आपणे रंग रंगांयदा, रंग रंगीला श्री भगवान। साची सेज आप सुहांयदा, आत्म ब्रह्म कर पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा, लेखा जाणे नेड़े दूरा, दूर नेड़े ना कोई रखांयदा। सतिगुर पूरा सच दुआर, एका एक सुहांयदा। जुगा जुगन्तर लए अवतार, गुरमुख सजन मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी कर खुवार, जून अजूनी सर्ब भवांयदा। लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची सोभा पांयदा। हुक्म हाकम धुर फ़रमाण, आदि जुगादि सुणांयदा। एका अक्खर कर परवान, निश्अक्खर आप पढ़ांयदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेल करे साचा हरि, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखणहारा, एका एकंकारया। सचखण्ड वसे सच दुआरा, महल्ल अटल उच्च मुनारया। दीपक जोती कर उज्यारा, निरगुण नूरो नूर डगमगा रिहा। पुरख अबिनाशी हो त्यारा, अजूनी रहित वेस वटा रिहा। जोती जामा भेख न्यारा, अनुभव प्रकाश करा रिहा। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारा, ब्रह्म ब्रह्मादि आप सुणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप धरा रिहा। आपणा नाउँ आपे रक्ख, करे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण हो प्रतक्ख, लोकमात वेख वखाईआ। सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे वेखे थाउँ थाँईआ। दो जहानां लोआं पुरीआं नौं सत्त पन्ध मुकाए नस्स नस्स, रवि ससि मुख मुख शर्माईआ। गुरमुखां दरस दिखाए हस्स हस्स, हस्त कीट एका रंग रंगाईआ। हिरदे अंदर वस वस, वस्त अमोलक एका झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे मन्दिर आपे वड़, सतिगुर पूरा सोभा पाईआ । साचा मन्दिर गुरमुख दुआरा, गुर करता कीमत आपे पांयदा। अंदर मन्दिर गुप्त ज़ाहरा, शब्द नाअरा इक्क लगांयदा। जोती जाता हो उज्यारा, दीपक दीआ इक्क जगांयदा। साढे तिन्न हथ्थ महल्ल अटल उच्च मुनारा, घर घर विच सोभा पांयदा। दीन दयाल दया कमाए इक्क वखाए ठांडा दरबारा, निरगुण तत्त ना कोई जलांयदा। एका गुर इक्क दुआरा, एका घर सच घर बारा, एका कमलापाती मीत मुरार विछड़ कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर सच्चा नाउँ निरँकार, आदि जुगादी करे खेल अगम्म अपार, रूप अनूप आप प्रगटांयदा। रूप अनूपा हरि भगवन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, अन्त आदि

इक्क अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम माया पाए बेअन्त, त्रैगुण कप्पड़ हथ्थ उठाईआ। भरमे भुल्ला जीव जंत, साध सन्त ना कोए चतराईआ। नाता तुटा नारी कन्त, सच सुहञ्जणी सेज ना कोई हंढाईआ। गुरमुख विरला काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, जिस जन सतिगुर पूरा आप चढ़ाईआ। दूजे दर ना जाए मंगत, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। मानस जन्म ना होए भंगत, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। मेल मिलाए साची संगत, हरि के पौड़े आप चढ़ाईआ। लहिणा देणा चुक्के भुक्ख नंगत, नाम निधाना झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा देवणहारा वर, जुग जुग साची सेव कमाईआ। जन भगतां सेव कमांयदा, पारब्रह्म हरि करतार। जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा, लोकमात लए अवतार। मूर्ख मूढ़े झूठे धन्दे लांयदा, नाता जोड़ काम क्रोध लोभ मोह हँकार। आसा तृष्ना रंग चढ़ांयदा, हउमें हंगता करे ख्वार। गुरमुख साचे मेल मिलांयदा, डुब्बदे पाथर जाए तार। चरन कँवल कँवल चरन इक्क टिकांयदा, काया मन्दिर अंदर डूँघी गार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरी हरि सच्चा करतार। करता पुरख हरि करनेयोग, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। आत्म रसीआ भोगे एका भोग, जुगा जुगन्तर खेल खलाईआ। हरिजन मेले धुर संजोग, जगत विजोग रहे ना राईआ। शब्द जणाए सच सलोक, सहिंसा रोग दए गंवाईआ। पार कराए चौदां लोक, लोक परलोक दए वड्याईआ। चरन दासी बणाए मुक्त मोख, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। नाता तोड़े हरख सोग, चिंता दुःख रहे ना राईआ। जिस जन आपणा दरस दिखाए अमोघ, कोटन कोटि जन्म दे पाप दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा आपणा नाउँ धराईआ। सतिगुर पूरा इक्क इकल्ला एकँकारा, जन भगतां उप्पर तुठया। देवे नाम शब्द भण्डारा, गुरमुख रहे ना दर ते रुठया। मेल मिलाए पीआ प्रीतम साचे यारा, हरि का नाम कदे ना जाए लुट्टया। किसे हथ्थ ना आए ठग्ग चोर यारा, कलिजुग जीवां भाग निखुटया। एका भुलया धुर दरबारा, आहलणिउँ डिग्गे थल्ले बोटया। ना कोई सके फिर उठाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे शाह कंगाल। शाह कंगालां सुरत संभालदा, आदि जुगादि समाया। लेखा जाणे सचखण्ड सच्ची धर्मसाल दा, धर्म दुआरे सोभा पाया। ब्रह्मा विष्न शिव आपे प्रितपालदा, करोड़ तेतीसा होए सहाया। नौं खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी निरगुण जोत खेल अकाल दा, घट घट आपणा दीप जगाया। बणे वाली दो जहान दा, शाह सुल्तान सच्चा शहनशाहया। ख़ज़ाना दए सच्चे धन माल दा, अतोट अतुट आप भराया। जुगा जुगन्तर गुरमुख साचे आपे भालदा, दर दरवेश दर दर फेरा पाया। नाता तोड़ काल महांकाल दा, सगला संग आप रखाया। अमृत आत्म इक्क उछालदा, हँस काग रूप वटाया।

१४०० ०६

लेखा जाणे पत डालू दा, फुल फलवाड़ी मात महिकाया। कलिजुग वेला अन्तिम होया बेहाल दा, हाल मुरीदा सुणन कोई ना आया। करे खेल अवल्लड़ी चाल दा, वेद कतेब भेव ना राया। गुरसिख दुआरे आपणी घाल आपे घालदा, हरिजन हरि जू भगती आप कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन लगाए आपणे लड़, एका पल्लू हथ्थ रखांयदा। साचा पल्लू हरि निरँकार, शब्द डोरी हथ्थ रखाईआ। वेखे विगसे सर्ब संसार, वेखणहारा दिस ना आईआ। भगत भगवन्त सुरत संभाल, सन्त कन्त मेल मिलाईआ। गुरमुखां सुणाए साचा ताल, नाद अनादी तलवाड़ा आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग सतिगुर सच्चा एक, हरि सति सतिवादी खेल खलाईआ। सति सतिवादी हरि निरँकारा, हरि मन्दिर बैठा सोभा पांयदा। तख्त निवासी बेऐब परवरदिगारा, नूर नुराना डगमगांयदा। गहर गम्भीर गुप्त ज़ाहरा, रूप अनूप शाहो भूप, जोत आप प्रगटांयदा। एका एक लगाए साचा नाअरा, सो पुरख निरँजण आप सुणांयदा। हँ ब्रह्म दए अधारा, पारब्रह्म आपणी खेल खिलांयदा। सोहँ शब्द सति जैकारा, सतिजुग साचे आप वखांयदा। कलिजुग भुल्ला जीव गंवारा, हरि का भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि बनवारी करे खेल अगम्म अपारी, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह सर्ब गुण दाता, पुरख बिधाता गुरमुखां करे उत्तम ज़ाता, वरन गोत ना कोई रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे कोटन कोटि, कोटन कोटी आपणी खेल खिलांयदा।

❊ २५ कतक २०१७ बिक्रमी नरायण सिँघ दे घर पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर ❊

सो पुरख निरँजण हरि मेहरवान, हरि वड्डा वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण नौजवान, आदि जुगादी एका रंग समाईआ। एकँकारा वड बलवान, निराकार ना मरे ना जाईआ। आदि निरँजण सदा सहेला निगहबान, निरवैर आपणी खेल खलाईआ। अबिनाशी करता वसणहारा सच मकान, सच दुआरे सोभा पाईआ। श्री भगवान लेखा जाणे दो जहान, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। पारब्रह्म प्रभ गुण निधान, गुणवन्ता भेव ना राईआ। जोती जोत नूर महान, जोत उजाला डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी धार आप बंधाईआ। आपणी धार बन्नूणहारा, एका रंग समाया। इक्क इकल्ला एकँकारा, सचखण्ड दुआरे सोभा पाया। आपणा करे आप सच विहारा, साचा सगन आप मनाया। आपे जाणे आपणी कारा, करता पुरख भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, हरि मन्दिर एका डेरा लाया। हरि मन्दिर हरि सुहांयदा, पारब्रह्म बेअन्त। निरगुण निरवैर आसण लांयदा, लेखा जाणे आदि अन्त, जोती जाता डगमगांयदा, आप आपणी बणाए बणत। आप आपणा संग निभांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवन्त। श्री भगवन्त खेल खिलांयदा, पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार। सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा, थिर घर साचा खोल्ह किवाड़। आप आपणा मेल मिलांयदा, लेखा जाणे आपणी वार। आप आपणा रूप प्रगटांयदा, आपे बणे कन्त भतार। आपे नारी नर नरायण अख्वांयदा, आपे सेजा माणे साची सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी एका कार। साची कार करांयदा, अबिनाशी करता पुरख अकाल। आपणा मेला आप मिलांयदा, इक्क इकल्ला दीन दयाल। नारी कन्त रूप प्रगटांयदा, सचखण्ड बैठ सच्ची धर्मसाल। आपणा अंग आप लगांयदा, आपे चले अवल्लड़ी चाल। आपणी गोद आप सुहांयदा, आप जन जननी जन्मे बाल। सुत दुलारा आप उपांयदा, आपे होया आप कृपाल। एका मन्दिर आप बहांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुत वसाए एका घर, आपे चले नाल नाल। सुत दुलारा जाया, किरपा कर पुरख अकाल। आपणे मन्दिर आप बहाया,
१४०२ वेखणहारा दीन दयाल। आपणी कुक्खों बाहर कढाया, लाल अनमुल्लड़ा एका लाल। करता कीमत आपे पाया, आदि जुगादी १४०२
बण दलाल। साचा लेखा बह समझाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे बाल। बाल
०६ निधाना शब्द सुत, पारब्रह्म उपजांयदा। लेखा जाणे अबिनाशी अचुत, लेखा लेख ना कोई वखांयदा। आप वखाए आपणी ०६
रुत्त, रुत रुतड़ी आप महिकांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़ ना कोई दिसे बुत, रूप रंग ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द वसाए साचे घर, घर मन्दिर आप उपांयदा। शब्द दुलार उपाया, कर किरपा गुण निधान। सचखण्ड दुआरे आप बहाया, इक्क वखाए सच निशान। दाई दाया एका नज़री आया, मात पित श्री भगवान। पुरख अबिनाशी जोत जगाया, आदि जुगादी रूप महान। आपणा भेव आप खुल्हाया, लेखा जणाए दो जहान। तेरा नाअरा अगम्म प्रगटाया, श्री भगवान हो मेहरवान। साचा बेड़ा बन्न्ह चलाया, आपे वेखे आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरे बख्शे माण। चरन दुआर हरि पेख्या, शब्द सुत करे प्रनाम। तूं साहिब सच्चा लिखणहारा लेखया, हउँ मूर्ख बाल अंञाण। कवण रूप होए तेरा भेख्या, कवण खेल करे दो जहान। कवण नाम होए अदेसया, कवण घर करीं परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ सेवक बालक चरनी डिग्गा आण। चरन ध्यान लगाया, सुत दुलारा बाल निधान। दोए जोड़ सीस झुकाया, मंग मंगे एका दान। तेरा विछोड़ा विछड़

ना जाया, तेरा रूप अगम्म श्री भगवान। तेरा वसेरा एका पाया, सचखण्ड सच्चा मकान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, झुलदा रहे तेरा सच निशान। पुरख अबिनाशी दया कमांयदा, देवे दरस दातार। साची तेरी सेवा इक्क वखांयदा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड कर त्यार। ब्रह्मा विष्न शिव तेरा संग निभांयदा, लक्ख चुरासी कर अकार। निराकार तेरा खेल खिलांयदा, घट घट वजाए तेरी सितार। नौं नौं चार वेख वखांयदा, आदि जुगादी मीत मुरार। एका चौकड़ वण्ड वण्डांयदा, वण्डण वण्ड अपर अपार। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग झोली पांयदा, नाता तोड़ सर्ब संसार। भगत भगवन्त साध सन्त सेवा लांयदा, अवतारां देवे इक्क अधार। गुर गुर तेरा नाउँ धरांयदा, आप वजाए सच सितार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा यार। साचा यार मीत मुरारा, पिता पूत वेख वखाईआ। पुरख अगम्मा हो त्यारा, सचखण्ड दुआरे दए वड्याईआ। तेरा मेरा इक्क प्यारा, विछड़ कदे ना जाईआ। जुगा जुगन्तर साची कारा, जुग चौकड़ी गेड़ा आप दवाईआ। एका चौकड़ लेखा जाणे जगत अवतारा, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख एका आपणा भेव खुल्हाईआ। आदि पुरख प्रभ भेव खुल्हाया, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। साचे सुत आप समझाया, एका देवे साचा दान।
१४०३ नौं नौं चार गेड़ा आपणे हथ्थ रखाया, लेखा जाणे दो जहान। जुग जुग आपणा वेस वटाया, वेस अवल्लड़ा श्री भगवान। १४०३
०६ कलिजुग अन्तिम होए सुहाया, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। पंज तत्त चोला इक्क हंढाया, विचोला बणे निगहबान। नानक ०६
तोला नाल रखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कौल हरि मेहरवान। हरि साचा कौल करार किया, कीमत करता कोए ना पांयदा। आपणा बीज आपे बीआ, आपे वेख वखांयदा। आपणी जोत आपे दीपक दीआ, प्रकाश प्रकाश आप धरांयदा। आपे बीवी आपे मीआँ, नारी कन्त आप हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। लेखा हथ्थ करतार, एका एक जणाईआ। कलिजुग आए अन्तिम वार, सुत दुलारे तेरी वज्जे वधाईआ। तेरा रूप धरे आप निरँकार, लोकमात करे कुड़माईआ। तेरा खण्डा तेज कटार, तेरा नाम सिफ्त सलाहीआ। तेरा रूप ब्रह्म अपार, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह आपणी घाड़त आप घड़ाईआ। तेरा करे सच प्यार, सगला संग आप हो जाईआ। तेरा मृदंग वजाए आप करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख दित्ता वर, आदि आपणा भेव आप खुल्हाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाउणा, सति सति सति समझांयदा। नानक निरगुण जोत जगाउणा, नौं नौं जामे वेस वटांयदा। नौं खण्ड पृथ्मी भेव खुल्हौणा, नौं दुआरे पन्ध मुकांयदा। नौं नौं नाथ रहिण

ना पाउणा, चुरासी कल ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत दित्ता वर, एका दर समझांयदा। साचा दर समझावणहारा, एका रंग समाया। कलिजुग वेखे इक्क दुआरा, एका घर दए वड्याआ। एका जोत ना कोई वरन ना कोई गोत आदि अन्त होए पसारा, निरगुण आपणा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, वर दाता भेव खुलाया। कलिजुग वेला अन्त आउणा, हरि साचा शब्द जणाईआ। सृष्ट सबाई चार वरन अठारां बरन घर घर करलाउणा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। शाह सुल्ताना सच धर्म ना किसे वखाउणा, रईयत रोवे नेत्र नैणा नीर वहाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करते तेरा रूप इक्क प्रगटाउणा, तेरे नाम दए वड्याईआ। आपणा सुत आप बनाउणा, पुरख अकाल बणे पिता माईआ। माता गुजरी कुक्ख भाग लगाउणा, अंदर वड़ किसे लभ्भे ना साचा माहीआ। दस दस मास ना किसे बन्द रखाउणा, गर्भ वास ना अग्न तपाईआ। तेग बहादर पिता जगत मनाउणा, हरि का भेव ना कोई पाईआ। चुताली बरस मात पित सति सन्तोख हंढाउणा, चौथे जुग वज्जे वधाईआ। अबिनाशी करते तेरा बीज आप बिजाउणा, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सुत दुलारा आपणा आप उपाईआ। सुत दुलारा हरि हरि साज, आपणी दया कमांयदा। पुरख अकाल मारे इक्क आवाज़,
१४०४ गोबिन्द एका नाउँ धरांयदा। गग्गा गोबिन्द गुर कर प्यार, गहर गम्भीर दया कमांयदा। काया गोर वसया बाहर, डूँग्घी १४०४
०६ कंदर ना डेरा लांयदा। बब्बा बिन्द इक्क अपार, पुरख अबिनाशी आपणी आप उपजाईआ। दद्दा देवे देवणहार, दिस किसे ना आंयदा। एका होड़ा कर त्यार, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। बिहारी अंदरे अंदर करे विचार, घर घर विच बूटा लांयदा। उत्ते टिपी रोवे ज़ारो ज़ार, हरि दा विछोड़ा झल्लया कदे ना जांयदा। गोबिन्द अक्खर तिन्ने कर त्यार, तिन्ने लावा बिन्दी होड़े मेल मिलांयदा। तिन्नां तत्तां वसया बाहर, तिन्नां गुणां विच कदे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सुत अबिनाशी अचुत, गोबिन्द सूरा आप उपांयदा। गोबिन्द सूरा सुत उपाया, पुरख अकाल दया कमाईआ। त्रैगुण माया विच ना आया, काल महांकाल चरना हेठ दबाईआ। पंज तत्त साची धर्मसाल इक्क वखाया, घर मिल्या साचा माहीआ। नाद अनादी ताल वजाया, दिवस रैण वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे सोभा पाईआ। गोबिन्द अक्खर अक्खर अपारा, निष्अक्खर मेल मिलाया। सस्सा किला कर त्यारा, सतिगुर साचा वेख वखाया। स्यारी मंगे बण भिखारा, चारों कुंट फेरा पाया। उत्ते टिपी करे हाहाकारा, हरि का भेव कोई ना आया। घग्गा घाड़न घड़े अपर अपारा, घड़न भन्नणहार पुरख समरथ इक्क अख्वाया।

जोद्धा सूरबीर बली बलकारा, दो जहानां आपणा नाउँ धराया। गोबिन्द सिँघ मार शब्द ललकार, पुरख अकाल आपणा सुत उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा भेव दए जणाया। गोबिन्द अक्खर तिन्न तिन्न छे, छे शास्त्र भेव ना पांयदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आप मुकाया आपणा पन्ध, चार वेद दिस ना आंयदा। अमृत बरखे एका मेंह, पुराण अठारां सर्ब कुरलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखांयदा। सूरबीर सुत उपन्नया, वड जोद्धा बलकार। लोकमात चढ़या चन्नया, जगत अन्धेर होया उज्यार। कूड़ विकारा फिरे भन्नया, चारों कुंट आए हार। बिन वसे छप्पर छन्नया, काया मन्दिर करे प्यार। दिवस रैण फिरे भन्नया, ग़रीब निमाणे पावे सार। चार वरनां देवे डन्नया, एका रूप वखाए पुरख अकाल। गुरमुख विरला लोकमात मन्नया, लक्ख चुरासी होए खुवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे करे कौल इकरार। कौल इकरार घर साचे, हरि साचा सच करांयदा। कलिजुग वेखे लग्गी आंचे, त्रैगुण माया तत्त तपांयदा। कूड़ कुड़यारा घर घर नाचे, माया ममता नाच करांयदा। कोई ना ढले साचे ढांचे, जूठ झूठ सर्ब हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव आप खुल्हांयदा। गोबिन्द तेरी साची कार, सिँघ रूप आप लगाईआ। सिँघ होए सच्चा शाहकार, शहनशाह वड्डी वड्याईआ। चार वरनां करे पार, पारब्रह्म सिफ्त सलाहीआ। पंचम देवे इक्क अधार, पंचम मेला सहिज सभाईआ। अमृत बख्शे ठंडी ठार, सति प्याला हथ्थ उठाईआ। शब्द अगम्मी खिच कटार, दो धारा आप चलाईआ। आपे गुरमुखां उत्तों आपणा करे वार, आर पार आपणे पार कराईआ। गुरमुख लहू लाल रंग प्रेम सितार, प्रेमी प्रेम नाल वजाईआ। गुरसिख आपणी हथ्थीं ना करया कोई कुरबान, भरमे भुल्ली सर्ब लुकाईआ। सतिगुर पूरा देवणहारा जीआ दान, जीव बुध ना सेव कमाईआ। आपणा आप करे कुरबान, करबला लेखा दए मुकाईआ। चार यार संग मुहम्मद दूर दुराडा बैठे रोवण कुरलाण, अल्ला राणी खुल्हड़े केस गल वखाईआ। जबराईल देवे धुर फ़रमाण, असराईल नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपे लए वड्याईआ। पंचम मेला जोड़ जुड़ाया, शब्दी खण्डा हथ्थ उठांयदा। वरनां बरनां भेव चुकाया, एका रंग रंगांयदा। अमृत साचा जाम प्याया, बीर रस आप भरांयदा। साचे पौड़े आप चढ़ाया, पूजा पाठ ना कोई करांयदा। एका दरस कर तरस, गुरमुखां आप कराया, दे दरस तृप्त वखांयदा। पुरख अकाल इष्ट इक्क जणाया, आप आपणा सीस झुकांयदा। गुरसिखां अग्गे झोली आपे डाहया, आपणी भिच्छया मंग मंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी धारा आप बंधांयदा। साची धारा गुरू गुर चेला,

१४०५
०६

गुर आप बंधाईआ। आपे बणया सज्जण सुहेला, आपे होए साचा माहीआ। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, आपे पुरी अनन्द तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भाणा इक्क समझाईआ। साचा भाणा हरि समझांयदा, भुल्ल रहे ना राया। कलिजुग आपणी खेल खिलांयदा, मेटणहारा आप हो जाया। लोकमात वेख वखांयदा, जगत नाता जोड़ जुड़ाया। चारे जुग फोल फुलांयदा, चारे सुत लए प्रगटाया। सतिजुग अजीत नाउँ धरांयदा, जुझार त्रेता वण्ड वण्डाया। ज़ोरावर सिँघ द्वापर अंग लगांयदा, कलिजुग फ़तह सिँघ फ़तह डंका इक्क वजाया। चौवां आपणी हथ्थीं भेट चढ़ांयदा, पुरख अकाल शुकर इक्क मनाया। माता पिता ना संग रखांयदा, बिरध अवस्था लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर दरवेश आपणा भेव खुल्हाया। दर दरवेश गुर गोबिन्द, आपणा खेल खिलांयदा। गढ़ी ताज गुणी गहिन्द, रूप अनूप आप प्रगटांयदा। सिँघ संगत कोलों मंगी इक्क मंग, सीस सीस नाल वटांयदा। गुरसिख तेरे उत्तों आपणा आप वारे वाली हिन्द, हिन्द दी ख़ाक आपणा सथ्थर हेठ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पुरख अकाल साचा सुत, गोबिन्द एका जांयदा। गोबिन्द सुत गुजरी लाल, सूलां सेज हेठ वछाईआ। उप्पर बैठा मार छाल, जगत जहाना साचा माहीआ। आपे बणया शाह कंगाल, नंगी पैंरी फेरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आपणे दर, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। यारड़ा सथर हंढांयदा, गुर गोबिन्द नौजवान। पुरख अकाल इक्क मनांयदा, देवणहारा धुर फ़रमाण। हाल मुरीदां इक्क सुणांयदा, आप आपणी कर भाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अवल्लड़ी चाल। गुर गोबिन्द शब्द सुणाया, सिँघ रूप अश्व अस्वार। पुरख अबिनाशी दया कमाया, लोकमात बण दलाल। लेखा लेखे आपे पाया, सुत साचे कर संभाल। तेरा लहिणा दए चुकाया, तेरी पूरी करे घाल। कलिजुग अन्तिम होए सहाया, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां नौं खण्ड पृथ्मी तेरा वजाए ताल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, निरगुण रूप पुरख अकाल। पुरख अकाल दया कमांयदा, गुर गोबिन्द गले लगा। तेरा रूप अनूप मात प्रगटांयदा, शब्द शब्दी नाउँ धरा। पंज तत्त चोला तेरा आप हंढांयदा, सम्बल नगरी नाउँ रखा। जोती जोत डगमगांयदा, नूरो नूर करे रुशना। दिस किसे ना आंयदा, कोटन कोटि राह रहे तका। ध्यान विच किसे ना आंयदा, साध सन्त आदि अन्त आपणा बैठे ध्यान लगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझा। लेखा हरि समझाया, कर किरपा गुण निधान। गोबिन्द सूरा आप मनाया, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। तेरा नाउँ नाद साची तूरा दए वजाया, पुरीआं

लोआं होण हैरान। कलिजुग नाता कूड़ा दए तुड़ाया, सच सुच्च करे प्रधान। तेरी मस्तक धूढ़ा गुरमुखां मस्तक दए लगाया, चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मुग्ध अञ्याण। तेरा बेड़ा लए तराया, एका चप्पू लाए आण। जो सरसे आया रुढ़ाया, लोकमात करे प्रधान। पहलों आपणे चरन मिलाया, नाता तोड़ सर्ब जहान। निहकलंक आपणा नाउँ रखाया, प्रगट होए जोद्धा सूरबीर बली बलवान। एका बंका दए सुहाया, बंक दुआरी हरि भगवान। एका डंका दए वजाया, पकड़ उठाए राज राजान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आदि आदि, निरगुण निरगुण करया कौल, पूरा करे उप्पर धौल, धरनी धरत धवल वेख वखाण। कलिजुग अन्तिम पूर कराउणा, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां एका रंग रंगाउणा, लक्ख चुरासी एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। शाहो भूप राज राजान इक्क अख्वाउणा, जगत जगदीस वड्डी वड्याईआ। साचा छत्र सीस झुलाउणा, बीस बीस सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आपणे दर, दर दरवेशा नर नरेशा, लेखा जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा, शंकर लेखा रहे ना राईआ। ब्रह्मा विष्न शिव पन्ध मकाउणा, त्रै त्रै आपणी खेल खिलांयदा। एका डंका नाम वजाउणा, करोड़ तेतीस सफा उठांयदा। मनमति मलेछ कोए रहिण ना पाउणा, गणपति गणेश ना कोए मनांयदा। रिखी केश गोवर्धन ना किसे सीस झुकाउणा, मस्तक तिलक ना कोए लगांयदा। पुरख अबिनाशी रूप प्रगटाउणा, पुरख अकाल नाउँ रखांयदा। गोबिन्द सूरा नाल रलाउणा, शब्द शब्दी मेल मिलांयदा। सम्बल नगरी धाम सुहाउणा, साढे तिन्न हथ्थ गढ़ उपांयदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन डेरा लाउणा, उच्च महल्ल अटल मुनारा एका वसे हरि निरँकारा, दूसर संग ना कोए रखांयदा। गोबिन्द सुत सुत दुलारा, आदि जुगादी इक्क प्यारा, जुगा जुगन्तर बन्ने धारा, कलिजुग वेखे अन्तिम वारा, कूड़ कुड़यारा पन्ध मुकांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदिन अन्ता खेल महान, देवणहारा साचा दान, जुगां जुगन्तर आपणी रचना आपे रच, आपे वेख वखांयदा।

✻ २६ कत्तक २०१७ बिक्रमी गुरनाम सिँघ दे घर पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर ✻

थिर घर ठांडा साचा दर, सो पुरख निरँजण आप उपाया। निरगुण निरवैर अंदर वड़, हरि पुरख निरंजण आसण लाया। एकँकारा आपणी किरपा आपे कर, साचा मन्दिर आप सुहाया। आदि निरँजण दीप उजाला एका कर, नूर नुराना डगमगाया। श्री भगवान सच दुआरे आपे खड़, रूप अनूप आप प्रगटाया। अबिनाशी करता देवणहारा वर, आदि जुगादि आपणी खेल खिलाया। पारब्रह्म सरन सरनाई जाए पड़, आपणी भिख्या मंग मंगाया। सति पुरख निरँजण सति दुआरे सच

सिँघासण पुरख अबिनाशण आपणा खेल करे हरि, भेव अभेदा आप खुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच डेरा लाया। सचखण्ड अंदर थिर दरबारा, पुरख अबिनाशी आप उपांयदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। ना कोई दीसे चार दीवारा, छप्पर छन्न ना कोए छुहांयदा। रवि ससि ना कोए उज्यारा, मंडल मंडप ना कोए वखांयदा। गगन गगनंतर ना कोए अखाड़ा, लोआं पुरीआं ना वेख वखांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव ना लाए कोए नाअरा, त्रैगुण माया ना वण्ड वण्डांयदा। ना कोई करे पारा, साध सन्त गुर पीर अवतार जीव जंत ना कोए प्रगटांयदा। करे खेल प्रभ करनेहारा, करता पुरख आपणा खेल आप खलांयदा। जूनी रहित वसे सभ तों न्यारा अनुभव प्रकाश आपणी धार चलांयदा। घर मन्दिर सोहे इक्क दुआरा, महल्ल अटल उच्च मुनारा, आप आपणा आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर दुआरा आपे खोल्ह, आदि जुगादी बैठा रहे अडोल, अडुल आपणा नाउँ धरांयदा। थिर घर वासा पुरख अबिनाशा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। करे खेल शाहो शाबासा, शहनशाह वड्डी वड्याईआ। आपे होए तख्त निवासा, तख्त ताज आप हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वेखे एका घर, घर सुहञ्जणा निरगुण जोत, इक्क रुशनाईआ। थिर घर साचा हरि भगवन्त, आदि जुगादि सुहांयदा। इक्क इकल्ला साचा कन्त, सति पुरख निरँजण आसण लांयदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ठांडा दर सच्चा दरबारा, थिर घर खोल्हे आप किवाड़ा, आपणा मन्दिर वेख वखांयदा। साचे मन्दिर खोल्ह किवाड़, आपणी दया आप कमाईआ। पुरख अबिनाशी हो उज्यार, निरगुण दाता पुरख बिधाता एका जोत करे रुशनाईआ। बैठा रहे इक्क इकांता, अकल कल भेव ना राईआ। उत्तम रक्खे आपणी ज़ाता, जोती जाता बेपरवाहीआ। सर्बकल आपे समराथा, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। आपे देवणहारा दाता, साची इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वेखे एका घर, घर वड्डा वड वड्याईआ। घर वड्डा हरि सालांहयदा, एका एकँकार। पुरख अबिनाशी वेख वखांयदा, निरगुण रूप अगम्म अपार। पारब्रह्म भेव ना आंयदा, श्री भगवान खेले खेल खेलणहार। सो पुरख निरँजण आपणा पर्दा आपे लांहयदा, हरि पुरख निरँजण मेला अपर अपार। आदि निरँजण रूप प्रगटांयदा, जोती जोत कर उज्यार। साचे तख्त सोभा पांयदा, तख्त निवासी बैठ सच्ची सरकार। थिर घर साचा इक्क वड्यांअदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि करतार। हरि करता खेल खिलांयदा, सचखण्ड दुआरा खोल्ह। घर विच घर आप बणांयदा, थिर मन्दिर इक्क अडोल। थिर घर साचे आसण लांयदा,

१४०८
०६

पुरख अबिनाशन आपणा कंडा आपे तोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वेखे एका हरि, आपणा भेव अलक्ख अलक्खणा आप खोल्। ठांडा दर धुर दरबारा, हरि साचे सच खुल्हाया। आदि जुगादी वेखे वेखणहारा, जुग जुग आपणा रूप प्रगटाया। साचा नाद सच्ची धुन्कारा, गृह मन्दिर आप वजाया। एका शब्द बोल जैकारा, आपणा अक्खर नाम पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मन्दिर इक्क सुहाया। साचा मन्दिर सुहांयदा, निरगुण दाता बेपरवाह। जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा, शब्द गुर बण मलाह। लोकमात वेख वखांयदा, लक्ख चुरासी थाउँ थाँ। गुरमुख साचे आप उठांयदा, आप दृढ़ाए आपणा नाँ। हरिजन साचे मेल मिलांयदा, लेखा जाणे पिता माँ। हरि सन्तन साचा रंग रंगांयदा, रंग मजीठी इक्क चढ़ा। भगत भगती मार्ग लांयदा, आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ा। रूप अनूप आप दरसांयदा, आत्म दरसी दरस करा। आपणा भेव आप खुल्हांयदा, दूई द्वैती पर्दा लाह। साचे मन्दिर सोभा पांयदा, पारब्रह्म अगम्म अथाह। एका जोती जोत जगांयदा, नूर नुराना कर रुशना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, थिर दरबारा इक्क सुहा। थिर दरबारा खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। गुरमुखां मिटाए पंचम धाड़ा, झूठा नाता तोड़ तुड़ांयदा। गुरमुखां देवे इक्क अधारा, शब्द शब्दी मेल मिलांयदा। सृष्ट सबाई साचा

१४०६ ०६

नाअरा, नाद अनादी धुन सुणांयदा। भगतां सुहाए सच मुनारा, घर मन्दिर खोज खुजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए ठांडा दर, दर ठांडा आप खुल्हांयदा। दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा, एका एक खुल्हाईआ। गुरमुखां मारे नित नवित अवाजा, दिवस रैण सेव कमाईआ। गुरमुखां दर फिरे भाजा, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। सन्तन रक्खे साची लाजा, लाजावन्त सच्चा शहनशाहीआ। जन भगतां रचे आपे काजा, करता पुरख दया कमाईआ। हथ्थ रखाए अनहद वाजा, घट घट आप वजाईआ। अश्व घोड़े चढ़े ताजा, शब्द शब्दी रिहा दुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आपे खोल्, थिर घर साचे रिहा बोल, बोल बोला भेव ना कोई जणाईआ। साचा शब्द बोल जैकारा, पुरख निरँजण आप अल्हांयदा। रसना जिह्वा ना कोए सहारा, बत्ती दन्द ना कोए हिलांयदा। त्रैगुण तत्त ना कोए वणजारा, पंज तत्त ना कोए हंढांयदा। रक्त बूंद ना लाए कोए गारा, पुरख अबिनाशी आपणा रूप आपे आप धरांयदा। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, लोकमात वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, थिर घर साचा इक्क वखांयदा। थिर घर साचा सच महल्ला, सो पुरख निरँजण आप सुहांयदा। अबिनाशी करता बैठा इक्क इकल्ला, दूसर संग ना कोए रलांयदा। आपणा दीपक आपे बला, जोती जोत डगमगांयदा। सच संदेश

१४०६ ०६

नर नरेश एका घल्ला, शब्द शब्दी ताल वजांयदा। लोकमात मार झात, पंज तत्त आत्म ब्रह्म पारब्रह्म फड़ाए पल्ला, सगला संग निभांयदा। वसणहारा जला थला, जल थल महीअल आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, थिर दरबारा आप खुलांयदा। थिर दरबारा अपर अपार, सतिगुर पूरा आप खुल्हाईआ। गुरमुख विरला पावे सार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। जुगा जुगन्तर लक्ख चुरासी सुत्ती रहे पैर पसार, हरि का रूप दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साची कार, करे कराए करनेहार, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। हरिजन मेले थिर घर, थिर वज्जदी रहे वधाईआ। सतिगुर पूरा आपणी किरपा कर, कर किरपा होए सहाईआ। आवण जावण चुकाए डर, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। राए धर्म ना मारे मार, वेले अन्त ना दए सज़ाईआ। नर्क निवास ना वेखे घर, गर्भ वास ना फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख विरले साचा घर वखाईआ। साचा घर सच दरबारा, हरि सन्तन वण्ड वण्डांयदा। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, गुर मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। एथे उथे दए सहारा, दो जहानां वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां करे पार किनारा, जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकांयदा। एका बख्शे चरन दुआरा, चरन चरनोदक मुख चुवांयदा। कागद कलम ना लिखणहारा, चारे वेद मुख शर्मायदा। अठारां पुराण करन पुकारा, शास्त्र सिमरत सर्ब कुरलांयदा। गीता ज्ञान ना कोए सहारा, अठारां अध्याए एका एक एका रंग रंगांयदा। तीस बतीस जगत नाअरा, जगत हदीस अञ्जील कुरान पढ़ांयदा। बाणी बाण गुर एका मारा, आर पार आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला साचा हरि, जुगा जुगन्तर वेस धर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन साचे थिर घर वड़ना, सतिगुर पूरा आप बहाईआ। आत्म अन्तर चौथे पौड़े आपे चढ़ना, चौथा पद इक्क वखाईआ। त्रैगुण अग्नी कदे ना सड़ना, माया ममता मोह मिटाईआ। दोए दोए लोचण दरसण करना, नेत्र नैण इक्क समझाईआ । एकँकारा हरि निरँकारा कन्त भतारा एका दाता वरना, सुहञ्जणी सेज सच हंढाईआ। पंचम मीता इक्क अतीता दर दुआरे दरसन करना, आसा तृष्ना दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वेखे एका घर, कमलापाती दीवा बाती इक्क जगाईआ। घर दीआ घर बाती, घर कँवल कँवल प्रकाशया। घर मेला हरि हरि कमलापाती, घर मंडल साची रासया। घर देवे अमृत बूंद स्वांती, घर पूरी करे आसया। घर दरस दिखाए इक्क इकांती, गुरसिख होए ना कोए निरासया। घर खोल्हे बन्द ताकी, अन्ध अन्धेर आप मिटासया। घर जोत निरँजण इक्क प्रकाशी, घर मेला शाहो शाबासया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगां जुगन्तर जन

भगतां बुझाए लग्गी बसन्तर, लेखा चुकाए दस दस मासया। दस दस मास लेख चुकाउणा, गुरमुखां गुर गुर दया कमांयदा। साचा मन्दिर इक्क वखाउणा, डूँग्घी कंदर फोल फुलांयदा। त्रैगुण माया जंदर आप तुड़ाउणा, नाम खण्डा हथ्थ चमकांयदा। उच्चे टिल्ले पर्बत आप चढ़ाउणा, बजर कपाटी पार करांयदा। अनहद साचा राग सुणाउणा, घर धुन नाद वजांयदा। ब्रह्म ब्रह्मादि खोज खुजाउणा, आत्म दरसी खेल खिलांयदा। अमृत आत्म जाम पिआउणा, निझर झिरना सति झिरांयदा। आत्म सेजा आप सुहाउणा, बंक दुआरी डेरा लांयदा। सुरती शब्दी मेल मिलाउणा, जगत विछोड़ा पन्ध कटांयदा। साचे मन्दिर सोभा पाउणा, निरगुण जोती जोत रूप प्रगटांयदा। थिर घर साचा इक्क वसाउणा, गुरमुख साचे आप बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई देवे वर, एका तत्त आप समझांयदा। थिर घर बैठण बैठण योग, दूसर अवर ना कोए चतराईआ। भगतन मेला धुर संजोग, सति पुरख निरँजण ल्ए मिलाईआ। माया ममता हउमे हंगता दूई द्वैती कट्टे रोग, एका अक्खर दए पढ़ाईआ। हरि का नाउँ चुगाए साची चोग, रस फीका सर्ब लोकाईआ। अगम्म अगम्मड़ा बोले इक्क सलोक, निश्अक्खर करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे लोक परलोक, दो जहानां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए साचा घर, थिर दरबारा आप सुहाईआ। थिर दरबारा सच दुआर, हरि साचा सच समझांयदा। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत मेल मिलाए एका वार, मिल्या मेल विछड़ ना जांयदा। सतिगुर पूरा कारज दए संवार, पंज दूत नेड़ कोए ना आंयदा। गृह मन्दिर कर उज्यार, घर दीपक डगमगांयदा। एका बख्शे अमृत ठंडा ठार, आसा तृष्ना भुक्ख गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बहाए साचे घर, साचा मन्दिर आप सुहांयदा। साचा मन्दिर तख्त सुहावा, सतिगुर पूरा आप उपांयदा। ना कोई चूल ना कोई पावा, ना कोई बाढी बणत बणांयदा। ना कोई रूप रंग रेख दिसे नावां, अगम्म अगम्मड़ी खेल खिलांयदा। ना कोई नगर खेड़ा दिसे गरावां, गृह मन्दिर आपणा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे आपे वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, साचे तख्त बैठा चढ़, गुरमुखां फड़ाए एका लड़, शब्दी डोर हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर देवे वर, लेखा जाणे नारी नर, नर नरायण हरि निरँकारा, कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। कलिजुग अन्तिम हरि अवतार, निरगुण जोती जोत जगाईआ। वसणहारा सचखण्ड दुआर, लोकमात करे रुशनाईआ। ठांडा रक्खे इक्क दरबार, थिर घर बैठा सेज सुहाईआ। डंका वजाए अपर अपार, शब्द शब्दी नाउँ प्रगटाईआ। जुग जुग विछड़े मेले यार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। पूर्ब लहिणा कर्म विचार,

१४११ ०६

कर्म कुकर्मा डेरा ढाहीआ। नाता जोड़े आप करतार, जोड़नहारा दिस ना आईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढे बाहर, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्म अन्तर करे प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। रसना बोले ना कोए जैकार, बत्ती दन्द ना कोए सुणाईआ। निरगुण निरगुण निरगुण नाल करे गुफ़तार, बेऐब सच्चा माहीआ। भगत भगवन्त वसे इक्क दरबार, सच दरबारा आप सुहाईआ। सतिगुर पूरा करे प्यार, हरि सज्जण लए मिलाईआ। माणस जन्म पैज जाए संवार, आपणे लेखे आपे पाईआ। ग़रीब निमाणयां दए आधार, जिस बख्शे सच सरनाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां करे बाहर, चौदां लोक चरनां हेठ दबाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गुरमुख साचे तेरे चरन करन निमस्कार, अद्धविचकार बैठे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस जन सतिगुर मिल्या मीत मुरार, संसा रोग रहे ना राईआ। सुन्न अगम्मी करे पार, धूंआँधार ना कोए वड्याईआ। थिर घर दरबारा खोल्ह किवाड़, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। गुरसिख साचे अंदर वाड़, आपे वेखे थाउँ थाँईआ। बणया रहे चोबदार, सेवक सेवा सच कमाईआ। आदि जुगादी ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। मरे ना जम्मे विच संसार, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। चौदां विद्या ना करे कोए विचार, लेखा जाणे जगत पढ़ाईआ। आपे वसे सभ तों बाहर, निरगुण दाता बेपरवाहीआ । आपे घट घट रिहा पसार, लक्ख चुरासी आसण सिँघासण आत्म सेजा आप सुहाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निरगुण निरवैर पुरख अकाल जूनी रहित दीन दयाल, जोती जामा भेख वटाईआ। निहकलंका लै अवतार, शब्द डंका वजाए विच संसार, समुंद सागर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कंदर फोल फुलाईआ। गुरसिखां करे इक्क प्यार, मति सुरमत देवे इक्क आधार, एका इष्ट पुरख अकाल, अन्तर दृष्ट दए खुल्हाईआ। सुरती सुरत ना होए बेहाल, मूर्त अकाल होए दयाल, गुरमुख वेखे साचे लाल, गुर गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा रूप अनूप शाहो भूप सति सरूप अनुभव धार, खेल अपार, हरिजन हरि जू हरि मन्दिर लए मिलाईआ। किरपा कर गुण निधान, शब्द रखाए इक्क निशान, चरन कँवल कँवल चरन बख्शे भगत ध्यान, भगत भगवन्त नारी कन्त साजण मीत मुरार हरि करतार, जगत विछोड़ा देवे कट्ट, थिर घर वखाए एका हट्ट, गुरमुख सज्जण बहे डट, तीर्थ तट जगत किनार गुरमुख नहावण कदे ना जाईआ। जिस जन मिल्या सतिगुर समरथ, महिमा आपणी आप जणाए अकथना अकथ, नाम चढ़ाए साचे रथ, सति सरूपी देवे वथ्थ, हउमे हंगता हँकारी बुरज जाए ढठ्ठ, मन मनूआ गेड़े उलटी लठ्ठ, अन्तर जोत जगाए लट लट, दूई द्वैती मेटे फट, अमृत आत्म सति प्याला एका जाम एका वार एका देवे घत, लेखा जाणे हड्ड मास नाड़ी रत, मेल मिलावा कमलापत, त्रैगुण तत्त ना अग्न जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर मेले साचा हरि, गुरमुख सज्जण एका करन मजन, दुरमति मैल रहे ना राईआ ।

✻ २६ कत्तक २०१७ बिक्रमी करतार सिंघ दे घर पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर ✻

सतिगुर पूरा हरि समरथ, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। आदि जुगादि चलाए रथ, रथ रथवाही सेव कमांयदा। लोकमात हो प्रगट, निरगुण सरगुण रूप वटांयदा। वसणहारा घट घट, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। जन भगतां देवे नाम वथ, वस्त अमोलक झोली पांयदा। लहिणा जाणे मस्तक मथ, धुर मस्तक वेख वखांयदा। जगत विकारा पाए नथ्थ, शब्द डोरी हथ्थ उठांयदा। दुरमति मैल देवे कट्ट, माया ममता मोह चुकांयदा। चरन दुआर वखाए साचा हट्ट, सच सदा इक्क खुल्हांयदा। लेखा जाणे तीर्थ तट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा दया कमांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, एका रंग समाया। जुगा जुगन्तर खेल महान, श्री भगवान आप कराया। शब्द सरूपी सति निशान, त्रैगुण अतीता आप झुलाया। लोकमात होए प्रधान, निरगुण सरगुण वेस धराया। साचे सन्त करे परवान, पारब्रह्म वड्डी वड्याआ। एका देवे नाम निधान, लिखण पढ़ण विच ना आया। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, दूई द्वैती पर्दा लाहया। सच वखाए इक्क मकान, हरि जू हरि मन्दिर डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा साहिब, हरि सति पुरख निरँजण आप अख्वाया। सतिगुर पूरा साचा हरि, हरि बिन अवर ना कोए जणाईआ। जन भगतां वखाए एका दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। आत्म अन्तर आपणा घाड़न आपे घड़, घाड़न घड़े सर्ब लोकाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव आपे फड़, सेवक सेवा साची सच समझाईआ। लक्ख चुरासी नारी नर, नर नरायण रूप प्रगटाईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख खेल खलाईआ। सन्त साजण लए वर, हरि सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा पातशाह, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, आदि जुगादि समाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाला, पुरख अकाल इक्क अख्वांयदा। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, थिर घर साचे सोभा पांयदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर भगत वछल, दीनन बणे कृपाला, कृपानिध आपणा नाउँ धरांयदा। चले चलाए अवल्लड़ी चाला, आपणा मार्ग आपणा पन्थ आपे लांयदा। जन भगतां दस्से राह सुखाला, चरन कँवल ध्यान जणांयदा। लेखा जाणे लक्ख चुरासी पत डाल्हा, ब्रह्म फुलवाड़ी वेख वखांयदा। सेव लगाए काल महांकाला, काल दयाल रूप वटांयदा। आपे पावणहारा त्रैगुण माया, जगत जंजाला, पंचम नाता जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा साहिब सुल्तान, लेखा जाणे दो जहान, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। सतिगुर पूरा भगत उधारन, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आदि जुगादि आए पैज संवारन, लोकमात दए वड्याईआ। शब्द अगम्मी दस्से एका धारन, धरनी धरत धवल समाईआ। आपे जाणे आपणा कारन,

१४१४ जगत क्रिया बन्द ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला साचा हरि, सतिगुर पूरा बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा बेपरवाह, एकँकारा खेल खिलांयदा। जुगा जुगन्तर बण मलाह, लोकमात फेरा पांयदा। नाउँ निरँकारा आपणा नाउँ प्रगटा, दो जहानां वेख वखांयदा। भगत भगवन्त लए उठा, साची भगती इक्क समझांयदा। आदि अन्त आपणा लेखा दए जणा, भेव अभेदा आप खुल्हांयदा। साचे मार्ग आपे ला, साची सिख्या सिख समझांयदा। निथाव्याँ देवणहारा थाँ, सिर समरथ हथ्थ टिकांयदा। ग़रीब निमाणे गले लगा, ग़रीब निवाज़ आपणा नाउँ धरांयदा। सदा सदा सद रक्खे ठंडी छाँ, अग्नी तत्त आप बुझांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस आप उडांयदा। अमृत आत्म जाम दए प्या, निझर झिरना इक्क झिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त श्री भगवन्त, सतिगुर पूरा आपणा रूप आप प्रगटांयदा। जुग जुग रूप प्रगटांयदा, हरि सतिगुर दीन दयाल। भगत भगवन्त वेख वखांयदा, जगत जुग अवल्लड़ी चाल। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा, लेखा जाणे सचंखड बैठ सच्ची धर्मसाल। कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा, नौं खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी होए बेहाल। ब्रह्मा विष्न शिव सर्ब कुरलांयदा, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इंद रलाए नाल। राज राजान शाह सुल्तान धीरज धीर ना कोए धरांयदा, दर दर घर घर मंगदे फिरदे बण कंगाल। जूठ झूठ चारों कुंट डंक वजांयदा, सच सुच्च किसे दिसे ना धर्मसाल। माया ममता मोह सर्ब कुरलांयदा, आसा तृष्ना प्या जीव जंत जंजाल। हरि का रूप दिस किसे ना आंयदा, मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआले रहे भाल। पुरख समरथ खेल खिलांयदा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। निहकलंका जामा पांयदा, रूप रंग रेख वसया बाहर, पुरख अकाल आपणा नाउँ धरांयदा। आपे होया जाणी जाण, नूर नुराना डगमगांयदा। लेखा जाणे हड्ड मास नाड़ी माटी ख़ाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, जुग जुग बणे मात दलाल। सतिगुर पूरा बण दलाल, जुगां जुगन्तर सेव कमाईआ। हरिभगत साचे लए उठाल, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। एका मार्ग दस्से सुख़ाल, आपणा मन्त्र आप पढ़ाईआ। अमृत आत्म सरोवर मारे उछाल, अठसठ बैठे मुख शर्माईआ। एका देवे नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ीना इक्क रखाईआ। नाता तोड़े काल महांकाल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सच दुआर वखाए सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। गुरमुखां कारज दए संवार, सतिगुर पूरा सो अख्वाईआ। डुब्बदे पाथर जाए तार, पाहन आपणा चरन छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, सुरती शब्द डोर बंधाईआ। सुरत शब्दी बन्न्हे डोर, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वेख वखांयदा। १४१४

०६ ०६

वसणहारा अन्ध घोर, सुख़मन टेढी बंक पार करांयदा। पंच विकारा देवे होड़, नौ दुआरे पन्ध मुकांयदा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, शाह सवारा दया कमांयदा। शब्द अनाद धुन इक्क सुणाए अनहद घनघोर, छत्ती राग भेव ना आंयदा। एका नाता एका वर ल्ए जोड़, जुड़या जोड़ ना कोए तुड़ांयदा। आत्म सेजा जाए बौहड़, भर प्याला जाम प्यांअदा। बजर कपाटी देवे तोड़, त्रैगुण डेरा आपे ढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे ल्ए वर, सतिगुर पूरा दया कमांयदा। सतिगुर पूरा सर्ब गुण मीत, मीत मुरारा इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादि चलाए आपणी रीत, दूसर संग ना कोए रखाईआ। गुरमुखां सुणाए सुहागी गीत, घर मन्दिर वज्जदी रहे वधाईआ। काया करे पतित पुनीत, पतित पापी ल्ए तराईआ। एका वसे हरि हरि चीत, चितवित ठगौरी कोए ना पाईआ। रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। धाम वखाए इक्क अनडीठ, घर विच घर समझाईआ। ना कोई मन्दिर ना मसीत, चार दीवार ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा एका हरि, गुरमुख मेले सहिज सुभाईआ। गुरमुख मेल मिलांयदा, जुगा जुगन्तर साची कार। गृह मन्दिर खोज खुजांयदा, घट भीतर हो उज्यार। दर दरवाज़ा इक्क खुल्हांयदा, आप आपणी किरपा धार। घर घर विच नज़री आंयदा, नेत्र नैण दए उग्घाड़। बंक दुआर इक्क सुहांयदा, पुरख अबिनाशी मीत मुरार। ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा, मेल मिलावा एका वार। जोती जोत जोत समांयदा, जोती जाता आप निरँकार। साची जोती आप चढ़ांयदा, गुरमुख सज्जण ल्ए उभार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सतिगुर इक्क मलाह, एका शब्दी देवे सति सलाह, गुर गुर हरि हरि शब्दी शब्द नाउँ धराईआ। शब्द गुरदेव सर्ब जग पित माता, सति पुरख निरँजण आप उपाया। आदि जुगादि चलाए आपणी गाथा, अक्खर वक्खर आप पढ़ाया। भगत भगवन्त देवणहारा दाता, भुल्ल कदे ना जाया। कलिजुग अन्तिम वेखे अन्धेरी राता, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। निरगुण भुल्लया तेरा पूजा पाठा, सरगुण बैठे इष्ट मनाया। पुरख अबिनाशी सचखण्ड दुआर बैठा वेखे तमाशा, चार वरन अठारां बरन घर घर दर दर देण दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सतिगुर सच्चा शाह पातशाह, इक्क इकल्ला बण मलाह, जन भगतां देवे नाम सलाह, सतिजुग साचा बेड़ा हथ्थ वखाया।

❊ २६ कत्तक २०१७ बिक्रमी कुंदन सिँघ दे घर पिण्ड मालचक ज़िला अमृतसर ❊

सतिगुर पूरा हरि निरँकारा, अकल कलधारी नाउँ धरांयदा। गुर गुर रूप अपर अपारा, हरि शब्दी शब्द प्रगटांयदा।

भगतन मीता विच संसारा, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। सन्तन वखाए इक्क दरबारा, ठांडा घर बारा इक्क जणांयदा। गुरमुखां देवे नाम आधारा, नाम नामा झोली पांयदा। गुरसिखां बख्शे अमृत आत्म ठंडी ठारा, भर प्याला जाम प्यांअदा। जुगा जुगन्तर साची कारा, करता पुरख आप करांयदा। लोकमात लै अवतारा, आप आपणी धार बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त आपणा भेव आप खुल्हांयदा। सतिगुर पूरा गहर गम्भीरा, एका रंग समाईआ। गुर गुर दाता जोद्धा सूरबीरा, वड बलवान सति निशान हथ्थ उठाईआ। सरगुण चोटी चाढ़े इक्क अख़ीरा, सचा मन्दिर दए वखाईआ। सन्तन बख्शे साची धीरा, धरत धवल दए वड्याईआ। गुरमुखां अमृत आत्म देवे नीरा, सांतक सति सति वरताईआ। गुरसिखां कढ्ढे हउमे पीड़ा, बिरहो अग्न ना कोए जलाईआ। नाता तोड़े जगत ज़ंजीरा, त्रैगुण बन्धन रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा साचा हरि, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाला, अगम्म अथाह बेपरवाह आप अख्वांयदा। गुर गुर खेले खेल निराला, खेलणहारा दिस ना आंयदा। भगतन बणे आप दलाला, दर घर साचे मेल मिलांयदा । सन्तन होए सदा रखवाला, जुगा जुगन्तर सेव कमांयदा। गुरमुखां दस्से नाम सुखाला, अन्तर आत्म आप दृढ़ांयदा। गुरसिख बहाए सच्ची धर्मसाला, गृह मन्दिर खोज खुजांयदा। शब्द अनाद वजाए धुन साचा ताला, अनाद अनादी आपणा नाद आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सज्जण हरि हरि मीत, आदि जुगादी ठंडा सीत, अग्नी तत्त ना कोए वखांयदा। सतिगुर सच्चा साहिब सुल्ताना, आदि जुगादि समाया। गुर गुर रूप श्री भगवाना, वेस अनेका आप कराया। भगवन भगती देवे भगतन दाना, इच्छया भिच्छया झोली पाया। सन्तन देवे धुर फ़रमाणा, तुरीआ राग नाद वजाया। गुरमुखां वखाए इक्क टिकाणा, घर घर विच कर रुशनाया। गुरसिखां होए जाणी जाणा, लक्ख चुरासी विच्चों लए तराया। एका बन्ने सति सरूपी सच्चा गाना, हरि जू हरि हरि साचा सगन मनाया। आप रखाए आपणे भाणा, हरि भाणा दए वखाया। लेखा जाणे आवण जाणा, जून अजूनी फोल फुलाया। शाहो भूप बण साचा राणा, तख्त निवासी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह सतिगुर सज्जण, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गुर गुर कराए एका मजन, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। भगतन संवारे आपे काजन, करता पुरख आपणी किरत कमाईआ। सन्तन मारे साची वाजन, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। गुरमुख चढ़ाए साचे ताजन, शब्द घोड़ा इक्क दौड़ाईआ। गुरसिखां मेल मिलाए ग़रीब निवाज़न, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। लेखा जाणे कल कि आजन, जुग चौकड़ी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, हरि सच्चा शहनशाहीआ। सतिगुर सच्चा शहनशाह, साचे तख्त सुहांयदा। गुर गुर रूप बण मलाह, लोकमात फेरा पांयदा। जुग जुग आपणा वेस वटा, हरिभगतन वेख वखांयदा। साचे सन्तां लए जगा, आलस निन्दरा ना कोए रखांयदा। गुरमुख पल्लू लए फड़ा, नाम पल्ला हथ्थ उठांयदा। गुरसिखां जणाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप हो आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साची कार, करे कराए करनेहार, कादर कुदरत विच समांयदा। कादर कुदरत वसया, निरगुण रूप अगम्म अपार। सतिगुर पूरा निराकार हो हो नस्सया, आदि जुगादी साची कार। गुर गुर मार्ग एका दस्सया, पारब्रह्म प्रभ हो त्यार। भगतन अंदर बह बह हस्सया, काया मन्दिर खोल्ह किवाड़। सन्तन देवे रस रसया, आत्म रस अपर अपार। गुरमुखां अंदर करे प्रकाश कोटन रव सस्या, जोती जाता हो उज्यार। गुरसिख हिरदे अंदर आपे वसया, आपे पावणहारा सार। शब्द निराला तीर एका कसया, डूँग्घी कंदर मारे मार। तत्त विकारा चरनां हेठ झस्सया, नाता तोड़ सर्ब संसार। मेटे रैण अन्धेरी रुस्सया, साचा चन्न करे उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए उभार। गुरमुख दया कमांयदा, गुरमुख मीता हरि निरँकार। सन्त साजण मेल मिलांयदा, भगत वछल आप करतार। गुर गुर आपणा नाउँ धरांयदा, जन्मे ना मरे विच संसार। सतिगुर आपणा धाम आप समझांयदा,
१४१७ अबिनाशी करता पुरख अकाल। जुग जुग आपणा रूप आप प्रगटांयदा, सतिजुग त्रेता द्वापर चले अवल्लड़ी चाल। कलिजुग १४१७
०६ रूप अनूप शाहो भूप सति सरूप आप वटांयदा, हड्ड मास नाड़ी ना दिसे खाल। रत्ती रत ना कोई उपजांयदा, मात पित ०६
नाता जोड़े ना कोई बाल। जोती जोत जोत डगमगांयदा, पुरख अबिनाशी खेल निराल। गुर शब्दी नाल रलांयदा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वजाए साचा ताल। अंडज जेरज वेख वखांयदा, उत्भुज सेत्ज रिहा सुरत संभाल। चौथे जुग डेरा ढांहयदा, लेखा जाणे शाह कंगाल, साचा खण्डा हथ्थ चमकांयदा, भय रखाए काल महांकाल। निरभउ आपणा नाउँ धरांयदा, वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल। दरगाहि साची वेख वखांयदा, परवरदिगार जल्वा नूर जलाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर सच्चा एका हरि, गुर गुर रूप मात धर, भगत भगवन्त लए फड़, सन्त सहेले लाए लड़, गुरमुखां अंदर आपे वड़, गुरसिखां लेखा जाणे चोटी चढ़, भेव अभेदा भेव खुलांयदा। भेव अभेद भेव खुलावणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। निरगुण जोती जामा वेस वटावना, कलि कल्की लए अवतार। निहकलंका एका डंक वजावणा, लोआं पुरीआं करे ख़बरदार। ब्रह्मा विष्न शिव उठावना, करोड़ तेतीसा नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार। नौं खण्ड पृथ्मी दहि दिशा आपणा फेरा पावणा, अश्व घोड़े साचे हो अस्वार। सोलां कलीआं आसण लावणा, सोलां इच्छया भरे भण्डार। नाम खण्डा हथ्थ

उठावणा, दो जहाना तिक्खी रक्खे दोवें धार। गुरमुख साचे मेल मिलावणा, सनमुखा करे प्यार। सच कुठाली हथ्थ उठावणा, सेवा करे आप निरँकार। जोती लम्बू लावणा, अग्नी देवे आपे आपणी वार। गुरसिख सोना कंचन कुंदन विच रखावणा, कर किरपा हरि गिरधार। सिँघ पारस रूप वटावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लाए पार। सोना कंचन कुंदन सच कुठाली, सतिगुर पूरा आपे पांयदा। आपे करता कीमत पाए बण दलाली, किसे हट्ट लोकमात ना जगत विकांयदा। दरगाह साची सचखण्ड दुआरे जन भगतां थाँ रक्खे ख़ाली, चार जुग आपणा गेड़ा आप भुवांयदा। जुगां जुगन्तर बणया रहे माली, हरिजन बूटे लोकमात फुल फलवाड़ी आप महिकांयदा। निरगुण आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणे हथ्थ रक्खे ख़ाली, गुरमुखां नाम झोली आप भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा एका हरि, सीस ना रक्खे कोए डर, जगदीस आपणा खेल खिलांयदा। जगत जगदीस हरि निरँकारा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सति पुरख निरँजण अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। सो पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबारा, सचखण्ड दुआरा इक्क प्रगटाईआ। हरि पुरख निरँजण मीत मुरारा, घर साचे सोभा पाईआ। एकँकारा निराकारा, निरवैर आपणा नाउँ धराईआ। आदि निरँजण हो उज्यारा, जोत निरँजण लक्ख चुरासी विच टिकाईआ। अबिनाशी करता सांझा यारा, सगला संग आप रखाईआ। श्री भगवान होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँघी कंदर समुंद सागर वेख वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दए आधारा, ब्रह्म मेला साचे माहीआ। भगत भगवन्त साचे सन्त बख्शे चरन प्यारा, गुरमुख गुरसिख एका रंग रंगाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक नरायण नर लै अवतारा, गुरमुख साचे लए जगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार किनारा, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। जूठा झूठा नाता सर्ब संसारा, बिन सतिगुर पूरे ना कोए सहाईआ। साक सज्जण सैण ना कोई मीत मुरारा, मात पित भाई भैण अन्त काल ना सके कोए गल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरसिख साचे लए फड़, औंदा जांदा दिस ना आईआ। औंदा जांदा कदे ना दिसया, निरगुण रूप अगम्म अपार। जुग जुग वण्डाए आपणा हिस्सया, गुरमुख साचे लए उभार। जगत विकारा लाहवे विसया, अमृत देवे अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप बहाए सच सच्चे दरबार। सच दुआर गुर चरन, गुरूदुआर इक्क समझांयदा। सतिगुर पूरा तरनी तरन, तारनहार इक्क हो आंयदा। नेत्र खोल्हे हरन फरन, अज्ञान अन्धेर चुकांयदा। नाता तोड़े मरन डरन, जम का भउ ना कोए रखांयदा। लेखा चुक्के वरन बरन, ज़ात पात ना बन्धन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वखाए एका घर, दर घर साचा आप सुहांयदा।

दर घर साचा सोभावन्त, सतिगुर पूरा आप सुहाईआ। गुरमुख मेले साचे सन्त, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। मेल मिलावा नारी कन्त, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, जिस जन आपणी दया कमाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँकार विकार रहे ना राईआ। मेल मिलाए साची संगत, संगत रूप सच्चा शहनशाहीआ। गुरमुख जगत दुआरे ना चढ़े मंगत, सतिगुर पूरा पूरी इच्छया आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां अंदर बैठा वड़, चार कुंट दहि दिशा नौं खण्ड पृथमी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा रूप घट घट रिहा दरसाईआ। आपणा रूप हरि दरसाए, गुरमुखां दया कमांयदा। घट घट एका नज़री आए, दूसर होर ना कोए जणांयदा। वरन बरन ना वण्ड वण्डाए, ज़ात पात ना कोए रखांयदा। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ रुशनाए, नूरो नूर डगमगांयदा। दीवा बाती इक्क जगाए, कमलापाती वेख वखांयदा। साचा साकी बण बण जाम प्याए, अमृत प्याला हथ्थ उठांयदा। लहिणा देणा बाकी दए चुकाए, पूर्ब कर्म वेख वखांयदा। आत्म ताकी बन्द खुल्हाए, बजर कपाटी कुण्डा लांहयदा। गुरमुख साचे गले लगाए आप आपणे अंग समांयदा। कुंदन पारस आप बणाए, आपणी भट्ठी आपे पांयदा। सालस बणके मेल मिलाए, गुर शब्दी नाउँ धरांयदा।
१४१६ गुर गोबिन्द मेला सहिज सुभाए, सिँघ रूप हरि आप अख्वांयदा। दोहां विचोला एका थाएँ, दो जहानां खेल खिलांयदा। १४१६
आदि अन्त पकड़नहारा बाहें, बाहों पकड़ गोद बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख दर
०६ दुआरे अग्गे खड़, लेखा जाणे सीस धड़, किला कोट काया गढ़ कंचन, कुठाली आपे पांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं ०६
भगवान, आदि जुगादी इक्क भगवान, लेखा जाणे शाह सुल्तान, दीन दयाल आपणी दया कमांयदा।

✻ २६ कत्तक २०१७ बिक्रमी बीबी अजैब कौर दे घर पिण्ड बाठ ज़िला अमृतसर ✻

करता पुरख हरि करनेजोग, जुग जुग आपणी खेल खिलांयदा। जन भगतां मेले धुर संजोग, धुर संजोगी मेल मिलांयदा। जगत विछोड़ा कट्टे रोग, हउमे रोग मेट मिटांयदा। आत्म अन्तर देवे साची चोग, अमृत आत्म रस चखांयदा। लेखा जाणे चौदां लोक, लोआं पुरीआं पन्ध मुकांयदा । शब्द सुणाए अगम्मी सलोक, अनाद अनादी नाद वजांयदा। नाता तोड़े हरख सोग, चिंता दुःख ना कोए वखांयदा। चरन दासी करे मुक्त मोख, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। हरिजन उभारे विच्चों कोटन कोटि कोट, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। तन नगारे लाए चोट, धुन आत्मक आप उपजांयदा। कूड़ी क्रिया कढ्ढे

खोट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आंयदा। चरन कँवल कँवल चरन एका बख्शे साची ओट, पुरख अबिनाशा जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पतित पापी पार उतार दा। पतित पापी उधारन हरि, आदि जुगादि समाया। आपणी किरपा आपे कर, दुरमति मैल दए धुआया। जो जन सरनाई जाए पड़, साचे पौड़े दए चढ़ाया। किला तोड़ हँकारी गढ़, निवण सो अक्खर इक्क समझाया। सतिगुर पूरा लगाए आपणे लड़, शब्द डोरी हत्थ वखाया। दरस दिखाए अग्गे खड़, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। हरि का रूप ना कोई सीस ना कोई धड़, काया चोली पंज तत्त ना कोए रखाया। आपणी करनी आपे कर, कुदरत कादर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीब निमाणे जुगा जुगन्तर गले लगाया। जुग जुग साची कार, सति पुरख निरँजण आप करांयदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, लोकमात वेस वटांयदा। हरिजन साचे कर प्यार, आप आपणा मेल मिलांयदा। वेखे विगसे वेखणहार, वेखणहारा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पतित पापी लए वर, पतित उधारन आप हो आंयदा। पतित पापी बेड़ा पार, डूँघे सागर पार कराईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, शाह सुल्ताना आपणे हत्थ रक्खे वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, जोती जामा वेस वटाईआ। खड़ग खण्डा तेज़ कटार, ब्रह्मण्डां आप चमकाईआ। जेरज अंडां दए हुलार, निरगुण निरवैर आपणा रूप आप धराईआ। गुरमुख साचे लए उभार, साची गोदी आप सुहाईआ। दर वखाए ठांडा दरबार, थिर घर वज्जदी रहे वधाईआ। सचखण्ड करे सच प्यार, साचे तख्त साचा माहीआ। गुण अवगुण ना करे कोए विचार, गुणवन्ता सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पतित पापी वेख वखाईआ। पतित पापी पार किनारा, दुरमति मैल धुआंयदा। घट घट अंदर कर पसारा, हरि हरि वेख वखांयदा। दीवा बाती कर उज्यारा, कमलापाती डगमगांयदा। साचा साकी बण वणजारा, अमृत नाम प्याला इक्क प्यांअदा। खोल्हे ताकी बन्द किवाड़ा, अन्ध अन्धेर गवांयदा। सतिगुर पूरा साचा लाड़ा, धुर दरगाही फेरा पांयदा। गुरमुख वेखे सुहागण नारा, पीआ प्रीतम मेल मिलांयदा। साची सखीआं मंगलचारा, पीआ प्रीतम वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचे घर, गृह मन्दिर खोज खुजांयदा। गृह मन्दिर डूँघी गार, काया हट्ट वेख वखांयदा। माणस मानुख भुल्ले जीव गंवार, हरि का रूप दिस किसे ना आंयदा। चारों कुंट अन्ध अँध्यार, जगत अन्धेरा सारे छांयदा। सृष्ट सबाई सुत्ती पैर पसार, त्रैगुण माया पर्दा एका पांयदा। गुरमुख विरला होए उज्यार, जिस सिर आपणा हत्थ टिकांयदा। माया ममता दुःखड़ा दए नवार, आसा तृष्ना मोह चुकांयदा। साचा शब्द दए इक्क आधार,

१४२१ ०६

आत्म ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलांयदा। ईश जीव जाणे कर्म, जगत जगदीश वेख वखांयदा। सतिगुर सरनाई साचा धर्म, दूसर धर्म ना कोए बणांयदा। गुर पूरा हाज़र हज़ूरा नेत्र लोचण खोल्हे हरन फरन, आपणा लोयण आप प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकारा, जुगा जुगन्तर पावे सारा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, एका डंका शब्द वजांयदा। डंका शब्द हरि करतार, चार कुंट दहि दिशा आप वजाईआ। दो जहानां करे ख़बरदार, चौदां लोकां आप उठाईआ। चौदां तबकां मारे मार, हरि जू वेखे ख़लक खुदाईआ। बेऐब खुदाई परवरदिगार, जल्वा नूर नूर इलाहीआ। नूर नुराना हो उज्यार, लोकमात निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यार, एका बैठा सेज विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खोल्हणहारा साचा दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। दर दुआर सुहंदड़ा, हरि सतिगुर सज्जण मीत। गुरमुख सज्जण मेल मिलंदड़ा, आदि जुगादी साची रीत। पतित पापी आप तरंदड़ा, करे कराए पतित पुनीत। साचे धाम आप सुहंदड़ा, धाम वखाए इक्क अनडीठ। चार वेद लेखा लेख ना कोए लिखंदड़ा, पुराण अठारां गाए हरि हरि गीत। हरि जू साचा वेस वटंदड़ा, जन भगतां वसे सदा चीत। चितवत ठगौरी कोए ना पन्दड़ा, लेखा जाणे हस्त कीट। हस्त कीट एका रंग रगंदड़ा, मेल मिलाए ऊँच नीच। ऊँच नीच अंदर आसण लगंदड़ा, निरगुण दाता सूचो सूच। सच सुच्च आपणा नाम दृढ़ंदड़ा, काया माटी वेखे कच। काया कंचन गढ़ आप सुहंदड़ा, गुरसिखां हिरदे आपे रच। साचे हिरदे डेरा लगंदड़ा, त्रैगुण माया ना जाए मच। त्रैगुण अग्नी तत्त बुझांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साचा मार्ग एका दस्स। साचा मार्ग हथ्थ करतार, आदि जुगादि लगाया। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे आपणी वार, कलिजुग अन्तिम वेखण आया। निहकलंका जामा धार, शब्द डंका इक्क सुणाया। राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाया। गुरसिख मेले विछड़े यार, जगत विछोड़ा फंद कटाया। एका सोहला सुणाए आपणी वार, सो पुरख निरँजण ढोला गाया। हँ ब्रह्म करे प्यार, आत्म ब्रह्म होए सहाया। एका एक एकँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पतित पापी लाए पार। पतित पापी बेड़ा तारदा, कृपानिधि हरि दीन दयाल। लेखा जाणे मूर्ख मुग्ध बाल अंञाण दा, चतर सुघड़ श्री भगवान। पूर्ब जन्मा कर्म पछाणदा, लहिणा देवे दो जहान। हरिजन हरिभगत हरि चरन दुआरे रंग माणदा, लक्ख चुरासी नाता जुड़या पंज शैतान। कलिजुग वेला अन्तिम ब्रह्म ज्ञान दा, कलिजुग भुल्ला जीव नादान। सति पुरख निरँजण सति सतिवादी ना कोए पछाणदा, चार वरन होए हैरान। आत्म सेज कन्त कन्तूल हरि भगवन्त रंग ना कोए माणदा, त्रैगुण माया हेठ विछाई सेज सूल। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह

बेपरवाह घट घट अन्तर आपे जाणदा, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आप पछाणे आपणा मूल। गुरमुख गुरसिख गुर सतिगुर साचा आप पछाणदा, लोकमात मार झात, आप उपजाए दया कमाए फुल फलवाड़ी साचे फूल।

✻ २६ कत्तक २०१७ बिक्रमी महिंदर सिंघ दे घर पिण्ड बाठ ज़िला अमृतसर ✻

जगत विकारा गहरा सागर, कूड़ी क़िरिया ताल वजांयदा। निर्मल कर्म करे उजागर, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। देवे नाम रती रत्नागर, रती रत्नागर लेखे पांयदा। साचे नाम करे सौदागर, साचा वणज इक्क करांयदा। भाग लगाए काया गागर, अमृत आत्म धार चुवांयदा। ग़रीब निमाणयां देवे आदर, जुग जुग हरिजन हरि हरि वेख वखांयदा। करे खेल हरि करता कादर, बेऐब रूप प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग नाता तोड़े कूड़ो कूड़, एका बख्शे चरन धूढ़, चरन चरनोदक मस्तक तिलक इक्क लगांयदा। चरन धूढ़ी साची वस्त अनमोल, गुरसिख हरि हरि झोली पांयदा। सदा सुहेला वसे कोल, विछड़ कदे ना जांयदा। पूरा करे कीता कौल, कँवल आपणा आप उलटांयदा।
१४२२ देवे वडियाई उप्पर धौल, धरनी धरत धवल सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि हरि आपणा रूप प्रगटांयदा। काया कूड़ा जगत नाता, सच सुच्च ना कोए दृढ़ाईआ। चारों कुंट अन्धेरी राता, १४२२
०६ निरगुण रूप ना कोए दरसाईआ। ग़रीब निमाणयां पुच्छे ना कोई वाता, गृह मन्दिर अंदर डूँग्घी कंदर पंज तत्त करे लड़ाईआ। ०६
माया ममता फिरे नार कमज़ाता, जगत दुहागण देवे दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजन, हरिजन पाए नेत्र अंजन, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाईआ। अज्ञान अन्धेरा देवे कट्ट, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। दूई द्वैती मेटे फट, एका निरगुण रंग रंगांयदा। साची वस्त वकाए साचे हट्ट, जगत दुआर ना कोए फिरांयदा। देवणहारा ब्रह्म मत, तत्व तत्त इक्क समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर वेखे आपे वड़, लेखा लेखे आपे पांयदा। पंज तत्त जगत बन्धन, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल खिलांयदा। त्रैगुण माया बध्धा तन्दन, मन मति बुध वेस वटांयदा। गुरमुख विरला जाणे परमानंदन, जिस जन आत्म अन्तर मेल मिलांयदा। धुन अनादी नाद गाए सुहागी छन्दन, अजपा जाप आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे वड प्रताप, मेटणहारा तीनों ताप, जगत संताप आप गवांयदा। जगत संताप मिटे दुःख, काया रोग रहे ना राईआ। उज्जल करे भगत मुख, मुख मुखड़ा आप सालाहीआ। सफल करे मात कुक्ख, जिस जन बख्शे सच सरनाईआ। इक्क

लक्ख असी हज़ार अंदर बहे ना कोए लुक, पसू प्रेत भूत चक्र जिन्न ख़बीस दए खपाईआ। सयद मुल्ला शेख़ पीर मुसायक कोए ना मारे आए चक्र, दर दुआरे दए दुरकाईआ। मढ़ी मसाणा लाहे सथ्थर, शब्द खण्डा इक्क चमकाईआ। कूड़ी क्रिया करे वक्खर, साची वस्त अमोलक एका नाम झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीब निमाणे जाए तार, तारनहार इक्क सच्चा शहनशाहीआ। तारनहारा आ गया, निरगुण जोती जामा धार। ग़रीब निमाणे गले लगा रिहा, हरख सोग तों वसया बाहर। ऊँच नीच ना कोए जणा रिहा, एका सरन बख्शे सच्ची सरनार। अमृत जाम प्याला साची मदि आप प्या रिहा, अठ्ठे पहर रहे खुमार। ब्रह्म नद इक्क वजा रिहा, सद वज्जदी रहे सितार। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढ हरिसंगत मेल मिला ल्या, नाता तोड़ सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शिश बख्शे इक्क इकल्ला बख्शणहार।

✳ २६ कत्तक २०१७ बिक्रमी दारा सिँघ दे घर पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✳

तख्त निवासी शाह पातशाह, पुरख अबिनाशी इक्क अख्वांयदा। शाहो शाबासी बेपरवाह, निरगुण निरवैर नाउँ रखांयदा। वसणहारा साचे थाँ, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। आदि जुगादी करे इक्क न्याँ, हुक्म हाकम इक्क सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता इक्क भगवन्ता, आपणी रचना आप रचांयदा। शाह पातशाह हरि भगवाना, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। खेले खेल दो जहाना, जागरत जोत कर रुशनाईआ। शब्द सुणाए धुर फ़रमाणा, बोध अगाधा आप अलाईआ। आपे जाणे आपणा भाणा, सद भाणे हरि समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। शहनशाह सच दरबारा, दरगाह साची आप सुहांयदा। सो पुरख निरँजण बण सिक्दारा, साचे तख्त सोभा पांयदा। हरि पुरख निरँजण वरतणहारा सति वरतारा, सति सतिवादी धार जणांयदा। एकँकारा बणे घड़न भन्नणहारा, समरथ पुरख रूप वटांयदा। आदि निरँजण कर पसारा, जोत उजाला वेख वखांयदा। श्री भगवान दर दरबार बणे भिखारा, मंगणहारा रूप वटांयदा। अबिनाशी करता देवणहारा अतोट भण्डारा, अतुट आप वरतांयदा। पारब्रह्म आपे जाणे आपणी कारा, करनी किरत करता पुरख आप करांयदा। जुगा जुगन्तर हो उज्यारा, लोकमात वेस वटांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए आधारा, त्रै त्रै लेखा बह समझांयदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, गृह मन्दिर आप वजांयदा। लेखा जाणे शाह दारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा खेल आप खिलांयदा। शहनशाह हरि ग़रीब निवाज़ा,

महिमा अकथ कथी ना जाईआ। भूपन भूप वड वड राजा, राज राजान इक्क अख्वाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचया काजा, रवि ससि करे रुशनाईआ। आदि जुगादि फिरे भाजा, निरगुण निरगुण वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वडा वड वड्याईआ। शाह पातशाह हरि भगवन्त, दर घर साचे सोभा पांयदा। लेखा जाणे जुगां जुगन्त, जुग चौकड़ी वण्ड वण्डांयदा। आपणी महिमा जाणे बेअन्त, लेखा लेख ना कोए वखांयदा। धार बंधाए नारी कन्त, नरायण सेज सुहांयदा। लेखा जाणे जीव जंत, लक्ख चुरासी बन्धन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दरगाह साची धाम सुहांयदा। शाह पातशाह सच्चा सुल्ताना, हरि पुरख निरँजण आप अख्वांयदा। आदि जुगादी नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटांयदा। हथ्थ उठाए सति निशाना, सच दरबारे आप झुलांयदा। आपे जाणे आपणा आवण जाणा, जुग जुग आपणा वेस धरांयदा। आप प्रगटाए आपणा बाणा, अनुभव आपणी जोत डगमगांयदा। आपे गाए आपणा गाणा, तुरीआ राग नाद वजांयदा। वसणहारा सच मकाना, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। थिर घर देवणहारा माणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, आदि अन्त आपणा रूप आप प्रगटांयदा। शाह पातशाह पारब्रह्म, इक्क इकल्ला एकंकारया। ना मरे ना पए जम्म, निरगुण जोत नूर उज्यारया। गगन पाताल रहाए बिन बिन थम्म, करे खेल अपर अपारया। साचे मन्दिर वसे बिन छप्पर छन्न, चार दीवार ना बणत बणा रिहा। ना कोई जननी जणे जन, मात पित ना कोए वखा रिहा। आपणा बेड़ा आपे बन्न्, पुरख अकाल आप चला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सीस ताज आप सुहा ल्या। शाह पातशाह सीस सुहाए ताज, इक्क इकल्ला वड वड्याईआ। दो जहानां करे साचा राज, शहनशाह बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर रच रच काज, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। गुरूआं पीरां साधां सन्तां देवणहारा एका दाज, नाम वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता हरि करनेहारा, करे खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। शाह पातशाह हरि दीन दयाला, दयानिध आप अख्वांयदा। एका वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। सेवा लाए काल महांकाला, जुग चौकड़ी गेड़ा आप दुआंयदा। लक्ख चुरासी फुल फलवाड़ी वेखे पत डाल्हा, नव खण्ड पृथ्मी फोल फुलांयदा। शब्द अगम्मी बण दलाला, पवण स्वासी दमी मूल मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तोड़नहारा जगत जंजाला, त्रैगुण माया पन्ध मुकांयदा। शाह पातशाह हरि साचा सतिगुर, एका एक अख्वांयदा। लेखा जाणे लिख्या धुर, धुर लेखा आप लिखांयदा। जुगा जुगन्तर दो जहानां

१४२४ ०६

१४२५
०६

लाए एका पौड़, लोक परलोक वेख वखांयदा। वसणहारा अन्धघोर, दीपक जोत ज्ञान आपे डगमगांयदा। लेखा जाणे पंज चोर, पंचम शब्द नाद धुन आप वजांयदा। पंचम नाता आपे जोड़, पंचम मोह मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा साचा हरि, राज राजान इक्क अख्वांयदा। राज राजाना शाहो भूप, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। आपणा जाणे सति सरूप, महिमा कहिण ना जाईआ। लेखा जाणे चारे कूट, चारे जुग फोल फुलाईआ। शब्द दौड़ाए साचा दूत, दिवस रैण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। नूर उजाला हरि गोपाला, हरि जू हरि हरि खेल खिलांयदा। जुगा जुगन्तर बण दलाला, लोकमात वेस वटांयदा। जन भगतां दस्से राह सुखाला, साचा मार्ग एका लांयदा। गुरमुखां चले नाल नाला, गुरसिख साची गोद बहांयदा। एका देवे नाम सच्चा धन माला, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जांयदा। लेखा जाणे शाह कंगाला, राज राजानां शाह सुल्तानां ग़रीब निमाणे फोल फुलांयदा । निमाणयां देवे एका माणा, आप चलाए आपणे भाणा, धुर फ़रमाणा राग सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आपणा खेल आप खलांयदा। जुग जुग खेल खिलांयदा, गुर सतिगुर लै अवतार। लोकमात वेख वखांयदा, निरगुण सरगुण पावे सार। वेला वक्त आपणे हथ्थ रखांयदा, कोए ना जाणे थित वार। गुर पीर अवतार आप प्रगटांयदा, आपे देवणहारा सच सहार। भगत भगवन्त खेल खिलांयदा, सन्त साजण लए उभार। गुरमुख साचे रंग रंगांयदा, उतर ना जाए विच संसार। गुरसिख एका दरस दिखांयदा, तृष्ना भुक्ख दए नवार। अर्श फर्श चार कुंट दहि दिशा आपणी वण्ड आप वण्डांयदा, ब्रह्मण्ड खण्ड वण्डणहार। जुग चौकड़ी पन्ध मुकांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदी जुगादी साची कार। आदि जुगादि साची कार, करता पुरख आप कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर निरगुण सरगुण धर धर आपे अवतार, माणस मानुख पंछी पसू रूप वटाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दरबारी इक्क मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौं नौं लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। नौं नौं लेखा हथ्थ करतार, चार चार वज्जे वधाईआ। चारे जुग रोवण वारो वार, चारे वेद रहे कुरलाईआ। चारे बाणी करे पुकार, चारे खाणी दए दुहाईआ। चारे वरन ना कोए आधार, चार यारी उच्ची कूके कूक कूक सुणाईआ। चार कुंट धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। नौं नौं होए मात ख्वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि अन्त खेल खिलांयदा, मधि आपणी किरपा धार। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा, कलिजुग आए अन्तिम वार। गुर पीर अवतार सभ हरि हरि रसना

गांयदा, एका इष्ट देव अगम्म अपार। निउँ निउँ सीस सर्ब झुकांयदा, दर मंगण बण भिखार। पुरख अबिनाशी दया कमांयदा, निरगुण दाता बणे सति वरतार। सति वस्तू एका झोली पांयदा, भरया रहे भण्डार। लोकमात खेल खिलांयदा, जीआं जंतां दए आधार। एका शक्ती ब्रह्म वखांयदा, पारब्रह्म प्रभ पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुगां जुगन्तर हो त्यार। जुग जुग खेल अवल्लड़ा, हरि साचा सच करांयदा। वसणहारा इक्क इकल्लड़ा, दरगाह साची धाम सुहांयदा। तेई दस अठारां फड़ाए आपणा पल्लड़ा, पंज इक्क मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका दूजा दूजा एका आपणे अंग लगांयदा। इक्क इकल्ला खेल अपारा, दूजी कुदरत रूप वटाईआ। तीजे नेत्र हो उज्यारा, चौथा पद वेख वखाईआ। पंचम शब्द नाद धुन्कारा, छेवें घर आप सुणाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण सति सतिवादी बोल जैकारा, आदि जुगादि एका नाअरा लाईआ। अठ्ठां तत्त वसे बाहरा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोए चतराईआ। नौं दुआरे दए हुलारा, जगत वासना विच रखाईआ। दसवें खोले इक्क किवाड़ा, घर घर विच आप बणाईआ। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़ा, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। सख़ीआं वखाए साचा इक्क अखाड़ा, वाह वा गीत गोबिन्द गाईआ। ताल वजाए अनहद तलवाड़ा, धुनी नाद नाद शुनवाईआ। अमृत बख्शे ठंडी ठारा, भर प्याला जाम प्याईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन मेले आपणी वारा, जुगा जुगंतर वेस वटाईआ। कलिजुग अन्तिम कूके करे पुकारा, चारों कुंट होए हलकाईआ। वरन बरन होए ख्वारा, ख़ालक ख़लक रूप वेख वखाईआ। साचा हक ना किसे विचारा, शरअ शरीअत बैठी मुख छुपाईआ। लेखा जाणे बेऐब परवरदिगारा, मुकामे हक सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुगा जुगन्तर लग्गी बसन्तर, लोकमात दए बुझाईआ। कलिजुग अन्तिम लग्गी अग्ग, त्रैगुण माया तत्त जलांयदा। जगत अन्धेरी रही वग, धूंआँधार सर्ब वखांयदा। माणस मानुख होए कग्ग, हँस रूप ना कोए वटांयदा। कूड़ी क्रिया पीती मदि, अमृत रस हथ्थ किसे ना आंयदा। गुर का शब्द काया विच्चों कढ्ढ, पंजां चोरां जड़ लगांयदा। ख़ाली दिसे काया माटी बहत्तर नाड़ तिन्न सौ सठ्ठ हड्ड, रती रत ना कोए जणांयदा। गृह मन्दिर सतिगुर पूरा ना लडाए किसे लड, सिर हथ्थ ना कोए टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जगत पसारा वेख वखांयदा। जगत पसारा वेखण आया, निरगुण रूप निराकार। दाई दाया बण जिस जगत बणाया, लेखा जाणे अन्तिम वार। विष्न ब्रह्मा शिव जिस आपणी गोदी जाया, इक्क हुलारा देवे मार। रजो तमो सतो जिस घाड़न आप घड़ाया, आपे होए घड़न भन्नणहार। पंज तत्त जिस रंग चढ़ाया, अन्तिम आपणी आप

करे विचार। लक्ख चुरासी जिस वेस वटाया, घर घर बैठा कर जोत उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर अवतार। कलिजुग अन्तिम कूड़ पसारा, कलि कल्की वेख वखाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत करन पुकारा, अञ्जील कुरान तीस बतीस दए दुहाईआ। खाणी बाणी मारे मारा, साचा चिल्ला तीर कमान नाम उठाईआ। वेद व्यासा कर पुकारा, उच्ची कूक गया सुणाईआ। करे खेल ब्रह्मण गौड़ा सुत दुलारा, उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ चढ़ फेरी पाईआ। हरि का भेव ना किसे विचारा आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सभ बैठे ध्यान लगाईआ। आपे वसे सभ तों बाहरा, गुप्त ज़ाहरा रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख थक्के सत्त समुंदर मस्स जगत शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपे जाणे, करे खेल श्री भगवान, हरि सच्चा शहनशाहीआ। शहनशाह हरि सतिगुर पूरा, एका एकंकारया। कलिजुग अन्तिम आपणा कारज करे पूरा, ना कोई जाणे जीव गंवारया। बल धारे जोद्धा सूरा, जोती जामा भेख अपारया। कलिजुग नाता तोड़े कूड़ा, कूड़ कुड़यारा करे ख्वारया। जन भगतां मस्तक लाए चरन धूढ़ा, जन्म मरन गेड़ निवारया। रंग चढ़ाए एका गूढ़ा,

१४२७ लालन लाल आप रंगा रिहा। आपणा बचन आपे करे पूरा, गोबिन्द कोल आप वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप १४२७

आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, शाह पातशाह आपणा नाउँ धरा ल्या। शाह पातशाह हरि नाउँ रक्ख, एका डंका शब्द वजांयदा। लेखा जाणे चुरासी लक्ख, लुकया कोए रहिण ना पांयदा। भगत भगवन्त करे वक्ख, निरगुण निरवैर वण्ड वण्डांयदा। सतिजुग मार्ग साचा दस्स, साचा पन्थ इक्क बणांयदा। चार वरन मिलावा हस्स हस्स, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगांयदा। दो जहानां पन्ध मुकाए नस्स नस्स, साचा अश्व आप दौड़ांयदा। दूई द्वैती मेटे रैण अन्धेरी मस्स, निरगुण साचा चन्द इक्क चढ़ांयदा। ऊँचां नीचां राउ रंकां हिरदे अंदर जाए वस, माया ममता मोह मिटांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना चरनां हेठां देवे झस्स, जिस सिर आपणा हत्थ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम करे खेल साचा हरि, साचा खेल आप खिलांयदा। साचा खेल हरि खिलावणा, भेव अभेदा भेव खोलू। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावणा, अन्तिम तोले साचा तोल। नव नव एका कंडे पावणा, नाम कंडा हत्थ उठाए इक्क अडोल। जगत खेड़ा फेर वसावणा, लेखा जाणे धरनी धरत धौल। लक्ख चुरासी अंग समावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जूठा झूठा पन्ध मुकावणा। जूठा झूठा पन्ध जाए मुक्क, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। ठग्ग चोर यार अंदर वड़या रहे ना कोए लुक, दर दर घर

घर वेख वखाईआ। दुष्ट दुराचार जननी जणे ना कोए कुक्ख, सतिगुर पूरा दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन मेटे तृष्ना भुक्ख, अठारां बरन दुःख ना कोई वखाईआ। हउमे रोग देवे कट्ट, दुःख दलिद्दर आप निवारना। दूई द्वैती मेटे फट, सतिगुर पूरे काज संवारना। चौदां लोक वखाए एका हट्ट, चौदां तबकां पार उतारना। नौं खण्ड पृथ्मी वखाए इक्क तीर्थ तट्ट, सच सरोवर पैज संवारना। घर घर जोत जगाए लट लट, अज्ञान अन्धेर आप निवारना। सतिजुग साचा कर प्रगट, धरत मात दी गोद बहावणा। एका लाहा लए साचा खट्ट, निरगुण दरसन हरि हरि पावना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सच दरबारा इक्क खुल्हावणा। सति दरबार जाए खुल्ह, सतिगुर पूरा आप खुल्हांयदा। चार वरन बणाए एका कुल, हरि हरि रूप सर्ब दरसांयदा। शाह सुल्तान राज राजान ग़रीब निमाणे एका कंडे जायण तुल, ऊँच नीच ना कोई बणांयदा। लक्ख चुरासी आप उपजाए आपणे कँवल फुल्ल, डाल्ही पत पत डाल्ही आप महिकांयदा। आपे पावणहारा मुल्ल, करता कीमत आप चुकांयदा। कलिजुग कूड़ा दीपक होणा गुल, गुल चराग ना कोई वखांयदा। अग्नी मिले ना किसे चुल, घर घर सगन ना कोई मनांयदा। सति पुरख निरँजण जो जन गए भुल्ल, आपणा लेखा लेखे ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शाह पातशाह सच्चा सुल्ताना, साचे तख्त बैठ श्री भगवाना, जन भगतां बन्न्हे एका गाना, आपणा बन्धन आपे पांयदा। साचा बन्धन पाए डोर, तन्दन तन्द हथ्थ रखांयदा। सृष्ट सबाई दिसे अन्धघोर, जगत अन्धेरा इक्क वखांयदा। पंचम मचायण आपणा शोर, उच्ची कूक सर्ब सुणांयदा। गुरमुखां सतिगुर पूरा आपे जाए बौहड़, फड़ बांहों बाहर कढांयदा। चरन प्रीत निभाए तोड़, जिस जन आपणे चरन लगांयदा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, वागां आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचा वेखदा, वेखणहार हरि करतार। लेखा जाणे जन्म दे भेख दा, भेखाधारी अपर अपार। लहिणा देणा चुकाए मुच्छ दाढ़ी केस दा, नाता वेखे मूंड मुंडाए यार। करे खेल श्री दस्मेश दा, पुरख अकाला हो त्यार। सम्मत सतारां आपे अंदर बह बह वेखदा, जगत भुलिआं गुज्झी मारे मार। नाता तोड़े औलीए पीर शेख़ दा, मुला मुसायक कर ख्वार। पुरख अकाल दीन दयाल नाउँ एका चेत दा, चेतन्न करे आप सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर प्रगट होवे कलि कल्की अवतार। कलि कल्की अवतार, हरि जू हरि मन्दिर सोभा पाईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, हुक्मी हुक्म इक्क जणाईआ। नौं सत्त सत्त नौं करे खुवार,

शाह सुल्तान राज राजान ख़ाक मिलाईआ। हथ्थ ना फड़े कोई कटार, तरकश तीर कमान ना कोई उठाईआ। सूरबीर ना रक्खे कोई नाल बलवान, घोड़ा जगत ना कोए दुड़ाईआ। एका शब्द मारे बाण, एका दर्द धायल सर्ब वखाईआ। दो जहानां लाहे आपे घाण, दुर्गा अष्टभुज निउँ निउँ चरन सरन सरन चरन पए सरनाईआ। हरि का भाउ भेव ना सके कोई पछाण, गुर अवतार देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन लेखा आपणा आपे विच टिकाईआ।

✻ २७ कत्तक २०१७ बिक्रमी मक्खण सिँघ दे घर नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✻

हरि किरपा गुर जाणदा, गुर किरपा भगतन दान। हरि किरपा गुर पछाणदा, गुर किरपा सन्तन मान। हरि किरपा गुर वखाणदा, गुर किरपा गुरमुख आत्म ब्रह्म ज्ञान। हरि किरपा गुर वेख वखाणदा, गुर किरपा गुरमुखां देवे साचा दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी इक्क भगवान। हरि किरपा गुर गुर रंग, गुर गुर रंग भगत चढ़ाईआ। हरि किरपा गुर गुर मंग, गुर गुर मंग सन्त दरसाईआ। हरि किरपा गुर गुर संग, गुरमुखां गुर गुर लए मिलाईआ। हरि किरपा गुर गुर मृदंग, गुर मृदंग गुर गुरमुख शब्द आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि अख्वाईआ। हरि किरपा गुर भण्डारा, गुर भण्डारा भगत वड्याईआ। हरि किरपा गुर वरतारा, सन्तन झोली आप भराईआ। हरि किरपा गुर वणजारा, गुरमुख साचे वणज वखाईआ। हरि किरपा गुर अधारा, गुरमुखां माण धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, हरि सच्चा शहनशाहीआ। गुर किरपा गुर जवान, हरि आपणी खेल खिलांयदा। हरि किरपा गुर मेहरवान, गुर भगतन वेख वखांयदा। हरि किरपा गुर सति निशान, गुर सन्तन हथ्थ फड़ांयदा। हरि किरपा गुर जाणी जाण, गुर गुरमुखां जाण पछाण आप करांयदा। हरि किरपा गुर इक्क ध्यान, गुरमुखां गुर इक्क ध्यान लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला साचा हरि, सच दुआरा सोभा पांयदा। हरि किरपा गुर प्रगटाया, सति पुरख अगम्म अपार। हरि किरपा गुर जाया, मात पित सुत दुलार। हरि किरपा गुर दरस दखाया, करे खेल अपर अपार। हरि किरपा गुर मार्ग लाया, निरगुण निरगुण दए अधार। हरि किरपा गुर राग सुणाया, शब्द अनादि बोल जैकार। हरि किरपा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप दरसाया। हरि किरपा गुर वेस धर, रूप अनूप आप प्रगटांयदा। हरि किरपा गुर खेल कर, घर साचे खेल

खिलांयदा। हरि किरपा गुर मेल दर, दर दर आप सुहांयदा। हरि किरपा गुर निरभउ होए ना रक्खे कोए डर, भय सिर ना कोई वखांयदा। हरि किरपा गुर ना जन्मे ना जाए मर, जून अजूनी ना कोई वखांयदा। हरि किरपा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। हरि किरपा गुर शाह सुल्ताना, साचे तख्त सुहाईआ। हरि किरपा गुर जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, बल आपणा आप रखाईआ। हरि किरपा गुर नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। हरि किरपा गुर मर्द मरदाना, पुरख नार ना कोई दिसाईआ। हरि किरपा गुर इक्क ज्ञाना, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। हरि किरपा गुर वसे सच मकाना, सचखण्ड दुआर वज्जे वधाईआ। हरि किरपा गुर वेखे मार ध्याना, थिर घर साचे सोभा पाईआ। हरि किरपा गुर गाए तराना, आपणी तार सितार आप हिलाईआ। हरि किरपा गुर हरि मन्त्र जाणा, आपणी गति मित आपे वेख वखाईआ। हरि किरपा गुर वरते भाणा, गुर भाणा वड वड्याईआ। हरि किरपा गुर खेले खेल आवण जाणा, रूप अनूपा आप दरसाईआ। हरि किरपा गुर पाए माणा, दर घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वड वड्डा बेपरवाहीआ। हरि किरपा गुर शाहो भूप, भूपत भूप इक्क अख्वांयदा। हरि किरपा गुर सति सरूप, रूप रेख ना कोई जणांयदा। हरि किरपा गुर महिमा अनूप, वेद कतेब ना वेख वखांयदा। हरि किरपा गुर वसे चारे कूट, दहि दिशा फेरी पांयदा। हरि किरपा गुर एका रूप, तन्दन तन्द वखांयदा। हरि किरपा गुर ना बणाए कोई कलबूत, निरगुण आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एका हरि, एका दर सुहांयदा। हरि किरपा गुर जोद्धा सूरबीर बलकार, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। हरि किरपा गुर बोल जैकार, आपणा नाअरा आपे लांयदा। हरि किरपा गुर श्रंगार, आप आपणी सेज सुहांयदा। हरि किरपा गुर कर प्यार, आप आपणा अंग लगांयदा। हरि किरपा गुर बख्शे धार, धार विच्चों आप प्रगटांयदा। हरि किरपा गुर अंदर बाहर, गुप्त ज़ाहर खेल खिलांयदा। हरि किरपा गुर मीत मुरार, मीत मुरारा इक्क बण जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा वेस आप धरांयदा। हरि किरपा गुर साची टेक, एका ओट जणाईआ। हरि किरपा गुर लिखे लेख, लेखा लेख ना कोई जणाईआ। हरि किरपा गुर आपा वेख, आपणा रूप आप दरसाईआ। हरि किरपा गुर धारे भेख, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। हरि किरपा गुर पंज तत्त करे प्रवेश, त्रै माया अग्न अंग समाईआ। हरि किरपा गुर बणे नर नरेश, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां आपणा हुक्म सुणाईआ। हरि किरपा गुर आपणे नेत्र आपे लए पेख, लोचण आपणा आप खुल्हाईआ। हरि किरपा गुर लेखा जाणे मुछ दाढ़ी केस, मूंड मुंडाए वेखे थाउँ थाँईआ। हरि किरपा गुर सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेष,

गृह मन्दिर डेरा लाईआ। हरि किरपा गुर इक्क अदेस, गुर इक्क देहु बुझाईआ। हरि किरपा गुर रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। हरि किरपा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ। हरि किरपा गुर करतारा, गुर गुर आपणा रूप वटांयदा। हरि किरपा गुर खेल अगम्म अपारा, लेखा लेख ना कोई वखांयदा। हरि किरपा गुर शब्दी धारा, शब्द शब्द विच समांयदा। हरि किरपा गुर ठांडा दरबारा, दर घर साचा आप सुहांयदा। हरि किरपा गुर अवतारा, नित नवित लोकमात वेख वखांयदा। हरि किरपा गुर मीत मुरारा, हरिभगत साचे वेख वखांयदा। हरि किरपा गुर साचा यारा, सन्तन साचा संग निभांयदा। हरि किरपा गुर गुरमुख वेखे सुत दुलारा, पूत सपूता गले लगांयदा। हरि किरपा गुर करे खेल विच संसारा, संसार सागर फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हरि एका गुर, एका लेखा जाणे धुर, धुर लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। हरि किरपा गुर उठया, सतिगुर सच्चा हो मेहरवान। जन भगतां उप्पर आपे तुठया, गुर गुर रूप श्री भगवान। देवे नाम भण्डार अतुटया, निखुट ना जाए विच जहान। अमृत आत्म देवे घुट्टया, अमृत आत्म पीण खाण। तन लगाए शब्द चोटया, नाद सुणाए सच्ची धुनकान। काया रखाए किला कोटया, घर मन्दिर हरि बैठा निगहबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, करे खेल श्री भगवान। हरि किरपा गुर दया कर, दीन दयाल खेल खिलांयदा। हरि किरपा गुर गुरमुख साचे लए वर, आप आपणा मेल मिलांयदा। हरि किरपा गुर गुरमुख सज्जण लए फड़, नाता बिधाता जोड़ जुड़ांयदा। हरि किरपा हरि सन्तन वखाए इका घर, घर घर विच जोत जगांयदा। हरि किरपा गुर भगतन अंदर जाए वड़, आत्म सेजा सोभा पांयदा। हरि किरपा गुर लेखा जाणे नारी नर, नर नरायण खेल खिलांयदा। हरि किरपा गुर लक्ख चुरासी घाड़न घड़, घट घट आपणा रूप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर गुर आपणा नाउँ धरांयदा। हरि का नाउँ गुर गुर धार, वेद कतेब कथन ना जाईआ। गुर गुर खड़े दर दुआर, हरि हरि लेखा रिहा पाईआ। हरि हरि सच्चा देवणहार, गुर गुर ढह पए सरनाईआ। गुर गुर वेखे इक्क वरतार, हरि सच्चा शहनशाहीआ। बणे हरि सच्ची सरकार, गुर गुर दर दरबान बहाईआ। गुर गुर मंगे एका दान, हरि हरि अग्गे झोली डाहीआ। हरि हरि सूरा सूरबीर बली बलवान, गुर गुर एका बल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख वड वड्याईआ। हरि दाता गुर भिखारी, एका महल्ल सुहाया। हरि वणज गुर वपारी, वाह वाह एका वणज कराईआ। हरि नाउँ गुर धारी, वाह वाह इक्क अधार रखाया। हरि घर गुर सच दुआरी, वाह वाह चाकर सेव कमाया। हरि कन्त

गुर एका नारी, वाह वाह नारी कन्त हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हरि, दूसर अवर ना कोई जणाया। हरि किरपा गुर भेटया, भगतन भगवन मेला दो जहान। हरि किरपा गुर मिल्या खेवट खेटया, हरि सन्तन बेड़ा चलाए आण। हरि किरपा गुर नाता बंधाए मात पित बेटी बेटया, गुरमुख साचे सुरत संभाल। हरि किरपा गुर गुरसिख आपणे शब्द लपेटया, नाम अगम्मां फड़ रुमाल। हरि किरपा गुर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लिखणहारा साचा लेखया, जुगा जुगन्तर बण दलाल। हरि किरपा गुर एक, गुर किरपा हरि पछाण। गुर किरपा हरि टेक, लेखा चुक्के दो जहान। आदि जुगादि रिहा वेख, वड दाता हरि मिरहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर गुर रूप कर प्रधान। हरि हरि गुर गुर एका रंग, आदि जुगादि समाया। करे खेल सूरा सरबंग, अनरंग रूप प्रगटाया। इक्क इकल्ला फड़ मृदंग, सच दुआरे आप वजाया। आपे जाणे आपणा अनन्द, अनन्द मंगल ना किसे गाया। आप मुकाए आपणा पन्ध, पांधी राही संग ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, जुगा जुगन्तर वेस धराया। जुगा जुगन्तर साची धार, गुर गुर रूप मात प्रगटाईआ। आपणी कल वरते करतार, कल विच आपणा आप बन्द रखाईआ। नौं नौं चार करया खेल अपार, जुग चौकड़ी गेड़ा रिहा दुवाईआ। पंज तत्त तत्त बोल जैकार, रत्ती रत्त लेखे लाईआ। समरथ पुरख खेल अपार, महिमा अकथ आप सुणाईआ। रथ चलाए सर्ब संसार, रथ रथवाही सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साचा हरि, गुर गुर एका रूप दरसाईआ। एका रूप गुर गुर दरस, दरस दरसी आप करांयदा। जन भगतां उप्पर करे तरस, सन्त साजण वेख वखांयदा। गुरमुखां मेटे जगत हरस, गुरसिखां तृष्ना मूल मुकांयदा। अमृत मेघ अंमिउँ रस देवे बरस, सांतक सति सति करांयदा। लेखा जाणे अर्श कुर्श, फर्श आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी आपणा नाउँ धरांयदा। आदि जुगादी हरि करतारा, एका दूआ खेल खिलांयदा। त्रै त्रै लोआं कर पसारा, चारे जुग वण्ड वण्डांयदा। चारे खाणी बाणी बोल जैकारा, चारे वेदां वेख वखांयदा। चार वरन कर उज्यारा, चार कुंट खेल खिलांयदा। चार यारी कर पसारा, एका चौकड़ बन्धन पांयदा। आपे वसे सभ तों न्यारा, नर हरि आपणा नाउँ धरांयदा। जुगा जुगन्तर आपणा नाउँ कर उज्यारा, गुरूआं पीरां एका सबक पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे हरि आपे गुर, आपे ताल आपे सुर, आपे शब्द आपे सुरत जाए जुड़, आपे लग्गी तोड़ निभांयदा। आपे गुर आपे अवतारा, आपे आपणा रूप प्रगटांयदा। आपे शाह आपे सिक्दारा,

शाह सुल्तान आपणा नाउँ धरांयदा। आपे हुक्म आप वरतारा, हुक्मी हुक्म आप फिरांयदा। आपे जगत जुग बणे अखाड़ा, आपे त्रिलोकी नाच नचांयदा। आपे चौदां लोकां दए सहारा, आपे चौदां तबकां फोल फुलांयदा। आपे लक्ख चुरासी कर पसारा, आपे घट घट जोत जगांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न शिव कर सेवादारा, साची सिख्या इक्क समझांयदा। आपे करोड़ तेतीसा दए आधारा, इंद इंदरासण आप टिकांयदा। आपे करे खेल विच संसारा, कुदरत कादर वेख वखांयदा। आपे सतिजुग त्रेता द्वापर करे खेल अपर अपारा, अनक गुण आपणे आप जणांयदा। आपे राम बण अवतारा, आपे रावण गढ़ तुड़ांयदा। आपे कान्हा कंसा मिल सखीआं गाए मंगलाचारा, मंगल रास आप रचांयदा। आपे ईसा मूसा काला सूसा तन शंगारा, अल्फ़ी एका तन रंगांयदा। आपे निरगुण निरवैर बोल जैकारा, नाम सति नानक मन्त्र इक्क दृढ़ांयदा। आपे वाहिगुरू फ़तेह सुणाए सुणनेहारा, एका डंका शब्द वजांयदा। आपे इष्ट बणया रिहा सर्ब संसारा, गुर पीर अवतार सर्ब ध्यान लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, गुर गुर आपणा नाउँ वड्यांअदा। आपणा नाउँ गुरू गुर गुर करतार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। लोकमात हो उज्यार, माणस माणस लए समझाईआ। उच्ची कूक करे पुकार, सरगुण साची सेव कमाईआ। निरगुण वसया धाम न्यार, जीवां जंतां दए समझाईआ। घट घट अंदर करे प्यार, जो जन

१४३३ आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। गुर किरपा हरि वेखे गुरमुख विरला वेखणहार, दूसर दिस किसे ना आईआ। साचे भगत १४३३

०६ भगवन्त कर दीदार, सांतक सति सति आपणे तत्त वरताईआ। कबीर जोलाहा उतरया पार, घर साचे वज्जी वधाईआ। जोती ०६

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगतन एका लेखा दए समझाईआ। हरिभगत एका दर मंगदा, दूसर दर ना कोए परवान। बिन हरि नाम ना चोली रंग दा, अवर करे ना कोए पछाण। बिन सचखण्ड दुआरे दूजा दर ना कोए लँघणा, रक्खे सिर ना किसे दी आण। मेला मंगे सूरे सरबंग दा, नाता तोड़ दो जहान। आपणा आप सति सरूपी अंदर आपे टंगदा, दूसर दिसे ना कोए निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सृष्ट सबाई देवे इक्क ज्ञान। हरि किरपा गुर देवे ज्ञान, गुर किरपा कहिण ना जाईआ। हरि किरपा भगत मिले भगवान, वेद शास्त्र सिमरत करे ना कोए पढ़ाईआ। चारे बाणी साचे भगत निउँ निउँ चरन सरन करन निमस्कार, बिन भगत बाणी मात ना कोए प्रगटाईआ। साची बाणी हरि का नाउँ विच संसार, गुरमुख आपणी रसना जिह्वा गाईआ। गुर गुर खेल करे अपार, गुरमुख साचे लए जगाईआ। बिन जोग अभ्यास फड़ फड़ बांहों देवे तार, गुर नानक साची रीत चलाईआ। गुर गोबिन्द देवे इक्क दीदार, कल्गी तोड़ा सीस टिकाईआ। वाह वा गुरू बोले जो इक्क जैकार, सचखण्ड दुआरे दए

बहाईआ। एका इष्ट वखाए पुरख अकाल, साचा भगती मार्ग रिहा वखाईआ। भय ना वखाए कोए सिर काल, महांकाल नेड़ ना आईआ। जिस जन सतिगुर पूरा होए आप मेहरवान, दर घर साचे लए बहाईआ। हरि हरि रूप नज़री आए इक्क भगवान, साचे तख्त बैठा सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर गुर एका भेव खुल्हाईआ। हरि गुर भेव खुल्हांयदा, गुर हरि एका प्यार। हरि गुर सेव कमांयदा, गुर हरि एका धार। हरि गुर जोत जगांयदा, गुर हरि नूर उज्यार। हरि गुर चोट लगांयदा, गुर हरि शब्द धुन्कार। हरि गुर लोक परलोक हुक्म चलांयदा, गुर हरि वरते विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर करे खेल सच्ची सरकार। हरि गुर सेव कमांयदा, निरगुण सरगुण हो उज्यार। हरि गुर जोग वखांयदा, नेहकर्मी कर प्यार। हरि गुर सलोक सुणांयदा, शब्द अगम्मी इक्क जैकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मन्दिर बैठ सच्चे दरबार। हरि मन्दिर दर सुहावणा, गृह वसे हरि निरँकारा। करे खेल श्री भगवानना, जोती जाता हो उज्यारा। जुग जुग झुलाए आपणा सति निशानना, लोकमात लै अवतारा। गुरमुखां फड़ाए एका दामना, छुट्ट ना जाए विच संसारा। खेड़ा वसाए नगर ग्रामना, काया मन्दिर दए सहारा। दरगाह साची बणे ज़ामना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला साचा हरि, आपणी पूरी करे आप भावणा। आपणी भावना भावी अंदर रक्ख, भगतन दए जणाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कर कर वक्ख, निष्अक्खर नाम करे पढ़ाईआ। श्री भगवान एका मार्ग दस्स, निरवैर रूप दरसाईआ। पुरख अकाला मेल मिलावा हस्स हस्स, हसरत जगत रहे ना राईआ। भगतां अंदर आपे जाए वस, रूप अनूप आप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा मार्ग इक्क समझाईआ। हरि गुर गुर मार्ग लाया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। गुर गुर हरि हरि रूप वटाया, हरि हरि गुर गुर कर धार। पंज तत्त ना कोई रखाया, निरगुण जोत जोत उज्यार। वरन गोत ना कोए बणाया, राज राजान ना शाह सुल्तान। ऊँच नीच ना वण्ड वण्डाया, चारे वरन ना कोए ज्ञान। चारे वेद ना सीस झुकाया, अठारां प्राणां ना करे ध्यान। गीता ज्ञान ना रसना गाया, अञ्जील कुरान ना करे सलाम। खाणी बाणी ना सीस झुकाया, आपे होया जाणी जाण। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, निहकलंक बली बलवान। गुरमुख साचे लए जगाया, सोया रहे ना कोए नादान। पुरख अकाल इक्क मिलाया, हरि जू होया आप मेहरवान। चाल अवल्लड़ी इक्क चलाया, साचे भगत कर परवान। जगत जंजाला गलों तुड़ाया, लक्ख चुरासी चुक्की काण। पूजा पाठ अभ्यास ना कोए वखाया, गुरमुखां घर घर दरस देवे आण। जिस जन एका वार दरसन पाया, दरगाह साची झुलदा

१४३४
०६

जाए निशान। वेले अन्त सति बबाण लए बिठाया, पुरख अबिनाशी आपणा देवे धुर फ़रमाण। गुरसिखां बण कहार सेव कमाया, डोली चुक्की जाए दो जहान। दूसर हथ्थ ना डोर फड़ाया, तेई अवतार होण हैरान। अठारां भगत रहे जस गाया, दस गुरू करन परवान। कलिजुग अन्तिम गुरमुखां लेखा आपणे हथ्थ रखाया, आपणी पाई एका आण। नानक गोबिन्द लिख्या पूर कराया, भुल्ल ना जाए गुण निधान। नारी पुरष एका थाँ बहाया, वण्डे वण्ड श्री भगवान। हरिजन साचे वारो वारी आपणी गोदी लए बहाया, हरख सोग करे ना कोए विच जहान। भैणा भइया नाता जगत बंधाया, सिँघ नरायण दीआ ज्ञान। मक्खण सिँघ नेत्र नीर ना कोए वहाया, बाल अञ्याणे आपे लए संभाल। हरबंस अंस गुर सतिगुर आपणे बंस रलाया, जगत सुत साचे पिता पुरख मिले आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दित्ता दान एका वार, दूजी वार थित ना कोए जणाया ।

❋ २८ कत्तक २०१७ बिक्रमी सरैण सिँघ दे घर पिण्ड जंडिआला गुरू ज़िला अमृतसर ❋

सति पुरख साहिब सुल्तान, अगम्म अगम्मड़ा वड वड्याईआ। सो पुरख निरँजण साहिब मेहरवान, रूप अनूप बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरँजण खेल महान, अनुभव आपणी खेल खलाईआ। एकँकारा नौजवान, आदि जुगादी भेव ना राईआ। आदि निरँजण नूर महान, निरवैर आपणा आप प्रगटाईआ। अबिनाशी करता करता पुरख करनेहार, आपणी कल आप धराईआ। श्री भगवान करे खेल अपर अपार, इक्क इकल्ला सच्चा शहनशाहीआ। पारब्रह्म प्रभ लेखा जाणे सच दरबार, दरगाह साची वड वड्याईआ। सचखण्ड वसाए एकँकार, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। घर मन्दिर पावे आपे सार, थिर घर लेखा अगम्म अथाहीआ। आपणा जोबन वेख बलकार, बल आपणा दए प्रगटाईआ। आपणा खेल करे खेलणहार, अलक्ख अलक्खना लख्या ना जाईआ। आपणी इच्छया कर विचार, आपणी सिख्या आपे पाईआ। आपणी घाड़त घड़े हरि करतार, साचा तख्त आप सुहाईआ। आपे शाह पातशाह बणे सच्ची सरकार, शहनशाह आपणा नाउँ धराईआ। आपे भूपत भूप होए दातार, राज राजान आप अख्वाईआ। आपे सति सतिवादी उठाए सति निशान, सति पुरख निरँजण सेव कमाईआ। आपे देवणहारा धुर फ़रमाण, शब्द अगम्मी वाज सुणाईआ। आपे हुक्मी हुक्म करे परवान, परवरदिगार बेपरवाहीआ। आपे आपणा होए जाणी जाण, जानणहार नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला सच महल्ला, एका रिहा वसाईआ। इक्क महल्ला हरि वसाया, आदि जुगादी आसण लांयदा। एका रूप अनूप प्रगटाया, रंग रेख ना कोए जणांयदा।

एका नरेश रिहा सुहाया, दर दरवेश ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचा आप जणांयदा। घर साचा सोहया बंक दुआरा, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। घर प्रगटया हरि एकँकारा, निराकार रूप धराईआ। घर बोलणहारा नाम सति जैकारा, सति सतिवादी आप प्रगटाईआ। घर करता पुरख होए उज्यारा, निरवैर आपणी धार चलाईआ। घर मूर्त अकाल एका वसे वसणहारा, जूनी रहित सहिज सुखदाईआ। घर लेखा जाणे धुर दरबारा, सचखण्ड निवासी सच्चा शहनशाहीआ। घर मंगण मंगे बण भिखारा, घर इच्छया झोली पाईआ। घर मन्दिर बणे सति वरतारा, साची वस्त हथ्थ उठाईआ। घर बोले शब्द नाद धुन्कारा, घर राग अनादी गाईआ। घर अमृत रक्खे ठंडी ठारा, चरन सरोवर इक्क सुहाईआ। घर उपजाए ब्रह्मा विष्न शिव सुत दुलारा, घर जननी एका माईआ। घर वखाए रवि ससि सूरज चन्न सतारा, घर मंडल मंडप दए वड्याईआ। घर त्रैगुण माया भर भण्डारा, त्रै त्रै लेखा दए समझाईआ। घर पंचम तत्त तत्त पसारा, तत्व तत्त इक्क रखाईआ। घर घाड़त घड़े आप सुन्यारा, सच कुठाली आपे ताईआ। घर लेखा जाणे हरि निरँकारा, दूसर अवर ना संग रखाईआ। घर निष्अक्खर पढ़े पढ़नहारा, घर साचे वेदां करे पढ़ाईआ। घर लक्ख चुरासी कर पसारा, घर साची वण्ड वण्डाईआ। घर बख्शणहारा नाम आधारा, अनमुल्ला नाम इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका एक सच्चा शहनशाहीआ। घर मन्दिर घर खेल न्यारा, घर जोती जोत जगांयदा। घर ब्रह्म पारब्रह्म करे पसारा, घर आपणा वेख वखांयदा। घर राती रुती थिती जाणे वारा, घर आपणी रुत सुहांयदा। घर फुल फलवाड़ी वेखे सच बहारा, सच सुगंधी आप महिकांयदा। घर लेखा जाणे नारी कन्त भतारा, घर गृह सुहञ्जणी सेज सुहांयदा। घर उपजाए मात पित घर सुत दुलारा, घर जननी जन मेल मिलांयदा। घर राग रागनी गाए आपणी वारा, घर धुन धुन विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, घर एका सच वसांयदा। एका घर हरि वसाया, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। दूजी कुदरत लए प्रगटाया, तीजे नेत्र वेखे थाउँ थाँईआ। चौथे पद आप समाया, धुन नाद शब्द गाए सहिज सुभाईआ। छेवें छप्पर छन्न किसे दिस ना आया, पुरख अबिनाशी रचन रचाईआ। सत्तवें सति सतिवादी घर घर आपणा डेरा लाया, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अठ्ठां तत्तां बन्धन पाया, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। नौं दुआरे जगत वखाया, नौं दर खेले सृष्ट सबाईआ। दसवां आपणी वण्ड वण्डाया, घर घर विच रिहा छुपाईआ। साचे घर जोत जगाया, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। साचे घर सेज विछाया, आत्म सेजा इक्क वखाईआ। साचे घर मेल मिलाया, सुरती शब्द एका रंग रंगाईआ। साचे घर तेल चढ़ाया, एका सगन मनाईआ।

१४३६ ०६

साचे घर खोजत खोजत हरि प्रभ पाया, ब्रह्म पारब्रह्म होए कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए साचा हरि, गृह मन्दिर आप सुहाया। गृह मन्दिर हरि सुहांयदा, घर घर विच कर प्रकाश। सति सरूपी आसण लांयदा, आदि जुगादी ना जाए विनास। जुग जुग आपणा रूप धरांयदा, निरगुण सरगुण प्रगट हो शाहो शाबास। साचा डंका नाम वजांयदा, लेखा जाणे सर्ब गुणतास। लक्ख चुरासी वेख वखांयदा, जन भगतां पूरी करे आस। साचे सन्तन मेल मिलांयदा, सेवा करे बण बण दासी दास। गुरमुख साचे रंग रंगांयदा, लेखा जाणे पवण स्वास। गुरमुख एका दर बहांयदा, सदा सहेला वसे पास। घर मन्दिर मेल मिलांयदा, हरिजन रहे ना कोई निरास। बत्ती दन्दन जो जन गांयदा, पावे सार अप तेज वाए पृथ्मी आकाश। परमानंदन इक्क वखांयदा, गृह मन्दिर साची रास। लक्ख चुरासी बन्धन तोड़ तुड़ांयदा, नाता तोड़े मात गर्भ वास। घर मन्दिर आप सुहांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, खेलणहारा खेल तमाश। गृह मन्दिर हरि खेल तमाशा, काया मंडल रास रचाईआ। प्रगट होए पुरख अबिनाशा, हरिजन साचे लए जगाईआ। चरन कँवल कँवल चरन उप्पर धवल दए भरवासा, धरनी धरत धवल नाल रलाईआ। निज घर निज आत्म निज गृह कर कर वासा, निज आत्म वेखे थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे काया माटी पंज तत्त कासा, बंक दुआरी सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका घर एका दर, एका हरि दए वखाईआ। एका दर साचे मन्दिर, हरि हरि आप वखांयदा। लेखा जाणे डूँग्घी कंदर, कँवरी भँवरी फोल फुलांयदा। आपे तोड़नहारा जंदर, दूई द्वैती कुण्डा लांहयदा। आप जणाए आपणा नाउँ मन्त्र, बिध अन्तर वेख वखांयदा। जगत बुझाए लग्गी बसन्तर, अमृत मेघ इक्क बरसांयदा। लेखा जाणे गगन गगनंतर, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजांयदा। गुरमुख विरले बणाए बणतर, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गृह एका घर, एका वसे साचा हरि, दूसर रूप ना कोई धरांयदा। घर वसया हरि निरँकारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। घर शब्द नाद धुन्कारा, घर वज्जदी रहे वधाईआ। घर मेल मिलावा पीआ प्रीतम पुरख पुरखोतम एका वारा, विछड़ कदे ना जाईआ। घर रंग रलीआ माणे नाल भतारा, घर सांतक सति सति समाईआ। घर साची कलीआं खिड़े गुलज़ारा, घर महिक महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साची कार, आदि जुगादी करनेहार, करन करावनहार इक्क अख्वाईआ। जुग जुग कार कमांयदा, इक्क इकल्ला बेपरवाह। सतिजुग त्रेता द्वापर रथ चलांयदा, अगम्म अगम्मड़ा बण मलाह। जगत नईआ वेख वखांयदा, सतिजुग सागर फोल फुला। डूँग्घी भँवरी डेरा लांयदा, रूप अनूप आप प्रगटा। गुर पीर अवतार

आपणा नाउँ धरा जगत मार्ग वेख वखांयदा, सृष्ट सबाई वेखे थाउँ थाँ। एका अक्खर जाप जपांयदा, अक्खर घाड़न लए घड़ा। घड़णहारा दिस ना आंयदा, घट घट बैठा मुख छुपा। आपणा मन्दिर आपणा घर आप सुहांयदा, आपणी सेजा सुत्ता पैर पसार एकँकारा शहनशाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर साची कार, करे कराए करनेहार, आपणी खेल आप खिलांयदा। त्रैगुण अतीता त्रैगुण भिन्न, त्रै त्रै रेखा आप मुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराया एका दूजा गिण गिण थिर कोई रहिण ना पाईआ। नित नवित लए अवतार करे खेल भिन्न भिन्न, भेव अभेदा भेव ना राईआ। आपणा रूप रंग ना दिसाए किसे चिन, लेखा लेखे कोई ना पाईआ। हरि का रूप लम्मा चौड़ा कोई ना सके मिण, बेअन्त कह कह थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सुहाए साचा घर, गृह मन्दिर दए वड्याईआ। गृह मन्दिर हरि सुहञ्जणा, निरगुण नूर जोत प्रकाश। पुरख अबिनाशी वसे एका सज्जणा, वड दाता शाहो शाबास। जुग जुग आपे जाणे आपणी रचना, लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ प्रभास। जुगा जुगन्तर आपणा नाउँ धराए साचो सच्चणा, सच सुच्च करे प्रकाश। आपे गृह गृह घर घर निरगुण सरगुण हो हो नच्चणा, घट भीतर पावे रास। आपे पंज तत्त काया माटी होए कच्चना, आपे उपजे आपे जाए विनास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
१४३८ त्रैगुण धार हरि निरँकार, गृह मन्दिर आप चलास। साची धारा हरि निरँकारा, घर साचे आप चलाईआ। आदि जुगादी १४३८
०६ इक्क अवतारा, रूप अनूप इक्क प्रगटाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, लोकमात वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव दए सहारा, ०६
करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इंद चरन कँवल बख्शे सच सरनाईआ। दाता जोद्धा सूरबीर वड मृगिंद, जुगा जुगन्तर खेल खिलाईआ। हरिभगत उपजाए आपणी बिन्द, नादी सुत नाउँ धराईआ। गृह मन्दिर मेटे सगली चिन्द, चिंता चिखा रहे ना राईआ। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, भव सागर पार कराईआ। हरि दाता गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, गुण अवगुण आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता हरि करनेयोग, जन भगतां देवे दरस अमोघ, दूसर दिस किसे ना आईआ। त्रै त्रै लेखा जानणहारा, एका रंग समाया। त्रै त्रै वेस वटावणहारा, एका जननी एका पित माया। त्रै त्रै गोद उठावणहारा, एका दाई दाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तख्त निवासी साचे तख्त डेरा लाया। साचे तख्त सुहांयदा, हरि सूरबीर बलवान। निरगुण सरगुण रूप प्रगटांयदा, लेखा जाणे दो जहान। गुर अवतार आपणी सेवा लांयदा, जुग जुग देवे धुर फ़रमाण। काया पंज तत्त मेल मिलांयदा, त्रैगुण तत्त कर परवान। ब्रह्म पारब्रह्म वखांयदा, घर मन्दिर खोल्ह दुकान। साचा हट्ट इक्क जणांयदा, बण वणजारा श्री भगवान।

एका वस्त झोली पांयदा, दाता दानी हो मेहरवान। नाम शब्द इक्क उपजांयदा, देवणहारा सर्ब ज्ञान। लोकमात आप धरांयदा, आपे होए निगहबान। उच्ची कूक आप सुणांयदा, गावणहारा गाए साचे गान। गुर गुर काया मन्दिर आप वसांयदा, लेखा जाणे सच मकान। दर दरवाज़ा आप आपणे हथ्थ जणांयदा, खोल्ह सके ना जीव नादान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। श्री भगवान खेल खिलांयदा, जुगा जुगन्तर साची कार। कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा, लोकमात लै अवतार। जोती जामा वेस वटांयदा, पंज तत्त ना कोए श्रंगार। तन कपड़ ना कोए रखांयदा, बस्त्र भूशन ना कोए आधार। अन्न पाणी ना मुख लगांयदा, ना कोई खाए अवर आहार। मन्दिर मस्जिद गुरदुआरा बंक ना कोए रखांयदा, तीर्थ तट ना रिहा पसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपार। अगम्म अपार हरि खेल खलाया, कलिजुग भेव कोए ना पांयदा। एका जोती दस दस रूप वटाया, गुर गुर आपणा रंग रंगांयदा। साची सोटी शब्द फड़ाया, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। कोटन कोटि जीव लए तराया, कोटन कोटि पार करांयदा। वासना खोटी दए कढाया, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। निर्मल जोती दए जगाया, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। वरन गोती

१४३८ ज़ात पात रहे ना राया, आत्म ब्रह्म सर्ब दरसांयदा। वरन बरन बन्धन ना कोए रखाया, चार वरन अठारां बरन मुख शर्मांयदा। १४३८

०६ एका रंग गुरमुखां काया चोली आप रंगाया, उतर कदे ना जांयदा। साचा ढोला सोहँ सो इक्क सुणाया, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलांयदा। हरि जू हरि हरि तोला बण के आया, साचा कंडा नाम हथ्थ उठांयदा। गोला बण बण सेव कमाया, जन भगत दुआरे फेरी पांयदा। धरत मात तेरा हौला भार दए कराया, मनमुख जीव सर्ब मिटांयदा। आपणा चोला लए बदलाया, जोती जाता खेल खिलांयदा। ओहला पर्दा दए चुकाया, मुख नकाब ना कोई रखांयदा। कला सोलां ना कोई रखाया, अनक कलधारी आपणा नाउँ रखांयदा। मौला रूप बणके आया, बिस्मिल आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मन्दिर एका गृह, एका घर हरि जू रहे दिस किसे ना आंयदा। साचा घर कर त्यार, हरि मन्दिर दए वड्याईआ। जगमग जोत जगे अपार, आठे पहर रुशनाईआ। दीवा बाती ना कोई अधार, तेल वट्टी ना कोई टिकाईआ। किसे कोलों मंगण ना जाए कोई उधार, वणज वणजारा आपणा आपे हो जाईआ। किसे घर सुणन जाए ना कोई धुन्कार, आपणा शब्द नाद आप वजाया। किसे दर करन ना जाए निमस्कार, सीस जगदीस ना किसे झुकाईआ। बिन भगत ना होए जगत भिखार, भगत दुआरा एका मंगण आईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। शब्द डंका वज्जे संसार, चार कुंट दहि दिशा रिहा सुणाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगता, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। लेखा जाणे ग़रीब

निमाणे ब्रह्म चोली आपे रंगदा, रंगणहारा एका एक सच्चा शहनशाहीआ। दुखियां दीनां अनाथा दर दर आपे वण्डदा, दर्द दुःख भय भंजन साचा माहीआ। निर्धन पर्दे आपे कज्जदा, नाम दोशाला उप्पर पाईआ। गुरमुखां गृह आपे वसदा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जिस जन आपणा मार्ग आपे दस्सदा, जगत नाता दए तुड़ाईआ। हरिजू सदा सदा भुक्खा रहे भगत जसदा, जस भगतां आपे गाईआ। मनमुखां कोलों आदि जुगादि जुगा जुगन्तर नस्सदा, पल्लू देवे ना किसे फड़ाईआ। तीर निराला एका कसदा, सति कमान इक्क उठाईआ। त्रैगुण माया आपे डस्सदा, नर हरि प्याला इक्क प्याईआ। करे खेल सर्ब गुणतास दा, गुणवन्ता गुण कहिण ना जाईआ। लेखा चकाउणा मदिरा मास दा, माया ममता दए खपाईआ। लेखा मुकाउणा हास बिलास दा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हलकाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम नास दा, लक्ख चुरासी सके ना कोई बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुखन लए मिलाईआ। गुरमुख सज्जन मीत मुरारा, गुर सतिगुर आप अलांयदा। लेखा जाणे अंदर बाहरा, गुप्त ज़ाहरा भेव ना आंयदा। पूर्ब जन्म करे विचारा, नेहकर्मी कर्म कमांयदा। देवणहारा सति भण्डारा, वस्त अमोलक आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

१४४० आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, घर घर विच आप सुहांयदा। घर विच घर कर त्यार, गुरमुखां बूझ बुझांयदा। १४४०

घर विच घर अमृत बख्शे ठंडी ठार, निझर झिरना जाम प्यांअदा। घर विच घर जोत कर उज्यार, अज्ञान अन्धेर गवांयदा।

०९ घर विच घर शब्द धुन्कार, सच मृदंग आप वजांयदा। घर विच घर सेजा अपर अपार, अगम्म अगम्मड़ा आप सुहांयदा। ०९

घर विच घर मेला नारी कन्त भतार, घर सुरती शब्द मिलांयदा। घर विच घर सखीआं मंगलचार, गीत गोबिन्द आप अलांयदा। घर विच घर वेखे वेखणहार, गुरमुख विरले आप वखांयदा। नेत्र लोचण नैण पेखे सिरजणहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वखाए एका घर, दूई द्वैती डेरा ढांहयदा। गुरमुख हरि घर वेख्या, घर आत्म कर ज्ञान। जगत नाता तुटा भरम भुलेखया, मोह चुकया पंज शैतान। गुर मिल्या नर नरेश्या, बल देवे सूरबीर बलवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख सज्जण लए पछाण। गुरमुख आप पछाणया, कर किरपा गुण निधान। नौं खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी पुण छाणया, छाछ वरोले श्री भगवान। रसना जिह्वा चार कुंट गाए साचा गाणया, किसे हथ्थ ना आए ब्रह्म ज्ञान। सतिगुर चले ना कोई भाणया, मन मति होई फिरे प्रधान। हरि नज़र ना आए वड विद्‌वानया, पढ़ पढ़ थक्के होए हैरान। गुरमुख विरला चतर सुजानया, जिस सतिगुर पूरा दरसन देवे आण। आपणी सुणाए अकथ कहाणीआ, कथनी कथ ना सके कोई विख्यान। किसे हथ्थ ना आए राजे राणया, हट्ट

विके ना किसे जहान। ग़रीब निमाणे आप उठाए बाल अंञाणया, साहिब सतिगुर हो मेहरवान। साचे घर गृह मन्दिर सचखण्ड दुआरे देवे माणया, चरनां हेठ दबाए ज़िमी अस्मान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

✻ २८ कत्तक २०१७ बिक्रमी इंदर सिँघ दे घर पिण्ड बंडाला ✻

दीन दयाल सर्ब गुण ठाकर स्वामी, निरगुण निरवैर आपणा नाउँ धरांयदा। गृह मन्दिर वसे सच मुकामी, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सदा सद नेहकामी, नर नरायण आपणी धार चलांयदा। शब्द अगम्म चलाए बाणी, बोध अगाध शब्द अल्लांयदा। चरन सरोवर अमृत रस रक्खे ठंडा पाणी, निझर आपणा रस आप प्रगटांयदा। आपे जाणे आपणी अकथ कहाणी, रसना जिह्वा कथ ना कोई सुणांयदा। आपे लक्ख चुरासी जीव जंत लेखा जाणे सर्ब प्राणी, घट घट मन्दिर जोत जगांयदा। आपे करे अकार चारे खाणी, ईश जीव मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे करता आपे ठाकर, आप आपणी खेल खिलांयदा। ठाकर करता हरि मेहरवाना, हरि जू हरि हरि मन्दिर सोभा पांयदा। थिर घर वसे इक्क मकाना, घर मन्दिर आप दरसांयदा। साचा तख्त इक्क सुहाना, आसण सिँघासण सोभा पांयदा। शब्द अनादी सच तराना, नाद अनादी नाद वजांयदा। अनुभव खेल श्री भगवाना, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। कर प्रकाश दो जहाना, मूर्त अकाल डगमगांयदा। करे खेल गुण निधाना, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। आपणा रूप आप पछाणा, रूप अनूप आप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा एकँकारा, कल आपणी आप प्रगटांयदा। कल प्रगटे हरि गोबिन्द, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। गहर गम्भीर सागर सिन्ध, अलक्ख अगोचर बेपरवाहीआ। लेखा जाणे ब्रह्मा विष्न शिव सुरपति राजा इंद, कोटन कोटि रूप धराईआ। लक्ख चुरासी एका दाता बण बख्शिंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाला सर्ब गुण ठाकर, रती नाम इक्क रत्नागर, वस्त अनमोल इक्क वखाईआ। नाम वस्त अनमोल हरि करतार, समरथ पुरख आपणे हथ्थ रखांयदा। जुगा जुगन्तर हो उज्यार, लोकमात वेस वटांयदा। एका बाणी बोल जैकार, आपणा नाउँ आप सालांहयदा। आपे गुर गुर देवणहार धार, आपे गुर गुर मुख वड्यांअदा। आपे भगतन देवे सच भण्डार, भगती भगत भगवन्त आप वरतांयदा। आपे सन्तन देवे नाम अधार, साची सेजा इक्क सुहांयदा। आपे गुरमुख सज्जण लए उभार, जगत गोदड़ी वेख वखांयदा। आपे गुरमुख वेखे

साचे लाल, अनमुल्लड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे लेखा जाणे काल महांकाल, दो जहान आपणी खेल खिलांयदा। आपे लहिणा देण चुकाए शाह कंगाल, राउ रंकां मूल मुकांयदा। आपे शब्द अनादि वजाए सच्चा ताल, साची नगरी आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा निध एका ठाकर, आदि जुगादी नाम सौदागर, वणज वणजारा इक्को इक्क अख्वांयदा। वणज वणजारा श्री भगवान, जुग जुग आपणा वणज करांयदा। चौदां लोका वेखे मार ध्यान, लोआं पुरीआं फोल फुलांयदा। त्रै त्रै देवे इक्क ज्ञान, विश्व एका रूप वखांयदा। एका मन्त्र धुर फ़रमाण, धुर दी बाणी बाण लगांयदा। एका मन्दिर इक्क मकान, एका गृह वसांयदा। एका लेखा जाणे जीव जहान, जीव जंत साध सन्त हरि भगवन्त वेख वखांयदा। एका चुकाए जम की कान, एका राए धर्म फंदन गल पांयदा। एका बख्शणहारा माण, एका दर दरबार दुरकांयदा। एका देवे पीण खाण, एका भुखयां भुक्ख मिटांयदा। एका गुर हो मेहरवान, सच निशाना इक्क वखांयदा। चरन कँवल बख्शे माण, मोह अभिमान सर्ब गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सर्ब जीआं प्रभ एका ठाकर, दूसर अवर ना कोए जणांयदा। ठाकर करता एकँकारा, आपणी रचना आप रचांयदा। जागरत जोत कर उज्यारा, घर घर आपणा वेस वटांयदा। रागी नादी वसे बाहरा, राग रागनी भेव ना आंयदा। करया खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर हो उज्यारा, निरगुण निरगुण बन्ने धारा, जोती जोत प्रगटांयदा। हरिजन जन हरि शब्द हुलारा, करे खेल विच संसारा, आदि जुगादी साची कारा, करता पुरख आपणी खेल आप खलांयदा। ठाकर स्वामी बण वणजारा, दर दर मंगे बण भिखारा, एका अल्फ़ी तन श्रंगारा, वेस अनेक आप वटांयदा। लेखा जाणे वारो वारा, बैठा रहे धुर दर दरबारा, कागद कलम ना लिखणहारा, लेखा लेख ना कोई जणांयदा। साकत निन्दक ना पावे कोई सारा, जिस जन साचा नाम अधारा, आत्म खोल्हे बन्द किवाड़ा, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। मेटे रैण अन्धेर अँध्यारा, साचा चन्न करे उज्यारा, मिले मेल पीआ प्रीतम मीत मुरारा, पिर कन्त एका राग नाद अनादी आप सुणांयदा। साची सिख्या मंगलचारा, वाह वाह हरि हरि पाया सच दरबारा, विछड़ ना जाए विच संसारा, सगला संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ठाकर स्वामी आप अख्वांयदा। ठाकर स्वामी सर्ब गुणवन्ता, हरि जू हरि हरि इक्क उपांयदा। आपे जाणे आपणी रीता, वेद कतेब भेव ना पांयदा। जुगा जुगन्तर ठांडा सीता, वसणहारा धाम अनडीठा, आपणा रस जाणे मीठा, अमृत रस आप उपांयदा। लेखा जाणे हस्त कीटा, वसणहारा ऊँचां नीचां, आपणे रंग आपे भिंचा, दूसर रंग ना कोई जणांयदा। ना कोई मन्दिर ना मसीता, बैठा रहे पतित पुनीता, गुरमुख वसे सदा चीता, काया कंचन गढ़ सुहांयदा। मिट्ठा करे कौड़ा रीठा, एका शब्द सुणाए

भाव रखाए अठारां अध्याए गीता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि ठाकर स्वामी साचा मीत, जुगा जुगन्तर लक्ख चुरासी परखे नीत, नित नित आपणा वेस वटांयदा। वेस अवल्लड़ा इक्क अकल्लड़ा, निरगुण निरवैर आप कराईआ। सचखण्ड दुआरा सच सिँघासण एका मलड़ा, आपणी जोती आपे रलड़ा, नूर नूर विच टिकाईआ। आप फड़ाए आपणा पल्लड़ा, आपे मार्ग लाए सति सुखल्लड़ा, आपे वेखे थाउँ थाँईआ। सच संदेश आपे घलड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द नाद नाद धुन्कारा, आप वजाए वजावणहारा, दो जहानां आप सुणाईआ। दो जहानां शब्द नाद, सति पुरख निरँजण आप वजाया। गीत गाए बोध अगाध, गोबिन्द भेव किसे ना पाया। लेखा जाणे अन्त आदि, आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाया। रूप दरसाए ब्रह्म ब्रह्मादि, पारब्रह्म वड्डी वड्याआ। गुरमुख सज्जण लक्ख चुरासी विच्चों काढ, जुग जुग आपणे अंग लगाया। देवणहारा साची दाद, साची वस्त झोली पाया। सन्त सुहेले आपे लाध, जगत छाछ वरोल वखाया। लेखा जाणे माधव माध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ठाकर स्वामी वसे एका दर, दर दरबारा आप सुहाया। दर दरबार सुहावणा, हरि साचा सोभा पाईआ। जुग जुग वेस वटावणा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। ब्रह्म लेखा बह समझावणा, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती बाती एका डगमगावणा, गृह मन्दिर कर रुशनाईआ। सुरती शब्दी मेल मिलावणा, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। एका पकड़े पकड़ाए साचा दामना, दामनगीर आप हो जाईआ। एथे उथे होए जामना, ज़ेर ज़बर दए मिटाईआ। लेखा जाणे राम रामना, राम रामा हरि रघुराईआ। मेटे रैण अन्धेरी शामना, घनईया शामां बसंरी नाम इक्क वजाईआ। नाता तोड़े तृष्ना तामना, माया ममता मोह रहिण ना पाईआ। इक्क वसाए नगर ग्रामना, काया खेड़ा सहिज सुभाईआ। अमृत प्याए साचा जामना, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। नेड़ ना आए कामनी कामना, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए फड़, जगत विछोड़ा कट्टे मात जुदाईआ। जिस जन सतिगुर पूरा पाया, आत्म वज्जे वधाईआ। काया नगर खेड़ा इक्क वसाया, पंज तत्त होए रुशनाईआ। मन मति बुध ना चले कोए चतराया, ढह ढह चरन कँवल पैण सरनाईआ। अन्ध अन्धेर रहे ना राया, टेढी बंक वेखणहारा थाउँ थाँईआ। निरगुण जोत इक्क जगाया, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। अमृत सरोवर सच नहावण इक्क नहाया, गुरसिख दूसर दर नहावण कोए ना जाईआ। काग हँस आप बणाया, माणक मोती चोग चुगाईआ। बजर कपाटी पर्दा आप तुड़ाया, दूई द्वैती रहे ना राईआ। त्रैगुण अग्नी सड़दा आप बचाया, पंजां चोरां लए छुडाया। कंचन गढ़ इक्क वखाया, घर अनहद शब्द वजाईआ। धुन नाद आप सुणाया, धुन आत्मक इक्क उपाईआ। मिल सखीआं मंगल गाया,

१४४३ ०६

घर साचे खुशी मनाईआ। आत्म सेजा वेख वखाया, दस्म दुआरी कुण्डा लाहीआ। निरगुण आपणा आसण सच सिँघासण आप सुहाया, उप्पर बैठा सेज विछाईआ। ब्रह्म रूप कर रुशनांयदा, प्रकाश प्रकाश विच टिकाईआ। रवि ससि रहे शर्माया, बारां रासी भेव ना राईआ। इक्क इकादसी खेल खिलाया, रूप अनूप आप दरसाईआ। गुरमुख सुरती शब्द समाया, सुरती शब्द भेव ना राईआ। अकाल मूर्त नज़री आया, काल रहित सदा सुखदाईआ। गुरमुख साचे आप आपणी गोद बहाया, सतिगुर पूरे वड वड्याईआ। राए धर्म ना दए सज़ाया, चित्रगुप्त लेखा ना कोए वखाईआ। हरिजन साचे दरगाह साची आप बहाया, वेले अन्त होए सहाईआ। जम का डण्ड ना सीस रखाया, शब्द बबाणे लए बिठाईआ। औंदा जांदा किसे दिस ना आया, ब्रह्मा विष्न शिव बैठे राह तकाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा ना मरे ना जाया, शब्द शब्दी आपणा नाउँ प्रगटाईआ। चारे वेद भेव ना राया, पुराण अठारां रहे जस गाईआ। शास्त्र सिमरत देण दुहाया, गीता ज्ञान दए गवाहीआ। अञ्जील कुरान कूक कूक रहे सुणाया, तीस बतीस ढोला एका गाईआ। नानक निरगुण बाण चलाया, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। चारे खाणी वेख वखाया, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज अंदर मन्दिर फोल फुलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, हरिजन सज्जण लए वर, नारी कन्त आप प्रनाईआ। गुरमुख नारी कन्त हरि
१४४४ पाया, विछड़या संसार। काया चोली रंग बसन्त चढ़ाया, चढ़या रूप अगम्म अपार। नेत्र नैणां कज्जल इक्क सुहाया, नाम १४४४
०६ निधाना हरि करतार। जोबन साचा वेख वखाया, शब्द जवानी हो उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा ०६
कर, आदि जुगादि एका हरि, हरिजन साचे लए मिलाया। हरिजन मेल मिलन्नया, सतिगुर मिल्या बेपरवाह। देवे नाम सच्चा धन धन्नया, अतोट अतुट भण्डारा दए वरता। गुरसिखां दुआरे फिरे भन्नया, जुग जुग आपणा वेस वटा। नेत्र दिसे ना आत्म अन्नयां, दूई द्वैती पर्दा बैठे मुख छुपा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां फड़ाए एका लड़, लक्ख चुरासी देवे डन्नया। गुरसिख साचे लड़ फड़ाउणा, गुर शब्दी खेल खिलांयदा। साचे पौड़े आप चढ़ाउणा, दो जहानां पन्ध मुकांयदा। एका दूजा भेव चुकाउणा, तीजा नेत्र नैण खुलांयदा। चौथे पद मेल मिलाउणा, घर चौथा आप सुहांयदा। पंचम मेला इक्क कराउणा, पंचम पंचम रूप समांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोई रखाउणा, सच दुआरे आप बहांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण सीस हथ्थ टिकाउणा, जगदीश वेख वखांयदा। अठ्ठां तत्तां नाता जोड़ जुड़ाउणा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोई रखांयदा। नौं दुआरे पन्ध मुकाउणा, जगत वासना बाहर कढांयदा। दस्म दुआरी मेल मिलाउणा, घर घर विच आप बहांयदा। साची नारी हरि कन्त मिलाउणा, साची सेज इक्क सुहांयदा। इक्क दूजे दा पल्लू आप फड़ाउणा,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लाए लड़, एका पल्लू नाम फड़ांयदा। गुरमुख साचे पल्लू फड़या, सतिगुर पूरे दया कमाईआ। आपणे अंदर आपे वड़या, दूजे दर ना मंगन जाईआ। पंच विकारा आपे चढ़या, ढह ढह सथ्थर ढेर कराईआ। सतिगुर पूरा गुरमुख दुआरे आपे खड़या, आपणी सेवा आप कमाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़या, गुरमुखां करे सति पढ़ाईआ। किला कोट हँकारी तोड़े गड़्या, सच मकाना दए वसाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़या, रूप रंग रेख ना कोई जणाईआ। गुरमुखां अंदर आपे वड़या, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। अग्नी हवन कदे ना सड़या, मढ़ी गोर ना कोई दबाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नड़या, गुरमुख रोम रोम करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप लगाईआ। आपे देवे नाम रती रत्नागर, रती रत आपणे लेखे आपे लाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां उत्तों होया कुरबान, गुरमुख करबला वेखे ना कोए, घर वज्जदी रहे वधाईआ।

❊ २८ कत्तक २०१७ बिक्रमी सरैण सिँघ दे घर जंडिआला गुरू ज़िला अमृतसर ❊

नर हरि हरी हरि नरायण, निरवैर रूप धरांयदा। गुरमुख विरला पेखे नैण, जिस जन आपणा खेल खिलांयदा। हरिजन चुकाए लहिणा देण, पूर्ब जन्मां वेख वखांयदा। दो जहाना बणे साक सज्जण सैण, सगला संग निभांयदा। लेखा जाणे मात पित भाई भैण, जगत कुटम्ब फोल फुलांयदा। तन बस्त्र पाए एका गहिण, सति श्रंगारा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरी हरि नरायण इक्क अख्वांयदा। हरी हरि नरायण हरि निरँकारा, हरि जू हरि हरि मन्दिर सोभा पांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्मादि खोज खुजांयदा। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणांयदा। सिफ्त सालाही वसे बाहरा, लेखा लेख ना कोए जणांयदा। त्रैगुण संग ना कोए विचारा, आपणी कल आप धरांयदा। करे वेस गुप्त ज़ाहरा, अंदर बाहरा रूप प्रगटांयदा। निरगुण लाए एका नाअरा, रसना जिह्वा ना कोए हलांयदा। कागद कलम ना लिखणहारा, वेद कतेब भेव ना पांयदा। गुरमुख विरला पावे सारा, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। खोलूणहारा बन्द किवाड़ा, पंचम धाड़ा मेट मिटांयदा। सखीआं वखाए एका अखाड़ा, साची मंडल रास रचांयदा। गोपी काहन कर प्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि नर नरायण नर हरि आपणा रूप आप धरांयदा। हरि नर नरायण बनवारी, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारी, मूर्त अकाल वडी वड्याईआ। जूनी रहित सच्चा शहनशाह वड सिक्दारी, शाह पातशाह आपणा रूप वटाईआ। दो जहानां

१४४५ ०६

करे खेल अगम्म अपारी, आवण जावण पतित पावन आपणी धार बंधाईआ। जुगा जुगन्तर हो उज्यारी, जागरत जोत करे रशनाईआ। जन भगतां पावे आपे सारी, भगवन आपणा रूप वटाईआ। सदा सुहेला मीत मुरारी, लोकमात वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर हरि हरि हरि एका रंग समाईआ। एका रंग पुरख अकाला, आदि जुगादि समाया। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, दरगाह साची धाम वड्याआ। अनुभव करे खेल निराला, निरगुण जोत नूर प्रकाश आप वखाया। जगत जुग अवल्लड़ी चाला, जुग करता आप कराया। जुगा जुगन्तर बण दलाला, गुरमुख साचे लए मिलाया। नाम पाए तन साची माला, मन का मणका आप फिराया। दिवस रैण चले नाला, विछड़ कदे ना जाया। फल लगाए काया डाल्हा, फुल फलवाड़ी वेख वखाया। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, पंज तत्त डेरा देवे ढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, नर हरि आपणा खेल खिलाया। खेलणहार पुरख समरथ, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। निरगुण निरवैर चलाए रथ, जुग जुग आपणी सेव कमांयदा। नाम जणाए महिमा अकथ, कथनी कथ ना कोए लिखांयदा। बख्शणहारा साची वथ, वस्त अमोलक आप वरतांयदा। जन भगतां मार्ग एका दस्स, लोकमात राह वखांयदा। हिरदे अंदर आपे वस, हरि मन्दिर डेरा लांयदा। शब्द तीर निराला मारे कस, बजर कपाटी चीर चरांयदा।
१४४६ पंच विकारा चरनां हेठ झस्स, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना हउमे हंगता गढ़ तुड़ांयदा। अमृत आत्म देवे एका १४४६
०६ रस, रस रसीआ आपणा नाउँ धरांयदा। सगल विसूरे जायण लथ्थ, जिस जन सतिगुर पूरा दया कमांयदा। जोती जोत ०६
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन हरि हरि वेखणहारा, अकल कल वड्याईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, हरिजन साचे लए मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार किनारा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। नौं खण्ड पृथमी चार कुंट धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। चार वरन होए खुआरा, चारे वेद रहे कुरलाईआ। अठारां बरन मारन नाअरा, अठारां पुराण कूक कूक सुणाईआ। अठारां अध्याए ना बन्न्हे धारा, गीता ज्ञान दए गवाहीआ। चारे जुग करन पुकारा, चार यार बैठे मुख शर्माईआ। चारे बाणी दए हुलारा, चारे खाणी वेख वखाईआ। एका शब्द नाम धुन सच्ची धुन्कारा, हथ्थ किसे ना आईआ। लक्ख चुरासी पढ़ पढ़ थक्की सर्ब संसारा, जगत सागर सिन्ध पार ना कोए कराईआ। हरिजन विरला पाए सारा, नेत्र लोचण नैण इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, घर मन्दिर इक्क वखाईआ। घर मन्दिर हरि सुहांयदा, निरगुण जोत कर उज्यार। दिवस रैण ताल वजांयदा, आठे पहर रहे धुन्कार। एका जोती डगमगांयदा, तेल बाती ना कोए प्यार। अमृत झिरना इक्क

झिरांयदा, सर सरोवर अगम्म अपार। साचा साकी बण बण जाम प्यांअदा, सेवा करे सेवकदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए संभाल। हरिजन सुरत संभालदा, दिवस रैण प्रभात। करे खेल जगत दलाल दा, लेखा जाणे आदि जुगादि। हरिजन सोए मात उठालदा, देवे नाम शब्द सच दात। नाता तोड़े जगत जंजाल दा, सदा सुहेला पुच्छे वात। ख़ज़ाना देवे नाम सच्चे धन माल दा, नाता तोड़ वरन गोत ज़ात पात। एका आपणा रूप वखाल दा, जोत सरूपी इक्क इकांत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरायण एका हरि, हरिजन वेखे मार झात। हरिजन वेखे वेखणहारा, सतिगुर पूरा नाउँ धरांयदा। कलिजुग कलि कल्की लै अवतारा, कलि कलेश सर्ब मिटांयदा। नर नरेश होए उज्यारा, ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकांयदा। करोड़ तेतीसा मंगे मंग भिखारा, सुरपति राजा इंद अग्गे झोली डांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि साचा तख्त सुहाया। उप्पर बैठ श्री भगवन्त, निरगुण आपणा आसण लाया। आपणी महिमा जाणे अगणत, अनुभव आपणा खेल खिलाया। निरगुण रूप सरगुण धराए जुगा जुगन्त, लोकमात वेस वटाया। वेख वखाए साचे सन्त, गुरमुख साचे गले लगाया। देवे नाम मणीआ मंत, आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाया। गढ़

१४४७ तोड़े हउमे हंगत, हरि के पौड़े आप चढ़ाया। काया चोली चाढ़े रंगत, रंग मजीठी इक्क रंगाया। नाता तोड़े भुक्ख नंगत, १४४७

०६ सच भण्डारा इक्क वरताया। गुरसिख दूजे दर ना जाए मंगत, साची भिच्छया झोली पाया। माणस जन्म ना होए खण्डत, ०६

लक्ख चुरासी दए कटाया। नाता तोड़े जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज ना रूप वटाया। हरि का भेव ना जाणे कोई पांधा पंडत, शास्त्र सिमरत बैठे मुख शर्माया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हरि एका नर, नर नरायण आपणा नाउँ धराया। नर नरायण हरि निरँकारा, अकल कल वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम खेल करे अपारा, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। निहकलंका लै अवतारा, लोकमात करे रुशनाईआ। चारों कुंट वेखे धूंआँधारा, धरनी धरत धवल फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल एका हरि, करनहार दिस ना आईआ। करनहार हरि करनेयोग, कुदरत कादर वेख वखाईआ। जन भगत मिलाए धुर संजोग, धुर दा लेखा लेखे पाईआ। जगत विछोड़ा कट्टे रोग, सोग चिंत ना कोए जणाईआ। आप संवारे लोक परलोक, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। इक्क सुणाए सच सलोक, हँ ब्रह्म पारब्रह्म लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, वरनहार इक्क अख्वाईआ। वरनहार सतिगुर साहिब सुल्तान, वड वड्डी वड्याईआ। हरिजन साचे लए पछाण, घट घट अंदर खोज खुजाईआ।

चरन कँवल बख्शे सच ध्यान, सरन चरन सच्ची सरनाईआ। एका देवे नाम निधान, निर्धन हरि हरि झोली पाईआ। अठे पहर नाद धुनकान, धुन आत्मक वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन मेले आपणे घर, हरि की महिमा कहिण ना जाईआ। हरि महिमा अपार, वेद कतेब जस गाया। हरि महिमा अपार, भगत भगवन्त लए मिलाया। हरि महिमा अपार, साचे सन्त गोद बहाया। हरि महिमा अपार, गुरमुख साचे लए जगाया। हरि महिमा अपार, गुरसिख सज्जण अंग लगाया। हरि महिमा अपार, मनमुख मूढ़े झूठे धन्दे लाया। हरि महिमा अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे कराए साची कार, लेखा जाणे धुर दरबार, दो जहानां पावे सार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां इक्क आधार, हरिजन जन हरि मेला निरगुण जोत इक्क अकाल, काल फाँस रहिण ना पाया।

✻ २६ कतक २०१७ बिक्रमी बीबी बलवन्त कौर दे घर पिण्ड धारड़ ज़िला अमृतसर ✻

१४४८ सतिगुर साहिब जाणीए, निरगुण रूप श्री भगवन्त। सतिगुर साहिब जाणीए, आदि जुगादी महिमा अगणत। सतिगुर साहिब जाणीए, हरि वड्डा वड बेअन्त। सतिगुर साहिब जाणीए दरगाह साची धाम सुहंत। सतिगुर साहिब जाणीए, लेखा जाणे आदि अन्त। सतिगुर साहिब जाणीए, आपे जाणे आपणा नाउँ, आपे गाए आपणा मंत। सतिगुर साहिब जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप बणाए साची बणत। सतिगुर साहिब जाणीए, सर्बकला भरपूर। सतिगुर साहिब जाणीए, आदि जुगादी जोती नूर। सतिगुर साहिब जाणीए, वसणहारा नेड़े दूर। सतिगुर साहिब जाणीए, सदा सुहेला हाज़र हज़ूर। सतिगुर साहिब जाणीए, आसा मनसा पूर। सतिगुर साहिब जाणीए, नाता तोड़े कूड़ो कूड़। सतिगुर साहिब जाणीए, एका देवे मस्तक धूढ़। सतिगुर साहिब जाणीए, चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़। सतिगुर साहिब जाणीए, गढ़ तोड़े हउमे हंगता ग़रूर। सतिगुर साहिब जाणीए, अमृत आत्म बख्शे सति सरूर। सतिगुर साहिब जाणीए, सर्बकल होए भरपूर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए ज़ाहर ज़हूर। सतिगुर साहिब जाणीए, आदि जुगादि समाए। सतिगुर साहिब जाणीए, इक्क इकल्ला खेल खलाए। सतिगुर साहिब जाणीए, ब्रह्मा विष्न शिव उपजाए। सतिगुर साहिब जाणीए, रवि ससि करे रुशनाए। सतिगुर साहिब जाणीए, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचाए। सतिगुर साहिब जाणीए, त्रैगुण माया संग निभाए। सतिगुर साहिब जाणीए, पंज तत्त घाड़न लए घड़ाए। सतिगुर साहिब जाणीए, लक्ख

चुरासी वण्डण वण्ड वण्डाए। सतिगुर साहिब जाणीए, जेरज अंडज उत्भुज सेत्ज रंगण रंग रंगाए। सतिगुर साहिब जाणीए, गृह गृह घर घर वजाए मृदंगन, ब्रह्म ब्रह्मादि आप सुणाए। सतिगुर साहिब जाणीए, दूजे दर ना जाए मंगण, सर्ब भण्डारी आप अख्वाए। सतिगुर साहिब जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला साचा हरि, करे खेल बेपरवाहे। सतिगुर साहिब जाणीए, हरि सतिगुर साजण मीत। जुग जुग वेख वखाणीए, इक्क इकल्ला बैठा रहे अतीत। सदा सुणाए अकथ कहाणीए, शब्द अनाद अगम्मी गीत। लेखा जाणे दो जहानीए, लक्ख चुरासी बण बण मीत। भगतन देवे एका वरनीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी रीत। सतिगुर साहिब साची रीत, सति पुरख निरँजण आप चलांयदा। इक्क इकल्ला पतित पुनीत, पतित पापी आप तरांयदा। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच वेख वखांयदा। हरिजन मेले साचे मीत, मित्र प्यारा आप अख्वांयदा। साचा मन्दिर वखाए देहुरा मसीत, काया बंक आप खुलांयदा। जुग जुग परखणहारा नीत, निरगुण आपणा खेल आपणे हथ्थ रखांयदा। एका वसे धाम अनडीठ, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला साचा हरि, साहिब सतिगुर आप हो जांयदा। सतिगुर साहिब दीन दयाला, दीनन रच्छया आप कराईआ। जुगां जुगन्तर खेल निराला, खेले खेल सच्चा शहनशाहीआ।
१४४६ जोती नूर नूर उजाला, नूरो नूर डगमगाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, थिर घर बैठा सेज हंढाईआ। लेखा १४४६
०६ जाणे काल महांकाला, महांकाल बल आपणा आप वखाईआ। जुगा जुगन्तर खेल निराला, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। ०६
तोड़णहारा जगत जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाला, निर्धन सरधन वेखे थाउँ थाँईआ। शब्द सरूपी बण दलाला, नव खण्ड पृथ्मी लोआं पुरीआं फेरी पाईआ। नाम अनमुल्लड़ी एका माला, मन का मणका आप फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साहिब वड्डी वड्याईआ। सतिगुर साहिब सच्चा शहनशाह, एकँकारा इक्क अख्वांयदा। सति सतिवादी बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलांयदा। नाउँ निरँकारा आप धरा, नर नरायण सच जैकारा आप सुणांयदा। अनहद मृदंगा इक्क वजा, अनाहद सेव कमांयदा। सूरा सरबंगा भेव ना रा, अनरंगा रूप आप वटांयदा। भुक्खा नंगा बेपरवाह, नाम भण्डारा इक्क वरतांयदा। जुगां जुगन्तर वेस वटा, लोकमात रूप धरांयदा। हरिजन साचे लए मिला, आप आपणा मेल मिलांयदा। कमलापाती खेल खला, अन्धेरी राती मेट मिटांयदा। अमृत बूंद स्वांती जाम प्या, गुरमुखां तष्ना भुक्ख आप गवांयदा। चरन कँवल नाता लए बंधा, नाता बिधाता जोड़ जुड़ांयदा। साची खाटी दए सुहा, आत्म सेजा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर रूप धरांयदा। साहिब

सतिगुर रूप धर, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। निराकार आकार कर, करता पुरख वेख वखाईआ। दर दरवाज़ा खोले दर, दरगाह सच्ची वड वड्याईआ। नर नरेश एका नर, हरि नरायण सच्चा शहनशाहीआ। आपे वसे आपणे घर, गृह मन्दिर कर रुशनाईआ। आपे तोड़े आपणा गढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सतिगुर वसणहारा एका थाँईआ। एका थान हरि थनंतर, दर घर साचा आप सुहांयदा। एका गृह एका गुर एका मन्त्र, एका नाम दृढ़ांयदा। एका सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, अन्तरजामी आप अख्वांयदा। एका बुझाए लग्गी बसन्तर, त्रैगुण अग्नी तत्त मिटांयदा। एका रूप प्रगटाए जुगा जुगन्तर, गुर पीर अवतार अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साहिब बेऐब आपणा नाउँ धरांयदा। बेऐब सतिगुर परवरदिगार, नूरो नूर डगमगाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, ख़ालक ख़लक रूप दरसाईआ। मुकामे हक हो उज्यार, जल्वा जलाल इक्क दरसाईआ। ऐनलहक कर पुकार, हक हक रिहा समझाईआ। लाशरीक खेल अपार, वाहिद आपणा रूप धराईआ। एका कलमा कर त्यार, कलाम इलाही दए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साहिब इक्क अख्वाईआ। सतिगुर साहिब साचा राम, राम रामा नाउँ धरांयदा। पूरन करे आपणा काम, पूर्ब लहिणा वेख वखांयदा। लेखा जाणे साचे नगर ग्राम, कंचन गढ़ आप सुहांयदा। आप वजाए

१४५० सति दमाम, शब्द नगारा आप सुणांयदा। आप प्याए सच्चा जाम, अमृत झिरना आप झिरांयदा। आपे करे प्रकाश कोटन १४५०

०६ भान, नूरो नूर नूर दरसांयदा। आपे होवे आत्म पंडत बोध ज्ञान, ब्रह्म ज्ञान आप दृढ़ांयदा आपे करे कराए सर्ब कल्याण, ०६

जून अजूनी आप फिरांयदा। आप वखाए सच निशान, दरगाह साची आप झुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साहिब सतिगुर वेस वटांयदा। साहिब सतिगुर घनईया शाम, एका बंसरी नाम वजाईआ। लेखा जाणे हड्ड मास नाड़ी चाम, तत्व तत्त फोल फुलाईआ। निरगुण सरगुण कर पछाण, सरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। एका राग सुणाए कान, एका वज्जदी रहे वधाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका हरि जू दरस दिखाईआ। एका गोपी एका काहन, एका मंडल रास रचाईआ। एका देवे धुर फ़रमाण, एका सख़ीआं मंगल गाईआ। एका करे सच घर बिसराम, आलस निन्दरा ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सच्चा एका हरि, हरि जू आपणा नाउँ दए वड्याईआ। साहिब सच्चा निरगुण धार, निरवैर पुरख अख्वांयदा। मूर्त अकाल हो उज्यार, जूनी रहित डगमगांयदा। मरे ना जम्मे विच संसार, अनुभव आपणी खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी वसया बाहर, लक्ख चुरासी आपणा डेरा लांयदा। लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची वेख वखांयदा। जुगा जुगन्तर साची कार, सतिजुग त्रेता द्वापर कर कर पार, कलिजुग अन्तिम

वेख वखांयदा। ना पुरख ना दिसे नार, पंज तत्त ना कोए आकार, रती रत ना कोए प्यार, हड्ड मास नाड़ी रत बन्धन कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सच्चा एका हरि, आपणी खेल आप खिलांयदा। करे खेल प्रभ समरथ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जुग जुग चलाए एका रथ, रथ रथवाही दिस ना आईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, निहकलंका नाउँ धराईआ। सर्बकल आपे समरथ, समरथ पुरख इक्क अख्वाईआ। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, चारों कुंट लए भुवाईआ। जन भगतां देवे एका वथ, नाम अमोलक वस्त झोली पाईआ। शब्द जणाए अकथना अकथ, अगम्म अगम्मड़ी धार वखाईआ। लेखा जाणे चौदां लोक चौदां हट्ट, चौदां तबकां खोज खुजाईआ। पावे सार तीर्थ तट, तट किनार अठसठ फोल फुलाईआ। लेखा जाणे जो जन रसना जिह्वा रहे रट, अंदर मन्दिर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा एका साहिब, दर घर साचे सोभा पाईआ। दर घर साचे सोभा पांयदा, सति पुरख निरँजण वड मेहरवान। सो पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा, आदि जुगादी खेल महान। हरि पुरख निरँजण रूप प्रगटांयदा, लेखा जाणे दो जहान। एकँकारा कल वरतांयदा, अकल कल ना सके कोए पछाण। आदि निरँजण डगमगांयदा, नूर नुराना सच मकान। अबिनाशी करता खेल खिलांयदा, खेले खेल श्री भगवान। पारब्रह्म प्रभ रूप धरांयदा, आदि जुगादी
१४५१ नौजवान। ब्रह्म अंस आप धरांयदा, लेखा जाणे दो जहान। सोहँ आपणा रूप वटांयदा, निरगुण सरगुण कर परवान। लक्ख १४५१
०६ चुरासी खेल खिलांयदा, जुग चौकड़ी हो प्रधान। गुर अवतार सेवा लांयदा, सन्तन देवे धुर फ़रमाण। भगतन लेखा इक्क ०६
समझांयदा, आपणी विद्या कर बलवान। चौदां विद्या मुख शर्मायदा, हरि का रूप ना सकण पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साचा हरि, करे खेल विच जहान। जगत जहान खेल खिलांयदा, कलिजुग अन्तिम लै अवतार। दोए दोए धारा आप वखांयदा, निरगुण सरगुण रूप अपार। सरगुण लेखा आप मुकांयदा, निरगुण दाता हो उज्यार। निरगुण एका डंक वजांयदा, शब्द नाद सच्ची धुन्कार। गुरमुख साचे आप जगांयदा, मेल मिलाए आपणी वार। घर घर दर दर काया मन्दिर फोल फुलांयदा, डूँघी कंदर पावे सार। मन बन्दर उठ ना दहि दिश धांयदा, मति बुध ना होए खुवार। जिस सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा, सुरत शब्द दए अधार। शब्द सुरत मेल मिलांयदा, सुरती शब्दी इक्क प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, हरि साची खेल खिलांयदा। निहकलंक लए अवतारा, नाम डंका इक्क वजांयदा। सम्मत सम्मती पावे सारा, बरस मास दिवस रैण घड़ी पल वेख वखांयदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दी धार आपणे

हथ्थ रखांयदा। चार वेद ना पावण सारा, पुराण अठारां सर्ब कुरलांयदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह शब्दी धार आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, भेव अभेदा अछल अछेदा, वल छल आपणा खेल खिलांयदा। वल छल अछल अडोल, अछल अछल कार कमाईआ। आपे बणया रहे अनभोल, गुरमुख साचे आपणे भाणे चलाईआ। आदि जुगादी तोलणहारा तोल, एका खण्डा हथ्थ उठाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लक्ख चुरासी घट घट वेखे सच वस्त ना किसे कोल, ख़ाली हट सर्ब वखाईआ। कलिजुग कूक पुकारे उच्ची बोल, एका एक रिहा सुणाईआ। मेरा रूप घट घट अंदर गया मौल, मौला हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग मिटे कूड़ी शाहीआ। कलिजुग कूड़ चुकावणा, कल कल्की लए अवतार। सतिजुग साचा राह वखावना, लोकमात हो उज्यार। नौं खण्ड एका रंग रंगावना, सति सतिवादी बोल जैकार। एका अक्खर नाम जपावणा, चार वरनां दए अधार। एका मन्त्र सति पढ़ावणा, फिरे मन्त्र विच संसार। एका अन्तिम खेल खिलावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई वेखे धूंआँधार। जगत अन्धेरा,
१४५२ साचा चन्द ना कोई चढ़ाईआ। किसे ना दिसे संझ सवेरा, चारों कुंट अन्धेरा छाईआ। कूड़ कुड़यारे पाया घेरा, माया ममता १४५२
मोह फंदन इक्क वखाईआ। भरमां ढाए सभ दा डेरा, साचा गढ़ ना कोई वखाईआ। कलिजुग कूके बण दलेरा, साध
०९ सन्त सिर सके ना कोई उठाईआ। प्रगट होए सिंघ शेर शेर दलेरा, जोती जोत कर रुशनाईआ। चौथे जुग देवे आपे गेड़ा, ०९
जगत लट्ठ दए भवाईआ। अन्त लगाए इक्क उखेड़ा, सभ दी जड़ दए उखड़ाईआ। जन भगतां बन्ने आपे बेड़ा, साचा खेवट खेटा सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। गुरमुख सच्चा माणक मोती, सतिगुर साचे हट्ट रखाया। दिवस रैण जगदी रहे जोती, जगत अन्धेर ना कोई जणाया। आप उठाए सुरती सोती, सवाणी हाणी इक्क मिलाया। नाता तोड़े वरन गोती, वरनां बरनां फंद कटाया। नाम फड़ाए साची सोटी, पंच विकारा दए दुरकाया। शब्द चढ़ाए साची चोटी, अद्धविचकार ना कोई वखाया। नौं दुआरे कढ्ढे वासना खोटी, विश्व इक्क रूप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सच्चा एका हरि, हरि बैठा तख्त सुहाया। तख्त निवासी आप हरि, लोकमात खेल खिलांयदा। गुरमुखां चुकाए जम्म का डर, भय भयानक ना कोई जणांयदा। आपणी किरपा आपे कर, कर किरपा मेल मिलांयदा। अमृत नुहाए साचे सर, घर सरोवर इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन गुरमुख गुरसिख लए फड़, नाम डोरी चोरी चोरी आप आपणी

हथ्थीं बन्धन पांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रक्खे साचा तन्दन, आदि जुगादि सदा बख्शंदन, बख्शिश बख्शीश गुरमुखां सीस जगदीश सच सेहरा नाम बंधांयदा।

✻ १ मग्घर २०१७ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✻

सतिगुर पूरा जाणीए, जो आदि जुगादि समाए। सतिगुर पूरा जाणीए, सो पुरख निरँजण नाउँ धराए। सतिगुर पूरा जाईए, हरि पुरख निरँजण खेल खिलाए। सतिगुर पूरा जाणीए, एकँकारा एका एक लए उपाए। सतिगुर पूरा जाणीए, आदि निरँजण जोती जोत डगमगाए। सतिगुर पूरा जाणीए, श्री भगवान वसे हर घट थाएँ। सतिगुर पूरा जाणीए, अबिनाशी करता आपणे सिँघासण आपे सोभा पाए। सतिगुर पूरा जाणीए, पारब्रह्म प्रभ वड्डी वडियाए। सतिगुर पूरा जाणीए, सचखण्ड दुआरे आप आपणा वेख वखाए। सतिगुर पूरा जाणीए, शाहो भूप वड राज राजान, सीस साचा ताज टिकाए। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्क इकल्ला वसे सच महल्ला, महल्ल मुनार आप सुहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहे। सतिगुर सच्चा शहनशाह, एका रंग समांयदा। तख्त निवासी बेपरवाह, भेव
१४५३ कोई ना पांयदा। आदि जुगादी बण मलाह, जुग जुग खेल खिलांयदा। आपणा नाउँ आप प्रगटा, आपणा लेखा आप समझांयदा। १४५३
०६ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक्क सुहांयदा। सच दुआरा सतिगुर ०६
मीत, एका एक सुहांयदा। आदि जुगादी साची रीत, हरि करता आप करांयदा। बैठा रहे इक्क अतीत, दरगाहि साची सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरवैर आपणा नाउँ धर, पुरख अकाल वेस वटांयदा। पुरख अकाला खेल अवल्ला, सचखण्ड दुआरे आप कराईआ। रूप प्रगटाए इक्क इकल्ला, अनुभव प्रकाश करे रुशानाईआ। सच सिँघासण एका मल्ला, राज राजाना एका एक आपणा बल धराईआ। वसणहारा सच महल्ला, थिर घर साचा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर डेरा लाईआ। हरि मन्दिर श्री भगवान, सति सतिवादी आप सुहांयदा। सति सरूपी इक्क निशान, निरवैर पुरख आप झुलांयदा। आपे होए जाणी जाण, आपणा भेव आप खुल्हांयदा। आपणा खेल करे महान, लेखा लेख ना कोई वखांयदा। शाहो भूप बण सुल्तान, सच सिक्दारा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी धारा आप बंधांयदा। हरि साची धार बंधांयदा, निरगुण रूप अगम्म अपार। साचे मन्दिर सोभा पांयदा, कमलापाती हो उज्यार। निरगुण बाती दीप जगांयदा,

१४५४
०६

नूर नुराना हो उज्यार। सगला साथी आप हो आंयदा, करे खेल करनेहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी कार। हरि साची कार कमांयदा, करता पुरख करनेयोग। साचे मन्दिर डेरा लांयदा, निरगुण निरगुण करे संजोग। जोती जोत मेल मिलांयदा, जोती जाता भोगे भोग। आपणा मोह आप वखांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे रक्खे आपणी ओट। आपणी आपे ओट रक्ख, आपणी दया कमाईआ। आपणे मन्दिरों आपा कर वख, पिता पूत खेल खिलाईआ। शब्द शब्दी नाउँ रक्ख, सुत अबिनाशी अचुत दए वड्याईआ। करे खेल अलक्खना अलक्ख, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची सोभा पाईआ। दरगाह साची हरि सुहांयदा, निरगुण दाता बेऐब परवरदिगार। सुत दुलारा एका जांयदा, जागरत जोत कर उज्यार। साची भिच्छया झोली पांयदा, अतोट अतुट इक्क भण्डार। निरगुण आपणा आप वरतांयदा, आपे होए वेखणहार। सति सरूप आप धरांयदा, आपणी कुल आप विचार। आपे विष्नूं बाहर कढांयदा, आपे नाभी कँवल फुल उज्यार। आपे ब्रह्मा वेख वखांयदा, आपे शंकर दए अधार। आपे त्रै त्रै मेल मिलांयदा, आपे तिन्नां वसे बाहर। आपे रवि ससि आपणी जोत जगांयदा, आपे मंडल मंडप दए सहार। आपे शब्द नाद वजांयदा, आपे ब्रह्मा वेद गावे चार। आपे पंज तत्त घाड़त घड़ांयदा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पावे सार। आपे लक्ख चुरासी खेल खिलांयदा, आपे चारे खाणी बणे मीत मुरार। आपे चारे बाणी ढोला गांयदा, आपे चार वरनां दए सहार। आपे चार जुग वण्ड वण्डांयदा, आपे चौकड़ी करनेहारा पार। आपे नौं खण्ड खेल खिलांयदा, आपे नौं दुआर खोल्हे जगत किवाड़। आपे चौथे पद समांयदा, पुरख अबिनाशी खेल अपार। एका जून अजूनी फिरांयदा, आपे मारनहारा मार। आपे कुंभी नर्क रखांयदा, आपे वेखे सवरगी धार। आपे चरनां नाल मिलांयदा, आपे तिन्नां लोकां करे बाहर। आपे चौदां लोक चरना हेठ दबांयदा, आपे चौदां तबकां करे खुवार। आपे चौदां विद्या मात पढ़ांयदा, आपे शब्द अगम्मी बोले हरि जैकार। आपे मन्त्र नाम दृढ़ांयदा, आपे बोले हँकार विकार। आपे साचे मन्दिर बहांयदा, आपे वसे जंगल जूह उजाड़ पहाड़। आपे धूंआँधार समांयदा, आपे जोती नूर करे उज्यार। आपे सुन्न समाध डेरा लांयदा, आपे उच्ची कूके करे प्यार। आपे गुर अवतार अख्वांयदा, आपे पीरन पीर बणे सिक्दार। आपे भगत भगवन्त उपजांयदा, आपे सन्तन दए अधार। आपे गुरमुख लेख लिखांयदा, आपे गुरमुख लए उभार। आपे गुरमुख वेख वखांयदा, आदि जुगादी वेखणहार। जुग गेड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। कागद कलम लिख लिख भेव कोई ना पांयदा, पुराण अठारां गए हार। छे शास्त्र सर्ब कुरलांयदा। मनू सिमरती ना करे विचार। कृष्न अठारां अध्याए

गीता गांयदा, एका अर्जन दए अधार। अञ्जील कुराना तीस बतीसा मुल्ला शेख़ मुसायक पीर आप समझांयदा, आपे होए बेऐब खुदाई परवरदिगार। हक हकीकत नाअरा आपे लांयदा, आपे ऐनलहक वाजां रिहा मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, करे खेल साचे घर, उच्चे मन्दिर बैठा चढ़, दिस किसे ना आंयदा। साचे मन्दिर हरि जू चढ़या, भेव किसे ना राया। निरगुण दुआरे निरगुण खड़या, बैठा अलक्ख जगाया। निरगण अंदर निरगुण वड़या, दर दुआर ना कोई खुल्हाया। निरगुण विद्या निरगुण पढ़या, रसना जिह्वा ना कोई हिलाया। निरगुण पल्ला निरगुण फड़या, ना मरे ना जाया। जुगा जुगन्तर आप आपणा खेल करया, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाया। त्रैगुण दर दरवेश फिरे दरया, दर दरबाना, सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्मादि, लोक परलोक वेख वखाया। ब्रह्म ब्रह्मादि हरि वेखदा, आदि जुगादी साची कार। जुग जुग वेस अवल्लड़ा करे नर नरेस दा, सरगुण निरगुण दए अधार। धुर दा लेखा आपे वेखदा, सृष्ट सबाई सांझा यार। घट घट अंदर आपे खेलदा, जोती जाता हो उज्यार। गुरमुख साचे मात मेलदा, आप आपणी किरपा धार। धाम वसे इक्क नवेल दा, छप्पर छन्न ना कोई चार दुआर। नाता जोड़े सज्जण सहेल दा, तुट्ट ना जाए विच संसार। जोती जोत सरूप हरि,
१४५५ आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साची कार। जुग जुग कार कमांयदा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। नौं नौं चौकड़ी १४५५
०६ वेख वखांयदा, चार चार करे कुड़माईआ। सृष्ट सबाई भेव ना आंयदा, भेव ना जाणे कोए लेखा लिख ना सके जीव गंवार। ०६
आपणी धारा आप बंधांयदा, लोकमात लए अवतार। गुर गुर आपणा नाउँ प्रगटांयदा, शब्दी नाद वजाए सच्ची धुन्कार। घट घट मन्दिर आप सुणांयदा, दिवस रैण सुणावणहार। चौथे जुग वेस वटांयदा, पारब्रह्म बेऐब परवरदिगार। तेई अवतार आपणी गोद बहांयदा, दस गुर बख्शे सीस प्यार। अठारां भगत चरनां नाल छुहांयदा, इक्क इकल्ला एकँकार। कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा, निहकलंकी जामा धार। कलि कल्की आप अख्वांयदा, प्रगट होए अगम्म अपार। कल्गी तोड़ा सीस टिकांयदा, भुल्ल ना रहे जीव गंवार। साची सखीआं सिख समझांयदा, लक्ख चुरासी गेड़ निवार। जम की फाँसी फंद कटांयदा, राए धर्म ना करे ख्वार। हरि का भेव पंडत कांसी कोई ना पांयदा, जगत विद्या रोवे धाहां मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा रूप आप प्रगटांयदा। रूप प्रगटाए हरि बनवारी, एका रंग समाया। प्रगट जोत जोत निरँकारी, निरगुण आपणा नाउँ धराया। दो जहाना पावे सारी, भेव अभेद भेव खुल्हाया। तोड़नहारा गढ़ हँकारी, नाम खण्डा हथ्थ चमकाया। जन भगतां पैज जाए संवारी, गुरमुख साचे लए जगाया। एका बख्शे

नाम अधारी, नाम निधाना झोली पाया। चरन प्रीती बख्शे साची यारी, यारड़ा सथ्थर इक्क वछाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा रूप सति सरूप, चार कुंट दहि दिशा करे रुशनाया। दहि दिशा खेल खिलावणा, नौं खण्ड पृथ्मी धार। सत्तां दीपां दीप जगावणा, जोती नूर नूर उज्यार। हस्त कीट वेख वखावणा, ऊँचां नीचां पावे सार। राउ रंक आप उठावणा, शाह सुल्ताना दए हुलार। एका डंका नाम वजावणा, लोआं पुरीआं करे ख़बरदार। गुरमुख साचे आप जगावणा, आलस निन्दरा दए निवार। बांहों पकड़ गले लगावणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। भेख अवल्ला आप धरावणा, निरगुण रूप हो उज्यार। जलां थलां डेरा लावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू हरि सच्ची सरकार। सच सरकार सच्चा शहनशाह, जुग जुग खेल खिलांयदा। कलिजुग अन्तिम बण मलाह, लोकमात बेड़ा आपणे कंध उठांयदा। एका चप्पू देवे ला, दिस किसे ना आंयदा। जन भगतां देवे सच सलाह, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध रिहा मुका, गेड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। निरगुण निरवैर मूर्त अकाल दरस दए दिखा, जूनी रहित डगमगांयदा। काल महांकाल दर
१४५६ दए दुरका, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। दीन दयाल आप अख्वा, गुरमुख लाल मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, १४५६
आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरि दातारा करे खेल विच संसारा, समुंद
०६ सागर फोल फुलांयदा। समंद सागर तत्त वरोले, धरनी धरत धवल वेख वखांयदा। आदि जुगादी सदा अडोले, डोल कदे ०६
ना जांयदा। निरगुण निरवैर लक्ख चुरासी आपणे कंडे तोले, तोलणहारा दिस ना आंयदा। शब्द अगम्मी धारन बोले, भेव कोए ना पांयदा। करे खेल पर्दे ओहले, काया पंज तत्त पर्दा इक्क वखांयदा। सर्ब जीआं दी आत्म फोले, अन्तर आपणा खेल खिलांयदा। गुरमुख वेखे साचे गोले, चरन भिखारी आप उठांयदा। बजर कपाट काया हाट अंदर आपे खोले, तीजा नैण नैण दरसांयदा। अनहद शब्द अनादी आपे बोले, सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म मेल मिलांयदा। आपणी वस्त आपणे रक्खे कोले, आदि अन्त आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, दो जहानां वेख वखांयदा। दो जहानां वेखण आया, पारब्रह्म हरि करतार। गुर गुर रूप ना कोए वटाया, पंज तत्त ना कोए आकार। जोती जामा वेस धराया, पुरख अबिनाशी भेव न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे हो त्यार। दरगाह साची खेल न्यारा, हरि करता आप कराईआ। कलिजुग वेखे जगत किनारा, चारों कुंट फेरा पाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। साधां सन्तां मन हँकारा,

तन श्रंगारा ना कोए कराईआ। मति बुध कुलक्खणी डूमणी होई विभचारा, हरि कन्त ना कोए प्रनाईआ। हरि का मन्दिर ना दिसे सच दुआरा, इट्टां मन्दिर रहे बणाईआ। जूठ झूठ लाया गारा, नदी किनारे कल्लर कंध जगत महल्ल रहे वसाईआ। कलिजुग अन्तिम पुरख अबिनाशी देवे इक्क हुलारा, सभ दे धौलर दए ढाहीआ। उच्चा ना दिसे कोए मुनारा, उच्ची कूक ना कोए सुणाईआ। सम्मत सोलां करया सच विहारा, दृष्ट इष्ट दए समझाईआ। सिँघ भगवान अज तक रिहा कुँवारा, नारी सुरत ना कोए प्रनाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण निरगुण सरगुण लै आया अवतारा, सरगुण निरगुण विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव दए खुल्हाईआ आपणा चरन सिध्धा धर, सचखण्ड दुआरे विच टिकाईआ। दूजा चरन पुठा कर, मनमुखां कुंभी नर्क वखाईआ। दोहां विचोला आपे बण, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ। सन्तां चुकावण आया डर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। जो निहकलंक नरायण नर सरनी जाए पढ़, दूजी वार ना फेरा पाईआ। जो दूजे दर लड़ रहे फड़, पुट्ठा पैर पुट्ठा गेड़ा लक्ख चुरासी विच भुवाईआ। करन आया हक नबेड़ा, भुल्ल रहे ना राईआ। सचखण्ड वसाउणा एका खेड़ा, गुरमुख साचे विच बहाईआ। धरत मात दा खुल्हा वेहड़ा, चारों कुंट दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, किसे ना देवे आपणा वर, भगत मंगण चाँईं चाँईआ। सुफ़ने विच बरड़ाए के, जिस दरसन देवे आण। कबीर जोलाहा मंगे आण दर दुआरे जाए के, तेरे पग की पाहनी मेरे तन को चाम। पुरख अबिनाशी लोकमात ना दित्ती ज़ामनी, कलाम नाल ना करी कलाम। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां पकड़े दामनी। सिध्धा चरन हरि निरँकारा, लोक परलोक आप रखांयदा। गुरमुख खिच्चे वारो वारा, लड़ नाल लड़ आप बंधांयदा। एका बख्शे सच प्यारा, चरन कँवल प्रीत सिखांयदा। चौदां तबकां करे खुवारा, चरनां हेठ दबांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव राह तक्कण अध विचकारा, नेत्र नैण सर्ब उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा चरन अग्गे रक्ख, हरिजन हरिभगत लक्ख चुरासी विच्चों करे वक्ख, साचा पक्ख आप रखांयदा। उलटा पैर कलिजुग धार, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। कलिजुग काया होए ख्वार, पंज तत्त गढ़ रहिण ना पाईआ। नाता तुट्टे जगत संसार, सगला संग ना कोए रखाईआ। मनमुखां मुख मारे मार, निन्दया निन्दक मुख मस्तक वेखे शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। पहली मग्घर खेल रचाया, गुरमुखां दया कमांयदा। मनमुखां दर तों दए दुरकाया, जूनी जून गेड़ वखांयदा। गुरमुख साचे लए मिलाया, जुग जुग विछड़े आप मिलांयदा। मनमुख लेखा रहे ना

राया, लेखा लेखे झोली पांयदा। गुरमुख साचे लए तराया, तारनहारा दया कमांयदा। मनमुखां बेड़ा दए डुबाया, पार किनार ना कोए लगांयदा। दोहां विचोला बणके आया, पुरख अकाल खेल खिलांयदा। ब्रह्मा लेखा दए मुकाया, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। शंकर त्रिशूल हथ्थ दए सुटाया, भोला नाथ नैण उठांयदा। सुरपति राजा इंद तख्त छड्ड छड्ड नेत्र नैणां नीर वहाया, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। कलिजुग अन्तिम कूके दए दुहाया, चारों कुंट कूक सुणांयदा। शाह सुल्तान सीस ताज ना कोए टिकाया, राज राजान ना कोए अख्वांयदा। चार वरनां वेख वखाया, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पर्दा कोए ना पांयदा। अठारां बरनां फोल फुलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा खेल आप खलांयदा। दो जहानां खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप करांयदा। दरगाह साची धाम न्यारा, घर मन्दिर सोभा पांयदा। सचखण्ड खोल्ह किवाड़ा, घर घर विच आप उपजांयदा। थिर घर वसया आप निरँकारा, सच सिँघासण आसण लांयदा। भगतन मीता भगतन पावे सारा, जुग जुग मेल मिलांयदा। कलिजुग अन्तिम लेखा जाणे धुर दरबारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपणा भेव अलक्ख अभेव अगम्म अगोचर आपणे हथ्थ रखांयदा। लोकमात मार झात, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। मनमुक्खां नाता जुड़या जगत साक, माया मोह बन्धन एका पाईआ। जूठ झूठ मिल्या राक, काम क्रोध लोभ मोह हँकार शाह स्वारा रिहा दौड़ाईआ। कोए ना दिसे पाकी पाक, पवित रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेखणहारा सर्ब लोकाईआ। वेखणहारा सर्ब घट अन्तर, घट घट आप समाया। कलिजुग लग्गी जगत बसन्तर, त्रैगुण लम्बू एका लाया। सति ना दीसे कोए मन्त्र, पढ़ पढ़ थक्के जीव सबाया। ना कोए बणाए साची बणतर, मन का भउ ना कोए जणाया। पारब्रह्म प्रभ सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, भुल्ल रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दो जहानां वेख वखाया। दो जहानां वेखणहारा, दोए दोए धार चलांयदा। पुट्ठा सिध्धा कर विहारा, संसार सागर फोल फुलांयदा। नौं निधां करे ख्वारा, अठारां सिद्धां मूल चुकांयदा। आपणी बिध आपे जाणे हरि निरँकारा, दूसर संग ना कोए रलांयदा। हरिजन मेले चरन दुआरा, मनमुख दर दुरकांयदा। आदि जुगादी खेल न्यारा, ख़ालक ख़लक रूप वटांयदा। सालस बणे अगम्म अपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर सोभा पांयदा। साचा चरन साची धार, अगला मार्ग सतिजुग राह चलाईआ। पिछला चरन कलिजुग जीवां मारे मारन, मढ़ी गोर दए दुहाईआ। दोहां विचोला बण सच्ची सरकारन, लेख लेखा वेख वखाईआ। करता पुरख करे आपणा कारन, करनहार वड वड्याईआ।

वेस वटाए गुप्त ज़ाहरन, अंदर बाहर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दो जहानां फेरा पाईआ। गुरमुख अग्गे चरन टिकाउँणा, पिछला पन्ध रहे ना राईआ। कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाउँणा, कूड़ी क्रिया ना वेख वखाईआ। पुरख बिधाता संग निभाउँणा, सगला संग इक्क दरसाईआ। सच बिबाणे आप चढ़ाउँणा, किसे राजे राणे हथ्थ ना आईआ। ग़रीब निमाणे गले लगाउँणा, जिस बख़्शे सच सरनाईआ। सचखण्ड दुआरे आप बहाउँणा, पुरख अबिनाशी सेव कमाईआ। साचा चँवर सीस झुलावणा, उँणंजा पवण मुख शर्माईआ। अन्तिम जोती जोत मिलाउँणा, जोती जोत जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, अग्गे चरन इक्क वखांयदा। अग्गे चरन सतिगुर धार, सति सरूप समझांयदा। दो जहानां बेड़ा करे पार, जिस जन आपणे चरन लगांयदा। इथे उथे होए सहार, सगला संग आप निभांयदा। गुरमुख आए ना दूजी वार, लक्ख चुरासी गेड़ा ना कोए रखांयदा। आपणे संग रक्खे करतार, जिउँ भावे तिउँ चलांयदा। जुगा जुगन्तर लए अवतार, आपणा बेड़ा आप तरांयदा। साचे भगत कर त्यार, लोकमात नाल लिआंयदा। मानस जन्म मानस जन्म मानस जन्म दए अधार, तिन्नां लोकां पार वसांयदा। चौथे घर सच्चे दरबार, चौथे पद मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अग्गे चरन एका कर, गुरमुखां चुकाए जगत डर, निरभउ भय ना कोए जणांयदा। पिछला चरन कलिजुग वाट, पान्धी पन्ध ना कोए मुकाईआ। मनमति विके कूड़े हाट, करता कीमत कोए ना पाईआ। ना कोई दीसे खेवट खाट, बेड़ा लोकमात चलाईआ। कलिजुग खेल नटूआ नाट, स्वांगी स्वांग इक्क रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, रूप रेख ना कोई जणाईआ। पुट्ठी पाहनी चरन टिका, चौथा जुग कुरलाए। कलिजुग जीव साचा घर कोए ना पाए। जिस जन खाधा कुट्ठा, हरि साचा दए सजाए। धर्म राए दर टंगे पुट्ठा, वेले अन्त ना कोए छुडाए। मानस जन्म जाए लुट्टा, पंज चोर नकब रहे लगाए। अन्तिम भाग मनमुखां निखुट्टा, देवे दरस ना हरि रघुराए। जमपुर जाए खाए चोटा, अग्नी अग्ग तपाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहे। पुट्ठा चरन जगत ख्वारी, चार कुंट जणाईआ। मानस जन्म कलिजुग जीव रहे हारी, अमोलक हीरा हथ्थ ना आईआ। भरमे भुल्ला नर नारी, नर हरि नरायण ना दरसन पाईआ। कूड़ा वेस कर श्रृंगारी, नेत्र नैणां कज्जल रहे मटकाईआ। नारी पुरष करन प्यारी, साची सेज ना कोई हंढाईआ। सृष्ट सबाई होए विभचारी, घर घर वेसवा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा इक्क सज़ाईआ। गुरसिखां करे प्यार, दया कमांयदा। मनमुखां मारे मार, ना कोई छुडांयदा।

गुरमुखां पैज संवार, लेखे लांयदा। मनमुखां कर खुआर, दहि दिशा फेरा पांयदा। गुरमुखां नूर उज्यार, जोत डगमगांयदा। मनमुखां अन्ध अँध्यार, दिवस रैण अन्धेरा छांयदा। गुरमुखां बख्शे नाम अधार, नाम अमोला झोली पांयदा। मनमुखां कूड़ा वणज वापार, झूठा नाता जोड़ जुड़ांयदा। करे खेल अगम्म अपार, निरगुण सरगुण भेव कोई ना आंयदा। ब्रह्मा विष्न शिव रोवण दर करन पुकार, निउँ निउँ सर्ब सीस झुकांयदा। करोड़ तेतीसा बण भिखार, अग्गे झोली आपणी डांहयदा। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ार, वेला अन्त ना कोई छुडांयदा। मनमुख सुत्ते पैर पसार, दूई द्वैती पर्दा ना कोई उठांयदा। गुरमुख गुरमुख राह तक्कण मीत मुरार, नेत्र बन्द इक्क खुलांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता करे खेल अगम्म अपार, कर किरपा मेल मिलांयदा। अग्गे पिच्छे पिच्छे अग्गे पावे सार, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। आपे सतिगुर लेखा जाणे धुर दरबार, आपे गुर गुर रूप प्रगटे विच संसार, दो जहानां वेख वखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए जाणी जाण, जानणहारा दिस ना आंयदा।

मन मरे मन चढ़े फास, मन लहिणा दए चुकाईआ। मन रोवे मन करे हास, मन वेखे वज्जदी वधाईआ। सतिगुर पूरा गुरमुखां करे पूरी आस, आस निरास ना कोई जणाईआ। जीवदयां आपणी हथ्थीं कट्टी फाँस, मोयां गल ना कोई पाईआ।

मुगल जामा ना जाणया कर कर हास, गुरमुखां हथ्थों दित्ती आप सजाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट हो निहकलंक नरायण घनक पुर वास, पिछला लहिणा आपणी झोली पाईआ। घर विच घर जोत होई प्रकाश, पुरख अकाल दीन दयाल नाल रखाईआ गोबिन्द लाल, पीला बस्त्र तन छुहाईआ। लेखा चुकया शाह कंगाल, आपे बणया हरि दलाल, संगत रक्खे नाल नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। चीत अतीत आपे भाल, सावण सुरत लए संभाल, अन्त ना खाए कोई जम काल, जम काल ग्रास ना कोई कराईआ। गुरमुख तेरा विंगा होए ना वाल, फल लग्गे काया डाल्ह, पत डाल्ही आप महिकाईआ। दस्में जामे नाल रखाया चोबदार सिँघ पाल, जिस शस्त्र हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

❊ २ मग्घर २०१७ बिक्रमी गुरनाम सिँघ दे घर पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर ❊

सो पुरख निरँजण सच्चा शहनशाह, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, आदि जुगादि समाईआ। हरि पुरख निरँजण इक्क मलाह, इक्क इकल्ला बेड़ा रिहा चलाईआ। एकँकारा वसे साचे थाँ, धाम सुहेलड़ा इक्क सुहाईआ।

१४६० ०६

आदि निरँजण जोत जगा, नूर नुराना डगमगाईआ। अबिनाशी करता देवणहारा सच सलाह, दरगाह साची सच सुहाईआ। श्री भगवान करनेहारा सच न्याँ, रूप अनूप भेव ना राईआ। पारब्रह्म प्रभ आपणा आप आप प्रगटा, वेखणहारा आप हो जाईआ। सचखण्ड दुआरा सच दरबारा खेल खला, ख़ालक आपणा नूर करे रुशनाईआ। घर विच घर आप उपा, थिर घर साचे दए वड्याईआ। सति सरूपी सच सिँघासण आप बणा, निरगुण सच महल्ले आप रखाईआ। शाहो भूप बण बेपरवाह, निरगुण निरवैर आपणा बल आप धराईआ। इक्क इकल्ला आसण ला, सति महल्ला दए वसाईआ। तख़्त निवासी शाहो भूप राज राजान आप अख्वा, खेल अवल्लड़ा आप खलाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। आपणा नाउँ आप धरा, नाउँ निरँकारा आप गाईआ। दर दरबान सेव कमा, दर दरवेश नर नरेश वेख वखाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरता, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, आपणा वेखे आप तमासा, दूसर संग ना कोए रखाईआ। ना कोई संग ना कोई साथ, सो पुरख निरँजण खेल खिलांयदा। हरि पुरख निरँजण चलाए आपणा राथ, रथ रथवाही दिस ना आंयदा। एकँकारा आपे जाणे आपणी गाथ, आपणा नाउँ आप अल्हांयदा। आदि निरँजण आपणी जोत आप प्रगटाए आपणे हाट, साचे मन्दिर सोभा पांयदा। श्री भगवान सच सिँघासण आपे सुत्ता आपणे खाट, सचखण्ड दुआरा आसण इक्क सुहांयदा। श्री भगवान आपे जाणे आपणी वाट, आदि जुगादी पन्ध मुकांयदा। पारब्रह्म प्रभ खेले खेल नटूआ नाट, स्वांगी स्वांग आप रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला साचा हरि, दर घर साचे सोभा पांयदा। दर घर साचा सोभावन्त, सचखण्ड दुआर वज्जे वधाईआ। वसणहारा एका कन्त, निरगुण निरवैर आपणा नाउँ धराईआ। पुरख अकाल महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। अलक्ख अगोचर बेअन्त बेअन्त बेअन्त, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। आपे जाणे आपणा मंत, नाम निधाना आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला एकँकार, करे खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी कार कराईआ। अगम्मड़ी कार हरि करांयदा, सचखण्ड दुआरा खोल्ह। अलक्ख निरँजण एका अलक्ख आप जगांयदा, शब्द अनादि अगम्मी बोल। साचा तख़्त आपे सोभा पांयदा, आदि जुगादि रहे अडोल। दर दरबान ना कोए रखांयदा, इक्क इकल्ला वसे कोल। साचा हुक्म आप वरतांयदा, आपणी जोती आपे मौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि उप्पर धौल। साचा खेल खलावणहारा, आपणी दया कमांयदा। सचखण्ड निवासी साचा खोल्ह दुआरा, थिर घर साचे सोभा पांयदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, आपणा हुक्म आप वरतांयदा। आपणी बन्न्हे आपे धारा, आपणा

खेल आप खिलांयदा। आपे बणे कन्त नारा, नारी नर नरायण आप हंढांयदा। आपे होए सुत दारा, आपे सेवक सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। सचखण्ड दुआर सुहञ्जणा, हरि साचा सच सुहाए। जोत जगाए आदि निरँजणा, नूर नूराना डगमगाए। इक्क इकल्ला साचा सज्जणा, घर साचे मेल मिलाए। ना घड़या ना भज्जणा, अबिनाशी पुरख आपणा नाउँ धराए। आदि जुगादि आपणी रक्खे आपे लज्जणा, सिर आपणा हथ्थ आप टिकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि जू हरि मन्दिर डेरा लाए। हरि मन्दिर हरि खेल अपारा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। थिर घर खोल्ले बन्द किवाड़ा, आपणी सेवा आप कमाईआ। आपे वसे सच दरबारा, दरगाह साची धाम सुहाईआ। आपे पुरख आपे नारा, आपे सुत दुलारा गोद सुहाईआ। आपे शब्दी शब्द बोल जैकारा, नाद अनादी इक्क सुणाईआ। आपे सेवा लाए सेवादारा, साची सेव आप कमाईआ। आपे देवे सति भण्डारा, साची वस्त झोली पाईआ। आपे ब्रह्मा विष्न कर त्यारा, आपे शंकर खेल खलाईआ। आपे रवि ससि कर उज्यारा, नूर नूर विच टिकाईआ। आपे मंडल मंडप दए सहारा, गगन गगनंतर आपे सोभा पाईआ। आपे त्रैगुण तत्त करे विचारा, आपे लेखा दए समझाईआ। आपे निरगुण निरगुण बण वरतारा, आपणी इच्छया भिख्या इक्क वखाईआ। आपे विष्नूं सद्दे चरन दुआरा, चरन कँवल इक्क दरसाईआ। आपे ब्रह्मा नेत्र खोल्ले वेखे वारो वारा, चारों कुंट नैण उठाईआ। आपे शंकर लेखा जाणे धूंआँधारा, सुन्न अगम्म फोल फुलाईआ। आपे तिन्नां वसे बाहरा, अनुभव आपणी खेल खिलाईआ। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारा, गृह मन्दिर आप वजाईआ। देवे वर सच्ची सरकारा, शहनशाह सच्ची शहनशाहीआ। पुरख अकाल सहिज सिक्दारा, निराकारा भेव ना राईआ। एकँकारा वेखणहारा, आप आपणा आपणे विच रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर भिखारा, एका वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका सिख्या दए समझाईआ। सच सिख्या हरि समझांयदा, विष्नूं उठ बाल निधान। पारब्रह्म प्रभ खेल खिलांयदा, निरगुण सरगुण कर प्रधान। आपणी जोती जोत जगांयदा, आपे होए निगहबान। आपणा तत्त आप प्रगटांयदा, आपे वेखे मार ध्यान। आपे रत्ती रत्त समांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा दान। विष्न सुणया हरि संदेश, निउँ निउँ चरनी सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी सदा आदेस, हउँ सेवक सेव कमाया। तेरा दर मंगदा रहां हमेश, भुल्ल कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दूसर दर ना मंगण जाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, वस्त अमोलक झोली पाईआ। एका बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक

मुख चुवाईआ। वस्त नाम साची झोली देवे डार, अतोट अतुट आप रखाईआ। वरते वरतावे वरतावणहार, भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, इक्क इकल्ला सच्चा शहनशाहीआ। विष्नूं वर घर साचा पाया, भुल्ल रहे ना राईआ। एका मीत मुरारा दए वरताया, अतोट अतुट रखाईआ। आदि आदि आपणा लहिणा दए समझाया, सीस जगदीस चरन छुहाईआ। कवण वेला कवण रुत अन्त लै मिलाया, जोती जोत जोत मिलाईआ। कवण रूप हरि खेल खिलाया, कवण नूर करे रुशनाईआ। कवण तत्त लए प्रगटाया, कवण नाद वज्जे वधाईआ। कवण ब्रह्मादि खोज खुजाया, कवण ब्रह्म लए उठाईआ। कवण पन्ध दए मुकाया, बण पान्धी साचा राहीआ। कवण निरगुण छन्द दए सुणाया, साचा ढोला एका गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि पुरख तेरी सच्ची सरनाईआ। आदि पुरख निरगुण दाता, जोती जोत डगमगांयदा। शब्दी शब्द सुणाए गाथा, विष्नूं आप समझांयदा। पारब्रह्म प्रभ आपणा वेखे खेल तमाशा, साची रचना आप रचांयदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पाए मंडल रासा, मंडल आपणा खेल खिलांयदा। अन्तिम तेरी पूरी करे आसा, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। आपे बणे दासी दासा,
१४६३ दासी दासा भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्नूं देवे एका वर, आपणा भेव आप खुल्हांयदा। १४६३
विष्नूं सुण कर ध्यान, हरि साचा सच जणांयदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग कर परवान, सेवक सेवा सच वखांयदा।
०६ अन्तिम मेले वाली दो जहान, निरगुण आपणा रूप धरांयदा। निहकलंका बली बलवान, एकँकारा हरि निरँकारा आपणा वेस ०६
आप वटांयदा। जोद्धा सूरबीर बली बलकारा, एका खण्डा हथ्थ चमकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नौं नौं चार पन्ध आप मुकांयदा। नौं नौं चार पन्ध मुकाउणा, थिर रहिण ना कोई पाईआ। पुरख अबिनासी वेस वटाउणा, जोती जोत कर रुशनाईआ। लहिणा देणा आप चुकाउणा, देवणहार आप हो जाईआ। विष्नूं भगवन मेल मिलाउणा, भेव कोए ना पाईआ। सो पुरख निरँजण आपणी धार आप चलाउणा, सो रूप सच्चा शहनशाहीआ। हँ रूप विष्नूं विच समाउणा, सोहँ एका रंग रंगाईआ। आदि आदि आपणा लहिणा तेरी झोली पाउणा, जुगादि रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या सुण कर प्रनाम, दोए चरन सीस झुकांयदा। तूं दाता साहिब श्री भगवान, हउँ बाल अंञाणा भेव ना आंयदा। तेरा झुलदा रहे निशान, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। हउँ वेखां मार ध्यान, तूंही तूं नज़री आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका फड़या तेरा लड़, छुट्ट कदे ना जांयदा। विष्न हरि लड़ फड़ाया, ब्रह्मा वेता लए

जगाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म लए उठाया, अंस बंस वेख वखाईआ। कँवल कँवला खोल्ह खुल्हाया, नाभी आपणी धार बंधाईआ। आपणा नूर नूर दरसाया, जल्वा जल्वा सच्चा शहनशाहीआ। आपणा मृदंग अंग अंग वजाया, नाम निधाना इक्क सुणाईआ। साचे रंग आप रंगाया, उतर कदे ना जाईआ। सुहागी छन्द इक्क सुणाया, ब्रह्म पारब्रह्म वज्जी वधाईआ। आपणा अनन्द आप वखाया, रस रस विच भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणी खेल आप खलाईआ। आपे ब्रह्मा कर उत्पत, पत डाल्ही आप महिकाईआ। आप बणाया आपणा सुत, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। हरि लेखा जाणे अबिनाशी अचुत, दूसर भेव कोए ना राईआ। ना कोई जाणे साची रुत्त, थित वार ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे एका वर, एका ब्रह्म समझाईआ। एका ब्रह्म हरि समझांयदा, पारब्रह्म प्रभ किरपा धार। मात पित आप अख्वांयदा, जन्म दाता बण सच्ची सरकार। दाई दाया वेख वखांयदा, वेखणहार अगम्म अपार। साचा लेखा आप लिखांयदा, लिखणहार एकँकार। कागद कलम ना हत्थ रखांयदा, ना कोई कातब करे विचार। आपणा भेव आप जणांयदा, शब्द अगम्मी बोल जैकार। बोध अगाधा आप सुणांयदा, वेखे विगसे करे विचार। जोती जोत

१४६४ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लेखा इक्क समझांयदा। ब्रह्मे लेखा हरि समझाया, कर १४६४

०६ किरपा गुण निधान। एका निष्अक्खर दए पढ़ाया, चारे वेदां कर ज्ञान। एका हुक्म दए सुणाया, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। ०६

लक्ख चुरासी तेरी झोली पाया, पंज तत्त कर प्रधान। अप तेज वाए पृथमी आकाश खेल खलाया, आपे होया जाणी जाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा धुर फ़रमाण। धुर फ़रमाणा हरि जणाया, भुल्ल रहे ना राईआ। त्रैगुण माया पंज तत्त नाता जोड़ जुड़ाया, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डा दए घड़ाया, तन माटी ख़ाक वखाईआ। पवण स्वास दए धराया, आपणी आसा आपे पूर कराईआ। नौं दुआरे खोल्ह वखाया, वड दाता बेपरवाहीआ। काया बंक दए सुहाया, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। आत्म ब्रह्म दए टिकाया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। ईश जीव रूप धराया, रूप अनूप दिस ना आईआ। हरि जगदीस खेल खिलाया, जागरत जोत कर रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा दित्ता एका वर, पारब्रह्म हरि दया कमाईआ। ब्रह्मे दर हरि साचा पाया, घर साचे ख़ुशी मनांयदा। लक्ख चुरासी वेख वखाया, घट घट जोत जगांयदा। घर विच घर दए सुहाया, निरगुण आपणा आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे सच समग्री, नाल रखाए जोत इकग्री, पुरख अकाल दया कमांयदा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ना, हरि साचा सच समझांयदा। निरगुण हरि हरि अंदर वड़ना, दिस

किसे ना आंयदा। सति सरूपी निरगुण आपणे पौड़े चढ़ना, दर आपणा आप खलांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़ना, दूसर विद्या ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी रचना वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, ब्रह्मा निउँ निउँ सीस झुकांयदा। पुरख अबिनाशी तेरे चरन कँवल पनहार, हउँ सेवक सेव कमांयदा। त्रैगुण माया तत्त विचार, पंचम नाता जोड़ जुड़ांयदा। सरगुण रूप अगम्म अपार, निरगुण तेरी वण्ड तेरे हत्थ रखांयदा। किरपा कर सच्ची सरकार, धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। मन मति बुध दए अधार, गढ़ मन्दिर आप वसांयदा। घर विच घर अगम्म अपार, डूँग्घी भँवरी वेख वखांयदा। त्रिबैणी नैणी इक्क अधार, टेढी बंक आप सुहांयदा। सर सरोवर ठंडा ठार, नाभी कँवल जल भरांयदा। आपे करे बन्द किवाड़, त्रैगुण पर्दा आपे पांयदा। आपे आत्म सेजा हो त्यार, जोती जोत डगमगांयदा। आदि ब्रह्म रूप वेखे वेखणहार, पारब्रह्म आपणी सेव आप कमांयदा। लेखा जाणे हड्ड नाड़ी मास चम्म, तत्व तत्त आप मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे दित्ता एका वर, लक्ख चुरासी रचन रचांयदा। लक्ख चुरासी रचन रचाया, ब्रह्म ब्रह्माद वज्जे वधाईआ। तेरा भाणा मोहे इक्क सुहाया, सीस जगदीस आप झुकाईआ। कवण वेला कवण वक्त हरि जू हरि हरि होए सहाया, लेखा लेखे लहणे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

१४६५ आपणी जोत धर, एका देणा साचा वर, आदि पुरख तेरी सच्ची सरनाईआ। आदि पुरख हरि समझांयदा, ब्रह्मे उठ उठ १४६५

०६ कर ध्यान। नौं नौं चार तेरी सेवा लांयदा, करे खेल श्री भगवान। निरगुण निरगुण वेख वखांयदा, वेखणहारा वड मेहरवान। ०६

जुग जुग तेरी वण्ड वण्डांयदा, लोकमात कर प्रधान। नौं सत्त खेल खिलांयदा, नाता जोड़ ज़िमी अस्मान। गगन गगनंतर फेरा पांयदा, ब्रह्मण्डां खण्डां देवे इक्क ज्ञान। शब्द डंका इक्क वजांयदा, प्रगट हो हो वाली दो जहान, आदिन अन्ता आपणा गुण आपे वेख वखांयदा, दूसर सके ना कोई पछाण। तेरा लहिणा तेरी झोली अन्तिम पांयदा। हरि जू हरि हरि आपे वेखे आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर फ़रमाण। धुर फ़रमाणा शब्द जणाया, ब्रह्मे नेत्र नैण उग्घाड़या। पुरख अबिनाशी नज़री आया, इक्क इकल्ला एकंकारया। चरन कँवल कँवल चरन ढह प्या सरनाया, मस्तक धूढ़ मंगे साची छारया। समरथ पुरख सिर हत्थ टिकाया, देवे वस्त अपर अपारया। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा पन्ध दए मुकाया, निरगुण निरगुण लै अवतारया। निहकलंका जामा पाया, आपे वेखे वेखणहारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, लक्ख चुरासी भाण्डा घड़, लोकमात बण ठठयारया। शंकर हरि प्रगटांयदा, कर किरपा गुण निधान। सुन्न अगम्मी वेख वखांयदा, आपे वेखे वेखणहार। आपणी जोत आप जगांयदा, निरगुण सरगुण

कर आकार। आपणा खण्डा हथ्थ फड़ांयदा, त्रैगुण त्रसूल मारे मार। जो घड़या भन्न वखांयदा, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, निरभउ चुकाए भय डर, भयानक रूप ना कोए दरसांयदा। शंकर कर निमस्कारी, नेत्र नैणां नीर वहांयदा। तूं साहिब सच्चा बेऐब परवरदिगारी, हउं भिखारी याचक मंगण दर तेरे आंयदा। एका वस्त दे अपारी, अग्गे आपणी झोली डांहयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपारी, करता पुरख आप खलांयदा। एका हुक्म वरते वरतारी, जो घड़या भन्न वखांयदा। लक्ख चुरासी करनी दारी, लुकया कोए रहिण ना पांयदा। अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी होए पनहारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार साचा वर, शब्द संदेशा इक्क सुणांयदा। शब्द संदेशा सुणया भोले नाथ, बाशक तशका गल लटकाईआ। पुरख अबिनाशी खेले खेल तमाश, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। लक्ख चुरासी घट घट अंदर पाए रास, गोपी काहन आप नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, एका इष्ट दए समझाईआ। एका इष्ट हरि समझाया, एका तत्त ज्ञान। एका खण्डा हथ्थ फड़ाया, एका वेखे मार ध्यान। इक्क प्रचण्डा दए चमकाया, चण्ड चण्डका होए निगहबान। अन्तिम लेखा दए समझाया, नौं नौं चार करे कल्याण। निरगुण जोती जामा वेस वटाया, प्रगट होवे श्री भगवान। निहकलंका

१४६६ नाउँ धराया, घर घर आपे वेखे आण। तेरा लहिणा दए चुकाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे १४६६

०६ वर सच्चा सुल्तान। विष्न ब्रह्मा शिव हरि समझाया, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। लक्ख चुरासी घाड़न ल्या घड़ाया, ०६

निरगुण आपणी जोत कर रुशनाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी आप समाया, धरनी धरत धवल दए सुहाईआ। जल बिम्ब वेख वखाया, पुरी आकाश वज्जे वधाईआ। साचा मार्ग आपे लाया, चारे वेदां करे पढ़ाईआ। चारे जुग वण्ड वण्डाया, चारे खाणी झोली पाईआ। चारे बाणी शब्द सुणाया, अलक्ख अलक्खणा अलक्ख जगाईआ। चारों कुंट वेख वखाया, वेखणहारा सच्चा शहनशाहीआ। चारे वरनां रंग चढ़ाया, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप प्रगटाईआ। जुगा जुगन्तर फेरा पाया, निरगुण निरगुण सरगुण वेखे थाउँ थाँईआ। आपणा गेड़ा आपणे हथ्थ रखाया, आपणी लट्ठ आप गढ़ाईआ। गुर पीर अवतार आपे सेवा लाया, साची सिख्या इक्क समझाईआ। भगत भगवन्त लए उठाया, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। साचे सन्त लए जगाया, ब्रह्म ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। गुरमुख साचे मार्ग पाया, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। गुरसिख आपणी गोद बहाया, जिउँ बालक मात सखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। आदि पुरख हरि खेल खिलांयदा, विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार। त्रैगुण माया झोली पांयदा, पंज तत्त तत्त आकार। रती रत मेल मिलांयदा, लेखा

जाणे वेखणहार। काया किला कोट बणांयदा, साचा मन्दिर कर त्यार। शब्द चोट इक्क लगांयदा, सच दुआरे आप निरँकार। कोटन कोटि कोट जीव प्रगटांयदा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज कर त्यार। जूनी जून आप फिरांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। लक्ख चुरासी कर पसारा, सचखण्ड निवासी दया कमांयदा। आपणी इच्छया भर भण्डारा, आपणी भिच्छया वेख वखांयदा। आपणा रूप कर उज्यारा, महांकाल नाउँ धरांयदा। करे खेल सिरजणहारा, दयाल आपणी दया कमांयदा। आपणे अंदरों आए बाहरा, थिर घर साचे कुण्डा लांहयदा। थिर घर साचे पार किनारा, सुन्न अगम्म आप समांयदा। आपे वेखे धूंआँधारा, धुर दी धार आप बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण सरगुण रूप धरांयदा। निरगुण सरगुण ब्रह्मा विष्न शिव धार, संसा रोग रहे ना राईआ। करता पुरख खेल अपार, पारब्रह्म प्रभ आप खलाईआ। आपणा वेखे आप दुआर, दर दरवाज़ा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महांकाल एका दर, दीन दयाल हथ्थ रक्खे वड्याईआ। महांकाल हरि का नाउँ, हरि बिन अवर ना कोए जणांयदा। आदि जुगादि वसे हर घट थाउँ, थान थनंतर सोभा पांयदा। जुगा जुगन्तर करे सच न्याउँ,
१४६७ सच सिँघासण आसण लांयदा। हरि जी पकड़े आपे बांहों, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, अमृत सरोवर आप नुहांयदा। लेखा जाणे पिता माउँ, गुरमुख गुरसिख बाल अंञाणे गोद बहांयदा। सदा सुहेला देवे ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव कर उज्यार, हरि साचे खेल खलाया। विष्नूं मंगे इक्क भण्डार, सच भण्डारा हरि वरताया। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म प्यार, लक्ख चुरासी विच समाया। शंकर रोवो करे गिरयाज़ार, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। कवण रूप मारां मार सर्ब संसार, जो घड़या भन्न वखाया। पारब्रह्म प्रभ किरपा धार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आपणी भिच्छया झोली पाया। सच भिच्छया झोली पांयदा, गुणवन्ता गुण निधान। काल आपणे विच्चों आप प्रगटांयदा, कर किरपा दीन दयाल। धूंआँधार खेल खिलांयदा, पत लाए साचे डाल्ह। तेरा सगला संग निभांयदा, लग्गी प्रीती निभे नाल। जो उपजे सो आपणे पेटे पांयदा, मेटे जगत निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा दान। महांकाल काल हरि खेल खिलाया, ब्रह्मा विष्न शिव मेल मिलानया। दो जहानां वेख वखाया, त्रै त्रै फिरे भन्नया। चौदां चौदां खोज खुजाया, जोती नूर श्री भगवन्नया। रवि ससि लए जगाया, लेखा जाणे छप्पर छन्नया। सच दरबारा आप वखाया, देवणहारा धुर फ़रमानया। ब्रह्मा अग्गे झोली रिहा डाहया, मंगे मंग बण निमाणया। लक्ख चुरासी जीव जंत

जो मात प्रगटाया, कवण लेखा लिखे श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, करे खेल गुण निधानया। लेखा लिखण लगांयदा, दया निध दीन दयाल। काल सुत एका जांयदा, चित्रगुप्त कर प्रितपाल। महांकाल दया कमांयदा, आपणी गोदी लए संभाल। धर्म राए विच बहांयदा, आदि जुगादि करे प्रितपाल। धर्म राए इच्छया इक्क प्रगटांयदा, वेखणहार जगत जहान। आपणी इच्छया इक्क सपुत्री जांयदा, लाड़ी मौत कर प्रधान। ब्रह्मा विष्न शिव मेल मिलांयदा, काल महांकाल खेल महान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा खेड़ा आप सुहांयदा। जगत खेड़ा आप सुहाया, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। घर घर डेरा आपे लाया, निरगुण सरगुण सेज हंढाईआ। जुग जुग गेड़ा आप दुवाया, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वण्ड वण्डाईआ। जुग जुग आपणा रूप धराया, गुर अवतार नाउँ रखाईआ। लोआं पुरीआं खोज खुजाया, ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे थाउँ थाँईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा आप दुआया, चारे जुग देण गवाहीआ। सत्त सत्त झेड़ा दए मुकाया, शहनशाह सच्चा पातशाहीआ। कलिजुग वेला अन्तिम आया, करे खेल बेपरवाहीआ। तेई अवतार दस गुरू पूर्ब लहिणा फोल फुलाया, भगत अठारां कर कुड़माईआ। निरगुण सरगुण खेल कराया, आपणा भेख वटाईआ। बावन रूप बण के आया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। बावण

१४६८ अक्खर पढ़ के आया, पैंती अक्खर करे पढ़ाईआ। सतारां निष्अक्खर आपणे विच बन्द रखाया, गुर पीर भेव ना राईआ। १४६८

०६ पीर दस्तगीर सगला संग निभाया, मुल्ला शेख़ मुसायक आप अख्वाईआ। आदि जुगादी रूप प्रगटाया, जुगा जुगन्तर बल वखाईआ। ०६

आपणा ढोला आपे गाया, पुराण अठारां आप सुणाईआ। शास्त्र सिमरत आप पढ़ाया, आपणी विद्या आप सुणाईआ। अठ दस ज्ञान आप दृढ़ाया, भगत भगवन्त दए वड्याईआ। एका कलमा आप सुणाया, कायनात कर रुशनाईआ। हक हकीकत वेख वखाया, लाशरीक सचा शहनशाहीआ। बेऐब परवरदिगार आपणा नाउँ धराया, महिबान बीदो वड्डी वड्याईआ। मुकमे हक डेरा लाया, हक हक हक रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, जुगा जुगन्तर वेखे खेल तमासा, आपणी रास आप रचाईआ। आपे लै अवतार, दया कमांयदा। आपे निरगुण धार, जोत जगांयदा। एका शब्द डंक अपार, आदि जुगादि वजांयदा। आपे सख़ीआं मंगलचार, आपे भगतन वेख वखांयदा। आपे वसया महल्ल अटार, उच्चे मन्दिर आपे आसण लांयदा। आपे रंग रलीआं माणे कन्त भतार, आपे साची सेज हंढांयदा। आपे नर नरायण सुत्ता पैर पसार, आपे आलस निन्दरा विच ना आंयदा। आपे त्रेता सतिजुग द्वापर करया पार, सतिजुग त्रेता द्वापर आपे खेल खिलांयदा। आपे कलिजुग हो उज्यार, ईसा मूसा काला सूसा तन छुहांयदा। आपे लेखा जाणे संग

मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी मुख घूँगट आपे लांहयदा। आपे निरगुण जोती जाता हो त्यार, कमलापात आपणा नाउँ धरांयदा। नानक सतिगुर मिल्या हरि सच्चे निरँकार, सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा। सति नाम मन्त्र कर त्यार, सति नाम सृष्ट सबाई आप पढ़ांयदा। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां करे इक्क प्यार, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका धाम बहांयदा। आपे शब्द नाद धुन जैकार, आप आपणा भेव खुलांयदा। आपे गुरू गुर गुर कर त्यार, गुरू ग्रन्थ गुर वड्यांअदा। आपे दसवें जोती हो उज्यार, सुत दुलारा नाउँ धरांयदा। आपे उच्ची कूके करे पुकार, पुरख अकाल राह वखांयदा। आदि जुगादी एका धार, करे कराए करनेहार, निरगुण सरगुण लै अवतार, जुगा जुगन्तर पावे सार, वेद कतेब भेव ना आंयदा। वेद कतेब रहे जस गा, हरि का भेव कोए ना पाईआ। सचखण्ड दुआरे वसे सच्चा शहनशाह, शाह पातशाह इक्क अख्वाईआ। जुग जुग बणे मात मलाह, साचा बेड़ा लए चलाईआ। भगतां देवे सच सलाह, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। हरि जू वखाए हर घट थाँ, चारों कुंट एका रूप दरसाईआ। चार वरन बणाए भैण भ्रा, दूसर नाता ना कोए वखाईआ। ब्रह्मण्ड एका खेड़ा दए वसा, नौं सत्त विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त ब्रह्म मति पारब्रह्म दए समझाईआ। ब्रह्म मति साची धार, हरि साचा सच समझांयदा। जुगा जुगन्तर लै अवतार, लोकमात

वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यार, निरगुण निरवैर आपणी कल आप वखांयदा। प्रगट हो विच संसार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। शब्द डंका अपर अपार, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पांयदा। लक्ख चुरासी होए खुआर, जो घड़या भन्न वखांयदा। कलिजुग मेटे रैण अँध्यार, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। नाता तोड़े पंज विकार, मन मति विभचार नार ना कोए हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, इक्क इकल्ला एकँकारा, जोती जोत जोत उज्यारा, जूनी रहित दिस ना आंयदा। जूनी रहित पुरख अकाला, अकल कल वड्डी वड्याईआ। सतिगुर सच्चा दीन दयाला, साख्यात रूप प्रगटाईआ। चरनां हेठ दबाए काल महांकाला, आप आपणा बल वखाईआ। शब्द अगम्मी रक्खे ढाला, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। जन भगतां तोड़े जगत जंजाला, त्रैगुण बन्धन रहे ना राईआ। एका मार्ग दस्से हरि सुखाला, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। पंज तत्त काया कंचन सच कुठाली ढाला, नाम सुहागा उप्पर लाईआ। आपे बणे वणज वणजारा, सच्चा पारखू हरि रघूराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, इक्क इकल्ला फेरी पाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवाना, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। सत्त रंग झुलाए इक्क निशाना, सत्तां दीपां आप

जणांयदा। शब्द अगम्मी फड़े तीर कमाना, दो जहानां चिल्ला आप उठांयदा। तख्तों लाहे राजा राणा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलांयदा। जन भगतां बन्ने हथ्थीं गानां, साचा सगन आप मनांयदा। अमृत आत्म बख़्शे पीणा खाणा, अंमिउँ रस आप चखांयदा। धुन अनादि सच्चा धुन गाणा, अनहद साचा ताल वजांयदा। लक्ख चुरासी सिर ते वरते भाणा, काल कूके कूक सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला, कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस वटंदड़ा, पारब्रह्म हरि करतार। निहकलंका नाउँ रखंदड़ा, कल कल्की लै अवतार। सीस ताज इक्क रखंदड़ा, पंचम मुख मुख श्रंगार। सम्मत सम्मती वेख वखंदड़ा, लक्ख चुरासी मारे मार। ना कोई वेखे आत्म अन्धड़ा, गुरमुख विरला पावे सार। जिस जन होए आप बख़्शंदड़ा, नेत्र नैण दए उग्घाड़। सति सरूपी रूप वखंदड़ा, रूप रंग रेख ते वसया बाहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर अवतार। हरि अवतार अवगत मीता, भेव किसे ना राया। आदि जुगादि जुगां जुगन्तर भगत भगवन्त बणे मीता, मित्र प्यारा नाउँ धराया। साचे मन्दिर बैठा रहे इक्क अतीता, त्रैगुण विच कदे ना आया। सांतक सति ठांडा सीता, अग्नी तत्त ना कोए जलाया। लेखा जाणे सुरत सवाणी सीता, शब्दी राम आप मिलाया। आपे होए पतित पुनीता, पतित पापी लए तराया। एका धाम वखाए हरि अनडीठा, जगत नेत्र दिस ना आया। नाम निधान गुरमुख विरले पीता, ब्रह्मा विष्न रहे तरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल खिलाया। निरगुण दाता निराकार, सरगुण जोत मात प्रगटाईआ। करे खेल अगम्म अपार, चौदां लोक चौदां तबक त्रैभवन खोज खुजाईआ। सुणावणहारा सच सलोक, लोआं पुरीआं करे जणाईआ। कलिजुग अन्तिम हरि का भाणा कोए ना सके रोक, नानक गोबिन्द गया लिखाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना दिसे दूजी ओट, सीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कलिजुग जीव आलृनिउँ डिगे बोट, साची गोद ना कोए बहाईआ। आसा तृष्ना हउमे हंगता माया ममता काम क्रोध लोभ मोह हँकार कोए ना कढ्ढे खोट, सच सुच्च ना कोए दृढ़ाईआ। झूठा नाता ओत पोत, पीआ प्रीतम ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन शब्द जगाया, कर किरपा श्री भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलाया, एका दीआ धुर फ़रमाण। जुग जुग विछोड़ा फंद कटाया, कलिजुग अन्तिम हो मेहरवान। गृह मन्दिर चन्द चढ़ाया, जोती जोत जगे महान। भरमां कंध आपे ढाया, इक्क वखाए सच निशान। शब्द सुहागी छन्द एका गाया, सो कन्त सो एका रूप पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, हरिजन बख्शे चरन ध्यान। चरन कँवल हरि सच ध्याना, गुरमुखां मुख सालांहयदा। एका देवे नाम निधाना, निर्धन झोली आप भरांयदा। शब्द अगम्मी इक्क बबाणा, हरिजन साचे आप बहांयदा। सचखण्ड दुआर वखाए इक्क मकाना, पुरख अबिनाशी आप सुहांयदा। करे खेल मर्द मरदाना, रूप रंग ना कोए वखांयदा। सर्ब जीआं दा एका कान्हा, लक्ख चुरासी गोपी आप हंढांयदा। गुरमुखां देवे एका माणा, माण अभिमाण गवांयदा। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाणा, पर्दा ओहला ना कोए वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरि सज्जण मेल मिलांयदा। हरि सज्जण हरि मेलया, कर किरपा वड मेहरवान। एका रंग रंगाए गुरू गुर चेलया, गुर चेला कर परवान। बणया रहे सज्जण सुहेलया, हरि सदा सदा मेहरवान। जोत निरँजण चाढ़े तेलया, पुरख अबिनाशी वेखे आण। आपे जाणे आपणा वक्त वेलया, आपणी थित वार आपे लए वखान। अचरज खेल पारब्रह्म कलिजुग खेलया, निरगुण रूप बली बलवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, वड दाता विच जहान। दो जहानां खेल खिलंदड़ा, इक्क इकल्ला एकँकार। विष्न ब्रह्मा शिव पन्ध मुकंदड़ा, जुग चौकड़ी कर ख्वार। साचा मार्ग इक्क वखंदड़ा, सति सतिवादी साची धार। पुरख अकाल इष्ट इक्क रखंदड़ा, निरगुण सरगुण दए अधार।
१४७१ शब्द गुर सर्ब वखंदड़ा, पंज तत्त ना कोए प्यार। ब्रह्म पारब्रह्म करे बन्दना, जीव ईश करे निमस्कार। निरगुण बन्ने साचा तन्दना, सरगुण नाता छुट्ट ना जाए विच संसार। जिस जन हरि हरि गाया बत्ती दन्दना, कलिजुग लेखा चुक्के चार लक्ख बत्ती हज़ार। दिवस रैण आठे पहर परमानंदना, लग्गे अग्ग ना तत्ती हाढ़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे साचा वर, करे प्रकाश बहत्तर नाड़। बहत्तर नाड़ी देवे चानण, चितवत ठगौरी कोए ना पाईआ। जिस जन फड़ाए आपणा दामन, दामनगीर होए सहाईआ। नेड़ ना आए कामनी कामन, धीरज जत सति इक्क वखाईआ। मेटे रैण अन्धेरी शामन, साचा नूर कर रुशनाईआ। काया खेड़ा वसाए ग्रामन, घर घर विच मेल मिलाईआ। सतिगुर पूरा गुरमुखां होए आपे ज़ामन, वेले अन्त लए छुडाईआ। बेड़ा कोई ना करे अन्तिम पार, मुला शेख़ पंडत पांधे जगत ग्रन्थी होए ना कोए सहाईआ। सर्ब जीआं दा एका रामन, आदि जुगादि एका राम आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्न ब्रह्मा शिव आपे फड़, आपे लेखा दए वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त इक्क भगवन्त, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। १४७१

३ मग्घर २०१७ बिक्रमी पशौरा सिँघ दे घर पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर

सो पुरख निरँजण सद मेहरवान, आदि अन्त बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरँजण खेल महान, निरगुण निरवैर आप कराईआ। एकँकारा जोद्धा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप धराईआ। आदि निरँजण नूर महान, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता साचा काहन, इक्क इकल्ला नाउँ प्रगटाईआ। श्री भगवान वाली दो जहान, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह भेव ना राईआ। पारब्रह्म आप आपणा लए उपा, नाम नामा आप उपाईआ। सचखण्ड दुआर वसे सच मकान, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। आपणी इच्छया आपणे विच धरा, लेखा जाणे सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एकँकारा, आपे बन्ने आपणी धारा, आदि पुरख नाउँ धराईआ। आदि पुरख सचखण्ड, दर घर साचा वेस वटांयदा। आपणे अंदर आप आपे करे बन्द, दूसर संग ना कोई रखांयदा। करे खेल गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, भेव अभेदा भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता आपणी कल आप वरतांयदा। कल वरते अकल कल धार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सो पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबार, हरि पुरख निरँजण वेख वखाईआ। एकँकारा करे प्यार, आदि निरँजण मेला सहिज सुभाईआ। अबिनासी करता मीत मुरार, श्री भगवान दए मिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, आपणी आप लए अंगड़ाईआ। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़, आपणा मन्दिर सोभा पाईआ। करे कराए साची कार, करता पुरख करनी किरत आप कमाईआ। घाड़त घड़े अगम्म अपार, घड़न भन्नणहार पुरख समरथ रूप रंग रेख ना कोई जणाईआ। आपणी प्रगटाए आपे वथ, वेखणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। हरि वड्डा साहिब सुल्तान, दर घर साचे सोभा पांयदा। सति सरूपी सति निशान, सति सतिवादी आप उठांयदा। आपे होए जाणी जाण, जानणहार दिस ना आंयदा। दरगाह साची हो प्रधान, दर दुआर आप प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा घाड़न आप घड़ांयदा। साचा घाड़न घड़नहारा, एका रंग समाया। आपणे मन्दिर वड़नहारा, रूप अनूप बेपरवाहया। आपणी करनी आपे करनहारा, घर घर वेखे हर घट थाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा साचा घर, एका वसे हरि हरि, दूसर रूप ना कोए दरसाया। सचखण्ड दुआरा कर त्यार, अनुभव आपणा रूप प्रगटाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, खेले खेल सहिज सुखदाईआ। निरगुण दाता बेऐब परवरदिगार, जल्वा नूर नूर उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर आप सुहाईआ।

हरि मन्दिर सोभावन्त, सचखण्ड दुआरा आप सुहाया। पुरख अबिनाशी एका कन्त, निरगुण बैठा आसण लाया। साचे तख्त बणाए बणत, साचे तख्त आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त आपे चढ़, आप आपणा हुक्म वरताईआ। साचा हुक्म आप वरतांयदा, आप आपणी किरपा धार। आप आपणा नाउँ सुणांयदा, निरगुण निरगुण कर पुकार। दर घर साचे खेल खिलांयदा, तख्त निवासी बण सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार। अलक्ख अगोचर खेल खिलाया, पारब्रह्म भेव ना आंयदा। आपणा हुक्म आप जणाया, आपणा लेखा आपणे विच टिकांयदा। आपणे तख्त आपे आसण लाया, पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा। आपणी सेवा आप कमाया, दर दरबान ना कोई रखांयदा। सीस जगदीस आप ना कोई झुकाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका नाउँ आप धरांयदा। नाउँ निरँकारा आपे धर, आपणा खेल आप खिलाईआ। आप वसे आपणे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। आपे बहै अंदर वड़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। आपे पुरख नारी नर, नर नरायण सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा देवे आपे वर, आपणी झोली आपे अग्गे डाहीआ। आपे बणे खिलारी, हरि सच्ची खेल खिलांयदा। आपे बणे भण्डारी, आपणी वस्त आपे झोली पांयदा। आपे निरगुण जोत जगे निरँकारी, आपे सुन्न समाध समांयदा। आपे वसे धाम न्यारी, नेहचल धाम आप वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा देवे आपे वर, आपणी भिच्छया आप वरतांयदा। आपणी भिच्छया आपे मंग, हरि साचा खेल खिलांयदा। निरगुण चाढ़े निरगुण रंग, निरगुण निरगुण वेख वखांयदा। निरगुण नाम निरगुण मृदंग, निरगुण ताल वजांयदा। निरगुण साथी निरगुण संग, निरगुण सगला संग निभांयदा। निरगुण लाए आपणे अंग, निरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण वेखे निरगुण पन्ध, दूसर भेव ना कोई आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवे एका वर, आपणा भेव आप खुलांयदा। आपणा भेव खुलावणहारा, एका हुक्म जणांयदा। निरगुण खेल करे अगम्म अपारा, आप आपणी धार चलांयदा। आपे बणया रहे निहकलंक आदि अन्त ना पारावारा, वार थित ना कोई वखांयदा। दूसर दिसे ना कोई दुआरा, मंगण दर ना किसे जांयदा। आपे वणज आप वणजारा, हट्ट हटवाणा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। लेखा जाणे निहकलंक, सो पुरख निरँजण नाउँ धराईआ। हरि पुरख निरँजण सुहाए आपणा बंक, एकँकारा वेखे थाउँ थाँईआ। आदि निरँजण महिमा अगणत, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। श्री भगवान साचा कन्त, कन्त कन्तूहल आप अख्वाईआ।

अबिनाशी करता आपे जाणे आपणी बणत, आपणा नाउँ आप वड्याईआ। पारब्रह्म दर दरवेश रहे मंगत, सीस जगदीश आपणी खेल आप खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक आपणा भेव दए खुल्हाईआ। हरि का रूप निहकलंक, अनुभव प्रकाशया। सो पुरख निरँजण निहकलंक, आदि जुगादि ना कदे विनासया। हरि पुरख निरँजण निहकलंक, सचखण्ड दुआरे पावे रासया। एकँकारा निहकलंक, आपणा जाणे आप भरवासया। आदि निरँजण निहकलंक, जोती जोत सदा प्रकाशया। श्री भगवान निहकलंक, वेखणहार खेल तमाश्या। अबिनाशी करता निहकलंक, आपणी करे आपे पूरी आसया। पारब्रह्म प्रभ निहकलंक, सेवक सेवक बणया रहे दासी दासीआ। शब्द अनादी निहकलंक, सचखण्ड दुआरे करे वासया। ब्रह्मा विष्न शिव धार निहकलंक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपे जाणे लेखा आपणे दर, आपणे घर आप करे निवासया। विष्न ब्रह्मा शिव साची धार, निहकलंक निरगुण रूप आप प्रगटाईआ। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं महल्ल लए उसार, निहकलंक निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आपे रवि ससि लए उभार, निहकलंक हरि जोती जोत जगाईआ। आपे शब्द नाद धुन्कार, बोध अगाध आप पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका हरि, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। विष्न ब्रह्मा
१४७४ शिव खेल अपारा, हरि साचा आप करांयदा। सेवा लाए सेवादारा, साची सेवा इक्क समझांयदा। देवणहारा सति भण्डारा, १४७४
०६ सच वस्त झोली पांयदा। करे खेल घड़न भन्नणहारा, साची घाड़त आप घड़ांयदा। लेखा जाणे अन्तिम वारा, सति संगारा ०६
आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपणा बल आप रखांयदा। निहकलंक श्री भगवान, दूसर दर ना कोई जणाईआ। सचखण्ड दुआरे वसे वड मेहरवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। दरगाह साची झुलाए इक्क निशान, तख्त निवासी सच्चा शहनशाहीआ। देवणहारा धुर फ़रमाण, बेऐब नाम खुदाईआ। शब्दी शब्द कर बलवान, सुत दुलारा वेख वखाईआ। विष्नूं देवणहारा दान, एका वस्त झोली पाईआ। ब्रह्मे बख्शे इक्क ज्ञान, निष्अक्खर नाम सुणाईआ। शंकर करे आप कलयान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बण विचोला निगहबान, वेखणहारा थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर पुरख अकाल, वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, दरगाह साची आप सुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, एका हुक्म आप वरतांयदा। पुरख अबिनाशी घट घट अंदर हो उज्यार, एका चेला रूप दरसांयदा। एका नाद सच्ची धुन्कार, गृह गृह आपणा नाद वजांयदा। एका बख्शे चरन प्यार, चरन दुआरा इक्क वखांयदा। रूप अनूप सच्ची सरकार, स्वच्छ सरूपी आप धरांयदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी धार अगम्म अपार आपणे हथ्थ रखांयदा। साची धार आदि निरँजण, आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे होए दर्द दु:ख भय भञ्जण, सगला संग आप निभाईआ। आपे बख्शे चरन धूढ़ नेत्र अञ्जण, ज्ञान ज्ञान विच चमकाईआ। आपे बख्शे साचे मजन, चरन सरोवर इक्क नुहाईआ। आपे बणे साचा सज्जण, साख्यात रूप प्रगटाईआ। आपे होए पर्दा कज्जण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। इक्क इकल्ला सच महल्ला, सति पुरख निरँजण आप सुहांयदा। वसणहारा उच्च अटला, नेहचल आपणा गढ़ बणांयदा। आपणी जोती आपे रला, जोती जोत आप समांयदा। आपणा फड़े आपे पल्ला, दामनगीर आप हो जांयदा। आपणा शब्द संदेश आपे घल्ला, आपणा नाम आप प्रगटांयदा। आपे करे वल छला, अछल छलधारी आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आदि आपणी रचना आपे वेख वखांयदा। आपणी रचना वेखणहारा, एकँकारा नाउँ धरांयदा। निरगुण निरगुण पावे सारा, रूप रेख रंग ना कोए जणांयदा। करे कराए साची कारा, करता पुरख कल वरतांयदा। तिन्नां मीता इक्क दुआरा, एका रीता आप दरसांयदा। ठांडा सीता धुर दरबारा, अमृत मेघ इक्क बरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव वड देवी देव आप जणांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव हरि जणांयदा, कर किरपा गुण निधान। साची सेवा इक्क वखांयदा, देवे धुर फ़रमाण। त्रैगुण वस्त झोली पांयदा, पंचम देवणहारा माण। नौं नौं चार खेल खिलांयदा, भेव अभेदा श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जगादी वखाए इक्क निशान। विष्न जणाया हरि निरँकार, भुल्ल रहे ना राईआ। निहकलंक मेरा नाउँ अपार, ना मरे ना जाईआ। ब्रह्मे नेत्र इक्क उग्घाड़, नैण नैणां दए दरसाईआ। आदि जुगादी साचा यार, मीत मुरारा इक्क अख्वाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्चे दरबार, तख्त निवासी सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सच्चा इक्क अख्वाईआ। शिव जणाया शंकर धार, संसा रोग रहे ना राया। निहकलंका इक्क अवतार, आदि जुगादि समाया। शब्द डंका अगम्म अपार, नाद अनादी नाद वजाया। सुहाए बंका इक्क दुआर, वार अनका खेल खलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तख्त निवासी भेव ना राया। निहकलंक वड दातारा, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए भण्डारा, त्रैगुण वस्त झोली पांयदा। पंज तत्त दए आधारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकास खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ बण ठठयारा, चारे खाणी वण्ड वण्डांयदा। अंडज जेरज दए सहारा,

उत्भुज सेत्ज मेल मिलांयदा। नौ दर वेखे जगत दुआरा, नौं खण्ड साचा वेस वटांयदा। चार जुग पावे सारा, चार वेद आप पढ़ांयदा। चार बाणी करे पुकारा, चारे खाणी बह समझांयदा। चार वरनां दए अधारा, चार यारी संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख अबिनाशी करता आपणा वेस आप धरांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यार, साची वस्त झोली पाईआ। नौं नौं चार वरते तेरा वरतार, जून अजूनी खेल खिलाईआ। लक्ख चुरासी कर श्रंगार, तन माटी आप सुहाईआ। खेवट खेटा बण निरँकार, जुग जुग बेड़ा ल्ए चलाईआ। साची हाटी करे वणज वपार, नाम भण्डारा इक्क वरताईआ। चौदां लोक दए सहार, लोक परलोक आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जुगा जुगन्तर पावे सार, आपणा मन्त्र आप चलाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, हरि का भेव ना कोए पाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग लोकमात वरते वरतार, त्रै त्रै वेस अनेक कराईआ। पंज तत्त तत्त उज्यार, ब्रह्म मति करे पढ़ाईआ। गुर पीर लेखा जाणे अवतार, आदि जुगादि सच्चा शहनशाहीआ। भगतन देवे नाम आधार, साचे सन्त ल्ए जगाईआ। गुरमुखां खोल्ह किवाड़, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। गुरसिखां नाता तोड़ पंचम धाड़, पंच विकारा दए खपाईआ। करे खेल आप करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। घट घट अंदर हो उज्यार, जोत निरँजण दए जगाईआ। घर घर विच सति भण्डार, उलटा कँवल नाभी आप भराईआ। घर घर शब्द नाद धुन्कार, अनहद साचा ताल वजाईआ। घर घर सखीआं मंगलचार, घर घर गीत गोबिन्द गाईआ। घर घर आत्म सेजा करे प्यार, घर घर विच होए सहाईआ। घर मेला नारी कन्त भतार, घर वज्जदी रहे वधाईआ। घर मिले पीआ प्रीतम मुरार, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ब्रह्मा विष्न शिव तेरा लक्ख चुरासी घाड़न घड़, जुग जुग वेखे सच्चा शहनशाहीआ। जुग जुग खेल खलावणा, निरगुण सरगुण साची धार। लक्ख चुरासी वेख वखावणा, घट भाण्डे हो उज्यार। जोती नूर डगमगावणा, मिट जाए अन्ध अँध्यार। साचा साकी बण बण जाम प्यावणा, भर प्याला एका वार। साचा राकी इक्क दौड़ावणा, शब्द घोड़े हो अस्वार। दो जहानां पन्ध मुकावणा, लेखा जाणे आवण जाण। जन भगतां फंद कटावणा, मेल मिलाए श्री भगवान। आपणा मन्त्र आप दृढ़ावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करे आपणा काम। हरि साची कार करांयदा, जगा जुगन्तर खेल अवल्ला। निरगुण सरगुण रूप धरांयदा, पंज तत्त वेखे काया जगत महल्ला। गुर गुर आपणा नाउँ धरांयदा, आपणी जोत आपे रला। आपणा नाउँ आप पढ़ांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौं नौं लेखा पार कर, चार चार वेख वखांयदा। चार चार हरि वेखण आया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। विष्नूं

वंसी नाल रखाया, एका देवे शब्द हुलार। ब्रह्मा भुल्ल रहे ना राया, अभुल्ल बणे आप निरँकार। शंकर साचा मार्ग वखाया, लेखा जाणे धुर दरबार। तिन्नां विचोला बण के आया, निहकलंक लै अवतार। राउ रंकां भेव ना राया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची धार आप चलाया। साची धार चलावणहारा, जुग जुग वेस वटांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नीर सर्ब वहांयदा। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इंद गण गंधर्ब हाहाकारा, खण्ड ब्रह्मण्ड धीरज धीर ना कोए वखांयदा। लोकमात खेल न्यारा, चार वरन अठारां बरन सांतक सति ना कोए वरतांयदा। नाता तुट्टा पुरख नारा, विभचारा सर्ब कमांयदा। पंज तत्त बणया गढ़ हँकारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाच नचांयदा। आसा तृष्ना कर श्रंगारा, माया ममता मेल मिलांयदा। मन मनूआ बणया झूठ सिक्दारा, साचा वणज ना कोए वखांयदा। बुध मति मति बुध ना करे कोए विचारा, सच बबेक ना कोए जणांयदा। गुर का शब्द ना किसे विचारा, रसना जिह्वा सर्ब हलांयदा। बत्ती दन्द गौण वारो वारा, कमलापाती मेल ना कोए मिलांयदा। घर मन्दिर अंदर ना होए उज्यारा, जोत निरँजण दीपक बाती ना कोए जगांयदा। घर मिले ना अमृत ठंडा ठारा, तीर्थ ताल सर्ब जगत नुहांयदा। घर वज्जे ना शब्द अनहद धुन्कारा, ताल तलवाड़ा सभ वेख वखांयदा। घर मिले ना मीत मुरारा, उच्ची कूक कूक जीव जंत कुरलांयदा। घर करे ना कोए सच श्रंगारा, कलिजुग कप्पड़ सर्ब हंढांयदा। घर सोहे ना सेज कन्त भतारा, जगत सूलां सेज सर्ब हंढांयदा। मन मति नार दुहागण होई मुटयारा, चारों कुंट नौं खण्ड सत्त दीप नैण उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा रूप धरांयदा। जुग जुग रूप धरांयदा, निरगुण सरगुण जामा धार। लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा, उत्भुज सेत्ज जेरज अंडज पावे सार। ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखांयदा, ईश जीव दए आधार। जगत जगदीस सेव कमांयदा, नर नरेश दर दरवेश बण दरबान। आपणा कीता आपे आप मिटांयदा, शब्द सुणाए धुर फ़रमाण। अनक नाउँ आपणे आप जणांयदा, सहँसर मुख ना सके कोए पछाण। विष्न ब्रह्मा शिव साची सेवा लांयदा, त्रैगुण अतीता देवे धुर फ़रमाण। कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा, प्रगट हो हो वाली दो जहान। पंज तत्त ना कोए रखांयदा, मन मति बुध ना कोए ध्यान। साक सैण ना कोए बणांयदा, मात पित ना कोए जहान। इष्ट देव ना कोए मनांयदा, इक्क इकल्ला श्री भगवान। साचे तख्त आप सुहांयदा, शाहो भूप राज राजान। कलिजुग कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा, एका मन्त्र देवे नाम ज्ञान। चारे वरनां आप पढ़ांयदा, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मार वेखे इक्क ध्यान। एका कलमा आप सुणांयदा, नबी रसूलां पावे आण। शरअ शरीअत भेव खुलांयदा, लाशरीक

वड मेहरवान। कायनात फोल फुलांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक बली बलवान। निहकलंक श्री भगवाना, आदि अन्त बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर खेल महाना, जगत बसन्तर दए बुझाईआ। आपणा नाउँ मारे तीर निशाना, त्रै त्रै लोकां पार कराईआ। जन भगतां बन्ने साचा गानां, सति सरूपी साचा सगन मनाईआ। सन्तन बख्शे इक्क ध्याना, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञाना, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। गुरसिख साचा चतर सुघड़ स्याणा, मूर्ख मूढ़े दए समझाईआ। एका राग सुणाए तराना, धुर दी बाणी आप अलाईआ। परा पसन्ती आपे गाए गाणा, मद्धम बैखरी आप सुणाईआ। घट घट अंदर करे पछाणा, भुल्ल रहे ना राईआ। मेट मिटाए जीव निधाना, गुर का शब्द रिदे ना कोई वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ। निहकलंका सच्चा शहनशाह, सति सति आपणा नाउँ धरांयदा। प्रगट होवे जगत मलाह, भगत भगवन्त वेख वखांयदा। सन्तां देवे सच सलाह, सिफ्त सलाही आप अख्वांयदा। गुरमुखां पकड़नहारा बांह, डुब्बदे पाथर आप तरांयदा। गुरमुखां देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। लेखा जाणे पिता माँ, बाल अञ्याणे गोद बहांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जिस जन सोहँ साची चोग

चुगांयदा। निथावयां देवे साचा थाँ, दरगाह साची आप बहांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव लए जगा, सोया कोए रहिण ना पांयदा। सभ दा लेखा दए समझा, पूर्ब लहिणा फोल फुलांयदा। विष्नूं विष्न नाल रला, आप आपणा रंग रंगांयदा। ब्रह्मे चारे वेदां दए जणा, लेखा लेख आप जणांयदा। शंकर तेरी त्रिसूल दए सुटा, बाशक तशका गलों लांहयदा। नौं नौं लेखा आप चुका, नौं चार पन्ध मुकांयदा। कलिजुग जेड़ी दए कटा, गल अल्फी ना कोई रखांयदा। लाल भूशन तन ना सके कोई छुहा, कंचन रंग ना कोई चढ़ांयदा। सूहा वेस ना सके कोई वटा, चिट्टी धारी फोल फुलांयदा। पंचम वेखे थाउँ थाँ, नीला नीली धारों पार करांयदा। कलिजुग काला सूसा लेखा जाणे ईसा मूसा, तन श्रंगार इक्क करांयदा। तीस बतीसा जाणे हदीसा, लाशरीक खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, इक्क इकल्ला खेल खिलांयदा। निहकलंक नर नरायण, रूप रंग रेख ना कोई जणाईआ। शब्द अनादी एका कहिण, गुर शब्द दए वड्याईआ। भगत भगवन्त बणाए साक सज्जण सैण, सगला संग आप निभाईआ। सन्तां चुकाए लहण देण, पूर्ब लेखा रहे ना राईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन सदा रसना कहिण, रसना जिह्वा एका गुण गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, ब्रह्मा विष्न शिव बख्शे इक्क सरनाईआ। शंकर तेरा पन्ध मुकाया, थिर कोए रहिण ना पाईआ। तेरा लेखा दए चुकाया, भोले नाथ सेव लगाईआ। तिन्न तिन्नां

वेखणहारा वेखण आया, भुल्ल रहे ना राईआ। मुछ दाढ़ी केस ना कोई रखाया, ना कोई मूंड मुंडाईआ। गुर गुर आपणा रूप धराया, गोबिन्द रूप अनूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नाद अनादी खेल खलाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म वखांयदा, देवे ब्रह्म ज्ञान। तेरा वेला अन्तिम आंयदा, लक्ख चुरासी तेरा मिटे निशान। जो घड़या भन्न वखांयदा, करे खेल श्री भगवान। तेरा पन्ध आप मुकांयदा, प्रगट होवे वाली दो जहान। तेरा भार आपणे कंध उठांयदा, आपे बणे बली बलवान। जोद्धा सूरबीर आपणा नाउँ धरांयदा, मर्द मरदाना गुण निधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द अगम्मी मारे बाण। विष्नूं तेरा खेल जणाया, हरि साचा सच समझांयदा। सांगोपांग सेज हंढाया, बाशक तशका आसण लांयदा। चरन दुआरे इक्क बहाया, लछमी एका सेव करांयदा। देवी देवा अलक्ख अभेव पारब्रह्म अबिनाशी वेखण आया, निरगुण आपणा रूप धरांयदा। एका गुण तिन्न चेले लए समझाया, साचा मेला मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, एका नाम दए दृढ़ाया। विष्नूं दृढ़ाए हरि हरि मेहरवाना, इक्क इकल्ला एकंकारया। ब्रह्मे देवे इक्क ज्ञाना, चारे वेदां वेद समा रिहा। शंकर बख्शे एका माण,
१४७६ सिर समरथ हथ्थ टिका रिहा। अन्तिम लेखा चुक्का कान, कलिजुग वेला अन्तिम आ रिहा। धरे जोत श्री भगवान, जोती १४७६
जामा भेख वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर एका तख्त
०६ सुहा ल्या। हरि मन्दिर तख्त सुहांयदा, तख्त निवासी एकँकार। प्रभ पारब्रह्म आसण लांयदा, अबिनाशी करता हो त्यार। ०६
श्री भगवान सोभा पांयदा, आदि निरँजण करे उज्यार। एकँकारा खेल खिलांयदा, हरि पुरख निरँजण पावे सार। सो पुरख निरँजण डगमगांयदा, आदि जुगादी भेव न्यार। सचखण्ड दुआरा इक्क वड्यांअदा, करे कराए साची कार। साची घाड़त आप घड़ांयदा, बणया रहे सच्चा सुन्यार। शब्द ठगौरी आपे पांयदा, करे खेल अगम्म अपार। कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न शिव ध्यान लगांयदा, तेरा अन्त ना पारावार। गुर अवतार खेल खिलांयदा, लोकमात साची कार। जुग चौकड़ी आप भवांयदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बन्न्हे धार। नौं नौं पन्ध मुकांयदा, वेखणहारा चार चार। आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा, वेद पुराण शास्त्र सिमरत पाए ना कोई सार। गीता ज्ञान हरि जस गांयदा, अठ दस कर विचार। अञ्जील कुरानां सिफ्त सलांहयदा, सिफ्ती सिफ्त भरे भण्डार। खाणी बाणी रंग रंगांयदा, रंग रतड़ा आप निरँकार। गुर गुर धारा आप चलांयदा, आदि जुगादी साची कार। शब्द शब्दी डंक वजांयदा, लोकमात सुणे सुणाए सुणनहार। आपणी इच्छया आपे वेख वखांयदा, करे खेल अपर अपार। आपणी दीख्या आपणी भीख्या आपे भिच्छया झोली पांयदा, आपे होए देवणहार। वेद व्यासा हरि

जस गांयदा, पुराण अठारां लए उच्चार। कलिजुग अन्तिम राह तकांयदा, निहकलंक लए अवतार। ईसा मूसा सिफ्त सलांहयदा, मुख कलमा नभी उच्चार। ऐनलहक एका हक राह तकांयदा, नाम हक परवरदिगार। आपणी नकाब आपे मुख तों पर्दा लांहयदा, नूर नुराना जल्वा कर उज्यार। एका अल्फ़ी गल हंढांयदा, आरफ कोई ना करे विचार। आपणी धारा आप चलांयदा, धरनी धरत दए सहार। चौदां तबकां एका नूर दरसांयदा, मुहम्मद बैठा अद्धविचकार। आपणा रंग आप रंगांयदा, रंग रंगीला सच्चा शाहकार। निराकार साकार रूप धरांयदा, निरगुण सरगुण पावे सार। एका जोत डगमगांयदा, पुरख अबिनाशी खेल अपार। पंज तत्त चोला जगत हंढांयदा, सांतक सति करे प्यार। सतिनाम मन्त्र दृढ़ांयदा, धुर दी बाणी धुर दी धार। चार वरनां एका थाँ बहांयदा, ऊँच नीच ना कोई विचार। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश काया माटी वेख वखांयदा, साची हाटी वणज वापार। तेरा तेरी धार चलांयदा, कूड़ी क्रिया लए विचार। उच्ची कूक आप सुणांयदा, बिन हरि हरि कोई ना उतरे पार। कलिजुग कूड़ कुड़यारा चारों कुंट अन्धेरा छांयदा, साचा चन्न ना कोई उज्यार। धूंआँधार सर्ब वखांयदा, जोती नूर ना कोई उज्यार। एका मन्त्र नाम पढ़ांयदा, फिरे मन्त्र विच संसार। साकत निन्दक दुष्ट मेट मिटांयदा, गुरमुखां दए अधार। कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा, वेखणहारा गुर करतार। सत्त समुंदर मस भेव ना आंयदा, बनास्पत लिख लिख जाए हार। बसुधा उप्पर लेख ना कोई जणांयदा, पारब्रह्म सच्ची सरकार। आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा, लिखण पढ़न तों वसे बाहर। कलिजुग अन्तिम जोत जगांयदा, जोती जाता होए उज्यार। निहकलंक नाउँ रखांयदा, उतर आए आपणी धार। मात पित कोए ना गोद बहांयदा, जननी करे ना कोए प्यार। शरअ मज़्हब दीन ईमान ना कोए रखांयदा, सर्ब जीआं दा सांझा यार। जो जन रसना गांयदा, घर घर मिले आण। चार दीवार बन्द ना कोए करांयदा, निरगुण रूप श्री भगवान। गुर गोबिन्द सिँघ राह तकांयदा, शहनशाह सच्चा सुल्तान। कलि कल्की अवतार रूप प्रगटांयदा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त महिमा महान। साध सन्त सर्ब जस गांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपे होए जाणी जाण। दाता दानी दुनी दार, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। करे खेल अपर अपार, औंदा जांदा दिस ना आईआ। लेखा लिखे लिखणहार, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। विष्नूं तेरा कर्ज़ा दए उतार, तेरी सेवा आपणे लेखे पाईआ। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म पसार, पारब्रह्म आपणे विच टिकाईआ। शंकर तेरी तिक्खी धार, घाड़त घड़े सच्चा शहनशाहीआ। तिन्नां विचोला हरि निरँकार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। एका ढोला सुणाए धुर जैकार, सोहँ सो आपणा गुण वखाईआ। बणया तोला सिरजणहार, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। तोल ना तुले अठारां

१४८०
०६

भार, लोआं पुरीआं रिहा मुख शर्माईआ। गुरमुख विरला उच्ची कूक करे पुकार, प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। विछड़ ना जाए विच संसार, जगत विछोड़ा दए कटाईआ। सुरत सवाणी मिल्या शब्द मीत मुरार, साचा हाणी हाणी वेख वखाईआ। सच सुहञ्जणी आत्म ठंडी ठार, सीतल धारा इक्क वहाईआ। घर सखीआं मंगलचार, वाह वा वज्जदी रहे वधाईआ। तिन्नां नाता तुट्टा रजो तमो सतो ना कोए विचार, एका ग्याता गुर शब्द साची बाणी आप जणाईआ। माणस जन्म ना जाए हार, लक्ख चुरासी रहे ना फाहीआ। धर्म राए ना खड़े दुआर, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। लाड़ी मौत ना करे श्रंगार, गुरसिख दुआरे ना फेरा पाईआ। जिस जन मिल्या कल कल्की अवतार, कल कलेश दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन बख्शे एका सरन, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका धाम बहाईआ। साचा धाम सुहाया, हरि सतिगुर दीन दयाल। ग़रीब निमाणे गले लगांयदा, आदि जुगादि करे प्रितपाल। झूठा नाता तोड़ तुड़ांयदा, दरस दिखाए दीन दयाल। जम का फास आप कटांयदा, नेड़ ना आए कलिजुग काल। महांकाल वेख वखांयदा, गुरसिखां सुरत संभाल। जुग जुग आपणे नाल चलांयदा, जगत रक्खे अवल्लड़ी चाल। मनमुखां दर दुरकांयदा, नौं खण्ड पृथ्मी करे बेहाल। शब्द खण्डा इक्क चमकांयदा, तिक्खी रक्खे धार। दो जहानां फेरी पांयदा, शाहो भूप सच्चा शाहकार। निरगुण निरवैर पुरख अकाल आपणा नाउँ धरांयदा, जूनी रहित जून अजूनी वसे बाहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, कूड़ी क़िया कलिजुग दए नवार। कलिजुग कूड़ा पन्ध मुकाउणा, सम्मत सम्मती वेख वखाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां फेरा पाउणा, शब्द अगम्मी घोड़ा इक्क दौड़ाईआ। सच सिँघासण आसण लाउणा, सोलां कलीआं आसण पाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड तेज़ चण्ड प्रचण्ड नाम खण्डा इक्क चमकाउणा, लोहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। खण्ड खण्ड आप कराउणा, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ। तीर तुफ़ंग ना कोए हत्थ उठाउणा, हुक्मी हुक्म इक्क वरताईआ। जो घड़या सो भन्न वखाउणा, स्वांगी आपणा सांग रचाईआ। जगत अखाड़ा इक्क लगाउणा, पंज तत्त नाच कराईआ। विष्न शिव ब्रह्मा उठ उठ हरि हरि राह तकाउणा, कवण कूटे रिहा जोत जगाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमाउणा, दीना नाथ दीनन होए सहाईआ। आपणा घाट आपणा हाट आप दरसाउणा, सम्बल नगरी दए वड्याईआ। साढे तिन्न हत्थ बणत बणाउणा, पुरख अकाल सेव कमाईआ। घर विच घर आप टिकाउणा, घर जोती जोत रुशनाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ के आसण लाउणा, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा दिस किसे ना आईआ। गोबिन्द सूरा सतिगुर हाज़र हज़ूरा जोती नूरा, एका शब्दी डंक वजाईआ। आपणा कौल करे

पूरा, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। गुर का बचन ना होए अधूरा, भुल्ल जाए सर्ब लोकाईआ। कलिजुग अन्तिम निरगुण जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, किसे ना वसे किले कोट, हत्थ किसे ना आईआ। धुर शब्द नगारा वज्जे चोट, जन भगतां कढ्ढे वासना खोट, काया दुरमति मैल धुवाईआ। जिस जन पुरख अकाल दीन दयाल एका ओट, दूसर दर ना मंगण जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरि सच्चा सर्ब सुखदाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को दाता, आदि जुगादि समाए। पारब्रह्म प्रभ पुरख बिधाता, जन्म मरन विच ना आए। जन भगतां देवे साची दाता, नाम निधाना झोली पाए। कलिजुग अन्त सतिजुग चलाए साची गाथा, सोहँ मन्त्र नाम चलाए। लेखा जाणे त्रिलोकी नाथा, राम कृष्न वेखे थाउँ थाएं। करे खेल हर घट वसणहारा वेखे तीर्थ ताटा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती अठसठ फेरा पाए। बिन सतिगुर पूरे कोए ना देवे नाम बाटा, अमृत अमिउँ रस अमृत धार निझर झिरना ना कोए झिराय। चार वरन विके झूठे हाटा, काया कच कच रही हंडाए। मन बन्दर नौं दुआरे उठ उठ नाचा, सुरती सुरत ना कोए भवाए। नानक गोबिन्द शब्द जिस जन वाचा, पुरख अकाल ल्ए मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरयण नर, आप आपणा खेल खलाए। हरि साचा खेल खिलांयदा, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार। निरगुण आपणा नाउँ प्रगटांयदा, आप आपणी जोत कर अकार। शब्द सुत नाल रलांयदा, करे कराए साची कार। ब्रह्मा विष्न शिव एका हुक्म आप सुणांयदा, करोड़ तेतीसा एका धक्का देवे मार। सुरपति राजा इंद अन्त कुरलांयदा, कोई ना पावे सार। त्रैगुण माया डेरा ढांहयदा, पंज तत्त ना कोई विचार। लक्ख चुरासी खेल खिलांयदा, ख़ालक ख़लक रूप करतार। आपणा खेल आप खलांयदा, वेखणहार सर्ब संसार। घट घट वेख वखांयदा, अंदर मन्दिर ढूँघी कंदर पावे हरि हरि सार। जूठ झूठ जगत तत्त झूठ रत वेख वखांयदा, ब्रह्म मति बन्न्हे धार। सति सन्तोख धीरज जत सति ना कोए रखांयदा, हठ करे ना कोए जीव संसार। त्रैगुण माया मठ तपांयदा, अमृत मिले ना ठंडी ठार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे ल्ए उभार। हरिजन आप उभारदा, हरि सतिगुर सज्जण मीत। जुग जुग पैज संवारदा, लेखा जाणे हस्त कीट। राह वखाए सच घर बार दा, धाम वखाए इक्क अनडीठ। तोड़े गढ़ मोह हँकार दा, आपे वसे हरि जू चीत। लेखा जाणे आर पार किनार दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख निभाए चरन प्रीत। चरन प्रीती नाता जोड़, गुरसिखां दया कमांयदा। सति चढ़ाए शब्द घोड़, सति सतिवादी मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी वेखे फल रीठा कौड़, गुरमुख विरले आप जगांयदा। पंच विकारा देवे दर तों होड़, सस्से उप्पर होड़ा लांयदा।

हँ ब्रह्म प्रभ पए बौहड़, बहु जन्म ना फेर फिरांयदा। जुगां जुगां दी लग्गी प्यास बुझाए औड़, दे दरस सांत करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेले आपणे घर, मढ़ी गौर ना कोए दबांयदा। मढ़ी गोर किसे ना सड़ना, ख़ाकी ख़ाक ना कोए मिलाईआ। गर्भ अग्नी फेर ना सड़ना, तत्व तत्त ना कोए जणाईआ। सतिगुर पूरे लड़ एका फड़ना, फिर छुट्ट कदे ना जाईआ। तीजे लोचण नैण दरसन करना, लिव अन्तर दए बुझाईआ। चौथे पद चौथे घर गुरसिख एका वड़ना, अध विचकार ना कोए अटकाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव गुरसिख तेरी मंगण सरना, वाह वा तेरी वड वड्याईआ। तेरा चुक्के मरना डरना, भय भयानक ना कोए वखाईआ। पुरख अबिनाशी कन्त कन्तूल एका वरना, दूसर सेज ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मेले आपणे घर, घर सुहञ्जणा इक्क सुहाईआ। घर सुहञ्जणा सोभावन्त, हरि पुरख निरँजण सुहाया। नारी मिल्या एका कन्त, घर साचे मंगल गाया। चढ़या रंग इक्क बसन्त, उतर कदे ना जाया। मिल्या नाउँ मणीआ मंत, रसना जिह्वा ना कोए हलाया। लेखा तुटा आदि अन्त, मध भीतर गया समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन हरि हरि एका धार, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ शब्दी शब्द शब्द प्यार, शब्द शब्द विच टिकाईआ। जोती जोत जोत उज्यार,

१४८३ जोती जोत विच समाईआ। आपे अंदर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आपणी खेल खलाईआ। गुरसिख सतिगुर मिल एका रूप १४८३

०६ दरसाए ना पुरख ना कोए नार, अनुभव प्रकाश दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे ०६

लए वर, वरनहार बेपरवाहीआ। जुग जुग गुरमुख साचे वरदा, भगत भगवन्त कर प्यार। साचे घोड़े आपे चढ़दा, शाह सवारा हो अस्वार। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दो जहानां बेड़ा पार आपे करदा, गुरमुख सज्जण लए उठाल। साची डोली आपे आपणे कंधे धरदा, नाल रखाए ना कोए कहार। गुरसिखां बणया रहे बरदा, गुर सतिगुर सेवादार। चाँई चाँई सेवा करदा, लोकमात लै अवतार। निरभउ होए कदे ना डरदा, भय रक्खे ना कोए संसार। आपणा कीता कौल कदे ना हरदा, जुग जुग लोकमात पावे सार। निरगुण आपणा खेल आपे करदा, सरगुण करे ना कोए विचार। कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न शिव चरनां सीस धरदा, दोए दोए जोड़ करन निमस्कार। तेई अवतार वर देवे सच्चा एका घर दा, साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार। दस गुर रूप नर हर दा, पंज तत्त दए आधार। अठारां भगतां अंदर आपे वड़दा, किरपा कर आप करतार। गुर शब्द आपणा नाउँ हरदा, हार मन्ने ना विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका एक निहकलंक नरायण नर अवतार। निहकलंका पुरख अकाल, काल महांकाल चरनां हेठ दबावंदा। दो

जहानां सुरत रिहा संभाल, करे खेल शाह कंगाल दा। जोती जल्वा नूर जलाल, घट घट दीपक आपे बालदा। शब्द अगम्मी एका ताल, लक्ख चुरासी सोई आप उठालदा। गुरमुख विरला घाले साची घाल, मनमुख गूढ़ी नींद सुआलदा। दिन दिहाढ़े लेखा जाणे ख़ज़ाना सच्चे धन माल, राज राजान कोए ना किसे पैज संवारदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल अगम्म अपार दा। अगम्म अपार अथाह बेअन्त, वेद कतेब कहिण ना पाईआ। आदि पुरख अबिनाशी करता पारब्रह्म महिमा अगणत, अलक्ख अलक्खणा लख्या ना जाईआ। आपे जाणे आपणा आदि अन्त, अन्त आदि आपणा खेल खलाईआ। कलिजुग अन्तिम माया पाए बेअन्त, त्रैगुण चारों कुंट फेरा पाईआ। भरमे भुल्ला जीव जंत, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। माया ममता हउमे हंगता कलिजुग सन्त, कूड़ी क्रिया जोबन रहे हंढाईआ। रसना बोलण हरि का नाउँ मंत, मन का मणका ना कोए भुवाईआ। गा गा थक्के राग रागनी छंत, सतिगुर साहिब दयाल ना कोए मिलाईआ। एथे उथे दो जहानां किसे ना मुक्कया पन्ध, पान्धी भुल्ले कलिजुग राहीआ। चौथे जुग चार लावां लै लै हंढाया झूठा कन्त, पुरख अबिनाशी वर घर साचा कोए ना पाईआ। कोटन कोटि पढ़ पढ़ थक्के अनन्द, अनन्द विच ना कोए समाईआ। जिस सतिगुर पूरा मिल्या बखशंद, डुब्बदा बेड़ा लए तराईआ। आदि जुगादि कदे ना देवे कंड, आपणी करवट आपे लए बदलाईआ। कलिजुग औध गई हंढ, चार लक्ख बत्ती हज़ार चौथे जुग बत्ती दन्द चार वरन आपणे पेटे रहे पाईआ। अन्तिम टुट्ट जाए बद्धी गंढ, कूड़ी क्रिया बन्द ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका रिहा वजाईआ। हरि डंका शब्द वजांयदा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां करे ख़बरदार। विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवांयदा, चरन कँवल होए ख़ाक शार। कलिजुग मूंह विच पल्ला पांयदा, नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार। कलिजुग मीत ना कोए दसांयदा, सगला संग ना दिसे विच संसार। जीव जंत सर्ब कुरलांयदा, ग़रीब निमाणे धाहां रहे मार। साचा घर ना कोए वखांयदा, पंडत पांधे जगत पत्री रहे विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, इक्क इकल्ला होया ख़बरदार। इक्क इकल्ला उठया, हरि सतिगुर सूरबीर। आदि जुगादि ना जाए लुट्टया, सद भण्डारा रक्खे भरपूर। जुग जुग जन भगतां उप्पर तुठया, पन्ध मुकाए नेड़ा दूर। आपणी गोदी आपे चुकया, आपे बेड़ा बन्ने पूर। सतिगुर पूरा लोकमात ना रहे लुकया, ज़ाहर होए हाज़र हज़ूर। मनमुखां जो मुक्खों थुक्क सुट्टया, कलिजुग अन्तिम चट्टणा पए ज़रूर। सिँघ शेर दलेर नर निरँकार विच संसार हो के बुकया, शाह सुल्तानां तोड़े ग़रूर। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग दा बैठा भुख्या, आसा मनसा आपणी करे पूर। गुरमुख विरले जुग जुग सुखणा रहे सुक्ख्या, गुर दाता मिले

इक्क ज़रूर। सफ़ल कराए मात कुख्या, लेखे लग्गे माता पिता नूर। जो जन आ सरनाई झुकया, कलिजुग नाता तोड़े कूड़ो कूड़। उज्जल करे मात मुख्या, जिस जन बख्शे चरन धूढ़। मात गर्भ ना होए उलटा रुक्ख्या, दस दस तपे ना अग्न तन्दूर। गुरसिख गुरमुख सन्त भगवन्त आदि अन्त आपणी गोदी आपे चुकया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका बख्शे जोती नूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन हरि देवे जीआ दान, आदि अनादि ब्रह्म ब्रह्मादि, ब्रह्म वेखे हाज़र हज़ूर।

✻ १४ मग्घर २०१७ बिक्रमी गुरदीप सिँघ दे घर पिण्ड हरदो फराला ज़िला जलन्धर ✻

सो पुरख निरँजण खेल खलाउणा, हरि पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। एकँकारा रूप प्रगटाउणा, आदि निरँजण नाउँ रुशनाईआ। अबिनाशी करता भेव चुकाउणा, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। पारब्रह्म प्रभ आपणा नाउँ धराउणा, निरगुण निरवैर आप अख्वाईआ। पुरख अकाल एका मन्दिर घर सुहाउणा, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। तख्त निवासी तख्त डेरा लाउणा, रूप रंग ना कोई वखाईआ। शाह पातशाह नाउँ रखाउणा, राजन राज दया कमाईआ। धुर फ़रमाणा हुक्म सुनाउणा,
१४८५ अभुल्ल भुल्ल ना जाईआ। अजूनी रहित वेस वटाउणा, आदि पुरख अबिनाशी करता आप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, १४८५
०६ आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका एक आप अख्वाईआ। सो पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, आदि जुगादि ०६
समांयदा। हरि पुरख निरँजण वसणहारा सच महल्ला, दर घर साचे सोभा पांयदा। एकँकारा आपणे नूर आपे रला, नूर नुराना नूर समांयदा। आदि निरँजण आपणे प्रकाश आपे बला, रूप रेख ना कोई जणांयदा। श्री भगवान अछल अछला, अछल अछल आपणा खेल खिलांयदा। अबिनाशी करता दर दरवाज़ा एका मल्ला, थिर घर साचे डेरा लांयदा। पारब्रह्म प्रभ आप फड़ाए आपणा पल्ला, सगला संग आप रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एकँकार, आदि पुरख खेल अपार, भेव कोई ना पांयदा। आदि पुरख हरि खेल अपारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। निरगुण निरवैर कर पसारा, रूप अनूप आप धराईआ। आपे अंदर आपे बाहरा, गुप्त ज़ाहर धार चलाईआ। करे खेल सचखण्ड दुआरा, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शहनशाह करे शहनशाहीआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। दर दरवेश बणे दरबाना, थिर घर साचे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल बेपरवाह आपे वेख वखाईआ। आपणा खेल वेखणहारा, एकँकारा आपणी कल धरांयदा।

आपणे मन्दिर हो उज्यारा, थिर घर साचे डगमगांयदा। तख्त निवासी शाह सिक्दारा, सति सरूपी रूप प्रगटांयदा। अगम्म अगम्मड़ी करे कारा, अलक्ख अगोचर भेव ना आंयदा। आपणा नूर कर उज्यारा, नूरो नूर नज़र समांयदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाहि साची आप वड्यांअदा। आपे नारी बण कन्त भतारा, साची सेज आप हंढांयदा। आपे जाणे सुत दुलारा, शब्दी शब्द प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलांयदा। सुत दुलार शब्द हरि धार, आपणी आप उपजाईआ। करे कराए करनेहार, करता पुरख वड वड्याईआ। लेखा जाणे शाह सिक्दार, पुरख अबिनाशी भेव ना राईआ। आपणी भिख्या आपे बणे भिखार, देवणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, हरि मन्दिर सोभा पाईआ। हरि मन्दिर हरि धाम न्यारा, सचखण्ड दुआरा आप उपांयदा। इक्क इकल्ला कर पसारा, निरगुण आपणा आसण लांयदा। साचा सुत कर न्यारा, जन जननी गोद बहांयदा। पुरख अकाल दए हुलारा, पारब्रह्म प्रभ सेव कमांयदा। दूसर कोई ना करे विचारा, सगला संग ना कोई रखांयदा। सो पुरख निरँजण खेल न्यारा, खेलणहारा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला, एकँकारा आपणा नाउँ धरांयदा। सचखण्ड दुआरे वेखे खेल तमाशा, साची मंडल रास रचाईआ। आपणे अंदर आपे करे वासा, रूप अनूप आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी धार आप चलाईआ। शब्द धार हरि चलांयदा, पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार। अलक्ख अलक्खणा अलख जगांयदा, धुनी नाद नाद जैकार। एका आपणा नाउँ प्रगटांयदा, आपे होए सुनणेहार। आपणा मन्दिर आप सुहांयदा, आपे वेखे सति दुआर। आपणा सुत आपणी गोद बहांयदा। आपे लेखा जाणे परवरदिगार, आपणी महिमा आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जूनी रहित इक्क एकँकार। जूनी रहित पुरख अकाला, एका रंग समाया। आपणे उप्पर हो दयाला, आपणी दया कमाया। आपे चले अवल्लड़ी चाला, भेव कोई ना पाया। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाला, थिर घर साचे डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अनुभव प्रकाश कराया। अनुभव प्रकाश हरि निरँकारा, रूप रंग रेख ना कोई जणाईआ। वसणहारा धाम न्यारा, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। दीवा बाती ना कोई उज्यारा, जोती नूर डगमगाईआ। सुत दुलारा करे पुकारा, उच्ची कूक सुणाईआ। हउँ सेवक सेवादार, तूं पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आदि आदि हउँ याचक मंगे दान बण भिखारा, तूं देवणहार सच्चा शहनशाहीआ। सो पुरख निरँजण बण वरतारा, वस्त अमोलक झोली पाईआ। हरि पुरख निरँजण दए सहारा, सगला संग इक्क वखाईआ। एकँकारा कर

१४८६ ०६

प्यारा, सीस आपणा हथ्थ टिकाईआ। आदि निरँजण इक्क उज्यारा, अन्ध अँध्यार ना कोई वखाईआ। श्री भगवान सांझा यारा, एका तत्त समझाईआ। अबिनाशी करता दए हुलारा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सारा, हरि शब्दी शब्द समझाईआ। इक्क वस्त देवे थारा, अतोट अतुट रखाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर पसारा, लोआं पुरीआं रचन रचाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डारा, वस्त अमोलक हथ्थ फड़ाईआ। पंज तत्त बणे अखाड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, आपे पाए आपणी रासा, जोती नूर नूर रुशनाईआ। साचे मंडल साची रास, सति पुरख निरँजण आप रचांयदा। एका वस्त रक्खे पास, आदि जुगादि वरतांयदा। जुगां जुगन्तर ना होए विनास, भस्मड़ होए ना रूप वटांयदा। ना कोई पृथ्मी ना आकाश, सूरज चन्न ना कोई चढ़ांयदा। ना कोई बरस ना कोई मास, घड़ी पल ना खेल खिलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव ना वसे पास, लक्ख चुरासी घाड़न ना कोई घड़ांयदा। त्रैगुण माया ना दासी दास, पंज तत्त चोला ना कोई हंढांयदा। जीव जंत ना बुझाए कोई प्यास, रसन स्वास ना कोई चलांयदा। एका जोत जोत प्रकाश, आदि पुरख निरगुण आपणा रूप धरांयदा। शब्दी शब्द कर वास, सर्ब गुणतास खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१४८७ किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी धार आपणे हथ्थ रखांयदा। शब्द सुत हरि सेवादार, एका हुक्म सुणांयदा। विष्न १४८७

०६ विष्नूं विश्व रूप प्रगटा, वास्तक आपणा नाउँ रखांयदा। एका बूंद कर त्यार, कँवल कँवला आप खिलांयदा। आपणी नाभी ०६

कँवल ताल भरा, ताल सुहावा आप सुहांयदा। आपणा कँवल आप अख्वा, फुल फलवाड़ी आप महिकांयदा। आपे पंखड़ीआं लए खुल्ला, रुत बसन्ती आप सुहांयदा। आपे ब्रह्मा लए प्रगटा, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी वण्ड वण्डांयदा। आपे चारे मुख लए खुला, चारे कूटां वेख वखांयदा। आपे चारे वेदां लए गा, शब्द अनादी नाद अल्लांयदा। आपे चारे खाणी रचन रचा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज आप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव आपणे अग्गे धर, आपणा हुक्म आप सुणांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव शंकर हरि जू हरि उपाया, त्रै त्रै खेल खिलांयदा। शब्द सुत इक्क समझाया, अबिनाशी अचुत वेख वखांयदा। आपणी रुत आप सुहाया, दूसर संग ना कोई वखांयदा। आपणी चोटी आपणा मृदंग आप वजाया, नाम सति राग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव देवे एका हुक्म सुणाया। एका हुक्म हरि सुणांयदा, विष्न ब्रह्मा कर परवान। नौं नौं चार खेल खिलांयदा, लेखा जाणे दो जहान। जुग चौकड़ी वण्ड वण्डांयदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग कर परवान। लक्ख चुरासी खेल खिलांयदा, पंज तत्त गुण निधान। अठ

तत्त वेख वखांयदा, मन मति बुध कर प्रधान। बहत्तर नाड़ी जोड़ जुड़ांयदा, तिन्न सौ सट्ठ करे कल्याण। पंचम नाच आप नचांयदा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार बलवान। हरि शब्द नाद धुन वजांयदा, घर मन्दिर इक्क निशान। घर जोती नूर डगमगांयदा, घर वेखे सुंञ मसाण। घर सखीआं मंगल गांयदा, घर पंचम होए प्रधान। घर आपणा मुख छुपांयदा, दिस ना आए श्री भगवान। घर ब्रह्म रूप धरांयदा, घर आत्म सेजा करे परवान। घर शब्दी नद वजांयदा, अनहद राग सच्ची धुनकान। घर सुरती खेल खिलांयदा, अकाल मूर्त वड मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी सेवा सच वखांयदा, भुल्ल ना जाणे बण नादान। लक्ख चुरासी घाड़न घड़या, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। पुरख अबिनाशी कारज करया, करता पुरख आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। भगतां अंदर आपे वड़या, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। साचे पौड़े आपे चढ़या, घर बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, आपणी रचना आप रचाईआ। लक्ख चुरासी रचन रचाया, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी वण्ड वण्डाईआ। निरगुण सरगुण वेस वटाया, पंज तत्त करे कुड़माईआ। त्रैगुण नाता जोड़ जुड़ाया, लोकमात खेल खलाईआ। बोध अगाध शब्द जणाया, घर घर विच आप सुणाईआ। ब्रह्म नद हरि नाद वजाया, तुरीआ राग राग अलाईआ। सन्त साध लए उठाया, जुगा जुगन्तर वड्डी वड्याईआ। लक्ख चुरासी विच्चों काढ आप आपणा लए बुझाया, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हरि समझांयदा, त्रैगुण दाता वड बलकार। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग सेवा साची लांयदा, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। चार जुग इक्क चौकड़ी बन्धन पांयदा, जुग जुग गेड़ा आवे वारो वार। लक्ख चुरासी खेल खिलांयदा, चारे खाणी करे प्यार। चारे बाणी शब्द अलांयदा, चारे जुग दए आधार। चारे वरनां वेख वखांयदा, चारे कुंट होए उज्यार। अवतार गुर आपणा नाउँ धरांयदा, साध सन्त दए आधार। पीर दस्तगीर आपणा खेल खिलांयदा, शाह हकीर होए परवरदिगार। जुग करता आपणी कार कमांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे एका वर, आपे करे कराए ख़बरदार। विष्न ख़बरदार रहिणा, हरि साचा शब्द जणांयदा। लोकमात थिर घर साचे तख्त बैठ बैठ हुक्म नाम कहिणा, हुक्मी हुक्म सर्ब भवांयदा। ब्रह्मे आपणा नेत्र आप आपणा वेख लैणा, सैम तेरा रूप दरसांयदा। नौं नौं चार लेखा देणा पैणा, वेला वक्त आप चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा आप सुणांयदा। शंकर उठ कर ध्यान, हरि साचा सच जणांयदा। नौं नौं चार चौकड़ी जुग अन्त मिटे सर्ब निशान, पुरख अबिनाशी आप मिटांयदा। प्रगट होए श्री भगवान, आपणी कल

१४८८ ०६

आप वरतांयदा। आपणा देवे शब्द ज्ञान, आपणा हुक्म आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लेखा आप समझांयदा। जुग जुग लेखा हरि समझांयदा, विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यार। चारे वेद मुख सालांहयदा, ब्रह्मे देवे एका धार। पुराण अठारां आप सुणांयदा, आपे करे साची कार। शास्त्र सिमरत आप अल़ांयदा, लेखा जाणे वारो वार। गीता ज्ञान आप दृढ़ांयदा, आपे बोल जगत जैकार। अञ्जील कुराना आप सुणांयदा, तीस बतीसा विच संसार। खाणी बाणी आपे गांयदा, निरगुण सरगुण हो त्यार। सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढांयदा, कलिजुग खेल करे करतार। तेई दस अठारां रूप प्रगटांयदा, पंज इक्क दए आधार। बावन आपणा नाउँ धरांयदा, लेखा लिखे ना कोए विच संसार। तिन्न पंज मेल मिलांयदा, नौं नौं खोल़् किवाड़। नौं खण्ड फेरा पांयदा, चार चार हो उज्यार। चारों कुंट वेख वखांयदा, सत्त सत्त दए पसार। दहि दिशा फोल फुलांयदा, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार। निरभउ आपणा नाउँ धरांयदा, भय रक्खे ना विच संसार। जूनी रहित दिस किसे ना आंयदा, रूप रेख रंग ना सके कोए विचार। अनुभव आपणी धार बंधांयदा, धरत धवल दए सहार। जोती नूर डगमगांयदा, लेखा जाणे सूरज चन्न सतार। अन्तिम अन्त कलिजुग आपणा वेस धरांयदा, प्रगट होवे विच संसार। निहकलंक भेव ना आंयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी सार। कलिजुग अन्तिम जामा पा, निहकलंक हरि नाउँ रखाईआ। विष्नूं वंसी वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर फोल फुलाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म लक्ख चुरासी ल्ए जगा, आत्म ब्रह्म खोज खुजाईआ। शंकर तेरी बिभूती तेरे तन दए रमा, जगत ख़ाक आप उडाईआ। विष्नूं तेरा भण्डारा दए छुडा, सच भण्डार ना कोए वरताईआ। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म रूप आपणे विच ल्ए समा, लक्ख चुरासी ना कोए भवाईआ। शंकर तेरा माण दए गंवा, हथ्थ त्रिसूल ना कोए वखाईआ। करे खेल बेपरवाह, जो घड़या भन्न वखाईआ। भाणे आपणे विच सदा रिहा चला, हरि भाणा वड वड्याईआ। नौं सौ चुरानवे जुग पन्ध रिहा मुका, तख्त निवासी सच्चा शहनशाहीआ। सचखण्ड दुआरा ल्या खुल़्हा, थिर घर आपणी सेज हंढाईआ। सुन्न अगम्मी पन्ध मुका, लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबाईआ। लोकमात निरगुण जोत कर रुशना, नूर नुराना आपणा नूर करे रुशनाईआ। साचे मन्दिर डेरा ला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। पुरख अबिनाशी आपणा खेल करे सहिज सुभा, वेद कतेब भेव ना राईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त सभ गए गा, जो पंज तत्त काया चोला जगत हंढाईआ। निहकलंक तेरा राह रहे तका, गुर गोबिन्द दए सलाहीआ। सम्बल नगरी एका धाम सुहा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवान अन्तिम प्रगट होवे आ, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। शाह सुल्तानां देवे ख़ाक मिला, राज राजान तख्त ताज ना कोए हंढाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां

दीपां इक्क निशाना दए चढ़ा, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। इक्क सरना सर्ब जाए जणा, सरनगत इक्क अख्वाईआ। जन भगतां बणे पिता माँ, बाल अंञाणे गोद उठाईआ। अठारां बरनां दए मिटा, चारों कुंट वेख वखाईआ। गुरमुखां देवे ठंडी छाँ, समरथ पुरख इक्क अख्वाईआ। चरन कँवल कँवल चरन बख्शे सच सरना, जड़ हँकारीआं दए पुटाईआ। कलिजुग अन्तिम हरि भगवन्त सहाई होवे आ, जो जन रसना जिह्वा रहे हरि गुण गाईआ। करनहारा सच न्याँ, सचखण्ड बैठा सच्चा पातशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, ब्रह्मा विष्न शिव लेखा दए मुकाईआ। विष्नूं तेरा लेख मुकाउणा, लेखा लेखे रहे ना राईआ। पुरख अबिनाशी खेल खिलाउणा, लोकमात वड्डी वड्याईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, सांतक सति सति समझाईआ। राग रागनी मुख शर्मौणा, छत्ती राग भेव ना पाईआ। गुरमुख साजण इक्क वडिआउणा, जिस आत्म अन्तर करे नाम पढ़ाईआ। निष्अक्खर जाप इक्क जपाउणा, अजपा जाप मूल चुकाईआ। तीनों ताप मेट मिटाउणा, त्रैगुण भाण्डा दए भन्नाईआ। साचा मन्दिर इक्क वखाउणा, काया मन्दिर आप सुहाईआ। जोत निरँजण दीप जगाउणा, घर घर विच करे रुशनाईआ। शब्द अनादी अनहद ताल वजाउणा, धुनी नाद नाद वजाईआ। बजर कपाटी पर्दा लौहणा, दूई द्वैती रहे ना राईआ। अमृत जाम निझर झिरना आप झिराउणा, गुरसिख अठसठ तीर्थ नहावण कोए ना जाईआ। आत्म सेजा आत्म ब्रह्म पारब्रह्म मिलाउणा, ईश जीव करे कुड़माईआ। नारी कन्त इक्क हंढाउणा, सेज सुहञ्जणी इक्क सुहाईआ। कन्त कन्तूल सीस हथ्थ टिकाउणा, जगदीस दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, विष्न तेरा विश्व रूप, वास्तक एका एक दरसाईआ। ब्रह्मे तेरा मुकणा पन्ध, पारब्रह्म प्रभ आप मुकांयदा। हँ ब्रह्म सुणाया एका छन्द, सो पुरख निरँजण आपे गांयदा। एथे ओथे दो जहान जाणे आपणा परमानंद, अनन्द अनन्द आप उपजांयदा। आपे तोड़े आपे लए गंढ, घड़न भन्नणहार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसारा, हरि जू वेखे वेखणहारा, आपणा रूप आप धरांयदा। ब्रह्मे ब्रह्म हरि वेखण आया, निहकलंकी जामा धार। निरगुण सरगुण विच समाया, अंदर वड़ वड़ डूँग्घी गार। डूँग्घी भँवरी आपे डेरा लाया, दिस ना आए सिरजणहार। लक्ख चुरासी सोई ना कोए जगाया, सृष्ट दब्बी पापां भार। त्रैगुण अग्नी अग्ग ना कोए बुझाया, अमृत देवे ना ठंडी ठार। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म कँवल, निझर झिरना ना दए झिराईआ। सति सरूपी बख्शे ना कोए फुहार, चार कुंट अन्धेरा छाया, जीव जंत साध सन्त रोवण ज़ारो ज़ार। पूरन भगवन्त नज़र किसे ना आया, मन्दिर मस्जिद होए खुवार। मन बन्दर बन्नृ ना किसे वखाया, दहि दिशा मारे उडार। काया

जंदर किसे ना तोड़ तुड़ाया, नाता तुटा ना काम क्रोध लोभ मोह हँकार। सतिगुर पूरा नज़र ना आया, निरगुण जोती जोत करे उज्यार। काया किला कोट दए वखाया, घर मिले मीत मुरार। सुरती शब्द लए मिलाया, शब्द सुरत करे प्यार। गुरसिख नारी गुर शब्द लए प्रनाया, साचे घोड़े हो अस्वार। शाह अस्वारा फेरा पाया, धारों पार ना कोए दरसाया, लाल कंचन सूहा वेस जगत वटाया, सन्त भगत ना कोए प्यार। पीला बस्त्र वेख वखाया, नीला उच्ची कूक करे पुकार। काला सूसा जगत विकार वधाया, आत्म जोती जोत ना कोए जगाया, जुगती हथ्थ ना आए किसे करतार। कलिजुग कूड़ा धन्दा इक्क वखाया, वरन बरन होए विभचार। दूई द्वैती पर्दा विच टिकाया, कोए ना करे पार। दीन मज़्हब वण्ड वण्डाया, ज़ात पात होए पनहार। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म रूप दिस किसे ना आया, सृष्ट सबाई गई हार। कलिजुग अन्तिम पारब्रह्म प्रभ वेखण आया, निहकलंकी जामा धार। तेरा लहिणा देणा दए चुकाया, लेखा रहे ना विच संसार। नेत्र नैणा दए वखाया, आप आपणी किरपा धार। भैणा भइया नाता दए तुड़ाया, मात पित ना कोए आधार। साची थित दए समझाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल अगम्म अपार। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म रूप छुपाउणा, सृष्ट सबाई लेखा दए मुकाईआ। सत्त समुंदर नज़र कोए ना आउणा, सत्त दीप ना वण्ड वण्डाईआ।

१४६१ ०६ १४६१ ०६

नौं खण्ड डेरा किसे ना लाउणा, सूरज चन्न गगन मंडल ना कोई रुशनाईआ। तारका मंडल ना डगमगाउणा, धू लेखा रहे ना राईआ। विष्नूं तेरा विश्व रूप आपणे विच मिलाउणा, शंकर देवे पन्ध मुकाईआ। बाशक तशका गलों लौहणा, जटा जूट ना कोई वखाईआ। तार सतार ना कोई वखाउणा, नारद सुरस्ती राग ना कोई गाईआ। गुर पीर अवतार नज़र कोई ना आउणा, साध सन्त ना कोई वड्याईआ। जो घड़या सो भन्न वखाउणा, पारब्रह्म आपणा खेल आप खिलाईआ। चार जुग चार वेद पन्ध मुकाउणा, चारे खाणी वेखणहारा वेखे थाउँ थाँईआ। चारे बाणी राग ना किसे अलाउणा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी कोई ना गाईआ। आपणा वेस आप धराउणा, धरत धरनी धवल दए वड्याईआ। करनी करता कुदरत कादर वेख वखाउणा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। साचा कलमा इक्क पढ़ाउणा, नबी रसूल अमाम इक्क हो जाईआ। कायनात एका रंग रंगाउणा, इक्क निजात दए समझाईआ। वाहिद खुदाए नूर इक्क दरसाउणा, मुकामे हक इक्क रुशनाईआ। परमआत्मा आत्मा इक्क उपजाउणा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। वाह वा नाद गुर इक्क सुनाउणा, शब्द अनादी नाद वजाईआ। इष्ट दृष्ट इक्क जनाउणा, सृष्ट सबाई पर्दा दए चुकाईआ। पुरख अकाल नौं खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी इक्क मनाउणा, दूजा नाउँ ना कोई वखाईआ। एका दूआ दूआ एका घर घर मिटाउणा, सो पुरख निरँजण आपणा पर्दा आपे पाईआ। हँ आपणे

विच्चों आप प्रगटौदा, सरगुण सगला संग निभाईआ। सोहँ रूप श्री भगवान निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण दो जहान चलाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लावणा, कूड़ कुड़यारा कर ख्वार। भगत भगवन्त आप उठावणा, तीजे लोचण नैण देवे दरस दिदार। शब्द शब्दी इक्क सुणावणा, नाद अनादी इक्क धुन्कार। ब्रह्म ब्रह्मादी भेव खुल्हावणा, आदि जुगादी साची कार। बोध अगाधी एका शब्द जणावणा, लिखण पढ़न तों रक्खे बाहर। चौदां विद्या मेट मिटावणा, लेखा चुक्के सोला संगार। सोलां इच्छया ना कोई वखावना, आसा तृष्ना देवे मार। साची सिख्या इक्क समझावणा, चार वरन करे प्यार। सो पुरख निरँजण एका गावणा, मरे ना जम्मे विच संसार। हँ तेरा रूप आपणे विच टिकावणा, हँ ब्रह्म आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साची बन्न्हे धार। सतिजुग साचा मात धरावणा, कलिजुग कूड़ा दए उठाल। सृष्ट सबाई एका रंग रंगावणा, चार वरना करे खुवार। नौं खण्ड पृथ्मी मन्दिर इक्क सुहावना, काया खोल्हे बन्द किवाड़। घर घर दीप इक्क जगावणा, जोत आपणी कर उज्यार। घट घट अमृत जाम प्यावणा, झिरना झिरे अगम्म अपार। साचा तीर्थ इक्क वखावणा, सर सरोवर भरया ताल। सुक्क कदे ना जावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग मार्ग दसे सुख़ाल। सतिजुग मार्ग दस्सणा, दासी दास सेव कमा। गुरमुखां हिरदे हरि जू वसणा, आपणा पर्दा आपे लाह। जगत विकारा दर तों नस्सणा, नेड़ ना आए पंज शैतान। सतिगुर पूरे गुरमुखां नाल काया मन्दिर आत्म सेजा बह बह हस्सणा, काया वसे खेड़ा ग्राँ। एका तीर निराला कसणा, अणयाला तीर दए लगा। मिटे रैण अन्धेरी मसणा, घर साचा चन्द दए वखा। मानस जन्म ना होए भड्डना, भड्ड खेड़ा करे सुआह। काया अंदर मन मनूआ तेरी उलटी गेड़े लड्डणा, शिवदुआला एका घर विच घर दए प्रगटा। अमृत वखाए साचा रसना, रस रसीआ इक्क चुआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा मार्ग दए लगा। सतिजुग साचा मार्ग जाए लग, लोकमात वज्जे वधाईआ। करे खेल सूरा सरबग्ग, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। त्रैगुण माया लग्गी बुझे अग्ग, तत्व तत्त इक्क रखाईआ। गुरसिखां सतिगुर पूरा पर्दे ल्ए कज्ज, जन्म जन्म दी धोवे लग्गी शाहीआ। घर विच घर वखाए मक्का काअबा साचा हज्ज, मक्का मदीना फेरी कोई ना पाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिभगत भगवन्त एका धाम बहणा सज, दूसर धाम ना कोई वड्याईआ। एका नाद एका शब्द, एका धुन एका साज जाए वज्ज, सारिंग सारिंगा ना कोई वखाईआ। गुरमुख

१४६३ ०६

तेरी वखाए चौथा पद हद्द, ब्रह्मा विष्न शिव तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा दए वखाईआ। सतिजुग साचा हरि वखावणा, जन भगतां दया कमा। लक्ख चुरासी ख़ाक रलावणा, वसदा खेड़ा दए ढाह। सम्मत अठारां राह तकावणा, बीस बीसा दए सलाह। गोबिन्द सूरा एका डंक वजावणा, लोआं पुरीआं दए हिला। ब्रह्मा शिव आप उठावणा, उच्ची रोवण मारन धा। करोड़ तेतीसा रहिण ना पावणा, सुरपति राजा इंद लभ्भे ना कोई राह। कलिजुग कूड़ा मुख छुपावणा, झूठा भुल्ले अन्तिम नाँ। सतिजुग साचा मार्ग लावना, साचा खेड़ा दए सुहा। सत्त रंग निशाना इक्क चढ़ावणा, सत्तां दीपां दए वडिया। नौं खण्ड फेरा पावणा, नौं दुआरे पन्ध मुका। चण्ड प्रचण्ड इक्क चमकावना, ब्रह्मण्डां खण्डां वण्डण आप वण्डा। उत्भुज सेत्ज रहिण ना पावणा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँग्घी कंदर करे नया। सत्त समुंदर जल सुकावणा, अग्नी रक्खे एका भाह। पुरख अबिनाशी खेल खलावणा, आपणा भाणा दए वरता। हरि का भाणा ना किसे मिटावणा, गुर पीर अवतार रहे सीस झुका। निहकलंक नाउँ हरि अबिनाशी आपणा आप धरावणा, निरगुण जोत कर रुशना। सतिजुग साचा सति वरतावणा, सति सतिवादी होए आप मलाह। आदि जुगादी आपणा बेड़ा आप चलावणा, आपे देवणहार सलाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचे इक्क जपाए साचा नाँ। एका नाउँ चार वरन, सतिजुग करे पढ़ाईआ। एका बख्शे सच्ची सरन, हरि सच्चा सच सरनाईआ। एका खोल्हे हरन फरन, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। एका करे करनी करन, करता पुरख इक्क अख्वाईआ। एका लेखा जाणे धरनी धरन, धरत धवल दए वड्याईआ। भउ चुकाए मरन डरन, भय भयानक होए सहाईआ। एका होए तरनी तरन, तरनहार इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण इक्क इकल्ला सच्चा शहनशाहीआ। सतिजुग सच्चा शहनशाह, सति पुरख निरँजण इक्क अख्वांयदा। इक्क जपाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप अख्वांयदा। सच संदेश नर नरेश देवे थाउँ थाँ, विष्न ब्रह्मा शिव आप समझांयदा। गुरमुख हँस बणाए फड़ फड़ काँ, जिस जन सोहँ चोग चुगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि बनवारी आपणा बन्धन आपे पांयदा। गुरसिख बन्धन पाया, शब्द डोरी बन्न्हया तन्द। लोकमात ना कोई तुड़ाया, जिस गाया सुहागी छन्द। बत्ती दन्द लेखे लाया, आत्म उपजाए परमानंद। रसन विकारा गंद तजाया, घर जोत निरँजण चढ़या चन्द। सतिगुर पूरा दरस दखाया, मानस जन्म टुट्टी लए गंढ। लक्ख चुरासी फंद दए कटाया, राए धर्म ना मंगे कोई मंग। चित्रगुप्त ना हिसाब वखांयदा,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जन भगतां होए सदा बख्शंद। बख्शणहार दीन दयाल, दयानिध वड्डी वड्याईआ। गुरमुख वेखे साचे लाल, लक्ख चुरासी विच्चों फोल फुलाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, सच वणजारा एका वणज कराईआ। आपणे सांचे आपे ढाल, आपणे नाम दए वड्याईआ। करे कराए सदा प्रितपाल, प्रितपालक हरि रघुराईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, जिस बख्शे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए मिलाईआ। गुरमुख सज्जण मेलया, कर किरपा गुण निधान। एका धाम वखाए गुरू गुर चेलया, सतिगुर पूरा हो मेहरवान। हरि मिल्या सज्जण सहेलया, सुणाया धुर फ़रमाण। राए धर्म दी कट्टे जेलया, सचखण्ड दुआरा दस्से इक्क मकान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख वेखे बाल अञ्याण।

१४६४ ✻ १५ मग्घर २०१७ बिक्रमी लाल सिँघ दे घर पिण्ड डल्ले वाल ज़िला जलन्धर ✻ १४६४

०६ गुरसिख सिम्मल रहे ना ख़ाली, सतिगुर पूरा दया कमांयदा। गुर मिल्या दो जहाना वाली, लोकमात वेख वखांयदा। एकँकारा बणया साचा माली, अमृत सिंच हरा करांयदा। आप वेखे पत डाल्ही, फुल फलवाड़ी वेख वखांयदा। जगत जुग चले अवल्लड़ी चाली, चाल निराली इक्क रखांयदा। दो जहान श्री भगवान गुरमुखां करे सच दलाली, वणज वणजारा इक्क अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। गुरसिख सुरती लए हुलारा, सतिगुर पूरा आप दवाईआ। दो जहानां करे पार किनारा, अद्धविचकार ना कोई डुबाईआ। इक्क वखाए सच दरबारा, सचखण्ड दुआरा खोल्ह जणाईआ। जोत जगाए दया कमाए उच्च मुनारा, नेहचल धाम वड्डी वड्याईआ। गुरसिख गुर गुर कर प्यारा, गुर मन्त्र नाम वड्याईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढे बाहरा, जून अजूनी ना कोई फिराईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। जुगा जुगन्तर खेल अपारा, हरि करतारा आप कराईआ। भगत भगवन्त बणया रहे सेवादारा, सेवक साची सेव कमाईआ। शब्द अगम्मी नाद अनादी बोल जैकारा, आपणा मन्त्र दए समझाईआ। सिम्मल रुख गुरमुख गुर गुर पाए सारा, हरि घर वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवहीआ। सिम्मल रुख जगत याद, लक्ख चुरासी दए वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम साहिब सतिगुर सुणे आप फ़रियाद, ख़ाली कोए रहिण ना पाईआ। जिस जन देवे नाम दाद, वस्त अमोलक आप वरताईआ। शब्द जणाए बोध अगाध, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। चरन कँवल दुआर लडाए लाड, जननी जन आप अख्वाईआ। मेल मिलावा मोहन माधव माध, जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लेखा दए समझाईआ। गुरमुख लेखा हरि दुआर, सो पुरख निरँजण आप जणांयदा। हरि पुरख निरँजण मीत मुरार, विछड़ कदे ना जांयदा। एकँकारा ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोई वखांयदा। आदि निरँजण नूर उज्यार, नूर नुराना डगमगांयदा। श्री भगवान हो त्यार, घर मन्दिर फोल फुलांयदा। अबिनाशी करता आपे वेखे वेखणहार, वेखणहारा दिस ना आंयदा। पारब्रह्म ब्रह्म बूटा कर त्यार, लोकमात आप लगांयदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर पावे सार, महां सार्थी आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार आप बंधांयदा। आपे जाणे सिम्मल रुख, सच सच वड्डी वड्याईआ। आपे मेटणहारा दुक्ख, पूर्ब लेखा वेख वखाईआ। आपे सुफ़ल कराए कुक्ख, मानस मानुख भेव ना राईआ। आपणा फल आपणे कोल रक्खे गृह मन्दिर बैठा लुक, नूर ज़हूर ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुलाईआ। हरि भेव अभेद खुलांयदा, कर किरपा गुण निधान। आपणी रचना आप रचांयदा, आदि जुगादी खेल महान। निरगुण निरगुण जोत जगांयदा, जोती जाता वड मेहरवान। साचे तख्त सोभा पांयदा, तख्त निवासी शाह सुल्तान। धुर फ़रमाणा हुक्म जणांयदा, धुर दी बाणी एका बाण। शाहो भूप वड राजन राज अख्वांयदा, करे खेल दो जहान। शब्द अनादी नाद वजांयदा, आपे सुणे सुणाए सुणनेहार। दूसर संग ना कोई
१४६५ रखांयदा, इक्क इकल्ला एकँकार। सचखण्ड दुआरे सोभा पांयदा, थिर खोल्ह इक्क किवाड़। हरि मन्दिर वड वड्यांअदा, १४६५
ना कोई दीसे चार दिवार। सूरज चन्द ना कोई चढ़ांयदा, मंडल मंडप ना कोई अकार। गुर पीर अवतार ना कोई अख्वांयदा, साध सन्त करे ना कोई प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्क इकल्ला परवरदिगार। इक्क इकल्ला परवरदिगारा, दर घर साचे सोभा पांयदा। करे खेल अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कारा, अलक्ख अगोचर रूप वटांयदा। उच्चे मन्दिर हो उज्यारा, आपणा रूप आप प्रगटांयदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, हुक्मी हुक्म आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा आप वड्यांअदा। दर घर साचा सोभावन्त, सति पुरख निरँजण आप सुहाईआ। एका वसे नर हरि नरायण कन्त, कन्त कन्तूहल बेपरवाहीआ। आपणी महिमा जाणे बेअन्त, बेअन्त आपणा नाउँ रखाईआ। लेखा जाणे जुगां जुगन्त, जुग करता सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव वड देवी देव आप जणाईआ। मात पित ना कोई प्यार, जननी गोद ना कोई सुहांयदा। बाल रूप ना शीर खार, सीस हथ्थ ना कोए टिकांयदा। जगदीश देवे ना कोई सहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा आपे लए उभार। हरि आपणा आप उभारया, कर किरपा गुण

०६ ०६

निधान। निरगुण दीप कर उज्यारया, वेखणहारा आपे होए निगहबान। आदि अन्त ना पारावारया, हरि सच्चा शाह सिक्दार
वड वडा मेहरबान। साचा तख्त आप सुहा रिहा, भूप बण राज राजान। सीस ताज इक्क टिका रिहा, पंचम रूप गुण
निधान। सति सतिवादी धार वखा रिहा, ना कोई ज़िमी ना अस्मान। गगन मंडल ना कोई रचन रचा ल्या, जोती जोत
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि भगवान। आपणा लेखा हरि भगवान लिखाई, ब्रह्मा विष्न शिव सेव
लगाया। त्रै त्रै लेखा इक्क समझाई, एका माई गोद बहाया। जननी जन वेखे चाँईं चाँईं, दाई दाया हरि रघुराया। आदि
पुरख सेव कमाई, ब्रह्म ब्रह्मादि वेख वखाया। वड वडा शहनशाही, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका
देवे साचा वर, साची सिख्या इक्क सिखाया। साची सिख्या करनी करतार, हरि शब्दी मंग मंगांयदा। कवण रूप विष्न
होए उज्यार, वास्तक तेरा रूप दरसांयदा। कवण ब्रह्मा करे पसार, पारब्रह्म वण्ड वण्डांयदा। कवण शंकर करे खेल न्यार,
साख्यात रूप धरांयदा। कवण देवे अन्त अधार, कवण जोती जोत मिलांयदा। कवण भरे सच भण्डार, सति भण्डारी कवण
अख्वांयदा। कवण लक्ख चुरासी करे त्यार, रूप अनूप कवण वटांयदा। कवण अन्तिम दए सँघार, लेखा कवण हथ्थ रखांयदा।
१४६६ कवण खेल करे विच संसार, सुत दुलारा दोए जोड़ मंग मंगांयदा। मंगे भिक्ख ढह ढह पै दुआर, चरन चरनोदक मस्तक १४६६
लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउं साची मंग मंगांयदा। सो पुरख
०६ निरँजण तुठया, सुत दुलारा लए उठा। आपणे विच्चों आपे फुट्टया, आपणा रूप लए प्रगटा। विष्नूं रूप ना जाए लुट्टया, ०६
विष्नूं आपणा नाउँ रखा। विष्नूं प्याए अमृत घुट्टया, चरन चरनोदक मुख चुवा। कँवल नाभी आपे फुट्टया, पारब्रह्म हो रुशना।
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्ह। हरि साचा भेव खुलांयदा, सुण बालक बाल
निधान। विष्नूं आपणा रूप धरांयदा, आदि जुगादी इक्क भगवान। ब्रह्म आपणी अंस उपांयदा, पारब्रह्म हो हो मेहरवान।
शंकर आपणा बल धरांयदा, आपे वेखे निगहबान। तिन्नां तेरी गोद सुहांयदा, दाता देवे साचा दान। आपणा भण्डारा अतुट
निखुट रखांयदा, निखुट ना जाए दो जहान। विष्नूं वरतारा आपे लांयदा, देवे धुर फ़रमाण। ब्रह्मा ब्रह्म रूप धरांयदा, लोकमात
करे प्रधान। शंकर एका रंग वखांयदा, अन्तिम मेटे सर्ब निशान। तिन्नां विचोला तेरा रूप धरांयदा, शब्द शब्दी गुण निधान।
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दस्से आप पछाण। हरि आपणी पछाण जणांयदा, भेव अभेदा
खोल्ह। त्रैगुण माया तत्त प्रगटांयदा, पंज तत्त कर परवान। रजो तमो सतो रंग रंगांयदा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश
करे कल्याण। लक्ख चुरासी घाड़त आप घड़ांयदा, आपे होए निगहबान। लोकमात खेल खिलांयदा, मंडल मंडप वेखे मार

ध्यान। रवि ससि जोत जगांयदा, किरनी किरन दए निधान। जल बिम्ब आप समांयदा, धरत धवल रखाए आण। नौं सति वण्ड वण्डांयदा, एका तत्त करे ध्यान। लक्ख चुरासी जोत जगांयदा, रूप अनूप श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा दान। साचा दान हरि हरि दीआ, देवणहार निरँकारा। घर घर जीवत जीए जीआ, जागरत नूर जोत उज्यारा। ब्रह्म बीज आपे बीआ, आपे वेखे फुल फुलवाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपारा। अगम्म अपार खेल खिलाया, भेव कोई ना पाईआ। आपणा अक्खर इक्क पढ़ाया, पारब्रह्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। चारे वेदां आपे गाया, चारे जुग वण्ड वण्डाईआ। चारे खाणी रचन रचाया, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज वेखे थाउँ थाईंआ। चारे बाणी बाण लगाया, अनुभव रूप आपणा आप बुझाईआ। चारे कुंटां फोल फुलाया, दूर नेड़ा पन्ध मुकाईआ। आपणा पर्दा घट घट अंदर आप छुपाया, घर घर विच आसण लाईआ। काया मन्दिर इक्क वड्याआ, नौं दुआरे आप खुल्हाईआ। जगत वस्तू विच रखाया, जगत तृष्ना कर कुड़माईआ। पंज तत्त पंच विकारा बन्धन पाया, काम क्रोध लोभ मोह हँकार इक्क जणाईआ। आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाया, दूसर हथ्थ किसे ना आईआ। घर घर विच नाद वजाया, अनहद शब्द धुन वजाईआ। घर घर विच दीप जगाया, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। घर घर विच कुण्डा
१४६७ लाहया, बजर कपाटी दए तुड़ाईआ। घर घर विच अमृत ताल भराया, नाभी अमृत इक्क वखाईआ। घर घर विच सेज १४६७
०६ सुहाया, आत्म सेजा डेरा लाईआ। घर घर विच हरि हरि वण्ड वण्डाया, पारब्रह्म वेखे चाँईं चाँईंआ। घर घर विच दए ०६
समझाया, आप आपणा पर्दा लाहीआ। साचे सुत तेरी वड्याआ, तेरे नाउँ वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, रूप अनूप इक्क दरसाईआ। रूप अनूप आप दरसावणा, हरि साची सच पछाण। भगत भगवन्त आप उठावणा, देवे धुर फ़रमाण। साचे सन्तां संग निभावणा, होए सहाई अन्तिम आण। गुरमुख गुरमुख मेल मिलावणा, चुक्के जम की कान। गुरसिख आपणी गोद बहावणा, दो जहाना देवे माण। जग जुग गेड़ा आप गिड़ावणा, लोकमात ना रहे निशान। द्वापर आपणा मुख छुपावणा, सखी मिले ना साचा काहन। कलिजुग आपणा बल धरावणा, चारों कुंट करे वैरान। सृष्ट सबाई सिम्मल रुख नज़री आवणा, फल दिसे ना किसे टाहण। फल फिके फुल बक बके कम्म किसे ना आवणा, भरमे भुल्ले बण निधान। गुरमुख विरला गुर सतिगुर आप जगावणा, जिस देवे धुर फ़रमाण। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान इक्क दृढ़ावना, नेड़ ना आयण पंज शैतान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। कलिजुग अन्तिम सिम्मल धार, चार कुंट रही कुरलाईआ। हरि सतिगुर साहिब करे ना किसे प्यार, जीव जंत

रहे कुरलाईआ। अमृत फल ना मिले किसे दुआर, आत्म तृष्ना ना कोई गंवाईआ। जूठ झूठ लए हुलार, कलिजुग झक्खड़ रिहा झुलाईआ। गढ़ हँकारी बणया उच्च मिनार, हउमे दीर्घ रोग रिहा सताईआ। मानस जन्म रहे हार, पत डाली गए सुकाईआ। लोकमात खिड़ी ना दिसे कोई गुलज़ार, रुत बसन्त ना कोई सुहाईआ। मनमुख नारी ना मिल्या कन्त भतार, सुहञ्जणी सेज ना कोई हंढाईआ। चारो कुंट दिसे विभचार, सति सति बैठा मुख छुपाईआ। कलिजुग मनमुख जीव सिम्मल रोवे धाहां मार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जड़ उखड़े अन्तिम वार, जगत निशान रहिण ना पाईआ। सीस धड़ ना कोई प्यार, पंज तत्त ख़ाकी माटी ख़ाक मिलाईआ। नाता तुट्टे साक सज्जण सैण यार, ना कोई सहाई पिता माईआ। नारी कन्त ना कोई प्यार, सगला संग ना कोई रखाईआ। उठ जीव कल हो त्यार, वेला अन्तिम अन्त समझाईआ। झूठा दिसे तन शंगार, जगत विकार रहे हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत सुराइरा सिम्मल रुख, माया ममता तृष्ना ना लथ्थी भुक्ख, सुफ़ल होई ना मात कुक्ख, मानस जन्म रहे गंवाईआ। गुरमुख बूटा सिम्मल जाए फुल्ल, रुत बसन्त अन्तिम आईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता आपणी जोती जाए मवल, पत टहिणी आप महिकाईआ। अन्तिम अन्त हरि भगवन्त करता कीमत पाए मुल, लक्ख करोड़ी ना कोए चुकाईआ। गुरसिख साचे कंडे जाए तुल, अठारां भार चरनां हेठ दबाईआ। देवे नाम नाम अनमुल्ल, करता कीमत कोए ना लाईआ। जो जन दुआरे आए भुल्ल, सिम्मल रूप ना कोए वखाईआ। भाग लगाए साची कुल, कालख टिक्का मेटे शाहीआ। सच निशाना जाए झुल्ल, सतिगुर पूरा आप झुलाईआ। गुरसिख त्रैगुण माया विच ना जाए रुल, जगत जंजाला आप कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए फड़, औदां जांदा दिस ना आईआ। निरगुण सरगुण आपे फड़, सरगुण निरगुण विच मिलांयदा। आपणे पौड़े आपे चढ़, साचा मन्दिर खोज खुजांयदा। कर प्रकाश बहत्तर नड़, अन्ध अन्धेर गवांयदा। शब्द अगम्मी आपे पढ़, तुरया राग सुणांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, जोती जोत डगमगांयदा। किला तोड़ हँकारी गढ़, आपणा मन्दिर आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख बन्हाए आपणे लड़, बन्दीख़ाना आप तुड़ांयदा। गुरसिख गुर एका जाणया, गृह मन्दिर कर विचार। गुर सतिगुर आप पछाणया, एका बख़्शे चरन प्यार। देवे नाम गुण निधानया, अमृत बरखे ठंडा ठार। लक्ख चुरासी पुण छाणया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। कूड़ी क्रिया चोला होया पुराणया, अन्तिम चीथड़ा देवे हार। पुच्छे वात ना कोए राजे राणया, राए धर्म करे ख्वार। लाड़ी मौत प्रनाए चतर सुघड़ स्याणया, आलम उलमा मारे मार। फड़ फड़ खाए वड जरवाणया, तोड़े गढ़ हँकार। गुरमुख विरला चले सतिगुर

भाणया, जिस सिर हथ्थ धरे करतार। कलिजुग जीव बाल अञ्याणया, सिम्मल रुक्ख लए हुलार। लाड़ी मौत भन्ने डाहणया, अन्तिम करे छार छार। जिस जन सतिगुर पूरा मिल्या श्री भगवानया, नाता तोड़े सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लाए पार। गुरसिख पार उतारया, कर किरपा हरि करतार। जन्म जन्म दा रोग निवारया, लक्ख चुरासी गेड़ निवार। माणस जन्म पैज संवारया, मात गर्भ ना आए दूजी वार। घर मन्दिर इक्क वखा ल्या, सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़। आपणी गोदी आप बहा ल्या, जिउँ माता बालक लाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिख सदा करे प्रितपाल। गुरसिखां प्रितपालदा, आदि जुगादि समाए। गुरमुखां आप उठालदा, जुगा जुगन्तर सेव कमाए। सन्तन घाल आपे घालदा, वेस अनेका रूप प्रगटाए। भगतन भगवन राह वखाल दा, साचे मार्ग आपे पाए। लेखा जाणे दो जहान दा, काल महांकाल आपणे हुक्म फिराय। गुरमुख साचे सदा सद सुरत संभालदा, शब्दी डोरी बन्धन पाए। लेखा जाणे शाह कंगाल दा, भुल्ल रहे ना राए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए मिलाए। हरिजन मेल मिलन्नया, कल कूड़ा नाता तोड़। देवे नाम सच्चा धन धनया, दूसर दर ना कोए लोड़। दिस ना आए नेत्र अन्न्हयां, कलिजुग काया रीठा होया कौड़। गुरमुख विरले हरि हरि मन्नया, जिस दरस दिखाए बौहड़। लक्ख चुरासी देवे डन्नया, शब्द अगम्मी चढ़या घोड़। गुरमुखां बेड़ा बन्न्हया, सचखण्ड दुआरे लाए एका पौड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन बुझाए लग्गी औड़। हरिजन बुझे लग्गी प्यास, सतिगुर पूरा आप बुझाईआ। दरस दिखाए दासी दास, दिवस रैण सेव कमाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। गुरसिखां अंदर कर कर वास, आपणा रूप अनूप आप समझाईआ। सति सरूपी कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। करे कराए बन्द ख़लास, बन्दी छोड़ सच्चा शहनशाहीआ। अन्तिम कलिजुग पूरी करे आस, जो जन रहे ध्यान लगाईआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच प्रभास, उच्चे टिल्ले पर्बत डूँग्घी कंदर फोल फुलाईआ। सतिगुर पूरा आदि जुगादि ना होए विनास, ना मरे ना जाईआ। गुरमुखां सद वसया पास, घर घर विच जोत जगाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी सिम्मल लक्कड़ी दिसे काठ, कलिजुग अन्तिम दए जलाईआ। गुरमुख विरला उतरे साचे घाट, जिस सतिगुर मिल्या इक्क मलाहीआ। दो जहानां मुक्के वाट, पान्धी आपणा पन्ध मुकाईआ। पूर्ब जन्मां पूरा करे घाट, जिस सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। दुरमति मैल देवे काट, निर्मल नीर इक्क दरसाईआ। लेखा चुकाए चौदां लोक चौदां हाट, चौदस रूप ना कोए वटाईआ। इक्क रखाए साची खाट, सच सिँघासण

सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मेले आपणे दर, सिम्मल सरायरा चुक्के डर, घर रुतड़ी घर बहार, घर सखीआं मंगलचार, घर मेला कन्त भतार, घर सुहञ्जणी सेज, घर वज्जदी रहे वधाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन होया आप मेहरवान, ख़ाली रक्खे ना कोए निशान, सति निशाना आप झुलाईआ।

✻ १६ मग्घर २०१७ बिक्रमी केसर सिँघ तीर्थ सिँघ दे घर पिण्ड डल्लेवाल ज़िला जलन्धर ✻

सतिगुर दुआरा साचा हट्ट, जुगा जुगन्तर आप वखाईआ। गुरमुख विरला लाहा लए खट्ट, सृष्ट सबाई नेत्र रो रो नीर वहाईआ। गुर सतिगुर दुरमति मेल देवे कट्ट, निर्मल नीर सीर इक्क पिलाईआ। दूई द्वैती मेटे फट्ट, साचा मार्ग इक्क दरसाईआ। अनहद शब्द कर प्रगट, गृह मन्दिर दए वड्याईआ। नाता तोड़ पंच विकारा नटुआ नट, आसा तृष्ना दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आत्म खाट, सुहञ्जणी सेज इक्क सुहाईआ। सेज सुहञ्जणी आत्म अन्तर, हरिजू हरि हरि मन्दिर आप सुहांयदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, जीव जंत वेख वखांयदा। गुरमुख जणाए आपणा मन्त्र, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। अग्नी अग्ग बुझे बसन्तर, सीतल अमृत मेघ बरसांयदा। लेखा जाणे गगन गगनंतर, गगन मंडल खोज खुजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह आसण पुरख अबिनासन, ब्रह्म लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। ब्रह्म निवासा पुरख अबिनाशा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। गुरसिखां पाए साची रासा, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। जुगत जगत जग भगत दए दिलासा, चरन भरवासा इक्क समझाईआ। जन हरि हरिजन मातलोक ना होए निरासा, निर्धन सरधन वेखे थाउँ थाँईआ। जो जन दरस दरसन रहे प्यासा, दे दरस तृखा बुझाईआ। काया मन्दिर कर कर वासा, रसन स्वासा लेखे लाईआ। कदे ना आए हार पासा, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लक्ख चुरासी करे बन्द खुलासा, बन्दी छोड़ सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा लेखे लाईआ। हरिजन हरि हरि जाणया, जानणहार इक्क करतार। आदि जुगादि चले आपणे भाणया, भाणा वरते सर्ब संसार। गुरमुख विरले हरि रंग माणया, अन्तर आत्म कर प्यार। गुर सतिगुर बख्शे चरन ध्यानया, चरन कँवल दए आधार। किसे हथ्थ ना आए चतर सुघड़ स्याणया, मूर्ख मूढ़े लाए पार। जिस जन आपणे दर करे परवानया, लोक परलोक ना होए ख्वार। नाम फड़ाए सति निशानया, दो जहानां दए हुलार। वखाए इक्क पद निरबानया, परम पुरख आप करतार। जिस जन गाया सोहँ गाणया, हँ ब्रह्म पारब्रह्म आप सुणाए आपणी सच गुफ़तार। दरगाह साची सचखण्ड दर दरवार देवे

माणया, इक्क इकल्ला कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए उभार। गुर करता गुर करनहार, गुर गुर आपणा वेस वटांयदा। गुर घाड़त घड़े बण सुन्यार, गुर गुर नाम कुठाली एका तांयदा। गुर गुर रूप बणे ठठयार, गुर गुर गुरमुख भाण्डे आप बणांयदा। गुर कंचन रूप अगम्म अपार, नाम पारस संग मिलांयदा। गुर गुरसिख मस्तक छुहाए चरन कँवल चरनार, चेतन्न रूप सर्ब दरसांयदा। नेतन नेत करे प्यार, नित नवित वेस वटांयदा। साचा हित सिरजणहार, हरिजन आपणा मेल मिलांयदा। पतित पवित कर जाए तार, पतित पापी आपणे रंग रंगांयदा। वार थित ना जाणे कोए जीव संसार, वेद कतेब शास्त्र सिमरत खाणी बाणी भेव कोए ना पांयदा। आदि जुगादि जाणे आपणी कार, ब्रह्म ब्रह्मादि खोज खुजांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्लड़ा निराकार, साकार ना रूप वटांयदा। जुग जुग वेखे विछड़े यार, कर किरपा मेल मिलांयदा। नारी पुरख ना कोए विचार, सर्ब जीआं दाता इक्क अख्वांयदा। गुरसिख डुब्बदे पाथर लाए पार, पाहन आपणा चरन छुहांयदा। गृह मन्दिर घर देवे दरस दीदार, गुरसिख दीद आपणी ईद मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे वेख वखांयदा।

१५०१ ०६

❊ ❊ ❊ ❊ ❊